

Holy Bible

Aionian Edition®

पवित्र बाइबिल

Hindi Bible

AionianBible.org

दुनिया का पहला पवित्र बाइबल रिवर्स ट्रांसलेशन
कॉर्पी और प्रिट करने के लिए **100%** मुफ्त
इस स्पष्ट में भी जाना जाता है “ बैंगनी बाइबिल ”

Holy Bible Aionian Edition ®

पवित्र बाइबिल
Hindi Bible

CC Attribution ShareAlike 4.0, 2018-2023

Source text: eBible.org

Source version: 9/15/2023

Source copyright: CC Attribution ShareAlike 4.0
Bridge Connectivity Solutions, 2017, 2018, 2019

Formatted by Speedata Publisher 4.13.11 (Pro) on 12/11/2023

100% Free to Copy and Print

TOR Anonymously

<https://AionianBible.org>

Published by Nainoia Inc

<https://Nainoia-Inc.signedon.net>

We pray for a modern public domain translation in every language

Report content and format concerns to Nainoia Inc

Volunteer help is welcome and appreciated!

Celebrate Jesus Christ's victory of grace!

प्रस्तावना

हिन्दी at AionianBible.org/Preface

The *Holy Bible Aionian Edition* ® is the world's first Bible *un-translation!* What is an *un-translation?* Bibles are translated into each of our languages from the original Hebrew, Aramaic, and Koine Greek. Occasionally, the best word translation cannot be found and these words are transliterated letter by letter. Four well known transliterations are *Christ*, *baptism*, *angel*, and *apostle*. The meaning is then preserved more accurately through context and a dictionary. The Aionian Bible un-translates and instead transliterates ten additional Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and all mankind, and the nature of afterlife destinies.

The first three words are *aiōn*, *aiōnios*, and *aīdios*, typically translated as *eternal* and also *world* or *eon*. The Aionian Bible is named after an alternative spelling of *aiōnios*. Consider that researchers question if *aiōn* and *aiōnios* actually mean *eternal*. Translating *aiōn* as *eternal* in Matthew 28:20 makes no sense, as all agree. The Greek word for *eternal* is *aīdios*, used in Romans 1:20 about God and in Jude 6 about demon imprisonment. Yet what about *aiōnios* in John 3:16? Certainly we do not question whether salvation is *eternal*! However, *aiōnios* means something much more wonderful than infinite time! Ancient Greeks used *aiōn* to mean *eon* or *age*. They also used the adjective *aiōnios* to mean *entirety*, such as *complete* or even *consummate*, but never infinite time. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs. So *aiōnios* is the perfect description of God's Word which has *everything* we need for life and godliness! And the *aiōnios* life promised in John 3:16 is not simply a ticket to *eternal* life in the future, but the invitation through faith to the *consummate* life beginning now!

The next seven words are *Sheol*, *Hadēs*, *Geenna*, *Tartaroō*, *Abyssos*, and *Limnē Pyr*. These words are often translated as *Hell*, the place of eternal punishment. However, *Hell* is ill-defined when compared with the Hebrew and Greek. For example, *Sheol* is the abode of deceased believers and unbelievers and should never be translated as *Hell*. *Hadēs* is a temporary place of punishment, Revelation 20:13-14. *Geenna* is the Valley of Hinnom, Jerusalem's refuse dump, a temporal judgment for sin. *Tartaroō* is a prison for demons, mentioned once in 2 Peter 2:4. *Abyssos* is a temporary prison for the Beast and Satan. Translators are also inconsistent because *Hell* is used by the King James Version 54 times, the New International Version 14 times, and the World English Bible zero times. Finally, *Limnē Pyr* is the Lake of Fire, yet Matthew 25:41 explains that these fires are prepared for the Devil and his angels. So there is reason to review our conclusions about the destinies of redeemed mankind and fallen angels.

The eleventh word, *eleēsē*, reveals the grand conclusion of grace in Romans 11:32. Take the time to understand these eleven words. The original translation is unaltered and a note is added to 64 Old Testament and 201 New Testament verses. To help parallel study and Strong's Concordance use, apocryphal text is removed and most variant verse numbering is mapped to the English standard. We thank our sources at eBible.org, Crosswire.org, unbound.Biola.edu, Bible4u.net, and NHEB.net. The Aionian Bible is copyrighted with creativecommons.org/licenses/by-nd/4.0, allowing 100% freedom to copy and print, if respecting source copyrights. Check the Reader's Guide and read online at AionianBible.org, with Android, and TOR network. Why purple? King Jesus' Word is royal... and purple is the color of royalty!

विषय - सूची

पुराना नियम

उत्पत्ति	11
निर्गमन	42
लैब्यव्यवस्था	67
गिनती	85
व्यवस्था विवरण	109
यहोश्	131
न्यायियों	145
रूत	159
1 शमूएल	161
2 शमूएल	181
1 राजा	197
2 राजा	216
1 इतिहास	234
2 इतिहास	251
एज़ा	272
नहेमायाह	278
एस्टर	287
अर्यूब	292
भजन संहिता	308
नीतिवचन	345
सभोपदेशक	358
श्रेष्ठगीत	363
यशायाह	366
थिर्मयाह	395
विलापगीत	428
यहेजेकेल	431
दानियेल	460
होशे	470
योएल	475
आमोस	477
ओबधाह	481
योना	482
मीका	484
नहम	487
हबक्कूक	489
सपन्याह	491
हागै	493
जकर्याह	494
मलाकी	499

नए नियम

मर्ती	503
मरकुस	522
लूका	534
यूहन्ना	554
प्रेरितों के काम	570
रोमियो	590
1 कुरिन्थियों	599
2 कुरिन्थियों	607
गलातियों	613
इफिसियों	616
फिलिप्पियों	619
कुलुस्सियों	621
1 थिस्सलुनीकियों	623
2 थिस्सलुनीकियों	625
1 तीमुथियुस	626
2 तीमुथियुस	629
तीतुस	631
फिलेमोन	632
इब्रानियों	633
याकूब	639
1 पतरस	642
2 पतरस	645
1 यूहन्ना	647
2 यूहन्ना	650
3 यूहन्ना	651
यहदा	652
प्रकाशित वाक्य	653
अनुबंध	
पाठक गाइड	
शब्दकोष	
मैप्स	
नियति	
रेखांकन, Doré	

पुराना नियम



इसलिए आदम को उसने निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये अदन की वाटिका के पूर्व की
ओर कस्बों को, और चारों ओर घृणेवाली अग्निमय तलवार को भी नियुक्त कर दिया।

उत्पत्ति 3:२४

उत्पत्ति

१ आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। २ पृथ्वी ब्रेडॉल और

सुन्सान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अधियारा था; तथा परमेश्वर का आन्मा जल के ऊपर मण्डराता था। ३ तब परमेश्वर ने कहा, “उजियाला हो,” तो उजियाला हो गया। ४ और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है, और परमेश्वर ने उजियाले को अंधियारे से अलग किया। ५ और परमेश्वर ने उजियाले को दिन और अंधियारे को रात कहा। तथा सौँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहला दिन हो गया। ६ फिर परमेश्वर ने कहा, “जल के बीच एक ऐसा अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाए।” ७ तब परमेश्वर ने एक अन्तर करके उसके नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग-अलग किया, और वैसा ही हो गया। ८ और परमेश्वर ने उस अन्तर को आकाश कहा। तथा सौँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन हो गया। ९ फिर परमेश्वर ने कहा, “आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई दे,” और वैसा ही हो गया। १० और परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा, तथा जो जल इकट्ठा हुआ उसको उसने समुद्र कहा; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। ११ फिर परमेश्वर ने कहा, “पृथ्वी से हीरी धास, तथा बीजवाले छोटे-छोटे पेड़, और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्हीं में एक-एक की जाति के अनुसार होते हैं पृथ्वी पर उगें,” और वैसा ही हो गया। १२ इस प्रकार पृथ्वी से हीरी धास, और छोटे-छोटे पेड़ जिनमें अपनी-अपनी जाति के अनुसार बीज होता है, और फलदाई वृक्ष जिनके बीज एक-एक की जाति के अनुसार उन्हीं में होते हैं उगें; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। १३ तथा सौँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार तीसरा दिन हो गया। १४ फिर परमेश्वर ने कहा, “दिन को रात से अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियाँ हों; और वे चिन्हों, और नियत समयों, और दिनों, और वर्षों के कारण हों; १५ और वे ज्योतियाँ आकाश के अन्तर में पृथ्वी पर प्रकाश देनेवाली भी ठहरें,” और वैसा ही हो गया। १६ तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियाँ बनाईं, उनमें से बड़ी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने के लिये, और छोटी ज्योति को रात पर प्रभुता करने के लिये बनाया। १७ परमेश्वर ने उनको आकाश के अन्तर में इसलिए रखा कि वे पृथ्वी पर प्रकाश दें, १८ तथा दिन और रात पर प्रभुता करें और उजियाले को अंधियारे से अलग करें; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। १९ तथा सौँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार चौथा दिन हो गया। २० फिर परमेश्वर ने कहा, “जल जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाए, और पर्याप्त पृथ्वी के ऊपर आकाश के अन्तर में उड़ें।” २१ इसलिए परमेश्वर ने जाति-जाति के बड़े-बड़े जल-जन्तुओं की, और उन सब जीवित प्राणियों की भी सृष्टि की जो चलते फिरते हैं जिनसे जल बहुत ही भर गया और एक-एक जाति के उड़नेवाले पक्षियों की भी सृष्टि की; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। २२ परमेश्वर ने यह कहकर उनको आशीष दी, “फूलों-फलों, और सपुद्र के जल में भर जाओ, और पक्षी पृथ्वी पर बढ़ें।” २३ तथा सौँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पाँचवाँ दिन हो गया। २४ फिर परमेश्वर ने कहा, “पृथ्वी से एक-एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात् घेरेल पश्च, और रेगेनेवाले जन्तु, और पृथ्वी के बन पश्च, जाति-जाति के अनुसार उत्पन्न हों,” और वैसा ही हो गया। २५ इस प्रकार परमेश्वर ने पृथ्वी के जाति-जाति के बन-पश्चओं को, और जाति-जाति के घेरेल पश्चओं को, और जाति-जाति के भूमि पर सब रेगेनेवाले जन्तुओं को बनाया; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। २६ फिर परमेश्वर ने कहा, “हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ; और वे समुद्र की मछलियों,

और आकाश के पक्षियों, और घेरेल पश्चओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेगेनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेगते हैं, अधिकार रखें।” २७ तब परमेश्वर ने अपने स्वरूप में मनुष्य को रचा, अपने ही स्वरूप में परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की; नर और नारी के स्पृह में उसने मनुष्यों की सृष्टि की। २८ और परमेश्वर ने उनको आशीष दी; और उनसे कहा, “फूलों-फलों, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने बश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेगेनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।” २९ फिर परमेश्वर ने उनसे कहा, “सुनो, जितने बीजवाले छोटे-छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने बूँदों में बीजवाले फल होते हैं, वे सब मैंने तुम को दिए हैं; वे तम्हारे भोजन के लिये हैं; ३० और जितने पृथ्वी के पश्च, और आकाश के पक्षी, और पृथ्वी पर रेगेनेवाले जन्तु हैं, जिनमें जीवन का प्राण है, उन सब के खाने के लिये मैंने सब हरे-हरे छोटे पेड़ दिए हैं,” और वैसा ही हो गया। ३१ तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। तथा सौँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवाँ दिन हो गया।

२ इस तरह आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया। ३ और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया, और उसने अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्वाम किया। ३ और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उसमें उसने सृष्टि की रचना के अपने सारे काम से विश्वाम लिया। ४ आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का बृतान्त यह है कि जब वे उत्पन्न हुए अर्थात् जिस दिन यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया। ५ तब मैदान का कोई पौधा भूमि पर न था, और न मैदान का कोई छोटा पेड़ उगा था, क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी पर जल नहीं बरसाया था, और भूमि पर खेती करने के लिये मनुष्य भी नहीं था। ६ लोकिन कुहरा पृथ्वी से उठाता था जिससे सारी भूमि सिंच जाती थी। ७ तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथरों में जीवन का च्वास फूँक दिया; और आदम जीवित प्राणी बन गया। ८ और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर, अदन में एक वाटिका लगाइ, और वहाँ आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया। ९ और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भाँति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं, उगाए, और वाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया। १० उस वाटिका को सीधीने के लिये एक महानी अदन से निकली और वहाँ से आगे बहकर चार नदियों में बँट गई। ११ पहली नदी का नाम पीशोन है, यह वही है जो हवीला नाम के सारे देश को जहाँ सोना मिलता है थेरे हुए है। १२ उस देश का सोना उत्तम होता है; वहाँ मोती और सूलैमानी पत्थर भी मिलते हैं। १३ और दूसरी नदी का नाम गीहोन है; यह वही है जो कृश के सारे देश को थेरे हुए है। १४ और तीसरी नदी का नाम हिङ्केल है; यह वही है जो अश्शू के पूर्व की ओर बहती है। और चौथी नदी का नाम फरात है। १५ तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रखवाली करे। १६ और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, “तू वाटिका के किसी भी वृक्षों का फल खा सकता है, १७ पर भले या बुे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।” १८ फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, “आदम अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उसके लिये उपयुक्त होगा।” १९ और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के जंगली पशुओं, और आकाश के सब भाँति के पक्षियों को रखकर आदम के

पास ले आया कि देखे, कि वह उनका क्या-क्या नाम रखता है; और जिस-जिस जीवित प्राणी का जो-जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया। २० अतः आदम ने सब जाति के घेरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के जंगली पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला जो उससे मेल खा सके। २१ तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को गहरी नीद में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकालकर उसकी जगह मौस भर दिया। २२ और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, छी बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया। २३ तब आदम ने कहा, “अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मौस में का मौस है; इसलिए इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है।” २४ इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे। २५ आदम और उसकी पत्नी दोनों नगे थे, पर वे लजित न थे।

३ यहोवा परमेश्वर ने जितने जंगली पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उसने छी से कहा, “क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, ‘तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?’” ४ छी ने सर्प से कहा, “इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं;” ५ पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न ही उसको छाना, नहीं तो मर जाओगे।” ६ तब सर्प ने छी से कहा, “तुम निश्चय न मरोगे ७ वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उरी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम भले खुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।” ८ अतः जब छी ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया; और अपने पाति को भी दिया, जो उसके साथ था और उसने भी खाया। ९ तब उन दोनों की आँखें खुल गईं, और उनको मालूम हआ कि वे नगे हैं; इसलिए उन्होंने अंजीर के पते जोड़-जोड़कर लंगोट बना लिये। १० तब यहोवा परमेश्वर, जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था, उसका शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। ११ तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से पूछा, “तू कहाँ हो?” १२ उसने कहा, “मैं तेरा शब्द वाटिका में सुनकर डर गया, क्योंकि मैं नंगा था; इसलिए छिप गया।” १३ यहोवा परमेश्वर ने कहा, “किसने तुझे बताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैंने तुझे मना किया था, क्या तुम उसका फल खाया है?” १४ आदम ने कहा, “जिस छी को तूने मेरे संग रहने को दिया है उरी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैंने खाया।” १५ तब यहोवा परमेश्वर ने छी से कहा, “तूने यह क्या किया है?” छी ने कहा, “सर्प ने मुझे बहका दिया, तब मैंने खाया।” १६ तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा, “तूने जो यह किया है इसलिए तू सब घेरेलू पशुओं, और सब जंगली पशुओं से अधिक शापित है; तू पेट के बल चला करेगा, और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा;” १७ और मैं तेरे और इस छी के बीच में, और तेरे बंश और इसके बंश के बीच में बैर उत्पन्न करँगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी इडी को डसेगा।” १८ फिर छी से उसने कहा, “मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ित होकर बच्चे उत्पन्न करेगी, और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।” १९ और आदम से उसने कहा, “तूने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैंने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना, उसको तूने खाया है, इसलिए भूमि तेरे कारण शापित है। तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा;” २० और वह

तेरे लिये कँटे और ऊँटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा; २१ और अपने माथे के पसीनी की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा; क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही है मिल जाएगा।” २२ आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा; क्योंकि जितने मनुष्य जीवित है उन सब की मूलमाता वही हुई। २३ और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के बक्श बनाकर उनको पहना दिए। २४ फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, “मनुष्य भले खुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है: इसलिए अब ऐसा न हो, कि वह हथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़कर खा ले और सदा जीवित रहे।” २५ इसलिए यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की वाटिका में से निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे जिसमें से वह बनाया गया था। २६ इसलिए आदम को उसने निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये अदन की वाटिका के पूर्व की ओर कस्बों को, और चारों ओर घूमेवाली अग्निमय तलवार को भी नियुक्त कर दिया।

४ जब आदम अपनी पत्नी हव्वा के पास गया तब उसने गर्भवती होकर कैन को जन्म दिया और कहा, “मैंने यहोवा की सहायता से एक पुत्र को जन्म दिया है।” ५ फिर वह उसके भाई हाबिल को भी जन्मी, हाबिल तो भेड़-बकरियों का चरवाहा बन गया, परन्तु कैन भूमि की खेती करनेवाला किसान बना। ६ कुछ दिनों के पश्चात् कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेट ले आया। ७ और हाबिल भी अपनी भेड़-बकरियों के कई एक पहलौठे बच्चे भेट चढ़ाने ले आया और उनकी चबीं भेट चढ़ाईं; तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेट को तो ग्रहण किया, ८ परन्तु कैन और उसकी भेट को उसने ग्रहण न किया। तब कैन अति क्रोधित हुआ, और उसके मुँह पर उदासी छा गई। ९ तब यहोवा ने कैन से कहा, “तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुँह पर उदासी क्यों छा गई है? १० यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वारा पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तुझे उस पर प्रभुता करनी है।” ११ तब कैन ने अपने भाई हाबिल से कुछ कहा; और जब वे मैदान में थे, तब कैन ने अपने भाई हाबिल पर चढ़ाकर उसकी हत्या कर दी। १२ तब यहोवा ने कैन से पूछा, “तेरा भाई हाबिल कहाँ है?” उसने कहा, “मालूम नहीं; क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?” १३ उसने कहा, “तूने क्या किया है? तेरे भाई का लह भूमि में से मेरी ओर चिल्लाकर मेरी दुहाई दे रहा है।” १४ इसलिए अब भूमि जिसने तेरे भाई का लह तेरे हाथ से पीने के लिये अपना मुँह खोला है, उसकी ओर से तू श्रापित है। १५ चाहे तू भूमि पर खेती करे, तो भी उसकी पूरी उपज फिर तुझे न मिलेगी, और तू पृथक्षी पर भटकने वाला और भगोड़ा होगा।” १६ तब कैन ने यहोवा से कहा, “मेरा टण्ड असहीय है।” १७ देख, तूने आज के दिन मुझे भूमि पर से निकाला है और मैं तेरी दृष्टि की आड़ में रह्या और पृथक्षी पर भटकने वाला और भगोड़ा रह्या; और जो कोई मुझे पाएगा, मेरी हत्या करेगा।” १८ इस कारण यहोवा ने उससे कहा, “जो कोई कैन की हत्या करेगा उससे सात गुण बदला लिया जाएगा।” और यहोवा ने कैन के लिये एक चिन्ह ठहराया ऐसा न हो कि कोई उसे पाकर मार डाले। १९ तब कैन यहोवा के सम्मुख से निकल गया और नोट नामक देश में, जो अदन के पूर्व की ओर है, रहने लगा। २० जब कैन अपनी पत्नी के पास गया तब वह गर्भवती हुई और हनोक को जन्म दिया; फिर कैन ने एक नगर बसाया और उस नगर का नाम अपने पुत्र के नाम पर रखा। २१ हनोक से झीराद उत्पन्न हुआ, और झीराद से महयाएल उत्पन्न हुआ और महयाएल से मतशाएल, और मतशाएल से लेमेक उत्पन्न हुआ। २२ लेमेक ने दो खियाँ ब्याह लीं: जिनमें से एक का नाम

आदा और दूसरी का सिल्ला है। २० आदा ने याबाल को जन्म दिया। वह उन लोगों का पिता था जो तम्भुओं में रहते थे और पशुओं का पालन करके जीवन निर्वाह करते थे। २१ उसके भाई का नाम यूबल था: वह उन लोगों का पिता था जो वीणा और बाँसुरी बजाते थे। २२ और सिल्ला ने भी तल्लल-कैन नामक एक पुत्र को जन्म दिया: वह पीतल और लोहे के सब धारवाले हथियारों का गढ़नेवाला हुआ। और तल्लल-कैन की बहन नामाह थी। २३ लेमेक ने अपनी पत्रियों से कहा, “हे आदा और हे सिल्ला मेरी सुग्री, हे लेमेक की पत्रियों, मेरी बात पर कान लगाओ: मैंने एक पुस्त को जो मुझे चोट लगाता था, अर्थात् एक जवान को जो मुझे घायल करता था, घाट किया है। २४ जब कैन का बदला सात गुणा लिया जाएगा। तो लेमेक का सतहतर गुणा लिया जाएगा।” २५ और आदम अपनी पत्री के पास फिर गया; और उसने एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम यह कहकर शेत रखा कि “परमेश्वर ने मेरे लिये हाबिल के बदले, जिसको कैन ने मारा था, एक और वंश प्रदान किया।” २६ और शेत के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उसने उसका नाम एनोश रखा। उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे।

५ आदम की वंशावली यह है। जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की तब उपर्युक्त वर्ष की और उसको बनाया। १ उसने नर और नरी करके मनुष्यों की सृष्टि की और उहें अशीष दी, और उनकी सृष्टि के दिन उनका नाम आदम रखा। २ जब आदम एक सौ तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा उसकी समानता में उस ही के स्वस्प के अनुसार एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसने उसका नाम शेत रखा। ३ और शेत के जन्म के पश्चात् आदम आठ सौ वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी भेटे-बेटियों उत्पन्न हुईं। ४ इस प्रकार आदम की कुल आयु नौ सौ तीस वर्ष की हुई, तत्पश्चात् वह मर गया। ५ जब शेत एक सौ पाँच वर्ष का हुआ, तब उसने कैनान को जन्म दिया। ६ कैनान के जन्म के पश्चात् एनोश आठ सौ पन्द्रह वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी भेटे-बेटियों उत्पन्न हुईं। ७ इस प्रकार एनोश की कुल आयु नौ सौ तीस वर्ष की हुई, तत्पश्चात् वह मर गया। ८ जब एनोश नब्बे वर्ष का हुआ, तब उसने कैनान को जन्म दिया। ९ कैनान के जन्म के पश्चात् एनोश आठ सौ चार वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी भेटे-बेटियों उत्पन्न हुईं। १० इस प्रकार कैनान की कुल आयु नौ सौ तीस वर्ष की हुई, तत्पश्चात् वह मर गया। ११ जब महललेल के जन्म के पश्चात् कैनान आठ सौ चारीस वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी भेटे-बेटियों उत्पन्न हुईं। १२ इस प्रकार कैनान सत्तर वर्ष का हुआ, तब उसने महललेल को जन्म दिया। १३ महललेल के जन्म के पश्चात् कैनान आठ सौ चारीस वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी भेटे-बेटियों उत्पन्न हुईं। १४ इस प्रकार कैनान की कुल आयु नौ सौ तीस वर्ष की हुई, तत्पश्चात् वह मर गया। १५ जब महललेल पैसठ वर्ष का हुआ, तब उसने येरेद को जन्म दिया। १६ येरेद के जन्म के पश्चात् महललेल आठ सौ तीस वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी भेटे-बेटियों उत्पन्न हुईं। १७ इस प्रकार महललेल की कुल आयु आठ सौ पचानबे वर्ष की हुई, तत्पश्चात् वह मर गया। १८ जब येरेद एक सौ बासठ वर्ष का हुआ, तब उसने होनोक को जन्म दिया। १९ होनोक के जन्म के पश्चात् येरेद आठ सौ वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी भेटे-बेटियों उत्पन्न हुईं। २० इस प्रकार येरेद की कुल आयु नौ सौ बासठ वर्ष की हुई, तत्पश्चात् वह मर गया। २१ जब होनोक पैसठ वर्ष का हुआ, तब उसने मतूशेलह को जन्म दिया। २२ मतूशेलह के जन्म के पश्चात् होनोक तीन सौ वर्ष तक परमेश्वर के साथ-साथ चलता रहा, और उसके और भी भेटे-बेटियों उत्पन्न हुईं। २३ इस प्रकार होनोक की कुल आयु तीन सौ पैसठ वर्ष की हुई, तत्पश्चात् वह मर गया। २४ जब होनोक परमेश्वर के साथ-साथ चलता था, फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया। २५ जब मतूशेलह एक सौ सतासी वर्ष का हुआ, तब उसने लेमेक को जन्म दिया। २६ लेमेक के जन्म के पश्चात् मतूशेलह सात सौ बयासी वर्ष जीवित रहा, और

उसके और भी भेटे-बेटियों उत्पन्न हुईं। २७ इस प्रकार मतूशेलह की कुल आयु नौ सौ उनहतर वर्ष की हुई, तत्पश्चात् वह मर गया। २८ जब लेमेक एक सौ बयासी वर्ष का हुआ, तब उससे एक पुत्र का जन्म हुआ। २९ उसने यह कहकर उसका नाम नह रखा, कि “यहोवा ने जो पृथ्वी को श्वाप दिया है, उसके विषय यह लड़का हमारे काम में, और उस कठिन परिश्रम में जो हम करते हैं, हमें सान्ति देगा।” ३० नह के जन्म के पश्चात् लेमेक पाँच सौ पचानबे वर्ष जीवित रहा, और उसके और भी भेटे-बेटियों उत्पन्न हुईं। ३१ इस प्रकार लेमेक की कुल आयु सात सौ सतहतर वर्ष की हुई, तत्पश्चात् वह मर गया। ३२ और नह पाँच सौ वर्ष का हुआ; और नह से शेष, और हाम और येपेत का जन्म हुआ।

६ फिर जब मनुष्य भूमि के ऊपर बहुत बढ़ने लगे, और उनके भेटियों उत्पन्न हुईं, तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा, कि वे सुन्दर हैं; और उन्होने जिस-जिसको चाहा उसे ब्याह कर लिया। ३ तब यहोवा ने कहा, “मेरा आत्मा मनुष्य में सदा के लिए निवास न करेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है; उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी।” ४ उन दिनों में पृथ्वी पर दानव रहते थे; और इसके पश्चात् जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियों के पास गए तब उनके द्वारा जो सन्तान उत्पन्न हुए, वे पुत्र शूरवीर होते थे, जिनकी कीर्ति प्राचीनकाल से प्रचलित है। ५ यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह मिर्नर बुरा ही होता है। ६ और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ। ७ तब यहोवा ने कहा, “मैं मनुष्य को जिसकी मैंने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूँगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेणुवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूँगा, क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूँ।” ८ परन्तु यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नह पर बनी रही। ९ नह की वंशावली यह है। नह धर्मी पुस्त और अपने समय के लोगों में खरा था; और नह परमेश्वर ही के साथ-साथ चलता रहा। १० और नह से शेष, और हाम, और येपेत नामक, तीन पुत्र उत्पन्न हुए। ११ उस समय पृथ्वी परमेश्वर की दृष्टि में बिगड़ गई थी, और उपद्रव से भर गई थी। १२ और परमेश्वर ने पृथ्वी पर जो दृष्टि की तो क्या देखा कि वह बिगड़ी हुई है; क्योंकि सब प्राणियों ने पृथ्वी पर अपना-अपना चाल-चलन बिगड़ लिया था। १३ तब परमेश्वर ने नह से कहा, “सब प्राणियों के अनन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है; क्योंकि उनके कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है, इसलिए मैं उनको पृथ्वी समेत नाश कर डालूँगा।” १४ इसलिए तू गोपेर वृक्ष की लकड़ी का एक जहाज बना ले, उसमें कोठरियाँ बनाना, और भीतर-भाहर उस पर रात लगाना। १५ इस ढंग से तू उसको बनाना: जहाज की लम्बाई तीन सौ हाथ, चौड़ाई पचास हाथ, और ऊँचाई तीस हाथ की हो। १६ जहाज में एक खिड़की बनाना, और उसके एक हाथ ऊपर से उसकी छत बनाना, और जहाज की एक और एक द्वार रखना, और जहाज में पहला, दूसरा, तीसरा खण्ड बनाना। १७ और सुन, मैं आप पृथ्वी पर जल-प्रलय करके सब प्राणियों को, जिनमें जीवन का व्यास है, आकाश के नीचे से नाश करने पर हूँ; और सब जो पृथ्वी पर है मर जाएँगे। १८ परन्तु तेरे संग मैं वाचा बाँधता हूँ, इसलिए तू अपने पुत्रों, छुंगी, और बहुओं समेत जहाज में प्रवेश करना। १९ और सब जीवित प्राणियों में से, तू एक-एक जाति के दो-दो, अर्थात् एक नर और एक मादा जहाज में ले जाकर, अपने साथ जीवित रखना। २० एक-एक जाति के पक्षी, और एक-एक जाति के पशु, और एक-एक जाति के भूमि पर रेणुवाले, सब में से दो-दो तेरे पास आएँगे, कि तू उनको जीवित रखे। २१ और भौंति-भौंति का भोजन पदार्थ जो खाया जाता है, उनको तू लेकर अपने पास इक्षु कर रखना; जो तेरे और

उनके भोजन के लिये होगा।” २८ परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार नहूं ने किया।

७ तब यहोवा ने नहूं से कहा, “तू अपने सारे घराने समेत जहाज में जा;

क्योंकि मैंने इस समय के लोगों में से केवल तुझी को अपनी दृष्टि में धर्मी पाया है। १ सब जाति के शुद्ध पशुओं में से तो तू सात-सात जोड़े, अर्थात् नर और मादा: ३ और आकाश के पक्षियों में से भी, सात-सात जोड़े, अर्थात् नर और मादा लेना, कि उनका वंश बचकर सारी पृथ्वी के ऊपर बना रहे। ४ क्योंकि अब सात दिन और बीतने पर मैं पृथ्वी पर चालीस दिन और चालीस रात तक जल बरसाता रहँगा; और जितने प्राणी मैंने बनाए हैं उन सब को भूमि के ऊपर से मिटा दूँगा।” ५ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार नहूं ने किया। ६ नहूं की आयु छः सौ वर्ष की थी, जब जल-प्रलय पृथ्वी पर आया। ७ नहूं अपने पुत्रों, पत्नी और बहुओं समेत, जल-प्रलय से बचने के लिये जहाज में गया। ८ शुद्ध, और अशुद्ध दोनों प्रकार के पशुओं में से, पक्षियों, ९ और भूमि पर रेंगनेवालों में से भी, दो-तो, अर्थात् नर और मादा, जहाज में नहूं के पास गए, जिस प्रकार परमेश्वर ने नहूं को आज्ञा दी थी। १० सात दिन के उपरान्त प्रलय का जल पृथ्वी पर अपने लगा। ११ जब नहूं की आयु के छः सौंवें वर्ष के दूसरे महीने का सत्रहवाँ दिन आया; उसी दिन बड़े गहरे समुद्र के सब सोते फट निकले और आकाश के झरोखे खुल गए। १२ और वर्षा चालीस दिन और चालीस रात निरन्तर पृथ्वी पर होती रही। १३ ठीक उसी दिन नहूं अपने पुत्र शेम, हाम, और येपेत, और अपनी पत्नी, और तीनों बहुओं समेत, १४ और उनके संग एक-एक जाति के सब जंगली पशु, और एक-एक जाति के सब घोरेलू पशु, और एक-एक जाति के सब पृथ्वी पर रेंगनेवाले, और एक-एक जाति के सब उड़नेवाले पक्षी, जहाज में गए। १५ जितने प्राणियों में जीवन का व्यास था उनकी सब जातियों में से दो-तो नहूं के पास जहाज में गए। १६ और जो गए, वह परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार सब जाति के प्राणियों में से नर और मादा गए। तब यहोवा ने जहाज का द्वार बन्द कर दिया। १७ पृथ्वी पर चालीस दिन तक जल-प्रलय होता रहा; और पानी बहुत बढ़ता ही गया, जिससे जहाज ऊपर को उठने लगा, और वह पृथ्वी पर से ऊँचा उठ गया। १८ जल बढ़ते-बढ़ते पृथ्वी पर बहुत ही बढ़ गया, और जहाज जल के ऊपर-ऊपर तैरता रहा। १९ जल पृथ्वी पर अत्यन्त बढ़ गया, यहाँ तक कि सारी धरती पर जितने बड़े-बड़े पहाड़ थे, सब डूब गए। २० जल तो पन्द्रह हाथ ऊपर बढ़ गया, और पहाड़ भी डूब गए। २१ और क्या पक्षी, क्या घोरेलू पशु, क्या जंगली पशु, और पृथ्वी पर सब चलनेवाले प्राणी, और जितने जन्तु पृथ्वी में बहुतायत से भर गए थे, वे सब, और सब मनुष्य मर गए। २२ जो-जो भूमि पर थे उनमें से जितनों के नथनों में जीवन का व्यास था, सब मर मिटे। २३ और क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, जो-जो भूमि पर थे, सब पृथ्वी पर से मिट गए; केवल नहूं, और जितने उसके संग जहाज में थे, वे ही बच गए। २४ और जल पृथ्वी पर एक सौ पचास दिन तक प्रबल रहा।

८ परमेश्वर ने नहूं और जितने जंगली पशु और घोरेलू पशु उसके संग जहाज में थे, उन सभी की सुधि ली: और परमेश्वर ने पृथ्वी पर पवन बहाई, और जल घने लगा। ९ गहरे समुद्र के सोते और आकाश के झरोखे बंद हो गए, और उसमें जो वर्षा होती थी वह भी थम गई। १० और एक सौ पचास दिन के पश्चात् जल पृथ्वी पर से लगातार घटने लगा। ११ सातवें महीने के सत्रहवाँ दिन को, जहाज अरारात नामक पहाड़ पर टिक गया। १२ और जल दसवें महीने तक घटता चला गया, और दसवें महीने के पहले दिन को, पहाड़ों की

चोटियाँ दिखाई दी। १३ फिर ऐसा हुआ कि चालीस दिन के पश्चात् नहूं ने अपने बनाए हुए जहाज की खिड़की को खोलकर, १४ एक कौआ उड़ा दिया: जब तक जल पृथ्वी पर से सूख न गया, तब तक कौआ इधर-उधर फिरता रहा। १५ फिर उसने अपने पास से एक कबूतरी को भी उड़ा दिया कि देखे कि जल भूमि से घट गया कि नहीं। १६ उस कबूतरी को अपने पैर टेकने के लिये कोई आधार न मिला, तो वह उसके पास जहाज में लौट आई: क्योंकि सारी पृथ्वी के ऊपर जल ही जल छाया था तब उसने हाथ बढ़ाकर उसे अपने पास जहाज में ले लिया। १७ तब और सात दिन तक ठहरकर, उसने उसी कबूतरी को जहाज में से फिर उड़ा दिया। १८ और कबूतरी सौँझ के समय उसके पास आ गई, तो क्या देखा कि उसकी चोंच में जैतून का एक नया पता है; इससे नहूं ने जान लिया, कि जल पृथ्वी पर घट गया है। १९ फिर उसने सात दिन और ठहरकर उसी कबूतरी को उड़ा दिया; और वह उसके पास फिर कभी लौटकर न आई। २० नहूं की आयु के छः सौ एक वर्ष के पहले महीने के पहले दिन जल पृथ्वी पर से सूख गया। तब नहूं ने जहाज की छत खोलकर क्या देखा कि धरती सूख गई है। २१ और दूसरे महीने के सताईसवें दिन को पृथ्वी पूरी रीत से सूख गई। २२ तब परमेश्वर न नहूं से कहा, २३ “तू अपने पुत्रों, पत्नी और बहुओं समेत जहाज में से निकल आ। २४ क्या पक्षी, क्या पशु, क्या सब भाँति के रेंगनेवाले जन्तु जो पृथ्वी पर रेंगते हैं; जितने शरीरधारी जीव-जन्तु तेरे संग हैं, उन सब को अपने साथ निकाल ले आ कि पृथ्वी पर उसे बहुत बच्चे उत्पन्न हों; और वे फूलें-फलें, और पृथ्वी पर फैल जाएँ।” २५ तब नहूं और उसके पुत्र और पत्नी और बहुएँ, निकल आई। २६ और सब चौपाँ, रेंगनेवाले जन्तु, और पक्षी, और जितने जीवजन्तु पृथ्वी पर चलते फिरते हैं, सब जाति-जाति कक्षे जहाज में से निकल आए। २७ तब नहूं ने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई, और सब शुद्ध पशुओं, और सब शुद्ध पक्षियों में से, कुछ कुछ लेकर वेदी पर होमबलि चढ़ाया। २८ इस पर यहोवा ने सुखदायक सुनाध पाकर सोचा, “मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को श्राप न ढूँगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है वह बुरा ही होता है; तो भी जैसा मैंने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मासँगा। २९ अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठंडा और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएँगे।”

३ फिर परमेश्वर ने नहूं और उसके पुत्रों को अशीष दी और उनसे कहा,

“फूलों-फलों और बढ़ों और बढ़ों और पृथ्वी में भर जाओ। ३० तुम्हारा डर और भय पृथ्वी के सब पशुओं, और आकाश के सब पक्षियों, और भूमि पर के सब रेंगनेवाले जन्तुओं, और समुद्र की सब मछलियों पर बान रहेगा वे सब तुम्हारे वश में कर दिए जाते हैं। ३१ सब चलनेवाले जन्तु तुम्हारा आहार होंगे; जैसे तुम को हेरे-हेरे छोटे पेड़ दिए थे, वैसे ही तुम्हें सब कुछ देता है। ३२ पर माँस को प्राण समेत अर्थात् लह समेत तम न खाना। ३३ और निम्बूद्य मैं तुम्हारा लह अर्थात् प्राण का बदला लौँगा: सब पशुओं, और मनुष्यों, दोनों से मैं उसे लौँगा; मनुष्य के प्राण का बदला मैं एक-एक के भाई-बन्धु से लौँगा। ३४ जो कोई मनुष्य का लह बहाएँगा उसका लह मनुष्य ही से बहाया जाएँगा क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वप्न के अनुसार बनाया है। ३५ और तुम तो फूलों-फलों और बढ़ों और पृथ्वी पर बहुतायत से सन्तान उत्पन्न करके उसमें भर जाओ।” ३६ फिर परमेश्वर ने नहूं और उसके पुत्रों से कहा, ३७ “सुनो, मैं तुम्हारे साथ और तुम्हारे पश्चात् जो तुम्हारा वंश होगा, उसके साथ भी वाचा बाँधता है, ३८ और सब जीवित प्राणियों से भी जो तुम्हारे संग हैं, क्या पक्षी क्या घोरेलू पशु, क्या पृथ्वी के सब जंगली पशु, पृथ्वी के जितने जीवजन्तु जहाज से निकले हैं। ३९

और मैं तुम्हारे साथ अपनी यह बाचा बांधता हूँ कि सब प्राणी फिर जल-प्रलय से नाश न होंगे और पृथ्वी का नाश करने के लिये फिर जल-प्रलय न होगा।” १२ फिर परमेश्वर ने कहा, “जो बाचा मैं तुम्हारे साथ, और जितने जीवित प्राणी तुम्हारे संग हैं उन सब के साथ भी युग-युग की पिंडियों के लिये बांधता हूँ; उसका यह चिन्ह है: १३ कि मैंने बादल में अपना धनुष रखा है, वह मेरे और पृथ्वी के बीच में बाचा का चिन्ह होगा। १४ और जब मैं पृथ्वी पर बादल फैलाऊं तब बादल में धनुष दिखाइ देगा। १५ तब मेरी जो बाचा तुम्हारे और सब जीवित शरीरधारी प्राणियों के साथ बंधी है; उसको मैं स्मरण करूँगा, तब ऐसा जल-प्रलय फिर न होगा जिससे सब प्राणियों का विनाश हो। १६ बादल में जो धनुष होगा मैं उसे डेखकर यह सदा की बाचा स्मरण करूँगा, जो परमेश्वर के और पृथ्वी पर के सब जीवित शरीरधारी प्राणियों के बीच बंधी है।” १७ फिर परमेश्वर ने नह से कहा, “जो बाचा मैंने पृथ्वी भर के सब प्राणियों के साथ बंधी है, उसका चिन्ह यही है।” १८ नह के जो पुत्र जहाज में से निकले, वे शेष, हाम और येपत थे; और हाम कनान का पिता हुआ। १९ नह के तीन पुत्र ये ही हैं, और इनका वंश सारी पृथ्वी पर फैल गया। २० नह किसानी करने लगा: और उससे दाख की बारी लगाई। २१ और वह दाखमधु पीकर मतवाला हुआ; और अपने तम्बू के भीतर नंगा हो गया। २२ तब कनान के पिता हाम ने, अपने पिता को नंगा देखा, और बाहर आकर अपने दोनों भाइयों को बता दिया। २३ तब शेष और येपत दोनों ने कपड़ा लेकर अपने कंधों पर रखा और पीछे की ओर उलटा चलकर अपने पिता के नंगे तन को ढाँप दिया और वे अपना मुख पीछे किए हए थे इसलिए उन्होंने अपने पिता को नंगा न देखा। २४ जब नह का नशा उतर गया, तब उसने जान लिया कि उसके छोटे पुत्र ने उसके साथ क्या किया है। २५ इसलिए उसने कहा, “कनान श्वापित हो: वह अपने भाई-बन्धुओं के दासों का दास हो।” २६ फिर उसने कहा, “शेष का परमेश्वर यहोवा धन्य है, और कनान शेष का दास हो। २७ परमेश्वर येपत के वंश को फैलाएँ; और वह शेष के तम्बूओं में बसे, और कनान उसका दास हो।” २८ जल-प्रलय के पश्चात् नह साढ़े तीन सौ वर्ष जीवित रहा। २९ इस प्रकार नह की कल आय समें जैसे मौर्खी की हई: तत्पश्चात् वह मर गया।

१० नह के पुन शेम, हाम और येपेत थे; उनके पुत्र जल-प्रलय के पश्चात्
उत्पन्न हुए: उनकी वंशावली यह है। २ येपेत के पुत्रः गोमेर, मागोग,
मादै, यावान, तब्ल, मेशेक और तीरास हुए। ३ और गोमेर के पुत्रः अश्कनज,
रीपत और तोगर्मा हुए। ४ और यावान के बंश में एलीशा और तर्शीश, और
कित्ती, और दोदानी लोग हुए। ५ इनके बंश अन्यजातियों के द्विपों के देशों में
ऐसे बैट गए कि वे भिन्न-भिन्न भाषाओं, कुलों, और जातियों के अनुसार
अलग-अलग हो गए। ६ फिर हाम के पुत्रः कूश, मिस्र, पूत और कनान हुए। ७
और कूश के पुत्र सबा, हवीला, सबता, रामाह, और सबतका हुए। और रामाह
के पुत्र शेबा और ददान हुए। ८ कश के बंश में निम्रो भी हआ; पृथ्वी पर पहला
वीर वही हुआ है। ९ वही यहोवा की दृष्टि में पपाक्रमी शिकार खेलनेवाला
ठहरा, इससे यह कहावत चली है, “निम्रो द के समान यहोवा की दृष्टि में
पपाक्रमी शिकार खेलनेवाला।” १० उसके राज्य का आरम्भ शिनार देश में
बाबेल, ऐरेख, अक्कद, और कलने से हुआ। ११ उस देश से वह निकलकर
अश्शूर को गया, और नीनवे, रहोबोतिर और कालह को, १२ और नीनवे और
कालह के बीच जो रेसन है, उसे भी बसाय; बड़ा नगर यही है। १३ मिस्र के
बंश में लद्दी, अनामी, लहाबी, नमही, १४ और पत्री, कसलही, और कसोरी
लोग हुए। कसलहीयों में से तो पालिशती लोग निकले। १५ कनान के बंश में
उसका ज्येष्ठ पुत्र सीदोन, तब हित, १६ यबस्सी, एमोरी, गिराशी, १७ हिल्डी,
अर्की, सीनी। १८ अर्ददी, समारी, और हमाटी लोग भी हएः फिर कनानियों

के कुल भी फैल गए। १९ और कनानियों की सीमा सीदेन से लेकर गरार के मार्ग से होकर गाजा तक और फिर सदोम और गमोरा और अदमा और सबोयीम के मार्ग से होकर लाशा तक हआ। २० हाम के बंश में ये ही हुएः और ये भिन्न-भिन्न कुलों, भाषाओं, देशों, और जातियों के अनुसार अलग-अलग हो गए। २१ फिर शेम, जो सब एवरेशनियों का मालपुस्त हुआ, और जो येपेत का ज्येष्ठ भाई था, उसके भी पुत्र उत्पन्न हुए। २२ शेम के पुत्रः एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद, लूट और अराम हुए। २३ अराम के पुत्रः ऊस, हूल, गेटर और मश हुए। २४ और अर्पक्षद ने शेलह को, और शेलह ने एबेर को जन्म दिया। २५ और एबेर के दो पुत्र उत्पन्न हुए, एक का नाम पेलेग इस कारण रखा गया कि उसके दिनों में पृथ्वी बैंट गई, और उसके भाई का नाम योत्कान था। २६ और योत्कान ने अल्मोदाद, शेलेप, हसर्मीवित, येरह, २७ होदराम, ऊजाल, दिक्ला, २८ ओबाल, अवीमाएल, शेबा, २९ ओपीर, हवीला, और योबाब को जन्म दिया: ये ही सब योत्कान के पुत्र हुए। ३० इनके रहने का स्थान मेसा से लेकर सपार, जो पूर्व में एक पहाड़ है, उसके मार्ग तक हआ। ३१ शेम के पुत्र ये ही हुएः और ये भिन्न-भिन्न कुलों, भाषाओं, देशों और जातियों के अनुसार अलग-अलग हो गए। ३२ नहू के पुत्रों के घराने ये ही हैं: और उनकी जातियों के अनुसार उनकी वंशावलियाँ ये ही हैं; और जल-प्रलय के पश्चात् पृथ्वी भर की जातियाँ इन्हीं में से होकर बैंट गईं।

११ सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा, और एक ही बोली थी। २ उस समय लोग पूर्व की ओर चलते-चलते शिनार देश में एक मैदान पाकर उसमें बस गए। ३ तब वे आपस में कहने लगे, “आओ, हम इंटे बना-बनाकर भली भाँति आग में पकायें।” और उन्होंने पत्थर के स्थान पर इट से, और मिटी के गारे के स्थान में चूने से काम लिया। ४ फिर उन्होंने कहा, “आओ, हम एक नगर और एक मीनार बना लें, जिसकी चोटी आकाश से जाते करे, इस प्रकार से हम अपना नाम करें, ऐसा न हो कि हमको सारी पृथ्वी पर फैलना पड़े।” ५ जब लोग नगर और गुम्मट बनाने लगे; तब उन्हें देखने के लिये यहोवा उत्तर आया। ६ और यहोवा ने कहा, “मैं क्या देखता हूँ, कि सब एक ही दल के हैं और भाषा भी उन सब की एक ही है, और उन्होंने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया; और अब जो कुछ वे करने का यद्व करेंगे, उसमें से कुछ भी उनके लिये अनहोना न होगा। ७ इसलिए आओ, हम उत्तरकर उनकी भाषा में बड़ी गडबडी डालें, कि वे एक दूसरे की बोली को न समझ सकें।” ८ इस प्रकार यहोवा ने उनको वहाँ से सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया; और उन्होंने उस नगर का बनाना छोड़ दिया। ९ इस कारण उस नगर का नाम बाबेल पड़ा; क्योंकि सारी पृथ्वी की भाषा में जो गडबड़ी है, वह यहोवा ने वही डाली, और वही से यहोवा ने मनुष्यों को सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया। १० शेष की वंशवली यह है। जल-प्रलय के दो वर्ष पश्चात् जब शेष एक सौ वर्ष का हुआ, तब उसने अर्पक्षद को जन्म दिया। ११ और अर्पक्षद के जन्म के पश्चात् शेष पाँच सौ वर्ष जीवित रहा; और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं। १२ जब अर्पक्षद पैरीस वर्ष का हुआ, तब उसने शेलह को जन्म दिया। १३ और शेलह के जन्म के पश्चात् अर्पक्षद चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं। १४ जब शेलह तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा एकर का जन्म हुआ। १५ और एकर के जन्म के पश्चात् शेलह चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं। १६ जब पेलेग के जन्म के पश्चात् एकर चार सौ तीस वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं। १७ जब पेलेग तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा सू का जन्म हुआ। १८ और सू के जन्म के पश्चात् पेलेग दो सौ नौ वर्ष और

जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं। २० जब रु बत्तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा सस्ग का जन्म हुआ। २१ और सस्ग के जन्म के पश्चात् रु दो सौ सात वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं। २२ जब सस्ग तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा नाहोर का जन्म हुआ। २३ और नाहोर के जन्म के पश्चात् सस्ग दो सौ वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं। २४ जब नाहोर उनतीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा तेरह का जन्म हुआ; २५ और तेरह के जन्म के पश्चात् नाहोर एक सौ उन्नीस वर्ष और जीवित रहा, और उसके और भी बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं। २६ जब तक तेरह सन्तर वर्ष का हुआ, तब तक उसके द्वारा अब्राम, और नाहोर, और हारान उत्पन्न हुए। २७ तेरह की वंशावली यह है: तेरह ने अब्राम, और नाहोर, और हारान को जन्म दिया; और हारान ने लूट को जन्म दिया। २८ और हारान अपने पिता के सामने ही, कसदियों के ऊर नाम नगर में, जो उसकी जन्म-भूमि थी, मर गया। २९ अब्राम और नाहोर दोनों ने विवाह किया। अब्राम की पत्नी का नाम सौरै, और नाहोर की पत्नी का नाम मिल्का था। यह उस हारान की बेटी थी, जो मिल्का और यिस्का दोनों का पिता था। ३० सौरै तो बौँधी थी; उसके सन्तान न हुईं। ३१ और तेरह अपने पुत्र अब्राम, और अपने पोते लूट, जो हारान का पुत्र था, और अपनी बहू सौरै, जो उसके पुत्र अब्राम की पत्नी थी, इन सभी को लेकर कसदियों के ऊर नगर से निकल कनान देश जाने को चला; पर हारान नामक देश में पहुँचकर वही रहने लगा। ३२ जब तेरह दो सौ पाँच वर्ष का हुआ, तब वह हारान देश में मर गया।

१२ यहोवा ने अब्राम से कहा, “अपने देश, और अपनी जन्म-भूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। २ और मैं तुझे से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान करौँगा, और तू आशीष का मूल होगा। ३ और जो तुझे आशीषवांद दें, उहें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं श्राप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।” ४ यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राम चला; और लूट भी उसके संग चला; और जब अब्राम हारान देश से निकला उस समय वह पच्छतर वर्ष का था। ५ इस प्रकार अब्राम अपनी पत्नी सौरै, और अपने भतीजे लूट को, और जो धन उन्होंने इकट्ठा किया था, और जो प्राप्ति उन्होंने हारान में प्राप्त किए थे, सब को लेकर कनान देश में जाने को निकल चला; और वे कनान देश में आ गए। ६ उस देश के बीच से जाते हुए अब्राम शेकेम में, जहाँ मौरे का बाज वक्ष है पहुँचा। उस समय उस देश में कनानी लोग रहते थे। ७ तब यहोवा ने अब्राम को दर्शन देकर कहा, “यह देश मैं तेरे वंश को दौँगा।” और उसने वहाँ यहोवा के लिये, जिसने उसे दर्शन दिया था, एक बेटी बनाई। ८ फिर वहाँ से आगे बढ़कर, वह उस पहाड़ पर आया, जो बेतेल के पूर्व की ओर है; और अपना तम्बू उस स्थान में खड़ा किया जिसके पश्चिम की ओर तो बेतेल, और पूर्व की ओर आई है; और वहाँ भी उसने यहोवा के लिये एक बेटी बनाई: और यहोवा से प्रार्थना की। ९ और अब्राम आगे बढ़ करके दक्षिण देश की ओर चला गया। १० उस देश में अकाल पड़ा: इसलिए अब्राम मिस्त्र देश को चला गया कि वहाँ परदेशी होकर रहे क्योंकि देश में भयंकर अकाल पड़ा था। ११ फिर ऐसा हुआ कि मिस्त्र के निकट पहुँचकर, उसने अपनी पत्नी सौरै से कहा, “सुन, मुझे मालूम है, कि तू एक सुन्दर स्त्री है; १२ और जब मिस्त्री तुझे देखेंगे, तब कहेंगे, ‘यह उसकी पत्नी है,’ इसलिए वे मुझ को तो मार डालेंगे, पर तुझको जीवित रख लेंगे। १३ अतः यह कहना, ‘मैं उसकी बहन हूँ,’ जिससे तेरे कारण मेरा कल्याण हो और मेरा प्राण तेरे कारण बचे।” १४ फिर ऐसा हुआ कि जब अब्राम मिस्त्र में

आया, तब मिस्त्री ने उसकी पत्नी को देखा कि वह अति सुन्दर है। १५ और मिस्त्र के राजा फिरौन के हाकिमों ने उसको देखकर फिरौन के सामने उसकी प्रसंगा की: इसलिए वह भी फिरौन के महल में पहुँचाई गई। १६ और फिरौन ने उसके कारण अब्राम की भलाई की; और उसको भेड़-बकरी, गाय-बैल, दास-दासियाँ, गदहे-गदहियाँ, और ऊंट मिले। १७ तब यहोवा ने फिरौन और उसके घराने पर, अब्राम की पत्नी सौरै के कारण बड़ी-बड़ी विपत्तियाँ ढाली। १८ तब फिरौन ने अब्राम को बुलावाकर कहा, “तूने मेरे साथ यह क्या किया? तूने मुझे क्यों नहीं बताया कि वह तेरी पत्नी है? १९ तूने क्यों कहा कि वह तेरी बहन है? मैंने उसे अपनी ही पत्नी बनाने के लिये लिया; परन्तु अब अपनी पत्नी को लेकर यहाँ से चला जा।” २० और फिरौन ने अपने आदमियों को उसके विषय में आज्ञा दी और उन्होंने उसको और उसकी पत्नी को, सब सम्पत्ति समेत जो उसका था, बिदा कर दिया।

१३ तब अब्राम अपनी पत्नी, और अपनी सारी सम्पत्ति लेकर, लूट को भी संग लिये हुए, मिस्त्र को छोड़कर कनान के दक्षिण देश में आया। २ अब्राम भेड़-बकरी, गाय-बैल, और सोने-चाँदी का बड़ा धनी था। ३ फिर वह दक्षिण देश से चलकर, बेतेल के पास उसी स्थान को पहुँचा, जहाँ पहले उसने अपना तम्बू खड़ा किया था, जो बेतेल और आई के बीच में है। ४ यह स्थान उस बेटी का है, जिसे उसने पहले बनाया था, और वहाँ अब्राम ने फिर यहोवा से प्रार्थना की। ५ लूट के पास भी, जो अब्राम के साथ चलता था, भेड़-बकरी, गाय-बैल, और तम्बू थे। ६ इसलिए उस देश में उन दोनों के लिये पर्याप्त स्थान न था कि वे इकट्ठे रहें क्योंकि उनके पास बहुत सम्पत्ति थी इसलिए वे इकट्ठे न रह सके। ७ सो अब्राम, और लूट की भेड़-बकरी, और गाय-बैल के चरवाहों में झाँगड़ा हुआ। उस समय कनानी, और परिज्जील लोग, उस देश में रहते थे। ८ तब अब्राम लूट से कहने लगा, “मेरे और तेरे बीच, और मेरे और तेरे चरवाहों के बीच मैं झाँगड़ा न होने पाएँ; क्योंकि हम लोग वाई-बन्धू हैं। ९ क्या सारा देश तेरे सामने नहीं? सो मुझसे अलग हो, यदि तू बाईं और जाए तो मैं दाहिनी और जाऊँगा; और यदि तू दाहिनी और जाए तो मैं बाईं और जाऊँगा!” १० तब लूट ने आँख उठाकर, यरदन नदी के पास वाली सारी तराई को देखा कि वह सब संचिंह हूँ है। जब तक यहोवा ने सदोम और गमोरा को नाश न किया था, तब तक सो अकर के मार्ग तक वह तराई यहोवा की वाटिका, और मिस्त्र देश के समान उपजाऊ थी। ११ सो लूट अपने लिये यरदन की सारी तराई को चुन के पूर्व की ओर चला, और वे एक दूसरे से अतागा हो गये। १२ अब्राम तो कनान देश में रहा, पर लूट उस तराई के नारों में रहने लगा, और अपना तम्बू सदोम के निकट खड़ा किया। १३ सदोम के लोग यहोवा की दृष्टि में बड़े दृष्टि और पारी थे। १४ जब लूट अब्राम से अलग हो गया तब उसके पश्चात् यहोवा ने अब्राम से कहा, “आँख उठाकर जिस स्थान पर तू है वहाँ से उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम, चारों ओर दृष्टि कर। १५ क्योंकि जितनी भग्नि तुझे दिखाई देती है, उस सब को मैं तुझे और तेरे वंश को युआ-युग के लिये दूँगा। १६ और मैं तेरे वंश को पृथ्वी की धूल के किनकों के समान बहुत कहसूँगा, यहाँ तक कि जो कोई पृथ्वी की धूल के किनकों को गिन सकेगा वही तेरा वंश भी गिन सकेगा। १७ उठ, इस देश की लम्बाई और चौड़ाई में चल फिर; क्योंकि मैं उसे तुम्हीं को दूँगा।” १८ इसके पश्चात् अब्राम अपना तम्बू उछाड़कर, मग्ने के बांजवक्सों के बीच जो हेब्रोन में थे, जाकर रहने लगा, और वहाँ भी यहोवा की एक बेटी बनाई।

१९ शिनार के राजा अम्रोपेल, और एल्लासार के राजा अर्योक, और एलाम के राजा कदोर्लाओमेर, और गोयीम के राजा तिदाल के दिनों में ऐसा

हुआ, २ कि उन्होंने सदोम के राजा बेरा, और गमोरा के राजा बिर्शा, और अदम के राजा शिनाब, और सबोयीम के राजा शेमेवर, और बेला जो सोअर भी कहलाता है, इन राजाओं के विस्तु युद्ध किया। ३ इन पाँचों ने सिद्धीम नामक तराई में, जो खारे नदी के पास है, एका किया। ४ बाहर वर्ष तक तो ये कदोर्लाओमेर के अधीन रहे; पर तेरहवें वर्ष में उसके विस्तु उठे। ५ चौदहवें वर्ष में कदोर्लाओमेर, और उसके संगी राजा आए, और अश्तरोत्कनम में रापाइयों को, और हाम में जजियों को, और शावे-कियात्म में एमियों को, ६ और सेरई नामक पहाड़ में होरियों को, मारते-मारते उस एल्पारान तक जो जंगल के पास है, पहुँच गए। ७ वहाँ से वे लौटकर एमिशपात को आए, जो कादेश भी कहलाता है, और अमालेकियों के सारे देश को, और उन एमोरियों को भी जीत लिया, जो हसासोन्तामार में रहते थे। ८ तब सदोम, गमोरा, अदमा, सबोयीम, और बेला, जो सोअर भी कहलाता है, इनके राजा निकले, और सिद्धीम नामक तराई में जहाँ लसार मिट्टी के गड्ढे ही गढ़े थे; सदोम और गमोरा के राजा भागते-भागते उनमें पिर पड़े, और जो बचे वे पहाड़ पर भाग गए। ९ तब वे सदोम और गमोरा के सारे धन और भोजनस्तुओं को लटू-लाट कर चले गए। १० और अब्राम का भर्तीजा लूत, जो सदोम में रहता था, उसको भी धन समेत वे लेकर चले गए। ११ तब एक जन जो भागकर बच निकला था उसने जाकर इनी अब्राम को समाचार दिया; अब्राम तो एमोरी मग्ने, जो एशकोल और आनेर का भाई था, उसके बांजवृक्षों के बीच में रहता था, और ये लोग अब्राम के संग वाचा बाँधे हुए थे। १२ यह सुनकर कि उसका भर्तीजा बन्दी बना लिया गया है, अब्राम ने अपने तीन सौ अठारह प्रशिक्षित, युद्ध कौशल में निषुण दासों को लेकर जो उसके कुटुम्ब में उत्पन्न हुए थे, अच्छ-शब्द धारण करके दान तक उनका पीछा किया। १३ और अपने दासों के अलग-अलग दल बाँधकर रात को उन पर चढ़ाई करके उनको मार लिया और यहोवा तक, जो दमिशक की उत्तर की ओर है, उनका पीछा किया। १४ और वह सारे धन को, और अपने भर्तीजे लूत, और उसके धन को, और छियों को, और सब बन्दियों को, लौटा ले आया। १५ जब वह कदोर्लाओमेर और उसके साथी राजाओं को जीतकर लौटा आता था तब सदोम का राजा शावे नामक तराई में, जो राजा की तराई भी कहलाती है, उससे भेंट करने के लिये आया। १६ तब शालेम का राजा मलिकिसिदक, जो परमप्रधान परमेश्वर का याजक था, रोटी और दाखमधु ले आया। १७ और उसने अब्राम को यह आरीविंद दिया, “परमप्रधान परमेश्वर की ओर से, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, तू धन्य हो।” १८ और धन्य है परमप्रधान परमेश्वर, जिसने ने द्रोहियों को तेरे वश में कर दिया है।” तब अब्राम ने उसको सब का दशमांश दिया। १९ तब सदोम के राजा ने अब्राम के कहा, “प्राणियों को तो मुझे दे, और धन को अपने पास रख।” २० अब्राम ने सदोम के राजा से कहा, “परमप्रधान परमेश्वर यहोवा, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, २१ उसकी मैं यह शपथ खाता हूँ, कि जो कुछ तेरा है उसमें से न तो मैं एक सत्, और न जृती का बन्धन, न कोई और वस्तु लैंगा; कि तू ऐसा न कहने पाए, कि अब्राम मेरे ही कारण धनी हुआ।” २२ पर जो कुछ इन जवानों ने खा लिया है और उनका भाग जो मेरे साथ गए थे; अर्थात् आनेर, एशकोल, और मग्ने मैं नहीं लौटाऊँगा वे तो अपना-अपना भाग रख लैं।”

१५ इन बातों के पश्चात् यहोवा का यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुँचा “हे अब्राम, मत डर; मैं तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा प्रतिफल हूँ।”

१६ अब्राम ने कहा, “हे प्रभु यहोवा, मैं तो सन्तानहीन हूँ, और मेरे घर का वारिस यह दमिशकवासी एलीएजर होगा, अतः तू मुझे क्या देगा?” १७ और अब्राम ने कहा, “मुझे तो तूने वंश नहीं दिया, और क्या देखता हूँ, कि मेरे घर में उत्पन्न हुआ एक जन मेरा वारिस होगा।” १८ तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुँचा, “यह तेरा वारिस न होगा, तेरा जो निज पुत्र होगा, वही तेरा वारिस होगा।” १९ और उसने उसको बाहर ले जाकर कहा, “आकाश की ओर दृष्टि करके तारामण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है?” फिर उसने उससे कहा, “तेरा वंश ऐसा ही होगा।” २० उसने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धार्मिकता गिना। २१ और उसने उससे कहा, “मैं वही यहोवा हूँ जो तुझे कसादियों के ऊर नगर से बाहर ले आया, कि तुझको इस देश का अधिकार दूँ।” २२ उसने कहा, “हे प्रभु यहोवा मैं कैसे जानूँ कि मैं इसका अधिकारी होऊँगा?” २३ यहोवा ने उससे कहा, “मेरे लिये तीन वर्ष की एक बछिया, और तीन वर्ष की एक बकरी, और तीन वर्ष का एक मेडा, और एक पिण्डुक और कबूतर का एक बच्चा लै।” २४ और इन सभी को लेकर, उसने बीच से दो टुकडे कर दिया और टुकड़ों को आपने-सामने रखा पर चिडियों के उसने टुकडे नहीं किए। २५ जब मौसाहारी पक्षी लाठों पर झापेटे, तब अब्राम ने उन्हें उड़ा दिया। २६ जब सर्व अस्त होने लगा, तब अब्राम को भारी नीद आई, और देखो, अत्यन्त भय और महा अंधकार ने उसे छा लिया। २७ तब यहोवा ने अब्राम से कहा, “यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराए देश में परदेशी होकर रहेंगे, और उस देश के लोगों के दास हो जाएँगे; और वे उनको चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे; २८ फिर जिस देश के वे दास होंगे उसको मैं दण्ड ढूँगा; और उसके पश्चात् वे बड़ा धन वहाँ से लेकर निकल आएँगे। २९ तो अपने पितरों में कुशल के साथ मिल जाए़ा; तुझे पौरे बुढ़ापे में मिट्टी दी जाए़ी। ३० पर वे चौथी पीढ़ी में यहाँ फिर आएँगे; क्योंकि अब तक एमोरियों का अधर्म पूरा नहीं हुआ है।” ३१ और ऐसा हुआ कि जब सर्व अस्त हो गया और धोर अंधकार छा गया, तब एक अंगीठी जिसमें से धुआँ उठाता था और एक जलती हुई मशाल दिखाई दी जो उन टुकड़ों के बीच में से होकर निकल गई। ३२ उसी दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बाँधी, “मिस के महानद से लेकर फरात नामक बड़े नद तक जिताना देश है, ३३ अर्थात्, केनियों, कनिजियों, कदमोनियों, ३४ हितियों, परिजियों, रापाइयों, ३५ एमोरियों, कनानियों, गिराशियों और यबूसियों का देश, मैंने तेरे वंश को दिया है।”

१६ अब्राम की पत्नी सौरे के कोई सन्तान न थी: और उसके हागार नाम की

एक मिसी दासी थी। १ सौरे ने अब्राम से कहा, “देख, यहोवा ने तो मेरी कोख बन्द कर रखी है इसलिए मैं तुझ से विनिती करती हूँ कि तू मेरी दासी के पास जा; सम्भव है कि मेरा घर उसके द्वारा बस जाए।” सौरे की यह बात अब्राम ने मान ली। २ इसलिए जब अब्राम को कनान देश में रहते दस वर्ष बीत चुके तब उसकी द्वी सौरे ने अपनी मिसी दासी हागार को लेकर अपने पति अब्राम को दिया, कि वह उसकी पत्नी हो। ३ वह हागार के पास गया, और वह गर्भवती हुई; जब उसने जाना कि वह गर्भवती है, तब वह अपनी स्वामिनी को अपनी दृष्टि में तुच्छ समझने लगी। ४ तब सौरे ने अब्राम से कहा, “जो मुझे पर उपत्रव हुआ वह तेरे ही सिर पर हो।” मैंने तो अपनी दासी को तेरी पत्नी कर दिया; पर जब उसने जाना कि वह गर्भवती है, तब वह मुझे तुच्छ समझने लगी, इसलिए यहोवा मेरे और तेरे बीच में न्याय करे।” ५ अब्राम ने सौरे से कहा, “देख तेरी दासी तेरे वश में है; जैसा तुझे भला लगे कैसा ही उसके साथ कर!” तब सौरे उसको दुःख देने लगी और वह उसके सामने से भाग गई। ६ तब यहोवा के दूत ने उसको जंगल में शूर के मार्ग पर जल के एक सोते के पास

पाकर कहा, “हे सारै की दासी हागार, तू कहाँ से आती और कहाँ को जाती है?” उसने कहा, “मैं अपनी स्वामिनी सारै के सामने से भाग आई हूँ।” ९ यहोवा के दूत ने उससे कहा, “अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके बश में रह।” १० और यहोवा के दूत ने उससे कहा, “मैं तेरे वंश को बहुत बढ़ाऊँगा, यहाँ तक कि बहतायत के कारण उसकी गिनती न हो सकेगी।” ११ और यहोवा के दूत ने उससे कहा, “देख तू गर्भवती है, और पुत्र जनेगी; तू उसका नाम इश्माएल रखना; क्योंकि यहोवा ने तेरे दुःख का हाल सुन लिया है। १२ और वह मनुष्य जंगली गढ़े के समान होगा, उसका हाथ सब के बिस्तु उठेगा, और सब के हाथ उसके बिस्तु उठेंगे; और वह अपने सब बाई-बन्धुओं के मध्य में बसा रहेगा।” १३ तब उसने यहोवा का नाम जिसने उससे बातें की थी, अत्ताएलरोई रखकर कहा, “क्या मैं यहाँ भी उसको जाते हुए देखने पाईं और देखने के बाद भी जीवित रही?” १४ इस कारण उस कुँएँ का नाम बाए-लहई-रोई कुआँ पड़ा; वह तो कादेश और बेरेद के बीच में है। १५ हागार को अब्राम के द्वारा एक पुत्र हुआ; और अब्राम ने अपने पुत्र का नाम, जिसे हागार ने जन्म दिया था, इश्माएल रखा। १६ जब हागार ने अब्राम के द्वारा इश्माएल को जन्म दिया उस समय अब्राम छियासी वर्ष का था।

१७ जब अब्राम निन्यानवे वर्ष का हो गया, तब यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, “मैं सर्वेशक्तिमान परमेश्वर हूँ; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा।” १८ मैं तेरे साथ वाचा बाँधूँगा, और तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊँगा।” १९ तब अब्राम मुँह के बल गिरा और परमेश्वर उससे यह बातें करता गया, २० “देख, मेरी वाचा तेरे साथ बांधी रहेगी, इसलिए तू जातियों के समूह का मूलपिता हो जाएगा। २१ इसलिए अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा परन्तु तेरा नाम अब्राहम होगा; क्योंकि मैंने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है। २२ मैं तुझे अत्यन्त फलवन्त कर्सँगा, और तुझको जाति-जाति का मूल बना दूँगा, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे। २३ और मैं तेरे साथ, और तेरे पश्चात् पीढ़ी-पीढ़ी तक तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युा-युा की वाचा बाँधता हूँ, कि मैं तेरा और तेरे पश्चात् तेरे वंश का भी परमेश्वर रहँगा। २४ और मैं तुझको, और तेरे पश्चात् तेरे वंश को भी, यह सारा कनान देश, जिसमें तू परदेशी होकर रहत है, इस रीति द्वांगा कि वह युा-युा उनकी निज भूमि रहेगी, और मैं उनका परमेश्वर रहँगा।” २५ फिर परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, “तू भी मेरे साथ बांधी हुई वाचा का पालन करना; तू और तेरे पश्चात् तेरा वंश भी अपनी-अपनी पीढ़ी में उसका पालन करो। २६ मेरे साथ बांधी हुई वाचा, जिसका पालन तुझे और तेरे पश्चात् तेरे वंश को करना पड़ेगा, वह यह है: तुम में से एक-एक पुस्तका खतना हो। २७ तुम अपनी-अपनी खलड़ी का खतना करा लेना: जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही चिन्ह होगा। २८ पीढ़ी-पीढ़ी में केवल तेरे वंश ही के लोग नहीं पर जो तेरे घर में उत्पन्न हुआ हो, अथवा परदेशियों को स्पा देकर मोत लिया जाए, ऐसे सब पुस्तक भी जब आठ दिन के हो जाएँ, तब उनका खतना किया जाए। २९ जो तेरे घर में उत्पन्न हो, अथवा तेरे स्पै से मोत लिया जाए, उसका खतना अवश्य ही किया जाएँ, इस प्रकार मेरी वाचा जिसका चिन्ह तुम्हारी देह में होगा वह युा-युा रहेगी। ३० जो पुस्तक खतनारहित रहे, अर्थात् जिसकी खलड़ी का खतना न हो, वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए, क्योंकि उसने मेरे साथ बांधी हुई वाचा को तोड़ दिया।” ३१ फिर परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, “तेरी जो पत्नी सौर है, उसको तू अब सौर न कहना, उसका नाम सारा होगा। ३२ मैं उसको अशीष दूँगा, और तुझको उसके द्वारा एक पुत्र दूँगा; और मैं उसको ऐसी अशीष दूँगा, कि वह जाति-जाति की मूलमाता हो जाएगी; और उसके वंश में

राज्य-राज्य के राजा उत्पन्न होंगे।” ३३ तब अब्राहम मुँह के बल गिर पड़ा और हँसा, और मन ही मन कहने लगा, “क्या सौ वर्ष के पुस्तक के भी सन्तान होगी और क्या सारा जो नब्बे वर्ष की है पुत्र जनेगी?” ३४ और अब्राहम ने परमेश्वर से कहा, “इश्माएल तेरी दृष्टि में बना रहे! यही बहुत है।” ३५ तब परमेश्वर ने कहा, “निश्चय तेरी पत्नी सारा के तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा; और तू उसका नाम इसहाक रखना; और मैं उसके साथ ऐसी वाचा बाँधूँगा जो उसके पश्चात् उसके वंश के लिये युा-युा की वाचा होगी। ३६ इश्माएल के विषय में भी मैंने तेरी सुनी है; मैं उसको भी अशीष दूँगा, और उसे फलवन्त कर्सँगा और अत्यन्त ही बड़ा दूँगा; उससे बाहर प्रधान उत्पन्न होंगे, और मैं उससे एक बड़ी जाति बनाऊँगा। ३७ परन्तु मैं अपनी वाचा इसहाक ही के साथ बाँधूँगा जो सारा से अगले वर्ष के इसी नियुक्त समय में उत्पन्न होगा।” ३८ तब परमेश्वर ने अब्राहम से बाँधे करनी बन्द की और उसके पास से ऊपर चढ़ गया। ३९ तब अब्राहम ने अपने पुत्र इश्माएल को लिया और, उसके घर में जितने उत्पन्न हुए थे, और जितने उसके स्थाये से मोल लिये गए थे, अर्थात् उसके घर में जितने पुस्त थे जो घर में उत्पन्न हुए, तथा जो परदेशियों के हाथ से मोल लिये गए थे, सब का खतना उसके साथ ही हुआ। ४० जब अब्राहम की खलड़ी का खतना हुआ तब वह निन्यानवे वर्ष का था। ४१ और जब उसके पुत्र इश्माएल की खलड़ी का खतना हुआ तब वह तेरह वर्ष का था। ४२ अब्राहम और उसके पुत्र इश्माएल दोनों का खतना एक ही दिन हुआ। ४३ और उसके घर में जितने पुस्त थे जो घर में उत्पन्न हुए, तथा जो परदेशियों के हाथ से मोल लिये गए थे, सब का खतना उसके साथ ही हुआ।

१८ अब्राहम मध्ये के बांजुक्षों के बीच कटी धूप के समय तम्बू के द्वार पर बैठा हुआ था, तब यहोवा ने उसे दर्शन दिया: ४४ उसने ऊँच उठाकर दृष्टि की तो क्या देखा, कि तीन पुस्त उसके सामने खड़े हैं। जब उसने उन्हें देखा तब वह उससे भेंट करने के लिये तम्बू के द्वार से दौड़ा, और भूमि पर गिरकर टण्डवत् की ओर कहने लगा, ४५ “हे प्रभु, यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है तो मैं विनती करता हूँ, कि अपने दास के पास से चले न जाना। ४६ मैं थोड़ा सा जल लाता हूँ और आप अपने पौँछ धोकर इस वृक्ष के तले विश्राम करो। ४७ फिर मैं एक टुकड़ा रोटी ले आँऊँ, और उससे आप अपने-अपने जीव को तूप करो; तब उसके पश्चात् आगे बढ़े क्योंकि आप अपने दास के पास इसी लिए पारे हैं।” ४८ उन्होंने कहा, “जैसा तू कहता है वैसा ही कर।” ४९ तब अब्राहम तुरन्त तम्बू में सारा के पास गया और कहा, “तीन सआ मैदा जल्दी से गौँथ, और फुलकर बना।” ५० फिर अब्राहम गाय-बैल के झुण्ड में दौड़ा, और एक कोमल और अच्छा बछड़ा लेकर अपने सेवक को दिया, और उसने जल्दी से उसको पकाया। ५१ तब उसने दही, और दूध, और बछड़े का मांस, जो उसने पकाया था, लेकर उनके आगे परोस दिया; और आप वृक्ष के तले उनके पास खड़ा रहा, और वे खाने लगे। ५२ उन्होंने उससे पूछा, “तेरी पत्नी सारा कहाँ है?” उसने कहा, “वह तो तम्बू में है।” ५३ उसने कहा, “मैं वसन्त क्रतु में निश्चय तेरे पास फिर आँऊँगा; और तेरी पत्नी सारा के एक पुत्र उत्पन्न होगा।” सारा तम्बू के द्वार पर जो अब्राहम के पीछे था सुन रही थी। ५४ अब्राहम और सारा दोनों बहुत बढ़े थे; और सारा का मासिक धर्म बन्द हो गया था। ५५ इसलिए सारा मन में हँसकर कहने लगी, “मैं तो बढ़ी हूँ, और मेरा स्वामी भी बढ़ा है, तो क्या मुझे यह सुख होगा?” ५६ तब यहोवा ने अब्राहम से कहा, “सारा यह कहकर क्यों हँसी, कि क्या मेरे, जो ऐसी बुढ़िया हो गई हैं, सचमुच एक पुत्र उत्पन्न होगा? ५७ क्या यहोवा के लिये कोई काम कठिन है? नियत समय में, अर्थात् वसन्त क्रतु में, मैं तेरे पास फिर आँऊँगा, और सारा के पुत्र उत्पन्न

होगा।” १५ तब सारा डर के मारे यह कहकर मुकर गई, “मैं नहीं हँस्सी।” उसने कहा, “नहीं, तू हँसी तो थी।” १६ फिर वे पुख वहाँ से चलकर, सदोम की ओर दृष्टि की; और अद्वाहम उहें विदा करने के लिये उनके संग-संग चला। १७ तब यहोवा ने कहा, “यह जो मैं करता हूँ उसे क्या अद्वाहम से छिपा रखूँ।” १८ अद्वाहम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी, और पृथ्वी की सारी जातियाँ उसके द्वारा आशीष पाएँगी। १९ क्योंकि मैं जानता हूँ, कि वह अपने पुत्रों और परिवार को जो उसके पीछे रह जाएँगे, आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल बने रहें, और धार्मिकता और न्याय करते रहें, ताकि जो कुछ यहोवा ने अद्वाहम के विषय में कहा है उसे पूरा करो।” २० फिर यहोवा ने कहा, “सदोम और गमोरा के विस्तु चिल्लाहट बढ़ गई है, और उनका पाप बहुत भारी हो गया है; २१ इसलिए मैं उतरकर देखूँगा, कि उसकी जैसी चिल्लाहट मेरे कान तक पहुँची है, उन्होंने ठीक वैसा ही काम किया है कि नहीं; और न किया हो तो मैं उसे जान लूँगा।” २२ तब वे पुख वहाँ से मुड़कर सदोम की ओर जाने लगे; पर अद्वाहम यहोवा के आगे खड़ा रह गया। २३ तब अद्वाहम उसके समीप जाकर कहने लगा, “क्या तू सचमुच दूष के संग धर्मी भी नाश करेगा? २४ कदाचित् उस नगर में पचास धर्मी हों तो क्या तू सचमुच उस स्थान को नाश करेगा और उन पचास धर्मियों के कारण जो उसमें हों न छोड़ेगा? २५ इस प्रकार का काम करना तुझ से दूर रहे कि दूष के संग धर्मी को भी मार डाले और धर्मी और दृष्टि दोनों की एक ही दशा हो। यह तुझ से दूर रहे। क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करेगा?” २६ यहोवा ने कहा, “यदि मुझे सदोम में पचास धर्मी मिलें, तो उनके कारण उस सारे स्थान को छोड़ूँगा।” २७ फिर अद्वाहम ने कहा, “हे प्रभु, सुन मैं तो मिट्टी और राख हूँ, तो भी मैंने इसनी ढिलाई की कि तुझ से बातें करूँ।” २८ कदाचित् उन पचास धर्मियों में पाँच घट जाएँ; तो क्या तू पाँच ही के घटने के कारण उस सारे नगर का नाश करेगा?” उसने कहा, “यदि मुझे उसमें पैतालीस भी मिलें, तो भी उसका नाश न करूँगा।” २९ फिर उसने उससे यह भी कहा, “कदाचित् वहाँ चालीस मिलें।” उसने कहा, “तो मैं चालीस के कारण भी ऐसा न करूँगा।” ३० फिर उसने कहा, “हे प्रभु, क्रोध न कर, तो मैं कुछ और कहूँ: कदाचित् वहाँ तीस मिलें।” उसने कहा, “यदि मुझे वहाँ तीस भी मिलें, तो भी ऐसा न करूँगा।” ३१ फिर उसने कहा, “हे प्रभु, सुन, मैंने इसनी ढिलाई तो की है कि तुझ से बातें करूँ: कदाचित् उसमें बीस मिलें।” उसने कहा, “मैं बीस के कारण भी उसका नाश न करूँगा।” ३२ फिर उसने कहा, “हे प्रभु, क्रोध न कर, मैं एक ही बार और कहूँगा: कदाचित् उसमें दस मिलें।” उसने कहा, “तो मैं दस के कारण भी उसका नाश न करूँगा।” ३३ जब यहोवा अद्वाहम से बातें कर चुका, तब चला गया: और अद्वाहम अपने घर को लौट गया।

१९ सॉँझ को वे दो दूत सदोम के पास आएँ: और लूत सदोम के फाटक के पास बैठा था। उनको देखकर वह उनसे भेट करने के लिये उठा; और मुँह के बल झुककर दण्डवत् कर कहा; १ “हे मेरे प्रभुओं, अपने दास के घर में पथारिए, और रात भर विश्वाम कीजिए, और अपने पाँच धोइये, फिर भोर को उठकर अपने मार्ग पर जाइए।” उन्होंने कहा, “नहीं; हम चौक ही में रात बिताएँगे।” २ और उसने उनसे बहुत विनती करके उन्हें मनाया; इसलिए वे उसके साथ चलकर उसके घर में आए; और उसने उनके लिये भोजन तैयार किया, और बिना ख्वारी की रोटियाँ बनाकर उनको खिलाई। ३ उनके सो जाने के पहले, सदोम नगर के पुरुषों ने, जवानों से लेकर बढ़ों तक, बरन चारों ओर के सब लोगों ने आकर उस घर को घेर लिया; ४ और लूत को पुकारकर कहने लगे, “जो पुख आज रात को तैरे पास आएँ हैं वे कहाँ हैं?

उनको हमारे पास बाहर ले आ, कि हम उनसे भोग करें।” ५ तब लूत उनके पास द्वार के बाहर गया, और किवाड़ को अपने पीछे बन्द करके कहा, ६ “हे मेरे भाइयों, ऐसी बुराई न करो। ७ सुनो, मेरी दो बेटियाँ हैं जिन्होंने अब तक पुख का मूँह नहीं देखा, इच्छा हो तो मैं उहें तुम्हारे पास बाहर ले आऊँ, और तुम को जैसा अच्छा लगे वैसा व्यवहार उनसे करो: पर इन पुरुषों से कुछ न करो; क्योंकि ये मेरी छत के तले आए हैं।” ८ उन्होंने कहा, “हट जा!” फिर वे कहने लगे, “तू एक परदेशी होकर यहाँ रहने के लिये आया पर अब न्यायी भी बन बैठा है; इसलिए अब हम उनसे भी अधिक तों साथ बुराई करेंगे।” और वे उस पुख लूत को बहुत दबाने लगे, और किवाड़ तोड़ने के लिये निकट आए। ९ तब उन अतिथियों ने हाथ बढ़ाकर लूत को अपने पास घर में खीच लिया, और किवाड़ को बन्द कर दिया। १० और उन्होंने क्या छोटे, क्या बड़े, सब पुरुषों को जो घर के द्वार पर थे अंधा कर दिया, अतः वे द्वार को टोटोलते-टोटोलते थक गए। ११ फिर उन अतिथियों ने लूत से पूछा, “यहाँ तेरा और कौन-कौन हैं? दामाद, बेटे, बेटियाँ, और नगर में तेरा जो कोई हो, उन सभी को लेकर इस स्थान से निकल जा। १२ क्योंकि हम यह स्थान नाश करने पर हैं, इसलिए कि इसकी चिल्लाहट यहोवा के सम्मुख बढ़ गई है, और यहोवा ने हमें इसका सत्यानाश करने के लिये भेज दिया है।” १३ तब लूत ने निकलकर अपने दामादों को, जिनके साथ उसकी बेटियों की सगाई हो गई थी, समझाकर कहा, “उठो, इस स्थान से निकल चलो; क्योंकि यहोवा इस नगर को नाश करने पर है।” १४ उसके दामाद उसका मजाक उड़ाने लगे। १५ जब पौ फटने लगी, तब दूरों ने लूत से जलदी करने को कहा और बोले, “उठ, अपनी पत्नी और दोनों बेटियों को जो यहाँ हैं ले जा: नहीं तो तू भी इस नगर के अधर्म में भस्म हो जाएगा।” १६ पर वह विलम्ब करता रहा, इस पर उन पुरुषों ने उसका और उसकी पत्नी, और दोनों बेटियों के हाथ पकड़े; क्योंकि यहोवा की दया उस पर थी: और उसको निकालकर नगर के बाहर कर दिया। १७ और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने उनको बाहर निकाला, तब उसने कहा, “अपना प्राण लेकर भाग जा; पीछे की ओर न ताकना, और तराई भर में न ठहरना; उस पहाड़ पर भाग जाना, नहीं तो तू भी भस्म हो जाएगा।” १८ लूत ने उससे कहा, “हे प्रभु, ऐसा न कर। १९ देख, तेरे दास पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हुई है, और तेरे इसमें बड़ी कृपा दिखाई, कि मेरे प्राण को बचाया है; पर मैं पहाड़ पर भाग नहीं सकता, कहीं ऐसा न हो, कि कोई विपत्ति मुझ पर आ पड़े, और मैं मर जाऊँ। २० देख, वह नगर ऐसा निकल है कि मैं वहाँ भाग सकता हूँ, और वह छोटा भी है। मुझे वही भाग जाने दे, क्या वह नगर छोटा नहीं है? और मेरा प्राण बच जाएगा।” २१ उसने उससे कहा, “देख, मैंने इस विषय में भी तेरी विनती स्वीकार की है, कि जिस नगर की चर्चा तेरे की है, उसको मैं नाश न करूँगा। २२ फुर्ती से वहाँ भाग जा; क्योंकि जब तक तू वहाँ न पहुँचे तब तक मैं कुछ न कर सकूँगा।” इसी कारण उस नगर का नाम सोअर पड़ा। २३ लूत के सोअर के निकट पहुँचते ही सर्व पृथ्वी पर उदय हुआ। २४ तब यहोवा ने अपनी ओर से सदोम और गमोरा पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई, २५ और उन नगरों को और सम्पूर्ण तराई की, और नगरों के सब निवासियों को, भूमि की सारी उपज समेत नाश कर दिया। २६ लूत की पत्नी ने जो उसके पीछे थी पीछे मुड़कर देखा, और वह नमक का खम्भा बन गई। २७ भोर को अद्वाहम उठकर उस स्थान को गया, जहाँ वह यहोवा के सम्मुख खड़ा था; २८ और सदोम, और गमोरा, और उस तराई के सारे देश की ओर आँख उठाकर क्या देखा कि उस देश में से धधकती हुई भूमि का सा धुआँ उठ रहा है। २९ और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर ने उस तराई के नगरों को, जिनमें लूत रहता था, उलट-पुलट कर नाश किया, तब उसने अद्वाहम को याद करके

लूट को उस घटना से बचा लिया। ३० लूट ने सोअर को छोड़ दिया, और पहाड़ पर अपनी दोनों बेटियों समेत रहने लगा; क्योंकि वह सोअर में रहने से डरता था; इसलिए वह और उसकी दोनों बेटियों वहाँ एक गुफा में रहने लगे। ३१ तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, “हमारा पिता बढ़ा है, और पृथ्वी भर में कोई ऐसा पुस्त नहीं जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आए।” ३२ इसलिए आ, हम अपने पिता को दाखमधु पिलाकर, उसके साथ सोएँ, जिससे कि हम अपने पिता के बंश को बचाए रखें।” ३३ अतः उन्होंने उसी दिन-रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया, तब तू जाकर उसके साथ सोना कि हम अपने पिता के द्वारा बंश उत्पन्न करें।” ३४ अतः उन्होंने उस दिन भी रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया, और छोटी बेटी जाकर उसके पास लेट गई; पर उसको उसके भी सोने और उठने का ज्ञान न था। ३५ इस प्रकार से लूट की दोनों बेटियों अपने पिता से गर्भवती हुईं। ३६ बड़ी एक पुत्र जनी और उसका नाम मोआब रखा; वह मोआब नामक जाति का जो आज तक है मूलपिता हुआ। ३७ और छोटी भी एक पुत्र जनी, और उसका नाम बेनअम्मी रखा; वह अमोनवर्षियों का जो आज तक है मूलपिता हुआ।

२० फिर अब्राहम वहाँ से निकलकर दक्षिण देश में आकर कादेश और शूर

के बीच में ठहरा, और गरार में रहने लगा। १ और अब्राहम अपनी पत्नी सारा के विषय में कहने लगा, “वह मेरी बहन है,” इसलिए गरार के राजा अबीमेलेक ने दूत भेजकर सारा को बुलावा लिया। २ रात को परमेश्वर ने स्वप्न में अबीमेलेक के पास आकर कहा, “सुन, जिस ढींकी को तूने रख लिया है, उसके कारण तू मर जाएगा, क्योंकि वह सुहागिन है।” ३ परन्तु अबीमेलेक उसके पास न गया था; इसलिए उसने कहा, “हे प्रभु, क्या तू निर्दीश जाति का भी घात करेगा? ४ क्या उसी ने स्वयं मुझसे नहीं कहा, ‘वह मेरी बहन है?’ और उस ढींकी ने भी आप कहा, ‘वह मेरा भाई है,’ मैंने तो अपने मन की खाराई और अपने व्यवहार की सच्चाई से यह काम किया।” ५ परमेश्वर ने उससे स्वप्न में कहा, “हाँ, मैं भी जानता हूँ कि अपने मन की खाराई से तुमें यह काम किया है और मैंने तुम्हे रोक भी रखा कि तू मेरे विस्तु पाप न करे; इसी कारण मैंने तुड़की उसे छोड़े नहीं दिया। ६ इसलिए अब उस पुस्त की पत्नी को उसे लौटा दे; क्योंकि वह नबी है, और तेरे लिये प्रार्थना करेगा, और तू जीता रहेगा पर यदि तू उसको न लौटाए तो जान रख, कि तू, और तेरे जितने लोग हैं, सब निश्चय मर जाएँगे।” ७ सबसे अबीमेलेक ने तड़के उठकर अपने सब कर्मचारियों को बुलावाकर ये सब बातें सुनाईं; और वे लोग बहुत डर गए। ८ तब अबीमेलेक ने अब्राहम को बुलावाकर कहा, “तूने हम से यह क्या किया है? और मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था कि तूने मेरे और मेरे राज्य के ऊपर ऐसा बड़ा पाप डाल दिया है? तूने मेरे साथ वह काम किया है जो उत्चित न था।” ९ फिर अबीमेलेक ने अब्राहम से पूछा, “तूने क्या समझकर ऐसा काम किया?” १० अब्राहम ने कहा, “मैंने यह सोचा था कि इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भी भय न होगा; इसलिए ये लोग मेरी पत्नी के कारण मेरा घाट करेंगे। ११ इसके अतिरिक्त सच्चमुच वह मेरी बहन है, वह मेरे पिता की बेटी तो है पर मेरी माता की बेटी नहीं; फिर वह मेरी पत्नी हो गई। १२ और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर ने मुझे अपने पिता का घर छोड़कर निकलने की आज्ञा दी, तब मैंने उससे कहा, ‘इतनी कृपा तुझे मुझ पर करनी होगी कि हम दोनों जहाँ-जहाँ जाएँ वहाँ-वहाँ तू मेरे विषय में कहना कि यह मेरा भाई है।’” १३ तब

अबीमेलेक ने भेड़-बकरी, गाय-बैल, और दास-दासियाँ लेकर अब्राहम को दीं, और उसकी पत्नी सारा को भी उसे लौटा दिया। १५ और अबीमेलेक ने कहा, “देख, मेरा देश तेरे सामने है; जहाँ तड़े भाए वहाँ रह।” १६ और सारा से उसने कहा, “देख, मैंने तेरे भाई को स्पैसे के एक हजार टुकड़े दिए हैं। देख, तेरे सारे संगियों के सामने वही तेरी आँखों का परदा बनेगा, और सभी के सामने तू ठीक होगी।” १७ तब अब्राहम ने यहोवा से प्रार्थना की, और यहोवा ने अबीमेलेक, और उसकी पत्नी, और दासियों को चंगा किया और वे जनने लगी। १८ क्योंकि यहोवा ने अब्राहम की पत्नी सारा के कारण अबीमेलेक के घर की सब बिंदियों की कोरों को पूरी रीति से बन्द कर दिया था।

२१ यहोवा ने जैसा कहा था वैसा ही सारा की सुधि लेकर उसके साथ अपने वचन के अनुसार किया।

१ सारा अब्राहम से गर्भवती होकर उसके बुढ़ापे में उसी नियुक्त समय पर जो परमेश्वर ने उससे ठहराया था, एक पुत्र उत्पन्न हुआ। २ अब्राहम ने अपने पुत्र का नाम जो सारा से उत्पन्न हुआ था इसहाक रखा। ३ और जब उसका पुत्र इसहाक आठ दिन का हुआ, तब उसने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उसका खतना किया। ४ जब अब्राहम का पुत्र इसहाक उत्पन्न हुआ तब वह एक सौ वर्ष का था। ५ और सारा ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे प्रफुल्लित किया है; इसलिए सब सुनेवाले भी मेरे साथ प्रफुल्लित होंगे।” ६ फिर उसने यह भी कहा, “क्या कोई कभी अब्राहम से कह सकता था, कि सारा लड़कों को दूध पिलाएँगी? पर देखो, मुझसे उसके बुढ़ापे में एक पुत्र उत्पन्न हुआ।” ७ और वह लड़का बढ़ा और उसका टूंड छुड़ाया गया; और इसहाक के दूध छुड़ाने के दिन अब्राहम ने बड़ा भोज किया। ८ तब सारा को मिरी हामार का पुत्र, जो अब्राहम से उत्पन्न हुआ था, हँसी करता हुआ दिखाई पड़ा। ९ इस कारण उसने अब्राहम से कहा, “इस दासी को पुत्र सहित निकाल दे: क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे पुत्र इसहाक के साथ भागी न होगा।” १० यह बात अब्राहम को अपने पुत्र के कारण बुरी लगी। ११ तब परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, “उस लड़के और अपनी दासी के कारण तुझे बुरा न लगे; जो बात सारा तुझ से कहे, उसे मान, क्योंकि जो तेरा वंश कहलाएगा सो इसहाक ही से चलेगा। १२ दासी के पुत्र से भी मैं एक जाति उत्पन्न करूँगा इसलिए कि वह तेरा वंश है।” १३ इसलिए अब्राहम ने सबसे तड़के उठकर रोटी और पानी से भरी चमड़े की थेली भी हामार को दी, और उसके कंधे पर रखी, और उसके लड़के को भी उसे टेकर उसको बिदा किया। वह चली गई, और बेशबा के जंगल में भटकने लगी। १४ जब थैली का जल समाप्त हो गया, तब उसने लड़के को एक झाड़ी के नीचे छोड़ दिया। १५ और आप उससे तीर भर के टपे पर दूर जाकर उसके सामने यह सोचकर बैठ गई, “मुझ को लड़के की मृत्यु देखनी न पड़े।” १६ तब वह उसके सामने बैठी हुई चिल्ला चिल्लाकर रोने लगी। १७ परमेश्वर ने उस लड़के की सुनी; और उसके दूत ने स्वर्ण से हामार को पुकारकर कहा, “हे हामार, तुझे क्या हुआ? मत ड़ा: क्योंकि जहाँ तेरा लड़का है वहाँ से उसकी आवाज परमेश्वर को सुन पड़ी है।” १८ उठ, अपने लड़के को उठा और अपने हाथ से सम्प्रभाल; क्योंकि मैं उसके द्वारा एक बड़ी जाति बनाऊँगा।” १९ तब परमेश्वर ने उसकी आँखें खोल दीं, और उसको एक कुआँ दिखाई पड़ा; तब उसने जाकर थैली को जल से भरकर लड़के को पिलाया। २० और परमेश्वर उस लड़के के साथ रहा; और जब वह बड़ा हुआ, तब जंगल में रहते-रहते धनुर्धीरी बन गया। २१ वह पारान नामक जंगल में रहा करता था; और उसकी माता ने उसके लिये मिथ देश से एक ढींकी मँगाई। २२ उन दिनों में ऐसा हुआ कि अबीमेलेक अपने सेनापति पीकोल को संग लेकर अब्राहम से कहने लगा, “जो कुछ तू करता है उसमें परमेश्वर तेरे संग रहता है; २३ इसलिए अब मुझसे यहाँ इस विषय

में परमेश्वर की शपथ खा कि तू न तो मुझसे छल करेगा, और न कभी मेरे बंश से करेगा, परन्तु जैसी कहानी मैंने तुझ पर की है, वैसी ही तू मुझ पर और इस देश पर भी, जिसमें तू रहता है, करेगा।” २४ अब्राहम ने कहा, “मैं शपथ खाऊँगा।” २५ और अब्राहम ने अबीमिलेक को एक कुएँ के विषय में जो अबीमिलेक के दासों ने बलपूर्वक ले लिया था, उत्तराहना दिया। २६ तब अबीमिलेक ने कहा, “मैं नहीं जानता कि किसने यह काम किया; और तूने भी मुझे नहीं बताया, और न मैंने आज से पहले इसके विषय में कछु सुना।” २७ तब अब्राहम ने भेड़-बक्री, और गाय-बैल अबीमिलेक को दिए; और उन दोनों ने अपास में वाचा बाँधी। २८ अब्राहम ने सात मादा मेंदों को अलग कर रखा। २९ तब अबीमिलेक ने अब्राहम से पूछा, “इन सात बच्चियों का, जो तूने अलग कर रखी हैं, क्या प्रयोजन है?” ३० उसने कहा, “तू इन सात बच्चियों को इस बात की साक्षी जानकर मेरे हाथ से ले कि मैंने यह कुआँ खोदा है।” ३१ उन दोनों ने जो उस स्थान में आपस में शपथ खाई, इसी कारण उसका नाम बेर्शबा पड़ा। ३२ जब उन्होंने बेर्शबा में परस्पर वाचा बाँधी, तब अबीमिलेक और उसका सेनापति फीकोल, उठकर पलिशियों के देश में लौट गए। ३३ फिर अब्राहम ने बेर्शबा में झाऊँ का एक वृक्ष लगाया, और वहाँ यहोवा से जो सानातन परमेश्वर है, प्रार्थना की। ३४ अब्राहम पलिशियों के देश में बहुत दिनों तक परदेशी होकर रहा।

२२ इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने, अब्राहम से यह कहकर उसकी परीक्षा की, “हे अब्राहम!” उसने कहा, “देख, मैं यहाँ हूँ।” १ उसने कहा, “अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिससे त प्रेम रखता है, सांग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा, और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा होमबलि करके चढ़ा।” २ अतः अब्राहम सर्वेर तड़के उठा और अपने गदहे पर काठी कस्कर अपने दो सेवक, और अपने पुत्र इसहाक को सांग लिया, और होमबलि के लिये लकड़ी चीर ली, तब निकलकर उस स्थान की ओर चला, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उससे की थी। ३ तिसरे दिन अब्राहम ने आँखें उठाकर उस स्थान को दूर से देखा। ४ और उसने अपने सेवकों से कहा, “गदहे के पास यहाँ ठहरे रहो; यह लड़का और मैं वहाँ तक जाकर, और दण्डवत् करके, फिर तुम्हारे पास लौट आएँगे।” ५ तब अब्राहम ने होमबलि की लकड़ी ले अपने पुत्र इसहाक पर लादी, और आग और छुरी को अपने हाथ में लिया; और वे दोनों एक साथ चल पड़े। ६ इसहाक ने अपने पिता अब्राहम से कहा, “हे मेरे पिता,” उसने कहा, “हे मेरे पुत्र, क्या बात है?” ७ उसने कहा, “देख, आग और लकड़ी तो हैं, पर होमबलि के लिये भेड़ कहाँ है?” ८ अब्राहम ने कहा, “हे मेरे पुत्र, परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा।” और वे दोनों सांग-संग आगे चलते गए। ९ जब वे उस स्थान को जिसे परमेश्वर ने उसको बताया था पहुँचे; तब अब्राहम ने वहाँ वेदी बनाकर लकड़ी को चुन-चुनकर रखा, और अपने पुत्र इसहाक को बाँधकर वेदी पर रखी लकड़ियों के ऊपर रख दिया। १० फिर अब्राहम ने हाथ बढ़ाकर छुरी को ले लिया कि अपने पुत्र को बलि करे। ११ तब यहोवा के दूर ने स्वर्ग से उसको पुकारकर कहा, “हे अब्राहम, हे अब्राहम!” उसने कहा, “देख, मैं यहाँ हूँ।” १२ उसने कहा, “उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उसे कुछ कर; क्योंकि तूने जो मुझसे अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा; इससे मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है।” १३ तब अब्राहम ने आँखें उठाई, और क्या देखा, कि उसके पीछे एक मेड़ा अपने सीरींगों से एक झाड़ी में फैसा हुआ है; अतः अब्राहम ने जाकर उस मेड़े को लिया, और अपने पुत्र के स्थान पर होमबलि करके चढ़ाया। १४ अब्राहम ने उस स्थान का नाम यहोवा यिरे रखा, इसके अमुसार आज तक भी

कहा जाता है, “यहोवा के पहाड़ पर प्रदान किया जाएगा।” १५ फिर यहोवा के दूत ने दूसरी बार स्वर्ग से अब्राहम को पुकारकर कहा, १६ “यहोवा की यह वाणी है, कि मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ कि तूने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा; १७ इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दँगा; और निश्चय तेरे बंश को आकाश के तारागण, और समुद्र तट के रेतकणों के समान अनगिनत कस्तुरा, और तेरा बंश अपने शान्तुओं के नगरों का अधिकारी होगा; १८ और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे बंश के कारण धन्य मानेंगी; क्योंकि तूने मेरी बात मानी है।” १९ तब अब्राहम अपने सेवकों के पास लौट आया, और वे सब बेर्शबा को संग-संग गए; और अब्राहम बेर्शबा में रहने लगा। २० इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ कि अब्राहम को यह सन्देश मिला, “मिल्का के तेरे भाई नाहोर से सन्तान उत्पन्न हुई हैं।” २१ मिल्का के पुत्र तो ये हुए, अर्थात् उसका जेठा ऊस, और ऊस का भाई बज, और कम्पूल, जो अराम का पिता हुआ। २२ फिर केसेद, हजो, पिलदाश, यिदूलाप, और बतूलत। २३ इन आठों को मिल्का ने अब्राहम के भाई नाहोर के द्वारा जन्म दिया। और बतूलत से रिबका उत्पन्न हुई। २४ फिर नाहोर के स्मानामक एक रखेल भी थी; जिससे तेबह, गहम, तहश, और माका, उत्पन्न हुए।

२३ सारा तो एक सौ सताईस वर्ष की आयु को पहुँची; और जब सारा की इतनी आयु हुई, १ तब वह किर्यतर्भवा में मर गई। यह तो कनान देश में है, और हेब्रोन भी कहलाता है। इसलिए अब्राहम सारा के लिये रोने-पीटने को बहाँ गया। २ तब अब्राहम शव के पास से उठकर हितियों से कहने लगा, ३ “मैं तुम्हारे बीच अतिथि और परदेशी हूँ; मुझे अपने मध्य में कविस्तान के लिये ऐसी भूमि दो जो मेरी निज की हो जाए, कि मैं अपने मृतक को गाड़कर अपनी आँख से दूर करूँ।” ४ हितियों ने अब्राहम से कहा, ५ “हे हमारे प्रभु, हमारी सुन; तू तो हमारे बीच में बड़ा प्रधान है। हमारी कब्जों में से जिसको तू चाहे उसमें अपने मृतक को गाड़; हम में से कोई तुझे अपनी कब्ज के लेने से न रोकेगा, कि तू अपने मृतक को उसमें गाड़ने न पाए।” ६ तब अब्राहम उठकर खड़ा हुआ, और हितियों के सामने, जो उस देश के निवासी थे, दण्डवत् करके कहने लगा, ७ “यदि तुम्हारी यह इच्छा हो कि मैं अपने मृतक को गाड़कर अपनी आँख से दूर करूँ, तो मेरी निज की भूमि हो जाए।” ८ ऐसोन तो हितियों के बीच वहाँ बैठा हुआ था, इसलिए जिन्हें हिती उसके नगर के फाटक से होकर भीतर जाते थे, उन सभी के सामने उसने अब्राहम को उत्तर दिया, ९ “हे मेरे प्रभु, ऐसा नहीं, मेरी सुन; वह भूमि मैं तुझे देता हूँ, और उसमें जो गुफा है, वह मैं तुझे देता हूँ; अपने जातिभाइयों के सम्मुख मैं उसे तुझको दिए देता हूँ; अतः अपने मृतक को कब्ज में रख।” १० तब अब्राहम ने उस देश के निवासियों के सामने दण्डवत् किया। ११ और उनके सुनते हुए ऐसोन से कहा, “यदि तू ऐसा चाहे, तो मेरी सुन उस भूमि का जो दाम हो, वह मैं देना चाहता हूँ; उसे मुझसे ले ले, तब मैं अपने मुर्दे को वहाँ गाइँगा।” १२ ऐसोन ने अब्राहम को यह उत्तर दिया, १३ “हे मेरे प्रभु, मेरी बात सुन; उस भूमि का दाम तो चार सौ शेकेल स्पा है; पर मेरे और तेरे बीच में यह क्या है? अपने मुर्दे को कब्ज में रख।” १४ अब्राहम ने ऐसोन की मानकर उसको उतना स्पा तौल दिया, जिताना उसने हितियों के सुनते हुए कहा था, अर्थात् चार सौ ऐसे शेकेल जो व्यापारियों में चलते थे। १५ इस प्रकार ऐसोन की भूमि, जो मग्ने के सम्मुख

मकपेला में थी, वह गुफा समेत, और उन सब वृक्षों समेत भी जो उसमें और उसके चारों ओर सीमा पर थे, १८ जितने हिती उसके नगर के फाटक से होकर भीतर जाते थे, उन सभी के सामने अब्राहम के अधिकार में पक्की रीति से आ गई। १९ इसके पश्चात् अब्राहम ने अपनी पत्नी सारा को उस मकपेलावाली भूमि की गुफा में जो मध्ये के अर्थात् हेड्रोन के सामने कनान देश में है, मिट्टी दी। २० इस प्रकार वह भूमि गुफा समेत, जो उसमें थी, हितियों की ओर से कब्रिस्तान के लिये अब्राहम के अधिकार में पूरी रीति से आ गई।

२४ अब्राहम अब बूझ हो गया था और उसकी आयु बहुत थी और यहोवा

ने सब बातों में उसको आशीरी दी थी। १ अब्राहम ने अपने उस दास से, जो उसके घर में पुरनिया और उसकी सारी सम्पत्ति पर अधिकारी था, कहा, “अपना हाथ मेरी जाँघ के नीचे रख; २ और मुझसे आकाश और पृथ्वी के परमेश्वर यहोवा की इस विषय में शपथ खा, कि तू मेरे पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों में से, जिनके बीच मैं रहता हूँ, किसी को न लाएगा। ३ परन्तु तू मेरे देश में मेरे ही कुटुम्बियों के पास जाकर मेरे पुत्र इस्हाक के लिये एक पत्नी ले आएगा।” ४ दास ने उससे कहा, “कदाचित् वह भी इस देश में मेरे साथ आना न चाहे; तो क्या मुझे तेरे पुत्र को उस देश में जहाँ से तू आया है ले जाना पड़ेगा?” ५ अब्राहम ने उससे कहा, “चौकस रह, मेरे पुत्र को वहाँ कभी न ले जाना।” ६ स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा, जिसने मुझे मेरे पिता के घर से और मेरी जन्म-भूमि से ले आकर मुझसे शपथ खाकर कहा कि “मैं यह देश तेरे वंश को दूँगा; वही अपना दूत तेरे अगे-अगे भेजेगा, कि तू मेरे पुत्र के लिये वहाँ से एक स्त्री ले आए।” ७ और यदि वह भी तेरे साथ आना न चाहे तब तो तू मेरी इस शपथ से छूट जाएगा; पर मेरे पुत्र को वहाँ न ले जाना।” ८ तब उस दास ने अपने स्वामी अब्राहम की जाँघ के नीचे अपना हाथ रखकर उससे इस विषय की शपथ खाई। ९ तब वह दास अपने स्वामी के ऊँटों में से दस ऊँट छाँटकर उसके सब उत्तम-उत्तम पदार्थों में से कछु कछु लेकर चला; और अरमन्हरैम में नाहोर के नगर के पास पहुँचा। १० और उसने ऊँटों को नगर के बाहर एक कुँए के पास बैठाया। वह संध्या का समय था, जिस समय स्थियाँ जल भरने के लिये निकलती हैं। ११ वह कहने लगा, “हे मेरे स्वामी अब्राहम के परमेश्वर यहोवा, आज मेरी कार्य को सिद्ध कर, और मेरे स्वामी अब्राहम पर कस्ता कर। १२ देख, मैं जल के इस सोते के पास खड़ा हूँ; और नगरवासियों की बेटियाँ जल भरने के लिये निकली आती हैं १४ इसलिए ऐसा होने दे कि जिस कन्या से मैं कहूँ, ‘अपना घड़ा मेरी ओर ज्ञान, कि मैं पीँज़,’ और वह कहे, ‘ले, पी ले, बाद मैं मैं तेरे ऊँटों को भी पिलाऊँगी,’ यह वही हो जिसे तूने अपने दास इस्हाक के लिये ठहराया हो; इसी रीति मैं जान लूँगा कि तू मेरे स्वामी पर कल्पणा की है।” १५ और ऐसा हुआ कि जब वह कह ही रहा था कि रिबका, जो अब्राहम के भाई नाहोर के जन्माये मिल्का के पुत्र, बृतान की बेटी थी, वह कंधे पर घड़ा लिये हुए आई। १६ वह अति सुन्दर, और कुमारी थी, और किसी पुस्त का मुँह न देखा था। वह कुँए में सोते के पास उत्तर गई, और अपना घड़ा भरकर फिर ऊपर आई। १७ तब वह दास उससे भेट करने को दौड़ा, और कहा, “अपने घड़े में से थोड़ा पानी मुझे पिला दो।” १८ उसने कहा, “हे मेरे प्रभु, ले, पी ले,” और उसने फुर्ती से घड़ा उतारकर हाथ में लिये-लिये उसको पानी पिला दिया। १९ जब वह उसको पिला चुकी, तब कहा, “मैं तेरे ऊँटों के लिये भी तब तक पानी भर-भर लाऊँगी, जब तक वे पी न चुकें।” २० तब वह फुर्ती से अपने घड़े का जल हौट में उण्डेलकर फिर कुँए पर भरने को दौड़ा गई; और उसके सब ऊँटों के लिये पानी भर दिया। २१ और वह पुस्त उसकी ओर चुपचाप अचम्भे के साथ ताकता हुआ यह सोचता था कि यहोवा ने मेरी

यात्रा को सफल किया है कि नहीं। २२ जब ऊँट पी चुके, तब उस पुस्त ने आधा तोला सोने का एक नथ निकालकर उसको दिया, और दस तोले सोने के कंगन उसके हाथों में पहना दिए २३ और पूछा, “तू किसकी बेटी है? यह मुझ को बता। क्या तेरे पिता के घर में हमारे टिकने के लिये स्थान है?” २४ उसने उत्तर दिया, “मैं तो नाहोर के जन्माए मिल्का के पुत्र बृतान की बेटी हूँ।” २५ फिर उसने उससे कहा, “हमारे यहाँ पुआल और चारा बहुत है, और टिकने के लिये स्थान भी है।” २६ तब उस पुस्त ने सिर झुकाकर यहोवा को दण्डवत् करके कहा, २७ “धन्य है मेरे स्वामी अब्राहम का परमेश्वर यहोवा, जिसने अपनी कस्ता और सच्चाई को मेरे स्वामी पर से हटा नहीं लिया; यहोवा ने मुझ को ठीक मार्ग पर चलाकर मेरे स्वामी के भाई-बन्धुओं के घर पर पहुँचा दिया है।” २८ तब उस कन्या ने दौड़कर अपनी माता को इस घटना का सारा हाल बता दिया। २९ तब लाबान जो रिबका का भाई था, बाहर कुँए के निकट उस पुस्त के पास दौड़ा गया। ३० और ऐसा हुआ कि जब उसने वह नथ और अपनी बहन रिबका के हाथों में वे कंगन भी देखे, और उसकी यह बात भी सुनी कि उस पुस्त ने मुझे ऐसी बातें कहीं; तब वह उस पुस्त के पास गया, और क्या देखा, कि वह सोते के निकट ऊँटों के पास खड़ा है। ३१ उसने कहा, “हे यहोवा की ओर से धन्य पुस्त भीतर आ तू क्यों बाहर खड़ा है? मैंने घर को, और ऊँटों के लिये भी स्थान तैयार किया है।” ३२ इस पर वह पुस्त घर में गया; और लाबान ने ऊँटों की काठियाँ खोलकर पुआल और चारा दिया; और उसके और उसके साथियों के पाँव धोने को जल दिया। ३३ तब अब्राहम के दास के आगे जलपान के लिये कुछ रखा गया; पर उसने कहा “मैं जब तक अपना प्रयोजन न कह दूँ, तब तक कुछ न खाऊँगा।” लाबान ने कहा, “कह दो।” ३४ तब उसने कहा, “मैं तो अब्राहम का दास हूँ।” ३५ यहोवा ने मेरे स्वामी को बड़ी आशीरी दी है, इसलिए वह महान पुस्त हो गया है, और उसने उसको भेड़-बकरी, गाय-बैल, सोना-स्पा, दास-दासियाँ, ऊँट और गदरे दिए हैं। ३६ और मेरे स्वामी की पत्नी सारा के बुढ़ापे में उससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ है; और उस पुत्र को अब्राहम ने अपना सब कुछ दे दिया है। ३७ मेरे स्वामी ने मुझे यह शपथ खिलाई है, कि मैं उसके पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों में से जिनके देश में वह रहता है, कोई स्त्री न ले आऊँगा। ३८ मैं उसके पिता के घर, और कूल के लोगों के पास जाकर उसके पुत्र के लिये एक स्त्री ले आऊँगा।” ३९ तब मैंने अपने स्वामी से कहा, “कदाचित् वह भी मेरे पीछे न आए।” ४० तब उसने मुझसे कहा, “यहोवा, जिसके सामने मैं चलता आया हूँ, वह तेरे संग अपने दूत को भेजकर तेरी यात्रा को सफल करेगा; और तू मेरे कुल, और मेरे पिता के घरने में से मेरे पुत्र के लिये एक स्त्री ले आऊँगा।” ४१ तू तब ही मेरी इस शपथ से छूटेगा, जब तू मेरे कुल के लोगों के पास पहुँचेगा; और यदि वे तुझे कोई स्त्री न दें, तो तू मेरी शपथ से छूटेगा।” ४२ इसलिए मैं आज उस कुँए के निकट आकर कहने लगा, “हे मेरे स्वामी अब्राहम के परमेश्वर यहोवा, यदि तू मेरी इस यात्रा को सफल करता हो;” ४३ तो देख मैं जल के इस कुँए के निकट खड़ा हूँ; और ऐसा हो, कि जो कुमारी जल भरने के लिये आई, और मैं उससे कहूँ, “अपने घड़े में से मुझे थोड़ा पानी पिला,” ४४ और वह मुझसे कहे, “पी ले, और मैं तेरे ऊँटों के पीने के लिये भी पानी भर दूँगी,” वह वही स्त्री हो जिसको तूने मेरे स्वामी के पुत्र के लिये ठहराया है।” ४५ मैंन ही मन यह कह ही रहा था, कि देख रिबका कंधे पर घड़ा लिये हुए निकल आई; फिर वह सोते के पास उतारकर भरने लगी। मैंने उससे कहा, “मुझे पानी पिला दो।” ४६ और उसने जलदी से अपने घड़े को कंधे पर से उतार के कहा, “ले, पी ले, पीछे मैं तेरे ऊँटों को भी पिलाऊँगी,” इस प्रकार मैंने पी लिया, और उसने ऊँटों को भी पिला दिया। ४७ तब मैंने उससे

पूछा, ‘तू किसकी बेटी हैं?’ और उसने कहा, ‘मैं तो नाहोर के जन्माए मिल्का के पुत्र बताएँ की बेटी हैं,’ तब मैने उसकी नाक में वह नथ, और उसके हाथों में वे कंगन पहना दिए। ५५ फिर मैने सिर झुकाकर यहोवा को दण्डवत् किया, और अपने स्वामी अब्राहम के परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा, क्योंकि उसने मुझे ठीक मार्ग से पहुँचाया कि मैं अपने स्वामी के पुत्र के लिये उसके कुदुम्ही की पुत्री को ले जाऊँ। ५६ इसलिए अब, यदि तुम मैं स्वामी के साथ कृपा और सच्चाई का व्यवहार करना चाहते हो, तो मुझसे कहो; और यदि नहीं चाहते हो; तो भी मुझसे कह करो; ताकि मैं दाहिनी ओर, या बाईं ओर फिर जाऊँ।” ५७ तब लाबान और बताएँ ने उत्तर दिया, “यह बात यहोवा की ओर से ही है; इसलिए हम लोग तुझ से न तो भला कह सकते हैं न ब्ला। ५८ देख, रिबका तैरे सामने है, उसको ले जा, और वह यहोवा के वचन के अनुसार, तैरे स्वामी के पुत्र की पत्री हो जाए।” ५९ उनकी यह बात सुनकर, अब्राहम के दास ने भूमि पर गिरकर यहोवा को दण्डवत् किया। ६० फिर उस दास ने सोने और रसे के गहने, और बन्धु निकालकर रिबका को दिए; और उसके भाई और माता को भी उसने अनमोल-अनमोल वस्तुएँ दी। ६१ तब उसने अपने संगी जनों समेत भोजन किया, और रात वही बिताई। उसने तड़के उठकर कहा, “मुझ को अपने स्वामी के पास जाने के लिये विदा करो।” ६२ रिबका के भाई और माता ने कहा, “कन्या को हमारे पास कुछ दिन, अर्थात् कम से कम दस दिन रहने दे; पिर उसके पश्चात् वह चली जाएगी।” ६३ उसने उनसे कहा, “यहोवा ने जो मेरी यात्रा को सफल किया है, इसलिए तुम मुझे मत रोको अब मुझे विदा कर दो, कि मैं अपने स्वामी के पास जाऊँ।” ६४ उन्होंने कहा, “हम कन्या को बुलाकर पूछते हैं, और देखेंगे, कि वह क्या कहती है।” ६५ और उन्होंने रिबका को बुलाकर उससे पूछा, “क्या तू इस मनुष्य के संग जाएगी?” उसने कहा, “हाँ मैं जाऊँगी।” ६६ तब उन्होंने अपनी बहन रिबका, और उसकी दाईं और अब्राहम के दास, और उसके साथी सभी को विदा किया। ६७ और उन्होंने रिबका को आरीर्वाद देकर कहा, “हे हमारी बहन, तू हजारों लाखों की आदिमाता हो, और तेरा वंश अपने बैरियों के नगरों का अधिकारी हो।” ६८ तब रिबका अपनी सहेलियों समेत चली; और ऊँट पर चढ़कर उस पुख के पीछे हो ली। इस प्रकार वह दास रिबका को साथ लेकर चल दिया। ६९ इसहाक जो दक्षिण देश में रहता था, लहौरोई नामक कुँए से होकर चला आता था। ७० सॉन्ज़ के समय वह मैदान में ध्यान करने के लिये निकला था; और उसने आँखें उठाकर क्या देखा, कि ऊँट चले आ रहे हैं। ७१ रिबका ने भी आँखें उठाकर इसहाक को देखा, और देखते ही ऊँट पर से उत्तर पड़ी। ७२ तब उसने दास से पूछा, “जो पुख मैदान पर हम से मिलने को चला आता है, वह कौन है?” दास ने कहा, “वह तो मेरा स्वामी है।” तब रिबका ने घूँघट लेकर अपने मुँह को ढाँप लिया। ७३ दास ने इसहाक से अपने साथ हुई घटना का वर्णन किया। ७४ तब इसहाक रिबका को अपनी माता सारा के तम्ब में ले आया, और उसको ब्याह कर उससे प्रेम किया। इस प्रकार इसहाक को माता की मृत्यु के पश्चात् शान्ति प्राप्त हुई।

२५ तब अब्राहम ने एक पत्री ब्याह ली जिसका नाम कतूरा था। १ उससे जिम्मान, योक्षान, मदना, मिधान, यिशबाक, और शूह उत्पन्न हुए। २ योक्षान से शेबा और ददान उत्पन्न हए; और ददान के बंश में अश्शरी, लर्शी, और लुम्पी लोग हुए। ३ मिधान के पुत्र एपा, एपेर, हनोक, अबीदा, और एल्दा हुए, ये सब कतूरा की सन्तान हुए। ४ इसहाक को तो अब्राहम ने अपना सब कुछ दिया। ५ पर अपनी रखेलियों के पुत्रों को, कुछ कुछ देकर अपने जीते जी अपने पुत्र इसहाक के पास से पूर्व देश में भेज दिया। ६ अब्राहम की

सारी आयु एक सौ पचास हार्टर वर्ष की हुई। ७ अब्राहम का दीर्घायु होने के कारण अर्थात् पूरे बुद्धिये की अवस्था में प्राण छूट गया; और वह अपने लोगों में जा मिला। ८ उसके पुत्र इसहाक और इश्माएल ने, हिती सोहर के पुत्र एपोन की मध्रे के सम्मुखवाली भूमि में, जो मकपेला की एक थी, उसमें उसको मिट्टी दी; ९ अर्थात् जो भूमि अब्राहम ने हितियों से मोल ली थी; उसी में अब्राहम, और उसकी पत्नी सारा, दोनों को मिट्टी दी गई। १० अब्राहम के मरने के पश्चात् रपरेश्वर ने उसके पुत्र इसहाक को जो लहौरोई नामक कुँए के पास रहता था, अशीष दी। ११ अब्राहम का पुत्र इश्माएल जो सारा की मिस्री दासी हागार से उत्पन्न हुआ था, उसकी यह बंशावली है। १२ इश्माएल के पुत्रों के नाम और बंशावली यह है: अर्थात् इश्माएल का जेठा पुत्र नबायोत, फिर केदार, अदबाएल, मिबासाम, १३ मिशमा, दूमा, मस्सा, १४ हदद, तेमा, यतूर, नारीश, और केदमा। १५ इश्माएल के पुत्र ये ही हुए, और इन्हीं के नामों के अनुसार इनके गाँवों, और छावनियों के नाम भी पड़े; और ये ही बारह अपने-अपने कुल के प्रधान हुए। १६ इश्माएल की सारी आयु एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई; तब उसके प्राण छूट गए, और वह अपने लोगों में जा मिला। १७ और उसके बंश हवीला से शूर तक, जो मिस्र के सम्मुख अश्शर के मार्ग में है, बस गए; और उनका भाग उनके सब भाई-बन्धुओं के सम्मुख पड़ा। १८ अब्राहम के पुत्र इसहाक की बंशावली यह है: अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ; १९ और इसहाक ने चारीस वर्ष का होकर रिबका को, जो पद्धनाम के वासी, अरामी बताएँ की बेटी, और अरामी लाबान की बहन थी, ब्याह लिया। २० इसहाक की पत्नी तो बाँझी थी, इसलिए उसने उसके निमित्त यहोवा से विनती की; और यहोवा ने उसकी विनती सुनी, इस प्रकार उसकी पत्नी रिबका गर्भवती हुई। २१ लड़के उसके गर्भ में आपस में लिपटकर एक दूसरे को मारने लगे। तब उसने कहा, “मेरी जो ऐसी ही दशा रहेगी तो मैं कैसे जीवित रहूँगी?” और वह यहोवा की इच्छा पूछने को गई। २२ तब यहोवा ने उससे कहा, “तेरे गर्भ में दो जीवियाँ हैं, और तेरी कोख से निकलते ही दो राज्य के लोग अलग-अलग होंगे, और एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी होंगे और बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा।” २३ जब उसके पुत्र उत्पन्न होने का समय आया, तब क्या प्रगत हुआ, कि उसके गर्भ में जुड़वे बालक हैं। २४ पहला जो उत्पन्न हुआ वह लाल निकला, और उसका सारा शरीर कम्बल के समान रोमपथ था; इसलिए उसका नाम एसाव रखा गया। २५ पीछे उसका भाई अपने हाथ से एसाव की एड़ी पकड़े हुए उत्पन्न हुआ; और उसका नाम याकूब रखा गया। जब रिबका ने उनको जन्म दिया तब इसहाक साठ वर्ष का था। २६ फिर वे लड़के बढ़ने लगे और एसाव तो बनवासी होकर चतुर शिकार खेलनेवाला हो गया, पर याकूब सीधा मनुष्य था, और तम्बुओं में रहा करता था। २७ इसहाक एसाव के अहरे का माँस खाया करता था, इसलिए वह उससे प्रीति रखता था; पर रिबका का याकूब से प्रीति रखती थी। २८ एक दिन याकूब भोजन के लिये कुछ दाल पका रहा था; और एसाव मैदान से थका हुआ आया। २९ तब एसाव ने याकूब से कहा, “वह जो लाल वस्तु है, उसी लाल वस्तु में से मुझे कुछ खिला, क्योंकि मैं थका हूँ।” इसी कारण उसका नाम एदोम भी पड़ा। ३० याकूब ने कहा, “अपना पहलौठे का अधिकार आज मैं हाथ बेच दू।” ३१ एसाव ने कहा, “देख, मैं तो अभी मरने पर हूँ इसलिए पहलौठे के अधिकार से मेरा क्या लाभ होगा?” ३२ याकूब ने कहा, “मुझसे अभी शपथ खा,” अतः उसने उससे शपथ खाई, और अपना पहलौठे का अधिकार याकूब के हाथ बेच डाला। ३३ इस पर याकूब ने एसाव को रोटी और पकाई हुई मस्रूरी की दाल दी; और उसने खाया पिया, तब उठकर चला गया। इस प्रकार एसाव ने अपना पहलौठे का अधिकार तुच्छ जाना।

२६ उस देश में अकाल पड़ा, वह उस पहले अकाल से अलग था जो अब्राहम के दिनों में पड़ा था। इसलिए इस्हाक गरार को पलिशियों के राजा अबीमेलेक के पास गया। २ वहाँ यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, “मिस में मत जा; जो देश मैं तुझे बढ़ाऊँ उसी में रह। ३ तू इसी देश मैं रह, और मैं तेरे संग रहँगा, और तुझे आशीष दूँगा; और ये सब देश मैं तुझको, और तेरे वंश को दूँगा; और जो शपथ मैंने तेरे पिता अब्राहम से खाइ थी, उसे मैं पूरी करँगा। ४ और मैं तेरे वंश को आकाश के तारागण के समान करँगा; और मैं तेरे वंश को ये सब देश दूँगा, और पृथ्वी की सारी जातियों तेरे वंश के कारण अपने को धन्य मानेंगी। ५ क्योंकि अब्राहम ने मेरी मानी, और जो मैंने उसे सौंपा था उसको और मेरी आज्ञाओं, विधियों और व्यवस्था का पालन किया।” ६ इसलिए इस्हाक गरार में रह गया। ७ जब उस स्थान के लोगों ने उसकी पत्नी के विषय में पछाड़ा, तब उसने यह सोचकर कि यदि मैं उसको अपनी पत्नी करूँ, तो यहाँ के लोग रिबका के कारण जो परम सुन्दरी है मुझ को मार डालेंगे, उत्तर दिया, “वह तो मेरी बहन है।” ८ जब उसको वहाँ रहते बहुत दिन बीत गए, तब एक दिन पलिशियों के राजा अबीमेलेक ने खिड़की में से झाँककर क्या देखा कि इस्हाक अपनी पत्नी रिबका के साथ कीड़ा कर रहा है। ९ तब अबीमेलेक ने इस्हाक को बुलावाकर कहा, “वह तो निश्चय तेरी पत्नी है; फिर तू वे क्यों उसको अपनी बहन कहा?” इस्हाक ने उत्तर दिया, “मैंने सोचा था, कि ऐसा न हो कि उसके कारण मेरी मृत्यु हो।” १० अबीमेलेक ने कहा, “तूने हम से यह क्या किया? ऐसे तो प्रजा में से कोई तेरी पत्नी के साथ सहज से कुकर्म कर सकता, और तू हमको पाप में फँसाता।” ११ इसलिए अबीमेलेक ने अपनी सारी प्रजा को आज्ञा दी, “जो कोई उस पुरुष को या उस द्वी को छूएगा, वह निश्चय मार डाला जाएगा।” १२ फिर इस्हाक ने उस देश में जोता बोया, और उसी वर्ष में सौ गुणा फल पाया; और यहोवा ने उसको आशीष दी, १३ और वह बढ़ा और उसकी उन्नति होती चली गई, यहाँ तक कि वह बहुत धनी पुरुष हो गया। १४ जब उसके भेड़-बक्करी, गाय-बैल, और बहुत से दास-दीपियाँ हुईं, तब पलिशी उससे डाक हकरने लगे। १५ इसलिए जितने कुओं को उसके पिता अब्राहम के दासों ने अब्राहम के जीते जी खोदा था, उनको पलिशियों ने मिट्टी से भर दिया। १६ तब अबीमेलेक ने इस्हाक से कहा, “हमारे पास से चला जा; क्योंकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया है।” १७ अतः इस्हाक वहाँ से चला गया, और गरार की घाटी में अपना तम्बू खड़ा करके वहाँ रहने लगा। १८ तब जो कुएँ उसके पिता अब्राहम के दिनों में खोड़े गए थे, और अब्राहम के मरने के पीछे पलिशियों ने भर दिए थे, उनको इस्हाक ने फिर से खुदवाया; और उनके वे ही नाम रखे, जो उसके पिता ने रखे थे। १९ फिर इस्हाक के दासों को घाटी में खोदते-खोदते बहते जल का एक सोता मिला। २० तब गरार के चरवाहों ने इस्हाक के चरवाहों से झाङड़ा किया, और कहा, “यह जल हमारा है।” इसलिए उसने उस कुएँ का नाम एसेक रखा; क्योंकि वे उससे झाङड़े थे। २१ फिर उन्होंने दूसरा कुआँ खोदा; और उन्होंने उसके लिये भी झाङड़ा किया, इसलिए उसने उसका नाम सिन्ना रखा। २२ तब उसने वहाँ से निकलकर एक और कुआँ खुदवाया; और उसके लिये उन्होंने झाङड़ा न किया; इसलिए उसने उसका नाम यह कहकर रहोबोत रखा, “अब तो यहोवा ने हमारे लिये बहुत स्थान दिया है, और हम इस देश में फूले-फलेंगे।” २३ वहाँ से वह बेरेबा को गया। २४ और उसी दिन यहोवा ने रात को उसे दर्शन देकर कहा, “मैं तेरे पिता अब्राहम का परमेश्वर हूँ; मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, और अपने दास अब्राहम के कारण तुझे आशीष दूँगा, और तेरा वंश बढ़ाऊँगा।” २५ तब उसने वहाँ एक बेदी बनाई, और यहोवा से प्रार्थना की, और अपना तम्बू वही खड़ा किया; और वहाँ इस्हाक के दासों ने एक कुआँ खोदा। २६ तब अबीमेलेक अपने सलाहकार अहुज्जत, और अपने सेनापति पीकोल को संग लेकर, गरार से उसके पास गया। २७ इस्हाक ने उनसे कहा, “तुम ने मुझसे बैर करके अपने बीच से निकाल दिया था, अब मेरे पास क्यों आए हो?” २८ उन्होंने कहा, “हमने तो प्रत्यक्ष देखा है, कि यहोवा तेरे साथ रहता है, इसलिए हमने सोचा, कि तू तो यहोवा की ओर से धन्य है, अतः हमारे तेरे बीच में शपथ खाई जाए, और हम तुझ से इस विषय की बाचा बन्धाएँ; २९ कि जैसे हमने तुझे नहीं छुआ, वरन् तेरे साथ केवल भलाई ही की है, और तुझको कुशल क्षेम से विदा किया, उसके अनुसार तू भी हम से कोई बुराई न करेगा।” ३० तब उसने उनको भोज दिया, और उन्होंने खाया-पिया। ३१ सर्वे उन सभी ने तड़के उठकर आपस में शपथ खाई; तब इस्हाक ने उनको विदा किया, और वे कुशल क्षेम से उसके पास से चले गए। ३२ उसी दिन इस्हाक के दासों ने आकर अपने उस खोदे हुए कुएँ का बृतान्त सुनाकर कहा, “हमको जल का एक सोता मिला है।” ३३ तब उसने उसका नाम शिवा रखा; इसी कारण उस नगर का नाम आज तक बेरेबा पड़ा है। ३४ जब एसाव चालीस वर्ष का हुआ, तब उसने हिंती बेरी की बेटी यहदीत, और हिंती एलोन की बेटी बासमत को ब्याह लिया; ३५ और इन ब्लियों के कारण इस्हाक और रिबका के मन को खेद हुआ।

२७ जब इस्हाक बढ़ा हो गया, और उसकी आँखें ऐसी धुँधली पड़ गईं कि उसको सँझाना न था, तब उसने अपने जेठे पुत्र एसाव को बुलाकर कहा, “हे मेरे पुत्र,” उसने कहा, “क्या आज्ञा।” २८ उसने कहा, “सुन, मैं तो बढ़ा हो गया हूँ, और नहीं जानता कि मेरी मृत्यु का दिन कब होगा।” २९ इसलिए अब तू अपना तरकश और धनुष आदि हथियार लेकर मैदान में जा, और मेरे लिये अहेर कर ले आ। ३० तब मेरी स्त्री के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बनाकर मेरे पास ले आना, कि मैं उसे खाकर मरने से पहले तुझे जी भरकर आशीर्वाद दूँ।” ३१ तब एसाव अहेर करने को मैदान में गया। जब इस्हाक एसाव से यह बात कह रहा था, तब रिबका सुन रही थी। ३२ इसलिए उसने अपने पुत्र याकूब से कहा, “सुन, मैंने तेरे पिता को तेरे भाई एसाव से यह कहते सुना है, ३३ तू मेरे लिये अहेर करके उसका स्वादिष्ट भोजन बना, कि मैं उसे खाकर तुझे यहोवा के आगे मरने से पहले आशीर्वाद दूँ।” ३४ इसलिए अब, हे मेरे पुत्र, मेरी सुन, और यह आज्ञा मान, ३५ कि बकरियों के पास जाकर बकरियों के दो अच्छे-अच्छे बच्चे ले आ; और मैं तेरे पिता के लिये उसकी स्त्री के अनुसार उनके माँस का स्वादिष्ट भोजन बनाऊँगी। ३६ तब तू उसको अपने पिता के पास ले जाना, कि वह उसे खाकर मरने से पहले तुझको आशीर्वाद दे।” ३७ याकूब ने अपनी माता रिबका से कहा, “सुन, मेरा भाई एसाव तो रोंआर पुरुष है, और मैं रोमहीन पुरुष हूँ।” ३८ कदाचित् मेरा पिता मुझे टटोलने लगे, तो मैं उसकी दृष्टि में ठग ठहराऊँगा; और आशीष के बदले श्राप ही कमाऊँगा।” ३९ उसकी माता ने उससे कहा, “हे मेरे पुत्र, श्राप तुझ पर नहीं मुझी पर नहीं पड़े, तू केवल मेरी सुन, और जाकर वे बच्चे मेरे पास ले आ।” ४० तब याकूब जाकर उनको अपनी माता के पास ले आया, और माता ने उसके पिता की स्त्री के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बना दिया। ४१ तब रिबका ने अपने पहले तुझको आशीर्वाद दिया। ४२ तब रिबका ने अपने पहले तुझको पुत्र एसाव के स्वादिष्ट भोजन बनाकर, जो उसके पास घर में थे, लेकर अपने छोटे पुत्र याकूब को पहना दिया। ४३ और बकरियों के बच्चों की खालों को उसके हाथों में और उसके चिकने गले में लपेट दिया। ४४ और वह स्वादिष्ट भोजन और अपनी बनाई हुई रोटी भी अपने पुत्र याकूब के हाथ में दे दी। ४५ तब वह अपने पिता के पास गया, और कहा, “हे मेरे पिता,” उसने कहा, “क्या बात है? हे मेरे पुत्र, तू कौन है?” ४६ याकूब ने अपने पिता से कहा, “मैं तेरा जेठा पुत्र एसाव हूँ।” मैंने तेरी आज्ञा के अनुसार किया है; इसलिए उठ और बैठकर मेरे अहेर के माँस में से खा, कि तू जी से

मुझे आशीर्वाद दे।” २० इसहाक ने अपने पुत्र से कहा, “हे मेरे पुत्र, क्या कारण है कि वह तुझे इतनी जलदी मिल गया?” उसने यह उत्तर दिया, “तौरे परमेश्वर यहोवा ने उसको मेरे समाने कर दिया।” २१ फिर इसहाक ने याकूब से कहा, “हे मेरे पुत्र, निकट आ, मैं तुझे टटोलकर जानूँ, कि तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव है या नहीं।” २२ तब याकूब अपने पिता इसहाक के निकट गया, और उसने उसको टटोलकर कहा, “बोल तो याकूब का सा है, पर हाथ एसाव ही के से जान पड़ते हैं।” २३ और उसने उसको नहीं पहचाना, क्योंकि उसके हाथ उसके भाई के से रोंगे आरे थे। अतः उसने उसको आशीर्वाद दिया। २४ और उसने पूछा, “क्या तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव है?” उसने कहा, “हाँ मैं हूँ।” २५ तब उसने कहा, “भोजन को मेरे निकट ले आ, कि मैं, अपने पुत्र के अहेर के माँस में से खाकर, तुझे जी से आशीर्वाद दूँ।” तब वह उसको उसके निकट ले आया, और उसने खाया; और वह उसके पास दाखमधू भी लाया, और उसने पिया। २६ तब उसके पिता इसहाक ने उससे कहा, “हे मेरे पुत्र निकट आकर मुझे चूम।” २७ उसने निकट जाकर उसको चूमा। और उसने उसके बब्बों का सुगन्ध पाकर उसको वह आशीर्वाद दिया, “देख, मेरे पुत्र की सुगन्ध जो ऐसे खेत की सी है जिस पर यहोवा ने आशीष दी है; २८ परमेश्वर तुझे आकाश से ओस, और भूमि की उत्तम से उत्तम उपज, और बहुत सा अनाज और नया दाखमधू दे; २९ राज्य-राज्य के लोग तेरे अधीन हों, और देश-देश के लोग तुझे दण्डवत् करें; तू अपने भाइयों का स्वामी हो, और तेरी माता के पुत्र तुझे दण्डवत् करें। जो तुझे श्राप दें वे आप ही श्रापित हों, और जो तुझे आशीर्वाद दें वे आशीष पाएँ।” ३० जैसे ही यह आशीर्वाद इसहाक याकूब को दे चुका, और याकूब अपने पिता इसहाक के सामने से निकला ही था, कि एसाव अहेर लेकर आ पहुँचा। ३१ तब वह भी स्वादिष्ठ भोजन बनाकर अपने पिता के पास ले आया, और उसने कहा, “हे मेरे पिता, उठकर अपने पुत्र के अहेर का माँस खा, ताकि मुझे जी से आशीर्वाद दे।” ३२ उसके पिता इसहाक ने पूछा, “तू कौन है?” उसने कहा, “मैं तेरा जेठा पुत्र एसाव हूँ।” ३३ तब इसहाक ने अत्यन्त थरथर कँपते हुए कहा, “फिर वह कौन था जो अहेर करके मेरे पास ले आया था, और मैंने तेरे आपने से पहले सब में से कुछ कुछ खा लिया और उसको आशीर्वाद दिया? वरन् उसको आशीष लगाई भी रहेगी।” ३४ अपने पिता की यह बात सनते ही एसाव ने अत्यन्त ऊँचे और दुख भेरे स्वर से चिल्लाकर अपने पिता से कहा, “हे मेरे पिता, मुझ को भी आशीर्वाद दे।” ३५ उसने कहा, “तेरा भाई धूर्ता से आया, और तेरे आशीर्वाद को लेकर चला गया।” ३६ उसने कहा, “क्या उसका नाम याकूब यथार्थ नहीं रखा गया? उसने मुझे दो बार अड़गांग मारा, मेरा पहलौठे का अधिकार तो उसने ले ही लिया था; और अब देख, उसने मेरा आशीर्वाद भी ले लिया है।” फिर उसने कहा, “क्या तू मेरे लिये भी कोई आशीर्वाद नहीं सोच रखा है?” ३७ इसहाक ने एसाव को उत्तर देकर कहा, “सुन, मैंने उसको तेरा स्वामी ठहराया, और उसके सब भाइयों को उसके अधीन कर दिया, और अनाज और नया दाखमधू देकर उसको पुष किया है। इसलिए अब, हे मेरे पुत्र, मैं तेरे लिये क्या करूँ?” ३८ एसाव ने अपने पिता से कहा, “हे मेरे पिता, क्या तेरे मन में एक ही आशीर्वाद है? हे मेरे पिता, मुझ को भी आशीर्वाद दे।” यह कहकर एसाव फूट फूटकर रोया। ३९ उसके पिता इसहाक ने उससे कहा, “सुन, तेरा निवास उपजाऊ भूमि से दूर हो, और ऊपर से आकाश की ओस उस पर न पढ़े।” ४० तू अपनी तलवार के बल से जीवित रहे, और अपने भाई के अधीन तो होए; पर जब तू स्वाधीन हो जाएँगा, तब उसके जाएँ को अपने कंधे पर से तोड़ फेंके।” ४१ एसाव ने तो याकूब से अपने पिता के दिए हुए आशीर्वाद के कारण बैरे रहा; और उसने सोचा, “मेरे पिता के अन्तकाल का दिन निकट है, फिर मैं अपने

भाई याकूब को घात कस्संगा।” ४२ जब रिबका को अपने पहलौठे पुत्र एसाव की ये बातें बताई गई, तब उसने अपने छोटे पुत्र याकूब को बुलाकर कहा, “सुन, तेरा भाई एसाव तुझे घात करने के लिये अपने मन में धीरज रखे हुए है।” ४३ इसलिए अब, हे मेरे पुत्र, मेरी सुन, और हारान को मेरे भाई लाबान के पास भाग जा; ४४ और थोड़े दिन तक, अर्थात् जब तक तेरे भाई का क्रोध न उतरे तब तक उसी के पास रहना। ४५ फिर जब तेरे भाई का क्रोध तुझ पर से उतरे, और जो काम तूने उससे किया है उसको वह भूल जाए; तब मैं तुझे वहाँ से बुलवा भेज़ूँगी। ऐसा क्यों हो कि एक ही दिन में मुझे तुम दोनों से वंचित होना पड़े?” ४६ फिर रिबका ने इसहाक से कहा, “हिंती लड़कियों के कारण मैं अपने प्राण से घिन करती हूँ; इसलिए यदि ऐसी हिंती लड़कियों में से, जैसी इस देश की लड़कियाँ हैं, याकूब भी एक को कहीं ब्याह ले, तो मेरे जीवन में क्या लाभ होगा?”

२८ तब इसहाक ने याकूब को बुलाकर आशीर्वाद दिया, और आज्ञा दी,

“तू किसी कनानी लड़की को न ब्याह लेना। २९ पद्धनराम में अपने नाना बूतौल के घर जाकर वहाँ अपने मामा लाबान की एक बेटी को ब्याह लेना। ३० सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुझे आशीष दे, और फलबन्त करके बढ़ाए, और तू राज्य-राज्य की मण्डली का मूल हो। ३१ वह तुझे और तेरे वंश को भी अब्राहम की सी आशीष दे, कि तू यह देश जिसमें तू परदेशी होकर रहता है, और जिसे परमेश्वर ने अब्राहम को दिया था, उसका अधिकारी हो जाए।” ३२ तब इसहाक ने याकूब को विदा किया, और वह पद्धनराम को अरामी बूतौल के पुत्र लाबान के पास चला, जो याकूब और एसाव की माता रिबका का भाई था। ३३ जब एसाव को पता चला कि इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद देकर पद्धनराम भेज दिया, कि वह वही से पत्री लाए, और उसको आशीर्वाद देने के समय यह आज्ञा भी दी, “तू किसी कनानी लड़की को ब्याह न लेना,” ३४ और याकूब माता-पिता की मानकर पद्धनराम को चल दिया। ३५ तब एसाव यह सब देखकर और यह भी सोचकर कि कनानी लड़कियाँ मेरे पिता इसहाक को बुरी लगती हैं, ३६ अब्राहम के पुत्र इश्माएल के पास गया, और इश्माएल की बेटी महलत को, जो नबायोत की बहन थी, ब्याह कर अपनी पत्रियों में मिला लिया। ३७ याकूब बेरेशी से निकलकर हारान की ओर चला। ३८ और उसने किसी स्थान में पहुँचकर रात वही बिताने का विचार किया, क्योंकि सूर्य अस्त हो गया था; इसलिए उसने उस स्थान के पथरों में से एक पथर ले अपना तकिया बनाकर रखा, और उसी स्थान में सो गया। ३९ तब उसने स्वप्न में क्या देखा, कि एक सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी है, और उसका सिरा स्वर्ग पर पहुँचा है; और परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ाते-उतरते हैं। ४० और यहोवा उसके ऊपर खड़ा होकर कहता है, “मैं यहोवा, तेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का भी परमेश्वर हूँ; जिस भूमि पर तू लेता है, उसे मैं तुझको और तेरे वंश को दँगा। ४१ और तेरा वंश भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत होगा, और पश्चिम, पूरब, उत्तर, दक्षिण, चारों ओर फैलता जाएगा; और तेरे तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएंगे। ४२ और सुन, मैं तेरे संग रहूँगा, और जहाँ कहीं तू जाएँ वहाँ तेरी रक्षा करूँगा, और तुझे इस देश में लौटा ले आऊँगा: मैं अपने को हुए को जब तक पूरा न कर लूँ तब तक तुझको न छोड़ूँगा।” ४३ तब याकूब जाग उठा, और कहने लगा, “मिश्चय इस स्थान में यहोवा है; और मैं इस बात को न जानता था।” ४४ और भय खाकर उसने कहा, “यह स्थान क्या ही भयनक है! यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता; वरन् यह स्वर्ग का फाटक ही होगा।” ४५ भोर को याकूब उठा, और अपने तकिये का पथर लेकर उसका खम्भा खड़ा किया, और उसके सिरे पर तेल

डाल दिया। १९ और उसने उस स्थान का नाम बेतेल रखा; पर उस नगर का नाम फहले लूज था। २० याकूब ने यह मन्नत मानी, “यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे, और मुझे खाने के लिये गोटी, और पहनने के लिये कपड़ा दे, २१ और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेत्र से लौट आऊँ; तो यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा। २२ और यह पत्थर, जिसका मैंने खम्भा खड़ा किया है, परमेश्वर का भवन ठहरेगा: और जो कुछ तू मुझे दे उसका दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूँगा।”

२३ फिर याकूब ने अपना मार्ग लिया, और पूर्वियों के देश में आया। २४ और उसने दृष्टि करके क्या देखा, कि मैदान में एक कुआँ है, और उसके पास भेड़-बकरियों के तीन झूण्ड बैठे हुए हैं, क्योंकि जो पत्थर उस कुएँ के मुँह पर धारा रहता था, जिसमें से झूण्डों को जल पिलाया जाता था, वह भारी था। २५ और जब सब झूण्ड वहाँ इकट्ठे हो जाते तब चरवाहे उस पत्थर को कुएँ के मुँह पर से लुटकाकर भेड़-बकरियों को पानी पिलाते, और फिर पत्थर को कुएँ के मुँह पर ज्यों का त्यों रख देते थे। २६ अतः याकूब ने चरवाहों से पछा, “हे मेरे भाइयों, तुम कहाँ के हो?” उन्होंने कहा, “हम हारान के हैं।” २७ तब उसने उनसे पछा, “क्या तुम नाहरे के पोते लाबान को जानते हो?” उन्होंने कहा, “हाँ, हम उसे जानते हैं।” २८ फिर उसने उनसे पछा, “क्या वह कुशल से है?” उन्होंने कहा, “हाँ, कुशल से है और वह देख, उसकी बेटी राहेल भेड़-बकरियों को लिये हए चर्ती आती है।” २९ उसने कहा, “देखो, अभी तो दिन बहुत है, पशुओं के इकट्ठे होने का समय नहीं; इसलिए भेड़-बकरियों को जल पिलाकर फिर ले जाकर चराओ।” ३० उन्होंने कहा, “हम अभी ऐसा नहीं कर सकते, जब सब झूण्ड इकट्ठे होते हैं तब पत्थर कुएँ के मुँह से लुटकाया जाता है, और तब हम भेड़-बकरियों को पानी पिलाते हैं।” ३१ उनकी यह बातचीत हो रही थी, कि राहेल जो पशु चराया करती थी, अपने पिता की भेड़-बकरियों को लिये हए आ गई। ३२ अपने मामा लाबान की बेटी राहेल को, और उसकी भेड़-बकरियों को भी देखकर याकूब ने निकट जाकर कुएँ के मुँह पर से पत्थर को लुटकाकर अपने मामा लाबान की भेड़-बकरियों को पानी पिलाया। ३३ तब याकूब ने राहेल को चूमा, और ऊँचे स्वर से रोया। ३४ और याकूब ने राहेल को बता दिया, कि मैं तेरा फुफेरा भाई हूँ, अर्थात् रिबका का पुत्र हूँ। तब उसने दौड़कर अपने पिता से कह दिया। ३५ अपने भांजे याकूब का समाचार पाते ही लाबान उससे भेट करने को दौड़ा, और उसको गले लगाकर चूमा, फिर अपने घर ले आया। और याकूब ने लाबान से अपना सब वृत्तान्त वर्णन किया। ३६ तब लाबान ने याकूब से कहा, “तू तो सचमुच मेरी हड्डी और माँस है।” और याकूब एक महीना भर उसके साथ रहा। ३७ तब लाबान ने याकूब से कहा, “भाई-बन्धु होने के कारण तुम से मुफ्त सेवा कराना मेरे लिए उचित नहीं है; इसलिए कह मैं तुझे सेवा के बदले क्या दूँ?” ३८ लाबान की दो बेटियाँ थीं, जिनमें से बड़ी का नाम लिआ और छोटी का राहेल था। ३९ लिआ के तो धन्धती आँखें थीं, पर राहेल स्वप्नी और सुन्दर थीं। ४० इसलिए याकूब ने, जो राहेल से प्रीति रखता था, कहा, “मैं तेरी छोटी बेटी राहेल के लिये सत वर्ष तेरी सेवा करूँगा।” ४१ लाबान ने कहा, “उसे पारा ए पुस्त को देने से तुझको देना उत्तम होगा; इसलिए मेरे पास रह।” ४२ अतः याकूब ने राहेल के लिये सत वर्ष सेवा की, और वे उसको राहेल की प्रीति के कारण थोड़े ही दिनों के बाबर जान पड़े। ४३ तब याकूब ने लाबान से कहा, “मेरी पत्नी मुझे दे, और मैं उसके पास जाऊँगा, क्योंकि मेरा समय पूरा हो गया है।” ४४ अतः लाबान ने उस स्थान के सब मनुष्यों को बुलाकर इकट्ठा किया, और एक भोज दिया। ४५ साँझ के समय वह अपनी बेटी लिआ को याकूब के

पास ले गया, और वह उसके पास गया। ४६ लाबान ने अपनी बेटी लिआ को उसकी दासी होने के लिये अपनी दासी जिल्पा दी। ४७ भोर को मालम हुआ कि यह तो लिआ है, इसलिए उसने लाबान से कहा, “यह तूने मुझसे क्या किया है? मैंने तेरे साथ रहकर जो तेरी सेवा की, तो क्या राहेल के लिये नहीं की? फिर तुमें मुझसे क्यों ऐसा छल किया है?” ४८ लाबान ने कहा, “हमारे यहाँ ऐसी रीति नहीं, कि बड़ी बेटी से पहले दूसरी का विवाह कर दें।” ४९ “इसका समाह हो पूरा कर; फिर दूसरी भी तुझे उस सेवा के लिये मिलेनी जो तू मेरे साथ रहकर और सात वर्ष तक करेगा।” ५० याकूब ने ऐसा ही किया, और लिआ के समाह को पूरा किया; तब लाबान ने उसे अपनी बेटी राहेल भी दी, कि वह उसकी पत्नी हो। ५१ लाबान ने अपनी बेटी राहेल की दासी होने के लिये अपनी दासी बिल्हा को दिया। ५२ तब याकूब राहेल के पास भी गया, और उसकी प्रीति लिआ से अधिक उसी पर हड्ड, और उसने लाबान के साथ रहकर सात वर्ष और उसकी सेवा की। ५३ जब यहोवा ने देखा कि लिआ अप्रिय हुई, तब उसने उसकी कोख खोली, पर राहेल बॉँझ रही। ५४ अतः लिआ गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने यह कहकर उसका नाम स्टेन रखा, “यहोवा ने मेरे दुःख पर दृष्टि की है, अब मेरा पति मुझसे प्रीति रखेगा।” ५५ फिर वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; तब उसने यह कहा, “यह सुनकर कि मैं अप्रिय हूँ यहोवा ने मुझे यह भी पुत्र दिया।” इसलिए उसने उसका नाम शिमोन रखा। ५६ फिर वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उसने कहा, “अब की बार तो मेरा पति मुझसे मिल जाएगा, क्योंकि उससे मेरे तीन पुत्र उत्पन्न हुए।” इसलिए उसका नाम लेवी रखा गया। ५७ और फिर वह गर्भवती हुई और उसके एक और पुत्र उत्पन्न हुआ; और उसने कहा, “अब की बार तो मैं यहोवा का धन्यवाद करूँगी।” इसलिए उसने उसका नाम यहदा रखा; तब उसकी कोख बन्द हो गई।

३० जब राहेल ने देखा कि याकूब के लिये मुझसे कोई सन्तान नहीं होती, तब वह अपनी बहन से डाह करने लगी और याकूब से कहा, “मुझे भी सन्तान दे, नहीं तो मर जाऊँगी।” ३१ तब याकूब ने राहेल से क्रोधित होकर कहा, “क्या मैं परमेश्वर हूँ? तेरी कोख तो उसी ने बन्द कर रखी है।” ३२ राहेल ने कहा, “अच्छा, मेरी दासी बिल्हा हाजिर है; उसी के पास जा, वह मेरे घुटों पर जेनेगी, और उसके द्वारा मेरा भी घर बसेगा।” ३३ तब उसने उसे अपनी दासी बिल्हा को दिया, कि वह उसकी पत्नी हो; और याकूब उसके पास गया। ३४ और बिल्हा गर्भवती हुई और याकूब से उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ३५ तब राहेल ने कहा, “परमेश्वर है मेरा न्याय चुकाया और मेरी सुनकर मुझे एक पुत्र दिया।” इसलिए उसने उसका नाम दान रखा। ३६ राहेल की दासी बिल्हा फिर गर्भवती हुई और याकूब से एक पुत्र और उत्पन्न हुआ। ३७ राहेल ने कहा, “मैंने अपनी बहन के साथ बड़े बल से लिपटकर मल्लयुद्ध किया और अब जीत गई।” अतः उसने उसका नाम नमाली रखा। ३८ जब लिआ ने देखा कि मैं जनने से रहित हो गई हूँ, तब उसने अपनी दासी जिल्पा को लेकर याकूब की पत्नी होने के लिये दे दिया। ३९ और लिआ की दासी जिल्पा के भी याकूब से एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ४० तब लिआ ने कहा, “अहो भाय!” इसलिए उसने उसका नाम गाद रखा। ४१ फिर लिआ की दासी जिल्पा के याकूब से एक और पुत्र उत्पन्न हुआ। ४२ तब लिआ ने कहा, “मैं धन्य हूँ; निश्चय छिँयाँ मुझे धन्य कहेंगी।” इसलिए उसने उसका नाम अशेष रखा। ४३ गेहूँ की कटनी के दिनों में रूबेन को मैदान में दूदाफल मिले, और वह उनको अपनी माता लिआ के पास ले गया, तब राहेल ने लिआ से कहा, “अपने पुत्र

के दूदाफलों में से कुछ मुझे दे।” १५ उसने उससे कहा, “तूने जो मेरे पति को ले लिया है क्या छोटी बात है? अब क्या तू मेरे पुत्र के दूदाफल भी लेना चाहती है?” राहेल ने कहा, “अच्छा, तौर पुत्र के दूदाफलों के बदले वह आज रात को तेरे संग सोएगा।” १६ सोंज़ा को जब याकूब मैदान से आ रहा था, तब लिआ उससे भेट करने को निकली, और कहा, “तुझे मेरे ही पास आना होगा, क्योंकि मैंने अपने पुत्र के दूदाफल देकर तुझे सचमुच मोल लिया।” तब वह उस रात को उसी के संग सोया। १७ तब परमेश्वर ने लिआ की सुनी, और वह गर्भवती हुई और याकूब से उसके पाँचवाँ पुत्र उत्पन्न हुआ। १८ तब लिआ ने कहा, “मैंने जो अपने पति को अपनी दासी दी, इसलिए परमेश्वर ने मुझे मेरी मजदूरी दी है।” इसलिए उसने उसका नाम इस्साकार रखा। १९ लिआ फिर गर्भवती हुई और याकूब से उसके छठवाँ पुत्र उत्पन्न हुआ। २० तब लिआ ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे अच्छा दान दिया है; अब की बार मेरा पति मेरे संग बना रहेगा, क्योंकि मेरे उससे छ: पुत्र उत्पन्न हो चुके हैं।” इसलिए उसने उसका नाम जबलून रखा। २१ तपश्चात् उसके एक बेटी भी हुई, और उसने उसका नाम दीना रखा। २२ परमेश्वर ने राहेल की भी सुधि ली, और उसकी सुनकर उसकी कोख खोली। २३ इसलिए वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; तब उसने कहा, “परमेश्वर ने मेरी नामधाराई को दूर कर दिया है।” २४ इसलिए उसने यह कहकर उसका नाम यूसुफ रखा, “परमेश्वर मुझे एक पुत्र और भी देगा।” २५ जब राहेल से यूसुफ उत्पन्न हुआ, तब याकूब ने लाबान से कहा, “मुझे विदा कर कि मैं अपने देश और स्थान को जाऊँ।” २६ मेरी छियाँ और मेरे बच्चे, जिनके लिये मैंने तेरी सेवा की है, उन्हें मुझे दे कि मैं चला जाऊँ; तू तो जानता है कि मैंने तेरी कैसी सेवा की है।” २७ लाबान ने उससे कहा, “यदि तेरी दृष्टि में मैंने अनुग्रह पाया है, तो यही रह जा; क्योंकि मैंने अनुभव से जान लिया है कि यहोवा ने तेरे कारण से मुझे आशीष दी है।” २८ फिर उसने कहा, “तू ठीक बता कि मैं तुझको क्या दूँ, और मैं उसे दूँगा।” २९ उनने उससे कहा, “तू जानता है कि मैंने तेरी कैसी सेवा की, और तेरे पश्च मेरे पास किस प्रकार से रहे।” ३० मेरे आने से पहले वे कितने थे, और अब कितने हो गए हैं; और यहोवा ने मेरे आने पर तुझे आशीष दी है। पर मैं अपने घर का काम कब करने पाऊँगा?” ३१ उसने फिर कहा, “मैं तुझे क्या दूँ?” याकूब ने कहा, “तू मुझे कुछ न दे; यदि तू मेरे लिये एक काम करे, तो मैं फिर तेरी भेड़-बकरियों को चराऊँगा, और उनकी रक्षा करूँगा।” ३२ मैं आज तेरी सब भेड़-बकरियों के बीच होकर निकलूँगा, और जो भेड़ या बकरी चित्तीवाली या चितकबरी हो, और जो भेड़ काली हो, और जो बकरी चितकबरी और चित्तीवाली हो, उन्हें मैं अलग कर रखूँगा; और मेरी मजदूरी में वे ही ठहरेंगी। ३३ और जब अगे को मेरी मजदूरी की चर्चा तैरे सामने चले, तब धर्म की यही साक्षी होगी; अर्थात् बकरियों में से जो कोई न चित्तीवाली न चितकबरी हो, और भेड़ों में से जो कोई काली न हो, यदि मेरे पास निकलें, तो चोरी की ठहरेंगी।” ३४ तब लाबान ने कहा, “तेरे कहने के अनुसार हो।” ३५ अतः उसने उसी दिन सब धारीवाले और चित्तकबरे बकरों, और सब चित्तीवाली और चितकबरी बकरियों को, अर्थात् जिनमें कुछ उजलापन था, उनको और सब काली भेड़ों को भी अलग करके अपने पुत्रों के हाथ सौप दिया। ३६ और उसने अपने और याकूब के बीच में तीन दिन के मार्ग का अन्तर ठहराया; और याकूब लाबान की भेड़-बकरियों को चराने लगा। ३७ तब याकूब ने चिनार, और बादाम, और अर्मान बृक्षों की हरी-हरी छड़ियाँ लेकर, उनके छिलके कहीं-कहीं छील के, उन्हें धारीदार बना दिया, ऐसी कि उन छड़ियों की सफेदी दिखाई देने लगी। ३८ और तब छीली हुई छड़ियों को भेड़-बकरियों के सामने उनके पानी पीने के कठौतों में खड़ा

किया; और जब वे पानी पीने के लिये आई तब गाभिन हो गई। ३९ छड़ियों के सामने गाभिन होकर, भेड़-बकरियाँ धारीवाले, चित्तीवाले और चितकबरे बच्चे जनी। ४० तब याकूब ने भेड़ों के बच्चों को अलग-अलग किया, और लाबान की भेड़-बकरियों के मुँह को चित्तीवाले और सब काले बच्चों की ओर कर दिया; और अपने झुण्डों को उनसे अलग रखा, और लाबान की भेड़-बकरियों से मिलने न दिया। ४१ और जब जब बलवन्त भेड़-बकरियाँ गाभिन होती थीं, तब-तब याकूब उन छड़ियों को कठौतों में उनके सामने रख देता था; जिससे वे छड़ियों को देखती हुई गाभिन हो जाएँ। ४२ पर जब निर्बल भेड़-बकरियाँ गाभिन होती थीं, तब वह उन्हें उनके अगे नहीं रखता था। इससे निर्बल-निर्बल लाबान की रही, और बलवन्त-बलवन्त याकूब की हो गई। ४३ इस प्रकार वह पुस्त अत्यन्त धनाढ़ी हो गया, और उसके बहुत सी भेड़-बकरियाँ, और दासियाँ और दास और ऊँट और गढ़े हो गए।

३१ फिर लाबान के पुत्रों की ये बातें याकूब के सुनने में आईं, “याकूब ने हमारे पिता का सब कुछ छीन लिया है, और हमारे पिता के धन के कारण उसकी यह प्रतिष्ठा है।” ४४ और याकूब ने लाबान के चेहरे पर दृष्टि की ओर ताड़ लिया, कि वह उसके प्रति पहले के समान नहीं है। ४५ तब यहोवा ने याकूब से कहा, “अपने पितरों के देश और अपनी जन्म-भूमि को लौट जा, और मैं तेरे संग रहूँगा।” ४६ तब याकूब ने राहेल और लिआ को, मैदान में अपनी भेड़-बकरियों के पास बुलाकर कहा, ४७ “तुम्हारे पिता के चेहरे से मुझे समझ पड़ता है, कि वह तो मुझे पहले के समान अब नहीं देखता; पर मेरे पिता का परमेश्वर मेरे संग है।” ४८ और तुम भी जानती हो, कि मैंने तुम्हारे पिता की सेवा शक्ति भर की है। ४९ पिर भी तुम्हारे पिता ने मुझसे छल करके मेरी मजदूरी को दस बार बदल दिया; परन्तु परमेश्वर ने उसको मेरी हानि करने नहीं दिया। ५० जब उनसे कहा, “चित्तीवाले बच्चे तेरी मजदूरी ठहरेंगे,” तब सब भेड़-बकरियाँ चित्तीवाले ही जनने लगी, और जब उसने कहा, ‘धारीवाले बच्चे तेरी मजदूरी ठहरेंगे,’ तब सब भेड़-बकरियाँ धारीवाले जनने लगी। ५१ इस रीत से परमेश्वर ने तुम्हारे पिता के पशु लेकर मुझ को दे दिए। ५२ भेड़-बकरियों के गाभिन होने के समय मैंने स्वर्ण में क्या देखा, कि जो बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं, वे धारीवाले, चित्तीवाले, और धब्बेवाले हैं; क्योंकि जो कुछ लाबान तुझ से करता है, वह मैंने देखा है। ५३ मैं उस बेतोल का परमेश्वर हूँ, जहाँ तूने एक खम्मे पर तेल डाल दिया था और मेरी मन्त्र मानी थी। अब छल, इस देख से निकलकर अपनी जन्म-भूमि को लौट जा।” ५४ तब राहेल और लिआ ने उससे कहा, “क्या हमारे पिता के घर में अब भी हमारा कुछ भाग या अंश बचा है? ५५ क्या हम उसकी दृष्टि में पराए न ठहरी? देख, उसने हमको तो बेच डाला, और हमारे रसे को खा बैठा है। ५६ इसलिए परमेश्वर ने हमारे पिता का जितना धन ले लिया है, वह हमारा, और हमारे बच्चों का है; अब जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है, वही कर।” ५७ तब याकूब ने अपने बच्चों और छियों को ऊँटों पर चढ़ाया; ५८ और जितने पशुओं को वह पढ़नराम में इकड़ा करके धनाढ़ी हो गया था, सब को कलान में अपने पिता इसहाक के पास जाने की मनसा से, साथ ले गया। ५९ लाबान तो अपनी भेड़ों का ऊन करतने के लिये चला गया था, और राहेल अपने पिता के गृहदेवाताओं को चुरा ले गई। ६० अतः याकूब लाबान अरमानी के पास से चोरी से चला गया, उसको न बताया कि मैं भागा जाता हूँ। ६१ वह अपना सब कुछ लेकर

भागा, और महानद के पार उत्तरकर अपना मुँह गिलाद के पहाड़ी देश की ओर किया। २८ तीसरे दिन लाबान को समाचार मिला कि याकूब भाग गया है। २९ इसलिए उसने अपने भाइयों को साथ लेकर उसका सात दिन तक पीछा किया, और गिलाद के पहाड़ी देश में उसको जा पड़ा। ३० तब परमेश्वर ने रात के स्वप्न में अरामी लाबान के पास आकर कहा, “सावधान रह, तू याकूब से न तो भला कहना और न बुरा।” ३१ और लाबान याकूब के पास पहुँच गया। याकूब अपना तम्बू गिलाद नामक पहाड़ी देश में खड़ा किए पड़ा था, और लाबान ने भी अपने भाइयों के साथ अपना तम्बू उसी पहाड़ी देश में खड़ा किया। ३२ तब लाबान याकूब से कहने लगा, “तू मैं यह क्या किया, कि मेरे पास से चोरी से चला आया, और मेरी बेटियों को ऐसा ले आया, जैसा कोई तलवार के बल से बन्दी बनाई गई हैं? ३३ तू क्यों चुपके से भाग आया, और मुझसे बिना कुछ कहे मेरे पास से चोरी से चला आया; नहीं तो मैं तुझे अपनद के साथ मुटंग और बींगा बजवाते, और गीत गवाते विदा करता? ३४ तू तो तो मुझे अपने बेटे-बेटियों को चूमने तक न दिया? तू तो मूर्खता की है। ३५ तुम लोगों की हानि करने की शक्ति मेरे हाथ में तो है; पर तुम्हरे पिता के परमेश्वर ने मुझसे बीती हुई रात में कहा, ‘‘सावधान रह, याकूब से न तो भला कहना और न बुरा।’’ ३६ भला, अब तू अपने पिता के घर का बड़ा अभिलाषी होकर चला आया तो चला आया, पर मेरे देवताओं को तू क्यों चुरा ले आया है?” ३७ याकूब ने लाबान को उत्तर दिया, “मैं यह सोचकर डर गया था कि कहीं तू अपनी बेटियों को मुझसे छीन न ले। ३८ जिस किरी के पास तू अपने देवताओं को पाए, वह जीवित न बचेगा। मेरे पास तेरा जो कुछ निकले, उसे भाई-बन्धुओं के सामने पहचानकर ले ले।” क्योंकि याकूब न जानता था कि राहेल ग्रहदेवताओं को चुरा ले आई है। ३९ यह सुनकर लाबान, याकूब और लिला और दोनों दासियों के तम्बूओं में गया; और कुछ न मिला। तब लिला के तम्बू में से निकलकर राहेल के तम्बू में गया। ४० राहेल तो ग्रहदेवताओं को ऊँट की काठी में रखकर उन पर बैठी थी। लाबान ने उसके सारे तम्बू में टटोलने पर भी उहँने न पाया। ४१ राहेल ने अपने पिता से कहा, “हे मेरे प्रभु! इससे अप्रसन्न न हो, कि मैं तेरे सामने नहीं उठी; क्योंकि मैं मासिक धर्म से हूँ।” ४२ अतः उसके ढूँढ-ढूँढ करने पर भी ग्रहदेवता उसको न मिले। ४३ तब याकूब कोधित होकर लाबान से झगड़ने लगा, और कहा, “मेरा क्या अपराध है? मेरा क्या पाप है, कि तने इतना कोधित होकर मेरा पीछा किया है? ४४ तू तो जो मेरी सारी सामग्री को टटोलकर देखा, तो तुझको अपने घर की सारी सामग्री में से क्या मिला? कुछ मिला हो तो उसको यहाँ अपने और मेरे भाइयों के सामने रख दे, और वे हम दोनों के बीच न्याय करें। ४५ इन बीस वर्षों से मैं तेरे पास रहा; इनमें न तो तेरी भेड़-बकरियों के गर्भ गिरे, और न तेरे मेड़ों का मौस मैंने कभी खाया। ४६ जिसे जंगली जन्तुओं ने फाड़ डाला उसको मैं तेरे पास न लाता था, उसकी हानि मैं ही उठाता था; चाहे दिन को चोरी जाता चाहे रात को, तू मुझे ही से उसको ले लेता था। ४७ मेरी तो यह दशा थी कि दिन को तो घाम और रात को पाला मुझे खा गया; और नीद मेरी आँखों से भाग जाती थी। ४८ बीस वर्ष तक मैं तेरे घर में रहा; चौदह वर्ष तो मैंने तेरी दोनों बेटियों के लिये, और छः वर्ष तेरी भेड़-बकरियों के लिये सेवा की; और तूने मेरी मजदूरी को दस बार बदल डाला। ४९ मेरे पिता का परमेश्वर अर्थात् अब्राहम का परमेश्वर, जिसका भय इसहाक भी मानता है, यदि मेरी ओर न होता, तो मिश्चय त अब मुझे खाली हाथ जाने देता। मेरे दूँख और मेरे हाथों के परश्चम को देखकर परमेश्वर ने बीती हुई रात में तुझे डॉटा।” ५० लाबान ने याकूब से कहा, “ये बेटियों तो मेरी ही हैं, और ये पुत्र भी मेरी ही हैं, और ये भेड़-बकरियाँ भी मेरी ही हैं, और जो कुछ तुझे देख पड़ता है वह सब मेरा ही है परन्तु अब मैं अपनी इन बेटियों

और इनकी सन्तान से क्या कर सकता हूँ? ५१ अब आ, मैं और तू दोनों आपस में बाचा बांधें, और वह मेरे और तेरे बीच साक्षी ठहरी रहे।” ५२ तब याकूब ने एक पथर लेकर उसका खम्भा खड़ा किया। ५३ तब याकूब ने अपने भाई-बन्धुओं से कहा, “पथर इकट्ठा करो,” यह सुनकर उन्होंने पथर इकट्ठा करके एक ढेर लगाया और वही ढेर के पास उन्होंने भोजन किया। ५४ उस ढेर का नाम लाबान ने तो जैगर सहादूथा, पर याकूब ने गिलियाद रखा। ५५ लाबान ने कहा, “यह ढेर आज से मेरे और तेरे बीच साक्षी रहेगा।” इस कारण उसका नाम गिलियाद रखा गया, ५६ और मिस्पा भी; क्योंकि उसने कहा, “जब हम एक दूसरे से दूर रहें तब यहोवा मेरी और तेरी देख-भाल करता रहे। ५७ यदि तू मेरी बेटियों को दूँख दे, या उनके सिवाय और बिंयाँ ब्याह ते, तो हमारे साथ कोई मनुष्य तो न रहेगा; पर देख मेरे तेरे बीच में परमेश्वर साक्षी रहेगा।” ५८ फिर लाबान ने याकूब से कहा, “इस ढेर को देख और इस खम्भे को भी देख, जिनको मैंने अपने और तेरे बीच में खड़ा किया है। ५९ यह ढेर और यह खम्भा दोनों इस बात के साक्षी रहें कि हानि करने की मनसा से न तो मैं इस ढेर को लाँघकर तेरे पास जाऊँगा, न तू इस ढेर और इस खम्भे को लाँघकर मेरे पास आएगा। ६० अब्राहम और नाहर और उनके पिता; तीनों का जो परमेश्वर है, वही हम दोनों के बीच न्याय करें।” तब याकूब ने उसकी शपथ खाई जिसका भय उसका पिता इसहाक मानता था। ६१ और याकूब ने उस पहाड़ पर बलि चढ़ाया, और अपने भाई-बन्धुओं को भोजन करने के लिये बुलाया, तब उन्होंने भोजन करके पहाड़ पर रात बिताई। ६२ भोर को लाबान उठा, और अपने बेटे-बेटियों को चूमकर और आशीर्वाद देकर चल दिया, और अपने स्थान को लौट गया।

३२ याकूब ने भी अपना मार्ग लिया और परमेश्वर के दूर उसे आ मिले।

१ उनको देखते ही याकूब ने कहा, “यह तो परमेश्वर का दल है।” इसलिए उसने उस स्थान का नाम महनैम रखा। २ तब याकूब ने सेईंदे देश में, अर्थात् एदोम देश में, अपने भाई एसाव के पास अपने आगे दूर भेज दिए। ३ और उसने उहँने यह आजा दी, “मेरे प्रभु एसाव से यह कहना; कि तेरा दास याकूब तुझ से यह कहता है, कि मैं तालान के यहाँ परदेशी होकर अब तक रहा; ४ और मेरे पास गाय-बैल, गधे, भेड़-बकरियाँ, और दास-दासियाँ हैं और मैंने अपने प्रभु के पास इसलिए सन्देश भेजा है कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो।” ५ वे दूर याकूब के पास लौटकर कहने लगे, “हम तेरे भाई एसाव के पास गए थे, और वह भी तुझ से भेंट करने को चार सौ पुस्त संग लिये हुए चला आता है।” ६ तब याकूब बहुत डर गया, और संकट में पड़ा; और यह सोचकर, अपने साथियों के, और भेड़-बकरियों, और गाय-बैलों, और ऊँटों के भी अलग-अलग दो दल कर लिये, ७ कि यदि एसाव आकर पहले दल को मारने लगे, तो दूसरा दल भागकर बच जाएगा। ८ फिर याकूब ने कहा, “हे यहोवा, हे मेरे दादा अब्राहम के परमेश्वर, हे मेरे पिता इसहाक के परमेश्वर, तूने तो मुझसे कहा था कि अपने देश और जन्म-भूमि में लौट जा, और मैं तेरी भलाई करूँगा। ९ तूने जो-जो काम अपनी करणा और सच्चाई से अपने दास के साथ किए हैं, कि मैं जो अपनी छड़ी ही लेकर इस वरदन नदी के पार उत्तर आया, और अब मैं दो दल हो गए हैं, तेरे ऐसे-ऐसे कामों में से एक के भी योग्य तो नहीं हूँ। १० मेरी बिनी तुम्हारे सुनकर मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से बचा मैं तो उससे डरता हूँ, कहीं ऐसा न हो कि वह आकर मुझे और माँ समेत लड़कों को भी मार डाले। ११ तूने तो कहा है, कि मैं निश्चय तेरी भलाई करूँगा, और तेरे बंश को समुद्र के रेतकणों के समान बहुत करूँगा, जो बहुतायत के मारे गिने नहीं जा सकते।” १२ उसने उस दिन की रात वही बिताई, और जो कुछ उसके पास था उसमें से अपने भाई एसाव की भेंट के लिये छाँट छाँटकर निकाला;

१४ अर्थात् दो सौ बकरियाँ, और बीस बकरे, और दो सौ भेड़ें, और बीस मेडे, १५ और बच्चों समेत दृथ देनेवाली तीस ऊँटनियाँ, और चालीस गायें, और दस बैल, और बीस गदहियाँ और उनके दस बच्चे। १६ इनको उसने झूण्ड-झूण्ड करके, अपने दासों को सौंपकर उनसे कहा, “मेरे आगे बढ़ जाओ; और झूण्डों के बीच-बीच में अन्तर रखो।” १७ फिर उसने आगते झूण्ड के रखवाले को यह आज्ञा दी, “जब मेरा बाई एसाव तुझे मिले, और पूछने लगे, ‘तू किसका दास है, और कहाँ जाता है, और ये जो तेरे आगे-आगे हैं, वे किसके हैं?’ १८ तब कहना, ‘यह तेरे दास याकूब के हैं। हे मेरे प्रभु एसाव, ये भेट के लिये तेरे पास भेजे गए हैं, और वह आप भी हमारे पीछे-पीछे आ रहा है।’” १९ और उसने दूसरे और तीसरे रखवालों को भी, बरन उन सभी को जो झूण्डों के पीछे-पीछे थे ऐसी ही आज्ञा दी कि जब एसाव तुम को मिले तब इसी प्रकार उससे कहना। २० और यह भी कहना, “तेरा दास याकूब हमारे पीछे-पीछे आ रहा है।” क्योंकि उसने यह सोचा कि यह भेट जो मेरे आगे-आगे जाती है, इसके द्वारा मैं उसके क्रोध को शान्त करके तब उसका दर्शन करूँगा; हो सकता है वह मुझसे प्रसन्न हो जाए। २१ इसलिए वह भेट याकूब से पहले पार उतर गई, और वह आप उस रात को छवनी में रहा। २२ उसी रात को वह उठा और अपनी दोनों छियों, और दोनों दासियों, और ग्यारहों लड़कों को संग लेकर घाट से यब्लोक नदी के पार उतर गया। २३ उसने उन्हें उस नदी के पार उतार दिया, बरन अपना सब कुछ पार उतार दिया। २४ और याकूब आप अकेला रह गया; तब कोई पुष्प आकर पौ फटने तक उससे मल्लयुद्ध करता रहा। २५ जब उसने देखा कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता, तब उसकी जाँच की नस को छुआ; और याकूब की जाँच की नस उससे मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई। २६ तब उसने कहा, “मुझे जाने दे, क्योंकि भोर होनेवाला है।” याकूब ने कहा, “जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूँगा।” २७ और उसने याकूब से पछा, “तेरा नाम क्या है?” उसने कहा, “याकूब।” २८ उसने कहा, “तेरा नाम अब याकूब नहीं, परन्तु इस्माइल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हाता है।” २९ याकूब ने कहा, “मैं विनीती करता हूँ, मुझे अपना नाम बता।” उसने कहा, “तू मेरा नाम क्यों पूछता है?” तब उसने उसको वही आशीर्वाद दिया। ३० तब याकूब ने यह कहकर उस स्थान का नाम पनीएल रखा; “परमेश्वर को आमने-सामने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है।” ३१ पनीएल के पास से चलते-चलते सूर्य उदय हो गया, और वह जाँच से लैंगड़ाता था। ३२ इस्माइली जो पशुओं की जाँच की जोड़वाले जंघानस को आज के दिन तक नहीं खाते, इसका कारण यही है कि उस पुष्प ने याकूब की जाँच के जोड़ में जंघानस को छुआ था।

३३ और याकूब ने आँखें उठाकर यह देखा, कि एसाव चार सौ पुष्प संग लिये हुए चला आता है। तब उसने बच्चों को अलग-अलग बाँटकर लिआ और राहेल और दोनों दासियों को सौंप दिया। ३४ और उसने सब के आगे लड़कों समेत दासियों को उसके पीछे लड़कों समेत लिआ को, और सब के पीछे राहेल और युसफ को रखा, ३५ और आप उन सब के आगे बढ़ा और सात बार भूमि पर गिरकर दण्डवत की, और अपने भाई के पास पहुँचा। ३६ तब एसाव उससे भेट करने को दौड़ा, और उसको हृदय से लगाकर, गले से लिपटकर चूमा; फिर वे दोनों रो पड़े। ३७ तब उसने आँखें उठाकर छियों और बच्चों को देखा; और पछा, “ये जो तेरे साथ हैं वे कौन हैं?” उसने कहा, “ये तेरे दास के लड़के हैं, जिन्हें परमेश्वर ने अनुग्रह करके मुझ को दिया है।” ३८ तब लड़कों समेत दासियों ने निकट आकर दण्डवत किया। ३९ फिर लड़कों

समेत लिआ निकट आई, और उन्होंने भी दण्डवत किया; अन्त में यसुफ और राहेल ने भी निकट आकर दण्डवत किया। ४० तब उसने पछा, “तेरा यह बड़ा दल जो मुझ को मिला, उसका क्या प्रयोजन है?” उसने कहा, “यह कि मेरे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो।” ४१ एसाव ने कहा, “हे मेरे भाई, मेरे पास तो बहुत है; जो कुछ तेरा है वह तेरा ही रहे।” ४२ याकूब ने कहा, “नहीं नहीं, यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो मेरी भेट ग्रहण कर: क्योंकि मैंने तेरा दर्शन पाकर, मानो परमेश्वर का दर्शन पाया है, और तू मुझसे प्रसन्न हुआ है।” ४३ इसलिए यह भेट, जो तुझे भेजी गई है, ग्रहण कर: क्योंकि परमेश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया है, और मेरे पास बहुत है।” जब उसने उससे बहुत अग्रह किया, तब उसने भेट को ग्रहण किया। ४४ फिर एसाव ने कहा, “आ, हम बढ़ चलें: और मैं तेरे आगे-आगे चलूँगा।” ४५ याकूब ने कहा, “हे मेरे प्रभु, तू जानता ही है कि मैं साथ सुकुमार लड़के, और दृथ नेहारी भेड़-बकरियाँ और आगे याद नहीं हैं; यदि ऐसे पशु एक दिन भी अधिक हाँके जाएँ, तो सब के सब मर जाएँगे।” ४६ इसलिए मेरा प्रभु अपने दास के आगे बढ़ जाए, और मैं इन पशुओं की गति के अनुसार, जो मेरे आगे हैं, और बच्चों की गति के अनुसार धरि धरि चलकर सेईर में अपने प्रभु के पास पहुँचूँगा।” ४७ एसाव ने कहा, “तो अपने साथियों में से मैं कई एक तेरे साथ छोड़ जाऊँ।” उसने कहा, “यह क्यों? इतना ही बहुत है, कि मेरे प्रभु के अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे।” ४८ तब एसाव ने उसी दिन सेईर जाने को अपना मार्ग लिया। ४९ परन्तु याकूब वहाँ से निकलकर सुककोत को गया, और वहाँ अपने लिये एक घर, और पशुओं के लिये झोपड़े बनाए। इसी कारण उस स्थान का नाम सुककोत पड़ा। ५० और याकूब जो पढ़नाम से आया था, उसने कनान देश के शेकेम नगर के पास कुशल क्षेत्र से पहुँचकर नगर के सामने ढेरे खड़े किए। ५१ और भूमि के जिस खण्ड पर उसने अपना तम्बू खड़ा किया, उसको उसने शेकेम के पिता हमोर के पुत्रों के हाथ से एक सौ कसीतों में मौल लिया। ५२ और वहाँ उसने एक बेटी बनाकर उसका नाम एल-एनोह-इस्माइल रखा।

३४ एक दिन लिआ की बेटी दीना, जो याकूब से उत्पन्न हुई थी, उस देश की लड़कियों से भेट करने को निकली। १ तब उस देश के प्रधान हिल्बी हमोर के पुत्र शेकेम ने उसे देखा, और उसे ले जाकर उसके साथ कुर्कम करके उसको भ्रष्ट कर डाला। २ तब उसका मन याकूब की बेटी दीना से लग गया, और उसने उस कन्या से प्रेम की बातें की, और उससे प्रेम करने लगा। ३ अतः शेकेम ने अपने पिता हमोर से कहा, “मुझे इस लड़की को मेरी पत्नी होने के लिये दिला दे।” ४ और याकूब ने सुना कि शेकेम ने मेरी बेटी दीना को अशुद्ध कर डाला है, पर उसके पुत्र उस समय पशुओं के संग मैदान में थे, इसलिए वह उनके अने तक चुप रहा। ५ तब शेकेम का पिता हमोर निकलकर याकूब से बातचीत करने के लिये उसके पास गया। ६ याकूब के पुत्र यह सुनते ही मैदान से बहुत उदास और क्रोधित होकर आएँ; क्योंकि शेकेम ने याकूब की बेटी के साथ कुर्कम करके इस्माइल के घराने से मूर्खता का ऐसा काम किया था, जिसका करना अनुचित था। ७ हमोर ने उन सबसे कहा, “मेरे पुत्र शेकेम का मन तुम्हारी बेटी पर बहुत लगा है, इसलिए उसे उसकी पत्नी होने के लिये उसको दे दो।” ८ और हमोर साथ ब्याह किया करो; अपनी बेटियों हमको दिया करो, और हमारी बेटियों को आप लिया करो। ९ और हमोर संग बरसे रहो; और यह देश तुम्हारे सामने पड़ा है; इसमें रहकर लेन-देन करो, और इसकी भूमि को अपने लिये ले लो।” १० और शेकेम ने भी दीना के पिता और भाइयों से कहा, “यदि मुझ पर तम लोगों की अनुग्रह की दृष्टि हो, तो जो कुछ तुम मुझसे कहो, वह मैं दूँगा।” ११ तुम मुझसे कितना ही मूल्य या बदला क्यों न

माँगो, तो भी मैं तुम्हारे कहे के अनुसार दँगा; परन्तु उस कन्या को पत्री होने के लिये मुझे दो।” १५ तब यह सोचकर कि शेकेम ने हमारी बहन दीना को अशुद्ध किया है, याकूब के पुत्रों ने शेकेम और उसके पिता हमोरे को छल के साथ यह उत्तर दिया, १६ “हम ऐसा काम नहीं कर सकते कि किसी खतनारहित पुष्प को अपनी बहन दें; क्योंकि इससे हमारी नामधाराई होगी।” १७ इस बात पर तो हम तुम्हारी मान लेंगे कि हमारे समान तुम में से हर एक पुष्प का खतना किया जाए। १८ तब हम अपनी बेटियाँ तुम्हें ब्याह देंगे, और तुम्हारी बेटियाँ ब्याह लेंगे, और तुम्हारे संग बसे भी रहेंगे, और हम दोनों एक ही समदयों के मनुष्य हो जाएँगे। १९ पर यदि तुम हमारी बात न मानकर अपना खतना न कराओगे, तो हम अपनी लड़की को लेकर यहाँ से चले जाएँगे।” २० उसकी इस बात पर हमोरे और उसका पुत्र शेकेम प्रसन्न हुए। २१ और वह जवान जो याकूब की बेटी को बहत चाहता था, इस काम को करने में उसने विलम्ब न किया। वह तो अपने पिता के सारे घरने में अधिक प्रतिष्ठित था। २२ इसलिए हमोरे और उसका पुत्र शेकेम अपने नगर के फाटक के निकट जाकर नगरवासियों को यह समझाने लगे; २३ “वे मनुष्य तो हमारे संग मेल से रहना चाहते हैं; अतः उन्हें इस देश में रखकर लेन-देन करने दो; देखो, यह देश उनके लिये भी बहुत है; फिर हम लोग उनकी बेटियों को ब्याह लें, और अपनी बेटियों को उन्हें दिया करें।” २४ वे लोग केवल इस बात पर हमारे संग रहने और एक ही समदयों के मनुष्य हो जाने को प्रसन्न हैं कि उनके समान हमारे सब पुष्पों का भी खतना किया जाए। २५ क्या उनकी भेड़-बकरियाँ, और गाय-बैल वरन् उनके सारे पशु और धन-सम्पत्ति हमारी न हो जाएगी? इतना ही करें कि हम लोग उनकी बात मान लें, तो वे हमारे संग रहेंगे।” २६ इसलिए जितने उस नगर के फाटक से निकलते थे, उन सभी ने हमोरे की ओर उसके पुत्र शेकेम की बात मानी; और हर एक पुष्प का खतना किया गया, जितने उस नगर के फाटक से निकलते थे। २७ तीसरे दिन, जब वे लोग पीड़ित पड़े थे, तब ऐसा हुआ कि शिमोन और लेवी नामक याकूब के दो पुत्रों ने, जो दीना के भाई थे, अपनी-अपनी तलवार ले उस नगर में निधंडक घुसकर सब पुष्पों को घात किया। २८ हमोरे और उसके पुत्र शेकेम को उन्होंने तलवार से मार डाला, और दीना को शेकेम के घर से निकल ले गए। २९ याकूब के पुत्रों ने घात कर डालने पर भी चढ़कर नगर को इसलिए लट लिया कि उसमें उनकी बहन अशुद्ध की गई थी। ३० उन्होंने भेड़-बकरी, और गाय-बैल, और गदहे, और नगर और मैदान में जितना धन था ले लिया। ३१ उस सब को, और उनके बाल-बच्चों, और छियों को भी हर ले गए, वरन् घर-घर में जो कछ था, उसको भी उन्होंने लट लिया। ३२ तब याकूब ने शिमोन और लेवी से कहा, “तुम ने जो इस देश के निवासी कनानियों और परिजिज्ञों के मन में प्रेरि घृणा उत्पन्न कराई है, इससे तुम ने मुझे संकट में डाला है, क्योंकि मेरे साथ तो थोड़े ही लोग हैं, इसलिए अब वे इकहे होकर मुझ पर चढ़ेंगे, और मुझे मार डालेंगे, तो मैं अपने घरने समेत सत्यानाश हो जाऊँगा।” ३३ उन्होंने कहा, “क्या वह हमारी बहन के साथ वेश्या के समान बर्ताव करेगा?”

३५ तब परमेश्वर ने याकूब से कहा, “यहाँ से निकलकर बेतेल को जा, और वहाँ रह; और वहाँ परमेश्वर के लिये बेटी बना, जिसने तुझे उस समय दर्शन दिया, जब त अपने भाई एसाव के डर से भागा जाता था।” ३६ तब याकूब ने अपने घरने से, और उन सबसे भी जो उसके संग थे, कहा, “तुम्हारे बीच में जो पराए देवता हैं, उन्हें निकाल फेंको; और अपने-अपने को शुद्ध करो, और अपने बच्च बदल डालो; ३७ और आओ, हम यहाँ से निकलकर बेतेल को जाएँ; वहाँ मैं परमेश्वर के लिये एक बेटी बनाऊँगा, जिसने संकट के दिन मेरी सुन-

ली, और जिस मार्ग से मैं चलता था, उसमें मैं संग रहा।” ३८ इसलिए जितने पराए देवता उनके पास थे, और जितने कुण्डल उनके कानों में थे, उन सभी को उन्होंने याकूब को दिया; और उसने उनको उस बांज वृक्ष के नीचे, जो शेकेम के पास है, गाड़ दिया। ३९ तब उन्होंने कूच किया; और उनके चारों ओर के नार निवासियों के मन में परमेश्वर की ओर से ऐसा भय समा गया, कि उन्होंने याकूब के पुत्रों का पीछा न किया। ४० याकूब उन सब समेत, जो उसके संग थे, कनान देश के लूज नगर को आया। वह नगर बेतेल भी कहलाता है। ४१ वहाँ उसने एक बेटी बनाई, और उस स्थान का नाम एलबेतेल रखा; क्योंकि जब वह अपने भाई के डर से भागा जाता था तब परमेश्वर उस पर वही प्रगट हुआ था। ४२ और रिबका की दूध पिलानेहारी दाई दबोरा मर गई, और बेतेल के बांज वृक्ष के तले उसको मिट्टी दी गई, और उस बांज वृक्ष का नाम अल्लोनबक्कूत रखा गया। ४३ फिर याकूब के पद्धनराम से आने के पश्चात परमेश्वर ने दूसी बार उसको दर्शन देकर आशीष दी। ४४ और परमेश्वर ने उससे कहा, “अब तक तो तेरा नाम याकूब रहा है; पर आगे को तेरा नाम याकूब न रहेगा, तू इसाएल कहलाएगा।” इस प्रकार उसने उसका नाम इसाएल रखा। ४५ फिर परमेश्वर ने उससे कहा, “मैं सर्वाशक्तिमान परमेश्वर हूँ। तू फूल-फले और बढ़े, और तुझ से एक जाति वरन् जातियों की एक मण्डली भी उत्पन्न होगी, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होगे। ४६ और जो देश मैंने अब्राहम और इसहाक को दिया है, वही देश तुझे देता है, और तेरे पीछे तेरे वंश को भी दँगा।” ४७ तब परमेश्वर उस स्थान में, जहाँ उसने याकूब से बातें की, उसके पास से ऊपर चढ़ गया। ४८ और जिस स्थान में परमेश्वर ने याकूब से बातें की, वहाँ याकूब ने पथर का एक खम्भा खड़ा किया, और उस पर अर्ध देकर तेल डाल दिया। ४९ जहाँ परमेश्वर ने याकूब से बातें की, उस स्थान का नाम उसने बेतेल रखा। ५० फिर उन्होंने बेतेल से कूच किया; और एप्राता थोड़ी ही दूर रह गया था कि राहेल को बच्चा जाने की बड़ी पीड़ा उठने लगी। ५१ जब उसको बड़ी-बड़ी पीड़ा उठाई थी तब दाई ने उससे कहा, “मत ड़; अब की भी तेरे बेटा ही होगा।” ५२ तब ऐसा हुआ कि वह मर गई, और प्राण निकलते-निकलते उसने उस बेटे का नाम बेनोनी रखा; पर उसके पिता ने उसका नाम बिन्यामीन रखा। ५३ और राहेल मर गई, और एप्राता, अर्थात् बैतलहम के मार्ग में, उसको मिट्टी दी गई। ५४ और याकूब ने उसकी कब्र पर एक खम्भा खड़ा किया: राहेल की कब्र का वह खम्भा आज तक बना है। ५५ फिर इसाएल ने कूच किया, और एप्रेल नामक गुम्फट के आगे बढ़कर अपना तम्बू खड़ा किया। ५६ जब इसाएल उस देश में बसा था, तब एक दिन ऐसा हुआ कि स्केन ने जाकर अपने पिता की रखैती बिल्हा के साथ कुकर्म किया; और यह बात इसाएल को मालूम हो गई। याकूब के बारह पुत्र हुए। ५७ उनमें से तिलिया के पुत्र ये थे; अर्थात् याकूब का जेठा, रस्बेन, फिर शिमोन, लेवी, यहदा, इस्साकार, और जबूलून। ५८ और राहेल की दासी बिल्हा के पुत्र ये थे; अर्थात् यसुफ, और बिन्यामीन। ५९ और राहेल की दासी बिल्हा के बारह पुत्र ये थे; अर्थात् दान, और नसाली। ६० और लिया की दासी जिल्पा के पुत्र ये थे; अर्थात् गाद, और आशेर। याकूब के ये ही पुत्र हुए, जो उससे पद्धनराम में उत्पन्न हुए। ६१ और याकूब मग्गे में, जो किर्यतअर्बा, अर्थात् हेब्रोन है, जहाँ अब्राहम और इसहाक परदेशी होकर हैं थे, अपने पिता इसहाक के पास आया। ६२ इसहाक की आयु एक सौ अस्सी वर्ष की हुई। ६३ और इसहाक का प्राण छूट गया, और वह मर गया, और वह बृद्ध और पूरी आयु का होकर अपने लोगों में जा मिला; और उसके पुत्र एसाव और याकूब ने उसको मिट्टी दी।

३६ एसाव जो एदोम भी कहलाता है, उसकी यह वंशावली है। ३७ एसाव ने तो कनानी लड़कियाँ ब्याह लीं; अर्थात् हिती एलोन की बेटी आदा को,

और ओहोलीबामा को जो अना की बेटी, और हिल्डी सिबोन की नातिन थी। ३ फिर उसने इश्माएल की बेटी बासमत को भी, जो नवायोद की बहन थी, ब्याह लिया। ४ आदा ने तो एसाव के द्वारा एलीपज को, और बासमत ने स्प्ल को जन्म दिया। ५ और ओहोलीबामा ने यशा, और यालाम, और कोरह को उत्पन्न किया, एसाव के ये ही पुत्र कनान देश में उत्पन्न हुए। ६ एसाव अपनी पत्नियों, और बेटे-बेटियों, और घर के सब प्राणियों, और अपनी भेड़-बकरी, और गाय-बैल आदि सब पशुओं, निदान अपनी सारी सम्पत्ति को, जो उसने कनान देश में संचय किया था, लेकर अपने भाई याकब के पास से दूरै देश को चला गया। ७ क्योंकि उनकी सम्पत्ति इतनी हो गई थी, कि वे इकट्ठे न रह सके; और पशुओं की बहुतायत के कारण उस देश में, जहाँ वे परदेशी होकर रहते थे, वे समा न सके। ८ एसाव जो एदोम भी कहलाता है, सेईर नामक पहाड़ी देश में रहने लगा। ९ सेईर नामक पहाड़ी देश में रहनेवाले एदोमियों के मूलपुरुष एसाव की वंशवाली यह है १० एसाव के पुत्रों के नाम ये हैं; अर्थात् एसाव की पत्नी आदा का पुत्र एलीपज, और उसी एसाव की पत्नी बासमत का पुत्र स्प्ल। ११ और एलीपज के ये पुत्र हुए; अर्थात् तेमान, ओमार, सपो, गाताम, और कनज। १२ एसाव के पुत्र एलीपज के जन्म दिया: एसाव की पत्नी आदा के बंश में ये ही हुए। १३ स्प्ल के ये पुत्र हुए; अर्थात् नहत, जेरह, शम्मा, और मिज्जा एसाव की पत्नी बासमत के बंश में ये ही हुए। १४ ओहोलीबामा जो एसाव की पत्नी, और सिबोन की नातिन और अना की बेटी थी, उसके ये पुत्र हुए; अर्थात् उसने एसाव के द्वारा यशा, यालाम और कोरह को जन्म दिया। १५ एसावशियों के अधिपति ये हुए: अर्थात् एसाव के जेते एलीपज के बंश में से तेमान अधिपति, ओमार अधिपति, सपो अधिपति, कनज अधिपति, १६ कोरह अधिपति, गाताम अधिपति, अमालेक अधिपति एलीपज वंशियों में से, एदोम देश में ये ही अधिपति हुए; और ये ही आदा के बंश में हुए। १७ एसाव के पुत्र स्प्ल के बंश में ये हुए; अर्थात् नहत अधिपति, जेरह अधिपति, शम्मा अधिपति, मिज्जा अधिपति स्प्लवशियों में से, एदोम देश में ये ही अधिपति हुए; और ये ही एसाव की पत्नी बासमत के बंश में हुए। १८ एसाव की पत्नी ओहोलीबामा के बंश में ये हुए; अर्थात् यशा अधिपति, यालाम अधिपति, कोरह अधिपति, अना की बेटी ओहोलीबामा जो एसाव की पत्नी थी उसके बंश में ये ही हुए। १९ एसाव जो एदोम भी कहलाता है, उसके बंश ये ही हैं, और उनके अधिपति भी ये ही हुए। २० सेईर जो होरी नामक जाति का था, उसके ये पुत्र उस देश में पहले से रहते थे; अर्थात् लोतान, शोबाल, सिबोन, अना, २१ दीशोन, एसेर, और दीशान: एदोम देश में सेईर के ये ही होरी जातिवाले अधिपति हुए। २२ लोतान के पुत्र, होरी, और हेमाम हुए; और लोतान की बहन तिम्ना थी। २३ शोबाल के ये पुत्र हुए; अर्थात् अल्वान, मानहत, एबाल, शपो, और ओनाम। २४ और सीदोन के ये पुत्र हुए; अर्थात् आल्वान, एशबान, और करान। २५ एसेर के ये पुत्र हुए: विल्हान, जावान, और अकान। २६ दीशान के ये पुत्र हुए: तस्स, और अरान। २७ होरियों के अधिपति ये हुए: लोतान अधिपति, शोबाल अधिपति, सिबोन अधिपति, अना अधिपति, २८ दीशोन अधिपति, एसेर अधिपति, दीशान अधिपति; सेईर देश में होरी जातिवाले ये ही अधिपति हुए। २९ फिर जब इश्माएलियों पर किसी राजा ने राज्य न किया था, तब भी एदोम के देश में ये राजा हुए; ३० बोर के पुत्र बेला ने एदोम में राज्य किया, और उसकी राजधानी का नाम दिन्हाबा है। ३१ बेला

के मरने पर, बोस्तानिवासी जेरह का पुत्र योबाब उसके स्थान पर राजा हुआ। ३२ योबाब के मरने पर, तेमानियों के देश का निवासी हशाम उसके स्थान पर राजा हुआ। ३३ फिर हशाम के मरने पर, बदर का पुत्र हदद उसके स्थान पर राजा हुआ यह बही है जिसने मिथानियों को मोआब के देश में मार लिया, और उसकी राजधानी का नाम अबीत है। ३४ हदद के मरने पर, मसेकावासी सम्ला उसके स्थान पर राजा हुआ। ३५ फिर सम्ला के मरने पर, शाऊल जो महानद के तटवाले रहेहोत नगर का था, वह उसके स्थान पर राजा हुआ। ३६ शाऊल के मरने पर, अकबोर का पुत्र बाल्हानान उसके स्थान पर राजा हुआ। ३७ अकबोर के पुत्र बाल्हानान के मरने पर, हदर उसके स्थान पर राजा हुआ और उसकी राजधानी का नाम पाऊ है; और उसकी पत्नी का नाम महेतबेल है, जो मेजाहाब की नातिन और मन्त्रद की बेटी थी। ३८ फिर एसाववंशियों के अधिपतियों के कुलों, और स्थानों के अनुसार उनके नाम ये हैं तिम्ना अधिपति, अल्ला अधिपति, यतेत अधिपति, ३९ ओहोलीबामा अधिपति, एला अधिपति, पीनोन अधिपति, ४० कनज अधिपति, तेमान अधिपति, मिबसार अधिपति, ४१ मादीएल अधिपति, ईराम अधिपति एदोमवंशियों ने जो देश अपना कर लिया था, उसके निवास-स्थानों में उनके ये ही अधिपति हुए; और एदोमी जाति का मूलपुरुष एसाव है।

३७ याकूब तो कनान देश में रहता था, जहाँ उसका पिता परदेशी होकर रहा था।

२ और याकूब के बंश का बृतान्त यह है: यसुफ सत्रह वर्ष का होकर अपने भाइयों के संग भेड़-बकरियों को चारता था; और वह लड़का अपने पिता की पत्नी बिल्हा, और जिल्पा के पुत्रों के संग रहा करता था; और उनकी बुराइयों का समाचार अपने पिता के पास पहुँचाया करता था। ३ और इश्माएल अपने सब पुत्रों से बढ़कर यसुफ से प्रीति रखता था, क्योंकि वह उसके बुद्धापे का पुत्र था: और उसने उसके लिये रंग-बिरंगा अंगरेख बनवाया। ४ परन्तु जब उसके भाइयों ने देखा, कि हमारा पिता हम सब भाइयों से अधिक उरी से प्रीति रखता है, तब वे उससे बैर करने लगे और उसके साथ ठीक से बात भी नहीं करते थे। ५ यसुफ ने एक स्वप्न देखा, और अपने भाइयों से उसके वर्णन किया; तब वे उससे और भी द्रेष करने लगे। ६ उसने उनसे कहा, “जो स्वप्न मैंने देखा है, उसे सनो ७ हम लोग खेत में पूले बाँध रहे हैं, और क्या देखता है वूँ कि मेरा पूला उठकर सीधा खड़ा हो गया; तब तुम्हारे पूलों ने मेरे पूलों को चारों तरफ से घेर लिया और उसे दण्डवत् किया।” ८ तब उसके भाइयों ने उससे कहा, “क्या सचमुच तू हमारे ऊपर राज्य करेगा? या क्या सचमुच तू हम पर प्रभुता करेगा?” इसलिए वे उसके स्वप्नों और उसकी बातों के कारण उससे और भी अधिक बैर करने लगे। ९ फिर उसने एक और स्वप्न देखा, कि सर्वी और चन्द्रमा, और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत् कर रहे हैं।” १० इस स्वप्न का उसने अपने पिता, और भाइयों से वर्णन किया; तब उसके पिता ने उसको डॉक्टर कहा, “यह कैसा स्वप्न है जो तू तू देखा है? क्या सचमुच मैं और तेरी माता और तेरे भाई सब जाकर तेरे आगे भूमि पर गिरकर दण्डवत् करेंगे?” ११ उसके भाई तो उससे डाह करते थे; पर उसके पिता ने उसके उस वर्चन को स्मरण रखा। १२ उसके भाई अपने पिता की भेड़-बकरियों को चारने के लिये शेकेम को गए। १३ तब इश्माएल ने यसुफ से कहा, “तेरे भाई तो शेकेम ही मैं भेड़-बकरी चरा रहे होंगे, इसलिए जा, मैं तुझे उनके पास भेजता हूँ।” उसने उससे कहा, “जो आज्ञा मैं हाजिर हूँ।” १४ उसने उससे कहा, “जा, अपने भाइयों और भेड़-बकरियों का हाल देख आ कि वे कुशल से तो हैं, फिर मेरे पास समाचार ले आ।” अतः उसने उसको हेब्रोन की तराई में

विदा कर दिया, और वह शेकेम में आया। १५ और किसी मनुष्य ने उसको मैदान में इधर-उधर भटकते हुए पाकर उससे पछा, “तु क्या हूँडता है?” १६ उसने कहा, “मैं तो अपने भाइयों को हूँडता हूँ कपा करके मुझे बता कि वे भेड़-बकरियों को कहाँ चरा रहे हैं?” १७ उस मनुष्य ने कहा, “वे तो यहाँ से चले गए हैं, और मैंने उनको यह कहते सुना, ‘आओ, हम दोतान को चलें।’” इसलिए यसुफ अपने भाइयों के पीछे चला, और उहें दोतान में पाया। १८ जैसे ही उन्होंने उसे दूर से आते देखा, तो उसके निकट आने के पहले ही उसे मार डालने की युक्ति की। १९ और वे आपस में कहने लगे, “देखो, वह स्वप्न देखेवाला आ रहा है।” २० इसलिए आओ, हम उसको घाट करके किसी गड्ढे में डाल दें, और यह कह देंगे, कि कोई जंगली पशु उसको खा गया। फिर हम देखेंगे कि उसके स्वनों का क्या फल होगा।” २१ यह सुनकर रस्बेन ने उसको उनके हाथ से बचाने की मनसा से कहा, “हम उसको प्राण से तो न मरो।” २२ फिर रस्बेन ने उनसे कहा, “लह मत बहाओ, उसको जंगल के इस गड्ढे में डाल दो, और उस पर हाथ मत उठाओ।” वह उसको उनके हाथ से छुड़ाकर पिता के पास फिर पहुँचाना चाहता था। २३ इसलिए ऐसा हुआ कि जब यसुफ अपने भाइयों के पास पहुँचा तब उन्होंने उसका रंग-बिरंगा अंगरखा, जिसे वह पहने हुए था, उतार लिया। २४ और यसुफ को उठाकर गड्ढे में डाल दिया। वह गङ्गा सूखा था और उसमें कुछ जल न था। २५ तब वे गोटी खाने को बैठ गए; और आँखें उठाकर क्या देखा कि इश्माएलियों का एक दल ऊँटों पर सुगन्ध-द्रव्य, बलसान, और गन्धरस लादे हुए, गिलाद से मिस को चला जा रहा है। २६ तब यहदा ने अपने भाइयों से कहा, “अपने भाई को घाट करने और उसका खून छिपाने से क्या लाभ होगा? २७ आओ, हम उसे इश्माएलियों के हाथ बेच डालें, और अपना हाथ उस पर न उठाएँ, क्योंकि वह हमारा भाई और हमारी ही हड्डी और माँस है।” और उसके भाइयों ने उसकी बात मान ली। २८ तब मिद्यामी व्यापारी उधर से होकर उनके पास पहुँचे। अतः यसुफ के भाइयों ने उसको उस गड्ढे में से खींचकर बाहर निकाला, और इश्माएलियों के हाथ चाँदी के बीस टुकड़ों में बेच दिया; और वे यसुफ को मिस में ले गए। २९ रस्बेन ने गड्ढे पर लौटकर क्या देखा कि यसुफ गड्ढे में नहीं है; इसलिए उसने अपने बच्चा फाड़, ३० और अपने भाइयों के पास लौटकर कहने लगा, “लड़का तो नहीं है, अब मैं किधर जाऊँ?” ३१ तब उन्होंने यसुफ का अंगरखा लिया, और एक बकरे को मारकर उसके लह में उसे डुबा दिया। ३२ और उन्होंने उस रंगबिरंगे अंगरखे को अपने पिता के पास भेजकर यह सन्देश दिया; “यह हमको मिला है, अतः देखकर पहचान ले कि यह तेरे पुत्र का अंगरखा है कि नहीं।” ३३ उसने उसको पहचान लिया, और कहा, “हाँ यह मेरी ही पुत्र का अंगरखा है; किसी दूष पशु ने उसको खा लिया है; निःसदेह यसुफ फाड़ डाला गया है।” ३४ तब याकूब ने अपने बच्चा फाड़ और कमर में टाट लेपेटा, और अपने पुत्र के लिये बहुत दिनों तक विलाप करता रहा। ३५ और उसके सब बेटे-बेटियों ने उसको शान्ति देने का यत्र किया; पर उसको शान्ति न मिली; और वह यही कहता रहा, “मैं तो विलाप करता हुआ अपने पुत्र के पास अयोलोक में उतर जाऊँगा।” इस प्रकार उसका पिता उसके लिये रोता ही रहा। (Sheol h7585) ३६ इस बीच मिद्यानियों ने यसुफ को मिस में ले जाकर पोतीपर नामक, फिरौन के एक हाकिम, और अंगरक्षकों के प्रधान, के हाथ बेच डाला।

३८ उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि यहदा अपने भाइयों के पास से चला गया, और हीरा नामक एक अदुल्लामवासी पुस्त के पास डेरा किया। २९हाँ यहदा ने शूआ नामक एक कनानी पुस्त की बेटी को देखा; और उससे विवाह

करके उसके पास गया। ३ वह गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और यहदा ने उसका नाम एर रखा। ४ और वह फिर गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र और उत्पन्न हुआ; और उसका नाम ओनान रखा गया। ५ फिर उसके एक पुत्र और उत्पन्न हुआ, और उसका नाम शेला रखा गया; और जिस समय इसका जन्म हुआ उस समय यहदा कजीब में रहता था। ६ और यहदा ने तामार नामक एक श्वी से अपने जेठे एक का विवाह कर दिया। ७ परन्तु यहदा का वह जेठा एर यहोवा के लिये दूष था, इसलिए यहोवा ने उसको मार डाला। ८ तब यहदा ने ओनान से कहा, “अपनी भौजाई के पास जा, और उसके साथ देवर का धर्म पूरा करके अपने भाई के लिये सन्तान उत्पन्न कर।” ९ ओनान तो जानता था कि सन्तान मेरी न ठहरेगी; इसलिए ऐसा हुआ कि जब वह अपनी भौजाई के पास गया, तब उसने भूमि पर वीर्य पिराकर नाश किया, जिससे ऐसा न हो कि उसके भाई के नाम से वंश चले। १० यह काम जो उसने किया उससे यहोवा अप्रसन्न हुआ और उसने उसको भी मार डाला। ११ तब यहदा ने इस डर के मारे कि कहीं ऐसा न हो कि अपने भाइयों के समान शेला भी मरे, अपनी बहू तामार से कहा, “जब तक मेरा पुत्र शेला सयाना न हो जाए तब तक अपने पिता के घर में विधवा ही बैठी रह।” इसलिए तामार अपने पिता के घर में जाकर रहने लगी। १२ बहुत समय के बीतने पर यहदा की पत्नी जो शूआ की बेटी थी, वह मर गई; फिर यहदा शोक के दिन बीतने पर अपने मित्र हीरा अदुल्लामवासी समेत अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतरने वालों के पास तिम्नाह को गया। १३ और तामार को यह समाचार मिला, “तेरा ससुर अपनी भेड़-बकरियों का ऊन कतरने के लिये तिम्नाह को जा रहा है।” १४ तब उसने यह सोचकर कि शेला सयाना तो हो गया पर मैं उसकी श्वी नहीं होने पाई, अपना विधवापन का पहरावा उतारा और धूँधूँ डालकर अपने को ढाँप लिया, और ऐसै नगर के फाटक के पास, जो तिम्नाह के मार्ग में है, जा बैठी। १५ जब यहदा ने उसको देखा, उसने उसको वेश्या समझा, व्यक्तिकि वह अपना मुँह ढाँपे हुए थी। १६ वह मार्ग से उसकी ओर फिरा, और उससे कहने लगा, “मुझे अपने पास आने दे,” (क्योंकि उसे यह मालूम न था कि वह उसकी बह है।) और वह कहने लगी, “यदि मैं तजो अपने पास आने दूँ तो तू मुझे क्या देगा?” १७ उसने कहा, “मैं अपनी बकरियों में से बकरी का एक बच्चा तैरे पास भेज दूँगा।” तब उसने कहा, “भला उसके भेजने तक क्या तू हमारे पास कुछ रेहन रख जाएगा?” १८ उसने पछा, “मैं तैरे पास क्या रेहन रख जाऊँ?” उसने कहा, “अपनी मुहर, और बाजूबन्द, और अपने हाथ की छड़ी।” तब उसने उसको वे वस्तुएँ दे दी, और उसके पास गया, और वह उससे गर्भवती हुई। १९ तब वह उठकर चली गई, और अपना धूँधूँ उतारकर अपना विधवापन का पहरावा फिर पहन लिया। २० तब यहदा ने बकरी का बच्चा अपने मित्र हीरा अदुल्लामवासी के हाथ से छुड़ा ले आए; पर वह श्वी उसको न मिली। २१ तब उसने वहाँ के लोगों से पछा, “वह देवदासी जो ऐसै मैं मार्ग की एक ओर बैठी थी, कहाँ है?” उन्होंने कहा, “यहाँ तो कोई देवदासी न थी।” २२ इसलिए उसने यहदा के पास लौटकर कहा, “मुझे वह नहीं मिली, और उस स्थान के लोगों ने कहा, ‘यहाँ तो कोई देवदासी न थी।’” २३ तब यहदा ने कहा, “अच्छा, वह बन्धक उसी के पास रहने दे, नहीं तो हम लोग तुच्छ गिने जाएँगे। देख, मैंने बकरी का यह बच्चा भेज दिया था, पर वह तुझे नहीं मिली।” २४ लगभग तीन महीने के बाद यहदा को यह समाचार मिला, “तेरी बह तामार ने व्यभिचार किया है; वरन् वह व्यभिचार से गर्भवती भी हो गई है।” तब यहदा ने कहा, “उसको बाहर ले आओ कि वह जलाई जाए।” २५ जब उसे बाहर निकाला जा रहा था, तब उसने, अपने ससुर के पास यह कहला

भेजा, “जिस पुम्प की ये वस्तु हैं, उसी से मैं गर्भवती हूँ,” फिर उसने यह भी कहलाया, “पहचान तो सही कि यह मुहर, और बाजूबन्द, और छड़ी किसकी हैं।” २६ यहदा ने उहें पहचानकर कहा, “वह तो मुझसे कम दोषी है; क्योंकि मैंने उसका अपने पुत्र शेला से विवाह न किया।” और उसने उससे फिर कभी प्रसंग न किया। २७ जब उसके जनने का समय आया, तब यह जान पड़ा कि उसके गर्भ में जुड़वे बच्चे हैं। २८ और जब वह जनने लगी तब एक बालक का हाथ बाहर आया, और दाईं ने लाल सूत लेकर उसके हाथ में यह कहते हुए बाँध दिया, “पहले यही उत्पन्न हुआ।” २९ जब उसने हाथ समेट लिया, तब उसका भाई उत्पन्न हो गया। तब उस दाईं ने कहा, “तू क्यों बरबस निकल आया है?” इसलिए उसका नाम पैरेस रखा गया। ३० पीछे उसका भाई जिसके हाथ में लाल सूत बन्धा था उत्पन्न हुआ, और उसका नाम जेरह रखा गया।

३१ जब यूसुफ मिस्र में पहुँचाया गया, तब पोतीपर नामक एक मिसी ने, जो फिरौन का हाकिम, और अंगरक्षकों का प्रधान था, उसको इश्माएलियों के हाथ से जो उसे बहाँ ले गए थे, मोल लिया। १ यूसुफ अपने मिसी स्वामी के घर में रहता था, और यहोवा उसके संग था; इसलिए वह सफल पूर्ण हो गया। २ और यूसुफ के स्वामी ने देखा, कि यहोवा उसके संग रहता है, और जो काम वह करता है उसको यहोवा उसके हाथ से सफल कर देता है। ३ तब उसकी अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई, और वह उसकी सेवा ठहल करने के लिये नियुक्त किया गया; फिर उसने उसको अपने घर का अधिकारी बनाकर अपना सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया। ४ जब से उसने उसको अपने घर का और अपनी सारी सम्पत्ति का अधिकारी बनाया, तब से यहोवा यूसुफ के कारण उस मिसी के घर पर आशीष देने लगा; और क्या घर में, क्या मैदान में, उसका जो कुछ था, सब पर यहोवा की आशीष होने लगी। ५ इसलिए उसने अपना सब कुछ यूसुफ के हाथ में यहाँ तक छोड़ दिया कि अपने खाने की रोटी को छोड़, वह अपनी सम्पत्ति का हाल कुछ न जानता था। यूसुफ सुन्दर और स्पवन था। ६ इन बातों के पश्चात ऐसा हुआ, कि उसके स्वामी की पत्नी ने यूसुफ की ओर आँख लगाई और कहा, “मेरे साथ सो।” ७ पर उसने अस्वीकार करते हुए अपने स्वामी की पत्नी से कहा, “सुन, जो कुछ इस घर में है मेरे हाथ में है, उसे मेरा स्वामी कुछ नहीं जानता, और उसने अपना सब कुछ मेरे हाथ में सौंप दिया है। ८ इस घर में मुझसे बड़ा कोई नहीं; और उसने तझे छोड़, जो उसकी पत्नी है; मुझसे कुछ नहीं रख छोड़ा; इसलिए भला, मैं ऐसी बड़ी दृष्टि करके परमेश्वर का अपराधी क्यों बैठूँ?” ९ और ऐसा हुआ कि वह प्रतिदिन यूसुफ से बातें करती रही, पर उसने उसकी न मानी कि उसके पास लेटे था उसके संग रहे। १० एक दिन क्या हुआ कि यूसुफ अपना काम-काज करने के लिये घर में गया, और घर के सेवकों में से कोई भी घर के अन्दर न था। ११ तब उस छों ने उसका बच्च पकड़कर कहा, “मेरे साथ सो,” पर वह अपना बच्च उसके हाथ में छोड़कर भागा, और बाहर निकल गया। १२ यह देखकर कि वह अपना बच्च मेरे हाथ में छोड़कर बाहर भाग गया, १३ उस छों ने अपने घर के सेवकों को बुलाकर कहा, “देखो, वह एक इन्ही मनुष्य को हमारा तिरस्कार करने के लिये हमारे पास ले आया है। वह तो मेरे साथ सोने के मतलब से मेरे पास अन्दर आया था और मैं ऊँचे स्वर से चिल्ला उठी। १४ और मेरी बड़ी चिल्लाहट सुनकर वह अपना बच्च मेरे पास छोड़कर भागा, और बाहर निकल गया।” १५ और वह उसका बच्च उसके स्वामी के घर आने तक अपने पास रखे रही। १६ तब उसने इस प्रकार की बातें कहीं, “वह इन्ही दास जिसको तू हमारे पास ले आया है, वह मुझसे हाँसी करने के लिये मेरे पास आया था; १७ और जब मैं ऊँचे स्वर से चिल्ला उठी, तब वह अपना बच्च मेरे पास छोड़कर

बाहर भाग गया।” १८ अपनी पत्नी की ये बातें सुनकर कि तेरे दास ने मुझसे ऐसा-ऐसा काम किया, यूसुफ के स्वामी का कोप भड़का। १९ और यूसुफ के स्वामी ने उसको पकड़कर बन्दीगृह में, जहाँ राजा के कैदी बन्द थे, डलवा दिया; अतः वह उस बन्दीगृह में रहा। २० पर यहोवा यूसुफ के संग-संग रहा, और उस पर कस्ता की, और बन्दीगृह के दरोगा के अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई। २१ इसलिए बन्दीगृह के दरोगा ने उन सब बन्दियों को, जो कारागार में थे, यूसुफ के हाथ में सौंप दिया; और जो-जो काम वे वहाँ करते थे, वह उसी की आज्ञा से होता था। २२ यूसुफ के वश में जो कुछ था उसमें से बन्दीगृह के दरोगा को कोई भी वस्तु देखी न पड़ती थी; क्योंकि यहोवा यूसुफ के साथ था; और जो कुछ वह करता था, यहोवा उसको उसमें सफलता देता था।

४० इन बातों के पश्चात ऐसा हुआ, कि मिस्र के राजा का पिलानेहरो और

पकानेहरो ने अपने स्वामी के बिस्तु कुछ अपारथ किया। १ तब फिरौन ने अपने उन दोनों हाकिमों, अर्थात् पिलानेहरों के प्रधान, और पकानेहरों के प्रधान पर क्रोधित होकर २ उहें कैद कराके, अंगरक्षकों के प्रधान के घर के उरी बन्दीगृह में, जहाँ यूसुफ बन्दी था, डलवा दिया। ३ तब अंगरक्षकों के प्रधान ने उनको यूसुफ के हाथ सौंपा, और वह उनकी सेवा-टहल करने लगा; अतः वे कुछ दिन तक बन्दीगृह में रहे। ४ मिस्र के राजा का पिलानेहरा और पकानेहरा, जो बन्दीगृह में बन्द थे, उन दोनों ने एक ही रात में, अपने-अपने होनहार के अनुसार, स्वप्न देखा। ५ सबैरे जब यूसुफ उनके पास अन्दर गया, तब उन पर उसने जो दृष्टि की, तो क्या देखता है, कि वे उदास हैं। ६ इसलिए उसने फिरौन के उन हाकिमों से, जो उसके साथ उसके स्वामी के घर के बन्दीगृह में थे, पूछा, “आज तुम्हारे मूँह क्यों उदास हैं?” ७ उहेंपैरे उससे कहा, “हम दोनों ने स्वप्न देखा है, और उनके फल का बतानेवाला कोई भी नहीं।” यूसुफ ने उनसे कहा, “क्या स्वप्नों का फल कहना परमेश्वर का काम नहीं है? मुझे अपना-अपना स्वप्न बताओ।” ८ तब पिलानेहरों का प्रधान अपना स्वप्न यूसुफ को यह बताने लगा: “मैंने स्वप्न में देखा, कि मेरे सामने एक दाखलता है; ९ और उस दाखलता में तीन डालियाँ हैं; और उसमें मानो कलियाँ लगी हैं, और वे फूली और उसके गुच्छों में दाख लगाकर पक गई। १० और फिरौन का कटोरा मेरे हाथ में था; और मैंने उन दाखों को लेकर फिरौन के कटोरे में निचोड़ा और कटोरों को फिरौन के हाथ में दिया।” ११ यूसुफ ने उससे कहा, “इसका फल यह है: तीन डालियों का अर्थ तीन दिन है। १२ इसलिए अब से तीन दिन के भीतर फिरौन तेरा सिर ऊँचा करेगा, और फिर से तेरे पद पर तुझे नियुक्त करेगा, और तू पहले के समान फिरौन का पिलानेहरा होकर उसका कटोरा उसके हाथ में फिर दिया करेगा। १३ अतः जब तेरा भला हो जाए तब मुझे स्मरण करना, और मुझ पर कृपा करके फिरौन से मेरी चर्चा चलाना, और इस घर से मुझे छुड़वा देना। १४ क्योंकि सचमुच इब्रानियों के देश से मुझे चुराकर लाया गया है, और यहाँ भी मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया, जिसके कारण मैं इस कारागार में डाला जाऊँ।” १५ यह देखकर कि उसके स्वप्न का फल अच्छा निकला, पकानेहरों के प्रधान ने यूसुफ से कहा, “मैंने भी स्वप्न देखा है, वह यह है: मैंने देखा कि मेरे सिर पर सफेद रोटी की तीन टोकरियाँ हैं। १६ और ऊपर की टोकरी में फिरौन के लिये सब प्रकार की पकी पकाई वस्तुएँ हैं; और पकी मेरे सिर पर की टोकरी में से उन वस्तुओं को खा रहे हैं।” १७ यूसुफ ने कहा, “इसका फल यह है: तीन टोकरियों का अर्थ तीन दिन है। १८ अब से तीन दिन के भीतर फिरौन तेरा सिर कटवाकर तुझे एक वक्ष पर टंगा देगा, और पकी मैं सौंप सको जो नोच-नोच कर खाँसेंगा।” १९ और तीसरे दिन फिरौन का जन्मदिन था, उसने अपने सब कर्मचारियों को भोज दिया, और उनमें से पिलानेहरों के प्रधान दोनों को

बन्दीगृह से निकलवाया। ११ पिलानेहारों के प्रधान को तो पिलानेहारे के पद पर फिर से नियुक्त किया, और वह फिरौन के हाथ में कटोरा देने लगा। १२ पर पकानेहारों के प्रधान को उसने टंगवा दिया, जैसा कि यूसुफ ने उनके स्वप्नों का फल उनसे कहा था। १३ फिर भी पिलानेहारों के प्रधान ने यूसुफ को स्मरण न रखा; परन्तु उसे भूल गया।

४१ पूरे दो वर्ष के बीतने पर फिरौन ने यह स्वप्न देखा कि वह नील नदी के किनारे खड़ा है। २ और उस नदी में से सात सुन्दर और मोटी-मोटी गायें निकलकर कछार की घास चरने लगी। ३ और, क्या देखा कि उनके पीछे और सात गायें, जो कुरुप और दुर्बल हैं, नदी से निकलीं; और दूसरी गायें के निकट नदी के टट पर जा खड़ी हैं। ४ तब ये कृस्प और दुर्बल गायें उन सात सुन्दर और मोटी-मोटी गायें को खा गईं। तब फिरौन जाग उठा। ५ और वह फिर से गया और दूसरा स्वप्न देखा कि एक डंठल में से सात मोटी और अच्छी-अच्छी बाले निकलीं। ६ और, क्या देखा कि उनके पीछे सात बाले पतली और पुरावाई से मुझाई हुई निकलीं। ७ और इन पतली बालों ने उन सातों मोटी और अन्न से भरी हुई बालों को निगल लिया। तब फिरौन जागा, और उसे मालूम हुआ कि यह स्वप्न ही था। ८ भोर को फिरौन का मन व्याकुल हुआ; और उसने मिस के सब ज्योतिषियों, और पंडितों को बुलवा भेजा; और उनको अपने स्वप्न बताएँ; पर उसमें से कोई भी उनका फल फिरौन को न बता सका। ९ तब पिलानेहारों का प्रधान फिरौन से बोल उठा, “मैं अपराध आज मुझे स्मरण आएः १० जब फिरौन अपने दासों से क्रोधित हुआ था, और मुझे और पकानेहारों के प्रधान को कैद कराके अंगरक्षकों के प्रधान के घर के बन्दीगृह में डाल दिया था; ११ तब हम दोनों ने एक ही रात में, अपने-अपने होनहार के अनुसार स्वप्न देखा; १२ और वहाँ हमारे साथ एक इडी जवान था, जो अंगरक्षकों के प्रधान का दास था; अतः हमने उसको बताया, और उसने हमारे स्वप्नों का फल हम से कहा, हम मैं से एक-एक के स्वप्न का फल उसने बता दिया। १३ और जैसा-जैसा फल उसने हम से कहा था, वैसा ही हुआ भी, अर्थात् सुझ को तो मेरा पद फिर मिला, पर वह फांसी पर लटकाया गया।” १४ तब फिरौन ने यूसुफ को बुलवा भेजा। और वह झटपट बन्दीगृह से बाहर निकला गया, और बाल बनवाकर, और बृश बदलकर फिरौन के सामने आया। १५ फिरौन ने यूसुफ से कहा, “मैंने एक स्वप्न देखा है, और उसके फल का बतानेवाला कोई भी नहीं; और मैंने तेरे विषय में सुना है, कि तू स्वप्न सुनते ही उसका फल बता सकता है।” १६ यूसुफ ने फिरौन से कहा, “मैं तो कुछ नहीं जानता: परमेश्वर ही फिरौन के लिये शुभ वचन देगा।” १७ फिर फिरौन यूसुफ से कहने लगा, “मैंने अपने स्वप्न में देखा, कि मैं नील नदी के किनारे पर खड़ा हूँ। १८ फिर, क्या देखा, कि नदी में से सात मोटी और सुन्दर-सुन्दर गायें निकलकर कछार की घास चरने लगी। १९ फिर, क्या देखा, कि उनके पीछे सात और गायें निकलीं, जो दुबली, और बहुत कुरुप, और दुर्बल हैं; मैंने तो सारे मिस देश में ऐसी कुडौल गायें कभी नहीं देखीं। २० इन दुर्बल और कुडौल गायों ने उन पहली सातों मोटी-मोटी गायों को खा लिया। २१ और जब वे उनको खा गई तब यह मालूम नहीं होता था कि वे उनको खा गई हैं, क्योंकि वे पहले के समान जैसी की तैसी कुडौल रहीं। तब मैं जाग उठा। २२ फिर मैंने दूसरा स्वप्न देखा, कि एक ही डंठल में सात अच्छी-अच्छी और अन्न से भरी हुई बाले निकलीं। २३ फिर क्या देखता हूँ, कि उनके पीछे और सात बाले छूछी-छूछी और पतली और पुरावाई से मुझाई हुई निकलीं। २४ और इन पतली बालों ने उन सात अच्छी-अच्छी बालों को निगल लिया। इसे मैंने ज्योतिषियों को बताया, पर इसका समझानेवाला कोई नहीं मिला।” २५ तब यूसुफ ने फिरौन से कहा, “फिरौन का स्वप्न एक ही है, परमेश्वर जो काम

करना चाहता है, उसको उसने फिरौन पर प्रगट किया है। २६ वे सात अच्छी-अच्छी गायें सात वर्ष हैं, और वे सात अच्छी-अच्छी बाले भी सात वर्ष हैं; स्वप्न एक ही है। २७ फिर उनके पीछे जो दुर्बल और कुडौल गायें निकलीं, और जो सात छूछी और पुरावाई से मुझाई हुई बाले निकलीं, वे अकाल के सात वर्ष होंगे। २८ यह वही बात है जो मैं फिरौन से कह चका हूँ, कि परमेश्वर जो काम करना चाहता है, उसे उसने फिरौन को दिखाया है। २९ सुन, सारे मिस देश में सात वर्ष तो बहुतायत की उपज के होंगे। ३० उनके पश्चात सात वर्ष अकाल के आएँ, और सारे मिस देश में लोग इस सारी उपज को भूल जाएँगे; और अकाल से देश का नाश होगा। ३१ और सुकाल (बहुतायत की उपज) देश में फिर स्मरण न रहेगा क्योंकि अकाल अत्यन्त भयंकर होगा। ३२ और फिरौन ने जो यह स्वप्न दो बार देखा है इसका भैद यही है कि यह बात परमेश्वर की ओर से नियुक्त हो चुकी है, और परमेश्वर इसे शिश्री ही पूरा करेगा। ३३ इसलिए अब फिरौन किसी समझदार और बुद्धिमान पुरुष को ढूँक करके उसे मिस देश पर प्रधानमंत्री ठहराए। ३४ फिरौन यह करे कि देश पर अधिकारियों को नियुक्त करे, और जब तक सुकाल के सात वर्ष रहें तब तक वह मिस देश की उपज का पंचमांश लिया करे। ३५ और वे इन अच्छे वर्षों में सब प्रकार की भोजनवस्तु इकट्ठा करें, और नगर-नगर में भण्डार घर भोजन के लिये, फिरौन के वश में करके उसकी रक्षा करें। ३६ और वह भोजनवस्तु अकाल के उन सात वर्षों के लिये, जो मिस देश में आएँगे, देश के भोजन के निमित्त रखी रहे, जिससे देश का उस अकाल से सत्यानाश न हो जाए।” ३७ यह बात फिरौन और उसके सारे कर्मचारियों को अच्छी लगी। ३८ इसलिए फिरौन ने अपने कर्मचारियों से कहा, “क्या हमको ऐसा पुरुष, जैसा यह है, जिसमें परमेश्वर का आत्मा रहता है, मिल सकता है?” ३९ फिर फिरौन ने यूसुफ से कहा, “परमेश्वर ने जो तुझे इतना जान दिया है, कि तेरे तुल्य कोई समझदार और बुद्धिमान नहीं, ३० इस कारण तु मेरे घर का अधिकारी होगा, और तेरी आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी, केवल राजगांडी के विषय में तुझ से बड़ा ठहराएँगा।” ३१ फिर फिरौन ने यूसुफ से कहा, “सुन, मैं तुझको मिस के सारे देश के ऊपर अधिकारी ठहरा देता हूँ।” ३२ तब फिरौन ने अपने हाथ से मूहर बाली अंगठी निकलकर यूसुफ के हाथ में पहना दी; और उसको बढ़िया मलमल के बब्ब पहनवा दिएँ, और उसके गते में सोने की माला डाल दी; ३३ और उसको अपने दूसरे रथ पर चढ़वाया; और लोग उसके आगे-आगे यह प्रचार करते चले, कि घृने टेककर दण्डवत् करो और उसने उसको मिस के सारे देश के ऊपर प्रधानमंत्री ठहराया। ३४ फिर फिरौन ने यूसुफ से कहा, “फिरौन तो मैं हूँ, और सारे मिस देश में कोई भी तेरी आज्ञा के बिना हाथ पाँव न हिलाएँगा।” ३५ फिरौन ने यूसुफ का नाम सापनत-पानेह रखा। और ओन नार के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत से उसका ब्याह करा दिया। और यूसुफ सारे मिस देश में दौरा करने लगा। ३६ जब यूसुफ मिस के राजा फिरौन के सम्मुख खड़ा हआ, तब वह तीस वर्ष का था। वह फिरौन के सम्मुख से निकलकर सारे मिस देश में दौरा करने लगा। ३७ सुकाल के सातों वर्षों में भूमि बहुतायत से अन्न उपजाती रही। ३८ और यूसुफ उन सातों वर्षों में सब प्रकार की भोजनवस्तुएँ, जो मिस देश में होती थी, जमा करके नगरों में रखता गया, और हर एक नगर के चारों ओर के खेतों की भोजनवस्तुओं को वह उसी नगर में इकट्ठा करता गया। ३९ इस प्रकार यूसुफ ने अन्न को समृद्ध कीरते के समान अत्यन्त बहुतायत से राशि-राशि गिनके रखा, यहाँ तक कि उसने उनका गिनना छोड़ दिया; क्योंकि वे असंख्य हो गईं। ४० अकाल के प्रथम वर्ष के आने से पहले यूसुफ ने दो पुत्र, ओन के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत से जन्मे। ४१ और यूसुफ ने अपने जेठे का नाम यह कहकर मनश्शे रखा, कि ‘परमेश्वर ने

मुझसे मेरा सारा कलेश, और मेरे पिता का सारा घराना भुला दिया है।’ ५२ दूसरे का नाम उसने यह कहकर ऐप्रैम रखा, कि ‘मुझे दुःख भोगने के देश में परमेश्वर ने फलवन्त किया है।’ ५३ और मिस्र देश के सुकाल के सात वर्ष समाप्त हो गए। ५४ और यसुफ के कहने के अनुसार सात वर्षों के लिये अकाल आरम्भ हो गया। सब देशों में अकाल पड़ने लगा; परन्तु सारे मिस्र देश में अन्न था। ५५ जब मिस्र का सारा देश खूबी मरने लगा; तब प्रजा फ़िरौन से चिल्ला चिल्लाकर रोटी माँगने लगी; और वह सब मिस्रियों से कहा करता था, “यसुफ के पास जाओ; और जो कुछ वह तुम से करे, वही करो।” ५६ इसलिए जब अकाल सारी पृथकी पर फैल गया, और मिस्र देश में अकाल का भयंकर स्पष्ट हो गया, तब यसुफ सब भण्डारों को खोल-खोलकर मिस्रियों के हाथ अन्न बेचने लगा। ५७ इसलिए सारी पृथकी के लोग मिस्र में अन्न मोल लेने के लिये यसुफ के पास आने लगे, क्योंकि सारी पृथकी पर भयंकर अकाल था।

४२ जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अन्न है, तब उसने अपने पुत्रों से कहा, “तुम एक दूसरे का मूँह क्यों देख रहे हो।” १ फिर उसने कहा, “मैंने सुना है कि मिस्र में अन्न है; इसलिए तुम लोग वहाँ जाकर हमारे लिये अन्न मोल ले आओ, जिससे हम न मरें, वरन् जीवित रहें।” २ अतः यसुफ के दस भाई अन्न मोल लेने के लिये मिस्र को गए। ३ पर यसुफ के भाई बिन्यामीन को याकूब ने यह सोचकर भाइयों के साथ न भेजा कि कहीं ऐसा न हो कि उस पर कोई विपत्ति आ पड़े। ४ इस प्रकार जो लोग अन्न मोल लेने आए उनके साथ इस्पाल के पुनर्भी आए; क्योंकि कनान देश में भी भारी अकाल था। ५ यसुफ तो मिस्र देश का अधिकारी था, और उस देश के सब लोगों के हाथ वही अन्न बेचता था; इसलिए जब यसुफ के भाई आए तब भूमि पर मूँह के बल गिरकर उसको दण्डवत् किया। ६ उनको देखकर यसुफ ने पहचान तो लिया, परन्तु उनके सामने भोला बनकर कठोरता के साथ उनसे पूछा, “तुम कहाँ से आते हो?” उन्होंने कहा, “हम तो कनान देश से अन्न मोल लेने के लिये आए हैं।” ७ यसुफ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, परन्तु उन्होंने उसको न पहचाना। ८ तब यसुफ अपने उन स्वनयों को स्मरण करके जो उसने उनके विषय में देखे थे, उनसे कहने लगा, “तुम भेदिए हो; इस देश की दुर्दशा को देखने के लिये आए हो।” ९ उन्होंने उससे कहा, “नहीं, नहीं, हे प्रभु, तेरे दास भोजनवस्तु मोल लेने के लिये आए हैं।” १० हम सब एक ही पिता के पुत्र हैं, हम सीधे मनुष्य हैं, तेरे दास भेदिए नहीं।” ११ उसने उनसे कहा, “नहीं नहीं, तुम इस देश की दुर्दशा देखने ही को आए हो।” १२ उन्होंने कहा, “हम तेरे दास बारह भाई हैं, और कनान देशवासी एक ही पुस्त के पुत्र हैं, और छोटा इस समय हमारे पिता के पास है, और एक जाता रहा।” १३ तब यसुफ ने उनसे कहा, “मैंने तो तुम से कह दिया, कि तुम भेदिए हो;” १४ अतः इसी रीति से तुम परखे जाओगे, फ़िरौन के जीवन की शपथ, जब तक तुहारा छोटा भाई यहाँ न आए, तब तक तुम यहाँ से न निकलने पाओगे। १५ इसलिए अपने मैं से एक को भेज दो कि वह तुम्हारे भाई को ले आए, और तुम लोग बढ़ी रहोगे; इस प्रकार तुम्हारी बातें परवरी जाँहीं कि तुम मैं सच्चाई है कि नहीं। यदि सच्चे न ठहरे तब तो फ़िरौन के जीवन की शपथ तुम निश्चय ही भेदिए समझे जाओगे।” १६ तब उसने उनको तीन दिन तक बन्दीगृह में रखा। १७ तीसरे दिन यसुफ ने उसे कहा, “एक काम करो तब जीवित रहोगे; क्योंकि मैं परमेश्वर का भय मानता हूँ;” १८ यदि तुम सीधे मनुष्य हो, तो तुम सब भाइयों में से एक जन इस बन्दीगृह में बँधुआ रहे, और तुम अपने घरवालों की भूख मिटाने के लिये अन्न ले जाओ। १९ और अपने छोटे भाई को मेरे पास ले आओ; इस प्रकार तुम्हारी बातें सच्ची ठहरेंगी, और तुम मार डाले न जाओगे।” तब उन्होंने वैसा ही किया।

२१ उन्होंने आपस में कहा, “निःसन्देह हम अपने भाई के विषय में दोषी हैं, क्योंकि जब उसने हम से गिडगिडाकर बिनती की, तब भी हमने यह देखकर, कि उसका जीवन कैसे संकट में पड़ा है, उसकी न सुनी; इसी कारण हम भी अब इस संकट में पड़े हैं।” २२ रूबेन ने उसने कहा, “क्या मैंने तुम से न कहा था कि लड़के के अपराधी मत बनो? परन्तु तुम ने न सुना। देखो, अब उसके लह का बदला लिया जाता है।” २३ यसुफ की और उनकी बातचीत जो एक दुभाषिया के द्वारा होती थी, इससे उनको मालूम न हुआ कि वह उनकी बोली समझता है। २४ तब वह उनके पास से हटकर रोने लगा; फिर उनके पास लौटकर और उससे बातचीत करके उनमें से शिमोन को छाँट निकाला और उनके सामने उसे बन्दी बना लिया। २५ तब यसुफ ने आज्ञा दी, कि उनके बोरे अन्न से भरो और एक-एक जन के बोरे में उसके स्पर्यों को भी रख दो, फिर उनको मारा के लिये भोजनवस्तु दो। अतः उनके साथ ऐसा ही किया गया। २६ तब वे अपना अन्न अपने गदहों पर लादकर वहाँ से चल दिए। २७ सराय में जब एक ने अपने गदहों पर चारा देने के लिये अपना बोरा खोला, तब उसका स्पर्य बोरे के मूँह पर रखा हुआ दिखलाई पड़ा। २८ तब उसने अपने भाइयों से कहा, “मेरा स्पर्य तो लौटा दिया गया है, देखो, वह मेरे बोरे में है,” तब उनके जी मैं जी न रहा, और वे एक दूसरे की ओर भय से ताकने लगे, और बोले, “परमेश्वर ने यह हम से क्या किया है?” २९ तब वे कनान देश में अपने पिता याकूब के पास आए, और अपना सारा वृत्तान्त उसे इस प्रकार वर्णन किया: ३० “जो पुस्त उस देश का स्वामी है, उसने हम से कठोरता के साथ बातें की, और हमको देश के भेदिए कहा।” ३१ तब हमने उससे कहा, “हम सीधे लोग हैं, भेदिए नहीं।” ३२ हम बारह भाई एक ही पिता के पुत्र हैं, एक जो जाता रहा, परन्तु छोटा इस समय कनान देश में हमारे पिता के पास है।” ३३ तब उस पुस्त ने, जो उस देश का स्वामी है, हम से कहा, “इससे मालूम हो जाएगा कि तुम सीधे मनुष्य हो; तुम अपने मैं से एक को मेरे पास छोड़कर अपने घरवालों की भूख मिटाने के लिये कुछ ले जाओ, ३४ और अपने छोटे भाई को मेरे पास ले आओ।” ३५ तब उनके जीवन के लिये यह उन्होंने कहा, “मेरा पुत्र उस देश की बातों की ओर आए हो, और उनको भेदिए नहीं, सीधे लोग हो।” फिर मैं तुम्हारे भाई को तम्हें सौप ढूँगा, और तुम इस देश में लेन-देन कर सकोगे।” ३६ यह कहकर वे अपने-अपने बोरे से अन्न निकालने लगे, तब, क्या देखा, कि एक-एक जन के स्पर्य की थैली उसी के बोरे में रखी है। तब स्पर्य की थैलियों को देखकर वे और उनका पिता बहुत डर गए। ३७ तब उनके पिता याकूब ने उनसे कहा, “मुझ को तुम मैं निवृत्ति कर दिया, देखो, यसुफ नहीं रहा, और शिमोन भी नहीं आया, और अब तुम बिन्यामीन को भी भी ले जाना चाहते हो। ये सब विपत्तियाँ मैं ऊपर आ पड़ी हैं।” ३८ रूबेन ने अपने पिता से कहा, “यदि मैं उसको तेरे पास न लाऊँ, तो मेरे दोनों पुत्रों को मार डालना; तू उसको मेरे हाथ में सौंप दे, मैं उसे तेरे पास फिर पहुँचा दूँगा।” ३९ उसने कहा, “मेरा पुत्र तुम्हारे संग न जाएगा; क्योंकि उसका भाई मर गया है, और वह अब अकेला रह गया है; इसलिए जिस मार्ग से तुम जाओगे, उसमें यदि उस पर कोई विपत्ति आ पड़े, तब तो तुम्हारे कारण मैं इस बुदापे की अवस्था में शोक के साथ अधोलोक में उत्तर जाऊँगा।” (Sheol h7585)

४३ कनान देश में अकाल और भी भयंकर होता गया। १ जब वह अन्न जो वे मिस्र से ले आए थे, समाप्त हो गया तब उनके पिता ने उनसे कहा, “फिर जाकर हमारे लिये थोड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओ।” २ तब यहदा ने उससे कहा, “उस पुस्त ने हमको चेतावनी देकर कहा, ‘यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे संग न आए, तो तुम मैरे सम्मुख न आने पाओगे।’” ३ इसलिए यदि तू हमारे भाई को हमारे संग न आए, तो तुम मैरे भोजनवस्तु मोल ले आएंगे; ४ परन्तु यदि तू उसको न भेजे, तो हम न जाएंगे, क्योंकि उस पुस्त ने

हम से कहा, ‘यदि तुम्हारा भाई तुम्हरे संग न हो, तो तुम मेरे सम्मुख न आने पाओगे।’” ६ तब इसाएल ने कहा, “तुम ने उस पुस्तक को यह बताकर कि हमारा एक और भाई है, क्यों मुझसे बुरा बर्ताव किया?” ७ उन्होंने कहा, “जब उस पुस्तक ने हमारी और हमारे कुटुंबियों की स्थिति के विषय में इस रीति पढ़ा, ‘क्या तुम्हारा पिता अब तक जीवित है? क्या तुम्हारे कोई और भाई भी है?’ तब हमने इन प्रश्नों के अनुसार उससे वर्णन किया; फिर हम क्या जानते थे कि वह कहेगा, ‘अपने भाई को यहाँ ले आओ।’” ८ फिर यहदा ने अपने पिता इसाएल से कहा, “उस लड़के को मेरे संग भेज दे, कि हम चले जाएँ; इससे हम, और तु, और हमारे बाल-बच्चे मने न पाएँगे, वरन् जीवित रहेंगे। ९ मैं उसका जामिन होता हूँ; मेरे ही हाथ से तु उसको वापस लेना। यदि मैं उसको तेरे पास पहुँचकर सामने न खड़ा कर दूँ, तब तो मैं सदा के लिये तेरा अपराधी ठहरँगा। १० यदि हम लोग विलम्ब न करें, तो अब तक दसरी बार लौट आते।” ११ तब उनके पिता इसाएल ने उनसे कहा, “यदि सचमुच ऐसी ही बात है, तो यह करो; इस देश की उत्तम-उत्तम वस्तुओं में से कुछ कुछ अपने बोरों में उस पुस्तक के लिये भेट ले जाओ: जैसे थोड़ा सा बलसान, और थोड़ा सा मध्य, और कुछ सुगन्ध-द्रव्य, और गन्धस, पिस्ते, और बादाम। १२ फिर अपने-अपने साथ दूना स्पया ले जाओ; और जो स्पया तुम्हारे बोरों के मूँह पर रखकर लौटा दिया गया था, उसको भी लेते जाओ; कदाचित् यह भूल से हुआ हो। १३ अपने भाई को भी संग लेकर उस पुस्तक के पास फिर जाओ, १४ और सर्वशक्तिमान परमेश्वर उस पुस्तक को तुम पर दयालु करेगा, जिससे कि वह तुम्हारे दूसरे भाई को और बिन्यामीन को भी आने दे: और यदि मैं निर्वश हुआ तो होने दो।” १५ तब उन मनुष्यों ने वह भेट, और दूना स्पया, और बिन्यामीन को भी संग लिया, और चल दिए और मिस्र में पहुँचकर यसुफ के सामने खड़े हुए। १६ उनके साथ बिन्यामीन को देखकर यसुफ ने अपने घर के अधिकारी से कहा, “उन मनुष्यों को घर में पहुँचा दो, और पशु मारकर भोजन तैयार करो, क्योंकि वे लोग दोपहर को मेरे संग भोजन करेंगे।” १७ तब वह अधिकारी पुस्तक यसुफ के कहने के अनुसार उन पुरुषों को यसुफ के घर में ले गया। १८ जब वे यसुफ के घर को पहुँचाए गए तब वे आपस में डरकर कहने लगे, “जो स्पया पहली बार हमारे बोरों में लौटा दिया गया था, उसी के कारण हम भीतर पहुँचा ए गए हैं; जिससे कि वह पुस्तक हम पर टट पड़े, और हमें वश में करके अपने दास बनाए, और हमारे गदहों को भी छीन ले।” १९ तब वे यसुफ के घर के अधिकारी के निकट जाकर घर के द्वार पर इस प्रकार कहने लगे, २० “हे हमारे प्रभु, जब हम पहली बार अन्न मोल लेने को आए थे, २१ तब हमने सराय में पहुँचकर अपने बोरों को खोला, तो क्या देखा, कि एक-एक जन का पूा-पूरा स्पया उसके बोरे के मूँह पर रखा है; इसलिए हम उसको अपने साथ फिर लेते आए हैं। २२ और दूसरा स्पया भी भोजनकर्तु मोल लेने के लिये लाए हैं; हम नहीं जानते कि हमारा स्पया हमारे बोरों में किसने रख दिया था।” २३ उसने कहा, “तुम्हारा कुशल हो, मत डरो: तुम्हारा परमेश्वर, जो तुम्हारे पिता का भी परमेश्वर है, उसी ने तुम को तुम्हारे बोरों में धन दिया होगा, तुम्हारा स्पया तो मुझ को मिल गया था।” फिर उसने शिमोन को निकालकर उनके संग कर दिया। २४ तब उस जन ने उन मनुष्यों को यसुफ के घर में ले जाकर जल दिया, तब उन्होंने अपने पाँवों को धोया; फिर उसने उनके गदहों के लिये चारा दिया। २५ तब यह सुनकर, कि आज हमको यही भोजन करना होगा, उन्होंने यसुफ के अने के समय तक, अर्थात् दोपहर तक, उस भेट को इक्ष्य कर रखा। २६ जब यसुफ घर आया तब वे उस भेट को, जो उनके हाथ में थी, उसके सम्मुख घर में ले गए, और भूमि पर गिरकर उसको दण्डवत् किया। २७ उसने उनका कुशल पूछा और कहा, “क्या तुम्हारा बूढ़ा पिता, जिसकी तुम ने

चर्चा की थी, कुशल से है? क्या वह अब तक जीवित है?” २८ उन्होंने कहा, “हाँ तेरा दास हमारा पिता कुशल से है है और अब तक जीवित है।” तब उन्होंने सिर झुकाकर फिर दण्डवत् किया। २९ तब उसने आँखें उठाकर और अपने सगे भाई बिन्यामीन को देखकर पूछा, “क्या तुम्हारा वह छोटा भाई, जिसकी चर्चा तुम ने मुझसे की थी, यही है?” फिर उसने कहा, “हे मेरे पुत्र, परमेश्वर तुझ पर असुह करो।” ३० तब अपने भाई के देह से मन भर आने के कारण और यह सोचकर कि मैं कहाँ जाकर रोऊँ, यसुफ तुन्त अपनी कोठरी में गया, और वहाँ रो पड़ा। ३१ फिर अपना मूँह धोकर निकल आया, और अपने को शान्त कर कहा, “भोजन परोसो।” ३२ तब उन्होंने उसके लिये तो अलग, और भाइयों के लिये भी अलग, और जो मिस्री उसके संग खाते थे, उनके लिये भी अलग, भोजन परोसा; इसलिए कि मिस्री इश्वियों के साथ भोजन नहीं कर सकते, वरन् मिस्री ऐसा करना धृष्टिं समझते थे। ३३ सो यसुफ के भाई उसके सामने, बड़े-बड़े पहले, और छोटे-छोटे पीछे, अपनी-अपनी अवस्था के अनुसार, क्रम से बैठाए गए; यह देख वे विस्मित होकर एक दूसरे की ओर देखने लगे। ३४ तब यसुफ अपने सामने से भोजन-वस्तु उठा-उठाकर उनके पास भेजने लगा, और बिन्यामीन को अपने भाइयों से पाँचगुना भोजनवस्तु मिलिए। और उन्होंने उसके संग मनमाना खाया पिया।

४४ तब उसने अपने घर के अधिकारी को आज्ञा दी, “इन मनुष्यों के बोरों में जितनी भोजनवस्तु समा सके उतनी भर दे, और एक-एक जन के स्पये को उसके बोरे के मूँह पर रख दे। ३५ और मेरा चाँदी की कटोरा छोटे भाई के बोरे के मूँह पर उसके अन्न के स्पये के साथ रख दे।” यसुफ की इस आज्ञा के अनुसार उन्होंने किया। ३६ सबै भोर होते ही वे मनुष्य अपने गदहों समेत विदा किए गए। ३७ वे नार से निकले ही थे, और दूर न जाने पाए थे कि यसुफ ने अपने घर के अधिकारी से कहा, “उन मनुष्यों को पीछा कर, और उनको पाकर उनसे कह, ‘तुम ने भलाई के बदले बुराई क्यों की है?’ ३८ क्या यह वह वस्तु नहीं जिसमें मेरा स्वामी पीता है, और जिससे वह शकुन भी विचार करता है? तुम ने यह जो किया है सो बुरा किया।” ३९ तब उसने उन्हें जा पकड़ा, और ऐसी ही बातें उनसे कहीं। ४० उन्होंने उससे कहा, “हे हमारे प्रभु, तू ऐसी बातें क्यों कहता है? ऐसा काम करना तेरे दासों से दूर रहे। ४१ देख जो स्पया हमारे बोरों के मूँह पर निकला था, जब हमने उसको कनान देश से तेरा आकर तुझे लौटा दिया, तब भला, तेरे स्वामी के घर में से हम कोई चाँदी या सोने की वस्तु कैसे चुरा सकते हैं? ४२ तेरे दासों में से जिस किसी के पास वह निकले, वह मार डाला जाए, और हम भी अपने उस प्रभु के दास हो जाएँ।” ४३ उसने कहा, “तुम्हारा ही कहना सही, जिसके पास वह निकले वह मेरा दास होगा; और तुम लोग निर्देश ठहरोगे।” ४४ इस पर वे जल्दी से अपने-अपने बोरे को उतार भूमि पर रखकर उन्हें खोलने लगे। ४५ तब वह हँड़ने लगा, और बड़े के बोरे से लेकर छोटे के बोरे तक खोज की: और कटोरा बिन्यामीन के बोरे में मिला। ४६ तब उन्होंने अपने-अपने वस्तु फाड़े, और अपना-अपना गदहा लादकर नगर को लौट गए। ४७ जब यहदा और उसके भाई यसुफ के घर पर हुँचे, और यसुफ वही था, तब वे उसके सामने भूमि पर गिरे। ४८ यसुफ ने उनसे कहा, “तुम लोगों ने यह कैसा काम किया है? क्या तुम न जानते थे कि मुझ सा मनुष्य शकुन विचार सकता है?” ४९ यहदा ने कहा, “हम लोग अपने भूमि पर क्या कहें? हम क्या कहकर अपने को निर्देश ठहराएँ? परमेश्वर ने तेरे दासों के अर्धम को पकड़ लिया है। हम, और जिसके पास कटोरा निकला वह भी, हम सब के सब अपने प्रभु के दास ही हैं।” ५० उसने कहा, “ऐसा करना मुझसे दूर रहे, जिस जन के पास कटोरा निकला है,

वही मेरा दास होगा, और तुम लोग अपने पिता के पास कुशल क्षेम से चले जाओ।” १८ तब यहदा उसके पास जाकर कहने लगा, “हे मेरे प्रभु, तेरे दास को अपने प्रभु से एक बात कहने की आज्ञा हो, और तेरा कोप तेरे दास पर न भड़के; क्योंकि तू तेरे फ़िरैन के तुल्य है।” १९ मेरे प्रभु ने अपने दासों से पूछा था, ‘क्या तुम्हरे पिता या भाई हैं?’ २० और हमने अपने प्रभु से कहा, ‘हाँ, हमारा बुद्धि पिता है, और उसके बुद्धिपैकी का एक छोटा सा बालक भी है, परन्तु उसका भाई नहीं रह गया है, इसलिए वह अब अपनी माता का अकेला ही रह गया है, और उसका पिता उससे सेह रखता है।’ २१ तब तने अपने दासों से कहा था, ‘उसको मेरे पास ले आओ, जिससे मैं उसको देखूँ।’ २२ तब हमने अपने प्रभु से कहा था, ‘वह लड़का अपने पिता को नहीं छोड़ सकता; नहीं तो उसका पिता मर जाएगा।’ २३ और तौने अपने दासों से कहा, ‘यदि तुम्हारा छोटा भाई तुम्हरे संग न आए, तो तुम मेरे सम्मुख फिर न आने पाओगे।’ २४ इसलिए जब हम अपने पिता तेरे दास के पास गए, तब हमने उससे अपने प्रभु की बातें कहीं। २५ तब हमरे पिता ने कहा, ‘फिर जाकर हमरे लिये थोड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओ।’ २६ हमने कहा, ‘हम नहीं जा सकते, हाँ, यदि हमारा छोटा भाई हमारे सांग रहे, तब हम जाएँगे; क्योंकि यदि हमारा छोटा भाई हमारे संग न रहे, तो हम उस पूरुष के सम्मुख न जाने पाएँगे।’ २७ तब तेरे दास मेरे पिता ने हम से कहा, ‘तुम तो जानते हो कि मेरी झी से दो पुत्र उत्पन्न हुए।’ २८ और उनमे से एक तो मुझे छोड़ ही गया, और मैंने निश्चय कर दिया, कि वह फाड़ डाला गया होगा; और तब से मैं उसका मूँह न देखा पाया। २९ अतः यदि तुम इसको भी मेरी आँख की आड़ में ले जाओ, और कोई विपत्ति इस पर पड़े, तो तुम्हरे कारण मैं इस बुद्धिपैकी की अवस्था में शोक के साथ अधोलोक में उतर जाऊँगा।’ (Sheol h7585) ३० इसलिए जब मैं अपने पिता तेरे दास के पास पहुँचूँ, और यह लड़का संग न रहे, तब, उसका प्राण जो इसी पर अटका रहता है, ३१ इस कारण, यह देखकर कि लड़का नहीं है, वह तुरन्त ही मर जाएगा। तब तेरे दासों के कारण तेरा दास हमारा पिता, जो बुद्धिपैकी अवस्था में है, शोक के साथ अधोलोक में उतर जाएगा। (Sheol h7585) ३२ फिर तेरा दास अपने पिता के यहाँ यह कहकर इस लड़के का जामिन हआ है, ‘यदि मैं इसको तेरे पास न पहुँचा दूँ, तब तो मैं सदा के लिये तेरा अपराधी ठहरूँगा।’ ३३ इसलिए अब तेरा दास इस लड़के के बदले अपने प्रभु का दास होकर रहने की आज्ञा पाए, और यह लड़का अपने भाइयों के संग जाने दिया जाए। ३४ क्योंकि लड़के के बिना संग रहे मैं कैसे अपने पिता के पास जा सकँगा; ऐसा न हो कि मेरे पिता पर जो दुःख पड़ेगा वह मुझे देखना पड़े।’

४५ तब यूसुफ उन सब के सामने, जो उसके आस-पास खड़े थे, अपने को और रोक न सका; और पुकारकर कहा, “मेरे आस-पास से सब लोगों को बाहर कर दो।” भाइयों के सामने अपने को प्रगट करने के समय यूसुफ के संग और कोई न रहा। ३५ तब वह चिल्ला चिल्लाकर रोने लगा; और मिस्रियों ने सुना, और फ़िरैन के घर के लोगों को भी इसका समाचार मिला। ३६ तब यूसुफ अपने भाइयों से कहने लगा, “मैं यूसुफ हूँ, क्या मेरा पिता अब तक जीवित है?” इसका उत्तर उसके भाई न दे सके; क्योंकि वे उसके सामने घबरा गए थे। ३७ पिर यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, “मेरे निकट आओ।” यह सुनकर वे निकट गए। फिर उसने कहा, “मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूँ, जिसको तुम ने मिस्र अनेवालों के हाथ बेच डाला था।” ३८ अब तुम लोग मत पछताओ, और तुम ने जो मुझे यहाँ बेच डाला, इससे उदास मत हो; क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे प्राणों को बचाने के लिये मुझे तुम्हरे आगे भेज दिया है। ३९ क्योंकि अब दो वर्ष से इस देश में अकाल है; और अब पाँच वर्ष और ऐसे ही होंगे कि उनमें न तो हल चलेगा और न अन्न काटा जाएगा। ४० इसलिए परमेश्वर ने मुझे

तुम्हारे आगे इसलिए भेजा कि तुम पृथ्वी पर जीवित रहो, और तुम्हारे प्राणों के बचने से तुम्हारा वंश बढ़े। ४१ इस रीति अब मुझ को यहाँ पर भेजनेवाले तुम नहीं, परमेश्वर ही ठहरा; और उसी ने मुझे फ़िरैन का पिता सा, और उसके सारे घर का स्वामी, और सारे मिस्र देश का प्रभु ठहरा दिया है। ४२ अतः शीघ्र मेरे पिता के पास जाकर कहो, ‘तेरा पुत्र यूसुफ इस प्रकार कहता है, कि परमेश्वर ने मुझे सारे मिस्र का स्वामी ठहराया है; इसलिए तू मेरे पास बिना विलम्ब किए चला आ।’ ४३ और तेरा निवास गोशेन देश में होगा, और तू बेटे, पोतों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, और अपने सब कुछ समेत मेरे निकट रहेगा। ४४ और अकाल के जो पाँच वर्ष और होंगे, उनमें मैं वहीं तेरा पालन-पोषण करूँगा; ऐसा न हो कि तू, और तेरा घराना, वरन् जितने रहे हैं, वे भर्खे मरें।’ ४५ और तुम अपनी आँखों से देखते हो, और मेरा भाई बिन्यामीन भी अपनी आँखों से देखता है कि जो हम से बातें कर रहा है वह यूसुफ है। ४६ तुम मेरे सब वैष्वक वा, जो मिस्र में है और जो कुछ तुम ने देखा है, उस सब का मेरे पिता से वर्णन करना; और तुरन्त मेरे पिता को यहाँ ले आना।’ ४७ और वह अपने भाई बिन्यामीन के गले से लिपटकर रोया; और बिन्यामीन भी उसके गले से लिपटकर रोया। ४८ वह अपने सब भाइयों को चूमकर रोया और इसके पश्चात उसके भाई उससे बातें करने लगे। ४९ इस बात का समाचार कि यूसुफ के भाई आए हैं, फ़िरैन के भवन तक पहुँच गया, और इससे फ़िरैन और उसके कर्मचारी प्रसन्न हुए। ५० इसलिए फ़िरैन ने यूसुफ से कहा, “अपने भाइयों से कह कि एक काम करो: अपने पशुओं को लादकर कनान देश में चले जाओ।” ५१ और अपने पिता और अपने-अपने घर के लोगों को लेकर मेरे पास आओ; और मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है वह मैं तुम्हें देंगा, और तुम्हें देश के उत्तम से उत्तम पदार्थ खाने को मिलेंगे। ५२ और तुम्हे आज्ञा मिली है, ‘तुम एक काम करो कि मिस्र देश से अपने बाल-बच्चों और स्त्रियों के लिये गाड़ियाँ ले जाओ, और अपने पिता को ले आओ।’ ५३ और अपनी सामग्री की चिन्ता न करना; क्योंकि सारे मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है वह तुम्हारा है।” ५४ इस्माइल के पुत्रों ने वैसा ही किया, और यूसुफ ने फ़िरैन की आज्ञा के अनुसार उन्हें गाड़ियाँ दी, और मार्ग के लिये भोजन-सामग्री भी दी। ५५ उन्होंने एक-एक जन को तो उनसे एक-एक जोड़ा बच्चा भी दिया; और बिन्यामीन को तीन सौ स्पे के टकड़े और पाँच जोड़े बच्चे दिए। ५६ अपने पिता के पास उसने जो भेजा वह यह है, अर्थात मिस्र की अच्छी सस्तुओं से लदे हुए दस दस गहरे, और अन्न और रोटी और उसके पिता के मार्ग के लिये भोजनवस्तु से लदी हुई दस गहरियाँ। ५७ तब उसने अपने भाइयों को विदा किया, और वे चल दिए; और उसने उनसे कहा, “मार्ग में कहीं झगड़ा न करना।” ५८ मिस्र से चलकर वे कनान देश में अपने पिता याकूब के पास पहुँचे। ५९ और उससे यह वर्णन किया, “यूसुफ अब तक जीवित है, और सारे मिस्र देश पर प्रभुता वहीं करता है।” पर उसने उन पर विच्वास न किया, और वह अपने आपे मैं न रहा। ६० तब उन्होंने अपने पिता याकूब से यूसुफ की सारी बातें, जो उसने उनसे कहीं थी, कह दी; जब उसने उन गाड़ियों को देखा, जो यूसुफ ने उसके ले आने के लिये भेजी थी, तब उसका चित्त स्थिर हो गया। ६१ और इस्माइल ने कहा, “बस, मेरा पुत्र यूसुफ अब तक जीवित है; मैं अपनी मृत्यु से पहले जाकर उसको देखूँगा।”

४६ तब इस्माइल अपना सब कुछ लेकर बेर्बेबा को गया, और वहाँ अपने पिता इस्माइल के परमेश्वर को बल्दिनाम चढ़ाया। ६२ तब परमेश्वर ने इस्माइल से रात को दर्शन में कहा, “हे याकूब है याकूब!” उसने कहा, “क्या आज्ञा।” ६३ उसने कहा, “मैं परमेश्वर तेरे पिता का परमेश्वर हूँ, तू मिस्र में जाने से मत डर; क्योंकि मैं तुझ से वहाँ एक बड़ी जाति बनाऊँगा।” ६४ मैं तेरे संग-

संग मिस्त्र को चलता हूँ; और मैं तुझे बहाँ से फिर निश्चय ले आऊँगा; और यस्तुक अपने हाथ से तेरी आँखों को बन्द करेगा।” ५ तब याकूब बेर्सिया से चला; और इमाएल के पुत्र अपने पिता याकूब, और अपने बाल-बच्चों, और डिंडों को उन गाड़ियों पर, जो फ़िरौन ने उनके ले आने को भेजी थी, चढ़ाकर चल पड़े। ६ वे अपनी भेड़-बकरी, गाय-बैल, और कनान देश में अपने इकट्ठा किए हुए सारे धन को लेकर मिस्त्र में आए। ७ और याकूब अपने बेटे-बेटियों, पोते-पोतियों, अर्थात् अपने वंश भर को अपने सांग मिस्त्र में ले आया। ८ याकूब के साथ जो इमाएली, अर्थात् उसके बेटे, पोते, आदि मिस्त्र में आए, उनके नाम ये हैं याकूब का जेठा रुबेन था। ९ और रुबेन के पुत्र हनोक, पल्लू, हेसोन, और कर्मी थे। १० शिमोन के पुत्र, यमूल, यामीन, ओहद, याकीन, सोहर, और एक कनानी जी से जन्मा हुआ शाऊल भी था। ११ लेवी के पुत्र गेरेशन, कहात, और मरारी थे। १२ यहदा के एर, ओनान, शेरोला, पेरेस, और जेरह नामक पुत्र हुए तो थे; पर एर और ओनान कनान देश में गढ़ गए थे; और पेरेस के पुत्र, हेसोन और हामूल थे। १३ इस्साकार के पुत्र, तोला, पुज्बा, योब और शिमोन थे। १४ जबलून के पुत्र, सेरेद, एलोन, और यहलेल थे। १५ लिआ के पुत्र जो याकूब से पढ़नराम में उत्पन्न हुए थे, उनके बेटे पोते ये ही थे, और इनसे अधिक उसके साथ एक बेटी दीना को भी जन्म दिया। यहाँ तक तो याकूब के सब वंशवाले तैतीस प्राणी हुए। १६ फिर गाद के पुत्र, सपेन, हामी, शूनी, एसबोन, एरी, असोदी, और असेली थे। १७ अशेर के पुत्र, यिम्ना, यित्वा, यित्वी, और बरीआ थे, और उनकी बहन सेरह थी; और बरीआ के पुत्र, हेबेर और मल्कीएल थे। १८ जिल्पा, जिसे लाबान ने अपनी बेटी लिआ को दिया था, उसके बेटे पोते आदि ये ही थे; और उसके द्वारा याकूब के सोलह प्राणी उत्पन्न हुए। १९ फिर याकूब की पत्नी राहेल के पुत्र यस्तुक और बिन्यामीन थे। २० और मिस्त्र देश में ओन के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत से यस्तुक के ये पुत्र उत्पन्न हुए, अर्थात् मनशरे और एप्रैम। २१ बिन्यामीन के पुत्र, बेला, बेकर, अशबेल, गेरा, नामान, एही, रोश, मुपीम, हृपीम, और अर्द थे। २२ राहेल के पुत्र जो याकूब से उत्पन्न हुए उनके ये ही पुत्र थे; उसके ये सब बेटे-पोते चौदह प्राणी हुए। २३ फिर दान का पुत्र हशीम था। २४ नसली के पुत्र, यहसेल, गूनी, येसेर, और शिल्लम थे। २५ बिल्हा, जिसे लाबान ने अपनी बेटी राहेल को दिया, उसके बेटे पोते ये ही हैं, उसके द्वारा याकूब के वंश में सात प्राणी हुए। २६ याकूब के निज वंश के जो प्राणी मिस्त्र में आए, वे उसकी बहुओं को छोड़ सब मिलकर छियासठ प्राणी हुए। २७ और यस्तुक के पुत्र, जो मिस्त्र में उससे उत्पन्न हुए, वे दो प्राणी थे; इस प्रकार याकूब के घराने के जो प्राणी मिस्त्र में आए सो सब मिलकर सतर हुए। २८ फिर उसने यहदा को अपने आगे यस्तुक के पास भेज दिया कि वह उसको गोशेन का मार्ग दिखाएँ; और वे गोशेन देश में आए। २९ तब यस्तुक अपना रथ जुलाकर अपने पिता इमाएल से भेट करने के लिये गोशेन देश को गया, और उससे भेट करके उसके गले से लिपटा, और कुछ देर तक उसके गले से लिपटा हुआ रोता रहा। ३० तब इमाएल ने यस्तुक से कहा, “मैं अब मरने से भी प्रसन्न हूँ, क्योंकि तुझे जीवित पाया और तेरा मुँह देख लिया।” ३१ तब यस्तुक ने अपने भाइयों से और अपने पिता के घराने से कहा, “मैं जाकर फ़िरौन को यह समाचार दूँगा, ‘मेरे भाई और मेरे पिता के सारे घराने के लोग, जो कनान देश में रहते थे, वे मेरे पास आ गए हैं, ३२ और वे लोग चरवाहे हैं, क्योंकि वे पशुओं को पालते आए हैं; इसलिए वे अपनी भेड़-बकरी, गाय-बैल, और जो कुछ उनका है, सब ले आए हैं।” ३३ जब फ़िरौन तुम को बुलाकर पूछे, ‘तुम्हारा उधम क्या है?’ ३४ तब यह कहना, ‘तेरे दास लड़कपन से लेकर आज तक पशुओं को पालते आए

हैं, वरन् हमारे पुरखा भी ऐसा ही करते थे।’ इससे तुम गोशेन देश में रहने पाओगे; क्योंकि सब चरवाहों से मिस्त्री लोग घृणा करते हैं।”

३५ तब यस्तुक ने फ़िरौन के पास जाकर यह समाचार दिया, “मेरा पिता और मेरे भाई, और उनकी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और जो कुछ उनका है, ३६ फिर उसने अपने भाइयों में से पाँच जन लेकर फ़िरौन के सामने खड़े कर दिए। ३७ फ़िरौन ने उसके भाइयों से पछा, “तुम्हारा उधम क्या है?” उन्होंने फ़िरौन से कहा, “तेरे दास चरवाहे हैं, और हमारे पुरखा भी ऐसे ही रहे।” ३८ फिर उन्होंने फ़िरौन से कहा, “हम इस देश में परदेशी की भाँति रहने के लिये आए हैं, क्योंकि कनान देश में भारी अकाल होने के कारण तेरे दासों को भेड़-बकरियों के लिये चारा न रहा; इसलिए अपने दासों को गोशेन देश में रहने की आज्ञा दे।” ३९ जब फ़िरौन ने यस्तुक से कहा, “तेरा पिता और तेरे भाई तेरे पास आ गए हैं, ४० और मिस्त्र देश तेरे सामने पड़ा है; इस देश का जो सबसे अच्छा भाग हो, उसमें अपने पिता और भाइयों को बसा दे; अर्थात् वे गोशेन देश में ही होंगे; और यदि तु जानता हो, कि उनमें से परिश्रमी पुष्प हैं, तो उन्हें मेरे पशुओं के अधिकारी ठहरा दे।” ४१ तब यस्तुक ने अपने पिता याकूब को आकर फ़िरौन के सम्मुख खड़ा किया; और याकूब ने फ़िरौन को आशीर्वाद दिया। ४२ तब फ़िरौन ने याकूब से पछा, “तेरी आयु कितने दिन की हूँ है?” ४३ याकूब ने फ़िरौन से कहा, “मैं तो एक सौ तीस वर्ष परदेशी होकर अपना जीवन बिता चुका हूँ; मेरे जीवन के दिन थोड़े और दुःख से भरे हुए भी थे, और मेरे बापादादे परदेशी होकर जितने दिन तक जीवित रहे उनमें दिन का मैं अभी नहीं हूआ।” ४४ और याकूब फ़िरौन को आशीर्वाद देकर उसके सम्मुख से चला गया। ४५ तब यस्तुक ने अपने पिता और भाइयों को बसा दिया, और फ़िरौन की आज्ञा के अनुसार मिस्त्र देश के अच्छे से अच्छे भाग में, अर्थात् रामसेस नामक प्रदेश में, भूमि देकर उनको सौंप दिया। ४६ और यस्तुक अपने पिता का, और अपने भाइयों का, और पिता के सारे घराने का, एक-एक के बाल-बच्चों की गिनती के अनुसार, भोजन दिला-दिलाकर उनका पालन-पोषण करने लगा। ४७ उस सारे देश में खाने को कुछ न रहा; क्योंकि अकाल बहुत भारी था, और अकाल के कारण मिस्त्र और कनान दोनों देश नाश हो गए। ४८ और जितना स्पष्ट मिस्त्र और कनान देश में था, सब को यस्तुक ने उस अन्न के बदले, जो उनके निवासी मोल लेते थे इकट्ठा करके फ़िरौन के भवन में पहुँचा दिया। ४९ जब मिस्त्र और कनान देश का स्पष्ट समाप्त हो गया, तब सब मिस्त्री यस्तुक के पास आ आकर कहने लगे, “हमको भोजनवस्तु दे, क्या हम स्पष्ट के न रहने से तेरे रहने हुए मर जाएँ?” ५० यस्तुक ने कहा, “यदि स्पष्ट न हो तो अपने पशु दे दो, और मैं उनके बदले तम्हें खाने को दृश्या।” ५१ तब वे अपने पशु यस्तुक के पास ले आएँ; और यस्तुक उनको घोड़ों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और गदहों के बदले खाने को देने लगा: उस वर्ष में वह सब जाति के पशुओं के बदले भोजन देकर उनका पालन-पोषण करता रहा। ५२ वह वर्ष तो बीत गया; तब अगले वर्ष में उन्होंने उसके पास आकर कहा, “हम अपने प्रभु से यह बात छिपा न रखेंगे कि हमारा स्पष्ट समाप्त हो गया है, और हमारे सब प्रकार के पशु हमारे प्रभु के पास आ चुके हैं; इसलिए अब हमारे प्रभु के सामने हमारे शरीर और भूमि छोड़कर और कुछ नहीं रहा। ५३ हम रहे देखते क्यों में, और हमारी भूमि क्यों उजड़ जाएँ? हमको और हमारी भूमि को भोजनवस्तु के बदले मोल ले, कि हम अपनी भूमि समेत फ़िरौन के दास हों और हमको बीज दे, कि हम मरने न पाएँ, वरन् जीवित रहें, और भूमि न उजड़े।” ५४ तब यस्तुक ने मिस्त्र की सारी भूमि को फ़िरौन के लिये मोल लिया;

क्योंकि उस भयंकर अकाल के पड़ने से मिथियों को अपना-अपना खेत बेच डालना पड़ा। इस प्रकार सारी भूमि फ़िरौन की हो गई। २८ और एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक सारे मिथ देश में जो प्रजा रहती थी, उसको उसने नगरों में लाकर बसा दिया। २९ पर याजकों की भूमि तो उसने न मोल ली; क्योंकि याजकों के लिये फ़िरौन की ओर से नित्य भोजन का बन्दोबस्त था, और नित्य जो भोजन फ़िरौन उनको देता था वहीं के खाते थे; इस कारण उनको अपनी भूमि बेचनी न पड़ी। ३० तब यूसुफ ने प्रजा के लोगों से कहा, “सुनो, मैंने आज के दिन तुम को और तुम्हारी भूमि को भी फ़िरौन के लिये मोत लिया है, देखो, तुम्हारे लिये यहाँ बीज है, इसे भूमि में जोओ।” ३१ और जो कुछ उपजे उसका पंचमांश फ़िरौन को देना, बाकी चार अंश तुम्हारे रहेंगे कि तुम उसे अपने खेतों में बोओ, और अपने-अपने बाल-बच्चों और घर के अन्य लोगों समेत खाया करो।” ३२ उन्होंने कहा, “तुमे हमको बचा लिया है, हमारे प्रभु के अनुग्रह की दृष्टि हम पर बनी रहे, और हम फ़िरौन के दास होकर रहेंगे।” ३३ इस प्रकार यूसुफ ने मिथ की भूमि के विषय में ऐसा नियम ठहराया, जो आज के दिन तक चला आता है कि पंचमांश फ़िरौन को मिला करें: केवल याजकों ही की भूमि फ़िरौन की नहीं हुई। ३४ इसाएल्ली मिथ के गोशेन प्रदेश में रहने लगे; और वहाँ की भूमि उनके बश में थी, और वे फ़ैले-फ़त्ले, और अत्यन्त बढ़ गए। ३५ मिथ देश में याकूब सऋ वर्ष जीवित रहा इस प्रकार याकूब की सारी आयु एक सौ सैतालीस वर्ष की हुई। ३६ जब इसाएल के मरने का दिन निकट आ गया, तब उसने अपने पुत्र यूसुफ को बुलावाकर कहा, “यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो अपना हाथ मेरी जाँध के तले रखकर शपथ खा, कि तू मेरे साथ कृपा और सच्चाई का यह काम करेगा, कि मुझे मिथ में मिट्ठी न देगा।” ३७ जब मैं अपने बापादांदों के संग सो जाऊँगा, तब तू मुझे मिथ से उठा ले जाकर उन्हीं के कब्रिस्तान में रखेगा।” तब यूसुफ ने कहा, “मैं तेरे वचन के अनुसार करूँगा।” ३८ फिर उसने कहा, “मुझसे शपथ खा।” अतः उसने उससे शपथ खाई। तब इसाएल ने खाट के सिरहोने की ओर सिर झुकाकर प्रार्थना की।

४८ इन बातों के पश्चात् किसी ने यूसुफ से कहा, “सुन, तेरा पिता बीमार है।” तब वह मनशे और ऐप्रैम नामक अपने दोनों पुत्रों को संग लेकर उसके पास चला। १ किसी ने याकूब को बता दिया, “तेरा पुत्र यूसुफ तेरे पास आ रहा है,” तब इसाएल अपने को सम्भालकर खाट पर बैठ गया। २ और याकूब ने यूसुफ से कहा, “सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने कनान देश के लौज नगर के पास मुझे दर्शन देकर आशीष दी, ३ और कहा, ‘सुन, मैं तुझे फलवन्त करके बढ़ाऊँगा, और तुझे राज्य-राज्य की मण्डली का मूल बनाऊँगा, और तेरे पश्चात् तेरे वंश को यह देश दूँगा, जिससे कि वह सदा तक उनकी निज भूमि बनी रहे।’ ४ और अब तेरे दोनों पुत्र, जो मिथ में मेरे आने से पहले उत्पन्न हुए हैं, वे मेरे ही ठहरेंगे; अथवा जिस रीति से स्केबन और शिमोन मेरे हैं, उसी रीति से ऐप्रैम और मनशे भी मेरे ठहरेंगे। ५ और उनके पश्चात् तेरे जो सन्तान उत्पन्न हो, वह तेरे तो ठहरेंगे; परन्तु बैंटवरों के समय वे अपने भाइयों ही के वंश में गिने जाएँगे। ६ जब मैं पैदान से आता था, तब एप्राता पहुँचने से थोड़ी ही दूर पहले गहेल कनान देश में, मार्ग में, मेरे सामने मर गई; और मैंने उसे वही, अथवा एप्राता जो बैतलहम भी कहलाता है, उसी के मार्ग में मिट्ठी दी।” ७ तब इसाएल को यूसुफ के पुत्र देख पड़े, और उनने पूछा, “ये कौन हैं?” ८ यूसुफ ने अपने पिता से कहा, “ये मेरे पुत्र हैं, जो परमेश्वर ने मुझे यहाँ दिए हैं।” उसने कहा, “उनको मेरे पास ले आ कि मैं उन्हें आशीर्वाद दूँ।” ९ इसाएल की आँखें बुढ़ापे के कारण धन्धली हो गई थीं, यहाँ तक कि उसे कम सूझता था। तब यूसुफ उन्हें उसके पास ले गया; और उसने उन्हें चूमकर गले

लगा लिया। १० तब इसाएल ने यूसुफ से कहा, “मुझे आशा न थी, कि मैं तेरा मुख फिर देखने पाऊँगा: परन्तु देख, परमेश्वर ने मुझे तेरा वंश भी दिखाया है।” ११ तब यूसुफ ने उन्हें अपने पिता के घुटनों के बीच से हटाकर और अपने मुँह के बल भूमि पर गिरकर दण्डवत् की। १२ तब यूसुफ ने उन दोनों को लेकर, अर्थात् ऐप्रैम को अपने दाहिने हाथ से, कि वह इसाएल के बाएँ हाथ पड़े, और मनशे को अपने बाएँ हाथ से, कि इसाएल के दाहिने हाथ पड़े, उन्हें उसके पास ले गया। १३ तब इसाएल ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर ऐप्रैम के सिर पर पर रख दिया; उसने तो जान बद्धाकर ऐसा किया: नहीं तो जेठा मनशे ही था। १४ फिर उसने यूसुफ को आशीर्वाद देकर कहा, “परमेश्वर जिसके सम्मुख मेरे बापदादे अब्राहम और इस्हाहक चलते थे वहीं परमेश्वर मेरे जन्म से लेकर आज के दिन तक मेरा चरवाहा बना है; १५ और वहीं दूसरे मुझे सारी बुराई से छुड़ाता आया है, वहीं अब इन लड़कों को आशीष दे; और ये मेरे और मेरे बापदादे अब्राहम और इस्हाहक के कहलाएँ; और पृथ्वी में बहुतायत से बढ़ें।” १६ जब यूसुफ ने देखा कि मेरे पिता ने अपना दाहिना हाथ ऐप्रैम के सिर पर रखा है, तब यह बात उसको बुरी लगी; इसलिए उसने अपने पिता का हाथ इस मनसा से पकड़ लिया, कि ऐप्रैम के सिर पर से उठाकर मनशे के सिर पर रख दे। १७ और यूसुफ ने अपने पिता से कहा, “हे पिता, ऐसा नहीं; क्योंकि जेठा यहीं है; अपना दाहिना हाथ इसके सिर पर रख।” १८ उसके पिता ने कहा, “नहीं, सु, हे मेरे पुत्र, मैं इस बात को भर्ती भाँति जानता हूँ यद्यपि इससे भी मनुष्यों की एक मण्डली उत्पन्न होगी, और यह भी महान हो जाएगा, तो भी इसका छोटा भाई इससे अधिक महान हो जाएगा, और उसके वंश से बहुत सी जातियाँ निकलेंगी।” १९ फिर उसने उसी दिन यह कहकर उनको आशीर्वाद दिया, “इसाएली लोग तेरा नाम ले लेकर ऐसा आशीर्वाद दिया करेंगे, ‘परमेश्वर तुझे ऐप्रैम और मनशे के समान बना दे,’” और उसने मनशे से पहले ऐप्रैम का नाम लिया। २० तब इसाएल ने यूसुफ से कहा, “देख, मैं तो मरने पर हूँ पन्नू परमेश्वर तुम लोगों के संग रहेगा, और तुम को तुम्हारे पितरों के देश में फिर पहुँचा देगा।” २१ और मैं तुझको तेरे भाइयों से अधिक भूमि का एक भाग देता हूँ, जिसको मैंने ऐप्रैलियों के हाथ से अपनी तलवार और धनुष के बल से ले लिया है।”

४९ फिर याकूब ने अपने पुत्रों को यह कहकर बुलाया, इकट्ठे हो जाओ, १ मैं तुम को बताऊँगा, कि अन्त के दिनों में तुम पर क्या-क्या लीतीगा। २ हे याकूब के पुत्रों, इकट्ठे होकर सुनो, अपने पिता इसाएल की ओर कान लगाओ। ३ हे स्केबन, तू मेरा जेठा, मेरा बल, और मेरे पौस्तक का पहला फल है; प्रतिशा का उत्तम भाग, और शक्ति का भी उत्तम भाग तू ही है। ४ तू जो जल के समान उबलेवाला है, इसलिए दूसरों से श्वेष न ठहरेगा; क्योंकि तू अपने पिता की खाट पर चढ़ा, तब तुमें उसको अशुद्ध किया; वह मेरे बिछौने पर चढ़ गया। ५ शिमोन और लेवी तो भाई-भाई हैं, उनकी तलवारें उपद्रव के हथियार हैं। ६ हे मेरे जीव, उनके मर्म में न पड़, हे मेरी महिमा, उनकी सभा में मत मिल; क्योंकि उन्होंने कोप से मनुष्यों को घात किया, और अपनी ही इच्छा पर चलकर बैलों को पंग बनाया। ७ धिक्कार उनके कोप को, जो प्रचण्ड था; और उनके रोष को, जो निर्दय था; मैं उन्हें याकूब में अलग-अलग और इसाएल में तिरत-वितर कर दूँगा। ८ हे यहदा, तेरे भाई तेरा धन्यवाद करेंगे, तेरा हाथ तेरे शरुओं की गर्दन पर पड़ेगा; तेरे पिता के पुत्र तुम्हें दण्डवत् करेंगे। ९ यहदा सिंह का बच्चा है। हे मेरे पुत्र, तू अहेर करके गुणा में गया है वह सिंह अथवा सिंही के समान दबकर बैठ गया; फिर कौन उसको छेड़ेगा।

१० जब तक शीलों न आए तब तक न तो यहदा से राजदण्ड छूटेगा, न उसके बंश से व्यवस्था देनेवाला अलग होगा; और राज्य-राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएँगे। ११ वह अपने जवान गढ़ते को दाखलता में, और अपनी गढ़ी के बच्चे को उत्तम जाति की दाखलता में बाँधा करेगा; उसने अपने बच्चे दाखमधु में, और अपना पहरावा दाखों के रस में धोया है। १२ उसकी आँखें दाखमधु से चमकीली और उसके दाँत दृढ़ से ब्रेवे होंगे। १३ जबलून समुद्र तट पर निवास करेगा, वह जहाजों के लिये बन्दरगाह का काम देगा, और उसका परला भाग सीदोन के निकट पहुँचेगा। १४ इसाएल का एक बड़ा और बलवन्त गढ़हा है, जो पशुओं के बाढ़ों के बीच में टबका रहता है। १५ उसने एक विश्वामित्रस्थान देखकर, कि अच्छा है, और एक देश, कि मनोहर है, अपने कंधे को बोझ उठाने के लिये झुकाया, और बेगारी में दास का सा काम करने लगा। १६ दान इमाएल का एक गोत्र होकर अपने जातिभाइयों का न्याय करेगा। १७ दान मार्ग में का एक साँप, और रास्ते में का एक नाग होगा, जो घोड़े की नरी को डसता है, जिससे उसका सवार पछाड़ खाकर गिर पड़ता है। १८ हे यहोवा, मैं तुझी से उद्धार पाने की बात जोहता आया हूँ। १९ गाद पर एक दल चढ़ाई तो करेगा; पर वह उसी दल के पिछले भाग पर छापा मरेगा। २० आशेर से जो अन्न उत्पन्न होगा वह उत्तम होगा, और वह राजा के योग्य स्वादिष्ट भोजन दिया करेगा। २१ नमाली एक छूटी हुई हरिनी है; वह सुन्दर बातें बोलता है। २२ यसुफ बलवन्त लता की एक शाखा है, वह सोते के पास लगी हुई फलवन्त लता की एक शाखा है; उसकी डालियाँ दीवार पर से चढ़कर फैल जाती हैं। २३ धन्वर्धरियों ने उसको खेदित किया, और उस पर तीर मारे, और उसके पीछे पड़े हैं। २४ पर उसका धनुष ढूँढ़ रहा, और उसकी बाँह और हाथ याकूब के उत्ती शक्तिमान परमेश्वर के हाथों के द्वारा फूटीले हुए, जिसके पास से वह चरवाहा आएगा, जो इमाएल की चट्ठान भी ठहरेगा। २५ यह तेरे पिता के उस परमेश्वर का काम है, जो तेरी सहायता करेगा, उस सर्वशक्तिमान का जो तुझे ऊपर से आकाश में की आशीष, और नीचे से गहरे जल में की आशीष, और स्तनों, और गर्भ की आशीषें देगा। २६ तेरे पिता के आशीर्वाद में पितरों के आशीर्वादों से अधिक बढ़ गए हैं और सनातन पहाड़ियों की मनचाही वस्तुओं के समान बने रहेंगे वे यसुफ के सिर पर, जो अपने भाईयों से अलग किया गया था, उसी के सिर के मुकुट पर फूले फलेंगे। २७ बिन्यामीन फाइनेवाला भेड़िया है, सर्वे तो वह अद्वेर भक्षण करेगा, और सॉन्ड को लूट बाँट लेगा। २८ इमाएल के बारहों गोत्र ये ही हैं और उनके पिता ने जिस-जिस वचन से उनको आशीर्वाद दिया, वे ये ही हैं; एक-एक को उसके आशीर्वाद के अनुसार उसने आशीर्वाद दिया। २९ तब उसने यह कहकर उनको आज्ञा दी, “मैं अपने लोगों के साथ मिलें पर हूँ; इसलिए मुझे हिती ऐपोन की भूमिकाली गुफा में मेरे बापदादों के साथ मिट्टी देना, ३० अर्थात् उसी गुफा में जो कनान देश में मग्ने के समान वाली मकपेला की भूमि मैं हूँ; उस भूमि को अब्राहम ने हिती ऐपोन के हाथ से इसलिए मोल लिया था, कि वह कविस्तान के लिये उसकी निज भूमि हो। ३१ वहाँ अब्राहम और उसकी पत्नी सारा को मिट्टी दी गई थी; और वही मैंने लिआ को भी मिट्टी दी। ३२ वह भूमि और उसमें की गुफा हितियों के हाथ से मोल ली गई।” ३३ याकूब जब अपने पुत्रों को यह आज्ञा दे चुका, तब अपने पाँव खाट पर समेट प्राण छोड़े, और अपने लोगों में जा मिला।

५० तब यसुफ अपने पिता के मुँह पर गिरकर रोया और उसे चूमा। १ और यसुफ ने उन वैद्यों को, जो उसके सेवक थे, आज्ञा दी कि उसके पिता के शव में सुगन्ध-द्रव्य भरे; तब वैद्यों ने इमाएल के शव में सुगन्ध-द्रव्य भर दिए।

३ और उसके चालीस दिन पौरे हुए, क्योंकि जिनके शव में सुगन्ध-द्रव्य भरे जाते हैं, उनको इतने ही दिन पौरे हुए लगते हैं; और मिट्टी लोग उसके लिये सतर दिन तक विलाप करते रहे। ४ जब उसके विलाप के दिन बीत गए, तब यसुफ फ़िरौन के घराने के लोगों से कहने लगा, “यदि तुम्हारे अनुग्रह की दृष्टि सुन पर हो तो मेरी यह विनती फ़िरौन को सनाओ, ५ मेरे पिता ने यह कहकर, ‘देख मैं मरने पर हूँ’, मुझे यह शपथ खिलाई, ‘जो कब्र मैंने अपने लिये कनान देश में खुदवाई है उसी में तू मुझे मिट्टी देगा।’ इसलिए अब मुझे वहाँ जाकर अपने पिता को मिट्टी देने की आज्ञा दे, तपश्चात्मा मैं लौट आऊँगा।” ६ तब फ़िरौन ने कहा, “जाकर अपने पिता की खिलाई हुई शपथ के अनुसार उसको मिट्टी दो।” ७ इसलिए यसुफ अपने पिता को मिट्टी देने के लिये चला, और फ़िरौन के सब कर्मचारी, अर्थात् उसके भवन के पुरनिये, और मिस्र देश के सब पुनिये उसके संग चले। ८ और यसुफ के घर के सब लोग भी संग गए; पर वे अपने बाल-बच्चों, और भेड़-बकरियों, और गाय-बैलों को गोशेन देश में छोड़ गए। ९ और उसके संग रथ और सवार गए, इस प्रकार भीड़ बहुत भारी हो गई। १० जब वे आताद के खलिहान तक, जो यरदन नदी के पार है, पहुँचे, तब वहाँ अत्यन्त भारी विलाप किया, और यसुफ ने अपने पिता के लिये सात दिन का विलाप कराया। ११ आताद के खलिहान में के विलाप को देखकर उस देश के निवासी कनानियों ने कहा, “यह तो मिसियों का कोई भारी विलाप होगा।” इसी कारण उस स्थान का नाम आबेलमिसैम पड़ा, और वह यरदन के पार है। १२ इमाएल के पुत्रों ने ठीक वही काम किया जिसकी उसने उनको आज्ञा दी थी: १३ अर्थात् उन्होंने उसको कनान देश में ले जाकर मकपेला की उस भूमिकाली गुफा में, जो मग्ने के समान है, मिट्टी दी; जिसको अब्राहम ने हिती ऐपोन के हाथ से इसलिए मोल लिया था, कि वह कविस्तान के लिये उसकी निज भूमि हो। १४ अपने पिता को मिट्टी देने के लिये उसके संग गए थे, मिस्र लौट आया। १५ जब यसुफ के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता मर गया है, तब कहने लगे, “कदाचित् यसुफ अब हमारे पीछे पड़े, और जितनी बुराई हमने उससे की थी सब का पूरा बदला हम से ले।” १६ इसलिए उन्होंने यसुफ के पास यह कहला भेजा, “तेरे पिता ने मरने से पहले हमें यह आज्ञा दी थी, १७ ‘तुम लोग यसुफ से इस प्रकार कहना, कि हम विनती करते हैं, कि तू अपने भाइयों के अपराध और पाप को क्षमा कर; हमने तुझ से बुराई की थी, पर अब अपने पिता के परमेश्वर के दासों का अपराध क्षमा कर।’” उनकी ये बातें सुनकर यसुफ रो पड़ा। १८ और उसके भाई आप भी जाकर उसके समाने गिर पड़े, और कहा, “देख, हम तेरे दास हैं।” १९ यसुफ ने उनसे कहा, “मत डरो, क्या मैं परमेश्वर की जगह पर हूँ? २० यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिससे वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं। २१ इसलिए अब मत डरो: मैं तुम्हारा और तुम्हारे बाल-बच्चों का पालन-पोषण करता रहूँगा।” इस प्रकार उसने उनको समझा-बुझाकर शान्ति दी। २२ यसुफ अपने पिता के घराने समेत मिस्र में रहता रहा, और यसुफ एक सौ दस वर्ष जीवित रहा। २३ और यसुफ ऐप्रैम के परपोतों तक को देखने पाया और मनश्वे के पोते, जो माकीर के पुर थे, वे उत्पन्न हुए और यसुफ ने उन्हें गोद में लिया। २४ यसुफ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं तो मरने पर हूँ; परन्तु परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, और तुम्हें इस देश से निकालकर उस देश में पहुँचा देगा, जिसके देने की उसने अब्राहम, इस्हाक, और याकूब से शपथ खाई थी।” २५ फ़िर यसुफ ने इमाएलियों से यह कहकर कि परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि

लेगा, उनको इस विषय की शपथ खिलाई, “हम तेरी हड्डियों को यहाँ से उस देश में ले जाएँगे।” ३६ इस प्रकार यसुफ एक सौ दस वर्ष का होकर मर गया: और उसके शव में सुगन्ध-द्रव्य भरे गए, और वह शव मिस्र में एक शवपेटी में रखा गया।

निर्गमन

१ इसाएल के पुत्रों के नाम, जो अपने-अपने घराने को लेकर याकूब के साथ मिस्र देश में आए, ये हैं: २ स्बेन, शिमोन, लेवी, यहदा, ३ इस्साकार, जब्लून, बिन्यामीन, ४ दान, नमाली, गाद और आशेर। ५ और यूसुफ तो मिस्र में पहले ही आ चुका था। याकूब के निज वंश में जो उत्पन्न हुए वे सब सत्तर प्राणी थे। ६ यूसुफ, और उसके सब भाई, और उस पीढ़ी के सब लोग मर गिरे। ७ परन्तु इसाएल की सन्तान फूलने-फलने लगी; और वे अत्यन्त सामर्थी बनते चले गए; और इन्हाँना अधिक बढ़ गए कि सारा देश उनसे भर गया। ८ मिस्र में एक नया राजा ग़दी पर बैठा जो यूसुफ को नहीं जानता था। ९ और उनसे अपनी प्रजा से कहा, “देखो, इसाएली हम से गिनती और सामर्थ्य में अधिक बढ़ गए हैं। १० इसलिए आओ, हम उनके साथ बुद्धिमानी से बर्तव करें, कहीं ऐसा न हो कि जब वे बहुत बढ़ जाएँ, और यदि युद्ध का समय आ पड़े, तो हमारे बैरियों से मिलकर हम से लड़ें और इस देश से निकल जाएँ।” ११ इसलिए मिस्रियों ने उन पर बेगानी करानेवालों को नियुक्त किया कि वे उन पर भार डाल-डालकर उनको दुख दिया करें; तब उन्होंने फिरौन के लिये पितोम और रामसेस नामक भण्डारवाले नारों को बनाया। १२ पर ज्यों-ज्यों वे उनको दुख देते गए त्यों-त्यों वे बढ़ते और फैलते चले गए; इसलिए वे इसाएलियों से अच्यन्त डर गए। १३ तो भी मिस्रियों ने इसाएलियों से कठोरता के साथ सेवा करवाई; १४ और उनके जीवन को गरे, इंट और खेती के भाँति-भाँति के काम की कठिन सेवा से दुर्ली कर डाला; जिस किसी काम में वे उनसे सेवा करवाते थे उसमें वे कठोरता का व्यवहार करते थे। १५ शिप्रा और पूआ नामक दो इन्हीं दाइयों को मिस्र के राजा ने आज्ञा दी, १६ “जब तुम इन्हीं द्वियों को बच्चा उत्पन्न होने के समय प्रसव के पत्थरों पर बैठी देखो, तब यदि बेटा हो, तो उसे मार डालना; और बेटी हो, तो जीवित रहने देना।” १७ परन्तु वे दाइयाँ परमेश्वर का भय मानती थीं, इसलिए मिस्र के राजा की आज्ञा न मानकर लड़कों को भी जीवित छोड़ देती थी। १८ तब मिस्र के राजा ने उनको बुलावाकर पूछा, “तुम जो लड़कों को जीवित छोड़ देती हो, तो ऐसा क्यों करती हो?” १९ दाइयों ने फिरौन को उत्तर दिया, “इन्हीं द्वियों मिस्र के समान नहीं हैं; वे ऐसी फुर्तीली हैं कि दाइयों के पहुँचने से पहले ही उनको बच्चा उत्पन्न हो जाता है।” २० इसलिए परमेश्वर ने दाइयों के साथ भलाई की; और वे लोग बढ़कर बहुत सामर्थी हो गए। २१ तब फिरौन ने अपनी सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी, “इन्हीं के जितने बेटे उत्पन्न हों उन सभी को तुम नील नदी में डाल देना, और सब बैटियों को जीवित रख छोड़ना।”

२ लेवी के घराने के एक पुस्तक ने एक लेवी वंश की छीं को ब्याह लिया। ३ वह छीं गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और यह देखकर कि यह बालक सुन्दर है, उसे तीन महीने तक छिपा रखा। ४ जब वह उसे और छिपा न सकी तब उसके लिये सरकारणों की एक टोकीरी लेकर, उस पर चिकनी मिट्ठी और राल लगाकर, उसमें बालक को रखकर नील नदी के किनारे कांसों के बीच छोड़ आई। ५ उस बालक की बहन दूर खड़ी रही, कि देखे उसका क्या हाल होगा। ६ तब फिरौन की बेटी नहाने के लिये नदी के किनारे आई; उसकी सखियाँ नदी के किनारे-किनारे ठहलने लगीं; तब उसने कांसों के बीच टोकीरी को देखकर अपनी दासी को उसे ले आने के लिये भेजा। ७ तब उसने उसे खोलकर देखा कि एक रोता हुआ बालक है; तब उसे तरस आया और उसने कहा, “यह तो किसी इन्हीं का बालक होगा।” ८ तब

बालक की बहन ने फिरौन की बेटी से कहा, “क्या मैं जाकर इन्हीं द्वियों में से किसी धाई को तेरे पास बुला ले आऊँ जो तेरे लिये बालक को दूध पिलाया करेगा?” ९ फिरौन की बेटी ने कहा, “जा।” तब लड़की जाकर बालक की माता को बुला ले आई। १० फिरौन की बेटी ने उससे कहा, “तू इस बालक को ले जाकर मेरे लिये दूध पिलाया कर, और मैं तुझे मजदूरी दूँगी।” तब वह छीं बालक को ले जाकर दूध पिलाने लगी। ११ जब बालक कुछ बड़ा हुआ तब वह उसे फिरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका बेटा ठहरा; और उसने यह कहकर उसका नाम मूसा रखा, “मैंने इसको जल से निकाला था।” १२ उन दिनों में ऐसा हुआ कि जब मूसा जबान हुआ, और बाहर अपने भाई-बन्धुओं के पास जाकर उनके दुखों पर दृष्टि करने लगा; तब उसने देखा कि कोई मिस्री जन मेरे एक इन्हीं भाई को मार रहा है। १३ जब उसने इधर-उधर देखा कि कोई नहीं है, तब उस मिस्री को मार डाला और रेत में छिपा दिया। १४ फिर दूसरे दिन बाहर जाकर उसने देखा कि दो इन्हीं पुस्त आपस में मारपीट कर रहे हैं, उसने अपराधी से कहा, “तू अपने भाई को क्यों मारता होता है?” १५ उसने कहा, “किसने तुझे हम लोगों पर हाकिम और न्यायी ठहराया? जिस भाँति तूने मिस्री को घात किया क्या उसी भाँति तू मुझे भी घात करना चाहता है?” तब मूसा यह सोचकर डर गया, “निश्चय वह बात खुल गई है।” १६ जब फिरौन ने यह बात सनी तब मूसा को घात करने की योजना की। तब मूसा फिरौन के सामने से भागा, और मिधान देश में जाकर रहने लगा; और वह वहाँ एक कुएँ के पास बैठ गया। १७ मिधान के याजक की सात बैटियाँ थीं, और वे वहाँ आकर जल भरने लगीं कि कठौतों में भरकर अपने पिता की भेड़-बकरियों को पिलाएँ। १८ तब चरवाहे आकर उनको हटाने लगे; इस पर मूसा ने खड़े होकर उनकी सहायता की, और भेड़-बकरियों को पानी पिलाया। १९ जब वे अपने पिता स्प्लल के पास फिर आईं, तब उसने उनसे पूछा, “क्या कारण है कि आज तुम ऐसी फुर्ती से आई होते हो?” २० उन्होंने कहा, “एक मिस्री पुस्त ने हमको चरवाहों के हाथ से छुड़ाया, और हमारे लिये बहुत जल भरकर भेड़-बकरियों को पिलाया।” २१ तब उसने अपनी बैटियों से पूछा, “वह पुस्त कहाँ है? तुम उसको क्यों छोड़ आई होते हो? उसको बुला ले आओ कि वह भोजन करो।” २२ और मूसा उस पुस्त के साथ रहने को प्रसन्न हुआ; उसने उसे अपनी बैटी सिप्पोरा को ब्याह दिया। २३ और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, तब मूसा ने यह कहकर, “मैं अन्य देश में पदेशी हूँ,” उसका नाम गेरोम रखा। २४ बहुत दिनों के बीतने पर मिस्र का राजा मर गया। और इसाएली कीठिन सेवा के कारण लम्बी-लम्बी साँस लेकर आहें भरने लगे, और पुकार उठे, और उनकी दुहाई जो कठिन सेवा के कारण हुई वह परमेश्वर तक पहुँची। २५ और परमेश्वर ने उनका कराहना सुनकर अपनी वाचा को, जो उसने अब्राहम, और इसहाक, और याकूब के साथ बाँधी थी, स्परण किया। २६ और परमेश्वर ने इसाएलियों पर दृष्टि करके उन पर चिंत लगाया।

३ मूसा अपने ससर यित्रो नामक मिधान के याजक की भेड़-बकरियों को चराता था, और वह उहाँ जंगल की पश्चिमी ओर होरेब नामक परमेश्वर के पर्वत के पास ले गया। ४ और परमेश्वर के दूत ने एक कैंटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया; और उन्होंने दृष्टि उठाकर देखा कि झाड़ी जल रही है, पर भस्म नहीं होती। ५ तब मूसा ने कहा, “ऐ उधर जाकर इस बड़े अचम्भे को देखँगा कि वह झाड़ी क्यों नहीं जल जाती।” ६ जब यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है, तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच से उसको पुकारा, “हे मूसा, हे मूसा!” मूसा ने कहा, “क्या आज्ञा।” ७ उसने कहा, “इधर पास मत आ, और अपने पाँवों से जूतियों को उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है।” ८ फिर उसने कहा, “मैं तेरे

पिता का परमेश्वर, और अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हैं।” तब मूसा ने जो परमेश्वर की ओर निहारने से डरता था अपना मुँह ढाँप लिया। ६ फिर यहोवा ने कहा, “मैंने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं उनके दुःख को निश्चय देखा है, और उनकी जो चिल्लाहट परिश्रम करनेवालों के कारण होती है उसको भी मैंने सुना है, और उनकी पीड़ा पर मैंने चित्त लगाया है; ७ इसलिए अब मैं उत्तर आया हूँ कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊँ, और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में जिसमें धूप और मधु की धारा बहती है, अर्थात् कनानी, हिती, एसोरी, परिज्जी, हिल्बी, और यबूसी लोगों के स्थान में पहुँचाऊँ। ८ इसलिए अब सन, इस्माएलियों की चिल्लाहट मुझे सुनाई पड़ी है, और मिस्रियों का उन पर अंधेर करना भी मुझे दिखाई पड़ा है, ९ इसलिए आ, मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूँ कि तू मेरी इस्माएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए।” १० तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, “मैं कौन हूँ जो फिरौन के पास जाऊँ, और इस्माएलियों को मिस्र से निकाल ले आऊँ?” ११ उसने कहा, “निश्चय मैं तेरे संग रहूँगा; और इस बात का कि तेरा भेजनेवाला मैं हूँ, तेरे लिए यह चिन्ह होगा; कि जब तब उन लोगों को मिस्र से निकाल चुके तब तुम इसी पहाड़ पर परमेश्वर की उपासना करोगे।” १२ मूसा ने परमेश्वर से कहा, “जब मैं इस्माएलियों के पास जाकर उनसे यह कहूँ, ‘तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है,’ तब यदि वे मुझसे पछँे, ‘उसका क्या नाम है?’ तब मैं उनको क्या बताऊँ?” १३ परमेश्वर ने मूसा से कहा, “मैं जो हूँ सो हूँ।” फिर उसने कहा, “तू इस्माएलियों से यह कहना, ‘जिसका नाम मैं हूँ है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।’” १४ फिर परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, “तू इस्माएलियों से यह कहना, ‘तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर, अर्थात् अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर, यहोवा, उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है।’ देख सदा तक मेरा नाम यही रहेगा, और पीढ़ी-पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा।” १५ इसलिए अब जाकर इस्माएली पुरिनियों को इकट्ठा कर, और उनसे कह, ‘तुम्हारे पूर्वज अब्राहम, इसहाक, और याकूब के परमेश्वर, यहोवा ने मुझे दर्शन देकर यह कहा है कि मैंने तुम पर और उत्तम से जो बर्तीव मिस्र में किया जाता है उस पर भी चित्त लगाया है; १६ और मैंने ठान लिया है कि तुम को मिस्र के दृःखों में से निकालकर कनानी, हिती, एसोरी, परिज्जी हिल्बी, और यबूसी लोगों के देश में ले चलूँगा, जो ऐसा देश है कि जिसमें धूप और मधु की धारा बहती है।” १७ तब वे तेरी मानेंगे; और तू इस्माएली पुरिनियों को संग लेकर मिस्र के राजा के पास जाकर उससे यह कहना, ‘इब्रियों के परमेश्वर, यहोवा से हल्लोगों की भेट हुई है; इसलिए अब हमको तीन दिन के मार्ग पर जंगल में जाने दे कि अपने परमेश्वर यहोवा को बलिदान चढ़ाएँ।’ १८ मैं जानता हूँ कि मिस्र का राजा तुम को जाने न देगा वरन् बड़े बल से दबाए जाने पर भी जाने न देगा। १९ इसलिए मैं हाथ बढ़ाकर उन सब आश्वर्यकर्मी से जो मिस्र के बीच कस्तूर उस देश को मास्टूर; और उसके पश्चात् वह तुम को जाने देगा। २० तब मैं मिस्रियों से अपनी इस प्रजा पर अनुग्रह करवाऊँगा; और जब तुम निकलोगे तब खाली हाथ न निकलोगे। २१ वरन् तुम्हारी एक-एक सी अपनी-अपनी पड़ोसिन, और अपने-अपने घर में रहनेवाली से सोने चाँदी के गहने, और वज्र माँग लेगी, और तुम उन्हें अपने बेटों और बेटियों को पहनाना; इस प्रकार तुम मिस्रियों को लटोगे।”

४ तब मूसा ने उत्तर दिया, “वे मुझ पर विश्वास न करेंगे और न मेरी सुनेंगे, वरन् कहेंगे, ‘यहोवा ने तुझको दर्शन नहीं दिया।’” ५ यहोवा ने उससे कहा, “तेरे हाथ में वह क्या है?” वह बोला, “लाठी।” ६ उसने कहा, “उसे

भूमि पर डाल दे।” जब उसने उसे भूमि पर डाला तब वह सर्प बन गई, और मूसा उसके सामने से भागा। ७ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “हाथ बढ़ाकर उसकी पूँछ पकड़ ले, ताकि वे लोग विश्वास करें कि तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर अर्थात् अब्राहम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर, और याकूब के परमेश्वर, यहोवा ने तुझको दर्शन दिया है।” ८ जब उसने हाथ बढ़ाकर उसको पकड़ा तब वह उसके हाथ में फिर लाठी बन गई। ९ फिर यहोवा ने उससे यह भी कहा, “अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप।” अतः उसने अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप लिया; और जब उसने उसको छाती पर से निकाला तब क्या देखा, कि उसका हाथ कोड के कारण हिम के समान च्वेत हो गया है। १० तब उसने कहा, “अपना हाथ छाती पर फिर रखकर ढाँप।” और उसने अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप लिया; और जब उसने उसको छाती पर से निकाला तब क्या देखा है कि वह फिर सारी देह के समान हो गया। ११ तब यहोवा ने कहा, “यदि वे तेरी बात पर विश्वास न करें, और पहले चिन्ह को न मानें, तो दूसरे चिन्ह पर विश्वास करेंगे। १२ और यदि वे इन दोनों चिन्हों पर विश्वास न करें और तेरी बात को न मानें, तब त नील नदी से कुछ जल लेकर सूखी भूमि पर डालना; और जो जल तू नदी से निकलेगा वह सूखी भूमि पर लाहू बन जाएगा।” १३ मूसा ने यहोवा से कहा, “हे मेरे प्रभु, मैं बोलने में निषुण नहीं, न तो पहले था, और न जब से तू अपने दास से बातें करने लगा; मैं तो मुँह और जीभ का भदा हूँ।” १४ यहोवा ने उससे कहा, “मनुष्य का मुँह किसने बनाया है? और मनुष्य को गँगा, या बहरा, या देखनेवाला, या अंथा, मुझ यहोवा को छोड़ कौन बनाता है? १५ अब जा, मैं तेरे मुख के संग होकर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखाता जाऊँगा।” १६ उसने कहा, “हे मेरे प्रभु, कृपया तू किसी अन्य व्यक्ति को भेज।” १७ तब यहोवा का कोप मूसा पर भड़का और उसने कहा, “क्या तेरा भाई लेवीय हाल्स नहीं है? मुझे तो निश्चय है कि वह बोलने में निषुण है, और वह तुझ से भेट करने के लिये निकल भी गया है, और तुझे देखकर मन में आनन्दित होगा। १८ इसलिए तू उसे ये बातें सिखाना; और मैं उसके मुख के संग और तेरे मुख के संग होकर जो कुछ तुहें करना होगा वह तुम को सिखाता जाऊँगा। १९ वह तेरी ओर से लोगों से बातें किया करेगा; वह तेरे लिये मुँह और तू उसके लिये परमेश्वर ठड़ेगा। २० और तू इस लाठी को हाथ में लिए जा, और इसी से इन चिन्हों को दिखाना।” २१ तब मूसा अपने ससुर यित्रो के पास लौटा और उससे कहा, “मुझे विदा कर, कि मैं मिस्र में रहनेवाले अपने भाइयों के पास जाकर देखूँ कि वे अब तक जीवित हैं या नहीं।” यित्रो ने कहा, “कुशल से जा।” २२ और यहोवा ने मिधान देश में मूसा से कहा, “मिस्र को लौट जा; क्योंकि जो मनुष्य तेरे प्राण के प्यासे थे वे सब मर गए हैं।” २३ तब मूसा अपनी पत्री और बेटों को गढ़े पर चढ़ाकर मिस्र देश की ओर परमेश्वर की उस लाठी को हाथ में लिये हुए लौटा। २४ और यहोवा ने मूसा से कहा, “जब तु मिस्र में पहुँचे तब साथाधान हो जाना, और जो चमत्कार मैंने तेरे वश में किए हैं उन सभी को फिरौन को दिखालाना; परन्तु मैं उसके मन को हठीला कस्तूर, और वह मेरी प्रजा को जाने न देगा। २५ और तू फिरौन से कहना, ‘यहोवा यह कहता है, कि इस्माएल मेरा पुत्र वरन् मेरा पहलौटा है, २६ और मैं जो तुझ से कह चुका हूँ, कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करें; और तू अब तक उसे जाने नहीं दिया, इस कारण मैं अब तेरे पुत्र वरन् तेरे पहलौटे को घात कस्तूर।’” २७ तब ऐसा हुआ कि मार्ग पर सराय में यहोवा ने मूसा से भेट करके उसे मार डालना चाहा। २८ तब सिपोरा ने एक तेज चक्रमक पत्थर लेकर अपने बेटे की खलड़ी को काट डाला, और मूसा के पौर्वों पर यह कहकर फेंक दिया, “निश्चय तलह बहानेवाला मेरा पति है।” २९ तब उसने उसको छोड़ दिया। और उसी समय खत्तें के कारण वह बोली, “तू लहू बहानेवाला,

पति है।” २७ तब यहोवा ने हास्न से कहा, “मूसा से भेट करने को जंगल में जाए।” और वह गया, और परमेश्वर के पर्वत पर उससे मिला और उसको चूमा। २८ तब मूसा ने हास्न को यह बताया कि यहोवा ने क्या-क्या बातें कहकर उसको भेजा है, और कौन-कौन से चिन्ह दिखलाने की आज्ञा उसे दी है। २९ तब मूसा और हास्न ने जाकर इसाएलियों के सब पुनियों को इकट्ठा किया। ३० और जितनी बातें यहोवा ने मूसा से कही थीं वह सब हास्न ने उन्हें सुनाई, और लोगों के सामने वे चिन्ह भी दिखलाए। ३१ और लोगों ने उन पर विश्वास किया; और यह सुनकर कि यहोवा ने इसाएलियों की सुधीली और उनके दुखों पर दृष्टि की है, उन्होंने सिर झुकाकर दण्डवत् किया।

५ इसके पश्चात् मूसा और हास्न ने जाकर फ़िरौन से कहा, “इसाएल का

परमेश्वर यहोवा यह कहता है, ‘‘मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि वे जंगल में मेरे लिये पर्व करें।’’ १ फ़िरौन ने कहा, “यहोवा कौन है कि मैं उसका वचन मानकर इसाएलियों को जाने दूँ मैं यहोवा को नहीं जानता, और मैं इसाएलियों को नहीं जाने दूँगा।” २ उन्होंने कहा, “इब्रियों के परमेश्वर ने हम से भेट की है; इसलिए हमें जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाने दे, कि अपने परमेश्वर यहोवा के लिये बलिदान करें, ऐसा न हो कि वह हम में मरी फैलाए या तलवार चलवाए।” ३ मिथ के राजा ने उनसे कहा, “हे मूसा, हे हास्न, तुम क्यों लोगों से काम छुड़वाना चाहते हो? तुम जाकर अपने-अपने बोझ को उठाओ।” ४ और फ़िरौन ने कहा, “सुनो, इस देश में वे लोग बहुत हो गए हैं, फिर तुम उनको उनके परिश्रम से क्षित्राम दिलाना चाहते हो!” ५ फ़िरौन ने उसी दिन उन परिश्रम करवानेवालों को जो उन लोगों के ऊपर थे, और उनके सरदारों को यह आज्ञा दी, ६ “तुम जो अब तक ईंट बनाने के लिये लोगों को पुआल दिया करते थे वह आगे को न देना; वे आप ही जाकर अपने लिये पुआल इकट्ठा करें। ७ तो भी जितनी ईंट अब तक उन्हें बनानी पड़ती थी उतनी ही आगे को भी उनसे बनवाना, ईंटों की गिनती कुछ भी न घटाना; क्योंकि वे अलासी हैं; इस कारण वे यह कहकर चिल्लते हैं, ‘‘हम जाकर अपने परमेश्वर के लिये बलिदान करें।’’ ८ उन मनुष्यों से और भी कठिन सेवा करवाई जाए कि वे उसमें परिश्रम करते रहें और झटी बातों पर ध्यान न लगाएँ।” ९ तब लोगों के परिश्रम करानेवालों ने और सरदारों ने बाहर जाकर उनसे कहा, “फ़िरौन इस प्रकार कहता है, ‘‘मैं तुम्हें पुआल नहीं दूँगा।’’ १० तुम ही जाकर जहाँ कहीं पुआल मिले वहाँ से उसको बटोरकर ले आओ; परन्तु तुम्हारा काम कुछ भी नहीं घटाया जाएगा।” ११ इसलिए वे लोग सारे मिथ देश में तिर-बितर हए कि पुआल के बदले खँटी बटोरें। १२ परिश्रम करनेवाले यह कह-कहकर उनसे जलदी करते रहे कि जिस प्रकार तुम पुआल पाकर किया करते थे उसी प्रकार अपना प्रतिदिन का काम अब भी पूरा करो। १३ और इसाएलियों में से जिस सरदारों को फ़िरौन के परिश्रम करानेवालों ने उनका अधिकारी ठहराया था, उन्होंने मार खाई, और उनसे पूछा गया, “क्या कारण है कि तुम ने अपनी ठहराई हुई ईंटों की गिनती के अनुसार पहले के समान कल और आज पूरी नहीं कराई?” १४ तब इसाएलियों के सरदारों ने जाकर फ़िरौन की दुहाई यह कहकर दी, “तू अपने दासों से ऐसा बर्ताव क्यों करता है? १५ तेरे दासों को पुआल तो दिया ही नहीं जाता और वे हम से कहते रहते हैं, ‘‘ईंट बनाओ, ईंट बनाओ,’ और तेरे दासों ने भी मार खाई है; परन्तु दोष तेरे ही लोगों का है।” १६ फ़िरौन ने कहा, “तुम अलासी हो, अलासी, इसी कारण कहते हो कि हमें यहोवा के लिये बलिदान करने को जाने दे। १७ अब जाकर अपना काम करो; और पुआल तुम को नहीं दिया जाएगा, परन्तु ईंटों की गिनती पूरी करनी पड़ेगी।” १८ जब इसाएलियों के सरदारों ने यह बात सुनी कि उनकी ईंटों की गिनती न घटेगी, और प्रतिदिन उतना ही काम

पूरा करना पड़ेगा, तब वे जान गए कि उनके संकट के दिन आ गए हैं। १९ जब वे फ़िरौन के सम्मुख से बाहर निकल आए तब मूसा और हास्न, जो उनसे भेट करने के लिये खड़े थे, उन्हें मिले। २० और उन्होंने मूसा और हास्न से कहा, “यहोवा तुम पर दृष्टि करके न्याय करे, क्योंकि तुम ने हमको फ़िरौन और उसके कर्मचारियों की दृष्टि में घृणित ठहराकर हमें घात करने के लिये उनके हाथ में तलवार दे दी है।” २१ तब मूसा ने यहोवा के पास लौटकर कहा, “हे प्रभु, तूने इस प्रजा के साथ ऐसी बुराई क्यों की? और तूने मझे यहाँ क्यों भेजा? २२ जब से मैं तेरे नाम से फ़िरौन के पास बातें करने के लिये गया तब से उसने इस प्रजा के साथ कुरा ही व्यवहार किया है, और तूने अपनी प्रजा का कुछ भी छुटकारा नहीं किया।”

६ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “अब तू देखोगा कि मैं फ़िरौन से क्या कहूँगा;

जिससे बहु उनको बाबस निकालेगा, वह तो उन्हें अपने देश से बरबस निकाल देगा।” १ परमेश्वर ने मूसा से कहा, “मैं यहोवा हूँ; २ मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर के नाम से अद्वाहम, इसहाक, और याकूब को दर्शन देता था, परन्तु यहोवा के नाम से मैं उन पर प्रगट न हुआ। ३ और मैंने उनके साथ अपनी बाचा ढूँकी की है, अर्थात् कनान देश जिसमें वे परदेसी होकर रहते थे, उसे उन्हें दें दूँ। ४ इसाएली जिन्हें मिस्री लोग दासत्व में रखते हैं उनका कराहना भी सुनकर मैंने अपनी बाचा को स्मरण किया है। ५ इस कारण तू इसाएलियों से कह, “मैं यहोवा हूँ, और तुम को मिसियों के बोझों के नीचे से निकालूँ, और उनके दासत्व से तुम को छुड़ाऊँगा, और अपनी भुजा बढ़ाकर और भारी दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लूँगा, ६ और मैं तुम को अपनी प्रजा बनाने के लिये अपना लौँगा, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा; और तुम जान लोगों कि मैं मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुम्हें मिसियों के बोझों के नीचे से निकाल ले आया। ७ और जिस देश के देने की शपथ मैंने अद्वाहम, इसहाक, और याकूब से खाई थी उसी मैं मैं तुम्हें पहँचाकर उसे तुम्हारा भाग कर दँगा। मैं तेरे यहोवा हूँ।” ८ ये बातें मूसा ने इसाएलियों को सुनाईं; परन्तु उन्होंने मन की बेचैनी और दासत्व की क़रता के कारण उसकी न सुनी। ९ तब यहोवा ने मूसा से कहा, १० “तू जाकर मिथ के राजा फ़िरौन से कह कि इसाएलियों को अपने देश में से निकल जाने दो।” ११ और मूसा ने यहोवा से कहा, “देख, इसाएलियों ने मेरी नहीं सुनी; फिर फ़िरौन मुझे भेद बोलनेवाले की कैसे सुनेगा?” १२ तब यहोवा ने मूसा और हास्न को इसाएलियों और मिथ के राजा फ़िरौन के लिये आज्ञा इस अधिग्राम से दी कि वे इसाएलियों को मिथ देश से निकाल ले जाएँ। १३ उनके पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये हैं: इसाएल का पहलौठा स्केन के पुत्र: हनोक, पल्लू, हेस्मोन और कर्मी थे; इहीं से स्केन के कुल निकलते। १४ और शिमोन के पुत्र: यमेल, यारीन, ओहद, याकीन, और सोहर थे, और एक कनानी श्री का बेटा शाजल भी था; इहीं से शिमोन के कुल निकलते। १५ लेवी के पुत्र जिनसे उनकी बंशावली चलती है, उनके नाम ये हैं: अर्थात् गेर्शोन, कहात और मरारी, और लेवी की पूरी अवस्था एक सौ सैतीस वर्ष की है। १६ गेर्शोन के पुत्र जिनसे उनका कुल चलता: लिब्नी और शर्मी थे। १७ कहात के पुत्र: अग्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीजल थे, और कहात की पूरी अवस्था एक सौ सैतीस वर्ष की है। १८ मरारी के पुत्र: महली और मशी थे। लेवियों के कुल जिनसे उनकी बंशावली चलती थी ही है। १९ अग्राम ने अपनी फूफी योकेबेद को ब्याह लिया और उससे हास्न और मूसा उत्पन्न हुए, और अग्राम की पूरी अवस्था एक सौ सैतीस वर्ष की है। २० यिसहार के पुत्र: कोरह, नेपेर और जिङ्गी थे। २१ उज्जीजल के पुत्र: मीशाएल, एलसाफान और सिनी थे। २२ हास्न ने अम्मीनादाब की बेटी, और नहशोन की बहन एलीशेबा को ब्याह लिया; और उससे नादाब, अबीह, और ईतामार उत्पन्न हुए। २३ कोरह के पुत्र:

अस्सीर, एलकाना और अबीआसाप थे; और इन्हीं से कोरहियों के कुल निकले। २५ हास्तन के पुत्र एलीआजर ने पूरीएल की एक बेटी को ब्याह लिया; और उससे पीनहास उत्पन्न हुआ। जिनसे उनका कुल चला। लेवियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुष्प ये ही हैं। २६ हास्तन और मूसा वे ही हैं जिनको यहोवा ने यह आज्ञा दी: “इसाएलियों को दल-दल करके उनके जर्थों के अनुसार मिस्र देश से निकाल ले आओ।” २७ ये वही मूसा और हास्तन हैं जिन्होंने मिस्र के राजा फिरौन से कहा कि हम इसाएलियों को मिस्र से निकाल ले जाएँगे। २८ जब यहोवा ने मिस्र देश में मूसा से यह बात कही, २९ “मैं तो यहोवा हूँ; इसलिए जो कुछ मैं तुम से कहूँगा वह सब मिस्र के राजा फिरौन से कहना।” ३० परन्तु मूसा ने यहोवा को उत्तर दिया, “मैं तो बोलने में भड़ा हूँ; और फिरौन कैसे मेरी सुनेगा?”

७ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “सुन, मैं तुझे फिरौन के लिये परमेश्वर सा ठहराता हूँ; और तेरा भाई हास्तन तेरा नवी ठहरेगा। १ जो-जो आज्ञा मैं तुझे दँवही तू कहना, और हास्तन उसे फिरौन से कहेगा जिससे वह इसाएलियों को अपने देश से निकाल जाने दे। २ परन्तु मैं फिरौन के मन को कठोर कर दूँगा, और अपने चिन्ह और चमत्कार मिस्र देश में बहुत से दिखलाऊँगा। ३ तो भी फिरौन तुम्हारी न सुनेगा; और मैं मिस्र देश पर अपना हाथ बढ़ाकर मिस्रियों को भारी दण्ड देकर अपनी सेना अर्थात् अपनी इसाएली प्रजा को मिस्र देश से निकाल दूँगा। ४ और जब मैं मिस्र पर हाथ बढ़ाकर इसाएलियों को उनके बीच से निकालूँगा तब मिस्री जान लेंगे, कि मैं यहोवा हूँ।” ५ तब मूसा और हास्तन ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार ही किया। ६ तब जब मूसा और हास्तन फिरौन से बात करने लगे तब मूसा तो अस्सी वर्ष का था, और हास्तन तिरासी वर्ष का था। ७ फिर यहोवा ने मूसा और हास्तन से इस प्रकार कहा, ८ “जब फिरौन तुम से कहे, ‘अपने प्रमाण का कोई चमत्कार दिखाओ,’ तब तू हास्तन से कहना, ‘अपनी लाठी को लेकर फिरौन के सामने डाल दे, कि वह अजगर बन जाए।’” ९ तब मूसा और हास्तन ने फिरौन के पास जाकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया; और जब हास्तन ने अपनी लाठी को फिरौन और उसके कर्मचारियों के सामने डाल दिया, तब वह अजगर बन गई। १० तब फिरौन ने पंडितों और टोनहा करनेवालों को बुलावाया; और मिस्र के जादूगरों ने आकर अपने-अपने तंत्र-मंत्र से वैसा ही किया। ११ उन्होंने भी अपनी-अपनी लाठी को डाल दिया, और वे भी अजगर बन गईं। पर हास्तन की लाठी उनकी लाठियों को निगल गई। १२ परन्तु फिरौन का मन और हीली हो गया, और यहोवा के वचन के अनुसार उसने मूसा और हास्तन की बातों को नहीं माना। १३ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “फिरौन का मन कठोर हो गया है और वह इस प्रजा को जाने नहीं देता। १४ इसलिए सभरे के समय फिरौन के पास जा, वह तो जल की ओर बाहर आएगा; और जो लाठी सर्प बन गई थी, उसको हाथ में लिए हए नील नदी के टट पर उससे भेट करने के लिये खड़े रहना। १५ और उससे इस प्रकार कहना, ‘इवियों के परमेश्वर यहोवा ने मझे यह कहने के लिये तेरे पास भेजा है कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि जिससे वे ज़गल में मेरी उपासना करें; और अब तक तने मेरा कहना नहीं माना। १६ यहोवा यह कहता है, इससे तू जान लेगा कि मैं ही परमेश्वर हूँ; देख, मैं अपने हाथ की लाठी को नील नदी के जल पर मारूँगा, और जल लह बन जाएगा, १७ और जो मछलियाँ नील नदी में हैं वे मर जाएँगी, और नील नदी से दुर्विध अपने लगेगी, और मिस्रियों का जी नदी का पानी पीने के लिये न चाहेगा।” १८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “हास्तन से कह कि अपनी लाठी लेकर मिस्र देश में जितना जल है, अर्थात् उसकी नदियाँ, नहरें, झीलें, और जलकुण्ड, सब के ऊपर

अपना हाथ बढ़ा कि उनका जल लह बन जाएँ; और सारे मिस्र देश में काठ और पथर दोनों भाँति के जलपात्रों में लह ही लह हो जाएगा।” १९ तब मूसा और हास्तन ने यहोवा की आज्ञा ही के अनुसार किया, अर्थात् उसने लाठी को उठाकर फिरौन और उसके कर्मचारियों के देखते नील नदी के जल पर मारा, और नदी का सब जल लह बन गया। २० और नील नदी में जो मछलियाँ थीं वे मर गईं; और नदी से दुर्विध आने लगी, और मिस्री लोग नदी का पानी न पी सके; और सारे मिस्र देश में लह हो गया। २१ तब मिस्र के जादूगरों ने भी अपने तंत्र-मंत्रों से वैसा ही किया; तो भी फिरौन का मन हठीला हो गया, और यहोवा के कहने के अनुसार उसने मूसा और हास्तन की न मानी। २२ फिरौन ने इस पर भी ध्यान नहीं दिया, और मूँह फेरकर अपने घर में चला गया। २३ और सब मिस्री लोग पीने के जल के लिये नील नदी के आस-पास खोदने लगे, क्योंकि वे नदी का जल नहीं पी सकते थे। २४ जब यहोवा ने नील नदी को मारा था तब से सात दिन हो चुके थे।

८ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “सुन, मैं तुझे फिरौन के लिये परमेश्वर सा ठहराता हूँ; और तेरा भाई हास्तन तेरा नवी ठहरेगा। १ जो-जो आज्ञा मैं तुझे दँवही तू कहना, और हास्तन उसे फिरौन से कहेगा जिससे वह इसाएलियों को अपने देश से निकाल जाने दे। २ परन्तु मैं फिरौन के मन को कठोर कर दूँगा, और अपने चिन्ह और चमत्कार मिस्र देश में बहुत से दिखलाऊँगा। ३ तो भी फिरौन तुम्हारी न सुनेगा; और मैं मिस्र देश पर अपना हाथ बढ़ाकर मिस्रियों को भारी दण्ड देकर अपनी सेना अर्थात् अपनी इसाएली प्रजा को मिस्र देश से निकाल दूँगा। ४ और जब मैं मिस्र पर हाथ बढ़ाकर इसाएलियों को उनके बीच से निकालूँगा तब मिस्री जान लेंगे, कि मैं यहोवा हूँ।” ५ तब मूसा और हास्तन ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार ही किया। ६ तब जब मूसा और हास्तन फिरौन से बात करने लगे तब मूसा तो अस्सी वर्ष का था, और हास्तन तिरासी वर्ष का था। ७ फिर यहोवा ने मूसा और हास्तन से इस प्रकार कहा, ८ “जब फिरौन तुम से कहे, ‘अपने प्रमाण का कोई चमत्कार दिखाओ,’ तब तू हास्तन से कहना, ‘अपनी लाठी को लेकर फिरौन के सामने डाल दे, कि वह अजगर बन जाए।’” ९ तब मूसा और हास्तन ने फिरौन के पास जाकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया; और जब हास्तन ने अपनी लाठी को फिरौन और उसके कर्मचारियों के सामने डाल दिया, तब वह अजगर बन गई। १० तब मूसा और हास्तन ने फिरौन के लिये तू मुझे आदेश दे कि अब मैं तेर, और तेरे कर्मचारियों, और प्रजा के निमित्त कब विनती करूँ, कि यहोवा तेरे पास से और तेरे घरों में से मेंढकों को दूर करे, और वे केवल नील नदी में पाए जाएँ।” ११ उसने कहा, “कल!” उसने कहा, “तेरे बचन के अनुसार होगा, जिससे तुझे यह जात हो जाए कि हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कोई दूसरा नहीं है। १२ और मेंढक तेरे पास से, और तेरे घरों में से, और तेरे कर्मचारियों और प्रजा के पास से दूर होकर केवल नील नदी में रहेंगे।” १३ तब मूसा और हास्तन फिरौन के पास से निकल गए; और मूसा ने उन मेंढकों के विषय यहोवा की दुहाई दी जो उसने फिरौन पर भेजे थे। १४ और यहोवा ने मूसा के कहने के अनुसार किया; और मेंढक घरों, आँगनों, और खेतों में मर गए। १५ और लोगों ने इकट्ठे करके उनके ढेर लगा दिए, और सारा देश दुर्विध से भर गया। १६ परन्तु जब फिरौन ने देखा कि अब आराम मिला है तब यहोवा के कहने के अनुसार उसने फिर अपने मन को कठोर किया, और उनकी न सनी। १७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “हास्तन को आज्ञा दे, ‘तू अपनी लाठी बढ़ाकर भूमि की धूल पर मार, जिससे वह मिस्र देश भर में कुटकियाँ बन जाएँ।’” १८ और उन्होंने वैसा ही किया; अर्थात् हास्तन ने लाठी को ले हाथ बढ़ाकर भूमि की धूल पर मारा, तब मनुष्य और पशु दोनों पर कुटकियाँ हो गई वरन् सारे मिस्र देश में भूमि की धूल कुटकियाँ बन गईं। १९ तब जादूगरों ने चाहा कि अपने तंत्र-मंत्रों के बल से हम भी कुटकियाँ ले आएँ, परन्तु यह उनसे न हो सका। और मनुष्यों और पशुओं

दोनों पर कुटकियाँ बनी ही रही। १८ तब जादूगरों ने फिरौन से कहा, “यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है।” तो भी यहोवा के कहने के अनुसार फिरौन का मन कठोर होता गया, और उसने मूसा और हास्न की बात न मानी। १९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “सर्वे उठकर फिरौन के सामने खड़ा होना, वह तो जल की ओर आएगा, और उससे कहना, ‘यहोवा तुझ से यह कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें।’ २० यदि तू मेरी प्रजा को न जाने देगा तो सुन, मैं तुझ पर, और तेरे घरों में झण्ड के झण्ड डांस भेज़ूँगा; और मिथियों के घर और उनके रहने की भूमि भी डांसों से भर जाएगी। २१ उस दिन मैं गोशन देश को जिसमें मेरी प्रजा रहती है अलग करूँगा, और उसमें डांसों के झण्ड न होंगे; जिससे तू जान ले कि पृथ्वी के बीच मैं ही यहोवा हूँ। २२ और मैं अपनी प्रजा और तेरी प्रजा में अन्तर ठहराऊँगा। यह चिन्ह कल होगा।” २३ और यहोवा ने वैसा ही किया, और फिरौन के भवन, और उसके कर्मचारियों के घरों में, और सरे मिस्र देश में डांसों के झण्ड भर गए, और डांसों के मारे वह देश नाश हुआ। २४ तब फिरौन ने मूसा और हास्न को बुलवाकर कहा, “तुम जाकर अपने परमेश्वर के लिये इसी देश में बलिदान करो।” २५ मूसा ने कहा, “ऐसा करना उचित नहीं; क्योंकि हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मिथियों की धृषिण वस्तु बलिदान करेंगे; और यदि हम मिथियों के देखते उनकी धृषिण वस्तु बलिदान करें तो क्या वे हमको पथरवाह न करेंगे? २६ हम जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाकर अपने परमेश्वर यहोवा के लिये जैसा वह हम से कहेगा वैसा ही बलिदान करेंगे।” २७ फिरौन ने कहा, “मैं तुम को जंगल में जाने दूँगा कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये जंगल में बलिदान करो; केवल बहुत दूर न जाना, और मैं लिये विनती करो।” २८ तब मूसा ने कहा, “सुन, मैं तेरे पास से बाहर जाकर यहोवा से विनती करूँगा कि डांसों के झण्ड तेरे, और तेरे कर्मचारियों, और प्रजा के पास से कल ही दूर हों; पर फिरौन आगे को कपट करके हमें यहोवा के लिये बलिदान करने को जाने देने के लिये मना न करो।” २९ अतः मूसा ने फिरौन के पास से बाहर जाकर यहोवा से विनती की। ३० और यहोवा ने मूसा के कहे के अनुसार डांसों के झण्डों को फ़िरौन, और उसके कर्मचारियों, और उसकी प्रजा से दूर किया; यहाँ तक कि एक भी न रहा। ३१ तब फिरौन ने इस बार भी अपने मन को कठोर किया, और उन लोगों को जाने न दिया।

१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “फिरौन के पास जाकर कह, ‘इब्रियों का परमेश्वर यहोवा तुझ से इस प्रकार कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि मेरी उपासना करें।’ २ और यदि तू उन्हें जाने न दे और अब भी पकड़े रहे, ३ तो सुन, तेरे जो घोड़े, गदहे, छंट, गाय-बैल, भेड़-बकरी आदि पशु मैदान में हैं, उन पर यहोवा का हाथ ऐसा पड़ेगा कि बहत भारी मरी होगी। ४ परन्तु यहोवा इसाएलियों के पशुओं में और मिथियों के पशुओं में ऐसा अन्तर करेगा कि जो इसाएलियों के हैं उनमें से कोई भी न मरेगा।” ५ फिर यहोवा ने यह कहकर एक समय ठहराया, “मैं यह काम इस देश में कल करूँगा।” ६ दूसरे दिन यहोवा ने ऐसा ही किया; और मिस्र के तो सब पशु मर गए, परन्तु इसाएलियों का एक भी पशु न मरा। ७ और फिरौन ने लोगों को भेजा, पर इसाएलियों के पशुओं में से एक भी नहीं मरा था। तो भी फिरौन का मन कठोर हो गया, और उसने उन लोगों को जाने न दिया। ८ फिर यहोवा ने मूसा और हास्न से कहा, “तुम दोनों भट्टी में से एक-एक मुश्ती राख ले लो, और मूसा उसे फिरौन के सामने आकाश की ओर उड़ा दे। ९ तब वह सूख धूल होकर सरे मिस्र देश में मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फ़कोले और फोड़े। १० तब वह सूख बन जाएगी।” ११ इसलिए वे भट्टी में की राख लेकर फिरौन के सामने खड़े

हुए, और मूसा ने उसे आकाश की ओर उड़ा दिया, और वह मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फ़कोले और फोड़े बन गई। १२ उन फोड़ों के कारण जादूगर मूसा के सामने खड़े न रह सके, क्योंकि वे फोड़े जैसे सब मिथियों के वैसे ही जादूगरों के भी निकले थे। १३ तब यहोवा ने फिरौन के मन को कठोर कर दिया, और जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था, उसने उसकी न सुनी। १४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “सर्वे उठकर फिरौन के सामने खड़ा हो, और उससे कह, ‘इब्रियों का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें।’ १५ नहीं तो अब की बार मैं तुझ पर, और तेरे कर्मचारियों और तेरी प्रजा पर सब प्रकार की विपरितीय डालूँगा, जिससे तू जान ले कि सारी पृथ्वी पर मेरे तुल्य कोई दूसरा नहीं है। १६ मैंने तो अभी हाथ बढ़ाकर तुझे और तेरी प्रजा को मरी से मारा होता, और तू पृथ्वी पर से सत्यानाश हो गया होता; १७ परन्तु सचमुच मैंने इसी कारण तुझे बनाए रखा है कि तुझे अपना सामर्थ्य दिखाऊँ, और अपना नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करूँ। १८ क्या तू अब भी मेरी प्रजा के सामने अपने आपको बड़ा समझता है, और उन्हें जाने नहीं देता? १९ सुन, कल मैं इसी समय ऐसे भारी-भारी ओले बरसाऊँगा, कि जिनके तुल्य मिस्र की नीव फ़ड़ने के दिन से लेकर अब तक कभी नहीं पड़े। २० इसलिए अब लोगों को भेजकर अपने पशुओं को और मैदान में जो कछु तेरा है सब को फूटी से आड़ में छिपा ले; नहीं तो जितने मनुष्य या पशु मैदान में रहें और घर में इकट्ठे न किए जाएँ उन पर ओले पिरिए, और वे मर जाएँगे।” २१ इसलिए फिरौन के कर्मचारियों में से जो लोग यहोवा के बचन का भय मानते थे उन्होंने तो अपने-अपने सेवकों और पशुओं को घर में हाँक दिया। २२ पर जिन्होंने यहोवा के बचन पर मन न लगाया उन्होंने अपने सेवकों और पशुओं को मैदान में रहने दिया। २३ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा कि सारे मिस्र देश के मनुष्यों, पशुओं और खेतों की सारी उपज पर ओले पिरिए।” २४ तब मूसा ने अपनी लाठी को आकाश की ओर उठाया, और यहोवा की सामर्थ्य से मेघ गरजने और ओले बरसने लगे, और आग पृथ्वी तक आती रही। इस प्रकार यहोवा ने मिस्र देश पर ओले बरसाएँ। २५ जो ओले पिरिए थे उनके साथ आग भी मिली हुई थी, और वे ओले इन्हे भारी थे कि जब से मिस्र देश बसा था तब से मिस्र भर में ऐसे ओले कभी न पिरिए थे। २६ इसलिए मिस्र भर के खेतों में क्या मनुष्य, क्या पशु, जितने थे सब ओलों से मारे गए, और ओलों से खेत की सारी उपज नष्ट हो गई, और मैदान के सब क्षुध भी टूट गए। २७ केवल गोशेन प्रदेश में जहाँ इसाएली बसते थे ओले नहीं गिरे। २८ तब फिरौन ने मूसा और हास्न को बुलवा भेजा और उनसे कहा, “इस बार मैंने पाप किया है; यहोवा धर्मी है, और मैं और मेरी प्रजा अधर्मी हैं। २९ मैंनों का गरजना और ओलों का बरसना तो बहुत हो गया; अब यहोवा से विनती करो; तब मैं तुम लोगों को जाने दूँगा, और तुम न रोके जाओगे।” ३० मूसा ने उससे कहा, “नगर से निकलते ही मैं यहोवा की ओर हाथ फैलाऊँगा, तब बादल का गरजना बन्द हो जाएगा, और ओले पिर न पिरिएं, इससे तू जान लेगा कि पृथ्वी यहोवा ही की है। ३१ तो भी मैं जानता हूँ, कि न तो तू और न तेरे कर्मचारी यहोवा परमेश्वर का भय मानेंगे।” ३२ सन और जौ तो ओलों से मारे गए, क्योंकि जौ की बालें निकल चुकी थीं और सन में फूल लगे हुए थे। ३३ पर गेहूँ और कठिया गेहूँ जो बढ़े न थे, इस कारण वे मारे न गए। ३४ जब मूसा ने फिरौन के पास से नगर के बाहर निकलकर यहोवा की ओर हाथ फैलाए, तब बादल का गरजना और ओलों का बरसना बन्द हुआ, और फिर बहुत मैंह भूमि पर न पड़ा। ३५ यह देखकर कि मैंह और ओलों और बादल का गरजना बन्द हो गया फिरौन ने अपने कर्मचारियों समेत फिर अपने मन को कठोर करके पाप किया। ३६ इस प्रकार

फिरौन का मन हठीला होता गया, और उसने इस्माएलियों को जाने न दिया; जैसा कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहलवाया था।

१० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “फिरौन के पास जा; क्योंकि मैं ही ने

उसके और उसके कर्मचारियों के मन को इसलिए कठोर कर दिया है कि अपने चिन्ह उनके बीच में दिखलाऊँ, ११ और तुम लोग अपने बेटों और पोतों से इसका वर्णन करो कि यहोवा ने मिथियों को कैसे उपहास में उड़ाया और अपने क्या-क्या चिन्ह उनके बीच प्रगट किए हैं; जिससे तुम यह जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ।” १२ तब मूसा और हास्न ने फिरौन के पास जाकर कहा, “इब्रियों का परमेश्वर यहोवा तुझ से इस प्रकार कहता है, कि तू कब तक मेरे सामने दीन होने से संकोच करता रहेगा? मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे मेरी उपासना करें। १३ यदि तू मेरी प्रजा को जाने न दे तो सुन, कल मैं तेरे देश में टिड़ियाँ ले आऊँगा। १४ और वे धर्मी को ऐसा छा लेंगी कि वह देख न पड़ेगी; और तुम्हारा जो कुछ ओलों से बच रहा है उसको वे चट कर जाएँगी, और तुम्हारे जितने बृक्ष मैदान में लगे हैं उनको भी वे चट कर जाएँगी, १५ और वे तेरे और तेरे सारे कर्मचारियों, यहाँ तक सारे मिथियों के घरों में भर जाएँगी; इन्हीं टिड़ियाँ तेरे बापदादों ने या उनके पुराखाओं ने जब से पृथ्वी पर जन्मे तब से आज तक कभी न देखी।” और वह मूँह फेरकर फिरौन के पास से बाहर गया। १६ तब फिरौन के कर्मचारी उससे कहने लगे, “वह जन कब तक हमारे लिये फंदा बना रहेगा? उन मनुष्यों को जाने दे कि वे अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करें; क्या तू अब तक नहीं जानता कि सारा मिथ्या नाश हो गया है?” १७ तब मूसा और हास्न फिरौन के पास फिर बुलवाकर गए, और उसने उनसे कहा, “चले जाओ, अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो; परन्तु वे जो जानेवाले हैं, कौन-कौन हैं?” १८ मूसा ने कहा, “हम तो बेटों-बेटियों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों समेत वरन् बच्चों से बढ़ों तक सब के सब जाएँगे, क्योंकि हमें यहोवा के लिये पर्व करना है।” १९ उसने इस प्रकार उनसे कहा, “यहोवा तुम्हारे संग रहे जबकि मैं तुम्हें बच्चों समेत जाने देता हूँ; देखो, तुम्हारे मन में बुराई है। २० नहीं, ऐसा नहीं होने पाएगा; तुम पुख्त ही जाकर यहोवा की उपासना करो, तुम यहीं तो चाहते थे।” और वे फिरौन के सम्मुख से निकाल दिए गए। २१ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “मिथ्या देश के ऊपर अपना हाथ बढ़ा कि टिड़ियाँ मिथ्या देश पर चढ़कर भूमि का जितना अन्न आदि ओलों से बचा है सब को चट कर जाएँ।” २२ अतः मूसा ने अपनी लाठी को मिथ्या देश के ऊपर बढ़ाया, तब यहोवा ने दिन भर और रात भर देश पर पुरवाई बहाई, और जब भोर हुआ तब उस पुरवाई में टिड़ियाँ आईं। २३ और टिड़ियों ने चढ़कर मिथ्या देश के सारे स्थानों में बसरा किया, उनका दल बहुत भारी था, वरन् न तो उनसे पहले ऐसी टिड़ियाँ आई थीं, और न उनके पीछे ऐसी फिर आएँगी। २४ वे तो सारी धर्मी पर छा गईं, यहाँ तक कि देश में अंधकार छा गया, और उसका सारा अन्न आदि और वशों के सब फल, अर्थात् जो कुछ ओलों से बचा था, सब को उन्होंने चट कर लिया; यहाँ तक कि मिथ्या देश भर में न तो किसी बृक्ष पर कुछ हरियाली रह गई और न खेत में अनाज रह गया। २५ तब फिरौन ने फूर्ती से मूसा और हास्न को बुलवाकर कहा, “मैंने तो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का और तुम्हारा भी अपराध किया है। २६ इसलिए अब की बार मेरा अपराध क्षमा करो, और अपने परमेश्वर यहोवा से विनती करो कि वह केवल मेरे ऊपर से इस मृत्यु को दूर करे।” २७ तब मूसा ने फिरौन के पास से निकलकर यहोवा से विनती की। २८ तब यहोवा ने बहुत प्रचण्ड पश्चिमी हवा बहाकर टिड़ियों को उड़ाकर लाल समृद्ध में डाल दिया, और मिथ्या के किसी स्थान में एक भी टिड़ी न रह गई। २९ तो भी यहोवा ने

फिरौन के मन को कठोर कर दिया, जिससे उसने इस्माएलियों को जाने न दिया। ३० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा कि मिथ्या देश के ऊपर अंधकार छा जाए, ऐसा अंधकार कि टटोला जा सके।”

३१ तब मूसा ने अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाया, और सारे मिथ्या देश में तीन दिन तक घोर अंधकार छाया रहा। ३२ तीन दिन तक न तो किसी ने किसी को देखा, और न कोई अपने स्थान से उठा; परन्तु सारे इस्माएलियों के घरों में उजियाला रहा। ३३ तब फिरौन ने मूसा को बुलवाकर कहा, “तुम लोग जाओ, यहोवा की उपासना करो; अपने बालकों को भी संग ले जाओ; केवल अपनी भेड़-बकरी और गाय-बैल को छोड़ जाओ।” ३४ मूसा ने कहा, “तुम्हारो हमारे हाथ मेलबलि और होमबलि के पश्च भी देने पड़ेंगे, जिहें हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये चढ़ाएँ।” ३५ इसलिए हमारे पश्च भी हमारे संग जाएँगे, उनका एक खुर तक न रह जाएगा, क्योंकि उन्हीं में से हमको अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना का सामान लेना होगा, और हम जब तक वहाँ न पहुँचें तब तक नहीं जानते कि क्या-क्या लेकर यहोवा की उपासना करनी होगी।” ३६ पर यहोवा ने फिरौन का मन हठीला कर दिया, जिससे उसने उन्हें जाने न दिया। ३७ तब फिरौन ने उससे कहा, “मेरे सामाने से चला जा; और सचेत रह, मुझे अपना मुख फिर न दिखाना; क्योंकि जिस दिन तू मुझे मूँह दिखलाए उसी दिन तू मारा जाएगा।” ३८ मूसा ने कहा, “तूने ठीक कहा है; मैं तेरे मूँह को फिर कभी न देखूँगा।”

११ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “एक और विपत्ति मैं फिरौन और मिथ्या देश

पर डालता हूँ, उसके पश्चात् वह तुम लोगों को वहाँ से जाने देगा; और जब वह जाने देगा तब तुम सभी को मिथ्या निकाल देगा। ३९ मेरी प्रजा को मेरी यह आज्ञा सुना कि एक-एक पुस्त अपने-अपने पड़ोसी, और एक-एक झी अपनी-अपनी पड़ोसिन से सोने-चौंदी के गहने माँग ले।” ४० तब यहोवा ने मिथियों को अपनी प्रजा पर दयालु किया। और इससे अधिक वह पुस्त मूसा मिथ्या देश में फिरौन के कर्मचारियों और साधारण लोगों की दृष्टि में अति महान था। ४१ फिर मूसा ने कहा, “यहोवा इस प्रकार कहता है, कि आर्धी रात के लगभग मैं मिथ्या देश के बीच में होकर चलूँगा। ४२ तब मिथ्या देश में सिंहासन पर विराजनेवाले फिरौन से लेकर चक्रकीं पीसनेवाली दारी तक के पहलौठे; वरन् पशुओं तक के सब पहलौठे मप जाएँगे। ४३ और सारे मिथ्या देश में बड़ा हाहाकार मचेगा, यहाँ तक कि उसके समान न तो कभी हुआ और न होगा। ४४ पर इस्माएलियों के विस्तु, क्या मनुष्य क्या पशु, किसी पर कोई कुत्ता भी न भौंकेगा; जिससे तुम जान लो कि मिथियों और इस्माएलियों में मैं यहोवा अन्तर करता हूँ। ४५ तब तेरे ये सब कर्मचारी मैंने पास आ मुझे दण्डवत् करके यह कहेंगे, ‘अपने सब अनुरक्षों समेत निकल जा।’ और उसके पश्चात् मैं निकल जाऊँगा।” यह कहकर मूसा बड़े क्रोध में फिरौन के पास से निकल गया। ४६ यहोवा ने मूसा से कह दिया था, “फिरौन तुम्हारी न सुनेगा; क्योंकि मेरी इच्छा है कि मिथ्या देश में बहुत से चमत्कार करूँ।” ४७ मूसा और हास्न ने फिरौन के सामाने ये सब चमत्कार किए; पर यहोवा ने फिरौन का मन और कठोर कर दिया, इसलिए उसने इस्माएलियों को अपने देश से जाने न दिया।

१२ फिर यहोवा ने मिथ्या देश में मूसा और हास्न से कहा, ४८ “यह महीना

तुम लोगों के लिये आरम्भ का ठहरे; अर्थात् वर्ष का पहला महीना यही ठहरे। ४९ इसाएल की सारी मण्डली से इस प्रकार कहो, कि इसी महीने के दसवें दिन को तुम अपने-अपने पितरों के घरानों के अनुसार, घराने पीछे एक-एक मेन्ना ले रखो। ५० और यदि किसी के घराने में एक मेन्ने के खाने के लिये मनुष्य कम हों, तो वह अपने सबसे निकट रहनेवाले पड़ोसी के साथ

प्राणियों की गिनती के अनुसार एक मेम्ना ले रहे; और तुम हर एक के खाने के अनुसार मैम्ने का हिसाब करना। ५ तुम्हारा मेम्ना निर्दोष और पहले वर्ष का न हो, और उसे चाहे भेड़ों में से लेना चाहे बकरियों में से। ६ और इस महीने के चौदहवें दिन तक उसे रख छोड़ना, और उस दिन सर्यास्त के समय इमाल की सारी मण्डली के लोग उसे बत्ति करें। ७ तब वे उसके लह में से कुछ लेकर जिन घरों में मैने को खाएँौ उनके द्वार के दोनों ओर और चौखट के सिरे पर लगाएँ। ८ और वे उसके मौस को उसी रात आग में भूकर अखमीरी रोटी और कडवे सामाप्त के साथ खाएँ। ९ उसको सिर, पैर, और अंतिडियों समेत आग में भूकर खाना, कच्चा या जल में कुछ भी पकाकर न खाना। १० और उसमें से कुछ सवेरे तक न रहने देना, और यदि कुछ सवेरे तक रह भी जाए, तो उसे आग में जला देना। ११ और उसके खाने की यह विधि है; कि कमर बाँधे, पाँव में जूती पहने, और हाथ में लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाना; वह तो यहोवा का फस्ह होगा। १२ क्योंकि उस रात को मैं मिस्त्र देश के बीच में से होकर जाऊँगा, और मिस्त्र देश के क्या मनुष्य क्या पशु, सब के पहिलौठों को मास्झांगा; और मिस्त्र के सारे देवताओं को भी मैं दण ढूँगा; मैं तो यहोवा हूँ। १३ और जिन घरों में तुम रहगें उन पर वह लह तुम्हारे निमित्त चिन्ह ठहरेगा; अर्थात् मैं उस लह को देखकर तुम को छोड़ जाऊँगा, और जब मैं मिस्त्र देश के लोगों को मास्झांगा, तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नाश न होगें। १४ और वह दिन तुम को स्मरण दिलानेवाला ठहरेगा, और तुम उसको यहोवा के लिये पर्व करके मानना; वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि जानकर पर्व माना जाए। १५ “सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना, उनमें से पहले ही दिन अपने-अपने घर में से खमीर उठा डालना, वरन् जो पहले दिन से लेकर सातवें दिन तक कोई खमीरी वस्तु खाए, वह प्राणी इमालियों में से नाश किया जाए। १६ पहले दिन एक पवित्र सभा, और सातवें दिन भी एक पवित्र सभा करना; उन दोनों दिनों में कोई काम न किया जाए; केवल जिस प्राणी का जो खाना हो उसके काम करने की आज्ञा है। १७ इसलिए तुम बिना खमीरी की रोटी का पर्व मानना, क्योंकि उसी दिन मानो मैम्ने तुम को दल-दल करके मिस्त्र देश से निकाला है; इस कारण वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि जानकर माना जाए। १८ पहले महीने के चौदहवें दिन की साँझ से लेकर इककीसवें दिन की साँझ तक तुम अखमीरी रोटी खाया करना। १९ सात दिन तक तुम्हारे घरों में कुछ भी खमीर न रहे, वरन् जो कोई किसी खमीरी वस्तु को खाए, चाहे वह देसी हो चाहे परदेशी, वह प्राणी इमालियों की मण्डली से नाश किया जाए। २० कोई खमीरी वस्तु न खाना; अपने सब घरों में बिना खमीरी की रोटी खाया करना।” २१ तब मूसा ने इमाल के सब पुरनियों को बुलाकर कहा, “तुम अपने-अपने कुल के अनुसार एक-एक मेम्ना अलग कर रखो, और फस्ह का पशुबलि करना। २२ और उसका लह जो तसले में होगा उसमें जूफा का एक गुच्छा डुबाकर उसी तसले में के लह से द्वारा के चौखट के सिरे और दोनों ओर पर कुछ लगाना; और भोर तक तुम में से कोई घर से बाहर न निकले। २३ क्योंकि यहोवा देश के बीच होकर मिस्त्रियों को मारता जाएगा, इसलिए जहाँ-जहाँ वह चौखट के सिरे, और दोनों ओर पर उस लह को देखेगा, वहाँ-वहाँ वह उस द्वारा को छोड़ जाएगा, और नाश करनेवाले को तुम्हारे घरों में मारने के लिये न जाने देगा। २४ फिर तुम इस विधि को अपने और अपने बंश के लिये सदा की विधि जानकर माना करो। २५ जब तुम उस देश में जिसे यहोवा अपने कहने के अनुसार तुम को देगा प्रवेश करो, तब वह काम किया करना। २६ और जब तुम्हारे लड़के वाले तुम से पूछें, ‘इस काम से तुम्हारा क्या मतलब है?’ २७ तब तुम उनको यह उत्तर देना, ‘यहोवा ने जो मिस्त्रियों के मारने के समय मिस्त्र में रहनेवाले हम इमालियों के

घरों को छोड़कर हमारे घरों को बचाया, इसी कारण उसके फसह का यह बलिदान किया जाता है।” तब लोगों ने सिर झुकाकर दण्डवत् किया। २८ और इमालियों ने जाकर, जो आज्ञा यहोवा ने मूसा और हास्तन को दी थी, उसी के अनुसार किया। २९ ऐसा हुआ कि आधी रात को यहोवा ने मिस्त्र देश में सिंहासन पर विराजनेवाले फिरौन से लेकर गँड़ में पड़े हुए बैंधुए तक सब के पहिलौठों को, वरन् पशुओं तक के सब पहिलौठों को मार डाला। ३० और फिरौन रात ही को उठ बैठा, और उसके सब कर्मचारी, वरन् सारे मिस्त्र उठे; और मिस्त्र में बड़ा हाहाकार मचा, क्योंकि एक भी ऐसा घर न था जिसमें कोई मरा न हो। ३१ तब फिरौन ने रात ही रात में मूसा और हास्तन को बुलावाकर कहा, “तुम इमालियों समेत मेरी प्रजा के बीच से निकल जाओ; और अपने कहने के अनुसार जाकर यहोवा की उपासना करो। ३२ अपने कहने के अनुसार अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को साथ ले जाओ, और मुझे आशीर्वाद दे जाओ।” ३३ और मिस्त्री जो कहते थे, ‘हम तो सब मर मिटे हैं,’ उन्होंने इमालियों लोगों पर दबाव डालकर कहा, “देश से झटपट निकल जाओ।” ३४ तब उहोंने अपने गुँधे-गुँधाए आठे को बिना खमीर दिए ही कठौतियों समेत कपड़ों में बाँधकर अपने-अपने कंधे पर डाल लिया। ३५ इमालियों ने मूसा के कहने के अनुसार मिस्त्रियों से सोने-चौदंदी के गहने और बब्ल माँग लिए। ३६ और यहोवा ने मिस्त्रियों को अपनी प्रजा के लोगों पर ऐसा दायत्तु किया कि उहोंने जो-जो माँग वह सब उनको दिया। इस प्रकार इमालियों ने मिस्त्रियों को लट लिया। ३७ तब इमाली रामसेस से कूच करके सुककोत को चले, और बाल-बच्चों को छोड़ वे कोई छँग लाख पैदल चलनेवाले पुष्प थे। ३८ उनके साथ मिली-जूली हीड़ एक भीड़ गई, और भेड़-बकरी, गाय-बैल, बहुत से पशु भी साथ गए। ३९ और जो गँधा आठा वे मिस्त्र से साथ ले गए उसकी उहोंने बिना खमीर दिए रोटियाँ बनाई; क्योंकि वे मिस्त्र से ऐसे बरबस निकाले गए, कि उहोंने अबसर भी न मिला की मार्ग में खाने के लिये कुछ पका सके, इसी कारण वह गँधा हुआ आटा बिना खमीर का था। ४० मिस्त्र में बसे हुए इमालियों को चार सौ तीस वर्ष बीत गए थे। ४१ और उन चार सौ तीस वर्षों के बीतने पर, ठीक उसी दिन, यहोवा की सारी सेना मिस्त्र देश से निकल गई। ४२ यहोवा इमालियों को मिस्त्र देश से निकाल लाया, इस कारण वह रात उसके निमित्त मानने के योग्य है; यह यहोवा की वही रात है जिसका पीढ़ी-पीढ़ी में माना इमालियों के लिये अवश्य है। ४३ फिर यहोवा ने मूसा और हास्तन से कहा, “पर्व की विधि यह है; कि कोई परदेशी उसमें से न खाए; ४४ पर जो किसी का मोल लिया हुआ दास हो, और तुम लोगों ने उसका खतना किया हो, वह तो उसमें से खा सकेगा। ४५ पर परदेशी और मजदूर उसमें से न खाएँ। ४६ उसका खाना एक ही घर में हो; अर्थात् तुम उसके मौस में से कुछ घर से बाहर न ले जाना; और बलिपूर की कोई हड्डी न तोड़ना। ४७ पर्व को मानना इमाल की सारी मण्डली का कर्तव्य है। ४८ और यदि कोई परदेशी उस लोगों के संग रहकर यहोवा के लिये पर्व को मानना चाहे, तो वह अपने यहाँ के सब पुस्तों का खतना कराएँ। तब वह समीप आकर उसको माने; और वह देशी मनुष्य के तुल्य ठहरेगा। पर कोई खतनारहित पुष्प उसमें से न खाने पाए। ४९ उसकी व्यवस्था देशी और तुम्हारे बीच में रहनेवाले परदेशी दोनों के लिये एक ही हो।” ५० यह आज्ञा जो यहोवा ने मूसा और हास्तन को दी उसके अनुसार सारे इमालियों ने किया। ५१ और ठीक उसी दिन यहोवा इमालियों को मिस्त्र देश से दल-दल करके निकाल ले गया।

१३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “क्या मनुष्य के क्या पशु के, इमालियों में जितने अपनी-अपनी माँ के पहलौठे हों, उन्हें मैरे लिये पवित्र मानना;

वह तो मेरा ही है।” ३ फिर मूसा ने लोगों से कहा, “इस दिन को स्मरण रखो, जिसमें तुम लोग दासत्व के घर, अर्थात् मिस्र से निकल आए हो; यहोवा तो तुम को वहाँ से अपने हाथ के बल से निकाल लाया; इसमें खमीरी रोटी न खाई जाए। ४ अबीब के महीने में आज के दिन तुम निकले हो। ५ इसलिए जब यहोवा तुम को कनानी, हिती, ऐमोरी, हिब्बी, और यबूदी लोगों के देश में पहुँचाएगा, जिसे देने की उसने तुहारे पुराखाओं से शपथ खाई थी, और जिसमें दध और मध की धारा बही है, तब तुम इसी महीने में पर्व करना। ६ सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना, और सातवें दिन यहोवा के लिये पर्व मानना। ७ इन सातों दिनों में अखमीरी रोटी खाई जाए; बरन् तुम्हारे देश भर में न खमीरी रोटी, न खमीर तुम्हारे पास देखने में आए। ८ और उस दिन तुम अपने-अपने पुत्रों को यह कहकर समझा देना, कि यह तो हम उसी काम के कारण करते हैं, जो यहोवा ने हमारे मिस्र से निकल आने के समय हमारे लिये किया था। ९ फिर यह तुम्हारे लिये तुम्हारे हाथ में एक चिन्ह होगा, और तुम्हारी आँखों के सामने स्मरण करानेवाली वस्तु उड़े; जिससे यहोवा की व्यवस्था तुम्हारे मुँह पर रहे क्योंकि यहोवा ने तुम्हें अपने बलवन्त हाथों से मिस्र से निकाला है। १० इस कारण तुम इस विधि को प्रतिवर्ष नियत समय पर माना करना। ११ “फिर जब यहोवा उस शपथ के अनुसार, जो उसने तुम्हारे पुराखाओं से और तुम से भी खाई है, तुम्हें कानियों के देश में पहुँचाकर उसको तुम्हें दे देगा, १२ तब तुम में से जितने अपनी-अपनी माँ के जेठे हौं उनको, और तुम्हारे पश्चिमों में जो ऐसे हों उनको भी यहोवा के लिये अपर्ण करना; सब नर बच्चे तो यहोवा के हैं। १३ और गदही के हर एक पहलौठे के बदले मेम्ना देकर उसको छुड़ा लेना, और यदि तुम उसे छुड़ाना न चाहो तो उसका गला तोड़ देना। पर अपने सब पहलौठे पुत्रों को बदला देकर छुड़ा लेना। १४ और आगे के दिनों में जब तुम्हारे पुत्र तुम से पूछें, ‘‘यह क्या है?’’ तो उनसे कहना, ‘‘यहोवा हम लोगों को दासत्व के घर से, अर्थात् मिस्र देश से अपने हाथों के बल से निकाल लाया है। १५ उस समय जब फिरौन ने कठोर होकर हमको जाने देना न चाहा, तब यहोवा ने मिस्र देश में मनुष्य से लेकर पशु तक सब के पहलौठों को मार डाला। इसी कारण पश्चिमों में से तो जितने अपनी-अपनी माँ के पहलौठे न हैं, उन्हें हम यहोवा के लिये बलि करते हैं; पर अपने सब जेठे पुत्रों को हम बदला देकर छुड़ा लेते हैं।” १६ यह तुम्हारे हाथों पर एक चिन्ह-सा और तुम्हारी भौहों के बीच टीका-सा ठहरे; क्योंकि यहोवा हम लोगों को मिस्र से अपने हाथों के बल से निकाल लाया है।” १७ जब फिरौन ने लोगों को जाने की आज्ञा दे दी, तब यहपि पलिशियों के देश में होकर जो मार्ग जाता है वह छोटा था; तो भी परमेश्वर यह सोचकर उनको उस मार्ग से नहीं ले गया कि कहीं ऐसा न हो कि जब ये लोग लडाई देखें तब पछताकर मिस्र को लौट आएं। १८ इसलिए परमेश्वर उनको चक्कर खिलाकर लाल समुद्र के जंगल के मार्ग से ले चला। और इसाएली पाँति बाँधे हुए मिस्र से निकल गए। १९ और मूसा यसुफ की हड्डियों को साथ लेता गया; क्योंकि यसुफ ने इसाएलियों से यह कहकर, ‘‘परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा,’’ उनको इस विषय की दृढ़ शपथ खिलाई थी कि वे उसकी हड्डियों को अपने साथ हाँहें से ले जाएँगे। २० फिर उन्होंने सूक्कोत से कूच करके जंगल की छोर पर एताम में डेरा किया। २१ और यहोवा उन्हें दिन को मार्ग दिखाने के लिये बादल के खम्भे में, और रात को उजियाला देने के लिये आग के खम्भे में होकर उनके आगे-आगे चला करता था, जिससे वे रात और दिन दोनों में चल सके। २२ उसने न तो बादल के खम्भे को दिन में और न आग के खम्भे को रात में लोगों के आगे से हटाया।

१४ यहोवा ने मूसा से कहा, “इसाएलियों को आज्ञा दे, कि वे लौटकर मिदोल और समुद्र के बीच पीहीरीत के सम्मुख, बाल-सपोन के सामने

अपने डेरे खड़े करें, उसी के सामने समुद्र के तट पर डेरे खड़े करें। ३ तब फिरौन इसाएलियों के विषय में सोचेगा, ‘‘वे देश के उलझानों में फैसे हैं और जंगल में घिर गए हैं।’’ ४ तब मैं फिरौन के मन को कठोर कर दूँगा, और वह उनका पीछा करेगा, तब फिरौन और उसकी सारी सेना के द्वारा मेरी महिमा होगी; और मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।” और उन्होंने वैसा ही किया। ५ जब मिस्र के राजा को यह समाचार मिला कि वे लोग भाग गए, तब फिरौन और उसके कर्मचारियों का मन उनके विस्तृ पलट गया, और वे कहने लगे, “हमने यह क्या किया, कि इसाएलियों को अपनी सेवकाई से छुटकारा देकर जाने दिया?” ६ तब उसने अपना रथ तैयार करवाया और अपनी सेना को संग लिया। ७ उसने छः सौ अच्छे से अच्छे रथ वरन् मिस्र के सब रथ लिए और उन सभी पर सरदार बैठाए। ८ और यहोवा ने मिस्र के राजा फिरौन के मन को कठोर कर दिया। इसलिए उसने इसाएलियों का पीछा किया, परन्तु इसाएली तो बेखतके निकले चले जाते थे। ९ पर फिरौन के सब घोड़ों, और रथों, और सवारों समेत मिस्री सेना ने उनका पीछा करके उनके पास, जो पीहीरीत के पास, बाल-सपोन के सामने, समुद्र के किनारे पर डेरे डाले पड़े थे, जा पहुँची। १० जब फिरौन निकट आया, तब इसाएलियों ने आँखें उठाकर व्या देखा, कि मिस्री हमारा पीछा किए चले आ रहे हैं, और इसाएली अत्यन्त डर गए, और चिल्लकार यहोवा की दूहाई टी। ११ और वे मूसा से कहने लगे, “क्या मिस्र में कब्बे न थीं जो तू हमको वहाँ से मरने के लिये जंगल में ले आया है? तूने हम से यह क्या किया कि हमको मिस्र से निकाल लाया? १२ क्या हम तुझ से मिस्र में यही बात न कहते रहे, कि हमें रहने दे कि हम मिसियों की सेवा करें? हमारे लिये जंगल में मरने से मिसियों कि सेवा करनी अच्छी थी।” १३ मूसा ने लोगों से कहा, “‘‘द्वो मत, खड़े-खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा; क्योंकि जिन मिसियों को तुम आज देखते हो, उनको फिर कभी न देखोगे। १४ यहोवा आप ही तुम्हारे लिये लडेगा, इसलिए तुम चुपचाप रहो।” १५ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “‘‘तू क्यों मेरी दूहाई दे रहा है? इसाएलियों को आज्ञा दे कि वहाँ से कूच करें। १६ और तू अपनी लाठी उठाकर अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, और वह दो भाग हो जाएगा; तब इसाएली समुद्र के बीच होकर स्थल ही स्थल पर चले जाएँगे। १७ और सुन, मैं आप मिसियों के मन को कठोर करता हूँ, और वे उनका पीछा करके समुद्र में घुस पड़ेंगे, तब फिरौन और उसकी सेना, और रथों, और सवारों के द्वारा मेरी महिमा होगी। १८ और जब फिरौन, और उसके रथों, और सवारों के द्वारा मेरी महिमा होगी, तब मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।” १९ तब परमेश्वर का दूत जो इसाएली सेना के आगे-आगे चला करता था जाकर उनके पीछे हो गया; और बादल का खम्भा उनके आगे से हटकर उनके पीछे जा ठहरा। २० इस प्रकार वह मिसियों की सेना और इसाएलियों की सेना के बीच में आ गया; और बादल और अंधकार तो हुआ, तो भी उससे रात को उन्हें प्रकाश मिलता रहा; और वे रात भर एक दूसरे के पास न आए। २१ तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया; और यहोवा ने रात भर प्रचण्ड पुरावाई चलाई, और समुद्र के बीच में चले गए। २२ तब इसाएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर होकर चले, और जल उनकी दाहिनी और बाई और दीवार का काम देता था। २३ तब मिस्री, अर्थात् फिरौन के सब घोड़े, रथ, और सवार उनका पीछा किए हुए समुद्र के बीच में चले गए। २४ और रात के अन्तिम पहर में यहोवा ने बादल और आग के खम्भे में से मिसियों की सेना पर दृष्टि करके उन्हें घबरा दिया। २५ और उसने उनके रथों के पहियों को निकाल डाला, जिससे उनका चलना कठिन हो गया; तब मिस्री आपस में कहने लगे, “आओ, हम इसाएलियों के

सामने से भागें; क्योंकि यहोवा उनकी ओर से मिस्थियों के विस्फु युद्ध कर रहा है।” २६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, कि जल मिस्थियों, और उनके रथों, और सवारों पर फिर बहने लगे।” २७ तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया, और भोर होते-होते क्या हुआ कि समुद्र फिर ज्यों का त्यों अपने बल पर आ गया; और मिसी उनटे भागने लगे, परन्तु यहोवा ने उनको समुद्र के बीच ही में झटक दिया। २८ और जल के पलटने से, जितने रथ और सवार इसाएलियों के पीछे समुद्र में आए थे, वे सब बरन-फिरैन की सारी सेना उसमें डूब गई, और उसमें से एक भी न बचा। २९ परन्तु इसाएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर होकर चले गए, और जल उनकी दाहिनी और बाईं दोनों ओर दीवार का काम देता था। ३० इस प्रकार यहोवा ने उस दिन इसाएलियों को मिस्थियों के बश से इस प्रकार छुड़ाया; और इसाएलियों ने मिस्थियों को समुद्र के टट पर मरे पड़े हुए देखा। ३१ और यहोवा ने मिस्थियों पर जो अपना पराक्रम दिखलाता था, उसको देखकर इसाएलियों ने यहोवा का भय माना और यहोवा की ओर उसके दास मूसा की भी प्रतीति की।

१५ तब मूसा और इसाएलियों ने यहोवा के लिये यह गीत गाया। उन्होंने

कहा, “मैं यहोवा का गीत गाऊँगा, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में डाल दिया है। २ यहोवा मेरा बल और भजन का विषय है, और वही मेरा द्वार भी ठहरा है; मेरा परमेश्वर वही है, मैं उसी की स्तुति करूँगा, (मैं उसके लिये निवास-स्थान बनाऊँगा), मैं पूर्वजों का परमेश्वर वही है, मैं उसको सराहँगा। ३ यहोवा योद्धा है, उसका नाम यहोवा है। ४ फिरैन के रथों और सेना को उसने समुद्र में डाल दिया; और उसके उत्तम से उत्तम रथी लाल समुद्र में डूब गए। ५ गहरे जल ने उन्हें हाँप लिया; वे पत्थर के समान गहरे स्थानों में डूब गए। ६ हे यहोवा, तेरा दाहिना हाथ शक्ति में महाप्रतापी हुआ हो यहोवा, तेरा दाहिना हाथ शक्ति को चक्कनाचूर कर देता है। ७ तू अपने विरेण्यियों को अपने महाप्रताप से गिरा देता है; तू अपना कोप भड़काता, और वे भूसे के समान भस्म हो जाते हैं। ८ तेरे नथों की साँस से जल एकत्र हो गया, धाराएँ ढेर के समान थम गईं, समुद्र के मध्य में गहरा जल जम गया। ९ शत्रु ने कहा था, मैं पीछा करूँगा, मैं जा पकड़ूँगा, मैं लट के माल को बाँट लूँगा, उन्से मेरा जी भर जाएगा। मैं अपनी तलवार खींचते ही अपने हाथ से उनको नाश कर डालूँगा। १० तू तेरे अपने श्वास का पवन चलाया, तब समुद्र ने उनको हाँप लिया; वे समुद्र में सीसे के समान डूब गए। ११ हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है? तू तेरे पवित्रता के कारण महाप्रतापी, और अपनी स्तुति करनेवालों के भय के योग्य, और आश्वर्यकर्म का कर्ता है। १२ तेरे अपना दाहिना हाथ बढ़ाया, और पृथ्वी ने उनको निगल लिया है। १३ अपनी करणा से तेरे अपनी छुड़ाई हुई प्रजा की अगुआई की है, अपने बल से तू उसे अपने पवित्र निवास-स्थान को ले चला है। १४ देश-देश के लोग सुनकर कौप उठेंगे; पलिशियों के प्राणों के लाले पड़ जाएँगे। १५ एदोम के अधिपति व्याकुल होंगे; मोआब के पहलवान थरथरा उठेंगे; सब कनान निवासियों के मन पिघल जाएँगे। १६ उनमें डर और घबराहट समा जाएगा; तेरी बाँह के प्रताप से वे पत्थर के समान अबोल होंगे, जब तक, हे यहोवा, तेरी प्रजा के लोग निकल न जाएँ, जब तक तेरी प्रजा के लोग जिनको तेरे मोत लिया है पर न निकल जाएँ। १७ तू उन्हें हाँचकर अपने निज भागवते पहाड़ पर बसाएगा, यह वही स्थान है, हे यहोवा जिसे तेरे अपने निवास के लिये बनाया, और वही पवित्रस्थान है जिसे, हे प्रभु, तूने आप ही स्थिर किया है। १८ यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा।” १९ यह गीत गाने का कारण यह है, कि फिरैन के घोड़े रथों और सवारों समेत समुद्र के बीच में चले गए, और यहोवा उनके ऊपर समुद्र का जल लौटा ले आया; परन्तु इसाएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल

पर होकर चले गए। २० तब हास्न की बहन मिर्याम नाम नविया ने हाथ में डफ लिया; और सब छियाँ डफ लिए नाचती हुई उसके पीछे हो गई ली। २१ और मिर्याम उनके साथ यह टेक गाती गई कि: “यहोवा का गीत गाओ, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में डाल दिया है।”

२२ तब मूसा इसाएलियों को लाल समुद्र से आगे ले गया, और वे शूर नामक जंगल में आए; और जंगल में जाते हुए तीन दिन तक पानी का सोता न मिला। २३ फिर मारा नामक एक स्थान पर पहुँचे, वहाँ का पानी खारा था, उसे वे न पी सके; इस कारण उस स्थान का नाम मारा पड़ा। २४ तब वे यह कहकर मूसा के विस्फु बड़बड़ाने लगे, “हम क्या पीँगँ?” २५ तब मूसा ने यहोवा की दुहाई दी, और यहोवा ने उसे एक पौधा बता दिया, जिसे जब उसने पानी में डाला, तब वह पानी मीठा हो गया। वही यहोवा ने उनके लिये एक विधि और नियम बनाया, और वही उसने यह कहकर उनकी परीक्षा की, २६ “यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए और उसकी सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैंने मिस्थियों पर भेजे हैं उनमें से एक भी तुझ पर न भेजँगा; क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला यहोवा हूँ।” २७ तब वे एलीम को आए, जहाँ पानी के बारह सोते और सतर खजूर के पेड़ थे; और वहाँ उन्होंने जल के पास डेरे खडे किए।

१६ फिर एलीम से कूच करके इसाएलियों की सारी मण्डली, मिस देश से

निकलने के बाद दूसरे महीने के पांदुख्वे दिन को, सीन नामक जंगल में, जो एलीम और सीनी पर्वत के बीच में है, आ पहुँची। १ जंगल में इसाएलियों की सारी मण्डली मूसा और हास्न के विस्फु बुड़बुड़ाने लगे। २ और इसाएली उनसे कहने लगे, “जब हम मिस देश में माँस की हाँड़ियों के पास बैठकर मनमाना भोजन खाते थे, तब यदि हम यहोवा के हाथ से मार डाले भी जाते तो उत्तम वही था; पर तुम हमको इस जंगल में इसलिए निकाल ले आए हो कि इस सारे समाज को भ्रांता डालो।” ३ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “देखो, मैं तुम लोगों के लिये आकाश से भोजनवस्तु बरसाऊँगा; और ये लोग प्रतिदिन बाहर जाकर प्रतिदिन का भोजन इकट्ठा करेंगे, इससे मैं उनकी परीक्षा करूँगा, कि ये मेरी व्यवस्था पर चलेंगे कि नहीं। ४ और ऐसा होगा कि छठवें दिन वह भोजन और दिनों से दून होगा, इसलिए जो कुछ छे वे उस दिन बटोरे उसे तैयार कर रखें।” ५ तब मूसा और हास्न ने सारे इसाएलियों से कहा, “साँझ को तुम जान लोगे कि जो तुम को मिस देश से निकाल ले आया है वह यहोवा है। ६ और भोर को तुम्हें यहोवा का तेज देख पड़ेगा, क्योंकि तुम जो यहोवा पर बुड़बुड़ाते हो उसे वह सुनता है। और हम क्या हैं कि तुम हम पर बुड़बुड़ाते हो?” ६ फिर मूसा ने कहा, “यह तब होगा जब यहोवा साँझ को तुम्हें खाने के लिये माँस और भोर को रोटी मनाने देगा; क्योंकि तुम जो उस पर बुड़बुड़ाते हो उसे वह सुनता है। और हम क्या हैं? तुम्हारा बुड़बुड़ाना हम पर नहीं यहोवा ही पर होता है।” ७ फिर मूसा ने हास्न से कहा, “इसाएलियों की सारी मण्डली को आज्ञा दे, कि यहोवा के सामने वरन् उसके समीप आए, क्योंकि उनसे उनका बुड़बुड़ाना सुना है।” ८ और ऐसा हुआ कि जब हास्न इसाएलियों की सारी मण्डली से ऐसी ही बाँतें कर रहा था, कि उन्होंने जंगल की ओर दृष्टि करके देखा, और उनको यहोवा का तेज बादल में दिखलाई दिया। ९ तब यहोवा ने मूसा से कहा, १० “इसाएलियों का बुड़बुड़ाना मैंने सुना है; उनसे कह दे, कि सूर्यस्त के समय तुम माँस खाओगे और भोर को तुम रोटी से तुम हो जाओगे; और तुम यह जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।” ११ तब ऐसा हुआ कि साँझ को बटोरे आकर सारी छावनी पर बैठ गईं, और भोर को छावनी के चारों ओर ओस पड़ी। १२ और जब ओस सूख गई तो वे क्या

देखते हैं, कि जंगल की भूमि पर छोटे-छोटे छिलके पाले के किनकों के समान पड़े हैं। १५ यह देखकर इसाएली, जो न जानते थे कि यह क्या वस्तु है, वे आपस में कहने लगे यह तो मना है। तब मूसा ने उनसे कहा, “यह तो वही भोजनवस्तु है जिसे यहोवा तुम्हें खाने के लिये देता है।” १६ जो आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है, कि तुम उसमें से अपने-अपने खाने के योग्य बटोरा करना, अर्थात् अपने-अपने प्राणियों की गिनती के अनुसार, प्रति मनुष्य के पीछे एक-एक ओमेर बटोराना; जिसके द्वे मैं जितने हों वह उन्हीं के लिये बटोरा करे।” १७ और इसाएलियों ने वैसा ही किया; और किसी ने अधिक, और किसी ने थोड़ा बटोर लिया। १८ जब उन्होंने उसको ओमेर से नापा, तब जिसके पास अधिक था उसके कुछ अधिक न रह गया, और जिसके पास थोड़ा था उसको कुछ घटी न हुई; क्योंकि एक-एक मनुष्य ने अपने खाने के योग्य ही बटोर लिया था। १९ फिर मूसा ने उनसे कहा, “कोई इसमें से कुछ सवेरे तक न रख छोड़े।” २० तो भी उन्होंने मूसा की बात न मानी, इसलिए जब किसी किसी मनुष्य ने उसमें से कुछ सवेरे तक रख छोड़ा, तो उसमें किडी पड़ गए और वह बसाने लगा; तब मूसा उन पर क्रोधित हुआ। २१ वे भोर को प्रतिदिन अपने-अपने खाने के योग्य बटोर लेते थे, और जब धूप कड़ी होती थी, तब वह गल जाता था। २२ फिर ऐसा हुआ कि छठवें दिन उन्होंने दूना, अर्थात् प्रति मनुष्य के पीछे दो-दो ओमेर बटोर लिया, और मण्डली के सब प्रधानों ने आकर मूसा को बता दिया। २३ उसने उनसे कहा, “यह तो वही बात है जो यहोवा ने कही, क्योंकि कल पवित्र विश्वाम, अर्थात् यहोवा के लिये पवित्र विश्वाम होगा; इसलिए तुम्हें जो तंदू में पकाना हो उसे पकाओ, और जो सिंजाना हो उसे सिंजाओ, और इसमें से जितना बचे उसे सवेरे के लिये रख छोड़ो।” २४ जब उन्होंने उसको मूसा की इस आज्ञा के अनुसार सवेरे तक रख छोड़ा, तब न तो वह बसाया, और न उसमें कीड़े पड़े। २५ तब मूसा ने कहा, “आज उसी को खाओ, क्योंकि आज यहोवा का विश्वामदिन है; इसलिए आज तुम को वह मैदान में न मिलेगा।” २६ छः दिन तो तुम उसे बटोरा करोगे; परन्तु सातवाँ दिन तो विश्वाम का दिन है, उसमें वह न मिलेगा।” २७ तो भी लोगों में से कोई-कोई सातवें दिन भी बटोरने के लिये बाहर गए, परन्तु उनको कुछ न मिला। २८ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था को कब तक नहीं मानेगे? २९ देखो, यहोवा ने जो तुम को विश्वाम का दिन दिया है, इसी कारण वह छठवें दिन को दो दिन का भोजन तुम्हें देता है; इसलिए तुम अपने-अपने यहाँ बैठे रहना, सातवें दिन कोई अपने स्थान से बाहर न जाना।” ३० अतः लोगों ने सातवें दिन विश्वाम किया। ३१ इसाएल के घराने ने उस वस्तु का नाम मना रखा; और वह धनिया के समान चेत था, और उसका स्वाद मधु के बने हुए पूरे का सा था। ३२ फिर मूसा ने कहा, “यहोवा ने जो आज्ञा दी वह यह है, कि इसमें से ओमेर भर अपने बंश की पीढ़ी-पीढ़ी के लिये रख छोड़ो, जिससे वे जानें कि यहोवा हमको मिस देश से निकालकर जंगल में कैसी रोटी खिलाता था।” ३३ तब मूसा ने हासन से कहा, “एक पात्र लेकर उसमें ओमेर भर लेकर उसे यहोवा के आगे रख दे, कि वह तुम्हारी पीढ़ियों के लिये रखा रहे।” ३४ जैसी आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, उसी के अनुसार हासन ने उसको साक्षी के सन्दूक के आगे रख दिया, कि वह वहीं रखा रहे। ३५ इसाएली जब तक बसे हुए देश में न पहुँचे तब तक, अर्थात् चालीस वर्ष तक मना खाते रहे; वे जब तक कनान देश की सीमा पर नहीं पहुँचे तब तक मना खाते रहे। ३६ एक ओमेर तो एका का दसवाँ भाग है।

१७ फिर इसाएलियों की सारी मण्डली सीन नामक जंगल से निकल चली, और यहोवा के आज्ञानुसार कूच करके रपीदीम में अपने द्वे खड़े किए;

और वहाँ उन लोगों को पीने का पानी न मिला। १८ इसलिए वे मूसा से वाद-विवाद करके कहने लगे, “हमें पीने का पानी दे।” मूसा ने उनसे कहा, “तुम मुझसे क्यों वाद-विवाद करते हो? और यहोवा की परीक्षा क्यों करते हो?” १९ फिर वहाँ लोगों को पानी की प्यास लगी तब वे यह कहकर मूसा पर बुडबुडाने लगे, “तुम्हें बाल-बच्चों और पशुओं समेत प्यासा मार डालने के लिये मिसे से क्यों ले आया है?” २० तब मूसा ने यहोवा की दुर्वाइ दी, और कहा, “इन लोगों से मैं क्या कहूँ? ये सब मुझे पथरवाह करने को तैयार हैं।” २१ यहोवा ने मूसा से कहा, “इसाएल के बूढ़े लोगों में से कुछ को अपने साथ ले ले; और जिस लाठी से तुम नील नदी पर मारा था, उसे अपने हाथ में लेकर लोगों के आगे बढ़ चल। २२ देख मैं तेरे आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा रहूँगा; और तू उस चट्टान पर मारना, तब उसमें से पानी निकलेगा जिससे ये लोग पीएँ।” तब मूसा ने इसाएल के बूढ़े लोगों के देखते वैसा ही किया। २३ और मूसा ने उस स्थान का नाम मस्सा और मरीबा रखा, क्योंकि इसाएलियों ने वहाँ वाद-विवाद किया था, और यहोवा की परीक्षा यह कहकर की, “क्या यहोवा हमारे बीच है या नहीं?” २४ तब अमालेकी आकर रपीदीम में इसाएलियों से लड़ने लगे। २५ तब मूसा ने यहोशू से कहा, “हमारे लिये कई एक पुस्तों को चुनकर छाँट ले, और बाहर जाकर अमालेकियों से लड़; और मैं कल परमेश्वर की लाठी हाथ में लिये हए पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहूँगा।” २६ मूसा की इस आज्ञा के अनुसार यहोशू अमालेकियों से लड़ने लगा; और मूसा, हास्न, और हर पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गए। २७ और जब तक मूसा अपना हाथ उठाए रहता था तब तक तो इसाएल प्रबल होता था; परन्तु जब जब वह उसे नीचे करता तब-तब अमालेक प्रबल होता था। २८ और जब मूसा के हाथ भर गए, तब उन्होंने एक पथर लेकर मूसा के नीचे रख दिया, और वह उस पर बैठ गया, और हास्न और हर एक-एक ओर मैं उसके हाथों को सम्भाले रहे; और उसके हाथ सूर्यास्त तक स्थिर रहे। २९ और यहोशू ने अनुचरों समेत अमालेकियों को तलवार के बल से हरा दिया। ३० तब यहोवा ने मूसा से कहा, “स्मरणार्थ इस बात को पुस्तक में लिख ले और यहोशू को सुना दे कि मैं आकाश के नीचे से अमालेक का स्मरण भी पूरी रीति से मिटा डालूँगा।” ३१ तब मूसा ने एक वेदी बनाकर उसका नाम ‘यहोवा निस्सी’ रखा; ३२ और कहा, “यहोवा ने शपथ खाई है कि यहोवा अमालेकियों से पीढ़ियों तक लड़ाई करता रहेगा।”

३३ जब मूसा के समसूल मिथान के याजक यित्रो ने यह सुना, कि परमेश्वर ने मूसा और अपनी प्रजा इसाएल के लिये क्या-क्या किया है, अर्थात् यह कि किसी रीति से यहोवा इसाएलियों को मिस से निकाल ले आया। ३४ तब मूसा के समसूल यित्रो मूसा की पत्नी सिपोरा को, जो पहले अपने पिता के घर भेज दी गई थी, ३५ और उसके दोनों बेटों को भी ले आया; इन्हें से एक का नाम मूसा ने यह कहकर गेश्मान रखा था, “मैं अन्य देश में परदेशी हुआ हूँ।” ३६ और दूसरे का नाम उसने यह कहकर एलीजेर रखा, “मेरे पिता के परमेश्वर ने मेरा सहायक होकर मुझे पिरौन की तलवार से बचाया।” ३७ मूसा की पत्नी और पुत्रों को उसका सम्मुख यित्रो संग लिए मूसा के पास जंगल के उस स्थान में आया, जहाँ परमेश्वर के पर्वत के पास उसका डेरा पड़ा था। ३८ और आकर उसने मूसा के पास यह कहला भेजा, “मैं तेरा सम्मुख यित्रो हूँ, और दोनों बेटों समेत तेरी पत्नी को तेरे पास ले आया हूँ।” ३९ तब मूसा अपने समसूल से भेट करने के लिये निकला, और उसको दण्डवत् करके चमा; और वे परस्पर कशतता पूछते हुए डेरे पर आ गए। ४० वहाँ मूसा ने अपने समसूल से वर्णन किया कि यहोवा ने इसाएलियों के निमित्त फिरौन और मिस्त्रियों से क्या-क्या किया, और इसाएलियों ने मार्ग में क्या-क्या कष्ट उठाया, फिर यहोवा उहें कैसे-कैसे

छुड़ाता आया है। ९ तब यिन्होंने उस समस्त भलाई के कारण जो यहोवा ने इसाएलियों के साथ की थी कि उन्हें मिथियों के बश से छुड़ाया था, मगन होकर कहा, १० “धन्य है यहोवा, जिसने तुम को फ़िरौन और मिथियों के बश से छुड़ाया, जिसने तुम लोगों को मिथियों की मुरी में से छुड़ाया है। ११ अब मैंने जान लिया है कि यहोवा सब देवताओं से बड़ा है; वरन् उस विषय में भी जिसमें उन्होंने इसाएलियों के साथ अहंकारपूर्ण व्यवहार किया था।” १२ तब मूसा के सास यिन्होंने परमेश्वर के लिये होमबलि और मेलबलि चढ़ाए, और हास्त इसाएलियों के सब पुरनियों समेत मूसा के सास यिन्होंने के संग परमेश्वर के आगे भेजन करने को आया। १३ दूसरे दिन मूसा लोगों का न्याय करने को बैठा, और भौं से सँझ तक लोग मूसा के आस-पास खड़े रहे। १४ यह देखकर कि मूसा लोगों के लिये क्या-क्या करता है, उसके ससुर ने कहा, “यह क्या काम है जो तू लोगों के लिये करता है? क्या कारण है कि तू अकेला बैठा रहता है, और लोग भौं से सँझ तक तेरे आस-पास खड़े रहते हैं?” १५ मूसा ने अपने ससुर से कहा, “इसका कारण यह है कि लोग मेरे पास परमेश्वर से पछने आते हैं। १६ जब जब उनका कोई मुकदमा होता है तब-तब वे मेरे पास आते हैं और मैं उनके बीच न्याय करता, और परमेश्वर की विधि और व्यवस्था उन्हें समजाता हूँ।” १७ मूसा के ससुर ने उससे कहा, “जो काम तू करता है वह अच्छा नहीं। १८ और इससे त क्या, वरन् ये लोग भी जो तेरे संग हैं निश्चय थक जाएंगे, क्योंकि यह काम तेरे लिये बहुत भारी है; तू इसे अकेला नहीं कर सकता। १९ इसलिए अब मेरी सुन ले, मैं तुझको सम्मति देता हूँ, और परमेश्वर तेरे संग रहे। तू तो इन लोगों के लिये परमेश्वर के सम्मुख जाया कर, और इनके मुकदमों को परमेश्वर के पास पहुँचा दिया कर। २० इन्हें विधि और व्यवस्था प्रगट कर करके, जिस मार्ग पर इन्हें चलना, और जो-जो काम इन्हें करना हो, वह इनको समझा दिया कर। २१ फिर तू इन सब लोगों में से ऐसे पुरुषों को छाँट ले, जो गुणी, और परमेश्वर का भय माननेवाले, सच्चे, और अन्यथा के लाभ से घृणा करनेवाले हों; और उनको हजार-हजार, सौ-सौ, पचास-पचास, और दस-दस मनुष्यों पर प्रधान नियुक्त कर दे। २२ और वे सब समय इन लोगों का न्याय किया करें; और सब बड़े-बड़े मुकदमों को तो तेरे पास ले आया करें, और छोटे-छोटे मुकदमों का न्याय आप ही किया करें; तब तेरा बोझ हलका होगा, क्योंकि इस बोझ को वे भी तेरे साथ उठाएँगे। २३ यदि तू यह उपाय करे, और परमेश्वर तुझको ऐसी आज्ञा दे, तो तू ठहर सकेगा, और ये सब लोग अपने स्थान को कुशल से पहुँच सकेंगे।” २४ अपने ससुर की यह बात मानकर मूसा ने उसके सब वचनों के अनुसार किया। २५ अतः उसने सब इसाएलियों में से गुणी पुरुष चुनकर उन्हें हजार-हजार, सौ-सौ, पचास-पचास, दस-दस, लोगों के ऊपर प्रधान ठहराया। २६ और वे सब लोगों का न्याय करने लगे; जो मुकदमा कठिन होता उसे तो वे मूसा के पास ले आते थे, और सब छोटे मुकदमों का न्याय वे आप ही किया करते थे। २७ तब मूसा ने अपने ससुर को विदा किया, और उसने अपने देश का मार्ग लिया।

१९ इसाएलियों को मिस्र देश से निकले हुए जिस दिन तीन महीने बीत चुके,

उसी दिन वे सभी के जंगल में आए। १ और जब वे रपीदीम से कूच करके सभी के जंगल में आए, तब उन्होंने जंगल में डेरे खड़े किए; और वही पर्वत के आगे इसाएलियों ने छावनी डाली। २ तब मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ़ गया, और यहोवा ने पर्वत पर से उसको पुकारकर कहा, “याकूब के घराने से ऐसा कह, और इसाएलियों को मेरा यह वचन सुना, ३ ‘तुम ने देखा है कि मैंने मिथियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ। ४ इसलिए अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे,

और मेरी बाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। ५ और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।” जो बातें तुझे इसाएलियों से कहीं हैं वे ये ही हैं।” ६ तब मूसा ने आकर लोगों के पुरनियों को बुलाया, और ये सब बातें, जिनके कहने की आज्ञा यहोवा ने उसे दी थी, उनको समझा दी। ७ और सब लोग मिलकर बोल उठे, “जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब हम नित करेंगे।” लोगों की यह बातें मूसा ने यहोवा को सुनाई। ८ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “सुन, मैं बादल के अंधियारे में होकर तैर पास आता हूँ, इसलिए कि जब मैं तुझे से बातें करूँ तब वे लोग सुनें, और सदा तेरा विश्वास करें।” और मूसा ने यहोवा से लोगों की बातों का वर्णन किया। ९ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “लोगों के पास जा और उन्हें आज और कल पवित्र करना, और वे अपने वस्त्र धो लें, १० और वे तीसरे दिन तक तैयार हो जाएँ; क्योंकि तीसरे दिन यहोवा सब लोगों के देखते सभी पर्वत पर उतर आएगा। ११ और तू लोगों के लिये चारों ओर बाड़ा बाँध देना, और उनसे कहना, ‘तुम सचेत रहो कि पर्वत पर न चढ़ो और उसकी सीमा को भी न छुओ; और जो कोई पहाड़ को छूए वह निश्चय मार डाला जाए। १२ उसको कोई हाथ से न छूए, जो छूए उस पर पथराव किया जाए, या उसे तीर से छेदा जाए; चाहे पश्च हो चाहे मनुष्य, वह जीवित न बचे।’ जब महाशब्द वाले नरसिंगे का शब्द देर तक सनाई दे, तब लोग पर्वत के पास आएँ।” १३ तब मूसा ने पर्वत पर से उत्तरकर लोगों के पास आकर उनको पवित्र कराया; और उन्होंने अपने वस्त्र धो लिए। १४ और उसने लोगों से कहा, “तीसरे दिन तक तैयार हो जाओ; ढी के पास न जाना।” १५ जब तीसरा दिन आया तब भौं होते बादल गरजने और बिजली चमकने लगी, और पर्वत पर काली धटा छा गई, फिर नरसिंगे का शब्द बड़ा भारी हआ, और छावनी में जितने लोग थे सब काँप उठे। १६ तब मूसा लोगों को परमेश्वर से भेट करने के लिये छावनी से निकाल ले गया; और वे पर्वत के नीचे खड़े हुए। १७ और यहोवा जो आग में होकर सभी पर्वत पर उतरा था, इस कारण समस्त पर्वत धूँसे भर गया, और उसका धूँस भैंस का सा उठ रहा था, और समस्त पर्वत बहुत काँप रहा था। १८ फिर जब नरसिंगे का शब्द बढ़ा भारी हआ, और छावनी ने वाणी सुनाकर उसको उत्तर दिया। १९ और यहोवा सभी पर्वत की चोटी पर उतरा; और मूसा को पर्वत की चोटी पर बुलाया और मूसा ऊपर चढ़ गया। २० तब यहोवा ने मूसा से कहा, “नीचे उत्तरकर लोगों को चेतावनी दे, कहीं ऐसा न हो कि वे बाड़ा तोड़कर यहोवा के पास देखें को घुसें, और उनमें से बहुत नाश हो जाएँ। २१ और याजक जो यहोवा के समीप आया करते हैं वे भी अपने को पवित्र करें, कहीं ऐसा न हो कि यहोवा उन पर टूट पड़े।” २२ मूसा ने यहोवा से कहा, “वे लोग सभी पर्वत पर नहीं चढ़ सकते; तूने तो आप हमको यह कहकर चिटाया कि पर्वत के चारों ओर बाड़ा बाँधकर उसे पवित्र रखो।” २३ यहोवा ने उससे कहा, “उत्तर तो जा, और हास्त समेत तू ऊपर आ; परन्तु याजक और साधारण लोग कहीं यहोवा के पास बाड़ा तोड़कर न चढ़ आएँ, कहीं ऐसा न हो कि वह उन पर टूट पड़े।” २४ अतः ये बातें मूसा ने लोगों के पास उत्तरकर उनको सुनाई।

२० तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे, १ ‘मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो

तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है। २ “तू मुझे छोड़ दूसरों को परमेश्वर करके न मानना। ३ “तू अपने लिये कोई मृति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है। ४ तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला परमेश्वर हूँ, और जो मुझसे बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड

दिया करता हूँ। ६ और जो मुझसे प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारों पर कस्ता किया करता हूँ। ७ “तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दीष न ठहराएगा।” ८ “तू विश्वामिदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। ९ छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम-काज करना; १० परन्तु सातवाँ दिन तौर परमेश्वर यहोवा के लिये विश्वामिदिन है। उसमें न तो तू किसी भाँति का काम-काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो। ११ क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उसमें है, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्वामिदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया। १२ “तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तू बहुत दिन तक रहने पाए।” १३ “तू खून न करना।” १४ “तू व्यभिचार न करना।” १५ “तू चोरी न करना।” १६ “तू किसी के विरुद्ध दृढ़ी साक्षी न देना।” १७ “तू किसी के घर का लालच न करना; न तो किसी की पत्नी का लालच करना, और न किसी के दास-दासी, या बैल गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करना।” १८ और सब लोग गरजने और बिजली और नरसिंगे के शब्द सुनते, और धूआं उठते हुए पर्वत को देखते रहे, और देखके, काँपकर दूर खड़े हो गए; १९ और वे मूसा से कहने लगे, “तू ही हम से बातें कर, तब तो हम सुन सकेंगे; परन्तु परमेश्वर हम से बातें न करे, ऐसा न हो कि हम मर जाएँ।” २० मूसा ने लोगों से कहा, “डरो मत; क्योंकि परमेश्वर इस निमित्त आया है कि तुम्हारी परीक्षा करे, और उसका भय तुम्हरे मन में बना रहे, कि तुम पाप न करो।” २१ और वे लोग तो दूरी खड़े रहे, परन्तु मूसा उस घोर अंधकार के समीप गया जहाँ परमेश्वर था। २२ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “तू इशाएलियों को मेरे ये वचन सुना, कि तुम लोगों ने तो आप ही देखा है कि मैंने तुम्हारे साथ आकाश से बातें की हैं। २३ तुम मेरे साथ किसी को सम्मिलित न करना, अर्थात् अपने लिये चाँदी या सोने से देवताओं को न गढ़ लेना।” २४ मेरे लिये मिट्टी की एक बेदी बनाना, और अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के होमबलि और मेलबलिति को उस पर चढ़ाना; जहाँ-जहाँ मैं अपने नाम का स्मरण कराऊँ वहाँ-वहाँ मैं आकर तुम्हें आशीष दूँगा। २५ और यदि तुम मेरे लिये पत्थरों की बेदी बनाओ, तो तरासे हुए पत्थरों से न बनाना; क्योंकि जहाँ तुम ने उस पर अपना हृथियार लगाया वहाँ तू उसे अशुद्ध कर देगा। २६ और मेरी बेदी पर सीढ़ी से कभी न चढ़ना, कहीं ऐसा न हो कि तेरा तन उस पर ढेख पड़े।”

२१ फिर जो नियम तुझे उनको समझाने हैं वे ये हैं। २ “जब तुम कोई इन्हीं दास मोल लो, तब वह छः वर्ष तक सेवा करता रहे, और सातवें वर्ष स्वतंत्र होकर सेंट-मैंट चला जाए। ३ यदि वह अकेला आया हो, तो अकेला ही चला जाए, और यदि पत्री सहित आया हो, तो उसके साथ उसकी पत्री भी चली जाए। ४ यदि उसके स्वामी ने उसको पत्री दी हो और उसे उसके बेटे या बेटियों उत्पन्न हुई हों, तो उसकी पत्री और बालक उस स्वामी के ही रहें, और वह अकेला चला जाए। ५ परन्तु यदि वह दास दृढ़ा से कहे, ऐं अपने स्वामी, और अपनी पत्री, और बालकों से प्रेम रखता हूँ; इसलिए मैं स्वतंत्र होकर न चला जाऊँगा;” ६ तो उसका स्वामी उसको परमेश्वर के पास ले चले; फिर उसको द्वार के किंवाड़ या बाजू के पास ले जाकर उसके कान में सुतारी से छेद करें; तब वह सदा उसकी सेवा करता रहे। ७ “यदि कोई अपनी बेटी को दासी होने के लिये बेच डालें, तो वह दासी के समान बाहर न जाए। ८ यदि उसका स्वामी उसको अपनी पत्री बनाए, और फिर उससे प्रसन्न न रहे, तो वह उसे दाम से छाड़ाई जाने दें; उसका विवासधात करने के बाद उस विदेशी

लोगों के हाथ बेचने का उसको अधिकार न होगा। १० यदि उसने उसे अपने बेटे को ब्याह दिया हो, तो उससे बेटी का सा व्यवहार करे। १० चाहे वह दूरी पत्री कर ले, तो भी वह उसका भोजन, बस्त्र, और संगति न घटाए। ११ और यदि वह इन तीन बातों में घटी करे, तो वह द्वी सेत-मैत बिना दाम चुकाए ही चली जाए। १२ “जो किसी मनुष्य को ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो वह भी निश्चय मार डाला जाए। १३ यदि वह उसकी घात में न बैठा हो, और परमेश्वर की इच्छा ही से वह उसके हाथ में पड़ गया हो, तो ऐसे मारनेवाले के भागने के निमित्त मैं एक स्थान ठहराऊँगा जहाँ वह भाग जाए। १४ परन्तु यदि कोई ढिलाई से किसी पर चढ़ाई करके उसे छल से घात करे, तो उसको मार डालने के लिये मेरी बेटी के पास से भी अलग ले जाना। १५ “जो अपने पिता या माता को मारे-पटि वह निश्चय मार डाला जाए। १६ “जो किसी मनुष्य को चुराए, चाहे उसे ले जाकर बेच डाले, चाहे वह उसके पास पाया जाए, तो वह भी निश्चय मार डाला जाए। १७ “जो अपने पिता या माता को श्वाप दे वह भी निश्चय मार डाला जाए। १८ “यदि मनुष्य झागड़ते हों, और एक दूसरे को पतथर या मुक्के से ऐसा मारे कि वह मरे नहीं परन्तु बिछौने पर पड़ा रहे, १९ तो जब वह उठकर लाठी के सहारे से बाहर चलने फिरने लगे, तब वह मारनेवाला निर्दोष ठहरे; उस दशा में वह उसके पड़े रहने के समय की हानि भर दे, और उसको भला चंगा भी करा दे। २० “यदि कोई अपने दास या दासी को सोटे से ऐसा मारे कि वह उसके मारने से मर जाए, तब तो उसको निश्चय दण्ड दिया जाए। २१ परन्तु यदि वह दो एक दिन जीवित रहे, तो उसके स्वामी को दण्ड न दिया जाए; क्योंकि वह दास उसका धन है। २२ “यदि मनुष्य आपस में मारपीट करके किसी गर्भवती द्वी को ऐसी चोट पहुँचाए, कि उसका गर्भ गिर जाए, परन्तु और कुछ हानि न हो, तो मारनेवाले से उतना दण्ड लिया जाए, जितना उस द्वी का पाति पंच की सम्मति से ठहराए। २३ परन्तु यदि उसको और कुछ हानि पहुँचे, तो प्राण के बदले प्राण का, २४ और आँख के बदले आँख का, और दाँत के बदले दाँत का, और हाथ के बदले हाथ का, और पाँव के बदले पाँव का, २५ और दाग के बदले दाग का, और घाव के बदले घाव का, और मार के बदले मार का दण्ड हो। २६ “जब कोई अपने दास या दासी की आँख पर ऐसा मारे कि फूट जाए, तो वह उसकी आँख के बदले उसे स्वतंत्र करके जाने दे। २७ और यदि वह अपने दास या दासी को मारकर उसका दाँत तोड़ डाले, तो वह उसके दाँत के बदले उसे स्वतंत्र करके जाने दे। २८ “यदि बैल किसी पुम्प या द्वी को ऐसा सींग मारे कि वह मर जाए, तो वह बैल तो निश्चय पथरवाह करके मार डाला जाए, और उसका माँस खाया न जाए; परन्तु बैल का स्वामी निर्दोष ठहरे। २९ परन्तु यदि उस बैल की पहले से सींग मारने की आदत पड़ी हो, और उसके स्वामी ने जताए जाने पर भी उसको न बाँध रखा हो, और वह किसी पुम्प या द्वी को मार डाले, तब तो वह बैल पथरवाह किया जाए, और उसका स्वामी भी मार डाला जाए। ३० यदि उस पर छुड़ौती ठहराई जाए, तो प्राण छुड़ाने को जो कुछ उसके लिये ठहराया जाए उसे उतना ही देना पड़ेगा। ३१ चाहे बैल ने किसी बेटे को, चाहे बेटी को मारा हो, तो भी इसी नियम के अनुसार उसके स्वामी के साथ व्यवहार किया जाए। ३२ यदि बैल ने किसी दास या दासी को सींग मारा हो, तो बैल का स्वामी उस दास के स्वामी को तीस शेक्सें स्पा दे, और वह बैल पथरवाह किया जाए। ३३ “यदि कोई मनुष्य गड़ा खोलकर या खोदकर उसको न ढूँपे, और उसमें किसी का बैल या गदहा गिर पड़े, ३४ तो जिसका वह गड़ा हो वह उस हानि को भर दे; वह पशु के स्वामी को उसका मोल दे, और लोथ गड़वाले की ठहरे। ३५ “यदि किसी का बैल किसी दूसरे के बैल को ऐसी चोट लगाए, कि वह मर जाए, तो वे दोनों मनुष्य जीवित बैल को बेचकर उसका मोल आपस में आधा-

आधा बाँट ले, और लोथ को भी वैसा ही बाँटें। ३५ यदि यह प्रगट हो कि उस बैल की पहले से सींग मारने की आदत पड़ी थी, पर उसके स्वामी ने उसे बाँध नहीं रखा, तो निश्चय वह बैल के बदले बैल भर दे, पर लोथ उसी की ठहरे।

२२ “यदि कोई मनुष्य बैल, या भेड़, या बकरी चुराकर उसका घाट करे

या बेच डाले, तो वह बैल के बदले पाँच बैल, और भेड़-बकरी के बदले चार भेड़-बकरी भर दे। २ यदि चोर सेंध लगाते हुए पकड़ा जाए, और उस पर ऐसी मार पड़े कि वह मर जाए, तो उसके खून का दोष न लगे; ३ यदि सूर्य निकल चुके, तो उसके खून का दोष लगे; अवश्य हो कि वह हानि को भर दे, और यदि उसके पास कुछ न हो, तो वह चोरी के कारण बेच दिया जाए। ४ यदि चुराया हुआ बैल, या गदहा, या भेड़ या बकरी उसके हाथ में जीवित पाई जाए, तो वह उसका दूना भर दे। ५ “यदि कोई अपने पशु से किसी का खेत या दाख की बारी चराए, अर्थात् अपने पशु को ऐसा छोड़ दे कि वह पराए खेत को चर ले, तो वह अपने खेत की और अपनी दाख की बारी की उत्तम से उत्तम उपज में से उस हानि को भर दे। ६ “यदि कोई आग जलाए, और वह काँटों में लग जाए और फूलों के ढेर या अनाज या खदान खेत जल जाए, तो जिसने आग जलाई हो वह हानि को निश्चय भर दे। ७ “यदि कोई दूसरे को स्पर्य या सामर्थी की धरोहर धरे, और वह उसके घर से चुराई जाए, तो यदि चोर पकड़ा जाए, तो दूना उसी को भर देना पड़ेगा। ८ और यदि चोर न पकड़ा जाए, तो घर का स्वामी परमेश्वर के पास लाया जाए कि निश्चय हो जाए कि उसने अपने भाई-बन्धु की सम्पत्ति पर हाथ लगाया है या नहीं। ९ चाहे बैल, चाहे गदहे, चाहे भेड़ या बकरी, चाहे बक्ष, चाहे किसी प्रकार की ऐसी खोई हुई वस्तु के विषय अपराध कर्तों न लगाया जाए, जिसे दो जन अपनी-अपनी कहते हों, तो दोनों का मुकदमा परमेश्वर के पास आए; और जिसको परमेश्वर दोषी ठहराए, वह दूसरे को दूना भर दे। १० “यदि कोई दूसरे को गदहा या बैल या भेड़-बकरी या कोई और पशु रखने के लिये सौंपै, और किसी के बिना देखे वह मर जाए, या चोट खाए, या हाँक दिया जाए, ११ तो उन दोनों के वीच यहोवा की शपथ खिलाई जाए, मैंने इसकी सम्पत्ति पर हाथ नहीं लगाया;” तब सम्पत्ति का स्वामी इसको सच माने, और दूसरे को उसे कुछ भी भर देना न होगा। १२ यदि वह सचमुच उसके हाथों से चुराया गया हो, तो वह उसके स्वामी को उसे भर दे। १३ और यदि वह फाड़ डाला गया हो, तो वह फाड़े हुए को प्रमाण के लिये ले आए, तब उसे उसकी भी भर देना न पड़ेगा। १४ “फिर यदि कोई दूसरे से पशु माँग लाए, और उसके स्वामी के संग न रहते उसके चोट लगे या वह मर जाए, तो वह निश्चय उसकी हानि भर दे। १५ यदि उसका स्वामी संग हो, तो दूसरे को उसकी हानि भरना न पड़े; और यदि वह भाड़े का हो तो उसकी हानि उसके भाड़े में आ गई। १६ “यदि कोई पृथु किसी कन्या को जिसके ब्याह की बात न लगी हो फुसलाकर उसके संग कुर्कम करे, तो वह निश्चय उसका मोल देकर उसे ब्याह ले। १७ परन्तु यदि उसका पिता उसे देने को बिल्कुल इन्कार करे, तो कुर्कम करनेवाला कन्याओं के मोल की रीति के अनुसार स्पर्य तौल दे। १८ “तू जाद-टोना करनेवाली को जीवित रहने न देना। १९ “जो कोई पशुगमन करे वह निश्चय मार डाला जाए। २० “जो कोई यहोवा को छोड़ किसी और देवता के लिये बलि करे वह सत्यनाश किया जाए। २१ “तुम परदेशी को न सताना और न उस पर अधेर करना क्योंकि मिस्र देश में तुम भी परदेशी थे। २२ किसी विधवा या अनाथ बालक को दुःख न देना। २३ यदि तुम ऐसों को किसी प्रकार का दुःख दो, और वे कुछ भी मेरी दुहाई दें, तो मैं निश्चय उनकी दुहाई सुनँगा; २४ तब मेरा क्रोध भड़केगा, और मैं तुम को तलवार से मरवाऊँगा, और तुम्हारी पत्रियाँ विधवा और तुम्हारे बालक

अनाथ हो जाएँगे। २५ “यदि तू मेरी प्रजा में से किसी दीन को जो तेरे पास रहता हो स्पर्य का क्रुण दे, तो उससे महाजन के समान ब्याज न लेना। २६ यदि तू कभी अपने भाई-बन्धु के बक्ष को बन्धक करके रख भी ले, तो सूर्य के अस्त होने तक उसको लौटा देना; २७ क्योंकि वह उसका एक ही ओढ़ना है, उसकी देह का वही अकेला बक्ष होगा; फिर वह किसे ओढ़कर सोएगा? और जब वह मेरी दुहाई देगा तब मैं उसकी सुनँगा, क्योंकि मैं तो कल्पनाय हूँ। २८ “परमेश्वर को श्वास न देना, और न अपने लोगों के प्रधान को श्वास देना। २९ “अपने खेतों की उपज और फलों के रस में से कुछ मुझे देने में विलम्ब न करना। अपने खेतों में से पललौठे को मुझे देना। ३० क्वैसे ही अपनी गायों और भेड़-बकरियों के पललौठे भी देना; सात दिन तक तो बच्चा अपनी माता के संग रहे, और आठवें दिन तू उसे मुझे दे देना। ३१ “तुम मेरे लिये पवित्र मनुष्य बनना; इस कारण जो पशु मैदान में फाड़ा हुआ पड़ा मिले उसका मौस न खाना, उसको कुत्तों के आगे फेंक देना।

२३ “झूठी बात न फैलाना। अन्यायी साक्षी होकर दृष्ट का साथ न देना।

२ बुराई करने के लिये न तो बहुतों के पीछे हो लेना, और न उनके पीछे फिरकर मुकदमे में न्याय बिगाड़ने को साक्षी देना; ३ और कंगाल के मुकदमे में उसका भी पक्ष न करना। ४ “यदि तेरे शत्रु का बैल या गदहा भटकता हुआ तुम्हे मिले, तो उसे उसके पास अवश्य फेर ले आना। ५ फिर यदि तू अपने खेती के गढ़े को बोझ के मारे दबा हुआ देखे, तो चाहे उसको उसके स्वामी के लिये छुड़ाने के लिये तेरा मन न चाहे, तो भी अवश्य स्वामी का साथ देकर उसे छुड़ा लेना। ६ “तेरे लोगों में से जो दरिद्र हों उसके मुकदमे में न्याय न बिगाड़ना। ७ इस्टे कुकड़े से दूर रहना, और निर्दोष और धर्मी को घाट न करना, क्योंकि मैं दृष्ट को निर्दोष न ठहराऊँगा। ८ घूस न लेना, क्योंकि घूस देखनेवालों को भी अंधा कर देता, और धर्मियों की बातें पलट देता है। ९ “परदेशी पर अंधेर न करना; तुम तो परदेशी के मन की बातें जानते हो, क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे। १० “छ. वर्ष तो अपनी भूमि में बोना और उसकी उपज इकट्ठी करना; ११ परन्तु सातावें वर्ष में उसको पड़ती रहने देना और वैसा ही छोड़ देना, तो तेरे भाई-बन्धुओं में के दरिद्र लोग उससे खाने पाएँ, और जो कुछ उनसे भी बचे वह जंगली पशुओं के खाने के काम में आए। और अपनी दाख और जैतून की बारियों को भी ऐसे ही करना। ११ छ. दिन तक तो अपना काम-काज करना, और सातावें दिन विश्राम करना; कि तेरे बैल और गदहे सुस्ताएँ, और तेरी दासियों के बेटे और परदेशी भी अपना जी ठंडा कर सके। १२ और जो कुछ मैंने तुम से कहा है उसमें सावधान रहना; और दूसरे देवताओं के नाम की चर्चा न करना, वरन् वे तुम्हारे मँह से सुनाई भी न दें। १३ “प्रतिवर्ष तीन बार मेरे लिये पर्व मानना। १४ अखमीरी रोटी का पर्व मानना; उसमें मेरी आज्ञा के अनुसार अबीब महीने के नियत समय पर सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना, क्योंकि उसी महीने में तुम मिस्र से निकल आए। और मुझ को कोई हुई खेती की पहली उपज तैयार हो, तब कट्टी का पर्व मानना। और वर्ष के अन्त में जब तू परिश्रम के फल बटोरकर ढेर लगाए, तब बटोरन का पर्व मानना। १५ प्रतिवर्ष तीनों बार तेरे सब पृथु प्रभु यहोवा को अपना मूँह दिखाएँ। १६ “मेरे बलिपूर्ण का लह खमीरी रोटी के संग न चढ़ाना, और न मेरे पर्व के उत्तम बलिदान में से कुछ स्वरूप तक रहने देना। १७ अपनी भूमि की पहली उपज का पहला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना। बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में न पकाना। १८ “सुन, मैं एक दूत तेरे आगे-आगे भेजता हूँ जो मार्ग में तेरी रक्षा करेगा, और जिस स्थान को मैंने तैयार किया है उसमें तुझे पहुँचाएगा। १९ उसके सामने सावधान रहना, और

उसकी मानना, उसका विरोध न करना, क्योंकि वह तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा; इसलिए कि उसमें मेरा नाम रहता है। २४ और यदि तू सचमुच उसकी माने और जो कुछ मैं कहूँ वह करे, तो मैं तेरे शत्रुओं का शत्रु और तेरे दोहियों का दोही बनूँगा। २५ इस रीति मेरा दूत तेरे आगे-आगे चलकर तुझे एमोरी, हिंती, परिज्जी, कनानी, हिल्डी, और यबूसी लोगों के यहाँ पहुँचाएगा, और मैं उनको सत्यानाश कर डालूँगा। २६ उनके देवताओं को दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना, और न उनके से काम करना, बरन उन मृतों को पूरी रीति से सत्यानाश कर डालना, और उन लोगों की लाटों के टुकड़े-टुकड़े कर देना। २७ तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, तब वह तेरे अन्न जल पर आशीष देगा, और तेरे बीच में से रोग दूर करेगा। २८ तेरे देश में न तो किसी का गर्भ पिरेगा और न कोई बौंझ होगी; और तेरी आयु मैं पूरी करूँगा। २९ जिनें लोगों के बीच तू जाएगा उन सभी के मन में मैं अपना भय पहले से ऐसा समवा दूँगा कि उनको व्याकुल कर दूँगा, और मैं तुझे सब शत्रुओं की पीठ दिखाऊँगा। ३० और मैं तुझे से पहले बर्री को भेजूँगा जो हिल्डी, कनानी, और हिंती लोगों को तेरे सामने से भगाकर दूर कर देंगी। ३१ मैं उनको तेरे आगे से एक ही वर्ष में तो न निकाल दूँगा, ऐसा न हो कि देश उजाझ हो जाए, और जंगली पशु बढ़कर तुझे दुर्घटना देने लगें। ३२ जब तक तू फूल-फलकर देश को अपने अधिकार में न कर ले तब तक मैं उन्हें तेरे आगे से थोड़ा-थोड़ा करके निकालता रहूँगा। ३३ मैं लाल समुद्र से लेकर पलिशियों के समुद्र तक और जंगल से लेकर फरात तक के देश को तेरे वश में कर दूँगा; मैं उस देश के निवासियों को भी तेरे वश में कर दूँगा, और तू उन्हें अपने सामने से बरबस निकालेगा। ३४ तू न तो उनसे बाचा बौंधना और न उनके देवताओं से। ३५ वे तेरे देश में रहने न पाएँ, ऐसा न हो कि वे तुझे से मेरे विस्तु पाप कराएँ; क्योंकि यदि तू उनके देवताओं की उपासना करे, तो यह तेरे लिये फंदा बनेगा।”

२४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “तू, हास्न, नादाव, अबीह, और इसाएलियों के सतर पुरनियों समेत यहोवा के पास ऊपर आकर दूर से दण्डवत् करना। २५ और केवल मूसा यहोवा के समीप आए; परन्तु वे समीप न आएँ, और दूसरे लोग उनके संग ऊपर न आयें।” २६ तब मूसा ने लोगों के पास जाकर यहोवा की सब बातें और सब नियम सुना दिए; तब सब लोग एक स्वर से बोल उठे, “जितनी बातें यहोवा ने कही हैं उन सब बातों को हम मानेंगे।” २७ तब मूसा ने यहोवा के सब बचन लिख दिए। और सबै उठकर पर्वत के नीचे एक बेदी और इसाएल के बारहों गोत्रों के अनुसार बारह खम्भे भी बनवाए। २८ तब उसने कई इसाएली जबानों को भेजा, जिन्होंने यहोवा के लिये होम्बलि और बैलों के मेलबलि चढ़ाए। २९ और मूसा ने आधा लह लेकर कटोरों में रखा, और आधा बेदी पर छिड़क दिया। ३० तब बाचा की पुस्तक को लेकर लोगों को पढ़ सनाया; उसे सनकर उन्होंने कहा, “जो कुछ यहोवा ने कहा है उस सब को हम करेंगे, और उसकी आज्ञा मानेंगे।” ३१ तब मूसा ने लह को लेकर लोगों पर छिड़क दिया, और उनसे कहा, “देखो, यह उस बाचा का लह है जिसे यहोवा ने इन सब बचनों पर तुम्हे साथ बांधी है।” ३२ तब मूसा, हास्न, नादाव, अबीह और इसाएलियों के सतर पुरनिए ऊपर गए। ३३ और उसके इसाएल के परमेश्वर का दर्शन किया; और उसके चरणों के तले मीलमणि का चबूतरा सा कुछ था, जो आकाश के तुल्य ही स्वच्छ था। ३४ और उसने इसाएलियों के प्रधानों पर हाथ न बढ़ाया; तब उन्होंने परमेश्वर का दर्शन किया, और खाया पिया। ३५ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “पहाड़ पर मेरे पास कह, और वहाँ रह; और मैं तुझे पत्थर की पटियाँ, और अपनी लिखी हुई

व्यवस्था और आज्ञा दूँगा कि तू उनको सिखाए।” ३६ तब मूसा यहोश नामक अपने टहलते समेत परमेश्वर के पर्वत पर चढ़ गया। ३७ और पुरनियों से वह यह कह गया, “जब तक हम तुम्हारे पास फिर न आएँ तब तक तुम यही हमारी बाट जोहते रहो; और सुनो, हास्न और दूर तुम्हारे सांग हैं; तो यदि किसी का मुकदमा हो तो उन्हीं के पास जाए।” ३८ तब मूसा पर्वत पर चढ़ गया, और बादल ने पर्वत को छा लिया। ३९ तब यहोवा के तेज ने सनै पर्वत पर निवास किया, और वह बादल उस पर छ: दिन तक छाया रहा; और सातवें दिन उसने मूसा को बादल के बीच में से पुकारा। ४० और इसाएलियों की दृष्टि में यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर प्रचण्ड आग सा देख पड़ता था। ४१ तब मूसा बादल के बीच में प्रवेश करके पर्वत पर चढ़ गया। और मूसा पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात रहा।

२५ यहोवा ने मूसा से कहा, “इसाएलियों से यह कहना कि मेरे लिये भेट लाएँ जिनें अपनी इच्छा से देना चाहें उन्हीं सभी से मेरी भेट लेना।” ३२ और जिन वस्तुओं की भेट उनसे लेनी हैं वे ये हैं, अर्थात् सोना, चौंपी, पीतल, नीले, बैगनी और लाल रंग का कपड़ा, स्क्रम सनी का कपड़ा, बकरी का बाल, ५ लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खाली, सुदसों की खाली, बबूल की लकड़ी, ६ उजियाले के लिये तेल, अभिषेक के तेल के लिये और सुगन्धित धूप के लिये सुगन्ध-द्रव्य, ७ एपोद और चपरास के लिये सलैमानी पत्थर, और जड़ने के लिये मणि। ८ और वे मेरे लिये एक पवित्रस्थान बनाएँ, कि मैं उनके बीच निवास करूँ। ९ जो कुछ मैं तुझे दिखाऊ हैं, अर्थात् निवास-स्थान और उसके सब सामान का नमूना, उसी के अनुसार तुम लोग उसे बनाना। १० “बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनाया जाएँ; उसकी लम्बाई ढाई हाथ, और चौड़ाई और ऊँचाई डेढ़-डेढ़ हाथ की हो। ११ और उसको शुद्ध सोने से भीतर और बाहर मढ़वाना, और सन्दूक के ऊपर चारों ओर सोने की बाड़ बनवाना। १२ और सोने के चार कड़े ढलवा कर उसके चारों पायों पर, एक ओर दो कड़े और दूसरी ओर भी दो कड़े लगवाना। १३ फिर बबूल की लकड़ी के ढड़े बनवाना, और उन्हें भी सोने से मढ़वाना। १४ और ढंडों को सन्दूक की दोनों ओर के कड़ों में डालना जिससे उनके बल सन्दूक उठाया जाए। १५ वे ढंडे सन्दूक के कड़ों में लगे रहें; और उससे अलग न किए जाएँ। १६ और जो साक्षीपत्र मैं तुझे दूँगा उसे उसी सन्दूक में रखना। १७ “फिर शुद्ध सोने का एक प्रायश्चित्र का ढकना बनवाना; उसकी लम्बाई ढाई हाथ, और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हो। १८ और सोना ढालकर दो कस्ब बनवाकर प्रायश्चित्र के ढकने के दोनों सिरों पर लगवाना। १९ एक कस्ब तो एक सिरे पर और दूसरा कस्ब दूसरे सिरे पर लगवाना; और कस्बों को और प्रायश्चित्र के ढकने को उसके दुकड़े से बनाकर उसके दोनों सिरों पर लगवाना। २० और उन कस्बों के पंख ऊपर से ऐसे फैले हुए बनें कि प्रायश्चित्र का ढकना उनसे ढूँपा रहे, और उनके मुख आमने-सामने और प्रायश्चित्र के ढकने की ओर रहें। २१ और प्रायश्चित्र के ढकने को सन्दूक के ऊपर लगवाना; और जो साक्षीपत्र मैं तुझे दूँगा उसे सन्दूक के भीतर रखना। २२ और मैं उसके ऊपर रहकर तुझ से मिला करूँगा; और इसाएलियों के लिये जितनी आज्ञा एँ, मुझ को तुझे देनी होंगी, उन सभी के विषय मैं प्रायश्चित्र के ढकने के ऊपर से और उन कस्बों के बीच में से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक पर होंगे, तुझ से वार्तालाप किया करूँगा। २३ “फिर बबूल की लकड़ी की एक मेज बनवाना; उसकी लम्बाई दो हाथ, चौड़ाई एक हाथ, और ऊँचाई डेढ़ हाथ की हो। २४ उसे शुद्ध सोने से मढ़वाना, और उसके चारों ओर सोने की एक बाड़ बनवाना। २५ और उसके चारों ओर सोने की एक बाड़ बनवाना, और इस पटरी के चारों ओर सोने की एक बाड़ बनवाना।

२६ और सोने के चार कड़े बनवाकर मेज के उन चारों कोनों में लगवाना जो उसके चारों पायों में होंगे। २७ वे कड़े पटरी के पास ही हैं, और डंडों के घरों का काम दें कि मेज उन्हीं के बल उठाई जाए। २८ और डंडों को बबूल की लकड़ी के बनवाकर सोने से मढ़वाना, और मेज उन्हीं से उठाई जाए। २९ और उसके परात और धृपदान, और चमचे और उण्डेलने के कटाएं, सब शुद्ध सोने के बनवाना। ३० और मेज पर मेरे आगे भेट की रोटियाँ नियत रखा करना। ३१ “फिर शुद्ध सोने की एक दीवट बनवाना। सोना ढलवा कर वह दीवट, पाये और डण्डी सहित बनाया जाए; उसके पृष्ठकोष, गाँठ और फूल, सब एक ही टुकड़े के बनें, ३२ और उसके किनारों से छः डालियाँ निकलें, तीन डालियाँ तो दीवट की एक ओर से और तीन डालियाँ उसकी दूसरी ओर से निकली हुई हों; ३३ एक-एक डाली में बादाम के फूल के समान तीन-तीन पृष्ठकोष, एक-एक गाँठ, और एक-एक फूल हों; दीवट से निकली हुई छहों डालियों का यही आकार या रूप हो; ३४ और दीवट की डण्डी में बादाम के फूल के समान चार पृष्ठकोष अपनी-अपनी गाँठ और फूल समेत हों; ३५ और दीवट से निकली हुई छहों डालियों में से दो-दो डालियों के नीचे एक-एक गाँठ हो, वे दीवट समेत एक ही टुकड़े के बने हुए हों। ३६ उनकी गाँठें और डालियाँ, सब दीवट समेत एक ही टुकड़े की हों, शुद्ध सोना ढलवा कर परा दीवट एक ही टुकड़े का बनवाना। ३७ और सात दीपक बनवाना; और दीपक जलाए जाएं कि वे दीवट के समाने प्रकाश दें। ३८ और उसके गुलतरश और गुलदान सब शुद्ध सोने के हों। ३९ वह सब इन समस्त सामान समेत किक्कार भर शुद्ध सोने का बने। ४० और सावधान रहकर इन सब वस्तुओं को उस नमूने के समान बनवाना, जो तुझे इस पर्वत पर दिखाया गया है।

२६ “फिर निवास-स्थान के लिये दस पर्दे बनवाना; इनको बटी हुई सरीवाले और नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े का कढाई के काम किए हुए कर्तबों के साथ बनवाना। २७ एक-एक पर्दे की लम्बाई अश्वाइंस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हो; सब पर्दे एक ही नाप के हों। २८ पाँच पर्दे एक दूसरे से जुड़े हुए हों; और फिर जो पाँच पर्दे रहेंगे वे भी एक दूसरे से जुड़े हुए हों। २९ और जहाँ ये दोनों पर्दे जोड़े जाएं वहाँ की दोनों छोरों पर नीले-नीले फंदे लगवाना। ३० दोनों छोरों में पचास-पचास फंदे ऐसे लगवाना कि वे आमने-सामने हों। ३१ और सोने के पचास अंकड़े बनवाना; और परदों के छल्लों को अंकड़ों के द्वारा एक दूसरे से ऐसा जुड़वाना कि निवास-स्थान मिलकर एक ही हो जाए। ३२ “फिर निवास के ऊपर तम्बू का काम देने के लिये बकरी के बाल के ग्यारह पर्दे बनवाना। ३३ एक-एक पर्दे की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हो; ग्यारहों पर्दे एक ही नाप के हों। ३४ और पाँच पर्दे अलग और फिर छः पर्दे अलग जुड़वाना, और छठवें पर्दे को तम्बू के सामने मोड़कर ढुहरा कर देना। ३५ और त-पचास अंकड़े उस पर्दे की छोर में जो बाहर से मिलाया जाएगा और पचास ही अंकड़े दूसी ओर के पर्दे की छोर में जो बाहर से मिलाया जाएगा बनवाना। ३६ और पीतल के पचास अंकड़े बनाना, और अंकड़ों को फंदों में लगाकर तम्बू को ऐसा जुड़वाना कि वह मिलकर एक ही हो जाए। ३७ और तम्बू के परदों का लटका हुआ भाग, अर्थात् जो आधा पट रहेगा, वह निवास की पिछली ओर लटका रहे। ३८ और तम्बू के परदों की लम्बाई में से हाथ भर इधर, और हाथ भर उधर निवास को ढाँकने के लिये उसकी दोनों ओर पर लटका हुआ रहे। ३९ फिर तम्बू के लिये लाल रंग से रंगी हुई मेडों की खालों का एक ओढ़ना और उसके ऊपर सुझों की खालों का भी एक ओढ़ना बनवाना। ४० “फिर निवास को खड़ा करने के लिये बबूल की लकड़ी के तख्ते बनवाना। ४१ एक-एक तख्ते में एक दूसरे से जोड़ी हुई दो-दो

चूले हों; निवास के सब तख्तों को इसी भाँति से बनवाना। ४२ और निवास के लिये जो तख्ते तु बनवाए उनमें से बीस तख्ते तो दक्षिण की ओर के लिये हों; ४३ और बीसों तख्तों के नीचे चाँदी की चालीस कुर्सियाँ बनवाना, अर्थात् एक-एक तख्ते के नीचे चाँदी की चालीस कुर्सियाँ बनवाना, अर्थात् उत्तर की ओर बीस तख्ते बनवाना। ४४ और उसके लिये चाँदी की चालीस कुर्सियाँ बनवाना, अर्थात् एक-एक तख्ते के नीचे दो-दो कुर्सियाँ हों। ४५ और निवास की पिछली ओर, अर्थात् पश्चिम की ओर के लिये छः तख्ते बनवाना। ४६ और पिछले भाग में निवास के कोनों के लिये दो तख्ते बनवाना; ४७ और ये नीचे से दो-दो भाग के हों और दोनों भाग ऊपर के सिरे तक एक-एक कड़े में मिलाए जाएँ; दोनों तख्तों का यही स्पष्ट हो; ये तो दोनों कोनों के लिये हों। ४८ और आठ तख्ते हों, और उनकी चाँदी की सोलह कुर्सियाँ हों; अर्थात् एक-एक तख्ते के नीचे दो-दो कुर्सियाँ हों। ४९ “फिर बबूल की लकड़ी के बेंडे बनवाना, अर्थात् निवास की एक ओर के तख्तों के लिये पाँच, ५० और निवास की दूसरी ओर के तख्तों के लिये पाँच बेंडे, और निवास का जो भाग पश्चिम की ओर पिछले भाग में होगा, उसके लिये पाँच बेंडे बनवाना। ५१ बीचवाला बेंडा जो तख्तों के मध्य में होगा वह तम्बू के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचे। ५२ फिर तख्तों को सोने से मढ़वाना, और उनके कड़े जो बेंडों के घरों का काम देंगे उन्हें भी सोने के बनवाना; और बेंडों को भी सोने से मढ़वाना। ५३ और निवास को इस रीति छड़ा करना जैसा इस पर्वत पर तुझे दिखाया गया है। ५४ “फिर नीले, बैंगनी और लाल रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सरीवाले कर्डडे का एक बीचवाला परदा बनवाना; वह कढाई के काम किए हुए कर्डडों के साथ बने। ५५ और उसको सोने से मढ़े हुए बबूल के चार खम्भों पर लटकाना, इनकी अंकड़ियाँ सोने की हों, और ये चाँदी की चार कुर्सियों पर खड़ी हों। ५६ और बीचवाले पर्दे को अंकड़ियों के नीचे लटकाकर, उसकी आड़ में साक्षीपत्र का सन्दक भीतर ले जाना; सो वह बीचवाला परदा तुहरे लिये परिवर्तनान को परमपत्र स्थान से अलग किए रहे। ५७ फिर परमपत्र स्थान में साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर प्रायद्वित के ढकेने को रखना। ५८ और उस पर्दे के बाहर निवास के उत्तर की ओर मेज रखना; और उसके दक्षिण की ओर मेज के सामने तीवट को रखना। ५९ “फिर तम्बू के द्वार के लिये नीले, बैंगनी और लाल रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सरीवाले कर्डडे का कढाई का काम किया हुआ एक परदा बनवाना। ६० और इस पर्दे के लिये बबूल के पाँच खम्भे बनवाना, और उनको सोने से मढ़वाना; उनकी कड़ियाँ सोने की हों, और उनके लिये पीतल की पाँच कुर्सियाँ ढलवा कर बनवाना।

२७ “फिर वेदी को बबूल की लकड़ी की, पाँच हाथ लम्बी और पाँच हाथ चौड़ी बनवाना; वेदी चौकोर हो, और उसकी ऊँचाई तीन हाथ की हो। ६१ और उसके चारों कोनों पर चार सींग बनवाना; वे उस समेत एक ही टुकड़े के हों, और उसे पीतल से मढ़वाना। ६२ और उसकी राख उठाने के पात्र, और फावड़ियाँ, और कटारे, और कॉट, और अंगूठियाँ बनवाना; उसका कुल सामान पीतल का बनवाना। ६३ और उसके पीतल की जाली की एक झांझरी बनवाना; और उसके चारों सिरों में पीतल के चार कड़े लगवाना। ६४ और उस झांझरी को वेदी के चारों ओर की कंगनी के नीचे ऐसे लगवाना कि वह वेदी की ऊँचाई के मध्य तक पहुँचे। ६५ और वेदी के लिये बबूल की लकड़ी के डंडे बनवाना, और उन्हें पीतल से मढ़वाना। ६६ और डंडे कड़ों में डाले जाएँ, कि जब जब वेदी उठाई जाए तब वे उसकी दोनों ओर पर रहें। ६७ वेदी को तख्तों से खोखली बनवाना; जैसी वह इस पर्वत पर तुझे दिखाई गई है वैसी ही बनाई

जाए। ९ “फिर निवास के आँगन को बनवाना। उसकी दक्षिण ओर के लिये तो बटी हुई सूक्ष्म सरी के कपड़े के सब पर्दों को मिलाए कि उसकी लम्बाई सौ हाथ की हो; एक ओर पर तो इतना ही हो। १० और उनके बीस खम्भे बनें, और इनके लिये पीतल की बीस कुर्सियाँ बनें, और खम्भों के कुण्डे और उनकी पटियाँ चाँदी की हों। ११ और उसी भाँति आँगन की उत्तर ओर की लम्बाई में भी सौ हाथ लम्बे पर्दे हों, और उनके भी बीस खम्भे और इनके लिये भी पीतल के बीस खाने हों, और उन खम्भों के कुण्डे और पटियाँ चाँदी की हों। १२ फिर आँगन की चौड़ाई में पञ्चिम की ओर पचास हाथ के पर्दे हों, उनके खम्भे दस और खाने भी दस हों। १३ पूरब की ओर पर आँगन की चौड़ाई पचास हाथ की हो। १४ और आँगन के द्वार की एक ओर पन्द्रह हाथ के पर्दे हों, और उनके खम्भे तीन और खाने तीन हों। १५ और दूसरी ओर भी पन्द्रह हाथ के पर्दे हों, उनके भी खम्भे तीन और खाने तीन हों। १६ आँगन के द्वार के लिये एक परदा बनवाना, जो नीले, बैगनी और लाल रंग के कपड़े और बटी हुई सूक्ष्म सरी के कपड़े का कामदार बना हुआ बीस हाथ का हो, उसके खम्भे चार और खाने भी चार हों। १७ आँगन के चारों ओर के सब खम्भे चाँदी की पटियाँ से जुड़े हुए हों, उनके कुण्डे चाँदी के और खाने पीतल के हों। १८ आँगन की लम्बाई सौ हाथ की, और उसकी चौड़ाई बाबराव पचास हाथ की और उसकी कनात की ऊँचाई पाँच हाथ की हो, उसकी कनात बटी हुई सूक्ष्म सरी के कपड़े की बने, और खम्भों के खाने पीतल के हों। १९ निवास के भाँति-भाँति के बर्तन और सब सामान और उसके सब खट्टे पीतल ही के हों। २० “फिर तू इस्पाएलियों को आज्ञा देना, कि मेरे पास दीवट के लिये कूट के निकाला हुआ जैतून का निर्मल तेल ले आना, जिससे दीपक नित्य जलता रहे। २१ मिलापावले तम्बू में, उस बीचवाले पर्दे से बाहर जो साक्षीपत्र के आगे होगा, हास्न और उसके उत्तर दीवट साँझ से भोर तक यहोवा के सामने सजा कर रखें। यह विधि इस्पाएलियों की पाठियों के लिये सदैव बनी रहेगी।

२८ “फिर तू इस्पाएलियों में से अपने भाई हास्न, और नादाब, अबीह, एलीआजर और इंतामार नामक उसके पुत्रों को अपने समीप ले आना कि वे मेरे लिये याजक का काम करें। २ और तू अपने भाई हास्न के लिये वैभव और शोभा के निमित्त पवित्र वस्त्र बनवाना। ३ और जितनों के हृदय में बुद्धि है, जिनको मैंने बुद्धि देनेवाली आत्मा से परिष्ण किया है, उनको तू हास्न के वस्त्र बनाने की आज्ञा दे कि वह मेरे निमित्त याजक का काम करने के लिये पवित्र बनें। ४ और जो बृश उन्हें बनाने होंगे वे ये हैं, अर्थात् सीनाबन्ध; और एपोद, और बागा, चार खाने का अंगरखा, पुरोहित का टोप, और कमरबन्द; वे ही पवित्र वस्त्र तेरे भाई हास्न और उसके पुत्रों के लिये बनाएँ जाएँ कि वे मेरे लिये याजक का काम करें। ५ और वे सोने और नीले और बैगनी और लाल रंग का और सूक्ष्म सरी का कपड़ा लैं। ६ “वे एपोद को सोने, और नीले, बैगनी और लाल रंग के कपड़े का और बटी हुई सूक्ष्म सरी के कपड़े का बनाएँ, जो कि निषुण कढ़ाई के काम करनेवाले के हाथ का काम हो। ७ और वह इस तरह से जोड़ा जाए कि उसके दोनों कंधों के सिरे आपस में मिले रहें। ८ और एपोद पर जो काढ़ा हुआ पटका होगा उसकी बनावट उसी के समान हो, और वे दोनों बिना जोड़ के हों, और सोने और नीले, बैगनी और लाल रंगवाले और बटी हुई सूक्ष्म सरीवाले कपड़े के हों। ९ फिर दो सुलैमानी मणि लेकर उन पर इस्पाएल के पुत्रों के नाम खुदवाना, १० उनके नामों में से छः तो एक मणि पर, और शेष छः नाम दूसरे मणि पर, इस्पाएल के पुत्रों की उत्पत्ति के अनुसार खुदवाना। ११ मणि गढ़नेवाले के काम के समान जैसे छापा खोदा जाता है, वैसे

ही उन दो मणियों पर इस्पाएल के पुत्रों के नाम खुदवाना; और उनको सोने के खानों में जड़वा देना। १२ और दोनों मणियों को एपोद के कंधों पर लगवाना, वे इस्पाएलियों के निमित्त स्मरण दिलवाने वाले मणि ठहरेंगे; अर्थात् हास्न उनके नाम यहोवा के आगे अपने दोनों कंधों पर स्मरण के लिये लगाए रहे। १३ “फिर सोने के खाने बनवाना, १४ और डोरियों के समान गैंथे हुए दो जंजीर शुद्ध सोने के बनवाना, और गैंथे हुए जंजीरों को उन खानों में जड़वा देना। १५ “फिर न्याय की चपरास को भी कढ़ाई के काम का बनवाना; एपोद के समान सोने, और नीले, बैगनी और लाल रंग के और बटी हुई सूक्ष्म सरी के कपड़े की उसे बनवाना। १६ वह चौकोर और दोहरी हो, और उसकी लम्बाई और चौड़ाई एक-एक बिलांद की हो। १७ और उसमें चार पंक्ति मणि जड़ाना। पहली पंक्ति में तो माणिक्य, पद्मराग और लालिङ्गी हों; १८ दूसरी पंक्ति में मरकत, नीलमणि और हीरा; १९ तीसरी पंक्ति में लशम, सर्वकांत और नीलम; २० और चौथी पंक्ति में फीरोजा, सुलैमानी मणि और यशब हों; ये सब सोने के खानों में जड़े जाएँ। २१ और इस्पाएल के पुत्रों के जितने नाम हैं उन्तेन मणि हों, अर्थात् उनके नामों की गिनती के अनुसार बारह नाम खुदें, बारहों गोत्रों में से एक-एक का नाम एक-एक मणि पर ऐसे खुदे जैसे छापा खोदा जाता है। २२ फिर चपरास पर डोरियों के समान गैंथे हुए शुद्ध सोने की जंजीर लगवाना; २३ और चपरास में सोने की दो कढ़ियाँ लगवाना, और दोनों कढ़ियों को चपरास के दोनों सिरों पर लगवाना। २४ और सोने के दोनों गैंथे जंजीरों को उन दोनों कढ़ियों में जो चपरास के सिरों पर होंगी लगवाना; २५ और गैंथे हुए दोनों जंजीरों के दोनों बाकी सिरों को दोनों खानों में जड़वा के एपोद के दोनों कंधों के बंधनों पर उसके सामने लगवाना। २६ फिर सोने की दो और कढ़ियाँ बनवाकर चपरास के दोनों सिरों पर, उसकी उस कारे पर जो एपोद के भीतर की ओर होगी लगवाना। २७ फिर उनके सिवाय सोने की दो और कढ़ियाँ बनवाकर एपोद के दोनों कंधों के बंधनों पर, नीचे से उनके सामने और उनके जोड़ के पास एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर लगवाना। २८ और चपरास अपनी कढ़ियों के द्वारा एपोद की कढ़ियों में नीले फीती से बैंधी जाए, इस रीति वह एपोद के काढ़े हुए पटुके पर बनी रहे, और चपरास एपोद पर से अलग न होने पाए। २९ और जब जब हास्न पवित्रस्थान में प्रवेश करे, तब-तब वह न्याय की चपरास पर अपने हृदय के ऊपर इस्पाएलियों के नामों को लगाए रहे, जिससे यहोवा के सामने उनका स्मरण नित्य रहे। ३० और तू न्याय की चपरास में ऊरी और तुर्मीम को रखना, और जब जब हास्न यहोवा के सामने प्रवेश करे, तब-तब वे उसके हृदय के ऊपर हों; इस प्रकार हास्न इस्पाएलियों के लिये यहोवा के न्याय को अपने हृदय के ऊपर यहोवा के सामने नित्य लगाए रहे। ३१ “फिर एपोद के बागे को सम्पूर्ण नीले रंग का बनवाना। ३२ उसकी बनावट ऐसी ही कि उसके बीच में सिर डालने के लिये छेद हो, और उस छेद के चारों ओर बख्तर के छेद की सी एक लुनी हुई कोर हो कि वह फटने न पाए। ३३ और उसके नीचेवाले घेरे में चारों ओर नीले, बैगनी और लाल रंग के कपड़े के अनार बनवाना, ३४ अर्थात् एक अनार के लिये छेद हो कि उसके बीच में सिर डालने के लिये छेद हो, और उस छेद के चारों ओर बख्तर के छेद की सी एक लुनी हुई कोर हो कि वह फटने न पाए। ३५ और उसके नीचेवाले घेरे में चारों ओर नीले, बैगनी और लाल रंग के कपड़े के अनार बनवाना, ३६ अर्थात् एक अनार के लिये छेद हो कि उसके बीच-बीच चारों ओर सोने की घटियाँ लगवाना, ३७ अर्थात् एक अनार के लिये छेद हो कि उसके बीच-बीच चारों ओर सोने की घटियाँ लगवाना, ३८ अर्थात् एक अनार के लिये छेद हो कि उसके बीच-बीच चारों ओर सोने की घटियाँ लगवाना, ३९ अर्थात् ‘यहोवा के लिये पवित्रा’ ४० और उसे नीले फीती से बैंधना, और वह पगड़ी के सामने के हिस्से पर रहे। ४१ और वह हास्न के माथे पर रहे, इसलिए

कि इसाएली जो कुछ पवित्र ठहराएँ, अर्थात् जितनी पवित्र वस्तुएँ भेट में चढ़ावे उन पवित्र वस्तुओं का दोष हास्न उठाए रहे, और वह नित्य उसके माथे पर रहे, जिससे यहोवा उनसे प्रसन्न रहे। ३१ “अंगरखे को सूक्ष्म सनी के कपड़े का चारखाना बनवाना, और एक पगड़ी भी सूक्ष्म सनी के कपड़े की बनवाना, और बेलबटे की कढ़ाई का काम किया हुआ एक कमरबन्द भी बनवाना।

३२ “फिर हास्न के पुत्रों के लिये भी अंगरखे और कमरबन्द और टोपियाँ बनवाना; ये बस्त्र भी वैभव और शोभा के लिये बनें। ३३ अपने भाई हास्न और उसके पुत्रों को ये ही सब वस्त्र पहनाकर उनका अभिषेक और संस्कार करना, और उन्हें पवित्र करना कि वे मेरे लिये याजक का काम करें। ३४ और उनके लिये सनी के कपड़े की जाँधिया बनवाना जिससे उनका तन ढूँपा रहे, वे कमर से जाँघ तक की हों; ३५ और जब जब हास्न या उसके पुत्र मिलापवाले तम्बू में प्रवेश करें, या पवित्रस्थान में सेवा ठहल करने को वेदी के पास जाएँ तब-तब वे उन जाँधियों को पहने रहें, न हो कि वे पापी ठहरें और मर जाएँ। यह हास्न के लिये और उसके बाद उसके वंश के लिये भी सदा की विधि ठहरे।

३६ “उन्हें पवित्र करने को जो काम तज्ज्ञ उनसे करना है कि वे मेरे लिये

याजक का काम करें वह यह है: एक निर्दोष बछड़ा और दो निर्दोष में लेना, ३७ और अखमीरी रोटी, और तेल से सने हुए मैदे के अखमीरी फुलके, और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी पपड़ियाँ भी लेना। ये सब गेहूँ के मैदे के बनवाना। ३८ इनको एक टोकरी में रखकर उस टोकरी को उस बछड़े और उन दोनों मेडों समेत समीप ले आना। ३९ फिर हास्न और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के द्वार के समीप ले आकर जल से नहलाना। ४० तब उन वस्त्रों को लेकर हास्न को अंगरखा और एपोद का बागा पहनाना, और एपोद और चपरास बाँधना, और एपोद का काढ़ा हुआ पटुका भी बाँधना; ४१ और उसके सिर पर पगड़ी को रखना, और पागड़ी पर पवित्र मुकुट को रखना। ४२ तब अभिषेक का तेल ले उसके सिर पर डालकर उसका अभिषेक करना। ४३ फिर उसके पुत्रों को समीप ले आकर उनको अंगरखे पहनाना, ४४ और उसके अर्थात् हास्न और उसके पुत्रों के कमर बाँधना और उनके सिर पर टोपियाँ रखना; जिससे याजक के पद पर सदा उनका हक रहे। इसी प्रकार हास्न और उसके पुत्रों का संस्कार करना। ४५ “तब बछड़े को मिलापवाले तम्बू के सम्मने समीप ले आना। और हास्न और उसके पुत्र बछड़े के सिर पर अपने-अपने हाथ रखें, ४६ तब उस बछड़े को यहोवा के सम्मुख मिलापवाले तम्बू के द्वार पर बलिदान करना, ४७ और बछड़े के लहू में से कुछ लेकर अपनी ऊंगी से वेदी के सींगों पर लगाना, और शेष सब लहू को वेदी के पाए पर उण्डेल देना, ४८ और जिस चर्बी से अंतडियाँ ढपी रहती हैं, और जो झिल्ली कलेजे के ऊपर होती है, उनको और दोनों गुर्दों को उनके ऊपर की चर्बी समेत लेकर सब को वेदी पर जलाना। ४९ परन्तु बछड़े का माँस, और खाल, और गोबर, छावनी से बाहर आग में जला देना; क्योंकि यह पापबलि होगा। ५० “फिर एक मेडा लेना, और हास्न और उसके पुत्र उसके सिर पर अपने-अपने हाथ रखें, ५१ तब उस मेडे को बालि करना, और उसका लहू लेकर वेदी पर चारों ओर छिक्कना। ५२ और उस मेडे को टुकड़े-टुकड़े काटना, और उसकी अंतडियों और पैरों को धोकर उसके टुकड़ों और सिर के ऊपर रखना, ५३ तब उस परे मेडे को वेदी पर जलाना; वह तो यहोवा के लिये होमबलि होगा; वह सुखदायक सुगन्ध और यहोवा के लिये हवन होगा। ५४ “फिर दूसरे मेडे को लेना; और हास्न और उसके पुत्र उसके सिर पर अपने-अपने हाथ रखें, ५५ तब उस मेडे को बलि करना, और उसके लहू में से कुछ लेकर हास्न और उसके पुत्रों के दाहिने कान के सिर पर, और उनके दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अँगूँ पर लगाना, और लहू को वेदी पर चारों ओर छिक्कना। ५६ फिर

वेदी पर के लहू, और अभिषेक के तेल, इन दोनों में से कुछ कुछ लेकर हास्न और उसके वस्त्रों पर, और उसके पुत्रों और उनके बच्चों पर भी छिक्कना; तब वह अपने वस्त्रों समेत और उसके पुत्र भी अपने-अपने वस्त्रों समेत पवित्र हो जाएँगे। ५७ तब मेडे को संस्कारवाला जानकर उसमें से चर्बी और मोटी पैंछ को, और जिस चर्बी से अंतडियाँ ढपी रहती हैं उसको, और कलेजे पर की झिल्ली को, और चर्बी समेत दोनों गुर्दों को, और दाहिने पुटे को लेना, ५८ और अखमीरी रोटी की टोकरी जो यहोवा के आगे धरी होंगी उसमें से भी एक रोटी, और तेल से सने हुए मैदे का एक फुलका, और एक पपड़ी लेकर, ५९ इन सब को हास्न और उसके पुत्रों के हाथों में रखकर हिलाए जाने की भेट ठहराकर यहोवा के आगे हिलाया जाए। ६० तब उन वस्त्रों को उनके हाथों से लेकर होमबलि की वेदी पर जला देना, जिससे वह यहोवा के सामने सुखदायक सुगन्ध ठहरे; वह तो यहोवा के लिये हवन होगा। ६१ “फिर हास्न के संस्कार को जो मेडा होगा उसकी छाती को लेकर हिलाए जाने की भेट के लिये यहोवा के आगे हिलाना; और वह तेरा भाग ठहरेगा। ६२ और हास्न और उसके पुत्रों के संस्कार का जो मेडा होगा, उसमें से हिलाए जाने की भेटवाली छाती जो हिलाइ जाएगी, और उठाए जाने का भेटवाला पुटा जो उठाया जाएगा, इन दोनों को पवित्र ठहराना। ६३ और ये सदा की विधि की रीति पर इसाएलियों की ओर से उसका और उसके पुत्रों का भाग ठहरे, क्योंकि ये उठाए जाने की भेट ठहरी हैं, और यह इसाएलियों की ओर से उनके मेलबलियों में से यहोवा के लिये उठाए जाने की भेट होगी। ६४ “हास्न के जो पवित्र वस्त्र होंगे वह उसके बाद उसके बेटे पोते आदि को मिलते रहें, जिससे उन्हीं को पहने हुए उनका अभिषेक और संस्कार किया जाए। ६५ उसके पुत्रों के जो उसके स्थान पर याजक होगा, वह जब पवित्रस्थान में सेवा ठहल करने को मिलापवाले तम्बू में पहले आए, तब उन वस्त्रों को सात दिन तक पहने रहें। ६६ “फिर याजक के संस्कार का जो मेडा होगा उसे लेकर उसका माँस किसी पवित्रस्थान में पकाना; ६७ तब हास्न अपने पुत्रों समेत उस मेडे का माँस और टोकरी की रोटी, दोनों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खाए। ६८ जिन पदार्थों से उनका संस्कार और उन्हें पवित्र करने के लिये प्रायश्चित्त किया जाएगा उनको तो वे खाएँ, परन्तु पराए कुल का कोई उन्हें न खाने पाए, क्योंकि वे पवित्र होंगे। ६९ यदि संस्कारवाले माँस या रोटी में से कुछ सर्वे तक बचा रहे, तो उस बचे हुए को आग में जलाना, वह खाया न जाए; क्योंकि वह पवित्र होगा। ७० “मैंने तुझे जो-जो आज्ञा दी हैं, उन सभी के अनुसार तू हास्न और उसके पुत्रों से करना; और सात दिन तक उनका संस्कार करते रहना, ७१ अर्थात् पापबलि का एक बछड़ा प्रायश्चित्त के लिये प्रतिदिन चढ़ाना। और वेदी की भी प्रायश्चित्त करने के समय शुद्ध करना, और उसे पवित्र करने के लिये उसका अभिषेक करना। ७२ सात दिन तक वेदी के लिये प्रायश्चित्त करके उसे पवित्र करना, और वेदी परमपवित्र ठहरेगी; और जो कुछ उससे छू जाएगा वह भी पवित्र हो जाएगा। ७३ “जो तुझे वेदी पर नित्य चढ़ाना होगा वह यह है; अर्थात् प्रतिदिन एक-एक वर्ष के दो भेड़ी के बच्चे। ७४ एक भेड़ के बच्चे को तो भोर के समय, और दूसरे भेड़ के बच्चे को साँझ के समय चढ़ाना। ७५ और एक भेड़ के बच्चे के संग हीन की चौथाई कूटकर निकाले हुए तेल से सना हुआ एपा का दसवाँ भाग मैदा, और अर्ध के लिये ही की चौथाई दाखमधु देना। ७६ और दूसरे भेड़ के बच्चे को साँझ के समय चढ़ाना, और उसके साथ भोर की रीति अनुसार अन्नबलि और अर्ध दोनों देना, जिससे वह सुखदायक सुगन्ध और यहोवा के लिये हवन ठहरे। ७७ तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी में यहोवा के आगे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर नित्य ऐसा ही होमबलि हुआ करे; यह वह स्थान है जिसमें मैं तुम लोगों से इसलिए

मिला करँगा कि तुझ से बातें कहूँ। ४५ मैं इस्माएलियों से वही मिला करँगा, और वह तम्भ मेरे तेज से पवित्र किया जाएगा। ४६ और मैं मिलापवाले तम्भ और वेदी को पवित्र करँगा, और हास्न और उसके पुत्रों को भी पवित्र करँगा कि वे मेरे लिये याजक का काम करें। ४७ और मैं इस्माएलियों के मध्य निवास करँगा, और उनका परमेश्वर ठहरँगा। ४८ तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा उनका परमेश्वर हूँ, जो उनको मिस्र देश से इस्मालिए निकाल ले आया, कि उनके मध्य निवास करँगे, मैं ही उनका परमेश्वर यहोवा हूँ।

३० “फिर धूप जलाने के लिये बबूल की लकड़ी की वेदी बनाना। १ उसकी

लाम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ की हो, वह चौकोर हो, और उसकी ऊँचाई दो हाथ की हो, और उसके सींग उसी टुकड़े से बनाए जाएँ। २ और वेदी के ऊपरवाले पल्ले और चारों ओर के बाजुओं और सींगों को शुद्ध सोने से मढ़ना, और इसके चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाना। ३ और इसकी बाड़ के नीचे इसके आमने-सामने के दोनों पल्लों पर सोने के दो-दो कड़े बनाकर इसके दोनों ओर लगाना, वे इसके उठाने के ढंडों के खानों का काम देंगे। ४ ढंडों को बबूल की लकड़ी के बनाकर उनको सोने से मढ़ना। ५ और तू उसको उस पर्टे के आगे रखना जो साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने है, अर्थात् प्रायश्चित्तवाले ढकने के आगे जो साक्षीपत्र के ऊपर है, वही मैं तुझ से मिला करँगा। ६ और उसी वेदी पर हास्न सुगन्धित धूप जलाया करें; प्रतिदिन भोर को जब वह दीपक को ठीक करे, तब वह धूप को जलाएँ, ७ तब सँझ के समय जब हास्न दीपकों को जलाएँ तब धूप जलाया करें, यह धूप यहोवा के सामने तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में नित्य जलाया जाए। ८ और उस वेदी पर तुम और प्रकार का धूप न जलाना, और न उस पर होम्बलि और न अन्नबलि चढ़ाना; और न इस पर अर्ध देना। ९ हास्न वर्ष में एक बार इसके सींगों पर प्रायश्चित्त करें; और तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में वर्ष में एक बार प्रायश्चित्त के पापबलि के लहू से इस पर प्रायश्चित्त किया जाएँ; यह यहोवा के लिये परमपवित्र है।” १० और तब यहोवा ने मूसा से कहा, ११ “जब त इस्माएलियों की गिनती लेने लगे, तब वे गिनने के समय जिनकी गिनती हुई हो अपने-अपने प्राणों के लिये यहोवा को प्रायश्चित्त दें, जिससे जब त उनकी गिनती कर रहा हो उस समय कोई विपत्ति उन पर न आ पड़े। १२ जितने लोग गिने जाएँ वे पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार आधा शेकेल दें, (यह शेकेल बीस गेरा का होता है), यहोवा की भेंट आधा शेकेल हो। १३ बीस वर्ष के या उससे अधिक अवस्था के जितने गिने जाएँ उनमें से एक-एक जन यहोवा को भेंट दे। १४ जब तुम्हरे प्राणों के प्रायश्चित्त के निमित्य यहोवा की भेंट अपित की जाएँ, तब न तो धनी लोग आधे शेकेल से अधिक दें, और न कंगाल लोग उससे कम दें। १५ और तू इस्माएलियों से प्रायश्चित्त का स्थाया लेकर मिलापवाले तम्भ के काम में लगाना; जिससे वह यहोवा के सम्मुख इस्माएलियों के स्मरणार्थ चिन्ह ठहरा, और उनके प्राणों का प्रायश्चित्त भी हो।” १६ और यहोवा ने मूसा से कहा, १७ “धोने के लिये पीतल की एक हौदी और उसका पाया भी पीतल का बनाना। और उसे मिलापवाले तम्भ में प्रवेश करें तब-तब वे हाथ पाँव धोया करें। १८ जब जब वे मिलापवाले तम्भ में प्रवेश करें तब-तब वे हाथ पाँव जल से धोएँ, नहीं तो मर जाएँगे, और जब जब वे वेदी के पास सेवा ठहल करें, अर्थात् यहोवा के लिये हव्य जलाने को आएँ तब-तब वे हाथ पाँव धोएँ, न हो कि मर जाएँ। १९ यह हास्न और उसके पुत्र अपने-अपने हाथ पाँव धोया करें। २० जब जब वे मिलापवाले तम्भ में प्रवेश करें तब-तब वे हाथ पाँव जल से धोएँ, नहीं तो मर जाएँगे, और जब जब वे वेदी के पास सेवा ठहल करें, अर्थात् यहोवा के लिये हव्य जलाने को आएँ तब-तब वे हाथ पाँव धोएँ, जो मैंने तुझे दी है।” २१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २२ “त इस्माएलियों से यह भी कहा, ‘मिश्चर्य तुम मेरे विश्वामिदिनों को मानना, क्योंकि तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में मेरे और तुम लोगों के बीच यह एक चिन्ह ठहरा है, जिससे तुम यह बात जान रखो कि यहोवा हमारा पवित्र कनेवाला है।’ २३ इस कारण तुम विश्वामिदिन को मानना, क्योंकि वह तुम्हरे लिये पवित्र ठहरा है; जो उसको अपवित्र करे वह मिश्चर्य

गन्धरस, और उसका आधा, अर्थात् ढाई सौ शेकेल सुगन्धित दालचीनी और ढाई सौ शेकेल सुगन्धित अगर, २४ और पाँच सौ शेकेल तज, और एक हीन जैतून का तेल लेकर २५ उनसे अभिषेक का पवित्र तेल, अर्थात् गंधी की रीति से तैयार किया हुआ सुगन्धित तेल बनवाना; यह अभिषेक का पवित्र तेल ठहरे। २६ और उससे मिलापवाले तम्भ का, और साक्षीपत्र के सन्दूक का, २७ और सारे सामान समेत मेज का, और सामान समेत दीवाट का, और धूवेदी का, २८ और सारे सामान समेत होम्बवेदी का, और पाए समेत हौदी का अभिषेक करना। २९ और उनको पवित्र करना, जिससे वे परमपवित्र ठहरें; और जो कुछ उनसे छ जाएगा वह पवित्र हो जाएगा। ३० फिर हास्न का उसके पुत्रों के साथ अभिषेक करना, और इस प्रकार उन्हें मेरे लिये याजक का काम करने के लिये पवित्र करना। ३१ और इस्माएलियों को मेरी यह आज्ञा सुनाना, ‘यह तेल तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में मेरे लिये पवित्र अभिषेक का तेल होगा।’ ३२ यह किसी मनुष्य की देह पर न डाला जाए, और मिलापवाले में उसके समान और कुछ न बनाना; यह पवित्र है, यह तुम्हरे लिये भी पवित्र होगा। ३३ जो कोई इसके समान कुछ बनाए या जो कोई इसमें से कुछ पराए कुलवाले पर लगाए, वह अपने लोगों में से नाश किया जाए।’” ३४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “बोल, नस्ती और कुन्दन, ये सुगन्ध-द्रव्य निर्मल लोबान समेत ले लेना, ये सब एक तौल के हों, ३५ और इनका धूप अर्थात् नमक मिलाकर गंधी की रीति के अनुसार शुद्ध और पवित्र सुगन्ध-द्रव्य बनवाना; ३६ फिर उसमें से कुछ पीसकर बारीक कर डालना, तब उसमें से कुछ मिलापवाले तम्भ में साक्षीपत्र के आगे, जहाँ पर मैं तुझ से मिला करँगा वहाँ रखना; वह तुम्हरे लिये परमपवित्र होगा। ३७ और जो धूप तू बनवाएगा, मिलापवाल में उसके समान तुम लोग अपने लिये और कुछ न बनवाना; वह तुम्हरे आगे यहोवा के लिये पवित्र होगा। ३८ जो कोई सँधने के लिये उसके समान कुछ बनाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए।”

३१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १ “सुन, मैं ऊरी के पुत्र बसलेले को, जो हर का पोता और यहदा के गोत्र का है, नाम लेकर बुलाता हूँ। २ और मैं उसको परमेश्वर की आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान, और सब प्रकार के कार्यों की समझ देनेवाली आत्मा है परिपूर्ण करता है, ३ जिससे वह कारीगरी के कार्य बुद्धि से निकाल निकालकर सब भाँति की बनावट में, अर्थात् सोने, चाँदी, और पीतल में, ४ और जड़ने के लिये मणि काटने में, और लकड़ी पर नक्काशी का काम करे। ५ और सन, मैं दान के गोत्रवाले अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब को उसके संग कर देता हूँ; वरन् जितने बुद्धिमान हैं उन सभी के हृदय में मैं बुद्धि देता हूँ, ६ जिससे जितनी बस्तुओं की आज्ञा मैंने तुझे दी है उन सभी को वे बनाएँ, ७ अर्थात् मिलापवाले तम्भ, और साक्षीपत्र का सन्दूक, और उस पर का प्रायश्चित्तवाला ढकना, और तम्भ का सारा सामान, ८ और सामान सहित मेज, और सारे सामान समेत शुद्ध सोने की दीवाट, और धूवेदी, ९ और सारे सामान सहित होम्बवेदी, और पाए समेत हौदी, १० और काढ़े हुए बच्च, और हास्न याजक के याजकवाले काम के पवित्र बच्च, और उसके पुत्रों के बच्च, ११ और अभिषेक का तेल, और पवित्रस्थान के लिये सुगन्धित धूप, इन सभी को वे उन सब आज्ञाओं के अनुसार बनाएँ जो मैंने तुझे दी हैं।” १२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १३ “त इस्माएलियों से यह भी कहा, ‘मिश्चर्य तुम मेरे विश्वामिदिनों को मानना, क्योंकि तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में मेरे और तुम लोगों के बीच यह एक चिन्ह ठहरा है, जिससे तुम यह बात जान रखो कि यहोवा हमारा पवित्र कनेवाला है।’ १४ इस कारण तुम विश्वामिदिन को मानना, क्योंकि वह तुम्हरे लिये पवित्र ठहरा है; जो उसको अपवित्र करे वह मिश्चर्य

मार डाला जाए; जो कोई उस दिन में कुछ काम-काज करे वह प्राणी अपने लोगों के बीच से नाश किया जाए। १५ छ: दिन तो काम-काज किया जाए, पर सातवाँ दिन पवित्र विश्वाम का दिन और यहोवा के लिये पवित्र है; इसलिए जो कोई विश्वाम के दिन में कुछ काम-काज करे वह निश्चय मार डाला जाए। १६ इसलिए इसाएली विश्वामदिन को माना करें, वरन पीढ़ी-पीढ़ी में उसको सदा की बाचा का विषय जानकर माना करें। १७ वह मेरे और इसाएलियों के बीच सदा एक विन्ह रहेगा, क्योंकि छ: दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी को बनाया, और सातवें दिन विश्वाम करके अपना जी ठंडा किया।” १८ जब परमेश्वर मूसा से सनीं पर्वत पर ऐसी बातें कर चुका, तब परमेश्वर ने उसको अपनी उंगली से लिखी हुई साक्षी देवेवाली पत्थर की दोनों तख्तियाँ दी।

३२ जब लोगों ने देखा कि मूसा को पर्वत से उतरने में विलम्ब हो रहा है, तब

वे हास्न के पास इक्ष्टे होकर कहने लगे, “अब हमारे लिये देवता बना, जो हमारे आगे-आगे चले; क्योंकि उस पुस्त मूसा को जो हमें मिस्र देश से निकाल ले आया है, हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ?” २ हास्न ने उनसे कहा, “तुम्हारी खियों और ब्रेटे बेटियों के कानों में सोने की जो बालियाँ हैं उन्हें उतारो, और मेरे पास ले आओ।” ३ तब सब लोगों ने उनके कानों से सोने की बालियों को उतारा, और हास्न के पास ले आए। ४ और हास्न ने उन्हें उनके हाथ से लिया, और एक बछडा ढालकर बनाया, और टाँकी से गढ़ा। तब वे कहने लगे, “हे इसाएल तेरा ईश्वर जो तुझे मिस्र देश से छुड़ा लाया है वह यही है।” ५ यह देखकर हास्न ने उसके आगे एक वेदी बनवाई, और यह प्रचार किया, “कल यहोवा के लिये पर्व होगा।” ६ और दूसरे दिन लोगों ने भोज को उठकर होमाबलि चढ़ाए, और मेलबलि ले आए; फिर बैठकर खाया पिया, और उठकर होमाबलि ले आए; ७ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “नीचे उतर जा, क्योंकि तेरी प्रजा के लोग, जिन्हें तू मिस्र देश से निकाल ले आया है, वे बिंगड गए हैं, ८ और जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा मैंने उनको दी थी उसको झटपट छोड़कर उन्होंने एक बछडा ढालकर बना लिया, फिर उसको दण्डवत् किया, और उसके लिये बलिदान भी चढ़ाया, और यह कहा है, ‘हे इसाएलियों तुम्हारा ईश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा ले आया है वह यही है।’” ९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “मैंने इन लोगों को देखा, और सुन, वे हठीते हैं। १० अब मुझे मत रोक, मेरा कोप उन पर भड़क उठा है जिससे मैं उन्हें भ्रम करूँ; परन्तु तुझ से एक बड़ी जाति उपजाऊँगा।” ११ तब मूसा अपने परमेश्वर यहोवा को यह कहकर मनाने लगा, “हे यहोवा, तेरा कोप अपनी प्रजा पर क्यों भड़का है, जिसे तू बड़े सामर्थ्य और बलवन्त हाथ के द्वारा मिस्र देश से निकाल लाया है? १२ मिस्री लोग यह क्यों कहने पाएँ, ‘वह उनको खो अभिप्राय से, अर्थात् पहाड़ों में घाट करके धरती पर से मिटा डालने की मनसा से निकाल ले गया?’ तू अपने भड़के हुए कोप को शान्त कर, और अपनी प्रजा को ऐसी हानि पहुँचाने से फिर जा। १३ अपने दास अब्राहम, इसहाक, और याकूब को स्मरण कर, जिससे तुम अपनी ही शपथ खाकर यह कहा था, ‘मैं तुम्हारे बंश को आकाश के तरों के तुल्य बहुत कस्तूरा, और यह सारा देश जिसकी मैंने चर्चा की है तुम्हारे बंश को दौँगा, कि वह उसके अधिकारी सदैव बने रहें।’” १४ तब यहोवा अपनी प्रजा की हानि करने से जो उसने कहा था पछताया। १५ तब मूसा फिरकर साक्षी की दोनों तख्तियों को हाथ में लिये हुए पहाड़ से उतर गया, उन तख्तियों के तो इधर और उधर दोनों ओर लिखा हुआ था। १६ और वे तख्तियाँ परमेश्वर की बनाई हुई थीं, और उन पर जो खोदकर लिखा हुआ था वह परमेश्वर का लिखा हुआ था। १७ जब यहोशू को लोगों के कोलाहल का शब्द सुनाई पड़ा, तब उसने मूसा से कहा, “छावनी से लड़ाई का सा शब्द सुनाई देता है।” १८ उसने कहा, “वह जो

शब्द है वह न तो जीतनेवालों का है, और न हारनेवालों का, मुझे तो गाने का शब्द सुन पड़ता है।” १९ छावनी के पास आते ही मूसा को वह बछडा और नाचाना देख पड़ा, तब मूसा का कोप भड़क उठा, और उसने तख्तियों को अपने हाथों से पर्वत के नीचे पटककर तोड़ डाला। २० तब उसने उनके बनाए हुए बछडे को लेकर आग में डालकर फूँक दिया। और पीसकर चूर चूकर डाला, और जल के ऊपर फैक दिया, और इसाएलियों को उसे पिलवा दिया। २१ तब मूसा हास्न से कहने लगा, “उन लोगों ने तुझ से क्या किया कि तूने उनको इतने बड़े पाप में फँसाया?” २२ हास्न ने उत्तर दिया, “मेरे प्रभु का कोप न भड़के; तू तो उन लोगों को जानता ही है कि वे कुर्बाइ में मन लगाए रहते हैं। २३ और उन्होंने मुझसे कहा, ‘हमारे लिये देवता बनवा जो हमारे आगे-आगे चले; क्योंकि उस पुस्त मूसा को, जो हमें मिस्र देश से छुड़ा लाया है, हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ?’” २४ तब मैंने उनसे कहा, ‘जिस जिसके पास सोने के गहने हों, वे उनको उतार लाएँ।’ और जब उन्होंने मुझ को दिया, मैंने उन्हें आग में डाल दिया, तब यह बछडा निकल पड़ा।” २५ हास्न ने उन लोगों को ऐसा निरंकुश कर दिया था कि वे अपने विरोधियों के बीच उपहास के योग्य हुए। २६ उनको निरंकुश देखकर मूसा ने छावनी के निकास पर खड़े होकर कहा, “जो कोई यहोवा की ओर का हो वह मेरे पास आएँ,” तब सारे लेवीय उसके पास इक्ष्टे हुए। २७ उसने उसके कहा, “इशाएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि अपनी-अपनी जाँघ पर तलवार लटकाकर छावनी से एक निकास से दूसरे निकास तक घम-घमकर अपने-अपने भाइयों, संगियों, और पड़ोसियों को घाट करो।” २८ मूसा के इस वचन के अनुसार लेवीयों ने किया और उस दिन तीन हजार के लगभग लोग मारे गए। २९ फिर मूसा ने कहा, “आज के दिन यहोवा के लिये अपना याजकपद का संस्कार करो, वरन् अपने-अपने बेटों और भाइयों के भी विस्तु होकर ऐसा करो जिससे वह आज तुम को आशीर्वादे।” ३० दूसरे दिन मूसा ने लोगों से कहा, “तुम ने बड़ा ही पाप किया है। अब मैं यहोवा के पास चढ़ जाऊँगा; सम्भव है कि मैं तुम्हारे पाप का प्रायश्चित्त कर सकँ।” ३१ तब मूसा यहोवा के पास जाकर कहने लगा, “हाय, हाय, हाय, उन लोगों ने सोने का देवता बनवाकर बड़ा ही पाप किया है। ३२ तो भी अब उनका पाप क्षमा कर नहीं तो अपनी लिखी हुई पुस्तक में से मेरे नाम को काट दो।” ३३ यहोवा ने मूसा से कहा, “जिसने मेरे विस्तु पाप किया है उसी का नाम मैं अपनी पुस्तक में से काट दूँगा। ३४ अब तो तू जाकर उन लोगों को उस स्थान में ले चल जिसकी चर्चा मैंने तुझ से की थी; देख मेरा दूत तेरे आगे-आगे चलेगा। परन्तु जिस दिन मैं दण्ड देने लगाऊँ उस दिन उनको इस पाप की भी दण्ड दूँगा।” ३५ अतः यहोवा ने उन लोगों पर विपत्ति भेजी, क्योंकि हास्न के बनाए हुए बछडे को उन्हीं ने बनवाया था।

३३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “तू उन लोगों को जिज्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है संग लेकर उस देश को जा, जिसके विषय मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब से शपथ खाकर कहा था, ‘मैं उसे तुम्हारे बंश को दौँगा।’ ३६ और मैं तेरे आगे-आगे एक दूत को भेजूँगा और कनानी, एमोरी, हिती, परिज्जी, हिल्ली, और यबूसी लोगों को बरबस निकाल दूँगा। ३७ तुम लोग उस देश को जाओ जिसमें दूध और मधु की धारा बहती है; परन्तु तुम हठीते हो, इस कारण मैं तुम्हारे बीच में होकर न चढ़ाऊँगा, ऐसा न हो कि मैं आर्थ में तुम्हारा अन्त कर डालूँ।” ३८ यह बुरा समाचार सुनकर वे लोग विलाप करने लगे; और कोई अपने गहने पहने हुए न रहा। ३९ क्योंकि यहोवा ने मूसा से कह दिया था, “इसाएलियों को मेरा यह वचन सुना, ‘तुम लोग तो हठीते हो; जो मैं पल भर के लिये तुम्हारे बीच होकर चलूँ, तो तुम्हारा अन्त कर डालूँगा। इसलिए अब

अपने-अपने गहने अपने अंगों से उतार दो, कि मैं जानूँ कि तुम्हरे साथ क्या करना चाहिए।” ६ तब इस्माली होरेब पर्वत से लेकर आगे को अपने गहने उतारे रहे। ७ मूसा तम्बू को छावनी से बाहर बरन दूर खड़ा कराया करता था, और उसको मिलापवाला तम्बू कहता था। और जो कोई यहोवा को ढूँढ़ता वह उस मिलापवाले तम्बू के पास जो छावनी के बाहर था निकल जाता था। ८ जब जब मूसा तम्बू के पास जाता, तब-तब सब लोग उठकर अपने-अपने डेरे के द्वार पर खड़े हो जाते, और जब तक मूसा में प्रवेश न करता था तब तक उसकी ओर ताकते रहते थे। ९ जब मूसा उस तम्बू में प्रवेश करता था, तब बादल का खम्भा उत्करकर तम्बू के द्वार पर ठहर जाता था, और यहोवा मूसा से बातें करने लगता था। १० और सब लोग जब बादल के खम्भे को तम्बू के द्वार पर ठहरा देखते थे, तब उठकर अपने-अपने डेरे के द्वार पर से दण्डवत् करते थे। ११ और यहोवा मूसा से इस प्रकार आमने-सामने बातें करता था, जिस प्रकार कोई अपने भाई से बातें करे। और मूसा तो छावनी में फिर लौट आता था, पर यहोश नामक एक जवान, जो नन्हा का पुत्र और मूसा का टहलुआ था, वह तम्बू में से न निकलता था। १२ और मूसा ने यहोवा से कहा, “सुन त मुझसे कहता है, ‘इन लोगों को ले चल’,” परन्तु यह नहीं बताया कि तू मेरे संग किसको भेजेगा। तो भी तूने कहा है, “तेरा नाम मेरे चिंत में बसा है, और तुझ पर मेरे अनुग्रह की दृष्टि है।” १३ और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो मुझे अपनी गति समझा दे, जिससे जब मैं तेरा ज्ञान पाऊँ तब तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे। फिर इसकी भी सूधि कर कि यह जाति तेरी प्रजा है।” १४ यहोवा ने कहा, “मैं आप चलूँगा और तुझे विश्वाम दूँगा।” १५ उसने उससे कहा, “यदि तू आप न चले, तो हमें वहाँ से आगे न ले जा।” १६ यह कैसे जाना जाए कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर और अपनी प्रजा पर है? क्या इससे नहीं कि तू हमारे संग-संग चले, जिससे मैं और तेरी प्रजा के लोग पृथ्वी भर के सब लोगों से अलग ठहरें?” १७ यहोवा ने मूसा से कहा, “मैं यह काम भी जिसकी चर्चा तूने की है करूँगा; क्योंकि मेरे अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर है, और तेरा नाम मेरे चिंत में बसा है।” १८ उसने कहा, “मुझे अपना तेज दिखा दे।” १९ उसने कहा, “मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊँगा, और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूँगा, और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूँ उसी पर अनुग्रह करूँगा, और जिस पर दया करना चाहूँ उसी पर दया करूँगा।” २० फिर उसने कहा, “तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता।” २१ फिर यहोवा ने कहा, “सुन, मैं पास एक स्थान है, तु उस चट्टान पर खड़ा हो;” २२ और जब तक मेरा तेज तेरे सामने होकर चलता रहे तब तक मैं तुझे चट्टान के दरार में रखूँगा, और जब तक मैं तेरे सामने होकर न निकल जाऊँ तब तक अपने हाथ से तुझे ढाँपे रहूँगा; २३ फिर मैं अपना हाथ उठा लूँगा, तब तु मेरी पीठ का तो दर्शन पाएगा, परन्तु मेरे मुख का दर्शन नहीं मिलेगा।”

३४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “पहली तत्त्वियों के समान पर्वथ की दो और तत्त्वियाँ गढ़ ले; तब जो वचन उन पहली तत्त्वियों पर लिखे थे, जिन्हें तूने तोड़ डाला, वे ही वचन मैं उन तत्त्वियों पर भी लिखूँगा।” २४ और सर्वे तैयार रहना, और भोर को सन्नि पर्वत पर चढ़कर उसकी चोटी पर मैं सामने खड़ा होना। २५ तैयार संग कोई न चढ़ पाए, वरन् पर्वत भर पर कोई मनुष्य कही दिखाई न दे; और न भेड़-बकरी और गाय-बैल भी पर्वत के आगे चरने पाएँ।” २६ तब मूसा ने पहली तत्त्वियों के समान दो और तत्त्वियाँ गढ़ीं; और भोर को सर्वे उठकर अपने हाथ में पर्वथ की वे दोनों तत्त्वियों लेकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार पर्वत पर चढ़ गया। २७ तब यहोवा ने बादल में उत्तरकर उसके संग वहाँ खड़ा होकर यहोवा नाम का प्रचार किया। २८ और यहोवा

उसके सामने होकर यह प्रचार करता हुआ चला, “यहोवा, यहोवा, परमेश्वर द्यालू और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजबन्त, और अति कस्तमाय और सत्य, २९ हजारों पीढ़ियों तक निरन्तर कस्ता करनेवाला, अर्धम और अपराध और पाप को क्षमा करनेवाला है, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा, वह पितरों के अर्धम का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है।” ३० तब मूसा ने फुर्ती कर पृथ्वी की ओर झुककर दण्डवत् किया। ३१ और उसने कहा, “हे प्रभु, यदि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो प्रभु, हम लोगों के बीच मैं होकर चले, ये लोग हठीले तो हैं, तो भी हमरे अर्धम और पाप को क्षमा कर, और हमें अपना निज भाग मानकर ग्रहण कर।” ३२ उसने कहा, “सुन, मैं एक वाचा बाँधता हूँ। तेरे सब लोगों के सामने मैं ऐसे आश्वर्यकर्म करूँगा जैसा पृथ्वी पर और सब जातियों में कभी नहीं हुए; और वे सारे लोग जिनके बीच तू रहता है यहोवा के कार्य को देखेंगे; क्योंकि जो मैं तुम लोगों से करने पर हूँ वह भययोग्य काम है।” ३३ जो आज्ञा मैं आज तम्हें देता हूँ उसे तुम लोग मानना। देखो, मैं तुम्हारे आगे से एपोरी, कनानी, हिती, परिज्जी, हिल्बी, और यवसी लोगों को निकालता हूँ। ३४ इसलिए सावधान रहना कि जिस देश में तू जानेवाला है उसके निवासियों से वाचा न बाँधना; कहीं ऐसा न हो कि वह तेरे लिये फंदा ठहरे। ३५ वरन् उनकी बेटियों को गिरा देना, उनकी लाठों को तोड़ डालना, और उनकी अपरो नामक मूर्तियों को काट डालना; ३६ क्योंकि तुम्हें किसी दूसरे को परमेश्वर करके दण्डवत् करने की आज्ञा नहीं, क्योंकि यहोवा जिसका नाम जलनशील है, वह जल उठनेवाला परमेश्वर है, ३७ ऐसा न हो कि तू उस देश के निवासियों से वाचा बाँधे, और वे अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करें, और उनके लिये बलिदान भी करें, और कोई तुझे नेबता दे और तू भी उसके बलिपशु का प्रसाद खाए, ३८ और तू उनकी बेटियों को अपने बेटों के लिये लाए, और उनकी बेटियाँ जो आप अपने देवताओं के पीछे होने का व्यभिचार करती हैं तेरे बेटों से भी अपने देवताओं के पीछे होने को व्यभिचार करवाएँ। ३९ “तुम देवताओं की मूर्तियाँ ढालकर न बना लेना।” ४० “अखमीरी रोटी का पर्व भानना। उसमें मेरी आज्ञा के अनुसार अबीब महीने के नियत समय पर सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना; क्योंकि तू मिस्त्र से अबीब महीने में निकल आया।” ४१ हर एक पहलौठा मेरा है; और क्या बछड़ा, क्या मेम्ना, तेरे पश्चिमों में से जो नर पहलौठे हों वे सब मेरे ही हैं। ४२ और गदही के पहलौठे के बदले मेम्ना देकर उसको छुड़ाना, और तू उसे छुड़ाना न चाहे तो उसकी गर्दन तोड़ देना। परन्तु अपने सब पहलौठे बेटों को बदला देकर छुड़ाना। मुझे कोई खाली हाथ अपना मुँह न दिखाए। ४३ “छः दिन तो परिश्वम करना, परन्तु सातवें दिन विश्वाम करना; वरन् हल जोतने और लवने के समय में भी विश्वाम करना।” ४४ और तू समाहों का पर्व भानना जो पहले लवे हुए गेहूँ का पर्व कहलाता है, और वर्ष के अन्त में बटोरन का भी पर्व भानना। ४५ वर्ष में तीन बार तेरे सब पुस्त इस्माइल के परमेश्वर प्रभु यहोवा को अपने मुँह दिखाएँ। ४६ मैं तो अन्यजातियों को तेरे आगे से निकालकर तेरी सीमाओं को बढ़ाऊँगा; और जब तू अपने परमेश्वर यहोवा को अपना मुँह दिखाने के लिये वर्ष में तीन बार आया करे, तब कोई तेरी भूमि का लालच न करेगा। ४७ “मेरे बलिदान के लह को खमीर सहित न चढ़ाना, और न फसह के पर्व के बलिदान में से कुछ सर्वे तक रहने देना।” ४८ अपनी भूमि की पहली उपज का पहला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना। बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में न पकाना।” ४९ और यहोवा ने मूसा से कहा, “ये वचन लिख ले; क्योंकि इन्हीं वचनों के अनुसार मैं तेरे और इस्माइल के साथ वाचा बाँधता हूँ।” ५० मूसा तो वहाँ यहोवा के संग चालीस दिन और रात रहा; और तब

तक न तो उसने रोटी खाई और न पानी पिया। और उसने उन तख्तियों पर बाचा के बचन अर्थात् दस आज्ञाएँ लिख दी। ३५ जब मूसा साक्षी की दोनों तख्तियाँ हाथ में लिये हुए सभी पर्वत से उतरा आता था तब यहोवा के साथ बातें करने के कारण उसके चेहरे से किरणें निकल रही थीं। परन्तु वह यह नहीं जानता था कि उसके चेहरे से किरणें निकल रही हैं। ३० जब हास्न और सब इमाएलियों ने मूसा को देखा कि उसके चेहरे से किरणें निकलती हैं, तब वे उसके पास जाने से डर गए। ३१ तब मूसा ने उनको बुलाया; और हास्न मण्डली के सारे प्रधानों समेत उसके पास आया, और मूसा उनसे बातें करने लगा। ३२ इसके बाद सब इमाएली पास आए, और जितनी आज्ञाएँ यहोवा ने सभी पर्वत पर उसके साथ बात करने के समय दी थीं, वे सब उसने उन्हें बताईं। ३३ जब तक मूसा उनसे बात न कर चुका तब तक अपने मुँह पर ओढ़ना डाले रहा। ३४ और जब जब मूसा भीतर यहोवा से बात करने को उसके सामने जाता तब-तब वह उस ओढ़नी को निकलते समय तक उतरे हुए रहता था; फिर बाहर आकर जो-जो आज्ञा उसे मिलती उन्हें इमाएलियों से कह देता था। ३५ इमाएली मूसा का चेहरा देखते थे कि उससे किरणें निकलती हैं; और जब तक वह यहोवा से बात करने को भीतर न जाता तब तक वह उस ओढ़नी को डाले रहता था।

३५ मूसा ने इमाएलियों की सारी मण्डली इकट्ठा करके उनसे कहा, “जिन कामों के करने की आज्ञा यहोवा ने दी है वे ये हैं। ३६: दिन तो काम-काज किया जाए, परन्तु सातवाँ दिन तुम्हारे लिये पवित्र और यहोवा के लिये पवित्र विश्वाम का दिन ठहरे; उसमें जो कोई काम-काज करे वह मार डाला जाएः ३७ वरन् विश्वाम के दिन तुम अपने-अपने घरों में आग तक न जलाना।” ३८ फिर मूसा ने इमाएलियों की सारी मण्डली से कहा, “जिस बात की आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है। ३९ तुम्हारे पास से यहोवा के लिये भेट ती जाए, अर्थात् जितने अपनी इच्छा से देना चाहें वे यहोवा की भेट करके ये वस्तुएँ ले आएँ, अर्थात् सोना, स्पा, पीतल; ४० नीले, बैंगनी और लाल रंग का कपड़ा, सूक्ष्म सनी का कपड़ा; बकरी का बाल, ४१ लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें, सुझों की खालें; बबूल की लकड़ी, ४२ उजियाला देने के लिये तेल, अधिषेक का तेल, और धूप के लिये सुगन्ध-द्रव्य, ४३ फिर एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी मणि और जड़ने के लिये मणि। ४४ “तुम में से जितनों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश है वे सब आकर जिस-जिस वस्तु की आज्ञा यहोवा ने दी है वे सब बनाएँ। ४५ अर्थात् तम्भू, और आवरण समेत निवास, और उसकी घुंडी, तख्ते, बैंडे, खम्भे और कुर्सियाँ; ४६ फिर डंडों समेत सन्दूक, और प्रायव्यन्ति का ढकना, और बीचावाला परदा; ४७ डंडों और सब सामान समेत मेज, और भेट की रोटियाँ; ४८ सामान और दीपकों समेत उजियाला देनेवाला दीवट, और उजियाला देने के लिये तेल; ४९ डंडों समेत धूपवेदी, अधिषेक का तेल, सुगन्धित धूप, और निवास के द्वार का परदा; ५० पीतल की झंझरी, डंडों आदि सारे सामान समेत होमवेदी, पाए समेत हौदी; ५१ खम्भों और उनकी कुर्सियों समेत आँगन के पर्द, और आँगन के द्वार के पर्द, ५२ निवास और आँगन दोनों के खूटे, और डोरियाँ; ५३ पवित्रस्थान में सेवा ठहल करने के लिये काढे हुए वस्त्र, और याजक का काम करने के लिये हास्न याजक के पवित्र वस्त्र, और उसके पुत्रों के वस्त्र भी।” ५४ तब इमाएलियों की सारी मण्डली मूसा के सामने से लौट गई। ५५ और जितनों को उत्साह हुआ, और जितनों के मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी, वे मिलापवाले तम्भू के काम करने और उसकी सारी सेवकाई और पवित्र वस्त्रों के बनाने के लिये यहोवा की भेट ले आने लगे। ५६ क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितनों के मन में ऐसी इच्छा

उत्पन्न हुई थी वे सब जुगनू, नथनी, मुंदरी, और कंगन आदि सोने के गहने ले आने लगे, इस भौति जितने मनुष्य यहोवा के लिये सोने की भेट के देनेवाले थे वे सब उनको ले आए। ५७ और जिस-जिस पुरुष के पास नीले, बैंगनी या लाल रंग का कपड़ा या सूक्ष्म सनी का कपड़ा, या बकरी का बाल, या लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें, या सुझों की खालें थीं वे उन्हें ले आए। ५८ फिर जितने चाँदी, या पीतल की भेट के देनेवाले थे वे यहोवा के लिये वैसी भेट ले आए; और जिस जिसके पास सेवकाई के किरी काम के लिये बबूल की लकड़ी थी वे उसे ले आए। ५९ और जितनी छियों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश था वे अपने हाथों से सूत काट-काटकर नीले, बैंगनी और लाल रंग के, और सूक्ष्म सनी के काटे हुए सूत को ले आईं। ६० और जितनी छियों के मन में ऐसी बुद्धि का प्रकाश था उन्होंने बकरी के बाल भी काटे। ६१ और प्रधान लोग एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी मणि, और जड़ने के लिये मणि, ६२ और उजियाला देने और अभिषेक और धूप के सुगन्ध-द्रव्य और तेल ले आए। ६३ जिस-जिस वस्तु के बनाने की आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी थी उसके लिये जो कछ आवश्यक था, उसे वे सब पुरुष और छियाँ ले आईं, जिनके हृदय में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी। इस प्रकार इमाएली यहोवा के लिये अपनी ही इच्छा से भेट ले आए। ६४ तब मूसा ने इमाएलियों से कहा सुनो, “यहोवा ने यहदा के गोत्रवाले बसलेल को, जो ऊरी का पुत्र और हर का पोता है, नाम लेकर बुलाया है। ६५ और उसने उसको परमेश्वर के आत्मा से ऐसा परिपूर्ण किया है कि सब प्रकार की बनावट के लिये उसको ऐसी बुद्धि, समझ, और ज्ञान मिला है, ६६ कि वह कारीगरी की युक्तियों निकालकर सोने, चाँदी, और पीतल में, ६७ और जड़ने के लिये मणि काटने में और लकड़ी पर नक्काशी काने में, वरन् बुद्धि से सब भौति की निकाली हुई बनावट में काम कर सके। ६८ फिर यहोवा ने उसके मन में और दान के गोत्रवाले अहीसामाके के पुत्र ओहोलीआब के मन में भी शिक्षा देने की शक्ति दी है। ६९ इन दोनों के हृदय को यहोवा ने ऐसी बुद्धि से परिपूर्ण किया है, कि वे नक्काशी करने और गढ़ने और नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े, और सूक्ष्म सनी के कपड़े में काढ़ने और बुनने, वरन् सब प्रकार की बनावट में, और बुद्धि से काम निकालने में सब भौति के काम करें।

३६ “बसलेल और ओहोलीआब और सब बुद्धिमान जिनको यहोवा ने ऐसी बुद्धि और समझ दी हो, कि वे यहोवा की सारी आज्ञाओं के अनुसार पवित्रस्थान की सेवकाई के लिये सब प्रकार का काम करना जानें, वे सब यह काम करें।” ३७ तब मूसा ने बसलेल और ओहोलीआब और सब बुद्धिमानों को जिनके हृदय में यहोवा ने बुद्धि का प्रकाश दिया था, अर्थात् जिस-जिसको पास आकर काम करने का उत्साह हुआ था उन सभी को बुलायाथा। ३८ और इमाएली जो-जो भेट पवित्रस्थान की सेवकाई के काम और उसके बनाने के लिये ले आए थे, उन्हें उन पुरुषों ने मूसा के हाथ से ले लिया। तब भी लोग प्रति भोर को उसके पास भेट अपनी इच्छा से लाते रहे; ३९ और जितने बुद्धिमान पवित्रस्थान का काम करने थे वे सब अपना-अपना काम छोड़कर मूसा के पास आए, ४० और कहने लगे, “जिस काम के करने की आज्ञा यहोवा ने दी है उसके लिये जितना चाहिये उससे अधिक वे ले आए हैं।” ४१ तब मूसा ने सारी छावनी में इस आज्ञा का प्रचार करवाया, “क्या पुरुष, क्या स्त्री, कोई पवित्रस्थान के लिये और भेट न लाए।” इस प्रकार लोग और भेट लाने से रोके गए। ४२ क्योंकि सब काम बनाने के लिये जितना सामान आवश्यक था उतना वरन् उससे अधिक बनानेवालों के पास आ चुका था। ४३ और काम करनेवाले जितने बुद्धिमान थे उन्होंने निवास के लिये बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के,

और नीले, बैगनी और लाल रंग के कपड़े के दस परदों को काढ़े हुए कस्बों सहित बनाया। १० एक-एक पर्दे की लम्बाई अशाईं स हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हुई; सब पर्दे एक ही नाप के बने। ११ उसने पाँच पर्दे एक दूसरे से जोड़ दिए, और फिर दूसरे पाँच पर्दे भी एक दूसरे से जोड़ दिए। १२ और जहाँ ये पर्दे जोड़े गए वहाँ की दोनों छोरों पर उसने नीले-नीले फंदे लगाए। १३ उसने दोनों छोरों में पचास-पचास फंदे इस प्रकार लगाए कि वे एक दूसरे के सामने थे। १४ और उसने सोने की पचास अंकड़े बनाए, और उनके द्वारा परदों को एक दूसरे से ऐसा जोड़ा कि निवास मिलकर एक हो गया। १५ फिर निवास के ऊपर के तम्बू के लिये उसने बकरी के बाल के ग्याह पर्दे बनाए। १६ एक-एक पर्दे की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हुई; और ग्याहों पर्दे एक ही नाप के थे। १७ इनमें से उसने पाँच पर्दे अलग और छः पर्दे अलग जोड़ दिए। १८ और जहाँ दोनों जोड़े गए वहाँ की छोरों में उसने पचास-पचास फंदे लगाए। १९ और उसने तम्बू के जोड़े के लिये पीतल की पचास अंकड़े भी बनाए जिससे वह एक हो जाए। २० और उसने तम्बू के लिये लाल रंग से रंगी हुई मेड़ों की खालों का एक आढ़ाना और उसके ऊपर के लिये सुझों की खालों का एक आढ़ाना बनाया। २१ फिर उसने निवास के लिये बबूल की लकड़ी के तख्तों को खड़े रखने के लिये बनाया। २२ एक-एक तख्ते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की हुई। २३ एक-एक तख्ते में एक दूसरी से जोड़ी हुई दो-दो चूलें बनीं, निवास के सब तख्तों के लिये उसने इसी भाँति बनाया। २४ और उसने निवास के लिये तख्तों को इस रीत से बनाया कि दक्षिण की ओर बीस तख्ते लगे। २५ और इन बीसों तख्तों के नीचे चाँदी की चालीस कुर्सियाँ, अर्थात् एक-एक तख्ते के नीचे उसकी दो चूलों के लिये उसने दो कुर्सियाँ बनाईं। २६ और निवास की दूसरी ओर, अर्थात् उत्तर की ओर के लिये भी उसने बीस तख्ते बनाए। २७ और इनके लिये भी उसने चाँदी की चालीस कुर्सियाँ, अर्थात् एक-एक तख्ते के नीचे दो-दो कुर्सियाँ बनाईं। २८ और निवास की पिछली ओर, अर्थात् पश्चिम ओर के लिये उसने छः तख्ते बनाए। २९ और पिछले भाग में निवास के कोनों के लिये उसने दो तख्ते बनाए। ३० और वे नीचे से दो-दो भाग के बने, और दोनों भाग ऊपर के सिरे तक एक-एक कड़े में मिलाए गए; उसने उन दोनों तख्तों का आकार ऐसा ही बनाया। ३१ इस प्रकार आठ तख्ते हुए, और उनकी चाँदी की सोलह कुर्सियाँ हुईं, अर्थात् एक-एक तख्ते के नीचे दो-दो कुर्सियाँ हुईं। ३२ फिर उसने बबूल की लकड़ी के बेंडे बनाए, अर्थात् निवास की एक ओर के तख्तों के लिये पाँच बेंडे, ३३ और निवास की दूसरी ओर के तख्तों के लिये बालों के बनाए। ३४ और निवास का जो किनारा पश्चिम की ओर पिछले भाग में था उसके लिये भी पाँच बेंडे, बनाए। ३५ और उसने बीचवाले बेंडे को तख्तों के मध्य में तम्बू के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचने के लिये बनाया। ३६ और तख्तों को उसने सोने से मढ़ा, और बेंडों के घर को काम देनेवाले कड़ों को सोने के बनाया, और बेंडों को भी सोने से मढ़ा। ३७ फिर उसने नीले, बैगनी और लाल रंग के कपड़े का, और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपड़े का बीचवाला परदा बनाया; वह कढ़ाई के काम किए हुए कस्बों के साथ बना। ३८ और उसने उसके लिये बबूल के चार खम्भे बनाए, और उनको सोने से मढ़ा; उनकी घुंडियाँ सोने की बनीं, और उसने उनके लिये चाँदी की चार कुर्सियाँ ढाली। ३९ उसने तम्बू के द्वार के लिये भी नीले, बैगनी और लाल रंग के कपड़े का, और बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का कढ़ाई का काम किया हुआ परदा बनाया। ४० और उसने घुंडियाँ समेत उसके पाँच खम्भे भी बनाए, और उनके सिरों और जोड़ने की छड़ों को सोने से मढ़ा, और उनकी पाँच कुर्सियाँ पीतल की बनाईं।

३७ फिर बसलेल ने बबूल की लकड़ी का सन्दूक बनाया; उसकी लम्बाई डाइ हाथ, चौड़ाई डेढ़ हाथ, और ऊँचाई डेढ़ हाथ की थी। ३८ उसने उसको भीतर बाहर शुद्ध सोने से मढ़ा, और उसके चारों ओर सोने की बाड़ बनाई। ३९ और उसके चारों पायों पर लगाने को उसने सोने के चार कड़े ढाले, दो कड़े एक ओर और दो कड़े दूसरी ओर लगे। ४० फिर उसने बबूल के डंडे बनाए, और उन्हें सोने से मढ़ा, ४१ और उनको सन्दूक के दोनों ओर के कड़ों में ढाला कि उनके बल सन्दूक उठाया जाए। ४२ फिर उसने शुद्ध सोने के प्रायश्चितवाले ढकने को बनाया; उसकी लम्बाई डाइ हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की थी। ४३ और उसने सोना गढ़कर दो कस्ब ग्रायश्चित के ढकने के दोनों सिरों पर बनाए; ४४ एक कस्ब तो एक सिरे पर, और दूसरा कस्ब दूसरे सिरे पर बना; उसने उनको प्रायश्चित के ढकने के साथ एक ही टुकड़े के दोनों सिरों पर बनाया। ४५ और कस्बों के पांच ऊपर से फैले हुए बने, और उन पांछों से प्रायश्चित का ढकना ढांग हुआ बना, और उनके मुख आमे-सामने और प्रायश्चित के ढकने की ओर किए हुए बने। ४६ फिर उसने बबूल की लकड़ी की मेज को बनाया; उसकी लम्बाई दो हाथ, चौड़ाई एक हाथ, और ऊँचाई डेढ़ हाथ की थी; ४७ और उसने उसको शुद्ध सोने से मढ़ा, और उसमें चारों ओर शुद्ध सोने की एक बाड़ बनाई। ४८ और उसने उसके लिये चार अंगुल चौड़ी एक पटरी, और इस पटरी के लिये चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई। ४९ और उसने मेज के लिये सोने के चार कड़े ढालकर उन चारों कोनों में लगाया, जो उसके चारों पायों पर थे। ५० वे कड़े पटरी के पास मेज उठाने के ढंडों के खानों का काम देने को बने। ५१ और उसने मेज उठाने के लिये ढंडों को बबूल की लकड़ी के बनाया, और सोने से मढ़ा। ५२ और उसने मेज पर का सामन अर्थात् परापर, धूपदान, कटोरे, और उण्डेलाने के बर्तन सब शुद्ध सोने के बनाए। ५३ फिर उसने शुद्ध सोना गढ़कर पाए और डण्डी समेत दीवाट को बनाया; उसके पुष्पकोष, गॉठ, और फूल सब एक ही टुकड़े के बने। ५४ और दीवाट से निकली हुई छः डालियाँ बनीं; तीन डालियाँ तो उसकी एक ओर से और तीन डालियाँ उसकी दूसरी ओर से निकली हुई बनीं। ५५ एक-एक ताली में बादाम के फूल के सरीखे तीन-तीन पुष्पकोष, एक-एक गॉठ, और एक-एक फूल बना; दीवाट से निकली हुई, उन छहों डालियों का यही आकार हुआ। ५६ और दीवाट की डण्डी में बादाम के फूल के समान अपनी-अपनी गॉठ और फूल समेत चार पुष्पकोष बने। ५७ और दीवाट से निकली हुई छहों डालियों में से दो-दो डालियों के नीचे एक-एक गॉठ दीवाट के साथ एक ही टुकड़े की बनी। ५८ गॉठ और डालियाँ सब दीवाट के साथ एक ही टुकड़े की बनीं; सारा दीवाट गहे हुए शुद्ध सोने का और एक ही टुकड़े का बना। ५९ और उसने दीवाट के सातों दीपक, और गुलतराश, और गुलदान, शुद्ध सोने के बनाए। ६० उसने सारे सामान समेत दीवाट को किक्काकार भर सोने का बनाया। ६१ फिर उसने बबूल की लकड़ी की धूपदेवी भी बनाई; उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ की थी; वह चौकोर बनी, और उसकी ऊँचाई डेढ़ हाथ की थी; और उसके सीधे उसके साथ बिना जोड़ के बने थे ६२ ऊपरवाले पल्लों, और चारों ओर के बाजुओं और सीरीगों समेत उसने उस बेदी को शुद्ध सोने से मढ़ा; और उसके चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई, ६३ और उस बाड़ के नीचे उसके दोनों पल्लों पर उसने सोने के दो कड़े बनाए, जो उसके उठाने के ढंडों के खानों का काम दें। ६४ और ढंडों को उसने बबूल की लकड़ी का बनाया, और सोने से मढ़ा। ६५ और उसने अभिषेक का पवित्र तेल, और सुगन्ध-द्रव्य का धूप गंधी की रीति के अनुसार बनाया।

३८ फिर उसने बबूल की लकड़ी की होमबलि के लिये वेदी भी बनाई; उसकी लम्बाई पाँच हाथ और चौड़ाई पाँच हाथ की थी; इस प्रकार से

वह चौकोर बनी, और ऊँचाई तीन हाथ की थी। २ और उसने उसके चारों कोनों पर उसके चार सीधे बनाए, वे उसके साथ बिना जोड़ के बने; और उसने उसको पीतल से मढ़ा। ३ और उसने वेदी का सारा सामान, अर्थात् उसकी हाँड़ियों, फावड़ियों, कटोरों, काँटों, और करछों को बनाया। उसका सारा सामान उसने पीतल का बनाया। ४ और वेदी के लिये उसके चारों ओर की काँगनी के तले उसने पीतल की जाली की एक झांझी बनाई, वह नीचे से वेदी की ऊँचाई के मध्य तक पहुँची। ५ और उसने पीतल की झांझी के चारों कोनों के लिये चार कड़े ढाले, जो ढंडों के खानों का काम दें। ६ फिर उसने ढंडों को बबल की लकड़ी का बनाया, और पीतल से मढ़ा। ७ तब उसने ढंडों को वेदी की ओर के कड़ों में वेदी के उठने के लिये डाल दिया। वेदी को उसने तज्ज्ञों से खोखली बनाया। ८ उसने हौदी और उसका पाया दोनों पीतल के बनाए, यह मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली महिलाओं के पीतल के दर्पणों के लिये बनाए गए। ९ फिर उसने आँगन बनाया; और दक्षिण की ओर के लिये आँगन के पर्दे बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के थे, और सब मिलाकर सौ हाथ लग्भे थे; १० उनके लिये बीस खम्भे, और इनकी पीतल की बीस कुर्सियाँ बनीं; और खम्भों की घुड़ियाँ और जोड़ने की छड़े चाँदी की बनीं। ११ और उत्तर की ओर के लिये भी सौ हाथ लग्भे पर्दे बने; और उनके लिये बीस खम्भे, और इनकी पीतल की बीस ही कुर्सियाँ बनीं, और खम्भों की घुड़ियाँ और जोड़ने की छड़े चाँदी की बनीं। १२ और पश्चिम की ओर के लिये सब पर्दे मिलाकर पचास हाथ के थे, उनके लिए दस खम्भे, और दस ही उनकी कुर्सियाँ थीं, और खम्भों की घुड़ियाँ और जोड़ने की छड़े चाँदी की थीं। १३ और पूरब की ओर भी वह पचास हाथ के थे। १४ आँगन के द्वार के एक ओर के लिये पन्द्रह हाथ के पर्दे बने; और उनके लिये तीन खम्भे और तीन कुर्सियाँ थीं। १५ और आँगन के द्वार के दूसरी ओर भी वैसा ही बना था; और आँगन के दरवाजे के इधर और उधर पन्द्रह-पन्द्रह हाथ के पर्दे बने थे, और उनके लिये तीन ही तीन खम्भे, और तीन ही तीन इनकी कुर्सियाँ भी थीं। १६ आँगन के चारों ओर सब पर्दे सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े के बने हुए थे। १७ और खम्भों की कुर्सियाँ पीतल की, और घुड़ियाँ और छड़े चाँदी की बनीं, और उनके सिरे चाँदी से मढ़े गए, और आँगन के सब खम्भे चाँदी के छड़ों से जोड़े गए थे। १८ आँगन के द्वार के पर्दे पर बेलबूटे का काम किया हुआ था, और वह नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े का; और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े के बने थे; और उसकी लम्बाई बीस हाथ की थी, और उसकी ऊँचाई आँगन की कनात की चौड़ाई के समान पैच हाथ की बनी। १९ और उनके लिये चार खम्भे, और खम्भों की चार ही कुर्सियाँ पीतल की बनीं, उनकी घुड़ियाँ चाँदी की बनीं, और उनके सिरे चाँदी से मढ़े गए, और उनकी छड़े चाँदी की बनीं। २० और निवास और आँगन के चारों ओर के सब खट्टे पीतल के बने थे। २१ साक्षीपत्र के निवास का सामान जो लेवियों के सेवाकार्य के लिये बना; और जिसकी गिनती हास्न याजक के पुत्र ईतामार के द्वारा मूरा के करने से हुई थी, उसका वर्णन यह है। २२ जिस-जिस वस्तु के बनाने की जाजा यहोवा ने मूरा को दी थी उसको यहदा के गोत्रवाले बसलेल ने, जो हर का पोता और ऊरी का पुत्र था, बन दिया। २३ और उसके संग दान के गोत्रवाले, अहीसामाक का पुत्र, ओहोलीआब था, जो नक्काशी करने और काढ़नेवाला और नीले, बैंगनी और लाल रंग के और सूक्ष्म सनी के कपड़े में कढ़ाई करनेवाला निषुण कारिगर था। २४ पवित्रस्थान के सारे काम में जो भेट का सोना लगा वह पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से उनतीस किक्कार, और सात सौ तीस शेकेल था। २५ और मण्डली के गिने हुए लोगों की भेट की चाँदी पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से सौ किक्कार, और सत्रह सौ पचहतर शेकेल थी।

२६ अर्थात् जितने बीस वर्ष के और उससे अधिक आयु के गिने गए थे, वे छः लाख तीन हजार साढ़े पैच सौ पुष्प थे, और एक-एक जन की ओर से पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार आधा शेकेल, जो एक बेका होता है, मिला। २७ और वह सौ किक्कार चाँदी पवित्रस्थान और बीचवाले पर्दे दोनों की कुर्सियों के ढालने में लग गई, सौ किक्कार से सौ कुर्सियाँ बनीं, एक-एक कुर्सी एक किक्कार की बनी। २८ और सत्रह सौ पचहतर शेकेल जो बच गए, उनसे खम्भों की घुड़ियाँ बनाई गईं, और खम्भों की चोटियाँ मढ़ी गईं, और उनकी छड़े भी बनाई गईं। २९ और भेट का पीतल सत्तर किक्कार और दो हजार चार सौ शेकेल था; ३० इसपे मिलापवाले तम्बू के द्वार की कुर्सियाँ, और पीतल की वेदी, पीतल की झांझी, और वेदी का सारा सामान; ३१ और आँगन के चारों ओर की कुर्सियाँ, और उसके द्वार की कुर्सियाँ, और निवास, और आँगन के चारों ओर के खट्टे भी बनाए गए।

३१ फिर उन्होंने नीले, बैंगनी और लाल रंग के काढ़े हुए कपड़े पवित्रस्थान की सेवा के लिये, और हास्न के लिये भी पवित्र वस्त्र बनाए; जिस प्रकार यहोवा ने मूरा को आज्ञा दी थी। ३२ और उसने एपोद को सोने, और नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े का, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े का बनाया। ३३ और उन्होंने सोना पीट-पीटकर उसके पतर बनाए, फिर पतरों को काट-काटकर तार बनाए, और तारों को नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े में, और सूक्ष्म सनी के काढ़े में कढ़ाई की बनावट से मिला दिया। ३४ एपोद के जोड़ने को उन्होंने उसके कंधों पर के बन्धन बनाए, वह अपने दोनों सिरों से जोड़ा गया। ३५ और उसे कसने के लिये जो काढ़ा हुआ पटका उस पर बना, वह उसके साथ बिना जोड़ का, और उसी की बनावट के अनुसार, अर्थात् सोने और नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े का, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े का बना; जिस प्रकार यहोवा ने मूरा को आज्ञा दी थी। ३६ उन्होंने सुलैमानी मणि काटकर उनमें इस्माएल के पुत्रों के नाम, जैसा छापा खोदा जाता है वैसी ही खोदि, और सोने के खानों में जड़ दिए। ३७ उसने उनको एपोद के कंधे के बन्धनों पर लगाया, जिससे इसाएलियों के लिये स्मरण करनेवाले मणि ठहरें; जिस प्रकार यहोवा ने मूरा को आज्ञा दी थी। ३८ उसने चपरास को एपोद के समान सोने की, और नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े की, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े में बेलबूटे का काम किया हुआ बनाया। ३९ चपरास तो चौकोर बनी; और उन्होंने उसको दोहरा बनाया, और वह दोहरा होकर एक बिता लाज्जा और एक बिता चौड़ा बना। ४० और उन्होंने उसमें चार पंक्तियों में मणि जड़े। पहली पंक्ति में माणिक्य, पद्मराग, और लालडी जड़े गए; ४१ और दूसरी पंक्ति में मरकत, नीलमणि, और हीरा, ४२ और तीसीरी पंक्ति में लशम, सर्यकांत, और नीलमणि; ४३ और चौथी पंक्ति में फीरोजा, सुलैमानी मणि, और यशब जड़े; ये सब अलग-अलग सोने के खानों में जड़े गए। ४४ और ये मणि इस्माएल के पुत्रों के नामों की गिनती के अनुसार बारह थे; बारहों गोत्रों में से एक-एक का नाम जैसा छापा खोदा जाता है वैसी ही खोदा गया। ४५ और उन्होंने चपरास पर डोरियों के समान गैंथे हुए शुद्ध सोने की जंजीर बनाकर लगाई, ४६ फिर उन्होंने सोने के दो खाने, और सोने की दो कढ़ियाँ बनाकर दोनों कढ़ियों को चपरास के दोनों सिरों पर लगाया; ४७ तब उन्होंने सोने की दोनों गैंथी हुई जंजीरों को चपरास के सिरों पर की दोनों कढ़ियों में लगाया। ४८ और गैंथी हुई दोनों जंजीरों के दोनों बाकी सिरों को उन्होंने दोनों खानों में जड़ के, एपोद के सामने दोनों कंधों के बन्धनों पर लगाया। ४९ और उन्होंने सोने की और दो कढ़ियाँ बनाकर चपरास के दोनों सिरों पर उसकी उस कोर पर, जो एपोद के भीतरी भाग में थी, लगाई। ५०

और उन्होंने सोने की दो और कड़ियाँ भी बनाकर एपोद के दोनों कंधों के बन्धनों पर नीचे से उसके सामने, और जोड़ के पास, एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर लगाई। २८ तब उन्होंने चपरास को उसकी कड़ियों के द्वारा एपोद की कड़ियों में नीले फती से ऐसा बाँधा, कि वह एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर रहे, और चपरास एपोद से अलग न होने पाए; जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २९ फिर एपोद का बागा सम्पूर्ण नीले रंग का बनाया गया। ३० और उसकी बनावट ऐसी हुई कि उसके बीच बख्तर के छेद के समान एक छेद बना, और छेद के चारों ओर एक कोर बनी, कि वह फटने न पाए। ३१ और उन्होंने उसके नीचेवाले धोरे में नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े के अनार बनाए। ३२ और उन्होंने शुद्ध सोने की धंतियाँ भी बनाकर बागे के नीचेवाले धोरे के चारों ओर अनारों के बीचों बीच लगाई; ३३ अर्थात् बागे के नीचेवाले धोरे के चारों ओर एक सोने की धंती, और एक अनार फिर एक सोने की धंती, और एक अनार लगाया गया कि उहाँ पहने हुए सेवा ठहल करें; जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। ३४ फिर उन्होंने हास्तन, और उसके पुरों के लिये बुनी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के अंगरखे, ३५ और सूक्ष्म सनी के कपड़े की पगड़ी, और सूक्ष्म सनी के कपड़े की सुदर टोपियाँ, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की जैंयिया, ३६ और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की और नीले, बैंगनी और लाल रंग की कढ़ाई का काम की हुई पगड़ी; इन सभी को जिस तरह यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी वैसा ही बनाया। ३७ फिर उन्होंने पवित्र मुकूट की पटी शुद्ध सोने की बनाई, और जैसे छापे में वैसे ही उसमें ये अक्षर खोदे गए, अर्थात् ‘यहोवा के लिये पवित्र।’ ३८ और उन्होंने उसमें नीला फती लगाया, जिससे वह ऊपर पागड़ी पर रहे, जिस तरह यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। ३९ इस प्रकार मिलापवाले तम्बू के निवास का सब काम समाप्त हुआ, और जिस-जिस काम की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, इसाएलियों ने उसी के अनुसार किया। ४० तब वे निवास को मूसा के पास ले आए, अर्थात् घटियाँ, तख्ते, बेंडे, खम्भे, कुर्सियाँ आदि सारे सामान समेत तम्बू; ४१ और लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालों का ओढ़ना, और सुझों की खालों का ओढ़ना, और बीच का परदा; ४२ डंडों सहित साक्षीपत्र का सन्दूक, और प्रायश्चित्त का ढकना; ४३ सारे सामान समेत मेज, और भेंट की रोटी; ४४ सारे सामान सहित दीवट, और उसकी सजावट के दीपक और उजियाला देने के लिये तेल; ४५ सोने की बेटी, और अधिषेक का तेल, और सुग्राहित धूप, और तम्बू के द्वार का परदा; ४६ पीतल की झाज़री, डंडों और सारे सामान समेत पीतल की बेटी; और पाए समेत हौटी; ४७ खम्भों और कुर्सियों समेत आँगन के पर्दे, और आँगन के द्वार का परदा, और डोरियाँ, और खेटू, और मिलापवाले तम्बू के निवास की सेवा का सारा सामान; ४८ पवित्रस्थान में सेवा ठहल करने के लिये बेल बूटा काढ़े हुए वस्त्र, और हास्तन याजक के पवित्र वस्त्र, और उसके पुरों के वस्त्र जिन्हें पहनकर उहाँ याजक का काम करना था। ४९ अर्थात् जो-जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उन्हीं के अनुसार इसाएलियों ने सब काम किया। ५० तब मूसा ने सारे काम का निरीक्षण करके देखा कि उन्होंने यहोवा की आज्ञा के अनुसार सब कुछ किया है। और मूसा ने उनको आशीर्वाद दिया।

४० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १ “पहले महीने के पहले दिन को तु मिलापवाले तम्बू के निवास को खड़ा कर देना। २ और उसमें साक्षीपत्र के सन्दूक को रखकर बीचवाले पर्दे की ओट में कर देना। ३ और मेज को भीतर ले जाकर जो कुछ उस पर सजाना है उसे सजा देना; तब दीवट को भीतर ले जाकर उसके दीपकों को जला देना। ४ और साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने सोने की बेटी को जो धूप के लिये है उसे रखना, और निवास के द्वार के पर्दे को लगा देना। ५ और मिलापवाले तम्बू के निवास के द्वार के सामने

होमवेदी को रखना। ६ और मिलापवाले तम्बू और बेटी के बीच हौटी को रखकर उसमें जल भरना। ७ और चारों ओर के आँगन की कनात को खड़ा करना, और उस आँगन के द्वार पर पर्दे को लटका देना। ८ और अधिषेक का तेल लेकर निवास का और जो कुछ उसमें होगा सब कुछ का अधिषेक करना, और सारे सामान समेत उसको पवित्र करना; तब वह पवित्र ठहरेगा। ९ सब सामान समेत होमवेदी का अधिषेक करके उसको पवित्र करना; तब वह परमपवित्र ठहरेगी। १० पाए समेत हौटी का भी अधिषेक करके उसे पवित्र करना। ११ तब हास्तन और उसके पुरों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले जाकर जल से नहलाना, १२ और हास्तन को पवित्र वस्त्र पहनाना, और उसका अधिषेक करके उसको पवित्र करना कि वह मेरे लिये याजक का काम करे। १३ और उसके पुरों को ले जाकर अंगरखे पहनाना, १४ और जैसे तूनके पिटा का अधिषेक करे वैसे ही उनका भी अधिषेक करना कि वे मेरे लिये याजक का काम करें; और उनका अधिषेक उनकी पीठी-पीढ़ी के लिये उनके सदा के याजकपद का चिन्ह ठहरेगा।” १५ और मूसा ने जो-जो आज्ञा यहोवा ने उसको दी थी उसी के अनुसार किया। १६ और दूसरे वर्ष के पहले महीने के पहले दिन को निवास खड़ा किया गया। १७ मूसा ने निवास को खड़ा करवाया और उसकी कुर्सियाँ धर उसके तख्ते लगाकर उनमें बैठे डाले, और उसके खम्भों को खड़ा किया; १८ और उसने निवास के ऊपर तम्बू के फैलाया, और तम्बू के ऊपर उसने ओढ़ने को लगाया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। १९ और उसने साक्षीपत्र को लेकर सन्दूक में रखा, और सन्दूक में डंडों को लगाकर उसके ऊपर प्रायश्चित्त के ढकने को रख दिया; २० और उसने सन्दूक को निवास में पहँचाया, और बीचवाले पर्दे को लटकवा के साक्षीपत्र के सन्दूक को उसके अन्दर किया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २१ और उसने मिलापवाले तम्बू में निवास के उत्तर की ओर बीच के पर्दे से बाहर मेज को लगावाया, २२ और उस पर उसने यहोवा के सम्मुख रोटी सजा कर रखी; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २३ और उसने मिलापवाले तम्बू में निवास के उत्तर की ओर बीच के पर्दे से बाहर मेज को रखाया, २४ और उसने दीपकों को यहोवा के सम्मुख जला दिया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २५ और उसने मिलापवाले तम्बू में बीच के पर्दे के सामने सोने की बेटी की रखा, २६ और उसने उस पर सुआन्धित धूप जलाया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २७ और उसने निवास के द्वार पर पर्दे को लगाया। २८ और मिलापवाले तम्बू के निवास के द्वार पर होमवेदी को रखकर उस पर होमबलि और अन्नबलि को चढ़ाया; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २९ और उसने मिलापवाले तम्बू और बेटी के बीच हौटी को रखकर उसमें धोने के लिये जल डाला, ३० और मूसा और हास्तन और उसके पुरों ने उसमें अपने-अपने हाथ पाँव धोए; ३१ और जब जब वे मिलापवाले तम्बू में या बेटी के पास जाते थे तब-तब वे हाथ पाँव धोते थे; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। ३२ और उसने निवास के चारों ओर और बेटी के आस-पास आँगन की कनात को खड़ा करवाया, और आँगन के द्वार के पर्दे को लटकवा दिया। इस प्रकार मूसा ने सब काम को पूरा किया। ३३ तब बादल मिलापवाले तम्बू पर छा गया, और यहोवा का तेज निवास-स्थान में भर गया। ३४ और बादल मिलापवाले तम्बू पर ठहर गया, और यहोवा का तेज निवास-स्थान में भर गया, इस प्रकार मूसा ने सब काम को पूरा किया। ३५ तब बादल मिलापवाले तम्बू में या बेटी के पास जाते थे तब-तब वे कूच करते थे। ३६ और यदि वह न उठता, तो जिस दिन तक वह न उठता था उस दिन तक वे कूच नहीं करते थे। ३७

इमाएल के घराने की सारी यात्रा में दिन को तो यहोवा का बादल निवास पर,
और रात को उसी बादल में आग उन सभी को दिखाई दिया करती थी।

लैव्यव्यवस्था

१ यहोवा ने मिलापवाले तम्बू में से मूसा को बुताकर उससे कहा, २

“इसाएलियों से कह कि तुम मैं से यदि कोई मनुष्य यहोवा के लिये पशु का चढ़ावा चढ़ाए, तो उसका बलिपशु गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से एक का हो। ३ “यदि वह गाय-बैलों में से होमबलि करे, तो निर्दोष नर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर चढ़ाए कि यहोवा उसे ग्रहण करे। ४ वह अपना हाथ होमबलि पशु के सिर पर रखे, और वह उनके लिये प्रायश्चित्त करने को ग्रहण किया जाएगा। ५ तब वह उस बछड़े को यहोवा के सामने बलि करे; और हास्न के पुत्र जो याजक हैं वे तह को समीप ले जाकर उस वेदी के चारों ओर छिड़के जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर हैं। ६ फिर वह होमबलि पशु की खाल निकालकर उस पशु को टुकड़े-टुकड़े करे; ७ तब हास्न याजक के पुत्र वेदी पर आग रखें, और आग पर लकड़ी सजा कर रखें; ८ और हास्न के पुत्र जो याजक हैं वे सिर और चर्बी समेत पशु के टुकड़ों को उस लकड़ी पर जो वेदी की आग पर होगी सजा कर रखें; ९ और वह उसकी अंतिमियों और पैरों को जल से धोए। तब याजक सब को वेदी पर जलाए कि वह होमबलि यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे। १० “यदि वह भेड़ों या बकरों का होमबलि चढ़ाए, तो निर्दोष नर को चढ़ाए। ११ और वह उसको यहोवा के आगे वेदी के उत्तरी ओर बलि करे; और हास्न के पुत्र जो याजक हैं वे उसके लह को वेदी के चारों ओर छिड़कें। १२ और वह उसको सिर और चर्बी समेत टुकड़े-टुकड़े करे, और याजक इन सब को उस लकड़ी पर सजा कर रखे जो वेदी की आग पर होगी; १३ वह उसकी अंतिमियों और पैरों को जल से धोए। और याजक वेदी पर जलाए कि वह होमबलि हो और यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे। १४ “यदि वह यहोवा के लिये पक्षियों की होमबलि चढ़ाए, तो पंडुकों या कबूतरों का चढ़ावा चढ़ाए। १५ याजक उसको वेदी के समीप ले जाकर उसका गला मरोड़कर सिर को धड़ से अलग करे, और वेदी पर जलाए; और उसका सारा लह उस वेदी के बाज पर गिराया जाए, १६ और वह उसकी गल-थैरी को मल सहित निकालकर वेदी के पूरब की ओर से राख डालने के स्थान पर फेंक दे; १७ और वह उसको पंखों के बीच से फाड़े, पर अलग-अलग न करे। तब याजक उसको वेदी पर उस लकड़ी के ऊपर रखकर जो आग पर होगी जलाए कि वह होमबलि और यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे।

२ “जब कोई यहोवा के लिये अन्नबलि का चढ़ावा चढ़ाना चाहे, तो वह मैदा चढ़ाए; और उस पर तेल डालकर उसके ऊपर लोबान रखे; ३ और वह उसको हास्न के पुत्रों के पास जो याजक हैं लाए। और अन्नबलि के तेल मिले हुए मैदे में से इस तरह अपनी मुश्ती भरकर निकाले कि सब लोबान उसमें आ जाए; और याजक उन्हें स्मरण दिलानेवाले भाग के लिये वेदी पर जलाए कि यह यहोवा के लिये सुखदायक सुआन्धित हवन ठहरे। ४ और अन्नबलि में से जो बचा रहे वह हास्न और उसके पुत्रों का ठहरे; यह यहोवा के हवनों में से परमपवित्र भाग होगा। ५ “जब त अन्नबलि के लिये तंदूर में पकाया हुआ चढ़ावा चढ़ाए, तो वह तेल से सने हुए अखमीरी मैदे के फुलकों, या तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी रेटियों का हो। ६ और यदि तेरा चढ़ावा तवे पर पकाया हुआ अन्नबलि हो, तो वह तेल से सने हुए अखमीरी मैदे का हो; ७ उसको टुकड़े-टुकड़े करके उस पर तेल डालना, तब वह अन्नबलि हो जाएगा। ८ और यदि तेरा चढ़ावा कढ़ाही में तला हुआ अन्नबलि हो, तो वह मैदे से तेल में बनाया जाए। ९ और जो अन्नबलि इन वस्तुओं में से किसी का

बना हो उसे यहोवा के समीप ले जाना; और जब वह याजक के पास लाया जाए, तब याजक उसे वेदी के समीप ले जाए। १० और याजक अन्नबलि में से स्मरण दिलानेवाला भाग निकालकर वेदी पर जलाए कि वह यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे; ११ और अन्नबलि में से जो बचा रहे वह हास्न और उसके पुत्रों का ठहरे; वह यहोवा के हवनों में परमपवित्र भाग होगा। १२ “कोई अन्नबलि जिसे तुम यहोवा के लिये चढ़ाओ खमीर मिलाकर बनाया न जाए; तुम कभी हवन में यहोवा के लिये खमीर और मधु न जलाना। १३ तुम इनको पहली उपज का चढ़ावा करके यहोवा के लिये चढ़ाना, पर वे सुखदायक सुगन्ध के लिये वेदी पर चढ़ाए न जाएँ। १४ फिर अपने सब अन्नबलियों को नमकीन बनाना; और अपना कोई अन्नबलि अपने परमेश्वर के साथ बंधी हुई वाचा के नमक से रहित होने न देना; अपने सब चढ़ावों के साथ नमक भी चढ़ाना। १५ “यदि तू यहोवा के लिये पहली उपज का अन्नबलि चढ़ाए, तो अपनी पहली उपज के अन्नबलि के लिये आग में भुरी हुई हरी-हरी बालें, अर्थात् हरी-हरी बालों को मीजिकर निकाल लेना, तब अन्न को चढ़ाना। १६ और उसमें तेल डालना, और उसके ऊपर लोबान रखना; तब वह अन्नबलि हो जाएगा। १७ और याजक मीजिकर निकालते हुए अन्न को, और तेल को, और सारे लोबान को स्मरण दिलानेवाला भाग करके जला दें; वह यहोवा के लिये हवन ठहरे।

३ “यदि उसका चढ़ावा मेलबलि का हो, और यदि वह गाय-बैलों में से किसी को चढ़ाए, तो चाहे वह पशु नर हो या मादा, पर जो निर्दोष हो उसी को वह यहोवा के आगों चढ़ाए। ४ और वह अपना हाथ अपने चढ़ावे के पशु के सिर पर रखे और उसको मिलापवाले तम्बू के द्वार पर बलि करे; और हास्न के पुत्र जो याजक हैं वे उसके लह को वेदी के चारों ओर छिड़कें। ५ वह मेलबलि में से यहोवा के लिये हवन करे, अर्थात् जिस चर्बी से अंतिमियां ढाई रहती हैं, और जो चर्बी उनमें लिपटी रहती है वह भी, ६ और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभी को वह अलग करे। ७ तब हास्न के पुत्र इनको वेदी पर उस होमबलि के ऊपर जलाएँ, जो उन लकड़ियों पर होगी जो आग के ऊपर है, कि यह यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे। ८ “यदि यहोवा के मेलबलि के लिये उसका चढ़ावा भेड़-बकरियों में से हो, तो चाहे वह नर हो या मादा, पर जो निर्दोष हो उसी को वह चढ़ाए। ९ यदि वह भेड़ का बच्चा चढ़ाता हो, तो उसको यहोवा के सामने चढ़ाएँ, १० और वह अपने चढ़ावे के पशु के सिर पर हाथ रखे और उसको मिलापवाले तम्बू के आगों बलि करे; और हास्न के पुत्र उसके लह को वेदी के चारों ओर छिड़कें। ११ तब मेलबलि को यहोवा के लिये हवन करे, और उसकी चर्बी भी मोटी पूँछ को वह रीढ़ के पास से अलग करे, और जिस चर्बी से अंतिमियां ढाई रहती हैं, और जो चर्बी उनमें लिपटी रहती है, १२ और दोनों गुर्दे, और जो चर्बी उनके ऊपर कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभी को वह अलग करे। १३ और याजक इन्हें वेदी पर जलाएँ; यह यहोवा के लिये हवन स्पी भेजन ठहरे। १४ “यदि वह बकरा या बक्री चढ़ाए, तो उसे यहोवा के सामने चढ़ाए। १५ और वह अपना हाथ उसके सिर पर रखे, और उसको मिलापवाले तम्बू के आगों बलि करे; और हास्न के पुत्र उसके लह को वेदी के चारों ओर छिड़के। १६ तब वह उसमें से अपना चढ़ावा करके यहोवा के लिये हवन करे, और यहोवा के सामने चढ़ाएँ, १७ और यदि वह भेड़ का बच्चा चढ़ाता हो, तो उसको यहोवा के सामने चढ़ाएँ, १८ और वह अपने चढ़ावे के पशु के सिर पर हाथ रखे और उसको मिलापवाले तम्बू के आगों बलि करे; और हास्न के पुत्र उसके लह को वेदी के चारों ओर छिड़कें। १९ और यहोवा के लिये हवन स्पी भेजन ठहरे। २० “यदि वह बकरा या बक्री चढ़ाए, तो उसे यहोवा के सामने चढ़ाए। २१ और वह अपना हाथ उसके सिर पर रखे, और उसको मिलापवाले तम्बू के आगों बलि करे; और हास्न के पुत्र उसके लह को वेदी के चारों ओर छिड़के। २२ और यहोवा के लिये हवन करे, और जिस चर्बी से अंतिमियां ढाई रहती हैं, और जो चर्बी उनमें लिपटी रहती है वह भी, २३ और दोनों गुर्दे, और जो चर्बी उनके ऊपर कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभी को वह अलग करे। २४ और याजक इन्हें वेदी पर जलाएँ; यह हवन स्पी

भोजन है जो सुखदायक सुगन्ध के लिये होता है; क्योंकि सारी चर्बी यहोवा की है। १७ वह तुम्हरे निवासों में तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी के लिये सदा की विधि ठहरेगी कि तुम चर्बी और लहू कभी न खाओ।”

४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ “इसाएलियों से यह कह कि यदि कोई

मनुष्य उन कामों में से जिनको यहोवा ने मना किया है, किसी काम को भूल से करके पापी हो जाए; ३ और यदि अधिषित याजक ऐसा पाप करे, जिससे प्रजा दोषी ठहरे, तो अपने पाप के कारण वह एक निर्दोष बछड़ा यहोवा को पापबलि करके ढाढ़ाए। ४ वह उस बछड़े को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के आगे ले जाकर उसके सिर पर हाथ रखे, और उस बछड़े को यहोवा के सामने बलि करो। ५ और अधिषित याजक बछड़े के लहू में से कुछ लेकर मिलापवाले तम्बू में ले जाए; ६ और याजक अपनी उँगली लहू में डुबो-डुबोकर और उसमें से कुछ लेकर पवित्रस्थान के बीचवाले पर्दे के आगे यहोवा के सामने सात बार छिड़के। ७ और याजक उस लहू में से कुछ और लेकर सुआन्धि धूप की बेटी के सीरीं पर जो मिलापवाले तम्बू में है यहोवा के सामने लगाए; ८ फिर बछड़े के सब लहू को बेटी के पाए पर होमबलि की बेटी जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है उण्डेल दे। ९ फिर वह पापबलि के बछड़े की सब चर्बी को उससे अलग करे, अर्थात् जिस चर्बी से अंतिडियॉ ढपी रहती हैं, और जितनी चर्बी उनमें लिपटी रहती है, १० और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभी को वह ऐसे अलग करे, ११ जैसे मेलबलिवाले चढ़ावे के बछड़े से अलग किए जाते हैं, और याजक इनको होमबलि की बेटी पर जलाए। १२ परन्तु उस बछड़े की खाल, पाँव, सिर, अंतिडियॉ, गोबर, १३ और सारा माँस, अर्थात् सम्पूर्ण बछड़ा छावनी से बाहर शुद्ध स्थान में, जहाँ राख डाली जाएगी, ले जाकर लकड़ी पर रखकर आग से जलाए; जहाँ राख डाली जाती है वह वही जलाया जाए। १४ “यदि इसाएल की सारी मण्डली अज्ञानता के कारण पाप करे और वह बात मण्डली की आँखों से छिपी हो, और वे यहोवा की किसी आज्ञा के विस्तु कुछ करके दोषी ठहरे हों; १५ तो जब उनका किया हुआ पाप प्रगट हो जाए तब मण्डली एक बछड़े को पापबलि करके ढाढ़ाए। वह उसे मिलापवाले तम्बू के आगे ले जाए, १६ और मण्डली के वृद्ध लोग अपने-अपने हाथों को यहोवा के आगे बछड़े के सिर पर रखें, और वह बछड़ा यहोवा के सामने बलि किया जाए। १७ तब अधिषित याजक बछड़े के लहू में से कुछ मिलापवाले तम्बू में ले जाए; १८ और याजक अपनी उँगली लहू में डुबो-डुबोकर उसे बीचवाले पर्दे के आगे सात बार यहोवा के सामने छिड़के। १९ और उसी लहू में से बेटी के सीरीं पर जो यहोवा के आगे मिलापवाले तम्बू में है लगाए; और बचा हुआ सब लहू होमबलि की बेटी के पाए पर जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है उण्डेल दे। २० और वह बछड़े की कुल चर्बी निकालकर बेटी पर जलाए। २१ जैसे पापबलि के बछड़े से किया था वैसे ही इससे भी करें; इस भाँति याजक इसाएलियों के लिये प्रायश्चित्त करे, तब उनका पाप क्षमा किया जाएगा। २२ और वह बछड़े को छावनी से बाहर ले जाकर उसी भाँति जलाए जैसे पहले बछड़े को जलाया था; यह तो मण्डली के निमित्त पापबलि ठहरेगा। २३ “जब कोई प्रधान पुरुष पाप करके दोषी हो जाए, २४ और उसका पाप उस पर प्रगट हो जाए, तो वह एक निर्दोष बकरा बलिदान करने के लिये ले आए; २५ और बकरे के सिर पर अपना हाथ रखे, और बकरे को उस स्थान पर बलि करे जहाँ होमबलि पशु यहोवा के आगे बलि किए जाते हैं; यह पापबलि ठहरेगा। २६ तब याजक

अपनी उँगली से पापबलि पशु के लहू में से कुछ लेकर होमबलि की बेटी के सीरीं पर लगाए, और उसका लहू होमबलि की बेटी के पाए पर उण्डेल दे। २७ और वह उसकी कुल चर्बी को मेलबलि की चर्बी के समान बेटी पर जलाए; और याजक उसके पाप के विषय में प्रायश्चित्त करे, तब वह क्षमा किया जाएगा। २८ “यदि साधारण लोगों में से कोई अज्ञानता से पाप करे, अर्थात् कोई ऐसा काम जिसे यहोवा ने मना किया हो करके दोषी हो, और उसका वह पाप उस पर प्रगट हो जाए, २९ तो वह उस पाप के कारण एक निर्दोष बकरी बलिदान के लिये ले आए; ३० और वह अपना हाथ पापबलि पशु के सिर पर रखे, और होमबलि के स्थान पर पापबलि पशु का बलिदान करे। ३१ और याजक उसके लहू में से अपनी उँगली से कुछ लेकर होमबलि की बेटी के सीरीं पर लगाए, और उसके सब लहू को उसी बेटी के पाए पर उण्डेल दे। ३२ और वह उसकी सब चर्बी को मेलबलि पशु की चर्बी के समान अलग करे, तब याजक उसको बेटी पर यहोवा के निमित्त सुखदायक सुगन्ध के लिये जलाए; और इस प्रकार याजक उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तब उसे क्षमा मिलेगी। ३३ “यदि वह पापबलि के लिये एक मेम्ना ले आए, तो वह निर्दोष मादा हो, ३४ और वह अपना हाथ पापबलि पशु के सिर पर रखे, और उसको पापबलि के लिये वही बलिदान करे जहाँ होमबलि पशुबलि किया जाता है। ३५ तब याजक अपनी उँगली से पापबलि के लहू में से कुछ लेकर होमबलि की बेटी के सीरीं पर लगाए, और उसके सब लहू को बेटी के पाए पर उण्डेल दे। ३६ और वह उसकी सब चर्बी को मेलबलिवाले मेम्ने की चर्बी के समान अलग करे, और याजक उसे बेटी पर यहोवा के हवनों के ऊपर जलाए; और इस प्रकार याजक उसके पाप के लिये प्रायश्चित्त करे, और वह क्षमा किया जाएगा।

५ “यदि कोई साक्षी होकर ऐसा पाप करे कि शपथ खिलाकर पूछने पर

भी कि क्या तूने यह सुना अथवा जानता है, और वह बात प्रगट न करे, तो उसको अपने अर्धम का भार उठाना पड़ेगा। ६ अथवा यदि कोई किसी अशुद्ध वस्तु को अज्ञानता से छू ले, तो चाहे वह अशुद्ध जंगली पशु की, चाहे अशुद्ध घेरेलू पशु की, चाहे अशुद्ध रेंगनेवाले जीव-जन्तु की लोथ हो, तो वह अशुद्ध होकर दोषी ठहरेगा। ७ अथवा यदि कोई मनुष्य किसी अशुद्ध वस्तु को अज्ञानता से छू ले, तो चाहे वह अशुद्ध वस्तु किसी भी प्रकार की क्यों न हो जिससे लोग अशुद्ध हो जाते हैं तो जब वह उस बात को जान लेगा तब वह दोषी ठहरेगा। ८ अथवा यदि कोई बुरा या भला करने को बिना सोचे समझे शपथ खाए, चाहे किसी प्रकार की बात वह बिना सोचे-विचारे शपथ खाकर करे, तो ऐसी बात में वह दोषी उस समय ठहरेगा जब उसे मालूम हो जाएगा। ९ और जब वह इन बातों में से किसी भी बात में दोषी हो, तब जिस विषय में उसने पाप किया हो वह उसको मान ले, १० और वह यहोवा के सामने अपना दोषबलि ले आए, अर्थात् उस पाप के कारण वह एक मादा भेड़ या बकरी पापबलि करने के लिये ले आए; तब याजक उस पाप के विषय उसके लिये प्रायश्चित्त करे। ११ “पर यदि उसे भेड़ या बकरी देने की समर्पण न हो, तो अपने पाप के कारण दो पिण्डुक या कबटारी के दो बच्चे दोषबलि चढ़ाने के लिये यहोवा के पास ले आए, उनमें से एक तो पापबलि के लिये और दूसरा होमबलि के लिये। १२ वह उनको याजक के पास ले आए, और उसका सिर गले से मोरड डालें, पर अलग न करे, १३ और वह पापबलि पशु के लहू में से कुछ बेटी के बाजू पर छिड़के, और जो लहू शेष रहे वह बेटी के पाए पर उण्डेला जाए; वह तो पापबलि ठहरेगा। १४ तब दूसरे पक्षी को वह नियम के अनुसार होमबलि करे, और याजक उसके पाप का प्रायश्चित्त करे, और तब वह क्षमा किया जाएगा। १५ “यदि वह दो पिण्डुक या कबूतरी

के दो बच्चे भी न दे सके, तो वह अपने पाप के कारण अपना चढ़ावा एपा का दसवाँ भाग मैदा पापबलि काके ले आए; उस पर न तो वह तेल डाले, और न लोबान रखे, क्योंकि वह पापबलि होगा । १२ वह उसको याजक के पास ले जाए, और याजक उसमें से अपनी मुट्ठी भर स्मरण दिलानेवाला भाग जानकर वेदी पर यहोवा के हवनों के ऊपर जलाए; वह तो पापबलि ठहरेगा। १३ और इन बातों में से किसी भी बात के विषय में जो कोई पाप करे, याजक उसका प्रायश्चित्त करे, और तब वह पाप क्षमा किया जाएगा। और इस पापबलि का शेष अन्नबलि के शेष के समान याजक का ठहरेगा।¹⁴ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १४ “यदि कोई यहोवा की पवित्र की हुई वस्तुओं के विषय में भूल से विश्वासघात करे और पापी ठहरे, तो वह यहोवा के पास एक निर्दोष मेडा दोषबलि के लिये ले आए; उसका दाम पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार उतने ही शेकेल चाँदी का हो जितना याजक ठहराए। १५ और जिस पवित्र वस्तु के विषय उसने पाप किया हो, उसमें वह पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर याजक को दे; और याजक दोषबलि का मेडा चढ़ाकर उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तब उसका पाप क्षमा किया जाएगा। १६ यदि कोई ऐसा पाप करे, कि उन कामों में से जिन्हें यहोवा ने मना किया है किसी काम को करे, तो चाहे वह उसके अनजान में हुआ हो, तो भी वह दोषी ठहरेगा, और उसको अपने अर्धम का भाग उठाना पड़ेगा। १७ इसलिए वह एक निर्दोष मेडा दोषबलि करके याजक के पास ले आए, वह उतने दाम का हो जितना याजक ठहराए, और याजक उसके लिये उसकी उस भूल का जो उसने अनजाने में ही प्रायश्चित्त करे, और वह क्षमा किया जाएगा। १८ यह दोषबलि ठहरे; क्योंकि वह मनुष्य निःसन्देह यहोवा के सम्मुख दोषी ठहरेगा।”

६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ “यदि कोई यहोवा का विश्वासघात करके पापी ठहरे, जैसा कि धरोहर, या लेन-देन, या लट के विषय में अपने भाई से छल करे, या उस पर अत्याचार करे, ३ या पड़ी हुई वस्तु को पाकर उसके विषय झट बोले और झूटी शपथ भी खाए; ऐसी कोई भी बात क्यों न हो जिसे करके मनुष्य पापी ठहरते हैं, ४ तो जब वह ऐसा काम करके दोषी हो जाए, तब जो भी वस्तु उसने लट, या अत्याचार करके, या धरोहर, या पड़ी पाई हो, ५ चाहे कोई वस्तु क्यों न हो जिसके विषय में उसने झूटी शपथ खाई हो; तो वह उसको पूरा-पूरा लौटा दे, और पाँचवाँ भाग भी बढ़ाकर भर दे, जिस दिन यह मालूम हो कि वह दोषी है, उसी दिन वह उस वस्तु को उसके स्वामी को लौटा दे। ६ और वह यहोवा के सम्मुख अपना दोषबलि भी ले आए, अर्थात् एक निर्दोष मेडा दोषबलि के लिये याजक के पास ले आए, वह उतनी ही दाम का हो जितना याजक ठहराए। ७ इस प्रकार याजक उसके लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करे, और जिस काम को करके वह दोषी हो गया हो उसकी क्षमा उसे मिलेगी।¹⁵ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ९ “हास्तन और उसके पुत्रों को आज्ञा देकर यह कह कि होमबलि की व्यवस्था यह है: होमबलि इंधन के ऊपर रात भर भीर तक वेदी पर पड़ा रहे, और वेदी की अग्नि वेदी पर जलती रहे। १० और याजक अपने सभी के बब्ब और अपने तन पर अपनी सभी की जाँधिया पहनकर होमबलि की राख, जो आग के भस्म करने से वेदी पर रह जाए, उसे उठाकर वेदी के पास रखे। ११ तब वह अपने ये बब्ब उतारकर दूसरे बब्ब पहनकर राख को छावनी से बाहर किसी शुद्ध स्थान पर ले जाए। १२ वेदी पर अग्नि जलती रहे, और कभी बुझने न पाए; और याजक प्रतिदिन भीर को उस पर लकड़ीयाँ जलाकर होमबलि के टुकड़ों को उसके ऊपर सजा कर धर दे, और उसके ऊपर मेलबलियों की चर्ची को जलाया करे। १३ वेदी पर आग लगातार जलती रहे, वह कभी बुझने न पाए। १४ “अन्नबलि की व्यवस्था इस प्रकार है: हास्तन के पुत्र उसको वेदी के आगे यहोवा के समीप ले आए। १५

और वह अन्नबलि के तेल मिले हुए मैदे में से मुट्ठी भर और उस पर का सब लोबान उठाकर अन्नबलि के स्मरणांश इस भाग को यहोवा के सम्मुख सुखदायक सुगन्ध के लिये वेदी पर जलाए। १६ और उसमें से जो शेष रह जाए उसे हास्तन और उसके पुत्र खाएँ; वह बिना खमीर पवित्रस्थान में खाया जाए, अर्थात् वे मिलापवाले तम्बू के आँगन में उसे खाएँ। १७ वह खमीर के साथ पकाया न जाए; क्योंकि मैदे अपने हब्य में से उसको उनका निज भाग होने के लिये उन्हें दिया है; इसलिए जैसा पापबलि और दोषबलि परमपवित्र है वैसा ही वह भी है। १८ तम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में हास्तन के बंश के सब पुष्प उसमें से खा सकते हैं, यहोवा के हवनों में से यह उनका भाग सदैव बना रहेगा; जो कोई उन हवनों को छूए वह पवित्र ठहरेगा।¹⁶ १९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २० “जिस दिन हास्तन का अभिषेक हो उस दिन वह अपने पुत्रों के साथ यहोवा को यह चढ़ावा चढ़ाए, अर्थात् एपा का दसवाँ भाग मैदा नित्य अन्नबलि में चढ़ाए, उसमें से आधा भोर को और आधा संध्या के समय चढ़ाए। २१ वह तब पर तेल के साथ पकाया जाए; जब वह तेल से तर हो जाए तब उसे ले आना, इस अन्नबलि के पके हुए टुकड़े यहोवा के सुखदायक सुगन्ध के लिये चढ़ाना। २२ हास्तन के पुत्रों में से जो भी उस याजकपद पर अभिषित होगा, वह भी उसी प्रकार का चढ़ावा चढ़ाया करे; यह विधि सदा के लिये है, कि यहोवा के सम्मुख वह सम्पूर्ण चढ़ावा जलाया जाए। २३ याजक के सम्पूर्ण अन्नबलि भी सब जलाए जाएँ; वह कभी न खाया जाए।” २४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २५ “हास्तन और उसके पुत्रों से यह कह कि पापबलि की व्यवस्था यह है: जिस स्थान में होमबलि पशु वध किया जाता है उसी में पापबलि पशु भी यहोवा के सम्मुख बलि किया जाए; वह परमपवित्र है। २६ जो याजक पापबलि चढ़ाए वह उसे खाए; वह पवित्रस्थान में, अर्थात् मिलापवाले तम्बू के आँगन में खाया जाए। २७ जो कुछ उसके माँस से छू जाए, वह पवित्र ठहरेगा; और यदि उसके लह के छीटि किसी वस्त्र पर पड़ जाएँ, तो उसे किसी पवित्रस्थान में धो देना। २८ और वह मिट्टी का पात्र जिसमें वह पकाया गया हो तोड़ दिया जाएँ; यदि वह पीतल के पात्र में उबाला गया हो, तो वह माँस जाए, और जल से धो लिया जाए। २९ याजकों में से सब पुष्प उसे खा सकते हैं; वह परमपवित्र वस्तु है। ३० पर जिस पापबलि पशु के लह में से कुछ भी लह मिलापवाले तम्बू के भीतर पवित्रस्थान में प्रायश्चित्त करने को पहुँचाया जाए, उसका माँस कभी न खाया जाएँ; वह आग में जला दिया जाए।

७ “फिर दोषबलि की व्यवस्था यह है। वह परमपवित्र है, : जिस स्थान पर होमबलि पशु का वध करते हैं उसी स्थान पर दोषबलि पशु भी बलि करें, और उसके लह को याजक वेदी पर चारों ओर छिड़के। ३१ और वह उसमें की सब चर्ची को चढ़ाए, अर्थात् उसकी मोटी पूँछ की, और जिस चर्ची से अंतिड़ीयाँ ढाँची रहती हैं वह भी, ३२ और दोनों गुर्दे और जो चर्ची उनके ऊपर और कमर के पास रहती है, और गुर्दे समेत कल्लेजे के ऊपर की झिल्ली; इन सभी को वह अलग करें; ३३ और याजक इन्हें वेदी पर यहोवा के लिये हवन करें; तब वह दोषबलि होगा। ३४ याजकों में के सब पुष्प उसमें से खा सकते हैं; वह किसी पवित्रस्थान में खाया जाएँ; क्योंकि वह परमपवित्र है। ३५ जैसा पापबलि है वैसा ही दोषबलि भी है, उन दोनों की एक ही व्यवस्था है; जो याजक उन बलियों को चढ़ा के प्रायश्चित्त करे वही उन वस्तुओं को ले ले। ३६ और जो याजक किसी के लिये होमबलि को चढ़ाए उस होमबलि पशु की खाल को वही याजक ले ले। ३७ और तंदूर में, या कढ़ाही में, या तवे पर पके हुए सब अन्नबलि उसी याजक की होंगी जो उन्हें चढ़ाता है। ३८ और सब अन्नबलि, जो चाहे तेल से सने हए हों चाहे स्त्रें हों, वे हास्तन के सब पुत्रों को एक समान मिले। ३९ “मेलबलि की जिसे कोई यहोवा के लिये चढ़ाए

व्यवस्था यह है: १२ यदि वह उसे धन्यवाद के लिये चढ़ाए, तो धन्यवाद-बलि के साथ तेल से सने हुए अखमीरी फुलके, और तेल से चुपड़ी हुईं अखमीरी रोटियाँ, और तेल से सने हुए मैटे के फुलके तेल से तर चढ़ाए। १३ और वह अपने धन्यवादवाले मेलबलि के साथ अखमीरी रोटियाँ, भी चढ़ाए। १४ और ऐसे एक-एक चढ़ावे में से वह एक-एक रोटी यहोवा को उठाने की भेट करके चढ़ाए; वह मेलबलि के लह के छिड़कनेवाले याजक की होगी। १५ और उस धन्यवादवाले मेलबलि का मौस बलिदान चढ़ाने के दिन ही खाया जाए; उसमें से कुछ भी भोर तक शेष न रह जाए। १६ पर यदि उसके बलिदान का चढ़ावा मन्त्र का या स्वेच्छा का हो, तो उस बलिदान को जिस दिन वह चढ़ाया जाए उसी दिन वह खाया जाए, और उसमें से जो शेष रह जाए वह दूरे दिन भी खाया जाए। १७ परन्तु जो कुछ बलिदान के मौस में से तीसरे दिन तक रह जाए वह आग में जला दिया जाए। १८ और उसके मेलबलि के मौस में से यदि कुछ भी तीसरे दिन खाया जाए, तो वह ग्रहण न किया जाएगा, और न उसके हित में गिना जाएगा; वह धृष्णित कर्म समझा जाएगा, और जो कोई उसमें से खाए उसका अधर्म उसी के सिर पर पड़ेगा। १९ “फिर जो मौस किसी अशुद्ध वस्तु से छू जाए वह न खाया जाए; वह आग में जला दिया जाए। फिर मेलबलि का मौस जितने शुद्ध होंगे वे ही खाएँ, २० परन्तु जो अशुद्ध होकर यहोवा के मेलबलि के मौस में से कुछ खाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए। २१ और यदि कोई किसी अशुद्ध वस्तु को छूकर यहोवा के मेलबलि पशु के मौस में से खाए, तो वह भी अपने लोगों में से नाश किया जाए, चाहे वह मनुष्य की कोई अशुद्ध वस्तु या अशुद्ध पशु या कोई भी अशुद्ध और धृष्णित वस्तु हो।” २२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २३ “इस्माएलियों से इस प्रकार कह: तुम लोग न तो बैल की कुछ चर्बी खाना और न भेड़ या बकरी की। २४ और जो पशु स्वयं मर जाए, और जो दूसरे पशु से फाड़ा जाए, उसकी चर्बी और अन्य काम में लाना, परन्तु उसे किसी प्रकार से खाना नहीं। २५ जो कोई ऐसे पशु की चर्बी खाएगा जिसमें से लोग कुछ यहोवा के लिये हवन करके चढ़ाया करते हैं वह खानेवाला अपने लोगों में से नाश किया जाएगा। २६ और तुम अपने घर में किसी भाँति का लह, चाहे पक्षी का चाहे पशु का हो, न खाना। २७ हर एक प्राणी जो किसी भाँति का लह खाएगा वह अपने लोगों में से नाश किया जाएगा।” २८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २९ “इस्माएलियों से इस प्रकार कह: जो यहोवा के लिये मेलबलि चढ़ाए वह उसी मेलबलि में से यहोवा के पास भेट ले आए; ३० वह अपने ही हाथों से यहोवा के हव्य को, अर्थात् छाती समेत चर्बी को ले आए कि छाती हिलाने की भेट करके यहोवा के सामने हिलाई जाए। ३१ और याजक चर्बी को तो बेटी पर जलाए, परन्तु छाती हास्त और उसके पुत्रों की होगी। ३२ फिर तुम अपने मेलबलियों में से दाहिनी जाँघ को भी उठाने की भेट करके याजक को दोना; ३३ हास्त के पुत्रों में से जो मेलबलि के लह और चर्बी को चढ़ाए दाहिनी जाँघ उसी का भाग होगा। ३४ क्योंकि इस्माएलियों के मेलबलियों में से हिलाने की भेट की छाती और उठाने की भेट की जाँघ को लेकर मैंने याजक हास्त और उसके पुत्रों को दिया है, कि यह सर्वदा इस्माएलियों की ओर से उनका हक बना रहे। ३५ “जिस दिन हास्त और उसके पुत्र यहोवा के समीप याजकपट के लिये लाए गए, उसी दिन यहोवा के हव्यों में से उनका यही अभिवित भाग ठहराया गया; ३६ अर्थात् जिस दिन यहोवा ने उनका अभिवेक किया उसी दिन उसने आज्ञा दी कि उनको इस्माएलियों की ओर से ये भाग नित्य मिला करें; उनकी पीढ़ी-पीढ़ी के लिये उनका यही हक ठहराया गया।” ३७ होमबलि, अन्नबलि, पापबलि, दोषबलि, याजकों के संस्कार बलि, और मेलबलि की व्यवस्था यही है; ३८ जब यहोवा

ने सीने पर्वत के पास के जंगल में मूसा को आज्ञा दी कि इस्माएली मेरे लिये क्या-क्या चढ़ावा चढ़ाएँ, तब उसने उनको यही व्यवस्था दी थी।

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ३९ “तू हास्त और उसके पुत्रों के बच्चों, और अभिवेक के तेल, और पापबलि के बछड़े, और दोनों मेडों, और अखमीरी रोटी की टोकरी को ४० मिलापबलि तम्बू के द्वार पर ले आ, और वही सारी मण्डली को इकट्ठा कर।” ४१ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया; और मण्डली मिलापबलि तम्बू के द्वार पर इकट्ठा हुई। ४२ तब मूसा ने मण्डली से कहा, “जो काम करने की आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है।” ४३ फिर मूसा ने हास्त और उसके पुत्रों को समीप ले जाकर जल से नहलाया। ४४ तब उसने उनको अंगरखा पहनाया, और कमरबन्ध लपेटकर बागा पहना दिया, और एपोद लगाकर एपोद के काढ़े हुए पटे से एपोद को बाँधकर कस दिया। ४५ और उसने चपरास लगाकर चपरास में ऊरीम और तुम्मीम रख दिए। ४६ तब उसने उसके सिर पर पगड़ी बाँधकर पगड़ी के सामने सोने के टीके को, अर्थात् पवित्र मुकुट को लगाया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। ४७ तब मूसा ने अभिवेक का तेल लेकर निवास का और जो कुछ उसमें था उन सब का भी अभिवेक करके उन्हें पवित्र किया। ४८ और उस तेल में से कुछ उसने बेदी पर सात बार छिड़का, और सम्पूर्ण सामान समेत बेदी का और पाए समेत हौदी का अभिवेक करके उन्हें पवित्र किया। ४९ और उसने अभिवेक के तेल में से कुछ हास्त के सिर पर डालकर उसका अभिवेक करके उसे पवित्र किया। ५० फिर मूसा ने हास्त के पुत्रों को समीप ले आकर, अंगरखे पहनाकर, कमरबन्ध बाँध के उनके सिर पर टोरी रख दी, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। ५१ तब वह पापबलि के बछड़े को समीप ले गया; और हास्त और उसके पुत्रों ने अपने-अपने हाथ पापबलि के बछड़े के सिर पर रखे। ५२ तब वह बलि किया गया, और मूसा ने लह को लेकर उँगली से बेदी के चारों सींगों पर लगाकर पवित्र किया, और लह को बेदी के पाए पर उण्डेल दिया, और उसके लिये प्रायश्चित्त करके उसको पवित्र किया। ५३ और मूसा ने अंतिडियों पर की सब चर्बी, और कलेजे पर की झिल्ली, और चर्बी समेत दोनों गुर्दों को लेकर बेदी पर जलाया। ५४ परन्तु बछड़े में से जो कुछ शेष रह गया उसको, अर्थात् गोबर समेत उसकी खाल और मौस को उसने छावनी से बाहर आग में जलाया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। ५५ फिर वह होमबलि के मेडे को समीप ले गया, और हास्त और उसके पुत्रों ने अपने-अपने हाथ मेडे के सिर पर रखे। ५६ तब वह बलि किया गया, और मूसा ने उसका लह बेदी पर चारों ओर छिड़का। ५७ तब मेडा टुकड़े-टुकड़े किया गया, और मूसा ने सिर और चर्बी समेत टुकड़ों को जलाया। ५८ तब अंतिडियों और पाँव जल से धोये गए, और मूसा ने पौरे मेडे को बेदी पर जलाया, और वह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये होमबलि और यहोवा के लिये हव्य हो गया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। ५९ फिर वह दूसरे मेडे को जो संस्कार का मेडा था समीप ले गया, और हास्त और उसके पुत्रों ने अपने-अपने हाथ मेडे के सिर पर रखे। ६० तब वह बलि किया गया, और मूसा ने उसका लह बेदी पर चारों ओर छिड़का। ६१ तब वह बलि किया गया, और मूसा ने सिर और चर्बी समेत टुकड़ों को जलाया। ६२ तब अंतिडियों और पाँव जल से धोये गए, और मूसा ने पौरे मेडे को बेदी पर जलाया, और वह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये होमबलि और यहोवा के लिये हव्य हो गया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। ६३ फिर वह दूसरे मेडे को जो संस्कार का मेडा था समीप ले गया, और हास्त और उसके पुत्रों ने अपने-अपने हाथ मेडे के सिर पर रखे। ६४ तब वह बलि किया गया, और मूसा ने उसके लह में से कुछ लेकर हास्त के दाहिने कान के सिरे पर और दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अँगठों पर लगाया; और मूसा ने लह को बेदी पर चारों ओर छिड़का। ६५ और उसने चर्बी, और मोटी पैँछ, और अंतिडियों पर की सब चर्बी, और कलेजे पर की झिल्ली समेत दोनों गुर्दे, और दाहिनी जाँघ, ये सब लेकर अलग रखे; ६६ और अखमीरी रोटी की टोकरी जो यहोवा के आगे रखी गई थी उसमें से

एक अखमीरी रोटी, और तेल से सने हुए मैटे का एक फुलका, और एक पपड़ी लेकर चब्बी और दाहिनी जाँघ पर रख दी; २० और ये सब वस्तुएँ हास्न और उसके पुत्रों के हाथों पर रख दी गईं, और हिलाने की भेट के लिये यहोवा के सामने हिलाइ गई। २१ तब मूसा ने उन्हें फिर उनके हाथों पर से लेकर उन्हें बेटी पर होमबलि के ऊपर जलाया, यह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये संस्कार की भेट और यहोवा के लिये हथ्या था। २२ तब मूसा ने छाती को लेकर हिलाने की भेट के लिये यहोवा के आगे हिलाया; और संस्कार के मेडे में से मूसा का भाग यही हुआ जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। २३ तब मूसा ने अभिषेक के तेल और बेटी पर के लह, दोनों में से कुछ लेकर हास्न और उसके बच्चों पर, और उसके पुत्रों और उनके बच्चों पर भी छिड़का; और उसने बच्चों समेत हास्न को भी पवित्र किया। २४ तब मूसा ने हास्न और उसके पुत्रों से कहा, “माँस को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर पकाओ, और उस रोटी को जो संस्कार की टोकरी में है वही खाओ, जैसा मैंने आज्ञा दी है कि हास्न और उसके पुत्र उसे खाएँ।” २५ और माँस और रोटी में से जो शेष रह जाए उसे आग में जला देना। २६ और जब तक तुम्हेरे संस्कार के दिन पूरे न हों तब तक, अर्थात् सात दिन तक मिलापवाले तम्बू के द्वार के बाहर न जाना, क्योंकि वह सात दिन तक तुम्हारा संस्कार करता रहेगा। २७ जिस प्रकार आज किया गया है वैसा ही करने की आज्ञा यहोवा ने दी है, जिससे तुम्हारा प्रायश्चित्त किया जाए। २८ इसलिए तुम मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सात दिन तक दिन-रात ठहरे रहना, और यहोवा की आज्ञा को मानना, ताकि तुम मर न जाओ, क्योंकि ऐसी ही आज्ञा मुझे दी गई है।” २९ तब यहोवा की इन्हीं सब आज्ञाओं के अनुसार जो उसने मूसा के द्वार दी थी हास्न और उसके पुत्रों ने किया।

१ आठवें दिन मूसा ने हास्न और उसके पुत्रों को और इसाएली पुरनियों को बुलाकर हास्न से कहा, १ “पापबलि के लिये एक निर्दोष बछड़ा, और होमबलि के लिये एक निर्दोष मेडा लेकर यहोवा के सामने भेट चढ़ा। २ और इसाएलियों से यह कह, ‘तुम पापबलि के लिये एक बकरा, और होमबलि के लिये एक बछड़ा और एक भेड़ का बच्चा तो, जो एक वर्ष के हों और निर्दोष हों, ३ और मेलबलि के लिये यहोवा के सम्मुख चढ़ाने के लिये एक बैल और एक मेडा, और तेल से सने हुए मैटे का एक अन्नबलि भी ले लो; क्योंकि आज यहोवा तुम को दर्शन देगा।’” ४ और जिस-जिस वस्तु की आज्ञा मूसा ने दी उन सब को वे मिलापवाले तम्बू के आगे ले आए; और सारी मण्डली समीप जाकर यहोवा के सामने खड़ी हुई। ५ तब मूसा ने कहा, “यह वह काम है जिसके करने के लिये यहोवा ने आज्ञा दी है कि तुम उसे करो; और यहोवा की महिमा का तेज तुम को दिखाई पड़ेगा।” ६ तब मूसा ने हास्न से कहा, “यहोवा की आज्ञा के अनुसार बेटी के समीप जाकर अपने पापबलि और होमबलि को चढ़ाकर अपने और सब जनता के लिये प्रायश्चित्त कर।” ७ इसलिए हास्न ने बेटी के समीप जाकर अपने पापबलि के बछड़े को बलिदान किया। ८ और हास्न के पुत्र लह को उसके पास ले गए, ९ तब उन्हें अपनी उँगली को लह में डुबाकर बेटी के सीधों पर लह को लगाया, और शेष लह को बेटी के पाए पर उण्डेल दिया; १० और पापबलि में की चब्बी और गुर्दों और कत्तेजे पर की छिल्ली को उसने बेटी पर जलाया, जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। ११ और माँस और खाल को उसने छावनी से बाहर आग में जलाया। १२ तब होमबलि पश्च को बलिदान किया; और हास्न के पुत्रों ने लह को उक्ते हाथ में दिया, और उसने उसको बेटी पर चारों ओर छिड़क दिया। १३ तब उन्होंने होमबलि पश्च को टुकड़े-टुकड़े करके सिर सहित उसके हाथ में दे दिया और उसने उनको बेटी पर जला दिया। १४ और उसने अंतिंगियों और पाँवों को

धोकर बेटी पर होमबलि के ऊपर जलाया। १५ तब उसने लोगों के चढ़ावे को आगे लेकर और उस पापबलि के बकरे को जो उनके लिये था लेकर उसका बलिदान किया, और पहले के समान उसे भी पापबलि करके चढ़ाया। १६ और उसने होमबलि को भी समीप ले जाकर विधि के अनुसार चढ़ाया। १७ और अन्नबलि को भी समीप ले जाकर उसमें से मुश्ती भर बेटी पर जलाया, यह भार के होमबलि के अलावा चढ़ाया गया। १८ बैल और मेडा, अर्थात् जो मेलबलि पश्च जनता के लिये थे वे भी बलि किए गए; और हास्न के पुत्रों ने लह को उसके हाथ में दिया, और उसने उसको बेटी पर चारों ओर छिड़क दिया; १९ और उन्होंने बैल की चब्बी को, और मेडे में से मोटी पैंछ को, और जिस चब्बी से अंतिंगियाँ ढाई रहती हैं उसको, और गुर्दों सहित कलेजे पर की छिल्ली को भी उसके हाथ में दिया; २० और उन्होंने चब्बी को छातियों पर रखा; और उसने वह चब्बी बेटी पर जलाई, २१ परन्तु छातियों और दाहिनी जाँघ को हास्न ने मूसा की आज्ञा के अनुसार हिलाने की भेट के लिये यहोवा के सामने हिलाया। २२ तब हास्न ने लोगों की ओर हाथ बढ़ाकर उन्हें अशीर्वाद दिया; और पापबलि, होमबलि, और मेलबलियों को चढ़ाकर वह नीचे उतर आया। २३ तब मूसा और हास्न मिलापवाले तम्बू में गए, और निकलकर लोगों को अशीर्वाद दिया; तब यहोवा का तेज सारी जनता को दिखाई दिया। २४ और यहोवा के सामने से आग निकली चब्बी सहित होमबलि को बेटी पर भस्म कर दिया; इसे देखकर जनता ने जय जयकर का नारा लगाया, और अपने-अपने मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया।

१० तब नादाब और अबीह नामक हास्न के दो पुत्रों ने अपना-अपना धूपदान लिया, और उनमें आग भरी, और उमेर धूप डालकर उस अनुचित आग को जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी यहोवा के सम्मुख अर्पित किया। ११ तब यहोवा के सम्मुख से आग निकली और उन दोनों को भस्म कर दिया, और वे यहोवा के सामने मर गए। १२ तब मूसा ने हास्न से कहा, “यह वही बात है जिसे यहोवा ने कहा था, कि जो मेरे समीप आए अवश्य है कि वह मुझे पवित्र जाने, और सारी जनता के सामने मेरी महिमा करे।” और हास्न चुप रहा। १३ तब मूसा ने मीशाएल और एलसाफान को जो हास्न के चाचा उज्जीएल के पुत्र थे बुलाकर कहा, “निकट आओ, और अपने भर्तीजों को पवित्रस्थान के आगे से उठाकर छावनी के बाहर ले जाओ।” १४ मूसा की इस आज्ञा के अनुसार वे निकट जाकर उनको अंगरखों सहित उठाकर छावनी के बाहर ले गए। १५ तब मूसा ने हास्न से और उसके पुत्र एलीआजर और ईतामार से कहा, “तुम लोग अपने सिरों के बाल मत बिखराओ, और न अपने बच्चों को फाड़ो, ऐसा न हो कि तुम भी मर जाओ, और सारी मण्डली पर उसका क्रोध भड़क उठे; परन्तु इसाएल के सारे घराने के लोग जो तुम्हारे भाई-बच्चे हैं वह यहोवा की लगाई हुई आग पर विलाप करें। १६ और तुम लोग मिलापवाले तम्बू के द्वार के बाहर न जाना, ऐसा न हो कि तुम मर जाओ; व्योंकि यहोवा के अभिषेक का तेल तुम पर लगा हुआ है।” मूसा के इस वचन के अनुसार उन्होंने किया। १७ फिर यहोवा ने हास्न से कहा, १८ “जब जब तू या तेरे पुत्र मिलापवाले तम्बू में आएँ तब-तब तुम में से कोई न तो दाखमधू पीए हो न और किसी प्रकार का मध्य, कहीं ऐसा न हो कि तुम मर जाओ; तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में यह विधि प्रवर्चित हो, १९ जिससे तुम पवित्र और अवित्र में, और शूल और अशूल में अन्तर कर सको; २० और इसाएलियों को उन सब विधियों को सिखा सको जिसे यहोवा ने मूसा के द्वारा उनको बता दी है।” २१ फिर मूसा ने हास्न से और उसके बचे हुए दोनों पुत्र एलीआजर और ईतामार से भी कहा, “यहोवा के हथ्य में से जो अन्नबलि बचा है उसे लेकर बेटी के पास बिना

खमीर खाओ, क्योंकि वह परमपवित्र है; १३ और तुम उसे किसी पवित्रस्थान में खाओ, वह यहोवा के हृत्य में से तेरा और रौप्रयुक्तों का हक्क है, क्योंकि मैंने ऐसी ही आज्ञा पाई है। १४ तब हिलाई हुई भेट की छाती और उठाई हुई भेट की जाँच को तुम लोग, अर्थात् तू और रौप्रयुक्तियाँ सब किसी शुद्ध स्थान में खाओ; क्योंकि वे इसाएलियों के मेलबलियों में से तुझे और तेरे बच्चों का हक्क ठहरा दी गई है। १५ चर्ची के हृत्यों समेत जो उठाई हुई जाँच और हिलाई हुई छाती यहोवा के सामने हिलाने के लिये आया करोए, ये भाग यहोवा की आज्ञा के अनुसार सर्वदा की विधि की व्यवस्था से तेरे और तेरे बच्चों के लिये है।” १६ फिर मूसा ने पापबलि के बकरे की खोजबीन की, तो क्या पाया कि वह जलाया गया है, इसलिए एलीआजर और ईतामार जो हास्तन के पुरु बचे थे उनसे वह क्रोध में आकर कहने लगा, १७ “पापबलि जो परमपवित्र है और जिसे यहोवा ने तुम्हें इसलिए दिया है कि तुम मण्डली के अर्थमें का भार अपने पर उठाकर उनके लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करो, तुम ने उसका माँस पवित्रस्थान में क्यों नहीं खाया? १८ देखो, उसका लहू पवित्रस्थान के भीतर तो लाया ही नहीं गया, निःसन्देह उचित था कि तुम मेरी आज्ञा के अनुसार उसके माँस को पवित्रस्थान में खोता।” १९ इसका उत्तर हास्तन ने मूसा को इस प्रकार दिया, “देख, आज ही उन्होंने अपने पापबलि और होमबलि को यहोवा के सामने चढ़ाया; फिर मुझ पर ऐसी विपत्तियाँ आ पड़ी हैं! इसलिए यदि मैं आज पापबलि का माँस खाता तो क्या यह बात यहोवा के सम्मुख भली होती?” २० जब मूसा ने यह सुना तब उसे संतोष हुआ।

११ फिर यहोवा ने मूसा और हास्तन से कहा, २ “इसाएलियों से कहो: जितने पशु पृथ्वी पर हैं उन सभी में से तुम इन जीवधारियों का माँस खा सकते हो। ३ पशुओं में से जितने चिरे या फटे खुर के होते हैं और पागुर करते हैं उन्हें खा सकते हो। ४ परन्तु पागुर करनेवाले या फटे खुरवालों में से इन पशुओं को न खाना, अर्थात् ५, जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, वह भी तुम्हारे लिये अशुद्ध है। ६ और खरगोश, जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता, इसलिए वह भी तुम्हारे लिये अशुद्ध है। ७ और सूअर, जो चिरे अर्थात् फटे खुर का होता तो है परन्तु पागुर नहीं करता, इसलिए वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है। ८ इनके माँस में से कुछ न खाना, और इनकी लोथ को छूना भी नहीं; ये तो तुम्हारे लिये अशुद्ध है। ९ “फिर जितने जलजन्तु हैं उनमें से तुम इन्हें खा सकते हों, अर्थात् समुद्र या नदियों के जलजन्तुओं में से जितनों के पंख और चोंघेटे होते हैं उन्हें खा सकते हो। १० और जलचरी प्राणियों में से जितने जीवधारी बिना पंख और चोंघेटे के समुद्र या नदियों में रहते हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं। ११ वे तुम्हारे लिये घृणित ठहरें; तुम उनके माँस में से कुछ न खाना, और उनकी लोथों को अशुद्ध जानना। १२ जल में जिस किसी जन्तु के पंख और चोंघेटे नहीं होते वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है। १३ “फिर पक्षियों में से इनको अशुद्ध जानना, ये अशुद्ध होने के कारण खाए न जाएं, अर्थात् उकाब, हड्डफोड, कुरर, १४ चील, और भाँति-भाँति के बाज, १५ और भाँति-भाँति के सब काग, १६ शुरुमुर्ग, तखमास, जलकुक्कट, और भाँति-भाँति के शिकरे, १७ हबासिल, हाडगील, उल्ल, १८ राजहैंस, धनेश, पिढ़, १९ सारस, भाँति-भाँति के बगुले, टिटीही और चम्मादड। २० “जिनके पंखवाले कीड़े चार पाँवों के बल चलते हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं। २१ पर रेगेवाले और पंखवाले जो चार पाँवों के बल चलते हैं, जिनके भूमि पर कूदने फाँदे को टाँगे होती हैं उनको तो खा सकते हो। २२ वे ये हैं, अर्थात् भाँति-भाँति की टिड़ी, भाँति-भाँति के फनगे,

भाँति-भाँति के झीगुर, और भाँति-भाँति के टिड़े। २३ परन्तु और सब रेगेवाले पंखवाले जो चार पाँव वाले होते हैं वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं। २४ “इनके कारण तुम अशुद्ध ठहरोगे; जिस किसी से इनकी लोथ छू जाए वह साँझ तक अशुद्ध ठहरे। २५ और जो कोई इनकी लोथ में का कुछ भी उठाए वह अपने बब्ल धोए और साँझ तक अशुद्ध रहे। २६ फिर जितने पशु चिरे खुर के होते हैं परन्तु न तो बिलकुल फटे खुर और न पागुर करनेवाले हैं वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; जो कोई उन्हें छूए वह अशुद्ध ठहरेगा। २७ और चार पाँव के बल चलनेवालों में से जितने पंजों के बल चलते हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; जो कोई उनकी लोथ छूए वह साँझ तक अशुद्ध रहे। २८ और जो कोई उनकी लोथ छूए वह अशुद्ध है। २९ “और जो पृथ्वी पर रेगते हैं उनमें से ये रेगेवाले तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं, अर्थात् नेवाला, चूहा, और भाँति-भाँति के गोह, ३० और छिपकली, मार, टिकटिक, सांडा, और मिरापीट। ३१ सब रेगेवालों में से ये ही तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; जो कोई इनकी लोथ छूए वह साँझ तक अशुद्ध रहे। ३२ और इनमें से किसी की लोथ जिस किसी वस्तु पर पड़ पड़ जाए वह भी अशुद्ध ठहरे, चाहे वह काठ का कोई पात्र हो, चाहे बब्ल, चाहे खाल, चाहे बोरा, चाहे किसी काम का कैसा ही पात्र आदि क्यों न हो; वह जल में डाला जाए, और साँझ तक अशुद्ध रहे, तब शुद्ध समझा जाए। ३३ और यदि मिट्टी का कोई पात्र हो जिसमें इन जन्तुओं में से कोई पड़े, तो उस पात्र में जो कुछ हो वह अशुद्ध ठहरे, और पात्र को तुम तोड़ डालना। ३४ उसमें जो खाने के योग्य भोजन हो, जिसमें पानी का छुआव हो वह सब अशुद्ध ठहरे; फिर यदि ऐसी पानी के लिये कुछ हो तो वह भी अशुद्ध ठहरे। ३५ और यदि इनकी लोथ में का कुछ तंदूर या चूल्हे पर पड़े तो वह भी अशुद्ध ठहरे, और तोड़ डाला जाए; क्योंकि वह अशुद्ध हो जाएगा, वह तुम्हारे लिये भी अशुद्ध ठहरे। ३६ परन्तु सोता या तालाब जिसमें जल इकट्ठा हो वह तो शुद्ध ही रहे; परन्तु जो कोई इनकी लोथ को छूए वह अशुद्ध ठहरे। ३७ और यदि इनकी लोथ में का कुछ किसी प्रकार के बीज पर जो बोने के लिये हो पड़े, तो वह बीज शुद्ध रहे; ३८ पर यदि बीज पर जल डाला गया हो और पीछे लोथ में का कुछ उस पर पड़ जाए, तो वह तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहरे। ३९ फिर जिन पशुओं के खाने की आज्ञा तुम को दी गई है यदि उनमें से कोई पशु मरे, तो जो कोई उसकी लोथ छूए वह साँझ तक अशुद्ध रहे। ४० और उसकी लोथ में से जो कोई कुछ खाए वह अपने बब्ल धोए और साँझ तक अशुद्ध रहे; और जो कोई उसकी लोथ उठाए वह भी अपने बब्ल धोए और साँझ तक अशुद्ध रहे। ४१ वे खाए न जाएँ। ४२ पृथ्वी पर सब रेगेवालों में से जितने पेट या चार पाँवों के बल चलते हैं, या अधिक पाँव वाले होते हैं, उन्हें तुम न खाना; क्योंकि वे जिनमें हैं। ४३ तुम किसी प्रकार के रेगेवाले जन्तु के द्वारा अपने आपको धिनौना न करना; और न उनके द्वारा अपने को अशुद्ध करके अपवित्र ठहराना। ४४ क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ; इस कारण अपने को शुद्ध करके पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ। इसलिए तुम किसी प्रकार के रेगेवाले जन्तु के द्वारा जो पृथ्वी पर चलता है अपने आपको अशुद्ध न करना। ४५ क्योंकि मैं वह यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्र देश से इसलिए निकाल ले आया हूँ कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरू; इसलिए तुम किसी प्रकार के रेगेवाले जन्तु के द्वारा जो पृथ्वी पर चलता है अपने आपको अशुद्ध न करना। ४६ “पशुओं, पश्चियों, और सब जलचरी प्राणियों, और पृथ्वी पर सब रेगेवाले प्राणियों के विषय में यही व्यवस्था है, ४७ कि शुद्ध अशुद्ध और भक्ष्य और अभक्ष्य जीवधारियों में भेद किया जाए।”

१२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ “इसाएलियों से कह: जो श्री गर्भवती हो और उसके लड़का हो, तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी; जिस प्रकार

वह क्रतुमती होकर अशुद्ध रहा करती। ५ और आठवें दिन लड़के का खतना किया जाए। ६ फिर वह झीं अपने शुद्ध करनेवाले स्थिर में तैतीस दिन रहे; और जब तक उसके शुद्ध हो जाने के दिन पूरे न हों तब तक वह न तो किसी पवित्र वस्तु को छाप, और न पवित्रस्थान में प्रवेश करे। ७ और यदि उसके लड़की पैदा हो, तो उसको क्रतुमती की सी अशुद्धता चौदह दिन की लगे, और फिर छियासठ दिन तक अपने शुद्ध करनेवाले रुधिर में रहें। ८ “जब उसके शुद्ध हो जाने के दिन पूरे हों, तब बाहे उसके बेटा हुआ हो चाहे बेटी, वह होमबलि के लिये एक वर्ष का भेड़ का बच्चा, और पापबलि के लिये कबूतरी का एक बच्चा या पिण्डकी मिलावताने तम्बू के द्वार पर याजक के पास लाए। ९ तब याजक उसको यहोवा के सामने भेट चढ़ाकर उसके लिये प्रायश्चित्त करे; और वह अपने स्थिर के बहने की अशुद्धता से छूटकर शुद्ध ठहरेगी। जिस झीं के लड़का या लड़की उत्पन्न हो उसके लिये यही व्यवस्था है। १० और यदि उसके पास भेड़ या बकरी देने की पूँजी न हो, तो दो पिण्डकी या कबूतरी के दो बच्चे, एक तो होमबलि और दूसरा पापबलि के लिये दें; और याजक उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तब वह शुद्ध ठहरेगी।”

१३ फिर यहोवा ने मूसा और हास्न से कहा, १ “जब किसी मनुष्य के शरीर

के चर्म में सूजन या पापड़ी या दाग हो, और इससे उसके चर्म में कोढ़ की व्याधि के समान कुछ दिखाई पड़े, तो उसे हास्न याजक के पास या उसके पुरु जो याजक हैं, उनमें से किसी के पास ले जाएँ। २ जब याजक उसके चर्म की व्याधि को देखे, और यदि उस व्याधि के स्थान के रोएँ उजले हो गए हों और व्याधि चर्म से गहरी दिखाई पड़े, तो वह जान ले कि कोढ़ की व्याधि है; और याजक उस मनुष्य को देखकर उसको अशुद्ध ठहराए। ३ पर यदि वह दाग उसके चर्म में उजला तो हो, परन्तु चर्म से गहरा न देख पड़े, और न वहाँ के रोएँ उजले हो गए हों, तो याजक उसको सात दिन तक बन्द करके रखे; ४ और सातवें दिन याजक उसको देखे, और यदि वह व्याधि जैसी की तैरी बनी रहे और उसके चर्म में न फैली हो, तो याजक उसको और भी सात दिन तक बन्द करके रखे; ५ और सातवें दिन याजक उसको फिर देखे, और यदि देख पड़े कि व्याधि की चमक कम है और व्याधि चर्म पर फैली न हो, तो याजक उसको शुद्ध ठहराए; क्योंकि उसके तो चर्म में पापड़ी है; और वह अपने वज्र धोकर शुद्ध हो जाए। ६ पर यदि याजक की उस जाँच के पश्चात् जिसमें वह शुद्ध ठहराया गया था, वह पहुँची उसके चर्म पर बहुत फैला जाए, तो वह फिर याजक को दिखाया जाए; ७ और यदि याजक को देख पड़े कि पापड़ी चर्म में फैला गई है, तो वह उसको अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह कोढ़ ही है। ८ “यदि कोढ़ की सी व्याधि किसी मनुष्य के हो, तो वह याजक के पास पहुँचाया जाए, ९ और याजक उसको देखे, और यदि वह सूजन उसके चर्म में उजली हो, और उसके कारण रोएँ भी उजले हो गए हों, और उस सूजन में बिना चर्म का माँस हो, १० तो याजक जाने कि उसके चर्म में पुराना कोढ़ है, इसलिए वह उसको अशुद्ध ठहराए; और बन्द न रखे, क्योंकि वह तो अशुद्ध है। ११ और यदि कोढ़ किसी के चर्म में फैटकर यहाँ तक फैला जाए, कि जहाँ कहीं याजक देखे रोगी के सिर से पैर के तलवे तक कोढ़ ने सारे चर्म को छा लिया हो, १२ तो याजक ध्यान से देखे, और यदि कोढ़ ने उसके सारे शरीर को छा लिया हो, तो वह उस व्यक्ति को शुद्ध ठहराए; और उसका शरीर जो बिलकुल उजला हो गया है वह शुद्ध ही ठहरे। १३ पर जब उसमें चर्महीन माँस देख पड़े, तब तो वह अशुद्ध ठहरे। १४ और याजक चर्महीन माँस को देखकर उसको अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वैसा चर्महीन माँस अशुद्ध ही होता है; वह कोढ़ है। १५ पर यदि वह चर्महीन माँस फिर उजला हो जाए, तो वह मनुष्य याजक के पास जाए, १६ और याजक उसको देखे, और यदि वह व्याधि फिर से उजली हो गई हो, तो

याजक रोगी को शुद्ध जाने; वह शुद्ध है। १७ “फिर यदि किसी के चर्म में फोड़ा होकर चंगा हो गया हो, १८ और फोड़े के स्थान में उजली सी सूजन या लाली लिये हुए उजला दाग हो, तो वह याजक को दिखाया जाए; १९ और याजक उस सूजन को देखे, और यदि वह चर्म से गहरा दिखाई पड़े, और उसके रोएँ भी उजले हो गए हों, तो याजक यह जानकर उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह कोढ़ की व्याधि है जो फोड़े में से फूटकर निकली है। २० परन्तु यदि याजक देखे कि उसमें उजले रोएँ नहीं हैं, और वह चर्म से गहरी नहीं, और उसकी चमक कम हुई है, तो याजक उस मनुष्य को सात दिन तक बन्द करके रखे, २१ और याजक उस जलने का धाव हो, और उस जलने के धाव में चर्महीन दाग लाली लिये हुए उजला या उजला ही हो जाए, २२ तो याजक उसको देखे, और यदि उस दाग में के रोएँ उजले हो गए हों और वह चर्म से गहरा दिखाई पड़े, तो वह कोढ़ है; जो उस जलने के दाग में से फूट निकला है; याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि उसमें कोढ़ की व्याधि है। २३ पर यदि याजक देखे, कि दाग में उजले रोएँ नहीं और न वह चर्म से कुछ गहरा है, और उसकी चमक कम हुई है, तो वह उसको सात दिन तक बन्द करके रखे, २४ और सातवें दिन याजक उसको देखे, और यदि वह चर्म में फैला गई हो, तो वह उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि उसको कोढ़ की व्याधि है। २५ परन्तु यदि वह दाग चर्म में नहीं फैला और अपने स्थान ही पर जहाँ का तहाँ बना हो, और उसकी चमक कम हुई हो, तो वह जल जाने के कारण सूजा हुआ है, याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए; क्योंकि वह दाग जल जाने के कारण से है। २६ पर यदि किसी पुस्त या झीं के सिर पर, या पुस्त की दाढ़ी में व्याधि हो, २७ तो याजक व्याधि को देखे, और यदि वह चर्म से गहरी देख पड़े, और उसमें भूरे-भूरे पतले बाल हों, तो याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; वह व्याधि सेहुआ, अर्थात् सिर या दाढ़ी का कोढ़ है। २८ और यदि याजक सेहुएँ की व्याधि को देखे, कि वह चर्म से गहरी नहीं है और उसमें काले-काले बाल नहीं हैं, तो वह सेहुएँ के रोगी को सात दिन तक बन्द करके रखे, २९ और सातवें दिन याजक व्याधि को देखे, तब यदि वह सेहुआ फैला न हो, और उसमें भूरे-भूरे बाल न हों, और सेहुआ चर्म से गहरा न देख पड़े, ३० तो यह मनुष्य मुँड़ा जाए, परन्तु जहाँ सेहुआ हो वहाँ न मुँड़ा जाए, और याजक उस सेहुएँ वाले को और भी सात दिन तक बन्द करे; ३१ और सातवें दिन याजक सेहुएँ को देखे, और यदि वह सेहुआ चर्म में फैला न हो और चर्म से गहरा न देख पड़े, तो याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए; और वह अपने वज्र धोकर शुद्ध ठहरे। ३२ पर यदि उसके शुद्ध ठहरने के फैश्वात् सेहुआ चर्म में कुछ भी फैले, ३३ तो याजक उसको देखे, और यदि वह चर्म में फैला हो, तो याजक भूरे बाल न ढूँढ़े, क्योंकि वह मनुष्य अशुद्ध है। ३४ परन्तु यदि उसकी ढूँढ़ि में वह सेहुआ जैसे का तैसा बना हो, और उसमें काले-काले बाल जमे हों, तो वह जाने की सेहुआ चंगा हो गया है, और वह मनुष्य शुद्ध है; याजक उसको शुद्ध ही ठहराए। ३५ “फिर यदि किसी पुस्त या झीं के चर्म में उजले दाग हों, ३६ तो याजक देखे, और यदि उसके चर्म में वे दाग कम उजले हों, तो वह जाने कि उसको चर्म में निकली हुई दाद ही है; वह मनुष्य शुद्ध ठहरे। ३७ “फिर याजक के बाल झड़ गए हों, तो जानना कि वह चन्द्रुला तो है परन्तु शुद्ध है। ३८ और याजक के आगे के बाल झड़ गए हों, तो वह माथे का चन्द्रुला तो है परन्तु शुद्ध है। ३९ परन्तु यदि चन्द्रुले सिर पर या चन्द्रुले माथे पर लाली लिये

हुए उजली व्याधि हो, तो जानना कि वह उसके चन्दूले सिर पर या चन्दूले माथे पर निकला हुआ कोढ़ है। ४३ इसलिए याजक उसको देखे, और यदि व्याधि की सूजन उसके चन्दूले सिर या चन्दूले माथे पर ऐसी लाली लिये हुए उजली हो जैसा चर्म के कोढ़ मैं होता है, ४४ तो वह मनुष्य कोढ़ी है और अशुद्ध है; और याजक उसको अवश्य अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह व्याधि उसके सिर पर है। ४५ “जिसमें वह व्याधि हो उस कोढ़ी के बब्ल फटे और सिर के बाल बिखरे रहें, और वह आपे ऊपरवाले होंठ को ढाँपे हुए अशुद्ध, अशुद्ध पुकारा करे। ४६ जितने दिन तक वह व्याधि उसमें रहे उन्हें दिन तक वह तो अशुद्ध रहेगा; और वह अशुद्ध ठहरा रहे, इसलिए वह अकेला रहा करे, उसका निवास-स्थान छानी के बाहर हो। ४७ “फिर जिस बब्ल में कोढ़ की व्याधि हो, चाहे वह बब्ल ऊन का हो चाहे सनी का, ४८ वह व्याधि चाहे उस सनी या ऊन के बब्ल के ताने में हो चाहे बाने में, या वह व्याधि चमड़े में या चमड़े की बनी हुई किसी वस्तु में हो, ४९ यदि वह व्याधि किसी बब्ल के चाहे ताने में चाहे बाने में, या चमड़े में या चमड़े की किसी वस्तु में हरी हो या लाल सी हो, तो जानना कि वह कोढ़ी की व्याधि है और वह याजक को दिखाई जाए। ५० और याजक व्याधि को देखे, और व्याधिवाली वस्तु को सात दिन के लिये बन्द करें; ५१ और सारावें दिन वह उस व्याधि को देखे, और यदि वह बब्ल के चाहे ताने में चाहे बाने में, या चमड़े में या चमड़े की बनी हुई किसी वस्तु में फैल गई हो, तो जानना कि व्याधि गलित कोढ़ है, इसलिए वह वस्तु, चाहे कैसे ही काम में क्यों न आती हो, तो भी अशुद्ध ठरेरगी। ५२ वह उस बब्ल को जिसके ताने या बाने में वह व्याधि हो, चाहे वह ऊन का हो चाहे सनी का, या चमड़े की वस्तु हो, उसको जला दे, वह व्याधि गलित कोढ़ की है; वह वस्तु आग में जलाई जाए। ५३ “यदि याजक देखे कि वह व्याधि उस बब्ल के ताने या बाने में, या चमड़े की उस वस्तु में नहीं फैली, ५४ तो जिस वस्तु में व्याधि हो उसके धोने की आज्ञा दे, तब उसे और भी सात दिन तक बन्द करके रखें; ५५ और उसके धोने के बाद याजक उसको देखे, और यदि व्याधि का न तो रंग बदला हो, और न व्याधि फैली हो, तो जानना कि वह अशुद्ध है; उसे आग में जलाना, क्योंकि चाहे वह व्याधि भीतर चाहे ऊपरी हो तो भी वह खा जानेवाली व्याधि है। ५६ पर यदि याजक देखे, कि उसके धोने के पश्चात् व्याधि की चमक कम हो गई, तो वह उसको बब्ल के चाहे ताने चाहे बाने में से, या चमड़े में से फाड़कर निकालें; ५७ और यदि वह व्याधि तभी भी उस बब्ल के ताने या बाने में, या चमड़े की उस वस्तु में दिखाई पड़े, तो जानना कि वह फूटकर निकली हुई व्याधि है; और जिसमें वह व्याधि हो उसे आग में जलाना। ५८ यदि उस बब्ल से जिसके ताने या बाने में व्याधि हो, या चमड़े की जो वस्तु हो उससे जब धोई जाए और व्याधि जाती रही, तो वह दूसी बार धूलकर शुद्ध ठहरे।” ५९ ऊन या सनी के बब्ल में के ताने या बाने में, या चमड़े की किसी वस्तु में जो कोढ़ की व्याधि हो उसके ग्राट और अशत ठहराने की यही व्यवस्था है।

१४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ “कोढ़ी के शुद्ध ठहराने की व्यवस्था यह है। वह याजक के पास पहुँचाया जाएँ; ३ और याजक छानी के बाहर जाएँ, और याजक उस कोढ़ी को देखे, और यदि उसके कोढ़ की व्याधि चांगी हुई हो, ४ तो याजक आज्ञा दे कि शुद्ध ठहरानेवाले के लिये दो शुद्ध और जीवित पक्षी, देवदार की लकड़ी, और लाल रंग का कपड़ा और जूफा ये सब लिये जाएँ; ५ और याजक आज्ञा दे कि एक पक्षी बतेहे हुए जल के ऊपर मिट्टी के पत्र में बलि किया जाए। ६ तब वह जीवित पक्षी को देवदार की लकड़ी और लाल रंग के कपड़े और जूफा इन सभी को लेकर एक संग उस पक्षी के लह में जो बहते हुए जल के ऊपर बलि किया गया है डबा दें; ७ और कोढ़ से शुद्ध ठहरानेवाले पर सात बार छिड़कर उसको शुद्ध ठहराएं। तब उस जीवित पक्षी

को मैदान में छोड़ दे। ९ और शुद्ध ठहरनेवाला अपने बच्चों को धोए, और सब बाल मैण्डवाकर जल से सान करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा; और उसके बाद वह छावनी में आने पाए, परन्तु सात दिन तक अपने डेरे से बाहर ही रहे। १० और सातवें दिन वह सिर, दाढ़ी और भौंहों के सब बाल मुँडाएँ, और सब अंग मूँडन कराए, और अपने बच्चों को धोए, और जल से सान करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा। ११ “आठवें दिन वह दो निर्दोष भेड़ के बच्चे, और एक वर्ष की निर्दोष भेड़ की बच्ची, और अन्नबलि के लिये तेल से सना हुआ एपा का तीन दहाई अंश मैदा, और लोज भर तेल लाए। १२ और शुद्ध ठहरनेवाला याजक इन वस्तुओं समेत उस शुद्ध होनेवाले मसुख को यहोवा के सम्मुख मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़ा करे। १३ तब याजक एक भेड़ का बच्चा लेकर दोषबलि के लिये उसे और उस लोज भर तेल को समीप लाए, और इन दोनों को हिलाने की भेट के लिये यहोवा के सामने हिलाए; १४ और वह उस भेड़ के बच्चे को उसी स्थान में जहाँ वह पापबलि और होमबलि पशुओं का बलिदान किया करेगा, अथात् पवित्रस्थान में बलिदान करे; क्योंकि जैसे पापबलि याजक का निज भाग होगा वैसे ही दोषबलि भी उसी का निज भाग ठहरेगा; वह परमपवित्र है। १५ तब याजक दोषबलि के लह में से कुछ लेकर शुद्ध ठहरनेवाले के दाहिने कान के सिरे पर, और उसके दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अँगढ़ों पर लगाए। १६ तब याजक उस लोज भर तेल में से कुछ लेकर अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले, १७ और याजक अपने दाहिने हाथ की ऊँगली को अपनी बाई हथेली पर के तेल में डुबाकर उस तेल में से कुछ अपनी ऊँगली से यहोवा के सम्मुख सात बार छिड़के। १८ और जो तेल उसकी हथेली पर रह जाएगा याजक उसमें से कुछ शुद्ध होनेवाले के दाहिने कान के सिरे पर, और उसके दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अँगढ़ों पर दोषबलि के लह के ऊपर लगाए; १९ और जो तेल याजक की हथेली पर रह जाए उसको वह शुद्ध होनेवाले के सिर पर डाल दे। और याजक उसके लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित करे। २० याजक पापबलि को भी चढ़ाकर उसके लिये जो अपनी अशुद्धता से शुद्ध होनेवाला हो प्रायश्चित करे; और उसके बाद होमबलि पशु का बलिदान करके २१ अन्नबलि समेत वेदी पर चढ़ाएः और याजक उसके लिये प्रायश्चित करे, और वह शुद्ध ठहरेगा। २२ “परन्तु यदि वह दरिद्र हो और इतना लाने के लिये उसके पास पूँजी न हो, तो वह अपना प्रायश्चित करवाने के निषिन्त, हिलाने के लिये भेड़ का बच्चा दोषबलि के लिये, और तेल से सना हुआ एपा का दसवाँ अंश मैदा अन्नबलि करके, और लोज भर तेल लाए; २३ और दो पंडक, या कबूतरी के दो बच्चे लाए, जो वह ला सके; और इनमें से एक तो पापबलि के लिये और दूसरा होमबलि के लिये हो। २४ और आठवें दिन वह इन सभी को अपने शुद्ध ठहरने के लिये मिलापवाले तम्बू के द्वार पर, यहोवा के सम्मुख, याजक के पास ले आए; २५ तब याजक उस लोज भर तेल और दोषबलिवाले भेड़ के बच्चे को लेकर हिलाने की भेट के लिये यहोवा के सामने हिलाए। २६ फिर दोषबलि के भेड़ के बच्चे का बलिदान किया जाए; और याजक उसके लह में से कुछ लेकर शुद्ध ठहरनेवाले के दाहिने कान के सिरे पर, और उसके दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अँगढ़ों पर लगाए। २७ फिर याजक उस तेल में से कुछ अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डालकर, २८ अपने दाहिने हाथ की ऊँगली से अपनी बाई हथेली पर के तेल में से कुछ यहोवा के सम्मुख सात बार छिड़के; २९ फिर याजक अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ शुद्ध ठहरनेवाले के दाहिने कान के सिरे पर, और उसके दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अँगढ़ों, पर दोषबलि के लह के स्थान पर लगाए। ३० और जो तेल याजक की हथेली पर रह जाए उसे वह शुद्ध ठहरनेवाले के लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित करने को उसके सिर पर डाल दे। ३१ तब वह पंडक

या कबूतरी के बच्चों में से जो वह ला सका हो एक को चढ़ाए, ३९ अर्थात् जो पक्षी वह ला सका हो, उनमें से वह एक को पापबति के लिये और अन्नबलि समेत दूसरे को होमबलि के लिये चढ़ाए; इस रीति से याजक शुद्ध ठहरनेवाले के लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करे। ४० जिसे कोढ़ की व्याधि हुई हो, और उसके इतनी पूँजी न हो कि वह शुद्ध ठहरने की सामग्री को ला सके, तो उसके लिये यही व्यवस्था है।” ४१ फिर यहोवा ने मूसा और हास्न से कहा, ४२ “जब तुम लोग कानान देश में पहुँचो, जिसे मैं तुम्हारी निज भूमि होने के लिये तम्हें देता हूँ, उस समय यदि मैं कोढ़ की व्याधि तम्हरे अधिकार के किसी घर में दिखाऊँ, ४३ तो जिसका वह घर हो वह आकर याजक को बता दे कि मुझे ऐसा देख पड़ता है कि घर में मानों कोई व्याधि है। ४४ तब याजक आज्ञा दे कि उस घर में व्याधि देखने के लिये मैं जाने से पहले उसे खाली करो, कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ घर में हो वह सब अशुद्ध ठहरे; और इसके बाद याजक घर देखने को भीतर जाए। ४५ तब वह उस व्याधि को देखे; और यदि वह व्याधि घर की दीवारों पर हरी-हरी या लाल-लाल मानो खुदी हुई लकड़ीरों के स्पृष्ट में हो, और ये लकड़ी दीवार में गहरी देख पड़ती हों, ४६ तो याजक घर से बाहर द्वार पर जाकर घर को सात दिन तक बन्द कर रखे। ४७ और सातवें दिन याजक आकर देखे; और यदि वह व्याधि घर की दीवारों पर फैल गई हो, ४८ तो याजक आज्ञा दे कि जिन पथरों को व्याधि है उन्हें निकालकर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान में फेंक दें; ४९ और वह घर के भीतर ही भीतर चारों ओर खुरचवाए, और वह खुरचन की मिट्टी नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान में डाली जाए; ५० और उन पथरों के स्थान में और दूसरे पथर लेकर लगाएँ और याजक ताजा गारा लेकर घर की जुड़ाई करे। ५१ यदि पथरों के निकाले जाने और घर के खुरचे और पुताई जाने के बाद वह व्याधि फिर घर में फूट निकले, ५२ तो याजक आकर देखे; और यदि वह व्याधि घर में फैल गई हो, तो वह जान ले कि घर में गलित कोढ़ है; वह अशुद्ध है। ५३ और वह सब गरे समेत पथर, लकड़ी और घर को खुदवाकर गिरा दे; और उन सब वस्तुओं को उठवाकर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान पर फिकवा दे। ५४ और जब तक वह घर बन्द रहे तब तक यदि कोई उसमें जाए तो वह साँझ तक अशुद्ध रहे; ५५ और जो कोई उस घर में सोए वह अपने बच्चों को धोए; ५६ “पर यदि याजक आकर देखे कि जब से घर लेसा गया है तब से उसमें व्याधि नहीं फैली है, तो यह जानकर कि वह व्याधि दूर हो गई है, घर को शुद्ध ठहराए।” ५७ और उस घर को पवित्र करने के लिये दो पक्षी, देवदार की लकड़ी, लाल रंग का कपड़ा और जूफा लाए, ५८ और एक पक्षी बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र में बलिदान करे, ५९ तब वह देवदार की लकड़ी, लाल रंग के कपड़े और जूफा और जीवित पक्षी इन सभी को लेकर बलिदान किए हुए पक्षी के लह में और बहते हुए जल में डुबा दे, और उस घर पर सात बार छिड़के। ६० इस प्रकार वह पक्षी के लह, और बहते हुए जल, और जीवित पक्षी, और देवदार की लकड़ी, और जूफा और लाल रंग के कपड़े के द्वारा घर को पवित्र करे; ६१ तब वह जीवित पक्षी को नगर से बाहर मैदान में छोड़ दे, इसी रीति से वह घर के लिये प्रायश्चित्त करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा।” ६२ सब धौति के कोढ़ की व्याधि, और सेहुएँ, ६३ और बच्च, और घर के कोढ़, ६४ और सूजन, और पपड़ी, और दाग के विषय में, ६५ शुद्ध और अशुद्ध ठहराने की शिक्षा देने की व्यवस्था यही है। सब प्रकार के कोढ़ की व्यवस्था यही है।

१५ फिर यहोवा ने मूसा और हास्न से कहा, : “इमाएलियों से कहो कि जिस-जिस पुस्त के प्रमेह हो, तो वह प्रमेह के कारण से अशुद्ध ठहरे।” १६

वह चाहे बहता रहे, चाहे बहना बन्द भी हो, तो भी उसकी अशुद्धता बनी रहेगी। १७ जिसके प्रमेह हो वह जिस-जिस बिछौने पर लेटे वह अशुद्ध ठहरे, और जिस-जिस वस्तु पर वह बैठे वह भी अशुद्ध ठहरे। १८ और जो कोई उसके बिछौने को छाए वह अपने बच्चों को धोकर जल से सान करे, और साँझ तक अशुद्ध ठहरा रहे। १९ और जिसके प्रमेह हो वह अपने बच्चों को धोकर जल से सान करे, और साँझ तक अशुद्ध ठहरा रहे। २० और जिसके प्रमेह हो वह किसी शुद्ध मनुष्य पर थके, तो वह अपने बच्चों को धोकर जल से सान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे। २१ और जिसके प्रमेह हो वह किसी वस्तु पर बैठे वह अशुद्ध ठहरे। २२ और जो कोई किसी वस्तु को जो उसके नीचे रही हो छाए, वह साँझ तक अशुद्ध रहे; और जो कोई ऐसी किसी वस्तु को उठाए वह अपने बच्चों को धोकर जल से सान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे। २३ और जिसके प्रमेह हो वह मिट्टी के जिस किसी पान को छाए वह तोड़ डाला जाए, और काठ के सब प्रकार के पान जल से थोए जाएँ। २४ “फिर जिसके प्रमेह हो वह यदि वह किसी को बिना हाथ धोए, छाए वह अपने बच्चों को धोकर जल से सान करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा।” २५ और आठवें दिन वह दो पंडुक या कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सम्मुख जाकर उन्हें याजक को दे। २६ तब याजक उनमें से एक को पापबति, और दूसरे को होमबलि के लिये भेंट चढ़ाए; और याजक उसके लिये उसके प्रमेह के कारण यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करे। २७ “फिर यदि किसी पुस्त का वीर्य स्वरुपता हो जाए, तो वह अपने सारे शरीर को जल से धोए, और साँझ तक अशुद्ध रहे। २८ और जिस किसी वस्तु या चमड़े पर वह वीर्य पड़े वह जल से धोया जाए, और साँझ तक अशुद्ध रहे। २९ और जब कोई पुस्त छी से प्रसंग करे तो वे दोनों जल से सान करें, और साँझ तक अशुद्ध रहें। ३० “फिर जब कोई छी ऋतुमती रहे, तो वह सात दिन तक अशुद्ध ठहरी रहे, और जो कोई उसके बिछौने को छाए वह अपने बच्चे धोकर जल से सान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे। ३१ और जो कोई किसी वस्तु को छाने पर वह बैठी हो वह अपने बच्चे धोकर जल से सान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे। ३२ और यदि बिछौने या और किसी वस्तु पर जिस पर वह बैठी हो छाने से समय उसका स्वधिर लगा हो, तो छानेवाले साँझ तक अशुद्ध रहे। ३३ और यदि कोई पुस्त उससे प्रसंग करे, और उसका स्वधिर उसके लिये जल जाए, तो वह पुस्त सात दिन तक अशुद्ध रहे, और जिस-जिस बिछौने पर वह लेटे वे सब अशुद्ध ठहरे। ३४ “फिर यदि किसी छी के अपने मासिक धर्म के नियुक्त समय से अधिक दिन तक स्थिर बहता रहे, या उस नियुक्त समय से अधिक समय तक ऋतुमती रहे, तो जब तक वह ऐसी दशा में रहे तब तक वह अशुद्ध ठहरी रहे।” ३५ उसके ऋतुमती रहने के सब दिनों में जिस-जिस बिछौने पर वह लेटे वे सब उसके मासिक धर्म के बिछौने के समान ठहरें, और जिस-जिस वस्तु पर वह बैठे वे भी उसके ऋतुमती रहने के दिनों के समान अशुद्ध ठहरें। ३६ और जो कोई उन वस्तुओं को छाए वह अशुद्ध ठहरे, इसलिए वह अपने बच्चों को धोकर जल से सान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे। ३७ और जब वह छी अपने ऋतुमती से शुद्ध हो जाए, तब से वह सात दिन गिन ले, और उन दिनों के बीतने पर वह

शुद्ध ठहरे। २८ फिर आठवें दिन वह दो पंडुक या कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास जाए। ३० तब याजक एक को पापबलि और दूसरे को होमबलि के लिये चढ़ाएँ; और याजक उसके लिये उसके मासिक धर्म की अशुद्धता के कारण यहोवा के सामने प्रायश्चित करे। ३१ “इस प्रकार से तुम इसाएलियों को उनकी अशुद्धता से अलग रखा करो, कहीं ऐसा न हो कि वे यहोवा के निवास को जो उनके बीच में है अशुद्ध करके अपनी अशुद्धता में फँसकर मर जाएँ।” ३२ जिसके प्रमेह हो और जो पुस्त वीर्य स्खलित होने से अशुद्ध हो; ३३ और जो भी क्रुतमती हो; और क्या पुस्त क्या स्त्री, जिस किसी के धारुण हो, और जो पुस्त अशुद्ध स्त्री के साथ प्रसंग करे, इन सभी के लिये यही व्यवस्था है।

१६ जब हास्न के दो पुत्र यहोवा के सामने समीप जाकर मर गए, उसके बाद

यहोवा ने मूसा से बातें की; १ और यहोवा ने मूसा से कहा, “अपने भाई हास्न से कह कि सन्दूक के ऊपर के प्रायश्चितवाले ढकने के आगे, बीचवाले पर्दे के अन्दर, अति पवित्रस्थान में हर समय न प्रवेश करे, नहीं तो मर जाएणा; क्योंकि मैं प्रायश्चितवाले ढकने के ऊपर बादल में दिखाइ दूँगा। २ जब हास्न अति पवित्रस्थान में प्रवेश करे तब इस रीति से प्रवेश करे, अर्थात् पापबलि के लिये एक बछड़े को और होमबलि के लिये एक मेहे को लेकर आए। ३ वह सनी के कपड़े का पवित्र अंगरखा, और अपने तन पर सनी के कपड़े की जाँधिया पहने हुए, और सनी के कपड़े का कमरबन्ध, और सनी के कपड़े की पगड़ी बाँधे हुए प्रवेश करें; ये पवित्र बन्ध हैं, और वह जल से सान करके इन्हे पहने। ४ फिर वह इसाएलियों की मण्डली के पास से पापबलि के लिये दो बकरे और होमबलि के लिये एक मेडा ले। ५ और हास्न उस पापबलि के बछड़े को जो उसी के लिये होगा चढ़ाकर अपने और अपने घराने के लिये प्रायश्चित करे। ६ और उन दोनों बकरों को लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने खड़ा करे; ७ और हास्न दोनों बकरों पर चिट्ठियाँ डाले, एक चिट्ठी यहोवा के लिये और दूसरी अजाजेल के लिये हो। ८ और जिस बकरे पर यहोवा के नाम की चिट्ठी निकले उसको हास्न पापबलि के लिये चढ़ाएँ; ९ परन्तु जिस बकरे पर अजाजेल के लिये चिट्ठी निकले वह यहोवा के सामने जीवित खड़ा किया जाए कि उससे प्रायश्चित किया जाए, और वह अजाजेल के लिये जंगल में छोड़ा जाए। १० “हास्न उस पापबलि के बछड़े को, जो उसी के लिये होगा, समीप ले आएँ और उसको बलिदान करके अपने और अपने घराने के लिये प्रायश्चित करो। ११ और जो बेदी यहोवा के सम्पुरुष है, उस पर के जलते हुए कोयलों से भरे हुए धूपदान को लेकर, और अपनी दोनों मुट्ठियों को कूटे हुए सुगन्धित धूप से भरकर, बीचवाले पर्दे के भीतर ले आकर १२ उस धूप को यहोवा के सम्पुरुष आग में डाले, जिससे धूप का धुआँ साक्षीपत्र के ऊपर के प्रायश्चित के ढकने के ऊपर छा जाएँ, नहीं तो वह मर जाएणा; १३ तब वह बछड़े के लह में से कुछ लेकर पूरब की ओर प्रायश्चित के ढकने के ऊपर अपनी उँगली से छिड़के, और फिर उस लह में से कुछ उँगली के द्वारा उस ढकने के सामने भी सात बार छिड़क दे। १४ फिर वह उस पापबलि के बकरे को जो साधारण जनता के लिये होगा बलिदान करके उसके लह को बीचवाले पर्दे के भीतर ले आएँ, और जिस प्रकार बछड़े के लह से उसने किया था ठीक वैसा ही वह बकरे के लह से भी करे, अर्थात् उसको प्रायश्चित के ढकने के ऊपर और उसके सामने छिड़के। १५ और वह इसाएलियों की भाँति-भाँति की अशुद्धता, और अपराधों, और उनके सब पापों के कारण पवित्रस्थान के लिये प्रायश्चित करें; और मिलापवाले तम्बू जो उनके संग उनकी भाँति-भाँति की अशुद्धता के बीच रहता है उसके लिये भी वह वैसा ही करे। १६ जब हास्न प्रायश्चित करने के लिये अति पवित्रस्थान में

प्रवेश करे, तब से जब तक वह अपने और अपने घराने और इसाएल की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित करके बाहर न निकलते तब तक कोई मनुष्य मिलापवाले तम्बू में न रहे। १७ फिर वह निकलकर उस वेदी के पास जो यहोवा के सामने है जाएँ और उसके लिये प्रायश्चित करे, अर्थात् बछड़े के लह और बकरे के लह दोनों में से कुछ लेकर उस वेदी के चारों कोनों के सींगों पर लगाए। १८ और उस लह में से कुछ अपनी उँगली के द्वारा सात बार उस पर छिड़कर उसे इसाएलियों की भाँति-भाँति की अशुद्धता छुड़ाकर शुद्ध और पवित्र करे। १९ “जब वह पवित्रस्थान और मिलापवाले तम्बू और वेदी के लिये प्रायश्चित कर चुके, तब जीवित बकरे को आगे ले आएँ; २० और हास्न अपने दोनों हाथों को जीवित बकरे पर रखकर इसाएलियों के सब अर्धम के कामों, और उनके सब अपराधों, अर्थात् उनके सारे पापों को अंगीकार करे, और उनको बकरे के सिर पर धरकर उसको किसी मनुष्य के हाथ जो इस काम के लिये तैयार हो जंगल में भेजकर छुड़वा दे। २१ वह बकरा उनके सब अर्धम के कामों को अपने ऊपर लादे हुए किसी निर्जन देश में उठा ले जाएणा; इसलिए वह मनुष्य उस बकरे को जंगल में छोड़ दे। २२ “तब हास्न मिलापवाले तम्बू में आएँ, और जिस सनी के बच्चों को पहने हुए उसने अति पवित्रस्थान में प्रवेश किया था उन्हें तुराकर बही पर रख दे। २३ फिर वह किसी पवित्रस्थान में जल से सान कर अपने निज वस्त्र पहन ले, और बाहर जाकर अपने होमबलि और साधारण जनता के होमबलिको चढ़ाकर अपने और जनता के लिये प्रायश्चित करे। २४ और पापबलि की चर्बी को वह वेदी पर जलाएँ। २५ और जामड़ा चमड़ा, माँस, और गोबर आग में जला दिया जाएँ। २६ और जो उनको जलाएँ वह अपने बच्चों को धोएँ, और जल से सान करे, और इसके बाद वह छावनी में प्रवेश करने पाएँ। २७ “तुम लोगों के लिये वह सदा की विधि होगी कि सातवें महीने के दसवें दिन को तम उपवास करना, और उस दिन कोई चाहे वह तुम्हरे निज देश का हो चाहे तुम्हरे बीच रहनेवाला कोई परदेशी हो, कोई भी किसी प्रकार का काम-काज न करे; २८ क्योंकि उस दिन तम्हें शुद्ध करने के लिये तुम्हरे निमित्त प्रायश्चित किया जाएणा; और तुम अपने सब पापों से यहोवा के सम्मुख पवित्र ठहरोगे। २९ यह तुम्हरे लिये परमविद्याम का दिन ठहरे, और तुम उस दिन उपवास करना और किसी प्रकार का काम-काज न करना; यह सदा की विधि होगी, कि इसाएलियों के लिये प्रतिवर्ष एक बार तुम्हरे सारे पापों के लिये प्रायश्चित किया जाएँ।” यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी, हास्न ने किया।

१७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १ “हास्न और उसके पुत्रों से और सब

इसाएलियों से कह कि यहोवा ने यह आज्ञा दी हैः २ इसाएल के घराने में से कोई मनुष्य हो जो बैल या भेड़ के बच्चे, या बकरी को, चाहे छावनी में चाहे छावनी से बाहर घाट करके ३ मिलापवाले तम्बू के द्वार पर, यहोवा के निवास के सामने यहोवा को चढ़ाने के निमित्त न ले जाएँ, तो उस मनुष्य को लह बहाने का दोष लगेगा; और वह मनुष्य जो लह बहानेवाला ठहरेगा,

वह अपने लोगों के बीच से नष्ट किया जाए। ५ इस विधि का यह कारण है कि इसाएली अपने बलिदान जिनको वे खुले मैदान में वध करते हैं, वे उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास, यहोवा के लिये ले जाकर उसी के लिये मेलबलि करके बलिदान किया करें; ६ और याजक लहू को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा की बेटी के ऊपर छिड़के, और चर्ची को उसके सुखदायक सुगन्ध के लिये जलाए। ७ वे जो बकरों के पूजक होकर व्यभिचार करते हैं, वे फिर अपने बलिपश्शमों को उनके लिये बलिदान न करें। तुम्हारी पीढ़ियों के लिये यह सदा की विधि होगी। ८ “तु उनसे कह कि इसाएल के घराने के लोगों में से या उनके बीच रहनेवाले परदेशियों में से कोई मनुष्य क्यों न हो जो होमबलि या मेलबलि चढ़ाए, ९ और उसके मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के लिये चढ़ाने को न ले आएः वह मनुष्य अपने लोगों में से नष्ट किया जाए। १० “फिर इसाएल के घराने के लोगों में से या उनके बीच रहनेवाले परदेशियों में से कोई मनुष्य क्यों न हो जो किसी प्रकार का लहू खाए, मैं उस लहू खानेवाले के विषुख होकर उसको उसके लोगों के बीच में से नष्ट कर डालँगा। ११ क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है; और उसको मैंने तुम लोगों को बेटी पर चढ़ाने के लिये दिया है कि तुहरे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त किया जाएः क्योंकि प्राण के लिए लहू ही से प्रायश्चित्त होता है। १२ इस कारण मैं इसाएलियों से कहता हूँ कि तुम में से कोई प्राणी लहू न खाएँ और जो परदेशी तुम्हरे बीच रहता हो वह भी लहू कभी न खाए।” १३ “इसाएलियों में से या उनके बीच रहनेवाले परदेशियों में से, कोई मनुष्य क्यों न हो, जो शिकार करके खाने के योग पशु या पक्षी को पकड़े, वह उसके लहू को उण्डेलकर धूलि से ढाँप दे। १४ क्योंकि शरीर का प्राण जो है वह उसका लहू ही है जो उसके प्राण के साथ एक है; इसलिए मैं इसाएलियों से कहता हूँ कि किसी प्रकार के लहू को तुम न खाना, क्योंकि सब प्राणियों का प्राण उनका लहू ही है; जो कोई उसको खाए वह नष्ट किया जाएगा। १५ और चाहे वह देशी हो या परदेशी हो, जो कोई किसी लोथ या फाड़े हुए पशु का माँस खाए वह अपने बच्चों को धोकर जल से सान करे, और सौँझ तक अशुद्ध रहे; तब वह शुद्ध होगा। १६ परन्तु यदि वह उनको न धोए और न सान करे, तो उसको अपने अर्धम का भार स्वयं उठाना पड़ेगा।”

१८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १ “इसाएलियों से कह कि मैं तुम्हारा

परमेश्वर यहोवा हूँ। २ तुम मिस्र देश के कामों के अनुसार, जिसमें तुम रहते थे, न करना; और कानान देश के कामों के अनुसार भी, जहाँ मैं तुम्हें ले चलता हूँ, न करना; और न उन देशों की विधियों पर चलना। ३ मेरे ही नियमों को मानना, और मेरी ही विधियों को मानते हुए उन पर चलना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। ४ इसलिए तुम मेरे नियमों और मेरी विधियों को निरन्तर मानना; जो मनुष्य उनको माने वह उनके कारण जीवित रहेगा। मैं यहोवा हूँ। ५ “तुम में से कोई अपनी किसी निकट कुटुम्बिनी का तन उघाड़ने को उसके पास न जाए। मैं यहोवा हूँ। ६ अपनी माता का तन, जो तुम्हरे पिता का तन है, न उघाड़ना; वह तो तुम्हारी माता है, इसलिए तुम उसका तन न उघाड़ना। ७ अपनी सौतेली माता का भी तन न उघाड़ना; वह तो तुम्हरे पिता ही का तन है। ८ अपनी बहन चाहे सर्गी हो चाहे सौतेली हो, चाहे वह घर में उत्पन्न हुई हो चाहे बाहर, उसका तन न उघाड़ना। ९ अपनी पोती या अपनी नातिन का तन न उघाड़ना, उनकी देह तो मानो तुम्हारी ही है। १० तुम्हारी सौतेली बहन जो तुम्हारे पिता से उत्पन्न हुई, वह तुम्हारी बहन है, इस कारण उसका तन न उघाड़ना। ११ अपनी पौधी का तन न उघाड़ना; वह तो तुम्हरे पिता की निकट कुटुम्बिनी है। १२ अपनी मौसी का तन न उघाड़ना;

क्योंकि वह तुम्हारी माता की निकट कुटुम्बिनी है। १३ अपने चाचा का तन न उघाड़ना, अर्थात् उसकी झी के पास न जाना; वह तो तुम्हारी चाची है। १५ अपनी बहू का तन न उघाड़ना वह तो तुम्हरे बेटे की झी है, इस कारण तुम उसका तन न उघाड़ना। १६ अपनी भाभी का तन न उघाड़ना; वह तो तुम्हरे भाई ही का तन है। १७ किसी झी और उसकी बेटी दोनों का तन न उघाड़ना, और उसकी पोती को या उसकी नातिन को अपनी झी करके उसका तन न उघाड़ना; वे तो निकट कुटुम्बिनी हैं; ऐसा करना महापाप है। १८ और अपनी झी की बहन को भी अपनी झी करके उसकी सौत न करना कि पहली के जीवित रहते हुए उसका तन भी उघाड़े। १९ “फिर जब तक कोई झी अपने ऋतु के कारण अशुद्ध रहे तब तक उसके पास उसका तन उघाड़ने को न जाना। २० फिर अपने भाई-बन्धु की झी से कुकर्म करके अशुद्ध न हो जाना। २१ अपनी सन्तान में से किसी की मोलेक के लिये होम करके न चढ़ाना, और न अपने परमेश्वर के नाम को अपवित्र ठहराना, मैं यहोवा हूँ। २२ झीगमन की रीति पुष्पगमन न करना; वह तो धिनौना काम है। २३ किसी जाति के पशु के साथ पशुगमन करके अशुद्ध न हो जाना, और न कोई झी पशु के साथमे इसलिए खड़ी हो कि उसके संग कुकर्म करे; यह तो उलटी बात है। २४ “ऐसा-ऐसा कोई भी काम करके अशुद्ध न हो जाना, क्योंकि जिन जातियों को मैं तुम्हरे आगे से निकालने पर हाँ वे ऐसे-ऐसे काम करके अशुद्ध हो गई हैं; २५ और उनका देश भी अशुद्ध हो गया है, इस कारण मैं उस पर उसके अर्धम का टण्ड देता हूँ, और वह देश अपने निवासियों को उगल देता है। २६ इस कारण तुम लोग मेरी विधियों और नियमों को निरन्तर मानना, और चाहे देशी, चाहे तुम्हारे बीच रहनेवाला परदेशी हो, तुम में से कोई भी ऐसा धिनौना काम न करे; २७ क्योंकि ऐसे सब धिनौने कामों को उस देश के मनुष्य जो तुम से पहले उसमें रहते थे, वे करते आए हैं, इसी से वह देश अशुद्ध हो गया है। २८ अब ऐसा न हो कि जिस रीति से जो जाति तुम से पहले उस देश में रहती थी, उसको उसने उगल दिया, उसी रीति जब तुम उसको अशुद्ध करो, तो वह तुम को भी उगल दे। २९ जितने ऐसा कोई धिनौना काम करें वे सब प्राणी अपने लोगों में से नष्ट किए जाएँ। ३० यह आज्ञा जो मैंने तुम्हारे मानने को दी है, उसे तुम मानना, और जो धिनौनी तीर्याँ तुम से पहले प्रचलित हैं, उनमें से किसी पर न चलना, और न उनके कारण अशुद्ध हो जाना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”

१९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ “इसाएलियों की सारी मण्डली से कह हूँ।

कि तुम पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ। ३ तुम अपनी-अपनी माता और अपने-अपने पिता का भय मानना, और मेरे विश्वामिदिनों को मानना: मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। ४ तुम मूरों की ओर न फिरना, और देवताओं की प्रतिमाएँ ढालकर न बना लेना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। ५ “जब तुम यहोवा के लिये मेलबलि करो, तब ऐसा बलिदान करना जिससे मैं तुम से प्रसन्न हो जाऊँ। ६ उसका मौस बलिदान के दिन और दूसरे दिन खाया जाएँ, परन्तु तीसरे दिन तक जो रह जाए वह आग में जला दिया जाए। ७ यदि उसमें से कुछ भी तीसरे दिन खाया जाएँ, तो यह धृष्टि ठहरेगा, और ग्रहण न किया जाएगा। ८ और उसका खानेवाला यहोवा के पवित्र पदार्थ को अपवित्र ठहराता है, इसलिए उसको अपने अर्धम का भार स्वयं उठाना पड़ेगा; और वह प्राणी अपने लोगों में से नष्ट किया जाएगा। ९ “फिर जब तुम अपने देश के खेत काटो, तब अपने खेत के कोने-कोने तक पूरा न काटना, और काटे हुए खेत की गिरी पड़ी बालों को न चुनाना। १० और अपनी दाख की बारी का दाना-दाना न तोड़ लेना, और अपनी दाख की बारी के झड़े हुए अंगूष्ठों को न बटोरना; उन्हें दीन और परदेशी लोगों के लिये छोड़

देना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। १५ “तुम चोरी न करना, और एक दूसरे से, न तो कपट करना, और न झुठ बोलना। १६ तुम मेरे नाम की झूठी शपथ खाके अपने परमेश्वर का नाम अपवित्र न ठहराना; मैं यहोवा हूँ। १७ “एक दूसरे पर अंधेर न करना, और न एक दूसरे को लूट लेना। मजटूर की मजटूरी तेरे पास सारी रात सवेरे तक न रहने पाए। १८ बहरे को श्राप न देना, और न अंधेरे के आगे ठोकर रखना, और अपने परमेश्वर का भय मानना; मैं यहोवा हूँ। १९ “न्याय में कुटिलता न करना; और न तो कंगाल का पक्ष करना और न बड़े मनुष्यों का मूँह देखा विचार करना; एक दूसरे का न्याय धार्मिकता से करना। २० बकवादी बनके अपने लोगों में न पिरा करना, और एक दूसरे का लह बहने की युक्तियाँ न बाँधना; मैं यहोवा हूँ। २१ “अपने मन में एक दूसरे के प्रति बैर न रखना; अपने पड़ोसी को अवश्य डॉटना, नहीं तो उसके पाप का भार तुझको उठाना पडेगा। २२ बदला न लेना, और न अपने जातिभाइयों से बैर रखना, परन्तु एक दूसरे से अपने समान प्रेम रखना, मैं यहोवा हूँ। २३ “तुम मेरी विधियों को निरन्तर मानना। अपने पशुओं को भिन्न जाति के पशुओं से मेल न खाने देना; अपने खेत में दो प्रकार के बीज इकट्ठे न बोना; और सनी और ऊन की मिलावट से बन हुआ बब्बन पहनना। २४ “फिर कोई स्त्री दासी हो, और उसकी मांगनी किसी पुरुष से हृदृही हो, परन्तु वह न तो दास से और न सेत-मेत स्वाधीन की गई हो; उससे यदि कोई कुर्कम करे, तो उन दोनों को दण्ड तो मिले, पर उस स्त्री के स्वाधीन न होने के कारण वे दोनों मार न डाले जाएँ। २५ पर वह पुस्त मिलावटाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के पास एक मेडा दोषबलि के लिये ले आए। २६ और याजक उसके किए हृष्ण पाप के कारण दोषबलि के मेडे के द्वारा उसके लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करे; तब उसका किया हुआ पाप क्षमा किया जाएगा। २७ “फिर जब तुम कनान देश में पहुँचकर किसी प्रकार के फल के बृक्ष लगाओ, तो उनके फल तीन वर्ष तक तुम्हारे लिये मानो खतनाहित ठहरे रहें; इसलिए उनमें से कुछ न खाया जाए। २८ और चौथे वर्ष में उनके सब फल यहोवा की स्तुति करने के लिये पवित्र ठहरें। २९ तब पाँचवें वर्ष में तुम उनके फल खाना, इसलिए कि उनसे तुम को बहुत फल मिलें; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। ३० “तुम लह लगा हुआ कुछ माँस न खाना। और न ठोना करना, और न शुभ या अशुभ मुहर्तों को मानना। ३१ अपने सिर में धेरा रखकर न मुण्डाना, और न अपने गाल के बालों को मुण्डाना। ३२ मुर्दों के कारण अपने शरीर को बिल्कुल न चीरना, और न उसमें छाप लगाना; मैं यहोवा हूँ। ३३ “अपनी बेटियों को वेश्या बनाकर अपवित्र न करना, ऐसा न हो कि देश वेश्यागमन के कारण महापाप से भर जाए। ३४ मेरे विश्वामित्रिन को माना करना, और मेरे पवित्रस्थान का भय निरन्तर मानना; मैं यहोवा हूँ। ३५ “ओझाओं और भूत साधनेवालों की ओर न फिरना, और ऐसों की खोज करके उनके कारण अशुद्ध न हो जाना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। ३६ “पक्के बाल वाले के सामने उठ खड़े होना, और बूढ़े का आदरमान करना, और अपने परमेश्वर का भय निरन्तर मानना; मैं यहोवा हूँ। ३७ “यदि कोई परदेशी तुम्हारे देश में तुम्हारे संग रहे, तो उसको दुःख न देना। ३८ जो परदेशी तुम्हारे संग रहे वह तुम्हारे लिये देशी के समान हो, और उससे अपने ही समान प्रेम रखना; क्योंकि तुम भी मिस्त्र देश में परदेशी थे; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। ३९ “तुम न्याय में, और परिमाण में, और तौल में, और नाप में, कुटिलता न करना। ४० सच्चा तराजु, धर्म के बटखोर, सच्चा एण, और धर्म का हीन तुम्हारे पास रहें; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुम को मिस्त्र देश से निकाल ले आया। ४१ इसलिए तुम मेरी सब विधियों और सब नियमों को मानते हुए निरन्तर पालन करो; मैं यहोवा हूँ।”

२० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १ “इसाएलियों से कह कि इसाएलियों में से, या इसाएलियों के बीच रहनेवाले परदेशियों में से, कोई क्यों न हो, जो अपनी कोई सन्तान मोलेक को बलिदान करे वह निश्चय मार डाला जाए; और जनता उसको पथरवाह करे। २ मैं भी उस मनुष्य के विस्तु होकर, उसको उसके लोगों में से इस कारण नाश करूँगा, कि उसने अपनी सन्तान मोलेक को देकर मेरे पवित्रस्थान को अशुद्ध किया, और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ठहराया। ३ और यदि कोई अपनी सन्तान मोलेक को बलिदान करे, और जनता उसके विषय में आनाकानी करे, और उसको मार न डाले, ४ तब तो मैं स्वयं उस मनुष्य और उसके घराने के विस्तु होकर उसको और जितने उसके पीछे होकर मोलेक के साथ व्यभिचार करें उन सभी को भी उनके लोगों के बीच में से नाश करूँगा। ५ “फिर जो मनुष्य ओझाओं या भूत साधनेवालों की ओर फिरके, और उनके पीछे होकर व्यभिचारी बने, तब मैं उस मनुष्य के विस्तु होकर उसके लोगों के बीच में से नाश कर दूँगा। ६ इसलिए तुम अपने अपाको पवित्र करो; और पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। ७ और तुम मेरी विधियों को आनन्द मानना, और उनका पालन भी करना; क्योंकि मैं तुम्हारा पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ। ८ “कोई क्यों न हो, जो अपने पिता या माता को श्राप दे वह निश्चय मार डाला जाए; उसने अपने पिता या माता को श्राप दिया है, इस कारण उसका खन उसी के सिर पर पडेगा। ९ फिर यदि कोई पर्वाई स्त्री के साथ व्यभिचार करे, तो जिसने किसी दूसरे की स्त्री के साथ व्यभिचार किया हो तो वह व्यभिचारी और वह व्यभिचारिणी दोनों निश्चय मार डालें जाएँ। १० यदि कोई अपनी सौतेली माता के साथ सोए, वह अपने पिता ही का तन उघाडनेवाला ठहरेगा; इसलिए वे दोनों निश्चय मार डाले जाएँ, उनका खन उन्हीं के सिर पर पडेगा। ११ यदि कोई अपनी बह के साथ सोए, तो वे दोनों निश्चय मार डाले जाएँ, क्योंकि वे उलटा काम करनेवाले ठहरेंगे, और उनका खन उन्हीं के सिर पर पडेगा। १२ यदि कोई जिस रीति स्त्री से उसी रीति पुस्त से प्रसंग करे, तो वे दोनों धिनौना काम करनेवाले ठहरेंगे; इस कारण वे निश्चय मार डाले जाएँ, उनका खन उन्हीं के सिर पर पडेगा। १३ यदि यदि कोई अपनी पत्नी और अपनी सास दोनों को रखे, तो यह महापाप है; इसलिए वह पुस्त और वे छियां तीनों के तीनों आग में जलाए जाएँ, जिससे तुम्हारे बीच महापाप न हो। १४ फिर यदि कोई पुस्त मिस्त्र पशामाई हो, तो पुस्त और पशु दोनों निश्चय मार डाले जाएँ। १५ यदि कोई स्त्री पशु के पास जाकर उसके संग कुर्कम करे, तो तू उस स्त्री और पशु दोनों को धात करना; वे निश्चय मार डाले जाएँ, उनका खन उन्हीं के सिर पर पडेगा। १६ “यदि कोई अपनी बहन का, चाहे उसकी सभी बहन हो चाहे सौतेली, उसका नन तन देखे, और उसकी बहन भी उसका नन तन देखे तो यह निन्दित बात है, वे दोनों अपने जातिभाइयों की अँखों के सामने नाश किए जाएँ; क्योंकि जो अपनी बहन का तन उघाडनेवाला ठहरेगा उसे अपने अर्धम का भार स्वयं उठाना पडेगा। १७ फिर यदि कोई पुस्त किसी क्रतुसमी त्री के संग सोकर उसका तन उघाड़े, तो वह पुस्त उसके स्थिर के सोते का उघाडनेवाला ठहरेगा, और वह स्त्री अपने स्थिर के सोते की उघाडनेवाली ठहरेगी; इस कारण वे दोनों अपने लोगों के बीच में से नाश किए जाएँ। १८ अपनी मौसी या फूफी का तन न उघाडना, क्योंकि जो उसे उघाडे वह अपनी निकट कुटुम्बिनी को नंगा करता है; इसलिए इन दोनों को अपने अर्धम का भार उठाना पडेगा। १९ यदि कोई अपनी चाची के संग सोए, तो वह अपने चाचा का तन उघाडनेवाला ठहरेगा, इसलिए वे दोनों अपने पाप के भार को उठाए हुए निर्वश मर जाएँगे। २० यदि कोई अपनी भाभी को अपनी पत्री बनाए, तो इसे धिनौना काम जानना; और वह अपने बाई का तन उघाडनेवाला ठहरेगा,

इस कारण वे दोनों निःसन्तान रहेंगे। २८ “तुम मेरी सब विधियों और मेरे सब नियमों को समझ के साथ मानना; जिससे यह न हो कि जिस देश में मैं तुम्हें लिये जा रहा हूँ वह तुम को उगल दे। २९ और जिस जाति के लोगों को मैं तुम्हारे आगे से निकालता हूँ उनकी रीति-नस्म पर न चलना; क्योंकि उन लोगों ने जो ये सब कुर्कर्म किए हैं, इसी कारण मुझे उनसे घुणा हो गई है। ३० पर मैं तुम लोगों से कहता हूँ कि तुम तो उनकी भूमि के अधिकारी होगे, और मैं इस देश को जिसमें धूप और मधु की धाराएँ बहती हैं तुम्हारे अधिकार में कर दूँगा; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जिसने तुम को अन्य देशों के लोगों से अलग किया है। ३१ इस कारण तुम शुद्ध और अशुद्ध पशुओं में, और शुद्ध और अशुद्ध पक्षियों में भेद करना; और कोई पशु या पक्षी या किसी प्रकार का भूमि पर रैनेवाला जीवजन्तु क्यों न हो, जिसको मैंने तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहराकर बर्जित किया है, उससे अपने आपको अशुद्ध न करना। ३२ तुम मेरे लिये पवित्र बने रहना; क्योंकि मैं यहोवा स्वयं पवित्र हूँ, और मैंने तुम को और देशों के लोगों से इसलिए अलग किया है कि तुम निरन्तर मेरे ही बने रहो। ३३ “यदि कोई पुरुष या स्त्री ओझाई या भूत की साधना करे, तो वह मिश्वय मार डाला जाएँ ऐसों पर परमेश्वर किया जाए, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा।”

२१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “हास्तन के पुत्र जो याजक हैं उनसे कह कि तुम्हारे लोगों में से कोई भी मेरे, तो उसके कारण तुम में से कोई अपने को अशुद्ध न करें; २ अपने निकट कुट्टम्बियों, अर्थात् अपनी माता, या पिता, या बेटे, या बेटी, या भाई के लिये, ३ या अपनी कुँवारी बहन जिसका विवाह न हुआ हो, जिनका निकट का सम्बंध है; उनके लिये वह अपने को अशुद्ध कर सकता है। ४ पर याजक होने के नाते से वह अपने लोगों में प्रवान है, इसलिए वह अपने को ऐसा अशुद्ध न करे कि अपवित्र हो जाए। ५ वे न तो अपने सिर मैंडाएँ, और न अपने गाल के बालों को मैंडाएँ, और न अपने शरीर चर्चि। ६ वे अपने परमेश्वर के लिये पवित्र बने रहें, और अपने परमेश्वर का नाम अपवित्र न करें; क्योंकि वे यहोवा के हृष्य को जो उनके परमेश्वर का भोजन है चढ़ाया करते हैं; इस कारण वे पवित्र बने रहें। ७ वे वेश्या या भ्रष्ट को ब्याह न लें; और न त्यागी हुई को ब्याह लें; क्योंकि याजक अपने परमेश्वर के लिये पवित्र होता है। ८ इसलिए तू याजक को पवित्र जानना, क्योंकि वह तुम्हारे परमेश्वर का भोजन चढ़ाया करता है; इसलिए वह तेरी दृष्टि में पवित्र ठहरे; क्योंकि मैं यहोवा, जो तुम को पवित्र करता हूँ, पवित्र हूँ। ९ और यदि याजक की बेटी वेश्या बनकर अपने आपको अपवित्र करे, तो वह अपने पिता को अपवित्र ठहराती है; वह आग में जलाई जाए। १० “जो अपने भाइयों में महायाजक हो, जिसके सिर पर अभिषेक का तेल डाला गया हो, और जिसका पवित्र बङ्गों को पहनने के लिये संस्कार हआ हो, वह अपने सिर के बाल बिखरने न दे, और न अपने वस्त्र फड़े; ११ और न वह किसी लोथ के पास जाए, और न अपने पिता या माता के कारण अपने को अशुद्ध करे; १२ और वह पवित्रस्थान से बाहर भी न निकले, और न अपने परमेश्वर के पवित्रस्थान को अपवित्र ठहराएँ; क्योंकि वह अपने परमेश्वर के अभिषेक का तेल स्त्री मुकर्त धारण किए हुए है; मैं यहोवा हूँ। १३ और वह कुँवारी स्त्री को ब्याहे। १४ जो विधवा, या त्यागी हुई, या भ्रष्ट, या वेश्या हो, ऐसी किसी से वह विवाह न करे, वह अपने ही लोगों के बीच में की किसी कुँवारी कन्या से विवाह करे। १५ और वह अपनी सन्तान को अपने लोगों में अपवित्र न करे; क्योंकि मैं उसका पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ।” १६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १७ “हास्तन से कह कि तेरे वंश की पीढ़ी-पीढ़ी में जिस किसी के कोई भी शारीरिक दोष हो वह अपने परमेश्वर का भोजन चढ़ाने के लिये समीप न आए। १८ कोई क्यों न हो, जिसमें दोष हो,

वह समीप न आए, चाहे वह अंथा हो, चाहे लैंगडा, चाहे नकचपटा हो, चाहे उसके कुछ अधिक अंग हों, १९ या उसका पाँच, या हाथ टटा हो, २० या वह कुबडा, या बैना हो, या उसकी आँखें में दोष हो, या उस मनुष्य के चाँई या खुजली हो, या उसके अण्ड पिचके हों; २१ हास्तन याजक के वंश में से जिस किसी में कोई भी शारीरिक दोष हो, वह यहोवा के हृष्य चढ़ाने के लिये समीप न आए; वह जो दोषयुक्त है कि उसकी भी अपने परमेश्वर का भोजन चढ़ाने के लिये समीप न आए। २२ वह अपने परमेश्वर के पवित्र और परमपवित्र दोनों प्रकार के भोजन को खाए, २३ परन्तु उसके दोष के कारण वह न तो बीचवाले पर्दे के भीतर आए और न वेदी के समीप, जिससे ऐसा न हो कि वह मेरे पवित्रस्थानों को अपवित्र करे; क्योंकि मैं उनका पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ।” २४ इसलिए मूसा ने हास्तन और उसके पुत्रों को तथा सब इसाएलियों को यह बातें कह सुनाई।

२२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ “हास्तन और उसके पुत्रों से कह कि इसाएलियों की पवित्र की हुई वस्तुओं से जिनको वे मैं लिये पवित्र करते हैं अलग रहें, और मैं पवित्र नाम को अपवित्र न करें; मैं यहोवा हूँ। ३ और उनसे कह कि तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में तुम्हारे सारे वंश में से जो कोई अपनी अशुद्धता की दशा में उन पवित्र की हुई वस्तुओं के पास जाए, जिन्हें इसाएली यहोवा के लिये पवित्र करते हैं, वह मनुष्य मेरे सामने से नाश किया जाएगा, मैं यहोवा हूँ। ४ हास्तन के वंश में से कोई क्यों न हो, जो कोढ़ी हो, या उसके प्रमेह हो, वह मनुष्य जब तक शुद्ध न हो जाए, तब तक पवित्र की हुई वस्तुओं में से कुछ न खाए। और जो लोथ के कारण अशुद्ध हुआ हो, या जिसका वीर्य स्खलित हुआ हो, ऐसे मनुष्य को जो कोई छूए, ५ और जो कोई किसी ऐसे रैगेनेवाले जन्तु को छूए जिससे लोग अशुद्ध हो सकते हैं, या किसी ऐसे मनुष्य को छूए जिसमें किसी प्रकार की अशुद्धता हो जो उसको भी लग सकती है। ६ तो वह याजक जो इनमें से किसी को छूए साँझ तक अशुद्ध ठहरा रहे, और जब तक जल से स्नान न कर ले, तब तक पवित्र वस्तुओं में से कुछ न खाए। ७ तब सूर्य अस्त होने पर वह शुद्ध ठहरेगा; और तब वह पवित्र वस्तुओं में से खा सकेगा, क्योंकि उसका भोजन वही है। ८ जो जानवर आप से मरा हो या पशु से फाड़ा गया हो उसे खाकर वह अपने आपको अशुद्ध न करें; मैं यहोवा हूँ। ९ इसलिए याजक लोग मेरी सौपी हुई वस्तुओं की रक्षा करें, ऐसा न हो कि वे उनको अपवित्र करके पाप का भार उठाएं, और इसके कारण मर भी जाएँ, मैं उनका पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ। १० “पराए कुल का जन, किसी पवित्र वस्तु को न खाने पाए, चाहे वह याजक का अतिथि हो या मजदूर हो, तो वह कोई पवित्र वस्तु न खाए। ११ यदि याजक की बेटी दास को स्पर्य देकर मोत ले, तो वह दास उसमें से खा सकता है; और जो याजक के घर में उत्पन्न हुए हों चाहे कुटुम्बी या दास, वे भी उसके भोजन में से खाएँ। १२ और यदि याजक की बेटी पराए कुल के किसी पुरुष से विवाह हो, तो वह भैंट की हुई पवित्र वस्तुओं में से न खाए। १३ यदि याजक की बेटी विधवा या त्यागी हुई हो, और उसकी सन्तान न हो, और वह अपनी बाल्यावस्था की रीति के अनुसार अपने पिता के घर में रहती हो, तो वह अपने पिता के घर में से खाएँ; पर पराए कुल का कोई उसमें से न खाने पाए। १४ और यदि कोई मनुष्य किसी पवित्र वस्तु में से कुछ भूल से खा जाए, तो वह उसका पाँचवाँ भाग बढ़ाकर उसे याजक को भर दे। १५ वे इसाएलियों की पवित्र की हुई वस्तुओं को, जिन्हें वे यहोवा के लिये चढ़ाएँ, अपवित्र न करें। १६ वे उनको अपनी पवित्र वस्तुओं में से खिलाकर उनसे अपराध का दोष न उठवाएँ; मैं उनका पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ।” १७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १८ “हास्तन और उसके पुत्रों से

और इसाएलियों से समझाकर कह कि इसाएल के घराने या इसाएलियों में रहनेवाले परदेशियों में से कोई क्यों न हो, जो मन्तन या स्वेच्छाबलि करने के लिये यहोवा को कोई होमबलि चढ़ाए। १५ तो अपने निमित्त ग्रहणयोग्य ठहरने के लिये बैलों या भेड़ों या बकरियों में से निर्दोष नर चढ़ाया जाए। २० जिसमें कोई भी दोष हो उसे न चढ़ाना; क्योंकि वह तुम्हारे निमित्त ग्रहणयोग्य न ठहरेगा। २१ और जो कोई बैलों या भेड़-बकरियों में से विशेष वस्तु संकल्प करने के लिये या स्वेच्छाबलि के लिये यहोवा को मेलबलि चढ़ाए, तो ग्रहण होने के लिये अवश्य है कि वह निर्दोष हो, उसमें कोई भी दोष न हो। २२ जो अंथा या अंग का टूटा या लूला हो, अथवा उसमें रसौती या खौरा या खुजली हो, ऐसों को यहोवा के लिये न चढ़ाना, उनको बेटी पर यहोवा के लिये हव्य न चढ़ाना। २३ जिस किसी बैल या भेड़ या बकरे का कोई अंग अधिक या कम हो उसको स्वेच्छाबलि के लिये चढ़ा सकते हो, परन्तु मन्तन पूरी करने के लिये वह ग्रहण न होगा। २४ जिसके अण्ड दबे या कुचले या टूटे या कट गए हों उसको यहोवा के लिये न चढ़ाना, और अपने देश में भी ऐसा काम न करना। २५ फिर इनमें से किसी को तुम अपने परमेश्वर का भोजन जानकर किसी परदेशी से लेकर न चढ़ाओ; क्योंकि उनमें दोष और कलंक है, इसलिए वे तुम्हारे निमित्त ग्रहण न होंगे।” २६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २७ “जब बछड़ा या भेड़ या बकरी का बच्चा उत्पन्न हो, तो वह सात दिन तक अपनी माँ के साथ रहे; फिर आठवें दिन से आगे को वह यहोवा के हव्य चढ़ावे के लिये ग्रहणयोग्य ठहरेगा। २८ चाहे गाय, चाहे भेड़ी या बकरी हो, उसको और उसके बच्चे को एक ही दिन में बलि न करना। २९ और जब तुम यहोवा के लिये धन्यवाद का मेलबलि चढ़ाओ, तो उसे इसी प्रकार से करना जिससे वह ग्रहणयोग्य ठहरे। ३० वह उसी दिन खाया जाए, उसमें से कुछ भी सवेरे तक रहने न पाए; मैं यहोवा हूँ। ३१ “इसलिए तुम मेरी आज्ञाओं को मानना और उनका पालन करना; मैं यहोवा हूँ। ३२ और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र न ठहराना, क्योंकि मैं इसाएलियों के बीच अवश्य ही पवित्र माना जाऊँगा; मैं तुम्हारा पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ, ३३ जो तुम को मिस्र देश से निकाल लाया है जिससे तुम्हारा परमेश्वर बना रहँ, मैं यहोवा हूँ।”

२३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ “इसाएलियों से कह कि यहोवा के पर्व जिनका तुम को पवित्र सभा एकत्रित करने के लिये नियत समय प्र प्रचार करना होगा, मेरे वे पर्व ये हैं। ३ “छः दिन काम-काज किया जाए, पर सातवाँ दिन परमविश्वाम का और पवित्र सभा का दिन है; उसमें किसी प्रकार का काम-काज न किया जाए; वह तुम्हारे सब घरों में यहोवा का विश्वामदिन ठहरे। ४ “फिर यहोवा के पर्व जिनमें से एक-एक के ठहराये हुए समय में तुम्हें पवित्र सभा करने के लिये अवश्य यहोवा का विश्वामदिन ठहरे। ५ पहले महीने के चौदहवें दिन को सौँझ के समय यहोवा का फसह हुआ करे। ६ और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को यहोवा के लिये अखमीरी रोटी का पर्व हुआ करे; उसमें तुम सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना। ७ उनमें से पहले दिन तुम्हारी पवित्र सभा का नाश हो; और उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना। ८ और सातों दिन तुम यहोवा को हव्य चढ़ाया करना; और सातवें दिन पवित्र सभा हो; उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना।” ९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १० “इसाएलियों से कह कि जब तुम उस देश में प्रवेश करो जिसे यहोवा तुम्हें देता है और उसमें के खेत काटो, तब अपने-अपने पके खेत की पहली उपज का पूला याजक के पास ले आया करना; ११ और वह उस पूले को यहोवा के सामने हिलाए कि वह तुम्हारे निमित्त ग्रहण किया जाए; वह उसे विश्वामदिन के आमते दिन हिलाए। १२ और जिस दिन तुम पूले को हिलाओ उसी दिन एक वर्ष का निर्दोष भेड़ का बच्चा यहोवा के लिये होमबलि चढ़ाना। १३ और

उसके साथ का अन्नबलि एपा के दो दसवें अंश तेल से सने हुए मैटे का हो वह सुखदायक सुगन्ध के लिये यहोवा का हव्य हो; और उसके साथ का अर्ध हीन भर की चौथाई दाखमधु हो। १४ और जब तक तुम इस चढ़ावे को अपने परमेश्वर के पास न ले जाओ, उस दिन तक नये खेत में से न तो रोटी खाना और न भूा हआ अन्न और न हरी बातें, यह तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में तुम्हारे सारे घरानों में सदा की विधि ठहरे। १५ “फिर उस विश्वामदिन के दूसरे दिन से, अर्थात् जिस दिन तुम हिलाई जानेवाली भेट के पूरे को ला आओ, उस दिन से पूरे सात विश्वामदिन गिन लेना; १६ सातवें विश्वामदिन के अगले दिन तक पचास दिन गिना, और पचासवें दिन यहोवा के लिये नदा अन्नबलि चढ़ाना। १७ तुम अपने घरों में से एपा के दो दसवें अंश मैटे की दो रोटियाँ हिलाने की भेट के लिये ले आना; वे खमीर के साथ पकाई जाएँ, और यहोवा के लिये पहली उपज ठहरे। १८ और उस रोटी के संग एक-एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के बच्चे, और एक बछड़ा, और दो मैटे चढ़ाना; वे अपने-अपने साथ के अन्नबलि और अर्ध समेत यहोवा के लिये होमबलि के समान चढ़ाए जाएँ, अर्थात् वे यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य ठहरें। १९ फिर पापबलि के लिये एक बकरा, और मेलबलि के लिये एक-एक वर्ष के दो भेड़ के बच्चे चढ़ाना। २० तब याजक उनको पहली उपज की रोटी समेत यहोवा के समान हिलाने की भेट के लिये हिलाए, और इन रोटियों के संग वे दो भेड़ के बच्चे भी हिलाए जाएँ; वे यहोवा के लिये पवित्र, और याजक का भाग ठहरे। २१ और तुम उस दिन यह प्रचार करना, कि आज हमारी एक पवित्र सभा होगी; और परिश्रम का कोई काम न करना; यह तुम्हारे सारे घरानों में तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में सदा की विधि ठहरे। २२ “जब तुम अपने देश में के खेत काटो, तब अपने खेत के कोनों को पूरी रिति से न काटना, और खेत में गिरी हुई बालों को न इकट्ठा करना; उसे गरीब और परदेशी के लिये छोड़ देना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।” २३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २४ “इसाएलियों से कह कि सातवें महीने के पहले दिन को तुम्हारे लिये परमविश्वाम हो; उस दिन को स्मरण दिलाने के लिये नरसिंग फैले जाएँ, और एक पवित्र सभा इकी हो। २५ उस दिन तुम परिश्रम का कोई काम न करना, और यहोवा के लिये एक हव्य चढ़ाना।” २६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २७ “उसी सातवें महीने का दसवाँ दिन प्रायश्चित का दिन माना जाए; वह तुम्हारी पवित्र सभा का दिन होगा, और उसमें तुम उपवास करना और यहोवा का हव्य चढ़ाना। २८ उस दिन तुम किसी प्रकार का काम-काज न करना; क्योंकि वह प्रायश्चित का दिन निरुक्त किया गया है जिसमें तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के समाने तुम्हारे लिये प्रायश्चित किया जाएगा। २९ इसलिए जो मनुष्य उस दिन उपवास न करे वह अपने लोगों में से नाश किया जाएगा। ३० और जो मनुष्य उस दिन किसी प्रकार का काम-काज करे उस मनुष्य को मैं उसके लोगों के बीच में से नाश कर डालूँगा। ३१ तुम किसी प्रकार का काम-काज न करना; यह तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में तुम्हारे घराने में सदा की विधि ठहरे। ३२ वह दिन तुम्हारे लिये परमविश्वाम का हो, उसमें तुम उपवास करना; और उस महीने के नवें दिन की सौँझ से अगली सौँझ तक अपना विश्वामदिन माना करना।” ३३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ३४ “इसाएलियों से कह कि उसी सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन से सात दिन तक यहोवा के लिये झोपड़ियों का पर्व रहा करे। ३५ पहले दिन पवित्र सभा हो; उसमें परिश्रम का कोई काम न करना। ३६ सातों दिन यहोवा के लिये हव्य चढ़ाया करना, फिर आठवें दिन तुम्हारी पवित्र सभा हो, और यहोवा के लिये हव्य चढ़ाना; वह महासभा का दिन है, और उसमें परिश्रम का कोई काम न करना। ३७ “यहोवा के नियत पर्व ये ही है, इनमें तुम यहोवा को हव्य चढ़ाना, अर्थात् होमबलि, अन्नबलि, मेलबलि, और अर्ध प्रत्येक अपने-

अपने नियत समय पर चढ़ाया जाए और पवित्र सभा का प्रचार करना। ३८ इन सभी से अधिक यहोवा के विश्वामिनों को मानना, और अपनी भेटों, और सब मन्त्रों, और स्वेच्छाबलियों को जो यहोवा को अर्पण करेगे चढ़ाया करना। ३९ “फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को, जब तुम देश की उपज को इकट्ठा कर चुको, तब सात दिन तक यहोवा का पर्व मानना; पहले दिन परमविश्वाम हो, और आठवें दिन परमविश्वाम हो। ४० और पहले दिन तुम अच्छे-अच्छे वृक्षों की उपज, और खजूर के पते, और घने वृक्षों की डालियाँ, और नदी में के मजनू को लेकर अपने परमेश्वर यहोवा के सामने सात दिन तक आनन्द करना। ४१ प्रतिवर्ष सात दिन तक यहोवा के लिये पर्व माना करना; यह तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में सदा की विधि ठहरे, कि सातवें महीने में यह पर्व माना जाए। ४२ सात दिन तक तुम झोपड़ियों में रहा करना, अर्थात् जितने जन्म के इसाएली हैं वे सब के सब झोपड़ियों में रहें, ४३ “इसलिए कि तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी के लोग जान रखें, कि जब यहोवा हम इसाएलियों को मिथ देश से निकालकर ला रहा था तब उसने उनको झोपड़ियों में टिकाया था; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।” ४४ और मूसा ने इसाएलियों को यहोवा के पर्व के नियत समय कह सुना।

२४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १ “इसाएलियों को यह आज्ञा दे कि मेरे पास उजियाला देने के लिये कूट के निकाला हुआ जैतून का निर्मल तेल ले आना, कि दीपक नियत जलता रहे। २ हास्त उसको, मिलापवाले तम्भू में, साक्षीपत्र के बीचवाले पर्दे से बाहर, यहोवा के सामने नियत सौँझ से भोर तक सजा कर रखे; यह तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी के लिये सदा की विधि ठहरे। ३ वह दीपकों को सोने की दीक्षा पर यहोवा के सामने नियत सजाया करे। ४ “तू मैता लेकर बार हरेटियाँ पकवाना, प्रत्येक रोटी में एका का दो दसवाँ अंश मैदा हो। ५ तब उनकी दो पंक्तियाँ करके, एक-एक पंक्ति में छः रोटियाँ, स्वच्छ मेज पर यहोवा के सामने रखना। ६ और एक-एक पंक्ति पर शुद्ध लोबान रखना कि वह रोटी स्मरण दिलानेवाली वस्तु और यहोवा के लिये हव्य हो। ७ प्रति विश्वामिन को वह उसे नियत यहोवा के सम्मुख क्रम से रखा करे, यह सदा की बाचा की रीत इसाएलियों की ओर से हुआ करे। ८ और वह हास्त और उसके पुत्रों की होंगी, और वे उसको किसी पवित्रस्थान में खाएँ, क्योंकि वह यहोवा के हव्यों में से सदा की विधि के अनुसार हास्त के लिये परमपवित्र वस्तु ठहरी है।” ९ उन दिनों में किसी इसाएली झी का बेटा, जिसका पिता मिरी पुस्त था, इसाएलियों के बीच चरा गया; और वह इसाएली झी का बेटा और एक इसाएली पुस्त छावनी के बीच आपस में मारपीट करने लगे, १० और वह इसाएली झी का बेटा यहोवा के नाम की निन्दा करके श्वाप देने लगा। यह सुनकर लोग उसको मूसा के पास ले गए। उसकी माता का नाम शलेमीत था, जो दान के गोत्र के दिन्दी की बेटी थी। ११ उन्होंने उसको हवालात में बन्द किया, जिससे यहोवा की आज्ञा से इस बात पर विचार किया जाए। १२ तब यहोवा ने मूसा से कहा, १२ “तुम लोग उस श्वाप देनेवाले को छावनी से बाहर ले जाओ, और जितनों ने वह निन्दा सुनी हो वे सब अपने-अपने हाथ उसके सिर पर रखें, तब सारी मण्डली के लोग उस पर पथराव करें। १३ और तू इसाएलियों से कह कि कोई क्यों न हो, जो अपने परमेश्वर को श्वाप दे उसे अपने पाप का भार उठाना पड़ेगा। १४ यहोवा के नाम की निन्दा करनेवाला निश्चय यार डाला जाएँ; सारी मण्डली के लोग निश्चय उस पर पथराव करें; चाहे देखी हो चाहे परदेशी, यदि कोई यहोवा के नाम की निन्दा करें तो वह मार डाला जाए। १५ “फिर जो कोई किसी मनुष्य को जान से मारे वह निश्चय मार डाला जाए। १६ और जो कोई किसी धरेलू पशु को जान से मारे वह उसका

बदला दे, अर्थात् प्राणी के बदले प्राणी दे। १७ “फिर यदि कोई किसी दूसरे को चोट पहुँचाए, तो जैसा उसने किया हो वैसा ही उसके साथ भी किया जाए, १८ अर्थात् अंग-भंग करने के बदले अंग-भंग किया जाए, आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, जैसी चोट जिसने किसी को पहुँचाई हो वैसी ही उसको पहुँचाई जाए। १९ पशु का मार डालनेवाला उसका बदला दे, परन्तु मनुष्य का मार डालनेवाला मार डाला जाए। २० तुम्हारा नियम एक ही हो, जैसा देती के लिये वैसा ही परदेशी के लिये भी हो; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।” २१ अतः मसा ने इसाएलियों को यह समझाया; तब उहोंने उस श्वाप देनेवाले को छावनी से बाहर ले जाकर उस पर पथराव किया। और इसाएलियों ने वैसा ही किया जैसा यहोवा ने मसा को आज्ञा दी थी।

२५ फिर यहोवा ने सनीं पर्वत के पास मूसा से कहा, १ “इसाएलियों से

कह कि जब तुम उस देश में प्रवेश करो जो मैं तुम्हें देता हूँ, तब भूमि को यहोवा के लिये विश्वाम मिला करो। २ छः वर्ष तो अपना-अपना खेत बोया करना, और छहवें वर्ष अपनी-अपनी दाख की बारी छाँट छाँटकर देश की उपज इकट्ठी किया करना; ३ परन्तु सातवें वर्ष भूमि को यहोवा के लिये परमविश्वामकाल मिला करो; उसमें न तो अपना खेत बोना और न अपनी दाख की बारी छाँटना। ४ जो कुछ काटे हुए खेत में अपने आप से उगे उसे न कटाना, और अपनी बिन छाँटी हुई दाखलता की दाखों को न तोड़ना; क्योंकि वह भूमि के लिये परमविश्वाम का वर्ष होगा। ५ भूमि के विश्वामकाल ही की उपज से तुम को, और तुम्हारे दास-दासी को, और तुम्हारे साथ रहनेवाले मजदूरों और परदेशियों को भी भोजन मिलेगा; ६ और तुम्हारे पशुओं का और देश में जितने जीवजन्तु हों उनका भी भोजन भूमि की सब उपज से होगा। ७ “सात विश्वामवर्ष, अर्थात् सातवें नियत वर्ष गिन लेना, सातों विश्वामवर्षों का यह समय उनचास वर्ष होगा। ८ तब सातवें महीने के दसवें दिन को, अर्थात् प्रायश्चित्त के दिन, जय जयकार के महाशब्द का नरसिंगा अपने सारे देश में सब कहीं फुँकवाना। ९ और उस पचासवें वर्ष को पवित्र करके मानना, और देश के सारे निवासियों के लिये छुटकारे का प्रचार करना; वह वर्ष तुम्हारे यहाँ जुबनी कहलाएँ; उसमें तुम अपनी-अपनी निज भूमि और अपने-अपने घराने में लौटने पाओगे। १० तुम्हारे यहाँ वह पचासवाँ वर्ष जुबली का वर्ष कहलाएँ; उसमें तुम न बोना, और जो अपने आप उगे उसे भी न काटना, और न बिन छाँटी हुई दाखलता की दाखों को तोड़ना। ११ क्योंकि वह तो जुबली का वर्ष होगा; वह तुम्हारे लिये पवित्र होगा; तुम उसकी उपज खेत ही में से ले लेकर खाना। १२ “इस जुबली के वर्ष में तुम अपनी-अपनी निज भूमि को लौटने पाओगे। १३ और यदि तुम अपने भाई-बन्धु के हाथ कुछ बेचो या अपने भाई-बन्धु से कुछ मोल लो, तो तुम एक दूसरे पर उपद्रव न करना। १४ जुबली के बाद जितने वर्ष भी तीते हों उनकी गिनती के अनुसार दाम ठहराके एक दूसरे से मोल लेना, और शेष वर्षों की उपज के अनुसार वह तेरे हाथ बेचे। १५ जितने वर्ष और रहें उतना ही दाम बढ़ाना, और जितने वर्ष कम रहें उतना ही दाम घटाना, क्योंकि वर्ष की उपज की संख्या जितनी ही वह तेरे हाथ बेचेगा। १६ तुम अपने-अपने भाई-बन्धु पर उपद्रव न करना; अपने परमेश्वर का भय मानना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। १७ “इसलिए तुम मेरी विधियों को मानना, और मेरी नियमों पर समझ बढ़ाकर चलना; क्योंकि ऐसा करने से तुम उस देश में निडर बसे रहोगे। १८ भूमि अपनी उपज उपजाया करेगी, और तुम पेट भर खाया करेगे, और उस देश में निडर बसे रहोगे। १९ और यदि तुम कहो कि सातवें वर्ष में हम क्या खाएँगे, न तो हम बोँगे न अपने खेत की उपज इकट्ठा करेंगे?” २० तो जानो कि मैं तुम को छठवें वर्ष में ऐसी आशीष दूँगा, कि भूमि की उपज तीन वर्ष तक काम आएगी। २१ तुम आठवें वर्ष में बोँगे, और

पुरानी उपज में से खाते रहोगे, और नवें वर्ष की उपज जब तक न मिले तब तक तुम पुरानी उपज में से खाते रहोगे। २३ “भूमि सदा के लिये बेची न जाए, क्योंकि भूमि मेरी है; और उसमें तुम परदेशी और बाहरी होंगे। २४ लेकिन तुम अपने भाग के सारे देश में भूमि को छुड़ाने देना। २५ “यदि तेरा कोई भाई-बन्धु कंगाल होकर अपनी निज भूमि में से कुछ बेच डाले, तो उसके कुटुम्बियों में से जो सबसे निकट हो वह आकर अपने भाई-बन्धु के बेचे भूमि भाग को छुड़ा ले। २६ यदि किसी मनुष्य के लिये कोई छुड़ानेवाला न हो, और उसके पास इतना धन हो कि आप ही अपने भाग को छुड़ा सके, २७ तो वह उसके बिकने के समय से वर्षों की निनती करके शेष वर्षों की उपज का दाम उसको, जिसमें उसे मोल लिया हो, फेर दे; तब वह अपनी निज भूमि का अधिकारी हो जाए। २८ परन्तु यदि उसके पास इतनी पूँजी न हो कि उसे फिर अपनी कर सके, तो उसकी बेची हृदृशी भूमि जुबली के वर्ष तक मोल लेनेवालों के हाथ में रहे, और जुबली के वर्ष में छूट जाए तब वह मनुष्य शहरपनाह वाले नगर में बसने का घर बेचे, तो वह बेचने के बाद वर्ष भर के अन्दर उसे छुड़ा सकेगा, अर्थात् पूरे वर्ष भर उस मनुष्य को छुड़ाने का अधिकार रहेगा। २९ परन्तु यदि वह वर्ष भर में न छुड़ाए, तो वह घर जो शहरपनाह वाले नगर में हो मोल लेनेवालों का बना रहे, और पीढ़ी-पीढ़ी में उसी में वंश का बना रहे; और जुबली के वर्ष में भी न छूटे। ३० परन्तु बिना शहरपनाह के गाँवों के घर तो देश के खेतों के समान गिने जाएँ; उनका छुड़ाना भी हो सकेगा, और वे जुबली के वर्ष में छूट जाएँ। ३१ फिर भी लेवियों के निज भाग के नगरों के जो घर हों उनको लेवीय जब चाहें तब छुड़ाएँ। ३२ और यदि कोई लेवीय अपना भाग न छुड़ाए, तो वह बेचा हुआ घर जो उसके भाग के नगर में हो जुबली के वर्ष में छूट जाएँ; क्योंकि इस्लाएलियों के बीच लेवियों का भाग उनके नगरों में वे घर ही है। ३३ पर उनके नगरों के चारों ओर की चराई की भूमि बेची न जाएँ; क्योंकि वह उनका सदा का भाग होगा। ३४ “फिर यदि तेरा कोई भाई-बन्धु कंगाल हो जाए, और उसकी दशा तेरे सामने तरस योग्य हो जाए, तो तू उसको सम्भालना; वह परदेशी या यात्री के समान तेरे संग रहे। ३५ उससे ब्याज या बढ़ती न लेना; अपने परमेश्वर का भय मानना; जिससे तेरा भाई-बन्धु तेरे संग जीवन निर्वह कर सके। ३६ उसको ब्याज पर स्पया न देना, और न उसको भोजनवस्तु लाभ के लालच से देना। ३७ मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, मैं तम्हें कनान देश देने के लिये और तुम्हारा परमेश्वर ठहरने की मनसा से तुम को मिस देश से निकाल लाया हूँ। ३८ “फिर यदि तेरा कोई भाई-बन्धु तेरे सामने कंगाल होकर अपने आपको तेरे हाथ बेच डाले, तो उससे दास के समान सेवा न करवाना। ३९ वह तेरे संग मजदूर या यात्री के समान रहे, और जुबली के वर्ष तक तेरे संग रहकर सेवा करता रहे; ४० तब वह बाल-बच्चों समेत तेरे पास से निकल जाए, और अपने कुटुम्ब में और अपने पितरों की निज भूमि में लौट जाए। ४१ क्योंकि वे मेरी ही दास हैं, जिनको मैं मिस देश से निकाल लाया हूँ; इसलिए वे दास की रीति से न बेचे जाएँ। ४२ उस पर कठोरता से अधिकार न करना; अपने परमेश्वर का भय मानते रहना। ४३ तेरे जो दास-दासियाँ हों वे तुम्हारे चारों ओर की जातियों में से हों, और दास और दासियाँ उन्हीं में से मोल लेना। ४४ जो यात्री लोग तुम्हारे बीच में परदेशी होकर रहेंगे, उनमें से और उनके घरानों में से भी जो तुम्हारे आस-पास हों, और जो तुम्हारे देश में उत्पन्न हुए हों, उनमें से तुम दास और दासी मोल लो; और वे तुम्हारा भाग ठहरें। ४५ तुम अपने पुत्रों को भी जो तुम्हारे बाद होंगे उनके अधिकारी कर सकोगे, और वे उनका भाग ठहरें; उनमें से तुम सदा अपने लिये दास लिया करना, परन्तु तुम्हारे भाई-बन्धु जो इस्लाएली हों उन पर अपना अधिकार कठोरता से न जाताना। ४६ “फिर

यदि तेरे सामने कोई परदेशी या यात्री धनी हो जाए, और उसके सामने तेरा भाई कंगाल होकर अपने आपको तेरे सामने उस परदेशी या यात्री या उसके बाहर के हाथ बेच डाले, ४७ तो उसके बिक जाने के बाद वह फिर छुड़ाया जा सकता है; उसके भाइयों में से कोई उसको छुड़ा सकता है, ४८ या उसका चाचा, या चचेरा भाई, तथा उसके कुल का कोई भी निकट कुटुम्बी उसको छुड़ा सकता है; या यदि वह धनी हो जाए, तो वह आप ही अपने को छुड़ा सकता है। ४९ वह अपने मोल लेनेवाले के साथ अपने बिकने के वर्ष से जुबली के वर्ष तक हिसाब करे, और उसके बिकने का दाम वर्षों की गिनती के अनुसार हो, अर्थात् वह दाम मजदूर के दिवसों के समान उसके साथ होगा। ५० यदि जुबली के वर्ष के बहुत वर्ष रह जाएँ, तो जितने स्पष्टों से वह मोल लिया गया हो उनमें से वह अपने छुड़ाने का दाम उतने वर्षों के अनुसार फेर दे। ५१ यदि जुबली के वर्ष के थोड़े वर्ष रह गए हों, तो भी वह अपने स्वामी के साथ हिसाब करके अपने छुड़ाने का दाम उतने ही वर्षों के अनुसार फेर दे। ५२ वह अपने स्वामी के संग उस मजदूर के समान रहे जिसकी वार्षिक मजदूरी ठहराई जाती हो; और उसका स्वामी उस पर तेरे सामने कठोरता से अधिकार न जाताने पाए। ५३ और यदि वह इन रीतियों से छुड़ाया न जाए, तो वह जुबली के वर्ष में अपने बाल-बच्चों समेत छूट जाए। ५४ क्योंकि इस्लाएली मेरी ही दास होता है, वे मिस देश से मेरी ही निकाले हुए दास हैं, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

२६ “तुम अपने लिये मूरतें न बनाना, और न कोई खुदी हृदृशी मूर्ति या स्तम्भ अपने लिये खड़ा करना, और न अपने देश में दण्डवत् करने के लिये नक्काशीदार पत्थर स्थापित करना; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। २ तुम मेरे विश्वामिदिनों का पालन करना और मेरे पवित्रस्थान का भय मानना; मैं यहोवा हूँ। ३ “यदि तुम मेरी विधियों पर चलो और मेरी आज्ञाओं को मानकर उनका पालन करो, ४ तो मैं तुम्हारे लिये समय-समय पर मैं बरसाऊँगा, तथा भूमि अपनी उपज उपजाएगी, और मैदान के वक्ष अपने-अपने फल दिया करेंगे; ५ यहाँ तक कि तुम दाख तोड़ने के समय भी दाँवीं करते रहोगे, और बोने के समय भी भर पेट दाख तोड़ते रहोगे, और तुम मनमानी रोटी खाया करोगे, और अपने देश में निश्चिन्त बसे रहोगे। ६ और मैं तुम्हारे देश में सुख चैन ढूँगा, और तुम सोओगे और तुम्हारा कोई डालनेवाला न होगा; और मैं उस देश में खतरनाक जन्तुओं को न रहने ढूँगा, और तलवार तुम्हारे देश में न चलेंगी। ७ और तुम अपने शत्रुओं को मार भगा दोगे, और वे तुम्हारी तलवार से मारे जाएँगे। ८ तुम में से पौँच मनुष्य सौ को और सौ मनुष्य दस हजार को खदेंगे; और तुम्हारे शत्रु तलवार से तुम्हारे आगे-आगे मारे जाएँगे; ९ और मैं तुम्हारी ओर क्यापाढ़ि रखूँगा और तुम को फलवन्त करूँगा और बढ़ाऊँगा, और तुम्हारे संग अपनी बाचा को पूर्ण करूँगा। १० और तुम रखे हुए पुराने अनाज को खाओगे, और नये के रहते भी पुराने को निकालोगे। ११ और मैं तुम्हारे बीच अपना निवास-स्थान बनाए रखूँगा, और मेरा जी तुम से धृणा नहीं करेगा। १२ और मैं तुम्हारे मध्य चला फिरा करूँगा, और तुम्हारा परमेश्वर बना रहूँगा, और तुम मेरी प्रजा बने रहोगे। १३ मैं तो तुम्हारा वह परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुम को मिस देश से इस्लाइ निकाल ले आया कि तुम मिस्त्रियों के दास न बने रहो; और मैंने तुम्हारे ज़ए को तोड़ डाला है, और तुम को सीधा खड़ा करके चलाया है। १४ “यदि तुम मेरी न सुनोगे, और इन सब आज्ञाओं को न मानोगे, १५ और मेरी विधियों को निकम्मा जानोगे, और तुम्हारी आत्मा मेरी निर्णयों से धृणा करे, और तुम मेरी सब आज्ञाओं का पालन न करोगे, वरन् मेरी बाचा को तोड़ोगे, १६ तो मैं तुम से यह करूँगा, अर्थात् मैं तुम को बेचैन करूँगा, और क्षयरोग और ज़वर से पीड़ित करूँगा, और इनके कारण तुम्हारी आँखें धूंधली हो जाएँगी, और तुम्हारा मन अति उदास होगा। और तुम्हारा बीज बोना

व्यर्थ होगा, क्योंकि तुम्हारे शत्रु उसकी उपज खा लेंगे; १७ और मैं भी तुम्हारे विस्तृ हो जाऊँगा, और तुम अपने शत्रुओं से हार जाओगे; और तुम्हारे बैरी तुम्हारे ऊपर अधिकार करेंगे, और जब कोई तुम को खेड़ता भी न होगा तब भी तुम भागोगे। १८ और यदि तुम इन बातों के उपरान्त भी मेरी न सुनो, तो मैं तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें सातगुना ताड़ना और दौँगा, १९ और मैं तुम्हारे बल का घमण्ड तोड़ डालूँगा, और तुम्हारे लिये आकाश को मानो लोहे का और भूमि को मानो पीतल की बना दौँगा; २० और तुम्हारा बल अकारथ गँवाया जाएगा, क्योंकि तुम्हारी भूमि अपनी उपज न उपजाएगी, और मैदान के वृक्ष अपने फल न देंगे। २१ “यदि तुम मेरे विस्तृ चलते ही रहो, और मेरा कहना न मानो, तो मैं तुम्हारे पापों के अनुसार तुम्हारे ऊपर और सात गुण संकट डालूँगा। २२ और मैं तुम्हारे बीच बन पशु भेज़ूँगा, जो तुम को निर्वैश करेंगे, और तुम्हारे घेरेलू पशुओं को नाश कर डालेंगे, और तुम्हारी गिनती घटाएँगे, जिससे तुम्हारी सड़कें सूनी पड़ जाएँगी। २३ “फिर यदि तुम इन बातों पर भी मेरी ताड़ना से न सुधरो, और मेरे विस्तृ चलते ही रहो, २४ तो मैं भी तुम्हारे विस्तृ चलूँगा, और तुम्हारे पापों के कारण मैं आप ही तुम को सात गुण माझ़ूँगा। २५ और मैं तुम पर एक ऐसी तलवार चलवाऊँगा, जो वाचा तोड़ने का पूरा-पूरा पलटा लेगी; और जब तुम अपने नगरों में जा जाकर इकट्ठे होंगे तब मैं तुम्हारे बीच मरी फैलाऊँगा, और तुम अपने शत्रुओं के बश में सौंप दिए जाओगे। २६ जब मैं तुम्हारे लिये अन्न के आधार को दूर कर डालूँगा, तब दस

छियाँ तुम्हारी रोटी एक ही तंदू में पकाकर तौल-तौलकर बाँट देंगी, और तुम खाकर भी तम न होंगे। २७ “फिर यदि तुम इसके उपरान्त भी मेरी न सुनोगे, और मेरे विस्तृ चलते ही रहोगे, २८ तो मैं अपने न्याय में तुम्हारे विस्तृ चलूँगा, और तुम्हारे पापों के कारण तुम को सातगुना ताड़ना और भी दौँगा। २९ और तुम को अपने बेटों और बेटियों का माँस खाना पड़ेगा। ३० और मैं तुम्हारे पूजा के ऊंचे स्थानों को ढाँ दौँगा, और तुम्हारे सूर्य की प्रतिमाएँ तोड़ डालूँगा, और तुम्हारी लोहों को तुम्हारी तोड़ी ही हृद मूरतों पर फेंक दौँगा, और मेरी आत्मा को तुम से घृणा हो जाएगी। ३१ और मैं तुम्हारे नगरों को उजाड़ दौँगा, और तुम्हारे पवित्रस्थानों को उजाड़ दौँगा, और तुम्हारा सुखदायक सुगन्ध ग्रहण न करँगा। ३२ और मैं तुम्हारे देश को सूना कर दौँगा, और तुम्हारे शत्रु जो उसमें रहते हैं वे इन बातों के कारण चकित होंगे। ३३ और मैं तुम को जाति-जाति के बीच तितर-वितर करूँगा, और तुम्हारे पीछे-पीछे तलवार खीचे रहँगा; और तुम्हारा देश सुना हो जाएगा, और तुम्हारे नगर उजाड हो जाएँगे। ३४ “तब जितने दिन वह देश सूना पड़ा रहेगा और तुम अपने शत्रुओं के देश में होंगे उतने दिन वह अपने विश्वामिकालों को मानता रहेगा। तब ही वह देश विश्वाम पाएगा, अर्थात् अपने विश्वामिकालों को मानता रहेगा। ३५ जितने दिन वह सूना पड़ा रहेगा उतने दिन उसको विश्वाम रहेगा, अर्थात् जो विश्वाम उसको तुम्हारे बहाँ बसे रहने के समय तुम्हारे विश्वामिकालों में न मिला होगा वह उसको तब मिलेगा। ३६ और तुम में से जो बचा रहेंगे और अपने शत्रुओं के देश में होंगे उनके हृदय में मै कायरता उपजाऊँगा; और वे पते के खड़कने से भी भाग जाएँगे, और वे ऐसे भागेंगे जैसे कोई तलवार से भागे, और किसी के बिना पीछा किए भी वे गिर पड़ेंगे। ३७ जब कोई पीछा करनेवाला न हो तब भी मानो तलवार के भय से वे एक दूसरे से ठोकर खाकर गिरते जाएँगे, और तुम को अपने शत्रुओं के सामने ठहरने की कल शक्ति न होगी। ३८ तब तुम जाति-जाति के बीच पहुँचकर नाश हो जाओगे, और तुम्हारे शत्रुओं की भूमि तुम को खा जाएगी। ३९ और तुम में से जो बचे रहेंगे वे अपने शत्रुओं में अपने अधर्म के कारण गल जाएँगे, और अपने पुराखाओं के अर्धम के कामों के कारण भी वे उन्हीं के समान गल जाएँगे। ४० “पर यदि वे अपने और अपने पितरों के अर्धम को मान लेंगे,

अर्थात् उस विच्वासघात को जो उन्होंने मेरे विस्तृ किया, और यह भी मान लेंगे, कि हम यहोवा के विस्तृ चले थे, ४१ इसी कारण वह हमारे विस्तृ होकर हमें शत्रुओं के देश में ले आया है। यदि उस समय उनका खतनाहित हृदय दब जाएगा और वे उस समय अपने अर्धम के दण्ड को अंगीकार करेंगे; ४२ तब जो वाचा मैंने याकूब के संग बाँधी थी उसको मैं स्मरण करूँगा, और जो वाचा मैंने इसहाक से और जो वाचा मैंने अब्राहम से बाँधी थी उनको भी स्मरण करूँगा, और इस देश को भी मैं स्मरण करूँगा। ४३ पर वह देश उनसे रहित होकर सूना पड़ा रहेगा, और उनके बिना सूना रहकर भी अपने विश्वामिकालों को मानता रहेगा; और वे लोग अपने अधर्म के दण्ड को अंगीकार करेंगे, इसी कारण से कि उन्होंने मेरी आज्ञाओं का उल्लंघन किया था, और उनकी आत्माओं को मेरी विधियों से घृणा थी। ४४ इन पर भी जब वे अपने शत्रुओं के देश में होंगे, तब मैं उनको इस प्रकार नहीं ढोँझूँगा, और न उनसे ऐसी घृणा करूँगा कि उनका सर्वनाश कर डालूँ और अपनी उस वाचा को तोड़ दूँ जो मैंने उनसे बाँधी है; क्योंकि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ; ४५ परन्तु मैं उनकी भलाई के लिये उनके पितरों से बाँधी हई वाचा को स्मरण करूँगा, जिन्हें मैं अन्यजातियों की आँखों के सामने मिथ देश से निकालकर लाया कि मैं उनका परमेश्वर ठहरूँ, मैं यहोवा हूँ।” ४६ जो-जो विधियाँ और नियम और व्यवस्था यहोवा ने अपनी ओर से इसाएलियों के लिये सनि पर्वत पर मूसा के द्वारा ठहराई थी वे ये ही हैं।

२७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ “इसाएलियों से यह कह कि जब कोई विशेष संकल्प माने, तो संकल्प किया हुआ मनुष्य तेरे ठहराने के अनुसार यहोवा के होंगे; ३ इसलिए यदि वह बीस वर्ष या उससे अधिक और साठ वर्ष से कम अवस्था का पुस्त हो, तो उसके लिये पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार पचास शेकेल का चाँदी ठहरे। ४ यदि वह बीं हो, तो तीस शेकेल ठहरे। ५ फिर यदि उसकी अवस्था पाँच वर्ष या उससे अधिक और बीस वर्ष से कम की हो, तो लड़के के लिये तो बीस शेकेल, और लड़की के लिये दस शेकेल ठहरे। ६ यदि उसकी अवस्था एक महीने या उससे अधिक और पाँच वर्ष से कम की हो, तो लड़के के लिये तो पाँच, और लड़की के लिये तीन शेकेल ठहरे। ७ फिर यदि उसकी अवस्था साठ वर्ष की या उससे अधिक हो, और वह पुस्त हो तो उसके लिये पन्दह शेकेल, और बीं हो तो दस शेकेल ठहरे। ८ परन्तु यदि कोई इतना कंगाल हो कि याजक का ठहराया हुआ दाम न दे सके, तो वह याजक के सामने खड़ा किया जाए, और याजक उसकी पूँजी ठहराए, अर्थात् जितना संकल्प करनेवाले से हो सके, याजक उसी के अनुसार ठहराए। ९ “फिर जिन पशुओं में से लोग यहोवा को चढ़ावा चढ़ाते हैं, यदि ऐसों में से कोई संकल्प किया जाए, तो जो पशु कोई यहोवा को दे वह पवित्र ठहरेगा। १० वह उसे किसी प्रकार से न बदले, न तो वह बुरे के बदले अच्छा, और न अच्छे के बदले बुरा दे; और यदि वह उस पशु के बदले दूसरा पशु दे, तो वह और उसका बदला दोनों पवित्र ठहरेंगे। ११ और जिन पशुओं में से लोग यहोवा के लिये चढ़ावा नहीं चढ़ाते ऐसों में से यदि वह हो, तो वह उसको याजक के सामने खड़ा कर दे, १२ तब याजक पशु के गुण-अवगुण दोनों विचार कर उसका मोल ठहराएँ; और जितना याजक ठहराए उसका मोल उतना ही ठहरे। १३ पर यदि संकल्प करनेवाला उसे किसी प्रकार से छुड़ाना चाहे, तो जो मोल याजक ने ठहराया हो उसमें उसका पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर दे। १४ “फिर यदि कोई अपना घर यहोवा के लिये पवित्र ठहराकर संकल्प करे, तो याजक उसके गुण-अवगुण दोनों विचार कर उसका मोल ठहराएँ; और जितना याजक ठहराए उसका मोल उतना ही ठहरे। १५ और यदि घर का पवित्र करनेवाला उसे छुड़ाना चाहे, तो जितना स्पया याजक ने उसका

मोल ठहराया हो उसमें वह पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर दे, तब वह घर उसी का रहेगा। १५ “फिर यदि कोई अपनी निज भूमि का कोई भाग यहोवा के लिये पवित्र ठहराना चाहे, तो उसका मोल इसके अनुसार ठहरे, कि उसमें कितना बीज पड़ेगा; जितना भूमि में होमेर भर जौ पड़े उतनी का मोल पचास शेकेल ठहरे। १६ यदि वह अपना खेत जुबली के वर्ष ही में पवित्र ठहराए, तो उसका दाम तेरे ठहराने के अनुसार ठहरे; १७ और यदि वह अपना खेत जुबली के वर्ष के बाद पवित्र ठहराए, तो जितने वर्ष दूसरे जुबली के वर्ष के बाकी रहें उन्हीं के अनुसार याजक उसके लिये स्पर्ये का हिसाब करे, तब जितना हिसाब में आए उतना याजक के ठहराने से कम हो। १८ और यदि खेत को पवित्र ठहरानेवाला उसे छुड़ाना चाहे, तो जो दाम याजक ने ठहराया हो उसमें वह पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर दे, तब खेत उसी का रहेगा। १९ और यदि वह खेत को छुड़ाया जाए; २० परन्तु जब वह खेत जुबली के वर्ष में छूटे, तब पूरी रीति से अर्पण किए हुए खेत के समान यहोवा के लिये पवित्र ठहरे, अर्थात् वह याजक ही की निज भूमि हो जाए। २१ फिर यदि कोई अपना मोल लिया हुआ खेत, जो उसकी निज भूमि के खेतों में का न हो, यहोवा के लिये पवित्र ठहराए, २२ तो याजक जुबली के वर्ष तक का हिसाब करके उस मनुष्य के लिये जितना ठहराए उतना ही वह यहोवा के लिये पवित्र जानकर उसी दिन दे दे। २३ जुबली के वर्ष में वह खेत उसी के अधिकार में जिससे वह मोल लिया गया हो फिर आ जाए, अर्थात् जिसकी वह निज भूमि हो उसी की फिर हो जाए। २४ जिस-जिस वस्तु का मोल याजक ठहराए उसका मोल पवित्रस्थान ही के शेकेल के हिसाब से ठहरे: शेकेल बीस गोरा का ठहरे। २५ “परन्तु घेरलू पशुओं का पहलौठा, जो पहलौठा होने के कारण यहोवा का ठहरा है, उसको कोई पवित्र न ठहराए; चाहे वह बछड़ा हो, चाहे भेड़ या बकरी का बच्चा, वह यहोवा ही का है। २६ परन्तु यदि वह अशद्ध पशु का हो, तो उसका पवित्र ठहरानेवाला उसको याजक के ठहराए हुए मोल के अनुसार उसका पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर छुड़ा सकता है; और यदि वह न छुड़ाया जाए, तो याजक के ठहराए हुए मोल पर बेच दिया जाए। २७ “परन्तु अपनी सारी वस्तुओं में से जो कुछ कोई यहोवा के लिये अर्पण करे, चाहे मनुष्य हो चाहे पशु, चाहे उसकी निज भूमि का खेत हो, ऐसी कोई अर्पण की हुई वस्तु न तो बेची जाए और न छुड़ाई जाए; जो कुछ अर्पण किया जाए वह यहोवा के लिये परमपवित्र ठहरे। २८ मनुष्यों में से जो कोई मृत्युदण्ड के लिये अर्पण किया जाए, वह छुड़ाया न जाए; निश्चय वह मार डाला जाए। २९ “फिर भूमि की उपज का सारा दशमांश, चाहे वह भूमि का बीज हो चाहे वृक्ष का फल, वह यहोवा ही का है; वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरे। ३० यदि कोई अपने दशमांश में से कुछ छुड़ाना चाहे, तो पाँचवाँ भाग बढ़ाकर उसको छुड़ाए। ३१ और गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ, अर्थात् जो-जो पशु गिनने के लिये लाठी के तले निकल जानेवाले हैं उनका दशमांश, अर्थात् दस-दस पीछे एक-एक पशु यहोवा के लिये पवित्र ठहरे। ३२ कोई उसके गुण-अवगुण न विचारे, और न उसको बदले; और यदि कोई उसको बदल भी ले, तो वह और उसका बदला दोनों पवित्र ठहरें; और वह कभी छुड़ाया न जाए।” ३३ जो आज्ञाएँ यहोवा ने इस्माएलियों के लिये सभी पर्वत पर मूसा को दी थी, वे ये ही हैं।

गिनती

१ इसाएलियों के मिस्र देश से निकल जाने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहले दिन को, यहोवा ने सीनै के जंगल में मिलापवाले तम्बू में, मूसा से कहा, २ “इसाएलियों की सारी मण्डली के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, एक-एक पुम्प की पिनती नाम ले लेकर करना। ३ जितने इसाएली बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के हों, और जो युद्ध करने के योग्य हों, उन सभी को उनके दलों के अनुसार तू और हास्त गिन ले। ४ और तुम्हारे साथ प्रत्येक गोत्र का एक पुम्प भी हो जो अपने पितरों के घराने का मुख्य पुम्प हो। ५ तुम्हारे उन साथियों के नाम ये हैं: रूबेन के गोत्र में से शदेऊर का पुत्र एलीसूर; ६ शिमोन के गोत्र में से सरीशैदै का पुत्र शलूमीएल; ७ यहदा के गोत्र में से अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन; ८ इस्साकार के गोत्र में से सूआर का पुत्र नतनेल; ९ जबलतून के गोत्र में से हेलोन का पुत्र एलीआब; १० यसफ़ वंशियों में से ये हैं, अर्थात् ऐमै के गोत्र में से अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा, और मनशो के गोत्र में से पदासूर का पुत्र गम्स्तीएल; ११ बिन्यामीन के गोत्र में से गिदोनी का पुत्र अबीदाम; १२ दान के गोत्र में से अम्मीशैदै का पुत्र अहीएजेर; १३ अरोर के गोत्र में से ओकान का पुत्र पापीएल; १४ गाद के गोत्र में से दौरूल का पुत्र एल्यासाप; १५ नसाली के गोत्र में से एसान का पुत्र अहीरा।” १६ मण्डली में से जो पुम्प अपने-अपने पितरों के गोत्रों के प्रधान होकर बुलाए गए, वे ये ही हैं, और ये इसाएलियों के हजारों में मुख्य पुम्प थे। १७ जिन पुम्पों के नाम ऊपर लिखे हैं उनको साथ लेकर मूसा और हास्त ने, १८ दूसरे महीने के पहले दिन सारी मण्डली इकट्ठी की, तब इसाएलियों ने अपने-अपने कुल और अपने-अपने पितरों के घराने के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु वालों के नामों की पिनती करवाकर अपनी-अपनी वंशावली लिखवाई, १९ जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी उसी के अनुसार उसने सीनै के जंगल में उनकी गणना की। २० और इसाएल के पहलीटै रूबेन के वंश के जितने पुम्प अपने कुल और अपने पितरों के घराने के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए; २१ और रूबेन के गोत्र के जितने हुए पुम्प साढ़े छियालीस हजार थे। २२ शिमोन के वंश के लोग जितने पुम्प अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे, और जो युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए। २३ और शिमोन के गोत्र के जितने हुए पुम्प उनसठ हजार तीन सौ थे। २४ गाद के वंश के जितने पुम्प अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए; २५ और गाद के गोत्र के जितने हुए पुम्प पैतालीस हजार साढ़े छः सौ थे। २६ यहदा के वंश के जितने पुम्प अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए; २७ और यहदा के गोत्र के जितने हुए पुम्प चौहत्तर हजार छः सौ थे। २८ इस्साकार के वंश के जितने पुम्प अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए; २९ और इस्साकार के गोत्र के जितने हुए पुम्प अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए; ३० और जबलतून के वंश के जितने पुम्प अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए; ३१ और जबलतून के गोत्र के जितने हुए पुम्प सत्तावन हजार चार सौ थे। ३२ यसुफ़ के वंश में से ऐमै के वंश के जितने पुम्प अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के

अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गएः ३३ और ऐप्रेम गोत्र के गिने हुए पुष्प साढ़े इकातलीस हजार थे। ३४ मनशे के बंश के जितने पुष्प अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गएः ३५ और मनशे के गोत्र के गिने हुए पुष्प बीतीस हजार दो सौ थे। ३६ बिन्यामीन के बंश के जितने पुष्प अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गएः ३७ और बिन्यामीन के गोत्र के गिने हुए पुष्प पैतीस हजार चार सौ थे। ३८ दान के बंश के जितने पुष्प अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गएः ३९ और दान के गोत्र के गिने हुए पुष्प बासठ हजार सात सौ थे। ४० आशेर के बंश के जितने पुष्प अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गएः ४१ और आशेर के गोत्र के गिने हुए पुष्प इकातलीस हजार थे। ४२ नमाली के बंश के जितने पुष्प अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गएः ४३ और नमाली के गोत्र के गिने हुए पुष्प तिरपन हजार चार सौ थे। ४४ इस प्रकार मूसा और हास्तन और इस्माएल के बाहर प्रधानों ने, जो अपने-अपने पितरों के घराने के प्रधान थे, उन सभी को गिन लिया और उनकी गिनती यही थी। ४५ अतः जितने इस्माएली बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे अपने पितरों के घरानों के अनुसार गिने गएः ४६ और वे सब गिने हुए पुष्प लिलाकर छः लाख तीन हजार साढ़े पाँच सौ थे। ४७ इनमें लेवीय अपने पितरों के गोत्र के अनुसार नहीं गिने गएः ४८ क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा था, “लेवीय गोत्र की गिनती इस्माएलियों के सांग न करना; ४९ परन्तु तू लेवीयों को गोत्र के अनुसार नहीं गिने गए।” ५० क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा था, “लेवीय गोत्र की गिनती इस्माएलियों के सांग न करना; ५१ परन्तु तू लेवीयों को साक्षी के तम्बू पर, और उसके सम्पूर्ण सामान पर, अर्थात् जो कुछ उससे सम्बन्ध रखता है उस पर अधिकारी नियुक्त करना; और सम्पूर्ण सामान सहित निवास को वे ही उठाया करें, और वे ही उसमें सेवा टहल भी किया करें, और तम्बू के आस-पास वे ही अपने डेरे डाला करें। ५२ और जब जब निवास को आगे ले जाना हो तब-तब लेवीय उसको गिरा दें, और जब जब निवास को खड़ा करना हो तब-तब लेवीय उसको खड़ा किया करें; और यदि कोई दूसरा समीप आए तो वह मार डाला जाए। ५३ और इस्माएली अपना-अपना डेरा अपनी-अपनी छावनी में और अपने-अपने झाँडे के पास खड़ा किया करें; ५४ पर लेवीय अपने डेरे साक्षी के तम्बू ही के चारों ओर खड़े किया करें, कहीं ऐसा न हो कि इस्माएलियों की माडली पर मेरा कोप भड़के; और लेवीय साक्षी के तम्बू की रक्षा किया करें।” ५५ जो आजाएँ यहोवा ने मूसा को दी थीं, इस्माएलियों ने उन्हीं के अनुसार किया।

२ फिर यहोवा ने मूसा और हास्न से कहा, २ “इमाएली मिलापवाले तम्हाँ के चारों ओर और उसके समाने अपने-अपने झांडे और अपने-अपने पितरों के घराने के निशान के समीप अपने डेरे खड़े करें। ३ और जो पूर्व दिशा की ओर जहाँ सूर्योदय होता है, अपने-अपने दलों के अनुसार डेरे खड़े किया करें, वे ही यहदा की छावनीवाले झांडे के लोग होंगे, और उनका प्रधान अमीनादाब का पुत्र नहशान होगा, ४ और उनके दल के गिने हए पुस्त चौहत्तर हजार छँ सौ हैं। ५ उके समीप जो डेरे खड़े किया करें वे इस्साकार

के गोत्र के हों, और उनका प्रधान सूआर का पुत्र नतनेल होगा, ६ और उनके दल के गिने हुए पुस्त चौबन हजार चार सौ हैं। ७ इनके पास जब्लून के गोव्रावाले होंगे, और उनका प्रधान हेलोन का पुत्र एलीआब होगा, ८ और उनके दल के गिने हुए पुस्त सतावन हजार चार सौ हैं। ९ इस रीति से यहदा की छावनी में जितने अपने-अपने दलों के अनुसार गिने गए वे सब मिलकर एक लाख छियासी हजार चार सौ हैं। पहले ये ही कूच किया करें। १० “दक्षिण की ओर रुबेन की छावनी के झण्डे के लोग अपने-अपने दलों के अनुसार रहें, और उनका प्रधान स्थेऊर का पुत्र एलीसूर होगा, ११ और उनके दल के गिने हुए पुस्त साढ़े छियालीस हजार हैं। १२ उनके पास जो डेर खड़े किया करें वे शिमोन के गोत्र के होंगे, और उनका प्रधान सरीशैदृ का पुत्र शलमीएल होगा, १३ और उनके दल के गिने हुए पुस्त उनसठ हजार तीन सौ हैं। १४ फिर गाद के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान स्ट्लैल का पुत्र एल्यासाप होगा, १५ और उनके दल के गिने हुए पुस्त पैतालीस हजार साढ़े छः सौ हैं। १६ रुबेन की छावनी में जितने अपने-अपने दलों के अनुसार गिने गए वे सब मिलकर एक लाख इक्यावन हजार साढ़े चार सौ हैं। दसरा कूच इनका हो। १७ “उनके पीछे और सब छावनियों के बीचों बीच लेवियों की छावनी समेत मिलापवाले तम्बू का कूच हुआ करें; जिस क्रम से वे डेर खड़े करें उसी क्रम से वे अपने-अपने स्थान पर अपने-अपने झण्डे के पास-पास चलें। १८ “पश्चिम की ओर ऐप्रैम की छावनी के झाड़े के लोग अपने-अपने दलों के अनुसार रहें, और उनका प्रधान अमीहद का पुत्र एलीशामा होगा, १९ और उनके दल के गिने हुए पुस्त साढ़े चालीस हजार हैं। २० उनके समीप मनश्वे के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान पदासूर का पुत्र गम्लीएल होगा, २१ और उनके दल के गिने हुए पुस्त बत्तीस हजार दो सौ हैं। २२ फिर बिन्यामीन के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान होगा, २३ और उनके दल के गिने हुए पुस्त पैतीस हजार चार सौ हैं। २४ ऐप्रैम की छावनी में जितने अपने-अपने दलों के अनुसार गिने गए वे सब मिलकर एक लाख इनका हो। २५ “उत्तर की ओर दान की छावनी के झण्डे के लोग अपने-अपने दलों के अनुसार रहें, और उनका प्रधान अमीशैदृ का पुत्र अहींजेरा होगा, २६ और उनके दल के गिने हुए पुस्त बासठ हजार सात सौ हैं। २७ और उनके पास जो डेर खड़े करें वे आशेर के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान ओक्रान का पुत्र पग्नीएल होगा, २८ और उनके दल के गिने हुए पुस्त साढ़े इकतालीस हजार हैं। २९ और उनके दल के गिने हुए पुस्त तिरपन हजार चार सौ हैं। ३० और दान की छावनी में जितने गिने गए वे सब मिलकर एक लाख सतावन हजार छः सौ हैं। ये अपने-अपने झण्डे के पास-पास होकर सबसे पीछे कूच करें।” ३१ इसाएलियों में से जो अपने-अपने पितरों के घराने के अनुसार गिने गए वे ये ही हैं, और सब छावनियों के जितने पुस्त अपने-अपने दलों के अनुसार गिने गए वे सब मिलकर छः लाख तीन हजार साढ़े पाँच सौ थे। ३२ परन्तु यहोवा ने मूसा को जो आज्ञा दी थी उसके अनुसार लेवीय तो इसाएलियों में गिने नहीं गए। ३३ इस प्रकार जो-जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, इसाएली उन आज्ञाओं के अनुसार अपने-अपने कुल और अपने-अपने पितरों के घरानों के अनुसार, अपने-अपने झण्डे के पास डेर खड़े करते और कूच भी करते थे।

३ जिस समय यहोवा ने संनिधि पर्वत के पास मूसा से बातें की उस समय हास्तन और मूसा की यह वंशावली थी। १ हास्तन के पुरों के नाम ये हैं नादाब जो उसका जेठा था, और अबीह, एलीआजर और ईत्तामार; २ हास्तन के पुत्र, जो अभिषिक्त याजक थे, और उनका संस्कार याजक का काम करने के लिये हुआ था, उनके नाम ये हैं। ३ नादाब और अबीह जिस समय संनिधि के जंगल में

यहोवा के सम्मुख अनुचित आग ले गए उसी समय यहोवा के सामने मर गए थे; और वे प्रुहीन थी थे। एलीआजर और ईत्तामार अपने पिता हास्तन के साथ याजक का काम करते रहे। ५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ६ “तेवी गोव्रावालों को समीप ले आकर हास्तन याजक के सामने खड़ा कर कि वे उसकी सहायता करें। ७ जो कुछ उसकी ओर से और सारी मण्डली की ओर से उन्हें सौंपा जाए उसकी देख-रेख वे मिलापवाले तम्बू के सामने करें, इस प्रकार वे तम्बू की सेवा करें; ८ वे मिलापवाले तम्बू के सम्पूर्ण सामान की ओर इसाएलियों की सौंपी हुई वस्तुओं की भी देख-रेख करें, इस प्रकार वे निवास-स्थान की सेवा करें। ९ और तू लेवियों को हास्तन और उसके पुरों की सौंपा दें; और वे इसाएलियों की ओर से हास्तन को सम्पूर्ण रीति से अर्पण किए हुए हों। १० और हास्तन और उसके पुरों को याजक के पद पर नियुक्त कर, और वे अपने याजकपद को सम्भालें; और यदि परदेशी समीप आए, तो वह मार डाला जाए।” ११ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १२ “सुन इसाएली छियों के सब पहिलौठों के बदले, मैं इसाएलियों में से लेवियों को ले लेता हूँ, इसलिए लेवीय मेरे ही हों। १३ सब पहिलौठे मेरे हैं; क्योंकि जिस दिन मैंने मिस्र देश के सब पहिलौठों को मारा, उसी दिन मैंने क्या मनुष्य क्या पशु इसाएलियों के सब पहिलौठों को अपने लिये पवित्र ठहराया; इशलिए वे मेरे ही ठड़ेरेगे, मैं यहोवा हूँ।” १४ फिर यहोवा ने संनिधि के जंगल में मूसा से कहा, १५ “लेवियों में से जितने पुस्त एक महीने या उससे अधिक आयु के हों उनको उनके पितरों के घरानों और उनके कुलों के अनुसार गिन ले।” १६ यह आज्ञा पाकर मूसा ने यहोवा के कहे अनुसार उनको गिन लिया। १७ लेवी के पुरों के नाम ये हैं, अर्थात् गेर्शोन, कहात, और माराई। १८ और गेर्शोन के पुत्र जिनसे उसके कुल चले उनके नाम ये हैं, अर्थात् लिब्नी और शिमी। १९ कहात के पुत्र जिनसे उसके कुल चले उनके नाम ये हैं, अर्थात् अप्राम, यिसहार, हेब्रोन, और उज्जीएल। २० और माराई के पुत्र जिनसे उसके कुल चले ये हैं, अर्थात् महली और मूशी। ये लेवियों के कुल अपने पितरों के घरानों के अनुसार हैं। २१ गेर्शोन से लिब्नियों और शिमियों के कुल चले, गेर्शोनवर्शियों के कुल ये ही हैं। २२ इनमें से जितने पुस्तों की आयु एक महीने की या उससे अधिक थी, उन सभी की गिनती साढ़े सात हजार थी। २३ गेर्शोनवाले कुल निवास के पीछे पश्चिम की ओर अपने डेरे डाला करें, २४ और गेर्शोनियों के मूलपुस्त के घराने का प्रधान लालका का पुत्र एल्यासाप हो। २५ और मिलापवाले तम्बू की जो वस्तुएँ गेर्शोनवर्शियों को सौंपी जाएँ वे ये हों, अर्थात् निवास और तम्बू, और उसका आवरण, और मिलापवाले तम्बू के द्वारा का परदा, २६ और जो अँगन निवास और वेदी के चारों ओर है उसके पर्दे, और उसके द्वारा का परदा, और सब डोरियाँ जो उसमें काम आती हैं। २७ फिर कहात से अप्रामियों, यिसहारीयों, हेब्रोनियों, और उज्जीएलियों के कुल चले; कहातियों के कुल ये ही हैं। २८ उनमें से जितने पुस्तों की आयु एक महीने की या उससे अधिक थी उनकी गिनती आठ हजार छः सौ थी। २९ उन पर पवित्रस्थान की देख-रेख का उत्तरदायित्व था। ३० कहातियों के कुल निवास-स्थान की उस और अपने डेरे डाला करें जो दक्षिण की ओर है; ३१ और कहातियों के मूलपुस्त के घराने का प्रधान उज्जीएल का पुत्र एलीसापान हो। ३२ और जो वस्तुएँ उनको सौंपी जाएँ वे सन्दक, मेज, दीवट, वेदियाँ, और पवित्रस्थान का वह सामान जिससे सेवा ठहल होती है, और परदा; अर्थात् पवित्रस्थान में काम में आनेवाला सारा सामान हो। ३३ और लेवियों के प्रधानों का प्रधान हास्तन याजक का पुत्र एलीआजर हो, और जो लोग पवित्रस्थान की सौंपी हुई वस्तुओं की देख-रेख करें उन पर वही मुखिया ठहरे। ३४ फिर मराई से महलियों और मूशियों के कुल चले; मराई के कुल ये ही हैं। ३५ इनमें से जितने पुस्तों की आयु एक

महीने की या उससे अधिक थी उन सभी की गिनती छः हजार दो सौ थी। ३५ और मरारी के कुलों के मूलपूर्ख के घराने का प्रधान अबीहिल का पुत्र सूरीएल हो; ये लोग निवास के उत्तर की ओर अपने डेरे खड़े करें। ३६ और जो वस्तुँ मरारीविशयों को सौंपी जाएँ कि वे उनकी देखेखेर करें, वे निवास के तख्ते, बेंडे, खम्भे, कुर्सियाँ, और सारा सामान; निदान जो कुछ उसके लगाने में काम आएँ, ३७ और चारों ओर के आँगन के खम्भे, और उनकी कुर्सियाँ, खट्टे और डोरियाँ हैं। ३८ और जो मिलापवाले तम्बू के सामग्रे, अर्थात् निवास के सामग्रे, पूर्व की ओर जहाँ से सर्वोदय होता है, अपने डेरे डाला करें, वे मूसा और हास्न और उसके पुत्रों के डेरे हों, और पवित्रस्थान की देखेखेर इस्माएलियों के बदले वे ही किया करें, और दूसरा जो कोई उसके समीप आए वह मार डाला जाए। ३९ यहोवा की इस आज्ञा को पाकर एक महीने की या उससे अधिक आयु वाले जितने लेवीय पुस्तकों को मूसा और हास्न ने उनके कुलों के अनुसार गिना, वे सब के सब बाईंस हजार थे। ४० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “इस्माएलियों के जितने पहलौठे पुस्तकों की आयु एक महीने की या उससे अधिक है, उन सभी को नाम ले लेकर गिन ले। ४१ और मेरे लिये इस्माएलियों के सब पहिलौठों के बदले लेवियों को, और इस्माएलियों के पशुओं के सब पहिलौठों के बदले लेवियों के पशुओं को ले; मैं यहोवा हूँ।” ४२ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने इस्माएलियों के सब पहिलौठों को गिन लिया। ४३ और सब पहलौठे पुस्तक जिनकी आयु एक महीने की या उससे अधिक थी, उनके नामों की गिनती बाईंस हजार दो सौ तिहतर थी। ४४ तब यहोवा ने मूसा से कहा, ४५ “इस्माएलियों के सब पहिलौठों के बदले लेवियों को, और उनके पशुओं के बदले लेवियों के पशुओं को ले, और लेवीय मेरे ही हों; मैं यहोवा हूँ।” ४६ और इस्माएलियों के पहिलौठों में से जो दो सौ तिहतर गिनती में लेवियों से अधिक है, उनके छुड़ाने के लिये, ४७ पुस्तक पैच शेकेल ले; वे पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से हों, अर्थात् बीस गेरा का शेकेल हो। ४८ और जो स्पृष्ट्या उन अधिक पहिलौठों की छुड़ाती का होगा उसे हास्न और उसके पुत्रों को दे देना।” ४९ अतः जो इस्माएली पहलौठे लेवियों के द्वारा छुड़ाए हुओं से अधिक ये उनके हाथ से मूसा ने छुड़ाती का स्पृष्ट्या लिया। ५० और एक हजार तीन सौ पैसठ शेकेल स्पृष्ट्या पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से बसल हआ। ५१ और यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा ने छुड़ाए हुओं का स्पृष्ट्या हास्न और उसके पुत्रों को दे दिया।

४ फिर यहोवा ने मूसा और हास्न से कहा, २ “लेवियों में से कहातियों की, उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, गिनती करो, ३ अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वालों में, जितने मिलापवाले तम्बू में काम-काज करने को भर्ती हैं। ४ और मिलापवाले तम्बू में परमपवित्र वस्तुओं के विषय कहातियों का यह काम होगा, ५ अर्थात् जब जब छावनी का कूच हो तब-तब हास्न और उसके पुत्र भीतर आकर, बीचवाले पर्दे को उतार कर उससे साक्षीपत्र के सन्दर्भ को ढाँप दें; ६ तब वे उस पर सुझियों की खालों का आवरण डालें, और उसके ऊपर भारी डंडों को लगाएँ। ७ फिर भेटवाली रोटी की मेज पर नीला कपड़ा बिछाकर उस पर परातों, धृपदानों, करछों, और उण्डेलाने के कटोरों को रखें; और प्रतिदिन की रोटी भी उस पर हो; ८ तब वे उन पर लाल रंग का कपड़ा बिछाकर उसको सुझियों की खालों के आवरण से ढाँपें, और मेज के डंडों को लगा दें। ९ फिर वे नीले रंग का कपड़ा लेकर दीपकों, गुलतराशों, और गुलदानों समेत उजियाला देवेवाले दीवाट को, और उसके सब तेल के पात्रों को, जिनसे उसकी सेवा टहल होती है, ढाँपें, १० तब वे सारे सामान समेत दीवाट को सुझियों की खालों के आवरण के भीतर रखकर डंडे पर धर दें। ११

फिर वे सोने की बेटी पर एक नीला कपड़ा बिछाकर उसको सुझियों की खालों के आवरण से ढाँपें, और उसके डंडों को लगा दें; १२ तब वे सेवा टहल के सारे सामान को लेकर, जिससे पवित्रस्थान में सेवा टहल होती है, नीले कपड़े के भीतर रखकर सुझियों की खालों के आवरण से ढाँपें, और डंडे पर धर दें। १३ फिर वे बेटी पर से सब राख उठाकर बेटी पर बैगी रंग का कपड़ा बिछाएँ; १४ तब जिस सामान से बेटी पर की सेवा टहल होती है वह सब, अर्थात् उसके करछे, कटौं, फावड़ियाँ, और कटौरे आदि, बेटी का सारा सामान उस पर रखें; और उसके ऊपर सुझियों की खालों का आवरण बिछाकर बेटी में डंडों को लगाएँ। १५ और जब हास्न और उसके पुत्र छावनी के कूच के समय पवित्रस्थान और उसके सारे सामान को ढाँप चुकें, तब उसके बाद कहाती उसके उठाने के लिये आएँ, पर किसी पवित्र वस्तु को न छूँ, कही ऐसा न हो कि मर जाएँ। कहातियों के उठाने के लिये मिलापवाले तम्बू की ये ही वस्तुएँ हैं। १६ “जो वस्तुएँ हास्न याजक के पुत्र एलीआजर को देखेखेर के लिये सौंपी जाएँ वे ये हैं, अर्थात् उजियाला देने के लिये तेल, और सुगान्धित धूप, और नित्य अन्नबलि, और अभिषेक का तेल, और सारे निवास, और उसमें की सब वस्तुएँ, और पवित्रस्थान और उसके सम्पूर्ण सामान।” १७ फिर यहोवा ने मूसा और हास्न से कहा, १८ “कहातियों के कुलों के गोत्रों को लेवियों में से नाश न होने देना; १९ उसके साथ ऐसा करो, कि जब वे परमपवित्र वस्तुओं के समीप आएँ, तब न मेरे परन्तु जीवित रहें, इस कारण हास्न और उसके पुत्र भीतर एक-एक के लिये उसकी सेवकाई और उसका भार ठहरा दें, २० और वे पवित्र वस्तुओं के देखने को क्षण भर के लिये भी भीतर आने न पाएँ, कहीं ऐसा न हो कि मर जाएँ।” २१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २२ “गेरोनीयों की भी गिनती उनके पितरों के घरानों और कुलों के अनुसार कर; २३ तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वाले, जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करने को भर्ती हों उन सभी को गिन ले। २४ सेवा करने और भार उठाने में गेरोनीयों के कुलवालों की यह सेवकाई हो; २५ अर्थात् वे निवास के पटों, और मिलापवाले तम्बू और उसके आवरण, और इसके ऊपरवाले सुझियों की खालों के आवरण, और मिलापवाले तम्बू के द्वारा के पर्दे, २६ और निवास, और बेटी के चारों ओर के आँगन के पर्दों, और आँगन के द्वार के पर्दे, और उनकी डोरियों, और उम्में काम में आनेवाले सारे सामान, इन सभी को वे उठाया करें; और इन वस्तुओं से जितना काम होता है वह सब भी उनकी सेवकाई में आए। २७ और गेरोनीयों के वश की सारी सेवकाई हास्न और उसके पुत्रों के कहने से हुआ करे, अर्थात् जो कुछ उनको उठाना, और जो-जो सेवकाई उनको करनी हो, उनका सारा भार तुम ही उन्हें सौंपा करो। २८ मिलापवाले तम्बू में गेरोनीयों के कुलों की यही सेवकाई ठरें; और उन पर हास्न याजक का पुत्र ईतामार अधिकार रखे। २९ “फिर मरारियों को भी तू उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिन लें; ३० तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वाले, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवा करने को भर्ती हों, उन सभी को गिन ले। ३१ और मिलापवाले तम्बू में की जिन वस्तुओं के उठाने की सेवकाई उनको मिले वे ये हों, अर्थात् निवास के तख्ते, बेंडे, खम्भे, और कुर्सियाँ, ३२ और चारों ओर आँगन के खम्भे, और इनकी कुर्सियाँ, खट्टे, डोरियाँ, और भाँति-भाँति के काम का सारा सामान ढाने के लिये उनको सौंपा जा ए। उसमें से एक-एक वस्तु का नाम लेकर तुम गिन लो। ३३ मरारियों के कुलों की सारी सेवकाई जो उन्हें मिलापवाले तम्बू के विषय करनी होगी वह यही है; वह हास्न याजक के पुत्र ईतामार के अधिकार में रहे।” ३४ तब मूसा और हास्न और मण्डली के प्रधानों ने कहातियों के वंश को, उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, ३५ तीस वर्ष से लेकर

पचास वर्ष की आयु के, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को भर्ती हुए थे, उन सभी को गिन लिया; ३५ और जो अपने-अपने कुलं के अनुसार गिने गए, वे दो हजार साडे सात सौ थे। ३६ कहानियों के कुलों में से जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करनेवाले गिने गए, वे इतने ही थे; जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी थी उसी के अनुसार मूसा और हास्न ने इनको गिन लिया। ३७ गेर्शीनियों में से जो अपने कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिने गए, ३८ अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के, जो मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को दल में भर्ती हुए थे, ३९ उनकी गिनती उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार दो हजार छ़: सौ तीस थी। ४० गेर्शीनियों के कुलों में से जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करनेवाले गिने गए, वे इतने ही थे; यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा और हास्न ने इनको गिन लिया। ४१ फिर मरारियों के कुलों में से जो अपने कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिने गए, ४२ अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के, जो मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को भर्ती हुए थे, ४३ उनकी गिनती उनके कुलों के अनुसार तीन हजार दो सौ थी। ४४ मरारियों के कुलों में से जिनको मूसा और हास्न ने, यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा के द्वारा मिली थी, गिन लिया वे इतने ही थे। ४५ लेवियों में से जिनको मूसा और हास्न और इसाएली प्रधानों ने उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिन लिया, ४६ अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वाले, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने और बोझ उठाने का काम करने को हाजिर होनेवाले थे, ४७ उन सभी की गिनती आठ हजार पाँच सौ अस्सी थी। ४८ ये अपनी-अपनी सेवा और बोझ ढोने के लिए यहोवा के कहने पर गए। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसी के अनुसार वे गिने गए।

५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ६ “इसाएलियों को आज्ञा दे, कि वे सब कोडियों को, और जितनों के प्रमेह हो, और जितने लोथ के कारण अशुद्ध हों, उन सभी को छावनी से निकाल दें; ७ ऐसों को चाहे पुस्त हों, चाहे झी, छावनी से निकालकर बाहर कर दें; कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी छावनी, जिसके बीच मैं निवास करता हूँ, उनके कारण अशुद्ध हो जाए।” ८ और इसाएलियों ने वैसा ही किया, अर्थात् ऐसे लोगों को छावनी से निकालकर बाहर कर दिया; जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था इसाएलियों ने वैसा ही किया। ९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १० “इसाएलियों से कह कि जब कोई पुस्त या झी ऐसा कोई पाप करके जो लोग किया करते हैं यहोवा से विश्वासघात करे, और वह मनुष्य दोषी हो, ११ तब वह अपना किया हुआ पाप मान ले; और पूरी क्षतिपूर्ति में पाँचवाँ अंश बढ़ाकर अपने दोष के बदले में उसी को दे, जिसके विषय दोषी हुआ हो। १२ परन्तु यदि उस मनुष्य का कोई कुटुम्बी न हो जिसे दोष का बदला भर दिया जाए, तो उस दोष का जो बदला यहोवा को भर दिया जाए वह याजक का हो, और वह उस प्रायश्चित्तवाले मेडे से अधिक हो जिससे उसके लिये प्रायश्चित्त किया जाए। १३ और जितनी पवित्री की हुई वस्तुएँ इसाएली उठाई हुई भेट करके याजक के पास लाएँ, वे उसी की हों; १४ सब मनुष्यों की पवित्री की हुई वस्तुएँ याजक की ठहरें; कोई जो कुछ याजक को दे वह उसका ठहरे।” १५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १६ “इसाएलियों से कह, कि यदि किसी मनुष्य की झी बुरी चाल चलकर उससे विश्वासघात करे, १७ और कोई पुस्त उसके साथ कुर्कम करे, परन्तु यह बात उसके पति से छिपी हो और खुली न हो, और वह अशुद्ध हो गई, परन्तु न तो उसके विस्तु कोई साक्षी हो, और न कुर्कम करते पकड़ी गई हो; १८ और उसके पति के मन में सदैव उत्पन्न हो, अर्थात् वह अपनी झी पर जलने लगे और वह अशुद्ध हुई हो; या उसके मन में जलन उत्पन्न हो, अर्थात् वह अपनी झी पर जलने लगे परन्तु

वह अशुद्ध न हुई हो; १९ तो वह पुस्त अपनी झी को याजक के पास ले जाए, और उसके लिये एका का दसवाँ अंश जौ का मैदा चढ़ावा करके ले आए; परन्तु उस पर तेल न डाले, न लोबान रखे, क्योंकि वह जलनवाला और स्मरण दिलानेवाला, अर्थात् अर्धम का स्मरण करनेवाला अन्नबलि होगा। २० “तब याजक उस झी को समीप ले जाकर यहोवा के सामने खड़ा करके उसके सिर के बाल बिखारा, और स्मरण दिलानेवाले अन्नबलि को जो जलनवाला है उसके हाथों पर धर दे। २१ तब याजक उस झी को यहोवा के शपथ धरवाकर कहे, कि यदि किसी पुस्त ने तुझ से कुर्कम न किया हो, और तू पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध हुई हो, तो तू इस कडवे जल के गुण से जो श्राप का कारण होता है बच्ची रहे। २२ पर यदि तू अपने पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध हुई हो, और तेरे पति को छोड़ किसी दूसरे पुस्त ने तुझ से प्रसंग किया हो, २३ (और याजक उसे श्राप देनेवाली शपथ धराकर कहे,) यहोवा तेरी जाँच सड़ाए और तेरा पेट फुलाए, और लोग तेरा नाम लेकर श्राप और धिक्कार दिया करें; २४ अर्थात् वह जल जो श्राप का कारण होता है तेरी अंतिमियों में जाकर तेरे पेट को फुलाए, और तेरी जाँच को सड़ा दे। तब वह झी कहे, आमीन, आमीन। २५ “तब याजक श्राप के ये शब्द पुस्तक में लिखकर उस कडवे जल से मिटाकर, २६ उस झी को वह कडवा जल पिलाए जो श्राप का कारण होता है, और वह जल जो श्राप का कारण होगा उस झी के पेट में जाकर कडवा हो जाएगा। २७ और याजक झी के हाथ में से जलनवाले अन्नबलि को लेकर यहोवा के आगे हिलाकर बेटी के समीप पहुँचा; २८ और याजक उस अन्नबलि में से उसका स्मरण दिलानेवाला भाग, अर्थात् मृशी भर लेकर बेटी पर जलाए, और उसके बाद झी को वह जल पिलाए। २९ और जब वह उसे वह जल पिला चुके, तब यदि वह अशुद्ध हुई हो और अपने पति का विश्वासघात किया हो, तो वह जल जो श्राप का कारण होता है उस झी के पेट में जाकर कडवा हो जाएगा, और उसका पेट फूलेगा, और उसकी जाँच सड़ा जाएगी, और उस झी का नाम उसके लोगों के बीच श्रापित होगा। ३० पर यदि वह झी अशुद्ध न हुई हो और शुद्ध ही हो, तो वह निर्दोष ठहरेगी और गर्भवती हो सकेगी। ३१ “जलन की व्यवस्था यही है, चाहे कोई झी अपने पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध हो, ३२ चाहे पुस्त के मन में जलन उत्पन्न हो और वह अपनी झी पर जलने लगे; तो वह उसको यहोवा के सम्मुख खड़ा कर दे, और याजक उस पर यह सारी व्यवस्था पूरी करे। ३३ तब पुस्त अर्धम से बचा रहेगा, और झी अपने अर्धम का बोझ आप उठाएगी।”

६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ७ “इसाएलियों से कह कि जब कोई पुस्त या झी नाजीरी की मन्त्र, अर्थात् अपने को यहोवा के लिये अलग करने की विशेष मन्त्र माने, ८ तब वह दाखमधु और मदिरा से अलग रहे; वह न दाखमधु का, और न मदिरा का सिरका पीए, और न दाख का कुछ रस भी पीए, वरन् दाख न खाए, चाहे हरी हो चाहे सर्खी। ९ जितने दिन यह अलग रहे उतने दिन तक वह बीज से लेकर छिलके तक, जो कुछ दाखलता से उत्पन्न होता है, उसमें से कुछ न खाए। १० “फिर जितने दिन उसने अलग रहने की मन्त्र मानी हो उतने दिन तक वह अपने सिर पर छुरा न फिराए; और जब तक वे दिन पेरे न हों जिनमें वह यहोवा के लिये अलग रहे तब तक वह पवित्र ठहरेगा, और अपने सिर के बालों को बढ़ाए रहे। ११ जितने दिन वह यहोवा के लिये अलग रहे उतने दिन तक किसी लोथ के पास न जाए। १२ चाहे उसका

पिता, या माता, या भाई, या बहन भी मेरे, तो भी वह उनके कारण अशुद्ध न होगा। ८ अपने अलग रहने के साथ दिनों में वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरा रहे। ९ “यदि कोई उसके पास अचानक मर जाए, और उसके अलग रहने का जो चिन्ह उसके सिर पर होगा वह अशुद्ध हो जाए, तो वह शुद्ध होने के दिन, अर्थात् सातवें दिन अपना सिर मुँडाएँ। १० और आठवें दिन वह दो पंडक या कबूतरी के दो बच्चे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास ले जाए, ११ और याजक एक को पापबलि, और दूसरे को होमबलि करके उसके लिये प्रायश्चित्त करे, क्योंकि वह लोथ के कारण पापी ठहरा है। और याजक उसी दिन उसका सिर फिर पवित्र करे, १२ और वह अपने अलग रहने के दिनों को फिर यहोवा के लिये अलग ठहराएँ, और एक वर्ष का एक भेड़ का बच्चा दोषबलि करके ले आए; और जो दिन इससे पहले बीत गए हों वे व्यर्थ गिने जाएँ, क्योंकि उसके अलग रहने का चिन्ह अशुद्ध हो गया। १३ “फिर जब नाजीर के अलग रहने के दिन पौरे हों, उस समय के लिये उसकी यह व्यवस्था है: अर्थात् वह मिलापवाले तम्बू के द्वार पर पूँछचाया जाए, १४ और वह यहोवा के लिये होमबलि करके एक वर्ष का एक निर्दोष भेड़ का बच्चा पापबलि करके, और एक वर्ष की एक निर्दोष भेड़ की बच्ची, और मेलबलि के लिये एक निर्दोष मेडा, १५ और अखमीरी रोटियों की एक टोकी, अर्थात् तेल से सने हुए मैटे के फुलके, और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी पापडियाँ, और उन बलियों के अन्नबलि और अर्ध, ये सब चढ़ावे समीप ले जाए। १६ इन सब को याजक यहोवा के सामने पूँछचाकर उसके पापबलि और होमबलि को चढ़ाएँ, १७ और अखमीरी रोटी की टोकरी समेत मैटे को यहोवा के लिये मेलबलि करके, और उस मेलबलि के अन्नबलि और अर्ध को भी चढ़ाएँ। १८ तब नाजीर अपने अलग रहने के चिन्हवाले सिर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मुँडाकर अपने बालों को उस आग पर डाल दे जो मेलबलि के नीचे होगी। १९ फिर जब नाजीर अपने अलग रहने के चिन्हवाले सिर को मुँडा चुके तब याजक मैटे का पकाया हुआ कंधा, और टोकरी में से एक अखमीरी रोटी, और एक अखमीरी पपड़ी लेकर नाजीर के हाथों पर धर दे, २० और याजक इनको हिलाने की भेट करके यहोवा के सामने हिलाएँ: हिलाइ हुई छाती और उठाइ हुई ज़ंज़य समेत ये भी याजक के लिये पवित्र ठहरें; इसके बाद वह नाजीर दाखमधु पी सकेगा। २१ “नाजीर की मनत की, और जो चढ़ावा उसको अपने अलग होने के कारण यहोवा के लिये चढ़ावा होगा उसकी भी यही व्यवस्था है। जो चढ़ावा वह अपनी पैंची के अनुसार चढ़ा सके, उससे अधिक जैसी मनत उसने मानी हो, वैसे ही अपने अलग रहने की व्यवस्था के अनुसार उसे करना होगा।” २२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २३ “हास्न और उसके पुत्रों से कह कि तुम इमाएलियों को इन बच्चों से अशीर्वद दिया करना: २४ “यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे: २५ “यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करे: २६ “यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे, और तुझे शानि दे। २७ “इस रिति से मेरे नाम को इमाएलियों पर रखें, और मैं उन्हें आशीष दिया करौँगा।”

७ फिर जब मूसा ने निवास को खड़ा किया, और सारे सामान समेत उसका अधिषेक करके उसको पवित्र किया, और सारे सामान समेत वेटी का भी अधिषेक करके उसे पवित्र किया, ८ तब इमाएल के प्रधान जो अपने-अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुस्तक, और गोत्रों के भी प्रधान होकर गिनती लेने के काम पर नियुक्त थे, ९ वे यहोवा के सामने भेट ले आए, और उनकी भेट छः भरी हुई गाड़ियाँ और बारह बैल थे, अर्थात् दो-दो प्रधान की ओर से एक-एक गाड़ी, और एक-एक प्रधान की ओर से एक-एक बैल; इन्हें वे निवास

के सामने यहोवा के समीप ले गए। १० तब यहोवा ने मूसा से कहा, ११ “उन बस्तुओं को तू उनसे ले ले, कि मिलापवाले तम्बू की सेवकाई में काम आएँ, तू उन्हें लेवियों के एक-एक कुल की विशेष सेवकाई के अनुसार उनको बाँट दो।” १२ अतः मूसा ने वे सब गाड़ियाँ और बैल लेकर लेवियों को दे दिये। १३ गेश्वरियों को उनकी सेवकाई के अनुसार उसने दो गाड़ियाँ और चार बैल दिए, १४ और मरारियों को उनकी सेवकाई के अनुसार उसने चार गाड़ियाँ और आठ बैल दिए; ये सब हास्न याजक के पुत्र इंतामार के अधिकार में किए गए। १५ परन्तु कहातियों को उसने कुछ न दिया, क्योंकि उनके लिये पवित्र वस्तुओं की यह सेवकाई थी कि वह उसे अपने कंधों पर उठा लिया करें। १६ फिर जब वेदी का अभिषेक हुआ तब प्रधान उसके संस्कार की भेट वेदी के समीप ले जाने लगे। १७ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “वेदी के संस्कार के लिये प्रधान लोग अपनी-अपनी भेट अपने-अपने नियत दिन पर चढ़ाएँ।” १८ इसलिए जो पुष्प पहले दिन अपनी भेट ले गया वह यहां गोवर्वाले अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन था; १९ उसकी भेट यह थी, अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैटे से भरे हुए थे; २० फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; २१ होमबलि के लिये एक बछड़ा, एक मेडा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; २२ पापबलि के लिये एक बकरा; २३ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मैटे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। सूअर के पुत्र नन्तेल की यही भेट थी। २४ और तीसरे दिन जबलूनियों का प्रधान हेलोन का पुत्र एलीआब यह भेट ले आया, २५ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैटे से भरे हुए थे; २६ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; २७ होमबलि के लिये एक बछड़ा, एक मेडा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; २८ पापबलि के लिये एक बकरा; २९ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मैटे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। शेदेझर के पुत्र एलीसूर यह भेट ले आया, ३० और चौथे दिन स्वेनियों का प्रधान शेदेझर का पुत्र एलीसूर यह भेट ले आया, ३१ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैटे से भरे हुए थे; ३२ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ३३ होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेडा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ३४ पापबलि के लिये एक बकरा; ३५ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मैटे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। शेदेझर के पुत्र एलीसूर की यही भेट थी। ३६ पाँचवें दिन शिमोनियों का प्रधान सूर्यशैद का पुत्र शत्लूपीएल यह भेट ले आया, ३७ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैटे से भरे हुए थे;

अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैटे से भेरे हुए थे; ४५ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ४६ होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेडा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ४७ पापबलि के लिये एक बकरा; ४८ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेडे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। सूरीशैद के पुत्र शलमीएल की यही भेट थी। ४९ और छठवें दिन गादियों का प्रधान दूलु का पुत्र एल्यासाप यह भेट ले आया, ५० अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सतर शेकेल चाँदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैटे से भेरे हुए थे; ५१ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ५२ होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेडा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ५३ पापबलि के लिये एक बकरा; ५४ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेडे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। दूलु के पुत्र एल्यासाप की यही भेट थी। ५५ सातवें दिन ऐप्रिमियों का प्रधान अमीहृद का पुत्र एल्याशामा यह भेट ले आया, ५६ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सतर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैटे से भेरे हुए थे; ५७ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ५८ होमबलि के लिये एक बछड़ा, एक मेडा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ५९ पापबलि के लिये एक बकरा; ६० और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेडे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। अमीहृद के पुत्र एल्याशामा की यही भेट थी। ६१ आठवें दिन मनशेइयों का प्रधान पदासूर का पुत्र गम्लीएल यह भेट ले आया, ६२ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सतर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैटे से भेरे हुए थे; ६३ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ६४ होमबलि के लिये एक बछड़ा, एक मेडा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ६५ पापबलि के लिये एक बकरा; ६६ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेडे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। पदासूर के पुत्र गम्लीएल की यही भेट थी। ६७ नवें दिन बिन्यामीनियों का प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान यह भेट ले आया, ६८ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सतर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैटे से भेरे हुए थे; ६९ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ७० होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेडा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ७१ पापबलि के लिये एक बकरा; ७२ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेडे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। पदासूर के पुत्र गम्लीएल की यही भेट थी। ७३ दसवें दिन दानियों का प्रधान अमीशैद का पुत्र अहीएजेर यह भेट ले आया, ७४ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सतर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैटे से भेरे हुए थे; ७५ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ७६ होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेडा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ७७ पापबलि के लिये एक बकरा; ७८ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेडे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। अमीशैद के पुत्र अहीएजेर की यही भेट थी। ७९ ग्यारहवें दिन आशेरियों का प्रधान ओक्रान का पुत्र पगीएल यह भेट ले आया। ८० अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस

शेकेल चाँदी का एक परात, और सतर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैटे से भेरे हुए थे; ८१ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का धूपदान; ८२ होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेडा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ८३ पापबलि के लिये एक बकरा; ८४ और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेडे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। ओक्रान के पुत्र पगीएल की यही भेट थी। ८५ बारहवें दिन नमालियों का प्रधान एनान का पुत्र अहीरा यह भेट ले आया, ८६ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सतर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैटे से भेरे हुए थे; ८७ फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान; ८८ होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेडा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा; ८९ पापबलि के लिये एक बकरा; ९० और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेडे, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। एनान के पुत्र अहीरा की यही भेट थी। ९१ वेदी के अभिषेक के समय इम्माएल के प्रधानों की ओर से उसके संस्कार की भेट यही हुई, अर्थात् चाँदी के बारह परात, चाँदी के बारह कटोरे, और सोने के बारह धूपदान। ९२ एक-एक चाँदी का परात एक सौ तीस शेकेल का, और एक-एक चाँदी का कटोरा सतर शेकेल का था; और पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से ये सब चाँदी के पात्र दो हजार चार सौ शेकेल के थे। ९३ फिर धूप से भेरे हुए सोने के बारह धूपदान जो पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से दस-दस शेकेल के थे, वे सब धूपदान एक सौ बीस शेकेल सोने के थे। ९४ फिर होमबलि के लिये सब मिलाकर बारह बछड़े, बारह मेडे, और एक-एक वर्ष के बारह भेड़ी के बच्चे, अपने-अपने अन्नबलि सहित थे; फिर पापबलि के सब बकरे बारह थे; ९५ और मेलबलि के लिये सब मिलाकर चौबीस बैल, और साठ मेडे, और साठ बकरे, और एक-एक वर्ष के साठ भेड़ी के बच्चे थे। वेदी के अभिषेक होने के बाद उसके संस्कार की भेट यही हुई। ९६ और जब मूसा यहोवा से बातें करने को मिलापाले तम्बू में गया, तब उसने प्रायश्चित्त के ढकने पर से, जो साक्षीपत्र के सन्दर्भ के ऊपर था, दोनों कर्खों के मध्य में से उसकी आवाज सुनी जो उससे बातें कर रहा था; और उसने (यहोवा) उससे बातें की।

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १ “हास्तन को समझाकर यह कह कि जब जब तू दीपियों को जलाए तब-तब सातों दीपिक का प्रकाश दीवाट के सामने हो।” २ इसलिए हास्तन ने वैसा ही किया, अर्थात् जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसी के अनुसार उसने दीपियों को जलाया कि वे दीवाट के सामने उजियाला दें। ३ और दीवाट की बनावट ऐसी थी, अर्थात् यह पाए से लेकर फूलों तक तग गढ़े हुए सोने का बनाया गया था; जो नमूना यहोवा ने मूसा को दिखालाया था उसी के अनुसार उसने दीवाट को बनाया। ४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ५ “इम्माएलियों के मध्य में से लेवियों को अत्तम लेकर शुद्ध कर। ६ उन्हें शुद्ध करने के लिये तू ऐसा कर, कि पावन करनेवाला जल उन पर छिड़क दे, फिर वे सर्वांग मुँड़न कराएँ, और वे धब्ब धोएँ, और वे अपने को शुद्ध करें। ७ तब वे तेल से सने हुए मैटे के अन्नबलि समेत एक बछड़ा ले लें, और तू पापबलि के लिये एक दूसरा बछड़ा लेना। ८ और तू लेवियों को मिलापाले तम्बू के सामने पहुँचाना, और इम्माएलियों की सारी मण्डली को इकट्ठा करना। ९० तब तू लेवियों को यहोवा के आगे समीप ले आना, और इम्माएलियों अपने हाथ उन पर रखें, ११ तब हास्तन लेवियों को यहोवा के सामने इम्माएलियों की ओर से हिलाई हुई भेट करके अर्पण करे कि वे यहोवा की सेवा करनेवाले

ठहरें। १२ तब लेवीय अपने-अपने हाथ उन बछड़ों के सिरों पर रखें; तब त् लेवियों के लिये प्रायव्यति करने को एक बछड़ा पापबलि और दूसरा होमबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाना। १३ और लेवियों को हास्न और उसके पुत्रों के सम्मुख खड़ा करना, और उनको हिलाने की भेट के लिये यहोवा को अपण करना। १४ “इस प्रकार तू उन्हें इसाएलियों में से अलग करना, और वे मेरे ही ठहरें।” १५ और जब त् लेवियों को शदू करके हिलाई हुई भेट के लिये अपण कर चुके, उसके बाद वे मिलापवाले तम्बू सम्बंधी सेवा टहल करने के लिये अन्दर आया करें। १६ क्योंकि वे इसाएलियों में से मुझे परी रीति से अपण किए हुए हैं; मैंने उनको सब इसाएलियों में से एक-एक स्त्री के पहलौठे के बदले अपना कर लिया है। १७ इसाएलियों के पहलौठे, चाहे मनुष्य के हों, चाहे पशु के, सब मेरे हैं; क्योंकि मैंने उन्हें उस समय अपने लिये पवित्र ठहराया जब मैंने मिथ देश के सब पहिलौठों को मार डाला। १८ और मैंने इसाएलियों के सब पहिलौठों के बदले लेवियों को लिया है। १९ उन्हें लेकर मैंने हास्न और उसके पुत्रों को इसाएलियों में से दान करके दे दिया है, कि वे मिलापवाले तम्बू में इसाएलियों के निमित सेवकाई और प्रायव्यति किया करें, कहीं ऐसा न हो कि जब इसाएली पवित्रस्थान के समीप आएँ तब उन पर कोई महाविपति आ पड़े।” २० लेवियों के विषय यहोवा की यह आज्ञा पाकर मूसा और हास्न और इसाएलियों की सारी मण्डली ने उनके साथ ठीक वैसा ही किया। २१ लेवियों ने तो अपने को पाप से शदू किया, और अपने बच्चों को धो डाला; और हास्न ने उन्हें यहोवा के सामने हिलाई हुई भेट के निमित अपण किया, और उन्हें शदू करने को उनके लिये प्रायव्यति भी किया। २२ और उसके बाद लेवीय हास्न और उसके पुत्रों के सामने मिलापवाले तम्बू में अपनी-अपनी सेवकाई करने को गए; और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को लेवियों के विषय में दी थी, उसी के अनुसार वे उनसे व्यवहार करने लगे। २३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २४ “जो लेवियों को करना है वह यह है, कि पच्चीस वर्ष की आयु से लेकर उससे अधिक आयु में वे मिलापवाले तम्बू सम्बंधी काम करने के लिये भीत उपस्थित हुआं करें; २५ और जब पचास वर्ष के हों तो फिर उस सेवा के लिये न आए और न काम करें; २६ परन्तु वे अपने भाई-बह्यों के साथ मिलापवाले तम्बू के पास रक्षा का काम किया करें, और किसी प्रकार की सेवकाई न करें। लेवियों को जो-जो काम सौंपे जाएँ उनके विषय तू उनसे ऐसा ही करना।”

९ इसाएलियों के मिथ देश से निकलने के दूसरे वर्ष के पहले महीने में यहोवा ने सनि के जंगल में मूसा से कहा, १ “इसाएली फसह नामक पर्व को उसके नियत समय पर मनाया करें। २ अर्थात् इसी महीने के चौदहवें दिन को सौँझ के समय तम लोग उसे सब लेवियों और नियमों के अनुसार मनाना।” ३ तब मूसा ने इसाएलियों से फसह मानने के लिये कह दिया। ४ और उन्होंने पहले महीने के चौदहवें दिन को सौँझ के समय सनि के जंगल में फसह को मनाया; और जो-जो आज्ञाएँ यहोवा ने मूसा को दी थी उन्हीं के अनुसार इसाएलियों ने किया। ५ परन्तु कुछ लोग एक मनुष्य के शव के द्वारा अशुद्ध होने के कारण उस दिन फसह को न मना सके; वे उसी दिन मूसा और हास्न के समीप जाकर मूसा से कहने लगे, ६ “हम लोग एक मनुष्य की लोथ के कारण अशुद्ध हैं, परन्तु हम क्यों स्के रहें, और इसाएलियों के संग यहोवा का चढ़ावा नियत समय पर क्यों न चढ़ाएँ?” मूसा ने उनसे कहा, “ठहरे रहो, मैं सन लूँ कि यहोवा तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा देता है।” ७ यहोवा ने मूसा से कहा, ८ “इसाएलियों से कह कि वह तुम लोग चाहे तुम्हारे वंश में से कोई भी किसी लोथ के कारण अशुद्ध हो, या दूर की यात्रा पर हो, तो भी वह यहोवा के लिये फसह को माने। ९ वे उसे दूसरे महीने के चौदहवें दिन को सौँझ के

समय मनाएँ; और फसह के बलिपशु के मौस को अखमीरी रोटी और कडवे सागपात के साथ खाएँ। १० और उसमें से कुछ भी सर्वे तक न रख छोड़े, और न उसकी कोई हड्डी तोड़े; वे फसह के पर्व को सारी विधियों के अनुसार मनाएँ। ११ परन्तु जो मनुष्य शदू हो और यात्रा पर न हो, परन्तु फसह के पर्व को न माने, वह मनुष्य अपने लोगों में से नाश किया जाए, उस मनुष्य को यहोवा का चढ़ावा नियत समय पर न ले आने के कारण अपने पाप का बोझ उठाना पड़ेगा। १२ यदि कोई पदेशी तुम्हारे साथ रहकर चाहे कि यहोवा के लिये फसह मनाएँ, तो वह उसी विधि और नियम के अनुसार उसको माने; देवी और पदेशी दोनों के लिये तुम्हारी एक ही विधि हो।” १३ जिस दिन निवास जो, साक्षी का तम्बू भी कहलाता है, खड़ा किया गया, उस दिन बादल उस पर छा गया; और संध्या को वह निवास पर आग के समान दिखाई दिया और भोर तक दिखाइ देता रहता। १४ प्रतिदिन ऐसा ही हुआ करता था; अर्थात् दिन को बादल छाया रहता, और रात को आग दिखाई देती थी। १५ और जब जब वह बादल तम्बू पर से उठ जाता तब इसाएली प्रस्थान करते थे; और जिस स्थान पर बादल ठहर जाता वही इसाएली अपने डेरे खड़े करते थे। १६ यहोवा की आज्ञा से इसाएली कूच करते थे, और यहोवा ही की आज्ञा से वे डेरे खड़े भी करते थे; और जितने दिन तक वह बादल निवास पर ठहरा रहता, उतने दिन तक वे डेरे डाले पड़े रहते थे। १७ जब बादल बहुत दिन निवास पर छाया रहता, तब भी इसाएली यहोवा की आज्ञा मानते, और प्रस्थान नहीं करते थे। १८ और कभी-कभी वह बादल थोड़े ही दिन तक निवास पर रहता, और तब भी वे यहोवा की आज्ञा से डेरे डाले पड़े रहते थे; और फिर यहोवा की आज्ञा ही से वे प्रस्थान करते थे। १९ और कभी-कभी बादल केवल संध्या से भोर तक रहता; और जब वह भोर को उठ जाता था तब वे प्रस्थान करते थे, और यदि वह रात दिन बराबर रहता, तो जब बादल उठ जाता, तब ही वे प्रस्थान करते थे। २० वह बादल चाहे दो दिन, चाहे एक महीना, चाहे वर्ष भर, जब तक निवास पर पर ठहरा रहता, तब तक इसाएली अपने डेरों में रहते और प्रस्थान नहीं करते थे; परन्तु जब वह उठ जाता तब वे प्रस्थान करते थे। २१ यहोवा की आज्ञा से वे अपने डेरे खड़े करते, और यहोवा ही की आज्ञा से वे प्रस्थान करते थे; जो आज्ञा यहोवा मूसा के द्वारा देता था, उसको वे माना करते थे।

१० फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १ “चाँदी की दो तुरहियां गढ़कर बनाई जाएँ; तू उनको मण्डली के बुलाने, और छावनियों के प्रस्थान करने में काम में लाना। २ और जब वे दोनों फूँकी जाएँ, तब सारी मण्डली मिलापवाले तम्बू के द्वार पर तेरे पास इक्शी हो जाएँ। ३ यदि एक ही तुरही फूँकी जाए, तो प्रधान लोग जो इसाएल के हजारों के मुख्य मुख्य हैं तेरे पास इक्शी हो जाएँ। ४ जब तुम लोग साँस बाँधकर फूँको, तो पूर्व दिशा की छावनियों का प्रस्थान हो। उनके प्रस्थान करने के लिये वे साँस बाँधकर फूँकों। ५ जब लोगों को इक्शी करके सभा करनी हो तब भी फूँकना परन्तु साँस बाँधकर नहीं। ६ और हास्न के पुत्र जो याजक हैं वे उन तुरहियों को फूँका करें। यह बात तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी के लिये सर्वदा की विधि रहे। ७ और जब तुम अपने देश में किसी सतानेवाले बैरी से लड़ने को निकलो, तब तुरहियों को साँस बाँधकर फूँकना, तब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को तुम्हारा स्मरण आएगा, और तुम अपने शत्रुओं से बचाए जाओगे। ८ अपने आनन्द के दिन में, और अपने नियत पर्वों में, और महीनों के आदि में, अपने होमबलियों और मेलबलियों के साथ उन तुरहियों को फूँकना; इससे तुम्हारे परमेश्वर को तुम्हारा स्मरण आएगा, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।” ९ दूसरे वर्ष

के दूसरे महीने के बीसवें दिन को बादल साक्षी के निवास के तम्बू पर से उठ गया, १२ तब इसाएली सनिं के जंगल में से निकलकर प्रस्थान करके निकले; और बादल पारान नामक जंगल में ठहर गया। १३ उनका प्रस्थान यहोवा की उम आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी आरम्भ हुआ। १४ और सबसे पहले तो यहदियों की छावनी के झण्डे का प्रस्थान हुआ, और वे दल बाँधकर चले; और उनका सेनापति अमीरीनादाब का पुत्र नहशोन था। १५ और इसकारियों के गोत्र का सेनापति सुआर का पुत्र नतनेल था। १६ और जब्लूनियों के गोत्र का सेनापति हेलोन का पुत्र एलीआब था। १७ तब निवास का तम्बू उत्तरा गया, और गेश्वनियों और मरारियों ने जो निवास के तम्बू को उठाते थे प्रस्थान किया। १८ फिर स्क्वेन की छावनी के झण्डे का कूच हुआ, और वे भी दल बनाकर चले; और उनका सेनापति शेडेकर का पुत्र एलीमूर था। १९ और शिमोनियों के गोत्र का सेनापति सूरीशैदे का पुत्र शल्मीएल था। २० और गादियों के गोत्र का सेनापति दूल का पुत्र एल्यासाप था। २१ तब कहातियों ने पवित्र वस्तुओं को उठाए हुए प्रस्थान किया, और उनके पहुँचने तक गेश्वनियों और मरारियों ने निवास के तम्बू को खड़ा कर दिया। २२ फिर एप्रिमियों की छावनी के झण्डे का कूच हुआ, और वे भी दल बनाकर चले; और उनका सेनापति अमीरीहद का पुत्र एल्याशमा था। २३ और मनश्वेश्वरों के गोत्र का सेनापति पदासू का पुत्र गम्लीएल था। २४ और बिन्यामीनियों के गोत्र का सेनापति गिदोनी का पुत्र अबीदान था। २५ फिर दानियों की छावनी जो सब छावनियों के पीछे थी, उसके झण्डे का प्रस्थान हुआ, और वे भी दल बनाकर चले; और उनका सेनापति अमीरीहै का पुत्र अबीएजर था। २६ और आशेरियों के गोत्र का सेनापति ओक्रान का पुत्र पगीएल था। २७ और नमालियों के गोत्र का सेनापति एनान का पुत्र अहीरा था। २८ इसाएली इसी प्रकार अपने-अपने दलों के अनुसार प्रस्थान करते, और आगे बढ़ा करते थे। २९ मूसा ने अपने ससरू स्थान मिधानी के पुत्र होबाब से कहा, “हम लोग उस स्थान की यात्रा करते हैं जिसके विषय में यहोवा ने कहा है, ‘मैं उसे तुम को दृঁग’”; इसलिए तु भी हमारे संग चल, और हम तेरी भलाई करेंगे; क्योंकि यहोवा ने इसाएल के विषय में भला ही कहा है।” ३० होबाब ने उसे उत्तर दिया, “मैं नहीं जाऊँगा; मैं अपने देश और कुटुम्बियों में लौट जाऊँगा।” ३१ फिर मूसा ने कहा, “हमको न छोड़, क्योंकि जंगल में कहाँ-कहाँ डेरा खड़ा करना चाहिये, यह तुझे ही मालमूत है, तू हमारे लिए आँखों का काम करना।” ३२ और यदि तू हमारे संग चलो, तो मैंनिये जो भलाई यहोवा हम से करेगा उसी के अनुसार हम भी तुझ से वैसा ही करेंगे।” ३३ फिर इसाएलियों ने यहोवा के पर्वत से प्रस्थान करके तीन दिन की यात्रा की; और उन तीनों दिनों के मार्ग में यहोवा की बाचा का सन्दूक उनके लिये विश्राम का स्थान ढूँढ़ता हुआ उनके आगे-आगे चलता रहा। ३४ और जब वे छावनी के स्थान से प्रस्थान करते थे तब दिन भर यहोवा का बादल उनके ऊपर छाया रहता था। ३५ और जब जब सन्दूक का प्रस्थान होता था तब-तब मूसा यह कहा करता था, “हे यहोवा, उठ, और तेरे शत्रु तिर-बितर हो जाएँ, और तेरे बैरी तेरे सामने से भाग जाएँ।” ३६ और जब जब वह ठहर जाता था तब-तब मूसा कहा करता था, “हे यहोवा, हजारों-हजार इसाएलियों में लौटकर आ जा।”

११ फिर वे लोग बुद्बुडाने और यहोवा के सुनते बुरा कहने लगे; अतः यहोवा ने सुना, और उसका कोप भड़क उठा, और यहोवा की आग उनके मध्य में जल उठी, और छावनी के एक किनारे से भस्म करने लगी। १२ तब लोग मूसा के पास आकर चिल्लाएँ; और मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की, तब वह आग बुझ गई, ३७ और उस स्थान का नाम त्वेरा पड़ा, क्योंकि यहोवा की आग उनके मध्य में जल उठी थी। ४ फिर जो मिली-जुली भीड़ उनके साथ थी, वह

बेहतर भोजन की लालसा करने लगी; और फिर इसाएली भी रोने और कहने लगे, “हमें माँस खाने को कौन देगा? ५ हमें वे मछलियाँ स्मरण हैं जो हम मिस में सेंत-मेंत खाया करते थे, और वे खरि, और खरबूजे, और गन्दने, और प्याज, और लहसुन भी; ६ परन्तु अब हमारा जी घबरा गया है, यहाँ पर इस मना को छोड़ और कुछ भी देख नहीं पड़ता।” ७ मना तो धनिये के समान था, और उसका रंग रुप मोती के समान था। ८ लोग इधर-उधर जाकर उसे बटोरते, और चक्की में पीसते या ओखली में कटते थे, फिर तस्ते में पकाते, और उसके फुलके बनाते थे; और उसका स्वाद तेल में बने हुए पूरे के समान था। ९ और गात को छावनी में ओस पड़ती थी तब उसके साथ मना भी गिरता था। १० और मूसा ने सब घरानों के आदमियों को अपने-अपने डेरे के द्वार पर रोते सुना; और यहोवा का कोप अत्यन्त भड़का, और मूसा को भी उनका बुड्बुडाना बुरा लगा। ११ तब मूसा ने यहोवा से कहा, “तू अपने दास से यह बुरा व्यवहार क्यों करता है? और क्या कारण है कि मैंने तेरी दृष्टि में अनुग्रह नहीं पाया, कि तुने इन सब लोगों का भार मुझ पर डाला है? १२ क्या ये सब लोग मेरी ही कोख में पड़े थे? क्या मैं ही ने उनको उत्पन्न किया, जो तू मुझसे कहता है, कि जैसे पिता दूध पीते बालक को अपनी गोद में उठाए-उठाए फिरता है, वैसे ही मैं इन लोगों को अपनी गोद में उठाकर उस देश में ले जाऊँ, जिसके देने की शपथ तुने उनके पूर्वजों से खाई है? १३ मुझे इतना माँस कहाँ से मिले कि इन सब लोगों को दृँग ये तो यह कह-कहकर मेरे पास रो रहे हैं, कि तू हमें माँस खाने को दे। १४ मैं अकेला इन सब लोगों का भार नहीं सम्भाल सकता, क्योंकि यह मेरी शक्ति के बाहर है। १५ और यदि तुझे मेरे साथ यही व्यवहार करना है, तो मुझ पर तेरा इतना अनुग्रह हो, कि तू मेरे प्राण एकदम ले ले, जिससे मैं अपनी दुर्दशा न देखने पाऊँ।” १६ यहोवा ने मूसा से कहा, “इसाएली पुरियों में से सत्तर ऐसे पुस्त मेरे पास इकट्ठे कर, जिनको तू जानता है कि वे प्रजा के पुरियों और उनके सरदार हैं और मिलापवाले तम्बू के पास ले आ, कि वे तेरे साथ यहाँ खड़े हों। १७ तब मैं उत्तरकर तुझ से बहाँ बातें कहसूँगा; और जो आत्मा तुझ में है उसमें से कुछ लेकर उनमें सम्पवाँगा, और वे इन लोगों का भार तेरे संग उठाए रहेंगे, और तुझे उसको अकेले उठाना न पड़ेगा। १८ और लोगों से कह, ‘कल के लिये अपने को पवित्र करो, तब तुम्हें माँस खाने को मिलेगा; क्योंकि तुम यहोवा के सुनते हुए यह कह-कहकर रोए हो, कि हमें माँस खाने को कौन देगा? हम मिस ही में भले थे। इसलिए यहोवा तुम को माँस खाने को देगा, और तुम खाओगे। १९ फिर तुम एक दिन, या दो, या पाँच, या दस, या बीस दिन ही नहीं, २० परन्तु महीन भर उसे खाते रहोगे, जब तक वह तुम्हारे नथनों से निकलने न लगे और तुम को उससे धूना न हो जाए, क्योंकि तुम लोगों ने यहोवा को जो तुम्हारे मध्य में है तुच्छ जाना है, और उसके सामने यह कहकर रोए हो कि हम मिस से क्यों निकल आए?” २१ फिर मूसा ने कहा, “जिन लोगों के बीच मैं हूँ उनमें से छः लाख तो प्यादे ही हैं, और तेरे कहा है कि मैं उन्हें इतना माँस दृँगा, कि वे महीन भर उसे खाते ही रहेंगे। २२ क्या वे सब भेड़-बकरी गाय-बैल उनके लिये मारे जाएँ कि उनको माँस मिले? या क्या सम्मुद्र की सब मछलियाँ उनके लिये इकट्ठी की जाएँ, कि उनको माँस मिले?” २३ यहोवा ने मूसा से कहा, “क्या यहोवा का हाथ छोटा हो गया है? अब तू देखोगा कि मेरा वचन जो मैंने तुझ से कहा है वह पूरा होता है कि नहीं।” २४ तब मूसा ने बाहर जाकर प्रजा के लोगों को यहोवा की बातें कह सुनाईं; और उनके पुरियों में से सत्तर पुस्त इक्षु करके तम्बू के चारों ओर खड़े किए। २५ तब यहोवा बादल में होकर उतरा और उसने मूसा से बातें की, और जो आत्मा उसमें था उसमें लेकर उन सत्तर पुरियों में समवा दिया; और जब वह आत्मा उनमें आया तब वे भविष्यद्वाणी करने लगे। परन्तु

फिर और कभी न की। २४ परन्तु दो मनुष्य छावनी में रह गए थे, जिसमें से एक का नाम एलदाद और दूसरे का मेदाद था, उनमें भी आत्मा आया; ये भी उन्हीं में से थे जिनके नाम लिख लिए गये थे, पर तम्बू के पास न गए थे, और वे छावनी ही में भविष्यद्वाणी करने लगे। २५ तब किरी जवान ने दौट्कर मूसा को बताया, कि एलदाद और मेदाद छावनी में भविष्यद्वाणी कर रहे हैं। २६ तब नून का पुत्र यहोश् जो मूसा का टहलुआ और उसके चुने हुए वीरों में से था, उसने मूसा से कहा, “हे मेरे स्वामी मूसा, उनको रोक दे!” २७ मूसा ने उससे कहा, “क्या तू मेरे कारण जलता है? भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग भविष्यद्वाणी होते, और यहोवा अपना आत्मा उन सभी में समाव देता!” २८ तब फिर मूसा इस्माएल के पुनियों समेत छावनी में चला गया। २९ तब यहोवा की ओर से एक बड़ी आँखी आई, और वह समुद्र से बे बटेरें उड़ाकर छावनी पर और उसके चारों ओर इन्हीं ले आई, कि वे इधर-उधर एक दिन के मार्ग तक भूमि पर दो दाथ के लगभग ऊँचे तक छा गए। ३० और लोगों ने उठकर उस दिन भर और रात भर, और दूसरे दिन भी दिन भर बटेरों को बटेरते रहे; जिससे कम से कम बटोरा उसने दस होमेर बटोरा; और उन्होंने उन्हें छावनी के चारों ओर फैला दिया। ३१ माँस उनके मुँह वाँ ही में था, और वे उसे खाने न पाए थे कि यहोवा का कोप उन पर भडक उठा, और उसने उनको बहुत बड़ी मार से मारा। ३२ और उस स्थान का नाम किंब्रोतहतावा पड़ा, क्योंकि जिन लोगों ने माँस की लालसा की थी उनको वहाँ मिट्ठी दी गई। ३३ फिर इस्माएली किंब्रोतहतावा से प्रस्थान करके हसरेत में पहुँचे, और वही रहे।

१२ मूसा ने एक कूशी झी के साथ विवाह कर लिया था। इसलिए मिर्याम
और हास्तन उसकी उस विवाहिता कर्शी झी के कारण उसकी निन्दा करने लगे; २४ उन्होंने कहा, “क्या यहोवा ने केवल मूसा ही के साथ बातें की हैं? क्या उन्हें हम से भी बातें नहीं की?” उनकी यह बात यहोवा ने सुनी। ३५ मूसा तो पृथ्वी भर के रहनेवाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था। ३६ इसलिए यहोवा ने एकाएक मूसा और हास्तन और मिर्याम से कहा, “तुम तीनों मिलापवाले तम्बू के पास निकल आओ।” तब वे तीनों निकल आए। ३७ तब यहोवा ने बादल के खम्भे में उत्तरकर तम्बू के द्वार पर खड़ा होकर हास्तन और मिर्याम को बुलाया; अतः वे दोनों उसके पास निकल आए। ३८ तब यहोवा ने कहा, “मेरी बातें सुनो यदि तुम में कोई भविष्यद्वाणा हो, तो उस पर मैं यहोवा दर्शन के द्वारा अपने आपको प्रगट करूँगा, या स्वप्न में उससे बातें करूँगा। ३९ परन्तु मेरा दास मूसा ऐसा नहीं है; वह तो मेरे सब घरपर मैं विश्वासीयोग्य है। ४० उससे मैं ग्रुम रीति से नहीं, परन्तु आमे-सामने और प्रत्यक्ष होकर बातें करता हूँ; और वह यहोवा का स्वरूप निहासने पाता है। इसलिए तुम मेरे दास मूसा की निन्दा करते हुए क्यों नहीं डेरे?” ४१ तब यहोवा का कोप उन पर भडका, और वह चला गया; ४२ तब वह बादल तम्बू के ऊपर से उठ गया, और मिर्याम को देखा कि वह कोटिन हो गई है। ४३ तब हास्तन मूसा से कहने लगा, “हे मेरे प्रभु, हम दोनों ने जो मर्हता की बरन-पाप भी किया, यह पाप हम पर न लगाने दे। ४४ और मिर्याम को उस मेरे हुए के समान न रहने दे, जिसकी देह अपनी माँ के पेट से निकलते ही अधगली हो।” ४५ अतः मूसा ने यह कहकर यहोवा की दुहाई दी, “हे परमेश्वर, कृपा कर, और उसको चंगा कर।” ४६ यहोवा ने मूसा से कहा, “यदि उसके पिता ने उसके मुँह पर थूका ही होता, तो क्या सात दिन तक वह लज्जित न रहती? इसलिए वह सात दिन तक छावनी से बाहर बन्द रहे, उसके बाद वह फिर भीतर आने पाए।” ४७ अतः मिर्याम सात दिन तक छावनी से बाहर बन्द रही, और जब तक मिर्याम फिर आने न पाई तब तक

लोगों ने प्रस्थान न किया। ४८ उसके बाद उन्होंने हसरेत से प्रस्थान करके पारान नामक जंगल में अपने डेरे खड़े किए।
१३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १९ “कनान देश जिसे मैं इस्माएलियों को देता हूँ, उसका भेद लेने के लिये पुष्पों को भेज; वे उनके पितरों के प्रति गोत्र के एक-एक प्रधान पुष्प हों।” २० यहोवा से यह आज्ञा पाकर मूसा ने ऐसे पुष्पों को पारान जंगल से भेज दिया, जो सब के सब इस्माएलियों के प्रधान थे। २१ उनके नाम ये हैं स्क्बेन के गोत्र में से जबकहर का पुत्र शम्म; २२ शिमोन के गोत्र में से होरी का पुत्र शापात; २३ यहदा के गोत्र में से युनुने का पुत्र कालेब; २४ इस्साकार के गोत्र में से यसुफ का पुत्र यिगाल; २५ ऐमे के गोत्र में से नून का पुत्र होशे, २६ बिन्यामीन के गोत्र में से रापू का पुत्र पलती; २७ जब्लून के गोत्र में से सोदी का पुत्र गढ़ीएल; २८ यसुफ वर्षियों में, मनशे के गोत्र में से सूसी का पुत्र गढ़ी; २९ दान के गोत्र में से गमल्ली का पुत्र अमीरीएल; ३० अशेर के गोत्र में से मीकाएल का पुत्र सतरू; ३१ नसाती के गोत्र में से वोप्सी का पुत्र नहबी; ३२ गाद के गोत्र में से माकी का पुत्र ग्राएल। ३३ जिन पुष्पों को मूसा ने देश का भेद लेने के लिये भेजा था उनके नाम ये ही हैं। और नून के पुत्र होशे का नाम मूसा ने यहोश् रखा। ३४ उनको कनान देश के भेद लेने को भेजते समय मूसा ने कहा, “इधर से, अर्थात् दक्षिण देश होकर जाओ, ३५ और पहाड़ी देश में जाकर उस देश को देख लो कि कैसा है, और उसमें बसे हुए लोगों को भी देखा कि वे बलवान हैं या निर्बल, थोड़े हैं या बहुत, ३६ और जिस देश में वे बसे हुए हैं वह कैसा है, अच्छा या बुरा, और वे कैसी-कैसी बसियों में बसे हुए हैं, और तम्भुओं में रहते हैं या गढ़ अथवा किलों में रहते हैं, ३७ ३८ और वह देश कैसा है, उपजाऊ है या बंजर है, और उसमें वृक्ष हैं या नहीं।” ३९ और तुम हियाव बौंधे चलो, और उस देश की उपज में से कुछ लेते भी आना।” वह समय पहली पक्की दाखों का था। ४० इसलिए वे चल दिए, और सीन नामक जंगल से ले रहोब तक, जो हमात के मार्ग में है, सारे देश को देख-भाल कर उसका भेद लिया। ४१ वे दक्षिण देश होकर चले, और हेब्रोन तक गए; वहाँ अहीमन, शेशै, और तल्मै नामक अनाकवंशी रहते थे। हेब्रोन मिस्र के सोअन से सात वर्ष पहले बसाया गया था। ४२ तब वे एशकोल नामक नले तक गए, और वहाँ से एक डाली दाखों के गुच्छे समेत तोड़ ली, और दो मनुष्य उसे एक लाठी पर लटकाए हुए उठा ले चले गए; और वे अनारों और अंजीरों में से भी कुछ कुछ ले आए। ४३ इस्माएली वहाँ से जो दाखों का गुच्छा तोड़ ले आए थे, इस कारण उस स्थान का नाम एशकोल नाला रखा गया। ४४ चालीस दिन के बाद वे उस देश का भेद लेकर लौट आए। ४५ और पारान जंगल के कादेश नामक स्थान में मूसा और हास्तन और इस्माएलियों की सारी मण्डली के पास पहुँचे; और उनको और सारी मण्डली को सन्देशा दिया, और उस देश के फल उनको दिखाए। ४६ उन्होंने मूसा से यह कहकर वर्णन किया, “जिस देश में तूने हमको भेजा था उसमें हम गए; उसमें सचमुच दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, और उनकी उपज में से यही है।” ४७ परन्तु उस देश के निवासी बलवान हैं, और उसके नाम गढ़वाले हैं और बहुत बड़े हैं; और फिर हमने वहाँ अनाकवंशीयों को भी देखा। ४८ दक्षिण देश में तो अमालेकी बसे हुए हैं, और पहाड़ी देश में हित्ती, यबूसी, और एमोरी रहते हैं; और समुद्र के किनारे-किनारे और यरदन नदी के तट पर कनानी बसे हुए हैं।” ४९ पर कलेब ने मूसा के सामने प्रजा के लोगों को चुप कराने के विचार से कहा, “हम अभी चढ़कर उस देश को अपना कर लें; क्योंकि निःसन्देश हम में ऐसा करने की शक्ति है।” ५० पर पुष्प उसके संग गए थे उन्होंने कहा, “उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है; क्योंकि वे हम से बलवान हैं।” ५१ और उन्होंने इस्माएलियों के सामने

उस देश की जिसका भेद उन्होंने लिया था यह कहकर निन्दा भी की, “वह देश जिसका भेद लेने को हम गये थे ऐसा है, जो अपने निवासियों को निगल जाता है; और जितने पुष्प हमने उसमें देखे वे सब के सब बड़े डील-डॉल के हैं।” ३३ फिर हमने वहाँ नपीलों को, अर्थात् नपीली जातिवाले अनाकवशियों को देखा; और हम अपनी दृष्टि में तो उनके सामने टिक्के के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे।”

१४ तब सारी मण्डली चिल्ला उठी; और रात भर वे लोग रोते ही रहे।

२ और सब इसाएली मूसा और हास्न पर बुद्बुडाने लगे; और सारी मण्डली उससे कहने लगी, “भला होता कि हम मिस्र ही में मर जाते! या इस जंगल ही में मर जाते! ३ यहोवा हमको उस देश में ले जाकर क्यों तलवार से मरवाना चाहता है? हमारी छिंगाँ और बाल-बच्चे तो लौट में चले जाएँगे; क्या हमारे लिये अच्छा नहीं कि हम मिस्र देश को लौट जाएँ?” ४ फिर वे आपस में कहने लगे, “आओ, हम किसी को अपना प्रधान बना लें, और मिस्र को लौट चलें।” ५ तब मूसा और हास्न इसाएलियों की सारी मण्डली के सामने मुँह के बल गिरे। ६ और नूर का पुत्र यहोशू और युपुने का पुत्र कालेब, जो देश के भेद लेनेवालों में से थे, अपने-अपने बच्चे फाइकर, ७ इसाएलियों की सारी मण्डली से कहने लगे, “जिस देश का भेद लेने को हम इधर-उधर घूमकर आए हैं, वह अत्यन्त उत्तम देश है। ८ यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो, तो हमको उस देश में, जिसमें दृथ और मधु की धाराएँ बहती हैं, पहुँचाकर उसे हमें दे देगा। ९ केवल इतना करो कि तुम यहोवा के विस्तु बलवा न करो; और न उस देश के लोगों से डरो, क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंगे; छाया उनके ऊपर से हट गई है, और यहोवा हमारी संग है, उनसे न डरो।” १० तब सारी मण्डली चिल्ला उठी, कि इनको पथरवाह करो। तब यहोवा का तेज मिलापवाले तम्बू में सब इसाएलियों पर प्रकाशमान हुआ। ११ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “ये लोग कब तक मेरा तिरस्कार करते रहेंगे? और मेरे सब अश्वर्यकर्मों को देखें पर भी कब तक मुझ पर विच्छास न करेंगे? १२ मैं उन्हें मरी से मास्त्वा, और उनके निज भाग से उन्हें निकाल दूँगा, और तज्ज से एक जाति उत्पन्न करूँगा जो उनसे बड़ी और बलवन्त होगी।” १३ मूसा ने यहोवा से कहा, “तब तो मिसी जिनके मध्य में से तू अपनी सामर्थ्य दिखाकर उन लोगों को निकाल ले आया है यह सुरोगे, १४ और इस देश के निवासियों से करोगें। उन्होंने तो यह सुना है कि तू जो यहोवा है इन लोगों के मध्य में रहता है; और प्रत्यक्ष दिखाई देता है, और तेरा बादल उनके ऊपर ठहरा रहता है, और तू दिन को बादल के खम्भे में, और रात को अनिके खम्भे में होकर इनके आगे-आगे चला करता है। १५ इसलिए यदि तू इन लोगों को एक ही बार मैं बार डाले, तो जिन जातियों ने तेरी कीर्ति सुनी है वे कहेंगी, १६ कि यहोवा उन लोगों को उस देश में जिसे उन्हें देने की शपथ खाई थी, पहुँचा न सका, इस कारण उसने उन्हें जंगल में घात कर डाला है। १७ इसलिए अब प्रभु की सामर्थ्य की महिमा तेरे कहने के अनुसार हो, १८ कि यहोवा कोप करने में धीरजवन्त और अति करणामय है, और अर्थमें और अपराध का क्षमा करनेवाला है, परन्तु वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएँगा, और पूर्वजों के अर्थम का टांड उनके बेटों, और पोतों, और परपोतों को देता है। १९ अब इन लोगों के अर्थम को अपनी बड़ी कस्ता के अनुसार, और जैसे तू मिस्र से लेकर यहाँ तक क्षमा करता रहा है वैसे ही अब भी क्षमा कर दे।” २० यहोवा ने कहा, “तेरी विनती के अनुसार मैं क्षमा करता हूँ; २१ परन्तु मेरी जीवन की शपथ सचमुच सारी पृथ्वी यहोवा की महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी, २२ उन सब लोगों ने जिन्होंने मेरी महिमा मिस्र देश में और जंगल में देखी, और मेरे किए हुए आश्वर्यकर्मों को देखने पर भी दस बार मेरी परीक्षा की, और मेरी बातें नहीं मानी, २३

इसलिए जिस देश के विषय मैंने उनके पूर्वजों से शपथ खाई, उसको वे कभी देखने न पाएँगे; अर्थात् जितनों ने मेरा अपमान किया है उनमें से कोई भी उसे देखने न पाएगा। २४ परन्तु इस कारण से कि मेरे दास कालेब के साथ और ही आत्मा है, और उसने पूरी तीरि से मेरा अनुकरण किया है, मैं उसको उस देश में जिसमें वह हो आया है पहुँचाऊँगा, और उसका वंश उस देश का अधिकारी होगा। २५ अमालेकी और कनानी लोग तराई में रहते हैं, इसलिए कल तुम घूमकर प्रस्थान करो, और लाल समुद्र के मार्ग से जंगल में जाओ।” २६ फिर यहोवा ने मूसा और हास्न से कहा, २७ “यह बूरी मण्डली मुझ पर बुद्बुडाती रहती है, उसको मैं कब तक सहाया रहूँ? इसाएली जो मुझ पर बुद्बुडाते रहते हैं, उनका यह बुद्बुडाना मैंने तो सना है। २८ इसलिए उससे कह कि यहोवा की यह वाणी है, कि मेरे जीवन की शपथ जो बातें तुम ने मेरे सुनते कही हैं, मिसन्देह मैं उसी के अनुसार तुम्हारे साथ व्यवहार करूँगा। २९ तुम्हारे शब इसी जंगल में पड़े रहेंगे; और तुम सब में से बीस वर्ष की या उससे अधिक आयु के जितने पिने गए थे, और मुझ पर बुद्बुडाते थे, ३० उसमें से युपुने के पुत्र कालेब और नूर के पुत्र यहोशू को छोड़ कोई भी उस देश में न जाने पाएगा, जिसके विषय मैंने शाश्वत खाई है कि तुम को उसमें बसाऊँगा। ३१ परन्तु तुम्हारे बाल-बच्चे जिनके विषय तुम ने कहा है, कि वे लौट में चले जाएँगे, उनको मैं उस देश में पहुँचा दूँगा, और वे उस देश को जान लेंगे जिसको तुम ने तुच्छ जाना है। ३२ परन्तु तुम लोगों के शब इसी जंगल में पड़े रहेंगे। ३३ और जब तक तुम्हारे बाल-बच्चे जिन गल में न गल जाएँ तब तक, अर्थात् चालीस वर्ष तक, तुम्हारे बाल-बच्चे जंगल में तुम्हारे व्यभिचार का फल भोगते हुए भटकते रहेंगे। ३४ जितने दिन तुम उस देश का भेद लेते रहे, अर्थात् चालीस दिन उनकी गिनती के अनुसार, एक दिन के बदले एक वर्ष, अर्थात् चालीस वर्ष तक तुम अपने अर्धम का टांड उठाए रहेंगे, तब तुम जान लोगे कि मेरा विरोध क्या है। ३५ मैं यहोवा यह कह चुका हूँ, कि इस बूरी मण्डली के लोग जो मेरे विस्तु इकट्ठे हुए हैं इसी जंगल में मर मिटेंगे; और मिसन्देह ऐसा ही करूँगा भी।” ३६ तब जिन पुरुषों को मूसा ने उस देश के भेद लेने के लिये भेजा था, और उन्होंने लौटकर उस देश की नामधारी करके सारी मण्डली को कुद्कुडाने के लिये उभारा था, ३७ उस देश की वे नामधारी करनेवाले पुस्त यहोवा के मारने से उसके सामने मर गये। ३८ परन्तु देश के भेद लेनेवाले पुरुषों में से नूर का पुत्र यहोशू और युपुने का पुत्र कालेब दोनों जीवित रहे। ३९ तब मूसा ने ये बातें सब इसाएलियों को कह सुनाई और वे बहुत विलाप करने लगे। ४० और वे सर्वे उठकर यह कहते हुए पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगे, “हमने पाप किया है; परन्तु अब तैयार है, और उस स्थान को जाएँगे जिसके विषय यहोवा ने वचन दिया था।” ४१ तब मूसा ने कहा, “तुम यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन क्यों करते हो? यह सफल न होगा। ४२ यहोवा तुम्हारे मध्य में नहीं है, मत चढ़ा, नहीं तो शत्रुओं से हार जाओगे। ४३ वहाँ तुम्हारे आगे अमालेकी और कनानी लोग हैं, इसलिए तुम तलवार से मारे जाओगे; तुम यहोवा को छोड़कर फिर गए हो, इसलिए वह तुम्हारे संग नहीं रहेगा।” ४४ परन्तु वे दिटाई करके पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए, परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक, और मूसा, छावनी से न हटे। ४५ तब अमालेकी और कनानी जो उस पहाड़ पर रहते थे उन पर चढ़ आए, और होर्मा तक उनको मारते चले आए।

१५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १ “इसाएलियों से कह कि जब तुम अपने

निवास के देश में पहुँचो, जो मैं तुम्हें देता हूँ, २ और यहोवा के लिये क्या होमबलि, क्या मेलबलि, कोई हव्य चढ़ाओं, चाहे वह विशेष मन्त्र पूरी करने का हो चाहे स्वेच्छाबलि का हो, चाहे तुम्हारे नियत समयों में का हो, या वह चाहे गाय-बैल चाहे भेड़-बकरियों में का हो, जिससे यहोवा के

लिये सुखदायक सुगन्ध हो; ४ तब उस होमबलि या मेलबलि के संग भेड़ के बच्चे यहोवा के लिये चौथाई हीन तेल से सना हुआ एपा का दसवाँ अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाना, ५ और चौथाई हीन दाखमधु अर्ध करके देना। ६ और मेडे के बलि के साथ तिहाई हीन तेल से सना हुआ एपा का दो दसवाँ अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाना; ७ और उसका अर्ध यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला तिहाई हीन दाखमधु देना। ८ और जब तु यहोवा को होमबलि या किसी विशेष मन्त्र पूरी करने के लिये बलि या मेलबलि करके बछड़ा चढ़ाए, ९ तब बछड़े का चढ़ानेवाला उसके संग आधा हीन तेल से सना हुआ एपा का तीन दसवाँ अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाए। १० और उसका अर्ध आधा हीन दाखमधु चढ़ाए, वह यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य होगा। ११ “एक-एक बछड़े, या मेडे, या भेड़ के बच्चे, या बकरी के बच्चे के साथ इसी रिति चढ़ावा चढ़ाया जाए। १२ तुम्हारे बलिपृष्ठों की जितनी गिनती हो, उसी गिनती के अनुसार एक-एक के साथ ऐसा ही किया करना। १३ जितने देशी हों वे यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य चढ़ाते समय ये काम इसी रिति से किया करें। १४ “और यदि कोई परदेशी तुम्हारे संग रहता हो, या तुम्हारी किसी पीढ़ी में तुम्हारे बीच कोई रहनेवाला हो, और वह यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य चढ़ाना चाहे, तो जिस प्रकार तम करोगे उसी प्रकार वह भी करे। १५ मण्डली के लिये, अर्थात् तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेवाले परदेशी दोनों के लिये एक ही विधि हो; तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में यह सदा की विधि ठहरे, कि जैसे तुम हो वैसे ही परदेशी भी यहोवा के लिये ठहरता है। १६ तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेवाले परदेशीयों के लिये एक ही व्यवस्था और एक ही नियम है।” १७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १८ “इस्माएलियों को मेरा यह वचन सुना, कि जब तुम उस देश में पहुँचो जहाँ मैं तुम को लिये जाता हूँ, १९ और उस देश की उपज का अन्न खाओ, तब यहोवा के लिये उठाई हुई भेट चढ़ावा करो। २० अपने पहले गुंधे हुए आटे की एक पपड़ी उठाई हुई भेट करके यहोवा के लिये चढ़ाना; जैसे तुम खलिहान में से उठाई हुई भेट चढ़ावोंगे वैसे ही उसको भी उठाया करना। २१ अपनी पीढ़ी-पीढ़ी में अपने पहले गुंधे हुए आटे में से यहोवा को उठाई हुई भेट दिया करना। २२ “फिर जब तुम इन सब आज्ञाओं में से जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया है किसी का उल्लंघन भूल से करो, २३ अर्थात् जिस दिन से यहोवा आज्ञा देने लगा, और आपे की तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में उस दिन से उसने जितनी आज्ञाएँ मूसा के द्वारा दी हैं, २४ उसमें यदि भूल से किया हुआ पाप मण्डली के बिना जाने हुआ हो, तो सारी मण्डली यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला होमबलि करके एक बछड़ा, और उसके संग नियम के अनुसार उसका अन्नबलि और अर्ध चढ़ाए, और पापबलि करके एक बकरा चढ़ाए। २५ तब याजक इस्माएलियों की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित्त करें, और उनकी क्षमा की जाएगी; क्योंकि उनका पाप भूल से हुआ, और उन्होंने अपनी भूल के लिये अपना चढ़ावा, अर्थात् यहोवा के लिये हव्य और अपना पापबलि उसके सामने चढ़ाया। २६ इसलिए इस्माएलियों की सारी मण्डली का, और उसके बीच रहनेवाले परदेशी का भी, वह पाप क्षमा किया जाएगा, क्योंकि वह सब लोगों के अनजाने में हुआ। २७ फिर यदि कोई मनुष्य भूल से पाप करे, तो वह एक वर्ष की एक बकरी पापबलि करके चढ़ाए। २८ और याजक भूल से पाप करनेवाले मनुष्य के लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करें; अतः इस प्रायश्चित्त के कारण उसका वह पाप क्षमा किया जाएगा। २९ जो कोई भूल से कुछ करे, चाहे वह इस्माएलियों में देशी हो, चाहे तुम्हारे बीच परदेशी होकर रहता हो, सब के लिये तुम्हारी एक ही व्यवस्था हो। ३० “परन्तु क्या देशी क्या परदेशी, जो मनुष्य ढिठाई से कुछ करे, वह यहोवा का अनादर

करनेवाला ठहरेगा, और वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए। ३१ वह यो यहोवा का वचन तुच्छ जानता है, और उसकी आज्ञा का टालनेवाला है, इसलिए वह मनुष्य निश्चय नाश किया जाए; उसका अर्धम उसी के सिर पड़ेगा।” ३२ जब इस्माएली जंगल में रहते थे, उन दिनों एक मनुष्य विश्वाम के दिन लकड़ी बीनता हुआ मिला, वे उसको मूसा और हास्न, और सारी मण्डली के पास ले गए। ३३ उन्होंने उसको हवालात में रखा, क्योंकि ऐसे मनुष्य से क्या करना चाहिये वह प्रगट नहीं किया गया था। ३४ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “वह मनुष्य निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली के लोगों ने उसको छावनी से बाहर ले जाकर पथरवाह किया, और वह मर गया। ३५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ३६ “इस्माएलियों से कह, कि अपनी पीढ़ी-पीढ़ी में अपने बड़ों के छोर पर झालर लगाया करना, और एक-एक छोर की झालर पर एक नीला फीता लगाया करना; ३७ और वह तुम्हारे लिये ऐसी झालर ठहरे, जिससे जब जब तुम उसे देखो तब-तब यहोवा की सारी आज्ञाएँ तुम को स्मरण आ जाएँ; और तुम उनका पालन करो, और तुम अपने-अपने मन और अपनी-अपनी दृष्टि के वश में होकर व्यभिचार न करते फिरो जैसे करते आए हो। ३८ परन्तु तुम यहोवा की सब आज्ञाओं को स्मरण करके उनका पालन करो, और अपने परमेश्वर के लिये पवित्र बनो। ३९ मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ, जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल ले आया कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरँ, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”

१६ कोरह जो लेवी का पपोता, कहात का पोता, और यिसहार का पुत्र था,

वह एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम, और पेलेत के पुत्र ओन, १ इन तीनों स्केनियों से मिलकर मण्डली के ढाई सौ प्रधान, जो सभासद और नामी थे, उनको संग लिया; २ और वे मूसा और हास्न के विस्तु उठ खड़े हुए, और उनसे कहने लगे, “तुम ने बहुत किया, अब बस करो; क्योंकि सारी मण्डली का एक-एक मनुष्य पवित्र है, और यहोवा उनके मध्य में रहता है; इसलिए तुम यहोवा की मण्डली में ऊँचे पदवाले क्यों बन बैठे हो?” ३ यह सुनकर मूसा अपने मूँह के बल गिरा; ४ फिर उसने कोरह और उसकी सारी मण्डली से कहा, “सर्वे को यहोवा दिखा देगा कि उसका कौन है, और पवित्र कौन है, और उसको अपने समीप बुला लेगा; जिसको वह आप चुन लेगा उसी को अपने समीप बुला भी लेगा। ५ इसलिए, हे कोरह, तुम अपनी सारी मण्डली समेत यह करो, अर्थात् अपना-अपना धूपदान ठीक करो; ६ और कल उनमें आग रखकर यहोवा के सामने धूप देना, तब जिसको यहोवा चुन ले वही पवित्र ठहरेगा। हे लेवियों, तुम भी बड़ी-बड़ी बातें करते हो, अब बस करो।” ७ फिर मूसा ने कोरह से कहा, “हे लेवियों, सुनो, ८ क्या यह तुम्हें छोटी बात जान पड़ती है कि इस्माएल के परमेश्वर ने तुम को इस्माएल की मण्डली से अलग करके अपने निवास की सेवकाई करने, और मण्डली के सामने खड़े होकर उसकी भी सेवा ठहल करने के लिये अपने समीप बुला लिया है; ९ और तुझे और तेरे सब लेवी भाइयों को भी अपने समीप बुला लिया है? फिर भी तुम याजकपद के भी खोजी हो? १० और इसी कारण तूने अपनी सारी मण्डली को यहोवा के विस्तु इकट्ठी किया है; हास्न कौन है कि तुम उस पर बुड़बुड़ते हो?” ११ फिर मूसा ने एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम को बुलवा भेजा; परन्तु उन्होंने कहा, “हम तेरे पास नहीं आएँगे। १२ क्या यह एक छोटी बात है कि तू हमको ऐसे देश से जिसमें धूप और मधु की धाराएँ बहती हैं इसलिए निकाल लाया है, कि हमें जंगल में मार डालें, फिर

क्या तू हमारे ऊपर प्रधान भी बनकर अधिकार जताते हैं? १४ फिर तू हमें ऐसे देश में जहाँ दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं नहीं पहुँचाया, और न हमें खेतों और दाख की बारियों का अधिकारी बनाया। क्या तू इन लोगों की आँखों में धूल डालेगा? हम तो नहीं आँगौं।” १५ तब मूसा का कोप बहुत भड़क उठा, और उसने यहोवा से कहा, “उन लोगों की भेट की ओर दृष्टि न कर। मैंने तो उनसे एक गदहा भी नहीं लिया, और न उनमें से किसी की हानि की है।” १६ तब मूसा ने कोरह से कहा, “कल तू अपनी सारी मण्डली को साथ लेकर हास्न के साथ यहोवा के सामने हाजिर होना; १७ और तुम सब अपना-अपना धूपदान लेकर उनमें धूप देना, फिर अपना-अपना धूपदान जो सब समेत ढाई सौ होंगे यहोवा के सामने ले जाना; विशेष करके तू और हास्न अपना-अपना धूपदान ले जाना।” १८ इसलिए उन्होंने अपना-अपना धूपदान लेकर और उनमें आग रखकर उन पर धूप डाला; और मूसा और हास्न के साथ मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़े हुए। १९ और कोरह ने सारी मण्डली को उनके विस्तृ मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठा कर लिया। तब यहोवा का तेज सारी मण्डली को दिखाई दिया। २० तब यहोवा ने मूसा और हास्न से कहा, २१ “उस मण्डली के बीच में से अलग हो जाओ कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूँ।” २२ तब वे मैंह के बल गिरकर कहने लगे, “हे परमेश्वर, हे सब प्राणियों के आत्माओं के परमेश्वर, क्या एक पुरुष के पाप के कारण तेरा क्रोध सारी मण्डली पर होगा?” २३ यहोवा ने मूसा से कहा, २४ “मण्डली के लोगों से कह कि कोरह, दातान, और अबीराम के तम्बुओं के आस-पास से हट जाओ।” २५ तब मूसा उठकर दातान और अबीराम के पास गया; और इसाएलियों के बूद्ध लोग उसके पीछे-पीछे गए। २६ और उसने मण्डली के लोगों से कहा, “तुम उन दृश्य मनुष्यों के डेरों के पास से हट जाओ, और उनकी कोई बस्तु न छाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम भी उनके सब पापों में फँसकर मिट जाओ।” २७ यह सुनकर लोग कोरह, दातान, और अबीराम के तम्बुओं के आस-पास से हट गए; परन्तु दातान और अबीराम निकलकर अपनी परियों, बेटों, और बाल-बच्चों समेत अपने-अपने डेरों के द्वार पर खड़े हुए। २८ तब मूसा ने कहा, “इससे तुम जान लोगे कि यहोवा ने मुझे भेजा है कि यह सब काम करूँ, क्योंकि मैंने अपनी इच्छा से कुछ नहीं किया। २९ यदि उन मनुष्यों की मृत्यु और सब मनुष्यों के समान हो, और उनका दण्ड सब मनुष्यों के समान हो, तब जानो कि मैं यहोवा का भेजा हुआ नहीं हूँ। ३० परन्तु यदि यहोवा अपनी अनोखी शक्ति प्राप्त करे, और पृथ्वी अपना मूँह पसारकर उनको, और उनका सब कुछ निगल जाए, और वे जीते जी अधोलोक में जा पड़े, तो तुम समझ लो कि इन मनुष्यों ने यहोवा का अपमान किया है।” (Sheol h7585) ३१ वह ये सब बातें कह ही चुका था कि भूमि उन लोगों के पाँव के नीचे फट गई; ३२ और पृथ्वी ने अपना मूँह खोल दिया और उनको और उनके समस्त घरबार का सामान, और कोरह के सब मनुष्यों और उनकी सारी सम्पत्ति को भी निगल लिया। ३३ और वे और उनका सारा घरबार जीवित ही अधोलोक में जा पड़े; और पृथ्वी ने उनको ढाँप लिया, और वे मण्डली के बीच में से नष्ट हो गए। (Sheol h7585) ३४ और जितने इसाएली उनके चारों ओर थे वे उनका चिल्लाना सुन यह कहते हुए भागे, “कहीं पृथ्वी हमको भी निगल न ले!” ३५ तब यहोवा के पास से आग निकली, और उन ढाई सौ धूप चढ़ानेवालों को भस्म कर डाला। ३६ तब यहोवा ने मूसा से कहा, ३७ “हास्न याजक के पुत्र एलीआजर से कह कि उन धूपदानों को आग में से उठा ले; और आग के अगारों को उधर ही छिटरा दे, क्योंकि वे पवित्र हैं।” ३८ जिन्होंने पाप करके अपने ही प्राणों की हानि की है, उनके धूपदानों के पतर पीट-पीट कर बनाए जाएँ जिससे कि वह बेदी के मढ़ने के काम आएँ; क्योंकि उन्होंने

यहोवा के सामने रखा था; इससे वे पवित्र हैं। इस प्रकार वह इसाएलियों के लिये एक निशान ठहरेगा।” ३९ इसलिए एलीआजर याजक ने उन पीतल के धूपदानों को, जिनमें उन जले हुए मनुष्यों ने धूप चढ़ाया था, लेकर उनके पतर पीटकर बेदी के मढ़ने के लिये बनवा दिए, ४० कि इसाएलियों को इस बात का स्मरण रहे कि कोई दूसरा, जो हास्न के बंश का न हो, यहोवा के सामने धूप चढ़ाने को समीप न जाएँ, ऐसा न हो कि वह भी कोरह और उसकी मण्डली के समान नष्ट हो जाए, जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा उसको आज्ञा दी थी। ४१ दूसरे दिन इसाएलियों की सारी मण्डली यह कहकर मूसा और हास्न पर बुद्धुबुदाने लगी, “यहोवा की प्रजा को तुम ने मार डाला है।” ४२ और जब मण्डली के लोग मूसा और हास्न के विस्तृ इकट्ठे हो रहे थे, तब उन्होंने मिलापवाले तम्बू की ओर दृष्टि की; और देखा, कि बादल ने उसे छा लिया है, और यहोवा का तेज दिखाई दे रहा है। ४३ तब मूसा और हास्न मिलापवाले तम्बू के समान आएँ, ४४ तब यहोवा ने मूसा और हास्न से कहा, ४५ “तुम उस मण्डली के लोगों के बीच से हट जाओ, कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूँ।” तब वे मैंह के बल गिरे। ४६ और मूसा ने हास्न से कहा, “धूपदान को लेकर उसमें बेटी पर से आग रखकर उस पर धूप डाल, मण्डली के पास फूटी से जाकर उसके लिये प्रायश्चित्त कर; क्योंकि यहोवा का कोप अत्यन्त भड़का है, और मरी फैलने लगी है।” ४७ मूसा की आज्ञा के अनुसार हास्न धूपदान लेकर मण्डली के बीच में दौड़ा गया; और यह देखकर कि लोगों में मरी फैलने लगी है, उसने धूप जलाकर लोगों के लिये प्रायश्चित्त किया। ४८ और वह मुर्दी और जीवित के मध्य में खड़ा हुआ; तब मरी थम गई। ४९ और जो कोरह के संग भागी होकर मर गए थे, उन्हें छोड़ जो लोग इस मरी से मर गए वे चौदह हजार सात सौ थे। ५० तब हास्न मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मूसा के पास लौट गया, और मरी थम गई।

१७ तब यहोवा ने मूसा से कहा, १ “इसाएलियों से बातें करके उनके पूर्वजों के घरानों के अनुसार, उनके सब प्रधानों के पास से एक-एक छड़ी ले; और उन बारह छड़ियों में से एक-एक पर एक-एक के मूलपुरुष का नाम लिख, २ और लेवियों की छड़ी पर हास्न का नाम लिख। क्योंकि इसाएलियों के पूर्वजों के घरानों के एक-एक मुख्य पुरुष की एक-एक छड़ी होगी। ३ और उन छड़ियों को मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के आगे, जहाँ मैं तुम लोगों से मिला करता हूँ, रख दे। ४ और जिस पुरुष को मैं चुनूँगा उसकी छड़ी में कलियाँ फृट निकलेंगी, और इसाएली जो तुम पर बुद्धुबुदाने रहते हैं, वह बुद्धुबुदाना मैं अपने ऊपर से दूर करूँगा।” ५ अतः मूसा ने इसाएलियों से यह बात कहीं; और उनके सब प्रधानों ने अपने-अपने लिए, अपने-अपने पूर्वजों के घरानों के अनुसार, एक-एक छड़ी उसे दी, सो बारह छड़ियाँ हीँ; और उन छड़ियों में हास्न की भी छड़ी थी। ६ उन छड़ियों को मूसा ने साक्षीपत्र के तम्बू में यहोवा के समाने रख दिया। ७ दूसरे दिन मूसा साक्षीपत्र के तम्बू में गया; तो क्या देखा, कि हास्न की छड़ी जो लेवी के घराने के लिये भी उसमें कलियाँ फृट निकलीं, उसमें कलियाँ लगीं, और फूल भी फूले, और पके बादाम भी लगे हैं। ८ तब मूसा उन सब छड़ियों को यहोवा के समाने से निकालकर सब इसाएलियों के पास ले गया; और उन्होंने अपनी-अपनी छड़ी पहचानकर ले ली। ९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “हास्न की छड़ी को साक्षीपत्र के समाने फिर रख दे, कि यह उन बलवा कानेवालों के लिये एक निशान बनकर रखी रहे, कि तू उनका बुद्धुबुदाना जो मेरे विस्तृ होता रहता है भविष्य में रोक सके, ऐसा न हो कि वे मर जाएँ।” १० और मूसा ने यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार ही किया। ११ तब इसाएली मूसा से कहने लगे, देख, “हमारे प्राण निकलने वाले हैं, हम सब नष्ट हुए हम सब के सब नष्ट हुए जाते हैं।

१३ जो कोई यहोवा के निवास के तम्बू के समीप जाता है वह मारा जाता है। तो क्या हम सब के सब मर ही जाएँगे?"

१४ फिर यहोवा ने हास्न से कहा, "पवित्रस्थान के विष्टु अर्थम् का भार तुझ

पर, और तेरे पुत्रों और तेरे पिता के घराने पर होगा; और तुम्हारे याजक कर्म के विष्टु अर्थम् का भार तुझ पर और तेरे पुत्रों पर होगा। ५ और लेवी का गोत्र, अर्थात् तेरे मलपुस्त के गोव्राले जो तेरे भाइ हैं, उनको भी अपने साथ ले आया कर, और वे तुझ से मिल जाएँ, और तेरी सेवा ठहल किया करें, परन्तु साक्षीपत्र के तम्बू के सामने तू और तेरे पुत्र ही आया करें। ६ जो तुझे सौंपा गया है उसकी और सारे तम्बू की भी वे रक्षा किया करें; परन्तु पवित्रस्थान के पातों के और वेदी के समीप न आएँ, ऐसा न हो कि वे और तुम लोग भी मर जाओ।

७ अतः वे तुझ से मिल जाएँ, और मिलापवाले तम्बू की सारी सेवकाई की वस्तुओं की रक्षा किया करें, परन्तु जो तेरे कुल का न हो वह तुम लोगों के समीप न आने पाए। ८ और पवित्रस्थान और वेदी की खखाली तुम ही किया करो, जिससे इसाएलियों पर फिर मेरा कोप न भड़के। ९ परन्तु मैंने आप तुम्हारे लेवी भाइयों को इसाएलियों के बीच से अलग कर लिया है, और वे मिलापवाले तम्बू की सेवा करने के लिये तुम को और यहोवा को सौंप दिये गए हैं। १० पर वेदी की और बीचवाले पर्दे के भीतर की बातों की सेवकाई के लिये तू और तेरे पुत्र अपने याजकपद की रक्षा करना, और तुम ही सेवा किया करना; क्योंकि मैं तुम्हें याजकपद की सेवकाई दान करता हूँ; और जो तेरे कुल का न हो वह यदि समीप आए तो मार डाला जाए।"

११ फिर यहोवा ने हास्न से कहा, "सुन, मैं आप तुझको उठाई हुई भेट सौंप देता हूँ, अर्थात् इसाएलियों की पवित्र की हुई वस्तुएँ; जितनी हों उन्हें मैं तेरा अभिषेक वाला भाग ठहराकर तझे और तेरे पुत्रों को सदा का हक करके दे देता हूँ। १२ जो परमपवित्र वस्तुएँ आग में भस्म में की जाएँगी वे तेरी ही ठहरें, अर्थात् इसाएलियों के सब चढ़ावों में से उनके सब अन्बलि, सब पापबलि, और सब दोषबलि, जो वे मुझ को दें, वह तेरे और तेरे पुत्रों के लिये परमपवित्र ठहरें। १३ उनको परमपवित्र वस्तु जानकर खाया करना; उनको हर एक पुस्त खा सकता है, वे तेरे लिये पवित्र हैं। १४ फिर ये वस्तुएँ भी तेरी ठहरें, अर्थात् जितनी भेटे इसाएली हिलाने के लिये हैं, उनको मैं तुझे और तेरे बेटे-बेटियों को सदा का हक करके दे देता हूँ; तेरे घराने में जितने शुद्ध हों वह उन्हें खा सकेंगे। १५ फिर उत्तम से उत्तम नया दाखमधु, और गेहूँ, अर्थात् इनकी पहली उपज जो वे यहोवा को दें, वह मैं तुझको देता हूँ। १६ उनके देश के सब प्रकार की पहली उपज, जो वे यहोवा के लिये ले आएँ, वह तेरी ही ठहरे; तेरे घराने में जितने शुद्ध हों वे उन्हें खा सकेंगे। १७ इसाएलियों में जो कुछ अर्पण किया जाए वह भी तेरा ही ठहरे। १८ सब प्राणियों में से जितने अपनी-अपनी माँ के पहलौठे हों, जिन्हें लोग यहोवा के लिये चढ़ाएँ, चाहे मनुष्य के चाहे पशु के पहलौठे हों, वे सब तेरी ही ठहरें; परन्तु मनुष्यों और अशुद्ध पशुओं के पहलौठों को दाम लेकर छोड़ देना। १९ और जिन्हें छुड़ाना हो, जब वे महीने भर के हों तब उनके लिये अपने ठहराए हुए मोल के अनुसार, अर्थात् पवित्रस्थान के बीस गेरा के शेकेल के हिसाब से पाँच शेकेल लेकर उन्हें छोड़ना। २० पर गाय, या भेड़ी, या बकरी के पहलौठे को न छोड़ना; वे तो पवित्र हैं। उनके लह को बेदी पर छिड़क देना, और उनकी चर्बी को बलि करके जलाना, जिससे यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध हो; २१ परन्तु उनका माँस तेरा ठहरे, और हिलाई हुई छाती, और दाहिनी जाँघ भी तेरी ही ठहरे। २२ पवित्र वस्तुओं की जितनी भेटे इसाएली यहोवा को हैं, उन सभी को मैं तुझे

के लिये यहोवा की सदा के लिये नमक की अटल बाचा है।" २३ फिर यहोवा ने हास्न से कहा, "इसाएलियों के देश में तेरा कोई भाग न होगा, और न उनके बीच तेरा कोई अंश होगा; उनके बीच तेरा भाग और तेरा अंश मैं ही हूँ।

२४ "फिर मिलापवाले तम्बू की जो सेवा लेवी करते हैं उसके बदले मैं उनको इसाएलियों का सब दशमांश उनका निज भाग कर देता हूँ। २५ और भविष्य में इसाएली मिलापवाले तम्बू के समीप न आएँ, ऐसा न हो कि उनके सिर पर पाप लगे, और वे मर जाएँ। २६ परन्तु लेवी मिलापवाले तम्बू की सेवा किया करें, और उनके अर्थम् का भार वे ही उठाया करें; यह तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि ठहरे; और इसाएलियों के बीच उनका कोई निज भाग न होगा। २७ क्योंकि इसाएली जो दशमांश यहोवा को उठाई हुई भेट करके देंगे, उसे मैं लेवियों को निज भाग करके देता हूँ, इसलिए मैंने उनके विषय में कहा है, कि इसाएलियों के बीच कोई भाग उनको न मिले।" २८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २९ "तू लेवियों से कह, कि जब जब तुम इसाएलियों के हाथ से वह दशमांश लो जिसे यहोवा तुम को तुम्हारा निज भाग करके उनसे दिलाता है, तब-तब उसमें से यहोवा के लिये एक उठाई हुई भेट करके दशमांश का दशमांश देना। ३० और तुम्हारी उठाई हुई भेट तुम्हारे हित के लिये ऐसी गिनी जाएँगी जैसा खलिहान में का अन्न, या रसकुण्ड में का दाखरस गिना जाता है। ३१ इसी तरी तुम भी अपने सब दशमांशों में से, जो इसाएलियों की ओर से पाओगे, यहोवा को एक उठाई हुई भेट देना; और यहोवा की यह उठाई हुई भेट हास्न याजक को दिया करना। ३२ जितने दान तुम पाओ उसमें से हर एक का उत्तम से उत्तम भाग, जो पवित्र ठहरा है, उसे यहोवा के लिये उठाई हुई भेट करके पूरी-पूरी देना। ३३ इसलिए तू लेवियों से कह, कि जब तुम उसमें का उत्तम से उत्तम भाग उठाकर दो, तब यह तुम्हारे लिये खलिहान में के अन्न, और रसकुण्ड के रस के तुल्य गिना जाएगा; ३४ और उसको तुम अपने घरानों समेत सब स्थानों में खा सकते हो, क्योंकि मिलापवाले तम्बू की जो सेवा तुम करोगे उसका बदला यही ठहरा है। ३५ और जब तुम उसका उत्तम से उत्तम भाग उठाकर दो तब उसके कारण तुम को पाप न लगेगा। परन्तु इसाएलियों की पवित्र की हुई वस्तुओं को अपवित्र न करना, ऐसा न हो कि तुम मर जाओ।"

३६ फिर यहोवा ने मूसा और हास्न से कहा, ३७ "व्यवस्था की जिस विधि की

आज्ञा यहोवा देता है वह यह है; कि तू इसाएलियों से कह, कि मैं ऐसे पास एक लाल निर्दीप बछिया ले आओ, जिसमें कोई भी दोष न हो, और जिस पर जूआ कभी न रखा गया हो। ३८ तब उसे एलीआजर याजक को दो, और वह उसे छावनी से बाहर ले जाए, और कोई उसको एलीआजर याजक के सामने बलिदान करें; ३९ तब एलीआजर याजक अपनी ऊँगली से उसका कुछ लह लेकर मिलापवाले तम्बू के सामने की ओर सात बार छिड़क दे। ४० तब कोई उस बछिया को खाल, मौस, लह, और गोबर समेत उसके सामने जलाए; ४१ और याजक देवदार की लकड़ी, जूफ़ा, और लाल रंग का कपड़ा लेकर उस आग में जिसमें बछिया जलती हो डाल दे। ४२ तब वह अपने बब्ल धोए और सान करें, इसके बाद छावनी में तो आएँ, परन्तु सौँझ तक अशुद्ध रहेगा। ४३ और जो मनुष्य उसको जलाए वह भी जल से अपने बब्ल धोए और सान करें, और सौँझ तक अशुद्ध रहें। ४४ फिर कोई शुद्ध पुस्त उस बछिया की राख बटोरकर छावनी के बाहर किसी शुद्ध स्थान में रख छोड़े; और वह राख इसाएलियों की मण्डली के लिये अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल के लिये रखी रहें, वह तो पापबलि है। ४५ और जो मनुष्य बछिया की राख बटोरे वह अपने बब्ल धोए, और सौँझ तक अशुद्ध रहेगा। और यह इसाएलियों के लिये, और उनके बीच

रहनेवाले परदेशियों के लिये भी सदा की विधि ठहरे। १० “जो किसी मनुष्य के शब को छूए वह सात दिन तक अशुद्ध रहे; ११ ऐसा मनुष्य तीसरे दिन पाप छुड़ाकर अपने को पावन करे, और सातवें दिन शुद्ध ठरे; परन्तु यदि वह तीसरे दिन अपने आपको पाप छुड़ाकर पावन न करे, तो सातवें दिन शुद्ध न ठहरेगा। १२ जो कोई किसी मनुष्य का शब छूकर पाप छुड़ाकर अपने को पावन न करे, वह यहोवा के निवास-स्थान का अशुद्ध करनेवाला ठहरेगा, और वह मनुष्य इसाएल में से नाश किया जाए; क्योंकि अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल उस पर न छिड़का गया, इस कारण वह अशुद्ध ठहरेगा, उसकी अशुद्धता उसमें बनी रहेगी। १३ “यदि कोई मनुष्य डेरे में मर जाए तो व्यवस्था यह है, कि जिने उस डेरे में रहे, या उसमें जाएँ, वे सब सात दिन तक अशुद्ध रहें। १४ और हर एक खुला हुआ पात्र, जिस पर कोई ढकना लगा न हो, वह अशुद्ध ठहरे। १५ और जो कोई मैदान में तलवार से मरे हुए को, या मृत शरीर को, या मनुष्य की हड्डी को, या किसी कब्र को छूए, तो सात दिन तक अशुद्ध रहे। १६ अशुद्ध मनुष्य के लिये जलाए हुए पापबलि की राख में से कुछ लेकर पात्र में डालकर उस पर सोते का जल डाला जाए; १७ तब कोई शुद्ध मनुष्य जूफा लेकर उस जल में डबाकर जल को उस डेरे पर, और जिने पात्र और मनुष्य उसमें हों, उन पर छिड़के, और हड्डी के, या मरे हुए के, या मृत शरीर को, या कब्र के छुनेवाले पर छिड़क दें; १८ वह शुद्ध पृथग तीसरे दिन और सातवें दिन उस अशुद्ध मनुष्य पर छिड़के; और सातवें दिन वह उसके पाप छुड़ाकर उसको पावन करे, तब वह अपने बच्चों को धोकर और जल से सान करके सौँझ को शुद्ध ठहरे। १९ “जो कोई अशुद्ध होकर अपने पाप छुड़ाकर अपने को पावन न कराए, वह मनुष्य यहोवा के पवित्रस्थान का अशुद्ध करनेवाला ठहरेगा, इस कारण वह मण्डली के बीच में से नाश किया जाए; अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल उस पर न छिड़का गया, इस कारण से वह अशुद्ध ठहरेगा। २० और यह उनके लिये सदा की विधि ठहरे। जो अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल छिड़के वह अपने बच्चों को धोए; और जो जन अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल छूए वह भी सौँझ तक अशुद्ध रहे। २१ और जो कुछ वह अशुद्ध मनुष्य छूए वह भी अशुद्ध ठहरे; और जो मनुष्य उस वस्तु को छूए वह भी सौँझ तक अशुद्ध रहे।”

२० पहले महीने में सारी इसाएली मण्डली के लोग सीन नामक जंगल में

आ गए, और कादेश में रहने लगे; और वहाँ मिर्याम मर गई, और वही उसको मिट्ठी दी गई। १ वहाँ मण्डली के लोगों के लिये पानी न मिला; इसलिए वे मूसा और हास्न के विस्तु इकट्ठे हुए। २ और लोग यह कहकर मूसा से झागड़ने लगे, “भला होता कि हम उस समय ही मर गए होते जब हमारे भाई यहोवा के सामने मर गए। ३ और तुम यहोवा की मण्डली को इस जंगल में क्यों ले आए हो, कि हम अपने पशुओं समेत यहाँ मर जाए? ४ और तुम ने हमको मिस्त्र से क्यों निकालकर इस बुरे स्थान में पहुँचाया है? यहाँ तो बीज, या अंजीर, या दाखलता, या अनार, कुछ नहीं है, यहाँ तक कि पीने को कुछ पानी भी नहीं है।” ५ तब मूसा और हास्न मण्डली के सामने से मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाकर अपने मुँह के बल गिरे। और यहोवा का तेज उनको दिखाई दिया। ६ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “उस लाठी को ले, और तू अपने भाई हास्न समेत मण्डली को इकट्ठा करके उनके देखते उस चट्ठान से बातें कर, तब वह अपना जल देगी; इस प्रकार से तू चट्ठान में से उनके लिये जल निकालकर मण्डली के लोगों और उनके पशुओं को पिला।” ७ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने उसके सामने से लाठी को ले लिया। ८ और मूसा ने उससे कहा, “हे बलवा करनेवालों, सुनो; क्या हमको इस चट्ठान में से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा?” ९ तब मूसा ने हाथ उठाकर लाठी चट्ठान पर दो

बार मारी; और उसमें से बहुत पानी फूट निकला, और मण्डली के लोग अपने पशुओं समेत पीने लगे। १० परन्तु मूसा और हास्न से यहोवा ने कहा, “तुम ने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया, और मुझे इसाएलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया, इसलिए तुम इस मण्डली को उस देश में पहुँचाने न पाओगे जिसे मैंने उहें दिया है।” ११ उस सोते का नाम मरीबा पड़ा, क्योंकि इसाएलियों ने यहोवा से झागड़ा किया था, और वह उनके बीच पवित्र ठहराया गया। १२ फिर मूसा ने कादेश से एदोम के राजा के पास दूत भेजे, “तेरा भाई इसाएल यह कहता है, कि हम पर जो-जो कलेश पड़े हैं वह तु जानता होगा; १३ अर्थात् यह कि हमारे पुरुखों में गए थे, और हम मिस्त्र में बहुत दिन रहे; और मिस्त्रियों ने हमारे पुरुखों के साथ और हमारे साथ भी बुरा बर्ताव किया; १४ परन्तु जब हमने यहोवा की दुहाई दी तब उसने हमारी सुनी, और एक दूत को भेजकर हमें मिस्त्र से निकाल ले आया है, इसलिए अब हम कादेश नगर में हैं जो तेरी सीमा ही पर है। १५ अतः हमें अपने देश में से होकर जाने दें। हम किसी खेत या दाख की बारी से होकर न चलेंगे, और कुओं का पानी न पीएँगे; सड़क ही सड़क से होकर चले जाएँगे, और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाएँ, तब तक न दाएँ न बाएँ मुड़ेंगे।” १६ परन्तु एदोमियों के राजा ने उसके पास कहला भेजा, “तू मेरे देश में से होकर मत जा, नहीं तो मैं तलवार लिये हुए तेरा सामना करने को निकलूँगा।” १७ इसाएलियों ने उसके पास फिर कहला भेजा, “हम सड़क ही सड़क से चलेंगे, और यदि हम और हमारे पशु तेरा पानी पीएँ, तो उसका दाम देंगे, हमको और कुछ नहीं, केवल पाँव-पाँव चलकर निकल जाने दें।” १८ परन्तु उसने कहा, “तू आने न पाएगा।” और एदोम बड़ी सेना लेकर भुजबल से उसका सामना करने को निकल आया। १९ इस प्रकार एदोम ने इसाएल को अपने देश के भीतर से होकर जाने देने से इन्कार किया; इसलिए इसाएल उसकी ओर से मुड़ गए। २० तब इसाएलियों की सारी मण्डली कादेश से कूच करके होर नामक पहाड़ के पास आ गई। २१ और एदोम देश की सीमा पर होर पहाड़ में यहोवा ने मूसा और हास्न से कहा, २२ “हास्न अपने लिंगों में जा मिलेगा; क्योंकि तुम दोनों ने जो मरीबा नामक सोते पर मेरा कहना न मानकर मुझसे बलवा किया है, इस कारण वह उस देश में जाने न पाएगा जिसे मैंने इसाएलियों को दिया है। २३ इसलिए तू हास्न और उसके पुत्र एलीआजर को होर पहाड़ पर ले चल; २४ और हास्न के बच्च उतारकर उसके पुत्र एलीआजर को पहना; तब हास्न वही मरकर अपने लिंगों में जा मिलेगा।” २५ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने कहिया; वे सारी मण्डली के देखते होर पहाड़ पर चढ़ गए। २६ तब मूसा ने हास्न के बच्च उतारकर उसके पुत्र एलीआजर को पहना; तब हास्न वही पहाड़ की चोटी पर मर गया। तब मूसा और एलीआजर पहाड़ पर से उतर आए। २७ और जब इसाएल की सारी मण्डली ने देखा कि हास्न का प्राण छूट गया है, तब इसाएल के सब घराने के लोग उसके लिये तीस दिन तक रोते रहे।

२१ तब अराद का कनानी राजा, जो दक्षिण देश में रहता था, यह सुनकर

कि जिस मार्ग से वे भेदिए आए थे उसी मार्ग से अब इसाएली आ रहे हैं, इसाएल से लड़ा, और उनमें से कुछ को बन्धुआ कर लिया। २२ तब इसाएलियों ने यहोवा से यह कहकर मनत मानी, “यदि तू सचमुच उन लिंगों को हमारे बश में कर दे, तो हम उनके लिंगों को सत्यानाश कर देंगे।” २३ इसाएल की यह बात सुनकर यहोवा ने कनानियों को उनके बश में कर दिया; अतः उन्होंने उनके लिंगों समेत उनको भी सत्यानाश किया; इससे उस स्थान का नाम होमा रखा गया। २४ फिर उन्होंने होर पहाड़ से कूच करके लाल समुद्र का मार्ग लिया कि एदोम देश से बाहर-बाहर धूमकर जाएँ; और लिंगों का मन मार्ग के कारण बहुत व्याकुल हो गया। २५ इसलिए वे परमेश्वर के विस्तु बात करने लगे, और

मूसा से कहा, “तुम लोग हमको मिस्र से जंगल में मरने के लिये क्यों ले आए हो? यहाँ न तो रोटी है, और न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दुःखित हैं।” ६ अतः यहोवा ने उन लोगों में तेज विषवाले साँप भेजे, जो उनको डसने लगे, और बहुत से इमाएली मर गए। ७ तब लोग मूसा के पास जाकर कहने लगे, “हमने पाप किया है, कि हमने यहोवा के और तेरे विश्व बाटों की हैं; यहोवा से प्रार्थना कर कि वह साँपों को हम से दूर करे।” तब मूसा ने उनके लिये प्रार्थना की। ८ यहोवा ने मूसा से कहा, “एक तेज विषवाले साँप की प्रतिमा बनवाकर खाखे पर लटका; तब जो साँप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा।” ९ अतः मूसा ने पीतल का एक साँप बनवाकर खाखे पर लटकाया; तब साँप के डसे हुओं में से जिस-जिसने उस पीतल के साँप की ओर देखा वह जीवित बच गया। १० फिर इमाएलियों ने कूच करके ओबोत में डेरे डालें। ११ और ओबोत से कूच करके अबारीम में डेरे डालें, जो पूर्व की ओर मोआब के सामने के जंगल में है। १२ वहाँ से कूच करके उन्होंने जेरेद नामक नाले में डेरे डालें। १३ वहाँ से कूच करके उन्होंने अर्नोन नदी, जो जंगल में बहती और एमोरियों के देश से निकलती है, उसकी दूसरी ओर डेरे खड़े किए; क्योंकि अर्नोन मोआबियों और एमोरियों के बीच होकर मोआब देश की सीमा ठहरी है। १४ इस कारण यहोवा के संग्राम नामक पुस्तक में इस प्रकार लिखा है, “सूपा में वाहें, और अर्नोन की धाटी, १५ और उन धाटियों की ढलान जो आर नामक नार की ओर है, और जो मोआब की सीमा पर है।” १६ फिर वहाँ से कूच करके वे बैर तक गए; वहाँ वही कुआँ है जिसके विषय में यहोवा ने मूसा से कहा था, “उन लोगों को इकट्ठा कर, और मैं उन्हें पानी दूँगा।” १७ उस समय इमाएल ने यह गीत गाया, “हे कुएँ, उमड आ, उस कुएँ के विषय में गाओ।” १८ जिसको हाकिमों ने खोदा, और इमाएल के रईसों ने अपने सांसों और लाठियों से खोद लिया।” फिर वे जंगल से मताना को, १९ और मताना से नहलीएल को, और नहलीएल से बामोत को, २० और बामोत से कूच करके उस तर्फ तक जो मोआब के मैदान में है, और पिसगा के उस सिरे तक भी जो यशीमोन की ओर झुका है पहुँच गए। २१ तब इमाएल ने एमोरियों के राजा सीहोन के पास दूरों से यह कहला भेजा, २२ “हमें अपने देश में होकर जाने दे; हम मुँदकर किसी खेत या दारब की बारी में तो न जाएँगे; न किसी कुएँ का पानी पीएँगे; और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाएँ तब तक सङ्क ही से चले जाएँगे।” २३ फिर भी सीहोन ने इमाएल को अपने देश से होकर जाने न दिया; वरन् अपनी सारी सेना को इकट्ठा करके इमाएल का सामना करने को जंगल में निकल आया, और यहस को आकर उनसे लड़ा। २४ तब इमाएलियों ने उसको तलवार से मार दिया, और अर्नोन से यब्बोक नदी तक, जो अमोनियों की सीमा थी, उसके देश के अधिकारी हो गए; अमोनियों की सीमा तो दृढ़ थी। २५ इसलिए इमाएल ने एमोरियों के सब नगरों को ले लिया, और उनमें, अर्थात हेशबोन और उसके आस-पास के नगरों में रहने लगे। २६ हेशबोन एमोरियों के राजा सीहोन का नगर था; उसने मोआब के पिछले राजा से लड़कर उसका सारा देश अर्नोन तक उसके हाथ से छीन लिया था। २७ इस कारण गढ़ बाट के कहनेवाले कहते हैं, “हेशबोन में आओ, सीहोन का नगर बर्ये, और दृढ़ किया जाए।” २८ क्योंकि हेशबोन से आग, सीहोन के नगर से लौ निकली; जिससे मोआब देश का आर नगर, और अर्नोन के ऊँचे स्थानों के स्वामी भस्म हुए। २९ हे मोआब, तझ पर हाय! कमोश देवता की प्रजा नाश हुई, उसने अपने बेटों को भगोड़ा, और अपनी बेटियों को एमोरी राजा सीहोन की दासी कर दिया। ३० हमने उन्हें गिरा दिया है, हेशबोन दीबोन तक नष्ट हो गया है, और हमने नोपह और मेदबा तक भी उजाड़ दिया है।” ३१ इस प्रकार इमाएल एमोरियों के देश में रहने लगा। ३२

तब मूसा ने याजेर नगर का भेद लेने को भेजा; और उन्होंने उसके गाँवों को ले लिया, और वहाँ के एमोरियों को उस देश से निकाल दिया। ३३ तब वे मुडकर बाशान के मार्ग से जाने लगे; और बाशान के राजा ओग ने उनका सामना किया, वह लड़ने को अपनी सारी सेना समेत एद्रेई में निकल आया। ३४ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “उससे मत डर; क्योंकि मैं उसको सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ में कर देता हूँ; और जैसा तूने एमोरियों के राजा हेशबोनवासी सीहोन के साथ किया है, वैसा ही उसके साथ भी करना।” ३५ तब उन्होंने उसको, और उसके पुत्रों और सारी प्रजा को यहाँ तक मारा कि उसका कोई भी न बचा; और वे उसके देश के अधिकारी हो गए।

२२ तब इमाएलियों ने कूच करके यरीहो के पास यरदन नदी के इस पार मोआब के अराबों में डेरे खड़े किए। २६ और सिपोर के पुत्र बालाक ने देखा कि इमाएल ने एमोरियों से क्या-क्या किया है। २७ इसलिए मोआब यह जानकर, कि इमाएली बहुत हैं, उन लोगों से अत्यन्त डर गया; यहाँ तक कि मोआब इमाएलियों के कारण अत्यन्त व्याकुल हुआ। २८ तब मोआबियों ने मिधानी पुनियों से कहा, “अब वह दल हमारे चारों ओर के सब लोगों को चट कर जाएगा, जिस तरह बैल खेत की हरी धास को चट कर जाता है।” उस समय सिपोर का पुत्र बालाक मोआब का राजा था; २९ और इसने पतोर नगर को, जो फरात के तट पर बोर के पुत्र बिलाम के जातिभाइयों की भूमि थी, वहाँ बिलाम के पास दूर भेजे कि वे यह कहकर उसे बुला लाएँ, “सुन एक दल मिस्र से निकल आया है, और भूमि उनसे ढक गई है, और अब वे मेरे सामने ही आकर बस गए हैं।” ३० इसलिए आ, और उन लोगों को मेरे निमित श्राप दे, क्योंकि वे मुझसे अधिक बलवन्त हैं, तब सम्भव है कि हम उन पर जयवन्त हों, और हम सब इनको अपने देश से मारकर निकाल दें; क्योंकि यह तो मैं जानता हूँ कि जिसको तू अशीर्वद देता है वह धन्य होता है, और जिसको तू श्राप देता है वह श्रापित होता है।” ३१ तब मोआबी और मिधानी पुनियों शारी कहने की दक्षिणा लेकर चले, और बिलाम के पास पहुँचकर बालाक की बातें कह सुनाई। ३२ उसने उनसे कहा, “आज रात को यहाँ टिको, और जो बात यहोवा मुझसे कहेगा, उसी के अनुसार मैं तुम को उत्तर दूँगा।” तब मोआब के हाकिम बिलाम के यहाँ ठहर गए। ३३ तब परमेश्वर ने बिलाम के पास आकर पूछा, “तेरे यहाँ ये पुस्त कौन है?” ३४ बिलाम ने परमेश्वर से कहा, “सिपोर के पुत्र मोआब के राजा बालाक ने मेरे पास यह कहला भेजा है, ३५ ‘सुन, जो दल मिस्र से निकल आया है उससे भूमि ढूँप गई है; इसलिए आकर मेरे लिये उन्हें श्राप दे; सम्भव है कि मैं उनसे लड़कर उनको बरबस निकाल सकूँगा।’” ३६ परमेश्वर ने बिलाम से कहा, “तू इनके संग मत जा; उन लोगों को श्राप मत दे, क्योंकि वे आशीर्वद के भागी हो चुके हैं।” ३७ भौंकोर को बिलाम ने उठकर बालाक के हाकिमों से कहा, “तुम अपने देश को चले जाओ; क्योंकि यहोवा मुझे तुम्हारे साथ जाने की आज्ञा नहीं देता।” ३८ तब मोआबी हाकिम चले गए और बालाक के पास जाकर कहा, “बिलाम ने हमारे साथ अने से मना किया है।” ३९ इस पर बालाक ने फिर और हाकिम भेजे, जो पहले से प्रतिष्ठित और गिनती में भी अधिक थे। ४० उन्होंने बिलाम के पास आकर कहा, “सिपोर का पुत्र मोआब के राजा बालाक यह कहता है, ‘मेरे पास अने से किसी कारण मत जार; ४१ क्योंकि मैं निश्चय तेरी बड़ी प्रतिशा करूँगा, और जो कुछ तु मुझसे कहे वही मैं करूँगा; इसलिए आ, और उन लोगों को मेरे निमित श्राप दे।’” ४२ बिलाम ने बालाक के कर्मचारियों को उत्तर दिया, “चाहे बालाक अपने घर को सोने चाँदी से भरकर मुझे दे दें, तो भी मैं अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को पलट नहीं सकता, कि उसे घटाकर व बढ़ाकर मानूँ।” ४३ इसलिए अब तुम लोग आज रात को यहीं टिके रहो, ताकि मैं जान लूँ, कि

यहोवा मुझसे और क्या कहता है।” २० और परमेश्वर ने रात को बिलाम के पास आकर कहा, “यदि वे पुष्प तुझे बुलाने आए हैं, तो तू उठकर उनके संग जा; परन्तु जो बात मैं तुझ से कहूँ उसी के अनुसार करना।” २१ तब बिलाम भौं को उठा, और अपनी गदही पर काठी बाँधकर मोआबी हाकिमों के संग चल पड़ा। २२ और उसके जाने के कारण परमेश्वर का कोप भड़क उठा, और यहोवा का दूत उसका विरोध करने के लिये मार्ग रोककर खड़ा हो गया। वह तो अपनी गदही पर सबार होकर जा रहा था, और उसके संग उसके दो सेवक भी थे। २३ और उस गदही को यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा; तब गदही को मारा कि वह मार्ग पर फिर आ जाए। २४ तब यहोवा का दूत दाख की बारियों के बीच की गली में, जिसके दोनों ओर बारी की दीवार थी, खड़ा हुआ। २५ यहोवा के दूत को देखकर गदही दीवार से ऐसी सट पाई कि बिलाम का पाँव दीवार से दब गया; तब उसने उसको फिर मारा। २६ तब यहोवा का दूत आगे बढ़कर एक सकरे स्थान पर खड़ा हुआ, जहाँ न तो दाहिनी ओर हटने की जगह थी और न बाइं ओर। २७ वहाँ यहोवा के दूत को देखकर गदही बिलाम को लिये हुए बैठ गई; फिर तो बिलाम का कोप भड़क उठा, और उसने गदही की लाठी से मारा। २८ तब यहोवा ने गदही का मुँह खोल दिया, और वह बिलाम से कहने लगी, “मैंने तेरा क्या किया है कि तूने मुझे तीन बार मारा?” २९ बिलाम ने गदही से कहा, “यह कि तूने मुझसे न टखटी की। यदि मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं तुझे अभी मार डालता।” ३० गदही ने बिलाम से कहा, “क्या मैं तेरी वही गदही नहीं, जिस पर तू जम्म से आज तक चढ़ता आया है? क्या मैं तुझ से कभी ऐसा करती थी?” वह बोला, “नहीं।” ३१ तब यहोवा ने बिलाम की आँखें खोती, और उसको यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा; तब वह झुक गया, और मुँह के बल गिरकर दण्डवत किया। ३२ यहोवा के दूत ने उससे कहा, “तूने अपनी गदही को तीन बार क्यों मारा? सुन, तेरा विरोध करने को मैं ही आया हूँ, इसलिए कि तू मेरे सामने दृश्य चाल चलता है; ३३ और यह गदही मुझे देखकर मेरे सामने से तीन बार हट गई। यदि वह मेरे सामने से हट न जाती, तो निःसन्देह मैं अब तक तुझको मार ही डालता, परन्तु उसको जीवित छोड़ देता।” ३४ तब बिलाम ने यहोवा के दूत से कहा, “मैंने पाप किया है; मैं नहीं जानता था कि तू मेरा सामना करने को मार्ग में खड़ा है। इसलिए अब यदि तुझे बुरा लगता है, तो मैं लौट जाता हूँ।” ३५ यहोवा के दूत ने बिलाम से कहा, “इन पुर्सों के संग तू चला जा; परन्तु केवल वही बात कहना जो मैं तुझ से कहूँगा।” तब बिलाम बालाक के हाकिमों के संग चला गया। ३६ यह सुनकर कि बिलाम आ रहा है, बालाक उससे भेट करने के लिये मोआब के उस नगर तक जो उस देश के अर्नोनिवाले सीमा पर है गया। ३७ बालाक ने बिलाम से कहा, “क्या मैंने बड़ी आशा से तुझे नहीं खुलवा भेजा था? फिर तू मेरे पास क्यों नहीं चला आया? क्या मैं इस योग्य नहीं कि सचमुच तेरी उचित प्रतिष्ठा कर सकता?” ३८ बिलाम ने बालाक से कहा, “देख, मैं तेरे पास आया तो हूँ। परन्तु अब क्या मैं कुछ कर सकता हूँ? जो बात परमेश्वर मेरे मुँह में डालेगा, वही बात मैं कहूँगा।” ३९ तब बिलाम बालाक के संग-संग चला, और वे किर्णीसोत तक आए। ४० और बालाक ने बैल और भेड़-बकरियों को बलि किया, और बिलाम और उसके साथ के हाकिमों के पास भेजा। ४१ भौं को बालाक बिलाम को बाल के ऊँचे स्थानों पर चढ़ा ले गया, और वहाँ से उसको सब इस्माएली लोग दिखाई पड़े।

२३ तब बिलाम ने बालाक से कहा, “यहाँ पर मेरे लिये सात वेदियाँ बनवा, और इसी स्थान पर सात बछड़े और सात मेहे तैयार कर।” २४ तब बालाक

ने बिलाम के कहने के अनुसार किया; और बालाक और बिलाम ने मिलकर प्रत्येक वेदी पर एक बछड़ा और एक मेडा चढ़ाया। २५ फिर बिलाम ने बालाक से कहा, “तू अपने होमबलि के पास खड़ा रह, और मैं जाता हूँ; सम्भव है कि यहोवा मुझसे भेट करने को आए; और जो कुछ वह मुझ पर प्रगट करेगा वही मैं तुझको बताऊँगा।” तब वह एक मुण्डे पहाड़ पर गया। २६ और परमेश्वर बिलाम से मिला; और बिलाम ने उससे कहा, “मैंने सात वेदियाँ तैयार की हैं, और प्रत्येक वेदी पर एक बछड़ा और एक मेडा चढ़ाया है।” २७ यहोवा ने बिलाम के मुँह में एक बात डाली, और कहा, “बालाक के पास लौट जा, और इस प्रकार कहना।” २८ और वह उसके पास लौटकर आ गया, और क्या देखता है कि वह सारे मोआबी हाकिमों समेत अपने होमबलि के पास खड़ा है। २९ तब बिलाम ने अपनी गृह बात अरम्भ की, और कहने लगा, “बालाक ने मुझे अराम से, अर्थात् मोआब के राजा ने मुझे पूर्व के पहाड़ों से बुलवा भेजा: ‘आ, मैं लिये याकूब को शाप दे, आ, इसाएल को धमकी दे।’ परन्तु जिन्हें परमेश्वर ने शाप नहीं दिया उन्हें मैं क्यों शाप दूँ? और जिन्हें यहोवा ने धमकी नहीं दी उन्हें मैं कैसे धमकी दूँ? ३० चबूनों की चोटी पर से वे मुझे दिखाई पड़ते हैं, पहाड़ियों पर से मैं उनको देखता हूँ; वह ऐसी जाति है जो अकेली बड़ी रहेगी, और अन्यजातियों से अलग गिनी जाएगी।” ३१ याकूब के धूलि के किनके को कौन गिन सकता है, या इस्माएल की चौथाई की गिनती कौन ले सकता है? सौभाग्य यदि मेरी मृत्यु धर्मियों की सी, और मेरा अन्त भी उन्हीं के समान हो!?” ३२ तब बालाक ने बिलाम से कहा, “तूने मुझसे क्या किया है? मैंने तुझे अपने शत्रुओं को शाप देने को बुलवाया था, परन्तु तूने उन्हें आशीष ही आशीष दी है।” ३३ उसने कहा, “जो बात यहोवा ने मुझे सिखलाई, क्या मुझे उसी को सावधानी से बोलना न चाहिये?” ३४ बालाक ने उससे कहा, “मेरे संग दूसरे स्थान पर चल, जहाँ से वे तुझे दिखाई देंगे; तू उन सभी को तो नहीं, केवल बाहरवालों को देख सकेगा; वहाँ से उन्हें मेरे लिये शाप दे।” ३५ तब वह उसको सोपीम नामक मैदान में पिसागा के सिरे पर ले गया, और वहाँ सात वेदियाँ बनवाकर प्रत्येक पर एक बछड़ा और एक मेडा चढ़ाया। ३६ तब बिलाम ने बालाक से कहा, “अपने होमबलि के पास यही खड़ा रह, और मैं उधर जाकर यहोवा से भेट करूँ।” ३७ और यहोवा ने बिलाम से भेट की, और उसने उसके मुँह में एक बात डाली, और कहा, “बालाक के पास लौट जा, और इस प्रकार कहना।” ३८ और वह उसके पास गया, और क्या देखता है कि वह मोआबी हाकिमों समेत अपने होमबलि के पास खड़ा है। और बालाक ने पछा, “यहोवा ने क्या कहा है?” ३९ तब बिलाम ने अपनी गृह बात अरम्भ की, और कहने लगा, “हे बालाक, मन लगाकर सुन, हे सिप्पोर के पुत्र, मेरी बात पर कान लगा: ४० परमेश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमी है कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उसने कहा उसे न करें? क्या वह बचन देकर उसे पूरा न करें? ४१ देख, अशीर्वाद ही देने की आज्ञा मैंने पाई है: वह आशीष दे चुका है, और मैं उसे नहीं पलट सकता। ४२ उसने याकूब में अनर्थ नहीं पाया; और न इस्माएल में अन्याय देखा है। उसका परमेश्वर यहोवा उसके संग है, और उनमें राजा की सी ललकार होती है। ४३ उनको मिस्र में से परमेश्वर ही निकाले लिए आ रहा है, वह तो जंगली साँड़ के समान बल रखता है। ४४ निश्चय कोई मंत्र याकूब पर नहीं चल सकता, और इस्माएल पर भावी कहना कोई अर्थ नहीं रखता; परन्तु याकूब और इस्माएल के विषय में अब यह कहा जाएगा, कि परमेश्वर ने क्या ही विचित्र काम किया है। ४५ सुन, वह दल सिंहनी के समान उठेगा, और सिंह के समान खड़ा होगा; वह जब तक शिकार को न खा ले, और मेरे हुओं के लहू को न पी ले, तब तक न लेटेगा।” ४६ तब बालाक ने बिलाम से कहा, “उनको न तो शाप देना, और न आशीष देना।” ४७

बिलाम ने बालाक से कहा, “क्या मैंने तुझ से नहीं कहा कि जो कुछ यहोवा मुझसे कहेगा, वही मुझे करना पड़ेगा?” २७ बालाक ने बिलाम से कहा, “चल मैं तुझको एक और स्थान पर ले चलता हूँ; सम्भव है कि परमेश्वर की इच्छा हो कि तू वहाँ से उन्हें मेरे लिये श्राप दो।” २८ तब बालाक बिलाम को पोर के सिर पर, जहाँ से यशीमोन देश दिखाई देता है, ले गया। २९ और बिलाम ने बालाक से कहा, “यहाँ पर मेरे लिये सात वेदीयों बनवा, और यहाँ सात बछड़े और सात मेडे तैयार कर।” ३० बिलाम के कहने के अनुसार बालाक ने प्रत्येक वेदी पर एक बछड़ा और एक मेडा चढ़ाया।

२४ यह देखकर कि यहोवा इसाएल को आशीष ही दिलाना चाहता है,

बिलाम पहले के समान शकुन देखने को न गया, परन्तु अपना मुँह ज़ंगल की ओर कर लिया। १ और बिलाम ने आँखें उठाई, और इसाएलियों को अपने गोत्र-गोत्र के अनुसार बसे हुए देखा। और परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा। २ तब उसने अपनी गृह बात आरम्भ की, और कहने लगा, “बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी है, जिस पुस्त की आँखें खुली थीं उसी की यह वाणी है, ३ परमेश्वर के चर्चनों का सुनेवाला, जो दण्डवत में पड़ा हुआ खुली हुई आँखों से सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है, उसी की यह वाणी है कि ४ हे याकूब, तेरे डेरे, और हे इसाएल, तेरे निवास-स्थान क्या ही मनभाने हैं! ५ वे तो घाटियों के समान, और नदी के टट की बाटिकाओं के समान ऐसे फैले हुए हैं, जैसे कि यहोवा के लगाए हुए, अगर के बृक्ष, और जल के निकट के देवदास। ६ और उसके घड़ों से जल उमड़ा करेगा, और उसका बीज बहुत से जलभरे खेतों में पड़ेगा, और उसका राजा अगाग से भी महान होगा, और उसका राज्य बढ़ता ही जाएगा। ७ उसको मिस्त्र में से परमेश्वर ही निकाले लिए आ रहा है; वह तो ज़ंगली साँड़ के समान बल रखता है, जाति-जाति के लोग जो उसके द्वाही हैं उनको वह खा जाएगा, और उनकी हड्डियों को टुकड़े-टुकड़े करेगा, और अपने तीरों से उनको बेधेगा। ८ वह घाट लगाए बैठा है, वह सिंह या सिंहनी के समान लेट गया है; अब उसको कौन छेड़े? जो कोई तुझे आरीर्वाद दे वह आशीष पाए, और जो कोई तुझे श्राप दे वह श्रापित हो।” ९ तब बालाक का कोप बिलाम पर भड़क उठा; और उसने हाथ पर हाथ पटककर बिलाम से कहा, “मैंने तुझे अपने शत्रुओं को श्राप देने के लिये बुलवाया, परन्तु तूने तीन बार उन्हें आशीर्वाद ही आशीर्वाद दिया है। १० इसलिए अब तू अपने स्थान पर भाग जा; मैंने तो सोचा था कि तेरी बड़ी प्रतिष्ठा कर्सँगा, परन्तु अब यहोवा ने तुझे प्रतिष्ठा पाने से रोक रखा है।” ११ बिलाम ने बालाक से कहा, “जो दूत तूने मेरे पास भेजे थे, क्या मैंने उनसे भी न कहा था, १२ कि चाहे बालाक अपने घर को सोने चाँदी से भरकर मुझे दे, तो भी मैं यहोवा की आज्ञा तोड़कर अपने मन से न तो भला कर सकता हूँ और न बुरा; जो कुछ यहोवा कहेगा वही मैं कहेंगा? १३ “अब सुन, मैं अपने लोगों के पास लौटकर जाता हूँ; परन्तु पहले मैं तुझे चेतावनी देता हूँ कि अनेकाले दिनों में वे लोग तेरी प्रजा से क्या-क्या करेंगे।” १४ फिर वह अपनी गृह बात आरम्भ करके कहने लगा, “बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी है, जिस पुस्त की आँखें बन्द थीं उसी की यह वाणी है, १५ परमेश्वर के चर्चनों का सुनेवाला, और परमप्रधान के ज्ञान का जानेवाला, जो दण्डवत में पड़ा हुआ खुली हुई आँखों से सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है, उसी की यह वाणी है: १६ मैं उसको देखँगा तो सही, परन्तु अभी नहीं; मैं उसको निहासँगा तो सही, परन्तु समीप होकर नहीं याकूब में से एक तारा उदय होगा, और इसाएल में से एक राजदण्ड उठेगा; जो मोआब की सीमाओं को चूर कर देगा, और सब शेष के पत्रों का नाश कर देगा। १७ तब एदोम और सेईर भी, जो उसके शत्रु हैं, दोनों उसके वश

में पड़ेंगे, और इसाएल वीरता दिखाता जाएगा। १८ और याकूब ही में से एक अधिपति आएगा जो प्रभुता करेगा, और नार में से बचे हुओं को भी सत्यानाश करेगा।” १९ फिर उसने अमालेक पर दृष्टि करके अपनी गृह बात आरम्भ की, और कहने लगा, “अमालेक अन्यजातियों में श्वेष तो था, परन्तु उसका अन्त विनाश ही है।” २० फिर उसने केनियों पर दृष्टि करके अपनी गृह बात आरम्भ की, और कहने लगा, “तेरा निवास-स्थान अति दृढ़ तो है, और तेरा बसेरा चट्ठान पर तो है; २१ तो भी केन उजड़ जाएगा। और अन्त में अश्शर तुझे बन्दी बनाकर ले आएगा।” २२ फिर उसने अपनी गृह बात आरम्भ की, और कहने लगा, “हाय, जब परमेश्वर यह करेगा तब कौन जीवित बचेगा? २३ तो भी किनियों के पास से जहाज वाले आकर अश्शर को और एकर को भी दुःख देंगे; और अन्त में उसका भी विनाश हो जाएगा।” २४ तब बिलाम चल दिया, और अपने स्थान पर लौट गया; और बालाक ने भी अपना मार्ग लिया।

२५ इसाएली शितीम में रहते थे, और वे लोग मोआबी लड़कियों के संग

कुर्कम करने लगे। १ और जब उन छिंवों ने उन लोगों को अपने देवताओं के ज़ीजों में नेवता दिया, तब वे लोग खाकर उनके देवताओं को दण्डवत करने लगे। २ इस प्रकार इसाएली बालपोर देवता को पूजने लगे। तब यहोवा का कोप इसाएल पर भड़क उठा; ३ और यहोवा ने मूसा से कहा, “प्रजा के सब प्रधानों को पकड़कर यहोवा के लिये धूप में लटका दे, जिससे मेरा भड़का हुआ कोप इसाएल के ऊपर से दूर हो जाए।” ४ तब मूसा ने इसाएली न्यायियों से कहा, “तुम्हरे जो-जो आदमी बालपोर के संग मिल गए हैं उन्हें घाट करो।” ५ जब इसाएलियों की सारी मण्डली मिलावाते तम्ब के द्वार पर रो रही थी, तो एक इसाएली पुस्त मूसा और सब लोगों की आँखों के सामने एक मिधानी झीं को अपने साथ अपने भाइयों के पास ले आया। ६ इसे देखकर एलीआजर का पुत्र पीनहास, जो हासन याजक का पोता था, उसने मण्डली में से उठकर हाथ में एक बरछड़ी ली, ७ और उस इसाएली पुस्त के डेरे में जाने के बाद वह भी भीतर गया, और उस पुस्त और उस झीं दोनों के पेट में बरछड़ी बेध दी। इस पर इसाएलियों में जो मरी फैल गई थी वह थम गई। ८ और मरी से चौबीस हजार मरुष्य मर गए। ९ तब यहोवा ने मूसा से कहा, १० “हास्तन याजक का पोता एलीआजर का पुत्र पीनहास, जिसे इसाएलियों के बीच मेरी जैसी जलन उठी, उसने मेरी जलजलाहट को उन पर से यहाँ तक दूर किया है, कि मैंने जलकर उनका अन्त नहीं कर डाला। ११ इसलिए तू कह दे, कि मैं उससे शान्ति की बाचा बाँधता हूँ।” १२ “और वह उसके लिये, और उसके बाद उसके बंश के लिये, सदा के याजकपद की बाचा होगी, क्योंकि उसे अपने परमेश्वर के लिये जलन उठी, और उसने इसाएलियों के लिये प्रायश्चित्त किया।” १३ जो इसाएली पुस्त मिधानी झीं के संग मारा गया, उसका नाम जिरी था, वह सालू का पुत्र और शिमोनियों में से अपने पितरों के घराने का प्रधान था। १४ और जो मिधानी झीं मारी गई उसका नाम कोजबी था, वह सूर की बेटी थी, जो मिधानी पितरों के एक घराने के लोगों का प्रधान था। १५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १६ “मिधानियों को सता, और उन्हें मार; १७ क्योंकि पोर के विषय और कोजबी के विषय वे तुम को छल करके सताते हैं।” कोजबी तो एक मिधानी प्रधान की बेटी और मिधानियों की जाति बहन थी, और मरी के दिन में पोर के मामले में मरी गई।

२६ फिर यहोवा ने मूसा और एलीआजर नामक हास्तन याजक के पुत्र से

कहा, “इसाएलियों की सारी मण्डली में जितने बीस वर्ष के, या उससे अधिक आयु के होने से इसाएलियों के बीच युद्ध करने के योग्य हैं, उनके पितरों के घरानों के अनुसार उन सभी की गिनती करो।” १८ अतः मूसा और

एलीआजर याजक ने यहीं को पास यदन नदी के टट पर मोआब के अराबा में उनको समझाकर कहा, ४ “बीस वर्ष के और उससे अधिक आयु के लोगों की गिनती लो, जैसे कि यहोवा ने मूसा और इसाएलियों को मिस्र देश से निकल आने के समय आज्ञा दी थी।” ५ स्वेंजो इसाएल का जेठा था; उसके ये पुत्र थे; अर्थात् हनोक, जिससे हनोकियों का कुल चला; और पल्ल, जिससे पल्लियों का कुल चला; ६ हेसोन, जिससे हेसोनियों का कुल चला; और कर्मी, जिससे कर्मियों का कुल चला। ७ स्वेनवाले कुल ये ही थे, और इनमें से जो गिने गए वे तैतालीस हजार सात सौ तीस पुष्प थे। ८ और पल्ल का पुत्र एलीआब था। ९ और एलीआब के पुत्र नम्पूल, दातान, और अबीराम थे। ये वही दातान और अबीराम हैं जो सभासद थे; और जिस समय कोरह की मण्डली ने यहोवा से झागड़ा किया था, उस समय उस मण्डली में मिलकर उन्होंने भी मूसा और हास्न से झागड़े थे; १० और जब उन ढाई सौ मनुज्यों के आग में भस्म हो जाने से वह मण्डली मिट गई, उसी समय पृथ्वी ने मुँह खोलकर कोरह समेत इनको भी निगल लिया; और वे एक दृष्टान्त ठहरे। ११ परन्तु कोरह के पुत्र तो नहीं मरे थे। १२ शिमोन के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् नम्पूल, जिससे नम्पूलियों का कुल चला; और यामीन, जिससे यामीनियों का कुल चला; और याकीन, जिससे याकीनियों का कुल चला; १३ और जेरह, जिससे जेरहियों का कुल चला; और शाऊल, जिससे शाऊलियों का कुल चला। १४ शिमोनवाले कुल ये ही थे; इनमें से बाईस हजार दो सौ पुष्प गिने गए। १५ गाद के पुत्र जिससे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् सपोन, जिससे सपोनियों का कुल चला; और हामी, जिससे हामियों का कुल चला; और शूनी, जिससे शूनियों का कुल चला; और ओजनी, जिससे ओजनियों का कुल चला; १६ और एरी, जिससे एरियों का कुल चला; और अरोद, जिससे अरोदियों का कुल चला; १७ और अरेली, जिससे अरेलियों का कुल चला। १८ गाद के वंश के कुल ये ही थे, इनमें से साढ़े चालीस हजार पुष्प गिने गए। १९ और यहदा के एर और ओनान नामक पुत्र तो हुए, परन्तु वे कनान देश में मर गए। २० और यहदा के जिन पुत्रों से उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् शेला, जिससे शेलियों का कुल चला; और पेरेस जिससे पेरेसियों का कुल चला; और जेरह, जिससे जेरहियों का कुल चला। २१ और पेरेस के पुत्र ये थे; अर्थात् हेसोन, जिससे हेसोनियों का कुल चला; और हामूल, जिससे हामूलियों का कुल चला। २२ यहदियों के कुल ये ही थे; इनमें से साढ़े छिह्नतर हजार पुष्प गिने गए। २३ इस्साकार के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् तोला, जिससे तोलियों का कुल चला; और पुव्वा, जिससे पुव्वियों का कुल चला; २४ और याश्व, जिससे याश्वियों का कुल चला; और शिमोन, जिससे शिमोनियों का कुल चला। २५ इस्साकारियों के कुल ये ही थे; इनमें से चौसठ हजार तीन सौ पुष्प गिने गए। २६ जब्लून के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् सेरेद जिससे सेरेदियों का कुल चला; और एलोन, जिनसे एलोनियों का कुल चला; और यहलेल, जिससे यहलेलियों का कुल चला। २७ जब्लूनियों के कुल ये ही थे; इनमें से साढ़े साठ हजार पुष्प गिने गए। २८ यसूफ के पुत्र जिससे उनके कुल निकले वे मनश्वे और एप्रैम थे। २९ मनश्वे के पुत्र ये थे; अर्थात् माकीर, जिससे माकीरियों का कुल चला; और माकीर से गिलाद उत्पन्न हुआ; और गिलाद से गिलादियों का कुल चला। ३० गिलाद के तो पुत्र ये थे; अर्थात् ईंजेर, जिससे ईंजेरियों का कुल चला; ३१ और हेलेक, जिससे हेलेकियों का कुल चला और अश्वील, जिससे अश्वीलियों का कुल चला; और शेकेम, जिससे शेकेमियों का कुल चला; और शमीदा, जिससे शमीदियों का कुल चला; ३२ और हेपेर, जिससे हेपेरियों का कुल चला; ३३ और हेपेर के पुत्र

सलोफाद के बेटे नहीं, केवल बेटियाँ हुईं; इन बेटियों के नाम महला, नोवा, होग्ला, मिल्का, और तिर्सा हैं। ३४ मनश्वेवाले कुल तो ये ही थे; और इनमें से जो गिने गए वे बाबन हजार सात सौ पुष्प थे। ३५ ऐप्रैम के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् शूलेल, जिससे शूलहियों का कुल चला; और बेकर, जिससे बेकेरियों का कुल चला। ३६ और शूलेल के यह पुत्र हुआ; अर्थात् एरान, जिससे एरानियों का कुल चला। ३७ ऐप्रैमियों के कुल ये ही थे; इनमें से साढ़े बीतीस हजार पुष्प गिने गए। अपने कुलों के अनुसार यसूफ के वंश के लोग ये ही थे। ३८ और बिन्यामीन के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् बेला जिससे बेलियों का कुल चला; और अशबेल, जिससे अशबेलियों का कुल चला; और अहीराम, जिससे अहीरामियों का कुल चला; ३९ और शपूपाम, जिससे शपूपामियों का कुल चला। ४० और बेला के पुत्र अर्द और नामान थे; और अर्द से अर्दियों का कुल, और नामान से नामानियों का कुल चला। ४१ अपने कुलों के अनुसार बिन्यामीनी ये ही थे; और इनमें से जो गिने गए वे पैतालीस हजार छः सौ पुष्प थे। ४२ दान का पुत्र जिससे उनका कुल निकला यह था; अर्थात् शूहाम, जिससे शूहामियों का कुल चला। और दान का कुल यही था। ४३ और शहामियों में से जो गिने गए उनके कुल में चौसठ हजार चार सौ पुष्प थे। ४४ आशेर के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् यिम्ना, जिससे यिम्नियों का कुल चला; यिक्की, जिससे यिक्कियों का कुल चला; और बरीआ, जिससे बरीइयों का कुल चला। ४५ फिर बरीआ के ये पुत्र हुए; अर्थात् हेबेर, जिससे हेबेरियों का कुल चला; और मल्कीएल, जिससे मल्कीएलियों का कुल चला। ४६ और आशेर की बेटी का नाम सेरह है। ४७ आशेरियों के कुल ये ही थे; इनमें से तिरपन हजार चार सौ पुष्प गिने गए। ४८ नसाली के पुत्र जिससे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् यहसेत, जिससे यहसेतियों का कुल चला; और गृनी, जिससे गृनियों का कुल चला; ४९ येसेर, जिससे येसेरियों का कुल चला; और शिल्लेम, जिससे शिल्लेमियों का कुल चला। ५० अपने कुलों के अनुसार नसाली के कुल ये ही थे; और इनमें से जो गिने गए वे पैतालीस हजार चार सौ पुष्प थे। ५१ सब इस्साएलियों में से जो गिने गए ये वे ये ही थे; अर्थात् छः लाख एक हजार सात सौ तीस पुष्प थे। ५२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ५३ “इनको, इनकी गिनती के अनुसार, वह भीमि इनका भाग होने के लिये बॉट दी जाए। ५४ अर्थात् जिस कुल में अधिक हों उनको अधिक भाग, और जिसमें कम हों उनको कम भाग देना; प्रयेक गोत्र को उसका भाग उसके गिने हुए लोगों के अनुसार दिया जाए। ५५ तो भी देश चिंटी डालकर बॉटा जाए; इस्साएलियों के पितरों के एक-एक गोत्र का नाम, जैसे-जैसे निकले वैसे-वैसे वे अपना-अपना भाग पाएँ। ५६ चाहे बहुतों का भाग हो चाहे थोड़ों का हो, जो-जो भाग बॉटे जाएँ वह चिंटी डालकर बॉटा जाएँ।” ५७ फिर लेवियों में से जो अपने कुलों के अनुसार गिने गए वे ये हैं; अर्थात् गेर्शेनियों से निकला हुआ गेर्शेनियों का कुल; कहात से निकला हुआ कहातियों का कुल, और मरारियों का कुल। ५८ लेवियों के कुल ये हैं; अर्थात् लिब्नियों का, हेब्रोनियों का, महलियों का, मूशियों का, और कोरहियों का कुल। और कहात से अग्राम उत्पन्न हुआ। ५९ और अग्राम की पत्नी का नाम योकेबेद है, वह लेवी के वंश की थी जो लेवी के वंश में मिस्र देश में उत्पन्न हुई थी; और वह अग्राम से हास्न और मूसा और उनकी बहन मिर्याम की भी जनी। ६० और हास्न से नादाब, अबीह, एलीआजर, और ईतामार उत्पन्न हुए। ६१ नादाब और अबीह ने उस समय मर गए थे, जब वे यहोवा के सामने ऊपरी आग ले गए थे। ६२ सब लेवियों में से जो गिने गये, अर्थात् जिनसे पुष्प एक महीने के या उससे

अधिक आयु के थे, वे तेईस हजार थे; वे इस्माएलियों के बीच इसलिए नहीं गिने गए, क्योंकि उनको देश का कोई भाग नहीं दिया गया था। ६३ मूसा और एलीआजर याजक जिन्होंने मोआब के अराब में यीहो के पास की यरदन नदी के तट पर इस्माएलियों को गिन लिया, उनके गिने हुए लोग इतने ही थे। ६४ परन्तु जिन इस्माएलियों को मूसा और हास्तन याजक ने सिंह के जंगल में गिना था, उनमें से एक भी पुस्त इस समय के गिने हुओं में न था। ६५ क्योंकि यहोवा ने उनके विषय कहा था, “वे निश्चय जंगल में मर जाएँगे।” इसलिए युपुने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोश् को छोड़, उनमें से एक भी पुस्त नहीं बचा।

२७ तब यसुफ के पुत्र मनशे के वंश के कुलों में से सलोफाद, जो हेपेर का

पुत्र, और गिलाद का पोता, और मनशे के पुत्र माकीर का परपोता था, उसकी बेटियाँ जिनके नाम महला, नोवा, होल्ला, मिल्का, और रिसा हैं वे पास आईं। २ और वे मूसा और एलीआजर याजक और प्रधानों और सारी मण्डली के सामने मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़ी होकर कहने लगीं, ३ “हमारा पिता जंगल में मर गया; परन्तु वह उस मण्डली में का न था जो कोरह की मण्डली के संग होकर यहोवा के विष्वु इक्षी हुई थी, वह अपने ही पाप के कारण मरा; और उसके कोई पुत्र न था। ४ तो हमारे पिता का नाम उसके कुल में से पुत्र न होने के कारण क्यों मिट जाए? हमारे चाचाओं के बीच हमें भी कुछ भूमि निज भाग करके दे।” ५ उनकी यह विनती मूसा ने यहोवा को सुनाई। ६ यहोवा ने मूसा से कहा, ७ “सलोफाद की बेटियों ठीक कहती हैं, इसलिए तु उनके चाचाओं के बीच उनको भी अवश्य ही कुछ भूमि निज भाग करके दे, अर्थात् उनके पिता का भाग उनके हाथ सौंप दे।” ८ और इस्माएलियों से यह कह, ‘यदि कोई मनुष्य बिना पुत्र मर जाए, तो उसका भाग उसकी बेटी के हाथ सौंपना। ९ और यदि उसके कोई बेटी भी न हो, तो उसका भाग उसके भाइयों को देना। १० और यदि उसके भाइ भी न हों, तो उसका भाग चाचाओं को देना। ११ और यदि उसके चाचा भी न हों, तो उसके कुल में से उसका जो कुटुम्बी सबसे समीप हो उनको उसका भाग देना कि वह उसका अधिकारी हो। इस्माएलियों के लिये यह न्याय की विधि ठहरेगी, जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी।” १२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “इस अबीराम नामक पर्वत के ऊपर चढ़कर उस देश को देख ले जिसे मैंने इस्माएलियों को दिया है।” १३ और जब तु उसको देख लेगा, तब अपने भाई हास्तन के समान तभी अपने लोगों में जा मिलेगा, १४ क्योंकि सीनी नामक जंगल में तुम दोनों ने मण्डली के झगड़ने के समय मेरी आज्ञा को तोड़कर मुझसे बलवा किया, और मुझे सोते के पास उनकी दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया।” (यह मरीबा नामक सोता है जो सीनी नामक जंगल के कादेस में है) १५ मूसा ने यहोवा से कहा, १६ “यहोवा, जो सारे प्राणियों की आत्माओं का परमेश्वर है, वह इस मण्डली के लोगों के ऊपर किसी पुस्त को नियुक्त कर दे, १७ जो उसके सामने आया-जाया करे, और उनका निकालने और बैठानेवाला हो; जिससे यहोवा की मण्डली बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों के समान न रहे।” १८ यहोवा ने मूसा से कहा, “तू नून के पुत्र यहोश् को लेकर उस पर हाथ रख; वह तो ऐसा पुस्त है जिससे मेरा आत्मा बसा है; १९ और उसको एलीआजर याजक के और सारी मण्डली के सामने खड़ा करके उनके सामने उसे आज्ञा दे।” २० और अपनी महिमा में से कुछ उसे दे, जिससे इस्माएलियों की सारी मण्डली उसकी माना करे। २१ और वह एलीआजर याजक के सामने खड़ा हुआ करे, और एलीआजर उसके लिये यहोवा से ऊरीम की आज्ञा पूछा करे; और वह इस्माएलियों की सारी मण्डली समेत उसके कहने से जाया करे, और उसी के कहने से लौट भी आया करे।” २२ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने

यहोश् को लेकर, एलीआजर याजक और सारी मण्डली के सामने खड़ा करके, २३ उस पर हाथ रखे, और उसको आज्ञा दी जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहा था।

२४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २५ “इस्माएलियों को यह आज्ञा सना, ‘मेरा चढ़ावा, अर्थात् मुझे सुखदायक सुगन्ध देनेवाला मेरा हव्यस्पी भोजन, तुम लोग मेरे लिये उनके नियत समयों पर चढ़ाने के लिये स्मरण रखना।’ २६ और तु उनसे कह: जो-जो तुहां यहोवा के लिये चढ़ाना होगा वे ये हैं; अर्थात् नित्य होमबलि के लिये एक-एक वर्ष के दो निर्दोष भेड़ी के नर बच्चे प्रतिदिन चढ़ाया करना। २७ एक बच्चे को भोर को और दूसरे को साँझ के समय चढ़ाना; २८ और भेड़ के बच्चे के साथ एक चौथाई हीन कूटकर निकाले हुए तेल से सने हुए एगा के दसवें अंश मैदे का अन्नबलि चढ़ाना। २९ यह नित्य होमबलि है, जो सिंह पर्वत पर यहोवा का सुखदायक सुगन्धवाला हव्य होने के लिये ठहराया गया। ३० और उसका अर्ध प्रति एक भेड़ के बच्चे के संग एक चौथाई हीन हो; मदिरा का यह अर्ध यहोवा के लिये पवित्रस्थान में देना। ३१ और दूसरे बच्चे को साँझ के समय चढ़ाना; अन्नबलि और अर्ध समेत भोर के होमबलि के समान उसे यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य करके चढ़ाना। ३२ “फिर विश्वामित्रिन को दो निर्दोष भेड़ के एक वर्ष के नर बच्चे, और अन्नबलि के लिये तेल से सना हुआ एगा का दो दसवाँ अंश मैदा अर्ध समेत चढ़ाना। ३३ नित्य होमबलि और उसके अर्ध के अलावा प्रत्येक विश्वामित्रिन का यही होमबलि ठहरा है। ३४ “फिर अपने महीनों के आरम्भ में प्रतिमाह यहोवा के लिये होमबलि चढ़ाना; अर्थात् दो बछड़े, एक मेडा, और एक-एक वर्ष के निर्दोष भेड़ के सात नर बच्चे; ३५ और बछड़े के साथ तेल से सना हुआ एगा का तीन दसवाँ अंश मैदा; ३६ और प्रत्येक भेड़ के बच्चे के पीछे तेल से सना हुआ एगा का दसवाँ अंश मैदा, उन सभी को अन्नबलि करके चढ़ाना; वह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये होमबलि और यहोवा के लिये हव्य ठहरेगा। ३७ और उनके साथ ये अर्ध हों; अर्थात् बछड़े के साथ आधा हीन, मेडे के साथ तिहाई हीन, और भेड़ के बच्चे के साथ चौथाई हीन दाखरमधु दिया जाए; वर्ष के सब महीनों में से प्रत्येक महीनी का यही होमबलि ठहरे। ३८ और एक बकरा पापबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाया जाए; यह नित्य होमबलि और उसके अर्ध के अलावा चढ़ाया जाए। ३९ “फिर पहले महीने के चौदहवें दिन को यहोवा का फसह हुआ करे। ४० और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को पर्व लगा करे; सात दिन तक अख्डरीरी रोटी खाई जाए। ४१ पहले दिन पवित्र सभा हो; और उस दिन परिश्रम का कोई काम न किया जाए; ४२ उसमें तुम यहोवा के लिये हव्य, अर्थात् होमबलि चढ़ाना; अतः दो बछड़े, एक मेडा, और एक-एक वर्ष के सात भेड़े के नर बच्चे हों; ये सब निर्दोष हों; ४३ और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; बछड़े के साथ एगा का तीन दसवाँ अंश और मेडे के साथ एगा का दो दसवाँ अंश मैदा हो। ४४ और सातों भेड़े के बच्चों में से प्रति बच्चे के साथ एगा का दसवाँ अंश चढ़ाना। ४५ और एक बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना, जिससे तुम्हारे लिये प्रायश्चित्र हो। ४६ भोर का होमबलि जो नित्य होमबलि ठहरा है, उसके अलावा इनको चढ़ाना। ४७ इस रीति से तुम उन सातों दिनों में भी हव्य का भोजन चढ़ाना, जो यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने के लिये हो; यह नित्य होमबलि और उसके अर्ध के अलावा चढ़ाया जाए। ४८ और सातवें दिन भी तुम्हारी पवित्र सभा हो; और उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना। ४९ “फिर पहली उपज के दिन में, जब तुम अपने कटनी के पर्व में यहोवा के लिये नया अन्नबलि चढ़ाओगे, तब भी

तुम्हारी पवित्र समा हो; और परिश्रम का कोई काम न करना। २७ और एक होमबलि चढ़ाना, जिससे यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध हो; अर्थात् दो बछड़े, एक मेडा, और एक-एक वर्ष के सात भेड़ के नर बच्चे; २८ और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवाँ अंश, और मेडे के संग एपा का दो दसवाँ अंश, २९ और सातों भेड़ के बच्चों में से एक-एक बच्चे के पीछे एपा का दसवाँ अंश मैदा चढ़ाना। ३० और एक बकरा भी चढ़ाना, जिससे तुहरे लिये प्रायश्चित्त हो। ३१ ये सब निर्दोष हों; और नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्थ के अल्लावा इसको भी चढ़ाना।

२९ “फिर सातवें महीने के पहले दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; उसमें

परिश्रम का कोई काम न करना। वह तुम्हरे लिये जयजयकार का नरसिंगा फूँकने का दिन ठहरा है; २ तुम होमबलि चढ़ाना, जिससे यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध हो; अर्थात् एक बछड़ा, एक मेडा, और एक-एक वर्ष के सात निर्दीष भेड़ के नर बच्चे; ३ और उनका अन्नबलि तेल से सने हए मैदे का हो; अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवाँ अंश, और मेडे के साथ एपा का दसवाँ अंश, ४ और सातों भेड़ के बच्चों में से एक-एक बच्चे के साथ एपा का दसवाँ अंश मैदा चढ़ाना। ५ और एक बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना, जिससे तुम्हरे लिये प्रायश्चित हो। ६ इन सभी से अधिक नये चाँद का होमबलि और उसका अन्नबलि, और नित्य होमबलि और उसका अन्नबलि, और उन सभी के अर्थ भी उनके नियम के अनुसार सुखदायक सुगन्ध देने के लिये यहोवा के हृव्य करके चढ़ाना। ७ “फिर उसी सातवें महीने के दसवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; तुम उपवास करके अपने-अपने प्राण को दुःख देना, और किसी प्रकार का काम-काज न करना; ८ और यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध देने को होमबलि; अर्थात् एक बछड़ा, एक मेडा, और एक-एक वर्ष के सात भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना; फिर ये सब निर्दीष हों; ९ और उनका अन्नबलि तेल से सने हए मैदे का हो; अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवाँ अंश, और मेडे के साथ एपा का दो दसवाँ अंश, १० और सातों भेड़ के बच्चों में से एक-एक बच्चे के पीछे एपा का दसवाँ अंश मैदा चढ़ाना। ११ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये सब प्रायश्चित के पापबलि और नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि के, और उन सभी के अर्धों के अलावा चढ़ाए जाएँ। १२ “फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; और उसमें परिश्रम का कोई काम न करना, और सात दिन तक यहोवा के लिये पर्व मानना; १३ तुम होमबलि यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने के लिये हृव्य करके चढ़ाना; अर्थात् तेरह बछड़े, और दो मेडे, और एक-एक वर्ष के चौदह भेड़ के नर बच्चे; ये सब निर्दीष हों; १४ और उनका अन्नबलि तेल से सने हए मैदे का हो; अर्थात् तेरहों बछड़ों में से एक-एक बछड़े के साथ एपा का तीन दसवाँ अंश, और दोनों मेडों में से एक-एक मेडे के साथ एपा का दो दसवाँ अंश, १५ और चौदहों भेड़ के बच्चों में से एक-एक बच्चे के साथ एपा का दसवाँ अंश मैदा चढ़ाना। १६ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ। १७ “फिर दूसरे दिन बारह बछड़े, और दो मेडे, और एक-एक वर्ष के चौदह निर्दीष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना; १८ और बछड़ों, और मेडों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्ध, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। १९ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ। २० “फिर तीसरे दिन ग्यारह बछड़े, और दो मेडे, और एक-एक वर्ष के चौदह निर्दीष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना; २१ और बछड़ों, और मेडों, और भेड़ के

बच्चों के साथ उनके अनन्बलि और अर्ध, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। २२ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अनन्बलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ। २३ “फिर चौथे दिन दस बछड़े, और दो मेड़े, और एक-एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना; २४ बछड़ों, और मेड़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अनन्बलि और अर्ध, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। २५ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अनन्बलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ। २६ “फिर पाँचवें दिन नौ बछड़े, दो मेड़े, और एक-एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना; २७ और बछड़ों, मेड़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अनन्बलि और अर्ध, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। २८ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अनन्बलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ। २९ “फिर छठवें दिन आठ बछड़े, और दो मेड़े, और एक-एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना; ३० और बछड़ों, और मेड़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अनन्बलि और अर्ध, उनकी गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना। ३१ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अनन्बलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ। ३२ “फिर सातवें दिन सात बछड़े, और दो मेड़े, और एक-एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना। ३३ और बछड़ों, और मेड़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अनन्बलि और अर्ध, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। ३४ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अनन्बलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ। ३५ “फिर आठवें दिन तुहारी एक महासभा हो; उसमें परिश्रम का कोई काम न करना, ३६ और उसमें होमबलि यहोवा को सुखदायक सम्बन्ध देने के लिये हव्य करके चढ़ाना; वह एक बछड़े, और एक मेड़े, और एक-एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के नर बच्चों का हो; ३७ बछड़े, और मेड़े, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अनन्बलि और अर्ध, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। ३८ और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अनन्बलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ। ३९ “अपनी मन्त्रों और स्वेच्छाबलियों के अलावा, अपने-अपने नियत समयों में, ये ही होमबलि, अनन्बलि, अर्ध, और मेलबलि, यहोवा के लिये चढ़ाना।” ४० यह सारी आज्ञा यहोवा ने मका को दी जो उसने इसाएलियों को सनाई।

३० फिर मूसा ने इसाएली गोत्रों के मुख्य-मुख्य पुरुषों से कहा, “यहोवा

ने यह आजादी हैः २ जब कोई पुस्तक यहोवा की मन्त्र माने, या अपने आपको वाचा से बाँधें के लिये शपथ खाए, तो वह अपना वचन न टाले; जो कछु उसके मूँह से निकला हो उसके अनुसार वह करे। ३ और जब कोई यही अपनी कुँवारी अवस्था में, अपने पिता के घर में रहते हुए, यहोवा की मन्त्र माने, व अपने को वाचा से बाँधे, ४ तो यदि उसका पिता उसकी मन्त्र या उसका वह वचन सुनकर, जिससे उसने अपने आपको बाँधा हो, उससे कछु न कहे; तब तो उसकी सब मन्त्रों स्थिर बनी रहें, और कोई बन्धन क्यों न हो, जिससे उसने अपने आपको बाँधा हो, वह भी स्थिर रहे। ५ परन्तु यदि उसका पिता उसकी सुनकर उसी दिन उसको मना करे, तो उसकी मन्त्रों या और प्रकार के बन्धन, जिनसे उसने अपने आपको बाँधा हो, उनमें से एक भी स्थिर न रहे, और यहोवा यह जानकर, कि उस यही के पिता ने उसे मना कर दिया है, उसका यह पाप क्षमा करेगा। ६ फिर यदि वह पति के अधीन हो और मन्त्र माने या बिना में उन्हें चिटाप किए ऐसा कुछ कहे जिससे वह बन्धन में पढ़े ।

और यदि उसका पति सुनकर उस दिन उससे कुछ न कहे; तब तो उसकी मन्त्रों स्थिर रहे, और जिन बन्धनों से उसने अपने आपको बाँधा हो वह भी स्थिर रहे। ८ परन्तु यदि उसका पति सुनकर उसी दिन उसे मना कर दे, तो जो मन्त्र उसने मारी है, और जो बात बिना सोच-विचार किए कहने से उसने अपने आपको बाँधा हो, वह टूट जाएगी; और यहोवा उस झीं का पाप क्षमा करेगा। ९ फिर विधवा या त्यागी हुई झीं की मन्त्र, या किसी प्रकार की बाचा का बन्धन क्यों न हो, जिससे उसने अपने आपको बाँधा हो, तो वह स्थिर ही रहे। १० फिर यदि कोई झीं अपने पति के घर में रहते मन्त्र माने, या शपथ खाकर अपने आपको बाँधे, ११ और उसका पति सुनकर कुछ न कहे, और न उसे मना करे; तब तो उसकी सब मन्त्रों स्थिर बनी रहे, और हर एक बन्धन क्यों न हो, जिससे उसने अपने आपको बाँधा हो, वह स्थिर रहे। १२ परन्तु यदि उसका पति उसकी मन्त्र आदि सुनकर उसी दिन पूरी रीत से तोड़ दे, तो उसकी मन्त्रों आदि, जो कुछ उसके मूँह से अपने बन्धन के विषय निकला हो, उसमें से एक बात भी स्थिर न रहे; उसके पति ने सब तोड़ दिया है; इसलिए यहोवा उस झीं का वह पाप क्षमा करेगा। १३ कोई भी मन्त्र या शपथ क्यों न हो, जिससे उस झीं ने अपने जीव को दुर्ख देने की बाचा बाँधी हो, उसको उसका पति चाहे तो दूढ़ करे, और चाहे तो तोड़े; १४ अर्थात् यदि उसका पति दिन प्रतिदिन उससे कुछ भी न कहे, तो वह उसको सब मन्त्रों आदि बन्धनों को जिससे वह बाँधी हो दूढ़ कर देता है; उसने उनको दूढ़ किया है, क्योंकि सुनने के दिन उसने कुछ नहीं कहा। १५ और यदि वह उन्हें सुनकर बहुत दिन पश्चात् तोड़ दे, तो अपनी झी के अर्थम का भार वही उठाएगा।” १६ पति-पत्री के बीच, और पिता और उसके घर में रहती हुई कुँवारी बेटी के बीच, जिन विधियों की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी वे ये ही हैं।

३१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १ “मिथानियों से इसाएलियों का पलटा ले; उसके बाद त अपने लोगों में जा मिलोगा।” २ तब मूसा ने लोगों से कहा, “अपने में से पुरुषों को युद्ध के लिये हथिरां धारण कराओ कि वे मिथानियों पर चढ़कर उनसे यहोवा का पलटा लें। ३ इसाएल के सब गोत्रों में से प्रत्येक गोत्र के एक-एक हजार पुरुषों को युद्ध करने के लिये भेजो।” ४ तब इसाएल के सब गोत्रों में से प्रत्येक गोत्र के एक-एक हजार पुरुष चुने गये, अर्थात् युद्ध के लिये हथिरां-बन्द बारह हजार पुरुष। ५ प्रत्येक गोत्र में से उन हजार-हजार पुरुषों को, और एलीआजर याजक के पुरुष पीनहास को, मूसा ने युद्ध करने के लिये भेजा, और पीनहास के हाथ में पवित्रस्थान के पात्र और वे तुरहियां थीं जो साँस बाँध बाँधकर फँकी जाती थीं। ६ और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, उसके अनुसार उन्होंने मिथानियों से युद्ध करके सब पुरुषों को घात किया। ७ और शेष मारे हुओं को छोड़ उन्होंने एवी, रेकेम, सूर, हर, और रेबा नामक मिथान के पाँचों राजाओं को घात किया; और बोर के पुत्र बिलाम को भी उन्होंने तलवार से घात किया। ८ और इसाएलियों ने मिथानी झियों को बाल-बच्चों समेत बन्दी बना लिया; और उनके गाय-बैल, भेड़-बकरी, और उनकी सारी सम्पत्ति को लूट लिया। ९ और उनके निवास के सब नगरों, और सब छावनियों को फँक दिया; १० तब वे, क्या मनुष्य क्या पशु, सब बन्दियों और सारी लूट-पाट को लेकर ११ यरीहो के पास की यरदन नदी के टट पर, मोआब के अराबा में, छावनी के निकट, मूसा और एलीआजर याजक और इसाएलियों की मण्डली के पास आए। १२ तब मूसा और एलीआजर याजक और मण्डली के सब प्रधान छावनी के बाहर उनका स्वागत करने को निकले। १३ और मूसा सहस्रपति-शतपति आदि, सेनापतियों से, जो युद्ध करके लौटे आते थे कोधित होकर कहने लगा, १४ “क्या तुम ने सब झियों को जीवित छोड़ दिया? १५ देखो, बिलाम की सम्पत्ति से, पोर के विषय में इसाएलियों से

यहोवा का विश्वासघात इन्हीं झियों ने कराया, और यहोवा की मण्डली में मरी फैली। १६ इसलिए अब बाल-बच्चों में से हर एक लड़के को, और जितनी झियों ने पुरुष का मूँह देखा हो उन सभी को घात करो। १७ परन्तु जितनी लड़कियों ने पुरुष का मूँह न देखा हो उन सभी को तुम अपने लिये जीवित रखो। १८ और तुम लोग सात दिन तक छावनी के बाहर रहो, और तुम में से जितनों ने किसी प्राणी को घात किया, और जितनों ने किसी मरे हुए को छुआ हो, वे सब अपने-अपने बन्दियों समेत तीसरे और सातवें दिनों में अपने-अपने को पाप छुड़ाकर पावन करो। १९ और सब वस्त्रों, और चमड़े की बनी हुई सब वस्त्रओं और बकरी के बालों की और लकड़ी की बनी हुई सब वस्त्रओं को पावन कर लो।” २० तब एलीआजर याजक ने सेना के उन पुरुषों से जो युद्ध करने गए थे कहा, “व्यवस्था की जिस विधि की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी है वह यह है: २१ सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, टीन, और सीसा, २२ जो कुछ आग में ठहर सके उसको आग में डालो, तब वह शुद्ध ठहरेगा; तो भी वह अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल के द्वारा पावन किया जाए; परन्तु जो कुछ आग में न ठहर सके उसे जल में डुबाओ। २३ और सातवें दिन अपने बन्द्रों को धोना, तब तुम शुद्ध ठहरोगे, और तब छावनी में आना।” २४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २५ “एलीआजर याजक और मण्डली के पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरुषों को साथ लेकर तलू के मनुष्यों और पश्चिमों की गिनती कर, २६ तब उनको आधा-आधा करके एक भाग उन सिपाहियों को जो युद्ध करने को गए थे, और दूसरा भाग मण्डली को दे। २७ फिर जो सिपाही युद्ध करने को गए थे, उनके आधे में से यहोवा के लिये, क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियाँ २८ पाँच सौ के पाँछे एक को कर मानकर ले ले; और यहोवा की भेंट करके एलीआजर याजक को दे दे। २९ फिर इसाएलियों के आधे में से, क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियाँ, क्या किसी प्रकार का पशु हो, पचास के पाँछे एक लेकर यहोवा के निवास की रखवाली करनेवाले लेवियों को दे।” ३० यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी मूसा और एलीआजर याजक ने किया। ३१ और जो वस्तुएँ सेना के पुरुषों ने अपने-अपने लिये लूट ली थी उनसे अधिक की लूट यह थी: अर्थात् लः लाख पचहतर हजार भेड़-बकरियाँ, ३२ बहतर हजार गाय बैल, ३३ इक्सठ हजार गदहे, ३४ और मनुष्यों में से जिन झियों ने पुरुष का मूँह नहीं देखा था वह सब बत्तीस हजार थी। ३५ और इसका आधा, अर्थात् उनका भाग जो युद्ध करने को गए थे, उसमें भेड़-बकरियाँ तीन लाख साढ़े सैतीस हजार, ३६ जिनमें से पैने सात सौ भेड़-बकरियाँ यहोवा का कर ठहरी। ३७ और गदहे साढ़े तीस हजार, जिनमें से बहतर यहोवा का कर ठहरे। ३८ और गदहे साढ़े बत्तीस हजार, जिनमें से इक्सठ यहोवा का कर ठहरे। ३९ और मनुष्य सोलह हजार जिनमें से बत्तीस प्राणी यहोवा का कर ठहरे। ४० इस कर को जो यहोवा की भेंट थी मूसा ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार एलीआजर याजक को दिया। ४१ इसाएलियों की मण्डली का आधा भाग, जिसे मूसा ने युद्ध करनेवाले पुरुषों के पास से अल्प किया था ४२ तीन लाख साढ़े सैतीस हजार भेड़-बकरियाँ ४३ बत्तीस हजार गाय-बैल, ४४ साढ़े तीस हजार गदहे, ४५ और सोलह हजार मनुष्य हुए। ४६ इस आधे में से, यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा ने, क्या मनुष्य क्या पशु, पचास में से एक लेकर यहोवा के निवास की रखवाली करनेवाले लेवियों को दिया। ४७ तब सहस्रपति-शतपति आदि, जो सरदार सेना के हजारों के ऊपर नियुक्त थे, वे मूसा के पास आकर कहने लगे, ४८ “जो सिपाही हमारे अधीन थे उनकी तेरे दासों ने गिनती ली, और उनमें से एक भी नहीं घटा। ४९ इसलिए पायजेब, कड़े, मुंदरियाँ, बालियाँ, बाजूबन्द, सोने के जो गहने, जिसने पाया है, उनको

हम यहोवा के सामने अपने प्राणों के निमित्त प्रायश्चित्त करने को यहोवा की भेट करके ले आए हैं।^{५१} तब मूसा और एलीआजर याजक ने उनसे वे सब सोने के नक्काशीदार गहने ले लिए।^{५२} और सहस्रपतियों और शतपतियों ने जो भेट का सोना यहोवा की भेट करके दिया वह सब सोलह हजार साठे सात सौ शेकेल का था।^{५३} (योद्हाओं ने तो अपने-अपने लिये लट ले ली थी।)^{५४} यह सोना मूसा और एलीआजर याजक ने सहस्रपतियों और शतपतियों से लेकर मिलापवाले तम्बू में पहुँचा दिया, कि इसाएलियों के लिये यहोवा के सामने स्मरण दिलनेवाली वस्तु ठहरे।

३२ स्केनियों और गादियों के पास बहुत से जानवर थे। जब उन्होंने याजे-

और गिलाद देखों को देखकर विचार किया, कि वह पशुओं के योग्य देश है, तब मूसा और एलीआजर याजक और मण्डली के प्रधानों के पास जाकर कहने लगे, ^{५५} “अतारोत, दीबोन, याजेर, निमा, हेशबोन, एलाले, सबाम, नबो, और बोन नगरों का देश।^{५६} जिस पर यहोवा ने इसाएल की मण्डली को विजय दिलवाई है, वह पशुओं के योग्य है; और तेरे दासों के पास पशु है।”^{५७} फिर उन्होंने कहा, “यदि तेरा अनुग्रह तेरे दासों पर हो, तो यह देश तेरे दासों को मिले कि उनकी निज भूमि हो; हमें यरदन पार न ले चल।”^{५८} मूसा ने गादियों और स्केनियों से कहा, “जब तुम्हारे भाई युद्ध करने को जाएँगे तब क्या तुम यहाँ बैठे रहेंगे? ^{५९} और इसाएलियों से भी उस पार के देश जाने के विषय, जो यहोवा ने उन्हें दिया है, तुम क्यों अस्वीकार करवाते हो? ^{६०} जब मैंने तुम्हारे बापदादों को कादेशबर्ने से कनान देश देखने के लिये भेजा, तब उन्होंने भी ऐसा ही किया था।^{६१} अर्थात् जब उन्होंने एश्कोल नामक घाटी तक पहुँचकर देश को देखा, तब इसाएलियों से उस देश के विषय जो यहोवा ने उन्हें दिया था अस्वीकार करा दिया।^{६२} इसलिए उस समय यहोवा ने कोप करके यह सपथ खाई,^{६३} “निसन्देह जो मनुष्य मिस से निकल आए हैं उनमें से, जितने बीस वर्ष के या उससे अधिक आयु के हैं, वे उस देश को देखने न पाएँगे, जिसके देने की शपथ मैंने अब्राहम, इसहाक, और याकूब से खाइ है, क्योंकि वे मेरे पीछे पूरी रीत से नहीं हो लिये; ^{६४} परन्तु युपन्ने कनजी का पुत्र कालेब, और नून का पुत्र योहोश, ये दोनों जो मेरे पीछे पूरी रीत से हो लिये हैं ये उसे ढेखने पाएँगे।”^{६५} अतः यहोवा का कोप इसाएलियों पर भड़का, और जब तक उस पीढ़ी के सब लोगों का अन्त न हुआ, जिन्होंने यहोवा के प्रति बुरा किया था, तब तक अर्थात् चालीस वर्ष तक वह उन्हें जंगल में मारे-मारे फिराता रहा।^{६६} और सुनो, तुम लोग उन पापियों के बच्चे होकर इसलिए अपने बापदादों के स्थान पर प्रगत हुए हो, कि इसाएल के विस्तृ यहोवा के भड़के हुए कोप को और भी भड़काओ।^{६७} यदि तुम उसके पीछे चलने से फिर जाओ, तो वह फिर हम सभी को जंगल में छोड़ देगा; इस प्रकार तुम इन सारे लोगों का नाश कराओगे।”^{६८} तब उन्होंने मूसा के और निकट आकर कहा, “हम अपने पशुओं के लिये यही भेड़शालाएँ बनाएँगे, और अपने बाल-बच्चों के लिये यही नगर बसाएँगे,^{६९} परन्तु आप इसाएलियों के आगे-आगे हथियार-बन्द तब तक चर्चोंगे, जब तक उनको उनके स्थान में न पहुँचा दें; परन्तु हमारे बाल-बच्चे इस देश के निवासियों के डर से गढ़वाले नगरों में रहेंगे।^{७०} परन्तु जब तक इसाएली अपने-अपने भाग के अधिकारी न हों तब तक हम अपने घरों को न लौटेंगे।^{७१} हम उनके साथ यरदन पार या कही आगे अपना भाग न लेंगे, क्योंकि हमारा भाग यरदन के इसी पार पूर्व की ओर मिला है।”^{७२} तब मूसा ने उनसे कहा, “यदि तुम ऐसा करो, अर्थात् यदि तुम यहोवा के आगे-आगे युद्ध करने को हथियार बैठो।^{७३} और हर एक हथियार-बन्द यरदन के पार तब तक चले, जब तक यहोवा अपने आगे से अपने शत्रुओं को न निकाले

७४ और देश यहोवा के बश में न आए; तो उसके पीछे तुम यहाँ लौटोगे, और यहोवा के और इसाएल के विषय निर्दोष ठहरोगे; और यह देश यहोवा के प्रति तुम्हारी निज भूमि ठहरेगा।^{७५} और यदि तुम ऐसा न करो, तो यहोवा के विस्तृ पारी ठहरोगे; और जान रखो कि तुम को तुम्हारा पाप लगेगा।^{७६} तुम अपने बाल-बच्चों के लिये नगर बसाओ, और अपनी भेड़-बकरियों के लिये भेड़शालाएँ बनाओ; और जो तुम्हारे मुँह से निकला है वही करो।”^{७७} तब गादियों और स्केनियों ने मूसा से कहा, “अपने प्रभु की आज्ञा के अनुसार तेरे दास करेंगे।^{७८} हमारे बाल-बच्चे, बिहाँ, भेड़-बकरी आदि, सब पशु तो यही गिलाद के नगरों में रहेंगे; ^{७९} परन्तु अपने प्रभु के कहे के अनुसार तेरे दास सब के सब युद्ध के लिये हथियार-बन्द यहोवा के आगे-आगे लड़ने को पार जाएँगे।”^{८०} “तब मूसा ने उनके विषय में एलीआजर याजक, और नून के पुत्र योहोश, और इसाएलियों के गोत्रों के पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुस्तकों को यह आज्ञा दी, ^{८१} कि यदि सब गादी और स्केनी पुस्तक युद्ध के लिये हथियार-बन्द तुम्हारे संग यरदन पार जाएँ, और देश तुम्हारे बश में आ जाए, तो गिलाद देश उनकी निज भूमि होने को उन्हें देना।^{८२} परन्तु यदि वे तुम्हारे संग हथियार-बन्द पार न जाएँ, तो उनकी निज भूमि तुम्हारे बीच कनान देश में ठहरे।”^{८३} तब गादी और स्केनी बोल उठे, “यहोवा ने जैसा तेरे दासों से कहलाया है वैसा ही हम करेंगे।^{८४} हम हथियार-बन्द यहोवा के आगे-आगे उस पार कनान देश में जाएँगे, परन्तु हमारी निज भूमि यरदन के इसी पार रहे।”^{८५} तब मूसा ने गादियों और स्केनियों को, और यस्तुक के पुत्र मनश्वे के अधे गोत्रियों को एमोरियों के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग, दोनों के राज्यों का देश, नगरों, और उनके आस-पास की भूमि समेत दे दिया।^{८६} तब गादियों ने दीबोन, अतारोत, अमोरे, ^{८७} अन्नीत, शोपान, याजेर, योगबाहा, ^{८८} बेतिनिमा, और बेत-हारन नामक नगरों को ढूढ़ किया, और उनमें भेड़-बकरियों के लिये भेड़शाला बनाए।^{८९} और स्केनियों ने हेशबोन, एलाले, और कियातीम को, ^{९०} फिर नबो और बालमोन के नाम बदलकर उनको, और सिबामा को ढूढ़ किया; और उन्होंने अपने ढूढ़ किए हुए नगरों के और-और नाम रखे।^{९१} और मनश्वे के पुत्र माकीर के बंशवालों ने गिलाद देश में जाकर उसे ले लिया, और जो एपोरी उसमें रहते थे उनको निकाल दिया।^{९२} तब मूसा ने मनश्वे के पुत्र माकीर के बंश को गिलाद दे दिया, और वे उसमें रहने लगे।^{९३} और मनश्वे इयाईर ने जाकर गिलाद की कितनी बस्तियाँ ले ली, और उनके नाम हब्बोताई रखे।^{९४} और नोबह ने जाकर गाँवों समेत कनात को ले लिया, और उसका नाम अपने नाम पर नोबह रखा।

३३ जब से इसाएली मूसा और हास्तन की अगुआई में दल बाँधकर मिस देश से निकले, तब से उनके ये पड़ाव हुए।^{९५} मूसा ने यहोवा से आज्ञा पाकर उनके कूच उनके पड़ावों के अनुसार लिख दिए; और वे ये हैं।^{९६} पहले महीने के पन्द्रहवें दिन को उन्होंने रामसेस से कूच किया; फस्त के दूसरे दिन इसाएली सब मिसियों के देखते बेखटके निकल गए, ^{९७} जबकि मिसी अपने सब पहिलौं को मिट्टी दे रहे थे जिन्हें यहोवा ने मारा था; और उसने उनके देवताओं को भी दण्ड दिया था।^{९८} इसाएलियों ने रामसेस से कूच करके सुक्रोत में डेरे डाले।^{९९} और सुक्रोत से कूच करके एताम में, जो जंगल के छोर पर है, डेरे डाले।^{१००} और एताम से कूच करके वीहारीतों को मुड़ गए, जो बाल-सपोन के सामने डेरे खड़े किए।^{१०१} तब वे पीहारीतों के सामने से कूच कर समुद्र के बीच होकर जंगल में गए, और एताम नामक जंगल में तीन दिन का मार्ग चलकर मारा में डेरे डाले।^{१०२} फिर मारा से कूच करके वे एलीम को गए, और एलीम में जल के बाहर सोते और सतर खजूर के बृक्ष मिले, और उन्होंने वहाँ डेरे खड़े किए।^{१०३} तब उन्होंने

एलीम से कूच करके लाल समुद्र के तट पर डेरे खड़े किए। ११ और लाल समुद्र से कूच करके सीन नामक जंगल में डेरे खड़े किए। १२ फिर सीन नामक जंगल से कूच करके उन्होंने दोपाका में डेरा किया। १३ और दोपाका से कूच करके आलशू में डेरा किया। १४ और आलशू से कूच करके रपीदीम में डेरा किया, और वहाँ उन लोगों को पीनि का पानी न मिला। १५ फिर उन्होंने रपीदीम से कूच करके सीनि के जंगल में डेरे डाले। १६ और सीनि के जंगल से कूच करके किंब्रोतहतावा में डेरा किया। १७ और किंब्रोतहतावा से कूच करके हसरोत में डेरे डाले। १८ और हसरोत से कूच करके रित्मा में डेरे खड़े किए। १९ और रिमोनपेरेस से कूच करके रिल्बा में डेरे खड़े किए। २० और रिस्सा में डेरे खड़े किए। २१ और रिस्सा से कूच करके कहेलाता में डेरा किया। २२ और कहेलाता से कूच करके शेपेर पर्वत के पास डेरा किया। २३ फिर उन्होंने शेपेर पर्वत से कूच करके हरादा में डेरा किया। २४ और हरादा से कूच करके मखेलोत में डेरा किया। २५ और मखेलोत से कूच करके तहत में डेरे खड़े किए। २६ और तहत से कूच करके तेरह में डेरे डाले। २७ और तेरह से कूच करके मिल्का में डेरे डाले। २८ फिर मिल्का से कूच करके उन्होंने हशमोना में डेरे डाले। २९ और हशमोना से कूच करके मोसेरोत में डेरे खड़े किए। ३० और मोसेरोत से कूच करके याकानियों के बीच डेरा किया। ३१ और होहंगिदाव से कूच करके योतबाता में डेरा किया। ३२ और योतबाता से कूच करके अब्रोना में डेरे खड़े किए। ३३ और अब्रोना से कूच करके एस्योनगेर में डेरे खड़े किए। ३४ और एस्योनगेर से कूच करके उन्होंने सीन नामक जंगल के कादेश में डेरा किया। ३५ फिर कादेश से कूच करके होर पर्वत के पास, जो एदोम देश की सीमा पर है, डेरे डाले। ३६ वहाँ इस्माएलियों के मिस देश से निकलने के चालीसवें वर्ष के पाँचवें महीने के पहले दिन को हास्न याजक यहोवा की आज्ञा पाकर होर पर्वत पर मर गया। ३७ और जब हास्न होर पर्वत पर मर गया तब वह एक सौ तेहेस वर्ष का था। ३८ और अराद का कनानी राजा, जो कनान देश के दक्षिण भाग में रहता था, उसने इस्माएलियों के अने का समाचार पाया। ३९ तब इस्माएलियों ने होर पर्वत से कूच करके सलमोना में डेरे डाले। ४० और सलमोना से कूच करके प्लोन में डेरे डाले। ४१ और प्लोन से कूच करके ओबोत में डेरे डाले। ४२ और ओबोत से कूच करके अबारीम नामक डीहों में जो मोआब की सीमा पर है, डेरे डाले। ४३ तब उन डीहों से कूच करके उन्होंने दीबोन-गाद में डेरा किया। ४४ और दीबोन-गाद से कूच करके अल्मोनदिल्लातैम में डेरा किया। ४५ और अल्मोनदिल्लातैम से कूच करके उन्होंने अबारीम नामक पहाड़ों में नबो के सामने डेरा किया। ४६ फिर अबारीम पहाड़ों से कूच करके मोआब के अराबा में, यरीहो के पास यरदन नदी के तट पर, यहोवा ने मूसा से कहा, ४७ “इस्माएलियों को समझाकर कह: जब तुम यरदन पार होकर कनान देश में पहुँचो ४८ तब उस देश के निवासियों को उनके देश से निकाल देना; और उनके सब नक्काशीदार पत्थरों को और ढली हई मर्मियों को नाश करना, और उनके सब पूजा के ऊँचे स्थानों को ढा देना। ४९ और उस देश को अपने अधिकार में लेकर उसमें निवास करना, क्योंकि मैंने वह देश तुम्हीं को दिया है कि तुम उसके अधिकारी हो। ५० और तुम उस देश को चिशी डालकर अपने कुलों के अनुसार बाँट लेना; अर्थात् जो कुल अधिकवाले हैं उन्हें अधिक, और जो थोड़ेवाले हैं उनको थोड़ा भाग देना;

जिस कुल की चिशी जिस स्थान के लिये निकले वही उसका भाग ठहरे; अपने पितरों के गोत्रों के अनुसार अपना भाग लेना। ५१ परन्तु यदि तुम उस देश के निवासियों को अनने आगे से न निकालोगे, तो उनमें से जिनको तुम उसमें रहने दोगे, वे मानों तुहारी आँखों में कैंटे और तुहारे पांजरों में कीते ठहोंगे, और वे उस देश में जहाँ तुम बसोगे, तुम्हें संकट में डालोगे। ५२ और उनसे जैसा बातिव करने की मनसा मैंने की है वैसा ही तुम से कहँगा।”

३४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २ “इस्माएलियों को यह आज्ञा दे: कि जो

देश तुम्हारा भाग होगा वह तो चारों ओर की सीमा तक का कनान देश है, इसलिए जब तुम कनान देश में पहुँचो, ३ तब तुम्हारा दक्षिणी प्रान्त सीन नामक जंगल से ले एदोम देश के किनारे-किनारे होता हुआ चला जाए, और तुम्हारी दक्षिणी सीमा खारे ताल के दिशे पर आरम्भ होकर पश्चिम की ओर चले; ४ वहाँ से तुहारी सीमा अकब्बीम नामक चढाई के दक्षिण की ओर पहुँचकर मुड़े, और सीन तक आए, और कादेशबर्ने के दक्षिण की ओर निकले, और हसरदार तक बढ़के अस्मोन तक पहुँचे; ५ फिर वह सीमा अस्मोन से घमकर मिस्र के नाले तक पहुँचे, और उसका अन्त समुद्र का तट ठहरे। ६ “फिर पश्चिमी सीमा महासमुद्र हो; तुम्हारी पश्चिमी सीमा यही ठहरे। ७ “तुम्हारी उत्तरी सीमा यह हो, अर्थात् तुम महासमुद्र से ले होर पर्वत तक सीमा बाँधना; ८ और होर पर्वत से हमात की घाटी तक सीमा बाँधना, और वह सदाद पर निकले; ९ फिर वह सीमा जिप्रेन तक पहुँचे, और हसरेनान पर निकले; तुम्हारी उत्तरी सीमा यही ठहरे। १० “फिर अपनी पूर्वी सीमा हसरेनान से शपाम तक बाँधना; ११ और वह सीमा शपाम से रिबला तक, जो ऐने के पूर्व की ओर है, नीचे को उतारे-उतारे किन्नरेत नामक ताल के पूर्व से लग जाए; १२ और वह सीमा यरदन तक उत्तरकर खारे ताल के तट पर निकले। तुम्हारे देश की चारों सीमाएँ ये ही ठहरे।” १३ तब मूसा ने इस्माएलियों से फिर कहा, “जिस देश के तुम चिशी डालकर अधिकारी होंगे, और यहोवा ने उसे साढ़े नौ गोत्र के लोगों को देने की आज्ञा दी है, वह यही है; १४ परन्तु रुसेनियों और गादियों के गोत्र तो अपने-अपने पितरों के कुलों के अनुसार अपना-अपना भाग पा चुके हैं; १५ अर्थात् उन डाइ गोत्रों के लोग यरीहो के पास यरदन के पार पूर्व दिशा में, जहाँ सूर्योदय होता है, अपना-अपना भाग पा चुके हैं।” १६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १७ “जो पुस्त तुम लोगों के लिये उस देश को बाँटेंगे उनके नाम ये हैं एलीआजर याजक और नन् का पुत्र यहोश। १८ और देश को बाँटने के लिये एक-एक गोत्र का एक-एक प्रधान ठहराना। १९ और इन पुस्तों के नाम ये हैं यहोदायोरी यपुन्ने का पुत्र कालेब, २० शिमोनगोत्री अम्मीहृद का पुत्र शम्पूल, २१ बिन्यायीनगोत्री किस्तोन का पुत्र एलीदाद, २२ दान के गोत्र का प्रधान योग्ली का पुत्र बुक्ती, २३ यसूफियों में से मनश्शेषियों के गोत्र का प्रधान एपोद का पुत्र हन्नीएल, २४ और एप्रेमियों के गोत्र का प्रधान शिसान का पुत्र कम्पूल, २५ जबूत्नियों के गोत्र का प्रधान पर्नाक का पुत्र एलीसापान, २६ इस्साकारियों के गोत्र का प्रधान अज्जान का पुत्र पलतीएल, २७ अशेरियों के गोत्र का प्रधान शलोमी का पुत्र अहीहृद, २८ और नमालियों के गोत्र का प्रधान अम्मीहृद का पुत्र पद्देहल।” २९ जिन पुस्तों को यहोवा ने कनान देश को इस्माएलियों के लिये बाँटने की आज्ञा दी थी यही हैं।

३५ फिर यहोवा ने, मोआब के अराबा में, यरीहो के पास की यरदन नदी के

तट पर मूसा से कहा, १ “इस्माएलियों को आज्ञा दे, कि तुम अपने-अपने निज भाग की भूमि में से लेवियों को रहने के लिये नगर देना; और नगरों के चारों ओर की चाराइयाँ भी उनको देना। २ नगर तो उनके रहने के लिये, और

चराइयों उनके गाय-बैल और भेड़-बकरी आदि, उनके सब पशुओं के लिये होंगी। ४ और नगरों की चराइयों, जिन्हें तुम लेवियों को दोगे, वह एक-एक नगर की शहरपनाह से बाहर चारों ओर एक-एक हजार हाथ तक की हों। ५ और नगर के बाहर पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की ओर, दो-दो हजार हाथ इस रीति से नापना कि नगर बीचों बीच हो; लेवियों के एक-एक नगर की चराइ इतनी ही भूमि की हो। ६ और जो नगर तुम लेवियों को दोगे उनमें से छः शरणनगर हों, जिन्हें तुम को खनी के भागने के लिये ठहराना होगा, और उनसे अधिक बयालीस नगर और भी देना। ७ जिनते नगर तुम लेवियों को दोगे वे सब अड़तालीस हों, और उनके साथ चराइयों देना। ८ और जो नगर तुम इमाएलियों की निज भूमि में से दो, वे जिनके बहुत नगर हों उनसे बहुत, और जिनके थोड़े नगर हों उनसे थोड़े लेकर देना; सब अपने-अपने नगरों में से लेवियों को अपने ही अपने भाग के अनुसार दें।” ९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, १० “इमाएलियों से कह: जब तुम यरदन पार होकर कनान देश में पहुँचो, ११ तक ऐसे नगर ठहराना जो तुम्हारे लिये शरणनगर हों, कि जो कोई किसी को भूल से मारकर खनी ठहरा हो वह वहाँ भाग जाए। १२ वे नगर तुम्हारे निमित्त पलटा लेनेवाले से शरण लेने के काम आएँ, कि जब तक खनी न्याय के लिये मण्डली के सामने खड़ा न हो तब तक वह न मार डाला जाए। १३ और शरण के जो नगर तुम दोगे वे छः हों। १४ तीन नगर तो यरदन के इस पार, और तीन कनान देश में देना; शरणनगर इतने ही हों। १५ ये छहों नगर इमाएलियों के और उनके बीच रहनेवाले परदेशियों के लिये भी शरणस्थान ठहरें, कि जो कोई किसी को भूल से मार डाले वह वहाँ भाग जाए। १६ “परन्तु यदि कोई किसी को लोहे के लिये ही विधियार से ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो वह खनी ठहरेगा; और वह खनी अवश्य मार डाला जाए। १७ और यदि कोई ऐसा पत्थर हाथ में लेकर, जिससे कोई मर सकता है, किसी को मारे, और वह मर जाए, तो वह भी खनी ठहरेगा; और वह खनी अवश्य मार डाला जाए। १८ या कोई हाथ में ऐसी लकड़ी लेकर, जिससे कोई मर सकता है, किसी को मारे, और वह मर जाए, तो वह भी खनी ठहरेगा; और वह खनी अवश्य मार डाला जाए। १९ लह का पलटा लेनेवाला आप ही उस खनी को मार डाले; जब भी वह मिलते तब ही वह उसे मार डाले। २० और यदि कोई किसी को बैर से ढकेल दे, या घात लगाकर कछ उस पर ऐसे फेंक दे कि वह मर जाए, २१ या शत्रुता से उसको अपने हाथ से ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो जिसने मारा हो वह अवश्य मार डाला जाए; वह खनी ठहरेगा; लह का पलटा लेनेवाला जब भी वह खनी उसे मिल जाए तब ही उसको मार डाले। २२ “परन्तु यदि कोई किसी को बिना सोचे, और बिना शत्रुता रखे ढकेल दे, या बिना घात लगाए उस पर कुछ फेंक दे, २३ या ऐसा कोई पत्थर लेकर, जिससे कोई मर सकता है, दूसरे को बिना देखे उस पर फेंक दे, और वह मर जाए, परन्तु वह न उसका शत्रु हो, और न उसकी हानि का खोजी रहा हो; २४ तो मण्डली मारनेवाले और लह का पलटा लेनेवाले के बीच इन नियमों के अनुसार न्याय करें; २५ और मण्डली उस खनी को लह के पलटा लेनेवाले के हाथ से बचाकर उस शरणनगर में जहाँ वह पहले भाग गया हो लौटा दे, और जब तक पवित्र तेल से अभिषेक किया हुआ महायाजक न मर जाए तब तक वह वही रहे। २६ परन्तु यदि वह खनी उस शरणनगर की सीमा से जिसमें वह भाग गया हो बाहर निकलकर और कहीं जाए, २७ और लह का पलटा लेनेवाला उसको शरणनगर की सीमा के बाहर कहीं पाकर मार डाले, तो वह लह बहाने का दोषी न ठहरे। २८ क्योंकि खनी की महायाजक की मृत्यु तक शरणनगर में रहना चाहिये; और महायाजक के मरने के पश्चात् वह अपनी निज भूमि को लौट सकेगा। २९ “तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में तुम्हारे सब रहने के

स्थानों में न्याय की यह विधि होगी। ३० और जो कोई किसी मनुष्य को मार डाले वह साक्षियों के कहने पर मार डाला जाए, परन्तु एक ही साक्षी की साक्षी से कोई न मार डाला जाए। ३१ और जो खनी प्राणदण्ड के योग्य ठहरे उससे प्राणदण्ड के बदले में जुर्माना न लेना; वह अवश्य मार डाला जाए। ३२ और जो किसी शरणनगर में भागा हो उसके लिये भी इस मतलब से जुर्माना न लेना, कि वह याजक के मरने से पहले फिर अपने देश में रहने को लौटने पाए। ३३ इसलिए जिस देश में तुम रहेगे उसको अशुद्ध न करना; खन से तो देश अशुद्ध हो जाता है, और जिस देश में जब खन किया जाए तब केवल खनी के लह बहाने ही से उस देश का प्रायश्चित हो सकता है। ३४ जिस देश में तुम निवास करेगे उसके बीच मैं रहूँगा, उसको अशुद्ध न करना; मैं यहोवा तो इमाएलियों के बीच रहता हूँ।”

३५ फिर यसुफियों के कलों में से गिलाद, जो माकीा का पुत्र और मनशे का पोता था, उसके बंश के कुल के पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुष्प मूसा के समीप जाकर उन प्रधानों के सामने, जो इमाएलियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुष्प थे, कहने लगे, १ “यहोवा ने हमारे प्रभु को आज्ञा दी थी, कि इमाएलियों को चिट्ठी डालकर देश बैठ देना; और फिर यहोवा की यह भी आज्ञा हमारे प्रभु को मिली, कि हमारे सगोत्री सलोफाद का भाग उसकी बेटियों को देना। २ पर यदि वे इमाएलियों के और किसी गोत्र के पुरुषों से ब्याही जाएँ, तो उनका भाग हमारे पितरों के भाग से छूट जाएगा, और जिस गोत्र में वे ब्याही जाएँ उसी गोत्र के भाग में मिल जाएगा; तब हमारा भाग घट जाएगा। ३ और जब इमाएलियों की जुबली होगी, तब जिस गोत्र में वे ब्याही जाएँ उसके भाग में उनका भाग पक्की रीति से मिल जाएगा; और वह हमारे पितरों के गोत्र के भाग से सदा के लिये छूट जाएगा।” ४ तब यहोवा से आज्ञा पाकर मूसा ने इमाएलियों से कहा, “यसुफियों के गोत्री ठीक कहते हैं। ५ सलोफाद की बेटियों के विषय में यहोवा ने यह आज्ञा दी है, कि जो वर जिसकी दृष्टि में अच्छा लगे वह उसी से ब्याही जाएँ; परन्तु वे अपने मूलपुस्प ही के गोत्र के कुल में ब्याही जाएँ। ६ और इमाएलियों के किसी गोत्र का भाग दूसरे के गोत्र के भाग में मिलने पाएँ; इमाएली अपने-अपने मूलपुस्प के गोत्र के भाग पर बने रहें। ७ और इमाएलियों के किसी गोत्र में किसी की बेटी हो जो भाग पानेवाली हो, वह अपने ही मूलपुस्प के गोत्र के किसी पुष्प से ब्याही जाए, इसलिए कि इमाएली अपने-अपने मूलपुस्प के भाग के अधिकारी रहें। ८ किसी गोत्र का भाग दूसरे गोत्र के भाग में मिलने न पाएँ; इमाएलियों के एक-एक गोत्र के लोग अपने-अपने भाग पर बने रहें।” ९ यहोवा की आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी सलोफाद की बेटियों ने किया। १० अर्थात् महला, तिर्सा, होगला, मिल्का, और नोवा, जो सलोफाद की बेटियाँ थीं, उन्होंने अपने चचेरे भाइयों से ब्याह किया। ११ वे यसुफ के पुत्र मनशे के बंश के कलों में ब्याही गईं, और उनका भाग उनके मूलपुस्प के कुल के गोत्र के अधिकार में बना रहा। १२ जो आज्ञा और नियम यहोवा ने मोआब के अमाबा में यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर मूसा के द्वारा इमाएलियों को दिए वे ये ही हैं।

व्यवस्था विवरण

१ जो बातें मूसा ने येरदन के पार जंगल में, अर्थात् सूफ़ के सामने के अराबा में, और पारान और तोपेल के बीच, और लाबान हस्सेरोत और दीजाहाब में, सारे इमारएलियों से कही वे ये हैं। २ होरेब से कादेशबर्ने तक सेईर पहाड़ का मार्ग ग्याह दिन का है। ३ चालीसवें वर्ष के ग्यारहवें महीने के पहले दिन को जो कुछ यहोवा ने मूसा को इमारएलियों से कहने की आज्ञा दी थी, उसके अनुसार मूसा उन्से ये बातें कहने लगा। ४ अर्थात् जब मूसा ने एमोरियों के राजा हेशबोनवारी सीहेन और बाशान के राजा अश्टरोतवारी ओग को एंड्रें में मार डाला, ५ उसके बाद येरदन के पार मोआब देश में वह व्यवस्था का विवरण ऐसे कहने लगा, ६ “हमारे परमेश्वर यहोवा ने होरेब के पास हम से कहा था, ‘तुम लोगों को इस पहाड़ के पास रहते हुए बहुत दिन हो गए हैं; ७ इसलिए अब यहाँ से कूच करो, और एमोरियों के पहाड़ी देश को, और क्या अराबा में, क्या पहाड़ों में, क्या नीचे के देश में, क्या दक्षिण देश में, क्या समुद्र के किनारे, जितने लोग एमोरियों के पास रहते हैं उनके देश को, अर्थात् लबानोन पर्वत तक और फरात नाम महानद तक रहनेवाले कनानियों के देश को भी चले जाओ। ८ सनो, मैं उस देश को तुम्हारे सामने किए देता हूँ; ९ जिस देश के विषय यहोवा ने अद्वाहम, इस्हाहक, और याकूब, तुम्हारे पितरों से शपथ खाकर कहा था कि मैं इसे तुम को और तुम्हारे बाट तुम्हारे बंश को दृঁगा, उसको अब जाकर अपने अधिकार में कर लो।” १० “फिर उसी समय मैंने तुम से कहा, ‘मैं तुम्हारा भार अकेला नहीं उठा सकता; ११ क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को यहाँ तक बढ़ाया है कि तुम गिनती में आज आकाश के तारों के समान हो गए हो। १२ तुम्हारे पितरों का परमेश्वर तुम को हजारगुणा और भी बढ़ाए, और अपने वचन के अनुसार तुम को आशीष भी देता रहे! १३ परन्तु तुम्हारे झांझट, और भार, और झगड़ों को मैं अकेला कहाँ तक सह सकता हूँ। १४ इसलिए तुम अपने-अपने गोत्र में से एक-एक बुद्धिमान और समझदार और प्रसिद्ध पुस्त चुन लो, और मैं उन्हें तुम पर मुखिया ठहराऊँगा।” १५ इसके उत्तर में तुम ने मुझसे कहा, ‘जो कुछ तू हम से कहता है उसका करना अच्छा है।’ १६ इसलिए मैंने तुम्हारे गोत्रों के मुख्य पुस्तों को जो बुद्धिमान और प्रसिद्ध पुस्त थे चुनकर तुम पर मुखिया नियुक्त किया, अर्थात् हजार-हजार, सौ-सौ, पचास-पचास, और दस-दस के ऊपर प्रधान और तुम्हारे गोत्रों के सरदार भी नियुक्त किए। १७ और उस समय मैंने तुम्हारे न्यायियों को आज्ञा दी, ‘तुम अपने भाइयों के मुकद्दमे सुना करो, और उनके बीच और उनके पड़ोसियों और परदेशियों के बीच भी धार्मिकता से न्याय किया करो। १८ न्याय करते समय किसी का पक्ष न करना; जैसे बड़े की बैसे ही छोटे मनुष्य की भी सुनना; किसी का मुँह देखकर न डरना, क्योंकि न्याय परमेश्वर का काम है; और जो मुकद्दमा तुम्हारे लिये कठिन हो, वह मैंने पास ले आना, और मैं उसे सुरुँगा।” १९ और मैंने उसी समय तुम्हारे सारे कर्तव्य तुम को बता दिए। २० “हम होरेब से कूच करके अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार उस सारे बड़े और भयानक जंगल में होकर चले, जिसे तुम ने एमोरियों के पहाड़ी देश के मार्ग में देखा, और हम कादेशबर्ने तक आए। २१ वहाँ मैंने तुम से कहा, ‘तुम एमोरियों के पहाड़ी देश तक आ गए हो जिसको हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है। २२ देखो, उस देश को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सामने किए देता है, इसलिए अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उस पर चढ़ो, और उसे अपने अधिकार में ले लो; न तो तुम डरो और न तुम्हारा मन कच्चा हो।” २३ और तुम सब मैंने पास आकर कहने लगे, ‘हम अपने आगे पुस्तों को भेज देंगे, जो उस देश का पता लागकर हमको यह सन्देश दें, कि

कौन से मार्ग से होकर चलना होगा और किस-किस नगर में प्रवेश करना पड़ेगा?’ २४ इस बात से प्रसन्न होकर मैंने तुम में से बारह पुस्त, अर्थात् हर गोत्र में से एक पुस्त चुन लिया; २५ और वे पहाड़ पर चढ़ गए, और एश्कोल नामक नाले को पहुँचकर उस देश का भेद लिया। २६ और उस देश के फलों में से कुछ हाथ में लेकर हमारे पास आए, और हमको यह सन्देश दिया, ‘जो देश हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है वह अच्छा है।’ २७ “तो भी तुम ने वहाँ जाने से मना किया, किन्तु अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के विस्तृ होकर २८ अपने-अपने डेरे में यह कहकर कुड़कुड़ने लगे, ‘यहोवा हम से बैर रखता है, इस कारण हमको मिस्त देश से निकाल ले आया है, कि हमको एमोरियों के वश में करके हमारा सत्यानाश कर डाले। २९ हम किधर जाएँ? हमारे भाइयों ने यह कहकर हमारे मन को कच्चा कर दिया है कि वहाँ के लोग हम से बड़े और लम्बे हैं; और वहाँ के नगर बड़े-बड़े हैं, और उनकी शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं; और हमने वहाँ अनाकवंशियों को भी देखा है।’ ३० मैंने तुम से कहा, ‘उनके कारण भय मत खाओ और न डरो। ३१ तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जो तुम्हारे आगे-आगे चलता है वह आप तुम्हारी ओर से लड़ेगा, जैसे कि उसने मिस्त में तुम्हारे देखते तुम्हारे लिये किया; ३२ फिर तुम ने जंगल में भी देखा कि जिस रीति कोई पुस्त अपने लड़के को उठाए चलता है, उसी रीति हमारा परमेश्वर यहोवा हमको इस स्थान पर पहुँचने तक, उस सारे मार्ग में जिससे हम आए हैं, उठाए रहा।’ ३३ इस बात पर भी तुम ने अपने उस परमेश्वर यहोवा पर विच्वास नहीं किया, ३४ जो तुम्हारे आगे-आगे इसलिए चलता रहा कि डेरे डालने का स्थान तुम्हारे लिये ढूँढ़े, और रात को आग में और दिन को बादल में प्रगट होकर चला, ताकि तुम को वह मार्ग दिखाए जिससे तुम चलो। ३५ “परन्तु तुम्हारी वे बातें सुनकर यहोवा का कोप भड़क उठा, और उसने यह शपथ खाई, ३६ ‘निश्चय इस बुरी पीढ़ी के मनुष्यों में से एक भी उस अच्छे देश को देखें न पाएं, जिसे मैंने उनके पितरों को देने की शपथ खाई थी। ३७ केवल युनुने का पुत्र कालेब ही उसे देखें पाएंगा, और जिस भूमि पर उसके पांच पढ़े हैं उसे मैं उसको और उसके बंश को भी दृঁगा; क्योंकि वह मेरे पीछे पूरी रीति से हो लिया है।’ ३८ और मुझ पर भी यहोवा तुम्हारे कारण कोधित हुआ, और यह कहा, ‘तू भी वहाँ जाने न पाएंगा; ३९ नन का पुत्र योशू जो भैरे सामने खड़ा रहता है, वह तो वहाँ जाने पाएंगा; इसलिए तू उसको हियाव दे, क्योंकि उस देश को इमारएलियों के अधिकार में वही कर देगा। ४० फिर तुम्हारे बाल-बच्चे जिनके विषय में तुम कहते हो कि ये लूट में चले जाएंगे, और तुम्हारे जो बच्चे अभी भले बुरे का भेद नहीं जानते, वे वहाँ प्रवेश करेंगे, और उनको मैं वह देश दृঁगा, और वे उसके अधिकारी होंगे। ४१ परन्तु तुम लोग घूमकर कूच करो, और लाल समुद्र के मार्ग से जंगल की ओर जाओ।’ ४२ “तब तुम ने मुझसे कहा, ‘हमने यहोवा के विस्तृ पाप किया है, अब हम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार चढ़ाई करेंगे और लड़ेंगे।’ तब तुम अपने-अपने हियाव बाँधकर पहाड़ पर बिना सोचे समझे चढ़ने को तैयार हो गए। ४३ तब यह कह दे कि तुम मत चढ़ो, और न लड़ो; क्योंकि मैं तुम्हारे मध्य में नहीं हूँ; कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने शत्रुओं से हार जाओ।’ ४४ यह बात मैंने तुम से कह दी, परन्तु तुम ने मानी; किन्तु डिठाई से यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन करके पहाड़ पर चढ़ गए। ४५ तब उस पहाड़ के निवासी एमोरियों ने तुम्हारा सामना करने को निकलकर मध्यमुकियों के समान तुम्हारा पीछा किया, और सेर्ई देश के होर्मा तक तुम्हें मारते-मारते चले आए। ४६ तब तुम लौटकर यहोवा के सामने रोने लगे; परन्तु यहोवा ने तुम्हारी न सुनी, न तुम्हारी बातों पर कान लगाया। ४७ और तुम कादेश में बहुत दिनों तक रहे, यहाँ तक कि एक युग हो गया।

२ “तब उस आज्ञा के अनुसार, जो यहोवा ने मुझ को दी थी, हमने घूमकर कूच किया, और लाल समुद्र के मार्ग के जंगल की ओर गए; और बहुत दिन तक सेईर पहाड़ के बाहर-बाहर चलते रहे। ३ तब यहोवा ने मुझसे कहा, ‘तुम लोगों को इस पहाड़ के बाहर-बाहर चलते हुए बहुत दिन बीत गए, अब घमकर उत्तर की ओर चलो। ४ और तू प्रजा के लोगों को मेरी यह आज्ञा सुना, कि तुम सेईर के निवासी अपने भाई एसावियों की सीमा के पास होकर जाने पर हो; और वे तुम से डर जाएँ। इसलिए तुम बहुत चौकस रहो; ५ उनसे लडाई न छेड़ना; क्योंकि उनके देश में से मैं तम्हें पाँव रखने की जगह तक न दूँगा, इस कारण कि मैंने सेईर पर्वत एसावियों के अधिकार में कर दिया है। ६ तम उनसे भोजन स्पये से मोल लेकर खा सकोगे, और स्पया देकर कुओं से पानी भरकर पी सकोगे। ७ क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे हाथों के सब कामों के विषय तुम्हें आशीर देता आया है, इस भारी जंगल में तुम्हारा चलना फिरना वह जानता है; इन चालीस वर्षों में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग-संग रहा है; और तुम को कुछ घटी नहीं हुई।’ ८ अतः हम सेईर निवासी अपने भाई एसावियों के पास से होकर, अराबा के मार्ग, और एलत और एस्योनगेबेर को पिछे छोड़कर चलो। ‘फिर हम मुड़कर मोअब के जंगल के मार्ग से होकर चलो। ९ और यहोवा ने मुझसे कहा, ‘मोआवियों को न सताना और न लडाई छेड़ना, क्योंकि मैं उनके देश में से कुछ भी नहीं तेरे अधिकार में न कर दूँगा क्योंकि मैंने आर को लूट के वंशजों के अधिकार में किया है। १० (पुराने दिनों में वहाँ ऐसी लोग बसे हुए थे, जो अनाकियों के समान बलवन्त और लम्बे-लम्बे और गिनती में बहुत थे; ११ और अनाकियों के समान वे भी रपाई गिने जाते थे, परन्तु मोआबी उहाँ ऐसी कहते हैं। १२ और पुराने दिनों में सेईर में होरी लोग बसे हुए थे, परन्तु एसावियों ने उनको उस देश से निकाल दिया, और अपने सामने से नाश करके उनके स्थान पर आप बस गए; जैसे कि इस्साएलियों ने यहोवा के दिए हुए अपने अधिकार के देश में किया।) १३ अब तुम लोग कूच करके जेरेट नदी के पार जाओ।’ तब हम जेरेट नदी के पार आए। १४ और हमारे कोदेशवर्ण को छोड़ने से लेकर जेरेट नदी पार होने तक अडतीस वर्ष बीत गए, उस बीच में यहोवा की शपथ के अनुसार उस पीढ़ी के सब येहो छावनी में से नाश हो गए। १५ और जब तक वे नाश न हुए तब तक यहोवा का हाथ उन्हें छावनी में से मिटा डालने के लिये उनके विस्तृ बढ़ा ही रहा। १६ “जब सब येहो मरते-मरते लोगों के बीच में से नाश हो गए, १७ तब यहोवा ने मुझसे कहा, १८ ‘अब मोअब की सीमा, अर्थात् आर को पार कर, १९ और जब तू अम्मोनियों के सामने जाकर उनके निकट पहुँचे, तब उनको न सताना और न छेड़ना, क्योंकि मैं अम्मोनियों के देश में से कुछ भी तेरे अधिकार में न करूँगा, क्योंकि मैंने उसे लूट के वंशजों के अधिकार में कर दिया है। २० (वह देश भी रपाईयों का गिना जाता था, क्योंकि पुराने दिनों में रपाई, जिन्हें अम्मोनी जमजुमी कहते थे, वे वहाँ रहते थे; २१ वे भी अनाकियों के समान बलवान और लम्बे-लम्बे और गिनती में बहुत थे; परन्तु यहोवा ने उनको अम्मोनियों के सामने से नाश कर डाला, और उन्होंने उनको उस देश से निकाल दिया, और उनके स्थान पर आप रहने लगे; २२ जैसे कि उसने सेईर के निवासी एसावियों के सामने से होरियों को नाश किया, और उन्होंने उनको उस देश से निकाल दिया, और आज तक उनके स्थान पर वे आप निवास करते हैं। २३ वैसा ही अव्ययों को, जो गाजा नगर तक गाँवों में बसे हुए थे, उनको कसोरियों ने जो कसोर से निकले थे नाश किया, और उनके स्थान पर आप रहने लगे।) २४ अब तुम लोग उठकर कूच करो, और अर्नोन के नाले के पार चलो: सुन, मैं देश समेत हेशबोन के राजा एमोरी सीहोन को तेरे हाथ में कर देता हूँ; इसलिए उस देश को अपने अधिकार में लेना आरम्भ करो, और उस राजा से युद्ध छेड़ दो। २५ और जितने लोग धरती पर रहते हैं उन सभी के मन में मैं आज ही के दिन से तेरे कारण डर और थरथराहट समवाने लगूँगा; वे तेरा समाचार पाकर तेरे डर के मारे कौपेंगे और पिंडित होंगे।” २६ “अतः मैंने कल्देमोत नामक जंगल से हेशबोन के राजा सीहोन के पास मेल की ये बातें कहने को दूत भेजे: २७ ‘मुझे अपने देश में से होकर जाने दे, मैं राजपथ पर से चला जाऊँगा, और दाँएँ और बाँहँ हाथ न मुड़ूँगा। २८ तू स्पया लेकर मेरे हाथ भोजनवस्तु देना कि मैं खाऊँग, और पानी भी स्पया लेकर मुझ को देना कि मैं पीऊँगँ; केवल मुझे पाँव-पाँव चले जाने दे, २९ जैसा सेईर के निवासी एसावियों ने और आर के निवासी मोआवियों ने मुझसे किया, वैसा ही तू भी मुझसे कर, इस रीति मैं यदरन पार होकर उस देश में पहुँचूँगा जो हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है।’ ३० परन्तु हेशबोन के राजा सीहोन ने हमको अपने देश में से होकर चलने न दिया; क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उसका चित ठिठोर और उसका मन हठीला कर दिया था, इसलिए कि उसको तुम्हारे हाथ में कर दे, जैसा कि आज प्रगट है। ३१ और यहोवा ने मुझसे कहा, ‘सुन, मैं देश समेत सीहोन को तेरे वश में कर देने पर हूँ; उस देश को अपने अधिकार में लेना आरम्भ कर।’ ३२ तब सीहोन अपनी सारी सेना समेत निकल आया, और हमारा सामना करके युद्ध करने को यहस तक चढ़ आया। ३३ और हमारे परमेश्वर यहोवा ने उसको हमारे द्वारा हारा दिया, और हमने उसको पत्रों और सारी सेना समेत मार डाला। ३४ और उसी समय हमने उसके सारे नगर ले लिए और एक-एक बरे हुए नगर की छियों और बाल-बच्चों समेत यहाँ तक सत्यानाश किया कि कोई न छटा; ३५ परन्तु पशुओं को हमने अपना कर लिया, और उन नगरों की लूट भी हमने ले ली जिनको हमने जीत लिया था। ३६ अर्नोन के नाले के छोरवाले अप्रोए नगर से लेकर, और उस नाले में के नगर से लेकर, पिलाद तक कोई नगर ऐसा ऊँचा न रहा जो हमारे सामने ठहर सकता था; क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा ने सभी को हमारे वश में कर दिया। ३७ परन्तु हम अम्मोनियों के देश के निकट, वरन् यब्बोक नदी के उस पार जितना देश है, और पहाड़ी देश के नगर जहाँ जाने से हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमको मना किया था, वहाँ हम नहीं गए।

३ “तब हम मुड़कर बाशान के मार्ग से चढ़ चले, और बाशान का ओग नामक राजा अपनी सारी सेना समेत हमारा सामना करने को निकल आया, कि एर्देई में युद्ध करे। ४ तब यहोवा ने मुझसे कहा, ‘उससे मत डर, क्योंकि मैं उसको सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ में किए देता हूँ, और जैसा तूने हेशबोन के निवासी एमोरियों के राजा सीहोन से किया है वैसा ही उससे भी करना।’ ५ इस प्रकार हमारे परमेश्वर यहोवा ने सारी सेना समेत बाशान के राजा ओग को भी हमारे हाथ में कर दिया; और हम उसको यहाँ तक मारते रहे कि उनमें से कोई भी न बच पाया। ६ उसी समय हमने उनके सारे नगरों को ले लिया, कोई ऐसा नगर न रह गया जिसे हमने उनसे न ले लिया हो, इस रीति अर्गेब का सारा देश, जो बाशान में ओग के राज्य में था और उसमें साठ नगर थे, वह हमारे वश में आ गया। ७ ये सब नगर गढ़वाले थे, और उनके ऊँची-ऊँची शहरपनाह, और फाटक, और बेंडे थे, और इनको छोड़ बिना शहरपनाह के भी बहुत से नगर थे। ८ और जैसा हमने हेशबोन के राजा सीहोन के नारों से किया था वैसा ही हमने इन नगरों से भी किया, अर्थात् सब बसे हुए नारों को छियों और बाल-बच्चों समेत सत्यानाश कर डाला। ९ परन्तु सब घेरेलू पशु और नगरों की लूट हमने अपनी कर ली। १० इस प्रकार हमने उस समय यदरन के इस पार रहनेवाले एमोरियों के दोनों राजाओं के हाथ से अर्नोन के नाले से लेकर हेमीन पर्वत तक का देश ले लिया। ११ (हेर्मोन को सीदोनी लोग सिर्योन, और एसोरी लोग सनीर कहते हैं।) १२ समर्थ देश के सब नगर, और

सारा गिलाद, और सल्का, और एट्रेईं तक जो ओग के राज्य के नगर थे, सारा बाशान हमारे बश में आ गया। ११ जो रपाई रह गए थे, उनमें से केवल बाशान का राजा ओग रह गया था, उसकी चारपाई जो लोहे की है वह तो अम्मोनियों के रब्बाह नगर में पड़ी है, साथारण पुश्क के हाथ के हिसाब से उसकी लम्बाई नौ हाथ की और चौड़ाई चार हाथ की है। १२ “जो देश हमें उस समय अपने अधिकार में ले लिया वह यह है, अर्थात् अर्नोन के नाले के किन्नरवाले अरोए नगर से लेकर सब नगरों समेत गिलाद के पहाड़ी देश का आधा भाग, जिसे मैंने स्टेनियों और गादियों को दे दिया, १३ और गिलाद का बचा हुआ भाग, और सारा बाशान, अर्थात् अर्नीब का सारा देश जो ओग के राज्य में था, इन्हें मैंने मनश्शे के आधे गोत्र को दे दिया। (सारा बाशान तो रपाइयों का देश कहलाता है।) १४ और मनश्शेर्इ याईर ने गश्शरियों और माकावासियों की सीमा तक अर्नीब का सारा देश ले लिया, और बाशान के नगरों का नाम अपने नाम पर हज्जोल्याईर रखा, और वही नाम आज तक बना है।) १५ और मैंने गिलाद देश मार्कीरों को दे दिया, १६ और रुस्टेनियों और गादियों को मैंने गिलाद से लेकर अर्नोन के नाले तक का देश दे दिया, अर्थात् उस नाले का बीच उनकी सीमा ठहराया, और यब्बोक नदी तक जो अम्मोनियों की सीमा है, १७ और किन्नेरत से लेकर पिसगा की ढलान के नीचे के अराबा के ताल तक, जो खारा ताल भी कहलाता है, अराबा और यरदन की पूर्व की ओर का सारा देश भी मैंने उन्हीं को दे दिया। १८ “उस समय मैंने तुहें यह आज्ञा दी, ‘तुम्हरे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें यह देश दिया है कि उसे अपने अधिकार में रखो; तुम सब योद्धा हथियार-बन्द होकर अपने भाई इस्माएलियों के आगे-आगे पार चलो। १९ परन्तु तुम्हारी शियाँ, और बाल-बच्चे, और पशु, जिन्हें मैं जानता हूँ कि बहुत से हैं, वह सब तुम्हरे नगरों में जो मैंने तुहें दिए हैं रह जाएँ। २० और जब यहोवा तुम्हरे भाइयों को वैसा विश्वास दे जैसा कि उसने तुम को दिया है, और वे उस देश के अधिकारी हो जाएँ जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उहें यरदन पार देता है; तब तुम भी अपने-अपने अधिकार की भूमि पर जो मैंने तुम्हें दी है लौटोगे।” २१ फिर मैंने उसी समय यहोश् से चिताकर कहा, ‘तू अपनी आँखों से देखा है कि तै तपेश्वर यहोवा ने इन दोनों राजाओं से क्या-क्या किया है, वैसा ही यहोवा उन सब राज्यों से करेगा जिनमें तू पार होकर जाएगा। २२ उसने न डरना; क्योंकि जो तुम्हारी ओर से लड़नेवाला है वह तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है।’ २३ “उसी समय मैंने यहोवा से गिलिडाकर बिनती की, २४ ‘हे प्रभु यहोवा, तू अपने दास को अपनी महिमा और बलवन्त हाथ दिखाने लगा है; स्वर्ग में और पृथ्वी पर ऐसा कौन देवता है जो तेरे से काम और पराक्रम के कर्म कर सके?’ २५ इसलिए मुझे पार जाने दे कि यरदन पार के उस उत्तम देश को, अर्थात् उस उत्तम पहाड़ और लबानोन को भी देखें पाँऊ।’ २६ परन्तु यहोवा तुम्हरे कारण मुझसे स्थू हो गया, और मेरी न सुनी; किन्तु यहोवा ने मुझसे कहा, ‘बस कर; इस विषय में फिर कभी मुझसे बातें न करना। २७ पिसगा पहाड़ की चोटी पर चढ़ जा, और पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, चारों ओर दृष्टि करके उस देश को देख ले; क्योंकि तू इस यरदन के पार जाने न पाएगा। २८ और यहोश् को आज्ञा दे, और उसे ढाल्स देकर टूट कर; क्योंकि इन लोगों के आगे-आगे वही पार जाएगा, और जो देश तू देखेगा उसको वही उनका निज भाग करा देगा।’ २९ तब हम बैतपोर के सामने की तराई में ठहरे।

४ “अब, हे इस्माएल, जो-जो विधि और नियम मैं तुम्हें सिखाना चाहता हूँ उन्हें सुन लो, और उन पर चलो; जिससे तुम जीवित रहो, और जो देश तुम्हारे पितरों का परमेश्वर यहोवा तुहें देता है उसमें जाकर उसके अधिकारी

हो जाओ। २ जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूँ उसमें न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना; तुम्हरे परमेश्वर यहोवा की जो-जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूँ उन्हें तुम मानना ३ तुम ने तो अपनी आँखों से देखा है कि बालपोर के कारण यहोवा ने क्या-क्या किया; अर्थात् जितने मनुज्य बालपोर के पीछे हो लिये थे उन सभी को तुम्हरे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हरे बीच में से सत्यानाश कर डाला; ४ परन्तु तुम जो अपने परमेश्वर यहोवा के साथ लिपटे रहे हो सब के सब आज तक जीवित हो। ५ सुनो, मैंने तो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार तुहें विधि और नियम सिखाए हैं, कि जिस देश के अधिकारी होने जाते हो उसमें तुम उनके अनुसार चलो। ६ इसलिए तुम उनको धरण करना और मानना; क्योंकि और देशों के लोगों के सामने तुम्हारी बुद्धि और समझ इसी से प्रगट होगी, अर्थात् वे इन सब विधियों को सुनकर कहेंगे, कि निश्चय यह बड़ी जाति बुद्धिमान और समझदार है। ७ देखो, कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसका देवता उसके ऐसे समीप रहता हो जैसा हमारा परमेश्वर यहोवा, जब भी हम उसको पुकारते हैं? ८ फिर कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसके पास ऐसी धर्मसंघ विधि और नियम हों, जैसी कि यह सारी व्यवस्था जिसे मैं आज तुम्हरे सामने रखता हूँ? ९ “यह अत्यन्त अवश्यक है कि तुम अपने विषय में सचेत रहो, और अपने मन की बड़ी चौकसी करो, कहीं ऐसा न हो कि जो-जो बातें तुम ने अपनी आँखों से देखी उनको भल जाओ, और वह जीवन भर के लिये तुम्हरे मन से जाती रहें; किन्तु तुम उहें अपने बेटों पोतों को सिखाना। १० विशेष करके उस दिन की बातें जिसमें तुम होरेब के पास अपने परमेश्वर यहोवा के सामने छड़े थे, जब यहोवा ने मुझसे कहा था, ‘उन लोगों को मेरे पास इकट्ठा कर कि मैं उन्हें अपने बचन सुनाऊँ, जिससे वे सीखें, ताकि जितने दिन वे पृथ्वी पर जीवित रहें उतने दिन मेरा भय मानने रहें, और अपने बाल-बच्चों को भी यही सिखाएँ।’ ११ तब तुम समीप जाकर उस पर्वत के नीचे खड़े हुए, और वह पहाड़ आग से धृत रहा था, और उसकी लौ आकाश तक पहुँचती थी, और उसके चारों ओर अंधियारा और बालद, और धोर अंधकार छाया हुआ था। १२ तब यहोवा ने उस आग के बीच में से तुम से बातें की; बातों का शब्द तो तुम को सुनाइ पड़ा, परन्तु कोई रूप न देखा; केवल शब्द ही शब्द सुन पड़ा। १३ और उसने तुम को अपनी वाचा के दसों बचन बताकर उनके मानने की आज्ञा दी; और उहें पथर की दो पटियाओं पर लिख दिया। १४ और मुझ को यहोवा ने उसी समय तुम्हें विधि और नियम सिखाने की आज्ञा दी, इसलिए कि जिस देश के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो उसमें तुम उनको माना करो। १५ “इसलिए तुम अपने विषय में बहुत सावधान रहना। क्योंकि जब यहोवा ने तुम से होरेब पर्वत पर आग के बीच में से बातें की, तब तुम को कोई रूप न दिखाई पड़ा, १६ कहीं ऐसा न हो कि तुम बिगड़कर चाहे पृथ्वी चाहे झीं के, १७ चाहे पृथ्वी पर चलनेवाले किसी पशु, चाहे आकाश में उड़नेवाले किसी पक्षी के। १८ “चाहे भूमि पर रेंगेवाले किसी जन्तु, चाहे पृथ्वी के जल में रहनेवाली किसी मछली के स्पू की कोई मृति खोटकर बना लो, १९ या जब तुम आकाश की ओर आँखें उड़ाकर, सूर्य, चन्द्रमा, और तारों की, अर्थात् आकाश का सारा तारागण देखो, तब बहक कर उहें दण्डवत् करके उनकी सेवा करने लगो, जिनको तुम्हरे परमेश्वर यहोवा ने धरती पर के सब देशवालों के लिये रखा है। २० और तुम को यहोवा लोहे के भेटे के सरीखे मिस्र देश से निकाल ले आया है, इसलिए कि तुम उसका प्रजास्ती निज भाग ठहरो, जैसा आज प्रगत है। २१ फिर तुम्हरे कारण यहोवा ने मुझसे क्रोध करके यह शपथ खाई, ‘तू यरदन पार जाने न पाएगा, और जो उत्तम देश इस्माएलियों का परमेश्वर यहोवा उहें उनका निज भाग करके देता है, उसमें तू प्रवेश करने न पाएगा।’ २२ किन्तु मुझे इसी देश में मरना है, मैं तो यरदन पार नहीं जा

सकता; परन्तु तुम पार जाकर उस उत्तम देश के अधिकारी हो जाओगे। २३ इसलिए अपने विषय में तुम सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम उस बाचा को भूलकर, जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम से बाँधी है, किसी और वस्तु की मृति खोदकर बनाओ, जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को मना किया है। २४ क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा मन करनेवाली आग है; वह जलन रखनेवाला परमेश्वर है। २५ “यदि उस देश में रहते-रहते बहुत दिन बीत जाने पर, और अपने बैटे-पोते उत्पन्न होने पर, तुम बिगड़कर किसी वस्तु के स्पष्ट की मृति खोदकर बनाओ, और इस रीति से अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति बुराई करके उसे अप्रसन्न कर दो, २६ तो मैं आज आकाश और पृथ्वी को तुम्हारे विस्तृ साक्षी करके कहता हूँ, कि जिस देश के अधिकारी होने के लिये तुम यरदन पार जाने पर हो उसमें तुम जल्दी बिल्कुल नाश हो जाओगे; और बहुत दिन रहने न पाओगे, किन्तु पूरी रीति से नहीं हो जाओगे। २७ और यहोवा तुम को देश-देश के लोगों में तिरन-बितर करेगा, और जिन जातियों के बीच यहोवा तुम को पहुँचाएगा उनमें तुम थोड़े ही से रह जाओगे। २८ और वहाँ तुम मनुष्य के बनाए हुए लकड़ी और पत्थर के देवताओं की सेवा करोगे, जो न देखते, और न सुनते, और न खाते, और न सूँचते हैं। २९ परन्तु वहाँ भी यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को छोड़ेगे, तो वह तुम को मिल जाएगा, शर्त यह है कि तुम अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से उसे छोड़ो। ३० अन्त के दिनों में जब तुम संकर्त में पडो, और ये सब विपत्तियाँ तुम पर आ पड़ें, तब तुम अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो और उसकी मानना; ३१ क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु परमेश्वर है, वह तुम को न तो छोड़ेगा और न नष्ट करेगा, और जो बाचा उसने तेरे पितरों से शपथ खाकर बाँधी है उसको नहीं भूलेगा। ३२ “जब से परमेश्वर ने मनुष्य को उत्पन्न करके पृथ्वी पर रखा तब से लेकर त अपने उत्पन्न होने के दिन तक की बातें पूछ, और आकाश के एक छोर से दसरे छोर तक की बातें पूछ, क्या ऐसी बड़ी बात कभी हई या सुने में आई है? ३३ क्या कोई जाति की परमेश्वर की वाणी आग के बीच में से अती ही है सुनकर जीवित रही, जैसे कि तुमें सुनी है? ३४ फिर क्या परमेश्वर ने और किसी जाति को दूसरी जाति के बीच से निकालने को कमर बाँधकर परीक्षा, और चिन्ह, और चमत्कार, और युद्ध, और बलवन्त हाथ, और बढ़ाई ही भुजा से ऐसे बड़े भयानक काम किए, जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मिस्र में तुम्हारे देखते किए? ३५ यह सब तुझको दिखाया गया, इसलिए कि तू जान ले कि यहोवा ही परमेश्वर है; उसको छोड़ और कोई ही ही नहीं। ३६ आकाश में से उसने तुझे अपनी वाणी सुनाई कि तुझे शिक्षा दे; और पृथ्वी पर उसने तुझे अपनी बड़ी आग दिखाई, और उसके बचन आग के बीच में से आते हुए तुझे सुनाई पड़े। ३७ और उसने जो तेरे पितरों से प्रेम रखा, इस कारण उनके पीछे उनके बंश को चुन लिया, और प्रत्यक्ष होकर तुझे अपने बड़े सामर्थ्य के द्वारा मिस्र से इसलिए निकाल लाया, ३८ कि तुझ से बड़ी और सामर्थी जातियों को तेरे आगे से निकालकर तुझे उनके देश में पहुँचाए, और उसे तेरा निज भागकर दे, जैसा आज के दिन दिखाई पड़ता है, ३९ इसलिए आज जान ले, और अपने मन में सोच भी रख, कि ऊपर आकाश में और नीचे पृथ्वी पर यहोवा ही परमेश्वर है; और कोई दूसरा नहीं। ४० और तू उसकी विधियों और आज्ञाओं को जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ मानना, इसलिए कि तेरा और तेरे पीछे तेरे बंश का भी भला हो, और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तेरे बहुत वरन् सदा के लिये हो।” ४१ तब मूसा ने यरदन के पार पूर्व की ओर तीन नगर अलग किए, ४२ इसलिए कि जो कोई बिना जाने और बिना पहले से बैर रखे अपने किसी भाई को मार डाले, वह उनमें से किसी नगर में भाग जाए, और भागकर जीवित रहे ४३ अर्थात् स्वेदियों का बेसर नगर जो जंगल के

समर्थ देश में है, और गादियों के गिलाद का रामोत, और मनशेइयों के बाशान का गोलन। ४४ फिर जो व्यवस्था मूसा ने इसाएलियों को दी वह यह है ४५ ये ही वे चेतावनीयाँ और नियम हैं जिन्हें मूसा ने इसाएलियों को उस सम्पर्क में बहुत सुनाया जब वे मिस्र से निकले थे, ४६ अर्थात् यरदन के पार बैतेपौर के सामने की तराई में, एमोरियों के राजा देशबोनवासी सीहोन के देश में, जिस राजा को उन्होंने मिस्र से निकलने के बाद मारा। ४७ और उन्होंने उसके देश को, और बाशान के राजा ओंग के देश को, अपने वश में कर लिया; यरदन के पार सूर्योदय की ओर रहनेवाले एमोरियों के राजाओं के ये देश थे। ४८ यह देश अर्नोन के नाले के छोपवाले अरोप्य से लेकर सिय्योन पर्वत, जो हेर्मोन भी कहलाता है, ४९ उस पर्वत तक का सारा देश, और पिसगा की ढलान के नीचे के अराबा के ताल तक, यरदन पार पूर्व की ओर का सारा अराबा है। ५० मूसा ने सोरो इसाएलियों को बुलवाकर कहा, “हे इसाएलियों, जो-जो विधि और नियम मैं आज तुम्हें सुनाता हूँ वे सुनो, इसलिए कि उन्हें सीखकर मानने में चौकसी करो। ५१ हमारे परमेश्वर यहोवा ने तो होरेब पर हम से बाचा बाँधा। ५२ इस बाचा को यहोवा ने हमारे पितरों से नहीं, हम ही से बाँधा, जो यहाँ आज के दिन जीवित है। ५३ यहोवा ने उस पर्वत पर आग के बीच में से तुम लोगों से आपने-सामने बातें की; ५४ उस आग के डर के मारे तुम पर्वत पर न चढ़े, इसलिए मैं यहोवा के और तुम्हारे बीच उसका बचन तुम्हें बताने की खड़ा रहा। तब उसने कहा, ५५ तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश में से निकाल लाया है, वह मैं हूँ हूँ। ५६ ‘मुझे छोड़ दूसरों को परमेश्वर करके न मानना।’ ५७ ‘तू अपने लिये कोई मृति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है; ५८ उनको दण्डवत् न करना और न उनकी उपासना करना; व्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रहनेवाला परमेश्वर हूँ, और जो मुझसे बैर रखते हैं उनके बेटों, पोतों, और रपरोपतों को पितरों का दण्ड दिया करता हूँ, ५९ और जो मुझसे प्रेर रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं उन हजारों पर कस्ता किया करता है। ६० ‘तू अपने परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ न लेना; व्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उनको निर्दिष्ट न ठहराएगा।’ ६१ ‘तू विश्वामिदिन को मानकर पवित्र रखना, जैसे तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी।’ ६२ छः दिन तो परिश्रम करके अपना सारा काम-काज करना; ६३ परन्तु सातावं दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्वामिदिन है; उसमें तू किसी भाँति का काम-काज करना, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरा बैल, न तेरा गदहा, न तेरा कोई पशु, न कोई पदेशी भी जो तेरे फाटकों के भीतर हो; जिससे तेरा दास और तेरी दासी भी तेरे समान विश्वामिदिन करे। ६४ और इस बात को स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास था, और वहाँ से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ाई ही भुजा के द्वारा निकाल लाया; इस कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे विश्वामिदिन मानने की आज्ञा देता है। ६५ ‘अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है, जिससे तो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तू बहुत दिन तक रहने पाए, और तेरा भला हो।’ ६६ ‘तू खन न करना।’ ६७ ‘तू व्यभिचार न करना।’ ६८ ‘तू चोरी न करना।’ ६९ ‘तू किसी के विस्तृ झाँठी साक्षी न देना।’ ७० ‘तू न किसी की पत्नी का लालच करना, और न किसी के घर का लालच करना, न उसके खेत का, न उसके दास का, न उसकी दासी का, न उसके बैल या गदहे का, न उसकी किसी और वस्तु का लालच करना।’ ७१ यही वचन यहोवा ने उस पर्वत पर आग, और बादल, और धोर अंधकार के बीच में से तुम्हारी सारी मण्डली से पुकारकर कहा; और इससे अधिक और

कुछ न कहा। और उन्हें उसने पत्थर की दो पटियाओं पर लिखकर मुझे दे दिया। २४ “जब पर्वत आग से ढक रहा था, और तुम ने उस शब्द को अंधियारे के बीच में से आते सुना, तब तुम और तुम्हारे गोत्रों के सब मुख्य-मुख्य पुम्प और तुम्हारे पुराने मेरे पास आएँ; २५ और तुम कहने लगे, ‘हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमको अपना तेज और अपनी महिमा दिखाई है, और हमने उसका शब्द आग के बीच में से आते हुए सुना; आज हमने देख लिया कि यद्यपि परमेश्वर मनुष्य से बातें करता है तो भी मनुष्य जीवित रहता है। २६ अब हम क्यों मर जाएँ? क्योंकि ऐसी बड़ी आग से हम भस्म हो जाएँगे; और यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर सुनें, तब तो मर ही जाएँगे। २७ क्योंकि सारे प्राणियों में से कौन ऐसा है जो हमारे समान जीवित और अग्नि के बीच में से बोलते हुए परमेश्वर का शब्द सुनकर जीवित बचा रहे? २८ इसलिए तुम समीप जा, और जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे उसे सुन ले; फिर जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे उसे हम से कहना; और हम उसे सुनेंगे और उसे मानेंगे।” २९ “जब तुम मुझसे ये बातें कह रहे थे तब यहोवा ने तुम्हारी बातें सुनी; तब उसने मुझसे कहा, ‘इन लोगों ने जो-जो बातें तुझ से कही हैं मैंने सुनी हैं; इन्होंने जो कुछ कहा वह ठीक ही कहा। ३० भला होता कि उनका मन सदैव ऐसा ही बना रहे, कि वे मेरा भय मानते हुए मेरी सब आज्ञाओं पर चलते रहे, जिससे उनकी और उनके वंश की सदैव भलाई होती रहे। ३१ इसलिए तू जाकर उनसे कह दे, कि अपने-अपने डेरों को लौट जाओ। ३२ परन्तु तू यहीं मेरे पास खड़ा रह, और मैं वे सारी आज्ञाएँ और नियम जिन्हें तुझे उनको सिखाना होगा तुझ से कहूँगा, जिससे वे उन्हें उस देश में जिसका अधिकार मैं उन्हें देने पर हूँ मानें।” ३३ इसलिए तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार करने में चौकसी करना; न तो ताएँ मुड़ना और न बाएँ। ३४ जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी है उस सारे मार्ग पर चलते रहो, कि तुम जीवित रहो, और तुम्हारा भला हो, और जिस देश के तुम अधिकारी होगे उसमें तुम बहुत दिनों के लिये बन रहा।

६ “यह वह आज्ञा, और वे विधियाँ और नियम हैं जो तुम्हें सिखाने की तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने आज्ञा दी हैं, कि तुम उन्हें उस देश में मानो जिसके अधिकारी होने को पार जाने पर हो; ७ और तू और तेरा बेटा और तेरा पोता परमेश्वर यहोवा का भय मानते हुए उसकी उन सब विधियों और आज्ञाओं पर, जो मैं तुझे सुनाता हूँ, अपने जीवन भर चलते रहें, जिससे तू बहुत दिन तक बना रहे। ८ हे इसाएल, सुन, और ऐसा ही करने की चौकसी कर; इसलिए कि तेरा भला हो, और तेरे पितरों के परमेश्वर यहोवा के वंशन के अनुसार उस देश में जहाँ दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं तुम बहुत हो जाओ। ९ हे इसाएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; १० तुम्हें परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे प्राण, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।; ११ और ये आज्ञाएँ जो मैं आज तुझको सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी हैं १२ और तू इन्हें अपने बाल-बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटे, उठते, इनकी चर्चा किया करना। १३ और इन्हें अपने हाथ पर चिन्ह के रूप में बैधना, और ये तेरी आँखों के बीच टीक का काम दें। १४ और इन्हें अपने-अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना। १५ “जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में पहुँचाए जिसके विषय में उसने अन्नाहम, इस्हाक, और याकूब नामक, तेरे पूर्वजों से तुझे देने की शपथ खाई, और जब वह तुझको बड़े-बड़े और अच्छे नार, जो तुमें नहीं बना, १६ और अच्छे-अच्छे पदार्थों से भरे हुए घर, जो तुमें नहीं भरे, और खुदे हुए कुँज, जो तुमें नहीं खोदे, और दाख की बारियाँ और जैतून के वृक्ष, जो तुमें नहीं लगाए,

ये सब वस्तुएँ जब वह दे, और तू खाके तृप हो, १७ तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू यहोवा को भूल जाए, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस देश से निकाल लाया है। १८ अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना; उसी की सेवा करना, और उसी के नाम की शपथ खाना। १९ तुम पराए देवताओं के, अर्थात् अपने चारों ओर के देशों के लोगों के देवताओं के पीछे न हो लेना; २० क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा जो तेरे बीच में है वह जलन रखनेवाला परमेश्वर है, कहीं ऐसा न हो कि तेरे परमेश्वर यहोवा का कोप तुझ पर भड़के, और वह तुझको पृथ्वी पर से नष्ट कर डाले। २१ “तुम अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न करना, जैसे कि तुम ने मसास में उसकी परीक्षा की थी। २२ अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं, चेतावनियों, और विधियों को, जो उसने तुझको दी है, सावधानी से मानना। २३ और जो काम यहोवा की दृष्टि में ठीक और सुहावना है वही किया करना, जिससे कि तेरा भला हो, और जिस उत्तम देश के विषय में यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाई उसमें तू प्रवेश करके उसका अधिकारी हो जाए, २४ कि तेरे सब शत्रु तेरे सामने से दूर कर दिए जाएँ, जैसा कि यहोवा ने कहा था। २५ “फिर आगे को जब तेरी सन्तान तुझ से पूछें, ‘ये चेतावनियाँ और विधि और नियम, जिनके मानने की आज्ञा हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी है, इनका प्रयोजन क्या है?’ २६ तब अपनी सन्तान से कहना, ‘जब हम मिस में फिरौन के दास थे, तब यहोवा बलवन्त हाथ से हमको मिस में से निकाल ले आया; २७ और यहोवा ने हमारे देखते बड़े-बड़े चिन्ह और चमत्कार दिखाएँ; २८ और हमको वह वहाँ से निकाल लाया, इसलिए कि हमें इस देश में पहुँचाकर, जिसके विषय में उसने हमारे पूर्वजों से शपथ खाई थी, इसको हमें सौंप दें। २९ और यहोवा ने हमें ये सब विधियाँ पालन करने की आज्ञा दी, इसलिए कि हम अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानें, और इस रिति सदैव हमारा भला हो, और वह हमको जीवित रखे, जैसा कि आज के दिन है। ३० और यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में उसकी आज्ञा के अनुसार इन सारे नियमों के मानने में चौकसी करें, तो यह हमारे लिये धार्मिकता ठहरेगा।”

७ “फिर जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में जिसके अधिकारी होने को तू जाने पर है पहुँचाएँ, और तेरे सामने से हिती, पिराशी, एमेरी, कनानी, परिज्जी, हिल्बी, और यबसी नामक, बहुत सी जातियों को अर्थात् तुम से बड़ी और सामर्थी सातों जातियों को निकाल दे, ३१ और तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे द्वारा हरा दे, और तू उन पर जय प्राप्त कर ले; तब उन्हें परी रिति से नष्ट कर डालना; उनसे न वाचा बाँधना, और न उन पर दया करना। ३२ और न उनसे ब्याह शादी करना, न तो अपनी बेटी उनके बेटे को ब्याह देना, और न उनकी बेटी को अपने बेटे के लिये ब्याह लेना। ३३ क्योंकि वे तेरे बेटे को मेरे पीछे चलने से बहकाएँगी, और दूसरे देवताओं की उपासना करवाएँगी; और इस कारण यहोवा का कोप तुम पर भड़क उठेगा, और वह तेरा शत्रु सत्यानाश कर डालेगा। ३४ उन लोगों से ऐसा बर्ताव करना, कि उनकी वैदेवियों को ढा देना, उनकी लातों को तोड़ डालना, उनकी अशेरा नामक मूर्तियों को काट काटकर पिरा देना, और उनकी खुदी हई मूर्तियों को आग में जला देना। ३५ क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा है; यहोवा ने पृथ्वी भर के सब देशों के लोगों में से तुझको चुन लिया है कि तू उसकी प्रजा और निज भाग ठहरे। ३६ यहोवा ने जो तुम से सेह करके तुम को चुन लिया, इसका कारण यह नहीं था कि तुम गिनती में और सब देशों के लोगों से अधिक थे, किन्तु तुम तो सब देशों के लोगों से गिनती में थोड़े थे; ३७ यहोवा ने जो तुम को बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के घर में से, और मिस के राजा फिरौन के हाथ से छुड़ाकर निकाल लाया, इसका यही कारण है कि वह तुम से प्रेम रखता

है, और उस शपथ को भी पूरी करना चाहता है जो उसने तम्हारे पूर्वजों से खाई थी। ९ इसलिए जान ले कि तेरा परमेश्वर यहोवा ही परमेश्वर है, वह विश्वासयोग्य परमेश्वर है; जो उससे प्रेम रखते और उसकी आजाएँ मानते हैं उनके साथ वह हजार पीढ़ी तक अपनी वाचा का पालन करता, और उन पर कल्पना करता रहता है; १० और जो उससे बैर रखते हैं, वह उनके देखते उनसे बदला लेकर नष्ट कर डालता है; अपने बैरी के विषय वह विलम्ब न करेगा, उसके देखते ही उससे बदला लेगा। ११ इसलिए इन आजाओं, विधियों, और नियमों को, जो मैं आज तुझे चिताता हूँ, मानने में चौकसी करना। १२ “और तुम जो इन नियमों को सुनकर मानोगे और इन पर चलोगे, तो तेरा परमेश्वर यहोवा भी उस कल्पनाय मध्य वाचा का पालन करेगा जिसे उसने देरे पूर्वजों से शपथ खाकर बौद्धी थी; १३ और वह तुझ से प्रेम रखेगा, और तुझे आशीष देगा, और गिनित में बढ़ाएगा; और जो देश उसने देरे पूर्वजों से शपथ खाकर तुझे देने को कहा है उसमें वह तेरी सन्तान पर, और अन्न, नये दाखमधु, और टटके तेल आदि, भूमि की उपज पर आशीष दिया करेगा, और तेरी गाय-बैल और भेड़-बकरियों की बढ़ती करेगा। १४ तू सब देशों के लोगों से अधिक धन्य होगा; तेरे बीच में न पुस्त न ढी निर्विश होगी, और तेरे पशुओं में भी ऐसा कोई न होगा। १५ और यहोवा तुझ से सब प्रकार के रोग दूर करेगा, और मिस्र की बूरी-बुरी व्याधियाँ जिन्हें तेरी जानता है उनमें से किसी को भी तुझे लाने न देगा, ये सब तेरे बैरियों ही को लगेंगे। १६ और देश-देश के जितने लोगों को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे वश में कर देगा, तू उन सभी को सत्यानाश करना; उन पर तरस की दृष्टि न करना, और न उनके देवताओं की उपासना करना, नहीं तो तू फंदे में फॅस जाएगा। १७ “यदि तू अपने मन में सोचो, कि वे जातियाँ जो मुझसे अधिक हैं; तो मैं उनको कैसे देश से निकाल सकँग़ा? १८ तो भी उनसे न डरना, जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने फ़िरौन से और सारे मिस्र से किया उसे भली भाँति स्मरण रखना। १९ जो बड़े-बड़े परीक्षा के काम तेरे अपनी आँखों से देखे, और जिन चिन्हों, और चमत्कारों, और जिस बलवन्त हाथ, और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको निकाल लाया, उनके अनुसार तेरा परमेश्वर यहोवा उन सब लोगों से भी जिनसे तू डरता है करेगा। २० इससे अधिक तेरा परमेश्वर यहोवा उनके बीच बर्बं भी भेजेगा, यहाँ तक कि उनमें से जो बचकर छिप जाएँगे वे भी तेरे सामने से नाश हो जाएँगे। २१ उनसे भय न खाना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, और वह महान् और भयोग्य परमेश्वर है। २२ तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को तेरे आगे से धीरी धीरी निकाल देगा; तो तू एकदम से उनका अन्त न कर सकेगा, नहीं तो जंगली पशु बढ़कर तेरी हानि करेंगे। २३ तो भी तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तुझ से हरका देगा, और जब तक वे सत्यानाश न हो जाएँ, तब तक उनको अति व्याकुल करता रहेगा। २४ और वह उनके राजाओं को तेरे हाथ में करेगा, और तू उनका भी नाम धरती पर से मिटा डालेगा; उनमें से कोई भी तेरे सामने खड़ा न रह सकेगा, और अन्त में तू उन्हें सत्यानाश कर डालेगा। २५ उनके देवताओं की खड़ी हुई मूर्तियाँ तुम आग में जला देना; जो चाँदी या सोना उन पर मढ़ा हो उसका लालच करके न ले लेना, नहीं तो तू उसके कारण फंदे में फॅसेगा, क्योंकि ऐसी वस्तुएँ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं। २६ और कोई घृणित वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा; उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर उससे धूणा करना और उसे कदापि न चाहना; क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है।

“जो-जो आज्ञा मैं आज तुझे सनाता हूँ उन सभी पर चलने की चौकसी करना, इसलिए कि तुम जीवित रहो और बढ़ते रहो, और जिस देश के विषय

में यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई है उसमें जाकर उसके अधिकारी हो जाओ। २७ और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिए ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाएँ और तेरी परीक्षा करके यह जान ले कि तेरे मन में क्या-क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा या नहीं। २८ उसने तुझको नम्र बनाया, और भूता भी होने दिया, फिर वह मन्ना, जिसे न तू और न तेरे पुरुषों भी जानते थे, वही तुझको खिलाया; इसलिए कि वह तुझको सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता, परन्तु जो-जो वचन यहोवा के मुँह से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है। २९ इन चालीस वर्षों में तेरे बब्ब पुनरे न हुए, और तेरे तन से भी नहीं गिरे, और न तेरे पाँव फूले। ३० फिर अपने मन में यह तो विचार कर, कि जैसा कोई अपने बेटे को ताङना देता है वैसे ही तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको ताङना देता है। ३१ इसलिए अपने परमेश्वर यहोवा की आजाओं का पालन करते हुए उसके मार्ग पर चलना, और उसका भय मानते रहना। ३२ क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे एक उत्तम देश में लिये जा रहा है, जो जल की नदियों का, और तराइयों और पहाड़ों से निकले हुए गहरे-गहरे सोतों का देश है। ३३ फिर वह गेहूँ, जौ, दाखलताओं, अंजीरों, और अनारों का देश है; और तेलबाले जैतूल और मधु की भी देश है। ३४ उस देश में अन्न की महँगी न होगी, और न उसमें तुझे किसी पदार्थ की घटी होगी; वहाँ के पथर लोहे के हैं, और वहाँ के पहाड़ों में से तू तांबा खोदकर निकाल सकेगा। ३५ और तू पेट भर खाएगा, और उस उत्तम देश के कारण जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देगा उसे धन्य मानेगा। ३६ “इसलिए सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर उसकी जो-जो आज्ञा, नियम, और विधि, मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनका मानना छोड़ दें; ३७ ऐसा न हो कि जब तु खाकर तूम हो, और अच्छे-अच्छे घर बनाकर उनमें रहने लगे, ३८ और तेरी गाय-बैलों और भेड़-बकरियों की बढ़ती हो, और तेरा सोना, चाँदी, और तेरा सब प्रकार का धन बढ़ जाए, ३९ तब तेरे मन में अहंकार समा जाए, और तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूल जाए, जो तुझको दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है, ४० और उस बड़े और भयानक जंगल में से ले आया है, जहाँ तेरा विषवाले सर्प और बिच्छू हैं, और जलताहित सूखे देश में उनसे तेरे लिये चक्रमक की चट्टान से जल निकाला, ४१ और तुझे जंगल में मन्ना खिलाया, जिसे तुम्हारे पुरुषों जानते भी न थे, इसलिए कि वह तुझे नम्र बनाएँ, और तेरी परीक्षा करके अन्त में तेरा भला ही करे। ४२ और कहीं ऐसा न हो कि तू सोचने लगे, कि यह सम्पत्ति मेरे ही सामर्थ्य और मेरी ही भुजबल से मुझे प्राप्त हुई। ४३ परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना, क्योंकि वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्त करने की सामर्थ्य इसलिए देता है, कि जो वाचा उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बौद्धी भी उसको पूरा करे, जैसा आज प्राप्त है। ४४ यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर दूसरे देवताओं के पीछे हो ले गए, और उनकी उपासना और उनको दण्डकत करेगा, तो मैं आज तुम को चिता देता हूँ कि तुम निःसन्देह नष्ट हो जाओगे। ४५ जिन जातियों को यहोवा तुम्हारे सम्मुख से नष्ट करने पर है, उन्हीं के समान तुम भी अपने परमेश्वर यहोवा का वचन न मानने के कारण नष्ट हो जाओगे।

४६ “हे इमाएल, सुन, आज तू यरदन पार इसलिए जानेवाला है, कि ऐसी जातियों को जो तुझे से बड़ी और सामर्थ्यी है, और ऐसे बड़े नगरों को जिनकी शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं, अपने अधिकार में ले ले। ४७ उनमें बड़े-बड़े और लम्बे-लम्बे लोग, अर्थात् अनाकवशी रहते हैं, जिनका हाल त जानता है, और उनके विषय में तूने यह सुना है, कि अनाकवशीयों के सामने कौन ठहर सकता है? ४८ इसलिए आज तू यह जान ले, कि जो तेरे आगे

भस्म करनेवाली आग के समान पार जानेवाला है वह तेरा परमेश्वर यहोवा है; और वह उनका सत्यानाश करेगा, और वह उनको तेरे सामने दबा देगा; और तु यहोवा के बचन के अनुसार उनको उस देश से निकालकर शीघ्र ही नष्ट कर डालेगा। ४ “जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे सामने से निकाल देगा तब यह न सोचना, कि यहोवा तेरे धार्मिकता के कारण तुझे इस देश का अधिकारी होने को ले आया है, किन्तु उन जातियों की दुश्ता ही के कारण यहोवा उनको तेरे सामने से निकालता है। ५ तू जो उनके देश का अधिकारी होने के लिये जा रहा है, इसका कारण तेरा धार्मिकता या मन की सिधाई नहीं है; तेरा परमेश्वर यहोवा जो उन जातियों को तेरे सामने से निकालता है, उसका कारण उनकी दुश्ता है, और यह भी कि जो बचन उसने अद्वाहम, इसहाक, और याकूब, अर्थात् तेरे पूर्वजों को शपथ खाकर दिया था, उसको वह पूरा करना चाहता है। ६ “इसलिए यह जान ते कि तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझे वह अच्छा देश देता है कि तू उसका अधिकारी हो, उसे वह तेरे धार्मिकता के कारण नहीं दे रहा है; क्योंकि तू तो एक हठीली जाति है। ७ इस बात का स्मरण रख और कभी भी न भूलना, कि जंगल में तने किस-किस रीति से अपने परमेश्वर यहोवा को क्रोधित किया; और जिस दिन से तू मिस्र देश से निकाला है जब तक तुम इस स्थान पर न पहुँचे तब तक तुम यहोवा से बलवा ही बलवा करते आए हो। ८ फिर होरेक के पास भी तुम ने यहोवा को क्रोधित किया, और वह क्रोधित होकर तुम्हें नष्ट करना चाहता था। ९ जब मैं उस बाचा के पथर की पटियाओं को जो यहोवा ने तुम से बाँधी थी लेने के लिये पर्वत के ऊपर चढ़ गया, तब चालीस दिन और चालीस रात के ऊपर रहा; और मैंने न तो रोटी खाई न पानी पिया। १० और यहोवा ने मुझे अपने ही हाथ की लिखी हुई पथर की दोनों पटियाओं को सौंप दिया, और वे ही बचन जिन्हें यहोवा ने पर्वत के ऊपर आग के मध्य में से सभा के दिन तुम से कहे थे वे सब उन पर लिखे हए थे। ११ और चालीस दिन और चालीस रात के बीत जाने पर यहोवा ने पथर की वे दो बाचा की पटियाएँ मुझे दे दीं। १२ और यहोवा ने मुझसे कहा, ‘उठ, यहाँ से झटपट निचे जा; क्योंकि तेरी प्रजा के लोग जिनको तू मिस्र से निकालकर ले आया है वे बिंगड़ गए हैं; जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा मैंने उन्हें दी थी उसको उन्होंने झटपट छोड़ दिया है; अर्थात् उन्होंने तुरन्त अपने लिये एक मृति ढालकर बना ली है।’ १३ “फिर यहोवा ने मुझसे यह भी कहा, ‘मैंने उन लोगों को देख लिया, वे हठीली जाति के लोग हैं; १४ इसलिए अब मुझे तू मत रोक, ताकि मैं उन्हें नष्ट कर डालूँ, और धर्ती के ऊपर से उनका नाम या चिन्ह तक मिटा डालूँ, और मैं उनसे बढ़कर एक बड़ी और सामर्थी जाति तुझी से उत्पन्न करूँगा। १५ तब मैं उलटे पैर पर्वत से निचे उत्तर चला, और पर्वत अनि से दहक रहा था और मेरे दोनों हाथों में बाचा की दोनों पटियाएँ थीं। १६ और मैंने देखा कि तुम ने अपने परमेश्वर यहोवा के विस्तु महापाप किया; और अपने लिये एक बछड़ा ढालकर बना लिया है, और तुरन्त उस मार्ग से जिस पर चलने की आज्ञा यहोवा ने तुम को दी थी उसको तुम ने तज दिया। १७ तब मैंने उन दोनों पटियाओं को अपने दोनों हाथों से लेकर फेंक दिया, और तुम्हारी ऑर्हियों के सामने उनको तोड़ डाला। १८ तब तुम्हारे उस महापाप के कारण जिसे करके तुम ने यहोवा की दृष्टि में बुराई की, और उसे रिस दिलाई थी, मैं यहोवा के सामने मुँह के बल पिर पड़ा, और पहले के समान, अर्थात् चालीस दिन और चालीस रात तक, न तो रोटी खाई और न पानी पिया। १९ मैं तो यहोवा के उस कोप और जलजलाहट से डर रहा था, क्योंकि वह तुम से अप्रसन्न होकर तुम्हारा सत्यानाश करने को था। परन्तु यहोवा ने उस बार भी मेरी सुन ली। २० और यहोवा हास्तन से इतना कोपित हुआ कि उसका भी सत्यानाश करना चाहा; परन्तु उसी समय मैंने

हास्तन के लिये भी प्रार्थना की। २१ और मैंने वह बछड़ा जिसे बनाकर तुम पापी हो गए थे लेकर, आग में डालकर झूँक दिया; और फिर उसे पीस-पीसकर ऐसा चूर चूरकर डाला कि वह धूल के समान जीर्ण हो गया; और उसकी उस राख को उस नदी में फेंक दिया जो पर्वत से निकालकर नीचे बहती थी। २२ “फिर तबेरा, और मस्सा, और किन्नोतहतावा में भी तुम ने यहोवा को रिस दिलाइ थी। २३ फिर जब यहोवा ने तुम को कांदेशबन्ने से यह कहकर भेजा, ‘जाकर उस देश के जिसे मैंने तुम्हें दिया है अधिकारी हो जाओ,’ तब भी तुम ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के विस्तु बलवा किया, और न तो उसका विचास किया, और न उसकी बात ही मानी। २४ जिस दिन से मैं तुम्हें जनना हूँ उस दिन से तुम यहोवा से बलवा ही करते आए हो। २५ “मैं यहोवा के सामने चालीस दिन और चालीस रात मूँह के बल पड़ा रहा, क्योंकि यहोवा ने कह दिया था, कि वह तुम्हारा सत्यानाश करेगा। २६ और मैंने यहोवा से यह प्रार्थना की, ‘हे प्रभु यहोवा, अपना प्रजास्तीपी निज भाग, जिनको तूने अपने महान प्रताप से छुड़ा लिया है, और जिनको तूने अपने बलवन्त हाथ से मिस्र से निकाल लिया है, उन्हें नष्ट न कर। २७ अपने दास अद्वाहम, इसहाक, और याकूब को समरण कर; और इन लोगों की हठ, और दुश्ता, और पाप पर दृष्टि न कर, २८ जिससे ऐसा न हो कि जिस देश से तू हमको निकालकर ले आया है, वहाँ के लोग कहने लगें, कि यहोवा उन्हें उस देश में जिसके देने का बचन उनको दिया था नहीं पहुँचा सका, और उनसे बैर भी रखता था, इसी कारण उनमें उन्हें जंगल में लाकर मार डाला है।’ २९ ये लोग तेरी प्रजा और निज भाग हैं, जिनको तूने अपने बड़े सामर्थ्य और बलवन्त भुजा के द्वारा निकाल ले आया है।”

१० “उस समय यहोवा ने मुझसे कहा, ‘पहली पटियाओं के समान पथर की दो और पटियाएँ गढ़ ले, और उन्हें लेकर मैं आपास पर्वत के ऊपर आ जा, और लकड़ी का एक सन्दूक भी बनवा ले।’ ३ और मैं उन पटियाओं पर वे ही बचन लिखूँगा, जो उन पहली पटियाओं पर थे, जिन्हें तूने तोड़ डाला, और तू उन्हें उस सन्दूक में रखवा।” ४ तब मैंने बबल की लकड़ी का एक सन्दूक बनवाया, और पहली पटियाओं के समान पथर की दो और पटियाएँ गढ़ी, तब उन्हें हाथों में लिये हुए पर्वत पर चढ़ गया। ५ और जो दस बचन यहोवा ने सभा के दिन पर्वत पर अनि के मध्य में से तुम से कहे थे, वे ही उसने पहले के समान उन पटियाओं पर लिखे; और उनको मुझे सौंप दिया। ६ तब मैं पर्वत से निचे उत्तर आया, और पटियाओं को अपने बनवाए हुए सन्दूक में धर दिया; और यहोवा की आज्ञा के अनुसार वे वही रखी हुई हैं। ७ “(तब इस्माएली याकानियों के कुओं से कूच करके मोसेरा तक आए। वहाँ हास्तन मर गया, और उसको वही मिट्ठी दी गई, और उसका पुत्र एलीआजर उसके स्थान पर याजक का काम करने लगा। ८ वे वहाँ से कूच करके गुदोदा को, और गुदोदा से योतबाता को चले, इस देश में जल की नदियों हैं। ९ उस समय यहोवा ने लेली गोत्र को इसलिए अलग किया कि वे यहोवा की बाचा का सन्दूक उठाया करें, और यहोवा के सम्मुख खड़े होकर उसकी सेवा टहल किया करें, और उसके नाम से आशीर्वाद दिया करें, जिस प्रकार कि आज के दिन तक होता आ रहा है। १० इस कारण लेवियों को अपने भाईयों के साथ कोई निज अंश या भाग नहीं मिला; यहोवा ही उनका निज भाग है, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उनसे कहा था।) ११ “मैं तो पहले के समान उस पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात ठहरा रहा, और उस बार भी यहोवा ने मेरी सुनी, और तुझे नाश करने की मनसा छोड़ दी। १२ फिर यहोवा ने मुझसे कहा, ‘उठ, और तू इन लोगों की अगुआई कर, ताकि जिस देश के देने को मैंने उनके पूर्वजों से शपथ खाकर कहा था उसमें वे जाकर उसको अपने अधिकार

में कर लैं।’ १२ “अब, हे इमाएल, तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से इसके सिवाय और क्या चाहता है, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानें, और उसके सारे मार्गों पर चले, उससे प्रेम रखे, और अपने पूरे मन और अपने सारे प्राण से उसकी सेवा करे, १३ और यहोवा की जो-जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझ सुनाता हूँ उनको ग्रहण करे, जिससे तेरा भला हो? १४ सुन, स्वर्ग और सबसे ऊँचा स्वर्ग भी, और पृथ्वी और उसमें कोई कुछ है, वह सब तौरे परमेश्वर यहोवा ही का है; १५ तो भी यहोवा ने तेरे पूर्वजों से सेह और प्रेम रखा, और उनके बाद तुम लोगों को जो उनकी सन्तान हो सब देशों के लोगों के मध्य में से चुन लिया, जैसा कि आज के दिन प्रगत है। १६ इसलिए अपने-अपने हृदय का खतना करो, और आगे को हठीले न रहो। १७ क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा वही ईश्वरों का परमेश्वर और प्रभुओं का प्रभु है, वह महान पराक्रमी और भययोग्य परमेश्वर है, जो किसी का पक्ष नहीं करता और न घूस लेता है। १८ वह अनाथों और विधवा का न्याय चुकाता, और परदेशियों से ऐसा प्रेम करता है कि उन्हें भोजन और बढ़ देता है। १९ इसलिए तुम भी परदेशियों से प्रेम भाव रखना; क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे। २० अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना; उसी की सेवा करना और उसी से लिपटे रहना, और उसी के नाम की शपथ खाना। २१ वहीं तुम्हारी स्तुति के योग्य है; और वहीं तुम्हारा परमेश्वर है, जिसने तेरे साथ वे बड़े महत्व के और भयानक काम किए हैं, जिन्हें तूने अपनी आँखों से देखा है। २२ तेरे पुरागा जब मिस्र में गए तब सतर ही मनुष्य थे; परन्तु अब तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरी गिनती आकाश के तारों के समान बहुत कर दी है।

११ “इसलिए तू अपने परमेश्वर यहोवा से अत्यन्त प्रेम रखना, और जो कुछ उसने तुझे सौंपा है उसका, अर्थात् उसकी विधियों, नियमों, और आज्ञाओं का नित्य पालन करना। २ और तुम आज यह सोच समझ लो (क्योंकि मैं तो तुम्हारे बाल-बच्चों से नहीं कहता,) जिन्होंने न तो कुछ देखा और न जाना है कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने क्या-क्या ताड़ना की, और कैरी महिमा, और बलवन्त हाथ, और बढ़ाइ हई भुजा दिखाई, ३ और मिस्र में वहाँ के राजा फिरैन को कैसे-कैसे इन्हें दिखाए, और उसके सारे देश में कैसे-कैसे चमत्कार के काम किए, ४ और उसने मिस्र की सेना के घोड़ों और रथों से क्या किया, अर्थात् जब वे तुम्हारा पीछा कर रहे थे तब उसने उनको लाल समूद्र में डुबोकर किस प्रकार नष्ट कर डाला, कि आज तक उनका पता नहीं; ५ और तुम्हारे इस स्थान में पहुँचने तक उसने जंगल में तुम से क्या-क्या किया; ६ और उसने स्लेनी एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम से क्या-क्या किया; अर्थात् पृथ्वी ने अपना मुँह पसारकर उनको धरानों, और डेरों, और सब अनुचरों समेत सब इमाएलियों के देखते-देखते कैसे निगल लिया; ७ परन्तु यहोवा के इन सब बड़े-बड़े कामों को तुम ने अपनी आँखों से देखा है। ८ “इस कारण जितनी आज्ञाएँ मैं आज तुम्हें सुनाता हूँ उन सभी को माना करना, इसलिए कि तुम सामर्थी होकर उस देश में जिसके अधिकारी होने के लिये तुम पार जा रहे हो प्रवेश करके उसके अधिकारी हो जाओ, ९ और उस देश में बहुत दिन रहने पाओ, जिसे तुम्हें और तुम्हारे वंश को देने की शपथ यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी, और उसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं। १० देखो, जिस देश के अधिकारी होने को तुम जा रहे हो वह मिस्र देश के समान नहीं है, जहाँ से निकलकर आए हो, जहाँ तुम बीज बोते थे और हरे साग के खेत की रीति के अनुसार अपने पौंछ से नालियों बनाकर सीधी चित्ती थी, ११ परन्तु जिस देश के अधिकारी होने को तुम पार जाने पर हो वह पहाड़ों और तराइयों का देश है, और आकाश की वर्षा के जल से सीधी चित्ती है; १२ वह ऐसा

देश है जिसकी तेरे परमेश्वर यहोवा को सुधि रहती है; और वर्ष के आदि से लेकर अन्त तक तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि उस पर निरन्तर लागी रहती है। १३ “यदि तुम मेरी आज्ञाओं को जो आज मैं तुम्हें सुनाता हूँ ध्यान से सुनकर, अपने सम्पूर्ण मन और सारे प्राण के साथ, अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो और उसकी सेवा करते रहो, १४ तो मैं तुम्हारे देश में बरसात के आदि और अन्त दोनों समयों की वर्षा को अपने-अपने समय पर बरसाऊँगा, जिससे तू अपना अन्न, नया दाखमधू, और टटका तेल संचय कर सकेगा। १५ और मैं तेरे पशुओं के लिये तेरे मैदान में घास उपजाऊँगा, और तू पेट भर खाएगा और सन्तुष्ट रहेगा। १६ इसलिए अपने विषय में सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन धोखा खाऊँ, और तुम बहक कर दूसरे देवताओं की पूजा करने लगो और उनको दण्डवत करने लगो, १७ और यहोवा का कोप तुम पर भड़के, और वह आकाश की वर्षा बन्द कर दे, और भूमि अपनी उपज न दे, और तुम उस उत्तम देश में से जो यहोवा तुम्हें देता है शीघ्र नष्ट हो जाओ। १८ इसलिए तुम मेरे ये वचन अपने-अपने मन और प्राण में धारण किए रहना, और चिन्ह के रूप में अपने हाथों पर बाँधना, और वे तुम्हारी आँखों के मध्य में टीके का काम दें। १९ और तुम घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटर-उठते इनकी चर्चा करके अपने बच्चों को सिखाया करना। २० और इन्हें अपने-अपने घर के चौखट के बाज़ुओं और अपने फाटकों के ऊपर लिखना; २१ इसलिए कि जिस देश के विषय में यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर कहा था, कि मैं उसे तुम्हें दूँगा, उसमें तुम और तुम्हारे बच्चे दीर्घायि होंगे, और जब तक पृथ्वी के ऊपर का आकाश बना रहे तब तक वे भी बने रहें। २२ इसलिए यदि तुम इन सब आज्ञाओं के मानने में जो मैं तुम्हें सुनाता हूँ पूरी चौकसी करके अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो, और उसके सब मार्गों पर चलो, और उससे लिपटे रहो, २३ तो यहोवा उन सब जातियों को तुम्हारे आगे से निकाल डालेगा, और तुम अपने से बड़ी और सामर्थी जातियों के अधिकारी हो जाओगे। २४ जिस-जिस स्थान पर तुम्हारे पौँछ के तलवे पड़ें वे सब तुम्हारे ही हो जाएंगे, अर्थात् जंगल से लबानोन तक, और फरात नामक महानद से लेकर पश्चिम के समुद्र तक तुम्हारी सीमा होगी। २५ तुम्हारे सामने कोई भी खड़ा न रह सकेगा; क्योंकि जितनी भूमि पर तुम्हारे पौँछ पड़ेंगे उस सब पर रहनेवालों के मन में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारे कारण उनमें डर और थरथराहट उत्पन्न कर देगा। २६ “सुनो, मैं आज के दिन तुम्हारे आगे आशीष और श्राप दोनों रख देता हूँ। २७ अर्थात् यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की इन आज्ञाओं को जो मैं आज तुम्हें सुनाता हूँ मानो, तो तुम पर आशीष होगी, २८ और यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को नहीं मानोगे, और जिस मार्ग की आज्ञा मैं आज सुनाता हूँ उसे तजक्कर दूसरे देवताओं के पीछे हो लोगे जिन्हें तुम नहीं जानते हो, तो तुम पर श्राप पड़ेगा। २९ और जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको उस देश में पहुँचाएँ जिसके अधिकारी होने को तू जाने पर है, तब आशीष गिरजीम पर्वत पर से और श्राप एबाल पर्वत पर से सुनाना। ३० क्या वे यहरदन के पार, सूर्य के अस्त होने की ओर, अराबा के निवासी कनानियों के देश में, गिलगाल के सामने, मोर के बांजवृक्षों के पास नहीं है? ३१ तुम तो यहरदन पार इसलिए जाने पर हो, कि जो देश तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है उसके अधिकारी हो जाओ; और तुम उसके अधिकारी होकर उसमें निवास करोगे; ३२ इसलिए जितनी विधियाँ और नियम मैं आज तुम को सुनाता हूँ उन सभी के मानने में चौकसी करना।

१२ “जो देश तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें अधिकार में लेने को दिया है, उसमें जब तक तुम भूमि पर जीवित रहो तब तक इन विधियों

और नियमों के मानने में चौकसी करना। २ जिन जातियों के तुम अधिकारी होगे उनके लोग ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों या टीलों पर, या किसी भाँति के होरे वृक्ष के तले, जितने स्थानों में अपने देवताओं की उपासना करते हैं, उन सभी को तुम पूरी रीति से नष्ट कर डालना; ३ उनकी वेदियों को ढा देना, उनकी लाठों को तोड़ डालना, उनकी अशेरा नामक मूर्तियों को आग में जला देना, और उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तियों को कटकर गिरा देना, कि उस देश में से उनके नाम तक मिट जाएँ। ४ फिर जैसा वे करते हैं, तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये वैसा न करना। ५ किन्तु जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सब गोत्रों में से चुन लेगा, कि वहाँ अपना नाम बनाए रखे, उपके उसी निवास-स्थान के पास जाया करना; ६ और वहाँ तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, और दशमांश, और उठाई हुई भेट, और मन्त्र की वस्तुएँ, और स्वेच्छाबलि, और गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहलौटे ले जाया करना, ७ और वही तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सामने भोजन करना, और अपने-अपने घराने समेत उन सब कामों पर, जिनमें तुम ने हाथ लगाया हो, और जिन पर तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की आशीष मिली हो, आनन्द करना। ८ जैसे हम आजकल यहाँ जो काम जिसको भाता है वही करते हैं वैसा तुम न करना; ९ जो विश्वास्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे भाग में देता है वहाँ तुम अब तक तो नहीं पहुँचे। १० परन्तु जब तुम यरदन पार जाकर उस देश में जिसके भागी तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें करता है बस जाओ, और वह तुम्हारे चारों ओर के सब शत्रुओं से तुम्हें विश्वाम दे, ११ और तुम निंदर रहने पाओ, तब जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उसी में तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, और दशमांश, और उठाई हुई भेट, और मन्त्रों की सब उत्तम-उत्तम वस्तुएँ जो तुम यहोवा के लिये संकल्प करोगे, अर्थात् जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूँ उन सभी को वही ले जाया करना। १२ और वहाँ तुम अपने-अपने बेटे-बेटियों और दास दासियों सहित अपने परमेश्वर यहोवा के सामने आनन्द करना, और जो लेवीय तुम्हारे फाटकों में रहे वह भी आनन्द करे, क्योंकि उसका तुम्हारे संग कोई निज भाग या अंश न होगा। १३ और सावधान रहना कि तु अपने होमबलियों को हर एक स्थान पर जो देखने में आए न चढ़ाना; १४ परन्तु जो स्थान तेरे किसी गोत्र में यहोवा चुन ले वही अपने होमबलियों को चढ़ाया करना, और जिस-जिस काम की आज्ञा मैं तुझको सुनाता हूँ उसको वही करना। १५ “परन्तु तू अपने सब फाटकों के भीतर अपने जी की इच्छा और अपने परमेश्वर यहोवा की दी हुई आशीष के अनुसार पशु मारकर खा सकेगा, शुद्ध और अशुद्ध मनुष्य दोनों खा सकेंगे, जैसे कि चिकित्से और हिरन का माँस। १६ परन्तु उसका लह न खाना; उसे जल के समान भूमि पर उण्डेल देना। १७ फिर अपने अन्न, या नये दाखमधु, या टटके तेल का दशमांश, और अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों के पहलौटे, और अपनी मन्त्रों की कोई वस्तु, और अपने स्वेच्छाबलि, और उठाई हुई भेटें अपने सब फाटकों के भीतर रहेंगे उनके साथ खाना, और तू अपने परमेश्वर यहोवा के सामने अपने सब कामों पर जिनमें हाथ लगाया हो आनन्द करना। १८ और सावधान रह कि जब तक तू भूमि पर जीवित रहे तब तक लेवियों को न छोड़ना। १९ “जब तेरा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तेरा देश बढ़ाए, और तेरा जी माँस खाना चाहे, और तू सोचने लगे, कि मैं माँस खाऊँगा, तब जो माँस तेरा जी चाहे वही खा सकेगा। २० जो स्थान तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम बनाए रखने के लिये चुन ले वह यदि तुझ से बहुत दूर हो, तो जो गाय-बैल भेड़-बकरी यहोवा ने

तुझे दी हों, उनमें से जो कुछ तेरा जी चाहे, उसे मेरी आज्ञा के अनुसार मारकर अपने फाटकों के भीतर खा सकेगा। २१ जैसे चिकित्से और हिरन का माँस खाया जाता है वैसे ही उनको भी खा सकेगा, शुद्ध और अशुद्ध दोनों प्रकार के मनुष्य उनका माँस खा सकेगे। २२ परन्तु उनका लह किसी भाँति न खाना; क्योंकि लह जो है वह प्राण ही है, और तू माँस के साथ प्राण कभी भी न खाना। २३ उसको न खाना; उसे जल के समान भूमि पर उण्डेल देना। २४ तू उसे न खाना; इसलिए कि वह काम करने से जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है तेरा और तेरे बाद तेरे वंश का भी भला हो। २५ परन्तु जब तू कोई वस्तु पवित्र करे, या मन्त्र माने, तो ऐसी करतुएँ लेकर उस स्थान को जाना जिसको यहोवा चुन लेगा, २६ और वहाँ अपने होमबलियों के माँस और लह दोनों को अपने परमेश्वर यहोवा की बेटी पर चढ़ाना, और मेलबलियों का लह उसकी बेटी पर उण्डेलकर उनका माँस खाना। २७ इन बातों को जिनकी आज्ञा मैं तुझे सुनाता हूँ चित्त लगाकर सुन, कि जब तू वह काम करे जो तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में भला और ठीक है, तब तेरा और तेरे बाद तेरे वंश का भी सदा भला होता रहे। २८ “जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को जिनका अधिकारी होने को तू जा रहा है तेरे आगे से नष्ट करे, और तू उनका अधिकारी होकर उनके देश में बस जाए, २९ तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि उनका सत्यानाश होने के बाद तू भी उनके समान फँस जाए, अर्थात् यह कहकर उनके देवताओं के सम्बंध में यह पूछ्याप्त न करना, कि उन जातियों के लोग अपने देवताओं की उपासना किस रीति करते थे? मैं भी बेटी ही करूँगा। ३० तू अपने परमेश्वर यहोवा से ऐसा व्यवहार न करना; क्योंकि जितने प्रकार के कामों से यहोवा घृणा करता है और बैर-भाव रखता है, उन सभी को उन्होंने अपने देवताओं के लिये किया है, यहाँ तक कि अपने बेटे-बेटियों को भी वे अपने देवताओं के लिये अग्नि में डालकर जला देते हैं। ३१ “जितनी बातों की मैं तुम को आज्ञा देता हूँ उनको चौकस होकर माना करना, और न तो कुछ उनमें बढ़ाना और न उनमें से कुछ घटाना।

१३ “यदि तेरे बीच कोई भविष्यद्वत्ता या स्वप्न देखनेवाला प्रगट होकर तुझे कोई इंद्रि चिन्ह या चमत्कार दिखाए, २ और जिस चिन्ह या चमत्कार को प्रमाण ठहराकर वह तुझ से कहे, ‘आओ हम पराए देवताओं के अनुयायी होकर, जिससे तुम अब तक अनजान रहे, उनकी पूजा करें,’ ३ तब तुम उस भविष्यद्वत्ता या स्वप्न देखनेवाले के बचन पर कभी कान न रखना; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा, जिससे यह जान ले, कि ये मुझसे अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम रखते हैं या नहीं? ४ तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना, और उसका भय मानना, और उसकी आज्ञाओं पर चलना, और उसका वचन मानना, और उसकी सेवा करना, और उसी से लिपटे रहना। ५ और ऐसा भविष्यद्वत्ता या स्वप्न देखनेवाला जो तुम को तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से फेर के, जिसने तुम को मिश देश से निकाला और दासत्व के घर से छुड़ाया है, तेरे उसी परमेश्वर यहोवा के मार्ग से बहकाने की बात कहनेवाला ठरेगा, इस कारण वह मार डाला जाए। इस रीति से तू अपने बीच में से ऐसी बुराइ को दूर कर देना। ६ “यदि तेरा सगा भाई, या बेटा, या बेटी, या तेरी अद्वीरिनी, या प्राणप्रिय तेरा कोई मित्र निराले में तुझको यह कहकर फुसलाने लगे, ‘आओ हम दूसरे देवताओं की उपासना या पूजा करें,’ जिन्हें न तो तू न तेरे पुराखा जानते थे, ७ चाहे वे तुम्हारे निकट रहनेवाले आस-पास के लोगों के, चाहे पृथी के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक दर-दूर के रहनेवालों के देवताओं हों, ८ तो तू उसकी न मानना, और न तो उसकी बात सुनना, और न उस पर तरस खाना, और न कोमलता दिखाना, और न उसको

छिपा रखना; ९ उसको अवश्य घात करना; उसको घात करने में पहले तेरा हाथ उठे, उसके बाद सब लोगों के हाथ उठे। १० उस पर ऐसा पथराव करना कि वह मर जाए, क्योंकि उसने तुझको तेरे उस परमेश्वर यहोवा से, जो तुझको दासत्व के घर अर्थात् प्रिय देश से निकाल लाया है, बहकने का यत्र किया है। ११ और सब इसाएँती सुनकर भय खाएँगे, और ऐसा बुरा काम किर तेरे बीच न करेंगे। १२ “यदि तेरे किसी नगर के विषय में, जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे रहने के लिये देता है, ऐसी बात तेरे सुनने में आए, १३ कि कुछ अधिमी पुस्तों ने तेरे ही बीच में से निकलकर अपने नगर के निवासियों को यह कहकर बहका दिया है, ‘आओ हम अन्य देवताओं की जिनसे अब तक अनजान हो उपासना करें,’ १४ तो पछाढ़ करना, और खोजना, और भली भाँति पता लगाना; और यदि यह बात सच हो, और कुछ भी सन्देह न रहे कि तेरे बीच ऐसा यिनीना काम किया जाता है, १५ तो अवश्य उस नगर के निवासियों को तलवार से मार डालना, और पशु आदि उस सब समेत जो उसमें हो उसको तलवार से सत्यानाश करना। १६ और उसमें की सारी लट्टू चौक के बीच इकट्ठी करके उस नगर को लट्टू समेत अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मानो सर्वांग होम करके जलाना; और वह सदा के लिये खण्डहर रहे, वह फिर बसाया न जाए। १७ और कोई सत्यानाश की वस्तु तेरे हाथ न लाने पाए; जिससे यहोवा अपने भड़के हुए कोप से शान्त होकर जैसा उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाई थी वैसा ही तुझ से दया का व्यवहार करे, और दया करके तुझको गिनती में बढ़ाय। १८ यह तब होगा जब त अपने परमेश्वर यहोवा की जितनी आज्ञाएँ मैं आज तुझे सुनाता हूँ उन सभी को मानेगा, और जो तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में ठीक है वही करेगा।

१४ “तम अपने परमेश्वर यहोवा के पुत्र हो, इसलिए मेरे हुओं के कारण न तो अपना शरीर चीरना, और न भौंहों के बाल मुण्डाना। २ क्योंकि त अपने परमेश्वर यहोवा के लिये एक पवित्र प्रजा है, और यहोवा ने तुझको पृथ्वी भर के समस्त देशों के लोगों में से अपनी निज सम्पत्ति होने के लिये चुन लिया है। ३ “तू कोई यिनीनी वस्तु न खाना। ४ जो पशु तुम खा सकते हो वे ये हैं, अर्थात् गाय-बैल, भेड़-बकरी, ५ हिरन, चिकारा, मूरा, जंगली बकरी, साबर, नीलगाय, और बैनली भेड़। ६ अतः पशुओं में से जिने पशु चिरे या फटे खुरवाले और पापुर करनेवाले होते हैं उनका माँस तुम खा सकते हो। ७ परन्तु पापुर करनेवाले या चिरे खुरवालों में से इन पशुओं को, अर्थात् ऊँट, खरगोश, और शापान को न खाना, क्योंकि ये पापुर तो करते हैं परन्तु चिरे खुर के नहीं होते, इस कारण वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं। ८ फिर सूअर, जो चिरे खुर का तो होता है परन्तु पापुर नहीं करता, इस कारण वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है। तुम न तो इनका माँस खाना, और न इनकी लोथ छूना। ९ “फिर जितने जलजन्तु हैं उनमें से तुम इहें खा सकते हो, अर्थात् जितनों के पंख और छिलके होते हैं। १० परन्तु जितने बिना पंख और छिलके के होते हैं उन्हें तुम न खाना; क्योंकि वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं। ११ “सब शुद्ध पक्षियों का माँस तो तुम खा सकते हो। १२ परन्तु इनका माँस न खाना, अर्थात् उकाब, हड्डफोड, कुरर; १३ गस्स्ड, चील और भाँति-भाँति के शाही; १४ और भाँति-भाँति के सब काग; १५ शुरुमुर्गी, तहमास, जलकुकक्ट, और भाँति-भाँति के बाजे; १६ छोटा और बड़ा दोनों जाति का उल्लू, और घुघ्घ; १७ धनेश, पिंड, हाड़गील; १८ सारस, भाँति-भाँति के बग्लो, हृदहृद, और चमगादड। १९ और जितने रेणेवाले जन्तु हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; वे खाए न जाएँ। २० परन्तु सब शुद्ध पंखवालों का माँस तुम खा सकते हो। २१ “जो अपनी मृत्यु से मर जाए उसे तुम न खाना; उसे अपने फाटकों के भीतर किसी परदेशी को खाने के लिये दे सकते हो, या किसी पराए के हाथ बेच सकते हो; परन्तु तू तो अपने परमेश्वर यहोवा के लिये

पवित्र प्रजा है। बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में न पकाना। २२ “बीज की सारी उपज में से जो प्रतिवर्ष खेत में उपजे उसका दशमांश अवश्य अलग करके रखना। २३ और जिस स्थान को तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिये चुन ले उसमें अपने अनन्, और नये दाखमधु, और टटके तेल का दशमांश, और अपने गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहलौंठ अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खाया करना; जिससे तुम उसका भय नित्य मानना सीखोगे। २४ परन्तु यदि वह स्थान जिसको तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम बनाएँ रखने के लिये चुन लेगा बहुत दूर हो, और इस कारण वहाँ की यात्रा तेरे लिये इन्हीं लम्ही हो कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आशीष से मिली हुई वस्तुएँ वहाँ न ले जा सके, २५ तो उसे बेचकर, स्पर्ये को बाँध, हाथ में लिये हुए उस स्थान पर जाना जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा, २६ और वहाँ गाय-बैल, या भेड़-बकरी, या दाखमधु, या मदिरा, या किसी भौंति की वस्तु क्यों न हो, जो तेरा जी चाहे, उसे उसी स्पर्ये से मोल लेकर अपने घराने समेत अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खाकर आनन्द करना। २७ और अपने फाटकों के भीतर के लेकीय को न छोड़ना, क्योंकि तेरे साथ उसका कोई भाग या अंश न होगा। २८ “तीन-तीन वर्ष के बीतने पर तीसरे वर्ष की उपज का सारा दशमांश निकलकर अपने फाटकों के भीतर इकट्ठा कर रखना; २९ तब लेकीय जिसका तेरे संग कोई निज भाग या अंश न होगा वह, और जो परदेशी, और अनाथ, और विद्वान् तेरे फाटकों के भीतर हों, वे भी आकर पेट भर खाएँ; जिससे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझे आशीष दे।

१५ “सात-सात वर्ष बीतने पर तुम छुटकारा दिया करना, ३ अर्थात् जिस किसी क्रृष्ण देनेवाले ने अपने पड़ोसी को कुछ उद्धार दिया हो, तो वह उसे छोड़ दे; और अपने पड़ोसी या भाई से उसको बरबस न भरवाए, क्योंकि यहोवा के नाम से इस छुटकारे का प्रचार हुआ है। ४ परदेशी मनुष्य से तू उसे बरबस भरवा सकता है, परन्तु जो कुछ तेरे भाई के पास तेरा हो उसे तू बिना भरवाए छोड़ देना। ५ तेरे बीच कोई दरिद्र न रहेंगा, क्योंकि जिस देश को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके तुझे देता है, कि तू उसका अधिकारी हो, उसमें वह तुझे बहुत ही आशीष देगा। ६ इतना अवश्य है कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात चित्त लगाकर सुने, और इन सारी आज्ञाओं के मानने में जो मैं आज तुम्हे सुनाता हूँ चौकसी करे। ७ तब तेरा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुझे आशीष देगा, और तू बहुत जातियों को उधार देगा, परन्तु तुझे उधार लेना न पड़ेगा; और तू बहुत जातियों पर प्रश्नाकरण, परन्तु वे तेरे ऊपर प्रभुता न करने पाएँगी। ८ “जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसके किसी फाटक के भीतर यदि तेरे भाइयों में से कोई तेरा पास दरिद्र हो, तो अपने उस दरिद्र भाई के लिये न तो अपना हादय कठोर करना, और न अपनी मुश्ती कड़ी करना; ९ जिस वस्तु की घटी उसको हो, उसकी जितनी आवश्यकता हो उतना अवश्य अपना हाथ ढीला करके उसको उधार देना। १० सचेत रह कि तेरे मन में ऐसी अधिमी चिन्ता न समाए, कि सातवाँ वर्ष जो छुटकारे का वर्ष है वह निकट है, और अपनी दृष्टि तू अपने उस दरिद्र भाई की ओर से कूर करके उसे कुछ न दे, और वह तेरे विश्व यहोवा की दुहाई है, तो यह तेरे लिये पाप ठहरेगा। ११ तू उसको अवश्य देना, और उसे देते समय तेरे मन को बुरा न लगे; क्योंकि इसी बात के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में जिनमें तू अपना हाथ लगाएँगा तुझे आशीष देगा। १२ तेरे देश में दरिद्र तो सदा पाए जाएँगे, इसलिए मैं तुझे यह आज्ञा देता हूँ कि तू अपने देश में अपने दीन-दरिद्र भाइयों को अपना हाथ ढीला करके अवश्य दान देना। १३ “यदि तेरा कोई भाई-बन्धु, अर्थात् कोई इब्री या इब्रिन, तेरे हाथ बिके, और

वह छः वर्ष तेरी सेवा कर चुके, तो सातवें वर्ष उसको अपने पास से स्वतंत्र करके जाने देना। १३ और जब तू उसको स्वतंत्र करके अपने पास से जाने दे तब उसे खाली हाथ न जाने देना; १४ वरन् अपनी भेड़-बकरियों, और खलिहान, और दाखमधु के कुण्ड में से बहुतायत से देना; तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे जैसी आशीष दी हो उसी के अनुसार उसे देना। १५ और इस बात को स्मरण रखना कि तू भी मिस्त्र देश में दास था, और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे छुड़ा लिया; इस कारण मैं आज तुझे यह आज्ञा सुनाता हूँ। १६ और यदि वह तुझ से और तेरे घराने से प्रेम रखता है, और तेरे संग अनन्द से रहता हो, और इस कारण तुझ से कहने लगे, 'मैं तेरे पास से न जाऊँगा,' १७ तो सुतारी लेकर उसका कान किवाड़ पर लगाकर छेदना, तब वह सदा तेरा दास बना रहेगा। और अपनी दासी से भी ऐसा ही करना। १८ जब तू उसको अपने पास से स्वतंत्र करके जाने दे, तब उसे छोड़ देना तुझको कठिन न जान पड़े, क्योंकि उसने छः वर्ष दो मजरूरों के बराबर तेरी सेवा की है। और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सारे कामों में तुझको आशीष देगा। १९ "तेरी गायों और भेड़-बकरियों के जितने पहलौठे नर हों उन सभी को अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र रखना; अपनी गायों के पहिलौठों से कोई काम न लेना, और न अपनी भेड़-बकरियों के पहिलौठों का ऊन करतरना। २० उस स्थान पर जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा तू यहोवा के सामने अपने-अपने घराने समेत प्रतिवर्ष उसका मौसूल खाना। २१ परन्तु यदि उसमें किसी प्रकार का दोष हो, अर्थात् वह लँगड़ा या अंधा हो, या उसमें किसी और ही प्रकार की बुराई का दोष हो, तो उसे अपने परमेश्वर यहोवा के लिये बलि न करना। २२ उसको अपने फाटकों के भीतर खाना; शुद्ध और अशुद्ध दोनों प्रकार के मुजु़व जैसे विकरों और हिरन का मौसूल खाने हैं वैसे ही उसका भी खा सकेंगे। २३ परन्तु उसका लहन न खाना; उसे जल के समान भूमि पर उण्डेल देना।

१६ "अबीब महीने को स्मरण करके अपने परमेश्वर यहोवा के लिये फसह

का पर्व मानना; क्योंकि अबीब महीने में तेरा परमेश्वर यहोवा रात को तुझे मिस्त्र से निकाल लाया। २४ इसलिए जो स्थान यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने को चुन लेगा, वही अपने परमेश्वर यहोवा के लिये भेड़-बकरियों और गाय-बैल फसह करके बलि करना। २५ उसके संग कोई खमीरी बस्तु न खाना; सात दिन तक अखमीरी रोटी जो दुःख की रोटी है खाया करना; क्योंकि तू मिस्त्र देश से उत्तावली करके निकला था; इसी रीति से तुझको मिस्त्र देश से निकलने का दिन जीवन भर स्मरण रहेगा। २६ सात दिन तक तेरे सारे देश में तेरे पास कहीं खमीरी देखने में भी न आए; और जो पशु तू पहले दिन की संध्या को बलि करे उसके मौस में कुछ सवैरे तक रहने न पाए। २७ फसह को अपने किसी फाटक के भीतर, जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे बलि न करना। २८ जो स्थान तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने के लिये चुन ले केवल वही, वर्ष के उसी समय जिसमें तू मिस्त्र से निकला था, अर्थात् सूरज झूँझने पर संध्याकाल को, फसह का पशुबलि करना। २९ तब उसका मौसूल उसी स्थान में जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले भूनकर खाना; फिर सवैरे को उठकर अपने-अपने डेरे को लौट जाना। ३० छः दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना; और सातवें दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये महासभा हो; उस दिन किसी प्रकार का काम-काज न किया जाए। ३१ "फिर जब तू खेत में हँसुआ लगाने लगे, तब से आरम्भ करके सात सप्ताह गिनना। ३२ तब अपने परमेश्वर यहोवा की आशीष के अनुसार उसके लिये स्वेच्छाबलि देकर सप्ताहों का पर्व मानना; ३३ और उस स्थान में जो तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने को चुन ले अपने-अपने बेटे-बेटियों, दास दासियों समेत तू और तेरे फाटकों के भीतर जो लेवीय हों, और जो-जो परदेशी, और अनाथ, और

विधवाएँ तेरे बीच में हों, वे सब के सब अपने परमेश्वर यहोवा के सामने आनन्द करें। ३४ और स्मरण रखना कि तू भी मिस्त्र में दास था; इसलिए इन विधियों के पालन करने में चौकसी करना। ३५ "तू जब अपने खलिहान और दाखमधु के कुण्ड में से बहुतायत से देना; तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे जैसी आशीष दी हो उसी के अनुसार उसे देना। ३६ और इस बात को स्मरण रखना कि तू भी मिस्त्र देश में दास था, और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे छुड़ा लिया; इस कारण मैं आज तुझे यह आज्ञा सुनाता हूँ। ३७ और यदि वह तुझ से और तेरे घराने से प्रेम रखता है, और तेरे संग अनन्द से रहता हो, और इस कारण तुझ से कहने लगे, 'मैं तेरे पास से न जाऊँगा,' ३८ तो सुतारी लेकर उसका कान किवाड़ पर लगाकर छेदना, तब वह सदा तेरा दास बना रहेगा। और अपनी दासी से भी ऐसा ही करना। ३९ जब तू उसको अपने पास से स्वतंत्र करके जाने दे, तब उसे छोड़ देना तुझको कठिन न जान पड़े; क्योंकि उसने छः वर्ष दो मजरूरों के बराबर तेरी सेवा की है। और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सारे कामों में तुझको आशीष देगा; तू आनन्द ही करना। ४० वर्ष में तीन बार, अर्थात् अखमीरी रोटी के पर्व, और सप्ताहों के पर्व, और ज्ञोपडियों के पर्व, इन तीनों पर्वों में तुम्हारे सब पुस्त अपने परमेश्वर यहोवा के सामने उस स्थान में जो वह चुन लेगा जाएँ। और देखो, खाली हाथ यहोवा के सामने कोई न जाएँ; ४१ सब पुस्त अपनी-अपनी पूँजी, और उस आशीष के अनुसार जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझको दी हो, दिया करें। ४२ "तू अपने एक-एक गोत्र में से, अपने सब फाटकों के भीतर जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको देता है न्यायी और सरदार नियुक्त कर लेना, जो लोगों का न्याय धार्मिकता से किया करें। ४३ तू तुम न्याय न बिगाड़ना; तू न तो पक्षपात करना; और न तो धूस लेना, क्योंकि धूस बुद्धिमान की अँखें अंधी कर देती हैं, और धर्मियों की बातें पलट देती हैं। ४४ जो कुछ नियन्त ठीक है उरी का पीछा करना, जिससे तू जीवित रहे, और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसका अधिकारी बना रहे। ४५ "तू अपने परमेश्वर यहोवा की जो बेटी बनाएगा उसके पास किसी प्रकार की लकड़ी की बनी हँड़ अशेरा का स्थापन न करना। ४६ और न कोई स्तम्भ खड़ा करना, क्योंकि उससे तेरा परमेश्वर यहोवा धृणा करता है।

१७ "तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये कोई बैल या भेड़-बकरी बलि न करना जिसमें दोष या किसी प्रकार की खोट हो; क्योंकि ऐसा करना तेरे परमेश्वर यहोवा के समीप धृणित है। ४७ "जो बस्तियाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, यदि उनमें से किसी में कोई पुस्त या झी ऐसी पाई जाए, जिसने तेरे परमेश्वर यहोवा की बाचा तोड़कर ऐसा काम किया हो, जो उसकी दृष्टि में बुरा है, ४८ अर्थात् मेरी आज्ञा का उल्लंघन करके पराए देवताओं की, या सर्व, या चन्द्रमा, या आकाश के गण में से किसी की उपासना की हो, या उनको दण्डवत किया हो, ४९ और यह बात तुझे बाई जाए और तेरे सुनने में आए; तब भली भाँति पूछाछा करना, और यदि यह बात सच ठहरे कि इस्माल में ऐसा धृणित कर्म किया गया है, ५० तो जिस पुस्त या झी ने ऐसा बुरा काम किया हो, उस पुस्त या झी को बाहर अपने फाटकों पर ले जाकर ऐसा पथराव करना कि वह मर जाए। ५१ जो प्राणदण्ड के योग्य ठहरे वह एक ही की साक्षी से न मार डाला जाए, किन्तु दो या तीन मनुष्यों की साक्षी से मार डाला जाए। ५२ उसके मार डालने के लिये सबसे पहले साक्षियों के हाथ, और उनके बाद और सब लोगों के हाथ उठें। इसी रीति से ऐसी बुराई को अपने मध्य से दूर करना। ५३ "यदि तेरी बस्तियों के भीतर कोई झगड़े की बात हो, अर्थात् आपस के खन, या चिवाद, या मारपीट का कोई मुकदमा उठे, और उसका न्याय करना तेरे लिये कठिन जान पड़े, तो उस स्थान को जाकर जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा; ५४ लेवीय याजकों के पास और उन दिनों के न्यायियों के पास जाकर पूछाछा करना, कि वे तुम को न्याय की बातें बताएँ। ५५ और न्याय की जैसी बात उस स्थान के लोग जो यहोवा चुन लेगा तुझे बता दें, उसी के अनुसार करना; और जो व्यवस्था की जो बात वे तुझे दें उसी के अनुसार चलाने में चौकसी करना; ५६ व्यवस्था की जो बात वे तुझे बताएँ, और न्याय की जो बात वे तुझ से कहें,

उसी के अनुसार करना; जो बात वे तुझको बताएँ उससे दाएँ या बाएँ न मुड़ना। १२ और जो मनुष्य अभिमान करके उस याजक की, जो वहाँ तेरे परमेश्वर यहोवा की सेवा टहल करने को उपस्थित रहेगा, न माने, या उस न्यायी की न सुने, तो वह मनुष्य मार डाला जाए; इस प्रकार तू इस्पाल में से ऐसी बुराई को दूर कर देना। १३ इससे सब लोग सुनकर डर जाएँगे, और फिर अभिमान नहीं करेंगे। १४ “जब तू उस देश में पहुँचे जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, और उसका अधिकारी हो, और उनमें बसकर कहने लगे, कि चारों ओर की सब जातियों के समान मैं भी अपने ऊपर राजा ठहराऊँगा; १५ तब जिसको तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले अवश्य उसी को राजा ठहराना। अपने भाइयों ही में से किसी को अपने ऊपर राजा ठहराना; किसी परदेशी को जो तेरा भाई न हो तू अपने ऊपर अधिकारी नहीं ठहरा सकता। १६ और वह बहुत घोड़े न रखे, और न इस मनसा से अपनी प्रजा के लोगों को मिस्त्र में भेजे कि उसके पास बहुत से घोड़े हो जाएँ, क्योंकि यहोवा ने तुम से कहा है, कि तुम उस मार्ग से फिर कभी न लौटना। १७ और वह बहुत छिंगाँ भी न रखे, ऐसा न हो कि उसका मन यहोवा की ओर से पलट जाएँ, और न वह अपना सोना-चाँदी बहुत बढ़ाए। १८ और जब वह राजगढ़ी पर विराजमान हो, तब इसी व्यवस्था की पुस्तक, जो लेवीय याजकों के पास रहेगी, उसकी एक नकल अपने लिये कर ले। १९ और वह उसे अपने पास रखे, और अपने जीवन भर उसको पढ़ा करे, जिससे वह अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना, और इस व्यवस्था और इन विधियों की सारी बातों को मानने में चौकसी करना, सीखे; २० जिससे वह अपने मन में घमण्ड करके अपने भाइयों को तुच्छ न जाने, और इन आज्ञाओं से न तो दाँएँ मुड़ें और न बाँएँ; जिससे कि वह और उसके बंश के लोग इस्पालियों के मध्य बहुत दिनों तक राज्य करते रहें।

१८ “लेवीय याजकों का, वरन् सारे लेवीय गोत्रियों का, इस्पालियों के संग कोई भाग या अंश न हो; उनका भोजन हव्य और यहोवा का दिया हुआ भाग हो। १ उनका अपने भाइयों के बीच कोई भाग न हो; क्योंकि अपने बंचन के अनुसार यहोवा उनका निज भाग ठहरा है। २ और चाहे गाय-बैल चाहे भेड़-बकरी का मेलबलि हो, उसके करनेवाले लोगों की ओर से याजकों का हक यह हो, कि वे उसका कंधा और दोनों गाल और पेट याजक कों दें। ३ तू उसको अपनी पहली उपज का अन्न, नया दाखरमधू, और टटका तेल, और अपनी भेड़ों का वह ऊन देना जो पहली बार करता गया हो। ४ क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे सब गोत्रों में से उसी को चुन लिया है, कि वह और उसके बंश सदा उसके नाम से सेवा टहल करने को उपस्थित हुआ करें। ५ “फिर यदि कोई लेवीय इस्पाल की बस्तियों में से किसी से, जहाँ वह परदेशी के समान रहता हो, अपने मन की बड़ी अभिलाषा से उस स्थान पर जाए जिसे यहोवा चुन लेगा, ६ तो अपने सब लेवीय भाइयों के समान, जो वहाँ अपने परमेश्वर यहोवा के समाने उपस्थित होंगे, वह भी उसके नाम से सेवा टहल करे। ७ और अपने पूर्वजों के भाग के मोल को छोड़ उसको भोजन का भाग भी उनके समान मिला करे। ८ “जब तू उस देश में पहुँचे जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, तब वहाँ की जातियों के अनुसार यिनौना काम करना न सीखना। ९ तुझे मैं कोइँ ऐसा न हो जो अपने बेटे या बेटी को आग में होम करके चढ़ानेवाला, या भावी कहनेवाला, या शुभ-अशुभ मुहूर्तों का माननेवाला, या टो-न्हा, या तांत्रिक, १० या बाजीगर, या ओझों से पूछनेवाला, या भूत साधनेवाला, या भूतों का जगानेवाला हो। ११ क्योंकि जितने ऐसे-ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित हैं; और इन्हीं घृणित कामों के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तेरे समाने से निकालने पर है। १२ तू अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख सिद्ध बना रहना। १३ “वे जातियाँ

जिनका अधिकारी तू होने पर है शुभ-अशुभ मुहूर्तों के माननेवालों और भावी कहनेवालों की सुना करती हैं; परन्तु तुझको तेरे परमेश्वर यहोवा ने ऐसा करने नहीं दिया। १४ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात् तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नवी को उत्पन्न करेगा; तू उसी की सुनना; १५ यह तेरी उस बिनती के अनुसार होगा, जो तुम होरेब पहाड़ के पास सभा के दिन अपने परमेश्वर यहोवा से की थी, ‘मुझे न तो अपने परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर सुनना, और न वह बड़ी आग फिर देखनी पड़े, कहीं ऐसा न हो कि मर जाऊँ।’ १६ तब यहोवा ने मुझसे कहा, ‘वे जो कुछ कहते हैं ठीक कहते हैं। १७ इसलिए मैं उनके लिये उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नवी को उत्पन्न करूँगा; और अपना बचन उसके मुँह में डालूँगा; और जिस-जिस बात की मैं उसे आजा दूँगा वही वह उनको कह सुनाएगा। १८ और जो मनुष्य मेरे वह बचन जो वह मेरे नाम से कहेगा ग्रहण न करेगा, तो मैं उसका हिसाब उससे लूँगा। १९ परन्तु जो नवी अभिमान करके मेरे नाम से कोई ऐसा बचन कहे जिसकी आज्ञा मैंने उसे न दी हो, या पराए देवताओं के नाम से कुछ कहे, वह नवी मार डाला जाए।’ २० और यदि तू अपने मन में कहे, ‘जो बचन यहोवा ने कोई कहा उसको हम किस रीति से पहचानें?’ २१ तो पहचान यह है कि जब कोई नवी यहोवा के नाम से कुछ कहे; तब यदि वह बचन न घटे और पूरा न हो जाए, तो वह बचन यहोवा का कहा हुआ नहीं; परन्तु उस नवी ने वह बात अभिमान करके कही है, तू उससे भय न खाना।

१९ “जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को नाश करे जिनका देश वह तुझे देता है, और तू उनके देश का अधिकारी होकर उनके नगरों और घरों में रहने लगे, २० तब अपने देश के बीच जिसका अधिकारी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे कर देता है तीन नगर अपने लिये अलग कर देना। २१ और तू अपने लिये मार्ग भी तैयार करना, और अपने देश के, जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे सौप देता है, तीन भाग करना, ताकि हर एक खनी वही भाग जाए। २२ और जो खनी वहों भागकर अपने प्राण को बचाए, वह इस प्रकार का हो; अर्थात् वह किसी से बिना पहले बैर रखे या उसको बिना जाने बूझे मार डाला हो। २३ जैसे कोई किसी के संग लकड़ी काटने को जंगल में जाए, और वृक्ष काटने को कुल्हाड़ी हाथ से उठाए, और कुल्हाड़ी बैट से निकलकर उस भाई को ऐसी लगे कि वह मर जाए तो वह उन नगरों में से किसी में भागकर जीवित रहे; २४ ऐसा न हो कि मार्ग की लम्बाई के कारण खन का पलटा लेनेवाला अपने क्रोध के जंगल में उसका पीछा करके उसको जा पकड़े, और मार डाले, यद्यपि वह प्राणदण्ड के योग्य नहीं, क्योंकि वह उससे बैर नहीं रखता था। २५ इसलिए मैं तुझे यह आज्ञा देता हूँ, कि अपने लिये तीन नगर अलग कर रखना। २६ “यदि तेरा परमेश्वर यहोवा उस शपथ के अनुसार जो उसने तेरे पूर्वजों से खाई थी, तेरी सीमा को बढ़ाकर वह सारा देश तुझे दे, जिसके देने का बचन उसने तेरे पूर्वजों को दिया था २७ यदि तू इन सब आज्ञाओं के मानने में जिन्हें मैं आज तुझको सनाता हूँ चौकसी करे, और अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखे और सदा उसके मार्ग पर चलता रहे तो इन तीन नगरों से अधिक और भी तीन नगर अलग कर देना, २८ इसलिए कि तेरे उस देश में जो तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा निज भाग करके देता है, किसी निर्दोष का खन न बहाया जाए, और उसका दोष तुझ पर न लगे। २९ “परन्तु यदि कोई किसी से बैर रखकर उसकी घात में लगे, और उस पर लपककर उसे ऐसा मारे कि वह मर जाए, और फिर उन नगरों में से किसी में भाग जाए, ३० तो उसके नगर के पुरानिये किसी को भेजकर उसको वहाँ से मैंगवाकर खन के पलटा लेनेवाले के हाथ में सौप दें, कि वह मार डाला जाए। ३१ उस पर तरस न खाना, परन्तु निर्दोष के खन का दोष इस्पाल से दूर करना, जिससे तुम्हारा भला हो। ३२ “जो देश तेरा परमेश्वर

यहोवा तुझको देता है, उसका जो भाग तज्ज्ञ मिलेगा, उसमें किसी की सीमा जिसे प्राचीन लोगों ने ठहराया हो न हटाना। १५ “किसी मनुष्य के विस्तु किसी प्रकार के अधर्घ या पाप के विषय में, चाहे उसका पाप कैसा ही क्यों न हो, एक ही जन की साक्षी न सुनना, परन्तु दो या तीन साक्षियों के कहने से बात पक्की ठहरे। १६ यदि कोई झाँठी साक्षी देवेवाला किसी के विस्तु यहोवा से फिर जाने की साक्षी देने को खड़ा हो, १७ तो वे दोनों मनुष्य, जिनके बीच ऐसा मुकदमा उठा हो, यहोवा के सम्मुख, अर्थात् उन दिनों के याजकों और न्यायियों के सामने खड़े किए जाएँ; १८ तब न्यायी भली भाँति पूछताछ करें, और यदि इस निर्णय पर पहुँचें कि वह झाँठा साक्षी है, और अपने भाई के विस्तु झाँठी साक्षी ही है १९ तो अपने भाई की जैसी भी हानि करवाने की युक्ति उसने की हो वैसी ही तुम भी उसकी करना; इसी रीत से अपने बीच में से ऐसी बुराई को दूर करना। २० तब दूसरे लोग सुनकर ढेरेंगे, और आगे को तैर बीच फिर ऐसा बुरा काम नहीं करेंगे। २१ और तू बिल्कुल तरस न खाना; प्राण के बदले प्राण का, आँख के बदले आँख का, दाँत के बदले दाँत का, हाथ के बदले हाथ का, पाँव के बदले पाँव का टण्ड देना।

२० “जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने को जाए, और घोड़े, रथ, और अपने

से अधिक सेना को देखे, तब उनसे न डरना; तेरा परमेश्वर यहोवा जो तुझको मिस्त्र देश से निकाल ले आया है वह तेरे संग है। २ और जब तुम युद्ध करने को शत्रुओं के निकट जाओ, तब याजक सेना के पास आकर कहे, ३ “हे इमाएलियों सुनो, आज तुम अपने शत्रुओं से युद्ध करने को निकट आए हो; तुम्हारा मन कच्चा न हो; तुम मत डरो, और न थरथराओ, और न उनके सामने भय खाओ; ४ क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे शत्रुओं से युद्ध करने और तुहें बचाने के लिये तुम्हारे संग-संग चलता है।” ५ फिर सरदार सिपाहियों से यह कहें, ‘‘तुम मैं से कौन है जिसने नया घर बनाया हो और उसका समर्पण न किया हो? तो वह अपने घर को लौट जाए, कहीं ऐसा न हो कि वह युद्ध में मर जाए और दूसरा मनुष्य उसका समर्पण करे। ६ और कौन है जिसने दाख की बारी लगाई हो, परन्तु उसके फल न खाए हों? वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह युद्ध में मरा जाए, और दूसरा मनुष्य उससे विवाह कर ल।’’ ७ इसके अलावा सरदार सिपाहियों से यह भी कहें, ‘‘कौन-कौन मनुष्य है जो डरपोक और कच्चे मन का है, वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि उसको देखकर उसके भाइयों का भी हियाव टूट जाए।’’ ८ और जब प्रधान सिपाहियों से यह कह चुकें, तब उन पर प्रधानता करने के लिये सेनापतियों को नियुक्त करें। ९ “जब तू किसी नगर से युद्ध करने को उसके निकट जाए, तब पहले उससे संधि करने का समाचार दे। १० और यदि वह संधि करना स्वीकार करे और तेरे लिये अपने फाटक खोल दे, तब जितने उसमें हों वे सब तेरे अधीन होकर तेरे लिये बेगार करनेवाले ठहरें। ११ परन्तु यदि वे तुम्ह से संधि न करें, परन्तु तुम्ह से लड़ना चाहें, तो तू उस नगर को घेर लेना; १२ और जब तेरा परमेश्वर यहोवा उसे तेरे हाथ में सौंप दे तब उसमें के सब पुस्तकों को तलवार से मार डालना। १३ परन्तु बिंद्यों और बाल-बच्चे, और पशु आदि जितनी लट्ट उस नगर में हो उसे अपने लिये रख लेना; और तेरे शत्रुओं की लट्ट जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे उसे काम में लाना। १४ इस प्रकार उन नगरों से करना जो तुझ से बहत दूर है, और जो यहाँ की जातियों के नगर नहीं है। १५ परन्तु जो नगर इन लोगों के हैं, जिनका अधिकारी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको ठहराने पर है, उनमें से किसी प्राणी को जीवित न रख छोड़ना, १६ परन्तु

उनका अवश्य सत्यानाश करना, अर्थात् हितियों, एपोरियों, कनानियों, परिजियों, हिब्बियों, और यबसियों को, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है; १७ ऐसा न हो कि जितने यिनाने काम वे अपने देवताओं की सेवा में करते आए हैं वैसा ही करना तुम्हें भी सिखाएँ, और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के विस्तु पाप करने लगो। १८ “जब तू युद्ध करते हुए किसी नगर को जीतने के लिये उसे बहत दिनों तक धैर रहे, तब उसके वृक्षों पर कुल्हाड़ी चलाकर उन्हें नाश करना, क्योंकि उनके फल तेरे खाने के काम आयें, इसलिए उन्हें न काटना। क्या मैदान के वृक्ष भी मनुष्य हैं कि तू उनको भी धेर रखें? १९ परन्तु जिन वृक्षों के विषय में तू यह जान ले कि इनके फल खाने के नहीं हैं, तो उनको काटकर नाश करना, और उस नगर के विस्तु उस समय तक धेराबन्दी किए रहना जब तक वह तेरे वश में न आ जाए।

२१ “यदि उस देश के मैदान में जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है किसी

मारे हुए का शब पड़ा हुआ मिले, और उसको किसने मार डाला है यह पता न चले, २ तो तेरे पुरनिये और न्यायी निकलकर उस शब के चारों ओर के एक-एक नगर की दूरी को नामें; ३ तब जो नगर उस शब के सबसे निकट ठहरे, उसके पुरनिये एक ऐसी बछिया ले ले, जिससे कुछ काम न लिया गया हो, और जिस पर ज्ञान कभी न रखा गया हो। ४ तब उस नगर के पुरनिये उस बछिया को एक बारहमासी नदी की ऐसी तराई में जो न जोती और न बोई गई हो ले जाएँ, और उसी तराई में उस बछिया का गला तोड़ दें। ५ और लेवीय याजक भी निकट आएँ, क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उनको चुन लिया है कि उसकी सेवा टहल करें और उसके नाम से अशीर्वाद दिया करें, और उनके कहने के अनुसार ह एक झाँड़े और मारपीट के मुकदमे का निर्णय हो। ६ फिर जो नगर उस शब के सबसे निकट ठहरे, उसके सब पुरनिये उस बछिया के ऊपर जिसका गला तराई में तोड़ा गया हो अपने-अपने हाथ धोकर करें, ७ “यह खन हमने नहीं किया, और न यह काम हमारी आँखों के सामने हआ है।” ८ इसलिए ह यहोवा, अपनी छुडाई हुई इमाएली प्रजा का पाप ढाँपकर निर्दोष खन का पाप अपनी इमाएली प्रजा के सिर पर से उतार।” तब उस खन के दोष से उनको क्षमा कर दिया जाएगा। ९ इस प्रकार वह काम करके जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है तू निर्दोष के खन का दोष अपने मध्य में से दूर करना। १० “जब तू अपने शत्रुओं से युद्ध करने को जाए, और तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे हाथ में कर दे, और तू उन्हें बन्दी बना ले, ११ तब यदि तेरे बन्दियों में किसी सुन्दर झीं की देखकर उस पर मोहित हो जाएँ, और उससे ब्याह कर लेना चाहे, १२ तो उसे अपने घर के भीतर ले आना, और वह अपना सिर मुँड़ाएँ, नाखन कटाएँ, १३ और अपने बन्धन के बन्ध उतारकर तेरे घर में महिने भर रहकर अपने माता पिता के लिये विलाप करती रहे; उसके बाद तू उसके पास जाना, और तू उसका पति और वह तेरी पत्नी बने। १४ फिर यदि वह तुझको अच्छी न लगे, तो जहाँ वह जाना चाहे वहाँ उसे जाने देना; उसको स्पष्ट लेकर कहीं न बेचना, और तेरा उससे शारीरिक सम्बंध था, इस कारण उससे दासी के सामान व्यवहार न करना। १५ “यदि किसी पुस्तकी की दो पिण्याँ हों, और उसे एक प्रिय और दूसरी अप्रिय हो, और प्रिया और अप्रिय दोनों खिलावें जैसे, परन्तु जेठा अप्रिय का हो, १६ तो जब वह अपने पुत्रों को अपनी सम्पत्ति का बैंटवारा करे, तब यदि अप्रिय का बेटा जो सचमुच जेठा है यदि जीवित हो, तो वह प्रिया के बेटे को जेठांस न दे सकेगा; १७ वह यह जानकर कि अप्रिय का बेटा मेरे पौस्तक का पहला फल है, और जेठे का अधिकार उसी का है, उसी को अपनी सारी सम्पत्ति में से दो भाग देकर जेठांसी माने। १८ “यदि किसी का हठीला और बिद्रोही बेटा हो, जो अपने माता-पिता की बात न माने, किन्तु

ताड़ना देने पर भी उनकी न सुने, १९ तो उसके माता-पिता उसे पकड़कर अपने नगर से बाहर फटक के निकट नगर के पुरनियों के पास ले जाएँ, २० और वे नगर के पुरनियों से कहें, ‘हमारा यह बेटा हठीला और दगैत है, यह हमारी नहीं सुनता; यह उडाऊ और पियकड़ है।’ २१ तब उस नगर के सब पुस्त उसको पथराव करके मार डालें, इस रीति से त अपने मध्य में से ऐसी बुराई को दूर करना, तब सारे इसाएली सुनकर भय खाएँगे। २२ “पिंफ यदि किसी से प्राणदण्ड के योग्य कोई पाप हुआ हो जिससे वह मार डाला जाए, और त उसके शव को वृक्ष पर लटका दे, २३ तो वह शव रात को वृक्ष पर टूँगा न रहे, अवश्य उसी दिन उसे मिटी देना, क्योंकि जो लटकाया गया हो वह परमेश्वर की ओर से श्रापित ठहरता है; इसलिए जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके देता है उस भूमि को अशुद्ध न करना।

२२ “त अपने भाई के गाय-बैल या भेड़-बकरी को भटकी हई देखकर

अनदेखी न करना, उसको अवश्य उसके पास पहुँचा देना। २३ परन्तु यदि तेरा वह भाई निकट न रहता हो, या त उसे न जानता हो, तो उस पशु को अपने घर के भीतर ले आना, और जब तब तेरा वह भाई उसको न ढूँढ़ तब तक वह तेरा पास रहे; और जब वह उसे ढूँढ़ तब उसको दे देना। ३ और उसके गदहे या वस्त्र के विषय, वरन् उसकी कोई वस्तु क्यों न हो, जो उससे खो गई हो और तुझको मिले, उसके विषय में भी ऐसा ही करना; तू देखी-अनदेखी न करना। ४ “त अपने भाई के गदहे या बैल की मार्ग पर गिरा हुआ देखकर अनदेखी न करना; उसके उठाने में अवश्य उसकी सहायता करना। ५ “कोई भी पुस्त का पहरावा न पहने, और न कोई पुस्त भी का पहरावा पहने; क्योंकि ऐसे कामों के सब करनेवाले तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में धूपित हैं। ६ “यदि वृक्ष या भूमि पर तेरे सामने मार्ग में किसी चिड़िया का घोंसला मिले, चाहे उसमें बच्चे हों चाहे अण्डे, और उन बच्चों या अण्डों पर उनकी माँ बैठी हुई हो, तो बच्चों समेत माँ को न लेना; ७ बच्चों को अपने लिये ले तो ले, परन्तु माँ को अवश्य छोड़ देना; इसलिए कि तेरा भला हो, और तेरी आयु के दिन बहुत हों। ८ “जब त नया घर बनाए तब उसकी छत पर आड़ के लिये मुण्डेर बनाना, ऐसा न हो कि कोई छत पर से गिर पड़े, और त अपने घराने पर खून का दोष लगाए। ९ “अपनी दाख की बारी में दो प्रकार के बीज न बोना, ऐसा न हो कि उसकी सारी उपज, अर्थात् तेरा बोया हुआ बीज और दाख की बारी की उपज दोनों अपवित्र ठहरें। १० बैल और गदहा दोनों संग जोतकर हल न चलाना। ११ उन और सभी की मिलावट से बना हुआ वस्त्र न पहनना। १२ “अपने आँढ़े के चारों ओर की कोर पर झालार लगाया करना। १३ “यदि कोई पुस्त किसी भी को ब्याहे, और उसके पास जाने के समय वह उसको अप्रिय लगे, १४ और वह उस भी की नामधाराई करे, और यह कहकर उस पर कुर्कम का दोष लगाए, ‘इस भी को मैंने ब्याहा, और जब उससे संगति की तब उसमें कुँवारी अवस्था के लक्षण न पाए,’ १५ तो उस कन्या के माता-पिता उसके कुँवारीपन के चिन्ह लेकर नगर के बृद्ध लोगों के पास फटक के बाहर जाएँ, १६ और उस कन्या का पिता बृद्ध लोगों से कहे, ‘मैंने अपनी बेटी इस पुस्त को ब्याह दी, और वह उसको अप्रिय लगती है,’ १७ और वह तो यह कहकर उस पर कुर्कम का दोष लगाता है, कि मैंने तेरी बेटी में कुँवारीपन के लक्षण नहीं पाए। परन्तु मेरी बेटी के कुँवारीपन के चिन्ह ये हैं।’ तब उसके माता-पिता नगर के बृद्ध लोगों के सामने उस चढ़ार को फैलाएँ। १८ तब नगर के पुरनियों उस पुस्त को पकड़कर ताड़ना दें, १९ और उस पर सौ शेकेल चाँदी का दण्ड भी लगाकर उस कन्या के पिता को दें, इसलिए कि उसने एक इसाएली कन्या की नामधाराई की है, और वह उसी की पत्नी बनी रहे, और वह जीवन भर उस भी को त्यागने न

पाए। २० परन्तु यदि उस कन्या के कुँवारीपन के चिन्ह पाए न जाएँ, और उस पुस्त की बात सच ठहरे, २१ तो वे उस कन्या को उसके पिता के घर के द्वार पर ले जाएँ, और उस नगर के पुस्त उसको पथराव करके मार डालें; उसने तो अपने पिता के घर में वेश्या का काम करके बुराई की है, इस प्रकार तू अपने मध्य में से ऐसी बुराई को दूर करना। २२ “यदि कोई पुस्त दूरे पुस्त की ब्याही हुई भी के सांग सोता हुआ पकड़ा जाए, तो जो पुस्त उस भी के सांग सोता हो वह और वह भी दोनों मार डाले जाएँ, इस प्रकार तू ऐसी बुराई को इसाएल में से दूर करना। २३ “यदि किसी कुँवारी कन्या के ब्याह की बात लगी हो, और कोई दूसरा पुस्त उसे नगर में पाकर उससे कुर्कम करे, २४ तो तुम उन दोनों को उस नगर के फटक के बाहर ले जाकर उन पर पथराव करके मार डालना, उस कन्या को तो इसलिए कि वह नगर में रहते हुए भी नहीं चिल्लाई, और उस पुस्त को इस कारण कि उसने पड़ोसी की भी का अपमान किया है; इस प्रकार तू अपने मध्य में से ऐसी बुराई को दूर करना। २५ “परन्तु यदि कोई पुस्त किसी कन्या को जिसके ब्याह की बात लगी हो मैदान में पाकर बरबस उससे कुर्कम करे, तो केवल वह पुस्त मार डाला जाए, जिसने उससे कुर्कम किया हो। २६ और उस कन्या से कुछ न करना; उस कन्या का पाप प्राणदण्ड के योग्य नहीं, क्योंकि जैसे कोई अपने पड़ोसी पर चढ़ाई करके उसे मार डाले, वैसी ही यह बात भी ठहरेगी; २७ कि उस पुस्त ने उस कन्या को मैदान में पाया, और वह चिल्लाई तो सही, परन्तु उसको कोई बचानेवाला न मिला। २८ “यदि किसी पुस्त को कोई कुँवारी कन्या मिले जिसके ब्याह की बात न लगी हो, और वह उसे पकड़कर उसके साथ कुर्कम करे, और वे पकड़े जाएँ, २९ तो जिस पुस्त ने उससे कुर्कम किया हो वह उस कन्या के पिता को पचास शेकेल चाँदी दे, और वह उसी की पत्नी हो, उसने उसका अपमान किया, इस कारण वह जीवन भर उसे न त्यागने पाए। ३० “कोई अपनी सौतेली माता को अपनी भी न बनाए, वह अपने पिता का ओढ़ना न उठाए।

२३ “जिसके अण्ड कुचले गए या लिंग काट डाला गया हो वह यहोवा की

सभा में न आने पाए। १ “कोई कुर्कम से जन्मा हुआ यहोवा की सभा में न आने पाए; किन्तु दस पीढ़ी तक उसके वंश का कोई यहोवा की सभा में न आने पाए। २ “कोई अम्मोनीया मोआबी यहोवा की सभा में न आने पाए; उनकी दसवीं पीढ़ी तक का कोई यहोवा की सभा में कभी न आने पाए; ३ इस कारण से कि जब तुम मिस्थ से निकलकर आते थे तब उन्होंने अन्न जल लेकर मार्ग में तुम से भेट नहीं की, और यह भी कि उन्होंने अस्मन्हैरैम देश के पतोर नगरावाले बोर के पुत्र बिलाम को तुझे श्वाप देने के लिये दक्षिणा दी। ४ परन्तु तेरे परमेश्वर यहोवा ने बिलाम की न सुनी; किन्तु तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे निमित्त उसके श्वाप को आशीष में बदल दिया, इसलिए कि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से प्रेम रखता था। ५ तू जीवन भर उनका कुशल और भलाई कभी न चाहना। ६ “किसी एटोमी से धूण न करना, क्योंकि वह तेरा भाई है; किसी मिस्थी से भी धूण न करना, क्योंकि उसके देश में तू परदेशी होकर रहा था। ७ उनके जो परपोते उत्पन्न हों वे यहोवा की सभा में आने पाएँ। ८ “जब तू शबूओं से लड़ने को जाकर छावनी डाले, तब सब प्रकार की बुरी बातों से बचे रहना। ९ यदि तेरे बीच कोई पुस्त उस अशुद्धता से जो रात्रि को आप से आप हुआ करती है अशुद्ध हुआ हो, तो वह छावनी से बाहर जाए, और छावनी के भीतर न आए; १० परन्तु संध्या से कुछ पहले वह सान करे, और जब सूर्य ढूब जाए तब छावनी में आए। ११ “छावनी के बाहर शौच-स्थान बनाना, और शौच के लिए वही जाया करना; १२ और तेरे पास के हथियारों में एक खनती भी रहे; और जब तू दिशा फिरने को बैठे, तब उससे खोदकर अपने मल को ढाँप देना। १३ क्योंकि

तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको बचाने और तेरे शत्रुओं को तुझ से हरवाने को तेरी छावनी के मध्य घूमता रहेगा, इसलिए तेरी छावनी पवित्र रहनी चाहिये, ऐसा न हो कि वह तेरे मध्य में कोई अशुद्ध वस्तु देखकर तुझ से फिर जाए। ५ “जो दास अपने स्वामी के पास से भागकर तेरी शरण ले उसको उसके स्वामी के हाथ न पकड़ा देना; ६ वह तेरे बीच जो नगर उसे अच्छा लगे उसी में तेरे संग रहने पाएँ और तू उस पर अत्याचार न करना। ७ “इसाएली बिंग्हों में से कोई देवदासी न हो, और न इसाएलियों में से कोई उपस्थिति ऐसा बुरा काम करनेवाला हो। ८ तू वेश्यापन की कमाई या कृते की कमाई किसी मनन्त को पूरी करने के लिये अपने परमेश्वर यहोवा के घर में न लाना; क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा के समीप ये दोनों की दोनों कमाई घृणित कर्म है। ९ “अपने किसी भाई को ब्याज पर क्रण न देना, चाहे स्पया हो, चाहे भोजनवस्तु हो, चाहे कोई वस्तु हो जो ब्याज पर दी जाती है, उसे ब्याज पर न देना। १० तू परदेशी को ब्याज पर क्रण तो दे, परन्तु अपने किसी भाई से ऐसा न करना, ताकि जिस देश का अधिकारी होने को तू जा रहा है, वहाँ जिस-जिस काम में अपना हाथ लगाए, उन सभी में तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे आशीष दे। ११ “जब तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मन्त्र माने, तो उसे पूरी करने में विलम्ब न करना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा उसे निश्चय तुझ से ले लेगा, और विलम्ब करने से तू पापी ठहरेगा। १२ परन्तु यदि तू मन्त्र न माने, तो तेरा कोई पाप नहीं। १३ जो कुछ तेरे मुँह से निकले उसके पूरा करने में चौकसी करना; तू अपने मुँह से वचन देकर अपनी इच्छा से अपने परमेश्वर यहोवा की जैसी मन्त्र माने, वैसा ही स्वतंत्रता पूर्क उसे पूरा करना। १४ “जब तू किसी दूसरे की दाख की बारी में जाए, तब पेट भर मनमाने दाख खा तो खा, परन्तु अपने पात्र में कुछ न रखना। १५ और जब तू किसी दूसरे के खड़े खेत में जाए, तब तू हाथ से बातें तोड़ सकता है, परन्तु किसी दूसरे के खड़े खेत पर हँसुआ न लगाना।

२४ “यदि कोई उपस्थिति जी को ब्याह ले, और उसके बाद उसमें लज्जा की बात पाकर उससे अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसको अपने घर से निकाल दे। २ और जब वह उसके घर से निकल जाए, तब दूसरे उपस्थिति की हो सकती है। ३ परन्तु यदि वह उस दूसरे उपस्थिति को भी अप्रिय लगे, और वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर उसके हाथ में देकर उसे अपने घर से निकाल दे, या वह दूसरा उपस्थिति जिसने उसको अपनी जी कर लिया हो मर जाए, ४ तो उसका पहला पति, जिसने उसको निकाल दिया हो, उसके अशुद्ध होने के बाद उसे अपनी पत्नी न बनाने पाए क्योंकि यह यहोवा के सम्मुख घृणित बात है। इस प्रकार तू उस देश को जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके तुझे देता है पापी न बनाना। ५ “जिस पुरुष का हाल ही में विवाह हुआ हो, वह सेना के साथ न जाए और न किसी काम का भार उस पर डाला जाएँ; वह वर्ष भर अपने घर में स्वतंत्रता से रहकर अपनी ब्याही हृद्दी की प्रसन्न करता रहे। ६ “कोई मनुष्य चक्की की या उसके ऊपर के पाट को बन्धक न रखे; क्योंकि वह तो मानो प्राण ही को बन्धक रखना है। ७ “यदि कोई अपने किसी इसाएली भाई को दास बनाने या बेच डालने के विचार से चुराता हुआ पकड़ा जाए, तो ऐसा चोर मार डाला जाएँ, ऐसी बुराई को अपने मध्य में से दूर करना। ८ “कोढ़ की व्याधि के विषय में चौकस रहना, और जो कुछ लेकीय याजक तुम्हें सिखाएँ उसी के अनुसार यह से करने में चौकसी करना; जैसी आज्ञा मैंने उनको दी है वैसा करने में चौकसी करना। ९ स्मरण रख कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने, जब तुम मिथ्या से निकलकर आ रहे थे, तब मार्ग में मिथ्याम से क्या किया। १० “जब तू अपने किसी भाई को कुछ उधार दे, तब बन्धक की वस्तु लेने के लिये उसके घर के भीतर न घुसना। ११ तू बाहर खड़ा रहना, और जिसको तू उधार दे वही

बन्धक की वस्तु को तेरे पास बाहर ले आए। १२ और यदि वह मनुष्य कंगाल हो, तो उसका बन्धक अपने पास रखे हुए न सोना; १३ सर्व अस्त होते-होते उसे वह बन्धक अवश्य फेर देना, इसलिए कि वह अपना ओढ़ना ओढ़कर सो सके और तुझे आशीर्वाद दे; और यह तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में धार्मिकता का काम ठहरेगा। १४ “कोई मजदूर जो दीन और कंगाल हो, चाहे वह तेरे भाइयों में से हो चाहे तेरे देश के फाटकों के भीतर रहनेवाले परदेशियों में से हो, उस फेर अंधेरे न करना; १५ यह जानकर कि वह दीन है और उसका मन मजदूरी में लगा रहता है, मजदूरी करने ही के दिन सर्वस्त से फहले तू उसकी मजदूरी देना; ऐसा न हो कि वह तेरे कारण यहोवा की दृष्टि दे, और तू पापी ठहरे। १६ “पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाएँ; जिसने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए। १७ “किसी परदेशी मनुष्य या अनाथ बालक का न्याय न बिगड़ना, और न किसी विधवा के कपड़े को बन्धक रखना; १८ और इसको स्मरण रखना कि तू मिथ्या में दास था, और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे वहाँ से छुड़ा लाया है; इस कारण मैं तुझे यह आज्ञा देता हूँ। १९ “जब तू अपने पक्के खेत को काटे, और एक पूला खेत में भूल से छूट जाए, तो उसे लेने को फिर न लौट जाना; वह परदेशी, अनाथ, और विधवा के लिये पड़ा रहे; इसलिए कि परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझको आशीष दे। २० जब तू अपने जैतून के बक्ष को झाड़े, तब डालियों को दूसरी बार न झाड़ना; वह परदेशी, अनाथ, और विधवा के लिये रह जाए। २१ जब तू अपनी दाख की बारी के फल तोड़े, तो उसका दाना-दाना न तोड़ लेना; वह परदेशी, अनाथ और विधवा के लिये रह जाए। २२ और इसको स्मरण रखना कि तू मिथ्या देश में दास था; इस कारण मैं तुझे यह आज्ञा देता हूँ।

२५ “यदि मनुष्यों के बीच कोई झाड़ा हो, और वे न्याय करवाने के लिये न्यायियों के पास जाएँ, और वे उनका न्याय करें, तो निर्दोष को निर्दोष और दोषी को दोषी ठहराएँ। २ और यदि दोषी मार खाने के योग्य ठहरे, तो न्यायी उसको गिरवाकर अपने सामने जैसा उसका दोष हो उसके अनुसार कोड़े गिनकर लगवाएँ। ३ वह उसे चालीस कोड़े तक लगावा सकता है, इससे अधिक नहीं लगावा सकता, ऐसा न हो कि इससे अधिक बहुत मार खिलवाने से तेरा भाई दृष्टि में तुच्छ ठहरे। ४ “दाँवते समय चलते हुए बैल का मुँह न बाँधना। ५ “जब कई भाई इसंग रहते हों, और उनमें से एक निपुन मर जाएँ, तो उसकी जी का ब्याह परगत्री से न किया जाएँ; उसके पति का भाई उसके पास जाकर उसे अपनी पत्नी कर ले, और उससे पति के भाई का धर्म पालन करे। ६ और जो पहला बेटा उस जी से उत्पन्न हो वह उस में हुए भाई के नाम का ठहरे, जिससे कि उसका नाम इसाएल में से मिट न जाए। ७ यदि उस जी के पति के भाई को उससे विवाह करना न भाए, तो वह जी का हाथ के फाटक पर बूढ़ा लोगों के पास जाकर कहे, ‘मेरे पति के भाई ने अपने भाई का नाम इसाएल में बनाए रखने से मना कर दिया है, और मुझसे पति के भाई का धर्म पालन करना नहीं चाहता।’ ८ तब उस नगर के बूढ़ा लोग उस पुरुष को बुलवाकर उसको समझाएँ; और यदि वह अपनी बात पर अड़ा रहे, और कहे, ‘मुझे इससे विवाह करना नहीं चाहता,’ ९ तो उसके भाई की पत्नी उन बूढ़ा लोगों के सामने उसके पास जाकर उसके पाँव से जूती उतारे, और उसके मुँह पर थूक दे; और कहे, ‘जो पुरुष अपने भाई के बंश को चलाना न चाहे उससे इसी प्रकार व्यवहार किया जाएगा।’ १० तब इसाएल में उस पुरुष का यह नाम पड़ेगा, अर्थात् जूती उतारे हुए पुरुष का घराना। ११ “यदि दो पुरुष आपस में मारपीट करते हों, और उनमें से एक की पत्नी अपने पति को मारनेवाले का हाथ से छुड़ाने के लिये पास जाए, और अपना हाथ बढ़ाकर उसके गुम अंग को पकड़े, १२ तो उस जी का हाथ काट डालना; उस पर तरस न खाना। १३

“अपनी थैली में भाँति-भाँति के अर्थात् घटती-बढ़ती बटखरे न रखना। १४ अपने घर में भाँति-भाँति के, अर्थात् घटती-बढ़ती न पुए न रखना। १५ तेरे बटखरे और नपुए पौरे-पौरे और धर्म के हों; इसलिए कि जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तेरी आयु बहुत हो। १६ क्योंकि ऐसे कामों में जितने कुटिलता करते हैं वे सब तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में धृष्टि है। १७ “स्मरण रख कि जब तू मिस से निकलकर आ रहा था तब अमालेक ने तुझ से मार्ग में क्या किया, १८ अर्थात् उनको परमेश्वर का भय न था; इस कारण उसने जब तू मार्ग में थेका-माँदा था, तब तुझ पर चढ़ाई करके जितने निर्बल होने के कारण सबसे पीछे थे उन सभी को मारा। १९ इसलिए जब तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में, जो वह तेरा भाग करके तेरे अधिकार में कर देता है, तुझे चारों ओर के सब शब्दों से विश्वास दे, तब अमालेक का नाम धरती पर से मिटा डालना; और तुम इस बात को न भलना।

२६ “फिर जब तू उस देश में जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा निज भाग करके

तुझे देता है पहुँचे, और उसका अधिकारी होकर उसमें बस जाए, १ तब जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, उसकी भूमि की भाँति-भाँति की जो पहली उपज तू अपने घर लाएगा, उसमें से कुछ टोकरी में लेकर उस स्थान पर जाना, जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने को चुन ले। २ और उन दिनों के याजक के पास जाकर यह कहना, ‘मैं आज हमारे परमेश्वर यहोवा के सामने स्वीकार करता हूँ, कि यहोवा ने हम लोगों को जिस देश के देने की हमारे पूर्वजों से शपथ खाई थी उसमें मैं आ गया हूँ’ ३ तब याजक तेरे हाथ से वह टोकरी लेकर तेरे परमेश्वर यहोवा की बेदी के सामने रख दे। ४ तब तू अपने परमेश्वर यहोवा से इस प्रकार कहना, ‘मेरा मूलपुष्ट एक अरामी मनुष्य था जो मरने पर था; और वह अपने छोटे से परिवार समेत मिस्त्र को गया, और वहाँ पारदेशी होकर रहा; और वहाँ उससे एक बड़ी, और सामर्थी, और बहुत मनुष्यों से भरी हुई जाति उत्पन्न हुई। ५ और मिस्त्रों ने हम लोगों से बुरा बताव किया, और हमें दुःख दिया, और हम से कठिन सेवा ली। ६ परन्त हमने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की दुहाई दी, और यहोवा ने हमारी सुनकर हमारे दुःख-श्रम और अत्याचार पर दृष्टि की; ७ और यहोवा ने बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भूमि से अति भयानक चिन्ह और चमत्कार दिखलाकर हमको मिस्त्र से निकाल लाया; ८ और हमें इस स्थान पर पहुँचाकर यह देश जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं हमें दे दिया है। ९ अब हे यहोवा, देख, जो भूमि तूने मुझे दी है उसकी पहली उपज मैं तेरे पास ले आया हूँ। १० तब तू उसे परमेश्वर यहोवा के सामने रखना; और यहोवा को दण्डवत् करना; ११ और जितने अच्छे पदार्थ तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे और तेरे घराने को दे, उके के कारण तू लेवियों और अपने मध्य में रहनेवाले परदेशियों सहित आनन्द करना। १२ ‘तीसरे वर्ष जो दशमांश देने का वर्ष ठहरा है, जब तू अपनी सब भाँति की बढ़ती के दशमांश को निकाल चुके, तब उसे लेवीय, परदेशी, अनाथ, और विधवा को देना, कि वे तेरे फाटकों के भीतर खाकर तुम हों; १३ और तू अपने परमेश्वर यहोवा से कहना, ‘मैंने तेरी सब आज्ञाओं के अनुसार पवित्र ठहराई हुई वस्तुओं को अपने घर से निकाला, और लेवीय, परदेशी, अनाथ, और विधवा को दे दिया है, तेरी किसी आज्ञा को मैंने न तो टाला है, और न भला है। १४ उन वस्तुओं में से मैंने शोक के समय नहीं खाया, और न उनमें से कोई वस्तु अश्रद्धाकी दशा में घर से निकाली, और न कुछ शोक करनेवालों को दिया। मैंने अपने परमेश्वर यहोवा की सुन ली, मैंने तेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया है। १५ तू स्वर्ग में से जो तेरा पवित्र धाम है दृष्टि करके अपनी प्रजा इस्राएल को आशीष दे, और इस दूध और मधु की धाराओं

के देश की भूमि पर आशीष दे, जिसे तूने हमारे पूर्वजों से खाई हुई शपथ के अनुसार हमें दिया है। १६ ‘आज के दिन तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको इन्हीं विधियों और नियमों के मानने की आज्ञा देता है; इसलिए अपने सारे मन और सारे प्राण से इनके मानने में चौकसी करना। १७ तू तो आज यहोवा को अपना परमेश्वर मानकर यह चर्चन दिया है, कि मैं तेरे बताए हुए मार्ग पर चलूँगा, और तेरी विधियों, आज्ञाओं, और नियमों को माना करूँगा, और तेरी सुन करूँगा। १८ और यहोवा ने भी आज तुझको अपने चर्चन के अनुसार अपना प्रजास्तीषी निज धन-सम्पत्ति माना है, कि तू उसकी सब आज्ञाओं को माना करे, १९ और कि वह अपनी बनाई हुई सब जातियों से अधिक प्रांतों, नाम, और शोभा के विषय में तुझको प्रतिष्ठित करे, और तू उसके चर्चन के अनुसार अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा बना रहे।’

२७ फिर इस्राएल के बूद्ध लोगों समेत मूसा ने प्रजा के लोगों को यह आज्ञा

दी, ‘जितनी आज्ञाएँ मैं आज तुझे सुनाता हूँ उन सब को मानना। १ और जब तुम यरदन पार होकर उस देश में पहुँचो, जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, तब बड़े-बड़े पवर्थ खड़े कर लेना, और उन पर चूना पोताना; २ और पार होने के बाद उन पर इस व्यवस्था के सारे चर्चनों को लिखना, इसलिए कि जो देश तेरे पूर्वजों का परमेश्वर यहोवा अपने चर्चन के अनुसार तुझे देता है, और जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, उस देश में तू जाने पाए। ३ फिर जिन पथरों के विषय में मैंने आज आज्ञा दी है, उन्हें तुम यरदन के पार होकर एबाल पहाड़ पर खड़ा करना, और उन पर चूना पोताना। ४ और वही अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पथरों की एक बेदी बनाना, उन पर कोई औजार न चलाना। ५ अपने परमेश्वर यहोवा की बेदी अनगढ़े पथरों की बनाकर उस पर उसके लिये होमलबलि चढ़ाना; ६ और वही मेलबलि भी चढ़ाकर भोजन करना, और अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख आनन्द करना। ७ और उन पथरों पर इस व्यवस्था के सब चर्चनों को स्पष्ट रीति से लिख देना।’ ८ फिर मूसा और लेवीय याजकों ने सब इस्राएलियों से यह भी कहा, ‘हे इस्राएल, चुप रहकर सन; आज के दिन तू अपने परमेश्वर यहोवा की प्रजा हो गया है। ९ इसलिए अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानना, और उसकी जो-जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनका पालन करना।’ १० फिर उसी दिन मूसा ने प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दी, ११ ‘जब तुम यरदन पार हो जाओ तब शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, यूसुफ, और बिन्यामीन, ये गिरिज्जीम पहाड़ पर खड़े होकर आशीर्वद सनाएँ। १२ और स्नेन, गाद, अशोर, जबूत्स, दान, और नमानी, ये एबाल पहाड़ पर खड़े होकर श्राप सुनाएँ। १३ तब लेवीय लोग सब इस्राएली पुरुषों से पुकारके कहें: १४ ‘श्रापित हो वह मनुष्य जो कोई मर्ति करीगर से खुदवाकर या ढलवा कर निराले स्थान में स्थापन करे, क्योंकि इससे यहोवा धृणा करता है।’ तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’ १५ ‘श्रापित हो वह जो अपने पिता या माता को तुच्छ जाने।’ तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’ १६ ‘श्रापित हो वह जो किसी दूसरे की सीमा को हटाए।’ तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’ १७ ‘श्रापित हो वह जो अपने पिता या माता को अंधे को मारा से भटका दे।’ तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’ १८ ‘श्रापित हो वह जो परदेशी, अनाथ, या विधवा का न्याय बिगाड़े।’ तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’ १९ ‘श्रापित हो वह जो अपनी सौतेली माता से कुकर्म करे, क्योंकि वह अपने पिता का ओढ़ा उधाड़ता है।’ तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’ २० ‘श्रापित हो वह जो किसी प्रकार के पशु से कुकर्म करे।’ तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’ २१ ‘श्रापित हो वह जो अपनी बहन, चाहे सागी हो चाहे सौतेली, से कुकर्म करे।’ तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’ २२ ‘श्रापित हो वह जो अपनी सास के संग कुकर्म करे।’

तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’ २४ ‘श्रापित हो वह जो किसी को छिपकर मारे।’ तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’ २५ ‘श्रापित हो वह जो निर्दोष जन के मार डालने के लिये घुस ले।’ तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’ २६ ‘श्रापित हो वह जो इस व्यवस्था के बचनों को मानकर पूछा न करे।’ तब सब लोग कहें, ‘आमीन।’

२८ “यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएँ, जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ, चौकसी से पूरी करने को चिंत लगाकर उसकी सुने, तो वह तुझे पृथ्वी की सब जातियों में श्रेष्ठ करेगा। १ फिर अपने परमेश्वर यहोवा की सुनने के कारण ये सब आशीर्वाद तुझ पर पूरे होंगे। २ धन्य हो तू नगर में, धन्य हो तू खेत में। ३ धन्य हो तेरी सन्तान, और तेरी भूमि की उपज, और गाय और भेड़-बकरी आदि पशुओं के बच्चे। ४ धन्य हो तेरी टोकरी और तेरा आटा गूँग्ने का पान। ५ धन्य हो तू भीतर आते समय, और धन्य हो तू बाहर जाते समय। ६ धन्य हो तू भीतर आते समय, और धन्य हो तू बाहर जाते हार जाएँगे; वे एक मार्ग से तुझ पर चढ़ाई करेंगे, परन्तु तेरे सामने से सात मार्ग से होकर भाग जाएँगे। ७ तेरे खत्तों पर और जितने कामों में तू हाथ लगाएगा उन सभी पर यहोवा आशीष देगा; इसलिए जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें वह तुझे आशीष देगा। ८ यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानने हुए उसके मार्गों पर चलो, तो वह अपनी शपथ के अनुसार तुझे अपनी पवित्र प्रजा करके स्थिर रखेगा। ९ और पृथ्वी के देश-देश के सब लोग यह देखकर, कि तू यहोवा का कहलाता है, तुझ से डर जाएँगे। १० और जिस देश के विषय यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर तुझे देने को कहा था, उसमें वह तेरी सन्तान की, और भूमि की उपज की, और पशुओं की बढ़ती करके तेरी भलाई करेगा। ११ यहोवा तेरे लिए अपने आकाशस्पी उत्तम भण्डार को खोलकर तेरी भूमि पर समय पर मैं बरसाया करेगा, और तेरे सारे कामों पर आशीष देगा; और तू बहुती जातियों को उधार देगा, परन्तु किसी से तुझे उधार लेना न पड़ेगा। १२ और यहोवा तुझको पूँछ नहीं, किन्तु सिर ही ठहराएगा, और तू नीचे नहीं, परन्तु ऊपर ही रहेगा; यदि परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएँ जो मैं आज तुझको सुनाता हूँ, तू उनके मानने में मन लगाकर चौकसी करें; १३ और जिन बचनों की मैं आज तुझे आज्ञा देता हूँ उनमें से किसी से दाँय या बाएँ मुँडकर पराए देवताओं के पीछे न हो ले, और न उनकी सेवा करे। १४ “परन्तु यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात न सुने, और उसकी सारी आज्ञाओं और विधियों के पालन करने में जो मैं आज सुनाता हूँ चौकसी नहीं करेगा, तो ये सब श्राप तुझ पर आ पड़ेंगे। १५ श्रापित हो तू नगर में, श्रापित हो तू खेत में। १६ श्रापित हो तेरी टोकरी और तेरा आटा गूँग्ने का पान। १७ श्रापित हो तेरी सन्तान, और भूमि की उपज, और गायों और भेड़-बकरियों के बच्चे। १८ श्रापित हो तू भीतर आते समय, और श्रापित हो तू बाहर जाते समय। १९ “फिर जिस-जिस काम में तू हाथ लगाए, उसमें यहोवा तब तक तुझको श्राप देता, और भयात्मा करता, और धमकी देता रहेगा, जब तक तू मिट न जाएँ, और श्रीघ्र नष्ट न हो जाएँ; यह इस कारण होगा कि तू यहोवा को त्याग कर तुझ काम करेगा। २० और यहोवा ऐसा करेगा कि मरी तुझ मैं फैलकर उस समय तक लगी रहेगी, जब तक जिस भूमि के अधिकारी होने के लिये तू जा रहा है उस पर से तेरा अन्त न हो जाएँ। २१ यहोवा तुझको क्षयरोग से, और ज्वर, और दाह, और बड़ी जलन से, और तलवार, और झूलस, और गेस्ट्स से मरेगा, और ये उस समय तक तेरा पीछा किए रहेंगे, जब तक तेरा सत्यानाश न हो जाए। २२ और तेरे सिर के ऊपर आकाश पीतल का, और तेरे पौँप के तले भूमि लोहे की हो जाएगी। २३ यहोवा तेरे देश में पानी के बदले रेत और धूलि बरसाएगा; वह आकाश से तुझ पर यहाँ तक बरसेगी कि तेरा सत्यानाश हो

जाएगा। २४ “यहोवा तुझको शत्रुओं से हरवाएगा; और तू एक मार्ग से उनका सामना करने को जाएगा, परन्तु सात मार्ग से होकर उनके सामने से भाग जाएगा; और पृथ्वी के सब राज्यों में मारा-मारा फिरेगा। २५ और तेरा शब आकाश के भाँति-भाँति के पक्षियों, और धरती के पश्चियों, और धरती के पश्चियों का आहार होगा; और उनको कोई भगानेवाला न होगा। २६ यहोवा तुझको मिस्र के से फोड़े, और बवासीर, और दाद, और खुजली से ऐसा पीड़ित करेगा, कि तू चंगा न हो सकेगा। २७ यहोवा तुझे पागल और अंधा कर देगा, और तेरे मन को अत्यन्त घबरा देगा; २८ और जैसे अंधा अंधियारे में टटोलता है वैसे ही तू दिन दुपहरी में टटोलता फिरेगा, और तेरे काम-काज सफल न होंगे; और तू सर्दैव केवल अत्याचार सहता और लटता ही रहेगा, और तेरा कोई छुड़ानेवाला न होगा। २९ तू ढ़ी से ब्याह की बात लगाएगा, परन्तु दूसरा पुम्प उसको भ्रष्ट करेगा; घर तू बनाएगा, परन्तु उसमें बसने न पाएगा; दाख की बारी तू लगाएगा, परन्तु उसके फल खाने न पाएगा। ३० तेरा बैल तेरी आँखों के सामने मारा जाएगा, और तू उसका माँस खाने न पाएगा; तेरा गदहा तेरी आँख के सामने लटू में चला जाएगा, और तेरी ओर से उनका कोई छुड़ानेवाला न होगा। ३१ तेरे बेटे-बेटियाँ दूसरे देश के लोगों के हाथ लग जाएँगे, और उनके लिये चाच से देखते-देखते तेरी आँखें रह जाएँगी; और तेरा कुछ बस न चलेगा। ३२ तेरी भूमि की उपज और तेरी सारी कमाई एक अनजाने देश के लोग खा जाएँगे; और सर्वदा तू केवल अत्याचार सहता और पिसता रहेगा; ३३ यहाँ तक कि तू उन बातों के कारण जो अपनी आँखों से देखेगा पागल हो जाएगा। ३४ यहोवा तेरे घटनों और टींगों में, वरन् न ख से शीर्षी तक भी असाध्य फोड़े निकालकर तुझको पीड़ित करेगा। ३५ “यहोवा तुझको उस राजा समेत, जिसको तू अपने ऊपर ठहराएगा, तेरे और तेरे पूर्वजों के लिए अनजानी एक जाति के बीच पहुँचाएगा, और उसके मध्य में रहकर तू काठ और पत्थर के दूसरे देवताओं की उपसना और पूजा करेगा। ३६ और उन सब जातियों में जिनके मध्य में यहोवा तुझको पहुँचाएगा, वहाँ के लोगों के लिये तू चकित होने का, और दृष्टान्त और श्राप का कारण समझा जाएगा। ३७ तू खेत में बीज तो बहूत सा ले जाएगा, परन्तु उपज थोड़ी ही बटोरेगा; क्योंकि टिड़ियाँ उसे खा जाएँगी। ३८ तू दाख की बारियाँ लगाकर उनमें काम तो करेगा, परन्तु उनकी दाख का मध्य पीने न पाएगा, वरन् फल भी तोड़ने पा एगा; क्योंकि कीड़ी उनको खा जाएँगे। ३९ तेरे सारे देश में जैतून के बृक्ष तो होंगे, परन्तु उनका तेल तू अपने शरीर में लगाने न पाएगा; क्योंकि वे झाड़ जाएँगे। ४० तेरे बेटे-बेटियाँ तो उत्पन्न होंगे, परन्तु तेरे रहेंगे नहीं; क्योंकि वे बन्धुवाई में चले जाएँगे। ४१ तेरे सब वृक्ष और तेरी भूमि की उपज टिड़ियाँ खा जाएँगी। ४२ जो परदेशी तेरे मध्य में रहेगा वह तुझ से बढ़ता जाएगा; और तू अप घटना चला जाएगा। ४३ “वह तुझको उधार देगा, परन्तु तू उसको उधार न दे सकेगा; वह तो सिर और तू पूँछ ठहरेगा। ४४ तू जो अपने परमेश्वर यहोवा की दी हई आज्ञाओं और विधियों के मानने को उसकी न सुनेगा, इस कारण ये सब श्राप तुझ पर आ पड़ेंगे, और तेरे पीछे पड़े रहेंगे, और तुझको पकड़ेंगे, और अन्त में तू नष्ट हो जाएगा। ४५ और वे तुझ पर और तेरे बंश पर सदा के लिये बने रहकर चिन्ह और चमत्कार ठहरेंगे; ४६ “तू जो सब पदार्थ की बहुतायत होने पर भी आनन्द और प्रसन्नता के साथ अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा नहीं करेगा, ४७ इस कारण तुझको भूखा, प्यासा, नंगा, और सब पदार्थों से रहित होकर अपने उन शत्रुओं की सेवा करनी पड़ेंगी जिन्हें यहोवा तेरे विष्टु भेजेगा; और जब तक तू नष्ट न हो जाए तब तक वह तेरी गर्दन पर लोहे का जूआ डाल रखेगा। ४९ यहोवा तेरे विष्टु दूर से, वरन् पृथ्वी के छोर से बेग से उड़नेवाले उकाब सी

एक जाति को चढ़ा लाएगा जिसकी भाषा को तून समझेगा; ५० उस जाति के लोगों का व्यवहार क्रूर होगा, वे न तो बुद्धों का मूँह देखकर आदर करेंगे, और न बालकों पर दया करेंगे; ५१ और वे तेरे पशुओं के बच्चे और भूमि की उपज यहाँ तक खा जाएंगे कि तून नष्ट हो जाएगा; और वे तेरे लिये न अन्न, और न नया दाखमधु, और न टटका तेल, और न बछड़े, न मेने छोड़ेंगे, यहाँ तक कि तून नाश हो जाएगा। ५२ और वे तेरे परमेश्वर यहोवा के दिये हुए सारे देश के सब फाटकों के भीतर तुझे घेर रखेंगे; वे तेरे सब फाटकों के भीतर तुझे उस समय तक धेरेंगे, जब तक तेरे सारे देश में तेरी ऊँची-ऊँची और दृढ़ शहरपानहे जिन पर तू भरोसा करेगा गिर न जाएँ। ५३ तब यिर जाने और उस संकट के समय जिसमें तेरे शत्रु तुझको डालेंगे, तू अपने निज जन्माए बेटे-बेटियों का माँस जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको देगा खाएगा। ५४ और तुझ में जो पुरुष को मल और अति सुकुमार हो वह भी अपने भाई, और अपनी प्राणप्रिय, और अपने बचे हुए बालकों को क्रूर दृष्टि से देखेगा; ५५ और वह उनमें से किसी को भी अपने बालकों के माँस में से जो वह आप खाएगा कुछ न देगा, क्योंकि यिर जाने और उस संकट में, जिसमें तेरे शत्रु तेरे सारे फाटकों के भीतर तुझे घेर डालेंगे, उसके पास कुछ न रहेगा। ५६ और तुझ में जो भी यहाँ तक को मल और सुकुमार हो कि सुकुमारपन के और कोमलता के मारे भूमि पर पाँव धरते भी डरती हो, वह भी अपने प्राणप्रिय पति, और बेटे, और बेटी को, ५७ अपनी खेरी, वरन् अपने जने हुए बच्चों को क्रूर दृष्टि से देखेगी, क्योंकि यिर जाने और उस संकट के समय जिसमें तेरे शत्रु तुझे तेरे फाटकों के भीतर घेरकर रखेंगे, वह सब वस्तुओं की घटी के मारे उन्हें छिपके खाएगी। ५८ “यदि तू इन व्यवस्था के सारे वचनों का पालन करने में, जो इस पुस्तक में लिखे हैं, चौकसी करके उस आदरणीय और भयोग्य नाम का, जो यहोवा तेरे परमेश्वर का है भय न माने, ५९ तो यहोवा तुझको और तेरे वंश को भयनक-भयनक दण्ड देगा, वे दृष्टि और बहुत दिन रहनेवाले रोग और भारी-भारी दण्ड होंगे। ६० और वह मिस्र के उन सब रोगों को फिर तेरे ऊपर लगा देगा, जिनसे तू भय खाता था; और वे तुझ में लगे रहेंगे। ६१ और जितने रोग आदि दण्ड इस व्यवस्था की पुस्तक में नहीं लिखे हैं, उन सभी को भी यहोवा तुझको यहाँ तक लगा देगा, कि तेरा सत्यानाश हो जाएगा। ६२ और तू जो अपने परमेश्वर यहोवा की न मानेगा, इस कारण आकाश के तारों के समान अनिग्नित होने के बदले तुझ में से थोड़े ही मनुष्य रह जाएंगे। ६३ और जैसे अब यहोवा को तुम्हारी भलाई और बढ़ती करने से हर्ष होता है, वैसे ही तब उसको तुम्हारा नाश बरन सत्यानाश करने से हर्ष होगा; और जिस भूमि के अधिकारी होने को तुम जा रहे हो उस पर से तुम उखाड़े जाओगे। ६४ और यहोवा तुझको पृथ्वी के इस छोर से लेकर उस छोर तक के सब देशों के लोगों में तिरत-बितर करेगा, और वहाँ रहकर तू अपने और अपने पुरुखों के अनजाने काठ और पथर के दूसरे देवताओं की उपासना करेगा। ६५ और उन जातियों में तक कभी चैन न पाएगा, और न तेरे पाँव को ठिकाना मिलेगा; क्योंकि वहाँ यहोवा ऐसा करेगा कि तेरा हृदय कौपता रहेगा, और तेरी ऊँचें धूंगली पड़ जाएँगी, और तेरा मन व्याकुल रहेगा; ६६ और तुझको जीवन का नियत सद्देह रहेगा; और तू दिन-रात धरथराता रहेगा, और तेरे जीवन का कुछ भरोसा न रहेगा। ६७ तेरे मन में जो भय बना रहेगा, और तेरी ऊँचों को जो कुछ दिखता रहेगा, उसके कारण तू भोर को आह मारकर कहेगा, ‘सँझ कब होगी!’ और सँझ को आह मारकर कहेगा, ‘भोर कब होगा!’ ६८ और यहोवा तुझको नावों पर चढ़ाकर मिस्र में उस मारी से लौटा देगा, जिसके विषय में मैने तुझ से कहा था, कि वह फिर तेरे देखने में न आएगा; और वहाँ तूम अपने शत्रुओं के हाथ दास-दासी होने के लिये बिकाऊ तो रहेंगे, परन्तु तुम्हारा कोई ग्राहक न होगा।”

२९ इस्माएलियों से जो वाचा के बाँधने की आज्ञा यहोवा ने मूसा को मोआब के देश में दी उसके ये ही वचन हैं, और जो वाचा उससे उनसे होरेव पहाड़ पर बाँधी थी यह उससे अलग है। ३० फिर मूसा ने सब इस्माएलियों को बुलाकर कहा, “जो कुछ यहोवा ने मिस्र देश में तुम्हारे देखते फिरौन और उसके सब कर्मचारियों, और उसके सारे देश से किया तूम ने देखा है; ३१ वे बड़े-बड़े परीक्षा के काम, और चिन्ह, और बड़े-बड़े चमत्कार तेरी आँखों के समने हुए; ३२ परन्तु यहोवा ने आज तक तुम को न तो समझने की बुद्धि, और न देखने की आँखें, और न सुनने के कान दिए हैं। ३३ मैं तो तुम को जंगल में चालीस वर्ष लिए फिरा; और न तुम्हारे तन पर वज्र पुराने हुए, और न तेरी जूतियाँ तेरे पैरों में पुरानी हुईं, ३४ रोटी जो तुम नहीं खाने पाए, और दाखमधु और मदिरा जो तुम नहीं पीने पाए, वह इसलिए हुआ कि तुम जानो कि मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ। ३५ और जब तुम इस स्थान पर आए, तब हेशोवन का राजा सीहोन और बाशान का राजा आओग, ये दोनों युद्ध के लिये हमारा सामना करने को निकल आए, और हमने उनको जीतकर उनका देश ले लिया; ३६ और स्वेनियों, गादियों, और मनश्वे के आधे गोत्र के लोगों को निज भाग करके दे दिया। ३७ इसलिए इस वाचा की बातों का पालन करो, ताकि जो कुछ करो वह सफल हो। ३८ “आज क्या बूद्ध लोग, क्या सरदार, तुम्हारे मुख्य-मुख्य पुरुष, क्या गोत्र-गोत्र के तम सब इस्माएली पुरुष, ३९ क्या तम्हारे बाल-बच्चे और ब्लियाँ, क्या लकड़हरे, क्या पानी भरेवाले, क्या तेरी छावनी में रहनेवाले परदेशी, तुम सब के सब अपने परमेश्वर यहोवा के सामने इसलिए खड़े हुए हो, ४० कि जो वाचा तेरा परमेश्वर यहोवा आज तुझ से बाँधता है, और जो शपथ वह आज तुझको खिलाता है, उसमें तू सहभागी हो जाएँ। ४१ इसलिए कि उस वचन के अनुसार जो उसने तुझको दिया, और उस शपथ के अनुसार जो उसने अब्राहम, इस्हाक, और याकूब, तेरे पर्वतों से खाई थी, वह आज तुझको अपनी प्रजा ठाराएँ, और आप तेरा परमेश्वर ठारो। ४२ फिर मैं इस वाचा और इस शपथ में केवल तुम को नहीं, ४३ परन्तु उनको भी, जो आज हमारे संग यहाँ हमारे परमेश्वर यहोवा के सामने खड़े हैं, और जो आज यहाँ हमारे संग नहीं हैं, सहभागी करता है। ४४ तुम जानते हो कि जब हम मिस्र देश में रहते थे, और जब मार्ग में की जातियों के बीचों बीच होकर आ रहे थे, ४५ तब तुम ने उनकी कैसी-कैसी धिनौनी वस्तुएँ, और काठ, पत्थर, चाँदी, सोने की कैसी मूरतें देखीं। ४६ इसलिए ऐसा न हो, कि तुम लोगों में ऐसा कोई पुरुष, या भी, या कुल, या गोत्र के लोग हों जिनका मन आज हमारे परमेश्वर यहोवा से फिर जाए, और वे जाकर उन जातियों के देवताओं की उपासना करें; फिर ऐसा न हो कि तुम्हारे मध्य ऐसी कोईं जड़ हो, जिससे विष या कड़वा फल निकले, ४७ और ऐसा मनुष्य इस श्राप के वचन सुनकर अपने को आशीर्वाद के योग्य माने, और यह सोचे कि चाहे मैं अपने मन के हठ पर चलूँ, और तुम होकर प्यास को मिटा डालूँ, तो भी मेरा कुशल होगा। ४८ यहोवा उसका पाप क्षमा नहीं करेगा, वरन् यहोवा के कोप और जलन का धूँआँ उसको छा लेगा, और जितने श्राप इस पुस्तक में लिखे हैं वे सब उस पर आ पड़ेंगे, और यहोवा उसका नाम धरती पर से मिटा देगा। ४९ और व्यवस्था की इस पुस्तक में जिस वाचा की चर्चा है उसके सब श्वारों के अनुसार यहोवा उसको इस्माएल के सब गोत्रों में से हानि के लिये अलग करेगा। ५० और आनेवाली पीड़ियों में तुम्हारे वंश के लोग जो तुम्हारे बाद उत्पन्न होंगे, और परदेशी मनुष्य भी जो दूर देश से आएँगे, वे उस देश की विपत्तियों और उसमें यहोवा के फैलाए हुए रोग को देखकर, ५१ और यह भी देखकर कि इसकी सब भूमि गन्धक और लोन से भर गई है, और यहाँ तक जल गई है कि इसमें न कुछ बोया जाता, और न कुछ जम सकता, और न घास उगती है, वरन् सदोम

और गमोरा, अदमा और सबोयीम के समान हो गया है जिन्हें यहोवा ने अपने कोप और जलजलाहट में उलट दिया था; २४ और सब जातियों के लोग पूछेंगे, ‘यहोवा ने इस देश से ऐसा क्यों किया? और इस बड़े कोप के भड़कने का क्या कारण है?’ २५ तब लोग यह उत्तर देंगे, ‘उनके पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने जो वाचा उनके साथ मिस्र देश से निकालने के समय बाँधी थी उसको उन्होंने तोड़ा है।’ २६ और पराए देवताओं की उपासना की है जिन्हें वे पहले नहीं जानते थे, और यहोवा ने उनको नहीं दिया था; २७ इसलिए यहोवा का कोप इस देश पर भडक उठा है, कि पुस्तक में लिखे हुए सब शाप इस पर आ पड़ें; २८ और यहोवा ने कोप, और बड़ा ही क्रोध करके उन्हें उनके देश में से उखाड़कर दूर से देश में फेंक दिया, जैसा कि आज प्रगट है।’ २९ “गुम बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं, परन्तु जो प्रगट की गई हैं वे सदा के लिये हमारे और हमारे वश के वश में होंगी, इसलिए कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएँ।

३० “फिर जब आशीष और श्राप की ये सब बातें जो मैंने तुझको कह सुनाई हैं तुझ पर घटें, और तू उन सब जातियों के मध्य में रहकर, जहाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको बरबस पहुँचाएगा, इन बातों को स्मरण करे, १ और अपनी सन्तान सहित अपने सारे मन और सारे प्राण से अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरकर उसके पास लौट आए, और इन सब आज्ञाओं के अनुसार जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ उसकी बातें मानने; २ तब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको बैंझुआई से लौटा ले आएगा, और तुझ पर दगा करके उन सब देशों के लोगों में से जिनके मध्य में वह तुझको तिरान-बिटाकर देगा फिर इकट्ठा करेगा। ३ चाहे धर्ती के छोर तक तेरा बरबस पहुँचाया जाना हो, तो भी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझको वहाँ से ले आकर इकट्ठा करेगा। ४ और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उसी देश में पहुँचाएगा जिसके तौर पुराखा अधिकारी हुए थे, और तू फिर उसका अधिकारी होगा; और वह तेरी भलाई करेगा, और तुझको तौर पुराखाओं से भी गिनती में अधिक बढ़ाएगा। ५ और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे और तेरे वंश के मन का खतना करेगा, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम करे, जिससे तू जीवित रहे। ६ और तेरा परमेश्वर यहोवा ये सब श्राप की बातें तेरे शत्रुओं पर जो तुझ से बैर करके तेरे पीछे पड़ेंगे भेजेगा। ७ और तू फिरेगा और यहोवा की सुनेगा, और इन सब आज्ञाओं को मानेगा जो मैं आज तुझको सुनाता हूँ। ८ और यहोवा तेरी भलाई के लिये तेरे सब कामों में, और तेरी सन्तान, और पशुओं के बच्चों, और भूमि की उपज में तेरी बढ़ती करेगा; क्योंकि यहोवा फिर तेरे ऊपर भलाई के लिये वैसा ही आनन्द करेगा, जैसा उसने तेरे पूर्वजों के ऊपर किया था; ९ क्योंकि त अपने परमेश्वर यहोवा की सुनकर उसकी आज्ञाओं और विधियों को जो इस व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है माना करेगा, और अपने परमेश्वर यहोवा की ओर अपने सारे मन और सारे प्राण से मन फिराएगा। १० “देखो, यह जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूँ, वह न तो तेरे लिये कठिन, और न दूर है।” ११ और न तो यह आकाश में है, कि तू कहे, ‘कौन हमारे लिये आकाश में चढ़कर उसे हमारे पास ले आए, और हमको सुनाए कि हम उसे मानें?’ १२ और न यह समृद्ध पार है, कि तू कहे, ‘कौन हमारे लिये समृद्ध पार जाए, और उसे हमारे पास ले आए, और हमको सुनाए कि हम उसे मानें?’ १३ परन्तु यह वचन तेरे बहुत निकट, वरन् तेरे मुँह और मन ही में है ताकि तू इस पर चलो। १४ “सुन, आज मैंने तुझको जीवन और मरण, हानि और लाभ दिखाया है।” १५ क्योंकि मैं आज तुझे आज्ञा देता हूँ, कि अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करना, और उसके मार्गों पर चलना, और उसकी आज्ञाओं, विधियों, और नियमों को मानना, जिससे तू जीवित रहे, और बढ़ता जाए, और तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में जिसका

अधिकारी होने को तू जा रहा है, तुझे आशीष दे। १६ परन्तु यदि तेरा मन भटक जाए, और तू न सुने, और भटककर पराए देवताओं को ढण्डवत् करे और उनकी उपासना करने लगे, १७ तो मैं तुम्हें आज यह चेतावनी देता हूँ कि तुम मिसन्देह नष्ट हो जाओगे; और जिस देश का अधिकारी होने के लिये तू यरदन पार जा रहा है, उस देश में तुम बहुत दिनों के लिये रहने न पाओगे। १८ मैं आज आकाश और पृथ्वी दोनों को तुम्हारे सामने इस बात की साक्षी बनाता हूँ, कि मैंने जीवन और मरण, आशीष और श्राप को तुम्हारे आगे रखा है; इसलिए तू जीवन ही को अपना ले, कि तू तरा वंश दोनों जीवित रहें; १९ इसलिए अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, और उसकी बात मानो, और उससे लिपटे रहो; क्योंकि तेरा जीवन और दीर्घ आयु यही है, और ऐसा करने से जिस देश को यहोवा ने अब्राहम, इसहाक, और याकूब, अर्थात् तेरे पूर्वजों को देने की शपथ खाई थी उस देश में तू बसा रहेगा।”

३१ और मूसा ने जाकर ये बातें सब इस्माएलियों को सुनाई। १ और उसने उनसे यह भी कहा, “आज मैं एक सौ बीस वर्ष का हूँ; और अब मैं चल फिर नहीं सकता; क्योंकि यहोवा ने मुझसे कहा है, कि तू इस यरदन पार नहीं जाने पाएगा।” २ तेरे आगे पार जानेवाला तेरा परमेश्वर यहोवा ही है; वह उन जातियों को तेरे सामने से नष्ट करेगा, और तू उनके देश का अधिकारी होगा; और यहोवा के वचन के अनुसार यहोश् तेरे आगे-आगे पार जाएगा। ३ और जिस प्रकार यहोवा ने ऐमेरियों के राजा सीहोन और ओग और उनके देश को नष्ट किया है, उसी प्रकार वह उन सब जातियों से भी करेगा। ४ और जब यहोवा उनको तुम से हरावा देगा, तब तुम उन सारी आज्ञाओं के अनुसार उनसे करना जो मैंने तुम को सुनाई है। ५ तृवियाव बाँध और दृढ़ हो, उनसे न डर और न भयभीत हो; क्योंकि तेरे संग चलनेवाला तेरा परमेश्वर यहोवा है; वह तुझको धोखा न देगा और न ढोड़ेगा।” ६ तब मूसा ने यहोश् को बुलाकर सब इस्माएलियों के सम्मुख कहा, “तृहियाव बाँध और दृढ़ हो जा; क्योंकि इन लोगों के संग उस देश में जिसे यहोवा ने इनके पूर्वजों से शपथ खाकर देने को कहा था तू जाएगा; और तू इनको उसका अधिकारी कर देगा।” ७ और तेरे आगे-आगे चलनेवाला यहोवा है; वह तेरे संग रहेगा, और न तो तुझे धोखा देगा और न छोड़ेगा, इसलिए मत डर और तेरा मन कच्चा न हो।” ८ फिर मूसा ने यही व्यवस्था लिखकर लेवीय याजकों को, जो यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेवाले थे, और इस्माएल के सब बूद्ध लोगों को सौंप दी। ९ तब मूसा ने उनको आज्ञा दी, “सात-सात वर्ष के बीते पर, अर्थात् छुटकारे के वर्ष में झोपड़ीबाले पर्व पर, १० जब सब इस्माएली तेरे परमेश्वर यहोवा के उस स्थान पर जिसे वह चुन लेगा आकर इकट्ठे हों, तब यह व्यवस्था सब इस्माएलियों को पढ़कर सुनाना।” ११ क्या पुस्त, क्या झीं, क्या बालक, क्या तुम्हारे फाटकों के भीतर के परदेशी, सब लोगों को इकट्ठा करना कि वे सुनकर सीखें, और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय मानकर, इस व्यवस्था के सारे वचनों के पालन करने में चौकसी करें, १२ और उनके बच्चे जिन्होंने ये बातें नहीं सुनी वे भी सुनकर सीखें, कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय उस समय तक मानते रहें, जब तक तुम उस देश में जीवित रहो जिसके अधिकारी होने को तुम यरदन पार जा रहे हो।” १३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “तेरे मने का दिन निकट है, तृयों यहोश् को बुलावा, और तुम दोनों मिलापवाले तम्बू में आकर उपस्थित हो कि मैं उसको आज्ञा दूँ।” तब मूसा और यहोश् जाकर मिलापवाले तम्बू में उपस्थित हुए। १४ तब यहोवा ने उस तम्बू में बादल के खम्भे में होकर दर्शन दिया; और बादल का खम्भा तम्बू के द्वार पर ठहर गया। १५ तब यहोवा ने मूसा से कहा, “तू तो अपने पुरुषाओं के संग सो जाने पर है;

और ये लोग उठकर उस देश के पराए देवताओं के पीछे जिनके मध्य वे जाकर रहेंगे यथिचारी हो जाएँगे, और मुझे त्याग कर उस बाचा को जो मैंने उनसे बांधी है तोड़ेंगे। १७ उस समय मेरा कोप इन पर भड़केगा, और मैं भी इन्हें त्याग कर इनसे अपना मुँह छिपा लौंगा, और ये आहार हो जाएँगे; और बहुत सी विपत्तियाँ और कलेश इन पर आ पड़ेंगे, यहाँ तक कि ये उस समय कहेंगे, ‘व्या ये विपत्तियाँ हम पर इस कारण तो नहीं आ पड़ी, क्योंकि हमारा परमेश्वर हमारे मध्य में नहीं रहा?’ १८ उस समय मैं उन सब बुद्धायें के कारण जो ये पराए देवताओं की ओर फिरकर करेंगे निःसन्देह उनसे अपना मुँह छिपा लौंगा। १९ इसलिए अब तुम यह गीत लिख लो, और तू इसे इमाराए़लियों को सिखाकर कंठस्थ करा देना, इसलिए कि यह गीत उनके विस्तु मेरा साक्षी ठहरे। २० जब मैं इनको उस देश में पहुँचाऊँगा जिसे देने की मैंने इनके पूर्वजों से शपथ खाई थी, और जिसमें दृढ़ और मध्य की धाराएँ बहती हैं, और खातेखाते इनका पेट भर जाए, और ये हष्ट-पृष्ठ हो जाएँगे; तब ये पराए देवताओं की ओर फिरकर उनकी उपासना करने लगेंगे, और मेरा तिरस्कार करके मेरी बाचा को तोड़ देंगे। २१ वरन अभी भी जब मैं इन्हें उस देश में जिसके विषय मैंने शपथ खाई है पहुँच नहीं चुका, मुझे मालूम है, कि ये व्या-व्या कल्पना कर रहे हैं, इसलिए जब बहुत सी विपत्तियाँ और कलेश इन पर आ पड़ेंगे, तब यह गीत इन पर साक्षी देगा, क्योंकि इनकी सन्तान इसको कभी भी नहीं भूलेगी। २२ तब मूसा ने उसी दिन यह गीत लिखकर इमाराए़लियों को सिखाया। २३ और यहोवा ने नन् के पुत्र योश को यह आज्ञा दी, “हियाव बाँध और ढूढ़ हो; क्योंकि इमाराए़लियों को उस देश में जिसे उन्हें देने को मैंने उनसे शपथ खाई है तू पहुँचाएगा; और मैं आप तेरे संग रहँगा।” २४ जब मूसा इस व्यवस्था के बचन को आदि से अन्त तक पुस्तक में लिख चुका, २५ तब उसने यहोवा का सन्दूक उठानेवाले लेखियों को आज्ञा दी, २६ “व्यवस्था की इस पुस्तक को लेकर अपने परमेश्वर यहोवा की बाचा के सन्दूक के पास रख दो, कि यह वहाँ तुझ पर साक्षी देती रहे। २७ क्योंकि तेरा बलवा और हठ मुझे मालूम है, देखो, मेरे जीवित और संग रहते हए भी तुम यहोवा से बलवा करते आए हो; फिर मेरे मरने के बाद भी क्यों न करोगे! २८ तुम अपने गोत्रों के सब बूढ़ लोगों को और अपने सरदारों को मैं तुम को ये बचन सुनाकर उनके विस्तु आकाश और पृथ्वी दोनों को साक्षी बनाऊँ। २९ क्योंकि मुझे मालूम है कि मेरी मृत्यु के बाद तुम बिल्कुल बिगड़ जाओगे, और जिस मार्ग में चलने की आज्ञा मैंने तुम को सुनाई है उसको भी तुम छोड़ दोगे; और अन्त के दिनों में जब तुम वह काम करके जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, अपनी बनाई हुई वस्तुओं की पूजा करके उसको रिस दिलाओगे, तब तुम पर विपत्ति आ पड़ेगी।” ३० तब मूसा ने इमारेल की सारी सभा को इस गीत के बचन आदि से अन्त तक कह सुनाए।

३२ “हे आकाश कान लगा, कि मैं बोलूँ; और हे पृथ्वी, मेरे मुँह की बातें सुन। १ मेरा उद्देश मैंह के समान बरसेगा और मेरी बातें औस के समान टपकेंगी, जैसे कि हरी धार पर झीसी, और पौधों पर झाड़ियाँ। २ मैं तो यहोवा के नाम का प्रचार करूँगा। तुम अपने परमेश्वर की महिमा को मानो।” ३ “वह चट्ठान है, उसका काम खरा है; और उसकी सारी गति न्याय की है। वह सच्चा परमेश्वर है, उसमें कुटिलता नहीं, वह धर्मी और सीधा है। ४ परन्तु इसी जाति के लोग टेढ़े और तिरछे हैं; ये बिगड़ गए, ये उसके पुत्र नहीं, यह उनका कलंक है। ५ हे मर्ख और निर्बुद्धि लोगों, क्या तुम यहोवा को यह बदला देते हो? क्या वह तेरा पिता नहीं है, जिसने तुम को मोल लिया है? उसने तुझको बनाया और स्थिर भी किया है। ६ प्राचीनकाल के दिनों को स्मरण करो, पीढ़ी-पीढ़ी के वर्षों को विचारों; अपने बाप से पूछो, और वह तुम

को बताएगा; अपने बूढ़े लोगों से प्रश्न करो, और वे तुझ से कह देंगे। ८ जब परमप्रधान ने एक-एक जाति को निज-निज भाग बाँट दिया, और आदमियों को अलग-अलग बसाया, तब उसने देश-देश के लोगों की सीमाएँ इमाराए़लियों की गिनती के अनुसार ठहराई। ९ क्योंकि यहोवा का अंश उसकी प्रजा है; याकूब उसका नपा हुआ निज भाग है। १० “उसने उसको जंगल में, और सुनसान और गरजनेवालों से भरी हड्ड मस्खमि में पाया; उसने उसके चारों ओर रहकर उसकी रक्षा की, और अपनी औंख की पुतली के समान उसकी सुधि रखी। ११ जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला-हिलाकर अपने बच्चों के ऊपर-ऊपर मण्डराता है, वैसे ही उसने अपने पंख फैलाकर उसको अपने परों पर उठा लिया। १२ यहोवा अकेला ही उसकी अगुआई करता रहा, और उसके संग कोई पराया देवता न था। १३ उसने उसको पृथ्वी के ऊँचे-ऊँचे स्थानों पर सवार कराया, और उसको खेतों की उपज खिलाई; उसने उसे चट्ठान में से मध्य और चक्रमक की चट्ठान में से तेल चुसाया। १४ गायों का दही, और भेड़-बकरियों का दूध, मेनों की चर्बी, बकरे और बाशन की जाति के मेहे, और गेहूँ का उत्तम से उत्तम आटा भी खाया; और तू दाखरस का मध्य पिया करता था। १५ “परन्तु यशून मोटा होकर लात माने लगा; तू मोटा और हष्ट-पृष्ठ हो गया, और चर्बी से छा गया है; तब उसने अपने सुनहरा परमेश्वर को तज दिया, और अपने उट्टार चट्ठान को तच्छ जाना। १६ उन्होंने पराए देवताओं को मानकर उसमें जलन उपजाई; और धूषित कर्म करके उसको रिस दिलाई। १७ उन्होंने पिशाचों के लिये जो परमेश्वर न थे बलि चढ़ाए, और उनके लिये वे अनजाने देवता थे, वे तो नये-नये देवता थे जो थोड़े ही दिन से प्रगत हुए थे, और जिनसे उनके पुरुखा कभी डेरे नहीं। १८ जिस चट्ठान से तू उत्पन्न हुआ उसको तू भूल गया, और परमेश्वर जिससे तेरी उत्पत्ति हुई उसको भी तू भूल गया है। १९ “इन बातों को देखकर यहोवा ने उन्हें तच्छ जाना, क्योंकि उसके बेटे-बेटियों ने उसे रिस दिलाई थी। २० तब उसने कहा, ‘मैं उनसे अपना मुख छिपा लौंगा, और देखूँगा कि उनका अन्त कैसा होगा, क्योंकि इस जाति के लोग बहुत टेढ़े हैं और धोखा देनेवाले पुत्र हैं। २१ उन्होंने ऐसी वस्तु को जो परमेश्वर नहीं है मानकर, मुझ में जलन उत्पन्न की; और अपनी व्यर्थ वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाई। इसलिए मैं भी उनके द्वारा जो मेरी प्रजा नहीं है उनके मन में जलन उत्पन्न करूँगा, और एक मर्ख जाति के द्वारा उन्हें रिस दिलाऊँगा। २२ क्योंकि मेरे कोप की आग भड़क उठी है, जो पातल की तह तक जलती जाएगी, और पृथ्वी अपनी उपज समेत भस्म हो जाएगी, और पहाड़ों की नीचों में भी आग लग देगी। (Sheol h7585) २३ “मैं उन पर विपत्ति पर विपत्ति भेजूँगा; और उन पर मैं अपने सब तीरों को छोड़ूँगा। २४ वे भूख से दुखें हो जाएँगे, और अंगारों से और कठिन महारोगों से ग्रसित हो जाएँगे; और मैं उन पर पशुओं के दाँत लगवाऊँगा, और धूलि पर रोगेवाले सर्पों का विष छोड़ दूँगा। २५ बाहर वे तलवार से मरेंगे, और कोठरियों के भीतर भय से; क्या कँवारे और कँवारियाँ, क्या दृढ़ पीता हुआ बच्चा क्या पक्के बाल वाले, सब इसी प्रकार बर्बाद होंगे। २६ मैंने कहा था, कि मैं उनको दूर-दूर तक तिर-बितर करूँगा, और मनुष्यों में से उनका स्मरण तक मिटा डालूँगा; २७ परन्तु मुझे शत्रुओं की छेड़-छाड़ का डर था, ऐसा न हो कि द्रोही इसको उलटा समझकर यह कहने लगे, ‘हम अपने ही बाहुबल से प्रबल हुए, और यह सब यहोवा से नहीं हुआ।’ २८ “क्योंकि इमारेल जाति युतिहीन है, और इनमें समझ है नहीं। २९ भला होता कि ये बुद्धिमान होते, कि इसको समझ लेते, और अपने अन्त का विचार करते। ३० यदि उनकी चट्ठान ही उनके न बेच देती, और यहोवा उनको दूसरों के हाथ में न कर देता; तो यह कैसे हो सकता कि उनके हजार का पीछा एक मनुष्य करता, और उनके दस

हजार को दो मनुष्य भगा देते? ३१ क्योंकि जैसी हमारी चट्ठान है वैसी उनकी चट्ठान नहीं है, चाहे हमारे शत्रु ही क्यों न न्यायी हों। ३२ क्योंकि उनकी दाखलता सदोमी की दाखलता से निकली, और गमोरा की दाख की बारियों में की है; उनकी दाख विषभरी और उनके गुच्छे कड़वे हैं; ३३ उनका दाखमध्य साँपों का सा विष और काले नागों का सा हलाहल है। ३४ “क्या यह बात मेरे मन में संचित, और मेरे भण्डारों में मुहरबन्द नहीं है?” ३५ पलटा लेना और बदला देना मेरा ही काम है, यह उनके पाँव फिसलने के समय प्रगत होगा, क्योंकि उनकी विपति का दिन निकट है, और जो दुःख उन पर पड़नेवाले हैं वे शीघ्र आ रहे हैं। ३६ क्योंकि जब यहोवा देखेगा कि मेरी प्रजा की शक्ति जाती रही, और क्या बध्यआ और क्या स्वाधीन, उनमें कोई बचा नहीं रहा, तब यहोवा अपने लोगों का न्याय करेगा, और अपने दासों के विषय में तरस खाएगा। ३७ तब वह कहेगा, उनके देवता कहाँ हैं, अर्थात् वह चट्ठान कहाँ जिस पर उनका भरोसा था, ३८ जो उनके बलिदानों की चर्ची खते, और उनके तपावनों का दाखमध्य पीति थे? वे ही उठकर तुम्हारी सहयोगी करें, और तुम्हारी आड हों। ३९ “इसलिए अब तुम देख लो कि मैं ही वह हूँ, और मेरे संग कोई देवता नहीं; मैं ही मार डालता, और मैं जिलाता भी हूँ; मैं ही घायल करता, और मैं ही चंगा भी करता हूँ; और मेरे हाथ से कोई नहीं छुड़ा सकता। ४० क्योंकि मैं अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर कहता हूँ, क्योंकि मैं अनन्तकाल के लिये जीवित हूँ, ४१ इसलिए यदि मैं विजली की तलवार पर सान धरकर झलकाऊँ, और न्याय अपने हाथ में ले लौं, तो अपने दोहियों से बदला लौँगा, और अपने बैरियों को बदला दूँगा। ४२ मैं अपने तीरों को लह से मतवाला कहूँगा, और मेरी तलवार माँस खाएगी—वह लह, मरे हुओ और बन्दियों का, और वह माँस, श्रुओं के लम्बे बाल वाले प्रधानों का होगा। ४३ “हे अन्यजातियों, उसकी प्रजा के साथ अनन्द मानो; क्योंकि वह अपने दासों के लह का पलटा लेगा, और अपने दोहियों को बदला देगा, और अपने देश और अपनी प्रजा के पाप के लिये प्रायश्चित देगा।” ४४ इस गीत के सब वचन मूसा ने नून के पुनर यहोश् समेत आकर लोगों को सुनाए। ४५ जब मूसा ये सब वचन सब इसाएलियों से कह चका, ४६ तब उसने उनसे कहा, “जितनी बातें मैं आज तुम से चिताकर कहता हूँ उन सब पर अपना-अपना मन लगाओ, और उनके अर्थात् इस व्यवस्था की सारी बातों के मानने में चौकसी करने की आज्ञा अपने बच्चों को दो। ४७ क्योंकि यह तुम्हारे लिये वर्यां काम नहीं, परन्तु तुम्हारा जीवन ही है, और ऐसा करने से उस देश में तुम्हारी आयु के दिन बहुत होगे, जिसके अधिकारी होने को तुम यरदन पार जा रहे हो।” ४८ फिर उसी दिन यहोवा ने मूसा से कहा, ४९ “उस अबारी पम्पाड़ की नबो नामक चोटी पर, जो मोआब देश में यरीहो के सामने है, चढ़कर कनान देश, जिसे मैं इसाएलियों की निज भूमि कर देता हूँ, उसको देख ले। ५० तब जैसा तेरा भाई हास्तन होर पहाड़ पर मरकर अपने लोगों में मिल गया, वैसा ही तू इस पहाड़ पर चढ़कर मर जाएगा, और अपने लोगों में मिल जाएगा। ५१ इसका कारण यह है, कि सीन जंगल में, कादेश के मरीबा नाम सोते पर, तुम दोनों ने मेरा अपराध किया, क्योंकि तुम ने इसाएलियों के मध्य में मुझे पवित्र न ठहराया। ५२ इसलिए वह देश जो मैं इसाएलियों को देता हूँ, तू अपने सामने देख लेगा, परन्तु वहाँ जाने न पाएगा।”

३३ जो आशीर्वाद परमेश्वर के जन मूसा ने अपनी मृत्यु से पहले इसाएलियों को दिया वह यह है। ० उसने कहा, “यहोवा संनि से आया, और सेर्हर से उनके लिये उदय हुआ; उसने पारान पर्वत पर से अपना तेज दिखाया, और लाखों पवित्रों के मध्य में से आया, उसके दाहिने हाथ से उनके लिये ज्वलायम विधियाँ निकली। १ वह निश्चय लोगों से प्रेम करता है; उसके सब

पवित्र लोग तेरे हाथ में हैं; वे तेरे पाँवों के पास बैठे रहते हैं, एक-एक तेरे वचनों से लाभ उठाता है। २ मूसा ने हमें व्यवस्था दी, और वह याकूब की मण्डली का निज भाग ठहरी। ३ जब प्रजा के मुख्य-मुख्य पुस्त, और इसाएल के सभी गोव एक संग होकर एकत्रित हुए, तब वह यशून में राजा ठहरा। ४ “स्खेन न मरे, वरन् जीवित रहे, तो भी उसके यहाँ के मनुष्य थेड़े होंगे।” ५ और यहदा पर यह आशीर्वाद हुआ जो मूसा ने कहा, “हे यहोवा तू यहदा की सुन, और उसे उसके लोगों के पास पहुँचा। वह अपने लिये आप अपने हाथों से लड़ा, और तू ही उसके दोहियों के विस्तु उसका सहायक हो।” ६ फिर लेवी के विषय में उसने कहा, “तेरे तुम्हीं और ऊपरी तेरे भक्त के पास हैं, जिसको उसे मस्सा में परख लिया, और जिसके साथ मरीबा नामक सोते पर तेरा वाद-विवाद हुआ; ७ उसने तो अपने माता-पिता के विषय में कहा, “मैं उनको नहीं जानता,” और न तो उसने अपने भाइयों को अपना माना, और न अपने पुत्रों को पहचाना। क्योंकि उन्होंने तेरी बातें मानी, और वे तेरी वाचा का पालन करते हैं। ८ वे याकूब को तेरे नियम, और इसाएल को तेरी व्यवस्था सिखाएँ; और तेरे आगे धूप और तेरी वेदी पर सर्वांग पशु को होमबलि करेंगे। ९ हे यहोवा, उसकी सम्पत्ति पर आशीर्ष दे, और उसके हाथों की सेवा को गृहण कर; उसके विरोधियों और बैरियों की कमर पर ऐसा मार, कि वे फिर न उठ सकें।” १० फिर उसने बिन्यामीन के विषय में कहा, “यहोवा का वह प्रिय जन, उसके पास निडर वास करेगा; और वह दिन भर उस पर छाया करेगा, और वह उसके कंधों के बीच रहा करता है।” ११ फिर यसुफ के विषय में उसने कहा; “इसका देश यहोवा से आशीर्ष पाए अर्थात् आकाश के अनमोल पदार्थ और ओस, और वह गहरा जल जो नीचे है, १२ और सूर्य के पकाए हुए अनमोल फल, और जो अनमोल पदार्थ मौसम के उगाए उगते हैं, १३ और प्राचीन पहाड़ों के उत्तम पदार्थ, और सनातन पहाड़ियों के अनमोल पदार्थ, १४ और पृथ्वी और जो अनमोल पदार्थ उसमें भरे हैं, और जो झाड़ी में रहता था उसकी प्रसन्नता। इन सभी के विषय में यसुफ के सिर पर, अर्थात् उसी के सिर के चाँद पर जो अपने भाइयों से अलग हुआ था आशीर्ष ही आशीर्ष फले। १५ वह प्रतीती है, मानो गाय का पहलौता है, और उसके सींग जंगली बैल के से हैं; उनसे वह देश-देश के लोगों को, बरन पृथ्वी के छोर तक के सब मनुष्यों को ढकेरेगा, वे ऐसे के लाखों-लाख, और मनशे के हजारों-हजार हैं।” १६ फिर जबूलून के विषय में उसने कहा, “हे जबूलून, तू बाहर निकलते समय, और हे इस्साकारा, तू अपने डेरों में आनन्द करो। १७ वे देश-देश के लोगों को पहाड़ पर बुलाएँगे; वे वहाँ धर्मज्ञ करेंगे; क्योंकि वे समुद्र का धन, और रेत में छिपे हुए अनमोल पदार्थ से लाभ उठाएँगे।” १८ फिर गाद के विषय में उसने कहा, “धन्य वह है जो गाद को बढ़ाता है! गाद तो सिंहनी के समान रहता है, और बाँह को, वरन् सिर के चाँद तक को फाड़ डालता है। १९ और उसने पहला अश तो अपने लिये चुन लिया, क्योंकि वहाँ सरदार के योग्य भाग रखा हुआ था; तब उसने प्रजा के मुख्य-मुख्य पुस्तों के संग आकर यहोवा का ठहराया हुआ धर्म, और इसाएल के साथ होकर उसके नियम का प्रतिपालन किया।” २० फिर दान के विषय में उसने कहा, “दान तो बाशान से कृदेवाला सिंह का बच्चा है।” २१ फिर नमाली के विषय में उसने कहा, “हे नमाली, तू जो यहोवा की प्रसन्नता से तुम, और उसकी आशीर्ष से भरपूर है, तू पश्चिम और दक्षिण के देश का अधिकारी हो।” २२ फिर आशेर के विषय में उसने कहा, “आशेर पुत्रों के विषय में आशीर्ष पाए; वह अपने भाइयों में प्रिय रहे, और अपना पाँव तेल में डुबोए। २३ तेरे जूते लोहे और पीतल के होंगे, और जैसे तेरे दिन वैसी ही तेरी शक्ति हो। २४ “हे यशून, परमेश्वर के तुल्य और कोई नहीं है, वह तेरी सहायता करने को आकाश पर, और अपना प्रताप

दिखाता हुआ आकाशमण्डल पर सवार होकर चलता है। २६ अनादि परमेश्वर तेरा गृहधाम है, और नीचे सनातन भुजाएँ हैं। वह शशुओं को तेरे सामने से निकाल देता, और कहता है, उनको सत्यानाश कर दे। २७ और इसाएल निर्दर्शन करता है; अन्न और नये दाखमधु के देश में याकूब का सोता अकेला ही रहता है; और उसके ऊपर के आकाश से ओस पड़ा करती है। २८ है इसाएल, तृक्या ही धर्य है! हे यहोवा से उद्गार पाई हुई प्रजा, तेरे तुल्य कौन है? वह तो तेरी सहायता के लिये ढाल, और तेरे प्रताप के लिये तलवार है, तेरे शशु तुझे सराहेंगे, और तृ उनके ऊँचे स्थानों को रौंदेगा।”

३४ फिर मूसा मोआब के अराबा से नबो पहाड़ पर, जो पिसगा की एक चोटी और यरीहो के सामने है, चढ़ गया; और यहोवा ने उसको दान तक का गिलाद नामक सारा देश, २ और नसाती का सारा देश, और एँग्रैम और मनश्शे का देश, और पश्चिम के समुद्र तक का यहूदा का सारा देश, ३ और दक्षिण देश, और सोअर तक की यरीहो नामक खजरवाले नगर की तराई, यह सब दिखाया। ४ तब यहोवा ने उससे कहा, “जिस देश के विषय में मैंने अब्राहम, इसहाक, और याकूब से शपथ खाकर कहा था, कि मैं इसे तेरे वंश को दूँगा वह यही है। मैंने इसको तुझे साक्षात् दिखा दिया है, परन्तु तृ पार होकर वहाँ जाने न पाएगा।” ५ तब यहोवा के कहने के अनुसार उसका दास मूसा वही मोआब देश में मर गया, ६ और यहोवा ने उसे मोआब के देश में बेतपोर के सामने एक तराई में मिट्ठी दी; और आज के दिन तक कोई नहीं जानता कि उसकी कब्र कहाँ है। ७ मूसा अपनी मृत्यु के समय एक सौ बीस वर्ष का था; परन्तु न तो उसकी आँखें धूँगली पड़ीं, और न उसका पौस्प घटा था। ८ और इसाएली मोआब के अराबा में मूसा के लिये तीस दिन तक रोते रहे; तब मूसा के लिये रोने और बिलाप करने के दिन पौरे हुए। ९ और नून का पुत्र यहोशू बृद्धिमानी की आत्मा से परिपूर्ण था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रखे थे; और इसाएली उस आजा के अनुसार जो यहोवा ने मूसा को दी थी उसकी मानते रहे। १० और मूसा के तुल्य इसाएल में ऐसा कोई नबी नहीं उठा, जिससे यहोवा ने आमने-सामने बातें की, ११ और उसको यहोवा ने फिरान और उसके सब कर्मचारियों के सामने, और उसके सारे देश में, सब चिन्ह और चमत्कार करने को भेजा था, १२ और उसने सारे इसाएलियों की दृष्टि में बलवन्त हाथ और बड़े भय के काम कर दिखाए।

यहोशू

१ यहोवा के दास मूसा की मृत्यु के बाद यहोवा ने उसके सेवक यहोशू से जो

नूस का पुत्र था कहा, २ “मेरा दास मूसा मर गया है; सो अब तू उठ, कमर बाँध, और इस सारी प्रजा समेत यरदन पार होकर उस देश को जा जिसे मैं उनको अर्थात् इसाएलियों को देता हूँ।” ३ उस बचन के अनुसार जो मैंने मूसा से कहा, अर्थात् जिस-जिस स्थान पर तुम पाँव रखेगे वह सब मैं तुहाँ दे देता हूँ।

४ जंगल और उस लबानोन से लेकर फरात महानद तक, और सर्योस्त की ओर महासमुद्र तक हितियों का सारा देश तम्हारा भाग ठहरेगा। ५ तेरे जीवन भर कोई तेरे सामने ठहर न सकेगा; जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी रहँगा; और न तो मैं तुझे धोखा ढाँगा, और न तुझको छोड़ूँगा। ६ इसलिए हियाव बाँधकर दृढ़ हो जा; क्योंकि जिस देश के देने की शपथ मैंने इन लोगों के पूर्वजों से खाई थी उसका अधिकारी तू इन्हें करेगा। ७ इन्हाँ हो कि तू हियाव बाँधकर और बहत दृढ़ होकर जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझे दी है उन सब के अनुसार करने में चौकसी करना; और उससे न तो दाँए मुड़ना और न बाँए, तब जहाँ-जहाँ तू जाएगा वहाँ-वहाँ तेरा काम सफल होगा। ८ व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उत्तरे पाए, इसी में दिन-रात ध्यान दिए रहना, इसलिए कि जो कुछ उसमें लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करें; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और त प्रभावशाली होगा।

९ क्या मैंने तुझे आज्ञा नहीं दी? हियाव बाँधकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहाँ-जहाँ तू जाएगा वहाँ-वहाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा।” १० तब यहोशू ने प्रजा के सरदारों को यह आज्ञा दी, ११

“छावनी में इधर-उधर जाकर प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दो, कि अपने-अपने लिए भोजन तैयार कर रखो; क्योंकि तीन दिन के भीतर तुम को इस यरदन के पार उत्तरकर उस देश को अपने अधिकार में लेने के लिये जाना है जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे अधिकार में देनेवाला है।” १२ फिर यहोशू ने स्टेनियों, गाड़ियों, और मनश्शे के अधे गोत्र के लोगों से कहा, १३ “जो बात यहोवा के दास मूसा ने तुम से कही थी, कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुहुं विश्वाम देता है, और यही देश तुहुं देगा, उसकी सुधि करो।” १४ तुम्हारी खियों, बाल-बच्चे, और पशु तो इस देश में रहें जो मूसा ने तुहुं यरदन के इस पार दिया, परन्तु तुम जो शूरवीर हो पाँच बाँधे हुए अपने भाइयों के आगे-आगे पार उत्तर चलो, और उनकी सहायता करो; १५ और जब यहोवा उनको ऐसा विश्वाम देगा जैसा वह तुहुं दे चुका है, और वे भी तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के दिए हुए देश के अधिकारी हो जाएँगे; तब तुम अपने अधिकार के देश में, जो यहोवा के दास मूसा ने यरदन के इस पार सर्योदय की ओर तुहुं दिया है, लौटकर इसके अधिकारी होंगे।” १६ तब उन्होंने यहोशू को उत्तर दिया, “जो कुछ तुमें हमें करने की आज्ञा दी है वह हम करेंगे, और जहाँ कहीं त हमें भेजे वहाँ हम जाएँगे।” १७ जैसे हम सब बातों में मूसा की मानते थे वैसे ही तेरी भी मान करेंगे; इन्हाँ हो कि तेरा परमेश्वर यहोवा जैसा मूसा के संग रहता था वैसे ही तेरे संग भी रहे। १८ कोई क्यों न हो जो तेरे विस्तु बलवा करे, और जितनी आज्ञाएँ तू दे उनको न माने, तो वह मार डाला जाएगा। परन्तु तू दृढ़ और हियाव बाँधे रह।”

२ तब नूस के पुत्र यहोशू ने दो भेदियों को शिरीम से चुपके से भेज दिया, और

उनसे कहा, “जाकर उस देश और यरीहो को देखो।” तुरन्त वे चल दिए, और राहाब नामक किसी वेश्या के घर में जाकर सो गए। ३ तब किसी ने यरीहो के राजा से कहा, “आज की रात कई एक इसाएली हमारे देश का भेद लेने को यहाँ आए हुए हैं।” ४ तब यरीहो के राजा ने राहाब के पास यह कहला

भेजा, “जो पुष्प तेरे यहाँ आए हैं उन्हें बाहर ले आ; क्योंकि वे सारे देश का भेद लेने को आए हैं।” ५ उस स्थी ने दोनों पुष्पों को छिपा रखा; और इस प्रकार कहा, “मेरे पास कई पुष्प आए तो थे, परन्तु मैं नहीं जानती कि वे कहाँ के थे; ६ और जब अंधेरा हुआ, और फाटक बन्द होने लगा, तब वे निकल गए; मुझे मालम नहीं कि वे कहाँ गए; तुम फूर्ती करके उनका पीछा करो तो उन्हें जा पकड़ोगे।” ७ उसने उनको घर की छत पर चढ़ाकर सनई की लकड़ियों के नीचे छिपा दिया था जो उसने छत पर सजा कर रखी थी। ८ वे पुष्प तो यरदन का मार्ग ले उनकी खोज में घाट तक चले गए; और ज्यों ही उनको खोजनेवाले फाटक से निकले त्यों ही फाटक बन्द किया गया। ९ वे लेटने न पाए थे कि वह स्थी छत पर इनके पास जाकर १० इन पुष्पों से कहने लगी, “मुझे तो निश्चय है कि यहोवा ने तुम लोगों को यह देश दिया है, और तुम्हारा भय हम लोगों के मन में समाया है, और इस देश के सब निवासी तुम्हारे कारण घबरा रहे हैं।” ११ क्योंकि हमने सुना है कि यहोवा ने तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय तुम्हारे सामने लाल समुद्र का जल सूखा दिया। और तुम लोगों ने सीहोन और ओग नामक यरदन पार रहनेवाले एमरियों के दोनों राजाओं का सत्यानाश कर डाला है। १२ और यह सुनते ही हमरा मन पिघल गया, और तुम्हारे कारण किसी के जी में जी न रहा; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ऊपर के आकाश का और नीचे की पृथ्वी का परमेश्वर है। १३ अब मैंने जो तुम पर दया की है, इसलिए मुझसे यहोवा की शपथ खाओ कि तुम भी मेरे पिता के घराने पर दया करोगे, और इसका सच्चा चिन्ह मुझे दो, १४ कि तुम मेरे माता-पिता, भाइयों और बहनों को, और जो कुछ उनका है उन सभी को भी जीवित रख छोड़ो, और हम सभी का प्राण मरने से बचाओगे।” १५ तब उन पुष्पों ने उससे कहा, “यदि तू हमारी यह बात किसी पर प्रगट न करे, तो तुम्हारे प्राण के बदले हमारा प्राण जाएँ; और जब यहोवा हमको यह देश देगा, तब हम तेरे साथ कृपा और सच्चाई से बर्ताव करेंगे।” १६ तब राहाब जिसका घर शहरपनाह पर बना था, और वह वही रहती थी, उसने उनको खिड़की से रस्सी के बल उतार के नगर के बाहर कर दिया। १७ और उसने उनसे कहा, “पहाड़ को चले जाओ, ऐसा न हो कि खोजनेवाले तुम को पाएँ; इसलिए जब तक तुम्हारे खोजनेवाले लौट न आएँ तब तक, अर्थात् तीन दिन वन वही छिपे रहना, उसके बाद अपना मार्ग लेना।” १८ उन्होंने उससे कहा, जो शपथ तुम हमको खिलाई है उसके विषय में हम तो निर्दोष रहेंगे। १९ सुन, जब हम लोग इस देश में आएँगे, तब जिस खिड़की से तुम हमको उतारा है उसमें यही लाल रंग के सत् की डोरी बाँध देना; और अपने माता पिता, भाइयों, वरन् अपने पिता के घराने को इसी घर में अपने पास इकट्ठा कर रखना। २० तब जो कोई तेरे घर के द्वार से बाहर निकले, उसके खून का दोष उसी के सिर पड़ेगा, और हम निर्दोष ठहरेंगे: परन्तु यदि तेरे संग घर में रहते हुए किसी पर किसी का हाथ पड़े, तो उसके खून का दोष हमारे सिर पर पड़ेगा। २१ फिर यदि तू हमारी यह बात किसी पर प्रगट करे, तो जो शपथ तुम हमको खिलाई है उससे हम स्वतंत्र ठहरेंगे।” २२ उसने कहा, “तुम्हारे बचनों के अनुसार हो।” तब उसने उनको विदा किया, और वे चले गए; और उसने लाल रंग की डोरी को खिड़की में बाँध दिया। २३ और वे जाकर पहाड़ तक पहुँचे, और वहाँ खोजनेवालों के लौटने तक, अर्थात् तीन दिन तक रहे; और खोजनेवाले उनको सारे मार्ग में ढूँढ़ते रहे और कहीं न पाया। २४ तब वे दोनों पुष्प पहाड़ से उतरे, और पार जाकर नूस के पुत्र यहोशू के पास इकट्ठा कर जाएँगे। २५ और उन्होंने यहोवा से कहा, “निःसन्देह यहोवा ने वह सारा देश हमारे हाथ में कर दिया है; फिर इसके सिवाय उसके सारे निवासी हमारे कारण घबरा रहे हैं।”

३ यहोश् सवेरे उठा, और सब इसाएलियों को साथ ले शिर्तीम से कूच कर यरदन के किनारे आया; और वे पार उतरने से पहले वहीं टिक गए। ४ और तीन दिन के बाद सरदारों ने छावनी के बीच जाकर ५ प्रजा के लोगों को यह आज्ञा दी, “जब तुम को अपने परमेश्वर यहोवा की बाचा का सन्दूक और उसे उठाए हुए लेवीय याजक भी दिखाई दें, तब अपने स्थान से कूच करके उसके पीछे-पीछे चलना, ६ परन्तु उसके और तुम्हारे बीच में दो हजार हाथ के लगभग अन्तर रहे; तुम सन्दूक के निकट न जाना। ताकि तुम देख सको, कि किस मार्ग से तुम को चलना है, क्योंकि अब तक तुम इस मार्ग पर होकर नहीं चरो।” ७ फिर यहोश् ने प्रजा के लोगों से कहा, “तुम अपने आपको पवित्र करो; क्योंकि कल के दिन यहोवा तुम्हारे मध्य में आश्चर्यकर्म करेगा।” ८ तब यहोश् ने याजकों से कहा, “बाचा का सन्दूक उठाकर प्रजा के आगे-आगे चलो।” तब वे बाचा का सन्दूक उठाकर आगे-आगे चले। ९ तब यहोवा ने यहोश् से कहा, “आज के दिन से मैं सब इसाएलियों के सम्मुख तेरी प्रशंसा करना आरम्भ करूँगा, जिससे वे जान लें कि जैसे मैं मूसा के संग रहता था वैसे ही मैं तेरे संग भी हूँ।” १० और तू बाचा के सन्दूक के उठानेवाले याजकों को यह आज्ञा दे, ‘‘जब तुम यरदन के जल के किनारे पहुँचो, तब यरदन में खड़े रहना।’’ ११ तब यहोश् ने इसाएलियों से कहा, “पास आकर अपने परमेश्वर यहोवा के बचन सुनो।” १२ और यहोश् कहने लगा, “इससे तुम जान लोगे कि जीवित परमेश्वर तुम्हारे मध्य में है, और वह तुम्हारे सामने से निःनन्देह कनानियों, हितियों, हिब्बियों, परिजियों, गिराशियों, एमोरियों, और यबूसियों को उनके देश में से निकाल देगा। १३ सुनो, पृथ्वी भर के प्रभु की बाचा का सन्दूक तुम्हारे आगे-आगे यरदन में जाने को है। १४ इसलिए अब इसाएल के गोत्रों में से बारह पुस्ती भर के प्रभु यहोवा की बाचा का सन्दूक उठानेवाले याजकों के पाँव यरदन के जल में पड़ेंगे, उस समय यरदन का ऊपर से बहाता हुआ जल थम जाएगा, और ढेर होकर ठहरा रहेगा।” १५ इसलिए जब प्रजा के लोगों ने अपने डेरों से ये यरदन पार जाने को कूच किया, और याजक बाचा का सन्दूक उठाए हुए प्रजा के आगे-आगे चले, १६ और सन्दूक के उठानेवाले यरदन पर पहुँचे, और सन्दूक के उठानेवाले याजकों के पाँव यरदन के तट के जल में पड़े (यरदन का जल तो कटनी के समय के सब दिन अपने तट के ऊपर-ऊपर बहा करता है), १७ तब जो जल ऊपर की ओर से बहा आता था वह बहुत दूर, अर्थात् आदाम नगर के पास जो सारातान के निकट है स्ककर एक ढेर हो गया, और दीवार सा उठा रहा, और जो जल अराबा का ताल, जो खारा ताल भी कहलाता है उसकी ओर बहा जाता था, वह पूरी रीति से सख गया; और प्रजा के लोग यरीहो के सामने पार उतर गए। १८ और याजक यहोवा की बाचा का सन्दूक उठाए हुए यरदन के बीचों बीच पहुँचकर स्थल पर स्थिर खड़े रहे, और सब इसाएली स्थल ही स्थल पार उतरे रहे, अन्त में उस सारी जाति के लोग यरदन पार हो गए।

४ जब उस सारी जाति के लोग यरदन के पार उतर चुके, तब यहोवा ने यहोश् से कहा, “प्रजा में से बारह पुस्त, अर्थात्-गोत्र पीछे एक-एक पुस्त को चुनकर यह आज्ञा दे, ५ तुम यरदन के बीच में, जहाँ याजकों ने पाँव धरे थे वहाँ से बारह पत्थर उठाकर अपने साथ पार ले चलो, और जहाँ आज की रात पड़ाव होगा वही उनको रख देना।” ६ तब यहोश् ने उन बारह पुस्तों को, जिन्हें उसने इसाएलियों के प्रत्येक गोत्र में से छांक्टकर ठहरा रखा था, ७ बूलवाकर कहा, “तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सन्दूक के आगे यरदन के बीच में जाकर इसाएलियों के गोत्रों की गिनती के अनुसार एक-एक

पत्थर उठाकर अपने-अपने कंधे पर रखो, ८ जिससे यह तुम लोगों के बीच चिन्ह ठहरे, और आगे को जब तुम्हारे बेटे यह पछें, ‘‘इन पत्थरों का क्या मतलब है?’’ ९ तब तुम उन्हें यह उत्तर दो, कि यरदन का जल यहोवा की बाचा के सन्दूक के सामने से दो भाग हो गया था; क्योंकि जब वह यरदन पार आ रहा था, तब यरदन का जल दो भाग हो गया। अतः वे पत्थर इसाएल को सदा के लिये स्मरण दिलानेवाले ठहरेंगे।” १० यहोश् की इस आज्ञा के अनुसार इसाएलियों ने किया, जैसा यहोवा ने यहोश् से कहा था वैसा ही उहोने इसाएली गोत्रों की गिनती के अनुसार बारह पत्थर यरदन के बीच में से उता लिए, और उनको अपने साथ ले जाकर पड़ाव में रख दिया। ११ और यरदन के बीच, जहाँ याजक बाचा के सन्दूक को उठाए हुए अपने पाँव धरे थे वहाँ यहोश् ने बारह पत्थर खड़े कराएँ, वे आज तक वहीं पाए जाते हैं। १२ और याजक सन्दूक उठाए हुए उस समय तक यरदन के बीच खड़े रहे जब तक वे सब बातें पूरी न हो चुकी, जिन्हें यहोवा ने यहोश् को लोगों से कहने की आज्ञा दी थी। तब सब लोग फुर्ती से पार उतर गएः १३ और जब सब लोग पार उतर चुके, तब याजक और यहोवा का सन्दूक भी उनके देखते पार हुए। १४ और स्बैनी, गादी, और मनश्रे के आधे गोत्र के लोग मूसा के कहने के अनुसार इसाएलियों के आगे पौंति बाँधे हुए पार गएः १५ अर्थात् कोई चालीस हजार पुस्त यदु के हथियार बाँधे हुए संग्राम करने के लिये यहोवा के सामने पार उत्तरकर यरीहो के पास के अराबा में पहुँचे। १६ उस दिन यहोवा ने सब इसाएलियों के सामने यहोश् की महिमा बढ़ाई; और जैसे वे मूसा का भय मानते थे वैसे ही यहोश् का भी भय उसके जीवन भर मानते रहे। १७ और यहोवा ने यहोश् से कहा, “१८ साक्षी का सन्दूक उठानेवाले याजकों को आज्ञा दि कि यरदन में से निकल आएँ।” १९ तो यहोश् ने याजकों को आज्ञा दी, “यरदन में से निकल आओ।” २० और ज्यों ही यहोवा की बाचा का सन्दूक उठानेवाले याजक यरदन के बीच में से निकल आए, और उनके पाँव स्थल पर पड़े, त्यों ही यरदन का जल अपने स्थान पर आया, और पहले के समान तटों के ऊपर फिर बहने लगा। २१ पहले महीने के दसवें दिन को प्रजा के लोगों ने यरदन में से निकलकर यरीहो की पूर्णी सीमा पर गिलगाल में अपने डेर डाले। २२ और जो बारह पत्थर यरदन में से निकाले गए थे, उनको यहोश् ने गिलगाल में खड़े किए। २३ तब उसने इसाएलियों से कहा, “आगे को जब तुम्हारे बाल-बच्चे अपने-अपने पिता से यह पूछें, ‘‘इन पत्थरों का क्या मतलब है?’’ २४ तब तुम यह कहकर उनको बताना, ‘‘इसाएली यरदन के पार स्थल ही स्थल चले आए थे।’’ २५ क्योंकि जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने लाल समुद्र को हमारे पार हो जाने तक हमारे सामने से हटाकर सूखा रखा था, वैसे ही उसने यरदन का भी जल तुम्हारे पार हो जाने तक तुम्हारे सामने से हटाकर सूखा रखा। २६ इसलिए कि पृथ्वी के सब देशों के लोग जान लें कि यहोवा का हाथ बलवन्त है; और तुम सर्वदा अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानते रहो।”

५ जब यरदन के पश्चिम की ओर रहनेवाले एमोरियों के सब राजाओं ने, और समुद्र के पास रहनेवाले कनानियों के सब राजाओं ने यह सुना, कि यहोवा ने इसाएलियों के पार होने तक उनके सामने से यरदन का जल हटाकर सुखा रखा है, तब इसाएलियों के डर के मारे उनका मन घबरा गया, और उनके जी में जी न रहा। ६ उस समय यहोवा ने यहोश् से कहा, “चक्रमक की छुरियाँ बनवाकर दसरी बार इसाएलियों का खतना करा दे।” ७ तब यहोश् ने चक्रमक की छुरियाँ बनवाकर खलड़ियों नामक टीले पर इसाएलियों का खतना कराया। ८ और यहोश् ने जो खतना कराया, इसका कारण यह है, कि जितने यदु के योग्य पुस्त मिस्र से निकले थे वे सब मिस्र से निकलने पर जंगल के मार्ग में मर गए थे। ९ जो पुस्त मिस्र से निकले थे उन सब का तो खतना हो

चुका था, परन्तु जितने उनके मिस्र से निकलने पर जंगल के मार्ग में उत्पन्न हुए उनमें से किसी का खतना न हुआ था। ६ क्योंकि इसाएली तो चालीस वर्ष तक जंगल में फिरते रहे, जब तक उस सारी जाति के लोग, अर्थात् जितने युद्ध के योग्य लोग मिस्र से निकले थे वे नाश न हो गए, क्योंकि उन्होंने यहोवा की न मारी थी; इसलिए यहोवा ने शपथ खाकर उनसे कहा था, कि जो देश मैंने तुम्हारे पूर्छियों से सेपथ खाकर तुम्हें देने को कहा था, और उसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, वह देश मैं तुम को नहीं दिखाऊँगा। ७ तो उन लोगों के पुत्र जिनको यहोवा ने उनके स्थान पर उत्पन्न किया था, उनका खतना यहोश् से कराया, क्योंकि मार्ग में उनके खतना न होने के कारण वे खतना दृष्टि थे। ८ और जब उस सारी जाति के लोगों का खतना हो चुका, तब वे चर्गे हो जाने तक अपने-अपने स्थान पर छावनी में रहे। ९ तब यहोवा ने यहोश् के कहा, “तुम्हारी नामधारी जो मिस्रियों में हुई है उसे मैंने आज दूर किया है” ॥१३॥ इस कारण उस स्थान का नाम आज के दिन तक गिलगाल पड़ा है। १० सो इसाएली गिलगाल में डेर डाले रहे, और उन्होंने यरीहों के पास के अराबा में पूर्णमासी की संध्या के समय फसह माना। ११ और फसह के दूसरे दिन वे उस देश की उपज में से अखमीरी रोटी और उसी दिन से भुना हुआ दाना भी खाने लगे। १२ और जिस दिन वे उस देश की उपज में से खाने लगे, उसी दिन सर्वे को मन्ना बन्द हो गया; और इसाएलियों को आगे फिर कभी मन्ना न मिला, परन्तु उस वर्ष उन्होंने कनान देश की उपज में से खाया। १३ जब यहोश् यरीहों के पास था तब उसने अपनी आँखें उठाई, और क्या देखा, कि हाथ में नंगी तलवार लिये हुए एक पुस्त सामने खड़ा है, और यहोश् ने उसके पास जाकर पूछा, “क्या तू हमारी ओर का है, या हमारे बैरियों की ओर का?” १४ उसने उत्तर दिया, “नहीं; मैं यहोवा की सेना का प्रधान होकर अभी आया हूँ।” तब यहोश् ने पृथ्वी पर मूँह के बल गिरकर दण्डवत् किया, और उससे कहा, “अपने दास के लिये मेरे प्रभु की क्या आज्ञा है?” १५ यहोवा की सेना के प्रधान ने यहोश् से कहा, “अपनी जूती पाँव से उत्तर डाल, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र है।” तब यहोश् ने वैसा ही किया।

६ यरीहों के सब फाटक इसाएलियों के डर के मारे लगातार बन्द रहे, और कोई बाहर भीतर आने-जाने नहीं पाता था। ७ फिर यहोवा ने यहोश् से कहा, “सुन, मैं यरीहों को उसके राजा और शरियों समेत तेरे वश में कर देता हूँ।” ८ सो तुम मैं जितने योद्धा हैं नगर को घेर लें, और उस नगर के चारों ओर एक बार धूम आएँ। और छ: दिन तक ऐसा ही किया करना। ९ और सात याजक सन्दूक के आगे-आगे मेढ़ों के सीरियों के सात नरसिंगे लिए हुए चर्चें, फिर सातवें दिन तुम नगर के चारों ओर सात बार धूमना, और याजक भी नरसिंगे फँकते चलें। १० और जब वे मेढ़ों के सीरियों के नरसिंगे देर तक फँकते रहें, तब सब लोग नरसिंगे का शब्द सुनते ही बड़ी ध्वनि से जयजयकार करें, तब नगर की शहरपनाह नीव से गिर जाएगी, और सब लोग अपने-अपने सामने चढ़ जाएँ।” ११ सो नून के पुत्र यहोश् ने याजकों को बुलावाकर कहा, “वाचा के सन्दूक को उठा लो, और सात याजक यहोवा के सन्दूक के आगे-आगे मेढ़ों के सीरियों के सात नरसिंगे लिए चलें।” १२ फिर उसने लोगों से कहा, “आगे बढ़कर नगर के चारों ओर धूम आओ; और हथियार-बन्द पुस्त यहोवा के सन्दूक के आगे-आगे चलें।” १३ और जब यहोश् ये बातें लोगों से कह चुका, तो वे सात याजक जो यहोवा के सामने सात नरसिंगे लिए हुए थे नरसिंगे फँकते हुए चले, और यहोवा की वाचा का सन्दूक उनके पीछे-पीछे चला। १४ और हथियार-बन्द पुस्त नरसिंगे फँकनेवाले याजकों के आगे-आगे चले, और पीछेवाले सन्दूक के पीछे-पीछे चले, और याजक नरसिंगे फँकते हुए चले। १५ और यहोश् ने लोगों को आज्ञा दी, “जब तक मैं तुम्हें

जयजयकार करने की आज्ञा न दूँ, तब तक जयजयकार न करना, और न तुम्हारा कोई शब्द सुनने में आए, न कोई बात तुम्हारे मूँह से निकलने पाए; आज्ञा पाते ही जयजयकार करना।” १६ उसने यहोवा के सन्दूक को एक बार नगर के चारों ओर घुमावाया; तब वे छावनी में आए, और रात वही काटी। १७ यहोश् सर्वे उठा, और याजकों ने यहोवा का सन्दूक उठा लिया। १८ और उन सात याजकों ने मेढ़ों के सीरियों के सात नरसिंगे लिए और यहोवा के सन्दूक के आगे-आगे फँकते हुए चले; और उनके आगे हथियार-बन्द पुस्त चर्चे, और पीछेवाले यहोवा के सन्दूक के पीछे-पीछे चले, और याजक नरसिंगे फँकते चले गए। १९ इस प्रकार वे दूसरे दिन भी एक बार नगर के चारों ओर घुमकर छावनी में लौट आए। और इसी प्रकार उन्होंने छः दिन तक किया। २० फिर सातवें दिन वे बड़े तड़के उठकर उसी रीति से नगर के चारों ओर सात बार धूम आए; केवल उसी दिन वे सात बार धूमे। २१ तब सातवीं बार जब याजक नरसिंगे फँकते थे, तब यहोश् ने लोगों से कहा, “जयजयकार करो; क्योंकि यहोवा ने यह नगर तुम्हें दे दिया है।” २२ और नगर और जो कुछ उसमें है यहोवा के लिये अर्पण की वस्तु ठहराकर बाद में उसी अर्पण की वस्तु में से कुछ ले लो, और इस प्रकार इसाएली छावनी को भ्रष्ट करके उसे कष में डाल दो। २३ सब चाँदी, सोना, और जो पात्र पीतल और लोहे के हैं, वे यहोवा के लिये पवित्र हैं, और उसी के भण्डार में रखे जाएँ।” २४ तब लोगों ने जयजयकार किया, और याजक नरसिंगे फँकते रहे। और जब लोगों ने नरसिंगे का शब्द सुना तो फिर बड़ी ही ध्वनि से उन्होंने जयजयकार किया, तब शहरपनाह नीव से गिर पड़ी, और लोग अपने-अपने सामने से उस नगर में चढ़ गए, और नगर को ले लिया। २५ और क्या पुस्त, क्या स्त्री, क्या जवान, क्या बूढ़ी, वरन् बैल, भेड़-बकरी, गदहे, और जितने नगर में थे, उन सभी को उन्होंने अर्पण की वस्तु जानकर तलवार से मार डाला। २६ तब यहोश् ने उन दोनों पुरुषों से जो उस देश का भेद लेने गए थे कहा, “अपनी शपथ के अनुसार उस वेश्या के घर में जाकर उसको और जो उसके पास हों उन्हें भी निकाल ले आओ।” २७ तब वे दोनों जवान भेदिए भीतर जाकर राहाब को, और उसके माता-पिता, भाइयों, और सब को जो उसके यहाँ रहते थे, वरन् उसके सब कुटुम्बियों को निकाल लाए, और इसाएल की छावनी से बाहर बैठा दिया। २८ तब उन्होंने नगर को, और जो कुछ उसमें था, सब को आग लगाकर फँक दिया; केवल चाँदी, सोना, और जो पात्र पीतल और लोहे के थे, उनको उन्होंने यहोवा के भवन के भण्डार में रख दिया। २९ और यहोश् ने राहब वेश्या और उसके पिता के घरने को, वरन् उसके सब लोगों को जीवित छोड़ दिया; और आज तक उसका वश इसाएलियों के बीच में रहता है, क्योंकि जो दूत यहोश् ने यरीहों के भेद लेने को भेजे थे उनको उसने छिपा रखा था। ३० फिर उसी समय यहोश् ने इसाएलियों के सम्मुख शपथ रखी, और कहा, “जो मनुष्य उठकर इस नगर यरीहों को फिर से बनाए वह यहोवा की ओर से श्रापित हो।” ३१ जब वह उसकी नीव डालेगा तब तो उसका जेठा पुत्र मरेगा, और जब वह उसके फाटक लगवाएगा तब उसका छोटा पुत्र जाएगा।” ३२ और यहोवा यहोश् के संग रहा; और यहोश् की कीर्ति उस सारे देश में फैल गई।

७ परन्तु इसाएलियों ने अर्पण की वस्तु के विषय में विश्वासघात किया; अर्थात् यहाँ गोत्र का आकान, जो जेरहवंशी जन्दी का पोता और कर्मी

का पुत्र था, उसने अर्पण की वस्तुओं में से कुछ ले लिया; इस कारण यहोवा का कोप इसाएलियों पर भड़क उठा। २ यहोश् ने यरीहो से आई नामक नगर के पास, जो बेतवेन से लगा हुआ बेतेल की पूर्व की ओर है, कुछ पुस्खों को यह कहकर भेजा, “जाकर देश का भेद ले आओ।” और उन पुस्खों ने जाकर आई का भेद लिया। ३ और उन्होंने यहोश् के पास लौटकर कहा, “सब लोग वहाँ न जाएँ, कोई दो तीन हजार पुस्ख जाकर आई को जीत सकते हैं; सब लोगों को वहाँ जाने का कष्ट न दे, क्योंकि वे लोग थोड़े ही हैं।” ४ इसलिए कोई तीन हजार पुस्ख वहाँ गए; परन्तु आई के रहनेवालों के समाने से भाग आए, ५ तब आई के रहनेवालों ने उनमें से कोई छतीस पुस्ख मार डाले, और अपने फाटक से शबारीम तक उनका पीछा करके उत्तराई में उनको मारते गए। ६ तब यहोश् ने अपने बच्चे फाड़े, और वह और इसाएली बुद्ध लोग यहोवा के सन्दूक के समाने मूँह के बल पिंकर भूमि पर साँझा तक पड़े रहे; और उन्होंने अपने-अपने सिर पर धूल डाली। ७ और यहोश् ने कहा, “हाय, प्रभु यहोवा, तू अपनी इस प्रजा को यरदन पार करो ले आया? क्या हमें एमोरियों के बश में करके नष्ट करने के लिये ले आया है? भला होता कि हम संतोष करके यरदन के ऊपर रह जाते हाय, प्रभु मैं क्या कहूँ, जब इसाएलियों ने अपने शत्रुओं को पीठ दिखाई है।” ८ क्योंकि कनानी वरन् इस देश के सब निवासी यह सुनकर हमको धेर लेंगे, और हमारा नाम पृथकी पर से मिटा डालेंगे; फिर तू अपने बच्चे नाम के लिये क्या करेगा?” ९ यहोवा ने यहोश् से कहा, “उठ, खड़ा हो जा, तू क्यों इस भाँति मूँह के बल भूमि पर पड़ा है? १० इसाएलियों ने पाप किया है; और जो वाचा मैंने उनसे अपने साथ बैधाई थी उसको उन्होंने तोड़ दिया है, उन्होंने अर्पण की वस्तुओं में से ले लिया, वरन् चोरी भी की, और छल करके उसको अपने सामान में रख लिया है। ११ इस कारण इसाएली अपने शत्रुओं के समाने खड़े नहीं रह सकते, वे अपने शत्रुओं को पीठ दिखाते हैं, इसलिए कि वे आप अर्पण की वस्तु बन गए हैं। और यदि तुम अपने मध्य में से अर्पण की वस्तु सत्यानाश न कर डालोगे, तो मैं आगे को तुम्हारे संग नहीं रहूँगा। १२ उठ, प्रजा के लोगों को पवित्र कर, उससे कह: ‘सर्वे तक अपने-अपने को पवित्र कर रखो; क्योंकि इसाएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, “हे इसाएल, तेरे मध्य में से अर्पण की वस्तु है, इसलिए जब तक तू अर्पण की वस्तु को अपने मध्य में से दूर न करे तब तक तू अपने शत्रुओं के सामने खड़ा न रह सकेगा।’” १३ इसलिए सर्वे को तुम गोन्न-गोन्न के अनुसार समीप खड़े किए जाओगे; और जिस गोन्न को यहोवा पकड़े वह एक-एक कुल करके पास आए; और जिस कुल को यहोवा पकड़े वह घराना-घराना करके पास आए; फिर जिस घराने को यहोवा पकड़े वह एक-एक पुस्ख करके पास आए। १४ तब जो पुस्ख अर्पण की वस्तु रखे हुए पकड़ा जाएगा, वह और जो कुछ उसका हो सब आग में डालकर जला दिया जाए; क्योंकि उसने यहोवा की वाचा को तोड़ा है, और इसाएल में अनुचित कर्म किया है।” १५ यहोश् सर्वे उठकर इसाएलियों को गोन्न-गोन्न करके समीप ले गया, और यहदा का गोन्न पकड़ा गया; १६ तब उसने यहदा के परिवार को समीप किया, और जेरहवंशीयों का कुल पकड़ा गया; फिर जेरहवंशीयों के घराने के एक-एक पुस्ख को समीप लाया, और जबदी पकड़ा गया; १७ तब उसने उसके घराने के एक-एक पुस्ख को समीप खड़ा किया, और यहदा गोन्न का आकान, जो जेरहवंशी जबदी का पोता और कर्मी का पुत्र था, पकड़ा गया। १८ तब यहोश् आकान से कहने लगा, “हे मेरे बेटे, इसाएल के परमेश्वर यहोवा का आदर कर, और उसके आगे अंगीकार कर; और जो कुछ तुमे किया है वह मुझे को बता दे, और मुझसे कुछ मत छिपा।” १९ आकान ने यहोश् को उत्तर दिया, “सचमुच मैंने इसाएल के परमेश्वर यहोवा

के विस्तु पाप किया है, और इस प्रकार मैंने किया है, २० कि जब मुझे लूट में बाबेल देश का एक सुन्दर ओढ़ना, और दो सौ शेकल चाँदी, और पचास शेकेल सोने की एक इंट देख पड़ी, तब मैंने उनका लालच करके उन्हें रख लिया; वे मेरे डेरे के भीतर भूमि में गड़े हैं, और सब के नीचे चाँदी है।” २१ तब यहोश् ने दूत भेजे, और वे उस डेरे में दौड़े गए, और क्या देखा, कि वे वस्तुएँ उसके डेरे में गड़ी हैं, और सब के नीचे चाँदी है। २२ उनको उन्होंने डेरे में से निकालकर यहोश् और सब इसाएलियों के पास लाकर यहोवा के सामने रख दिया। २३ तब सब इसाएलियों समेत यहोश् जेरहवंशी आकान को, और उस चाँदी और ओढ़ना और सोने की इंट को, और उसके बैलों, गदहों और भेड़-बकरियों को, और उसके डेरे को, अर्थात् जो कुछ उसका था उन सब को आकोर नामक तराई में ले गया। २४ तब यहोश् ने उससे कहा, “तूने हमें क्यों कष्ट दिया है? आज के दिन यहोवा तुझी को कष्ट देगा।” तब सब इसाएलियों ने उस पर पथराव किया; और उनको आग में डालकर जलाया, और उनके ऊपर पथर डाल दिए। २५ और उन्होंने उसके ऊपर पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया जो आज तक बना है; तब यहोवा का भड़का हुआ काप शान्त हो गया। इस कारण उस स्थान का नाम आज तक आकोर तराई पड़ा है।

८ तब यहोवा ने यहोश् से कहा, “मत डर, और तेरा मन कच्चा न हो; कमर बाँधकर सब योद्धाओं को साथ ले, और आई पर चढ़ाई कर; सुन, मैंने आई के राजा को उसकी प्रजा और उसके नगर और देश समेत तेरे बश में कर दिया है।” ९ और जैसा तने यरीहो और उसके राजा से किया वैसा ही आई और उसके राजा के साथ भी करना; केवल तम पशुओं समेत उसकी लूट तो अपने लिये ले सकोगे; इसलिए उस नगर के पीछे की ओर अपने पुस्ख घाट में लगा दो।” १० अतः यहोश् ने सब योद्धाओं समेत आई पर चढ़ाई करने की तैयारी की; और यहोश् ने तीस हजार पुस्खों को जो शूरवीर थे चुनकर रात ही की आज्ञा देकर भेजा। ११ और उनको यह आज्ञा दी, “सुनो, तुम उस नगर के पीछे की ओर घाट लगाए बैठे रहना; नगर से बहुत दूर न जाना, और सब के सब तैयार रहना; १२ और मैं अपने सब साथियों समेत उस नगर के निकट जाऊँगा। और जब वे पहले के समान हमारा सामना करने को निकलें, तब हम उनके आगे से भागेंगे; १३ तब वे यह सोचकर, कि वे पहले की भाँति हमारे सामने से भागे जाते हैं, हमारा पीछा करेंगे, इस प्रकार हम उनके सामने से भागकर उन्हें नगर से दूर निकाल ले जाएँगे; १४ तब तुम घाट में से उठकर नगर को अपना कर लेना; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उसको तुम्हारे हाथ में कर देगा।” १५ और जब नगर को ले लो, तब उसमें आग लगाकर झूँक देना, यहोवा की आज्ञा के अनुसार ही काम करना; सुनो, मैंने तुम्हें आज्ञा दी है।” १६ तब यहोश् ने उनको भेज दिया; और वे घाट में बैठने को चले गए, और बेतेल और आई के मध्य में और आई की पश्चिम की ओर बैठे रहे; परन्तु यहोश् उस रात को लोगों के बीच टिका रहा। १७ यहोश् सर्वे उठा, और लोगों की गिनती करके इसाएली बुद्ध लोगों समेत लोगों के आगे-आगे आई की ओर चला। १८ और उसके संग के सब योद्धा चढ़ गए, और आई नगर के निकट पहुँचकर उसके सामने उत्तर की ओर डेरे डाल दिए, और उनके और आई के बीच एक तराई थी। १९ तब उन्हें कोई पौँच हजार पुस्ख चुनकर बेतेल और आई के मध्य नगर के पश्चिम की ओर उनको घाट में बैठा दिया। २० और जब लोगों ने नगर के उत्तर ओर सारी सेना को और उसके पश्चिम ओर घाट में बैठे हुओं को भी ठिकाने पर कर दिया, तब यहोश् उसी रात तराई के बीच गया। २१ जब आई के राजा ने यह देखा, तब वे फूर्ती करके सर्वे उठे, और राजा अपनी सारी प्रजा को

लेकर इसाएलियों के सामने उनसे लड़ने को निकलकर ठहराए हुए स्थान पर जो आराबा के सामने है पहुँचा; और वह नहीं जानता था कि नगर की पिछली ओर लोग घाट लगाए बैठे हैं। १५ तब यहोशू और सब इसाएली उनसे मानो हार मानकर जंगल का मार्ग लेकर भाग निकले। १६ तब नगर के सब लोग इसाएलियों का पीछा करने को पुकार-पुकारके बुलाए गए; और वे यहोशू का पीछा करते हुए नगर से दूर निकल गए। १७ और न आई में और न बेतल में कोई पुरुष रह गया, जो इसाएलियों का पीछा करने को न गया हो; और उन्होंने नगर को खुला हुआ छोड़कर इसाएलियों का पीछा किया। १८ तब यहोवा ने यहोशू से कहा, “अपने हाथ का बर्छा आई की ओर बढ़ा; क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में दे दूँगा।” और यहोशू ने अपने हाथ के बर्छे को नगर की ओर बढ़ाया। १९ उसके हाथ बढ़ाते ही जो लोग घाट में बैठे थे वे झटपट अपने स्थान से उठे, और दौड़कर नगर में प्रवेश किया और उसको ले लिया; और झटपट उसमें आग लगा दी। २० जब आई के पुरुषों ने पीछे की ओर फिरकर दृष्टि की, तो क्या देखा, कि नगर का धुआँ आकाश की ओर उठ रहा है; और उन्हें न तो इधर भागने की शक्ति रही, और न उधर, और जो लोग जंगल की ओर भागे जाते थे वे फिरकर अपने खदेड़नेवालों पर टूट पड़े। २१ जब यहोशू और सब इसाएलियों ने देखा कि घातियों ने नगर को ले लिया, और उसका धुआँ उठ रहा है, तब घमकर आई के पुरुषों को मारने लगे। २२ और उनका सामना करने को दूसरे भी नगर से निकल आए; सो वे इसाएलियों के बीच में पड़ गए, कुछ इसाएली तो उनके आगे, और कुछ उनके पीछे थे; अतः उन्होंने उनको यहाँ तक मार डाला कि उनमें से न तो कोई बच्चे और न भागने पाया। २३ और आई के राजा को वे जीवित पकड़कर यहोशू के पास ले आए। २४ और जब इसाएली आई के सब निवासियों को मैदान में, अर्थात उस जंगल में जहाँ उन्होंने उनका पीछा किया था घाट कर चुके, और वे सब के सब तलवार से मारे गए यहाँ तक कि उनका अन्त ही हो गया, तब सब इसाएलियों ने आई को लौटकर उस भी तलवार से मारा। २५ और छीं पुरुष, सब मिलाकर जो उस दिन मारे गए वे बाहर हजार थे, और आई के सब पुरुष इतने ही थे। २६ क्योंकि जब तक यहोशू ने आई के सब निवासियों का सत्यानाश न कर डाला तब तक उसने अपना हाथ, जिससे बर्छा बढ़ाया था, फिर न खीचा। २७ यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो उसने यहोशू को दी थी इसाएलियों ने पशु आदि नगर की लूट अपनी कर ली। २८ तब यहोशू ने आई को फुँकवा दिया, और उसे सदा के लिये खण्डहर कर दिया: वह आज तक उजाड़ पड़ा है। २९ और आई के राजा को उसने साँझ तक बृक्ष पर लटका रखा; और सूर्य ढबते-ढबते यहोशू की आज्ञा से उसका शब बृक्ष पर से उतारकर नगर के फाटक के सामने डाल दिया गया, और उस पर पथरों का बड़ा ढेर लगा दिया, जो आज तक बना है। ३० तब यहोशू ने इसाएल के परमेवर यहोवा के लिये एबाल पर्वत पर एक वेदी बनवाई, ३१ जैसा यहोवा के दास मूसा ने इसाएलियों को आज्ञा दी थी, और जैसा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है, उसने समचे पथरों की एक वेदी बनवाई जिस पर औजार नहीं चलाया गया था। और उस पर उन्होंने यहोवा के लिये होमबलि चढ़ाए, और मेलबलि किए। ३२ उसी स्थान पर यहोशू ने इसाएलियों के सामने उन पथरों के ऊपर मूसा की व्यवस्था, जो उसने लिखी थी, उसकी नकल कराई। ३३ और वे, क्या देशी क्या परदेशी, सभे इसाएली अपने बृद्ध लोगों, सरदारों, और न्यायियों समेत यहोवा की वाचा का सन्दूक उठानेवाले लेवीय याजकों के सामने उस सन्दूक के इधर-उधर खड़े हुए, अर्थात् आधे लोग तो गिरिजीम पर्वत के, और आधे एबाल पर्वत के सामने खड़े हुए, जैसा कि यहोवा के दास मूसा ने पहले आज्ञा दी थी, कि इसाएली प्रजा को आशीर्वाद दिए जाएँ। ३४ उसके बाद उसने आशीष और श्राप

की व्यवस्था के सारे वचन, जैसे-जैसे व्यवस्था की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वैसे-वैसे पढ़ पढ़कर सुना दिए। ३५ जिन्हीं बातों की मूसा ने आज्ञा दी थी, उनमें से कोई ऐसी बात नहीं रह गई जो यहोशू ने इसाएल की सारी सभा, और स्नियों, और बाल-बच्चों, और उनके साथ रहनेवाले परदेशी लोगों के सामने भी पढ़कर न सुनाई।

१९ यह सुनकर हिन्ती, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिल्बी, और यबूसी, जितने राजा यरदन के इस पार पहाड़ी देश में और नीचे के देश में, और लबानोन के सामने के महानगर के टट पर रहते थे, २० वे एक मन होकर यहोशू और इसाएलियों से लड़ने को इकट्ठे हुए। २१ जब गिबोन के निवासियों ने सुना कि यहोशू ने यरिहो और आई से क्या-क्या किया है, २२ तब उन्होंने छल किया, और राजदूतों का भेष बनाकर अपने गदहों पर पुराने बोरे, और पुराने फटे, और जोड़े हुए पदिरा के कुप्पे लादकर २३ अपने पांवों में पुरानी बैबन्द लगी हुई जूतियाँ, और तन पर पुराने बृक्ष पहने, और अपने भोजन के लिये सूर्खी और फफूंदी लगी हुई रोटी ले ली। २४ तब वे गिलाल की छावनी में यहोशू के पास जाकर उससे और इसाएली पुरुषों से कहने लगे, “हम दूर देश से आए हैं; इसलिए अब तुम हम से बाचा बांधो।” २५ इसाएली पुरुषों ने उन हिल्बियों से कहा, “क्या जाने तुम हमारे मध्य में ही रहते हो; फिर हम तुम से बाचा कैसे बांधे?” २६ उन्होंने यहोशू से कहा, “हम तेरे दास हैं।” तब यहोशू ने उनसे कहा, “तुम कौन हो? और कहाँ से आए हो?” २७ उन्होंने उससे कहा, “तेरे दास बहुत दूर के देश से तेरे परमेवर यहोवा का नाम सुनकर आए हैं; क्योंकि हमने यह सब सुना है, अर्थात् उसकी कीर्ति और जो कुछ उसने मिस्र में किया, २८ और जो कुछ उसने एपोरियों के दोनों राजाओं से किया जो यरदन के उस पर रहते थे, अर्थात् हेशबोन के राजा सीहोन से, और बाशान के राजा ओग से जो अश्तरोत में था। २९ इसलिए हमारे यहाँ के बृद्ध लोगों ने और हमारे देश के सब निवासियों ने हम से कहा, कि मार्ग के लिये अपने साथ भोजनवस्तु लेकर उनसे मिलने को जाओ, और उनसे कहना, कि हम तुम्हारे दास हैं; इसलिए अब तुम हम से बाचा बांधो। ३० जिस दिन हम तुम्हारे पास चलने को निकले उस दिन तो हमने अपने-अपने घर से यह रोटी गरम और ताजी ली थी, परन्तु अब देखो, यह सूख गई है और इसमें फफूंदी लग गई है। ३१ फिर ये जो मदिरा के कुप्पे हमने भर लिये थे, तब तो नये थे, परन्तु देखो अब ये फट गए हैं; और हमारे ये बृक्ष और जूतियाँ बड़ी लम्बी यात्रा के कारण पुरानी हो गई हैं।” ३२ तब उन पुरुषों ने यहोवा से बिना सलाह लिये उनके भोजन में से कुछ ग्रहण किया। ३३ तब यहोशू ने उनसे मेल करके उनसे यह बाचा बांधी, कि तुम को जीवित छोड़ोगे; और मण्डली के प्रधानों ने उनसे शपथ खाई। ३४ और उनके साथ बाचा बांधने के तीन दिन के बाद उनको यह समाचार मिला; कि वे हमारे पडोस के रहनेवाले लोग हैं, और हमारे ही मध्य में बसे हैं। ३५ तब इसाएली कूच करके तीसरे दिन उनके नगरों को जिनके नाम गिबोन, करीरा, बेरोत, और किर्बत्यारिम है पहुँच गए, ३६ और इसाएलियों ने उनको न मारा, क्योंकि मण्डली के प्रधानों ने उनके संग इसाएल के परमेवर यहोवा की शपथ खाई थी। तब सारी मण्डली के लोग प्रधानों के विस्तु कुदकुदाने लगे। ३७ तब सब प्रधानों ने सारी मण्डली से कहा, “हमने उनसे इसाएल के परमेवर यहोवा की शपथ खाई है, इसलिए अब उनको छोड़ देंगे, नहीं तो हमारी खाई हुई शपथ के कारण हम पर कोध पड़ेगा।” ३८ फिर प्रधानों ने उनसे कहा, “वे जीवित छोड़ जाएँ।” अतः प्रधानों के इस वचन के अनुसार वे सारी मण्डली के लिये लकड़हरे और पानी भरनेवाले बने। ३९ फिर यहोशू ने उनको बुलवाकर कहा, “तुम तो हमारे ही बीच में रहते हो, फिर तुम ने हम से यह

कहकर क्यों छल किया है, कि हम तुम से बहुत दूर रहते हैं? २३ इसलिए अब तुम श्रापित हो, और तुम में से ऐसा कोई न रहेगा जो दास, अर्थात् मेरे परमेश्वर के भवन के लिये लकड़हारा और पानी भरनेवाला न हो।” २४ उन्होंने यहोश् को उत्तर दिया, “तेरे दासों को यह निश्चय बताया गया था, कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने अपने दास मसा को आज्ञा दी थी कि तुम को वह सारा देश दे, और उसके सारे निवासियों को तुम्हारे सामने से सर्वनाश करें; इसलिए हम लोगों को तुम्हारे कारण से अपने प्राणों के लाले पड़ गए, इसलिए हमने ऐसा काम किया। २५ और अब हम तेरे वश में हैं, जैसा बर्ताव तुझे भला लगे और ठीक लगे, वैसा ही व्यवहार हमारे साथ कर।” २६ तब उसने उन्हें वैसा ही किया, और उन्हें इसाएलियों के हाथ से ऐसा बचाया, कि वे उन्हें घात करने न पाए। २७ परन्तु यहोश् ने उसी दिन उनको मण्डली के लिये, और जो स्थान यहोवा चुन ले उसमें उसकी बेटी के लिये, लकड़हारे और पानी भरनेवाले नियुक्त कर दिया, जैसा आज तक है।

१० जब यस्खलेम के राजा अदोनीसेदेक ने सुना कि यहोश् ने आई को ले लिया, और उसका सत्यानाश कर डाला है, और जैसा उसने यरीहो और उसके राजा से किया था वैसा ही आई और उसके राजा से भी किया है, और यह भी सुना कि गिबोन के निवासियों ने इसाएलियों से मेल किया, और उनके बीच रहने लगे हैं, २७ तब वे बहुत डर गए, क्योंकि गिबोन बड़ा नगर बरन राजनगर के तुल्य और आई से बड़ा था, और उसके सब निवासी शूरवीर थे। २८ इसलिए यस्खलेम के राजा अदोनीसेदेक ने हेब्रोन के राजा होहाम, यर्मत के राजा पिराम, लाकीश के राजा यापी, और एलोन के राजा दबीर के पास यह कहला भेजा, २९ “मेरे पास आकर मेरी सहायता करो, और चलो हम गिबोन को मारें; क्योंकि उसने यहोश् और इसाएलियों से मेल कर लिया है।” ३० इसलिए यस्खलेम, हेब्रोन, यर्मत, लाकीश, और एलोन के पाँचों एमेरी राजाओं ने अपनी-अपनी सारी सेना इकट्ठी करके चढ़ाई कर दी, और गिबोन के सामने ढेरे डालकर उससे युद्ध छेड़ दिया। ३१ तब गिबोन के निवासियों ने गिलगाल की छावनी में यहोश् के पास यह कहला भेजा, “अपने दासों की ओर से तु अपना हाथ न हटाना; शीघ्र हमारे पास आकर हमें बचा ले, और हमारी सहायता कर; क्योंकि पहाड़ पर रहनेवाले एमेरीयों के सब राजा हमारे विस्तृ इकट्ठे हुए हैं।” ३२ तब यहोश् सारे योद्धाओं और सब शूरवीरों को संग लेकर गिलगाल से चल पड़ा। ३३ और यहोवा ने यहोश् से कहा, “उनसे मत डर, क्योंकि मैंने उनको तेरे हाथ में कर दिया है; उन्हें से एक पुस्त भी तेरे सामने टिक न सकेगा।” ३४ तब यहोश् गारों-रात गिलगाल से जाकर एकाएक उन पर टूट पड़ा। ३५ तब यहोवा ने ऐसा किया कि वे इसाएलियों से घबरा गए, और इसाएलियों ने गिबोन के पास उनका बड़ा संहार किया, और बेथोरोन के चढ़ाई पर उनका पीछा करके अजेका और मक्केदा तक उनको मारते गए। ३६ फिर जब वे इसाएलियों के सामने से भागकर बेथोरोन की उत्तराई पर आए, तब अजेका पहुँचने तक यहोवा ने आकाश से बड़े-बड़े पत्थर उन पर बरसाएँ, और वे मर गए; जो ओरों से मारे गए उनकी गिनती इसाएलियों की तलवार से मारे हुओं से अधिक थी। ३७ उस समय, अर्थात् जिस दिन यहोवा ने एमेरीयों को इसाएलियों के वश में कर दिया, उस दिन यहोश् ने यहोवा से इसाएलियों के देखते इस प्रकार कहा, “हे सूर्य, तू गिबोन पर, और हे चन्द्रमा, तू अख्यालोन की तराई के ऊपर थमा रह।” ३८ और सूर्य उस समय तक ठहरा रहा, जब तक उस जाति के लोगों ने अपने शत्रुओं से बदला न लिया। क्या यह बात याशर नामक पुस्तक में नहीं लिखी है कि सूर्य आकाशमण्डल के बीचबीच ठहरा रहा, और लगभग चार पहर तक न ढूबा? ३९ न तो उससे पहले कोई ऐसा दिन हुआ और न उसके

बाद, जिसमें यहोवा ने किसी पुस्त की सुनी हो; क्योंकि यहोवा तो इसाएल की ओर से लड़ता था। ४० तब यहोश् सारे इसाएलियों समेत गिलगाल की छावनी को लौट गया। ४१ वे पाँचों राजा भागकर मक्केदा के पास की गुफा में जिष्ठे। ४२ तब यहोश् को यह समाचार मिला, “पाँचों राजा मक्केदा के पास की गुफा में जिष्ठे हुए हमें मिले हैं।” ४३ यहोश् ने कहा, “गुफा के मूँह पर बड़े-बड़े पत्थर लुढ़काकर उनकी देख-भाल के लिये मनुष्यों को उसके पास बैठा दो; ४४ परन्तु तम मत ठहरो, अपने शत्रुओं का पीछा करके उनमें से जो-जो पिछड़ गए हैं उनको मार डालो, उन्हें अपने-अपने गढ़वाले नगर में घुस गए, ४५ तब सब लोग मक्केदा की छावनी को यहोश् के पास कुशल क्षेत्र से लौट आएँ और इसाएलियों के विस्तृ किसी ने जीभ तक न हिलाई। ४६ तब यहोश् ने जैसा दी, “गुफा का मूँह खोलकर उन पाँचों राजाओं को मेरे पास निकाल ले आओ।” ४७ उन्होंने ऐसा ही किया, और यस्खलेम, हेब्रोन, यर्मत, लाकीश, और एलोन के उन पाँचों राजाओं को गुफा में से उसके पास निकाल ले आए। ४८ जब वे उन राजाओं को यहोश् के पास निकाल ले आए, तब यहोश् ने इसाएल के सब पुस्तों को बुलाकर अपने साथ चलनेवाले योद्धाओं के प्रधानों से कहा, “निकट आकर अपने-अपने पाँच इन राजाओं की गदीनों पर रखो” और उन्होंने निकट जाकर अपने-अपने पाँच उनकी गदीनों पर रखे। ४९ तब यहोश् ने उनसे कहा, “डरो मत, और न तुम्हारा मन कच्चा हो; हियाव बाँधकर दृढ़ हो; क्योंकि यहोवा तुम्हारे सब शत्रुओं से जिनसे तुम लड़नेवाले हो ऐसा ही करेगा।” ५० इसके बाद यहोश् ने उनको मरवा डाला, और पाँच वृक्षों पर लटका दिया। और वे साँझ तक उन वृक्षों पर लटके रहे। ५१ सूर्य इब्रो-इब्रो यहोश् से आज्ञा पाकर लोगों ने उन्हें उन वृक्षों पर से उतार के उसी गुफा में जहाँ वे छिप गए थे डाल दिया, और उस गुफा के मूँह पर बड़े-बड़े पत्थर रख दिए, वे आज तक वहीं रखे हुए हैं। ५२ उसी दिन यहोश् ने मक्केदा को ले लिया, और उसको तलवार से मारा, और उसके राजा का सत्यानाश किया; और जितने प्राणी उसमें थे उन सभी में से किसी को जीवित न छोड़ा; और जैसा उसने यरीहो के राजा के साथ किया था वैसा ही मक्केदा के राजा से भी किया। ५३ तब यहोश् सब इसाएलियों समेत मक्केदा से चलकर लिब्ना को गया, और लिब्ना से लड़ा; ५४ और यहोवा ने उसको भी राजा समेत इसाएलियों के हाथ में कर दिया; और यहोश् ने उसको और उसमें के सब प्राणियों को तलवार से मारा; और उसमें से किसी को भी जीवित न छोड़ा; और उसके राजा से वैसा ही किया जैसा उसने यरीहो के राजा के साथ किया था। ५५ फिर यहोश् सब इसाएलियों समेत लिब्ना से चलकर लाकीश को गया, और उसके विस्तृ छावनी डालकर लड़ा; ५६ और यहोवा ने लाकीश को इसाएल के हाथ में कर दिया, और दूसरे दिन उसने उसको जीत लिया; और जैसा उसने लिब्ना के सब प्राणियों को तलवार से मारा था वैसा ही उसने लाकीश से भी किया। ५७ तब गेजेर का राजा होराम लाकीश की सहायता करने को चढ़ आया; और यहोश् ने प्रजा समेत उसको भी ऐसा मारा कि उसके लिये किसी को जीवित न छोड़ा। ५८ फिर यहोश् ने सब इसाएलियों समेत लाकीश से चलकर एलोन को गया; और उसके विस्तृ छावनी डालकर युद्ध करने लगा; ५९ और उसी दिन उन्होंने उसको ले लिया, और उसको तलवार से मारा; और उसी दिन जैसा उसने लाकीश के सब प्राणियों का सत्यानाश कर डाला था वैसा ही उसने एलोन से भी किया। ६० फिर यहोश् सब इसाएलियों समेत एलोन से चलकर हेब्रोन को गया, और उससे लड़ने लगा; ६१ और

उन्होंने उसे ले लिया, और उसको और उसके राजा और सब गाँवों को और उनमें के सब प्राणियों को तलवार से मारा; जैसा यहोश् ने एलोन से किया था वैसा ही उसने हेब्रोन में भी किसी को जीवित न छोड़ा; उसने उसको और उनमें के सब प्राणियों का सत्यानाश कर डाला। ४८ तब यहोश् सब इस्माइलियों समेत घूमकर दबीर को गया, और उससे लड़ने लगा; ४९ और राजा समेत उसे और उसके सब गाँवों को ले लिया; और उन्होंने उनको तलवार से घाट किया, और जितने प्राणी उसमें थे सब का सत्यानाश कर डाला, किसी को जीवित न छोड़ा, जैसा यहोश् ने हेब्रोन और उसके राजा से किया था वैसा ही उसने दबीर और उसके राजा से भी किया। ५० इसी प्रकार यहोश् ने उस सारे देश को, अर्थात् पहाड़ी देश, दक्षिण देश, नीचे के देश, और ढालू देश को, उनके सब राजाओं समेत मारा; और इस्माइल के परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किसी को जीवित न छोड़ा, वरन् जितने प्राणी थे सभी का सत्यानाश कर डाला। ५१ और यहोश् ने कादेशबर्ने से ले गाजा तक, और गिबोन तक के सारे गोशेन देश के लोगों को मारा। ५२ इन सब राजाओं को उनके देशों समेत यहोश् ने एक ही समय में ले लिया, क्योंकि इस्माइल का परमेश्वर यहोवा इस्माइलियों की ओर से लड़ता था। ५३ तब यहोश् सब इस्माइलियों समेत गिलागाल की छावनी में लौट आया।

११ यह सुनकर हासोर के राजा याबीन ने मादोन के राजा योबाब, और शिप्रोन

और अक्षाप के राजाओं को, २ और जो-जो राजा उत्तर की ओर पहाड़ी देश में, और किन्नरेत के दक्षिण के अराबा में, और नीचे के देश में, और पश्चिम की ओर दोर के ऊंचे देश में रहते थे, उनको, ३ और पूर्व पश्चिम दोनों ओर के रहनेवाले कनानियों, और एपोरियों, हितियों, पारिजियों, और पहाड़ी यहसियों, और मिस्या देश में हर्मेन पहाड़ के नीचे रहनेवाले हिब्लियों को बुलवा भेजा। ४ और वे अपनी-अपनी सेना समेत, जो समृद्ध के किनारे रेतकणों के समान बहुत थी, मिलकर निकल आए, और उनके साथ बहुत से घोड़े और रथ भी थे। ५ तब वे सब राजा सम्मति करके इकट्ठे हुए, और इस्माइलियों से लड़ने को मेरोम नामक ताल के पास आकर एक संग छावनी डाली। ६ तब यहोवा ने यहोश् से कहा, “उनसे मत डर, क्योंकि कल इसी समय मैं उन सभी को इस्माइलियों के वश में करके मरवा डातङ्गा; तब त उनके घोड़ों के घुटनों की नस कटवाइ, और उनके रथ भस्म कर देना।” ७ और यहोश् सब योद्धाओं समेत मेरोम नामक ताल के पास अचानक पहुँचकर उन पर टूट पड़ा। ८ और यहोवा ने उनको इस्माइलियों के हाथ में कर दिया, इसलिए उन्होंने उन्हें मार लिया, और बड़े नगर सीढ़ीन और मिस्पोतैमै तक, और पूर्व की ओर मिस्ये के मैदान तक उनका पीछा किया; और उनको मारा, और उनमें से किसी को जीवित न छोड़ा। ९ तब यहोश् ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार उनसे किया, अर्थात् उनके घोड़ों के घुटनों की नस कटवाइ, और उनके रथ आग में जलाकर भस्म कर दिए। १० उस समय यहोश् ने घूमकर हासोर को जो पहले उन सब राज्यों में मुख्य नगर था ले लिया, और उसके राजा को तलवार से मार डाला। ११ और जितने प्राणी उसमें थे उन सभी को उन्होंने तलवार से मारकर सत्यानाश किया; और किसी प्राणी को जीवित न छोड़ा, और हासोर को यहोश् ने आग लगाकर फँकवा दिया। १२ और उन सब नगरों को उनके सब राजाओं समेत यहोश् ने ले लिया, और यहोवा के दास मूसा की आज्ञा के अनुसार उनको तलवार से घाट करके सत्यानाश किया। १३ परन्तु हासोर को छोड़कर, जिसे यहोश् ने फँकवा दिया, इस्माइल ने और किसी नगर को जो अपने टीले पर बसा था नहीं जलाया १४ और इन नगरों के पश्च और इनकी सारी लृट को इस्माइलियों ने अपना कर लिया; परन्तु मनुष्यों को उन्होंने

तलवार से मार डाला, यहाँ तक उनका सत्यानाश कर डाला कि एक भी प्राणी को जीवित नहीं छोड़ा गया। १५ जो आज्ञा यहोवा ने अपने दास मूसा को दी थी उसी के अनुसार मूसा ने यहोश् को आज्ञा दी थी, और ठीक वैसा ही यहोश् ने किया थी; जो-जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उनमें से यहोश् ने कोई भी पूरी किए बिना न छोड़ी। १६ तब यहोश् ने उस सारे देश को, अर्थात् पहाड़ी देश, और सारे दक्षिणी देश, और कुल गोशन देश, और नीचे के देश, अराबा, और इस्माइल के पहाड़ी देश, और उसके नीचेवाले देश को, १७ हालाक नाम पहाड़ से ले, जो सेईर की चढाई पर है, बालगाद तक, जो लबानोन के मैदान में हेर्मेन पर्वत के नीचे है, जितने देश हैं उन सब को जीत लिया और उन देशों के सारे राजाओं को पकड़कर मार डाला। १८ उन सब राजाओं से यदु करते-करते यहोश् को बहुत दिन लगा गए। १९ गिबोन के निवासी हिब्लियों को छोड़ और किसी नगर के लोगों ने इस्माइलियों से मेल न किया; और सब नगरों को उन्होंने लड़ लड़कर जीत लिया। २० क्योंकि यहोवा की जो मनसा थी, कि अपनी उस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी उन पर कुछ भी दिया न करें; वरन् सत्यानाश कर डालें, इस कारण उनसे उनके मन ऐसे कठोर कर दिए, कि उन्होंने इस्माइलियों का सामना करके उनसे यदु किया। २१ उस समय यहोश् ने पहाड़ी देश में आकर हेब्रोन, दबीर, अनाब, वरन् यहदा और इस्माइल दोनों के सारे पहाड़ी देश में रहनेवाले अनाकियों को नाश किया; यहोश् ने नगरों समेत उनका सत्यानाश कर डाला। २२ इस्माइलियों के देश में कोई अनाकी न रह गया; केवल गाजा, गत, और अशदोद में कोई-कोई रह गए। २३ जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था, वैसा ही यहोश् ने वह सारा देश ले लिया; और उसे इस्माइल के गोतों और कुलों के अनुसार बाँट करके उन्हें दे दिया। और देश को लडाई से शान्ति मिली।

१२ यरदन पार सूर्योदय की ओर, अर्थात् अर्नौन घाटी से लेकर हेर्मेन पर्वत तक के देश, और सारे पूर्वी अराबा के जिन राजाओं को इस्माइलियों ने मारकर उनके देश को अपने अधिकार में कर लिया था वे ये हैं; २ एपोरियों का हेशबोनवासी राजा सीहोन, जो अर्नौन घाटी के किनारे के अरोएस से लेकर, और उसी घाटी के बीच के नगर को छोड़कर यब्बोक नदी तक, जो अप्पोनियों की सीमा है, आधे गिलाद पर, ३ और किन्नरेत नामक ताल से लेकर बेत्यशीमोत से होकर अराबा के ताल तक, जो खारा ताल भी कहलाता है, पूर्व की ओर के अराबा, और दक्षिण की ओर पिस्या की ढलान के नीचे-नीचे के देश पर प्रभुता रखता था। ४ फिर बड़े हुए रपाइयों में से बाशान के राजा ओग का देश था, जो अशतारेत और एद्रेई में रहा करता था, ५ और हेर्मेन पर्वत सल्का, और गश्शरियों, और माकियों की सीमा तक कुल बाशान में, और हेशबोन के राजा सीहोन की सीमा तक आधे गिलाद में भी प्रभुता करता था। ६ इस्माइलियों और यहोवा के दास मूसा ने इनको मार लिया; और यहोवा के दास मूसा ने उनका देश स्लेनियों और गादियों और मनशों के आधे गोत्र के लोगों को दे दिया। ७ यरदन के पश्चिम की ओर, लबानोन के मैदान में के बालगाद से लेकर सेईर की चढाई के हालाक पहाड़ तक के देश के जिन राजाओं को यहोश् और इस्माइलियों ने मारकर उनका देश इस्माइलियों के गोत्रों और कुलों के अनुसार भाग करके दे दिया था वे ये हैं ८ हिती, और एपोरी, और कनानी, और परिज्जी, और हिब्ली, और यहसी, जो पहाड़ी देश में, और नीचे के देश में रहते थे। ९ एक, यरीहो का राजा; एक, बेतेल के पास के आई का राजा; १० एक, यस्सलेम का राजा; एक, हेब्रोन का राजा; ११ एक, यर्मूत का राजा; एक, लाकीश का राजा; १२ एक, एलोन का राजा; एक, गेजेर का राजा; १३ एक, दबीर का राजा; एक, गेदेर का राजा; १४ एक, होर्मा का राजा;

एक, अराद का राजा; १५ एक, लिब्ना का राजा; एक, अदुल्लाम का राजा; १६ एक, मक्केदा का राजा; एक, बेतेल का राजा; १७ एक, तप्पूह का राजा; एक, हेपे का राजा; १८ एक, अपेक का राजा; एक, लशशारेन का राजा; १९ एक, मादोन का राजा; एक, हासोर का राजा; २० एक, शिप्रोन्मरेन का राजा; एक, अक्षेप का राजा; २१ एक, तानाक का राजा; एक, मणिशो का राजा; २२ एक, केदेश का राजा; एक, कर्मेल में योकनाम का राजा; २३ एक, दोर नामक कँचे देश के दोर का राजा; एक, गिलगाल के गोयीम का राजा; २४ और एक, तिर्सा का राजा; इस प्रकार सब राजा इकतीस हुए।

१३ यहोश् बूढ़ा और बहुत उम्र का हो गया था; और यहोवा ने उससे कहा,

“तू बूढ़ा और बहुत उम्र का हो गया है, और बहुत देश रह गए हैं, जो इसाएल के अधिकार में अभी तक नहीं आए। २ ये देश रह गए हैं, अर्थात् पलिशियों का सारा प्रान्त, और सारे गश्शूरी ३ (मिस्र के आगे शीहार से लेकर उत्तर की ओर एक्लोन की सीमा तक जो कनानियों का भाग गिना जाता है); और पलिशियों के पाँचों सरदार, अर्थात् गाजा, अशदोद, अशकलोन, गत, और एक्लोन के लोग), और दक्षिणी ओर अब्बी भी, ४ फिर अपेक और एपोरियों की सीमा तक कनानियों का सारा देश और सीदेनियों का मारा नामक देश, ५ फिर गबालियों का देश, और सूर्योदय की ओर हेर्मोन पर्वत की नीचे के बालगाद से लेकर हमात की घाटी तक सारा लबानोन, ६ फिर लबानोन से लेकर मिस्रपोतमै तक सीदेनियों के पहाड़ी देश के निवासी। इनको मैं इसाएलियों के सामने से निकाल दूँगा; इतना हो कि तू मेरी आज्ञा के अनुसार चिह्नी डाल डालकर उनका देश इसाएल को बॉट दे। ७ इसलिए तू अब इस देश को नौ गोत्रों और मनशे के आधे गोत्र को उनका भाग होने के लिये बॉट दे।” ८ स्बेनियों और गादियों को तो वह भाग मिल चुका था, जिसे मूसा ने उन्हें यरदन के पूर्व की ओर दिया था, क्योंकि यहोवा के दास मूसा ने उन्हीं को दिया था, ९ अर्थात् अर्नोन नामक घाटी के किनारे के अरोएस से लेकर, और उसी घाटी के बीच के नगर को छोड़कर दीबोन तक मेदबा के पास का सारा चौरस देश; १० और अमोनियों की सीमा तक हेशबोन में विराजनेवाले एपोरियों के राजा सीहोन के सारे नगर; ११ और गिलाद देश, और गश्शूरियों और माकावासियों की सीमा, और सारा हेर्मोन पर्वत, और सल्का तक सारा बाशान, १२ फिर अशतरोत और एद्वई में विराजनेवाले उस ओग का सारा राज्य जो रपाइयों में से अकेला बच गया था; क्योंकि इन्हीं को मूसा ने मारकर उनकी प्रजा को उस देश से निकाल दिया था। १३ परन्तु इसाएलियों ने गश्शूरियों और माकियों को उनके देश से निकाला; इसलिए गश्शूरी और माकी इसाएलियों के मध्य में आज तक रहते हैं। १४ और लेवी के गोत्रियों को उसने कोई भाग न दिया; क्योंकि इसाएल के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उसी के हव्य उनके लिये भाग ठहरे हैं। १५ मूसा ने स्बन के गोत्र को उनके कुलों के अनुसार दिया, १६ अर्थात् अर्नोन नामक घाटी के किनारे के अरोएस से लेकर और उसी घाटी के बीच के नगर को छोड़कर मेदबा के पास का सारा चौरस देश, १७ फिर चौरस देश में का हेशबोन और उसके सब गाँव, फिर दीबोन, बामोतबाल, बेतबाल्मोन, १८ यहस, कदेमोत, मेपात, १९ कियातैम, सिबमा, और तराई में के पहाड़ पर बसा हुआ सेरेथशहर, २० बेतपेर, पिसगा की ढलान और बेत्यशीमेत, २१ अर्थात् चौरस देश में बसे हुए हेशबोन में विराजनेवाले एपोरियों के उस राजा सीहोन के राज्य के सारे नगर जिन्हें मूसा ने मार लिया था। मूसा ने एवी, रेकेम, सूर, हर, और रेबा नामक मिधान के प्रधानों को भी मार डाला था जो सीहोन के ठहराए हुए हाकिम और उसी देश के निवासी थे। २२ और इसाएलियों ने उनके और मारे हुओं के साथ बोर के

पुत्र भावी कहनेवाले बिलाम को भी तलवार से मार डाला। २३ और स्बेनियों की सीमा यरदन का किनारा ठहरा। स्बेनियों का भाग उनके कुलों के अनुसार नगरों और गाँवों समेत यही ठहरा। २४ फिर मूसा ने गाद के गोत्रियों को भी कुलों के अनुसार उनका निज भाग करके बॉट दिया। २५ तब यह ठहरा, अर्थात् याजेर आदि गिलाद के सारे नगर, और रब्बाह के सामने के अरोएस तक अमोनियों का आधा देश, २६ और हेशबोन से रामत-प्रिस्पे और बोतीनीम् तक, और महनैम से दबीर की सीमा तक, २७ और तराई में बेतहारम, बेतनिमा, सुककोत, और सापोन, और हेशबोन के राजा सीहोन के राज्य के बचे हुए भाग, और किन्नेर नामक ताल के सिरे तक, यरदन के पूर्व की ओर का वह देश जिसकी सीमा यरदन है। २८ गादियों का भाग उनके कुलों के अनुसार नगरों और गाँवों समेत यही ठहरा। २९ फिर मूसा ने मनशे के आधे गोत्रियों को भी उनका निज भागकर दिया; वह मनशेश्वीयों के आधे गोत्र का निज भाग उनके कुलों के अनुसार ठहरा। ३० वह यह है, अर्थात् महनैम से लेकर बाशान के राजा ओग के राज्य का सब देश, और बाशान में बरी हुई याईर की साठों बस्तियाँ, ३१ और गिलाद का आधा भाग, और अशतरोत, और एद्वई, जो बाशान में ओग के राज्य के नार थे, ये मनशे के पुत्र माकीर के बंश का, अर्थात् माकीर के आधे बंश का निज भाग कुलों के अनुसार ठहरे। ३२ जो भाग मूसा ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास के यरदन के पूर्व की ओर बॉट दिए वे ये ही हैं। ३३ परन्तु लेवी के गोत्र को मूसा ने कोई भाग न दिया; इसाएल का परमेश्वर यहोवा ही अपने वचन के अनुसार उनका भाग ठहरा।

१४ जो-जो भाग इसाएलियों ने कनान देश में पाए, उन्हें एलीआजर याजक,

और नन के पुत्र यहोश्, और इसाएली गोत्रों के पूर्वजों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुस्तों ने उनको दिया वे ये हैं। ३ जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा साढ़े नौ गोत्रों के लिये दी थी, उसके अनुसार उनके भाग चिह्नी डाल डालकर दिए गए। ४ मूसा ने तो ढाई गोत्रों के भाग यरदन पार दिए थे; परन्तु लेवियों को उसने उनके बीच कोई भाग न दिया था। ५ यूसुफ के बंश के तो दो गोत्र हो गए थे, अर्थात् मनशे और एप्रैम; और उस देश में लेवियों को कुछ भाग न दिया गया, केवल रहने के नगर, और पशु आदि धन रखने को चराइयाँ उनको मिली। ६ जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसके अनुसार इसाएलियों ने किया; और उन्होंने देश को बॉट लिया। ७ तब यहदी यहोश् के पास गिलगाल में आए; और कनजी यहुने के पुत्र कालेब ने उससे कहा, “तू जानता होगा कि यहोवा ने कादेशबर्ने में परमेश्वर के जन मूसा से मेरे और तेरे विषय में क्या कहा था। ८ जब यहोवा के दास मूसा ने मुझे इस देश का भेद लेने के लिये कादेशबर्ने से भेजा था तब मैं चालीस वर्ष का था; और मैं सच्चे मन से उसके पास सन्देश ले आया। ९ और मैं साथी जो मेरे संग गए थे उन्होंने तो प्रजा के लोगों का मन निराश कर दिया, परन्तु मैंने अपने परमेश्वर यहोवा की पूरी रीति से मेरे परमेश्वर यहोवा की बातों का अनुकरण किया है, इस कारण निःसन्देह जिस भूमि पर तू अपने पाँव धर आया हैं वह सदा के लिये तेरा और तेरे बंश का भाग होगी।” १० और अब देख, जब से यहोवा ने मूसा से यह वचन कहा था तब से पैतलीस वर्ष हो चुके हैं, जिनमें इसाएली जंगल में घृसते फिरते रहे; उनमें यहोवा ने अपने कहने के अनुसार मुझे जीवित रखा है, और अब मैं पचासी वर्ष का हूँ। ११ जितना बल मूसा के भेजने के दिन मुझे मैं था उतना बल अभी तक मुझे मैं है; युद्ध करने और भीतर बाहर आने-जाने के लिये जितनी उस समय मुझ में सामर्थ्य थी उतनी ही अब भी मुझ में सामर्थ्य है। १२ इसलिए अब वह पहाड़ी मुझे दे जिसकी चर्चा यहोवा ने उस दिन की थी; तने तो उस

दिन सुना होगा कि उसमें अनाकवंशी रहते हैं, और बड़े-बड़े गढ़वाले नगर भी हैं; परन्तु क्या जाने सम्भव है कि यहोवा मेरे संग रहे, और उसके कहने के अनुसार मैं उहें उनके देश से निकाल दूँ।” १३ तब यहोश् ने उसको आशीर्वाद दिया, और हेब्रोन को यपुने के पुनर कालेब का भागकर दिया। १४ इस कारण हेब्रोन कनजी यपुने के पुनर कालेब का भाग आज तक बना है, क्योंकि वह इसाएल के परमेष्ठ यहोवा का पूरी रीति से अनुगमी था। १५ पहले हेब्रोन का नाम किर्यतअर्बा था; वह अर्बा अनाकियों में सबसे बड़ा पुस्त था। और उस देश को लडाई से शान्ति मिली।

१५ यहदियों के गोत्र का भाग उनके कुलों के अनुसार चिह्नी डालने से एटोम की सीमा तक, और दक्षिण की ओर सीन के जंगल तक जो दक्षिणी सीमा पर है ठहरा। २ उनके भाग का दक्षिणी सीमा खारे ताल के उस सिरेवाले कोल से आरभ हड़ जो दक्षिण की ओर बढ़ती है; ३ और वह अकब्बीम नामक चढ़ाई के दक्षिणी ओर से निकलकर सीन होते हुए कादेशबर्ने के दक्षिण की ओर को चढ़ गयी, फिर हेब्रोन के पास हो अद्वार को चढ़कर कर्काऊ की ओर मुड़ गयी, ४ वहाँ से अस्मोन होते हुए वह मिस्र के नाते पर निकली, और उस सीमा का अन्त समुद्र हुआ। तम्हारी दक्षिणी सीमा यही होगी। ५ फिर पूर्वी सीमा यरदन के मुहाने तक खारा ताल ही ठहरी, और उत्तर दिशा की सीमा यरदन के मुहाने के पास के ताल के कोल से आरभ करके, ६ बेथेप्ला को चढ़ते हुए बेतराबा की उत्तर की ओर होकर स्वेनी बोहन नामक पथर तक चढ़ गया; ७ और वही सीमा आकोर नामक तराई से दबीरी की ओर चढ़ गया, और उत्तर होते हुए गिलागाल की ओर झुकी जो तराई के दक्षिणी ओर की अद्वीपीम की चढ़ाई के सामने है; वहाँ से वह एशेमेश नामक सोते के पास पहुँचकर एनरोगेल पर निकला; ८ फिर वही सीमा हिन्नोम के पुनर की तराई से होकर यबस् (जो यस्तातेम कहलाता है) उसकी दक्षिण की ओर से बढ़ते हुए उस पहाड़ की चोटी पर पहुँचा, जो पश्चिम की ओर हिन्नोम की तराई के सामने और रपाईम की तराई के उत्तरी सिरे पर है; ९ फिर वही सीमा उस पहाड़ की चोटी से नेसोह नामक सोते को चला गया, और एप्रोन पहाड़ के नगरों पर निकला; फिर वहाँ से बाला को (जो किर्यत्यारीम भी कहलाता है) पहुँचा; १० फिर वह बाला से पश्चिम की ओर मुड़कर सेईं पहाड़ तक पहुँचा, और यारीम पहाड़ (जो कसालोन भी कहलाता है) उसके उत्तरी ओर से होकर बेतशेमेश को उत्तर गया, और वहाँ से तिम्नाह पर निकला; ११ वहाँ से वह सीमा एकोन की उत्तरी ओर के पास होते हुए शिक्करोन गया, और बाला पहाड़ होकर यब्बेल पर निकला; और उस सीमा का अन्त समुद्र का टट हुआ। १२ और पश्चिम की सीमा महासमुद्र का टट ठहरा। यहदियों को जो भाग उनके कुलों के अनुसार मिला उसकी चारों ओर की सीमा यही हड़ी। १३ और यपुने के पुनर कालेब को उसने यहोवा की आज्ञा के अनुसार यहदियों के बीच भाग दिया, अर्थात् किर्यतअर्बा जो हेब्रोन भी कहलाता है (वह अर्बा अनाक का पिता था)। १४ और कालेब ने वहाँ से शेशी, अहीमन, और तल्मै नामक, अनाक के तीनों पुत्रों को निकाल दिया। १५ फिर वहाँ से वह दबीर के निवासियों पर चढ़ गया; पूर्वकाल में तो दबीर का नाम किर्यतेपेरथा। १६ और कालेब ने कहा, “जो किर्यत्सेपेर को मारकर ले ले उससे मैं अपनी बेटी अकसा को ब्याह दूँगा।” १७ तब कालेब के भाई ओत्रीएल कनजी ने उसे ले लिया; और उसने उसे अपनी बेटी अकसा को ब्याह दिया। १८ जब वह उसके पास आई, तब उसने उसको पिता से कुछ भूमि माँगने को उभारा, फिर वह अपने गढ़े पर से उत्तर पड़ी, और कालेब ने उससे पृष्ठ, “तु क्या चाहती है?” १९ वह बोली, “मुझे आशीर्वाद दे; तुम मुझे दक्षिण देश में की कुछ भूमि तो दी है, मुझे जल के सोते भी दे।” तब उसने ऊपर के सोते, नीचे के सोते, दोनों उसे दिए। २० यहदियों के गोत्र का भाग तो उनके कुलों के अनुसार यही ठहरा। २१ यहदियों के गोत्र के किनारे-वाले नगर दक्षिण देश में एटोम की सीमा की ओर ये हैं, अर्थात् कब्सेल, एद्र, यागू, २२ कीना, दीमोना, अदादा, २३ केदेश, हासोर, यितान, २४ जीप, तेलेम, बालोत, २५ हासोर्हदत्ता, करिर्योथेसोन (जो हासार भी कहलाता है), २६ और अमाम, शेमा, मोलादा, २७ हसर्गद्वा, हेशमोन, बेपेलेत, २८ हसर्थशाल, बेरेबा, बिज्योत्या, २९ बाला, इट्यीम, एपेम, ३० एलतोलद, करील, होर्मा, ३१ सिकलग, मदमन्ना, सनसन्ना, ३२ लबाओत, शिल्हीम, ऐन, और रिमोन; ये सब नगर उननीस हैं, और इनके गाँव भी हैं। ३३ तराई में ये हैं अर्थात् एश्ताओल, सोरा, अश्वा, ३४ जानोह, एनगनीम, तप्पूह, एनाम, ३५ यर्मूत, अदुल्लाम, सोको, अजेका, ३६ शौरैम, अदतिम, गदेरा, और गदेरोतैम, ये सब चौदह नगर हैं, और इनके गाँव भी हैं। ३५ फिर सनान, हदासा, मिंगदलगाद, ३६ दिलान, मिस्पे, योकेल, ३७ लाकाशा, बोस्कत, एलोन, ३८ कब्बोन, लहमास, कितलीश, ३९ गोद्रेत, बेतदागोन, नामाह, और मक्केदा, ये सोलह नगर हैं, और इनके गाँव भी हैं। ३१ फिर लिब्ना, एटेर, अशान, ३२ इमाह, अश्वा, नरीब, ३३ कीला, अकजीब और मरेश; ये नौ नगर हैं, और इनके गाँव भी हैं। ३५ फिर नगरों और गाँवों समेत एकोन, ३६ और एकोन से लेके समुद्र तक, अपने-अपने गाँवों समेत जितने नगर अशदोद की ओर है। ३७ फिर अपने-अपने नगरों और गाँवों समेत अशदोद और गाजा, वरन मिस्र के नाते तक और महासमुद्र के तट तक जितने नगर हैं। ३८ पहाड़ी देश में ये हैं अर्थात् शामीर, यनीर, सोको, ३९ दन्ना, किर्यत्सन्ना (जो दबीरी भी कहलाता है), ४० अनाब, एश्तमो, आनीम, ४१ गोशेन, होलोन और गीलो, ये ग्यारह नगर हैं, और इनके गाँव भी हैं। ४२ फिर अराब, दूमा, एशान, ४३ यानीम, बेतप्पूह, अपेका, ४४ हुमता, किर्यतअर्बा (जो हेब्रोन भी कहलाता है, और सीओर;) ये नौ नगर हैं, और इनके गाँव भी हैं। ४५ फिर माओन, कर्मेल, जीप, युता, ४६ यिजेल, योकदाम, जानोह, ४७ कैन, पिबा, और तिमाह; ये दस नगर हैं और इनके गाँव भी हैं। ४८ फिर हलहल्ल, बेतसूर, गदोर, ४९ मरात, बेतनोत और एलतोकोन; ये छः नगर हैं और इनके गाँव भी हैं। ५० फिर किर्यतबाल (जो किर्यत्यारीम भी कहलाता है) और रब्बाह; ये दो नगर हैं, और इनके गाँव भी हैं। ५१ जंगल में ये नगर हैं अर्थात् बेतराबा, मिद्दीन, सकाका; ५२ निब्शान, नामक का नगर और एनगदी, ये छः नगर हैं और इनके गाँव भी हैं। ५३ यस्तातेम के निवासी यबूसियों को यहदी न निकाल सके; इसलिए आज के दिन तक यबूसी यहदियों के संग यस्तातेम में रहते हैं।

१६ फिर यसुफ की सन्तान का भाग चिह्नी डालने से ठहराया गया, उनकी सीमा यरीहो के पास की यरदन नदी से, अर्थात् पूर्व की ओर यरीहो के जल से आरभ होकर उस पहाड़ी देश से होते हुए, जो जंगल में है, बेतेल को पहुँचा; २ वहाँ से वह लौज तक पहुँचा, और एकोनों की सीमा से होते हुए अतारोत पर जा निकला; ३ और पश्चिम की ओर यपत्तेयों की सीमा से उत्तरारोत पर निकला। ४ तब मनश्वे और एप्रैम नामक यसुफ के दोनों पुत्रों की सन्तान ने अपना-अपना भाग लिया। ५ एप्रैमियों की सीमा उनके कुलों के अनुसार यह ठहरी; अर्थात् उनके भाग की सीमा पूर्व से आरभ होकर अतोतारोत से होते हुए ऊपरवाले बेथेरोन तक पहुँचा; ६ और उन्हीं सीमा पश्चिम की ओर के मिकमतात से आरभ होकर पूर्व की ओर मुड़कर तानतशीलों को पहुँचा, और उसके पास से होते हुए यानोह तक पहुँचा; ७ फिर यानोह से वह अतारोत और नारा को उत्तरी हड़ी यरीहो के पास होकर यरदन पर निकली। ८ फिर वही सीमा तप्पूह से निकलकर, और पश्चिम की ओर जाकर, काना की नदी तक

होकर समृद्ध पर निकली। ऐप्रेमियों के गोत्र का भाग उनके कुलों के अनुसार यहीं ठहरा। ९ और मनशशेइयों के भाग के बीच भी कई एक नार अपने-अपने गाँवों समेत ऐप्रेमियों के लिये अलग किए गए। १० परन्तु जो कनानी गेजेर में बसे थे उनको ऐप्रेमियों ने वहाँ से नहीं निकाला; इसलिए वे कनानी उनके बीच आज के दिन तक बसे हैं, और बेगारी में दास के समान काम करते हैं।

१७ फिर यूसुफ के जेठे मनशशे के गोत्र का भाग चिह्नी डालने से यह ठहरा।

मनशशे का जेठा पुत्र गिलाद का पिता माकीर योद्धा था, इस कारण उसके बंश को गिलाद और बाशान मिला। १ इसलिए यह भाग दूसरे मनशशेइयों के लिये उनके कुलों के अनुसार ठहरा, अर्थात् अबी-एजेर, हेलेक, असीएल, शेकेम, हेपेर, और शमीदा; जो अपने-अपने कुलों के अनुसार यूसुफ के पुत्र मनशशे के बंश में के पुष्प थे, उनके अलग-अलग बंशों के लिये ठहरा। २ परन्तु हेपेर जो गिलाद का पुत्र, माकीर का पेता, और मनशशे का परपेता था, उसके पुत्र सलोफाद के बेटे नहीं, बेटियाँ ही हैं; और उनके नाम महला, नोवा, होग्ला, मिल्का, और तिर्सा हैं। ३ तब वे एलीआजर याजक, नून के पुत्र यहोश, और प्रधानों के पास जाकर कहने लगी, यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी, कि वह हमको हमारे भाइयों के बीच भाग दे। तो यहोश ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन्हें उनके चाचाओं के बीच भाग दिया। ४ तब मनशशे को, यरदन पार गिलाद देश और बाशान को छोड़, दस भाग मिले; ५ क्योंकि मनशशेइयों के बीच में मनशशेइ बिंगियों की भी भाग मिला। और दूसरे मनशशेइयों को गिलाद देश मिला। ६ और मनशशे की सीमा आशेर से लेकर मिकमतात तक पहुँची, जो शेकेम के सामने है; फिर वह दक्षिण की ओर बढ़कर एनतप्हू के निवासियों तक पहुँची। ७ एनतप्हू की भूमि तो मनशशे को मिली, परन्तु तप्हू नगर जो मनशशे की सीमा पर बसा है वह ऐप्रेमियों का ठहरा। ८ फिर वहाँ से वह सीमा काना की नदी तक उत्तरकर उसके दक्षिण की ओर तक पहुँच गई, ये नगर यथापि मनशशे के नगरों के बीच में थे तो भी ऐप्रेम के ठहरे; और मनशशे की सीमा उस नदी के उत्तर की ओर से जाकर समृद्ध पर निकली। ९ दक्षिण की ओर का देश तो ऐप्रेम को और उत्तर की ओर का मनशशे को मिला, और उसकी सीमा समृद्ध ठहरी; और वे उत्तर की ओर आशेर से और पूर्व की ओर इस्साकार से जा मिली। १० और मनशशे को, इस्साकार और आशेर अपने-अपने नगरों समेत बेतशान, यिलाम, और अपने नगरों समेत दोर के निवासी, और अपने नगरों समेत एन्दरोन के निवासी, और उनकी नगरों समेत तानाक की निवासी, और अपने नगरों समेत मिमिदो के निवासी, ये तीनों जो ऊँचे स्थानों पर बसे हैं मिले। ११ परन्तु मनशशेइ उन नगरों के निवासियों को उनमें से नहीं निकाल सके; इसलिए कनानी उस देश में बसे रहे। १२ तो भी जब इस्साएली सामर्थी हो गए, तब कनानियों से बेगारी तो करने लगे, परन्तु उनको पूरी रीति से निकाल बाहर न किया। १३ यूसुफ की सन्तान यहोश से कहने लगी, “हम तो गिनती में बहुत हैं, क्योंकि अब तक यहोवा हमें आशीष ही देता आया है, फिर तने हमारे भाग के लिये चिह्नी डालकर क्यों एक ही अंश दिया है?” १४ यहोश ने उनसे कहा, “यदि तुम गिनती में बहुत हो, और ऐप्रेम का पहाड़ी देश तुम्हारे लिये छोटा हो, तो परिजियों और रपाइयों का देश जो जंगल है उसमें जाकर पेड़ों को काट डालो।” १५ यूसुफ की सन्तान ने कहा, “वह पहाड़ी देश हमारे लिये छोटा है; और बेतशान और उसके नगरों में रहनेवाले, और यिलाम की तराई में रहनेवाले, जितने कनानी नीचे के देश में रहते हैं, उन सभी के पास लोहे के रथ हैं।” १६ फिर यहोश ने, क्या ऐप्रेम क्या मनशशेइ, अर्थात् यूसुफ के सारे घराने से कहा, “हाँ तुम लोग तो गिनती में बहुत हो, और तुम्हारी सामर्थ्य भी बड़ी है, इसलिए तुम को बेबल एक ही भाग न मिलेगा; १७ पहाड़ी देश भी तुम्हारा हो जाएगा; क्योंकि

वह जंगल तो है, परन्तु उसके पेड़ काट डालो, तब उसके आस-पास का देश भी तुम्हारा हो जाएगा; क्योंकि काहे कनानी सामर्थ्य हों, और उनके पास लोहे के रथ भी हों, तो भी तुम उन्हें वहाँ से निकाल सकोगे।”

१८ फिर इस्साएलियों की सारी मण्डली ने शीलों में इक्की होकर वहाँ

मिलापवाले तम्बू को खड़ा किया; क्योंकि देश उनके बंश में आ गया था। १ और इस्साएलियों में से सात गोत्रों के लोग अपना-अपना भाग बिना पाये रह गए थे। २ तब यहोश ने इस्साएलियों से कहा, “जो देश तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है, उसे अपने अधिकार में कर लेने में तुम कब तक ढिलाईं करते रहोगे? ३ अब प्रति गोत्र के पीछे तीन मनुष्य ठहरा लो, और मैं उन्हें इस्साएल भेज़ूँगा कि वे चलकर देश में घैमे फिरें, और अपने-अपने गोत्र के भाग के प्रयोजन के अनुसार उसका हाल लिख लिखकर मेरे पास लौट आएँ। ४ और वे देश के सात भाग लिखें, यहाँ तो दक्षिण की ओर अपने भाग में, और यूसुफ के घराने के लोग उत्तर की ओर अपने भाग में रहें। ५ और तुम देश के सात भाग लिखकर मेरे पास ले आओ; और मैं यहाँ तुम्हारे लिये अपने परमेश्वर यहोवा के सामने चिह्नी डालूँगा। ६ और लेवियों का तुम्हारे मध्य में कोई भाग न होगा, क्योंकि यहोवा का दिया हुआ याजकपद ही उनका भाग है; और गाद, स्क्वेन, और मनशशे के आधे गोत्र के लोग यरदन के पूर्व की ओर यहोवा के दास मूसा का दिया हुआ अपना-अपना भाग पा चुके हैं।” ७ तब वे पुष्प उठकर चल दिए; और जो उस देश का हाल लिखने को चले उन्हें यहोश ने यह आज्ञा दी, “जाकर देश में घैमे फिरो, और उसका हाल लिखकर मेरे पास लौट आओ; और मैं यहाँ शीलों में यहोवा के सामने तुम्हारे लिये चिह्नी डालूँगा।” ८ तब वे पुष्प चल दिए, और उस देश में घैमे, और उसके नगरों के सात भाग करके उनका हाल पुस्तक में लिखकर शीलों की छावनी में यहोश के पास आए। ९ तब यहोश ने शीलों में यहोवा के सामने उनके लिये चिह्नियाँ डाली; और वहीं यहोश ने इस्साएलियों को उनके भागों के अनुसार देश बाँट दिया। १० बिन्यामीनियों के गोत्र की चिह्नी उनके कुलों के अनुसार निकली, और उनका भाग यहदियों और यूसुफियों के बीच में पड़ा। ११ और उनकी उत्तरी सीमा यरदन से आरम्भ हुई, और यरीहो की उत्तरी ओर से चढ़ते हुए पश्चिम की ओर पहाड़ी देश में होकर बेतावेन के जंगल में निकली; १२ वहाँ से वह लूज को पहुँची (जो बेतेल भी कहलाता है), और लूज की दक्षिणी ओर से होते हुए निचले बेथोरेन के दक्षिणी ओर के पहाड़ के पास हो अत्रोदार को उत्तर गई। १३ फिर पश्चिमी सीमा मुड़कर बेथोरेन के सामने और उसकी दक्षिण ओर के पहाड़ से होते हुए किर्यतबाल नामक यहदियों के एक नार पर निकली (जो किर्यत्यारीम भी कहलाता है); पश्चिम की सीमा यही ठहरी। १४ फिर दक्षिण की ओर की सीमा पश्चिम से आरम्भ हुई, और होकर किर्यत्यारीम के सिरे से निकलकर नेसोह के सोते पर पहुँची; १५ और उस पहाड़ के सिरे पर उत्तरी, जो हिन्नोम के पुत्र की तराई के सामने और रपाईम नामक तराई के उत्तरी ओर है; वहाँ से वह हिन्नोम की तराई में, अर्थात् यूबूस के दक्षिणी ओर होकर एनरगेल को उत्तरी; १६ वहाँ से वह उत्तर की ओर और मुड़कर एनशेमेश को निकलकर उस गलीलोत की ओर गई, जो अदुमीमी की चाढ़ाइ के सामने है, फिर वहाँ से वह रुबेन के पुत्र बोहन के पत्थर तक उत्तर गई; १७ वहाँ से वह उत्तर की ओर जाकर अराबा के सामने के पहाड़ की ओर से होते हुए अराबा को उत्तरी; १८ वहाँ से वह सीमा बेथोग्ला की उत्तरी ओर से जाकर खारे ताल की उत्तर ओर के कोल में यरदन के मुहाने पर निकली, दक्षिण की सीमा यही ठहरी। १९ और पूर्व की ओर की सीमा यरदन ही ठहरी। बिन्यामीनियों का भाग, चारों ओर की सीमाओं सहित, उनके कुलों के अनुसार, यही ठहरा। २०

बिन्यामीनियों के गोत्र को उनके कुलों के अनुसार ये नगर मिले, अर्थात् यरीहो, बेथाला, एपेक्सीस, २२ बेतराबा, समारैम, बेतेल, २३ अब्दीम, पारा, ओप्रा, २४ कपरमोनी, ओफनी और गेबा; ये बारह नगर और इनके गाँव मिले। २५ फिर गिबोन, रामाह, बेरोत, २६ मिस्पे, कपीरा, मोसा, २७ रेकेम, यर्पेल, तरला, २८ सेला, एलेप, यबस (जो यस्शलेम भी कहलाता है), गिबा और किर्यत; ये चौदह नगर और इनके गाँव उन्हें मिले। बिन्यामीनियों का भाग उनके कुलों के अनुसार यहीं ठहरा।

१९ दूसरी चिठ्ठी शिमोन के नाम पर, अर्थात् शिमोनियों के कुलों के अनुसार

उनके गोत्र के नाम पर निकली; और उनका भाग यहदियों के भाग के बीच में ठहरा। २ उनके भाग में ये नगर हैं, अर्थात् बेर्शबा, शेबा, मोलादा, ३ हसर्शआल, बाला, एसेम, ४ एल्तोलद, बेतल, होर्मा, ५ सिकलग, बेट्म्याकित, हसर्शसा, ६ बेतलबाओत, और शास्फेन; ये तेह नगर और इनके गाँव उन्हें मिले। ७ फिर ऐन, रिम्मोन, एतेर, और आशान, ये चार नगर गाँवों समेत; ८ और बाल्ट्वेर जो दक्षिण देश का रामाह भी कहलाता है, वहाँ तक इन नगरों के चारों ओर के सब गाँव भी उन्हें मिले। शिमोनियों के गोत्र का भाग उनके कुलों के अनुसार यहीं ठहरा। ९ शिमोनियों का भाग तो यहदियों के अंश में से दिया गया; क्योंकि यहदियों का भाग उनके लिये बहुत था, इस कारण शिमोनियों का भाग उन्हीं के भाग के बीच ठहरा। १० तीसरी चिठ्ठी जब्लूनियों के कुलों के अनुसार उनके नाम पर निकली। और उनके भाग की सीमा सारीद तक पहुँची; ११ और उनकी सीमा पश्चिम की ओर मरला को चढ़कर दब्बेशी को पहुँची; और योकनाम के सामने के नाले तक पहुँच गई; १२ फिर सारीद से वह सर्योदय की ओर मुड़कर किसलोताबोर की सीमा तक पहुँची, और वहाँ से बढ़ते-बढ़ते दाबरात में निकली, और यापी की ओर जा निकली; १३ वहाँ से वह पूर्व की ओर आगे बढ़कर गथयेर और इत्कासीन को गई, और उस रिम्मोन में निकली जो नेआ तक फैला हुआ है; १४ वहाँ से वह सीमा उसके उत्तर की ओर से सुधकर हन्नातोन पर पहुँची, और यिसहेल की तराई में जा निकली; १५ कत्तात, नहलात, शिप्रोन, यिद्ता, और बैतलहम; ये बारह नगर उनके गाँवों समेत उसी भाग के ठहरे। १६ जब्लूनियों का भाग उनके कुलों के अनुसार यहीं ठहरा; और उसमें अपने-अपने गाँवों समेत ये ही नगर है। १७ चौथी चिठ्ठी इस्साकारियों के कुलों के अनुसार उनके नाम पर निकली। १८ और उनकी सीमा यिज्जेल, कस्तुल्लोत, श्वेम १९ हपैरैम, शीओन, अनाहरत, २० रब्बीत, किश्योन, एपेस, २१ रेमेत, एनागनीम, एहद्दा, और बेत्पस्से तक पहुँची। २२ फिर वह सीमा ताबोर, शहसूमा और बेतशेमेश तक पहुँची, और उनकी सीमा यरदन नदी पर जा निकली; इस प्रकार उनको सोलह नगर अपने-अपने गाँवों समेत मिले। २३ कुलों के अनुसार इस्साकारियों के गोत्र का भाग नगरों और गाँवों समेत यहीं ठहरा। २४ पाँचवीं चिठ्ठी अशेरियों के गोत्र के कुलों के अनुसार उनके नाम पर निकली। २५ उनकी सीमा में हेल्कात, हल्ली, बेतेन, अक्षाप, २६ अलाम्पेल्लेक, अमाद, और मिशाल थे; और वह पश्चिम की ओर कर्मेल तक और शीहोलिब्नात तक पहुँची; २७ फिर वह सर्योदय की ओर मुड़कर बेतदागोन को गई, और जब्लून के भाग तक, और यिसहेल की तराई में उत्तर की ओर होकर बेतेमेक और नीएल तक पहुँची और उत्तर की ओर जाकर काबूल पर निकली, २८ और वह एकोन, रहोब, हम्मोन, और काना से होकर बड़े सीदान को पहुँची; २९ वहाँ से वह सीमा मुड़कर रामाह से होते हुए सोर नामक गढ़वाले नगर तक चली गई, फिर सीमा होसा की ओर मुड़कर और अक्जीब के पास के देश में होकर समुद्र पर निकली, ३० उम्मा, अपेक, और रहोब भी उनके भाग में ठहरे; इस

प्रकार बाईस नगर अपने-अपने गाँवों समेत उनको मिले। ३१ कुलों के अनुसार आशेरियों के गोत्र का भाग नगरों और गाँवों समेत यहीं ठहरा। ३२ छठवीं चिठ्ठी नमालियों के कुलों के अनुसार उनके नाम पर निकली। ३३ और उनकी सीमा हेलेप से, और सानन्नीम के बांज बृक्ष से, अदामीनिकेब और यन्नेल से होकर, और लक्खम को जाकर यरदन पर निकली; ३४ वहाँ से वह सीमा पश्चिम की ओर मुड़कर अजनोताबोर को गई, और वहाँ से हुक्कोक को गई, और दक्षिण, और जब्लून के भाग तक, और पश्चिम की ओर यहदा के भाग के पास की यरदन नदी पर पहुँची। ३५ और उनके गढ़वाले नगर ये हैं, अर्थात् सिद्धीम, सेर, हम्मत, रक्कत, किन्नरेत, ३६ अदामा, रामाह, हासोर, ३७ केदेश, एद्रेई, एन्हासोर, ३८ यिरोन, मिगदलेल, होर्मे, बेतनात, और बेतशेमेश; ये उनीस नगर गाँवों समेत उनको मिले। ३९ कुलों के अनुसार नमालियों के गोत्र का भाग नगरों और उनके गाँवों समेत यहीं ठहरा। ४० सातवीं चिठ्ठी कुलों के अनुसार दान के गोत्र के नाम पर निकली। ४१ और उनके भाग की सीमा में सोरा, एश्ताओल, ईरेशेमेश, ४२ शालब्बीन, अय्यालोन, यितला, ४३ एलोन, तिम्नाह, एकोन, ४४ एलतके, मिग्बोन, बालात, ४५ यहद, बेनबराक, गत्रिमोन, ४६ मेयर्कीन, और रक्कोन ठहरे, और यापा के सामने की सीमा भी उनकी थी। ४७ और दानियों का भाग इससे अधिक हो गया, अर्थात् दानी लेशेम पर चढ़कर उससे लड़े, और उसे लेकर तलवार से मार डाला, और उसको अपने अधिकार में करके उसमें बस गए, और अपने मूलपुस्त के नाम पर लेशेम का नाम दान रखा। ४८ कुलों के अनुसार दान के गोत्र का भाग नगरों और गाँवों समेत यहीं ठहरा। ४९ जब देश का बैंटा जाना सीमाओं के अनुसार पूरा हो गया, तब इस्साएलियों ने नन के पुत्र यहोशू को भी अपने बीच में एक भाग दिया। ५० यहोवा के कहने के अनुसार उन्होंने उसको उसका मौंगा हुआ नगर दिया, यह ऐरेम के पहाड़ी देश में का तिम्नसेरह है, और वह उस नगर को बसाकर उसमें रहने लगा। ५१ जो-जो भाग एलीजाजर याजक, और नून के पुत्र यहोशू, और इस्साएलियों के गोत्रों के घरानों के पूर्वजों के मुख्य-मुख्य पुरुषों ने शीलों में, मिलापवाले तम्बू के द्वार पर, यहोवा के सामने चिठ्ठी डाल डालके बैट दिए वे ये ही हैं। इस प्रकार उन्होंने देश विभाजन का काम पूरा किया।

२० फिर यहोवा ने यहोशू से कहा, २ “इस्साएलियों से यह कह, मैंने मूसा के

द्वारा तुम से शरण नगरों की जो चर्चा की थी उसके अनुसार उनको ठहरा लो, ३ जिसपे जो कोई भल से बिना जाने किसी को मार डाले, वह उसमें से किसी में भाग जाएँ; इसलिए वे नगर खून के पलटा लेनेवाले से बचने के लिये तुहरे शरणस्थान ठहरें। ४ वह उन नगरों में से किसी को भाग जाएँ, और उस नगर के फटाक में से खड़ा होकर उसके पुरानियों को अपना मुकदमा कह सुनाएँ; और वे उसको अपने नगर में अपने पास टिका लैं, और उसे कोई स्थान दें, जिसमें वह उनके साथ रहे। ५ और यदि खून का पलटा लेनेवाला उसका पीछा करे, तो वे यह जानकर कि उसने अपने पड़ोसी को बिना जाने, और पहले उससे बिना बैर रखे मारा, उस खूनी को उसके हाथ में न दें। ६ और जब तक वह मण्डली के सामने न्याय के लिये खड़ा न हो, और जब तक उन दिनों का महायाजक न मर जाएँ, तब तक वह उसी नगर में रहे; उसके बाद वह खूनी अपने नगर को लौटकर जिसपे वह भाग आया हो अपने घर में फिर रहने पाएँ।” ७ और उन्होंने नमाली के पहाड़ी देश में गत्तील के केदेश को, और ऐरेम के पहाड़ी देश में शेकेम को, और यहदा के पहाड़ी देश में किर्यतर्बा को, (जो हेब्रोन भी कहलाता है) पवित्र ठहराया। ८ और यरीहो के पास के यरदन के पूर्व की ओर उन्होंने स्बेन के गोत्र के भाग में बेसेर को, जो

जंगल में चौरस भूमि पर बसा हुआ है, और गाद के गोत्र के भाग में गिलाद के रामोत को, और मनश्शे के गोत्र के भाग में बाशान के गोलन को ठहराया। ९ सारे इस्माएलियों के लिये, और उनके बीच रहेवाले परदेशियों के लिये भी, जो नगर इस मनसा से ठहराए गए कि जो कोई किसी प्राणी को भूल से मार डाले वह उनमें से किसी में भाग जाए, और जब तक न्याय के लिये मण्डली के सामने खड़ा न हो, तब तक खन का पलटा लेनेवाला उसे मार डालने न पाए, वे यह ही हैं।

२१ तब लेवियों के पूर्वजों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुस्त्र एलीआजर

याजक, और नन के पुत्र यहोशू, और इस्माएली गोत्रों के पूर्वजों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुस्त्रों के पास आकर २ कनान देश के शीलो नगर में कहने लगे, “यहोवा ने मूसा के द्वारा हमें बसने के लिये नगर, और हमारे पशुओं के लिये उन्हीं नारों की चराइँयाँ भी देने की आज्ञा दी थी।” ३ तब इस्माएलियों ने यहोवा के कहने के अनुसार अपने-अपने भाग में से लेवियों को चराइँयों समेत ये नगर दिए। ४ तब कहातियों के कुलों के नाम पर चिठ्ठी निकली। इसलिए लेवियों में से हासन याजक के वंश को यहदी, शिमोन, और बिन्यामीन के गोत्रों के भागों में से तेरह नगर मिले। ५ बाकी कहातियों को ऐप्रैम के गोत्र के कुलों, और दान के गोत्र, और मनश्शे के आधे गोत्र के भागों में से चिठ्ठी डाल डालकर दस नगर दिए गए। ६ और गेर्शोनियों को इस्साकार के गोत्र के कुलों, और आजेर, और नसाली के गोत्रों के भागों में से, और मनश्शे के उस आधे गोत्र के भागों में से भी जो बाशान में था चिठ्ठी डाल डालकर तेरह नगर दिए गए। ७ कुलों के अनुसार मरारियों को रुबेन, गाद, और जब्लून के गोत्रों के भागों में से बारह नगर दिए गए। ८ जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी थी उसके अनुसार इस्माएलियों ने लेवियों को चराइँयों समेत ये नगर चिठ्ठी डाल डालकर दिए। ९ उन्होंने यहदियों और शिमोनियों के गोत्रों के भागों में से ये नगर जिनके नाम लिखे हैं दिए; १० ये नगर लेवीय कहाती कुलों में से हासन के वंश के लिये थे; क्योंकि पहली चिठ्ठी उन्हीं के नाम पर निकली थी। ११ अर्थात् उन्होंने उनको यहदा के पहाड़ी देश में चारों ओर की चराइँयों समेत किर्तन अर्बा नगर दे दिया, जो अनाक के पिता अर्बा के नाम पर कहलाया और हेह्नोन भी कहलाता है। १२ परन्तु उस नगर के खेत और उसके गांव उन्होंने यथुन्ने के पुत्र कालेब को उसकी निज भूमि करके दे दिए। १३ तब उन्होंने हासन याजक के वंश को चराइँयों समेत खनी के शरणनगर हेह्नोन, और अपनी-अपनी चराइँयों समेत लिब्ना, १४ यतीर, एशतमो, १५ होलोन, दबीर, ऐन, १६ युता और बेतशेमेश दिए; इस प्रकार उन दोनों गोत्रों के भागों में से नौ नगर दिए गए। १७ और बिन्यामीन के गोत्र के भाग में से अपनी-अपनी चराइँयों समेत ये चार नगर दिए गए, अर्थात् गिबोन, गेबा, १८ अनातोत और अल्मोन। १९ इस प्रकार हासनवंशी याजकों को तेरह नगर और उनकी चराइँयाँ मिलीं। २० फिर बाकी कहाती लेवियों के कुलों के भाग के नगर चिठ्ठी डाल डालकर ऐप्रैम के गोत्र के भाग में से दिए गए। २१ अर्थात् उनको चराइँयों समेत ऐप्रैम के पहाड़ी देश में खनी के शरण लेने का शेकेम नगर दिया गया, फिर अपनी-अपनी चराइँयों समेत गेजेर, २२ किबसैम, और बेथोरोन; ये चार नगर दिए गए। २३ और दान के गोत्र के भाग में से अपनी-अपनी चराइँयों समेत तानाक और गत्रिमोन; ये दो नगर दिए गए। २४ इस प्रकार बाकी कहातियों के कुलों के सब नगर चराइँयों समेत दस ठहरे। २५ फिर लेवियों के कुलों में के गेर्शोनियों को मनश्शे के आधे गोत्र के भाग में से अपनी-अपनी चराइँयों समेत

खनी के शरणनगर बाशान का गोलन और बेशतरा; ये दो नगर दिए गए। २६ और इस्साकार के गोत्र के भाग में से अपनी-अपनी चराइँयों समेत किश्योन, दाबरात, २७ यर्मूत, और एनगन्नीम; ये चार नगर दिए गए। २८ और आजेर के गोत्र के भाग में से अपनी-अपनी चराइँयों समेत मिशाल, अब्दोन, २९ हेल्कात, और रहोब; ये चार नगर दिए गए। ३० और नसाली के गोत्र के भाग में से अपनी-अपनी चराइँयों समेत खनी के शरणनगर गलील का केदेश, फिर हम्मोतदोर, और कर्तन; ये तीन नगर दिए गए। ३१ गेर्शोनियों के कुलों के अनुसार उनके सब नगर अपनी-अपनी चराइँयों समेत तेरह ठहरे। ३२ फिर बाकी लेवियों, अर्थात् मरारियों के कुलों को जब्लून के गोत्र के भाग में से अपनी-अपनी चराइँयों समेत योकनाम, कर्ता, ३३ दिम्ना, और नहलाल; ये चार नगर दिए गए। ३४ और स्क्वेन के गोत्र के भाग में से अपनी-अपनी चराइँयों समेत बेसेर, यहस, ३५ कदेमोत, और मेपात; ये चार नगर दिए गए। ३६ और स्क्वेन के गोत्र के भाग में से अपनी-अपनी चराइँयों समेत खनी के शरणनगर गिलाद में का रामोत, फिर महनैम, ३७ हेशबोन, और याजेर, जो सब मिलाकर चार नगर हैं दिए गए। ३८ लेवियों के बाकी कुलों अर्थात् मरारियों के कुलों के अनुसार उनके सब नगर ये ही ठहरे, इस प्रकार उनको बासह नगर चिठ्ठी डाल डालकर दिए गए। ३९ इस्माएलियों की निज भूमि के बीच लेवियों के सब नगर अपनी-अपनी चराइँयों समेत अड़तालीस ठहरे। ४० ये सब नगर अपने-अपने चारों ओर की चराइँयों के साथ ठहरे; इन सब नगरों की यही दशा थी। ४१ इस प्रकार यहोवा ने इस्माएलियों को वह सारा देश दिया, जिसे उसने उनके पूर्वजों से शपथ खाकर देने को कहा था; और वे उसके अधिकारी होकर उसमें बस गए। ४२ और यहोवा ने उन सब बातों के अनुसार, जो उसने उनके पूर्वजों से शपथ खाकर कही थी, उन्हें चारों ओर से विश्वाम दिया; और उनके शबुओं में से कोई भी उनके सामने टिक न सका; यहोवा ने उन सभी को उनके बश में कर दिया। ४३ जितनी भलाई की बातें यहोवा ने इस्माएल के घराने से कही थीं उनमें से कोई भी बात न छूटी; सब की सब पूरी हुईं।

२२ उस समय यहोशू ने स्क्वेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियों को

बुलवाकर कहा, १ “जो-जो आज्ञा यहोवा के दास मूसा ने तुहें दी थी वे सब तुम ने मानी हैं, और जो-जो आज्ञा मैंने तम्हें दी हैं उन सभी को भी तुम ने माना है; २ तुम ने अपने भाइयों को इनने दिनों में आज के दिन तक नहीं छोड़ा, परन्तु अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा तुम ने चौकसी से मानी है। ३ और अब तम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुहारे भाइयों को अपने बचन के अनुसार विश्वाम दिया है, इसलिए अब तुम लौटकर अपने-अपने डेरों को, और अपनी-अपनी निज भूमि में, जिसे यहोवा के दास मूसा ने यहदन पार तम्हें दिया है चले जाओ। ४ केवल इस बात की पूरी चौकसी करना कि जो-जो आज्ञा और व्यवस्था यहोवा के दास मूसा ने तुम को दी है उसको मानकर अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो, उसके सारे मार्गों पर चलो, उसकी आज्ञाएँ मानो, उसकी भक्ति में लौटीन रहो, और अपने सारे मन और सारे प्राण से उसकी सेवा करो।” ५ तब यहोशू ने उन्हें आशीर्वाद देकर विदा किया; और वे अपने-अपने डेरों को चले गए। ६ मनश्शे के आधे गोत्रियों को मूसा ने बाशान में भाग दिया था; परन्तु दूसरे आधे गोत्र को यहोशू ने उनके भाइयों के बीच यहदन के पश्चिम की ओर भाग दिया। उनको जब यहोशू ने विदा किया कि अपने-अपने डेरों को चले गए। ७ मनश्शे के आधे गोत्रियों को मूसा ने बाशान में भाग दिया था; परन्तु दूसरे आधे गोत्र को यहोशू ने उनके भाइयों के बीच यहदन के पश्चिम की ओर भाग दिया। उनको जब यहोशू ने विदा किया कि अपने-अपने डेरों को चाँदी, सोना, पीतल, लोहा, और बहुत से बड़े और बहुत धन-सम्पत्ति लिए हुए अपने-अपने डेरों को लौट आओ; और अपने शबुओं की लौट की सम्पत्ति को अपने भाइयों के संग बांट लेना।” ८ तब स्क्वेनी, गादी, और मनश्शे के आधे

गोत्री इस्माएलियों के पास से, अर्थात् कनान देश के शीतो नगर से, अपनी गिलाद नामक निज भूमि में, जो मूरा के द्वारा दी गई, यहोवा की आज्ञा के अनुसार उनकी निज भूमि हो गई थी, जाने की मनसा से लौट गए। १० और जब स्बेनी, गादी, और मनश्शे के आधे गोत्री यरदन की उस तराई में पहुँचे जो कनान देश में है, तब उन्होंने वहाँ देखने के योग्य एक बड़ी वेदी बनाई। ११ और इसका समाचार इस्माएलियों के सुनने में आया, कि स्बेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियों ने कनान देश के सामने यरदन की तराई में, अर्थात् उसके उस पार जो इस्माएलियों का है, एक वेदी बनाई है। १२ जब इस्माएलियों ने यह सुना, तब इस्माएलियों की सारी मण्डली उसे लड़ने के लिये चढ़ाई करने को शीतो में इकट्ठी हुई। १३ तब इस्माएलियों ने स्बेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियों के पास गिलाद देश में एतीआजर याजक के पुनर्पीनहास को, १४ और उसके संग दस प्रधानों को, अर्थात् इस्माएल के एक-एक गोत्र में से पूर्वजों के घरानों के एक-एक प्रधान को भेजा, और वे इस्माएल के हजारों में अपने-अपने पूर्वजों के घरानों के मुख्य पुस्त थे। १५ वे गिलाद देश में स्बेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियों के पास जाकर कहने लगे, १६ “यहोवा की सारी मण्डली यह कहती है, कि ‘तुम ने इस्माएल के परमेश्वर यहोवा का यह कैसा विश्वासाधात किया; आज जो तुम ने एक वेदी बना ली है, इसमें तुम ने उसके पीछे चलना छोड़कर उसके विस्तु आज बलवा किया है?’ १७ सुनो, पोर के विषय का अर्थम् हमारे लिये कुछ कम था, यद्यपि यहोवा की मण्डली को भारी टण्ड मिला तो भी आज के दिन तक हम उस अर्थम् से शुद्ध नहीं हुए; क्या वह तुम्हारी दृष्टि में एक छोटी बात है, १८ कि आज तुम यहोवा को त्याग कर उसके पीछे चलना छोड़ देते हो? क्या तुम यहोवा से फिर जाते हो, और कल वह इस्माएल की सारी मण्डली से क्रोधित होगा। १९ परन्तु यदि तुम्हारी निज भूमि अशुद्ध हो, तो पार आकर यहोवा की निज भूमि में, जहाँ यहोवा का निवास रहता है, हम लोगों के बीच में अपनी-अपनी निज भूमि कर लो; परन्तु हमारे परमेश्वर यहोवा की वेदी को छोड़ और कोई वेदी बनाकर न तो यहोवा से बलवा करो, और न हम से। २० देखो, जब जेरह के पुनर्पीनहास को आकान ने अर्पण की हुई वस्तु के विषय में विश्वासाधात किया, तब क्या यहोवा का कोप इस्माएल की पूरी मण्डली पर न भड़का? और उस पुस्त के अर्थम् का प्राणदण्ड अकेले उसी को न मिला।” २१ तब स्बेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियों ने इस्माएल के हजारों के मुख्य पुस्तों को यह उत्तर दिया, २२ “यहोवा जो ईश्वरों का परमेश्वर है, ईश्वरों का परमेश्वर यहोवा इसको जानता है, और इस्माएली भी इसे जान लेंगे, कि यदि यहोवा से फिरके या उसका विश्वासाधात करके हमने यह काम किया हो, तो तू आज हमको जीवित न छोड़, २३ यदि आज के दिन हमने वेदी को इसलिए बनाया हो कि यहोवा के पीछे चलना छोड़ दें, या इसलिए कि उस पर होमवलि, अन्नबलि, या मेलबलि चढ़ाएँ, तो यहोवा आप इसका हिसाब ले; २४ परन्तु हमने इसी विचार और मनसा से यह किया है कि कहीं भविष्य में तुम्हारी सन्तान हमारी सन्तान से यह न कहने लगे, ‘तुम को इस्माएल के परमेश्वर यहोवा से क्या काम?’ २५ क्योंकि, हे स्बेनियों, हे गादियों, यहोवा ने जो हमारे और तुम्हारे बीच में यरदन को सीमा ठहरा दिया है, इसलिए यहोवा में तुम्हारा कोई भाग नहीं है।’ ऐसा कहकर तुम्हारी सन्तान हमारी सन्तान में से यहोवा का भय छुटा देगा। २६ इसलिए हमने कहा, ‘आओ, हम अपने लिये एक वेदी बना लें, वह होमवलि या मेलबलि के लिये नहीं, २७ परन्तु इसलिए कि हमारे और तुम्हारे, और हमारे बाट हमारे और तुम्हारे बीच के बीच में साक्षी का काम दे; इसलिए कि हम होमवलि, मेलबलि, और बलिदान चढ़ाकर यहोवा के सम्मुख उसकी उपासना करें; और भविष्य में तुम्हारी

सन्तान हमारी सन्तान से यह न कहने पाए, कि यहोवा में तुम्हारा कोई भाग नहीं।’ २८ इसलिए हमने कहा, ‘जब वे लोग भविष्य में हम से या हमारे बीच से यह कहने लगें, तब हम उनसे कहेंगे, कि यहोवा के वेदी के नमूने पर बनी हुई इस वेदी को देखो, जिसे हमारे पुरुखाओं ने होमवलि के मेलबलि के लिये नहीं बनाया; परन्तु इसलिए बनाया था कि हमारे और तुम्हारे बीच में साक्षी का काम दे।’ २९ यह हम से दूर रहे कि यहोवा से फिरकर आज उसके पीछे चलना छोड़ दें, और अपने परमेश्वर यहोवा की उस वेदी को छोड़कर जो उसके निवास के सामने है होमवलि, और अन्नबलि, या मेलबलि के लिये दूसरी वेदी बनाएँ।’ ३० स्बेनियों, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियों की इन बातों को सुनकर पीनहास याजक और उसके संग मण्डली के प्रधान, जो इस्माएल के हजारों के मुख्य पुस्त थे, वे अति प्रसन्न हुए। ३१ और एतीआजर याजक के पुनर्पीनहास ने स्बेनियों, गादियों, और मनश्शे इश्वरों से कहा, “तुम ने जो यहोवा का ऐसा विवासाधात नहीं किया, इससे आज हमने यह जान लिया कि यहोवा हमारे बीच में है; और तुम लोगों ने इस्माएलियों को यहोवा के हाथ से बचाया है।” ३२ तब एतीआजर याजक का पुनर्पीनहास प्रधानों समेत स्बेनियों और गादियों के पास से गिलाद होते हुए कनान देश में इस्माएलियों के पास लौट गया; और यह बृतान्त उनको कह सुनाया। ३३ तब इस्माएली प्रसन्न हुए, और परमेश्वर को धन्य कहा, और स्बेनियों से लड़ने और उनके रनने का देश उजाड़ने के लिये चढ़ाई करने की चर्चा फिर न की। ३४ और स्बेनियों और गादियों ने यह कहकर, “यह वेदी हमारे और उनके मध्य में इस बात की साक्षी ठहरी है, कि यहोवा ही परमेश्वर है,” उस वेदी का नाम एद रखा।

२३ इसके बहुत दिनों के बाद, जब यहोवा ने इस्माएलियों को उनके चारों ओर के शत्रुओं से विश्वास दिया, और यहोशू बूढ़ा और बहुत आयु का हो गया, २४ तब यहोशू सब इस्माएलियों को, अर्थात् पुरनियों, मुख्य पुस्तों, न्यायियों, और सरदारों को बुलवाकर कहने लगा, “मैं तो अब बूढ़ा और बहुत आयु का हो गया हूँ; ३५ और तुम ने देखा कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे निमित्त इन सब जातियों से क्या-क्या किया है, क्योंकि जो तुम्हारी और से लड़ता आया है वह तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है। ३६ देखो, मैंने इन बीची हुई जातियों को चिरी डाल डालकर तुम्हारे गोत्रों का भागकर दिया है; और यरदन से लेकर सर्यास्त की ओर के बड़े सम्मुद्र तक रहेनाली उन सब जातियों को भी ऐसा ही दिया है, जिनको मैंने काट डाला है। ३७ और तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उनको तुम्हारे सामने से उनके देश से निकाल देगा; और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उनके देश के अधिकारी हो जाओगे। ३८ इसलिए बहुत हियाव बाँधकर, जो कुछ मसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है उसके पार करने में चौकसी करना, उससे न तो दाहिने मुड़ना और न बाँएँ। ३९ ये जो जातियाँ तुम्हारे बीच रह गई हैं इनके बीच न जाना, और न इनके देवताओं के नामों की चर्चा करना, और न उनकी शापथ खिलाना, और न उनकी उपासना करना, और न उनको दण्डवत् करना, ४० परन्तु जैसे आज के दिन तक तुम अपने परमेश्वर यहोवा की भक्ति में लबलीन रहते हो, वैसे ही रहा करना। ४१ यहोवा ने तुम्हारे सामने से बड़ी-बड़ी और बलवन्त जातियाँ निकाली हैं; और तुम्हारे सामने आज के दिन तक कोई ठहर नहीं सका। ४२ तुम में से एक मनुय जहार ममुज्यों को भगाएगा, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारी ओर से लड़ता है। ४३ इसलिए अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखने की पूरी चौकसी करना। ४४ क्योंकि यदि तुम किसी रीति यहोवा से फिरकर इन जातियों के बाकी लोगों से मिलने लगो जो तुम्हारे बीच बचे हुए रहते हैं, और इनसे ब्याह शादी करके इनके साथ

समधियाना रिश्ता जोड़े, १३ तो निश्चय जान लो कि आगे को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा इन जातियों को तुम्हारे सामने से नहीं निकालेगा; और ये तुम्हारे लिये जाल और फंटे, और तुम्हारे पांजरों के लिये कोडे, और तुम्हारी अँखों में कॉटे ठहरेगी, और अन्त में तुम इस अच्छी भूमि पर से जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी है नष्ट हो जाओगे। १४ “सुनो, मैं तो अब सब संसारियों की गति पर जानेवाला हूँ, और तुम सब अपने-अपने हृदय और मन में जानते हो, कि जितनी भलाई की बातें हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमारे विषय में कहीं उनमें से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही; वे सब की सब तुम पर घट गई हैं, उनमें से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही। १५ तो जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की कहीं ही तुम पर लाएगा और तुम को इस अच्छी भूमि के ऊपर से, जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है, सत्यानाश कर डालेगा। १६ जब तुम उस बाचा को, जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को आज्ञा देकर अपने साथ बन्धाया है, उल्लंघन करके पराए देवताओं की उपासना और उनको दण्डवत् करने लगो, तब यहोवा का कोप तुम पर भड़केगा, और तुम इस अच्छे देश में से जिसे उसने तुम को दिया है शीघ्र नष्ट हो जाओगे।”

२४ फिर यहोश् ने इसाएल के सब गोत्रों को शेकेम में इकट्ठा किया, और

इसाएल के बूढ़े लोगों, और मुख्य पुरुषों, और न्यायियों, और सरदारों को बुलवाया; और वे परमेश्वर के सामने उपस्थित हए। १ तब यहोश् ने उन सब लोगों से कहा, “इसाएल का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है, कि ‘प्राचीनकाल में अब्राहम और नाहोर का पिता तेरह आदि, तुम्हारे पुरुषों का फरात महानद के उस पार रहते हुए दूसरे देवताओं की उपासना करते थे। २ और मैंने तुम्हारे मूलपुरुष अब्राहम को फरात के उस पार से ले आकर कनान देश के सब स्थानों में फिराया, और उसका वंश बढ़ाया। और उर्ये इसाहाक को दिया। ३ फिर मैंने इसाहाक को याकूब और एसाव दिया। और एसाव को मैंने सेरेह-नामक पहाड़ी देश दिया कि वह उसका अधिकारी हो, परन्तु याकूब बेटों-पोतों समेत मिस्र को गया। ४ फिर मैंने मसा और हास्न को भेजकर उन सब कामों के द्वारा जो मैंने मिस्र में किए उस देश को मारा; और उसके बाद तुम को निकाल लाया। ५ और मैं तुम्हारे पुरुषाओं को मिस्र में से निकाल लाया, और तुम समुद्र के पास पहुँचे; और मिसियों ने रथ और सवारों को संग लेकर लाल समुद्र तक तुम्हारा पीछा किया। ६ और जब तुम ने यहोवा की दुहाई दी तब उसने तुम्हारे और मिसियों के बीच में अंधियारा कर दिया, और उन पर समुद्र को बहाकर उनको डुबा दिया; और जो कुछ मैंने मिस्र में किया उसे तुम लोगों ने अपनी अँखों से देखा; फिर तुम बहुत दिन तक जंगल में रहे। ७ तब मैं तुम को उन एमोरियों के देश में ले आया, जो यरदन के उस पार बसे थे; और वे तुम से लड़े और मैंने उन्हें तुम्हारे वश में कर दिया, और तुम उनके देश के अधिकारी हो गए, और मैंने उनका तुम्हारे सामने से सत्यानाश कर डाला। ८ फिर मोआब के राजा सिप्पार का पुत्र बालाक उठकर इसाएल से लड़ा; और तुम्हें श्वप्न देने के लिये बोके के पुत्र बिलाम को बुलवा भेजा, ९ परन्तु मैंने बिलाम की नहीं सुनी; वह तुम को आशीष ही आशीष देता गया; इस प्रकार मैंने तुम को उसके हाथ से बचाया। १० तब तुम यरदन पार होकर यरीहो के पास आए, और जब यरीहो के लोग, और एमोरी, परिज्जी, कनानी, दिन्ती, मिर्गशी, हिब्बी, और यबूसी तुम से लड़े, तब मैंने उन्हें तुम्हारे वश में कर दिया। ११ और मैंने तुम्हारे आगे बर्बी को भेजा, और उन्होंने एमोरियों के दोनों राजाओं को तुम्हारे सामने से भगा दिया; देखो, यह तुम्हारी तलवार या धनुष का काम नहीं हुआ। १२ फिर मैंने तुम्हें ऐसा देश दिया जिसमें तुम ने परिश्रम न

किया था, और ऐसे नगर भी दिए हैं जिन्हें तुम ने न बसाया था, और तुम उनमें बसे हो; और जिन दाख और जैतून के बागियों के फल तुम खाते हो उन्हें तुम ने नहीं लगाया था।” १३ “इसलिए अब यहोवा का भय मानकर उसकी सेवा खराई और सच्चाई से करो; और जिन देवताओं की सेवा तुम्हारे पुरुषों फरात के उस पार और मिस्र में करते थे, उन्हें दूर करके यहोवा की सेवा करो। १४ और यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे, तो आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरुषों महानद के उस पार करते थे, और चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिनके देश में तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूँगा।” १५ तब लोगों ने उत्तर दिया, “यहोवा को त्याग कर दूसरे देवताओं की सेवा करनी हम से दूर रहे; १६ क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा वही है जो हमको और हमारे पुरुषाओं को दासत्व के घर, अथवा उसके देश से निकाल ले आया, और हमारे देखते बड़े-बड़े अश्वर्यकर्म किए, और जिस मार्ग पर और जितनी जातियों के मध्य में से हम चले आते थे उनमें हमारी रक्षा की; १७ और हमारे सामने से इस देश में रहनेवाली एमोरी आदि सब जातियों को निकाल दिया है; इसलिए हम भी यहोवा की सेवा करेंगे, क्योंकि हमारा परमेश्वर वही है।” १८ यहोश् ने लोगों से कहा, “तुम से यहोवा की सेवा नहीं हो सकती; क्योंकि वह पवित्र परमेश्वर है; वह जलन रखनेवाला परमेश्वर है; वह तुम्हारे अपराध और पाप क्षमा न करेगा। १९ यदि तुम यहोवा को त्याग कर पराए देवताओं की सेवा करने लगोगे, तो यधियि वह तुम्हारा भला करता आया है तो भी वह फिरकर तुम्हारी हानि करेगा और तुम्हारा अन्त भी कर डालेगा।” २० लोगों ने यहोश् से कहा, “नहीं; हम यहोवा ही की सेवा करेंगे।” २१ यहोश् ने लोगों से कहा, “तुम आप ही अपने साक्षी हो कि तुम ने यहोवा की सेवा करनी चुन ली है।” २२ उन्होंने कहा, “हाँ, हम साक्षी हैं।” २३ यहोश् ने कहा, “अपने बीच में से पराए देवताओं को दूर करके अपना-अपना मन इसाएल के परमेश्वर यहोवा की ओर लगाओ।” २४ लोगों ने यहोश् से कहा, “हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही की सेवा करेंगे, और उसी की बात मानेंगे।” २५ तब यहोश् ने उसी दिन उन लोगों से बाचा बैंधाईं, और शेकेम में उनके लिये विधि और नियम ठहराया। २६ यह सारा बृतान्त यहोश् ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में लिख दिया; और एक बड़ा पत्थर चुनकर वहाँ उस बांज वृक्ष के तले खड़ा किया, जो यहोवा के पवित्रस्थान में था। २७ तब यहोश् ने सब लोगों से कहा, “सुनो, यह पत्थर हम लोगों का साक्षी रहेगा, क्योंकि जितने वचन यहोवा ने हम से कहे हैं उन्हें इसने सुना है; इसलिए यह तुम्हारा साक्षी रहेगा, ऐसा न हो कि तुम अपने परमेश्वर से मुकर जाओ।” २८ तब यहोश् ने लोगों को अपने-अपने निज भाग पर जाने के लिये बिदा किया। २९ इन बातों के बाद यहोवा का दास, नून का पुत्र यहोश्, एक सौ दस वर्ष का होकर मर गया। ३० और उसको तिम्नत्सेरह में, जो एमैं के पहाड़ी देश में गाश नामक पहाड़ के उत्तर में है, उसी के भाग में मिट्टी दी गई। ३१ और यहोश् के जीवन भर, और जो बूढ़े लोग यहोश् के मरने के बाद जीवित रहे और जानते थे कि यहोवा ने इसाएल के लिये कैसे-कैसे काम किए थे, उनके भी जीवन भर इसाएली यहोवा ही की सेवा करते रहे। ३२ फिर यूसुफ की हड्डियाँ जिन्हें इसाएली मिस्र से ले आए थे वे शेकेम की भूमि के उस भाग में गाड़ी गई, जिसे याकूब ने शेकेम के पिता हमारे के पुत्रों से एक सौ चाँदी के सिक्कों में मोत लिया था; इसलिए वह यूसुफ की सन्तान का निज भाग हो गया। ३३ और हास्न का पुत्र एलीआजर भी मर गया; और उसको एमैं के पहाड़ी देश में उस पहाड़ी पर मिट्टी दी गई, जो उसके पुत्र पीनहास के नाम पर गिबर्तीनहास कहलाती है और उसको दे दी गई थी।

न्यायियों

१ यहोश के मरने के बाद इसाएलियों ने यहोवा से पूछा, “कनानियों के विस्तु लड़ने को हमारी और से पहले कौन चढ़ाई करेगा?” २ यहोवा ने उत्तर दिया, “यहदा चढ़ाई करेगा; सुनो, मैंने इस देश को उसके हाथ में दे दिया है।” ३ तब यहदा ने अपने भाई शिमोन से कहा, “मैं संग मैं भाग में आ, कि हम कनानियों से लड़ें; और मैं भी तेरे भाग में जाऊँगा।” अतः शिमोन उसके संग चला। ४ और यहदा ने चढ़ाई की, और यहोवा ने कनानियों और परिजियों को उसके हाथ में कर दिया; तब उन्होंने बेजेक में उन्हें से दस हजार पुख्ख मार डाले। ५ और बेजेक में अदोनीबेजेक को पाकर वे उससे लड़े, और कनानियों और परिजियों को मार डाला। ६ परन्तु अदोनीबेजेक भागा, तब उन्होंने उसका पीछा करके उसे पकड़ लिया, और उसके हाथ पाँव के अँगुठे काट डाले। ७ तब अदोनीबेजेक ने कहा, “हाथ पाँव के अँगुठे काटे हुए सन्तर राजा मेरी मेज के नीचे टुकड़े बीनते थे; जैसा मैंने किया था, वैसा ही बदला परमेश्वर ने मुझे दिया है।” तब वे उसे यस्तलेम को ले गए और वहाँ वह मर गया। ८ यहदियों ने यस्तलेम से लड़कर उसे ले लिया, और तलबार से उसके निवासियों को मार डाला, और नगर को फूँक दिया। ९ और तब यहदी पहाड़ी देश और दक्षिण देश, और नीचे के देश में रहनेवाले कनानियों से लड़ने को गए। १० और यहदा ने उन कनानियों पर चढ़ाई की जो हेब्रोन में रहते थे (हेब्रोन का नाम तो पूर्वकाल में किर्यतर्बारा था); और उन्होंने शेशौ, अहीमन, और तलमै को मार डाला। ११ वहाँ से उसने जाकर दबीर के निवासियों पर चढ़ाई की। दबीर का नाम तो पूर्वकाल में किर्यत्सेपरथा। १२ तब कालेब ने कहा, “जो किर्यत्सेपर को मारकर ले ले उससे मैं अपनी बेटी अकसा का विवाह कर दूँगा।” १३ इस पर कालेब के छोटे भाई कनजी ओट्रीएल ने उसे ले लिया; और उसने उससे अपनी बेटी अकसा का विवाह कर दिया। १४ और जब वह ओट्रीएल के पास आई, तब उसने उसको अपने पिता से कुछ भूमि मांगने को उभारा; फिर वह अपने गढ़े पर से उत्तरी, तब कालेब ने उससे पूछा, “तू क्या चाहती है?” १५ वह उससे बोली, “मुझे अशीर्वद दे; तूने मुझे दक्षिण देश तो दिया है, तो जल के सोते भी दे।” इस प्रकार कालेब ने उसको ऊपर और नीचे के दोनों सोते दे दिए। १६ मूसा के साले, एक केनी मनुष्य की सन्तान, यहदी के संग खजरवाले नगर से यहदा के जंगल में गए जो अराद के दक्षिण की ओर है, और जाकर इसाएली लोगों के साथ रहने लगे। १७ फिर यहदा ने अपने भाई शिमोन के संग जाकर सप्त में रहनेवाले कनानियों को मार लिया, और उस नगर का सत्यानाश कर डाला। इसलिए उस नगर का नाम होर्म पड़ा। १८ और यहदा ने चारों ओर की भूमि समेत गाजा, अश्कलोन, और एकोन को ले लिया। १९ यहोवा यहदा के साथ रहा, इसलिए उसने पहाड़ी देश के निवासियों को निकाल दिया; परन्तु तराई के निवासियों के पास लोहे के रथ थे, इसलिए वह उन्हें न निकाल सका। २० और उन्होंने मूसा के कहने के असुराहे हेब्रोन कालेब को दे दिया; और उसने वहाँ से अनाक के तीनों पुत्रों को निकाल दिया। २१ और यस्तलेम में रहनेवाले यबसियों को बिन्यामीनियों ने न निकाला; इसलिए यबसी आज के दिन तक यस्तलेम में बिन्यामीनियों के संग रहते हैं। २२ फिर यसुफ के घराने ने बेतेल पर चढ़ाई की; और यहोवा उनके संग था। २३ और यसुफ के घराने ने बेतेल का भेद लेने को लोग भेजे। और उस नगर का नाम पूर्वकाल में लूज था। २४ और भेदियों ने एक मनुष्य को उस निकलते हुए देखा, और उससे कहा, “नगर में जाने का मार्ग हमें दिखा, और हम तुझ पर दया करेगे।” २५ जब उसने उन्हें नगर में जाने का मार्ग दिखाया, तब उन्होंने नगर को तो तलबार से मारा, परन्तु उस

मनुष्य को सारे घराने समेत छोड़ दिया। २६ उस मनुष्य ने हितियों के देश में जाकर एक नगर बसाया, और उसका नाम लूज रखा; और आज के दिन तक उसका नाम वही है। २७ मनश्वे ने अपने-अपने गाँवों समेत बेतशान, तानाक, दोर, यिलाम, और मगिद्दो के निवासियों को न निकाला; इस प्रकार कनानी उस देश में बसे ही रहे। २८ परन्तु जब इसाएली सामर्थी हुए, तब उन्होंने कनानियों से बेगारी ली, परन्तु उन्हें पूरी रीति से न निकाला; इसलिए कनानी जेजेर में रहनेवाले कनानियों को न निकाला; इसलिए कनानी जेजेर में उके बीच में बसे रहे। २९ जबलून ने कित्रोन और नहलोल के निवासियों को न निकाला; इसलिए कनानी उनके बीच में बसे रहे, और उनके वश में हो गए। ३० आशेर ने अक्को, सीदोन, अहलाब, अकजीब, हेलबा, अपीक, और रहोब के निवासियों को न निकाला था; ३१ इसलिए आशेरी लोग देश के निवासी कनानियों के बीच में बस गए; क्योंकि उन्होंने उनको न निकाला था। ३२ नमानी ने बेतशेमेश और बेतनात के निवासियों को न निकाला, परन्तु देश के निवासी कनानियों के बीच में बस गए; तो भी बेतशेमेश और बेतनात के लोग उनके वश में हो गए। ३३ एमोरियों ने दानियों को पहाड़ी देश में भगा दिया, और तराई में आने न दिया; ३४ इसलिए एमोरी हेस नामक पहाड़, अच्यालोन और शाल्बीम में बसे ही रहे, तो भी यसुफ का घराना यहाँ तक प्रबल हो गया कि वे उनके वश में हो गए। ३५ और एमोरियों के देश की सीमा अकब्बीम नामक पर्वत की चढ़ाई से आरम्भ करके ऊपर की ओर थी।

२ यहोवा का दूत गिलगाल से बोकीम को जाकर कहने लगा, “मैंने तुम को मिस से ले आकर इस देश में पहुँचाया है, जिसके विषय में मैंने तुम्हारे पुखाओं से शपथ लाई थी। और मैंने कहा था, ‘जो बाचा मैंने तुम से बांधी है, उसे मैं कभी न तोड़ूँगा; २ इसलिए तुम इस देश के निवासियों से बाचा न बाँधना; तुम उनकी बेटियों को ढा देना।’ परन्तु तुम ने मेरी बात नहीं मारी। तुम ने ऐसा क्यों किया है? ३ इसलिए मैं कहता हूँ, ‘मैं उन लोगों को तुम्हारे सामने से न निकालूँगा; और वे तुम्हारे पाँजर में कॉट, और उनके देवता तुम्हारे लिये फंदा ठहरेंगे।’” ४ जब यहोवा के दूत ने सारे इसाएलियों से ये बातें कही, तब वे लोग चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे। ५ और उन्होंने उस स्थान का नाम बोकीम रखा। और वहाँ उन्होंने यहोवा के लिये बलि चढ़ायी। ६ जब यहोश ने लोगों को विदा किया था, तब इसाएली देश को अपने अधिकार में कर लेने के लिये अपने-अपने निज भाग पर गए। ७ और यहोश के जीवन भर, और उन बूढ़े लोगों के जीवन भर जो यहोश के मरने के बाद जीवित रहे और देख चुके थे कि यहोवा ने इसाएल के लिये कैसे-कैसे बड़े काम किए हैं, इसाएली लोग यहोवा की सेवा करते रहे। ८ तब यहोवा का दास नून का पुत्र यहोश एक सौ दस वर्ष का होकर मर गया। ९ और उसको तिम्नथेरेस में जो एग्रीम के पहाड़ी देश में गाश नामक पहाड़ के उत्तरी ओर है, उसी के भाग में मिट्टी दी गई। १० और उस पीढ़ी के सब लोग भी अपने-अपने पितरों में मिल गए; तब उसके बाद जो दूसरी पीढ़ी हुई उसके लोग न तो यहोवा को जानते थे और न उस काम को जो उसने इसाएल के लिये किया था। ११ इसलिए इसाएली वह करने लगे जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और बाल नामक देवताओं की उपासना करने लगे; १२ वे अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा को, जो उन्हें मिस देश से निकाल लाया था, त्याग कर पारा देवताओं की उपासना करने लगे, और उन्हें दण्डकृत किया; और यहोवा को रिस दिलाई। १३ वे यहोवा को त्याग कर बाल देवताओं और अश्तोरत देवियों की उपासना करने लगे। १४ इसलिए यहोवा का कोप इसाएलियों पर भडक उठा, और उसने उनको लटेरों के हाथ में कर दिया जो उन्हें लूटने लगे; और उसने उनको चारों ओर के शत्रुओं के अधीन कर दिया; और वे फिर अपने शत्रुओं के सामने ठहर न सके। १५ जहाँ कहीं वे बाहर जाते

वहाँ यहोवा का हाथ उनकी बुराई में लगा रहता था, जैसे यहोवा ने उनसे कहा था, वरन् यहोवा ने शपथ खाई थी, इस प्रकार वे बड़े संकट में पड़ गए। १६ तो भी यहोवा उनके लिये न्यायी ठहराता था जो उन्हें लटनेवाले के हाथ से छुड़ाते थे। १७ परन्तु वे अपने न्यायियों की भी नहीं मानते थे; वरन् व्यभिचारिणी के समान पराए देवताओं के पीछे चलते और उन्हें टण्डवत् करते थे; उनके पर्वज जो यहोवा की आजाएँ मानते थे, उनकी उस लीक को उन्होंने शीघ्र ही छोड़ दिया, और उनके अनुसार न किया। १८ जब जब यहोवा उनके लिये न्यायी को ठहराता तब-तब वह उस न्यायी के संग रहकर उसके जीवन भर उन्हें श्रुतों के हाथ से छुड़ाता था; क्योंकि यहोवा उनका करहना जो अधेर और उपद्रव करनेवालों के कारण होता था सुनकर दुखी था। १९ परन्तु जब न्यायी मर जाता, तब वे फिर पराए देवताओं के पीछे चलकर उनकी उपासना करते, और उन्हें टण्डवत् करके अपने पुराखाओं से अधिक बिगड़ जाते थे; और अपने द्वे कामों और हठीली चाल को नहीं छोड़ते थे। २० इसलिए यहोवा का कोप इस्माएल पर भड़क उठा; और उसने कहा, “इस जाति ने उस वाचा को जो मैंने उनके पर्वजों से बाँधी थी तोड़ दिया, और मेरी बात नहीं मानी, २१ इस कारण जिन जातियों को यहोश मरते समय छोड़ गया है उनमें से मैं अब किसी को उनके सामने से न निकालौँगा; २२ जिससे उनके द्वारा मैं इस्माएलियों की परीक्षा करूँ, कि जैसे उनके पर्वज मेरे मार्ग पर चलते थे वैसे ही ये भी चलेंगे कि नहीं।” २३ इसलिए यहोवा ने उन जातियों को एकाएक न निकाला, वरन् रहने दिया, और उसने उन्हें यहोश के हाथ में भी उनको न सौंपा था।

३ इस्माएलियों में से जितने कनान में की लड़ाइयों में भागी न हुए थे, उन्हें परखने के लिये यहोवा ने इन जातियों को देश में इसलिए रहने दिया; ३ कि पीढ़ी-पीढ़ी के इस्माएलियों में से जो लड़ाई को पहले न जानते थे वे सीखें, और जान लें, ४ अर्थात् पैंचों सरदारों समेत पलिशियों, और सब कनानियों, और सीदोनियों, और बालहर्मेन नामक पहाड़ से लेकर हमात की तराई तक लबानोन पर्वत में रहेनेवाले हिन्दियों को। ५ ये इसलिए रहने पाए कि इनके द्वारा इस्माएलियों की बात में परीक्षा हो, कि जो आजाएँ यहोवा ने मसा के द्वारा उनके पूर्वजों को दी थी, उन्हें वे मारेंगे या नहीं। ६ इसलिए इस्माएली कनानियों, हितियों, एमोरियों, परिजियों, हिन्दियों, और यबूसियों के बीच में बस गए; ७ तब वे उनकी बेटियाँ विवाह में लेने लगे, और अपनी बेटियाँ उनके बेटों को विवाह में देने लगे; और उनके देवताओं की भी उपासना करने लगे। ८ इस प्रकार इस्माएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, और अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर बाल नामक देवताओं और अशेरा नामक देवियों की उपासना करने लग गए। ९ तब यहोवा का क्रौध इस्माएलियों पर भड़का, और उसने उनको अरम्नहैरैम के राजा कशन रिश-आतिम के अधीन कर दिया; सो इस्माएली आठ वर्ष तक कूशन रिश-आतिम के अधीन में रहे। १० तब इस्माएलियों ने यहोवा की दुहाई दी, और उसने इस्माएलियों के छुटकारे के लिये कालोंके छोटे भाई ओटीएल नामक कनजी के पुत्र को ठहराया, और उसने उनको छुड़ाया। ११ उसमें यहोवा का आत्मा समाया, और वह इस्माएलियों का न्यायी बन गया, और लड़ने को निकाला, और यहोवा ने अराम के राजा कूशन रिश-आतिम को उसके हाथ में कर दिया; और वह कूशन रिश-आतिम पर जयवन्त हुआ। १२ तब इस्माएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया; और यहोवा ने मोआब के राजा एलोन को इस्माएल पर प्रबल किया, क्योंकि उन्होंने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया था। १३ इसलिए उसने अम्मोनियों और अमालेकियों को अपने पास इकट्ठा किया, और जाकर

इस्माएल को मार लिया; और खजूरवाले नगर को अपने वश में कर लिया। १४ तब इस्माएली अठारह वर्ष तक मोआब के राजा एलोन के अधीन रहे। १५ फिर इस्माएलियों ने यहोवा की दुहाई दी, और उसने गेरा के पुत्र एहू नामक एक बिन्यामीनी को उनका छुड़ानेवाला ठहराया; वह बवंहत्था था। इस्माएलियों ने उरी के हाथ से मोआब के राजा एलोन के पास कुछ भेट भेजी। १६ एहू ने हाथ भर लम्बी एक दोधारी तलवार बनवाई थी, और उसको अपने वस्त्र की नीचे दाहिनी जाँघ पर लटका लिया। १७ तब वह उस भेट को मोआब के राजा एलोन के पास जो बड़ा मोटा पुस्त था ले गया। १८ जब वह भेट को दे चुका, तब भेट के लतनेवाले को बिदा किया। १९ परन्तु वह आप मिलामाल के निकट की खुदी ही हई मूरतों के पास लौट गया, और एलोन के पास कहला भेजा, “हे राजा, मुझे तुझ से एक भेट की बात कहनी है।” तब राजा ने कहा, “थोड़ी देर के लिये बाहर जाओ।” तब जितने लोग उसके पास उपस्थित थे वे सब बाहर चले गए। २० तब एहू उसके पास गया; वह तो अपनी एक हवादार अटारी में अकेला बैठा था। एहू देने कहा, “परमेश्वर की ओर से मुझे तुझ से एक बात कहनी है।” तब वह गदी पर से उठ खड़ा हुआ। २१ इतने में एहू ने अपना बायाँ हाथ बढ़ाकर अपनी दाहिनी जाँघ पर से तलवार खींचकर उसकी तोंद में घुसेंड दी; २२ और फल के पीछे मूर भू मधी पैठ गई, और फल चबीं में धंसा रहा, क्योंकि उसने तलवार को उसकी तोंद में से न निकाला; वरन् वह उसके आरपार निकल गई। २३ तब एहू छज्जे से निकलकर बाहर गया, और अटारी के किवाड़ खींचकर उसको बन्द करके ताला लगा दिया। २४ उसके निकलकर जाते ही राजा के दास आए, तो क्या देखते हैं, कि अटारी के किवाड़ों में ताला लगा है; इस कारण वे बोले, “निश्चय वह हवादार कोरी में लालूङका करता होगा।” २५ वे बाट जोहते-जोहते थक गए; तब यह देखकर कि वह अटारी के किवाड़ नहीं खोलता, उन्होंने कुँजी लेकर किवाड़ खोले तो क्या देखा, कि उनका स्वामी भूमि पर मरा पड़ा है। २६ जब तक वे सोच विचार कर ही रहे थे तब तक एहू भाग निकला, और खुदी ही हई मूरतों की पल्ली ओर होकर सेंद्रे में जाकर शरण ली। २७ वहाँ पहुँचकर उसने ऐप्रैम के पहाड़ी देश में नरसिंगा फूँका; तब इस्माएली उसके संग होकर पहाड़ी देश से उसके पीछे-पीछे नीचे गए। २८ और उसने उनसे कहा, “मेरे पीछे-पीछे चले आओ; क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे मोआबी शत्रुओं को तुम्हरे हाथ में कर दिया है।” तब उन्होंने उसके पीछे-पीछे जा के यरदन के घाटों को जो मोआब देश की ओर है ले लिया, और किसी को उत्तरने न दिया। २९ उस समय उन्होंने लगभग दस हजार मोआवियों को मार डाला; वे सब के सब हष्ट-पृष्ठ और शूरीर थे, परन्तु उनमें से एक भी न बचा। ३० इस प्रकार उस समय मोआब इस्माएल के हाथ के तले दब गया। तब अस्सी वर्ष तक देश में शान्ति बनी रही। ३१ उसके बाद अनात का पुत्र शमग दुहा हुआ, उसने छँ: सौ पलिशती पुस्तों को बैल के पैने से मार डाला; इस कारण वह भी इस्माएल का छुड़ानेवाला हुआ।

४ जब एहू दर गया तब इस्माएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया।

: इसलिए यहोवा ने उनको हासोर में विराजनेवाले कनान के राजा याबीन के अधीन कर दिया, जिसका सेनापति सीसरा था, जो अन्यजातियों के हरोसेत का निवासी था। ३२ तब इस्माएलियों ने यहोवा की दुहाई दी; क्योंकि सीसरा के पास लोहे के नी सौ रथ थे, और वह इस्माएलियों पर बीस वर्ष तक बड़ा अधेर करता रहा। ३३ उस समय लप्पीदोत की झी दबोरा जो नविया थी इस्माएलियों का न्याय करती थी। ३४ वह ऐप्रैम के पहाड़ी देश में रामाह और बेतेल के बीच में दबोरा के खजूर के तले बैठा करती थी, और इस्माएली उसके पास न्याय के लिये जाया करते थे। ३५ उसने अबीनोअम के पुत्र बाराक को केदेश नमाली में से बुलाकर कहा, “क्या इस्माएल के परमेश्वर यहोवा ने यह आजा नहीं दी, कि

तू जाकर ताबोर पहाड़ पर चढ़, और नसालियों और जब्लूनियों में के दस हजार पुस्तों को संग ले जा? ७ तब मैं याबीन के सेनापति सीसरा को रथों और भीड़भाड़ समेत कीशोन नदी तक तेरी ओर खींच ले आऊँगा; और उसको तेरे हाथ में कर दूँगा।” ८ बाराक ने उससे कहा, “यदि तू मेरे संग चलेगी तो मैं जाऊँगा, नदी तो न जाऊँगा!” ९ उसने कहा, “निःसन्देह मैं तेरे संग चलूँगी; तो भी इस यात्रा से तेरी कुछ बढ़ाई न होगी, क्योंकि यहोवा सीसरा को एक छीं के अधीन कर देगा।” तब दबोरा उठकर बाराक के संग केदेश में बुलवा लिया; और उसके पीछे दस हजार पुस्त चढ़ गए; और दबोरा उसके संग चढ़ गई। १० तब बाराक ने जब्लून और नसाली के लोगों को केदेश में बुलवा लिया; और उसके पीछे दस हजार पुस्त चढ़ गए; और दबोरा उसके संग चढ़ गई। ११ हेबेर नामक केनी ने उन केनियों में से, जो मूसा के साले होबाब के वंश के थे, अपने को अलग करके केदेश के पास के साननीमि के बांज वृक्ष तक जाकर अपना डेरा बही ढाला था। १२ तब सीसरा को यह समाचार मिला कि अबीनोअम का पुत्र बाराक ताबोर पहाड़ पर चढ़ गया है, १३ तब सीसरा ने अपने सब रथ, जो लोहे के नी सौ रथ थे, और अपने संग की सारी सेना को अन्यजातियों के हरोशेत से कीशोन नदी पर बुलवाया। १४ तब दबोरा ने बाराक से कहा, “उठ! क्योंकि आज वह दिन है जिसमें यहोवा सीसरा को तेरे हाथ में कर देगा। क्या यहोवा तेरे आगे नहीं निकलता है?” इस पर बाराक और उसके पीछे-पीछे दस हजार पुस्त ताबोर पहाड़ से उतर पड़े। १५ तब यहोवा ने सारे रथों वरन् सारी सेना समेत सीसरा को तलवार से बाराक के सामने घबरा दिया; और सीसरा रथ पर से उत्तरकर पाँव-पाँव भाग चला। १६ और बाराक ने अन्यजातियों के हरोशेत तक रथों और सेना का पीछा किया, और तलवार से सीसरा की सारी सेना नष्ट की गई, और एक भी मनुष्य न बचा। १७ परन्तु सीसरा पाँव-पाँव हेबेर केनी की छीं याएल के डेरे को भाग गया; क्योंकि हासोरे के राजा याबीन और हेबेर केनी में मेल था। १८ तब याएल सीसरा की भेट के लिये निकलकर उससे कहने लगी, “हे मेरे प्रभु, आ, मेरे पास आ, और न डर।” तब वह उसके पास डेरे में गया, और उसने उसके ऊपर काम्ल डाल दिया। १९ तब सीसरा ने उससे कहा, “मुझे प्यास लगी है, मुझे थोड़ा पानी पिला।” तब उसने दूध की कुप्पी खोलकर उसे दूध पिलाया, और उसको ओढ़ा दिया। २० तब उसने उससे कहा, “डेरे के द्वार पर खड़ी रह, और यदि कोई आकर तुझ से पछे, ‘यहाँ कोई पुस्त है?’ तब कहना, ‘कोई भी नहीं।’” २१ इसके बाद हेबेर की छीं याएल ने डेरे की एक खूँटी ली, और अपने हाथ में एक हथौड़ा भी लिया, और दबे पाँव उसके पास जाकर खूँटी को उसकी कनपटी में ऐसा ठोक दिया कि खूँटी पार होकर भूमि में धूँस गई; वह तो थका था ही इसलिए गहरी नीद में सो रहा था। अतः वह मर गया। २२ तब बाराक सीसरा का पीछा करता हुआ आया, तब याएल उससे भेट करने के लिये निकली, और कहा, “इधर आ, जिसका तू खोजी है उसको मैं तुझे दिखाऊँगी।” तब उसने उसके साथ जाकर क्या देखा; कि सीसरा मरा पड़ा है, और वह खूँटी उसकी कनपटी में गड़ी है। २३ इस प्रकार परमेश्वर ने उस दिन कनान के राजा याबीन को इमाएलियों के सामने नीचा दिखाया। २४ और इमाएली कनान के राजा याबीन को पर प्रबल होते गए, यहाँ तक कि उन्होंने कनान के राजा याबीन को नष्ट कर डाला।

५ उसी दिन दबोरा और अबीनोअम के पुत्र बाराक ने यह गीत गाया: २५ “इमाएल के अगुओं ने जो अगुआई की ओर प्रजा जो अपनी ही इच्छा से भरती हुई, इसके लिये यहोवा को धन्य कहो! २६ “हे राजाओं, सुनो; हे अधिपतियों कान लगाओ, मैं आप यहोवा के लिये गीत गाऊँगी; इमाएल के परमेश्वर यहोवा का मैं भजन करूँगी। २७ हे यहोवा, जब तु सेईर से निकल चला, जब तूने एदोम के देश से प्रस्थान किया, तब पृथ्वी डोल उठी, और

आकाश टूट पड़ा, बादल से भी जल बरसने लगा। ८ यहोवा के प्रताप से पहाड़, इमाएल के परमेश्वर यहोवा के प्रताप से वह सन्ति पिघलकर बहने लगा। ९ “अनात के पुत्र शमपार के दिनों में, और याएल के दिनों में सङ्केत सूनी पड़ी थी, और बटोरी पाण्डियों से चलते थे। १० जब तक मैं दबोरा न उठी, जब तक मैं इमाएल में माता होकर न उठी, तब तक गाँव से पड़े थे। ११ नये-नये देवता माने गए, उस समय फाटकों में लडाई होती थी। क्या चालीस हजार इमाएलियों में भी ढाल या बर्छी कही देखें में आती थी? १२ मेरा मन इमाएल के हाकिमों की ओर लगा है, जो प्रजा के बीच में अपनी ही इच्छा से भरती हुए। यहोवा को धन्य कहो। १३ “हे उजली गदियों पर चढ़नेवालों, हे फर्शों पर विराजनेवालों, हे मार्ग पर पैदल चलनेवालों ध्यान रखो। १४ पनघटों के आस-पास धनुर्धारियों की बात के कारण, वहाँ वे यहोवा के धर्ममय कामों का, इमाएल के लिये उसके धर्ममय कामों का वर्णन करेंगे। उस समय यहोवा की प्रजा के लोग फाटकों के पास गए। १५ “जाग, जाग, हे दबोरा! जाग, जाग, गीत सुना! हे बाराक, उठ, हे अबीनोअम के पुत्र, अपने बन्दियों को बँधुआई में ले चल। १६ उस समय थोड़े से रईस प्रजा समेत उतर पड़े; यहोवा शूर्वीरों के विद्धु मेरे हित में उतर आया। १७ ऐसे में से वे एआजिसकी जड़ अमालेक में हैं, हे बिन्यामीन, तेरे पीछे तेरे दलों में, माकीर में से हाकिम, और जब्लून में से सेनापति का टण्ड लिए हए उतरे; १८ और इमासाकार के हाकिम दबोरा के संग हुए, जैसा इमासाकार वैसा ही बाराक भी था; उसके पीछे लगे हुए वे तराई में झापटकर गए। स्बेन की नदियों के पास बड़े-बड़े काम मन में ठाने गए। १९ तू चरबाहों का सीटी बजाना सुनने को भेंडशालाओं के बीच क्यों बैठा रहा? स्बेन की नदियों के पास बड़े-बड़े काम सोचे गए। २० गिलाद यरदन पार रह गया; और दान क्यों जहाँजों में रह गया? अबोर समुद्र तट पर बैठा रहा, और उसकी खाड़ियों के पास रह गया। २१ जब्लून अपने धरण पर खेलनेवाले लोग ठहरे; नसाली भी देश के ऊँचे-ऊँचे स्थानों पर वैसा ही ठहरा। २२ “राजा आकर लड़, उस समय कनान के राजा मगिदो के सोतों के पास तानाक में लड़े; पर स्पौदों का कुछ लाभ न पाया। २३ आकाश की ओर से भी लडाई हुई, वरन् तारों ने अपने-आपने मण्डल से सीसरा से लडाई की। २४ कीशोन नदी ने उनको बहा दिया, अर्थात् वही प्राचीन नदी जो कीशोन नदी है। हे मन, हियाव बँधे आगे बढ़। २५ “उस समय थोड़े के खरों से टाप का शब्द होने लगा, उनके बलिष्ठ घोड़ों के कूदने से यह हुआ। २६ “यहोवा का दूत कहता है, कि मेरोज को शाप दो, उसके निवासियों को भारी शाप दो, क्योंकि वे यहोवा की सहायता करने को, शरीरों के विद्धु यहोवा की सहायता करने को न आए। २७ “सब छियों में से केनी हेबेर की छीं याएल धन्य ठहरेगी। २८ सीसरा ने पानी मांगा, उसने दूध दिया, इसीं के योग बर्तन में वह मक्खन ले आई। २९ उसने अपना हाथ खूँटी की ओर, अपना दाहिना हाथ बढ़ाई के हथौड़े की ओर बढ़ाया; और हथौड़े से सीसरा को मारा, उसके सिर को फोड़ डाला, और उसकी कनपटी को आर-पार छेद दिया। ३० उस छीं के पाँवों पर वह झुका, वह गिरा, वह पड़ा रहा; उस छीं के पाँवों पर वह झुका, वह गिरा; जहाँ झुका, वही मरा पड़ा रहा। ३१ “खिंडकी में से एक छीं झाँककर चिल्लाई, सीसरा की माता ने डिलमिली की ओट से पुकारा, ‘उसके रथ के आने में इतनी देर क्यों लगी?’ उसके रथों के पहियों को देर क्यों हुई है?’ ३२ उसकी बुद्धिमान प्रतिष्ठित छियों ने उसे उत्तर दिया, वरन् उसने अपने आपको इस प्रकार उत्तर दिया, ३३ “क्या उन्होंने लट पाकर बँट नहीं ली? क्या एक-एक पुस्त को एक-एक वरन् दो-दो कुँवारियाँ; और सीसरा को रंगिले वन्ध की लट, वरन् बटे काढ़े हुए रंगीले वन्ध की लट, और लटे हुओं के गले में दोनों ओर बूटे काढ़े हुए रंगीले वन्ध

नहीं मिले?” ३१ “हे यहोवा, “तेरे सब शत्रु ऐसे ही नाश हो जाएँ। परन्तु उसके प्रेमी लोग प्रताप के साथ उदय होते हुए सर्व के समान तेजोमय हों।” फिर देश में चालीस वर्ष तक शान्ति रही।

६ तब इसाएलियों ने यहोवा की दृष्टि में दूरा किया, इसलिए यहोवा ने उन्हें

मिधानियों के वश में सात वर्ष कर रखा। ७ और मिधानी इसाएलियों पर प्रबल हो गए। मिधानियों के डर के मारे इसाएलियों ने पहाड़ों के गहरे खड़ों, और गुफाओं, और किलों को अपने निवास बना लिए। ८ और जब जब इसाएली बीज बोते तब-तब मिधानी और अमालेकी और पर्वीं लोग उनके विस्तु चढ़ाई करके ९ गाजा तक छावनी डाल डालकर भूमि की उपज नाश कर डालते थे, और इसाएलियों के लिये न तो कुछ भोजनवस्तु, और न भेड़-बकरी, और न गाय-बैल, और न गदहा छोड़ते थे। १० क्योंकि वे अपने पशुओं और डेरों को लिए हुए चढ़ाई करते, और रिहियों के दल के समान बहुत आते थे; और उनके ऊँट भी अनगिनत होते थे; और वे देश को उजाड़ने के लिये उसमें आया करते थे। ११ और मिधानियों के कारण इसाएली बड़ी दुर्दशा में पड़ गए; तब इसाएलियों ने योहोवा की दुहाई दी। १२ जब इसाएलियों ने मिधानियों के कारण यहोवा की दुहाई दी, १३ तब यहोवा ने इसाएलियों के पास एक नवी को भेजा, जिसने उससे कहा, “इसाएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है: मैं तुम को मिस्त्र में से ले आया, और दासत्व के घर से निकाल ले आया; १४ और मैंने तुम को मिथियों के हाथ से, बरन् जितने तुम पर अधेर करते थे उन सभी के हाथ से छुड़ाया, और उनको तुम्हारे सामने से बरबस निकालकर उनका देश तुम्हें दे दिया; १५ और मैंने तुम से कहा, ‘मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, एमेरी लोग जिनके देश में तुम रहते हो उनके देवताओं का भय न मानना।’ परन्तु तुम ने मेरा कहना नहीं माना।” १६ फिर यहोवा का दूर आकर उस बांज वृक्ष के तले बैठ गया, जो ओप्रा में अबीएजेरी योआश का था, और उसका पुत्र गिदेन एक दाखरस के कुण्ड में गेहूँ इसलिए झाड़ रहा था कि उसे मिधानियों से छिपा रखे। १७ उसको यहोवा के दूर ने दर्शन देकर कहा, “हे शर्वीर सूरमा, यहोवा तेरे संग है।” १८ गिदेन ने उससे कहा, “हे मेरे प्रभु, विनती सुन, यदि यहोवा हमारे संग होता, तो हम पर यह सब विपत्ति क्यों पड़ती? और जितने आश्वर्यकर्मों का वर्णन हमारे पुरुखा यह कहकर करते थे, ‘क्या यहोवा हमको मिस्त्र से छुड़ा नहीं लाया,’ वे कहाँ रहे? अब तो यहोवा ने हमको त्याग दिया, और मिधानियों के हाथ कर दिया है।” १९ तब यहोवा ने उस पर दृष्टि करके कहा, “अपनी इसी शक्ति पर जा और त इसाएलियों को मिधानियों के हाथ से छुड़ाएगा; क्या मैंने तुझे नहीं भेजा?” २० उसने कहा, “हे मेरे प्रभु, विनती सुन, मैं इसाएल को कैसे छुड़ाऊँ? देख, मेरा कुल मनश्चे में सबसे कंगल है, फिर मैं अपने पिता के घराने में सबसे छोटा हूँ।” २१ यहोवा ने उससे कहा, “निश्चय मैं तेरे संग रहूँगा; सो तू मिधानियों को ऐसा मार लेगा जैसा एक मनुष्य को।” २२ गिदेन ने उससे कहा, “यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो मुझे इसका कोई चिन्ह दिखा कि तू ही मुझसे बातें कर रहा है।” २३ तब जब तक मैं तेरे पास फिर आकर अपनी भेट निकालकर तेरे सामने न रखूँ, तब तक तू यहाँ से न जा।” उसने कहा, “मैं तेरे लौटने तक ठहरा रहूँगा।” २४ तब गिदेन ने जाकर बकरी का एक बच्चा और एक एपा मैटे की अखमीरी रोटियाँ तैयार कीं; तब माँस को टोकरी में, और रसा को तसले में रखकर बांज वृक्ष के तले उसके पास ले जाकर दिया। २५ परमेश्वर के दूर ने उससे कहा, “माँस और अखमीरी रोटियों को लेकर इस चट्टान पर रख दे, और रसा को उण्डेल दे।” उसने ऐसा ही किया। २६ तब यहोवा के दूर ने अपने हाथ की लाठी को बढ़ाकर माँस और अखमीरी रोटियों को छुआ; और चट्टान से आग निकली

जिससे माँस और अखमीरी रोटियाँ भस्म हो गईं; तब यहोवा का दूर उसकी दृष्टि से ओझाल हो गया। २७ जब गिदेन ने जान लिया कि वह यहोवा का दूर था, तब गिदेन कहने लगा, “हाय, प्रभु यहोवा! मैंने तो यहोवा के दूर को साक्षात देखा है।” २८ यहोवा ने उससे कहा, “तुझे शान्ति मिलें; मत डर, तू न मरेगा।” २९ तब गिदेन ने वहाँ यहोवा की एक वेदी बनाकर उसका नाम, ‘यहोवा शालोम रखा।’ वह आज के दिन तक अबीएजेरीयों के ओप्रा में बनी है। ३० फिर उर्ती रात को यहोवा ने गिदेन से कहा, “अपने पिता का जवान बैल, अर्थात् दूसरा सात वर्ष का बैल ले, और बाल की जो वेदी तेरे पिता की है उसे गिरा दे, और जो अशेरा देवी उसके पास है उसे काट डाल।” ३१ और उस दृढ़ स्थान की चोटी पर ठहराइ हुई रीति से अपने परमेश्वर यहोवा की एक वेदी बना; तब उस दूसरे बैल को ले, और उस अशेरा की लकड़ी जो तू काट डालेगा जलाकर होमबलि चढ़ा।” ३२ तब गिदेन ने अपने संग दस दासों को लेकर यहोवा के वचन के अनुसार किया; परन्तु अपने पिता के घराने और नगर के लोगों के डर के मारे वह काम दिन को न कर सका, इसलिए रात में किया। ३३ नगर के लोग संसरे उठकर क्या देखते हैं, कि बाल की वेदी गिरी पड़ी है, और उसके पास की अशेरा कटी पड़ी है, और दूसरा बैल बनाइ हुई वेदी पर चढ़ाया हुआ है। ३४ तब वे आपस में कहने लगे, “यह काम किसने किया?” और पूछपाल और ढूँ-ढाँ ढूँ करके वे कहने लगे, “यह योआश के पुत्र गिदेन का काम है।” ३५ तब नगर के मनुष्यों ने योआश से कहा, “अपने पुत्र को बाहर ले आ, कि मार डाला जाए, क्योंकि उसने बाल की वेदी को गिरा दिया है, और उसके पास की अशेरा की भी काट डाला है।” ३६ योआश ने उन सभी से जो उसके सामने खड़े हुए थे कहा, “क्या तुम बाल के लिये बाद विवाद करोगे? क्या तुम उसे बचाओगे? जो कोई उसके लिये बाद विवाद करे वह मार डाला जाएगा। संसरे तक ठहरे रहो; तब तक यदि वह परमेश्वर हो, तो जिसने उसकी वेदी गिराई है उससे वह आप ही अपना बाद विवाद करो।” ३७ इसलिए उस दिन गिदेन का नाम यह कहकर यस्त्वाल रखा गया, कि इसने जो बाल की वेदी गिराई है तो इस पर बाल आप बाद विवाद कर ले। ३८ इसके बाद सब मिधानी और अमालेकी और पर्वीं इकट्ठे हुए, और पार आकर जिञ्जेल की तराई में डैरे डाले। ३९ तब यहोवा का आत्मा गिदेन में समाया; और उसने नरसिंगा ढूँका, तब अबीएजेरी उसकी सुनने के लिये इकट्ठे हुए। ४० फिर उसने समस्त मनश्चे के पास अपने दूर भेजे; और वे भी उसके समीप इकट्ठे हुए। और उसने आशेर, जबलून, और नसाली के पास भी दूर भेजे; तब वे भी उससे मिलने को चले आए। ४१ तब गिदेन ने परमेश्वर से कहा, “यदि तू अपने वचन के अनुसार इसाएल को मेरे द्वारा छुड़ाएगा।” ४२ और ऐसा ही हुआ। इसलिए जब उसने संसरे उठकर उस ऊन को ढाबाकर उसमें से ओपस निचोड़ी, तब एक कटोरा भर गया। ४३ फिर गिदेन ने परमेश्वर से कहा, “यदि मैं एक बार फिर कहूँ, तो तेरा क्रोध मुझ पर न भड़के, मैं इस ऊन से एक बार और भी तेरी परीक्षा करूँ, अर्थात् केवल ऊन ही सुखी रहे, और सारी भूमि पर ओपस पड़े।” ४४ उस रात को परमेश्वर ने ऐसा ही किया; अर्थात् केवल ऊन ही सुखी रह गई, और सारी भूमि पर ओपस पड़ी।

७ तब गिदेन जो यस्त्वाल भी कहलाता है और सब लोग जो उसके संग

थे संसरे उठे, और होरोद नामक संसे के पास अपने डेरे खड़े किए; और मिधानियों की छावनी उनके उत्तरी ओर मौरे नामक पहाड़ी के पास तराई पड़ी।

पड़ी थी। २ तब यहोवा ने गिदोन से कहा, “जो लोग तेरे संग हैं वे इतने हैं कि मैं मिथानियों को उनके हाथ नहीं कर सकता, नहीं तो इसाएल यह कहकर मेरे विस्फुल अपनी बड़ाई मरने लगेंगे, कि हम अपने ही भजबल के द्वारा बचे हैं।” ३ इसलिए तू जाकर लोगों में यह प्रचार करके सुना दे, ‘‘जो कोई डर के मारे थरथराता हो, वह गिलाद पहाड़ से लौटकर चला जाए।’’ ४ तब बाईंस हजार लोग लौट गए, और केवल दस हजार रह गए। ५ फिर यहोवा ने गिदोन से कहा, “अब भी लोग अधिक हैं; उन्हें सोते के पास नीचे ले चल, वहाँ मैं उन्हें तेरे लिये परखूँगा; और जिस जिसके विषय में मैं तुझ से कहूँ, ‘‘यह तेरे संग चले,’’ वह तो तेरे संग चले; और जिस जिसके विषय में मैं कहूँ, ‘‘यह तेरे संग न जाए,’’ वह न जाए।” ६ तब वह उनको सोते के पास नीचे ले गया; वहाँ यहोवा ने गिदोन से कहा, “जितने कुत्ते की समान जीभ से पानी चपड़-चपड़ करके पींगे उनको अलग रख; और वैसा ही उन्हें भी जो घुटने टेककर पींगे।” ७ जिहोने मुँह में हाथ लगाकर चपड़-चपड़ करके पानी पिया उनकी तो गिनती तीन सौ ठहरी; और बाकी सब लोगों ने घुटने टेककर पानी पिया। ८ तब यहोवा ने गिदोन से कहा, “इन तीन सौ चपड़-चपड़ करके पीनेवालों के द्वारा मैं तुम को छुड़ाऊँगा, और मिथानियों को तेरे हाथ में कर दूँगा; और अन्य लोग अपने-अपने स्थान को लौट जाए।” ९ तब उन तीन सौ लोगों ने अपने साथ भोजन सामग्री ली और अपने-अपने नारसंगे लिए; और उसने इसाएल के अन्य सब पुस्तों को अपने-अपने डेरे की ओर भेज दिया, परन्तु उन तीन सौ पुस्तों को अपने पास रख छोड़ा; और मिथान की छावनी उसके नीचे तराई में पड़ी थी। १० उसी रात को यहोवा ने उससे कहा, “उठ, छावनी पर चढ़ाई कर; क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ कर देता हूँ।” ११ परन्तु यदि तु चढ़ाई करते डरता हो, तो अपने सेवक फूरा को संग लेकर छावनी के पास जाकर सुन, १२ कि वे क्या कह रहे हैं; उसके बाद तझे उस छावनी पर चढ़ाई करने का हियाव होगा।” तब वह अपने सेवक फूरा को संग ले उन हथियार-बन्दों के पास जो छावनी के छोर पर थे उत्तर गया। १३ मिथानी और अमालेकी और सब पूर्णी लोग तो टिड़ियों के समान बहुत से तराई में फैले पड़े थे, और उनके ऊंट समुद्र तट के रेतकणों के समान गिनती से बाहर थे। १४ जब गिदोन वहाँ आया, तब एक जन अपने किसी संगी को अपना स्वप्न बता रहा था, “सुन, मैंने स्वप्न में क्या देखा है कि जौ की एक रोटी लुढ़कते-लुढ़कते मिथान की छावनी में आई, और डेरे को ऐसी टक्कर मारी कि वह गिर गया, और उसको ऐसा उलट दिया, कि डेरा गिरा पड़ा रहा।” १५ उसके संगी ने उत्तर दिया, “यह योआश के पुत्र गिदोन नामक एक इसाएली पुस्त की तलवार को छोड़ कुछ नहीं है; उसी के हाथ में परमेश्वर ने मिथान को सारी छावनी समेत कर दिया है।” १६ उस स्वप्न का वर्णन और फल सुनकर गिदोन ने दण्डवत् किया; और इसाएल की छावनी में लौटकर कहा, “उठो, यहोवा ने मिथानी सेना को तुम्हारे वश में कर दिया है।” १७ तब उसने उन तीन सौ पुस्तों के तीन झण्ड किए, और एक-एक पुस्त के हाथ में एक नरसिंगा और खाली घड़ा दिया, और घड़ों के भीतर एक मशाल थी। १८ फिर उसने उससे कहा, “मुझे देखो, और वैसा ही करो; सुनो, जब मैं उस छावनी की छोर पर पहुँचूँ, तब जैसा मैं कहूँ वैसा ही तुम भी करना।” १९ अर्थात् जब मैं और मैं सब संगी नरसिंगा फूँकें तब तुम भी छावनी के चारों ओर नरसिंगे फूँकना, और ललकासना, ‘‘यहोवा की ओर गिदोन की तलवार।’’ २० बीचाले पहर के आरम्भ में जैसे ही पहस्तों की बदली हो गई थी वैसे ही गिदोन अपने संग के सौ पुस्तों समेत छावनी के छोर पर गया; और नरसिंग को फूँक दिया और अपने हाथ के घड़ों को तोड़ डाला। २१ तब नीनों झण्डों ने नरसिंगों को झँका और घड़ों को तोड़ डाला; और अपने-अपने बाँह हाथ में मशाल और दाहिने हाथ में फूँकने को नरसिंग लिए हुए चिल्ला उठे,

‘‘यहोवा की तलवार और गिदोन की तलवार।’’ २२ तब वे छावनी के चारों ओर अपने-अपने स्थान पर खड़े रहे, और सब सेना के लोग दौड़ने लगे; और उन्होंने चिल्ला चिल्लाकर उन्हें भगा दिया। २३ और उन्होंने तीन सौ नरसिंगों को फूँका, और यहोवा ने एक-एक पुस्त की तलवार उसके सर्गी पर और सब सेना पर चलवाई; तो सेना के लोग सरेरा की ओर बेताशिता तक और तब्बात के पास के आबेल-महाला तक भाग गए। २४ तब इसाएली पुस्त नसाली और अशेर और मनशेश के सारे देश से इकट्ठे होकर मिथानियों के पीछे पड़े। २५ और गिदोन ने एप्रैम के सब पहाड़ी देश में यह कहने को दृढ़ भेज दिए, “मिथानियों से मुठभेड़ करने को चले आओ, और यरदन नदी के घाटों को बेतारा तक उससे पहले अपने वश में कर लो।” तब सब ऐप्रैमी पुस्तों ने इकट्ठे होकर यरदन नदी को बेतारा तक अपने वश में कर लिया। २६ और उन्होंने ओरेब और जेब नाम मिथान के दो हाकिमों को पकड़ा; और ओरेब को ओरेब नामक चट्टान पर, और जेब को जेब नामक दाखरस के कुण्ड पर धात किया; और वे मिथानियों के पीछे पड़े; और ओरेब और जेब के सिर यरदन के पार गिदोन के पास ले गए।

८ तब ऐप्रैमी पुस्तों ने गिदोन से कहा, “तूने हमारे साथ ऐसा बर्ताव क्यों किया है, कि जब तू मिथान से लड़ने को चला तब हमको नहीं बुलवाया?” अतः उन्होंने उससे बड़ा झगड़ा किया। ९ उसने उससे कहा, “मैंने तुम्हारे समान भला अब किया ही क्या है? क्या ऐप्रैम की छोड़ी हुई दाख भी अबीै-जेर की सब फसल से अच्छी नहीं है? १० तुम्हारे ही हाथों में परमेश्वर ने ओरेब और जेब नामक मिथान के हाकिमों को कर दिया; तब तुम्हारे बराबर मैं कर ही क्या सका?” जब उसने यह बात कही, तब उनका जी उसकी ओर से ठंडा हो गया। ११ तब गिदोन और उसके संग तीन सौ पुस्त, जो थके-मैंदे थे तो भी खदेड़ते ही रहे थे, यरदन के किनारे आकर पार हो गए। १२ तब उसने सुककोत के लोगों से कहा, “मेरे पीछे इन आनेवालों को रोटीयाँ दो, क्योंकि ये थके-मैंदे हैं; और मैं मिथान के जेबह और सल्मना नामक राजाओं का पीछा कर रहा हूँ।” १३ सुककोत के हाकिमों ने उत्तर दिया, “क्या जेबह और सल्मना तेरे हाथ में पड़ चुके हैं, कि हम तेरी सेना को रोटी दें?” १४ गिदोन ने कहा, “जब यहोवा जेबह और सल्मना को मेरे हाथ में कर देगा, तब मैं इस बात के कारण तुम को जंगल के कटीले और बिच्छु पेड़ों से नुचालूँगा।” १५ वहाँ से वह पनौल को गया, और वहाँ के लोगों से ऐसी ही बात कही; और पनौल के लोगों ने सुककोत के लोगों का सा उत्तर दिया। १६ उसने पनौल के लोगों से कहा, “जब मैं कुशल से लौट आऊँगा, तब इस गुम्ट को ढा दूँगा।” १७ जेबह और सल्मना तो कर्करे मैं थे, और उनके साथ कोई पन्द्रह हजार पुस्तों की सेना थी, क्योंकि पर्वियों की सारी सेना मैं से उतने ही रह गए थे; और जो मारे गए थे वे एक लाख बीस हजार हथियार-बन्द थे। १८ तब गिदोन ने नोबह और योगबहा के पूर्व की ओर डेरों में रहेनेवालों के मार्ग में चढ़कर उस सेना को जो निडर पड़ी थी मार लिया। १९ और जब जेबह और सल्मना भागे, तब उसने उनका पीछा करके मिथानियों के उन दोनों राजाओं अर्थात् जेबह और सल्मना को पकड़ लिया, और सारी सेना को भगा दिया। २० और योआश का पुत्र गिदोन हैरेस नामक चढ़ाई पर से लड़ाई से लौटा। २१ और सुककोत के एक जवान पुस्त को पकड़कर उससे पूछा, और उसने सुककोत के सतहतों हाकिमों और बद्दु लोगों के पते लिखवाए। २२ तब वह सुककोत के मनुष्यों के पास जाकर कहने लगा, “जेबह और सल्मना को देखो, जिनके विषय में यह कहकर मुझे चिढ़ाया था, कि क्या जेबह और सल्मना अभी तेरे हाथ में हैं, कि हम तेरे थके-मैंदे जनों को रोटी दें?” २३ तब उसने उस नगर के बद्दु लोगों को पकड़ा, और जंगल के कटीले और बिच्छु पेड़ लेकर सुककोत के

पुस्तकों को कुछ सिखाया। १७ और उसने पन्नूल के गुम्मट को ढां दिया, और उस नगर के मनुष्यों को घात किया। १८ फिर उसने जेबह और सल्लून्हुना से पछां, “जो मनुष्य तुम ने ताबोर पर घात किए थे वे कैसे थे?” उन्होंने उत्तर दिया, “जैसा तू वैसे ही वे भी थे, अर्थात् एक-एक का स्पूर राजकुमार का सा था।” १९ उसने कहा, “वे तो मेरे भाई, बरन मेरे सहोदर भाई थे; यहोवा के जीवन की शपथ, यदि तुम ने उनको जीवित छोड़ा होता, तो मैं तुम को घात न करता।” २० तब उसने अपने जेठे पुत्र यतेरे से कहा, “उठकर इन्हें घात कर।” परन्तु जवान ने अपनी तलवार न खीची, क्योंकि वह उस समय तक लड़का ही था, इसलिए वह डर गया। २१ तब जेबह और सल्लून्हुना ने कहा, “तू उठकर हम पर प्रहार कर; क्योंकि जैसा पुस्त हो, वैसा ही उसका पौस्त भी होगा।” तब गिदेन ने उठकर जेबह और सल्लून्हुना को घात किया; और उनके ऊँटों के गलों के चन्द्रहरों को ले लिया। २२ तब इसाएल के पुस्तों ने गिदेन से कहा, “तू हमारे ऊपर प्रभुता कर, तू और तेरा पुत्र और पोता भी प्रभुता करें; क्योंकि तूने हमको मिधान के हाथ से छुड़ाया है।” २३ गिदेन ने उनसे कहा, “मैं तुम्हारे ऊपर प्रभुता न करूँगा, और न मेरा पुत्र तुम्हारे ऊपर प्रभुता करेगा; यहोवा ही तुम पर प्रभुता करेगा।” २४ फिर गिदेन ने उनसे कहा, “मैं तुम से कुछ माँगता हूँ, अर्थात् तुम मुझ को अपनी-अपनी लूट में की बालियाँ दो। (वे तो इस्माएली थे, इस कारण उनकी बालियाँ सोने की थी।)” २५ उन्होंने कहा, “निकट्य हम देंगे।” तब उन्होंने कपड़ा बिछाकर उसमें अपनी-अपनी लूट में से निकालकर बालियाँ डाल दी। २६ जो सोने की बालियाँ उसने माँग ली उनका तौल एक हजार सात सौ शेकेल हुआ; और उनको छोड़ चन्द्रहर, झुपके, और बैगीनी रंग के बब्ज़ जो मिधानियों के राजा पहने थे, और उनके ऊँटों के गलों की जंजीर। २७ उनका गिदेन ने एक एपोद बनवाकर अपने ओप्रा नामक नगर में रखा; और सारा इसाएल वहाँ व्यभिचारिणी के समान उसके पीछे हो लिया, और वह गिदेन और उसके घराने के लिये फंदा ठहरा। २८ इस प्रकार मिधान इसाएलियों से दब गया, और फिर सिर न उठाया। और गिदेन के जीवन भर अर्थात् चालीस वर्ष तक देश चैन से रहा। २९ योआश का पुत्र यस्त्वाल जाकर अपने घर में रहने लगा। ३० और गिदेन के सतर बेटे उत्पन्न हुए, क्योंकि उसकी बहुत छियाँ थीं। ३१ और उसकी जो एक रखैल शेकेम में रहती थी उसको एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और गिदेन ने उसका नाम अबीमेलेक रखा। ३२ योआश का पुत्र गिदेन पूरे बुढ़ापे में मर गया, और अबीजेत्रियों के ओप्रा नामक गाँव में उसके पिता योआश की कब्रि में उसको मिट्टी दी गई। ३३ गिदेन के मरते ही इसाएली फिर गए, और व्यभिचारिणी के समान बाल देवताओं के पीछे हो लिए, और बाल-बरीत को अपना देवता मान लिया। ३४ और इसाएलियों ने अपने परमेश्वर यहोवा को, जिसने उनको चारों ओर के सब शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया था, स्मरण न रखा; ३५ और न उन्होंने यस्त्वाल अर्थात् गिदेन की उस सारी भलाई के अनुसार जो उसने इसाएलियों के साथ की थी उसके घराने को प्रति दिखाई।

९ यस्त्वाल का पुत्र अबीमेलेक शेकेम को अपने मामाओं के पास जाकर उसे और अपने नाना के सब घराने से यह कहने लगा, १ “शेकेम के सब मनुष्यों से यह पूछो, ‘तुम्हारे लिये क्या भला है? क्या यह कि यस्त्वाल के सतर पुत्र तुम पर प्रभुता करे?’ या कि एक ही पुस्त तुम पर प्रभुता करे? और यह भी स्मरण रखो कि मैं तुम्हारा हाड़ मौस हूँ।” २ तब उसके मामाओं ने शेकेम के सब मनुष्यों से ऐसी ही बातें कहीं; और उन्होंने यह सोचकर कि अबीमेलेक तो हमारा भाई है अपना मन उसके पीछे लगा दिया। ३ तब उन्होंने बाल-बरीत के मन्दिर में से सतर टुकड़े रूपे उसको दिए, और उन्हें लगाकर

अबीमेलेक ने नीच और लुच्चे जन रख लिए, जो उसके पीछे हो लिए। ५ तब उसने ओप्रा में अपने पिता के घर जा के अपने भाइयों को जो यस्त्वाल के सतर पुत्र थे एक ही पथर पर घात किया; परन्तु यस्त्वाल का योताम नामक लहरा पुत्र छिपकर बच गया। ६ तब शेकेम के सब मनुष्यों और बेटमिल्लों के सब लोगों ने इकट्ठे होकर शेकेम के खम्भे के पासवाले बांज वृक्ष के पास अबीमेलेक को राजा बनाया। ७ इसका समाचार सुनकर योताम गिरिज्जीम पहाड़ की चोटी पर जाकर खड़ा हुआ, और ऊँचे स्वर से पुकारके कहने लगा, “हे शेकेम के मनुष्यों, मेरी सुनो, इसलिए कि परमेश्वर तुम्हारी सुने। ८ किंतु युग में वृक्ष किसी का अधिष्ठेक करके अपने ऊपर राजा ठहराने को चले; तब उन्होंने जैतून के वृक्ष से कहा, ‘तू हम पर राज्य कर।’ ९ तब जैतून के वृक्ष ने कहा, ‘क्या मैं अपनी उस चिकनाहट को छोड़कर, जिससे लोग परमेश्वर और मनुष्य दोनों का आदरमान करते हैं, वृक्षों का अधिकारी होकर इधर-उधर डोलने को चलूँ?’ १० तब वृक्षों ने अंजीर के वृक्ष से कहा, ‘तू आकर हम पर राज्य कर।’ ११ अंजीर के वृक्ष ने उनसे कहा, ‘क्या मैं अपने मठिपन और अपने अच्छे-अच्छे फलों को छोड़ वृक्षों का अधिकारी होकर इधर-उधर डोलने को चलूँ?’ १२ फिर वृक्षों ने दाखलता से कहा, ‘तू आकर हम पर राज्य कर।’ १३ दाखलता ने उनसे कहा, ‘क्या मैं अपने नये मध्य को छोड़, जिससे परमेश्वर और मनुष्य दोनों को आनन्द होता है, वृक्षों की अधिकारिणी होकर इधर-उधर डोलने को चलूँ?’ १४ तब सब वृक्षों ने झाड़बेरी से कहा, ‘तू आकर हम पर राज्य कर।’ १५ झाड़बेरी ने उन वृक्षों से कहा, ‘यदि तुम अपने ऊपर राजा होने को मेरा अधिष्ठेक सच्चाई से करते हो, तो आकर मेरी छाया में शरण लो; और नहीं तो, झाड़बेरी से आग निकलेगी जिससे लबानों के देवदार भी भस्म हो जाएँगे।’ १६ “इसलिए अब यदि तुम ने सच्चाई और खराई से अबीमेलेक को राजा बनाया है, और यस्त्वाल और उसके घराने से भलाई की, और उससे उसके काम के योग्य बर्ताव किया हो, तो भला। १७ (मेरा पिता तो तुम्हारे निमित लड़ा, और अपने प्राण पर खेलकर तुम को मिधानियों के हाथ से छुड़ाया; १८ परन्तु तुम ने आज मेरे पिता के घराने के विस्तु उठकर बलवा किया, और उसके सतर पुत्र एक ही पथर पर घात किया, और उसकी रखैल के पुत्र अबीमेलेक को इसलिए शेकेम के मनुष्यों के ऊपर राजा बनाया है कि वह तुम्हारा भाई है); १९ इसलिए यदि तुम लोगों ने आज के दिन यस्त्वाल और उसके घराने से सच्चाई और खराई से बर्ताव किया हो, तो अबीमेलेक के कारण आनन्द करो, और वह भी तुम्हारे कारण आनन्द करो; २० और नहीं, तो अबीमेलेक से ऐसी आग निकले जिससे शेकेम के मनुष्य और बेटमिल्लों भस्म हो जाएँ; २१ और शेकेम के मनुष्यों और बेटमिल्लों से ऐसी आग निकले जिससे अबीमेलेक भस्म हो जाए।” २२ तब योताम भागा, और अपने भाई अबीमेलेक के डंके के मारे बेर को जाकर वही रहने लगा। २३ अबीमेलेक इसाएल के ऊपर तीन वर्ष हाकिम रहा। २४ तब परमेश्वर ने अबीमेलेक और शेकेम के मनुष्यों के बीच एक बुरी आत्मा भेज दी; सो शेकेम के मनुष्य अबीमेलेक से विश्वासघात करने लगे; २५ जिससे यस्त्वाल के सतर पुत्रों पर किए हुए उपद्रव का फल भोगा जाए, और उनका खून उनके घात करनेवाले उनके भाई अबीमेलेक के सिर पर, और उसके अपने भाइयों के घात करने में उसकी सहायता करनेवाले शेकेम के मनुष्यों के सिर पर भी हो। २६ तब शेकेम के मनुष्यों ने वहाँडों की चोटियों पर उसके लिये घातकों को बैठाया, जो उस मार्ग से सब अपने जानेवालों को लूटे थे; और इसका समाचार अबीमेलेक को मिला। २७ तब एबेद का पुत्र गाल अपने भाइयों समेत शेकेम में आया; और शेकेम के मनुष्यों ने उसका भरोसा किया। २८ और उन्होंने मैदान में जाकर अपनी-अपनी दाख की बारियों के फल तोड़े

और उनका रस रौंदा, और स्तुति का बलिदान कर अपने देवता के मन्दिर में जाकर खाने-पीने और अबीमिलेक को कोसने लगे। २८ तब एवेद के पुत्र गाल ने कहा, “अबीमिलेक कौन है? शेकेम कौन है कि हम उसके अधीन हैं? क्या वह यस्त्वाल का पुत्र नहीं? क्या जबूल उसका सेनानायक नहीं? शेकेम के पिता हमारे के लोगों के तो अधीन हो, परन्तु हम उसके अधीन क्यों रहें? ३१ और यह प्रजा मेरे वश में होती तो क्या ही भला होता! तब तो मैं अबीमिलेक को दूर करता।” फिर उसने अबीमिलेक से कहा, “अपनी सेना की गिनती बढ़ाकर निकल आ।” ३० एवेद के पुत्र गाल की ओर बातें सुनकर नगर के हाकिम जबूल का क्रौंच भड़क उठा। ३१ और उसने अबीमिलेक के पास छिपके दूरों से कहला भेजा, “एवेद का पुत्र गाल और उसके भाई शेकेम में आ के नगरवालों को तेरा विरोध करने को भड़का रहे हैं।” ३२ इसलिए तू अपने संगवालों समेत रात को उठकर मैदान में घाट लगा। ३३ और सर्वेर सूर्य के निकलते ही उठकर इस नगर पर चढ़ाई करना; और जब वह अपने संगवालों समेत तेरा सामना करने को निकलते तब जो तुझ से बन पड़े वही उससे करना।” ३४ तब अबीमिलेक और उसके संग के सब लोग रात को उठ चार दल बाँधकर शेकेम के विस्तृ घाट में बैठ गए। ३५ और एवेद का पुत्र गाल बाहर जाकर नगर के फाटक में खड़ा हुआ; तब अबीमिलेक और उसके संगी घाट छोड़कर उठ खड़े हुए। ३६ उन लोगों को देखकर गाल जबूल से कहने लगा, “देख, पहाड़ों की चोटियों पर से लोग उतरे आते हैं।” जबूल ने उससे कहा, “वह तो पहाड़ों की छाया है जो तुझे मनुष्यों के समान दिखाई देती है।” ३७ गाल ने फिर कहा, “देख, लोग देश के बीचों बीच होकर उत्तर आते हैं, और एक दल मोनीरीम नामक बांज वृक्ष के मार्ग से चला आता है।” ३८ जबूल ने उससे कहा, “तेरी यह बात कहाँ ही, कि अबीमिलेक कौन है कि हम उसके अधीन हैं? ये तो वे ही लोग हैं जिनको तो निकम्मा जाना था; इसलिए अब निकलकर उनसे लड़।” ३९ तब गाल शेकेम के पुस्त्रों का अगुआ हो बाहर निकलकर अबीमिलेक से लड़ा। ४० और अबीमिलेक ने उसको खेड़ा, और वह अबीमिलेक के सामने से भागा; और नगर के फाटक तक पहुँचते-पहुँचते बहुत से घायल होकर गिर पड़े। ४१ तब अबीमिलेक अस्मा में रहने लगा; और जबूल ने गाल और उसके भाइयों को निकाल दिया, और शेकेम में रहने न दिया। ४२ दूसरे दिन लोग मैदान में निकल गए; और यह अबीमिलेक को बताया गया। ४३ और उसने अपनी सेना के तीन दल बाँधकर मैदान में घाट लगाई; और जब देखा कि लोग नगर से निकले आते हैं तब उन पर चढ़ाई करके उन्हें मार लिया। ४४ अबीमिलेक अपने संग के दलों समेत अगे टौड़कर नगर के फाटक पर खड़ा हो गया, और दो दलों ने उन सब लोगों पर धावा करके जो मैदान में थे उन्हें मार डाला। ४५ उसी दिन अबीमिलेक ने नगर से दिन भर लड़कर उसको ले लिया, और उसके लोगों को घाट करके नगर को ढा दिया, और उस पर नमक छिड़कवा दिया। ४६ यह सुनकर शेकेम के गुम्मट के सब रहनेवाले एल्टबरीत के मन्दिर के गढ़ में जा सुने। ४७ जब अबीमिलेक को यह समाचार मिला कि शेकेम के गुम्मट के सब प्रधान लोग इक्के हुए हैं, ४८ तब वह अपने सब संगियों समेत सल्मोन नामक पहाड़ पर चढ़ गया; और हाथ में कुल्हाड़ी ले पेड़ों में से एक डाली काटी, और उसे उठाकर अपने कंधे पर रख ली। और अपने संगवालों से कहा, “जैसा तुम ने मुझे करते देखा वैसा ही तुम भी झटपट करो।” ४९ तब उन सब लोगों ने भी एक-एक डाली काट ली, और अबीमिलेक के पीछे हो उनको गढ़ पर डालकर गढ़ में आग लगाई; तब शेकेम के गुम्मट के सब भी पुस्त जो लगभग एक हजार थे मर गए। ५० तब अबीमिलेक ने तेबस को जाकर उसके सामने डेरे खड़े करके उसको ले लिया। ५१ परन्तु उस नगर के बीच एक दृढ़ गुम्मट था, इसलिए क्या भी क्या

पुस्त, नगर के सब लोग भागकर उसमें घुसे; और उसे बन्द करके गुम्मट की छत पर चढ़ गए। ५२ तब अबीमिलेक गुम्मट के निकट जाकर उसके विस्तृ लड़ने लगा, और गुम्मट के द्वार तक गया कि उसमें आग लगाए। ५३ तब किसी भी ने चक्की के ऊपर का पाट अबीमिलेक के सिर पर डाल दिया, और उसकी खोपड़ी फट गई। ५४ तब उसने झट अपने हथियारों के ढोनेवाले जवान को बुलाकर कहा, “अपनी तलवार खींचकर मुझे मार डाल, ऐसा न हो कि लोग मेरे विषय में कहने पाएँ, ‘उसको एक भी ने घाट किया।’” तब उसके जवान ने तलवार भोंक दी, और वह मर गया। ५५ यह देखकर कि अबीमिलेक मर गया है इस्माइली अपने-अपने स्थान को छले गए। ५६ इस प्रकार जो दृष्टि काम अबीमिलेक ने अपने सन्तर भाइयों को घाट करके अपने पिता के साथ किया था, उसको परमेश्वर ने उसके सिर पर लौटा दिया; ५७ और शेकेम के पुस्त्रों के भी सब दृष्टि काम परमेश्वर ने उनके सिर पर लौटा दिए, और यस्त्वाल के पुत्र योताम का शाप उन पर घट गया।

१० अबीमिलेक के बाद इस्माइल को छुड़ाने के लिये तोला नामक एक

इस्साकारी उठा, वह दोदो का पोता और पूरा का पुत्र था; और एंग्रैम के पहाड़ी देश के शारीर नगर में रहता था। ११ वह तेईस वर्ष तक इस्माइल का न्याय करता रहा। तब मर गया, और उसको शारीर में मिट्टी दी गई। १२ उसके बाद गिलादी याईर उठा, वह बाईस वर्ष तक इस्माइल का न्याय करता रहा। १३ और उसके तीस पुत्र थे जो गढ़हियों के तीस बच्चों पर सबर हुआ करते थे; और उनके तीस नगर भी थे जो गिलाद देश में हैं, और आज तक हज्बोत्याईर कहलाते हैं। १४ और याईर मर गया, और उसको कामोन में मिट्टी दी गई। १५ तब इस्माइलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, अर्थात् बाल देवताओं और अशतोरत देवियों और अराम, सीदोन, मोआब, अमोनियों, और पलिशियों के देवताओं की उपासना करने लगे; और यहोवा को त्याग दिया, और उसकी उपासना न की। १६ तब यहोवा का क्रोध इस्माइल पर भड़का, और उसने उन्हें पलिशियों और अमोनियों के अधीन कर दिया, १७ और उस वर्ष ये इस्माइलियों को सताते और पीसते रहे। वरन् यरदन पार एमोरियों के देश गिलाद में रहनेवाले सब इस्माइलियों पर अठारह वर्ष तक अंधेर करते रहे। १८ अमोनी यहदा और बिन्यामिन से और एंग्रैम के धरान से लड़ने को यदन पार जाते थे, यहाँ तक कि इस्माइल बड़े संकट में पड़ गया। १९ तब इस्माइलियों ने यह कहकर यहोवा की दृष्टि दी, “हमने जो अपने परमेश्वर को त्याग कर बाल देवताओं की उपासना की है, यह हमने तेरे विस्तृ महापाप किया है।” २० यहोवा ने इस्माइलियों से कहा, “क्या मैंने तुम को मिथियों, एमोरियों, अमोनियों, और पलिशियों के हाथ से न छुड़ाया था? २१ फिर जब सीदोनी, और अमालेकी, और माओनी लोगों ने तुम पर अंधेर किया; और तुम ने मेरी दृष्टि दी, तब मैंने तुम को उनके हाथ से भी न छुड़ाया? २२ तो भी तुम ने मुझे त्याग कर पराए देवताओं की उपासना की है; इसलिए मैं फिर तुम को न छुड़ाऊँगा। २३ जाओ, अपने माने हए देवताओं की दृष्टि दो; तुम्हरे संकट के समय वे ही तुम्हें छुड़ाएँ।” २४ इस्माइलियों ने यहोवा से कहा, “हमने पाप किया है, इसलिए जो कुछ तेरी दृष्टि में भला हो वही हम से कर; परन्तु अभी हमें छुड़ा।” २५ तब वे पराए देवताओं को अपने मध्य में से दूर करके यहोवा की उपासना करने लगे; और वह इस्माइलियों के कष्ठ के कारण खेदित हुआ। २६ तब अमोनियों ने इकट्ठे होकर गिलाद में अपने डेरे डाले; और इस्माइलियों ने भी इकट्ठे होकर मिस्पा में अपने डेरे डाले। २७ तब गिलाद के हाकिम एक दूसरे से कहने लगे, “कौन पुस्त अमोनियों से संग्राम आरम्भ करेगा? वही गिलाद के सब निवासियों का प्रधान ठहरेगा।”

१९ यिसह नामक गिलादी बड़ा शूर्वीर था, और वह वेश्या का बेटा था; और

गिलाद से यिसह उत्पन्न हुआ था। २ गिलाद की झीं के भी बेटे उत्पन्न हुए; और जब वे बड़े हो गए तब यिसह को यह कहकर निकाल दिया, “तू तो पराई झीं का बेटा है, इस कारण हमारे पिता के घराने में कोई भाग न पाएगा।” ३ तब यिसह अपने भाइयों के पास से भागकर तोब देश में रहने लगा; और यिसह के पास लुच्चे मनुष्य इकट्ठे हो गए; और उसके संग पिनरे लगे। ४ और कुछ दिनों के बाद अम्मोनी इसाएल से लड़ने लगे। ५ जब अम्मोनी इसाएल से लड़ते थे, तब गिलाद के बूढ़े लोग यिसह को तोब देश से ले आने को गए; ६ और यिसह से कहा, “चलकर हमारा प्रधान हो जा, कि हम अम्मोनियों से लड़ सकें।” ७ यिसह ने गिलाद के बूढ़े लोगों से कहा, “क्या तुम ने मुझसे बैर करके मुझे मेरे पिता के घर से निकाल न दिया था? फिर अब संकट में पड़कर मेरे पास क्यों आए हो?” ८ गिलाद के बूढ़े लोगों ने यिसह से कहा, “इस कारण हम अब तेरी ओर पिरे हैं, कि तू हमारे संग चलकर अम्मोनियों से लड़े; तब तू हमारी ओर से गिलाद के सब निवासियों का प्रधान ठहरेगा।” ९ यिसह ने गिलाद के बूढ़े लोगों से पूछा, “यदि तुम मुझे अम्मोनियों से लड़ने को पिर मेरे घर ले चलो, और यहोवा उन्हें मेरे हाथ कर दे, तो क्या मैं तुहारा प्रधान ठहरेंगा?” १० गिलाद के बूढ़े लोगों ने यिसह से कहा, “निश्चय हम तेरी इस बात के अनुसार करेंगे; यहोवा हमारे और तेरे बीच में इन बचनों का सुननेवाला है।” ११ तब यिसह गिलाद के बूढ़े लोगों के संग चला, और लोगों ने उसको अपने ऊपर मुखिया और प्रधान ठहराया; और यिसह ने अपनी सब बाँतें मिस्पा में यहोवा के सम्मुख कह सुनाई। १२ तब यिसह ने अम्मोनियों के राजा के पास दूरों से यह कहला भेजा, “तुझे मुझसे क्या काम, कि तू मेरे देश में लड़ने को आया है?” १३ अम्मोनियों के राजा ने यिसह के दूरों से कहा, “कारण यह है, कि जब इसाएली मिस्र से आए, तब अर्नोन से यब्बोक और यरदन तक जो मेरा देश था उसको उन्होंने छीन लिया; इसलिए अब उसको बिना झगड़ा किए लौटा दे।” १४ तब यिसह ने फिर अम्मोनियों के राजा के पास यह कहने को दूर भेजे, १५ “यिसह तुझ से यह कहता है, कि इसाएल ने न तो मोआब का देश ले लिया और न अम्मोनियों का, १६ वरन् जब वे मिस्र से निकले, और इसाएली जंगल में होते हुए लाल समुद्र तक चले, और कादेश को आए। १७ तब इसाएल ने एदोम के राजा के पास दूरों से यह कहला भेजा, ‘मुझे अपने देश में से होकर जाने दे;’ और एदोम के राजा ने उनकी न मानी। इसी रीति उसने मोआब के राजा से भी कहला भेजा, और उसने भी न माना। इसलिए इसाएल का देश में रह गया। १८ तब उसने जंगल में चलते-चलते एदोम और मोआब दोनों देशों के बाहर-बाहर धूमकर मोआब देश की पूर्व की ओर से आकर अर्नोन के इसी पार अपने डेरे डाले; और मोआब की सीमा के भीतर न गया, क्योंकि मोआब की सीमा अर्नोन थी। १९ फिर इसाएल ने एमोरियों के राजा सीहीन के पास जो हेशबोन का राजा था दूरों से यह कहला भेजा, ‘हमें अपने देश में से होकर हमारे स्थान को जाने दे।’ २० परन्तु सीहीन ने इसाएल का इतना विश्वास न किया कि उसे अपने देश में से होकर जाने देता; वरन् अपनी सारी प्रजा को इकट्ठा कर अपने डेरे यहस में खड़े करके इसाएल से लड़ा। २१ और इसाएल के परमेश्वर यहोवा ने सीहीन को सारी प्रजा समेत इसाएल के हाथ में कर दिया, और उन्होंने उनको मार लिया; इसलिए इसाएल उस देश के निवासी एमोरियों के सारे देश का अधिकारी हो गया। २२ अर्थात् वह अर्नोन से यब्बोक तक और जंगल से ले यरदन तक एमोरियों के सारे देश का अधिकारी हो गया। २३ इसलिए अब इसाएल के परमेश्वर यहोवा ने अपनी इसाएली प्रजा के सामने से एमोरियों को उनके देश से निकाल दिया है; फिर क्या तू उसका अधिकारी होने पाएगा? २४ क्या तू उसका अधिकारी न होगा,

जिसका तेरा कमोश देवता तुझे अधिकारी कर दे? इसी प्रकार से जिन लोगों को हमारा परमेश्वर यहोवा सामने से निकले, उनके देश के अधिकारी हम होंगे। २५ फिर क्या तू मोआब के राजा सिप्पोर के पुत्र बालाक से कुछ अच्छा है? क्या उसने कभी इसाएलियों से कुछ भी झगड़ा किया? क्या वह उनसे कभी लड़ा? २६ जबकि इसाएल हेशबोन और उसके गाँवों में, और अरोए और उसके गाँवों में, और अर्नोन के किनारे के सब नारों में तीन सौ वर्ष से बसा है, तो इतने दिनों में तुम लोगों ने उसको क्यों नहीं छुड़ा लिया? २७ मैंने तेरा अपराध नहीं किया; तू ही मुझसे यदु छेड़कर बुरा व्यवहार करता है; इसलिए यहोवा जो न्यायी है, वह इसाएलियों और अम्मोनियों के बीच में आज न्याय करे।” २८ तो भी अम्मोनियों के राजा ने यिसह की ये बातें न मानी जिनको उसने कहला भेजा था। २९ तब यहोवा का आत्मा यिसह में समा गया, और वह गिलाद और मनश्शे से होकर गिलाद के मिस्पे में आया, और गिलाद के मिस्पे से होकर अम्मोनियों की ओर चला। ३० और यिसह ने यह कहकर यहोवा की मन्त्र नामी, “यदि तू नि-सन्देह अम्मोनियों को मेरे हाथ में कर दे, ३१ तो जब मैं कुशल के साथ अम्मोनियों के पास से लौट आऊँ तब जो कोई मेरे भेट के लिये मेरे घर के द्वार से निकले वह यहोवा का ठहरेगा, और मैं उसे होम्बलि करके चढ़ाऊँगा।” ३२ तब यिसह अम्मोनियों से लड़ने को उनकी ओर चला, और यहोवा ने उनके उनके हाथ में कर दिया। ३३ और वह अरोए से ले मिन्नी तक, जो बीस नगर है, वरन् आबेलकरामी तक जीतो-जीतो उन्हें बहुत बड़ी मार से मारता गया। और अम्मोनी इसाएलियों से हार गए। ३४ जब यिसह मिस्पा को अपने घर आया, तब उसकी बेटी डफ बजाती और नाचती हुई उससे भेट करने के लिये निकल आई, वह उसकी एकलौती थी; उसको छोड़ उसके न तो कोई बेटा था और न कोई बेटी। ३५ उसको देखते ही उसने अपने कपड़े फाड़कर कहा, “हाय, मेरी बेटी! तूने कमर तोड़ दी, और तू भी मेरे कष्ट देनेवालों में हो गई है; क्योंकि मैंने यहोवा को चरन दिया है, और उसे टाल नहीं सकता।” ३६ उसने उसने कहा, “हे मेरे पिता, तूने जो यहोवा को चरन दिया है, तो जो बात तेरे मूँह से निकली है उसी के अनुसार मुझसे बताव कर, क्योंकि यहोवा ने तेरे अम्मोनी शत्रुओं से तेरा बदला लिया है।” ३७ फिर उसने अपने पिता से कहा, “मेरे लिये यह किया जाए तो महीने तक मुझे छोड़ दे, कि मैं अपनी सहेलियों सहित जाकर पहाड़ों पर फिरती हुई अपने कुँवारेपन पर रोती रहूँ।” ३८ उसने कहा, “जा।” तब उसने दो महीने की छुटी दी; इसलिए वह अपनी सहेलियों सहित चली गई, और पहाड़ों पर अपने कुँवारेपन पर रोती रही। ३९ दो महीने के बीतने पर वह अपने पिता के पास लौट आई, और उसने उसके विषय में अपनी मानी हुई मन्त्र तक पूछा किया। और उस कन्या ने पुष्प का मूँह कभी न देखा था। इसलिए इसाएलियों में यह रीति चली ३० कि इसाएली ब्रियाँ प्रतिवर्ष यिसह गिलादी की बेटी का यश गाने को वर्ष में चार दिन तक जाया करती थी।

१२ तब ऐप्रैम पुष्प इकट्ठे होकर सापोन को जाकर यिसह से कहने लगे, “जब तू अम्मोनियों से लड़ने को गया तब हमें संग चलने को क्यों नहीं बुलवाया? हम तेरा घर तुझ समेत जला देंगे।” १ यिसह ने उनसे कहा, “मेरा और मेरे लोगों का अम्मोनियों से बड़ा झगड़ा हुआ था; और जब मैंने तुम से सहायता माँगी, तब तुम ने मुझे उनके हाथ से नहीं बचाया। ३ तब यह देखकर कि तुम मुझे नहीं बचाते मैं अपने प्राणों को हथेली पर रखकर अम्मोनियों के विस्तृ चला, और यहोवा ने उनको मेरे हाथ में कर दिया; फिर तुम अब मुझसे लड़ने को क्यों चढ़ आए हो?” ४ तब यिसह गिलाद के सब ऐप्रैमों को इकट्ठा करके ऐप्रैम से लड़ा, ऐप्रैम जो कहता था, “हे गिलादियों, तुम तो ऐप्रैम और मनश्शे के बीच रहनेवाले ऐप्रैमियों के भगोड़े हो,” और गिलादियों ने उनको

मार लिया। ५ और गिलादियों ने यरदन का घाट उससे पहले अपने वश में कर लिया। और जब कोई ऐसी भगोड़ा कहता, “मुझे पार जाने दो,” तब गिलाद के पुख्त उससे पछते थे, “क्या तू ऐसी है?” और यदि वह कहता, “नहीं,” ६ तो वे उससे कहते, “अच्छा, शिब्बोलेत कह,” और वह कहता, “सिब्बोलेत,” क्योंकि उससे वह ठीक से बोला नहीं जाता था; तब वे उसको पकड़कर यरदन के घाट पर मार डालते थे। इस प्रकार उस समय बयालीस हजार ऐसी मरे गए। ७ यिसह छ: वर्ष तक इसाएल का न्याय करता रहा। तब यिसह गिलादी मर गया, और उसको गिलाद के किसी नगर में मिट्टी दी गई। ८ उसके बाद बैतलहम का निवासी इब्सान इसाएल का न्याय करने लगा। ९ और उसके तीस बेटे हुए; और उसने अपनी तीस बेटियाँ बाहर विवाह दी, और बाहर से अपने बेटों का विवाह करके तीस बह ले आया। और वह इसाएल का न्याय सात वर्ष तक करता रहा। १० तब इब्सान मर गया, और उसको बैतलहम में मिट्टी दी गई। ११ उसके बाद जबूलीनी एलोन इसाएल का न्याय करने लगा, और वह इसाएल का न्याय दस वर्ष तक करता रहा। १२ तब एलोन जबूलीनी मर गया, और उसको जबूलून के देश के अय्यालोन में मिट्टी दी गई। १३ उसके बाद पिरातोनी हिल्लेल का पुत्र अब्दोन इसाएल का न्याय करने लगा। १४ और उसके चालीस बेटे और तीस पोते हुए, जो गदहियों के सतर बच्चों पर सवार हुआ करते थे। वह आठ वर्ष तक इसाएल का न्याय करता रहा। १५ तब पिरातोनी हिल्लेल का पुत्र अब्दोन मर गया, और उसको ऐसै के देश के पिरातोन में, जो अमालेकियों के पहाड़ी देश में है, मिट्टी दी गई।

१६ इसाएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया; इसलिए यहोवा ने उनको पलिशियों के वश में चालीस वर्ष के लिये रखा। १ दान के कुल का सोरावासी मानोह नामक एक पुख्त था, जिसकी पत्नी के बाँझ होने के कारण कोई पुन न था। २ यह स्त्री को यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, “सुन, बाँझ होने के कारण तेरे बच्चा नहीं; परन्तु अब तू गर्भवती होगी और तेरे बेटा होगा। ३ इसलिए अब सावधान रह, कि न तो तू दाखमधू या और किसी भाँति की मदिरा पीए, और न कोई अशुद्ध वस्तु खाए, ४ क्योंकि तू गर्भवती होगी और तेरे एक बेटा उत्पन्न होगा। और उसके सिर पर छुरा न पिरे, क्योंकि वह जन्म ही से परमेश्वर का नाजीर रहेगा; और इसाएलियों को पलिशियों के हाथ से छुड़ने में वही हाथ लगाएगा।” ५ उस स्त्री ने अपने पति के पास जाकर कहा, “परमेश्वर का एक जन मेरे पास आया था जिसका रुप परमेश्वर के दूत का सा असि भययोग्य था; और मैंने उससे न पछाकि तू कहाँ का है? और न उसने मुझे अपना नाम बताया; ६ परन्तु उसने मुझसे कहा, ‘सुन तू गर्भवती होगी और तेरे एक बेटा होगा; इसलिए अब न तो दाखमधू या और न किसी भाँति की मदिरा पीना, और न कोई अशुद्ध वस्तु खाना, क्योंकि वह लड़का जन्म से मरण के दिन तक परमेश्वर का नाजीर रहेगा।’” ७ तब मानोह ने यहोवा से यह बिनती की, “हे प्रभु, बिनती सुन, परमेश्वर का वह जन जिसे तू भेजा था फिर हमारे पास आए, और हमें सिखाए कि जो बालक उत्पन्न होनेवाला है उससे हम क्या-क्या करें।” ८ मानोह की यह बात परमेश्वर ने सुन ली, इसलिए जब वह स्त्री मैदान में बैठी थी, और उसका पति मानोह उसके संग न था, तब परमेश्वर का वही दूत उसके पास आया। ९ तब उस स्त्री ने झट दौड़कर अपने पति को यह समाचार दिया, “जो पुख्त उस दिन मेरे पास आया था उसी ने मुझे दर्शन दिया है।” १० यह सुनते ही मानोह उठकर अपनी पत्नी के पीछे चला, और उस पुख्त के पास आकर पूछा, “क्या तू वही पुख्त है जिसने इस स्त्री से बातें की थीं?” उसने कहा, “मैं वही हूँ।” ११ मानोह ने कहा, “जब तेरे वचन पूरे हो जाएँ तो, उस बालक का कैसा ढंग और उसका क्या काम

होगा?” १२ यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, “जितनी वस्तुओं की चर्चा मैंने इस स्त्री से की थी उन सबसे यह पेरे रहे। १३ यह कोई वस्तु जो दाखलता से उत्पन्न होती है न खाए, और न दाखमधू या और किसी भाँति की मदिरा पीए, और न कोई अशुद्ध वस्तु खाए; और जो आज्ञा मैंने इसको दी थी उसी को यह माने।” १४ मानोह ने यहोवा के दूत से कहा, “हम तुझको रोक लें, कि तेरे लिये बकरी का एक बच्चा पकाकर तैयार करें।” १५ यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, “चाहे तू मुझे रोक रखे, परन्तु मैं तेरे भोजन में से कुछ न खाऊँगा; और यदि तू होमबलि करना चाहे तो यहोवा ही के लिये कर।” (मानोह तो न जानता था, कि यह यहोवा का दूत है।) १६ मानोह ने यहोवा के दूत से कहा, “अपना नाम बता, इसलिए कि जब तेरी बातें पूरी हों तब हम तेरा आदरमान कर सकें।” १७ यहोवा के दूत ने उससे कहा, “मेरा नाम तो अद्भुत है, इसलिए तू उसे क्यों पूछता है?” १८ तब मानोह ने अन्नबलि समेत बकरी का एक बच्चा लेकर चट्टान पर यहोवा के लिये चढ़ाया तब उस दूत ने मानोह और उसकी पत्नी के देखते-देखते एक अद्भुत काम किया। १९ अर्थात् जब लौ उस बेटी पर से आकाश की ओर उठ रही थी, तब यहोवा का दूत उस बेटी की लौ में होकर मानोह और उसकी पत्नी की पत्नी के देखते-देखते चढ़ गया; तब वे भूमि पर पूँछ के बल गिर। २० परन्तु यहोवा के दूत ने मानोह और उसकी पत्नी को फिर कभी दर्शन न दिया। तब मानोह ने जान लिया कि वह यहोवा का दूत था। २१ तब मानोह ने अपनी पत्नी से कहा, “हम निश्चय मर जाएँगे, क्योंकि हमने परमेश्वर का दर्शन पाया है।” २२ उसकी पत्नी ने उससे कहा, “यदि यहोवा हमें मार डालना चाहता, तो हमारे हाथ से होमबलि और अन्नबलि ग्रहण न करता, और न वह ऐसी सब बातें हमको दिखाता, और न वह इस समय हमें ऐसी बातें सुनाता।” २३ और उस स्त्री के एक बेटा उत्पन्न हुआ, और उसका नाम शिमशोन रखा; और वह बालक बढ़ाया गया, और यहोवा उसको आशीष देता रहा। २४ और यहोवा का आत्मा सोरा और एश्ताओल के बीच महनेदान में उसको उभारे लगा।

१४ शिमशोन तिम्नाह को गया, और तिम्नाह में एक पलिशती स्त्री को देखा। १ तब उसने जाकर अपने माता पिता से कहा, “तिम्नाह में मैंने एक पलिशती स्त्री को देखा है, सो अब तुम उससे मेरा विवाह करा दो।” २ उसके माता पिता ने उससे कहा, “क्या तेरे भाइयों की बेटियों में, या हमारे सब लोगों में कोई स्त्री नहीं है, कि तू खतनाहित पलिशियों में की स्त्री से विवाह करना चाहता है?” शिमशोन ने अपने पिता से कहा, “उसी से मेरा विवाह करा दे; क्योंकि मुझे वही अच्छी लगती है।” ३ उसके माता पिता न जानते थे कि यह बात यहोवा की ओर से है, कि वह पलिशियों के विस्तु दाँव ढूँढता है। उस समय तो पलिशती इसाएल पर प्रभुता करते थे। ४ तब शिमशोन अपने माता पिता को संग लेकर तिम्नाह की चलकर तिम्नाह की दाख की बारी के पास पहुँचा, वहाँ उसके सामने एक जवान सिंह गरजने लगा। ५ तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उत्तरा, और यद्यपि उसके हाथ में कुछ न था, तो भी उसने उसको ऐसा फांडा डाला जैसा कोई बकरी का बच्चा फांडे। अपना यह काम उसने अपने पिता या माता को न बताया। ६ तब उसने जाकर उस स्त्री से बातचीत की; और वह शिमशोन को अच्छी लगाई। ७ कुछ दिनों के बीतने पर वह उसे लाने को लौट चला; और उस सिंह की लोथ में मधुमक्खियों का एक झूण्ड और मधू भी थी। ८ तब वह उसमें से कुछ हाथ में लेकर खाते-खाते अपने माता पिता के पास आया, और उसी से किसी लोथ में से निकाला है, कुछ दिया, और उन्होंने भी उसे खाया। ९ तब उसका पिता उस

स्थी के यहाँ गया, और शिमशोन ने जवानों की रीति के अनुसार वहाँ भोज दिया। १५ उसको देखकर वे उसके संग रहने के लिये तीस संगियों को ले आए। १६ शिमशोन ने उससे कहा, “मैं तुम से एक पहेली कहता हूँ; यदि तुम इस भोज के सातों दिनों के भीतर उसे समझकर अर्थ बता दो, तो मैं तुम को तीस कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े दूँगा; १७ और यदि तुम उसे न बता सको, तो तुम को मुझे तीस कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े देने पड़ोगे।” उन्होंने उससे कहा, “अपनी पहेली कह, कि हम उसे सुनें।” १८ उसने उससे कहा, “खानेवाले में से खाना, और बलवन्त में से मीठी वस्तु निकली।” इस पहेली का अर्थ वे तीन दिन के भीतर न बता सके। १९ सातवें दिन उन्होंने शिमशोन की पत्नी से कहा, “अपने पति को फुसला कि वह हमें पहेली का अर्थ बताए, नहीं तो हम तुझे तेरे पिता के घर समेत आग में जलाएँगे। क्या तुम लोगों ने हमारा धन लेने के लिये हमें नेवाता दिया है? क्या यहीं बात नहीं है?” २० तब शिमशोन की पत्नी यह कहकर उसके सामने रोने लगी, “तू तो मुझसे प्रेम नहीं, बैर ही रखता है; कि तुम एक पहेली मेरी जाति के लोगों से तो कही हैं, परन्तु मुझ को उसका अर्थ भी नहीं बताया।” उसने कहा, “मैंने उसे अपनी माता या पिता को भी नहीं बताया, फिर क्या मैं तेज़को बता दूँ?” २१ भोज के सातों दिनों में वह स्थी उसके सामने रोती रही; और सातवें दिन जब उसने उसको बहुत तंग किया; तब उसने उसको पहेली का अर्थ बता दिया। तब उसने उसे अपनी जाति के लोगों को बता दिया। २२ तब सातवें दिन सूर्य डूबे न पाया कि उस नगर के मनुष्यों ने शिमशोन से कहा, “मध्य से अधिक क्या मीठा? और सिंह से अधिक क्या बलवन्त है?” उसने उससे कहा, “यदि तुम मेरी बछिया को हल में न जोते, तो मेरी पहेली की कभी न समझते।” २३ तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा, और उसने अशक्लोन को जाकर वहाँ के तीस पुस्तों को मार डाला, और उनका धन लूटकर तीस जोड़े कपड़ों को पहेली के बतानेवालों को दे दिया। तब उसका क्रोध भड़का, और वह अपने पिता के घर गया। २४ और शिमशोन की पत्नी का उसके एक संगी के साथ जिससे उसने मित्र का सा बर्ताव किया था विवाह कर दिया गया।

१५ परन्तु कुछ दिनों बाद, गेहूँ की कटनी के दिनों में, शिमशोन बकरी का एक बच्चा लेकर अपनी सुसुराल में जाकर कहा, “मैं अपनी पत्नी के पास कोठरी में जाऊँगा।” परन्तु उसके ससुर ने उसे भीतर जाने से रोका। २५ और उसके ससुर ने कहा, “मैंने सचमुच यह जानता था कि तू उससे बैर ही रखता है, इसलिए मैंने उसका तेरे सारी से विवाह कर दिया। क्या उसकी छोटी बहन उससे सन्दर नहीं है? उसके बदले उसी से विवाह कर ले।” २६ शिमशोन ने उन लोगों से कहा, “अब चाहे मैं पलिशियों की हानि भी करूँ, तो भी उनके विषय में निर्दिष्ट ही ठहरँगा।” २७ तब शिमशोन ने जाकर तीन सौ लोमड़ियाँ पकड़ी, और मशाल लेकर दो-दो लोमड़ियों की पूँछ एक साथ बाँधी, और उनके बीच एक-एक मशाल बाँधी। २८ तब मशालों में आग लगाकर उसने लोमड़ियों को पलिशियों के खड़े खेतों में छोड़ दिया; और पूलियों के ढेर वरन् खड़े खेत और जैतून की बारियाँ भी जल गईं। २९ तब पलिशियों पड़ने लगे, “यह किसने किया है?” लोगों ने कहा, “उसके तिम्नाह के दामाद शिमशोन ने यह इसलिए किया, कि उसके ससुर ने उसकी पत्नी का उसके साथी से विवाह कर दिया।” ३० तब पलिशियों ने जाकर उस पत्नी और उसके पिता दोनों को आग में जला दिया। ३१ शिमशोन ने उससे कहा, “तुम जो ऐसा काम करते हो, इसलिए मैं तुम से बदला लेकर ही रहूँगा।” ३२ तब उसने उनको अति निष्प्रत के साथ बड़ी मार से भार डाला; तब जाकर एताम नामक चट्ठान की एक दरार में रहने लगा। ३३ तब पलिशियों ने चढ़ाई करके यहदा देश में डैर खड़े किए, और लही में फैल गए। ३४ तब यहदी मनुष्यों ने उनसे

पूछा, “तुम हम पर क्यों चढ़ाई करते हो?” उन्होंने उत्तर दिया, “शिमशोन को बाँधने के लिये चढ़ाई करते हैं, कि जैसे उसने हम से किया वैसे ही हम भी उससे करें।” ३५ तब तीन हजार यहदी पुस्प एताम नामक चट्ठान की दरार में जाकर शिमशोन से कहने लगे, “क्या तू नहीं जानता कि पलिशियों हम पर प्रभुता करते हैं? फिर तने हम से ऐसा क्यों किया है?” उसने उससे कहा, “जैसा उन्होंने मुझसे किया था, वैसा ही मैंने भी उनसे किया है।” ३६ उन्होंने उससे कहा, “हम तुझे बाँधकर पलिशियों के हाथ में कर देने के लिये आए हैं।” शिमशोन ने उससे कहा, “मुझसे यह शपथ खाओ कि तुम मुझ पर प्रहार न करोगे।” ३७ उन्होंने कहा, “ऐसा न होगा; हम तुझे बाँधकर उनके हाथ में कर देंगे; परन्तु तुझे किसी रीति मार न डालेंगे।” तब वे उसको दो नई रसियों से बाँधकर उस चट्ठान में से ले गए। ३८ वह लही तक आ गया पलिशियों उसको देखकर ललकारने लगे; तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा, और उसकी बाँहों की रसियाँ आग में जले हुए सन के समान हो गईं, और उसके हाथों के बन्धन मानो गलकर टूट पड़े। ३९ तब उसको गदहे के जबड़े की एक नई हड्डी मिली, और उसने हाथ बढ़ाकर उसे ते ले लिया और उससे एक हजार पुस्तों को मार डाला। ४० तब शिमशोन ने कहा, “गदहे के जबड़े की हड्डी से ढेढ़ के ढेर लग गए, गदहे के जबड़े की हड्डी ही से मैंने हजार पुस्तों को मार डाला।” ४१ जब वह ऐसा कह चुका, तब उसने जबड़े की हड्डी फेंक दी और उस स्थान का नाम रामत-लही रखा गया। ४२ तब उसको बड़ी प्यास लगी, और उसने यहोवा को पुकारके कहा, “तुम अपने दास से यह बड़ा छुटकारा कराया है; फिर क्या मैं अब प्यासा मर के उन खतनाहीन लोगों के हाथ में पड़ूँ?” ४३ तब परमेश्वर ने लही में ओखली सा गाहा कर दिया, और उसमें से पानी निकलने लगा; जब शिमशोन ने पीया, तब उसके जी में जी आया, और वह फिर ताजा दम हो गया। इस कारण उस सोते का नाम एन्हक्सरों रखा गया, वह आज के दिन तक लही में है। ४४ शिमशोन तो पलिशियों के दिनों में बीस वर्ष तक इथाएल का न्याय करता रहा।

१६ तब शिमशोन गाजा को गया, और वहाँ एक वेश्या को देखकर उसके पास गया। ४५ जब गाजावासियों को इसका समाचार मिला कि शिमशोन यहाँ आया है, तब उन्होंने उसको धेर लिया, और रात भर नगर के फाटक पर उसकी धात में लगे रहे; और यह कहकर रात भर चुपचाप रहे, कि भोर होते ही हम उसकी धात करेंगे। ४६ परन्तु शिमशोन आधी रात तक पड़ा रहा, और आधी रात को उठकर, उसने नगर के फाटक के दोनों पल्लों और दोनों बाज़ुओं को पकड़कर बेंडों समेत उखाड़ लिया, और अपने कंधों पर रखकर उन्हें उस पहाड़ की चोटी पर ले गया, जो हेब्रोन के सामने है। ४७ इसके बाद वह सोरेक नामक धाटी में रहेनेवाली दलीला नामक एक छी से प्रीति करने लगा। ४८ तब पलिशियों के सरदारों ने उस छी के पास जा के कहा, “तू उसको फुसलाकर पूछ कि उसके महाबल का भेद क्या है, और कौन सा उपाय करके हम उस पर ऐसे प्रबल हों, कि उसे बाँधकर दबा रखें; तब वह तुझे ग्यारह-ग्यारह सौ टुकड़े चाँदी देंगे।” ४९ तब दलीला ने शिमशोन से कहा, “मुझे बता दे कि तेरे बड़े बल का भेद क्या है, और किसी रीति से कोई तुझे बाँधकर रख सकता है।” ५० शिमशोन ने उससे कहा, “यदि मैं सात ऐसी नई-नई ताँतों से बाँधा जाऊँ जो सुखाई न गई हों, तो मेरा बल घट जाएगा, और मैं साधारण मनुष्य सा हो जाऊँगा।” ५१ तब पलिशियों के सरदार दलीला के पास ऐसी नई-नई सात ताँतें ले गए जो सुखाई न गई थीं, और उनसे उसने शिमशोन को बाँधा। ५२ उसके पास तो कुछ मनुष्य कोठरी में धात लगाए बैठे थे। तब उसने उससे कहा, “हे शिमशोन, पलिशियों तेरी धात में हैं!” तब उसने ताँतों को

ऐसा तोड़ा जैसा सन का सूत आग से छूते ही टूट जाता है। और उसके बल का भेद न खुला। १० तब दलीला ने शिमशोन से कहा, “सुन, तने तो मुझसे छल किया, और झूठ कहा है; अब मुझे बता दे कि तू किस वस्तु से बन्ध सकता है।” ११ उसने उससे कहा, “यदि मैं ऐसी नई-नई रसियों से जो किसी काम में न आई हौं कसकर बौधा जाऊँ, तो मेरा बल घट जाएगा, और मैं साधारण मनुष्य के समान हो जाऊँगा।” १२ तब दलीला ने नई-नई रसियों लेकर और उसको बौधकर कहा, “हे शिमशोन, पलिशिती तेरी धात में हैं!” कितने मनुष्य उस कोठरी में धात लगाए हुए थे। तब उसने उनको सूत के समान अपनी भुजाओं पर से तोड़ डाला। १३ तब दलीला ने शिमशोन से कहा, “अब तक तू मुझसे छल करता, और झट बोलता आया है; अब मुझे बता दे कि तू किस से बन्ध सकता है?” उसने कहा, “यदि तू मेरे सिर की सातों लट्टे ताने में बुने तो बन्ध सक़ूँगा।” १४ अतः उसने उसे खेंटी से जकड़ा। तब उससे कहा, “हे शिमशोन, पलिशिती तेरी धात में हैं?” तब वह नीद से चौक उठा, और खूंटी को धरन में से उछाड़कर उसे ताने समेत ले गया। १५ तब दलीला ने उससे कहा, “तेरा मन तो मुझसे नहीं लगा, फिर तू क्यों कहता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ? तूने ये तीनों बार मुझसे छल किया, और मुझे नहीं बताया कि तेरे बड़े बल का भेद क्या है।” १६ इस प्रकार जब उसने हर दिन बातें करते-करते उसको तंग किया, और यहाँ तक हठ किया, कि उसकी नाकों में दम आ गया, १७ तब उसने अपने मन का सारा भेद खोलकर उससे कहा, “मेरे सिर पर छुरा कभी नहीं फिरा, क्योंकि मैं माँ के पेट ही से परमेश्वर का नाजीर हूँ, यदि मैं मुँड़ा जाऊँ, तो मेरा बल इतना घट जाएगा, कि मैं साधारण मनुष्य सा हो जाऊँगा।” १८ यह देखकर, कि उसने अपने मन का सारा भेद मुझसे कह दिया है, दलीला ने पलिशियों के सरदारों के पास कहला भेजा, “अब की बार फिर आओ, क्योंकि उसने अपने मन का सब भेद मुझे बता दिया है।” तब पलिशियों के सरदार हाथ में स्पया लिए हुए उसके पास गए। १९ तब उसने उसको अपने घुटों पर सुला रखा; और एक मनुष्य बुलवाकर उसके सिर की सातों लट्टे मुँड़वा डाली। और वह उसको ढाबाने लागी, और वह निर्बल हो गया। २० तब उसने कहा, “हे शिमशोन, पलिशिती तेरी धात में हैं!” तब वह चौककर सोचने लगा, “मैं पहले के समान बाहर जाकर झटक़ूँगा।” वह तो न जानता था, कि यहोवा उसके पास से चला गया है। २१ तब पलिशियों ने उसको पकड़कर उसकी आँखें फोड़ डाली, और उसे गाजा को ले जा के पीतल की बेड़ियों से जकड़ दिया; और वह बन्दीगूँह में चकवीं पीसने लगा। २२ उसके सिर के बाल मुँड़ जाने के बाद फिर बढ़ने लगे। २३ तब पलिशियों के सरदार अपने दागोन नामक देवता के लिये बड़ा यज्ञ, और आनन्द करने को यह कहकर इकट्ठे हुए, “हमारे देवता ने हमारे शत्रु शिमशोन को हमारे हाथ में कर दिया है।” २४ और जब लोगों ने उसे देखा, तब यह कहकर अपने देवता की स्तुति की, “हमारे देवता ने हमारे शत्रु और हमारे देश का नाश करनेवाले को, जिसने हम में से बहुतों को मार भी डाला, हमारे हाथ में कर दिया है।” २५ जब उनका मन मग्न हो गया, तब उहोंने कहा, “शिमशोन को बुलवाया लो, कि वह हमारे लिये तमाशा करे।” इसलिए शिमशोन बन्दीगूँह में से बुलवाया गया, और उनके लिये तमाशा करने लगा, और खम्भों के बीच खड़ा कर दिया गया। २६ तब शिमशोन ने उस लड़के से जो उसका हाथ पकड़े था कहा, “मुझे उन खम्भों को, जिसने घर सम्भला हुआ है छुने दे, कि मैं उस पर टेक लगाऊँ।” २७ वह घर तो खी पुरुषों से भरा हुआ था; पलिशियों के सब सरदार भी वहाँ थे, और छत पर कोई तीन हजार लौं और पुरुष थे, जो शिमशोन को तमाशा करते हुए देख रहे थे। २८ तब शिमशोन ने यह कहकर यहोवा की दुहाई दी, “हे प्रभु यहोवा, मेरी सुधि ले; हे परमेश्वर, अब की बार मुझे बल दे, कि

मैं पलिशियों से अपनी दोनों आँखों का एक ही बदला लूँ।” २९ तब शिमशोन ने उन दोनों बीचवाले खम्भों को जिनसे घर सम्भला हुआ था, पकड़कर एक पर तो दाहिने हाथ से और दूसरे पर बाएँ हाथ से बल लगा दिया। ३० और शिमशोन ने कहा, “पलिशियों के संग मेरा प्राण भी जाए।” और वह अपना सारा बल लगाकर झुका; तब वह घर सब सरदारों और उसमें के सारे लोगों पर गिर पड़ा। इस प्रकार जिनको उसने मरते समय मार डाला वे उनसे भी अधिक थे जिन्हें उसने अपने जीवन में मार डाला था। ३१ तब उसके भाई और उसके पिता के सारे घराने के लोग आए, और उसे उठाकर ले गए, और सोरा और झूताओल के मध्य उसके पिता मानोह की कब्र में मिट्टी दी। उसने इसाएल का न्याय बीस वर्ष तक किया था।

१७ ऐप्रैम के पहाड़ी देश में मीका नामक एक पुस्त था। १८ उसने अपनी माता से कहा, “जो स्पाह सौ टुकड़े चौंदी तुम से ले लिए गए थे, जिनके विषय में तूने मेरे सुनते भी श्वाप दिया था, वे मेरे पास हैं; मैंने ही उनको ले लिया था।” उसकी माता ने कहा, “मेरे बेटे पर यहोवा की ओर से आशीर्वाद हो।” ३२ जब उसने वे स्पाह सौ टुकड़े चौंदी अपनी माता को वापस दिए, तब माता ने कहा, “मैं अपनी ओर से अपने बेटे के लिये यह स्पया यहोवा को निश्चय अर्पण करती हूँ ताकि उससे एक मूरत खोदकर, और दूसरी ढालकर बनाई जाए, इसलिए अब मैं उसे तुझको वापस देती हूँ।” ३३ जब उसने वह स्पया अपनी माता को वापस दिया, तब माता ने दो सौ टुकड़े ढलवैयों को दिए, और उसने उनसे एक मूर्ति खोदकर, और दूसरी ढालकर बनाई, और वे मीका के घर में रही। ३४ मीका के पास एक देवस्थान था, तब उसने एक एपोद, और कई एक गृहदेवता बनवाए; और अपने एक बेटे का संस्कार करके उसे अपना पुरोहित ठहरा लिया। ३५ उन दिनों में इसाएलियों का कोई राजा न था; जिसको जो ठीक जान पड़ता था वही वह करता था। ३६ यहदा के कुल का एक जवान लेवीय यहदा के बैतलहम में परदेशी होकर रहता था। ३७ वह यहदा के बैतलहम नगर से इसलिए निकला, कि जहाँ कहीं स्थान मिले वहाँ जा रहे। चलते-चलते वह ऐप्रैम के पहाड़ी देश में मीका के घर पर आ निकला। ३८ मीका ने उससे पूछा, “तू कहाँ से आता है?” उसने कहा, “मैं तो यहदा के बैतलहम से आया हुआ एक लेवीय हूँ, और इसलिए चला जाता हूँ, कि जहाँ कहीं ठिकाना मुझे मिले वहाँ रहूँ।” ३९ मीका ने उससे कहा, “मेरे संग रहकर मैं लिये पिता और पुरोहित बन, और मैं तुम्हे प्रतिवर्ष दस टुकड़े स्पै, और एक जोड़ा कपड़ा, और भोजनवस्तु दिया करूँगा,” तब वह लेवीय भीतर गया। ४० और वह लेवीय उस पुस्त के संग रहने से प्रसन्न हुआ; और वह जवान उसके साथ बेटा सा बना रहा। ४१ तब मीका ने उस लेवीय का संस्कार किया, और वह जवान उसका पुरोहित होकर मीका के घर में रहने लगा। ४२ और मीका सोचता था, कि अब मैं जानता हूँ कि यहोवा मेरा भला करेगा, क्योंकि मैंने एक लेवीय को अपना पुरोहित रखा है।

१८ उन दिनों में इसाएलियों का कोई राजा न था। और उन्हीं दिनों में दानियों के गोत्र के लोग रहने के लिये कोई भाग ढूँढ़ रहे थे; क्योंकि इसाएली गोत्रों के बीच उनका भाग उस समय तक न मिला था। ४३ तब दानियों ने अपने समस्त कुल में से पाँच शर्वीरों को सोरा और झूताओल से देश का भेद लेने और उसमें छानबीन करने के लिये यह कहकर भेज दिया, “जाकर देश में छानबीन करो।” इसलिए वे ऐप्रैम के पहाड़ी देश में मीका के घर तक जाकर वहाँ टिक गए। ४४ जब वे मीका के घर के पास आए, तब उस जवान लेवीय का बोल पहचाना; इसलिए वहाँ मुड़कर उससे पूछा, “तुम्हे यहाँ कैनून ले आया? और तू यहाँ क्या करता है? और यहाँ तेरे पास क्या है?” ४५ उसने

उनसे कहा, “मीका ने मुझसे ऐसा-ऐसा व्यवहार किया है, और मुझे नौकर रखा है, और मैं उसका पुरोहित हो गया हूँ।” ५ उन्होंने उससे कहा, “परमेश्वर से सलाह ले, कि हम जान लें कि जो यात्रा हम करते हैं वह सफल होगी या नहीं।” ६ पुरोहित ने उनसे कहा, “कुशल से चले जाओ। जो यात्रा तुम करते हो उस पर यहोवा की कृपादृष्टि है।” ७ तब वे पाँच मनुष्य चल निकले, और लैश को जाकर वहाँ के लोगों को देखा कि सीदोनियों के समान निर्दर, बेखटके, और शान्ति से रहते हैं; और इस देश का कोई अधिकारी नहीं है, जो उन्हें किसी काम में रोके, और ये सीदोनियों से दूर रहते हैं, और दूसरे मनुष्यों से कोई व्यवहार नहीं रखते। ८ तब वे सोरा और एश्टाओल को अपने भाइयों के पास गए, और उनके भाइयों ने उनसे पछा, “तुम क्या समाचार ले आए हो?” ९ उन्होंने कहा, “आओ, हम उन लोगों पर चढ़ाई करें; क्योंकि हमने उस देश को देखा कि वह बहत अच्छा है। तुम क्यों चुपचाप रहते हो? वहाँ चलकर उस देश को अपने वश में कर लेने में आलस न करो। १० वहाँ पहुँचकर तुम निर रहते हुए लोगों को, और लम्बा चौड़ा देश पाओगे; और परमेश्वर ने उसे तम्हारे हाथ में दे दिया है। वह ऐसा स्थान है जिसमें पृथ्वी भर के किसी पर्दार्थ की घटी नहीं है।” ११ तब वहाँ से अर्थात् सोगा और एश्टाओल से दानियों के कुल के छ: सौ पुस्तों ने युद्ध के हथियार बांधकर प्रस्थान किया। १२ उन्होंने जाकर यहाँ देश के किर्भयारीम नगर में डेरे खड़े किए। इस कारण उस स्थान का नाम महेनदान आज तक पड़ा है, वह तो किर्भयारीम के पश्चिम की ओर है। १३ वहाँ से वे आगे बढ़कर ऐप्रेम के पहाड़ी देश में मीका के घर के पास आए। १४ तब जो पाँच मनुष्य लैश के देश का भेद लेने गए थे, वे अपने भाइयों से कहने लगे, “क्या तुम जानते हो कि इन घरों में एक एपोद, कई एक गृहदेवता, एक खुटी और एक ढली हुई मूरत है? इसलिए अब सोचो, कि क्या करना चाहिये।” १५ वे उधर मुड़कर उस जवान लेवी के घर गए, जो मीका का घर था, और उसका कुशल क्षेत्र पछा। १६ और वे छ: सौ दानी पुस्त फाटक में हथियार बाँधे हुए खड़े रहे। १७ और जो पाँच मनुष्य देश का भेद लेने गए थे, उन्होंने वहाँ घुसकर उस खुटी हुई मूरत, एपोद, गृहदेवता, और ढली हुई मूरत को ले लिया, और वह पुरोहित फाटक में उन हथियार बाँधे हुए छ: सौ पुस्तों के संग खड़ा था। १८ जब वे पाँच मनुष्य मीका के घर में घुसकर खुटी हुई मूरत, एपोद, गृहदेवता, और ढली हुई मूरत को ले आए थे, तब पुरोहित ने उनसे पछा, “यह तुम क्या करते हो?” १९ उन्होंने उससे कहा, “चुप रह, अपने मुँह को हाथ से बन्द कर, और हम लोगों के संग चलकर, हमारे लिये पिता और पुरोहित बन। तो लिये क्या अच्छा है? यह, कि एक ही मनुष्य के घराने का पुरोहित हो, या यह, कि इस्माएलियों के एक गोत्र और कुल का पुरोहित हो?” २० तब पुरोहित प्रसन्न हुआ, इसलिए वह एपोद, गृहदेवता, और खुटी हुई मूरत को लेकर उन लोगों के संग चला गया। २१ तब वे मुड़े, और बाल-बच्चों, पशुओं, और सामान को अपने आगे करके चल दिए। २२ जब वे मीका के घर से दूर निकल गए थे, तब जो मनुष्य मीका के घर के पासवाले घरों में रहते थे उन्होंने इकट्ठे होकर दानियों को जा लिया। २३ और दानियों को पुकारा, तब उन्होंने मुँह फेर के मीका से कहा, “तुझे क्या हुआ कि तू इतना बड़ा दल लिए आता है?” २४ उसने कहा, “तुम तो मेरे बनवाए हुए देवताओं और पुरोहित को ले चले हो; फिर मेरे पास क्या रह गया? तो तुम मुझसे क्यों पूछते हो कि तुझे क्या हुआ है?” २५ दानियों ने उससे कहा, “तेरा बोल हम लोगों में सुनाई न दे, कहीं ऐसा न हो कि क्रोधी जन तुम लोगों पर प्रहार करें और तु अपना और अपने घर के लोगों के भी प्राण को खो दे।” २६ तब दानियों ने अपना मार्ग लिया, और मीका यह देवकर कि वे मुझसे अधिक बलवन्त हैं फिरके अपने घर लौट

गया। २७ तब वे मीका के बनवाए हुए पदार्थों और उसके पुरोहित को साथ ले लैश के पास आए, जिसके लोग शान्ति से और बिना खटके रहते थे, और उन्होंने उनको तलवार से मार डाला, और नगर को आग लगाकर फँक दिया। २८ और कोई बचानेवाला न था, क्योंकि वह सीदोन से दूर था, और वे और मनुष्यों से कोई व्यवहार न रखते थे। और वह बेत्रहोब की तराइ में था। तब उन्होंने नगर को ढूढ़ किया, और उसमें रहने लगे। २९ और उन्होंने उस नगर का नाम इस्माएल के एक पुत्र अपने मूलपुरुष दान के नाम पर दान रखा; परन्तु पहले तो उस नगर का नाम लैश था। ३० तब दानियों ने उस खुटी हुई मूरत को खड़ा कर लिया; और देश की बैंधुआई के समय वह योनातान जो गोर्षीम का पुत्र और मूसा का पोता था, वह और उसके बंश के लोग दान गोत्र के पुरोहित बने रहे। ३१ और जब तक परमेश्वर का भवन शीलों में बना रहा, तब तक वे मीका की खटवाई हुई मूरत को स्थापित किए रहे।

१९ उन दिनों में जब इस्माएलियों का कोई राजा न था, तब एक लेवीय पुस्त ऐप्रेम के पहाड़ी देश की परती और परदेशी होकर रहता था, जिसने यहाँ के बैतलहम में की एक रखेल रख ली थी। १२ उसकी रखेल व्यभिचार करके यहाँ के बैतलहम को अपने पिता के घर चली गई, और चार महीने बहीं रही। १३ तब उसका पति अपने साथ एक सेवक और दो गदहे लेकर चला, और उसके यहाँ गया, कि उसे समझा बुझाकर ले आए। वह उसे अपने पिता के घर ले गई, और उस जवान झी का पिता उसे देखकर उसकी भेंट से आनन्दित हुआ। १४ तब उसके सम्मुख अर्थात् उस झी के पिता ने विनती करके उसे रोक लिया, और वह तीन दिन तक उसके पास रहा; इसलिए वे वहाँ खाते पीते टिके रहे। १५ चौथे दिन जब वे भोर को सखे उठे, और वह चलने को हुआ; तब झी के पिता ने अपने दामाद से कहा, “एक टुकड़ा रोटी खाकर अपना जी ठंडा कर, तब तुम लोग चले जाना।” १६ तब उन दोनों ने बैठकर संग-संग खाया पिया; फिर झी के पिता ने उस पुस्त से कहा, “और एक रात टिके रहने को प्रसन्न हो और आनन्द कर।” १७ वह पुस्त विदा होने को उठा, परन्तु उसके सम्मुख ने विनती करके उसे दबाया, इसलिए उसने फिर उसके यहाँ रात बिताई। १८ पाँचवें दिन भोर को वह तो विदा होने को सखे उठा; परन्तु झी के पिता ने कहा, “अपना जी ठंडा कर, और तुम दोनों दिन ढलने तक स्के रहो।” १९ तब उन दोनों ने रोटी खाई। २० जब वह पुस्त अपनी रखेल और सेवक समेत विदा होने को उठा, तब उसके सम्मुख अर्थात् झी के पिता ने उससे कहा, “देख दिन तो ढल चला है, और साँझ होने पर है, इसलिए तुम लोग रात भर टिके रहो। देख, दिन तो ढबने पर है; इसलिए यहीं आनन्द करता हुआ रात बिता, और सखे को उठकर अपना मार्ग लेना, और अपने डेरे को चले जाना।” २१ परन्तु उस पुस्त ने उस रात को टिकना न चाहा, इसलिए वह उठकर विदा हुआ, और काठी बाँधे हुए दो गदहे और अपनी रखेल संग लिए हुए यबूस के सामने तक (जो यस्शलेम कहलाता है) पहुँचा। २२ वे यबूस के पास थे, और दिन बहुत ढल गया था, कि सेवक ने अपने स्वामी से कहा, “आ, हम यबूसियों के इस नगर में मुँहकर टिकें।” २३ उसके स्वामी ने उससे कहा, “हम पराए नगर में जहाँ कोई इस्माएली नहीं रहता, न उत्तरें; गिबा तक बढ़ जाएँगे।” २४ फिर उसने अपने सेवक से कहा, “आ, हम उधर के स्थानों में से किसी के पास जाएँ, हम गिबा या रामाह में रात बिताएँ।” २५ और वे आगे की ओर चले, और उनके बिन्यामीन के गिबा के निकट पहुँचते-पहुँचते सर्व अस्त हो गया, २६ इसलिए वे गिबा में टिकने के लिये उसकी ओर मुड़ गए। और वह भीतर जाकर उस नगर के चौक में बैठ गया, क्योंकि किसी ने उनको अपने घर में न टिकाया। २७ तब एक बूढ़ा अपने खेत के काम को

निपटाकर साँझ को चला आया; वह तो एप्रैम के पहाड़ी देश का था, और गिबा में परदेशी होकर रहता था; परन्तु उस स्थान के लोग बिन्यामीनी थे। १० उसने आँखें उठाकर उस यात्री को नगर के चौक में बैठे देखा; और उस बूढ़े ने पृछा, “तु किधर जाता, और कहाँ से आता है?” ११ उसने उससे कहा, “हम लोग तो यहदा के बैतलहम से आकर एप्रैम के पहाड़ी देश की परली ओर जाते हैं, मैं तो वही का हूँ; और यहदा के बैतलहम तक गया था, और अब यहोवा के भवन को जाता हूँ, परन्तु कोई मुझे अपने घर में नहीं टिकाता। १२ हमारे पास तो गदहों के लिये पुआल और चारा भी है, और मेरे और तेरी इस दासी और इस जवान के लिये भी जो तेरे दासों के संग है रोटी और दाखमधु भी है, हमें किसी वस्तु की घटी नहीं है।” १३ बूढ़े ने कहा, “तेरा कल्याण हो, तेरे प्रयोजन की सब बस्तुएँ मेरे सिर हों; परन्तु रात को चौक में न बिता।” १४ तब वह उसको अपने घर ले चला, और गदहों को चारा दिया; तब वे पाँव धोकर खाने-पीने लगे। १५ वे आनन्द कर रहे थे, कि नगर के लुच्चों ने घर को धेर लिया, और द्वार को खटखटा-खटखटाकर घर के उस बूढ़े स्वामी से कहने लगे, “जो पुस्त तेरे घर में आया, उसे बाहर ले आ, कि हम उससे भोग करें।” १६ घर का स्वामी उनके पास बाहर जाकर उनसे कहने लगा, “नहीं, नहीं, हे मेरे भाईयों, ऐसी बुराई न करो; यह पुस्त जो मेरे घर पर आया है, इससे ऐसी मरुषता का काम मत करो। १७ देखो, यहाँ मेरी कुँवारी बेटी है, और उस पुस्त की रखैल भी है; उनको मैं बाहर ले आऊँगा। और उनका पत-पानी लो तो लो, और उससे तो जो चाहो सो करो; परन्तु इस पुस्त से ऐसी मरुषता का काम मत करो।” १८ परन्तु उन मनुष्यों ने उसकी न मानी। तब उस पुस्त ने अपनी रखैल को पकड़कर उनके पास बाहर कर दिया; और उन्होंने उससे कुरुकंठ किया, और रात भर क्या भोर तक उससे लीलाकीडा करते रहे। और पौ फटते ही उसे छोड़ दिया। १९ तब वह झीं पौ फटते ही जा के उस मनुष्य के घर के द्वार पर जिसमें उसका पति था गिर गई, और उजियाले के होने तक वही पड़ी रही। २० सबै जब उसका पति उठ, घर का द्वार खोल, अपना मार्ग लेने को बाहर गया, तो क्या देखा, कि उसकी रखैल घर के द्वार के पास डेवड़ी पर हाथ फैलाए हुए पड़ी है। २१ उसने उससे कहा, “उठ हम चलें।” जब कोई उत्तर न मिला, तब वह उसको गढ़े पर लालदार अपने स्थान को गया। २२ जब वह अपने घर पहुँचा, तब छुरी ले रखैल को अंग-अंग करके काटा; और उसे बाहर टुकड़े करके इस्माएल के देश में भेज दिया। २३ जितनों ने उसे देखा, वे सब आपस में कहने लगे, “इस्माएलियों के मिस्र देश से चले आने के समय से लेकर आज के दिन तक ऐसा कुछ कभी नहीं हुआ, और न देखा गया; अतः इस पर सोचकर सम्मति करो, और बताओ।”

२० तब दान से लेकर बेरेबा तक के सब इस्माएली और गिलाद के लोग
भी निकले, और उनकी मण्डली एकमत होकर मिस्पा में यहोवा के पास इकट्ठी हई। २४ और सारी प्रजा के प्रधान लोग, बरन सब इस्माएली गोत्रों के लोग जो चार लाख तलवार चलानेवाले प्यादे थे, परमेश्वर की प्रजा की सभा में उपस्थित हुए। (बिन्यामीनियों ने तो सुना कि इस्माएली मिस्पा को आए है।) और इस्माएली पृछने लगे, “हम से कहो, यह बुराई कैसे हुई?” २५ उस मार डाली हुई झी के लेवीय पति ने उत्तर दिया, “मैं अपनी रखैल समेत बिन्यामीन के गिबा में टिकने को गया था। २६ तब गिबा के पुरुषों ने मुझ पर चढ़ाई की, और रात के समय घर को धेर के मुझे घात करना चाहा; और मेरी रखैल से इतना कुरुकंठ किया कि वह मर गई। २७ तब मैंने अपनी रखैल को लेकर टुकड़े-टुकड़े किया, और इस्माएलियों के भाग के सारे देश में भेज दिया, उन्होंने तो इस्माएल में महापाप और मरुषता का काम किया है। २८ सुनो, हे इस्माएलियों,

सब के सब देखो, और यही अपनी सम्मति दो।” २९ तब सब लोग एक मन हो, उठकर कहने लगे, “न तो हम मैं से कोई अपने डेरे जाएंगा, और न कोई अपने घर की ओर मुड़ेगा। ३० परन्तु अब हम गिबा से यह करेंगे, अर्थात हम चिट्ठी डाल डालकर उस पर चढ़ाई करेंगे, ३१ और हम सब इस्माएली गोत्रों में सौ पुस्तों में से दस, और हजार पुस्तों में से एक सौ, और दस हजार में से एक हजार पुस्तों को ठहराएँ, कि वे सेना के लिये भोजनस्तु पहुँचाएँ; इसालिए कि हम बिन्यामीन के गिबा में पहुँचकर उसको उस मरुषता का पूरा फल भुगता सके जो उन्होंने इस्माएल में की है।” ३२ तब सब इस्माएली पुस्त उस नगर के विस्तृ एक पुस्त की समान संगठित होकर इकट्ठे हो गए। ३३ और इस्माएली गोत्रियों ने बिन्यामीन के सारे गोत्रियों में किनें मनुष्य यह, पृछने को भेजे, “यह क्या बुराई है जो तुम लोगों में की गई है? ३४ अब उन गिबावासी लुच्चों को हमारे हाथ कर दो, कि हम उनको जान से मार के इस्माएल में से बुराई का नाश करें।” परन्तु बिन्यामीनियों ने अपने भाई इस्माएलियों की मानने से इन्कार किया। ३५ और बिन्यामीनी अपने-अपने नगर में से आकर गिबा में इसालिए इकट्ठे हुए, कि इस्माएलियों से लड़ने को निकलें। ३६ और उसी दिन गिबावासी पुस्तों को छोड़, जिनकी गिनती सात सौ चुने हुए पुस्त ठहरी, और नगरों से आए हुए तलवार चलानेवाले बिन्यामीनियों की गिनती छब्बीस हजार पुस्त ठहरी। ३७ इन सब लोगों में से सात सौ बायंहथ्ये चुने हुए पुस्त थे, जो सब के सब ऐसे थे कि गोफन से पत्थर मारने में बाल भर भी न चकते थे। ३८ और बिन्यामीनियों को छोड़ इस्माएली पुस्त चार लाख तलवार चलानेवाले थे; ये सब के सब योद्धा थे। ३९ सब इस्माएली उठकर बेतेल को गए, और यह कहकर परमेश्वर से सलाह ली, और इस्माएलियों ने पृछा, “हम में से कौन बिन्यामीनियों से लड़ने को पहले चढ़ाई करें?” यहोवा ने कहा, “यहदा पहले चढ़ाई करो।” ४० तब इस्माएलियों ने सबैरों को उठकर गिबा के सामने डेरे डाले। ४१ और इस्माएली पुस्त बिन्यामीनियों से लड़ने को निकल गए; और इस्माएली पुस्तों ने उससे लड़ने को गिबा के विस्तृ पॉति बाँधी। ४२ तब बिन्यामीनियों ने गिबा से निकल उसी दिन बाँझ स हजार इस्माएली पुस्तों को मारकर मिट्टी में मिला दिया। ४३ तो भी इस्माएली पुस्तों ने हियाव बाँधकर के उसी स्थान में जहाँ उन्होंने पहले दिन पॉति बाँधी थी, फिर पॉति बाँधी। ४४ और इस्माएली जाकर साँझ तक यहोवा के सामने रोते रहे, और यह कहकर यहोवा से पृछा, “क्या हम अपने भाई बिन्यामीनियों से लड़ने को फिर पास जाएँ?” यहोवा ने कहा, “हाँ, उन पर चढ़ाई करो।” ४५ तब दूसरे दिन इस्माएली बिन्यामीनियों के निकट पहुँचे। ४६ तब बिन्यामीनियों ने दूसरे दिन उनका सामना करने को गिबा से निकलकर फिर अठारह हजार इस्माएली पुस्तों को मारकर, जो सब के सब तलवार चलानेवाले थे, मिट्टी में मिला दिया। ४७ तब सब इस्माएली, बरन सब लोग बेतेल को गए; और रोते हुए यहोवा के सामने बैठे रहे, और उस दिन साँझ तक उपवास किया, और यहोवा को होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। ४८ और इस्माएलियों ने यहोवा से सलाह ली (उस समय परमेश्वर का बाचा का सन्दूक वही था, ४९ और पीनहास, जो हासन का पोता, और एलीआजर का पुत्र था उस दिनों में उसके सामने हाजिर रहा करता था।) उन्होंने पृछा, “क्या हम एक और बार अपने भाई बिन्यामीनियों से लड़ने को निकलें, या उनको छोड़ दें?” यहोवा ने कहा, “चढ़ाई कर; क्योंकि कल मैं उनको तो रोहथ में कर दूँगा।” ५० तब इस्माएलियों ने गिबा के चारों ओर लोगों को घात में बैठाया। ५१ तीसरे दिन इस्माएलियों ने बिन्यामीनियों पर फिर चढ़ाई की, और पहले के समान गिबा के विस्तृ पॉति बाँधी। ५२ तब बिन्यामीनी उन लोगों का सामना करने को निकले, और नगर के पास से खीचे गए; ५३ और जो दो सङ्क, एक बेतेल को और दूसरी गिबा को गई है, उनमें लोगों को

पहले के समान मारने लगे, और मैदान में कोई तीस इसाएली मारे गए। ३२ बिन्यामीनी कहने लगे, “वे पहले के समान हम से मारे जाते हैं।” परन्तु इसाएलियों ने कहा, “हम भागकर उनको नगर में से सड़कों में खींच ले आएँ।” ३३ तब सब इसाएली पुस्खों ने अपने स्थान से उठकर बालतामार में पाँति बाँधीं; और घात में बैठे हुए इसाएली अपने स्थान से, अर्थात् मारेगों से अन्चानक निकले। ३४ तब सब इसाएलियों में से छाँटे हुए दस हजार पुस्ख मिला के सामने आए, और थोर लडाई होने लगी; परन्तु वे न जानते थे कि हम पर विपत्ति अभी पड़ना चाहती है। ३५ तब यहोवा ने बिन्यामीनियों को इसाएल से हथवा दिया, और उस दिन इसाएलियों ने पच्चीस हजार एक सौ बिन्यामीनी पुस्खों को नाश किया, जो सब के सब तलवार चलानेवाले थे। ३६ तब बिन्यामीनियों ने देखा कि हम हार गए। और इसाएली पुस्ख उन घातकों का भरोसा करके जिहें उन्होंने मिला के पास बैठाया था बिन्यामीनियों के सामने से चले गए। ३७ परन्तु घातक लोग फुर्ती करके मिला पर झटपट गए, और घातकों ने आगे बढ़कर सारे नगर को तलवार से मारा। ३८ इसाएली पुस्खों और घातकों के बीच तो यह चिन्ह ठहराया गया था, कि वे नगर में से बहुत बड़ा धुएँ का खम्भा उठाए। ३९ इसाएली पुस्ख तो लडाई में हटने लगे, और बिन्यामीनियों ने यह कहकर कि निश्चय वे फल्ती लडाई के समान हम से होरे जाते हैं, इसाएलियों को मार डालने लगे, और तीस एक पुस्खों को घात किया। ४० परन्तु जब वह धुएँ का खम्भा नगर में से उठने लगा, तब बिन्यामीनियों ने अपने पीछे जो दृष्टि की तो क्या देखा, कि नगर का नगर धुआँ होकर आकाश की ओर उड़ रहा है। ४१ तब इसाएली पुस्ख धूम, और बिन्यामीनी पुस्ख यह देखकर घबरा गए, कि हम पर विपत्ति आ पड़ी है। ४२ इसलिए उन्होंने इसाएली पुस्खों को पीठ दिखाकर जंगल का मार्ग लिया; परन्तु लडाई उनसे होती ही रही, और जो अन्य नगरों में से आए थे उनको इसाएली रास्ते में नाश करते गए। ४३ उन्होंने बिन्यामीनियों को घेर लिया, और उन्हें खेड़ा, वे मरुता में वरन् गिना के पूर्व की ओर तक उन्हें लातड़ते गए। ४४ और बिन्यामीनियों में से अठारह हजार पुस्ख जो सब के सब शूरूवीर थे मारे गए। ४५ तब वे घमकर जंगल में की रिम्मोन नामक चट्ठान की ओर तो भाग गए; परन्तु इसाएलियों ने उनमें से पाँच हजार को चुन-चुनकर सड़कों में मार डाला, फिर गिद्दोम तक उनके पीछे पड़के उनमें से दो हजार पुस्ख मार डाले। ४६ तब बिन्यामीनियों में से जो उस दिन मारे गए वे पच्चीस हजार तलवार चलानेवाले पुस्ख थे, और ये सब शूरूवीर थे। ४७ परन्तु छः सौ पुस्ख घमकर जंगल की ओर भागे, और रिम्मोन नामक चट्ठान में पहुँच गए, और चार महीने वहीं रहे। ४८ तब इसाएली पुस्ख लौटकर बिन्यामीनियों पर लपके और नगरों में क्या मनुष्य, क्या पशु, जो कुछ मिला, सब को तलवार से नाश कर डाला। और जितने नगर उन्होंने मिले उन सभी को आग लगाकर फँक दिया।

२१ इसाएली पुस्खों ने मिस्पा में शपथ खाकर कहा था, “हम में कोई अपनी बेटी का किसी बिन्यामीनी से विवाह नहीं करेगा।” २२ वे बेतेल को जाकर साँझ तक परमेश्वर के सामने बैठे रहे, और फूट फूटकर बहुत रोते रहे। २३ और कहते थे, “हे इसाएल के परमेश्वर यहोवा, इसाएल में ऐसा क्यों होने पाया, कि आज इसाएल में एक गोत्र की घटी हुई है?” २४ फिर दूसरे दिन उन्होंने सर्वे उठ वहाँ बैठी बनाकर होम्बलि और मेलबलि चढ़ाए। २५ तब इसाएली पछड़े लगे, “इसाएल के सारे गोत्रों में से कौन है जो यहोवा के पास सभा में नहीं आया था?” उन्होंने तो भारी शपथ खाकर कहा था, “जो कोई मिस्पा को यहोवा के पास न आए वह निश्चय मार डाला जाएगा।” २६ तब इसाएली अपने भाई बिन्यामीन के विषय में यह कहकर पछताने लगे, “आज

इसाएल में से एक गोत्र कट गया है। २७ हमने जो यहोवा की शपथ खाकर कहा है, कि हम उनसे अपनी किसी बेटी का विवाह नहीं करेंगे, इसलिए बचे हुओं को खियाँ मिलने के लिये क्या करें?” २८ जब उन्होंने यह पूछा, “इसाएल के गोत्रों में से कौन है जो मिस्पा को यहोवा के पास न आया था?” तब यह मालम हुआ, कि गिलादी याबेश से कोई छावनी में सभा को न आया था। २९ अर्थात् जब लोगों की गिनती की गई, तब यह जाना गया कि गिलादी याबेश के निवासियों में से कोई यहाँ नहीं है। ३० इसलिए मण्डली ने बारह हजार शूरूवीरों को वहाँ यह आज्ञा देकर भेज दिया, “तुम जाकर खियों और बाल-बच्चों समेत मिलादी याबेश को तलवार से नाश करो। ३१ और उन्हें जो करना होगा वह यह है, कि सब पुस्खों को और जितनी छियों ने पुख का मुँह देखा हो उनका सत्यानाश कर डालना।” ३२ और उन्हें गिलादी याबेश के निवासियों में से चार सौ जवान कुमारियाँ मिली जिन्होंने पुख का मुँह नहीं देखा था, और उन्हें वे शिलों को जो कनान देश में है छावनी में ले आए। ३३ तब सारी मण्डली ने उन बिन्यामीनियों के पास जो रिम्मोन नामक चट्ठान पर थे कहला भेजा, और उनसे संधि की घोषणा की। ३४ तब बिन्यामीन उसी समय लौट गए, और उनको वे खियाँ दी गईं जो गिलादी याबेश की खियों में से जीवित छाड़ी गई थीं; तो भी वे उनके लिये थोड़ी थीं। ३५ तब लोग बिन्यामीन के विषय फिर यह कहकर पछताये, कि यहोवा ने इसाएल के गोत्रों में घटी की है। ३६ तब मण्डली के बूढ़े लोगों ने कहा, “बिन्यामीनी खियाँ नाश हुई हैं, तो बचे हुए पुस्खों के लिये छी पाने का हम क्या उपाय करें?” ३७ फिर उन्होंने कहा, “बचे हुए बिन्यामीनियों के लिये कोई भाग चाहिये, ऐसा न हो कि इसाएल में से एक गोत्र मिट जाए। ३८ परन्तु हम तो अपनी किसी बेटी का उनसे विवाह नहीं कर सकते, क्योंकि इसाएलियों ने यह कहकर शपथ खाई है कि श्रापित हो वह जो किसी बिन्यामीनी से अपनी लड़की का विवाह करें।” ३९ फिर उन्होंने कहा, “सुनो, शिलो जो बेतेल के उत्तर की ओर, और उस सड़क के पूर्व की ओर है जो बेतेल से शेकेम को चली गई है, और लबोना के दक्षिण की ओर है, उसमें प्रतिवर्ष यहोवा का एक पर्व माना जाता है।” ४० इसलिए उन्होंने बिन्यामीनियों को यह आज्ञा दी, “तुम जाकर दाख की बारियों के बीच घात लगाए बैठे रहो, ४१ और देखे रहो; और यदि शिलो की लड़कियाँ नाचने को निकलें, तो तुम दाख की बारियों से निकलकर शिलो की लड़कियों में से अपनी-अपनी छी को पकड़कर बिन्यामीन के क्षेत्र को चले जाना। ४२ और जब उनके पिता या भाई हमारे पास झागड़ने को आएँगे, तब हम उनसे कहेंगे, ‘अनुग्रह करके उनको हमें दे दो, क्योंकि लडाई के समय हमने उनमें से एक-एक के लिये छी नहीं बचाई; और तुम लोगों ने तो उनका विवाह नहीं किया, नहीं तो तुम अब दोषी ठहरते।’” ४३ तब बिन्यामीनियों ने ऐसा ही किया, अर्थात् उन्होंने अपनी गिनती के अनुसार उन नाचनेवालियों में से पकड़कर खियाँ ले लीं; तब अपने भाग को लौट गए, और नगरों को बसाकर उनमें रहने लगे। ४४ उन्हीं समय इसाएली भी वहाँ से चलकर अपने-अपने निज भाग को गए। ४५ उन दिनों में इसाएलियों का कोई राजा न था; जिसको जो ठीक जान पड़ता था वही वह करता था।

१ जिन दिनों में न्यायी लोग राज्य करते थे उन दिनों में देश में अकाल पड़ा, तब यहदा के बैतलहम का एक पुस्त अपनी छी और दोनों पुत्रों को संग लेकर मोआब के देश में परदेसी होकर रहने के लिए चला। २ उस पुस्त का नाम एलीमिलेक, और उसकी पत्री का नाम नाओमी, और उसके दो बेटों के नाम महलोन और किल्योन थे; ये एप्राती अर्थात् यहदा के बैतलहम के रहनेवाले थे। वे मोआब के देश में आकर वहाँ रहे। ३ और नाओमी का पति एलीमिलेक मर गया, और नाओमी और उसके दोनों पुत्र रह गए। ४ और उन्होंने एक-एक मोआबिन छी ब्याह ली; एक छी का नाम ओपी और दूसरी का नाम स्था था। फिर वे वहाँ कोई दस वर्ष रहे। ५ जब महलोन और किल्योन दोनों मर गए, तब नाओमी अपने दोनों पुत्रों और पति से विचित हो गई। ६ तब वह मोआब के देश में यह सुनकर, कि यहोवा ने अपनी प्रजा के लोगों की सुधि ले के उहें भोजनवस्तु दी है, उस देश से अपनी दोनों बहुओं समेत लौट जाने को चली। ७ अतः वह अपनी दोनों बहुओं समेत उस स्थान से जहाँ रहती थी निकली, और उन्होंने यहदा देश को लौट जाने का मार्ग लिया। ८ तब नाओमी ने अपनी दोनों बहुओं से कहा, “तुम अपने-अपने मायके लौट जाओ। और जैसे तुम ने उनसे जो मर गए हैं और मुझसे भी प्रीति की है, वैसे ही यहोवा तुम पर कृपा करे। ९ यहोवा ऐसा करे कि तुम फिर अपने-अपने पति के घर में विश्राम पाओ।” तब नाओमी ने उनको चूमा, और वे चिल्ला चिल्लाकर रोने लगीं, १० और उससे कहा, “निश्चय हम तेरे संग तेरे लोगों के पास चलेंगी।” ११ पर नाओमी ने कहा, “हे मेरी बेटियों, लौट जाओ, तुम क्यों मेरे संग चलेंगी? क्या मेरी कोख मैं और पुत्र हैं जो तुम्हारे पति हों? १२ हे मेरी बेटियों, लौटकर चली जाओ, क्योंकि मैं पति करने को बुझी हो चुकी हूँ। और चाहे मैं कहती थी, कि मुझे आशा है, और आज की रात मेरा पति होता थी, और मेरे पुत्र भी होते, १३ तो भी क्या तुम उनके सयाने होने तक आशा लगाए ठहरी रहती? और उनके निमित्त पति करने से स्कंच रहती? हे मेरी बेटियों, ऐसा न हो, क्योंकि मेरा दुःख तुम्हारे दुःख से बहुत बढ़कर है; देखो, यहोवा का हाथ मेरे विस्तृ उठा है।” १४ तब वे चिल्ला चिल्लाकर फिर से रोने लगीं; और ओपी ने तो अपनी सास को चूमा, परन्तु स्त उससे अलग न हुई। १५ तब नाओमी ने कहा, “देख, तेरी जिठानी तो अपने लोगों और अपने देवता के पास लौट गई है; इसलिए तू अपनी जिठानी के पीछे लौट जा।” १६ पर स्त बोली, “तू मुझसे यह विनती न कर, कि मुझे त्याग या छोड़कर लौट जा; क्योंकि जिधर तू जाएँगी उधर मैं भी जाऊँगी, जहाँ तू टिके वहाँ मैं भी टिकँगी; तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा; १७ जहाँ तू मेरेगी वहाँ मैं भी मस्ती, और वही मुझे मिट्टी दी जाएगी। यदि मृत्यु छोड़ और किसी कारण मैं तुझ से अलग होऊँ, तो यहोवा मुझसे वैसा ही बरन् उससे भी अधिक करे।” १८ जब नाओमी ने यह देखा कि वह मैं संग चलने को तैयार है, तब उसने उससे और बात न कही। १९ अतः वे दोनों चल पड़ी और बैतलहम को पहुँचने पर सारे नगर में उनके कारण हलचल मच गई; और ख्रियाँ कहने लगीं, “क्या यह नाओमी है?” २० उसने उनसे कहा, “मुझे नाओमी न कहो, मुझे मारा कहो, क्योंकि सर्वशक्तिमान ने मुझ को बड़ा दुःख दिया है। २१ मैं भरी पूरी चली गई थी, परन्तु यहोवा ने मुझ खाली हाथ लौटाया है। इसलिए जबकि यहोवा ही ने मेरे विद्व साक्षी दी, और सर्वशक्तिमान ने मुझ दुःख दिया है, फिर तुम मुझ क्यों नाओमी कहती हो?” २२ इस प्रकार नाओमी अपनी मोआबिन बह स्त के साथ

लौटी, जो मोआब देश से आई थी। और वे जौ कटने के आरम्भ में बैतलहम पहुँची।

२ नाओमी के पति एलीमिलेक के कुल में उसका एक बड़ा धनी कुटुम्बी था, जिसका नाम बोअज था। ३ मोआबिन स्त ने नाओमी से कहा, “मुझे किसी खेत में जाने दे, कि जो मुझ पर अनुग्रह की दृष्टि करे, उसके पीछे-पीछे मैं सिला बीनीती जाऊँ।” उसने कहा, “चली जा, बेटी।” ४ इसलिए वह जाकर एक खेत में लवनेवालों के पीछे बीने लगी, और जिस खेत में वह संयोग से गई थी वह एलीमिलेक के कुटुम्बी बोअज का था। ५ और बोअज बैतलहम से आकर लवनेवालों से कहने लगा, “यहोवा तुम्हारे संग रहे,” और वे उससे बोले, “यहोवा तुझे आशीष दे।” ६ तब बोअज ने अपने उस सेवक से जो लवनेवालों के ऊपर ठहराया गया था पूछा, “वह किसकी कन्या है?” ७ जो सेवक लवनेवालों के ऊपर ठहराया गया था उसने उत्तर दिया, “वह मोआबिन कन्या है, जो नाओमी के संग मोआब देश से लौट आई है।” ८ उसने कहा था, “मुझे लवनेवालों के पीछे-पीछे पूर्णे के बीच बीने और बाले बटोरने दे।” ९ तो वह आई, और भोर से अब तक यही है, केवल थोड़ी देर तक घर में रही थी। १० तब बोअज ने स्त से कहा, “हे मेरी बेटी, क्या तू सुनती है? किसी दूसरे के खेत में बीनने को न जाना, मेरी ही दासियों के संग यही रहना। ११ जिस खेत को वे लवती हों उसी पर तेरा ध्यान लगा रहे, और उन्हीं के पीछे-पीछे चला करना। क्या मैंने जवानों को आज्ञा नहीं दी, कि तुझे तंग न करें? और जब जब तुझे प्यास लगे, तब-तब तू बरतनों के पास जाकर जवानों का भरा हुआ पानी पीना।” १२ तब वह भूमि तक झुककर मुँह के बल गिरी, और उससे कहने लगी, “क्या कारण है कि तेरे मुझ परदेशिन पर अनुग्रह की दृष्टि करके मेरी सुधि ली है?” १३ बोअज ने उत्तर दिया, “जो कुछ तूने अपने पति की मृत्यु के बाद अपनी सास से किया है, और तू किस प्रकार अपने माता पिता और जन्म-भूमि को छोड़कर ऐसे लोगों में आई है जिनको पहले तून जानती थी, यह सब मुझे विस्तार के साथ बताया गया है। १४ यहोवा तेरी करनी का फल दे, और इसाएल का परमेश्वर यहोवा जिसके पंखों के तले तू शरण लेने आई है, तुझे पूरा प्रतिफल दे।” १५ उसने कहा, “हे मेरे प्रभु, तू अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे, क्योंकि यथपूर्व मैं तेरी दासियों में से किसी के भी बाराबर नहीं हूँ, तो भी तने अपनी दासी के मन मैं पैठनेवाली बातें कहकर मुझे शान्ति दी है।” १६ फिर खाने के समय बोअज ने उससे कहा, “यही आकर रोटी खा, और अपना कौर सिरके में डाला।” तो वह लवनेवालों के पास बैठ गई; और उसने उसको भुनी हुई बाले दी; और वह खाकर तूम हुई, बरन् कुछ बचा भी रखा। १७ जब वह बीनने को उठी, तब बोअज ने अपने जवानों को आज्ञा दी, “उसको पूलों के बीच-बीच में भी बीनने दो, और दोष मत लगाओ।” १८ बरन् मुश्ती भर जाने पर कुछ कुछ निकालकर गिरा भी दिया करो, और उसके बीनने के लिये छोड़ दो, और उसे डॉटना मत।” १९ अतः वह सौँझा तक खेत में बीनीती रही; तब जो कुछ बीन चुकी उसे फटका, और वह कई एपा भर जौ निकला। २० तब वह उसे उठाकर नगर मैं गई, और उसकी सास ने उससे पूछा, “आज तू कहाँ बीनीती, और कहाँ काम करती थी? धन्य वह हो जिसने तेरी सुधि ली है।” तब उसने अपनी सास को बता दिया, कि मैंने किसके पास काम किया, और कहा, “जिस पुस्त के पास मैंने आज काम किया उसका नाम बोअज है।” २१ नाओमी ने अपनी बह से कहा, “वह यहोवा की ओर से आशीष पाए, क्योंकि उसने न तो जीवित पर से और न मेरे हुओं पर से अपनी कम्पा

हटाई!” फिर नाओमी ने उससे कहा, “वह पुस्त तो हमारा एक कुटुम्बी है, वरन् उनमें से है जिनको हमारी भूमि छुड़ाने का अधिकार है।” १८ फिर स्त मोआबिन बोली, “उनमें मुझसे यह भी कहा, ‘जब तक मेरे सेवक मेरी सारी कटनी पूरी न कर चुके तब तक उन्हीं के संग-संग लगी रह।’” १९ नाओमी ने अपनी बह स्त से कहा, “मेरी बेटी यह अच्छा भी है, कि तू उसी की दासियों के साथ-साथ जाया करो, और वे तुझको दूसरे के खेत में न मिलो।” २० इसलिए स्त जौ और गेहूँ दोनों की कटनी के अन्त तक बीनने के लिये बोअज की दासियों के साथ-साथ लगी रही; और अपनी सास के यहाँ रहती थी।

३ एक दिन उसकी सास नाओमी ने उससे कहा, “हे मेरी बेटी, क्या मैं तेरे

लिये आश्रय न ढूँढ़ू कि तेरा भला हो? १ अब जिसकी दासियों के पास तू थी, क्या वह बोअज हमारा कुटुम्बी नहीं है? वह तो आज रात को खलिहान में जौ फटकेगा। २ तू सान कर तेल लगा, बख्ख पहनकर खलिहान को जा; परन्तु जब तक वह पुस्त खा पी न चुके तब तक अपने को उस पर प्रगत न करना। ३ और जब वह लेट जाए, तब तू उसके लेटने के स्थान को देख लेना; फिर भीतर जा उसके पाँव उघाड़ के लेट जाना; तब वही तुझे बताएगा कि तुझे क्या करना चाहिये।” ४ स्त ने उससे कहा, “जो कुछ तू कहती है वह सब मैं कहूँगी।” ५ तब वह खलिहान को गई और अपनी सास के कहे अनुसार ही किया। ६ जब बोअज खा पी चुका, और उसका मन आनन्दित हुआ, तब जाकर अनाज के ढेर के एक सिरे पर लेट गया। तब वह चूपचाप गई, और उसके पाँव उघाड़ के लेट गई। ७ आधी रात को वह पुस्त चौंक पड़ा, और आगे की ओर झक्कर क्या पाया, कि मेरे पाँवों के पास कोई स्ती लेटी है। ८ उसने पूछा, “तू कौन है?” तब वह बोली, “मैं तो तेरी दासी स्त हूँ; तू अपनी दासी को अपनी चूर ओड़ा दे, क्योंकि तू हमारी भूमि छुड़ानेवाला कुटुम्बी है।” ९ उसने कहा, “हे बेटी, यहोवा की ओर से तुझ पर आशीष हो; क्योंकि तूने अपनी पिछली प्रीति पहली से अधिक दिखाई, क्योंकि तू, क्या धनी, क्या कंगाल, किसी जवान के पीछे नहीं लगी।” १० इसलिए अब, हे मेरी बेटी, मत डर, जो कुछ तू कहेगी मैं तुझ से कहूँगा; क्योंकि मेरे नगर के सब लोग जानते हैं कि तू भली स्ती है। ११ और सच तो है कि मैं ये छुड़ानेवाला कुटुम्बी हूँ, तो भी एक और है जिसे मुझसे पहले ही छुड़ाने का अधिकार है। १२ अतः रात भर ठहरी रह, और सबै यदि वह तेरे लिये छुड़ानेवाले का काम करना चाहे; तो अच्छा, वही ऐसा करें; परन्तु यदि वह तेरे लिये छुड़ानेवाले का काम करने को प्रसन्न न हो, तो यहोवा के जीवन की शपथ मैं ही वह काम करूँगा। भौंतक लेटी रह।” १३ तब वह उसके पाँवों के पास भौंत कर लेटी रही, और उससे पहले कि कोई दूसरे को पहचान सके वह उठी; और बोअज ने कहा, “कोई जानने न पाए कि खलिहान में कोई स्ती आई थी।” १४ तब बोअज ने कहा, “जो चूर तू ओड़े हैं उसे फैलाकर पकड़ ले।” और जब उसने उसे पकड़ा तब उसने छ: नपुए जौ नापकर उसको उठा दिया; फिर वह नगर में चली गई। १५ जब स्त अपनी सास के पास आई तब उसने पूछा, “हे बेटी, क्या हुआ?” तब जो कुछ उस पुस्त ने उससे किया था वह सब उसने उसे कह सुनाया। १६ फिर उसने कहा, “यह छ: नपुए जौ उसने यह कहकर मुझे दिया, कि अपनी सास के पास खाली हाथ मत जा।” १७ फिर नाओमी ने कहा, “हे मेरी बेटी, जब तक तू न जाने कि इस बात का कैसा फल निकलेगा, तब तक चुपचाप बैठी रह, क्योंकि आज उस पुस्त को यह काम बिना निपटाए चैन न पड़ेगा।”

४ तब बोअज फाटक के पास जाकर बैठ गया; और जिस छुड़ानेवाले कुटुम्बी की चर्चा बोअज ने की थी, वह भी आ गया। तब बोअज ने कहा,

“हे मित्र, इधर आकर यही बैठ जा;” तो वह उधर जाकर बैठ गया। २ तब उसने नगर के दस बूद्ध लोगों को बुलाकर कहा, “यही बैठ जाओ।” वे भी बैठ गए। ३ तब वह उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी से कहने लगा, “नाओमी जो मोआब देश से लौट आई है वह हमारे भाई एलीमेलेक की एक टुकड़ा भूमि बेचना चाहती है।” ४ इसलिए मैंने सोचा कि यह बात तुझको जाताकर कहँगा, कि तू उसको इन बैठे हुओं के सामने और मेरे लोगों के इन बूद्ध लोगों के सामने मोल ले। और यदि तू उसको छुड़ाना चाहे, तो छुड़ा; और यदि तू छुड़ाना न चाहे, तो मुझे ऐसा ही बता दे, कि मैं समझ लूँ; क्योंकि तुझे छोड़ उसके छुड़ाने का अधिकार और किसी को नहीं है, और तेरे बाद मैं हूँ।” उसने कहा, “मैं उसे छुड़ाऊँगा।” ५ फिर बोअज ने कहा, “जब तू उस भूमि को नाओमी के हाथ से मोल ले, तब तू स्त मोआबिन के हाथ से भी जो मेरे हुए की स्ती है इस मनसा से मोल लेना पड़ेगा, कि मेरे हुए का नाम उसके भाग में स्थिर कर दे।” ६ उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी ने कहा, “मैं उसको छुड़ा नहीं सकता, ऐसा न हो कि मेरा निज भाग बिगड़ जाए। इसलिए मैं बो छुड़ाने का अधिकार तू ले ले, क्योंकि मैं उसे छुड़ा नहीं सकता।” ७ पुराने समय में इसाएल में छुड़ाने और बदलने के विषय में सब पक्का करने के लिये यह प्रथा थी, कि मनुष्य अपनी जूती उतार के दूसरे को देता था। इसाएल में प्रमाणित इसी रीति से होता था। ८ इसलिए उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी ने बोअज से यह कहकर; “कि तू उसे मोल ले, तेरी जूती उतारी।” ९ तब बोअज ने बूद्ध लोगों और सब लोगों से कहा, “तुम आज इस बात के साक्षी हो कि जो कुछ एलीमेलेक का और जो कुछ किल्योन और महलोन का था, वह सब मैं नाओमी के हाथ से मोल लेता हूँ।” १० फिर महलोन की स्ती स्त मोआबिन को भी मैं अपनी पत्री करने के लिये इस मनसा से मोल लेता हूँ, कि मेरे हुए का नाम उसके निज भाग पर स्थिर करूँ, कहीं ऐसा न हो कि मेरे हुए का नाम उसके भाइयों में से और उसके स्थान के फाटक से मिट जाए; तुम लोग आज साक्षी ठहरे हो।” ११ तब फाटक के पास जितने लोग थे उहोंने और बूद्ध लोगों ने कहा, “हम साक्षी हैं। यह जो स्ती तेरे घर में आती है उसको यहोवा इसाएल के घराने की दो उपजनेवाली राहेल और लिआ के समान करे। और तू एषाता में वीरता करे, और बैतलहम में तेरा बड़ा नाम हो;” १२ और जो सन्तान यहोवा इस जवान स्ती के द्वारा तुझे दे उसके कारण से तेरा घराना पेरेस का सा हो जाए, जो तामार से यहादा के द्वारा उत्पन्न हुआ।” १३ तब बोअज ने स्त को ब्याह लिया, और वह उसकी पत्री हो गई; और जब वह उसके पास गया तब यहोवा की दया से उसको गर्भ रहा, और उसके एक बेटा उत्पन्न हुआ। १४ तब बीज्यों ने नाओमी से कहा, “यहोवा ध्यय है, जिसने तुझे आज छुड़ानेवाले कुटुम्बी के बिना नहीं छोड़ा; इसाएल में इसका बड़ा नाम हो।” १५ और यह तेरी जी मैं जी ले आनेवाला और तेरा बुद्धपे में पालनेवाला हो, क्योंकि तेरी बह जो तुझ से प्रेम रखती और सात बेटों से भी तेरे लिये श्वेष है उसी का यह बेटा है।” १६ फिर नाओमी उस बच्चे को अपनी गोट में रखकर उसकी दाई का काम करने लगी। १७ और उसकी पड़ोसिनों ने यह कहकर, कि “नाओमी के एक बेटा उत्पन्न हुआ है”, लड़के का नाम ओबेद रखा। यिसी का पिता और दाऊद का दादा वही हुआ। १८ पेरेस की बंशावर्ती यह है, अर्थात् पेरेस से हेसोन, १९ और हेसोन से राम, और राम से अम्मीनादाब, २० और अम्मीनादाब से नहशोन, और नहशोन से सलमोन, २१ और सलमोन से बोअज, और बोअज से ओबेद, २२ और ओबेद से यिशै, और यिशै से दाऊद उत्पन्न हुआ।

1 शमूएल

१ ऐप्रैम के पहाड़ी देश के रामातैम सोरीम नगर का निवासी एल्कना नामक

एक पुस्त था, वह ऐप्रैमी था, और सूफ के पुत्र तोह का परपोता, एलीह का पोता, और यरोहाम का पुत्र था। २ और उसकी दो पत्रियाँ थीं; एक का नाम हन्ना और दूसरी का पनिना था। पनिना के तो बालक हुए, परन्तु हन्ना के कोई बालक न हुआ। ३ वह पुष्प प्रतिवर्ष अपने नगर से सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने और मेलबलि चढ़ाने के लिये शीलों में जाता था; और वहाँ होनी और पीनहास नामक एली के दोनों पुत्र रहते थे, जो यहोवा के याजक थे। ४ और जब जब एल्कना मेलबलि चढ़ाता था तब-तब वह अपनी पत्री पनिना को और उसके सब बेटे-बेटियों को दान दिया करता था; ५ परन्तु हन्ना को वह दो गुना दान दिया करता था, क्योंकि वह हन्ना से प्रीति रखता था; तो भी यहोवा ने उसकी कोख बन्द कर रखी थी। ६ परन्तु उसकी सौत इस कारण से, कि यहोवा ने उसकी कोख बन्द कर रखी थी, उसे अत्यन्त चिढ़ाकर कुदाती रहती थी। ७ वह तो प्रतिवर्ष ऐसा ही करता था; और जब हन्ना यहोवा के भवन को जाती थी तब पनिना उसको चिढ़ाती थी। इसलिए वह रोती और खाना न खाती थी। ८ इसलिए उसके पति एल्कना ने उससे कहा, “हे हन्ना, तू क्यों रोती है? और खाना क्यों नहीं खाती? और तेरा मन क्यों उदास है? क्या तेरे लिये मैं दस बेटों से भी अच्छा नहीं हूँ?” ९ तब शीलों में खाने और पीने के बाद हन्ना उठी। और यहोवा के मन्दिर के चौखट के एक बाजू के पास एली याजक कुर्सी पर बैठा हुआ था। १० वह मन में व्याकूल होकर यहोवा से प्रार्थना करने और बिलख-बिलख कर रोने लगी। ११ और उसने यह मन्त्र मानी, “हे सेनाओं के यहोवा, यदि तू अपनी दासी के दुःख पर सचमुच दृष्टि करे, और मेरी सुधि ले, और अपनी दासी को भूल न जाए, और अपनी दासी को पुत्र दे, तो मैं उसे उसके जीवन भर के लिये यहोवा को अपेंग करूँगी, और उसके सिर पर छारा फिरने न पाएगा।” १२ जब वह यहोवा के सामने ऐसी प्रार्थना कर रही थी, तब एली उसके मूँह की ओर ताक रहा था। १३ हन्ना मन ही मन कह रही थी; उसके होंठों तो हिलते थे परन्तु उसका शब्द न सुन पड़ता था; इसलिए एली ने समझा कि वह नशे में है। १४ तब एली ने उससे कहा, “तू कब तक ज्ञो मैं रहेगी? अपना नशा उतार।” १५ हन्ना ने कहा, “नहीं, हे मेरे प्रभु, मैं तो दुखिया हूँ; मैंने न तो दाखमधु पिया है और न मदिरा, मैंने आपने मन की बात खोलकर यहोवा से कही है।” १६ अपनी दासी को ओछी छीं न जान, जो कुछ मैंने अब तक कहा है, वह बहुत ही शोकित होने और चिढ़ाइ जाने के कारण कहा है।” १७ एली ने कहा, “कुशल से चली जा; इसाएल का परमेश्वर तुझे मन चाहा वर दे।” १८ उसने कहा, “तेरी दासी तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाए।” तब वह छीं चली गई और खाना खाया, और उसका मूँह फिर उदास न रहा। १९ वे सर्वे उठ यहोवा को दण्डवत् करके रामाह में अपने घर लौट गए। और एल्कना अपनी छीं हन्ना के पास गया, और यहोवा ने उसकी सुधि ली; २० तब हन्ना गर्वती हुई और सप्त अपने एक पुत्र हुआ, और उसका नाम शमूएल रखा, क्योंकि वह कहने लगी, “मैंने यहोवा से मॉंगकर इसे पाया है।” २१ फिर एल्कना अपने पौरे घराने समेत यहोवा के सामने प्रतिवर्ष की मेलबलि चढ़ाने और अपनी मन्त्र पूरी करने के लिये गया। २२ परन्तु हन्ना अपने पति से यह कहकर घर में रह गई, “जब बालक का दृथ छूट जाएगा तब मैं उसको ले जाऊँगी, कि वह यहोवा को मूँह दिखाए, और वहाँ सदा बना रहे।” २३ उसके पति एल्कना ने उससे कहा, “जो तुझे भला लगे वही कर जब तक तू उसका दृथ न छुड़ाए तब तक यहीं ठहरी रह, केवल इतना हो कि यहोवा अपना वचन पूरा करे।” इसलिए वह छीं वहीं

घर पर रह गई और अपने पुत्र के दृथ छूटने के समय तक उसको पिलाती रही।

२४ जब उसने उसका दृथ छुड़ाया तब वह उसको संग ले गई, और तीन बछड़े, और एपा भर आटा, और कुपी भर दाखमधु भी ले गईं, और उस लड़के की शीलों में यहोवा के भवन में पहुँचा दिया; उस समय वह लड़का ही था। २५ और उन्होंने बछड़ा बलि करके बालक को एली के पास पहुँचा दिया। २६ तब हन्ना ने कहा, “हे मेरे प्रभु, तैरे जीवन की शपथ, हे मेरे प्रभु, मैं वही छीं जो तेरे पास यहीं छुड़ी होकर यहोवा से प्रार्थना करती थी।” २७ यह वही बालक है जिसके लिये मैंने प्रार्थना की थी, और यहोवा ने मझे मूँह मांगा वर दिया है। २८ इसलिए मैं भी उसे यहोवा को अपेंग कर देती हूँ; कि यह अपने जीवन भर यहोवा ही का बना रहे।” तब उसने वहीं यहोवा को दण्डवत् किया।

२ तब हन्ना ने प्रार्थना करके कहा, “मेरा मन यहोवा के कारण मग्न है; मेरा

सींग यहोवा के कारण ऊँचा हुआ है। मेरा मूँह मैं शत्रुओं के विद्ध खुल गया, क्योंकि मैं तेरे किए हुए उद्धार से आनन्दित हूँ।” २ “यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं, क्योंकि तुझको छोड़ और कोई है ही नहीं; और हमारे परमेश्वर के समान कोई चित्रन नहीं है।” ३ फूलकर अहंकार की ओर बातें मत करो, और अंधेर की बातें तम्हारे मूँह से न निकलें; क्योंकि यहोवा ज्ञानी परमेश्वर है, और कामों को तौलनेवाला है। ४ शर्वीरों के धनुष टूट गए, और ठोकर खानेवालों की कमर में बल का फेटा कसा गया। ५ जो पेट भरते थे उन्हें गेटी के लिये मजदूरी करनी पड़ी, जो भूखे थे वे फिर ऐसे न रहे। बरन् जो बाँझ थी उसके सात हुए, और अनेक बालकों की माता घुलती जाती है। ६ यहोवा माराता है और जिलाता भी है; वही अध्येतों में उतारता और उससे निकालता भी है। (Sheol h7585) ७ यहोवा निर्भन करता है और धर्मी भी ज्ञाना है, वही नीचा करता और ऊँचा भी करता है। ८ वह कंगाल को धूलि में से उठाता; और दरिद्र को धूरे में से निकाल खड़ा करता है, ताकि उनको अधिपतियों के संग छैटाए, और महिमायुक्त सिंहासन के अधिकारी बनाए। क्योंकि पृथ्वी के खम्भे यहोवा के हैं, और उसने उन पर जगत को धारा है। ९ “वह अपने भत्तों के पाँवों को सम्भाले रहेगा, परन्तु दृष्टि अधियोर में चुपचाप पड़े रहेंगे; क्योंकि कोई मनुष्य अपने बल के कारण प्रबल न होगा।” १० जो यहोवा से झागड़ते हैं वे चक्कानाचूर होंगे; वह उनके विद्ध आकाश में गरजेगा। यहोवा पूर्वी की छोर तक न्याय करेगा; और अपने राजा को बल देगा, और अपने अभिषिक्त के सींग को ऊँचा करेगा।” ११ तब एल्कना रामाह को अपने घर चला गया। और वह बालक एली याजक के सामने यहोवा की सेवा ठहल करने लगा। १२ एली के पुत्र तो लुच्चे थे; उन्होंने यहोवा को न पहचाना। १३ याजकों की रीत लोगों के साथ यह थी, कि जब कोई मनुष्य मेलबलि चढ़ाता था तब याजक का सेवक माँस पकाने के समय एक नोकवाला काँटा हाथ में लिये हुए आकर, १४ उसे कड़ाही, या हाण्डी, या हूँड़े, या तसले के भीतर डालता था; और जितना माँस कॉट में लग जाता था उतना याजक अप ले लेता था। ऐसा ही वे शीलों में सारे इस्माएलियों से किया करते थे जो वहाँ आते थे। १५ और चबीं जलाने से पहले भी याजक का सेवक आकर मेलबलि चढ़ानेवाले से कहता था, “भूने के लिये याजक को माँस दे; वह तुझ से पका हुआ नहीं, कच्चा ही माँस लेगा।” १६ और जब कोई उससे कहता, “निश्चय चबीं अभी जलाई जाएगी, तब जितना तेरा जी जाहे उतना ले लेना,” तब वह कहता था, “नहीं, अभी नहीं तो मैं छीन लूँगा।” १७ इसलिए उन जवानों का पाप यहोवा की दृष्टि में बहुत भारी हुआ; क्योंकि वे मनुष्य यहोवा की भेट का तिरस्कार करते थे। १८ परन्तु शमूएल जो बालक था सनी का एपोद पहने हुए यहोवा के सामने सेवा ठहल किया करता था। १९ और उसकी माता प्रतिवर्ष उसके लिये एक छोटा सा बाग बनाकर जब अपने पति के संग प्रतिवर्ष की मेलबलि चढ़ाने

आती थी तब बागे को उसके पास लाया करती थी। २० एली ने एन्काना और उसकी पत्नी को आशीर्वाद देकर कहा, “यहोवा इस अर्पण किए हुए बालक के बदले जो उसको अर्पण किया गया है तुझको इस पत्नी से वंश दे।” तब वे अपने यहाँ चले गए। २१ यहोवा ने हन्ना की सुधिती, और वह गर्भवती हुई और उसके तीन बेटे और दो बेटियाँ उत्पन्न हुईं। और बालक शमूएल यहोवा के संग रहता हुआ बढ़ता गया। २२ एली तो अति बूढ़ा हो गया था, और उसने सुना कि उसके पुत्र सारे इस्माएल से कैसा-कैसा व्यवहार करते हैं, वरन् मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली छियोंके संग कुर्कम भी करते हैं। २३ तब उसने उनसे कहा, “तुम ऐसे-ऐसे काम करते हो? मैं इन सब लोगों से तुम्हारे कुर्कमों की चर्चा सुना करता हूँ।” २४ हे मेरे बेटों, ऐसा न करो, क्योंकि जो समाचार मेरे सुनने में आता है वह अच्छा नहीं; तुम तो यहोवा की प्रजा से अपराध करते हो। २५ यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का अपराध करे, तब तो न्यायी उसका न्याय करेगा; परन्तु यदि कोई मनुष्य यहोवा के विस्तु पाप करे, तो उसके लिये कौन विनाती करेगा?” तो भी उन्होंने अपने पिता की बात न मानी; क्योंकि यहोवा की इच्छा उन्हें मार डालने की थी। २६ परन्तु शमूएल बालक बढ़ता गया और यहोवा और मनुष्य दोनों उससे प्रसन्न रहते थे। २७ परमेश्वर का एक जन एली के पास जाकर उससे कहने लगा, “यहोवा यह कहता है, कि जब तेरे मूलपुस्ख का घराना मिस्र में फिरान के घराने के वश में था, तब क्या मैं उस पर निष्ठ्यव प्रगट न हुआ था?” २८ और क्या मैंने उसे इस्माएल के सब गोत्रों में से इसलिए चुन नहीं लिया था, कि मेरा याजक होकर मेरी वेदी के ऊपर चढ़ाए चढ़ाए, और धूप जलाए, और मेरे सामने एपोद पहना करे? और क्या मैंने तेरे मूलपुस्ख के घराने को इस्माएलियों के सारे हव्य न दिए थे? २९ इसलिए मेरे मेलबलि और अनन्बलि को जिनको मैंने अपने धाम में चढ़ाने की आज्ञा दी है, उन्हें तुम लोग क्यों पाँव तले रौंदें हो? और तू क्यों अपने पुत्रों का मुझसे अधिक आदर करता है, कि तुम लोग मेरी इस्माएली प्रजा की अच्छी से अच्छी भेट खा खाके मोटे हो जाओ? ३० इसलिए इस्माएल के परमेश्वर यहोवा की यह बाणी है, कि मैंने कहा तो था, कि तेरा घराना और तेरे मूलपुस्ख का घराना मेरे सामने सदैव चला करेगा; परन्तु अब यहोवा की बाणी यह है, कि यह बात मुझसे दूर हो; क्योंकि जो मेरा आदर करें मैं उनका आदर करूँगा, और जो मुझे तुच्छ जाने वे छोटे समझे जाएँगे। ३१ सुन, वे दिन आते हैं, कि मैं तेरा भुजबल और तेरे मूलपुस्ख के घराने का भुजबल ऐसा तोड़ डालूँगा, कि तेरे घराने में कोई बूढ़ा होने न पाएगा। ३२ इस्माएल का कितना ही कल्याण क्यों न हो, तो भी तुझे मेरे धाम का दुख देख पड़ेगा, और तेरे घराने में कोई कभी बूढ़ा न होने पाएगा। ३३ मैं तेरे कुल के सब किसी से तो अपनी वेदी की सेवा न छीरूँगा, परन्तु तो भी तेरी आँखें देखती रह जाएँगी, और तेरा मन शोकित होगा, और तेरे घर की बढ़ती सब अपनी पूरी जीवनी ही में भर मिट्टें। ३४ और मेरी इस बात का चिन्ह वह विपत्ति होगी जो होनी और पीनहास नामक तेरे दोनों पुत्रों पर पड़ेगी; अर्थात् वे दोनों के दोनों एक ही दिन मर जाएँगे। ३५ और मैं अपने लिये एक विचासयोग्य याजक कठहाँड़ा, जो मेरे हृदय और मन की इच्छा के अनुसार किया करेगा, और मैं उसका घर बसाऊँगा और स्थिर करूँगा, और वह मेरे अभिषिक्त के आगे-आगे सब दिन चला फिरा करेगा। ३६ और ऐसा होगा कि जो कोई तेरे घराने में बचा रहेगा वह उसी के पास जाकर एक छोटे से टुकड़े चाँदी के या एक रोटी के लिये दण्डवत् करके कहेगा, याजक के किसी काम में मुझे लगा, जिससे मुझे एक टुकड़ा रोटी मिले।”

३ वह बालक शमूएल एली के सामने यहोवा की सेवा ठहल करता था। उन दिनों में यहोवा का वचन दुर्लभ था; और दर्शन कम मिलता था। २ और

उस समय ऐसा हुआ कि (एली की आँखें तो धृुँधली होने लगी थी और उसे न सूझ पड़ता था) जब वह अपने स्थान में लेटा हुआ था, ३ और परमेश्वर का दीपक अब तक बुझा नहीं था, और शमूएल यहोवा के मन्दिर में जहाँ परमेश्वर का सन्दूक था, लेटा था; ४ तब यहोवा ने शमूएल को पुकारा; और उसने कहा, “क्या आज्ञा!” ५ तब उसने एली के पास दौड़कर कहा, “क्या आज्ञा, तने तो मुझे पुकारा है।” वह बोला, “मैंने नहीं पुकारा; फिर जा लेटा रह।” ६ तब जाकर लेट गया। ७ तब यहोवा ने फिर पुकारके कहा, “हे शमूएल!” शमूएल उठकर एली के पास गया, और कहा, “क्या आज्ञा, तने तो मुझे पुकारा है।” ८ उसने कहा, “हे मेरे बेटे, मैंने नहीं पुकारा; फिर जा लेटा रह।” ९ उस समय तब तो शमूएल यहोवा को नहीं पहचानता था, और न यहोवा का वचन ही उस पर प्रगट हुआ था। १० फिर तीसीरी बार यहोवा ने शमूएल को पुकारा। और वह उठकर एली के पास गया, और कहा, “क्या आज्ञा, तने तो मुझे पुकारा है।” ११ तब एली ने समझ लिया कि इस बालक को यहोवा ने पुकारा है। १२ इसलिए एली ने शमूएल से कहा, “जा लेटा रह, और यदि वह तुझे फिर पुकारे, तो तू कहना, ‘हे यहोवा, कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है।’” १३ तब शमूएल अपने स्थान पर जाकर लेट गया। १४ तब यहोवा आ खड़ा हुआ, और पहले के समान पुकारा, “शमूएल! शमूएल!” शमूएल ने कहा, “कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है।” १५ यहोवा ने शमूएल से कहा, “सुन, मैं इस्माएल में एक ऐसा काम करने पर हूँ, जिससे सब सुनेवालों पर बड़ा सन्नाटा छा जाएगा। १६ उस दिन मैं एली के विस्तु वह सब कुछ पूरा करूँगा जो मैंने उसके घराने के विषय में कहा, उसे आरम्भ से अन्त तक पूरा करूँगा। १७ क्योंकि मैं तो उसको यह कहकर जता चुका हूँ, कि मैं उस अर्धम का दण्ड जिसे वह जानता है सदा के लिये उसके घर का न्याय करूँगा, क्योंकि उसके पुत्र आप श्रापित हुए हैं, और उसने उन्हें नहीं रोका। १८ इस कारण मैंने एली के घराने के विषय यह शपथ खाई, कि एली के घराने के अर्धम का प्रायाश्वित न तो मेलबलि से कभी होगा, और न अनन्बलि से।” १९ और शमूएल भौं भौं तक लेटा रहा; तब उसने यहोवा के भवन के किवाड़ों को खोला। और शमूएल एली को उस दर्शन की बातें बताने से डरा। २० तब एली ने शमूएल को पुकारकर कहा, “हे मेरे बेटे, शमूएल!” वह बोला, “क्या आज्ञा!” २१ तब उसने पूछा, “वह कौन सी बात है जो यहोवा ने तुझ से कही है? उसे मुझसे न छिपा। जो कुछ उसने तुझ से कहा हो यदि तू उसमें से कुछ भी मुझसे छिपाए, तो परमेश्वर तुझ से वैसा ही वरन् उससे भी अधिक करे।” २२ तब शमूएल ने उसको रत्नी-रत्नी बातें कह सनाई, और कुछ भी न छिपा रखा। वह बोला, “वह तो यहोवा है; जो कुछ वह भला जाने वही करे।” २३ और शमूएल बड़ा होता गया, और यहोवा उसके संग रहा, और उसने शमूएल की कोई भी बात निष्कर्ष होने नहीं दी। २४ और दान से बेरेबा तक के हरनेवाले सारे इस्माएलियों ने जान लिया कि शमूएल यहोवा का नवी होने के लिये नियुक्त किया गया है। २५ और यहोवा ने शीतों में फिर दर्शन दिया, क्योंकि यहोवा ने अपने आपको शीतों में शमूएल पर अपने वचन के द्वारा प्रगट किया।

४ और शमूएल का वचन सारे इस्माएल के पास पहुँचा। और इस्माएली पलिशितों से युद्ध करने को निकले; और उन्होंने तो एबेनेजेर के आस-पास छावनी डाली, और पलिशितों ने अपेक में छावनी डाली। २८ तब पलिशितों ने इस्माएल के विस्तु पाँति बाँधी, और जब घमासान युद्ध होने लगा तब इस्माएली पलिशितों से हार गए, और उन्होंने कोई चार हजार इस्माएली सेना के सुखों को मैदान में ही मार डाला। ३१ जब वे लोग छावनी में लौट आए, तब इस्माएल के बूढ़े लोग कहने लगे, “यहोवा ने आज हमें पलिशितों से क्यों

हरवा दिया है? आओ, हम यहोवा की वाचा का सन्दूक शीलो से मँग ले आएँ, कि वह हमारे बीच में आकर हमें शत्रुओं के हाथ से बचाए।” ५ तब उन लोगों ने शीलो में भेजकर वहाँ से कस्तूरों के ऊपर विराजनेवाले सेनाओं के यहोवा की वाचा का सन्दूक मँगवा लिया; और परमेश्वर की वाचा के सन्दूक के साथ ऐसी के दोनों पुत्र, होप्नी और पीनहास भी वहाँ थे। ६ जब यहोवा की वाचा का सन्दूक छावनी में पहुँचा, तब सारे इसाएली इतने बल से ललकार उठे, कि भूमि पर जूँ उठी। ७ इस ललकार का शब्द सुनकर पलिशियों ने पछा, “इश्वियों की छावनी में ऐसी बड़ी ललकार का क्या कारण है?” तब उन्होंने जान लिया, कि यहोवा का सन्दूक छावनी में आया है। ८ तब पलिशियी डकर कहने लगे, “उस छावनी में परमेश्वर आ गया है।” फिर उन्होंने कहा, “हाय! हम पर ऐसी बात धूले नहीं हूँथी थी। ९ हाय! ऐसे महाप्रातीरी देवताओं के हाथ से हमको कौन बचाएगा? ये तो वे ही देवता हैं जिन्होंने मिशियों पर जंगल में सब प्रकार की विपत्तियाँ डाली थी। १० हे पलिशियों, तुम हियाव बाँधो, और पुस्तार्थ जगाओ, कहीं ऐसा न हो कि जैसे इन्हीं तुम्हारे अधीन हो गए वैसे तुम भी उनके अधीन हो जाओ; पुस्तार्थ करके संग्राम करो।” ११ तब पलिशियी लडाई के मैदान में टूट पड़े, और इसाएली हालकर अपने-अपने डैर को भागने लगे; और ऐसा अत्यन्त संहार हुआ, कि तीस हजार इसाएली पैदल खेत आए। १२ और परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया; और ऐसी के दोनों पुत्र, होप्नी और पीनहास, भी मरे गए। १३ तब उसी दिन एक बिन्यारीनी मनुष्य सेना में से दौड़कर अपने बछ फाड़े और सिर पर मिट्ठी डालते हुए शीलो पहुँचा। १४ वह जब पहुँचा उस समय एली, जिसका मन परमेश्वर के सन्दूक की चिन्ता से थरथरा रहा था, वह मार्ग के किनारे कुसीं पर बैठा बाट जोह रहा था। और जैसे ही उस मनुष्य ने नगर में पहुँचकर वह समाचार दिया वैसे ही सारा नगर चिल्ला उठा। १५ चिल्लाने का शब्द सुनकर एली ने पछा, “ऐसे हुल्लड और हालकर मचने का क्या कारण है?” और उस मनुष्य ने झट जाकर एली को पूरा हाल सुनाया। १६ एली तो अठानवे वर्ष का था, और उसकी आँखें धुंधली पड़ गईं थीं, और उसे कुछ सूझत न था। १७ उस मनुष्य ने एली से कहा, “मैं वही हूँ जो सेना में से आया हूँ, और मैं सेना से आज ही भागकर आया हूँ।” वह बोला, “हे मेरे बेटे, क्या समाचार है?” १८ उस समाचार देनेवाले ने उत्तर दिया, “इसाएली पलिशियों के सामने से भाग गए हैं, और लोगों का बड़ा भयानक संहार भी हुआ है, और तेरे दोनों पुत्र होप्नी और पीनहास भी मरे गए, और परमेश्वर का सन्दूक भी छीन लिया गया है।” १९ जैसे ही उसने परमेश्वर के सन्दूक का नाम लिया वैसे ही एली फाटक के पास कुसीं पर से पछाड़ खाकर पिर पड़ा; और बूढ़ा और भारी होने के कारण उसकी गर्दन टूट गई, और वह मर गया। उसने तो इसाएलियों का न्याय चालीस वर्ष तक किया था। २० उसकी बहू पीनहास की भी गर्भवती थी, और उसका समय समीप था। और जब उसने परमेश्वर के सन्दूक के छीन लिए जाने, और अपने ससुर और पति के मरने का समाचार सुना, तब उसको जच्चा का दर्द उठा, और वह दुहर गई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। २१ उसके मरते-मरते उन छियों ने जो उसके आस-पास खड़ी थी उससे कहा, “मत डर, क्योंकि तेरे पुत्र उत्पन्न हुआ है।” परन्तु उसने कुछ उत्तर न दिया, और न कुछ ध्यान दिया। २२ और परमेश्वर के सन्दूक के छीन लिए जाने और अपने ससुर और पति के कारण उसने यह कहकर उस बालक का नाम ईकाबोद रखा, “इसाएल में से महिमा उठ गई।” २३ फिर उसने कहा, “इसाएल में से महिमा उठ गई है, क्योंकि परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया है।”

५ पलिशियों ने परमेश्वर का सन्दूक एबेनेजेर से उठाकर अशदोद में पहुँचा दिया; फिर पलिशियों ने परमेश्वर के सन्दूक को उठाकर दागोन के

मन्दिर में पहुँचाकर दागोन के पास रख दिया। ६ दूसरे दिन अशदोदियों ने तड़के उठकर क्या देखा, कि दागोन यहोवा के सन्दूक के सामने औद्ये मूँह भूमि पर गिरा पड़ा है। तब उन्होंने दागोन को उठाकर उसी के स्थान पर फिर खड़ा किया। ७ फिर अगले दिन जब वे तड़के उठे, तब क्या देखा, कि दागोन यहोवा के सन्दूक के सामने औद्ये मूँह भूमि पर गिरा पड़ा है; और दागोन का सिर और दोनों हथेलियाँ डेवडी पर कटी हुई पड़ी हैं; इस प्रकार दागोन का केवल धड़ समृच्छा रह गया। ८ इस कारण आज के दिन तक भी दागोन के पुजारी और जितने दागोन के मन्दिर में जाते हैं, वे अशदोद में दागोन की डेवडी पर पाँव नहीं रखते। ९ तब यहोवा का हाथ अशदोदियों के ऊपर भारी पड़ा, और वह उन्हें नाश करने लगा; और उसने अशदोद और उसके आस-पास के लोगों के गिलिटियाँ निकाली। १० यह हाल देखकर अशदोद के लोगों ने कहा, “इसाएल के देवता का सन्दूक हमारे मध्य रहने नहीं पाएगा; क्योंकि उसका हाथ हम पर और हमारे देवता दागोन पर कठोरता के साथ पड़ा है।” ११ तब उन्होंने पलिशियों के सब सरदारों को बुलाकर भेजा, और उनसे पछा, “हम इसाएल के देवता के सन्दूक से क्या करें?” वे बोले, “इसाएल के देवता का सन्दूक घुमाकर गत नगर में पहुँचाया जाए।” अतः उन्होंने इसाएल के परमेश्वर के सन्दूक को घुमाकर गत में पहुँचा दिया। १२ जब वे उसको घुमाकर वहाँ पहुँचे, तो यूँ हुआ कि यहोवा का हाथ उस नगर के विस्तु ऐसा उठा कि उसमें अत्यन्त बड़ी हलचल मच गई; और उसने छोटे से बड़े तक उस नगर के सब लोगों को मारा, और उनके गिलिटियाँ निकलने लगी। १३ तब उन्होंने परमेश्वर का सन्दूक एकोन को भेजा और जैसे ही परमेश्वर का सन्दूक एकोन में पहुँचा वैसे ही एकोनी यह कहकर चिल्लाने लगे, “इसाएल के देवता का सन्दूक घुमाकर हमारे पास इसलिए पहुँचाया गया है, कि हम और हमारे लोगों को मरवा डालें।” १४ तब उन्होंने पलिशियों के सब सरदारों को इकट्ठा किया, और उनसे कहा, “इसाएल के देवता के सन्दूक को निकाल दो, कि वह अपने स्थान पर लौट जाए। और हमको और हमारे लोगों को मर डालने न पाए।” उस समस्त नगर में तो मूर्त्यु के भय की हलचल मच रही थी, और परमेश्वर का हाथ वहाँ बहुत भारी पड़ा था। १५ और जो मनुष्य न मरे वे भी गिलिटियों के मरे पड़े रहे; और नगर की चिल्लाहट आकाश तक पहुँची।

६ यहोवा का सन्दूक पलिशियों के देश में सात महीने तक रहा। ७ तब पलिशियों ने याजकों और भावी कहनेवालों को बुलाकर पछा, “यहोवा के सन्दूक से हम क्या करें? हमें बताओ कि क्या प्रायश्चित्त देकर हम उसे उसके स्थान पर भेजें?” ८ वे बोले, “यदि तुम इसाएल के देवता का सन्दूक वहाँ भेजो, तो उसे वैसे ही न भेजना; उसकी हानि भरने के लिये अवश्य ही दोषबलि देना। तब तुम चंगे हो जाओगे, और तुम जान लोगे कि उसका हाथ तुम पर से क्यों नहीं उठाया गया।” ९ उन्होंने पछा, “हम उसकी हानि भरने के लिये कौन सा दोषबलि दें?” वे बोले, “पलिशी सरदारों की गिनती के अनुसार सोने की पाँच गिलिटियाँ, और सोने के पाँच चूहे; क्योंकि तुम सब और तुम्हारे सरदार दोनों एक ही रोग से ग्रसित हो। १० तो तुम अपनी गिलिटियों और अपने देश के नष्ट कहनेवाले चूहों की भी मृत्यु बनाकर इसाएल के देवता की महिमा मानो; सम्भव है वह अपना हाथ तुम पर से और तुम्हारे देवताओं और देश पर से उठा ले। ११ तुम अपने मन व्याहों ऐसे हरीते करते हो जैसे मिशियों और फिरौन ने अपने मन हरीते कर दिए थे? जब उसने उनके मध्य में अचम्भित काम किए, तब क्या उन्होंने उन लोगों को जाने न दिया, और क्या वे चले न गए? १२ इसलिए अब तुम एक नई गाड़ी बनाओ, और ऐसी दो दुधार गायें लो जो जूए तले न आई हों, और उन गायों को उस गाड़ी में जोतकर

उनके बच्चों को उनके पास से लेकर घर को लौटा दो। ८ तब यहोवा का सन्दूक लेकर उस गाड़ी पर रख दो, और सोने की जो वस्तुएँ तुम उसकी हानि भरने के लिये दोषबलि की रीति से दोगे उन्हें दूसरे सन्दूक में रख के उसके पास रख दो। फिर उसे खाना कर दो कि चली जाए। ९ और देखते रहना; यदि वह अपने देश के मार्ग से होकर बेतशेमेश को छले, तो जानो कि हमारी यह बड़ी हानि उसी की ओर से हुई और यदि नहीं, तो हमको निन्द्य होगा कि यह मार हम पर उसकी ओर से नहीं, परन्तु संयोग ही से हुई।” १० उन मनुष्यों ने वैसा ही किया; अर्थात् दो दुधार गायें लेकर उस गाड़ी में जोती, और उनके बच्चों को घर में बन्द कर दिया। ११ और यहोवा का सन्दूक, और दूसरा सन्दूक, और सोने के चहों और अपनी गिलियों की मरतों को गाड़ी पर रख दिया। १२ तब गायों ने बेतशेमेश का सीधा मार्ग लिया; वे सङ्क ही सङ्क रम्भारी हुई चली गई, और न दाहिने मुड़ी और न बायें; और पलिशियों के सरदार उनके पछे-पीछे बेतशेमेश की सीमा तक गए। १३ और बेतशेमेश के लोग तराई में गेहूँ काट रहे थे; और जब उन्होंने आँखें उठाकर सन्दूक को देखा, तब उसके देखने से आनन्दित हुए। १४ गाड़ी योहेश नामक एक बेतशेमेशी के खेत में जाकर वहाँ ठहर गई, जहाँ एक बड़ा पत्थर था। तब उन्होंने गाड़ी की लकड़ी की चीरा और गायों को होमबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाया। १५ और लेवियों ने यहोवा के सन्दूक को उस सन्दूक के समेत जो साथ था, जिसमें सोने की वस्तुएँ थीं, उत्तर के उस बड़े पत्थर पर रख दिया; और बेतशेमेश के लोगों ने उसी दिन यहोवा के लिये होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। १६ यह देखकर पलिशियों के पाँचों सरदार उसी दिन एक्सोन को लौट गए। १७ सोने की गिलियों जो पलिशियों ने यहोवा की हानि भरने के लिये दोषबलि करके दे दी थी उनमें से एक तो अशदोद की ओर से, एक गाजा, एक अश्कलोन, एक गत, और एक एक्सोन की ओर से दी गई थी। १८ और वह सोने के चहों, क्या शहरपनाह वाले नगर, क्या बिना शहरपनाह के गाँव, वरन् जिस बड़े पत्थर पर यहोवा का सन्दूक रखा गया था वहाँ पलिशियों के पाँचों सरदारों के अधिकार तक की सब बस्तियों की गिनती के अनुसार दिए गए। वह पत्थर आज तक बेतशेमेशी योहेश के खेत में है। १९ फिर इस कारण से कि बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा के सन्दूक के भीतर झाँका था उसने उनमें से सतर मनुष्य, और फिर पचास हजार मनुष्य मार डाले; और वहाँ के लोगों ने इसलिए विलाप किया कि यहोवा ने लोगों का बड़ा ही संहार किया था। २० तब बेतशेमेश के लोग कहने लगे, “इस पवित्र परमेश्वर यहोवा के सामने कौन खड़ा रह सकता है? और वह हमारे पास से किसके पास चला जाए?” २१ तब उन्होंने किर्यत्यारीम के निवासियों के पास यह कहने को दूर भेजे, “पलिशियों ने यहोवा का सन्दूक लौटा दिया है, इसलिए तुम आकर उसे अपने यहाँ ले जाओ।”

७ तब किर्यत्यारीम के लोगों ने जाकर यहोवा के सन्दूक को उठाया, और अबीनादाब के घर में जो टीले पर बना था रखा, और यहोवा के सन्दूक की रक्षा करने के लिये अबीनादाब के पुत्र एलीआजर को पवित्र किया। ८ किर्यत्यारीम में सन्दूक को रखे हुए बहुत दिन हुए, अर्थात् बीस वर्ष बीत गए, और इस्माइल का सारा घराना विलाप करता हुआ यहोवा के पछे चलने लगा। ९ तब शमूएल ने इस्माइल के सारे घराने से कहा, “यदि तुम अपने पूर्ण मन से यहोवा की ओर फिरे हो, तो पराए देवताओं और अश्तोरेत देवियों को अपने बीच में से दूर करो, और यहोवा की ओर अपना मन लगाकर केवल उसी की उपासना करो, तब वह तुम्हें पलिशियों के हाथ से छुड़ाएगा।” १० तब इस्माइलियों ने बाल देवताओं और अश्तोरेत देवियों को दूर किया, और केवल यहोवा ही की उपासना करने लगे। ११ फिर शमूएल ने कहा, “सब इस्माइलियों

को मिस्पा में इकट्ठा करो, और मैं तुम्हारे लिये यहोवा से प्रार्थना करूँगा।” १२ तब वे मिस्पा में इकट्ठे हुए, और जल भर के यहोवा के सामने उपडेल दिया, और उस दिन उपवास किया, और वहाँ कहने लगे, “हमने यहोवा के विस्तु पाप किया है।” और शमूएल ने मिस्पा में इस्माइलियों का न्याय किया। १३ तब पलिशियों ने सुना कि इस्माइली मिस्पा में इकट्ठे हुए हैं, तब उनके सरदारों ने इस्माइलियों पर चढ़ाई की। यह सुनकर इस्माइली पलिशियों से भयभीत हुए। १४ और इस्माइलियों ने शमूएल से कहा, “हमारे लिये हमारे परमेश्वर यहोवा की दुहाई देना न छोड़, जिससे वह हमको पलिशियों के हाथ से बचाए।” १५ तब शमूएल ने एक दूध पीता मेना ले सर्वांग होमबलि करके यहोवा को चढ़ाया; और शमूएल ने इस्माइलियों के लिये यहोवा की दुहाई दी, और यहोवा ने उसकी सुन ती। १६ और जिस समय शमूएल होमबलि को चढ़ा रहा था उस समय पलिशियों के संग युद्ध करने के लिये निकट आ गए, तब उसी दिन यहोवा ने पलिशियों के ऊपर बादल को बड़े कड़क के साथ गरजाकर उन्हें घबरा दिया; और वे इस्माइलियों से हार गए। १७ तब इस्माइली पुरुषों ने मिस्पा से निकलकर पलिशियों को खदेड़ा, और उन्हें बेतकर के नीचे तक मारते चले गए। १८ तब शमूएल ने एक पत्थर लेकर मिस्पा और शेन के बीच में खड़ा किया, और यह कहकर उसका नाम एक्सेजर रखा, “यहाँ तक यहोवा ने हमारी सहायता की है।” १९ तब पलिशीती दब गए, और इस्माइलियों के देश में फिर न आए, और शमूएल के जीवन भर यहोवा का हाथ पलिशियों के विस्तु बना रहा। २० और एक्सोन और गत तक जितने नगर पलिशियों ने इस्माइलियों के हाथ से छीन लिए थे, वे फिर इस्माइलियों के वश में आ गए; और उनका देश भी इस्माइलियों ने पलिशियों के हाथ से छुड़ाया। और इस्माइलियों और एमोरियों के बीच भी संघ दो गई। २१ और शमूएल जीवन भर इस्माइलियों का न्याय करता रहा। २२ वह प्रतिवर्ष बेतेल और गिलगाल और मिस्पा में धूम-धूमकर उन सब स्थानों में इस्माइलियों का न्याय करता था। २३ तब वह रामाह में जहाँ उसका घर था लौट आया, और वहाँ भी इस्माइलियों का न्याय करता था, और वहाँ उसने यहोवा के लिये एक बेटी बनाई।

८ जब शमूएल बढ़ा हुआ, तब उसने अपने पुत्रों को इस्माइलियों पर न्यायी ठहराया। ९ उसके जेठे पुत्र का नाम योएल, और दूसरे का नाम अबिय्याह था; वे बेरेशी में न्याय करते थे। १० परन्तु उसके पुत्र उसकी राह पर न चले, अर्थात् लालच में आकर धूस लेते और न्याय बिगड़ाते थे। ११ तब सब इस्माइली बढ़ूलोग इकट्ठे होकर रामाह में शमूएल के पास जाकर १२ उससे कहने लगे, “सुन, तू तो अब बढ़ा हो गया, और तैरे पुत्र तेरी राह पर नहीं चलते; अब हम पर न्याय करने के लिये सब जातियों की रीति के अनुसार हमारे लिये एक राजा नियुक्त कर दे।” १३ परन्तु जो बात उन्होंने कही, ‘‘हम पर न्याय करने के लिये हमारे ऊपर राजा नियुक्त कर दे,’’ यह बात शमूएल को बुरी लगी। और शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। १४ और यहोवा ने शमूएल से कहा, “वे लोग जो कुछ तुझ से कहें उसे मान ले; क्योंकि उन्होंने तुझको नहीं परन्तु मुझी को निकला जाना है, कि मैं उनका राजा न रहूँ।” १५ जैसे-जैसे काम वे उस दिन से, जब से मैं उन्हें मिस्प से निकला लाया, आज के दिन तक करते आए हैं, कि मुझ को त्याग कर पराए, देवताओं की उपासना करते आए हैं, वैसे ही वे तुझ से भी करते हैं। १६ इसलिए अब तू उनकी बात मान; तो भी तू गम्भीरता से उनको भली भाँति समझा दे, और उनको बता भी दे कि जो राजा उन पर राज्य करेगा उसका व्यवहार किस प्रकार होगा।” १७ शमूएल ने उन लोगों को जो उससे राजा चाहते थे यहोवा की सब बातें कह सुनाई। १८ उसने कहा, “जो राजा तुम पर राज्य करेगा उसकी यह चाल होगी, अर्थात् वह तुम्हारे पुत्रों को लेकर अपने रथों और घोड़ों के काम पर नैकर रखेगा, और वे उसके रथों

के आगे-आगे दौड़ा करेगे; १२ फिर वह उनको हजार-हजार और पचास-पचास के ऊपर प्रधान बनाएगा, और कितनों से वह अपने हल जुतवाएगा, और अपने खेत कटवाएगा, और अपने लिये युद्ध के हथियार और स्थों के साज बनवाएगा। १३ फिर वह तुम्हारी बेटियों को लेकर उनसे सुगन्ध-द्रव्य और रसोई और रोटियाँ बनवाएगा। १४ फिर वह तुम्हारे खेतों और दाख और जैतून की बारियों में से जो अच्छी से अच्छी होंगी उन्हें ले लेकर अपने कर्मचारियों को देगा। १५ फिर वह तुम्हारे बीज और दाख की बारियों का दसवाँ अंश ले लेकर अपने हाकिमों और कर्मचारियों को देगा। १६ फिर वह तुम्हारे दास दासियों को, और तुम्हारे अच्छे से अच्छे जवानों को, और तुम्हारे गढ़ों को भी लेकर अपने काम में लगाएगा। १७ वह तुम्हारी भेड़-बकरियों का भी दसवाँ अंश लेगा; इस प्रकार तुम लोग उसके दास बन जाओगे। १८ और उस दिन तुम अपने उस चुने हुए राजा के कारण दुहाई दोगे, परन्तु यहोवा उस समय तुम्हारी न सुनेगा।” १९ तो भी उन लोगों ने शमूएल की बात न सुनी; और कहने लगे, “नहीं! हम निश्चय अपने लिये राजा चाहते हैं, २० जैसे हम भी और सब जातियों के समान हो जाएँ, और हमारा राजा हमारा न्याय करे, और हमारे आगे-आगे चलकर हमारी ओर से युद्ध किया करे।” २१ लोगों की ये सब बातें सुनकर शमूएल ने यहोवा के कानों तक पहुँचाया। २२ यहोवा ने शमूएल से कहा, “उनकी बात मानकर उनके लिये राजा ठहरा दे।” तब शमूएल ने इसाएली मनुष्यों से कहा, “तुम अब अपने-अपने नगर को छले जाओ।”

९ बिन्यामीन के गोत्र में कीश नाम का एक पुष्प था, जो अपीह के पुत्र बकेरात का पर्याप्ता, और सरोर का पोता, और अबीएल का पुत्र था; वह एक बिन्यामीनी पुष्प का पुत्र और बड़ा शक्तिशाली सूमा था। ० उसके शाऊल नामक एक जवान पुत्र था, जो सुन्दर था, और इसाएलियों में कोई उससे बढ़कर सुन्दर न था; वह इतना लम्बा था कि दुसरे लोग उसके कंधे ही तक आते थे। १ जब शाऊल के पिता कीश की गदहियाँ खो गईं, तब कीश ने अपने पुत्र शाऊल से कहा, “एक सेवक को अपने साथ ले जा और गदहियों को ढूँढ़ ला।” २ तब वह ऐसुम के पहाड़ी देश और शलीशा देश होते हुए गया, परन्तु उन्हें न पाया। तब वे शलीम नामक देश भी होकर गए, और वहाँ भी न पाया। फिर बिन्यामीन के देश में गए, परन्तु गदहियाँ न मिलीं। ३ जब वे सूफ़ नामक देश में आए, तब शाऊल ने अपने साथ के सेवक से कहा, “आ, हम लौट चलें, ऐसा न हो कि मेरा पिता गदहियों की चिन्ता छोड़कर हमारी चिन्ता करने लगे।” ४ उसने उससे कहा, “सुन, इस नगर में परमेश्वर का एक जन है जिसका बड़ा आदरमान होता है; और जो कुछ वह कहता है वह बिना पूरा हुए नहीं रहता। अब हम उधर चलें, सम्भव है वह हमको हमारा मार्ग बताएँ कि किधर जाएँ।” ५ शाऊल ने अपने सेवक से कहा, “सुन, यदि हम उस पुष्प के पास चलें तो उसके लिये क्या ले चलें? देख, हमारी थैलियों में की रोटी चुक गई है और भेट के योग्य कोई वस्तु है नी हरी, जो हम परमेश्वर के उस जन को दें। हमारे पास क्या है?” ६ सेवक ने फिर शाऊल से कहा, “मेरे पास तो एक शेकेल चाँदी की चौथाई है, वही मैं परमेश्वर के जन को दूँगा, कि वह हमको बताएँ कि किधर जाएँ।” ७ (पूर्वकाल में तो इसाएल में जब कोई परमेश्वर से प्रश्न करने जाता तब ऐसा कहता था, “चलो, हम दर्शी के पास चलें;” क्योंकि जो आजकल नबी कहलाता है वह पूर्वकाल में दर्शी कहलाता था।) ८ तब शाऊल ने अपने सेवक से कहा, “तूने भला कहा है; हम चलें।” अतः वे उस नगर को छले जहाँ परमेश्वर का जन था। ९ उस नगर की चढ़ाई पर चढ़ते समय उन्हें कई एक लड़कियाँ मिली जो पानी भरने को निकली

थीं; उन्होंने उनसे पूछा, “क्या दर्शी यहाँ है?” १० उन्होंने उत्तर दिया, “है; देखो, वह तुम्हरे आगे है। अब फूर्ती करो; आज ऊँचे स्थान पर लोगों का यज्ञ है, इसलिए वह आज नगर में आया हुआ है।” ११ जैसे ही तुम नगर में पहुँचे वैसे ही वह तुम को ऊँचे स्थान पर खाना खाने को जाने से पहले मिलेगा; क्योंकि जब तक वह न पहुँचे तब तक लोग भोजन न करेंगे, इसलिए कि यज्ञ के विषय में वही धन्यवाद करता; तब उसके बाद ही आमन्त्रित लोग भोजन करते हैं। इसलिए तुम अभी चढ़ाओ, इसी समय वह तुम्हें मिलेगा।” १२ वे नगर में चढ़ गए और जैसे ही नगर के भीतर पहुँचे वैसे ही शमूएल ऊँचे स्थान पर चढ़ने के बिचार से उनके सामने आ रहा था। १३ शाऊल के अने से एक दिन पहले यहोवा ने शमूएल को यह चिंता रखा था, १४ “कल इसी समय मैं तेरे पास बिन्यामीन के क्षेत्र से एक पुष्प को भेजूँगा, उसी को तू मेरी इसाएली प्रजा के ऊपर प्रधान होने के लिये अभिषेक करना। और वह मेरी प्रजा को पलिशितयों के हाथ से छुड़ाएगा; क्योंकि मैंने अपनी प्रजा पर कृपादृष्टि की है, इसलिए कि उनकी चिल्लाहट मेरे पास पहुँची है।” १५ फिर जब शमूएल को शाऊल दिखाई पड़ा, तब यहोवा ने उससे कहा, “जिस पुष्प की चर्चा मैंने तुझे की थी वह यही है; मेरी प्रजा पर यही अधिकार करेगा।” १६ तब शाऊल फाटक में शमूएल के निकट जाकर कहने लगा, “मुझे बता कि दर्शी का घर कहाँ है?” १७ उसने कहा, “दर्शी तो मैं हूँ; मेरे आगे-आगे ऊँचे स्थान पर चढ़ जा, क्योंकि आज के दिन तुम मेरे साथ भोजन खाओगे, और सवेरे को जो कुछ तेरे मन में हो सब कुछ मैं तुझे बताकर बिदा करूँगा।” १८ और तेरी गदहियाँ जो तीन दिन हुए खो गई थीं उनकी कुछ भी चिन्ता न कर, क्योंकि वे मिल गई हैं। और इसाएल में जो कुछ मनभाऊ है वह किसका है? क्या वह तेरा और तेरे पिता के सारे घराने का नहीं है?” १९ शाऊल ने उत्तर देकर कहा, “क्या मैं बिन्यामीनी, अर्थात् सब इसाएली गोत्रों में से छोटे गोत्र का नहीं हूँ? और क्या मेरा कुल बिन्यामीन के गोत्र के सारे कुलों में से छोटा नहीं है? इसलिए तू मुझसे ऐसी बातें क्यों कहता है?” २० तब शमूएल ने शाऊल और उसके सेवक को कोठरी में पहुँचाकर आमन्त्रित लोग, जो लगभग तीस जन थे, उनके साथ मुख्य स्थान पर बैठा दिया। २१ फिर शमूएल ने रसोइये से कहा, “जो टुकड़ा मैंने तुझे देकर, अपने पास रख छोड़ने को कहा था, उसे ले आ।” २२ तो रसोइये ने जाँघ को माँस समेत उठाकर शाऊल के आगे धर दिया; तब शमूएल ने कहा, “जो रखा गया था उसे देख, और अपने सामने रख के खा; क्योंकि वह तेरे लिये इसी नियत समय तक, जिसकी चर्चा करके मैंने लोगों को न्योता दिया, रखा हुआ है।” शाऊल ने उस दिन शमूएल के साथ भोजन किया। २३ तब वे ऊँचे स्थान से उत्तरकर नगर में आए, और उसने घर की छत पर शाऊल से बातें की। २४ सवेरे वे तड़के उठे, और पौ फटते शमूएल ने शाऊल को छत पर बुलाकर कहा, “उठ, मैं तुझको बिदा करूँगा।” तब शाऊल उठा, और वह और शमूएल दोनों बाहर निकल गए। २५ और नगर के सिरे की उत्तराई पर चलते-चलते शमूएल ने शाऊल से कहा, “अपने सेवक को हम से आगे बढ़ने की आज्ञा दे, (वह आगे बढ़ गया,) परन्तु तू अभी खड़ा रह कि मैं तुझे परमेश्वर का बचन सुनाऊँ।”

१० तब शमूएल ने एक कुपी तेल लेकर उसके सिर पर उण्डेला, और उसे चूमकर कहा, “क्या इसका कारण यह नहीं कि यहोवा ने अपने निज भाग के ऊपर प्रधान होने को तेरा अभिषेक किया है? १ आज जब तू मेरे पास से चला जाएगा, तब राहेल की कब्र के पास जो बिन्यामीन के देश की सीमा पर सेलसह मैं हूँ, दो जन तुझे मिलेंगे, और कहेंगे, ‘जिन गदहियों को तू ढूँढ़ने गया था वे मिली हैं; और सुन, तेरा पिता गदहियों की चिन्ता छोड़कर तुम्हारे कारण कुदाता हुआ कहता है, कि मैं अपने पुत्र के लिये क्या करूँ?’ २ फिर

वहाँ से आगे बढ़कर जब तू ताबोर के बांज वृक्ष के पास पहुँचेगा, तब वहाँ तीन जन परमेश्वर के पास भेले को जाते हुए तुझे मिलेगा, जिनमें से एक तो बकरी के तीन बच्चे, और दूसरा तीन रोटी, और तीसरा एक कुप्पी दाखमधु लिए हुए होगा। ८ वे तेरा कुशल पड़ेंगे, और तुझे दो रोटी देंगे, और तू उन्हें उनके हाथ से ले लेना। ९ तब तू परमेश्वर के पहाड़ पर पहुँचेगा जहाँ पलिशियों की चौकी है, और जब तू वहाँ नगर में प्रवेश करे, तब नवियों का एक दल ऊँचे स्थान से उतरता हुआ तुझे मिलेगा; और उनके आगे सिरां, डफ, बॉसीरी, और बीणा होंगे; और वे नव्वत करते होंगे। १० तब यहोवा का आत्मा तुझ पर बल से उतरेगा, और तू उनके साथ होकर नव्वत करने लगेगा, और तू परिवर्तित होकर और ही मनुष्य हो जाएगा। ११ और जब ये चिन्ह तुझे दिखाई पड़ेंगे, तब जो काम करने का अवसर तुझे मिले उसमें लग जाना; क्योंकि परमेश्वर रेत संग रहेगा। १२ और तू मुझपे फलते गिलगाल को जाना; और मैं होमबलि और मेलबलि चढ़ाने के लिये तेरे पास आऊँगा। तू सात दिन तक मेरी बाट जोहते रहना, तब मैं तेरे पास पहुँचकर तुझे बताऊँगा कि तुझको क्या-क्या करना है।” १३ जैसे ही उसने शमूएल के पास से जाने को पीठ फेरी वैसे ही परमेश्वर ने उसके मन को परिवर्तित किया; और वे सब चिन्ह उसी दिन प्राप्त हुए। १४ जब वे उधर उस पहाड़ के पास आए, तब नवियों का एक दल उसको मिला; और परमेश्वर का आत्मा उस पर बल से उतरा, और वह उनके बीच में नव्वत करने लगा। १५ जब उन सभी ने जो उसे पहले से जानते थे यह देखा कि वह नवियों के बीच में नव्वत कर रहा है, तब आपस में कहने लगे, “कीश के पुत्र को यह क्या हुआ? क्या शाऊल भी नवियों में का है?” १६ वहाँ के एक मनुष्य ने उत्तर दिया, “भला, उनका बाप कौन है?” इस पर यह कहावत चलने लगी, “क्या शाऊल भी नवियों में का है?” १७ जब वह नव्वत कर चुका, तब ऊँचे स्थान पर चढ़ गया। १८ तब शाऊल के चाचा ने उससे और उसके सेवक से पछा, “तुम कहाँ गए थे?” उसने कहा, “हम तो गदहियों को छूँदने गए थे; और जब हमने देखा कि वे कहाँ नहीं मिलती, तब शमूएल के पास गए।” १९ शाऊल के चाचा ने कहा, “मुझे बता कि शमूएल ने तुम से क्या कहा।” २० शाऊल ने अपने चाचा से कहा, “उसने हमें निश्चय करके बताया कि गदहियाँ मिल गईं।” परन्तु जो बात शमूएल ने राज्य के विषय में कही थी वह उसने उसको न बताई। २१ तब शमूएल ने प्रजा के लोगों को मिस्पा में यहोवा के पास बुलाया; २२ तब उसने इसाएलियों से कहा, “इसाएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, ‘मैं तो इसाएल को मिस्प देखा से निकाल लाया, और तुम को मिस्पियों के हाथ से, और उन सब राज्यों के हाथ से जो तुम पर अंधेर करते थे छुड़ाया है।’” २३ परन्तु तुम ने आज अपने परमेश्वर को जो सब विपत्तियों और कष्टों से तुम्हारा छुड़ानेवाला है तुच्छ जाना; और उससे कहा है, ‘हम पर राजा नियुक्त कर दे।’ इसलिए अब तुम गोत्र-गोत्र और हजार-हजार करके यहोवा के सामने छड़े हो जाओ।” २४ तब शमूएल सारे इसाएली गोत्रों को समीप लाया, और चिठ्ठी बिन्यामीन के नाम पर निकली। २५ तब वह बिन्यामीन के गोत्र को कुल-कुल करके समीप लाया, और चिठ्ठी मत्री के कुल के नाम पर निकली; फिर चिठ्ठी कीश के पुत्र शाऊल के नाम पर निकली। और जब वह छूँदा गया, तब न मिला। २६ तब उन्होंने फिर यहोवा से पछा, “क्या यहाँ कोई और आनेवाला है?” यहोवा ने कहा, “सुनो, वह सामान के बीच में छिपा हुआ है।” २७ तब वे दौड़कर उसे वहाँ से लाए; और वह लोगों के बीच में खड़ा हुआ, और वह कंधे से सिर तक सब लोगों से लम्फा था। २८ शमूएल ने सब लोगों से कहा, “क्या तुम ने यहोवा के चुने हुए को देखा है कि सारे लोगों में कोई उसके बराबर नहीं?” तब सब लोग ललकार के बोल उठे, “राजा चिरंजीव रहे।” २९ तब शमूएल ने लोगों से राजनीति का वर्णन किया, और

उसे पुस्तक में लिखकर यहोवा के आगे रख दिया। और शमूएल ने सब लोगों को अपने-अपने घर जाने को बिदा किया। ३० और शाऊल गिबा को अपने घर चला गया, और उसके साथ एक दल भी गया जिनके मान को परमेश्वर ने उभारा था। ३१ परन्तु कई तुच्छे लोगों ने कहा, “यह जन हमारा क्या उद्धार करेगा?” और उन्होंने उसको तुच्छ जाना, और उसके पास भेंट न लाए। तो भी वह सुनी अनसुनी करके चुप रहा।

११ तब अम्मोनी नाहाश ने चढ़ाई करके गिलाद के याबेश के विस्तु छावनी डाली; और याबेश के सब पुस्तों ने नाहाश से कहा, “हम से वाचा बॉथ, और हम तेरी अधीनता मान लेंगे।” ३२ अम्मोनी नाहाश ने उससे कहा, “मैं तुम से वाचा इस शर्त पर बांधँगा, कि मैं तुम सभी की दाहिनी आँखें फोड़कर इसे सारे इसाएल की नामधारी का कारण कर दूँ।” ३३ याबेश के बूढ़े लोगों ने उससे कहा, “हमें सात दिन का अवसर दे तब तक हम इसाएल के सो देश में दूत भेजेंगे। और यदि हमको कोई बचानेवाला न मिलेगा, तो हम तेरे ही पास निकल आएँगे।” ३४ दूरों ने शाऊलवाले गिबा में आकर लोगों को यह सन्देश सुनाया, और सब लोग चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे। ३५ शाऊल बैलों के पीछे-पीछे मैदान से चला आता था; और शाऊल ने पछा, “लोगों को क्या हुआ कि वे रोते हैं?” उन्होंने याबेश के लोगों का सन्देश उसे सुनाया। ३६ यह सन्देश सुनते ही शाऊल पर परमेश्वर का आत्मा बल से उतरा, और उसका कोप बहुत भड़क उठा। ३७ और उसने एक जोड़ी बैल लेकर उसके टुकड़े-टकड़े काटे, और यह कहकर दूरों के हाथ से इसाएल के सारे देश में कहला भेजा, “जो कोई आकर शाऊल और शमूएल के पीछे न हो लेगा उसके बैलों से ऐसा ही किया जाएगा।” तब यहोवा का भय लोगों में ऐसा समाया कि वे एक मन होकर निकल आए। ३८ तब उसने उन्हें बेजेक में गिन लिया, और इसाएलियों के तीन लाख, और यहदियों के तीस हजार ठहरे। ३९ और उन्होंने उन दूरों से जो आए थे कहा, “तुम गिलाद में के याबेश के लोगों से यह कहो, कल धूप तेज होने की घड़ी तक तुम छुटकारा पाओगे।” तब दूरों ने जाकर याबेश के लोगों को सन्देश दिया, और वे आनन्दित हुए। ४० तब याबेश के लोगों ने नाहाश से कहा, “कल हम तम्हारे पास निकल आएँगे, और जो कुछ तुम को अच्छा लगे वही हम से करना।” ४१ दूरे दिन शाऊल ने लोगों के तीन दल किए; और उन्होंने रात के अनिम पहर में छावनी के बीच में आकर अम्मोनियों को मारा; और धूप के कड़े होने के समय तक ऐसे मारते रहे कि जो बच निकले वे यहाँ तक तिर-बिर छुए हैं कि दो जन भी एक संग कही न रहे। ४२ तब लोग शमूएल से कहने लगे, “जिन मनुष्यों ने कहा था, ‘क्या शाऊल हम पर राज्य करेगा?’ उनको लाओ कि हम उन्हें मार डालें।” ४३ शाऊल ने कहा, “आज के दिन कोई मार डाला न जाएगा; क्योंकि आज यहोवा ने इसाएलियों को छुटकारा दिया है।” ४४ तब शमूएल ने इसाएलियों से कहा, “आओ, हम गिलगाल को चलें, और वहाँ राज्य को नये सिरे से स्थापित करें।” ४५ तब सब लोग गिलगाल को चले, और वहाँ उन्होंने गिलगाल में यहोवा के सामने शाऊल को राजा बनाया; और वही उन्होंने यहोवा को मेलबलि चढ़ाए; और वही शाऊल और सब इसाएली लोगों ने अत्यन्त आनन्द मनाया।

१२ तब शमूएल ने सारे इसाएलियों से कहा, “सुनो, जो कुछ तुम ने मुझसे कहा था उसे मानकर मैंने एक राजा तुम्हारे ऊपर ठहराया है। ४६ और अब देखो, वह राजा तुम्हारे आगे-आगे चलता है; और अब मैं बढ़ा हूँ, और मेरे बाल सफेद हो गए हैं, और मेरे पुत्र तुम्हारे पास हैं; और मैं लड़कपन से लेकर आज तक तुम्हारे सामने काम करता रहा हूँ। ४७ मैं उपस्थित हूँ, इसलिए तुम

यहोवा के सामने, और उसके अधिषिक्त के सामने मुझ पर साक्षी दो, कि मैंने किसका बैल ले लिया? या किसका गदहा ले लिया? या किस पर अंधेर किया? या किसको पीसा? या किसके हाथ से अपनी आँखें बन्द करने के लिये घूम लिया? बताओ, और मैं वह तुम को फेर ढूँगा?” ५ वे बोले, “तूने न तो हम पर अंधेर किया, न हमें पीसा, और न किसी के हाथ से कुछ लिया है।” ६ उसने उनसे कहा, “आज के दिन यहोवा तुम्हारा साक्षी, और उसका अधिषिक्त इस बात का साक्षी है, कि मैंने यहाँ कुछ नहीं निकला।” वे बोले, “हाँ, वह साक्षी है।” ७ फिर शमूएल लोगों से कहने लगा, “जो मूसा और हास्न को ठहराकर तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश से निकाल लाया वह यहोवा ही है।” ८ इसलिए अब तुम खड़े रहो, और मैं यहोवा के सामने उसके सब धार्मिकता के कामों के विषय में, जिन्हें उसने तुम्हारे साथ और तुम्हारे पूर्वजों के साथ किया है, तुम्हारे साथ विचार करूँगा। ९ याकूब मिस में गया, और तुम्हारे पूर्वजों ने यहोवा की दुहाई दी; तब यहोवा ने मूसा और हास्न को भेजा, और उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से निकाला, और इस स्थान में बसाया। १० फिर जब वे अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गए, तब उसने उन्हें हासोर के सेनापति सीसरा, और पलिशियों और मोअब के राजा के अधीन कर दिया; और वे उनसे लड़े। ११ तब उन्होंने यहोवा की दुहाई देकर कहा, “हमने यहोवा को त्याग कर और आबाल टेवताओं और अरारोरेत देवियों की उपासना करके महापाप किया है; परन्तु अब तू हमको हमरे शत्रुओं के हाथ से छुड़ा तो हम तेरी उपासना करेंगे।” १२ इसलिए यहोवा ने यस्त्वाल, बदान, यिसह, और शमूएल को भेजकर तुम को तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया; और तुम निडर रहने लगे। १३ और जब तुम ने देखा कि अमेनियों का राजा नाहाश हम पर चढाई करता है, तब यधि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारा राजा था तो भी तुम ने मुझसे कहा, “नहीं, हम पर एक राजा राज्य करेगा।” १४ अब उस राजा को देखो जिसे तुम ने चुन लिया, और जिसके लिये तुम ने प्रार्थना की थी; देखो, यहोवा ने एक राजा तुम्हारे ऊपर नियुक्त कर दिया है। १५ यदि तुम यहोवा का भय मानते, उसकी उपासना करते, और उसकी बात सन्तुत रहो, और यहोवा की आज्ञा को टालकर उससे बलवा न करो, और तुम और वह जो तुम पर राजा हुआ है दोनों अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे-पीछे चलनेवाले बने रहो, तब तो भला होगा; १६ परन्तु यदि तुम यहोवा की बात न मानो, और यहोवा की आज्ञा को टालकर उससे बलवा करो, तो यहोवा का हाथ जैसे तुम्हारे पुरखों के विस्तु हुआ वैसे ही तुम्हारे भी विस्तु उठेगा। १७ इसलिए अब तुम खड़े रहो, और इस बड़े काम को देखो जिसे यहोवा तुम्हारी आँखों के सामने करने पर है। १८ आज क्या गेहूँ की कटनी नहीं हो रही? मैं यहोवा को पुकास्त्वा, और वह मेघ गरजाएगा और मैं हव बरसाएगा; तब तुम जान लोगे, और देख भी लोगे, कि तुम ने राजा माँगकर यहोवा की दृष्टि में बहुत बड़ी बुराई की है।” १९ तब शमूएल ने यहोवा को पुकारा, और यहोवा ने उसी दिन मेघ गरजाया और मैं हव बरसाया; और सब लोग यहोवा से और शमूएल से अन्यत डर गए। २० और सब लोगों ने शमूएल से कहा, “अपने दासों के निमित्त अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर, कि हम मर न जाएँ, क्योंकि हमने अपने सारे पापों से बढ़कर वह बुराई की है कि राजा माँगा है।” २१ शमूएल ने लोगों से कहा, “डरो मत; तुम ने यह सब बुराई तो की है, परन्तु अब यहोवा के पीछे चलने से फिर मत मुड़ना; परन्तु अपने सम्पूर्ण मन से उसकी उपासना करना; २२ और मत मुड़ना; नहीं तो ऐसी व्यर्थ वस्तुओं के पीछे चलने लगोगे जिनसे न कुछ लाभ पहुँचेगा, और न कुछ छुटकारा हो सकता है, क्योंकि वे सब व्यर्थ ही हैं। २३ यहोवा तो अपने बड़े नाम के कारण अपनी प्रजा को न तजेगा, क्योंकि यहोवा ने तुम्हें अपनी ही इच्छा से अपनी

प्रजा बनाया है। २४ फिर यह मुझसे दूर हो कि मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करना छोड़कर यहोवा के विस्तु पापी ठहरूँ, मैं तो तुम्हें अच्छा और सीधा मार्म दिखाता रहूँगा। २५ केवल इतना हो कि तुम लोग यहोवा का भय मानो, और सच्चाई से अपने सम्पूर्ण मन के साथ उसकी उपासना करो; क्योंकि यह तो सोचो कि उसने तुम्हारे लिये कैसे बड़े-बड़े काम किए हैं। २६ परन्तु यदि तुम बुराई करते ही रहोगे, तो तुम और तुम्हारा राजा दोनों के दोनों मिट जाओगे।”

१३ शाऊल तीस वर्ष का होकर राज्य करने लगा, और उसने इसाएलियों पर दो वर्ष तक राज्य किया। १४ फिर शाऊल ने इसाएलियों में से तीन हजार पुरुषों को अपने लिये चुन लिया; और उनमें से दो हजार शाऊल के साथ मिकमाश में और बेतेल के पहाड़ पर रहे, और एक हजार योनातान के साथ बिन्यामीन के गिबा में रहे, और दूसरे सब लोगों को उसने अपने-अपने डेरे में जाने को विदा किया। १५ तब योनातान ने पलिशियों की उस चौकी को जो गेला में थी मार लिया; और इसका समाचार पलिशियों के कानों में पड़ा। तब शाऊल ने सारे देश में नरसिंगा झुँकवाकर यह कहला भेजा, “इङ्गी लोग सुने।” १६ और सब इसाएलियों ने यह समाचार सुना कि शाऊल ने पलिशियों की चौकी को मारा है, और यह भी कि पलिशी इसाएल से छूना करने लगे हैं। तब लोग शाऊल के पीछे चलकर गिलगाल में इकट्ठे हो गए। १७ पलिशी इसाएल से यदु करने के लिये इकट्ठे हो गए, अर्थात् तीस हजार रथ, और छः हजार सवार, और समुद्र तट के रेतकणों के समान बहुत से लोग इकट्ठे हुए; और बेतावेन के पूर्व की ओर जाकर मिकमाश में छावनी डाली। १८ जब इसाएली पुरुषों ने देखा कि हम सकेती में पड़े हैं (और सचमुच लोग संकट में पड़े थे), तब वे लोग गुफाओं, झाड़ियों, चट्टानों, गढ़ियों, और गह्रों में जा लिए। १९ और कितने इङ्गी यरदान पार होकर गाद और गिलाद के देशों में चले गए; परन्तु शाऊल गिलगाल ही में रहा, और सब लोग थरथराते हुए उसके पीछे हो लिए। २० वह शमूएल के ठहराए हुए समय, अर्थात् सात दिन तक बाट जोहता रहा; परन्तु शमूएल गिलगाल में न आया, और लोग उसके पास से इधर-उधर होने लगे। २१ तब शाऊल ने कहा, “होमबलि और मेलबलि मेरे पास लाओ।” तब उसने होमबलि को चढाया। २२ जैसे ही वह होमबलि को चढ़ा चुका, तो क्या देखता है कि शमूएल आ पहुँचा; और शाऊल उससे मिलने और नमस्कार करने को निकला। २३ शमूएल ने पछा, “तूने क्या किया?” शाऊल ने कहा, “जब मैंने देखा कि लोग मेरे पास से इधर-उधर हो चले हैं, और तू ठहराए हुए दिनों के भीतर नहीं आया, और पलिशी मिकमाश में इकट्ठे हुए हैं। २४ तब मैंने सोचा कि पलिशी गिलगाल में मुझ पर अभी आ पड़ेंगे, और मैंने यहोवा से विनती भी नहीं की है; अतः मैंने अपनी इच्छा न रहते भी होमबलि चढाया।” २५ शमूएल ने शाऊल से कहा, “तूने मर्खता का काम किया है; तूने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को नहीं माना; नहीं तो यहोवा तेरा राज्य इसाएलियों के ऊपर सदा स्थिर रखता।” २६ परन्तु अब तेरा राज्य बना न रहेगा; यहोवा ने अपने लिये एक ऐसे पुरुष को ढूँग लिया है जो उसके मन के अनुसार है, और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया है, क्योंकि तेरे यहोवा की आज्ञा को नहीं माना।” २७ तब शमूएल चल निकला, और गिलगाल से बिन्यामीन के गिबा को गया। और शाऊल ने अपने साथ के लोगों को गिनकर कोइँ छः सौ पाए। २८ और शाऊल और उसका पुत्र योनातान और जो लोग उनके साथ थे वे बिन्यामीन के गेला में रहे; और पलिशी मिकमाश में डेरे डाले पड़े रहे। २९ और पलिशियों की छावनी से आक्रमण करनेवाले तीन दल बाँधकर निकले; एक दल ने शाऊल नामक देश की ओर फिरके ओप्रा का मार्ग लिया, ३० एक और दल ने मुँडकर बेथोरेन का मार्ग लिया, और एक और दल ने मुँडकर उस देश का मार्ग लिया जो

सबोईम नामक तराई की ओर जंगल की तरफ है। १९ इस्लाएल के पूरे देश में लोहार कहीं नहीं मिलता था, क्योंकि पलिशियों ने कहा था, “इन्हीं तलवार या भाला बनाने न पाएँ।” २० इसलिए सब इसाएली अपने-अपने हल की फाल, और भाले, और कुल्हाड़ी, और हँसुआ तेज़ करने के लिये पलिशियों के पास जाते थे; २१ परन्तु उनके हँसओं, फालों, खेती के विश्लेषणों, और कुल्हाड़ीयों की धारें, और पैनों की नोकें ठीक करने के लिये वे रेती रखते थे। २२ इसलिए यहु के दिन शाऊल और योनातान के साथियों में से किसी के पास न तो तलवार थी और न भाला, वे केवल शाऊल और उसके पुत्र योनातान के पास थे। २३ और पलिशियों की चौकी के सिपाही निकलकर मिकमाश की घाटी को गए।

१४ एक दिन शाऊल के पुत्र योनातान ने अपने पिता से बिना कुछ कहे अपने

हथियार ढोनेवाले जबान से कहा, “आ, हम उधर पलिशियों की चौकी के पास चलें।” २४ शाऊल तो गिबा की सीमा पर मिग्रेन में अनार के पेड़ के तले टिका हुआ था, और उसके संग के लोग कोई छः सौ थे; २५ और एली जो शीलों में यहोवा का याजक था, उसके पुत्र पीनहास का पोता, और ईकाबोद के भाई, अहीतब्र का पुत्र अहियाह भी एपोद पहने हुए संग था। परन्तु उन लोगों को मालूम न था कि योनातान चला गया है। २६ उन घाटियों के बीच में, जिनसे होकर योनातान पलिशियों की चौकी को जाना चाहता था, दोनों और एक-एक नोकीली चट्टान थीं; एक चट्टान का नाम बोसेस, और दसरी का नाम सेने था। २७ एक चट्टान तो उत्तर की ओर मिकमाश के सामने, और दूसरी दक्षिण की ओर गेबा के सामने खड़ी थी। २८ तब योनातान ने अपने हथियार ढोनेवाले जबान से कहा, “आ, हम उन खतानारहित लोगों की चौकी के पास जाएँ; क्या जाने यहोवा हमारी सहायता करें; क्योंकि यहोवा को कोई स्कावट नहीं, कि चाहे तो बहुत लोगों के द्वारा, चाहे थोड़े लोगों के द्वारा छुटकारा दे।” २९ उसके हथियार ढोनेवाले ने उससे कहा, “जो कुछ रौर मन में हो वही कर; उधर चल, मैं तेरी इच्छा के अनुसार तेरे संग रहूँगा।” ३० योनातान ने कहा, “सुन, हम उन मनुष्यों के पास जाकर अपने को उन्हें दिखाएँ। ३१ यदि वे हम से यह कहें, ‘हमारे आने तक ठहरे रहों,’ तब तो हम उसी स्थान पर खड़े रहें, और उनके पास न चढ़े। ३२ परन्तु यदि वे यह कहें, ‘हमारे पास चढ़ आओ,’ तो हम यह जानकर चर्चें, कि यहोवा उन्हें हमारे हाथ में कर देगा। हमारे लिये यही चिन्ह हो।” ३३ तब उन दोनों ने अपने को पलिशियों की चौकी पर प्रगट किया, तब पलिशी कहने लगे, “देखो, इन्हीं लोग उन यितों में से जहाँ वे छिपे थे निकले आते हैं।” ३४ फिर चौकी के लोगों ने योनातान और उसके हथियार ढोनेवाले से पुकारके कहा, “हमारे पास चढ़ आओ, तब हम तुम को कुछ सिखाएँगे।” ३५ तब योनातान ने अपने हथियार ढोनेवाले से कहा, “मेरे पीछे-पीछे चढ़ आ; क्योंकि यहोवा उन्हें इस्लालियों के हाथ में कर देगा।” ३६ और योनातान अपने हाथों और पाँवों के बल चढ़ गया, और उसका हथियार ढोनेवाला भी उसके पीछे-पीछे चढ़ गया। पलिशी योनातान के सामने पिरते गए, और उसका हथियार ढोनेवाला उसके पीछे-पीछे उन्हें मारता गया। ३७ यह पहला संहार जो योनातान और उसके हथियार ढोनेवाले से हुआ, उसमें आधे बीघे भूमि में बीस एक पुस्त मारे गए। ३८ और छावनी में, और मैदान पर, और उन सब लोगों में थरथराहट हुई; और चौकीवाले और आक्रमण करनेवाले भी थरथराने लगे; और भक्तम्प भी हुआ; और अत्यन्त बड़ी थरथराहट हुई। ३९ बिन्यामीन के गिबा में शाऊल के पहसुओं ने दृष्टि करके देखा कि वह भीड़ घटती जा रही है, और वे लोग इधर-उधर चले जा रहे हैं। ४० तब शाऊल ने अपने साथ के लोगों से कहा, “अपनी गिनती करके देखो कि हमारे पास से कौन चला गया है।” उन्होंने गिनकर देखा,

कि योनातान और उसका हथियार ढोनेवाला यहाँ नहीं हैं। ४१ तब शाऊल ने अहियाह से कहा, “परमेश्वर का सन्दूक इधर ला।” उस समय तो परमेश्वर का सन्दूक इस्लालियों के साथ था। ४२ शाऊल याजक से बातें कर रहा था, कि पलिशियों की छावनी में हुल्लड अधिक बढ़ गया; तब शाऊल ने याजक से कहा, “अपना हाथ खींच ले।” ४३ तब शाऊल और उसके संग के सब लोग इकट्ठे होकर लडाई में गए; वहाँ उन्होंने क्या देखा, कि एक-एक पुस्त की तलवार अपने-अपने साथी पर चल रही है, और बहत बड़ा कोलाहल मच रहा है। ४४ जो इनी पहले पलिशियों की ओर थे, और उनके साथ चारों और से छावनी में गए थे, वे भी शाऊल और योनातान के संग के इस्लालियों में मिल गए। ४५ इसी प्रकार जितने इस्लाली पुस्त ऐसम के पहाड़ी देश में छिप गए थे, वे भी यह सुनकर कि पलिशी भागे जाते हैं, लडाई में आकर उनका पीछा करने में लग गए। ४६ तब यहोवा ने उस दिन इस्लालियों को छुटकारा दिया; और लडाईवाले बेतावेन की परली ओर तक चले गए। ४७ परन्तु इस्लाली पुस्त उस दिन तंग हुए, क्योंकि शाऊल ने उन लोगों को शपथ धराकर कहा, “शापित हो वह, जो साँझ से पहले कुछ खाए; इनी रीति मैं अपने शत्रुओं से बदलता ले सकँगा।” अतः उन लोगों में से किसीने कुछ भी भोजन न किया। ४८ और सब लोग किसी वन में पहुँचे, जहाँ भूमि पर मधु पड़ा हुआ था। ४९ जब लोग वन में आए तब क्या देखा, कि मधु टपक रहा है, तो भी शपथ के डर के मारे कोई अपना हाथ अपने मुँह तक न ले गया। ५० परन्तु योनातान ने अपने पिता को लोगों को शपथ धराते न सुना था, इसलिए उसने हाथ की छड़ी की नोक बढ़ाकर मधु के छते में डुबाया, और अपना हाथ अपने मुँह तक ले गया; तब उसकी आँखों में ज्योति आई। ५१ तब लोगों में से एक मनुष्य ने कहा, “तेरे पिता ने लोगों को कड़ी शपथ धरा के कहा है, ‘शापित हो वह, जो आज कुछ खाए।’” और लोग थके-मँदी थे। ५२ योनातान ने कहा, “मेरे पिता ने लोगों को कष्ट दिया है; देखो, मैंने इस मधु को थोड़ा सा खाया, और मेरी आँखें कैसी चमक उठी हैं। ५३ यदि आज लोग अपने शत्रुओं की लट्ट से जिसे उन्होंने पाया मनमाना खाते, तो कितना अच्छा होता; अभी तो बहत अधिक पलिशी मारे नहीं गए।” ५४ उस दिन वे मिकमाश से लेकर अस्यालोन तक पलिशियों को मारते गए; और लोग बहुत ही थक गए। ५५ इसलिए वे लट्ट पर टूटे, और भेड़-बकरी, और गाय-बैल, और बछड़े लेकर भूमि पर मारकर उनका माँस लह समेत खाने लगे। ५६ जब इसका समाचार शाऊल को मिला, कि लोग लह समेत माँस खाकर यहोवा के विस्तु पाप करते हैं। तब उसने उनसे कहा, “तुम ने तो विश्वासघात किया है; अभी एक बड़ा पथर मेरे पास लुकादा।” ५७ फिर शाऊल ने कहा, “लोगों के बीच में इधर-उधर फिरके उनसे कहो, ‘अपना-अपना बैल और भेड़ शाऊल के पास ले जाओ, और वही बलि करके खाओ; और लह समेत खाकर यहोवा के विस्तु पाप न करो।’” तब सब लोगों ने उसी रात अपना-अपना बैल ले जाकर वही बलि किया। ५८ तब शाऊल ने यहोवा के लिये एक वेदी बनवाई; वह तो पहली वेदी है जो उसने यहोवा के लिये बनवाई। ५९ फिर शाऊल ने कहा, “हम इसी रात को ही पलिशियों का पीछा करके उन्हें भोर तक लटूते रहें; और उनमें से एक मनुष्य को भी जीवित न छोड़ें।” उन्होंने कहा, “जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही कर।” परन्तु याजक ने कहा, “हम यहीं परमेश्वर के समीप आएँ।” ६० तब शाऊल ने परमेश्वर से पूछा, “क्या मैं पलिशियों का पीछा करूँ? क्या तू उन्हें इस्लाल के हाथ में कर देगा?” परन्तु उसे उस दिन कुछ उत्तर न मिला। ६१ तब शाऊल ने कहा, “हे प्रजा के मुख्य लोगों, इधर आकर जाओ; और देखो कि आज पाप किस प्रकार से हुआ है। ६२ क्योंकि इस्लाल के छुड़ानेवाले यहोवा के जीवन की शपथ, यदि वह पाप

मेरे पुत्र योनातान से हुआ हो, तो भी निश्चय वह मार डाला जाएगा।” परन्तु लोगों में से किसी ने उसे उत्तर न दिया। ४० तब उसने सारे इसाएलियों से कहा, “तुम एक और रहो, और मैं और मेरा पुत्र योनातान दूसी ओर रहेंगे।” लोगों ने शाऊल से कहा, “जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही कर।” ४१ तब शाऊल ने यहोवा से कहा, “हे इसाएल के परमेश्वर, सत्य बात बता।” तब चिह्नी योनातान और शाऊल के नाम पर निकली, और प्रजा बच गई। ४२ फिर शाऊल ने कहा, “मेरे और मेरे पुत्र योनातान के नाम पर चिह्नी डालो।” तब चिह्नी योनातान के नाम पर निकली। ४३ तब शाऊल ने योनातान से कहा, “मुझे बता, कि तुम क्या किया है।” योनातान ने बताया, और उससे कहा, “मैंने अपने हाथ की छड़ी की नोक से थोड़ा सा मध्य चखते तो लिया था; और देख, मुझे मरना है।” ४४ शाऊल ने कहा, “परमेश्वर ऐसा ही कर, वरन् इससे भी अधिक करे; हे योनातान, तु मिश्चय मरा जाएगा।” ४५ परन्तु लोगों ने शाऊल से कहा, “क्या योनातान मरा जाए, जिसने इसाएलियों का ऐसा बड़ा छुटकारा किया है? ऐसा न होगा! यहोवा के जीवन की शपथ, उसके सिर का एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा; क्योंकि आज के दिन उसने परमेश्वर के साथ होकर काम किया है।” तब प्रजा के लोगों ने योनातान को बचा लिया, और वह मरा न गया। ४६ तब शाऊल पलिशियों का पीछा छोड़कर लौट गया; और पलिशियों भी अपने स्थान को छले गए। ४७ जब शाऊल इसाएलियों के राज्य में स्थिर हो गया, तब वह मोंबारी, अम्मोनी, एटोमी, और पलिश्ती, अपने चारों ओर के सब शत्रुओं से, और सोबा के राजाओं से लड़ा; और जहाँ-जहाँ वह जाता वहाँ जय पाता था। ४८ फिर उसने वीरता करके अमालेकियों को जीता, और इसाएलियों को लटुनेवालों के हाथ से छुड़ाया। ४९ शाऊल के पुत्र योनातान, यिश्वी, और मल्कीशुअथ थे; और उसकी दो बेटियों के नाम ये थे, बड़ी का नाम तो मेरब और छोटी का नाम मीकल था। ५० और शाऊल की छोटी का नाम अहीनोअम था जो अहीमास की बेटी थी। उसके प्रधान सेनापति का नाम अब्नेर था जो शाऊल के चाचा नेर का पुत्र था। ५१ शाऊल का पिता कीश था, और अब्नेर का पिता नेर अबीएल का पुत्र था। ५२ शाऊल जीवन भर पलिशियों से संग्राम करता रहा; जब जब शाऊल को कोई वीर या अच्छा योद्धा दिखाई पड़ा तब-तब उसने उसे अपने पास रख लिया।

१५ शमूएल ने शाऊल से कहा, “यहोवा ने अपनी प्रजा इसाएल पर राज्य करने के लिये तेरा अभिषेक करने को मुझे भेजा था, इसलिए अब यहोवा की बातें सुन ले। १ सेनाओं का यहोवा यह कहता है, ‘मुझे स्मरण आता है कि अमालेकियों ने इसाएलियों से क्या किया; जब इसाएली मिस्र से आ रहे थे, तब उन्होंने मार्ग में उनका सामना किया।’ इसलिए अब तु जाकर अमालेकियों को मार, और जो कुछ उनका है उसे बिना कोमलता किए सत्यानाश कर; क्या पुरुष, क्या लड़ी, क्या बच्चा, क्या दूध पीता, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, क्या ऊँट, क्या गदहा, सब को मार डाल।” २ तब शाऊल ने लोगों को बुलाकर इकट्ठा किया, और उन्हें तलाईम में गिना, और वे दो लाख प्यादे, और दस हजार यहदी पुरुष थे। ३ तब शाऊल ने अमालेक नगर के पास जाकर एक घाटी में घातकों को बैठाया। ४ और शाऊल ने केनियों से कहा, “वहाँ से हटो, अमालेकियों के मध्य में से निकल जाओ और कहीं ऐसा न हो कि मैं उनके साथ तुम्हारा भी अन्त कर डालूँ; क्योंकि तुम ने सब इसाएलियों पर उनके मिस्र से आते समय प्रीति दिखाई थी।” और केनी अमालेकियों के मध्य में से निकल गए। ५ तब शाऊल ने हवीला से लेकर शूरु तक जो मिस्र के पूर्व में है अमालेकियों को मारा। ६ और उनके राजा अगाग

को जीवित पकड़ा, और उसकी सब प्रजा को तलवार से नष्ट कर डाला। ७ परन्तु अगाग पर, और अच्छी से अच्छी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, मोटे पशुओं, और मेमों, और जो कुछ अच्छा था, उन पर शाऊल और उसकी प्रजा ने कोमलता की, और उन्हें नष्ट करना न चाहा; परन्तु जो कुछ तुच्छ और निकम्मा था उसका उन्होंने सत्यानाश किया। ८ तब यहोवा का यह वचन शमूएल के पास पहुँचा, ९ “मैं शाऊल को राजा बना के पछलताह हूँ; क्योंकि उसने मेरे पीछे चलाना छोड़ दिया, और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया।” तब शमूएल का क्रोध भड़का; और वह रात भर यहोवा की दुर्वासा देता रहा। १० जब शमूएल शाऊल से भेट करने के लिये सर्वेर उठा; तब शमूएल को यह बताया गया, “शाऊल कर्त्तव्य को आया था, और अपने लिये एक स्मारक खड़ा किया, और धूमकर गिलगाल को चला गया है।” ११ तब शमूएल शाऊल के पास गया, और शाऊल ने उससे कहा, “तुझे यहोवा की ओर से आशीष मिले; मैंने यहोवा की आज्ञा पूरी की है।” १२ शमूएल ने कहा, “फिर भेड़-बकरियों का यह मिमियाना, और गाय-बैलों का यह रम्भाना जो मुझे सुनाई देता है, यह क्यों हो रहा है?” १३ शाऊल ने कहा, “वे तो अमालेकियों के यहाँ से आए हैं; अर्थात् प्रजा के लोगों ने अच्छी से अच्छी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि करने को छोड़ दिया है; और बाकी सब का तो हमने सत्यानाश कर दिया है।” १४ तब शमूएल ने शाऊल से कहा, “ठहर जा! और जो बात यहोवा ने आज रात को मुझसे कही है वह मैं तुझको बताता हूँ।” उसने कहा, “कह दे!” १५ शमूएल ने कहा, “जब तू अपनी दृष्टि में लोटा था, तब क्या तू इसाएली गोत्रों का प्रधान न हो गया?, और क्या यहोवा ने इसाएल पर राज्य करने को तेरा अभिषेक नहीं किया? १६ और यहोवा ने तुझे एक विशेष कार्य करने को भेजा, और कहा, ‘जाकर उन पापी अमालेकियों का सत्यानाश कर, और जब तक वे मिट न जाएँ, तब तक उनसे लड़ता रह।’ १७ फिर उसे किस लिये यहोवा की यह बात टालकर लूट पर टूट के वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है?” १८ शाऊल ने शमूएल से कहा, “निःसद्दे भैंने यहोवा की बात मानकर जिधर यहोवा ने मुझे भेजा उंधर चला, और अमालेकियों के राजा को ले आया हूँ, और अमालेकियों का सत्यानाश किया है। १९ परन्तु प्रजा के लोग लूट में से भेड़-बकरियों, और गाय-बैलों, अर्थात् नष्ट होने की उत्तम-उत्तम वस्तुओं को गिलगाल में तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि चढ़ाने को ले आए हैं।” २० शमूएल ने कहा, “क्या यहोवा होमपलियों, और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। २१ देख, बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है। तू जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना, इसलिए उसने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।” २२ शाऊल ने शमूएल से कहा, “मैं तेरे पाप किया हैं; मैंने तो अपनी प्रजा के लोगों का भय मानकर और उनकी बात सुनकर यहोवा की आज्ञा और तेरी बातों का उल्लंघन किया है। २३ परन्तु अब मेरे पाप को क्षमा कर, और मेरे साथ लौट आ, कि मैं यहोवा को दण्डवत् करूँ।” २४ शमूएल ने शाऊल से कहा, “मैं तेरे साथ न लौटूँगा; क्योंकि तुने यहोवा की बात को तुच्छ जाना है, और यहोवा ने तुझे इसाएल का राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।” २५ तब शमूएल जाने के लिये धूमा, और शाऊल ने उसके बागे की छोर को पकड़ा, और वह फट गया। २६ तब शमूएल ने उससे कहा, “आज यहोवा ने इसाएल के राज्य को फाइकर तुझे से छीन लिया, और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझे से अच्छा है दे दिया है। २७ और जो इसाएल का बलमूल है वह न तो झाठ बोलता

और न पछताता है; क्योंकि वह मनुष्य नहीं है, कि पछताए।” ३० उसने कहा, “मैंने पाप तो किया है; तो भी मेरी प्रजा के पुरनियों और इसाएल के सामने मेरा आदर कर, और मेरे साथ लौट, कि मैं तैर परमेश्वर यहोवा को दण्डवत् करूँ।” ३१ तब शमूएल लौटकर शाऊल के पीछे गया, और शाऊल ने यहोवा को दण्डवत् की। ३२ तब शमूएल ने कहा, “अमालेकियों के राजा अगाग को मेरे पास ले आओ।” तब अगाग अनन्द के साथ यह कहता हुआ उसके पास गया, “निश्चय मृत्यु का दुःख जाता रहा।” ३३ शमूएल ने कहा, “जैसे जियाँ तेरी तलवार से निर्वश हई हैं, वैसे ही तेरी माता जियों में निर्वश होगी।” तब शमूएल ने अगाग को गिलगान में यहोवा के सामने टुकड़े-टुकड़े किया। ३४ तब शमूएल रामाह को चला गया; और शाऊल अपने नगर गिबा को अपने घर गया। ३५ और शमूएल ने अपने जीवन भर शाऊल से फिर भेट न की, क्योंकि शमूएल शाऊल के लिये विलाप करता रहा। और यहोवा शाऊल को इसाएल का राजा बनाकर पछताता था।

१६ यहोवा ने शमूएल से कहा, “मैंने शाऊल को इसाएल पर राज्य करने के लिये तुच्छ जाना है, तू कब तक उसके विषय विलाप करता रहेगा? अपने सीग में तेल भरकर चल; मैं तुझको बैतलहमवासी यिशै के पास भेजता हूँ, क्योंकि मैंने उसके पुत्रों में से एक को राजा होने के लिये चुना है।” ३६ शमूएल बोला, “मैं कैसे जा सकता हूँ? यदि शाऊल सुन लेगा, तो मुझे धात करेगा।” यहोवा ने कहा, “एक बालिया साथ ले जाकर कहना, मैं यहोवा के लिये यज्ञ करने को आया हूँ।” ३७ और यज्ञ पर यिशै को न्योता देना, तब मैं तुझे बता दूँगा कि तुझको क्या करना है; और जिसको मैं तुझे बताऊँ उसी का मेरी ओर से अभिषेक करना।” ३८ तब शमूएल ने यहोवा के करने के अनुसार किया, और बैतलहम को गया। उस नगर के पुरनिये थरथराते हुए उससे मिलने को गए, और कहने लगे, “क्या तु मित्रभाव से आया है कि नहीं?” ३९ उसने कहा, “हाँ, मित्रभाव से आया हूँ; मैं यहोवा के लिये यज्ञ करने को आया हूँ, तुम अपने-अपने को पवित्र करके मेरे साथ यज्ञ में आओ।” ४० तब उसने यिशै और उसके पुत्रों को पवित्र करके यज्ञ में आने का न्योता दिया। ४१ जब वे आए, तब उसने एलीआब पर दृष्टि करके सोचा, “निश्चय यह जो यहोवा के सामने है वही उसका अभिषिक्त होगा।” ४२ परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, “न तो उसके स्पष्ट पर दृष्टि कर, और न उसके कद की ऊँचाई पर, क्योंकि मैंने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का स्पष्ट देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।” ४३ तब यिशै ने अवीनादाब को बुलाकर शमूएल के सामने भेजा। और उससे कहा, “यहोवा ने इसको भी नहीं चुना।” ४४ फिर यिशै ने शम्मा को सामने भेजा। और उसने कहा, “यहोवा ने इसको भी नहीं चुना।” ४५ इस प्रकार यिशै ने अपने सात पुत्रों को शमूएल के सामने भेजा। और शमूएल यिशै से कहता गया, “यहोवा ने इन्हें नहीं चुना।” ४६ तब शमूएल ने यिशै से कहा, “क्या सब लड़के आ गए?” ४७ वह बोला, “नहीं, छोटा तो रह गया, और वह भेड़-बकरियों को चरा रहा है।” शमूएल ने यिशै से कहा, “उसे बुलावा भेज, क्योंकि जब तक वह यहाँ न आए तब तक हम खाने को न बैठेंगे।” ४८ तब वह उसे बुलाकर भीतर ले आया। उसके तो लाली झलकती थी, और उसकी आँखें सुन्दर, और उसका स्पष्ट सुडौल था। तब यहोवा ने कहा, “उठकर इसका अभिषेक कर: यहीं है।” ४९ तब शमूएल ने अपना तेल का सींग लेकर उसके भाइयों के मध्य में उसका अभिषेक किया; और उस दिन से लेकर भविष्य को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा। तब शमूएल उठकर रामाह को चला गया। ५० यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और यहोवा की ओर से एक दृष्टि आत्मा उसे घबराने लगा। ५१ और शाऊल के कर्मचारियों ने उससे

कहा, “सुन, परमेश्वर की ओर से एक दृष्टि आत्मा तुझे घबराता है। ५२ हमारा प्रभु अपने कर्मचारियों को जो उपस्थित है आज्ञा दे, कि वे किसी अच्छे बीणा बजानेवाले को ढूँढ़ ले आएँ; और जब जब परमेश्वर की ओर से दृष्टि आत्मा तुझ पर चढ़े, तब-तब वह अपने हाथ से बजाए, और तू अच्छा हो जाए।” ५३ शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, “अच्छा, एक उत्तम बीणा-वादक देखो, और उसे मेरे पास लाओ।” ५४ तब एक जबान ने उत्तर देके कहा, “सुन, मैंने बैतलहमवासी यिशै के एक पुत्र को देखा जो बीणा बजाना जानता है, और वह वीर योद्धा भी है, और बात करने में बुद्धिमान और रूपवान भी है; और यहोवा उसके साथ रहता है।” ५५ तब शाऊल ने दूरों के हाथ यिशै के पास कहला भेजा, “अपने पुत्र दाऊद को जो भेड़-बकरियों के साथ रहता है मेरे पास भेज दे।” ५६ तब यिशै ने रोटी से लदा हुआ एक गदहा, और कुप्पा भर दाखमधु, और बकरी का एक बच्चा लेकर अपने पुत्र दाऊद के हाथ से शाऊल के पास भेज दिया। ५७ और दाऊद शाऊल उससे बहुत प्रीति करने लगा, और वह उसका हथियार ढोनेवाला हो गया। ५८ तब शाऊल ने यिशै के पास कहला भेजा, “दाऊद को मेरे सामने उपस्थित रहने दे, क्योंकि मैं उससे बहुत प्रसन्न हूँ।” ५९ और जब जब परमेश्वर की ओर से वह आत्मा शाऊल पर चढ़ता था, तब-तब दाऊद बीणा लेकर बजाता; और शाऊल चैन पाकर अच्छा हो जाता था, और वह दृष्टि आत्मा उसमें से हट जाता था।

१७ अब पलिशियों ने यदू के लिये अपनी सेनाओं को इकट्ठा किया; और यहदा देश के सोको में एक साथ होकर सोको और अजेका के बीच एपेसदम्पीम में डेरे डाले। १८ शाऊल और इसाएली पुष्पों में भी इकट्ठे होकर एला नामक तराई में डेरे डाले, और यदू के लिये पलिशियों के विस्तु पाँति बाँधी। १९ पलिशी तो एक ओर के पहाड़ पर और इसाएली दूसरी ओर के पहाड़ पर खड़े रहे; और दोनों के बीच तराई थी। २० तब पलिशियों की छावनी में से गोलियत नामक एक वीर निकला, जो गत नगर का था, और उसकी लम्बाई छः हाथ एक बित्ता थी। २१ उसके सिर पर पीतल का टोप था; और वह एक पत्तर का झिलम पहने हुए था, जिसका तौल पाँच हजार शेकेल पीतल का था। २२ उसकी टाँगों पर पीतल के बीच तराई थी। २३ उसके भाले की छड़ जुलाहे के डोंगी के समान थी, और उस भाले का फल छः सौ शेकेल लोहे का था, और बड़ी ढाल लिए हुए एक जन उसके आगे-आगे चलता था। २४ वह खड़ा होकर इसाएली पाँतियों को ललकार के बोला, “तुम ने यहाँ आकर लडाई के लिये क्यों पाँति बाँधी है? क्या मैं पलिशी नहीं हूँ, और तुम शाऊल के अधीन नहीं हो? अपने मैं से एक पुष्प चुनो, कि वह मेरे पास उत्तर आए। २५ यदि वह मुझसे लड़कर मुझे मार सके, तब तो हम तुम्हारे अधीन हो जाएँगे; परन्तु यदि मैं उस प्रबल होकर माहौँ, तो तुम को हमारे अधीन होकर हमारी सेवा करनी पड़ेगी।” २६ फिर वह पलिशी बोला, “मैं आज के दिन इसाएली पाँतियों को ललकारता हूँ, किसी पुष्प को मेरे पास भेजो, कि हम एक दूसरे से लड़ें।” २७ उस पलिशी की इन बातों को सुनकर शाऊल और समस्त इसाएलियों का मन कच्चा हो गया, और वे अत्यन्त डर गए। २८ दाऊद यहदा के बैतलहम के उस एपाती पुष्प का पुत्र था, जिसका नाम यिशै था, और उसके आठ पुत्र थे और वह पुष्प शाऊल के दिनों में बढ़ा और निर्बल हो गया था। २९ यिशै के तीन बड़े पुत्र शाऊल के पीछे होकर लड़ने को गए थे; और उसके तीन पुत्रों के नाम जो लड़ने को गए थे, ये थे, अर्थात् ज्येष्ठ का नाम एलीआब, दूसरे का अबीनादाब, और तीसरे का शम्मा था। ३० सबसे छोटा दाऊद था; और तीनों बड़े पुत्र शाऊल के पीछे होकर गए थे, ३१ और दाऊद बैतलहम में अपने पिता की भेड़ बकरियाँ चराने

को शाऊल के पास से आया-जाया करता था। १६ वह पलिश्ती तो चालीस दिन तक सवैरे और सँझ़ को निकट जाकर खड़ा हुआ करता था। १७ यिशै ने अपने पुत्र दाऊद से कहा, “यह एपा भर भुना हुआ अनाज, और ये दस रोटियाँ लेकर छावनी में अपने भाइयों के पास दौड़ जा; १८ और परीक की ये दस टिकियाँ उनके सहस्रपति के लिये ले जा। और अपने भाइयों का कुशल देखकर उनकी कोई निशानी ले आना। १९ शाऊल, और तैरे भाई, और समस्त इस्माएली पुस्प एला नामक तराई में पलिश्तियों से लड़ रहे हैं।” २० अतः दाऊद सबैरे उठ, भेड़ बकरियों को किसी रखवाले के हाथ में छोड़कर, यिशै की अजा के अनुसार उन वस्तुओं को लेकर चला; और जब सेना रणभूमि को जा रही, और संग्राम के लिये ललकार रही थी, उसी समय वह गाड़ियों के पड़ाव पर पहुँचा। २१ तब इस्माएलियों और पलिश्तियों ने अपनी-अपनी सेना आमने-सामने करके पाँति बाँधी। २२ दाऊद अपनी सामग्री सामान के रखवाले के हाथ में छोड़कर रणभूमि को ढौड़ा, और अपने भाइयों के पास जाकर उनका कुशल क्षेत्र पूछा। २३ वह उनके साथ बातें कर ही रहा था, कि पलिश्तियों की पाँतियों में से वह वीर, अर्थात् गतवाही गोलियत नामक वह पलिश्ती योद्धा चढ़ आया, और पहले की सी बातें कहने लगा। और दाऊद ने उन्हें सुना। २४ उस पुस्प की देखकर सब इस्माएली अत्यन्त भय खाकर उसके सामने से भागे। २५ फिर इस्माएली पुस्प कहने लगे, “क्या तुम ने उस पुस्प को देखा है जो चढ़ा आ रहा है? निच्यव हव इस्माएलियों को ललकारने को चढ़ा आता है; और जो कोई उसे मार डालेगा उसको राजा बहुत धन देगा, और अपनी बेटी का विवाह उससे कर देगा, और उसके पिता के घराने को इस्माएल में स्वतंत्र कर देगा।” २६ तब दाऊद ने उन उस्सों से जो उसके आस-पास खड़े थे पूछा, “जो उस पलिश्ती को मारकर इस्माएलियों की नामधारी दूर करेगा उसके लिये क्या किया जाएगा? वह खतनारहित पलिश्ती क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकरे?” २७ तब लोगों ने उससे वही बातें कहीं, अर्थात् यह, कि जो कोई उसे मराएगा उससे ऐसा-ऐसा किया जाएगा। २८ जब दाऊद उन मनुष्यों से बातें कर रहा था, तब उसका बड़ा भाई एलीआब सुन रहा था; और एलीआब दाऊद से बहत क्रोधित होकर कहने लगा, “तू यहाँ क्यों आया है? और जंगल में उन थोड़ी सी भेड़ बकरियों को तू किसके पास छोड़ आया है? तेरा अभिमान और तैरे मन की बुराई मुझे मालूम है; तू तो लडाई देखने के लिये यहाँ आया है।” २९ दाऊद ने कहा, “अब मैंने क्या किया है? वह तो निरी बात थी।” ३० तब उसने उसके पास से मुँह फेर के टूसेरे के सम्मुख होकर बैरी ही बात कहीं; और लोगों ने उसे पहले के समान उत्तर दिया। ३१ जब दाऊद की बातों की चर्चा हुई, तब शाऊल को भी सुनाई गई, और उसने उसे बुलवा भेजा। ३२ तब दाऊद ने शाऊल से कहा, “किसी मनुष्य का मन उसके कारण कच्चा न हो; तेरा दास जाकर उस पलिश्ती से लड़ोगा।” ३३ शाऊल ने दाऊद से कहा, “तू जाकर उस पलिश्ती के खिस्त युद्ध नहीं कर सकता; क्योंकि तू तो लड़का ही है, और वह लड़कपन ही से योद्धा है।” ३४ दाऊद ने शाऊल से कहा, “तेरा दास अपने पिता की भेड़-बकरियाँ चारता था; और जब कोई सिंह या भालू झाण्ड में से मेमा उठा ले जाता, ३५ तब मैं उसका पीछा करके उसे मारता, और मैमने को उसके मुँह से छुड़ा लेता; और जब वह मुझ पर हमला करता, तब मैं उसके केश को पकड़कर उसे मार डालता। ३६ तैरे दास ने सिंह और भालू दोनों के मारा है। और वह खतनारहित पलिश्ती उनके समान हो जाएगा, क्योंकि उसने जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारा है।” ३७ फिर दाऊद ने कहा, “यहोवा जिसने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा।” शाऊल ने दाऊद से कहा, “जा, यहोवा तैरे साथ रहे।” ३८ तब शाऊल ने अपने वस्त्र

दाऊद को पहनाए, और पीतल का टोप उसके सिर पर रख दिया, और ड्लिम उसको पहनाया। ३९ तब दाऊद ने उसकी तलवार वस्त्र के ऊपर कसी, और चलने का यथा किया; उसने तो उनको न परखा था। इसलिए दाऊद ने शाऊल से कहा, “इन्हें पहने हुए मुझसे चला नहीं जाता, क्योंकि मैंने इन्हें नहीं परखा है।” और दाऊद ने उन्हें उतार दिया। ४० तब उसने अपनी लाठी हाथ में ली और नदी में से पाँच चिकने पत्थर छाँटकर अपनी चरवाही की थैली, अर्थात् अपने झोले में रखे; और अपना गोफन हाथ में लेकर पलिश्ती के निकट पहुँचने लगा, और जो जन उसकी बड़ी ढाल लिए था वह उसके आगे-आगे चला। ४१ जब पलिश्ती ने दृष्टि करके दाऊद को देखा, तब उसे तुच्छ जाना; क्योंकि वह लड़का ही था, और उसके मुख पर लाली झलकती थी, और वह सुन्दर था। ४२ तब पलिश्ती ने दाऊद से कहा, “क्या मैं कूता हूँ, कि तू लाठी लेकर मेरे पास आता है?” तब पलिश्ती अपने देवताओं के नाम लेकर दाऊद को कोसने लगा। ४३ फिर पलिश्ती ने दाऊद से कहा, “मेरे पास आ, मैं तेरा माँस आकाश के पक्षियों और बन-पश्चओं को दे दूँगा।” ४४ दाऊद ने पलिश्ती से कहा, “तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरा पास आता हूँ, जो इस्माएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तूने ललकारा है। ४५ आज के दिन यहोवा तुझको मेरे हाथ में कर देगा, और मैं तुझको मासँगा, और तेरा सिर तेरे धंधे से अलगा करूँगा; और मैं आज के दिन पलिश्ती सेना के शब आकाश के पक्षियों को दे दूँगा; तब समस्त पृथ्वी के लोग जान लेंगे कि इस्माएल में एक परमेश्वर है।” ४६ और यह समस्त मण्डली जान लेंगी कि यहोवा तलवार या भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता, इसलिए कि संग्राम तो यहोवा का है, और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा।” ४७ जब पलिश्ती उठकर दाऊद का सामान करने के लिये निकट आया, तब दाऊद सेना की ओर पलिश्ती का सामान करने के लिये फुर्ती से दौड़ा। ४८ फिर दाऊद ने अपनी थैली में हाथ डालकर उसमें से एक पत्थर निकाला, और उसे गोफन में रखकर पलिश्ती के माथे पर ऐसा मारा कि पत्थर उसके माथे के भीतर छुस गया, और वह भूमि पर मुँह के बल गिर पड़ा। ४९ अतः दाऊद ने पलिश्ती पर गोफन और एक ही पत्थर के द्वारा प्रबल होकर उसे मार डाला; परन्तु दाऊद के हाथ में तलवार न थी। ५० तब दाऊद दौड़कर पलिश्ती के ऊपर खड़ा हो गया, और उसकी तलवार पकड़कर म्यान से खीची, और उसको घात किया, और उसका सिर उसी तलवार से काट डाला। यह देखकर कि हमारा वीर मर गया पलिश्ती भाग गए। ५१ इस पर इस्माएली और यहदी पुस्प ललकार उठे, और गत और एकोन से फाटकों तक पलिश्तियों का पीछा करते गए, और धायल पलिश्ती शरैरम के मार्ग में और गत और एकोन तक गिरते गए। ५२ तब इस्माएली पलिश्तियों का पीछा छोड़कर लौट आए, और उनके डेरों को लूट लिया। ५३ और दाऊद पलिश्ती का सिर यस्शलेम में ले गया; और उसके हथियार अपने डेरे में रख लिए। ५४ जब शाऊल ने दाऊद को उस पलिश्ती का सामान करने के लिये जाते देखा, तब उसने अपने सेनापति अब्नेर से पूछा, “हे अब्नेर, वह जवान किसका पुत्र है?” अब्नेर ने कहा, “हे राजा, तेरे जीवित की शपथ, मैं नहीं जानता।” ५५ राजा ने कहा, “तू पूछ ले कि वह जवान किसका पुत्र है।” ५६ जब दाऊद पलिश्ती को मारकर लौटा, तब अब्नेर ने उसे पलिश्ती का सिर हाथ में लिए हुए शाऊल के सामने पहुँचाया। ५७ शाऊल ने उससे पूछा, “हे जवान, तू किसका पुत्र है?” दाऊद ने कहा, “मैं तैरे दास बैतलहमवासी यिशै का पुत्र हूँ।”

५८ जब वह शाऊल से बातें कर चुका, तब योनातान का मन दाऊद पर ऐसा लग गया, कि योनातान उसे अपने प्राण के समान प्यार करने लगा। ५९

और उस दिन शाऊल ने उसे अपने पास रखा, और पिता के घर लौटने न दिया। ३ तब योनातान ने दाऊद से बाचा बाँधी, क्योंकि वह उसको अपने प्राण के समान प्यार करता था। ४ योनातान ने अपना बागा जो वह स्वयं पहने था उतारकर अपने बच्चे समेत दाऊद को दे दिया, वरन् अपनी तलवार और धनुष और कमरबन्ध भी उसको दे दिए। ५ और जहाँ कहीं शाऊल दाऊद को भेजता था वहाँ वह जाकर बुद्धिमानी के साथ काम करता था; अतः शाऊल ने उसे योद्धाओं को प्रधान नियुक्त किया। और समस्त प्रजा के लोग और शाऊल के कर्मचारी उससे प्रसन्न थे। ६ जब दाऊद उस पलिशियों को मारकर लौट रहा था, और वे सब लोग भी आ रहे थे, तब सब इमारेली नगरों से छिंगों ने निकलकर डफ और तिकोने बाजे लिए हुए, आनन्द के साथ गाती और नाचती हुई, शाऊल राजा के स्वागत में निकली। ७ और वे छिंगों नाचती हुई एक दूसरे के साथ यह गाती गई, “शाऊल ने तो हजारों को, परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है।” ८ तब शाऊल अति क्रोधित हुआ, और यह बात उसको बुरी लगी; और वह कहने लगा, “उन्होंने दाऊद के लिये तो लाखों और मेरे लिये हजारों ही ठहराया; इसलिए अब राज्य को छोड़ उसको अब क्या मिलना बाकी है?” ९ उस दिन से शाऊल दाऊद की ताक में लगा रहा। १० दूसरे दिन परमेश्वर की ओर से एक तुरु आत्मा शाऊल पर बल से उतरा, और वह अपने घर के भीतर नवकृत करने लगा; दाऊद प्रतिदिन के समान अपने हाथ से बजा रहा था और शाऊल अपने हाथ में अपना भाला लिए हुए था; ११ तब शाऊल ने यह सोचकर कि ‘‘मैं ऐसा मास्तंगा कि भाला दाऊद को बेधकर दीवार में धूंस जाए।’’ भाले को चलाया, परन्तु दाऊद उसके सामने से दोनों बार हट गया। १२ शाऊल दाऊद से डरा करता था, क्योंकि यहोवा दाऊद के साथ था और शाऊल के पास से अलग करके सहस्रपति किया, और वह प्रजा के सामने आया-जाया करता था। १३ और दाऊद अपनी समस्त चाल में बुद्धिमानी दिखाता था; और यहोवा उसके साथ-साथ था। १४ जब शाऊल ने देखा कि वह बहुत बुद्धिमान है, तब वह उससे डर गया। १५ परन्तु इमारेल और यहदा के समस्त लोग दाऊद से प्रेम रखते थे; क्योंकि वह उनके आगे-आगे आया-जाया करता था। १६ शाऊल ने यह सोचकर कि ‘‘मेरा हाथ नहीं, बरन् पलिशियों ही का हाथ दाऊद पर पड़े,’’ उससे कहा, “सुन, मैं अपनी बड़ी बेटी मेरब से तेरा विवाह कर दँगा; इतना कर, कि तू मेरे लिये वीरता के साथ यहोवा की ओर से युद्ध कर।” १७ दाऊद ने शाऊल से कहा, “मैं क्या हूँ, और मेरा जीवन क्या है, और इमारेल में मेरे पिता का कुल क्या है, कि मैं राजा का दामाद हो जाऊँ?” १८ जब समय आ गया कि शाऊल की बेटी मेरब का दाऊद से विवाह किया जाए, तब वह महोलाई अद्वीएल से ब्याह दी गई। १९ और शाऊल की बेटी मीकल दाऊद से प्रीति रखने लगी; और जब इस बात का समाचार शाऊल को मिला, तब वह प्रसन्न हुआ। २० शाऊल तो सोचता था, कि वह उसके लिये फंदा हो, और पलिशियों का हाथ उस पर पड़े। और शाऊल ने दाऊद से कहा, “अब की बार तो तू अबश्य ही मेरा दामाद हो जाएगा।” २१ फिर शाऊल ने अपने कर्मचारियों को आज्ञा दी, “दाऊद से छिपकर ऐसी बातें करो, ‘सुन, राजा तुझ से प्रसन्न है, और उसके सब कर्मचारी भी तुझ से प्रेम रखते हैं; इसलिए अब तू राजा का दामाद हो जा।’” २२ तब शाऊल के कर्मचारियों ने दाऊद से ऐसी ही बातें कहीं। परन्तु दाऊद ने कहा, “मैं तो निर्धन और तुच्छ मनुष्य हूँ, फिर क्या तुम्हारी दृष्टि में राजा का दामाद होना छोटी बात है?” २३ जब शाऊल के कर्मचारियों ने उसे बताया, कि दाऊद ने ऐसी-ऐसी बातें कहीं। २४ तब शाऊल ने कहा, “तुम दाऊद से यह कहो, ‘राजा कन्या का मोल तो कुछ नहीं चाहता, केवल पलिशियों की एक सौ खलड़ियाँ चाहता हैं, कि वह

अपने शत्रुओं से बदला ले।’’ शाऊल की योजना यह थी, कि पलिशियों से दाऊद को मरवा डाले। २५ जब उसके कर्मचारियों ने दाऊद को ये बातें बताईं, तब वह राजा का दामाद होने को प्रसन्न हुआ। जब विवाह के कुछ दिन रह गए, २६ तब दाऊद अपने जनों को संग लेकर चला, और पलिशियों के दो सौ पुरुषों को मारा; तब दाऊद उनकी खलड़ियों को ले आया, और वे राजा को गिन-गिनकर दी गई, इसलिए कि वह राजा का दामाद हो जाए। अतः शाऊल ने अपनी बेटी मीकल का उससे विवाह कर दिया। २७ जब शाऊल ने देखा, और निश्चय किया कि यहोवा दाऊद के साथ है, और मेरी बेटी मीकल उससे प्रेम रखती है, २८ तब शाऊल दाऊद से ओर भी डर गया। इसलिए शाऊल सदा के लिये दाऊद का बैरी बन गया। २९ फिर पलिशियों के प्रधान निकल आए, और जब जब वे निकल आए तब-तब दाऊद ने शाऊल के सब कर्मचारियों से अधिक बुद्धिमानी दिखाई; इससे उसका नाम बहुत बड़ा हो गया।

१० शाऊल ने अपने पुत्र योनातान और अपने सब कर्मचारियों से दाऊद को मार डालने की चर्चा की। परन्तु शाऊल का युव योनातान दाऊद से बहुत प्रसन्न था। ११ योनातान ने दाऊद को बताया, “मेरा पिता तुझे मेरवा डालना चाहता है; इसलिए तू सर्वेरे सावधान रहना, और किसी गुप्त स्थान में बैठा हुआ छिपा रहना; १२ और मैं मैदान में जहाँ तू होगा वहाँ जाकर अपने पिता के पास खड़ा होकर उससे तेरी चर्चा करूँगा; और यदि मुझे कुछ मालूम हो तो तुझे बताऊँगा।” १३ योनातान ने अपने पिता शाऊल से दाऊद की प्रशंसा करके उससे कहा, “हे राजा, अपने दास दाऊद का अपराधी न हो; क्योंकि उसने तेरे विद्धु कोई अपराध नहीं किया, बरन् उसके सब काम तो बहुत हित के हैं; १४ उसने अपने प्राण पर खेलकर उस पलिशियों को मार डाला, और यहोवा ने समस्त इमारेलियों की बड़ी जय कराई। इसे देखकर तू आनन्दित हुआ था; और तू दाऊद को अकारण मारकर निर्दोष के खून का पापी क्यों बनें?” १५ तब शाऊल ने योनातान की बात मानकर यह शपथ खाई, “यहोवा के जीवन की शपथ, दाऊद मार डाला न जाएगा।” १६ तब योनातान ने दाऊद को बुलाकर ये समस्त बातें उसको बताईं। फिर योनातान दाऊद को शाऊल के पास ले गया, और वह पहले की सामान उसके सामने रहने लगा। १७ तब लड़ाई फिर होने लगी; और दाऊद जाकर पलिशियों से लड़ा, और उन्हें बड़ी मार से मारा, और वे उसके सामने से भाग गए। १८ जब शाऊल हाथ में भाला लिए हुए घर में बैठा था; और दाऊद हाथ से वीरा बजा रहा था, तब यहोवा की ओर से एक दृष्टि आत्मा शाऊल पर चढ़ा। १९ शाऊल ने चाहा, कि दाऊद को ऐसा मारे कि भाला उसे बेधते हुए दीवार में धूंस जाए; परन्तु दाऊद शाऊल के सामने से ऐसा हट गया कि भाला जाकर दीवार ही में धूंस गया। और दाऊद भागा, और उस रात को बच गया। २० तब शाऊल ने दाऊद के घर पर दूत इसलिए भेजे कि वे उसकी घाट में रहें, और सर्वेरे उसे मार डालें, तब दाऊद की बड़ी मीकल ने उसे यह कहकर जताया, “यदि तू इस रात को अपना प्राण न बचाए, तो सर्वेरे मारा जाएगा।” २१ तब मीकल ने दाऊद को खिड़की से उतार दिया; और वह भागकर बच निकला। २२ तब मीकल ने गृहदेवताओं को ले चारपाई पर लिटाया, और बकरियों के रोए की तकिया उसके सिरहाने पर रखकर उनको बच्चे ओढ़ा दिए। २३ जब शाऊल ने दाऊद को पकड़ लाने के लिये दूत भेजे, तब वह बोली, “वह तो बीमार है।” २४ तब शाऊल ने दूतों को दाऊद के देखने के लिये भेजा, और कहा, “उसे चारपाई समेत मेरे पास लाओ कि मैं उसे मार डालूँ।” २५ जब दूत भीतर गए, तब क्या देखते हैं कि चारपाई पर गृहदेवता पड़े हैं, और सिरहाने पर बकरियों के रोए की तकिया है। २६ अतः शाऊल ने मीकल से कहा, “तूने मुझे ऐसा धोखा क्यों दिया? तूने मेरे

शत्रु को ऐसे क्यों जाने दिया कि वह बच निकला है?” मीकल ने शाऊल से कहा, “उसने मुझसे कहा, ‘मुझे जाने दें; मैं तुझे क्यों मार डालूँ।’” ४८ दाऊद भागकर बच निकला, और रामाह में शमूएल के पास पहुँचकर जो कुछ शाऊल ने उससे किया था सब उसे कह सुनाया। तब वह और शमूएल जाकर नबायोत में रहने लगे। ४९ जब शाऊल को इसका समाचार मिला कि दाऊद रामाह में के नबायोत में है, ५० तब शाऊल ने दाऊद को पकड़ लाने के लिये दूत भेजे; और जब शाऊल के दर्तों ने नबियों के दल को नबवत करते हुए, और शमूएल को उनकी प्रधानता करते हुए देखा, तब परमेश्वर का आत्मा उन पर चढ़ा, और वे भी नबवत करने लगे। ५१ इसका समाचार पाकर शाऊल ने और दूत भेजे, और वे भी नबवत करने लगे। फिर शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे, और वे भी नबवत करने लगे। ५२ तब वह आप ही रामाह को चला, और उस बड़े गृह पर जो सेकू में है पहुँचकर पूछने लगा, “शमूएल और दाऊद कहाँ हैं?” किसी ने कहा, “वे तो रामाह के नबायोत में हैं।” ५३ तब वह उधर, अर्थात् रामाह के नबायोत को चला; और परमेश्वर का आत्मा उस पर भी चढ़ा, और वह रामाह के नबायोत को पहुँचने तक नबवत करता हुआ चला गया। ५४ और उसने भी अपने बूँद उतारे, और शमूएल के सामने नबवत करने लगा, और भूमि पर गिरकर दिन और रात नंगा पड़ा रहा। इस कारण से यह कहावत चर्ची, “क्या शाऊल भी नबियों में से है?”

२० फिर दाऊद रामाह के नबायोत से भागा, और योनातान के पास जाकर

कहने लगा, “मैंने क्या किया है? मुझसे क्या पाप हुआ? मैंने तेरे पिता की दृष्टि में ऐसा कौन सा अपराध किया है, कि वह मेरे प्राण की खोज में रहता है?” १ उसने उससे कहा, “ऐसी बात नहीं है; तू मारा न जाएगा। सुन, मेरा पिता मुझ को बिना बताए न तो कोई बड़ा काम करता है और न कोई छोटा; फिर वह ऐसी बात को मुझसे क्यों छिपाएगा? ऐसी कोई बात नहीं है।” २ फिर दाऊद ने शपथ खाकर कहा, “तेरा पिता निश्चय जानता है कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर है; और वह सोचता होगा, कि योनातान इस बात को न जानने पाए, ऐसा न हो कि वह खेदित हो जाए। परन्तु यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, निःसन्देह, मेरे और मृत्यु के बीच डग ही भर का अन्तर है।” ३ योनातान ने दाऊद से कहा, “जो कुछ तेरा जी चाहे वही मैं तेरे लिये कहसूँगा।” ४ दाऊद ने योनातान से कहा, “सुन कल नया चाँद होगा, और मुझे उचित है कि राजा के साथ बैठकर भोजन करूँ; परन्तु तू मुझे विदा कर, और मैं परसों साँझ तक मैदान में छिपा रहूँगा।” ५ यदि तेरा पिता मेरी कुछ चिन्ता करे, तो कहना, ‘दाऊद ने अपने नगर बैतलहम को शीघ्र जाने के लिये मुझसे विनती करके छुट्टी माँगी है; क्योंकि वहाँ उसके समस्त कुल के लिये वार्षिक यज्ञ है।’ ६ यदि वह यह कहे, ‘अच्छा!’ तब तो तेरे दास के लिये कशल होगा; परन्तु यदि उसका क्रोध बहुत भडक उठे, तो जान लेना कि उसने बुराई ठानी है। ७ और तू अपने दास से कृपा का व्यवहार करना, क्योंकि तेरे यहोवा की शपथ खिलाकर अपने दास को अपने साथ बाचा बैंधाई है। परन्तु यदि मुझसे कुछ अपराध हुआ हो, तो तू आप मुझे मार डाल; तू मुझे अपने पिता के पास क्यों पहुँचाएँ?” ८ योनातान ने कहा, “ऐसी बात कभी न होगी! यदि मैं निश्चय जानता कि मेरे पिता ने तुझे से बुराई करनी ठानी है, तो क्या मैं तुझको न बताता?” ९ दाऊद ने योनातान से कहा, “यदि तेरा पिता तुझको कठोर उत्तर दे, तो कौन मुझे बताएगा?” १० योनातान ने दाऊद से कहा, “चल हम मैदान को निकल जाएँ।” और वे दोनों मैदान की ओर चले गए। ११ तब योनातान दाऊद से कहने लगा, “इस्माएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ, जब मैं कल या परसों इसी समय अपने पिता का भेद पाऊँ, तब यदि दाऊद की भलाई देखूँ, तो क्या मैं उसी समय तेरे पास दूत भेजकर तुझे न बताऊँगा?” १२

यदि मेरे पिता का मन तेरी बुराई करने का हो, और मैं तुझ पर यह प्रगट करके तुझे विदा न करूँ कि तू कूशल के साथ चला जाए, तो यहोवा योनातान से ऐसा ही वरन् इससे भी अधिक करे। यहोवा तेरे साथ वैसा ही रहे जैसा वह मेरे पिता के साथ रहा। १३ और न केवल जब तक मैं जीवित रहूँ, तब तक मुझ पर यहोवा की सी कृपा ऐसे करना, कि मैं न मरूँ, १४ परन्तु मेरे घराने पर से भी अपनी कृपादृष्टि कभी न हटाना! वरन् जब यहोवा दाऊद के हर एक शत्रु को पृथ्वी पर से नष्ट कर चुकेगा, तब भी ऐसा न करना।” १५ इस प्रकार योनातान ने दाऊद के घराने से यह कहकर बाचा बैंधाई, “यहोवा दाऊद के शत्रुओं से बदला ले।” १६ और योनातान दाऊद से प्रेम रखता था, और उसने उसको फिर शपथ खिलाई, क्योंकि वह उससे अपने प्राण के बराबर प्रेम रखता था। १७ तब योनातान ने उससे कहा, “कल नया चाँद होगा; और तेरी चिन्ता की जाएगी, क्योंकि तेरी कुर्सी खाली रहेगी।” १८ और तू तीन दिन के बीतने पर तुरन्त आना, और उस स्थान पर जाकर जहाँ तू उस काम के दिन छिपा था, अर्थात् एजेल नामक पत्थर के पास रहना। १९ तब मैं उसकी ओर, मानो अपने किसी ठहराए हुए चिन्ह पर तीन तीर चलाऊँगा। २० फिर मैं अपने ठहराए लड़के को यह कहकर भेजूँगा, कि जाकर तीरों को ढूँढ़ ले आ। यदि मैं उस लड़के से साफ-साफ कहूँ, “देख, तीर इधर तेरे इस ओर है,” तू उसे ले आ, तो तू आ जाना क्योंकि यहोवा के जीवन की शपथ, तेरे लिये कशल को छोड़ और कुछ न होगा। २१ परन्तु यदि मैं लड़के से यह कहूँ, “सुन, तीर उधर तेरे उस ओर है,” तो तू चले जाना, क्योंकि यहोवा ने तुझे विदा किया है। २२ और उस बात के विषय जिसकी चर्चा मैंने और तूने आपस में की है, यहोवा मेरे और तेरे मध्य में सदा रहे।” २३ इसलिए दाऊद मैदान में जा छिपा; और जब नया चाँद हुआ, तब राजा भोजन करने को बैठा। २४ राजा तो पहले के समान अपने उस आसन पर बैठा जो दीवार के पास था; और योनातान खड़ा हुआ, और अब्देर शाऊल के निकट बैठा, परन्तु दाऊद का स्थान खाली रहा। २५ उस दिन तो शाऊल यह सोचकर चुप रहा, कि इसका कोई न कोई कारण होगा; वह अशुद्ध होगा, निःसन्देह शुद्ध न होगा। २६ फिर नये चाँद के दूसरे दिन को दाऊद का स्थान खाली रहा। अतः शाऊल ने अपने पुत्र योनातान से पूछा, “क्या कारण है कि यिशै का पुत्र न तो कल भोजन पर आया था, और न आज ही आया है?” २७ योनातान ने शाऊल से कहा, “दाऊद ने बैतलहम जाने के लिये मुझसे विनती करके छुट्टी माँगी; २८ और कहा, ‘मुझे जाने दें; क्योंकि उस नगर में हमारे कुल का यज्ञ है, और मेरे भाई ने मुझ को वहाँ उपस्थित होने की आज्ञा दी है। और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो मुझे जाने दे कि मैं अपने भाईयों से भेंट कर आऊँ।’ इसी कारण वह राजा की मेज पर नहीं आया।” २९ तब शाऊल का कोप योनातान पर भड़क उठा, और उसने उससे कहा, “हे कुटिला राजदोही! के पुत्र, क्या मैं नहीं जानता कि तेरा मन तो यिशै के पुत्र पर लगा है? इसी से तेरी आशा का टूटना और तेरी माता का अनादर ही होगा।” ३० क्योंकि जब तक यिशै का पुत्र भूमि पर जीवित रहेगा, तब तक न तो तू और न तेरा राज्य स्थिर रहेगा। इसलिए अभी भेजकर उसे मेरे पास ला, क्योंकि निश्चय वह मार डाला जाएगा।” ३१ योनातान ने अपने पिता शाऊल को उत्तर देकर उससे कहा, “वह क्यों मारा जाए? उसने क्या किया है?” ३२ तब शाऊल ने उसको मारने के लिये उस पर भाला चलाया; इससे योनातान ने जान लिया, कि मेरे पिता ने दाऊद को मार डालाना ठान लिया है। ३३ तब योनातान क्रोध से जलता हुआ मैंज पर से उठ गया, और महीने के दूसरे दिन को भोजन न किया, क्योंकि वह बहुत खेदित था, इसलिए कि उसके पिता ने दाऊद का अनादर किया था। ३४ सबैरे को योनातान एक छोटा लड़का संग लिए हुए मैदान में दाऊद के साथ ठहराए हुए स्थान को गया। ३५ तब उसने

अपने लड़के से कहा, “दौड़कर जो-जो तीर मैं चलाऊँ उहँ हूँ ढूँढ़ ले आ।” लड़का दौड़ ही रहा था, कि उसने एक तीर उसके पेरे चलाया। ३७ जब लड़का योनातान के चलाए तीर के स्थान पर पहुँचा, तब योनातान ने उसके पीछे से पुकारके कहा, “तीर तो तेरी उस ओर है।” ३८ फिर योनातान ने लड़के के पीछे से पुकारकर कहा, “फुर्ती कर, ठहर मत।” और योनातान का लड़का तीरों को बटोरके अपने स्वामी के पास ले आया। ३९ इसका भेद लड़का तो कुछ न जानता था; केवल योनातान और दाऊद इस बात को जानते थे। ४० योनातान ने अपने हथियार उस लड़के को टेकर कहा, “जा, इहँ नगर को पहुँचा।” ४१ जैसे ही लड़का गया, वैसे ही दाऊद दक्षिण दिशा की ओर से निकला, और भूमि पर औरे मुँह गिरकर तीन बार दण्डवत की; तब उन्होंने एक दूसरे को चूमा, और एक दूसरे के साथ रोए परन्तु दाऊद का रोना अधिक था। ४२ तब योनातान ने दाऊद से कहा, “कुशल से चला जा; क्योंकि हम दोनों ने एक दूसरे से यह कहकर यहोवा के नाम की शपथ खाइ है, कि यहोवा मेरे और तेरे मध्य, और मेरे और तेरे वश के मध्य में सदा रहें।” तब वह उठकर चला गया; और योनातान नगर में गया।

२१ तब दाऊद नोब को गया और अहीमिलेक याजक के पास आया; और

अहीमिलेक दाऊद से भेट करने को थरथराता हुआ निकला, और उससे पछा, “क्या कारण है कि तू अकेला है, और तेरे साथ कोई नहीं?” २ दाऊद ने अहीमिलेक याजक से कहा, “राजा ने मुझे एक काम करने की आज्ञा देकर मुझसे कहा, ‘जिस काम को मैं तुझे भेजता हूँ, और जो आज्ञा मैं तुझे देता हूँ, वह किसी पर प्रगट न होने पाए।’” और मैंने जवानों को फ्लाने स्थान पर जाने को समझाया है। ३ अब तेरे हाथ में क्या है? पाँच रोटी, या जो कुछ मिले उसे मेरे हाथ में दे।” ४ याजक ने दाऊद से कहा, “मेरे पास साधारण रोटी तो नहीं है, केवल पवित्र रोटी है; इतना हो कि वे जवान छियों से अलग रहे हों।” ५ दाऊद ने याजक को उत्तर देकर उससे कहा, “सच है कि हम तीन दिन से छियों से अलग हैं; फिर जब मैं निकल आता हूँ, तब जवानों के बर्तन पवित्र होते हैं; यद्यपि यात्रा साधारण होती है, तो आज उनके बर्तन अवश्य ही पवित्र होंगे।” ६ तब याजक ने उसको पवित्र रोटी दी; क्योंकि दूसरी रोटी वहाँ न थी, केवल भेट की रोटी थी जो यहोवा के सम्मुख से उठाई गई थी, कि उसके उठा लेने के दिन गरम रोटी रखी जाए। ७ उसी दिन वहाँ दोए नामक शाऊल का एक कर्मचारी यहोवा के आगे स्का हुआ था; वह एदोमी और शाऊल के चरवाहों का मुखिया था। ८ फिर दाऊद ने अहीमिलेक से पूछा, “क्या यहाँ तेरे पास कोई भाला या तलवार नहीं है? क्योंकि मुझे राजा के काम की ऐसी जल्दी थी कि मैं न तो तलवार साथ लाया हूँ, और न अपना कोई हथियार ही लाया।” ९ याजक ने कहा, “हाँ, पलिशती गोलियत जिसे तेरे एला तारीह में घात किया, उसकी तलवार कपड़े में लपेटी हुई एपोदे के पीछे रखी है; यदि तू उसे लेना चाहे, तो ले ले, उसे छोड़ और कोई यहाँ नहीं है।” दाऊद बोला, “उसके तुल्य कोई नहीं; वही मुझे दे।” १० तब दाऊद चला, और उसी दिन शाऊल के डर के मारे भागकर गत के राजा आकीश के पास गया। ११ और आकीश के कर्मचारियों ने आकीश से कहा, “क्या वह उस देश का राजा दाऊद नहीं है? क्या लोगों ने उसी के विषय नाचते-नाचते एक दूसरे के साथ यह गाना न गया था, ‘शाऊल ने हजारों को, और दाऊद ने लाखों को मारा है?’” १२ दाऊद ने ये बातें अपने मन में रखी, और गत के राजा आकीश से अत्यन्त डर गया। १३ तब उसने उनके सामने दूसरी चाल चली, और उनके हाथ में पड़कर पागल सा, बन गया; और फाटक के किवाड़ों पर लकड़ियाँ और खीचिने, और अपनी लाल अपनी दाढ़ी पर बहाने लगा। १४ तब आकीश ने अपने कर्मचारियों से कहा, “देखो, वह जन तो बाबला है; तुम उसे मेरे पास

क्यों लाए हो? १५ क्या मेरे पास बाबलों की कुछ घटी है, कि तुम उसको मेरे सामने बाबलापन करने के लिये लाए हो? क्या ऐसा जन मेरे भवन में आने पाएगा?”

२२ दाऊद वहाँ से चला, और बचकर अदुल्लाम की गुफा में पहुँच गया; यह

सुनकर उसके भाई, वरन् उसके पिता का समस्त घराना वहाँ उसके पास गया। १ और जिने संकट में पड़े थे, और जिने ऋणी थे, और जिने उदास थे, वे सब उसके पास इकट्ठे हुए; और वह उनका प्रधान हुआ। और कोई चार सौ पुरुष उसके साथ हो गए। २ वहाँ से दाऊद ने मोआब के मिस्पे को जाकर मोआब के राजा से कहा, “मेरे पिता को अपने पास तब तक आकर रहने दो, जब तक कि मैं न जानूँ कि परमेश्वर मेरे लिये क्या करेगा।” ३ और वह उनको मोआब के राजा के सम्मुख ले गया, और जब तक दाऊद उस गढ़ में रहा, तब तक वे उसके पास रहे। ४ फिर गढ़ नामक एक नबी ने दाऊद से कहा, “इस गढ़ में मत रह; चल, यहदा के देश में जा।” ५ और दाऊद चलकर हैरत के जंगल में गया। ६ तब शाऊल ने सुना कि दाऊद और उसके संयोगों का पता लग गया है उस समय शाऊल गिरा के ऊँचे स्थान पर, एक झाऊ के पेड़ के नीचे, हाथ में अपना भाला लिए हुए बैठा था, और उसके सब कर्मचारी उसके आस-पास खड़े थे। ७ तब शाऊल अपने कर्मचारियों से जो उसके आस-पास खड़े थे कहने लगा, “हे बिन्यामीनियों, सुनो; क्या यिशै का पुत्र तुम सभी को खेत और दाख की बारियाँ देगा? क्या वह तुम सभी को सहस्रपति और शतपति करेगा? ८ तुम सभी ने मेरे विस्तु क्यों राजदोह की गोष्ठी की है? और जब मेरे पुत्र ने यिशै के पुत्र से वाचा बाँधी, तब किसी ने मुझ पर प्रगट नहीं किया; और तुम में से किसी ने मेरे लिये शोकित होकर मुझ पर प्रगट नहीं किया, कि मेरे पुत्र ने मेरे कर्मचारी को मेरे विस्तु ऐसा घात लगाने को उभारा है, जैसा आज के दिन है।” ९ तब एदोमी दोए गे, जो शाऊल के सेवकों के ऊपर ठहराया गया था, उत्तर देकर कहा, “मैंने तो यिशै के पुत्र को नोब में अहीतूब के पुत्र अहीमिलेक के पास अते देखा, १० और उसने उसके लिये यहोवा से पूछा, और उसे भोजनवस्तु दी, और पलिशती गोलियत की तलवार भी दी।” ११ और राजा ने अहीतूब के पुत्र अहीमिलेक याजक को और उसके पिता के समस्त घराने को, अर्थात् नोब में रहनेवाले याजकों को बुलवा भेजा; और जब वे सब के सब शाऊल राजा के पास आए, १२ तब शाऊल ने कहा, “हे अहीतूब के पुत्र, सुन,” वह बोला, “हे प्रभु, क्या आजाना?” १३ शाऊल ने उसे पूछा, “क्या कारण है कि तू और यिशै के पुत्र दोनों ने मेरे विस्तु राजदोह की गोष्ठी की है? तूने उसे रोटी और तलवार दी, और उसके लिये परमेश्वर से पूछा भी, जिससे वह मेरे विस्तु डेरे, और ऐसा घात लगाए जैसा आज के दिन है?” १४ अहीमिलेक ने राजा को उत्तर देकर कहा, तेरे समस्त कर्मचारियों में दाऊद के तुल्य विच्वासयोग कौन है? वह तो राजा का दामाद है, और तेरे राजसभा में उपस्थित हुआ करता, और तेरे परिवार में प्रतिष्ठित है। १५ क्या मैंने आज ही उसके लिये परमेश्वर से पूछना आरम्भ किया है? वह मुझसे दूर रहे! राजा न तो अपने दास पर ऐसा कोई दोष लगाए, न मेरे पिता के समस्त घराने पर, क्योंकि तेरा दास इन सब बातों के विषय कुछ भी नहीं जानता।” १६ राजा ने कहा, “हे अहीमिलेक, तू और तेरे पिता का समस्त घराना निश्चय मार डाला जाएगा।” १७ फिर राजा ने उसे परस्परों से जो उसके आस-पास खड़े थे आज्ञा दी, “मुझे और यहोवा के याजकों को मार डालो; क्योंकि उन्होंने भी दाऊद की सहायता की है, और उसका भागना जानने पर भी मुझ पर प्रगट नहीं किया।” परन्तु राजा के सेवक यहोवा के याजकों को मारने के लिये हाथ बढ़ाना न चाहते थे। १८ तब राजा ने दोए से कहा, “तू मुड़कर याजकों को

मार डाल।” तब एदोमी दोणा ने मुड़कर याजकों को मारा, और उस दिन सनीवाला एपोद पहने हुए पचासी पुष्पों को घाट किया। १५ और याजकों के नगर नोब को उसने खियों-पुष्पों, और बाल-बच्चों, और दूधीतों, और बैलों, गदहों, और भेड़-बकरियों समेत तलवार से मारा। १० परन्तु अहिंदूके पुत्र अहीमलेक का एन्यातार नामक एक पुत्र बच निकला, और दाऊद के पास भाग गया। २१ तब एन्यातार ने दाऊद को बताया, कि शाऊल ने यहोवा के याजकों का वध किया है। २२ और दाऊद ने एन्यातार से कहा, “जिस दिन एदोमी दोणा वहाँ था, उसी दिन मैंने जान लिया था, कि वह निश्चय शाऊल को बताएगा। तेरी पिता के समर्पण के मारे जाने का कारण मैं ही हुआ। २३ इसलिए तू मेरे साथ निंदर रह; जो मेरे प्राण का ग्राहक है वही तेरी प्राण का भी ग्राहक है; परन्तु मेरे साथ रहने से तेरी रक्षा होगी।”

२३ दाऊद को यह समाचार मिला कि पलिशियों लोग कीला नगर से यश्चुकर रहे हैं, और खलिहानों को लटू रहे हैं। २४ तब दाऊद ने यहोवा से पछा, “क्या मैं जाकर पलिशियों को मास्हँ?” यहोवा ने दाऊद से कहा, “जा, और पलिशियों को मार के कीला को बचा।” ३ परन्तु दाऊद के जनों ने उससे कहा, “हम तो इस यहदा देश में भी डरते रहते हैं, यदि हम कीला जाकर पलिशियों की सेना का सामना करें, तो क्या बहुत अधिक डर में न पड़ेंगे?” ४ तब दाऊद ने यहोवा से फिर पूछा, और यहोवा ने उस उत्तर देकर कहा, “कमर बांधकर कीला को जा; क्योंकि मैं पलिशियों को तेरी हाथ में कर दृग्गा।” ५ इसलिए दाऊद अपने जनों को संग लेकर कीला को गया, और पलिशियों से लड़कर उनके पशुओं को हाँक लाया, और उन्हें बड़ी मार से मारा। अतः दाऊद ने कीला के निवासियों को बचाया। ६ जब अहीमलेक का पुत्र एन्यातार दाऊद के पास कीला को भाग गया था, तब हाथ में एपोद लिए हुए गया था। ७ तब शाऊल को यह समाचार मिला कि दाऊद कीला को गया है। और शाऊल ने कहा, “परमेश्वर ने तेरे मेरे हाथ में कर दिया है; वह तो फाटक और बेंडेवाले नगर में घुसकर बन्द हो गया है।” ८ तब शाऊल ने अपनी सारी सेना को लड़ाई के लिये बुलवाया, कि कीला को जाकर दाऊद और उसके जनों को धेर ले। ९ तब दाऊद ने जान लिया कि शाऊल मेरी हानि कि युक्ति कर रहा है; इसलिए उसने एन्यातार याजक से कहा, “एपोद को निकट ले आ।” १० तब दाऊद ने कहा, “हे इस्माएल के परमेश्वर यहोवा, तेरे दास ने निश्चय सुना है कि शाऊल मेरे कारण कीला नगर नष्ट करने को आना चाहता है। ११ क्या कीला के लोग मुझे उसके बश में कर देंगे? क्या ऐसे तेरे दास ने सुना है, वैसे ही शाऊल आएगा? हे इस्माएल के परमेश्वर यहोवा, अपने दास को यह बता।” यहोवा ने कहा, “हाँ, वह आएगा।” १२ फिर दाऊद ने पछा, “क्या कीला के लोग मुझे और मेरे जनों को शाऊल के बश में कर देंगे?” यहोवा ने कहा, “हाँ, वे कर देंगे।” १३ तब दाऊद और उसके जन जो कोई छँ सौ थे, कीला से निकल गए, और इधर-उधर जहाँ कहीं जा सके वहाँ गए। और जब शाऊल को यह बताया गया कि दाऊद कीला से निकल भागा है, तब उसने वहाँ जाने का विचार छोड़ दिया। १४ तब दाऊद जंगल के गढ़ों में रहने लगा, और पहाड़ी देश के जीप नामक जंगल में रहा। और शाऊल उसे प्रतिदिन ढूँढता रहा, परन्तु परमेश्वर ने उसे उसके हाथ में न पड़ने दिया। १५ और दाऊद ने जान लिया कि शाऊल मेरे प्राण की खोज में निकला है। और दाऊद जीप नामक जंगल के होरेश नामक स्थान में था; १६ कि शाऊल का पुत्र योनातान उठकर उसके पास होरेश में गया, और परमेश्वर की चर्चा करके उसको ढाड़स दिलाया। १७ उसने उससे कहा, “मत डर; क्योंकि तू मेरे पिता शाऊल के हाथ में न पड़ेगा; और तू ही इस्माएल का राजा होगा, और मैं तेरे

नीचे होऊँगा; और इस बात को मेरा पिता शाऊल भी जानता है।” १८ तब उन दोनों ने यहोवा की शपथ खाकर आपस में बाचा बांधीं; तब दाऊद होरेश में रह गया, और योनातान अपने घर चला गया। १९ तब जीपी लोग गिबा में शाऊल के पास जाकर कहने लगे, “दाऊद तो हमारे पास होरेश के गढ़ों में, अर्थात् उस हकीला नामक पहाड़ी पर छिपा रहता है, जो यशीमोन के दक्षिण की ओर है। २० इसलिए अब, हे राजा, तेरी जो इच्छा आने की है, तो आ; और उसको राजा के हाथ में पकड़वा देना हमारा काम होगा।” २१ शाऊल ने कहा, “यहोवा की आशीष तुम पर हो, क्योंकि तुम ने मुझ पर दया की है। २२ तुम चलकर और भी निश्चय कर लो; और देख-भाल कर जान लो, और उसके अड़े का पता लगा लो, और पता लगाओ कि उसको वहाँ किसने देखा है; क्योंकि किसी ने मुझसे कहा है, कि वह बड़ी चतुराई से काम करता है। २३ इसलिए जहाँ कहीं वह छिपा करता है उन सब स्थानों को देख देखकर पहचानो, तब निश्चय करके मेरे पास लैट आना। और मैं तुम्हे साथ चलूँगा, और यदि वह उस देश में कहीं भी हो, तो मैं उसे यहदा के हजारों में से ढूँढ़ निकालूँगा।” २४ तब वे चलकर शाऊल से पहले जीप को गए। परन्तु दाऊद अपने जनों समेत माओन नामक जंगल में चला गया था, जो अराबा में यशीमोन के दक्षिण की ओर है। २५ तब शाऊल अपने जनों को साथ लेकर उसकी खोज में गया। इसका समाचार पाकर दाऊद पर्वत पर से उतर के माओन जंगल में रहने लगा। यह सुन शाऊल ने माओन जंगल में दाऊद का पीछा किया। २६ शाऊल तो पहाड़ की एक ओर, और दाऊद अपने जनों समेत पहाड़ की दूसरी ओर जा रहा था; और दाऊद शाऊल के डर के मारे जल्दी जा रहा था, और शाऊल अपने जनों समेत दाऊद और उसके जनों को पकड़ने के लिये धेरा बनाना चाहता था, २७ कि एक दूत ने शाऊल के पास आकर कहा, “फुर्ती से चला आ; क्योंकि पलिशियों ने देश पर चढ़ाई की है।” २८ यह सुन शाऊल दाऊद का पीछा छोड़कर पलिशियों का सामना करने की चला; इस कारण उस स्थान का नाम सेलाहम्म-हलकोत पड़ा। २९ वहाँ से दाऊद चढ़कर एगादी के गढ़ों में रहने लगा।

२४ जब शाऊल पलिशियों का पीछा करके लौटा, तब उसको यह समाचार मिला, कि दाऊद एनगदी के जंगल में है। ३० तब शाऊल समस्त इस्माएलियों में से तीन हजार को छाँटकर दाऊद और उसके जनों को ‘जंगली बकरों की चट्ठानों’ पर खोजने गया। ३१ जब वह मार्ग पर के भेड़शालाओं के पास पहुँचा जहाँ एक गुफा थी, तब शाऊल दिशा फिरने को उसके भीतर गया। और उसी गुफा के कोरों में दाऊद और उसके जन बैठे हुए थे। ३२ तब दाऊद के जनों ने उससे कहा, “सुन, आज वही दिन है जिसके विषय यहोवा ने तुम से कहा था, ‘मैं तेरे शत्रु को तेरे हाथ में सौंप दूँगा,’ कि तू उससे मनमाना बर्ताव कर ले।” ३३ तब दाऊद ने उठकर शाऊल के बागों की छोर काटने से पछताया। ३४ इसके बाद दाऊद शाऊल के बागों की छोर काटने से पछताया। ३५ तब दाऊद ने उसके जनों से कहने लगा, “यहोवा न करे कि मैं अपने प्रभु से जो यहोवा का अधिषिक्त है ऐसा काम करूँ, कि उस पर हाथ उठाऊँ, क्योंकि वह यहोवा का अधिषिक्त है।” ३६ ऐसी बातें कहकर दाऊद ने अपने जनों को समझाया और उन्हें शाऊल पर आक्रमण करने को उठने न दिया। फिर शाऊल उठकर गुफा से निकला और अपना मार्ग लिया। ३७ उसके बाद दाऊद भी उठकर गुफा से निकला और शाऊल को पीछे से पुकारके बोला, “हे मेरे प्रभु, हे राजा।” जब शाऊल ने पीछे मुड़कर देखा, तब दाऊद ने भूमि की ओर सिर झुकाकर दण्डवत् की। ३८ और दाऊद ने शाऊल से कहा, “जो मनुष्य कहते हैं, कि दाऊद तेरी हानि चाहता है उनकी तू क्यों सुनता है? ३९ देख, आज तने अपनी आँखों से देखा है कि यहोवा ने आज गुफा में तुझे मेरे हाथ सौंप दिया था; और

किसी किसी ने तो मुझसे तुझे मारने को कहा था, परन्तु मुझे तुझ पर तरस आया; और मैंने कहा, मैं अपने प्रभु पर हाथ न उठाऊँगा; क्योंकि वह यहोवा का अधिकारित है। १५ फिर, हे मेरे पिता, देख, अपने बागे की छोर मेरे हाथ में देख; मैंने तेरे बागे की छोर तो काट ली, परन्तु तुझे घात न किया; इससे निश्चय करके जान ले, कि मेरे मन में कोई बुराई या अपराध का सोच नहीं है। मैंने तेरे विस्तु कोई अपराध नहीं किया, परन्तु तुमे प्राण लेने को मानो उसका अहेर करता रहता है। १६ यहोवा मेरा और तेरा न्याय करे, और यहोवा तुझ से मेरा बदला ले; परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा। १७ प्राचीनों के नीतिवचन के अनुसार ‘दुश्ता दुर्दों से होती है’; परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा। १८ इसाएल का राजा किसका पीछा करने को निकला है? और किसके पीछे पड़ा है? एक मेरे कुते के पीछे! एक पिस्स के पीछे! १९ इसलिए यहोवा न्यायी होकर मेरा तेरा विचार करे, और विचार करके मेरा मुकदमा लड़े, और न्याय करके मुझे तेरे हाथ से बचाए।” २० जब दाऊद शाऊल से ये बातें कह चुका, तब शाऊल ने कहा, “हे मेरे बेटे दाऊद, क्या यह तेरा बोल है?” तब शाऊल चिल्लाकर रोने लगा। २१ फिर उसने दाऊद से कहा, “तुम मुझसे अधिक धर्मी हैं; तूने तो मेरे साथ भलाई की है, परन्तु मैंने तेरे साथ बुराई की। २२ और तूने आज यह प्रगट किया है, कि तूने मेरे साथ भलाई की है, कि जब यहोवा ने मुझे तेरे हाथ में कर दिया, तब तूने मुझे घात न किया। २३ भला! क्या कोई मनुष्य अपने शत्रु को पारक कुशल से जाने देता है? इसलिए जो तूने आज मेरे साथ किया है, इसका अच्छा बदला यहोवा तुझे दे। २४ और अब, मुझे मालमू हुआ है कि तू निश्चय राजा हो जाएगा, और इसाएल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर होगा। २५ अब मुझसे यहोवा की शपथ खा, कि मैं तेरे वंश को तेरे बाद नष्ट न करेंगा, और तेरे पिता के घराने में से तेरा नाम मिटा न डालूँगा।” २६ तब दाऊद ने शाऊल से ऐसी ही शपथ खाई। तब शाऊल अपने घर चला गया; और दाऊद अपने जनों समेत गढ़ों में चला गया।

२५ शमाएल की मृत्यु हो गई; और समस्त इसाएलियों ने इकट्ठे होकर उसके लिये छाती पीटी, और उसके घर ही मैं जो रामाह में था उसको मिट्टी दी। तब दाऊद उठकर पारान जंगल को चला गया। २७ माओन में एक पुस्त रहता था जिसका व्यापार कर्मल में था। और वह पुस्त बहुत धर्मी था, और उसकी तीन हजार भेड़े, और एक हजार बकरियाँ थीं; और वह अपनी भेड़ों का ऊन करत रहा था। २८ उस पुस्त का नाम नाबाल, और उसकी पत्नी का नाम अबीगील था। दी तो बुद्धिमान और स्वपती थी, परन्तु पुस्त कठोर, और बुरे-बुरे काम करनेवाला था; वह कालेबवंशी था। २९ जब दाऊद ने जंगल में समाचार पाया, कि नाबाल अपनी भेड़ों का ऊन करत रहा है; ३० तब दाऊद ने दस जवानों को वहाँ भेज दिया, और दाऊद ने उन जवानों से कहा, “कर्मल में नाबाल के पास जाकर मेरी ओर से उसका कुशल क्षेत्र पूछो। ३१ और उससे यह कहो, ‘तुम चिरंजीव रहे, तेरा कल्याण हो, और तेरा घराना कल्याण से रहे, और जो कुछ तेरा है वह कल्याण से रहे। ३२ मैंने सुना है, कि जो तुम ऊन करत रहा है; तेरे चरवाहे हम लोगों के पास रहे, और न तो हमने उनकी कुछ हानि की, और न उनका कुछ खोया गया। ३३ अपने जवानों से यह बात पूछ ले, और वे तुझको बताएँगे। अतः इन जवानों पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो; हम तो आनन्द के समय में आए हैं, इसलिए जो कुछ तेरे हाथ लगे वह अपने दासों और अपने बेटे दाऊद को दे।” ३४ दाऊद के जवान जाकर ऐसी बातें उसके नाम से नाबाल को सुनाकर चुप रहे। ३५ नाबाल ने दाऊद के जनों को उत्तर देकर उनसे कहा, “दाऊद कौन है? यिसे का पत्र कौन है? आजकल बहत से दास अपने-अपने स्वामी के पास से भाग जाते हैं। ३६ क्या मैं अपनी रोटी-पानी और जो पशु मैंने

अपने करतरनेवालों के लिये मारे हैं लेकर ऐसे लोगों को दे दूँ, जिनको मैं नहीं जानता कि कहाँ के हैं?” ३७ तब दाऊद के जवानों ने लौटकर अपना मार्ग लिया, और लौटकर उसको ये सब बातें ज्यों की त्यों सुना दीं। ३८ तब दाऊद ने अपने जनों से कहा, “अपनी-अपनी तलवार बाँध लो।” तब उन्होंने अपनी-अपनी तलवार बाँध ली; और दाऊद ने भी अपनी तलवार बाँध ली; और कोई चार सौ पुस्त दाऊद के पीछे-पीछे चले, और दो सौ सामान के पास रह गए। ३९ परन्तु एक सेवक ने नाबाल की पत्नी अबीगील को बताया, “दाऊद ने जंगल से हमारे स्वामी को आशीर्वाद देने के लिये दूत भेजे थे; और उसने उन्हें ललकार दिया। ४० परन्तु वे मनुष्य हम से बहुत अच्छा बर्ताव रखते थे, और जब तक हम मैदान में रहते हुए उनके पास आया-जाया करते थे, तब तक न तो हमारी कुछ हानि हुई, और न हमारा कुछ खोया; ४१ जब तक हम उनके साथ भेड़-बकरियाँ चरते रहे, तब तक वे रात दिन हमारी आड़ बने रहे। ४२ इसलिए अब सोच विचार कर कि क्या करना चाहिए; क्योंकि उन्होंने हमारे स्वामी की और उसके समस्त घराने की हानि करना ठान लिया होगा, वह तो ऐसा रुक्ष है कि उससे कोई बोल भी नहीं सकता।” ४३ तब अबीगील ने फुर्ती से दो सौ रोटी, और दो कुपी दाखमधु, और पाँच भेड़ों का बांस, और पाँच सआ भना हुआ अनाज, और एक सौ गुच्छे किशमिश, और अंजीरों की दो सौ सौ टिकियाँ लेकर गढ़ों पर लदवाई। ४४ और उसने अपने जवानों से कहा, “तुम मेरे आगे-आगे चलो, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आती हूँ,” परन्तु उसने अपने पति नाबाल से कुछ न कहा। ४५ वह गढ़े पर चढ़ी हुई पहाड़ की आड़ में उतरी जाती थी, और दाऊद अपने जनों समेत उसके सामने उत्तरा आता था; और वह उनको मिट्टी। ४६ दाऊद ने तो सोचा था, “मैंने जो जंगल में उसके सब माल की ऐसी रक्षा की कि उसका कुछ भी न खोया, यह नि:सन्देह व्यर्थ हुआ; क्योंकि उसने भलाई के बदले मुझसे बुराई ही की है। ४७ यदि सवर्ग को उजियाला होने तक उस जन के समस्त लोगों में से एक लड़के को भी मैं जीवित छोड़ूँ, तो परमेश्वर मैं सब शत्रुओं से ऐसा ही, बरन इससे भी अधिक करो।” ४८ दाऊद को देख अबीगील फुर्ती करके गढ़े पर से उत्तर पड़ी, और दाऊद के समस्त मुँह के बल भूमि पर गिरकर दण्डवत् की। ४९ फिर वह उसके पाँव पर गिरकर कहने लगी, “हे मेरे प्रभु, यह अपराध मेरे ही सिर पर हो, तेरी दासी तुझ से कुछ कहना चाही है, और तुम अपनी दासी की बातों को सुन ले। ५० मेरा प्रभु उस दुश्मनाल पर चित्त न लगाए; क्योंकि जैसा उसका नाम है वैसा ही वह आप है; उसका नाम तो नाबाल है, और सचमुच उसमें मूर्खता पाई जाती है; परन्तु मुझ तेरी दासी ने अपने प्रभु के जवानों को जिन्हें तूने भेजा था न देखा था। ५१ और अब, हे मेरे प्रभु, यहोवा की जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, कि यहोवा ने जो तुझे खन से और अपने हाथ के द्वारा अपना बदला लेने से रोक रखा है, इसलिए अब तेरे शत्रु और मेरे प्रभु की हानि के चाहनेवाले नाबाल ही के समान ठहरें। ५२ और अब यह भेट जो तेरी दासी अपने प्रभु के पास लाई है, उन जवानों को दी जाए जो मेरे प्रभु के साथ चलते हैं। ५३ अपनी दासी का अपराध क्षमा कर; क्योंकि यहोवा निश्चय मेरे प्रभु का घर बसाएगा और स्थिर करेगा, इसलिए कि मेरा प्रभु यहोवा की ओर से लड़ता है; और जन्म भर तुझ में कोई बुराई नहीं पाई जाएगी। ५४ और यद्यपि एक मनुष्य तेरा पीछा करने और तेरे प्राण का ग्राहक होने को उठा है, तो भी मेरे प्रभु का प्राण तेरे परमेश्वर यहोवा की जीवनस्थी गढ़ी में बैधा रहेगा, और तेरे शत्रुओं के प्राणों को वह मानो गोफन में रखकर फेंक देगा। ५५ इसलिए जब यहोवा मेरे प्रभु के लिये यह समस्त भलाई करेगा जो उसने तेरे विषय में कही है, और तुझे इसाएल पर प्रधान करके ठहराएगा, ५६ तब तुझे इस कारण पछताना न होगा, या मेरे प्रभु का हृदय पीड़ित न होगा कि तूने अकारण खून

किया, और मेरे प्रभु ने अपना बदला आप लिया है। फिर जब यहोवा मेरे प्रभु से भलाई करे तब अपनी दासी को स्मरण करना।” ३२ दाऊद ने अबीगैल से कहा, “इसाएल का परमेवर यहोवा धन्य है, जिसने आज के दिन मुझसे भेट करने के लिये तुड़े भेजा है। ३३ और तेरा विवेक धन्य है, और तू आप भी धन्य हैं, कि तूने मुझे आज के दिन खून करने और अपना बदला आप लेने से रोक लिया है। ३४ क्योंकि सचमुच इसाएल का परमेवर यहोवा, जिसने मुझे तेरी हानि करने से रोका है, उसके जीवन की शपथ, यदि तू फूर्ती करके मुझसे भेट करने को न आती, तो निःसन्देह सर्वे को उजियाला होने तक नाबाल का कोई लड़का भी न बचता।” ३५ तब दाऊद ने उसे ग्रहण किया जो वह उसके लिये लाई थी; फिर उससे उसने कहा, “अपने घर कुशल से जा; सुन, मैंने तेरी बात मानी है और तेरी विनिती ग्रहण कर ली है।” ३६ तब अबीगैल नाबाल के पास लौट गई, और क्या देखती है, कि वह घर में राजा का सा भोज कर रहा है। और नाबाल का मन मग्न है, और वह नशे में अति चूर हो गया है; इसलिए उसने भोर का उजियाला होने से पहले उससे कुछ भी न कहा। ३७ सर्वे को जब नाबाल का नशा उतर गया, तब उसकी पत्नी ने उसे सारा हाल कह सनाया, तब उसके मन का हियाव जाता रहा, और वह पथर सा सुन हो गया। ३८ और दस दिन के पश्चात् यहोवा ने नाबाल को ऐसा मारा, कि वह मर गया। ३९ नाबाल के मरने का हाल सुनकर दाऊद ने कहा, “धन्य है यहोवा जिसने नाबाल के साथ मेरी नामधारी का मुकदमा लड़कर अपने दास को बुराई से रोक रखा; और यहोवा ने नाबाल की बुराई को उसी के सिर पर लाद दिया है।” तब दाऊद ने लोगों को अबीगैल के पास इसलिए भेजा कि वे उससे उसकी पत्नी होने की बातचीत करें। ४० तो जब दाऊद के सेवक कर्मील को अबीगैल के पास पहुँचे, तब उससे कहने लगे, “दाऊद ने हमें तेरे पास इसलिए भेजा है कि तू उसकी पत्नी बने।” ४१ तब वह उठी, और मूँह के बल भूमि पर गिर टूटवत् करके कहा, “तेरी दासी अपने प्रभु के सेवकों के चरण धोने के लिये दासी बने।” ४२ तब अबीगैल फुर्ती से उठी, और गदहे पर चढ़ी, और उसकी पाँच सहेलियाँ उसके पीछे-पीछे हो लीं; और वह दाऊद के दूरों के पीछे-पीछे गई, और उसकी पत्नी हो गई। ४३ और दाऊद ने यिजेल नगर की अहीनेअम से भी विवाह कर लिया, तो वे दोनों उसकी पत्रियाँ हुईं। ४४ परन्तु शाऊल ने अपनी बेटी दाऊद की पत्नी मीकल को लैश के पुत्र गल्लीमिवासी पलती को दे दिया था।

२६

फिर जीपी लोग गिबा में शाऊल के पास जाकर कहने लगे, “क्या दाऊद उस हकीला नामक पहाड़ी पर जो यशीमोन के सामने है छिपा नहीं रहता?” १ तब शाऊल उठकर इसाएल के तीन हजार छाँटे हुए योद्धा संग लिए हुए गया कि दाऊद को जीप के जंगल में खोजे। २ और शाऊल ने अपनी छावनी मार्ग के पास हकीला नामक पहाड़ी पर जो यशीमोन के सामने है डाली। परन्तु दाऊद जंगल में रहा; और उसने जान लिया, कि शाऊल मेरा पीछा करने को जंगल में आया है; ३ तब दाऊद ने भेदियों को भेजकर निश्चय कर लिया कि शाऊल सचमुच आ गया है। ४ तब दाऊद उठकर उस स्थान पर गया जहाँ शाऊल पड़ा था; और दाऊद ने उस स्थान को देखा जहाँ शाऊल अपने सेनापति नेर के पुत्र अब्ने समेत पड़ा था, शाऊल तो गाड़ियों की आड़ में पड़ा था और उसके लोग उसके चारों ओर डेरे डाले हुए थे। ५ तब दाऊद ने हिती अहीमेलेक और सस्याह के पुत्र योआब के भाई अबीशै से कहा, “मेरे साथ उस छावनी में शाऊल के पास कौन चलेगा?” अबीशै ने कहा, “तेरे साथ मैं चलूँगा।” ६ अतः दाऊद और अबीशै रातों-रात उन लोगों के पास गए, और क्या देखते हैं, कि शाऊल गाड़ियों की आड़ में पड़ा सो रहा है, और उसका भाला उसके सिरहाने भूमि में गड़ा है; और अब्ने और योद्धा लोग

उसके चारों ओर पड़े हुए हैं। ७ तब अबीशै ने दाऊद से कहा, “परमेवर ने आज तेरे शून्य को तेरे हाथ में कर दिया है; इसलिए अब मैं उसको एक बार ऐसा मास्क कि भाला उसे बेधता हुआ भूमि में धूँस जाए, और मुझ को उसे दूसी बार मारना न पड़ेगा।” ८ दाऊद ने अबीशै से कहा, “उसे नष्ट न कर; क्योंकि यहोवा के अभिषिक्त पर हाथ चलाकर कौन निर्दोष ठहर सकता है।” ९ फिर दाऊद ने कहा, “यहोवा के जीवन की शपथ यहोवा ही उसको मारेगा; या वह अपनी मृत्यु से मरेगा; या वह लड़ाई में जाकर मर जाएगा। १० यहोवा न करे कि मैं अपना हाथ यहोवा के अभिषिक्त पर उठाऊँ; अब उसके सिरहाने से भाला और पानी की सुराही उठा ले, और हम यहाँ से चले जाएँ।” ११ तब दाऊद ने भाले और पानी की सुराही को शाऊल के सिरहाने से उठा लिया; और वे चले गए। और किसी ने इसे न देखा, और न जाना, और न कोई जागा; क्योंकि वे सब इस कारण सोए हुए थे, कि यहोवा की ओर से उनमें भारी नीद समा गई थी। १२ तब दाऊद दूसी ओर जाकर दूर के पहाड़ की चोटी पर खड़ा हुआ, और दोनों के बीच बड़ा अन्तर था; १३ और दाऊद ने उन लोगों को, और ने के पुत्र अब्ने को पुकारके कहा, “हे अब्ने यह तू नहीं सुनता?” अब्ने ने उत्तर देकर कहा, “तू कौन है जो राजा को पुकारता है?” १४ दाऊद ने अब्ने से कहा, “क्या तू पुष्प नहीं है? इसाएल में तेरे तुल्य कौन है? तूने अपने स्वामी राजा की चौकरी क्यों नहीं की? एक जन तो तेरे स्वामी राजा को नष्ट करने द्याया था। १५ जो काम तूने किया है वह अच्छा नहीं। यहोवा के जीवन की शपथ तुम लोग मारे जाने के योग्य हो, क्योंकि तुम ने अपने स्वामी, यहोवा के अभिषिक्त की चौकरी नहीं की। और अब देख, राजा का भाला और पानी की सुराही जो उसके सिरहाने भी वे कहा हैं?” १६ तब शाऊल ने दाऊद का बोल पहचानकर कहा, “हे मेरे बेटे दाऊद, क्या यह तेरा बोल है?” दाऊद ने कहा, “हाँ, मेरे प्रभु राजा, मेरा ही बोल है।” १७ फिर उसने कहा, “मेरा प्रभु अपने दास का पीछा क्यों करता है? मैंने क्या किया है? और मुझसे कौन सी बुराई हुई है? १८ अब मेरा प्रभु राजा, अपने दास की बांतें सुन ले। यदि यहोवा ने तुझे मेरे विस्तु उकसाया हो, तब तो वह भेट प्रहृष्ट करे; परन्तु यदि आदमियों ने ऐसा किया हो, तो वे यहोवा की ओर से शापित हों, क्योंकि उन्होंने अब मुझे निकाल दिया कि मैं यहोवा के निज भाग में न रहूँ, और उन्होंने कहा है, ‘जा पारा देवताओं की उपासना कर।’ १९ इसलिए अब मेरा लहू यहोवा की आँखों की ओटे में भूमि पर न बहने पाएँ; इसाएल का राजा तो एक पिस्स ढूँढ़ने आया है, जैसा कि कोई पहाड़ों पर तीर का अद्देर करे।” २० इसलिए अब मेरा लहू यहोवा एक-एक को अपने-अपने धार्मिकता और सच्चाई का फल देगा; देख, आज यहोवा ने तुझको मेरे हाथ में कर दिया था, परन्तु मैंने यहोवा के अभिषिक्त पर अपना हाथ उठाना उचित न समझा। २१ इसलिए जैसे तेरे प्राण आज मेरी दृष्टि में प्रिय रहे, वैसे ही मेरे प्राण भी यहोवा की दृष्टि में प्रिय रहे, और वह मुझे समस्त विपत्तियों से छुड़ाए।” २२ शाऊल ने दाऊद से कहा, “हे मेरे बेटे दाऊद तू धन्य है! तू बड़े-बड़े काम करेगा और तेरे काम सफल होंगे।” तब दाऊद ने अपना मार्ग लिया, और शाऊल भी अपने स्थान को लौट गया।

२३ तब दाऊद सोचने लगा, “अब मैं किसी न किसी दिन शाऊल के हाथ से नष्ट हो जाऊँगा; अब मेरे लिये उत्तम यह है कि मैं पलिशितियों के देश में

भाग जाऊँ; तब शाऊल मेरे विषय निराश होगा, और मुझे इस्माएल के देश के किसी भाग में फिर न ढूँढ़ेगा, तब मैं उसके हाथ से बच निकलौँगा।” २ तब दाऊद अपने छ. सौ सांगी पुष्पों को लेकर चला गया, और गत के राजा माओके के पुनर आकीश के पास गया। ३ और दाऊद और उसके जन अपने-अपने परिवार समेत गत में आकीश के पास रहने लगे। दाऊद तो अपनी दो छियों के साथ, अर्थात् यिज्जेती अहीनोअम, और नाबाल की छीं कर्मती अब्बागिल के साथ रहा। ४ जब शाऊल को यह समाचार मिला कि दाऊद गत को भाग गया है, तब उसने उसे फिर कभी न ढूँढ़ा। ५ दाऊद ने आकीश से कहा, “यदि मुझ पर तेरे असुख की दृष्टि हो, तो देश की किसी बस्ती में मुझ स्थान दिला दे जहाँ मैं रहूँ, तेरा दास तेरे साथ राजधानी में क्यों रहे?” ६ तब आकीश ने उसे उसी दिन सिक्ललग बस्ती दी; इस कारण से सिक्ललग आज के दिन तक यहां के राजाओं का बना है। ७ पलिशितियों के देश में रहते-रहते दाऊद को एक वर्ष चार महीने बीत गए। ८ और दाऊद ने अपने जनों समेत जाकर गश्शरियों, गिरिजियों, और अमालेकियों पर चढाई की; ये जातियाँ तो प्राचीनकाल से उस देश में रहती थीं जो शूर के मार्ग में मिस्र देश तक है। ९ दाऊद ने उस देश को नष्ट किया, और छीं पुष्प किसी को जीवित न छोड़ा, और भेड़-बकरी, गाय-बैल, गदहे, झॅट, और बब्ल लेकर लौटा, और आकीश के पास गया। १० आकीश ने पछा, “आज तम ने चढाई तो नहीं की?” दाऊद ने कहा, “हाँ, यहां यरहोलियों और केनियों की दक्षिण दिशा में।” ११ दाऊद ने छीं पुष्प किसी को जीवित न छोड़ा कि उन्हें गत में पहुँचाएँ; उसने सोचा था, “ऐसा न हो कि वे हमारा काम बताकर यह कहें, कि दाऊद ने ऐसा-ऐसा किया है। वरन् जब से वह पलिशितियों के देश में रहता है, तब से उसका काम ऐसा ही है।” १२ तब आकीश ने दाऊद की बात सच मानकर कहा, “यह अपने इस्माएली लोगों की दृष्टि में अति धृषिण हुआ है; इसलिए यह सदा के लिये मेरा दास बना रहेगा।”

२८ उन दिनों में पलिशितियों ने इस्माल से लड़ने के लिये अपनी सेना इकट्ठी की तब आकीश ने दाऊद से कहा, “निश्चय जान कि तुझे अपने जवानों समेत मेरे साथ सेना में जाना होगा।” २ दाऊद ने आकीश से कहा, “इस कारण तु जान लेगा कि तेरा दास क्या करेगा।” आकीश ने दाऊद से कहा, “इस कारण मैं तुझे अपने सिर का रक्षक सदा के लिये ठहराऊँगा।” ३ शमूएल तो मर गया था, और समस्त इस्माएलियों ने उसके विषय छाती पीटी, और उसको उसके नार रामाह में मिट्टी दी थी। और शाऊल ने ओडों और भूत-सिद्धि करनेवालों को देश से निकाल दिया था। ४ जब पलिशिती इकट्ठे हुए और शूरम में छावनी डाली, तो शाऊल ने सब इस्माएलियों को इकट्ठा किया, और उन्होंने गिलबो में छावनी डाली। ५ पलिशितियों की सेना को देखकर शाऊल डर गया, और उसका मन अत्यन्त भयभीत हो कौप उठा। ६ और जब शाऊल ने यहोवा से पछा, तब यहोवा ने न तो स्वप्न के द्वारा उसे उत्तर दिया, और न ऊरीम के द्वारा, और न भविष्यद्वृत्ताओं के द्वारा। ७ तब शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, “मेरे लिये किसी भूत-सिद्धि करनेवाली को ढूँढ़ो, कि मैं उसके पास जाकर उससे पूछूँ।” उसके कर्मचारियों ने उससे कहा, “एनदोर में एक भूत-सिद्धि करनेवाली रहती है।” ८ तब शाऊल ने अपना भेष बदला, और दूसरे कपड़े पहनकर, दो मनुष्य संग लेकर, रातों-रात चलकर उस छीं के पास गया, और कहा, “अपने सिद्धि भूत से मेरे लिये भावी कहलवा, और जिसका नाम मैं लौँगा उसे बुलावा दे।” ९ छीं ने उससे कहा, “तु जानता है कि शाऊल ने क्या किया है, कि उसने ओडों और भूत-सिद्धि करनेवालों का देश से नाश किया है। फिर तू मेरे प्राण के लिये क्यों फंदा लगाता है कि मुझे मरवा डाले।” १०

शाऊल ने यहोवा की शपथ खाकर उससे कहा, “यहोवा के जीवन की शपथ, इस बात के कारण तुझे दण्ड न मिलेगा।” ११ तब छीं ने पछा, “मैं तेरे लिये किसको बुलाऊँग़?” उसने कहा, “शमूएल को मेरे लिये बुला।” १२ जब छीं ने शमूएल को देखा, तब ऊँचे शब्द से चिल्लाई; और शाऊल से कहा, “तूने मुझे क्यों धोखा दिया? तु तो शाऊल है।” १३ राजा ने उससे कहा, “मत डर; तुझे क्या देख पड़ता है?” छीं ने शाऊल से कहा, “मुझे एक देवता पृथ्वी में से चढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है।” १४ उसने उससे पछा, “उसका कैसा स्पृह है?” उसने कहा, “एक बूढ़ा पुष्प बागा ओढ़े हुए चढ़ा आता है।” तब शाऊल ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल है, और उसे मूँह भूमि पर पिस्कर दण्डबत दिया। १५ शमूएल ने शाऊल से पछा, “तूने मुझे ऊपर बुलवाकर क्यों सताया है?” शाऊल ने कहा, “मैं बड़े संकट में पड़ा हूँ; क्योंकि पलिशिती मेरे साथ लड़ रहे हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया, और अब मुझे न तो भविष्यद्वृत्ताओं के द्वारा उत्तर देता है, और न स्वप्नों के; इसलिए मैंने तुझे बुलाया कि तू मुझे जाता दे कि मैं क्या करूँ।” १६ शमूएल ने कहा, “जब यहोवा तुझे छोड़कर तेरा शत्रु बन गया, तब तू मुझसे क्यों पछता है? १७ यहोवा ने तो जैसे मुझसे कहलवाया था वैसा ही उसने व्यवहार किया है, अर्थात् उसने तेरे हाथ से राज्य छीनकर तेरे पड़ोसी दाऊद को दे दिया है। १८ तूने जो यहोवा की बात न मानी, और न अमालेकियों को उसके भड़के हुए कोप के अनुसार दण्ड दिया था, इस कारण यहोवा ने तुझे से आज ऐसा बर्ताव किया। १९ फिर यहोवा तुझ समेत इस्माएलियों को पलिशितियों के हाथ में कर देगा; और तू अपने बेटों समेत कल मेरे साथ होगा; और इस्माएली सेना को भी यहोवा पलिशितियों के हाथ में कर देगा।” २० तब शाऊल तुन्त युँहे के बल भूमि पर गिर पड़ा, और शमूएल की बातों के कारण अत्यन्त डर गया; उसने पूरे दिन और रात भोजन न किया था, इससे उसमें बल कुछ भी न रहा। २१ तब वह छीं शाऊल के पास गई, और उसको अति व्याकुल देखकर उससे कहा, “सुन, तेरी दासी ने तो तेरी बात मानी; और मैंने अपने प्राण पर खेलकर तेरे वचनों को सुन लिया जो तूने मुझसे कहा। २२ तो अब तू भी अपनी दासी की बात मान; और मैं तेरे सामने एक टुकड़ा रोटी रखूँ; तू उसे खा, कि जब तू अपना मार्ग ले तब तुझे बल आ जाए।” २३ उसने इन्कार करके कहा, “मैं न खा ऊँक़ागा।” परन्तु उसके सेवकों और छीं ने मिलकर यहाँ तक उसे दबाया कि वह उनकी बात मानकर, भूमि पर से उठकर खाट पर बैठ गया। २४ छीं के घर में तो एक तैयार किया हुआ बछड़ा था, उसने फूर्ती करके उसे मारा, फिर आटा लेकर गूँथा, और अखमीरी रोटी बनाकर २५ शाऊल और उसके सेवकों के आगे लाई; और उन्होंने खाया। तब वे उठकर उसी रात चले गए।

२९ पलिशितियों ने अपनी समस्त सेना को अपेक में इकट्ठा किया; और इस्माएली पिज्जेल के निकट के सोते के पास डौरे डाले हुए थे। १ तब पलिशितियों के सरदार अपने-अपने सैकड़ों और हजारों समेत आगे बढ़ गए, और सेना के पीछे-पीछे आकीश के साथ दाऊद भी अपने जनों समेत बढ़ गया। २ तब पलिशिती हाकिमोंने पछा, “इन इन्ड्रियों का यहाँ क्या काम है?” आकीश ने पलिशिती सरदारों से कहा, “क्या वह इस्माल के राजा शाऊल का कर्मचारी दाऊद नहीं है, जो क्या जाने कितने दिनों से वरन् वर्षों से मेरे साथ रहता है, और जब से वह भाग आया, तब से आज तक मैंने उसमें कोई दोष नहीं पाया।” ३ तब पलिशिती हाकिमोंने पछा, “इन इन्ड्रियों का यहाँ क्या काम है?” आकीश ने पलिशिती सरदारों से कहा, “क्या वह इस्माल के राजा शाऊल का कर्मचारी दाऊद नहीं है, जो क्या जाने कितने दिनों से वरन् वर्षों से मेरे साथ रहता है, और कहा है कि शाऊल ने क्या किया है, कि उसने ओडों और भूत-सिद्धि करनेवालों का देश से नाश किया है। फिर तू मेरे प्राण के लिये क्यों फंदा लगाता है कि मुझे मरवा डाले।” ४

करे? क्या लोगों के सिर कटवाकर न करेगा? ५ क्या यह वही दाऊद नहीं है, जिसके विषय में लोग नाचते और गाते हुए एक दूसरे से कहते थे, ‘शाऊल ने हजारों को, पर दाऊद ने लाखों को मारा है?’ ६ तब आकीश ने दाऊद को बुलाकर उससे कहा, “यहोवा के जीवन की शपथ तू तो सीधा है, और सेना में तेरा मेरे संग आना-जाना भी मुझे भावता है, क्योंकि जब से तू मेरे पास आया तब से लेकर आज तक मैंने तो तुझ में कोई बुराई नहीं पाई। तो भी सरदार लोग तुझे नहीं चाहते। ७ इसलिए अब तू कुशल से लौट जा; ऐसा न हो कि पलिश्ती सरदार तुझ से अप्रसन्न हों।” ८ दाऊद ने आकीश से कहा, “मैंने क्या किया है? और जब से मैं तेरे सामने आया तब से आज तक तूने अपने दास में क्या पाया है कि मैं अपने प्रभु राजा के शत्रुओं से लड़ने न पाऊँ?” ९ आकीश ने दाऊद को उत्तर देकर कहा, “हाँ, यह मुझे मालम है, तू मेरी दृष्टि में तो परमेश्वर के दूत के समान अच्छा लगता है; तो भी पलिश्ती हाकिमों ने कहा है, ‘वह हमारे संग लड़ाइ में न जाने पाएगा।’ १० इसलिए अब तू अपने प्रभु के सेवकों को लेकर जो तेरे साथ आए हैं सवैरे को तड़के उठना; और तुम तड़के उठकर उजियाला होते ही चले जाना।” ११ इसलिए दाऊद अपने जनों समेत तड़के उठकर पलिश्तीयों के देश को लौट गया। और पलिश्ती यिज्रेल को चढ़ गए।

३० तीसरे दिन जब दाऊद अपने जनों समेत सिक्कलग पहुँचा, तब उन्होंने

क्या देखा, कि अमालेकियों ने दक्षिण देश और सिक्कलग पर चढ़ाई की। और सिक्कलग को मार के फैंक दिया, २ और उसमें की छी आदि छोटे बड़े जितने थे, सब को बन्दी बनाकर ले गए; उन्होंने किसी को मार तो नहीं डाला, परन्तु सभी को लेकर अपना मार्ग लिया। ३ इसलिए जब दाऊद अपने जनों समेत उस नगर में पहुँचा, तब नगर तो जला पड़ा था, और छियाँ और बेटे-बेटियाँ बैंधुआई में चली गई थीं। ४ तब दाऊद और वे लोग जो उसके साथ थे चिल्लताकर इतना गोए, कि फिर उनमें रोने की शक्ति न रही। ५ दाऊद की दोनों छियाँ, यिज्रेली अहीनों अम, और कर्मेली नाबाल की छी अबगील, बन्दी बना ली गई थी। ६ और दाऊद बड़े संकंट में पड़ा; क्योंकि लोग अपने बेटे-बेटियों के कारण बहुत शोकित होकर उस पर पथरवाह करने की चर्चा कर रहे थे। परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करके हियाव बाँधा। ७ तब दाऊद ने अहीमलेक के पुत्र एव्यातार याजक से कहा, “एपोद को मेरे पास ला।” ८ तब एव्यातार एपोद को दाऊद के पास ले आया। ९ और दाऊद ने यहोवा से पूछा, “क्या मैं इस दल का पीछा करूँ? क्या उसको जा पकड़ूँगा?” उसने उससे कहा, “पीछा कर; क्योंकि तू निश्चय उसको पकड़ेगा, और निःसन्देह सब कुछ छुड़ा लाएगा।” १० तब दाऊद अपने छ: सौ साथी जनों को लेकर बसोर नामक नदी तक पहुँचा; वहाँ कुछ लोग छोड़े जाकर रह गए। ११ दाऊद तो चार सौ पुस्त्रों समेत पीछा किए चला गया; परन्तु दो सौ जो ऐसे थक गए थे, कि बसोर नदी के पार न जा सके वही रहे। १२ उनको एक मिस्री पुस्त्र मैदान में मिला, उन्होंने उसे दाऊद के पास ले जाकर रोटी दी; और उसने उसे खाया, तब उसे पानी पिलाया, १३ फिर उन्होंने उसको अंजीर की टिकिया का एक टुकड़ा और दो गुच्छे किशमिया दिए। और जब उसने खाया, तब उसके जी में जी आया; उसने तीन दिन और तीन रात से न तो रोटी खाई थी और न पानी पिया था। १४ तब दाऊद ने उससे पूछा, “तू किसका जन है? और कहाँ का है?” उसने कहा, “मैं तो मिस्री जवान और एक अमालेकी मनुष्य का दास हूँ; और तीन दिन हुए कि मैं वीराम पड़ा, और मेरा स्वामी मुझे छोड़ गया। १५ हम लोगों ने क्वेशियों की दक्षिण दिशा में, और यहदा के देश में, और कालोब की दक्षिण दिशा में चढ़ाई की; और सिक्कलग को

आग लगाकर फूँक दिया था।” १६ दाऊद ने उससे पूछा, “क्या तू मुझे उस दल के पास पहुँचा देगा?” उसने कहा, “मुझसे परमेश्वर की यह शपथ खा, कि तू मुझे न तो प्राण से मरोगा, और न मेरे स्वामी के हाथ कर देगा, तब मैं तुझे उस दल के पास पहुँचा दूँगा।” १७ जब उसने उसे पहुँचाया, तब देखने में आया कि वे सब भूमि पर छिट्के हुए खाते पीते, और उस बड़ी लट के कारण, जो वे पलिश्तीयों के देश और यहदा देश से लाए थे, नाच रहे हैं। १८ इसलिए दाऊद उन्हें रात के पहले पहर से लेकर दूसरे दिन की सौंज़ा तक मारता रहा; यहाँ तक कि चार सौ जवानों को छोड़, जो ऊँटों पर चढ़कर भाग गए, उनमें से एक भी मनुष्य न बचा। १९ और जो कुछ अमालेकी ले गए थे वह सब दाऊद ने छुड़ाया; और दाऊद ने अपनी दोनों छियों को भी छुड़ा लिया। २० वरन् उनके क्या छोटे, क्या बड़े, क्या बेटे, क्या बेटियाँ, क्या लूट का माल, सब कुछ जो अमालेकी ले गए थे, उसमें से कोई वस्तु न रही जो उनको न मिली हो; क्योंकि दाऊद सब का सब लौटा लाया। २१ और दाऊद ने सब भेड़-बकरियाँ, और गाय-बैल भी लट लिए; और इन्हें लोग यह कहते हुए अपने जानवरों के आगे हाँकते गए, कि यह दाऊद की लट है। २२ तब दाऊद उन दो सौ पुस्त्रों के पास आया, जो ऐसे थक गए थे कि दाऊद के पीछे-पीछे न जा सके थे, और बसोर नाले के पास छोड़ दिए गए थे; और वे दाऊद से और उसके संग के लोगों से मिलने को चले; और दाऊद ने उनके पास पहुँचकर उनका कुशल क्षेत्र पूछा। २३ तब उन लोगों में से जो दाऊद के संग गए थे सब दृश्य और ओछे लोगों ने कहा, “ये लोग हमारे साथ नहीं चले थे, इस कारण हम उन्हें अपने छुड़ाए हुए लट के माल में से कुछ न देंगे, केवल एक-एक मनुष्य को उसकी छी और बाल-बच्चे देंगे, कि वे उन्हें लेकर चले जाएँ।” २४ परन्तु दाऊद ने कहा, “हे मेरे भाइयों, तुम उस माल के साथ ऐसा न करने पाओगे जिसे यहोवा ने हमें दिया है; और उसने हमारी रक्षा की, और उस दल को जिसने हमारे ऊपर चढ़ाई की थी हमारे हाथ में कर दिया है। २५ और इस विषय में तुम्हारी कौन सुनेगा? लड़ाई में जानेवाले का जैसा भाग हो, सामान के पास बैठे हुए की थी वैसा ही भाग होगा; दोनों एक ही समान भाग पाएँगे।” २६ और दाऊद ने इस्माएलियों के लिये ऐसी ही विधि और नियम ठहराया, और वह उस दिन से लेकर आगे को वरन् आज तो बना है। २७ सिक्कलग में पहुँचकर दाऊद ने यहदी पुनियों के पास जो उसके मित्र थे लट के माल में से कुछ कुछ भेजा, और यह सन्देश भेजा, “यहोवा के शत्रुओं से ली हुई लट में से तुम्हारे लिये यह भेट है।” २८ अर्थात् बेतेल के दक्षिण देश के रामोत, यतीर, २९ अरोए, सिपमोत, एस्तमो, ३० राकाल, यरहमेलियों के नगरों, केनियों के नगरों, ३१ होर्मा, कोराशान, अताक, ३२ हेब्रेन आदि जितने स्थानों में दाऊद अपने जनों समेत फिरा करता था, उन सब के पुनियों के पास उसने कुछ कुछ भेजा।

३१ पलिश्ती तो इस्माएलियों से लड़े; और इस्माएली पुष्प पलिश्तीयों के सामने से भागे, और गिलबो नाम पहाड़ पर मारे गए। ३२ और पलिश्ती शाऊल और उसके पुत्रों के पीछे लगे रहे; और पलिश्तीयों ने शाऊल के पुत्र योनातान, अबीनादाब, और मल्कीशअ को मार डाला। ३३ शाऊल के साथ घमासान युद्ध हो रहा था, और धनुर्धारियों ने उसे पा लिया, और वह उनके कारण अत्यन्त व्याकुल हो गया। ३४ तब शाऊल ने अपने हथियार ढोनेवाले से कहा, “अपनी तलवार खीचकर मुझे भोक दे, ऐसा न हो कि वे खानारहित लोग आकर मुझे भोक दें, और मेरा ठाठ करें।” परन्तु उसके हथियार ढोनेवाले ने अत्यन्त भय खाकर ऐसा करने से इन्कार किया। तब शाऊल अपनी तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा। ३५ यह देखकर कि शाऊल मर गया, उसका हथियार ढोनेवाला भी अपनी तलवार पर आप गिरकर उसके साथ मर गया। ३६

अतः शाऊल, और उसके तीनों पुत्र, और उसका हथियार ढोनेवाला, और उसके समस्त जन उसी दिन एक संग मर गए। ७ यह देखकर कि इस्माएली पुस्त भाग गए, और शाऊल और उसके पुत्र मर गए, उस तराई की दूसरी ओर बाले और यरदन के पार रहनेवाले भी इस्माएली मनुष्य अपने-अपने नगरों को छोड़कर भाग गए; और पलिश्ती आकर उनमें रहने लगे। ८ दूसरे दिन जब पलिश्ती मारे हुओं के माल को लटाने आए, तब उनको शाऊल और उसके तीनों पुत्र गिलबो पहाड़ पर पड़े हुए मिले। ९ तब उन्होंने शाऊल का सिर काटा, और हथियार लूट लिए, और पलिश्तियों के देश के सब स्थानों में दूरों को इधरलिए भेजा, कि उनके देवालयों और साधारण लोगों में यह शुभ समाचार देते जाएँ। १० तब उन्होंने उसके हथियार तो अशोरेत नामक देवियों के मन्दिर में रखे, और उसके शव को बेतशान की शहरपनाह में जड़ दिया। ११ जब गिलादवाले याबेश के निवासियों ने सुना कि पलिश्तियों ने शाऊल से क्या-क्या किया है, १२ तब सब शहरीर चले, और रातों-रात जाकर शाऊल और उसके पुत्रों के शव बेतशान की शहरपनाह पर से याबेश में ले आए, और वही फँक दिए। १३ तब उन्होंने उनकी हड्डियाँ लेकर याबेश के झाऊ के पेड़ के नीचे गाड़ दी, और सात दिन तक उपवास किया।

२ शमूएल

१ शाऊल के मरने के बाद, जब दाऊद अमालेकियों को मारकर लौटा, और

दाऊद को सिकलग में रहते हुए दो दिन हो गए, २ तब तीसरे दिन ऐसा हुआ कि शाऊल की छावनी में से एक पुस्तक पढ़े फाड़े सिर पर धूल ढाले हुए आया। जब वह दाऊद के पास पहैंचा, तब भूमि पर गिरा और दण्डवत किया। ३ दाऊद ने उससे पूछा, “तू कहाँ से आया है?” उसने उससे कहा, “मैं इस्माएली छावनी में से बचकर आया हूँ।” ४ दाऊद ने उससे पूछा, “वहाँ क्या बात हुई? मुझे बता।” उसने कहा, “यह, कि लोग रणभूमि छोड़कर भाग गए, और बहुत लोग मरे गए; और शाऊल और उसका पुत्र योनातान भी मरे गए हैं।” ५ दाऊद ने उस समाचार देनेवाले जबान से पूछा, “तू कैसे जानता है कि शाऊल और उसका पुत्र योनातान मर गए?” ६ समाचार देनेवाले जबान ने कहा, “संयोग से मैं पिलबो पहाड़ पर था; तो क्या देखा, कि शाऊल अपने भाले की टेक लगाए हुए हैं; फिर मैंने यह भी देखा कि उसका पीछा किए हुए रथ और सवार बड़े वेग से दौड़े आ रहे हैं।” ७ उसने पीछे फिरकर मुझे देखा, और मुझे पुकारा। मैंने कहा, ‘‘क्या आज्ञा?’’ ८ उसने मुझसे पूछा, ‘‘तू कौन है?’’ मैंने उससे कहा, ‘‘मैं तो अमालेकी हूँ।’’ ९ उसने मुझसे कहा, ‘‘मेरे पास खड़ा होकर मुझे मार डाल; क्योंकि मेरा सिर तो घूमा जाता है, परन्तु प्राण नहीं निकलता।’’ १० तब मैंने यह निश्चय जान लिया, कि वह गिर जाने के पश्चात नहीं बच सकता, मैंने उसके पास खड़े होकर उसे मार डाला; और मैं उसके सिर का मुकुट और उसके हाथ का कंगन लेकर यहाँ अपने स्वामी के पास आया हूँ।’’ ११ तब दाऊद ने दुखी होकर अपने कपड़े पकड़कर फाड़े; और जितने पुस्त उसके संग थे सब ने वैसा ही किया; १२ और वे शाऊल, और उसके पुत्र योनातान, और योहोवा की प्रजा, और इस्माएल के घराने के लिये छाती पीटने और रोने लगे, और साँझ तक कुछ न खाया, इस कारण कि वे तलवार से मारे गए थे। १३ फिर दाऊद ने उस समाचार देनेवाले जबान से पूछा, “तू कहाँ का है?” उसने कहा, “मैं तो परदेसी का बेटा अर्थात् अमालेकी हूँ।” १४ दाऊद ने उससे कहा, “तू योहोवा के अधिषिक्त को नष्ट करने के लिये हाथ बढ़ाने से क्यों नहीं डरा?” १५ तब दाऊद ने एक जबान को बुलाकर कहा, “निकट जाकर उस पर प्रहार कर।” तब उसने उसे ऐसा मारा कि वह मर गया। १६ और दाऊद ने उससे कहा, “तेरा खन तेरे ही सिर पर पड़े; क्योंकि तू यह कहकर कि मैं ही ने योहोवा के अधिषिक्त को मार डाला, अपने मूँह से अपने ही विस्तु साक्षी दी है।” १७ तब दाऊद ने शाऊल और उसके पुत्र योनातान के विषय यह विलापगीत बनाया, १८ और यहदियों को यह धनुष नामक गीत सिखाने की आज्ञा दी; यह याशार नामक पुस्तक में लिखा हुआ है: १९ “हे इस्माएल, तेरा शिरोमणि तेरे ऊँचे स्थान पर मारा गया। हाय, शूर्वीर कैसे गिर पड़े हैं! २० गत में यह न बताओ, और न अश्कलोन की सड़कों में प्रचार करना; न हो कि पलिश्ती छियाँ आनन्दित हों, न हो कि खतनारहित लोगों की बेटियाँ गर्व करने लगें। २१ “हे गिलबो पहाड़ों, तुम पर न आस पड़े, और न वर्षा हो, और न भेट के योग्य उपजवाले खेत पाए जाएँ। क्योंकि वहाँ शूर्वीरों की ढाले अशुद्ध हो गईं। और शाऊल की ढाल बिना तेल लगाए रह गई। २२ “ज़ज़े हज़े के लह बहाने से, और शूर्वीरों की चर्ची खाने से, योनातान का धनुष न लौटा था, और न शाऊल की तलवार छूठी फिर आती थी। २३ “शाऊल और योनातान जीवनकाल में तो प्रिय और मनभाऊ थे, और अपनी मृत्यु के समय अलग न हुए; वे उकाब से भी वेग से चलनेवाले, और सिंह से भी अधिक पराक्रमी थे। २४ “हे इस्माएली छियों, शाऊल के लिये रोओ, वह तो तुम्हें लाल रंग के बब्ब पहनाकर सुख देता, और तुम्हरे बब्बों के ऊपर सोने

के गहने पहनाता था। २५ “हाय, युद्ध के बीच शूर्वीर कैसे काम आए! हे योनातान, हे ऊँचे स्थानों पर जूँड़े हए, ज़हेरे भाई योनातान, मैं तेरे कारण दुःखित हूँ; तू मझे बहुत मनभाऊ जान पड़ता था; तेरा प्रेम मुझ पर अद्युत, वरन् छियों के प्रेम से भी बढ़कर था। २६ “हाय, शूर्वीर कैसे गिर गए, और युद्ध के हथियार कैसे नष्ट हो गए हैं!”

२ इसके बाद दाऊद ने योहोवा से पूछा, “क्या मैं यहदा के किसी नगर में जाऊँ?” योहोवा ने उससे कहा, “हाँ, जा।” दाऊद ने फिर पूछा, “किस नगर में जाऊँ?” उसने कहा, “हेब्रोन में।” ३ तब दाऊद यिज्जेली अहीनोअम, और कर्मेली नाबाल की की झी अबीगेल नामक, अपनी दोनों पत्रियों समेत वहाँ गया। ४ दाऊद अपने साथियों को भी एक-एक के घराने समेत वहाँ ले गया; और वे हेब्रोन के गाँवों में रहने लगे। ५ और यहदी लोग गए, और वहाँ दाऊद का अधिषेक किया कि वह यहदा के घराने का राजा हो। जब दाऊद को यह समाचार मिला, कि जिह्वोंने शाऊल को मिट्टी दी वे गिलाद के याबेश नगर के लोग हैं। ६ तब दाऊद ने दूरों से गिलाद के याबेश के लोगों के पास यह कहला भेजा, “योहोवा की आशीष तुम पर हो, क्योंकि तुम ने अपने प्रभु शाऊल पर यह कृपा करके उसको मिट्टी दी। ७ इसलिए अब योहोवा तुम से कृपा और सच्चाई का बर्ताव करे; और मैं भी तुम्हारी इस भलाई का बदला तुम को दूँगा, क्योंकि तुम ने यह काम किया है। ८ अब हियाव बौधो, और पुरासार्थ करो; क्योंकि तुम्हारा प्रभु शाऊल मर गया, और यहदा के घराने ने अपने ऊपर राजा होने को मेरा अधिषेक किया है।” ९ परन्तु नेर का पुत्र अब्नेर जो शाऊल का प्रधान सेनापति था, उसने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को संग ले पार जाकर महौम में पहुँचाया; १० और उसे गिलाद अधिषिक्त के देश, यिज्जेल, ईप्रैम, बिन्यामीन, वरन् समस्त इस्माएल प्रदेश पर राजा नियुक्त किया। ११ शाऊल का पुत्र ईशबोशेत चालीस वर्ष का था जब वह इस्माएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। परन्तु यहदा का घराना दाऊद के पक्ष में रहा। १२ और दाऊद का हेब्रोन में यहदा के घराने पर राज्य करने का समय साढ़े तात वर्ष था। १३ नेर का पुत्र अब्नेर, और शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के जन, महनैम से गिलोन को आए। १४ तब सस्त्याह का पुत्र योआब, और दाऊद के जन, हेब्रोन से निकलकर उनसे गिलोन के जलकुण्ड के पास मिले; और दोनों दल उस जलकुण्ड के एक-एक ओर बैठ गए। १५ तब अब्नेर ने योआब से कहा, “जबान लोग उठकर हमारे सामने खेलें।” योआब ने कहा, “वे उठें।” १६ तब वे उठे, और बिन्यामीन, अर्थात् शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पक्ष के लिये बारह जन गिनकर निकले, और दाऊद के जनों में से भी बारह निकले। १७ और उन्होंने एक दूसरे का सिर पकड़कर अपनी-अपनी तलवार एक दूसरे के पौंछ में भोकं दी, और वे एक ही संग मरे। इससे उस स्थान का नाम हेल्कथस्सूरीम पड़ा, वह गिलोन में है। १८ उस दिन बड़ा घोर युद्ध हुआ; और अब्नेर और इस्माएल के पुस्तक दाऊद के जनों से हार गए। १९ वहाँ योआब, अबीशे, और असाहेल नामक सस्त्याह के तीनों पुत्र थे। असाहेल जंगली हिरन के समान बगा से दौड़नेवाला था। २० तब असाहेल अब्नेर का पीछा करने लगा, और उसका पीछा करते हुए न तो दाहिनी ओर मुड़ा न बाई ओर। २१ अब्नेर ने पीछे फिरके पूछा, “क्या तू असाहेल है?” उसने कहा, “हाँ मैं बही हूँ।” २२ अब्नेर ने उससे कहा, “चाहे दाहिनी, चाहे बाई ओर मुड़, किसी जबान को पकड़कर उसका कबच ले ले।” परन्तु असाहेल ने उसका पीछा न छोड़ा। २३ अब्नेर ने असाहेल से फिर कहा, “मेरा पीछा छोड़ दे; मुझ को क्यों तुझे मारकर मिट्ठी में मिला देना पड़े? ऐसा करके मैं तेरे भाई योआब को अपना मुख कैसे दिखाऊँगा?” २४ तो भी उसने हट जाने को मना किया; तब अब्नेर ने अपने भाले की पिछाड़ी उसके पेट में ऐसे मारी, कि भाला आर-पार

होकर पीछे निकला; और वह वही गिरकर मर गया। जितने लोग उस स्थान पर आए जहाँ असाहेल गिरकर मर गया, वहाँ वे सब खड़े रहे। २४ परन्तु योआब और अबीशी अन्नेर का पीछा करते रहे; और सूर्य डूबते-डूबते वे अमाह नामक उस पहाड़ी तक पहुँचे, जो गिबोन के जंगल के मार्ग में गीह के सामने है। २५ और बिन्यामीनी अन्नेर के पीछे होकर एक दल हो गए, और एक पहाड़ी की चोटी पर खड़े हुए। २६ तब अन्नेर योआब को पुकारके कहने लगा, “क्या तलवार सदा मारती रहे? क्या तू नहीं जानता कि इसका फल दुःखदाई होमा? तू कब तक अपने लोगों को आज्ञा न देगा, कि अपने भाइयों का पीछा छोड़कर लौटो?” २७ योआब ने कहा, “परमेश्वर के जीवन की शपथ, कि यदि तू न बोला होता, तो निःसन्देह लोग सवेरे ही चले जाते, और अपने-अपने भाई का पीछा न करते।” २८ जब योआब ने नरसिंगा फूँका; और सब लोग ठहर गए, और फिर इसाएतियों का पीछा न किया, और लडाई फिर न की। २९ अन्नेर अपने जनों समेत उसी दिन रातों-रात असाहा से होकर गया; और यरदन के पार हो समस्त विश्रोन देश में होकर महानैम में पहुँचा। ३० योआब अन्नेर का पीछा छोड़कर लौटा; और जब उसने सब लोगों को इकट्ठा किया, तब क्या देखा, कि दाऊद के जनों में से उन्नीस पुरुष और असाहेल भी नहीं हैं। ३१ परन्तु दाऊद के जनों ने बिन्यामीनियों और अन्नेर के जनों को ऐसा मारा कि उनमें से तीन सौ साठ जन मर गए। ३२ और उन्होंने असाहेल को उठाकर उसके पिता के कब्रिस्तान में, जो बैतलहम में था, मिट्टी दी। तब योआब अपने जनों समेत रात भर चलकर पौ फटते-फटते हेब्रोन में पहुँचा।

३ शाऊल के घराने और दाऊद के घराने के मध्य बहुत दिन तक लडाई होती रही, परन्तु दाऊद प्रबल होता गया, और शाऊल का घराना निर्बल पड़ता गया। ३३ और हेब्रोन में दाऊद के पुत्र उत्पन्न हुए; उसका जेठा बेटा अन्नोन था, जो यिज्जेती अहीनोअम से उत्पन्न हुआ था; ३४ और उसका दूसरा किलाब था, जिसकी माँ कर्मली नाबाल की झी अबगिल थी; तीसरा अबशालोम, जो गशूर के राजा तल्मै की बेटी माका से उत्पन्न हुआ था; ३५ चौथा अदोनियाह, जो हमगीत से उत्पन्न हुआ था; पाँचवाँ शपत्याह, जिसकी माँ अबीतल थी; ३६ छठवाँ यित्राम, जो एला नाम दाऊद की झी से उत्पन्न हुआ। हेब्रोन में दाऊद से ये ही सन्तान उत्पन्न हुईं। ३७ जब शाऊल और दाऊद दोनों के घरानों के मध्य लडाई हो रही थी, तब अन्नेर शाऊल के घराने की सहायता में बल बढ़ाता गया। ३८ शाऊल की एक रखेल थी जिसका नाम रिसासा था, वह अर्या की बेटी थी, और ईश्वरोंशेत ने अन्नेर से पूछा, “तू मेरे पिता की रखेल के पास क्यों गया?” ३९ ईश्वरोंशेत की बातों के कारण अन्नेर अति क्रोधित होकर कहने लगा, “क्या मैं यहदा के कुत्ते का सिर हूँ? आज तक मैं तेरे पिता शाऊल के घराने और उसके भाइयों और मित्रों को प्रीति दिखाता आया हूँ, और तज्ज्ञ दाऊद के हाथ पड़ने नहीं दिया; फिर तू अब मुझ पर उस झी के विषय में दोष लगाता है? ४० यदि मैं दाऊद के साथ परमेश्वर की शपथ के अनुसार बर्ताव न करूँ, तो परमेश्वर अन्नेर से वैसा ही, वरन् उससे भी अधिक करे; ४१ अर्थात्, मैं राज्य को शाऊल के घराने से छीनूँगा, और दाऊद की राजगढ़ी दान से लेकर बेशबा तक इसाएल और यहदा के ऊपर स्थिर करूँगा।” ४२ और वह अन्नेर को कोई उत्तर न दे सका, इसलिए कि वह उससे डरता था। ४३ तब अन्नेर ने दाऊद के पास दूरी से कहता भेजा, “देश किसका है?” और यह भी कहला भेजा, “तू मेरे साथ वाचा बांध, और मैं तेरी सहायता करूँगा कि समस्त इसाएल का मन तेरी ओर फेर दूँ।” ४४ दाऊद ने कहा, “ठीक है, मैं तेरे साथ वाचा तो बाँधूँगा परन्तु एक बात मैं तुझ से चाहता हूँ; कि जब तू मुझसे भेट करने आए, तब यदि तू पहले शाऊल की बेटी मीकल को न ले आए, तो मुझसे

भेट न होगी।” ४५ फिर दाऊद ने शाऊल के पुत्र ईश्वरोंशेत के पास दूरी से यह कहला भेजा, “मेरी पत्नी मीकल, जिसे मैंने एक सौ पलिशियों की खलाड़ियाँ देकर अपनी कर लिया था, उसको मुझे दे दो।” ४६ तब ईश्वरोंशेत ने लोगों को भेजकर उसे लैश के पुत्र पलताएल के पास से छीन लिया। ४७ और उसका पति उसके साथ चला, और बहरीम तक उसके पीछे रोता हुआ चला गया। तब अन्नेर ने उससे कहा, “लौट जा,” और वह लौट गया। ४८ फिर अन्नेर ने इसाएल के पुनियों के संग इस प्रकार की बातचीत की, “पहले तो तुम लोग चाहते थे कि दाऊद हमारे ऊपर राजा हो। ४९ अब वैसा ही करो; क्योंकि यहोना ने दाऊद के विषय में यह कहा है, ‘अपने दास दाऊद के द्वारा मैं अपनी प्रजा इसाएल को पलिशियों, वरन् उनके सब शत्रुओं को हाथ से छुड़ाऊँगा।’” ५० अन्नेर ने बिन्यामीन से भी बातें की; तब अन्नेर हेब्रोन को चला गया, कि इसाएल और बिन्यामीन के समस्त घराने को जो कुछ अच्छा लगा, वह दाऊद को सुनाए। ५१ तब अन्नेर बीस पुरुष संग लेकर हेब्रोन में आया, और दाऊद ने उसके और उसके संगी पुस्तों के लिये भोज किया। ५२ तब अन्नेर ने दाऊद से कहा, “मैं उठकर जाऊँगा, और अपने प्रभु राजा के पास सब इसाएल को इकट्ठा करूँगा, कि वे तेरे साथ वाचा बांधें, और तू अपनी इच्छा के अनुसार राज्य कर सके।” ५३ तब दाऊद ने अन्नेर को विदा किया, और वह कुशल से चला गया। ५४ तब दाऊद के कई जन और योआब समेत कई चाढ़ाई करके बहुत सी लूट लिये हुए आ गए। अन्नेर दाऊद के पास हेब्रोन में न था, क्योंकि उसने उसको विदा कर दिया था, और वह कुशल से चला गया था। ५५ जब योआब और उसके साथ की समस्त सेना आई, तब लोगों ने योआब को बताया, “नेर का पुत्र अन्नेर राजा के पास आया था, और उसने उसको विदा कर दिया, और वह कुशल से चला गया।” ५६ तब योआब ने राजा के पास जाकर कहा, “तूने यह क्या किया है? अन्नेर जो तेरे पास आया था, तो क्या कारण है कि फिर तने उसको जाने दिया, और वह चला गया है? ५७ तू नेर के पुत्र अन्नेर को जानता होगा कि वह तुझे धोखा देने, और तेरे अने-जाने, और सारे काम का भेद लेने आया था।” ५८ योआब ने दाऊद के पास से निकलकर अन्नेर के पीछे दूत भेजे, और वे उसको सीरा नामक कुण्ड से टैटौ ले आए। परन्तु दाऊद को इस बात का पता न था। ५९ जब अन्नेर हेब्रोन को लौट आया, तब योआब उससे एकान्त में बातें करने के लिये उसको फाटक के भीतर अलग ले गया, और वहाँ अपने भाई असाहेल के खूब के बदले में उसके पेट में ऐसा मारा कि वह मर गया। ६० बाद में जब दाऊद ने यह सुना, तो कहा, “नेर के पुत्र अन्नेर के खन के विषय में अपनी प्रजा समेत यहोना की दृष्टि में सदैव निर्दोष रहेंगा। ६१ वह योआब और उसके पिता के समस्त घराने को लगाए, और योआब के बंश में कोई प्रमेह का रोगी, और कोढ़ी, और लंगड़ा, और तलवार से घात किया जानेवाला, और भूखा मनेवाला सदा होता रहे।” ६२ योआब और उसके भाई अबीशी ने अन्नेर को इस कारण घात किया, कि उसने उनके भाई असाहेल को गिबोन में लडाई के समय मार डाला था। ६३ तब दाऊद ने योआब और अपने सब संगी लोगों से कहा, “अपने वन्न फाड़ो, और कमर में टाट बैंधकर अन्नेर के आगे-आगे चलो।” ६४ और दाऊद राजा स्वयं अर्थी के पीछे-पीछे चला। ६५ अन्नेर को हेब्रोन में मिट्टी दी गई; और राजा अन्नेर की कब्र के पास फूट फूटकर रोगा; और सब लोग भी रोगे। ६६ तब दाऊद ने अन्नेर के विषय यह विलापीत बनाया, “क्या उचित था कि अन्नेर मूर्ख के समान मरे? ६७ न तो तेरे हाथ बैंधे गए, और न तेरे पाँवों में बेडियों डाली गई, जैसे कोई कुटिल मनुष्यों से मारा जाए, वैसे ही तू मारा गया।” तब सब लोग उसके विषय फिर रो उठे। ६८ तब सब लोग कुछ दिन रहते दाऊद को रोटी खिलाने आए; परन्तु दाऊद ने शपथ खाकर कहा, “यदि

मैं सूर्य के अस्त होने से पहले रोटी या और कोई वस्तु खाऊँ, तो परमेश्वर मुझसे ऐसा ही, बरन इससे भी अधिक करे।” ३६ सब लोगों ने इस पर विचार किया और इससे प्रसन्न हुए, वैसे भी जो कुछ राजा करता था उससे सब लोग प्रसन्न होते थे। ३७ अतः उन सब लोगों ने, बरन् समस्त इमाएल ने भी, उसी दिन जान लिया कि नेर के पुत्र अन्नेर का घाट किया जाना राजा की ओर से नहीं था। ३८ राजा ने अपने कर्मचारियों से कहा, “क्या तुम लोग नहीं जानते कि इमाएल में आज के दिन एक प्रधान और प्रतीपा मनुष्य मरा है? ३९ और यद्यपि मैं अधिषिक्त राजा हूँ तो भी आज निर्बल हूँ; और वे सस्थाह के पुत्र मुझसे अधिक प्रचण्ड हैं। परन्तु यहोवा बुराई करनेवाले को उसकी बुराई के अनुसार ही बदला दे।”

४ जब शाऊल के पुत्र ने सुना, कि अन्नेर हेब्रोन में मारा गया, तब उसके हाथ ढींगे पड़ गए, और सब इमाएली भी घबरा गए। ५ शाऊल के पुत्र के दो जन थे जो दलों के प्रधान थे; एक का नाम बानाह, और दूसरे का नाम रेकाब था, ये दोनों बेरोतवासी बिन्यामीनी रिम्मोन के पुत्र थे, (व्योंकि बेरोत भी बिन्यामीन के भाग में गिना जाता है); ६ और बेरोती लोग गितैम को भाग गए, और आज के दिन तक वही परदेशी होकर रहते हैं।) ७ शाऊल के पुत्र योनातान के एक लैंगड़ा बेटा था। जब यिचेल से शाऊल और योनातान का समाचार आया तब वह पाँच वर्ष का था; उस समय उसकी दाई उसे उठाकर भासी; और उसके उतावली से भागने के कारण वह गिरकर लैंगड़ा हो गया। उसका नाम मपीबोशेत था। ८ उस बेरोती रिम्मोन के पुत्र रेकाब और बानाह कहीं धूप के समय ईशबोशेत के घर में जब वह दोपहर को विश्वाम कर रहा था आए। ९ और गेहैं ले जाने के बहाने घर में घुस गए, और उसके पेट में मारा; तब रेकाब और उसका भाई बानाह भाग निकले। १० जब वे घर में घुसे, और वह सोने की कोठरी में चारपाई पर सो रहा था, तब उन्होंने उसे मार डाला, और उसका सिर काट लिया, और उसका सिर लेकर रातों-रात अराबा के मार्ग से चले। ११ वे ईशबोशेत का सिर हेब्रोन में दाऊद के पास ले जाकर राजा से कहने लगे, “देख, शाऊल जो तेरा शत्रु और तेरे प्राणों का ग्राहक था, उसके पुत्र ईशबोशेत का यह सिर है; तो आज के दिन यहोवा ने शाऊल और उसके बश से मेरे प्रभु राजा का बदला लिया है।” १२ दाऊद ने बेरोती रिम्मोन के पुत्र रेकाब और उसके भाई बानाह को उत्तर देकर उनसे कहा, “यहोवा जो मेरे प्राण को सब विपत्तियों से छुड़ाता आया है, उसके जीवन की शपथ, १३ जब किसी ने यह जानकर, कि मैं शुभ समाचार देता हूँ, सिक्कलग में मुझ को शाऊल के मरने का समाचार दिया, तब मैंने उसको पकड़कर घाट कराया; अर्थात् उसको समाचार का यहीं बदला मिला। १४ फिर जब दृष्ट मनुष्यों ने एक निर्दोष मनुष्य को उसी के घर में, बरन् उसकी चारपाई ही पर घाट किया, तो मैं अब अवश्य ही उसके खून का बदला तुम से लूँगा, और तुम्हें धरती पर से नष्ट कर डालूँगा।” १५ तब दाऊद ने जीवानों को आज्ञा दी, और उन्होंने उनको घाट करके उनके हाथ पाँव काट दिए, और उनके शव को हेब्रोन के जलकुण्ड के पास टाँग दिया। तब ईशबोशेत के सिर को उठाकर हेब्रोन में अन्नेर की कब्र में गाड़ दिया।

१६ तब इमाएल के सब गोत्र दाऊद के पास हेब्रोन में आकर कहने लगे, “सुन, हम लोग और तू एक ही हाड़ माँस हैं। १७ फिर भूतकात में जब शाऊल हमारा राजा था, तब भी इमाएल का अगुआ तू ही था; और यहोवा ने तुझ से कहा, ‘मेरी प्रजा इमाएल का चरबाहा, और इमाएल का प्रधान तू ही होगा।’” १८ अतः सब इमाएली पुरनिये हेब्रोन में राजा के पास आए; और दाऊद राजा ने उनके साथ हेब्रोन में यहोवा के सामने बाचा बाँधी, और उन्होंने इमाएल का

राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक किया। १९ दाऊद तीस वर्ष का होकर राज्य करने लगा, और चालीस वर्ष तक राज्य करता रहा। २० सादे सात वर्ष तक तो उसने हेब्रोन में यहदा पर राज्य किया, और तैतीस वर्ष तक यस्शलेम में समस्त इमाएल और यहदा पर राज्य किया। २१ तब राजा ने अपने जनों को साथ लिए हुए यस्शलेम को जाकर यबसियों पर चढ़ाई की, जो उस देश के निवासी थे। उन्होंने यह समझाकर, कि दाऊद यहाँ धुस न सकेगा, उससे कहा, “जब तक तू अंधेरे और लैंगड़ों को दूर न करे, तब तक यहाँ धुस न पाएगा।” २२ तो भी दाऊद ने सियोन नामक गढ़ को ले लिया, वही दाऊदपुर भी कहलाता है। २३ उस दिन दाऊद ने कहा, “जो कोई यबसियों को मारना चाहे, उसे चाहिये कि नाते से होकर चढ़े, और अंधे और लैंगड़े जिससे दाऊद मन से धिन करता है उन्हें मरो।” इससे यह कहावत चली, “अंधे और लैंगड़े महल में आने न पाएंगे।” २४ और दाऊद उस गढ़ में रहने लगा, और उसका नाम दाऊदपुर रखा। और दाऊद ने चारों ओर मिल्लों से लेकर भीतर की ओर शहरपाना बनवाई। २५ और दाऊद की बड़ाई अधिक होती गई, और सेनाओं का परमेश्वर यहोवा उसके संग रहता था। २६ तब सोर के राजा हीराम ने दाऊद के पास दूर, और देवदार की लकड़ी, और बर्दी, और राजमिही भेजे, और उन्होंने दाऊद के लिये एक भवन बनाया। २७ और दाऊद को मिश्चर्य हो गया कि यहोवा ने मझे इमाएल का राजा करके स्थिर किया, और अपनी इमाएली प्रजा के निमित्त मेरा राज्य बढ़ाया है। २८ जब दाऊद हेब्रोन से आया तब उसने यस्शलेम की ओर रखैलियाँ रख ली, और परियाँ बना ली; और उसके और बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं। २९ उसकी जो सन्तान यस्शलेम में उत्पन्न हुईं, उनके ये नाम हैं, अर्थात् शम्मू, शेबाब, नातान, सुलैमान, ३० यिथार, एलीशू, नेपा, यापी, ३१ एलीशामा, एल्यादा, और एलीपिलेत। ३२ जब पलिशियों ने यह सुना कि इमाएल का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक हुआ, तब तब पलिशियाँ आकर रपाईं मनामक तराई में फैल गए। ३३ तब दाऊद ने यहोवा से पूछा, “क्या मैं पलिशियों पर चढ़ाई करूँ? क्या तू उन्हें मेरे हाथ कर दोगा?” यहोवा ने दाऊद से कहा, “चढ़ाई कर; क्योंकि मैं मिश्चर्य पलिशियों को तेरे हाथ कर दूँगा।” ३४ तब दाऊद बालपरासीम को गया, और दाऊद ने उन्हें बही मारा; तब उसने कहा, “यहोवा मेरे सामने होकर मेरे शत्रुओं पर जल की धारा के समान टूट पड़ा है।” इस कारण उसने उस स्थान का नाम बालपरासीम रखा। ३५ वहाँ उन्होंने अपनी मूरतों को छोड़ दिया, और दाऊद और उसके जन उन्हें उठा ले गए। ३६ फिर दूसरी बार पलिशियी चढ़ाई करके रपाईं मनामक तराई में फैल गए। ३७ जब दाऊद ने यहोवा से पूछा, तब उसने कहा, “चढ़ाई न कर; उनके पीछे से धूमकर तू वृक्षों के सामने से उन पर छापा मारा। ३८ और जब तू वृक्षों की फूनगियों में से सेना के चलने की सी आहट तुझे सुनाई पड़े, तब यह जानकर फुर्ती करना, कि यहोवा पलिशियों की सेना के मामने को मेरे आगे अभी पधारा है।” ३९ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार दाऊद गेबा से लेकर गेजेर तक पलिशियों को मारता गया।

४० फिर दाऊद ने एक और बार इमाएल में से सब बड़े वीरों को, जो तीस हजार थे, इकट्ठा किया। ४१ तब दाऊद और जितने लोग उसके संग थे, वे सब उठकर यहदा के बाले नामक स्थान से चले, कि परमेश्वर का वह सन्दर्भ ले आएँ, जो कस्तबों पर विराजनेवाले सेनाओं के यहोवा का कहलाता है। ४२ तब उन्होंने परमेश्वर का सन्दर्भ एक नई गाड़ी पर चढ़ाकर टीले पर रहनेवाले अबीनादाब के घर से निकाला; और अबीनादाब के उज्जा और अहो नामक दो पुत्र उस नई गाड़ी को हाँकने लगे। ४३ और उन्होंने उसको परमेश्वर के

सन्दूक समेत टीले पर रहनेवाले अबीनादाब के घर से बाहर निकाला; और अद्यो सन्दूक के आगे-आगे चला। ५ दाऊद और इसाएल का समस्त घराना यहोवा के आगे सनोवर की लकड़ी के बने हुए सब प्रकार के बाजे और बीणा, सारणीयाँ, डफ, डमस, झाँझ बजाते रहे। ६ जब वे नाकोन के खलिहान तक आए, तब उज्जा ने अपना हाथ परमेश्वर के सन्दूक की ओर बढ़ाकर उसे थाम लिया, क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई थी। ७ तब यहोवा का कोप उज्जा पर भड़क उठा; और परमेश्वर ने उसके दोष के कारण उसको वहाँ ऐसा मारा, कि वह वहाँ परमेश्वर के सन्दूक के पास मर गया। ८ तब दाऊद अप्रसन्न हुआ, इसलिए कि यहोवा उज्जा पर टट पड़ा था; और उसने उस स्थान का नाम पेरेसुज्जा रखा, यह नाम आज के दिन तक विद्यमान है। ९ और उस दिन दाऊद यहोवा से डरकर कहने लगा, “यहोवा का सन्दूक मेरे यहाँ कैसे आए?” १० इसलिए दाऊद ने यहोवा के सन्दूक को अपने यहाँ दाऊदपुर में पहुँचाना न चाहा; परन्तु गतवासी ओवेदेटोम के यहाँ पहुँचाया। ११ यहोवा का सन्दूक गतवासी ओवेदेटोम के घर में तीन महीने रहा; और यहोवा ने ओवेदेटोम और उसके समस्त घराने को आशीष दी। १२ तब दाऊद राजा को यह बताया गया, कि यहोवा ने ओवेदेटोम के घराने पर, और जो कुछ उसका है, उस पर भी परमेश्वर के सन्दूक के कारण आशीष दी है। तब दाऊद ने जाकर परमेश्वर के सन्दूक को ओवेदेटोम के घर से दाऊदपुर में आनन्द के साथ पहुँचा दिया। १३ जब यहोवा का सन्दूक उठानेवाले थे, कदम चल चुके, तब दाऊद ने एक बैल और एक पाला पोसा हुआ बछड़ा बलि कराया। १४ और दाऊद सनी का एपोद कमर में कसे हुए यहोवा के सम्मुख तन मन से नाचता रहा। १५ अतः दाऊद और इसाएल का समस्त घराना यहोवा के सन्दूक को जयजयकार करते और नरसिंह फँकते हुए ले चला। १६ जब यहोवा का सन्दूक दाऊदपुर में आ रहा था, तब शाऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से झाँककर दाऊद राजा को यहोवा के सम्मुख नाचते कूदते देखा, और उसे मन ही मन तुच्छ जाना। १७ और लोग यहोवा का सन्दूक भीरत ले आए, और उसके स्थान में, अर्थात् उस तम्बू में रखा, जो दाऊद ने उसके लिये खड़ा कराया था; और दाऊद ने यहोवा के सम्मुख होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। १८ जब दाऊद होमबलि और मेलबलि चढ़ा चुका, तब उसने सेनाओं के यहोवा के नाम से प्रजा को आशीर्वाद दिया। १९ तब उसने समस्त प्रजा को, अर्थात्, क्या स्त्री क्या पुरुष, समस्त इसाएली भीड़ के लोगों को एक-एक रोटी, और एक-एक टुकड़ा माँस, और किशमिश की एक-एक टिकिया बैंटवा दी। तब प्रजा के सब लोग अपने-अपने घर चले गए। २० तब दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद देने के लिये लौटा और शाऊल की बेटी मीकल दाऊद से मिलने को निकली, और कहने लगी, “आज इसाएल का राजा जब अपना शरीर अपने कर्मचारियों की दासियों के सामने ऐसा उघाड़े हुए था, जैसा कोई निकम्मा अपना तन उघाड़े रहता है, तब क्या ही प्रतीपी देख पड़ता था!” २१ दाऊद ने मीकल से कहा, “यहोवा, जिसने तेरे पिता और उसके समस्त घराने के बदले मुझ को चुनकर अपनी प्रजा इसाएल का प्रधान होने को ठहरा दिया है, उसके सम्मुख मैं ऐसा नाचा—और मैं यहोवा के सम्मुख इसी प्रकार नाचा करूँगा। २२ और मैं इससे भी अधिक तुच्छ बनूँगा, और अपनी दृष्टि में नीच ठहरूँगा; और जिन दासियों की तरे चर्चा की वे भी मेरा आदरमान करेंगी।” २३ और शाऊल की बेटी मीकल के मरने के दिन तक कोई सन्तान न हुई।

७ जब राजा अपने भवन में रहता था, और यहोवा ने उसको उसके चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्वास दिया था, २४ तब राजा नातन नामक भविष्यद्वता से कहने लगा, “देख, मैं तो देवदार के बने हुए घर में रहता हूँ, परन्तु परमेश्वर

का सन्दूक तम्बू में रहता है।” २५ नातन ने राजा से कहा, “जो कुछ तेरे मन में हो उसे कर; क्योंकि यहोवा तेरे संग है।” २६ उसी रात को यहोवा का यह बचन नातन के पास पहुँचा, २७ “जाकर मेरे दास दाऊद से कह, ‘यहोवा यह कहता है, कि क्या तू मेरे निवास के लिये घर बनवाएगा?’ २८ जिस दिन से मैं इसाएलियों को मिस्र से निकाल लाया आज के दिन तक मैं कभी घर में नहीं रहा, तब्बु के निवास में आया-जाया करता हूँ। २९ जहाँ-जहाँ मैं समस्त इसाएलियों के बीच फ़िरता रहा, क्या मैंने कहीं इसाएल के किसी गोत्र से, जिसे मैंने अपनी प्रजा इसाएल की चरवाही करने को ठहराया है, ऐसी बात कभी कही, कि तुम ने मेरे लिए देवदार का घर क्यों नहीं बनवाया?” ३० इसलिए अब त मेरे दास दाऊद से ऐसा कह, ‘‘सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि मैंने तो तुझे भेड़शाला से, और भेड़-बकरियों के पीछे-पीछे फ़िरने से, इस मनसा से बुला लिया कि तू मेरी प्रजा इसाएल का प्रधान हो जाए। ३१ और जहाँ कहीं तू आया गया, वहाँ-वहाँ मैं तेरे संग रहा, और तेरे समस्त शत्रुओं को तेरे सामने से नाश किया है, फिर मैं तेरे नाम को पृथ्वी पर के बड़े-बड़े लोगों के नामों के समान महान कर दूँगा। ३२ और मैं अपनी प्रजा इसाएल के लिये एक स्थान ठहराऊँगा, और उसको स्थिर करूँगा, कि वह अपने ही स्थान में बर्सी रहेगी, और कभी चलायामन न होगी; और कुटिल लोग उसे फिर दुर्ख न देने पाएँगे, जैसे कि पहले करते थे, ३३ वरन् उस समय से भी जब मैं अपनी प्रजा इसाएल के ऊपर न्यायी ठहराता था; और मैं तुझे तेरे समस्त शत्रुओं से विश्वास दूँगा। यहोवा तुझे यह भी बताता है कि यहोवा तेरा घर बनाए रखेगा। ३४ जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपने पुरुखों के संग जा मिलेगा, तब मैं तेरे निज वंश को तेरे पीछे खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूँगा। ३५ मैं नाम का घर वही बनवाएगा, और मैं उसकी राजगी को संदैव स्थिर रखूँगा। ३६ मैं उसका पिता ठहरूँगा, और वह मेरा पुत्र ठहरेगा। यदि वह अर्धम करे, तो मैं उसे मनुष्यों के योग्य दण्ड से, और आदमियों के योग्य मार से ताड़ना दूँगा। ३७ परन्तु मेरी कम्मा उस पर से ऐसे न हटेगी, जैसे मैंने शाऊल पर से हटा ली थी और उसको तेरे आगे से ढूँ किया था। ३८ वरन् तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे सामने सदा अटल बना रहेगा; तेरी ग़दी संदैव बनी रहेगी।” ३९ इन सब बातों और इस दर्शन के अनुसार नातन ने दाऊद को समझा दिया। ४० तब दाऊद राजा भीतर जाकर यहोवा के सम्मुख बैठा, और कहने लगा, “हे प्रभु यहोवा, क्या कहूँ, और मेरा घराना क्या है, कि तूने मुझे यहाँ तक पहुँचा दिया है? ४१ तो भी ही, हे प्रभु यहोवा, यह तो मनुष्य का नियम है। ४२ दाऊद तुझ से और क्या कह सकता है? हे प्रभु यहोवा, तू तो अपने दास को जानता है! ४३ तूने अपने बचन के निमित्त, और अपने ही मन के अनुसार, यह सब बड़ा काम किया है, कि तेरा दास उसको जान ले। ४४ इस कारण, हे यहोवा परमेश्वर, तू महान है; क्योंकि जो कुछ हमने अपने कानों से सुना है, उसके अनुसार तेरे तुल्य कोई नहीं, और न तुझे छोड़ कोई और परमेश्वर है। ४५ फिर तेरी प्रजा इसाएल के भी तुल्य कौन है? वह तो पृथ्वी भर में एक ही जाति है जिसे परमेश्वर ने जाकर अपनी निज प्रजा करने को छुड़ाया, इसलिए कि वह अपना नाम करे, (और तुम्हारे लिये बड़े-बड़े काम करे) और तू अपनी प्रजा के सामने, जिसे तने मिथी आदि जाति-जाति के लोगों और उनके देवताओं से छुड़ा लिया, अपने देश के लिये भयानक काम करे। ४६ और तूने अपनी प्रजा इसाएल को अपनी सदा की प्रजा होने के लिये ठहराया; और हे यहोवा, तू आप उसका परमेश्वर है। ४७ अब हे यहोवा परमेश्वर, तूने जो बचन अपने दास के और उसके घराने के विषय दिया है, उसे सदा के लिये स्थिर कर, और

अपने कहने के अनुसार ही कर; २६ और यह कर कि लोग तेरे नाम की महिमा सदा किया करें, कि सेनाओं का यहोवा इमाएल के ऊपर परमेश्वर है; और तेरे दास दाऊद का घराना तेरे सामने अटल रहे। २७ क्योंकि, हे सेनाओं के यहोवा, हे इमाएल के परमेश्वर, तेरे यह कहकर अपने दास पर प्रगत किया है, कि मैं तेरा घर बनाए रखूँगा; इस कारण तेरे दास को तुझ से यह प्रार्थना करने का हियाव हुआ है। २८ अब हे प्रभु यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तेरे बचन सत्य है, और तुम अपने दास को यह भलाई करने का बचन दिया है; २९ तो अब प्रसन्न होकर अपने दास के घराने पर ऐसी आशीष दे, कि वह तेरे सम्मुख सदैव बना रहे; क्योंकि, हे प्रभु यहोवा, तुम ऐसा ही कहा है, और तेरे दास का घराना तुझ से आशीष पाकर सदैव धन्य रहे।”

इसके बाद दाऊद ने पतिशियों को जीतकर अपने अधीन कर लिया, और दाऊद ने पतिशियों की राजधानी की प्रभुता उनके हाथ से छीन ली। ३ फिर उसने मोआवियों को भी जीता, और इनको भूमि पर लिटा कर डोरी से मापा; तब दो डोरी से लोगों को मापकर घात किया, और डोरी भर के लोगों को जीवित छोड़ दिया। तब मोआबी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले आने लगे। ४ फिर जब सोबा का राजा रहोब का पुत्र हदादेजेर फरात के पास अपना राज्य फिर ज्यों का त्यों करने को जा रहा था, तब दाऊद ने उसको जीत लिया। ५ और दाऊद ने उससे एक हजार सात सौ सवार, और बीस हजार प्यादे छीन लिए; और सब रथवाले घोड़ों के घृटनों के पीछे की नस कटवाई, परन्तु एक सौ रथ के लिये घोड़े बचा रहे। ६ जब दमिशक के अरामी सोबा के राजा हदादेजेर की सहायता करने को आए, तब दाऊद ने अरामियों में से बाईंस हजार पुष्प मारे। ७ तब दाऊद ने दमिशक के अराम में सिपाहियों की चौकियाँ बैठाईं, इस प्रकार अरामी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले आने लगे। और जहाँ-जहाँ दाऊद जाता था वहाँ-वहाँ यहोवा उसको जयवन्त करता था। ८ हदादेजेर के कर्मचारियों के पास सोने की जो ढाले थीं उन्हें दाऊद लेकर यस्खलेम को आया। ९ और बेतह और बेरौताई नामक हदादेजेर के नगरों से दाऊद राजा बहुत सा पीतल ले आया। १० जब हमात के राजा तोई ने सुना कि दाऊद ने हदादेजेर की समस्त सेना को जीत लिया है, ११ तब तोई ने योराम नामक अपने पुत्र को दाऊद राजा के पास उसका कुशल क्षेत्र पूछने, और उसे इसलिए बढ़ाई देने को भेजा, कि उसने हदादेजेर से लड़कर उसको जीत लिया था; क्योंकि हदादेजेर तोई से लड़ा करता था। और योराम चाँदी, सोने और पीतल के पात्र लिए हुए आया। १२ इनको दाऊद राजा ने यहोवा के लिये पवित्र कक्षे रखा; और वैसा ही अपने जीती हुई सब जातियों के सोने चाँदी से भी किया, १३ अर्थात् अरामियों, मोआबियों, अम्मोनियों, पलिशियों, और अमालेकियों के सोने चाँदी को, और रहोब के पुत्र सोबा के राजा हदादेजेर की लूट को भी रखा। १४ जब दाऊद नमक की तराई में अठारह हजार अरामियों को मारकर लौट आया, तब उसका बड़ा नाम हो गया। १५ फिर उसने एदोम में सिपाहियों की चौकियाँ बैठाईं, प्यादे एदोम में उसने सिपाहियों की चौकियाँ बैठाईं, और सब एदोमी दाऊद के अधीन हो गए। और दाऊद जहाँ-जहाँ जाता था वहाँ-वहाँ यहोवा उसको जयवन्त करता था। १६ दाऊद तो समस्त इमाएल पर राज्य करता था, और दाऊद अपनी समस्त प्रजा के साथ न्याय और धार्मिकता के काम करता था। १७ प्रधान सेनापति सर्स्याह का पुत्र योआब था; इतिहास का लिखनेवाला अहीलद का पुत्र यहोशापात था; १८ प्रधान याजक अहीलद का पुत्र सादोक और अज्यातार का पुत्र अहीमेलक थे; मंत्री सरायाह था; १९ करेतियों और पलेतियों का प्रधान यहोयादा का पुत्र बनायाह था, और दाऊद के पुत्र भी मंत्री थे।

१ दाऊद ने पूछा, “क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं योनातान के कारण प्रीति दिखाऊँ?” २ शाऊल के घराने की सीबा नामक एक कर्मचारी था, वह दाऊद के पास बुलाया गया; और जब राजा ने उससे पूछा, “क्या तू सीबा है?” तब उसने कहा, हाँ, “तेरा दास बही है।” ३ राजा ने पूछा, “क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं परमेश्वर की सी प्रीति दिखाऊँ?” सीबा ने राजा से कहा, हाँ, योनातान का एक बेटा तो है, जो लॉगड़ा है।” ४ राजा ने उससे पूछा, “वह कहाँ है?” सीबा ने राजा से कहा, “वह तो लोदबार नगर में, अम्मीएल के पुत्र माकीर के घर में रहता है।” ५ तब राजा दाऊद ने दूर भेजकर उसको लोदबार से, अम्मीएल के पुत्र माकीर के घर से बुलाया लिया। ६ जब मपीबोशेत, जो योनातान का पुत्र और शाऊल का पोता था, दाऊद के पास आया, तब मुँह के बल गिरकर दण्डवत किया। दाऊद ने कहा, “हे मपीबोशेत!” उसने कहा, “तेरे दास को क्या आज्ञा?” ७ दाऊद ने उससे कहा, “मत डर; तेरे पिता योनातान के कारण मैं निश्चय तुझको प्रीति दिखाऊँगा, और तेरे दादा शाऊल की सारी भूमि तुझे फेर दूँगा; और तू मेरी मेज पर नित्य भोजन किया करा।” ८ उसने दण्डवत करके कहा, “तेरा दास क्या है, कि तू मुझे ऐसे मेरे कुते की ओर दृष्टि करे?” ९ तब राजा ने शाऊल के कर्मचारी सीबा को बुलावाकर उससे कहा, “जो कछ शाऊल और उसके समस्त घराने का था वह मैंने तेरे स्वामी के पोते को दे दिया है।” १० अब से तू अपने बेटों और सेवकों समेत उसकी भूमि पर खेती करके उसकी उपज ले आया करना, कि तेरे स्वामी के पोते को भोजन मिला करे; परन्तु तेरे स्वामी का पोता मपीबोशेत मेरी मेज पर नित्य भोजन किया करेगा।” और सीबा के तो पन्द्रह पुत्र और बीस सेवक थे। ११ सीबा ने राजा से कहा, “मेरा प्रभु राजा अपने दास को जो-जो आज्ञा दे, उन सभी के अनुसार तेरा दास करेगा।” दाऊद ने कहा, “मपीबोशेत राजकुमारों के समान मेरी मेज पर भोजन किया करे।” १२ मपीबोशेत के भी मीका नामक एक छोटा बेटा था। और सीबा के घर में जितने रहते थे वे सब मपीबोशेत की सेवा करते थे। १३ मपीबोशेत यस्खलेम में रहता था; क्योंकि वह राजा की मेज पर नित्य भोजन किया करता था। और वह दोनों पाँवों का विकलांग था।

१० इसके बाद अम्मोनियों का राजा मर गया, और उसका हानून नामक पुत्र उसके स्थान पर राजा हुआ। ११ तब दाऊद ने यह सोचा, “जैसे हानून के पिता नाहाश ने मुझ को प्रीति दिखाई थी, वैसे ही मैं भी हानून को प्रीति दिखाऊँगा।” तब दाऊद ने अपने कई कर्मचारियों को उसके पास उसके पिता की मृत्यु के विषय शान्ति देने के लिये भेज दिया। और दाऊद के कर्मचारी अम्मोनियों के देश में आए। १२ परन्तु अम्मोनियों के हाकिम अपने स्वामी हानून से कहने लगे, “दाऊद ने जो तेरे पास शान्ति देनेवाले भेजे हैं, वह क्या तेरी समझ में तेरे पिता का आदर करने के विचार से भेजे गए हैं? वह क्या दाऊद ने अपने कर्मचारियों को तेरे पास इसी विचार से नहीं भेजा कि इस नगर में ढाँड़-ढाँड़ करके और इसका भेद लेकर इसको उलट दें?” १३ इसलिए हानून ने दाऊद के कर्मचारियों को पकड़ा, और उनकी अधी-अधी दाढ़ी मुँड़बालक और अधी वस्त्र, अर्थात् नित्य तक कटवाकर, उनको जाने दिया। १४ इस घटना का समाचार पाकर दाऊद ने कछ लोगों को उसे मिलने के लिये भेजा, क्योंकि वे राजा के सामने आने से बहुत लजाते थे। और राजा ने यह कहा, “जब तक तुम्हारी दाढ़ीयाँ बढ़ न जाएँ तब तक यरीहों में ठहरे रहो, फिर लौट आना।” १५ जब अम्मोनियों ने देखा कि हम से दाऊद अप्रसन्न है, तब अम्मोनियों ने बेत्रहोब और सोबा के बीस हजार अरामी प्यादों को, वेतन पर बुलाया। १६ यह सुनकर दाऊद ने योआब और शूरवीरों की समस्त सेना

को भेजा। ८ तब अम्मोनी निकले और फाटक ही के पास पाँति बाँधी; और सोबा और रहोब के अरामी और तोब और माका के पुष्प उनसे अलग मैदान में थे। ९ यह देखकर कि आगे-पीछे दोनों हमारे विस्तु पाँति बाँधी है, योआब ने सब बड़े-बड़े इसाएली वीरों में से बहुतों को छाँटकर अरामियों के सामने उनकी पाँति बाँधाई, १० और अन्य लोगों को अपने भाई अबीशे के हाथ सौंप दिया, और उसने अम्मोनियों के सामने उनकी पाँति बाँधा दिया। ११ फिर उसने कहा, “यदि अरामी मुझ पर प्रबल होने लगें, तो तू मेरी सहायता करना; और यदि अम्मोनी तुझ पर प्रबल होने लगें, तो मैं आकर तेरी सहायता करूँगा।” १२ तू हियाव बाँध, और हम अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगरों के निमित्त पुस्तार्थ करें; और यहोवा जैसा उसके अच्छा लगे वैसा करें।” १३ तब योआब और जो लोग उसके साथ थे अरामियों से युद्ध करने को निकट गए; और वे उसके सामने से भागे। १४ यह देखकर कि अरामी भाग गए हैं अम्मोनी भी अबीशे के सामने से भागकर नगर के भीतर घुसे। तब योआब अम्मोनियों के पास से लौटकर यस्शलेम को आया। १५ फिर यह देखकर कि हम इसाएलियों से हार गए हैं सब अरामी इकट्ठे हुए। १६ और हदादेजे ने दूत भेजकर फरात के पार के अरामियों को बुलवाया; और वे हदादेजे के सेनापति शोबक को अपना प्रधान बनाकर हेलाम को आए। १७ इसका समाचार पाकर दाऊद ने समस्त इसाएलियों को इकट्ठा किया, और यरदन के पार होकर हेलाम में पहुँचा। तब अराम दाऊद के विस्तु पाँति बाँधकर उससे लड़ा। १८ परन्तु अरामी इसाएलियों से भागे, और दाऊद ने अरामियों में से सात सौ रथियों और चालीस हजार सवारों को मार डाला, और उनके सेनापति शोबक को ऐसा घायल किया कि वह बर्दी मर गया। १९ यह देखकर कि हम इसाएल से हार गए हैं, जितने राजा हदादेजे के अधीन थे उन सभी ने इसाएल के साथ संघीकी, और उसके अधीन हो गए। इसलिए अरामी अम्मोनियों की और सहायता करने से डर गए।

११ फिर जिस समय राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं, उस समय, अर्थात् वर्ष के आरम्भ में दाऊद ने योआब को, और उसके सांग अपने सेवकों और समस्त इसाएलियों को भेजा; और उन्होंने अम्मोनियों का नाश किया, और रब्बाह नगर को घेर लिया। परन्तु दाऊद यस्शलेम में रह गया। २ सौँझ के समय दाऊद पलंग पर से उठकर राजभवन की छत पर टहल रहा था, और छत पर से उसको एक छीं, जो अति सुन्दर थी, नहाती हुई देख पड़ी। ३ जब दाऊद ने भेजकर उसे बुलवा लिया; और वह दाऊद के पास आई, और वह उसके साथ सोया। (वह तो ऋत से शुद्ध हो गई थी) तब वह अपने घर लौट गई। ५ और वह छीं गर्भवती हुई, तब दाऊद के पास कहला भेजा, कि मुझे गर्भ है। ६ तब दाऊद ने योआब के पास कहला भेजा, “हिती ऊरियाह को मेरे पास भेज।” तब योआब ने ऊरियाह को दाऊद के पास भेज दिया। ७ जब ऊरियाह उसके पास आया, तब दाऊद ने उससे योआब और सेना का कुशल क्षेम और युद्ध का हाल पूछा। ८ तब दाऊद ने ऊरियाह से कहा, “अपने घर जाकर अपने पाँव धो।” और ऊरियाह राजभवन से निकला, और उसके पीछे राजा के पास से कुछ इनाम भेजा गया। ९ परन्तु ऊरियाह अपने स्वामी के सब सेवकों के संग राजभवन के द्वार में लेट गया, और अपने घर न गया। १० जब दाऊद को यह समाचार मिला, “ऊरियाह अपने घर नहीं गया,” तब दाऊद ने ऊरियाह से कहा, “क्या तू यात्रा करके नहीं आया? तो अपने घर क्यों नहीं गया?” ११ ऊरियाह ने दाऊद से कहा, “जब सन्दूक और इसाएल

और यहदा झोपड़ियों में रहते हैं, और मेरा स्वामी योआब और मेरे स्वामी के सेवक खुले मैदान पर डेरे डाले हुए हैं, तो क्या मैं घर जाकर खाँ, पीँ, और अपनी पत्री के साथ सोँऊँ तेरे जीवन की शपथ, और तेरे प्राण की शपथ, कि मैं ऐसा काम नहीं करने का।” १२ दाऊद ने ऊरियाह से कहा, “आज यहीं रह, और कल मैं तुझे विदा करूँगा।” इसलिए ऊरियाह उस दिन और दूसरे दिन भी यस्शलेम में रहा। १३ तब दाऊद ने उसे नेवता दिया, और उसने उसके सामने खाया पिया, और उसी ने उसे मतवाला किया; और सौँझ को वह अपने स्वामी के सेवकों के संग अपनी चारपाई पर सोने को निकला, परन्तु अपने घर न गया। १४ सरौरे दाऊद ने योआब के नाम पर एक चिट्ठी लिखकर ऊरियाह के हाथ से भेज दी। १५ उस चिट्ठी में यह लिखा था, “सबसे घोर युद्ध के सामने ऊरियाह को रखना, तब उसे छोड़कर लौट आओ, कि वह घायल होकर मर जाए।” १६ अतः योआब ने नार को अच्छी रीति से देख-भाल कर जिस स्थान में वह जानता था कि वीर है, उसी में ऊरियाह को ढहरा दिया। १७ तब नगर के पुरुषों ने निकलकर योआब से युद्ध किया, और लोगों में से, अर्थात् दाऊद के सेवकों में से कितने मारे गए; और उनमें हिती ऊरियाह भी मर गया। १८ तब योआब ने दूत को भेजकर दाऊद को युद्ध का पूरा हाल बताया; १९ और दूत को आज्ञा दी, “जब तू युद्ध का पूरा हाल राजा को बता दे, २० तब यदि राजा क्रोध में कहने लगे, ‘तम लोग लड़ने को नगर के ऐसे निकट क्यों गए?’ क्या तुम न जानते थे कि वे शहरपनाह पर से तीर छोड़े? २१ यस्ल्बेशेत के पुत्र अबीमिलेक को किसने मार डाला? क्या एक छीं ने शहरपनाह पर से चक्रकी का उपरला पाट उस पर ऐसा न डाला कि वह तेबस में मर गया? फिर तुम शहरपनाह के ऐसे निकट क्यों गए?” तो तू यह कहना, ‘तेरा दास ऊरियाह हिती भी मर गया।’” २२ तब दूत चल दिया, और जाकर दाऊद से योआब की सब बातों का वर्णन किया। २३ दूत ने दाऊद से कहा, “वे लोग हम पर प्रबल होकर मैदान में हमारे पास निकल आए, फिर हमने उन्हें फाटक तक खेड़ा। २४ तब धर्मार्थियों ने शहरपनाह पर से तेरे जनों पर तीर छोड़े; और राजा के कितने जन मर गए, और तेरा दास ऊरियाह हिती भी मर गया।” २५ दाऊद ने दूत से कहा, “योआब से यह कहना, ‘इस बात के कारण उदास न हो, क्योंकि तलवार जैसे इसको वैसे उसको नष्ट करती है; तू नगर के विस्तु अधिक दृढ़ता से लड़कर उसे उलट दो।’ और तू उसे यहाय बंधा।” २६ जब ऊरियाह की छीं ने सुना कि मेरा पति मर गया, तब वह अपने पति के लिये रोने पीटने लगी। २७ और जब उसके विलाप के दिन बीत चुके, तब दाऊद ने उसे बुलवाकर अपने घर में रख लिया, और वह उसकी भाई हो गई, और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। परन्तु उस काम से जो दाऊद ने किया था यहोवा क्रोधित हुआ।

१२ तब यहोवा ने दाऊद के पास नातान को भेजा, और वह उसके पास जाकर कहने लगा, “एक नगर में दो मनुष्य रहते थे, जिनमें से एक धनी और एक निर्धन था। १ धनी के पास तो बहुत सी भेड़-बकरियाँ और गाय बैल थे; २ परन्तु निर्धन के पास भेड़ की एक छोटी बच्ची को छोड़ और कुछ भी न था, और उसको उसने मोल लेकर जिलाया था। वह उसके यहाँ उसके बाल-बच्चों के साथ ही बढ़ी थी; वह उसके टुकड़े में से खाती, और उसके कटोरे में से पीती, और उसकी गोद में सोती थी, और वह उसकी बेटी के समान थी। ४ और धनी के पास एक यात्री आया, और उसने उस यात्री के लिये, जो उसके पास आया था, भोजन बनवाने को अपनी भेड़-बकरियों या गाय बैलों में से कुछ न लिया, परन्तु उस निर्धन मनुष्य की भेड़ की बच्ची लेकर उस जन के लिये, जो उसके पास आया था, भोजन बनवाया।” ५ तब दाऊद का कोप उस

मनुष्य पर बहुत भड़का; और उसने नातान से कहा, “यहोवा के जीवन की शपथ, जिस मनुष्य ने ऐसा काम किया वह प्राणदण्ड के योग्य है; ६ और उसको वह भेड़ की बच्ची का चौपांता भर देना होगा, क्योंकि उसने ऐसा काम किया, और कुछ दया नहीं की।” ७ तब नातान ने दाऊद से कहा, “तू ही वह मनुष्य है। इसाएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, मैंने तेरा अभिषेक करके तुझे इसाएल का राजा ठहराया, और मैंने तुझे शाऊल के हाथ से बचाया; ८ फिर मैंने तेरे स्वामी का भवन तुझे दिया, और तेरे स्वामी की पत्रियाँ तेरे भोग के लिये दी; और मैंने इसाएल और यहदा का धराना तुझे दिया था; और यदि यह थोड़ा था, तो मैं तुझे और भी बहुत कुछ देवेलाता था। ९ तने यहोवा की आज्ञा तुच्छ जानकर क्यों वह काम किया, जो उसकी दृष्टि में बुरा है? हिती ऊरियाह को तूने तलवार से घात किया, और उसकी पत्री को अपनी कर लिया है, और ऊरियाह को अम्मोनियों की तलवार से मरवा डाला है। १० इसलिए अब तलवार तेरे घर से कभी दूर न होगी, क्योंकि तूने मुझे तुच्छ जानकर हिती ऊरियाह की पत्री को अपनी पत्री कर लिया है।” ११ यहोवा यह कहता है, ‘‘सुन, मैं तेरे घर में से विधिंत उठाकर तुझ पर डालूँगा; और तेरी पत्रियों को तेरे सामने लेकर दूसरे को दूँगा, और वह दिन दुपहरी में तेरी पत्रियों से कुर्कम करेगा। १२ तूने तो वह काम छिपाकर किया; पर मैं यह काम सब इसाएलियों के सामने दिन दुपहरी कराऊँगा।’’ १३ तब दाऊद ने नातान से कहा, “मैंने यहोवा के विद्युत पाप किया है।” नातान ने दाऊद से कहा, “यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया है; तू न मरेगा। १४ तो भी तूने जो इस काम के द्वारा यहोवा के श्रुतों को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है, इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है वह अवश्य ही मरेगा।” १५ तब नातान अपने घर चला गया। जो बच्चा ऊरियाह की पत्री से दाऊद के द्वारा उत्पन्न हुआ था, वह यहोवा का मारा बहुत रोगी हो गया। १६ अतः दाऊद उस लड़के के लिये परमेश्वर से विनती करने लगा; और उपवास किया, और भीतर जाकर रात भर भूमि पर पड़ा रहा। १७ तब उसके घरने के पुरानिये उठकर उसे भूमि पर से उठाने के लिये उसके पास गए; परन्तु उसने न चाहा, और उनके संग रोटी न खाई। १८ सातवें दिन बच्चा मर गया, और दाऊद के कर्मचारी उसको बच्चे के मरने का समाचार देने से डेरे; उन्होंने कहा था, “जब तक बच्चा जीवित रहा, तब तक उसने हमारे समझाने पर मन न लगाया; यदि हम उसको बच्चे के मर जाने का हाल सुनाएँ तो वह बहुत ही अधिक दुःखी होगा।” १९ अपने कर्मचारियों को आपस में फुसफुसाते देखकर दाऊद ने जान लिया कि बच्चा मर गया; तो दाऊद ने अपने कर्मचारियों से पूछा, “क्या बच्चा मर गया?” उन्होंने कहा, “हाँ, मर गया है।” २० तब दाऊद भूमि पर से उठा, और नहाकर तेल लगाया, और बच्चा बदला; तब यहोवा के भवन में जाकर टांडबत की, फिर अपने भवन में आया; और उसकी आज्ञा पर रोटी उसको पोरसी गई, और उसने भोजन किया। २१ तब उसके कर्मचारियों ने उससे पूछा, “तूने यह क्या काम किया है? जब तक बच्चा जीवित रहा, तब तक तू उपवास करता हुआ रोता रहा; परन्तु जैसे ही बच्चा मर गया, वैसे ही तू उठकर भोजन करने लगा।” २२ उसने उत्तर दिया, “जब तक बच्चा जीवित रहा तब तक तो मैं यह सोचकर उपवास करता और रोता रहा, कि क्या जाने यहोवा मुझ पर ऐसा अनुग्रह करे कि बच्चा जीवित रहे। २३ परन्तु अब वह मर गया, फिर मैं उपवास क्यों करूँ? क्या मैं उसे लौटा ला सकता हूँ? मैं तो उसके पास जाऊँगा, परन्तु वह मेरे पास लौटकर नहीं आएगा।” २४ तब दाऊद ने अपनी पत्री बतशेवा को शान्ति दी, और वह उसके पास गया; और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने उसका नाम सुलैमान रखा। और वह यहोवा का प्रिय हुआ। २५ और उसने नातान भविष्यद्वत्का के द्वारा सन्देश भेज दिया; और उसने यहोवा के कारण

उसका नाम यदिधाह रखा। २६ इस बीच योआब ने अम्मोनियों के रब्बाह नगर से लड़कर राजनगर को ले लिया। २७ तब योआब ने दूतों से दाऊद के पास यह कहला भेजा, “मैं रब्बाह से लड़ा और जलवाले नागर को ले लिया है। २८ इसलिए अब रहे हुए लोगों को इक्षता करके नगर के विस्तु छावनी डालकर उसे भी ले ले, ऐसा न हो कि मैं उसे ले लूँ, और वह मेरे नाम पर कहलाए।” २९ तब दाऊद सब लोगों को इक्षता करके रब्बाह को गया, और उससे युद्ध करके उसे ले लिया। ३० तब उसने उनके राजा का मुकुट, जो तौल में किंकार भर सोने का था, और उसमें मणि जड़े थे, उसको उसके सिर पर से उतारा, और वह दाऊद के सिर पर रखा गया। फिर उसने उस नगर की बहुत ही लृट पाई। ३१ उसने उसके रहनेवालों को निकालकर अरी से दो-दो टुकड़े कराया, और लोहे के हेंगे उन पर फिरवाएँ, और लोहे की कुल्हाड़ियों से उन्हें कटवाया, और इंट के पांजवे में से चलवाया, और अम्मोनियों के सब नागरों से भी उसने ऐसा ही किया। तब दाऊद समस्त लोगों समेत यस्सलेम को लौट गया।

१३ तामार नामक एक सुन्दरी जो दाऊद के पुत्र अबशालोम की बहन थी, उस पर दाऊद का पुत्र अम्मोन मोहित हुआ। १ अम्मोन अपनी बहन तामार के कारण ऐसा विकल हो गया कि बीमार पड़ गया; क्योंकि वह कुमारी थी, और उसके साथ कुछ करना अम्मोन को कठिन जान पड़ता था। २ अम्मोन के योनादाब नामक एक मित्र था, जो दाऊद के भाई शिमआह का बेटा था, और वह बड़ा चरू था। ३ और उसने अम्मोन से कहा, “हे राजकुमार, क्या कारण है कि तू प्रतिदिन ऐसा दुलाला होता जाता है क्या तू मुझे न बताएगा?” अम्मोन ने उससे कहा, “मैं तो अपने भाई अबशालोम की बहन तामार पर मोहित हूँ।” ४ योनादाब ने उससे कहा, “अपने पलंग पर लेटकर बीमार बन जा; और जब तेरा पिता तुझे देखने को आए, तब उससे कहना, ‘मेरी बहन तामार आकर मुझे रोटी खिलाएँ, और भोजन को मेरे सामने बनाए, कि मैं उसको देखकर उसके हाथ से खाऊँ।’” ५ अतः अम्मोन लेटकर बीमार बना; और जब राजा उसे देखने आया, तब अम्मोन ने राजा से कहा, “मेरी बहन तामार आकर मेरे देखते दो पूरियां बनाएँ, कि मैं उसके हाथ से खाऊँ।” ६ तब दाऊद ने अपने घर तामार के पास यह कहला भेजा, “अपने भाई अम्मोन के घर जाकर उसके लिये भोजन बना।” ७ तब तामार अपने भाई अम्मोन के घर गई, और वह पड़ा हुआ था। तब उसने आटा लेकर गैँधा, और उसके देखते पूरियां पकाई। ८ तब उसने थाल लेकर उनको उसके लिये परोसा, परन्तु उसने खाने से इन्कार किया। तब अम्मोन ने अपने दासों से कहा, “मेरे आस-पास से सब लोगों को निकाल दो।” तब सब लोग उसके पास से निकल गए। ९ तब अम्मोन ने तामार से कहा, “भोजन को कोठरी में ले आ, कि मैं तेरे हाथ से खाऊँ।” १० तो तामार अपनी बनाई हुई पूरियों को उठाकर अपने भाई अम्मोन के पास कोठरी में ले गई। ११ जब वह उनको उसके खाने के लिये निकट ले गई, तब उसने उसे पकड़कर कहा, “हे मेरी बहन, आ, मुझसे मिला।” १२ उसने कहा, “हे मेरे भाई, ऐसा नहीं, मुझे भ्रष्ट न कर; क्योंकि इसाएल मैं ऐसा काम होना नहीं चाहिये; ऐसी मूर्खता का काम न कर।” १३ फिर मैं अपनी नामधराई लिये हुए कहाँ जाऊँगी? और तू इस्माएलियों में एक मूर्ख गिना जाएगा। तू राजा से बातचीत कर, वह मुझ को तुझे ब्याह देने के लिये मना न करेगा।” १४ परन्तु उसने उसकी न सुनी; और उससे बलवान होने के कारण उसके साथ कुर्कम करके उसे भ्रष्ट किया। १५ तब अम्मोन उससे अत्यन्त बैर रखने लगा, यहाँ तक कि यह बैर उसके पहले मोह से बढ़कर हुआ। तब अम्मोन ने उससे कहा, “उठकर चर्ची जा।” १६ उसने कहा, “ऐसा नहीं, क्योंकि यह बड़ा उपद्रव, अर्थात् मुझे निकाल देना उस पहले से बढ़कर है जो तूने मुझसे किया है।” परन्तु उसने उसकी न सुनी। १७ तब उसने अपने सेवक जवान को बुलाकर

कहा, “इस स्थी को मेरे पास से बाहर निकाल दे, और उसके पीछे किवाड़ में चिटकनी लगा दे।” १८ वह तो रंगबिरंगी कुर्ती पहने थीं, क्योंकि जो राजकुमारियाँ कुँवारी रहती थीं वे ऐसे ही बच्चे पहनती थीं। अतः अन्नोन के ठहलुए ने उसे बाहर निकालकर उसके पीछे किवाड़ में चिटकनी लगा दी। १९ तब तामार ने अपने सिर पर राख डाली, और अपनी रंगबिरंगी कुर्ती को फाड़ डाला; और सिर पर हाथ रखे चिल्लाती हुई चली गई। २० उसके भाई अबशालोम ने उससे पूछा, “क्या तेरा भाई अन्नोन तेरे साथ रहा है? परन्तु अब, हे मैरी बहन, चुप रह, वह तो तेरा भाई है; इस बात की चिन्ता न कर।” तब तामार अपने भाई अबशालोम के घर में मन मारे बैठी रही। २१ जब ये सब बातें दाऊद राजा के कान में पड़ी, तब वह बहुत झूँझला उठा। २२ और अबशालोम ने अन्नोन से भला-बुरा कुछ न कहा, क्योंकि अन्नोन ने उसकी बहन तामार को भ्रष्ट किया था, इस कारण अबशालोम उससे धूमा करता था। २३ दो वर्ष के बाद अबशालोम ने एग्रेम के निकट के बाल्हासोर में अपनी भेड़ों का ऊन कतरवाया और अबशालोम ने सब राजकुमारों को नेवता दिया। २४ वह राजा के पास जाकर कहने लगा, “विनती यह है, कि तेरे दास की भेड़ों का ऊन कतरवा जाता है, इसलिए राजा अपने कर्मचारियों समेत अपने दास के संग चले।” २५ राजा ने अबशालोम से कहा, “हे मेरे बेटे, ऐसा नहीं; हम सब न चलेंगे, ऐसा न हो कि तुम्हे अधिक कष्ट हो।” तब अबशालोम ने विनती करके उस पर दबाव डाला, परन्तु उसने जाने से इन्कार किया, तो भी उसे आशीर्वाद दिया। २६ तब अबशालोम ने कहा, “यदि तु नहीं तो मेरे भाई अन्नोन को हमारे संग जाने दे।” राजा ने उससे पूछा, “वह तेरे संग क्यों चले?” २७ परन्तु अबशालोम ने उसे ऐसा दबाया कि उसने अन्नोन और सब राजकुमारों को उसके साथ जाने दिया। २८ तब अबशालोम ने अपने सेवकों को आज्ञा दी, “सावधान रहो और जब अन्नोन दाखमधू पीकर नशे में आ जाए, और मैं तुम से कहूँ, ‘अन्नोन को मार डालना।’ क्या इस आज्ञा का देनेवाला मैं नहीं हूँ? हियाव बाँधकर पुर्षसर्थ करना।” २९ अतः अबशालोम के सेवकों ने अन्नोन के साथ अबशालोम की आज्ञा के अनुसार किया। तब सब राजकुमार उठ खड़े हुए, और अपने-अपने खच्चर पर चढ़कर भाग गए। ३० वे मार्ग ही मैं थे, कि दाऊद को यह समाचार मिला, “अबशालोम ने सब राजकुमारों को मार डाला, और उनमें से एक भी नहीं बचा।” ३१ तब दाऊद ने उठकर अपने बच्चे फाड़े, और भूमि पर गिर पड़ा, और उसके सब कर्मचारी बच्चे फाड़े हुए उसके पास खड़े रहे। ३२ तब दाऊद के भाई शिमआह के पुत्र योनादाब ने कहा, “मेरा प्रभु यह न समझे कि सब जवान, अर्थात् राजकुमार मार डाले गए हैं, केवल अन्नोन मारा गया है; क्योंकि जिस दिन उसने अबशालोम की बहन तामार को भ्रष्ट किया, उसी दिन से अबशालोम की आज्ञा से ऐसी ही बात निवित थी।” ३३ इसलिए अब मेरा प्रभु राजा अपने मन में यह समझकर कि सब राजकुमार मर गए उदास न हो; क्योंकि केवल अन्नोन ही मारा गया है।” ३४ इन्हें अबशालोम भाग गया। और जो जवान पहरा देता था उसने आँखें उठाकर देखा, कि पीछे की ओर से पहाड़ के पास के मार्ग से बहुत लोग चले आ रहे हैं। ३५ तब योनादाब ने राजा से कहा, “देख, राजकुमार तो आ गए हैं; जैसा तेरे दास ने कहा था वैसा ही हुआ।” ३६ वह कह ही चुका था, कि राजकुमार पहुँच गए, और चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे; और राजा भी अपने सब कर्मचारियों समेत बिलख-बिलख कर रोने लगा। ३७ अबशालोम तो भागकर गशूर के राजा अमीहद के पुत्र तल्यै के पास गया। और दाऊद अपने पुत्र के लिये दिन-दिन विलाप करता रहा। ३८ अतः अबशालोम भागकर गशूर को गया, तब वहाँ तीन वर्ष तक रहा। ३९ दाऊद के

मन में अबशालोम के पास जाने की बड़ी लालसा रही; क्योंकि अन्नोन जो मर गया था, इस कारण उसने उसके विषय में शान्ति पाई।

१४ सूर्याह का पुत्र योआब ताड़ गया कि राजा का मन अबशालोम की ओर लगा है। १५ इसलिए योआब ने तकोआ नगर में दूत भेजकर वहाँ से एक बुद्धिमान स्थी को बुलवाया, और उससे कहा, “शोक करनेवाली बन, अर्थात् शोक का पहरावा पहन, और तेल न लगा; परन्तु ऐसी स्थी बन जो बहुत दिन से मेरे हुए व्यक्ति के लिये विलाप करती रही हो।” १६ तब राजा के पास जाकर ऐसी-ऐसी बातें कहना।” १७ और योआब ने उसको जो कुछ कहना था वह सिखा दिया। १८ जब तकोआ की वह स्थी राजा के पास गई, तब मूँह के बल भूमि पर गिर दण्डवत करके कहने लगी, “राजा की दुहाई।” १९ राजा ने उससे पूछा, “तुझे क्या चाहिये?” उसने कहा, “सचमुच मेरा पति मर गया, और मैं विधवा हो गई।” २० और तेरी दासी के दो बेटे थे, और उन दोनों ने मैदान में मारपीट की; और उनको छुड़ानेवाला कोई न था, इसलिए एक ने दूसरे को ऐसा मारा कि वह मर गया। २१ अब सुन, सब कुल के लोग तेरी दासी के विद्धु उठकर यह कहते हैं, “जिसने अपने भाई को घाट किया उसको हमें सौंप दे, कि उसके मारे हुए भाई के प्राण के बदले में उसको प्राणदण्ड दें,” और इस प्रकार वे वारिस को भी नष्ट करेंगे। इस तरह वे मेरे अंगारे को जो बच गया है बुझाएँगे, और मेरे पति का नाम और सन्तान धरती पर से मिटा डालेंगे।” २२ राजा ने स्थी से कहा, “अपने घर जा, और मैं तेरे विषय आज्ञा दूँगा।” २३ तब तकोआ की उस स्थी ने राजा से कहा, “हे मेरे प्रभु, हे राजा, दोष मूँही को और मेरे पिता के घराने ही को लोगे; और राजा अपनी गँड़ी समेत निर्दोष ठहरो।” २४ राजा ने कहा, “जो कोई तुझे से कुछ बोले उसको मैं पास ला, तब वह फिर तुझे छुने न पाएगा।” २५ उसने कहा, “राजा अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करे, कि खून का पलटा लेनेवाला और नाश करने न पाए, और मैं बेटे का नाश न होने पाए।” २६ उसने कहा, “यहोवा के जीवन की शपथ, तेरे बेटे का एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा।” २७ स्थी बोली, “तेरी दासी अपने प्रभु राजा से एक बात कहने पाए।” २८ उसने कहा, “कहे जा।” स्थी कहने लगी, “फिर तूने परमेश्वर की प्रजा की हानि के लिये ऐसी ही युक्ति क्यों की है? राजा ने जो यह बचन कहा है, इससे वह दोषी सा ठहरत है, क्योंकि राजा अपने निकाले हुए को लौटा नहीं लाता।” २९ हमको तो मरना ही है, और भूमि पर गिरे हुए जल के समान ठहरेंगे, जो फिर उठाया नहीं जाता; तो भी परमेश्वर प्राण नहीं लेता, बरन ऐसी युक्ति करता है कि निकाला हुआ उसके पास से निकाला हुआ न रहे। ३० और अब मैं जो अपने प्रभु राजा से यह बात कहने को आई हूँ, इसका कारण यह है, कि लोगों ने मुझे डरा दिया था; इसलिए तेरी दासी ने सोचा, “मैं राजा से बोलूँगी, कदाचित् राजा अपनी दासी की विनती को पूरी करे।” ३१ निःसन्देह राजा सुनकर अवश्य अपनी दासी को उस मनुष्य के हाथ से बचाएगा, जो मुझे और मेरे बेटे दोनों को परमेश्वर के भाग में से नष्ट करना चाहता है।” ३२ अतः तेरी दासी ने सोचा, “मेरे प्रभु राजा के बचन से शान्ति मिलें;” क्योंकि मेरा प्रभु राजा परमेश्वर के किसी दूत के समान भले बुरे में भेद कर सकता है; इसलिए तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहे।” ३३ राजा ने उत्तर देकर उस स्थी से कहा, “जो बात मैं तुझे से पूछता हूँ उसे मुझसे न छिपा।” स्थी ने कहा, “मेरा प्रभु राजा करे जाए।” ३४ राजा ने पूछा, “इस बात में क्या योआब तेरा संगी है?” स्थी ने उत्तर देकर कहा, “हे मेरे प्रभु, हे राजा, तेरे प्राण की शपथ, जो कुछ मेरे प्रभु राजा ने कहा है, उससे कोई न दाहिनी और मुड़ सकता है और न बाई ओर। तेरे दास योआब ही ने मुझे आज्ञा दी, और ये सब बातें उसी ने तेरी दासी को सिखाई हैं। ३५ तेरे दास योआब ने यह

काम इसलिए किया कि बात का रंग बदले। और मेरा प्रभु परमेश्वर के एक दूत के तुल्य बुद्धिमान है, यहाँ तक कि धर्थी पर जो कुछ होता है उन सब को वह जानता है।” २८ तब राजा ने योआब से कहा, “सुन, मैंने यह बात मानी है; तु जाकर उस जवान अबशालोम को लौटा ला।” २९ तब योआब ने भूमि पर मुँह के बल गिर दण्डवत् कर राजा को आशीर्वाद दिया; और योआब कहने लगा, “हे मेरे प्रभु, हे राजा, आज तेरा दास जान गया कि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है, क्योंकि राजा ने अपने दास की चिनती सुनी है।” ३० अतः योआब उठकर गशरू को गया, और अबशालोम को यस्शलेम ले आया। ३१ तब राजा ने कहा, “वह अपने घर जाकर रहे; और मेरा दर्शन न पाए।” तब अबशालोम अपने घर चला गया, और राजा का दर्शन न पाया। ३२ समस्त इस्माएल में सुन्दरता के कारण बहुत प्रशंसा योग्य अबशालोम के तुल्य और कोई न था; वरन् उसमें नख से सिख तक कुछ दोष न था। ३३ वह वर्ष के अन्त में अपना सिर मूँड़वाता था; (उसके बाल उसको भारी जान पड़ते थे, इस कारण वह उसे मूँड़ता था) और जब जब वह उसे मूँड़ता तब-तब अपने सिर के बाल तैत्कर राजा के तौल के अनुसार दो सौ शेकेल भर पाता था। ३४ अबशालोम के तीन बेटे, और तमार नामक एक बेटी उत्पन्न हुई थी; और यह स्पवती छी थी। ३५ अतः अबशालोम राजा का दर्शन बिना पाए यस्शलेम में दो वर्ष रहा। ३६ तब अबशालोम ने योआब को बुलवा भेजा कि उसे राजा के पास भेजे; परन्तु योआब ने उसके पास आने से इन्कार किया। और उसने उसे दूसरी बार बुलवा भेजा, परन्तु तब भी उसने आने से इन्कार किया। ३७ तब उसने अपने सेवकों से कहा, “सुनो, योआब का एक खेत मेरी भूमि के निकट है, और उसमें उसका जौ खड़ा है; तुम जाकर उसमें आग लगाओ।” और अबशालोम के सेवकों ने उस खेत में आग लगा दी। ३८ तब योआब उठा, और अबशालोम के घर में उसके पास जाकर उसपे पूछने लगा, “तेरे सेवकों ने मेरे खेत में क्यों आग लगाइ दी?” ३९ अबशालोम ने योआब से कहा, “मैंने तो तेरे पास यह कहला भेजा था, ‘यहाँ आना कि मैं तुझे राजा के पास यह कहने को भेजूँ, ‘मैं गशरू से क्यों आया? मैं अब तक वहाँ रहता तो अच्छा होता।’” इसलिए अब राजा मुझे दर्शन दे; और यदि मैं दोबी हूँ, तो वह मुझे मार डाले।” ४० तब योआब ने राजा के पास जाकर उसको यह बात सुनाई; और राजा ने अबशालोम को बुलवाया। अतः वह उसके पास गया, और उसके सम्मुख भूमि पर मुँह के बल गिरकर दण्डवत् की; और राजा ने अबशालोम को छूमा।

१५ इसके बाद अबशालोम ने रथ और घोड़े, और अपने आगे-आगे दौड़नेवाले पचास अंगरक्षकों रख लिए। १ अबशालोम सर्वेर उठकर फाटक के मार्ग के पास खड़ा हुआ करता था; और जब जब कोई मुझे राजा के पास न्याय के लिये आता, तब-तब अबशालोम उसको पुकारके पूछता था, “तू किस नगर से आता है?” और वह कहता था, “तेरा दास इस्माएल के अप्सक गोत्र का है।” २ तब अबशालोम उसपे कहता था, “सुन, तेरा पक्ष तो ठीक और न्याय का है; परन्तु राजा की ओर से तेरी सुनेवाला कोई नहीं है।” ३ फिर अबशालोम यह भी कहा करता था, “भला होता कि मैं इस देश में न्यायी ठहराया जाता! तब जितने मुकद्दमा वाले होते वे सब मेरे ही पास आते, और मैं उनका न्याय चुकाता।” ४ फिर जब कोई उसे दण्डवत् करने को निकट आता, तब वह हाथ बढ़ाकर उसको पकड़कर चम लेता था। ५ अतः जितने इस्माएली राजा के पास अपना मुकद्दमा लेकर आते उन सभी से अबशालोम ऐसा ही व्यवहार किया करता था; इस प्रकार अबशालोम ने इस्माएली मुरुज्यों के मन को हर लिया। ६ चार वर्ष के बीतने पर अबशालोम ने राजा से कहा, “मुझे हेत्रोन जाकर अपनी उस मन्त्र को पूरी करने दे, जो मैंने यहोवा की

मानी है।” तेरा दास तो जब अराम के गशरू में रहता था, तब यह कहकर यहोवा की मन्त्र मानी, कि यदि यहोवा मुझे सच्चालेम को लौटा ले जाए, तो मैं यहोवा की उपासना करूँगा।” ७ राजा ने उससे कहा, “कुशल क्षेम से जा।” ८ तब योआब ने भूमि पर मुँह से यह कहने के लिये भेदिए भेजे, “जब नरसिंगे का शब्द तुम को सुनाई पड़े, तब कहना, ‘अबशालोम हेत्रोन में राजा हुआ।’” ९ अबशालोम के संग दो सौ निमित्रिय यस्शलेम से गए; वे सीधे मन से उसका भेद बिना जाने गए। १० फिर जब अबशालोम का यज्ञ हुआ, तब उसने गीलोवासी अहीतोपेल को, जो दाऊद का मंत्री था, बुलवा भेजा कि वह अपने नगर गीलो से आए। और राजदोह की गोष्ठी ने बल पकड़ा, क्योंकि अबशालोम के पक्ष के लोग बराबर बढ़ते गए। ११ तब किसी ने दाऊद के पास जाकर यह समाचार दिया, “इस्माएली मुरुज्यों के मन अबशालोम की ओर हो गए है।” १२ तब दाऊद ने अपने दब कर्मचारियों से जो यस्शलेम में उसके संग थे कहा, “आओ, हम भाग चलें; नहीं तो हम में से कोई भी अबशालोम से न बचेगा; इसलिए फुर्ती करते चले चलो, ऐसा न हो कि वह फुर्ती करके हमें आ घेरे, और हमारी हानि करे, और इस नगर को तलवार से मार ले।” १३ राजा के कर्मचारियों ने उससे कहा, “जैसा हमारे प्रभु राजा को अच्छा जान पड़े, वैसा ही करने के लिये तेरे दास तैयार हैं।” १४ तब राजा निकल गया, और उसके पीछे उसका समस्त घराना निकला। राजा दस रघुविलियों को भवन की चौकसी करने के लिये छोड़ गया। १५ तब राजा निकल गया, और उसके पीछे सब लोग निकले; और वे बेतर्महक में ठहर गए। १६ उसके सब कर्मचारी उसके पास से होकर आगे गए; और सब करती, और सब पलती, और सब गती, अर्थात् जो छः सौ पुस्त गत से उसके पीछे हो लिए थे वे सब राजा के सामने से होकर आगे चले। १७ तब राजा ने गती इत्तै से पृष्ठा, “हमारे संग तु क्यों चलता है? लौटकर राजा के पास रह; क्योंकि तु परदेशी और अपने देश से दूर है, इसलिए अपने स्थान को लौटा जा।” १८ तो कल ही आया है, क्या मैं आज तुझे अपने साथ मारा-मारा फिराऊँ? मैं तो जहाँ जा सकँगा वहाँ जाऊँगा। तू लौट जा, और अपने भाइयों को भी लौटा दे; परमेश्वर की कस्ता और सच्चाई तेरे संग रहे।” १९ इत्तै ने राजा को उत्तर देकर कहा, “यहोवा के जीवन की शपथ, और मेरे प्रभु राजा के जीवन की शपथ, जिस किसी स्थान में मेरा प्रभु राजा रहेगा, चाहे मरने के लिये हो चाहे जीवित रहने के लिये, उसी स्थान में तेरा दास भी रहेगा।” २० तब दाऊद ने इत्तै से कहा, “पार चल।” अतः गती इत्तै अपने समस्त जनों और अपने साथ के सब बाल-बच्चों समेत पार हो गया। २१ सब रहनेवाले चिल्ला चिल्लाकर रोए; और सब लोग पार हुए, और राजा भी किंद्रोन नामक घाटी के पार हुआ, और सब लोग नाले के पार जंगल के मार्ग की ओर पार होकर चल पड़े। २२ तब क्या देखने में आया, कि सादोक भी और उसके संग सब लेवीय परमेश्वर की बाचाका सन्दूक उठाए हुए हैं; और उन्होंने परमेश्वर के सन्दूक को धर दिया, तब ऐल्यातार चढ़ा, और जब तक सब लोग नगर से न निकले तब तक वहीं रहा। २३ तब राजा ने सादोक से कहा, “परमेश्वर के सन्दूक को नगर में लौटा ले जा। यदि यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो, तो वह मुझे लौटाकर उसको और अपने वासस्थान को भी दिखाएगा; २४ परन्तु यदि वह मुझसे ऐसा कहे, ‘मैं तुझ से प्रसन्न नहीं,’ तो भी मैं हाजिर हूँ, जैसा उसको भाए वैसा ही वह मेरे साथ बर्तव करे।” २५ फिर राजा ने सादोक याजक से कहा, “क्या तु दर्शी नहीं है? सो कुशल क्षेम से नगर में लौट जा, और तेरा पुत्र अहीमास, और ऐल्यातार का पुत्र योनातान, दोनों तुम्हारे संग लैटै।” २६ सुनो, मैं जंगल के घाट के पास तब तक ठहरा रहँगा, जब तक तुम लोगों से मुझे हाल का समाचार न मिले।” २७ तब सादोक और ऐल्यातार ने

परमेश्वर के सन्दूक को यस्तलेम में लौटा दिया; और आप वही रहे। ३० तब दाऊद जैतून के पहाड़ की चढ़ाई पर सिर ढाँके, नगे पाँव, रोता हुआ चढ़ने लगा; और जितने लोग उसके संग थे, वे भी सिर ढाँके रोते हुए चढ़ गए। ३१ तब दाऊद को यह समाचार मिला, “अबशालोम के संगी राजदोहियों के साथ अहीतोपेल है।” दाऊद ने कहा, “हे यहोवा, अहीतोपेल की सम्मति को मूर्खता बना दे।” ३२ जब दाऊद चोटी का पहुँचा, जहाँ परमेश्वर की आराधना की जाती थी, तब ऐसी हूँसी अंगरखा फाड़े, सिर पर मिट्ठी डाले हुए उससे मिलने को आया। ३३ दाऊद ने उससे कहा, “यदि तू मेरे संग आगे जाए, तब तो मेरे लिये भार ढहेगा।” ३४ परन्तु यदि तू नगर को लौटकर अबशालोम से कहने लगे, ‘‘हे राजा, मैं तेरा कर्मचारी होऊँगा; जैसा मैं बहुत दिन तेरे पिता का कर्मचारी रहा, वैसे ही अब तेरा रहँगा,’’ तो तू मेरे हित के लिये अहीतोपेल की सम्मति को निष्फल कर सकेगा। ३५ और क्या वहाँ तेरे संग सादोक और एन्यातार याजक न रहेंगे? इसलिए राजभवन में से जो हाल तुझे सुनाई पड़े, उसे सादोक और एन्यातार याजकों को बताया करना। ३६ उनके साथ तो उनके दो पुत्र, अर्थात् सादोक का पुत्र अहीमास, और एन्यातार का पुत्र योनातान, वहाँ रहेंगे; तो जो समाचार तुम लोगों को मिले उसे मेरे पास उन्हीं के हाथ भेजा करना।” ३७ अतः दाऊद का मित्र, हूँसी, नगर को गया, और अबशालोम भी यस्तलेम में पहुँच गया।

१६ दाऊद चोटी पर से थोड़ी दूर बढ़ गया था, कि मरीबोशेत का कर्मचारी सीबा एक जोड़ी, जीन बांधे हुए गदहों पर दो सौ रोटी, किशमिश की एक सौ टिकियाँ, धूपकाल के फल की एक सौ टिकियाँ, और कृषी भर दाखमधु, लादे हुए उससे आ मिला। १७ राजा ने सीबा से पछा, “इन्से तेरा क्या प्रयोजन है?” सीबा ने कहा, “गदहे तो राजा के घराने की सवारी के लिये हैं, और रोटी और धूपकाल के फल जबानों के खाने के लिये हैं, और दाखमधु इसलिए है कि जो कोई जंगल में थक जाए वह उसे पीए।” १८ राजा ने पछा, “फिर तेरे स्वामी का बेटा कहाँ है?” सीबा ने राजा से कहा, “वह तो यह कहकर यस्तलेम में रह गया, कि अब इस्माइल का घराना मुझे मेरे पिता का राज्य फेर देगा।” १९ राजा ने सीबा से कहा, “जो कुछ मरीबोशेत का था वह सब तुझे मिल गया।” सीबा ने कहा, “प्रणाम; हे मेरे प्रभु, हे राजा, मुझ पर तैर अनुग्रह की दृष्टि बनी रहे।” २० जब दाऊद राजा बहरीम तक पहुँचा, तब शाऊल का एक कटुम्बी वहाँ से निकला, वह गेरा का पुत्र शिमी था; और वह कोसता हुआ चला आया। २१ वह दाऊद पर, और दाऊद राजा के सब कर्मचारियों पर पथर फेंकने लगा; और शर्वीरों समेत सब लोग उसकी दाहिनी बाईं दोनों ओर थे। २२ शिमी कोसता हुआ यह बकता गया, “दूर हो खूनी, दूर हो ओछे, निकल जा, निकल जा! यहोवा ने तुझ से शाऊल के घराने के खन का पूरा बदला लिया है, जिसके स्थान पर तू राजा बना है, यहोवा ने राज्य को तेरे पुत्र अबशालोम के हाथ कर दिया है। और इसलिए कि तू खूनी है, तू अपनी बुराई में आप फैस गया।” २३ तब सस्याह के पुत्र अबीशी ने राजा से कहा, “यह मरा हुआ कुता मेरे प्रभु राजा को क्यों श्वाप देने पाए? मुझे उधर जाकर उसका सिर काटने दे।” २४ राजा ने कहा, “सस्याह के बेटों, मुझे तुम से क्या काम? वह जो कोसता है, और यहोवा ने जो उससे कहा है, कि दाऊद को श्वाप दे, तो उससे कौन पूछ सकता है, कि तूने ऐसा क्यों किया?” २५ फिर दाऊद ने अबीशी और अपने सब कर्मचारियों से कहा, “जब मेरा निज पुत्र ही मेरे प्राण का खोजी है, तो यह बिन्यामीनी अब ऐसा क्यों न करे? उसको रहने दो, और श्वाप देने दो; क्योंकि यहोवा ने उससे कहा है।” २६ कदाचित् यहोवा इस उपचर पर, जो मुझ पर हो रहा है, दृष्टि करके आज के श्वाप के बदले मुझे भला बदला दे।” २७ तब दाऊद अपने जनों समेत अपने

मार्ग चला गया, और शिमी उसके सामने के पहाड़ के किनारे पर से श्वाप देता, और उस पर पथर और धूत फेंकता हुआ चला गया। २८ राजा अपने संग के सब लोगों समेत अपने ठिकाने पर थका हुआ पहुँचा; और वहाँ विश्वाम किया। २९ अबशालोम सब इस्माइली लोगों समेत यस्तलेम को आया, और उसके संग अहीतोपेल भी आया। ३० जब दाऊद का मित्र ऐसी हूँसी अबशालोम के पास पहुँचा, तब हूँसी ने अबशालोम से कहा, “राजा चिरंजीव रहे!” ३१ अबशालोम ने उससे कहा, “क्या यह तेरी प्रीति है जो तू अपने मित्र से रखता है? तू अपने मित्र के संग क्यों नहीं गया?” ३२ हूँसी ने अबशालोम से कहा, “ऐसा नहीं; जिसकी यहोवा और वे लोग, क्या वरन् सब इस्माइली लोग चाहें, उसी का मैं हूँ, और उसी के संग मैं रहूँगा।” ३३ और फिर मैं किसकी सेवा करूँ? क्या उसके पुत्र के सामने रहकर सेवा न करूँ? जैसा मैं तेरे पिता के सामने रहकर सेवा करता था, वैसा ही तेरे सामने रहकर सेवा करूँगा।” ३४ तब अबशालोम ने अहीतोपेल से कहा, “तुम लोग अपनी सम्मति दो, कि क्या करना चाहिये?” ३५ अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा, “जिन रखैलियों को तेरा पिता भवन की चौकरी करने को छोड़ गया, उनके पास तू जा; और जब सब इस्माइली यह सुनेंगे, कि अबशालोम का पिता उससे बिन करता है, तब तेरे सब संगी हियाव बैठेंगे।” ३६ अतः उसके लिये भवन की छत के ऊपर एक तम्ब खडा किया गया, और अबशालोम समस्त इस्माइल के देखते अपने पिता की रखैलों के पास गया। ३७ उन दिनों जो सम्मति अहीतोपेल देता था, वह ऐसी होती थी कि मानो कोई परमेश्वर का वचन पूछ लेता हो; अहीतोपेल चाहे दाऊद को चाहे अबशालोम को, जो-जो सम्मति देता वह ऐसी ही होती थी।

१७ फिर अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा, “मुझे बारह हजार पुस्त छाँटने दे, और मैं उठकर आज ही रात को दाऊद का पीछा करूँगा।” ३८ और जब वह थका-माँदा और निर्बल होगा, तब मैं उसे पकड़ूँगा, और डराऊँगा; और जितने लोग उसके साथ हैं सब भागेंगे। और मैं राजा ही को मास्हंगा, ३९ और मैं सब लोगों को तेरे पास लौटा लाऊँगा; जिस मनुष्य का तू खोजी है उसके मिलने से समस्त प्रजा का मिलना हो जाएगा, और समस्त प्रजा कुशल क्षेम से रहेगी।” ४० यह बात अबशालोम और सब इस्माइली पुरिनियों को उचित मालप मड़ी। ४१ फिर अबशालोम ने कहा, “ऐसी हूँसी को भी बुला ला, और जो वह करेगा हम उसे भी सुनें।” ४२ जब हूँसी अबशालोम के पास आया, तब अबशालोम ने उससे कहा, “अहीतोपेल ने तो इस प्रकार की बात कही है; क्या हम उसकी बात मानें कि नहीं? यदि नहीं, तो तू कह दे।” ४३ हूँसी ने अबशालोम से कहा, “जो सम्मति अहीतोपेल ने इस बार दी, वह अच्छी नहीं।” ४४ फिर हूँसी ने कहा, “तू तो अपने पिता और उसके जनों को जानता है कि वे शर्वीर हैं, और बच्चा छीनी हुई रीछिनी के समान कोधित होंगे। तेरा पिता योद्धा है; और अन्य लोगों के साथ रात नहीं बिताता। ४५ इस समय तो वह किसी गड़े, या किसी दूसरे स्थान में छिपा होगा। जब इसमें से पहले ही आक्रमण में कोई-कोई मारे जाएँ, तब इसके सब सुननेवाले कहने लगेंगे, ‘‘अबशालोम के पक्षवाले हार गए।’’ ४६ तब वीर का हृदय, जो सिंह का सा होता है, उसका भी साहस टूट जाएगा, समस्त इस्माइल जानता है कि तेरा पिता वीर है, और उसके संगी बड़े योद्धाएँ हैं। ४७ इसलिए मेरी सम्मति यह है कि दान से लेकर बेरेबा तक रहनेवाले समस्त इस्माइली तेरे पास समृद्ध टट के रेतकणों के समान इकट्ठे किए जाएँ, और तू आप ही युद्ध को जाए। ४८ और जब हम उसको किसी न किसी स्थान में जहाँ वह मिले जा पकड़ेंगे, तब जैसे ओस भूमि पर गिरती है वैसे ही हम उस पर टूट पड़ेंगे; तब न तो वह बचेगा, और न उसके संगियों में से कोई बचेगा। ४९ यदि वह किसी नगर में घुसा हो,

तो सब इमाएली उस नगर के पास रस्सियों ले आएँगे, और हम उसे नदी में खीचेंगे, यहाँ तक कि उसका एक छोटा सा पथर भी न रह जाएगा।” १४ तब अबशालोम और सब इमाएली पुरुषों ने कहा, “ऐसे की हड्डी की सम्मति अहीतोपेल की सम्मति से उत्तम है।” यहोवा ने तो अहीतोपेल की अच्छी सम्मति को निष्फल करने की ठानी थी, कि वह अबशालोम ही पर विपत्ति डाले। १५ तब हड्डी ने सादोक और इयातार याजकों से कहा, “अहीतोपेल ने तो अबशालोम और इमाएली पुरुषियों को इस-इस प्रकार की सम्मति दी; और मैंने इस-इस प्रकार की सम्मति दी है।” १६ इसलिए अब फुर्ती कर दाऊद के पास कहना भेजो, ‘‘आज रात जंगली घाट के पास न ठहरना, अवश्य पार ही हो जाना; ऐसा न हो कि राजा और जितने लोग उसके संग हों, सब नष्ट हो जाएँ।” १७ योनातान और अहीमास एनरोगेल के पास ठहरे रहे; और एक दासी जाकर उन्हें सदेशा दे आती थी, और वे जाकर राजा दाऊद को सदेशा देते थे; क्योंकि वे किसी के देखते नगर में नहीं जा सकते थे। १८ एक लड़के ने उन्हें देखकर अबशालोम को बताया; परन्तु वे दोनों फुर्ती से चले गए, और एक बहरीमवासी मनुष्य के घर पहुँचकर जिसके आँगन में कुआँ था उसमें उत्तर गए। १९ तब उसकी झीं ने कपड़ा लेकर कुएँ के मुँह पर बिछाया, और उसके ऊपर दला हुआ अन्न फैला दिया; इसलिए कुछ मालाम न पड़ा। २० तब अबशालोम के सेवक उस घर में उस झीं के पास जाकर कहने लगे, “अहीमास और योनातान कहाँ हैं?” तब झीं ने उनसे कहा, “वे तो उस घोटी नदी के पार गए।” तब उन्होंने उन्हें ढूँढ़ा, और न पाकर यस्शलोम को लौटे। २१ जब वे चले गए, तब ये कुएँ में से निकले, और जाकर दाऊद राजा को समाचार दिया; और दाऊद से कहा, “तुम लोग चलो, फुर्ती करके नदी के पार हो जाओ; क्योंकि अहीतोपेल ने तुम्हारी हानि की ऐसी-ऐसी सम्मति दी है।” २२ तब दाऊद अपने सब संगियों समेत उठकर यरदन पार हो गया; और पौ फटने तक उन्हें से एक भी न रह गया जो यरदन के पार न हो गया हो। २३ जब अहीतोपेल ने देखा कि मेरी सम्मति के अनुसार काम नहीं हुआ, तब उसने अपने गदहे पर काठी कर्ती, और अपने नगर में जाकर अपने घर में गया। और अपने घराने के विषय जो-जो आज्ञा देनी थी वह देकर आपने को फांसी लगा ली; और वह मर गया, और उसके पिता के कब्रिस्तान में उसे मिट्टी दे दी गई। २४ तब दाऊद महनैम में पहुँचा। और अबशालोम सब इमाएली पुरुषों समेत यरदन के पार गया। २५ अबशालोम ने अमासा को योआब के स्थान पर प्रधान सेनापति ठहराया। यह अमासा एक इमाएली पुरुष का पुत्र था जिसका नाम यित्रो था, और वह योआब की माता, सस्याह की बहन, अबीगैल नामक नाहाश की बेटी के संग सोया था। २६ और इमाएलियों ने और अबशालोम ने गिलाद देश में छावनी डाली २७ जब दाऊद महनैम में आया, तब अमोनियों के रखबाह के निवासी नाहाश का पुत्र शोबी, और लोदबरवासी अम्मीएल का पुत्र माकीर, और रोगलीमवासी गिलादी बर्जिल्लै, २८ चारपाइयाँ, तसले मिट्टी के बर्तन, गेहूँ, जौ, मैदा, लोबिया, मसूर, भूमे चरे, २९ मधु, मक्खबन, भेड़-बकरियाँ, और गाय के दूधी का पनीर, दाऊद और उसके संगियों के खाने को यह सोचकर ले आए, “जंगल में वे लोग भूखे प्यासे और थके-मौंदे होंगे।”

१८ तब दाऊद ने अपने संग के लोगों की गिनती ली, और उन पर सहस्रपति और शतपति ठहराए। १९ फिर दाऊद ने लोगों की एक तिहाई योआब के, और एक तिहाई सस्याह के पुत्र योआब के भाई अबीशै के, और एक तिहाई गती इतै के, अधिकार में करके युद्ध में भेज दिया। फिर राजा ने लोगों से कहा, “मैं भी अवश्य तुम्हरे साथ चलूँगा।” २० लोगों ने कहा, “तू जाने न पाएगा। क्योंकि चाहे हम भाग जाएँ, तो भी वे हमारी चिन्ता न करेंगे। वरन्

चाहे हम में से आधे मारे भी जाएँ, तो भी वे हमारी चिन्ता न करेंगे। परन्तु तू हमारे जैसे दस हजार पुरुषों के बराबर हैं, इसलिए अच्छा यह है कि तू नगर में से हमारी सहायता करने को तैयार रहे।” २१ राजा ने उनसे कहा, “जो कुछ तुहें भाए वही मैं करूँगा।” इसलिए राजा फाटक की एक ओर खड़ा रहा, और सब लोग सौ-सौ, और हजार, हजार करके निकलने लगे। २२ राजा ने योआब, अबीशै, और इतै को आज्ञा दी, “मैंने निमित्त उस जवान, अर्थात् अबशालोम से कोमलता करना।” यह आज्ञा राजा ने अबशालोम के विषय सब प्रधानों को सब लोगों के सुनाते हुए दी। २३ अतः लोग इमाएल का सामना करने को मैटान में निकले; और ऐसे नामक वन में युद्ध हुआ। २४ वहाँ इमाएली लोग दाऊद के जनों से हार गए, और उस दिन ऐसा बडा संहार हुआ कि बीस हजार मारे गए, युद्ध उस समस्त देश में फैल गया; और उस दिन जितने लोग तलवार से मारे गए, उनसे भी अधिक वन के कारण मर गए। २५ संयोग से अबशालोम और दाऊद के जनों की भेट हो गई। अबशालोम एक खच्चर पर चढ़ा हुआ जा रहा था, कि खच्चर एक बड़े बांज वृक्ष की धनी डालियों के नीचे से गया, और उसका सिर उस बांज वृक्ष में अटक गया, और वह अधर में लटका रह गया, और उसका खच्चर निकल गया। २६ इसको देखकर किसी मनुष्य ने योआब को बताया, “मैंने अबशालोम को बांज वृक्ष में टॉंगा हुआ देखा।” २७ योआब ने बतानेवाले से कहा, “तूने यह देखा! फिर क्यों उसे वही मारकर भूमि पर न गिरा दिया? तो मैं तुझे दस टुकड़े चाँदी और एक कमरबन्ध देता।” २८ उस मनुष्य ने योआब से कहा, “चाहे मेरे हाथ में हजार टुकड़े चाँदी तैलकर दिए जाएँ, तो भी राजकुमार के विस्फू हाथ न बढ़ाऊँगा; क्योंकि हम लोगों के सुनाते राजा ने तुझे और अबीशै और इतै को यह आज्ञा दी, ‘तुम मैं से कोई क्यों न हो उस जवान अर्थात् अबशालोम को न छू।’” २९ यदि मैं धोखा देकर उसका प्राण लेता, तो तू आप मेरा विरोधी हो जाता, क्योंकि राजा से कोई बात छिपी नहीं रहती।” ३० योआब ने कहा, “मैं तेरे संग ऐसे ही ठहरा नहीं रह सकता!” इसलिए उसने तीन लकड़ी हाथ में लेकर अबशालोम के हृदय में, जो बांज वृक्ष में ज़िवित ही लटका था, छेड़ डाला। ३१ तब योआब के दस हथियार ढोनेवाले जवानों ने अबशालोम को धेर के ऐसा मारा कि वह मर गया। ३२ फिर योआब ने नरसिंगा फूँका, और लोग इमाएल का पीछा करने से लैटे; क्योंकि योआब प्रजा को बचाना चाहता था। ३३ तब लोगों ने अबशालोम को उतार के उस वन के एक बड़े गड्ढे में डाल दिया, और उस पर पत्थरों का एक बहुत बड़ा ढेर लगा दिया; और सब इमाएली अपने-अपने ढेरों को भाग गए। ३४ अपने जीते जी अबशालोम ने यह सोचकर कि मेरे नाम का स्मरण करानेवाला कोई पुत्र मेरा नहीं है, अपने लिये वह स्तम्भ खड़ा कराया था जो राजा की तराई में है; और स्तम्भ का अपना ही नाम रखा, जो आज के दिन तक अबशालोम का स्तम्भ कहलाता है। ३५ तब सादोक के पुत्र अहीमास ने कहा, “मुझे दौड़कर राजा को यह समाचार देने दे, कि यहोवा ने न्याय करके तुझे तेरे शरूओं के हाथ से बचाया है।” ३६ योआब ने उनसे कहा, “तू आज के दिन समाचार न दे; दूसरे दिन समाचार देने पाएगा, परन्तु आज समाचार न दे, इसलिए कि राजकुमार मर गया है।” ३७ तब योआब ने एक कूशी से कहा, “जो कुछ तूने देखा है वह जाकर राजा को बता दे।” तो वह कूशी योआब को दण्डवत करके दौड़ गया। ३८ फिर सादोक के पुत्र अहीमास ने दूसी बार योआब से कहा, “जो हो सो हो, परन्तु मुझे दौड़ जाने दे।” योआब ने कहा, “हे मेरे बेटे, तेरे समाचार का कुछ बदला न मिलेगा, फिर तू क्यों दौड़ जाना चाहता है?” ३९ उसने यह कहा, “जो हो सो हो, परन्तु मुझे दौड़ जाने दे।” उसने उनसे कहा, “दौड़।” तब अहीमास दौड़ा, और तराई से होकर कूशी के आगे बढ़ गया। ४० दाऊद तो दो फाटकों

के बीच बैठा था, कि पहसुआ जो फाटक की छत से होकर शहरपनाह पर चढ़ गया था, उसने अँखें उठाकर क्या देखा, कि एक मनुष्य अकेला दौड़ा आता है। २५ जब पहसु ने पुकारके राजा को यह बता दिया, तब राजा ने कहा, “यदि अकेला आता हो, तो सन्देशा लाता होगा।” वह दौड़ते-दौड़ते निकल आया। २६ फिर पहसु ने एक और मनुष्य को दौड़ते हुए देख फाटक के रखवाले को पुकारके कहा, “सुन, एक और मनुष्य अकेला दौड़ा आता है।” राजा ने कहा, “वह भी सन्देशा लाता होगा।” २७ पहसु ने कहा, “मुझे तो ऐसा देख पड़ता है कि पहले का दौड़ना सादोक के पुत्र अहीमास का सा है।” राजा ने कहा, “वह तो भला मनुष्य है, तो भला सन्देश लाता होगा।” २८ तब अहीमास ने पुकारके राजा से कहा, “सब कुशल है।” फिर उसने भूमि पर मूँह के बल पर राजा को दण्डवत् करके कहा, “तेरा परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिसने मेरे प्रभु राजा के विस्तु हाथ उठानेवाले मनुष्यों को तेरे वश में कर दिया है।” २९ राजा ने पछा, “क्या वह जवान अबशालोम सुकशल है?” अहीमास ने कहा, “जब योआब ने राजा के कर्मचारी को और तेरे दास को भेज दिया, तब मुझे बड़ी भीड़ देख पड़ी, परन्तु मातृपूर्ण न हुआ कि क्या हुआ था।” ३० राजा ने कहा; “हटकर यहीं खड़ा रह।” और वह हटकर खड़ा रहा। ३१ तब कृशी भी आ गया; और कृशी कहने लगा, “मेरे प्रभु राजा के लिये समाचार है। यहोवा ने आज न्याय करके तुझे उन सभी के हाथ से बचाया है जो तेरे विस्तु उठे थे।” ३२ राजा ने कृशी से पूछा, “क्या वह जवान अथीत अबशालोम कुशल से है?” कृशी ने कहा, “मेरे प्रभु राजा के शरू, और जिसने तेरी हानि के लिये उठे हैं, उनकी दशा उस जवान की सी हो।” ३३ तब राजा बहुत घबराया, और फाटक के ऊपर की अटारी पर रोता हुआ चढ़ने लगा, और चलते-चलते यह कहता गया, “हाय मेरे बेटे अबशालोम! मेरे बेटे, हाय! मेरे बेटे अबशालोम! भला होता कि मैं आप तेरे बदले मरता, हाय! अबशालोम! मेरे बेटे, मेरे बेटे!”

१९ तब योआब को यह समाचार मिला, “राजा अबशालोम के लिये रो रहा है और विलाप कर रहा है।” २० इसलिए उस दिन की विजय सब लोगों की समझ में विलाप ही का कारण बन गई; क्योंकि लोगों ने उस दिन सुना, कि राजा अपने बेटे के लिये खेदित है। २१ इसलिए उस दिन लोग ऐसा मूँह चुराकर नगर में घुसे, जैसा लोग युद्ध से भाग आने से लज्जित होकर मूँह चुराते हैं। २२ और राजा मूँह धौंपै हुए चिल्ला चिल्लाकर पुकारता रहा, “हाय मेरे बेटे अबशालोम! हाय अबशालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!” २३ तब योआब घर में राजा के पास जाकर कहने लगा, “तेरे कर्मचारियों ने आज के दिन तेरा, और तेरे बेटे-बेटियों का और तेरी पतियों और रखेलों का प्राण तो बचाया है, परन्तु तेरे आज के दिन उन सभी का मूँह काला किया है; २४ इसलिए कि तू अपने बैरियों से प्रेम और अपने प्रेमियों से बैर रखता है। तेरे आज यह प्राप्त किया कि तुझे हाकिमों और कर्मचारियों की कुछ चिन्ता नहीं; वरन् मैंने आज जान लिया, कि यदि हम सब आज मारे जाते और अबशालोम जीवित रहता, तो तू बहुत प्रसन्न होता। २५ इसलिए अब उठकर बाहर जा, और अपने कर्मचारियों को शान्ति दे; नहीं तो मैं यहोवा की शपथ खाकर कहता हूँ, कि यदि तू बाहर न जाएगा, तो आज रात को एक मनुष्य भी तेरे संग न रहेगा; और तेरे बचपन से लेकर अब तक जितनी विपरिती तुझ पर पड़ी है उन सबसे यह विपरिती बड़ी होगी।” २६ तब राजा उठकर फाटक में जा बैठा। जब सब लोगों को यह बताया गया, कि राजा फाटक में बैठा है, तब सब लोग राजा के सामने आए। इस बीच इस्माइली अपने-अपने डेरे को भाग गए थे। २७ इस्माइल के सब गोत्रों के सब लोग आपस में यह कहकर झगड़ते थे, “राजा ने हमें हमारे शत्रुओं के हाथ से

बचाया था, और पलिशितियों के हाथ से उसी ने हमें छुड़ाया; परन्तु अब वह अबशालोम के डर के मारे देश छोड़कर भाग गया। २८ अबशालोम जिसको हमने अपना राजा होने को अभिषेक किया था, वह युद्ध में मर गया है। तो अब तुम क्यों चुप रहते? और राजा को लौटा ले आने की चर्चा क्यों नहीं करते?” २९ तब राजा दाऊद ने सादोक और ऐब्यातार याजकों के पास कहला भेजा, “यहदी पुरियों से कहो, ‘तुम लोग राजा को भवन पहुँचाने के लिये सबसे पीछे क्यों होते हो जबकि समस्त इस्माइल की बातचीत राजा के सुनने में आई है, कि उसको भवन में पहुँचाएँ। ३० तुम लोग तो मेरे भाई, वरन् मेरी ही हड्डी और माँस हो; तो तुम राजा को लौटाने में सब के पीछे क्यों होते हो?’” ३१ फिर अमासा से यह कहो, ‘क्या तू मेरी हड्डी और माँस नहीं होते हो?’ और यदि तू योआब के स्थान पर सदा के लिये सनापति न ठहरे, तो परमेश्वर मुझसे वैसा ही बरन् उससे भी अधिक करो।” ३२ इस प्रकार उसने सब यहदी पुस्त्रों के मन ऐसे अपनी ओर खीची लिया कि मानो एक ही पुष्ट था; और उहोंने राजा के पास कहला भेजा, “तू अपने सब कर्मचारियों को संग लेकर लौट आ।” ३३ तब राजा लौटकर यरदन तक आ गया; और यहदी लोग गिलगाल तक गए कि उससे मिलकर उसे यरदन पार ले आएँ। ३४ यहदियों के संग गेरा का पुत्र बिन्यामीनी शिमी भी जो बहीम का निवासी था फूर्ती करके राजा दाऊद से भेट करने को गया; ३५ उसके संग हजार बिन्यामीनी पुस्त्र थे और ऐश शाऊल के घराने का कर्मचारी सीबा अपने पन्द्रह पुत्रों और बीस दासों समेत था, और वे राजा के सामने यरदन के पार पैदल उत्तर गए। ३६ और एक बेड़ा राजा के परिवार को पार ले आने, और जिस काम में वह उसे लाना चाहे उसी में लगाने के लिये पार गया। जब राजा यरदन पार जाने पर था, तब गेरा का पुत्र शिमी उसके पाँवों पर गिरकर, ३७ राजा से कहने लगा, “मेरा प्रभु मेरे दोष का लेखा न ले, और जिस दिन मेरा प्रभु राजा यस्तलेम को छोड़ आया, उस दिन तेरे दास ने जो कुटिल काम किया, उसे स्मरण न करे और न राजा उसे अपने ध्यान में रखे। ३८ क्योंकि तेरा दास जानता है कि मैंने पाप किया; देख, आज अपने प्रभु राजा से भेट करने के लिये यस्तु के समस्त घराने में से मैं ही पहले आया हूँ।” ३९ तब सस्त्याह के पुत्र अबीशी ने कहा, “शिमी ने जो यहोवा के अभिषिक्त को शाप दिया था, इस कारण क्या उसका वध करना न चाहिये?” ४० दाऊद ने कहा, “हे सस्त्याह के बेटों, मुझे तुम से क्या काम, कि तुम आज मेरे विरोधी ठहरे हो? आज क्या इस्माइल में किसी को प्राणदण्ड मिलेगा? क्या मैं नहीं जानता कि आज मैं इस्माइल का राजा हुआ हूँ?” ४१ फिर राजा ने शिमी से कहा, “तुझे प्राणदण्ड न मिलेगा।” और राजा ने उससे शपथ भी खाइ। ४२ तब शाऊल का पोता मपीबोशेत राजा से भेट करने को आया; उसने राजा के चले जाने के दिन से उसके कुशल क्षेम से फिर अपने के दिन तक न अपने पाँवों के नाखून काटे, और न अपनी दाढ़ी बनवाई, और न अपने कपड़े धुलवाए थे। ४३ जब यस्तलेमी राजा से मिलने को गए, तब राजा ने उससे पूछा, “मैं पिलोबोशेत, तू मेरे संग क्यों नहीं गया था?” ४४ उसने कहा, “हे मेरे प्रभु, हे राजा, मेरे कर्मचारी ने मुझे धोखा दिया था; तेरा दास जो विकलांग है; इसलिए तेरे दास ने सोचा, ‘मैं गदहे पर काठी कसवाकर उस पर चढ़ राजा के साथ चला जाऊँगा।’” ४५ और मेरे कर्मचारी ने मेरे प्रभु राजा के सामने मेरी चुगली की है। परन्तु मेरा प्रभु राजा परमेश्वर के दूत के समान है, और जो कुछ तुझे भाए वही कर। ४६ मेरे पिता का समस्त घराने तेरी ओर से प्राणदण्ड के योग्य था; परन्तु तूने अपने दास को अपनी मेज पर खानेवालों में दिना है। मुझे क्या हक है कि मैं राजा की दुहाई दूँ?” ४७ राजा ने उससे कहा, “तू अपनी बात की चर्चा क्यों करता रहता है? मेरी आज्ञा यह है, कि उस भूमि को तुम और सीबा दोनों आपस में बाँट लो।” ४८ मपीबोशेत ने राजा से कहा, “मेरे प्रभु

राजा जो कुशल क्षेम से अपने घर आया है, इसलिए सीबा ही सब कुछ ले ले।” ३१ तब गिलादी बर्जिल्लै रोगलीम से आया, और राजा के साथ यरदन पार गया, कि उसको यरदन के पार पहुँचाए। ३२ बर्जिल्लै तो वृद्ध पुष्प था, अर्थात् अस्त्री वर्ष की आयु का था जब तक राजा महनैम में रहता था तब तक वह उसका पालन-पोषण करता रहा; क्योंकि वह बहुत धनी था। ३३ तब राजा ने बर्जिल्लै से कहा, “मेरे संग पार चल, और मैं तुझे यस्शलेम में अपने पास रखकर तेरा पालन-पोषण करौँगा।” ३४ बर्जिल्लै ने राजा से कहा, “मुझे कितने दिन जीवित रहना है, कि मैं राजा के संग यस्शलेम को जाऊँ? ३५ आज मैं अस्त्री वर्ष का हूँ; क्या मैं भले बुरे का विवेक कर सकता हूँ? क्या तेरा दास जो कुछ खाता पीता है उसका स्वाद पहचान सकता है? क्या मुझे गायकों या गायिकाओं का शब्द अब सुन पड़ता है? तेरा दास अब अपने स्वामी राजा के लिये क्यों बोझ का कारण हो? ३६ तेरा दास राजा के संग यरदन पार ही तक जाएगा। राजा इसका ऐसा बड़ा बदला मुझे क्यों दे? ३७ अपने दास को लौटने दे, कि मैं अपने ही नगर में अपने माता पिता के कब्रिस्तान के पास मरूँ। परन्तु तेरा दास किम्हाम उपस्थित है; मेरे प्रभु राजा के संग वह पार जाएँ; और जैसा तुझे भाएँ वैसा ही उससे व्यवहार करना।” ३८ राजा ने कहा, “हाँ, किम्हाम मैं संग पार चलेगा, और जैसा तुझे भाएँ वैसा ही मैं उससे व्यवहार करौँगा वरन् जो कुछ तुम्हेसे चाहेगा वह मैं तेरे लिये करौँगा।” ३९ तब सब लोग यरदन पार गए, और राजा भी पार हुआ; तब राजा ने बर्जिल्लै को चूकर आशीर्वद दिया, और वह अपने स्थान को लौट गया। ४० तब राजा गिलाल की ओर पार गया, और उसके संग किम्हाम पार हुआ; और सब यहदी लोगों ने और आधे इस्माएली लोगों ने राजा को पार पहुँचाया। ४१ तब सब इस्माएली पुष्प राजा के पास आए, और राजा से कहने लगे, “क्या कारण है कि हमारे यहदी भाई तुझे चोरी से ले आए हैं?” ४२ सब यहदी पुरुषों ने इस्माएली पुरुषों को उत्तर दिया, “कारण यह है कि राजा हमारे गोत्र का है। तो तुम लोग इस बात से क्यों स्ठ गए हो? क्या हमने राजा का दिया हुआ कुछ खाया है? या उसने हमें कुछ दान दिया है?” ४३ इस्माएली पुरुषों ने यहदी पुरुषों को उत्तर दिया, “राजा में दस अंश हमारे हैं; और दाऊद में हमारा भाग तुम्हारे भाग से बड़ा है। तो फिर तुम ने हमें क्यों तुच्छ जाना? क्या अपने राजा के लौटा ले आने की चर्चा पहले हम ही ने न की थी?” और यहदी पुरुषों ने इस्माएली पुरुषों से अधिक कड़ी बातें कहीं।

२० वहाँ संयोग से शेबा नामक एक बिन्यामीनी था, वह ओछा पुष्प बिक्री का पुत्र था; वह नरसिंगा फूँककर कहने लगा, “दाऊद में हमारा कुछ अंश नहीं, और न यिसी के पुत्र में हमारा कोई भाग है; ही इस्माएलियों, अपने-अपने डेरे को चले जाओ!” १ इसलिए सब इस्माएली पुष्प दाऊद के पीछे चलना छोड़कर बिक्री के पुत्र शेबा के पीछे हो लिए; परन्तु सब यहदी पुष्प यरदन से यस्शलेम तक अपने राजा के संग लगे रहे। २ तब दाऊद यस्शलेम को अपने भवन में आया; और राजा ने उन दस रखेलों को, जिन्हें वह भवन की चौकसी करने को छोड़ गया था, अलग एक घर में रखा, और उनका पालन-पोषण करता रहा, परन्तु उनसे सहवास न किया। इसलिए वे अपनी-अपनी मृत्यु के दिन तक विधवापन की सी दशा में जीवित ही बन्द रहीं। ३ तब राजा ने अमासा से कहा, “यहदी पुरुषों को तीन दिन के भीतर मेरे पास बुला ला, और तभी यहाँ उपस्थित रहना।” ४ तब अमासा यहदियों को बुलाने गया; परन्तु उसके ठहराए हुए समय से अधिक रह गया। ५ तब दाऊद ने अबीसै से कहा, “अब बिक्री का पुत्र शेबा अबशालोम से भी हमारी अधिक हानि करेगा; इसलिए तू अपने प्रभु के लोगों को लेकर उसका पीछा कर, ऐसा

न हो कि वह गढ़वाले नगर पाकर हमारी दृष्टि से छिप जाए।” ६ तब योआब के जन, और केरेती और पलेती लोग, और सब शूरवीर उसके पीछे हो लिए; और बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने को यस्शलेम से निकलो। ७ वे मिलोन में उस भारी पथर के पास पहुँचे ही थे, कि अमासा उनसे आ मिला। योआब तो योद्धा का वस्त्र फेटे से करे हुए था, और उस फेटे में एक तलवार उसकी कमर पर अपनी यान में बंधी हुई थी; और जब वह चला, तब वह निकलकर गिर पड़ी। ८ तो योआब ने अमासा से पछा, “हे मेरे भाई!, क्या तू कुशल से है?” तब योआब ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर अमासा को चूमने के लिये उम्मीदी दाढ़ी पकड़ी। ९ परन्तु अमासा ने उस तलवार की कुछ चिन्ना न की जो योआब के हाथ में थी; और उसने उसे अमासा के पेट में भोक दी, जिससे उसकी अंतिमियाँ निकलकर धरती पर गिर पड़ी, और उसने उसको दूसरी बार न मारा; और वह मर गया। तब योआब और उसका भाई अबीसै बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने को चले। १० और उसके पास योआब का एक जवान खड़ा होकर कहने लगा, “जो कोई योआब के पक्ष और दाऊद की ओर का हो वह योआब के पीछे हो ले।” ११ अमासा सड़क के मध्य अपने लह में लोट रहा था। जब उस मनुष्य ने देखा कि सब लोग खड़े हो गए हैं, तब अमासा को सड़क पर से मैदान में उठा ले गया, क्योंकि देखा कि जितने उसके पास आते हैं वे खड़े हो जाते हैं, तब उसने उसके ऊपर एक कपड़ा डाल दिया। १२ उसके सड़क पर से सरकाए जाने पर, सब लोग बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने को योआब के पीछे हो लिए। १३ शेबा सब इस्माएली गोत्रों में होकर आबेल और बेतमाका और बैरियों के देश तक पहुँचा; और वे भी इकट्ठे होकर उसके पीछे हो लिए। १४ तब योआब के जनों ने उसको आबेल-वेतमाका में घेर लिया; और नगर के सामने एक टीला खड़ा किया कि वह शहरपनाह से सट गया; और योआब के संग के सब लोग शहरपनाह को गिराने के लिये धक्का देने लगे। १५ तब एक बुद्धिमान झीं ने नगर में से पुकारा, “सुनो! सुनो! योआब से कहो, कि यहाँ आए, ताकि मैं उसके कुछ बातें करूँ।” १६ जब योआब उसके निकट गया, तब झीं ने पछा, “क्या तू योआब है?” उसने कहा, “हाँ, मैं वही हूँ।” फिर उसने उससे कहा, “अपनी दासी के बचन सुन।” उसने कहा, “मैं सुन रहा हूँ।” १७ वह कहने लगा, “प्राचीनकाल में लोग कहा करते थे, ‘आबेल में पछा जाए,’ और इस रीति झगड़े को निपटा देते थे। १८ मैं तो मेल मिलापवाले और विश्वासयोग इस्माएलियों में से हूँ; परन्तु तू एक प्रधान नगर नष्ट करने का यत्र करता है; तू यहोवा के भाग को क्यों निगल जाएगा?” १९ योआब ने उत्तर देकर कहा, “यह मुझसे दूर हो, दूर, कि मैं निगल जाऊँ या नष्ट करूँ। २० बात ऐसी नहीं है। शेबा नामक ऐसे के पहाड़ी देश का एक पुस्त जो बिक्री का पुत्र है, उसने दाऊद राजा के विस्तु हाथ उठाया है; अतः तुम लोग केवल उसी को सौंप दो, तब मैं नगर को छोड़कर चला जाऊँगा।” झीं ने योआब से कहा, “उसका सिर शहरपनाह पर से तेरे पास फेंक दिया जाएगा।” २१ तब झीं अपनी बुद्धिमानी से सब लोगों के पास गई। तब उन्होंने बिक्री के पुत्र शेबा का सिर काटकर योआब के पास फेंक दिया। तब योआब ने नरसिंगा फूँका, और सब लोग नगर के पास से अलग-अलग होकर अपने-अपने डेरे को गए और योआब यस्शलेम के राजा के पास लौट गया। २२ योआब तो समस्त इस्माएली सेना के ऊपर प्रधान रहा; और यहोवादा का पुत्र बनायाह करेतियों और पलेतियों के ऊपर था; २३ और अदोराम बेगरों के ऊपर था; और अबीलद का पुत्र यहोशेपात इतिहास का लेखक था; २४ और शवा मंत्री था; और सादोक और एल्यातार याजक थे; २५ और याईरी ईरा भी दाऊद का एक मंत्री था।

२१ दाऊद के दिनों में लगातार तीन वर्ष तक अकाल पड़ा; तो दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। यहोवा ने कहा, “यह शाऊल और उसके खनी घराने के कारण हुआ, क्योंकि उसने गिबोनियों को मरवा डाला था।” ३ तब राजा ने गिबोनियों को बुलाकर उनसे बताएं की। गिबोनी लोग तो इसाएलियों में से नहीं थे, वे बचे हुए एमोरियों में से थे; और इसाएलियों ने उनके साथ शपथ खाई थी, परन्तु शाऊल को जो इसाएलियों और यहदियों के लिये जलन हुई थी, इससे उन्हें मार डालने के लिये यत्र किया था। ४ तब दाऊद ने गिबोनियों से पूछा, “मैं तुम्हारे लिये क्या करस्तँ? और क्या करके ऐसा प्रायश्चित्त करस्तँ, कि तुम यहोवा के निज भाग को आपीवाद दे सको?” ५ गिबोनियों ने उनसे कहा, “हमारे और शाऊल या उसके घराने के मध्य स्थे पैसे का कुछ झगड़ा नहीं; और न हमारा काम है कि किसी इसाएली को मार डालें।” ६ उन्होंने राजा से कहा, “जो कुछ तुम कहो, वही मैं तुम्हारे लिये कहस्तँ।” ७ उन्होंने राजा से कहा, “जिस पुष्प ने हमको नष्ट कर दिया, और हमारे विस्तु ऐसी युक्ति की कि हमारा ऐसा सत्यानाश हो जाएँ, कि इसाएल के देश में अगे को न रह सकें, ८ उसके बंश के सात जन हमें सौंप दिए जाएँ, और हम उन्हें यहोवा के लिये यहोवा के चुने हुए शाऊल की गिबा नामक बस्ती में फार्सी देंगे।” राजा ने कहा, “मैं उनको सौंप दूँगा।” ९ परन्तु दाऊद ने और शाऊल के पुत्र योनातान ने आपस में यहोवा की शपथ खाई थी, इस कारण राजा ने योनातान के पुत्र मपीबोशेत को जो शाऊल का पोता था बचा रखा। १० परन्तु अमर्मी और मपीबोशेत नामक, अर्या की बेटी रिस्पा के दोनों पुत्र जो शाऊल से उत्पन्न हुए थे; और शाऊल की बेटी मीकल के पाँचों बेटे, जो वह महोलवासी बर्जिल्से के पुत्र अट्रीएल की ओर से थे, इनको राजा ने पकड़वाकर ११ गिबोनियों के हाथ सौंप दिया, और उन्होंने उन्हें पहाड़ पर यहोवा के सामने फांसी दी, और सातों एक साथ नष्ट हुए। उनका मार डाला जाना तो कटनी के पहले दिनों में, अर्थात् जै की कटनी के आरम्भ में हुआ। १२ तब अर्या की बेटी रिस्पा ने टाट लेकर, कटनी के आरम्भ से लेकर जब तक आकाश से उन पर अत्यन्त वर्षा न हुई, तब तक चट्टान पर उसे अपने नीचे बिछाये रही; और न तो दिन में आकाश के पक्षियों को, और न रात में जंगली पशुओं को उन्हें छूने दिया। १३ जब अर्या की बेटी शाऊल की रखैल रिस्पा के इस काम का समाचार दाऊद को मिला, १४ तब दाऊद ने जाकर शाऊल और उसके पुत्र योनातान की हड्डियों को गिलादी याबेश के लोगों से ले लिया, जिन्होंने उन्हें बेतशान के उस चौक से चुरा लिया था, जहाँ पलिशियों ने उन्हें उस दिन टांगा था, जब उन्होंने शाऊल को गिलबो पहाड़ पर मार डाला था; १५ वह वहाँ से शाऊल और उसके पुत्र योनातान की हड्डियों को ले आया; और फांसी पाए हुओं की हड्डीयाँ भी इकट्ठी की गईं। १६ और शाऊल और उसके पुत्र योनातान की हड्डियाँ बिन्यामीन के देश के जेला में शाऊल के पिता कीश के कबिस्तान में गाड़ी गईं, और दाऊद की सब आज्ञाओं के अनुसार काम हुआ। उसके बाद परमेश्वर ने देश के लिये प्रार्थना सुन ली। १७ पलिशियों ने इसाएल से फिर युद्ध किया, और दाऊद अपने जनों समेत जाकर पलिशियों से लड़ने लगा; परन्तु दाऊद थक गया। १८ तब यिशबोबोनोब, जो रापा के बंश का था, और उसके भाले का फल तौल में तीन सौ शेकल पीतल का था, और वह नई तलवार बांधे हुए था, उसने दाऊद को मारने का ठान लिया था। १९ परन्तु सस्याह के पुत्र अबीशै ने दाऊद की सहायता करके उस पलिशियों को ऐसा मारा कि वह मर गया। तब दाऊद के जनों ने शपथ खाकर उससे कहा, “तू फिर हमारे संग युद्ध को जाने न पाएगा, ऐसा न हो कि तेरे मने से इसाएल का दिया बुझ जाए।” २० इसके बाद पलिशियों के साथ गोब में फिर युद्ध हुआ; उस समय हृशाई सिल्बके ने रपाईवशी सप को मारा। २१ गोब में पलिशियों के साथ फिर युद्ध हुआ; उसमें बैतलहमवासी यारयोरगीम के पुत्र एल्हनान ने गतवासी गोलियत को मार डाला, जिसके बर्छे की छड़ जुलाहे की डोंगी के समान थी। २२ फिर गत में युद्ध हुआ, और वहाँ बड़े डील-डैल वाला एक रपाईवशी पुष्प था, जिसके एक-एक हाथ पाँव में, छ: छ: उँगली, अर्थात् गिनती में चौबीस उँगलियाँ थीं। २३ जब उसने इसाएल को ललकारा, तब दाऊद के बाई शिमआह के पुत्र योनातान ने उसे मारा। २४ ये ही चार गत में उस रापा से उत्पन्न हुए थे; और वे दाऊद और उसके जनों से मार डाले गए।

२२ जिस समय यहोवा ने दाऊद को उसके सब शत्रुओं और शाऊल के हाथ से बचाया था, उस समय उसने यहोवा के लिये इस गीत के बचन गाएः २ उसने कहा, “यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़, मेरा छुड़ानेवाला, ३ मेरा चट्टानस्ती परमेश्वर है, जिसका मैं शरणागत हूँ, मेरी ढाल, मेरा बचानेवाला सींग, मेरा ऊँचा गढ़, और मेरा शरणस्थान है, है मेरे उद्गरकर्ता, त् उपदर्द से मेरा उद्गार किया करता है। ४ मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकास्तँगा, और मैं अपने शत्रुओं से बचाया जाऊँगा। ५ “मृत्यु के तरंगों ने तो मेरे चारों ओर धेरा डाला, नास्तिकपन की धाराओं ने मुझ को घबरा दिया था; ६ अधोलोक की रसियियों मेरे चारों ओर थी, मृत्यु के फंदे मेरे सामाने थे। (Sheol h7585) ७ अपने संकट में मैंने यहोवा को पुकारा; और अपने परमेश्वर के सम्मुख चिल्लाया। उसने मेरी बात को अपने मन्दिर में से सुन लिया, और मेरी दुहाई उसके कानों में पहुँची। ८ “तब पृथ्वी हिल गई और डोल उठी, और आकाश की नीरों काँपकर बहूत ही हिल गई, क्योंकि वह अति क्रोधित हुआ था। ९ उसके नथनों से धुआँ निकला, और उसके मुँह से आग निकलकर भस्म करने लगी; जिससे कोयले दहक उठे। १० और वह स्वर्ण को ज्वकाकर नीचे उतर आया; और उसके पाँबों तले धेर अंधकार छाया था। ११ वह कस्तुर पर सवार होकर उड़ा, और पवन के पंखों पर चढ़कर दिखाई दिया। १२ उसने अपने चारों ओर के अधियोरों को, मेघों के सम्म, और आकाश की काली घटाओं को अपना मण्डप बनाया। १३ उसके सम्मुख के तेज से, आग के कोयले दहक उठे। १४ यहोवा आकाश में से गरजा, और परमप्रधान ने अपनी वाणी सुनाई। १५ उसने तीर चला-चलाकर मेरे शत्रुओं को तितर-बितर कर दिया, और बिजली गिरा गिराकर उसको परास्त कर दिया। १६ तब समुद्र की थाह दिखाई देने लगी, और जगत की नीरें खुल गईं, यह तो यहोवा की डॉट से, और उसके नथनों की साँस की झोक से हुआ। १७ “उसने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया, और मुझे गहरे जल में से खीचकर बाहर निकाला। १८ उसने मुझे मेरे बलवन्त शत्रु से, और मेरे बैरियों से, जो मुझसे अधिक सामर्थी थे, मुझे छुड़ा लिया। १९ उन्होंने मेरी विपत्ति के दिन मेरा सामना तो किया; परन्तु यहोवा मेरा अश्रु था। २० उसने मुझे निकलकर चौड़े स्थान में पहुँचाया; उसने मुझ को छुड़ाया, क्योंकि वह मुझसे प्रसन्न था। २१ “यहोवा ने मुझसे मेरी धार्मिकता के अनुसार व्यवहार किया; मेरे कामों की शुद्धता के अनुसार उसने मुझे बदला दिया। २२ क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता रहा, और अपने परमेश्वर से मुँह मोड़कर दुश्मन बना। २३ उसके सब नियम तो मेरे सामने बने हैं, और मैं उसकी विधियों से हट न गया। २४ मैं उसके साथ खरा बना रहा, और अर्थम से अपने को बचाए रहा, जिसमें मेरे फँसने का डर था। २५ इसलिए यहोवा ने मुझे मेरी धार्मिकता के अनुसार बदला दिया, मेरी उस शुद्धता के अनुसार जिसे वह देखता था। २६ “विक्षापमयोग्य के साथ त् अपने को विक्षापमयोग्य दिखाता; खेरे पुष्प के साथ त् अपने को खरा दिखाता है; २७ शुद्ध के साथ त् अपने को शुद्ध दिखाता; और टेढ़े के साथ त् तिरछा बनता है। २८ और दीन लोगों को तो त् बचाता है, परन्तु अभिमानियों पर दृष्टि

करके उन्हें नीचा करता है। ३८ हे यहोवा, तू ही मेरा दीपक है, और यहोवा मेरे अधिथारे को दूर करके उजियाला कर देता है। ३९ तेरी सहायता से मैं दल पर धावा करता, अपने परमेश्वर की सहायता से मैं शहरपानाह को फाँद जाता हूँ। ४० परमेश्वर की गति खरी है; यहोवा का वचन तात्या हुआ है; वह अपने सब शरणागतों की ढाल है। ४१ “यहोवा को छोड़ क्या कोई परमेश्वर है? हमारे परमेश्वर को छोड़ क्या और कोई चट्टान है?” ४२ यह वही परमेश्वर है, जो मेरा अति दृढ़ किला है, वह खेरे मनुज्य को अपने मार्ग में लिए चलता है। ४३ वह मेरे पैरों को हरिनी के समान बना देता है, और मुझे ऊँचे स्थानों पर खड़ा करता है, और मेरे पैर नहीं फिसले। ४४ मैंने अपने शत्रुओं का पीछा करके उनका सत्यानाश कर दिया, और जब तक उनका अन्त न किया तब तक न लौटा। ४५ मैंने उनका अन्त किया; और उन्हें ऐसा छेद डाला है कि वे उठ नहीं सकते; वरन् वे तो मेरे पाँवों के नीचे गिरे पड़े हैं। ४६ तेरे यदु के लिये मेरी कमर बलवन्त की; और मेरे विरोधियों को मैंने ही सामने परास्त कर दिया। ४७ और तेरे मेरे शत्रुओं की पीठ मुझे दिखाई, ताकि मैं अपने बैरियों को काट डालूँ। ४८ उन्होंने बाट तो जोही, परन्तु कोई बचानेवाला न मिला; उन्होंने यहोवा की भी बाट जोही, परन्तु उसने उनको कोई उत्तर न दिया। ४९ तब मैंने उनको कूट कृतकर भूमि की धूल के समान कर दिया, मैंने उन्हें सङ्कोचों और गती कृचों की कीचड़ के समान पटककर चारों ओर फैला दिया। ५० “फिर तेरे मुझे प्रजा के झगड़ों से छुड़ाकर अन्यजातियों का प्रथान होने के लिये मेरी रक्षा की, जिन लोगों को मैं न जानता था वे भी मेरे अधीन हो जाएँगे। ५१ परदेशी मेरी चापलसू करेंगे; वे मेरा नाम सुनते ही मेरे वश में आएँगे। ५२ परदेशी मुझाँगें, और अपने किलों में से थरथराते हुए निकलेंगे। ५३ “यहोवा जीवित है; मेरी चट्टान धन्य है, और परमेश्वर जो मेरे उद्धार की चट्टान है, उसकी महिमा हो। ५४ धन्य है मेरा पलटा लेनेवाला परमेश्वर, जो देश-देश के लोगों को मेरे वश में कर देता है, ५५ और मुझे मेरे शत्रुओं के बीच से निकालता है; हाँ, तू मुझे मेरे विरोधियों से ऊँचा करता है, और उपद्रवी पुष्प से बचाता है। ५६ “इस कारण, हे यहोवा, मैं जाति-जाति के सामने तेरा धन्यवाद करूँगा, और तेरे नाम का भजन गाऊँगा ५७ वह अपने ठहराए हुए राजा का बड़ा उद्धार करता है, वह अपने अभिषित दाऊद, और उसके वश पर युगानुगा कस्या करता रहेगा।”

२३ दाऊद के अनिति वचन ये हैं: “यिशै के पुत्र की यह वाणी है, उस पुष्प की वाणी है जो ऊँचे पर खड़ा किया गया, और याकूब के परमेश्वर का अभिषित, और इसाएल का मधुर भजन गणेवाला है: १ “यहोवा का आत्मा मुझ में होकर बोला, और उसी का वचन मेरे मूँह में आया। २ इसाएल के परमेश्वर ने कहा है, इसाएल की चट्टान ने मुझसे बातें की हैं, कि मनुष्यों में प्रभुता करनेवाला एक धर्मी होगा, जो परमेश्वर का भय मानता हुआ प्रभुता करेगा, ३ वह मानो भोर का प्रकाश होगा जब सूर्य निकलता है, ऐसा भोर जिसमें बादल न हो, जैसा वर्षी के बाद निर्मल प्रकाश के कारण भूमि से हरी-हरी घास उत्तरी है। ४ क्या मेरा घराना परमेश्वर की दृष्टि में ऐसा नहीं है? उसने तो मेरे साथ सदा की एक ऐसी वाचा बाँधी है, जो सब बातों में ठीक की हुई और अटल भी है। क्योंकि चाहे वह उसको प्रगट न करे, तो भी मेरा पूर्ण उद्धार और पूर्ण अभिलाषा का विषय वही है। ५ परन्तु ओले लोग सब के सब निकम्पी झाड़ियों के समान हैं जो हाथ से पकड़ी नहीं जाती, ६ परन्तु जो पुष्प उनको छूए उसे लहे और भाले की छड़ से सुसज्जित होना चाहिये। इसलिए वे अपने ही स्थान में आग से भस्म कर दिए जाएँगे।” ८ दाऊद के

शूरवीरों के नाम ये हैं: अर्थात् तहकमोनी योशेल्यशेवेत, जो सरदारों में मुख्य था; वह एस्नी अदीनों भी कहलाता था; जिसने एक ही समय में आठ सौ पुस्त मार डाले। ९ उसके बाद अहोही दोंदै का पुत्र एलीआजर था। वह उस समय दाऊद के संग के तीनों बीरों में से था, जबकि उन्होंने यदु के लिये एकनित हुए पलिशियों को ललकारा, और इसाएली पुस्त चले गए थे। १० वह कमर बाँधकर पलिशियों को तब तक मारता रहा जब तक उसका हाथ थक न गया, और तलबार हाथ से चिपट न गई, और उस दिन यहोवा ने बड़ी विजय कराई; और जो लोग उसके पीछे हो लिए वे केवल लूटने ही के लिये उसके पीछे हो लिए। ११ उसके बाद आगौ नामक एक हरारी का पुत्र शम्मा था। पलिशियों ने इकट्ठे होकर एक स्थान में दल बाँधा, जहाँ मस्र का एक खेत था; और लोग उनके डर के मरे भागे। १२ तब उसने खेत के मध्य में खड़े होकर उसे बचाया, और पलिशियों को मार लिया; और यहोवा ने बड़ी विजय दिलाई। १३ फिर तीसों मुख्य सरदारों में से तीन जन कट्टी के दिनों में दाऊद के पास अदुल्लाम नामक गुफा में आए, और पलिशियों का दल रपाइम नामक तराई में छावनी किए हुए था। १४ उस समय दाऊद गढ़ में था; और उस समय पलिशियों की चौकी बैतलहम में थी। १५ तब दाऊद ने बड़ी अभिलाषा के साथ कहा, “कौन मुझे बैतलहम के फाटक के पास के कुएँ का पानी पिलाएगा?” १६ अतः वे तीनों वीर पलिशियों की छावनी पर टूट पड़े, और बैतलहम के फाटक के कुएँ से पानी भरकर दाऊद के पास ले आए। परन्तु उसने पीने से इन्कार किया, और यहोवा के सामने अर्ध करके उण्डेला, १७ और कहा, “हे यहोवा, मुझसे ऐसा काम दूर रहे। क्या मैं उन मनुष्यों का लह पीँज़ जो अपने प्राणों पर खेलकर गए थे?” इसलिए उसने उस पानी को पीने से इन्कार किया। इन तीन वीरों ने तो ये ही काम किए। १८ अबीशै जो सस्याह के पुत्र योआब का भाई था, वह तीनों से मुख्य था। उसने अपना भाला चलाकर तीन सौ को मार डाला, और तीनों में नामी हो गया। १९ क्या वह तीनों से अधिक प्रतिष्ठित न था? और इसी से वह उनका प्रधान हो गया; परन्तु मुख्य तीनों के पद को न पहँचा। २० फिर यहोवादा का पुत्र बनायाह था, जो कल्सेलवासी एक बड़ा काम करनेवाले वीर का पुत्र था; उसने सिंह सरीखे दो मोआबियों को मार डाला। लक्ष गिरने के समय उसने एक गुड़ में उत्तर के एक सिंह को मार डाला। २१ फिर उसने एक स्पवान मिस्री पुस्त को मार डाला। मिस्री तो हाथ में भाला लिए हुए था; परन्तु बनायाह एक लाती ही लिए हुए उसके पास गया, और मिस्री के हाथ से भाला छीनकर उसी के भाले से उसे घात किया। २२ ऐसे-ऐसे काम करके यहोवादा का पुत्र बनायाह उन तीनों वीरों में नामी हो गया। २३ वह तीसों से अधिक प्रतिष्ठित तो था, परन्तु मुख्य तीनों के पद को न पहँचा। उसको दाऊद ने अपनी निज सभा का सभासद मियुक्त किया। २४ फिर तीसों में योआब का भाई असाहेल; बैतलहमी दोदो का पुत्र एल्हनान, २५ हेरोदी शम्मा, और एलीका, २६ पेलेती हेलेम, तकोई इक्केश का पुत्र ईरा, २७ अनातोती अबीएजर, हशाई मबन्ने, २८ अहोही सम्बोन, नतोपाही महौर, २९ एक और नतोपाही बानाह का पुत्र हेलेब, बिन्यामिनियों के गिबा नगर के रिबि का पुत्र इतै, ३० पिरातोनी, बनायाह, गाश के नालों के पास रहनेवाला हिंदै, ३१ अराबा का अबीअल्बोन, बहरीमी अज्मावेत, ३२ शालबोनी एल्यहवा, याशेन के वंश में से योनातान, ३३ हरारी शम्मा, हरारी शारार का पुत्र अहीआम, ३४ माका देश के अहसबै का पुत्र एल्पिलेत, गीलोवासी अहीतोपेल का पुत्र एलीआम, ३५ कर्मेली हेसो, असाबी पैर, ३६ सोबा नातान का पुत्र यिगाल, गादी बानी, ३७ अम्पोनी सेलेक, बेरोती नहैरै जो सस्याह के पुत्र योआब का हथियार ढोनेवाला था, ३८ येतेरी ईरा, और गोरेब, ३९ और हिंती ऊरियाह था: सब मिलाकर सैतीस थे।

२४ यहोवा का कोप इसाएलियों पर फिर भड़का, और उसने दाऊद को

उनकी हानि के लिये यह कहकर उभारा, “इसाएल और यहदा की गिनती ले।” ५ इसलिए राजा ने योआब सेनापति से जो उसके पास था कहा, “तुम दान से बेर्श्वा तक रहनेवाले सब इसाएली गोत्रों में इधर-उधर धूम, और तुम लोग प्रजा की गिनती लो, ताकि मैं जान लूं कि प्रजा की कितनी गिनती है।” ६ योआब ने राजा से कहा, “प्रजा के लोग कितने भी क्यों न हों, तेरा परमेश्वर यहोवा उनको सौ गुण बढ़ा दे, और मेरा प्रभु राजा इसे अपनी अँखों से देखे भी पाए; परन्तु, हे मेरे प्रभु, हे राजा, यह बात तु क्यों चाहत है?” ७ तो भी राजा की आज्ञा योआब और सेनापतियों पर प्रबल हुई। अतः योआब और सेनापति राजा के सम्मुख से इसाएली प्रजा की गिनती लेने को निकल गए। ८ उन्होंने यहदन पार जाकर अरोएर नगर की दाहिनी ओर डेरे खड़े किए, जो गाद की घाटी के मध्य में और याजेर की ओर है। ९ तब वे गिलाद में और तहतीहोदशी नामक देश में गए, फिर दान्यान को गए, और चक्कर लगाकर सीटोंन में पहुँचे; १० तब वे सोर नामक दृढ़ गढ़, और हिल्बियों और कनानियों के सब नगरों में गए; और उन्होंने यहदा देश की दक्षिण में बेर्श्वा में दैरा निपटाया। ११ इस प्रकार सोर देश में इधर-उधर धूम धूमकर वे नै महनि और बीस दिन के बीतने पर यस्सलेम को आए। १२ तब योआब ने प्रजा की गिनती का जोड़ राजा को सुनाया; और तलवार चतानेवाले योद्धा इसाएल के तो आठ लाख, और यहदा के पाँच लाख निकले। १३ प्रजा की गणना करने के बाद दाऊद का मन व्याकुल हआ। अतः दाऊद ने यहोवा से कहा, “यह काम जो मैंने किया वह महापाप है। तो अब, हे यहोवा, अपने दास का अधर्म दूर कर; क्योंकि मुझसे बड़ी मूर्खित हुई है।” १४ सबैरे जब दाऊद उठा, तब यहोवा का यह वचन गाद नामक नबी के पास जो दाऊद का दर्शी था पहुँचा, १५ “जाकर दाऊद से कह, ‘यहोवा यह कहता है, कि मैं तुम्हारो तीन विपत्तियाँ दिखाता हूँ, उनमें से एक को चुन ले, कि मैं उसे तुझ पर डालूँ।’” १६ अतः गाद ने दाऊद के पास जाकर इसका समाचार दिया, और उससे पूछा, “क्या तैरे देश में सात वर्ष का अकाल पड़े? या तीन महीने तक तैरे शत्रु तेरा पीछा करते रहें और तु उनसे भागता रहे? या तैरे देश में तीन दिन तक मरी फैली रहे? अब सौच विचार कर, कि मैं अपने भेजनेवाले को क्या उत्तर दूँ।” १७ दाऊद ने गाद से कहा, “मैं बड़े संकट में हूँ, हम यहोवा के हाथ में पड़े, क्योंकि उसकी दया बड़ी है; परन्तु मनुष्य के हाथ में मैं न पड़ूँगा।” १८ तब यहोवा इसाएलियों में सबैरे से ले ले ठहराए हुए समय तक मरी फैलाए रहा; और दान से लेकर बेर्श्वा तक रहनेवाली प्रजा में से सतर हजार पुष्प मर गए। १९ परन्तु जब दूत ने यस्सलेम का नाश करने को उस पर अपना हाथ बढ़ाया, तब यहोवा वह विपत्ति डालकर शोकित हुआ, और प्रजा के नाश करनेवाले दूत से कहा, “बस कर; अब अपना हाथ खींचा” यहोवा का दूत उस समय अरौना नामक एक यबसी के खलिहान के पास था। २० तो जब प्रजा का नाश करनेवाला दूत दाऊद को दिखाई पड़ा, तब उसने यहोवा से कहा, “देख, पाप तो मैं ही ने किया, और कुटिलता मैं ही ने की है; परन्तु इन भेड़ों ने क्या किया है? सो तेरा हाथ मेरे और मेरे पिता के घराने के विस्फु हो।” २१ उसी दिन गाद ने दाऊद के पास आकर उससे कहा, “जाकर अरौना यबसी के खलिहान में यहोवा की एक वेदी बनवा।” २२ अतः दाऊद यहोवा की आज्ञा के अनुसार गाद का वह वचन मानकर वहाँ गया। २३ जब अरौना ने दृष्टि कर दाऊद को कर्मचारियों समेत अपनी ओर आते देखा, तब अरौना ने निकलकर भूमि पर मुँह के बल गिर राजा को दण्डवत की। २४ और अरौना ने कहा, “मेरा प्रभु राजा अपने दास के पास क्यों पधारा है?” दाऊद ने कहा, “तुझ से यह खलिहान मौल लेने आया हूँ, कि यहोवा की एक वेदी बनवाऊँ, इसलिए कि

यह महामारी प्रजा पर से दूर की जाए।” २५ अरौना ने दाऊद से कहा, “मेरा प्रभु राजा जो कुछ उसे अच्छा लगे उसे लेकर चढ़ाए देख, होमबलि के लिये तो बैल है, और दौँवने के हथियार, और बैलों का सामान ईंधन का काम देंगे।” २६ यह सब अरौना ने राजा को दे दिया। फिर अरौना ने राजा से कहा, “तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से प्रसन्न हो।” २७ राजा ने अरौना से कहा, “ऐसा नहीं, मैं ये वस्तुएँ तुझ से अवश्य दाम टेकर लैंगा; मैं अपने परमेश्वर यहोवा को सेत-मेत के होमबलि नहीं चढ़ाने का।” सो दाऊद ने खलिहान और बैलों को चाँदी के पचास शेकेल में मोल लिया। २८ और दाऊद ने वहाँ यहोवा की एक वेदी बनवाकर होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। और यहोवा ने देश के निमित विनती सुन ली, तब वह महामारी इसाएल पर से दूर हो गई।

1 राजा

१ दाऊद राजा बूढ़ा और उसकी आयु बहुत बढ़ गई थी; और यथपि उसको

कपड़े ओढ़ाए जाते थे, तो भी वह गर्म न होता था। २ उसके कर्मचारियों ने उससे कहा, “हमारे प्रभु राजा के लिये कोई जवान कुँवारी ढूँढ़ी जाए, जो राजा के सम्मुख रहकर उसकी सेवा किया करे और तैरे पास लेटा करे, कि हमारे प्रभु राजा को गर्मी पहुँचे।” ३ तब उन्होंने समस्त इसाएली देश में सुन्दर कुँवारी ढूँढ़ते-ढूँढ़ते अवीशंग नामक एक शृंगेमिन कन्या को पाया, और राजा के पास ले आए। ४ वह कन्या बहुत ही सुन्दर थी, और वह राजा की दासी होकर उसकी सेवा करती रही; परन्तु राजा का उससे सहवास न हुआ। ५ तब हमरी तो का पुत्र अदोनियाह सिर ऊँचा करके कहने लगा, “मैं राजा बूँद़ा!” सो उसने रथ और सवार और अपने अगे-अगे दौड़ने को पचास अंगरक्षकों को रख लिए। ६ उसके पिता ने तो जन्म से लेकर उसे कभी यह कहकर उदास न किया था, “तुम ऐसा क्यों कियाएँ?” वह बहुत स्पष्टवान था, और अबशालोम के बाद उसका जन्म हुआ था। ७ उसने सर्स्याह के पुत्र योआब से और एल्यातार याजक से बातचीत की, और उन्होंने उसके पीछे होकर उसकी सहायता की। ८ परन्तु सादोक याजक यहोयादा का पुत्र बनायाह, नातान नबी, शिमी, रेई, और दाऊद के शूरवीरोंने अदोनियाह का साथ न दिया। ९ अदोनियाह ने जोहेलेत नामक पत्थर के पास जो एमोगेल के निकट है, भेड़-बैल और तैयार किए हुए पशुबलि किए, और अपने सब भाइयों, राजकुमारों और राजा के सब यहदी कर्मचारियों को बुला लिया। १० परन्तु नातान नबी, और बनायाह और शूरवीरों को और अपने खाइ द्वारा सुलैमान को उसने न बुलाया। ११ तब नातान ने सुलैमान की माता बतशेबा से कहा, “क्या तूने सुना है कि हमरी का पुत्र अदोनियाह राजा बन बैठा है और हमारा प्रभु दाऊद इसे नहीं जानता? १२ इसलिए अब आ, मैं तुमे ऐसी सम्पति देता हूँ, जिससे तू अपना और अपने पुत्र सुलैमान का प्राण बचाए। १३ तब दाऊद राजा के पास जाकर, उससे यह पूछ, ‘हे मेरे प्रभु! हे राजा! क्या तूने शपथ खाकर अपनी दासी से नहीं कहा, कि तेरा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा होगा, और वह मेरी राजगद्दी पर विराजेगा? किन अदोनियाह क्यों राजा बन बैठा है?’ १४ और जब तब ही राजा से ऐसी बातों करती रहेगी, तब मैं तेरे पीछे आकर, तेरी बातों की पुष्टि करूँगा।” १५ तब बतशेबा राजा के पास कोठरी में गई; राजा तो बहुत बूढ़ा था, और उसकी सेवा ठहल शृंगेमिन अवीशंग करती थी। १६ बतशेबा ने छुककर राजा को दण्डवत किया, और राजा ने पूछा, “तू क्या चाहती है?” १७ उसने उत्तर दिया, “हे मेरे प्रभु, तुम तो अपने परमेश्वर यहोवा की शपथ खाकर अपनी दासी से कहा था, ‘तेरा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा होगा’ और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा।” १८ अब देख अदोनियाह राजा बन बैठा है, और अब तक मेरा प्रभु राजा इसे नहीं जानता। १९ उसने बहुत से बैल तैयार किए, पशु और भेड़े बलि की, और सब राजकुमारों को और एल्यातार याजक और योआब सेनापति को बुलाया है, परन्तु उसे तास सुलैमान को नहीं बुलाया। २० और हे मेरे प्रभु! हे राजा! सब इसाएली तुझे ताक रहे हैं कि तु उससे कहे, कि हमारे प्रभु राजा की गद्दी पर उसके बाद कौन बैठेगा। २१ नहीं तो जब हमारा प्रभु राजा, अपने पुरुखाओं के संग सोएगा, तब मैं और मेरा पुत्र सुलैमान दोनों अपराधी गिने जाएँगे।” २२ जब बतशेबा राजा से बातें कर ही रही थी, कि नातान नबी भी आ गया। २३ और राजा से कहा गया, “नातान नबी हाजिर है,” तब वह राजा के सम्मुख आया, और मूँह के बल गिरकर राजा को दण्डवत की। २४ तब नातान कहने लगा, “हे मेरे प्रभु, हे राजा! क्या तूने कहा है, ‘अदोनियाह मेरे बाद राजा होगा’ और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा?” २५ देख

उसने आज नीचे जाकर बहुत से बैल, तैयार किए हुए पशु और भेड़े बलि की हैं, और सब राजकुमारों और सेनापतियों को और एल्यातार याजक को भी बुला लिया है; और वे उसके सम्मुख खाते पीते हुए कह रहे हैं, ‘अदोनियाह राजा जीवित रहे।’ २६ परन्तु मुझ तेरे दास को, और सादोक याजक और यहोयादा के पुत्र बनायाह, और तेरे दास सुलैमान को उसने नहीं बुलाया। २७ क्या यह मेरे प्रभु राजा की ओर से हुआ? तेरे तो अपने दास को यह नहीं जीताया है, कि प्रभु राजा की गद्दी पर कौन उसके बाद विराजेगा।” २८ दाऊद राजा ने कहा, “बतशेबा को मेरे पास बुला लाओ।” तब वह राजा के पास आकर उसके सामने खड़ी हुई। २९ राजा ने शपथ खाकर कहा, “यहोवा जो मेरा प्राण सब जोखिमों से बचाता आया है, ३० उसके जीवन की शपथ, जैसा मैंने तुझ से इसाएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ खाकर कहा था, ‘तेरा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा होगा, और वह मेरे बदले मेरी गद्दी पर विराजेगा,’ वैसा ही मैं निश्चय आज के दिन करूँगा।” ३१ तब बतशेबा ने भूमि पर मूँह के बल गिर राजा को दण्डवत् करके कहा, “मेरा प्रभु राजा दाऊद सदा तक जीवित रहे।” ३२ तब दाऊद राजा ने कहा, “मेरे पास सादोक याजक, नातान नबी, यहोयादा के पुत्र बनायाह को बुला लाओ।” अतः वे राजा के सामने आए। ३३ राजा ने उनसे कहा, “अपने प्रभु के कर्मचारियों को साथ लेकर मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे निज खच्चर पर चढ़ाओ; और गीहोन को ले जाओ; ३४ और वहाँ सादोक याजक और नातान नबी इसाएल का राजा होने को उसका अधिषेक करें; तब तुम सब नरसिंग फँककर कहना, ‘राजा सुलैमान जीवित रहे।’” ३५ और तुम उसके पीछे-पीछे इधर आना, और वह आकर मेरे सिंहासन पर विराजे, क्योंकि मैं बदले में वही राजा होगा; और उसी को मैंने इसाएल और यहदा का प्रधान होने को ठहराया है।” ३६ तब यहोयादा के पुत्र बनायाह ने कहा, “आमीन! मेरे प्रभु राजा का परमेश्वर यहोवा भी ऐसा ही कहे।” ३७ जिस रीति यहोवा मेरे प्रभु राजा के संग रहा, उसी रीति वह सुलैमान के भी संग रहे, और उसका राज्य मेरे प्रभु दाऊद राजा के राज्य से भी अधिक बढ़ाए।” ३८ तब सादोक याजक और नातान नबी और यहोयादा का पुत्र बनायाह और करेतियों और पलेतियों को संग लिए हुए नीचे गए, और सुलैमान को राजा दाऊद के खच्चर पर चढ़ाकर गीहोन को ले जाते तो यहोवा के तम्बू में से तेल भरा हुआ सींग निकाला, और सुलैमान का राज्याभिषेक किया। और वे नरसिंग फँकने लगे; और सब लोग बोल उठे, “राजा सुलैमान जीवित रहे।” ३९ तब सादोक याजक ने यहोवा के तम्बू में से तेल भरा हुआ सींग निकाला, और सुलैमान का राज्याभिषेक किया। और वे नरसिंग को बोल उठे, “राजा सुलैमान जीवित रहे।” ४० तब सब लोग उसके पीछे-पीछे बाँसुरी बजाते और इतना बड़ा आनन्द करते हुए ऊपर गए, कि उनकी ध्वनि से पृथ्वी डोल उठी। ४१ जब अदोनियाह और उसके सब अतिथि खा चुके थे, तब यह ध्वनि उनको सुनाई पड़ी। योआब ने नरसिंग का शब्द सुनकर पूछा, “नगर में हलचल और चिल्लाहट का शब्द क्यों हो रहा है?” ४२ वह यह कहता ही था, कि एल्यातार याजक का पुत्र योनातान आया और अदोनियाह ने उससे कहा, “भीतर आ; तू तो भला मनुष्य है, और भला समाचार भी लाया होगा।” ४३ योनातान ने अदोनियाह से कहा, “सचमुच हमारे प्रभु राजा दाऊद ने सुलैमान को राजा बना दिया।” ४४ और राजा ने सादोक याजक, नातान नबी और यहोयादा के पुत्र बनायाह और करेतियों और पलेतियों को उसके संग भेज दिया, और उन्होंने उसको राजा के खच्चर पर चढ़ाया है। ४५ और सादोक याजक, और नातान नबी ने गीहोन में उसका राज्याभिषेक किया है; और वे वहाँ से ऐसा आनन्द करते हुए ऊपर गए हैं कि नगर में हलचल मच गई, और जो शब्द तुम को सुनाई पड़ रहा है वही है। ४६ सुलैमान राजगद्दी पर विराज भी रहा है। ४७ फिर राजा के कर्मचारी हमारे प्रभु दाऊद राजा को यह कहकर धन्य कहने आए, ‘तेरा परमेश्वर, सुलैमान का नाम, तेरे नाम से भी महान करे, और उसका राज्य

तेरे राज्य से भी अधिक बढ़ाएँ।’ और राजा ने अपने पलंग पर दण्डवत् की। ४८ फिर राजा ने यह भी कहा, ‘इसाएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिसने आज मेरे देखते एक को मेरी ग़दी पर विराजमान किया है।’ ४९ तब जिने अतिथि अदोनियाह के संग थे वे सब अथर्वा उठे, और उठकर अपना-अपना मार्ग लिया। ५० और अदोनियाह सुलैमान से डरकर उठा, और जाकर वेदी के सींगों को पकड़ लिया। ५१ तब सुलैमान को यह समाचार मिला, “अदोनियाह सुलैमान राजा से ऐसा डर गया है कि उसने वेदी के सींगों को यह कहकर पकड़ लिया है, ‘आज राजा सुलैमान शपथ खाए कि अपने दास को तलवार से न मार डालेगा।’” ५२ सुलैमान ने कहा, “यदि वह भलमनसी दिखाए तो उसका एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा, परन्तु यदि उसमें दृष्टा पाई जाए, तो वह मारा जाएगा।” ५३ तब राजा सुलैमान ने लोगों को भेज दिया जो उसको वेदी के पास से उतार ले आए तब उसने आकर राजा सुलैमान को दण्डवत् की और सुलैमान ने उससे कहा, “अपने घर चला जा।”

२ जब दाऊद के मरने का समय निकट आया, तब उसने अपने पुत्र सुलैमान से कहा, २ “मैं संसार की रीति पर कूच करनेवाला हूँ इसलिए तू हियाव बाँधकर पुस्तर दिया। ३ और जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे सौंपा है, उसकी रक्षा करके उसके मार्गों पर चला करना और जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसा ही उसकी विधियों तथा आज्ञाओं, और नियमों, और चितौनियों का पालन करते रहना; जिससे जो कुछ तू करे और जहाँ कहीं तू जाए, उसमें तू सफल होए। ४ और यहोवा अपना वह चर्चन पूरा करे जो उसने मेरे विषय में कहा था, ‘यदि तेरी सन्तान अपनी चाल के विषय में ऐसे सावधान रहें, कि अपने सम्पूर्ण हृदय और सम्पूर्ण प्राण से सच्चाई के साथ नित मेरे सम्मुख चलते रहें तब तो इसाएल की राजगढ़ी पर विराजनेवाले की, तेरे कुल परिवार में घटी कभी न होगी।’ ५ “फिर तू स्वयं जानता है, कि स्स्याह के पुत्र योआब ने मुझसे क्या-क्या किया। अर्थात् उसने रेते के पुत्र अब्नेर, और ये तेरे के पुत्र अमासा, इसाएल के इन दो सेनापतियों से क्या-क्या किया। उसने उन दोनों को घाट किया, और मेल के समय युद्ध का लह बहाकर उससे अपनी कमर का कमरबन्द और अपने पाँवों की जूतियाँ भिगो दी। ६ इसलिए तू अपनी बुद्धि से काम लेना और उस पक्के बाल बाले को अधोलोक में शान्ति से उत्तरने न देना। (Sheol h7585) ७ फिर गिलादी बर्जिल्ट्से के पुत्रों पर कपा रखना, और वे तेरी मेज पर खानेवालों में रहें, क्योंकि जब मैं तेरे भाई अबशातोम के सामने से भागा जा रहा था, तब उन्होंने मेरे पास आकर वैसा ही किया था। ८ फिर सुन, तेरे पास बिन्यामीनी गेरा का पुत्र बहरीमी शिमी रहता है, जिस दिन मैं महनैम को जाता था उस दिन उसने मुझे कड़ाई से श्राप दिया था पर जब वह मेरी भेट के लिये यरदन को आया, तब मैंने उससे यहोवा की यह शपथ खाई, कि मैं तुझे तलवार से न मार डालूँगा। ९ परन्तु अब त इसे निर्दोष न ठहराना, तू तो बुद्धिमान पुष्प है; तुझे मालूम होगा कि उसके साथ क्या करना चाहिये, और उस पक्के बाल बाले का लह बहाकर उसे अधोलोक में उतार देना।” (Sheol h7585) १० तब दाऊद अपने पुरुखाओं के संग जा मिला और दाऊदपुर में उसे मिट्ठी दी गई। ११ दाऊद ने इसाएल पर चालीस वर्ष राज्य किया, सात वर्ष तो उसने हेब्रोन में और तैतीस वर्ष यस्सलेम में राज्य किया था। १२ तब सुलैमान अपने पिता दाऊद की ग़दी पर विराजमान हुआ और उसका राज्य बहुत दूढ़ हुआ। १३ तब हमरी का पुत्र अदोनियाह, सुलैमान की माता बतोवा के पास आया, बतोवा ने पृछा, “क्या त मित्रभाव से आता है?” १४ उसने उत्तर दिया, “हाँ, मित्रभाव से!” फिर वह कहने लगा, “मुझे तुझ से एक बात कहीं है।” उसने कहा, “कह!” १५ उसने कहा, “तुझे तो मालूम है कि राज्य मेरा हो गया था, और समस्त इसाएली मेरी ओर मुँह किए थे, कि मैं

राज्य करूँ; परन्तु अब राज्य पलटकर मेरे भाई का हो गया है, क्योंकि वह यहोवा की ओर से उसको मिला है। १६ इसलिए अब मैं तुझ से एक बात माँगता हूँ, मुझ को मना न करना।” उसने कहा, “कहे जा।” १७ उसने कहा, “राजा सुलैमान तुझे इन्कार नहीं करेगा; इसलिए उससे कह, कि वह मुझे श्रेमिन अबीशंग को ब्याह दे।” १८ बतोवा ने कहा, “अच्छा, मैं तेरे लिये राजा से कहाँगी।” १९ तब बतोवा अदोनियाह के लिये राजा सुलैमान से बातचीत करने को उसके पास गई, और राजा उसकी भेट के लिये उठा, और उसे दण्डवत् करके अपने सिंहासन पर बैठ गया। फिर राजा ने अपनी माता के लिये एक सिंहासन रख दिया, और वह उसकी दाहिनी ओर बैठ गई। २० तब वह कहने लगी, “मैं तुझ से एक छोटा सा बरदान माँगती हूँ इसलिए मुझ को मना न करना,” राजा ने कहा, “हे माता माँग; मैं तुझे इन्कार नहीं करूँगा।” २१ उसने कहा, “वह श्रेमिन अबीशंग से भाई अदोनियाह को ब्याह दी जाए।” २२ राजा सुलैमान ने अपनी माता को उत्तर दिया, “तू अदोनियाह के लिये श्रेमिन अबीशंग ही को क्यों माँगती है? उसके लिये राज्य भी माँग, क्योंकि वह तो मेरा बड़ा भाई है, और उसी के लिये क्या! एब्यातार याजक और सस्याह के पुत्र योआब के लिये भी माँग।” २३ और राजा सुलैमान ने यहोवा की शपथ खाकर कहा, “यदि अदोनियाह ने यह बात अपने प्राण पर खेलकर न कही हो तो परमेश्वर मुझसे वैसा ही क्या बरन् उससे भी अधिक करे। २४ अब यहोवा जिसने मुझे स्थिर किया, और मेरे पिता दाऊद की राजगढ़ी पर विराजमान किया है और अपने चर्चन के अनुसार मेरा घर बसाया है, उसके जीवन की शपथ आज ही अदोनियाह मार डाला जाएगा।” २५ अतः राजा सुलैमान ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को भेज दिया और उसने जाकर, उसको ऐसा मारा कि वह मर गया। २६ तब एब्यातार याजक से राजा ने कहा, “अनातोत मैं अपनी भूमि को जा; क्योंकि तू भी प्राणदण्ड के योग्य है। आज के दिन तो मैं तुझे न मार डालूँगा, क्योंकि तू मेरे पिता दाऊद के सामने प्रभु यहोवा का सन्दूक उठाया करता था; और उन सब दुःखों में जो मेरे पिता पर पड़े थे तू भी दुखी था।” २७ और सुलैमान ने एब्यातार को यहोवा के याजक होने के पद से उतार दिया, इसलिए कि जो चर्चन यहोवा ने एर्ती के वंश के विषय में शीतों में कहा था, वह पूरा हो जाए। २८ इसका समाचार योआब तक पहुँचा; योआब अबशालोम के पीछे तो नहीं हो लिया था, परन्तु अदोनियाह के पीछे हो लिया था। तब योआब यहोवा के तम्बू को भाग गया, और वेदी के सींगों को पकड़ लिया। २९ तब राजा सुलैमान को यह समाचार मिला, “योआब यहोवा के तम्बू को भाग गया है, और वह वेदी के पास है,” तब सुलैमान ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को यह कहकर भेज दिया, कि तू जाकर उसे मार डाल। ३० तब बनायाह ने यहोवा के तम्बू के पास जाकर उससे कहा, “राजा की यह आज्ञा है, कि निकल आ।” उसने कहा, “नहीं, मैं यही मर जाऊँगा।” तब बनायाह ने लौटकर यह सन्देश राजा को दिया “योआब ने मुझे यह उत्तर दिया।” ३१ राजा ने उससे कहा, “उसके करने के अनुसार उसको मार डाल, और उसे मिट्ठी दे, ऐसा करके निर्दोषों का जो खन योआब ने किया है, उसका दोष तू मुझ पर से और मेरे पिता के घरने पर से दूर करेगा।” ३२ और यहोवा उसके सिर वह खन लौटा देगा क्योंकि उसने मेरे पिता दाऊद के बिना जाने अपने से अधिक धर्मी और भले दो पुरुषों पर, अर्थात् इसाएल के प्रधान सेनापति नेर के पुत्र अब्नेर और यहदा के प्रधान सेनापति येतेर के पुत्र अमासा पर टूटकर उनको तलवार से मार डाला था। ३३ अतः योआब के सिर पर और उसकी सन्तान के सिर पर खन सदा तक रहेगा, परन्तु दाऊद और उसके वंश और उसके घरने और उसके राज्य पर यहोवा की ओर से शान्ति संदेव तक रहेगी।” ३४ तब यहोयादा के पुत्र बनायाह ने जाकर योआब को मार डाला;

और उसको जंगल में उसी के घर में मिट्टी दी गई। ३५ तब राजा ने उसके स्थान पर यहोयादा के पुत्र बनायाह को प्रधान सेनापति ठहराया; और एव्हातार के स्थान पर सादोक याजक को ठहराया। ३६ तब राजा ने शिमी को बुलवा भेजा, और उससे कहा, “तू यस्सलेम में अपना एक घर बनाकर वहीं रहना और नगर से बाहर कहीं न जाना। ३७ त. निश्चय जान रख कि जिस दिन तू निःसन्देह मार डाला जाएगा, और तेरा लाह तेरे ही सिर पर पड़ेगा।” ३८ शिमी ने राजा से कहा, “बात अच्छी है; जैसा मेरे प्रभु राजा ने कहा है, वैसा ही तेरा दास करेगा।” तब शिमी बहुत दिन यस्सलेम में रहा। ३९ परन्तु तीन वर्ष के ब्याती होने पर शिमी के दो दास, गत नगर के राजा माका के पुत्र आकीश के पास भाग गए, और शिमी को यह समाचार मिला, “तेरे दास गत में हैं।” ४० तब शिमी उठकर अपने गढ़े पर काठी कसकर, अपने दास को ढूँढ़ने के लिये गत को आकीश के पास गया, और अपने दासों को गत से ले आया। ४१ जब सुलैमान राजा को इसका समाचार मिला, “शिमी यस्सलेम से गत को गया, और फिर लौट आया है,” ४२ तब उसने शिमी को बुलवा भेजा, और उससे कहा, “क्या मैंने तुझे यहोवा की शपथ न खिलाइ थी? और तुझ से चिताकर न कहा था, ‘यह निश्चय जान रख कि जिस दिन तू निकलकर कहीं चला जाए, उसी दिन तू निःसन्देह मार डाला जाएगा?’ और क्या तूने मुझसे न कहा था, ‘जो बात मैंने सुनी, वह अच्छी है?’” ४३ फिर तूने यहोवा की शपथ और मेरी दृढ़ आज्ञा क्यों नहीं मानी?” ४४ और राजा ने शिमी से कहा, “तू आप ही अपने मन में उस सब दृष्टियों को जानता है, जो तूने मेरे पिता दाऊद से की थी? इसलिए यहोवा तेरे सिर पर तेरी दृष्टि लौटा देगा।” ४५ परन्तु राजा सुलैमान धन्य रहेगा, और दाऊद का राज्य यहोवा के सामने सौंदर्य दृढ़ रहेगा।” ४६ तब राजा ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को आज्ञा दी, और उसने बाहर जाकर, उसको ऐसा मारा कि वह भी मर गया। इस प्रकार सुलैमान के हाथ में राज्य दृढ़ हो गया।

३७ फिर राजा सुलैमान मिस्र के राजा फिरौन की बेटी को ब्याह कर उसका दामाद बन गया, और उसको दाऊदपुर में लाकर तब तक अपना भवन और यहोवा का भवन और यस्सलेम के चारों ओर की शहरपन्थ न बनवा चुका, तब तक उसको वहीं रखा। ३८ क्योंकि प्रजा के लोग तो ऊँचे स्थानों पर बलि चढ़ाते थे और उन दिनों तक यहोवा के नाम का कोई भवन नहीं बना था। ३९ सुलैमान यहोवा से प्रेम रखता था और अपने पिता दाऊद की विधियों पर चलता तो रहा, परन्तु वह ऊँचे स्थानों पर भी बलि चढ़ाया और धूप जलाया करता था, तब वहाँ की बेटी पर सुलैमान को दर्शन देकर कहा, “जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूँ वह माँग।” ४० सुलैमान ने कहा, “तू अपने दास मेरे पिता दाऊद पर बड़ी कस्ता करता रहा, क्योंकि वह अपने को रेरे सम्पुख जानकर तेरे साथ सच्चाई और धार्मिकता और मन की सिधाई से चलता रहा; और तूने यहाँ तक उस पर कस्ता की थी कि उसे उसकी गँड़ी पर बिराजेनवाला एक पुत्र दिया है, जैसा कि आज वर्तमान है।” ४१ और अब हे मेरे परमेश्वर यहोवा! तूने अपने दास को मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा किया है, परन्तु मैं छोटा लड़का सा हूँ जो भीत बाहर आना-जाना नहीं जानता। ४२ फिर तेरा दास तेरी चुनी हई प्रजा के बहुत से लोगों के मध्य में है, जिनकी गिनती बहायात के मारे नहीं हो सकती। ४३ त. अपने दास को अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये समझने की ऐसी शक्ति दे, कि मैं भले बुझे को परख सकूँ, क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके?” ४४ इस

बात से प्रभु प्रसन्न हुआ, कि सुलैमान ने ऐसा वरदान माँगा है। ४५ तब परमेश्वर ने उससे कहा, “इसलिए कि तूने यह वरदान माँगा है, और न तो दीर्घायु और न धन और न अपने शत्रुओं का नाश माँगा है, परन्तु समझने के विवेक का वरदान माँगा है इसलिए सुन, ४६ मैं तेरे बचन के अनुसार करता हूँ, तुझे बुद्धि और विवेक से भरा मन देता हूँ, यहाँ तक कि तेरे समान न तो तुझ से पहले कोई कभी हुआ, और न बाद में कोई कभी होगा। ४७ फिर जो तूने नहीं माँगा, अर्थात् धन और महिमा, वह भी मैं तुझे यहाँ तक देता हूँ, कि तेरे जीवन भर कोई राजा तेरे तुल्य न होगा।” ४८ फिर यदि तू अपने पिता दाऊद के समान मेरे मार्गों में चलता हुआ, मेरी विधियों और आज्ञाओं को मानता रहेगा तो मैं तेरी आयु को बढ़ाऊँगा।” ४९ तब सुलैमान जाग उठा; और देखा कि यह स्वप्न था; फिर वह यस्सलेम को गया, और यहोवा की बाचा के सन्दूक के सामने खड़ा होकर, होम्बलि और मेलबलि चढ़ाए, और अपने सब कर्मचारियों के लिये भोज किया। ५० उस समय दो वेश्याएँ राजा के पास आकर उसके सम्पुख खड़ी हुईं। ५१ उम्में से एक झीं कहने लगी, “हे मेरे प्रभु! मैं और यह झीं दोनों एक ही घर में रहती हैं; और इसके संग घर में रहते हुए मेरे एक बच्चा हुआ।” ५२ फिर मेरे जच्चा के तीन दिन के बाद ऐसा हुआ कि यह झीं भी जच्चा हो गई, हम तो संग ही संग थीं, हम दोनों को छोड़कर घर में और कोई भी न था। ५३ और रात में इस झीं का बालक इसके नीचे टबकर मर गया। ५४ तब इसने आधी रात को उठकर, जब तेरी दासी सो ही रही थी, तब मेरा लड़का मेरे पास से लेकर अपनी छाती में रखा, और अपना मरा हुआ बालक मेरी छाती में लिटा दिया। ५५ भौं को जब मैं अपना बालक दूध पिलाने को उठी, तब उसे मरा हुआ पाया; परन्तु भौं को मैंने ध्यान से यह देखा, कि वह मेरा पुत्र नहीं है।” ५६ तब सूसी झीं ने कहा, “नहीं जीवित पुत्र मेरा है, और मरा पुत्र तेरा है।” परन्तु वह कहती रही, “नहीं मरा हुआ तेरा पुत्र है और जीवित मेरा पुत्र है,” इस प्रकार वे राजा के सामने बातें करती रहीं। ५७ राजा ने कहा, “एक तो कहती है ‘जो जीवित है, वही मेरा पुत्र है, और मरा हुआ तेरा पुत्र है’; और दूसी कहती है, ‘नहीं, जो मरा है वही तेरा पुत्र है, और जो जीवित है, वह मेरा पुत्र है।’” ५८ फिर राजा ने कहा, “मेरे पास तलवार ले आओ;” अतः एक तलवार राजा के सामने लाई गई। ५९ तब राजा बोला, “जीविते बालक को दो टुकड़े करके आधा इसको और आधा उसको दो।” ६० तब जीवित बालक की माता का मन अपने बेटे के सेह से भर आया, और उसने राजा से कहा, “हे मेरे प्रभु! जीवित बालक उसी को दे; परन्तु उसको किसी भाँति न मारा।” ६१ सूसी झीं ने कहा, “वह न तो मेरा हो और न तेरा, वह दो टुकड़े किया जाए।” ६२ तब राजा ने कहा, “पहली को जीवित बालक दो; किसी भाँति उसको न मारो; क्योंकि उसकी माता वही है।” ६३ जो न्याय राजा ने चुकाया था, उसका समाचार समस्त इस्लाएल को मिला, और उन्होंने राजा का भय माना, क्योंकि उन्होंने यह देखा, कि उसके मन में न्याय करने के लिये परमेश्वर की बुद्धि है।

६४ राजा सुलैमान ने समस्त इस्लाएल के ऊपर राजा नियुक्त हुआ था। ६५ और उसके हाकिम ये थे, अर्थात् सादोक का पुत्र अजर्याह याजक, ६६ और शीशा के पुत्र एलीहोरेप और अहिश्याह राजसी आधिकारिक थे। अहीलूद का पुत्र यदोशपात, इतिहास का लेखक था। ६७ फिर यहोयादा का पुत्र बनायाह प्रधान सेनापति था, और सादोक और एव्हातार याजक थे। ६८ नातान का पुत्र अजर्याह भण्डारियों के ऊपर था, और नातान का पुत्र जाबूद याजक, और राजा का मित्र भी था। ६९ अहीशार राजपरिवार के ऊपर था, और अब्दा का पुत्र अदेनीराम बेगारों के ऊपर मुखिया था। ७० और सुलैमान के बारह भण्डारी

थे, जो समस्त इस्माएलियों के अधिकारी होकर राजा और उसके घराने के लिये भोजन का प्रबन्ध करते थे। एक-एक पुस्प प्रतिवर्ष अपने-अपने नियुक्त महीने में प्रबन्ध करता था। ८ उनके नाम ये थे, अर्थात् एप्रैम के पहाड़ी देश में बेन्हारा। ९ और माक्स, शाल्बीम, बेटशेपेश और लेन-बेतानान में बेन्देकर था। १० अख्लोत में बेन्देसेद जिसके अधिकार में सोको और हेपेर का समस्त देश था। ११ दोर के समस्त ऊचे देश में बेन-अभीनादब जिसकी छी सुलैमान की बेटी तापत थी। १२ अहीलद का पुत्र बाना जिसके अधिकार में तानाक, मगिदो और बेतशान का वह सब देश था, जो सारतान के पास और यिजेल के नीचे और बेतशान से आबेल-महोला तक अर्थात् योकमाम की परली ओर तक है। १३ और गिलाद के रामोत में बेनगेबेर था, जिसके अधिकार में मनशेई याईर के गिलाद के गाँव थे, अर्थात् इसी के अधिकार में बाशान के अर्गोब का देश था, जिसमें शहरपानाह और पीतल के बैडेवाले साठ बड़े-बड़े नगर थे। १४ इद्दो के पुत्र अहीनादब के हाथ में महनैम था। १५ नमाली में अहीमास था, जिसने सुलैमान की बासमत नाम बेटी को ब्याह लिया था। १६ आशेर और आलोत में हौशे का पुत्र बाना, १७ इस्साकार में पास्ह का पुत्र यहोशापात, १८ और बिन्यामीन में एता का पुत्र शिमी था। १९ ऊरी का पुत्र गेबेर गिलाद में अर्थात् एमोरियों के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग के देश में था, इस समस्त देश में वही अधिकारी था। २० यहदा और इस्माल के लोग बहुत थे, वे समुद्र तट पर के रेतकणों के समान बहुत थे, और खाते-पीते और आनन्द करते रहे। २१ सुलैमान तो महानद से लेकर पलिसियों के देश, और मिस की सीमा तक के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता करता था और उनके लोग सुलैमान के जीवन भर भेट लाते, और उसके अधीन रहते थे। २२ सुलैमान की एक दिन की रसोई में इतना उठाता था, अर्थात् तीस कोर मैदा, साठ करो आटा, २३ दस तैयार किए हुए बैल और चाराइयों में से बीस बैल और सौ भेड़-बकरी और इनको छोड़ हिरन, चिकारे, यखमू और तैयार किए हुए पक्की। २४ क्योंकि फरात के इस पार के समस्त देश पर अर्थात् तिप्पह से लेकर गाजा तक जितने राजा थे, उन सभी पर सुलैमान प्रभुता करता, और अपने चारों ओर के सब रहनेवालों से मेल रखता था। २५ और दान से बेरेबा तक के सब यहदी और इस्माएली अपनी-अपनी दाखलाता और अंजर के बृक्ष तले सुलैमान के जीवन भर निर रहते थे। २६ फिर उसके रथ के घोड़ों के लिये सुलैमान के चालीस हजार घुड़साल थे, और उसके बारह हजार घुड़साल थे। २७ और वे भण्डारी अपने-अपने महीने में राजा सुलैमान के लिये और जितने उसकी मेज पर आते थे, उन सभी के लिये भोजन का प्रबन्ध करते थे, किसी वस्तु की घटी होने नहीं पाती थी। २८ घोड़ों और वेग चलनेवाले घोड़ों के लिये जौ और पुआल जहाँ प्रयोजन होता था वहाँ आज्ञा के अनुसार एक-एक जन पहुँचाया करता था। २९ और परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि दी, और उसकी समझ बहुत ही बढ़ाई, और उसके हृदय में समुद्र तट के रेतकणों के तुल्य अनगिनत गुण दिए। ३० और सुलैमान की बुद्धि पूर्व देश के सब निवासियों और मिसियों की भी बुद्धि से बढ़कर बुद्धि थी। ३१ वह तो और सब मनुष्यों से बरन एतान, एजेही और हैमान, और माहोल के पुत्र कलकोल, और दर्दी से भी अधिक बुद्धिमान था और उसकी कीर्ति चारों ओर की सब जातियों में फैल गई। ३२ उसने तीन हजार नीतिवचन कहे, और उसके एक हजार पाँच गीत भी हैं। ३३ फिर उसने लबानोन के देवदासों से लेकर दीवार में से उगते हुए जफा तक के सब पेड़ों की चर्चा और पशुओं पक्षियों और रेणेवाले जन्तुओं और मछलियों की चर्चा की। ३४ और देश-देश के लोग पृथ्वी के सब राजाओं की ओर से जिन्होंने सुलैमान की बुद्धि की कीर्ति सुनी थी, उसकी बुद्धि की बांते सुनने को आया करते थे।

५ सोर नगर के राजा हीराम ने अपने दूत सुलैमान के पास भेजे, क्योंकि उसने सुना था, कि वह अभिवित होकर अपने पिता के स्थान पर राजा हुआ है: और दाऊद के जीवन भर हीराम उसका मित्र बना रहा। ६ सुलैमान ने हीराम के पास यह सन्देश भेजा, “तुझे मालूम है, ७ कि मेरा पिता दाऊद अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन इसलिए न बनवा सका कि वह चारों ओर लडाईयों में तब तक उत्तमा रहा, जब तक यहोवा ने उसके शरुओं को उसके पाँव तले न कर दिया। ८ परन्तु अब मेरे परमेश्वर यहोवा ने मुझे चारों ओर से विश्वाम दिया है और उन न तो कोई विरोधी है, और न कुछ विपत्ति देख पड़ती है। ९ मैंने अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनवाने की तान रखी है अर्थात् उस बात के अनुसार जो यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कही थी, ‘तेरा पुत्र जिसे मैं तेरे स्थान में गैंडी पर बैठाऊँगा, वही मेरे नाम का भवन बनवाएगा।’ १० इसलिए अब तू मेरे लिये लबानोन पर से देवदार काटने की आज्ञा दे, और मेरे दास तेरे दासों के संग रहेंगे, और जो कुछ मजदूरी तू ठहराए, वही मैं तुझे तेरे दासों के लिये दूँगा, तुझे मालूम तो है, कि सीदीनियों के बराबर लकड़ी काटने का भेद हम लोगों में से कोई भी नहीं जानता।” ११ सुलैमान की ये बातें सुनकर, हीराम बहुत आनन्दित हुआ, और कहा, “आज यहोवा धन्य है, जिसने दाऊद को उस बड़ी जाति पर राज्य करने के लिये एक बुद्धिमान पत्र दिया है।” १२ तब हीराम ने सुलैमान के पास यह सन्देश भेजा, “जो तूने मेरे पास कहला भेजा है वह मेरी समझ में आ गया, देवदार और सनोवर की लकड़ी के विषय जो कुछ तू चाहे, वही मैं कहसँगा। १३ मेरे दास लकड़ी को लबानोन से समुद्र तक पहुँचाएँगे, फिर मैं उनके बैड़ बनवाकर, जो स्थान तू मेरे लिये ठहराए, वही पर समुद्र के मार्ग से उनको पहुँचवा दौँगा: वहाँ मैं उनको खोलकर डलवा दूँगा, और तू उन्हें ले लेना: और तू मेरे परिवार के लिये भोजन देकर, मेरी भी इच्छा पूरी करना।” १४ इस प्रकार हीराम सुलैमान की इच्छा के अनुसार उसको देवदार और सनोवर की लकड़ी देने लगा। १५ और सुलैमान ने हीराम के परिवार के खाने के लिये उसे बीस हजार करो गेहँ और बीस कोर पेरा हुआ तेल दिया; इस प्रकार सुलैमान हीराम को प्रतिवर्ष दिया करता था। १६ यहोवा ने सुलैमान को अपने वचन के अनुसार बुद्धि दी, और हीराम और सुलैमान के बीच मेल बना रहा बरन उन दोनों ने आपस में बाचा भी बाँध ली। १७ राजा सुलैमान ने पैरे इस्माएल में से तीस हजार पुस्प बेगार पर लगाए। १८ और उन्हें लबानोन पहाड़ पर बारी-बारी करके, महीने-महीने दिस हजार भेज दिया करता था और एक महीना वे लबानोन पर, और दो महीने घर पर रहा करते थे; और बेगारियों के ऊपर अदोनीराम ठहराया गया। १९ सुलैमान के सतर हजार बोझ ढोनेवाले और पहाड़ पर असरी हजार वृक्ष काटनेवाले और पत्थर निकालनेवाले थे। २० इनको छोड़ सुलैमान के तीन हजार तीन सौ मुखिए थे, जो काम करनेवालों के ऊपर थे। २१ फिर राजा की आज्ञा से बड़े-बड़े अनमोल पत्थर इसलिए खोदकर निकाले गए कि भवन की नींव, गढ़े हुए पत्थरों से ढाली जाए। २२ सुलैमान के कारीगरों और हीराम के कारीगरों और गबालियों ने उनको गढ़ा, और भवन के बनाने के लिये लकड़ी और पत्थर तैयार किए।

६ इस्माएलियों के मिस देश से निकलने के चार सौ अस्सीवें वर्ष के बाद जो सुलैमान के इस्माएल पर राज्य करने का चौथा वर्ष था, उसके जीवनाक दूसरे महीने में वह यहोवा का भवन बनाने लगा। २३ जो भवन राजा सुलैमान ने यहोवा के लिये बनाया उसकी लम्बाई साठ हाथ, चौड़ाई बीस हाथ और ऊँचाई तीस हाथ की थी। २४ और भवन के मन्दिर के सामने के ओसारे की लम्बाई बीस हाथ की थी, अर्थात् भवन की चौड़ाई के बराबर थी, और ओसारे की चौड़ाई जो भवन के सामने थी, वह दस हाथ की थी। २५ फिर

उसने भवन में चौखट सहित जालीदार छिड़िकियाँ बनाईं। ५ और उसने भवन के आस-पास की दीवारों से सटे हुए अर्थात् मन्दिर और दर्शन-स्थान दोनों दीवारों के आस-पास उसने मंजिलें और कोठरियाँ बनाई। ६ सबसे नीचेवाली मंजिल की चौड़ाई पाँच हाथ, और बीचवाली की छ: हाथ, और ऊपरवाली की सात हाथ की थी, क्योंकि उसने भवन के आस-पास दीवारों को बाहर की ओर कुर्सीदार बनाया था इसलिए कि कड़ियाँ भवन की दीवारों को पकड़े हुए न हों। ७ बनाते समय भवन ऐसे पथरते का बनाया गया, जो बहाँ हैं ले आने से पहले गढ़कर ठीक किए गए थे, और भवन के बनते समय हथौड़े, बस्तूली या और किसी प्रकार के लोहे के औजार का शब्द कभी सुनाई नहीं पड़ा। ८ बाहर की बीचवाली कोठरियों का द्वार भवन की दाहिनी ओर था, और लोग चक्रकरदार सीढ़ियों पर होकर बीचवाली कोठरियों में जाते, और उसने ऊपरवाली कोठरियों पर जाया करते थे। ९ उसने भवन को बनाकर पूरा किया, और उसकी छत देवदार की कड़ियों और तख्तों से बनी थी। १० और पूरे भवन से लगी हुई जो मंजिले उसने बनाई वह पाँच हाथ ऊँची थी, और वे देवदार की कड़ियों के द्वारा भवन से मिलाई गई थी। ११ तब यहोवा का यह वर्चन सुलैमान के पास पहुँचा, १२ “यह भवन जो तू बना रहा है, यदि तू मेरी विधियों पर चलेगा, और मेरे नियमों को मानेगा, और मेरी सब आज्ञाओं पर चलता हुआ उनका पालन करता रहेगा, तो जो वर्चन मैंने तेरे विषय में तो पिता दाऊद को दिया था उसको मैं पूरा करूँगा। १३ और मैं इसाएलियों के मध्य में निवास करूँगा, और अपनी इसाएली प्रजा को न तज़़ु़ा।” १४ अतः सुलैमान ने भवन को बनाकर पूरा किया। १५ उसने भवन की दीवारों पर भीतर की ओर देवदार की तख्ताबंदी की, और भवन के फर्श को उसने सनोवर के तख्तों से बनाया। १६ और भवन के पीछे की ओर मैं भी उसने बीस हाथ की दूरी पर फर्श से ले दीवारों के ऊपर तक देवदार की तख्ताबंदी की, इस प्रकार उसने परमपवित्र स्थान के लिये भवन की एक भीतरी कोठरी बनाई। १७ उसके सामने का भवन अर्थात् मन्दिर की लम्बाई चालीस हाथ की थी। १८ भवन की दीवारों पर भीतर की ओर देवदार की लकड़ी की तख्ताबंदी थी, और उसमें कलियाँ और खिले हुए फूल खुदे थे, सब देवदार ही था: पथर कुछ नहीं दिखाई पड़ता था। १९ भवन के भीतर उसने एक पवित्रस्थान यहोवा की वाचा का सन्दूक रखने के लिये तैयार किया। २० और उस पवित्रस्थान की लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई बीस-बीस हाथ की थी; और उसने उस पर उत्तम सोना मढ़वाया और वेदी की तख्ताबंदी देवदार से की। २१ फिर सुलैमान ने भवन को भीतर-भीतर शुद्ध सोने से मढ़वाया, और पवित्रस्थान के सामने सोनी की साँकले लगाई, और उसको भी सोने से मढ़वाया। २२ और उसने पूरे भवन को सोने से मढ़वाकर उसका काम पूरा किया। और पवित्रस्थान की पूरी वेदी को भी उन्ने सोने से मढ़वाया। २३ पवित्रस्थान में उसने दस-दस हाथ ऊँचे जैतून की लकड़ी के दो कस्तुर बना रखे। २४ एक कस्तुर का एक पांच पाँच हाथ का था, और उसका दूसरा पांच भी पाँच हाथ का था, एक पांच के सिरे से, दूसरे पांच के सिरे तक लम्बाई दस हाथ थी। २५ दूसरा कस्तुर भी दस हाथ का था; दोनों कस्तुर एक ही नाप और एक ही आकार के थे। २६ एक कस्तुर की ऊँचाई दस हाथ की, और दूसरे की भी इतनी ही थी। २७ उसने कस्तुरों को भीतरवाले स्थान में रखवा दिया; और कस्तुरों के पांच ऐसे फैले थे, कि एक कस्तुर का एक पांच, एक दीवार से, और दूसरे का दूसरा पांच, दूसरी दीवार से लगा हुआ था, फिर उनके दूसरे दो पांच भवन के मध्य में एक दूसरे को स्पर्श करते थे। २८ उसने कस्तुरों को सोने से मढ़वाया। २९ उसने भवन की दीवारों पर बाहर और भीतर चारों ओर कस्तुर, खजरू के वृक्ष और खिले हुए फूल खुदवाए। ३०

भवन के भीतर और बाहरवाली कोठरी के फर्श उसने सोने से मढ़वाए। ३१ पवित्रस्थान के प्रवेश-द्वार के लिये उसने जैतून की लकड़ी के दरवाजे लगाए और चौखट के सिरहाने और बाजूओं की बनावट पंचकोणीय थी। ३२ दोनों किवाड़ जैतून की लकड़ी के थे, और उसने उनमें कस्तुर, खजरू के वृक्ष और खिले हुए फूल खुदवाए और सोने से मढ़ा और कस्तुरों के ऊपर सोना मढ़वा दिया गया। ३३ इसी रीति उसने मन्दिर के प्रवेश-द्वार के लिये भी जैतून की लकड़ी के चौखट के बाजू बनाए, ये चौकोरे थे। ३४ दोनों दरवाजे सनोवर की लकड़ी के थे, जिनमें से एक दरवाजे के दो पल्ले थे; और दूसरे दरवाजे के दो पल्ले थे जो पलटकर दुहर जाते थे। ३५ उन पर भी उसने कस्तुर और खजरू के वृक्ष और खिले हुए फूल खुदवाए और खुदे हुए काम पर उसने सोना मढ़वाया। ३६ उसने भीतरवाले आँगन के घेरे को गढ़े हुए पथरतों के तीन रेधे, और एक परत देवदार की कड़ियाँ लगाकर बनाया। ३७ चौथे वर्ष के जीवी नामक महीने में यहोवा के भवन की नीव डाली गई। ३८ और ग्यारहवें वर्ष के बूल नामक आठवें महीने में, वह भवन उस सब समेत जो उसमें उचित समझा गया बन चुका। इस रीति सुलैमान को उसके बनाने में सात वर्ष लगे।

७ सुलैमान ने अपना महल भी बनाया, और उसके निर्माण-कार्य में तेरह वर्ष लगे।

१ उसने लबानोन का बन नामक महल बनाया जिसकी लम्बाई सौ हाथ, चौड़ाई पचास हाथ और ऊँचाई तीस हाथ की थी; वह तो देवदार के खम्भों की चार पंक्तियों पर बना और खम्भों पर देवदार की कड़ियाँ रखी गई। २ और पैतैलीस खम्भों के ऊपर देवदार की छतवाली कोठरियाँ बनी अर्थात् एक-एक मंजिल में पन्द्रह कोठरियाँ बनी। ३ तीनों मंजिलों में कड़ियाँ धरी गईं, और तीनों में खिड़कियाँ आमने-सामने बनी। ४ और सब द्वार और बाजूओं की कड़ियाँ भी चौकोर थीं, और तीनों मंजिलों में खिड़कियाँ आमने-सामने बनी। ५ उसने एक खम्भेवाला ओसारा भी बनाया जिसकी लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई तीस हाथ की थी, और इन खम्भों के सामने एक खम्भेवाला ओसारा और उसके सामने डेवढी बनाई। ६ फिर उसने न्याय के सिंहासन के लिये भी एक ओसारा बनाया, जो न्याय का ओसारा कहलाया; और उसमें एक फर्श से दूसरे फर्श तक देवदार की तख्ताबंदी थी। ७ उसके रहने का भवन जो उस ओसारे के भीतर के एक और आँगन में बना, वह भी उत्तीर्ण ढंग से बना। फिर उसी ओसारे के समान से सुलैमान ने फ्रिझों की बेटी के लिये जिसको उसने ब्याह लिया था, एक और भवन बनाया। ८ ये सब घर बाहर भीतर नीव से पंद्रह तक ऐसे अनपोल और गढ़े हुए पथरतों के बने जो नापकर, और आरों से चीरकर तैयार किए गए थे और बाहर के आँगन से ले बड़े आँगन तक लगाए गए। ९ उसकी नीव बहमूल्य और बड़े-बड़े अर्थात् दस-दस और आठ-आठ हाथ के पथरतों की डाटनी गई थी। १० और ऊपर भी बहमूल्य पथर थे, जो नाप से गढ़े हुए थे, और देवदार की लकड़ी भी थी। ११ बड़े आँगन के चारों ओर के घेरे में गढ़े हुए पथरतों के तीन रेधे, और देवदार की कड़ियों की एक परत थी, जैसे कि यहोवा के भवन के भीतरवाले आँगन और भवन के ओसारे में लगे थे। १२ फिर राजा सुलैमान ने सोर से ह्राम को बुलवा भेजा। १३ वह नसाती के गोत्र की किसी विधिवा का बेटा था, और उसका पिता एक सोरवासी ठंडेरा था, और वह पीतल की सब प्रकार की कारीगरी में पूरी बुद्धि, निषुआ और समझ रखता था। सो वह राजा सुलैमान के पास आकर उसका सब काम करने लगा। १४ उसने पीतल ढालकर अठारह-अठारह हाथ ऊँचे दो खम्भे बनाए, और एक-एक का घेरा बारह हाथ के सत का था ये भीतर से खोखले थे, और इसकी धातु की मोटाई चार अंगुल थी। १५ उसने खम्भों के सिरों पर लगाने की पीतल ढालकर दो कँगनी बनाई; एक-एक कँगनी की ऊँचाई, पाँच-पाँच हाथ की थी। १६ खम्भों के सिरों पर

की कँगनियों के लिये चार खाने की सात-सात जालियाँ, और सॉकलों की सात-सात झालरें बनी। १५ उसने खम्भों को भी इस प्रकार बनाया कि खम्भों के सिरों पर की एक-एक कँगनी को ढाँपने के लिये चारों ओर जालियों की एक-एक पाँति पर अनारों की दो पंक्तियाँ हों। १६ जो कँगनियाँ ओसारों में खम्भों के सिरों पर बनी, उनमें चार-चार हाथ ऊँचे सोसन के फूल बने हए थे। २० और एक-एक खम्भों के सिरे पर, उस गोलाई के पास जो जाली से लगी थी, एक और कँगनी बनी, और एक-एक कँगनी पर जो अनार चारों ओर पंक्ति-पंक्ति करके बने थे वह दो सौ थे। २१ उन खम्भों को उसने मन्दिर के ओसारे के पास खड़ा किया, और दाहिनी ओर के खम्भे को खड़ा करके उसका नाम याकीन रखा; फिर बाईं ओर के खम्भे को खड़ा करके उसका नाम बोअज रखा। २२ और खम्भों के सिरों पर सोसन के फूल का काम बना था खम्भों का काम इसी रीति पूरा हुआ। २३ फिर उसने एक ढाला हुआ एक बड़ा हौज बनाया, जो एक छोर से दूसरी छोर तक दस हाथ चौड़ा था, उसका आकार गोल था, और उसकी ऊँचाई पाँच हाथ की थी, और उसके चारों ओर का घेरा तीस हाथ के सूत के बराबर था। २४ और उसके चारों ओर के किनारे के नीचे एक-एक हाथ में दस-दस कलियाँ बनी, जो हौज को घेरे थीं; जब वह ढाला गया; तब ये कलियाँ भी दो पंक्तियों में ढाली गईं। २५ और वह बारह बने हुए बैलों पर रखा गया जिनमें से तीन उत्तर, तीन पश्चिम, तीन दक्षिण, और तीन पूर्व की ओर मुँह किए हुए थे; और उन ही की ऊपर हौज था, और उन सभी का पिछला अंग भीतर की ओर था। २६ उसकी मोटाई मुष्टी भर की थी, और उसका किनारा कटोरे के किनारे के समान सोसन के फूलों के जैसा बना था, और उसमें दो हजार बत पानी समाना था। २७ फिर उसने पीतल के दस ठेले बनाए, एक-एक ठेले की लम्बाई चार हाथ, चौड़ाई भी चार हाथ और ऊँचाई तीन हाथ की थी। २८ उन पायों की बनावट इस प्रकार थी; उनके पटरियों थीं, और पटरियों के बीचों बीच जोड़ भी थे। २९ और जोड़ों के बीचों बीच की पटरियों पर सिंह, बैल, और कस्तब बने थे और जोड़ों के ऊपर भी एक-एक और ठेला बना और सिंहों और बैलों के नीचे लटकती हुई झालरें बनी थी। ३० एक-एक ठेले के लिये पीतल के चार पहिये और पीतल की धूरियाँ बनीं; और एक-एक के चारों कोनों से लगे हुए आधार भी ढालकर बनाए गए जो हौदी के नीचे तक पहुँचते थे, और एक-एक आधार के पास झालरें बनी हुई थी। ३१ हौदी का मुँह जो ठेले की कँगनी के भीतर और ऊपर भी था वह एक हाथ ऊँचा था, और ठेले का मुँह जिसकी चौड़ाई डेढ़ हाथ की थी, वह पाये की बनावट के समान गोल बना; और उसके मुँह पर भी कुछ खुदा हुआ काम था और उनकी पटरियाँ गोल नहीं, चौकोर थीं। ३२ और चारों पहिये, पटरियों के नीचे थे, और एक-एक ठेले के पहियों में धूरियाँ भी थीं; और एक-एक पहिये की ऊँचाई डेढ़-डेढ़ हाथ की थी। ३३ पटरियों की बनावट, रथ के पहिये की सी थी, और उनकी धूरियाँ, चक्र, आर, और नाभे सब ढाली हुई थीं। ३४ और एक-एक ठेले के चारों कोनों पर चार आधार थे, और आधार और ठेले दोनों एक ही टुकड़े के बने थे। ३५ और एक-एक ठेले के सिरे पर आधा हाथ ऊँची चारों ओर गोलाई थी, और ठेले के सिरे पर की टेके और पटरियाँ ठेले से जुड़े हुए एक ही टुकड़े के बने थे। ३६ और टेकों के पाटों और पटरियों पर जितनी जगह जिस पर थी, उसमें उसने कस्तब, और सिंह, और खजर के बृक्ष खोटकर भर दिये, और चारों ओर झालरें भी बनाई। ३७ इसी प्रकार से उसने दोसों ठेलों को बनाया; सभी का एक ही सॉचा और एक ही नाप, और एक ही आकार था। ३८ उसने पीतल की दस हौदी बनाई। एक-एक हौदी में चालीस-चालीस बत पानी समाना था; और एक-एक, चार-चार हाथ चौड़ी थी, और दोसों ठेलों में से एक-एक पर, एक-एक हौदी थी।

३९ उसने पाँच हौदी भवन के दक्षिण की ओर, और पाँच उसकी उत्तर की ओर रख दीं; और हौज को भवन की दाहिनी ओर अर्थात् दक्षिण-पूर्व की ओर रख दिया। ४० हराम ने हौदियों, फावड़ियों, और कटोरों को भी बनाया। सो हराम ने राजा सुलैमान के लिये यहोवा के भवन में जितना काम करना था, वह सब पूरा कर दिया, ४१ अर्थात् दो खम्भे, और उन कँगनियों की गोलाईयाँ जो दोनों खम्भों के सिरे पर थीं, और दोनों खम्भों के सिरों पर की गोलाईयों के ढाँपने को दो-दो जालियाँ, और दोनों जालियों के लिए चार-चार सौ अनार, ४२ अर्थात् खम्भों के सिरों पर जो गोलाईयाँ थीं, उनके ढाँपने के लिये अर्थात् एक-एक जाली के लिये अनारों की दो-दो पंक्तियाँ; ४३ दस ठेले और इन पर की दस हौदियाँ, ४४ एक हौज और उसके नीचे के बारह बैल, और हैंडे, फावड़ियाँ, ४५ और कटोरे बने। ये सब पात्र जिन्हें हराम ने यहोवा के भवन के निमित्त राजा सुलैमान के लिये बनाया, वह झलकाये हुए पीतल के बने। ४६ राजा ने उनको यरदन की तराई में अर्थात् सुककोत और सारातन के मध्य की चिकनी मिट्टीवाली भूमि में ढाला। ४७ और सुलैमान ने बहुत अधिक होने के कारण सब पात्रों को बिना तैले छोड़ दिया, अतः पीतल के तौल का वजन मालम न हो सका। ४८ यहोवा के भवन के जितने पात्र थे सुलैमान ने सब बनाए, अर्थात् सोने की वेदी, और सोने की वह मेज जिस पर भेट की रोटी रखी जाती थी, ४९ और शुद्ध सोने की दीवटें जो भीतरी कोठरी के आगे पाँच तो दक्षिण की ओर, और पाँच उत्तर की ओर रखी गईं; और सोने के फूल, ५० दीपक और चिमटे, और शुद्ध सोने के तसले, कैचियाँ, कटोरे, धृपदान, और करछे और भीतरवाला भवन जो परमपवित्र स्थान कहलाता है, और भवन जो मन्दिर कहलाता है, दोनों के किवाड़ों के लिये सोने के कब्जे बने। ५१ इस प्रकार जो-जो काम राजा सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिये किया, वह सब पूरा हुआ। तब सुलैमान ने अपने पिता दाऊद के पवित्र किए हुए सोने चाँदी और पात्रों को भीतर पहुँचाकर यहोवा के भवन के भण्डारों में रख दिया।

८८ तब सुलैमान ने इस्माएली पुनियों को और गोत्रों के सब मुख्य पुस्तों को भी जो इस्माएलियों के पर्वजों के घरानों के प्रधान थे, यस्श्शलेम में अपने पास इस मनसा से इकट्ठा किया, कि वे यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर अर्थात् सिच्योन से ऊपर ले आएं। ९ अतः सब इस्माएली पुष्प एतानीम नामक सातवें महीने के पर्व के समय राजा सुलैमान के पास इकट्ठे हुए। १० जब सब इस्माएली पुनिये आए, तब याजकों ने सन्दूक को उठा लिया। ११ और यहोवा का सन्दूक, और मिलापवाले तब, और जितने पवित्र पात्र उस तम्बू में थे, उन सभी को याजक और लेवीय लोग ऊपर ले गए। १२ और राजा सुलैमान और समस्त इस्माएली मण्डली, जो उसके पास इकट्ठी हुई थी, वे सब सन्दूक के सामने इने भेड़ और बैल बलि कर रहे थे, जिनकी गिनती किसी रीति से नहीं हो सकती थी। १३ तब याजकों ने यहोवा की वाचा का सन्दूक उसके स्थान को अर्थात् भवन के पवित्रस्थान में, जो परमपवित्र स्थान है, पहुँचाकर कस्तबों के पंखों के तले रख दिया। १४ कस्तब सन्दूक के स्थान के ऊपर पंख ऐसे फैलाए हुए थे, कि वे ऊपर से सन्दूक और उसके ढाँड़ों को ढाँके थे। १५ ढाँड़े तो ऐसे लम्बे थे, कि उनके सिरे उस पवित्रस्थान से जो पवित्रस्थान के सामने था दिखाई पड़ते थे परन्तु बाहर से वे दिखाई नहीं पड़ते थे। वे आज के दिन तक यहीं बर्तमान हैं। १६ सन्दूक में कुछ नहीं था, उन दो पटियाओं को छोड़ जो मूसा ने होरेब में उसके भीतर उस समय रखी, जब यहोवा ने इस्माएलियों के पिस्ते से निकलने पर उनके साथ वाचा बौद्धी थी। १७ जब याजक पवित्रस्थान से निकले, तब यहोवा के भवन में बालद भर आया। १८ और बालद के कारण याजक सेवा ठहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा

के भवन में भर गया था। १२ तब सुलैमान कहने लगा, “यहोवा ने कहा था, कि मैं घोर अंधकार में वास किए रह्हाँ। १३ सचमुच मैंने तेरे लिये एक वासस्थान, वरन् ऐसा ढूढ़ स्थान बनाया है, जिसमें तू युगानुया बना रहे।” १४ तब राजा ने इसाएल की पूरी सभा की ओर मुँह फेरकर उसको आशीर्वाद दिया; और पूरी सभा खड़ी रही। १५ और उसने कहा, “धन्य है इसाएल का परमेश्वर यहोवा! जिसने अपने मुँह से मेरे पिता दाऊद को यह वचन दिया था, और अपने हाथ से उसे पूरा किया है, १६ “जिस दिन से मैं अपनी प्रजा इसाएल को मिस्र से निकाल लाया, तब से मैंने किसी इसाएली गोत्र का कोई नगर नहीं चुना, जिसमें मेरे नाम के निवास के लिये भवन बनाया जाए; परन्तु मैंने दाऊद को चुन लिया, कि वह मेरी प्रजा इसाएल का अधिकारी हो।” १७ मेरे पिता दाऊद की यह इच्छा तो थी कि इसाएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाए। १८ परन्तु यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा, ‘‘यह जो तेरी इच्छा है, कि यहोवा के नाम का एक भवन बनाए, ऐसी इच्छा करके तूने भला तो किया; १९ तो भी तू उस भवन को न बनाएँ; तेरा जो निज पुत्र होगा, वही मेरे नाम का भवन बनाएँ।” २० यह जो वचन यहोवा ने कहा था, उसे उसने पूरा भी किया है, और मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर उठकर, यहोवा के वचन के अनुसार इसाएल की ग़दी पर विराजमान हूँ, और इसाएल के परमेश्वर यहोवा के नाम से इस भवन को बनाया है। २१ और इसमें मैंने एक स्थान उस सन्दूक के लिये ठहराया है, जिसमें यहोवा की वह वाचा है, जो उसने हमारे पुराखाओं को मिस्र देश से निकालने के समय उनसे बांधी थी।” २२ तब सुलैमान इसाएल की पूरी सभा के देखते यहोवा की वेदी के समाने खड़ा हुआ, और अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाकर कहा, हे यहोवा! २३ हे इसाएल के परमेश्वर! तेरे समान न तो ऊपर स्वर्ग में, और न नीचे पृथ्वी पर कोई परमेश्वर है: तेरे जो दास अपने सम्पूर्ण मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर चलते हैं, उनके लिये तू अपनी वाचा पूरी करता, और कस्ता करता रहता है। २४ जो वचन तुम मेरे पिता दाऊद को दिया था, उपका तूने पालन किया है, जैसा तूने अपने मुँह से कहा था, जैसा ही अपने हाथ से उसको पूरा किया है, जैसा कि आज है। २५ इसलिए अब हे इसाएल के परमेश्वर यहोवा! इस वचन को भी पूरा कर, जो तुमे अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था, ‘‘तेरे कुल में, मेरे सामने इसाएल की ग़दी पर विराजनेवाले संदेश बने रहेंगे इतना हो कि जैसे तू स्वयं मुझे सम्मुख जानकर चलता रहा, वैसे ही तेरे वश के लोग अपनी चाल चलन में ऐसी ही चौकसी करें।’’ २६ इसलिए अब हे इसाएल के परमेश्वर अपना जो वचन तुमे अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था उसे सच्चा सिद्ध कर। २७ “क्या परमेश्वर सचमुच पृथ्वी पर वास करेगा, स्वर्ग में वरन् सबसे ऊँचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता, फिर मेरे बनाए हुए इस भवन में कैसे समाएँ।” २८ तो भी है मेरे परमेश्वर यहोवा! अपने दास की प्रार्थना और गिडिगिडाहट की ओर कान लागाकर, मेरी चिल्लाहट और यह प्रार्थना सुन! जो मैं आज तेरे सामने कर रहा हूँ; २९ कि तेरी आँख इस भवन की ओर अर्थात् इसी स्थान की ओर जिसके विषय तूने कहा है, ‘‘मेरा नाम वहाँ रहेगा,’ रात दिन खुली रहें और जो प्रार्थना तेरा दास इस स्थान की ओर करे, उसे तू सुन ले। ३० और तू अपने दास, और अपनी प्रजा इसाएल की प्रार्थना जिसको वे इस स्थान की ओर गिडिगिडा के करें उसे सुनना, वरन् स्वर्ग में से जो तेरा निवास-स्थान है सुन लेना, और सुनकर क्षमा करना। ३१ “जब कोई किसी दूसरे का अपराध करे, और उसको शपथ खिलाई जाए, और वह आकर इस भवन में तेरी वेदी के सामने शपथ खाए, ३२ तब तू स्वर्ग में सुनकर, अर्थात् अपने दासों का न्याय करके दुष्को दुष्क ठहरा और उसकी चाल उसी के सिर लौटा दे, और निर्देश को निर्देश ठहराकर, उसके धार्मिकता के अनुसार उसको फैल देना। ३३ फिर जब तेरी

प्रजा इसाएल तेरे विस्तृ पाप करने के कारण अपने शत्रुओं से हार जाए, और तेरी ओर फिरकर तेरा नाम ले और इस भवन में तुझे से गिडिगिडाहट के साथ प्रार्थना करे, ३४ तब तू स्वर्ग में से सुनकर अपनी प्रजा इसाएल का पाप क्षमा करना: और उन्हें इस देश में लौटा ले आना, जो तूने उनके पुराखाओं को दिया था। ३५ “जब वे तेरे विस्तृ पाप करें, और इस कारण आकाश बन्द हो जाए, कि वर्षी न होए, ऐसे समय यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करके तेरे नाम को मानें जब तू उन्हें दुःख देता है, और अपने पाप से फिरें, तो तू स्वर्ग में से सुनकर क्षमा करना, तू जो उनको वह भला मार्ग दिखाता है, जिस पर उन्हें चलना चाहिये, इसलिए अपने इस देश पर, जो तूने अपनी प्रजा का भागकर दिया है, पानी बरसा देना। ३६ यह जब इस देश में अकाल या मरी या झुल्स हो या गेस्ट्स या टिट्हियाँ या कीड़े लंगों या उनके शत्रु उनके देश के फाटकों में उन्हें घेर रखें, अथवा कोई विपत्ति या रोग क्यों न हों, ३७ तब यदि कोई मनुष्य या तेरी प्रजा इसाएल अपने-अपने मन का दुःख जान ले, और गिडिगिडाहट के साथ प्रार्थना करके अपने हाथ इस भवन की ओर फैलाएँ; ३८ तो तू अपने स्वर्गीय निवास-स्थान में से सुनकर क्षमा करना, और ऐसा करना, कि एक-एक के मन को जानकर उसकी समस्त चाल के अनुसार उसको फैल देना: तू ही तो सब मनुष्यों के मन के भेदों का जानेवाला है। ३९ तब वे जितने दिन इस देश में रहें, जो तूने उनके पुराखाओं को दिया था, उनने दिन तक तेरा भय मानते रहें। ४० “फिर परदेशी भी जो तेरी प्रजा इसाएल का न हो, जब वह तेरा नाम सुनकर, दूर देश से आए, ४१ वह तो तेरे बड़े नाम और बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा का समाचार पाए; इसलिए जब ऐसा कोई आकर इस भवन की ओर प्रार्थना करे, ४२ तब तू अपने स्वर्गीय निवास-स्थान में से सुन, और जिस बात के लिये ऐसा परदेशी तुझे पुकारे, उसी के अनुसार व्यवहार करना जिससे पृथ्वी के सब देशों के लोग तेरा नाम जानकर तेरी प्रजा इसाएल के समान तेरा भय मानें, और निच्छय जानें, कि यह भवन जिसे मैंने बनाया है, वह तेरा ही कहलाता है। ४३ “जब तेरी प्रजा के लोग जहाँ कहीं तू उन्हें भेजे, वहाँ अपने शत्रुओं से लड़ाई करने को निकल जाएँ, और इस नगर की ओर जिसे तूने चुना है, और इस भवन की ओर जिसे मैंने तेरे नाम पर बनाया है, यहोवा से प्रार्थना करें, ४४ तब तू स्वर्ग में से उनकी प्रार्थना और गिडिगिडाहट सुनकर उनका न्याय ४५ “निष्पात तो कोई मनुष्य नहीं है: यदि ये भी तेरे विस्तृ पाप करें, और तू उन पर कोप करके उन्हें शत्रुओं के हाथ कर दे, और वे उनको बन्दी बनाकर अपने देश को चाहे वह दूर हो, चाहे निकट, ले जाएँ, ४६ और यदि वे बैंधुआई के देश में सोच विचार करें, और फिरकर अपने बन्दी बनावालों के देश में तुझे से गिडिगिडाकर कहें, ‘‘हमने पाप किया, और कुटिलता और दुष्टता की है’’ ४७ और यदि वे अपने उन शत्रुओं के देश में जो उन्हें बन्दी करके ले गए हों, अपने सम्पूर्ण मन और सम्पूर्ण प्राप्ति से तेरी ओर फिरें और अपने इस देश की ओर जो तूने उनके पुराखाओं को दिया था, और इस नगर की ओर जिसे तूने चुना है, और इस भवन की ओर जिसे मैंने तेरे नाम का बनाया है, तुझे से प्रार्थना करें, ४८ तो तू अपने स्वर्गीय निवास-स्थान में से उनकी प्रार्थना और गिडिगिडाहट सुनना; और उनका न्याय करना, ४९ और जो पाप तेरी प्रजा के लोग तेरे विस्तृ करेंगे, और जितने अपराध वे तेरे विस्तृ करेंगे, सब को क्षमा करके, उनके बन्दी करनेवालों के मन में ऐसी दया उपजाना कि वे उन पर दया करें। ५० क्योंकि वे तो तेरी प्रजा और तेरा निज भाग हैं जिन्हें तू लौहे के भट्टे के मध्य में से अर्थात् मिस्र से निकाल लाया है। ५१ इसलिए तेरी आँखें तेरे दास की गिडिगिडाहट और तेरी प्रजा इसाएल की गिडिगिडाहट की ओर ऐसी खुली रहें, कि जब जब वे तुझे पुकारें, तब-तब तू उनकी सुन लें; ५२ क्योंकि हे

प्रभु यहोवा अपने उस वचन के अनुसार, जो तूने हमारे पुरखाओं को मिस्त्र से निकालने के समय अपने दास मूसा के द्वारा दिया था, तूने इन लोगों को अपना निज भाग होने के लिये पृथकी की सब जातियों से अलग किया है।^{५४} जब सुलैमान यहोवा से यह सब प्रार्थना गिडिगिडाहट के साथ कर चुका, तब वह जो घृटने टेके और आकाश की ओर हाथ फैलाए हुए था, यहोवा की बेटी के सामने से उठा, ^{५५} और खड़ा हो, समस्त इस्माएली सभा को ऊँचे स्वर से यह कहकर आशीर्वाद दिया, ^{५६} “धन्य है यहोवा, जिसने ठीक अपने कथन के अनुसार अपनी प्रजा इस्माएल को विश्वाम दिया है, जितनी भलाई की बातें उन्हें अपने दास मूसा के द्वारा कही थीं, उनमें से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही।^{५७} हमारा परमेश्वर यहोवा जैसे हमारे पुरखाओं के संग रहता था, वैसे ही हमारे संग भी रहे, वह हमको त्याग न दे और न हमको छोड़ दे।^{५८} वह हमारे मन अपनी ओर ऐसा फिराए रखे, कि हम उसके सब मार्गों पर चला करें, और उसकी आज्ञाएँ और विधियाँ और नियम जिन्हें उसने हमारे पुरखाओं को दिया था, नित माना करें।^{५९} और मेरी ये बातें जिनकी मैंने यहोवा के सामने विनती की है, वह दिन और रात हमारे परमेश्वर यहोवा के मन में बनी रहें, और जैसी प्रतिदिन आवश्यकता हो वैसा ही वह अपने दास का और अपनी प्रजा इस्माएल का भी न्याय किया करे,^{६०} और इससे पृथकी की सब जातियों यह जान लें, कि यहोवा ही परमेश्वर है; और कोई दूसरा नहीं।^{६१} तो तुम्हारा मन हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर ऐसी पूरी सीति से लगा रहे, कि आज के समान उसकी विधियों पर चलते और उसकी आज्ञाएँ मानते रहो।”^{६२} तब राजा समस्त इस्माएल समेत यहोवा के सम्मुख मेलबलि चढ़ाने लगा।^{६३} और जो पशु सुलैमान ने मेलबलि में यहोवा को चढ़ाए, वे बाईंस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़े थी। इस रीति राजा ने सब इस्माएलियों समेत यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा की।^{६४} उस दिन राजा ने यहोवा के भवन के समनेवाले अँगांन के मध्य भी एक स्थान पवित्र किया और होमबलि, और अन्नबलि और मेलबलियों की चर्ची वही चढ़ाई, क्योंकि जो पीतल की बेटी यहोवा के सामने थी, वह उनके लिये छोटी थी।^{६५} अतः सुलैमान ने और उसके संग समस्त इस्माएल की एक बड़ी सभा ने जो हमारा के प्रवेश-द्वार से लेकर मिस्त्र के नाले तक के सब देशों से इकट्ठी हुई थी, दो सप्ताह तक अर्थात् चौदह दिन तक हमारे परमेश्वर यहोवा के सामने पर्व को माना।^{६६} फिर आठवें दिन उसने प्रजा के लोगों को विदा किया। और वे राजा को धन्य, धन्य, कहकर उस सब भलाई के कारण जो यहोवा ने अपने दास दाऊद और अपनी प्रजा इस्माएल से की थी, आनन्दित और मग्न होकर अपने-अपने डेरे को चले गए।

९ जब सुलैमान यहोवा के भवन और राजभवन को बना चुका, और जो कुछ उसने करना चाहा था, उसे यहोवा ने जैसे गिबोन में उसको दर्शन दिया था, वैसे ही दूसरी बार भी उसे दर्शन दिया।^{६७} और यहोवा ने उससे कहा, “जो प्रार्थना गिडिगिडाहट के साथ तूने मुझसे की है, उसको मैंने सुना है, यह जो भवन तूने बनाया है, उसमें मैंने अपना नाम सदा के लिये रखकर उसे पवित्र किया है, और मेरी आँखें और मेरा मन नित्य वही लगे रहेंगे।^{६८} और यदि तू अपने पिता दाऊद के समान मन की खाराइ और सिधाई से अपने को मेरे सम्में जानकर चलता रहे, और मेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया करे, और मेरी विधियों और नियमों को मानता रहे, तो मैं तेरा राज्य इस्माएल के ऊपर सदा के लिये स्थिर करूँगा;^{६९} जैसे कि मैंने तेरे पिता दाऊद को वचन दिया था, ‘तेरे कुल में इस्माएल की ग़दी पर विराजनेवाले सदा बने रहेंगे।’^{७०} परन्तु यदि तुम लोग या तुम्हारे बंश के लोग मेरे पीछे चलना छोड़ दें, और मेरी उन आज्ञाओं और विधियों को जो मैंने तुम को दी हैं, न मानें, और जाकर पराए देवताओं की उपासना करें और उन्हें दण्डवत् करने लगें, ^{७१} तो मैं

इस्माएल को इस देश में से जो मैंने उनको दिया है, काट डालूँगा और इस भवन को जो मैंने अपने नाम के लिये पवित्र किया है, अपनी दृष्टि से उतार दूँगा; और सब देशों के लोगों में इस्माएल की उपमा दी जाएगी और उसका दृष्टान्त चलेगा।^{७२} और यह भवन जो ऊँचे पर रहेगा, तो जो कोई इसके पास होकर चलेगा, वह चकित होगा, और ताली बजाएगा और वे पछेंगे, ‘यहोवा ने इस देश और इस भवन के साथ क्यों ऐसा किया है?’^{७३} तब लोग कहेंगे, ‘उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा को जो उनके पुरखाओं को मिस्त्र देश से निकाल लाया था। तजक्कर पराए देवताओं को पकड़ लिया, और उनको दण्डवत् की ओर उनकी उपासना की इस कारण यहोवा ने यह सब पवित्र उन पर डाल दी।’”^{७४} सुलैमान को तो यहोवा के भवन और राजभवन दोनों के बनाने में बीस वर्ष लग गए।^{७५} तब सुलैमान ने सोर के राजा हीराम को जिसने उसके मनमाने देवदार और सनोवर की लकड़ी और सोना दिया था, गर्विल देश के बीस नगर दिए।^{७६} तब राजा हीराम ने सोर से जाकर उन नगरों को देखा, जो सुलैमान ने उसको दिए थे, तब वे उसको अच्छे न लगे।^{७७} तब उसने कहा, “हे मेरे भाई, ये कैसे नगर तूने मुझे दिए हैं?” और उसने उनका नाम कबूल देश रखा। और यही नाम आज के दिन तक पड़ा है।^{७८} फिर हीराम ने राजा के पास एक सौ बीस किक्कार सोना भेजा था।^{७९} राजा सुलैमान ने लोगों को जो बेगारी में रखा, इसका प्रयोजन यह था, कि यहोवा का और अपना भवन बनाए, और मिल्लों और यस्तातेम की शहरपनाह और हासोर, मणियों और गेजेर नगरों को ढुक करे।^{८०} गेजेर पर तो मिस्त्र के राजा फ़िरौन ने चढ़ाई करके उसे ले लिया था और आग लगाकर फ़ूँक दिया, और उस नगर में रहनेवाले कनानियों को मार डाला और, उसे अपनी बेटी सुलैमान की रानी का निज भाग करके दिया था,^{८१} अतः सुलैमान ने गेजेर और नीचेवाले बेथेरोन, ^{८२} बालात और तामार को जो जंगल में है, ढूँढ़ किया, ये तो देश में हैं।^{८३} फिर सुलैमान के जितने भण्डारवाले नगर थे, और उसके रथों और सवारों के नगर, उनको वरन् जो कुछ सुलैमान ने यस्तातेम, लबानोन और अपने राज्य के सब देशों में बनाना चाहा, उन सब को उसने ढूँढ़ किया।^{८४} एमोरी, हिती, परिज्जी, हिब्बी और यबस्सी जो रह गए थे, जो इस्माएली न थे, ^{८५} उनके बंश जो उनके बाद देश में रह गए, और उनको इस्माएली सत्यानाश न कर सके, उनको तो सुलैमान ने दास करके बेगारी में रखा, और आज तक उनकी वही दशा है।^{८६} परन्तु इस्माएलियों में से सुलैमान ने किसी को दास न बनाया; वे तो योद्धा और उसके कर्मचारी, उसके हाकिम, उसके सरदार, और उसके रथों, और सवारों के प्रधान हुए।^{८७} जो मुख्य हाकिम सुलैमान के कामों के ऊपर ठहरके काम करनेवालों पर प्रभुता करते थे, ये पाँच सौ पचास थे।^{८८} तब फ़िरौन की बेटी दाऊदपुर से अपने उस भवन को आ गई, जो सुलैमान ने उसके लिये बनाया था, तब उसने मिल्लों को बनाया।^{८९} सुलैमान उस बेटी पर जो उसने यहोवा के लिये बनायी थी, प्रतिवर्ष तीन बार होमबलि और मेलबलि चढ़ाया करता था और साथ ही उस बेटी पर जो यहोवा के सम्मुख थी, धूप जलाया करता था, इस प्रकार उसने उस भवन को तैयार कर दिया।^{९०} फिर राजा सुलैमान ने एस्योनगेबेर में जो एदोम देश में लाल समुद्र के किनारे एलोत के पास है, जहाज बनाए।^{९१} और जहाजों में हीराम ने अपने अधिकार के मल्लाहों को, जो समुद्र की जानकारी रखते थे, सुलैमान के सेवकों के संग भेज दिया।^{९२} उन्होंने ओपीर को जाकर वहाँ से चार सौ बीस किक्कार सोना, राजा सुलैमान को लाकर दिया।

१० जब शेवा की रानी ने यहोवा के नाम के विषय सुलैमान की कीर्ति सुनी, तब वह कठिन-कठिन प्रश्नों से उसकी परीक्षा करने को चल पड़ी।^{९३}

वह तो बहुत भारी दल के साथ, मसालों, और बहुत सोने, और मणि से लदे ऊँट साथ लिये हुए यस्शलेम को आईं, और सुलैमान के पास पहुँचकर अपने मन की सब बातों के विषय में उससे बातें करने लगी। ३ सुलैमान ने उसके सब प्रश्नों का उत्तर दिया, कोई बात राजा की बुद्धि से ऐसी बाहर न रही कि वह उसको न बता सका। ४ जब शेबा की रानी ने सुलैमान की सब बुद्धिमानी और उसका बनाया हुआ भवन, और उसकी मेज पर का भोजन देखा, ५ और उसके कर्मचारी किस रीति बैठते, और उसके टहल्तुए किस रीति खड़े रहते, और कैसे-कैसे कपड़े पहने रखते हैं, और उसके पिलानेवाले कैसे हैं, और वह कैसी चढ़ाई है, जिसमें वह यहोवा के भवन को जाया करता है, यह सब जब उसने देखे, तब वह चकित रह गई। ६ तब उसने राजा से कहा, “तेरे कामों और बुद्धिमानी की जो कीर्ति मैंने अपने देश में सुनी थी वह सच ही है। ७ परन्तु जब तक मैंने आप ही आकर अपनी औंखों से यह न देखा, तब तक मैंने उन बातों पर विश्वास न किया, परन्तु इसका आधा भी मुझे न बताया गया था; तेरी बुद्धिमानी और कल्पना उस कीर्ति से भी बढ़कर है, जो मैंने सुनी थी। ८ धन्य हैं तेरे जन! धन्य हैं तेरे ये सेवक! जो नित्य तेरे सम्मुख उपस्थित रहकर तेरी बुद्धि की बातें सुनते हैं। ९ धन्य है तेरा परमेश्वर यहोवा! जो तड़ा से ऐसा प्रसन्न हुआ कि तुझे इमाएल की राजगढ़ी पर विराजमान किया यहोवा इमाएल से सदा प्रेम रखता है, इस कारण उसने तुझे न्याय और धार्मिकता करने को राजा बना दिया है। १० उसने राजा को एक सौ बीस किक्कार सोना, बहुत सा सुगन्ध-दृव्य, और मणि दिया; जितना सुगन्ध-दृव्य शेबा की रानी ने राजा सुलैमान को दिया, उतना फिर कभी नहीं आया। ११ फिर हीराम के जहाज भी जो ओरपार से सोना लाते थे, बहुत सीं चन्दन की लकड़ी और मणि भी लाए। १२ और राजा ने चन्दन की लकड़ी से यहोवा के भवन और राजभवन के लिये खम्भे और गर्वयों के लिये बीणा और सारंगियाँ बनवाईं; ऐसी चन्दन की लकड़ी आज तक फिर नहीं आई, और न दिखाई पड़ी है। १३ शेबा की रानी ने जो कुछ चाहा, वही राजा सुलैमान ने उसकी इच्छा के अनुसार उसको दिया, फिर राजा सुलैमान ने उसको अपनी उदारता से बहुत कुछ दिया, तब वह अपने जनों समेत अपने देश को लौट गई। १४ जो सोना प्रतिवर्ष सुलैमान के पास पहुँचा करता था, उसका तौल छ: सौ छियासठ किक्कार था। १५ इसके अतिरिक्त सौदागरों से, और व्यापारियों के लेन-देन से, और अरब देशों के सब राजाओं, और अपने देश के राज्यालों से भी बहुत कुछ मिलता था। १६ राजा सुलैमान ने सोना गढ़वाकर तीन सौ छोटी ढालें भी बनवाईं; एक-एक ढाल में छ: सौ शेकेल सोना लगा। १७ फिर उसने सोना गढ़वाकर तीन सौ छोटी ढालें भी बनवाईं; एक-एक छोटी ढाल में, तीन माने सोना लगा; और राजा ने उनको लबानोन का बन नामक महल में रखवा दिया। १८ राजा ने हाथी दाँत का एक बड़ा सिंहासन भी बनवाया, और उत्तम कुन्दन से मढ़वाया। १९ उस सिंहासन में छ: सीढ़ियाँ थीं; और सिंहासन का पिछला भाग गोलाकार था, और बैठने के स्थान के दोनों ओर टेक लगी थीं, और दोनों टेकों के पास एक-एक सिंह खड़ा हुआ बना था। २० और छोड़ी सीढ़ियों के दोनों ओर एक-एक सिंह खड़ा हुआ बना था, कुल बाहर सिंह बने थे। किसी राज्य में ऐसा सिंहासन कभी नहीं बना; २१ राजा सुलैमान के पीने के सब पात्र सोने के बने थे, और लबानोन का बन नामक महल के सब पात्र भी शुद्ध सोने के थे, चाँदी का कोई भी न था। सुलैमान के दिनों में उसका कुछ मूँह न था। २२ क्योंकि समुद्र पर हीराम के जहाजों के साथ राजा भी तर्पिणी के जहाज रखता था, और तीन-तीन वर्ष पर तर्पिणी के जहाज सोना, चाँदी, हाथी दाँत, बन्दर और मधूर ले आते थे। २३ इस प्रकार राजा सुलैमान, धन और बुद्धि में पृथ्वी के सब राजाओं से बढ़कर हो गया। २४ और समस्त पृथ्वी के लोग उसकी बुद्धि की

बातें सुनने को जो परमेश्वर ने उसके मन में उत्पन्न की थी, सुलैमान का दर्शन पाना चाहते थे। २५ और वे प्रतिवर्ष अपनी-अपनी भेट, अर्थात् चाँदी और सोने के पात्र, वस्त्र, शश्व, सुगन्ध-दृव्य, घोड़े, और खच्चर ले आते थे। २६ सुलैमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर लिये, उसके चौदह सौ रथ, और बारह हजार सवार हो गए, और उनको उसने रथों के नगरों में, और यस्शलेम में राजा के पास ठहरा रखा। २७ और राजा ने बहुतायत के कारण, यस्शलेम में चाँदी को तो ऐसा कर दिया जैसे पत्थर और देवदार को ऐसा जैसे नीचे के देश के गत्तर। २८ और जो घोड़े सुलैमान रखता था, वे मिथ से आते थे, और राजा के व्यापारी उन्हें ब्लॉड-ड्रॉप करके ठहराए हुए दाम पर लिया करते थे। २९ एक रथ तो छः सौ शेकेल चाँदी में, और एक घोड़ा डेढ़ सौ शेकेल में, मिथ से आता था, और इसी दाम पर वे हितियों और अराम के सब राजाओं के लिये भी व्यापारियों के द्वारा आते थे।

११ परन्तु राजा सुलैमान फिरैन की बेटी, और बहुत सी विजातीय छियों से, जो मोआबी, अम्मोनी, एदोमी, सिदोनी, और हिती थीं, प्रीति करने लगा। २० वे उन जातियों की थीं, जिनके विषय में यहोवा ने इमाएलियों से कहा था, “तुम उनके मध्य में न जाना, और न वे तुम्हारे मध्य में आने पाएँ, वे तुम्हारा मन अपने देवताओं की ओर निःसन्देह फेरेंगी,” उन्हीं की प्रीति में सुलैमान लिप हो गया। २१ उसके सात सौ राजियाँ, और तीन सौ रखैलियाँ हो गई थीं और उसकी इन छियों ने उसका मन बहका दिया। २२ अतः जब सुलैमान बड़ा हुआ, तब उसकी छियों ने उसका मन पराए देवताओं की ओर बहका दिया, और उसका मन अपने पिता दाऊद की समान अपने परमेश्वर यहोवा पर पूरी रीति से लगा न रहा। २३ सुलैमान तो सीदेनियों की अश्वरेत नामक देवी, और अम्मोनियों के मिल्कोम नामक धृषित देवता के पीछे चला। २४ इस प्रकार सुलैमान ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और यहोवा के पीछे अपने पिता दाऊद के समान पूरी रीति से न चला। २५ उन दिनों सुलैमान ने यस्शलेम के सामने के पहाड़ पर मोआवियों के कमोश नामक धृषित देवता के लिये एक-एक ऊँचा स्थान बनाया। २६ और अपनी सब विजातीय छियों के लिये भी जो अपने-अपने देवताओं को धूप जलाती और बलिदान करती थीं, उसने ऐसा ही किया। २७ तब यहोवा ने सुलैमान पर कोध किया, क्योंकि उसका मन इमाएल के परमेश्वर यहोवा से पिर गया था जिसने दो बार उसको दर्शन दिया था। २८ और उसने इसी बात के विषय में आज्ञा दी थी, कि पराए देवताओं के पीछे न हो लेना, तो भी उसने यहोवा की आज्ञा न मानी। २९ इसलिए यहोवा ने सुलैमान से कहा, “तुझे से जो ऐसा काम हुआ है, और मेरी बृंधाई हुई वाचा और दी हुई विधि तुमे पूरी नहीं की, इस कारण मैं राज्य को निश्चय तुझ से छीनकर तेरे एक कर्मचारी को दे दूँगा। ३० तो भी तेरे पिता दाऊद के कारण तेरे दिनों में तो ऐसा न करँगा; परन्तु तेरे पुत्र के हाथ से राज्य छीन लूँगा। ३१ फिर भी मैं पूर्ण राज्य तो न छीन लूँगा, परन्तु अपने दास दाऊद के कारण, और अपने चुने हुए यस्शलेम के कारण, मैं तेरे पुत्र के हाथ में एक गोत्र छोड़ दूँगा।” ३२ तब यहोवा ने एदोमी हृदद को जो एदोमी राजवंश का था, सुलैमान का शत्रु बना दिया। ३३ क्योंकि जब दाऊद एदोम में था, और योआब सेनापति मारे हुओं को मिटा देने गया, ३४ (योआब तो समस्त इमाएल समेत वहाँ छः महीने रहा, जब तक उसने एदोम के सब पुस्तों का नाश न कर दिया) ३५ तब हृदद जो छोटा लड़का था, अपने पिता के कई एक एदोमी सेवकों के संग मिथ को जाने की मनसा से भागा। ३६ और वे मिथान से होकर पारान को आए, और पारान में से कई पुस्तों को संग लेकर मिथ में फिरैन राजा के पास गए, और

फिरौन ने उसको घर दिया, और उसके भोजन व्यवस्था की आज्ञा दी और कुछ भूमि भी दी। १९ और हदद पर फिरौन की बड़े अनुग्रह की दृष्टि हुई, और उसने उससे अपनी साली अर्थात् तहपनेस रानी की बहन ब्याह दी। २० और तहपनेस की बहन से गन्भूत उत्पन्न हुआ और इसका दूध तहपनेस ने फिरौन के भवन में छुड़ाया; तब गन्भूत फिरौन के भवन में उसी के पुत्रों के साथ रहता था। २१ जब हदद ने मिस्र में रहते यह सुना, कि दाऊद अपने पुरुखाओं के संग जा मिला, और योआब सेनापति भी मर गया है, तब उसने फिरौन से कहा, “मुझे आज्ञा दे कि मैं अपने देश को जाऊँ!” २२ फिरौन ने उससे कहा, “क्यों? मेरे यहाँ तुझे क्या घटी हुई कि तू अपने देश को चला जाना चाहता है?” उसने उत्तर दिया, “कुछ नहीं हुई, तो भी मुझे अवश्य जाने दे।” २३ फिर परमेश्वर ने उसका एक और शत्रु कर दिया, अर्थात् एल्यादा के पुत्र रजोन को, वह तो अपने स्वामी सोबा के राजा हददेजेर के पास से भागा था; २४ और जब दाऊद ने सोबा के जनों को घाट किया, तब रजोन अपने पास कई पुस्तों को इकट्ठे करके, एक दल का प्रधान हो गया, और वह दमिश्क को जाकर वहाँ रहने और राज्य करने लगा। २५ उस हानि के साथ-साथ जो हदद ने की, रजोन भी, सुलैमान के जीवन भर इस्माइल का शत्रु बना रहा; और वह इस्माइल से धूणा रखता हुआ अराम पर राज्य करता था। २६ फिर नबात का और सस्त-आह नामक एक विधावा का पुत्र यारोबाम नामक एक ऐप्रैमी सरेदावासी जो सुलैमान का कर्मचारी था, उसने भी राजा के विस्तु सिर उठाया। २७ उसका राजा के विस्तु सिर उठाने का यह कारण हुआ, कि सुलैमान मिल्लों को बना रहा था और अपने पिता दाऊद के नगर के दरार बन्द कर रहा था। २८ यारोबाम बड़ा शर्वीर था, और जब सुलैमान ने जवान को देखा, कि यह परिश्रमी है; तब उसने उसको यूसूक के घराने के सब काम पर मुखिया ठहराया। २९ उन्हीं दिनों में यारोबाम यस्सलेम से निकलकर जा रहा था, कि शीलोवासी अहिय्याह नबी, नई चंद्र ओढ़े हुए मार्ग पर उससे मिला; और केवल वे ही दोनों मैदान में थे। ३० तब अहिय्याह ने अपनी उस नई चंद्र को ले लिया, और उसे फांडकर बारह टुकड़े कर दिए। ३१ तब उसने यारोबाम से कहा, “दस टुकड़े ले लो; क्योंकि, इस्माइल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, ‘सुन, मैं राज्य को सुलैमान के हाथ से छीनकर दस गोत्र तेरे हाथ में कर दूँगा।’ ३२ परन्त मेरे दास दाऊद के कारण और यस्सलेम के कारण जो मैंने इस्माइल के सब गोत्रों में से चुना है, उसका एक गोत्र बना रहेगा। ३३ इसका कारण यह है कि उन्होंने मुझे त्याग कर सीदेनियों की देवी अश्तरेत और मोआवियों के देवता कामोश, और अम्मोनियों के देवता मिल्कोम को टण्डवत की, और मेरे मार्ग पर नहीं चलते; और जो मेरी दृष्टि में ठीक है, वह नहीं किया, और मेरी विधियों और नियमों को नहीं माना जैसा कि उसके पिता दाऊद ने किया। ३४ तो भी मैं उपरके हाथ से पूर्ण राज्य न ले लूँगा, परन्तु मेरा चुना हुआ दास दाऊद जो मेरी आज्ञाएँ और विधियाँ मानता रहा, उसके कारण मैं उसको जीवन भर प्रधान ठहराए रखूँगा। ३५ परन्त उसके पुत्र के हाथ से मैं राज्य अर्थात् दस गोत्र लेकर तुझे दे दूँगा। ३६ और उसके पुत्र को मैं एक गोत्र दूँगा, इसलिए कि यस्सलेम अर्थात् उस नगर में जिसे अपना नाम रखने को मैंने चुना है, मेरे दास दाऊद का दीपक मेरे सामने संदेव बना रहे। ३७ परन्त तुझे मैं ठहरा लूँगा, और तू अपनी इच्छा भर इस्माइल पर राज्य करेगा। ३८ और यदि तू मेरे दास दाऊद के समान मेरी सब आज्ञाएँ माने, और मेरे मार्ग पर चले, और जो काम मेरी दृष्टि में ठीक है, वही करे, और मेरी विधियाँ और आज्ञाएँ मानता रहे, तो मैं तेरे संग रहूँगा, और जिस तरह मैं दाऊद का घराना बनाए रखा है, वैसे ही तेरा भी घराना बनाए रखूँगा, और तेरे हाथ इस्माइल को दूँगा। ३९ इस पाप के कारण मैं दाऊद के बंश को दुःख दूँगा, तो भी सदा तक नहीं।” ४० इसलिए सुलैमान ने

यारोबाम को मार डालना चाहा, परन्तु यारोबाम मिस्र के राजा शीशक के पास भाग गया, और सुलैमान के मरने तक वही रहा। ४१ सुलैमान की और सब बातें और उसके सब काम और उसकी बुद्धिमानी का वर्णन, क्या सुलैमान के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? ४२ सुलैमान को यस्सलेम में सब इस्माइल पर राज्य करते हुए चार्टीस वर्ष बीते। ४३ और सुलैमान मरकर अपने पुरुखाओं के संग जा मिला, और उसको उसके पिता दाऊद के नार में मिली दी गई, और उसका पुत्र रहबाम उसके स्थान पर राजा हुआ।

१२ रहबाम शेकेम को गया, क्योंकि सब इस्माइली उसको राजा बनाने के लिये वही गए थे। १३ जब नबात के पुत्र यारोबाम ने यह सुना, (जो अब तक मिस्र में ही रहता था, क्योंकि यारोबाम सुलैमान राजा के डर के मारे भागकर मिस्र में रहता था। १४ अतः उन लोगों ने उसको बुलवा भेजा) तब यारोबाम और इस्माइल की समस्त सभा रहबाम के पास जाकर यह कहने लगी, १५ “तेरे पिता ने तो हम लोगों पर भारी जूँआ डाल रखा था, तो अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को, और उस भारी जूँआ को, जो उसने हम पर डाल रखा है, कुछ हलका कर; तब हम तेरे अधीन रहेंगे।” १६ उसने कहा, “अभी तो जाओ, और तीन दिन के बाद मेरे पास फिर आना।” तब वे चले गए। १७ तब राजा रहबाम ने उन बड़ों से जो उसके पिता सुलैमान के जीवन भर उसके सामने उपस्थित रहा करते थे, सम्मति ली, “इस प्रजा को कैसा उत्तर देना उचित है, इसमें तुम क्या सम्मति देते हो?” १८ उन्होंने उसको यह उत्तर दिया, “यदि तू अपनी प्रजा के लोगों का दास बनकर उनके अधीन हो और उनसे मध्य बातें कहें, तो वे संदेव तेरे अधीन बने रहेंगे।” १९ रहबाम ने उस सम्मति को छोड़ दिया, जो बड़ों ने उसको दी थी, और उन जवानों से सम्मति ली, जो उसके संग बड़े हुए थे, और उसके सम्मुख उपस्थित रहा करते थे। २० उनसे मध्य बातें कहें, तो वे संदेव तेरे अधीन बने रहेंगे।” २१ रहबाम ने उस सम्मति को छोड़ दिया, जो बड़ों ने उसको दी थी, और उन जवानों से सम्मति ली, जो उसके संग बड़े हुए थे, और उसके सम्मुख उपस्थित रहा करते थे। २२ उनसे पछा, “मैं प्रजा के लोगों को कैसा उत्तर दूँ? इसमें तुम क्या सम्मति देते हो? उन्होंने तो मुझसे कहा है, ‘जो जूँआ तेरे पिता ने हम पर डाल रखा है, उसे तू हलका कर।’” २३ जवानों ने जो उसके संग बड़े हुए थे उसको यह उत्तर दिया, “उन लोगों ने तुझे से कहा है, ‘तेरे पिता ने हमारा जूँआ भारी किया था, परन्तु तू उसे हमारे लिए हलका कर;’ तू उनसे यह कहना, ‘मेरी छिंगुलिया मेरे पिता की कमर से भी मोटी है।’ २४ मेरे पिता ने तुम पर जो भारी जूँआ रखा था, उसे मैं और भी भारी कहूँगा; मेरा पिता तो तुम को कोडों से ताड़ना देता था, परन्तु मैं बिच्छुओं से दूँगा।” २५ तीसरे दिन, जैसे राजा ने ठहराया था, कि तीसरे दिन मेरे पास फिर आना, वैसे ही यारोबाम और समस्त प्रजागण रहबाम के पास उपस्थित हुए। २६ तब राजा ने प्रजा से कड़ी बातें की, २७ और बड़ों की दी हुई सम्मति छोड़कर, जवानों की सम्मति के अनुसार उनसे कहा, “मेरे पिता ने तो तुम्हारा जूँआ भारी कर दिया, परन्तु मैं उसे और भी भारी कर दूँगा: मेरे पिता ने तो कोडों से तुम को ताड़ना दी, परन्तु मैं तुम को बिच्छुओं से ताड़ना दूँगा।” २८ इस प्रकार राजा ने प्रजा की बात नहीं मानी, इसका कारण यह है, कि जो वचन यहोवा ने शीलोवासी अहिय्याह के द्वारा नबात के पुत्र यारोबाम से कहा था, उसको पूरा करने के लिये उसने ऐसा ही ठहराया था। २९ जब समस्त इस्माइल ने देखा कि राजा हमारी नहीं सुनता, तब वे बोले, “दाऊद के साथ हमारा क्या अंश? हमारा तो यिशै के पुत्र में कोई बाहर नहीं! हे इस्माइल अपने-अपने डेरे को चले जाओ: अब है दाऊद, अपने ही धरने की चिन्ना करा।” ३० अतः इस्माइल अपने-अपने डेरे को चले गए। केवल जिनने इस्माइली यहदा के नगरों में देरे हुए थे उन पर रहबाम राज्य करता रहा। ३१ तब राजा रहबाम ने अदोराम को जो सब बेगारों पर अधिकारी था, भेज दिया, और सब इस्माइलियों ने उस पर पथराव किया, और वह मर गया: तब रहबाम फुर्ती से

अपने रथ पर चढ़कर यस्शलेम को भाग गया। ११ इस प्रकार इसाएल दाऊद के घराने से फिर गया, और आज तक फिर हुआ है। १० यह सुनकर कि यारोबाम लौट आया है, समस्त इसाएल ने उसको मण्डली में बुलवा भेजा और सम्पूर्ण इसाएल के ऊपर राजा नियुक्त किया, और यहदा के गोत्र को छोड़कर दाऊद के घराने से कोई मिला न रहा। ११ जब रहबाम यस्शलेम को आया, तब उसने यहदा के समस्त घराने को, और बिन्यामीन के गोत्र को, जो मिलकर एक लाख असरी हजार अच्छे योद्धा थे, इकट्ठा किया, कि वे इसाएल के घराने के साथ लड़कर सुलैमान के पुत्र रहबाम के वश में फिर राज्य कर दें। १२ तब परमेश्वर का यह वचन परमेश्वर के जन शमायाह के पास पहुँचा, “यहदा के राजा सुलैमान के पुत्र रहबाम से, १३ और यहदा और बिन्यामीन के सब घराने से, और सब लोगों से कह, ‘यहोवा यह कहता है, १४ कि अपने भाई इसाएलियों पर चढ़ाई करके युद्ध न करो; तुम अपने-अपने घर लौट जाओ, क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से हुई है।’” यहोवा का यह वचन मानकर उन्होंने उसके अनुसार लौट जाने को अपना-अपना मार्ग लिया। १५ तब यारोबाम ऐपैम के पहाड़ी देश के शेकेम नगर को ढूढ़ करके उसमें रहने लगा, फिर वहाँ से निकलकर पन्नएल को भी ढूढ़ किया। १६ तब यारोबाम सोचने लगा, “अब राज्य दाऊद के घराने का हो जाएगा। १७ यदि प्रजा के लोग यस्शलेम में बलि करने को जाएं, तो उनका मन अपने स्वामी यहदा के राजा रहबाम की ओर फिरेगा, और वे मुझे घात करके यहदा के राजा रहबाम के हो जाएंगे।” १८ अतः राजा ने सम्मति लेकर सोने के दो बछड़े बनाए और लोगों से कहा, “यस्शलेम को जाना तुम्हारी शक्ति से बाहर है इसलिए हे इसाएल अपने देवताओं को देखो, जो तुम्हें मिश्र देश से निकाल लाए है।” १९ उसने एक बछड़े को बेतेल, और दूसरे को दान में स्थापित किया। २० और यह बात पाप का कारण हुई; क्योंकि लोग उनमें से एक के सामने दण्डवत् करने को दान तक जाने लगे। २१ और उसने ऊँचे स्थानों के भवन बनाए, और सब प्रकार के लोगों में से जो लेनीवंशी न थे, याजक ठहराए। २२ फिर यारोबाम ने आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन यहदा के पर्व के समान एक पर्व ठहरा दिया, और वेदी पर बलि चढ़ाने लगा; इस रीति उसने बेतेल में अपने बनाए हुए बछड़ों के लिये वेदी पर, बलि किया, और अपने बनाए हुए ऊँचे स्थानों के याजकों को बेतेल में ठहरा दिया। २३ जिस महीने की उसने अपने मन में कल्पना की थी अर्थात् आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन को वह बेतेल में अपनी बनाई हुई वेदी के पास चढ़ गया। उसने इसाएलियों के लिये एक पर्व ठहरा दिया, और धूप जलाने को वेदी के पास चढ़ गया।

१३ तब यहोवा से वचन पाकर परमेश्वर का एक जन यहदा से बेतेल को आया, और यारोबाम धूप जलाने के लिये वेदी के पास खड़ा था। १८ उस जन ने यहोवा से वचन पाकर वेदी के विस्तु यह पुकारा, “वेदी, हे वेदी! यहोवा यह कहता है, कि सुन, दाऊद के कुल में योशियाह नामक एक लड़का उत्पन्न होगा, वह उन ऊँचे स्थानों के याजकों को जो तुझ पर धूप जलाते हैं, तुझ पर बलि कर देगा; और तुझ पर मनुष्यों की हाईड़ीं जलाइ जाएँगी।” १९ और उसने, उसी दिन यह कहकर उस बात का एक चिन्ह भी बताया, “यह वचन जो यहोवा ने कहा है, इसका चिन्ह यह है कि यह वेदी फट जाएगी, और इस पर की राख गिर जाएगी।” २० तब ऐसा हुआ कि परमेश्वर के जन का यह वचन सुनकर जो उसने बेतेल की वेदी के विस्तु पुकारकर कहा, यारोबाम ने वेदी के पास से हाथ बढ़ाकर कहा, “उसको पकड़ लो!” तब उसका हाथ जो उसकी ओर बढ़ाया गया था, सख गया और वह उसे अपनी ओर खींच न सका। २१ और वेदी फट गई, और उस पर की राख गिर गई; अतः वह चिन्ह पूरा हुआ, जो परमेश्वर के जन ने यहोवा से वचन पाकर कहा था। २२ तब राजा

ने परमेश्वर के जन से कहा, “अपने परमेश्वर यहोवा को मना और मेरे लिये प्रार्थना कर, कि मेरा हाथ ज्यों का त्यों हो जाए।” तब परमेश्वर के जन ने यहोवा को मानाया और राजा का हाथ फिर ज्यों का त्यों हो गया। २३ तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, “मेरे संग घर चलकर अपना प्राण ठंडा कर, और मैं तुझे दान भी दूँगा।” २४ परमेश्वर के जन ने राजा से कहा, “चाहे तु मुझे अपना आधा घर भी दे, तो भी तेरे घर न चलूँगा और इस स्थान में मैं न तो रोटी खाऊँगा और न पानी पीऊँगा। २५ क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा मिली है, कि न तो रोटी खाना, और न पानी पीना, और न उस मार्ग से लौटना जिससे तू जाएगा।” २६ इसलिए वह उस मार्ग से जिससे बेतेल को गया था न लौटकर, दूसरे मार्ग से चला गया। २७ बेतेल में एक बृद्ध नवी रहता था, और उसके एक बेटे ने अकार उससे उन सब कामों का वर्णन किया जो परमेश्वर के जन ने उस दिन बेतेल में किए थे; और जो बातें उसने राजा से कही थीं, उनको भी उसने अपने पिता से कह सुनाया। २८ उसके बेटों ने तो यह देखा था, कि परमेश्वर का वह जन जो यहदा से आया था, किस मार्ग से चला गया, अतः उनके पिता ने उनसे पूछा, “वह किस मार्ग से चला गया?” २९ और उसने अपने बेटों से कहा, “मेरे लिये गदहे पर काठी बाँधो;” तब उन्होंने गदहे पर काठी बाँधी, और वह उस पर चढ़ा, ३० और परमेश्वर के जन के पीछे जाकर उसे एक बांज वक्ष के तले बैठा हुआ पाया; और उससे पूछा, “परमेश्वर का जो जन यहदा से आया था, क्या तू वही है?” ३१ उसने कहा, “हाँ, वही हूँ।” उसने उससे कहा, “मेरे संग घर चलकर भोजन कर।” ३२ उसने उससे कहा, “मैं न तो तेरे संग लौट सकता, और न तेरे संग घर में सकता हूँ और न मैं इस स्थान में तेरे संग रोटी खाऊँगा, न पानी पीऊँगा। ३३ क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे यह आज्ञा मिली है, कि वहाँ न तो रोटी खाना और न पानी पीना, और जिस मार्ग से तू जाएगा उससे न लौटना।” ३४ उसने कहा, “जैसा तू नवी है वैसा ही मैं भी नवी हूँ; और मुझसे एक दूत ने यहोवा से वचन पाकर कहा, कि उस पुम्प को अपने संग अपने घर लौटा ले आ, कि वह रोटी खाए, और पानी पीए।” यह उसने उससे झूँट कहा। ३५ अतएव वह उसके संग लौट गया और उसके घर में रोटी खाई और पानी पीया। ३६ जब वे मेज पर बैठे ही थे, कि यहोवा का वचन उस नवी के पास पहुँचा, जो दूसरे को लौटा ले आया था। ३७ उसने परमेश्वर के उस जन को जो यहदा से आया था, पुकारके कहा, “यहोवा यह कहता है इसलिए कि तूने यहोवा का वचन न माना, और जो आज्ञा तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे ती थी उसे भी नहीं माना; ३८ परन्तु जिस स्थान के विषय उसने तुझ से कहा था, ‘उसमें न तो रोटी खाना और न पानी पीना,’ उसी में तूने लौटकर रोटी खाई, और पानी भी पिया है इस कारण तुझे अपने पुरखाओं के कब्रिस्तान में मिट्टी नहीं दी जाएगी।” ३९ जब वह खा पी चुका, तब उसने परमेश्वर के उस जन के लिये जिसको वह लौटा ले आया था गदहे पर काठी बाँधाई। ४० जब वह मार्ग में चल रहा था, तो एक सिंह उसे मिला, और उसको मार डाला, और उसका शव मार्ग पर पड़ा रहा, और गदहा उसके पास खड़ा रहा और सिंह भी लोथ के पास खड़ा रहा। ४१ जो लोग उधर से चले आ रहे थे उन्होंने यह देखकर कि मार्ग पर एक शव पड़ा है, और उसके पास सिंह खड़ा है, उस शव में जाकर जहाँ वह बृद्ध नवी रहता था यह समाचार सुनाया। ४२ यह सुनकर उस नवी ने जो उसको मार्ग पर से लौटा ले आया था, कहा, “परमेश्वर का वही जन होगा, जिसने यहोवा के वचन के विस्तु किया था, इस कारण यहोवा ने उसको सिंह के पंजे में पड़ने दिया; और यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने उससे कहा था, सिंह ने उसे फाड़कर मार डाला होगा।” ४३ तब उसने अपने बेटों से कहा, “मेरे लिये गदहे पर काठी बाँधो;” जब उन्होंने काठी बाँधी, ४४ तब

उसने जाकर उस जन का शब मार्ग पर पड़ा हुआ, और गदहे, और सिंह दोनों को शब के पास खड़े हुए पाया, और यह भी कि सिंह ने न तो शब को खाया, और न गदहे को फाड़ा है। २८ तब उस बूढ़े नबी ने परमेश्वर के जन के शब को उठाकर गदहे पर लाद लिया, और उसके लिये छाती पीटने लगा, और उसे मिट्ठी देने को अपने नगर में लौटा ले गया। २९ और उसने उसके शब को अपने कब्रिस्तान में रखा, और लोग “हाय, मेरे भाई!” यह कहकर छाती पीटने लगे। ३० फिर उसे मिट्ठी देकर उसने अपने बेटों से कहा, “जब मैं मर जाऊँगा तब मझे इसी कब्रिस्तान में रखना, जिसमें परमेश्वर का यह जन रखा गया है, और मेरी हड्डियाँ उसी की हड्डियों के पास रख देना।” ३१ क्योंकि जो बचन उसने यहोवा से पाकर बेतेल की वेदी और सामरिया के नगरों के सब ऊँचे स्थानों के भवनों के विस्तृ पुकारके कहा है, वह निश्चय पूरा हो जाएगा।” ३२ इसके बाद यारोबाम अपनी बुरी चाल से न किरा। उसने फिर सब प्रकार के लोगों में से ऊँचे स्थानों के याजक बनाए, वरन् जो कोई चाहता था, उसका संस्कार करके, वह उसको ऊँचे स्थानों का याजक होने को ठहरा देता था। ३३ यह बात यारोबाम के घराने का पाप ठहरी, इस कारण उसका विनाश हुआ, और वह धर्मी पर से नाश किया गया।

१४ उस समय यारोबाम का बेटा अवियाह रोगी हुआ। २ तब यारोबाम ने अपनी बीं से कहा, “ऐसा भेष बना कि कोई तुझे पहचान न सके कि यह यारोबाम की बीं है, और शीलों को चली जा, वहाँ अहियाह नबी रहता है जिसने मुझसे कहा था ‘त इस प्रजा का राजा हो जाएगा।’” ३ उसके पास तदस रोटी, और टिकियाँ और एक कुपी मधु लिये हुए जा, और वह तुझे बताएगा कि लड़के का क्या होगा।” ४ यारोबाम की बीं ने वैसा ही किया, और चलकर शीलों को पहुँची और अहियाह के घर पर आई: अहियाह को तो कुछ सज्ज न पड़ा था, क्योंकि बुढ़ापे के कारण उसकी ऊँचे धू-धूनी पड़ गई थी। ५ और यहोवा ने अहियाह से कहा, “सुन यारोबाम की बीं तुझ से अपने बेटे के विषय में जो रोगी है कुछ पूछने को आती है, तू उससे ये-ये बातें कहना; वह तो आकर अपने को दूसरी औरत बताएगी।” ६ जब अहियाह ने द्वार में आते हुए उसके पाँव की आहट सुनी तब कहा, “हे यारोबाम की बीं! भीतर आ; तू अपने को क्यों दूसरी बीं बनाती है? मुझे तेरे लिये बुरा सन्देश मिला है।” ७ त जाकर यारोबाम से कह कि इसाएल का परमेश्वर यहोवा तुझ से यह कहता है, “मैंने तो तुझको प्रजा में से बढ़ाकर अपनी प्रजा इसाएल पर प्रधान किया, ८ और दाऊद के घराने से राज्य छीनकर तुझको दिया, परन्तु त मेरे दास दाऊद के समान न हुआ जो मेरी आज्ञाओं को मानता, और अपने पूर्ण मन से मेरे पीछे-पीछे चलता, और केवल वही करता था जो मेरी दृष्टि में ठीक है।” ९ तने उन सभी से बढ़ाकर जो तुझ से पहले थे बुराई, की है, और जाकर पराए देवता की उपासना की और मूरतें ढालकर बनाई, जिससे मुझे क्रोधित कर दिया और मुझे तो पीढ़ी के फेंक दिया है। १० इस कारण मैं यारोबाम के घराने पर विपत्ति डालूँगा, वरन् मैं यारोबाम के कुल में से हर एक लड़के को और क्या बन-बन्धुए, क्या स्वाधीन इसाएल के मध्य हर एक रहनेवाले को भी नष्ट कर डालूँगा: और जैसा कोई गोबर को तब तक उठाता रहता है जब तक वह सब उठा नहीं लिया जाता, वैसे ही मैं यारोबाम के घराने की सफाई कर दूँगा। ११ यारोबाम के घराने का जो कोई नगर में मर जाए, उसको कुते खाँगें, और जो मैदान में मरे, उसको आकाश के पक्षी खा जाएँगे; क्योंकि यहोवा ने यह कहा है।” १२ इसलिए तू उठ और अपने घर जा, और नगर के भीतर तेरे पाँव पड़ते ही वह बालक मर जाएगा। १३ उसे तो समस्त इसाएली छाती पीटकर मिट्ठी देंगे; यारोबाम के सन्तानों में से केवल उसी को कब्र मिलेगी,

क्योंकि यारोबाम के घराने में से उसी में कुछ पाया जाता है जो यहोवा इसाएल के प्रभु की दृष्टि में भला है। १४ फिर यहोवा इसाएल के लिये एक ऐसा राजा खड़ा करेगा जो उसी दिन यारोबाम के घराने को नाश कर डालेगा, परन्तु कब? यह अभी होगा। १५ क्योंकि यहोवा इसाएल को ऐसा मारेगा, जैसा जल की धारा से नरकट हिलाया जाता है, और वह उनको इस अच्छी भूमि में से जो उसने उनके पुरुखाओं को दी थी उखांडकर फरार के पार तिर-बितर करेगा; क्योंकि उन्होंने अशेरा नामक मूर्ति अपने लिये बनाकर यहोवा को क्रोध दिलाया है। १६ और उन पापों के कारण जो यारोबाम ने किए और इसाएल से कराए थे, यहोवा इसाएल को त्वया देगा।” १७ तब यारोबाम की बीं विदा होकर चली और तिसी को आई, और वह भवन की डेवढी पर जैसे ही पहुँची कि वह बालक मर गया। १८ तब यहोवा के बचन के अनुसार जो उसने अपने दास अहियाह नबी से कहलाया था, समस्त इसाएल ने उसको मिट्ठी देकर उसके लिये शोक मनाया। १९ यारोबाम के और काम अर्थात् उसने कैसा-कैसा युद्ध किया, और कैसा राज्य किया, यह सब इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है। २० यारोबाम बाईंस वर्ष तक राज्य करके मर गया और अपने पुरुखाओं के संग जा मिला और नादाब नामक उसका पुत्र उसके स्थान पर राजा हुआ। २१ सुलैमान का पुत्र रहबाम यहदा में राज्य करने लगा। रहबाम इकतारीस वर्ष का होकर राज्य करने लगा; और यस्शलेम जिसको यहोवा ने सारे इसाएली गोंदों में से अपना नाम रखने के लिये चुन लिया था, उस नगर में वह सत्रह वर्ष तक राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम नामाह था जो अम्मोनी बीं थी। २२ और यहदी लोग वह करने लगे जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और अपने पुरुखाओं से भी अधिक पाप करके उसकी जलन भड़काई। २३ उन्होंने तो सब ऊँचे टीलों पर, और सब होरे वृक्षों के तले, ऊँचे स्थान, और लाटें, और अशेरा नामक मूर्ते बना ली। २४ और उनके देश में पुस्तगामी भी थे, वे उन जातियों के से सब घिनोने काम करते थे जिन्हें यहोवा ने इसाएलियों के सामने से निकाल दिया था। २५ राजा रहबाम के पाँचवें वर्ष में मिस्र का राजा शीशक, यस्शलेम पर चढ़ाई करके, २६ यहोवा के भवन की अनमोल वस्तुएँ और राजभवन की अनमोल वस्तुएँ, सब की सब उठा ले गया; और सोने की जो ढाले सुलैमान ने बनाई थी सब को वह ले गया। २७ इसलिए राजा रहबाम ने उनके बदले पीतल की ढाले बनवाई और उन्हें पहसूओं के प्रधानों के हाथ सौंप दिया जो राजभवन के द्वार की रखवाली करते थे। २८ और जब जब राजा यहोवा के भवन में जाता था तब-तब पहसू उन्हें उठा ले चलते, और फिर अपनी कोठरी में लौटाकर रख देते थे। २९ रहबाम के और सब काम जो उसने किए वह क्या यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? ३० रहबाम और यारोबाम मैं तो सदा लडाई होती रही। ३१ और रहबाम जिसकी माता नामाह नामक एक अम्मोनिन थी, वह मरकर अपने पुरुखाओं के साथ जा मिला; और उन्हीं के पास दाऊदपुर मैं उसको मिट्ठी दी गई: और उसका पुत्र अवियाह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

१५ नवात के पुत्र यारोबाम के राज्य के अठारहवें वर्ष में अवियाह यहदा पर राज्य करने लगा। २ और वह तीन वर्ष तक यस्शलेम में राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम माका था जो अबशालोम की पुत्री थी: ३ वह वैसे ही पापों की लीक पर चलता रहा जैसे उसके पिता ने उसपर पहले किए थे और उसका मन अपने परमेश्वर यहोवा की ओर अपने परादा दाऊद के समान पूरी रीत से सिद्ध न था; ४ तो भी दाऊद के कारण उसके परमेश्वर यहोवा ने यस्शलेम मैं उसे एक दीपक दिया अर्थात् उसके पुत्र को उसके बाद ठराया और यस्शलेम को बनाए रखा। ५ क्योंकि दाऊद वह किया करता था जो

यहोवा की दृष्टि में ठीक था और हिती ऊरिय्याह की बात के सिवाय और किसी बात में यहोवा की किसी आज्ञा से जीवन भर कभी न मुड़ा। ६ रहबाम के जीवन भर उसके और यारोबाम के बीच लडाई होती रही। ७ अबिय्याम के और सब काम जो उसने किए, क्या वे यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? और अबिय्याम की यारोबाम के साथ लडाई होती रही। ८ अबिय्याम मरकर अपने पुराखाओं के संग जा मिला, और उसको दाऊदपुर में मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र आसा उसके स्थान पर राज्य करने लगा। ९ इसाएल के राजा यारोबाम के राज्य के बीसवें वर्ष में आसा यहदा पर राज्य करने लगा; १० और यस्शलेम में इकतालीस वर्ष तक राज्य करता रहा, और उसकी माता अबशालोम की पुत्री माका थी। ११ और आसा ने अपने मूलपुर्ष दाऊद के समान वही किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था। १२ उसने तो पुष्पणमियों को देश से निकाल दिया, और जिन्ति मूर्ते उसके पुराखाओं ने बनाई थी उन सभी को उसने दूर कर दिया। १३ वरन् उसकी माता माका जिसने अशेषा के लिये एक धिनौरी मूरत बनाई थी उसको उसने राजमाता के पद से उतार दिया, और आसा ने उसकी मूरत को काट डाला और किद्रोन के नाले में फूँक दिया। १४ परन्तु ऊँचे स्थान तो ढाए न गए; तो भी आसा का मन जीवन भर यहोवा की ओर पूरी रीति से लगा रहा। १५ और जो सोना चाँदी और पत्र उसके पिता ने अर्पण किए थे, और जो उसने स्वयं अर्पण किए थे, उन सभी को उसने यहोवा के भवन में पहुँचा दिया। १६ आसा और इसाएल के राजा बाशा के बीच उनके जीवन भर युद्ध होता रहा। १७ इसाएल के राजा बाशा ने यहदा पर चढाई की, और रामाह को इस्पलिए ढूढ़ किया कि कोई यहदा के राजा आसा के पास आने-जाने न पाए। १८ तब आसा ने जिन्ता सोना चाँदी यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में रह गया था उस सब को निकाल अपने कर्मचारियों के हाथ सौंपकर, दमिशकवासी अराम के राजा बेन्हदट के पास जो हेज्योन का पोता और तब्बिम्मोन का पुत्र था भेजकर यह कहा, १९ “जैसा मेरे और तेरे पिता के मध्य में वैसा ही मेरे और तेरे मध्य भी वाचा बाँधी जाएः देख, मैं तेरे पास चाँदी सोने की भेंट भेजता हूँ, इसलिए आ, इसाएल के राजा बाशा के साथ की अपनी वाचा को टाल दे, कि वह मेरे पास से चला जाए।” २० राजा आसा की यह बात मानकर बेन्हदट ने अपने दहों के प्रधानों से इसाएली नगरों पर चढ़ाई करवाकर इथ्योन, दान, अबेल्वेत्माका और समस्त किन्नरेत को और नगानी के समस्त देश को पूरा जीत लिया। २१ यह सुनकर बाशा ने रामाह को ढूढ़ करना छोड़ दिया, और तिर्सी में रहने लगा। २२ तब राजा आसा ने सारे यहदा में प्रचार करवाया और कोई अनसुना न रहा, तब वे रामाह के पथरों और लकड़ी को जिनसे बाशा उसे ढूढ़ करता था उठा ले गए, और उनसे राजा आसा ने बिन्यामीन के गेबा और मिस्पा को ढूढ़ किया। २३ आसा के अन्य काम और उसकी वीरता और जो कुछ उसने किया, और जो नगर उसने ढूढ़ किए, यह सब क्या यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? परन्तु उसके बुढ़ापे में तो उसे पाँचों का रोग लग गया। २४ आसा मरकर अपने पुराखाओं के संग जा मिला, और उसे उसके मूलपुर्ष दाऊद के नगर में उन्हीं के पास मिट्टी दी गई और उसका पुत्र यहोशापात उसके स्थान पर राज्य करने लगा। २५ यहदा के राजा आसा के राज्य के दूसरे वर्ष में यारोबाम का पुत्र नादाब इसाएल पर राज्य करने लगा; और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। २६ उसने वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था और अपने पिता के मार्ग पर वही पाप करता हुआ चलता रहा जो उसने इसाएल से करवाया था। २७ नादाब सब इसाएल समेत पलिशियों के देश के गिब्बतोन नगर को घेरे था। और इसाकार के गोत्र के अहिय्याह के पुत्र बाशा ने उसके विस्तुर राजद्रोह की गोष्ठी करके गिब्बतोन के पास उसको मार डाला। २८ और

यहदा के राजा आसा के राज्य के तीसरे वर्ष में बाशा ने नादाब को मार डाला, और उसके स्थान पर राजा बन गया। २९ राजा होते ही बाशा ने यारोबाम के समस्त घराने को मार डाला; उसने यारोबाम के वंश को यहाँ तक नष्ट किया कि एक भी जीवित न रहा। यह सब यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ जो उसने अपने दास शीलोवासी अहिय्याह से कहलवाया था। ३० यह इस कारण हुआ कि यारोबाम ने स्वयं पाप किए, और इसाएल से भी करवाए थे, और उसने इसाएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोधित किया था। ३१ नादाब के और सब काम जो उसने किए, वह क्या इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? ३२ आमा और इसाएल के राजा बाशा के मध्य में तो उनके जीवन भर युद्ध होता रहा। ३३ यहदा के राजा आसा के राज्य के तीसरे वर्ष में अहिय्याह का पुत्र बाशा, तिर्सी में समस्त इसाएल पर राज्य करने लगा, और बौबीस वर्ष तक राज्य करता रहा। ३४ और उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, और यारोबाम के मार्ग पर वही पाप करता रहा जिसे उसने इसाएल से करवाया था।

१६ तब बाशा के विषय यहोवा का यह वचन हनानी के पुत्र येह के पास पहुँचा, १ “मैंने तुझको मिट्टी पर से उठाकर अपनी प्रजा इसाएल के प्रधान किया, परन्तु तु यारोबाम की सी चाल चलता और मेरी प्रजा इसाएल से ऐसे पाप कराता आया है जिनसे वे मुझे क्रोध दिलाते हैं। २ सुन, मैं बाशा और उसके घराने की पूरी रीति से सफाई कर दूँगा और तेरे घराने को नवात के पुत्र यारोबाम के समान कर दूँगा। ३ बाशा के घर का जो कोई नगर में मर जाए, उसको कुते खा डालेंगे, और उसका जो कोई मैदान में मर जाए, उसको आकाश के पक्षी खा डालेंगे।” ४ बाशा के और सब काम जो उसने किए, और उसकी वीरता यह सब क्या इसाएल के राजाओं की पुस्तक में नहीं लिखा है? ५ अन्त में बाशा मरकर अपने पुराखाओं के संग जा मिला और तिर्सी में उसे मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र एला उसके स्थान पर राज्य करने लगा। ६ यहोवा का जो वचन हनानी के पुत्र येह के द्वारा बाशा और उसके घराने के विस्तुर आया, वह न केवल उन सब बुराइयों के कारण आया जो उसने यारोबाम के घराने के समान होकर यहोवा की दृष्टि में किया था और अपने कामों से उसको क्रोधित किया, बरन् इस कारण भी आया, कि उसने उसको मार डाला था। ७ यहदा के राजा आसा के राज्य के छब्बीसवें वर्ष में बाशा का पुत्र एला तिर्सी में इसाएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। ८ जब वह तिर्सी में असी नामक भण्डारी के घर में जो उसके तिसीवाले भवन का प्रधान था, पीकर मतवाला हो गया था, तब उसके जिरी नामक एक कर्मचारी ने जो उसके आधे रथों का प्रधान था, ९ राजद्रोह की गोष्ठी की और भीतर जाकर उसको मार डाला, और उसके स्थान पर राजा बन गया। यह यहदा के राजा आसा के राज्य के सताईसवें वर्ष में हुआ। १० और जब वह राज्य करने लगा, तब गदी पर बैठते ही उसने बाशा के पूरे घराने को मार डाला, बरन् उसने न तो उसके कुटुम्बियों और न उसके मित्रों में से एक लड़के को भी जीवित छोड़ा। ११ इस रीति यहोवा के उस वचन के अनुसार हो उसने येह नवी के द्वारा बाशा के विस्तुर कहा था, जिन्हीं ने बाशा का समस्त घराना नष्ट कर दिया। १२ इसका कारण बाशा के सब पाप और उसके पुत्र एला के भी पाप थे, जो उन्होंने स्वयं आप करके और इसाएल से भी करवाकर इसाएल के परमेश्वर यहोवा को व्यर्थ बातों से क्रोध दिलाया था। १३ एला के और सब काम जो उसने किए, वह क्या इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। १४ यहदा के राजा आसा के सताईसवें वर्ष में जित्री तिर्सी में राज्य करने लगा, और तिर्सी में सात दिन तक राज्य करता रहा। उस समय लोग पलिशियों के देश गिब्बतोन के विस्तुर डेरे किए हुए थे। १५ तो जब

उन डेरे लगाए हुए लोगों ने सुना, कि जिम्मी ने राजद्रोह की गोष्ठी करके राजा को मार डाला है, तो उसी दिन समस्त इसाएल ने ओप्री नामक प्रधान सेनापति को छावनी में इसाएल का राजा बनाया। १७ तब ओप्री ने समस्त इसाएल को संग ले गिब्बतोन को छोड़कर तिर्सा को घेर लिया। १८ जब जिम्मी ने देखा, कि नगर ले लिया गया है, तब राजभवन के गुम्मट में जाकर राजभवन में आग लगा दी, और उसी में स्वयं जल मरा। १९ यह उसके पापों के कारण हुआ क्योंकि उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, क्योंकि वह यारोबाम की सी चाल और उसके किए हुए और इसाएल से करवाए हुए पाप की लीक पर चला। २० जिम्मी के और काम और जो राजद्रोह की गोष्ठी उसने की, यह सब क्या इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? २१ तब इसाएली प्रजा दो भागों में बैंट गई, प्रजा के आधे लोग तो तिब्नी नामक गीनत के पुत्र को राजा बनाने के लिये उसी के पीछे हो लिए, और आधे ओप्री के पीछे हो लिए। २२ अन्त में जो लोग ओप्री के पीछे हुए थे वे उन पर प्रबल हुए जो गीनत के पुत्र तिब्नी के पीछे हो लिए थे, इसलिए तिब्नी मारा गया और ओप्री राजा बन गया। २३ यहदा के राजा आसा के इकट्ठीसर्वे वर्ष में ओप्री इसाएल पर राज्य करने लगा, और बारह वर्ष तक राज्य करता रहा; उसने छ. वर्ष तो तिर्सा में राज्य किया। २४ और उसने शेमर से सामरिया पहाड़ को दो किक्कार चाँदी में मोल लेकर, उस पर एक नगर बसाया; और अपने बसाए हुए नगर का नाम पहाड़ के मालिक शेमेर के नाम पर सामरिया रखा। २५ ओप्री ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था वरन् उन सभी से भी जो उससे पहले थे अधिक बुराई की। २६ वह नबात के पुत्र यारोबाम की सी सब चाल चला, और उसके सब पापों के अनुसार जो उसने इसाएल से करवाए थे जिसके कारण इसाएल के परमेश्वर यहोवा को उन्होंने अपने व्यर्थ कर्मों से क्रोध दिलाया था। २७ ओप्री के और काम जो उसने किए, और जो वीरता उसने दिखाई, यह सब क्या इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? २८ ओप्री मरकर अपने पुरुखों के संग जा मिला और सामरिया में उसको मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र अहाब उसके स्थान पर राज्य करने लगा। २९ यहदा के राजा आसा के राज्य के अड्डीसर्वे वर्ष में ओप्री का पुत्र अहाब इसाएल पर राज्य करने लगा, और इसाएल पर सामरिया में बाईश वर्ष तक राज्य करता रहा। ३० और ओप्री के पुत्र अहाब ने उन सभसे अधिक जो उससे पहले थे, वह कर्म किए जो यहोवा की दृष्टि में बुरे थे। ३१ उसने तो नबात के पुत्र यारोबाम के पापों में चलना हलकी सी बात जानकर, सीदोनियों के राजा एतबाल की बेटी ईजेबेल से विवाह करके बाल देवता की उपासना की और उसको दण्डवत् किया। ३२ उसने बाल का एक भवन सामरिया में बनाकर उसमें बाल की एक बेदी बनाई। ३३ और अहाब ने एक अशेषा भी बनाया, वरन् उसने उन सब इसाएली राजाओं से बढ़कर जो उससे पहले थे इसाएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोध दिलाने के काम किए। ३४ उसके दिनों में बेतेलवासी हीएल ने यरीहों को फिर बसाया; जब उसने उसकी नीच डाली तब उसका जेठा पुत्र अबीराम मर गया, और जब उसने उसके फाटक खड़े किए तब उसका छोटा पुत्र सम्बू मर गया, यह यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ, जो उसने नून के पुत्र यहोश के द्वारा कहलवाया था।

१७ तिशबी एलियाह जो गिलाद का निवासी था उसने अहाब से कहा-

“इसाएल का परमेश्वर यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूँ, उसके जीवन की शपथ इन वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो मैंह बरसेगा, और न ओस पड़ेगी।” ३५ तब यहोवा का यह वचन उसके पाप पहुँचा, ३६ “यहाँ से चलकर पूरब की ओर जा और करीत नामक नाले में जो यरदन के पूर्व में है छिप जा। ३७ उसी नदी का पानी तू पिया कर, और मैंने कौवों को आज्ञा दी है

कि वे तुझे वहाँ खिलाएँ।” ३८ यहोवा का यह वचन मानकर वह यरदन के पूर्व में करीत नामक नदी में जाकर छिपा रहा। ३९ और सबेरे और सौँड़ा को कौवे उसके पाप रोटी और माँस लाया करते थे और वह नदी का पानी पिया करता था। ४० कुछ दिनों के बाद उस देश में वर्षा न होने के कारण नदी सूख गई। ४१ तब यहोवा का यह वचन उसके पाप पहुँचा, ४२ “चलकर सीदोने के सारफत नगर में जाकर वहीं रह। सुन, मैंने वहाँ की एक विधावा को तो रेखिलाने की आज्ञा दी है।” ४३ अतः वह वहाँ से चल दिया, और सारफत को गया; नगर के फाटक के पास पहुँचकर उसने क्या देखा कि, एक विधावा लकड़ी बीन रही है, उसको बुलाकर उसने कहा, “किसी पाप में मेरे पीने को थोड़ा पानी ले आ।” ४४ जब वह लेने जा रही थी, तो उसने उसे पुकारके कहा “अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी भी मेरे पास लेती आ।” ४५ उसने कहा, “तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ मेरे पास एक भी रोटी नहीं है केवल घड़े में मुट्ठी भर मैदा और कूपी में थोड़ा सा तेल है, और मैं दो एक लकड़ी बीनकर लिए जाती हूँ कि अपने और अपने बेटे के लिये उसे पकाऊँ, और हम उसे खाएँ, फिर मर जाएँ।” ४६ एलियाह ने उससे कहा, “मत डर; जाकर अपनी बात के अनुसार कर, परन्तु घलने मेरे लिये एक छोटी सी रोटी बनाकर मेरे पास ले आ, फिर इसके बाद अपने और अपने बेटे के लिये बनाना।” ४७ क्योंकि इसाएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि जब तक यहोवा भूमि पर मैं ह न बरसाएगा तब तक न तो उस घड़े का मैदा सामाप्त होगा, और न उस कूपी का तेल घटेगा।” ४८ तब वह चली गई, और एलियाह के वचन के अनुसार किया, तब से वह और भी और उसका घराना बहुत दिन तक खाते रहे। ४९ यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने एलियाह के द्वारा कहा था, न तो उस घड़े का मैदा सामाप्त हुआ, और न उस कूपी का तेल घटा। ५० इन बातों के बाद उस भी का बेटा जो घर की स्वामिनी थी, रोपी हुआ, और उसका रोग यहाँ तक बढ़ा कि उसका साँस लेना बन्द हो गया। ५१ तब वह एलियाह से कहने लगी, “हे परमेश्वर के जन! मेरा तुझ से क्या काम? क्या तू इसलिए मेरे वहाँ आया है कि मेरे बेटे की मृत्यु का कारण हो और मेरे पाप का स्मरण दिलाएँ?” ५२ उसने उससे कहा “अपना बेटा मुझे दे,” तब वह उसे उसकी गोद से लेकर उस अटारी पर ले गया जहाँ वह स्वयं रहता था, और अपनी खाट पर लिटा दिया। ५३ तब उसने यहोवा को पुकारकर कहा, “हे मेरे परमेश्वर यहोवा! क्या तू इस विधावा को बेटा मार डालकर जिसके यहाँ मैं टिका हूँ, इस पर भी विपत्ति ले आया है?” ५४ तब वह बालक पर तीन बार पसर गया और यहोवा को पुकारकर कहा, “हे मेरे परमेश्वर यहोवा! इस बालक का प्राण इसमें फिर डाल दे।” ५५ एलियाह की यह बात यहोवा ने सुन ली, और बालक का प्राण उसमें फिर आ गया और वह जी उठा। ५६ तब एलियाह बालक को अटारी पर से नीचे घर में ले गया, और एलियाह ने यह कहकर उसकी माता के हाथ में सौंप दिया, “देख तेरा बेटा जीवित है।” ५७ भी ने एलियाह से कहा, “अब मुझे निश्चय हो गया है कि तू परमेश्वर का जन है, और यहोवा का जो वचन तेरे मूँह से निकलता है, वह सच होता है।”

१८ बहुत दिनों के बाद, तीसेरे वर्ष में यहोवा का यह वचन एलियाह के पास पहुँचा, “जाकर अपने आपको अहाब को दिखा, और मैं भूमि पर मैंह बरसा दूँगा।” १९ तब एलियाह अपने आपको अहाब को दिखाने गया। उस समय सामरिया में अकाल भारी था। २० अहाब ने ओबेधां को जो उसके घराने की दीवान था बुलवाया। २१ ओबेधां तो यहोवा का भय यहाँ तक मानता था कि जब ईजेबेल यहोवा के नवियों को नाश करती थी, तब ओबेधां ने एक सौ नवियों को लेकर पचास-पचास करके गुफाओं में छिपा रखा; और अन्न जल

देकर उनका पालन-पोषण करता रहा। ५ और अहाब ने ओब्याह से कहा, “देश में जल के सब सोतों और सब नदियों के पास जा, कदाचित् इतनी घास मिले कि हम घोड़ों और खच्चरों को जीवित बचा सके, और हमारे सब पशु न मर जाएँ।” ६ अतः उन्होंने आपस में देश बाँटा कि उसमें होकर चलें; एक और अहाब और दूसरी ओर ओब्याह चला। ७ ओब्याह मार्ग में था, कि एलियाह उसको मिला; उसे पहचानकर वह मूँह के बल गिरा, और कहा, “हे मेरे प्रभु एलियाह, क्या तू है?” ८ उसने कहा “हाँ मैं ही हूँ: जाकर अपने स्वामी से कह, ‘एलियाह मिला है।’” ९ उसने कहा, “मैंने ऐसा क्या पाप किया है कि तु मुझे मरवा डालने के लिये अहाब के हाथ करना चाहता है? १० तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ कोई ऐसी जाति या राज्य नहीं, जिसमें मेरे स्वामी ने तुझे ढूँढ़ने को न भेजा हो, और जब उन लोगों ने कहा, ‘वह यहाँ नहीं है’, तब उसने उस राज्य या जाति को इसकी शपथ खिलाई कि वह नहीं मिला। ११ और अब तू कहता है, ‘जाकर अपने स्वामी से कह, कि एलियाह यहाँ है।’ १२ फिर ज्यों ही मैं तेरे पास से चला जाऊँगा, त्यों ही यहोवा का आत्मा तुझे न जाने कहाँ उठा ले जाएगा, अतः जब मैं जाकर अहाब को बताऊँगा, और तू उसे न मिलेगा, तब वह मुझे मार डालेगा: परन्तु मैं तेरा दास अपने लड़कपन से यहोवा का भय मानता आया हूँ। १३ क्या मेरे प्रभु को यह नहीं बताया गया, कि जब ईजेबेल यहोवा के नवियों को धात करती थी तब मैंने क्या किया? कि यहोवा के नवियों में से एक सौ लेकर पचास-पचास करके गुफाओं में छिपा रखा, और उन्हें अन्न जल देकर पालता रहा। १४ फिर अब तू कहता है, ‘जाकर अपने स्वामी से कह, कि एलियाह मिला है।’ तब वह मुझे धात करेगा।” १५ एलियाह ने कहा, “सेनाओं का यहोवा जिसके सामने मैं रहता हूँ, उसके जीवन की शपथ आज मैं अपने आपको उसे दिखाऊँगा।” १६ तब ओब्याह अहाब से मिलने चला। १७ एलियाह को देखते ही अहाब ने कहा, “हे इसाएल के सतानेवाले क्या तू ही है?” १८ उसने कहा, “मैंने इसाएल को कष्ट नहीं दिया, परन्तु तू ही ने और तेरे पिता के घराने ने दिया है, क्योंकि तुम यहोवा की आजाओं को टालकर बाल देवताओं की उपासना करने लगे। १९ अब दूसरे भेजकर सारे इसाएल को और बाल के साथे चार सौ नवियों और अशेरा के चार सौ नवियों को जो ईजेबेल की मेज पर खाते हैं, मेरे पास कर्मल पर्वत पर इकट्ठा कर ले।” २० तब अहाब ने सारे इसाएलियों को बुला भेजा और नवियों को कर्मल पर्वत पर इकट्ठा किया। २१ और एलियाह सब लोगों के पास आकर कहने लगा, “तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लो; और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लो।” लोगों ने उसके उत्तर में एक भी बात न कही। २२ तब एलियाह ने लोगों से कहा, “यहोवा के नवियों में से केवल मैं ही रह गया हूँ; और बाल के नवीं साथे चार सौ मनुष्य हैं। २३ इसलिए दो बछड़े लाकर हमें दिए जाएँ, और वे कि अपने लिये चुनकर उसे टुकड़े-टुकड़े काटकर लकड़ी पर रख दें, और कुछ आग न लायें; और मैं दूसरे बछड़े को तैयार करके लकड़ी पर रखेंगा, और कुछ आग न लायेंगा। २४ तब तुम अपने देवता से प्रार्थना करना, और मैं यहोवा से प्रार्थना करूँगा, और जो आग गिराकर उत्तर दे वही परमेश्वर ठहरे।” तब सब लोग बोल उठे, “अच्छी बात।” २५ और एलियाह ने बाल के नवियों से कहा, “पहले तुम एक बछड़ा चुनकर तैयार कर लो, क्योंकि तुम तो बहुत हो; तब अपने देवता से प्रार्थना करना, परन्तु आग न लगाना।” २६ तब उन्होंने उस बछड़े को जो उन्हें दिया गया था लेकर तैयार किया, और भोर से लेकर दोपहर तक वह यह कहकर बाल से प्रार्थना करते रहे, “हे बाल हमारी सुन, हे बाल हमारी सुन!” परन्तु न कोई शब्द और न कोई उत्तर

देनेवाला हुआ। तब वे अपनी बनाई हुई बेटी पर उछलने कूदने लगे। २७ दोपहर को एलियाह ने यह कहकर उनका उपहास किया, “ऊँचे शब्द से पुकारो, वह तो देवता है; वह तो ध्यान लगाए होगा, या कहीं गया होगा या यात्रा में होगा, या हो सकता है कि सोता हो और उसे जगाना चाहिए।” २८ और उन्होंने बड़े शब्द से पुकार-पुकारके अपनी रीति के अनुसार छुरियों और बर्छियों से अपने-अपने को यहाँ तक ध्यान लिया कि लह लहान हो गए। २९ वे दोपहर भर ही क्या, वरन् भेट चढ़ाने के समय तक नबवत करते रहे, परन्तु कोई शब्द सुन न पड़ा; और न तो किसी ने उत्तर दिया और न कान लगाया। ३० तब एलियाह ने सब लोगों से कहा, “मैंने निकट आओ;” और सब लोग उसके निकट आए। तब उसने यहोवा की बेटी की जो गिराइ गई थी मरम्मत की। ३१ फिर एलियाह ने याकूब के पुरों की गिनति के अनुसार जिसके पास यहोवा का यह वचन आया था, “तेरा नाम इसाएल होगा,” बार बार पत्थर छोटे, ३२ और उन पत्थरों से यहोवा के नाम की एक बेटी बनाई, और उसके चारों ओर इतना बड़ा एक गड़ा खोद दिया, कि उसमें दो सामा बीज समा सके। ३३ तब उसने बेटी पर लकड़ी को सजाया, और बछड़े को टुकड़े-टुकड़े काटकर लकड़ी पर रख दिया, और कहा, “चार घड़ पानी भर के होमबलि, पश्च और लकड़ी पर उण्डेल दो।” ३४ तब उसने कहा, “दूसरी बार वैसा ही करो;” तब लोगों ने दूसरी बार वैसा ही किया। फिर उसने कहा, “तीसरी बार करो;” तब लोगों ने तीसरी बार भी वैसा ही किया। ३५ और जल बेटी के चारों ओर बह गया, और गंडे को भी उत्तरे जल से भर दिया। ३६ फिर भेट चढ़ाने के समय एलियाह नवी समीप जाकर कहने लगा, “हे अब्राहम, इसाहाक और इसाएल के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रगट कर कि इसाएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ, और मैंने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं।” ३७ हे यहोवा! मेरी सुन, मेरी सुन, कि ये लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है।” ३८ तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़े में का जल भी सूखा दिया। ३९ यह देख सब लोग मूँह के बल गिरकर बोल उठे, “यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है;” ४० एलियाह ने उनसे कहा, “बाल के नवियों को पकड़ लो, उनमें से एक भी छूटने न पाएँ,” तब उन्होंने उनको पकड़ लिया, और एलियाह ने उन्हें नीचे कीशोन के नाले में ले जाकर मार डाला। ४१ फिर एलियाह ने अहाब से कहा, “उठकर खा पी, क्योंकि भारी वर्षा की सनसनाहट सुन पड़ती है।” ४२ तब अहाब खाने-पीने चला गया, और एलियाह कर्मल की चोटी पर चढ़ गया, और भूमि पर गिरकर अपना मूँह घूटनों के बीच किया, ४३ और उसने अपने सेवक से कहा, “चढ़कर समुद्र की ओर दृष्टि करके देख,” तब उसने चढ़कर देखा और लैटैकर कहा, “कुछ नहीं दिखता।” एलियाह ने कहा, “फिर सात बार जा।” ४४ सातवीं बार उसने कहा, “देख समुद्र में से मनुष्य का हाथ सा एक छोटा बादल उठ रहा है।” एलियाह ने कहा, “अहाब के पास जाकर कह, ‘रथ जुतवाकर नीचे जा, कहीं ऐसा न हो कि तू वर्षा के कारण स्क जाए।’” ४५ थोड़ी ही देर में आकाश वायु से उड़ाई हुई घटाओं, और और्ध्वी से काला हो गया और भारी वर्षा होने लगी; और अहाब सवार होकर जिजेल के चला। ४६ तब यहोवा की शक्ति एलियाह पर ऐसी हुई, कि वह कमर बँधकर अहाब के आगे-आगे यिजेल तक दौड़ता चला गया।

१९ जब अहाब ने ईजेबेल को एलियाह के सब काम विस्तार से बताए कि उसने सब नवियों को तलवार से किस प्रकार मार डाला। २० तब ईजेबेल ने एलियाह के पास एक दूर के द्वारा कहला भेजा, “यदि मैं कल इसी समय

तक तेरा प्राण उनका सा न कर डालूँ तो देवता मेरे साथ वैसा ही वरन् उससे भी अधिक करो।” ३ यह देख एलियाह अपना प्राण लेकर भागा, और यहदा के बेर्शबा को पहुँचकर अपने सेवक को वहाँ छोड़ दिया। ४ और आप जंगल में एक दिन के मार्ग पर जाकर एक झाक के पेड़ के तले बैठ गया, वहाँ उसने यह कहकर अपनी मृत्यु माँगी, “हे यहोवा बस है, अब मेरा प्राण ले ले, क्योंकि मैं अनेपुराखाओं से अच्छा नहीं हूँ।” ५ वह झाक के पेड़ तले लेटकर सो गया और देखो एक दूत ने उसे छूकर कहा, “उठकर खा।” ६ उसने दृष्टि करके क्या देखा कि मेरे सिरहाने पथरों पर पकी हुई एक रोटी, और एक सुराही पानी रखा है; तब उसने खाया और पिया और फिर लेट गया। ७ दूसरी बार यहोवा का दूत आया और उसे छूकर कहा, “उठकर खा, क्योंकि तुझे बहुत लम्बी यात्रा करनी है।” ८ तब उसने उठकर खाया पिया; और उसी भोजन से बल पाकर चालीस दिन-रात चलते-चलते परमेश्वर के पर्वत होरेब को पहुँचा। ९ वहाँ वह एक गुफा में जाकर टिका और यहोवा का यह वचन उसके पास पहुँचा, “हे एलियाह तेरा यहाँ क्या काम?” १० उसने उत्तर दिया “सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त मुझे बड़ी जलन हुई है, क्योंकि इसाएलियों ने तेरी वाचा टाल दी, तेरी वेदियों को गिरा दिया, और तेरे नवियों को तलवार से घात किया है, और मैं ही अकेला रह गया हूँ, और वे मेरे प्राणों के भी खोजी हैं।” ११ उसने कहा, “निकलकर यहोवा के सम्मुख पर्वत पर खड़ा हो।” १२ और यहोवा पास से होकर चला, और यहोवा के सामने एक बड़ी प्रचण्ड आँधी से पहाड़ फटने और चट्ठाने टूटने लगी, तो भी यहोवा उस आँधी में न था; फिर आँधी के बाद भूकम्प हुआ, तो भी यहोवा उस भूकम्प में न था। १३ फिर भूकम्प के बाद आग दिखाई दी, तो भी यहोवा उस आग में न था; फिर आग के बाद एक ढबा हुआ धीमा शब्द सुनाई दिया। १४ यह सुनते ही एलियाह ने अपना धूँ चढ़र से ढाँपा, और बाहर जाकर गुफा के द्वार पर खड़ा हुआ। फिर एक शब्द उसे सुनाई दिया, “हे एलियाह तेरा यहाँ क्या काम?” १५ उसने कहा, “मुझे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त बड़ी जलन हुई, क्योंकि इसाएलियों ने तेरी वाचा टाल दी, और तेरी वेदियों को गिरा दिया है और तेरे नवियों को तलवार से घात किया है, और मैं ही अकेला रह गया हूँ, और वे मेरे प्राणों के भी खोजी हैं।” १६ यहोवा ने उससे कहा, “लौटकर दमिश्क के जंगल को जा, और वहाँ पहुँचकर अराम का राजा होने के लिये हजाएल का, १७ और इसाएल का राजा ने अपने सेवकों को निमशी के पोते येह का, और अपने स्थान पर नवी होने के लिये अबेल-महोला के शापात के पुरु एलीशा का अभिषेक करना। १८ और हजाएल की तलवार से जो कोई बच जाए उसको येह मार डालेगा; और जो कोई येह की तलवार से बच जाए उसको एलीशा मार डालेगा। १९ तो भी मैं सात हजार इसाएलियों को बचा रखूँगा। ये तो वे सब हैं, जिन्होंने न तो बाल के आगे घुटने टेके, और न मुँह से उसे चमा है।” २० तब वह बैलों को छोड़कर एलियाह के पीछे दौड़ा, और कहने लगा, “मुझे अपने माता-पिता को चूमने दे, तब मैं तेरे पीछे चलूँगा।” उसने कहा, “लौट जा, मैंने तुझे से क्या किया है?” २१ तब वह उसके पीछे से लौट गया, और एक जोड़ी बैल लेकर बलि किए, और बैलों का सामान जलाकर उनका माँस पका के अपने लोगों को दे दिया, और उन्होंने खाया; तब वह कमर बाँधकर एलियाह के पीछे चला, और उसकी सेवा टहल करने लगा।

२० अराम के राजा बेन्हदद ने अपनी सारी सेना इकट्ठी की, और उसके साथ बत्तीस राजा और घोड़े और रथ थे; उन्हें संग लेकर उसने सामरिया पर

चढ़ाई की, और उसे घेर के उसके बिस्तु लड़ा। २१ और उसने नगर में इसाएल के राजा अहाब के पास दूरों को यह कहने के लिये भेजा, “बेन्हदद तुझ से यह कहता है, २२ तेरा चाँदी सोना मेरा है, और तेरी छियाँ और बच्चों में जो-जो उत्तम हैं वह भी सब मेरे हैं।” २३ इसाएल के राजा ने उसके पास कहला भेजा, “हे मेरे प्रभु! हे राजा! तेरे वचन के अनुसार मैं और मेरा जो कुछ है, सब तेरा है।” २४ उन्हीं दूतों ने फिर आकर कहा, “बेन्हदद तुझ से यह कहता है, ‘मैंने तेरे पास यह कहला भेजा था कि तुझे अपनी चाँदी सोना और छियाँ और बालक भी मुझे देने पड़ेंगे।’ २५ परन्तु कल इसी समय मैं अपने कर्मचारियों को तेरे पास भेजूँगा और वे तेरे और तेरे कर्मचारियों के घरों में ढूँढ़-ढूँढ़ करेंगे, और तेरी जो-जो मनभावनी वस्तुएँ निकलें उन्हें वे अपने-अपने हाथ में लेकर आएँगे।” २६ तब इसाएल के राजा ने अपने देश के सब पुरियों को बुलाकर कहा, “सोच विचार करो, कि वह मनुष्य हमारी हानि ही का अभिलाली है; उसने मुझसे मेरी छियाँ, बालक, चाँदी सोना मैंगवा भेजा है, और मैंने इन्कार न किया।” २७ तब सब पुरियों ने और और सब साधारण लोगों ने उससे कहा, “उसकी न सुनना; और न मानना।” २८ तब राजा ने बेन्हदद के दूतों से कहा, “मेरे प्रभु राजा से मेरी आरे से कहो, ‘जो कुछ तूने पहले अपने दास से चाहा था वह तो मैं कहस्ता, परन्तु यह मुझसे न होगा।’” २९ तब बेन्हदद के दूतों ने जाकर उसे यह उत्तर सुना दिया। ३० तब बेन्हदद ने अहाब के पास कहला भेजा, “यदि सामरिया में इन्हीं धूल निकले कि मेरे सब पीछे चलनेवालों की मुश्ती भर जाए तो देवता मेरे साथ ऐसा ही वरन् इससे भी अधिक करें।” ३१ इसाएल के राजा ने उत्तर देकर कहा, “उससे कहो, ‘जो हथियार बाँधता हो वह उसके समान न फूले जो उन्हें उतारता हो।’” ३२ यह वचन सुनते ही वह जो अन्य राजाओं समेत डेरों में पी रहा था, उसने अपने कर्मचारियों से कहा, “पाँति बाँधो,” तब उन्होंने नगर के बिस्तु पाँति बाँधी। ३३ तब एक नवी ने इसाएल के राजा अहाब के पास जाकर कहा, “यहोवा तुझ से यह कहता है, ‘यह बड़ी भीड़ जो तूने देखी है, उस सब को मैं आज तेरे हाथ में कर दूँगा, इससे तू जान लेगा, कि मैं यहोवा हूँ।’” ३४ अहाब ने पछा, “किसके द्वारा?” उसने कहा, “यहोवा यह कहता है, कि प्रदेशों के हाकिमों के सेवकों के द्वारा।” फिर उसने पैछा, “युद्ध को कौन आरम्भ करे?” उसने उत्तर दिया, “तू ही।” ३५ तब उसने प्रदेशों के हाकिमों के सेवकों की गिनती ली, और वे दो सौ बत्तीस निकले; और उनके बाद उसने सब इसाएली लोगों की गिनती ली, और वे सात हजार निकले। ३६ ये दोपहर को निकल गए, उस समय बेन्हदद अपने सहायक बत्तीसों राजाओं समेत डेरों में शराब पीकर मतवाला हो रहा था। ३७ प्रदेशों के हाकिमों के सेवक पहले निकले। तब बेन्हदद ने दूत भेजे, और उन्होंने उससे कहा, “सामरिया से कुछ मनुष्य निकले आते हैं।” ३८ उसने कहा, “चाहे वे मेल करने को निकले हों, चाहे लड़ने को, तो मैं उन्हें जीतिवाही पकड़ लाऊँ।” ३९ तब प्रदेशों के हाकिमों के सेवक और उनके पीछे की सेना के सिपाही नगर से निकले। ४० और वे अपने-अपने सामने के पुष्प को मारने लगे; और अरामी भाग, और इसाएल ने उनका पीछा किया, और अराम का राजा बेन्हदद, सवारों के संग घोड़े पर चढ़ा, और भागकर बच गया। ४१ तब इसाएल के राजा ने भी निकलकर घोड़ों और रथों को मारा, और अरामियों को बड़ी मार से मारा। ४२ तब उस नवी ने इसाएल के राजा के पास जाकर कहा, “जाकर लडाई के लिये अपने को ढूँढ़ कर, और सचेत होकर सोच, कि क्या करना है, क्योंकि नये वर्ष के लगाते ही अराम का राजा फिर तुझ पर चढ़ाई करेगा।” ४३ तब अराम के राजा के कर्मचारियों ने उससे कहा, “उन लोगों का देवता पहाड़ी देवता है, इस कारण वे हम पर प्रबल हैं; इसलिए हम उनसे चौरस भूमि पर लड़ें तो निश्चय हम उन पर प्रबल हो जाएँगे।

२४ और यह भी काम कर, अर्थात् सब राजाओं का पद ले ले, और उनके स्थान पर सेनापतियों को ठहरा दे। २५ फिर एक और सेना जो तेरी उस सेना के बराबर हो जो नष्ट हो गई है, घोड़े के बदले घोड़ा, और रथ के बदले रथ, अपने लिये गिन ले; तब हम चौरस भूमि पर उनसे लड़ें, और निश्चय उन पर प्रबल हो जाएंगे।’’ उनकी यह सम्मति मानकर बेन्हदद ने वैसा ही किया। २६ और नये वर्ष के लगते ही बेन्हदद ने अरामियों को इक्ष्यु किया, और इसाएल से लड़ने के लिये अपेक्ष को गया। २७ और इसाएली भी इक्ष्यु किए गए, और उनके भोजन की तैयारी हुई; तब वे उनका सामान करने को गए, और इसाएली उनके सामने डेरे डालकर बकरियों के दो छोटे झुण्ड से देख पड़े, परन्तु अरामियों से देश भर गया। २८ तब परमेश्वर के उसी जन ने इसाएल के राजा के पास जाकर कहा, ‘‘यहोवा यह कहता है, ‘अरामियों ने यह कहा है, कि यहोवा पहाड़ी देवता है, परन्तु नीची भूमि का नहीं है, इस कारण मैं उस बड़ी भीड़ को तेरे हाथ में कर दूँगा, तब तुम्हें ज्ञात हो जाएगा कि मैं यहोवा हूँ।’’ २९ और वे सात दिन अपने-सामने डेरे डाले पड़े रहे; तब सातवें दिन यदु छिड़ गया; और एक दिन में इसाएलियों ने एक लाख अरामी प्यादे मार डाले। ३० जो बच गए, वह अपेक्ष को भागकर नगर में घुसे, और वहाँ उन बचे हुए लोगों में से सताईस हजार पुस्त शहरपनाह की दीवार के गिरने से दबकर मर गए। बेन्हदद भी भाग गया और नगर की एक भीती कोठरी में गया। ३१ तब उसके कर्मचारियों ने उससे कहा, ‘‘सुन, हमने तो सुना है, कि इसाएल के घराने के राजा दयालु राजा होते हैं, इसलिए हमें कमर में टाट और सिर पर रस्सियाँ बाँधे हुए इसाएल के राजा के पास जाने दे, सम्भव है कि वह तेरा प्राण बचा ले।’’ ३२ तब वे कमर में टाट और सिर पर रस्सियाँ बाँधकर इसाएल के राजा के पास जाकर कहने लगे, ‘‘तेरा दास बेन्हदद तुझ से कहता है, ‘कृपा करके मुझे जीवित रहने दे।’’ राजा ने उत्तर दिया, ‘‘क्या वह अब तक जीवित है? वह तो मेरा भाई है।’’ ३३ उन लोगों ने इसे शुभ शक्तुन जानकर, फुर्ती से बद्ध लेने का यत्र किया कि यह उसके मन की बात है कि नहीं, और कहा, ‘‘हाँ तेरा भाई बेन्हदद।’’ राजा ने कहा, ‘‘जाकर उसको ले आओ।’’ तब बेन्हदद उसके पास निकल आया, और उसने उसे अपने रथ पर चढ़ा लिया। ३४ तब बेन्हदद ने उससे कहा, ‘‘जो नगर मेरे पिता ने तेरे पिता से ले लिये थे, उनको मैं फेर दूँगा, और जैसे मेरे पिता ने सामरिया में अपने लिये सड़कें बनवाई, वैसे ही तू दमिश्क में सड़कें बनवाना।’’ अहाब ने कहा, ‘‘मैं इसी वाचा पर तुझे छोड़ देता हूँ,’’ तब उसने बेन्हदद से वाचा बाँधकर, उसे स्वतंत्र कर दिया। ३५ इसके बाद नबियों के दल में से एक जन ने यहोवा से वचन पाकर अपने संगी से कहा, ‘‘मुझे मार,’’ जब उस मनुष्य ने उसे मारने से इन्कार किया, ३६ तब उसने उससे कहा, ‘‘तुम यहोवा का वचन नहीं माना, इस कारण सुन, वैसे ही तू मेरे पास से चला जाएगा, वैसे ही सिंह से मार डाला जाएगा।’’ तब जैसे ही वह उसके पास से चला गया, वैसे ही उसे एक सिंह मिला, और उसको मार डाला। ३७ फिर उसको दूसरा मनुष्य मिला, और उससे भी उसने कहा, ‘‘मुझे मार।’’ और उसने उसको ऐसा मारा कि वह घायल हुआ। ३८ तब वह नवी चला गया, और आँखों को पगड़ी से ढाँपकर राजा की बाट जोहता हुआ मार्ग पर खड़ा रहा। ३९ जब राजा पास होकर जा रहा था, तब उसने उसकी दुहाई देकर कहा, ‘‘जब तेरा दास यदु क्षेत्र में गया था तब कोई मनुष्य मेरी ओर मुँडकर किसी मनुष्य को मेरे पास ले आया, और मुझसे कहा, ‘‘इस मनुष्य की चौकसी कर; यदि यह किसी रीति छूट जाए, तो उसके प्राण के बदले तुझे अपना प्राण देना होगा; नहीं तो किक्कार भर चाँदी देना पड़ेगा।’’ ४० उसके बाद तेरा दास इधर-उधर काम में फैस गया, फिर वह न मिला।’’ इसाएल के राजा ने उससे कहा, ‘‘तेरा ऐसा ही न्याय होगा; तूने आप अपना न्याय किया

है।’’ ४१ नबी ने झट अपनी आँखों से पगड़ी उठाई, तब इसाएल के राजा ने उसे पहचान लिया, कि वह कोई नबी है। ४२ तब उसने राजा से कहा, ‘‘यहोवा तुझ से यह कहता है, ‘इसलिए कि तूने अपने हाथ से ऐसे एक मनुष्य को जाने दिया, जिसे मैंने सत्यानाश हो जाने को ठहराया था, तुझे उसके प्राण के बदले अपना प्राण और उसकी प्रजा के बदले, अपनी प्रजा देनी पड़ेगी।’’ ४३ तब इसाएल का राजा उदास और अप्रसन्न होकर घर की ओर चला, और सामरिया को आया।

२१ नाबोत नामक एक यिज्जेली की एक दाख की बारी सामरिया के राजा

अहाब के राजभवन के पास यिज्जेल में थी। २२ इन बातों के बाद अहाब ने नाबोत से कहा, ‘‘तेरी दाख की बारी मेरे घर के पास है, तू उसे मुझे दे कि मैं उसमें साग-पात की बारी लगाऊँ; और मैं उसके बदले तुझे उससे अच्छी एक वाटिका दूँगा, नहीं तो तेरी इच्छा हो तो मैं तुझे उसका मूल्य दे दूँगा।’’ २३ नाबोत ने अहाब से कहा, ‘‘यहोवा न करे कि मैं अपने पुराखाओं का निज भाग तुझे दूँ।’’ २४ यिज्जेली नाबोत के इस वचन के कारण ‘‘मैं तुझे अपने पुराखाओं का निज भाग न दूँगा,’’ अहाब उदास और अप्रसन्न होकर अपने घर गया, और बिछौने पर लेट गया और मुँह फेर लिया, और कुछ भोजन न किया। २५ तब उसकी पत्नी इंजेबेल ने उसके पास आकर पूछा, ‘‘तेरा मन क्यों ऐसा उदास है कि तू कुछ भोजन नहीं करता?’’ २६ उसने कहा, ‘‘कारण यह है, कि मैंने यिज्जेली नाबोत से कहा ‘स्थाया लेकर मुझे अपनी दाख की बारी दे, नहीं तो यदि तू चाहे तो मैं उसके बदले दूसरी दाख की बारी दूँगा’; और उसने कहा, ‘‘मैं अपनी दाख की बारी तुझे न दूँगा।’’ २७ उसकी पत्नी इंजेबेल ने उससे कहा, ‘‘क्या तु इसाएल पर राज्य करता है कि नहीं? उठकर भोजन कर; और तेरा मन अनन्दित हो; यिज्जेली नाबोत की दाख की बारी मैं तुझे दिलवा दूँगी।’’ २८ तब उसने अहाब के नाम से चिठ्ठी लिखकर उसकी अंगठी की छाप लगाकर, उन पुरियों और रईसों के पास भेज दी जो उसी नगर में नाबोत के पड़ोस में रहते थे। २९ उस चिठ्ठी में उसने यह लिखा, ‘‘उपवास का प्रचार करो, और नाबोत को लोगों के सामने ऊँचे स्थान पर बैठाना। ३० तब दो नीच जनों को उसके सामने बैठाना जो साक्षी देकर उससे कहें, ‘‘तूने परमेश्वर और राजा दोनों की निन्दा की।’’ तब तुम लोग उसे बाहर ले जाकर उसको पथरवाह करना, कि वह मर जाए।’’ ३१ इंजेबेल की चिठ्ठी में की आज्ञा के अनुसार नगर में रहनेवाले पुरियों और रईसों ने उपवास का प्रचार किया, ३२ और नाबोत को लोगों के सामने ऊँचे स्थान पर बैठाया। ३३ तब दो नीच जन आकर उसके सम्मुख बैठ गए; और उन नीच जनों ने लोगों के सामने नाबोत के विस्तृ यह साक्षी दी, ‘‘नाबोत ने परमेश्वर और राजा दोनों की निन्दा की।’’ इस पर उन्होंने उसे नगर से बाहर ले जाकर उसको पथरवाह किया, और वह मर गया। ३४ तब उन्होंने इंजेबेल के पास यह कहला भेजा कि नाबोत पथरवाह करके मार डाला गया है। ३५ यह सुनते ही कि नाबोत पथरवाह करके मार डाला गया है, इंजेबेल ने अहाब से कहा, ‘‘उठकर यिज्जेली नाबोत की दाख की बारी को जिसे उसने तुझे स्थाया लेकर देने से भी इन्कार किया था अपने अधिकार में ले, क्योंकि नाबोत जीवित नहीं परन्तु वह मर गया है।’’ ३६ यिज्जेली नाबोत की मृत्यु का समाचार पाते ही अहाब उसकी दाख की बारी अपने अधिकार में लेने के लिये वहाँ जाने को उठ खड़ा हुआ। ३७ तब यहोवा का यह वचन तिशबी प्रतियाह के पास पहुँचा, ३८ ‘‘चल, सामरिया में रहनेवाले इसाएल के राजा अहाब से मिलने को जा; वह तो नाबोत की दाख की बारी में है, उसे अपने अधिकार में लेने को वह वहाँ गया है।’’ ३९ और उससे यह कहना, कि यहोवा यह कहता है, ‘क्या तूने घात किया, और अधिकारी

भी बन बैठा?" फिर तू उससे यह भी कहना, कि यहोवा यह कहता है, 'जिस स्थान पर कुत्तों ने नाबोत का लाह चाटा, उसी स्थान पर कुत्ते तेरा भी लाह चाटेंगे।' २० एलियाह को देखकर अहाब ने कहा, "हे मेरे शत्रु! क्या तूने मेरा पता लगाया है?" उसने कहा, "हाँ, लगाया तो है, और इसका कारण यह है, कि जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, उसे करने के लिये तने अपने को बेच डाला है। २१ मैं तुझ पर ऐसी विपत्ति डालूँगा, कि तुझे पूरी रीति से मिटा डालूँगा; और तेरे घर के एक-एक लड़के को और क्या बश्यु, क्या स्वाधीन इमाएल में हर एक रहनेवाले को भी नाश कर डालूँगा। २२ और मैं तेरा घराना नबात के पुत्र यारोबाम, और अहियाह के पुत्र जाएा का सा कर दूँगा; इसलिए कि तने मुझे क्रोधित किया है, और इमाएल से पाप करवाया है। २३ और ईजेबेल के विषय में यहोवा यह कहता है, 'यिज्जेल के किले के पास कुत्ते ईजेबेल को खा डालेंगे।' २४ अहाब का जो कोई नगर में पर जाएा उसको कुत्ते खा लेगे; और जो कोई मैदान में पर जाएा उसको आकाश के पक्षी खा जाएँगे।' २५ सचमुच अहाब के तुल्य और कोई न था जिसने अपनी पत्नी ईजेबेल के उकसाने पर वह काम करने को जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, अपने को बेच डाला था। २६ वह तो उन एपोरियों के समान जिनको यहोवा ने इमाएलियों के सामने से देश से निकाला था बहुत ही थिनोंने काम करता था, अर्थात् मूर्तों की उपासना करने लगा था। २७ एलियाह के ये वचन सुनकर अहाब ने अपने बब्ल फाड़े, और अपनी देह पर टाट लपेटकर उपवास करने और टाट ही ओढ़े पड़ा रहने लगा, और दबे पाँवों चलने लगा। २८ और यहोवा का यह वचन तिशबी एलियाह के पास पहुँचा, २९ "क्या तूने देखा है कि अहाब मेरे सामने नम्र बन गया है? इस कारण कि वह मेरे सामने नम्र बन गया है मैं वह विपत्ति उसके जीते जी उस पर न डालूँगा परन्तु उसके पुत्र के दिनों में मैं उसके घराने पर वह विपत्ति भेज़ूँगा।"

२२ तीन वर्ष तक अरामी और इमाएली बिना युद्ध के रहे। २ तीसरे वर्ष में यहदा का राजा यहोशापात इमाएल के राजा के पास गया। ३ तब इमाएल के राजा ने अपने कर्मचारियों से कहा, "क्या तुम को मालूम है, कि गिलाद का रामोत हमारा है? फिर हम क्यों चुपचाप रहते और उसे अराम के राजा के हाथ से क्यों नहीं छीन लेते हैं?" ४ और उसने यहोशापात से पृछा, "क्या तू मेरे संग गिलाद के रामोत से लड़ने के लिये जाएगा?" यहोशापात ने इमाएल के राजा को उत्तर दिया, "जैसा तू है वैसा मैं भी हूँ। जैसी तेजी प्रजा है वैसी ही मेरी भी प्रजा है, और जैसे तेरे घोड़े हैं वैसे ही मेरे भी घोड़े हैं।" ५ फिर यहोशापात ने इमाएल के राजा से कहा, "आज यहोवा की इच्छा मालूम कर लो।" ६ तब इमाएल के राजा ने नवियों को जो कोई चार सौ पुस्त थे इकट्ठा करके उनसे पृछा, "क्या मैं गिलाद के रामोत से युद्ध करने के लिये चढ़ाई करूँ, या स्का रहूँ?" उन्होंने उत्तर दिया, "चढ़ाई कर: क्योंकि प्रभु उसको राजा के हाथ में कर देगा।" ७ परन्तु यहोशापात ने पृछा, "क्या यहाँ यहोवा का और भी कोई नबी नहीं है जिससे हम पूछ लें?" ८ इमाएल के राजा ने यहोशापात से कहा, "हाँ, यिम्ला का पुत्र मीकायाह एक पुस्त और है जिसके द्वारा हम यहोवा से पृछ सकते हैं? परन्तु मैं उससे धूमा रखता हूँ, क्योंकि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं वरन् हानि ही की भविष्यद्वाणी करता है।" ९ यहोशापात ने कहा, "राजा ऐसा न कहे।" तब इमाएल के राजा ने एक हाकिम को बुलवाकर कहा, "यिम्ला के पुत्र मीकायाह को फूर्ती से ले आ।" १० इमाएल का राजा और यहदा का राजा यहोशापात, अपने-अपने राजबब्ल पहने हुए सामरिया के फटक में एक खुले स्थान में अपने-अपने सिंहासन पर विराजमान थे और सब भविष्यद्वाता उनके सम्मुख भविष्यद्वाणी कर रहे थे। ११ तब कनाना के पुत्र सिदकियाह ने लोहे के सींग बनाकर कहा, "यहोवा यह

कहता है, 'इनसे तू अरामियों को मारते-मारते नाश कर डालेगा।'" १२ और सब नबियों ने इसी आशय की भविष्यद्वाणी करके कहा, "गिलाद के रामोत पर चढ़ाई कर और तू कृतार्थ हो: क्योंकि यहोवा उसे राजा के हाथ में कर देगा।" १३ और जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था उसने उससे कहा, "सुन, भविष्यद्वता एक ही मूँह से राजा के विषय शब्द वचन कहते हैं तो तेरी बातें उनकी सी हों; तू भी शब्द वचन कहना।" १४ मीकायाह ने कहा, "यहोवा के जीवन की शपथ जो कुछ यहोवा मुझसे कहे, वही मैं कहँगा।" १५ जब वह राजा के पास आया, तब राजा ने उससे पृछा, "हे मीकायाह! क्या हम गिलाद के रामोत से युद्ध करने के लिये चढ़ाई करें या स्के रहें?" उसने उसको उत्तर दिया, "हाँ, चढ़ाई कर और तू कृतार्थ हो; और यहोवा उसको राजा के हाथ में कर दे।" १६ राजा ने उससे कहा, "मुझे कितनी बार तुझे शपथ धराकर चिनाना होगा, कि तू यहोवा का स्मरण करके मुझसे सच्ची ही कह।" १७ मीकायाह ने कहा, "मुझे समस्त इमाएल बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों के समान पहाड़ों पर; तिरत बितर दिखाई पड़ा, और यहोवा का यह वचन आया, 'उनका कोई चरवाहा नहीं हैं; अतः वे अपने-अपने घर कुशल क्षेत्र से लौट जाएँ।'" १८ तब इमाएल के राजा ने यहोशापात से कहा, "क्या मैंने तुझ से न कहा था, कि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं हानि ही की भविष्यद्वाणी करेगा।" १९ मीकायाह ने कहा, "इस कारण तू यहोवा का यह वचन सुन! मुझे सिंहासन पर विराजमान यहोवा और उसके पास दाँ-बाँ-खड़ी हुई स्वर्ग की समस्त सेना दिखाई दी है।" २० तब यहोवा ने पृछा, "अहाब को कौन ऐसा बहकाएगा, कि वह गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करके खेत आए?" तब किसी ने कछ, और किसी ने कुछ कहा। २१ अन्त में एक आत्मा पास आकर यहोवा के सम्मुख खड़ी हुई, और कहने लगी, "मैं उसको बहकाऊँगी" यहोवा ने पृछा, "किस उपाय से?" २२ उसने कहा, "मैं जाकर उसके सब भविष्यद्वताओं में पैठकर उसने झूठ बुलवाऊँगी।" यहोवा ने कहा, "तेरा उसको बहकाना सफल होगा, जाकर ऐसा ही कर।" २३ तो अब सुन यहोवा ने तेरे इन सब भविष्यद्वताओं के मूँह में एक झूठ बोलनेवाली आत्मा बैठाई है, और यहोवा ने तेरे विषय हानि की बात कही है।" २४ तब कनाना के पुत्र सिदकियाह ने मीकायाह के निकट जा, उसके गाल पर थप्पड़ मारकर पृछा, "यहोवा का आत्मा मुझे छोड़कर तुझ से बातें करने को किधर गया?" २५ मीकायाह ने कहा, "जिस दिन तू छिपने के लिये कोठरी से कोठरी में भागो, तब तुझे जात होगा।" २६ तब इमाएल के राजा ने कहा, "मीकायाह को नगर के हाकिम आमोन और योआश राजकुमार के पास ले जा; २७ और उनसे कह, 'राजा यह कहता है, कि इसको बन्दीगृह में डालो, और जब तक मैं कुशल से न आऊँ, तब तक इसे दुःख की रोटी और पानी दिया करो।'" २८ और मीकायाह ने कहा, "यदि तू कभी कुशल से लौटे, तो जान कि यहोवा ने मेरे द्वारा नहीं कहा।" फिर उसने कहा, "हे लोगों तुम सब के सब सन लो।" २९ तब इमाएल के राजा और यहदा के राजा यहोशापात दोनों ने गिलाद के रामोत पर चढ़ाई की। ३० और इमाएल के राजा ने यहोशापात से कहा, "मैं तो भेष बदलकर युद्ध क्षेत्र में जाऊँगा, परन्तु तू अपने ही वब्ब पहने रहना।" तब इमाएल का राजा भेष बदलकर युद्ध क्षेत्र में गया। ३१ अराम के राजा ने तो अपने रथों के बत्तिसों प्रधानों को जाऊँ दी थी, "न तो छोटे से लड़ो और न बड़े से, केवल इमाएल के राजा से युद्ध करो।" ३२ अतः जब रथों के प्रधानों ने यहोशापात को देखा, तब कहा, "मिश्चर इमाएल का राजा वही है।" और वे उसी से युद्ध करने को मुड़े; तब यहोशापात चिल्ला उठा। ३३ यह देखकर कि वह इमाएल का राजा नहीं है, रथों के प्रधान उसका पीछा छोड़कर लौट गए। ३४ तब किसी ने अटकल से एक तीर चलाया और वह इमाएल के राजा के डिलम और निचले वब्ब के बीच छेदकर लगा; तब

उसने अपने सारथी से कहा, “मैं घायल हो गया हूँ इसलिए बागडेर फेरकर मुझे सेना में से बाहर निकाल ले चल।” ३५ और उस दिन युद्ध बढ़ता गया और राजा अपने रथ में औरें के सहारे आमरियों के सम्मुख खड़ा रहा, और सौंदर्य को मर गया; और उसके घाव का लह बहकर रथ के पायदान में भर गया। ३६ सर्व ड्रवते हुए सेना में यह पुकार हर्ष, “हर एक अपने नगर और अपने देश को लौट जाए।” ३७ जब राजा मर गया, तब सामरिया को पहुँचाया गया और सामरिया में उसे मिट्ठी दी गई। ३८ और यहोवा के वचन के अनुसार जब उसका रथ सामरिया के जलकुण्ड में धोया गया, तब कुत्तों ने उसका लह चाट लिया, और वेश्याएँ यहीं स्नान करती थीं। ३९ अहाब के और सब काम जो उसने किए, और हाथी दाँत का जो भवन उसने बनाया, और जो-जो नगर उसने बसाए थे, यह सब क्या इस्माएल्ली राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? ४० अतः अहाब मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसका पुत्र अहज्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा। ४१ इस्माएल के राजा अहाब के राज्य के चौथे वर्ष में आसा का पुत्र यहोशापात यहदा पर राज्य करने लगा। ४२ जब यहोशापात राज्य करने लगा, तब वह पैतीस वर्ष का था और पच्चीस वर्ष तक यस्शलेम में राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम अजूबा था, जो शिल्ही की बेटी थी। ४३ और उसकी चाल सब प्रकार से उसके पिता आसा की सी थी, अर्थात् जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है वही वह करता रहा, और उससे कुछ न मुड़ा। तो भी ऊँचे स्थान ढाए न गए, प्रजा के लोग ऊँचे स्थानों पर उस समय भी बलि किया करते थे और धूप भी जलाया करते थे। ४४ यहोशापात ने इस्माएल के राजा से मेल किया। ४५ यहोशापात के काम और जो वीरता उसने दिखाई, और उसने जो-जो लडाइयाँ की, यह सब क्या यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? ४६ पुस्तगामियों में से जो उसके पिता आसा के दिनों में रह गए थे, उनको उसने देश में से नाश किया। ४७ उस समय एदोम में कोई राजा न था; एक नायब राजकाज का काम करता था। ४८ फिर यहोशापात ने तर्शीश के जहाज सोना लाने के लिये ओपीर जाने को बनवा लिए, परन्तु वे एस्योनगेबेर में टूट गए, इसलिए वहाँ न जा सके। ४९ तब अहाब के पुत्र अहज्याह ने यहोशापात से कहा, “मेरे जहाजियों को अपने जहाजियों के संग, जहाजों में जाने दे;” परन्तु यहोशापात ने इन्कार किया। ५० यहोशापात मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसको उसके पुरखाओं के साथ उसके मूलपुस्थ दाऊद के नगर में मिट्ठी दी गई। और उसका पुत्र यहोराम उसके स्थान पर राज्य करने लगा। ५१ यहदा के राजा यहोशापात के राज्य के सत्रहवें वर्ष में अहाब का पुत्र अहज्याह सामरिया में इस्माएल पर राज्य करने लगा और दो वर्ष तक इस्माएल पर राज्य करता रहा। ५२ और उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। और उसकी चाल उसके माता पिता, और नबात के पुत्र यारोबाम की सी थी जिसने इस्माएल से पाप करवाया था। ५३ जैसे उसका पिता बाल की उपासना और उसे दण्डवत् करने से इस्माएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोधित करता रहा वैसे ही अहज्याह भी करता रहा।

2 राजा

१ अहबान के मरने के बाद मोआब इस्माएल के विस्तु बलवा करने लगा। २ अहज्याह एक जातीदार खिड़की में से, जो सामरिया में उसकी अटारी में थी, गिर पड़ा, और बीमार हो गया। तब उसने दूरों को यह कहकर भेजा, “तुम जाकर एकोन के बाल-जब्ब नामक देवता से यह पछ आओ, कि क्या मैं इस बीमारी से बचूँगा कि नहीं?” ३ तब यहोवा के दूर ने तिशबी एलियाह से कहा, “उठकर सामरिया के राजा के दूरों से मिलने को जा, और उनसे कह, ‘क्या इस्माएल में कोई परमेश्वर नहीं जो तुम एकोन के बाल-जब्ब देवता से पूछने जाते हो?’” ४ इसलिए अब यहोवा तुझ से यह कहता है, ‘जिस पलंग पर तु पड़ा है, उस पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा।’” ५ तब एलियाह से कहा, “उठकर सामरिया के राजा के दूरों से मिलने को जा, और उनसे कह, ‘क्या इस्माएल में कोई परमेश्वर नहीं जो तुम एकोन के बाल-जब्ब देवता से पूछने जाते हो?’” ६ उन्होंने उससे कहा, “एक मनुष्य हम से मिलने को आया, और कहा कि, ‘जिस राजा ने तुम को भेजा उसके पास लौटकर कहो, यहोवा यह कहता है, कि क्या इस्माएल में कोई परमेश्वर नहीं जो तू एकोन के बाल-जब्ब देवता से पूछने को भेजता है? इस कारण जिस पलंग पर तु पड़ा है, उस पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा।’” ७ उसने उन्से पूछा, “जो मनुष्य तुम से मिलने को आया, और तुम से ये बातें कहीं, उसका कैसा रंग-रूप था?” ८ उन्होंने उसको उत्तर दिया, “वह तो रोंआर मनुष्य था और अपनी कमर में चमड़े का फेटा बाँधे हुए था।” उसने कहा, “वह तिशबी एलियाह होगा।” ९ तब उसने उसके पास पचास सिपाहियों के एक प्रधान को उसके पचासों सिपाहियों समेत भेजा। प्रधान ने एलियाह के पास जाकर क्या देखा कि वह पहाड़ की चोटी पर बैठा है। उसने उससे कहा, “हे परमेश्वर के भक्त राजा ने कहा है, ‘तु उत्तर आ।’” १० एलियाह ने उस पचास सिपाहियों के प्रधान से कहा, “यदि मैं परमेश्वर का भक्त हूँ तो आकाश से आग गिरकर तुझे तेरे पचासों समेत भस्म कर डालो।” तब आकाश से आग उतरी और उसे उसके पचासों समेत भस्म कर डालो।” ११ फिर राजा ने उसके पास पचास सिपाहियों के एक और प्रधान को, पचासों सिपाहियों समेत भेज दिया। प्रधान ने उससे कहा, “फुर्ती से तु उत्तर आ।” १२ एलियाह ने उत्तर देकर उनसे कहा, “यदि मैं परमेश्वर का भक्त हूँ तो आकाश से आग गिरकर तुझे और तेरे पचासों समेत भस्म कर डालो।” तब आकाश से परमेश्वर की आग उतरी और उसे उसके पचासों समेत भस्म कर दिया। १३ फिर राजा ने तीसीं बार पचास सिपाहियों के एक और प्रधान को, पचासों सिपाहियों समेत भेज दिया, और पचास का वह तीसरा प्रधान चढ़कर, एलियाह के सामने घुटनों के बल गिरा, और पिण्डपिण्डाकर उससे बिनती की, “हे परमेश्वर के भक्त मेरा प्राण और तेरे इन पचास दासों के प्राण तेरी दृष्टि में अनमोल ठहरे।” १४ पचास-पचास सिपाहियों के जो दो प्रधान अपने-अपने पचासों समेत पहले आए थे, उनको तो आग ने आकाश से गिरकर भस्म कर डाला, परन्तु अब मेरा प्राण तेरी दृष्टि में अनमोल ठहरे।” १५ तब यहोवा के दूर ने एलियाह से कहा, “उसके संग नीचे जा, उससे मत डर।” तब एलियाह उठकर उसके संग राजा के पास नीचे गया, १६ और उससे कहा, “यहोवा यह कहता है, ‘तुमें तो एकोन के बाल-जब्ब देवता से पूछने को दूर भेजे थे तो क्या इस्माएल में कोई परमेश्वर नहीं कि जिससे तु पछ सके? इस कारण तु जिस पलंग पर पड़ा है, उस पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा।’” १७ यहोवा के इस बचन के अनुसार जो एलियाह ने कहा था, वह मर गया। और उसकी सन्तान न होने के कारण यहोराम उसके स्थान पर यहदा के राजा यहोशापात के पुत्र यहोराम के दूसरे

वर्ष में राज्य करने लगा। १८ अहज्याह के और काम जो उसने किए वह क्या इस्माएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?

२ जब यहोवा एलियाह को बवंडर के द्वारा स्वर्गी में उठा ले जाने को था, तब

एलियाह और एलीशा दोनों संग-संग गिलगाल से चले। १९ एलियाह ने एलीशा से कहा, “यहोवा मुझे बेतेल तक भेजता है इसलिए तू यहीं ठहरा रह।” एलीशा ने कहा, “यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे नहीं छोड़ने का।” इसलिए वे बेतेल को चले गए, २० और बेतेलवासी भविष्यद्वक्ताओं के दल एलीशा के पास आकर कहने लगे, “क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा तेरे स्वामी को तेरे पास से उठा लेने पर है?” उसने कहा, “हाँ, मुझे भी यह मालूम है, तम चुप रहो।” २१ एलियाह ने उससे कहा, “हे एलीशा, यहोवा मुझे यरीहो को भेजता है; इसलिए तू यहीं ठहरा रह।” उसने कहा, “यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे नहीं छोड़ने का।” अतः वे यरीहो को आए। २२ और यरीहोवासी भविष्यद्वक्ताओं के दल एलीशा के पास आकर कहने लगे, “क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा तेरे स्वामी को तेरे पास से उठा लेने पर है?” उसने उत्तर दिया, “हाँ मुझे भी मालूम है, तम चुप रहो।” २३ फिर एलियाह ने उससे कहा, “यहोवा मुझे यरदन तक भेजता है, इसलिए तू यहीं ठहरा रह।” उसने कहा, “यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे नहीं छोड़ने का।” अतः वे दोनों आगे चले। २४ और भविष्यद्वक्ताओं के दल में से पचास जन जाकर उनके सामने टूर खड़े हुए, और वे दोनों यरदन के किनारे खड़े हुए। २५ तब एलियाह ने अपनी चढ़ार पकड़कर ऐठ ली, और जल पर मारा, तब वह इधर-उधर दो भाग हो गया; और वे दोनों स्थल ही स्थल पर उत्तर दिये। २६ उनके पार पहुँचने पर एलियाह ने एलीशा से कहा, “इससे पहले कि मैं तेरे पास से उठा लिया जाऊँ जो कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिये करूँ, वह माँग।” एलीशा ने कहा, “तुझ में जो आत्मा है, उसका दो गुना भाग मुझे मिल जाए।” २७ एलियाह ने कहा, “तुमें कठिन बात माँगी है, तो भी यदि तू मुझे उठा लिये जाने के बाद देखने पाए तो तेरे लिये ऐसा ही होगा; नहीं तो न होगा।” २८ वे चलते-चलते बतें कर रहे थे, कि अचानक एक अनिमय रथ और अनिमय घोड़ों ने उनको अलग-अलग गिराया, और एलियाह बवंडर में होकर स्वर्गी पर चढ़ गया। २९ और उसे एलीशा देखता और पुकारता रहा, “हाय मेरे पिता! हाय मेरे पिता! हाय इस्माएल के रथ और सवारों!” जब वह उसको फिर दिखाई न पड़ा, तब उसने अपने वन्धु फाड़े और फाड़कर दो भागकर दिया। ३० फिर उसने एलियाह की चढ़ार उठाई जो उस पर से गिरी थी, और वह लौट आया, और यरदन के तट पर खड़ा हुआ। ३१ तब उसने एलियाह की वह चढ़ार जो उस पर से गिरी थी, पकड़कर जल पर मारी और कहा, “एलियाह का परमेश्वर यहोवा कहाँ है?” जब उसने जल पर मारा, तब वह इधर-उधर दो भाग हो गया और एलीशा पार हो गया। ३२ उसे देखकर भविष्यद्वक्ताओं के दल जो यरीहो में उसके सामने थे, कहने लगे, “एलियाह में जो आत्मा थी, वही एलीशा पर ठहर गई है।” अतः वे उससे मिलने को आए और उसके सामने भूमि तक झुककर दण्डवत् की। ३३ तब उन्होंने उससे कहा, “सुन, तेरे दासों के पास पचास बलवान पुष्प है, वे जाकर तेरे स्वामी को ढूँढ़ें, सम्भव है कि क्या जाने यहोवा के आत्मा ने उसको उठाकर किसी पहाड़ पर या किसी तराई में डाल दिया हो।” उसने कहा, “मत भेजो।” ३४ जब उन्होंने उसको यहाँ तक दबाया कि वह लज्जित हो गया, तब उसने कहा, “भेज दो।” अतः उन्होंने पचास पुष्प भेज दिए, और वे उसे तीन दिन तक ढूँढ़ते रहे परन्तु न पाया। ३५ उस समय तक वह यरीहो में ठहरा रहा, अतः जब वे उसके पास लौट आए, तब उसने उनसे कहा, “क्या मैंने तुम से न कहा था,

कि मत जाओ?” १९ उस नगर के निवासियों ने एलीशा से कहा, “देख, यह नगर मन्थवाने स्थान पर बसा है, जैसा मेरा प्रभु देखता है परन्तु पानी बुरा है; और भूमि गर्भ गिरानेवाली है।” २० उसने कहा, “एक नये प्याले में नमक डालकर मेरे पास ले आओ।” वे उसे उसके पास ले आए। २१ तब वह जल के सोते के पास गया, और उसमें नमक डालकर कहा, “यहोवा यथ कहता है, कि मैं यह पानी ठीक कर देता हूँ, जिससे वह फिर कभी मृत्यु या गर्भ गिरने का कारण न होगा।” २२ एलीशा के इस वचन के अनुसार पानी ठीक हो गया, और आज तक ऐसा ही है। २३ वहाँ से वह बेतेल को चला, और मार्ग की चढ़ाई में चल रहा था कि नगर से छोटे लड़के निकलकर उसका उपहास करके कहने लगे, “हे चन्द्रु चढ जा, हे चन्द्रु चढ जा।” २४ तब उसने पीछे की ओर फिरकर उन पर दृष्टि की और यहोवा के नाम से उनको श्राप दिया, तब जंगल में से दो रीछनियों ने निकलकर उनमें से बयालीस लड़के फांड डाले। २५ वहाँ से वह कर्मेल को गया, और फिर वहाँ से सामरिया को लौट गया।

३ यहदा के राजा यहोशापात के राज्य के अठारहवें वर्ष में अहाब का पुत्र

यहोराम सामरिया में राज्य करने लगा, और बारह वर्ष तक राज्य करता रहा। १ उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था तो भी उसने अपने माता-पिता के बराबर नहीं किया वरन् अपने पिता की बनवाईं हुई बाल के स्तम्भ को दूर किया। २ तो भी वह नवात के पुत्र यारोबाम के ऐसे पार्पों में जैसे उसने इसाएल से भी कराए लिपिटा रहा और उसे न फिरा। ३ मोआब का राजा मेशा बहुत सी भेड़-बकरियाँ रखता था, और इसाएल के राजा को एक लाख बच्चे और एक लाख मेढ़ों का ऊन कर की रीति से दिया करता था।

४ जब अहाब मर गया, तब मोआब के राजा ने इसाएल के राजा से बलवाना किया। ५ उस समय राजा यहोराम ने सामरिया से निकलकर सारे इसाएल की गिनती ली। ६ और उसने जाकर यहदा के राजा यहोशापात के पास यह सन्देश भेजा, “मोआब के राजा ने मुझसे बलवाना किया है, क्या तू मेरे संग मोआब से लड़ने को चलने गए?” उसने कहा, “हाँ मैं चलूँगा, जैसा तू वैसा मैं, जैसी तरी प्रजा वैसी मेरी प्रजा, और जैसे तेरे घोड़े वैसे मेरे भी घोड़े हैं।”

७ फिर उसने पूछा, “हम किस मार्ग से जाएँ?” उसने उत्तर दिया, “एदोम के जंगल से होकर।” ८ तब इसाएल का राजा, और यहदा का राजा, और एदोम का राजा चले और जब सात दिन तक धूमकर चल चुके, तब सेना और उसके पीछे-पीछे चलनेवाले पशुओं के लिये कुछ पानी न मिला। ९ और इसाएल के राजा ने कहा, “हाया! यहोवा ने इन तीन राजाओं को इसलिए इकट्ठा किया, कि उनको मोआब के हाथ में कर दे।” १० परन्तु यहोशापात ने कहा, “क्या यहाँ यहोवा का कोई नबी नहीं है, जिसके द्वारा हम यहोवा से पूछें?” इसाएल के राजा के किसी कर्मचारी ने उत्तर देकर कहा, “हाँ, शापात का पुत्र एलीशा जो एलियाह के हाथों को धूलाया करता था वह तो यहाँ है।”

११ तब यहोशापात ने कहा, “उसके पास यहोवा का वचन पहुँचा करता है।” तब इसाएल का राजा और यहोशापात और एदोम का राजा उसके पास गए। १२ तब एलीशा ने इसाएल के राजा से कहा, “मेरा तुम से क्या काम है? अपने पिता के भविष्यद्वत्ताओं और अपनी माता के नवियों के पास जा।” इसाएल के राजा ने उससे कहा, “ऐसा न कह, क्योंकि यहोवा ने इन तीनों राजाओं को इसलिए इकट्ठा किया, कि इनको मोआब के हाथ में कर दे।” १३ एलीशा ने कहा, “सेनाओं का यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहा करता हूँ, उसके जीवन की शपथ यदि मैं यहदा के राजा यहोशापात का आदरमान न करता, तो मैं न तो तेरी और मुँह करता और न तुझ पर दृष्टि करता। १४ अब कोई बजानेवाला मेरे पास ले आओ।” जब बजानेवाला बजाने लगा, तब यहोवा की शक्ति एलीशा पर हुई। १५ और उसने कहा, “इस नाले में तुम लोग इतना खोदो,

कि इसमें गड़े ही गड़े हो जाएँ। १६ क्योंकि यहोवा यह कहता है, ‘तुम्हारे सामने न तो वायु चलेगी, और न वर्षा होगी, तो भी यह नदी पानी से भर जाएगी, और अपने गाय बैलों और पशुओं समेत तुम पीने पाओगे। १७ और यह यहोवा की दृष्टि में छोटी सी बात है; यहोवा मोआब को भी तुम्हारे हाथ में कर देगा। १८ तब तुम सब गढ़वाले और उत्तम नगरों को नाश करना, और सब अच्छे वृक्षों को काट डालना, और जल के सब सोतों को भर देना, और सब अच्छे खेतों में पथर फेंककर उत्तें बिगाड़ देना।” १९ सर्वे को अन्वलि चढ़ाने के समय एदोम की ओर से जल बह आया, और देश जल से भर गया। २० यह सुनकर कि राजाओं ने हम से युद्ध करने के लिये चढ़ाई की है, जिन्हे मोआबियों की अवस्था हथियार बाँधें योग्य थी, वे सब बुलाकर इकट्ठे किए गए, और सीमा पर खड़े हुए। २१ सर्वे को जब वे उठे उस समय सूर्य की किरणें उस जल पर ऐसी पड़ी कि वह मोआबियों के सामने की ओर से लह सा लाल दिखाई पड़ा। २२ तो वे कहने लगे, “वह तो लह होगा, निःसन्देह वे राजा एक दूसरे को मारकर नाश हो गए हैं, इसलिए अब हे मोआबियों लट्ट लेने को जाओ।” २३ और जब वे इसाएल की छावनी के पास आए ही थे, कि इसाएली उठकर मोआबियों को मारने लगे और वे उनके सामने से भग गए; २४ और वे मोआब को मारते-मारते उनके देश में पहुँच गए। २५ और उन्होंने नारों को ढा दिया, और सब अच्छे खेतों में एक-एक पुस्त ने अपना-अपना पथर डालकर उन्हें भर दिया; और जल के सब सोतों को भर दिया; और सब अच्छे-अच्छे वृक्षों को काट डाला, यहाँ तक कि कीरहरासत के पथर तो रह गए, परन्तु उसको भी चारों ओर गोफन चलानेवालों ने जाकर मारा। २६ यह देखकर कि हम युद्ध में हार चले, मोआब के राजा ने सात सौ तलवार रखनेवाले पुस्त संग लेकर एदोम के राजा तक पाँती चीरकर पहुँचने का यत्र किया परन्तु पहुँच न सका। २७ तब उसने अपने जेठे पुत्र को जो उसके स्थान में राज्य करनेवाला था पकड़कर शहरपनाह पर होम्बलि चढ़ाया। इस कारण इसाएल पर बड़ा ही क्रोध हुआ, इसलिए वे उसे छोड़कर अपने देश को लौट गए।

४ भविष्यद्वत्ताओं के दल में से एक की बी ने एलीशा की दुहाई देकर कहा,

“तेरा दास मेरा पति मर गया, और तू जानता है कि वह यहोवा का भय माननेवाला था, और जिसका वह कर्जदार था, वह आया है कि वे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिये ले जाए।” १ एलीशा ने उससे पूछा, “मैं तेरे लिये क्या करूँ? मुझे बता कि तेरे घर में क्या है?” उसने कहा, “तेरी दासी के घर में एक हांडी तेल को छोड़ और कुछ नहीं है।” २ उसने कहा, “तू बाहर जाकर अपनी सब पड़ोसियों से खाली बर्तन माँग ले आ, और थोड़े बर्तन न लाना। ३ फिर तू अपने बेटों समेत अपने घर में जा, और द्वार बन्द करके उन सब बर्तनों में तेल उड़ेले देना, और जो भर जाए उन्हें अलग रखना।” ४ तब वह उसके पास से चली गई, और अपने बेटों समेत अपने घर जाकर द्वार बन्द किया; तब वे तो उसके पास बर्तन लाते गए और वह उड़ेलती गई। ५ जब बर्तन भर गए, तब उसने अपने बेटे से कहा, “मेरे पास एक और भी ले आ;” उसने उससे कहा, “और बर्तन तो नहीं रहा।” तब तेल स्क गया। ६ तब उसने जाकर परमेश्वर के भक्त को यह बता दिया। और उसने कहा, “जा तेल बेचकर ऋण भर दें; और जो रह जाए, उससे तू अपने पुत्रों सहित अपना निवाह करना।” ७ फिर एक दिन की बात है कि एलीशा शनेम को गया, जहाँ एक कुलीन बी थी, और उसने उसे रोटी खाने के लिये विनती करके विवश किया। अतः जब जब वह उधर से जाता, तब-तब वह वहाँ रोटी खाने को उत्तरा था। ८ और उस बी ने अपने पति से कहा, “सुन यह जो बार बार हमारे यहाँ से होकर जाया करता है वह मुझे परमेश्वर का कोई पवित्र भक्त जान

पड़ता है। १० हम दीवार पर एक छोटी उपरौठी कोठरी बनाएँ, और उसमें उसके लिये एक खाट, एक मेज, एक कुर्सी और एक दीवार रखें, कि जब जब वह हमारे यहाँ आए, तब-तब उसी में टिका करो।” ११ एक दिन की बात है, कि वह वहाँ जाकर उस उपरौठी कोठरी में टिका और उसी में लेट गया। १२ और उसने अपने सेवक गेहजी से कहा, “उस शनेमिन को बुला लो।” उसके बुलाने से वह उसके सामने खड़ी हुई। १३ तब उसने गेहजी से कहा, “इससे कह, कि तूने हमारे लिये ऐसी बड़ी चिन्ता की है, तो तेरे लिये क्या किया जाए? क्या तेरी चर्चा राजा, या प्रधान सेनापति से की जाए?” उसने उत्तर दिया, “मैं तो अपने ही लोगों में रहती हूँ।” १४ फिर उसने कहा, “तो इसके लिये क्या किया जाए?” गेहजी ने उत्तर दिया, “निश्चय उसके कोई लड़का नहीं, और उसका पति बड़ा है।” १५ उसने कहा, “उसको बुला लो।” और जब उसने उसे बुलाया, तब वह द्वारा मैं खड़ी हुई। १६ तब उसने कहा, “वसन्त क्रतु में दिन पूरे होने पर तु एक बेटा छाती से लगाएगी।” ढी ने कहा, “हे मैं प्रभु! हे परमेश्वर के भक्त ऐसा नहीं, अपनी दासी को धोखा न दे।” १७ ढी को गर्भ रहा, और वसन्त क्रतु का जो समय एलीशा ने उससे कहा था, उसी समय जब दिन पूरे हुए, तब उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। १८ जब लड़का बड़ा हो गया, तब एक दिन वह अपने पिता के पास लवनेवालों के निकट निकल गया। १९ और उसने अपने पिता से कहा, “आह! मेरा सिर, आह! मेरा सिर।” तब पिता ने अपने सेवक से कहा, “इसको इसकी माता के पास ले जा।” २० वह उसे उठाकर उसकी माता के पास ले गया, फिर वह दोपहर तक उसके घृणों पर बैठा रहा, तब मर गया। २१ तब उसने चढ़कर उसको परमेश्वर के भक्त की खाट पर लिटा दिया, और निकलकर किवाड़ बन्द किया, तब उत्तर गई। २२ तब उसने अपने पति से पुकारकर कहा, “मेरे पास एक सेवक और एक गदही तुरन्त भेज दे कि मैं परमेश्वर के भक्त के यहाँ झटपट हो आऊँ।” २३ उसने कहा, “आज त उसके यहाँ क्यों जाएगी? आज न तो नये चाँद का, और न विश्राम का दिन है,” उसने कहा, “कल्याण होगा।” २४ तब उस ढी ने गदही पर काटी बाँधकर अपने सेवक से कहा, “हाँके चल; और मेरे कहे बिना हँकने में ढिलाइ न करना।” २५ तो वह चलते-चलते कर्त्तव्य पर्वत को परमेश्वर के भक्त के निकट पहुँची। उसे दूर से देखकर परमेश्वर के भक्त ने अपने सेवक गेहजी से कहा, “देख, उधर तो वह शनेमिन है।” २६ अब उससे मिलने को दौड़ जा, और उससे पूछ, कि तू कुशल से है? तेरा पति भी कुशल से है? और लड़का भी कुशल से है? पूछने पर ढी ने उत्तर दिया, “हाँ, कुशल से हैं।” २७ वह पहाड़ पर परमेश्वर के भक्त के पास पहुँची, और उसके पाँव पकड़ने लगी, तब गेहजी उसके पास गया, कि उसे धक्का देकर हटाए, परन्तु परमेश्वर के भक्त ने कहा, “उसे छोड़ दे, उसका मन व्याकुल है; परन्तु यहोवा ने मुझ को नहीं बताया, छिपा ही रखा है।” २८ तब वह कहने लगी, “क्या मैंने अपने प्रभु से पुत्र का वर माँगा था? क्या मैंने न कहा था मुझे धोखा न दें?” २९ तब एलीशा ने गेहजी से कहा, “अपनी कमर बाँध, और मेरी छड़ी हाथ में लेकर चला जा, मार्ग में यदि कोई तुझे मिले तो उसका कुशल न पूछना, और कोई तेरा कुशल पूछे, तो उसको उत्तर न देना, और मेरी यह छड़ी उस लड़के के मुँह पर रख देना।” ३० तब लड़के की माँ ने एलीशा से कहा, “यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे न छोड़ूँगी।” तो वह उठकर उसके पीछे-पीछे चला। ३१ उनसे पहले पहुँचकर गेहजी ने छड़ी को उस लड़के के मुँह पर रखा, परन्तु कोई शब्द न सुन पड़ा, और न उसमें कोई हरकत हुई, तब वह एलीशा से मिलने को लौट आया, और उसको बता दिया, “लड़का नहीं जागा।” ३२ जब एलीशा घर में आया, तब क्या देखा, कि लड़का मरा हुआ उसकी खाट पर पड़ा है। ३३ तब उसने अकेला भीतर जाकर किवाड़ बन्द

किया, और यहोवा से प्रार्थना की। ३४ तब वह चढ़कर लड़के पर इस रीति से लेट गया कि अपना मुँह उसके मुँह से और अपनी आँखें उसकी आँखों से और अपने हाथ उसके हाथों से मिला दिये और वह लड़के पर पसर गया, तब लड़के की देह गर्भ होने लगी। ३५ वह उसे छोड़कर घर में इधर-उधर टहलने लगा, और फिर चढ़कर लड़के पर पसर गया; तब लड़के ने सात बार छीका, और अपनी आँखें खोली। ३६ तब एलीशा ने गेहजी को बुलाकर कहा, “शनेमिन को बुला ले।” जब उसके बुलाने से वह उसके पास आई, “तब उसने कहा, अपने बेटे को उठा ले।” ३७ वह भीतर गई, और उसके पाँवों पर पिर भूमि तक झुककर दण्डवत् किया; फिर अपने बेटे को उठाकर निकल गई। ३८ तब एलीशा गिलगाल को लौट गया। उस समय देश में अकाल था, और भविष्यद्वत्ताओं के दल उसके सामने बैठे हुए थे, और उसने अपने सेवक से कहा, “हण्डा चढ़ाकर भविष्यद्वत्ताओं के दल के लिये कुछ पका।” ३९ तब कोई मैदान में साग तोड़ने गया, और कोई जंगली लता पाकर अपनी आँकवार भर जंगली फल तोड़ ले आया, और फॉक-फॉक करके पकने के लिये हण्डे में डाल दिया, और वे उसको न पहचानते थे। ४० तब उन्होंने उन मनुष्यों के खाने के लिये हण्डे में से परोसा। खाते समय वे चिल्लाकर बोल उठे, “हे परमेश्वर के भक्त हण्डे में जहर है,” और वे उसमें से खा न सके। ४१ तब एलीशा ने कहा, “अच्छा, कुछ आटा ले आओ।” तब उसने उसे हण्डे में डालकर कहा, “उन लोगों के खाने के लिये परोस दे।” फिर हण्डे में कुछ हानि की बस्तु न रही। ४२ कोई मनुष्य बालशालीशा से, पहले उपजे हुए जौ की बीस रोटीयाँ, और अपनी बोरी में हरी बालों परमेश्वर के भक्त के पास ले आया; तो एलीशा ने कहा, “उन लोगों को खाने के लिये दें।” ४३ उसके टहलाए ने कहा, “क्या मैं सौ मनुष्यों के सामने इतना ही रख दूँ?” उसने कहा, “लोगों को दे दे कि खाएँ, क्योंकि यहोवा यह कहता है, ‘उनके खाने के बाद कुछ बच भी जाएगा।’” ४४ तब उसने उनके आगे रख दिया, और यहोवा के बचन के अनुसार उनके खाने के बाद कुछ बच भी गया।

५ अराम के राजा का नामान नामक सेनापति अपने स्वामी की दृष्टि में बड़ा

और प्रतिष्ठित पुम्प था, क्योंकि यहोवा ने उसके द्वारा अरामियों को विजयी किया था, और वह शूरीर था, परन्तु कोही था। १ अरामी लोग दल बाँधकर इस्माएल के देश में जाकर वहाँ से एक छोटी लड़की बन्दी बनाकर ले आए थे और वह नामान की पत्री की सेवा करती थी। २ उसने अपनी स्वामिनी से कहा, “यदि मेरा स्वामी सामरिया के भविष्यद्वत्ता के पास होता, तो क्या ही अच्छा होता! क्योंकि वह उसको कोढ़ से चंगा कर देता।” ३ तो नामान ने अपने प्रभु के पास जाकर कह दिया, “इस्माएली लड़की इस प्रकार कहती है।” ४ अराम के राजा ने कहा, “तू जा, मैं इस्माएल के राजा के पास एक पत्र भेज़ूँगा।” ५ तब वह दस किक्कार चाँदी और छः हजार टुकड़े सोना, और दस जोड़े काढ़े साथ लेकर रवाना हो गया। ६ और वह इस्माएल के राजा के पास वह पत्र ले गया जिसमें यह लिखा था, “जब यह पत्र तुझे मिले, तब जानना कि मैंने नामान नामक अपने एक कर्मचारी को तेरे पास इसलिए भेजा है, कि तू उसका कोढ़ दूर कर दो।” ७ यह पत्र पढ़ने पर इस्माएल के राजा ने अपने बच्चे फाड़े और बोला, “क्या मैं मारनेवाला और जिलानेवाला परमेश्वर हूँ कि उस पुम्प ने मेरे पास किसी को इसलिए भेजा है कि मैं उसका कोढ़ दूर करूँ? सोच विचार तो करो, वह मुझसे गङ्गाड़े का कारण ढूँढ़ता होगा।” ८ यह सुनकर कि इस्माएल के राजा ने अपने बच्चे फाड़े हैं, परमेश्वर के भक्त एलीशा ने राजा के पास कहला भेजा, “तूने क्यों अपने बच्चे फाड़े हैं? वह मेरे पास आए, तब जान लेगा, कि इस्माएल में भविष्यद्वत्ता है।” ९ तब नामान घोड़ों और रथों समेत

एलीशा के द्वार पर आकर खड़ा हुआ। १० तब एलीशा ने एक दूत से उसके पास यह कहला भेजा, “तू जाकर यरदन में सात बार डुबकी मार, तब तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा, और तू शुद्ध होगा।” ११ परन्तु मानाम कोधित हो यह कहता हुआ चला गया, “मैंने तो सोचा था, कि अवश्य वह मेरे पास बाहर आएगा, और खड़ा होकर अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके कोढ़ के स्थान पर अपना हाथ फेरकर कोढ़ को दूर करेगा।” १२ क्या दमिश्क की अबाना और पर्पर नदियाँ इस्माएल के सब जलाशयों से उत्तम नहीं हैं? क्या मैं उनमें सान करके शुद्ध नहीं हो सकता हूँ?“ इसलिए वह क्रोध से भरा हुआ लौटकर चला गया। १३ तब उसके सेवक पास आकर कहने लगे, “हे हमारे पिता यदि भविष्यद्वत्का तुमे कोई भारी काम करने की आज्ञा देता, तो क्या तु उसे न करता? फिर जब वह कहता है, कि सान करके शुद्ध हो जा, तो कितना अधिक इसे मानाना चाहिए।” १४ तब उसने परमेश्वर के भक्त के बचन के अनुसार यरदन को जाकर उसमें सात बार डुबकी मारी, और उसका शरीर छोटे लड़के का सा हो गया; और वह शुद्ध हो गया। १५ तब वह अपने सब दल बल समेत परमेश्वर के भक्त के यहाँ लौट आया, और उसके सम्मुख खड़ा होकर कहने लगा, “सुन, अब मैंने जान लिया है, कि समस्त पृथ्वी में इस्माएल को छोड़ और कहीं परमेश्वर नहीं है! इसलिए अब अपने दास की भेट ग्रहण कर।” १६ एलीशा ने कहा, “यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूँ उसके जीवन की शपथ मैं कुछ भेट न लूँगा;” और जब उसने उसको बहुत विवश किया कि भेट को ग्रहण करे, तब भी वह इन्कार ही करता रहा। १७ तब मानाम ने कहा, “अच्छा, तो तेरे दास को दो खच्चर मिट्ठी मिले, क्योंकि आगे को तेरा दास यहोवा को छोड़ और किसी परमेश्वर को होमबलि या मेलबलि न चढ़ाएगा।” १८ एक बात यहोवा तेरे दास की क्षमा करे, कि जब मेरा स्वामी रिमोन के भवन में दण्डवत करने को जाए, और वह मेरे हाथ का सहारा ले, और मुझे भी रिमोन के भवन में दण्डवत करनी पड़े, तब यहोवा तेरे दास का यह काम क्षमा करे कि मैं रिमोन के भवन में दण्डवत करूँ।” १९ उसने उससे कहा, “कुशल से विदा हो।” वह उसके यहाँ से थोड़ी दूर चला गया था, २० कि परमेश्वर के भक्त एलीशा का सेवक गेहजी सोचने लगा, “मेरे स्वामी ने तो उस अरामी नामान को ऐसा ही छोड़ दिया है कि जो वह ले आया था उसको उतने न लिया, परन्तु यहोवा के जीवन की शपथ मैं उसके पीछे दौड़कर उससे कुछ न कुछ ले लूँगा।” २१ तब गेहजी नामान के पीछे दौड़ा नामान किसी को अपने पीछे दौड़ता हुआ देखकर, उससे मिलने को रथ से उतर पड़ा, और पूछा, “सब कुशल क्षेम तो है?” २२ उसने कहा, “हाँ, सब कुशल है; परन्तु मेरे स्वामी ने मुझे यह कहने को भेजा है, ‘ऐप्रैम के पहाड़ी देश से भविष्यद्वत्काओं के दल में से दो जवान मेरे यहाँ अभी आए हैं, इसलिए उनके लिये एक किक्कार चाँदी और दो जोड़े बच्चे दे।’” २३ नामान ने कहा, “खुशी से दो किक्कार काँदी और दो जोड़े बच्चे दे।” तब उसने उससे बहुत विनती करके दो किक्कार चाँदी अलग थैलियों में बाँधकर, दो जोड़े बच्चे समेत अपने दो सेवकों पर लाद दिया, और वे उन्हें उसके आगे-आगे ले चले। २४ जब वह टीते के पास पहुँचा, तब उसने उन वस्तुओं को उनसे लेकर घर में रख दिया, और उन मनुष्यों को विदा किया, और वे चले गए। २५ और वह भीतर जाकर, अपने स्वामी के सामने खड़ा हुआ। एलीशा ने उससे पूछा, “हे गेहजी तू कहाँ से आता है?” उसने कहा, “तेरा दास तो कहीं नहीं गया।” २६ उसने उससे कहा, “जब वह पुष्प इधर मुँह फेरकर तुझ से मिलने को अपने रथ पर से उतरा, तब से वह पूरा हाल मुझे मालूम था; क्या यह समय चाँदी या बख्त या जैतून या दाख की बारियाँ, भेड़-बकरियाँ, गाय बैल और दास-दासी लेने का

है? २७ इस कारण से नामान का कोढ़ तुझे और तेरे बंश को सदा लगा रहेगा।” तब वह हिम सा खेत कोड़ी होकर उसके सामने से चला गया।

६ भविष्यद्वत्काओं के दल में से किसी ने एलीशा से कहा, “यह स्थान जिसमें हम तेरे सामने रहते हैं, वह हमारे लिये बहुत छोटा है।” ७ इसलिए हम यरदन तक जाएँ और वहाँ से एक-एक बल्ली लेकर, यहाँ अपने रहने के लिये एक स्थान बना लें;” उसने कहा, “अच्छा जाओ।” ८ तब किसी ने कहा, “अपने दासों के संग चला हूँ।” उसने कहा, “चलता हूँ।” ९ अतः वह उनके संग चला और वे यरदन के किनारे पहुँचकर लाकड़ी काटने लगे। १० परन्तु जब एक जन बल्ली काट रहा था, तो कुलहाड़ी बेट से निकलकर जल में गिर गई; इसलिए वह चिल्लाकर कहने लगा, “हाय! मेरे प्रभु, वह तो मौंगी हुई थी।” ११ परमेश्वर के भक्त ने पूछा, “वह कहाँ गिरी?” जब उसने स्थान दिखाया, तब उसने एक लकड़ी काटकर वहाँ डाल दी, और वह लोहा पानी पर तैरने लगा। १२ उसने कहा, “उसे उठा लो।” तब उसने हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया। १३ अराम का राजा इस्माएल से युद्ध कर हथा था, और सम्मति करके अपने कर्मचारियों से कहा, “अमुक स्थान पर मेरी छावनी होगी।” १४ तब परमेश्वर के भक्त ने इस्माएल के राजा के पास कहला भेजा, “चौकसी कर और अमुक स्थान से होकर न जाना क्योंकि वहाँ अरामी चढाई करनेवाले हैं।” १५ तब इस्माएल के राजा ने उस स्थान को, जिसकी चर्चा करके परमेश्वर के भक्त ने उसे चित्ताया था, दूर भेजकर, अपनी रक्षा की, और इस प्रकार एक दो बार नहीं बरन बहुत बार हुआ। १६ इस कारण अराम के राजा का मन बहुत घबरा गया; अतः उसने अपने कर्मचारियों को बुलाकर उनसे पूछा, “क्या तुम मुझे न बताओगे कि हम लोगों में से कौन इस्माएल के राजा की ओर का है?” उसके एक कर्मचारी ने कहा, “हे मेरे प्रभु! हे राजा! ऐसा नहीं, १७ एलीशा जो इस्माएल में भविष्यद्वत्का है, वह इस्माएल के राजा को वे बातें भी बताया करता है, जो तू शयन की कोठरी में बोलता है।” १८ राजा ने कहा, “जाकर देखो कि वह कहाँ है, तब मैं भेजकर उसे पकड़कर माँगाऊँगा।” उसको यह समाचार मिला: “वह दोतान में है।” १९ तब उसने वहाँ घोड़ों और रथों समेत एक भारी दल भेजा, और उन्होंने रात को आकर नगर को घेर लिया। २० भेर को परमेश्वर के भक्त का टहलुआ उठा और निकलकर क्या देखता है कि घोड़ों और रथों समेत एक दल नगर को घेर हुए पड़ा है। तब उसके सेवक ने कहा, “हाय! मेरे स्वामी, हम क्या करें?” २१ उसने कहा, “मत ड़ा; क्योंकि जो हमारी ओर है, वह उसे अधिक है, जो उनकी ओर है।” २२ तब एलीशा ने यह प्रार्थना की, “हे यहोवा, इसकी आँखें खोल दे कि यह देख सके।” तब यहोवा ने सेवक की आँखें खोल दी, और जब वह देख सका, तब क्या देखा, कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है। २३ जब अरामी उसके पास आए, तब एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना की कि इस दल को अंधा कर डाल। एलीशा के इस बचन के अनुसार उसने उन्हें अंधा कर दिया। २४ तब एलीशा ने उनसे कहा, “यह तो मार्ग नहीं है, और न यह नगर है, मेरे पीछे हो लो; मैं तुम्हें उस मनुष्य के पास जिसे तुम ढूँढ़ रहे हो पहुँचाऊँगा।” तब उसने उन्हें सामरिया को पहुँचा दिया। २५ जब वे सामरिया में आ गए, तब एलीशा ने कहा, “हे यहोवा, इन लोगों की आँखें खोल कि देख सकें।” तब यहोवा ने उनकी आँखें खोली, और जब वे देखने लगे तब क्या देखा कि हम सामरिया के मध्य में हैं। २६ उनको देखकर इस्माएल के राजा ने एलीशा से कहा, “हे मेरे पिता, क्या मैं इनको मार लूँ?” २७ उसने उत्तर दिया, “मत मार। क्या तु उनको मार दिया करता है, जिनको तू तलवार और धनुष से बन्दी बना लेता है? तू उनको अन्न जल दे, कि खा पीकर अपने

स्वामी के पास चले जाएँ।” २३ तब उसने उनके लिये बड़ा भोज किया, और जब वे खा पी चुके, तब उसने उन्हें बिदा किया, और वे अपने स्वामी के पास चले गए। इसके बाद अराम के दल इसाएल के देश में फिर न आए। २४ इसके बाद अराम के राजा बेन्हदद ने अपनी समस्त सेना इकट्ठी करके, सामरिया पर चढ़ाई कर दी और उसको धेर लिया। २५ तब सामरिया में बड़ा अकाल पड़ा और वह ऐसा धिरा रहा, कि अन्त में एक गढ़हे का सिर चाँदी के अस्ती टुकड़ों में और कब की चौथाई भर कबत्र की बीत पॉच टुकड़े चाँदी तक बिकने लगी। २६ एक दिन इसाएल का राजा शहरपनाह पर टहल रहा था, कि एक छीं में पुकारके उससे कहा, “हे प्रभु, हे राजा, बचा!” २७ उसने कहा, “यदि यहोवा तुझे न बचाए, तो मैं कहाँ से तुझे बचाऊँ? क्या खलिहान में से, या दाखरस के कुण्ड में से?” २८ फिर राजा ने उससे पूछा, “तुझे क्या हुआ?” उसने उत्तर दिया, “इस छीं ने मुझसे कहा था, ‘मुझे अपना बेटा दे, कि हम आज उसे खा लें, फिर कल मैं अपना बेटा दूँगी, और हम उसे भी खाएँगी।’” २९ तब मेरे बेटे को पकाकर हमने खा लिया, फिर दूसरे दिन जब मैंने इससे कहा “अपना बेटा दे कि हम उसे खा लें, तब इसने अपने बेटे को छिपा रखा।” ३० उस छीं की ये बातें सुनते ही, राजा ने अपने बब्ब फाड़े (वह तो शहरपनाह पर टहल रहा था), जब लोगों ने देखा, तब उनको यह देख पड़ा कि वह भीतर अपनी देह पर टाट पहने है। ३१ तब वह बोल उठा, “यदि मैं शापात के पुत्र एलीशा का सिर आज उसके धड़ पर रहने दूँ, तो परमेश्वर मेरे साथ ऐसा ही वरन् इससे भी अधिक करे।” ३२ एलीशा अपने घर में बैठा हुआ था, और पुरनिये भी उसके संग बैठे थे। सो जब राजा ने अपने पास से एक जन भेजा, तब उस दूत के पहुँचने से पहले उसने पुरनियों से कहा, “देखो, इस खूनी के बेटे ने किसी को मेरा सिर काटने को भेजा है, इसलिए जब वह दूत आए, तब किवाड बन्द करके रोके रहना। क्या उसके स्वामी के पाँव की आहट उसके पीछे नहीं सुन पड़ती?” ३३ वह उससे यह बातें कर ही रहा था कि दूत उसके पास आ पहुँचा। और राजा कहने लगा, “यह विपत्ति यहोवा की ओर से है, अब मैं आगे को यहोवा की बाट क्यों जोहता रहूँ?”

७ तब एलीशा ने कहा, “यहोवा का वचन सनो, यहोवा यह कहता है, ‘कल इसी समय सामरिया के फाटक में सआ भर मैदा एक शेकेल में और दो सआ जौ भी एक शेकेल में बिकेगा।’” ८ तब उस सरदार ने जिसके हाथ पर राजा तकिया करता था, परमेश्वर के भक्त को उत्तर देकर कहा, “सुन, चाहे यहोवा आकाश के झारेखे खोले, तो भी क्या ऐसी बात हो सकेगी?” उसने कहा, “सुन, तू यह अपनी आँखों से तो देखोगा, परन्तु उस अन्न में से कुछ खाने न पाएगा।” ९ चार कोळी फाटक के बाहर थे; वे आपस में कहने लगे, “हम क्यों यहाँ बैठे-बैठे मर जाएँ? १० यदि हम कहें, ‘नगर में जाएँ?’ तो वहाँ मर जाएँ; क्योंकि वहाँ अकाल पड़ा है, और यदि हम यहीं बैठे रहें, तो भी मर ही जाएँ। तो आओ हम अराम की सेना में पकड़े जाएँ; यदि वे हमको जिलाए रखें तो हम जिवित रहेंगे, और यदि वे हमको मार डालें, तो भी हमको मरना ही है।” ११ तब वे साँझ को अराम की छावनी में जाने को चले, और अराम की छावनी की ओर पर हुँचकर क्या देखा, कि वहाँ कोई नहीं है। १२ क्योंकि प्रभु ने अराम की सेना को रथों और घोड़ों की ओर भारी सेना की सी आहट सुनाई थी, और वे आपस में कहने लगे थे, “सुनो, इस्माएल के राजा ने हिती और मिती राजाओं को वेतन पर बुलवाया है कि हम पर चढ़ाई करें।” १३ इसलिए वे साँझ को उठकर ऐसे भाग गए, कि अपने डेरे, घोड़े, गढ़े, और छावनी जैसी की तैरी छोड़कर अपना-अपना प्राण लेकर भाग गए। १४ जब वे कोळी छावनी की ओर के डेरों के पास पहुँचे, तब एक डेरे में घुसकर खाया पिया, और उसमें से चाँदी, सोना और बब्ब ले जाकर छिपा रखा; फिर

लौटकर दूसरे डेरे में घुस गए और उसमें से भी ले जाकर छिपा रखा। १५ तब वे आपस में कहने लगे, “जो हम कर रहे हैं वह अच्छा काम नहीं है, यह अनन्द के समाचार का दिन है, परन्तु हम किसी को नहीं बताते। जो हम पौ फटने तक ठहरे रहें तो हमको दण्ड मिलेगा; सो अब आओ हम राजा के घराने के पास जाकर यह बात बता दें।” १६ तब वे चले और नगर के चौकीदारों को बुलाकर बताया, “हम जो अराम की छावनी में गए, तो क्या देखा, कि वहाँ कोई नहीं है, और मनुष्य की कुछ आहट नहीं है, केवल बंधे हुए घोड़े और गढ़ हैं, और डेरे जैसे के तीसे हैं।” १७ तब चौकीदारों ने पुकारके राजभवन के भीतर समाचार दिया। १८ तब राजा रात ही को उठा, और अपने कर्मचारियों से कहा, “मैं तुम्हें बताता हूँ कि अरामियों ने हम से क्या किया है? वे जानते हैं, कि हम लोग भूखे हैं इस कारण वे छावनी में से मैदान में छिपने को यह कहकर गए हैं, कि जब वे नगर से निकलेंगे, तब हम उनको जीवित ही पकड़कर नगर में घुसने पाएँगे।” १९ परन्तु राजा के किसी कर्मचारी ने उत्तर देकर कहा, “जो घोड़े नगर में बच रहे हैं उनमें से लोग पाँच घोड़े लें, और उनको भेजकर हम हाल जान लें। वे तो इस्माएल की सब भीड़ के समान हैं जो नगर में रह गई है वरन् इस्माएल की जो भीड़ मर मिट गई है वे उसी के समान हैं।” २० अतः उन्होंने दो रथ और उनके घोड़े लिये, और राजा ने उनको अराम की सेना के पीछे भेजा; और कहा, “जाओ, देखो।” २१ तब वे यरदान तक उनके पीछे चले गए, और क्या देखा, कि पूरा मार्ग वज्रों और पात्रों से भरा पड़ा है, जिन्हें अरामियों ने उतावली के मारे फेंक दिया था; तब दूत लौट आए, और राजा से यह कह सुनाया। २२ तब लोगों ने निकलकर अराम के डेरों को लूट लिया; और यहोवा के वचन के अनुसार एक सआ मैदा एक शेकेल में, और दो सआ जौ एक शेकेल में बिकने लगा। २३ अब राजा ने उस सरदार को जिसके हाथ पर वह तकिया करता था फाटक का अधिकारी ठहराया; तब वह फाटक में लोगों के पाँवों के नीचे ढबकर मर गया। यह परमेश्वर के भक्त के उस वचन के अनुसार हुआ जो उसने राजा से उसके यहाँ आने के समय कहा था। २४ परमेश्वर के भक्त ने जैसा राजा से यह कहा था, “कल इसी समय सामरिया के फाटक में दो सआ जौ एक शेकेल में, और एक सआ मैदा एक शेकेल में बिकेगा,” वैसा ही हुआ। २५ और उस सरदार ने परमेश्वर के भक्त को, उत्तर देकर कहा था, “सुन चाहे यहोवा आकाश में झरोखे खोले तो भी क्या ऐसी बात हो सकेगी?” और उसने कहा था, “सुन, तू यह अपनी आँखों से तो देखोगा, परन्तु उस अन्न में से खाने न पाएगा।” २६ अतः उसके साथ ठीक वैसा ही हुआ, अतएव वह फाटक में लोगों के पाँवों के नीचे ढबकर मर गया।

८ जिस छीं के बेटे को एलीशा ने जिलाया था, उससे उसने कहा था कि अपने घराने समेत यहाँ से जाकर जहाँ कहीं तू रह सके वहाँ रह; क्योंकि यहोवा की इच्छा है कि अकाल पड़े, और वह इस देश में सात वर्ष तक बना रहेगा। ९ परमेश्वर के भक्त के इस वचन के अनुसार वह छीं अपने घराने समेत पलिशियों के देश में जाकर सात वर्ष रही। १० सात वर्ष के बीतने पर वह पलिशियों के देश से लौट आई, और अपने घर और भूमि के लिये दुहाइ देने को राजा के पास गई। ११ राजा उस समय परमेश्वर के भक्त के सेवक गेहजी से बातें कर रहा था, और उसने कहा, “जो बड़े-बड़े काम एलीशा ने किए हैं उनको मुझसे वर्णन कर।” १२ जब वह राजा से यह वर्णन कर ही रहा था कि एलीशा ने एक मुर्दे को जिलाया, तब जिस छीं के बेटे को उसने जिलाया था वही आकर अपने घर और भूमि के लिये दुहाइ देने लगी। १३ बगेहजी ने कहा, “हे मेरे प्रभु! हे राजा! यह वही छीं है और यही उसका बेटा है जिसे एलीशा ने

जिलाया था।” ६ जब राजा ने स्त्री से पूछा, तब उसने उससे सब कह दिया। तब राजा ने एक हाकिम को यह कहकर उसके साथ कर दिया कि जो कुछ इसका था वरन् जब से इसने देश को छोड़ दिया तब से इसके खेत की जितनी आमदनी अब तक हुई हो सब इसे फेर दे। ७ एलीशा दग्धिक को गया। और जब अराम के राजा बेन्हदद को जो रोगी था यह समाचार मिला, “परमेश्वर का भक्त यहाँ भी आया है,” ८ तब उसने हजाएल से कहा, “भैंट लेकर परमेश्वर के भक्त से मिलने को जा, और उसके द्वारा यहोवा से यह पूछ, ‘क्या बेन्हदद जो रोगी है वह बचेगा कि नहीं?’” ९ तब हजाएल भैंट के लिये दग्धिक की सब उत्तम-उत्तम वस्तुओं से चालीस ऊंट लदवाकर, उससे मिलने को चला, और उसके सम्मुख खड़ा होकर कहने लगा, “तेरे पुत्र अराम के राजा बेन्हदद ने मुझे तुझ से यह पूछने को भेजा है, ‘क्या मैं जो रोगी हूँ तो बच्चां कि नहीं?’” १० एलीशा ने उससे कहा, “जाकर कह, ‘तू निश्चय बच सकता,’ तो भी यहोवा ने मुझ पर प्रगट किया है, कि तू निःन्देह मर जाएगा।” ११ और वह उसकी ओर टकटकी बाँधकर देखता रहा, यहाँ तक कि वह लज्जित हआ। और परमेश्वर का भक्त रोने लगा। १२ तब हजाएल ने पूछा, “मेरा प्रभु क्यों रोता है?” उसने उत्तर दिया, “इसलिए कि मुझे मालूम है कि तू इस्माएलियों पर क्या-क्या उपद्रव करेगा; उनके गढ़वाले नगरों को तू फूँक देगा; उनके जवानों को तू तलवार से घात करेगा, उनके बाल-बच्चों को तू पटक देगा, और उनकी गर्भवती स्त्रियों को तू चीर डालेगा।” १३ हजाएल ने कहा, “तेरा दास जो कृते सरीखा है, वह क्या है कि ऐसा बड़ा काम करे?” एलीशा ने कहा, “यहोवा ने मुझ पर यह प्रगट किया है कि तू अराम का राजा हो जाएगा।” १४ तब वह एलीशा से विदा होकर अपने स्वामी के पास गया, और उसने उससे पूछा, “एलीशा ने तुझ से क्या कहा?” उसने उत्तर दिया, “उसने मुझसे कहा कि बेन्हदद निःन्देह बचेगा।” १५ दूसरे दिन उसने रजाई को लेकर जल से भिगो दिया, और उसको उसके मुँह पर ऐसा ओढ़ा दिया कि वह मर गया। तब हजाएल उसके स्थान पर राज्य करने लगा। १६ इस्माएल के राजा अहाब के पुत्र योराम के राज्य के पाँचवें वर्ष में, जब यहदा का राजा यहोशापात जीतिथा, तब यहोशापात का पुत्र यहोराम यहदा पर राज्य करने लगा। १७ जब वह राजा हुआ, तब बत्तीस वर्ष का था, और आठ वर्ष तक यस्सलेम में राज्य करता रहा। १८ वह इस्माएल के राजाओं की सी चाल चला, जैसे अहाब का घराना चलता था, क्योंकि उसकी स्त्री अहाब की बेटी थी; और वह उस काम को करता था जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। १९ तो भी यहोवा ने यहदा को नाश करना न चाहा, यह उसके दास दाऊद के कारण हुआ, क्योंकि उसने उसको बचन दिया था, कि तेरे वंश के निमित्त मैं सदा तेरे लिये एक दीपक जलाता हुआ रखूँगा। २० उसके दिनों में एदोम ने यहदा की अधीनता छोड़कर अपना एक राजा बना लिया। २१ तब योराम अपने सब रथ साथ लिये हुए साईर को गया, और रात को उठकर उन एदोमियों को जो उसे धौर हुए थे, और रथों के प्रधानों को भी मारा; और लोग अपने-अपने डेरे को भाग गए। २२ अतः एदोम यहदा के वंश से छूट गया, और आज तक वैसा ही है। उस समय लिब्ना ने भी यहदा की अधीनता छोड़ दी। २३ योराम के और सब काम और जो कुछ उसने किया, वह क्या यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? २४ अन्त में योराम मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उनके बीच दाऊदपुर में उसे मिट्ठी दी गई, और उसका पुत्र अहज्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा। २५ अहाब के पुत्र इस्माएल के राजा योराम के राज्य के बारहवें वर्ष में यहदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह राज्य करने लगा। २६ जब अहज्याह राजा बना, तब बाईस वर्ष का था, और यस्सलेम में एक ही वर्ष राज्य किया। और उसकी माता का नाम

अतल्याह था, जो इस्माएल के राजा ओम्री की पोती थी। २७ वह अहाब के घराने की सी चाल चला, और अहाब के घराने के समान वह काम करता था, यो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, क्योंकि वह अहाब के घराने का दमाद था। २८ वह अहाब के पुत्र योराम के संग गिलाद के रामोत में अराम के राजा हजाएल से लड़ने को गया, और अरामियों ने योराम को घायल किया। २९ राजा योराम इस्माएल लौट गया, कि यिज्जेल में उन घावों का इलाज कराए, जो उसको अरामियों के हाथ से उस समय लगे, जब वह हजाएल के साथ लड़ रहा था। और अहाब का पुत्र योराम तो यिज्जेल में रोगी था, इस कारण यहदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह उसको देखने गया।

३० तब एलीशा भविष्यद्वत्काने ने भविष्यद्वत्काओं के दल में से एक को बुलाकर उससे कहा, “कमर बाँध, और हाथ में तेल की यह कुपी लेकर गिलाद के रामोत को जा।” ३१ और वहाँ पहुँचकर येह को जो यहोशापात का पुत्र और निमशी का पोता है, ढूँढ़ लेना; तब भीतर जा, उसको खड़ा कराकर उसके भाइयों से अलग एक भीतर कोठरी में ले जाना। ३२ तब तेल की यह कुपी लेकर तेल को उसके सिर पर यह कहकर डालना, ‘यहोवा यह कहता है, कि मैं इस्माएल का राजा होने के लिये तेरा अधिकेक कर देता हूँ।’ तब द्वार खोलकर भागना, विलम्ब न करना।” ३३ अतः वह जवान भविष्यद्वत्का गिलाद के रामोत को गया। ३४ वहाँ पहुँचकर उसने क्या देखा, कि सेनापति बैठे हुए हैं; तब उसने कहा, “हे सेनापति, मुझे तुझ से कुछ कहना है।” येह ने पूछा, “हम सभी में किस से?” उसने कहा, “हे सेनापति, मुझे तुझ से कुछ कहना है।” ३५ तब वह उठकर घर में गया; और उसने यह कहकर उसके सिर पर तेल डाला, “इस्माएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, मैं अपनी प्रजा इस्माएल पर राजा होने के लिये तेरा अधिकेक कर देता हूँ।” ३६ तो त अपने स्वामी अहाब के घराने को मार डालना, जिससे मुझे अपने दास भविष्यद्वत्काओं के बरन् अपने सब दासों के खून का जो इजेबेल ने बहाया, बदला मिले। ३७ क्योंकि अहाब का समस्त घराना नाश हो जाएगा, और मैं अहाब के बंश के हर एक लड़के को और इस्माएल में के क्या बन्दी, क्या स्वाधीन, हर एक का नाश कर डालूँगा। ३८ और मैं अहाब का घराना नवात के पुत्र योराम का सा, और अहिज्याह के पुत्र बाशा का सा कर दूँगा। ३९ और इजेबेल को यिज्जेल की भूमि में कुते खाएँगे, और उसको मिट्ठी देनेवाला कोई न होगा।” तब वह द्वार खोलकर भाग गया। ४० तब येह अपने स्वामी अहाब के घराने को मार डालना, जिससे उसने एदोम के कर्मचारियों के पास निकल आया, और एक ने उससे पूछा, “क्या कुशल है, वह बालवाला बनों तेरे पास आया था?” उसने उससे कहा, “तुम को मालूम होगा कि वह कौन है और उससे क्या बातचीत हुई।” ४१ उन्होंने कहा, “झूँठ है, हमें बता दे।” उसने कहा, “उसने मुझसे कहा तो बहुत, परन्तु मतलब यह है ‘यहोवा यह कहता है कि मैं इस्माएल का राजा होने के लिये तेरा अधिकेक कर देता हूँ।’” ४२ तब उन्होंने झट अपना-अपना वञ्च उतार कर उसके नीचे सीढ़ी ही पर बिछाया, और नसरिंगे फूँककर कहने लगे, “येह राजा है।” ४३ यह येह जो निमशी का पोता और यहोशापात का पुत्र था, उसने योराम से राजदोह की युक्ति की। (योराम तो सारे इस्माएल समेत अराम के राजा हजाएल के कारण गिलाद के रामोत की रक्षा कर रहा था; ४४ परन्तु राजा योराम आप अपने घाव का जो अराम के राजा हजाएल से युद्ध करने के समय उसको अरामियों से लगे थे, उनका इलाज कराने के लिये यिज्जेल को लौट गया था।) तब येह ने कहा, “यदि तुम्हारा ऐसा मन हो, तो इस नगर में से कोई निकलकर यिज्जेल में सुनाने को न जाने पाए।” ४५ तब येह रथ पर चढ़कर, यिज्जेल को चला जहाँ योराम पड़ा हुआ था; और यहदा का राजा अहिज्याह योराम के देखने को वहाँ आया था। ४६ यिज्जेल के गुम्मट पर, जो पहस्ता खड़ा था, उसने येह के संग आते हुए दल को देखकर कहा, “मुझे

एक दल दिखता है;” योराम ने कहा, “एक सवार को बुलाकर उन लोगों से मिलने को भेज और वह उससे पूछें, ‘क्या कुशल है?’” १८ तब एक सवार उससे मिलने को गया, और उससे कहा, “राजा पृथुता है, ‘क्या कुशल है?’” येह ने कहा, “कुशल से तेरा क्या काम? हटकर मेरे पीछे चल।” तब पहसु ने कहा, “वह दूत उनके पास पहुँचा तो था, परन्तु लौटकर नहीं आया।” १९ तब उसने दूसरा सवार भेजा, और उसने उनके पास पहुँचकर कहा, “राजा पृथुता है, ‘क्या कुशल है?’” येह ने कहा, “कुशल से तेरा क्या काम? हटकर मेरे पीछे चल।” २० तब पहसु ने कहा, “वह भी उनके पास पहुँचा तो था, परन्तु लौटकर नहीं आया। हाँकना मिश्री के पोते येह का सा है, वह तो पागलों के समान हाँकता है।” २१ योराम ने कहा, “मेरा रथ जूतवा।” जब उसका रथ जूत गया, तब इस्पाल का राजा योराम और यहदा का राजा अहज्याह, दोनों अपने-अपने रथ पर चढ़कर निकल गए, और येह से मिलने को बाहर जाकर यिज्जेल नाबोत की भूमि में उससे भेट की। २२ येह को देखते ही योराम ने पृथु, “हे येह क्या कुशल है,” येह ने उत्तर दिया, “जब तक तेरी माता ईजेबेल छिनालपन और टोना करती रहे, तब तक कुशल कहाँ?” २३ तब योराम रास फेर के, और अहज्याह से यह कहकर भागा, “हे अहज्याह विष्वासघात है, भाग चला।” २४ तब येह ने धनुष को कान तक खींचकर योराम के कंधों के बीच ऐसा तीर मारा, कि वह उसका हृदय फोड़कर निकल गया, और वह अपने रथ में झुककर गिर पड़ा। २५ तब येह ने विदकर नामक अपने एक सरदार से कहा, “उसे उठाकर यिज्जेली नाबोत की भूमि में फेंक दे; स्मरण तो कर, कि जब मैं और तू, हम दोनों एक संग सवार होकर उसके पिता अहाब के पीछे-पीछे चल रहे थे तब यहोवा ने उससे यह भारी वचन कहलवाया था, २६ ‘यहोवा की यह वाणी है, कि नाबोत और उसके पुत्रों का जो खन हआ, उसे मैंने देखा है, और यहोवा की यह वाणी है, कि मैं उसी भूमि में तुझे बदला दूँगा।’ तो अब यहोवा के उस वचन के अनुसार इसे उठाकर उत्ती भूमि में फेंक दे।” २७ यह देखकर यहदा का राजा अहज्याह बारी के भवन के मार्ग से भाग चला। और येह ने उसका पिठा करके कहा, “उसे भी रथ ही पर मारो;” तो वह भी यिबलाम के पास की गूर की ढाई इंच पर मारा गया, और मगिदो तक भागकर मर गया। २८ तब उसके कर्मचारियों ने उसे रथ पर यस्सलेम को पहुँचाकर दाऊदपुर में उसके पुरखाओं के बीच मिट्टी दी। २९ अहज्याह तो अहाब के पुत्र योराम के राज्य के ग्यारहवें वर्ष में यहदा पर राज्य करने लगा था। ३० जब येह यिज्जेल को आया, तब ईजेबेल यह सुन अपनी आँखों में सुमा लगा, अपना सिर संवारकर, खिड़की में से झाँकने लगी। ३१ जब येह फाटक में होकर आ रहा था तब उसने कहा, “हे अपने स्वामी के घात करनेवाले जिम्री, क्या कुशल है?” ३२ तब उसने खिड़की की ओर मूँह उठाकर पृथु, “मेरी ओर कौन है? कौन?” इस पर दो तीन खोजों ने उसकी ओर झाँका। ३३ तब उसने कहा, “उसे नीचे गिरा दो।” अतः उन्होंने उसको नीचे गिरा दिया, और उसके लह के कुछ छीटे दीवार पर और कुछ घोड़ों पर पड़े, और उन्होंने उसको पॉव से लातड़ा दिया। ३४ तब वह भीतर जाकर खाने-पीने लगा; और कहा, “जाओ उस श्रीपति स्त्री को देख लो, और उसे मिट्टी दो; वह तो राजा की बेटी है।” ३५ जब वे उसे मिट्टी देने गए, तब उसकी खोपड़ी पाँवों और हथेलियों को छोड़कर उसका और कुछ न पाया। ३६ अतः उन्होंने लौटकर उससे कह दिया; तब उसने कहा, “यह यहोवा का वह वचन है, जो उसने अपने दास तिशबी एलियाह से कहलवाया था, कि ईजेबेल का माँस यिज्जेल की भूमि में कुते खाएँगे।” ३७ और ईजेबेल का शव यिज्जेल की भूमि पर खाद के समान पड़ा रहेगा, यहाँ तक कि कोई न कहेगा, ‘यह ईजेबेल है।’”

१० अहाब के सतर बेटे, पोते, सामरिया में रहते थे। अतः येह ने सामरिया में उन पुनियों के पास, और जो यिज्जेल के हाकिम थे, और जो अहाब के लड़कों के पालनेवाले थे, उनके पास पत्रों को लिखकर भेजा, : “तुम्हारे स्वामी के बेटे, पोते तो तुम्हारे पास रहते हैं, और तुम्हारे रथ, और घोड़े भी हैं, और तुम्हारे एक गढ़वाला नगर, और हथियार भी हैं; तो इस पत्र के हाथ लगते ही, ३ अपने स्वामी के बेटों में से जो सबसे अच्छा और योग्य हो, उसको छांटकर, उसके पिता की गडी पर बैठाओ, और अपने स्वामी के घराने के लिये लड़ा।” ४ परन्तु वे बहुत डर गए, और कहने लगे, “उसके सामने दो राजा भी ठहर न सके, फिर हम कहाँ ठहर सकेंगे?” ५ तब जो राजधाने के काम पर था, और जो नगर के ऊपर था, उन्होंने और पुनियों और लड़कों के पालनेवालों ने येह के पास यह कहला भेजा, “हम तेरे दास हैं, जो कुछ तू हम से कहे, उसे हम करेंगे; हम किसी को राजा न बनाएँगे, जो तुमे भाए वही कर।” ६ तब उसने दूसरा पत्र लिखकर उनके पास भेजा, “यदि तुम मेरी ओर के हो और मेरी मानो, तो अपने स्वामी के बेटों-पोतों के सिर कटवाकर कल इसी समय तक मेरे पास यिज्जेल में हाजिर होना।” राजपत्र तो जो सतर मनुष्य थे, वे उस नगर के रेसों के पास पलते थे। ७ यह पत्र उनके हाथ लगते ही, उन्होंने उन सतरों राजुपत्रों को पकड़कर मार डाला, और उनके सिर टोकरियों में रखकर यिज्जेल को उसके पास भेज दिए। ८ जब एक दूत ने उसके पास जाकर बता दिया, “राजकुमारों के सिर आ गए हैं।” तब उसने कहा, “उन्हें फाटक में दो ढेर करके सवेरे तक रखो।” ९ सवेरे उसने बाहर जा खड़े होकर सब लोगों से कहा, “तुम तो निर्दोष हो, मैंने अपने स्वामी से राजदोह की युक्ति करके उसे घात किया, परन्तु इन सभी को किसने मार डाला? १० अब जान लो कि जो वचन यहोवा ने अपने दास एलियाह के द्वारा कहा था, उसे उसने पूरा किया है; जो वचन यहोवा ने अहाब के घराने के विषय कहा, उसमें से एक भी बात बिना पूरी हुए न रहेगी।” ११ तब अहाब के घराने के जितने लोग यिज्जेल में रह गए, उन सभी को और उसके जितने प्रधान पुम्ह और मित्र और याजक थे, उन सभी को येह ने मार डाला, यहाँ तक कि उसने किसी को जीवित न छोड़ा। १२ तब वह वहाँ से चलकर सामरिया को गया। और मार्ग में चरवाहों के ऊन करतने के स्थान पर पहुँचा ही था, १३ कि यहदा के राजा अहज्याह के भाई येह से मिले और जब उसने पृथु, “तुम कौन हो?” तब उन्होंने उत्तर दिया, “हम अहज्याह के भाई हैं, और राजुपत्रों और राजमाता के बेटों का कुशल क्षेत्र पृथुने को जाते हैं।” १४ तब उसने कहा, “इन्हें जीवित पकड़ो।” अतः उन्होंने उनको जो बायालीस पुष्प थे, जीवित पकड़ा, और ऊन करतने के स्थान की बावली पर मार डाला, उसने उसमें से किसी को न छोड़ा। १५ जब वह वहाँ से चला, तब रेकाब का पुत्र यहोनादाब सामने से आता हुआ उसको मिला। उसका कुशल उसने पूछकर कहा, “मेरा मन तो तेरे प्रति निष्कपट है, क्या तेरा मन भी वैसा ही है?” यहोनादाब ने कहा, “हाँ, ऐसा ही है।” किर उसने कहा, “ऐसा हो, तो अपना हाथ मुझे दो।” उसने अपना हाथ उसे दिया, और वह यह कहकर उसे अपने पास रथ पर चढ़ाने लगा, १६ “मेरे संग चल और देख, कि मुझे यहोवा के निमित्त कैसी जलन रहती है।” तब वह उसके रथ पर चढ़ा दिया गया। १७ सामरिया को पहुँचकर उसने यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने एलियाह से कहा था, अहाब के जितने सामरिया में बचे रहे, उन सभी को मार के विनाश किया। १८ तब येह ने सब लोगों को इक्षा करके कहा, “अहाब ने तो बाल की थोड़ी ही उपासना की थी, अब येह उसकी उपासना बढ़ाके करेगा। १९ इसलिए अब बाल के सब निबियों, सब उपासनकों और सब याजकों को मेरे पास बुला लाओ, उनमें से कोई भी न रह जाए; क्योंकि बाल के लिये मेरा एक

बड़ा यज्ञ होनेवाला है; जो कोई न आए वह जीवित न बचेगा।” ये है ने यह काम कपट करके बाल के सब उपासकों को नाश करने के लिये किया। २० तब ये है ने कहा, “बाल की एक पवित्र महासभा का प्रचार करो।” और लोगों ने प्रचार किया। २१ ये है ने सारे इस्माइल में दूत भेजे; तब बाल के सब उपासक आए, यहाँ तक कि ऐसा कोई न रह गया जो न आया हो। वे बाल के भवन में इतने आए, कि वह एक सिरे से दूसरे सिरे तक भर गया। २२ तब उसने उस मनुष्य से जो वस्त्र के घर का अधिकारी था, कहा, “बाल के सब उपासकों के लिये वस्त्र निकाल ले आ।” अतः वह उके लिये वस्त्र निकाल ले आया। २३ तब ये है रेकाव के पुत्र यहोनादाव को संग लेकर बाल के भवन में गया, और बाल के उपासकों से कहा, “दृढ़कर देखो, कि यहाँ तम्हारे संग यहोवा का कोई उपासक तो नहीं है, केवल बाल ही के उपासक हैं।” २४ तब वे मेलबलि और होमबलि चढ़ाने को भीतर गए। ये है ने तो अस्सी पुस्त बाहर ठहराकर उनसे कहा था, “यदि उन मनुष्यों में से जिन्हें मैं तम्हारे हाथ कर दूँ, कोई भी बचने पाए, तो जो उसे जाने देगा उसका प्राण, उसके प्राण के बदले जाएगा।” २५ फिर जब होमबलि चढ़ चुका, तब ये है ने पहस्तों और सरदारों से कहा, “भीतर जाकर उन्हें मार डालो; कोई निकलने न पाए।” तब उन्होंने उन्हें तलवार से मारा और पहस्त और सरदार उनको बाहर फेंकर बाल के भवन के नगर को गए। २६ और उन्होंने बाल के भवन में की लाठें निकालकर फूँक दी। २७ और बाल के स्तम्भ को उन्होंने तोड़ डाला; और बाल के भवन को ढाकर शौचालय बना दिया; और वह आज तक ऐसा ही है। २८ अतः ये है ने बाल को इस्माइल में से नाश करके दूर किया। २९ तो भी नवात के पुत्र यारोबाम, जिसने इस्माइल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार करने, अर्थात् बेतेल और दान में के सोने के बछड़ों की पूजा, उससे ये है अलग न हआ। ३० यहोवा ने ये है से कहा, “इसलिए कि तूने वह किया, जो मेरी दृष्टि में ठीक है, और अहाब के घरने से मेरी इच्छा के अनुसार बर्ताव किया है, तैरे परपोते के पुत्र तक तेरी सत्तन इस्माइल की गड़ी पर विराजी रहेगी।” ३१ परन्तु ये है ने इस्माइल के परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था पर पूर्ण मन से चलने की चौकसी न की, बरन यारोबाम जिसने इस्माइल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार करने से वह अलग न हुआ। ३२ उन दिनों यहोवा इस्माइल की सीमा को घटाने लगा, इसलिए हजाएल ने इस्माइल के उन सोर देशों में उनको मारा। ३३ यदरन से पूरब की ओर गिलाद का सारा देश, और गादी और रूबेनी और मनशेही का देश अर्थात् ऊरोए से लेकर जो अर्नोन की तराई के पास है, गिलाद और बाशान तक। ३४ ये है के और सब काम और जो कुछ उसने किया, और उसकी पूर्ण वीरता, यह सब क्या इस्माइल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? ३५ अन्त में ये है मरकर अपने पुरुखाओं के संग जा मिला, और सामरिया में उसको मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र यहोआहाज उसके स्थान पर राजा बन गया। ३६ ये है के सामरिया में इस्माइल पर राज्य करने का समय तो अष्टैस वर्ष का था।

११ जब अहज्याह की माता अतल्याह ने देखा, कि उसका पुत्र मर गया, तब

उसने पैरे राजवंश को नाश कर डाला। १२ परन्तु यहोवेबा जो राजा योआम की बेटी, और अहज्याह की बहन थी, उसने अहज्याह के पुत्र योआश को घात होनेवाले राजकुमारों के बीच में से चुराकर दाई समेत बिछौने रखने की कोठरी में छिपा दिया। और उन्होंने उसे अतल्याह से ऐसा छिपा रखा, कि वह मरा न गया। ३७ और वह उसके पास यहोवा के भवन में छ: वर्ष छिपा रहा, और अतल्याह देश पर राज्य करती रही। ३८ सातवें वर्ष में यहोयादा ने अंगरक्षकों और पहस्तों के शतपतियों को बुला भेजा, और उनको यहोवा के

भवन में अपने पास ले आया; और उनसे बाचा बाँधी और यहोवा के भवन में उनको शपथ खिलाकर, उनको राजपत्र दिखाया। ३९ और उन्हें आजा दी, “एक काम करो: अर्थात् तुम में से एक तिहाई लोग जो विश्वामिदिन को अनेवाले हों, वे राजभवन का पहरा दें।” ४० और एक तिहाई लोग सूर नामक फाटक में ठहरे रहे, और एक तिहाई लोग पहस्तों के पीछे के फाटक में रहे; अतः तुम भवन की चौकसी करके लोगों को रोके रहना; ४१ और तुम्हरे दो दल अर्थात् जितने विश्वामिदिन को बाहर जानेवाले हों वह राजा के आस-पास होकर यहोवा के भवन की चौकसी करें। ४२ तुम अपने-अपने हाथ में हथियार लिये हुए राजा के चारों ओर रहना, और जो कोई पाँतियों के भीतर धूमसा चाहे वह मार डाला जाए, और तुम राजा के आते-जाते समय उसके संग रहना।” ४३ यहोयादा याजक की इन सब आज्ञाओं के अनुसार शतपतियों ने किया। वे विश्वामिदिन को अनेवाले और जानेवाले दोनों दलों के अपने-अपने जनों को संग लेकर यहोयादा याजक के पास गए। ४४ तब याजक ने शतपतियों को राजा दाऊद के बर्छे, और ढालें जो यहोवा के भवन में थी दे दी। ४५ इसलिए वे पहस्त अपने-अपने हाथ में हथियार लिए हुए भवन के दक्षिणी कोने से लेकर उत्तरी कोने तक बेटी और भवन के पास, राजा के चारों ओर उसको घेकर खड़े हुए। ४६ तब उसने राजकुमार को बाहर लाकर उसके सिर पर मुकर्त, और साक्षीपत्र रख दिया; तब लोगों ने उसका अधिकैक करके उसको राजा बनाया; पिर ताली बजा-बजाकर बोल उठे, “राजा जीवित रहे!” ४७ जब अतल्याह को पहस्तों और लोगों की हलचल सुनाई पड़ी, तब वह उनके पास यहोवा के भवन में गई; ४८ और उसने क्या देखा कि राजा रीति के अनुसार खम्भे के पास खड़ा है, और राजा के पास प्रधान और तुरही बजानेवाले खड़े हैं। और सब लोग अनन्द करते और तुरहियां बजा रहे हैं। तब अतल्याह अपने बन्धु फाड़कर, “राजदोह! राजदोह!” पुकारने लगी। ४९ तब यहोयादा याजक ने दल के अधिकारी शतपतियों को आज्ञा दी, “उसे अपनी पाँतियों के बीच से निकाल ले जाओ; और जो कोई उसके पीछे चले उसे तलवार से मार डालो।” क्योंकि याजक ने कहा, “वह यहोवा के भवन में न मार डाली जाए।” ५० इसलिए उन्होंने दोनों ओर से उसको जगह दी, और वह उस मार्ग के बीच से चली गई, जिससे घोड़े राजभवन में जाया करते थे; और वहाँ वह मार डाली गई। ५१ तब यहोयादा ने यहोवा के, और राजा-प्रजा के बीच यहोवा की प्रजा होने की बाचा बँधाई, और उसने राजा और प्रजा के मध्य भी बाचा बँधाई। ५२ तब सब लोगों ने बाल के भवन को जाकर दी दिया, और उसकी बेटियाँ और मूर्ते भली भाँति तोड़ दीं; और मतान नामक बाल के याजक को बेदियों के सामने ही घात किया। याजक ने यहोवा के भवन पर अधिकारी ठहरा दिए। ५३ तब वह शतपतियों, अंगरक्षकों और पहस्तों और सब लोगों को साथ लेकर राजा को यहोवा के भवन से नीचे ले गया, और पहस्तों के फाटक के मार्ग से राजभवन को पहुँचा दिया। और राजा राजगाँड़ी पर विराजमान हुआ। ५४ तब सब लोग आनन्दित हुए, और नगर में शान्ति हुई। अतल्याह तो राजभवन के पास तलवार से मार डाली गई थी। ५५ जब योआश राजा हुआ उस समय वह सात वर्ष का था।

१२ ये है के राज्य के सातवें वर्ष में योआश राज्य करने लगा, और यस्तलेम में चालीस वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम सिब्या था जो बेर्शबा की थी। १ और जब तक यहोयादा याजक योआश को शिक्षा देता रहा, तब तक वह वही काम करता रहा जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है। २ तो भी ऊँचे स्थान गिराए न गए; प्रजा के लोग तब भी ऊँचे स्थान पर बलि चढ़ाते और धूप जलाते रहे। ३ योआश ने याजकों से कहा, “पवित्र की ही हृष्टि वस्तुओं का जितना स्पया यहोवा के भवन में पहुँचाया जाए, अर्थात् गिने हुए लोगों का

स्पया और जितना स्पया देने के जो कोई योग्य ठहराया जाए, और जितना स्पया जिसकी इच्छा यहोवा के भवन में ले आने की हो, ५ इन सब को याजक लोग अपनी जान-पहचान के लोगों से लिया करें और भवन में जो कुछ टूटा फूटा हो उसको सुधार दें।” ६ तो भी याजकों ने भवन में जो टूटा फूटा था, उसे योआश राजा के राज्य के तेईसवें वर्ष तक नहीं सुधारा था। ७ इसलिए राजा योआश ने यहोयादा याजक, और याजकों को बुलाकर पूछा, “भवन में जो कुछ टूटा फूटा है, उसे तुम क्यों नहीं सुधारते? अब से अपनी जान-पहचान के लोगों से और स्पया न लेना, और जो तुम्हें मिले, उसे भवन के सुधारने के लिये दे देना।” ८ तब याजकों ने मान लिया कि न तो हम प्रजा से और स्पया लें और न भवन को सुधारें। ९ तब यहोयादा याजक ने एक सन्दूक लेकर, उसके ढक्कन में छेद करके उसको यहोवा के भवन में आनेवालों के दाखिने हाथ पर बेडी के पास रख दिया; और द्वार की रखवाली करनेवाले याजक उसमें वह सब स्पया डालने लगे जो यहोवा के भवन में लाया जाता था। १० जब उन्होंने देखा, कि सन्दूक में बहुत स्पया है, तब राजा के प्रधान और महायाजक ने आकर उसे थैलियों में बाँध दिया, और यहोवा के भवन में पाए हुए स्पये को गिन लिया। ११ तब उन्होंने उस तौले हुए स्पये को उन काम करनेवालों के हाथ में दिया, जो यहोवा के भवन में अधिकारी थे; और इन्होंने उसे यहोवा के भवन के बनानेवाले बढ़ीयों, राजमिष्णियों, और संगतराशों को दिये। १२ और लकड़ी और गढ़े हुए पथर मोल लेने में, वरन् जो कुछ भवन के टृटे फूटे की मरम्मत में खर्च होता था, उसमें लगाया। १३ परन्तु जो स्पया यहोवा के भवन में आता था, उससे चाँदी के तसले, चिमटे, कटौरे, तुहियां आदि सोने या चाँदी के किसी प्रकार के पात्र न बने। १४ परन्तु वह काम करनेवाले को दिया गया, और उन्होंने उसे लेकर यहोवा के भवन की मरम्मत की। १५ और जिनके हाथ में काम करनेवालों को देने के लिये स्पया दिया जाता था, उनसे कुछ हिसाब न लिया जाता था, क्योंकि वे सच्चाई से काम करते थे। १६ जो स्पया दोषबालियों और पापबलियों के लिये दिया जाता था, यह तो यहोवा के भवन में न लगाया गया, वह याजकों को मिलता था। १७ तब अराम के राजा हजाएल ने गत नगर पर चढ़ाई की, और उससे लड़ाई करके उसे ले लिया। तब उसने यस्शलेम पर भी चढ़ाई करने को अपना मुँह किया। १८ तब यहदा के राजा योआश ने उन सब पवित्र वस्तुओं को जिहें उसके पुरुखा यहोशापात यहोराम और अहज्याह नामक यहदा के राजाओं ने पवित्र किया था, और अपनी पवित्र की हुई वस्तुओं को भी और जितना सोना यहोवा के भवन के भण्डारों में और राजभवन में मिला, उस सब को लेकर अराम के राजा हजाएल के पास भेज दिया, और वह यस्शलेम के पास से चला गया। १९ योआश के और सब काम जो उसने किया, वह क्या यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? २० योआश के कर्मचारियों ने राजदोह की युक्ति करके, उसको मिल्लों के भवन में जो सिल्ला की ढालन पर था, मार डाला। २१ अर्थात् शिमात का पुत्र योजाबाद और शोमेर का पुत्र योजाबाद, जो उसके कर्मचारी थे, उन्होंने उसे ऐसा मारा, कि वह मर गया। तब उसे उसके पुरुखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्टी दी, और उसका पुत्र अमस्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

१३ अहज्याह के पुत्र यहदा के राजा योआश के राज्य के तेईसवें वर्ष में येह
का पुत्र यहोआहाज सामरिया में इस्माएल पर राज्य करने लगा, और सत्रह वर्ष तक राज्य करता रहा। १ और उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिसने इस्माएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उनको छोड़ न दिया। २ इसलिए यहोवा का क्रोध इस्माएलियों के विस्तृ भड़क उठा, और उसने उनको अराम के राजा

हजाएल, और उसके पुत्र बेन्हदद के अधीन कर दिया। ३ तब यहोआहाज यहोवा के सामने गिडगिडाया और यहोवा ने उसकी सून ली; क्योंकि उसने इस्माएल पर अंधेरे देखा कि अराम का राजा उन पर कैसा अंधेर करता था। ४ इसलिए यहोवा ने इस्माएल को एक छुडनेवाला दिया और वे अराम के वश से छूट गए; और इस्माएलि पिछले दिनों के समान फिर अपने-अपने डेरे में रहने लगे। ५ तो भी वे ऐसे पापों से न फिरे, जैसे यारोबाम के घराने ने किया, और जिनके अनुसार उसने इस्माएल से पाप कराए थे: परन्तु उनमें चलते रहे, और सामरिया में अशोरा भी खड़ी रही। ६ अराम के राजा ने यहोआहाज की सेना में से केवल पचास सवार, दस रथ, और दस हजार प्यादे छोड़ दिए थे; क्योंकि उसने उनको नाश किया, और रैंद रैंदकर के धूत में मिला दिया था। ७ यहोआहाज के और सब काम जो उसने किए, और उसकी वीरता, यह सब क्या इस्माएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? ८ अन्तः यहोआहाज मरकर अपने पुरुखाओं के संग जा मिला और सामरिया में इस्माएल पर राज्य करने लगा। ९ यहदा के राजा योआश के राज्य के सैतीसवें वर्ष में यहोआहाज का पुत्र यहोआश सामरिया में इस्माएल पर राज्य करने लगा, और सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा। १० और उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् नबात का पुत्र यारोबाम जिसने इस्माएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उनसे अलग न हुआ। ११ यहोआश के और सब काम जो उसने किए, और जिस वीरता से वह यहदा के राजा अमस्याह से लड़ा, यह सब क्या इस्माएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? १२ अन्त में यहोआश मरकर अपने पुरुखाओं के संग जा मिला और यारोबाम उसकी गढ़ी पर विराजमान हुआ; और यहोआश को सामरिया में इस्माएल के राजाओं के बीच मिट्टी दी गई। १३ एलीशा को वह रोग लग गया जिससे उसकी मृत्यु होने पर थी, तब इस्माएल का राजा यहोआश उसके पास गया, और उसके ऊपर रोकर कहने लगा, “हाय मेरे पिता! हाय मेरे पिता! हाय इस्माएल के रथ और सवारों!” एलीशा ने उससे कहा, “धनुष और तीर ले आ।” १४ वह उसके पास धनुष और तीर ले आया। १५ तब उसने इस्माएल के राजा से कहा, “धनुष पर अपना हाथ लगाया।” जब उसने कहा, “धनुष पर अपना हाथ लगाया।” तब वह तीन बार मारकर ठहर गया। १६ और परमेश्वर के जन ने उस पर क्रोधित होकर कहा, “तुझे तो पाँच छः बार मारना चाहिये था। ऐसा करने से तो तु अराम को यहाँ तक मारता कि उनका अन्त कर डालता, परन्तु अब तु उन्हें तीन ही बार मरेगा।” १७ फिर उसने कहा, “तीरों को ले;” और जब उसने उसे खोल दिया, तब एलीशा ने कहा, “तीर छोड़ दे;” उसने तीर छोड़ा। और एलीशा ने कहा, “यह तीर यहोवा की ओर से छुटकारे अर्थात् अराम से छुटकारे का चिन्ह है, इसलिए तु अपेक्ष में अराम को यहाँ तक मार लेगा कि उनका अन्त कर डालेगा।” १८ फिर उसने कहा, “तीरों को ले;” और जब उसने उसे लिया, तब उसने इस्माएल के राजा से कहा, “भूमि पर मार,” १९ तब वह तीन बार मारकर ठहर गया। २० और परमेश्वर के जन ने उस पर क्रोधित होकर कहा, “तुझे तो पाँच छः बार मारना चाहिये था। ऐसा करने से तो तु अराम को यहाँ तक मारता कि उनका अन्त कर डालता, परन्तु अब तु उन्हें तीन ही बार मरेगा।” २१ तब एलीशा मर गया, और उसे मिट्टी दी गई। प्रतिवर्ष वसन्त क्रृत्ति में मोआब के दल, देश पर आक्रमण करते थे। २२ लोग किसी मनुष्य को मिट्टी दे रहे थे, कि एक दल उन्हें दिखाई पड़ा, तब उन्होंने उस शब को एलीशा की कब्र में डाल दिया, और एलीशा की हड्डियों से छूते ही वह जी उठा, और अपने पाँवों के बल खड़ा हो गया। २३ यहोआहाज के जीवन भर अराम का राजा हजाएल इस्माएल पर अंधेर ही करता रहा। २४ परन्तु यहोवा ने उन पर अनुग्रह किया, और उन पर दया करके अपनी उस वाचा के कारण जो उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब से बाँधी थी, उन पर कृपादृष्टि की, और न तो उन्हें नाश किया, और न अपने

सामने से निकाल दिया। २४ तब अराम का राजा हजाएल मर गया, और उसका पुत्र बेन्हदट उसके स्थान पर राजा बन गया। २५ तब यहोआहाज के पुत्र यहोआश ने हजाएल के पुत्र बेन्हदट के हाथ से वे नगर फिर ले लिए, जिन्हें उसने युद्ध करके उसके पिता यहोआहाज के हाथ से छीन लिया था। यहोआश ने उसको तीन बार जीतकर इमाएल के नगर फिर ले लिए।

१४ इमाएल के राजा यहोआहाज के पुत्र योआश के राज्य के दूसरे वर्ष में

यहदा के राजा योआश का पुत्र अमस्याह राजा हुआ। १ जब वह राज्य करने लगा तब वह पच्चीस वर्ष का था, और यस्सलेम में उनतीस वर्ष राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम यहोअदान था, जो यस्सलेम की थी। २ उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था तो भी अपने मलपुस्तक दाऊद के समान न किया; उसने ठीक अपने पिता योआश के से काम किए। ३ उसके दिनों में ऊँचे स्थान गिराए न गए; लोग तब भी उन पर बलि चढ़ाते, और धू जलाते रहे। ४ जब राज्य उसके हाथ में स्थिर हो गया, तब उसने अपने उन कर्मचारियों को मूल्य-दण्ड दिया, जिन्होंने उसके पिता राजा को मार डाला था। ५ परन्तु उन खनियों के बच्चों को उसने न मार डाला, क्योंकि यहोवा की यह आज्ञा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है: “पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और पिता के कारण पुत्र न मार डाला जाए; जिसने पाप किया हो, वही उस पाप के कारण मार डाला जाए।” ६ उसी अमस्याह ने नमक की तराइ में दस हजार एदोमी पुस्त मार डाले, और सेला नगर से युद्ध करके उसे ले लिया, और उसका नाम योतेल रखा, और वह नाम आज तक चलता है। ७ तब अमस्याह ने इमाएल के राजा यहोआश के पास जो येह का पोता और यहोआहाज का पुत्र था दूरों से कहला भेजा, “आ हम एक दूसरे का सामना करें।” ८ इमाएल के राजा यहोआश ने यहदा के राजा अमस्याह के पास यह सन्देश भेजा, “लबानोन पर की एक झड़बेरी ने लबानोन के एक देवदार के पास कहला भेजा, ‘अपनी बेटी का मेरे बेटे से विवाह कर दे’ इन्हें में लबानोन में का एक बन पशु पास से चला गया और उस झड़बेरी को रौंद डाला। ९ तूने एदोमियों को जीता तो है इसलिए तू फूल उठा है। उसी पर बडाई मारता हुआ घर रह जा; तु अपनी हानि के लिये यहाँ क्यों हाथ उठाता है, जिससे तू क्या वरन् यहदा भी नीचा देखेगा?” १० परन्तु अमस्याह ने न माना। तब इमाएल के राजा यहोआश ने चढ़ाई की, और उसने और यहदा के राजा अमस्याह ने यहदा देश के बेतशेमेश में एक दूसरे का सामना किया। ११ और यहदा इमाएल से हार गया, और एक-एक अपने-अपने डेरों को भागा। १२ तब इमाएल के राजा यहोआश ने यहदा के राजा अमस्याह को जो अहज्याह का पोता, और योआश का पुत्र था, बेतशेमेश में पकड़ लिया, और यस्सलेम को गया, और ऐरोमी फाटक से कोनेवाले फाटक तक, चार सौ हाथ यस्सलेम की शहरपानह गिरा दी। १३ और जिनासा सोना, चाँदी और जिनेपान यहोवा के भवन में और राजभवन के भण्डारों में मिले, उन सब को और बन्धक लोगों को भी लेकर वह सामरिया को लौट गया। १४ यहोआश के और काम जो उसने किए, और उसकी वीरता और उसने किस रीति यहदा के राजा अमस्याह से युद्ध किया, यह सब क्या इमाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? १५ अन्त में यहोआश मरकर अपने पुरुखाओं के संग जा मिला और उसे इमाएल के राजाओं के बीच सामरिया में मिट्ठी दी गई; और उसका पुत्र यारोबाम उसके स्थान पर राज्य करने लगा। १६ यहोआहाज के पुत्र इमाएल के राजा यहोआश के मरने के बाद योआश का पुत्र यहदा का राजा अमस्याह पन्द्रह वर्ष जीतित रहा। १७ अमस्याह के और काम क्या यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? १८ जब यस्सलेम में उसके विद्यु राजद्रोह की गोष्ठी की गई, तब वह लाकीश को भाग गया। अतः उन्होंने

लाकीश तक उसका पीछा करके उसको वहाँ मार डाला। १९ तब वह घोड़ों पर रखकर यस्सलेम में पहुँचा गया, और वहाँ उसके पुरुखाओं के बीच उसको दाऊदपुर में मिट्ठी दी गई। २० तब सारी यहदी प्रजा ने अजर्याह को लेकर, जो सोलह वर्ष का था, उसके पिता अमस्याह के स्थान पर राजा नियुक्त कर दिया। २१ राजा अमस्याह मरकर अपने पुरुखाओं के संग जा मिला, तब उसके बाद अजर्याह ने एहत को ढूढ़ करके यहदा के बश में फिरकर लिया। २२ यहदा के राजा योआश के पुत्र अमस्याह के राज्य के पन्द्रहवें वर्ष में इमाएल के राजा यहोआश का पुत्र यारोबाम सामरिया में राज्य करने लगा, और इकतालीस वर्ष राज्य करता रहा। २३ उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था; अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिसने इमाएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उनसे वह अलग न हुआ। २४ उसने इमाएल की सीमा हमात की घाटी से ले आराबा के ताल तक ज्यों का त्यों कर दी, जैसा कि इमाएल के पामेव्वर यहोवा ने अपितै के पुत्र अपने दास गथेपरवारी योना भविष्यद्वत्ता के द्वारा कहा था। २५ क्योंकि यहोवा ने इमाएल का दुःख देखा कि बहुत ही कठिन है, वरन् क्या बन्दी क्या स्वाधीन कोई भी बचा न रहा, और न इमाएल के लिये कोई सहायक था। २६ यहोवा ने नहीं कहा था, कि मैं इमाएल का नाम धरती पर से मिटा डालूँगा। अतः उसने यहोआश के पुत्र यारोबाम के द्वारा उनको छुटकारा दिया। २७ यारोबाम के और सब काम जो उसने किए, और कैसे प्राक्रम के साथ उसने युद्ध किया, और दमिश्क और हमात को जो पहले यहदा के राज्य में थे इमाएल के बश में फिर मिला लिया, यह सब क्या इमाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? २८ अन्त में यारोबाम मरकर अपने पुरुखाओं के संग जो इमाएल के राजा थे जा मिला, और उसका पुत्र जकर्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

१५ इमाएल के राजा यारोबाम के राज्य के सताईसवें वर्ष में यहदा के राजा

अमस्याह का पुत्र अजर्याह राजा हुआ। १ जब वह राज्य करने लगा, तब सोलह वर्ष का था, और यस्सलेम में बाबन वर्ष राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम यकोल्याह था, जो यस्सलेम की थी। २ जैसे उसका पिता अमस्याह किया करता था जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, वैसे ही वह भी करता था। ३ तो भी ऊँचे स्थान गिराए न गए; प्रजा के लोग उस समय भी उन पर बलि चढ़ाते, और धू जलाते रहे। ४ यहोवा ने उस राजा को ऐसा मारा, कि वह मरने के दिन तक कोही रहा, और अलग एक घर में रहता था। योताम नामक राजपुत उसके घरने के काम पर अधिकारी होकर देश के लोगों का न्याय करता था। ५ अजर्याह के और सब काम जो उसने किए, वह क्या यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? ६ अन्त में अजर्याह मरकर अपने पुरुखाओं के संग जा मिला और उसको दाऊदपुर में उसके पुरुखाओं के बीच मिट्ठी दी गई, और उसका पुत्र योताम उसके स्थान पर राज्य करने लगा। ७ यहदा के राजा अजर्याह के राज्य के अड़तीसवें वर्ष में यारोबाम का पुत्र जकर्याह इमाएल पर सामरिया में राज्य करने लगा, और छ. महीने राज्य किया। ८ उसने अपने पुरुखाओं के समान वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिसने इमाएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उनसे वह अलग न हुआ। ९ और याबेश के पुत्र शल्लम ने उससे राजदोह की गोष्ठी करके उसको प्रजा के सामने मारा, और उसको घात करके उसके स्थान पर राजा हुआ। १० अब याबेश के पुत्र शल्लम ने उससे राजदोह की गोष्ठी करके उसको प्रजा के सामने मारा, और उसको घात करके उसके स्थान पर राजा हुआ। ११ जकर्याह के और काम इमाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं। १२ अतः यहोवा का वह वचन पूरा हुआ, जो उसने येह से कहा था, “तौर परपेतों के पुत्र तक तेरी सन्तान इमाएल की ग़ज़ी पर बैठती जाएगी।” और वैसा ही हुआ। १३ यहदा के राजा उज्जियाह के राज्य के उनतालीसवें वर्ष में याबेश का पुत्र

शल्लम् राज्य करने लगा, और महीने भर सामरिया में राज्य करता रहा। १४ क्योंकि गादी के पुत्र मनहेम ने, तिर्सा से सामरिया को जाकर याबेश के पुत्र शल्लम् को वही मारा, और उसे घात करके उसके स्थान पर राजा हुआ। १५ शल्लम् के अन्य काम और उसने राजदोहे की जो गोष्ठी की, यह सब इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है। १६ तब मनहेम ने तिर्सा से जाकर, सब निवासियों और आस-पास के देश समेत तिस्ख को इस कारण मार लिया, कि तिस्खियों ने उसके लिये फाटक न खोले थे, इस कारण उसने उन्हें मार दिया, और उसमें जितनी गर्भवती बिंबियाँ थीं, उन सभी को चीर डाला। १७ यहदा के राजा अजर्याह के राज्य के उनतालीसवें वर्ष में गादी का पुत्र मनहेम इसाएल पर राज्य करने लगा, और दस वर्ष सामरिया में राज्य करता रहा। १८ उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिसने इसाएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उनसे वह जीवन भर अलग न हुआ। १९ अशशूर के राजा पूल ने देश पर चढ़ाई की, और मनहेम ने उसको हजार किंवकर चाँदी इस इच्छा से दी, कि वह उसका सहायक होकर राज्य को उसके हाथ में स्थिर रखे। २० यह चाँदी अशशूर के राजा को देने के लिये मनहेम ने बड़े-बड़े धनबान इसाएलियों से ले ली, एक-एक पुस्त को पचास-पचास शेकेल चाँदी देनी पड़ी; तब अशशूर का राजा देश को छोड़कर लौट गया। २१ मनहेम के और काम जो उसने किए, वे सब क्या इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? २२ अन्त में मनहेम मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसका पुत्र पकहयाह उसके स्थान पर राज्य करने लगा। २३ यहदा के राजा अजर्याह के राज्य के पचासवें वर्ष में मनहेम का पुत्र पकहयाह सामरिया में इसाएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। २४ उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम जिसने इसाएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उनसे वह अलग न हुआ। २५ उसके सरदार रमल्याह के पुत्र पेकह ने उसके विस्तुर राजदोहे की गोष्ठी करके, सामरिया के राजभवन के गुम्फट में उसको और उसके संग अर्गाब और अर्ये को मारा; और पेकह के संग पचास गिलादी पुस्त थे, और वह उसका घात करके उसके स्थान पर राजा बन गया। २६ पकहयाह के और सब काम जो उसने किए, वह इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं। २७ यहदा के राजा अजर्याह के राज्य के बावनवें वर्ष में रमल्याह का पुत्र पेकह सामरिया में इसाएल पर राज्य करने लगा, और बीस वर्ष तक राज्य करता रहा। २८ उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम, जिसने इसाएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उनसे वह अलग न हुआ। २९ इसाएल के राजा पेकह के दिनों में अशशूर के राजा तिल्लियेसर ने आकर इत्योन, आबेल्वेत्माका, यानोह, केदेश और हासोर नामक नगरों को और गिलाद और गतील, वरन् नसाती के पैरे देश को भी ले लिया, और उनके लोगों को बन्दी बनाकर अशशूर को ले गया। ३० उज्जियाह के पुत्र योताम के बीसवें वर्ष में एला के पुत्र होशे ने रमल्याह के पुत्र पेकह के विस्तुर राजदोहे की गोष्ठी करके उसे मारा, और उसे घात करके उसके स्थान पर राजा बन गया। ३१ पेकह के और सब काम जो उसने किए वह इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं। ३२ रमल्याह के पुत्र इसाएल के राजा पेकह के राज्य के दूसरे वर्ष में यहदा के राजा उज्जियाह का पुत्र योताम राजा हुआ। ३३ जब वह राज्य करने लगा, तब पच्चीस वर्ष का था, और यस्तलेम में सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम यस्शा था जो सादेक की बेटी थी। ३४ उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, अर्थात् जैसा

उसके पिता उज्जियाह ने किया था, ठीक वैसा ही उसने भी किया। ३५ तो भी ऊँचे स्थान गिरा न गए, प्रजा के लोग उन पर उस समय भी बलि चढ़ाते और धूप जलाते रहे। यहोवा के भवन के ऊँचे फाटक को इसी ने बनाया था। ३६ योताम के और सब काम जो उसने किए, वे क्या यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? ३७ उन दिनों में यहोवा अराम के राजा रसीन को, और रमल्याह के पुत्र पेकह को, यहदा के विस्तुर भेजने लगा। ३८ अन्त में योताम मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और अपने मूलपुस्त दाऊद के नगर में अपने पुरखाओं के बीच उसको मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र आहाज उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

१६ रमल्याह के पुत्र पेकह के राज्य के सत्रहवें वर्ष में यहदा के राजा योताम

का पुत्र आहाज राज्य करने लगा। १ जब आहाज राज्य करने लगा, तब वह बीस वर्ष का था, और सोलह वर्ष तक यस्तलेम में राज्य करता रहा। और उसने अपने मूलपुस्त दाऊद का सा काम नहीं किया, जो उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में ठीक था। २ परन्तु वह इसाएल के राजाओं की सी चाल चला, बरन उन जातियों के विनाने कामों के अनुसार, जिन्हें यहोवा ने इसाएलियों के सामने से देश से निकाल दिया था, उसने अपने बेटे को भी आग में होम कर दिया। ३ वह ऊँचे स्थानों पर, और पहाड़ियों पर, और सब हरे वृक्षों के नीचे, बलि चढ़ाया और धूप जलाया करता था। ४ तब अराम के राजा रसीन, और रमल्याह के पुत्र इसाएल के राजा पेकह ने लड़ने के लिये यस्तलेम पर चढ़ाई की, और उन्होंने आहाज को धेर लिया, परन्तु युद्ध करके उनसे कठ बन न पड़ा। ५ उस समय अराम के राजा रसीन ने, एलत को अराम के वश में करके, यहदियों को वहाँ से निकाल दिया; तब अरामी लोग एलत को गए, और आज के दिन तक वहाँ रहते हैं। ६ अतः आहाज ने दूत भेजकर अशशूर के राजा तिल्लियेसर के पास कहला भेजा, “मुझे अपना दास, वरन् बेटा जानकर चढ़ाई कर, और मुझे अराम के राजा और इसाएल के राजा के हाथ से बचा जो मेरे विस्तुर उठे हैं।” ७ आहाज ने यहोवा के भवन में और राजभवन के भण्डारों में जितना सोना-चाँदी मिला उसे अशशूर के राजा के पास भेट करके भेज दिया। ८ उसकी मानकर अशशूर के राजा ने दमिश्क पर चढ़ाई की, और उसे लेकर उसके लोगों को बन्दी बनाकर, कीरी को ले गया, और रसीन को मार डाला। ९ तब राजा आहाज अशशूर के राजा तिल्लियेसर से भेट करने के लिये दमिश्क को गया, और वहाँ की बेटी देखकर उसकी सब बनावट के अनुसार उसका नवका ऊरियाह याजक के पास नमना करके भेज दिया। १० ठीक इसी नमने के अनुसार जिसे राजा आहाज ने दमिश्क से भेजा था, ऊरियाह याजक ने राजा आहाज के दमिश्क से अनें तक एक बेटी बना दी। ११ जब राजा दमिश्क से आया तब उसने उस बेटी को देखा, और उसके निकट जाकर उस पर बलि चढ़ाए। १२ उसी बेटी पर उसने अपना होमबलि और अन्नबलि जलाया, और अर्ध दिया और मेलबलियों का लाह छिड़क दिया। १३ और पीतल की जो बेटी यहोवा के सामने रहती थी उसको उसने भवन के सामने से अर्थात् अपनी बेटी और यहोवा के भवन के बीच से हटाकर, उस बेटी के उत्तर की ओर रख दिया। १४ तब राजा आहाज ने ऊरियाह याजक को यह आज्ञा दी, “भोर के होमबलि और साँझा के अन्नबलि, राजा के होमबलि और उसके अन्नबलि, और सब साधारण लोगों के होमबलि और अर्ध बड़ी बेटी पर चढ़ाया कर, और होमबलियों और मेलबलियों का सब लाह उस पर छिड़क; और पीतल की बेटी को मैं यहोवा से पूछेंगे कि लिये प्रयोग करूँगा।” १५ राजा आहाज ने इस आज्ञा के अनुसार ऊरियाह याजक को यह आज्ञा दी, “भोर के कुर्सियों की पटरियों को काट डाला, और हैदियों को उन पर से उतार दिया,

और बड़े हौद को उन पीतल के बैलों पर से जो उसके नीचे थे उतारकर, पत्थरों के फर्श पर रख दिया। १८ विश्वाम के दिन के लिये जो छाया हुआ स्थान भवन में बना था, और राजा के बाही प्रवेश-द्वार को उसने अश्शू के राजा के कारण यहोवा के भवन से अलग कर दिया। १९ आहाज के और काम जो उसने किए, वे क्या यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? २० अन्त में आहाज मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसे उसके पुरखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्ठी दी गई, और उसका पुत्र हिजकियाह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

१७ यहदा के राजा आहाज के राज्य के बारहवें वर्ष में एला का पुत्र होशे

सामरिया में, इस्माएल पर राज्य करने लगा, और नई वर्ष तक राज्य करता रहा। २१ उसने वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, परन्तु इस्माएल के उन राजाओं के बाबर नहीं जो उससे पहले थे। २२ उस पर अश्शू के राजा शल्मनेसर ने चढ़ाई की, और होशे उसके अधीन होकर, उसको भेट देने लगा। २३ परन्तु अश्शू के राजा ने होशे के राजद्वाह की गोष्ठी को जान लिया, क्योंकि उसे सो नामक मिस्र के राजा के पास दूत भेजे थे और अश्शू के राजा के पास वार्षिक भेट भेजनी छोड़ दी, इस कारण अश्शू के राजा ने उसको बन्दी बनाया, और बेडी डालकर बन्दीगृह में डाल दिया। २४ तब अश्शू के राजा ने ऐसे देश पर चढ़ाई की, और सामरिया को जाकर तीन वर्ष तक उसे धेर रहा। २५ होशे के नैवें वर्ष में अश्शू के राजा ने सामरिया को ले लिया, और इस्माएलियों को अश्शू में ले जाकर, हलह में और गोजान की नदी हाबोर के पास और मादियों के नगरों में बसाया। २६ इसका यह कारण है, कि यद्यि इस्माएलियों का परमेश्वर यहोवा उनके मिस्र के राजा फैरून के हाथ से छुड़ाकर मिस्र देश से निकाल लाया था, तो भी उन्होंने उसके विस्तृ पाप किया, और पराए देवताओं का भय माना, २७ और जिन जातियों को यहोवा ने इस्माएलियों के सामने से देश से निकाला था, उनकी रीति पर, और अपने राजाओं की चलाई हुई रीतियों पर चलते थे। २८ इस्माएलियों ने कपट करके अपने परमेश्वर यहोवा के विस्तृ अनुचित काम किए, अर्थात् पहस्तों के गुम्फ से लेकर गढ़वाले नगर तक अपनी सारी बसियों में ऊँचे स्थान बना लिए; २९ और सब ऊँची पहाड़ियों पर, और सब हरे वृक्षों के नीचे लाठें और अशेषा खड़े कर लिए। ३० ऐसे ऊँचे स्थानों में उन जातियों के समान जिनको यहोवा ने उनके सामने से निकाल दिया था, धूप जलाया, और यहोवा को क्रोध दिलाने के योग्य बुरे काम किए, ३१ और मूरतों की उपासना की, जिसके विषय यहोवा ने उनसे कहा था, “सुम यह काम न करना।” ३२ तो भी यहोवा ने सब भविष्यद्वत्ताओं और सब दर्शियों के द्वारा इस्माएल और यहदा को यह कहकर चिताया था, “अपनी बुरी चाल छोड़कर उस सारी व्यवस्था के अनुसार जो मैंने तुम्हारे पुरखाओं को दी थी, और अपने दास भविष्यद्वत्ताओं के हाथ तुम्हारे पास पहुँचाइ है, मेरी आज्ञाओं और विधियों को माना करो।” ३३ परन्तु उन्होंने न माना, बरन् अपने उन पुरखाओं के समान, जिन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा का विश्वास न किया था, वे भी हठीले बन गए। ३४ वे उसकी विधियों और अपने पुरखाओं के साथ उसकी वाचा, और जो चितौतियाँ उसने उन्हें दी थीं, उनको तुच्छ जानकर, निकम्मी बातों के पीछे हो लिए, जिससे वे आप निकम्मे हो गए, ३५ और अपने चरों और की उन जातियों के पीछे भी हो लिए जिनके विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी कि उनके से काम न करना। ३६ बरन् उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को त्याग दिया, और दो बछड़ों की मूरें डालकर बनाई, और अशेरा भी बनाई, और आकाश के सारे गणों को दण्डवत् की, और बाल की उपासना की।

३७ उन्होंने अपने बेटे-बेटियों को आग में होम करके चढ़ाया; और भावी कहनेवालों से पूछने, और टोना करने लगे; और जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था जिससे वह क्रोधित भी होता है, उसके करने को अपनी इच्छा से बिक गए। ३८ इस कारण यहोवा इस्माएल से अति क्रोधित हुआ, और उन्हें अपने सामने से दूर कर दिया; यहदा का गोत्र छोड़ और कोई बचा न रहा। ३९ यहदा ने भी अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएँ न मानी, बरन् जो विधियाँ इस्माएल ने चलाई थीं, उन पर चलने लगे। ४० तब यहोवा ने इस्माएल की सारी सन्तान को छोड़कर, उनको दुःख दिया, और लटनेवालों के हाथ कर दिया, और अन्त में उन्हें अपने सामने से निकाल दिया। ४१ जब उसने इस्माएल को दाऊद के घराने के हाथ से छीन लिया, तो उन्होंने नबात के पुत्र यारोबाम को अपना राजा बनाया; और यारोबाम ने इस्माएल को यहोवा के पीछे चलने से दूर खीचकर उनसे बड़ा पाप कराया। ४२ अतः जैसे पाप यारोबाम को किए थे, वैसे ही पाप इस्माएली भी करते रहे, और उनसे अलग न हए। ४३ अन्त में यहोवा ने इस्माएल को अपने सामने से दूर कर दिया, जैसे कि उसने अपने सब दास भविष्यद्वत्ताओं के द्वारा कहा था। इस प्रकार इस्माएल अपने देश से निकालकर अश्शू को पहुँचाया गया, जहाँ वह आज के दिन तक रहता है। ४४ अश्शू के राजा ने बाबेल, कृता, अब्बा, हमात और सपर्वेम नगरों से लोगों को लाकर, इस्माएलियों के स्थान पर सामरिया के नारों में बसाया; सो वे सामरिया के अधिकारी होकर उसके नगरों में रहने लगे। ४५ जब वे वहाँ पहले-पहले रहने लगे, तब यहोवा का भय न मानते थे, इस कारण यहोवा ने उनके बीच सिंह भेजे, जो उनको मार डालने लगे। ४६ इस कारण उन्होंने अश्शू के राजा के पास कहला भेजा कि जो जातियाँ तूरे उनके देशों से निकालकर सामरिया के नारों में बसा दी हैं, वे उस देश के देवता की रीति नहीं जानती, इससे उसने उसके मध्य सिंह भेजे हैं जो उनको इसलिए मार डालते हैं कि वे उस देश के देवता की रीति नहीं जानते। ४७ तब अश्शू के राजा ने आज्ञा दी, “जिन याजकों को तुम उस देश से ले आए, उनमें से एक को वहाँ पहुँचा दो; और वह वहाँ जाकर रहे, और वह उनको उस देश के देवता की रीति सिखाए।” ४८ तब जो याजक सामरिया से निकाले गए थे, उनमें से एक जाकर बाबेल में रहने लगा, और उनको सिखाने लगा कि यहोवा का भय किस रीति से मानना चाहिये। ४९ तो भी एक-एक जाति के लोगों ने अपने-अपने निज देवता बनाकर, अपने-अपने बसाए हुए नगर में उन ऊँचे स्थानों के भवनों में रखा जो सामरिया के वासियों ने बनाए थे। ५० बाबेल के मनुष्यों ने सुक्कोतबनोत को, कृत के मनुष्यों ने नेर्गल को, हमात के मनुष्यों ने अर्शीमा को, ५१ और अब्बियों ने निभज, और तर्ताक को स्थापित किया, और सपर्वेमी लोग अपने बेटों को अट्डमेलक और अनमेलेक नामक सपर्वेम के देवताओं के लिये होम करके चढ़ाने लगे। ५२ अतः वे यहोवा का भय मानते तो थे, परन्तु सब प्रकार के लोगों में से ऊँचे स्थानों के याजक भी ठहरा देते थे, जो ऊँचे स्थानों के भवनों में उनके लिये बलि करते थे। ५३ वे यहोवा का भय मानते तो थे, परन्तु उन जातियों की रीति पर, जिनके बीच से वे निकाले गए थे, अपने-अपने देवताओं की भी उपासना करते रहे। ५४ आज के दिन तक वे अपनी पुरानी रीतियों पर चलते हैं, वे यहोवा का भय नहीं मानते। वे न तो उन विधियों और नियमों पर और न उस व्यवस्था और आज्ञा के अनुसार चलते हैं, जो यहोवा ने याकूब की सन्तान को दी थी, जिसका नाम उसने इस्माएल रखा था। ५५ उसे यहोवा ने वाचा बाँधकर उन्हें यह आज्ञा दी थी, “तुम पराए देवताओं का भय न मानना और न उन्हें दण्डवत् करना और न उनकी उपासना करना और न उनको बलि चढ़ाना। ५६ परन्तु यहोवा जो तुम को बड़े बल और बढ़ाई हुई भूजा के द्वारा मिम देश से निकाल ले आया, तुम उसी का भय मानना, उसी को दण्डवत् करना और उसी

को बति चढ़ाना। ३७ और उसने जो-जो विधियाँ और नियम और जो व्यवस्था और आजाएँ तुम्हारे लिये लिखी, उन्हें तुम सदा चौकसी से मानते रहो; और पराए देवताओं का भय न मानना। ३८ और जो वाचा मैंने तुम्हारे साथ बांधी है, उसे न भला और पराए देवताओं का भय न मानना। ३९ केवल अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना, वही तुम को तुम्हारे सब शत्रुओं के हाथ से बचाएगा।” ४० तो भी उन्होंने न माना, परन्तु वे अपनी पुरानी रीति के अनुसार करते रहे। ४१ अतएव वे जातियाँ यहोवा का भय मानती तो थीं, परन्तु अपनी खुदी हड्डी मूरतों की उपासना भी करती रहीं, और जैसे वे करते थे वैसे ही उनके बेटे पोते भी आज के दिन तक करते हैं।

१८ एला के पुत्र इस्माएल के राजा होशे के राज्य के तीसरे वर्ष में यहदा के

राजा आहाज का पुत्र हिजकियाह राजा हुआ। १ जब वह राज्य करने लगा तब पच्चीस वर्ष का था, और उन्हींस वर्ष तक यस्शलेम में राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम अबी था, जो जकर्याह की बेटी थी। २ जैसे उसके मूलपुस्त दाऊद ने किया था जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है वैसा ही उसने भी किया। ३ उसने ऊँचे स्थान गिरा दिए, लाठों को तोड़ दिया, अशोरा को काट डाला। पीतल का जो साँप मूसा ने बनाया था, उसको उसने इस कारण चूर चूरकर दिया, कि उन दिनों तक इस्माएली उसके लिये धूप जलाते थे; और उसने उसका नाम नहशतान रखा। ४ वह इस्माएल के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखता था, और उसके बाद यहदा के सब राजाओं में कोई उसके बराबर न हआ, और न उससे पहले भी ऐसा कोई हुआ था। ५ और वह यहोवा से लिपटा रहा और उसके पछे चलना न छोड़ा; और जो आजाएँ यहोवा ने मूसा को दी थी, उनका वह पालन करता रहा। ६ इसलिए यहोवा उसके सांग रहा; और जहाँ कहीं वह जाता था, वहाँ उसका काम सफल होता था। और उसने अश्शूर के राजा से बलवा करके, उसकी अधीनता छोड़ दी। ७ उसने पतिशियों को गाज़ा और उसकी सीमा तक, पहस्तों के गुप्त और गढ़वाले नगर तक मारा। ८ राजा हिजकियाह के राज्य के चौथे वर्ष में जो एला के पुत्र इस्माएल के राजा होशे के राज्य का सातवाँ वर्ष था, अश्शूर के राजा शल्मनेसेर ने सामरिया पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया। ९ और तीन वर्ष के बीतने पर उन्होंने उसको ले लिया। इस प्रकार हिजकियाह के राज्य के छठवें वर्ष में जो इस्माएल के राजा होशे के राज्य का नौवाँ वर्ष था, सामरिया ले लिया गया। १० तब अश्शूर का राजा इस्माएलियों को बन्दी बनाकर अश्शूर में ले गया, और हल्ह में और गोजान की नदी हांगोर के पास और माटियों के नगरों में उसे बसा दिया। ११ इसका कारण यह था, कि उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा की बात न मानी, बरन् उसकी वाचा को तोड़ा, और जितनी आजाएँ यहोवा के दास मूसा दी थीं, उनको टाल दिया और न उनको सुना और न उनके अनुसार किया। १२ हिजकियाह राजा के राज्य के चौदहवे वर्ष में अश्शूर के राजा सन्हेतीन ने यहदा के सब गढ़वाले नगरों पर चढ़ाई करके उनको ले लिया। १३ तब यहदा के राजा हिजकियाह ने अश्शूर के राजा के पास लाकीश को सन्देश भेजा, “मुझसे अपराध हुआ, मेरे पास से लैट जा; और जो भार तुम्हा पर डालेगा उसको मैं उठाऊँगा।” तो अश्शूर के राजा ने यहदा के राजा हिजकियाह के लिये तीन सौ किक्कार चाँदी और तीस किक्कार सोना ठहरा दिया। १४ तब जितनी चाँदी यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में मिली, उस सब को हिजकियाह ने उसे दे दिया। १५ उस समय हिजकियाह ने यहोवा के मन्दिर के दरवाजों से और उन खम्भों से भी जिन पर यहदा के राजा हिजकियाह ने सोना मढ़ा था, सोने को छीलकर अश्शूर के राजा को दे दिया। १६ तो भी अश्शूर के राजा ने तर्तान, रबसारीस और रबशाके को बड़ी सेना देकर, लाकीश से यस्शलेम के पास हिजकियाह राजा के विस्तु भेज दिया।

अतः वे यस्शलेम को गए और वहाँ पहुँचकर उपर के जलकुण्ड की नाली के पास धोबियों के खेत की सड़क पर जाकर खड़े हुए। १७ जब उन्होंने राजा को पुकारा, तब हिल्कियाह का पुत्र एलयाकीम जो राजधाने के काम पर था, और शेबना जो मंत्री था और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लिखनेवाला था, ये तीनों उनके पास बाहर निकल गए। १८ रबशाके ने उनसे कहा, “हिजकियाह से कहो, कि महाराजाधिराज अर्थात् अश्शूर का राजा यह कहता है, ‘तु किस पर भरोसा करता है?’ १९ तू जो कहता है, कि मेरे यहाँ युद्ध के लिये युक्ति और पराक्रम है, वह तो केवल बात ही बात है। तू किस पर भरोसा रखता है कि तू तो मुझसे बतता किया है? २० सुन, तू तो उस कुचले हुए नरकट अर्थात् मिस पर भरोसा रखता है, उस पर यदि कोई टेक लगाए, तो वह उसके हाथ में चुभकर छेदगा। मिस का राजा फिरैन अपने सब भरोसा रखनेवालों के लिये ऐसा ही है। २१ फिर यदि तुम मुझसे कहो, कि हमारा भरोसा अपने परमेश्वर यहोवा पर है, तो क्या यह वही नहीं है जिसके ऊँचे स्थानों और वेदियों को हिजकियाह ने दूर करके यहदा और यस्शलेम से कहा, कि तुम इसी वेदी के सामने जो यस्शलेम में हैं दण्डवत् करना?” २२ तो अब मेरे स्वामी अश्शूर के राजा के पास कुछ बन्धक रख, तब मैं तुझे दो हजार धोड़ दूँगा, क्या तू उन पर सवार चढ़ा सकेगा कि नहीं? २३ फिर तू मेरे स्वामी के छोटे से छोटे कर्मचारी का भी कहा न मानकर क्यों रथों और सवारों के लिये मिस पर भरोसा रखता है? २४ क्या मैंने यहोवा के बिना कहे, इस स्थान को उजाड़ने के लिये चढ़ाई की है? यहोवा ने मुझसे कहा है, कि तुम देश पर चढ़ाई करके उसे उजाड़ दे।” २५ तब हिल्कियाह के पुत्र एलयाकीम और शेबना योआह ने रबशाके से कहा, “अपने दासों से आरामी भाषा में बातें कर, क्योंकि हम उसे समझते हैं, और हम से यहदी भाषा में शहरपानह पर बैठे हुए लोगों के सुनते बातें न कर।” २६ रबशाके ने उनसे कहा, “क्या मेरे स्वामी ने मुझे तुम्हारे स्वामी ही के, या तुम्हारे ही पास ये बातें कहने को भेजा है? क्या उसने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा, जो शहरपानह पर बैठे हैं, ताकि तुम्हारे संग उनको भी अपना मल खाना और अपना मूत्र पीना पड़े?” २७ तब रबशाके ने खड़े हो, यहदी भाषा में ऊँचे शब्द से कहा, “महाराजाधिराज अर्थात् अश्शूर के राजा की बात सुनो। २८ राजा यह कहता है, ‘हिजकियाह तुम को धोखा देने न पाए, क्योंकि वह तुम्हें मेरे हाथ से बचा न सकेगा।’ २९ और वह तुम से यह कहकर यहोवा पर भरोसा करने न पाए, कि यहोवा निश्चय हमको बचाएगा और यह नगर अश्शूर के राजा के बश में न पड़ेगा। ३० हिजकियाह की मत सुनो। अश्शूर का राजा कहता है कि भेट भेजकर मुझे प्रसन्न करो और मेरे पास निकल आओ, और प्रत्येक अपनी-अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष के फल खाता और अपने-अपने कुण्ड का पानी पीता रहे। ३१ तब मैं आकर तुम को ऐसे देश में ले जाऊँगा, जो तुम्हारे देश के समान अनाज और नये दाढ़वधु का देश, रोटी और दाख की बारियों का देश, जैतून और मधु का देश है, वहाँ तुम मरोगे नहीं, जीवित रहोगे; तो जब हिजकियाह यह कहकर तुम को बहकाए, कि यहोवा हमको बचाएगा, तब उसकी न सुनना। ३२ क्या और जातियों के देवताओं ने अपने-अपने देश को अश्शूर के राजा के हाथ से कभी बचाया है? ३३ हमात और अर्पांद के देवता कहाँ रहे? सपर्वेम, हेना और इव्वा के देवता कहाँ रहे? क्या उन्होंने सामरिया को मेरे हाथ से बचाया है, ३४ देश-देश के सब देवताओं में से ऐसा कौन है, जिसने अपने देश को मेरे हाथ से बचाया हो? फिर क्या यहोवा यस्शलेम को मेरे हाथ से बचाएगा।” ३५ परन्तु सब लोग चुप रहे और उसके उत्तर में एक बात भी न कही, क्योंकि राजा की ऐसी आज्ञा थी, कि उसको उत्तर न देना। ३६ तब हिल्कियाह का पुत्र एलयाकीम जो राजधाने के काम

पर था, और शेबना जो मंत्री था, और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लिखनेवाला था, अपने बच्चे फाडे हुए, हिजकिय्याह के पास जाकर रबशाके की बातें कह सुनाई।

१९ जब हिजकिय्याह राजा ने यह सुना, तब वह अपने बच्चे फाड, टाट

ओडकर यहोवा के भवन में गया। २० और उसने एलयाकीम को जो राजधाने के काम पर था, और शेबना मंत्री को, और याजकों के पुनर्नियों को, जो सब टाट ओढे हुए थे, आमोस के पुत्र यशायाह भविष्यद्वत्ता के पास भेज दिया। २१ उन्होंने उससे कहा, “हिजकिय्याह यह कहता है, आज का दिन संकट, और भर्सना, और निन्दा का दिन है; बच्चों के जन्म का समय तो हुआ पर जन्मा को जन्म देने का बल न रहा। २२ कदाचित् तेरा परमेश्वर यहोवा रबशाके की सब बातें सुने, जिसे उसके स्वामी अश्शूर के राजा ने जीविते परमेश्वर की निन्दा करने को भेजा है, और जो बातें तेरे परमेश्वर यहोवा ने सुनी हैं उन्हें डॉट; इसलिए तू इन बचे हुओं के लिये जो रह गए हैं प्रार्थना कर।” २३ जब हिजकिय्याह राजा के कर्मचारी यशायाह के पास आए, २४ तब यशायाह ने उनसे कहा, “अपने स्वामी से कहो, ‘यहोवा यह कहता है, कि जो बचन तूने सुने हैं, जिनके द्वारा अश्शूर के राजा के जन्मे ने मेरी निन्दा की है, उनके कारण मत डर।” २५ सुन, मैं उसके मन को प्रेरित करूँगा, कि वह कुछ समाचार सुनकर अपने देश को लौट जाए, और मैं उसको उसी के देश में तलवार से मरवा डालूँगा।” २६ तब रबशाके ने लौटकर अश्शूर के राजा को लिब्ना नगर से युद्ध करते पाया, क्योंकि उसने सुना था कि वह लाकीश के पास से उठ गया है। २७ जब उसने कश के राजा तिहाका के विषय यह सुना, “वह मुझसे लड़ने को निकला है,” तब उन्हें हिजकिय्याह के पास दूरों को यह कहकर भेजा, २८ “तुम यहदा के राजा हिजकिय्याह से यह कहना: ‘तेरा परमेश्वर जिसका तू भरोसा करता है, यह कहकर तुझे खोबा न देने पाए, कि यस्शलेम अश्शूर के राजा के बश में न पड़ेगा।’ २९ देख, तूने तो सुना है कि अश्शूर के राजाओं ने सब देशों से कैसा व्यवहार किया है और उनका सत्यानाश कर दिया है। फिर क्या तू बचेगा? ३० गोजान और हारान और रेसेप और तलस्सार में रहनेवाले एदेनी, जिन जातियों को मेरे पुराखाओं ने नाश किया, क्या उनमें से किसी जाति के देवताओं ने उसको बचा लिया? ३१ हमात का राजा, और अपाद का राजा, और सर्पवीं नगर का राजा, और हेना और इव्वा के राजा ये सब कहाँ हरे??” ३२ इस पत्री को हिजकिय्याह ने दूरों के हाथ से लेकर पढ़ा। तब यहोवा के भवन में जाकर उसको यहोवा के सामने फैला दिया। ३३ और यहोवा से यह प्रार्थना की, “हे इसाएल के परमेश्वर यहोवा! हे कर्स्बों पर विराजनेवाले! पृथ्वी के सब राज्यों के ऊपर केवल तू ही परमेश्वर है। आकाश और पृथ्वी को तू ही न बनाया है। ३४ हे यहोवा! कान लगाकर सुन, हे यहोवा आँख खोलकर देख, और सन्हेत्रीब के बचनों को सुन ले, जो उसने जीविते परमेश्वर की निन्दा करने को कहला भेजे हैं। ३५ हे यहोवा, सच तो है, कि अश्शूर के राजाओं ने जातियों को और उनके देशों को उजाड़ा है। ३६ और उनके देवताओं को आग में झाँका है, क्योंकि वे ईश्वर न थे; वे मनुष्यों के बनाए हुए काठ और पत्थर ही के थे; इस कारण वे उनको नाश कर सके। ३७ इसलिए अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा त, हमें उसके हाथ से बचा, कि पृथ्वी के राज्य-राज्य के लोग जान लें कि केवल तू ही यहोवा है।” ३८ तब आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह के पास यह कहला भेजा, “इसाएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है: जो प्रार्थना तूने अश्शूर के राजा सन्हेत्रीब के विषय मुझसे की, उसे मैंने सुना है। ३९ उसके विषय में यहोवा ने यह बचन कहा है, “सिय्योन की कुमारी कन्या तुझे तुच्छ जानती और तुझे उपहास में

उड़ाती है, यस्शलेम की पुरी, तुझ पर सिर हिलाती है। ४० “तूने जो नामधारी और निन्दा की है, वह किसकी की है? और तूने जो बड़ा बोल बोला और घमण्ड किया है वह किसके विस्तु किया है? इसाएल के पवित्र के विस्तु तूने किया है। ४१ अपने दूरों के द्वारा तूने प्रभु की निन्दा करके कहा है, कि बहुत से रथ लेकर मैं पर्वतों की चोटियों पर, वरन् लबानोन के बीच तक चढ़ आया हूँ, और मैं उसके ऊँचे-ऊँचे देवदासों और अच्छे-अच्छे सोनोवर को काट डालूँगा; और उसमें जो सबसे ऊँचा टिकने का स्थान होगा उसमें और उसके बन की फलदाई बारियों में प्रवेश करूँगा। ४२ मैंने तो खुदवाकर परदेश का पानी पिया; और मिस्र की नहरों में पांच धरते ही उन्हें सूखा डालूँगा। ४३ क्या तूने नहीं सुना, कि प्राचीनकाल से मैंने यहीं ठहराया? और पिछले दिनों से इसकी तैयारी की थी, उहें अब मैंने पूरा भी किया है, कि तू गढ़वाले नगरों को खण्डहर ही खण्डहर कर दे, ४४ इसी कारण उनके रहनेवालों का बल घट गया; वे विस्मित और लजिज्जत हुए; वे मैदान के छोटे-छोटे पेड़ों और हरी घास और छत पर की घास, और ऐसे अनाज के समान हो गए, जो बढ़ने से पहले सूख जाता है। ४५ “मैंने तो तेरा बैठा रहना, और कूच करना, और लौट आना जानता हूँ, और यह भी कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़कता है। ४६ इस कारण कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़कता और तेरे अभिमान की बातें मेरे कानों में पड़ी हैं; मैं तेरी नाक में अपनी नकेल डालकर और तेरे मूँह में अपना लगाम लगाकर, जिस मार्ग से तू आया है, उसी से तुझे लौटा दूँगा। ४७ “और तेरे लिये यह चिन्ह होगा, कि इस वर्ष तो तुम उसे खाओगे जो आप से आप उंगे, और दूसरे वर्ष उसे जो उत्पन्न हो वह खाओगे; और तीसरे वर्ष बीज बोने और उसे लबने पाओगे, और दाख की बारियाँ लगाने और उनका फल खाने पाओगे। ४८ और यहदा के घराने के बचे हुए लोग फिर जड़ पकड़ेंगे, और फलेंगे भी। ४९ क्योंकि यस्शलेम में से बचे हुए और सिय्योन पर्वत के भागे हुए लोग निकलेंगे। यहोवा यह काम अपनी जलन के कारण करेगा। ५० “इसलिए यहोवा अश्शूर के राजा के विषय में यह कहता है कि वह इस नगर में प्रवेश करने, वरन् इस पर एक तीर भी मारने न पाएगा, और न वह ढाल लेकर इसके सामने आने, या इसके विस्तु दमदाम बनाने पाएगा। ५१ जिस मार्ग से वह आया, उसी से वह लौट भी जाएगा, और इस नगर में प्रवेश न करने पाएगा, यहोवा की यही बाणी है। ५२ और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त इस नगर की रक्षा करके इसे बचा ऊँगा।” ५३ उसी रात में क्या हुआ, कि यहोवा के दूर ने निकलकर अश्शूरियों की छावनी में एक लाख पचासी हजार पुरुषों को मारा, और भोर को जब लोग सवरे उठे, तब देखा, कि शव ही शब पड़े हैं। ५४ तब अश्शूर का राजा सन्हेत्रीब चल दिया, और लौटकर नीनवे में रहने लगा। ५५ वहाँ वह अपने देवता निस्त्रोक के मन्दिर में दण्डवत् कर रहा था, कि अद्रमेलक और शरेसर ने उसको तलवार से मारा, और अरारात देश में भाग गए। तब उसका पुत्र एसाह्देन उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

२० उन दिनों में हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि मरने पर था, और आमोस

के पुत्र यशायाह भविष्यद्वत्ता ने उसके पास जाकर कहा, “यहोवा यह कहता है, कि अपने घराने के विषय जो आज्ञा दीनी हो वह दे; क्योंकि तू नहीं बचेगा, मर जाएगा।” २१ तब उसने दीवार की ओर मूँह फेर, यहोवा से प्रार्थना करके कहा, “हे यहोवा! २२ मैं बिन्नी करता हूँ, स्मरण कर, कि मैं सच्चाई और खेर मन से अपने को रोरे सम्मुख जानकर चलता आया हूँ; और जो तुझे अच्छा लगता है वही मैं करता आया हूँ।” तब हिजकिय्याह फूट फूटकर रोया। २३ तब ऐसा हुआ कि यशायाह अँगन के बीच तक जाने भी न पाया था कि यहोवा का यह बचन उसके पास पहुँचा, २४ “लौटकर मेरी प्रजा के प्रधान हिजकिय्याह से कह, कि तेरे मूलपुस्त दाऊद का परमेश्वर यहोवा यह कहता

है, कि मैंने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आँसू देखे हैं; देख, मैं तुझे चंगा करता हूँ, परसों तू यहोवा के भवन में जा सकेगा। ६ मैं तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूँगा। अशूर के राजा के हाथ से तुझे और इस नगर को बचाऊँगा, और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊँद के निमित्त इस नगर की रक्षा करूँगा।” ७ तब यशायाह ने कहा, “अंजीरों की एक टिकिया लो।” जब उन्होंने उसे लेकर फोड़े पर बौंधा, तब वह चंगा हो गया। ८ हिजकियाह ने यशायाह से पछा, “यहोवा जो मुझे चंगा करेगा और मैं परसों यहोवा के भवन को जा सकूँगा, इसका क्या चिन्ह होगा?” ९ यशायाह ने कहा, “यहोवा जो अपने कहे हुए वचन को पूरा करेगा, इस बात का यहोवा की ओर से तेरे लिये यह चिन्ह होगा, कि धृष्टघटी की छाया दस अंश आगे बढ़ जाएगी, या दस अंश घट जाएगी।” १० हिजकियाह ने कहा, “छाया का दस अंश आगे बढ़ना तो हल्की बात है, इसलिए ऐसा हो कि छाया दस अंश पीछे लौट जाए।” ११ तब यशायाह भविष्यद्वत्का ने यहोवा को पुकारा, और आहाज की धृष्टघटी की छाया, जो दस अंश ढल चुकी थी, यहोवा ने उसको पीछे की ओर लौटा दिया। १२ उस समय बलदान का पुत्र ब्रोदक-बलदान जो बाबेल का राजा था, उसने हिजकियाह के रोगी होने की चर्चा सुनकर, उसके पास पत्री और भेट भेजी। १३ उनके लानेवालों की मानकर हिजकियाह ने उनको अपने अनमोल पदार्थों का सब भण्डार, और चाँदी और सोना और सगन्ध-दृव्य और उत्तम तेल और अपने हथियारों का पूरा धर और अपने भण्डारों में जो-जो वस्तुएँ थीं, वे सब दिखाई, हिजकियाह के भवन और राज्य भर में कोई ऐसी वस्तु न रही, जो उसने उन्हें न दिखाई हो। १४ तब यशायाह भविष्यद्वत्का ने हिजकियाह राजा के पास जाकर पूछा, “वे मनुष्य क्या कह गए? और कहाँ से तेरे पास आए थे?” हिजकियाह ने कहा, “वे तो दूर देश से अर्थात् बाबेल से आए थे।” १५ फिर उसने पूछा, “तेरे भवन में उन्होंने क्या-क्या देखा है?” हिजकियाह ने कहा, “जो कुछ मेरे भवन में है, वह सब उन्होंने देखा। मेरे भण्डारों में कोई ऐसी वस्तु नहीं, जो मैंने उन्हें न दिखाई हो।” १६ तब यशायाह ने हिजकियाह से कहा, “यहोवा का वचन सुन ले।” १७ ऐसे दिन आनेवाले हैं, जिनमें जो कुछ तेरे भवन में है, और जो कुछ तेरे पुरखाओं का रखा हुआ आज के दिन तक भण्डारों में है वह सब बाबेल को उठ जाएगा; यहोवा यह कहता है, कि कोई वस्तु न बचेगी। १८ और जो पुत्र तेरे बंश में उत्पन्न हों, उनमें से भी कुछ को वे बन्दी बनाकर ले जाएँगे; और वे खोजे बनाकर बाबेल के राजभवन में रहेंगे।” १९ तब हिजकियाह ने यशायाह से कहा, “यहोवा का वचन जो तुमे कहा है, वह भला ही है,” क्योंकि उसने सोचा, “यदि मेरे दिनों में शान्ति और सच्चाई बनी रहेंगी? तो क्या यह भला नहीं है?” २० हिजकियाह के और सब काम और उसकी सारी वीरता और किसी रीति उसने एक जलाशय और नरर खुदवाकर नगर में पानी पहुँचा दिया, यह सब क्या यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? २१ अन्त में हिजकियाह मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसका पुत्र मनश्शे उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

२१ जब मनश्शे राज्य करने लगा, तब वह बारह वर्ष का था, और यस्शलेम में पचपन वर्ष तक राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम हेप्सीबा था। २ उसने उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार, जिनको यहोवा ने इसाएलियों के सामने देश से निकाल दिया था, वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुगा था। ३ उसने उन ऊँचे स्थानों को जिनको उसके पिता हिजकियाह ने नष्ट किया था, फिर बनाया, और इसाएल के राजा अहाब के समान बाल के लिये वेदियाँ और एक अशोरा बनवाई, और आकाश के सारे गणों को दण्डवत्

और उनकी उपासना करता रहा। ४ उसने यहोवा के उस भवन में वेदियाँ बनाई जिसके विषय यहोवा ने कहा था, “यस्शलेम में मैं अपना नाम रखूँगा।” ५ वरन यहोवा के भवन के दोनों ऊँचाँगों में भी उसने आकाश के सारे गणों के लिये वेदियाँ बनाई। ६ फिर उसने अपने बेटे को आग में होम करके चढ़ाया; और शुभ-अशुभ मुहर्तों को मानता, और टोना करता, और ओझों और भूत सिद्धिवालों से व्यवहार करता था; उसने ऐसे बहुत से काम किए जो यहोवा की दृष्टि में बुगे हैं, और जिनसे वह क्रोधित होता है। ७ अशोरा की जो मूर्ति उसने खुदवाई, उसको उसने उस भवन में स्थापित किया, जिसके विषय यहोवा ने दाऊँद और उसके पुत्र सुलैमान से कहा था, “इस भवन में और यस्शलेम में, जिसको मैंने इसाएल के सब गोत्रों में से चुन लिया है, मैं सदैव अपना नाम रखूँगा।” ८ और यदि वे मेरी सब आज्ञाओं के और मेरे दास मूसा की दी हुई पूरी व्यवस्था के अनुसार करने की चौकसी करें, तो मैं ऐसा न करूँगा कि जो देश मैंने इसाएल के पुरखाओं को दिया था, उससे वे फिर निकलकर मारे-मारे फिरें।” ९ परन्तु उन्होंने न माना, वरन् मनश्शे ने उनको यहाँ तक भटका दिया कि उन्होंने उन जातियों से भी बढ़कर बुराई की जिनका यहोवा ने इसाएलियों के सामने से बिनाश किया था। १० इसलिए यहोवा ने अपने दास भविष्यद्वत्काओं के द्वारा कहा, ११ “यहदा के राजा मनश्शे ने जो ये धृणित काम किए, और जिनमीं बुराइयाँ ऐसोरियों ने जो उससे पहले थे की थीं, उनसे भी अधिक बुराइयाँ कीं; और यहदियों से अपनी बनाई हुई मूर्तों की पूजा करवाकर उन्हें पाप में फँसाया है। १२ इस कारण इसाएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है कि सुनो, मैं यस्शलेम और यहदा पर ऐसी विपत्ति डालना चाहता हूँ कि जो कोई उसका समाचार सुनेगा वह बड़े सन्नाटे में आ जाएगा। १३ और जो माने की डोरी मैंने सामरिया पर डाली है और जो साहूल मैंने अहाब के घराने पर लटकाया है वही यस्शलेम पर डालूँगा। और मैं यस्शलेम को ऐसा पोछूँगा जैसे कोई थाली को पोंछता है और उसे पोंछकर उलट देता है। १४ मैं अपने निज भाग के बचे हुओं को त्याग कर श्रव्यों के हाथ कर दूँगा और वे अपने सब श्रव्यों के लिए लृत और धन बन जाएँगे। १५ इसका कारण यह है, कि जब से उनके पुरखा मिथ से निकले तब से आज के दिन तक वे वह काम करके जो मेरी दृष्टि में बुगा है, मुझे कोध दिलाते आ रहे हैं।” १६ मनश्शे ने न केवल वह काम करके यहदियों से पाप कराया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, वरन् निर्दीयों का खून बहूत बहाया, यहाँ तक कि उसने यस्शलेम को एक सिरे से दूसरे सिरे तक खून से भर दिया। १७ मनश्शे के और सब काम जो उसने किए, और जो पाप उसने किए, वह सब क्या यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? १८ अन्त में मनश्शे मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसके भवन की बारी में जो उज्जा की बारी कहलाती थी मिट्ठी दी गई, और उसका पुत्र आमोन उसके स्थान पर राजा हुआ। १९ जब आमोन राज्य करने लगा, तब वह बाईंस वर्ष का था, और यस्शलेम में दो वर्ष तक राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम मश्शलेमेत था जो योत्वावासी हास्स की बेटी थी। २० और उसने अपने पिता मनश्शे के समान वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। २१ वह पूरी तरह अपने पिता के समान चाल चला, और जिन मूर्तों की उपासना उसका पिता करता था, उनकी वह भी उपासना करता, और उन्हें दण्डवत् करता था। २२ उसने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया, और यहोवा के मार्ग पर न चला। २३ आमोन के कर्मचारियों ने विद्रोह की गोष्ठी करके राजा को उसी के भवन में मार डाला। २४ तब साधारण लोगों ने उन सभी को मार डाला, जिन्होंने राजा आमोन के विद्धु-विद्रोह की गोष्ठी की थी, और लोगों ने उसके पुत्र योशियाह को उसके स्थान पर राजा बनाया। २५ आमोन के और काम जो उसने किए,

वह क्या यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। १८ उसे भी उज्जा की बारी में उसकी निज कब्र में मिट्ठी दी गई, और उसका पुत्र योशियाह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

२२ जब योशियाह राज्य करने लगा, तब वह आठ वर्ष का था, और

यस्शलेम में इकतीस वर्ष तक राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम यदीदा था जो बोस्कतवासी अदायाह की बेटी थी। १९ उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है और जिस मार्ग पर उसका मूलपुरुष दाऊद चला थीक उसी पर वह भी चला, और उससे न तो दाहिनी ओर न बाई और मुड़ा।

२० अपने राज्य के अठाहरवें वर्ष में राजा योशियाह ने असल्याह के पुत्र शापान मंत्री को जो मशल्लम का पोता था, यहोवा के भवन में यह कहकर भेजा, २१ “हिल्किय्याह महायाजक के पास जाकर कह, कि जो चाँदी यहोवा के भवन में लाई गई है, और द्वारापालों ने प्रजा से इकट्ठी की है, २२ उसको जोड़कर, उन काम करनेवालों को सौंप दे, जो यहोवा के भवन के काम पर मुखिए हैं, फिर वे उसको यहोवा के भवन में काम करनेवाले कारीगरों को दें, इसलिए कि उसमें जो कुछ टूटा फूटा हो उसकी वे मरम्मत करें। २३ अर्थात् बढ़दियों, राजपिण्डियों और संगतराशों को दें, और भवन की मरम्मत के लिये लकड़ी और गड्ढे हुए पथर मोल लेने में लगाएँ।” २४ परन्तु जिनके हाथ में वह चाँदी सौंपी गई, उससे हिसाब न लिया गया, क्योंकि वे सच्चाई से काम करते थे।

२५ हिल्किय्याह महायाजक ने शापान मंत्री से कहा, “मुझे यहोवा के भवन में व्यवस्था की पुस्तक मिली है,” तब हिल्किय्याह ने शापान को वह पुस्तक दी, और वह उसे पढ़ने लगा। २६ तब शापान मंत्री ने राजा के पास लौटकर यह सन्देश दिया, “जो चाँदी भवन में मिली, उसे तो कर्मचारियों ने थैलियों में डालकर, उनको सौंप दिया जो यहोवा के भवन में काम करनेवाले हैं।” २७ फिर शापान मंत्री ने राजा को यह भी बता दिया, “हिल्किय्याह याजक ने उसे एक पुस्तक दी है।” तब शापान उसे राजा को पढ़कर सुनाने लगा। २८ व्यवस्था की उस पुस्तक की बातें सुनकर राजा ने अपने बब्बन फाड़े। २९ फिर उसने हिल्किय्याह याजक, शापान के पुत्र अहीकाम, मीकायाह के पुत्र अकबोर, शापान मंत्री और असायाह नामक अपने एक कर्मचारी को आज्ञा दी, ३० “यह पुस्तक जो मिली है, उसकी बातें के विषय तुम जाकर मेरी और प्रजा की और सब यहदियों की ओर से यहोवा से पूछो, क्योंकि यहोवा की बड़ी ही जलजलाहट हम पर इस कारण भड़की है, कि हमारे पुरुखाओं ने इस पुस्तक की बातें न मानी कि जो कुछ हमों लिये लिखा है, उसके अनुसार करें।”

३१ हिल्किय्याह याजक और अहीकाम, अकबोर, शापान और असायाह ने हूल्दा नविया के पास जाकर उससे बातें की, वह उस शल्लम की पत्री थी जो तिकवा का पुत्र और हर्हस का पोता और बहुओं का रखवाला था, (और वह जी यस्शलेम के नये मोहल्ले में रहती थी)। ३२ उसने उनसे कहा, “इस्माएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि जिस पुरुष ने तुम को मेरे पास भेजा, उससे यह कहो, ३३ ‘यहोवा यह कहता है, कि सुन, जिस पुस्तक को यहदा के राजा ने पढ़ा है, उसकी सब बातों के अनुसार मैं इस स्थान और इसके निवासियों पर विपत्ति डालने पर हूँ।” ३४ उन लोगों ने मुझे त्याग कर पराए देवताओं के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई हुई सब वस्तुओं के द्वारा मुझे क्रोध दिलाया है, इस कारण मेरी जलजलाहट इस स्थान पर भड़केगी और फिर शान्त न होगी।

३५ परन्तु यहदा का राजा जिसने तुहँसे यहोवा से पूछने को भेजा है उससे तम यह कहो, कि इस्माएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, ३६ इसलिए कि तू वे बातें सुनकर दीन हुआ, और मेरी वे बातें सुनकर कि इस स्थान और इसके निवासियों को देखकर लोग चकित होंगे, और श्राप दिया करेंगे, तूँ यहोवा के

सामने अपना सिर झुकाया, और अपने बब्बन फाड़कर मैरे सामने रोया है, इस कारण मैंने तेरी सुनी है, यहोवा की यही वाणी है। ३७ इसलिए देख, मैं ऐसा कहसूँगा, कि तू अपने पुराखाओं के संग मिल जाएगा, और तू शान्ति से अपनी कब्र को पहुँचाया जाएगा, और जो विपत्ति मैं इस स्थान पर डालूँगा, उसमें से तुझे अपनी आँखों से कुछ भी देखना न पड़ेगा।” तब उन्होंने लैटकर राजा को यही सन्देश दिया।

२३ राजा ने यहदा और यस्शलेम के सब पुरनियों को अपने पास बुलाकर

इकश्ति किया। ३८ तब राजा, यहदा के सब लोगों और यस्शलेम के सब निवासियों और याजकों और नवियों वरन् छोटे बड़े सारी प्रजा के लोगों को संग लेकर यहोवा के भवन में गया। उसने जो वाचा की पुस्तक यहोवा के भवन में मिली थी, उसकी सब बातें उनको पढ़कर सुनाई हैं। ३९ तब राजा ने खम्भे के पास खड़ा होकर यहोवा से इस आशा की वाचा बोधी, कि मैं यहोवा के पीछे-पीछे चलूँगा, और अपने सारे मन और सारे प्राण से उसकी आजाँ, चित्तीनियाँ और विधियों का नित पालन किया करूँगा, और इस वाचा की बातों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं पूरी करूँगा; और सब प्रजा वाचा में सम्भारी हुई। ४० तब राजा ने हिल्किय्याह महायाजक और उसके नीचे के याजकों और द्वारापालों को आज्ञा दी कि जितने पात्र बाल और अशेरा और आकाश के सब गणों के लिये बने हैं, उन सभी को यहोवा के मन्दिर में से निकाल ले आओ। तब उसने उनको यस्शलेम के बाहर किंद्रोन के मैदानों में फूँककर उनकी राख बेतेल को पहुँचा दी। ४१ जिन पुजारियों को यहदा के राजाओं ने यहदा के नगरों के ऊंचे स्थानों में और यस्शलेम के आस-पास के स्थानों में धूप जलाने के लिये ठहराया था, उनको और जो बाल और सूर्य-चन्द्रमा, राशिचक और आकाश के सारे गणों को धूप जलाते थे, उनको भी राजा ने हटा दिया। ४२ वह अशेरा को यहोवा के भवन में से निकालकर यस्शलेम के बाहर किंद्रोन नाले में ले गया और वही उसको फूँक दिया, और पीसकर बुकनी कर दिया। तब वह बुकनी साधारण लोगों की कब्रों पर फेंक दी। ४३ फिर पुष्पगामियों के घर जो यहोवा के भवन में थे, जहाँ ब्रिंहीयाँ अशेरा के लिये पर्दे बुना करती थीं, उनको उसने ढा दिया। ४४ उसने यहदा के सब नगरों से याजकों को बुलवाकर गेबा से बेशीबा तक के उन ऊंचे स्थानों को, जहाँ उन याजकों ने धूप जलाया था, अशुद्ध कर दिया; और फाटकों के ऊंचे स्थान अर्थात् जो स्थान नगर के योहेश नामक हाकिम के फाटक पर थे, और नगर के फाटक के भीतर जानेवाले के बाइ और थे, उनको उसने ढा दिया। ४५ तो भी ऊंचे स्थानों के याजक यस्शलेम में यहोवा की बेटी के पास न आए, वे अख्मारी रोटी अपने भाइयों के साथ खाते थे। ४६ फिर उसने तोपेत जो हिन्नोमवशियों की तराई में था, अशुद्ध कर दिया, ताकि कोई अपने बेटे या बेटी को मोलेक के लिये आग में होम करके न चढ़ाए। ४७ जो घोड़े यहदा के राजाओं ने सूर्य को अपृण करके, यहोवा के भवन के द्वार पर नतम्मेलेक नामक खोजे की बाहर की कोठरी में रखे थे, उनको उसने ढूँ किया, और सूर्य के रथों को आग में फूँक दिया। ४८ आहज की अटारी की छत पर जो बेटियाँ यहदा के राजाओं की बनाई हुई थीं, और जो बेटियाँ मनशे ने यहोवा के भवन के दोनों आँगनों में बनाई थीं, उनको राजा ने ढाकर पीस डाला और उनकी बुकनी किंद्रोन नाले में फेंक दी। ४९ जो ऊंचे स्थान इस्माएल के राजा सूलैमान ने यस्शलेम के पर्व की ओर और विकारी नामक पहाड़ी के दक्षिण ओर, अश्तरैत नामक सीदेनियों की घिनौनी देवी, और कमोश नामक मोआवियों के घिनौने देवता के लिये बनवाए थे, उनको राजा ने अशुद्ध कर दिया। ५० उसने लाठों को तोड़ दिया और अशेरों को काट डाला, और उनके स्थान मनुष्यों

की हड्डियों से भर दिए। १५ फिर बेतेल में जो वेदी थी, और जो ऊँचा स्थान नबात के पुत्र यारोबाम ने बनाया था, जिसने इसाएल से पाप कराया था, उस वेदी और उस ऊँचे स्थान को उसने ढा दिया, और ऊँचे स्थान को फँक कर बुकनी कर दिया और अशेरा को फँक दिया। १६ तब योशियाह ने मुदकर वहाँ के पहाड़ की कब्रों को देखा, और लोगों को भेजकर उन कब्रों से हड्डियाँ निकलवा दी और वेदी पर जलवाकर उसको अशुद्ध किया। यह यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ, जो परमेश्वर के उस भक्त ने पुकारकर कहा था जिसने इन्हीं बातों की चर्चा की थी। १७ तब उसने पछाड़ा, “जो खम्भा मुझे दिखाई पड़ता है, वह क्या है?” तब नगर के लोगों ने उससे कहा, “वह परमेश्वर के उस भक्त जन की कब्र है, जिसने यहदा से आकर इसी काम की चर्चा पुकारकर की थी, जो तूने बेतेल की वेदी से किया है।” १८ तब उसने कहा, “उसको छोड़ दो; उसकी हड्डियों को कोई न हटाए।” तब उन्होंने उसकी हड्डियाँ उस नवी की हड्डियों के संग जो सामरिया से आया था, रहने दी। १९ फिर ऊँचे स्थान के जितने भवन सामरिया के नगरों में थे, जिनको इसाएल के राजाओं ने बनाकर यहोवा को क्रोध दिलाया था, उन सभी को योशियाह ने गिरा दिया; और जैसा-जैसा उसने बेतेल में किया था, वैसा-वैसा उनसे भी किया। २० उन ऊँचे स्थानों के जितने याजक वहाँ थे उन सभी को उसने उन्हीं वेदियों पर बलि किया और उन पर मनुष्यों की हड्डियाँ जलाकर यस्शलेम को लौट गया। २१ राजा ने सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी, “इस वाचा की पुस्तक में जो कुछ लिखा है, उसके अनुसार अपने परमेश्वर यहोवा के लिये फस्त का पर्व मानो।” २२ निश्चय ऐसा फस्त ह तो न्यायियों के दिनों में माना गया था जो इसाएल का न्याय करते थे, और न इसाएल या यहदा के राजाओं के दिनों में माना गया था। २३ राजा योशियाह के राज्य के अठारहवें वर्ष में यहोवा के लिये यस्शलेम में यह फस्त माना गया। २४ फिर आज्ञे, भृत-सिद्धिवाते, गृहदेवता, मूर्त्ते और जितनी धिनौनी वस्तरै यहदा देश और यस्शलेम में जहाँ कहीं दिखाई पड़ी, उन सभी को योशियाह ने इस मनसा से नाश किया, कि व्यवस्था की जो बातें उस पुस्तक में लिखी थीं जो हिल्कियाह याजक को यहोवा के भवन में मिली थीं, उनको वह पूरी करे। २५ उसके तुल्य न तो उससे पहले कोई ऐसा राजा हुआ और न उसके बाद ऐसा कोई राजा उठा, जो मूसा की पूरी व्यवस्था के अनुसार अपने पूर्ण मन और पूर्ण प्राण और पूर्ण शक्ति से यहोवा की ओर फिरा हो। २६ तो भी यहोवा का भड़का हुआ बड़ा कोप शान्त न हुआ, जो इस कारण से यहदा पर भड़का था, कि मनश्वे ने यहोवा को क्रोध पर क्रोध दिलाया था। २७ यहोवा ने कहा था, “जैसे मैंने इसाएल को अपने सामने से दूर किया, वैसे ही यहदा को भी दूर करूँगा; और इस यस्शलेम नगर, जिसे मैंने चुना और इस भवन जिसके विषय मैंने कहा, कि यह मैं नाम का निवास होगा, के विस्तृ मैं हाथ उठाऊँगा।” २८ योशियाह के और सब काम जो उसने किए, वह क्या यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? २९ उसके दिनों में फिरौन-नको नामक मिस्र का राजा अश्शूर के राजा की सहायता करने फरात महानद तक गया तो योशियाह राजा भी उसका सामना करने को गया, और फिरौन-नको ने उसको देखते ही मगिदों में मार डाला। ३० तब उसके कर्मचारियों ने उसका शव एक रथ पर रख मगिदों से ले जाकर यस्शलेम को पहुँचाया और उसकी निज कब्र में रख दिया। तब साधारण लोगों ने योशियाह के पुत्र यहोआहाज को लेकर उसका अधिषेक करके, उसके पिता के स्थान पर राजा नियुक्त किया। ३१ जब यहोआहाज राज्य करने लगा, तब वह तेईस वर्ष का था, और तीन महीने तक यस्शलेम में राज्य करता रहा; उसकी माता का नाम हमृतल था, जो लिङ्गावासी यर्मयाह की बेटी थी। ३२ उसने ठीक अपने पुरुषाओं के समान

वही किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। ३३ उसको फिरौन-नको ने हमार देश के रिबला नगर में बन्दी बना लिया, ताकि वह यस्शलेम में राज्य न करने पाए, फिर उसने देश पर सौ किक्कार चाँदी और किक्कार भर सोना जुर्माना किया। ३४ तब फिरौन-नको ने योशियाह के पुत्र एलयाकीम को उसके पिता योशियाह के स्थान पर राजा नियुक्त किया, और उसका नाम बदलकर यहोयाकीम रखा; परन्तु यहोआहाज को वह ले गया। और यहोआहाज मिस्र में जाकर वही मर गया। ३५ यहोयाकीम ने फिरौन को वह चाँदी और सोना तो दिया परन्तु देश पर इसलिए कर लगाया कि फिरौन की आज्ञा के अनुसार उसे दे सके, अर्थात् देश के सब लोगों से जितना जिस पर लगान लगा, उतनी चाँदी और सोना उससे फिरौन-नको को देने के लिये ले लिया। ३६ जब यहोयाकीम राज्य करने लगा, तब वह पच्चीस वर्ष का था, और ग्यारह वर्ष तक यस्शलेम में राज्य करता रहा; उसकी माता का नाम जबीदा था जो स्मावासी पदायाह की बेटी थी। ३७ उसने ठीक अपने पुरुषाओं के समान वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है।

२४ उसके दिनों में बाबेल के राजा नब्कदनेस्सर ने चढ़ाई की और
यहोयाकीम तीन वर्ष तक उसके अधीन रहा; तब उसने फिरकर उससे बिद्रोह किया। २८ तब यहोवा ने उसके बिस्तु और यहदा को नाश करने के लिये कसदियों, अरामियों, मोआबियों और अम्मोनियों के दल भेजे, यह यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ, जो उसने अपने दास भविष्यद्वत्ताओं के द्वारा कहा था। ३८ निःसद्दे यह यहदा पर यहोवा की आज्ञा से हुआ, ताकि वह उनको अपने समाने से दूर करे। यह मनश्वे के सब पापों के कारण हुआ। ३९ और निर्दीष के उम खन के कारण जो उसने किया था; क्योंकि उसने यस्शलेम को निर्दीषों के खन से भर दिया था, जिसको यहोवा ने क्षमा करना न चाहा। ४० यहोयाकीम के और सब काम जो उसने किए, वह क्या यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? ४१ अन्त में यहोयाकीम मरकर अपने पुरुषाओं के संग जा मिला और उसका पुत्र यहोयाकीम उसके स्थान पर राजा हुआ। ४२ और मिस्र का राजा अपने देश से बाहर फिर कभी न आया, क्योंकि बाबेल के राजा ने मिस्र के नाले से लेकर फरात महानद तक जितना देश मिस्र के राजा का था, सब को अपने बश में कर लिया था। ४३ जब यहोयाकीम राज्य करने लगा, तब वह अठारह वर्ष का था, और तीन महीने तक यस्शलेम में राज्य करता रहा; और उसकी माता का नाम नहशता था, जो यस्शलेम के एलनातम की बेटी थी। ४४ उसने ठीक अपने पिता के समान वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। ४५ उसके दिनों में बाबेल के राजा नब्कदनेस्सर के कर्मचारियों ने यस्शलेम पर चढ़ाई करके नगर को धेर लिया। ४६ जब बाबेल के राजा नब्कदनेस्सर के कर्मचारी नगर को धेर हुए थे, तब वह आप वहाँ आ गया। ४७ तब यहदा का राजा यहोयाकीम अपनी माता और कर्मचारियों, हाकिमों और खोजों को संग लेकर बाबेल के राजा के पास गया, और बाबेल के राजा ने अपने राज्य के आठवें वर्ष में उनको पकड़ लिया। ४८ तब उसने यहोवा के भवन में और राजभवन में रखा हुआ पूरा धन वहाँ से निकाल लिया और सोने के जो पत्र यहोवा के भवन में ले गया, वहाँ तक कि साधारण लोगों में कंगालों को छोड़ और कोई न रह गया। ४९ वह यहोयाकीम को बाबेल में ले गया और उसकी माता और स्त्रियों और खोजों को और देश के बड़े लोगों को वह बन्दी बनाकर यस्शलेम से बाबेल को ले गया। ५० और सब धनवान जो सात हजार थे, और कारीगर और लोहारों को बन्दी बनाकर ले गया, और यहोवा की दृष्टि में बुरा है।

लोहार जो मिलकर एक हजार थे, और वे सब बीर और युद्ध के योग्य थे, उन्हें बाबेल का राजा बन्दी बनाकर बाबेल को ले गया। १७ बाबेल के राजा ने उसके स्थान पर उसके चाचा मतन्याह को राजा नियुक्त किया और उसका नाम बदलकर सिदकियाह रखा। १८ जब सिदकियाह राज्य करने लगा, तब वह इक्कीस वर्ष का था, और यस्शलेम में ग्यारह वर्ष तक राज्य करता रहा; उसकी माता का नाम हमूतल था, जो लिबानावासी ग्यरियाह की बेटी थी। १९ उसने ठीक यहोयाकीम की लीक पर चलकर वही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। २० क्योंकि यहोवा के कोप के कारण यस्शलेम और यहदा की ऐसी दशा हुई, कि अन्त में उसने उनको अपने सामने से दूर किया।

२५ सिदकियाह ने बाबेल के राजा से बालवा किया। उसके राज्य के नौवें

वर्ष के दसवें महीने के दसवें दिन को बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी पूरी सेना लेकर यस्शलेम पर चढ़ाई की, और उसकी धेर निया और उसके चारों ओर पटकोटा बनाए। २१ इस प्रकार नगर सिदकियाह राजा के राज्य के ग्यारहवें वर्ष तक घिरा हुआ रहा। २२ चौथे महीने के नौवें दिन से नगर में अकाल यहाँ तक बढ़ गई, कि देश के लोगों के लिये कुछ खाने को न रहा। २३ तब नगर की शहरपनाह में दरार की गई, और दोनों दीवारों के बीच जो फाटक राजा की बारी के निकट था उस मार्ग से सब योद्धा रात ही रात निकल भागे यद्यपि कसदी नगर को छोड़ हुए थे, राजा ने अराबा का मार्ग लिया। २४ तब कसदियों की सेना ने राजा का पीछा किया, और उसको यरीही के पास के मैदान में जा पकड़ा, और उसकी पूरी सेना उसके पास से तिर-बितर हो गई। २५ तब वे राजा को पकड़कर रिबला में बाबेल के राजा के पास ले गए, और उसे दण्ड की आज्ञा दी गई। २६ उन्होंने सिदकियाह के पुत्रों को उसके सामने घाट किया और सिदकियाह की आँखें फोड़ डाली और उसे पीतल की बेड़ियों से जकड़कर बाबेल को ले गए। २७ बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के उन्नीसवें वर्ष के पाँचवें महीने के सातवें दिन को अंगरक्षकों का प्रधान नबूजरदान जो बाबेल के राजा का एक कर्मचारी था, यस्शलेम में आया। २८ उसने यहोवा के भवन और राजभवन और यस्शलेम के सब घरों को अर्थात् हर एक बड़े घर को आग लगाकर पूँक दिया। २९ यस्शलेम के चारों ओर की शहरपनाह को कसदियों की पूरी सेना ने जो अंगरक्षकों के प्रधान के संग थी वह दिया। ३० जो लोग नगर में रह गए थे, और जो लोग बाबेल के राजा के पास भाग गए थे, और साथारण लोग जो रह गए थे, इन सभी को अंगरक्षकों का प्रधान नबूजरदान बन्दी बनाकर ले गया। ३१ परन्तु अंगरक्षकों के प्रधान ने देश के कंगालों में से कितनों को दाख की बारियों की सेवा और काशकारी करने को छोड़ दिया। ३२ यहोवा के भवन में जो पीतल के खम्भे थे और कुर्सियाँ और पीतल का हौद जो यहोवा के भवन में था, इनको कसदी तोड़कर उनका पीतल बाबेल को ले गए। ३३ हाँडियों, फावडियों, चिमटों, धूपदानों और पीतल के सब पात्रों को भी जिनसे सेवा ठहल होती थी, वे ले गए। ३४ कर्छे और कटोरियाँ जो सोने की थीं, और जो कुछ चाँदी का था, वह सब सोना, चाँदी, अंगरक्षकों का प्रधान ले गया। ३५ दोनों खम्भे, एक हौद और कुर्सियाँ जिसको सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिये बनाया था, इन सब वस्तुओं का पीतल तैल से बाहर था। ३६ एक-एक खम्भे के ऊपर तीन-तीन हाथ ऊँची पीतल की एक-एक कँगनी थीं, और एक-एक कँगनी पर चारों ओर जो जाली और अनार बने थे, वे सब पीतल के थे। ३७ अंगरक्षकों के प्रधान ने सरायाह महायाजक और उसके नीचे के याजक सपन्याह और नीतों द्वारपालों को पकड़ लिया। ३८ नगर में से उसने एक हाकिम को पकड़ा जो योद्धाओं के ऊपर था, और जो पुस्त राजा के सम्मुख रहा करते थे, उनमें से पाँच जन जो नगर में मिले, और

सेनापति का मुंशी जो लोगों को सेना में भरती किया करता था; और लोगों में से साठ पुस्त जो नगर में मिले। ३९ इनको अंगरक्षकों का प्रधान नबूजरदान पकड़कर रिबला के राजा के पास ले गया। ४० तब बाबेल के राजा ने उन्हें हमात देश के रिबला में ऐसा मारा कि वे मर गए। अतः यहदी बन्दी बनके अपने देश से निकाल दिए गए। ४१ जो लोग यहदा देश में रह गए, जिनको बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने छोड़ दिया, उन पर उसने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को जो शापान का पोता था अधिकारी ठहराया। ४२ जब दलों के सब प्रधानों ने अर्थात् नतन्याह के पुत्र इशमाएल कोरेर ह के पुत्र योहानान, नतोपाई, तन्हमेत के पुत्र सरायाह और किसी मार्काई के पुत्र याजन्याह ने और उनके जनों ने यह सुना, कि बाबेल के राजा ने गदल्याह को अधिकारी ठहराया है, तब वे अपने-अपने जनों समेत मिस्पा में गदल्याह के पास आए। ४३ गदल्याह ने उनसे और उनके जनों ने शपथ खाकर कहा, “कसदियों के सिपाहियों से न डरो, देश में रहते हुए बाबेल के राजा के अधीन रहो, तब तुम्हारा भला होगा।” ४४ परन्तु सातवें महीने में नतन्याह का पुत्र इशमाएल, जो एलीशामा का पोता और राजवंश का था, उसने दस जन संग ले गदल्याह के पास जाकर उसे ऐसा मारा कि वह मर गया, और जो यहदी और कसदी उसके संग मिस्पा में रहते थे, उनको भी मार डाला। ४५ तब क्या छोटे क्या बड़े सारी प्रजा के लोग और दलों के प्रधान कसदियों के डर के मारे उठकर मिस्पा में जाकर रहने लगे। ४६ फिर यहदा के राजा यहोयाकीन की बैंधुआई के तैतीसवें वर्ष में अर्थात् जिस वर्ष बाबेल का राजा एवीत्मरोदक राजगढ़ी पर विराजमान हुआ, उसी के बाहरवें महीने के सताईसवें दिन को उसने यहदा के राजा यहोयाकीन को बन्दीगृह से निकालकर बड़ा पद दिया। ४७ उससे मधुर-मधुर वचन कहकर जो राजा उसके संग बाबेल में बन्धुए थे उनके सिंहासनों से उसके सिंहासन को अधिक ऊँचा किया, ४८ यहोयाकीन ने बन्दीगृह के बख्ब बदल दिए और उसने जीवन भर नित्य राजा के सम्मुख भोजन किया। ४९ और प्रतिदिन के खर्च के लिये राजा के यहाँ से नित्य का खर्च ठहराया गया जो उसके जीवन भर लगातार उसे मिलता रहा।

1 इतिहास

१ आदम, शेत, एतोश; २ केनान, महललेल, येरेद; ३ हनोक, मतशेलह, लेमेक; ४ नह, शेम, हाम और येपेत। ५ येपेत के पुत्र: गोमेर, मागोग, माई, यावान, तूबल, मेशेक और तीरास। ६ गोमेर के पुत्र: अशकनज, दीपत और तोगर्मा ७ यावान के पुत्र: एलीशा, तरीश, और कित्ती और रोदानी लोग। ८ हाम के पुत्र: कूश, मिस, पूत और कनान थे। ९ कूश के पुत्र: सबा, हवीला, सबता, रामाह और सबत्का थे। और रामाह के पुत्र: शेबा और ददान थे। १० और कश से निश्रोद उत्पन्न हुआ; पृथ्वी पर पहला वीर वर्ही हुआ। ११ और मिस से लद्दी, अनामी, लहावी, नस्ही, १२ पवस्सी, कसलही (जिनसे पलिश्ती उत्पन्न हुए) और कमोरी उत्पन्न हुए। १३ कनान से उसका जेठा सीदेन और दित, १४ और यबसी, एमोरी, गिगाशी, १५ हिन्बी, अकीं, सीनी, १६ अर्वी, समारी और हमाती उत्पन्न हुए। १७ शेम के पुत्र: एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद, लद, अराम, ऊस, हूल, गेतेर और मेशेक थे। १८ और अर्पक्षद से शेलह और शेलह से एबर उत्पन्न हुआ। १९ एबर के दो पुत्र उत्पन्न हुए: एक का नाम पेलेग इस कारण रखा गया कि उसके दिनों में पृथ्वी बाँटी गई; और उसके भाई का नाम योत्कान था। २० और योत्कान से अल्मोदाद, शेलेप, हस्सर्मवेत, येरह, २१ हंदोराम, ऊजाल, दिक्ला, २२ एबाल, अबीमाएल, शेबा, २३ ओपीर, हवीला और योबाब उत्पन्न हुए; ये ही सब योत्कान के पुत्र थे। २४ शेम, अर्पक्षद, शेलह, २५ एबर, पेलेग, स, २६ सस्गा, नाहोर, तेरह, २७ अद्वाम, वह अद्वाहम भी कहलाता है। २८ अद्वाहम के पुत्र इस्हाक और इश्माएल। २९ इनकी वंशवालियाँ ये हैं। इश्माएल का जेठा नबायोत, फिर केटार, अटबएल, मिबसाम, ३० मिश्मा, दूमा, मस्सा, हदट, तेमा, ३१ यतूर, नारीश, केटमा। ये इश्माएल के पुत्र हुए। ३२ फिर कतरा जो अब्राहम की रखैल थी, उसके ये पुत्र उत्पन्न हुए, अर्थात् उससे जिग्रान, योक्षान, मदान, मिधान, यिशबाक और शह उत्पन्न हुए। योक्षान के पुत्र: शेबा और ददान। ३३ और मिधान के पुत्र: एणा, एपेर, हनोक, अबीदा और एल्दा, ये सब कतरा के वंशज हैं। ३४ अब्राहम से इस्हाक उत्पन्न हुआ। इस्हाक के पुत्र: एसाव और इश्माएल। ३५ एसाव के पुत्र: एलीपज, स्प्लन, यश, यालाम और कोरह थे। ३६ एलीपज के ये पुत्र हुए: तेमान, ओमार, सपी, गाताम, कनज, तिम्मा और अमालेक। ३७ स्प्लन के पुत्र: नहत, जेरह, शम्मा और मिज्जा। ३८ फिर सेईं के पुत्र: लोतान, शोबाल, सिबोन, अना, दीशोन, एसेर और दीशान हुए। ३९ और लोतान के पुत्र: होरी और होमाम, और लोतान की बहन तिम्मा थी। ४० शोबाल के पुत्र: अल्यान, मानहत, एवाल, शपी और ओनाम। और सिबोन के पुत्र: अच्या, और अना। ४१ अना का पुत्र: दीशोन। और दीशोन के पुत्र: हम्रान, एशबान, यित्रान और करान। ४२ एसेर के पुत्र: बिल्हान, जावान और याकान। और दीशान के पुत्र: ऊस और अरान। ४३ जब किसी राजा ने इश्माएलियों पर राज्य न किया था, तब एदोम के देश में ये राजा हुए अर्थात् बोर का पुत्र बेला और उसकी राजधानी का नाम दिन्हावा था। ४४ बेला के मरने पर, बोमाई जेरह का पुत्र योबाब, उसके स्थान पर राजा हुआ। ४५ और योबाब के मरने पर, तेमानियों के देश का हशाम उसके स्थान पर राजा हुआ। ४६ फिर हशाम के मरने पर, बदट का पुत्र हदट, उसके स्थान पर राजा हुआ: यह वही है जिसने मिधानियों को मोआब के देश में मार दिया; और उसकी राजधानी का नाम अबीत था। ४७ और हदट के मरने पर, मयेकाई सम्ला उसके स्थान पर राजा हुआ। ४८ फिर सम्ला के मरने पर शाऊल, जो महानद के तट पर के रहोबोत नगर का था, वह उसके स्थान पर राजा हुआ। ४९ और शाऊल के मरने पर अकबोर का पुत्र बाल्हानान उसके स्थान पर राजा हुआ। ५० और बाल्हानान के मरने पर, हदट उसके

स्थान पर राजा हुआ; और उसकी राजधानी का नाम पाऊ हुआ, उसकी पत्नी का नाम महेतबेल था जो मेज़ाबाब की नातिनी और मत्रेद की बेटी थी। ५१ और हदट मर गया। फिर एदोम के अधिपति ये थे: अर्थात् अधिपति तिम्मा, अधिपति अल्वा, अधिपति यतेत, ५२ अधिपति ओहोलीबामा, अधिपति एला, अधिपति पीनोन, ५३ अधिपति कनज, अधिपति तेमान, अधिपति मिबसार, ५४ अधिपति मद्याएल, अधिपति इराम। एदोम के ये अधिपति हुए।

२ इश्माएल के ये पुत्र हुए: स्बेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, जब्लून, २१ दान, यसूफ, बिन्यामीन, नसाली, गाद और अशेर। २२ यहूदा के ये पुत्र हुए ए, ओनान और शेला, उसके ये तीनों पुत्र, शआ नामक एक कनानी झी की बेटी से उत्पन्न हुए। और यहदा का जेठा ए, योबोा की दृष्टि में बुरा था, इस कारण उसने उसको मार डाला। २३ यहूदा की बह तामार से पेरेस और जेरह उत्पन्न हुए। यहदा के कुल पाँच पुत्र हुए। २४ पेरेस के पुत्र: हेसोन और हामल। २५ और जेरह के पुत्र: जिप्री, एतान, हेमान, कलकोल और दारा सब मिलकर पाँच पुत्र हुए। २६ फिर कमीं का पुत्र: आकार जो अपिंग की हुई बस्तु के विषय में विश्वासघात करके इश्माएलियों को कष्ट देनेवाला हुआ। २७ और एतान का पुत्र: अजर्याई। २८ हेसोन के जो पुत्र उत्पन्न हुए यहरमेल, राम और कलौड़ै। २९ और राम से अम्मीनादाब और अम्मीनादाब से नहशोन उत्पन्न हुआ जो यहदा वंशियों का प्रधान बना। ३० और नहशोन से सल्मा और सल्मा से बोअज़; ३१ और बोअज़ से ओबेद और ओबेद से यिशे उत्पन्न हुआ। ३२ और यिशे से उसका जेठा एनीआब और दसरा अबीनादाब तीसरा शिमा, ३३ चौथा नतेल और पाँचवाँ रहे। ३४ छठा ओसेम और सातवाँ दाऊद उत्पन्न हुआ। ३५ इनकी बढ़ने से स्वयाह और अबिगिल थीं। और स्वयाह के पुत्र अवीशी, योआब और असाहेल ये तीन थे। ३६ और अबिगिल से अमासा उत्पन्न हुआ, और अमासा का पिता इश्माएली येतेर था। ३७ हेसोन के पुत्र कालेब के अज़बा नामक एक झी से, और यशीओत से बेटे उत्पन्न हुए; और इसके पुत्र ये हुए; अर्थात् येपेर, योबाब और अर्दोन। ३८ जब अज़बा मर गई, तब कालेब ने एपाता को ब्याह लिया; और जिससे हर उत्पन्न हुआ। ३९ और हर से ऊरी और ऊरी से बसतेल उत्पन्न हुआ। ४० इसके बाद हेसोन गिलाद के पिता माकीर की बेटी के पास गया, जिसे उसने तब ब्याह लिया, जब वह साठ वर्ष का था; और उससे सग्गू उत्पन्न हुआ। ४१ और सग्गू से याईर जन्मा, जिसके गिलाद देश में तेईस नगर थे। ४२ और गशूर और अराम ने याईर की बस्तियों को और गाँवों समेत कनात को, उनसे ले लिया; ये सब नार मिलकर साठ थे। ये सब गिलाद के पिता माकीर के पुत्र थे। ४३ और जब हेसोन कालेब एपाता में मर गया, तब उसकी अवियाह नामक झी से अशहर उत्पन्न हुआ जो तकोआ का पिता हुआ। ४४ और हेसोन के जेठे यहरमेल के ये पुत्र हुए अर्थात् राम जो उसका जेठा था; और बूना, ओरेन, ओसेम और अहिय्याह। ४५ और यहरमेल की एक और पत्नी थी, जिसका नाम अतारा था; वह ओनाम की माता थी। ४६ और यहरमेल के जेठे राम के ये पुत्र हुए, अर्थात् मास, यामीन और एकेर। ४७ और ओनाम के पुत्र शम्मै और यादा हुए। और शम्मै के पुत्र नादाब और अबीशूर हुए। ४८ और अबीशूर की पत्नी का नाम अबीहैल था, और उससे अहबान और मोलीद उत्पन्न हुए। ४९ और नादाब के पुत्र सेलेद और अपैम हुए; सेलेद तो निःसन्तान मर गया और अपैम का पुत्र यिशी ५० और यिशी का पुत्र शेशान और शेशान का पुत्र: अहलै। ५१ फिर शम्मै के बाईं यादा के पुत्र: येतेर और योनातान हुए; येतेर तो निःसन्तान मर गया। ५२ योनातान के पुत्र पेलेत और जाज़ा; यहरमेल के पुत्र ये हुए। ५३ योनातान के तो बेटा न हुआ, केवल बेटियाँ हुईं। योनातान के पास यही नामक एक मिस्त्री दास था। ५४ और योनातान ने उसको अपनी बेटी ब्याह दी, और उससे अतै उत्पन्न हुआ। ५५ और अतै से नातान, नातान से

जाबाद, ३७ जाबाद से एपलाल, एपलाल से ओबेद, ४८ ओबेद से येह, येह से अजर्याह, ३९ अजर्याह से हेलेस, हेलेस से एलासा, ५० एलासा से सिस्मै, सिस्मै से शल्लमू, ५१ शल्लमू से यकम्याह और यकम्याह से एलीशामा उत्पन्न हुए। ५२ फिर यरहमेल के भाइ कालेब के ये पुत्र हुए अर्थात् उसका जेठा मेशा जो जीप का पिता हुआ। और मरेशा का पुत्र हेब्रोन भी उसी के वंश में हुआ। ५३ और हेब्रोन के पुत्र करोह, तप्पह, रेकेम और शेमा। ५४ और शेमा से योकीम का पिता रहम और रेकेम से शम्मै उत्पन्न हुआ था। ५५ और शम्मै का पुत्र माओन हुआ; और माओन बेतसूर का पिता हुआ। ५६ फिर एपा जो कालेब की रखेल थी, उससे हारान, मोसा और गाजेज उत्पन्न हुए; और हारान से गाजेज उत्पन्न हुआ। ५७ फिर याहदै के पुत्र रेगेम, योताम, गेशान, पेलेत, एपा और शाप। ५८ और माका जो कालेब की रखेल थी, उससे शेबेर और तिर्हाना उत्पन्न हुए। ५९ फिर उससे मदमन्ना का पिता शाप और मकबेना और गिबा का पिता शवा उत्पन्न हुए। और कालेब की बेटी अकसा थी। ६० कालेब के वंश में ये हुए। एप्राता के जेठे हक का पुत्र: किर्यत्यारीम का पिता शोबाल, ६१ बैतलहम का पिता सल्मा और बेतगादेर का पिता हारेप। ६२ और किर्यत्यारीम के पिता शोबाल के वंश में हारेप आधे मनुहोतवासी, ६३ और किर्यत्यारीम के कुल अर्थात् येतेरी, पूरी, शमाती और मिश्राई और इनसे सोराई और एशताओली निकले। ६४ फिर सल्मा के वंश में बैतलहम और नतोपाई, अगोडबेतोआब और आधे मानहती, सोरी। ६५ याबेस में रहनेवाले लेखकों के कुल अर्थात् तिराती, शिमाती और सूक्ताती हुए। ये रेकाब के घरने के मूलपुरुष हम्मत के वंशवाले कहीं हैं।

३ दाऊद के पुत्र जो हेब्रोन में उससे उत्पन्न हुए वे ये हैं: जेठा अनोन जो यिज्जेली अहीनोअम से, दूसरा दानियरेत जो कर्मेली अबर्गिल से उत्पन्न हुआ। १ तीसरा अबशालोम जो गश्रे के राजा तरमै की बेटी माका का पुत्र था, चौथा अदोनियाह जो हागीत का पुत्र था। २ पाँचवाँ शपत्याह जो अबीतल से, और छठवाँ यित्राम जो उसकी छीं एला से उत्पन्न हुआ। ३ दाऊद से हेब्रोन में छ: पुत्र उत्पन्न हुए, और वहाँ उसने साढ़े सात वर्ष राज्य किया; यस्खलेम में तैतीस वर्ष राज्य किया। ५ यस्खलेम में उसके ये पुत्र उत्पन्न हुए: अर्थात् शिमा, शोबाल, नातान और सुलैमान, ये चारों अम्मील की बेटी बतेशबा से उत्पन्न हुए। ६ और यिभार, एलीशामा एलीपिलेत, ७ नोगह, नेपेग, यापी, ८ एलीशामा, एल्यादा और एल्लिपिलेत, ये नौ पुत्र थे। ९ ये सब दाऊद के पुत्र थे; और इनको छोड़ रखेलों के भी पुत्र थे, और इनकी बहन तामार थी। १० फिर सुलैमान का पुत्र रहबाम उत्पन्न हुआ; रहबाम का अवियाह, अवियाह का आसा, आसा का योहेशापात, ११ योहेशापात का योराम, योराम का अहज्याह, अहज्याह का योआश; १२ योआश का अमस्याह, अमस्याह का अजर्याह, अजर्याह का योताम; १३ योताम का आहाज, आहाज का हिजकियाह, हिजकियाह का मनश्शे; १४ मनश्शे का आमोन, और आमोन का योशियाह पुत्र हुआ। १५ और योशियाह के पुत्र: उसका जेठा योहानान, दूसरा योहोयाकीम; तीसरा सिदिकियाह, चौथा शल्लमू। १६ योहोयाकीम का पुत्र यकोन्याह, इसका पुत्र सिदिकियाह। १७ और यकोन्याह का पुत्र अस्सीर, उसका पुत्र शालतीएल; १८ और मल्कीराम, पदायाह, शेनस्सर, यकम्याह, होशामा और नदब्याह; १९ और पदायाह के पुत्र जरूबबेल और शिमी हुए; और जरूबबेल के पुत्र मश्ललाम और हनन्याह, जिनकी बहन शलोमीती थी; २० और हश्शबा, आहेल, बेरक्याह, हस्याह और यश्वब-हेसेद, पाँच। २१ और हनन्याह के पुत्र: पलत्याह और यश्यायाह, और उसका पुत्र रपायाह, उसका पुत्र अनर्न, उसका पुत्र ओबेधाह, उसका पुत्र शकन्याह। २२ और शकन्याह का पुत्र शमायाह, और शमायाह के

पुत्र हनूश और यिगाल, बारीह, नार्याह और शापात, छः। २३ और नार्याह के पुत्र एल्योएनै, हिजकियाह और अञ्जीकाम, तीन। २४ और एल्योएनै के पुत्र होदव्याह, एल्याशीब, पलायाह, अक्कबू, योहानान, दलायाह और अनानी, सात।

४ यहदा के पुत्र: मैरेस, हेयोन, कर्मी, हूर और शोबाल। २५ और शोबाल के

पुत्र: रायाह से यहत और यहत से अहमै और लहद उत्पन्न हुए, ये सोराई कुल हैं। ३ एताम के पिता के ये पुत्र हुए अर्थात् यिज्जेल, यिश्मा और यिद्वाश, जिनकी बहन का नाम हस्सलेलपेनी था; ४ और गदोर का पिता पन्नेल, और हशाह का पिता एजेर। ये एप्राता के जेठे हक के सन्तान थे, जो बैतलहम का पिता हुआ। ५ और तकोआ के पिता अशहर के हेला और नारा नामक दो द्वियाँ थी। ६ नारा से अहज्याम, हेपेर, तेमनी और हाहशतारी उत्पन्न हुए, नारा के ये ही पुत्र हुए। ७ और हेला के पुत्र, सेरेत, यिसहर और एत्रा। ८ कोस से आनब और सोबेबा उत्पन्न हुए और उसके वंश में हास्म के पुत्र अहर्हल के कुल भी उत्पन्न हुए। ९ और याबेस अपने भाइयों से अधिक प्रतिष्ठित हुआ, और उसकी माता ने यह कहकर उसका नाम याबेस रखा, “मैंने इसे पीड़ित होकर उत्पन्न किया।” १० और याबेस ने इमार्ल के परमेश्वर को यह कहकर पुकारा, “भला होता, कि तु मुझे सच्चमुच अशीष देता, और मेरा देश बढ़ाता, और तेरा हाथ मेरे साथ रहता, और तु मुझे बुराई से ऐसा बचा रखता कि मैं उससे पीड़ित न होता!” और जो कुछ उसने माँगा, वह परमेश्वर ने उसे दिया। ११ फिर शहा के भाई कल्बू से एशतोन का पिता महीर उत्पन्न हुआ। १२ एशतोन के वंश में बेतरापा का घराना, और पासेह और ईर्वाहाश का पिता तहिना उत्पन्न हुए, रेका के लोग ये ही हैं। १३ कनज के पुत्र: ओट्रीएल और सरायाह, और ओट्रीएल का पुत्र हतत। १४ मोनोतै से ओप्रा और सरायाह से योआब जो गेहराशीम का पिता हुआ; वे करीगर थे। १५ और युपुने के पुत्र कालेब के पुत्र: इस्त, एला और नाम, और एला के पुत्र: कनज। १६ यहलेल के पुत्र, जीप, जीपा, तीरया और असरेल। १७ और एज्जा के पुत्र: येरो, मेरेट, एपेर और यालोन, और उसकी छीं से मिर्याम, शम्मै और एशतोम का पिता यिशबह उत्पन्न हुए। १८ उसकी यहदिन छीं से गदोर का पिता येरेट, सोको के पिता हेबेर और जानोह के पिता यकूतीएल उत्पन्न हुए, ये फिरैन की बेटी बित्या के पुत्र थे जिसे मेरेट दे ब्याह लिया था। १९ और होदियाह की छीं जो नहम की बहन थी, उसके पुत्र: कीला का पिता एक गेरेमी और एशतोम का पिता एक माकाई। २० और शिमोन के पुत्र: अनोन, रिन्ना, बेन्हानान और तोतोन; और यिशी के पुत्र: जोहेत और बेनजोहेत। २१ यहदा के पुत्र शेला के पुत्र: लेका का पिता एर, मारेश का पिता लादा और बेत-अशबे में उस घराने के कुल जिसमें सन के कपड़े का काम होता था; २२ और योकीम और कोजेबा के मनुष्य और योआश और साराप जो मोआब में प्रभुता करते थे, और याशब लेहेम। इनका वृत्तान्त प्राचीन है। २३ ये कुम्हार थे, और नताईम और गदोर में रहते थे जहाँ वे राजा का काम-काज करते हुए उसके पास रहते थे। २४ शिमोन के पुत्र: नम्मेल, यामीन, यारीब, जेरह और शाऊल; २५ और शाऊल का पुत्र शल्लमू, शल्लमू का पुत्र मिक्साम और मिक्साम का मिश्मा हुआ। २६ और मिश्मा का पुत्र हम्मैलू, उसका पुत्र जक्कहर, और उसका पुत्र शिरी। २७ शिरी के सोलह बेटे और छः बेटियाँ हुईं परन्तु उसके भाइयों के बहुत बेटे न हुए; और उनका सारा कुल यहदियों के बराबर न बढ़ा। २८ ये बेरेबा, मोलादा, हर्स्शाला, २९ बिल्हा, एसेम, तोलाद, ३० बतूएल, होर्मा, सिकलग, ३१ बेत्म्किबोत, हसर्सीम, बेत्विरी और शैरैम में बस गए; दाऊद के राज्य के समय तक उनके ये ही नगर रहे। ३२ और उनके गाँव एताम, ऐन, रिमोन, तोकेन और आशान नामक पाँच नगर; ३३ और बाल तक जितने गाँव इन नामों

के आस-पास थे, उनके बसने के स्थान ये ही थे, और यह उनकी वंशावली है। ३४ फिर मशोबाब और यम्लेक और अमस्याह का पुत्र योशा, ३५ और योएल और योशिब्याह का पुत्र ये, जो सरायाह का पोता, और असीएल का परपोता था, ३६ और एल्योएने और याकोबा, यशोहायाह और असायाह और अदीएल और यसीएल और बनायाह, ३७ और शिपी का पुत्र जीजा जो अल्लोन का पुत्र, यह यदायाह का पुत्र, यह शिपी का पुत्र, यह शमायाह का पुत्र था। ३८ ये जिनके नाम लिखे हुए हैं, अपने-अपने कुल में प्रधान थे; और उनके पितरों के घराने बहत बढ़ गए। ३९ ये अपनी भेड़-बकरियों के लिये चराई ढूँढ़ने को गदोर की घाटी की तराई की पूर्व और तक गए। ४० और उनको उत्तम से उत्तम चराई मिली, और देश लम्बा-चौड़ा, चैन और शान्ति का था; क्योंकि वहाँ के पहले रहनेवाले हाम के बंश के थे। ४१ और जिनके नाम ऊपर लिखे हैं, उन्होंने यहदा के राजा हिङ्कियाह के दिनों में वहाँ आकर जो मूरी वहाँ मिले, उनको डेरों समेत मारकर ऐसा सत्यानाश कर डाला कि आज तक उनका पता नहीं है, और वे उनके स्थान में रहने लगे, क्योंकि वहाँ उनकी भेड़-बकरियों के लिये चराई थी। ४२ और उनमें से अर्थात् शिमेनियों में से पाँच सौ पुस्त अपने ऊपर पलत्याह, नार्याह, रपायाह और उज्जीएल नामक यिशी के पुत्रों को अपना प्रधान ठरायाः; ४३ तब वे सेईंद पहाड़ को गए, और जो अमालेकी बचकर रह गए थे उनको मारा, और आज के दिन तक वहाँ रहते हैं।

५ इसाएल का जेठा तो स्बेन था, परन्तु उसने जो अपने पिता के बिछौने को

अशुद्ध किया, इस कारण जेठे का अधिकार इसाएल के पुत्र यसुफ के पुत्रों को दिया गया। वंशावली जेठे के अधिकार के अनुसार नहीं ठरी। १ यद्यपि यहदा अपने भाइयों पर प्रबल हो गया, और प्रधान उसके बंश से हुआ परन्तु जेठे का अधिकार यसुफ का था २ इसाएल के जेठे पुत्र स्बेन के पुत्र ये हुए: अर्थात् होनोक, पल्लू, हेसोन और कर्मी। ३ योएल का पुत्र शमायाह, शमायाह का गोग, गोग का शिमी, ४ शिमी का मीका, मीका का रायाह, रायाह का बाल, ५ और बाल का पुत्र बएराह, इसको अश्शूर का राजा तिलत्पिलेसेर बन्दी बनाकर ले गया; और वह स्बेनियों का प्रधान था। ६ और उसके भाइयों की वंशावली के लिखते समय वे अपने-अपने कुल के अनुसार ये ठहरे, अर्थात् मुख्य तो यीएल, फिर जकर्याह, ७ और अजाज का पुत्र बेला जो शेमा का पोता और योएल का परपोता था, वह अरोए में और नबो और बालमोन तक रहता था। ८ और पूर्व और वह उस जंगल की सीमा तक रहा जो फरात महानद तक पहुँचाता है, क्योंकि उनके पश्चि गिलाद देश में बढ़ गए थे। ९ और शाऊल के दिनों में उन्होंने हगियों से युद्ध किया, और हगी उनके हाथ से मरे गए; तब वे गिलाद के सम्पूर्ण पर्वी भाग में अपने डेरों में रहने लगे। १० गादी उनके सामने सल्का तक बाशान देश में रहते थे। ११ अर्थात् मुख्य तो योएल और दूसरा शापाम फिर यानै और शापात, ये बाशान में रहते थे। १२ और उनके भाई अपने-अपने पितरों के घरानों के अनुसार मीकाएल, मशूल्लाम, शेबा, यौर, याकान, जीझ और एबेर, सात थे। १३ ये अब्हिहिल के पुत्र थे, जो हरी का पुत्र था, यह योराह का पुत्र, यह गिलाद का पुत्र, यह मीकाएल का पुत्र, यह यशिशी का पुत्र, यह यहदा का पुत्र, यह बूज का पुत्र था। १४ इनके पितरों के घरानों का मुख्य पुस्त अब्दीएल का पुत्र, और गूरी का पोता अही था। १५ ये लोग बाशान में, गिलाद और उसके गाँवों में, और शारोन की सब चराइयों में उसकी दूसरी ओर तक रहते थे। १६ इन सभी की वंशावली यहदा के राजा योताम के दिनों और इसाएल के राजा यारोबाम के दिनों में लिखी गई। १७ स्बेनियों, गादियों और मनशेसे के आधे गोत्र के योद्धा जो ढाल बाँधें, तलवार चलाने, और धनुष के तीर छोड़ने के योग्य और युद्ध करना सीखे हुए थे, वे

चौवालीस हजार सात सौ साठ थे, जो युद्ध में जाने के योग्य थे। १८ इन्होंने हगियों और यतू नापीश और नोदाब से युद्ध किया था। १९ उनके विस्तु इनको सहायता मिली, और हगी उन सब समेत जो उनके साथ थे उनके हाथ में कर दिए गए, क्योंकि युद्ध में इन्होंने परमेश्वर की दुहाई दी थी और उसने उनकी विनाई इस कारण सुनी, कि इन्होंने उस पर भरोसा रखा था। २० और इन्होंने उनके पश्चि हर लिए, अर्थात् ऊंट तो पचास हजार, भेड़-बकरी ढाई लाख, गदहे दो हजार, और मनुष्य एक लाख बन्धुए करके ले गए। २१ और बहुत से मरे पड़े थे क्योंकि वह लडाई परमेश्वर की ओर से हुई। और ये उनके स्थान में बैंधुआई के समय तक बसे रहे। २२ फिर मनशेसे के आधे गोत्र की सन्तान उस देश में बसे, और वे बाशान से ले बालहर्मेन, और सनीर और हेर्मेन पर्वत तक फैल गए। २३ और उनके पितरों के घरानों के मुख्य पुस्त थे ये थे, अर्थात् एपेर, यिशी, एल्यीएल, अज्जीएल, यिर्याह, होद्याह और यहदीएल, ये बड़े बीर और नामी और अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुस्त थे। २४ परन्तु उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर से विश्वासयात किया, और उस देश के लोग जिनका परमेश्वर ने उनके सामने से विनाश किया था, उनके देवताओं के पीछे व्यभिचारिणी के समान हो लिए। २५ इसलिए इसाएल के परमेश्वर ने अश्शूर के राजा पूर्ण और अश्शूर के राजा तिलत्पिलेसेर का मन उभारा, और इन्होंने उन्हें अर्थात् स्बेनियों, गादियों और मनशेसे के आधे गोत्र के लोगों को बन्धुआ करके हलह, हावोर और हारा और गोजान नदी के पास पहुँचा दिया; और वे आज के दिन तक वहाँ रहते हैं।

६ लेवी के पुत्र गेरोनै, कहात और मरारी। १ और कहात के पुत्र, अप्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल। २ और अप्राम की सन्तान हास्तन, मूसा और मिर्याम, और हास्तन के पुत्र, नादाब, अबीह, एलीआजर और इत्तामार। ३ एलीआजर से पीनहास, पीनहास से अबीशू, ४ अबीशू से बुक्की, बुक्की से उज्जी, ५ उज्जी से जरहाया, जरहाया से मरायोत, ६ मरायोत से अमर्याह, अमर्याह से अहीतब, ७ अहीतब से सादोक, सादोक से अहीमास, ८ अहीमास से अजर्याह, अजर्याह से योहानाम, ९ और योहानाम से अजर्याह उत्पन्न हुआ (जो सुलैमान के यस्सलेम में बनाए हुए भवन में याजक का काम करता था)। १० अजर्याह से अमर्याह, अमर्याह से अहीतब, ११ अहीतब से सादोक, सादोक से शल्लूम, १२ शल्लूम से हिलिक्याह, हिलिक्याह से अजर्याह, १३ अजर्याह से सरायाह, और सरायाह से योहोसादाक उत्पन्न हुआ। १४ और जब यहोवा, यहदा और यस्सलेम को नब्कदासेसर के द्वारा बन्धुआ करके ले गया, तब योहोसादाक भी बन्धुआ होकर गया। १५ लेवी के पुत्र गेरोनै, कहात और मरारी। १६ और गेरोनै के पुत्रों के नाम ये थे, अर्थात् लिब्नी और शिमी। १७ और कहात के पुत्र अप्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल। १८ और मरारी के पुत्र महली और मूसी। अपने-अपने पितरों के घरानों के अनुसार लेवियों के कुल ये हुए। १९ अर्थात्, गेरोनै का पुत्र लिब्नी हुआ, लिब्नी का यहत, यहत का जिम्मा। २० जिम्मा का योआह, योआह का इझे, इझे का जेरह, और जेरह का पुत्र यातोह हुआ। २१ फिर कहात का पुत्र अप्रीनादाब हुआ, अप्रीनादाब का कोरह, कोरह का अस्सीर, २२ अस्सीर का एल्काना, एल्काना का बन्ध्यासाप, बन्ध्यासाप का अस्सीर, २३ अस्सीर का तहत, तहत का ऊरीएल, ऊरीएल का उजियाह और उजियाह का पुत्र शाऊल हुआ। २४ फिर एल्काना का पुत्र अमासै और अभीमोत। २५ एल्काना का पुत्र सोपै, सोपै का नहत, २६ नहत का एलीआब, एलीआब का योहोम, और योहोम का पुत्र एल्काना हुआ। २७ शमूलत के पुत्र: उसका जेठा योएल और दूसरा अबियाह हुआ। २८ फिर मरारी का पुत्र महली, महली का लिब्नी, लिब्नी का शिमी,

शिमी का उज्जा। ३० उज्जा का शिमा; शिमा का हागिय्याह और हागिय्याह का पुत्र असायाह हुआ। ३१ फिर जिनको दाऊद ने सन्दूक के भवन में रखे जाने के बाद, यहोवा के भवन में गाने का अधिकारी ठहरा दिया वे हैं। ३२ जब तक सुलैमान यस्सलेम में यहोवा के भवन को बनवा न चुका, तब तक वे मिलापाले तम्बू के निवास के सामने गाने के द्वारा सेवा करते थे; और इस सेवा में नियम के अनुसार उपस्थित हुआ करते थे। ३३ जो अपने-अपने पुत्रों समेत उपस्थित हुआ करते थे वे ये हैं, अर्थात् कहातियों में से हेमान गवैया जो योएल का पुत्र था, और योएल शम्पूल का, ३४ शम्पूल एल्काना का, एल्काना यरोहाम का, यरोहाम एल्टिप्ल का, एल्टिप्ल तोह का, ३५ तोह सफ का, सफ एल्काना का, एल्काना महत का, महत अमासै का, ३६ अमासै एल्काना का, एल्काना योएल का, योएल अजर्याह का, अजर्याह सपन्नाह का, ३७ सपन्नाह तहत का, तहत अस्सीर का, अस्सीर एल्यासाप का, एल्यासाप कोरह का, ३८ कोरह यिसहार का, यिसहार कहात का, कहात लेवी का और लेवी इम्माएल का पुत्र था। ३९ और उसका भाई आसाप जो उसके दाहिने खड़ा हुआ करता था वह बैरेक्याह का पुत्र था, और बैरेक्याह शिमा का, ४० शिमा मीकाएल का, मीकाएल बासेयाह का, बासेयाह मल्किय्याह एवं का, ४१ मल्किय्याह एवं का, एट्टी जेरह का, जेरह अदायाह का, ४२ अदायाह एतान का, एतान जिम्मा का, जिम्मा शिमी का, ४३ शिमी यहत का, यहत गेर्शेम का, गेर्शेम लेवी का पुत्र था। ४४ और बाई और उनके भाई मरारी खड़े होते थे, अर्थात् एतान जो कीशी का पुत्र था, और कीशी अब्दी का, अब्दी मल्लूक का, ४५ मल्लूक हशब्याह का, हशब्याह अमस्याह का, अमस्याह हिल्किय्याह का, ४६ हिल्किय्याह अमसी का, अमसी बानी का, बानी शेमेर का, ४७ शेमेर महली का, महली मूशी का, मूशी मरारी का, और मरारी लेवी का पुत्र था; ४८ और इनके भाई जो लेवीय थे वे परमेश्वर के भवन के निवास की सब प्रकार की सेवा के लिये अर्पण किए हुए थे। ४९ परन्तु हास्तन और उसके पुत्र होमबली की बेदी, और धूप की बेदी दोनों पर बलिदान चढ़ाते, और परमावित्र स्थान का सब काम करते, और इम्माएलियों के लिये प्रायश्चित्त करते थे, जैसे कि परमेश्वर के दास मूसा ने आजाएँ दी थी। ५० और हास्तन के बंश में ये हुएः अर्थात् उसका पुत्र एल्लीआजर हुआ, और एल्लीआजर का पीनहास, पीनहास का अबीशू, ५१ अबीशू का बुक्की, बुक्की का उज्जी, उज्जी का जरहयाह, ५२ जरहयाह का मरायोत, मरायोत का अमर्याह, अमर्याह का अहीतूब, ५३ अहीतूब का सादोक और सादोक का अहीमास पुत्र हुआ। ५४ उनके भागों में उनकी छावनियों के अनुसार उनकी बस्तियाँ ये हैं अर्थात् कहात के कुलों में से पहली चिश्ती जो हास्तन की सन्तान के नाम पर निकली; ५५ अर्थात् चारों ओर की चराइयों समेत यहदा देश का हेब्रोन उन्हें मिला। ५६ परन्तु उस नगर के खेत और गाँव युपने के पुत्र कालेब को दिए गए। ५७ और हास्तन की सन्तान को शरणनगर हेब्रोन, और चराइयों समेत लिब्ना, और यतीर और अपनी-अपनी चराइयों समेत एश्टमो; ५८ अपनी-अपनी चराइयों समेत हीलेन और दबीर; ५९ आशान और बेतेमेश। ६० और बिन्यामीन के गोत्र में से अपनी-अपनी चराइयों समेत गेबा, आलेपेत और अनातोत दिए गए। उनके घरानों के सब नगर तेरह थे। ६१ और शेष कहातियों के गोत्र के कुल, अर्थात् मनश्शे के आधे गोत्र में से चिश्ती डालकर दस नगर दिए गए। ६२ और गेर्शेमियों के कुलों के अनुसार उन्हें स्केबेन, गाद और जबलून के गोत्रों में से चिश्ती डालकर बारह नगर दिए गए। ६३ इम्माएलियों ने लेवियों को ये नगर चराइयों समेत दिए। ६४ उन्होंने यहदियों, शिमोनियों और बिन्यामीनियों के गोत्रों में से वे नगर दिए, जिनके नाम उपर

दिए गए हैं। ६५ और कहातियों के कई कुलों को उनके भाग के नगर ऐप्रैम के गोत्र में से मिले। ६६ सो उनको अपनी-अपनी चराइयों समेत ऐप्रैम के पहाड़ी देश का शेकेम जो शरणनगर था, फिर गेजेर, ६७ योकमाम, बेयेरोन, ६८ अय्यलोन और गत्रिमोन; ६९ और मनश्शे के आधे गोत्र में से अपनी-अपनी चराइयों समेत अनेक और बिलाम शेष कहातियों के कुल को मिले। ७० फिर गेर्शेमियों को मनश्शे के आधे गोत्र के कुल में से तो अपनी-अपनी चराइयों समेत बाशान का गोलन और अशतारोत; ७१ और इस्साकार के गोत्र में से अपनी-अपनी चराइयों समेत केदेश, दाबरात, ७२ रामोत और आनेम, ७३ और आगेर के गोत्र में से अपनी-अपनी चराइयों समेत माशाल, अब्दोन, ७४ हकोक और रहोब; ७५ और नमाली के गोत्र में से अपनी-अपनी चराइयों समेत गलील का केदेश हम्मोन और कियतिम मिले। ७६ फिर शेष लेवियों अर्थात् मरायियों को जबलून के गोत्र में से तो अपनी-अपनी चराइयों समेत रिम्मोन और ताबोर। ७७ और यरीहों के पास की यरदन नदी के पूर्व और स्केबेन के गोत्र में से तो अपनी-अपनी चराइयों समेत जंगल का बेसेर, यहस, ७८ कटेमोत और मेपात; ७९ और गाद के गोत्र में से अपनी-अपनी चराइयों समेत गिलाद का रामोत महैनैम, ८० हेबेबोन और याजेर दिए गए।

७ इस्साकार के पुत्र: तोला, पृआ, याश्व और शिम्मोन, चार थे। १ और तोला के पुत्र: उज्जी, रपायाह, यरीएल, यहमै, शिवासाम और शम्पूल, ये अपने-अपने पितरों के घरानों अर्थात् तोला की सन्तान के मुख्य पुस्त और बड़े वीर थे, और दाऊद के दिनों में उनके बंश की गिनती बाईस हजार थे: सौ थी। ३ और उज्जी का पुत्र: यिज्ज्वाह, और यिज्ज्वाह के पुत्र मीकाएल, ओवधाह, योएल और यिशिय्याह पॉच थे; ये सब मुख्य पुस्त थे; ४ और उनके साथ उनकी वंशावलियों और पितरों के घरानों के अनुसार सेना के दलों के छत्तीस हजार योद्धा थे, क्योंकि उनकी बहत सी द्वियाँ और पुत्र थे। ५ और उनके भाई जो इस्साकार के सब कुलों में से थे, वे सत्तासी हजार बड़े वीर थे, जो अपनी-अपनी वंशावली के अनुसार गिने गए। ६ बिन्यामीन के पुत्र: बेला, बेकेर और यदीएल ये तीन थे। ७ बेला के पुत्र: एस्बोन, उज्जी, उज्जीएल, यरीमोत और ईरी ये पॉच थे। ये अपने-अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुस्त और बड़े वीर थे, इनके बंश की गिनती अपनी-अपनी वंशावली के अनुसार उनकी बाईस हजार चौंतीस थी। ८ और बेकेर के पुत्र: जमीरा, योआश, एलीएजर, एल्योएन, ओप्री, येरमोत, अबिय्याह, अनातोत और आलेपेत ये सब बेकेर के पुत्र थे। ९ ये जो अपने-अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुस्त और बड़े वीर थे, इनके बंश की गिनती अपनी-अपनी वंशावली के अनुसार बीस हजार दो सौ थी। १० और यदीएल का पुत्र बिल्हान, और बिल्हान के पुत्र, यूश, बिन्यामीन, एहद, कनाना, जेतान, तर्शीश और अहीशरथ थे। ११ ये सब जो यदीएल की सन्तान और अपने-अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुस्त और बड़े वीर थे, इनके बंश से सेना में युद्ध करने के योग्य सन्त्रह हजार दो सौ पुस्त थे। १२ और ईर के पुत्र शुप्पीम और हृप्पीम और अहेर के पुत्र हृशीम थे। १३ नमाली के पुत्र, यहसेल, गृनी, येसेर और शिल्लेम थे, ये बिल्हान के पोते थे। १४ मनश्शे के पुत्र: अस्सीएल जो उसकी अरामी रखैल झी से उत्पन्न हुआ था; और उस अरामी झी ने गिलाद के पिता माकीर को भी जन्म दिया। १५ और माकीर (जिसकी बहन का नाम माका था) उसने हृप्पीम और शुप्पीम के लिये द्वियाँ ब्याह ली, और दूसरे का नाम सलोफाद था, और सलोफाद के बेटियाँ हुईं। १६ फिर माकीर की झी स्थानीय माका को एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उसका नाम पेरेश रखा; और उसके भाई का नाम शेरेश था; और इसके पुत्र ऊलाम और राकेम थे। १७ और ऊलाम का पुत्र: बदान। ये गिलाद की सन्तान थे जो माकीर का पुत्र और

मनश्चे का पोता था। १८ फिर उसकी बहन हम्मोलेकेत ने ईशाहोद, अबीएजेर और महला को जन्म दिया। १९ शमीदा के पुत्र अहिअन, शेकेम, लिखी और अनीआम थे। २० एग्रैम के पुत्र शूतेलह और शूतेलह का बैरेट, बैरेट का तहत, तहत का एलादा, एलादा का तहत; २१ तहत का जाबाद और जाबाद का पुत्र शूतेलह हुआ, और एजेर और एलाद भी जिन्हें गत के मनुष्यों ने जो उस देश में उत्पन्न हुए थे इसलिए थात किया, कि वे उनके पश्च हर लेने को उत्तर आए थे। २२ सो उनका पिता एग्रैम उनके लिये बहुत दिन शोक करता रहा, और उसके भाई उसे शान्ति देने को आए। २३ और वह अपनी पत्नी के पास गया, और उसने गर्भवती होकर एक पुत्र को जन्म दिया और एग्रैम ने उसका नाम इस कारण बरीआ रखा, कि उसके घराने में विपत्ति पड़ी थी। २४ उसकी पुत्री शेरा थी, जिसने निचले और ऊपरवाले दोनों बेथेरोन नामक नगरों को और उज्जेनशेरा को दृढ़ कराया। २५ उसका पुत्र रेषा था, और रेषा भी, और उसका पुत्र तेलह, तेलह का तहन, तहन का लादान, २६ लादान का अमीहद, अमीहद का एलीशामा, २७ एलीशामा का नून, और नून का पुत्र योहेशूथा। २८ उनकी निज भूमि और बासियाँ गाँवों समेत बेतेल और पर्वत की ओर नारान और पश्चिम की ओर गाँवों समेत गेजेर, फिर गाँवों समेत शेकेम, और गाँवों समेत अद्या थीं; २९ और मनशशीइयों की सीमा के पास अपने-अपने गाँवों समेत बेताशन, तानाक, मीठाओं और दोर। इनमें इस्माएल के पुत्र यस्फ की सन्तान के लोग रहते थे। ३० आशेर के पुत्र, यिम्ना, शिवा, यिश्वी और बरीआ, और उनकी बहन सेरह हुई। ३१ और बरीआ के पुत्र: हेबेर और मल्कीएल और यह बर्जौत का पिता हुआ। ३२ हेबेर ने यपलेत, शोमेर, होताम और उनकी बहन शूआ को जन्म दिया। ३३ और यपलेत के पुत्र पासक बिम्हाल और अश्वात। यपलेत के ये ही पुत्र थे। ३४ शेमेर के पुत्र: अहीं, रोहगा, यहुब्बा और अराम। ३५ उसके भाई हेलेम के पुत्र सोपह, यिम्ना, शेलेश और आमाल। ३६ सोपह के पुत्र, सह, हर्पेपर, शूआल, बेरी, इग्रा। ३७ बेसेर, होद, शम्मा, शिलसा, यित्रान और बेरा। ३८ येतेर के पुत्र: युनुने, पिस्पा और अरा। ३९ उल्ला के पुत्र: आरह, हन्नीएल और रिस्या। ४० ये सब आशेर के वंश में हुए, और अपने-अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष और बड़े से बड़े वीर थे और प्रधानों में मुख्य थे। ये जो अपनी-अपनी वंशावली के अनुसार सेना में युद्ध करने के लिये मिने गए, इनकी गिनती छब्बीस हजार थी।

४ बिन्यामीन से उसका जेठा बेला, दूसरा अश्वेल, तीसरा अहह, २ चौथा नोहा और पाँचवाँ रापा उत्पन्न हुआ। ३ बेला के पुत्र अद्वार, गेरा, अबीहद, ४ अबीशू, नामान, अहोह, ५ गेरा, शपूपान और ह्राम थे। ६ एहद के पुत्र ये हुए (गेबा के निवासियों के पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे ये, जिन्हें बन्दी बनाकर मानहत को ले जाया गया था)। ७ और नामान, अहियाह और गेरा (इन्हें भी बन्धुआ करके मानहत को ले गए थे), और उसने उज्जा और अबीहद को जन्म दिया। ८ और शहैरम से हशीम और बारा नामक अपनी छियों को छोड़ देने के बाद, मोआब देश में लड़के उत्पन्न हुए। ९ उसकी अपनी छी होदेश से योबाब, सिब्या, मेशा, मल्काम, यस्स, सोक्या, १० और मिर्मा उत्पन्न हुए। उसके ये पुत्र अपने-अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे। ११ और हशीम से अबीतूब और एल्पाल का जन्म हुआ। १२ एल्पाल के पुत्र एबेर, यिशाम और शामेद, इसी ने ओनों और गाँवों समेत लोट को बसाया। १३ फिर बरीआ और शेमा जो अय्यालोन के निवासियों के पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे, और जिन्होंने गत के निवासियों को भगा दिया, १४ और अहोह, शाशक, येमोत, १५ जबघाह, अराद, एवेर, १६ मीकाएल, यिस्पा, योहा, जो बरीआ के पुत्र थे, १७ जबघाह, मशुल्लाम, हिजकी, हेबेर, १८ यिशमैर,

यिजलीआ, योबाब जो एल्पाल के पुत्र थे। १९ और याकीम, जिक्री, जब्दी, २० एलीएने, सिल्लौतै, एलीएल, २१ अदायाह, बरायाह और शिप्रात जो शिमी के पुत्र थे। २२ यिशापान, एबेर, एलीएल, २३ अब्दोन, जिक्री, हानान, २४ हनन्याह, एलाम, अन्तोतिय्याह, २५ यिपदयाह और पन्नेल जो शाशक के पुत्र थे। २६ और शमशैरै, शहर्याह, अतल्याह, २७ योरेश्याह, एलियाह और जिक्री जो योहाम के पुत्र थे। २८ ये अपनी-अपनी पीढ़ी में अपने-अपने पितरों के घरानों में मुख्य पुस्त और प्रधान थे, ये यस्सलेम में रहते थे। २९ गिबोन में गिबोन का पिता रहता था, जिसकी पत्नी का नाम माका था। ३० और उसका जेठा पुत्र अब्दोन था, पिर सूर, कीश, बाल, नादाब, ३१ गदोर; अहोह और जेकेर हुए। ३२ मिक्लोत से शिमआह उत्पन्न हुआ। और ये भी अपने भाइयों के सामने यस्सलेम में रहते थे, अपने भाइयों ही के साथ। ३३ नेर से कीश उत्पन्न हुआ, कीश से शाकुल, और शाकुल से योनातान, मल्कीशूभ, अबीनादाब, और एशबाल उत्पन्न हुआ; ३४ और योनातान का पुत्र मरीब्बाल हुआ, और मरीब्बाल से मीका उत्पन्न हुआ। ३५ मीका के पुत्र: पीतोन, मेलेक, तारे और आहाज। ३६ आहाज से यहोअदा उत्पन्न हुआ, और यहोअदा से अलेपेत, अज्मावेत और जिम्री; और जिम्री से मोसा। ३७ मिस्पे से बिना उत्पन्न हुआ, और इसका पुत्र रापा हुआ, रापा का एलासा और एलासा का पुत्र आसेल हुआ। ३८ और आसेल के छ: पुत्र हुए जिनके ये नाम थे, अर्थात् अजीकाम, बोक्सु, इस्माएल, शरायाह, ओब्याह, और हानान। ये सब आसेल के पुत्र थे। ३९ उसके भाई एशोक के ये पुत्र हुए, अर्थात् उसका जेठा ऊलाम, दसरा यश, तीसरा एलीऐलेत। ४० ऊलाम के पुत्र शूरवीर और धनुर्धरी हुए, और उनके बहुत बेटे-पोते अर्थात् डेल सौ हुए। ये ही सब बिन्यामीन के वंश के थे।

९ इस प्रकार सब इस्माएली अपनी-अपनी वंशावली के अनुसार, जो इस्माएल के राजाओं के बृतान्त की पुस्तक में लिखी है, गिने गए। और यही अपने विश्वासघात के कारण बन्दी बनाकर बाबेल को पहुँचाए गए। १ बैंधुआई से लौटकर जो लोग अपनी-अपनी निज भूमि अर्थात् अपने नारों में रहते थे, वह इस्माएली, याजक, लेवीय और मन्दिर के सेवक थे। २ यस्सलेम में कुछ यहदी, कुछ बिन्यामीन, और कुछ एग्रीमी, और मनशेही, रहते थे। ३ अर्थात् यहदा के पुत्र पेस के वंश में से अमीहद का पुत्र ऊतै, जो ओग्री का पुत्र, और इसी का पोता, और बानी का परपोता था। ४ और शीलोइयों में से उसका जेठा पुत्र असायाह और उसके पुत्र। ५ जेरह के वंश में से यूल, और इनके भाई, ये छ: सौ नब्बे हुए। ६ फिर बिन्यामीन के वंश में से सल्लू जो मशुल्लाम का पुत्र, होदव्याह का पोता, और हस्सनूआ का परपोता था। ७ और यिबनायाह जो योहाम का पुत्र था, और एला जो उज्जी का पुत्र, और मिक्री का पोता था, और मशुल्लाम जो शपत्याह का पुत्र, रुस्ल का पोता, और यिन्नियाह का परपोता था; ८ और इनके भाई आईं जो अपनी-अपनी वंशावली के अनुसार मिलकर नौ सौ छप्पन थे। ये सब पुस्त अपने-अपने पितरों के घरानों के अनुसार पितरों के घरानों में मुख्य थे। ९ याजकों में से यदायाह, यहोयाबिं और याकीन, १० और अजर्याह जो परमेवर के भवन का प्रधान और हिल्किय्याह का पुत्र था, यह मशुल्लाम का पुत्र, यह सादोक का पुत्र, यह मरायोत का पुत्र, यह अहीतूब का पुत्र था; ११ और अदायाह जो परमेवर के भवन की सेवा के काम में बहुत निपुण पुस्त थे। १२ फिर लेवियों में से मरारी के वंश में से शमायाह जो हशशूब का पुत्र, अज्रीकाम का पोता, और हशब्याह का

परपोता था; १५ और बकबककर, हेरेश और गालाल और आसाप के बंश में से मत्तन्याह जो मीका का पुत्र, और जिक्री का पोता था; १६ और ओबघाह जो शमायाह का पुत्र, गालाल का पोता और यदूतून का परपोता था: और वेरेक्याह जो आसा का पुत्र, और एल्काना का पोता था, जो नतोपाइयों के गाँवों में रहता था। १७ द्वारपालों में से अपने-अपने भाइयों सहित शल्लम्, अक्कूब्, तल्मोन और अहीमन, इनमें से मुख्य तो शल्लम् था। १८ और वह अब तक पूर्व की ओर राजा के फाटक के पास द्वारपाली करता था। लेवियों की छावनी के द्वारपाल ये ही थे। १९ और शल्लम् जो कोरे का पुत्र, ऐन्यासाप का पोता, और कोप्रह का परपोता था, और उसके भाई जो उसके मूलपुष्प के घासे के अर्थात् कोरही थे, वह इस काम के अधिकारी थे कि वे तम्बू के द्वारपाल हों। उनके पुरखा तो यहोवा की छावनी के अधिकारी, और प्रवेश-द्वार के रखवाले थे। २० प्राचीनकाल में एनीआजर का पुत्र पीनहास, जिसके संग यहोवा रहता था, वह उनके प्रधान था। २१ मशेलम्याह का पुत्र जकर्याह मिलापवाले तम्बू का द्वारपाल था। २२ ये सब जो द्वारपाल होने को चुने गए, वह दो सौ बारह थे। ये जिनके पुरखाओं को दाऊद और शमैल दर्शी ने विवासयोग्य जानकर ठहराया था, वह अपने-अपने गाँव में अपनी-अपनी वंशावली के अनुसार गिने गए। २३ अंतः वे और उनकी सन्तान यहोवा के भवन अर्थात् तम्बू के भवन के फाटकों का अधिकार बारी-बारी खरो थे। २४ द्वारपाल पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, चारों दिशा की ओर चौकी देते थे। २५ और उनके भाई जो गाँवों में रहते थे, उनको सात-सात दिन के बाद बारी-बारी से उनके संग रहने के लिये आना पड़ता था। २६ क्योंकि चारों प्रधान द्वारपाल जो लेवीय थे, वे विवासयोग्य जानकर परमेश्वर के भवन की कोठरियों और भण्डारों के अधिकारी ठहराए गए थे। २७ वे परमेश्वर के भवन के आस-पास इसलिए रात बिताते थे कि उसकी रक्षा उहें सौंपी गई थी, और प्रतिदिन भोर को उसे खोलना उन्हीं का काम था। २८ उनमें से कुछ उपासना के पात्रों के अधिकारी थे, क्योंकि ये पात्र गिनकर भीतर पहुँचा, और गिनकर बाहर निकाले भी जाते थे। २९ और उनमें से कुछ सामान के, और पवित्रस्थान के पात्रों के, और मैटे, दाखमध्य, तेल, लोबान और सुगन्ध-द्रव्यों के अधिकारी ठहराए गए थे। ३० याजकों के पुत्रों में से कुछ सुगन्ध-द्रव्यों के मिश्रण तैयार करने का काम करते थे। ३१ और मानित्याह नामक एक लेवीय जो कोरही शल्लम् का जेठा था उसे विवासयोग्य जानकर तबों पर बनाई हुई वस्तुओं का अधिकारी नियुक्त किया था। ३२ उसके भाइयों अर्थात् कहातियों में से कुछ तो भेटवाली रोटी के अधिकारी थे, कि हर एक विश्वामिदिन को उसे तैयार किया करें। ३३ ये गवर्ये थे जो लेवीय पितरों के घरानों में मुख्य थे, और मन्दिर में रहते, और अन्य सेवा के काम से ढैरे थे; क्योंकि वे रात-दिन अपने काम में लगे रहते थे। ३४ ये ही अपनी-अपनी पीढ़ी में लेवियों के पितरों के घरानों में मुख्य पुम्प थे, ये यस्शलेम में रहते थे। ३५ गिबोन में गिबोन का पिता यील रहता था, जिसकी पत्नी का नाम माका था। ३६ उसका जेठा पुत्र अब्दोन हआ, फिर सर, कीश, बाल, नेर, नादाब, ३७ गंदोर, अह्वा, जकर्याह और मिक्रोत; ३८ और मिक्रोत से शिमाम उत्पन्न हुआ और ये भी अपने भाइयों के सामने अपने भाइयों के संग यस्शलेम में रहते थे। ३९ नेर से कीश, कीश से शाऊल, और शाऊल से योनातान, मल्कीशूअू, अबीनादाब और एशबाल उत्पन्न हुए। ४० और योनातान का पुत्र मरीब्बात हआ, और मरीब्बाल से मीका उत्पन्न हुआ। ४१ मीका के पुत्र पीतोन, मेलेक, तहे और आहाज; ४२ और आहाज, से यारा, और यारा से आलेपेत, अज्मावेत और जिप्री, और जिप्री से मोसा, ४३ और मोसा से बिना उत्पन्न हुआ और बिना का पुत्र रपायाह हआ, रपायाह का एलासा, और एलासा का पुत्र आसेल हुआ। ४४ और आसेल के छः पुत्र हुए

जिनके ये नाम थे, अर्थात् अज्ञीकाम, बोकर्सु, इश्माएल, शरायाह, ओबघाह और हानान; आसेल के ये ही पुत्र हुए।

१० पलिश्ती इस्माएलियों से लड़े; और इस्माएली पलिश्तियों के सामने से भागे, और गिलबो नामक पहाड़ पर मारे गए। ११ पर पलिश्ती शाऊल और उसके पुत्रों के पीछे लगे रहे, और पलिश्तियों ने शाऊल के पुत्र योनातान, अबीनादाब और मल्कीशूअू को मार डाला। १२ शाऊल के साथ घमासान युद्ध होता रहा और धनुर्धारियों ने उसे जा लिया, और वह उनके कारण व्याकुल हो गया। १३ तब शाऊल ने अपने हथियार ढोनेवाले से कहा, “अपनी तलवार खींचकर मुझे थोक दे, कहीं ऐसा न हो कि वे खतनारहित लोग आकर मेरा उपहास करें”; परन्तु उसके हथियार ढोनेवाले ने भयभीत होकर ऐसा करने से इन्कार किया। तब शाऊल अपनी तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा। १४ यह देखकर कि शाऊल मर गया है उसका हथियार ढोनेवाला अपनी तलवार पर आप गिरकर मर गया। १५ इस तरह शाऊल और उसके तीनों पुत्र, और उसके घराने के सब लोग एक संग मर गए। १६ यह देखकर कि वे भाग गए, और शाऊल और उसके पुत्र मर गए, उस तराई में रहनेवाले सब इस्माएली मनुष्य अपने-अपने नगर को छोड़कर भाग गए, और पलिश्ती आकर उनमें रहने लगे। १७ दसे दिन जब पलिश्ती मारे हुओं के माल को लट्टने आए, तब उनको शाऊल और उसके पुत्र गिलबो पहाड़ पर पड़े हुए मिले। १८ तब उन्होंने उसके बच्चों को उतार उसका सिर और हथियार ले लिया और पलिश्तियों के देश के सब स्थानों में दूतों को इसलिए भेजा कि उनके देवाताओं और साधारण लोगों में यह शुभ समाचार देते जाएँ। १९ तब उन्होंने उसके हथियार अपने मन्दिर में रखे, और उसकी खोपड़ी को दागोन के मन्दिर में लटका दिया। २० जब गिलाद के याबेश के सब लोगों ने सुना कि पलिश्तियों ने शाऊल के साथ क्या-क्या किया है। २१ तब सब शूरवीर चले और शाऊल और उसके पुत्रों के शवों को उठाकर याबेश में ले आए, और उनकी हुइयों को याबेश में एक बांज वृक्ष के तले गाड़ दिया और सात दिन तक उपवास किया। २२ तब तरह शाऊल उस विवासधात के कारण मर गया, जो उसने यहोवा से किया था; क्योंकि उसने यहोवा का वचन टाल दिया था, फिर उसने भूत-सिद्धि करनेवाली से पृछकर सम्मति ली थी। २३ उसने यहोवा से न पृछा था, इसलिए यहोवा ने उसे मारकर राज्य को यित्री के पुत्र दाऊद को दे दिया।

१३ तब सब इस्माएली दाऊद के पास हेब्रोन में इकट्ठे होकर कहने लगे, “सुन, हम लोग और तु एक ही हुई और माँस है। १४ पिछले दिनों में जब शाऊल राजा था, तब भी इस्माएलियों का अगुआ तही था, और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे से कहा, ‘मेरी प्रजा इश्माएल का चरवाहा, और मेरी प्रजा इश्माएल का प्रधान, तही होगा।’” १५ इसलिए सब इस्माएली पुरिये हेब्रोन में राजा के पास आए, और दाऊद ने उनके साथ हेब्रोन में यहोवा के सामने वाचा बांधी; और उन्होंने यहोवा के वचन के अनुसार, जो उसने शमैल से कहा था, इश्माएल का राजा होने के लिये दाऊद का अधिषेक किया। १६ तब सब इस्माएलियों समेत दाऊद यस्शलेम गया, जो यबूस भी कहलाता था, और वहाँ यबूसी नामक उस देश के निवासी रहते थे। १७ तब यबूस के निवासियों ने दाऊद से कहा, “तू यहाँ आने नहीं पाएगा।” तो भी दाऊद ने सिद्धोन नामक गढ़ को ले लिया, वही दाऊदपुर भी कहलाता है। १८ दाऊद ने कहा, “जो कोई यबूसियों को सबसे पहले मरोगा, वह मुख्य सेनापति होगा,” तब स्वयं हाह का पुत्र योआब सबसे पहले चढ़ गया, और सेनापति बन गया। १९ तब दाऊद उस गढ़ में रहने लगा, इसलिए उसका नाम दाऊदपुर पड़ा। २० और उसने नगर के चारों ओर, अर्थात् मिल्लों से लेकर चारों ओर शहरपनाह बनवाई,

और योआब ने शेष नगर के खण्डहरों को फिर बसाया। ९ और दाऊद की प्रतिष्ठा अधिक बढ़ती गई और सेनाओं का यहोवा उसके संग था। १० यहोवा ने इमाएल के विषय जो चरन कहा था, उसके अनुसार दाऊद के जिन शूर्वीरों ने सब इमाएलियों समेत उसके राज्य में उसके पक्ष में होकर, उसे राजा बनाने को जोर दिया, उनमें से मुख्य पुस्त्र थे हैं। ११ दाऊद के शूर्वीरों की नामावती यह है, अर्थात् एक हक्मोनी का पुत्र याशोबाम जो तीसों में मुख्य था, उसने तीन सौ पुस्त्रों पर भाला चलाकर, उन्हें एक ही समय में मार डाला। १२ उसके बाद अहोही दोदो का पुत्र एलीआजर जो तीनों महान वीरों में से एक था। १३ वह प्रसदमीमां में जहाँ जै का एक खेत था, दाऊद के संग रहा जब पलिशिती वहाँ युद्ध करने को इकट्ठे हुए थे, और लोग पलिशितियों के सामने से भाग गए। १४ तब उन्होंने उस खेत के बीच में खड़े होकर उसकी रक्षा की, और पलिशितियों को मारा, और यहोवा ने उनका बड़ा उड़ार किया। १५ तीसों मुख्य पुस्त्रों में से तीन दाऊद के पास चढ़ान को, अर्थात् अदुल्लाम नामक गुफा में गए, और पलिशितियों की छावनी रपाईं नामक तराई में पड़ी हुई थी। १६ उस समय दाऊद गढ़ में था, और उस समय पलिशितियों की एक चौकी बैतलहम में थी। १७ तब दाऊद ने बड़ी अभिलाषा के साथ कहा, “कौन मुझे बैतलहम के फाटक के पास के कुँए का पानी पिलाएगा?” १८ तब वे तीनों जन पलिशितियों की छावनी पर टृट पड़े और बैतलहम के फाटक के कुँए से पानी भरकर दाऊद के पास ले आए; परन्तु दाऊद ने पीने से इन्कार किया और यहोवा के सामने अर्थ करके उण्डेला: १९ और उसने कहा, “मेरा परमेश्वर मुझसे ऐसा करना दूर रखे। क्या मैं इन मरुष्यों का लह पीकँ जिन्होंने अपने प्राणों पर खेला है? ये तो अपने प्राण पर खेलकर उसे ले आए हैं” इसलिए उसने वह पानी पीने से इन्कार किया। इन तीन वीरों ने ये ही काम किए। २० अबीशी जो योआब का भाई था, वह तीनों में मुख्य था। उसने अपना भाला चलाकर तीन सौ को मार डाला और तीनों में नामी हो गया। २१ दूसरी श्रेणी के तीनों में वह अधिक प्रतिष्ठित था, और उक्ता प्रधान हो गया, परन्तु मुख्य तीनों के पद को न पहुँचा २२ यहोयादा का पुत्र बनायाह था, जो कबसेल के एक वीर का पुत्र था, जिसने बड़े-बड़े काम किए थे, उन्हें सिंह समान दो मोआवियों को मार डाला, और हिम्रतु में उसने एक गड़े में उत्तर के एक सिंह को मार डाला। २३ फिर उसने एक डील-डौलतवाले अर्थात् पाँच हाथ लम्बे मिस्री पुस्त्र को मार डाला, वह मिस्री हाथ में जुलाहों का ढेका-सा एक भाला लिए हुए था, परन्तु बनायाह एक लाटी ही लिए हुए उसके पास गया, और मिस्री के हाथ से भाले को छीनकर उसि के भाले से उसे घाट किया। २४ ऐसे-ऐसे काम करके यहोयादा का पुत्र बनायाह उन तीनों वीरों में नामी हो गया। २५ वह तो तीसों से अधिक प्रतिष्ठित था, परन्तु मुख्य तीनों के पद को न पहुँचा। उसको दाऊद ने अपने अंगरक्षकों का प्रधान नियुक्त किया। २६ फिर दलों के वीर ये थे, अर्थात् योआब का भाई असाहेल, बैतलहमी दोदो का पुत्र एल्हनान, २७ हरारी शम्मोत, पलोनी हेलेस, २८ तकोई इक्केश का पुत्र ईरा, अनातोती अबीएजर, २९ सिल्बैकै हशाईं, अहोही ईलै, ३० महरै नतोपाईं, एक और नतोपाईं बानाह का पुत्र हेलेद, ३१ बिन्यामीनियों के गिबा नगरवासी रिबि का पुत्र इतै, पिरातोनी बनायाह, ३२ गाश के नालों के पास रहनेवाला हैर, अराबावासी अबीएल, ३३ बहरीमी अज्मावेत, शालबोनी एल्यहबा, ३४ गीजोई हाशेम के पुत्र, फिर हरारी शारे का पुत्र योनातान, ३५ हरारी साकार का पुत्र अहीआम, ऊर का पुत्र एलीपाल, ३६ मकराई हेपेर, पलोनी अहियाह, ३७ कर्मेली हेसो, एज्वै का पुत्र नौर, ३८ नातान का भाई योएल, हग्री का पुत्र मिभार, ३९ अम्मोनी सेलेक, बेरोती नौरै जो सस्याह के पुत्र योआब का हथियार ढेनेवाला था, ४० थेतेरी ईरा और गोरेब, ४१ हिन्ती ऊरियाह, अहलै का पुत्र जाबाद, ४२ तीस पुस्त्रों

समेत स्क्वेनी शीजा का पुत्र अदीना जो स्क्वेनियों का मुखिया था, ४३ माका का पुत्र हानान, मेतेनी योशापात, ४४ अशतारोती उज्जियाह, अरोएरी होताम के पुत्र शामा और यीएल, ४५ शिप्री का पुत्र यदीएल और उसका भाई तीसी, योहा, ४६ महवीमी एलीएल, एलनाम के पुत्र यरीबि और योशव्याह, ४७ मोआबी यित्मा, एलीएल, ओबेद और मसोबाई यासीएल।

१२ जब दाऊद सिक्कलग में कीश के पुत्र शाऊल के डर के मारे छिपा
रहता था, तब ये उसके पास वहाँ आए, और ये उन वीरों में से थे जो युद्ध में उसके सहायक थे। १ ये धनधरी थे, जो दाएँ-बाएँ, दोनों हाथों से गोफन के पत्थर और धनुष के तीर चला सकते थे; और ये शाऊल के भाइयों में से बिन्यामीनी थे, २ मुख्य तो अहीएजर और दूसरा योआश था जो गिबावासी शमामा का पुत्र था; फिर अज्मावेत के पुत्र यजीएल और पेलेत, फिर बराका और अनातोती येह, ४ और गिबोनी यिशमायाह जो तीसों में से एक वीर और उनके ऊपर भी था; फिर यिर्मायाह, यहजीएल, योहानान, गदेरावासी योजाबाद, ५ एलजै, यरीमोत, बाल्याह, शेरमायाह, हास्पी शपत्याह, ६ एल्काना, यिशियाह, अजेरेल, योएजर, याशोबाम, जो सब कोरहवंशी थे, ७ और गदोवासी योरोहाम के पुत्र योएला और जबघाह। ८ फिर जब दाऊद जंगल के गढ़ में रहता था, तब ये गादी जो शूर्वीर थे, और युद्ध विघा सीखे हुए और ढाल और भाला काम में लानेवाले थे, और उनके मुँह सिंह के से और वे पहाड़ी मुग के समान वेंग से डैनेवाले थे, ये और गादियों से अलग होकर उसके पास आए, ९ अर्थात् मुख्य तो एजर, दूसरा ओबघाह, तीसरा एलीआब, १० चौथा मिश्मन्ना, पाँचवाँ यिर्मायाह, ११ छठा अतै, सातवाँ एलीएल, १२ आठवाँ योहानान, नौवाँ एलजाबाद, १३ दसवाँ यिर्मायाह और ग्यारहवाँ मकबनै था, १४ ये गादी मुख्य योद्धा थे, उनमें से जो सबसे छोटा था वह तो एक सौ के ऊपर, और जो सबसे बड़ा था, वह हजार के ऊपर था। १५ ये ही वे हैं, जो पहले महीने में जब यरदन नदी सब किनारों के ऊपर-ऊपर बहती थी, तब उसके पार उत्तरे; और पूर्व और पश्चिम दोनों ओर के सब तराई के रहनेवालों को भगा दिया। १६ कई एक बिन्यामीनी और यहदी भी दाऊद के पास गढ़ में आए। १७ उनसे मिलने को दाऊद निकला और उनसे कहा, “यदि तुम मेरे पास मित्राभाव से मेरी सहायता करने को आए हो, तब तो मेरा मन तुम से लगा रहेगा; परन्तु जो तुम मुझे धोखा देकर मेरे शत्रुओं के हाथ पकड़वाने आए हो, तो हमारे पितरों का परमेश्वर इस पर दृष्टि करके डॉटे, क्योंकि मेरे हाथ से कोई उपद्रव नहीं हुआ।” १८ तब आत्मा अग्राही में समाया, जो तीसों वीरों में मुख्य था, और उसने कहा, “हे दाऊद! हम तेरे हैं; हे यिशै के पुत्र! हम तेरी ओर के हैं, तेरा कुशल ही कुशल हो और तेरे सहायतों का कुशल हो, क्योंकि तेरा परमेश्वर तेरी सहायता किया करता है।” इसलिए दाऊद ने उनको रख लिया, और अपने दल के मुखिए ठराहा दिए। १९ फिर कुछ मनश्शेई भी उस समय दाऊद के पास भाग आए, जब वह पलिशितियों के साथ होकर शाऊल से लड़ने को गया, परन्तु वह उसकी कुछ सहायता न कर सका, क्योंकि पलिशितियों के सरदारों ने समाप्ति लेने पर यह कहकर उसे विदा किया, “वह हमारे सिर कटवाकर अपने स्वामी शाऊल से फिर मिल जाएगा।” २० जब वह सिक्कलग को जा रहा था, तब ये मनश्शेई उसके पास भाग आए; अर्थात् अदनह, योजाबाद, यटीएल, मीकाएल, योजाबाद, एलीहै और सिल्लतै जो मनश्शे के हजारों के मुखिए थे। २१ इहोंने लूटेरों के दल के बिस्तु दाऊद की सहायता की, क्योंकि ये सब शूर्वीर थे, और सेना के प्रधान भी बन गए। २२ वरन् प्रतिदिन लोग दाऊद की सहायता करने को उसके पास आते रहे, यहाँ तक कि परमेश्वर की सेना के समान एक बड़ी सेना बन गई। २३ फिर लोग लड़ने के लिये हथियार बाँधे हुए हेब्रोन में दाऊद के पास इसलिए आए कि

यहोवा के वचन के अनुसार शाऊल का राज्य उसके हाथ में कर दें: उनके मुखियों की गिनती यह है। २४ यहदा के ढाल और भाला लिए हुए छ: हजार आठ सौ हथियार-बन्द लड़ने को आए। २५ शिमोनी सात हजार एक सौ तैयार शूर्वीर लड़ने को आए। २६ लेवीय चार हजार छ: सौ आए। २७ और हास्न के घराने का प्रधान यहोवादा था, और उसके साथ तीन हजार सात सौ आए। २८ और सादोक नामक एक जवान वीर भी आया, और उसके पिता के घराने के बाइंस प्रधान आए। २९ और शाऊल के भाई बिन्यामीनियों में से तीन हजार आए, क्योंकि उस समय तक आधे बिन्यामीनियों से अधिक शाऊल के घराने का पक्ष करते रहे। ३० फिर ऐश्मियों में से बड़े वीर और अपने-अपने पितों के घरानों में नामी पुष्प बीस हजार आठ सौ आए। ३१ मनश्शे के आधे गोत्र में से दाऊद को राजा बनाने के लिये अठार हजार आए, जिनके नाम बताए गए थे। ३२ इस्साकारियों में से जो समय को पहचानते थे, कि इस्माइल को क्या करना उचित है, उनके प्रधान दो सौ थे; और उनके सब भाई उनकी आज्ञा में रहते थे। ३३ फिर जबलून में से युद्ध के सब प्रकार के हथियार लिए हुए लड़ने को पाँति बाँधनेवाले योद्धा पचास हजार आए, वे पाँति बाँधनेवाले थे और चंचल न थे। ३४ फिर नसाली में से प्रधान तो एक हजार, और उनके संग ढाल और भाला लिए सैनीस हजार आए। ३५ दानियों में से लड़ने के लिये पाँति बाँधनेवाले अश्रीस हजार छ: सौ आए। ३६ और अशेर में से लड़ने को पाँति बाँधनेवाले चालीस हजार योद्धा आए। ३७ और यरदन पार रहनेवाले रुबेनी, गादी और मनश्शे के आधे गोत्रियों में से युद्ध के सब प्रकार के हथियार लिए हुए एक लाख बीस हजार आए। ३८ ये सब युद्ध के लिये पाँति बाँधनेवाले दाऊद को सारे इस्माइल का राजा बनाने के लिये हेड्रोन में सच्चे मन से आए, और अन्य सब इस्माइली भी दाऊद को राजा बनाने के लिये सहमत थे। ३९ वे वहाँ तीन दिन दाऊद के संग खाते पीते रहे, क्योंकि उनके भाइयों ने उनके लिये तैयारी की थी, ४० और जो उनके निकट बरन इस्साकार, जबलून और नसाली तक रहते थे, वे भी गढ़ों, ऊँटों, खच्चरों और बैरों पर मैदा, अंजीरों और किशमिश की टिकियां, दाखमधु और तेल आदि भोजनवस्तु लादकर लाए, और बैल और भेड़-बकरियां बहुतायत से लाए; क्योंकि इस्माइल में आनन्द मनाया जा रहा था।

१३ दाऊद ने सहस्रपतियों, शतपतियों और सब प्रधानों से सम्मति ली। १ तब दाऊद ने इस्माइल की सारी मण्डली से कहा, “यदि यह तुम को अच्छा लगे और हमारे परमेश्वर की इच्छा हो, तो इस्माइल के सब देशों में जो हमारे भाई रह गए हैं और उनके साथ जो याजक और लेवीय अपने-अपने चराईवाले नगरों में रहते हैं, उनके पास भी यह सन्देश भेजें कि हमारे पास इकट्ठा हो जाओ, २ और हम अपने परमेश्वर के सन्दूक को अपने यहाँ ले आएं; क्योंकि शाऊल के दिनों में हम उसके समीप नहीं जाते थे।” ३ और समस्त मण्डली ने कहा, कि वे ऐसा ही करेंगे, क्योंकि यह बात उन सब लोगों की दृष्टि में उचित मालूम हुई। ४ तब दाऊद ने मिस के शहीरों से ले हमारा की घाटी तक के सब इस्माइलियों को इसलिए इकट्ठा किया, कि परमेश्वर के सन्दूक को किर्यत्यारीम से ले आए। ५ तब दाऊद सब इस्माइलियों को संग लेकर बाला को गया, जो किर्यत्यारीम भी कहलाता था और यहदा के भाग में था, कि परमेश्वर यहोवा का सन्दूक वहाँ से ले आए; वह तो कस्बों पर विराजेवाला है, और उसका नाम भी यही लिया जाता है। ६ तब उन्होंने परमेश्वर का सन्दूक एक नई गाड़ी पर चढ़ाकर, अबीनादाब के घर से निकाला, और उज्जा और अब्बो उस गाड़ी को हाँकने लगे। ७ दाऊद और सारे इस्माइली परमेश्वर के सामने तन मन से गीत गाते और वीणा, सारंगी, डफ, झाँझ और तुरहियां बजाते

थे। ८ जब वे किदोन के खलिहान तक आए, तब उज्जा ने अपना हाथ सन्दूक थामने को बढ़ाया, क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई थी। ९ तब यहोवा का कोप उज्जा पर भड़क उठा; और उसने उसको मारा क्योंकि उसने सन्दूक पर हाथ लगाया था; वह वहीं परमेश्वर के सामने मर गया। १० तब दाऊद अप्रसन्न हुआ, इसलिए कि यहोवा उज्जा पर टूट पड़ा था; और उसने उस स्थान का नाम पैरेसुज्जा रखा, यह नाम आज तक बना है। ११ उस दिन दाऊद परमेश्वर से डरकर कहने लगा, “मैं परमेश्वर के सन्दूक को अपने यहाँ कैसे ले आऊँ?” १२ तब दाऊद सन्दूक को अपने यहाँ दाऊदपुर में न लाया, परन्तु अबेदेदोम नामक गति के यहाँ ले गया। १३ और परमेश्वर का सन्दूक अबेदेदोम के यहाँ उसके घराने के पास तीन महीने तक रहा, और यहोवा ने अबेदेदोम के घराने पर और जो कुछ उसका था उस पर भी आशीष दी।

१४ सोरे के राजा हीराम ने दाऊद के पास दृत भेजे, और उसका भवन बनाने को देवदार की लकड़ी और राजमिश्नी और बढ़ी भेजे। १५ तब दाऊद को निश्चय हो गया कि यहोवा ने उसे इस्माइल का राजा कक्षे के स्थिर किया है, क्योंकि उसकी प्रजा इस्माइल के निमित उसका राज्य अत्यन्त बढ़ गया था। १६ यस्शलेम में दाऊद ने और लियों से विवाह कर लिया, और उसने और बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं। १७ उसकी जो सन्तान यस्शलेम में उत्पन्न हुई, उनके नाम ये हैं: शम्मू, शोबाब, नातान, सुलैमान; १८ यिभार, एलीशी, एलपेलेत; १९ नोगह, नेपें, यापी, एलीशामा, २० बेल्यादा और एलीपिलेत। २१ जब पलिशियों ने सुना कि पेरे इस्माइल का राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक हुआ, तब सब पलिशियों ने दाऊद की खोज में चढ़ाई की; यह सुनकर दाऊद उनका सामना करने को निकल गया। २२ पलिशी आए और रपाईम नामक तराई में धावा बोला। २३ तब दाऊद ने परमेश्वर से पूछा, “क्या मैं पलिशियों पर चढ़ाई करूँ? और क्या तु उन्हें मैं हाथ में कर देया?” यहोवा ने उससे कहा, “चढ़ाई कर, क्योंकि मैं उन्हें तो हाथ में कर दूँगा।” २४ इसलिए जब वे बालपरासीम को आए, तब दाऊद ने उनको वहीं मार लिया; तब दाऊद ने कहा, “परमेश्वर मेरे द्वारा मेरे शत्रुओं पर जल की धारा के समान टूट पड़ा है।” इस कारण उस स्थान का नाम बालपरासीम रखा गया। २५ वहाँ वे अपने देवताओं को छोड़ गए, और दाऊद की आज्ञा से वे आग लगाकर फूँक दिए गए। २६ फिर टूसी बार पलिशियों ने उसी तराई में धावा बोला। २७ तब दाऊद ने परमेश्वर से फिर पूछा, और परमेश्वर ने उससे कहा, “उनका पीछा मत कर; उनसे मुड़कर तत के वृक्षों के सामने से उन पर छापा मार।” २८ और जब तत के वृक्षों की फुनियों में से सेना के चलने की सी आहट तुके सुन पड़े, तब यह जानकर युद्ध करने को निकल जाना कि परमेश्वर पलिशियों की सेना को मारने के लिये तेरे आगे जा रहा है।” २९ परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार दाऊद ने किया, और इस्माइलियों ने पलिशियों की सेना को गिरोन से लेकर गेजेर तक मार लिया। ३० तब दाऊद की कीर्ति सब देशों में फैल गई, और यहोवा ने सब जातियों के मन में उसका भय भर दिया।

१५ तब दाऊद ने दाऊदपुर में भवन बनवाए, और परमेश्वर के सन्दूक के लिये एक स्थान तैयार करके एक तम्बू खड़ा किया। १६ तब दाऊद ने कहा, “लेवियों को छोड़ और किसी को परमेश्वर का सन्दूक उठाना नहीं चाहिये, क्योंकि यहोवा ने उनको इसी लिए चुना है कि वे परमेश्वर का सन्दूक उठाएँ। और उसकी सेवा टहल सदा किया करें।” १७ तब दाऊद ने सब इस्माइलियों को यस्शलेम में इसलिए इकट्ठा किया कि यहोवा का सन्दूक उस स्थान पर पहुँचाएँ, जिसे उसने उसके लिये तैयार किया था। १८ इसलिए दाऊद ने हास्न की सन्तानों और लेवियों को इकट्ठा किया: १९ अर्थात् कहाँतियों में से

ऊरीएल नामक प्रधान को और उसके एक सौ बीस भाइयों को; ६ मरारियों में से असायाह नामक प्रधान को और उसके दो सौ बीस भाइयों को; ७ गेर्शीमियों में से योएल नामक प्रधान को और उसके एक सौ तीस भाइयों को; ८ एलीसापनियों में से शमायाह नामक प्रधान को और उसके दो सौ भाइयों को; ९ हेब्रेनियों में से एलीएल नामक प्रधान को और उसके असरी भाइयों को; १० और उज्जरीएलियों में से अम्मीनादाब नामक प्रधान को और उसके एक सौ बारह भाइयों को। ११ तब दाऊद ने सादोक और एव्यातार नामक याजकों को, और ऊरीएल, असायाह, योएल, शमायाह, एलीएल और अम्मीनादाब नामक लेवियों को बुलवाकर उसे कहा, १२ “तुम तो लेवीय पितरों के घरानों में मुख्य पुस्त हो; इसलिए अपने भाइयों समेत अपने-अपने को पवित्र करो, कि तुम इसाएल के परमेश्वर यहोवा का सन्दूक उस स्थान पर पहुँचा सको जिसको मैंने उसके लिये तैयार किया है।” १३ क्योंकि पिछली बार तुम ने उसको न उठाया था इस कारण हमारा परमेश्वर यहोवा हम पर टूट पड़ा, क्योंकि हम उसकी खोज में नियम के अनुसार न लगे थे।” १४ तब याजकों और लेवियों ने अपने-अपने को पवित्र किया, कि इसाएल के परमेश्वर यहोवा का सन्दूक ले जा सकें। १५ तब उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा ने यहोवा का वचन सुनकर दी थी, लेवियों ने सन्दूक को ढंडों के बल अपने कंधों पर उठा लिया। १६ तब दाऊद ने प्रधान लेवियों को आज्ञा दी कि अपने भाई गवैयों को बाजे अर्थात् सारीं, वीणा और झाँझ देकर बजाने और आनन्द के साथ ऊँचे स्वर से गाने के लिये नियुक्त करें। १७ तब लेवियों ने योएल के पुत्र हेमान को, और उसके भाइयों में से बेरेक्याह के पुत्र आसाप को, और अपने भाई मरारियों में से कृशायाह के पुत्र एतान को ठहराया। १८ उनके साथ उन्होंने दूसरे पट के अपने भाइयों को अर्थात् जकर्याह, बेन, याजीएल, शमीरामोत, यहीएल, उन्नी, एर्लीआब, बनायाह, मासेयाह, मतित्याह, एलीपलेह, मिकनेयाह, और ओबेदेदोम और यीएल को जो द्वारपाल थे ठहराया। १९ अतः हेमान, आसाप और एतान नाम के गवैये तो पीतल की झाँझ बजा-बजाकर राग चलाने को; २० और जकर्याह, अजीएल, शमीरामोत, यहीएल, उन्नी, एर्लीआब, मासेयाह, और बनायाह, अलामोत नामक राग में सारंगी बजाने को; २१ और मतित्याह, एलीपलेह, मिकनेयाह, ओबेदेदोम, यीएल, और अजज्याह वीणा रुख्ज में छेड़ने को ठहराए गए। २२ और राग उठाने का अधिकारी कनन्याह नामक लेवियों का प्रधान था, वह राग उठाने के विषय शिक्षा देता था, क्योंकि वह निपुण था। २३ और बेरेक्याह और एल्काना सन्दूक के द्वारपाल थे। २४ और शबन्नाह, योशापात, नतनेल, अमासै, जकर्याह, बनायाह और एलीएजेर नामक याजक परमेश्वर के सन्दूक के आगे-आगे तुरहियां बजाते हुए चले और ओबेदेदोम और यहिय्याह उसके द्वारपाल थे; २५ दाऊद और इसाएलियों के पुरानिये और सहभूति सब मिलकर यहोवा की बाचा का सन्दूक ओबेदेदोम के घर से आनन्द के साथ ले आने के लिए गए। २६ जब परमेश्वर ने लेवियों की सहायता की जो यहोवा की बाचा का सन्दूक उठानेवाले थे, तब उन्होंने सात बैल और सात मेंटे बलि किए। २७ दाऊद, और यहोवा की बाचा का सन्दूक उठानेवाले सब लेवीय और गणेवाले और गणेवालों के साथ राग उठानेवाले का प्रधान कनन्याह, ये सब तो सन के काङडे के बागे पहने थे, और दाऊद सन के कपड़े का एपोट पहने थे। २८ इस प्रकार सब इसाएली यहोवा की बाचा के सन्दूक को जयजयकार करते, और नरसिंगे, तुरहियां और झाँझ बजाते और सारंगियां और वीणा बजाते हुए ले चले। २९ जब यहोवा की बाचा का सन्दूक दाऊदपुर में पहुँचा तब शाऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से झाँककर दाऊद राजा को कूदते और खेलते हुए देखा, और उसे मन ही मन तच्छ जाना।

१६ तब परमेश्वर का सन्दूक ले आकर उस तम्बू में रखा गया जो दाऊद ने उसके लिये खड़ा कराया था; और परमेश्वर के सामने होमबलि और मेलबलि चढ़ाए गए। १७ जब दाऊद होमबलि और मेलबलि चढ़ा चुका, तब उसने यहोवा के नाम से प्रजा को आशीर्वाद दिया। १८ और उसने क्या पुस्त, क्या झीं, सब इसाएलियों को एक-एक रोटी और एक-एक टुकड़ा माँस और किशमिश की एक-एक टिकिया बैंटवा दी। १९ तब उसने कई लेवियों को इसलिए ठहरा दिया, कि यहोवा के सन्दूक के सामने सेवा ठहल किया करें, और इसाएल के परमेश्वर यहोवा की चर्चा और उसका धन्यवाद और स्तुति किया करें। २० उनका मुखिया तो आसाप था, और उसके नीचे जकर्या हथा, फिर यीएल, शमीरामोत, यहीएल, मतित्याह, एर्लीआब, बनायाह, ओबेदेदोम और यीएल थे; ये तो सारंगियाँ और वीणाएँ लिये हुए थे, और आसाप झाँझ पर राग बजाता था। २१ बनायाह और यहजीएल नामक याजक परमेश्वर की बाचा के सन्दूक के सामने नित्य तुरहियां बजाने के लिए नियुक्त किए गए। २२ तब उरी दिन दाऊद ने यहोवा का धन्यवाद करने का काम आसाप और उसके भाइयों को सौंप दिया। २३ यहोवा का धन्यवाद करो, उससे प्रार्थना करो; देश-देश में उसके कामों का प्रचार करो। २४ उसका गीत गाओ, उसका भजन करो, उसके सब आश्वर्यकर्मों का ध्यान करो। २५ उसके पवित्र नाम पर घमण्ड करो; यहोवा के खोजियों का हादय आनन्दित हो। २६ यहोवा और उसकी सामर्थ्य की खोज करो; उसके दर्शन के लिए लगातार खोज करो। २७ उसके किए हुए आश्वर्यकर्म, उसके चमत्कार और न्यायवचन स्मरण करो। २८ हे उसके दास इसाएल के बंश, हे याकूब की सन्तान तुम जो उसके चुने हुए हो! २९ वही हमारा परमेश्वर यहोवा है, उसके न्याय के काम पृथ्वी भर में होते हैं। ३० उसकी बाचा को सदा स्मरण रखो, यह वही बचन है जो उसने हजार पीढ़ियों के लिये ठहरा दिया। ३१ वह बाचा उसने अद्वाहम के साथ बाँधी और उरी के विषय उन्हे इसहाक से शपथ खाई, ३२ और उरी को उसने याकूब के लिये विधि करके और इसाएल के लिये सदा की बाचा बाँधकर यह कहकर दृढ़ किया, ३३ “मैं कनान देश तुझी को ढूँगा, वह बॉट में तुम्हारा निज भाग होगा।” ३४ उस समय तो तुम गिनती में थोड़े थे, बल्कि बहुत ही थोड़े और उस देश में फिरते तो रहे, ३५ परन्तु उसने किसी मनुष्य को उन पर अंधेर करने न दिया; और वह राजाओं को उनके निपित यह धमकी देता था, ३६ “मेरे अभिषिक्तों को मठ छुओ, और न मेरे नवियों की हानि करो।” ३७ हे समस्त पृथ्वी के लोगों यहोवा का गीत गाओ। प्रतिदिन उसके किए हुए उद्घार का शुभ समाचार सुनाते रहो। ३८ अन्यजातियों में उसकी महिमा का, और देश-देश के लोगों में उसके आश्वर्यकर्मों का वर्णन करो। ३९ क्योंकि यहोवा महान और स्तुति के आति योग्य है, वह तो सब देवताओं से अधिक भययोग्य है। ४० क्योंकि देश-देश के सब देवता मूर्तियाँ ही हैं; परन्तु यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया है। ४१ उसके चरों ओर वैभव और ऐश्वर्य है; उसके स्थान में सामर्थ्य और आनन्द है। ४२ हे देश-देश के कुलों, यहोवा का गुणानवाद करो, यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को मानो। ४३ यहोवा के नाम की महिमा ऐसी मानो जो उसके नाम के योग्य है। भेट लेकर उसके सम्मुख आओ, पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो। ४४ हे सारी पृथ्वी के लोगों उसके सामने थरथराओ। जगत ऐसा स्थिर है, कि वह टलने का नहीं। ४५ आकाश आनन्द करे और पृथ्वी मग्न हो, और जाति-जाति में लोग कहें, “यहोवा राजा हाँ है।” ४६ समुद्र और उसमें की सब वस्तुएँ गरज उठें, मैदान और जो कुछ उसमें हैं सो प्रफुल्लित हों। ४७ उरी समय वन के बृक्ष यहोवा के सामने जयजयकार करें, क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है।

३४ यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी कस्ता सदा की है। ३५ और यह कहो, “हे हमारे उद्गार करनेवाले परमेश्वर हमारा उद्गार कर, और हमको इक्षु करके अन्यजातियों से छुड़ा, कि हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करें, और तेरी स्तुति करते हुए तेरे विषय बढ़ाई करें। ३६ अनादिकाल से अनन्तकाल तक इसाएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है।” तब सब प्रजा ने “आरीन” कहा: और यहोवा की स्तुति की। ३७ तब उसने वहाँ अर्थात् यहोवा की बाचा के सन्दक के सामने आसाप और उसके भाइयों को छोड़ दिया, कि प्रतिदिन के प्रयोजन के अनुसार वे सन्दक के सामने नित्य सेवा ठहल किया करें, ३८ और अडसठ भाइयों समेत ओबेदोम को, और द्वारपालों के लिये यदूतन के पुत्र ओबेदोम और होसा को छोड़ दिया। ३९ फिर उसने सादोक याजक और उसके भाई याजकों को यहोवा के निवास के सामने, जो गिबोन के ऊँचे स्थान में था, ठहरा दिया, ४० कि वे नित्य सवीर और सौंझ को होम्बलि की बेटी पर यहोवा को होम्बलि चाढ़ाया करें, और उन सब के अनुसार किया करें, जो यहोवा की व्यवस्था में लिखा है, जिसे उसने इसाएल को दिया था। ४१ और उनके संग उसने हेमान और यदूतन और द्वारपालों को भी जो नाम लेकर चुने गए थे ठहरा दिया, कि यहोवा की सदा की कस्ता के कारण उसका धन्यवाद करें। ४२ और उनके संग उसने हेमान और यदूतन को बजानेवालों के लिये तुहियाँ और ज़ाँझें और परमेश्वर के गीत गाने के लिये बाजे दिए, और यदूतन के बेटों को फाटक की रखवाती करने को ठहरा दिया। ४३ तब प्रजा के सब लोग अपने-अपने घर चले गए, और दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद देने लौट गया।

१७ जब दाऊद अपने भवन में रहने लगा, तब दाऊद ने नातान नवी से कहा, “देख, मैं तो देवदार के बने हुए घर में रहता हूँ, परन्तु यहोवा की बाचा का सन्दक तम्बू में रहता है।” २ नातान ने दाऊद से कहा, “जो कुछ तेरे मन में हो उसे कर, क्योंकि परमेश्वर तेरे संग है।” ३ उसी दिन-रात को परमेश्वर का यह वचन नातान के पास पहुँचा, “जाकर मैं दास दाऊद से कह, ४ ‘यहोवा यह कहता है: मेरे निवास के लिये तु घर बनवाने न पाएगा।’ ५ क्योंकि जिस दिन से मैं इसाएलियों को मिस्र से ले आया, आज के दिन तक मैं कभी घर में नहीं रहा, परन्तु एक तम्बू से दूसरे तम्बू को और एक निवास को आया-जाया करता हूँ। ६ जहाँ-जहाँ मैंने सब इसाएलियों के बीच आना-जाना किया, क्या मैंने इसाएल के न्यायियों में से जिनको मैंने अपनी प्रजा की चरवाही करने को ठहराया था, किसी से ऐसी बात कभी कही कि तुम लोगों ने मैंने लिये देवदार का घर क्यों नहीं बनवाया? ७ अतः अब तू मेरे दास दाऊद से ऐसा कह, कि सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि मैंने तो तुझको भेड़शाला से और भेड़-बकरियों के पीछे-पीछे फिरने से इस मनसा से बुला लिया, कि तू मेरी प्रजा इसाएल के प्रधान हो जाए; ८ और जहाँ कहीं तू आया और गया, वहाँ मैं तेरे संग रहा, और तेरे सब शत्रुओं को तेरे सामने से नष्ट किया है। अब मैं तेरे नाम को पृथक्की के बड़े-बड़े लोगों के नामों के समान बड़ा कर दूँगा। ९ और मैं अपनी प्रजा इसाएल के लिये एक स्थान ठहराऊँगा, और उसको स्थिर करूँगा कि वह अपने ही स्थान में बसी रहे और कभी चलायामान न हो; और कुटिल लोग उनको नाश न करने पाएँगे, जैसे कि पहले दिनों में करते थे, १० वरन् उस समय भी जब मैं अपनी प्रजा इसाएल के ऊपर न्यायी ठहराता था; अतः मैं तेरे सब शत्रुओं को दबा दूँगा। फिर मैं तुझे यह भी बताता हूँ, कि यहोवा तेरा घर बनाए रखेगा। ११ जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी और तुझे अपने पितरों के संग जाना पड़ेगा, तब मैं तेरे बाद तेरे बंध को जो तेरे पुत्रों में से होगा, खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूँगा। १२ मेरे लिये एक घर

वही बनाएगा, और मैं उसकी राजगढ़ी को सदैव स्थिर रखूँगा। १३ मैं उसका पिता ठहरूँगा और वह मेरा पुत्र ठहरेगा; और जैसे मैंने अपनी कस्ता उस पर से जो तुझ से पहले था हटाई, वैसे मैं उस पर से न हटाऊँगा, १४ वरन् मैं उसको अपने घर और अपने राज्य में सदैव स्थिर रखूँगा और उसकी राजगढ़ी सदैव अटल रहेगी।” १५ इन सब बातों और इस दर्शन के अनुसार नातान ने दाऊद को समझा दिया। १६ तब दाऊद राजा भीतर जाकर यहोवा के सम्मुख बैठा, और कहने लगा, “हे यहोवा परमेश्वर! मैं क्या हूँ? और मेरा घराना क्या है? कि तू मुझे यहाँ तक पहुँचाया है? १७ हे परमेश्वर! यह तेरी दृष्टि में छोटी सी बात हूँ, क्योंकि तूने अपने दास के घराने के विषय भविष्य के बहुत दिनों तक की चर्चा की है, और हे यहोवा परमेश्वर! तूने मुझे ऊँचे पद का मनुष्य सा जाना है। १८ जो महिमा तेरे दास पर दिखाई गई है, उसके विषय दाऊद तुझ से और क्या कह सकता है? तू तो अपने दास को जानता है। १९ हे यहोवा! तूने अपने दास के निमित्त और अपने मन के अनुसार यह बड़ा काम किया है, कि तेरा दास उसको जान ले। २० हे यहोवा! जो कुछ हमने अपने कानों से सुना है, उसके अनुसार तेरे तुल्य कोई नहीं, और न तुझे छोड़ और कोई परमेश्वर है। २१ फिर तेरी प्रजा इसाएल के भी तुल्य कौन है? वह तो पृथकी भर में एक ही जाति है, उसे परमेश्वर ने जाकर अपनी निज प्रजा करने को छुड़ाया, इसलिए कि तू बड़े और डरावने काम करके अपना नाम करे, और अपनी प्रजा के सामने से जो तूने मिस्र से छुड़ा ली थी, जाति-जाति के लोगों को निकाल दे। २२ क्योंकि तूने अपनी प्रजा इसाएल को अपनी सदा की प्रजा होने के लिये ठहराया, और हे यहोवा! तू आप उसका परमेश्वर ठहरा। २३ इसलिए, अब हे यहोवा, तूने जो वचन अपने दास के और उसके घराने के विषय दिया है, वह सदैव अटल रहे, और अपने वचन के अनुसार ही कर। २४ और तेरा नाम सदैव अटल रहे, और यह कहकर तेरी बड़ाई सदा की जाए, कि सेनाओं का यहोवा इसाएल का परमेश्वर है, वरन् वह इसाएल ही के लिये परमेश्वर है, और तेरे दास दाऊद का घराना तेरे सामने स्थिर रहे। २५ क्योंकि हे मेरे परमेश्वर, तूने यह कहकर अपने दास पर प्रगट किया है कि मैं तेरा घर बनाए रखूँगा, इस कारण तेरे दास को तेरे सम्मुख प्रार्थना करने का हियाव हआ है। २६ और अब हे यहोवा तू ही परमेश्वर है, और तूने अपने दास को यह भलाई करने का वचन दिया है; २७ और अब तूने प्रसन्न होकर, अपने दास के घराने पर ऐसी आशीष दी है, कि वह तेरे सम्मुख सदैव बना रहे, क्योंकि हे यहोवा, तू आशीष दे चुका है, इसलिए वह सदैव आशीषित बना रहे।”

१८ इसके बाद दाऊद ने पलिशियों को जीतकर अपने अधीन कर लिया, और गँवों समेत गत नगर को पलिशियों के हाथ से छीन लिया। १ फिर उसने मोआवियों को भी जीत लिया, और मोआवी दाऊद के अधीन होकर भेट लाने लगे। २ फिर जब सोबा का राजा हादादेजेर फरात महानद के पास अपना राज्य स्थिर करने को जा रहा था, तब दाऊद ने उसको हमात के पास जीत लिया। ३ दाऊद ने उससे एक हजार रथ, सात हजार सवार, और बीस हजार प्यादे हर लिए, और दाऊद ने सब रथवाले घोड़े बचा रखे। ४ जब दमिश्क के अरामी, सोबा के राजा हादादेजेर की सहायता करने को आए, तब दाऊद ने अरामियों में से बाईस हजार पुष्प मारे। ५ तब दाऊद ने दमिश्क के अराम में सिपाहियों की चौकियाँ बैठाईं, अतः अरामी दाऊद के अधीन होकर भेट ले आने लगे। और जहाँ-जहाँ दाऊद जाता, वहाँ-वहाँ यहोवा उसको जय दिलाता था। ६ और हादादेजेर के कर्मचारियों के पास सोने की जो ढालें थीं, उन्हें दाऊद लेकर यस्तलेम को आया। ७ और हादादेजेर के तिभत और कन नामक नगरों से दाऊद बहुत सा पीतल ले आया; और उसी से सुलैमान ने पीतल के

हौद और खम्भों और पीतल के पात्रों को बनवाया। ९ जब हमात के राजा तोऊ ने सुना कि दाऊद ने सोबा के राजा हदादेजेर की समस्त सेना को जीत लिया है, १० तब उसने हदोराम नामक अपने पुत्र को दाऊद राजा के पास उसका कुशल क्षेत्र मृच्छे और उसे बधाई देने को भेजा, इसलिए कि उसने हदादेजेर से लड़कर उसे जीत लिया था; (क्योंकि हदादेजेर तोऊ से लड़ा करता था) और हदोराम सोने चाँदी और पीतल के सब प्रकार के पात्र लिये हुए आया। ११ इनको दाऊद राजा ने यहोवा के लिये पवित्र करके रखा, और वैसा ही उस सोने- चाँदी से भी किया जिसे सब जातियों से, अर्थात् एदोमियों, मोआवियों, अम्मोनियों, पलिशियों, और अमालेकियों से प्रपत किया था। १२ फिर सस्याह के पुत्र अबीझी ने नमक की तराई में अठार हजार एदोमियों को मार लिया। १३ तब उसने एदोम में सिपाहियों की चौकीयाँ बैठाईं; और सब एदोमी दाऊद के अधीन हो गए। और दाऊद जहाँ-जहाँ जाता था वहाँ-वहाँ यहोवा उसको जय दिलाता था। १४ दाऊद समस्त इस्माइल पर राज्य करता था, और वह अपनी सब प्रजा के साथ न्याय और धार्मिकता के काम करता था। १५ प्रधान सेनापति सस्याह का पुत्र योआब था; इतिहास का लिखनेवाला अहीलदू का पुत्र यहोशापात था; १६ अहीलबू का पुत्र सादोक और एब्जातार का पुत्र अबीमिलेक प्रधान याजक थे, मंत्री शबाथा था; १७ करितियों और पलेतियों का प्रधान यहोयादा का पुत्र बनायाह था; और दाऊद के पुत्र राजा के पास मुखिये होकर रहते थे।

१९ इसके बाद अम्मोनियों का राजा नाहाश मर गया, और उसका पुत्र उसके स्थान पर राजा हुआ। २ तब दाऊद ने यह सोचा, “हानून के पिता नाहाश ने जो मुझ पर प्रीति दिखाई थी, इसलिए मैं भी उस पर प्रीति दिखाऊँगा।” तब दाऊद ने उसके पिता के विषय शान्ति देने के लिये दूत भेजे। और दाऊद के कर्मचारी अम्मोनियों के देश में हानून के पास उसे शान्ति देने को आए। ३ परन्तु अम्मोनियों के हाकिम हानून से कहने लगे, “दाऊद ने जो तेरे पास शान्ति देनेवाले भेजे हैं, वह क्या तेरी समझ में तेरे पिता का आदर करने की मनसा से भेजे है? क्या उसके कर्मचारी इसी मनसा से तेरे पास नहीं आए, कि ढूँढ़-ढूँढ़ करें और उनके नष्ट करें, और देश का भेद लें?” ४ इसलिए हानून ने दाऊद के कर्मचारियों को पकड़ा, और उनके बाल मुँछड़वाएं, और आधे बन्ध अर्थात् नितम्ब तक कटवाकर उनको जाने दिया। ५ तब कुछ लोगों ने जाकर दाऊद को बता दिया कि उन पुरुषों के साथ कैसा बर्ताव किया गया, अतः उसने लोगों को उनसे मिलने के लिये भेजा क्योंकि वे पुष्प बहुत लजिज्जत थे, और राजा ने कहा, “जब तक तुम्हारी दाढ़ियाँ बढ़ न जाएँ, तब तक यरीहों में ठहरे रहो, और बाद को लौट आना।” ६ जब अम्मोनियों ने देखा, कि हम दाऊद को घिनींने लाते हैं, तब हानून और अम्मोनियों ने एक हजार किक्कार चाँदी, अरम्भहैरम और अरम्माका और सोबा को भेजी, कि रथ और सवार किराये पर बुलाए। ७ सो उन्होंने बर्तीस हजार रथ, और माका के राजा और उसकी सेना को किराये पर बुलाया, और इन्होंने आकर मेदवा के सामने, अपने डेंडे खड़े किए। और अम्मोनी अपने-अपने नगर में से इकट्ठे होकर लड़ने को आए। ८ यह सुनकर दाऊद ने योआब और शर्वीरों की पूरी सेना को भेजा। ९ तब अम्मोनी निकले और नगर के फाटक के पास पाँति बँधाईं, और जो राजा आए थे, वे उसे अलग मैटान में थे। १० यह देखकर कि आगे-पीछे दोनों ओर हमारे विद्ध पाँति बँधी हैं, योआब ने सब बड़े-बड़े इस्माइली बीरों में से कुछ को छांटकर अरामियों के सामने उनकी पाँति बँधाईं, ११ और शेष लोगों को अपने भाईं अबीझी के हाथ सौंप दिया, और उन्होंने अम्मोनियों के सामने पाँति बँधी। १२ और उसने कहा, “यदि अरामी मुझ पर प्रबल होने लगे, तो तू मेरी सहायता करना; और यदि अम्मोनी तुझ पर प्रबल होने लगे, तो मैं तेरी सहायता करूँगा।

१३ तू हियाव बँध और हम सब अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगरों के निमित्पु सुसार्थ करें; और यहोवा जैसा उसको अच्छा लगे, वैसा ही करेगा।” १४ तब योआब और जो लोग उसके साथ थे, अरामियों से युद्ध करने को उनके सामने गए, और वे उसके सामने से भागे। १५ यह देखकर कि अरामी भाग गए हैं, अम्मोनी भी उसके भाई अबीझी के सामने से भागकर नगर के भीतर घुसे। तब योआब यस्शलेम को लौट आया। १६ फिर यह देखकर कि वे इसाएलियों से हार गए हैं, अरामियों ने दूर भेजकर फरात के पार के अरामियों को बुलवाया, और हदादेजेर के सेनापति शोपक को अपना प्रधान बनाया। १७ इसका समाचार पाकर दाऊद ने सब इस्माइलियों को इकट्ठा किया, और यहदन पर होकर उन पर चढ़ाई की ओर उनके विद्ध पाँति बँधाई, तब वे उससे लड़ने लगे। १८ परन्तु अरामी इस्माइलियों से भागे, और दाऊद ने उनमें से सात हजार रथियों और चालीस हजार प्यादों को मार डाला, और शोपक सेनापति को भी मार डाला। १९ यह देखकर कि वे इसाएलियों से हार गए हैं, हदादेजेर के कर्मचारियों ने दाऊद से सधि की ओर उसके अधीन हो गए; और अरामियों ने अम्मोनियों की सहायता फिर करनी न चाही।

२० फिर नये वर्ष के आरम्भ में जब राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं, तब योआब ने भारी सेना सांग ले जाकर अम्मोनियों का देश उजाड़ दिया और आकर रब्बाह को धेर लिया; परन्तु दाऊद यस्शलेम में रह गया; और योआब ने रब्बाह को जीतकर ढांडा दिया। २ तब दाऊद ने उनके राजा का मुक़ट उसके सिर से उतारकर क्या देखा, कि उसका तौल किक्कार भर सोने का है, और उसमें मणि भी जड़े थे; और वह दाऊद के सिर पर रखा गया। फिर उसे नगर से बहुत सामान लट्ठ में मिला। ३ उसने उनमें रहनेवालों को निकालकर आरों और लोहे के हेंगों और कुल्हाड़ियों से कटवाया; और अम्मोनियों के सब नगरों के साथ भी दाऊद ने वैसा ही किया। तब दाऊद सब लोगों समेत यस्शलेम को लौट गया। ४ इसके बाद गेजेर में पलिशियों के साथ युद्ध हुआ; उस समय हशाइ सिब्बकै ने सिपैपै को, जो रापा की सन्तान था, मार डाला; और वे तब गए। ५ पलिशियों के साथ फिर युद्ध हुआ; उसमें याईर के पुत्र एल्हानन ने गरी गोलियत के भाई लहीमी को मार डाला, जिसके बर्छे की छड़, जुलाहे की डोनी के समान थी। ६ फिर गत में भी युद्ध हुआ, और वहाँ एक बड़े डील-डॉल का पुस्त था, जो रापा की सन्तान था, और उसके एक-एक हाथ पाँव में छ: छ: उंगलियों अर्थात् सब मिलाकर चैबीस उँगलियाँ थीं। ७ जब उसने इस्माइलियों को ललकारा, तब दाऊद के भाई शिमा के पुत्र योनातान ने उसको मारा। ८ ये ही गत में रापा से उत्पन्न हुए थे, और वे दाऊद और उसके सेवकों के हाथ से मार डाले गए।

२१ और शैतान ने इस्माइल के विद्ध उठकर, दाऊद को उकसाया कि इस्माइलियों की गिनती ली गई। १ तब दाऊद ने योआब और प्रजा के हाकिमों से कहा, “तुम जाकर रेवेबा से ले दान तक इस्माइल की गिनती लेकर मुझे बताओ, कि मैं जान लूँ कि वे कितने हैं।” २ योआब ने कहा, “यहोवा की प्रजा के किंतु ही क्यों न हों, वह उनको सौ गुना बड़ा दे; परन्तु हे मेरे प्रभु! हे राजा! क्या वे सब राजा के अधीन नहीं हैं? मेरा प्रभु ऐसी बात क्यों चाहता है? वह इस्माइल पर दोष लगाने का कारण क्यों बनेंगे?” ३ तो भी राजा की आज्ञा योआब पर प्रबल हुई। तब योआब विदा होकर सारे इस्माइल में घूमकर यस्शलेम को लौट आया। ४ तब योआब ने प्रजा की गिनती का जोड़, दाऊद को सुनाया और सब तलवार चलानेवाले पुस्त इस्माइल के तो यारह लाख, और यहदा के चार लाख सत्तर हजार ठहरे। ५ परन्तु उनमें योआब ने लेवी और बिन्यामीन को न गिना, क्योंकि वह राजा की आज्ञा से घृणा करता था ६

और यह बात परमेश्वर को बुरी लगी, इसलिए उसने इसाएल को मारा। ८ और दाऊद ने परमेश्वर से कहा, “यह काम जो मैंने किया, वह महापाप है। परन्तु अब अपने दास का अर्धम दूर कर; मुझसे तो बड़ी मूर्खता हुई है।” ९ तब यहोवा ने दाऊद के दर्शी गाद से कहा, १० “जाकर दाऊद से कह, ‘यहोवा यह कहता है कि मैं तुझको तीन विपत्तियाँ दिखाता हूँ, उनमें से एक को चुन ले, कि मैं उसे तुझ पर डालूँ।’” ११ तब गाद ने दाऊद के पास जाकर उससे कहा, “यहोवा यह कहता है, कि जिसको तु चाहे उसे चुन ले: १२ या तो तीन वर्ष का अकाल पढ़े; या तीन महीने तक तेरे विरोधी तुझे नाश करते रहें, और तेरे शत्रुओं की तलवार तुझ पर चलती रहें; या तीन दिन तक यहोवा की तलवार चले, अर्थात् मरी देश में फैले और यहोवा का दूत इसाएली देश में चारों ओर विनाश करता रहे। अब सोच, कि मैं अपने भेजनेवाले को क्या उत्तर दूँ।” १३ दाऊद ने गाद से कहा, “मैं बड़े संकट में पड़ा हूँ, मैं यहोवा के हाथ में पड़ूँ, क्योंकि उसकी दया बहुत बड़ी है; परन्तु मनुष्य के हाथ में मुझे पड़ना न पड़े।” १४ तब यहोवा ने इसाएल में मरी फैलाई, और इसाएल में सतर हजार पुस्त मर मिटे। १५ फिर परमेश्वर ने एक दूत यस्शलेम को भी उसका नाश करने को भेजा; और वह नाश करने ही पर था, कि यहोवा दुःख देने से खेदित हुआ, और नाश करने वाले दून से कहा, “बस कर; अब अपना हाथ खींच ले।” और यहोवा का दूत यबूसी ओर्नन के खलिहान के पास खड़ा था। १६ और दाऊद ने आँखें उठाकर देखा कि यहोवा का दूत हाथ में खींची हुई और यस्शलेम के ऊपर बढ़ाई हुई एक तलवार लिये हुए आकाश के बीच खड़ा है, तब दाऊद और पुरानिये टाट पहने हुए मुँह के बल गिरे। १७ तब दाऊद ने परमेश्वर से कहा, “जिसने प्रजा की गिनती लेने की आज्ञा दी थी, वह क्या मैं नहीं हूँ हाँ, जिसने पाप किया और बहुत बुराई की है, वह तो मैं ही हूँ। परन्तु इन भेड़-बकरियों ने क्या किया है? इसलिए हे मेरे परमेश्वर यहोवा! तेरा हाथ मेरे पिता के घराने के विस्फु हो, परन्तु तेरी प्रजा के विस्फु न हो, कि वे मारे जाएँ।” १८ तब यहोवा के दून ने गाद को दाऊद से यह कहने की आज्ञा दी कि दाऊद चढ़कर यबूसी ओर्नन के खलिहान में यहोवा की एक बेटी बनाए। १९ गाद के इस वचन के अनुसार जो उसने यहोवा के नाम से कहा था, दाऊद चढ़ गया। २० तब ओर्नन ने पीछे फिरके दूत को देखा, और उसके चारों बेटे जो उसके संग थे छिप गए, ओर्नन तो गेहूँ दाँवता था। २१ जब दाऊद ओर्नन के पास आया, तब ओर्नन ने दृष्टि करके दाऊद को देखा और खलिहान से बाहर जाकर भूमि तक झुककर दाऊद को दण्डवत् किया। २२ तब दाऊद ने ओर्नन से कहा, “इस खलिहान का स्थान मुझे दे दे, कि मैं इस पर यहोवा के लिए एक बेटी बनाऊँ, उसका पूरा दाम लेकर उसे मुझ को दे, कि यह विपत्ति प्रजा पर से दूँ की जाए।” २३ ओर्नन ने दाऊद से कहा, “इसे ले ले, और मेरे प्रभु राजा को जो कछ भाए वह वही करे; सुन, मैं तुझे होमबलि के लिये बैल और ईंधन के लिये दाँवने के हथियार और अन्नबलि के लिये गेहूँ, यह सब मैं देता हूँ।” २४ राजा दाऊद ने ओर्नन से कहा, “नहीं, मैं अवश्य इसका पूरा दाम ही देकर इसे मोल लौँगा; जो तेरा है, उसे मैं यहोवा के लिये नहीं लौँगा, और न सेत-मेत का होमबलि चढ़ाऊँगा।” २५ तब दाऊद ने उस स्थान के लिये ओर्नन को छः सौ शेकेल सोना तौलकर दिया। २६ तब दाऊद ने वहाँ यहोवा की एक बेटी बनाई और होमबलि की बेटी पर स्वर्ग से आग गिराकर उसकी सुन ली। २७ तब यहोवा ने दूत को आज्ञा दी; और उसने अपनी तलवार फिर म्यान में कर ली। २८ यह देखकर कि यहोवा ने यबूसी ओर्नन के खलिहान में मेरी सुन ली है, दाऊद ने उसी समय वहाँ बलिदान किया। २९ यहोवा का निवास जो मूरा ने जंगल में बनाया था, और होमबलि की बेटी, ये दोनों उस समय गिब्रोन के

ऊँचे स्थान पर थे। ३० परन्तु दाऊद परमेश्वर के पास उसके सामने न जा सका, क्योंकि वह यहोवा के दूत की तलवार से डर गया था।

२२ तब दाऊद कहने लगा, “यहोवा परमेश्वर का भवन यही है, और इसाएल के लिये होमबलि की बेटी यही है।” ३१ तब दाऊद ने इसाएल के देश में जो परदेसी थे उनको इक्षा करने की आज्ञा दी, और परमेश्वर का भवन बनाने को पथर गढ़ने के लिये संगताराश ठहरा दिए। ३२ फिर दाऊद ने फाटकों के किवाड़ों की कीलों और जोड़ों के लिये बहुत सा लोहा, और तौल से बाहर बहुत पीतल, ३३ और गिनती से बाहर देवदार के पेड़ इकट्ठे किए; क्योंकि सीदोन और सोर के लोग दाऊद के पास बहुत से देवदार के पेड़ लाए थे। ३४ और दाऊद ने कहा, “मेरा पुत्र सुलैमान सुकुमार और लड़का है, और जो भवन यहोवा के लिये बनाना है, उसे अत्यन्त तेजोमय और सब देशों में प्रसिद्ध और शोभायमान होना चाहिये; इसलिए मैं उसके लिये तैयारी करूँगा।” अतः दाऊद ने मरने से पहले बहुत तैयारी की। ३५ फिर उसने अपने पुत्र सुलैमान को बुलाकर इसाएल के परमेश्वर यहोवा के लिये भवन बनाने की आज्ञा दी। ३६ दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा, “मेरी मनसा तो थी कि अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊँ। ३७ परन्तु यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, ‘तू तेरा लह बहुत बहाया और बड़े-बड़े युद्ध किए हैं, इसलिए तू मेरे नाम का भवन न बनाने पाएणा, क्योंकि तूने भूमि पर मेरी दृष्टि में बहुत लह बहाया है। ३८ देख, तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा, जो शान्त पुस्त होगा, और मैं उसको चारों ओर के शत्रुओं से शान्ति दूँगा; उसका नाम तो सुलैमान होगा, और उसके दिनों में मैं इसाएल को शान्ति और चैन दूँगा। ३९ वही मेरे नाम का भवन बनाएणा। और वही मेरा पुत्र ठहरेगा और मैं उसका पिता ठहरूँगा, और उसकी राजाजी की मैं इसाएल के ऊपर सदा के लिये स्थिर रखूँगा।” ४० अब हे मेरे पुत्र, यहोवा तेरे संग रहे, और तू कृतार्थ होकर उस वचन के अनुसार जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे विषय कहा है, उसका भवन बनाना। ४१ अब यहोवा तुझे बुद्धि और समझ दे और इसाएल का अधिकारी ठहरा दे, और तू अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था को मानता रहे। ४२ तू तब ही कृतार्थ होगा जब उन विधियों और नियमों पर चलने की चौकसी करेगा, जिनकी आज्ञा यहोवा ने इसाएल के लिये मूसा को दी थी। हियाव बाँध और दृढ़ हो। मत डर; और तेरा मन कच्चा न हो। ४३ सुन, मैंने अपने क्लेश के समय यहोवा के भवन के लिये एक लाख किक्कार सोना, और दस लाख किक्कार सोना, और पीतल और लोहा इतना इकट्ठा किया है, कि बहुतायत के काण तौल से बाहर है; और लकड़ी और पथर मैंने इकट्ठे किए हैं, और तू उनको बढ़ा सकेगा। ४४ और तेरे पास बहुत कारीगर है, अर्थात् पथर और लकड़ी के काटने और गढ़नेवाले वरन् सब भाँति के काम के लिये सब प्रकार के प्रवीण पुस्त हैं। ४५ सोना, चाँदी, पीतल और लोहे की तो कुछ गिनती नहीं है, सो तू उस काम में लग जा! यहोवा तेरे संग नित रहे।” ४६ फिर दाऊद ने इसाएल के सब हाकिमों को अपने पुत्र सुलैमान की सहायता करने की आज्ञा यह कहकर दी, ४७ “क्या तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग नहीं है? क्या उसने तुम्हें चारों ओर से विश्वास नहीं दिया? उसने तो देश के निवासियों को मेरे वश में कर दिया है; और देश यहोवा और उसकी प्रजा के सामने दबा हुआ है। ४८ अब तन मन से अपने परमेश्वर यहोवा के पास जाया करो, और जी लगाकर यहोवा परमेश्वर का पवित्रस्थान बनाना, कि तुम यहोवा की वाचा का सन्दूक और परमेश्वर के पवित्र पात्र उस भवन में लाओ जो यहोवा के नाम का बनानेवाला है।”

२३ दाऊद तो बूढ़ा वरन् बहुत बूढ़ा हो गया था, इसलिए उसने अपने पुत्र सुलैमान को इसाएल पर राजा नियुक्त कर दिया। २४ तब उसने इसाएल के

सब हाकिमों और याजकों और लेवियों को इकट्ठा किया। ३ जितने लेवीय तीस वर्ष के और उससे अधिक अवस्था के थे, वे मिने गए, और एक-एक पुस्तके गिनने से उनकी गिनती अड़तीस हजार हुई। ४ इनमें से चौबीस हजार तो यहोवा के भवन का काम चलाने के लिये नियुक्त हुए, और छः हजार सरदार और न्यायी। ५ और चार हजार द्वारपाल नियुक्त हुए, और चार हजार उन बाजों से यहोवा की स्तुति करने के लिये ठहराए गए जो दाऊद ने स्तुति करने के लिये बनाए थे। ६ फिर दाऊद ने उनको गेशर्न, कहात और मरारी नामक लेवी के पुत्रों के अनुसार दलों में अलग-अलग कर दिया। ७ गेशर्नियों में से तो लादान और शिमी थे। ८ और लादान के पुत्र: सदार यहीएल, फिर जेताम और योएल ये तीन थे। ९ शिमी के पुत्र: शलोमीत, हजीएल और हारान ये तीन थे। लादान के कुल के पूर्वजों के घरानों के मुख्य पुस्त ये ही थे। १० फिर शिमी के पुत्र: यहत, जीना, यश, और बरीआ, शिमी के यही चार पुत्र थे। ११ यहत मुख्य था, और जीजा दूसरा; यशू और बरीआ के बहुत बेरे न हुए, इस कारण वे सब मिलकर पितरों का एक ही घराना ठहरे। १२ कहात के पुत्र: अम्माम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल चार थे। अम्माम के पुत्र: हास्न और मूसा। १३ हास्न तो इसलिए अलग किया गया, कि वह और उसकी सन्तान सदा परमपवित्र वस्तुओं को पवित्र ठहराएँ, और सदा यहोवा के सम्पुर्ख धूप जलाया करें और उसकी सेवा ठहल करें, और उसके नाम से आशीर्वाद दिया करें। १४ परन्तु परमेश्वर के भक्त मूसा के पुत्रों के नाम लेवी के गोत्र की बीच मिने गए। १५ मूसा के पुत्र, गेशर्न और एलीएजेर। १६ और गेशर्न का पुत्र शबाएल मुख्य था। १७ एलीएजेर के पुत्र: रहब्याह मुख्य; और एलीएजेर के और कोई पुत्र न हुआ, परन्तु रहब्याह के बहुत से बेटे हुए। १८ यिसहार के पुत्रों में से शलोमीत मुख्य ठहरा। १९ हेब्रोन के पुत्र: यरिय्याह मुख्य, दूसरा अमर्याह, तीसरा यहजीएल, और चौथा यकमाम। २० उज्जीएल के पुत्रों में से मुख्य तो मीका और दूसरा यिशिश्याह था। २१ मरारी के पुत्र: महली और मूरी। महली के पुत्र: एलीआजर और कीश। २२ एलीआजर पुत्रहीन मर गया, उसके केवल बेटियाँ हुईं, अतः कीश के पुत्रों ने जो उनके भाई थे उन्हें ब्याह लिया। २३ मूरी के पुत्र: महली, एद्रेर और येरोमत यह तीन थे। २४ लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुस्त ये ही थे, ये नाम ले लेकर, एक-एक पुस्त करके गिने गए, और बीस वर्ष की या उससे अधिक अवस्था के थे और यहोवा के भवन में सेवा ठहल करते थे। २५ क्योंकि दाऊद ने कहा, “इस्माएल के परमेश्वर यहोवा ने अपनी प्रजा को विश्वाम दिया है, कि वे यस्तालेम में संदेव रह सकें।” २६ और लेवियों को निवास और उसकी उपासना का सामान फिर उठाना न पड़ेगा।” २७ क्योंकि दाऊद की पिछली आज्ञाओं के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक अवस्था के लेवीय मिने गए। २८ क्योंकि उनका काम तो हास्न की सन्तान की सेवा ठहल करना था, अर्थात् यह कि वे आँगनों और कोठियों में, और सब पवित्र वस्तुओं के शुद्ध करने में और परमेश्वर के भवन की उपासना के सब कामों में सेवा ठहल करें; २९ और भेट की रोटी का, अन्नबलियों के मैटे का, और अच्छमीरी पपड़ियों का, और तबे पर बनाए हुए और सने हुए का, और मापने और तौलने के सब प्रकार का काम करें। ३० और प्रति भोर और प्रति साँझ को यहोवा का धन्यवाद और उसकी स्तुति करने के लिये खड़े रहा करें। ३१ और विश्वामिदिनों और नये चाँद के दिनों, और नियम पर्वों में मिनती के नियम के अनुसार नित्य यहोवा के सब होम्बलियों को चढ़ाएँ। ३२ और यहोवा के भवन की उपासना के विषय मिलापवाले तम्बू और पवित्रस्थान की रक्खा करें, और अपने भाई हास्नियों के सौंपे हुए काम को चौकीसी से करें।

२४ फिर हास्न की सन्तान के दल ये थे। हास्न के पुत्र तो नादाब, अबीह, एलीआजर और ईतामार थे। २५ परन्तु नादाब और अबीह अपने पिता के

सामने पुत्रहीन मर गए, इसलिए याजक का काम एलीआजर और ईतामार के बंश करते थे। ३ और दाऊद ने एलीआजर के बंश के सादोक और ईतामार के बंश के अहीमेलेक की सहायता से उनको अपनी-अपनी सेवा के अनुसार दल-दल करके बैट दिया। ४ एलीआजर के बंश के मुख्य पुस्त, ईतामार के बंश के मुख्य पुस्तों से अधिक थे, और वे ऐसे बैट गए: अर्थात् एलीआजर के बंश के पितरों के घरानों के सोलाह, और ईतामार के बंश के पितरों के घरानों के आठ मुख्य पुस्त थे। ५ बत वे चिश्ती डालकर बराबर-बराबर बैट गए, क्योंकि एलीआजर और ईतामार दोनों के बंशों में पवित्रस्थान के हक्किम और परमेश्वर के हक्किम नियुक्त हुए थे। ६ और ननेल के पुत्र शमायाह जो शास्त्री और लेवीय था, उनके नाम राजा और हाकिमों और सादोक याजक, और एज्यातार के पुत्र अहीमेलेक और याजकों और लेवियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुस्तों के सामने तिथे, अर्थात् पितरों का एक घराना तो एलीआजर के बंश में से और एक ईतामार के बंश में से लिया गया। ७ वहती चिश्ती तो यहोयारीब के, और दूसरी यदायाह, ८ तीसरी हारीम के, चौथी सोरीम के, ९ पाँचवी मल्कियाह के, छठवी मियायामीन के, १० सातवी हक्कोस के, आठवीं अबियाह के, ११ नौवी येहुअ के, दसवीं शकन्याह के, १२ यारहवी एल्याशीब के, बारहवीं याकीम के, १३ तेरहवीं हृप्पा के, चौदहवीं येसेबाब के, १४ पन्दहवीं बिल्गा के, सोलहवीं इमेर के, १५ सत्रहवीं हेजीर के, अठारहवीं हापित्सेस के, १६ उन्नीसवीं पतह्याह के, बीसवीं यहेजकेल के, १७ इक्कीसवीं याकीन के, बाईसवीं गामल के, १८ तेईसवीं दलायाह के, और चौबीसवीं माज्याह के नाम पर निकली। १९ उनकी सेवकाई के लिये उनका यही नियम ठहराया गया कि वे अपने उस नियम के अनुसार जो इस्माएल के परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार उनके मूलपुस्त हास्न ने चलाया था, यहोवा के भवन में जाया करें। २० बचे हुए लेवियों में से अप्राम के बंश में से शबाएल, शबाएल के बंश में से येहदयाह। २१ बचा रहब्याह, अतः रहब्याह, के बंश में से यिशिश्याह मुख्य था। २२ यिसहारियों में से शलोमोत और शलोमोत के बंश में से यहत। २३ हेब्रोन के बंश में से मुख्य तो यरिय्याह, दूसरा अमर्याह, तीसरा यहजीएल, और चौथा यकमाम। २४ उज्जीएल के बंश में से मीका और मीका के बंश में से शामीर। २५ मीका का भाई याई यिशिश्याह, यिशिश्याह के बंश में से जकर्याह। २६ मरारी के पुत्र महली और मूरी और याजियाह का पुत्र बिनो था। २७ मरारी के पुत्र: याजियाह से बिनो और शोहम, जककूर और इन्नी थे। २८ महली से, एलीआजर जिसके कोई पुत्र न था। २९ कीश से कीश के बंश में यहरमेल। ३० और मूरी के पुत्र, महली, एद्रेर और यरीमोत। अपने-अपने पितरों के घरानों के अनुसार ये ही लेवीय सन्तान के थे। ३१ इहोने भी अपने भाई हास्न की सन्तानों की तरह दाऊद राजा और सादोक और अहीमेलेक और याजकों और लेवियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुस्तों के सामने चिश्तीयों डाली, अर्थात् मुख्य पुस्त के पितरों का घराने उसके छोटे भाई के पितरों के घराने के बराबर ठहरा।

२५ फिर दाऊद और सेनापतियों ने आसाप, हेमान और यदूतून के कुछ पुत्रों को सेवकाई के लिये अलग किया कि वे बीणा, सारंगी और झाँझ बजा-बजाकर नब्बूत करें। और इस सेवकाई के काम करनेवाले मनुष्यों की गिनती यह थी: १ अर्थात् आसाप के पुत्रों में से जककूर, यसुफ, नतन्याह और अशेरेला, आसाप के ये पुत्र आसाप ही की आज्ञा में थे, जो राजा की आज्ञा के अनुसार नब्बूत करता था। २ फिर यदूतून के पुत्रों में से गदल्याह, सरी, यशायाह, शिमी, हशब्याह, मतित्याह, ये ही छः अपने पिता यदूतून की आज्ञा में होकर जो यहोवा का धन्यवाद और स्तुति कर करके नब्बूत करता था,

वीणा बजाते थे। ४ हेमान के पुत्रों में से, बुकिक्याह, मतन्याह, उज्जीएल, शबाएल, यरीमोत, हनन्याह, हनानी, एलीआता, गिद्लती, रोममतीएजेर, योशबकाशा, मल्लोती, होतीर और महजीओत; ५ परमेश्वर की प्रतिज्ञानकूल जो उसका नाम बढ़ाने की थी, ये सब हेमान के पुत्र थे जो राजा का दर्शी था; क्योंकि परमेश्वर ने हेमान को चौदह बेटे और तीन बेटियाँ दी थी। ६ ये सब यहोवा के भवन में गाने के लिये अपने-अपने पिता के अधीन रहकर, परमेश्वर के भवन, की सेवकाई में छाँझा, सारंगी और वीणा बजाते थे। आसाप, यदून और हेमान राजा के अधीन रहते थे। ७ इन सभी की गिनती भाइयों समेत जो यहोवा के गीत सीखे हुए और सब प्रकार से निषुप्त थे, दो सौ अष्टाई थी। ८ उन्होंने क्या बड़ा, क्या छोटा, क्या गुरु, क्या चेला, अपनी-अपनी बारी के लिये चिठ्ठी डाली। ९ पहली चिठ्ठी आसाप के बेटों में से यूसुफ के नाम पर निकली, दूसरी गदल्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १० तीसरी जक्कूर के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। ११ चौथी यिशी के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १२ पाँचवी नतन्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १३ छठी बुकिक्याह के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १४ सातवीं यरोलाके नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १५ अठवीं यशायाह के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १६ नौवीं मतन्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १७ दसवीं शिमी के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १८ ग्यारहवीं अजरेल के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १९ बारहवीं हशब्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २० तेरहवीं शूबाएल के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २१ चौदहवीं मतित्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २२ पन्द्रहवीं यरोमोत के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २३ सोलहवीं हनन्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २४ सत्रहवीं योशबकाशा के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २५ अठारहवीं हनानी के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २६ उन्नीसवीं मल्लोती के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २७ बीसवीं एलियात्ह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २८ इक्कीसवीं होतीर के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। २९ बाईसवीं गिद्लती के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। ३० तेझेसवीं महजीओत, के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। ३१ चौबीसवीं चिठ्ठी रोममतीएजेर के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे।

२६ फिर द्वारपालों के दल ये थे: कोरहियों में से तो मरोलेम्याह, जो कोरे का पुत्र और आसाप की सन्तानों में से था। २२ और मरोलेम्याह के पुत्र हुए, अर्थात् उसका जेठा जक्कर्याह, दूसरा यदीएल, तीसरा जब्याह, ३ चौथा यातनीएल, पाँचवाँ एलाम, छठवाँ यहोहानाम और सातवाँ एल्योहेनै। ४ फिर ओबेदेम के भी पुत्र हुए, उसका जेठा शमायाह, दूसरा यहोजाबाद, तीसरा योआह, चौथा साकार, पाँचवाँ नतनेल, ५ छठवाँ अम्मीएल, सातवाँ इस्साकार और अठवाँ पुल्लतै, क्योंकि परमेश्वर ने उसे अशीष दी थी। ६ और उसके पुत्र शमायाह के भी पुत्र उत्पन्न हुए, जो शूबीरी होने के कारण अपने पिता के घराने पर प्रभुता करते थे। ७ शमायाह के पुत्र ये थे, अर्थात् ओतनी, रपाएल, ओबेद, एलजाबाद और उनके भाई एलीह और समक्याह बलवान पुस्त थे।

८ ये सब ओबेदेम की सन्तानों में से थे, वे और उनके पुत्र और भाई इस सेवकाई के लिये बलवान और शक्तिमान थे; ये ओबेदेमी बासठ थे। ९ मरोलेम्याह के पुत्र और भाई अठारह थे, जो बलवान थे। १० फिर मरारी के बंश में से होसा के भी पुत्र थे, अर्थात् मुख्य तो शिप्री (जिसको जेठा न होने पर भी उसके पिता ने मुख्य ठहराया), ११ दूसरा हल्कियाह, तीसरा तब्ल्याह और चौथा जक्कर्याह था; होसा के सब पुत्र और भाई मिलकर तेरेथे। १२ द्वारपालों के दल इन मुख्य पुस्तों के थे, ये अपने भाइयों के बराबर ही यहोवा के भवन में सेवा ठहल करते थे। १३ इहोने क्या छोटे, क्या बड़े, अपने-अपने पितरों के घरानों के अनुसार एक-एक फटक के लिये चिठ्ठी डालती। १४ पूर्व की ओर की चिठ्ठी शेलेम्याह के नाम पर निकली। तब उन्होंने उसके पुत्र जक्कर्याह के नाम की चिठ्ठी डाली (वह बुद्धिमान मंत्री था) और चिठ्ठी उत्तर की ओर के लिये निकली। १५ दक्षिण की ओर के लिये ओबेदेम के नाम पर चिठ्ठी निकली, और उसके बेटों के नाम पर खजाने की कोठरी के लिये। १६ फिर शूपीम और होसा के नामों की चिठ्ठी पश्चिम की ओर के लिये निकली, कि वे शल्लेकेत नामक फाटक के पास चढ़ाई की सड़क पर आपने-सामने चौकीदारी किया करें। १७ पूर्व की ओर तो छः लेवीयथ, उत्तर की ओर प्रतिदिन चार, दक्षिण की ओर प्रतिदिन चार, और खजाने की कोठरी के पास दो ठहरे। १८ पश्चिम की ओर के पर्बार नामक स्थान पर ऊँची सड़क के पास तो चार और पर्बार के पास दो रहे। १९ ये द्वारपालों के दल थे, जिनमें से कितने तो कोरह के और कुछ मरारी के बंश के थे। २० फिर लेवियों में से अहियाह परमेश्वर के भवन और पवित्र की हुई वस्तुओं, दोनों के भण्डारों का अधिकारी नियुक्त हुआ। २१ ये लादान की सन्तान के थे, अर्थात् गेशीनियों की सन्तान जो लादान के कुल के थे, अर्थात् लादान और गेशीनी के पितरों के घरानों के मुख्य पुस्त थे, अर्थात् यहोएली। २२ यहोएली के पुत्र ये थे, अर्थात् जेताम और उसका भाई योएल जो यहोवा के भवन के खजाने के अधिकारी थे। २३ अम्मायियों, यिसहारियों, हेब्रोनियों और उज्जीएलियों में से। २४ शबूएल जो मूसा के पुत्र गेशीम के बंश का था, वह खजानों का मुख्य अधिकारी था। २५ और उसके भाइयों का वृत्तान्त यह है: एलीएजेर के कुल में उसका पुत्र रहब्याह, रहब्याह का पुत्र यशायाह, यशायाह का पुत्र योराम, योराम का पुत्र जिक्री, और जिक्री का पुत्र शलोमोत था। २६ यही शलोमोत अपने भाइयों समेत उन सब पवित्र की हुई वस्तुओं के भण्डारों का अधिकारी था, जो राजा दाऊद और पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुस्तों और सहस्रपतियों और शतपतियों और मुख्य सेनापतियों ने पवित्र की थीं। २७ जो लूट लडाइयों में मिलती थी, उसमें से उन्होंने यहोवा के भवन ढूढ़ करने के लिये कुछ पवित्र किया। २८ वरन् जितना शम्पूल दशी, कीश के पुत्र शाऊल, नेर के पुत्र अन्नर, और सस्याह के पुत्र योआब ने पवित्र किया था, और जो कुछ जिस किसी ने पवित्र कर रखा था, वह सब शलोमोत और उसके भाइयों के अधिकार में था। २९ यिसहारियों में से कनन्याह और उसके पुत्र, इस्माएल के देश का काम अर्थात् सरदार और न्यायी का काम करने के लिये नियुक्त हुए। ३० और हेब्रोनियों में से हशब्याह और उसके भाई जो स्रवह सौ बलवान पुस्त थे, वे यहोवा के सब काम और राजा की सेवा के विषय यदून के पश्चिम और रहनेवाले इस्माएलियों के अधिकारी ठहरे। ३१ हेब्रोनियों में से यरियाह मुख्य था, अर्थात् हेब्रोनियों की पीढ़ी-पीढ़ी के पितरों के घरानों के अनुसार दाऊद के राज्य के चालीसवें वर्ष में वे ढूढ़ गए, और उनमें से कई शूरवीर गिलाद के याजेर में मिले। ३२ उसके भाई जो वीर थे, पितरों के घरानों के दो हजार सात सौ मुख्य पुस्त थे, इनको दाऊद राजा ने परमेश्वर के सब

विषयों और राजा के विषय में स्क्रेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र का अधिकारी ठहराया।

२७ इसाएलियों की गिनती, अर्थात् पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुस्तकों

और सहस्रपतियों और शतपतियों और उनके सरदारों की गिनती जो वर्ष भर के महीने-महीने उपस्थित होने और छुट्टी पानेवाले दलों के थे और सब विषयों में राजा की सेवा टहल करते थे, एक-एक दल में चौबीस हजार थे। १ पहले महीने के लिये पहले दल का अधिकारी जब्दीएल का पुत्र याशोबाम नियुक्त हुआ; और उसके दल में चौबीस हजार थे। २ वह पैरेस के बंश का था और पहले महीने में सब सेनापतियों का अधिकारी था। ३ दूसरे महीने के दल का अधिकारी दोनै नामक एक अहोही था, और उसके दल का प्रधान मिक्लोत था, और उसके दल में चौबीस हजार थे। ४ तीसरे महीने के लिये तीसरा सेनापति यहोयादा याजक का पुत्र बनायाह था और उसके दल में चौबीस हजार थे। ५ यह वही बनायाह है, जो तीसों शूरों में वीर, और तीसों में शेष भी था; और उसके दल में उसका पुत्र अमीजाबाद था। ६ चौथे महीने के लिये चौथा सेनापति योआब का भाई असाहेल था, और उसके बाद उसका पुत्र जबधाह था और उसके दल में चौबीस हजार थे। ७ पाँचवें महीने के लिये पाँचवाँ सेनापति यिज्ञाही शम्हत था और उसके दल में चौबीस हजार थे। ८ छठवें महीने के लिये छठवाँ सेनापति तोकोई इक्केश का पुत्र झारा था और उसके दल में चौबीस हजार थे। ९ सातवें महीने के लिये सातवाँ सेनापति ऐप्रैम के बंश का हेलेस पल्लोनी था और उसके दल में चौबीस हजार थे। १० आठवें महीने के लिये आठवाँ सेनापति जेरह के बंश में से हशाई सिब्बके था और उसके दल में चौबीस हजार थे। ११ नौवें महीने के लिये नौवाँ सेनापति बिन्यामीनी अवीएजेर अनातोवासी था और उसके दल में चौबीस हजार थे। १२ दसवें महीने के लिये दसवाँ सेनापति जेरही महरे नतोपावासी था और उसके दल में चौबीस हजार थे। १३ यारहवें महीने के लिये यारहवाँ सेनापति ऐप्रैम के बंश का बनायाह पिरातोनवासी था और उसके दल में चौबीस हजार थे। १४ बारहवें महीने के लिये बारहवाँ सेनापति ओवीएल के बंश का हेल्दै नतोपावासी था और उसके दल में चौबीस हजार थे। १५ फिर इसाएली गोत्रों के थे अधिकारी थे: अर्थात् स्क्रेनियों का प्रधान जिक्री का पुत्र एल्हीएजेर; शियोनियों से माका का पुत्र शपत्याह; १६ लेवी से कम्प्यूल का पुत्र हशब्याह; हास्तन की सन्तान का सादोक; १७ यहोवा का एल्ही नामक दाऊद का एक भाई, इस्साकार से मीकाएल का पुत्र ओप्री; १८ जबल्स से ओब्याह का पुत्र विशमायाह, जाताई से अञ्जीएल का पुत्र यरीमोत; १९ ऐप्रैम से अज्ज्याह का पुत्र होशेम, मनश्शे से आधे गोत्र का, पदायाह का पुत्र योएल; २० गिलाद में आधे गोत्र मनश्शे से जकर्याह का पुत्र झो, बिन्यामीन से अन्नेर का पुत्र यासीएल; २१ और दान से यरोहाम का पुत्र अजरेल प्रधान ठहरा। ये ही इसाएल के गोत्रों के हाकिम थे। २२ परन्तु दाऊद ने उनकी गिनती बीस वर्ष की अवस्था के नीचे न की, क्योंकि यहोवा ने इसाएल की गिनती आकाश के तरों के बराबर बढ़ाने के लिये कहा था। २३ परन्तु दाऊद ने उनकी गिनती बीस वर्ष की अवस्था के नीचे न की, क्योंकि यहोवा ने इसाएल के देखते अर्थात् यहोवा की मण्डली के देखते, और अपने परमेश्वर के सामने, अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को मानो और उन पर ध्यान करते रहे; ताकि तुम इस अच्छे देश के अधिकारी बने रहो, और इसे अपने बाद अपने बंश का सदा का भग्न होने के लिये छोड़ जाओ। २४ “हे मेरे पुत्र सुलैमान! तू अपने पिता के परमेश्वर का ज्ञान रख, और खेरे मन और प्रसन्न जीव से उसकी सेवा करता रह; क्योंकि यहोवा मन को जाँचता और विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है उसे समझता है। यदि तू उसकी खोज में रहे, तो वह तुझको मिलेगा; परन्तु यदि तू उसको त्याग दे तो वह सदा के लिये तुझको छोड़ देगा। २५ अब चौकस रह, यहोवा ने तुझे एक ऐसा भवन बनाने को चुन लिया है, जो पवित्रस्थान ठहरेगा, हियाव बाँधकर इस काम में लग जा।” २६ तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को मन्दिर के ओसारे, कोठरियों, भण्डारों, अटारियों, भीतरी कोठरियों, और प्रायश्चित के ढकने के स्थान का नमूना, २७ और यहोवा के भवन के आँगनों और चारों ओर की कोठरियों, और परमेश्वर के भवन के भण्डारों और पवित्र की हड्डी वस्तुओं के भण्डारों के, जो-जो नमूने परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से उसको मिले थे, वे

था। २८ और नीचे के देश के जैतून और गूलर के बृक्षों का अधिकारी गदी बाल्हानान था और तेल के भण्डारों का अधिकारी योआश था। २९ और शारोन में चरनेवाले गाय-बैलों का अधिकारी शारोनी शिव्रे था और तराइयों के गाय-बैलों का अधिकारी अदलै का पुत्र शापात था। ३० और ऊंटों का अधिकारी इश्माएली ओबील और गदहियों का अधिकारी मेरोनोतवासी येहदायह। ३१ और भेड़-बकरियों का अधिकारी हायी याजीज था। ये ही सब राजा दाऊद की धन-सम्पत्ति के अधिकारी थे। ३२ और दाऊद का भतीजा योनातन एक समझदार मंत्री और शास्त्री था, और एक हक्मोनी का पुत्र यहील राजपुत्रों के संग रहा करता था। ३३ और अहीतोपेल राजा का मंत्री था, और एकी हौशे राजा का मित्र था। ३४ और अहीतोपेल के बाद बनायाह का पुत्र यहोयादा और एज्यातार मंत्री ठहरा गए। और राजा का प्रधान सेनापति योअब था।

२८ और दाऊद ने इसाएल के सब हाकिमों को अर्थात् गोत्रों के हाकिमों और

राजा की सेवा टहल करनेवाले दलों के हाकिमों को और सहस्रपतियों और शतपतियों और राजा और उसके पुत्रों के पशु आदि सब धन-सम्पत्ति के अधिकारियों, सरदारों और वीरों और सब शूरवीरों को यस्सलैम में बुलवाया। ३५ तब दाऊद राजा खड़ा होकर कहने लगा, “हे मेरे भाइयों! और हे मेरी प्रजा के लोगों! मेरी सुनो, मेरी मनसा तो थी कि यहोवा की बाचा के सन्दूक के लिये और हम लोगों के परमेश्वर के चरणों की पीढ़ी के लिये विश्वाम का एक भवन बनाऊँ, और मैंने उसके बनाने की तैयारी की थी। ३६ परन्तु परमेश्वर ने मुझसे कहा, ‘तू मेरे नाम का भवन बनाने न पाएगा, क्योंकि तू यहु द्युकरनेवाला है और तूने लह बहाया है।’ ३७ तो भी इसाएल के परमेश्वर यहोवा ने मेरे पिता के सारे घराने में से मुझी को चुन लिया, कि इसाएल का राजा सदा बना रहूँ अर्थात् उसने यहोवा को प्रधान होने के लिये और यहोवा के घराने में से मेरे पिता के घराने को चुन लिया और मेरे पिता के पुत्रों में से वह मुझी को सारे इसाएल का राजा बनाने के लिये प्रसन्न हुआ। ३८ और मेरे सब पुत्रों में से (यहोवा ने तो मुझे बहुत पुत्र दिए है) उसने मेरे पुत्र सुलैमान को चुन लिया है, कि वह इसाएल के ऊपर यहोवा के राज्य की ग़दी पर विराजे। ३९ और उसने मुझसे कहा, ‘तेरा पुत्र सुलैमान ही मेरे भवन और आँगनों को बनाएगा, क्योंकि मैंने उसको चुन लिया है कि मेरा पुत्र ठहरे, और मैं उसका पिता ठहरँगा। ४० और यदि वह मेरी आज्ञाओं और नियमों के मानने में आजकल के समान ढूढ़ रहे, तो मैं उसका राज्य सदा स्थिर रखूँगा।’ ४१ इसलिए अब इसाएल के देखते अर्थात् यहोवा की मण्डली के देखते, और अपने परमेश्वर के सामने, अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाओं को मानो और उन पर ध्यान करते रहो; ताकि तुम इस अच्छे देश के अधिकारी बने रहो, और इसे अपने बाद अपने बंश का सदा का भग्न होने के लिये छोड़ जाओ। ४२ “हे मेरे पुत्र सुलैमान! तू अपने पिता के परमेश्वर का ज्ञान रख, और खेरे मन और प्रसन्न जीव से उसकी सेवा करता रह; क्योंकि यहोवा मन को जाँचता और विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है उसे समझता है। यदि तू उसकी खोज में रहे, तो वह तुझको मिलेगा; परन्तु यदि तू उसको त्याग दे तो वह सदा के लिये तुझको छोड़ देगा। ४३ और यहोवा ने तुझे एक ऐसा भवन बनाने को चुन लिया है, जो पवित्रस्थान ठहरेगा, हियाव बाँधकर इस काम में लग जा।” ४४ तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को मन्दिर के ओसारे, कोठरियों, भण्डारों, अटारियों, भीतरी कोठरियों, और प्रायश्चित के ढकने के स्थान का नमूना, ४५ और यहोवा के भवन के आँगनों और चारों ओर की कोठरियों, और परमेश्वर के भवन के भण्डारों और पवित्र की हड्डी वस्तुओं के भण्डारों के, जो-जो नमूने परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से उसको मिले थे, वे

सब दे दिए। १३ फिर याजकों और लेवियों के दलों, और यहोवा के भवन की सेवा के सब कामों, और यहोवा के भवन की सेवा के सब सामान, १४ अर्थात् सब प्रकार की सेवा के लिये सोने के पात्रों के निमित्त सोना तैलकर, और सब प्रकार की सेवा के लिये चाँदी के पात्रों के निमित्त चाँदी तैलकर, १५ और सोने की दीवटों के लिये, और उनके दीपिकों के लिये प्रति एक-एक दीवट, और उसके दीपिकों का सोना तैलकर; और चाँदी की दीवटों के लिये एक-एक दीवट, और उसके दीपिक की चाँदी, प्रति एक-एक दीवट के काम के अनुसार तैलकर, १६ और भेंट की गोटी की मेजों के लिये एक-एक मेज का सोना तैलकर, और चाँदी की मेजों के लिये चाँदी, १७ और शुद्ध सोने के कॉर्टों, कटोरों और प्यालों और सोने की कटोरियों के लिये एक-एक कटोरी का सोना तैलकर, और चाँदी की कटोरियों के लिये एक-एक कटोरी की चाँदी तैलकर, १८ और धूप की वेदी के लिये ताया हुआ सोना तैलकर, और रथ अर्थात् यहोवा की वाचा का सन्दूक ढाँकनेवाले और पंख फैलाए हुए कर्स्तों के नमूने के लिये सोना दे दिया। १९ दाऊद ने कहा “मैंने यहोवा की शक्ति से जो मुझ को मिली, यह सब कुछ बुझकर लिख दिया है।” २० फिर दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा, हियाव बौध और दृढ़ होकर इस काम में लग जा मत डर, और तेरा मन कच्चा न हो, क्योंकि यहोवा परमेश्वर जो मेरा परमेश्वर है, वह तेरे संग है; और जब तक यहोवा के भवन में जितना काम करना हो वह न हो चुके, तब तक वह न तो तुझे धोखा देगा और न तुझे त्यागेगा। २१ और देख परमेश्वर के भवन के सब काम के लिये याजकों और लेवियों के दल ठहराए गए हैं, और सब प्रकार की सेवा के लिये सब प्रकार के काम प्रसन्नता से करनेवाले बुद्धिमान पुष्प भी तेरा साथ देंगे; और हाकिम और सारी प्रजा के लोग भी जो कुछ तू कहेगा वही करेंगे।”

२१ फिर राजा दाऊद ने सारी सभा से कहा, “मेरा पुत्र सुलैमान सुकुमार लड़का है, और केवल उसी को परमेश्वर ने चुना है; काम तो भारी है, क्योंकि यह भवन मनुष्य के लिये नहीं, यहोवा परमेश्वर के लिये बनेगा। २२ मैंने तो अपनी शक्ति भर, अपने परमेश्वर के भवन के निमित्त सोने की वस्तुओं के लिये सोना, चाँदी की वस्तुओं के लिये चाँदी, पीतल की वस्तुओं के लिये पीतल, लोहे की वस्तुओं के लिये लोहा, और लकड़ी की वस्तुओं के लिये लकड़ी, और सुलैमानी पत्थर, और जड़ने के योग्य मणि, और पच्चीकारी के काम के लिये भिन्न-भिन्न रंगों के नग, और सब भाँति के मणि और बहुत सा सांगमरमर इकट्ठा किया है। २३ फिर मेरा मन अपने परमेश्वर के भवन में लगा है, इस कारण जो कुछ मैंने पवित्र भवन के लिये इकट्ठा किया है, उस सबसे अधिक मैं अपना निज धन भी जो सोना चाँदी के रूप में मेरे पास है, अपने परमेश्वर के भवन के लिये दे देता हूँ। २४ अर्थात् तीन हजार किक्कार ओपीर का सोना, और सात हजार किक्कार तपाई हुई चाँदी, जिससे कोठरियों की भीति मढ़ी जाएँ। २५ और सोने की वस्तुओं के लिये सोना, और चाँदी की वस्तुओं के लिये चाँदी, और कारीगरों से बनानेवाले सब प्रकार के काम के लिये मैं उसे देता हूँ। और कौन अपनी इच्छा से यहोवा के लिये अपने को अर्पण कर देता है?” २६ तब पितरों के घरानों के प्रधानों और इसाएल के गोत्रों के हाकिमों और सहज्ञपतियों और शतपतियों और राजा के काम के अधिकारियों ने अपनी-अपनी इच्छा से, २७ परमेश्वर के भवन के काम के लिये पाँच हजार किक्कार और दस हजार दक्षमोन सोना, दस हजार किक्कार चाँदी, अठार हजार किक्कार पीतल, और एक लाख किक्कार लोहा दे दिया। २८ और जिनके पास मणि थे, उन्होंने उन्हें यहोवा के भवन के खजाने के लिये गेशोंनी यहीएल के हाथ में दे दिया। २९ तब प्रजा के लोग आनन्दित हुए, क्योंकि हाकिमों ने प्रसन्न होकर खरे मन और अपनी-अपनी इच्छा से यहोवा

के लिये भेट दी थी; और दाऊद राजा बहुत ही आनन्दित हुआ। ३० तब दाऊद ने सारी सभा के सम्मुख यहोवा का धन्यवाद किया, और दाऊद ने कहा, “हे यहोवा! हे हमारे मूलपुष्प इसाएल के परमेश्वर! अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू धन्य है। ३१ हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और वैभव, तेरा ही है; क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा! राज्य तेरा है, और तू सभी के ऊपर मुख्य और महान ठहरा है। ३२ धन और महिमा तेरी ओर से मिलती है, और तू सभी के ऊपर प्रभुता करता है। सामर्थ्य और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं, और सब लोगों को बढ़ाना और बल देना तेरे हाथ में है। ३३ इसलिए अब हे हमारे परमेश्वर! हम तेरा धन्यवाद और तेरे महिमायुक्त नाम की स्तुति करते हैं। ३४ “मैं क्या हूँ और मेरी प्रजा क्या है? कि हमको इस रीति से अपनी इच्छा से तुझे भेट देने की शक्ति मिलते? तुझी से तो सब कुछ मिलता है, और हमने तेरे हाथ से पाकर तुझे दिया है। ३५ तेरी दृष्टि में हम तो अपने सब पुराखाओं के समान पराए और परदेशी हैं; पृथ्वी पर हमारे दिन छाया के समान बीत जाते हैं, और हमारा कुछ ठिकाना नहीं। ३६ हे हमारे परमेश्वर यहोवा! वह जो बड़ा संचय हमने तेरे पवित्र नाम का एक भवन बनाने के लिये किया है, वह तेरे ही हाथ से हमें मिला था, और सब तेरा ही है। ३७ और हे मेरे परमेश्वर! मैं जानता हूँ कि तू मन को जाँचता है और सिधाई से प्रसन्न रहता है; मैंने तो यह सब कुछ मन की सिधाई और अपनी इच्छा से दिया है; और अब मैंने आनन्द से देखा है, कि तेरी प्रजा के लोग जो यहाँ उपस्थित हैं, वह अपनी इच्छा से तेरे लिये भेट देते हैं। ३८ हे यहोवा! हे हमारे पुराखा अब्राहम, इसाहाक और इसाएल के परमेश्वर! अपनी प्रजा के मन के विचारों में यह बात बनाए रख और उनके मन अपनी ओर लगाए रख। ३९ और मेरे पुत्र सुलैमान का मन ऐसा खारा कर दे कि वह तेरी आज्ञाओं, चित्तीनियों और विधियों को मानता रहे और यह सब कुछ करे, और उस भवन को बनाए, जिसकी तैयारी मैंने की है।” ४० तब दाऊद ने सारी सभा से कहा, “तुम अपने परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद करो!” तब सभा के सब लोगों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद किया, और अपना-अपना सिर झुकाकर यहोवा को और राजा को दण्डवत् किया। ४१ और दसरे दिन उन्होंने यहोवा के लिये बहुत से बलिदान किए, अर्थात् अर्घ्य समेत एक हजार बैल, एक हजार भेड़ और एक हजार भेड़ के बच्चे होमबलि करके चढ़ाए, और सब इसाएल के लिये बहुत से मेलबलि चढ़ाए। ४२ उसी दिन यहोवा के समाने उन्होंने बड़े आनन्द से खाया और पिया। फिर उन्होंने दाऊद के पुत्र सुलैमान को टूसी बार राजा ठाराकर यहोवा की ओर से प्रधान होने के लिये उसका और याजक होने के लिये सादोक का अधिष्ठेता किया। ४३ तब सुलैमान अपने पिता दाऊद के स्थान पर राजा होकर यहोवा के सिंहासन पर विराजने लगा और समृद्ध हुआ, और इसाएल उसके अधीन हुआ। ४४ और सब हाकिमों और शूरवीरों और राजा दाऊद के सब पुत्रों ने सुलैमान राजा की अधीनता अंगीकार की। ४५ और यहोवा ने सुलैमान को सब इसाएल के देखते बहुत बढ़ाया, और उसे ऐसा राजकीय ऐवर्चर्च दिया, जैसा उससे पहले इसाएल के किसी राजा का न हुआ था। ४६ इस प्रकार यिशै के पुत्र दाऊद ने सरो इसाएल के ऊपर राज्य किया। ४७ और उसके इसाएल पर राज्य करने का समय चालीस वर्ष का था; उसने सात वर्ष तो हेत्रोन में और तैतीस वर्ष यस्शलेम में राज्य किया। ४८ और वह पूरे बुढ़ापे की अवस्था में दीर्घायु होकर और धन और वैभव, मनमाना भोगकर मर गया; और उसका पुत्र सुलैमान उसके स्थान पर राजा हुआ। ४९ आदि से अन्त तक राजा दाऊद के सब कामों का वृत्तान्त, ५० और उसके सब राज्य और पराक्रम का, और उस पर और इसाएल पर, वरन् देश-देश के सब राज्यों पर

जो कुछ बीता, इसका भी वृत्तान्त शमूएल दर्शी और नातान नबी और गाद दर्शी की पुस्तकों में लिखा हुआ है।

२ इतिहास

१ दाऊद का पुत्र सुलैमान राज्य में स्थिर हो गया, और उसका परमेश्वर यहोवा

उसके संग रहा और उसको बहुत ही बढ़ाया। २ सुलैमान ने सारे इस्माएल

से, अर्थात् सहश्रापियों, शतपतियों, न्यायियों और इस्माएल के सब प्रधानों

से जो पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुस्त थे, बातें की। ३ तब सुलैमान

पूरी मण्डली समेत गिबोन के ऊँचे स्थान पर गया, क्योंकि परमेश्वर का

मिलापवाला तम्बू जिसे यहोवा के दास मसा ने ज़ंगल में बनाया था, वह वही

पर था। ४ परन्तु परमेश्वर के सन्दक को दाऊद किर्कियारीम से उस स्थान पर

ले आया था जिसे उसने उसके लिये तैयार किया था, उसने तो उसके लिये

यस्शलेम में एक तम्बू खड़ा कराया था। ५ पर पीतल की जो वेदी ऊरी के पुत्र

बसलेल ने, जो हर का पोता था, बनाई थी, वह गिबोन में यहोवा के निवास के

सामने थी। इसलिए सुलैमान मण्डली समेत उसके पास गया। ६ सुलैमान ने

वही उस पीतल की वेदी के पास जाकर, जो यहोवा के सामने मिलापवाले

तम्बू के पास थी, उस पर एक हजार होमवलि चढ़ाय। ७ उसी दिन-रात को

परमेश्वर ने सुलैमान को दर्शन देकर उससे कहा, “जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे

दूँ वह माँग।” ८ सुलैमान ने परमेश्वर से कहा, “तू मेरे पिता दाऊद पर बड़ी

कर्मणा करता रहा और मुझ को उसके स्थान पर राजा बनाया है। ९ अब हे

यहोवा परमेश्वर! जो वचन तूने मेरे पिता दाऊद को दिया था, वह पूरा हो, तूने

तो मुझे ऐसी प्रजा का राजा बनाया है जो भभि की धूल के किनकों के समान

बहुत है। १० अब मुझे ऐसी बुद्धि और ज्ञान दे कि मैं इस प्रजा के सामने अनन्द-बाहर आना-जाना कर सकूँ, क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का

न्याय कर सके?” ११ परमेश्वर ने सुलैमान से कहा, “तेरी जो ऐसी ही इच्छा

है, अर्थात् तूने न तो धन-सम्पत्ति माँगी है, न ऐश्वर्य और न अपने बैरियों का

प्राण और न अपनी दीर्घायि माँगी, केवल बुद्धि और ज्ञान का वर माँगा है,

जिससे तू मेरी प्रजा का जिसके ऊपर मैंने तुझे राजा नियुक्त किया है, न्याय कर

सके, १२ इस कारण बुद्धि और ज्ञान तुझे दिया जाता है। मैं तुझे इतनी धन-

सम्पत्ति और ऐश्वर्य भी दूँगा, जितना न तो तुझे से फहले किसी राजा को मिला

और न तो बाद किसी राजा को मिलेगा।” १३ तब सुलैमान गिबोन के ऊँचे

स्थान से, अर्थात् मिलापवाले तम्बू के सामने से यस्शलेम को आया और वहाँ

इस्माएल पर राज्य करने लगा। १४ फिर सुलैमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर

लिये, और उसके चौदह सौ रथ और बारह हजार सवार थे, और उनको उसने

रथों के नगरों में, और यस्शलेम में राजा के पास ठहरा रखा। १५ राजा ने ऐसा

किया कि यस्शलेम में सोने-चाँदी का मूल्य बहुतायत के कारण पत्थरों का

सा, और देवदार का मूल्य नीचे के देश के गलरों का सा बना दिया। १६ जो

घोड़े सुलैमान रखता था, वे मिस से आते थे, और राजा के व्यापारी उन्हे झुण्ड

के झूण्ड ठहराए हुए दाम पर लिया करते थे। १७ एक रथ तो छः सौ शेकेल

चाँदी पर, और एक घोड़ा डेढ़ सौ शेकेल पर मिस से आता था; और इसी दाम

पर वे नितियों के सब राजाओं और अराम के राजाओं के लिये उन्हीं के द्वारा

लाया करते थे।

२ अब सुलैमान ने यहोवा के नाम का एक भवन और अपना राजभवन बनाने

का विचार किया। ३ इसलिए सुलैमान ने सतर हजार बोझा ढोनेवाले और

अस्सी हजार पहाड़ से पत्थर काटनेवाले और वृक्ष काटनेवाले, और इन पर

तीन हजार छः सौ मुखिए गिनती करके ठहराए। ४ तब सुलैमान ने सोर के

राजा हीराम के पास कहला भेजा, “जैसा तूने मेरे पिता दाऊद से बर्ताव किया,

अर्थात् उसके रहने का भवन बनाने को देवदार भेजे थे, वैसा ही अब मुझसे भी

बर्ताव कर। ५ देख, मैं अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाने पर हूँ, कि उसे उसके लिये वित्रि कहूँ और उसके सम्मुख सुगन्धित धूप जलाऊँ, और नित्य भेटि की रोटी उसमें रखी जाएँ; और प्रतिदिन सवैरे और सॉंड़ को, और विश्वाम और नये चाँद के दिनों में और हमारे परमेश्वर यहोवा के सब नियत पर्वों में होमपलि चढ़ाया जाए। इस्माएल के लिये ऐसी ही सदा की विधि है। ६ जो भवन मैं बनाने पर हूँ, वह महान होगा; क्योंकि हमारा परमेश्वर सब देवताओं में महान है। ७ परन्तु किस में इतनी शक्ति है, कि उसके लिये भवन बनाए, वह तो स्वर्ग में वरन् सबसे ऊँचे स्वर्ग में भी नहीं समाता? मैं क्या हूँ कि उसके सामने धूप जलाने को छोड़ और किसी विचार से उसका भवन बनाऊँ? ८ इसलिए अब तू मेरे पास एक ऐसा मनुष्य भेज दे, जो सोने, चाँदी, पीतल, लोहे और बैगनी, लाल और नीले कपड़े की कारीगरी में निपुण हो और नक्काशी भी जानता हो, कि वह मेरे पिता दाऊद के ठहराए हुए निपुण मनुष्यों के साथ होकर जो मेरे पास यहदा और यस्शलेम में रहते हैं, काम करे। ९ फिर लबानोन से मेरे पास देवदार, सोनोवार और चन्दन की लकड़ी भेजना, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तेरे दास लबानोन में वृक्ष काटना जानते हैं, और तेरे दासों के संग मेरे दास भी रहकर, १० मेरे लिये बहुत सी लकड़ी तैयार करेंगे, क्योंकि जो भवन मैं बनाना चाहता हूँ, वह बड़ा और अचम्भे के योग्य होगा। ११ तेरे दास जो लकड़ी का टोंगे, उनको मैं बीस हजार कोर कूटा हुआ गेहूँ, बीस हजार कोर जौ, बीस हजार बत दाखमधु और बीस हजार बत तेल दूँगा।” १२ तब सोर के राजा हीराम ने चिट्ठी लिखकर सुलैमान के पास भेजी: “यहोवा अपनी प्रजा से प्रेम रखता है, इससे उसने तुझे उनका राजा कर दिया।” १३ फिर हीराम ने यह भी लिखा, “धन्य है इस्माएल का परमेश्वर यहोवा, जो आकाश और पृथ्वी का सृजनहार है, और उसने दाऊद राजा को एक बुद्धिमान, चतुर और समझदार पुत्र दिया है, ताकि वह यहोवा का एक भवन और अपना राजभवन भी बनाए। १४ इसलिए अब मैं एक बुद्धिमान और समझदार पुत्र को, अर्थात् हराम-अबी को भेजता हूँ, १५ जो एक दान-वंशी छीं का बेटा है, और उसका पिता सोर का था। वह सोने, चाँदी, पीतल, लोहे, पत्थर, लकड़ी, बैगनी और नीले और लाल और सूक्ष्म सन के कपड़े का काम, और सब प्रकार की नक्काशी को जानता और सब भाँति की कारीगरी बना सकता है। इसलिए तेरे चतुर मनुष्यों के संग, और मेरे प्रभु तेरे पिता दाऊद के चतुर मनुष्यों के संग, उसको भी काम मिले। १६ मेरे प्रभु ने जो गेहूँ, जौ, तेल और दाखमधु भेजने की चर्चा की है, उसे अपने दासों के पास भिजवा दे। १७ और हम लोग जितनी लकड़ी का तुझे प्रयोजन हो उतनी लबानोन पर से काटेंगे, और बेडे बनवाकर समुद्र के मार्ग से याफा को पहुँचाएँगे, और तू उसे यस्शलेम को ले जाना।” १८ तब सुलैमान ने इस्माएली देश के सब परदेशियों की गिनती ली, यह उस गिनती के बाद हुई जो उसके पिता दाऊद ने ली थी; और वे एक लाख तिरपन हजार छः सौ पुष्प निकले। १९ उनमें से उसने सतर हजार बोझा ढोनेवाले, अस्सी हजार पहाड़ पर तथा एक लाख तिरपन हजार बोझा ढोनेवाले और वृक्ष काटनेवाले और वृक्ष काटनेवाले और तीन हजार छः सौ उन लोगों से काम करानेवाले मुखिया नियुक्त किए।

३ तब सुलैमान ने यस्शलेम में मोरियाय नामक पहाड पर उसी स्थान में

यहोवा का भवन बनाना आरम्भ किया, जिसे उसके पिता दाऊद ने दर्शन

पाकर यबूनी ओरनीन के खलिहान में तैयार किया था: ० उसने अपने राज्य के

चौथे वर्ष के दूसरे महीने के, दूसरे दिन को मिर्माण कार्य आरम्भ किया। १ परमेश्वर का जो भवन सुलैमान ने बनाया, उसकी यह नीव है, अर्थात् उसकी

लम्बाई तो प्राचीनकाल के नाप के अनुसार साठ हाथ, और उसकी चौड़ाई बीस हाथ की थी। २ भवन के सामने के ओसारे की लम्बाई तो भवन की

चौडाई के बराबर बीस हाथ की; और उसकी ऊँचाई एक सौ बीस हाथ की थी। सुलैमान ने उसको भीतर से शुद्ध सोने से मढ़वाया। ५ भवन के मुख्य भाग की छत उसने सोनोव की लकड़ी से पटवाई, और उसको अच्छे सोने से मढ़वाया, और उस पर खजर के वृक्ष की ओर सॉकलों की नक्काशी कराई। ६ फिर शोभा देने के लिये उसने भवन में मणि जड़वाए। और यह सोना पर्वम का था। ७ उसने भवन को, अर्थात् उसकी किडियों, डेविडियों, दीवारों और किवाड़ों को सोने से मढ़वाया, और दीवारों पर कस्ब खुदवाए। ८ फिर उसने भवन के परमपवित्र स्थान को बनाया; उसकी लम्बाई भवन की चौडाई के बराबर बीस हाथ की थी, और उसकी चौडाई बीस हाथ की थी; और उसने उसे छः सौ किक्कार शुद्ध सोने से मढ़वाया। ९ सोने की कीलों का तौल पचास शेकेल था। उसने अटारियों को भी सोने से मढ़वाया। १० फिर भवन के परमपवित्र स्थान में उसने नक्काशी के काम के दो कस्ब बनवाए और वे सोने से मढ़वाए गए। ११ कर्स्बों के पंख तो सब मिलकर बीस हाथ लग्बे थे, अर्थात् एक कर्स्ब का एक पंख पाँच हाथ का और भवन की दीवार तक पहुँचा हुआ था; और उसका दूसरा पंख पाँच हाथ का था और दूसरे कर्स्ब के पंख से मिला हुआ था। १२ दूसरे कर्स्ब का भी एक पंख पाँच हाथ का और भवन की दूसरी दीवार तक पहुँचा था, और दूसरा पंख पाँच हाथ का और पहले कर्स्ब के पंख से सटा हुआ था। १३ इन कर्स्बों के पंख बीस हाथ फैले हुए थे; और वे अपने अपने पाँवों के बल खड़े थे, और अपना-अपना मुख भीतर की ओर किए हुए थे। १४ फिर उसने बीचवाले पर्दे को नीते, बैगनी और लाल रंग के सन के कपड़े का बनवाया, और उस पर कस्ब कढ़वाए। १५ भवन के सामने उसने पैतीस-पैतीस हाथ ऊँचे दो खम्भे बनवाए, और जो कँगनी एक-एक के ऊपर थी वह पाँच-पाँच हाथ की थी। १६ फिर उसने भीतरी कोठरी में सॉकलों बनवाकर खम्भों के ऊपर लगाई, और एक सौ अनार भी बनाकर सॉकलों पर लटकाए। १७ उसने इन खम्भों को मन्दिर के सामने, एक तो उसकी दाहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर खड़ा कराया; और दाहिने खम्भे का नाम याकीन और बाएँ खम्भे का नाम बोअज रखा।

४ फिर उसने पीतल की एक वेदी बनाई, उसकी लम्बाई और चौडाई बीस-बीस हाथ की और ऊँचाई दस हाथ की थी। ५ फिर उसने ढला हुआ एक हौद बनवाया; जो एक किनारे से दूधेरे किनारे तक दस हाथ तक चौड़ा था, उसका आकार गोल था, और उसकी ऊँचाई पाँच हाथ की थी, और उसके चारों ओर का धेर तीस हाथ के नाप का था। ६ उसके नीचे, उसके चारों ओर, एक-एक हाथ में दस-दस बैलों की प्रतिमाएँ बनी थीं, जो हौद को धेरे थीं, जब वह ढाला गया, तब ये बैल भी दो पंक्तियों में ढाले गए। ७ वह बारह बने हुए बैलों पर रखा गया, जिनमें से तीन उत्तर, तीन पश्चिम, तीन दक्षिण और तीन पूर्व की ओर मुँह किए हुए थे; और इनके ऊपर हौद रखा था, और उन सभी के पिछले अंग भीतरी भाग में पड़ते थे। ८ हौद के धातु की मोर्टाई मुश्ती भर की थी, और उसका किनारा कटोरे के किनारे के समान, सोसान के फूलों के काम से बना था, और उसमें तीन हजार बत भरकर समाता था। ९ फिर उसने धोने के लिये दस हौदी बनवाकर, पाँच दाहिनी और पाँच बाईं और रख दी। उनमें होमबिटी की बरताएँ धोई जाती थीं, परन्तु याजकों के धोने के लिये बड़ा हौद था। १० फिर उसने सोने की दस दीवाट विधि के अनुसार बनवाई, और पाँच दाहिनी ओर और पाँच बाईं ओर मन्दिर में रखवा दी। ११ फिर उसने दस मेज बनवाकर, पाँच दाहिनी ओर और पाँच बाईं ओर मन्दिर में रखवा दी। और उसने सोने के एक सौ कटोरे बनवाए। १२ फिर उसने याजकों के आँगन और बड़े आँगन को बनवाया, और इस आँगन में फाटक बनवाकर उनके किवाड़ों पर पीतल मढ़वाया। १३ उसने हौद को भवन की दाहिनी ओर

अर्थात् पूर्व और दक्षिण के कोने की ओर रखवा दिया। १४ हराम ने हण्डों, फावडियों, और कटोरों को बनाया। इस प्रकार हराम ने राजा सुलैमान के लिये परमेश्वर के भवन में जो काम करना था उसे पूरा किया १५ अर्थात् दो खम्भे और गोलों समेत वे कँगनियाँ जो खम्भों के सिरों पर थीं, और खम्भों के सिरों पर के गोलों को ढाँकने के लिए जालियों की दो-दो पंक्ति; १६ और दोनों जालियों के लिये चार सौ अनार और जो गोले खम्भों के सिरों पर थे, उनको ढाँकेवाली एक-एक जाली के लिये अनारों की दो-दो पंक्ति बनाई। १७ फिर उसने कुर्सियाँ और कुर्सियों पर की हौदियाँ, १८ और उनके नीचे के बाहर बैल बनाए। १९ फिर हराम-अनी ने हण्डों, फावडियों, कटोरों और इनके सब सामान को यहोवा के भवन के लिये राजा सुलैमान की आज्ञा से झलकाए हए पीतल के बनवाए। २० राजा ने उनको यरदन की तराई में अर्थात् सुककोत और सारातान के बीच की चिकनी मिट्टीवाली भूमि में ढलवाया। २१ सुलैमान ने ये सब पात्र बहुत मात्रा में बनवाए, यहाँ तक कि पीतल के तौल का हिसाब न था। २२ अतः सुलैमान ने परमेश्वर के भवन के सब पात्र, सोने की वेदी, और वे मेज जिन पर भेंट की रोटी रखी जाती थीं, २३ फिर दीपकों समेत शुद्ध सोने की दीवटें, जो विधि के अनुसार भीतरी कोठरी के सामने जला करती थीं। २४ और सोने वरन् निरे सोने के फूल, दीपक और चिमटे; २५ और शुद्ध सोने की कैचियाँ, कटोरे, धूपदान और करछे बनवाए। फिर भवन के द्वार और परमपवित्र स्थान के भीतरी दरवाजे और भवन अर्थात् मन्दिर के दरवाजे सोने के बने।

५ इस प्रकार सुलैमान ने यहोवा के भवन के लिये जो-जो काम बनवाया वह सब पूरा हो गया। तब सुलैमान ने अपने पिता दाऊद के पवित्र किए हए सोने, चाँदी और सब पात्रों को भीतर पहुँचाकर परमेश्वर के भवन के भांडारों में रखवा दिया। २६ तब सुलैमान ने इस्माएल के पुनियों को और गोलों के सब मुख्य पुस्त, जो इस्माएलियों के पितरों के घरानों के प्रधान थे, उनको भी यस्तलेम में इस उद्देश्य से इकट्ठा किया कि वे यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर से अर्थात् सियोन से ऊपर ले आएँ। २७ सब इस्माएली पुस्त सातवें महीने के पर्व के समय राजा के पास इकट्ठा हुए। २८ जब इस्माएल के सब पुनिये आए, तब लेवियों ने सन्दूक को उठा लिया। २९ और लेवीय याजक सन्दूक और मिलापवाले तम्बू और जितने पवित्र पात्र उस तम्बू में थे उन सभी को ऊपर ले गए। ३० और राजा सुलैमान और सब इस्माएली मण्डली के लोग जो उसके पास इकट्ठा हुए थे, उन्होंने सन्दूक के सामने इन्हें भेड़ और बैल बति किए, जिनकी गिनती और हिसाब बहुतायत के कारण न हो सकता था। ३१ तब याजकों ने यहोवा की वाचा का सन्दूक उसके स्थान में, अर्थात् भवन की भीतरी कोठरी में जो परमपवित्र स्थान है, पहुँचाकर, कर्स्बों के पंखों के तले रख दिया। ३२ सन्दूक के स्थान के ऊपर कस्ब पंख फैलाए हुए थे, जिससे वे ऊपर से सन्दूक और उसके डंडों को ढाँके थे। ३३ डंडे तो इतने लम्बे थे, कि उनके सिरे सन्दूक से निकले हुए भीतरी कोठरी के सामने देख पड़ते थे, परन्तु बाहर से वे दिखाई न पड़ते थे। वे आज के दिन तक वर्ही हैं। ३४ सन्दूक में पथर की उन दो पटियाओं को छोड़ कुछ न था, जिन्हें मूसा ने होरेब में उसके भीतर उस समय रखा, जब यहोवा ने इस्माएलियों के मिस्र से निकलने के बाद उनके साथ वाचा बाँधी थी। ३५ जब याजक पवित्रपथान से निकले (जितने याजक उपस्थित थे, उन सभी ने अपने-अपने को पवित्र किया था, और अलग-अलग दलों में होकर सेवा न करते थे), ३६ और जितने लेवीय गायक थे, वे सब के सब अर्थात् पुत्रों और भाइयों समेत आसाप, हेमान और यदून सन के बच्च पहने झाँझ, सारंगियाँ और वीणाएँ लिये हुए, वेदी के पूर्व की ओर

खड़े थे, और उनके साथ एक सौ बीस याजक तुहियां बजा रहे थे।) १३ और जब तुहियां बजानेवाले और गानेवाले एक स्वर से यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे, और तुहियां, झाँझ आदि बाजे बजाते हुए यहोवा की यह स्तुति ऊँचे शब्द से करने लगे, “वह भला है और उसकी कस्ता सदा की है,” तब यहोवा के भवन में बादल छा गया, १४ और बादल के कारण याजक लोग सेवा-ठहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गया था।

६ तब सुलैमान कहने लगा, “यहोवा ने कहा था, कि मैं घोर अंधकार में वास किए रहूँगा। ७ परन्तु मैंने तेरे लिये एक वासस्थान बनान् ऐसा दृढ़ स्थान बनाया है, जिसमें तू युग-युग रहे।) ८ तब राजा ने इसाएल की पूरी सभा की ओर मुँह फेरकर उसको आशीर्वाद दिया, और इसाएल की पूरी सभा खड़ी रही। ९ और उसने कहा, “धन्य है इसाएल का परमेश्वर यहोवा, जिसने अपने मुँह से मेरे पिता दाऊद को यह वचन दिया था, और अपने हाथों से इसे पूरा किया है, १० जिस दिन से मैं अपनी प्रजा को मिस देश से निकाल लाया, तब से मैंने न तो इसाएल के किसी गोत्र का कोई नगर चुना जिसमें मेरे नाम के निवास के लिये भवन बनाया जाए, और न कोई मनुष्य चुना कि वह मेरी प्रजा इसाएल पर प्रधान हो। ११ परन्तु मैंने यस्सलेम को इसलिए चुना है, कि मेरा नाम वहाँ हो, और दाऊद को चुन लिया है कि वह मेरी प्रजा इसाएल पर प्रधान हो।” १२ मेरे पिता दाऊद की यह इच्छा थी कि इसाएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनावा। १३ परन्तु यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा, “तेरी जो इच्छा है कि यहोवा के नाम का एक भवन बनाए, ऐसी इच्छा करके तेरे भला तो किया; १४ तो भी तू उस भवन को बनाने न पाएगा: तेरा जो निज पुत्र होगा, वही मेरे नाम का भवन बनाएगा।” १५ यह वचन जो यहोवा ने कहा था, उसे उसने पूरा भी किया है; और मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर उठकर यहोवा के वचन के अनुसार इसाएल की गदी पर विराजमान हूँ, और इसाएल के परमेश्वर यहोवा के नाम के इस भवन को बनाया है। १६ इसमें मैंने उस सन्दर्भ को रख दिया है, जिसमें यहोवा की वह वाचा है, जो उसने इसाएलियों से बांधी थी।” १७ तब वह इसाएल की सारी सभा के देखते यहोवा की बेटी के सामने खड़ा हुआ और अपने हाथ फैलाए। १८ सुलैमान ने पाँच हाथ लम्बी, पाँच हाथ चौड़ी और तीन हाथ ऊँची पीतल की एक चौकी बनाकर आँगन के बीच रखवाई थी; उसी पर खड़े होकर उसने सारे इसाएल की सभा के सामने घूटने टेककर स्वर्ण की ओर हाथ फैलाए हुए कहा, १९ “हे यहोवा, हे इसाएल के परमेश्वर, तेरे समान न तो स्वर्ण में और न पृथ्वी पर कोई इपरमेश्वर है: तेरे जो दास अपने सारे मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर चलते हैं, उनके लिये तू अपनी वाचा पूरी करता और कस्ता करता रहता है। २० तेरे जो वचन मेरे पिता दाऊद को दिया था, उसका तूने पालन किया है, जैसा तूने अपने मुँह से कहा था, वैसा ही अपने हाथ से उसको हमारी आँखों के सामने पूरा भी किया है। २१ इसलिए अब हे इसाएल के परमेश्वर यहोवा, इस वचन को भी पूरा कर, जो तूने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था, ‘तेरे कुल में मेरे समाने इसाएल की गदी पर विराजनेवाले सदा बने रहेंगे, यह हो कि जैसे तू अपने को मेरे सम्मुख जानकर चलता रहा, वैसे ही तेरे बंश के लोग अपनी चाल चलन में ऐसी चौकसी करें, कि मेरी व्यवस्था पर चलें।’ २२ अब हे इसाएल के परमेश्वर यहोवा, जो वचन तूने अपने दास दाऊद को दिया था, वह सच्चा किया जाए। २३ “परन्तु क्या परमेश्वर सच्चमुच मनुष्यों के संग पृथ्वी पर वास करेगा? स्वर्ग में वरन् सबसे ऊँचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता, फिर मेरे बनाए हुए इस भवन में तू कैसे समाएगा? २४ तो भी हे मेरे परमेश्वर यहोवा, अपने दास

की प्रार्थना और गिडगिडाहट की ओर ध्यान दे और मेरी पुकार और यह प्रार्थना सुन, जो मैं तेरे समाने कर रहा हूँ। २५ वह यह है कि तेरी आँखें इस भवन की ओर, अर्थात् इसी स्थान की ओर जिसके विषय में तूने कहा है कि मैं उसमें अपना नाम रखूँगा, गत-दिन खुली रहें, और जो प्रार्थना तेरा दास इस स्थान की ओर करे, उसे तू सुन ले। २६ और अपने दास, और अपनी प्रजा इसाएल की प्रार्थना जिसको वे इस स्थान की ओर मुँह किए हुए गिडगिडाकर करें, उसे सुन लेना; स्वर्ग में से जो तेरा निवास-स्थान है, सुन लेना; और सुनकर क्षमा करना। २७ “जब कोई मनुष्य किसी दूसरे के विस्तु अपराध करे और उसको शपथ खिलाई जाए, और वह आकर इस भवन में तेरी बेटी के सामने शपथ खाए, २८ तब तू स्वर्ग में से सुनना और मानना, और अपने दासों का न्याय करके दृष्टि को बदला देना, और उसकी चाल उसी के सिर लौटा देना, और निर्दोष को निर्दोष ठहराकर, उसकी धार्मिकता के अनुसार उसको फल देना। २९ “फिर यदि तेरी प्रजा इसाएल तेरे विस्तु पाप करने के कारण अपने शत्रुओं से हार जाए, और तेरी ओर फिरकर तेरा नाम मानें, और इस भवन में तूझ से प्रार्थना करें और गिडगिडाहट, ३० तो तू स्वर्ग में से सुनना; और अपनी प्रजा इसाएल का पाप क्षमा करना, और उन्हें इस देश में लौटा ले आना जिसे तूने उनको और उनके पुराखाओं को दिया है। ३१ “जब वे तेरे विस्तु पाप करें, और इस कारण आकाश इतना बन्द हो जाए कि वर्षा न हो, ऐसे समय यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करके तेरे नाम को मानें, और तू जो उन्हें दुख देता है, इस कारण वे अपने पाप से फिरें, ३२ तो तू स्वर्ग में से सुनना, और अपने दासों और अपनी प्रजा इसाएल के पाप को क्षमा करना; तू जो उनको वह भला मार्ग दिखाता है जिस पर उन्हें चलना चाहिये, इसलिए अपने इस देश पर जिसे तूने अपनी प्रजा का भाग करके दिया है, पानी बरसा देना। ३३ “जब इस देश में अकल या मरी या झलक हो या गेस्ट या टिड्डीयाँ या कीड़े लगें, या उनके शत्रु उनके देश के फाटकों में उन्हें धेर रखें, या कोई विपत्ति या रोग हो; ३४ तब यदि कोई मनुष्य या तेरी सारी प्रजा इसाएल जो अपना-अपना दुःख और अपना-अपना खेद जानकर और गिडगिडाहट के साथ प्रार्थना करके अपने हाथ इस भवन की ओर फैलाएँ, ३५ तो तू अपने स्वर्गीय निवास-स्थान से सुनकर क्षमा करना, और एक-एक के मन की जानकर उसकी चाल के अनुसार उसे फल देना; (तू ही तो आदमियों के मन का जानेवाला है); ३६ कि वे जितने दिन इस देश में रहें, जिसे तूने उनके पुराखाओं को दिया था, उतने दिन तक तेरा भय मानते हुए तेरे मार्गों पर चलते रहें। ३७ “फिर परदेशी भी जो तेरी प्रजा इसाएल का न हो, जब वह तेरे बड़े नाम और बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के कारण दूर देश से आएँ, और आकर इस भवन की ओर मुँह किए हुए प्रार्थना करे, ३८ तब तू अपने स्वर्गीय निवास-स्थान में से सुने, और जिस बात के लिये ऐसा परदेशी तूझ पुकारे, उसके अनुसार करना; जिससे पृथ्वी के सब देशों के लोग तेरा नाम जानकर, तेरी प्रजा इसाएल के समान तेरा भय मानें; और निश्चय करें, कि यह भवन जो मैंने बनाया है, वह तेरा ही कहलाता है। ३९ “जब तेरी प्रजा के लोग जहाँ कहीं तू उन्हें भेजे वहाँ अपने शत्रुओं से लड़ाई करने को निकल जाएँ, और इस नार की ओर जिसे तूने चुना है, और इस भवन की ओर जिसे मैंने तेरे नाम का बनाया है, मुँह किए हुए तूझ से प्रार्थना करें, ४० तब तू स्वर्ग में से उनकी प्रार्थना और गिडगिडाहट सुनना, और उनका न्याय करना। ४१ “निषाप तो कोई मनुष्य नहीं है यदि वे भी तेरे विस्तु पाप करें और तू उन पर कोप करके उन्हें शत्रुओं के हाथ कर दे, और वे उन्हें बन्दी बनाकर किसी देश को, चाहे वह दूर हो, चाहे निकट, ले जाएँ, ४२ तो यदि वे बैंधुआई के देश में सोच विचार करें, और फिरकर अपने बन्दी बनानेवालों के देश में तूझ से गिडगिडाकर कहें, ‘हमने पाप किया, और

कुटिलता और दुष्टता की है,’ ३८ इसलिए यदि वे अपनी बैंधुआई के देश में जहाँ वे उन्हें बन्दी बनाकर ले गए हों अपने पौरे मन और सारे जीव से तेरी ओर फिरें, और अपने इस देश की ओर जो तूने उनके पुराखाओं को दिया था, और इस नगर की ओर जिसे तूने चुना है, और इस भवन की ओर जिसे मैंने तेरे नाम का बनाया है, मैंहूँ किए हृष्ट तुझ से प्रार्थना करें, ३९ तो तू अपने स्वर्णीय निवास-स्थान में से उनकी प्रार्थना और गिडिगिडाहट सुनना, और उनका न्याय करना और जो पाप तेरी प्रजा के लोग तेरे विश्व करें, उन्हें क्षमा करना। ४० और है मेरे परमेश्वर! जो प्रार्थना इस स्थान में की जाए उसकी ओर अपनी आँखें खोले रह और अपने कान लगाए रख। ४१ “अब हे यहोवा परमेश्वर, उठकर अपने सामर्थ्य के सन्दूक समेत अपने विश्वास्थान में आ, हे यहोवा परमेश्वर तेरे याजक उद्गारस्पी बब्ल पहने रहें, और तेरे भक्त लोग भलाई के कारण आनन्द करते रहें। ४२ हे यहोवा परमेश्वर, अपने अभिवित की प्रार्थना को अनसुनी न कर, तू अपने दास दाऊद पर की गई कस्ता के काम स्मरण रख।”

७ जब सुलैमान यह प्रार्थना कर चुका, तब स्वर्ग से आग ने गिरकर होमबलियों

तथा अन्य बलियों को भस्म किया, और यहोवा का तेज भवन में भर गया। १ याजक यहोवा के भवन में प्रवेश न कर सके, क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया था। २ और जब आग गिरी और यहोवा का तेज भवन पर छा गया, तब सब इसाएली देखते रहे, और फर्श पर झुककर अपना-अपना मूँह भूमि की ओर किए हुए दण्डवत् किया, और यह कहकर यहोवा का धन्यवाद किया, “वह भला है, उसकी कस्ता सदा की है।” ३ तब सब प्रजा समेत राजा ने यहोवा को बत्ति चढ़ाई। ४ राजा सुलैमान ने बाईंस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़-बकरियाँ चढ़ाई। अतः पूरी प्रजा समेत राजा ने यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा की। ५ याजक अपना-अपना कार्य करने को खड़े रहे, और लेवीय भी यहोवा के गति गाने के लिये वायायन लिये हुए खड़े थे, जिन्हें दाऊद राजा ने यहोवा की सदा की कस्ता के कारण उसका धन्यवाद करने को बनाकर उनके द्वारा स्तुति कराई थी; और इनके सामने याजक लोग तुरहियाँ बजाते रहे; और सब इसाएली खड़े रहे। ६ फिर सुलैमान ने यहोवा के भवन के सामने आँगन के बीच एक स्थान पवित्र करके होमबलि और मेलबलियों की चर्बी वहीं चढ़ाई, क्योंकि सुलैमान की बनाई हुई पीतल की बेटी होमबलि और अन्नबलि और चर्बी के लिये छोटी थी। ७ उसी समय सुलैमान ने और उसके सांग हमारत की घाटी से लेकर मिस के नाले तक के समस्त इसाएल की एक बहुत बड़ी सभा ने सात दिन तक पर्व को माना। ८ और आठवें दिन उन्होंने महासभा की, उन्होंने बेटी की प्रतिष्ठा सात दिन की; और पर्वों की भी सात दिन माना। ९ सातवें महीने के तेईसवें दिन को उसने प्रजा के लोगों को बिदा किया, कि वे अपने-अपने द्वे को जाएँ, और वे उस भलाई के कारण जो यहोवा ने दाऊद और सुलैमान और अपनी प्रजा इसाएल पर की थी आनन्दित थे। १० अतः सुलैमान यहोवा के भवन और राजभवन को बना चुका, और यहोवा के भवन में और अपने भवन में जो कुछ उसने बनाना चाहा, उसमें उसका मनोरथ पूरा हुआ। ११ तब यहोवा ने रात में उसको दर्शन देकर उससे कहा, “मैंने तेरी प्रार्थना सुनी और इस स्थान को जय के भवन के लिये अपनाया है। १२ यदि मैं आकाश को ऐसा बन्द करूँ, कि वर्षा न हो, या टिड़ियों को देश उजाड़ने की आज्ञा दूँ, या अपनी प्रजा में मरी फैलाऊ, १३ तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मैं कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी खुली चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूँगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूँगा। १४ अब से जो प्रार्थना इस स्थान में की जाएगी, उस पर मेरी आँखें खुली और मेरे कान लगे रहेंगे।

१५ क्योंकि अब मैंने इस भवन को अपनाया और पवित्र किया है कि मेरा नाम सदा के लिये इसमें बना रहे; मेरी आँखें और मेरा मन दोनों नित्य यहीं लगे रहेंगे। १६ यदि तु अपने पिता दाऊद के समान अपने को मेरे सम्मुख जानकर चलता रहे और मेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया करे, और मेरी विधियों और नियमों को मानता रहे, १७ तो मैं तेरी राजगी को स्थिर रखूँगा; जैसे कि मैंने तेरे पिता दाऊद के साथ वाचा बाँधी थी, कि तेरे कुल में इसाएल पर प्रभुता करनेवाला सदा बना रहेगा। १८ परन्तु यदि तुम लोग फिरो, और मेरी विधियों और आज्ञाओं को जो मैंने तुम को दी हैं त्यागो, और जाक धारा देवताओं की उपसना करो और उन्हें दण्डवत् करो, १९ तो मैं उनको अपने देश में से जो मैंने उनको दिया है, जड से उखाइँगा; और इस भवन को जो मैंने अपने नाम के लिये पवित्र किया है, अपनी दृष्टि से दूर करूँगा; और ऐसा करूँगा कि देश-देश के लोगों के बीच उसकी उपमा और नामधराई चलेगी। २० यह भवन जो इतना विशाल है, उसके पास से आने-जानेवाले चकित होकर पछेंगे, ‘यहोवा ने इस देश और इस भवन से ऐसा क्यों किया है?’ २१ तब लोग कहेंगे, ‘उन लोगों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को जो उनको मिथ देश से निकाल लाया था, त्याग कर पराए देवताओं को ग्रहण किया, और उन्हें दण्डवत् की ओर उनकी उपसना की, इस कारण उसने यह सब विपत्ति उन पर ढाली है।’”

८ सुलैमान को यहोवा के भवन और अपने भवन के बनाने में बीस वर्ष लगे।

१ तब जो नगर हीराम ने सुलैमान को दिए थे, उन्हें सुलैमान ने दृढ़ करके उनमें इसाएलियों को बसाया। २ तब सुलैमान सोबा के हमात को जाकर, उस पर जयवन्त हुआ। ३ उसने तदमोर को जो जंगल में है, और हमात के सब भण्डार-नगरों को दृढ़ किया। ४ फिर उसने ऊपरवाले और नीचेवाले दोनों बेथेरोन को शहरपनाह और फाटकों और बेंडों से दृढ़ किया। ५ उसने बालात को और सुलैमान के जितने भण्डार-नगर थे और उसके रथों और सवारों के जितने नगर थे उनको, और जो कुछ सुलैमान ने यस्शलेम, लबानोन और अपने राज्य के सब देश में बनाना चाहा, उन सब को बनाया। ६ हितियों, एमोरियों, परिजियों, हिल्डियों और यवसियों के बचे हुए लोग जो इसाएल के न थे, ७ उनके बंश जो उनके बाद देश में रह गए, और जिनका इसाएलियों ने अन्त न किया था, उनमें से तो बहुतें को सुलैमान ने बेगार में रखा और आज तक उनकी बही दशा है। ८ परन्तु इसाएलियों में से सुलैमान ने अपने काम के लिये किसी को दास न बनाया, वे तो योद्धा और उसके हाकिम, उसके सरदार और उसके रथों और सवारों के प्रधान हुए। ९ सुलैमान के सरदारों के प्रधान जो प्रजा के लोगों पर प्रभुता करनेवाले थे, वे तो ढाईं सौ थे। १० फिर सुलैमान फ़िरौन की बेटी को दाऊदपुर्स में से उस भवन में ले आया जो उसने उसके लिये बनाया था, क्योंकि उसने कहा, “जिस-जिस स्थान में यहोवा का सन्दूक आया है, वह पवित्र है, इसलिए मेरी रानी इसाएल के राजा दाऊद के भवन में न रहने पाएगी।” ११ तब सुलैमान ने यहोवा की उस बेटी पर जो उसने ओसरे के आगे बनाई थी, यहोवा को होमबलि चढ़ाई। १२ वह मूसा की आज्ञा और प्रतिदिन के नियम के अनुसार, अर्थात् विश्वाम और नये चाँद और प्रतिवर्ष तीन बार ठहराए हुए पर्वों अर्थात् अख्मरी गोटी के पर्व, और सप्ताहों के पर्व, और झोपड़ियों के पर्व में बलि चढ़ाया करता था। १३ उसने अपने पिता दाऊद के नियम के अनुसार याजकों के सेवाकार्यों के लिये उनके दल ठहराए, और लेवियों को उनके कार्यों पर ठहराया, कि हर एक दिन के प्रयोजन के अनुसार ये यहोवा की स्तुति और याजकों के सामने सेवा-ठहल किया करें, और एक-एक फाटक के पास द्वारपालों को दल-दल करके ठहरा दिया; क्योंकि परमेश्वर के भक्त दाऊद ने ऐसी आज्ञा दी थी। १४ राजा ने भण्डारों या

किसी और बात के सम्बंध में याजकों और लेवियों को जो-जो आज्ञा दी थी, उन्होंने उसे न टाला। १६ सुलैमान का सब काम जो उसने यहोवा के भवन की नीव डालने से लेकर उसके पूरा करने तक किया वह ठीक हुआ। इस प्रकार यहोवा का भवन पूरा हुआ। १७ तब सुलैमान एस्योनोबेर और एलोतो को गया, जो एदोम के देश में समुद्र के किनारे स्थित हैं। १८ हीराम ने उसके पास अपने जहाजियों के द्वारा जहाज और समुद्र के जानकार मल्लाह भेज दिए, और उन्होंने सुलैमान के जहाजियों के संग ओपीरो को जाकर वहाँ से साढ़े चार सौ किलोमीटर सोना राजा सुलैमान को ला दिया।

९ जब शेबा की रानी ने सुलैमान की कीर्ति सुनी, तब वह कठिन-कठिन प्रश्नों

से उसकी परीक्षा करने के लिये यस्शलेम को चली। वह बहुत भारी दल और मसालों और बहुत सोने और मणि से तदे ऊँ साथ लिये हए आई, और सुलैमान के पास पहुँचकर उससे अपने मन की सब बातों के विषय बातें की। २ सुलैमान ने उसके सब प्रश्नों का उत्तर दिया, कोई बात सुलैमान की बुद्धि से ऐसी बाहर न रही कि वह उसे न बता सके। ३ जब शेबा की रानी ने सुलैमान की बुद्धिमानी और उसका बनाया हुआ भवन, ४ और उसकी मेज पर का भोजन देखा, और उसके कर्मचारी किस रीति बैठते, और उसके टहलए किस रीति खड़े रहते और कैसे-कैसे कपड़े पहने रहते हैं, और उसके पिलानेवाले कैसे हैं, और वे कैसे कपड़े पहने हैं, और वह कैसी चढ़ाई है जिससे वह यहोवा के भवन को जाया करता है, जब उसने यह सब देखा, तब वह चकित हो गई। ५ तब उसने राजा से कहा, “मैंने तेरे कामों और बुद्धिमानी की जो कीर्ति अपने देश में सुनी वह सच ही है।” ६ परन्तु जब तक मैंने आप ही आकर अपनी आँखों से यह न देखा, तब तक मैंने उन पर विवाद न किया; परन्तु तेरी बुद्धि की आधी बड़ाई भी मुझे न बताई गई थी; तू उस कीर्ति से बढ़कर है जो मैंने सुनी थी। ७ धन्य हैं तेरे जन, धन्य हैं तेरे ये सेवक, जो नित्य तेरे सम्मुख उपस्थित रहकर तेरी बुद्धि की बातें सुनते हैं। ८ धन्य है तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझ से ऐसा प्रसन्न हुआ, कि तुझे अपनी राजगढ़ी पर इसलिए विराजमान किया कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की ओर से राज्य करें; तेरा परमेश्वर जो इस्माएल से प्रेम करके उन्हें सदा के लिये स्थिर करना चाहता था, इसी कारण उसने तुझे न्याय और धार्मिकता करने को उनका राजा बना दिया।” ९ उसने राजा को एक सौ बीस किक्करार सोना, बहुत सा सुगन्ध-दृव्य, और मणि दिए; जैसे सुगन्ध-दृव्य शेबा की रानी ने राजा सुलैमान को दिए, वैसे देखने में नहीं आए। १० फिर हीराम और सुलैमान दोनों के जहाजी जो ओपीर से सोना लाते थे, वे चन्दन की लकड़ी और मणि भी लाते थे। ११ राजा ने चन्दन की लकड़ी से यहोवा के भवन और राजभवन के लिये चबतेरे और गायकों के लिये बीणाएँ और सारंगियाँ बनवाईं; ऐसी वस्तुएँ उससे पहले यहदा देश में न देख पड़ी थीं। १२ फिर शेबा की रानी ने जो कुछ चाहा वही राजा सुलैमान ने उसको उसकी इच्छा के अनुसार दिया; यह उससे अधिक था, जो वह राजा के पास ले आई थी। तब वह अपने जनों समेत अपने देश को लौट गई। १३ जो सोना प्रतिवर्ष सुलैमान के पास पहुँचा करता था, उसका तौल छः सौ छियासठ किक्करा था। १४ यह उससे अधिक था जो सोदागर और व्यापारी लाते थे; और अब देश के सब राजा और देश के अधिपति भी सुलैमान के पास सोना-चाँदी लाते थे। १५ राजा सुलैमान ने सोना गढ़ाकर दो सौ बड़ी-बड़ी ढालें बनवाईं; एक-एक ढाल में छः सौ शेकेल गढ़ा हुआ सोना लगा। १६ फिर उसने सोना गढ़ाकर तीन सौ छोटी ढालें और भी बनवाईं; एक-एक छोटी ढाल में तीन सौ शेकेल सोना लगा, और राजा ने उनको लबानोन के बन नामक महल में रख दिया। १७ राजा ने हाथी दाँत का एक बड़ा सिंहासन बनाया और

शुद्ध सोने से मढ़ाया। १८ उस सिंहासन में छः सीढ़ियाँ और सोने का एक पावदान था; ये सब सिंहासन से जुड़े थे, और बैठने के स्थान के दोनों ओर टेक लगी थी और दोनों टेकों के पास एक-एक सिंह खड़ा हुआ बना था, वे सब बारह हुए। किसी राज्य में ऐसा कभी न बना। १९ राजा सुलैमान के पीने के सब पात्र सोने के थे, और लबानोन के बन नामक महल के सब पात्र भी शुद्ध सोने के थे; सुलैमान के दिनों में चाँदी का कोई मूल्य न था। २० क्योंकि हीराम के जहाजियों के संग राजा के जहाज तर्शीश को जाते थे, और तीन-तीन वर्ष के बाद तर्शीश के ये जहाज सोना, चाँदी, हाथी दाँत, बद्दल और मोरे ले आते थे। २१ अतः राजा सुलैमान धन और बुद्धि में पृथ्वी के सब राजाओं से बढ़कर हो गया। २२ पृथ्वी के सब राजा सुलैमान की उस बुद्धि की बातें सुनने को जो परमेश्वर ने उसके मन में उपजाइ थी उसका दर्शन करना चाहते थे। २३ वे प्रतिवर्ष अपनी-अपनी भेट अर्थात् चाँदी और सोने के पात्र, बन्ध-शस्त्र, सुगन्ध-दृव्य, घोड़े और खच्चर ले आते थे। २४ अपने घोड़ों और रथों के लिये सुलैमान के चार हजार घुड़साल और बारह हजार घुड़सवार भी थे, जिनको उसने रथों के नारों में और यस्शलेम में राजा के पास ठहरा रखा। २५ वह फरात से पलिशियों के देश और मिस्र की सीमा तक के सब राजाओं पर प्रभुता करता था। २६ राजा ने ऐसा किया कि बहुतायत के कारण यस्शलेम में चाँदी का मूल्य पत्थरों का सा और देवदार का मूल्य नीचे के देश के गूलरों का सा हो गया। २७ लोग मिस्र से और अन्य सभी देशों से सुलैमान के लिये घोड़े लाते थे। २८ आदि से अन्त तक सुलैमान के और सब काम क्या नातान नबी की पुस्तक में, और शिलोवासी अहिण्याह की नववत की पुस्तक में, और नबात के पुत्र यारोबाम के विषय इसे दर्शी के दर्शन की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? २९ सुलैमान ने यस्शलेम में सारे इस्माएल पर चालीस वर्ष तक राज्य किया। ३० फिर सुलैमान अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसको पिता दाऊद के नगर में मिट्टी दी गई; और उसका पुत्र रहबाम उसके स्थान पर राजा हुआ।

१० रहबाम शेकेम को गया, क्योंकि सारे इस्माएली उसको राजा बनाने के

लिये वही गए थे। १ जब नबात के पुत्र यारोबाम ने यह सुना (वह तो मिस्र में रहता था, जहाँ वह सुलैमान राजा के डर के मारे भाग गया था), तो वह मिस्र से लौट आया। २ तब उन्होंने उसको बुलवा भेजा; अतः यारोबाम और सब इस्माएली आकर रहबाम से कहने लगे, ३ “तेरे पिता ने तो हम लोगों पर भारी ज़ाआ डाल रखा था, इसलिए अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को और उस भारी ज़ूँ को जिसे उसने हम पर डाल रखा है कुछ हलका कर, तब हम तेरे अर्धीन रहेंगे।” ४ उसने उसने कहा, “तीन दिन के उपरान्त मैं पास फिर आना।” अतः वे चले गए। ५ बत राजा रहबाम ने उन बड़ों से जो उसके पिता सुलैमान के जीवन भर उसके सामने उपस्थित रहा करते थे, यह कहकर सम्मति ली, “इस प्रजा को कैसा उत्तर देना चाहित है, इसमें तुम क्या सम्मति देते हो?” ६ उन्होंने उसको यह उत्तर दिया, “यदि तू इस प्रजा के लोगों से अच्छा बर्ती करके उन्हें प्रसन्न करे और उनसे मधुर बातें कहे, तो वे सदा तेरे अर्धीन बने रहेंगे।” ७ परन्तु उसने उस सम्मति को जो बड़ों ने उसको दी थी छोड़ दिया और उन जवानों से सम्मति ली, जो उसके संग बड़े हुए थे और उसके सम्मुख उपस्थित रहा करते थे। ८ उनसे उसने पूछा, “मैं प्रजा के लोगों को कैसा उत्तर दूँ, इसमें तुम क्या सम्मति देते हो? उन्होंने तो मुझसे कहा है, ‘जो ज़ाआ तेरे पिता ने हम पर डाल रखा है, उसे तू हलका कर।’” ९ जवानों ने जो उसके संग बड़े हुए थे उसको यह उत्तर दिया, “उन लोगों ने तुझ से कहा है, ‘तेरे पिता ने हमारा ज़ाआ भारी किया था, परन्तु उसे हमारे लिये

हलका कर;’ तु उनसे यह कहना, ‘मेरी छिंगुलिया मेरे पिता की कमर से भी मोटी ठहरेगी। १५ मेरे पिता ने तुम पर जो भारी जूआ रखा था, उसे मैं और भी भारी कस्सँगा; मेरा पिता तो तुम को कोड़ों से ताड़ना देता था, परन्तु मैं बिच्छुओं से ढूँगा।’ १६ तीसरे दिन जैसे राजा ने ठहराया था, “तीसरे दिन मेरे पास फिर आना,” वैसे ही यारोबाम और सारी प्रजा रहबाम के पास उपस्थित हुई। १७ तब राजा ने उनसे कड़ी बातें कीं, और रहबाम राजा ने बढ़ों की दी हुई सम्पति छोड़कर १८ जवानों की सम्पत्ति के अनुसार उनसे कहा, “मेरे पिता ने तो तुम्हारा जूआ भारी कर दिया था, परन्तु मैं उसे और भी कठिन कर दूँगा; मेरे पिता ने तो तुम को कोड़ों से ताड़ना दी, परन्तु मैं बिच्छुओं से ताड़ना दूँगा।” १९ इस प्रकार राजा ने प्रजा की विनती न मानी; इसका कारण यह है, कि जो वचन यहोवा ने शीलोवासी अहित्याह के द्वारा नवात के पुनर यारोबाम से कहा था, उसको पूरा करने के लिये परमेश्वर ने ऐसा ही ठहराया था। २० जब समस्त इस्माएलियों ने देखा कि राजा हमारी नहीं सुनता, तब वे बोले, “दाऊद के साथ हमारा क्या अंश? हमारा तो यिथो के पुत्र में कोई भाग नहीं है। हे इस्माएलियों, अपने-अपने डेरे को चले जाओ! अब हे दाऊद, अपने ही घराने की चिन्ता कर!” २१ तब सब इस्माएली अपने डेरे को चले गए। केवल जितने इस्माएली यहदा के नगरों में बसे हए थे, उन्हीं पर रहबाम राज्य करता रहा। २२ तब राजा रहबाम ने होदराम को जो सब बगारों पर अधिकारी था भेज दिया, और इस्माएलियों ने उस पर पथराव किया और वह मर गया। तब रहबाम फूर्ती से अपने रथ पर चढ़कर, यस्शलेम को भाग गया। २३ और इस्माएल ने दाऊद के घराने से बलवा किया और आज तक किरा हुआ है।

२४ जब रहबाम यस्शलेम को आया, तब उसने यहदा और बिन्यामीन के घराने को जो मिलकर एक लाख अस्सी हजार अच्छे योद्धा थे इक्षत्ता किया, कि इस्माएल के साथ युद्ध करे जिससे राज्य रहबाम के वश में फिर आ जाए। १ तब यहोवा का यह वचन नपरमेश्वर के भक्त शमायाह के पास पहुँचा। २ “यहदा के राजा सुलैमान के पुत्र रहबाम से और यहदा और बिन्यामीन के सब इस्माएलियों से कह, ३ ‘यहोवा यह कहता है, कि अपने भाइयों पर चढ़ाई करके युद्ध न करो। तुम अपने-अपने घर लौट जाओ, क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से है इह है।’” यहोवा के ये वचन मानकर, वे यारोबाम पर बिना चढ़ाई किए लौट गए। ४ रहबाम यस्शलेम में रहने लगा, और यहदा में बचाव के लिये ये नगर दृढ़ किए, ५ अर्थात् बैतलहम, एताम, तकोआ, ६ बेतसूर, सोको, अदुल्लाम, ७ गत, मारेश, जीप, ८ अदोरेम, लाकीश, अजेका, ९ सोरा, अस्यालोन और हेब्रोन जो यहदा और बिन्यामीन में हैं, दृढ़ किया। १० उसने दृढ़ नगरों को और भी दृढ़ करके उनमें प्रधान ठहराए, और भोजनस्तु और तेल और दाखमध के भण्डार रखवा दिए। ११ फिर एक-एक नगर में उसने ढाले और भाले रखवाकर उनको अत्यन्त दृढ़ कर दिया। यहदा और बिन्यामीन तो उसके अधिकार में थे। १२ सारे इस्माएल के याजक और लेवीय भी अपने सारे देश से उठकर उसके पास गए। १३ अतः लेवीय अपनी चाराइयों और निज भूमि छोड़कर, यहदा और यस्शलेम में आए, क्योंकि यारोबाम और उसके पुत्रों ने उनको निकाल दिया था कि वे यहोवा के लिये याजक का काम न करें, १४ और उसने ऊँचे स्थानों और बकरा देवताओं और अपने बनाए हुए बछड़ों के लिये, अपनी ओर से याजक ठहरा लिए। १५ लेवियों के बाद इस्माएल के सब गोदों में से जितने मन लगाकर इस्माएल के परमेश्वर यहोवा के खोजी थे वे अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को बलि चढ़ाने के लिये यस्शलेम को आए। १६ उन्होंने यहदा का राज्य स्थिर किया और सुलैमान के पुत्र रहबाम को तीन वर्ष तक दृढ़ कराया, क्योंकि तीन वर्ष तक वे दाऊद और सुलैमान की लीक-

पर चलते रहे। १७ रहबाम ने एक झीं से विवाह कर लिया, अर्थात् महलत से जिसका पिता दाऊद का पुत्र यरीमोत और माता यिशे के पुत्र एनीआब की बेटी अबहिल थी। १८ उससे यूँ, शेर्माय्ह और जाहम नामक पुत्र उत्पन्न हुए। १९ उसके बाद उसने अबशालोम की बेटी माका से विवाह कर लिया, और उससे अबिय्याह, अतै, जीजा और शतोमीत उत्पन्न हुए। २० रहबाम ने अठारह रानियों ब्याह ली और साठ रखैलियाँ रखी, और उसके अश्वाईस बेटे और साठ बैटियाँ उत्पन्न हुईं। अबशालोम की बेटी माका से वह अपनी सब रानियों और रखैलों से अधिक प्रेम रखता था; २१ रहबाम ने माका के बेटे अबिय्याह को मुख्य और सब भाइयों में प्रधान इस विचार से ठहरा दिया, कि उसे राजा बनाए। २२ उसने समझ-बद्धकर काम किया, और उसने अपने सब पुत्रों को अलग-अलग करके यहदा और बिन्यामीन के सब देशों के सब गढ़वाले नगरों में ठहरा दिया; और उन्हें भोजनस्तु बहुतायत से दी, और उनके लिये बहुत सी खियाँ ढूँढ़ी।

२३ परन्तु जब रहबाम का राज्य दृढ़ हो गया, और वह आप स्थिर हो गया, तब उसने और उसके साथ सारे इस्माएल ने यहोवा की व्यवस्था को त्याग दिया। २४ उन्होंने जो यहोवा से विकासघात किया, इस कारण राजा रहबाम के पाँचवें वर्ष में मिस्र के राजा शीशक ने, ३ बारह सौ रथ और साठ हजार सवार लिये हुए यस्शलेम पर चढ़ाई की, और जो लोग उसके संग मिस्र से आए, अर्थात् लूबी, सुकिक्याँ, कूरी, ये अनगिनत थे। ४ उसने यहदा के गढ़वाले नगरों को ले लिया, और यस्शलेम तक आया। ५ तब शमायाह नबी रहबाम और यहदा के हाकिमों के पास जो शीशक के डर के मारे यस्शलेम में इकट्ठे हुए थे, आकर कहने लगा, “यहोवा यह कहता है, कि तुम ने मुझ को छोड़ दिया है, इसलिए मैंने तुम को छोड़कर शीशक के हाथ में कर दिया है।” ६ तब इस्माएल के हाकिम और राजा दीन हो गए, और कहा, “यहोवा धर्मी है।” ७ जब यहोवा ने देखा कि वे दीन हुए हैं, तब यहोवा का यह वचन शमायाह के पास पहुँचा “वे दीन हो गए हैं, मैं उनको नष्ट रखूँगा; मैं उनका कुछ बचाव करूँगा, और मेरी जलजलाहट शीशक के द्वारा यस्शलेम पर न भड़केंगी।” ८ तो भी वे उसके अधीन रहेंगे, ताकि वे मेरी ओर देश-देश के राज्यों की भी सेवा में अन्तर को जान लें।” ९ तब मिस्र का राजा शीशक यस्शलेम पर चढ़ाई करके यहोवा के भवन की अनमोल वस्तुएँ और राजभवन की अनमोल वस्तुएँ उठा ले गया। १० वह सब कुछ उठा ले गया, और सोने की जो ढालें सुलैमान ने बनाई थीं, उनको भी वह ले गया। ११ तब राजा रहबाम ने उसके बदले पीतल की ढालें बनवाई और उन्हें पहसुओं के प्रधानों के हाथ सौंप दिया, जो राजभवन के द्वार की रखवाली करते थे। १२ जब जब राजा यहोवा के भवन में जाता, तब-तब पहसुए आकर उन्हें उठा ले चलते, और फिर पहसुओं की कोठरी में लौटाकर रख देते थे। १३ जब रहबाम दीन हुआ, तब यहोवा का कोध उस पर से उत्तर गया, और उसने उसका पूरा विनाश न किया; और यहदा की दशा कुछ अच्छी थी थी। १४ अतः राजा रहबाम यस्शलेम में दृढ़ होकर राज्य करता रहा। जब रहबाम राज्य करने लगा, तब इकलातीस वर्ष की आयु का था, और यस्शलेम में अर्थात् उस नगर में, जिसे यहोवा ने अपना नाम बनाए रखने के लिये इस्माएल के सारे गोदों में से चुन लिया था, सत्रह वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम नामाह था, जो अम्मोनी थी। १५ उसने वह कर्म किया जो बुरा है, अर्थात् उसने अपने मन को यहोवा की खोज में न लगाया। १६ आदि से अन्त तक रहबाम के काम क्या शमायाह नबी और इश्वरीयों की पुस्तकों में बंशवलियों की रीति पर नहीं लिखे हैं? रहबाम और यारोबाम के बीच तो लड़ाई सदा होती रही। १७ और रहबाम मरकर अपने

पुरखाओं के संग जा मिला और दाऊदपुर में उसको मिट्ठी दी गई। और उसका पुत्र अवियाह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

१३ यारोबाम के अठारहवें वर्ष में अवियाह यहदा पर राज्य करने लगा।

२ वह तीन वर्ष तक यस्सलेम में राज्य करता रहा, और उसकी माता का नाम मीकायाथ था; जो गिबावासी ऊरीएल की बेटी थी। फिर अवियाह और यारोबाम के बीच में लडाई हुई। ३ अवियाह ने तो बड़े योद्धाओं का दल, अर्थात् चार लाख छैटे हुए पुस्त लेकर लड़ने के लिये पाँति बैंधाई, और यारोबाम ने आठ लाख छैटे हुए पुस्त जो बड़े शर्कीर थे, लेकर उसके विस्तृ पाँति बैंधाई। ४ तब अवियाह समरैम नामक पहाड़ पर, जो ऐसे के पहाड़ी देश में है, खड़ा होकर कहने लगा, “हे यारोबाम, हे सब इस्माएलियों, मेरी सुनो। ५ क्या तुम को न जानना चाहिए, कि इस्माएल के परमेश्वर यहोवा ने नमक बाली बाचा बाँधकर दाऊद को और उसके बंश को इस्माएल का राज्य सदा के लिये दे दिया है। ६ तो भी नवात का पुत्र यारोबाम जो दाऊद के पुत्र सूलैमान का कर्मचारी था, वह अपने स्वामी के विस्तृ उठा है। ७ उसके पास हल्के और ओछे मनुष्य इक्षु हो गए हैं और जब सूलैमान का पुत्र रहबाम लड़का और अल्हड मन का था और उनका सामना न कर सकता था, तब वे उसके विस्तृ सामर्थी हो गए। ८ अब तुम सोचते हो कि हम यहोवा के राज्य का सामना करेंगे, जो दाऊद की सन्तान के हाथ में है, क्योंकि तुम सब मिलकर बड़ा समाज बन गए हो और तुम्हारे पास वे सोने के बछड़े भी हैं जिहें यारोबाम ने तुम्हारे देवता होने के लिये बनवाया। ९ क्या तुम ने यहोवा के याजकों को, अर्थात् हास्न की सन्तान और लेवियों को निकालकर देश-देश के लोगों के समान याजक नियुक्त नहीं कर लिए? जो कोई एक बछड़ा और सात में अपना संस्कार कराने को ले आता, वह उनका याजक हो जाता है जो ईश्वर नहीं है। १० परन्तु हम लोगों का परमेश्वर यहोवा है और हमने उसको नहीं त्यागा, और हमारे पास यहोवा की सेवा ठहल करनेवाले याजक, हास्न की सन्तान और अपने-अपने काम में लगे हुए लेनीय है। ११ वे नित्य सर्वे और सँझ को यहोवा के लिये होमबलि और सुआन्ध-द्व्य का धूप जलाते हैं, और शुद्ध मेज पर भेट की रोटी सजाते और सोने की दीवट और उसके दीपक सौङ्ग-सौङ्ग को जलाते हैं; हम तो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते हैं, परन्तु तुम ने उसको त्याग दिया है। १२ देखो, हमारे संग हमारा प्रधान परमेश्वर है, और उसके याजक तुम्हारे विस्तृ साँस बाँधकर फँकने को तुरहियां लिये हुए भी हमारे साथ हैं। हे इस्माएलियों अपने पूर्वों के परमेश्वर यहोवा से मत लड़ो, क्योंकि तुम सफल न होगे।” १३ परन्तु यारोबाम ने घाटकों को उनके पीछे भेज दिया, वे तो यहदा के सामने थे, और घातक उनके पीछे थे। १४ जब यहदियों ने पीछे मूँह फेरा, तो देखा कि हमारे आगे और पीछे दोनों ओर से लडाई होनेवाली है; तब उन्होंने यहोवा की दुहाई दी, और याजक तुरहियों को फँकने लगे। १५ तब यहदी पुस्तों ने जय जयकार किया, और जब यहदी पुस्तों ने जय जयकार किया, तब परमेश्वर ने अवियाह और यहदा के सामने, यारोबाम और सारे इस्माएलियों को मारा। १६ तब इस्माएली यहदा के सामने से भागे, और परमेश्वर ने उन्हें उनके हाथ में कर दिया। १७ अवियाह और उसकी प्रजा ने उन्हें बड़ी मार से मारा, यहाँ तक कि इस्माएल में से पाँच लाख छैटे हुए पुस्त मरे गए। १८ उस समय तो इस्माएली दब गए, और यहदी इस कारण प्रबल हुए कि उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखा था। १९ तब अवियाह ने यारोबाम का पीछा करके उससे बेतेल, यशाना और ऐप्रोन नगरों और उनके गाँवों को ले लिया। २० अवियाह के जीवन भर यारोबाम फिर सामर्थी न हुआ; और यहोवा ने उसको

ऐसा मारा कि वह मर गया। २१ परन्तु अवियाह और भी सामर्थी हो गया और चौदह द्वियाँ ब्याह ली जिनसे बाइस बेटे और सोलह बेटियाँ उत्पन्न हुईं। २२ अवियाह के काम और उसकी चाल चलन, और उसके वचन, इन नवी की कथा में लिखे हैं।

१४ अन्त में अवियाह मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला, और

उसको दाऊदपुर में मिट्ठी दी गई, और उसका पुत्र आसा उसके स्थान पर राज्य करने लगा। इसके दिनों में दस वर्ष तक देश में चैन रहा। २३ आसा ने वही किया जो उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में अच्छा और ठीक था। २४ उसने पाई वेदियों को और उन्हें स्थानों को दूर किया, और लाठों को तुड़वा डाला, और अशोरा नामक मूरतों को तोड़ डाला। २५ और यहदियों को आज्ञा दी कि अपने पूर्वों के परमेश्वर यहोवा की खोज करें, और व्यवस्था और आज्ञा को मानें। २६ उसने ऊँचे स्थानों और सर्वी की प्रतिमाओं को यहदा के सब नगरों में से दूर किया, और उसके सामने राज्य में चैन रहा। २७ उसने यहदा में गढ़वाले नगर बसाए, क्योंकि देश में चैन रहा। उन वर्षों में उसे किसी से लडाई न करनी पड़ी क्योंकि यहोवा ने उसे विश्वाम दिया था। २८ उसने यहदियों से कहा, “आओ हम इन नगरों को बसाएँ और उनके चारों ओर शहरपानाह, गढ़ और फाटकों के पल्ले और बेड़े बनाएँ; देश अब तक हमारे सामने पड़ा है, क्योंकि हमने, अपने परमेश्वर यहोवा की खोज की है; हमने उसकी खोज की और उनमें हमको चारों ओर से विश्वाम दिया है।” तब उन्होंने उन नगरों को बसाया और समृद्ध हुए। २९ फिर आसा के पास ढाल और बरछी रखनेवालों की एक सेना थी, अर्थात् यहदा में से तो तीन लाख पुस्त और बिन्यामीन में से ढाल रखनेवाले और धनुर्धारी दो लाख अस्सी हजार, ये सब शर्कीर थे। ३० उनके विस्तृ दस लाख पुस्तों की सेना और तीन सौ रथ लिये हुए जेरह नामक एक कूशी निकला और मारेशा तक आ गया। ३१ तब आसा उसका सामना करने को चला और मारेशा के निकट सापाता नामक तराई में युद्ध की पाँति बैंधी गई। ३२ तब आसा ने अपने परमेश्वर यहोवा की दुहाई दी, “हे यहोवा! जैसे तू सामर्थी की सहायता कर सकता है, वैसे ही शक्तिहीन की भी; हे हमारे परमेश्वर यहोवा! हमारी सहायता कर, क्योंकि हमारा भरोसा तुड़ी पर है और तेरे नाम का भरोसा करके हम इस भीड़ के विस्तृ आए हैं। हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है; मनुष्य तुड़ पर प्रबल न होने पाएगा।” ३३ तब यहोवा ने कूशियों को आसा और यहदियों के सामने मारा और कूरी भाग गए। ३४ आसा और उसके संग के लोगों ने उनका पीछा गरार तक किया, और उन्हें कूशी मारे गए, कि वे फिर सिर न उठा सके क्योंकि वे यहोवा और उसकी सेना से हार गए, और यहदी बहुत सी लूट ले गए। ३५ उन्होंने गरार के आस-पास के सब नगरों को मार लिया, क्योंकि यहोवा का भय उनके रहनेवालों के मन में समा गया और उन्होंने उन नगरों को लृप्त लिया, क्योंकि उनमें बहुत सा धन था। ३६ फिर पशु-शालाओं को जीतकर बहुत सी भेड़-बकरीयाँ और ऊँट लटकर यस्सलेम को लौटे।

१५ तब परमेश्वर का आत्मा ओदेट के पुत्र अजर्याह में समा गया, २ और

वह आसा से भेट करने निकला, और उससे कहा, “हे आसा, और हे सारे यहदा और बिन्यामीन, मेरी सुनो, जब तक तुम यहोवा के संग रहोगे तब तक वह तुम्हारे संग रहेगा; और यदि तुम उसकी खोज में लगे रहो, तब तो वह तुम से मिला करेगा, परन्तु यदि तुम उसको त्याग दोगे तो वह भी तुम को त्याग देगा। ३७ बहुत दिन इस्माएल बिना सत्य परमेश्वर के और बिना सिखनेवाले याजक के और बिना व्यवस्था के रहा। ३८ परन्तु जब जब वे संकट में पड़कर इस्माएल के परमेश्वर यहोवा की ओर फिरे और उसको ढूँढ़ा, तब-तब

वह उनको मिला। ५ उस समय न तो जानेवाले को कुछ शान्ति होती थी, और न अनेवाले को, वरन् सारे देश के सब निवासियों में बड़ा ही कोलाहल होता था। ६ जाति से जाति और नगर से नगर चूर किए जाते थे, क्योंकि परमेश्वर विभिन्न प्रकार का कष्ट देकर उहें घबरा देता था। ७ परन्तु तुम लोग हियाव बाँधों और तुम्हरे हाथ ढीले न पड़ें, क्योंकि तुम्हारे काम का बदला मिलेगा। ८ जब आसा ने ये वचन और ओटेद नबी की नववत सुनी, तब उसने हियाव बाँधकर यहदा और बिन्यामीन के सारे देश में से, और उन नारों में से भी जो उसने ऐप्रैम के पहाड़ी देश में लिये थे, सब धिनौनी वस्तुएँ दूर की, और यहोवा की जो वेदी यहोवा के ओसरे के सामने थी, उसको नये सिरे से बनाया। ९ उसने सारे यहदा और बिन्यामीन को, और ऐप्रैम, मनश्वे और शियोन में से जो लोग उसके संग रहते थे, उनको इकश्त्र किया, क्योंकि वे यह देखकर कि उसका परमेश्वर यहोवा उसके संग रहता है, इसाएल में से बहुत से उसके पास चले आए थे। १० आसा के राज्य के पन्द्रहवें वर्ष के तीसरे महीने में वे यस्तातेम में इकश्त्र हुए। ११ उसी समय उन्होंने उस लट्ट में से जो वे ले आए थे, सात सौ बैल और सात हजार भेड़-बकरियाँ, यहोवा को बलि करके चढ़ाई। १२ उन्होंने बाचा बाँधी कि हम अपने पैरे मन और सारे जीव से अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की खोज करेंगे; १३ और क्या बड़ा, क्या छोटा, क्या झीं, क्या पुस्त, जो कोई इसाएल के परमेश्वर यहोवा की खोज न करे, वह मार डाला जाएगा। १४ और उन्होंने जय जयकार के साथ तुक्कियाँ और नरसिंगे बजाते हुए ऊँचे शब्द से यहोवा की शपथ खाई। १५ यह शपथ खाकर सब यहदी आनन्दित हुए, क्योंकि उन्होंने अपने सारे मन से शपथ खाई और बड़ी अभिलाषा से उसको ढूँढ़ा और वह उनको मिला, और यहोवा ने चारों ओर से उन्हें विश्वाम दिया। १६ आसा राजा की माता माका जिसने अशेरा के पास रखने के लिए एक धिनौनी मूरत बनाई, उसको उसने राजमाता के पद से उतार दिया; और आसाप ने उसकी मूरत काटकर पीस डाली और किंद्रोन नाले में फेंक दी। १७ ऊँचे स्थान तो इसाएलियों में से न ढाए गए, तो भी आसा का मन जीवन भर निष्कप्त रहा। १८ उसने जो सोना-चाँदी, और पात्र उसके पिता ने अर्पण किए थे, और जो उसने आप अर्पण किए थे, उनको परमेश्वर के भवन में पहुँचा दिया। १९ राजा आसा के राज्य के पैतीसवें वर्ष तक फिर लडाई न हुई।

१६ आसा के राज्य के छत्तीसवें वर्ष में इसाएल के राजा बाशा ने यहदा पर चढ़ाई की और रामाह को इसलिए दृढ़ किया, कि यहदा के राजा आसा के पास कोई आने-जाने न पाए। २ तब आसा ने यहोवा के भवन और राजभवन के भण्डारों में से चाँदी-सोना निकाल दमिश्कवासी अराम के राजा बेन्हदट के पास दूर भेजकर यह कहा, ३ “जैसे मैं तेरे पिता के बीच वैसे ही मेरे तेरे बीच भी बाचा बढ़े, देख मैं तेरे पास चाँदी-सोना भेजता हूँ, इसलिए आ, इसाएल के राजा बाशा के साथ की अपनी बाचा को तोड़ दे, ताकि वह मुझसे दूर हो।” ४ बेन्हदट ने राजा आसा की यह बात मानकर, अपने दतों के प्रधानों से इसाएली नारों पर चढ़ाई करवाकर इय्योन, दान, अबेल्यैम और नासाली के सब भण्डरवाले नगरों को जीत लिया। ५ यह सुनकर बाशा ने रामाह को दृढ़ करना छोड़ दिया, और अपना वह काम बन्द करा दिया। ६ तब राजा आसा ने पैरे यहदा देश को साथ लिया और रामाह के पथरों और लकड़ी को, जिसने बाशा काम करता था, उठा ले गया, और उनसे उसने गेबा, और मिप्पा को दृढ़ किया। ७ उस समय हनानी दर्शी यहदा के राजा आसा के पास जाकर कहने लगा, “तने जो अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा नहीं रखा वरन् अराम के राजा ही पर भरोसा रखा है, इस कारण अराम के राजा की सेना तेरे हाथ से

बच गई है। ८ क्या कूशियों और लूबियों की सेना बड़ी न थी, और क्या उसमें बहत से रथ, और सवार न थे? तो भी तूने यहोवा पर भरोसा रखा था, इस कारण उसने उनको तेरे हाथ में कर दिया। ९ देख, यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिए फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कप्त रहता है, उनकी सहायता में वह अपनी सामर्थ्य दिखाए। तूने यह काम मर्खता से किया है, इसलिए अब से तू लडाइयों में फैसा रहेगा।” १० तब आसा दर्शी पर क्रोधित हआ और उसे काठ में ठोकवा दिया, क्योंकि वह उसकी ऐसी बात के कारण उस पर क्रोधित था। और उसी समय से आसा प्रजा के कुछ लोगों पर अन्याचार भी करने लगा। ११ आदि से लेकर अन्त तक आसा के काम यहदा और इसाएल के राजाओं के बृतान्त में लिखे हैं। १२ अपने राज्य के उनतालीसवें वर्ष में आसा को पॉव का रोग हुआ, और वह रोग बहुत बढ़ गया, तो भी उसने रोगी होकर यहोवा की नहीं वैद्यों ही की शरण ली। १३ अन्त में आसा अपने राज्य के इकतालीसवें वर्ष में मर के अपने पुरुखाओं के साथ जा मिला। १४ तब उसको उनी की कब्र में जो उसने दाऊदतुर में खुदवा ली थी, मिट्टी दी गई; और वह सुगन्ध-द्रव्यों और गंधी के काम के भाँति-भाँति के मसालों से भेरे हुए एक बिल्लैने पर लिटा दिया गया, और बहुत सा सुगन्ध-द्रव्य उसके क्षिये जलाया गया।

१७ उसका पुत्र यहोशापात उसके स्थान पर राज्य करने लगा, और इसाएल के विद्धु अपना बल बढ़ाया। १ उसने यहदा के सब गढ़वाले नगरों में सिपाहियों के दल ठहरा दिए, और यहदा के देश में और ऐप्रैम के उन नारों में भी जो उसके पिता आसा ने ले लिये थे, सिपाहियों की चौकियाँ बैठा दी। २ यहोवा यहोशापात के संग रहा, क्योंकि उसने अपने मूलपुस्त दाऊद की प्राचीन चाल का अनुसरण किया और बाल देवताओं की खोज में न लगा। ३ वरन वह आने पिता के परमेश्वर की खोज में लगा रहता था और उसी की आज्ञाओं पर चलता था, और इसाएल के से काम नहीं करता था। ४ इस कारण यहोवा ने राज्य को उसके हाथ में दृढ़ किया, और सारे यहदी उसके पास भेट लाया करते थे, और उसके पास बहुत धन हो गया और उसका वैभव बढ़ गया। ५ यहोवा के मार्गों पर चलते-चलते उसका मन मणन हो गया, फिर उसने यहदा से ऊँचे स्थान और अशेरा नामक मरते दूर कर दी। ६ उसने अपने राज्य के तीसरे वर्ष में बैन्हैल, ओबायाह, जकर्याह, नतनेल और मीकायाह नामक अपने हाकिमों को यहदा के नगरों में शिक्षा देने को भेज दिया। ७ उनके साथ शमायाह, नतन्याह, जबधाह, असाहेल, शमीरामोत, यहोनातान, अदोनियाह, तोवियाह और तोबदोनियाह, नामक लेदीय और उनके संग एलीशामा और यहोराम नामक याजक थे। ८ अतः उन्होंने यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक अपने साथ लिये हुए यहदा में शिक्षा दी, वरन् वे यहदा के सब नगरों में प्रजा को सिखाते हुए घूमे। ९ यहदा के आस-पास के देशों के राज्य-राज्य में यहोवा का ऐसा डर समा गया, कि उन्होंने यहोशापात से यहु न किया। १० कुछ पलिश्ती यहोशापात के पास भेट और कर समझकर चाँदी लाए; और अरब के लोग भी सात हजार सात सौ मेहे और सात हजार सात सौ बकरे ले आए। ११ यहोशापात बहुत ही बढ़ता गया और उसने यहदा में किले और भण्डार के नगर तैयार किए। १२ और यहदा के नगरों में उसका बहुत काम होता था, और यस्तातेम में उसके योद्धा अर्थात् शूरवीर रहते थे। १३ इनके पितरों के घरानों के अनुसार इनकी यह गिनती थी, अर्थात् यहदी सहज्ञपति तो ये थे, प्रधान अदनह जिसके साथ तीन लाख शूरवीर रहते थे, १४ और उसके बाद प्रधान यहोहानाम, जिसके साथ दो लाख अस्सी हजार पूर्स थे। १५ और इसके बाद जिङ्गी का पुत्र अमस्याह, जिसने अपने को अपनी ही इच्छा से यहोवा को

अर्पण किया था, उसके साथ दो लाख शूरवीर थे। १७ फिर बिन्यामीन में से एल्यादा नामक एक शूरवीर, जिसके साथ ढाल रखनेवाले दो लाख धनुर्धरी थे। १८ और उसके नीचे यहोजाबाद, जिसके साथ युद्ध के हथियार बाँधे हुए, एक लाख अस्सी हजार पुस्त थे। १९ ये वे हैं, जो राजा की सेवा में लौटीन थे। ये उनसे अलग थे जिन्हें राजा ने सारे यहदा के गढ़वाले नगरों में ठहरा दिया।

१८ यहोशापात बड़ा धनवान और ऐर्वर्यवान हो गया; और उसने अहाब

के घराने के साथ विवाह-सम्बंध स्थापित किया। २० कुछ वर्ष के बाद वह सामरिया में अहाब के पास गया, तब अहाब ने उसके और उसके संगियों के लिये बहुत सी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल काटकर, उसे गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करने को उकसाया। २१ इस्माएल के राजा अहाब ने यहदा के राजा यहोशापात से कहा, “क्या तू मेरे साथ गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करेगा?” उसने उसे उत्तर दिया, “जैसा तू वैसा मैं भी हूँ, और जैसी तेरी प्रजा, वैसी मेरी भी प्रजा है। हम लोग युद्ध में तेरा साथ देंगे।” २२ फिर यहोशापात ने इस्माएल के राजा से कहा, “आओ, पहले यहोवा का वचन मालूम करें।” २३ तब इस्माएल के राजा ने नवियों को जो चार सौ पुस्त थे, इकट्ठा करके उनसे पूछा, “क्या हम गिलाद के रामोत पर युद्ध करने को चढ़ाई करें, अथवा मैं स्का रहूँ?” उन्होंने उत्तर दिया, “चढ़ाई कर, क्योंकि परमेश्वर उसको राजा के हाथ कर देगा।” २४ परन्तु यहोशापात ने पूछा, “क्या यहाँ यहोवा का और भी कोई नवी नहीं है जिससे हम पृछ लें?” २५ इस्माएल के राजा ने यहोशापात से कहा, “हाँ, एक पुष्प और है, जिसके द्वारा हम यहोवा से पछ सकते हैं, परन्तु मैं उससे धूम करता हूँ; क्योंकि वह मेरे विषय कभी कल्याण की नहीं, सदा हानि ही की नव्वत करता है। वह यिम्ला का पुत्र मीकायाह है।” यहोशापात ने कहा, “राजा ऐसा न कहे।” २६ तब इस्माएल के राजा ने एक हाकिम को बुलवाकर कहा, “यिम्ला के पुत्र मीकायाह को फुर्ती से ले आ।” २७ इस्माएल का राजा और यहदा का राजा यहोशापात अपने-अपने राजवस्तु पहने हुए, अपने-अपने सिंहासन पर बैठे हुए थे; वे सामरिया के फाटक में एक खुले स्थान में बैठे थे और सब नवी उनके सामने नव्वत कर रहे थे। २८ तब कनाना के पुत्र सिदिकियाह ने लोहे के सींग बनवाकर कहा, “यहोवा यह कहता है, कि इनसे तू अरामियों को मारते-मारते नाश कर डालेगा।” २९ सब नवियों ने इसी आशय की नव्वत करके कहा, “गिलाद के रामोत पर चढ़ाई कर और तू कृतार्थ होवे; क्योंकि यहोवा उसे राजा के हाथ कर देगा।” ३० जो दूसरी मीकायाह को बुलाने गया था, उसने उससे कहा, “सुन, नवी लोग एक ही मूँह से राजा के विषय शुभ वचन कहते हैं; इसलिए तेरी बात उनकी सी हो, तू भी शुभ वचन कहना।” ३१ मीकायाह ने कहा, “यहोवा के जीवन की शपथ, जो कुछ मेरा परमेश्वर करे वही मैं भी कहूँगा।” ३२ जब वह राजा के पास आया, तब राजा ने उससे पूछा, “हे मीकायाह, क्या हम गिलाद के रामोत पर युद्ध करने को चढ़ाई करें अथवा मैं स्का रहूँ?” उसने कहा, “हाँ, तुम लोग चढ़ाई करो, और कृतार्थ हो; और वे तुम्हारे हाथ में कर दिए जाएंगे।” ३३ राजा ने उससे कहा, “मुझे कितनी बार तुझे शपथ धारकर चित्नाना होगा, कि तू यहोवा का स्मरण करके मुझसे सच ही कह।” ३४ मीकायाह ने कहा, “मुझे सारा इस्माएल बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों के समान पहाड़ों पर तिर-बितर दिखाई पड़ा, और यहोवा का वचन आया कि वे तो अनाथ हैं, इसलिए हर एक अपने-अपने घर कुशल क्षेम से लौट जाएँ।” ३५ तब इस्माएल के राजा ने यहोशापात से कहा, “क्या मैंने तुझे से न कहा था, कि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं, हानि ही की नव्वत करेगा?” ३६ मीकायाह ने कहा, “इस कारण तुम लोग यहोवा का यह वचन सनो मुझे सिंहासन पर विराजमान यहोवा और उसके दाँ-बाँ खड़ी हुई स्वर्ण की सारी सेना दिखाई पड़ी। ३७ तब यहोवा ने

पूछा, ‘इस्माएल के राजा अहाब को कौन ऐसा बहकाएगा, कि वह गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करे।’ तब किसी ने कुछ और किसी ने कुछ कहा। ३८ अन्त में एक आत्मा पास आकर यहोवा के सम्मुख खड़ी हुई, और कहने लगी, “मैं उसको बहकाऊँगी।” ३९ यहोवा ने पूछा, “किस उपाय से?” उसने कहा, “मैं जाकर उसके सब नवियों में पैठ के उनसे झूठ बुलवाऊँगी।” यहोवा ने कहा, ‘तेरा उसको बहकाना सफल होगा, जाकर ऐसा ही कर।’ ४० इसलिए सुन, अब यहोवा ने तेरे इन नवियों के मूँह में एक झूठ बोलनेवाली आत्मा बैठाई है, और यहोवा ने तेरे विषय हानि की बात कही है।” ४१ तब कनाना के पुत्र सिदिकियाह ने निकट जा, मीकायाह के गाल पर थप्पड़ मारकर पूछा, “यहोवा का आत्मा मुझे छोड़कर तुझ से बातें करने को किधर गया।” ४२ उसने कहा, “जिस दिन तू छिपने के लिये कोठरी से कोठरी में भागेगा, तब जान लेगा।” ४३ इस पर इस्माएल के राजा ने कहा, “मीकायाह को नार के हाकिम आमोन और राजकुमार योआश के पास लौटाकर, ४४ उससे कहो, ‘राजा यह कहता है, कि इसको बन्दीगृह में डालो, और जब तक मैं कुशल से न आऊँ, तब तक इसे दुःख की रोटी और पानी दिया करो।’” ४५ तब मीकायाह ने कहा, “यदि तू कभी कुशल से लौटे, तो जान कि यहोवा ने मेरे द्वारा नहीं कहा।” फिर उसने कहा, “हे लोगों, तुम सब के सब सुन लो।” ४६ तब इस्माएल के राजा और यहदा के राजा यहोशापात दोनों ने गिलाद के रामोत पर चढ़ाई की। ४७ इस्माएल के राजा ने यहोशापात से कहा, “मैं तो भेष बदलकर युद्ध में जाऊँगा, परन्तु तू अपने ही वस्त्र पहने रह।” इस्माएल के राजा ने भेष बदलता और वे दोनों युद्ध में गए। ४८ अराम के राजा ने तो अपने रथों के प्रधानों को आज्ञा दी थी, “न तो छोटे से लड़ो और न बड़े से, केवल इस्माएल के राजा से लड़ो।” ४९ इसलिए जब रथों के प्रधानों ने यहोशापात को देखा, तब कहा, “इस्माएल का राजा बही है,” और वे उसी से लड़ने को मुड़े। इस पर यहोशापात चिल्ला उठा, तब यहोवा ने उसकी सहायता की। परमेश्वर ने उनको उसके पास से फिर जाने को प्रेरित किया। ५० यह देखकर कि वह इस्माएल का राजा नहीं है, रथों के प्रधान उसका पीछा छोड़कर लौट गए। ५१ तब किसी ने यूँही एक तीर चलाया, और वह इस्माएल के राजा के झिल्लम और निचले वस्त्र के बीच छेदकर लगा; तब उसने अपने सारी से कहा, “मैं धायल हो गया हूँ, इसलिए लगाम फेरकर मुझे सेना में से बाहर ले चल।” ५२ और उस दिन युद्ध बढ़ता गया और इस्माएल का राजा अपने रथ में अरामियों के सम्मुख सौँझ तक खड़ा रहा, परन्तु सूर्य अस्त होते-होते वह मर गया।

१९ यहदा का राजा यहोशापात यस्शलेम को अपने भवन में कुशल से लौट गया। १ तब हननी नामक दर्शी का पुत्र येह यहोशापात राजा से भेट करने को निकला और उससे कहने लगा, “क्या दुर्दी की सहायता करनी और यहोवा के बैठियों से प्रेम रखना चाहिये? इस काम के कारण यहोवा की ओर से तुझ पर क्रोध भड़का है।” २ तो भी तुझ में कुछ अच्छी बातें पाई जाती हैं। तूने तो देश में से अशेरों को नाश किया और अपने मन को परमेश्वर की खोज में लगाया है।” ३ यहोशापात यस्शलेम में रहता था, और उसने बैरेबा से लेकर ऐरैम के पहाड़ी देश तक अपनी प्रजा में फिर दौरा करके, उनको उनके पितरों के परमेश्वर यहोवा की ओर फेर दिया। ४ फिर उसने यहदा के एक-एक गढ़वाले नगर में न्यायी ठहराया। ५ और उसने न्यायियों से कहा, “सोचो कि क्या करते हो, क्योंकि तुम जो न्याय करोगे, वह मनुष्य के लिये नहीं, यहोवा के लिये करोगे; और वह न्याय करते समय तुम्हारे साथ रहेगा।” ६ अब यहोवा का भय तुम में बना रहे; चौकरी से काम करना, क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा में कुछ कुटिलता नहीं है, और न वह किसी का पक्ष करता और न घूस लेता है।” ७ यस्शलेम में भी यहोशापात ने लेवियों और याजकों और इस्माएल

के पितरों के घरानों के कुछ मुख्य पुस्तों को यहोवा की ओर से न्याय करने और मुकद्दमों को जॉचरे के लिये ठहराया। उनका न्याय-आसन यस्शलेम में था। ९ उसने उनको आज्ञा दी, “यहोवा का भय मानकर, सच्चाई और निष्कपट मन से ऐसा करना। १० तुम्हारे भाई जो अपने-अपने नगर में रहते हैं, उनमें से जिसका कोई मुकद्दमा तुम्हारे सामने आए, चाहे वह खन का हो, चाहे व्यवस्था, अथवा किसी आज्ञा या विधि या नियम के विषय हो, उनको चिता देना कि यहोवा के विषय दोषी न हो। ऐसा न हो कि तुम पर और तुम्हारे भाईयों पर उसका क्रोध भड़के। ऐसा करो तो तुम दोषी न ठहरोगे। ११ और देखो, यहोवा के विषय के सब मुकद्दमों में तो अमर्याह महायाजक, और राजा के विषय के सब मुकद्दमों में यहदा के घराने का प्रधान इस्माएल का पुत्र जबग्राह तुम्हारे ऊपर अधिकारी है; और लेवीय तुम्हारे सामने सरदारों का काम करेगे। इसलिए हियाव बाँधकर काम करो और भले मनुष्य के साथ यहोवा रहेगा।”

२० इसके बाद मोआवियों और अम्पोनियों ने और उनके साथ कई मूर्नियों

ने युद्ध करने के लिये यहोशापात पर चढ़ाई की। १२ तब लोगों ने आकर यहोशापात को बता दिया, “ताल के पार से एदोम देश की ओर से एक बड़ी भीड़ तुम पर चढ़ाई कर रही है; और देख, वह हसासोनामार तक जो एनगदी भी कहलाता है, पहुँच गई है।” १३ तब यहोशापात डर गया और यहोवा की खोज में लग गया, और पूरे यहदा में उपचास का प्रचार करवाया। १४ अतः यहदी यहोवा से सहायता मांगने के लिये इकश्त हुए, वरन् वे यहदा के सब नगरों से यहोवा से भेट करने को आए। १५ तब यहोशापात यहोवा के भवन में नये अँगन के सामने यहदियों और यस्शलेमियों की मण्डली में खड़ा होकर १६ यह कहने लगा, “हे हमारे पितरों के परमेश्वर यहोवा! क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है? और क्या तू जाति-जाति के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता नहीं करता? और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और पराक्रम नहीं है कि तेरा सामना कोई नहीं कर सकता? १७ हे हमारे परमेश्वर! क्या तुम इस देश के निवासियों को अपनी प्रजा इस्माएल के सामने से निकालकर इहें अपने मित्र अब्बाहम के बंश को सदा के लिये नहीं दे दिया? १८ वे इसमें बस गए और इसमें तेरे नाम का एक पवित्रस्थान बनाकर कहा, १९ ‘यदि तलवार या मरी अथवा अकाल या और कोई विपत्ति हम पर पड़े, तो भी हम इसी भवन के सामने और तेरे सामने (तेरा नाम तो इस भवन में बसा है) खड़े होकर, अपने क्लेश के कारण तेरी दुहाई देंगे और तू सुनकर बचाएगा।’ २० और अब अम्पोनी और मोआवी और सेईर के पहाड़ी देश के लोग जिन पर तुमे इस्माएल को मिस्र देश से आते समय चढ़ाई करने न दिया, और वे उनकी ओर से मुड़ गए और उनका विनाश न किया, २१ देख, वे ही लोग तेरे दिए हुए अधिकार के इस देश में से जिसका अधिकार तुम हमें दिया है, हमको निकालकर कैसा बदला हमें दे रहे हैं। २२ हे हमारे परमेश्वर, क्या तू उनका न्याय न करेगा? यह जो बड़ी भीड़ हम पर चढ़ाई कर रही है, उसके सामने हमारा तो बस नहीं चलता और हमें कुछ सङ्झाता नहीं कि क्या करना चाहिये? परन्तु हमारी आँखें तेरी ओर लगी हैं।” २३ और सब यहदी अपने-अपने बाल-बच्चों, स्त्रियों और पुत्रों समेत यहोवा के सम्मुख खड़े रहे। २४ तब आसाप के बंश में से यहजीएल नामक एक लेवीय जो जकर्याह का पुत्र और बनायाह का पोता और मतन्याह के पुत्र यीएल का परपेता था, उसमें मण्डली के बीच यहोवा का आत्मा समाया। २५ तब वह कहने लगा, “हे सब यहदियों, हे यस्शलेम के रहनेवालों, हे राजा यहोशापात, तुम सब ध्यान दो; यहोवा तुम से यह कहता है, ‘तुम इस बड़ी भीड़ से मत डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो; क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं, परमेश्वर का है।’ २६ कल उनका सामना करने को जाना। देखो वे सीस की चढ़ाई पर चढ़े आते हैं

और यस्एल नामक जंगल के सामने नाले के सिरे पर तुम्हें मिलेंगे। २७ इस लडाई में तुम्हें लड़ाना न होगा; हे यहदा, और हे यस्शलेम, ठहरे रहना, और खड़े रहकर यहोवा की ओर से अपना बचाव देखना;” मत डरो, और तुम्हारा मन कच्चा न हो; कल उनका सामना करने को चलना और यहोवा तुम्हारे साथ रहेगा।” २८ तब यहोशापात भूमि की ओर मुँह करके झुका और सब यहदियों और यस्शलेम के निवासियों ने यहोवा के सामने गिरकर यहोवा को टण्डवत् किया। २९ कहातियों और कोरहियों में से कुछ लेवीय खड़े होकर इस्माएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति अत्यन्त ऊँचे स्वर से करने लगे। ३० वे सर्वे उठकर तकोआ के जंगल की ओर निकल गए; और चलते समय यहोशापात ने खड़े होकर कहा, “हे यहदियों, हे यस्शलेम के निवासियों, मेरी सुनो, अपने परमेश्वर यहोवा पर विचास रखो, तब तुम स्थिर रहोगे; उसके निवायों पर विचास करो, तब तुम कृतार्थ हो जाओगे।” ३१ तब उसने प्रजा के साथ सम्मति करके जिनों को ठहराया, जो कि पवित्रता से शोभायामन होकर हथियार-बन्दों के आगे-आगे चलते हुए यहोवा के गीत गाएँ, और यह कहते हुए उसकी स्तुति करें, “यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी कल्पा सदा की है।” ३२ जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने अम्पोनियों, मोआवियों और सेईर के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहदा के विस्तु आ रहे थे, घाटकों को बैठा दिया और वे मारे गए। ३३ क्योंकि अम्पोनियों और मोआवियों ने सेईर के पहाड़ी देश के निवासियों को डराने और सत्यानाश करने के लिये उन पर चढ़ाई की, और जब वे सेईर के पहाड़ी देश के निवासियों का अन्त कर चुके, तब उन सभी ने एक दूसरे का नाश करने में हाथ लगाया। ३४ जब यहदियों ने जंगल की चौकी पर पहुँचकर उस भीड़ की ओर दृष्टि की, तब क्या देखा कि वे भूमि पर पड़े हुए शव हैं, और कोई नहीं बचा। ३५ तब यहोशापात और उसकी प्रजा लट लेने को गए और शवों के बीच बहुत सी सम्पत्ति और मनभावने गहने मिले; उन्होंने इतने गहने उतार लिये कि उनको न ले जा सके, वरन् लटू इनी मिली, कि बटोरते-बटोरते तीन दिन बीत गए। ३६ चौथे दिन वे बराका नामक तराई में इकट्ठे हुए और वहाँ यहोवा का धन्यवाद किया; इस कारण उस स्थान का नाम बराका की तराई पड़ा, जो आज तक है। ३७ तब वे, अर्थात् यहदा और यस्शलेम नगर के सब पुस्त और उनके आगे-आगे यहोशापात, आनन्द के साथ यस्शलेम लौटे क्योंकि यहोवा ने उन्हें शत्रुओं पर आनन्दित किया था। ३८ अतः वे सारंगीयाँ, वीणाएँ और तुरहियाँ जबतो हुए यस्शलेम में यहोवा के भवन को आए। ३९ और जब देश-देश के सब राज्यों के लोगों ने सुना कि इस्माएल के शत्रुओं से यहोवा लड़ा, तब उनके मन में परमेश्वर का डर समा गया। ४० इस प्रकार यहोशापात के राज्य को चैन मिला, क्योंकि उसके परमेश्वर ने उसके चारों ओर से विश्वाम दिया। ४१ अतः यहोशापात ने यहदा पर राज्य किया। जब वह राज्य करने लगा तब वह पैतीस वर्ष का था, और पच्चीस वर्ष तक यस्शलेम में राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम अजबा था, जो शिल्पी की बेटी थी। ४२ वह अपने पिता आसा की लीक पर चला और उससे न मुडा, अर्थात् जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है वही वह करता रहा। ४३ तो भी ऊँचे स्थान ढाए न गए, वरन् अब तक प्रजा के लोगों ने अपना मन अपने पितरों के परमेश्वर की ओर न लगाया था। ४४ आदि से अन्त तक यहोशापात के और काम, हनानी के पुर येह के विषय उस वृत्तान्त में लिखे हैं, जो इस्माएल के राजाओं के वृत्तान्त में पाया जाता है। ४५ इसके बाद यहदा के राजा यहोशापात ने इस्माएल के राजा अहज्याह से जो बड़ी दृष्टा करता था, मेल किया। ४६ अर्थात् उसने उसके साथ इसलिए मेल किया कि तरींश जाने को जहाज बनवाएँ, और उन्होंने ऐसे जहाज एस्योनगेब्र में बनवाए। ४७ तब

दोदावाह के पुत्र मारेशावासी एलीएजर ने यहोशापात के बिस्दू यह नवूवत की, “तुमें जो अहज्याह से मेल किया, इस कारण यहोवा तेरी बनवाई हुई वस्तुओं को तोड़ डालेगा।” अतः जहाज टूट गए और तर्शीश को न जा सके।

२१ अन्त में यहोशापात मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला, और उसको

उसके पुरखाओं के बीच दाऊदपुर में मिट्ठी दी गई; और उसका पुत्र यहोराम उसके स्थान पर राज्य करने लगा। २ उसके भाई जो यहोशापात के पुत्र थे: अर्थात् अजर्याह, यहीएन, जकर्याह, अजर्याह, मीकाएल और शपत्याह; ये सब इमाएल के राजा यहोशापात के पुत्र थे। ३ उनके पिता ने उन्हें चाँदी सोना और अनमोल वस्तुएँ और बड़े-बड़े दान और यहृदा में गढ़वाले नगर दिए थे, परन्तु यहोराम को उसने राज्य दे दिया, क्योंकि वह जेठा था। ४ जब यहोराम अपने पिता के राज्य पर नियुक्त हुआ और बलवन्त भी हो गया, तब उसने अपने सब भाइयों को और इमाएल के कुछ हाकिमों को भी तलवार से घात किया। ५ जब यहोराम राजा हुआ, तब वह बत्तीस वर्ष का था, और वह आठ वर्ष तक यस्त्वलेम में राज्य करता रहा। ६ वह इमाएल के राजाओं की सी चाल चला, जैसे अहाब का घराना चलता था, क्योंकि उसकी पत्नी अहाब की बेटी थी। और वह उस काम को करता था, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, क्योंकि उसके पिता की मृत्यु के बाद वे उसको ऐसी सलाह देते थे, जिससे उसका विनाश हुआ। ७ वह उनकी सलाह के अनुसार चलता था, और इमाएल के राजा अहाब के पुत्र यहोराम के संग गिलाद के राष्ट्र में अराम के राजा हजाएल से लड़ने को गया और अरामियों ने यहोराम को घायल किया। ८ अतः राजा यहोराम इसलिए लौट गया कि यिज्जेल में उन घावों का इलाज कराए जो उसको अरामियों के हाथ से उस समय लगे थे जब वह हजाएल के साथ लड़ रहा था। क्योंकि अहाब का पुत्र यहोराम जो यिज्जेल में रोगी था, इस कारण से यहृदा के राजा यहोराम का उन अजर्याह उसको देखेने गया। ९ अहज्याह का विनाश यहोवा की ओर से हुआ, क्योंकि वह यहोराम के पास गया था। जब वह वहाँ पहुँचा, तब यहोराम के संग निमिश के पुत्र येह का सामना करने को निकल गया, जिसका अभिषेक यहोवा ने इसलिए कराया था कि वह अहाब के घराने का नाश करे। १० जब येह अहाब के घराने को दण्ड दे रहा था, तब उसको यहृदा के हाकिम और अहज्याह के भतीजे जो अहज्याह के टहलुए थे, मिले, और उसने उनको घात किया। ११ तब उसने अहज्याह को ढूँढ़ा। वह सामरिया में छिपा था, अतः लोगों ने उसको पकड़ लिया और येह के पास पहुँचाकर उसको मार डाला। तब यह कहकर उसको मिट्ठी दी, “यह यहोशापात का पोता है, जो अपने पौर मन से यहोवा की खोज करता था।” और अहज्याह के घराने में राज्य करने के योग्य कोई न रहा। १२ जब अहज्याह की माता अतल्याह ने देखा कि मेरा पुत्र मर गया, तब उसने उठकर यहृदा के घराने के सारे राजवंश को नाश किया। १३ परन्तु यहोशापात जो राजा की बेटी थी, उसने अहज्याह के पुत्र योआश को घात होनेवाले राजकुमारों के बीच से चुराकर दाई समेत बिलौने रखने की कोठरी में छिपा दिया। इस प्रकार राजा यहोराम की बेटी यहोशापात जो यहोयादा याजक की झी और अहज्याह की बहन थी, उसने योआश को अतल्याह से ऐसा छिपा रखा कि वह उसे मार डालने न पाई। १४ वह उसके पास परमेश्वर के भवन में छ: वर्ष छिपा रहा, इन्हें दिनों तक अतल्याह देश पर राज्य करती रही।

२२ तब यस्त्वलेम के निवासियों ने उसके छोटे पुत्र अहज्याह को उसके स्थान पर राजा बनाया; क्योंकि जो दल अरबियों के संग छावनी में

आया था, उसने उसके सब बड़े बेटों को घात किया था अतः यहृदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह राजा हुआ। २ जब अहज्याह राजा हुआ, तब वह बाईस वर्ष का था, और यस्त्वलेम में एक ही वर्ष राज्य किया। उसकी माता का नाम अतल्याह था, जो ओप्री की पोती थी। ३ वह अहाब के घराने की सी चाल चला, क्योंकि उसकी माता उसे दुष्टा करने की सलाह देती थी। ४ वह अहाब के घराने के समान वह काम करता था जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, क्योंकि उसके पिता की मृत्यु के बाद वे उसको ऐसी सलाह देते थे, जिससे उसका विनाश हुआ। ५ वह उनकी सलाह के अनुसार चलता था, और इमाएल के राजा अहाब के पुत्र यहोराम के संग गिलाद के राष्ट्र में अराम के राजा हजाएल से लड़ने को गया और अरामियों ने यहोराम को घायल किया। ६ अतः राजा यहोराम इसलिए लौट गया कि यिज्जेल में उन घावों का इलाज कराए जो उसको अरामियों के हाथ से उस समय लगे थे जब वह हजाएल के साथ लड़ रहा था। क्योंकि अहाब का पुत्र यहोराम जो यिज्जेल में रोगी था, इस कारण से यहृदा के राजा यहोराम का उन अजर्याह उसको देखेने गया। ७ अहज्याह का विनाश यहोवा की ओर से हुआ, क्योंकि वह यहोराम के पास गया था। जब वह वहाँ पहुँचा, तब यहोराम के संग निमिश के पुत्र येह का सामना करने को निकल गया, जिसका अभिषेक यहोवा ने इसलिए कराया था कि वह अहाब के घराने का नाश करे। ८ जब येह अहाब के घराने को दण्ड दे रहा था, तब उसको यहृदा के हाकिम और अहज्याह के भतीजे जो अहज्याह के टहलुए थे, मिले, और उसने उनको घात किया। ९ तब उसने अहज्याह को ढूँढ़ा। वह सामरिया में छिपा था, अतः लोगों ने उसको पकड़ लिया और येह के पास पहुँचाकर उसको मार डाला। तब यह कहकर उसको मिट्ठी दी, “यह यहोशापात का पोता है, जो अपने पौर मन से यहोवा की खोज करता था।” और अहज्याह के घराने में राज्य करने के योग्य कोई न रहा। १० जब अहज्याह की माता अतल्याह ने देखा कि मेरा पुत्र मर गया, तब उसने उठकर यहृदा के घराने के सारे राजवंश को नाश किया। ११ परन्तु यहोशापात जो राजा की बेटी थी, उसने अहज्याह के पुत्र योआश को घात होनेवाले राजकुमारों के बीच से चुराकर दाई समेत बिलौने रखने की कोठरी में छिपा दिया। इस प्रकार राजा यहोराम की बेटी यहोयादा याजक की झी और अहज्याह की बहन थी, उसने योआश को अतल्याह से ऐसा छिपा रखा कि वह उसे मार डालने न पाई। १२ वह उसके पास परमेश्वर के भवन में छ: वर्ष छिपा रहा, इन्हें दिनों तक अतल्याह देश पर राज्य करती रही।

२३ सातवें वर्ष में यहोयादा ने हियाव बाँधकर योहोराम के पुत्र अजर्याह,

योहोनान के पुत्र इमाएल, ओबेद के पुत्र अजर्याह, अदायाह के पुत्र मासेयाह और जिक्री के पुत्र एलीशापात, इन शतपतियों से वाचा बाँधी। २ तब वे यहृदा में घूमकर यहृदा के सब नगरों में से लेवियों को और इमाएल के पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरुषों को इकट्ठ करके यस्त्वलेम को ले आए। ३ उस सारी मण्डली ने परमेश्वर के भवन में राजा के साथ वाचा बाँधी, और यहोयादा ने उनसे कहा, “सुनो, यह राजकुमार राज्य केरेगा जैसे कि यहोवा ने दाऊद के वंश के विषय कहा है। ४ तुम एक काम करो। अर्थात् तुम याजकों और लेवियों की एक तिहाई लोग जो विश्वामिन को आवेदाले हो, वे द्वारपाली करें, ५ एक तिहाई लोग राजभवन में रहें, और एक तिहाई लोग नीव के फाटक के पास रहें, और सब लोग यहोवा के भवन के आँगनों में रहें। ६ परन्तु याजकों और सेवा ठहल करनेवाले लेवियों को छोड़ और कोई यहोवा

के भवन के भीतर न आने पाए; वे तो भीतर आएँ, क्योंकि वे पवित्र हैं परन्तु सब लोग यहोवा के भवन की चौकसी करें। ७ लेवीय लोग अपने-अपने हाथ में हथियार लिये हुए राजा के चारों ओर रहे और जो कोई भवन के भीतर घुसे, वह मार डाला जाए। और तुम राजा के आते-जाते उसके साथ रहना।” ८ यहोयादा याजक की इन सब आज्ञाओं के अनुसार लेवियों और सब यहूदियों ने किया। उन्होंने विश्वामिदिन को आनेवाले और विश्वामिदिन को जानेवाले दोनों दलों के, अपने-अपने जनों को अपने साथ कर लिया, क्योंकि यहोयादा याजक ने किसी दल के लेवियों को बिदा न किया था। ९ तब यहोयादा याजक ने शतपतियों को राजा दाऊद के बर्छे और भाले और ढालें जो परमेश्वर के भवन में थी, दे दी। १० फिर उसने उन सब लोगों को अपने-अपने हाथ में हथियार लिये हुए भवन के दक्षिणी कोने से लेकर, उत्तरी कोने तक वेदी और भवन के पास राजा के चारों ओर उसकी आड़ करके खड़ा कर दिया। ११ तब उन्होंने राजकुमार को बाहर ला, उसके सिर पर मुकुट रखा और साक्षीपत्र देकर उसे राजा बनाया; और यहोयादा और उसके पुत्रों ने उसका अभिषेक किया, और लोग बोल उठे, राजा जीवित रहे। १२ जब अतल्याह को उन लोगों का हल्ला, जो दौड़ते और राजा को समराहते थे सुनाई पड़ा, तब वह लोगों के पास यहोवा के भवन में गई। १३ उसने क्या देखा, कि राजा द्वारा केनिकट खाभे के पास खड़ा है, और राजा के पास प्रधान और तुरही बजनेवाले खड़े हैं, और सब लोग अनन्द कर रहे हैं और तुरहियां बजा रहे हैं और गाने बजनेवाले बाजे बजाते और स्तुति करते हैं। तब अतल्याह अपने बच्चे फांडकर पुकारने लगी, राजदोह, राजदोह! १४ तब यहोयादा याजक ने दल के अधिकारी शतपतियों को बाहर लाकर उनसे कहा, “उसे अपनी पक्षियों के बीच से निकाल ले जाओ; और जो कोई उसके पीछे चले, वह तलवार से मार डाला जाए।” याजक ने कहा, “उसे यहोवा के भवन में न मार डालो।” १५ तब उन्होंने दोनों और से उसको जगह दी, और वह राजभवन के घोड़फाटक के द्वार तक गई, और वहाँ उन्होंने उसको मार डाला। १६ तब यहोयादा ने अपने और सारी प्रजा के और राजा के बीच यहोवा की प्रजा होने की वाचा बढ़ाई। १७ तब सब लोगों ने बाल के भवन को जाकर दा दिया; और उसकी वेदियों और मूरतों को टुकड़े-टुकड़े किया, और मतान नामक बाल के याजक को वेदियों के सामने ही धात किया। १८ तब यहोयादा ने यहोवा के भवन की सेवा के लिये उन लेवीय याजकों को ठहरा दिया, जिन्हें दाऊद ने यहोवा के भवन पर दल-दल करके इसलिए ठहराया था, कि जैसे मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसे ही वे यहोवा को होमबलि चढ़ाया करें, और दाऊद की चलाई हुई विधि के अनुसार अनन्द करें और गाएँ। १९ उसने यहोवा के भवन के फाटकों पर द्वारपालों को इसलिए खड़ा किया, कि जो किसी रीति से अशुद्ध हो, वह भीतर जाने न पाए। २० वह शतपतियों और रईसों और प्रजा पर प्रभुता करनेवालों और देश के सब लोगों को साथ करके राजा को यहोवा के भवन से नीचे ले गया और ऊँचे फाटक से होकर राजभवन में आया, और राजा को राजगढ़ी पर बैठाया। २१ तब सब लोग अनन्दित हुए और नगर में शान्ति हुई। अतल्याह तो तलवार से मार ही डाली गई थी।

२४ जब योआश राजा हुआ, तब वह सात वर्ष का था, और यस्शलेम में

चालीस वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम सिल्वा था, जो बेरेश्बा की थी। १ जब तक यहोयादा याजक जीवित रहा, तब तक योआश वह काम करता रहा जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है। २ यहोयादा ने उसके दो विवाह कराएँ और उससे बेटे-बेटियाँ उत्पन्न हुईं। ३ इसके बाद योआश के मन में यहोवा के भवन की मरम्मत करने की इच्छा उपजी। ४ तब उसने याजकों और लेवियों को इकट्ठा करके कहा, “प्रतिवर्ष यहदा के नगरों में जा जाकर

सब इस्माएलियों से स्पर्ये लिया करो जिससे तुम्हारे परमेश्वर के भवन की मरम्मत हो; देखो इस काम में फुर्ती करो।” तो भी लेवियों ने कुछ फुर्ती न की। ५ तब राजा ने यहोयादा महायाजक को बुलावाकर पूछा, “क्या कारण है कि तूने लेवियों को दृढ़ आज्ञा नहीं दी कि वे यहदा और यस्शलेम से उस चन्दे के स्पर्ये ले आएँ जिसका नियम यहोवा के दास मूसा और इस्माएल की मण्डली ने साक्षीपत्र के तम्बू के नियमित चलाया था।” ६ उस दृढ़ श्री अतल्याह के बेटों ने तो परमेश्वर के भवन को तोड़ दिया था, और यहोवा के भवन की सब पवित्र की हुई वस्तुएँ बाल देवताओं के लिये प्रयोग की थी। ७ राजा ने एक सन्दूक बनाने की आज्ञा दी और वह यहोवा के भवन के फाटक के पास बाहर रखा गया। ८ तब यहदा और यस्शलेम में यह प्रचार किया गया कि जिस चन्दे का नियम परमेश्वर के दास मूसा ने जंगल में चलाया था, उसके स्पर्ये यहोवा के नियमित ले आओ। ९ तो सब हाकिम और प्रजा के सब लोग आनन्दित हो स्पर्ये लाकर जब तक चन्दा पूरा न हुआ तब तक सन्दूक में डालते गए। १० जब जब वह सन्दूक लेवियों के हाथ से राजा के प्रधानों के पास पहुँचाया जाता और यह जान पड़ता था कि उसमें स्पर्ये बहुत हैं, तब-तब राजा के प्रधान और महायाजक के अधिकारी आकर सन्दूक को खाली करते और तब उसे फिर उसके स्थान पर रख देते थे। उन्होंने प्रतिदिन ऐसा किया और बहुत स्पर्ये इकट्ठा किए। ११ तब राजा और यहोयादा ने वह स्पर्ये यहोवा के भवन में काम करनेवालों को दे दिए, और उन्होंने राजमिलियों और बढ़दूयों को यहोवा के भवन के सुधारने के लिये, और लोहारों और ठारों को यहोवा के भवन की मरम्मत करने के लिये मजदूरी पर रखा। १२ कारीगर काम करते गए और काम पूरा होता गया, और उन्होंने परमेश्वर का भवन जैसा का तैसा बनाकर दृढ़ कर दिया। १३ जब उन्होंने वह काम पूरा कर लिया, तब वे शेष स्पर्ये राजा और यहोयादा के पास ले गए, और उनसे यहोवा के भवन के लिये पात्र बनाए गए, अर्थात् सेवा ठहल करने के पात्र और धूपदान आदि सोने चाँदी के पात्र। जब तक यहोयादा जीवित रहा, तब तक यहोवा के भवन में होमबलि नियत चढ़ाए जाते थे। १४ परन्तु यहोयादा बृहदी हो गया और दीर्घायु होकर मर गया। जब वह मर गया तब एक सौ तीस वर्ष का था। १५ और दाऊदपुर में राजाओं के बीच उसको मिट्ठी दी गई, क्योंकि उसने इस्माएल में और परमेश्वर के और उसके भवन के विषय में भला किया था। १६ यहोयादा के मरने के बाद यहदा के हाकिमों ने राजा के पास जाकर उसे दण्डवत् की, और राजा ने उनकी मानी। १७ तब वे अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का भवन छोड़कर अशेरों और मूरतों की उपासना करने लगे। अतः उनके ऐसे दोषी होने के कारण परमेश्वर का क्रोध यहदा और यस्शलेम पर भड़का। १८ तो भी उसने उनके पास नबी भेजे कि उनको यहोवा के पास फेर लाएँ; और इन्होंने उन्हें चिता दिया, परन्तु उन्होंने कान न लगाया। १९ तब परमेश्वर का आत्मा यहोयादा याजक के पुत्र जकर्याह में समा गया, और वह ऊँचे स्थान पर खड़ा होकर लोगों से कहने लगा, “परमेश्वर यह कहता है, कि तुम यहोवा की आज्ञाओं को क्यों टालते हो? ऐसा करके तुम्हारा भला नहीं हो सकता। देखो, तुम ने तो यहोवा को त्याग दिया है, इस कारण उसने भी तुम को त्याग दिया।” २० तब लोगों ने उसके विस्तु दोह की बात करके, राजा की आज्ञा से यहोवा के भवन के आँगन में उस पर पथराव किया। २१ इस प्रकार राजा योआश ने वह प्रीति भलकर जो यहोयादा ने उससे की थी, उसके पुत्र को घात किया। मरते समय उसने कहा, “यहोवा इस पर दृष्टि करके इसका लेखा ले।” २२ नये वर्ष के लगते अरामियों की सेवा ने उस पर चढ़ाई की, और यहदा और यस्शलेम आकर प्रजा में से सब हाकिमों को नाश किया और उनका सब धन लूटकर दमिश्क के राजा के पास भेजा। २३ अरामियों की सेवा

थोड़े ही सैनिकों के साथ तो आई, परन्तु यहोवा ने एक बहुत बड़ी सेना उनके हाथ कर दी, क्योंकि उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर को त्याग दिया था। इस प्रकार योआश को भी उहोंने डण्ड दिया। २५ जब वे उसे बहुत ही घायल अवस्था में छोड़ गए, तब उसके कर्मचारियों में यहोयादा याजक के पुत्रों के खून के कारण उससे द्रोह की बात करके, उसे उसके बिलौने पर ही ऐसा मारा, कि वह मर गया; और उन्होंने उसको दाऊदुर में मिट्टी दी, परन्तु राजाओं के कब्रिस्तान में नहीं। २६ जिन्होंने उससे राजद्रोह की गोष्ठी की, वे थे थे, अर्थात् अमोनिन शिमात का पुत्र याजाद, और शिप्रित मोआबिन का पुत्र यहोजाबाद। २७ उसके बेटों के विषय और उसके विस्तृ, जो बड़े डण्ड की नब्बूद बहुई, उसके और परमेश्वर के भवन के बनने के विषय ये सब बातें राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक में लिखी हैं। तब उसका पुत्र अमस्याह उसके स्थान पर राजा हुआ।

२८ जब अमस्याह राज्य करने लगा तब वह पच्चीस वर्ष का था, और यस्शलेम में उनतीस वर्ष तक राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम यहोअद्धन था, जो यस्शलेम की थी। २९ उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है, परन्तु खेरे मन से न किया। ३० जब राज्य उसके हाथ में स्थिर हो गया, तब उसने अपने उन कर्मचारियों को मार डाला जिन्होंने उसके पिता राजा को मार डाला था। ३१ परन्तु उसने उनके बच्चों को न मार क्योंकि उसने यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार किया, जो मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है, “पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए, जिसने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए।” ३२ तब अमस्याह ने यहदा को बरन-सारे यहदियों और बियामिनियों को इकट्ठा करके उनको, पितरों के धरानों के अनुसार सहज्ञपतियों और शतपतियों के अधिकार में ठहराया; और उनमें से जितनों की अवस्था बीस वर्ष की अथवा उससे अधिक थी, उनकी गिनती करके तीन लाख भाला चलानेवाले और ढाल उठानेवाले बड़े-बड़े योद्धा पाए। ३३ फिर उसने एक लाख इमाएली शूर्वीरों को भी एक सौ किक्कार चौंटी देकर बुलावाया। ३४ परन्तु परमेश्वर के एक जन ने उसके पास आकर कहा, “हे राजा, इमाएल की सेना तेरे साथ जाने न पाए; क्योंकि यहोवा इमाएल अर्थात् ऐप्रैम की समस्त सन्तान के संग नहीं रहता। ३५ यदि तू जाकर पुरुषर्थ करें; और युद्ध के लिये हियाव बाँधे, तो भी परमेश्वर तुझे शत्रुओं के सामने गिराएगा, क्योंकि सहायता करने और गिरा देने दोनों में परमेश्वर सामर्थी है।” ३६ अमस्याह ने परमेश्वर के भक्त से पूछा, “फिर जो सौ किक्कार चौंटी मैं इमाएली दल को दे चुका हूँ, उसके विषय क्या करूँ?” परमेश्वर के भक्त ने उत्तर दिया, “यहोवा तुझे इससे भी बहुत अधिक दे सकता है।” ३७ तब अमस्याह ने उहों अर्थात् उस दल को जो ऐप्रैम की ओर से उसके पास आया था, अलग कर दिया, कि वे अपने स्थान को लौट जाएँ। तब उनका क्रोध यहदियों पर बहुत भड़क उठा, और वे अत्यन्त क्रोधित होकर अपने स्थान को लौट गए। ३८ परन्तु अमस्याह हियाव बाँधकर अपने लोगों को तेरे चला, और नमक की तराई में जाकर, दस हजार सेईरियों को मार डाला। ३९ यहदियों ने दस हजार को बन्दी बनाकर चट्टान की चोटी पर ले गये, और चट्टान की चोटी पर से गिरा दिया, और वे सब चूर्चू हो गए। ४० परन्तु उस दल के पुरुष जिसे अमस्याह ने लौटा दिया कि वे उसके साथ युद्ध करने को न जाएँ, सामरिया से बेथेरोन तक यहदा के सब नगरों पर टूट पड़े, और उनके तीन हजार निवासी मार डाले और बहुत लृत ले ली। ४१ जब अमस्याह एस्मियों का संहार करके लौट आया, तब उसने सेईरियों के देवताओं को ले आकर अपने देवता करके खड़ा किया, और

उन्हीं के सामने दण्डवत् करने, और उन्हीं के लिये धूप जलाने लगा। ४२ तब यहोवा का क्रोध अमस्याह पर भड़क उठा और उसने उसके पास एक नबी भेजा जिसने उससे कहा, “जो देवता अपने लोगों को तेरे हाथ से बचा न सके, उनकी खोज में तू क्यों लगा है?” ४३ वह उससे कही रहा था कि उसने उससे पछा, “क्या हमने तुझे राजमंत्री ठहरा दिया है? चुप रह! क्या तू मरना चाहता है?” तब वह नबी यह कहकर चुप हो गया, “मुझे मालूम है कि परमेश्वर ने तेरा नाश करना ठान लिया है, क्योंकि तू ऐसा किया है और मेरी सम्मति नहीं मानी।” ४४ तब यहदा के राजा अमस्याह ने सम्मति लेकर, इमाएल के राजा योआश के पास, जो येह का पोता और यहोआहाज का पुत्र था, यह कहला भेजा, “आ हम एक दूसरे का सामना करें।” ४५ इमाएल के राजा योआश ने यहदा के राजा अमस्याह के पास यह कहला भेजा, “लबानोन पर की एक झाड़बेरी ने लबानोन के एक देवदार के पास कहला भेजा, ‘अपनी बेटी मेरे बेटे को ब्याह दे,’ इतने में लबानोन का कोई वन पशु पास से चला गया और उस झाड़बेरी की रौंद डाला। ४६ तू कहता है, कि मैंने एटोमियों को जीत लिया है; इस कारण तू फूल उठा और डीग मारता है! अपने घर में रह जा; तू अपनी हानि के लिये यहाँ क्यों हाथ डालता है, इससे तू क्या, वरन् यहदा भी नीचा खाएगा।” ४७ परन्तु अमस्याह ने माना। यह तो परमेश्वर की ओर से हुआ, कि वह उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ कर दे, क्योंकि वे एटोम के देवताओं की खोज में लग गए थे। ४८ तब इमाएल के राजा योआश ने चढ़ाई की ओर उसने और यहदा के राजा अमस्याह ने यहदा देश के बेतशेमेश में एक दूसरे का सामना किया। ४९ यहदा इमाएल से हार गया, और हर एक अपने-अपने डेरे को भागा। ५० तब इमाएल के राजा योआश ने यहदा के राजा अमस्याह को, जो यहोआहाज का पोता और योआश का पुत्र था, बेतशेमेश में पकड़ा और यस्शलेम को ले गया और यस्शलेम की शहरपनाह को, ऐप्रैम फाटक से कोनेवाले फाटक तक, चार सौ हाथ गिरा दिया। ५१ और जितना सोना चाँदी और जितने पात्र परमेश्वर के भवन में ओवेदेटोम के पास मिले, और राजभवन में जितना खजाना था, उस सब को और बन्धक लोगों को भी लेकर वह सामरिया को लौट गया। ५२ यहोआहाज के पुत्र इमाएल के राजा योआश के मरने के बाद योआश का पुत्र यहदा का राजा अमस्याह पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहा। ५३ आदि से अन्त तक अमस्याह के और काम, क्या यहदा और इमाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? ५४ जिस समय अमस्याह यहोवा के पीछे चलना छोड़कर फिर गया था उस समय से यस्शलेम में उसके विस्तृ द्वारा की गोष्ठी होने लगी, और वह लाकीश को भाग गया। अतः दूतों ने लाकीश तक उसका पीछा करके, उसको बीमार डाला। ५५ तब वह धोड़ों पर रखकर पहुँचाया गया और उसे उसके पुरुखों के बीच यहदा के नगर में मिट्टी दी गई।

२७ तब सब यहदी प्रजा ने उज्जियाह को लेकर जो सोलह वर्ष का था, उसके पिता अमस्याह के स्थान पर राजा बनाया। २८ जब राजा अमस्याह मरकर अपने पुरुखों के संग जा मिला तब उज्जियाह ने एलोत नगर को ढूँढ़ करके यहदा में फिर मिला लिया। २९ जब उज्जियाह राज्य करने लगा, तब वह सोलह वर्ष का था। और यस्शलेम में बावन वर्ष तक राज्य करता रहा, उसकी माता का नाम यकोल्याथा था, जो यस्शलेम की थी। ३० जैसे उसका पिता अमस्याह, किया करता था वैसा ही उसने भी किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था। ३१ जैसे उसका पिता अमस्याह एस्मियों का संहार करके लौट आया, तब उसने जाकर पलिशितियों से युद्ध किया, और गत, यब्बे और अशदोद की शहरपनाहें गिरा

दी, और अशदोद के आस-पास और पलिशियों के बीच में नगर बसाए। ७ परमेश्वर ने पलिशियों और गूर्वालवासी, अरबियों और मूनियों के विस्तु उसकी सहायता की। ८ अमोनी उज्जियाह को भेट देने लगे, वरन् उसकी कीर्ति मिथ की सीमा तक भी फैल गई, क्योंकि वह अत्यन्त सामर्थी हो गया था। ९ फिर उज्जियाह ने यस्शलेम में कोने के फाटक और तराई के फाटक और शहरपनाह के मोड़ पर गुम्मट बनवाकर ढूढ़ किए। १० उसके बहुत जानवर थे इसलिए उसने जंगल में और नीचे के देश और चौरस देश में गुम्मट बनवाए और बहुत से हौद खुदवाए, और पहाड़ों पर और कर्मेल में उसके किसान और दाख की बारियों के मात्री थे, क्योंकि वह खेती किसानी की करनेवाला था। ११ फिर उज्जियाह के योद्धाओं की एक सेना थी जिनकी गिनती थीएल मंशी और मासेयाह सरदार, हनन्याह नामक राजा के एक हाकिम की आज्ञा से करते थे, और उसके अनुसार वह दल बाँधकर लड़ने को जाती थी। १२ पिरतों के घरानों के मूख्य-मूख्य पुष्प जो शूरवीर थे, उनकी पूरी गिनती दो हजार छ: सौ थी। १३ उनके अधिकार में तीन लाख साड़े सात हजार की एक बड़ी सेना थी, जो शूरुओं के विस्तु राजा की सहायता करने को बड़े बल से यदू करनेवाले थे। १४ इनके लिये अर्थात् पूरी सेना के लिये उज्जियाह ने ढालें, भाले, टोप, डिलम, धनुष और गोफन के पथर तैयार किए। १५ फिर उसने यस्शलेम में गुम्मटों और कंगोरों पर रखने को चतुर पुष्पों के निकाले हुए यन्त्र भी बनवाए जिनके द्वारा तीर और बड़े-बड़े पथर फेंके जाते थे। उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई, क्योंकि उसे अद्भुत सहायता यहाँ तक मिली कि वह सामर्थी हो गया। १६ परन्तु जब वह सामर्थी हो गया, तब उसका मन फूल उठा; और उसने बिंगाड़कर अपने परमेश्वर यहोवा का विष्वासघात किया, अर्थात् वह धूप की बेटी पर धूप जलाने को यहोवा के मन्दिर में छोड़ गया। १७ पर अजर्याह याजक उसके बाद भीतर गया, और उसके संग यहोवा के अस्ती याजक भी जो वीर थे गए। १८ उन्होंने उज्जियाह राजा का सामना करके उससे कहा, “हे उज्जियाह यहोवा के लिये धूप जलाना तेरा काम नहीं, हासन की सन्तान अर्थात् उन याजकों ही का काम है, जो धूप जलाने को पवित्र किए गए हैं।” त् पवित्रस्थान से निकल जा; तूने विष्वासघात किया है, यहोवा परमेश्वर की ओर से यह तेरी महिमा का कारण न होगा।” १९ तब उज्जियाह धूप जलाने को धृपदान हाथ में लिये हुए झूँझला उठा। वह याजकों पर झूँझला रहा था, कि याजकों के देखते-देखते यहोवा के भवन में धूप की बेटी के पास ही उसके माथे पर कोढ़ प्रगत हुआ। २० अजर्याह महायाजक और सब याजकों ने उस पर दृष्टि की, और क्या देखा कि उसके माथे पर कोढ़ निकला है! तब उन्होंने उसको वहाँ से झिटप निकाल दिया, वरन् यह जानकर कि यहोवा ने मुझे कोही कर दिया है, उसने आप बाहर जाने को उतावली की। २१ उज्जियाह राजा मरने के दिन तक कोही रहा, और कोढ़ के कारण अलग एक घर में रहता था, वह यहोवा के भवन में जाने न पाता था। और उसका पुत्र योताम राजघराने के काम पर नियुक्त किया गया और वह लोगों का न्याय भी करता था। २२ अदि से अन्त तक उज्जियाह के और कामों का वर्णन तो अपेस के पुत्र यशायाह नबी ने लिखा है। २३ अन्त में उज्जियाह मरकर अपने पुरुखाओं के संग जा मिला, और उसको उसके पुरुखाओं के निकट राजाओं के मिट्टी देने के खेत में मिट्टी दी गई क्योंकि उन्होंने कहा, “वह कोही है।” उसका पुत्र योताम उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

२७ जब योताम राज्य करने लगा तब वह पच्चीस वर्ष का था, और यस्शलेम में सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम यस्शा था, जो सादेक की बेटी थी। १ उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में ठीक

है, अर्थात् जैसा उसके पिता उज्जियाह ने किया था, ठीक वैसा ही उसने भी किया तो भी वह यहोवा के मन्दिर में न घुसा; और प्रजा के लोग तब भी बिगड़ी चाल चलते थे। २ उसी ने यहोवा के भवन के ऊपरवाले फाटक को बनाया, और ओपेल की शहरपनाह पर बहुत कुछ बनवाया। ३ फिर उसने यहदा के पहाड़ी देश में कई नगर ढूढ़ किए, और जंगलों में गढ़ और गुम्मट बनाए। ४ वह अमोनीयों के राजा से यदू करके उन पर प्रबल हो गया। उसी वर्ष अमोनीयों ने उसको सौ किक्कारा चाँदी, और दस-दस हजार कोर गेहूँ और जौ दिया। फिर दूसरे और तीसरे वर्ष में भी उन्होंने उसे उतना ही दिया। ५ अतः योताम सामर्थी हो गया, क्योंकि वह अपने आपको अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख जानकर सीधी चाल चलता था। ६ योताम के और काम और उसके सब यदू और उसकी चाल चलन, इन सब बातों का वर्णन इस्पाल और यहदा के राजाओं के इतिहास में लिखा है। ७ जब वह राजा हुआ, तब पच्चीस वर्ष का था; और वह यस्शलेम में सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा। ८ अन्त में योताम मरकर अपने पुरुखाओं के संग जा मिला और उसे दाऊदपुर में मिट्टी दी गई। और उसका पुत्र आहाज उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

२८ जब आहाज राज्य करने लगा तब वह बीस वर्ष का था, और सोलह वर्ष तक यस्शलेम में राज्य करता रहा। और अपने मूलधुस दाऊद के समान काम नहीं किया, जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, १ परन्तु वह इस्पाल के राजाओं की सी चाल चला, और बाल देवताओं की मूर्तियाँ ढलवा कर बनाईं, २ और हिन्नोम के बेटे की तराई में धूप जलाया, और उन जातियों के धिनोने कामों के अनुसार जिन्हें यहोवा ने इस्पालियों के सामने देख से निकाल दिया था, अपने बच्चों को आग में होम कर दिया। ३ ऊँचे स्थानों पर, और पहाड़ियों पर, और सब हरे वृक्षों के तले वह बलि चढ़ाया और धूप जलाया करता था। ४ इसलिए उसके परमेश्वर यहोवा ने उसको अरामियों के राजा के हाथ कर दिया, और वे उसको जीतकर, उसके बहुत से लोगों को बन्दी बनाकर दमिश्क को ले ले गए। और वह इस्पाल के राजा के बश में कर दिया गया, जिसने उसे बड़ी मार से मारा। ५ रमल्याह के पुत्र पेकह ने, यहदा में एक ही दिन में एक लाख बीस हजार लोगों को जो सब के सब बीर थे, घात किया, क्योंकि उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया था। ६ जिक्री नामक एक ऐप्रीमी वीर ने मासेयाह नामक एक राजपुत को, और राजभवन के प्रधान अर्जीकाम को, और एल्काना को, जो राजा का मंत्री था, मार डाला। ७ इसाएली अपने भाइयों में से सियों, बेटों और बेटियों को मिलाकर दो लाख लोगों को बन्दी बनाकर, और उनकी बहुत लृट भी छीनकर सामरिया की ओर ले चले। ८ परन्तु वहाँ ऑटेद नामक यहोवा का एक नवी था; वह सामरिया को आनेवाली सेना से मिलाकर उनसे कहने लगा, “सुनो, तुम्हरे पितरों के परमेश्वर यहोवा ने यहदियों पर झूँझलाकर उनको तुम्हारे हाथ कर दिया है, और तुम ने उनको ऐसा क्रोध करके घात किया जिसकी चिल्लाहट स्वर्ग को पहुँच गई है।” ९ अब तुम ने ठाना है कि यहदियों और यस्शलेमियों को अपने दास-दासी बनाकर दबाए रखो। क्या तुम भी अपने परमेश्वर यहोवा के यहाँ दोषी नहीं हो? १० इसलिए अब मेरी सुनो और इन बन्दियों को जिन्हें तुम अपने भाइयों में से बन्दी बनाकर ले आए हो, लौटा दो, यहोवा का क्रोध तो तुम पर भड़का है।” ११ तब ऐप्रीमियों के कुछ मूर्ख पुस्त अर्थात् योहानान का पुत्र अजर्याह, मशिल्लमेत का पुत्र बेरेक्याह, शल्लम का पुत्र यहिजकियाह, और हद्दै का पुत्र अमासा, लड़ाई से आनेवालों का सामना करके, उनसे कहने लगे। १२ “तुम इन बन्दियों को यहाँ दोषी हो जाएँगे, और उससे हमारा पाप और दोष बढ़ जाएगा, हमारा दोष तो बड़ा

है और इसाएल पर बहुत क्रोध भड़का है।” १४ तब उन हथियार-बन्दों ने बन्दियों और लट को हाकिमों और सारी सभा के सम्में छोड़ दिया। १५ तब जिन पुरुषों के नाम ऊपर लिखे हैं, उन्होंने उठकर बन्दियों को ले लिया, और लट में से सब नंगे लोगों को कपड़े, और जूतियाँ पहनाईं; और खाना खिलाया, और पानी पिलाया, और तेल मला; और तब बिरल लोगों को गढ़ों पर चढ़ाकर, यरीहों को जो खजर का नाश कहलाता है, उनके भाइयों के पास पहुँचा दिया। तब वे सामरिया को लौट आए। १६ उस समय राजा आहाज ने अश्शूर के राजाओं के पास दूत भेजकर सहायता माँगी। १७ क्योंकि एदोमियों ने यहदा में आकर उसको मारा, और बन्दियों को ले गए थे। १८ पलिशियों ने नीचे के देश और यहदा के दक्षिण के नगरों पर चढ़ाई करके, बेतशेमेश, अच्यालोन और गदेरोत को, और अपने-अपने गँवों समेत सोको, तिम्नाह, और गिमजो को ले लिया; और उनमें रहने लगे थे। १९ अतः यहोवा ने इसाएल के राजा आहाज के कारण यहदा को दबा दिया, क्योंकि वह निरंकुश होकर चला, और यहोवा से बड़ा विश्वासघात किया। २० तब अश्शूर का राजा तिग्लतिपिलेसेर उसके विस्तु आया, और उसको कष्ट दिया; दृढ़ नहीं किया। २१ आहाज ने तो यहोवा के भवन और राजभवन और हाकिमों के घरों में से धन निकालकर अश्शूर के राजा को दिया, परन्तु इससे उसको कुछ सहायता न हुई। २२ क्षेत्रों के समय राजा आहाज ने यहोवा से और भी विश्वासघात किया। २३ उसने दमिश्क के देवताओं के लिये जिन्होंने उसको मारा था, बलि चढ़ाया; क्योंकि उसने यह सोचा, कि अरामी राजाओं के देवताओं ने उनकी सहायता की, तो मैं उनके लिये बलि चढ़ाऊँगा कि वे मेरी सहायता करें। परन्तु वे उसके और सारे इसाएल के पतन का कारण हुए। २४ फिर आहाज ने परमेश्वर के भवन के पात्र बटोरकर तुड़वा डाले, और यहोवा के भवन के द्वारों को बन्द कर दिया; और यस्श्लेम के सब कोनों में वेदियों बनाई। २५ यहदा के एक-एक नगर में उसने पराए देवताओं को धूप जलाने के लिये ऊँचे स्थान बनाए, और अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को रिस दिलाई। २६ उसके और कार्मों, और आदि से अन्त तक उसकी पूरी चाल चलन का वर्णन यहदा और इसाएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है। २७ अन्त में आहाज मरकर अपने पुरुखों के संग जा मिला और उसको यस्श्लेम नगर में मिट्ठी दी गई, परन्तु वह इसाएल के राजाओं के कब्रिस्तान में पहुँचाया न गया। और उसका पुत्र हिजकिय्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

२१ जब हिजकिय्याह राज्य करने लगा तब वह पच्चीस वर्ष का था, और

उनतीस वर्ष तक यस्श्लेम में राज्य करता रहा। और उसकी माता का नाम अबिय्याह था, जो जकर्या की बेटी थी। १ जैसे उसके मूलपृष्ठ दाऊद ने किया था अर्थात् जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था वैसा ही उसने भी किया। २ अपने राज्य के पहले वर्ष के पहले महीने में उसने यहोवा के भवन के द्वार खुलवा दिए, और उनकी मरम्मत भी कराई। ३ तब उसने याजकों और लेवियों को ले आकर पूर्व के चौक में इक्षता किया। ४ और उनसे कहने लगा, “हे लेवियों, मेरी सूनो! अब अपने-अपने को पवित्र करो, और अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा के भवन को पवित्र करो, और पवित्रस्थान में से मैल निकालो। ५ देखो हमारे पुरुखों ने विश्वासघात करके वह कर्म किया था, जो हमारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है और उसको तज करके यहोवा के निवास से मूँह फेरकर उसको पीठ दिखाई थी। ६ फिर उन्होंने ओसारे के द्वार बन्द किए, और दीपकों को बुझा दिया था; और पवित्रस्थान में इसाएल के परमेश्वर के लिये न तो धूप जलाया और न होमबलि चढ़ाया था। ७ इसलिए यहोवा का क्रोध यहदा और यस्श्लेम पर भड़का है, और उसने ऐसा किया, कि वे मारे-मारे फिरें और चकित होने और ताली बजाने का कारण हो जाएँ,

जैसे कि तुम अपनी आँखों से देख रहे हो। ८ देखो, इस कारण हमारे बाप तलवार से मारे गए, और हमारे बेटे-बेटियाँ और लियाँ बैधुआई में चर्ती गई हैं। ९ अब मेर मन ने यह निर्णय किया है कि इसाएल के परमेश्वर यहोवा से वाचा बौध्य, इसलिए कि उसका भड़का हुआ क्रोध हम पर से दूर हो जाए। १० हे मेरे बेटों, ढिलाई न करो, देखो, यहोवा ने अपने सम्मुख खड़े रहने, और अपनी सेवा टहल करने, और अपने टहलते और धूप जलानेवाले का काम करने के लिये तुम्हीं को चुन लिया है।” ११ तब लेवीय उठ खड़े हुएः अर्थात् कहातियों में से अमासै का पुत्र महत, और अर्जयाह का पुत्र योएल, और मरारियों में से अब्दी का पुत्र कीशा, और यहल्लेल का पुत्र अर्जयाह, और गेर्शनियों में से जिम्मा का पुत्र योआह, और योआह का पुत्र एदेन। १२ और एलीसापान की सन्तान में से शिमी, और यूलू और आसाप की सन्तान में से जकर्याह और मतन्याह। १३ और हेमान की सन्तान में से यहएल और शिमी, और यदून की सन्तान में से शमायाह और उज्जीएल। १४ इन्होंने अपने भाइयों को इकट्ठा किया और अपने-अपने को पवित्र करके राजा की उस आज्ञा के अनुसार जो उसने यहोवा से वचन पाकर दी थी, यहोवा का भवन शुद्ध करने के लिये भीतर गए। १५ तब याजक यहोवा के भवन के भीतरी भाग को शुद्ध करने के लिये उसमें जाकर यहोवा के मन्दिर में जितनी अशुद्ध वस्तुएँ मिली उन सब को निकालकर यहोवा के भवन के अँगन में ले गए, और लेवियों ने उन्हें उठाकर बाहर निकलने के नाले में पहुँचा दिया। १६ पहले महीने के पहले दिन को उन्होंने पवित्र करने का काम आरम्भ किया, और उसी महीने के आठवें दिन को वे यहोवा के ओसारे तक आ गए। इस प्रकार उन्होंने यहोवा के भवन को आठ दिन में पवित्र किया, और पहले महीने के सोलहवें दिन को उन्होंने उस काम को पूरा किया। १७ तब उन्होंने राजा हिजकिय्याह के पास भीतर जाकर कहा, “हम यहोवा के पूरे भवन को और पात्रों समेत होमबलि की बेटी, और भेट की रोटी की मेज को भी शुद्ध कर चुके। १८ जितने पात्र राजा आहाज ने अपने राज्य में विश्वासघात करके फेंक दिए थे, उनको भी हमने ठीक करके पवित्र किया है, और वे यहोवा की बेटी के सामने रखे हुए हैं।” १९ तब राजा हिजकिय्याह सर्वे उठकर नगर के हाकिमों को इक्षता करके, यहोवा के भवन को गया। २० तब वे राज्य और पवित्रस्थान और यहदा के निमित सात बछड़े, सात मेडे, सात भेड़ के बच्चे, और पापबलि के लिये सात बकरे ले आए, और उसने हास्त की सन्तान के लेवियों को आज्ञा दी कि इन सब को यहोवा की बेटी पर चढ़ाएँ। २१ तब उन्होंने बछड़े बलि किए, और याजकों ने उनका लह लेकर बेटी पर छिड़क दिया; तब उन्होंने मेडे बलि किए, और उनका लह भी बेटी पर छिड़क दिया, और भेड़ के बच्चे बलि किए, और उनका लह भी बेटी पर छिड़क दिया। २२ तब वे पापबलि के बकरों को राजा और मण्डली के समीप ले आए और उन पर अपने-अपने हाथ रखे। २३ तब याजकों ने उनको बलि करके, उनका लह बेटी पर छिड़ककर पापबलि किया, जिससे सारे इसाएल के लिये प्रायत्नित किया जाए। क्योंकि राजा ने सारे इसाएल के लिये होमबलि और पापबलि किए जाने की आज्ञा दी थी। २४ फिर उसने दाऊद और राजा के दस्ती गाद, और नातान नवी की आज्ञा के अनुसार जो यहोवा की ओर से उसके नवियों के द्वारा आई थी, झाँझ, सारंगियाँ और बीणाएँ लिए हुए लेवियों को यहोवा के भवन में खड़ा किया। २५ तब लेवीय दाऊद के चलाए बाजे लिए हुए, और याजक तरहियां लिए हुए खड़े हुए। २६ तब हिजकिय्याह ने बेटी पर होमबलि चढ़ाने की आज्ञा दी, और जब होमबलि चढ़ाने लगी, तब यहोवा का गीत आरम्भ हुआ, और तरहियां और इसाएल के राजा दाऊद के बाजे बजने लगे; २७ और मण्डली के सब लोग दण्डवत करते और गनेवाले गाते और तुरही फूँकनेवाले फूँकते रहे; यह सब बब तक होता रहा, जब तक

होमबलि चढ़ न चुकी। ३१ जब बलि चढ़ चुकी, तब राजा और जितने उसके संग वहाँ थे, उन सभी ने सिर झुकाकर दण्डवत् किया। ३० राजा हिजकियाह और हाकिमों ने लेवियों को आज्ञा दी, कि दाऊद और आसाप दर्शी के भजन गाकर यहोवा की स्तुति करें। अतः उन्होंने आनन्द के साथ स्तुति की और सिर झुकाकर दण्डवत् किया। ३१ तब हिजकियाह कहने लगा, “अब तुम ने यहोवा के निमित्त अपना अपर्ण किया है; इसलिए समीप आकर यहोवा के भवन में मेलबलि और धन्यवाद-बलि पहुँचा ओ।” तब मण्डली के लोगों ने मेलबलि और धन्यवाद-बलि पहुँचा दिए, और जितने अपनी इच्छा से देना चाहते थे उन्होंने भी होमबलि पहुँचा। ३२ जो होमबलि पशु मण्डली के लोगों ले आए, उनकी गिनती यह थी: सत्र बैल, एक सौ मेडे, और दो सौ भेड़ के बच्चे; ये सब यहोवा के निमित्त होमबलि के काम में आए। ३३ पवित्र किए हुए पशु, छः सौ बैल और तीन हजार भेड़-बकरियाँ थीं। ३४ परन्तु याजक ऐसे थोड़े थे, कि वे सब होमबलि पशुओं की खालें न उतार सके, तब उनके भाई लेवीय उस समय तक उनकी सहायता करते रहे जब तक वह काम पूरा न हो गया; और याजकों ने अपने को पवित्र न किया, क्योंकि लेवीय अपने को पवित्र करने के लिये पवित्र याजकों से अधिक सीधे मन के थे। ३५ पिर होमबलि पशु बहुत थे, और मेलबलि पशुओं की चबीं भी बहुत थीं, और एक-एक होमबलि के साथ अर्ध भी देना पड़ा। अतः यहोवा के भवन में की उपासना ठीक की गई। ३६ तब हिजकियाह और सारी प्रजा के लोग उस काम के कारण आनन्दित हुए, जो यहोवा ने अपनी प्रजा के लिये तैयार किया था; क्योंकि वह काम एकाएक हो गया था।

३० पिर हिजकियाह ने सारे इमाएल और यहदा में कहला भेजा, और ऐसे और मनश्शे के पास इस आशय के पत्र लिख भेजे, कि तुम यस्शलेम को यहोवा के भवन में इसाएल के परमेश्वर यहोवा के लिये फसह मनाने को आओ। ३१ राजा और उसके हाकिमों और यस्शलेम की मण्डली ने सम्मति की थी कि फसह को दूरे महीने में मनाएँ। ३२ वे उस समय इस कारण न मना सकते थे, क्योंकि थोड़े ही याजकों ने अपने-अपने को पवित्र किया था, और प्रजा के लोग यस्शलेम में इकट्ठे न हुए थे। ३३ यह बात राजा और सारी मण्डली को अच्छी लगी। ३४ तब उन्होंने यह ठहरा दिया, कि बेरेबिंा से लेकर दान के सारे इमालियों में यह प्रचार किया जाये, कि यस्शलेम में इसाएल के परमेश्वर यहोवा के लिये फसह मनाने को चले आओ; क्योंकि उन्होंने इन्हीं बड़ी संख्या में उसको इस प्रकार न मनाया था जैसा कि लिखा है। ३५ इसलिए हरकरे राजा और उसके हाकिमों से चिह्नियाँ लेकर, राजा की आज्ञा के अनुसार सारे इमाएल और यहदा में घैमे, और यह कहते रहे, “हे इसाएलियों! अब्राहम, इस्हाहक, और इमाएल के परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो, कि वह अश्शूर के राजाओं के हाथ से बचे हुए तुम लोगों की ओर फिरे। ३६ और अपने पुरुखों और भाइयों के समान मत बो, जिन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा से विश्वासघात किया था, और उसने उन्हें चकित होने का कारण कर दिया, जैसा कि तुम स्वयं देख रहे हो। ३७ अब अपने पुरुखाओं के समान हठ न करो, बरन यहोवा के अदीन होकर उसके उस पवित्रस्थान में आओ जिसे उसने सदा के लिये पवित्र किया है, और अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो, कि उसका भड़का हआ क्षेत्र तुम पर से दूर हो जाए। ३८ यदि तुम यहोवा की ओर फिरोगे तो जो तुम्हारे भाइयों और बाल-बच्चों को बन्दी बनाकर ले गए हैं, वे उन पर दया करेंगे, और वे इस देश में लौट सकेंगे क्योंकि तुहारा परमेश्वर यहोवा अनग्रहकीर्ति और दयातुर है, और यदि तुम उसकी ओर फिरोगे तो वह अपना मुँह तुम से न मोड़ेगा।” ३९ इस प्रकार हरकरे ऐसे और मनश्शे के देशों में नगर-नगर होते हुए जबूलून तक गए; परन्तु उन्होंने उनकी हँसी की, और उन्हें उपहास में डाया। ४० तो भी आशेर, मनश्शे और जबूलून में से कुछ लोग दीन होकर यस्शलेम को आए। ४१ यहदा में भी परमेश्वर की ऐसी शक्ति हुई, कि वे एक मन होकर, जो आज्ञा राजा और हाकिमों ने यहोवा के वचन के अनुसार दी थी, उसे मानने को तैयार हुए। ४२ इस प्रकार अधिक लोग यस्शलेम में इसलिए इकट्ठे हुए, कि दूसरे महीने में अखरमीरी रोटी का पर्व मानें। और बहत बड़ी सभा इकट्ठी हो गई। ४३ उन्होंने उठकर, यस्शलेम में की वेदियों और धूप जलाने के सब स्थानों को उठाकर किदोन नाले में फेंक दिया। ४४ तब दूसरे महीने के चौदहवें दिन को उन्होंने फसह के पशुबलि किए तब याजक और लेवीय लज्जित हुए और अपने को पवित्र करके होमबलियों को यहोवा के भवन में ले आए। ४५ वे अपने नियम के अनुसार, अर्थात् परमेश्वर के जन मूसा की व्यवस्था के अनुसार, अपने-अपने स्थान पर खड़े हुए, और याजकों ने रक्त को लेवियों के हाथ से लेकर छिड़क दिया। ४६ क्योंकि सभा में बहुत ऐसे थे जिन्होंने अपने को पवित्र न किया था; इसलिए सब अश्शुद्ध लोगों के फसह के पशुओं को बलि करने का अधिकार लेवियों को दिया गया, कि उनको यहोवा के लिये पवित्र करें। ४७ बहुत से लोगों ने अर्थात् ऐसे, मनश्शे, इस्साकार और जबूलून में से बहुतों ने अपने को शुद्ध नहीं किया था, तो भी वे फसह के पशु का माँस लिखी हुई विधि के बिंदु खाते थे। क्योंकि हिजकियाह ने उनके लिये यह प्रार्थना की थी, “यहोवा जो भला है, वह उन सभी के पाप ढाँप दे; ४८ जो परमेश्वर की अर्थात् अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की खोज में मन लगाए हुए हैं, चाहे वे पवित्रस्थान की विधि के अनुसार शुद्ध न भी हों।” ४९ और यहोवा ने हिजकियाह की यह प्रार्थना सुनकर लोगों को चंगा किया। ५० जो इमाएली यस्शलेम में उपस्थित थे, वे सात दिन तक अखरमीरी रोटी का पर्व बड़े आनन्द से मनाते रहे; और प्रतिदिन लेवीय और याजक ऊँचे शब्द के बाजे यहोवा के लिये बजाकर यहोवा की स्तुति करते रहे। ५१ जितने लेवीय यहोवा का भजन बुद्धिमानी के साथ करते थे, उनको हिजकियाह ने शान्ति के वचन कहे। इस प्रकार वे मेलबलि चढ़ाकर और अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा के सम्पूर्ख अंगीकार करते रहे और उस नियत पर्व के सातों दिन तक खाते रहे। ५२ तब सारी सभा ने सम्मति की कि हम और सात दिन पर्व मानेंगे; अतः उन्होंने और सात दिन आनन्द से पर्व मनाया। ५३ क्योंकि यहदा के राजा हिजकियाह ने सभा को एक हजार बछड़े और सात हजार भेड़-बकरियाँ दी, और हाकिमों ने सभा को एक हजार बछड़े और दस हजार भेड़-बकरियाँ दी, और बहुत से याजकों ने अपने को पवित्र किया। ५४ तब याजकों और लेवियों समेत यहदा की सारी सभा, और इमाएल से आए हुओं की सभा, और इमाएल के देश से आए हुए, और यहदा में रहनेवाले परदेशी, इन सभी ने आनन्द किया। ५५ इस प्रकार यस्शलेम में बड़ा आनन्द हुआ, क्योंकि दाऊद के पत्र इमाएल के राजा सुलैमान के दिनों से ऐसी बात यस्शलेम में न हुई थी। ५६ अन्त में लेवीय याजकों ने खड़े होकर प्रजा को आशीर्वाद दिया, और उनकी सुनी गई, और उनकी प्रार्थना उसके पवित्र धाम तक अर्थात् स्वर्ग तक पहुँची।

३१ जब यह सब हो चुका, तब जितने इमाएली उपस्थित थे, उन सभी ने यहदा के नगरों में जाकर, सारे यहदा और बिन्यामीन और ऐसे और मनश्शे में की लाठों को तोड़ दिया, अशेरों को काट डाला, और ऊँचे स्थानों और वेदियों को गिरा दिया; और उन्होंने उन सब का अन्त कर दिया। तब सब इमाएली अपने-अपने नगर को लौटकर, अपनी-अपनी निज भूमि में पहुँचे। ५७ हिजकियाह ने याजकों के दलों को और लेवियों को बरन याजकों और लेवियों दोनों को, प्रति दल के अनुसार और एक-एक मनुष्य को उसकी

सेवकाई के अनुसार इसलिए ठहरा दिया, कि वे यहोवा की छानी के द्वारों के भीतर होमबलि, मेलबलि, सेबा टहल, धन्यवाद और स्तुति किया करें। ३ फिर उसने अपनी सम्पत्ति में से राजभाग को होमबलियों के लिये ठहरा दिया; अर्थात् सबैं और साँझ की होमबलि और विश्वाम और नये चाँद के दिनों और नियत समयों की होमबलि के लिये जैसा कि यहोवा की व्यवस्था में लिखा है। ४ उसने यस्सलेम में रहनेवालों को याजकों और लेवियों को उनका भाग देने की आज्ञा दी, ताकि वे यहोवा की व्यवस्था के काम मन लगाकर कर सकें। ५ यह आज्ञा सुनते ही इस्माएली अन्न, नया दाखमधू, टटका तेल, मधु आदि खेती की सब भाँति की पहली उपज बहुतायत से देने, और सब वस्तुओं का दशमांश अधिक मात्रा में लाने लगे। ६ जो इस्माएली और यहदी, यहदा के नगरों में रहते थे, वे भी बैलों और भेड़-बकरियों का दशमांश, और उन पवित्र वस्तुओं का दशमांश, जो उनके परमेश्वर यहोवा के निमित्त पवित्र की गई थीं, लाकर ढेर-ढेर करके रखने लगे। ७ इस प्रकार ढेर का लगाना उन्होंने तिसरे महीने में आरम्भ किया और सातवें महीने में पूरा किया। ८ जब हिजकियाह और हाकिमों ने आकर उन ढेरों को देखा, तब यहोवा को और उसकी प्रजा इस्माएल को धन्य-धन्य कहा। ९ तब हिजकियाह ने याजकों और लेवियों से उन ढेरों के विषय पूछा। १० अजर्याह महायाजक ने जो सादोक के घराने का था, उससे कहा, “जब से लोग यहोवा के भवन में उठाई हई भेंटे लाने लगे हैं, तब से हम लोग पेटे भर खाने को पाते हैं, बरन बहुत बचा भी करता है; क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को आशीष दी है, और जो शेष रह गया है, उसी का यह बड़ा ढेर है।” ११ तब हिजकियाह ने यहोवा के भवन में कोठरियाँ तैयार करने की आज्ञा दी, और वे तैयार की गई। १२ तब लोगों ने उठाई हई भेंटे, दशमांश और पवित्र की हुई वस्तुएँ, सच्चाई से पहुँचाई और उनके मुख्य अधिकारी कोनन्याह नामक एक लेवीय था दूसरा उसका भाई शिरी था; १३ और कोनन्याह और उसके भाई शिरी के नीचे, हिजकियाह राजा और परमेश्वर के भवन के प्रधान अजर्याह दोनों की आज्ञा से यहीएल, अजर्याह, नहत, असाहेल, यरीमोत, योजाबाद, एल्लीएल, यिस्म्यायाह, महत और बनायाह अधिकारी थे। १४ परमेश्वर के लिये स्वेच्छाबलियों का अधिकारी यिम्ना लेवीय का पुत्र करो था, जो पूर्व फाटक का द्वारपाल था, कि वह यहोवा की उठाई हई भेंटे, और परमपवित्र वस्तुएँ बाँटा करे। १५ उसके अधिकार में एडेन, मिन्यामीन, येशुअ, शमायाह, अमर्याह और शकन्याह याजकों के नगरों में रहते थे, कि वे क्या बड़े, क्या छोटे, अपने भाइयों को उनके दलों के अनुसार सच्चाई से दिया करें, १६ और उनके अलावा उनको भी दें, जो पुस्त्रों की वंशावली के अनुसार गिने जाकर तीन वर्ष की अवस्था के या उससे अधिक आयु के थे, और अपने-अपने दल के अनुसार अपनी-अपनी सेवा के कार्य के लिये प्रतिदिन के काम के अनुसार यहोवा के भवन में जाया करते थे। १७ उन याजकों को भी दें, जिनकी वंशावली उनके पितरों के घरानों के अनुसार की गई, और उन लेवियों को भी जो बीस वर्ष की अवस्था से ले आगे को अपने-अपने दल के अनुसार, अपने-अपने काम करते थे। १८ सारी सभा में उनके बाल-बच्चों, बिलों, बेटों और बेटियों को भी दें, जिनकी वंशावली थी, क्योंकि वे सच्चाई से अपने को पवित्र करते थे। १९ फिर हासन की सन्तान के याजकों को भी जो अपने-अपने नगरों के चराईवाले मैदान में रहते थे, देने के लिये वे पुष्ट नियुक्त किए गए थे जिनके नाम ऊपर लिखे हुए थे कि वे याजकों के सब पुस्त्रों और उन सब लेवियों को भी उनका भाग दिया करें जिनकी वंशावली थी। २० सारे यहदा में भी हिजकियाह ने ऐसा ही प्रबन्ध किया, और जो कुछ उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में भला और ठीक और सच्चाई का था, उसे वह करता था। २१ जो-जो काम उसने परमेश्वर के भवन

की उपासना और व्यवस्था और आज्ञा के विषय अपने परमेश्वर की खोज में किया, वह उसने अपना सारा मन लगाकर किया और उसमें सफल भी हुआ।

३२ इन बातों और ऐसे प्रबन्ध के बाद अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने आकर यहदा में प्रवेश कर और गढ़वाले नगरों के विस्तृ डेरे डालकर उनको अपने लाभ के लिये लेना चाहा। २२ यह देखकर कि सन्हेरीब निकट आया है और यस्सलेम से लड़ने की इच्छा करता है, २३ हिजकियाह ने अपने हाकिमों और वीरों के साथ यह सम्मति की, कि नगर के बाहर के सोतों को पटवा दें; और उन्होंने उसकी सहायता की। २४ इस पर बहुत से लोग इकट्ठे हुए, और यह कहकर कि, “अश्शूर के राजा क्यों यहाँ आए, और आकर बहत पानी पाएँ,” उन्होंने सब सोतों को रोक दिया और उस नदी को सुखा दिया जो देश के मध्य से होकर बहती थी। २५ फिर हिजकियाह ने हियाव बाँधकर शहरपनाह जहाँ कहीं दृटी थी, बहाँ-वहाँ उसको बनवाया, और उसे गुम्फों के बाबार ऊँचा किया और बाहर एक और शहरपनाह बनवाई, और दाऊदपुर में मिल्लों को ढ़ढ किया। और बहत से हथियार और ढार्टें भी बनवाई। २६ तब उसने प्रजा के ऊपर सेनापति नियुक्त किए और उनको नगर के फाटक के चौक में इकट्ठा किया, और यह कहकर उनको धीरज दिया, २७ “हियाव बाँधो और दृढ़ हो तुम न तो अश्शूर के राजा से डरो और न उसके संग की सारी भीड़ से, और न तुम्हारा मन कच्चा हो; क्योंकि जो हमारे साथ है, वह उसके संगियों से बड़ा है। २८ अर्थात् उसका सहारा तो मनुष्य ही है परन्तु हमारे साथ, हमारी सहायता और हमारी ओर से युद्ध करने को हमारा परमेश्वर यहोवा है।” इसलिए प्रजा के लोग यहदा के राजा हिजकियाह की बातों पर भरोसा किए रहे। २९ इसके बाद अश्शूर का राजा सन्हेरीब जो सारी सेना समेत लाकीश के सामने पड़ा था, उसने अपने कर्मचारियों को यस्सलेम में यहदा के राजा हिजकियाह और उन सब यहदियों से जो यस्सलेम में थे यह कहने के लिये भेजा, ३० “अश्शूर का राजा सन्हेरीब कहता है, कि तुम्हें किसका भरोसा है जिससे कि तुम धिरे हुए यस्सलेम में बैठे हो? ३१ क्या हिजकियाह तुम से यह कहकर कि हमारा परमेश्वर यहोवा हमको अश्शूर के राजा के पंजे से बचाएगा तुम्हें नहीं भरमाता है कि तुम को भूखा प्यासा मारे? ३२ क्या उसी हिजकियाह ने उसके ऊँचे स्थान और वेदियों को दूर करके यहदा और यस्सलेम को आज्ञा नहीं दी, कि तुम एक ही देवी के सामने दण्डवत् करना और उसी पर धूप जलाना? ३३ क्या तुम को मालूम नहीं, कि मैंने और मेरे पुराखाओं ने देश-देश के सब लोगों से क्या-क्या किया है? क्या उन देशों की जातियों के देवता किसी भी उपाय से अपने देश को मेरे हाथ से बचा सके? ३४ जिनी जातियों का मेरे पुराखाओं ने सत्यानाश किया है उनके सब देवताओं में से ऐसा कौन था जो अपनी प्रजा को मेरे हाथ से बचा सका हो? फिर तुम्हारा देवता तुम को मेरे हाथ से कैसे बचा सकेगा? ३५ अब हिजकियाह तुम को इस रीति से भरमाने अथवा बहकाने न पाए, और तुम उस पर विश्वास न करो, क्योंकि किसी जाति या राज्य का कोई देवता अपनी प्रजा को न तो मेरे हाथ से और न मेरे पुराखाओं के हाथ से बचा सका। यह निश्चय है कि तुम्हारा देवता तुम को मेरे हाथ से नहीं बचा सकेगा।” ३६ इससे भी अधिक उसके कर्मचारियों ने यहोवा परमेश्वर की, और उसके दास देवता की निन्दा की। ३७ फिर उसने ऐसा एक पत्र भेजा, जिसमें इस्माएल के परमेश्वर यहोवा की निन्दा की थी लिखी थी: “जैसे देश-देश की जातियों के देवताओं ने अपनी-अपनी प्रजा को मेरे हाथ से नहीं बचाया वैसे ही हिजकियाह का देवता भी अपनी प्रजा को मेरे हाथ से नहीं बचा सकेगा।” ३८ और उन्होंने ऊँचे शब्द से उन यस्सलेमियों को जो शहरपनाह पर बैठे थे, यहदी बोली में पुकारा, कि उनको डराकर घबराहट में

डाल दें जिससे नगर को ले लें। १९ उन्होंने यस्सलेम के परमेश्वर की ऐसी चर्चा की, कि मानो पृथ्वी के देश-देश के लोगों के देवताओं के बाबर हो, जो मनुष्यों के बनाए हुए हैं। २० तब इन घटनाओं के कारण राजा हिजकियाह और आमोस के पुनर्यशायाह नवी दोनों ने प्रार्थना की और स्वर्ग की ओर दुआई दी। २१ तब यहोवा ने एक दूत भेज दिया, जिसने अश्शूर के राजा की छावनी में सब शूरीरों, प्रधानों और सेनापतियों को नष्ट किया। अतः वह लज्जित होकर, अपने देश को लौट गया। और जब वह अपने देवता के भवन में था, तब उसके निज पुत्रों ने वहीं उसे तलवार से मार डाला। २२ अतः यहोवा ने हिजकियाह और यस्सलेम के निवासियों को अश्शूर के राजा सन्तरीब और अपने सब शूरों के हाथ से बचाया, और चारों ओर उनकी अगुआई की। २३ तब बहुत लोग यस्सलेम को यहोवा के लिये भेंट और यहदा के राजा हिजकियाह के लिये अनमोल वस्तुएँ ले आने लगे, और उस समय से हव सब जातियों की दृष्टि में महान ठहरा। २४ उन दिनों हिजकियाह ऐसा रोमी हुआ, कि वह मरने पर था, तब उसने यहोवा से प्रार्थना की; और उसने उससे बातें करके उसके लिये एक चिन्ह दिया। २५ परन्तु हिजकियाह ने उस उपकार का बदला न दिया, क्योंकि उसका मन फूल उठा था। इस कारण उसका कोप उस पर और यहदा और यस्सलेम पर भड़का। २६ तब हिजकियाह यस्सलेम के निवासियों समेत अपने मन के फूलने के कारण दीन हो गया, इसलिए यहोवा का क्रोध उन पर हिजकियाह के दिनों में न भड़का। २७ हिजकियाह को बहुत ही धन और वैभव मिला; और उसने चाँती, सोने, मणियों, सुगन्ध-दृव्य, ढालों और सब प्रकार के मनवाने पात्रों के लिये भण्डार बनवाए। २८ फिर उसने अन्न, नया दाखमध, और टट्का तेल के लिये भण्डार, और सब भौंति के पशुओं के लिये थान, और भेड़-बकरियों के लिये भेड़शालाएँ बनवाई। २९ उसने नगर बसाए, और बहुत ही भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की सम्पत्ति इकट्ठा कर ली, क्योंकि परमेश्वर ने उसे बहुत सा धन दिया था। ३० उसी हिजकियाह ने गीहोन नामक नदी के ऊपर के सोते को पाटकर उस नदी की नीचे की ओर दाऊदपुर के पश्चिम की ओर सीधा पहुँचाया, और हिजकियाह अपने सब कामों में सफल होता था। ३१ तो भी जब बालेट के हाकिमों ने उसके पास उसके देश में किए हुए अद्भुत कामों के विषय पूछने को दूत भेजे तब परमेश्वर ने उसको इसलिए छोड़ दिया, कि उसको परखकर उसके मन का सारा भेद जान ले। ३२ हिजकियाह के और काम, और उसके भक्ति के काम आमोस के पुनर्यशायाह नवी के दर्शन नामक पुस्तक में, और यहदा और इस्माइल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं। ३३ अन्त में हिजकियाह मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसको दाऊद की सन्तान के कब्रिस्तान की चढ़ाई पर मिट्टी दी गई, और सब यहदियों और यस्सलेम के निवासियों ने उसकी मृत्यु पर उसका आदरमान किया। उसका पुनर्मनश्शे उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

३३ जब मनश्शे राज्य करने लगा तब वह बारह वर्ष का था, और यस्सलेम में पचपन वर्ष तक राज्य करता रहा। १ उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् उन जातियों के विनानै कामों के अनुसार जिनको यहोवा ने इस्माइलियों के सामने से देश से निकाल दिया था। २ उसने उन ऊँचे स्थानों को जिन्हें उसके पिता हिजकियाह ने तोड़ दिया था, फिर बनाया, और बाल नामक देवताओं के लिये वेदियाँ और अशेरा नामक मूर्तें बनाई, और आकाश के सारे गणों को दण्डवत् करता, और उनकी उपासना करता रहा। ३ उसने यहोवा के उस भवन में वेदियाँ बनाई जिसके विषय यहोवा ने कहा था “यस्सलेम में मेरा नाम सदा बना रहेगा।” ४ वरन् यहोवा के भवन के दोनों अँगों में भी उसने आकाश के सारे गणों के लिये वेदियाँ बनाई। ५ फिर उसने

हिन्नोम के बेटे की तराई में अपने बेटों को होम करके चढ़ाया, और शुभ-अशुभ मुहर्तों को मानता, और टोना और तंत्र-मन्त्र करता, और ओझों और भृत सिद्धिवालों से सम्बंध रखता था। वरन् उसने ऐसे बहुत से काम किए, जो यहोवा की दृष्टि में बुरे हैं और जिनसे वह अप्रसन्न होता है। ६ और उसने अपनी खुदवाई ही ही मर्ति परमेश्वर के उस भवन में स्थापित की जिसके विषय परमेश्वर ने दाऊद और उसके पुनर्मनश्शे में लिया था, “इस भवन में, और यस्सलेम में, जिसको मैंने इस्माइल के सब गोत्रों में से चुन लिया है मैं अपना नाम सर्वदा रखूँगा, ७ और मैं ऐसा न करूँगा कि जो देश मैंने तुम्हारे पुरखाओं को दिया था, उसमें से इस्माइल फिर मारा-मारा फिर; इतना अवश्य हो कि वे मेरी सब आज्ञाओं को अर्थात् मसा की दी ही ही सारी व्यवस्था और विधियों और नियमों को पालन करने की चौकटी करें।” ८ मनश्शे ने यहदा और यस्सलेम के निवासियों को यहाँ तक भट्का दिया कि उन्होंने उन जातियों से भी बढ़कर बुराई की, जिन्हें यहोवा ने इस्माइलियों के सामने से विनाश किया था। ९ यहोवा ने मनश्शे और उसकी प्रजा से बातें की, परन्तु उन्होंने कुछ ध्यान नहीं दिया। १० तब यहोवा ने उन पर अश्शूर के सेनापतियों से चढ़ाई कराई, और वे मनश्शे को नेकल डालकर, और पीतल की बेड़ियों से जकड़कर, उसे बाबेल को ले गए। ११ तब संकट में पड़कर वह अपने परमेश्वर यहोवा को मानने लगा, और अपने पूर्वजों के परमेश्वर के सामने बहुत दीन हुआ, और उससे प्रार्थना की। १२ तब उसने प्रसन्न होकर उसकी विनती सुनी, और उसको यस्सलेम में पहुँचाकर उसका राज्य लौटा दिया। तब मनश्शे को निश्चय हो गया कि यहोवा ही परमेश्वर है। १३ इसके बाद उसने दाऊदपुर से बाहर गीहोन के पश्चिम की ओर नाले में मछली फाटक तक एक शहरपान हबनवाई, फिर ओपेल को धेरकर बहुत ऊँचा कर दिया; और यहदा के सब गढ़वाले नगरों में सेनापति ठहरा दिए। १४ फिर उसने पराए देवताओं को और यहोवा के भवन में की मृति को, और जितनी वेदियाँ उसने यहोवा के भवन के पर्वत पर, और यस्सलेम में बनवाई थीं, उन सब को दूर करके नगर से बाहर फेंकवा दिया। १५ तब उसने यहोवा की बेटी की मरम्मत की, और उस पर मेलबलि और धन्यवाद-बलि चढ़ाने लगा, और यहदियों को इस्माइल के परमेश्वर यहोवा की उपासना करने की आज्ञा दी। १६ तो भी प्रजा के लोग ऊँचे स्थानों पर बलिदान करते रहे, परन्तु केवल अपने परमेश्वर यहोवा के लिये। १७ मनश्शे के और काम, और उसने जो प्रार्थना अपने परमेश्वर से की, और उन दर्शियों के बचन जो इस्माइल के परमेश्वर यहोवा के नाम से उससे बातें करते थे, यह सब इस्माइल के राजाओं के इतिहास में लिखा हुआ है। १८ और उसकी प्रार्थना और वह कैसे सुनी गई, और उसका सारा पाप और विवासयात और उसने दीन होने से पहले कहाँ-कहाँ ऊँचे स्थान बनवाए, और अशेरा नामक और खुटी ही ही मूर्तियाँ खड़ी कराई, यह सब होशे के बचनों में लिखा है। १९ अन्त में मनश्शे मरकर अपने पुरखाओं के संग जा मिला और उसे उसी के घर में मिट्टी दी गई; और उसका पुनर्मान आमोन उसके स्थान पर राज्य करने लगा। २० जब आमोन राज्य करने लगा, तब वह बाईंस वर्ष का था, और यस्सलेम में दो वर्ष तक राज्य करता रहा। २१ उसने अपने पिता मनश्शे के सामने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। और जितनी मूर्तियाँ उसके पिता मनश्शे ने खोदकर बनवाई थीं, वह भी उन सभी के सामने बलिदान करता और उन सभी की उपासना भी करता था। २२ जैसे उसका पिता मनश्शे यहोवा के सामने दीन हुआ, वैसे वह दीन न हुआ, वरन् आमोन अधिक दोषी होता गया। २३ उसके कर्मचारियों ने द्रोह की गोष्ठी करके, उसको उसी के भवन में मार डाला। २४ तब साधारण लोगों ने उन सभी को मार डाला, जिन्होंने राजा आमोन से द्रोह

की गोष्ठी की थी; और लोगों ने उसके पुत्र योशियाह को उसके स्थान पर राजा बनाया।

३४ जब योशियाह राज्य करने लगा, तब वह आठ वर्ष का था, और

यस्शलेम में इकतीस वर्ष तक राज्य करता रहा। २ उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है, और जिन मार्गों पर उसका मूलपुस्तक दाऊद चलता रहा, उन्हीं पर वह भी चला करता था और उससे न तो दाहिनी ओर मुड़ा, और न बाई ओर। ३ वह लड़का ही था, अर्थात् उसको गँड़ी पर बैठे आठ वर्ष पूरे भी न हुए थे कि अपने मूलपुस्तक दाऊद के परमेश्वर की खोज करने लगा, और बारहवें वर्ष में वह ऊँचे स्थानों और अशेरा नामक मरुतों को और खुदी और ढली हुई मरुतों को दूर करके, यहदा और यस्शलेम को शुद्ध करने लगा। ४ बाल देवताओं की वेदियों उसके सामने तोड़ डाली गई, और सूर्य की प्रतिमाएँ जो उनके ऊपर ऊँचे पर थीं, उसने कट डाली, और अशेरा नामक, और खुदी और ढली हुई मरुतों को उसने तोड़कर पीस डाला, और उनकी बुकनी उन लोगों की कब्रों पर छिटरा दी, जो उनको बलि छढ़ाते थे। ५ उनके पुजारियों की हड्डियाँ उसने उन्हीं की वेदियों पर जलाई। ६ अतः उसने यहदा और यस्शलेम को शुद्ध किया। ७ फिर मनश्शे, ऐप्रैम और शिमोन के बरन नमाली तक के नगरों के खण्डहरों में, उसने वेदियों को तोड़ डाला, ८ और अशेरा नामक और खुदी हुई मरुतों को पीसकर बुकनी कर डाला, और इस्माएल के सारे देश की सूर्य की सब प्रतिमाओं को काटकर यस्शलेम को लौट गया। ९ फिर अपने राज्य के अठारहवें वर्ष में जब वह देश और भवन दोनों को शुद्ध कर चुका, तब उसने असल्याह के पुत्र शापान और नगर के हाकिम मासेयाह और योआहाज के पुत्र इतिहास के लेखक योआह को अपने परमेश्वर यहोवा के भवन की मरम्मत करने के लिये भेज दिया। १० अतः उन्होंने हिल्कियाह महायाजक के पास जाकर जो सम्या परमेश्वर के भवन में लाया गया था, अर्थात् जो लेवीय दरबानों ने मनश्शीरों, ऐमियों और सब बचे हुए इस्माएलियों से और सब यहदियों और बिन्यामीनियों से और सब यस्शलेम के निवासियों के हाथ से लेकर इकट्ठा किया था, उसको सौंप दिया। ११ अर्थात् उन्होंने उसे उन काम करनेवालों के हाथ सौंप दिया जो यहोवा के भवन के काम पर मुखिए थे, और यहोवा के भवन की उन काम करनेवालों ने उसे भवन में जो कुछ दृटा फूटा था, उसकी मरम्मत करने में लगाया। १२ अर्थात् उन्होंने उसे बढ़दियों और राजमिथ्रियों को दिया कि वे गढ़े हुए पथर और जोड़ों के लिये लकड़ी मोल लें, और उन घरों को छाँएं जो यहदा के राजाओं ने नाश कर दिए थे। १३ वे मनुष्य सच्चाई से काम करते थे, और उनके अधिकारी मरारीय, यहत और ओबायाह, लेवीय और कहाती, जकर्याह और मश्श्लाम, काम चलानेवाले और गाने-बजाने का भेद सब जाननेवाले लेवीय भी थे। १४ फिर वे बोझियों के अधिकारी थे और भौति-भौति की सेवा और काम चलानेवाले थे, और कुछ लेवीय मुंशी सरदार और दरबान थे। १५ जब वे उस स्थे को जो यहोवा के भवन में पहुँचाया गया था, निकाल रहे थे, तब हिल्कियाह याजक को मूसा के द्वारा दी हुई यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक मिली। १६ तब हिल्कियाह ने शापान मंत्री से कहा, “मुझे यहोवा के भवन में व्यवस्था की पुस्तक मिली है;” तब हिल्कियाह ने शापान को वह पुस्तक दी। १७ तब शापान उस पुस्तक की राजा के पास ले गया, और यह सन्देश दिया, “जो-जो काम तेरे कर्मचारियों को सौंपा गया था उसे कर रहे हैं। १८ जो सम्या यहोवा के भवन में मिला, उसको उन्होंने उण्डेलकर मुखियों और कारीगरों के हाथों में सौंप दिया है।” १९ फिर शापान मंत्री ने राजा को यह भी बता दिया कि हिल्कियाह याजक ने मुझे एक पुस्तक दी है,

तब शापान ने उसमें से राजा को पढ़कर सुनाया। २० व्यवस्था की वे बातें सुनकर राजा ने अपने बब्ल फाड़े। २१ फिर राजा ने हिल्कियाह, शापान के पुत्र अहीकाम, मीका के पुत्र अब्दोन, शापान मंत्री और असायाह नामक अपने कर्मचारी को आज्ञा दी, २२ “तुम जाकर मेरी ओर से और इस्माएल और यहदा में रहनेवालों की ओर से इस पाई हुई पुस्तक के बचनों के विषय यहोवा से पूछो; क्योंकि यहोवा की बड़ी ही जलजलाहट हम पर इसलिए भड़की है कि हमारे पुरुषोंने ये यहोवा का बचन नहीं माना, और इस पुस्तक में लिखी हुई सब आज्ञाओं का पालन नहीं किया।” २३ तब हिल्कियाह ने राजा के अन्य दूरों समेत हुल्दा नविया के पास जाकर उससे उसी बात के अनुसार बातें की, वह तो उस शल्तूम की ज़ी शी जो तोखत का पुत्र और हमा का पोता और बश्शलय का रखवाला था: और वह ज़ी यस्शलेम के नये टोले में रहती थी। २४ उसने उसने कहा, “इस्माएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि जिस पुस्त ने तुम को मेरे पास भेजा, उससे यह कहो, २५ ‘यहोवा यह कहता है, कि सुन, मैं इस स्थान और इसके निवासियों पर विपति डालकर यहदा के राजा के सामने जो पुस्तक पढ़ी गई, उसमें जितने श्राप लिखे हैं उन सभी को पूरा करँगा। २६ उन लोगों ने मुझे त्याग कर पराए देवताओं के लिये धूप जलाया है और अपनी बनाई हुई सब बस्तुओं के द्वारा मुझे क्रोध दिलाया है, इस कारण मेरी जलजलाहट इस स्थान पर भड़क उठी है, और शान्त न होगी। २७ परन्तु यहदा का राजा जिसने तुम्हें यहोवा से पूछने को भेज दिया है उससे तुम यह कहो, कि इस्माएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, २८ कि इसलिए कि तू वे बातें सुनकर दीन हुआ, और परमेश्वर के सामने अपना सिर झुकाया, और उसकी बातें सुनकर जो उसने इस स्थान और इसके निवासियों के विस्तृक ही, तूने मेरे सामने अपना सिर झुकाया, और बब्ल फाड़कर मेरे सामने रोया है, इस कारण मैंने तेरी सुनी है; यहोवा की यही बाणी है। २९ सुन, मैं तुझे तेरे पुरुषों और इसके निवासियों के सांग ऐसा मिलाऊँगा कि तू शान्ति से अपनी कब्र को पहुँचाया जाएगा, और जो विपति मैं इस स्थान पर, और इसके निवासियों पर डालाना चाहता हूँ, उसमें से तुझे अपनी आँखों से कुछ भी देखना न पड़ेगा।” ३० तब उन लोगों ने लौटकर राजा को यही संदेश दिया। ३१ तब राजा ने यहदा और यस्शलेम के सब पुस्तियों को इकट्ठे होने को बुलावा भेजा। ३२ राजा यहदा के सब लोगों और यस्शलेम के सब निवासियों और याजकों और लेवियों वरन् छोटे बड़े सारी प्रजा के लोगों को संग लेकर यहोवा के भवन को गया; तब उसने जो वाचा की पुस्तक यहोवा के भवन में मिली थी उसमें की सारी बातें उनको पढ़कर सुनाई। ३३ तब राजा ने अपने स्थान पर खड़े होकर, यहोवा से इस आशय की वाचा बाँधी कि मैं यहोवा के पीछे-पीछे चलूँगा, और अपने सम्पूर्ण मन और सम्पूर्ण जीव से उसकी आज्ञाओं, चेतावनियों और विधियों का पालन करँगा, और इन वाचा की बातों को जो इस पुस्तक में लिखी है, पूरी करँगा। ३४ फिर उसने उन सभी से जो यस्शलेम में और बिन्यामीन में थे वेरी ही वाचा बाँधाई: और यस्शलेम के निवासी, परमेश्वर जो उनके पितरों का परमेश्वर था, उसकी वाचा के अनुसार करने लगे। ३५ योशियाह ने इस्माएलियों के सब देशों में से सब अशुद्ध बस्तुओं को दूर करके जितने इस्माएल में मिले, उन सभी से उपासना कराई; अर्थात् उनके परमेश्वर यहोवा की उपासना कराई; उसके जीवन भर उन्होंने अपने पूर्णजों के परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना न छोड़ा।

३५ योशियाह ने यस्शलेम में यहोवा के लिये फसह पर्व माना और पहले महीने के चौदहवें दिन को फसह का पशुबलि किया गया। ३६ उसने याजकों को अपने-अपने काम में ठराया, और यहोवा के भवन में सेवा करने को उनका हियाव बन्धाया। ३७ फिर लेवीय जो सब इस्माएलियों को सिखाते और यहोवा के लिये पवित्र ठहरे थे, उनसे उसने कहा, “तुम पवित्र सन्तूक को

उस भवन में रखो जो दाऊद के पुत्र इम्पाएल के राजा सुलैमान ने बनवाया था; अब तुम को कंधों पर बोझ उठाना न होगा। अब अपने परमेश्वर यहोवा की और उसकी प्रजा इम्पाएल की सेवा करो। ५ इम्पाएल के राजा दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान दोनों की लिखी हुई विधियों के अनुसार, अपने-अपने पितरों के अनुसार, अपने-अपने दल में तैयार रहो। ६ तुम्हरे भाई लोगों के पितरों के घरानों के भागों के अनुसार पवित्रस्थान में खड़े रहो, अर्थात् उनके एक भाग के लिये लेवियों के एक-एक पितर के घराने का एक भाग हो। ७ फस्ह के पशुओं को बलि करो, और अपने-अपने को पवित्र करके अपने भाइयों के लिये तैयारी करो कि वे यहोवा के उस वचन के अनुसार कर सकें, जो उसने मूसा के द्वारा कहा था।¹ ८ फिर योशियाह ने सब लोगों को जो वहाँ उपस्थित थे, तीस हजार भेड़ों और बकरियों के बच्चे और तीन हजार बैल दिए थे; ये सब फस्ह के बलिदानों के लिये राजा की सम्पत्ति में से दिए गए थे। ९ उसके हाकिमों ने प्रजा के लोगों, याजकों और लेवियों को स्वेच्छाबलियों के लिये पशु दिए। और हिलिकियाह, जकर्याह और यहीएल नामक परमेश्वर के भवन के प्रधानों ने याजकों को दो हजार छः सौ भेड़-बकरियाँ और तीन सौ बैल फस्ह के बलिदानों के लिए दिए। १० कोनन्याह ने और शमायाह और नटनेल जो उसके भाई थे, और हशब्याह, यीएल और योजाबाद नामक लेवियों के प्रधानों ने लेवियों को पाँच हजार भेड़-बकरियाँ, और पाँच सौ बैल फस्ह के बलिदानों के लिये दिए। ११ इस प्रकार उपासना की तैयारी हो गई, और राजा की आज्ञा के अनुसार याजक अपने-अपने स्थान पर, और लेविय अपने-अपने दल में खड़े हुए। १२ तब फस्ह के पशुबलि किए गए, और याजक बलि करनेवालों के हाथ से लह को लेकर छिड़क देते और लेवीय उनकी खाल उतारते गए। १३ तब उन्होंने होमबलि के पशु इसलिए अलग किए कि उन्हें लोगों के पितरों के घरानों के भागों के अनुसार दें, कि वे उन्हें यहोवा के लिये चढ़ाव दें जैसा कि मूसा की पुस्तक में लिखा है; और बैलों को भी उन्होंने बैसा ही किया। १४ तब उन्होंने फस्ह के पशुओं का माँस विधि के अनुसार आग में भ्रा, और पवित्र वस्तुएँ, हाँड़ियों और हाङड़ों और थालियों में सिझा कर फुर्ती से लोगों को पहुँचा दिया। १५ तब उन्होंने अपने लिये और याजकों के लिये तैयारी की, क्योंकि हास्तन की सन्तान के याजक होमबलि के पशु और चर्बी रात तक चढ़ाते रहे, इस कारण लेवियों ने अपने लिये और हास्तन की सन्तान के याजकों के लिये तैयारी की। १६ आसाप के वंश के गविये, दाऊद, आसाप, हेमान और राजा के दर्शी यदूतन की आज्ञा के अनुसार अपने-अपने स्थान पर रहे, और द्वारापाल एक-एक फाटक पर रहे। उन्हें अपना-अपना काम छोड़ा न पड़ा, क्योंकि उनके भाई लेवियों ने उनके लिये तैयारी की। १७ अतः उसी दिन राजा योशियाह की आज्ञा के अनुसार फस्ह मनाने और यहोवा की वेदी पर होमबलि चढ़ाने के लिये यहोवा की सारी उपासना की तैयारी की गई। १८ जो इम्पाएली वहाँ उपस्थित थे उन्होंने फस्ह को उसी समय और अख्वारी रोटी के पर्व को सात दिन तक माना। १९ इस फस्ह के बाबर शमूल नवी के दिनों से इम्पाल में कोई फस्ह मनाया न गया था, और न इम्पाएल के किसी राजा ने ऐसा मनाया, जैसा योशियाह और याजकों, लेवियों और जितने यहदी और इम्पाली उपस्थित थे, उन्होंने और यस्शलेम के निवासियों ने मनाया। २० यह फस्ह योशियाह के राज्य के अठारहवें वर्ष में मनाया गया। २१ इसके बाद जब योशियाह भवन को तैयार कर चुका, तब मिस्त्र के राजा नको ने फरात के पास के कर्कमीश नगर से लड़ने को चढ़ाई की, और योशियाह उसका सामना करने को गया। २२ परन्तु उसने उसके पास दूतों से कहला भेजा, “हे यहदा के राजा मेरा तज्ज्ञ से क्या काम! आज मैं तुझ पर नहीं उसी कुल पर चढ़ाई कर रहा हूँ, जिसके साथ मैं युद्ध

करता हूँ; फिर परमेश्वर ने मुझसे फुर्ती करने को कहा है। इसलिए परमेश्वर जो मेरे सांग है, उससे अलग रह, कहीं ऐसा न हो कि वह तुझे नाश करे।” २३ परन्तु योशियाह ने उससे मूँह न मोड़ा, बरन उससे लड़ने के लिये भेष बदला, और नको के उन वचनों को न माना जो उसने परमेश्वर की ओर से कहे थे, और मगिदो की तराई में उससे युद्ध करने को गया। २४ तब धन्त्यर्थियों ने राजा योशियाह की ओर तीर छोड़े; और राजा ने अपने सेवकों से कहा, “मैं बहुत ध्याल हो गया हूँ, इसलिए मूँझे यहाँ से ले चलो।” २५ तब उसके सेवकों ने उसको रथ पर से उतारकर उसके दूसरे रथ पर चढ़ाया, और यस्शलेम ले गये। वहाँ वह मर गया और उसके पुरुखाओं के कबिस्तान में उसको मिट्टी दी गई। यहदियों और यस्शलेमियों ने योशियाह के लिए विलाप किया। २६ यिर्मायाह ने योशियाह के लिये विलाप का गीत बनाया और सब गानेवाले और गानेवालियाँ अपने विलाप के गीतों में योशियाह की चर्चा आज तक करती हैं। इनका गाना इम्पाएल में एक विधि के तुल्य ठहराया गया और ये बातें विलापीतों में लिखी हुई हैं। २७ योशियाह के और काम और भक्ति के जो काम उसने उसी के अनुसार किए जो यहोवा की व्यवस्था में लिखा हआ है। २८ आदि से अन्त तक उसके सब काम इम्पाएल और यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे हुए हैं।

३६ तब देश के लोगों ने योशियाह के पुत्र यहोआहाज को लेकर उसके पिता के स्थान पर यस्शलेम में राजा बनाया। १ जब यहोआहाज राज्य करने लगा, तब वह तेईस वर्ष का था, और तीन महीने तक यस्शलेम में राज्य करता रहा। २ तब मिस्त्र के राजा ने उसको यस्शलेम में राजगढ़ी से उतार दिया, और देश पर सौ किंवकार भर सोना जुमिन में ढंड लगाया। ३ तब मिस्त्र के राजा ने उसके भाई एलयाकीम को यहदा और यस्शलेम का राजा बनाया और उसका नाम बदलकर यहोयाकीम रखा; परन्तु नको उसके भाई यहोआहाज को मिस्त्र में ले गया। ४ जब यहोयाकीम राज्य करने लगा, तब वह पच्चीस वर्ष का था, और ग्यारह वर्ष तक यस्शलेम में राज्य करता रहा। उसने वह काम किया, जो उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है। ५ उस पर बाबेल के राजा नब्कदनेस्सर ने चढ़ाई की, और बाबेल ले जाने के लिये उसको पीतल की बेड़ियाँ पहना दी। ६ फिर नब्कदनेस्सर ने यहोवा के भवन के कुछ पात्र बाबेल ले जाकर, अपने मन्दिर में जो बाबेल में था, रख दिए। ७ यहोयाकीम के और काम और उसने जो-जो धिनोंने काम किए, और उसमें जो-जो बुराइयाँ पाई गईं, वह इम्पाएल और यहदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखी हैं; और उसका पुत्र यहोयाकीन उसके स्थान पर राज्य करने लगा। ८ जब यहोयाकीन राज्य करने लगा, तब वह आठ वर्ष का था, और तीन महीने और दस दिन तक यस्शलेम में राज्य करता रहा। उसने वह किया, जो परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है। ९ नये वर्ष के लगते ही नब्कदनेस्सर ने लोगों को भेजकर, उसे और यहोवा के भवन के मनभावने पात्रों को बाबेल में मँगवा लिया, और उसके भाई सिद्धिकियाह को यहदा और यस्शलेम पर राजा नियुक्त किया। १० जब सिद्धिकियाह राज्य करने लगा, तब वह इक्कीस वर्ष का था, और यस्शलेम में ग्यारह वर्ष तक राज्य करता रहा। ११ उसने वही किया, जो उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है। यद्यपि यिर्मायाह नवी यहोवा की ओर से बातें कहता था, तो भी वह उसके सामने दीन न हुआ। १२ फिर नब्कदनेस्सर जिसने उसे परमेश्वर की शपथ खिलाई थी, उससे उसने बलवा किया, और उसने हठ किया और अपना मन कठोर किया, कि वह इम्पाएल के परमेश्वर यहोवा की ओर न फिरे। १३ सब प्रधान याजकों ने और लोगों ने भी अन्यजातियों के से धिनोंने काम करके बहुत बड़ा विच्वासघात

किया, और यहोवा के भवन को जो उसने यस्शलेम में पवित्र किया था, अशद्व कर डाला। ५५ उनके पूर्जों के परमेश्वर यहोवा ने बड़ा यत्र करके अपने दूरों से उनके पास कहला भेजा, क्योंकि वह अपनी प्रजा और अपने धाम पर तरस खाता था; ५६ परन्तु वे परमेश्वर के दूरों को उपहास में उड़ाते, उसके वचों को तुच्छ जानते, और उसके नवियों की हँसी करते थे। अतः यहोवा अपनी प्रजा पर ऐसा झुँझला उठा, कि बचने का कोई उपाय न रहा। ५७ तब उसने उन पर कसदियों के राजा से चढ़ाई करवाई, और इसने उनके जवानों को उनके पवित्र भवन ही में तलवार से मार डाला; और क्या जवान, क्या कुँवारी, क्या बूढ़े, क्या पक्के बाल वाले, किसी पर भी कोमलता न की; यहोवा ने सभी को उसके हाथ में कर दिया। ५८ क्या छोटे, क्या बड़े, परमेश्वर के भवन के सब पात्र और यहोवा के भवन, और राजा, और उसके हाकिमों के खजाने, इन सभी को वह बाबेल में ले गया। ५९ कसदियों ने परमेश्वर का भवन झूँक दिया, और यस्शलेम की शहरपनाह को तोड़ डाला, और आग लगाकर उसके सब भवनों को जलाया, और उसमें का सारा बहुमूल्य सामान नष्ट कर दिया। ६० जो तलवार से बच गए, उन्हें वह बाबेल को ले गया, और फारस के राज्य के प्रबल होने तक वे उसके और उसके बेटों-पेतों के अधीन रहे। ६१ यह सब इसलिए हुआ कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुँह से निकला था, वह पूरा हो, कि देश अपने विश्वामिकाओं में सुख भोगता रहे। इसलिए जब तक वह सूना पड़ा रहा तब तक अर्थात् सत्र वर्ष के पूरे होने तक उसको विश्राम मिला। ६२ फारस के राजा कुम्ह के पहले वर्ष में यहोवा ने उसके मन को उभारा कि जो वचन यिर्मयाह के मुँह से निकला था, वह पूरा हो। इसलिए उसने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया, और इस आशय की चिठ्ठियाँ लिखवाईः ६३ “फारस का राजा कुम्ह कहता है, ‘स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि यस्शलेम जो यहदा में है उसमें मेरा एक भवन बनवा; इसलिए हे उसकी प्रजा के सब लोगों, तुम में से जो कोई चाहे, उसका परमेश्वर यहोवा उसके साथ रहे, वह वहाँ रवाना हो जाए।”

एज्ञा

१ फारस के राजा कुम्ह के राज्य के पहले वर्ष में यहोवा ने फारस के राजा कुम्ह

का मन उभारा कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुँह से निकला था वह पूरा हो जाए, इसलिए उसने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया और लिखवा भी दिया: २ “फारस का राजा कुम्ह यह कहता है: स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उसने मुझे आज्ञा दी, कि यहदा के यस्शलेम में मेरा एक भवन बनवा। ३ उसकी समस्त प्रजा के लोगों में से तुम्हरे मध्य जो कोई हो, उसका परमेश्वर उसके साथ रहे, और वह यहदा के यस्शलेम को जाकर इसाएल के परमेश्वर यहोवा का भवन बनाए - जो यस्शलेम में है वही परमेश्वर है। ४ और जो कोई किसी स्थान में रह गया हो, जहाँ वह रहता हो, उस स्थान के मनुष्य चाँदी, सोना, धन और पशु देकर उसकी सहायता करें और इससे अधिक यस्शलेम शिथ उपरेक्षण के भवन के लिये अपनी-अपनी इच्छा से भी भेट चढ़ाएँ।” ५ तब यहदा और बिन्यामीन के जितने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों और याजकों और लेखियों का मन परमेश्वर ने उभारा था कि जाकर यस्शलेम में यहोवा के भवन को बनाएँ, वे सब उठ खड़े हुए; ६ और उनके आस-पास सब रहनेवालों ने चाँदी के पात्र, सोना, धन, पशु और अनमोल वस्तुएँ देकर, उनकी सहायता की; यह उन सभसे अधिक था, जो लोगों ने अपनी-अपनी इच्छा से दिया। ७ फिर यहोवा के भवन के जो पात्र नवकृदनेस्सर ने यस्शलेम से निकालकर अपने देवता के भवन में रखे थे, ८ उनको कुम्ह राजा ने, मिथदात खजांची से निकलवाकर, यहदियों के शेशबस्सर नामक प्रधान को गिनकर सौंप दिया। ९ उनकी गिनती यह थी, अर्थात् सोने के तीस और चाँदी के एक हजार परात और उनतीस लघु, १० सोने के तीस कटोरे और मध्यम प्रकार की चाँदी के चार सौ दस कटोरे तथा अन्य प्रकार के पात्र एक हजार। ११ सोने चाँदी के पात्र सब मिलाकर पाँच हजार चार सौ थे। इन सभी को शेशबस्सर उस समय ले आया जब बन्धु बाबेल से यस्शलेम को आए।

२ जिनको बाबेल का राजा नव्बूकदनेस्सर बाबेल को बन्दी बनाकर ले गया

था, उनमें से प्रान्त के जो लोग बैधुआई से छूटकर यस्शलेम और यहदा को अपने-अपने नगर में लौटे वे ये हैं। २ ये जस्त्याबेल, येशुअ, नहेम्याह, सरायाह, रेलायाह, मोर्दै, बिलशान, मिस्पार, बिगवै, रहम और बानाह के साथ आए। इसाएली प्रजा के मनुष्यों की गिनती यह है: अर्थात् ३ परोश की सन्तान दो हजार एक सौ बहतर, ४ शपत्याह की सन्तान तीन सौ बहतर, ५ आरह की सन्तान सात सौ पचहतर, ६ पहत्मोआब की सन्तान येशुअ और योआब की सन्तान में से दो हजार आठ सौ बारह, ७ एलाम की सन्तान बारह सौ चौबन, ८ जनू की सन्तान नौ सौ पैतालीस, ९ जक्कर्क ई की सन्तान सात सौ साठ, १० बानी की सन्तान छः सौ बयालीस, ११ बैबै की सन्तान छः सौ तेईस, १२ अजगाद की सन्तान बारह सौ बाईस, १३ अदोनीकाम की सन्तान छः सौ छियासठ, १४ बिगवै की सन्तान दो हजार छप्पन, १५ आदीन की सन्तान चार सौ चौबन, १६ हिजकियाह की सन्तान आतेर की सन्तान में से अठानवे, १७ बेसै की सन्तान तीन सौ तेईस, १८ योरा के लोग एक सौ बारह, १९ हाशम के लोग दो सौ तेईस, २० गिब्बार के लोग पंचानबे, २१ बैतलहम के लोग एक सौ तेईस, २२ नतोपा के मनुष्य छप्पन; २३ अनातोत के मनुष्य एक सौ अष्टाईस, २४ अजमावेत के लोग बयालीस, २५ किर्बत्याराम कपीरा और बेरोत के लोग सात सौ तैतालीस, २६ रामाह और गेबा के लोग छः सौ इक्कीस, २७ मिकमाश के मनुष्य एक सौ बाईस, २८ बेतेल और आई के मनुष्य दो सौ तेईस, २९ नबो के

लोग बाबन, ३० मग्गीस की सन्तान एक सौ छप्पन, ३१ दूसरे एलाम की सन्तान बारह सौ चौबन, ३२ हारीम की सन्तान तीन सौ बीस, ३३ लोद, हादीद और ओनो के लोग सात सौ पच्चीस, ३४ यरीहो के लोग तीन सौ पैतालीस, ३५ सना के लोग तीन हजार छः सौ तीस। ३६ फिर याजकों अर्थात् येशुअ के घराने में से यदायाह की सन्तान नौ सौ तिहतर, ३७ इम्मेर की सन्तान एक हजार बाबन, ३८ पशहार की सन्तान बारह सौ सैतालीस, ३९ हारीम की सन्तान एक हजार सत्रह ४० फिर लेवीय, अर्थात् येशुअ की सन्तान और कदमीएल की सन्तान होदव्याह की सन्तान में से चौहतर। ४१ फिर गवैयों में से आसाप की सन्तान एक सौ अष्टाई। ४२ फिर दरबानों की सन्तान, शल्लम की सन्तान, आतेर की सन्तान, तल्मोन की सन्तान, अक्कूब की सन्तान, हीतीा की सन्तान, और शोबै की सन्तान, ये सब मिलाकर एक सौ उनतालीस हुए। ४३ फिर नतीन की सन्तान, सीहा की सन्तान, हस्पा की सन्तान, तब्बाओत की सन्तान। ४४ केरोस की सन्तान, सीअहा की सन्तान, पादोन की सन्तान, ४५ लबाना की सन्तान, हाबाला की सन्तान, अक्कूब की सन्तान, ४६ हागाब की सन्तान, शल्म की सन्तान, हानान की सन्तान, ४७ गिल की सन्तान, गहर की सन्तान, रायाह की सन्तान, ४८ रसीन की सन्तान, नकोदा की सन्तान, गज्जाम की सन्तान, ४९ उज्जा की सन्तान, पासेह की सन्तान, बेसै की सन्तान, ५० असा की सन्तान, मूरीम की सन्तान, नपीरीम की सन्तान, ५१ बक्कब की सन्तान, हक्का की सन्तान, हर्हर की सन्तान। ५२ बसलतू की सन्तान, महीदा की सन्तान, हर्शा की सन्तान, ५३ बर्कास की सन्तान, सीसरा की सन्तान, तेमह की सन्तान, ५४ नसीह की सन्तान, और हतीपा की सन्तान। ५५ फिर सुलैमान के दासों की सन्तान, सोतै की सन्तान, हस्सोपेरेत की सन्तान, पस्त्वा की सन्तान, ५६ याला की सन्तान, दर्कन की सन्तान, गिल की सन्तान, ५७ शपत्याह की सन्तान, हतील की सन्तान, पोकरेत-सबायीम की सन्तान, और आमी की सन्तान। ५८ सब नतीन और सुलैमान के दासों की सन्तान, तीन सौ बानवे थे। ५९ फिर जो तेलमेलाह, तेलहर्षा, कर्स्ब, अद्दन और इम्मेर से आए, परन्तु वे अपने-अपने पितरों के घराने और वंशावली न बता सके कि वे इसाएल के हैं, वे ये हैं: ६० अर्थात् दलायाह की सन्तान, तोबियाह की सन्तान और नकोदा की सन्तान, जो मिलकर छः सौ बाबन थे। ६१ याजकों की सन्तान में से हबायाह की सन्तान, हव्वकोस की सन्तान और बर्जिल्लै की सन्तान, जिसने गिलादी बर्जिल्लै की एक बेटी को ब्याह लिया और उसी का नाम रख लिया था। ६२ इन सभी ने अपनी-अपनी वंशावली का पत्र औरों की वंशावली की पोथियों में ढाँचा, परन्तु वे न मिले, इसलिए वे अशुद्ध ठहराकर याजकपद से निकाले गए। ६३ और अधिपित ने उनसे कहा, कि जब तक ऊरीम और तुम्पीम धारण करनेवाला कोई याजक न हो, तब तक कोई परमपवित्र वस्तु खाने न पाए। ६४ समस्त मण्डली मिलकर बयालीस हजार तीन सौ साठ की थी। ६५ इनको छोड़ इनके सात हजार तीन सौ सैन्यिस दास-दासियाँ और दो सौ गानेवाले और गानेवालियाँ थीं। ६६ उनके घोड़े सात सौ छतीस, खच्चर दो सौ पैतालीस, ऊँट चार सौ पैतीस, ६७ और गदहे छः हजार सात सौ बीस थे। ६८ पितरों के घरानों के कुछ मुख्य-मुख्य पुरुषों ने जब यहोवा के भवन को जो यस्शलेम में है, आए, तब परमेश्वर के भवन को उरी के स्थान पर खड़ा करने के लिये अपनी-अपनी इच्छा से कुछ दिया। ६९ उन्होंने अपनी-अपनी पूँजी के अनुसार इक्सठ हजार दर्कोन सोना और पाँच चाँदी और याजकों के योग्य एक सौ अंगरखे अपनी-अपनी इच्छा से उस काम के खजाने में दे दिए। ७० तब याजक और लेवीय और लोगों में से कुछ और गवैये और द्वारपाल और नतीन लोग अपने नगर में और सब इसाएली अपने-अपने नगर में फिर बस गए।

३ जब सातवाँ महीना आया, और इस्माएली अपने-अपने नगर में बस गए, तो लोग यस्शलेम में एक मन होकर इकट्ठे हुए। २ तब योसादाक के पुत्र येशुअ ने अपने भाईयों समेत और शालतीएल के पुत्र जस्ल्वाबेल ने अपने भाईयों समेत कमर बाँधकर इस्माएल के परमेश्वर की वेदी को बनाया कि उस पर होमबलि चढ़ाइँ, जैसे कि परमेश्वर के भक्त मूसा की व्यवस्था में लिखा है। ३ तब उन्होंने वेदी को उसके स्थान पर खड़ा किया क्योंकि उन्हें उस ओर के देशों के लोगों का भय रहा, और वे उस पर यहोवा के लिये होमबलि अर्थात् प्रतिदिन सवारे और साँझ के होमबलि चढ़ाने लगे। ४ उन्होंने झोपड़ियों के पर्व को माना, जैसे कि लिखा है, और प्रतिदिन के होमबलि एक-एक दिन की गिनती और नियम के अनुसार चढ़ाए। ५ उसके बाद नित्य होमबलि और नये-नये चाँद और यहोवा के पवित्र किए हुए सब नियत पर्वों के बलि और अपनी-अपनी इच्छा से यहोवा के लिये सब स्वेच्छाबलि हर एक के लिये बलि चढ़ाए। ६ सातवें महीने के पहले दिन से वे यहोवा को होमबलि चढ़ाने लगे। परन्तु यहोवा के मन्दिर की नीव तब तक न डाली गई थी। ७ तब उन्होंने पत्थर गढ़नेवालों और कारीगरों को स्पाया, और सीदोनी और सोरी लोगों को खाने-पीनी की बस्तुएँ और तेल दिया, कि वे फारस के राजा कुमू के पत्र के अनुसार देवदार की लकड़ी लबानोन से याका के पास के समूद्र में पहँचाएँ। ८ उनके परमेश्वर के भवन में, जो यस्शलेम में है, अनेकों के सूरे वर्ष के दूसरे महीने में, शालतीएल के पुत्र जस्ल्वाबेल ने और योसादाक के पुत्र येशुअ ने और उनके अन्य भाईयों ने जो याजक और लेवीय थे, और जितने बैंधुआई से यस्शलेम में आए थे उन्होंने भी काम को आरभ किया, और बीस वर्ष अथवा उससे अधिक अवस्था के लेवियों को यहोवा के भवन का काम चलाने के लिये नियुक्त किया। ९ तो येशुअ और उसके बेटे और भाई, और कदमीएल और उसके बेटे, जो यहदा की सन्तान थे, और हेनादाद की सन्तान और उनके बेटे परमेश्वर के भवन में कारीगरों का काम चलाने को खड़े हुए। १० जब राजमिश्रियों ने यहोवा के मान्दिर की नीव डाली, तब अपने बड़े पहने हुए, और तुहियाँ लिये हुए याजक, और झाँझ लिये हुए आसाप के वश के लेवीय इसलिए नियुक्त किए गए कि इस्माएलियों के राजा दाऊद की चलाई हुई रीति के अनुसार यहोवा की स्तुति कीं। ११ सो वे यह गा गाकर यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे, “वह भला है, और उसकी कस्ता इस्माएल पर सदैव बनी है।” और जब वे यहोवा की स्तुति करने लगे तब सब लोगों ने यह जानकर कि यहोवा के भवन की नीव अब पड़ रही है, ऊँचे शब्द से जयजयकर किया। १२ परन्तु बहुत से याजक और लेवीय और पूर्वजों के घरानों के मुख्य पुस्तक, अर्थात् वे बूढ़े जिन्होंने पहला भवन देखा था, जब इस भवन की नीव उनकी आँखों के सामने पड़ी तब फूट फूटकर रोने लगे, और बहुत से आनन्द के मारे ऊँचे शब्द से जयजयकर कर रहे थे। १३ इसलिए लोग, आनन्द के जयजयकर का शब्द, लोगों के रोने के शब्द से अलग पहचान न सके, क्योंकि लोग ऊँचे शब्द से जयजयकर कर रहे थे, और वह शब्द दूर तक सुनाई देता था।

४ जब यहदा और बिन्यामीन के शब्दोंने वे यह सुना कि बैंधुआई से छूटे हुए लोग इस्माएल के परमेश्वर यहोवा के लिये मन्दिर बना रहे हैं, २ तब वे जस्ल्वाबेल और पूर्वजों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुस्तकों के पास आकर उनसे कहने लगे, “हमें भी अपने संग बनाने दो; क्योंकि तुम्हारे समान हम भी तुम्हारे परमेश्वर की खोज में लगे हुए हैं, और अश्वर का राजा एस्हदेन जिसने हमें यहाँ पहँचाया, उसके दिनों से हम उसी को बलि चढ़ाते भी हैं।” ५ जस्ल्वाबेल, येशुअ और इस्माएल के पितरों के घरानों के मुख्य पुस्तकों ने

उनसे कहा, “हमारे परमेश्वर के लिये भवन बनाने में, तुम को हम से कुछ काम नहीं, हम ही लोग एक संग मिलकर फारस के राजा कुमू की आज्ञा के अनुसार इस्माएल के परमेश्वर यहोवा के लिये उसे बनाएँ।” ६ तब उस देश के लोग यहदियों को निराश करने और उन्हें डाकार मन्दिर बनाने में स्कावट डालने लगे। ७ और फारस के राजा कुमू के जीवन भर वरन फारस के राजा द्वारा के राज्य के समय तक उनके मनोरथ को निष्फल करने के लिये वकीलों को स्पा देते रहे। ८ क्षर्य के राज्य के आरम्भिक दिनों में उन्होंने यहदा और यस्शलेम के निवासियों का दोषपत्र उसे लिख भेजा। ९ फिर अर्तक्षत्र के दिनों में विश्वालाम, मिश्रदात और ताबेल ने और उसके सहयोगियों ने फारस के राजा अर्तक्षत्र को चिठ्ठी लिखी, और चिठ्ठी अरामी अक्षरों और अरामी भाषा में लिखी गई। १० अर्थात् रहम राजमंत्री और शिमशै मंत्री ने यस्शलेम के विस्तृ राजा अर्तक्षत्र को इस आशय की चिठ्ठी लिखी। ११ उस समय रहम राजमंत्री और शिमशै मंत्री और उनके अन्य सहयोगियों ने, अर्थात् दीनी, अपरस्तकी, तर्फली, अफारसी, ऐकी, बाबेली, शूशनी, देहवी, एलामी, १२ आदि जातियों ने जिन्हें महान और प्रधान ओस्नप्पर ने पार ले आकर सामरिया नगर में और महानद के इस पार के शेष देश में बसाया था, एक चिठ्ठी लिखी। १३ जो चिठ्ठी उन्होंने अर्तक्षत्र राजा को लिखी, उसकी यह नकल है—“राजा अर्तक्षत्र की सेवा में तेरे दास जो महानद के पार के मनूष्य हैं, तज्जे शुभकामनाएँ भेजते हैं। १४ राजा को यह दिखित हो, कि जो यहदी तेरे पास से चले आए, वे हमारे पास यस्शलेम को पहँचाएँ हैं। वे उस दीनी और विनोने नगर को बसा रहे हैं, वरन् उसकी शहरपनाह को खाड़ा कर चुके हैं और उसकी नीव को जोड़ चुके हैं। १५ अब राजा को यह दिखित हो कि यदि वह नगर बस गया और उसकी शहरपनाह बन गई, तब तो वे लोग कर, चुंगी और राहदारी फिर न देंगे, और अन्त में राजाओं की हानि होगी। १६ हम लोग तो राजभवन का नमक खाते हैं और उचित नहीं कि राजा का अनादर हमारे देखते हो, इस कारण हम यह चिठ्ठी भेजकर राजा को चिता देते हैं। १७ तेरे पुरखाओं के इतिहास की पुस्तक में खोज की जाए; तब इतिहास की पुस्तक में तू यह पाकर जान लेगा कि वह नगर बलवा करनेवाला और राजाओं और प्रान्तों की हानि करनेवाला है, और प्राचीनकाल से उसमें बलवा मचता आया है। इसी कारण वह नगर नष्ट भी किया गया था। १८ हम राजा को मिश्रद्य करा देते हैं कि यदि वह नगर बसाया जाए और उसकी शहरपनाह बन चुके, तब इसके कारण महानद के इस पार तेरा कोई भाग न रह जाएगा।” १९ तब राजा ने रहम राजमंत्री और शिमशै मंत्री और सामरिया और महानद के इस पार रहनेवाले उनके अन्य सहयोगियों के पास यह उत्तर भेजा, “कुशल, हो! २० जो चिठ्ठी तुम लोगों ने हमारे पास भेजी वह मेरे सामने पढ़कर साफ-सफाई की गई। २१ और मेरी आज्ञा से खोज किए जाने पर जान पड़ा है, कि वह नगर प्राचीनकाल से राजाओं के विस्तृ सिर उठाता आया है और उसमें दांगा और बलवा होता आया है। २२ यस्शलेम के सामरी राजा भी हुए जो महानद के पार से समस्त देश पर राज्य करते थे, और कर, चुंगी और राहदारी उन्होंनी जीती थी। २३ इसलिए अब इस आज्ञा का प्रचार कर कि वे मनूष्य रोके जाएँ और जब तक मेरी ओर से आज्ञा न मिले, तब तक वह नगर बनाया न जाए। २४ और चौकस रहो, इस बात में ढौले न होना; राजाओं की हानि करनेवाली वह बुराई क्यों बढ़ने पाए?” २५ जब राजा अर्तक्षत्र की यह चिठ्ठी रहम और शिमशै मंत्री और उनके सहयोगियों को पढ़कर सुनाई गई, तब वे उत्तावली करके यस्शलेम को यहदियों के पास गए और बलपूर्वक उनको रोक दिया। २६ तब परमेश्वर के भवन का काम जो यस्शलेम में है, स्क गया; और फारस के राजा द्वारा के राज्य के दूसरे वर्ष तक स्क रहा।

५ तब हांगे नामक नवी और इदो का पोता जकर्याह यहदा और यस्शलेम के यहदियों से नबवत करने लगे, उन्होंने इसाएल के परमेश्वर के नाम से उनसे नबवत की। २ तब शालतीएल का पुत्र जस्बबाबेल और योसादाक का पुत्र येषुअ, कमर बाँधकर परमेश्वर के भवन को जो यस्शलेम में है बनाने लगे; और परमेश्वर के बैठकर उनका साथ देते रहे। ३ उसी समय महानद के इस पार का तत्त्व नामक अधिपति और शतर्बोजैन अपने सहयोगियों समेत उनके पास जाकर यह पूछने लगे, “इस भवन के बनाने और इस शहरपनाह को खड़ा करने की किसने तुम को आज्ञा दी है?” ४ उन्होंने लोगों से यह भी कहा, “इस भवन के बनानेवालों के क्या नाम हैं?” ५ परन्तु यहदियों के पुरनियों के परमेश्वर की दृष्टि उन पर रही, इसलिए जब तक इस बात की चर्चा दारा से न की गई और इसके विषय चिठ्ठी के द्वारा उत्तर न मिला, तब तक उन्होंने इनको न रोका। ६ जो चिठ्ठी महानद के इस पार के अधिपति तत्त्व और शतर्बोजैन और महानद के इस पार के उनके सहयोगियों फरसियों ने राजा दारा के पास भेजी उसकी नकल यह है; ७ उन्होंने उसको एक चिठ्ठी लिखी, जिसमें यह लिखा था: “राजा दारा का कुशल क्षेत्र सब प्रकार से हो। ८ राजा को विदित हो, कि हम लोग यहदा नामक प्रान्त में महान परमेश्वर के भवन के पास गए थे, वह बड़े-बड़े पथरों से बन रहा है, और उसकी दीवारों में कड़ियाँ जुड़ रही हैं; और यह काम उन लोगों के द्वारा फुर्ती के साथ हो रहा है, और सफल भी होता जाता है। ९ इसलिए हमने उन पुरनियों से यह पूछा, ‘यह भवन बनवाने, और यह शहरपनाह खड़ी करने की आज्ञा किसने तुम्हें दी?’ १० और हमने उनके नाम भी पूछे, कि हम उनके मुख्य पुरुषों के नाम लिखकर तुझको जता सकें। ११ उन्होंने हमें यह उत्तर दिया, ‘हम तो आकाश और पृथ्वी के परमेश्वर के दास हैं, और जिस भवन को बहुत वर्ष हुए इसाएलियों के एक बड़े राजा ने बनाकर तैयार किया था, उसी को हम बना रहे हैं। १२ जब हमारे पुरखाओं ने स्वर्ग के परमेश्वर को रिस दिलाई थी, तब उसने उन्हें बाबेल के कस्दी राजा नब्कूदनेस्सर यस्शलेम के हाथ में कर दिया था, और उसने इस भवन को नाश किया और लोगों को बन्दी बनाकर बाबेल को ले गया। १३ परन्तु बाबेल के राजा कुसू के पहले वर्ष में उसी कुसू राजा ने परमेश्वर के इस भवन को बनाने की आज्ञा दी। १४ परमेश्वर के भवन के जो सोने और चाँदी के पात्र नब्कूदनेस्सर यस्शलेम के मन्दिर में से निकलवाकर बाबेल के मन्दिर में ले गया था, उनको राजा कुसू ने बाबेल के मन्दिर में से निकलवाकर शेशबस्सर नामक एक पुस्तकों को जिसे उसने अधिपति ठहरा दिया था, सौंप दिया। १५ उसने उससे कहा, “ये पात्र ले जाकर यस्शलेम के मन्दिर में रख, और परमेश्वर का वह भवन अपने स्थान पर बनाया जाए।” १६ तब उसी शेशबस्सर ने आकर परमेश्वर के भवन की जो यस्शलेम में है नीव डाली, और तब से अब तक यह बन रहा है, परन्तु अब तक नहीं बन पाया।” १७ अब यदि राजा को अच्छा लगे तो बाबेल के राजभण्डार में इस बात की खोज की जाए, कि राजा कुसू ने सचमुच परमेश्वर के भवन के जो यस्शलेम में है बनवाने की आज्ञा दी थी, या नहीं। तब राजा इस विषय में अपनी इच्छा हमको बताए।”

६ तब राजा दारा की आज्ञा से बाबेल के पुस्तकालय में जहाँ खजाना भी रहता था, खोज की गई। ७ मादे नामक प्रान्त के अहमता नगर के राजगढ़ में एक पुस्तक मिली, जिसमें यह वृत्तान्त लिखा था: ८ “राजा कुसू के पहले वर्ष में उसी कुसू राजा ने यह आज्ञा दी, कि परमेश्वर के भवन के विषय जो यस्शलेम में है, अर्थात् वह भवन जिसमें बलिदान किए जाते थे, वह बनाया जाए और उसकी नीव दृढ़ता से डाली जाए, उसकी ऊँचाई और चौड़ाई साठ-साठ हाथ की हो; ९ उसमें तीन रेषे भारी-भारी पथरों के हों, और एक परत नई लकड़ी

की हो; और इनकी लागत राजभवन में से दी जाए। १० परमेश्वर के भवन के जो सोने और चाँदी के पात्र नब्कूदनेस्सर ने यस्शलेम के मन्दिर में से निकलवाकर बाबेल को पहुँचा दिए थे। वह लौटाकर यस्शलेम के मन्दिर में अपने-अपने स्थान पर पहुँचाए जाएँ, और तू उन्हें परमेश्वर के भवन में रख देना।” ११ “अब हे महानद के पार के अधिपति तत्त्वने! हे शतर्बोजैन! तुम अपने सहयोगियों महानद के पार के फारसियों समेत वहाँ से अलग रहो; १२ परमेश्वर के उस भवन के काम को रहाने दो; यहदियों का अधिपति और यहदियों के पुरनियों परमेश्वर के उस भवन को उसी के स्थान पर बनाएँ। १३ वरन मैं आज्ञा देता हूँ कि तुम्हें यहदियों के उन पुरनियों से ऐसा बर्ताव करना होगा, कि परमेश्वर का वह भवन बनाया जाएँ अर्थात् राजा के धन में से, महानद के पार के कर में से, उन पुरुषों को फुर्ती के साथ खर्चा दिया जाएँ; ऐसा न हो कि उनको स्कना पड़े। १४ क्या बछड़े! क्या मेढ़े! क्या मेने! स्वर्ग के परमेश्वर के होमबलियों के लिये जिस-जिस वस्तु का उहाँ प्रयोजन हो, और जितना गेहूँ, नमक, दाखमधु और तेल यस्शलेम के याजक कहें, वह सब उन्हें बिना भूल चूक प्रतिदिन दिया जाएँ। १५ इसलिए कि वे स्वर्ग के परमेश्वर को सुखदायक सुन्धनवाले बलि चढ़ाकर, राजा और राजकुमारों के दीर्घायु के लिये प्रार्थना किया करें। १६ फिर मैंने आज्ञा दी है, कि जो कोई यह आज्ञा टाले, उसके घर में से कड़ी निकाली जाएँ, और उस पर वह स्वयं चढ़ाकर जकड़ा जाएँ, और उसका घर इस अपराध के कारण धूरा बनाया जाएँ। १७ परमेश्वर जिसने वहाँ अपने नाम का निवास ठहराया है, वह क्या राजा क्या प्रजा, उन सभी को जो यह आज्ञा टालने और परमेश्वर के भवन को जो यस्शलेम में है नाश करने के लिये हाथ बढ़ाएँ, नष्ट करे। मुझ दारा ने यह आज्ञा दी है फुर्ती से ऐसा ही करना।” १८ तब महानद के इस पार के अधिपति तत्त्वने और शतर्बोजैन और उनके सहयोगियों ने दारा राजा के चिठ्ठी भेजने के कारण, उसी के अनुसार फुर्ती से काम किया। १९ तब यहदी पुरनिये, हांगे नबी और इदो के पोते जकर्या के नबवत करने से मन्दिर को बनाते रहे, और सफल भी हुए और उन्होंने इसाएल के परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार और फारस के राजा कुसू, दारा और अर्तक्षन की आज्ञाओं के अनुसार बनाते-बनाते उसे पूरा कर लिया। २० इस प्रकार वह भवन राजा दारा के राज्य के छठवें वर्ष में अदार महीने के तीसरे दिन को बनकर समाप्त हुआ। २१ इसाएली, अर्थात् याजक लेवीय और जितने बैंधुआई से आए थे उन्होंने परमेश्वर के उस भवन की प्रतिष्ठा उत्सव के साथ की। २२ उस भवन की प्रतिष्ठा में उन्होंने एक सौ बैल और दो सौ मेड़े और चार सौ मेने और फिर सब इसाएल के निमित्त पापबलि करके इसाएल के गोत्रों की गिनती के अनुसार बाहर बकरे चढ़ाए। २३ तब जैसे मूसा की पुस्तक में लिखा है, वैसे ही उन्होंने परमेश्वर की आराधना के लिये जो यस्शलेम में है, बारी-बारी से याजकों और दल-दल के लेवीयों को नियुक्त कर दिया। २४ फिर पहले महीने के चौदहवें दिन को बैंधुआई से आए हुए लोगों ने फसह माना। २५ क्योंकि याजकों और लेवीयों ने एक मन होकर, अपने-अपने को शुद्ध किया था; इसलिए वे सब के सब शुद्ध थे। उन्होंने बैंधुआई से आए हुए सब लोगों और अपने भाई याजकों के लिये और अपने-अपने लिये फसह के पशुबलि किए। २६ तब बैंधुआई से लौटे हुए इसाएली और जितने और देश की अन्यजातियों की अशुद्धता से इसलिए अलग हो गए थे कि इसाएल के परमेश्वर यहोवा की खोज करें, उन सभी ने भोजन किया। २७ वे अखमीरी रोटी का पर्व सात दिन तक अनन्द के साथ मनाते रहे; क्योंकि यहोवा ने उन्हें आनन्दित किया था, और अश्वर के राजा का मन उनकी ओर ऐसा फेर दिया कि वह परमेश्वर अर्थात् इसाएल के परमेश्वर के भवन के काम में उनकी सहायता करे।

७ इन बातों के बाद अर्थात् फारस के राजा अरक्षन्त्र के दिनों में, एज़ा बाबेल

से यस्शलेम को गया। वह सरायाह का पुत्र था। सरायाह अजर्याह का पुत्र था, अजर्याह हिल्किय्याह का, २ हिल्किय्याह शल्लूम का, शल्लूम सादेक का, सादेक अहीतब का, अहीतब अमर्याह का, अमर्याह अजर्याह का, ३ अजर्याह मरायोत का, ४ मरायोत जरह्याह का, जरह्याह उज्जी का, उज्जी बुक्की का, ५ बुक्की अबीश का, अबीश पीनहास का, पीनहास एलीआज़र का और एलीआज़र हास्न महायाज़क का पुत्र था। ६ यहीं एज़ा मूसा की व्यवस्था के विषय जिसे इसाएल के परमेश्वर यहोवा ने दी थी, निषुण शास्त्री था। उसके परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि जो उस पर रही, इसके कारण राजा ने उसका मूँह माँगा वर दे दिया। ७ कुछ इसाएली, और याजक लेवीय, गवैये, और द्वारपाल और मन्दिर के सेवकों में से कुछ लोग अरक्षन्त्र राजा के सातवें वर्ष में यस्शलेम को गए। ८ वह राजा के सातवें वर्ष के पाँचवें महीने में यस्शलेम को पहुँचा। ९ पहले महीने के पहले दिन को वह बाबेल से चल दिया, और उसके परमेश्वर की कृपादृष्टि उस पर रही, इस कारण पाँचवें महीने के पहले दिन वह यस्शलेम को पहुँचा। १० क्योंकि एज़ा ने यहोवा की व्यवस्था का अर्थ जान लेने, और उसके अनुसार चलने, और इसाएल में विधि और नियम सिखाने के लिये अपना मन लगाया था। ११ जो चिन्ही राजा अरक्षन्त्र ने एज़ा याजक और शास्त्री को दी थी जो यहोवा की आज्ञाओं के बचनों का, और उसकी इसाएलियों में चलाई हुई विधियों का शास्त्री था, उसकी नकल यह है; १२ “एज़ा याजक के नाम जो स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था का पूर्ण शास्त्री है, उसको अरक्षन्त्र महाराजाधिराज की ओर से। १३ मैं यह आज्ञा देता हूँ, कि मेरे राज्य में जितने इसाएली और उनके याजक और लेवीय अपनी इच्छा से यस्शलेम जाना चाहें, वे तेरे साथ जाने पाएँ। १४ “तू तो राजा और उसके सातों मंत्रियों की ओर से इसलिए भेजा जाता है, कि अपने परमेश्वर की व्यवस्था के विषय जो तेरे पास है, यहदा और यस्शलेम की दशा जान ले, १५ और जो चाँदी-सोना, राजा और उसके मंत्रियों ने इसाएल के परमेश्वर को जिसका निवास यस्शलेम में है, अपनी इच्छा से दिया है, १६ और जितना चाँदी-सोना समस्त बाबेल प्रान्त में तुझे मिलेगा, और जो कुछ लोग और याजक अपनी इच्छा से अपने परमेश्वर के भवन के लिये जो यस्शलेम में हैं देंगे, उसको ले जाए। १७ इस कारण तु उस स्पष्टे से फुर्ती के साथ बैल, मेडे और मेने उनके योग्य अनन्बलि और अर्ध की वस्तुओं समेत मोल लेना और उस वेदी पर चढ़ाना, जो तुम्हारे परमेश्वर के यस्शलेम वाले भवन में है। १८ और जो चाँदी-सोना बचा रहे, उससे जो कुछ तुझे और तेरे भाइयों को उचित जान पड़े, वही अपने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करना। १९ तेरे परमेश्वर के भवन की उपासना के लिये जो पात्र तुझे सौंपे जाते हैं, उन्हें यस्शलेम के परमेश्वर के समाने दे देना। २० इनसे अधिक जो कुछ तुझे अपने परमेश्वर के भवन के लिये आवश्यक जानकर देना पड़े, वह राज खजाने में से देना। २१ “मैं अरक्षन्त्र राजा यह आज्ञा देता हूँ, कि तुम महानद के पार के सब खजांचियों से जो कुछ एज़ा याजक, जो स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था का शास्त्री है, तुम लोगों से चाहे, वह फुर्ती के साथ किया जाए। २२ अर्थात् सौ किक्कार तक चाँदी, सौ कोर तक गेहूँ, सौ बत तक दाखमधु, सौ बत तक तेल और नमक जितना चाहिये उतना दिया जाए। २३ जो-जो आज्ञा स्वर्ग के परमेश्वर की ओर से मिले, ठीक उसी के अनुसार स्वर्ग के परमेश्वर के भवन के लिये किया जाए, राजा और राजकुमारों के राज्य पर परमेश्वर का क्रोध क्यों भड़कने पाए। २४ फिर हम तुम को चिंता देते हैं, कि परमेश्वर के उस भवन के किसी याजक, लेवीय, गवैये, द्वारपाल, नतीन या और किसी सेवक से कर, चुंगी, अथवा राहदारी लेने की आज्ञा नहीं है। २५ “फिर हे

एज़ा! तेरे परमेश्वर से मिली हुई बुद्धि के अनुसार जो तुझ में है, न्यायियों और विचार करनेवालों को नियुक्त कर जो महानद के पार रहनेवाले उन सब लोगों में जो तेरे परमेश्वर की व्यवस्था जानते हों न्याय किया करें; और जो-जो उन्हें न जानते हों, उनको तुम सिखाया करो। २६ जो कोई तेरे परमेश्वर की व्यवस्था और राजा की व्यवस्था न माने, उसको फुर्ती से दण्ड दिया जाए, चाहे प्राणदण्ड, चाहे देश निकाला, चाहे माल जम किया जाना, चाहे कैद करना।” २७ धन्य है हमारे पितरों का परमेश्वर यहोवा, जिसने ऐसी मनसा राजा के मन में उत्पन्न की है, कि यस्शलेम स्थित यहोवा के भवन को सँवरे, २८ और मुझ पर राजा और उसके मंत्रियों और राजा के सब बड़े हाकिमों को दयालु किया। मेरे परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि जो मुझ पर हुई, इसके अनुसार मैंने हियाव बाँधा, और इसाएल में से मुख्य पुरुषों को इकट्ठा किया, कि वे मेरे संग चलें।

८ उनके पूर्वजों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरुष ये हैं, और जो लोग राजा अरक्षन्त्र के राज्य में बाबेल से मेरे संग यस्शलेम को गए उनकी वंशावली यह है: १ अर्थात् पीनहास के वंश में से गेर्शीम, ईतामार के वंश में से दानिय्येल, दाऊद के वंश में से हत्तूश। २ शकन्याह के वंश के परोश के गोत्र में से जकर्याह, जिसके संग डेढ़ सौ पुरुषों की वंशावली हुई। ३ पहन्तोआब के वंश में से जरह्याह का पुत्र एल्योहैन, जिसके संग दो सौ पुरुष थे। ४ शकन्याह के वंश में से यहजीएल का पुत्र, जिसके संग तीन सौ पुरुष थे। ५ आदीन के वंश में से योनातान का पुत्र एबेट, जिसके संग पचास पुरुष थे। ६ एल्मान के वंश में से अतल्याह का पुत्र यशायाह, जिसके संग सत्तर पुरुष थे। ७ शपत्याह के वंश में से मीकाएल का पुत्र जबाहाह, जिसके संग दो सौ अठारह पुरुष थे। ८ योआब के वंश में से यहीएल का पुत्र ओबायाह, जिसके संग दो सौ अठारह पुरुष थे। ९ शलोमीत के वंश में से योसियाह का पुत्र, जिसके संग एक सौ साठ पुरुष थे। १० बैबै के वंश में से बैबै का पुत्र जकर्याह, जिसके संग अश्वास पुरुष थे। ११ अजगाद के वंश में से हवकातान का पुत्र योहानान, जिसके संग एक सौ दस पुरुष थे। १२ अदोनीकाम के वंश में से जो पीछे गए उनके ये नाम हैं: अर्थात् एलीपीलेत, यूएल, और शमायाह, और उनके संग साठ पुरुष थे। १३ और बिगवै के वंश में से ऊतै और जकर्हाथे, और उनके संग सत्तर पुरुष थे। १४ इनको मैंने उस नदी के पास जो अहवा की ओर बहती है इकट्ठा कर लिया, और वहाँ हम लोग तीन दिन देरे डाले रहे, और मैंने वहाँ लोगों और याजकों को देख लिया परन्तु किसी लेवीय को न पाया। १५ मैंने एलीजेर, अरीएल, शमायाह, एलनातान, यारीब, एलनातान, नातान, जकर्याह और मशुल्लाम को जो मुख्य पुरुष थे, और योयारीब और एलनातान को जो बुद्धिमान थे १६ बुलवाकर, इझे के पास जो कासिप्या नामक स्थान का प्रधान था, भेज दिया; और उनको समझा दिया, कि कासिप्या स्थान में इझे और उसके भाई नतीन लोगों से क्या-क्या कहना, वे हमारे पास हमारे परमेश्वर के भवन के लिये सेवा तहत करनेवालों को ले आएँ। १७ हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि जो हम पर हुई इसके अनुसार वे हमारे पास ईश्वकेत को जो इसाएल के परपोतों और लेवी के पोते महली के वंश में से था, और शेरेब्याह को, और उसके पुत्रों और भाइयों को, अर्थात् अठारह जनों को; १८ और हश्याह को, और उसके संग मरारी के वंश में से यशायाह को, और उसके पुत्रों और भाइयों को, अर्थात् बीस जनों को; १९ और नतीन लोगों में से जिन्हें दाऊद और हाकिमों ने लेवियों की सेवा करने को ठहराया था दो सौ बीस नदियों को ले आए। इन सभी के नाम लिखे हुए थे। २० तब मैंने वहाँ अर्थात् अहवा नदी के टट पर उपवास का प्रचार इस आशय से किया, कि हम परमेश्वर के सामने दीन हों; और उससे अपने और अपने बाल-बच्चों

और अपनी समस्त सम्पत्ति के लिये सरल यात्रा माँगे। २८ क्योंकि मैं मार्ग के शत्रुओं से बचने के लिये सिपाहियों का दल और सवार राजा से माँगने से लजाता था, क्योंकि हम राजा से यह कह चुके थे, “हमारा परमेश्वर अपने सब खोजियों पर, भलाइ के लिये कृपादृष्टि रखता है और जो उसे त्याग देते हैं, उसका बल और कोप उके विस्फु है।” २९ इसी विषय पर हमने उपवास करके अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उसने हमारी सुनी। ३० तब मैंने मुख्य याजकों में से बारह पुस्तों को, अर्थात् शेरेब्याह, हशब्याह और इनके दस भाइयों को अलग करके, जो चाँदी, सोना और पात्र, ३१ राजा और उसके मन्त्रियों और उसके हानिकारों और जितने इसाएली उपथित थे उन्होंने हमारे परमेश्वर के भवन के लिये भेट दिए थे, उन्हें तौलकर उनको दिया। ३२ मैंने उनके हाथ में साढे छः सौ किक्काकार चाँदी, सौ किक्काकार चाँदी के पात्र, ३३ सौ किक्काकार सोना, हजार दर्कमोन के साने के बीस कट्टोरे, और सोने सीखी अनमोल चम्पकनेवाले पीलत के दो पात्र तौलकर दे दिये। ३४ मैंने उनसे कहा, “तुम तो यहोवा के लिये पवित्र हो, और ये पात्र भी पवित्र हैं, और यह चाँदी और सोना भेट का है, जो तुम्हारे पितरों के परमेश्वर यहोवा के लिये प्रसन्नता से दी गई।” ३५ इसलिए जाता रहा, और जब तक तुम इन्हें यस्सलेम में प्रधान याजकों और लेवियों और इसाएल के पितरों के घरानों के प्रधानों के सामने यहोवा के भवन की कोठरियों में तौलकर न दो, तब तक इनकी रक्षा करते रहो।” ३६ तब याजकों और लेवियों ने चाँदी, सोने और पात्रों को तौलकर ले लिया कि उन्हें यस्सलेम को हमारे परमेश्वर के भवन में पहुँचाए। ३७ पहले महीने के बारहवें दिन को हमने अहवा नदी से कूच करके यस्सलेम का मार्ग लिया, और हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि हम पर रही; और उसने हमको शत्रुओं और मार्ग पर घाट लगाने वालों के हाथ से बचाया। ३८ अन्त में हम यस्सलेम पहुँचे और वहाँ तीन दिन रहे। ३९ फिर चौथे दिन वह चाँदी-सोना और पात्र हमारे परमेश्वर के भवन में ऊरियाह के पुत्र मेरेमोत याजक के हाथ में तौलकर दिए गए। उनके संग पीनहास का पुत्र एलिआजर था, और उनके साथ येशुअ का पुत्र योजाबाद लेवीय और बिन्नूइ का पुत्र नोआधाह लेवीय थे। ४० वे सब स्वस्ताएँ गिनी और तौली गईं, और उनका तौल उर्फी समय लिखा गया। ४१ जो बैंधुआई से आए थे, उन्होंने इसाएल के परमेश्वर के लिये होमबलि चढ़ाए, अर्थात् समस्त इसाएल के निमित्त बारह बछड़े, छियानबे भेड़े और सतहतर मेम्मे और पापबलि के लिये बारह बकरे; यह सब यहोवा के लिये होमबलि था। ४२ तब उन्होंने राजा की आज्ञाएँ महानद के इस पार के अधिकारियों और अधिकारियों को दी; और उन्होंने इसाएली लोगों और परमेश्वर के भवन के काम में सहायता की।

५ जब ये काम हो चुके, तब हाकिम मेरे पास आकर कहने लगे, “न तो इसाएली लोग, न याजक, न लेवीय इस ओर के देशों के लोगों से अलग हैं; वरन् उनके से, अर्थात् कनानियों, हितियों, परिजियों, यवसियों, अम्मोनियों, मोआबियों, मिसियों और एमोरियों के से यिनौने काम करते हैं।” ६ क्योंकि उन्होंने उनकी बेटियों में से अपने और अपने बेटों के लिये खिण्यां कर ली हैं; और पवित्र वंश इस ओर के देशों के लोगों में मिल गया है। वरन् हाकिम और सरदार इस विवासधात में मुख्य हुए हैं।” ७ यह बात सुनकर मैंने अपने बच्चे और बागे को फाड़ा, और अपने सिर और दाढ़ी के बाल नोचे, और विस्मित होकर बैठा रहा। ८ तब जितने लोग इसाएल के परमेश्वर के वचन सुनकर बैंधुआई से आए हुए लोगों के विवासधात के कारण थरथरता थी, सब मेरे पास इकड़े हुए, और मैं साँझ की भेट के समय तक विस्मित होकर बैठा रहा। ९ परन्तु साँझ की भेट के समय मैं बच्चे और बागा फाड़े हुए उपवास की

दशा में उठा, फिर घुटनों के बल झुका, और अपने हाथ अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फैलाकर कहा: १० “हे मेरे परमेश्वर! मुझे तेरी ओर अपना मूँह उठाते लज्जा आती है, और है मेरे परमेश्वर! मेरा मूँह काला है; क्योंकि हम लोगों के अर्धम के काम हमारे सिर पर बढ़ गए हैं, और हमारा दोष बढ़ते-बढ़ते आकाश तक पहुँचा है।” ११ अपने पुराखाओं के दिनों से लेकर आज के दिन तक हम बड़े दोषी हैं, और अपने अर्धम के कामों के कारण हम अपने राजाओं और याजकों समेत देश-देश के राजाओं के हाथ में किए गए कि तलबार, दासत्व, लटे जाने, और मूँह काला हो जाने की विपत्तियों में पड़ें, जैसे कि आज हमारी दिशा है। १२ अब थोड़े दिन से हमारे परमेश्वर यहोवा का अनुग्रह हम पर हुआ है, कि हम में से कोई-कोई बच निकले, और हमको उसके पवित्रस्थान में एक खँटी मिले, और हमारा परमेश्वर हमारी आँखों में ज्योति अनेंद्रि, और दासत्व में हमको कुछ विश्वास्ति मिले। १३ हम दास तो हैं हीं, परन्तु हमारे दासत्व में हमारे परमेश्वर ने हमको नहीं छोड़ दिया, वरन् फारस के राजाओं को हम पर ऐसे कृपालु किया, कि हम नया जीवन पाकर अपने परमेश्वर के भवन को उठाने, और इसके खण्डहरों को सुधारने पाए, और हमें यहदा और यस्सलेम में आड़ मिली। १४ “अब हे हमारे परमेश्वर, इसके बाद हम क्या कहें, यही कि हमने तेरी उन आज्ञाओं को तोड़ दिया है, १५ जो तूने यह कहकर अपने दास नवियों के द्वारा दी, ‘जिस देश के अधिकारी होने को तुम जाने पर हो, वह तो देश-देश के लोगों की अशुद्धता के कारण और उनके धिनौने कामों के कारण अशुद्ध देश है, उन्होंने उसे एक सीमा से दूसरी सीमा तक अपनी अशुद्धता से भर दिया है।” १६ इसलिए अब तून तो अपनी बेटियाँ उनके बेटों को ब्याह देना और न उनकी बेटियों से अपने बेटों का ब्याह करना, और न कभी उनका कुशल क्षेत्र चाहना, इसलिए कि तुम बलवान बनो और उस देश के अच्छे-अच्छे पदर्थ खाने पाओ, और उसे ऐसा छोड़ जाओ, कि वह तुम्हारे वंश के अधिकार में संदेव बना रहे।” १७ और उस सब के बाद जो हमारे बुरे कामों और बड़े दोष के कारण हम पर बीता है, जबकि हे हमारे परमेश्वर तुमे हमारे अर्धम के बराबर हमें दण्ड नहीं दिया, वरन् हम में से कितनों को बचा रखा है, १८ तो क्या हम तेरी आज्ञाओं को फिर से उल्लंघन करके इन धिनौने काम करनेवाले लोगों से समाधियाना का सम्बंध करें? क्या तू हम पर यहाँ तक कीप न करेगा जिससे हम मिट जाएँ और न तो कोई बचे और न कोई रह जाए? १९ हे इसाएल के परमेश्वर यहोवा! तू धर्मी है, हम बचकर मुक्त हुए हैं जैसे कि आज वर्तमान है। देख, हम तेरे सामने दोषी हैं, इस कारण कोई तेरे सामने खड़ा नहीं रह सकता।”

१० जब एज्जा परमेश्वर के भवन के सामने पड़ा, रोता हुआ प्रार्थना और पाप का अंगीकार कर रहा था, तब इसाएल में से पुस्तों, खिण्यों और बच्चों की एक बहु बड़ी मण्डली उसके पास इकट्ठी हुई; और लोग बिलख-बिलख कर रो रहे थे। ११ तब यहीएल का पुत्र शकन्याह जो एलाम के वंश में का था, एज्जा से कहने लगा, “हम लोगों ने इस देश के लोगों में से अन्यजाति खिण्यों व्याह कर अपने परमेश्वर का विवासधात तो किया है, परन्तु इस दशा में भी इसाएल के लिये आशा है।” १२ अब हम अपने परमेश्वर से यह वाचा बाँधे, कि हम अपने प्रभु की सम्पत्ति और अपने बेटों की सम्पत्ति के अनुसार ऐसी सब खिण्यों को और उनके बच्चों को दूर करें; और व्यवस्था के अनुसार काम किया जाए। १३ तू उठ, क्योंकि यह काम तेरा ही है, और हम तेरे साथ है; इसलिए हियाव बौंधकर इस काम में लग जा।” १४ तब एज्जा उठा, और याजकों, लेवियों और सब इसाएलियों के प्रधानों को यह शपथ खिलाई कि हम इसी वचन के अनुसार करेंगे; और उन्होंने वैसी ही शपथ खाई। १५ तब एज्जा परमेश्वर के भवन के सामने से उठा,

और एल्याशीब के पुत्र यहोहानान की कोठरी में गया, और वहाँ पहुँचकर न तो रोटी खाई, न पानी पिया, क्योंकि वह बैंधुआई में से निकल आए हुओं के विश्वासघात के कारण शोक करता रहा। ७ तब उन्होंने यहदा और यस्शलेम में रहनेवाले बैंधुआई में से आए हुए सब लोगों में यह प्रचार कराया, कि तुम यस्शलेम में इकट्ठे हो; ८ और जो कोई हाकिमों और पुरनियों की सम्मति न मानेगा और तीन दिन के भीतर न आए तो उसकी समस्त धन-सप्तिनि नह की जाएगी और वह आप बैंधुआई से आए हुओं की सभा से अलग किया जाएगा। ९ तब यहदा और बिन्न्यामीन के सब मनुष्य तीन दिन के भीतर यस्शलेम में इकट्ठे हुए; यह नौवें महीने के बीसवें दिन में हुआ; और सब लोग परमेश्वर के भवन के चौक में उस विषय के कारण और भारी वर्षा के मारे काँते हुए बैठे रहे। १० तब एजा याजक खड़ा होकर, उनसे कहने लगा, “तुम लोगों ने विश्वासघात करके अन्यजाति छियाँ ब्याह ली, और इससे इस्माएल का दोष बढ़ गया है। ११ सो अब अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के सामने अपना पाप मान लो, और उसकी इच्छा पूरी करो, और इस देश के लोगों से और अन्यजाति छियों से अलग हो जाओ।” १२ तब पूरी मण्डली के लोगों ने ऊँचे शब्द से कहा, “जैसा तूने कहा है, वैसा ही हमें करना उचित है। १३ परन्तु लोग बहुत हैं, और वर्षा का समय है, और हम बाहर खड़े नहीं रह सकते, और यह दो एक दिन का काम नहीं है, क्योंकि हमने इस बात में बड़ा अपराध किया है। १४ समस्त मण्डली की ओर से हमारे हाकिम नियुक्त किए जाएँ; और जब तक हमारे परमेश्वर का भड़का हुआ कोप हम से दूर न हो, और यह काम पूरा न हो जाए। तब तक हमारे नारों के जितने निवासियों ने अन्यजाति छियाँ ब्याह ली हों, वे नियत समयों पर आया करें, और उनके संग एक नगर के पुरनिये और न्यायी आए।” १५ इसके विशुद्ध केवल असाहेल के पुत्र योनातान और तिकवा के पुत्र यहजयाह खड़े हुए, और मश्ल्लाम और शब्बतै लेवियों ने उनकी सहायता की। १६ परन्तु बैंधुआई से आए हुए लोगों ने वैसा ही किया। तब एजा याजक और पितरों के घराने के निकतने मुख्य पुष्प अपने-अपने पितरों के अनुसार अपने सब नाम लिखाकर अलग किए गए, और दसवें महीने के पहले दिन को इस बात की तहकीकात के लिये बैठे। १७ और पहले महीने के पहले दिन तक उन्होंने उन सब पुस्तों की जाँच पूरी कर ली, जिन्होंने अन्यजाति छियों को ब्याह लिया था। १८ याजकों की सन्तान में से, ये जन पाए गए जिन्होंने अन्यजाति छियों को ब्याह लिया था: येशुअ के पुत्र, योसादाक के पुत्र, और उसके भाई मासेयाह, एलीएजेर, यारीब और गदल्याह। १९ इन्होंने हाथ मारकर चबन दिया, कि हम अपनी छियों को निकाल देंगे, और उन्होंने दोषी ठहरकर, अपने-अपने दोष के कारण एक-एक मेढ़ा बलि किया। २० इम्रेर की सन्तान में से हनानी और जबद्याह। २१ हारीम की सन्तान में से मासेयाह, एलियाह, शमायाह, यहीएल और उजियाह। २२ पश्हूर की सन्तान में से एल्योएनै, मासेयाह, इश्माएल, नतनेल, योजाबाद और एलासा। २३ फिर लेवियों में से योजाबाद, शिमी, केलायाह जो कलीता कहलाता है, पतह्याह, यहदा और एलीजेर। २४ गवैयों में से एल्याशीब; और द्वारपालों में से शल्लूम, तेलेम और ऊरी। २५ इस्माएल में से परोश की सन्तान में रम्याह, यिजियाह, मल्कियाह, मियामीन, एलीआजर, मल्कियाह और बनायाह। २६ एलाम की सन्तान में से मतन्याह, जकर्याह, यहीएल अब्दी, यरेमोत और एलियाह। २७ और जन्तु की सन्तान में से एल्योएनै, एल्याशीब, मतन्याह, यरेमोत, जाबाद और अजीजा। २८ बेबै की सन्तान में से यहोहानान, हनन्याह, जब्बै और अतलै। २९ बानी की सन्तान में से मश्ल्लाम, मल्लूक, अदायाह, याशबू, शाल और यरामोत। ३० पहत्मोआब की सन्तान में से अदना, कलात, बनायाह, मासेयाह, मतन्याह, बसलेल, बिन्नूई और मनश्शे। ३१ हारीम की सन्तान में से एलीएजेर, यिशियाह, मल्कियाह, शमायाह, शिमोन; ३२ बिन्यामीन, मल्लूक और शेमर्याह। ३३ हाशम की सन्तान में से; मतनै, मतता, जाबाद, एनीपिलेत, यरेमै, मनश्शे और शिमी। ३४ और बानी की सन्तान में से; मादै, अप्राम, ऊएल; ३५ बनायाह, बेदयाह, कलही; ३६ वन्याह, मेरमोत, एल्याशीब; ३७ मतन्याह, मत्तै, यास; ३८ बानी, बिन्नूई, शिमी; ३९ शेलेम्याह, नातान, अदायाह; ४० मकनदबै, शाशै, शारै; ४१ अजरेल, शेलेम्याह, शेमर्याह; ४२ शल्लूम, अमर्याह और यसुफ। ४३ नबो की सन्तान में से; यीएल, मतित्याह, जाबाद, जबीना, यरई, योएल और बनायाह। ४४ इन सभी ने अन्यजाति छियाँ ब्याह ली थीं, और बहुतों की छियों से लड़के भी उत्पन्न हुए थे।

नहेमायाह

१ हक्ल्याह के पुत्र नहेम्याह के बचन। वीसिंवे वर्ष के किसलेव नामक महीने में, जब मैं शूशन नामक राजगढ़ में रहता था, तब हनानी नामक मेरा एक भाई और यहदा से आए हुए कई एक पुष्प आए; तब मैंने उनसे उन बचे हुए यहदियों के विषय जो बैंधुआई से छूट गए थे, और यस्शलेम के विषय में पृछा। उन्होंने मुझसे कहा, “जो बचे हुए लोग बैंधुआई से छूटकर उस प्रान्त में रहते हैं, वे डडी दुर्दशा में पड़े हैं, और उनकी निन्दा होती है; क्योंकि यस्शलेम की शहरपनाह टूटी ही है, और उसके फाटक जले हुए हैं।” २ ये बाते सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा और कुछ दिनों तक विलाप करता; और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास करता और यह कहकर प्रार्थना करता रहा। ३ “हे स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, हे महान और भयोग्य परमेश्वर! तू जो अपने प्रेम रखनेवाले और आज्ञा माननेवाले के विषय अपनी वाचा पालता और उन पर कल्पा करता है, तू तान लगाए, और अँखें खोते रह, कि जो प्रार्थना मैं तेरा दास इस समय तैरे दास इसाएलियों के लिये दिन-रात करता रहता हूँ, उसे तू सुन ले। मैं इसाएलियों के पापों को जो हम लोगों ने तेरे विस्तु किए हैं, मान लेता हूँ। मैं और मेरे पिता के घराने दोनों ने पाप किया है। ४ हमने तेरे सामने बहुत बुराई की है, और जो आज्ञाएँ, विधियाँ और नियम तने अपने दास मूसा को दिए थे, उनको हमने नहीं माना। ५ उस बचन की सूधि से, जो तने अपने दास मूसा से कहा था, ‘यदि तुम लोग विश्वासघात करो, तो मैं तुम को देश-देश के लोगों में तिरं-बितर करूँगा।’ ६ परन्तु यदि तुम मेरी ओर फिरो, और मेरी आज्ञाएँ मानो, और उन पर चलो, तो चाहे तुम में से निकाले हुए लोग आकाश की छोर में भी हों, तो भी मैं उनको वहाँ से इकट्ठा करके उस स्थान में पहुँचाऊँगा, जिसे मैंने अपने नाम के निवास के लिये चुन लिया है।” ७ अब वे तेरे दास और तेरी प्रजा के लोग हैं जिनको तने अपनी डडी सामर्थ्य और बलवन्त हाथ के द्वारा छुड़ा लिया है। ८ हे प्रभु विनिर्ती यह है, कि तू अपने दास की प्रार्थना पर, और अपने उन दासों की प्रार्थना पर, जो तेरे नाम का भय मानना चाहते हैं, कान लगा, और आज अपने दास का काम सफल कर, और उस पुष्प को उस पर दयालु कर।” मैं तो राजा का पियाऊ था।

२ अर्थक्षत्र राजा के बीसिंवे वर्ष के नीसान नामक महीने में, जब उसके सामने दाखमधु था, तब मैंने दाखमधु उठाकर राजा को दिया। इससे पहले मैं उसके सामने कमी उदास न हुआ था। ३ तब राजा ने मुझसे पृछा, “तू तो रोनी नहीं है, किर तेरा मुँह क्यों उत्तरा है? यह तो मन ही की उदासी होगी।” तब मैं अत्यन्त डर गया। ४ मैंने राजा से कहा, “राजा सदा जीवित रहे! जब वह नगर जिसमें मैंने पुराखाओं की कब्रें हैं, उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक जले हुए हैं, तो मेरा मुँह क्यों न उत्तरे?” ५ राजा ने मुझसे पृछा, “फिर तू क्या माँगता है?” तब मैंने स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करके, राजा से कहा; ६ “यदि राजा को भाए, और तू अपने दास से प्रसन्न हो, तो मुझे यहदा और मेरे पुराखाओं की कब्रों के नगर को भेज, ताकि मैं उसे बनाऊँ।” ७ तब राजा ने जिसके पास रानी भी बैठी थी, मुझसे पृछा, “तू कितने दिन तक यात्रा में रहेगा? और कब लौटेगा?” अतः राजा मुझे भेजने को प्रसन्न हुआ; और मैंने उसके लिये एक समय नियुक्त किया। ८ फिर मैंने राजा से कहा, “यदि राजा को भाए, तो महानद के पार के अधिपतियों के लिये इस आशय की चिठ्ठियाँ मुझे दी जाएँ कि जब तक मैं यहदा को न पहुँचूँ, तब तक मैं यहदा अपने-अपने देश में से होकर जाने दैं। ९ और सरकारी जंगल के रखनेवाले आसाप के लिये भी इस आशय की चिठ्ठी मुझे दी जाए ताकि वह मुझे भवन से लगे हुए राजगढ़ की

कड़ियों के लिये, और शहरपनाह के, और उस घर के लिये, जिसमें मैं जाकर रहूँगा, लकड़ी दे।” मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर थी, इसलिए राजा ने यह विनिर्ती स्वीकार कर ली। १० तब मैंने महानद के पार के अधिपतियों के पास जाकर उन्हें राजा की चिठ्ठियाँ दी। राजा ने मेरे संग सेनापति और सवार भी भेजे थे। ११ यह सुनकर कि एक मनुष्य इसाएलियों के कल्याण का उपाय करने को आया है, होरोनी सम्बल्लत और तोबियाह नामक कर्मचारी जो अम्मोनी था, उन दोनों को बहुत बुरा लगा। १२ जब मैं यस्शलेम पहुँच गया, तब वहाँ तीन दिन रहा। १३ तब मैं थोड़े पुस्तों को लेकर रात को उठा; मैंने किसी को नहीं बताया कि मेरे परमेश्वर ने यस्शलेम के हित के लिये मैंने मन में क्या उपजाया था। अपनी सवारी के पश्च को छोड़ कोई पश्च मेरे संग न था। १४ मैं रात को ताराई के फाटक में होकर निकला और अजगर के सोते की ओर, और कुड़ा फाटक के पास गया, और यस्शलेम की टूटी पड़ी हुई शहरपनाह और जले फाटकों को देखा। १५ तब मैं आगे बढ़कर सोते के फाटक और राजा के कुण्ड के पास गया; परन्तु मेरी सवारी के पश्च के लिये आगे जाने को स्थान न था। १६ तब मैं रात ही रात नाले से होकर शहरपनाह को देखता हुआ चढ़ गया; फिर धूकार ताराई के फाटक से भीतर आया, और इस प्रकार लौट आया। १७ और हाकिम न जानते थे कि मैं कहाँ गया और क्या करता था; वरन् मैंने तब तक न तो यहदियों को कुछ बताया था और न याजकों और न इसों और न हाकिमों और न दूसरे काम करनेवालों को। १८ तब मैंने उनसे कहा, “तुम तो आप देखते हो कि हम कैसी दुर्दशा में हैं, कि यस्शलेम उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक जले हुए हैं। तो आओ, हम यस्शलेम की शहरपनाह को बनाएँ, कि भविष्य में हमारी मानधाराई न रहे।” १९ फिर मैंने उनको बताया, कि मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर कैसी हुई और राजा ने मुझसे क्या-क्या बातें कही थीं। २० तब उन्होंने कहा, “आओ हम कमर बाँधकर बनाने लगें।” और उन्होंने इस भले काम को करने के लिये हियाव बाँध लिया। २१ यह सुनकर होरोनी सम्बल्लत और तोबियाह नामक कर्मचारी जो अम्मोनी था, और गेशेम नामक एक अरबी, हमें उपहास में उड़ाने लगे; और हमें तुच्छ जानकर कहने लगे, “यह तुम क्या काम करते हो। क्या तुम राजा के विस्तु बलवा करोगे?” २२ तब मैंने उनको उत्तर देकर उनसे कहा, “स्वर्ग का परमेश्वर हमारा काम सफल करेगा, इसलिए हम उसके दास कमर बाँधकर बनाएँगे; परन्तु यस्शलेम में तुम्हारा न तो कोई भाग, न हक और न स्मारक है।”

३ तब एल्यूशीब महायाजक ने अपने भाई याजकों समेत कमर बाँधकर भेड़फाटक को बनाया। उन्होंने उसकी प्रतिष्ठा की, और उसके पल्लों को भी लगाया; और हमेंआ नामक गुम्मट तक वरन् हननेल के गुम्मट के पास तक उन्होंने शहरपनाह की प्रतिष्ठा की। ४ उससे आगे यरीहो के मनुष्यों ने बनाया, और इनसे आगे इस्त्री के पुत्र जक्कर ने बनाया। ५ फिर मछली फाटक को हस्सना के बेटों ने बनाया; उन्होंने उसकी कड़ियाँ लगाई, और उसके पल्ले, ताले और बेंडे लगाए। ६ उनसे आगे मेरेमोत ने जो हक्कोंस का पोता और ऊरियाह का पुत्र था, मरम्मत की। और इनसे आगे मशुल्लाम ने जो मशेजेल का पोता, और बैरेक्याह का पुत्र था, मरम्मत की। इससे आगे बाना के पुत्र सादोक ने मरम्मत की। ७ इनसे आगे तकोद्यों ने मरम्मत की; परन्तु उनके रहिंसों ने अपने प्रभु की सेवा का जूआ अपनी गर्दन पर न लिया। ८ फिर पुराने फाटक की मरम्मत पासेह के पुत्र योयादा और बसोदयाह के पुत्र मशुल्लाम ने की; उन्होंने उसकी कड़ियाँ लगाई, और उसके पल्ले, ताले और बेंडे लगाए। ९ और उनसे आगे गिबोनी मलत्याह और मेरोनोती यादोने ने और गिबोन और मिस्या के मनुष्यों ने महानद के पार के अधिपति के सिंहासन की ओर से मरम्मत की। १० उनसे आगे हर्ह्याह के पुत्र उज्जीएल ने और अन्य

सुनारों ने मरम्मत की। इससे आगे हनन्याह ने, जो गन्धियों के समाज का था, मरम्मत की; और उन्होंने चौड़ी शहरपनाह तक यस्शलेम को दूढ़ किया। ९ उनसे आगे हर के पुत्र रपायाह ने, जो यस्शलेम के अधे जिले का हाकिम था, मरम्मत की। १० और उनसे आगे हस्प के पुत्र यदयाह ने अपने ही घर के सामने मरम्मत की; और इससे आगे हशबन्याह के पुत्र हत्श ने मरम्मत की।

११ हारीम के पुत्र मल्कियाह और पहल्वोआब के पुत्र हशश्ब ने एक और भाग की, और भृती के गुम्मट की मरम्मत की। १२ इससे आगे यस्शलेम के अधे जिले के हाकिम हल्लोहेश के पुत्र शल्लूम ने अपनी बेटियों समेत मरम्मत की। १३ तराई के फाटक की मरम्मत हानून और जानोह के निवासियों ने की; उन्होंने उसको बनाया, और उसके तारे, बेंडे और पल्ले लगाए, और हजार हाथ की शहरपनाह को भी अर्थात् कँडा फाटक तक बनाया। १४ कँडा फाटक की मरम्मत रेकाब के पुत्र मल्कियाह ने की, जो बेथक्क्रेम के जिले का हाकिम था; उसी ने उसको बनाया, और उसके ताले, बेंडे और पल्ले लगाए। १५ सोता फाटक की मरम्मत कोल्होजे के पुत्र शल्लूम ने की, जो मिस्पा के जिले का हाकिम था; उसी ने उसको बनाया और पाटा, और उसके तारे, बेंडे और पल्ले लगाए; और उसी ने राजा की बारी के पास के शेलह नामक कुण्ड की शहरपनाह को भी दाऊदपुर से उत्तरनेवाली सीढ़ी तक बनाया। १६ उसके बाद अजबूक के पुत्र नहेम्याह ने जो बेतसूर के अधे जिले का हाकिम था, दाऊद के कविस्तान के सामने तक और बनाए हुए जलरुण्ड तक, वरन् वीरों के घर तक भी मरम्मत की। १७ इसके बाद बारी के पुत्र रहम ने किनने लेवियों समेत मरम्मत की। इससे आगे कीला के अधे जिले के हाकिम हशब्याह ने अपने जिले की ओर से मरम्मत की। १८ उसके बाद उनके भाइयों समेत कीला के अधे जिले के हाकिम हेनादाद के पुत्र बब्बे ने मरम्मत की। १९ उससे आगे एक और भाग की मरम्मत जो शहरपनाह के मोड़ के पास शब्दों के घर की चढ़ाई के सामने है, येशुअ के पुत्र एजर ने की, जो मिस्पा का हाकिम था। २० फिर एक और भाग की अर्थात् उसी मोड़ से लेकर एल्याशीब महायाजक के घर के द्वार तक की मरम्मत जब्बे के पुत्र बास्क ने तन मन से की। २१ इसके बाद एक और भाग की अर्थात् एल्याशीब के घर के द्वार से लेकर उसी घर के सिरे तक की मरम्मत, मोमोत ने की, जो हक्कोस का पोता और ऊरियाह का पुत्र था। २२ उसके बाद उन याजकों ने मरम्मत की जो तराई के मनुष्य थे। २३ उनके बाद बिन्यामीन और हशश्ब ने अपने घर के सामने मरम्मत की; और इनके पीछे अजर्याह ने जो मासेयाह का पुत्र और अनन्याह का पोता था अपने घर के पास मरम्मत की। २४ तब एक और भाग की, अर्थात् अजर्याह के घर से लेकर शहरपनाह के मोड़ तक वरन् उसके कोने तक की मरम्मत हेनादाद के पुत्र बिन्नै ने की। २५ फिर उसी मोड़ के सामने जो ऊँचा गुम्मट राजभवन से बाहर निकला हुआ बन्दीगृह के ऊँगांग के पास है, उसके सामने ऊँजै के पुत्र पालाल ने मरम्मत की। इसके बाद परोश के पुत्र पदायाह ने मरम्मत की। २६ नतीन लोग तो ओपेल में पूरब की ओर जलफाटक के सामने तक और बाहर निकले हुए गुम्मट तक रहते थे। २७ पदायाह के बाद तकोइयों ने एक और भाग की मरम्मत की, जो बाहर निकले हुए बड़े गुम्मट के सामने और ओपेल की शहरपनाह तक है। २८ फिर घोड़ाफाटक के ऊपर याजकों ने अपने-अपने घर के सामने मरम्मत की। २९ इनके बाद इमेर के पुत्र सादोक ने अपने घर के सामने मरम्मत की; और तब पर्वी फाटक के खखवाले शकन्याह के पुत्र शमायाह ने मरम्मत की। ३० इसके बाद शेलेम्याह के पुत्र हनन्याह और सालाप के छठवें पुत्र हानून ने एक और भाग की मरम्मत की। ३१ उसके बाद मल्कियाह ने अपनी कोठरी के सामने मरम्मत की। ३२ उसके बाद मल्कियाह ने जो सुनार था नतीनों और व्यापारियों के स्थान तक ठहराए हुए स्थान के

फाटक के सामने और कोने के कोठे तक मरम्मत की। ३३ और कोनेवाले कोठे से लेकर भेड़फाटक तक सुनारों और व्यापारियों ने मरम्मत की।

४ जब सम्बल्लत ने सुना कि यहदी लोग शहरपनाह को बना रहे हैं, तब उसने बुरा माना, और बहुत रिसियाकर यहदियों को उपहास में उड़ाने लगा। २ वह अपने भाइयों के और सामरिया की सेना के सामने यह कहने लगा, “वे निर्बल यहदी क्या करना चाहते हैं? क्या वे वह काम अपने बल से करेंगे? क्या वे अपना स्थान ढूढ़ करेंगे? क्या वे ज्ञान करेंगे? क्या वे आज ही सब को निपटा डालेंगे? क्या वे मिट्टी के ढेरों में के जले हुए पत्थरों को फिर नये सिरे से बनाएंगे?” ५ उसके पास तो अम्मोनी तोबियाह था, और वह कहने लगा, “जो कुछ वे बना रहे हैं, यदि कोई गीदड़ भी उस पर चढ़े, तो वह उनकी बनाई हुई पत्थर की शहरपनाह को तोड़ देगा।” ६ हे हमारे परमेश्वर सुन ले, कि हमारा अपमान हो रहा है, और उनका किया हुआ अपमान उन्हीं के सिर पर लौटा दे, और उन्हें बैंधुआई के देश में लूटवा दे। ७ और उनका अर्थात् तन ढाँप, और न उनका पाप तेरे सम्मुख से मिटाया जाए; क्योंकि उन्होंने तझे शहरपनाह बनानेवालों के सामने क्रोध दिलाया है। ८ हम लोगों ने शहरपनाह को बनाया; और सारी शहरपनाह आधी ऊँचाई तक जुड़ गई।

क्योंकि लोगों का मन उस काम में नित लगा रहा। ९ जब सम्बल्लत और तोबियाह और अरबियों, अम्मोनियों और अशदोदियों ने सुना, कि यस्शलेम की शहरपनाह की मरम्मत होती जाती है, और उसमें के नके बन्द होने लगे हैं, तब उन्होंने बहुत ही बुरा माना; १० और सभी ने एक मन से गोष्ठी की, कि जाकर यस्शलेम से लड़े, और उसमें गडबड़ी डालें। ११ परन्तु हम लोगों ने अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उनके डृ के मारे उनके विस्तु दिन-रात के हफ्ऱस ठहरा दिए। १२ परन्तु यहदी कहने लगे, “दोनेवालों का बल घट गया, और मिट्टी बहुत पड़ी है, इसलिए शहरपनाह हम से नहीं बन सकती।” १३ और हमारे शत्रु कहने लगे, “जब तक हम उनके बीच में न पहुँचें, और उन्हें घात करके वह काम बन्द न करें, तब तक उनको न कुछ मालम होगा, और न कुछ दिखाई पड़ेगा।” १४ फिर जो यहदी उनके आस-पास रहते थे, उन्होंने सब स्थानों से दस बार आ आकर, हम लोगों से कहा, “तुम को हमारे पास लौट आना चाहिये।” १५ इस कारण मैने लोगों को तलवारें, बर्छियाँ और धनुष देकर शहरपनाह के पीछे सबसे नीचे के खुले स्थानों में घराने-घराने के अनुसार बैठा दिया। १६ तब मैं देखकर उठा, और रईसों और हाकिमों और सब लोगों से कहा, “उनमे मत डारो, प्रभु जो महान और भययोग्य है, उसी को स्मरण करके, अपने भाइयों, बेटों, बेटियों, छियों और घरों के लिये युद्ध करना।” १७ जब हमारे शत्रुओं ने सुना, कि यह बात हमको मालम हो गई है और परमेश्वर ने उनकी युक्ति निष्फल की है, तब हम सब के सब शहरपनाह के पास अपने-अपने काम पर लौट गए। १८ और उस दिन से मैं आधे सेवक तो उस काम में लगे रहे और अधे बर्छियों, तलवारों, धनुषों और झिलमों को धारण किए रहते थे; और यहदा के सारे घराने के पीछे हाकिम रहा करते थे। १९ शहरपनाह को बनानेवाले और बोझ के ढोनेवाले दोनों भार उठाते थे, अर्थात् एक हाथ से काम करते थे और दूसरे हाथ से हथियार पकड़े रहते थे। २० राजमिही अपनी-अपनी जाँच पर तलवार लटकाए हुए बनाते थे। और नरसिंग का झूँकनेवाला मैं पास रहता था। २१ इसलिए मैंने रईसों, हाकिमों और सब लोगों से कहा, “काम तो बड़ा और फैला हुआ है, और हम लोग शहरपनाह पर अलग-अलग एक दूसरे से दूर रहते हैं। २२ इसलिए जहाँ से नरसिंग तुम्हें सुनाई दे, उठर ही हमारे पास इकट्ठे हो जाना। हमारा परमेश्वर हमारी ओर से लड़ेगा।” २३ अतः हम काम में लगे रहे, और उनमें आधे, पौ फटने से तारों के

घाट के सामने और कोने के कोठे तक मरम्मत की। २४ और कोनेवाले कोठे से लेकर भेड़फाटक तक सुनारों और व्यापारियों ने मरम्मत की।

२५ जब उन्होंने बुरा माना, और बहुत रिसियाकर यहदियों को उपहास में उड़ाने लगा, “वे निर्बल यहदी क्या करना चाहते हैं? क्या वे वह काम अपने बल से करेंगे? क्या वे अपना स्थान ढूढ़ करेंगे? क्या वे ज्ञान करेंगे? क्या वे आज ही सब को निपटा डालेंगे? क्या वे मिट्टी के ढेरों में के जले हुए पत्थरों को फिर नये सिरे से बनाएंगे?” २६ उसके पास तो अम्मोनी तोबियाह था, और वह कहने लगा, “जो कुछ वे बना रहे हैं, यदि कोई गीदड़ भी उस पर चढ़े, तो वह उनकी बनाई हुई पत्थर की शहरपनाह को तोड़ देगा।” २७ हे हमारे परमेश्वर सुन ले, कि हमारा अपमान हो रहा है, और उनका किया हुआ अपमान उन्हीं के सिर पर लौटा दे, और उन्हें बैंधुआई के देश में लूटवा दे। २८ और उनका अर्थात् तन ढाँप, और न उनका पाप तेरे सम्मुख से मिटाया जाए; क्योंकि उन्होंने तझे शहरपनाह बनानेवालों के सामने क्रोध दिलाया है। २९ हम लोगों ने शहरपनाह को बनाया; और सारी शहरपनाह आधी ऊँचाई तक जुड़ गई।

क्योंकि लोगों का मन उस काम में नित लगा रहा। ३० जब सम्बल्लत और तोबियाह और अरबियों, अम्मोनियों और अशदोदियों ने सुना, कि यस्शलेम की शहरपनाह की मरम्मत होती जाती है, और उसमें के नके बन्द होने लगे हैं, तब उन्होंने बहुत ही बुरा माना; ३१ और सभी ने एक मन से गोष्ठी की, कि जाकर यस्शलेम से लड़े, और उसमें गडबड़ी डालें। ३२ परन्तु हम लोगों ने अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उनके डृ के मारे उनके उनके विस्तु दिन-रात के हफ्ऱस ठहरा दिए। ३३ परन्तु यहदी कहने लगे, “दोनेवालों का बल घट गया, और मिट्टी बहुत पड़ी है, इसलिए शहरपनाह हम से नहीं बन सकती।” ३४ और हमारे शत्रु कहने लगे, “जब तक हम उनके बीच में न पहुँचें, और उन्हें घात करके वह काम बन्द न करें, तब तक उनको न कुछ मालम होगा, और न कुछ दिखाई पड़ेगा।” ३५ फिर जो यहदी उनके आस-पास रहते थे, उन्होंने सब स्थानों से दस बार आ आकर, हम लोगों से कहा, “तुम को हमारे पास लौट आना चाहिये।” ३६ इस कारण मैने लोगों को तलवारें, बर्छियाँ और धनुष देकर शहरपनाह के पीछे सबसे नीचे के खुले स्थानों में घराने-घराने के अनुसार बैठा दिया। ३७ तब मैं देखकर उठा, और रईसों और हाकिमों और सब लोगों से कहा, “उनमे मत डारो, प्रभु जो महान और भययोग्य है, उसी को स्मरण करके, अपने भाइयों, बेटों, बेटियों, छियों और घरों के लिये युद्ध करना।” ३८ जब हमारे शत्रुओं ने सुना, कि यह बात हमको मालम हो गई है और परमेश्वर ने उनकी युक्ति निष्फल की है, तब हम सब के सब शहरपनाह के पास अपने-अपने काम पर लौट गए। ३९ और उस दिन से मैं आधे सेवक तो उस काम में लगे रहे और अधे बर्छियों, तलवारों, धनुषों और झिलमों को धारण किए रहते थे; और यहदा के सारे घराने के पीछे हाकिम रहा करते थे। ४० शहरपनाह को बनानेवाले और बोझ के ढोनेवाले दोनों भार उठाते थे, अर्थात् एक हाथ से काम करते थे और दूसरे हाथ से हथियार पकड़े रहते थे। ४१ राजमिही अपनी-अपनी जाँच पर तलवार लटकाए हुए बनाते थे। और नरसिंग का झूँकनेवाला मैं पास रहता था। ४२ इसलिए मैंने रईसों, हाकिमों और सब लोगों से कहा, “काम तो बड़ा और फैला हुआ है, और हम लोग शहरपनाह पर अलग-अलग एक दूसरे से दूर रहते हैं। ४३ इसलिए जहाँ से नरसिंग तुम्हें सुनाई दे, उठर ही हमारे पास इकट्ठे हो जाना। हमारा परमेश्वर हमारी ओर से लड़ेगा।” ४४ अतः हम काम में लगे रहे, और उनमें आधे, पौ फटने से तारों के

निकलने तक बर्छियाँ लिये रहते थे। ४५ फिर उसी समय मैंने लोगों से यह भी कहा, “एक-एक मनुष्य अपने दास समेत यस्शलेम के भीतर रात बिताया करे, कि वे रात को तो हमारी रखवाली करें, और दिन को काम में लगे रहें।” ४६ इस प्रकार न तो मैं अपने कपड़े उतारता था, और न मेरे भाई, न मेरे सेवक, न वे पहसु जो मेरे अनुचर थे, अपने कपड़े उतारते थे; सब कोई पानी के पास भी हाथियार लिये हुए जाते थे।

५ तब लोग और उनकी छियों की ओर से उनके भाई यहदियों के बिस्तु बड़ी

चिल्लाहट मची। ५१ कुछ तो कहते थे, “हम अपने बेटे-बेटियों समेत बहुत प्राणी हैं, इसलिए हमें अन्न मिलना चाहिये कि उसे खाकर जीवित रहें।” ५२ कुछ कहते थे, “हम अपने-अपने खेतों, दाख की बारियों और घरों को अकाल के कारण गिरवी रखते हैं, कि हमें अन्न मिले।” ५३ फिर कुछ यह कहते थे, “हमने राजा के कर के लिये अपने-अपने खेतों और दाख की बारियों पर स्पष्ट उधार लिया। ५४ परन्तु हमारा और हमारे भाइयों का शरीर और हमारे और उनके बच्चे एक ही समान हैं, तो भी हम अपने बेटे-बेटियों को दास बनाते हैं; बरन हमारी कोई-कोई बेटी दासी भी ही हो चकी है; और हमारा कुछ बस नहीं चलता, क्योंकि हमारे खेत और दाख की बारियों औरों के हाथ पड़ी है।” ५५ यह चिल्लाहट और ये बातें सुनकर मैं बहुत क्रोधित हुआ। ५६ तब अपने मन में सोच चिचार करके मैंने रईसों और हाकिमों को घुड़ककर कहा, “तुम अपने-अपने भाई से ब्याज लेते हो।” ५७ तब मैंने उनके बिस्तु एक बड़ी सभा की। ५८ और मैंने उनसे कहा, “हम लोगों ने तो अपनी शक्ति भर अपने यहदी भाइयों को जो अन्यजातियों के हाथ बिक गए थे, दाम देकर छुड़ाया है, फिर क्या तुम अपने भाइयों को बेचोगे? क्या वे हमारे हाथ बिकेंगे?” तब वे चुप रहे और कुछ न कह सके। ५९ फिर मैं कहता गया, “जो काम तुम करते हो वह अच्छा नहीं है; क्या तुम को इस कारण हमारे परमेश्वर का भय मानकर चलना न चाहिये कि हमारे शत्रु जो अन्यजाति हैं, वे हमारी नामधाराई न करें? ६० मैं भी और मेरे भाई और सेवक उनको सम्या और अनाज उधार देते हैं, परन्तु हम इसका ब्याज छोड़ दें।” ६१ आज ही उनके खेत, और दाख, और जैतून की बारियाँ, और घर फेर दो; और जो स्पष्टा, अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल तुम उनसे ले लेते हो, उसका सौंबां भाग फेर दो?” ६२ उन्होंने कहा, “हम उन्हें फेर देंगे, और उनसे कुछ न लेंगे; जैसा तू कहता है, वैसा ही हम करेंगे।” ६३ तब मैंने याजकों को बुलाकर उन लोगों को यह शापथ खिलाई, कि वे इसी वचन के अनुसार करेंगे। ६४ फिर मैंने अपने कपड़े की छोर झाड़कर कहा, “इसी रीति से जो कोई इस वचन को पूरा न करे, उसको परमेश्वर झाड़कर, उसका घर और कमाई उससे छुड़ाए, और इसी रीति से वह झाड़ा जाए, और कंगाल हो जाए।” तब सारी सभा ने कहा, “आपीनी!” और यहोवा की स्तुति की। और लोगों ने इस वचन के अनुसार काम किया। ६५ फिर जब से मैं यहदा देश में उनका अधिपति ठहराया गया, अर्थात् राजा अर्कश्वत्र के राज्य के बीसिंवें वर्ष से लेकर उसके बीसिंवें वर्ष तक, अर्थात् बारह वर्ष तक मैं और मेरे भाइयों ने अधिपतियों के हक्क का भोजन नहीं खाया। ६६ परन्तु पहले अधिपति जो मुझसे पहले थे, वे प्रजा पर भार डालते थे, और उनसे रोटी, और दाखमधु, और इसके साथ चालीस शेकेल चाँदी लेते थे, वस्त्र उनके सेवक भी प्रजा के ऊपर अधिकार जताते थे; परन्तु मैं ऐसा नहीं करता था, क्योंकि मैं यहोवा का भय मानता था। ६७ फिर मैं शहरपनाह के काम में लिपटा रहा, और हम लोगों ने कुछ भूमि मोल न ली; और मेरे सब सेवक काम करने के लिये वहाँ इकट्ठे रहते थे। ६८ फिर मेरी मेज पर खानेवाले एक सौ पचास यहदी और हाकिम और वे भी थे, जो चारों ओर की अन्यजातियों में से हमारे पास आए थे। ६९ जो प्रतिदिन के लिये तैयार

किया जाता था वह एक बैल, छ: अच्छी-अच्छी भेड़ें व बकरियाँ थीं, और मेरे लिये चिंडिये भी तैयार की जाती थीं; दस-दस दिन के बाद भाँति-भाँति का बहुत दाखमधु भी तैयार किया जाता था; परन्तु तो भी मैंने अधिपति के हक्क का भोज नहीं लिया, ७० क्योंकि काम का भार प्रजा पर भारी था। हे मेरे परमेश्वर! जो कुछ मैंने इस प्रजा के लिये किया है, उसे तू मेरे हित के लिये स्मरण रख।

६ जब सम्बल्लत, तो बियाह और अरबी गेशेम और हमारे अन्य शत्रुओं को

यह समाचार मिला, कि मैं शहरपनाह को बनवा चुका; और यद्यपि उस समय तक भी मैं फाटकों में पल्ले न लगा चुका था, तो भी शहरपनाह में कोई दरार न रह गई थी। ७१ तब सम्बल्लत और गेशेम ने मेरे पास यह कहला भेजा, “आ, हम आपों के मैटान के किसी गाँव में एक दूसरे से भेट करें।” परन्तु वे मेरी हानि करने की इच्छा करते थे। ७२ परन्तु मैंने उनके पास दूतों के द्वारा कहला भेजा, “मैं तो भारी काम में लगा हूँ, वहाँ नहीं जा सकता; मेरे इसे छोड़कर तुम्हारे पास जाने से वह काम क्यों बन्द रहेगे?” ७३ फिर उन्होंने चार बार मेरे पास वही बात कहला भेजी, और मैंने उनको वैसा ही उत्तर दिया। ७४ तब पाँचवीं बार सम्बल्लत ने अपने सेवक को खुली हुई चिंडी देकर मेरे पास भेजा, ७५ जिसमें यह लिखा था, “जाति-जाति के लोगों में यह कहा जाता है, और गेशेम भी यही बात कहता है, कि तुम्हारी और यहदियों की मनसा बलवा करने की है, और इस कारण तू उस शहरपनाह को बनवाता है; और तू इन बातों के अनुसार उनका राजा बनना चाहता है। ७६ और तू ने यस्शलेम में नवी ठहराए हैं, जो यह कहकर तौरे विषय प्रचार करें, कि यहदियों में एक राजा है। अब ऐसा ही समाचार राजा को दिया जाएगा। इसलिए अब आ, हम एक साथ सम्मति करें।” ७७ तब मैंने उसके पास कहला भेजा, “जैसा तू कहता है, वैसा तो कुछ भी नहीं हुआ, तू ये बातें अपने मन से गढ़ता है।” ७८ वे सब लोग यह सोचकर हमें डराना चाहते थे, कि “उनके हाथ ढीले पड़ जाए, और काम बन्द हो जाए।” परन्तु अब हे परमेश्वर तू मुझे हियाव दे। ७९ फिर मैं शमायाह के घर में गया, जो दलायाह का पुत्र और महेतबेल का पोता था, वह तो बन्द घर में था; उसने कहा, “आ, हम परमेश्वर के भवन अर्थात् मन्दिर के भीतर आपस में भेट करें, और मन्दिर के द्वार बन्द करें; क्योंकि वे लोग तुझे घात करने आएंगे, रात ही को वे तुझे घात करने आएंगे।” ८० परन्तु मैंने कहा, “क्या मुझ जैसा मनुष्य भागे? और मुझ जैसा कौन है जो अपना प्राण बचाने को मन्दिर में घुसे? मैं नहीं जाने का।” ८१ फिर मैंने जान लिया कि वह परमेश्वर का भेजा नहीं है परन्तु उसने हर बात परमेश्वर का वचन कहकर मेरी हानि के लिये कही, क्योंकि तो बियाह और सम्बल्लत ने उसे स्पष्ट दे रखा था। ८२ उन्होंने उसे इस कारण स्पष्ट दे रखा था कि मैं डर जाऊँ, और वैसा ही काम करके पापी ठहरँ, और उनको दोष लगाने का अवसर मिले और वे मेरी नामधाराई कर सकें। ८३ हे मेरे परमेश्वर! तो बियाह, सम्बल्लत, और नोअधाह नविया और अन्य जिन्हें नवी मुझे डराना चाहते थे, उन सब के ऐसे-ऐसे कामों की सुधि रख। ८४ एलूल महीने के पच्चीसवें दिन को अर्थात् बाबन दिन के भीतर शहरपनाह बन गई। ८५ जब हमारे सब शत्रुओं ने यह सुना, तब हमारे चारों ओर रहनेवाले सब अन्यजाति डर गए, और बहुत लजिज रहे; क्योंकि उन्होंने जान लिया कि यह काम हमारे परमेश्वर की ओर से हुआ। ८६ उन दिनों में भी यहदी रईसों और तो बियाह के बीच चिंडी बहुत आया-जाया करती थी। ८७ क्योंकि वह आरह के पुत्र शकन्याह का दामाद था, और उसके पुत्र यहोहानाम ने बैरेक्याह के पुत्र मशल्लाम की लेटी को व्याह लिया था; इस कारण बहुत से यहदी उसका पक्ष करने की शपथ खाए हुए थे। ८८ वे मेरे सुनते उसके भले

कामों की चर्चा किया करते, और मेरी बातें भी उसको सुनाया करते थे। तो वियाह मुझे डराने के लिये चिह्नियाँ भेजा करता था।

७ जब शहरपनाह बन गई, और मैंने उसके फाटक खड़े किए, और द्वारपाल,

और गवैये, और लेवीय लोग ठहराये गए, २ तब मैंने अपने भाई हननी और राजगढ़ के हाकिम हनन्याह को यस्सलेम का अधिकारी ठहराया, क्योंकि यह सच्चा पुष्प और बहतरों से अधिक परमेश्वर का भय माननेवाला था। ३ और मैंने उनसे कहा, “जब तक धूप कड़ी न हो, तब तक यस्सलेम के फाटक न खोले जाएँ और जब पहले पहरा देते रहें, तब ही फाटक बन्द किए जाएँ और बेड़े लगाए जाएँ। फिर यस्सलेम के निवासियों में से तु रखवाले ठहरा जो अपना-अपना पहरा अपने-अपने घर के सामने दिया करें।” ४ नगर तो लम्बा चौड़ा था, परन्तु उसमें लोग थोड़े थे, और घर नहीं बने थे। ५ तब मेरे परमेश्वर ने मेरे मन में यह उपजाया कि रईसों, हाकिमों और प्रजा के लोगों को इसलिए इकट्ठे करें, कि वे अपनी-अपनी वंशवली के अनुसार गिने जाएँ। और मुझे पहले-पहल यस्सलेम को आए हुओं का वंशवली पत्र मिला, और उसमें मैंने यह लिखा हुआ पाया। ६ जिनको बाबेल का राजा, नबूकदेनेसर बन्दी बना करके ले गया था, उनमें से प्रान्त के जो लोग बैंधुआई से छूटकर, यस्सलेम और यहदा के अपने-अपने नगर को आए। ७ वे जस्बबेल, येशुअ, नहेम्याह, अजर्याह, राम्याह, नहमानी, मोटैक, बिलशान, मिस्पेरेत, बिगवै, नहम और बानाह के संग आए। इसाएली प्रजा के लोगों की गिनती यह है। ८ पराश की सन्तान दो हजार एक सौ बहतर, ९ शपत्याह की सन्तान तीन सौ बहतर, १० आरह की सन्तान छः सौ बाबान। ११ पह्तमोआब की सन्तान याने येशुअ और योआब की सन्तान, दो हजार आठ सौ अठारह। १२ एताम की सन्तान बारह सौ चौबन, १३ जूत की सन्तान आठ सौ पैतालीस। १४ जकर्कई की सन्तान सात सौ साठ। १५ बिन्नूई की सन्तान छः सौ अड़तालीस। १६ बेंवे की सन्तान छः सौ अश्वर्स। १७ अजगाद की सन्तान दो हजार तीन सौ बाईस। १८ अदोनीकाम की सन्तान छः सौ सडसठ। १९ बिगवै की सन्तान दो हजार सडसठ। २० आदीन की सन्तान छः सौ पचपन। २१ हिजकियाह की सन्तान आतेर के वंश में से अश्वनवे। २२ हाश्शूम, की सन्तान तीन सौ अश्वर्स। २३ बेंसै की सन्तान तीन सौ चौबीस। २४ हारीफ की सन्तान एक सौ बारह। २५ गिलोन के लोग पंचानबे। २६ बैतलहम और नतोपा के मनुष्य एक सौ अश्वरी। २७ अनातोत के मनुष्य एक सौ अश्वर्स। २८ बैतजमावत के मनुष्य बयालीस। २९ किर्त्यारीम, कपीरा, और बेरोत के मनुष्य सात सौ पैतालीस। ३० रामाह और गेबा के मनुष्य छः सौ इक्कीस। ३१ मिकमाश के मनुष्य एक सौ बाईस। ३२ बैतेल और आई के मनुष्य एक सौ तेईस। ३३ दूसरे नबो के मनुष्य बाबन। ३४ दूसरे एलाम की सन्तान बारह सौ चौबन। ३५ हारीम की सन्तान तीन सौ बीस। ३६ यरीहो के लोग तीन सौ पैतालीस। ३७ लोद हादीद और ओनो के लोग सात सौ इक्कीस। ३८ सना के लोग तीन हजार नौ सौ तीस। ३९ फिर याजक अर्थात् येशुअ के घराने में से यदायाह की सन्तान नौ सौ तिहतर। ४० इम्मर की सन्तान एक हजार बाबन। ४१ पशाहूर की सन्तान बारह सौ पैतालीस। ४२ हारीम की सन्तान एक हजार सत्रह। ४३ फिर लेवीय थे: होदवा के वंश में से कदमीएल की सन्तान येशुअ की सन्तान चौहतर। ४४ फिर गवैये थे: आसाप की सन्तान एक सौ अड़तालीस। ४५ फिर द्वारपाल थे: शल्लम की सन्तान, आतेर की सन्तान, तल्मोन की सन्तान, अक्कूब की सन्तान, हतीता की सन्तान, और शोबै की सन्तान, जो सब मिलकर एक सौ अड़तालीस हुए। ४६ फिर नतीन अर्थात् सीहा की सन्तान, हसपा की सन्तान, तब्बाओत की सन्तान, ४७ केरोस की सन्तान, सीआ की सन्तान, पादोन की सन्तान, ४८ लबाना की सन्तान,

हगाबा की सन्तान, शल्मै की सन्तान। ४९ हानान की सन्तान, गिफ्टेर की सन्तान, गहर की सन्तान, ५० रायाह की सन्तान, रसीन की सन्तान, नकोदा की सन्तान, ५१ गज्जाम की सन्तान, उज्जा की सन्तान, पासेह की सन्तान, ५२ बेसे की सन्तान, मूरीम की सन्तान, नपूशस की सन्तान, ५३ बक्कूब की सन्तान, हक्का की सन्तान, हर्हर की सन्तान, ५४ बसलीत की सन्तान, महीदा की सन्तान, हर्षा की सन्तान, ५५ बर्कोस की सन्तान, सीसरा की सन्तान, तेमह की सन्तान, ५६ नसीह की सन्तान, और हतीपा की सन्तान। ५७ फिर सुलैमान के दासों की सन्तान: सोते की सन्तान, सोपेरेत की सन्तान, परीदा की सन्तान, ५८ याला की सन्तान, दर्कोन की सन्तान, गिएल की सन्तान, ५९ शपत्याह की सन्तान, हतीत की सन्तान, पोकरेत-सबायीम की सन्तान, और अमोन की सन्तान। ६० नतीन और सुलैमान के दासों की सन्तान मिलाकर तीन सौ बानवे थे। ६१ और ये वे हैं, जो तेलमेलाह, तेलहशी, कस्ब, अदोन, और इम्मर से यस्सलेम को गए, परन्तु अपने-अपने पितरों के घराने और वंशवली न बता सके, कि इस्माएल के हैं, या नहीं ६२ दलायाह की सन्तान, तो वियाह की सन्तान, और नकोदा की सन्तान, जो सब मिलाकर छः सौ बयातीस थे। ६३ और याजकों में से हबायाह की सन्तान, हव्वकोस की सन्तान, और बर्जिल्लै की सन्तान, जिसने गिलादी बर्जिल्लै की बैटियों में से एक से विवाह कर लिया, और उन्हीं का नाम रख लिया था। ६४ इन्होंने अपना-अपना वंशवली पत्र और अन्य वंशवली पतों में ढूँडा, परन्तु न पाया, इसलिए वे अशुद्ध ठहरकर याजकपद से निकाले गए। ६५ और अधिपति ने उनसे कहा, कि जब तक ऊरीम और तुम्मीम धारण करनेवाला कोई याजक न उठे, तब तक तुम कोई परमपवित्र बस्तु खाने न पाओगे। ६६ पूरी मण्डली के लोग मिलाकर बयातीस हजार तीन सौ साठ ठहरे। ६७ इनको छोड़ उनके सात हजार तीन सौ सैतीस दास-दसियाँ, और दो सौ पैतालीस गानेवाले और गानेवालियाँ थी। ६८ उनके थोड़े सात सौ छतीस, खच्चर दो सौ पैतालीस, ६९ ऊँट चार सौ पैतीस और गदहे छः हजार सात सौ बीस थे। ७० और पितरों के घरानों के कई एक मुख्य पुस्तों ने काम के लिये दान दिया। अधिपति ने तो चन्दे में हजार दर्कमोन सोना, पचास कट्टोरे और पाँच सौ तीस याजकों के अंगरखे दिए। ७१ और पितरों के घरानों के कई मुख्य-मुख्य पुस्तों ने उस काम के चन्दे में बीस हजार दर्कमोन सोना और दो हजार दो सौ माने चाँदी दी। ७२ और शेष प्रजा ने जो दिया, वह बीस हजार दर्कमोन सोना, दो हजार माने चाँदी और सडसठ याजकों के अंगरखे हुए। ७३ इस प्रकार याजक, लेवीय, द्वारपाल, गवैये, प्रजा के कुछ लोग और नतीन और सब इसाएली अपने-अपने नगर में बस गए।

जब सातवाँ महीना निकट आया, उस समय सब इसाएली अपने-अपने नगर में थे। तब उन सब लोगों ने एक मन होकर, जलफाटक के सामने के चौक में इकट्ठे होकर, एज्जा शास्त्री से कहा, कि मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्माएल को दी थी, उसकी पुस्तक ले आ। ७४ तब एज्जा याजक सातवें महीने के पहले दिन को क्या च्छी, क्या पुष्प, जितने सुनकर समझ सकते थे, उन सभी के सामने व्यवस्था को ले आया। ७५ वह उसकी बातें भोर से दोपहर तक उस चौक के सामने जो जलफाटक के सामने था, क्या च्छी, क्या पुष्प और सब समझने वालों को पढ़कर सुनाता रहा; और लोग व्यवस्था की पुस्तक पर कान लगाए रहे। ७६ एज्जा शास्त्री, काठ के एक मध्यां पर जो इसी काम के लिये बना था, खड़ा हो गया; और उसकी दाहिनी ओर मतित्याह, शेमा, अनायाह, ओरियाह, हिलिक्याह और मासेयाह, और बाईं ओर, पदायाह, मीशाएल, मलिक्याह, हाश्शूम, हशब्दाना, जकर्याह और मश्ललाम खड़े हुए। ७७ तब एज्जा ने जो सब लोगों से ऊँचे पर था, सभी के देखते उस पुस्तक को खोल दिया; और जब उसने उसको खोला, तब सब लोग उठ खड़े हुए। ७८ तब एज्जा ने

महान परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा; और सब लोगों ने अपने-अपने हाथ उठाकर आमीन, आमीन, कहा; और सिर झुकाकर अपना-अपना माथा भूमि पर टेकर यहोवा को दण्डवत् किया। ७ येशुअ, बानी, शेरूब्याह, यामीन, अक्षरू, शब्बतै, होदियाह, मासेयाह, कलीता, अजयोह, योजाबाद, हानान और पलायाह नामक लेवीय, लोगों को व्यवस्था समझाते गए, और लोग अपने-अपने स्थान पर खड़े रहे। ८ उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक से पढ़कर अर्थ समझा दिया; और लोगों ने पाठ को समझ लिया। ९ तब नहेम्याह जो अधिपति था, और एजा जो याजक और शास्त्री था, और जो लेवीय लोगों को समझा रहे थे, उन्होंने सब लोगों से कहा, “आज का दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र है; इसलिए विलाप न करो और न रोओ।” क्योंकि सब लोग व्यवस्था के बचन सुनकर रोते रहे। १० फिर उसने उनसे कहा, “जाकर चिकना-चिकना भोजन करो और मीठा-मीठा रस पियो, और जिनके लिये कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास भोजन सामग्री भेजो; क्योंकि आज का दिन हमारे प्रभु के लिये पवित्र है; और उदास मत रहो, क्योंकि यहोवा का आनन्द तम्हारा ढूढ़ गढ़ है।” ११ अतः लेवियों ने सब लोगों को यह कहकर चुप करा दिया, “चुप रहो क्योंकि आज का दिन पवित्र है; और उदास मत रहो।” १२ तब सब लोग खाने, पीने, भोजन सामग्री भेजने और बडा आनन्द मनाने को चले गए, क्योंकि जो बचन उनको समझा ए गए थे, उन्हें वे समझा ए थे। (योपिडियों का पर्व) १३ दूसरे दिन भी समस्त प्रजा के पितरों के घराने के मुख्य-मुख्य पुस्त और याजक और लेवीय लोग, एजा शास्त्री के पास व्यवस्था के बचन ध्यान से सुनने के लिये इकट्ठे हुए। १४ उन्हें व्यवस्था में यह लिखा हुआ मिला, कि यहोवा ने मूसा को यह आज्ञा दी थी, कि इमाएली सातवें महीने के पर्व के समय ज्ञोपिडियों में रहा करें, १५ और अपने सब नगरों और यस्त्वालेम में यह सुनाया और प्रचार किया जाए। “फाहड पर जाकर जैतन, तैलवक्ष, मेहदी, खजर और घने-घने बृक्षों की डालियाँ ले आकर ज्ञोपिडियाँ बनाओ, जैसे कि लिखा है।” १६ अतः सब लोग बाहर जाकर डालियाँ ले आए, और अपने-अपने घर की छत पर, और अपने आँगनों में, और परमेश्वर के भवन के आँगनों में, और जलफाटक के चौक में, और ऐसे के फाटक के चौक में, ज्ञोपिडियाँ बना लीं। १७ वरन् सब मण्डली के लोग जिने बैंधुआई से छूटकर लौट आए थे, ज्ञोपिडियों बनाकर उम्में रहे। नून के पत्र यहोश के दिनों से लेकर उस दिन तक इमाएलियों ने ऐसा नहीं किया था। उस समय बहुत बडा आनन्द हुआ। १८ फिर पहले दिन से अनिति दिन तक एजा ने प्रतिदिन परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में से पढ़ पढ़कर सुनाया। वे सात दिन तक पर्व को मानते रहे, और आठवें दिन मियम के अनुसार महासभा हुई।

९ फिर उसी महीने के चौबीसवें दिन को इमाएली उपवास का टाट पहने और सिर पर धूल डाले हुए, इकट्ठे हो गए। १० तब इमाएल के वंश के लोग सब अन्यजाति लोगों से अलग हो गए, और खड़े होकर, अपने-अपने पापों और अपने पुरुषाखों के अर्धम के कामों को मान लिया। ११ तब उन्होंने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर दिन के एक पहर तक अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक पढ़ते, और एक और पहर अपने पापों को मानते, और अपने परमेश्वर यहोवा को दण्डवत् करते रहे। १२ और येशुअ, बानी, कदमीएल, शब्बन्याह, बुन्नी, शेरूब्याह, बानी और कनानी ने लेवियों की सीढ़ी पर खड़े होकर ऊँचे स्वर से अपने परमेश्वर यहोवा की दुहाई दी। १३ फिर येशुअ, कदमीएल, बानी, हशब्न्याह, शेरूब्याह, होदियाह, शब्बन्याह, और पतह्याह नामक लेवियों ने कहा, “खड़े हो, अपने परमेश्वर यहोवा को

अनादिकाल से अनन्तकाल तक धन्य कहो। तेरा महिमायुक्त नाम धन्य कहा जाए, जो सब धन्यवाद और स्तुति से पेरे है। १४ “तू ही अकेला यहोवा है, स्वर्ग वरन् सबसे ऊँचे स्वर्ग और उसके सब गण, और पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, और समुद्र और जो कुछ उसमें है, सभी को तू ही ने बनाया, और सभी की रक्षा तू ही करता है, और स्वर्ग की समस्त सेना तुझी को दण्डवत् करती है। १५ हे यहोवा! तू वही परमेश्वर है, जो अब्राम को चुनकर कसादियों के ऊर नार में से निकाल लाया, और उसका नाम अब्राहम रखा; १६ और उसके मन को अपने साथ सच्चा पाकर, उससे वाचा बांधी, कि मैं तेरे वंश को कनानियों, हितियों, एमोरियों, परिज्जियों, यबूसियों, और गिगांशियों का देश छूँगा; और तूने अपना वह वर्चन पूरा भी किया, क्योंकि तू धर्मी है। १७ “फिर तने मिस्र में हमारे पुरुषाखों के दुर्ख पर दृष्टि की; और लाल समुद्र के तट पर उनकी दुहाई सुनी। १८ और फिरौन और उसके सब कर्मचारी वरन् उसके देश के सब लोगों को दण्ड देने के लिये चिन्ह और चमत्कार दिखाएँ; क्योंकि तू जानता था कि वे उनसे अभिमान करते हैं; और तूने अपना ऐसा बडा नाम किया, जैसा आज तक वर्तमान है। १९ और तूने उनके आगे समुद्र को ऐसा दो भाग किया, कि वे समुद्र के बीच स्थल ही स्थल चलकर पार हो गए; और जो उनके पांछे पड़े थे, उनको तूने गहरे स्थानों में ऐसा डाल दिया, जैसा पथर समुद्र में डाला जाए। २० फिर तने दिन को बादल के खम्भे में होकर और रात को आग के खम्भे में होकर उनकी अगुआई की, कि जिस मार्ग पर उन्हें चलना था, उसमें उनको उजियाला मिले। २१ फिर तने सन्नि पर्वत पर उत्तरकर आकाश में से उनके साथ बातें की, और उनको सीधी नियम, सच्ची व्यवस्था, और अच्छी विधियाँ, और आज्ञाएँ दी। २२ उन्हें अपने पवित्र विश्वामिदिन का ज्ञान दिया, और अपने दास मूसा के द्वारा आज्ञाएँ, और विधियाँ और व्यवस्था दी। २३ और उनकी भूख मिटाने को आकाश से उन्हें भोजन दिया और उनकी प्यास बुझाने को चट्टान में से उनके लिये पानी निकाला, और उन्हें आज्ञा दी कि जिस देश को तुम्हें देने की मैंने शपथ खाई है उसके अधिकारी होने को तुम उसमें जाओ। २४ “परन्तु उन्होंने और हमारे पुरुषाखों ने अभिमान किया, और हठीले बने और तेरी आज्ञाएँ न मानी; २५ और आज्ञा मानने से इन्कार किया, और जो आश्वर्यकर्म तने उनके बीच किए थे, उनका स्मरण न किया, वरन् हठ करके यहाँ तक बलवा करनेवाले बने, कि एक प्रधान ठहराया, कि अपने दासत्व की दशा में लौटे। परन्तु तू क्षमा करनेवाला अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से कोप करनेवाला, और अति कस्त्रामय परमेश्वर है, तूने उनको न त्यागा। २६ वरन् जब उन्होंने बछडा ढालकर कहा, ‘‘तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है, वह यही है,’’ और तेरा बहुत तिरस्कार किया, २७ तब भी तू जो अति दयाल है, उनको जंगल में न त्यागा; न तो दिन को अगुआई करनेवाला बादल का खम्भा उन पर से हटा, और न रात को उजियाला देनेवाला और उनका मार्ग दिखानेवाला आग का खम्भा। २८ वरन् तूने उन्हें समझाने के लिये अपने आत्मा को जो भला है दिया, और अपना मन्ना उन्हें खिलाना न छोड़ा, और उनकी प्यास बुझाने को पानी देता रहा। २९ चालीस वर्ष तक तू जंगल में उनका ऐसा पालन-पोषण करता रहा, कि उनको कुछ घटी न हई; न तो उनके वक्ष पुराने हुए और न उनके पाँव में सजन हुई। ३० फिर तने राज्य-राज्य और देश-देश के लोगों को उनके वश में कर दिया, और दिशा-दिशा में उनको बाँट दिया; अतः वे हेशबोन के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग दोनों के देशों के अधिकारी हो गए। ३१ फिर तूने उनकी सन्तान को आकाश के तारों के समान बढ़ाकर उन्हें उस देश में पहुँचा दिया, जिसके विषय तूने उनके पूर्वजों से कहा था; कि वे उसमें जाकर उसके अधिकारी हो जाएँगे। ३२ सो यह सन्तान जाकर उसकी अधिकारी हो गई,

और तूने उनके द्वारा देश के निवासी कनानियों को दबाया, और राजाओं और देश के लोगों समेत उनको, उनके हाथ में कर दिया, कि वे उनसे जो चाहें सो करें। २५ उन्होंने गढ़वाले नगर और उपजाऊ भूमि ले ली, और सब प्रकार की अच्छी बस्तुओं से भेरे हुए घरों के, और खुदे हुए हौदों के, और दाख और जैतून की बारियों के, और खाने के फलवाले बहुत से बुक्झों के अधिकारी हो गए; वे उसे खा खाकर तृषु हुए, और हष्ट-पुष्ट हो गए, और तेरी बड़ी भलाई के कारण सुख भोगते रहे। २६ “परन्तु वे तुझ से फिरकर बलवा कनेवाले बन गए और तेरी व्यवस्था को त्याग दिया, और तेरे जो नबी तेरी ओर उन्हें फेरेने के लिये उनको चिताते रहे उनको उन्होंने घात किया, और तेरा बहुत तिरस्कार किया। २७ इस कारण तूने उनको उनके शत्रुओं के हाथ में कर दिया, और उन्होंने उनको संकट में डाल दिया; तो भी जब जब वे संकट में पड़कर तेरी दुहाई देते रहे तब-तब तू स्वर्ग से उनकी सुनता रहा; और तू जो अति दयातु है, इसलिए उनके छुड़ानेवाले को भेजता रहा जो उनको शत्रुओं के हाथ से छुड़ाते थे। २८ परन्तु जब जब उनको चैन मिला, तब-तब वे फिर तेरे सामने बुराई करते थे, इस कारण तू उनको शत्रुओं के हाथ में कर देता था, और वे उन पर प्रभुता करते थे; तो भी जब वे पिंकर कर तेरी दुहाई देते, तब तू स्वर्ग से उनकी सुनता और तू जो दयातु है, इसलिए बार बार उनको छुड़ाता, २९ और उनको चिताता था कि उनको फिर अपनी व्यवस्था के अर्थीन कर दे। परन्तु वे अभिमान करते रहे और तेरी आज्ञाएँ नहीं मानते थे, और तेरे नियम, जिनको यदि मनुष्य माने, तो उनके कारण जीवित रहे, उनके विस्तृ पाप करते, और हठ करके अपना कंधा हटाते और न सुनते थे। ३० तू तो बहुत वर्ष तक उनकी सहता रहा, और अपने आत्मा से नवियों के द्वारा उन्हें चिताता रहा, परन्तु वे कान नहीं लगाते थे, इसलिए तूने उन्हें देश-देश के लोगों के हाथ में कर दिया। ३१ तो भी तूने जो अति दयालु है, उनका अन्त नहीं कर डाला और न उनको त्याग दिया, क्योंकि तू अनुग्रहकारी और दयातु परमेश्वर है। ३२ “अब तो हे हमारे परमेश्वर! हे महान पराक्रमी और भययोग्य परमेश्वर! जो अपनी वाचा पालता और कस्ता करता रहा है, जो बड़ा कष्ट, अश्शूर के राजाओं के दिनों से ले आज के दिन तक हमें और हमारे राजाओं, हाकिमों, याजकों, नबियों, पुरुखाओं, बरन तेरी समस्त प्रजा को भोगना पड़ा है, वह तेरी दृष्टि में थोड़ा न ठहरे। ३३ तो भी जो कुछ हम पर बीता है उसके विषय तू तो धर्मी है; तूने तो सच्चाई से काम किया है, परन्तु हमने दृष्टा की है। ३४ और हमारे राजाओं और हाकिमों, याजकों और पुरुखाओं ने, न तो तेरी व्यवस्था को माना है और न तेरी आज्ञाओं और चित्तोनियों की ओर ध्यान दिया है जिनसे तूने उनको चिताता था। ३५ उन्होंने अपने राज्य में, और उस बड़े कल्याण के समय जो तूने उन्हें दिया था, और इस लम्बे चौड़े और उपजाऊ देश में तेरी सेवा नहीं की; और न अपने बुरे कामों से पश्चाताप किया। ३६ देख, हम आजकल दास हैं; जो देश तूने हमारे पितरों को दिया था कि उसकी उत्तम उपज खाएँ, इसी में हम दास हैं। ३७ इसकी उपज से उन राजाओं को जिन्हें तूने हमारे पापों के कारण हमारे ऊपर ठहराया है, बहुत धन मिलता है; और वे हमारे शरीरों और हमारे पशुओं पर अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार प्रभुता जताते हैं, इसलिए हम बड़े संकट में पड़े हैं।” ३८ इस सब के कारण, हम सच्चाई के साथ वाचा बाँधते, और लिख भी देते हैं, और हमारे हाकिम, लेवीय और याजक उस पर छाप लगाते हैं।

१० जिन्होंने छाप लगाई वे ये हैं हकल्याह का पुत्र नहेम्याह जो अधिपति था, और सिद्धिकियाह; १ सरायाह, अजर्याह, यर्मयाह; २ पशहर, अमर्याह, मल्कियाह; ३ हन्तूश, शबन्याह, मल्लूक; ४ हारीम, मेरमोत, ओबघाह;

५ दानिय्येल, गिन्तोन, बास्क; ६ मशुल्लाम, अबिय्याह, मिय्यामीन; ८ माज्याह, बिलौ और शमायाह; ये तो याजक थे। ९ लेवी ये थे: आजन्याह का पुत्र येशुअ, हेनादाद की सन्तान में से बिन्नूई और कदमीएल; १० और उनके भाई शबन्याह, होदियाह, कलीता, पलायाह, हानान; ११ मीका, रहोब, हशब्याह; १२ जक्कूर, शेरब्याह, शबन्याह। १३ होदियाह, बानी और बनीन; १४ फिर प्रजा के प्रधान ये थे: परोश, पहत्मोआब, एसाम, जतू, बानी; १५ बुनी, अजगाद, बेवै, १६ अदोनिय्याह, बिगवै, आदीन; १७ अतेर, हिजकिय्याह, अज्जूर; १८ होदियाह, हाशम, बेसै; १९ हारीफ, अनातोत, नोबै; २० मग्नीआश, मशुल्लाम, हेजीर; २१ मशजबेल, सादोक, यद; २२ पलत्याह, हानान, अनायाह; २३ होशे, हन्याह, हशशूब; २४ हल्लोहेश, पिल्हा, शेबेक; २५ रहम, हशब्ना, मासेयाह; २६ अहियाह, हानान, अनान; २७ मल्लूक, हारीम और बानाह। २८ शेष लोग अर्थात् याजक, लेवीय, द्वारपाल, गवैये और नतीन लोग, और जितने परमेश्वर की व्यवस्था मानने के लिये देश-देश के लोगों से अलग हुए थे, उन सभी ने अपनी छियों और उन बेट-बेटियों समेत जो समझनेवाले थे, २९ अपने भाई रईसों से मिलकर शपथ खाई, कि हम परमेश्वर की उस व्यवस्था पर चलेंगे जो उसके दास मूसा के द्वारा दी गई है, और अपने प्रभु यहोवा की सब आज्ञाएँ, नियम और विधियाँ मानने में चौकसी करेंगे। ३० हम न तो अपनी बेटियाँ इस देश के लोगों को ब्याह देंगे, और न अपने बेटों के लिये उनकी बेटियाँ ब्याह लेंगे। ३१ और जब इस देश के लोगों को ब्याह देंगे, और सातवें वर्ष में भूमि पड़ी रहने देंगे, और अपने-अपने त्रण की वस्तुली छोड़ देंगे। ३२ फिर हम लोगों ने ऐसा नियम बाँध लिया जिससे हमको अपने परमेश्वर के भवन की उपासना के लिये प्रतिवर्ष एक-एक तिहाई शेकेल देना पड़ेगा: ३३ अर्थात् भेट की रोटी और नित्य अन्नबलि और नित्य होमबलि के लिये, और विश्वामिदिनों और नये चाँद और नियत पर्वों के बलिदानों और अन्य पवित्र भेटों और इस्माएल के प्रायाश्चित के निमित पापबलियों के लिये, अर्थात् अपने परमेश्वर के भवन के सारे काम के लिये। ३४ फिर क्या याजक, क्या लेवीय, क्या साधारण लोग, हम सभी ने इस बात के ठहराने के लिये चिठ्ठियाँ डाली, कि अपने पितरों के घरानों के अनुसार प्रतिवर्ष ठहराए हुए समर्यों पर लकड़ी की भेट व्यवस्था में लिखी हुई बातों के अनुसार हम अपने परमेश्वर यहोवा की बेदी पर जलाने के लिये अपने परमेश्वर के भवन में लाया करेंगे। ३५ हम अपनी-अपनी भूमि की पहली उपज और सब भाँति के वक्षों के पहले फल प्रतिवर्ष यहोवा के भवन में ले आएँ। ३६ और व्यवस्था में लिखी हुई बात के अनुसार, अपने-अपने पहलौठे बेटों और पशुओं, अर्थात् पहलौठे बछड़ों और मेम्नों को अपने परमेश्वर के भवन में उन याजकों के पास लाया करेंगे, जो हमारे परमेश्वर के भवन में सेवा ठहल करते हैं। ३७ हम अपना पहला गँड़ा हुआ आटा, और उठाई हुई भेट, और सब प्रकार के वक्षों के फल, और नया दाखमध्य, और टटका तेल, अपने परमेश्वर के भवन की कोठरियों में याजकों के पास, और अपनी-अपनी भूमि की उपज का दशमांश लेवियों के पास लाया करेंगे, क्योंकि वे लेवीय हैं, जो हमारी खेती के सब नगरों में दशमांश लेते हैं। ३८ जब जब लेवीय दशमांश लें, तब-तब उनके संग हास्तन की सन्तान का कोई याजक रहा करे; और लेवीय दशमांशों का दशमांश हमारे परमेश्वर के भवन की कोठरियों में अर्थात् भण्डार में पहुँचाया करेंगे। ३९ क्योंकि जिन कोठरियों में पवित्रस्थान के पात्र और सेवा ठहल करनेवाले याजक और द्वारपाल और गवैये रहते हैं, उनमें इस्माएली और लेवीय, आजाज, नये दाखमध्य, और टटके तेल की उठाई हुई भेट पहुँचाएँ। इस प्रकार हम अपने परमेश्वर के भवन को न छोड़ेंगे।

११ प्रजा के हाकिम तो यस्सलेम में रहते थे, और शेष लोगों ने यह ठहराने

के लिये चिठ्ठियां डालीं, कि दस में से एक मनुष्य यस्सलेम में, जो पवित्र नगर है, बस जाएँ; और नौ मनुष्य अन्य नगरों में बसें। **२** जिन्होंने अपनी ही इच्छा से यस्सलेम में वास करना चाहा उन सभी को लोगों ने आशीर्वाद दिया। **३** उस प्रान्त के मुख्य-मुख्य पुरुष जो यस्सलेम में रहते थे, वे ये हैं; परन्तु यहदा के नगरों में एक-एक मनुष्य अपनी निज भूमि में रहता था; अर्थात् इस्माएली, याजक, लेवीय, नरीन और सलैमान के दासों की सन्तान। **४** यस्सलेम में तो कुछ यहदी और बिन्यामीनी रहते थे। यहदियों में से तो येरस के वंश का अतायाह जो उजियाह का पुत्र था, यह जकर्याह का पुत्र, यह अमर्याह का पुत्र, यह शपत्याह का पुत्र, यह महललेल का पुत्र था। **५** मसेयाह जो बास्क का पुत्र था, यह कोल्होजे का पुत्र, यह हजायाह का पुत्र, यह अदायाह का पुत्र, यह योयारीब का पुत्र, यह जकर्याह का पुत्र, और यह शीलोई का पुत्र था। **६** पेरेस के वंश के जो यस्सलेम में रहते थे, वह सब मिलाकर चार सौ अडसठ शूर्वीर थे। **७** बिन्यामीनियों में से सल्लू जो मशुल्लाम का पुत्र था, यह योएद का पुत्र, यह पदायाह का पुत्र था, यह कोलायाह का पुत्र यह मासेयाह का पुत्र, यह इतीएह का पुत्र, यह यशायाह का पुत्र था। **८** उसके बाद गब्बै सल्लै जिनके साथ नौ सौ अशाईस पुरुष थे। **९** इनका प्रधान जिक्री का पुत्र योएल था, और हस्सनआ का पुत्र यहदा नगर के प्रधान का नायब था। **१०** फिर याजकों में से योयारीब का पुत्र यदायाह और याकीन। **११** और सरायाह जो परमेश्वर के भवन का प्रधान और हिल्कियाह का पुत्र था, यह मशुल्लाम का पुत्र, यह सादेक का पुत्र, यह मरायोत का पुत्र, यह अर्टीतूब का पुत्र था। **१२** और इनके आठ सौ बाईंस भाई जो उस भवन का काम करते थे; और अदायाह, जो योहोमा का पुत्र था, यह पलल्याह का पुत्र, यह अमर्सी का पुत्र, यह जकर्याह का पुत्र, यह पशाहर का पुत्र, यह मत्कियाह का पुत्र था। **१३** इसके दो सौ बायालीस भाई जो पितरों के घरानों के प्रधान थे; और अमर्सी जो अजेरेल का पुत्र था, यह अहजै का पुत्र, यह मशिल्लोपोत का पुत्र, यह इम्पेर का पुत्र था। **१४** इनके एक सौ अशाईस शूर्वीर भाई थे और इनका प्रधान हग्मदोलीम का पुत्र जब्दीएल था। **१५** फिर लेवियों में से शमायाह जो हश्शब का पुत्र था, यह अंजीकाम का पुत्र, यह हश्शब्याह का पुत्र, यह बुन्नी का पुत्र था। **१६** शब्बते और योजाबाद मुख्य लेवियों में से परमेश्वर के भवन के बाही काम पर ठहरे थे। **१७** मत्न्याह जो मीका का पुत्र और जब्दी का पोता, और आसाप का परपोता था; वह प्रार्थना में धन्यवाद करनेवालों का मुखिया था, और बकबुक्याह अपने भाइयों में दूसरा पद रखता था; और अब्दा जो शम्मू का पुत्र, और गालाल का पोता, और यदूनू का परपोता था। **१८** जो लेवीय पवित्र नगर में रहते थे, वह सब मिलाकर दो सौ चौरान्नी थे। **१९** अक्कूब और तल्मोन नायक द्वारपाल और उनके भाई जो फाटकों के खखाले थे, एक सौ बहतर थे। **२०** शेष इस्माएली याजक और लेवीय, यहदा के सब नगरों में अपने-अपने भग पर रहते थे। **२१** नरीन लोग ओपेल में रहते; और नरिनों के ऊपर सीहा, और गिशा ठहराए गए थे। **२२** जो लेवीय यस्सलेम में रहकर परमेश्वर के भवन के काम में लगे रहते थे, उनका मुखिया आसाप के वंश के गवैयों में का उज्जी था, जो बानी का पुत्र था, यह हश्शब्याह का पुत्र, यह मत्न्याह का पुत्र और यह हश्शब्याह का पुत्र था। **२३** क्योंकि उनके विषय राजा की आज्ञा थी, और गवैयों के प्रतिदिन के प्रयोजन के अनुसार ठीक प्रबन्ध था। **२४** प्रजा के सब काम के लिये मरोजेल का पुत्र पतह्याह जो यहदा के पुत्र जेरह के वंश में था, वह राजा के पास रहता था। **२५** बच गए गाँव और उनके खेत, सो कुछ यहदी किर्थतअर्बा, और उनके गाँव में, कुछ दीबोन, और उसके गाँवों में, कुछ यकब्सेल और उसके गाँवों में रहते

थे। **२६** फिर येशुअ, मोलादा, बेटेलेत; **२७** हस्सूआल, और बेर्शबा और उसके गाँवों में; **२८** और सिकलग और मकोना और उनके गाँवों में; **२९** एन्निमोन, सोरा, यर्मत, **३०** जानोह और अदुल्लाम और उनके गाँवों में, लाकीश, और उसके खेतों में, अजेका और उसके गाँवों में वे बेर्शबा से ले हिन्नोम की तराई तक डेरे डाले हुए रहते थे। **३१** बिन्यामीनी गेबा से लेकर मिकामा, अय्या और बेतेल और उसके गाँवों में; **३२** अनातोत, नोब, अनन्याह, **३३** हासोर, रामाह, गितैम, **३४** हादीद, सबोईम, बल्लत, **३५** लोट, ओनो और कारीगरों की तराई तक रहते थे। **३६** यहदा के कुछ लेवियों के दल बिन्यामीन के प्रान्तों में बस गए।

१२ जो याजक और लेवीय शालतीएल के पुत्र जस्ल्बाबेल और येशुअ के संग यस्सलेम को गए थे, वे ये थे: सरायाह, यिर्यायाह, एज्जा, **२** अमर्याह, मल्लूक, हनुग, **३** शकन्याह, रहम, मरेमोत, **४** इशो, गिन्नतोई, अबियाह, **५** मिय्यामीन, मायाह, बिल्गा, **६** शमायाह, योयारीब, यदायाह, **७** सल्लू अमोक, हिल्कियाह और यदायाह। येशुअ के दिनों में याजकों और उनके भाइयों के मुख्य-मुख्य पुरुष, ये ही थे। **८** फिर ये लेवीय गए: येशुअ, बिन्हैं, कदमीएल, शेरेब्याह, यहदा और वह मत्न्याह जो अपने भाइयों से समेत धन्यवाद के काम पर ठहराया गया था। **९** और उनके भाई बकबुक्याह और उन्नो उनके सामने अपनी-अपनी सेवकाई में लगे रहते थे। **१०** येशुअ से योगाकीम उत्पन्न हुआ और योयाकीम से एल्याशीब और एल्याशीब से योयादा, **११** और योयादा से योनातान और योनातान से यदृ उत्पन्न हुआ। **१२** योयाकीम के दिनों में ये याजक अपने-अपने पितरों के घराने के मुख्य पुरुष थे, अर्थात् सरायाह का तो मरायाह; यिर्याह का हनन्याह। **१३** एज्जा का मशुल्लाम; अमर्याह का यहोहानान। **१४** मल्लूकी का योनातान; शबन्याह का यसूफ। **१५** हारीम का अदना; मरायोत का हेलकै। **१६** इशो का जकर्याह; गिन्नतोन का मशुल्लाम; **१७** अबियाह का जिक्री; मिन्यामीन के मोअघाह का पिलतै; **१८** बिल्गा का शम्मू; शमायाह का यहोहानान; **१९** योयारीब का मत्तै; यदायाह का उज्जी; **२०** सल्लै का कर्लै; अमोक का एकेर। **२१** हिल्कियाह का हश्शब्याह; और यदायाह का नननेल। **२२** एल्याशीब, योयादा, योहानान और यदृ के दिनों में लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों के नाम लिखे जाते थे, और दारा फारसी के राज्य में याजकों के भी नाम लिखे जाते थे। **२३** जो लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे, उनके नाम एल्याशीब के पुत्र योहानान के दिनों तक इतिहास की पुस्तक में लिखे जाते थे। **२४** और लेवियों के मुख्य पुरुष ये थे: अर्थात् हश्शब्याह, शेरेब्याह और कदमीएल का पुत्र येशुअ; और उनके सामने उनके भाई बाई परमेश्वर के भक्त दाक्त की आज्ञा के अनुसार अमाने-सामने स्तुति और धन्यवाद करने पर नियुक्त थे। **२५** मत्न्याह, बकबुक्याह, ओब्याह, मशुल्लाम, तल्मोन और अक्कूब फाटकों के पास के भण्डारों का पहरा देनेवाले द्वारपाल थे। **२६** योयाकीम के दिनों में जो योसादाक का पोता और येशुअ का पुत्र था, और नहेम्याह अधिपति और एज्जा याजक और शासी के दिनों में ये ही थे। **२७** यस्सलेम की शहरपनाह की प्रतिष्ठा के समय लेवीय अपने सब स्थानों में ढूँढ़े गए, कि यस्सलेम को पहुँचाए जाएँ, जिससे आनन्द और धन्यवाद करके और झाँझ, सारंगी और वीणा बजाकर, और गाकर उसकी प्रतिष्ठा करें। **२८** तो गवैयों के सन्तान यस्सलेम के चारों ओर के देश से और नतोपातियों के गाँवों से, **२९** और बेतगिलगाल से, और गेबा और अज्मावेत के खेतों से इकट्ठे हुए; क्योंकि गवैयों ने यस्सलेम के आस-पास गाँव बसा लिये थे। **३०** तब याजकों और लेवियों ने अपने-अपने को शुद्ध किया; और उन्होंने प्रजा को, और फाटकों और शहरपनाह को भी शुद्ध किया। **३१** तब मैंने यहदी हाकिमों को शहरपनाह पर चढ़ाकर दो बड़े दल

ठहराए, जो धन्यवाद करते हुए धूमधाम के साथ चलते थे। इनमें से एक दल तो दक्षिण की ओर, अर्थात् कड़ा फाटक की ओर शहरपनाह के ऊपर-ऊपर से चला; ३२ और उसके पीछे-पीछे ये चले, अर्थात् होशायाह और यहदा के आधे हाकिम, ३३ और अजर्याह, एज्जा, मशुल्लाम, ३४ यहदा, बिन्यामीन, शमायाह, और यिर्मायाह, ३५ और याजकों के किनने पुत्र तुरहियां लिये हुए: जकर्याह जो योनातान का पुत्र था, यह शमायाह का पुत्र, यह मतन्याह का पुत्र, यह मीकायाह का पुत्र, यह जक्कर का पुत्र, यह आसाप का पुत्र था। ३६ और उसके भाई शमायाह, अजरेल, मिलतै, गिलतै, मारे, नतनेल, यहदा और हनानी परमेश्वर के भक्त दाऊद के बाजे लिये हुए थे; और उनके आगे-आगे एज्जा शास्त्री चला। ३७ ये सोता फाटक से हो सीधे दाऊदपुर की सीढ़ी पर चढ़, शहरपनाह की ऊँचाई पर से चलकर, दाऊद के भवन के ऊपर से होकर, पूब की ओर जलफाटक तक पहुँचे। ३८ और धन्यवाद करने और धूमधाम से चलनेवालों का दूसरा दल, और उनके पीछे-पीछे मैं, और आधे लोग उनसे मिलने को शहरपनाह के ऊपर-ऊपर से भट्ठों के गुम्मट के पास से चौड़ी शहरपनाह तक। ३९ और ऐप्रैम के फाटक और पुराने फाटक, और मछली फाटक, और हनेल के गुम्मट, और हम्मेआ नामक गुम्मट के पास से होकर भेड़फाटक तक चले, और पहस्तों के फाटक के पास खड़े हो गए। ४० तब धन्यवाद करनेवालों के दोनों दल और मैं और मेरे साथ आधे हाकिम परमेश्वर के भवन में खड़े हो गए। ४१ और एल्याकीम, मसेयाह, मिन्यामीन, मीकायाह, एल्योएनै, जकर्याह और हन्याह नामक याजक तुरहियां लिये हुए थे। ४२ मसेयाह, शमायाह, एलीआजर, उज्जी, यहोहानान, मल्कियाह, एलाम, और एजर (खड़े हुए थे) और गवैये जिनका मुखिया जिब्रिहाह था, वह ऊँचे स्वर से गाते बजाते रहे। ४३ उसी दिन लोगों ने बड़े-बड़े मेलबलि चढ़ाए, और आनन्द किया; क्योंकि परमेश्वर ने उनको बहुत ही आनन्दित किया था; छियों ने और बाल-बच्चों ने भी आनन्द किया। यस्शलेम के आनन्द की धृवनि दूर-दूर तक फैल गई। ४४ उसी दिन खजानों के, उठाई हुई भेटों के, पहली-पहली उपज के, और दशमांशों की कोठरियों के अधिकारी ठहराए गए, कि उनमें नगर-नगर के खेतों के अनुसार उन वस्तुओं को जमा करें, जो व्यवस्था के अनुसार याजकों और लेवियों के भाग में की थी; क्योंकि यहदी उपस्थित याजकों और लेवियों के कारण आनन्दित थे। ४५ इसलिए वे अपने परमेश्वर के काम और शुद्धता के विषय चौकीया करते रहे; और गवैये और द्वारपाल भी दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान की आज्ञा के अनुसार वैसा ही करते रहे। ४६ प्राचीनकाल, अर्थात् दाऊद और आसाप के दिनों में तो गवैयों के प्रधान थे, और परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद के गीत गाए जाते थे। ४७ जस्त्वाबेल और नहेम्याह के दिनों में सारे इस्माएली, गवैयों और द्वारपालों के प्रतिदिन का भाग देते रहे; और वे लेवियों के अंश पवित्र करके देते थे; और लेवीय हास्त की सन्तान के अंश पवित्र करके देते थे।

१३ उसी दिन मूसा की पुस्तक लोगों को पढ़कर सुनाई गई, और उसमें यह लिखा हुआ मिला, कि कोई अमोनी या मोआबी परमेश्वर की सभा में कभी न आने पाए; १ क्योंकि उन्होंने अनन् जल लेकर इसाएलियों से भेट नहीं की, वरन् बिलाम को उन्हें श्राप देने के लिये भेट देकर बुलवाया था - तो भी हमारे परमेश्वर ने उस श्राप को आशीष में बदल दिया। २ यह व्यवस्था सुनकर, उन्होंने इस्माएल में से मिली जुली भीड़ को अलग-अलग कर दिया। ३ इससे पहले एल्याशीबी याजक जो हमारे परमेश्वर के भवन की कोठरियों का अधिकारी और तोवियाह का सम्बंधी था। ४ उसने तोवियाह के लिये एक बड़ी कोठरी तैयार की थी जिसमें पहले अन्नबलि का सामान और लोबान और पात्र और अनाज, नये दाखमधु और टटके तेल के दशमांश, जिन्हें लेवियों, गवैयों

और द्वारपालों को देने की आज्ञा थी, रखी हुई थी; और याजकों के लिये उठाई हुई भेट भी रखी जाती थी। ५ परन्तु मैं इस समय यस्शलेम में नहीं था, क्योंकि बाबेल के राजा अर्तश्त्र के बत्तीसवें वर्ष में मैं राजा के पास चला गया। फिर किनते दिनों के बाद राजा से छुट्टी माँगी, ६ और मैं यस्शलेम को आया, तब मैंने जान लिया, कि एल्याशीब ने तोवियाह के लिये परमेश्वर के भवन के आँगनों में एक कोठरी तैयार कर, क्या ही बुराई की है। ७ इसे मैंने बहुत बुरा माना, और तोवियाह का सारा घेरेलू सामान उस कोठरी में से फेंक दिया। ८ तब मेरी आज्ञा से वे कोठरियाँ शुद्ध की गईं, और मैंने परमेश्वर के भवन के पात्र और अन्नबलि का सामान और लोबान उसमें फिर से रखवा दिया। ९ फिर मुझे मालूम हआ कि लेवियों का भाग उन्हें नहीं दिया गया है; और इस कारण काम करनेवाले लेवीय और गवैये अपने-अपने खेत को भाग गए हैं। १० तब मैंने हाकिमों को डॉक्टर कहा, “परमेश्वर का भवन क्यों त्याग गया है?” फिर मैंने उनको इकट्ठा करके, एक-एक को उसके स्थान पर नियुक्त किया। ११ तब से सब यहदी अनाज, नये दाखमधु और टटके तेल के दशमांश भण्डारों में लाने लगे। १२ मैंने भण्डारों के अधिकारी शेलेम्याह याजक और सादोक मुशी को, और लेवियों में से पदायाह को, और उनके नीचे हानान को, जो मतन्याह का पोता और जक्कर का पुत्र था, नियुक्त किया; वे तो विश्वासयोग गिने जाते थे, और अपने भाइयों के मध्य बाँटना उनका काम था। १३ हे मेरे परमेश्वर! मेरा यह काम मेरे हित के लिये स्मरण रख, और जो-जो सुकर्म मैंने अपने परमेश्वर के भवन और उसमें की आराधना के विषय किए हैं उन्हें मिटा न डाला। १४ उन्हीं दिनों में मैंने यहदा में बहुतों को देखा जो विश्वामिदिन को होंदों में दाख रौदरते, और पूलियों को ले आते, और गदों पर लादते थे; वैसे ही वे दाखमधु, दाख, अंजीर और कई प्रकार के बोझ विश्वामिदिन को यस्शलेम में लाते थे; तब जिस दिन वे भोजनवस्तु बेचते थे, उसी दिन मैंने उनको चिता दिया। १५ फिर उसमें सोरी लोग रहकर मछली और कई प्रकार का सौदा ले आकर, यहदियों के हाथ यस्शलेम में विश्वामिदिन को बेचा करते थे। १६ तब मैंने यहदा के रईसों को डॉक्टर कहा, “तुम लोग यह क्या बुराई करते हो, जो विश्वामिदिन को अपवित्र करते हो? १७ क्या तुम्हारे पुरखा ऐसा नहीं करते थे? और क्या हमारे परमेश्वर ने यह सब विपत्ति हम पर और इस नगर पर न डाली? तो भी तुम विश्वामिदिन को अपवित्र करने से इस्माएल पर परमेश्वर का क्रोध और भी भड़काते जाते हो।” १८ अतः जब विश्वामिदिन के पहले दिन को यस्शलेम के फाटकों के आस-पास अंपैरा होने लगा, तब मैंने आज्ञा दी, कि उनके पत्त्वे बन्द किए जाएँ, और यह भी आज्ञा दी, कि वे विश्वामिदिन के पूरे होने तक खोले न जाएँ। तब मैंने अपने कुछ सेवकों को फाटकों का अधिकारी ठहरा दिया, कि विश्वामिदिन को कोई बोझ भीतर आने न पाए। १९ इसलिए व्यापारी और कई प्रकार के सौदे के बेचनेवाले यस्शलेम के बाहर दो एक बार टिके। २० तब मैंने उनको चिताकर कहा, “तुम लोग शहरपनाह के सामने क्यों टिकते हो? यदि तुम फिर ऐसा करोगे तो मैं तुम पर हाथ बढ़ाऊँगा।” इसलिए उस समय से वे फिर विश्वामिदिन को नहीं आए। २१ तब मैंने लेवियों को आज्ञा दी, कि अपने-अपने को शुद्ध करके फाटकों की रखवाली करने के लिये आया करो, ताकि विश्वामिदिन पवित्र माना जाए। हे मेरे परमेश्वर! मेरे हित के लिये यह भी स्मरण रख और अपनी बड़ी कस्ता के अनुसार मुझ पर तरस खा। २२ फिर उन्हीं दिनों में मुझ को ऐसे यहदी दिखाई पड़े, जिन्होंने अशदोती, अमोनी और मोआबी छियों ब्याह ली थीं। २३ उनके बच्चों की आधी बोती अशदोती थी, और वे यहदी बोती न बोल सकते थे, दोनों जाति की बोती बोलते थे। २४ तब मैंने उनको डॉटा और कोसा, और उनमें से कुछ को पिटवा दिया और उनके बाल नुचवाएँ; और उनको परमेश्वर

की यह शपथ खिलाई, “हम अपनी बेटियाँ उनके बेटों के साथ व्याह में न देंगे और न अपने लिये या अपने बेटों के लिये उनकी बेटियाँ व्याह में लेंगे। २६ क्या इसाएल का राजा सुलैमान इसी प्रकार के पाप में न फँसा था? बहुतेरी जातियों में उसके तुल्य कोई राजा नहीं हुआ, और वह अपने परमेश्वर का प्रिय भी था, और परमेश्वर ने उसे सारे इसाएल के ऊपर राजा नियुक्त किया; परन्तु उसको भी अन्यजाति क्षियों ने पाप में फँसाया। २७ तो क्या हम तुहारी सुनकर, ऐसी बड़ी बुराई करें कि अन्यजाति की क्षियों से विवाह करके अपने परमेश्वर के विष्टु पाप करें?” २८ और एल्याशीब महायाजक के पुत्र योशादा का एक पुत्र, होरेनी सम्बल्लत का दामाद था, इसलिए मैंने उसको अपने पास से भगा दिया। २९ हे मेरे परमेश्वर, उनको स्मरण रख, क्योंकि उन्होंने याजकपद और याजकों और लेवियों की वाचा को अशुद्ध किया है। ३० इस प्रकार मैंने उनको सब अन्यजातियों से शुद्ध किया, और एक-एक याजक और लेवीय की बारी और काम ठहरा दिया। ३१ फिर मैंने लकड़ी की भेंट ले आने के विशेष समय ठहरा दिए, और पहली-पहली उपज के देने का प्रबन्ध भी किया। हे मेरे परमेश्वर! मेरे हित के लिये मुझे स्मरण कर।

एस्टर

१ क्षयर्थ नामक राजा के दिनों में ये बातें हुईः यह वही क्षयर्थ है, जो एक सौ सताईस प्रान्तों पर, अर्थात् भारत से लेकर कश्श देश तक राज्य करता था। २ उन्हीं दिनों में जब क्षयर्थ राजा अपनी उस राजगढ़ी पर विराजमान था जो शशन नामक राजगढ़ में थी। ३ वहाँ उसने अपने राज्य के तीसरे वर्ष में अपने सब हाकिमों और कर्मचारियों को भोज दिया। फारस और मादै के सेनापति और प्रान्त-प्रान्त के प्रधान और हाकिम उसके सम्मुख आ गए। ४ वह उन्हे बहुत दिन बरन् एक सौ अस्सी दिन तक अपने राजवैभव का धन और अपने माहात्म्य के अनमोल पदार्थ दिखाता रहा। ५ इन्हे दिनों के बीते पर राजा ने क्या छोटे क्या बड़े उन सभी की भी जो शशन नामक राजगढ़ में इकट्ठा हुए थे, राजभवन की बारी के आँगन में सात दिन तक भोज दिया। ६ वहाँ के पर्व श्वेत और नीले सूत के थे, और सन और बैंगनी रंग की डोरियों से चाँदी के छल्लों में, संगमरमर के खम्भों से लगे हुए थे; और वहाँ की चौकियाँ सोने-चाँदी की थीं; और लाल और श्वेत और पीले और काले संगमरमर के बने हुए फर्श पर धरी हुई थीं। ७ उस भोज में राजा के योग्य दाखमधु भिन्न-भिन्न स्प के सोने के पात्रों में डालकर राजा की उदारता से बहतायत के साथ पिलाया जाता था। ८ पीना तो नियम के अनुसार होता था, किसी को विवश करके नहीं पिलाया जाता था; क्योंकि राजा ने तो अपने भवन के सब भण्डारियों को आज्ञा दी थी, कि जो अतिथि जैसा चाहे उसके साथ वैसा ही बर्ताव करना। ९ रानी वशती ने भी राजा क्षयर्थ के भवन में बिंबियों को भोज दिया। १० सातवें दिन, जब राजा का मन दाखमधु में मग्न था, तब उसने महमान, बिजता, हर्बोना, बिगता, अबगता, जेतर और कर्कस नामक सातों खोजों को जो क्षयर्थ राजा के सम्मुख सेवा टहल किया करते थे, आज्ञा दी, ११ कि रानी वशती को राजमुकुट धारण किए हुए राजा के सम्मुख ले आओ; जिससे कि देश-देश के लोगों और हाकिमों पर उसकी सुन्दरता प्रगट हो जाए; क्योंकि वह देखें में सुन्दर थी। १२ खोजों के द्वारा राजा की यह आज्ञा पाकर रानी वशती ने आने से इन्कार किया। इस पर राजा बड़े क्रोध से जलने लगा। १३ तब राजा ने समय-समय का भेद जानेवाले पंडितों से पूछा (राजा तो नीति और न्याय के सब ज्ञानियों से ऐसा ही किया करता था। १४ उसके पास कर्शना, शेतर, अदमाता, तशीशि, मैरेस, मर्सीना, और मम्कून नामक फारस, और मादै के सात प्रधान थे, जो राजा का दर्शन करते, और राज्य में मुख्य-मुख्य पदों पर नियुक्त किए गए थे।) १५ राजा ने पूछा, “रानी वशती ने राजा क्षयर्थ की खोजों द्वारा दिलाई हुई आज्ञा का उल्लंघन किया, तो नीति के अनुसार उसके साथ क्या किया जाए?” १६ तब मम्कून ने राजा और हाकिमों की उपस्थिति में उत्तर दिया, “रानी वशती ने जो अनुचित काम किया है, वह न केवल राजा से परन्तु सब हाकिमों से और उन सब देशों के लोगों से भी जो राजा क्षयर्थ के सब प्रान्तों में रहते हैं। १७ क्योंकि रानी के इस काम की चर्चा सब बिंबियों में होगी और जब यह कहा जाएगा, ‘राजा क्षयर्थ ने रानी वशती को अपने सामाने ले आने की आज्ञा दी परन्तु वह न आई,’ तब वे भी अपने-अपने पति को तुच्छ जानने लगेंगी। १८ आज के दिन फारस और मादी हाकिमों की बिंबियाँ जिन्होंने रानी की यह बात सुनी है तो वे भी राजा के सब हाकिमों से ऐसा ही कहने लगेंगी; इस प्रकार बहुत ही धृणा और क्रोध उत्पन्न होगा। १९ यदि राजा को स्वीकार हो, तो यह आज्ञा निकाले, और फारसियों और मादियों के कानान में लिखी भी जाए, जिससे कभी बदल न सके, कि रानी वशती राजा क्षयर्थ के सम्मुख फिर कभी आने न पाए, और राजा पटरानी का पद किसी दूसरी को दे दें जो उससे अच्छी हो। २० अतः जब राजा की यह आज्ञा उसके सारे राज्य में

सुनाई जाएगी, तब सब पत्रियाँ, अपने-अपने पति का चाहे बड़ा हो या छोटा, आदरमान करती रहेंगी।” २१ यह बात राजा और हाकिमों को प्रसन्न आई और राजा ने मम्कून की सम्मति मान ली और अपने राज्य में, २२ अर्थात् प्रत्येक प्रान्त के अक्षरों में और प्रत्येक जाति की भाषा में चिठ्ठियाँ भेजी, कि सब पुष्प अपने-अपने घर में अधिकार चलाएँ, और अपनी जाति की भाषा बोला करें।

२ इन बातों के बाद जब राजा क्षयर्थ का गुस्सा ठंडा हो गया, तब उसने रानी वशती की, और जो काम उसने किया था, और जो उसके विषय में आज्ञा निकली थी उसकी भी सुधि तीव्र। ३ तब राजा के सेवक जो उसके टहलाएँ थे, कहने लगे, “राजा के लिये सुन्दर तथा युवा कुँवारियाँ ढूँढ़ी जाएँ। ४ और राजा ने अपने राज्य के सब प्रान्तों में लोगों को इसलिये नियुक्त किया कि वे सब सुन्दर युवा कुँवारियों को शशन गढ़ के रनवास में इकट्ठा करें और बिंबियों के प्रबन्धक होंगे को जो राजा का खोजा था सौंप दें; और शुद्ध करने के योग्य बस्तुएँ उहें दी जाएँ। ५ तब उनमें से जो कुँवारी राजा की दृष्टि में उत्तम ठहरे, वह रानी वशती के स्थान पर पटरानी बनाई जाए।” यह बात राजा को प्रसन्न आई और उसने ऐसा ही किया। ६ शूशन गढ़ में मोटैके नामक एक यहदी रहता था, जो कीशी नाम के एक बिन्यामीनी का परपोता, शिमी का पोता, और याई का पुत्र था। ७ वह उन बन्दियों के साथ यस्तलेम से बँधुआई में गया था, जिन्हें बाबेल का राजा नव्बकूदनेस्सर, यहदा के राजा यकोन्याह के संग बन्दी बना के ले गया था। ८ उसने हदाम्सा नामक अपनी चर्चेरी बहन को, जो एस्टर भी कहलाती थी, पाता-पोसा था; क्योंकि उसके माता-पिता कोई न थे, और वह लड़की सुन्दर और स्पष्टवती थी, और जब उसके माता-पिता मर गए, तब मोटैके ने उसको अपनी बेटी करके पाला। ९ जब राजा की आज्ञा और नियम सुनाए गए, और बहुत सी युवा बिंबियाँ, शूशन गढ़ में होंगे के अधिकार में इकट्ठी की गईं, तब एस्टर भी राजभवन में बिंबियों के प्रबन्धक होंगे के अधिकार में सौंपी गईं। १० वह युक्ती उसकी दृष्टि में अच्छी लगी; और वह उससे प्रसन्न हुआ, तब उसने बिना विलम्ब उसे राजभवन में से शुद्ध करने की बस्तुएँ, और उसका भोजन, और उसके लिये चुनी हुई सात सहेलियाँ भी दी, और उसको और उसकी सहेलियों को रनवास में सबसे अच्छा रहने का स्थान दिया। ११ एस्टर ने न अपनी जाति बताई थी, न अपना कुल; क्योंकि मोटैके ने उसको आज्ञा दी थी, कि उसे न बताना। १२ मोटैके तो प्रतिदिन रनवास के आँगन के सामने टहलता था ताकि जाने कि एस्टर कैसी है और उसके साथ क्या हो रहा है? १३ जब एक-एक कन्या की बारी आई, कि वह क्षयर्थ राजा के पास जाए, और यह उस समय हुआ जब उसके साथ बिंबियों के लिये ठहराएँ हुए नियम के अनुसार बाहर माह तक व्यवहार किया गया था; अर्थात् उनके शुद्ध करने के दिन इस रीति से बीत गए, कि छ: माह तक गन्धरस का तेल लगाया जाता था, और छ: माह तक सुगन्ध-द्रव्य, और बिंबियों के शुद्ध करने का अन्य सामान लगाया जाता था। १४ इस प्रकार से वह कन्या जब राजा के पास जाती थी, तब जो कुछ वह चाहती कि रनवास से राजभवन में ले जाए, वह उसको दिया जाता था। १५ सौँझ की तो वह जाती थी और सर्वों को वह लौटकर रनवास के दूरसे घर में जाकर रखैलों के प्रबन्धक राजा के खोजे शाशगाज के अधिकार में हो जाती थी, और राजा के पास फिर नहीं जाती थी। और यदि राजा उससे प्रसन्न हो जाता था, तब वह नाम लेकर बुलाई जाती थी। १६ जब मोटैके के चाचा अबीहिल की बेटी एस्टर, जिसको मोटैके ने बेटी मानकर रखा था, उसकी बारी आई कि राजा के पास जाए, तब जो कुछ बिंबियों के प्रबन्धक राजा के खोजे होंगे ने उसके लिये ठहराया था, उससे अधिक उसने और कुछ न माँगा। जितनों ने एस्टर को देखा, वे सब उससे प्रसन्न हुए। १७ अतः एस्टर

राजभवन में राजा क्षर्यष के पास उसके राज्य के सातवें वर्ष के तेबेत नामक दसवें महीने में पहुँचाई गई। १७ और राजा ने एस्टरो का और सब द्वियों से अधिक प्यार किया, और अन्य सब कुँवारियों से अधिक उसके अनुग्रह और कृपा की दृष्टि उसी पर हुई, इस कारण उसने उसके सिर पर राजमुकुट रखा और उसको वशती के स्थान पर रानी बनाया। १८ तब राजा ने अपने सब हाकिमों और कर्मचारियों को एक बड़ा भोज दिया, और उसे एस्टरो का भोज कहा; और प्रान्तों में छुट्टी दिलाई, और अपनी उदारता के बोग्य इनाम भी बैठ। १९ जब कुँवारियाँ दूसरी बार इकट्ठा की गई, तब मोदैके राजभवन के फाटक में बैठा था। २० एस्टरो ने अपनी जाति और कुल का पाता नहीं दिया था, क्योंकि मोदैके ने उसको ऐसी आज्ञा दी थी कि न बताए; और एस्टरो मोदैके की बात ऐसी मानती थी जैसे कि उसके यहाँ अपने पालन-पोषण के समय मानती थी। २१ उन्हीं दिनों में जब मोदैके राजा के राजभवन के फाटक में बैठा करता था, तब राजा के खोजे जो द्वारपाल भी थे, उनमें से बिगताना और तैरेश नामक दो जनों ने राजा क्षर्यष से स्तकर उस पर हाथ चलाने की युक्ति की। २२ यह बात मोदैके को मालूम हुई, और उसने एस्टरो रानी को यह बात बताई, और एस्टरो ने मोदैके का नाम लेकर राजा को चितौती दी। २३ तब जाँच पड़ताल होने पर यह बात सच निकली और वे दोनों वृक्ष पर लटका दिए गए, और यह बृतान्त राजा के सामने इतिहास की पुस्तक में लिख लिया गया।

३ इन बातों के बाद राजा क्षर्यष ने अगारी हम्मदाता के पुत्र हामान को उच्च पद दिया, और उसको महत्व देकर उसके लिये उसके साथी हाकिमों के सिंहासनों से ऊँचा सिंहासन ठहराया। ४ राजा के सब कर्मचारी जो राजभवन के फाटक में रहा करते थे, वे हामान के सामने झुकर कर दण्डवत् किया करते थे क्योंकि राजा ने उसके विषय ऐसी ही आज्ञा दी थी; परन्तु मोदैके न तो झुकता था और न उसको दण्डवत् करता था। ५ तब राजा के कर्मचारी जो राजभवन के फाटक में रहा करते थे, उन्होंने मोदैके से पूछा, “तू राजा की आज्ञा का क्यों उल्लंघन करता है?” ६ जब वे उसके प्रतिदिन ऐसा ही कहते रहे, और उसने उनकी एक न मानी, तब उन्होंने यह देखने की इच्छा से कि मोदैके की यह बात चलेगी कि नहीं, हामान को बता दिया; उसने उनको बता दिया था कि मैं यहाँ हूँ। ७ जब हामान ने देखा, कि मोदैके नहीं झुकता, और न मुझ को दण्डवत् करता है, तब हामान बहुत ही क्रोधित हुआ। ८ उसने केवल मोदैके पर हाथ उठाना अपनी मर्यादा से कम जाना। क्योंकि उन्होंने हामान को यह बता दिया था, कि मोदैके किस जाति का है, इसलिए हामान ने क्षर्यष के साप्राज्य में रहनेवाले सारे यहदियों को भी मोदैके की जाति जानकर, विनाश कर डालने की युक्ति निकाली। ९ राजा क्षर्यष के बारहवें वर्ष के नीसान नामक पहले महीने में, हामान ने अदार नामक बारहवें महीने तक के एक-एक दिन और एक-एक महीने के लिये “पूर्” अर्थात् चिरी अपने सामने डलवाई। १० हामान ने राजा क्षर्यष से कहा, “तेरे राज्य के सब प्रान्तों में रहनेवाले देश-देश के लोगों के मध्य में तिरान-वितर और छिटकी हुई एक जाति है, जिसके नियम और सब लोगों के नियमों से भिन्न हैं; और वे राजा के कानून पर नहीं चलते, इसलिए उन्हें रहने देना राजा को लाभदायक नहीं है। ११ यदि राजा को स्वीकार हो तो उन्हें नष्ट करने की आज्ञा लिखी जाए, और मैं राजा के भण्डारियों के हाथ में राजभण्डरा में पहुँचाने के लिये, दस हजार किक्कार चाँदी दूँगा।” १२ तब राजा ने अपनी मुहर वाली अंगूठी अपने हाथ से उतारकर अगारी हम्मदाता के पुत्र हामान को, जो यहदियों का बैरी था दे दी। १३ और राजा ने हामान से कहा, “वह चाँदी तुझे दी गई है, और वे लोग भी, ताकि तू उससे जैसा तेरा जी चाहे वैसा ही व्यवहार करो।” १४ फिर उसी पहले महीने के तेरहवें दिन को राजा के लेखक बुलाए गए, और हामान की

आज्ञा के अनुसार राजा के सब अधिपतियों, और सब प्रान्तों के प्रधानों, और देश-देश के लोगों के हाकिमों के लिये चिठ्ठियाँ, एक-एक प्रान्त के अक्षरों में, और एक-एक देश के लोगों की भाषा में राजा क्षर्यष के नाम से लिखी गई; और उनमें राजा की मुहर वाली अंगूठी की छाप लगाई गई। १५ राज्य के सब प्रान्तों में इस आशय की चिठ्ठियाँ हर डाकियों के द्वारा भेजी गई कि एक ही दिन में, अर्थात् अदार नामक बारहवें महीने के तेरहवें दिन को, क्या जवान, क्या बढ़ा, क्या स्त्री, क्या बालक, सब यहाँ घाट और नाश किए जाएँ, और उनकी धन-सम्पत्ति लट ली जाए। १६ उस आज्ञा के लेख की नकलें सब प्रान्तों में खुली हुई भेजी गई कि सब देशों के लोग उस दिन के लिये तैयार हो जाएँ। १७ यह आज्ञा शूशन गढ़ में दी गई, और डाकिए राजा की आज्ञा से तुरन्त निकल गए। राजा और हामान तो दाखमधु पीने बैठ गए; परन्तु शूशन नगर में घबराहट फैल गई।

४ जब मोदैके ने जान लिया कि क्या-क्या किया गया है तब मोदैके बच्चा फाड़, टाट पहन, राख डालकर, नगर के मध्य जाकर ऊँचे और दुःख भेरे शब्द से चिल्लाने लगा; २० और वह राजभवन के फाटक के सामने पहुँचा, परन्तु टाट पहने हुए राजभवन के फाटक के भीतर तो किसी के जाने की आज्ञा न थी। २१ एक-एक प्रान्त में, जहाँ-जहाँ राजा की आज्ञा और नियम पहुँचा, वहाँ-वहाँ यहाँ बड़ा बिलाप करने और रोने पीटने लगे, बरन बहुत से टाट पहने और राख डाले हुए पड़े रहे। २२ एस्टरे रानी की सहेलियों और खोजों ने जाकर उसको बता दिया, तब रानी शोक से भर गई; और मोदैके के पास बच्चे भेजकर यह कहलाया कि टाट उतारकर इन्हें पहन ले, परन्तु उसने उन्हें न लिया। २३ तब एस्टरे ने राजा के खोजों में से हताक को जिसे राजा ने उसके पास रहने को ठहराया था, बुलावाकर आज्ञा दी, कि मोदैके के पास जाकर मालूम कर ले, कि क्या बात है और इसका क्या कारण है। २४ तब हताक नगर के उस चौक में, जो राजभवन के फाटक के सामने था, मोदैके के पास निकल गया। २५ मोदैके ने उसको सब कुछ बता दिया कि मेरे ऊपर क्या-क्या बीती है, और हामान ने यहदियों के नाश करने की अनुमति पाने के लिये राजभण्डर में कितनी चाँदी भर देने का वचन दिया है, यह भी ठीक-ठीक बता दिया। २६ फिर यहदियों को विनाश करने की जो आज्ञा शूशन में दी गई थी, उसकी एक नकल भी उसने हताक के हाथ में, एस्टरे को दिखाने के लिये दी, और उसे सब हाल बताने, और यह आज्ञा देने को कहा, कि भीतर राजा के पास जाकर अपने लोगों के लिये गिडिङिडाकर विनाई करे। २७ तब हताक ने एस्टरे के पास जाकर मोदैके की बातें कह सुनाई। २८ तब एस्टरे ने हताक को मोदैके से यह कहने की आज्ञा दी, २९ “राजा के सब कर्मचारियों, बरन राजा के प्रान्तों के सब लोगों को भी मालूम है, कि क्या पृष्ठ क्या छुट्टी, कोई क्यों न हो, जो आज्ञा बिना पाए भीतरी आँगन में राजा के पास जाएगा उसके मार डालने ही की आज्ञा है; केवल जिसकी ओर राजा सोने का राजदण्ड बढ़ाए वही बचता है। परन्तु मैं अब तीस दिन से राजा के पास नहीं बुलाई गई हूँ।” ३० एस्टरे की ये बाँबों मोदैके को सुनाई गई। ३१ तब मोदैके ने एस्टरे के पास यह कहला भेजा, “तू मन ही मन यह विचार न कर, कि मैं ही राजभवन में रहने के कारण और सब यहदियों में से बच्ची रहँगी। ३२ क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा, परन्तु तू अपने पिता के घराने समेत नाश होगी। क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिये राजपट मिल गया हो?” ३३ तब एस्टरे ने मोदैके के पास यह कहला भेजा, “तू जाकर शूशन के सब यहदियों को इकट्ठा कर, और तुम सब मिलकर मेरे निमित उपवास करो, तीन

दिन-रात न तो कुछ खाओ, और न कुछ पीओ। और मैं भी अपनी सहेलियों सहित उसी रीति उपवास करूँगी। और ऐसी ही दशा में मैं नियम के विश्वरूप राजा के पास भीतर जाऊँगी; और यदि नाश हो गई तो हो गई।” १५ तब मोदकै चला गया और एस्ट्रेर की आज्ञा के अनुसार ही उसने सब कुछ किया।

५ तीसरे दिन एस्ट्रेर अपने राजकीय बब्ब पहनकर राजभवन के भीतरी आँगन

में जाकर, राजभवन के सामने खड़ी हो गई। राजा तो राजभवन में राजगढ़ी पर भवन के द्वार के सामने विराजमान था; २ और जब राजा ने एस्ट्रेर रानी को आँगन में खड़ी हुई देखा, तब उससे प्रसन्न होकर सोने का राजदण्ड जो उसके हाथ में था उसकी ओर बढ़ाया। तब एस्ट्रेर ने निकट जाकर राजदण्ड की नोक छुई। ३ तब राजा ने उससे पूछा, “हे एस्ट्रेर रानी, तुझे क्या चाहिये? और तू क्या माँगती है? माँग और तुझे आधा राज्य तक दिया जाएगा।” ४ एस्ट्रेर ने कहा, “यदि राजा को स्वीकार हो, तो आज हामान को साथ लेकर उस भोज में आए, जो मैंने राजा के लिये तैयार किया है।” ५ तब राजा ने आज्ञा दी, “हामान को तुरन्त ले आओ, कि एस्ट्रेर का निमंत्रण ग्रहण किया जाए।” अतः राजा और हामान एस्ट्रेर के तैयार किए हुए भोज में आए। ६ भोज के समय जब दाखमधु पिया जाता था, तब राजा ने एस्ट्रेर से कहा, “तेरा क्या निवेदन है? वह पूरा किया जाएगा। और तू क्या माँगती है? माँग, और आधा राज्य तक तुझे दिया जाएगा।” ७ एस्ट्रेर ने उत्तर दिया, “मेरा निवेदन और जो वरदान मैं माँगूँ वही देना राजा को स्वीकार हो, तो राजा और हामान कल उस भोज में आएँ जिसे मैं उनके लिये करूँगी, और कल मैं राजा के इस वचन के अनुसार करूँगी।” ८ उस दिन हामान अनन्दित और मन में प्रसन्न होकर बाहर गया। परन्तु जब उसने मोदकै को राजभवन के फाटक में देखा, कि वह उसके सामने तो खड़ा हुआ, और न हटा, तब वह मोदकै के विश्वरूप क्रोध से भर गया। ९ तो भी वह अपने को रोककर अपने घर गया; और अपने मित्रों और अपनी झी जेरेश को बुलवा भेजा। १० तब हामान ने, उससे अपने धन का वैधव, और अपने बाल-बच्चों की बढ़ती और राजा ने उसको कैसे-कैसे बढ़ाया।

इन सब का वर्णन किया। ११ हामान ने यह भी कहा, “एस्ट्रेर रानी ने भी मुझे छोड़ और किसी को राजा के संग, अपने किए हुए भोज में आने न दिया; और कल के लिये भी राजा के संग उसने मुझी को नेबता दिया है। १२ तो भी जब जब मुझे वह यहदी मोदकै राजभवन के फाटक में बैठा हुआ दिखाई पड़ता है, तब-तब यह सब मेरी दृष्टि में व्यर्थ लगता है।” १३ उसकी पत्री जेरेश और उसके सब मित्रों ने उससे कहा, “पचास हाथ ऊँचा फांसी का एक खम्भा बनाया जाए, और सबेरे को राजा से कहना, कि उस पर मोदकै लटका दिया जाए; तब राजा के संग आनन्द से भोज में जाना।” इस बात से प्रसन्न होकर हामान ने वैसा ही फांसी का एक खम्भा बनवाया।

६ उस रात राजा को नीद नहीं आई, इसलिए उसकी आज्ञा से इतिहास की

पुस्तक लाई गई, और पढ़कर राजा को सुनाई गई। ७ उसमें यह लिखा हुआ मिला, कि जब राजा क्षर्यष्ट के हाकिम जो द्वारपाल भी थे, उनमें से बिगताना और तेरेश नामक दो जनों ने उस पर हाथ चलाने की युक्ति की थी उसे मोदकै ने प्रगट किया था। ८ तब राजा ने पूछा, “इसके बदले मोदकै की क्या प्रतिष्ठा और बड़ाई की गई?” राजा के जो सेवक उसकी सेवा ठहल कर रहे थे, उन्होंने उसको उत्तर दिया, “उसके लिये कुछ भी नहीं किया गया।” ९ राजा ने पूछा, “आँगन में कौन है?” उसी समय हामान राजा के भवन से बाहरी आँगन में इस मनसा से आया था, कि जो खम्भा उसने मोदकै के लिये तैयार

कराया था, उस पर उसको लटका देने की चर्चा राजा से करे। १० तब राजा के सेवकों ने उससे कहा, “आँगन में तो हामान खड़ा है।” राजा ने कहा, “उसे भीतर बुलवा लाओ।” ११ जब हामान भीतर आया, तब राजा ने उससे पूछा, “जिस मधुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो तो उसके लिये क्या करना उचित होगा?” हामान ने यह सोचकर, कि मुझसे अधिक राजा किसकी प्रतिष्ठा करना चाहता होगा? १२ राजा को उत्तर दिया, “जिस मधुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहे, १३ उसके लिये राजकीय बब्ब लाया जाए, जो राजा पहनता है, और एक घोड़ा भी, जिस पर राजा सवार होता है, और उसके सिर पर जो राजकीय मुकुट धरा जाता है वह भी लाया जाए। १४ फिर वह बब्ब, और वह घोड़ा राजा के किसी बड़े हाकिम को सौंपा जाए, और जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो, उसको वह बब्ब पहनाया जाए, और उस घोड़े पर सवार करके, नगर के चौक में उसे फिराया जाए; और उसके आगे-आगे यह प्रचार किया जाए, ‘जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है, उसके साथ ऐसा ही किया जाएगा।’”

१५ राजा ने हामान से कहा, “फुर्तीं करके अपने कहने के अनुसार उस बब्ब और उस घोड़े को लेकर, उस यहदी मोदकै से जो राजभवन के फाटक में बैठा करता है, वैसा ही कर। जैसा तूने कहा है उसमें कुछ भी कमी होने न पाए।” १६ तब हामान ने उस बब्ब, और उस घोड़े को लेकर, मोदकै को पहनाया, और उसे घोड़े पर चढ़ाकर, नगर के चौक में इस प्रकार पुकारता हुआ घुमाया, “जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है उसके साथ ऐसा ही किया जाएगा।” १७ तब मोदकै तो राजभवन के फाटक में लौट गया परन्तु हामान शोक करता हुआ और सिर ढाँपे हुए झट परन्तु अपने घर को गया। १८ हामान ने अपनी पत्री जेरेश और अपने सब मित्रों से सब कुछ जो उस पर बीता था वर्णन किया। तब उसके बुद्धिमान मित्रों और उसकी पत्री जेरेश ने उससे कहा, “मोदकै जिसे तू नीचा दिखाना चाहता है, यदि वह यहदियों के बंश में का है, तो तू उस पर प्रबल न होने पाएगा उससे पूरी रीति नीचा हो जाएगा।” १९ वे उससे बातें कर ही रहे थे, कि राजा के खोजे आकर, हामान को एस्ट्रेर के किए हुए भोज में फुर्तीं से बुला ले गए।

७ अतः राजा और हामान एस्ट्रेर रानी के भोज में आ गए। १ और राजा ने दूसरे दिन दाखमधु पीते-पीते एस्ट्रेर से फिर पूछा, “हे एस्ट्रेर रानी! तेरा क्या निवेदन है? वह पूरा किया जाएगा। और तू क्या माँगती है? माँग, और आधा राज्य तक तुझे दिया जाएगा।” २ एस्ट्रेर रानी ने उत्तर दिया, “हे राजा! यदि तू मुझ पर प्रसन्न है, और राजा को यह स्वीकार हो, तो मैं निवेदन से मुझे, और मेरे माँगने से मेरे लोगों को प्राणदान मिले। ३ क्योंकि मैं और मेरी जाति के लोग बेच डाले गए हैं, और हम सब घात और नाश किए जानेवाले हैं। यदि हम केवल दास-दासी हो जाने के लिये बेच डाले जाते, तो मैं चूप रहती; चाहे उस दशा में भी वह विरोधी राजा की हानि भर न सकता।” ४ तब राजा क्षर्यष्ट ने एस्ट्रेर रानी से पूछा, “वह कौन है? और कहाँ है जिसने ऐसा करने की मनसा की है?” ५ एस्ट्रेर ने उत्तर दिया, “वह विरोधी और शबू यही दुश्म हामान है।” तब हामान राजा-रानी के सामने भयभीत हो गया। ६ राजा कोध से भरकर, दाखमधु पीने से उठकर, राजभवन की बारी में निकल गया; और हामान यह देखकर कि राजा ने मेरी हानि ठानी होगी, एस्ट्रेर रानी से प्राणदान माँगने की खड़ा हुआ। ७ जब राजा राजभवन की बारी से दाखमधु पीने के स्थान में लौट आया तब क्या देखा, कि हामान उसी चौकी पर जिस पर एस्ट्रेर बैठी है द्युक रहा है; और राजा ने कहा, “क्या यह घर ही मैं मेरे सामने ही रानी से बरबस करना चाहता है?” राजा के मुँह से यह वचन निकला ही था, कि सेवकों ने हामान का मुँह ढाँप दिया। ८ तब राजा के सामने उपस्थित रहनेवाले खोजों में से हर्बोना नाम एक ने राजा से कहा, “हामान के यहाँ

पचास हाथ ऊँचा फांसी का एक खम्भा खड़ा है, जो उसने मोटैके के लिये बनवाया है, जिसने राजा के हित की बात कही थी।” राजा ने कहा, “उसको उसी पर लटका दो।” १० तब हामान उसी खम्भे पर जो उसने मोटैके के लिये तैयार कराया था, लटका दिया गया। इस पर राजा का गुस्सा ठंडा हो गया।

८ उसी दिन राजा क्षर्यष्ट के यहदियों के विरोधी हामान का घरबार एस्टरे

रानी को दे दिया। मोटैके राजा के सामने आया, क्योंकि एस्टरे ने राजा को बताया था, कि उससे उसका क्या नाता था २ तब राजा ने अपनी वह मुहर वाली अंगूठी जो उसने हामान से ले ली थी, उतार कर, मोटैके को दे दी। एस्टरे ने मोटैके को हामान के घरबार पर अधिकारी नियुक्त कर दिया। ३ फिर एस्टरे दूसरी बार राजा से बोलीं; और उसके पाँच पर गिर, आँसू बहा बहाकर उससे गिडिगिडाकर बिनती की, कि अगामी हामान की बुराई और यहदियों की हानि की उसकी युक्ति निष्फल की जाए। ४ तब राजा ने एस्टरे की ओर सोने का राजदण्ड बढ़ाया। ५ तब एस्टरे उठकर राजा के सामने खड़ी हुई, और कहने लगी, “यदि राजा को स्वीकार हो और वह मुझसे प्रेसन है और यह बात उसको ठीक जान पड़े, और मैं भी उसको अच्छी लगती हूँ, तो जो चिठ्ठियाँ हममदाता अगामी के पुत्र हामान ने राजा के सब प्रान्तों के यहदियों को नाश करने की युक्ति करके लिखाई थी, उनको पलटने के लिये लिखा जाए। ६ क्योंकि मैं अपने जाति के लोगों पर पड़नेवाली उस विपत्ति को किस रीत से देख सकूँगी? और मैं अपने भाइयों के विनाश को कैसे देख सकूँगी?” ७ तब राजा क्षर्यष्ट ने एस्टरे रानी से और मोटैके यहदी से कहा, “मैं हामान का घरबार तो एस्टरे को दे चुका हूँ, और वह फांसी के खम्भे पर लटका दिया गया है, इसलिए कि उसने यहदियों पर हाथ उठाया था। ८ अतः तुम अपनी समझ के अनुसार राजा के नाम से यहदियों के नाम पर लिखो, और राजा की मुहर वाली अंगूठी की छाप भी लगाओ; क्योंकि जो चिठ्ठी राजा के नाम से लिखी जाए, और उस पर उसकी अंगूठी की छाप लगाई जाए, उसको कोई भी पलट नहीं सकता।” ९ उसी समय अर्थात् सीवान नामक तीसरे महीने के तेरहसंवेद दिन को राजा के लेखक बुलवाए गए और जिस-जिस बात की आज्ञा मोटैके ने उन्हें दी थी, उसे यहदियों और अधिपतियों और भारत से लेकर कश तक, जो एक सौ सताईंस प्रान्त हैं, उन सभी के अधिपतियों और हाकिमों को एक-एक प्रान्त के अक्षरों में और एक-एक देश के लोगों की भाषा में, और यहदियों को उनके अक्षरों और भाषा में लिखी गई। १० मोटैके ने राजा क्षर्यष्ट के नाम से चिठ्ठियाँ लिखाकर, और उन पर राजा की मुहर वाली अंगूठी की छाप लगाकर, वेग चलनेवाले सरकारी घोड़ों, खच्चरों और सॉडनियों पर सवार हरकरों के हाथ भेज दी। ११ इन चिठ्ठियों में सब नगरों के यहदियों को राजा की ओर से अनुमति दी गई, कि वे इकट्ठे हों और अपना-अपना प्राण बचाने के लिये तैयार होकर, जिस जाति या प्रान्त के लोग अन्याय करके उनको या उनकी छियों और बाल-बच्चों को दुःख देना चाहें, उनको घाट और नाश करें, और उनकी धन-सम्पत्ति लट लें। १२ और यह राजा क्षर्यष्ट के सब प्रान्तों में एक ही दिन में किया जाए, अर्थात् अदार नामक बारहवें महीने के तेरहवें दिन को। १३ इस आज्ञा के लेख की नकले, समस्त प्रान्तों में सब देशों के लोगों के पास खुली हुई भेजी गई, ताकि यहदी उस दिन अपने शत्रुओं से पलटा लेने को तैयार रहें। १४ अतः हरकरों वेग चलनेवाले सरकारी घोड़ों पर सवार होकर, राजा की आज्ञा से फुर्ती करके जलदी चले गए, और यह आज्ञा शूशन राजगढ़ में दी गई थी। १५ तब मोटैके नीले और श्वेत रंग के राजकीय वस्त्र पहने और सिर पर सोने का बड़ा मुकुट धोर हुए और सूक्ष्म सन और बैंगनी रंग का बागा पहने हुए, राजा के सम्मुख से निकला, और शूशन नगर के लोग आनन्द के मारे ललकार उठे। १६ और यहदियों को आनन्द और हर्ष हुआ और उनकी

बड़ी प्रतिष्ठा हुई। १७ और जिस-जिस प्रान्त, और जिस-जिस नगर में, जहाँ कहीं राजा की आज्ञा और नियम पहुँचे, वहाँ-वहाँ यहदियों को आनन्द और हर्ष हुआ, और उन्होंने भोज करके उस दिन को खुशी का दिन माना। और उस देश के लोगों में से बहुत लोग यहदी बन गए, क्योंकि उनके मन में यहदियों का डर समा गया था।

१ अदार नामक बारहवें महीने के तेरहवें दिन को, जिस दिन राजा की आज्ञा

और नियम पूरे होने को थे, और यहदियों के शत्रु उन पर प्रबल होने की आशा रखते थे, परन्तु इसके विपरीत यहदी अपने बैरियों पर प्रबल हुए; उस दिन, २ यहदी लोग राजा क्षर्यष्ट के सब प्रान्तों में अपने-अपने नगर में इकट्ठे हुए, कि जो उनकी हानि करने का यत्र करे, उन पर हाथ चलाएँ। कोई उनका सामना न कर सका, क्योंकि उनका भय देश-देश के सब लोगों के मन में समा गया था। ३ वरन् प्रान्तों के सब हाकिमों और अधिपतियों और प्रधानों और राजा के कर्मचारियों ने यहदियों की सहायता की, क्योंकि उनके मन में मोटैके का भय समा गया था। ४ मोटैके तो राजा के यहाँ बहुत प्रतिष्ठित था, और उसकी कीर्ति सब प्रान्तों में फैल गई; वरन् उस पुष्प मोटैके की महिमा बढ़ती चली गई। ५ उन्होंने पर्शन्दाता, दल्पोन, अस्पाता, पोराता, अदल्या, अरीदाता, ६ पर्मशता, अरिसे, अरदि और वैजाता, ७ अर्थात् हममदाता के पुत्र यहदियों के विरोधी हामान के दसों पुत्रों को भी घात किया; परन्तु उनके धन को न लटा। ८ उसी दिन शूशन राजगढ़ में घात किए हुओं की गिनती राजा को समाई गई। ९ तब राजा ने एस्टरे रानी से कहा, “यहदियों ने शूशन राजगढ़ ही में पाँच सौ मनुष्यों और हामान के दसों पुत्रों को भी घात करके नाश किया है; फिर राज्य के अन्य प्रान्तों में उन्होंने न जाने क्या-क्या किया होगा! अब इससे अधिक तो निवेदन क्या है? वह भी पूरा किया जाएगा। और तू क्या माँगती है? वह भी तुझे दिया जाएगा।” १० एस्टरे ने कहा, “यदि राजा को स्वीकार हो तो शूशन के यहदियों को आज के समान कली भी करने की आज्ञा दी जाए, और हामान के दसों पुत्र फांसी के खम्भों पर लटकाए जाएँ।” ११ राजा ने आज्ञा दी, “ऐसा किया जाए़,” यह आज्ञा शूशन में दी गई, और हामान के दसों पुत्र लटकाए गए। १२ शूशन के यहदियों ने अदार महीने के चौदहवें दिन को भी इकट्ठे होकर शूशन में तीन सौ पुस्तों को घात किया, परन्तु धन को न लटा। १३ राज्य के अन्य प्रान्तों के यहदी इकट्ठा होकर अपना-अपना प्राण बचाने के लिये खड़े हुए, और अपने बैरियों में से पचहतर हजार मनुष्यों को घात करके अपने शत्रुओं से विश्वास पाया; परन्तु धन को न लटा। १४ यह अदार महीने के तेरहवें दिन को किया गया, और चौदहवें दिन को उन्होंने विश्वास करके भोज किया और आनन्द का दिन ठहराया। १५ परन्तु शूशन के यहदी अदार महीने के तेरहवें दिन को, और उसी महीने के चौदहवें दिन को इकट्ठा हुए, और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को उन्होंने विश्वास करके भोज का और आनन्द का दिन ठहराया। १६ इस कारण देहाती यहदी जो बिना शहरपान ही की बसियों में रहते हैं, वे अदार महीने के चौदहवें दिन को आनन्द और भोज और खुशी और आपस में भोजन सामग्री भेजते कि दिन नियुक्त करके मानते हैं। १७ इन बातों का बृतान्त लिखकर, मोटैके ने राजा क्षर्यष्ट के सब प्रान्तों में, क्या निकट क्या दूर रहनेवाले सभे यहदियों के पास चिठ्ठियाँ भेजी, १८ और यह आज्ञा दी, कि अदार महीने के चौदहवें और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को प्रतिवर्ष माना करें। १९ जिनमें यहदियों ने अपने शत्रुओं से विश्वास पाया, और यह महीना

जिसमें शोक आनन्द से, और विलाप खुशी से बदला गया; (माना करें) और उनको भोज और आनन्द और एक दूसरे के पास भोजन सामग्री भेजने और कंगालों को दान देने के दिन मानें। २४ अतः यहदियों ने जैसा आरम्भ किया था, और जैसा मोटैके ने उन्हें लिखा, वैसा ही करने का निश्चय कर लिया। २५ क्योंकि हम्मदाता अगारी का पुत्र हामान जो सब यहदियों का विरोधी था, उसने यहदियों का नाश करने की युक्ति की, और उन्हें मिटा डालने और नाश करने के लिये पूर् अर्थात् चिठ्ठी डाली थी। २६ परन्तु जब राजा ने यह जान लिया, तब उसने आज्ञा दी और लिखवाई कि जो दुष्य युक्ति हामान ने यहदियों के मिठ्ठू की थी वह उसी के सिर पर पलट आए, तब वह और उसके पुत्र फांसी के खम्भों पर लटकाए गए। २७ इस कारण उन दिनों का नाम पूर् शब्द से पूरीम रखा गया। इस चिठ्ठी की सब बातों के कारण, और जो कुछ उन्होंने इस विषय में देखा और जो कुछ उन पर बीता था, उसके कारण भी २८ यहदियों ने अपने-अपने लिये और अपनी सन्तान के लिये, और उन सभी के लिये भी जो उनमें मिल गए थे यह अटल प्रण किया, कि उस लेख के अनुसार प्रतिवर्ष उसके ठहराए हुए समय में वे ये दो दिन मानें। २९ और पीढ़ी-पीढ़ी, कुल-कुल, प्रान्त-प्रान्त, नगर-नगर में ये दिन स्मरण किए और माने जाएँगे। और पूरीम नाम के दिन यहदियों में कभी न मिटेंगे और उनका स्मरण उनके वंश से जाता न रहेगा। ३० फिर अबहिल की बेटी एस्टेर रानी, और मोटैके यहदी ने, पूरीम के विषय यह दूसरी चिठ्ठी बढ़े अधिकार के साथ लिखी। ३१ इसकी नकलें मोटैके ने क्षयर्ष के राज्य के, एक सौ सत्ताईस प्रान्तों के सब यहदियों के पास शान्ति देनेवाली और सच्ची बातों के साथ इस आशय से भेजी, ३२ कि पूरीम के उन दिनों के विशेष ठहराए हुए समयों में मोटैके यहदी और एस्टेर रानी की आज्ञा के अनुसार, और जो यहदियों ने अपने और अपनी सन्तान के लिये ठान लिया था, उसके अनुसार भी उपवास और विलाप किए जाएँ। ३३ पूरीम के विषय का यह नियम एस्टेर की आज्ञा से भी स्थिर किया गया, और उनकी चर्चा पुस्तक में लिखी गई।

१० राजा क्षयर्ष ने देश और समुद्र के टापुओं पर कर लगाया। ११ उसके माहात्म्य और पराक्रम के कार्मों, और मोटैके की उस बड़ाई का पूरा व्योरा, जो राजा ने उसकी की थी, क्या वह मादै और फारस के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? १२ यहदी मोटैके, क्षयर्ष राजा ही के बाद था, और यहदियों की दृष्टि में बड़ा था, और उसके सब भाई उससे प्रसन्न थे, क्योंकि वह अपने लोगों की भलाई की खोज में रहा करता था और अपने सब लोगों से शान्ति की बातें कहा करता था।

अर्थ्यूब

१ ऊस देश में अर्थ्यूब नामक एक पुरुष था; वह खरा और सीधा था और

परमेश्वर का भय मानता और बुराई से परे रहता था। २ उसके सात बेटे और तीन बेटियाँ उत्पन्न हुईं। ३ फिर उसके सात हजार भेड़-बकरियाँ, तीन हजार ऊंट, पाँच सौ जोड़ी बैल, और पाँच सौ गदहियाँ, और बहत ही दास-दासियाँ थीं; बरन उसके इन्हीं सम्पत्ति थीं, कि पूरी देशों में वह सबसे बड़ा था। ४ उसके बेटे बारी-बारी से एक दूसरे के घर में खाने-पीने को जाया करते थे; और अपनी तीनों बहनों को अपने संग खाने-पीने के लिये बुलवा भेजते थे। ५ और जब जब दावत के दिन पूरे हो जाते, तब-तब अर्थ्यूब उन्हें बुलवाकर पवित्र करता, और बड़ी भौं को उठकर उनकी गिनती के अनुसार होमबलि चढ़ाता था; क्योंकि अर्थ्यूब सोचता था, “कदाचित् मेरे बच्चों ने पाप करके परमेश्वर को छोड़ दिया हो।” इसी रीति अर्थ्यूब संदेव किया करता था। ६ एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी आया। ७ यहोवा ने शैतान से पूछा, “तू कहाँ से आता है?” शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, “पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूँ।” ८ यहोवा ने शैतान से पूछा, “क्या तूने दास अर्थ्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुच्छ खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है।” ९ यहोवा ने शैतान से पूछा, “तू कहाँ से आता है?” शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, “पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूँ।” १० यहोवा ने शैतान से पूछा, “क्या तूने मेरे दास अर्थ्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुच्छ खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है।” ११ शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, “क्या अर्थ्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है? १२ क्या तूने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा नहीं बाँधा? त्वे तो उसके काम पर आशीष दी है, और उसकी सम्पत्ति देश भर में फैल गई है। १३ परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छँ; तब वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा।” १४ यहोवा ने शैतान से कहा, “सुन, जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना।” तब शैतान यहोवा के सामने से चला गया। १५ एक दिन अर्थ्यूब के बेटे-बेटियाँ बड़े भाई के घर में खाते और दाखमधु पी रहे थे; १६ तब एक दूत अर्थ्यूब के पास आकर कहने लगा, “हम तो बैलों से हल जोत रहे थे और गदहियाँ उनके पास चर रही थीं। १७ कि शेषा के लोग धावा करके उनको ले गए, और तलवार से तेरे सेवकों को मार डाला; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूँ।” १८ वह अभी यह कह ही रहा था कि दूसरा भी आकर कहने लगा, “परमेश्वर की आग आकाश से गिरी और उससे भेड़-बकरियाँ और सेवक जलकर भस्म हो गए; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूँ।” १९ वह अभी यह कह ही रहा था, कि एक और भी आकर कहने लगा, “तेरे बेटे-बेटियाँ बड़े भाई के घर में खाते और दाखमधु पीते थे, २० कि जंगल की ओर से बड़ी प्रचण्ड वायु चली, और घर के चारों कोनों को ऐसा झोंका मारा, कि वह जवानों पर पिर पड़ा और वे मर गए; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूँ।” २१ तब अर्थ्यूब उठा, और बागा फाड़, सिर मुँड़ाकर भूमि पर गिरा और दण्डकर करके कहा, २२ “मैं अपनी माँ के पेट से नंगा निकला और वही नंगा लौट जाऊँगा; यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है।” २३ इन सब बातों में भी अर्थ्यूब ने न तो पाप किया, और न परमेश्वर पर मूर्खता से दोष लगाया।

२ फिर एक और दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए, और

उनके बीच शैतान भी उसके सामने उपस्थित हुआ। ३ यहोवा ने शैतान से पूछा, “तू कहाँ से आता है?” शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, “इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूँ।” ४ यहोवा ने शैतान से पूछा, “क्या तूने मेरे दास अर्थ्यूब पर ध्यान दिया है कि पृथ्वी पर उसके तुच्छ खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है? और यद्यपि तेरे मुखे उसको बिना कारण स्त्यानाश करने को उभारा, तो भी वह अब तक अपनी खराई पर बना है।” ५ शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, “खाल के बदले खाल, परन्तु प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता है। ६ इसलिए केवल अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियाँ और माँस छू, तब वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा।” ७ यहोवा ने शैतान से कहा, “सुन, वह तेरे हाथ में है, केवल उसका प्राण छोड़ देना।” ८ तब शैतान यहोवा के सामने से निकला, और अर्थ्यूब को पाँच के तलवे से लेकर सिर की चोटी तक बड़े-बड़े फोड़ों से पीड़ित किया। ९ तब अर्थ्यूब खुजलाने के लिये एक ठीकरा लेकर राख पर बैठ गया। १० तब उसकी पत्री उससे कहने लगी, “क्या तू अब भी अपनी खराई पर बना है? परमेश्वर की निन्दा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा।” ११ उसने उससे कहा, “तू एक मर्याद़ी झी के समान बातें करती है, क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें?” इन सब बातों में भी अर्थ्यूब ने अपने मुँह से कोई पाप नहीं किया। १२ जब तेमानी एलीपज, और शही बिल्दद, और नामाती सोपर, अर्थ्यूब के इन तीन मित्रों ने इस सब विपत्ति का समाचार पाया जो उस पर पड़ी थीं, तब वे आपस में यह ठानकर कि हम अर्थ्यूब के पास जाकर उसके संग विलाप करेंगे, और उसको शान्ति देंगे, अपने-आपने यहाँ से उसके पास चले। १३ जब उन्होंने दूर से आँख उठाकर अर्थ्यूब को देखा और उसे न पहचान सके, तब चिल्लाकर रो उठे; और अपना-अपना बागा फाड़ा, और आकाश की ओर धूलि उड़ाकर अपने-अपने सिर पर डाली। १४ तब वे सात दिन और सात रात उसके संग भूमि पर बैठे रहे, परन्तु उसका दुःख बहुत ही बड़ा जानकर किसी ने उससे एक भी बात न कही।

३ इसके बाद अर्थ्यूब मुँह खोलकर अपने जन्मदिन को धिक्कारने ४ और

कहने लगा, ५ “वह दिन नाश हो जाए जिसमें मैं उत्पन्न हुआ, और वह रत भी जिसमें कहा गया, ‘बेटे का गर्भ रहा।’ ६ वह दिन अधियारा हो जाए। ऊपर से परमेश्वर उसकी सृधि न ले, और न उसमें प्रकाश होए। ७ अधियारा और मृत्यु की छाया उस पर रहे। बादल उस पर छाए रहे; और उस दिन को अंधेरा कर देनेवाली चीज़ि उसे डाराएँ। ८ धोर अंधकार उस रात को पकड़े; वर्षा के दिनों के बीच वह आनन्द न करने पाए, और न महीनों में उसकी गिनती की जाए। ९ उसने, वह रात बाँझ हो जाए; उसमें गाने का शब्द न सुन पड़े, जो लोग किसी दिन को धिक्कारते हैं, और लियातान को छेड़ने में निपुण हैं, उसे धिक्कारें। १० उसकी संध्या के तारे प्रकाश न दें; वह उजियाले की बाट जोहे पर वह उसे न मिले, वह भोर की पलकों को भी देखने न पाए; ११ क्योंकि उसने मेरी माता की कोख को बन्द न किया और कष्ट को मेरी दृष्टि से न छिपाया। १२ “मैं गर्भ ही मैं क्यों न मर गया? पेट से निकलते ही मेरा प्राण क्यों न छूटा? १३ मैं घुटनों पर क्यों लिया गया? मैं छातियों को क्यों पीने पाया? १४ ऐसा न होता तो मैं चुपचाप पड़ा रहता, मैं सोता रहता और विश्राम करता, १५ और मैं पृथ्वी के उन राजाओं और मंत्रियों के साथ होता जिन्होंने अपने लिये सुनसान स्थान बनवा लिए, १६ या मैं उन राजकुमारों के साथ होता जिनके पास सोना था जिन्होंने अपने घरों को चाँदी से भर लिया था; १७ या मैं समस्य गिरे हुए गर्भ के समान हुआ होता, या ऐसे बच्चों के समान होता जिन्होंने उजियाले को

कभी देखा ही न हो। १७ उस दशा में दुःख नहीं देते, और थके-मांदे विश्राम पाते हैं। १८ उसमें बन्धुए एक संग सुख से रहते हैं; और परिश्रम करनेवाले का शब्द नहीं सुनते। १९ उसमें छोटे बड़े सब रहते हैं, और दास अपने स्वामी से स्वतंत्र रहता है। २० “दुखियों को उजियाला, और उदास मनवालों को जीवन क्यों दिया जाता है? २१ वे मृत्यु की बाट जोहते हैं पर वह आती नहीं; और गड़े हुए धन से अधिक उसकी खोज करते हैं; २२ वे कब्र को पहुँचकर आनन्दित और अत्यन्त मग्न होते हैं। २३ उजियाला उस पुण्य को क्यों मिलता है जिसका मार्ग छिपा है, जिसके चारों ओर परमेश्वर ने धेरा बाँध दिया है? २४ मुझे तो रेटी खेने के बल्दे लम्बी-लम्बी सीँसें आती हैं, और मेरा विलाप धारा के समान बहता रहता है। २५ क्योंकि जिस डरावनी बात से मैं डरता हूँ, वही मुझ पर आ पड़ती है, और जिस बात से मैं भय खाता हूँ वही मुझ पर आ जाती है। २६ मुझे न तो चैन, न शान्ति, न विश्राम मिलता है; परन्तु दुःख ही दुःख आता है।

४ तब तेमानी एलीपंज ने कहा, २ “यदि कोई तुझ से कुछ कहने लगे, तो क्या तुझे बुरा लगेगा? परन्तु बोले बिना कौन रह सकता है? ३ सुन, तूने बहुतों को शिक्षा दी है, और निर्बल लोगों को बलवन्त किया है। ४ गिरते हुओं को तूने अपनी बातों से सम्भाल लिया, और लड़खड़ाते हुए लोगों को तूने बलवन्त किया। ५ परन्तु अब विपत्ति तो तुझी पर आ पड़ी, और तू निराश हुआ जाता है; उसने तुझे छुआ और तू धब्बरा उठा। ६ क्या परमेश्वर का भय ही तेरा आसरा नहीं? और क्या तेरी चाल चलन जो खरी है तेरी आशा नहीं? ७ “क्या तुझे मालम है कि कोई निर्दोष भी कभी नाश हुआ है? या कहीं सज्जन भी काट डाले गए? ८ मेरे देखने में तो जो पाप को जोते और दुःख बोते हैं, वही उसको काटते हैं। ९ वे तो परमेश्वर की आवास से नाश होते, और उसके क्रोध के झोंके से भस्म होते हैं। १० सिंह का गरजना और हिंसक सिंह का दहाड़ना बन्द हो जाता है। और जवान सिंहों के दाँत तोड़ जाते हैं। ११ शिकार न पाकर बढ़ा सिंह मर जाता है, और सिंहनी के बच्चे तिर बितर हो जाते हैं। १२ “एक बात चुपके से मेरे पास पहुँचाँ गई, और उसकी कुछ भनक मेरे कान में पड़ी। १३ रात के स्वप्नों की चिन्ताओं के बीच जब मनुष्य गहरी निद्रा में रहते हैं, १४ मुझे ऐसी थरथराहट और कँकँटी लगी कि मेरी सब हँड़ियाँ तक हिल उठी। १५ तब एक आत्मा मेरे सामने से होकर चली; और मेरी देह के रोए खड़े हो गए। १६ वह चुपचाप ठहर गई और मैं उसकी आकृति को पहचान न सका। परन्तु मेरी आँखों के सामने कोई स्पष्ट था; पहले सन्नाटा छाया रहा, फिर मुझे एक शब्द सुन पड़ा, १७ ‘क्या नाशवान मनुष्य परमेश्वर से अधिक धर्मी होगा? क्या मनुष्य अपने सृजनहार से अधिक पवित्र हो सकता है?’ १८ देख, वह अपने सेवकों पर भरोसा नहीं रखता, और अपने स्वर्गदूतों को दोषी ठहराता है; १९ फिर जो मिट्टी के घरों में रहते हैं, और जिनकी नीव मिट्टी में डाली गई है, और जो पतंगों के समान पिस जाते हैं, उनकी क्या गणना। २० वे भोर से संध्या तक नाश किए जाते हैं, वे सदा के लिये मिट जाते हैं, और कोई उनका विचार भी नहीं करता। २१ क्या उनके डेरी की डेरी उनके अन्दर ही अन्दर नहीं कट जाती? वे बिना बुद्धि के ही मर जाते हैं?

५ “पुकारकर देख; क्या कोई है जो तुझे उत्तर देगा? और पवित्रों में से तू किसकी ओ पिरेगा? ६ क्योंकि मूर्ख तो खेद करते-करते नाश हो जाता है, और निर्विद्ध जलते-जलते राम पिटा है। ७ मैंने मूर्ख को जड़ पकड़ते देखा है; परन्तु अचानक मैंने उसके वासस्थान को घिककरा। ८ उसके बच्चे स्रस्का से दूर हैं, और वे फाटक में पीसी जाते हैं, और कोई नहीं है जो उन्हें छुड़ाए। ९ उसके खेत की उपज भूखे लोग खा लेते हैं, वरन् कँटीली बाड़ में से भी

निकाल लेते हैं; और प्यासा उनके धन के लिये फंदा लगाता है। १० क्योंकि विपत्ति धूल से उत्पन्न नहीं होती, और न कष्ट भूमि में से उत्तरा है; ११ परन्तु जैसे चिंगारियाँ ऊपर ही ऊपर को उड़ जाती हैं, वैसे ही मनुष्य कष्ट ही भोगने के लिये उत्पन्न हुआ है। १२ “परन्तु मैं तो परमेश्वर ही को खोजता रहूँगा और अपना मुकद्दमा परमेश्वर पर छोड़ दूँगा, १३ वह तो ऐसे बड़े काम करता है जिनकी थाप नहीं लगती, और इन्हें आश्वर्यर्कर्म करता है, जो गिने नहीं जाते। १४ वही पृथ्वी के ऊपर वर्षी करता है, और खेतों पर जल बरसाता है। १५ इसी रीति वह नम्र लोगों को ऊँचे स्थान पर बैठाता है, और शोक का पहरावा पहने हुए लोग ऊँचे पर पहुँचकर बचते हैं। १६ वह तो धूर्त लोगों की कल्पनाएँ व्यर्थ कर देता है, और उनके हाथों से कुछ भी बन नहीं पड़ता। १७ वह बुद्धिमानों को उनकी धूर्ताता ही मैं फँसाता है; और कुटिल लोगों की युक्ति दूर की जाती है। १८ उन पर दिन को अंधेरा छा जाता है, और दिन दुपहरी में वे रात के समान टटोलते फिरते हैं। १९ परन्तु वह दरिद्रों को उनके वचनसी तलवार से और बलवानों के हाथ से बचाता है। २० इसलिए कंगालों को आशा होती है, और कुटिल मनुष्यों का मँहूँ बन्द हो जाता है। २१ “देख, क्या ही धन्य वह मनुष्य, जिसको परमेश्वर ताङना देता है; इसलिए तू सर्वशक्तिमान की ताड़ना को तुच्छ मत जान। २२ क्योंकि वही धायल करता, और वही पृथी भी बाँधता है; वही मारता है, और वही अपने हाथों से चंगा भी करता है। २३ वह तुझे छ: विपत्तियों से छुड़ाएगा; वरन् सात से भी तेरी कुछ हानि न होने पाएगी। २४ अकाल में वह तुझे मृत्यु से, और युद्ध में तलवार की धार से बचा लेगा। २५ तू वचनसी कोडे से बचा रहेगा और जब विनाश आए, तब भी तुझे भय न होगा। २६ तू उजाड़ और अकाल के दिनों में हँसमुख रहेगा, और तुझे जंगली जन्तुओं से डर न लगेगा। २७ वरन् मैदान के पथर भी तुझ से वाचा बाँधे रहेंगे, और बन पशु तुझ से मेल रखेंगे। २८ और तुझे निश्चय होगा, कि तेरा डेरा कुशल से है, और जब तू अपने निवास में देखे तब कोई वस्तु खोई न होगी। २९ तुझे यह भी निश्चित होगा, कि मेरे बहुत वंश होंगे, और मेरी सन्तान पृथ्वी की धास के तुल्य बहुत होंगी। ३० तू जैसे पूलियों का ढेर समय पर खलिहान में रखा जाता है, वैसे ही तू पूरी अवस्था का होकर कब्र को पहुँचेगा। ३१ देख, हमने खोज खोजकर ऐसा ही पाया है; इसे तू सुन, और अपने लाभ के लिये ध्यान में रख।”

६ फिर अय्यबू ने उत्तर देकर कहा, २ “भला होता कि मेरा खेद तौला जाता, और मेरी सारी विपत्ति तराजू में रखी जाती! ३ क्योंकि वह समुद्र की रेत से भी भारी ठहरती; इसी कारण मेरी बातें उतावली से हुई हैं। ४ क्योंकि सर्वशक्तिमान के तीर मेरे अन्दर चुभे हैं; और उनका विष मेरी आत्मा में पैठ गया है; परमेश्वर की भयंकर बात मेरे विश्वृ पाँती बौद्धि हैं। ५ जब जंगली गदहे को धास मिलती, तब क्या वह रेकता है? और बैल चारा पाकर क्या डकारता है? ६ जो फीका है क्या वह बिना नमक खाया जाता है? क्या आगे की सफेदी में भी कुछ स्वाद होता है? ७ जिन वस्तुओं को मैं छूना भी नहीं चाहता वही मानो मेरे लिये यिनौना आहार ठही है। ८ “भला होता कि मुझे मँहूँ मँगा वर मिलता और जिस बात की मैं आशा करता हूँ वह परमेश्वर मुझे दे देता। ९ कि परमेश्वर प्रसन्न होकर मुझे कुचल डालता, और हाथ बढ़ाकर मुझे काट डालता! १० यही मेरी शान्ति का कारण; वरन् भारी पीड़ा में भी मैं इस कारण से उछल पड़ता; क्योंकि मैंने उस पवित्र के वचनों का कभी इन्कार नहीं किया। ११ मुझ में बल ही क्या है कि मैं आशा रखूँ? और मेरा अन्त ही क्या होगा कि मैं धीरज धूँ? १२ क्या मेरी दृढ़ता पथरों के समान है? क्या मेरा शरीर पीतल का है? १३ क्या मैं निराधार नहीं हूँ? क्या काम करने की शक्ति मुझसे दूर नहीं

हो गई? १४ “जो पड़ोसी पर कृपा नहीं करता वह सर्वशक्तिमान का भय मानना छोड़ देता है। १५ मेरे भाई नाले के समान विवासायी हो गए हैं, वरन् उन नालों के समान जिनकी धार सूख जाती है; १६ और वे बर्के के कारण काले से हो जाते हैं, और उनमें हिम छिपा रहता है। १७ परन्तु जब गर्मी होने लगती तब उनकी धाराएँ लोप हो जाती हैं, और जब कड़ी धूप पड़ती है तब वे अपनी जगह से उड़ जाते हैं १८ वे धूमते-धूमते सूख जाती, और सुनसान स्थान में बहकर नाश होती है। १९ तेपा के बंजरे देखते रहे और शेषा के कफिलेवालों ने उनका रास्ता देखा। २० वे लज्जित हुए क्योंकि उन्होंने भरोसा रखा था; और वहाँ पहुँचकर उनके मुँह सूख गए। २१ उसी प्रकार अब तुम भी कुछ न रहे; मेरी विपरिति देखकर तुम डर गए हो। २२ क्या मैंने तुम से कहा था, ‘मुझे कुछ दो?’ या ‘अपनी सम्पत्ति में से मेरे लिये कुछ दो?’ २३ या ‘मुझे सतानेवाले के हाथ से बचाओ?’ या ‘उपद्रव करनेवालों के बश से छुड़ा लो?’ २४ ‘मुझे शिक्षा दो और मैं चुप रहूँगा; और मुझे समझाओ कि मैंने किस बात में चूक की है। २५ सच्चाई के बचनों में कितना प्रभाव होता है, परन्तु तुम्हारे विवाद से क्या लाभ होता है? २६ क्या तुम बातें पकड़ने की कल्पना करते हो? निराश जन की बातें तो बायु के समान हैं। २७ तुम अनाथों पर चिठ्ठी डालते, और अपने मित्र को बेचकर लाभ उठानेवाले हो। २८ “इसलिए अब कृपा करके मुझे देखो; निश्चय मैं तुम्हारे सामने कटापि झूठ न बोलूँगा। २९ फिर कुछ अन्याय न होने पाए; फिर इस मुकदमे में मेरा धर्म ज्यों का त्वयों बना है, मैं सत्य पर हूँ। ३० क्या मेरे वचनों में कुछ कुटिलता है? क्या मैं दुष्टा नहीं पहचान सकता?

७ “क्या मनुष्य को पृथ्वी पर कठिन सेवा करनी नहीं पड़ती? क्या उसके दिन मजदूर के से नहीं होते? ८ जैसा कोई दास छाया की अभिलाषा करे, या मजदूर अपनी मजदूरी की आशा रखे; ९ वैसा ही मैं अनर्थ के महीनों का स्वामी बनाया गया हूँ, और मेरे लिये कल्पना से भरी रातें ठहराई गई हैं। १० जब मैं लेट जाता, तब कहता हूँ, ‘मैं कब उड़ूँगा?’ और रात कब बीतेगी? और पौ फटने तक छटपटाते-छटपटाते थक जाता हूँ। ११ मेरी देख कीड़ों और मिट्टी के ढेलों से ढकी हुई है, मेरा चमड़ा सिमट जाता, और फिर गत जाता है। १२ मेरे दिन जलाहे की ढरकी से अधिक फुर्ती से चलनेवाले हैं और निराशा में बीते जाते हैं। १३ “याद कर कि मेरा जीवन बायु ही है; और मैं अपनी आँखों से कल्प्यन किरन न देखूँगा। १४ जो मुझे अब देखता है उसे मैं फिर दिखाई न दूँगा; तेरी आँखें मेरी और होंगी परन्तु मैं न मिलूँगा। १५ जैसे बादल छटकर लोप हो जाता है, वैसे ही अधोलोक में उत्तरनेवाला फिर वहाँ से नहीं लौट सकता; (Sheol h7585) १६ वह अपने घर को फिर लौट न आएगा, और न अपने स्थान में फिर मिलेगा। १७ “इसलिए मैं अपना मुँह बन्द न रखूँगा; अपने मन का खेद खोलकर कहूँगा; और अपने जीव की कडवाहट के कारण कुड़कुड़ता रहूँगा। १८ क्या मैं समृद्ध हूँ, या समृद्धी अजगर हूँ, कि तु मुझ पर पहरा बैठाता है? १९ जब जब मैं सोचता हूँ कि मुझे खाट पर शान्ति मिलेगी, और बिछौने पर मेरा खेद कुछ हलका होगा; २० तब-तब तू मुझे स्वप्नों से बचरा देता, और दर्शनों से भयपीत कर देता है; २१ यहाँ तक कि मेरा जी फांसी को, और जीवन से मृत्यु को अधिक चाहता है। २२ मुझे अपने जीवन से घृणा आती है; मैं सर्वदा जीवित रहना नहीं चाहता। मेरा जीवनकाल सँस सा है, इसलिए मुझे छोड़ दे। २३ मनुष्य क्या है कि तू उसे महत्व दे, और अपना मन उस पर लगाए, २४ और प्रति भोर को उसकी सुधि ले, और प्रति क्षण उसे जींचता रहे? २५ तू कब तक मेरी ओर आँख लगाए रहेगा, और इनी देर के लिये भी मुझे न छोड़ोगा कि मैं अपना थूक निगल लूँ? २६ हे मनुष्यों के ताकनेवाले, मैंने पाप तो किया होगा,

तो मैंने तेरा क्या बिगाड़ा? तूने क्यों मुझ को अपना निशाना बना लिया है, यहाँ तक कि मैं अपने ऊपर आप ही बोझ हुआ हूँ? २७ और तू क्यों मेरा अपराध क्षमा नहीं करता? और मेरा अर्धम वर्षों दूर नहीं करता? अब तो मैं मिट्टी में सो जाऊँगा, और तू मुझे यत्र से ढूँढ़ैगा पर मेरा पता नहीं मिलेगा!”

८ तब शही बिलद देने कहा, ९ “तू कब तक ऐसी-ऐसी बातें करता रहेगा? और तेरे मुँह की बातें कब तक प्रचण्ड वायु सी रहेगी? १० क्या परमेश्वर अन्याय करता है? और क्या सर्वशक्तिमान धार्मिकता को उलटा करता है? ११ यदि तेरे बच्चों ने उसके विस्तृ पाप किया है, तो उसने उनके अपराध का फल भुगताया है। १२ तो भी यदि तू आप परमेश्वर को यत्र से ढूँढ़ता, और सर्वशक्तिमान से गिङ्गिडाकर बिनती करता, १३ और यदि तू निर्मल और धर्मी रहता, तो निश्चय वह तेरे लिये जागता; और तेरी धार्मिकता का निवास फिर ज्यों का त्यों कर देता। १४ चाहे तेरा भाग पहले छोड़ा ही गया हो परन्तु अन्त में तेरी बहुत बढ़ती होती। १५ “पिछली पीढ़ी के लोगों से तो पूछ, और जो कुछ उनके पुरखाओं ने जॉच पड़ताल की है उस पर ध्यान दे। १६ क्योंकि हम तो कल ही कैंडै, और कुछ नहीं जानते; और पृथ्वी पर हमरे दिन छाया के समान बीते जाते हैं। १७ तब वे लोग तुम से शिक्षा की बातें न कहेंगे? क्या वे अपने मन से बात न निकालेंगे? १८ “क्या कछार की घास पानी बिना बढ़ सकती है? क्या सरकण्डा जल बिना बढ़ता है? १९ चाहे वह हरी हो, और कटी भी न गई हो, तो भी वह और सब भाँति की घास से पहले ही सूख जाती है। २० परमेश्वर के सब बिसरानेवालों की गति ऐसी ही होती है और भक्तिहीन की आशा दूर जाती है। २१ उसकी आशा का मूल कट जाता है, और जिसका वह भरोसा करता है, वह मकड़ी का जाला ठरता है। २२ चाहे वह अपने घर पर टेक लगाए परन्तु वह न ठरेगा; वह उसे दूढ़ता से थामेगा परन्तु वह स्थिर न रहेगा। २३ वह धूप पाकर हरा भरा हो जाता है, और उसकी डालियाँ बगीचे में चारों ओर फैलती हैं। २४ उसकी जड़ कंकड़ों के ढेर में लिपटी हुई रहती है, और वह पथर के स्थान को देख लेता है। २५ परन्तु जब वह अपने स्थान पर से नाश किया जाए, तब वह स्थान उससे यह कहकर मुँह मोड़ लेगा, “मैंने उसे कभी देखा ही नहीं।” २६ देख, उसकी आनन्द भरी चाल यही है, फिर उसी मिट्टी में से दूसरे उंगों। २७ “देख, परमेश्वर न तो खो न मनुष्य को निकम्मा जानकर छोड़ देता है, और न बुराई करनेवालों को सम्भालता है। २८ वह तो तुम्हे हँसमुख करेगा, और तुम से जयजयकार कराएगा। २९ तेरे बैरी लज्जा का वज्र पहनेंगे, और दूषों का डोरा कहीं रहने न पाएगा।”

१० तब अय्यब ने कहा, ११ “मैं निश्चय जानता हूँ कि बात ऐसी ही है; परन्तु मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में कैसे धर्मी ठहर सकता है? १२ चाहे वह उससे मुकुटमा लड़ना भी चाहे तो भी मनुष्य हजार बातों में से एक का भी उत्तर न दे सकेगा। १३ परमेश्वर बूढ़िगान और अति सामग्री है: उसके विरोध में हठ करके कौन कभी प्रबल हुआ है? १४ वह तो पर्वतों को अचानक हटा देता है और उन्हें पता भी नहीं लगता, वह क्रोध में आकर उन्हें उलट-पुलट कर देता है। १५ वह पृथ्वी को हिलाकर उसके स्थान से अलग करता है, और उसके खम्भे काँपने लगते हैं। १६ उसकी आज्ञा बिना सूर्य उदय होता ही नहीं; और वह तारों पर मुहर लगाता है; १७ वह आकाशमण्डल को अकेला ही फैलाता है, और समुद्र की ऊँची-ऊँची लहरों पर चलता है; १८ वह सार्वर्षि, मृगशिरा और कच्चपचिया और दक्षिण के नक्षत्रों का बनानेवाला है। १९ वह तो ऐसे बड़े कर्म करता है, जो गिने नहीं जा सकते। २० देखो, वह मेरे सामने से होकर तो चलता है परन्तु मुझ को नहीं दिखाई पड़ता; और आगे को बढ़ जाता है, परन्तु मुझ सूझ ही नहीं पड़ता है।

१२ देखो, जब वह छीनने लगे, तब उसको कौन रोकेगा? कौन उससे कह सकता है कि तू यह क्या करता है? १३ “परमेश्वर अपना क्रोध ठंडा नहीं करता। रहब के सहायकों को उसके पाँव तले झुकना पड़ता है। १४ फिर मैं क्या हूँ, जो उसे उत्तर दूँ, और बातें छाँट कर उससे बिवाक करहूँ? १५ चाहे मैं निर्दोष भी होता परन्तु उसको उत्तर न दे सकता; मैं अपने मुझे से गिड़गिड़कर बिनती करता। १६ चाहे मैं पुकारने से वह उत्तर भी देता, तो भी मैं इस बात पर विश्वास न करता, कि वह मेरी बात सुनता है। १७ वह अंदी चलाकर मुझे तोड़ डालता है, और बिना कारण मेरी चोट पर चोट लगाता है। १८ वह मुझे साँस भी लेने नहीं देता है, और मुझे कड़वाहट से भरता है। १९ यदि सामर्थ्य की चर्चा हो, तो देखो, वह बलवान है और यदि न्याय की चर्चा हो, तो वह कहेगा मुझसे कौन मुकदमा लड़ेगा? २० चाहे मैं निर्दोष ही क्यों न हूँ, परन्तु अपने ही मुँह से दोषी ठहरँगा; खरा होने पर भी वह मुझे कृटिल ठहराएगा। २१ मैं खरा तो हूँ, परन्तु अपना भेद नहीं जानता; अपने जीवन से मुझे धूमा आती है। २२ बात तो एक ही है, इससे मैं यह कहता हूँ कि परमेश्वर खेरे और दृश्य दोनों का नाश करता है। २३ जब लोग विपत्ति से अचानक मरने लगते हैं तब वह निर्दोष लोगों के जाँचे जाने पर हँसता है। २४ देश दुश्षों के हाथ में दिया गया है। परमेश्वर उसके न्यायियों की आँखों को मैंदं देता है, इसका करनेवाला वही न हो तो कौन है? २५ “मेरे दिन हरकरों से भी अधिक वेग से चले जाते हैं; वे भागे जाते हैं और उनको कल्याण कुछ भी दिखाई नहीं देता। २६ वे तेजी से सरकण्डों की नावों के समान चले जाते हैं, या अहेर पर झपटते हुए उकाब के समान। २७ यदि मैं कहूँ, ‘मैं विलाप करना भूल जाऊँगा, और उदासी छोड़कर अपना मन प्रफुल्लित कर लौंगा,’ २८ तब मैं अपने सब दुःखों से डरता हूँ। मैं तो जानता हूँ, कि तू मुझे निर्दोष न ठहराएगा। २९ मैं तो दोषी ठहरँगा; फिर व्यर्थ क्यों परिश्रम करूँ? ३० चाहे मैं हिम के जल में सान करहूँ, और अपने हाथ खार से निर्मल करहूँ, ३१ तो भी तू मुझे गँहे में डाल ही देगा, और मेरे बब्ल भी मुझसे धिन करेंगे। ३२ क्योंकि परमेश्वर मैं तुल्य मनुष्य नहीं है कि मैं उससे बाद-विवाद कर सकूँ, और हम दोनों एक दूरे से मुकदमा लड़ सकें। ३३ हम दोनों के बीच कोई बिचवाई नहीं है, जो हम दोनों पर अपना हाथ रखे। ३४ वह अपना सोंटा मुझ पर से दूर करे और उसकी भय देनेवाली बात मुझे न घबराए। ३५ तब मैं उससे निर छोकर कुछ कह सकँगा, क्योंकि मैं अपनी दृष्टि में ऐसा नहीं हूँ।

१० “मेरा प्राण जीवित रहने से उकताता है, मैं स्वतंत्रा पूर्वक कुदकुड़ाऊँगा; और मैं अपने मन की कड़वाहट के मारे बातें कस्संगा। ११ मैं परमेश्वर से कहँगा, मुझे दोषी न ठहरा; मुझे बता दे, कि तू किस कारण मुझसे मुकदमा लड़ता है? १२ क्या तुझे अंधेर करना, और दुश्यों की युक्ति को सफल करके अपने हाथों के बनाए हए को निकम्मा जानना भला लगता है? १३ क्या तेरी देहधारियों की सी आँखें हैं? और क्या तेरा देखना मनुष्य का सा है? १४ क्या तेरे दिन मनुष्य के दिन के समान हैं, या तेरे वर्ष पुष्प के समयों के तुल्य हैं, १५ कि तू मेरा अर्धम ढँकता, और मेरा पाप पछाड़ता है? १६ तुझे तो मालूम ही है, कि मैं दृश्य नहीं हूँ, और तेरे हाथ से कोई छुड़ानेवाला नहीं! १७ तेरे अपने हाथों से मुझे ठीक रचा है और जोड़कर बनाया है, तो भी तू मुझे नाश किए डालता है। १८ स्मरण कर, कि तूने मुझ को गँधी हुई मिट्टी के समान बनाया, क्या तू मुझे फिर धूल में मिलाएगा? १९ क्या तूने मुझे दृश्य के समान उड़ेलकर, और दही के समान जमाकर नहीं बनाया? २० फिर तूने मुझ पर चमड़ा और माँस चढ़ाया और हड्डियाँ और नसें गूँथकर मुझे बनाया है। २१ तूने मुझे जीवन दिया, और मुझ पर कस्ता की है; और तेरी चौकसी से मेरे प्राण की रक्षा हुई है। २२ तो भी तूने ऐसी बातों को अपने मन में छिपा रखा; मैं तो जान गया, कि तूने ऐसा ही

करने को ठाना था। २३ कि यदि मैं पाप करूँ, तो तू उसका लेखा लेगा; और अर्धम करने पर मुझे निर्दोष न ठहराएगा। २४ यदि मैं दृष्टा करूँ तो मुझ पर हाय! और यदि मैं धर्मी बनूँ तो भी मैं सिर न उठाऊँगा, क्योंकि मैं अपमान से भरा हुआ हूँ और अपने दुःख पर ध्यान रखता हूँ। २५ और चाहे सिर उठाऊँ तो भी तु सिंह के समान मेरा अहेर करता है, और फिर मेरे विस्तु आश्रयकर्मी को करता है। २६ तू मेरे समान अपने नये-नये साक्षी ले आता है, और मुझ पर अपना क्रोध बढ़ाता है; और मुझ पर सेना पर सेना चढ़ाई करती है। २७ “तूने मुझे गर्भ से क्यों निकला? नहीं तो मैं वही प्राण छोड़ता, और कोई मुझे देखने भी न पाता। २८ मेरा होना न होने के समान होता, और पेट ही से कब्ज़ को पहँचाया जाता। २९ क्या मेरे दिन थोड़े नहीं? मुझे छोड़ दे, और मेरी ओर से मुँह फेर ले, कि मेरा मन थोड़ा शान्त हो जाए। ३० इससे पहले कि मैं वहाँ जाऊँ, जहाँ से फिर न लौटूँगा, अर्थात् योर अंधकार के देश में, और मृत्यु की छाया में; ३१ और मृत्यु के अंधकार का देश जिसमें सब कुछ गड़बड़ है; और जहाँ प्रकाश भी ऐसा है जैसा अंधकार।”

११ तब नामाती सोपर ने कहा, १२ “बहुत सी बातें जो कही गई हैं, क्या उनका उत्तर देना न चाहिये? क्या यह बकवादी मनुष्य धर्मी ठहराया जाए? १३ क्या तेरे बड़े बोल के कारण लोग चुप रहें? और जब तू ठंडा करता है, तो क्या कोई तुझे लज्जित न करे? १४ तू तो यह कहता है, ‘मेरा सिद्धान्त शुद्ध है और मैं परमेश्वर की दृष्टि में पवित्र हूँ।’ १५ परन्तु भला हो, कि परमेश्वर स्वयं बातें करें, और तेरे विस्तु मुँह खोले, १६ और तज़ा पर बुद्धि की गुप्त बातें प्रगत करे, कि उनका मर्म तेरी बुद्धि से बढ़कर है। इसलिए जान ले, कि परमेश्वर तेरे अर्धम में से बहुत कुछ भूल जाता है। १७ “क्या तू परमेश्वर का गूँह भेद पा सकता है? और क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जाँच सकता है? १८ वह आकाश सा ऊँचा है; तू क्या कर सकता है? वह अधोलोक से गहरा है, तू कहाँ समझ सकता है? (Sheol h7585) १९ उसकी माप पूर्वी से भी लम्बी है और समदूर से चौड़ी है। २० जब परमेश्वर बीच से गुजरे, बन्दी बना ले और अदालत में बुलाए, तो कौन उसको रोक सकता है? २१ क्योंकि वह पाखण्डी मनुष्यों का भेद जानता है, और अनर्थ काम को बिना सोच विचार किए भी जान लेता है। २२ निर्बुद्धि मनुष्य बुद्धिमान हो सकता है; यद्यपि मनुष्य जंगली गढ़ों के बच्चे के समान जन्म ले; २३ “यदि तू अपना मन शुद्ध करे, और परमेश्वर की ओर अपने हाथ फैलाए, २४ और यदि कोई अनर्थ काम तुझ से हो गया हो उसे दूर करे, और अपने देरों में कोई कुटिलता न रहने दे, २५ तब तो तू निश्चय अपना मुँह निष्कलंक दिखा सकेगा; और तू स्थिर होकर कभी न डरेगा। २६ तब तू अपना दुःख भूल जाएगा, तू उसे उस पानी के समान स्मरण करेगा जो बह गया हो। २७ और तेरा जीवन दोहरा से भी अधिक प्रकाशमान होगा; और चाहे अंधेरा भी हो तो भी वह भोर सा हो जाएगा। २८ और तुझे आशा होगी, इस कारण तू निर्भय रहेगा; और अपने चारों ओर देख देखकर तू निर्भय विश्वास कर सकेगा। २९ और जब तू लेटेगा, तब कोई तुझे डराएगा नहीं; और बहुत लोग तुझे प्रसन्न करने का यत्र करेंगे। ३० परन्तु दुश्य लोगों की आँखें धूँधली हो जाएँगी, और उन्हें कोई शरणस्थान न मिलेगा और उनकी आशा यही होगी कि प्राण निकल जाए।”

१२ तब अच्यूब ने कहा; १३ “नि-सन्देह मनुष्य तो तुम ही हो और जब तुम मरोगे तब बुद्धि भी जाती रहेगी। १४ परन्तु तुम्हारे समान मुझ में भी समझ है, मैं तुम लोगों से कुछ नीचा नहीं हूँ कौन ऐसा है जो ऐसी बातें न जानता हो? १५ मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता था, और वह मेरी सुन लिया करता था; परन्तु अब मेरे मित्र मुझ पर हँसते हैं, जो धर्मी और खरा मनुष्य है, वह हँसी का

कारण हो गया है। ५ दृश्यी लोग तो सुखी लोगों की समझ में तुच्छ जाने जाते हैं; और जिनके पाँव फिसलते हैं उनका अपमान अवश्य ही होता है। ६ डाकुओं के डेरे कशल क्षेम से रहते हैं, और जो परमेश्वर को क्रोध दिलाते हैं, वह बहुत ही निर्दर रहते हैं; अर्थात् उनका इंधन उनकी मुट्ठी में रहता है; ७ “पशुओं से तो पछ और वे तुझे सिखाएँगे; और आकाश के पक्षियों से, और वे तुझे बताएँगे। ८ पृथ्वी पर ध्यान दे, तब उससे तुझे शिक्षा मिलेगी; और समृद्धि की मछलियाँ भी तुझे से वर्णन करेंगी। ९ कौन इन बातों को नहीं जानता, कि यहोवा ही ने अपने हाथ से इस संसार को बनाया है? १० उम्रके हाथ में एक-एक जीवधारी का प्राप्त, और एक-एक देहधारी मनुष्य की आत्मा भी रहती है। ११ जैसे जीभ से भोजन चखा जाता है, क्या वैसे ही कान से चचन नहीं परखे जाते? १२ बूढ़ों में बुद्धि पाई जाती है, और लम्बी आयु वालों में समझ होती रहती है। १३ “परमेश्वर में पूरी बुद्धि और पराक्रम पाए जाते हैं; युक्ति और समझ उसी में हैं। १४ देखो, जिसको वह ढा दे, वह फिर बनाया नहीं जाता; जिस मनुष्य को वह बन्द करे, वह फिर खोला नहीं जाता। १५ देखो, जब वह वर्षा को रोक रखता है तो जल सख जाता है; फिर जब वह जल छोड़ देता है तब पृथ्वी उलट जाती है। १६ उसमें समर्प्य और खरी बुद्धि पाई जाती है; धोखा देनेवाला और धोखा खानेवाला दोनों उसी के हैं। १७ वह मनियों को लूटकर बैंधुआई में ले जाता, और न्यायियों को मूर्ख बना देता है। १८ वह राजाओं का अधिकार तोड़ देता है, और उनकी कमर पर बन्धन बन्धवाता है। १९ वह याजकों को लूटकर बैंधुआई में ले जाता और सामर्थियों को उलट देता है। २० वह विश्वासयोग पुळों से बोलने की शक्ति और पुनियों से विवेक की शक्ति हर लेता है। २१ वह हाकियों को अपमान से लादता, और बलवानों के हाथ ढाले कर देता है। २२ वह अधियरो की गहरी बातें प्रगट करता, और मनुष्य की छाया को भी प्रकाश में ले आता है। २३ वह जातियों को बड़ाता, और उनको नाश करता है; वह उनको फैलाता, और बैंधुआई में ले जाता है। २४ वह पृथ्वी के मुख्य लोगों की बुद्धि उड़ा देता, और उनको निर्जन स्थानों में जहाँ रास्ता नहीं है, भटकता है। २५ वे बिन उजियाले के अंधेरे में टटोलते फिरते हैं; और वह उन्हें ऐसा बना देता है कि वे मतवाले के समान डगमगाते हुए चलते हैं।

१३ “सुनो, मैं यह सब कुछ अपनी आँख से देख चुका, और अपने कान से सुन चुका, और समझ भी चुका हूँ। २ जो कुछ तुम जानते हो वह मैं भी जानता हूँ, मैं तुम लोगों से कुछ कम नहीं हूँ। ३ मैं तो सर्वशक्तिमान से बातें कहसूँगा, और मेरी अभिलाषा परमेश्वर से वाद-विवाद करने की है। ४ परन्तु तुम लोग झट्टी बात के गढ़नेवाले हो; तुम सब के सब निकम्मे वैध हो। ५ भला होता, कि तुम बिल्कुल चूप रहते, और इससे तुम बूद्धिमान ठहरते। ६ मेरा विवाद सुनो, और मेरी विनीती की बातों पर कान लगाओ। ७ क्या तुम परमेश्वर के निमित्त टेढ़ी बातें कहोगे, और उसके पक्ष में कपट से बोलोगे? ८ क्या तुम उसका पक्षपात करोगे? और परमेश्वर के लिये मुकदमा चलाओगे। ९ क्या यह भला होगा, कि वह तुम को जाँचे? क्या जैसा कोई मनुष्य को धोखा दे, वैसा ही तुम क्या उसको भी धोखा दोगे? १० यदि तुम छिपकर पक्षपात करो, तो वह निश्चय तुम को डाँटेगा। ११ क्या तुम उसके माहात्म्य से भय न खाओगे? क्या उसका डर तुम्हारे मन में न समाएँ? १२ तुम्हारे स्मरणयोग नीतिवचन राख के समान हैं; तुम्हारे गढ़ मिठी ही के ठहरे हैं। १३ “मुझसे बात करना छोड़ो, कि मैं भी कुछ कहने पाऊँ; फिर मुझ पर जो चाहे वह आ पड़े। १४ मैं क्यों अपना माँस अपने दाँतों से चबाऊँ? और क्यों अपना प्राण हथेती पर रखूँ? १५ वह मुझे घात करेगा, मुझे कुछ आशा नहीं; तो भी मैं अपनी

चाल-चलन का पक्ष लूँगा। १६ और यह ही मेरे बचाव का कारण होगा, कि भलिहीन जन उसके सामने नहीं जा सकता। १७ चित्त लगाकर मेरी बात सुनो, और मेरी विनीती तुम्हारे कान में पड़े। १८ देखो, मैंने अपने मुकदमे की पूरी तैयारी की है; मुझे निश्चय है कि मैं निर्दोष ठहसूँगा। १९ कौन है जो मुझसे मुकदमा लड़ सकेगा? ऐसा कोई पाया जाए, तो मैं चुप होकर प्राण छोड़ूँगा। २० दो ही काम मेरे लिए कर, तब मैं तुझ से नहीं छिपूँगा। २१ अपनी ताड़ना मुझसे दूर कर ले, और अपने भय से मुझे भयभीत न कर। २२ तब रौंदे बुलाने पर मैं बोलूँगा; या मैं प्रश्न करूँगा, और तू मुझे उत्तर दे। २३ मुझसे कितने अधर्म के काम और पाप हुए हैं? मेरे अपराध और पाप मुझे जाता दे। २४ तू किस कारण अपना मुँह फेर लेता है, और मुझे अपना शब्द गिनता है? २५ क्या तू उड़ते हुए पते को भी कौपाण्या? और सूखे डंठल के पीछे पड़ेगा? २६ तू मेरे लिये कठिन दुखों की आज्ञा देता है, और मेरी जवानी के अधर्म का फल मुझे भुगता देता है। २७ और मेरे पाँवों को काठ में ठोकता, और मेरी सारी चाल-चलन देखता रहता है; और मेरे पाँवों की चारों ओर सीमा बाँध लेता है। २८ और मैं सड़ी-गली बस्तु के तुल्य हूँ जो नाश हो जाती है, और कीड़ा खाए कपड़े के तुल्य हूँ।

१४ “मनुष्य जो जी से उत्पन्न होता है, उसके दिन थोड़े और दुःख भरे है। १ वह फूल के समान खिलता, फिर तोड़ा जाता है; वह छाया की रीति पर ढल जाता, और कहीं ठहरता नहीं। २ फिर क्या तू ऐसे पर दृष्टि लगाता है? क्या तू मुझे अपने साथ कच्चीरी में घसीटता है? ३ अशुद्ध बस्तु से शुद्ध बस्तु को कौन निकाल सकता है? कोई नहीं। ४ मनुष्य के दिन नियुक्त किए गए हैं, और उसके महिनों की गिनती रें पास लिखी है, और तूने उसके लिये ऐसा सीमा बाँधा है जिसे वह पार नहीं कर सकता, ५ इस कारण उससे अपना मुँह फेर ले, कि वह आराम करे, जब तक कि वह मजदूर के समान अपना दिन पूरा न कर ले। ६ “वृक्ष के लिये तो आशा रहती है, कि चाहे वह काट डाला भी जाए, तो भी फिर पनपेगा और उससे नर्म-नर्म डालियाँ निकलती ही रहेंगी। ७ चाहे उसकी जड़ भूमि में पुरानी भी हो जाए, और उसका ढूँढ मिट्ठी में सूख भी जाए, ८ तो भी वर्षा की गन्ध पाकर वह फिर पनपेगा, और पैधे के समान उससे शाखाएँ फूटेंगी। ९ परन्तु मनुष्य मर जाता, और पड़ा रहता है; जब उसका प्राण छूट गया, तब वह कहाँ रहता? १० जैसे नदी का जल घट जाता है, और जैसे महानद का जल सूखते-सूखते सूखा जाता है, ११ वैसे ही मनुष्य लेट जाता और फिर नहीं उठता; जब तक आकाश बना रहेगा तब तक वह न जागेगा, और न उसकी नीद टूटेगी। १२ भला होता कि तू मुझे अधोलोक में छिपा लेता, और जब तक तेरा कोप ठंडा न हो जाए तब तक मुझे छिपाए रखता, और मेरे लिये समय नियुक्त करके फिर मेरी सुधि लेता। (Sheol h7585) १३ यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा? जब तक मेरा छुटकारा न होता तब तक मैं अपनी कठिन सेवा के सारे दिन आशा लगाए रहता। १४ तू मुझे पुकारता, और मैं उत्तर देता हूँ; तुझे अपने हाथ के बनाए हुए काम की अभिलाषा होती है। १५ परन्तु अब तू मेरे पग-पग की गिनता है, क्या तू मेरे पाप की ताक में लगा नहीं रहता? १६ मेरे अपराध छाप लगी हुई थैली में है, और तूने मेरे अधर्म को सी रखा है। १७ “और निश्चय पहाड़ भी मिरेगिरे नाश हो जाता है, और चट्टान अपने स्थान से हट जाती है; १८ और पथर जल से यिस जाते हैं, और चट्टान अपने स्थान से हट जाती है; १९ और पथर क्रक्कर जल से ब्रह्म का बिगड़कर उसे निकाल देता है। २० तू सदा उस पर प्रबल होता, और वह जाता रहता है; तू उसका चेहरा बिगड़कर उसे निकाल देता है। २१ उसके पुत्रों की बड़ाई होती है, और यह उसे नहीं सूझता; और उनकी घटी

होती है, परन्तु वह उनका हाल नहीं जानता। १५ केवल उसकी अपनी देह को दृःख्य होता है, और केवल उसका अपना प्राण ही अन्दर ही अन्दर शोकित होता है।"

१५ तब तेमानी एलीपिज ने कहा : "क्या बृद्धिमान को उचित है कि अज्ञानता

के साथ उत्तर दे, या अपने अन्तःकरण को पूर्वी पवन से भरे? १६ क्या वह निष्फल वचनों से, या व्यर्थ बातों से वाद-विवाद करे? १७ वरन् तू परमेश्वर का भय मानना छोड़ देता, और परमेश्वर की भक्ति करना औरों से भी छुड़ाता है। १८ तू अपने मूँह से अपना अधर्म प्रगट करता है, और धर्म लोगों के बोलने की रीति पर बोलता है। १९ मैं तो नहीं परन्तु तेरा मूँह ही तुझे दोषी ठहराता है, और तेरे ही वचन तेरे विस्तु साक्षी देते हैं। २० "क्या पहला मनुष्य तू ही उत्पन्न हुआ? क्या तेरी उत्पत्ति पहाड़ों से भी पहले हुई? क्या तू परमेश्वर की सभा में बैठा सुनता था? क्या बुद्धि का ठेका तहीं ने ले रखा है २१ तू ऐसा क्या जानता है जिसे हम नहीं जानते? तुझ में ऐसी कौन सी समझ है जो हम में नहीं? २२ हम लोगों में तो पक्के बाल बाले और अति पुरनिये मनुष्य हैं, जो तेरे पिता से भी बहुत आयु के हैं। २३ परमेश्वर की शान्तिदायक बातें, और जो वचन तेरे लिये कोमल हैं, क्या ये तेरी दृष्टि में तुझे हैं? २४ तेरा मन क्यों तुझे खींच ले जाता है? और तू आँख से क्यों इशारा करता है? २५ तू भी अपनी आत्मा परमेश्वर के विस्तु करता है, और अपने मूँह से व्यर्थ बातें निकलने देता है। २६ मनुष्य है क्या कि वह निष्कलंक हो? और जो जी ऐसे उत्पन्न हुआ वह है क्या कि निर्दोष हो सके? २७ देख, वह अपने पवित्रों पर भी विश्वास नहीं करता, और स्वर्ग भी उसकी दृष्टि में निर्मल नहीं है। २८ फिर मनुष्य अधिक घिनीना और भ्रष्ट है जो कुटिलता को पानी के समान पीता है। २९ "मैं तुझे समझा दूँगा, इसलिए मेरी सुन ले, जो मैंने देखा है, उसी का वर्णन मैं करता हूँ। ३० (वे ही बातें जो बृद्धिमानों ने अपने पुरखाओं से सुनकर बिना छिपा बताया है। ३१ केवल उन्हीं को देश दिया गया था, और उनके मध्य में कोई विदेशी आताजाता नहीं था।) ३२ उष्ण जन जीवन भर पीड़ा से तड़पता है, और उपद्रवी के वर्षों की गिनती ठहराई हुई है। ३३ उसके कान में डरावना शब्द गँजता रहता है, कुशल के समय भी नाश करनेवाला उस पर आ पड़ता है। ३४ उसे अधियारे में से फिर निकलने की कुछ आशा नहीं होती, और तलवार उसकी धात में रहती है। ३५ वह रोटी के लिये मारा-मारा फिरता है, कि कहाँ मिलेगी? उसे निश्चय रहता है, कि अंधकार का दिन मेरे पास ही है। ३६ संकट और दुर्घटना से उसको डर लगता रहता है, ऐसे राजा के समान जो युद्ध के लिये तैयार हो, वे उस पर प्रबल होते हैं। ३७ क्योंकि उसने तो परमेश्वर के विस्तु हाथ बढ़ाया है, और सर्वशक्तिमान के विस्तु वह ताल ठोकता है, ३८ और सिर उठाकर और अपनी मोटी-मोटी ढालें दिखाता हुआ घमण्ड से उस पर धावा करता है; ३९ इसलिए कि उसके मूँह पर चिकनाई छा गई है, और उसकी कमर में चबीं जमी है। ४० और वह उजाड़े हुए नारों में बस गया है, और जो घर रहने योग्य नहीं, और खण्डर होने को छोड़े गए हैं, उनमें बस गया है। ४१ वह धनी न रहेगा, और न उसकी सम्पत्ति बनी रहेगी, और ऐसे लोगों के खेत की उपज भूमि की ओर न झुकने पाएगी। ४२ वह अंधियारे से कम्पी न निकलेगा, और उसकी डालियाँ आग की लपट से झूलस जाएँगी, और परमेश्वर के मूँह की व्यास से वह उड़ जाएगा। ४३ वह अपने को धोखा देकर व्यर्थ बातों का भरोसा न करे, क्योंकि उसका प्रतिफल धोखा ही होगा। ४४ वह उसके नियत दिन से पहले पूरा हो जाएगा; उसकी डालियाँ हरी ही रहेंगी। ४५ दाख के समान उसके कच्चे फल झड़ जाएंगे, और उसके फल जैतून के वृक्ष के समान गिरेंगे। ४६ क्योंकि भक्तिहीन के परिवार से कुछ बन न पड़ेगा, और जो धूस लेते हैं,

उनके तम्बू आग से जल जाएँगे। ४७ उनको उपद्रव का गर्भ रहता, और वे अनर्थ को जन्म देते हैं और वे अपने अन्तःकरण में छल की बातें गढ़ते हैं।"

१६ तब अस्यूब ने कहा, ४८ "ऐसी बहुत सी बातें मैं सुन चुका हूँ, तुम सब के सब निकलमे शान्तिदाता हो। ४९ क्या व्यर्थ बातों का अन्त कभी होगा? तू कौन सी बात से द्विकर कर ऐसे उत्तर देता है? ५० यदि तुम्हारी दशा मेरी सी होती, तो मैं भी तुम्हारी सी बातें कर सकता; मैं भी तुम्हारे विस्तु बातें जोड़ सकता, और तुम्हारे विस्तु सिर हिला सकता। ५१ वरन् मैं अपने वचनों से तुम को हियाव दिलाता, और बातों से शान्ति देकर तुम्हारा शोक घटा देता। ५२

"चाहे मैं बोलूँ तो भी मेरा शोक न घटेगा, चाहे मैं चुप रहूँ, तो भी मेरा दुःख कुछ कम न होगा। ५३ परन्तु अब उसने मुझे थका दिया है; उसने मेरे सारे परिवार को उजाड़ डाला है। ५४ और उसने जो मेरे शरीर को सूखा डाला है, वह मेरे विस्तु साक्षी ठहरा है, और मेरा दुबलापन मेरे विस्तु खड़ा होकर मेरे सामने साक्षी देता है। ५५ उसने कोध में आकर मुझ को फाड़ा और मेरे पिंडे पड़ा है, वह मेरे विस्तु दाँत पीसता; और मेरा बैरी मुझ को आँखें दिखाता है। ५६ अब लोग मुझ पर मूँह पसारते हैं, और मेरी नामधाराई करके मेरे गाल पर घप्पड मारते, और मेरे विस्तु भीड़ लगाते हैं। ५७ परमेश्वर ने मुझे कुटिलों के बश में बर दिया, और दुष्ट लोगों के हाथ में फेंक दिया है। ५८ मैं सुख से रहता था, और उसने मुझे चूर चूरकर डाला; उसने मेरी गर्दन पकड़कर मुझे टुकड़े-टुकड़े कर दिया; फिर उसने पुझे अपना निशाना बनाकर खड़ा किया है। ५९ उसके तीर में चारों ओर उड़ रहे हैं, वह निर्दय होकर मेरे गुर्दों को बेधता है, और मेरा पित भूमि पर बहाता है। ६० वह शर के समान मुझ पर धावा करके मुझे चोट पर चोट पर हाँचाकर धायल करता है। ६१ मैंने अपनी खाल पर टाट को सी लिया है, और अपना बल मिट्टी में मिला दिया है। ६२ रोते-रोते मेरा मूँह सूज गया है, और मेरी आँखों पर घोर अंधकार छा गया है; ६३ तो भी मुझसे कोई उपद्रव नहीं हुआ है, और मेरी प्रार्थना पवित्र है। ६४ "हे पृथ्वी, तू मेरे लह को न ढाँपना, और मेरी तुहाई कहीं न स्के। ६५ अब भी स्वर्ग में मेरा साक्षी है, और मेरा गवाह ऊपर है। ६६ मेरे मित्र मुझसे धूम करते हैं, परन्तु मैं परमेश्वर के सामने आँसू बहाता हूँ, ६७ कि कोई परमेश्वर के सामने सज्जन का, और आदर्मी का मुकद्दमा उसके पड़ोसी के विस्तु लड़े। ६८ क्योंकि थोड़े ही वर्षों के बीतने पर मैं उस मार्ग से चला जाऊँगा, जिससे मैं फिर वापिस न लौटूँगा।

१७ "मेरा प्राण निकलने पर है, मेरे दिन पूरे हो चुके हैं, मेरे लिये कब्र तैयार है। ६९ निश्चय जो मैं संग है वह ठाण्डा करनेवाले हैं, और उनका झाङडा-रागड़ा मुझे लगातार दिखाई देता है। ७० "जामानत दे, अपने और मेरे बीच में तू ही जामिन हो; कौन है जो मेरे हाथ पर हाथ मारे? ७१ तो उनका मन समझने से रोका है, इस कारण तू उनको प्रबल न करोगा। ७२ जो अपने मित्रों को चुपाली खाकर लूटा देता, उसके बच्चों की आँखें अंधी हो जाएँगी। ७३ "उसने ऐसा किया कि सब लोग मेरी उपमा देते हैं, और लोग मेरे मूँह पर थकते हैं। ७४ खेद के मारे मेरी आँखों में धूंधलापन छा गया है, और मेरे सब अंग छाया के समान हो गए हैं। ७५ इसे देखकर सीधे लोग चकित होते हैं, और जो निर्देश है, वह भक्तिहीन के विस्तु भड़क उठते हैं। ७६ तो भी धर्मी लोग अपना मार्ग पकड़े रहेंगे, और शुद्ध काम करनेवाले सामर्थ्य पर सामर्थ्य पाते जाएँगे। ७७ तुम सब के सब मेरे पास आओ तो आओ, परन्तु मुझे तम लोगों में एक भी बृद्धिमान न मिलेगा। ७८ मेरे दिन तो बीत चुके, और मेरी मनसांप्राप्ति गई, और जो मेरे मन में था, वह नाश हुआ है। ७९ वे रात को दिन ठहराते; वे कहते हैं, अंधियारे के निकट उजियाला है। ८० यदि मेरी आशा यह हो कि अधोलोक मेरा धाम होगा, यदि मैंने अंधियारे में अपना बिछौना बिछा लिया है, (Sheol h7585) ८१ यदि

मैंने सड़ाहट से कहा, 'तू मेरा पिता है,' और किडे से, 'तू मेरी माँ,' और 'मेरी बहन है,' १५ तो मेरी आशा कहाँ रही? और मेरी आशा किसके देखने में आएगी? १६ वह तो अधोलोक में उत्तर जाएगी, और उस समेत मुझे भी मिट्ठी में विश्राम मिलेगा।" (Sheol h7585)

१८ तब शही बिल्द ने कहा, २ "तुम कब तक फंदे लगा लगाकर वचन

पकड़ते रहेगे? चित लगाओ, तब हम बोलेंगे। ३ हम लोग तम्हारी दृष्टि में क्यों पशु के तुल्य समझे जाते, और मर्ख ठहरे हैं। ४ हे अपने को क्रोध में फाड़नेवाले क्या तेरे निमित्त पृथ्वी उजड जाएगी, और चट्टान अपने स्थान से हट जाएगी? ५ "तो भी दुर्दों का दीपक बुझ जाएगा, और उसकी आग की लौ न चमकेगी। ६ उसके डैरे में का उजियाला अधिरा हो जाएगा, और उसके ऊपर का दिया बुझ जाएगा। ७ उसके बड़े-बड़े फाल छोटे हो जाएंगे और वह अपनी ही युक्ति के द्वारा गिरेगा। ८ वह अपना ही पौंप जाल में फँसाएगा, वह फंदों पर चलता है। ९ उसकी एड़ी फंदे में फँस जाएगी, और वह जाल में पकड़ा जाएगा। १० फंदे की रसियाँ उसके लिये भूमि में, और जाल रास्ते में छिपा दिया गया है। ११ चारों ओर से डरावनी वस्तुएँ उसे डराएँगी और उसके पाले पड़कर उसको भगाएँगी। १२ उसका बल दुःख से घट जाएगा, और विपत्ति उसके पास ही तैयार रहेगी। १३ वह उसके अंग को खा जाएगी, वरन् मृत्यु का पहलौठा उसके अंगों को खा लेगा। १४ अपने जिस डेरे का भरोसा वह करता है, उससे वह छीन लिया जाएगा; और वह भयंकरता के रजा के पास पहुँचाया जाएगा। १५ जो उसके यहाँ का नहीं है वह उसके डेरे में वास करेगा, और उसके घर पर गन्धक छिटाई जाएगी। १६ उसकी जड़ तो सूख जाएगी, और डालियाँ कट जाएंगी। १७ पृथ्वी पर से उसका समरण मिट जाएगा, और बाजार में उसका नाम कभी न सुन पड़ेगा। १८ वह उजियाले से अंधियारे में ढकेल दिया जाएगा, और जगत में से भी भगाया जाएगा। १९ उसके कुटुम्बियों में उसके कोई पुरु-पौत्र न रहेगा, और जहाँ वह रहता था, वहाँ कोई बचा न रहेगा। २० उसका दिन देखकर पश्चिम के लोग भयाकूल होंगे, और पूर्व के निवासियों के रोएँ खड़े हो जाएँगे। २१ नि-सन्देह कुटिल लोगों के निवास ऐसे हो जाते हैं, और जिसको परमेश्वर का ज्ञान नहीं रहता, उसका स्थान ऐसा ही हो जाता है।"

१९ तब अर्यूब ने कहा, २ "तुम कब तक मेरे प्राण को दुःख देते रहेगे; और

बातों से मुझे चूर-चूर करोगे? ३ इन दर्पों बार तुम लोग मेरी निन्दा ही करते रहे, तुम्हें लज्जा नहीं आती, कि तुम मेरे साथ कठोरता का बर्ताव करते हो? ४ मान लिया कि मुझसे भूल हुई, तो भी वह भूल तो मेरे ही सिर पर रहेगी। ५ यदि तुम सचमुच मेरे विद्धु अपनी बड़ाई करते हो और प्रमाण देकर मेरी निन्दा करते हो, ६ तो यह जान लो कि परमेश्वर ने मुझे गिरा दिया है, और मुझे अपने जाल में फँसा लिया है। ७ देखो, मैं उपद्रव! उपद्रव! चिल्लाता रहता हूँ, परन्तु कोई नहीं सुनता; मैं सहायता के लिये द्वाइं देता रहता हूँ, परन्तु कोई न्याय नहीं करता। ८ उसने मेरे मार्ग को ऐसा स्थंधा है कि मैं आगे चल नहीं सकता, और मेरी डारों अंधेरी कर दी है। ९ मेरा वैष्व उसने हर लिया है, और मेरे सिर पर से मुकुट उतार दिया है। १० उसने चारों ओर से मुझे तोड़ दिया, बस मैं जाता रहा, और मेरी आशा को उसने बृक्ष के समान उखाड़ डाला है। ११ उसने मुझ पर अपना क्रोध भड़काया है और अपने शत्रुओं में मुझे पिनता है। १२ उसके दल इक्के होकर मेरे विद्धु मोर्चा बांधते हैं, और मेरे डेरे के चारों ओर छावनी डालते हैं। १३ "उसने मेरे भाइयों को मुझसे दूर किया है, और जो मेरी जान-पहचान के थे, वे बिलकुल अनजान हो गए हैं। १४ मेरे कुटुम्बी मुझे छोड़ गए हैं, और मेरे प्रिय मित्र मुझे भूल गए हैं। १५ जो मेरे घर में रहा करते थे, वे,

वरन् मेरी दासियाँ भी मुझे अनजान पिनते लगी हैं; उनकी दृष्टि में मैं परदेशी हो गया हूँ। १६ जब मैं अपने दास को बुलाता हूँ, तब वह नहीं बोलता; मुझे उससे गिङ्गिड़ाना पड़ता है। १७ मेरी साँस मेरी छी को और मेरी गन्ध मेरे भाइयों की दृष्टि में यिनीं लगती हैं। १८ बच्चे भी मुझे तुच्छ जानते हैं, और जब मैं उठने लगता, तब वे मेरे विद्धु बोलते हैं। १९ मेरे सब परम मित्र मुझसे द्रेष रखते हैं, और जिनसे मैंने प्रेम किया वे पलटकर मेरे विरोधी हो गए हैं। २० मेरी खाल और मौस मेरी हड्डियों से सट गए हैं, और मैं बाल-बाल बच गया हूँ। २१ हे मेरे मित्रो! मुझ पर दया करो, दया करो, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे मरा है। २२ तुम परमेश्वर के समान क्यों मेरे पीछे पड़े हो? और मेरे मौस से क्यों तुम नहीं हुए? २३ "भला होता, कि मेरी बातें लिखी जातीं; भला होता, कि वे पुस्तक में लिखी जातीं, २४ और लोहे की टाँकी और सीसे से वे सदा के लिये चट्टान पर खोदी जातीं। २५ मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुड़नेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा। २६ और अपनी खाल के इस प्रकार नाश हो जाने के बाद भी, मैं शरीर में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊँगा। २७ उसका दर्शन मैं आप अपनी अँखों से अपने लिये करूँगा, और न कोई दूसरा। यद्यपि मेरा हृदय अन्दर चूर-चूर भी हो जाए, २८ तो भी मुझ में तो धर्म का मूल पाया जाता है! और तुम जो कहते हो हम इसको क्यों सताएँ! २९ तो तुम तलवार से डरो, क्योंकि जलजलाहट से तलवार का दण्ड मिलता है, जिससे तुम जान लो कि न्याय होता है!"

२० तब नामाती सोपर ने कहा, २ "मेरा जी चाहता है कि उत्तर दृঁ, और

इसलिए बोलने में फुर्ती करता हूँ। ३ मैंने ऐसी डॉट सुनी जिससे मेरी निन्दा हुई, और मेरी आत्मा अपनी समझ के अनुसार तुझे उत्तर देती है। ४ क्या तू यह नियम नहीं जानता जो प्राचीन और उस समय का है, जब मनुष्य पृथ्वी पर बसाया गया, ५ दुर्दों की विजय क्षण भर का होता है, और भक्तिहीनों का आनन्द पल भर का होता है? ६ चाहे ऐसे मूल्य का माहात्म्य आकाश तक पहुँच जाए, और उसका सिर बादलों तक पहुँचे, ७ तो भी वह अपनी विज्ञ के समान सदा के लिये नाश हो जाएगा; और जो उसको देखते थे वे पूछेंगे कि वह कहाँ रहा? ८ वह स्वप्न के समान लोप हो जाएगा और किसी को फिर न मिलेगा; रात में देखे हुए रूप के समान वह रहने न पाएगा। ९ जिसने उसको देखा हो फिर उसे न देखेगा, और अपने स्थान पर उसका कुछ पता न रहेगा। १० उसके बच्चे कंगालों से भी विनती करेंगे, और वह अपना छीना हुआ माल फेर देगा। ११ उसकी हड्डियों में जबानी का बल भरा हुआ है परन्तु वह उसी के साथ मिट्ठी में मिल जाएगा। १२ "चाहे बुराई उसको मीठी लगे, और वह उसे अपनी जीभ के नीचे छिपा रखे, १३ और वह उसे बचा रखे और न छोड़े, वरन् उसे अपने ताल के बीच ढबा रखे, १४ तो भी उसका भोजन उसके पेट में पलटेगा, वह उसके अन्दर नाग का सा विष बन जाएगा। १५ उसने जो धन निगल लिया है उसे वह फिर उगल देगा; परमेश्वर उसे उसके पेट में से निकाल देगा। १६ वह नागों का विष चूस लेगा, वह कैरत के डसने से मर जाएगा। १७ वह नदियों अर्थात् मधु और दही की नदियों को देखेने पर जाएगा। १८ जिसके लिये उसने परश्म किया, उसको उसे लौटा देना पड़ेगा, और वह उसे निगलने न पाएगा; उसकी मोत ली हुई वस्तुओं से जितना आनन्द होना चाहिये, उतना तो उसे न मिलेगा। १९ क्योंकि उसने कंगालों को पीसकर छोड़ दिया, उसने घर को छीन लिया, जिसे उसने नहीं बनाया। २० "लालसा के मारे उसको कभी शान्ति नहीं मिलती थी, इसलिए वह अपनी कोई मन्माधारनी वस्तु बचा न सकेगा। २१ कोई वस्तु उसका कौर बिना हुए न बचती थी, इसलिए उसका कुशल बना न रहेगा २२ पूरी सम्पत्ति रहते भी वह सकेती में पड़ेगा; तब सब दुःखियों के हाथ उस पर उठेंगे। २३ ऐसा होगा, कि उसका पेट भरने पर होगा,

परमेश्वर अपना क्रोध उस पर भड़काएगा, और रोटी खाने के समय वह उस पर पड़ेगा। २५ वह लोहे के हथियार से भागेगा, और पीतल के धनुष से मारा जाएगा। २६ वह उस तीर को खीचकर अपने पेट से निकालेगा, उसकी चमकीली नोंक उसके पित से होकर निकलेगी, भय उसमें समाएगा। २७ उसके गड़े हुए धन पर घोर अंधकार छा जाएगा। वह ऐसी आग से भस्म होगा, जो मनुष्य की फैँकी हुई न हो; और उत्तीरे से उसके डेरे में जो बचा हो वह भी भस्म हो जाएगा। २८ आकाश उसका अर्थम प्रगट करेगा, और पृथ्वी उसके विष्वु खड़ी होगी। २९ उसके घर की बढ़ती जाती रहेगी, वह परमेश्वर के क्रोध के दिन बह जाएगी। ३० परमेश्वर की ओर से दृष्ट मनुष्य का अंश, और उसके लिये परमेश्वर का ठहराया हुआ भाग यही है।”

२१ तब अर्यवू ने कहा, “चित लगाकर मेरी बात सुनो; और तुम्हारी शानि यही ठरो। ३१ मेरी कुछ तो सहो, कि मैं भी बातें कहूँ; और जब मैं बातें कर कुच्छुँ, तब पीछे ठश करना। ३२ क्या मैं किसी मनुष्य की दुहाई देता हूँ? फिर मैं अधीर क्यों न होऊँ? ३३ मेरी और चित लगाकर चकित हो, और अपनी-अपनी उंगली ढाँत तले दबाओ। ३४ जब मैं कहों को स्मरण करता तब मैं घबरा जाता हूँ, और मेरी देह काँपने लगती है। ३५ क्या कारण है कि दृष्ट लोग जीवित रहते हैं, वरन् बढ़े भी हो जाते, और उनका धन बढ़ता जाता है? ३६ उनकी सन्तान उनके संग, और उनके बाल-बच्चे उनकी आँखों के सामने बने रहते हैं। ३७ उनके घर में भयरहित कुशल रहता है, और परमेश्वर की छही उन पर नहीं पड़ती। ३८ उनका साँड गाभिन करता और चकता नहीं, उनकी गायें विश्वासी हैं और बच्चा कभी नहीं गिरती। ३९ वे अपने लड़कों को झुण्ड के झुण्ड बाहर जाने देते हैं, और उनके बच्चे नाचते हैं। ४० वे डफ और बीणा बजाते हुए गाते, और बांसुरी के शब्द से अनन्दित होते हैं। ४१ वे अपने दिन सुख से बिताते, और पल भर ही में अशोलोक में उत्तर जाते हैं। (Sheol h7585) ४२ तो भी वे परमेश्वर से कहते थे, ‘हम से दूर हो! तेरी गति जानने की हमको इच्छा नहीं है। ४३ सर्वशक्तिमान क्या है, कि हम उसकी सेवा करें? और यदि हम उससे विनती भी करें तो हमें क्या लाभ होगा?’ ४४ देखो, उनका कुशल उनके हाथ में नहीं रहता, दृष्ट लोगों का विचार मुझसे दूर रहे। ४५ “कितनी बार ऐसे होता है कि दुर्णों का दीपक बुझ जाता है, या उन पर विपत्ति आ पड़ती है, और परमेश्वर क्रोध करके उनके हिस्से में शोक देता है, ४६ वे यासे से उड़ाए हुए भसे की, और बवण्डर से उड़ाई हुई भूसी के समान होते हैं। ४७ तुम कहते हो ‘परमेश्वर उसके अर्थम का दाढ़ उसके बच्चों के लिये रख छोड़ता है,’ वह उसका बदला उत्तीर्ण को दे, ताकि वह जान ले। ४८ दृष्ट अपना नाश अपनी ही आँखों से देखे, और सर्वशक्तिमान की जलजलाहट में से आप पी ले। ४९ क्योंकि जब उसके महीनों की गिनती कट चुकी, तो अपने बादबाले घराने से उसका क्या काम रहा। ५० क्या परमेश्वर को कोई ज्ञान सिखाएँ? वह तो ऊँचे पद पर रहनेवालों का भी न्याय करता है। ५१ कोई तो अपने पौर बल में बड़े चैन और सुख से रहता हुआ मर जाता है। ५२ उसकी देह दध से और उसकी हीड़ियों गूदे से भरी रहती है। ५३ और कोई अपने जीव में कढ़कढ़क बिना सुख भगो मर जाता है। ५४ वे दोनों बाबावर मिट्टी में मिल जाते हैं, और कीड़े उन्हें ढांक लेते हैं। ५५ “देखो, मैं तुम्हारी कल्पनाएँ जानता हूँ, और उन युक्तियों को भी, जो तुम मेरे विषय में अन्याय से करते हो। ५६ तुम कहते तो हो, ‘रईस का घर कहाँ रहा? दुर्णों के निवास के तम्ब कहाँ रहे?’ ५७ परन्तु क्या तुम ने बटोहियों से कभी नहीं पूछा? क्या तुम उनके इस विषय के प्रमाणों से अनजान हो, ५८ कि विपत्ति के दिन के लिये दुर्जन सुक्षित रखा जाता है; और महाप्रलय के समय के लिये ऐसे लोग बचाए जाते हैं? ५९ उसकी चाल उसके मुँह पर कौन कहेगा? और उसने जो किया है, उसका पलटा

कौन देगा? ६० तो भी वह कब्र को पहुँचाया जाता है, और लोग उस कब्र की रखबाली करते रहते हैं। ६१ नाले के ढेले उसको सुखदायक लगते हैं, और जैसे पूर्वकाल के लोग अनगिनत जा चुके, वैसे ही सब मनुष्य उसके बाद भी चले जाएँगे। ६२ तुम्हारे उत्तरों में तो झूठ ही पाया जाता है, इसलिए तुम क्यों सुझे व्यर्थ शानि देते हो?”

२२ तब तेमानी एलीप्ज ने कहा, “क्या मनुष्य से परमेश्वर को लाभ पहुँच सकता है? जो बुद्धिमान है, वह स्वयं के लिए लाभदायक है। ६३ क्या तेरे धर्मी होने से सर्वशक्तिमान सुख पा सकता है? तेरी चाल की खराई से क्या उसे कुछ लाभ हो सकता है? ६४ वह तो तुझे डाँटा है, और तुझ से मुकदमा लड़ता है, तो क्या यह तेरी भक्ति के कारण है? ६५ क्या तेरी बुराई बहुत नहीं? तेरे अर्थम के कामों का कुछ अन्त नहीं। ६६ तूने तो अपने भाई का बन्धक अकाशण रख लिया है, और नगो के बब्ल उतार लिये हैं। ६७ थके हुए को तूने पानी न पिलाया, और भूखे को रोटी देने से इन्कार किया। ६८ जो बलवान था उत्तीर्ण को भूमि मिली, और जिस पुस्त की प्रतिष्ठा हुई थी, वही उसमें बस गया। ६९ तूने विधवाओं को खाली हाथ लौटा दिया। और अनाथों की बाहे तोड़ डाली गई। ७० इस कारण तेरे चारों ओर फंदे लगे हैं, और अचानक डर के मारे तू घबरा रहा है। ७१ क्या तू अधियोगे को नहीं देखता, और उस बाढ़ को जिसमें तू डब रहा है? ७२ “क्या परमेश्वर सर्वग के ऊँचे स्थान में नहीं है? ऊँचे से ऊँचे तारों को देख कि वे कितने ऊँचे हैं। ७३ फिर तू कहता है, ‘परमेश्वर क्या जानता है? क्या वह घोर अंधकार की आड़ में होकर न्याय करेगा? ७४ काली घटाओं से वह ऐसा छिपा रहता है कि वह कुछ नहीं देख सकता, वह तो आकाशमण्डल ही के ऊपर चलता फिरता है’ ७५ क्या तू उसे पुराने गर्से को पकड़े रहेगा, जिस पर वे अमर्थ करनेवाले चलते हैं? ७६ वे अपने समय से पहले उठा लिए गए और उनके घर की नीव नदी बहा ले गई। ७७ उन्होंने परमेश्वर से कहा था, ‘हम से दूर हो जा,’ और यह कि ‘सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमारा क्या कर सकता है?’ ७८ तो भी उसने उनके घर अच्छे-अच्छे पदार्थों से भर दिए परन्तु दृष्ट लोगों का विचार मुझसे दूर रहे। ७९ धर्मी लोग देखकर आनन्दित होते हैं; और निर्दोष लोग उनकी हँसी करते हैं, कि ८० ‘जो हमारे विष्वु उठे थे, निःसन्देह मिट गए और उनका बड़ा धन आग का कौर हो गया है’ ८१ “परमेश्वर से मेल मिलाप कर तब तुझे शानि मिलेगी; और इससे तेरी भलाई होगी। ८२ उसके मुँह से शिक्षा सुन ले, और उसके बचन अपने मन में रख। ८३ यदि तू सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर फिरके समीप जाए, और अपने तम्ब से कुटिल काम दूर करे, तो तू बन जाएगा। ८४ तू अपनी अनगोल वस्तुओं को धूलि पर, वरन् ओपीर का कुन्दन भी नालों के पत्थरों में डाल दे, ८५ तब सर्वशक्तिमान आप तेरी अनगोल वस्तु और तेरे लिये चमकीली चौंदी होगा। ८६ तब तू सर्वशक्तिमान से सुख पाएगा, और परमेश्वर की ओर अपना मुँह बेखटके उठा सकेगा। ८७ और तू उससे प्रार्थना करेगा, और वह तेरी सुनेगा; और तू अपनी मन्नतों को पूरी करेगा। ८८ जो बात तू ठाने वह तुझ से बन भी पड़ेगी, और तेरे मार्गों पर प्रकाश रहेगा। ८९ मनुष्य जब गिरता है, तो तू कहता है कि वह उठाया जाएगा; क्योंकि वह नम्र मनुष्य को बचाता है। ९० वरन् जो निर्दोष न हो उसको भी वह बचाता है, तेरे शुद्ध कामों के कारण तू छुड़ाया जाएगा।”

२३ तब अर्यवू ने कहा, “मेरी कुड़कड़ाहट अब भी नहीं स्क सकती, मेरे कष्ट मैं कराहने से भरी है। ९१ भला होता, कि मैं जानता कि वह कहाँ मिल सकता है, तब मैं उसके विराजने के स्थान तक जा सकता! ९२ मैं उसके सामने अपना मुकदमा पेश करता, और बहुत से प्रमाण देता। ९३ मैं जान लेता कि

वह मुझसे उत्तर में क्या कह सकता है, और जो कुछ वह मुझसे कहता वह मैं समझ लेता। ६ क्या वह अपना बड़ा बल दिखाकर मुझसे मुकदमा लड़ता? नहीं, वह मुझ पर ध्यान देता। ७ सज्जन उससे विवाद कर सकते, और इस रीति मैं अपने न्यायी के हाथ से सदा के लिये छूट जाता। ८ “देखो, मैं आगे जाता हूँ परन्तु वह नहीं मिलता; मैं पीछे हटता हूँ, परन्तु वह दिखाई नहीं पड़ता; ९ जब वह बाईं और काम करता है तब वह मुझे दिखाई नहीं देता; वह तो दाहिनी ओर ऐसा छिप जाता है, कि मुझे वह दिखाई नहीं नहीं पड़ता। १० परन्तु वह जानता है, कि मैं कैसी चाल चला हूँ; और जब वह मुझे ता लेगा तब मैं सोने के समान निकलता हूँ। ११ मेरे पैर उसके मार्ग में दिश्र रखें; और मैं उसी का मार्ग बिना मुड़े थामे रहा। १२ उसकी आज्ञा का पालन करने से मैं न हटा, और मैंने उसके चर्चन अपनी इच्छा से कहीं अधिक काम के जानकर सुरक्षित रखे। १३ परन्तु वह एक ही बात पर अड़ा रहता है, और कौन उसके उससे फिरा सकता है? जो कुछ उसका जी चाहता है वही वह करता है। १४ जो कुछ मेरे लिये उसने ठाना है, उसी को वह पूरा करता है, और उसके मन में ऐसी-ऐसी बहती सी बातें हैं। १५ इस कारण मैं उसके सम्मुख घबरा जाता हूँ; जब मैं सोचता हूँ तब उससे वरथरा उठता हूँ। १६ क्योंकि मेरा मन परमेश्वर ही ने कच्चा कर दिया, और सर्वशक्तिमान ही ने मुझ को घबरा दिया है। १७ क्योंकि मैं अंधकार से धिरा हुआ हूँ, और घोर अंधकार ने मेरे मुँह को ढाँप लिया है।

२४ “सर्वशक्तिमान ने दृष्टों के न्याय के लिए समय ब्यां नहीं ठहराया, और जो लोग उसका ज्ञान रखते हैं वे उसके दिन क्यों देखने नहीं पाते? १ कुछ लोग भूमि की सीमा को बढ़ाते, और भेड़-बकरियाँ छीनकर चराते हैं। २ वे अनाथों का गदाह हाँक ले जाते, और विधवा का बैल बन्धक कर रखते हैं। ३ वे दरिद्र लोगों को मार्ग से हटा देते, और देश के दीनों को इकट्ठे छिपना पड़ता है। ४ देखो, दीन लोग जंगली गदहों के समान अपने काम को और कुछ भोजन यथा से ढूँढ़ने को निकल जाते हैं, उनके बच्चों का भोजन उनको जंगल से मिलता है। ५ उनको खेत में चारा काटना, और दृष्टों की बची बचाई दाख बटोरना पड़ता है। ६ रात को उहने बिना बब्ल नंगे पड़े रहना और जाड़े के समय बिना ओढ़े पड़े रहना पड़ता है। ७ वे पहाड़ों पर की वर्षा से भीगे रहते, और शरण न पाकर चाहन से लिपट जाते हैं। ८ कुछ दृष्टु लोग अनाथ बालक को माँ की छाती पर से छीन लेते हैं, और दीन लोगों से बन्धक लेते हैं। ९ जिससे वे बिना बब्ल नंगे फिरते हैं; और भ्रूख के मारे, पूलियाँ ढोते हैं। १० वे दृष्टों की दीवारों के भीतर तेल पेरते और उनके कुण्डों में दाख रौदेते हुए भी प्यासे रहते हैं। ११ वे बड़े नार में कराहते हैं, और धायल किए हुओं का जी दुहाई देता है; परन्तु परमेश्वर मूर्खता का हिसाब नहीं लेता। १२ “फिर कुछ लोग उजियाले से बैर रखते, वे उसके मार्गों को नहीं पहचानते, और न उसके मार्गों में बने रहते हैं। १३ खसी, पौ फटे ही उठकर दीन दरिद्र मनुष्य को घात करता, और रात को चोर बन जाता है। १४ व्यभिचारी यह सोचकर कि कोई मुझ को देखने न पाए, दिन छबने की राह देखता रहता है, और वह अपना मुँह छिपाए भी रखता है। १५ वे अंधियारों के समय धरों में सेंध मारते और दिन को छिपे रहते हैं; वे उजियाले को जानते भी नहीं। १६ क्योंकि उन सभी को भोक का प्रकाश घोर अंधकार सा जान पड़ता है, घोर अंधकार का भय वे जानते हैं।” १७ “वे जल के ऊपर हलकी सी वस्तु के सरीखे हैं, उनके भाग को पृथ्वी के रहनेवाले कोसते हैं, और वे अपनी दाख की बारियों में लौटने नहीं पाते। १८ जैसे सूखे और धूप से हिम का जल सूख जाता है वैसे ही पापी लोग अयोलोक में सूख जाते हैं। (Sheol h7585) १९ माता भी उसको भूल जाती, और कीड़े उसे चूसते हैं, भविष्य में उसका स्मरण न रहेगा; इस रीति टेढ़ा काम करनेवाला वृक्ष के समान कट जाता है। २० “वह बाँझ झी को जो कभी नहीं

जनी लूटता, और विधवा से भलाई करना नहीं चाहता है। २१ बलात्कारियों को भी परमेश्वर अपनी शक्ति से खीच लेता है, जो जीवित रहने की आशा नहीं रखता, वह भी फिर उठ बैठता है। २२ उन्हें ऐसे बेखटके कर देता है, कि वे सम्भले रहते हैं; और उसकी कृपादृष्टि उनकी चाल पर लाली रहती है। २३ वे बढ़ते हैं, तब थोड़ी देर में जाते रहते हैं, वे दबाए जाते और सभी के समान रख लिये जाते हैं, और अनाज की बाल के समान काटे जाते हैं। २४ क्या यह सब सच नहीं? कौन मुझे झलालाएगा? कौन मेरी बातें निकम्मी ठहराएगा?”

२५ तब शूही बिल्दद ने कहा, २ “प्रभुता करना और डराना यह उसी का काम है; वह अपने ऊँचे-ऊँचे स्थानों में शान्ति रखता है। ३ क्या उसकी सेनाओं की गिनती हो सकती? और कौन है जिस पर उसका प्रकाश नहीं पड़ता? ४ फिर मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी कैसे ठहर सकता है? और जो झी से उत्पन्न हुआ है वह कैसे निर्मल हो सकता है? ५ देख, उसकी दृष्टि में चन्द्रमा भी अधोरा ठहरता, और तारे भी निर्मल नहीं ठहरते। ६ फिर मनुष्य की क्या गिनती जो कीड़ा है, और आदमी कहाँ रहा जो चेचुआ है!”

२६ तब अर्यब ने कहा, २ “निर्बल जन की तूने क्या ही बड़ी सहायता की, और जिसकी बाँह में सामर्थ्य नहीं, उसको तूने कैसे सम्भाला है? ३ निर्बुद्धि मनुष्य को तूने क्या ही अच्छी सम्पत्ति दी, और अपनी खरी बुद्धि कैसी भर्ती भाँति प्राप्त की है? ४ तूने किसके हित के लिये बातें कहीं? और किसके मन की बातें तेरे मुँह से निकली?” ५ “बहुत दिन के मरे हुए लोग भी जलनिधि और उसके निवासियों के तले तड़पते हैं। ६ अयोलोक उसके सामने उघड़ा रहता है, और विनाश का स्थान ढाँप नहीं सकता। (Sheol h7585) ७ वह उत्तर दिशा को निराधार फैलाए रहता है, और बिना टेक पृथ्वी को लटकाए रखता है। ८ वह जल को अपनी काती धटाओं में बाँध रखता, और बादल उसके बोझ से नहीं फटता। ९ वह अपने सिंहासन के सामने बादल फैलाकर चाँद को छिपाए रखता है। १० उजियाले और अंधियारों के बीच जहाँ सीमा बंधी है, वहाँ तक उसने जलनिधि का सीमा ठहरा रखी है। ११ उसकी घुड़की से आकाश के खम्भे वरथराते और चकित होते हैं। १२ वह अपने बल से समुद्र को शान्त, और अपनी बुद्धि से रहब को छेद देता है। १३ उसकी आत्मा से आकाशमण्डल स्वच्छ हो जाता है, वह अपने हाथ से बेग से भागनेवाले नाग को मार देता है। १४ देखो, ये तो उसकी गति के किनारे ही हैं; और उसकी आहट फुसफुसाहट ही सी तो सुन पड़ती है, फिर उसके पराक्रम के गरजने का भेद कौन समझ सकता है?”

२७ अर्यब ने और भी अपनी गूढ़ बात उठाई और कहा, २ “मैं परमेश्वर के जीवन की शपथ खाता हूँ जिसने मेरा न्याय बिगाड़ दिया, अर्थात् उस सर्वशक्तिमान के जीवन की जिसने मेरा प्राण कड़वा कर दिया। ३ क्योंकि अब तक मेरी सौंस बराबर आती है, और परमेश्वर का आत्मा मेरे नथुरों में बना है। ४ मैं यह कहता हूँ कि मेरे मुँह से कोई कुटिल बात न निकलेगी, और न मैं कपट की बातें बोलेंगी। ५ परमेश्वर न करे कि मैं तुम लोगों को सच्चा ठहराऊँ, जब तक मैं अपनी खराई से न हँड़ाँगा। ६ मैं अपनी धार्मिकता पकड़े हुए हूँ और उसको हाथ से जाने न दूँगा; क्योंकि मेरा मन जीवन भर मुझे दोषी नहीं ठहराएगा। ७ ‘मेरा शब्द दुर्घटों के समान, और जो मेरे विस्तु उठता है वह कुटिलों के तल्य ठहरे। ८ जब परमेश्वर भक्तिहीन मनुष्य का प्राण ले ले, तब यथपि उसने धन भी प्राप्त किया हो, तो भी उसकी क्या आशा रहेगी? ९ जब वह संकट में पड़े, तब क्या परमेश्वर उसकी दुहाई सुनेगा? १० क्या वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर में सुख पाकेगा, और हर समय परमेश्वर को पुकार सकेगा? ११ मैं तुम्हें परमेश्वर के काम के विषय शिक्षा दूँगा,

और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की बात मैं न छिपाऊँगा १५ देखो, तुम लोग सब के सब उसे स्थवं देख चुके हो, फिर तुम व्यर्थ विचार क्यों पकड़े रहते हो?” १६ “दृष्ट मनुष्य का भाग परमेश्वर की ओर से यह है, और उपद्रवियों का अंश जो वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर के हाथ से पाते हैं, वह यह है, कि १७ चाहे उसके बच्चे गिनती में बढ़ भी जाएँ, तो भी तलवार ही के लिये बढ़ेंगे, और उसकी सन्तान पेटे भर रोटी न खाने पाएगी। १८ उसके जो लोग बच जाएँ वे मरकर कब्र को पहुँचेंगे; और उसके यहाँ की विधावाँ न रोएँगी। १९ चाहे वह स्थाय धूलि के समान बटोर रखे और वज्र मिट्ठी के किनकों के तुल्य अनगिनत तैयार कराए, २० वह उहें तैयार कराए तो सही, परन्तु धर्मी उहें पहन लेगा, और उसका स्थाय निर्दोष लोग आपस में बैठेंगे। २१ उसने अपना घर मकड़ी का सा बनाया, और खेत के रखवाले की झोपड़ी के समान बनाया। २२ वह धर्मी होकर लेट जाए परन्तु वह बना न रहेगा; औँख खोलते ही वह जाता रहेगा। २३ भय की धाराएँ उसे बहा ले जाएँगी, रात को बवण्डर उसको उड़ा ले जाएँगा। २४ पूर्वी वायु उसे ऐसा उड़ा ले जाएँगी, और वह जाता रहेगा और उसको उसके स्थान से उड़ा ले जाएँगी। २५ क्योंकि परमेश्वर उस पर विपत्तियाँ बिना तरस खाए डाल देगा, उसके हाथ से वह भाग जाना चाहेगा। २६ लोग उस पर ताली बजाएँगे, और उस पर ऐसी सुसकारियाँ भरेंगे कि वह अपने स्थान पर न रह सकेगा।

२८ “चाँदी की खानि तो होती है, और सोने के लिये भी स्थान होता है जहाँ लोग जाते हैं। १ लोहा मिट्ठी में से निकाला जाता और पथर पिघलाकर पीतल बनाया जाता है २ मनुष्य अंधियरो को दू कर, दूर-दूर तक खोद-खोदकर, अंधियरो और घोर अंधकार में पथर ढूँढते हैं। ३ जहाँ लोग रहते हैं वहाँ से दूर वे खानि खोदते हैं वहाँ पृथ्वी पर चलनेवालों के भले-बिसरे हए वे मनुष्यों से दूर लटके हुए झलते रहते हैं। ४ यह भूमि जो है, इससे रोटी तो मिलती है, परन्तु उसके नीचे के स्थान मानो आग से उलट दिए जाते हैं। ५ उसके पथर नीलमणि का स्थान है, और उसी में सोने की धूली भी है। ६ “उसका मार्ग कोई माँसाहारी पक्षी नहीं जानता, और किसी गिर्द की दृष्टि उस पर नहीं पड़ी। ७ उस पर हिसक पशुओं ने पाँव नहीं धरा, और न उससे होकर कोई सिंह कभी गया है। ८ “वह चक्रमक के पथर पर हाथ लगाता, और पहाड़ों को जड़ ही से उलट देता है। ९ वह चट्टान खोदकर नालियों बनाता, और उसकी औँखों को हर एक अनमोल वस्तु दिखाइ देती है। १० वह नदियों को ऐसा गेक देता है, कि उससे एक बैंट भी पानी नहीं टपकता और जो कुछ छिपा है उसे वह उजियाले में निकालता है। ११ “परन्तु बुद्धि कहाँ मिल सकती है? और समझ का स्थान कहाँ है? १२ उसका मोल मनुष्य को मालूम नहीं, जीवनलोक में वह कहीं नहीं मिलती। १३ अथाह सागर कहता है, ‘वह मुझ में नहीं है’, और समुद्र भी कहता है, ‘वह मेरे पास नहीं है।’ १४ शुद्ध सोने से वह मोल लिया नहीं जाता। और न उसके दाम के लिये चाँदी तौली जाती है। १५ न तो उसके साथ ओपीर के कुन्दन की बराबरी हो सकती है; और न अनमोल सुलैमानी पथर या नीलमणि की। १६ न सोना, न काँच उसके बराबर ठहर सकता है, कुन्दन के गहने के बदले भी वह नहीं मिलती। १७ मूँह और स्फटिकमणि की उसके आगे क्या चर्चाँ? बुद्धि का मोल मणिक से भी अधिक है। १८ क्षृश देश के पद्मराग उसके तुल्य नहीं ठहर सकते; और न उससे शुद्ध कुन्दन की बराबरी हो सकती है। १९ फिर बुद्धि कहाँ मिल सकती है? और समझ का स्थान कहाँ? २० वह सब प्राणियों की औँखों से छिपी है, और आकाश के पक्षियों के देखने में नहीं आती। २१ विनाश और मृत्यु कहती है, ‘हमने उसकी चर्चा सनी है।’ २२ “परन्तु परमेश्वर उसका मार्ग समझता है, और उसका स्थान उसको मालूम है। २३ वह तो पृथ्वी की छोर तक ताकता

रहता है, और सारे आकाशमण्डल के तले देखता-भालता है। २४ जब उसने बायु का तौल ठहराया, और जल को नपुण मैं नापा, २५ और मैं के लिये विधि और गर्जन और बिजिती के लिये मार्ग ठहराया, २६ तब उसने बुद्धि को देखकर उसका बखान भी किया, और उसको सिद्ध करके उसका पूरा भेद बड़ा लिया। २७ तब उसने मनुष्य से कहा, ‘देख, प्रभु का भय मानना यहीं बुद्धि है और बुराई से दूर रहना यहीं समझ है।’”

२९ अय्यब ने और भी अपनी गृह बाट उठाई और कहा, १ “भला होता, कि मेरी दशा बीते हुए महीनों की सी होती, जिन दिनों में परमेश्वर मेरी रक्षा करता था, २ जब उसके दीपक का प्रकाश मेरे सिर पर रहता था, और उससे उजियाला पाकर मैं अंधेरे से होकर चलता था। ३ वे तो मेरी जवानी के दिन थे, जब परमेश्वर की मित्रता मेरे डेरे पर प्रगट होती थी। ४ उस समय तक तो सर्वशक्तिमान परमेश्वर मेरे संग रहता था, और मेरे बच्चे मेरे चारों ओर रहते थे। ५ तब मैं अपने पैरों को मलाई से धोता था और मेरे पास की छानों से तेल की धाराएँ बहा करती थी। ६ जब-जब मैं नगर के फाटक की ओर चलकर खुले स्थान में अपने बैठने का स्थान तैयार करता था, ७ तब-तब जवान मुझे देखकर छिप जाते, और पुनिये उठकर खड़े हो जाते थे। ८ हक्किम लोग भी बोलने से स्क जाते, और हाथ से मूँह मूँद रहते थे। ९ प्रधान लोग चुप रहते थे और उनकी जीभ ताल से सट जाती थी। १० क्योंकि जब कोई मेरा समाचार सुनता, तब वह मुझे धन्य कहता था, और जब कोई मुझे देखता, तब मेरे विषय साक्षी देता था; ११ क्योंकि मैं दुहाई देनेवाले दीन जन को, और असहाय अनाथ को भी छुड़ाता था। १२ जो नाश होने पर या मुझे आशीर्वाद देता था, और मेरे काण विधावा अनन्द के मारे गाती थी। १३ मैं धार्मिकता को पहने रहा, और वह मुझे ढाके रहा; मेरा न्याय का काम मेरे लिये बागे और सुन्दर पगड़ी का काम देता था। १४ मैं अंधों के लिये औँखें, और लंगड़ों के लिये पाँव ठहरता था। १५ दरिद्र लोगों का मैं पिता ठहरता था, और जो मेरी फहान का न था उसके मुकद्दमे का हाल मैं पूछताछ करके जान लेता था। १६ मैं कृटिल मनुष्यों की डाढ़ें तोड़ डालता, और उनका शिकार उनके मूँह से छीनकर बचा लेता था। १७ तब मैं सोचता था, ‘मेरे दिन रेतकणों के समान अनगिनत होंगे, और अपने ही बर्सों में मेरा प्राण छूटेगा। १८ मेरी जड़ जल की ओर फैली, और मेरी डाली पर ओस रात भर पड़ी रहेगी, १९ मेरी महिमा ज्यों की त्यों बनी रहेगी, और मेरा धनुष मैं हाथ में सदा नया होता जाएगा। २० “लोग मेरी ही ओर कान लगाकर ठहरे रहते थे और मेरी सम्पत्ति सुनकर चुप रहते थे। २१ जब मैं बोल चुकता था, तब वे और कुछ न बोलते थे, मेरी बातें उन पर मैं के सामान बरसा करती थी। २२ जैसे लोग बरसात की, वैसे ही मेरी भी जाट देखते थे; और जैसे बरसात के अन्त की वर्षा के लिये वैसे ही वे मूँह पसारे रहते थे। २३ जब उनको कुछ आशा न रहती थी तब मैं हँसकर उनको प्रसन्न करता था; और कोई मेरे मूँह को बिगाड़ न सकता था। २४ मैं उनका मार्ग चुन लेता, और उनमें मुख्य ठहरकर बैठा करता था, और जैसा सेना में राजा या विलाप करनेवालों के बीच शान्तिदाता, वैसा ही मैं रहता था।

३० “परन्तु अब जिनकी आयु मुझसे कम है, वे मेरी हँसी करते हैं, वे जिनके पिताओं को मैं अपनी भेड़-बकरियों के कुत्तों के काम के योग्य भी न जानता था। २ उनके भुजबल से मुझे क्या लाभ हो सकता था? उनका पौस्त तो जाता रहा। ३ वे दरिद्रता और काल के मारे दुबले पड़े हुए हैं, वे अंधेरे और सुन्दर स्थानों में सुर्खी धूल फॉकते हैं। ४ वे ज़ादी के आस-पास का लोनिया साग तोड़ लेते, और ज़ाऊ की जड़ें खाते हैं। ५ वे मनुष्यों के बीच में से निकाले जाते हैं, उनके पीछे ऐसी पुकार होती है, जैसी चोर के पीछे। ६

डरावने नालों में, भूमि के बिलों में, और चट्टानों में, उन्हें रहना पड़ता है। ७ वे ज्ञाड़ियों के बीच रेक्टे, और बिच्छू पौधों के नीचे इकट्ठे पड़े रहते हैं। ८ वे मूर्खी और नीच लोगों के बंश हैं जो मार-मार के इस देश से निकाले गए थे। ९ “ऐसे ही लोग अब मुझ पर लगते गीत गाते, और मुझ पर तान मारते हैं। १० वे मुझसे बिन खाकर दूर रहते, वे मेरे मुँह पर थकने से भी नहीं डरते। ११ परमेश्वर ने जो मेरी रस्सी खोलकर मुझे दुख दिया है, इसलिए वे मेरे सम्पन्न मुँह में लगाम नहीं रखते। १२ मेरी दाहिनी ओर बाजास्त लोग उठ खड़े होते हैं, वे मेरे पाँव सरका देते हैं, और मेरे नाश के लिये अपने उपाय बाँधते हैं। १३ जिनके कोई सहायक नहीं, वे भी मेरे रस्तों को बिगाड़ते, और मेरी विपत्ति को बढ़ाते हैं। १४ मानो बड़े नाके से घुसकर वे आ पड़ते हैं, और उजाड़ के बीच मैं होकर मुझ पर धावा करते हैं। १५ मुझ में घबराहट छा गई है, और मेरा रईसपन मानो वायु से उड़ाया गया है, और मेरा कुशल बादल के समान जाता रहा। १६ “और अब मैं शोकसामर में डब्बा जाता हूँ; दुःख के दिनों ने मुझे जकड़ लिया है। १७ रात को मेरी हड्डियों मेरे अन्दर छिद जाती हैं और मेरी नसों में चैन नहीं पड़ती। १८ मेरी बीमारी की बहुतायत से मेरे वश का स्पष्ट बदल गया है; वह मेरे कुर्ते के गले के समान मुझसे लिपटी हड्डी है। १९ उसने मुझ को कीचड़ में फेंक दिया है, और मैं पिटी और राख के तुल्य हो गया हूँ। २० मैं तेरी दुहाई देता हूँ, परन्तु तू नहीं सुनता; मैं खड़ा होता हूँ परन्तु तु मेरी ओर घूसे लगता है। २१ तू बदलकर मुझ पर कठोर हो गया है, और अपने बलवत्त हथ से मुझे सताता है। २२ तू मुझे वायु पर सवार करके उड़ाता है, और आँधी के पानी में मुझे गला देता है। २३ हाँ, मुझे निश्चय है, कि तू मुझे मृत्यु के वश में कर देगा, और उस घर में पैंचांगा, जो सब जीवित प्राणियों के लिये ठहराया गया है। २४ “तो भी क्या कोई गिरते समय हाथ न बढ़ाएगा? और क्या कोई विपत्ति के समय दुहाई न देगा? २५ क्या मैं उसके लिये रोता नहीं था, जिसके दूरिन आते थे? और क्या दरिद्र जन के कारण मैं प्राण में दृश्यत न होता था? २६ जब मैं कुशल का मार्ग जोहता था, तब विपत्ति आ पड़ी; और जब मैं उजियाले की आशा लगाए था, तब अंधकार छा गया। २७ मेरी अंतिमियों निस्तर उबलती रहती हैं और आराम नहीं पाती; मेरे दुःख के दिन आ गए हैं। २८ मैं शोक का पहरावा पहने हुए मानो बिना सूर्य की गमी के काला हो गया हूँ। और मैं सभा में खड़ा होकर सहायता के लिये दुहाई देता हूँ। २९ मैं गीदड़ों का भाई और शुरुर्मीं का संसा हो गया हूँ। ३० मेरा चमड़ा काला होकर मुझ पर से गिरता जाता है, और ताप के मारे मेरी हड्डियाँ जल गई हैं। ३१ इस कारण मेरी बीणा से लिला और मेरी बाँसुरी से रोने की ध्वनि निकलती है।

३१ “मैंने अपनी आँखों के विषय बाच्चा बाँधी है, फिर मैं किसी कुँवारी पर क्यों आँखे लगाऊँ? १ क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग से कौन सा अंश और सर्वशक्तिमान ऊपर से कौन सी सम्पत्ति बांटता है? २ क्या वह कुटिल मनुष्यों के लिये विपत्ति और अनर्थ काम करनेवालों के लिये सत्यानाश का कारण नहीं है? ३ क्या वह मेरी गति नहीं देखता और क्या वह मेरे पग-पग नहीं गिनता? ४ यदि मैं व्यर्थ चाल चलता हूँ, या कपट करने के लिये मेरे पैर ढौड़े हों; ५ (तो मैं धर्म के तराज में तौला जाऊँ, ताकि परमेश्वर मेरी खराई को जान ले)। ६ यदि मेरा पार्मा से बहक गए हों, और मेरा मन मेरी आँखों की देखी चाल चला हो, या मेरे हाथों में कुछ कलंक लगा हो; ७ तो मैं बैज बोऊँ, परन्तु दूसरा खाए; वरन् मेरे खेत की उपज उखाड़ डाली जाए। ८ “यदि मेरा हृदय किसी झी पर मोहित हो गया है, और मैं अपने पडोसी के द्वार पर घाट में बैठा हूँ, ९ तो मेरी झी दूसरे के लिये पीसी, और पराए पुस्त उसको भ्रष्ट करें। १० क्योंकि वह तो महापाप होता; और न्यायियों से दण्ड पाने के योग्य अर्थम् का काम होता; ११ क्योंकि वह ऐसी आग है जो जलाकर भस्म कर देती है,

और वह मेरी सारी उपज को जड़ से नाश कर देती है। १२ “जब मेरे दास व दासी ने मुझसे झाड़ा किया, तब यदि मैंने उनका हक्क मार दिया हो; १३ तो जब परमेश्वर उठ खड़ा होगा, तब मैं क्या करूँगा? और जब वह आएगा तब मैं क्या उत्तर दूँगा? १४ क्या वह उसका बनानेवाला नहीं जिसने मुझे गर्भ में बनाया? क्या एक ही ने हम दोनों की सूरत गर्भ में न रची थी? १५ “यदि मैंने कंगालों की इच्छा पूरी न की हो, या मेरे कारण विधवा की आँखें कभी निराश हुई हों, १६ या मैंने अपना टकड़ा अकेला खाया हो, और उसमें से अनाथ न खाने पाए हों, १७ (परन्तु वह मेरे लड़कपन ही से मेरे साथ इस प्रकार पला जिस प्रकार पिता के साथ, और मैं जन्म ही से विधवा को पालता आया हूँ); १८ यदि मैंने किसी को बझहीन मरते हुए देखा, या किसी दरिद्र को जिसके पास ओढ़ने को न था १९ और उसको अपनी भेड़ों की ऊन के कपड़े न दिए हों, और उसने गर्भ होकर मुझे अशीर्वद न दिया हो; २० या यदि मैंने फाटक में अपने सहायक देखकर अनाथों के मारने को अपना हाथ उठाया हो, २१ या अपने बाँह कंधे से उखड़कर गिर पड़े, और मेरी भुजा की हड्डी टूट जाए। २२ क्योंकि परमेश्वर के प्रताप के कारण मैं ऐसा नहीं कर सकता था, क्योंकि उसकी ओर की विपत्ति के कारण मैं भयभीत होकर थरथराता था। २३ “यदि मैंने सोने का भरोसा किया होता, या कुन्दन को अपना आसरा कहा होता, २४ या अपने बहुत से धन या अपनी बड़ी कमाई के कारण आनन्द किया होता, २५ या सर्दी को चमकते या चन्द्रमा को महारोधा से चलते हुए देखकर २६ मैं मन ही मन मोहित हो गया होता, और अपने मुँह से अपना हाथ चूम लिया होता; २७ तो यह भी न्यायियों से दण्ड पाने के योग्य अर्थम् का काम होता; क्योंकि ऐसा करके मैंने सर्वशंख परमेश्वर का इन्कार किया होता। २८ “यदि मैं अपने बैरी के नाश से आनन्दित होता, या जब उस पर विपत्ति पड़ी तब उस पर हँसा होता; २९ (परन्तु मैंने न तो उसको श्वाप देते हुए, और न उसके प्राणदण्ड की प्रार्थना करते हुए अपने मुँह से पाप किया है); ३० यदि मेरे डेरे के रहनेवालों ने यह न कहा होता, “ऐसा कोई कहाँ मिलेगा, जो इसके यहाँ का माँस खाकर तुम न हुआ हो?” ३१ (परदेशी को सड़क पर टिकना न पड़ता था; मैं बटोही के लिये अपना द्वार खुला रखता था); ३२ यदि मैंने आदम के समान अपना अपराध छिपाकर अपने अर्थम् को ढाँप लिया हो, ३३ इस कारण कि मैं बड़ी भीड़ से भय खाता था, या कुलीनों से तुच्छ किए जाने से डर गया यहाँ तक कि मैं द्वार से बाहर न निकला- ३४ भला होता कि मेरा कोई सुननेवाला होता! सर्वशक्तिमान परमेश्वर अभी मेरा न्याय चुकाए! देखो, मेरा दस्तखत यही है। भला होता कि जो शिकायतनामा मेरे मुँह ने लिखा है वह मेरे पास होता है। ३५ निश्चय मैं उसको अपने कंधे पर उठाए फिरता; और सुन्दर पगड़ी जानकर अपने सिर में बाँधे रहता। ३६ मैं उसको अपने पग-पग का हिसाब देता, मैं उसके निकट प्रधान के समान निढ़र जाता। ३७ “यदि मेरी भूमि मेरे विद्धु दुहाई देती हो, और उसकी रेधरियाँ मिलकर रोती हों; ३८ यदि मैंने अपनी भूमि की उपज बिना मजदूरी दिए खाई, या उसके मालिक का प्राण लिया हो; ३९ तो गेहूँ के बदले झड़बेरी, और जौ के बदले जंगली घास उंगें।” अद्यूब के चचन पूरे हुए हैं।

३२ तब उन तीनों पुस्तों ने यह देखकर कि अद्यूब अपनी दृष्टि में निर्देष्य है उसको उत्तर देना छोड़ दिया। १ और बूजी बारेकेल का पुत्र एलीह जो राम के कुल का था, उसका क्रोध भड़क उठा। अद्यूब पर उसका क्रोध इसलिए भड़क उठा, कि उसने परमेश्वर को नहीं, अपने ही को निर्देष्य ठहराया। २ फिर अद्यूब के तीनों मित्रों के विद्धु भी उसका क्रोध इस कारण भड़का, कि वे अद्यूब को उत्तर न दे सके, तो भी उसको दोषी ठहराया। ३ एलीह तो अपने को उनसे छोटा जानकर अद्यूब की बातों के अन्त की बाट

जोहता रहा। ५ परन्तु जब एलीह ने देखा कि ये तीनों पुम्प कुछ उत्तर नहीं देते, तब उसका क्रोध भडक उठा। ६ तब बूजी बारकेल का पुत्र एलीह कहने लगा, “मैं तो जवान हूँ, और तुम बहुत बड़े हो; इस कारण मैं स्का रहा, और अपना विचार तुम को बताने से डरता था। ७ मैं सोचता था, ‘जो आयु में बड़े हैं वे ही बात करें, और जो बहुत वर्ष के हैं, वे ही बुद्धि सिखाएँ।’ ८ परन्तु मनुष्य में आत्मा तो है ही, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपनी दी हर्दी साँस से उन्हें समझने की शक्ति देता है। ९ जो बुद्धिमान है वे बड़े-बड़े लोग ही नहीं और न्याय के समझनेवाले बड़े ही नहीं होते। १० इसलिए मैं कहता हूँ, ‘मेरी भी सुनो; मैं भी अपना विचार बताऊँगा।’ ११ ‘मैं तो तुम्हारी बातें सुनने को ठहरा रहा, मैं तुम्हारे प्रमाण सुनने के लिये ठहरा रहा; जबकि तुम कहने के लिये शब्द ढूँढ़ते रहे। १२ मैं चिंत लगाकर तुम्हारी सुनता रहा। परन्तु किसी ने अर्यबृ के पक्ष का खण्डन नहीं किया, और न उसकी बातों का उत्तर दिया। १३ तुम लोग मत समझो कि हमको ऐसी बुद्धि मिली है, कि उसका खण्डन मनुष्य नहीं परमेश्वर ही कर सकता है। १४ जो बातें उसने कहीं वह मेरे विस्तृतों तो नहीं कहीं, और न मैं तुम्हारी सी बातों से उसको उत्तर दूँगा। १५ ‘वे विस्तित हूँ, और फिर कुछ उत्तर नहीं दिया; उन्होंने बातें करना छोड़ दिया। १६ इसलिए कि वे कुछ नहीं बोलते और चुपचाप खड़े हैं, क्या इस कारण मैं ठहरा रहूँ? १७ परन्तु अब मैं भी कुछ कहूँगा, मैं भी अपना विचार प्रगट करूँगा। १८ क्योंकि मेरे मन में बातें भरी हैं, और मेरी आत्मा मुझे उभर रही है। १९ मेरा मन उस दाखमधु के समान है, जो खोला न गया हो; वह नई कुपियों के समान फटा जाता है। २० शान्ति पाने के लिये मैं बोलूँगा; मैं मुँह खोलकर उत्तर दूँगा। २१ न मैं किसी आदर्मी का पक्ष करूँगा, और न मैं किसी मनुष्य को चापलसी की पदवी दूँगा। २२ क्योंकि मुझे तो चापलसी करना आता ही नहीं, नहीं तो मेरा सुजनहार क्षण भर में मुझे उठा लेता।

३३ “इसलिए अब, हे अर्यबृ! मेरी बातें सुन ले, और मेरे सब चर्चनों पर कान लगा। २ मैंने तो अपना मुँह खोला है, और मेरी जीभ मुँह में चुलबुला रही है। ३ मेरी बातें मेरे मन की सिधाई प्रगट करेंगी; जो ज्ञान मैं रखता हूँ उसे खराई के साथ कहँगा। ४ मुझे परमेश्वर की आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की साँस से मुझे जीवन मिलता है। ५ यदि तू मुझे उत्तर दे सके, तो दे; मेरे सामने अपनी बातें क्रम से रचकर खड़ा हो जा। ६ देख, मैं परमेश्वर के सन्म्युते तैर तुल्य हूँ; मैं भी मिट्टी का बना हुआ हूँ। ७ सुन, तज्ज्ञ डर के पारे घबराना न पडेगा, और न तू मेरे बोझ से देकेगा। ८ “निःसन्देह तेरी ऐसी बात मेरे कानों में पड़ी है और मैंने तेरे चर्चन सुने हैं, ९ मैं तो पवित्र और निरपराध और निष्कलंक हूँ; और मुझ में अर्थम नहीं है। १० देख, परमेश्वर मुझसे झगड़ने के दाँव ढूँढ़ता है, और मुझे अपना शत्रु समझता है; ११ वह मेरे दोनों पाँवों को काठ में ठोक देता है, और मेरी सारी चाल पर दृष्टि रखता है।” १२ “देख, मैं तुझे उत्तर देता हूँ, इस बात में तू सच्चा नहीं है। क्योंकि परमेश्वर मनुष्य से बड़ा है। १३ तू उससे क्यों झगड़ता है? क्योंकि वह अपनी किसी बात का लेखा नहीं देता। १४ क्योंकि परमेश्वर तो एक क्या वरन् दो बार बोलता है, परन्तु लोग उस पर चिंत नहीं लगाते। १५ स्वप्न में, या रात को दिए हुए दर्शन में, जब मनुष्य घोर निद्रा में पड़े रहते हैं, या बिछौने पर सोते समय, १६ तब वह मनुष्यों के कान खोलता है, और उनकी शिथा पर मुहर लगाता है, १७ जिससे वह मनुष्य को उसके संकल्प से रोके और गर्व को मनुष्य में से दूर करे। १८ वह उसके प्राण को गृही से बचाता है, और उसकी जीवन को तलवार की मार से बचाता है। १९ “उसकी ताड़ना भी होती है, कि वह अपने बिछौने पर पड़ा-पड़ा तड़पता है, और उसकी हड्डी-हड्डी में लगातार झगड़ा होता है। २० यहाँ तक कि उसका प्राण रोटी से, और उसका मन स्वादिष्ट भोजन से घृणा

करने लगता है। २१ उसका माँस ऐसा सूख जाता है कि दिखाई नहीं देता; और उसकी हड्डियाँ जो पहले दिखाई नहीं देती थीं निकल आती हैं। २२ तब वह कब्र के निकट पहुँचता है, और उसका जीवन नाश करनेवालों के वश में हो जाता है। २३ यदि उसके लिये कोई बिचवई स्वर्गदूत मिले, जो हजार में से एक ही हो, जो भावी कहे। और जो मनुष्य को बताए कि उसके लिये क्या ठीक है। २४ तो वह उस पर अनुग्रह करके कहता है, ‘उसे गड़े में जाने से बचा ले, मुझे छुड़ाती मिली है। २५ तब उस मनुष्य की देह बालक की देह से अधिक स्वस्थ और कोमल हो जाएगी; उसकी जीवनी के दिन फिर लौट आएंगे।’ २६ वह परमेश्वर से विनती करेगा, और वह उसपे प्रसन्न होगा, वह आनन्द से परमेश्वर का दर्शन करेगा, और परमेश्वर मनुष्य को ज्यों का त्यों धर्मी कर देगा। २७ वह मनुष्यों के सामने गाने और कहने लगता है, ‘मैंने पाप किया, और सच्चाई को उलट-पुलट कर दिया, परन्तु उसका बदला मुझे दिया नहीं गया। २८ उसने मेरे प्राण कब्र में पड़ने से बचाया है, मेरा जीवन उजियाले को देखेगा।’ २९ “देख, ऐसे-ऐसे सब काम परमेश्वर मनुष्य के साथ दो बार क्या वरन् तीन बार भी करता है, ३० जिससे उसको कब्र से बचाए, और वह जीवनलोक के उजियाले का प्रकाश पाए। ३१ हे अर्यबृ! कान लगाकर मेरी सुन, चुप रह, मैं और बोलूँगा। ३२ यदि तुझे बात कहनी हो, तो मुझे उत्तर दे; बोल, क्योंकि मैं तुझे निर्दोष ठहराना चाहता हूँ। ३३ यदि नहीं, तो तू मेरी सुन, चुप रह, मैं तुझे बुद्धि की बात सिखाऊँगा।”

३४ फिर एलीह यह कहता गया; १ “हे बुद्धिमानों! मेरी बातें सुनो, हे ज्ञानियों! मेरी बात पर कान लगाओ, २ क्योंकि जैसे जीभ से चर्चा जाता है, वैसे ही चर्चन कान से परखे जाते हैं। ३ यो कुछ ठीक है, हम अपने लिये चुन लें; जो भला है, हम आपस में समझ-बझा लें ४ क्योंकि अर्यबृ ने कहा है, ‘मैं निर्दोष हूँ, और परमेश्वर ने मेरा हक मार दिया है। ५ यद्यपि मैं सच्चाई पर हूँ, तो भी ज़ाठा ठहरता हूँ, मैं निरपराध हूँ, परन्तु मेरा घाव असाध्य है।’ ६ अर्यबृ के तुल्य कौन शूरीक है, जो परमेश्वर की निन्दा पानी के समान पीता है, ७ जो अनर्थ करनेवालों का साथ देता, और दृष्टि मनुष्यों की संगति रखता है? ८ उसने तो कहा है, ‘मनुष्य को इससे कुछ लाभ नहीं कि वह आनन्द से परमेश्वर की संगति रखें।’ ९ “इसलिए हे समझावालों! मेरी सुनो, यह सम्भव नहीं कि परमेश्वर दृष्टा का काम करे, और सर्वशक्तिमान बुराई करे। १० वह मनुष्य की करनी का फल देता है, और प्रत्येक को अपनी-अपनी चाल का फल भगताता है। ११ निःसन्देह परमेश्वर दृष्टा नहीं करता और न सर्वशक्तिमान अन्याय करता है। १२ किसने सारे जगत का प्रबन्ध किया? १३ यदि वह मनुष्य से अपना मन हटाए और अपना आत्मा और आवास अपने ही में समेट ले, १४ तो सब देहधारी एक संग नाश हो जाएँगे, और मनुष्य फिर मिट्टी में मिल जाएगा। १५ “इसलिए इसको सुनकर समझ रख, और मेरी इन बातों पर कान लगा। १६ जो न्याय का बैरी हो, क्या वह तासन करे? जो पूर्ण धर्मी है, क्या तू उसे दृष्टि ठहराएगा? १७ वह राजा से कहता है, ‘तू नीच हैं’, और प्रधानों से, ‘तुम दृष्टि हो।’ १८ परमेश्वर तो हाकिमों का पक्ष नहीं करता और धर्मी और कंगाल दोनों को अपने बनाए हुए जानकर उनमें कुछ भेद नहीं करता। १९ आधी रात को पल भर में वे मर जाते हैं, और प्रजा के लोग हिलाए जाते और जाते रहते हैं। और प्रतापी लोग बिना हाथ लगाए उठा लिए जाते हैं। २० “क्योंकि परमेश्वर की आँखें मनुष्य की चाल चलन पर लागी रहती हैं, और वह उसकी सारी चाल को देखता रहता है। २१ ऐसा अंधियारा या घोर अंधकार कही नहीं है जिसमें अर्थ करनेवाले छिप सके। २२ क्योंकि उसने मनुष्य का कुछ समय नहीं ठहराया ताकि वह परमेश्वर के सम्मुख अदालत में जाए। २३ वह बड़े-

बड़े बलवानों को बिना पूछपाछ के चूर-चूर करता है, और उनके स्थान पर दसरों को खड़ा कर देता है। २५ इसलिए कि वह उनके कामों को भली भाँति जानता है, वह उहें रात में ऐसा उलट देता है कि वे चूर-चूर हो जाते हैं। २६ वह उन्हें दुः जानकर सभी के देखते मराता है, २७ क्योंकि उन्होंने उसके पीछे चलना छोड़ दिया है, और उसके किसी मार्ग पर चित न लगाया, २८ यहाँ तक कि उनके कारण कंगालों की दुहाई उस तक पहुँची और उसने दीन लोगों की दुहाई सनी। २९ जब वह चुप रहता है तो उसे कौन दोषी ठहरा सकता है? और जब वह मूँह फेर ले, तब कौन उसका दर्शन पा सकता है? जाति भर के साथ और अकेले मनुष्य, दोनों के साथ उसका ब्राह्मण व्यवहार है ३० ताकि भक्तिहीन राज्य करता न रहे, और प्रजा फंदे में फँसाई न जाए। ३१ “क्या किसी ने कभी परमेश्वर से कहा, ‘मैंने दण्ड सहा, अब मैं भविष्य में बुराई न करूँगा, ३२ जो कुछ मुझे नहीं सूझ पड़ता, वह तू मुझे सिखा दे; और यदि मैंने टेढ़ा काम किया हो, तो भविष्य में वैसा न करूँगा?’” ३३ क्या वह तेरे ही मन के अनुसार बदला पाए क्योंकि तू उससे अप्रसन्न है? क्योंकि तुझे निर्णय करना है, न कि मुझे; इस कारण जो कुछ तुझे समझ पड़ता है, वह कह दे। ३४ सब ज्ञानी पुष्प वरन् जितने बुढ़िमान मेरी सुनते हैं वे मुझसे कहेंगे, ३५ “अय्यूब ज्ञान की बातें नहीं कहता, और न उसके चर्चन समझ के साथ होते हैं।” ३६ भला होता, कि अय्यूब अन्त तक परीक्षा में रहता, क्योंकि उसने अनर्थकारियों के समान उत्तर दिए हैं। ३७ और वह अपने पाप में विरोध बढ़ाता है; और हमारे बीच ताली बजाता है, और परमेश्वर के विस्तु बहुत सी बातें बनाता है।”

३५ फिर एलीह इस प्रकार और भी कहता गया, २ “क्या तू इसे अपना हक समझता है? क्या तू दावा करता है कि तेरी धार्मिकता परमेश्वर की धार्मिकता से अधिक है? ३ जो तू कहता है, ‘मुझे इससे क्या लाभ? और मुझे पापी होने में और न होने में कौन सा अधिक अन्तर है?’ ४ मैं तुझे और मेरे साथियों को भी एक संग उत्तर देता हूँ। ५ आकाश की ओर दृष्टि करके देख, और आकाशमण्डल को ताक, जो तुझ से ऊँचा है। ६ यदि तेरे पाप किया है तो परमेश्वर का क्या बिगड़ता है? यदि तेरे अपराध बहुत ही बढ़ जाएं तो भी तू उसका क्या कर लेगा? ७ यदि तू धर्मी है तो उसको क्या दे देता है; या उसे तेरे हाथ से क्या मिल जाता है? ८ तेरी दृष्टि का फल तुझ जैसे पुष्प के लिये है, और तेरी धार्मिकता का फल भी मनुष्यमात्र के लिये है। ९ “बहुत अधेर होने के कारण वे चिल्लाते हैं; और बलवान के बाहुबल के कारण वे दुहाई देते हैं। १० तो भी कोई यह नहीं कहता, ‘मेरा सुजनेवाला परमेश्वर कहाँ है, जो रात में भी गीत गवाता है, ११ और हमें पृथ्वी के पशुओं से अधिक शिक्षा देता, और आकाश के पक्षियों से अधिक बुद्धि देता है?’” १२ वे दुहाई देते हैं परन्तु कोई उत्तर नहीं देता, यह ब्रूँ लोगों के घमण्ड के कारण होता है। १३ निश्चय परमेश्वर व्यर्थ बातें कभी नहीं सुनता, और न सर्वशक्तिमान उन पर चित लगाता है। १४ तो तू क्यों कहता है, कि वह मुझे दर्शन नहीं देता, कि यह मुकद्दमा उसके सामने है, और तू उसकी बाट जोहता हुआ ठहरा है? १५ परन्तु अभी तो उसने क्रोध करके दण्ड नहीं दिया है, और अभिमान पर चित बहुत नहीं लगाया; १६ इस कारण अय्यूब व्यर्थ मूँह खोलकर अज्ञानता की बातें बहुत बनाता है।”

३६ फिर एलीह ने यह भी कहा, २ “कुछ ठहरा रह, और मैं तुझको समझाऊँगा, क्योंकि परमेश्वर के पक्ष में मुझे कुछ और भी कहना है। ३ मैं अपने ज्ञान की बात दूर से ले आऊँगा, और अपने सुजनहार को धर्मी ठहराऊँगा। ४ निश्चय मेरी बातें झटी न होंगी, वह जो तेरे सांग है वह पूरा ज्ञानी है। ५ “देख, परमेश्वर सामर्थी है, और किसी को तुच्छ नहीं जानता; वह

समझने की शक्ति में समर्थ है। ६ वह दुष्टों को जिलाए नहीं रखता, और दीनों को उनका हक देता है। ७ वह धर्मियों से अपनी आँखें नहीं फेरता, वरन् उनको राजाओं के संग सदा के लिये सिंहासन पर बैठाता है, और वे ऊँचे पद को प्राप्त करते हैं। ८ और चाहे वे बेड़ियों में जकड़े जाएँ और दुःख की रस्सियों से बाँधे जाएँ, ९ तो भी परमेश्वर उन पर उनके काम, और उनका यह अपराध प्रगत करता है, कि उन्होंने गवर्व किया है। १० वह उनके कान शिक्षा सुनने के लिये खोलता है, और ज्ञाना देता है कि वे बुराई से दूर रहें। ११ यदि वे सुनकर उसकी सेवा करें, तो वे अपने दिन कल्याण से, और अपने वर्ष सुख से पूरे करते हैं। १२ परन्तु यदि वे न सुनें, तो वे तलवार से नाश हो जाते हैं, और अज्ञानता में मरते हैं। १३ “परन्तु वे जो मन ही मन भक्तिहीन होकर क्रोध बढ़ाते, और जब वह उनको बाँधता है, तब भी दुहाई नहीं देते, १४ वे जवानी में रम जाते हैं और उनका जीवन लुच्चों के बीच में नाश होता है। १५ वह दुःखियों को उनके दुःख से छुड़ाता है, और उपद्रव में उनका कान खोलता है। १६ परन्तु वह तुड़कों भी कलेश के मूँह में से निकालकर ऐसे चैड़े स्थान में जहाँ सकती नहीं है, पहुँचा देता है, और चिकना-चिकना भोजन तेरी मेज पर परोसता है। १७ “परन्तु तूने दुष्टों का सा निर्णय किया है इसलिए निर्णय और न्याय तुझ से लिपटे रहते हैं। १८ देख, तू जलजलाहट से भर के ठश मत कर, और न घूस को अधिक बड़ा जानकर मार्ग से मुड़। १९ क्या तेरा रोना या तेरा बल तुझे दुःख से छुटकारा देगा? २० उस रात की अभिलाषा न कर, जिसमें देश-देश के लोग अपने-अपने स्थान से मिटाएँ जाते हैं। २१ चौकस रह, अनर्थ काम की ओर मत फिर, तूने तो दुःख से अधिक इसी को चुन लिया है। २२ देख, परमेश्वर अपने सामर्थ्य से बड़े-बड़े काम करता है, उसके समान शिक्षक कौन है? २३ किसने उसके चलने का मार्ग ठहराया है? और कौन उससे कह सकता है, ‘तूने अनुचित काम किया है?’ २४ “उसके कामों की महिमा और प्रशंसा करने को स्मरण रख, जिसकी प्रशंसा का गीत मनुष्य गाते चले आए हैं। २५ सब मनुष्य उसको ध्यान से देखते आए हैं, और मनुष्य उसे दूर-दूर से देखता है। २६ देख, परमेश्वर महान और हमारे ज्ञान से कहीं पेरे है, और उसके वर्ष की गिनती अनन्त है। २७ क्योंकि वह तो जल की बैंड़ों ऊपर को खीच लेता है वे कुहरे से मैंह होकर टपकती हैं, २८ वे ऊँचे-ऊँचे बालद उण्डेलते हैं और मनुष्यों के ऊपर बहुतायत से बरसाते हैं। २९ फिर क्या कोई बादलों का फैलना और उनके मण्डल में का गरजना समझ सकता है? ३० देख, वह अपने उजियाले को चहुँ और फैलाता है, और समुद्र की थाह को ढाँपता है। ३१ क्योंकि वह देश-देश के लोगों का न्याय इन्हीं से करता है, और भोजनस्तुते बहुतायत से देता है। ३२ वह बिजली को अपने हाथ में लेकर उसे आज्ञा देता है कि निशाने पर गिरे। ३३ इसकी कड़क उसी का समाचार देती है पशु भी प्रगट करते हैं कि अंधड़ चढ़ा आता है।

३७ “फिर इस बात पर भी मेरा हृदय कँपता है, और अपने स्थान से उछल पड़ता है। १ उसके बोलने का शब्द तो सुगे, और उस शब्द को जो उसके मूँह से निकलता है सुगो। २ वह उसको सारे आकाश के तले, और अपनी बिजली को पृथ्वी की छोर तक भेजता है। ३ उसके पीछे गरजने का शब्द होता है; वह अपने प्रतापी शब्द से गरजता है, और जब उसका शब्द सुनाई देता है तब बिजली लगातार चमकने लगती है। ४ परमेश्वर गरजकर अपना शब्द अद्भुत रीति से सुनाता है, और बड़े-बड़े काम करता है जिनको हम नहीं समझते। ५ वह तो हिम से कहता है, पृथ्वी पर गिर, और इसी प्रकार मैंह को भी और मूसलाधार वर्षा को भी ऐसी ही आज्ञा देता है। ६ वह सब मनुष्यों के हाथ पर मुहर कर देता है, जिससे उसके बनाए हुए सब मनुष्य उसको पहचानें। ७ तब वन पशु गुफाओं में घुस जाते, और अपनी-अपनी माँदों में रहते

हैं। ९ दक्षिण दिशा से बवण्डर और उत्तर दिशा से जाड़ा आता है। १० परमेश्वर की आवास की छूँक से बर्फ पड़ता है, तब जलशयों का पाट जम जाता है। ११ फिर वह घटाओं को भाप से लादता, और अपनी बिजली से भरे हुए उजियाले का बादल दूर तक फैलाता है। १२ वे उसकी बुद्धि की युक्ति से इधर-उधर फिराए जाते हैं, इसलिए कि जो आज्ञा वह उनको दे, उसी को वे बसाई हुई पृथ्वी के ऊपर पूरी करें। १३ चाहे ताङना देने के लिये, चाहे अपनी पृथ्वी की भलाई के लिये या मनुष्यों पर करण करने के लिये वह उसे भेजे। १४ “हे अय्यूब! इस पर कान लगा और सुन ले; चुपचाप खड़ा रह, और परमेश्वर के आश्र्यकर्मों का विचार कर। १५ क्या तू जानता है, कि परमेश्वर कर्मों अपने बादलों को आज्ञा देता, और अपने बादल की बिजली को चमकाता है? १६ क्या तू घटाओं का तौलना, या सर्वज्ञानी के आश्र्यकर्मों को जानता है? १७ जब पृथ्वी पर दक्षिणी हवा ही के कारण से सन्नाटा रहता है तब तेरे बब्ल गर्म हो जाते हैं? १८ फिर क्या तू उसके साथ आकाशमण्डल को तान सकता है, जो ढाले हुए दर्पण के तुल्य ढूँढ़ है? १९ तू हमें यह सिखा कि उससे क्या कहना चाहिये? क्योंकि हम अधियारे के कारण अपना व्याख्यान ठीक नहीं रच सकते। २० क्या उसको बताया जाए कि मैं बोलना चाहता हूँ? क्या कोई अपना सत्यानाश चाहता है? २१ “अपनी तो आकाशमण्डल में का बड़ा प्रकाश देखा नहीं जाता जब वायु चलकर उसको शुद्ध करती है। २२ उत्तर दिशा से सुनहरी ज्योति आती है परमेश्वर भयग्रोह्य तेज से विभूषित है। २३ सर्वशक्तिमान परमेश्वर जो अति सामर्थी है, और जिसका भेद हम पा नहीं सकते, वह न्याय और पूर्ण धार्मिकता को छोड़ अत्याचार नहीं कर सकता। २४ इसी कारण सज्जन उसका भय मानते हैं, और जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान हैं, उन पर वह दृष्टि नहीं करता।”

३८ तब यहोवा ने अय्यूब को आँधी में से यूँ उत्तर दिया, १ “यह कौन है जो अज्ञानता की बातें कहकर युक्ति को बिगाड़ा चाहता है? २ पुरुष के समान अपनी कमर बाँध ले, क्योंकि मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, और तू मुझे उत्तर दे। ३ “जब मैंने पृथ्वी की नीच डाली, तब तू कहाँ था? यदि तू समझदार हो तो उत्तर दे। ४ उसकी नाप किसने ठहराई, क्या तू जानता है उस पर किसने सूत खीचा? ५ उसकी नीच कौन सी वस्तु पर रखी गई, या किसने उसके कोने का पत्थर बैठाया, ६ जबकि भौंर के तेरे एक संग आनन्द से गते थे और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार करते थे? ७ “फिर जब समुद्र ऐसा फट निकला मानो वह गर्भ से फूट निकला, तब किसने द्वारा बन्द कर उसको रोक दिया; ८ जबकि मैंने उसको बादल पहनाया और घोर अंधकार में लपेट दिया, ९ और उसके लिये सीमा बाँधा और यह कहकर बैंड और किवांड़ लगा दिए, १० “यहीं तक आ, और आगे न बढ़, और तेरी उमड़नेवाली लहरें यहीं थम जाएँ।” ११ “क्या तूने जीवन भर में कभी भौंर को आज्ञा दी, और पौ को उसका स्थान जाताया है, १२ ताकि वह पृथ्वी की छोरों को वश में करे, और दृष्टि लोग उसमें से झाड़ दिए जाएँ? १३ वह ऐसा बदलता है जैसा मोहर के नीचे चिकनी मट्टी बदलती है, और सब वस्तुँ मानो बब्ल पहने हुए दिखाई देती हैं। १४ दुर्घां से उनका उजियाला रोक लिया जाता है, और उनकी बढाई हुई बाँह तोड़ी जाती है। १५ “क्या तू कभी समुद्र के सोतों तक पहुँचा है, या गहरे सागर की थाह में कभी चला फिरा है? १६ क्या मृत्यु के फाटक तुझ पर प्रगट हुए, क्या तू घोर अंधकार के फाटकों को कभी देखने पाया है? १७ क्या तूने पृथ्वी की चौड़ाई को पूरी रीति से समझ लिया है? यदि तू यह सब जानता है, तो बता दे। १८ “उजियाले के निवास का मार्ग कहाँ है, और अधियारे का स्थान कहाँ है? १९ क्या तू उसे उसकी सीमा तक हटा सकता है, और उसके घर की डगर पहचान सकता है? २० निःसन्देह तू यह सब कुछ जानता होगा! क्योंकि तू तो

उस समय उत्पन्न हुआ था, और तू बहुत आयु का है। २१ फिर क्या तू कभी हिम के भण्डार में पैठा, या कभी ओलों के भण्डार को तुमें देखा है, २२ जिसको मैंने संकट के समय और युद्ध और लडाई के दिन के लिये रख छोड़ा है? २३ किस मार्ग से उजियाला फैलाया जाता है, और पूर्वी वायु पृथ्वी पर बहाई जाती है? २४ “महावृष्टि के लिये किसने नाला काटा, और कड़कनेवाली बिजली के लिये मार्ग बनाया है, २५ कि निर्जन देश में और जंगल में जहाँ कोई मनुष्य नहीं रहता मैंह बरसाकर, २६ उजाड़ ही उजाड़ देश को सीचे, और हरी घास उगाए? २७ क्या मैंह का कोई पिता है, और आकाश से मिरे हुए पाले को कौन उत्पन्न करता है? २८ जल पत्थर के समान जम जाता है, और गहरे पानी के ऊपर जमावट होती है। २९ “क्या तू कृष्णचिया का गुच्छा गँथ सकता या मारिशा के बन्धन खोल सकता है? ३० क्या तू राशियों को ठीक-ठीक समय पर उदय कर सकता, या सप्तरिषि को साथियों समेत लिए चल सकता है? ३१ क्या तू आकाशमण्डल की विधियाँ जानता और पृथ्वी पर उनका अधिकार ठहरा सकता है? ३२ क्या तू बादलों तक अपनी वाणी पहुँचा सकता है, ताकि बहुत जल बरस कर तुझे छिपा ले? ३३ क्या तू बिजली को आज्ञा दे सकता है, कि वह जाए, और तुझ से कहे, ‘मैं उपस्थित हूँ?’ ३४ किसने अन्तःकरण में बुद्धि उपजाई, और मन में समझने की शक्ति किसने दी है? ३५ कौन बुद्धि से बादलों को गिन सकता है? और कौन आकाश के कुपों को उण्डेल सकता है, ३६ जब धूलि जम जाती है, और ढेले एक दूसरे से सट जाते हैं? ३७ “क्या तू सिंहनी के लिये अहेर पकड़ सकता, और जवान सिंहों का पेट भर सकता है, ३८ जब वे माँड़ में बैठे हों और आङ्ड में घाट लगाए दबक कर बैठे हों? ३९ फिर जब कौवे के बच्चे परमेश्वर की दुहाई देते हुए निराहार उड़ते फिरते हैं, तब उनको आहार कौन देता है?

३१ “क्या तू जानता है कि पहाड़ पर की जंगली बकरियाँ कब बच्चे देती हैं? या जब हिरनियाँ बियाती हैं, तब क्या तू देखता रहता है? ३२ क्या तू उनके महीने गिन सकता है, क्या तू उनके बियाने का समय जानता है? ३३ जब वे बैठकर अपने बच्चों को जनती, वे अपनी पीड़ाओं से छूट जाती हैं? ३४ उनके बच्चे हष्ट-पृष्ठ होकर मैंदान में बढ़ जाते हैं, वे निकल जाते और फिर नहीं लौटते। ३५ “किसने जंगली गदहे को स्वाधीन करके छोड़ दिया है? किसने उसके बन्धन खोले हैं? ३६ उसका घर मैंने निर्जल देश को, और उसका निवास नमकीन भूमि को ठहराया है। ३७ वह नगर के कोलाहल पर हँसता, और हँकनेवाले की हाँक सुनता भी नहीं। ३८ पहाड़ों पर जो कुछ मिलता है उसे वह चरता वह सब भाँति की हरियाली ढूँढ़ता फिरता है। ३९ “क्या जंगली साँड़ तेरा काम करने को प्रसन्न होगा? क्या वह तेरी चरनी के पास रहेगा? ४० क्या तू जंगली साँड़ को रस्से से बाँधकर रेघारियों में चला सकता है? क्या वह नालों में तेरे पिछे-पीछे हँगे फेरेगा? ४१ क्या तू उसके बड़े बल के कारण उस पर भरोसा करेगा? या जो परिश्रम का काम तेरा हो, क्या तू उस पर छोड़ेगा? ४२ क्या तू उसका विवास करेगा, कि वह तेरा अनाज घर ले आए, और तेरे खलिहान का अन्न इकट्ठा करे? ४३ “फिर शुतुर्मुखी अपने पंखों को आनन्द से फुलती है, परन्तु क्या ये पंख और पर सेह को प्रगट करते हैं? ४४ क्योंकि वह तो अपने आङ्डे भूमि पर छोड़ देती और धूलि में उन्हें गर्भ करती है; ४५ और इसकी सुधि नहीं रखती, कि वे पाँव से कुचले जाएँगे, या कोई बन पश उनको कुचल डालेगा। ४६ वह अपने बच्चों से ऐसी कठोरता करती है कि मानो उसके नहीं है, यद्यपि उसका कष्ट अकारथ होता है, तो भी वह निश्चिन्त रहती है; ४७ क्योंकि परमेश्वर ने उसको बुद्धिरहित बनाया, और उसे समझने की शक्ति नहीं दी। ४८ जिस समय वह सीधी होकर अपने पंख फैलाती है,

तब घोड़े और उसके सवार दोनों को कुछ नहीं समझती है। १९ “क्या तूने घोड़े को उसका बल दिया है? क्या तूने उसकी गर्दन में फहराते हुई घंटे बाल जमाए हैं? २० क्या उसको टिकी की सी उछलने की शक्ति तू देता है? उसके फैँक्कारेने का शब्द डरावना होता है। २१ वह तराइ में टाप मारता है और अपने बल से हरिष्ट रहता है, वह हथियार-बन्दों का सामना करने को निकल पड़ता है। २२ वह डर की बात पर हँसता, और नहीं घबराता; और तलवार से पीछे नहीं हटता। २३ तरकश और चमकता हुआ सांग और भाला उस पर खड़खड़ता है। २४ वह रिस और क्रोध के मारे भयी को निगलता है; जब नरसिंगे का शब्द सुनाइ देता है तब वह स्क्रता नहीं। २५ जब जब नरसिंगा बजता तब-तब वह हिन-हिन करता है, और लड़ाइ और अफसरों की ललकार और जय जयकार को दूर से सूँध लेता है। २६ “क्या तेरे समझाने से बाज उड़ता है, और दक्षिण की ओर उड़ने को अपने पंख फैलाता है? २७ क्या उकाब तेरी आज्ञा से ऊपर चढ़ जाता है, और ऊँचे स्थान पर अपना घोसला बनाता है? २८ वह चट्ठान पर रहता और चट्ठान की चोटी और ढूँढ स्थान पर बसेरा करता है। २९ वह अपनी आँखों से दूर तक देखता है, वहाँ से वह अपने अहर को ताक लेता है। ३० उसके बच्चे भी लहू चूसते हैं; और जहाँ घात किए हुए लोग होते वहाँ वह भी होता है।”

४० फिर यहोवा ने अय्यूब से यह भी कहा: १ “क्या जो बकवास करता है वह सर्वशक्तिमान से झागड़ा करे? जो परमेश्वर से विवाद करता है वह इसका उत्तर दे।” २ तब अय्यूब ने यहोवा को उत्तर दिया: ३ “देख, मैं तो तुच्छ हूँ, मैं तुझे क्या उत्तर दूँ? मैं अपनी उँगली दाँत तले दबाता हूँ। ४ एक बार तो मैं कह चुका, परन्तु और कुछ न कहँगा; हाँ दो बार भी मैं कह चुका, परन्तु अब कुछ और आगे न बढ़वाँगा।” ५ तब यहोवा ने अय्यूब को आँधी में से यह उत्तर दिया: ६ “पुस्त के समान अपनी कमर बाँध ले, मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, और तू मुझे बता। ७ क्या तू मेरा न्याय भी व्यर्थ ठहराएगा? क्या तू अप निर्देष ठहने की मनसा से मुझ को दोषी ठहराएगा? ८ क्या तेरा बाहुल परमेश्वर के तुल्य है? क्या तू उसके समान शब्द से गरज सकता है? ९ “अब अपने को महिमा और प्रताप से संवार और ऐवर्खी और तेज के बब्ब पहन ले। १० अपने अति क्रोध की बाद को बहा दे, और एक-एक घमण्डी को देखते ही उसे नीचा कर। ११ हर एक घमण्डी को देखकर झुका दे, और दृश्य लोगों को जहाँ खड़े हों वहाँ से गिरा दे। १२ उनको एक संग मिट्टी में मिला दे, और उस गुम स्थान में उनके मुँह बाँध दे। १३ तब मैं भी तेरे विषय में मान लौंगा, कि तेरा ही दाहिना हाथ तेरा उद्घार कर सकता है। १४ “उस जलगाज को देख, जिसको मैंने तेरे साथ बनाया है, वह बैल के समान घास खाता है। १५ देख उसकी कमर में बल है, और उसके पेट के पांडों में उसकी सामर्थ्य रहती है। १६ वह अपनी पूँछ को देवदार के समान हिलाता है; उसकी जाँघों की नर्सें एक दूसरे से मिली हुई हैं। १७ उसकी हड्डियाँ मानो पीतल की नलियाँ हैं, उसकी पसलियाँ मानो लोहे के बेंडे हैं। १८ “वह परमेश्वर का मुख्य कार्य है; जो उसका सुजनहार हो उसके निकट तलवार लेकर आए। १९ निश्चय पहाड़ों पर उसका चारा मिलता है, जहाँ और सब बन पशु कलोल करते हैं। २० वह कमल के पौधों के नीचे रहता है नकटों की आड़ में और कीचि पर लेटा करता है। २१ कमल के पौधे उस पर छाया करते हैं, वह नाले के बैंट के बृक्षों से घिरा रहता है। २२ चाहे नदी की बाढ़ भी हो तो भी वह न घबराएगा, चाहे यरदन भी बढ़कर उसके मुँह तक आए परन्तु वह निर्भय रहेगा। २३ जब वह चौकस हो तब क्या कोई उसके पकड़ सकेगा, या उसके नाथ में फंदा लगा सकेगा?

४१ “फिर क्या तू लिव्यातान को बंसी के द्वारा खींच सकता है, या डोरी से उसका जबड़ा दबा सकता है? २ क्या तू उसकी नाक में नकेल लगा सकता या उसका जबड़ा कील से बेध सकता है? ३ क्या वह तुझ से बहुत गिड़गिड़ाहट करेगा, या तुझ से मीठी बांते बोलेगा? ४ क्या वह तुझ से बाचा बँधेगा कि वह सदा तेरा दास रहे? ५ क्या तू उससे ऐसे खेलेगा जैसे चिड़िया से, या अपनी लड़कियों का जी बहलाने को उसे बाँध रखेगा? ६ क्या मछुए के दल उसे बिकाऊ माल समझेंगे? क्या वह उसे व्यापारियों में बाँट देंगे? ७ क्या तू उसका चमड़ा भाले से, या उसका सिर मछुए के विश्लेष से बेध सकता है? ८ तू उस पर अपना हाथ ही धेर, तो लड़ाइ को कभी न भूलेगा, और भविष्य में कभी ऐसा न करेगा। ९ देख, उसे पकड़ने की आशा निष्फल रहती है; उसके देखने ही से मन कच्चा पड़ जाता है। १० कोई ऐसा साहसी नहीं, जो लिव्यातान को भड़काए, फिर ऐसा कौन है जो मेरे सामने ठहर सके? ११ किसने मुझे पहले दिया है, जिसका बदला मुझे देना पड़े! देख, जो कुछ सारी धरती पर है, सब मेरा है। १२ “मैं लिव्यातान के अंगों के विषय, और उसके बड़े बल और उसकी बनावट की शोभा के विषय चुप न रहूँगा। १३ उसके ऊपर के पहारे को कौन उतार सकता है? उसके दाँतों की दोनों पांतियों के अर्थात् जबड़ों के बीच कौन आएगा? १४ उसके मुख के दोनों किवाड़ कौन खोल सकता है? उसके दाँत चारों ओर से डरावने हैं। १५ उसके छिलकों की रेखाएँ घमण्ड का करार हैं; वे मानो कड़ी छाप से बन्द किए हुए हैं। १६ वे एक दूसरे से ऐसे जड़े हुए हैं, कि उनमें कुछ वायु भी नहीं पैठ सकती। १७ वे आपस में मिले हुए और ऐसे सटे हुए हैं, कि अलग-अलग नहीं हो सकते। १८ फिर उसके छीकों से उजियाला चमक उठता है, और उसकी आँखें भोर की पलकों के समान हैं। १९ उसके मुँह से जलते हुए परती निकलते हैं, और आग की चिंगारियाँ छूटती हैं। २० उसके नरनांदों से ऐसा धुँआँ निकलता है, जैसा खौलती हुई हाण्डी और जलते हुए नरकटों से। २१ उसकी सौंस से कोयले सुलगते, और उसके मुँह से आग की लौ निकलती है। २२ उसकी गर्दन में सामर्थ्य बनी रहती है, और उसके सामने डर नाचता रहता है। २३ उसके माँस पर माँस चढ़ा हुआ है, और ऐसा आपस में सटा हुआ है जो हिल नहीं सकता। २४ उसका हृदय पत्थर सा ढूँढ है, बरन चक्की के निचले पाट के समान ढूँढ है। २५ जब वह उठने लगता है, तब सामर्थ्य भी डर जाते हैं, और डर के मारे उनकी सुध-बुध लोप हो जाती है। २६ यदि कोई उस पर तलवार चलाए, तो उसके कुछ न बन पड़ेगा; और न भाले और न बर्छी और न तीर से। २७ वह लोहे को पुआल सा, और पीतल को सड़ी लकड़ी सा जानता है। २८ वह तीर से भगाया नहीं जाता, गोफन के पत्थर उसके लिये भूसे से ठहरते हैं। २९ लाठियाँ भी भूसे के समान गिनी जाती हैं, वह बर्छी के चलने पर हँसता है। ३० उसके निचले भाग पैने ठीकरे के समान हैं, कीचड़ पर मानो वह हँगा फेरता है। ३१ वह गहरे जल को हण्डे के समान मथता है उसके कारण नील नदी मरहम की हाण्डी के समान होती है। ३२ वह अपने पीछे चमकीली लीक छोड़ता जाता है। गहरा जल मानो ब्लैट देने लगता है। ३३ धरती पर उसके तुल्य और कोई नहीं है, जो ऐसा निर्भय बनाया गया है। ३४ जो कुछ ऊँचा है, उसे वह ताकता ही रहता है, वह सब घमण्डियों के ऊपर राजा है।”

४२ तब अय्यूब ने यहोवा को उत्तर दिया: १ “मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई स्क नहीं सकती। २ तुम मुझसे पूछा, ‘तू कौन है जो ज्ञानरहित होकर युक्ति पर परदा डालता है?’ परन्तु मैंने तो जो नहीं समझाता था वही कहा, अर्थात् जो बातें मेरे लिये अधिक कठिन और मेरी समझ से बाहर थीं जिनको मैं जानता भी नहीं था। ३ तुम मुझसे कहा, मैं निवेदन करता हूँ सुन, मैं कुछ कहँगा, मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ,

तू मुझे बता।’ ५ मैंने कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं, ६ इसलिए मुझे अपने ऊपर घृणा आती है, और मैं धूलि और राख में पश्चाताप करता हूँ।’ ७ और ऐसा हुआ कि जब यहोवा ये बातें अर्यूब से कह चुका, तब उसने तेमानी एलीपज से कहा, ‘‘मेरा क्रोध तेरे और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का है, क्योंकि जैसी ठीक बात मेरे दास अर्यूब ने मेरे विषय कही है, कैसी तुम लोगों ने नहीं कही। ८ इसलिए अब तुम सात बैल और सात मेडे छाँटकर मेरे दास अर्यूब के पास जाकर अपने निमित्त होमबलि चढ़ाओ, तब मेरा दास अर्यूब तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा, क्योंकि उसी की प्रार्थना मैं ग्रहण करूँगा; और नहीं, तो मैं तुम से तुहारी मूर्खता के योग्य बर्ताव करूँगा, क्योंकि तुम लोगों ने मेरे विषय मेरे दास अर्यूब की सी ठीक बात नहीं कही।’ ९ यह सुन तेमानी एलीपज, शूरी बिल्दद और नामाती सोपर ने जाकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया, और यहोवा ने अर्यूब की प्रार्थना ग्रहण की। १० जब अर्यूब ने अपने मित्रों के लिये प्रार्थना की, तब यहोवा ने उसका सारा दुःख दूर किया, और जितना अर्यूब का पहले था, उसका दुगना यहोवा ने उसे दे दिया। ११ तब उसके सब भाई, और सब बहरें, और जितने पहले उसको जानते-पहचानते थे, उन सभी ने आकर उसके यहाँ उसके सांग भोजन किया; और जितनी विपत्ति यहोवा ने उस पर डाली थी, उन सब के विषय उन्होंने विलाप किया, और उसे शान्ति दी; और उसे एक-एक चाँदी का सिक्का और सोने की एक-एक बाली दी। १२ और यहोवा ने अर्यूब के बाद के दिनों में उसको पहले के दिनों से अधिक आशीष दी, और उसके चौदह हजार भेड़-बकरियाँ, छ: हजार ऊँट, हजार जोड़ी बैल, और हजार गदहियाँ हो गईं। १३ और उसके सात बेटे और तीन बेटियाँ भी उत्पन्न हुईं। १४ इनमें से उसने जेठी बेटी का नाम तो यमीमा, दूसरी का कसीआ और तीसरी का केरेन्हप्पक रखा। १५ और उस सारे देश में ऐसी सिंहियाँ कहीं न थीं, जो अर्यूब की बेटियों के समान सुन्दर हों, और उनके पिता ने उनको उनके भाइयों के सांग ही सम्पत्ति दी। १६ इसके बाद अर्यूब एक सौ चालीस वर्ष जीवित रहा, और चार पीढ़ी तक अपना वंश देखने पाया। १७ अन्त में अर्यूब वृद्धावस्था में दीर्घायु होकर मर गया।

भजन संहिता

१ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो दुर्णी की योजना पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठश्च करनेवालों की मण्डली में बैठता है! २ परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात-दिन ध्यान करता रहता है। ३ वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती पानी की धाराओं के किनारे लगाया गया है और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। और जो कुछ वह पुष्प करे वह सफल होता है। ४ दूष लोग ऐसे नहीं होते, वे उस भूसी के समान होते हैं, जो पवन से उडाई जाती है। ५ इस कारण दूष लोग अदालत में स्थिर न रह सकेंगे, और न पापी धर्मियों की मण्डली में ठहरेंगे; ६ क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है, परन्तु दुर्णी का मार्ग नाश हो जाएगा।

२ जाति-जाति के लोग क्यों हल्लड मचते हैं, और देश-देश के लोग क्यों घट्टंग्रंथ रचते हैं? १ यहोवा के और उसके अधिकारिके विस्तु पृथकी के राजागण मिलकर, और हाकिम आपस में घट्टंग्रंथ रचकर, कहते हैं, २ “आओ, हम उनके बन्धन तोड़ डालें, और उनकी रसियों को अपने ऊपर से उतार फेके।” ३ वह जो स्वर्ग में विराजमान है, हँसेगा, प्रभु उनको उपहास में उड़ाएगा। ४ तब वह उनसे क्रोध में बातें करेगा, और क्रोध में यह कहकर उन्हें भयभीत कर देगा, ५ “मैंने तो अपने चुने हुए राजा को, अपने पवित्र पर्वत सियोन की राजगढ़ी पर नियुक्त किया है।” ६ मैं उस वचन का प्रचार करूँगा: जो यहोवा ने मुझसे कहा, “तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे जन्माया है।” ७ मुझसे माँ, और मैं जाति-जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिये, और दूर-दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिये दें दूँगा। ८ तू उन्हें लोहे के ढंडे से ढकड़े-टकड़े करेगा। तु कम्हार के बर्बन के समान उहें चकनाचू कर डालेगा।” ९ इसलिए अब, हे राजाओं, बुद्धिमन बनो; हे पृथकी के शासकों, सावधान हो जाओ। १० डरते हुए यहोवा की उपासना करो, और काँपते हुए मग्न हो। ११ पुत्र को चूमो ऐसा न हो कि वह क्रोध करे, और तम मार्ग ही में नाश हो जाओ, क्योंकि क्षण भर में उसका क्रोध भड़कने को है। धन्य है वे जो उसमें शरण लेते हैं।

३ दाऊद का भजन। जब वह अपने पुत्र अबशालोम के सामने से भागा जाता था हे यहोवा मेरे सतानेवाले कितने बढ़ गए हैं! वे जो मेरे विस्तु उठते हैं बहुत हैं। १ बहुत से मेरे विषय में कहते हैं, कि उसका बचाव परमेश्वर की ओर से नहीं हो सकता। (सेला) २ परन्तु हे यहोवा, तू तो मेरे चारों ओर मेरी ढाल है, तू मेरी महिमा और मेरे मस्तक का ऊँचा करनेवाला है। ३ मैं ऊँचे शब्द से यहोवा को पुकारता हूँ, और वह अपने पवित्र पर्वत पर से मुझे उत्तर देता है। (सेला) ४ मैं लेटकर सो गया; फिर जाग उठा, क्योंकि यहोवा मुझे सम्भालता है। ५ मैं उस भीड़ से नहीं डरता, जो मेरे विस्तु चारों ओर पाँती बाँधे खड़े हैं। ६ उठ, हे यहोवा! हे मेरे परमेश्वर मुझे बचा ले! क्योंकि तू मेरे सब शत्रुओं के जबड़ों पर मारा है। और तू दुर्णी के दाँत तोड़ डाले हैं। ७ उद्धार यहोवा ही की ओर से होता है, हे यहोवा तेरी आशीष तेरी प्रजा पर हो।

४ प्रधान बजानेवाले के लिये: तारवाले बाजों के साथ। दाऊद का भजन

हे मेरे धर्मिय परमेश्वर, जब मैं पुकास्त तब तू मुझे उत्तर दे; जब मैं संकट में पड़ा तब तू मुझे सहारा दिया। मुझ पर असूप्त कर और मेरी प्रार्थना सुन ले। २ हे मनुष्यों, कब तक मेरी महिमा का अनाद होता रहेगा? तुम कब तक व्यर्थ बातों से प्रीति रखोगे और झाठी युक्ति की खोज में रहोगे? (सेला) ३ यह जान

रखो कि यहोवा ने भक्त को अपने लिये अलग कर रखा है; जब मैं यहोवा को पुकास्त तब वह सुन लेगा। ४ काँपते रहो और पाप मत करो, अपने-अपने बिछौने पर मन ही मन में ध्यान करो और चुपचाप रहो। (सेला) ५ धर्मिकता के बलिदान चढ़ाओ, और यहोवा पर भरोसा रखो। ६ बहुत से हैं जो कहते हैं, “कौन हमको कुछ भलाई दिखाएगा?” हे यहोवा, तू अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका! ७ तूने मेरे मन में उससे कहीं अधिक अनान्द भर दिया है, जो उनको अन्न और दाखमधु की बढ़ती से होता है। ८ मैं शानि से लेट जाऊँगा और सो जाऊँगा; क्योंकि, हे यहोवा, केवल तू ही मुझ को निश्चिन्त रहने देता है।

५ प्रधान बजानेवाले के लिये: बांसुरियों के साथ, दाऊद का भजन हे यहोवा, मेरे चर्चों पर कान लगा; मेरे कराहने की ओर ध्यान लगा। २ हे मेरे राजा, हे मेरे परमेश्वर, मेरी दुहाई पर ध्यान दे, क्योंकि मैं तुझी से प्रार्थना करता हूँ। ३ हे यहोवा, भोर को मेरी वार्षी तुझे सुनाई देगी, मैं भोर को प्रार्थना करके तेरी बाट जोहँगा। ४ क्योंकि तू ऐसा परमेश्वर है, जो दुश्ता से प्रसन्न ही होता; दुरे लोग तेरे साथ नहीं रह सकते। ५ घमण्डी तेरे सम्मुख खड़े होने न पाएँगे; तुझे सब अनर्थकारियों से धृणा है। ६ तू उनको जो झूठ बोलते हैं नाश करेगा; यहोवा तो हत्यारे और छली मनुष्य से धृणा करता है। ७ परन्तु मैं तो तेरी अपार कम्हा के कारण तेरे भवन में आऊँगा, मैं तेरा भय मानकर तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत करूँगा। ८ हे यहोवा, मेरे शत्रुओं के कारण अपने धार्मिकता के मार्ग में मेरी अमुआई कर; मेरे अगे-अगे अपने सीधे मार्ग को दिखा। ९ क्योंकि उनके मुँह में कोई सच्चाई नहीं; उनके मन में निरी दुश्ता है। उनका गला खुली हुई कब्र है, वे अपनी जीभ से चिकनी चुपीली बातें करते हैं। १० हे परमेश्वर तु उनको दोषी ठहरा; वे अपनी ही युक्तियों से आप ही गिर जाएँ; उनको उनके अपराधों की अधिकाई के कारण निकाल बाहर कर, क्योंकि उन्होंने तुझे से बलवा किया है। ११ परन्तु जितने तुझ में शरण लेते हैं वे सब आनन्द करें, वे सर्वादा ऊँचे स्वर से गाते रहें; क्योंकि तू उनकी रक्षा करता है, और जो तेरे नाम के प्रेरी हैं तुझ में प्रफुल्लित होते हैं। १२ क्योंकि तू धर्मी की आशीष देगा; हे यहोवा, तू उसको ढाल के समान अपनी कृपा से धेरे रहेगा।

६ प्रधान बजानेवाले के लिये: तारवाले बाजों के साथ। खर्ज की राग में, दाऊद का भजन हे यहोवा, तू मुझे अपने क्रोध में न डॉट, और न रोप में मुझे ताड़ना दे। २ हे यहोवा, मुझ पर दया कर, क्योंकि मैं कुम्हला गया हूँ; हे यहोवा, मुझे चंगा कर, क्योंकि मेरी हाड़ियों में बेचैनी है। ३ मेरा प्राण भी बहुत खेदित है। और तू, हे यहोवा, कब तक? ४ लौट आ, हे यहोवा, और मेरे प्राण बचा; अपनी कम्हा के निमित्त मेरा उद्धार कर। ५ क्योंकि मृत्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता; अधेलोक में कौन तेरा धन्यवाद करेगा? (Sheol h7585) ६ मैं कराहते-कराहते थक गया; मैं अपनी खाट आँसुओं से भिगोता हूँ; प्रति रात मेरा बिछौना भीगता है। ७ मेरी आँखें शोक से बैठी जाती हैं, और मेरे सब सतानेवालों के कारण वे धूँधला गइ हैं। ८ हे सब अनर्थकारियों मेरे पास से दूर हो; क्योंकि यहोवा ने मेरे रोने का शब्द सुन लिया है। ९ यहोवा ने मेरा गिडगिडाना सुना है; यहोवा मेरी प्रार्थना को ग्रहण भी करेगा। १० मेरे सब शत्रु लज्जित होंगे और बहुत ही घबराएँगे; वे पराजित होकर पीछे होंगे, और एकाएक लज्जित होंगे।

७ दाऊद का शिग्गायोन नामक भजन जो बिन्यामीनी कश की बातों के कारण यहोवा के सामने गया है मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं तुझ में शरण लेता हूँ; सब पीछा करनेवालों से मुझे बचा और छुटकारा दे, १ ऐसा न हो कि वे मुझ को सिंह के समान फाड़कर टकड़े-टकड़े कर डालें; और कोई मेरा छुड़नेवाला न

हो। ४ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, यदि मैंने यह किया हो, यदि मेरे हाथों से कुटिल काम हुआ हो, ५ यदि मैंने अपने मेल रखनेवालों से भलाई के बदले बुराई की हो, या मैंने उसको जो अकारण मेरा बैरी था लूटा है ६ तो शत्रु मेरे प्राण का पीछा करके मुझे आ पकड़े, और मेरे प्राण को भूमि पर रौंदे, और मुझे अपमानित करके मिट्ठी में मिला दे। (सेला) ७ हे यहोवा अपने क्रोध में उठ; क्रोध से भरे मेरे सतानेवाले के विस्तृ तू खड़ा हो जा; मेरे लिये जाग! तू न्याय की आज्ञा दे दी है। ८ देश-देश के लोग तेरे चारों ओर इकट्ठे हुए हैं; तू फिर से उनके ऊपर विराजमान हो। ९ यहोवा जाति-जाति का न्याय करता है; यहोवा मेरी धार्मिकता और खराई के अनुसार मेरा न्याय चुका दे। १० भला हो कि दुषों की बुराई का अन्त हो जाए, परन्तु धर्मी को तू स्थिर कर; क्योंकि धर्मी परमेश्वर मन और मर्म का ज्ञाता है। ११ मेरी ढाल परमेश्वर के हाथ में है, वह सीधे मनवालों को बचाता है। १२ परमेश्वर धर्मी और न्यायी है, वरन् ऐसा परमेश्वर है जो प्रतिदिन क्रोध करता है। १३ यदि मनुष्य मन न फिराए तो वह अपनी तलवार पर सान चढ़ाएगा; और युद्ध के लिए अपना धनुष तैयार करेगा। १४ और उस मनुष्य के लिये उसने मृत्यु के हथियार तैयार कर लिए हैं; वह अपने तीरों को अग्निबाण बनाता है। १५ देख दुष्ट को अनर्थ काम की पीड़िएँ हो रही हैं, उसको उत्पात का गर्भ है, और उससे झट्ठ का जन्म हुआ। १६ उसने गृह खोदकर उसे गहरा किया, और जो खाई उसने बनाई थी उसमें खड़ वह आप ही मिरा। १७ उसका उत्पात पलटकर उसी के सिर पर पड़ेगा; और उसका उपत्वन उसी के माथे पर पड़ेगा। १८ मैं यहोवा के धर्म के अनुसार उसका धन्यवाद करूँगा, और परमप्रधान यहोवा के नाम का भजन गाऊँगा।

५ प्रधान बजानेवाले के लिये गिरीती की राग पर दाऊद का भजन हे यहोवा
हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है! तूने अपना वैभव स्वर्ग पर दिखाया है। २ तूने अपने बैरियों के कारण बच्चों और शिशुओं के द्वारा अपनी प्रशंसा की है, ताकि तू शत्रु और पलटा लेनेवालों को रोक रखे। ३ जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चन्द्रमा और तरागण को जो तूने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ; ४ तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदिमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले? ५ क्योंकि तूने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकूट उसके सिर पर रखा है। ६ तूने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तूने उसके पाँव तले सब कुछ कर दिया है। ७ सब भेड़-बकरी और गाय-बैल और जितने बन पश्च हैं, ८ आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियाँ, और जितने जीव-जन्तु समुद्रों में चलते फिरते हैं। ९ हे यहोवा, हे हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है।

६ प्रधान बजानेवाले के लिये मूलबैयन कि राग पर दाऊद का भजन हे यहोवा
यहोवा परमेश्वर मैं अपने पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूँगा। १ मैं तेरे सब आश्वर्यकर्मी का वर्णन करूँगा। २ मैं तेरे कारण अनन्दित और प्रफुल्लित होऊँगा, हे परमप्रधान, मैं तेरे नाम का भजन गाऊँगा। ३ मेरे शत्रु पराजित होकर पीछे हटते हैं, वे तेरे सामने से ठोकर खाकर नाश होते हैं। ४ तूने मेरे मुकदमों का न्याय में पक्ष में किया है; तूने सिंहासन पर विराजमान होकर धार्मिकता से न्याय किया। ५ तूने जाति-जाति को झिड़का और दुष्ट को नाश किया है; तूने उनका नाम अनन्तकाल के लिये मिटा दिया है। ६ शत्रु अनन्तकाल के लिये उजड़ गए हैं; उनके नगरों को तूने ढा दिया, और उनका नाम और निशान भी मिट गया है। ७ परन्तु यहोवा सौंदैव सिंहासन पर विराजमान है, उसने अपना सिंहासन न्याय के लिये सिद्ध किया है; ८ और वह जगत का न्याय धर्म से करेगा, वह देश-देश के लोगों का मुकदमा खराई से निपटाएगा। ९ यहोवा पिसे

हुओं के लिये ऊँचा गढ़ ठहरेगा, वह संकट के समय के लिये भी ऊँचा गढ़ ठहरेगा। १० और तेरे नाम के जानेवाले तुङ्ग पर भरोसा रखेंगे, क्योंकि हे यहोवा तूने अपने खोजियों को त्याग नहीं दिया। ११ यहोवा जो सिद्धोन में विराजमान है, उसका भजन गाओ! जाति-जाति के लोगों के बीच में उसके महार्कर्मी का प्रचार करो। १२ क्योंकि खन का पलटा लेनेवाला उनको स्मरण करता है, वह पिसे हुओं की दुर्लाई को नहीं भलता। १३ हे यहोवा, मुझ पर दया कर। देख, मेरे बैरी मुझ पर अत्याचार कर रहे हैं, तू ही मुझे मृत्यु के फाटकों से बचा सकता है; १४ ताकि मैं सिद्धोन के फाटकों के पास तेरे सब गुणों का वर्णन करूँ, और तेरे किए हुए दुष्टों से मग्न होऊँ। १५ अन्य जातिवालों ने जो गङ्गा खोदा था, उसी में वे आप गिर पड़े; जो जाल उन्होंने लगाया था, उसमें उन्हीं का पाँव फँस गया। १६ यहोवा ने अपने को प्रगट किया, उसने न्याय किया है, दुष्ट अपने किए हुए कामों में फँस जाता है। (हिंगायोन, सेला) १७ दुष्ट अद्योलक में लौट जाएँगे, तथा वे सब जातियों भी जो परमेश्वर को भूल जाती है। (Sheol h7585) १८ क्योंकि दरिद्र लोग अनन्तकाल तक बिसरे हुए न रहेंगे, और न तो नग्न लोगों की आशा सर्वदा के लिये नाश होगी। १९ हे यहोवा, उठ, मनुष्य प्रबल न होने पाए। जातियों का न्याय तेरे सम्मुख किया जाए। २० हे यहोवा, उनको भय दिला! जातियों अपने को मनुष्यमात्र ही जानें। (सेला)

१० हे यहोवा तू क्यों दूर खड़ा रहता है? संकट के समय में क्यों छिपा रहता है?
१० दुष्टों के अंहकार के कारण दीन पर अत्याचार होते हैं; वे अपनी ही निकाली हुई युक्तियों में फँस जाएँ। ११ क्योंकि दुष्ट अपनी अभिलाषा पर घमण्ड करता है, और लोभी यहोवा को त्याग देता है और उसका तिरस्कार करता है। १२ दुष्ट अपने अंहकार में परमेश्वर को नहीं खोजता; उसका पूरा विचार यही है कि कोई परमेश्वर है ही नहीं। १३ वह अपने मार्ग पर दृढ़ता से बना रहता है, तेरे धार्मिकता के नियम उसकी दुष्ट से बहत दूर ऊँचाई पर है, जितने उसके विरोधी हैं उन पर वह फँकरता है। १४ वह अपने मन में कहता है कि “मैं कभी टलने का नहीं, मैं पीढ़ी से पीढ़ी तक दुख से बचा रहँगा।” १५ उसका मूँह श्वाप और छल और धमकियों से भरा है; उत्पात और अनर्थ की बातें उसके मूँह में हैं। १६ वह गँवों में घाट में बैठा करता है, और गुम स्थानों में निर्दोष को घाट करता है, उसकी आँखें लाचार की घाट में लगी रहती है। १७ वह सिंह के समान झाड़ी में छिपकर घाट में बैठता है; वह दीन को जाल में फँसाकर पकड़ लेता है। १८ लाचार लोगों को कुचला और पीटा जाता है, वह उसके मजबूत जाल में गिर जाते हैं। १९ वह अपने मन में सोचता है, “परमेश्वर भूल गया, वह अपना मूँह छिपाता है; वह कभी नहीं देखोगा।” २० उठ, हे यहोवा; हे परमेश्वर, अपना हाथ बढ़ा और न्याय कर; और दीनों को न भूल। २१ परमेश्वर को दुष्ट क्यों तुच्छ जानता है, और अपने मन में कहता है “तू लेखा न लेगा?” २२ तूने देख लिया है, क्योंकि तू उत्पात और उत्पीड़न पर दृष्टि रखता है, ताकि उसका पलटा अपने हाथ में रखे; लाचार अपने आपको तुझे सौंपता है; अनाथों का तू ही सहायक रहा है। २३ दुर्जन और दुष्ट की भूजा को तोड़ डाल; उनकी दुष्टा का लेखा ले, जब तक कि सब उसमें से दूर न हो जाए। २४ यहोवा अनन्तकाल के लिये महाराज है; उसके देश में से जाति-जाति लोग नाश हो गए हैं। २५ हे यहोवा, तूने नग्न लोगों की अभिलाषा सुनी है; तू उनका मन दृढ़ करेगा, तू कान लगाकर सुनेगा २६ कि अनाथ और पिसे हुए का न्याय करे, ताकि मनुष्य जो मिट्ठी से बना है फिर भय दिखाने न पाए।

११ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन मैं यहोवा में शरण लेता हूँ;
तुम क्यों मेरे प्राण से कहते हो “पक्षी के समान अपने पहाड़ पर उड़

जा”; २ क्योंकि देखो, दुष्ट अपना धनुष चढ़ाते हैं, और अपने तीर धनुष की डोरी पर रखते हैं, कि सिंधे मनवालों पर अंथियरे में तीर चलाएँ। ३ यदि नीचे ढा दी जाएँ तो धर्मी क्या कर सकता है? ४ यहोवा अपने पवित्र भवन में है, यहोवा का सिंहासन स्वर्ग में है; उसकी आँखें मनुष्य की सन्तान को नित देखती रहती हैं और उसकी पलकें उनको जाँचती हैं। ५ यहोवा धर्मी और दुष्ट दोनों को परखता है, परन्तु जो उपद्रव से प्रीति रखते हैं उनसे वह घृणा करता है। ६ वह दुष्टों पर आग और गन्धक बरसाएँ; और प्रचंड लहर उनके कटोरों में बाँट दी जाएँ। ७ क्योंकि यहोवा धर्मी है, वह धार्मिकता के ही कामों से प्रसन्न रहता है; धर्मी जन उसका दर्शन पाएँगे।

१२ प्रधान बजानेवाले के लिये खर्ज की राग में दाऊद का भजन हे यहोवा

बचा ले, क्योंकि एक भी भक्त नहीं रहा; मनुष्यों में से विश्वासयोग्य लोग लुप्त हो गए हैं। २ प्रत्येक मनुष्य अपने पड़ोसी से झटी बातें कहता है; वे चापलती के होठों से दो रंगी बातें करते हैं। ३ यहोवा सब चापलत्सु होठों को और उस जीभ को जिससे बड़ा बोल निकलता है काट डालेगा। ४ वे कहते हैं, “हम अपनी जीभ ही से जीर्णे, हमारे हौंठ द्वारा हमारे ही वश में हैं, हम पर कौन शासन कर सकेगा?” ५ दीन लोगों के लुट जाने, और दरिद्रों के कराहेने के कारण, यहोवा कहता है, “अब मैं उट्ठाँगा, जिस पर वे फँकुराते हैं उसे मैं चैन विश्वाम दँगा।” ६ यहोवा का वचन पवित्र है, उस चाँदी के समान जो भक्ती में मिट्टी पर ताई गई, और सात बार निर्मल की गई हो। ७ तू ही है यहोवा उनकी रक्षा करोगा, उनको इस काल के लोगों से सर्वदा के लिये बचाए रखेगा। ८ जब मनुष्यों में बुराई का आदर होता है, तब दुष्ट लोग चारों ओर अकड़ते फिरते हैं।

१३ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन हे परमेश्वर, तू कब तक?

क्या सारैव मुझे भूला रहेगा? तू कब तक अपना मुखडा मुझसे छिपाए रखेगा? १ मैं कब तक अपने मन ही मन में युक्तियाँ करता रहूँ, और दिन भर अपने हृदय में दूषित रहा करूँ? कब तक मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल रहेगा? २ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी ओर ध्यान दे और मुझे उत्तर दे, मेरी आँखों में ज्योति अनें दे, नहीं तो मुझे मृत्यु की नीद आ जाएगी; ३ ऐसा न हो कि मेरा शत्रु करे, “मैं उस पर प्रबल हो गया,” और ऐसा न हो कि जब मैं डगमगाने लगूं तो मैं शत्रु मग्न हों। ४ परन्तु मैंने तो तेरी कल्पा पर भरोसा रखा है; मेरा हृदय तेरे उद्धार से मग्न होगा। ५ मैं यहोवा के नाम का भजन गाँजँगा, क्योंकि उसने मेरी भलाई की है।

१४ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन मूर्ख ने अपने मन में कहा

है, “कोई परमेश्वर है ही नहीं।” वे बिगड़ गए, उन्होंने धिनोने काम किए हैं, कोई सुकर्मी नहीं। २ यहोवा ने स्वर्ग में से मनुष्यों पर दृष्टि की है कि देखे कि कोई बुद्धिमान, कोई यहोवा का खोजी है या नहीं। ३ वे सब के सब भटक गए, वे सब भ्रष्ट हो गए; कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं। ४ क्या किसी अनर्थकारी को कुछ भी ज्ञान नहीं रहता, जो मेरे लोगों को ऐसे खा जाते हैं जैसे रोटी, और यहोवा का नाम नहीं लेते? ५ वहाँ उन पर भय छा गया, क्योंकि परमेश्वर धर्मी लोगों के बीच में निरन्तर रहता है। ६ तुम तो दीन की युक्ति की हँसी उड़ाते हो परन्तु यहोवा उसका शरणस्थान है। ७ भला हो कि इमाएल का उद्धार सिध्योन से प्रगत होता! जब यहोवा अपनी प्रजा को दासत्व से लौटा ले आएगा, तब याकूब मग्न और इस्माएल आनन्दित होगा।

१५ दाऊद का भजन हे यहोवा तेरे तम्ब में कौन रहेगा? तेरे पवित्र पर्वत पर

कौन बसने पाएगा? १ वह जो सिधाई से चलता और धर्म के काम करता

है, और हृदय से सच बोलता है; २ जो अपनी जीभ से अपमान नहीं करता, और न अन्य लोगों की बुराई करता, और न अपने पड़ोसी का अपमान सुनता है; ३ वह जिसकी दृष्टि में निकम्मा मनुष्य तुच्छ है, पर जो यहोवा के डार्कैयों का आदर करता है, जो शपथ खाकर बदलता नहीं चाहे हानि उठानी पड़े; ५ जो अपना स्वाम्य व्याज पर नहीं देता, और निर्दोष की हानि करने के लिये घृस नहीं लेता है। जो कोई ऐसी चाल चलता है वह कभी न डगमगाएगा।

१६ दाऊद का मित्काम हे परमेश्वर मेरी रक्षा कर, क्योंकि मैं तेरा ही शरणगम

हूँ। २ मैंने यहोवा से कहा, “तू ही मेरा प्रभु है; तेरे सिवा मेरी भलाई कही नहीं।” ३ पृथ्वी पर जो पवित्र लोग हैं, वे ही आदर के योग्य हैं, और उन्हीं से मैं प्रसन्न हूँ। ४ जो पराए देवता के पीछे भागते हैं उनका दुःख बढ़ जाएगा, मैं उन्हें लहवाले अर्थ नहीं चढ़ाऊँगा और उनका नाम अपने होठों से नहीं लौटा।

५ यहोवा त मेरा चुना हुआ भाग और मेरा कटोरा है; मेरे भाग को त् स्थिर रखता है। ६ मेरे लिये माप की डोरी मनभावने स्थान में पड़ी, और मेरा भाग मनभावना है। ७ मैं यहोवा को धन्य कहता हूँ, क्योंकि उसने मुझे सम्पत्ति दी है; बरन् मेरा मन भी रात में मुझे शिक्षा देता है। ८ मैंने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है: इसलिए कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है मैं कभी न डगमगाऊँगा। ९ इस कारण मेरा हृदय अनन्दित और मेरी आत्मा मग्न है; मेरा शरीर भी चैन से रहेगा। १० क्योंकि तू मेरे प्राण को अओलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को कब्ज़ में सँड़ने देगा। (Sheol h7585) ११ तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है।

१७ दाऊद की प्रार्थना हे यहोवा परमेश्वर सच्चाई के वचन सु, मेरी पुकार

की ओर ध्यान दे मेरी प्रार्थना की ओर जो निष्कपट मुँह से निकलती है कान लगा! १ मेरे मुकद्दमे का निर्णय तेरे सम्मुख हो; तेरी आँखें न्याय पर लगी रहें! २ यदि तू मेरे हृदय को जाँचता; यदि तू रात को मेरा परीक्षण करता, यदि तू मुझे परखता तो कुछ भी खोटापन नहीं पाता; मेरे मुँह से अपराध की बात नहीं निकलती। ३ मानवीय कामों में मैंने तेरे मुँह के वचनों के द्वारा अर्थार्थियों के मार्ग से स्वयं को बचाए रखा। ४ मेरे पाँव तेरे पथों में स्थिर रहे, फिसले नहीं। ५ हे परमेश्वर, मैंने तुझ से प्रार्थना की है, क्योंकि तू मुझे उत्तर देगा। अपना कान मेरी ओर लगाकर मेरी विनती सुन ले। ६ तू जो अपने दाहिने हाथ के द्वारा अपने शरणगांठों को उनके विरोधियों से बचाता है, अपनी अद्भूत कल्पना दिखा। ७ अपनी आँखों की पुतली के समान सुरक्षित रख; अपने पंखों के तरे मुझे छिपा रख, ८ उन दुष्टों से जो मुझ पर अत्याचार करते हैं, मेरे प्राण के शत्रुओं से जो मुझे धेरे हुए हैं। ९ उन्होंने अपने हृदयों को कठोर किया है; उनके मुँह से घमण्ड की बातें निकलती हैं। १० उन्होंने पाए-पग पर मुझ को धेरा है, वे मुझ को भूमि पर पटक देने के लिये घात लगाए हुए हैं। ११ वह उस सिंह के समान रहता है जो अपने शिकार की लालसा करता है, और जवान सिंह के समान घात लगाने में बैठा रहता है। १२ उठ, हे यहोवा! उसका सामना कर और उसे पटक दे! अपनी तलवार के बल से मेरे प्राण को दुष्ट से बचा ले। १३ अपना हाथ बढ़ाकर हे यहोवा, मुझे मनुष्यों से बचा, अर्थात् सांसारिक मनुष्यों से जिनका भाग इसी जीवन में है, और जिनका पेट तू अपने भण्डार से भरता है। वे बाल-बच्चों से सन्तुष्ट हैं; और शेष सम्पत्ति अपने बच्चों के लिये छोड़ जाते हैं। १४ परन्तु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूँगा जब मैं जागूँगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट होऊँगा।

१८ प्रधान बजानेवाले के लिये। यहोवा के दास दाऊद का गीत, जिसके वचन

उसने यहोवा के लिये उस समय गाया जब यहोवा ने उसको उसके सारे

शत्रुओं के हाथ से, और शाऊल के हाथ से बचाया था, उसने कहा है यहोवा, हे मेरे बल, मैं तुझ से प्रेम करता हूँ। २ यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़ और मेरा छुड़ानेवाला है; मेरा परमेश्वर, मेरी चट्टान है, जिसका मैं शरणागत हूँ, वह मेरी ढाल और मेरी उद्धार का सीग, और मेरा ऊँचा गढ़ है। ३ मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकासँगा; इस प्रकार मैं अपने शत्रुओं से बचाया जाऊँगा। ४ मृत्यु की रसियों से मैं चारों ओर से घिर गया हूँ, और अर्धमी की बाढ़ ने मुझ को भयभीत कर दिया; ५ अंगोलों की रसियाँ मैं चारों ओर थीं, और मृत्यु के फंदे मुझ पर आए थे। (Sheol h7585) ६ अपने संकट में मैंने यहोवा परमेश्वर को पुकारा; मैंने अपने परमेश्वर की दुहाई दी। और उसने अपने महिंद्र में से मेरी बाणी सुनी। और मेरी दुहाई उसके पास पहुँचकर उसके कानों में पड़ी। ७ तब पृथ्वी हिल गई, और कौपं उठी और पहाड़ों की नीचे कॅपिट होकर हिल गई क्योंकि वह अति क्रांतित हआ था। ८ उसके नथनों से धुआँ निकला, और उसके मुँह से आग निकलकर भस्म करने लगी; जिससे कोप्ले दहक उठे। ९ वह स्वर्ण की नीचे झुकाकर उत्तर आया; और उसके पाँवों तले घोर अंधकार था। १० और वह कस्ब पर सवार होकर उड़ा, वरन् पवन के पंखों पर सवारी करके बैग से उड़ा। ११ उसने अंधियारों को अपने छिपने का स्थान और अपने चारों ओर आकाश की काली घटाओं का मण्डप बनाया। १२ उसके आगे बिजिती से, ओले और अंगोरे गिर पड़े। १३ तब यहोवा आकाश में गरजा, परमप्रधान ने अपनी बाणी सुनाई और ओले और अंगोरों को भेजा। १४ उसने अपने तीर चला-चलाकर शत्रुओं को तिरत-बितर किया; वरन् बिजलियाँ गिरा पिगाकर उनको परास्त किया। १५ तब जल के नाले देख पड़े, और जगत की नीव प्रगत हुई, यह तो यहोवा तेरी ढाँड़ से, और तेरे नथनों की साँस की झोंक से हुआ। १६ उसने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया, और गहरे जल में से खींच लिया। १७ उसने मेरे बलवन्त शत्रु से, और उनसे जो मुझसे भूगा करते थे, मुझे छुड़ाया; क्योंकि वे अधिक सामर्थी थे। १८ मेरे संकट के दिन वे मेरे विद्धु आए पन्तु यहोवा मेरा अश्वय था। १९ और उसने मुझे निकालकर चैडे स्थान में पहुँचाया, उसने मुझ को छुड़ाया, क्योंकि वह मुझसे प्रसन्न था। २० यहोवा ने मुझसे मेरी धार्मिकता के अनुसार व्यवहार किया; और मेरे हाथों की शुद्धता के अनुसार उसने मुझे बदला दिया। २१ क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता रहा, और दृष्टा के कारण अपने परमेश्वर से दूँ न हुआ। २२ क्योंकि उसके सारे निर्णय मेरे सम्मुख बने रहे और मैंने उसकी विधियों को न त्यागा। २३ और मैं उसके सम्मुख सिद्ध बना रहा, और अर्धम से अपने को बचाए रहा। २४ यहोवा ने मुझे मेरी धार्मिकता के अनुसार बदला दिया, और मेरे हाथों की उस शुद्धता के अनुसार जिसे वह देखता था। २५ विष्वासयोग्य के साथ त् अपने को विष्वासयोग्य दिखाता; और खोरे पुख के साथ त् अपने को खरा दिखाता है। २६ शुद्ध के साथ त् अपने को शुद्ध दिखाता, और टेढ़े के साथ त् तिरछा बनता है। २७ क्योंकि त् दीन लोगों को तो बचाता है; परन्तु धमण्ड भरी आँखों को नीची करता है। २८ हाँ, त् ही मेरे दीपक को जलाता है; मेरा परमेश्वर यहोवा मेरे अंधियारों को उजियाला कर देता है। २९ क्योंकि तेरी सहायता से मैं सेना पर धावा करता हूँ, और अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह को लाँच जाता हूँ। ३० परमेश्वर का मार्ग सिद्ध है; यहोवा का वचन ताथा हुआ है; वह अपने सब शरणागतों की ढाल है। ३१ यहोवा को छोड़ क्या कोई परमेश्वर है? हमारे परमेश्वर को छोड़ क्या और कोई चट्टान है? ३२ यह वही परमेश्वर है, जो सामर्थ्य से मेरा कमरबन्ध बँधता है, और मेरा मार्ग को सिद्ध करता है। ३३ वही मेरे पैरों को हिरनी के पैरों के समान बनाता है, और मुझे ऊँचे स्थानों पर खड़ा करता है। ३४ वह मेरे हाथों को यदू करना सिखाता है, इसलिए मेरी बाहों से पीतल का धनुष झुक जाता है। ३५ तू मेरे मुझ को अपने

बचाव की ढाल दी है, तू अपने दाहिने हाथ से मुझे सम्भाले हुए है, और तेरी नम्रता ने मुझे महान बनाया है। ३६ तूने मेरे पैरों के लिये स्थान चौड़ा कर दिया, और मेरे पैर नहीं फिसले। ३७ मैं अपने शत्रुओं का पीछा करके उहाँ पकड़ लैंगा; और जब तक उनका अन्त न कहूँ तब तक न लौटैंगा। ३८ मैं उड़े ऐसा बैरूँगा कि वे उठ न सकेंगे; वे मेरे पाँवों के नीचे गिर जाएंगे। ३९ क्योंकि तूने यदू के लिये मेरी कमर में शक्ति का पटुका बौंधा है, और मेरे विरोधियों को मेरे सम्मुख नीचा कर दिया। ४० तूने मेरे शत्रुओं की पीठ मेरी ओर फेर दी; ताकि मैं उनको काट डालूँ जो मुझसे द्रेष रखते हैं। ४१ उहाँने दुहाई तो दी परन्तु उहाँ कोई बचानेवाला न मिला, उन्होंने यहोवा की भी दुहाई दी, परन्तु उसी भी उनको उत्तर न दिया। ४२ तब मैंने उनको कृट कृटकर पवन से उड़ाई हुई धूल के समान कर दिया; मैंने उनको मार्ग के कीचड़ के समान निकाल फेंका। ४३ तूने मुझे प्रजा के झाङडों से भी छुड़ाया; तूने मुझे अन्यजातियों का प्रधान बनाया है; जिन लोगों को मैं जानता भी न था वे मेरी सेवा करते हैं। ४४ मेरा नाम सुनते ही वे मेरी आज्ञा का पालन करेंगे; परदेशी मेरे वश में हो जाएँगे। ४५ परदेशी मुझी जाएँगे, और अपने किलों में से थरथराते हुए निकलेंगे। ४६ यहोवा परमेश्वर जीवित है; मेरी चट्टान धन्य है; और मेरे मुक्तिदाता परमेश्वर की बड़ाई है। ४७ धन्य है मेरा पलटा लेनेवाला परमेश्वर! जिसने देश-देश के लोगों को मेरे वश में कर दिया है; ४८ और मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ाया है; तू मुझ को मैं विरोधियों से ऊँचा करता, और उपट्री पुस्त से बचता है। ४९ इस कारण मैं जाति-जाति के सामने तेरा धन्यवाद करूँगा, और तेरे नाम का भजन गाऊँगा। ५० वह अपने ठहराए हुए राजा को महान विजय देता है, वह अपने अभिविष्ट दाऊद पर और उसके बंश पर युआनुयुा कस्ता करता रहेगा।

१९ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन आकाश परमेश्वर की महिमा वर्णन करता है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट करता है।

१ दिन से दिन बातें करता है, और रात को रात ज्ञान सिखाता है। २ न तो कोई बोली है और न कोई भाषा; जहाँ उनका शब्द सुनाई नहीं देता है। ३ फिर भी उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूँज गया है, और उनका वचन जगत की छोर तक पहुँच गया है। उनमें उसने सूर्य के लिये एक मण्डप खड़ा किया है, ४ जो दुर्घे के समान अपने कक्ष से निकलता है। वह शूरवीर के समान अपनी दौड़ दौड़ने में हरिष्ट होता है। ५ वह आकाश की एक छोर से निकलता है, और वह उसकी दूसरी छोर तक चक्कर मारता है; और उसकी गर्मी से कोई नहीं बच पाता। ६ यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विचासयोग्य हैं, बुद्धिहीन लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं; ७ यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं, हृदय को अनन्दित कर देते हैं; यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आँखों में ज्योति ले आती है; ८ यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है; यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं। ९ वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं; वे मधु से और छत्ते से टपकनेवाले मधु से भी बढ़कर मधुर हैं। १० उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है; उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है। ११ अपनी गलतियों को कौन समझ सकता है? मेरे गुप्त पापों से तू मुझे पवित्र कर। १२ तू अपने दास को ढिटाई के पापों से भी बचाए रख; वह मुझ पर प्रभुता करने पाएँगे। १३ तब मैं सिद्ध हो जाऊँगा, और बड़े अपराधों से बचा रहेंगा। १४ हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करनेवाले, मेरे मुँह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहणयोग्य हों।

२० प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन संकट के दिन यहोवा तेरी सुन लै! याकूब के परमेश्वर का नाम तुझे ऊँचे स्थान पर नियुक्त करे!

वह पवित्रस्थान से तेरी सहायता करे, और सिद्ध्योन से तुझे सम्भाल ले। ३ वह तेरे सब भेटों को स्मरण करे, और तेरे होमबलि को ग्रहण करे। (सेला) ४ वह तेरे मन की इच्छा को पूरी करे, और तेरी सारी युक्ति को सफल करे। ५ तब हम तेरे उद्धार के कारण ऊँचे स्वर से हरिष्ठ होकर गाएँगे, और अपने परमेश्वर के नाम से झांडे खडे करेंगे। यहोवा तेरे सारे निवेदन स्वीकार करे। ६ अब मैं जान गया कि यहोवा अपने अभिषिक्त को बचाएगा; वह अपने पवित्र स्वर्ण से, अपने दाहिने हाथ के उद्धार के सामर्थ्य से, उसको उत्तर देगा। ७ किसी को रथों पर, और किसी को घोड़ों पर भरोसा है, परन्तु हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही का नाम लेंगे। ८ वे तो इक्का गए और पिर पड़े: परन्तु हम उठे और सीधे खडे हैं। ९ हे यहोवा, राजा को छुड़ा; जब हम तुझे पुकारें तब हमारी सहायता कर।

२१ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन है यहोवा तेरी सामर्थ्य से

राजा आनन्दित होगा; और तेरे किए हुए उद्धार से वह अति मग्न होगा। १ तुमें उसके मनोरथ को पूरा किया है, और उसके युँह की विनती को तुमें अस्वीकार नहीं किया। (सेला) २ क्योंकि तू उत्तम अशीषि देता हुआ उससे मिलता है और तू उसके सिर पर कुन्दन का मुकुट पहनता है। ३ उसने तुझ से जीवन माँगा, और तुमें जीवनदान दिया; तुमें उसको युगान्युग का जीवन दिया है। ४ तेरे उद्धार के कारण उसकी महिमा अधिक है, तू उसको वैभव और एव्वर्थ से आभिषिक्त कर देता है। ५ क्योंकि तुमें उसको सर्वदा के लिये अशीषि किया है; तू अपने सम्मुख उसको हर्ष और अनन्द से भर देता है। ६ क्योंकि राजा का भरोसा यहोवा के ऊपर है, और परमप्रधान की कस्ता से वह कर्मी नहीं टलने का। ७ तेरा हाथ तेरे सब बैरियों को छूँढ़ निकालेगा, तेरा दाहिना हाथ तेरे सब बैरियों का पता लगा लेगा। ८ तू अपने मुख के सम्मुख उन्हें जलते हुए भेटे के समान जलाएगा। यहोवा अपने क्रोध में उन्हें निगल जाएगा, और आग उनको भस्म कर डालेगा। ९ तू उनके फलों को पृथ्वी पर से, और उनके वंश को मनुष्यों में से नष्ट करेगा। १० क्योंकि उन्होंने तेरी हानि ठानी है, उन्होंने ऐसी युक्ति निकाली है जिसे वे पूरी न कर सकेंगे। ११ क्योंकि तू अपना धनुष उनके विस्फु चढ़ाएगा, और वे पीठ दिखाकर भागेंगे। १२ हे यहोवा, अपनी सामर्थ्य में महान हो; और हम गा गाकर तेरे प्राक्रम का भजन सुनाएँ।

२२ प्रधान बजानेवाले के लिये अध्येलेरशर राग में दाऊद का भजन है मेरे

परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तुमें मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है? मेरा उद्धार कहाँ है? १ हे मेरे परमेश्वर, मैं दिन को पुकारता हूँ परन्तु तू उत्तर नहीं देता; और रात को भी मैं चुप नहीं रहता। २ परन्तु तू जो इसाएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है, तू तो पवित्र है। ३ हमारे पुरुखा तुझी पर भरोसा रखते थे; वे भरोसा रखते थे, और तू उन्हें छुड़ाता था। ४ उन्होंने तेरी दहाई दी और तेरे उनको छुड़ाया वे तुझी पर भरोसा रखते थे और कभी लज्जित न हान। ५ परन्तु मैं तो कीड़ा हूँ, मनुष्य नहीं; मनुष्यों में नीमा नामधारा है, और लोगों में मेरा अपमान होता है। ६ वह सब जो मुझे देखते हैं मेरा ठष्ठा करते हैं, और होंठ बिचकाते और यह कहते हुए सिर हिलाते हैं, ७ वे कहते हैं “वह यहोवा पर भरोसा करता है, यहोवा उसको छुड़ाए, वह उसको उबारे क्योंकि वह उससे प्रसन्न है।” ८ परन्तु तू ही ने मुझे गर्भ से निकाला; जब मैं दूध पीता बच्चा था, तब ही से तूने मुझे भरोसा रखना सिखाया। ९ मैं जन्मते ही तुझी पर छोड़ दिया गया, माता के गर्भ ही से तू मेरा परमेश्वर है। १० मुझसे दूर न हो क्योंकि संकट निकट है, और कोई सहायक नहीं। ११ बहुत से सांडों ने मुझे धेर लिया है, बाशान के

बलवन्त सॉँड मेरे चारों ओर मुझे धेर हुए है। १२ वे फाड़ने और गरजनेवाले सिंह के समान मुझ पर अपना मूँह पसारे हुए हैं। १३ मैं जल के समान बह गया, और मेरी सब हड्डियों के जोड़ उखड़ गए: मेरा हृदय मोम हो गया, वह मेरी देह के भीतर पिघल गया। १४ मेरा बल टूट गया, मैं ठीकरा हो गया; और मेरी जीभ मेरे तातू से चिपक गई, और तू मुझे मारकर मिट्ठी में मिला देता है। १५ क्योंकि कुत्तों ने मुझे धेर लिया है, कुकुर्मियों की मण्डली मेरे चारों ओर मुझे धेर हुए हैं; वह मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं। १६ मैं अपनी सब हड्डियों पिन सकता हूँ; वे मुझे देखते और निहारते हैं; १७ वे मेरे बन्ध आपस में बौंटते हैं, और मेरे पहारवे पर चिट्ठी डालते हैं। १८ परन्तु हे यहोवा तू दूर न रह! हे मेरे सहायक, मेरी सहायता के लिये फूर्ती कर! १९ मेरे प्राण को तलवार से बचा, मेरे प्राण को कुत्ते के पंजे से बचा लो। २० मुझे सिंह के मूँह से बचा, जंगली सॉँड के सीरींगों से तू मुझे बचा। २१ मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का प्रचार करूँगा; सभा के बीच तेरी प्रशंसा करूँगा। २२ हे यहोवा के डरवैयों, उसकी स्तुति करो! हे याकूब के वंश, तुम सब उसकी महिमा करो! हे इसाएल के वंश, तुम सब का भय मानो! २३ क्योंकि उसने दुःखी को तुच्छ नहीं जाना और न उससे धृणा करता है, यहोवा ने उससे अपना मुख नहीं छिपाया; पर जब उसने उसकी दुहाई दी, तब उसकी सुन ली। २४ बड़ी सभा में मेरा स्तुति करना तेरी ही ओर से होता है; मैं अपनी मनतों को उसके भय रखनेवालों के सामने पूरा करूँगा। २५ नम्र लोग भोजन करके तूम होंगे; जो यहोवा के खोजी है, वे उसकी स्तुति करेंगे। तुम्हरे प्राण सर्वदा जीवित रहें! २६ पृथ्वी के सब दूर-दूर देशों के लोग उसको समरण करेंगे और उसकी ओर फिरेंगे; और जाति-जाति के सब कुल तेरे सामने दण्डवत् करेंगे। २७ क्योंकि राज्य यहोवा ही का है, और सब जातियों पर वही प्रभुता करता है। २८ पृथ्वी के सब हष्ट-पृष्ठ लोग भोजन करके दण्डवत् करेंगे; वे सब जो मिट्ठी में मिल जाते हैं और अपना-अपना प्राण नहीं बचा सकते, वे सब उसी के सामने धूटने टेकेंगे। २९ एक वंश उसकी सेवा करेगा; दूसरी पीढ़ी से प्रभुका वर्णन किया जाएगा। ३० वे आएँगे और उसके धार्मिकता के कामों को एक वंश पर जो उत्पन्न होगा यह कहकर प्राप्त करेंगे कि उसने ऐसे-ऐसे अद्वृत काम किए।

२३ दाऊद का भजन यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ धर्ती न होगी। १ वह

मुझे हरी-हरी चाराइयों में बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के झारने के पास ले चलता है; २ वह मेरे जी मैं जी ले आता है। धार्मिकता के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी आज्ञाएँ करता है। ३ चाहे मैं घेर अंधकार से भी हर्द तराई में होकर चलूँ, तो भी हानि से न डस्सा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सौंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है। ४ तू मेरे सतानेवालों के सामने मेरे लिये मेज बिछाता है, तुमें मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमड़ रहा है। ५ निश्चय भलाई और कस्ता जीवन भर मेरे साथ-साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा बास करूँगा।

२४ दाऊद का भजन पृथ्वी और जो कुछ उसमें है यहोवा ही का है; जगत

और उसमें निवास करनेवाले भी। ६ क्योंकि उसी ने उसकी नीच शम्भुओं के ऊपर ढूढ़ करके रखी, और महानदों के ऊपर स्थिर किया है। ७ यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है? और उसके पवित्रस्थान में कौन खड़ा हो सकता है? ८ जिसके काम निर्दीष और हृदय शुद्ध है, जिसने अपने मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं लगाया, और न कपट से शपथ खाइ है। ९ वह यहोवा की ओर से आरीष पाएगा, और अपने उद्धार करनेवाले परमेश्वर की ओर से धर्मी ठहरेगा। १० ऐसे ही लोग उसके खोजी हैं, वे तेरे दर्शन के खोजी याकूबवंशी हैं। (सेला) ११ हे फाटकों, अपने सिर ऊँचे करो! हे सनातन के द्वारों, ऊँचे हो

जाओ! क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा। ८ वह प्रतापी राजा कौन है? यहोवा जो सामर्थी और पराक्रमी है, परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है। ९ हे फाटकों, अपने सिर ऊँचे करो हे सानातन के द्वारों तुम भी खुल जाओ! क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा! १० वह प्रतापी राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है। (सेला)

२५ दाऊद का भजन हे यहोवा, मैं अपने मन को तेरी ओर उठाता हूँ। १

हे मेरे परमेश्वर, मैंने तुम्हीं पर भरोसा रखा है, मुझे लज्जित होने न दे; मैं शत्रु मुझ पर जयजयकार करने न पाएँ। २ वरन् जितने तेरी बाट जोहते हैं उम्मे से कोई लज्जित न होगा; परन्तु जो अकारण विच्वासघाती है वे ही लज्जित होंगे। ३ हे यहोवा, अपने मार्ग मुझ को दिखा; अपना पथ मुझे बता दो। ४ मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे, क्योंकि तू मेरा उद्धार करनेवाला परमेश्वर है; मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता रहता हूँ। ५ हे यहोवा, अपनी दया और कर्णा के कामों को स्मरण कर; क्योंकि वे तो अनन्तकाल से होते आए हैं। ६ हे यहोवा, अपनी भलाई के कारण मेरी जवानी के पापों और मेरे अपराधों को स्मरण न कर; अपनी कर्णा ही के अनुसार तू मुझे स्मरण कर। ७ यहोवा भला और सीधा है; इसलिए वह पापियों को अपना मार्ग दिखलाएगा। ८ वह नम्र लोगों को न्याय की शिक्षा देगा, हाँ, वह नम्र लोगों को अपना मार्ग दिखलाएगा। ९ जो यहोवा की वाचा और चितौनियों को मानते हैं, उनके लिये उसके सब मार्ग कर्णा और सच्चाई है। १० हे यहोवा, अपने नाम के निमित्त मेरे अर्थमें को जो बहुत है क्षमा कर। ११ वह कौन है जो यहोवा का भय मानता है? प्रभु उसको उसी मार्ग पर जिससे वह प्रसन्न होता है चलाएगा। १२ वह कुशल से टिका रहेगा, और उसका वंश पृथ्वी पर अधिकारी होगा। १३ यहोवा के भेद को वही जानते हैं जो उससे डरते हैं, और वह अपनी वाचा उन पर प्रगट करेगा। १४ मेरी आँखें सदैव यहोवा पर टक्टकी लगाए रहती हैं, क्योंकि वही मेरे पाँवों को जाल में से छुड़ाएगा। १५ हे यहोवा, मेरी ओर फिरकर मुझ पर दया कर; क्योंकि मैं अकेला और पीड़ित हूँ। १६ मेरे हृदय का क्लेश बढ़ गया है, तू मुझ को मेरे दुःखों से छुड़ा ले। १७ तू मेरे दुःख और कष्ट पर दृष्टि कर, और मेरे सब पापों को क्षमा कर। १८ मेरे शत्रुओं को देख कि वे कैसे बढ़ गए हैं, और मुझसे बड़ा बैंग रखते हैं। १९ मेरे प्राण की रक्षा कर, और मुझे छुड़ा; मुझे लज्जित न होने दे, क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूँ। २० खराई और सिधाई मुझे सुखित रखे, क्योंकि मुझे तेरी ही आशा है। २१ हे परमेश्वर इमाएल को उसके सारे संकर्तों से छुड़ा ले।

२६ दाऊद का भजन हे यहोवा, मेरा न्याय कर, क्योंकि मैं खराई से चलता

रहा हूँ, और मेरा भरोसा यहोवा पर अटल बना है। २ हे यहोवा, मुझ को जाँच और परख; मेरे मन और हृदय को परख। ३ क्योंकि तेरी कर्णा तो मेरी आँखों के सामने है, और मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलता रहा हूँ। ४ मैं निकम्मी चाल चलनेवालों के संग नहीं बैठा, और न मैं कपटियों के साथ कहीं जाँचा; ५ मैं कुकर्मियों की संगति से घृणा रखता हूँ, और दूरों के संग न बढ़ूँगा। ६ मैं अपने हाथों को निर्दोषता के जल से धोऊँगा, तब हे यहोवा मैं तेरी बेटी की प्रदक्षिणा करूँगा, ७ ताकि तेरा धन्यवाद ऊँचे शब्द से कहूँ, और तेरे सब आश्रयकर्मों का वर्णन करूँ। ८ हे यहोवा, मैं तेरे धाम से तेरी महिमा के निवास-स्थान से प्रीति रखता हूँ। ९ मेरे प्राण को पापियों के साथ, और मेरे जीवन की हत्यारों के साथ न मिला। १० वे तो ओछापन करने में लगे रहते हैं, और उनका दाहिना हाथ घृस से भरा रहता है। ११ परन्तु मैं तो खराई से चलता रहूँगा। तू मुझे छुड़ा ले, और मुझ पर दया कर। १२ मेरे पाँव चौरस स्थान में स्थिर हैं; सभाओं में मैं यहोवा को धन्य कहा करूँगा।

२७ दाऊद का भजन यहोवा मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से ढँसँ?

यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किसका भय खाऊँ? १ जब कुकर्मियों ने जो मुझे सताते और मुझी से बैर रखते थे, मुझे खा डालने के लिये मुझ पर चढ़ाई की, तब वे ही तोकर खाकर गिर पड़े। २ चाहे सेना भी मेरे विस्तु छावनी डाले, तो भी मैं न डसँगा; चाहे मेरे विस्तु लड़ाई ठन जाए, उस दशा में भी मैं हियाव बाँधे निश्चित रहूँगा। ३ एक वर मैंने यहोवा से माँगा है, उरी के यत्र में लगा रहूँगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊँ, जिससे यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूँ, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूँ। ४ क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने माण्डप में छिपा रखेगा; अपने तम्बू के गूम स्थान में वह मुझे छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा। ५ अब मेरा सिर में चारों ओर के शत्रुओं से ऊँचा होगा; और मैं यहोवा के तम्बू में अनन्द के बलिदान चढ़ाऊँगा; और मैं गाँँगा और यहोवा के लिए गीत गाऊँगा। ६ हे यहोवा, मेरा शब्द सुन, मैं पुकारता हूँ, तू मुझ पर दया कर और मुझे उत्तर दे। ७ तूने कहा है, “मेरे दर्शन के खोजी हो।” इसलिए मेरा मन तुझ से कहता है, “हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूँगा।” ८ अपना मुख मुझसे न छिपा। अपने दास को झोंच करके न हटा, तू मेरा सहायक बना है। ९ हे मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर मुझे त्याग न दे, और मुझे छोड़ न दे! १० मेरे माता-पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा। ११ हे यहोवा, अपना मार्ग मुझे सिखा, और मेरे द्वाहियों के कारण मुझ की चौरस रास्ते पर ले चल। १२ मुझ को मेरे सतानेवालों की इच्छा पर न छोड़, क्योंकि इठे साक्षी जो उपद्रव करने की धून मैं हैं मेरे विस्तु उठे हैं। १३ यदि मुझे विच्वास न होता कि जीवितों की पृथ्वी पर यहोवा की भलाई को देखूँगा, तो मैं मुछित हो जाता। १४ यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बाँध और तेरा हृदय ढूढ़ रहे; हाँ, यहोवा ही की बाट जोहता रह!

२८ दाऊद का भजन हे यहोवा, मैं तुम्हीं को पुकासँगा; हे मेरी चट्टान, मेरी

पुकार अनसुनी न कर, ऐसा न हो कि तेरे चुप रहने से मैं कब्र में पड़े हुओं के समान हो जाऊँ जो पाताल में चले जाते हैं। १ जब मैं तेरी दृहाई दूँ और तेरे पवित्रस्थान की भीती कोठाई की ओर अपने हाथ उठाऊँ, तब मेरी गिडगिडाहट की बात सुन ले। २ उन दूरों और अनर्थकारियों के संग मुझे न घसीट; जो अपने पडोसियों से बांते तो मेल की बोलते हैं, परन्तु हृदय में बुराई रखते हैं। ३ उनके कामों के और उनकी करनी की बुराई के अनुसार उनसे बर्ताव कर, उनके हाथों के काम के अनुसार उन्हें बदला दे; उनके कामों का पलटा उठें दे। ४ क्योंकि वे यहोवा के कामों को और उसके हाथ के कामों को नहीं समझते, इसलिए वह उन्हें पाड़ाड़ेगा और फिर न उठाएगा। ५ यहोवा धन्य है; क्योंकि उसने मेरी गिडगिडाहट को सुना है। ६ यहोवा मेरा बल और मेरी ढाल है; उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिली है; इसलिए मेरा हृदय प्रफुल्लित है; और मैं गीत गाकर उसका धन्यवाद करूँगा। ७ यहोवा अपने लोगों की सामर्थ्य है, वह अपने अधिवितक के लिये उद्धार का दृढ़ गढ़ है। ८ हे यहोवा अपनी प्रजा का उद्धार कर, और अपने निज भग के लोगों को आशीष दे, और उनकी चरवाही कर और सदैव उन्हें सम्भाले रह।

२९ दाऊद का भजन हे परमेश्वर के पुत्रों, यहोवा का, हाँ, यहोवा ही का

गुणानुदाकरो, यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को सराहो। १ यहोवा के नाम की महिमा करो; पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को डण्डवत् करो। २ यहोवा की वाणी में तो खराई से चलता रहता है, यहोवा धने मेंधों के ऊपर सुनाई देती है; प्रतापी परमेश्वर गरजता है, यहोवा धने मेंधों के ऊपर रहता है। ३ यहोवा की वाणी शक्तिशाली है, यहोवा की वाणी प्रतापमय है। ४ यहोवा की वाणी देवदारों को तोड़ डालती है, यहोवा

लबानोन के देवदारों को भी तोड़ डालता है। ६ वह लबानोन को बछड़े के समान और सियोन को सॉड के समान उछालता है। ७ यहोवा की वाणी आग की लपटों को चीरती है। ८ यहोवा की वाणी वन को हिला देती है, यहोवा कांदेश के वन को भी कंपाता है। ९ यहोवा की वाणी से हिरनियों का गर्भपात हो जाता है। और जंगल में पतझड़ होता है; और उसके मन्दिर में सब कोई “महिमा ही महिमा” बोलते रहते हैं। १० जल-प्रलय के समय यहोवा विराजमान था; और यहोवा सर्वदा के लिये राजा होकर विराजमान रहता है। ११ यहोवा अपनी प्रजा को बल देगा; यहोवा अपनी प्रजा को शान्ति की आशीष देगा।

३० भजन की प्रतिष्ठा के लिये दाऊद का भजन हे यहोवा, मैं तुझे सराहँगा

क्योंकि तने मुझे खीचकर निकाला है, और मेरे शत्रुओं को मुझ पर अनन्द करने नहीं दिया। २ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैंने तेरी दुष्टी री और तने मुझे चंगा किया है। ३ हे यहोवा, तने मेरा प्राण अधोतोक में से निकाला है, तने मुझ को जीवित रखा और कब्र में पड़ने से बचाया है। (Sheol h7585) ४ तुम जो विश्वासयोग हो! यहोवा की स्तुति करो, और जिस पवित्र नाम से उसका स्मरण होता है, उसका धन्यवाद करो। ५ क्योंकि उसका क्रोध, तो क्षण भर का होता है, परन्तु उसकी प्रसन्नता जीवन भर की होती है। कदाचित् रात को रोना पड़े, परन्तु सर्वे आनन्द पहुँचेगा। ६ मैंने तो अपने चैन के समय कहा था, कि मैं कभी नहीं टलने का। ७ हे यहोवा, अपनी प्रसन्नता से तूने मेरे पहाड़ को ढूँढ़ और स्थिर किया था; जब तूने अपना मुख फेर लिया तब मैं घबरा गया। ८ हे यहोवा, मैंने तुझी को पुकारा; और प्रभु से पिडिगिडाकर यह बिनती की, कि ९ जब मैं कब्र में चला जाऊँगा तब मेरी मृत्यु से क्या लाभ होगा? क्या मिट्टी तेरा धन्यवाद कर सकती है? क्या वह तेरी विश्वसनीयता का प्रचार कर सकती है? १० हे यहोवा, सुन, मुझ पर दया कर; हे यहोवा, तू मेरा सहायक हो। ११ तूने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला; तूने मेरा टाट उत्तरवाकर मेरी कमर में आनन्द का पटका बाँधा है; १२ ताकि मेरा मन तेरा भजन गाता रहे और कभी चुप न हो। हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं सर्वदा तेरा धन्यवाद करता रहँगा।

३१ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन हे यहोवा, मैं तुझ में शरण

लेता हूँ, मुझे कभी लज्जित होना न पड़े; तु अपने धर्मी होने के कारण मुझे छुड़ा ले! २ अपना कान मेरी ओर लगाकर तुरन्त मुझे छुड़ा ले! ३ क्योंकि तू मेरे लिये चट्टान और मेरा गढ़ है, इसलिए अपने नाम के निमित्त मेरी अगुआई कर, और मुझे आगे ले चल। ४ जो जाल उन्होंने मेरे लिये बिछाया है उससे तू मुझ को छुड़ा ले, क्योंकि तू ही मेरा ढूँढ गढ़ है। ५ मैं अपनी आत्मा को रो रही हाथ में सौंप देता हूँ; हे यहोवा, हे विश्वासयोग परमेश्वर, तूने मुझे मोल लेकर मुक्त किया है। ६ जो व्यर्थ मूर्तियों पर मन लगाते हैं, उनसे मैं धृणा करता हूँ, परन्तु मेरा भरोसा यहोवा ही पर है। ७ मैं तेरी करण्या से मगन और आनन्दित हूँ, क्योंकि तने मेरे दूँख पर दुष्टि की है, मेरे कष्ट के समय तूने मेरी सुधि ली है, ८ और तूने मुझे शत्रु के हाथ में पड़ने नहीं दिया; तूने मेरे पाँवों को चौड़े स्थान में खड़ा किया है। ९ हे यहोवा, मुझ पर दया कर क्योंकि मैं संकट में हूँ; मेरी आँखें बरन् मेरा प्राण और शरीर सब शोक के मारे घुले जाते हैं। १० मेरा जीवन शोक के मारे और मेरी आयु कराहते-कराहते घट चली है; मेरा बल मेरे अधर्म के कारण जाता रहा, और मेरी हड्डियाँ घुल गई। ११ अपने सब विरोधियों के कारण मेरे पड़ोसियों में मेरी नामग्राही हुई है, अपने जान-पहचानवालों के लिये डर का करण हूँ; जो मुझ को सङ्कट पर देखते हैं वह मुझसे दूर भाग जाते हैं। १२ मैं मृतक के समान

लोगों के मन से बिसर गया; मैं टूटे बर्तन के समान हो गया हूँ। १३ मैंने बहुतों के मूँह से अपनी निन्दा सुनी, चारों ओर भय ही भय है। जब उन्होंने मेरे विद्ध आपस में सम्मति की तब मेरे प्राण लेने की युक्ति की। १४ परन्तु हे यहोवा, मैंने तुझी पर भरोसा रखा है, मैंने कहा, “तू मेरा परमेश्वर है।” १५ मेरे दिन तेरे हाथ में हैं; तु मुझे मेरे शत्रुओं और मेरे सतानेवालों के हाथ से छुड़ा। १६ अपने दास पर अपने मुँह का प्रकाश चमका; अपनी करण्या से मेरा उद्धार कर। १७ हे यहोवा, मुझे लज्जित न होने दे क्योंकि मैंने तुझको पुकारा है; दूष लज्जित हों और वे पाताल में चूपचाप पड़े रहें। (Sheol h7585) १८ जो अहंकार और अपमान से धर्मी की निन्दा करते हैं, उनके झूठ बोलनेवाले मुँह बन्द किए जाएँ। १९ आहा, तेरी भलाई क्या ही बड़ी है जो तने अपने डरवैयों के लिये रख डोड़ी है, और अपने शरणागतों के लिये मनुष्यों के सामने प्रगत भी की है। २० तू उन्हें दर्शन देने के गुम स्थान में मनुष्यों की बुरी गोँधी से गुम रखेगा; तू उनको अपने मण्डप में झगड़े-रगड़े से छिपा रखेगा। २१ यहोवा धन्य है, क्योंकि उसने मुझे गढ़वाले नगर में रखकर मुझ पर अद्युत करण्या की है। २२ मैंने तो घबराकर कहा था कि मैं यहोवा की दुष्टि से दूर हो गया। तो भी जब मैंने तेरी दुर्वाइ दी, तब तूने मेरी गिडिगिडाहट को सुन लिया। २३ हे यहोवा के सब भत्तों, उसने प्रेम रखो! यहोवा विश्वासयोग लोगों की तो रक्षा करता है, परन्तु जो अहंकार करता है, उसको वह भली भाँति बदला देता है। २४ हे यहोवा पर आशा रखनेवालों, हियाव बाँधो और तुम्हारे हृदय ढूँढ़ रहें।

३२ दाऊद का भजन मशकील क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा

किया गया, और जिसका पाप ढाँपा गया हो। १ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले, और जिसकी आत्मा में कपट न हो। २ जब मैं चुप रहा तब दिन भर कराहते-कराहते मेरी हड्डियाँ पिघल गई। ३ क्योंकि रात-दिन मैं तेरे हाथ के नीचे दबा रहा; और मेरी तरावत धूपकाल की सी झर्णी बनती गई। (सेला) ४ जब मैंने अपना पाप तुझ पर प्राप्त किया और अपना अधर्म न छिपाया, और कहा, “मैं यहोवा के सामने अपने अपराधों को मान लैँगा;” तब तूने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया। (सेला) ५ इस कारण हर एक भक्त तुझ से ऐसे समय में प्रार्थना करे जबकि तू मिल सकता है। निश्चय जब जल की बड़ी बाढ़ आएँ तो भी उस भक्त के पास न पहुँचेंगी। ७ तू मेरे छिपने का स्थान है; तू संकट से मेरी रक्षा करेगा, तू मुझे चारों ओर से छुटकारे के गीतों से घेर लेगा। (सेला) ८ मैं तुझे बुद्धि दृঁगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उसमें तेरी अगुआई करूँगा, मैं तुझ पर क्रापादृष्टि रखूँगा और सम्मति दिया करूँगा। ९ तुम घोड़े और खच्चर के समान न बरों जो समझ नहीं रखते, उनकी उमंग लगाम और रास से रोकनी पड़ती है, नहीं तो वे तेरे बश में नहीं आने के। १० दृष्टि को तो बहत पीड़ा होगी; परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह करण्या से धिरा रहेगा। ११ हे धर्मियों यहोवा के कारण आनन्दित और मगन हो, और हे सब सीधे मनवालों आनन्द से जयजयकार करो!

३३ हे धर्मियों, यहोवा के कारण जयजयकार करो। क्योंकि धर्मी लोगों को

स्तुति करना शोभा देता है। १ वीणा बजा-बजाकर यहोवा का धन्यवाद करो, दस तारवाली सारंगी बजा-बजाकर उसका भजन गाओ। २ उसके लिये नया गीत गाओ, जयजयकार के साथ भली भाँति बजाओ। ३ क्योंकि यहोवा का वचन सीधा है; और उसका सब काम निष्पक्षता से होता है। ४ वह धर्मिकता और न्याय से प्रीति रखता है; यहोवा की करण्या से पृथ्वी भरपूर है। ५ आकाशमण्डल यहोवा के वचन से, और उसके सारे गण उसके मूँह की व्यास से बने। ७ वह समुद्र का जल ढेर के समान इकट्ठा करता; वह गहरे सागर को

अपने भण्डार में रखता है। ८ सारी पृथ्वी के लोग यहोवा से डरें, जगत के सब निवासी उसका भय मानें। ९ क्योंकि जब उसने कहा, तब हो गया; जब उसने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया। १० यहोवा जाति-जाति की युक्ति को व्यर्थ कर देता है; वह देश-देश के लोगों की कल्पनाओं को निष्फल करता है। ११ यहोवा की योजना सर्वदा स्थिर रहेगी, उसके मन की कल्पनाएँ पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेंगी। १२ क्या ही धन्य है वह जाति जिसका परमेश्वर यहोवा है, और वह समाज जिसे उसने अपना निज भाग होने के लिये चुन लिया हो! १३ यहोवा स्वर्ग से दृष्टि करता है, वह सब मनुष्यों को निहारता है; १४ अपने निवास के स्थान से वह पृथ्वी के सब रहनेवालों को देखता है, १५ वही जो उन सभी के हृदयों को गढ़ता, और उनके सब कामों का विचार करता है। १६ कोई ऐसा राजा नहीं, जो सेना की बहुतायत के कारण बच सके; वीर अपनी बड़ी शक्ति के कारण छूट नहीं जाता। १७ विजय याने के लिए घोड़ा व्यर्थ सुक्ष्मा है, वह अपने बड़े बल के द्वारा किसी को नहीं बचा सकता है। १८ देखो, यहोवा की दृष्टि उसके डरवैयों पर और उन पर जो उसकी कस्ता की आशा रखते हैं, बनी रहती है, १९ कि वह उनके प्राण को मृत्यु से बचाए, और अकाल के समय उनको जीवित रखे। २० हम यहोवा की बाट जाहें हैं; वह हमारा सहायक और हमारी ढाल ठहरा है। २१ हमारा हृदय उसके कारण अनन्दित होगा, क्योंकि हमने उसके पवित्र नाम का भरोसा रखा है। २२ हे यहोवा, जैसी तुझ पर हमारी आशा है, वैसी ही तेरी कम्पणा भी हम पर हो।

३४ दाऊद का भजन जब वह अबीमेलेक के सामने बौरहा बना, और अबीमेलेक ने उसे निकाल दिया, और वह चला गया मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करँगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी। २३ मैं यहोवा पर घमण्ड करँगा; नम्र लोग यह सुनकर आनन्दित होंगे। २४ मैं साथ यहोवा की बड़ाई करो, और आओ हम मिलकर उसके नाम की स्तुति करें; २५ मैं यहोवा के पास गया, तब उसने मेरी सुन ली, और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया। २६ जिन्होंने उसकी ओर दृष्टि की, उन्होंने ज्योति पाई; और उनका मुँह कभी काला न होने पाया। २७ इस दीन जन ने पकारा तब यहोवा ने सुन लिया, और उसको उसके सब कष्टों से छुड़ा लिया। २८ यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उनको बचाता है। २९ चरखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है! क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो उसकी शरण लेता है। ३० हे यहोवा के पवित्र लोगों, उसका भय मानो, क्योंकि उसके डरवैयों को किसी बात की घटी नहीं होती! ३१ जबान सिहों को तो घटी होती और वे भ्रूँ भी रह जाते हैं, परन्तु यहोवा के खोजियों को किसी भली वस्तु की घटी न होगी। ३२ हे बच्चों, आओ मेरी सुरो, मैं तुम को यहोवा का भय मानना सिखाऊँगा। ३३ वह कौन मनुष्य है जो जीवन की इच्छा रखता, और दीर्घायु चाहता है ताकि भलाई देखे? ३४ अपनी जीभ को बुराई से रोक रख, और अपने मुँह की चौकरी कर कि उससे छल की बात न निकले। ३५ बुराई को छोड़ और भलाई कर; मेल को ढूँढ़ और उसी का पीछा कर। ३६ यहोवा की आँखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान भी उनकी दुराई की ओर लगे रहते हैं। ३७ यहोवा बुराई कनेवालों के विमुख रहता है, ताकि उनका स्मरण पृथ्वी पर से मिटा डाले। ३८ धर्मी दुर्वाइ देते हैं और यहोवा सनता है, और उनको सब विपत्तियों से छुड़ाता है। ३९ यहोवा टूटे मनवालों के समीप रहता है, और पिसे हूँओं का ढाल करता है। ४० धर्मी पर बहत सी विपत्तियाँ पड़ती ते हैं, परन्तु यहोवा उसको उन सबसे मुक्त करता है। ४१ वह उसकी हड्डी-हड्डी की रक्षा करता है; और उनमें से एक भी टूटने नहीं पाता। ४२ दृष्टि अपनी बुराई के द्वारा मारा जाएगा; और धर्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे। ४३ यहोवा अपने दासों का प्राण

मोल लेकर बचा लेता है; और जितने उसके शरणागत है उनमें से कोई भी दोषी न ठहरेगा।

३५ दाऊद का भजन है यहोवा, जो मेरे साथ मुकद्दमा लड़ते हैं, उनके साथ तू

भी मुकद्दमा लड़; जो मुझसे युद्ध करते हैं, उनसे तू युद्ध कर। १ ढाल और भाला लेकर मेरी सहायता करने को खड़ा हो। २ बच्चों को खीच और मेरा पीछा करनेवालों के सामने आकर उनको रोक; और मुझसे कह, कि मैं तेरा उद्धार हूँ। ३ जो मेरे प्राण के ग्राहक हैं वे लज्जित और निरादर हों! जो मेरी हानि की कल्पना करते हैं, वे पीछे हटाए जाएँ और उनका मुँह काला हो। ४ वे बायु से उड़ जानेवाली भूसी के समान हों, और यहोवा का दूत उन्हें हॉकता जाए। ५ उनका मार्ग अंधियारा और फिसलाहा हो, और यहोवा का दूत उनको खेड़ेता जाए। ६ क्योंकि अकारण उन्होंने मेरे लिये अपना जाल गूँह में बिछाया; अकारण ही उन्होंने मेरा प्राण लेने के लिये गृह्ण खोदा है। ७ अचानक उन पर विपत्ति आ पड़े! और जो जाल उन्होंने बिछाया है उसी में वे आप ही फैसे; और उसी विपत्ति में वे आप ही पड़ें! ८ परन्तु मैं यहोवा के कारण अपने मन में मग्न होऊँगा, मैं उसके किए हुए उद्धार से हर्षित होऊँगा। ९ मेरी हड्डी-हड्डी कहेंगी, “हे यहोवा, तेरे तुल्य कौन है, जो दीन को बड़े-बड़े बलवन्तों से बचाता है, और लुटेरों से दीन दरिद्र लोगों की रक्षा करता है?” १० अधर्मी साक्षी खड़े होते हैं, वे मुझ पर झूठा अरोप लगाते हैं। ११ वे मुझसे भलाई के बदले बुराई करते हैं, यहाँ तक कि मेरा प्राण ऊब जाता है। १२ जब वे रोगी थे तब तो मैं टाट पहने रहा, और उपवास कर करके दुःख उठाता रहा; मुझे मेरी प्रार्थना का उत्तर नहीं मिला। १३ मैं ऐसी भावना रखता था कि मानो वे मेरे संगी या भाई हैं, जैसा कोई माता के लिये विलाप करता हो, वैसा ही मैंने शोक का पहरावा पहने हुए सिर झुकाकर शोक किया। १४ परन्तु जब मैं लैंगड़ाने लगा तब वे लोग आनन्दित होकर इकट्ठे हुए, नीच लोग और जिन्हें मैं जानता भी न था वे मेरे विस्तृ इकट्ठे हुए; वे मुझे लगातार फाड़ते रहे; १५ आदर के बिना वे मुझे ताना मारते हैं, वे मुझ पर दाँत पीसते हैं। १६ हे प्रभु, तू कब तक देखता रहेगा? इस विपत्ति से, जिसमें उन्होंने मुझे डाला है मुझ को छुड़ा! जबान सिंहों से मेरे प्राण को बचा ले! १७ मैं बड़ी सभा में तेरा धन्यवाद करँगा; बहुत लोगों के बीच मैं तेरी स्तुति करँगा। १८ मेरे झ़ाट बोलनेवाले शत्रु मेरे विस्तृ आनन्द न करने पाएँ। १९ क्योंकि वे मेल की बातें नहीं बोलते, परन्तु देख मैं जो चुपचाप रहते हैं, उनके विस्तृ छल की कल्पनाएँ करते हैं। २० और उन्होंने मेरे विस्तृ मुँह पसार के कहा; “आहा, आहा, हमने अपनी आँखों से इशारा न करने पाएँ। २१ क्योंकि वे मेल की बातें नहीं बोलते, परन्तु देख मैं जो चुपचाप रहते हैं, उनके विस्तृ छल की कल्पनाएँ करते हैं। २२ हे यहोवा, तेरे तो देखा है; चुप न रह। हे प्रभु, मुझसे दूर न रह। २३ उठ, मैं न्याय के लिये जाग, हे मैं परमेश्वर, हे मैं प्रभु, मेरा मुकद्दमा निपटाने के लिये आ! २४ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू अपने धार्मिकता के अनुसार मेरा न्याय चुका; और उन्हें मेरे विस्तृ आनन्द करने न दे! २५ वे मन में न कहने पाएँ, “आहा! हमारी तो इच्छा पूरी हड्डी!” वे यह न कहें, “हम उसे निगल गए हैं।” २६ जो मेरी हानि से आनन्दित होते हैं उनके मुँह लज्जा के मारे एक साथ काले हो! जो मेरे विस्तृ बड़ाई मारते हैं वह लज्जा और अनादर से ढूँज जाएँ। २७ जो मेरे धर्म से प्रसन्न रहते हैं, वे जयजयकार और आनन्द करें, और निरन्तर करते रहें, यहोवा की बड़ाई हो, जो अपने दास के कुशल से प्रसन्न होता है। २८ तब मेरे मुँह से तेरी धर्म की चर्चा होगी, और दिन भर तेरी स्तुति निकलेगी।

३६ प्रधान बजानेवाले के लिये यहोवा के दास दाऊद का भजन दृष्ट जन का

अपाराध उसके हृदय के भीतर कहता है, परमेश्वर का भय उसकी दृष्टि में नहीं है। २९ हे यह अपने अधर्म के प्रगट होने और धृष्टि ठहरने के विषय अपने

मन में चिकनी चुपड़ी बातें विचारता है। ३ उसकी बातें अनर्थ और छल की हैं, उसने बुद्धि और भलाई के काम करने से हाथ उठाया है। ४ वह अपने बिछौते पर पड़े-पड़े अनर्थ की कल्पना करता है; वह अपने कुमार्ग पर दृढ़ता से बना रहता है; बुराई से वह हाथ नहीं उठाता। ५ हे यहोवा, तेरी कस्ता स्वर्ग में है, तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुँची है। ६ तेरा धर्म ऊँचे पर्वतों के समान है, तेरा न्याय अथाह सागर के समान हैं; हे यहोवा, तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा करता है। ७ हे परमेश्वर, तेरी कस्ता कैसी अनमोल है! मनुष्य जैसे पंखो के तले शरण लेते हैं। ८ वे तेरे भवन के भोजन की बहातयत से तृप्त होंगे, और तू अपनी सुख की नीरी में से उहें पिलाएगा। ९ क्योंकि जीवन का सोता तेरी ही पास है, तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएँगे। १० अपने जाननेवालों पर कस्ता करता रह, और अपने धर्म के काम सीधे मनवालों में करता रह। ११ अहंकारी मुझ पर लात उठाने न पाए, और न दृश्य अपने हाथ के बल से मुझे भगाने पाए। १२ वहाँ अनर्थकारी गिर पड़े हैं, वे ढेकल दिए गए, और फिर उठन सकेंगे।

३७ दाऊद का भजन कुकर्मियों के कारण मत कुछ, कुटिल काम करनेवालों

के विषय डाह न कर! १ क्योंकि वे घास के समान झट कट जाएँगे, और हरी घास के समान मुर्जा जाएँगे। २ यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर; देश में बसा रह, और सच्चाई में मन लगाए रह। ३ यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनरथों को पूरा करेगा। ४ अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा। ५ और वह तेरा धर्म ज्योति के समान, और तेरा न्याय दोपहर के उजियाले के समान प्रगट करेगा। ६ यहोवा के सामने चुपचाप रह, और धीरज से उसकी प्रतिक्षा कर; उस मनुष्य के कारण न कुछ, जिसके काम सफल होते हैं, और वह बुरी युक्तियों को निकालता है। ७ क्रोध से पेरे रह, और जलजलाहट को छोड़ दे। मत कुछ, उससे बुराई ही निकलेगी। ८ क्योंकि कुकर्मी लोग काट डाले जाएँगे; और जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वही पृथकी के अधिकारी होंगे। ९ थोड़े दिन के बीतने पर दृश्य रहेगा ही नहीं; और तू उसके स्थान को भली भाँति देखने पर भी उसको न पाएगा। १० परन्तु नम्र लोग पृथकी के अधिकारी होंगे, और बड़ी शान्ति के कारण अनन्द मनाएँगे। ११ दृश्य धर्मी के विद्धु बुरी युक्ति निकालता है, और उस पर दौत पीसता है; १२ परन्तु प्रभु उस पर हँसेगा, क्योंकि वह देखता है कि उसका दिन अनेवाला है। १३ दृश्य लोग तलवार छिन्चे और धनुष ढाँचा हुए हैं, ताकि दीन दरिद्र को पिरा दें, और सीधी चाल चलनेवालों को बध करें। १४ उनकी तलवारों से उन्हीं के हृदय छिड़ेंगे, और उनके धनुष तोड़ जाएँगे। १५ धर्मी का थोड़ा सा धन दृश्यों के बहुत से धन से उत्तम है। १६ क्योंकि दृश्यों की भूजाएँ तो तोड़ी जाएँगी, परन्तु यहोवा धर्मियों को सम्भालता है। १७ यहोवा खेरे लोगों की आयु की सुधि रखता है, और उनका भाग सदैव बना रहेगा। १८ विपत्ति के समय, वे लज्जित न होंगे, और अकाल के दिनों में वे तृप्त रहेंगे। १९ दृश्य लोग नाश हो जाएँगे, और यहोवा के शत्रु खेत की सुधरी घास के समान नाश होंगे, वे धुएँ के समान लुप्त हो जाएँगे। २० दृश्य ऋण लेता है, और भरता नहीं परन्तु धर्मी अनुग्रह करके दान देता है; २१ क्योंकि जो उससे आशीष पाते हैं वे तो पृथकी के अधिकारी होंगे, परन्तु जो उससे शापित होते हैं, वे नाश हो जाएँगे। २२ मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है, और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है; २३ चाहे वह गिरे तो भी पड़ा न रह जाएगा, क्योंकि यहोवा उसका हाथ थामे रहता है। २४ मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूँ; परन्तु न तो कभी धर्मी को त्याग हुआ, और न उसके बंश को टुकड़े माँगते देखा है। २५ वह तो दिन भर अनुग्रह कर करके क्रृष देता है, और उसके बंश पर आशीष फलती रहती है। २६ बुराई को

छोड़ भलाई कर; और तू सर्वदा बना रहेगा। २७ क्योंकि यहोवा न्याय से प्रीति रखता; और अपने भक्तों को न तजेगा। उनकी तो रक्षा सदा होती है, परन्तु दृश्यों का बंश काट डाला जाएगा। २८ धर्मी लोग पृथकी के अधिकारी होंगे, और उसमें सदा बसे रहेंगे। २९ धर्मी अपने मैंह से बुद्धि की बातें करता, और न्याय का वचन कहता है। ३० उसके परमेश्वर की व्यवस्था उसके हृदय में बनी रहती है, उसके पैर नहीं फिसलते। ३१ दृश्य धर्मी की ताक में रहता है। और उसके मार डालने का यथ करता है। ३२ यहोवा उसको उसके हाथ में न छोड़ेगा, और जब उसका विचार किया जाए तब वह उसे दोषी न ठहराएगा। ३३ यहोवा की बाट जोहता रह, और उसके मार्ग पर बना रह, और वह तुड़े बढ़ाकर पृथकी का अधिकारी कर देगा; जब दृश्य काट डाले जाएँगे, तब तू देखेगा। ३४ मैंने दृश्य को बड़ा पराक्रमी और ऐसा फैलता हुए देखा, जैसा कोई हरा पेड़ अपने निज भूमि में फैलता है। ३५ परन्तु जब कोई उधर से गया तो देखा कि वह वहाँ है ही नहीं; और मैंने भी उसे ढूँढ़ा, परन्तु कहीं न पाया। ३६ खेरे मनुष्य पर दृष्टि कर और धर्मी को देख, क्योंकि मेल से रहनेवाले पुस्त का अन्तफल अच्छा है। ३७ परन्तु अपराधी एक साथ सत्यानाश किए जाएँगे; दृश्यों का अन्तफल सर्वनाश है। ३८ धर्मियों की मुकियि यहोवा की ओर से होती है, संकट के समय वह उनका दृश्य गढ़ है। ३९ यहोवा उनकी सहायता करके उनको बचाता है; वह उनको दृश्यों से छुकाकर उनका उद्धार करता है, इसलिए कि उहोंने उसमें अपनी शरण ली है।

३८ यादगार के लिये दाऊद का भजन है यहोवा क्रोध में आकर मुझे डिङ्क

न दे, और न जलजलाहट में आकर मेरी ताड़ना कर! १ क्योंकि तेरे तीर मुझ में लगे हैं, और मैं तेरे हाथ के नीचे दबा हूँ। २ तेरे क्रोध के कारण मेरे शरीर में कुछ भी आरोग्यता नहीं; और मेरे पाप के कारण मेरी हड्डियों में कुछ भी चैन नहीं। ३ क्योंकि मेरे अधर्म के कामों में मेरा सिर ढूँढ़ गया, और वे भारी बोझ के समान मेरे सहने से बाहर हो गए हैं। ४ मेरी मूर्खता के पाप के कारण मेरे घाव सङ्ग गए और उनसे दुर्गन्ध आती है। ५ मैं बहुत दृश्यी हूँ और दृश्य गया हूँ, दिन भर मैं शोक का पहराबा पहने हुए चलता फिरता हूँ। ६ क्योंकि मेरी कर्म में जलन है, और मेरे शरीर में आरोग्यता नहीं। ७ मैं निर्बल और बहुत ही चूर हो गया हूँ; मैं अपने मन की बघराहट से कराहता हूँ। ८ हे प्रभु मेरी सारी अभिलाषा तेरे सम्मुख है, और मेरा कराहना तुझ से छिपा नहीं। ९ मेरा हृदय धड़कता है, मेरा बल घटाता जाता है; और मेरी आँखों की ज्योति भी मुझसे जाती रही। १० मैंने मित्र और मेरे संगी मेरी विपत्ति में अलग हो गए, और मेरे कुटुम्बी भी दूर जा खड़े हुए। ११ मेरे प्राण के ग्राहक मेरे लिये जात बिछाते हैं, और मेरी हानि का यत्र करनेवाले दृष्टान् की बातें बोलते, और दिन भर छल की युक्ति सोचते हैं। १२ परन्तु मैं बहरे के समान सुनता ही नहीं, और मैं गैंगे के समान मूँह नहीं खोलता। १३ वरन् मैं ऐसे मनुष्य के तुल्य हूँ जो कुछ नहीं सुनता, और जिसके पूँछ से विवाद की कोई बात नहीं निकलती। १४ परन्तु हे यहोवा, मैंने तुझ ही पर अपनी आशा लगाई है, हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, तू ही उत्तर देगा। १५ क्योंकि मैंने कहा, “ऐसा न हो कि वे मुझ पर आनन्द करें; जब मेरा पाँव फिसल जाता है, तब मुझ पर अपनी बड़ाई मारते हैं।” १६ क्योंकि मैं तो अब गिरने ही पर हूँ; और मेरा शोक निरन्तर मेरे सामने है। १७ इसलिए कि मैं तो अपने अधर्म को प्रगट करूँगा, और अपने पाप के कारण खेदित रहँगा। १८ परन्तु मेरे शत्रु अनगिनत हैं, और मेरे बैरी बहुत हो गए हैं। १९ जो भलाई के बदलने में बुराई करते हैं, वह भी मेरे भलाई के पीछे चलने के कारण मुझसे विरोध करते हैं। २० हे यहोवा, मुझे छोड़ न दो! हे मेरे परमेश्वर, मुझसे दूर न हो! २१ हे यहोवा, हे मेरे उद्धारकर्ता, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर!

३९ यद्गूरन् प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन मैंने कहा, “मैं अपनी चाल चलन में चौकटी करूँगा, ताकि मेरी जीभ से पाप न हो; जब तक दृष्टि मेरे सामने है, तब तक मैं लगाम लगाए अपना मुँह बन्द किए रहूँगा।” २८ मैंने धारण कर गूँगा बन गया, और भलाई की ओर से भी चुप्पी साथे रहा; और मेरी पीड़ा बढ़ गई, ३ मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर जल रहा था। सोचते-सोचते आग भड़क उठी; तब मैं अपनी जीभ से बोल उठा; ४ “हे यहोवा, ऐसा कर कि मेरा अन्त मुझे मालमूल हो जाए, और यह भी कि मेरी आयु के दिन कितने हैं; जिससे मैं जान लूँ कि कैसा अनियत है।” ५ देख, तुमे मेरी आयु बालिश्त भर की रखी है, और मेरा जीवनकाल तेरी दृष्टि में कुछ है ही नहीं। सचमुच सब मनुष्य कैसे ही स्थिर क्यों न हों तो भी व्यर्थ ठहरे हैं। (सेला) ६ सचमुच मनुष्य छाया सा चलता फिरता है; सचमुच वे व्यर्थ घबराते हैं; वह धन का संचय तो करता है परन्तु नहीं जानता कि उसे कौन लेगा! ७ “अब हे प्रभु, मैं किस बात की बाट जोहै? मेरी आशा तो तेरी ओर लगी है।” ८ मुझे मेरे सब अपराधों के बन्धन से छुड़ा ले। मर्ख मेरी निन्दा न करने पाए। ९ मैं गूँगा बन गया और मुँह न खोला; क्योंकि यह काम त ही ने किया है। १० तुमे जो विष्णि मुझ पर डाली है उसे मुझसे दूर कर दे, क्योंकि मैं तो तेरे हाथ की मार से भ्रम्म हुआ जाता हूँ। ११ जब तू मनुष्य को अधर्म के कारण डॉट-डपटकर ताड़ना देता है; तब तु उसकी सामर्थ्य को पतंगे के समान नाश करता है; सचमुच सब मनुष्य वृथाभिमान करते हैं। १२ “हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन, और मेरी दुहाई पर कान लगा, मेरा रोना सुनकर शान्त न रह! क्योंकि मैं तेरे संग एक परदेशी यात्री के समान रहता हूँ, और अपने सब पुरुखाओं के समान परदेशी हूँ।” १३ आह! इससे पहले कि मैं यहाँ से चला जाऊँ और न रह जाऊँ, मुझे बचा ले जिससे मैं प्रदीप जीवन प्राप्त करूँगा!”

४० प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उसने मेरी ओर झूककर मेरी दुहाई सुनी। १ उसने मुझे सत्यानाश के गड़े और दलदल की कीच में से उबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को ढूढ़ किया है। २ उसने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है। बहुत लोग यह देखेंगे और उसकी महिमा करेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे। ३ क्या ही धन्य है वह पुस्तक, जो यहोवा पर भरोसा करता है, और अभिमानियों और मिथ्या की ओर मुद्देनेवालों की ओर मुँह न फेरता हो। ४ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तुमे बहुत से काम किए हैं! जो आश्वर्यकर्मी और विचार तू हमारे लिये करता है वह बहुत सी है; तेरे तुन्ह कोई नहीं! मैं तो चाहता हूँ कि खोलकर उनकी चर्चा करूँ, परन्तु उनकी गिनती नहीं हो सकती। ५ मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न नहीं होता तूने मेरे कान खोदकर खोले हैं। होमबलि और पापबलि तूने नहीं चाहा। ६ तब मैंने कहा, “देख, मैं आया हूँ; क्योंकि पुस्तक में मेरे विषय ऐसा ही लिखा हुआ है।” ७ हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ, और तेरी व्यवस्था मेरे अन्तःकरण में बर्सी है।” ८ मैंने बड़ी सभा में धार्मिकता के शुभ समाचार का प्रचार किया है; देख, मैंने अपना मुँह बन्द नहीं किया हे यहोवा, तू इसे जानता है। ९ मैंने तेरी धार्मिकता मन ही में नहीं रखा; मैंने तेरी सच्चाई और तेरे किए हुए उद्गार की चर्चा की है; मैंने तेरी कस्ता और सत्यता बड़ी सभा से गुम नहीं रखी। १० हे यहोवा, तू भी अपनी बड़ी दया मुझ पर से न हटा ले, तेरी कस्ता और सत्यता से निरन्तर मेरी रक्षा होती रहे। ११ क्योंकि मैं अनगिनत बुराइयों से घिरा हुआ हूँ; मेरे अधर्म के कामों ने मुझे आ पकड़ा और मैं दृष्टि नहीं उठा सकता; वे गिनती में मेरे सिर के बालों से भी अधिक हैं; इसलिए मेरा हृदय टूट गया। १२ हे यहोवा, कृपा करके मुझे छुड़ा लो! हे यहोवा, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर! १३ जो मेरे प्राण की खोज में है, वे सब लज्जित हों; और उनके मुँह काले हों और वे पीछे हटाए और निरादर किए जाएँ जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं। १४ जो मुझसे, “आहा, आहा,” कहते हैं, वे अपनी लज्जा के मारे विस्मित हों। १५ परन्तु जितने तुझे ढूँढ़ते हैं, वह सब तेरे कारण हविंत और आनन्दित हों; जो तेरा किया हुआ उद्गार चाहते हैं, वे निरन्तर कहते रहें, “यहोवा की बडाई हो!” १६ मैं तो दीन और दरिद्र हूँ, तो भी प्रभु मेरी चिन्ता करता है। तू मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है; हे मेरे परमेश्वर विलम्ब न कर।

४१ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन क्या ही धन्य है वह, जो कंगाल की सुधि रखता है! विष्णि के दिन यहोवा उसको बचाएगा। २ यहोवा उसकी रक्षा करके उसको जीवित रखेगा, और वह पृथ्वी पर धन्य होगा। ३ उसको शत्रुओं की इच्छा पर न छोड़। ४ जब वह व्याधि के मारे शय्या पर पड़ा हो, तब यहोवा उसे सम्भालेगा; तू रोग में उसके पूरे बिछौने को उलटकर ठीक करेगा। ५ मैंने कहा, “हे यहोवा, मुझ पर दया कर; मुझ को चंगा कर, क्योंकि मैंने तो तेरे विस्तु पाप किया है!” ६ मेरे शत्रु यह कहकर मेरी बुराई करते हैं “वह कब मेरेगा, और उसका नाम कब मिटेगा?” ७ और जब वह मुझसे मिलने को आता है, तब वह व्यर्थ बातें बकता है, जबकि उसका मन अपने अन्दर अधर्म की बातें संचय करता है; और बाहर जाकर उनकी चर्चा करता है। ८ मेरे सब बैरी मिलकर मेरे विस्तु कानाफूसी करते हैं; वे मेरे विस्तु होकर मेरी हानि की कल्पना करते हैं। ९ वे कहते हैं कि इसे तो कोई बुरा रोग लग गया है; अब जो यह पड़ा है, तो फिर कभी उठने का नहीं। १० मेरा परम प्रिय जिस पर मैं भरोसा रखता था, जो मेरी रोटी खाता था, उसने भी मेरे विस्तु लात उठाई है। ११ परन्तु हे यहोवा, तू मुझ पर दया करके मुझ को उठा ले कि मैं उनको बदला दूँ। १२ मेरा शत्रु जो मुझ पर जयवन्त नहीं हो पाता, इससे मैंने जान लिया है कि तू मुझसे प्रसन्न है। १३ और मुझे तो तू खराई से सम्भालता, और सर्दारा के लिये अपने सम्मुख स्थिर करता है। १४ इसाएल का परमेश्वर यहोवा आदि से अनन्तकाल तक धन्य है आमीन, फिर आमीन।

४२ प्रधान बजानेवाले के लिये कोरहविशयों का मशकील जैसे हिरनी नदी के जल के लिये हाँफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये हाँफता हूँ। १ जीविते परमेश्वर, हाँ परमेश्वर, का मैं प्यासा हूँ, मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुँह दिखाऊँगा? २ मेरे अँगूँ दिन और रात मेरा आहार हुए हैं; और लोग दिन भर मुझसे कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहाँ है? ३ मैं कैसे भीड़ के संग जाया करता था, मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथ उत्सव करनेवाली भीड़ के बीच मैं परमेश्वर के भवन को धीर धीर जाया करता था; यह स्मरण करके मेरा प्राण शोकित हो जाता है। ४ हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? और तू अन्दर ही अन्दर क्यों ब्याकुल है? परमेश्वर पर आशा लगाए रह, क्योंकि मैं उसके दर्शन से उद्गार पाकर फिर उसका धन्यवाद करूँगा। ५ हे मेरे परमेश्वर; मेरा प्राण मेरे भीतर गिरा जाता है, इसलिए मैं येरदन के पास के देश से और हेर्मन के पहाड़ों और मिसिगार की पहाड़ी के ऊपर से तुझे स्मरण करता हूँ। ६ तेरी जलधाराओं का शब्द सुनकर जल, जल को पुकारता है; तेरी सारी तरगों और लहरों में मैं डूब गया हूँ। ७ तो भी दिन को यहोवा अपनी शक्ति और कस्ता प्रगट करेगा; और रात को भी मैं उसका गीत गाऊँगा, और अपने जीवनदाता परमेश्वर से प्रार्थना करूँगा। ८ मैं परमेश्वर से जो मेरी चट्टान है कहाँगा, “तू मुझे क्यों भूल गया? मैं शत्रु के अत्याचार के मारे क्यों शोक करहा वहने हुए चलता फिरा तू है?” ९ मेरे सतानेवाले जो मेरी निन्दा करते हैं, मानो उससे मेरी हड्डियाँ चूर-चूर होती हैं, मानो कटार से छिदी जाती है, क्योंकि वे दिन भर मुझसे कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहाँ है? १० मेरे

तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर भरोसा रख; क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है, मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा।

४३ हे परमेश्वर, मेरा न्याय चुका और विधर्मी जाति से मेरा सुकदमा लड़;

मुझ को छली और कुटिल पुस्त से बचा। १ क्योंकि तू मेरा सामर्थी परमेश्वर है, तूने क्यों मुझे त्याग दिया है? मैं शत्रु के अत्याचार के मारे शोक का पहरावा पहने हुए क्यों फिरता रहूँ? २ अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को भेज; वे मेरी अगुआई करें, वे ही मुझ को तेरे पवित्र पर्वत पर और तेरे निवास-स्थान में पहुँचाए। ३ तब मैं परमेश्वर की बेटी के पास जाऊँगा, उस परमेश्वर के पास जो मेरे अति आनन्द का कुण्ड है; और हे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, मैं बींगा बजा-बजाकर तेरा धन्यवाद करूँगा। ४ हे मेरे प्राण तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर आशा रख, क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है; मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा।

४४ प्रधान बजानेवाले के लिये कोरहवशियों का मश्कील हे परमेश्वर, हमने

अपने कानों से सुना, हमारे बापादादों ने हम से वर्णन किया है, कि तूने उनके दिनों में और प्राचीनकाल में क्या-क्या काम किए हैं। २ तूने अपने हाथ से जातियों को मिकाल दिया, और इनको बसाया; तूने देश-देश के लोगों को दुःख दिया, और इनको चारों ओर फैला दिया; ३ क्योंकि वे न तो अपनी तलवार के बल से इस देश के अधिकारी हुए, और न अपने बाहुबल से; परन्तु तेरे दानिने हाथ और तेरी भुजा और तेरे प्रसन्न मुख के कारण जयवन्त हुए; क्योंकि तू उनको चाहता था। ४ हे परमेश्वर, तू ही हमारा महाराजा है, तू याकूब के उद्धार की आज्ञा देता है। ५ तेरे सहरे से हम अपने द्वोहियों को ढकेलकर पिरा देंगे; तेरे नाम के प्रताप से हम अपने विरोधियों को रौदेंगे। ६ क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रखूँगा, और न अपनी तलवार के बल से बचूँगा। ७ परन्तु तू ही ने हमको द्वोहियों से बचाया है, और हमारे बैरीयों को निराश और लज्जित किया है। ८ हम परमेश्वर की बड़ाई दिन भर करते रहते हैं, और सरैव तेरे नाम का धन्यवाद करते रहेंगे। (सेला) ९ तो भी तूने अब हमको त्याग दिया और हमारा अनादर किया है, और हमारे दलों के साथ अगे नहीं जाता। १० तू हमको शत्रु के सामने से हटा देता है, और हमारे बैरी मनमाने लट मार करते हैं। ११ तूने हमें कसाई की भेड़ों के समान कर दिया है, और हमको अन्यजातियों में तिर-बितर किया है। १२ तू अपनी प्रजा को सेंत-मैत बेच डालता है, परन्तु उनके मोले से तू धनी नहीं होता। १३ तू हमारे पड़ोसियों से हमारी नामधाराई करता है, और हमारे चारों ओर के रहनेवाले हम से हँसी ठशा करते हैं। १४ तूने हमको अन्यजातियों के बीच में अपमान ठाराया है, और देश-देश के लोग हमारे कारण सिर हिलाते हैं। १५ दिन भर हमें तिरस्कार सहना पड़ता है, और कलंक लगाने और निन्दा करनेवाले के बोल से, १६ शत्रु और बदला लेनेवालों के कारण, बुरा-भला कहनेवालों और निन्दा करनेवालों के कारण। १७ यह सब कुछ हम पर बीता तो भी हम तझे नहीं भले, न तेरी बाच्चा के विषय विवास्थात किया है। १८ हमारे मन न बहके, न हमारे पैर तरी राह से मुड़ें; १९ तो भी तूने हमें गीदड़ों के स्थान में पीस डाला, और हमको घोर अंधकार में छिपा दिया है। २० यदि हम अपने परमेश्वर का नाम भूल जाते, या किसी पराए देवता की ओर अपने हाथ फैलाते, २१ तो क्या परमेश्वर इसका विचार न करता? क्योंकि वह तो मन की गुम बातों को जानता है। २२ परन्तु हम दिन भर तेरे निमित्त मार डाले जाते हैं, और उन भेड़ों के समान समझे जाते हैं जो वध होने पर हैं। २३ हे प्रभु, जाग! तू क्यों सोता है? उठ! हमको सदा के

लिये त्याग न दे! २४ तू क्यों अपना मुँह छिपा लेता है? और हमारा दुःख और सताया जाना भूल जाता है? २५ हमारा प्राण मिट्टी से लग गया; हमारा शरीर भूमि से सट गया है। २६ हमारी सहायता के लिये उठ खड़ा हो। और अपनी कस्ता के निमित्त हमको छुड़ा ले।

४५ प्रधान बजानेवाले के लिये शोशन्नीम में कोरहवशियों का मश्कील। प्रेम

प्रीति का गीत मेरा हृदय एक सुन्दर विषय की उमंग से उमड़ रहा है, जो बात मैंने राजा के विषय रची है उसको सुनाता हूँ; मेरी जीभ निपुण लेखक की लेखनी बनी है। २ तू मनुष्य की सन्तानों में परम सुन्दर है; तेरे होठों में अनुग्रह भरा हुआ है; इसलिए परमेश्वर ने तुझे सदा के लिये आशीर दी है। ३ हे वीर, तू अपनी तलवार को जो तेरा वैभव और प्रताप है अपनी कमर पर बाँध। ४ सत्यता, नम्रता और धार्मिकता के निमित्त अपने ऐरवर्ष और प्रताप पर सफलता से सबवर हो; तेरा दाहिना हाथ तुझे भयनक काम सिखाए। ५ तेरे तीर तो तेज हैं, तेरे सामने देश-देश के लोग पिंगे; राजा के शत्रुओं के हृदय उनसे छिट्ठेंगे। ६ हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बना रहेगा; तेरा राजदण्ड न्याय का है। ७ तेरे धार्मिकता से प्रीति और दृष्टि से बैर रखा है। इस कारण परमेश्वर ने हाँ, तेरे परमेश्वर ने तुझको तेरे साधियों से अधिक हर्ष के तेल से अभिषेक किया है। ८ तेरे सारे बब्ल गन्धर्स, अगर, और तेरज से सुग्रस्ति है, तू हाथी दाँत के मन्दिरों में तारवाले बाजों के कारण आनन्दित हुआ है। ९ तेरी प्रतिष्ठित शियों में राजकुमारियाँ भी हैं; तेरी दाहिनी और पटरानी, ओपर के कुन्दन से विभूषित खड़ी है। १० हे राजकुमारी सुन, और कान लगाकर ध्यान दे; अपने लोगों और अपने पिता के घर को भूल जा; ११ और राजा तेरे स्पृ की चाह करेगा। क्योंकि वह तो तेरा प्रभु है, तू उसे दण्डवत् कर। १२ सोर की राजकुमारी भी भेट करने के लिये उपस्थित होगी, प्रजा के धनबान लोग तुझे प्रसन्न करने का यत्र करेंगे। १३ राजकुमारी महल में अति शोभायामन है, उसके बब्ल में सुनहले बटे कढ़े हुए हैं, १४ वह बटेदार बब्ल पहने हुए राजा के पास पहुँचाई जाएगी। जो कुमारियाँ उसकी सहेलियाँ हैं, वे उसके पीछे-पीछे चलती हुई तेरे पास पहुँचाई जाएंगी। १५ वे आनन्दित और मग्न होकर पहुँचाई जाएंगी, और वे राजा के महल में प्रवेश करेंगी। १६ तेरे पितरों के स्थान पर तेरे सन्तान होंगे; जिनको तु सारी पृथ्वी पर हाकिम ठहराएगा। १७ मैं ऐसा करूँगा, कि तेरे नाम की चर्चा पीढ़ी से पीढ़ी तक होती रहेगी; इस कारण देश-देश के लोग सदा सर्वदा तेरा धन्यवाद करते रहेंगे।

४६ प्रधान बजानेवाले के लिये कोरहवंशियों का, अलामोत की राग पर एक

गीत परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलनेवाला सहायक। १ इस कारण हमको कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएँ; २ चाहे समुद्र गरजें और फेन उठाए, और पहाड़ उसकी बाढ़ से कैंप उठे। (सेला) ३ एक नदी है जिसकी नहरों से परमेश्वर के नगर में अर्थात परमप्रधान के पवित्र निवास भवन में आनन्द होता है। ४ परमेश्वर उस नगर के बीच में है, वह कभी टलने का नहीं; पौ फटेही ही परमेश्वर उसकी सहायता करता है। ५ जाति-जाति के लोग झल्ला उठे, राज्य-राज्य के लोग डगमगाने लगे; वह बोल उठा, और पृथ्वी पिघल गई। ६ सेनाओं का यहोवा हमारे संग है, याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है। (सेला) ७ आओ, यहोवा के महाकर्म देखो, कि उसने पृथ्वी पर कैसा-कैसा उजाड़ किया है। ८ वह पृथ्वी की छोर तक लडाइयों को मिटाता है; वह धनुष को तोड़ता, और भाले को दो टुकड़े कर डालता है, और रथों को आग में झोक देता है। ९ “चुप हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ।

मैं जातियों में महान हूँ, मैं पृथ्वी भर में महान हूँ।” ११ सेनाओं का यहोवा हमारे संग है; याकूब का परमेश्वर हमारा ऊँचा गढ़ है। (सेला)

४७ प्रधान बजानेवाले के लिये कोरहवशियों का भजन है देश-देश के सब

लोगों, तालियाँ बजाओ। ऊँचे शब्द से परमेश्वर के लिये जयजयकार करो। २ क्योंकि यहोवा परमप्रधान और भययोग्य है, वह सारी पृथ्वी के ऊपर महाराजा है। ३ वह देश-देश के लोगों को हमारे सम्मुख नीचा करता, और जाति-जाति को हमारे पाँवों के नीचे कर देता है। ४ वह हमारे लिये उत्तम भाग चुन लेगा, जो उसके प्रिय याकूब के घण्टण का कारण है। (सेला) ५ परमेश्वर जयजयकार सहित, यहोवा नरसिंगे के शब्द के साथ ऊपर गया है। ६ परमेश्वर का भजन गाओ, भजन गाओ! हमारे महाराजा का भजन गाओ, भजन गाओ। ७ क्योंकि परमेश्वर सारी पृथ्वी का महाराजा है; समझ बूँदूकर बुद्धि से भजन गाओ। ८ परमेश्वर जाति-जाति पर राज्य करता है; परमेश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर विराजमान है। ९ राज्य-राज्य के रईस अब्राहम के परमेश्वर की प्रजा होने के लिये इकट्ठे हुए हैं। क्योंकि पृथ्वी की ढालें परमेश्वर के वश में हैं, वह तो शिरोमणि है।

४८ गीत। कोरहवशियों का भजन हमारे परमेश्वर के नगर में, और अपने

पवित्र पर्वत पर यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है। (सेला) १ सिय्योन पर्वत ऊँचाई में सुन्दर और सारी पृथ्वी के हर्ष का कारण है, राजाधिराज का नगर उत्तरी सिरे पर है। २ उसके महलों में परमेश्वर ऊँचा गढ़ माना गया है। ३ क्योंकि देखो, राजा लोग इकट्ठे हुए, वे एक संग आगे बढ़ गए। ४ उन्होंने आप ही देखा और देखते ही विस्मित हुए, वे घबराकर भाग गए। ५ वहाँ कपकंपी ने उनको आ पकड़ा, और जच्चा की सी पीड़ीएँ उन्हें होने लगी। ६ तू पूर्णी वायु से तरीश के जहाजों को तोड़ डालता है। ७ सेनाओं के यहोवा के नगर में, अपने परमेश्वर के नगर में, जैसा हमने सुना था, वैसा देखा भी है; परमेश्वर उसको सदा दृढ़ और स्थिर रखेगा। ८ हे परमेश्वर हमने तेरे मन्दिर के भीतर तेरी कस्ता पर ध्यान किया है। ९ हे परमेश्वर तेरे नाम के योग्य तेरी स्तुति पृथ्वी की छोर तक होती है। तेरा दाहिना हाथ धार्मिकता से भरा है; १० तेरे न्याय के कामों के कारण सिय्योन पर्वत आनन्द करे, और यहदा के नगर की पुत्रियाँ मग्न हों। ११ सिय्योन के चारों ओर चलो, और उसकी परिक्रमा करो, उसके गुम्मटों को गिन लो, १२ उसकी शहरपानाह पर दृष्टि लगाओ, उसके महलों को ध्यान से देखो; जिससे कि तुम अनेवाली पीढ़ी के लोगों से इस बात का वर्णन कर सको। १३ क्योंकि वह परमेश्वर सदा सर्वदा हमारा परमेश्वर है, वह मृत्यु तक हमारी अगुआई करेगा।

४९ प्रधान बजानेवाले के लिये कोरहवशियों का भजन है देश-देश के सब

लोगों यह सुनो! हे संसार के सब निवासियों, कान लगाओ। १ क्या ऊँच, क्या नीच क्या धर्मी, क्या दरिद्र, कान लगाओ! २ मेरे मूँह से बुद्धि की बातें निकलेंगी; और मेरे हृदय की बातें समझ की होंगी। ३ मैं नीतिवचन की ओर अपना कान लगाऊंगा, मैं विज्ञ बजाते हुए अपनी गुप्त बात प्रकाशित करूँगा। ४ विपति के दिनों में मैं क्यों डरूँ जब अर्धमूँह आ धेरे? ५ जो अपनी सम्पत्ति पर भरोसा रखते, और अपने धन की बहुतायत पर फूलते हैं, ६ उनमें से कोई अपने भाई को किसी भाँति छुड़ा नहीं सकता है; और न परमेश्वर को उसके बदले प्रायश्चित्त में कुछ दे सकता है। ७ क्योंकि उनके प्राण की छुड़ौती भारी है वह अन्त तक कभी न चुका सकेंगे ८ कोई ऐसा नहीं जो सैदैव जीवित रहे, और कब्र को न देखे। ९ क्योंकि देखने में आता है कि बुद्धिमान भी मरते हैं, और मूर्ख और पशु सरीखे मनुष्य भी दोनों नाश होते हैं, और अपनी सम्पत्ति दूसरों के लिये छोड़ जाते हैं। १० वे मन ही मन यह

सोचते हैं, कि उनका घर सदा स्थिर रहेगा, और उनके निवास पीढ़ी से पीढ़ी तक बने रहेंगे; इसलिए वे अपनी-अपनी भूमि का नाम अपने-अपने नाम पर रखते हैं। ११ परन्तु मनुष्य प्रतिष्ठा पाकर भी स्थिर नहीं रहता, वह पशुओं के समान होता है, जो मर मिटते हैं। १२ उनकी यह चाल उनकी मूर्खता है, तो भी उनके बाद लोग उनकी बातों से प्रसन्न होते हैं। (सेला) १३ वे अधोलोक की मानो भेड़ों का झांड ठहराए गए हैं; मृत्यु उनका गड़ीरिया ठहरेगा; और भौंकों सीधे लोग उन पर प्रभुता करेंगे; और उनका सुन्दर स्पष्ट अधोलोक का कौर हो जाएगा और उनका कोई आधार न रहेगा। (Sheol h7585) १५ परन्तु परमेश्वर मेरे प्राण को अधोलोक के वश से छुड़ा लेगा, वह मुद्रे ग्रहण करके अपनाएगा। (Sheol h7585) १६ जब कोई धर्मी हो जाए और उसके घर का वैभव बढ़ जाए, तब त् भय न खाना। १७ क्योंकि वह मरकर कुछ भी साथ न ले जाएगा; न उसका वैभव उसके साथ कब्र में जाएगा। १८ चाहे वह जीते जी अपने अपाको धन्य कहता रहे। जब त् अपनी भलाई करता है, तब वे लोग तेरी प्रशंसा करते हैं १९ तो भी वह अपने पुराखाओं के समाज में मिलाया जाएगा, जो कभी उजियाला न देखेंगे। २० मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी हों तो परन्तु यदि वे समझ नहीं रखते तो वे पशुओं के समान हैं, जो मर मिटते हैं।

५० आसाप का भजन सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा ने कहा है, और

उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक पृथ्वी के लोगों को बुलाया है। २ सिय्योन से, जो परम सुन्दर है, परमेश्वर ने अपना तेज दिखाया है। ३ हमारा परमेश्वर आएगा और चुपचाप न रहेगा, आग उसके आगे-आगे भस्म करती जाएगी; और उसके चारों ओर बड़ी आँधी चलेगी। ४ वह अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये ऊपर के आकाश को और पृथ्वी को भी पुकारेगा: ५ “मेरे भत्तों को मेरे पास इकट्ठा करो, जिन्होंने बलिदान चढ़ाकर मुझसे वाचा बाँधी है!” ६ और स्वर्ण उसके धर्मी होने का प्रचार करेगा क्योंकि परमेश्वर तो आप ही न्यायी है। (सेला) ७ “हे मेरी प्रजा, सुन, मैं बोलता हूँ, और हे इसाएल, मैं तेरे विषय साक्षी देता हूँ। परमेश्वर तेरा परमेश्वर मैं ही हूँ। ८ मैं तुझ पर तेरे बलियों के विषय दोष नहीं लगाता, तेरे होमबलि तो नित्य मेरे लिये चढ़ते हैं। ९ मैं न तो तेरे घर से बैल न तेरे पशुशाला से बकरे लूँगा। १० क्योंकि वह के सारे जीव-जन्म और हजारों पहाड़ों के जानवर मेरे ही हैं। ११ पहाड़ों के सब पक्षियों को मैं जानता हूँ, और मैदान पर चलने-फिरनेवाले जानवर मेरे ही हैं। १२ “यदि मैं भूया होता तो तुझ से न कहता; क्योंकि जगत और जो कुछ उसमें है वह मेरा है। १३ क्या मैं बैल का मॉस खाऊँ, या बकरों का तह पीँड़ूँ? १४ परमेश्वर को धन्यवाद ही का बलिदान चढ़ा, और परमप्रधान के लिये अपनी मन्त्रों पूरी कर; १५ और संकट के दिन मुझे पुकार, मैं तुझे छुड़ाऊँगा, और तू मेरी महिमा करने पाएगा।” १६ परन्तु दृष्टि से परमेश्वर कहता है: “तुझे मेरी विधियों का वर्णन करने से क्या काम? तू मेरी वाचा की चर्चा क्यों करता है? १७ तू तो शिक्षा से बैर करता, और मेरे वचनों को तुच्छ जानता है। १८ जब तुम चोर को देखो, तब उसकी संगति से प्रसन्न हुआ; और परस्तीगमियों के साथ भागी हुआ। १९ “तुमे अपना मूँह बुराई करने के लिये खोला, और तेरी जीभ छल की बातें गढ़ती है। २० तू बैठा हुआ अपने भाई के विस्तु बोलता; और अपने सो भाई की चुगली खाता है। २१ यह काम तुमे किया, और मैं चुप रहा; इसलिए तुमे समझ लिया कि परमेश्वर बिल्कुल मेरे समान है। परन्तु मैं तुझे समझाऊँगा, और तेरी आँखों के सामने सब कुछ अलग-अलग दिखाऊँगा।” २२ “हे परमेश्वर को भूलनेवालों यह बात भली भाँति समझ लो, कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हें फाड़ डालूँ, और कोई छुड़ानेवाला न हो। २३ धन्यवाद के

बलिदान का चढ़ानेवाला मेरी महिमा करता है; और जो अपना चरित्र उत्तम रखता है उसको मैं परमेश्वर का उद्धार दिखाऊँगा!”

५९ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन जब नातान नबी उसके-

पास इसलिए आया कि वह बतशेबा के पास गया था है परमेश्वर, अपनी कर्मण के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे। १ मुझे भली भाँति धोकर मेरा अधर्म दूर कर, और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर! २ मैं तो अपने अपराधों को जानता हूँ, और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है। ३ मैंने केवल तेरे ही विष्टु पाप किया, और जो तेरी दृष्टि में भुजा है, वही किया है, ताकि तू बोलने में धर्मी और न्याय करने में निष्क्रियक ठहरे। ४ देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा। ५ देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है, और मेरे मन ही में जान सिखाएगा। ६ जफा से मुझे शुद्ध कर, तो मैं पवित्र हो जाऊँगा; मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत बनूँगा। ७ मुझे हर्ष और आनन्द की बातें सुना, जिससे जो हड्डियाँ तूने तोड़ डाली हैं, वे मगन हो जाएँ। ८ अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले, और मेरे सारे अधर्म के कामों को मिटा डाल। ९ हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरी भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर। १० मुझे अपने सामने से निकाल न दे, और अपने पवित्र आत्मा को मुझसे अलग न कर। ११ अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे, और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल। १२ जब मैं अपराधी को तेरा मार्ग सिखाऊँगा, और पापी तेरी ओर फिरेंगे। १३ हे परमेश्वर, हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर, मुझे हत्या के अपराध से छुड़ा ले, तब मैं तेरी धार्मिकता का जयजयकार करने पाऊँगा। १४ हे प्रभु, मेरा मूँह खोल दे तब मैं तेरा गुणानुवाद कर सकूँगा। १५ क्योंकि तू बलि से प्रसन्न नहीं होता, नहीं तो मैं देता; होमबलि से भी तू प्रसन्न नहीं होता। १६ टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू दटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता। १७ प्रसन्न होकर सिय्योन की भलाई कर, यस्सलेम की शहरपनाह को तू बना, १८ तब तू धार्मिकता के बलिदानों से अर्थात् सर्वांग पशुओं के होमबलि से प्रसन्न होगा; तब लोग तेरी बेटी पर पवित्र बलिदान चढ़ाएँगे।

६० प्रधान बजानेवाले के लिये मश्कील पर दाऊद का भजन जब दोणा

एटोमी ने शाऊल को बताया कि दाऊद अहीमेलेके के घर गया था है वीर, तू बुराई करने पर क्यों घमण्ड करता है? परमेश्वर की कर्मण तो अनन्त है। १ तेरी जीभ केवल दुश्ता गढ़ती है; सान धरे हुए उस्तेरे के समान वह छल का काम करती है। २ तू भलाई से बढ़कर बुराई मैं, और धार्मिकता की बात से बढ़कर दूँठ से प्रीति रखता है। (सेला) ३ हे छली जीभ, तू सब विनाश करनेवाली बातों से प्रसन्न रहती है। ४ निश्चय परमेश्वर तुझे सदा के लिये नाश कर देगा; वह तुझे पकड़कर तेरे डेरे से निकाल देगा; और जीवितों के लोक से तुझे उखाड़ डालेगा। (सेला) ५ तब धर्मी लोग इस घटना को देखकर डर जाएँगे, और यह कहकर उस पर हँसेंगे, ६ देखो, यह वर्ती पुरुष है जिसने परमेश्वर को अपनी शरण नहीं माना, परन्तु अपने धन की बहतायत पर भरोसा रखता था, और अपने को दुश्ता में ढूँढ़ करता रहा!” ७ परन्तु मैं तो परमेश्वर के भवन में हो जैतून के बक्ष के समान हूँ। मैंने परमेश्वर की कर्मण पर सदा सर्वदा के लिये भरोसा रखा है। ८ मैं तेरा धन्यवाद सर्वदा करता रहूँगा, क्योंकि तू ही ने यह काम किया है। मैं तेरे नाम पर आशा रखता हूँ, क्योंकि यह तेरे पवित्र भक्तों के समाने उत्तम है।

५३ प्रधान बजानेवाले के लिये महलत की राग पर दाऊद का मश्कील मूर्ख

ने अपने मन में कहा, “कोई परमेश्वर है जी नहीं।” वे बिंगड गए, उन्होंने कुटिलता के घिनौने काम किए हैं; कोई सुकर्मी नहीं। १ परमेश्वर ने स्वर्ग पर से मनुष्यों के ऊपर दृष्टि की ताकि देखे कि कोई बुद्धि से चलनेवाला या परमेश्वर को खोजनेवाला है कि नहीं। २ वे सब के सब हट गए; सब एक साथ बिंगड गए; कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं। ३ क्या उन सब अनर्थकारियों को कुछ भी ज्ञान नहीं, जो मेरे लोगों को रोटी के समान खाते हैं पर परमेश्वर का नाम नहीं लेते हैं? ४ वहाँ उन पर भय छा गया जहाँ भय का कोई कारण न था। क्योंकि यहोवा ने उनकी हड्डियों को, जो तेरे विष्टु छावनी डाले पड़े थे, तिर-बितर कर दिया; तने तो उन्हें लज्जित कर दिया इसलिए कि परमेश्वर ने उनको त्याग दिया है। ५ भला होता कि इसाएल का पूरा उद्धार सिय्योन से निकलता। जब परमेश्वर अपनी प्रजा को बन्धुवाई से लौटा ले आएगा। तब याकूब मगान और इसाएल आनन्दित होगा।

५४ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का तारकले बाजों के साथ मश्कील

जब जीपियों ने आकर शाऊल से कहा, “क्या दाऊद हमारे बीच में छिपा नहीं रहता?” हे परमेश्वर अपने नाम के द्वारा मेरा उद्धार कर, और अपने पराक्रम से मेरा न्याय कर। १ हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन ले; मेरे मुँह के बचनों की ओर कान लगा। २ क्योंकि परदेशी मेरे विष्टु उठे हैं, और कुकर्मी मेरे प्राण के गाहक हुए हैं; उन्होंने परमेश्वर को अपने सम्मुख नहीं जाना। (सेला) ३ देखो, परमेश्वर मेरा सहायक है; प्रभु मेरे प्राण को सम्भालनेवाला है। ४ वह मेरे द्वाहियों की बुराई को उन्हीं पर लौटा देगा; हे परमेश्वर, अपनी सच्चाई के कारण उनका विनाश कर। ५ मैं तुझे स्वेच्छाबलि चढ़ाऊँगा; हे यहोवा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद कहूँगा, क्योंकि यह उत्तम है। ६ क्योंकि तूने मुझे सब दुःखों से छुड़ाया है, और मैंने अपने श्रवुओं पर विजयपूर्ण दृष्टि डाली है।

५५ प्रधान बजानेवाले के लिये तारवाले बाजों के साथ दाऊद का मश्कील

हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा, और मेरी गिडगिडाहट से मुँह न मोड़। १ मेरी ओर ध्यान देकर, मुझे उत्तर दे; विपत्तियों के कारण मैं व्याकुल होता हूँ। २ क्योंकि शारु कोलाहल और दृश्य उपद्रव कर रहे हैं, वे मुझ पर दोषारोपण करते हैं, और क्रोध में आकर सताते हैं। ३ मेरा मन भीतर ही भीतर संकट में है, और मृत्यु का भय मुझ में समा गया है। ४ भय और कंपन ने मुझे पकड़ लिया है, और भय ने मुझे जकड़ लिया है। ५ तब मैंने कहा, “भला होता कि मेरे कबूतर के से पंख होते तो मैं उड़ जाता और विश्वाम पाता। ६ देखो, किर ते मैं उड़ते-उड़ते दूर निकल जाता और जंगल में बसेरा लेता, (सेला) ७ मैं प्रचण्ड बयार और अँधी के झोंके से बचकर किसी शरणस्थान में भाग जाता।” ८ हे प्रभु, उनका सत्यानाश कर, और उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दें; क्योंकि मैंने आर में उपद्रव और झगड़ा देखा है। ९ रात-दिन वे उसकी शहरपनाह पर चढ़कर चारों ओर घूमते हैं; और उसके भीतर दुश्ता और उत्पात होता है। १० उसके भीतर दुश्ता ने बसेरा डाला है, और अत्याचार और छल उसके चौक से दूर नहीं होते। ११ जो मेरी नामधाराई करता है वह शर्त नहीं था, नहीं तो मैं उसको सह लेता; जो मेरे विष्टु बडाई मारता है वह मेरा बैरी नहीं है, नहीं तो मैं उससे छिप जाता। १२ परन्तु वह तो तू ही था जो मेरी बराबरी का मनुष्य मेरा परम मित्र और मेरी जान-पहचान का था। १३ हम दोनों अपस में कैसी मीठी-मीठी बातें करते थे; हम भीड़ के साथ परमेश्वर के भवन को जाते थे। १४ उनको मृत्यु अचानक आ दबाएँ; वे जीवित ही अदोलोक में उत्तर जाएँ; क्योंकि उनके घर और मन दोनों में बुराइयाँ और उत्पात भरा

है। (Sheol h7585) १६ परन्तु मैं तो परमेश्वर को पुकास्तँगा; और यहोवा मुझे बचा लेगा। १७ सौँझ को, भीर को, दोपहर को, तीनों पहर मैं दूहाई दूँगा और करहता रहँगा और वह मेरा शब्द सुन लेगा। १८ जो लडाई मेरे विद्युत मर्ची थी उससे उसने मुझे कुशल के साथ बचा लिया है। उन्होंने तो बहुतों को संग लेकर मेरा सामना किया था। १९ परमेश्वर जो आदि से विराजमान है यह सुनकर उनको उत्तर देगा। (सेला) ये वे हैं जिनमें कोई परिवर्तन नहीं, और उनमें परमेश्वर का भय है ही नहीं। २० उसने अपने मेल रखनेवालों पर भी हाथ उठाया है, उसने अपनी बाचा को तोड़ दिया है। २१ उसके मूँह की बातें तो मन्त्रवन सी चिकिनी थी परन्तु उसके मन में लडाई की बातें थीं; उसके वचन तेल से अधिक नरम तो थे परन्तु नंगी तलवरें थीं। २२ अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा; वह धर्मी को कमी टलने न देगा। २३ परन्तु हे परमेश्वर, तू उन लोगों को विनाश के गड्ढे में गिरा देगा; हत्यारे और छली मनुष्य अपनी आधी आयु तक भी जीवित न रहेंगे। परन्तु मैं तुझ पर भरोसा रखूँगा।

५६ प्रधान बजानेवाले के लिये योनतेलेखद्वेषीम में दाऊद का मित्काम जब पतिशियों ने उसको गत नगर में पकड़ा था हे परमेश्वर, मुझ पर दया कर, क्योंकि मनुष्य सुझे निगलना चाहते हैं, वे दिन भर लड़कर मुझे सताते हैं। २ मेरे द्वोही दिन भर मुझे निगलना चाहते हैं, क्योंकि जो लोग अभिमान करके मुझसे लड़ते हैं वे बहुत हैं। ३ जिस समय मुझे डर लगेगा, मैं तुझ पर भरोसा रखूँगा। ४ परमेश्वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करँगा, परमेश्वर पर मैंने भरोसा रखा है, मैं नहीं डरँगा। कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है? ५ वे दिन भर मेरे वचनों को, उन्ता अर्थ लगाकर मरोड़ते रहते हैं; उनकी सारी कल्पनाएँ मेरी ही झुराई करने की होती है। ६ वे सब मिलकर इकट्ठे होते हैं और छिपकर बैठते हैं, वे मेरे कदमों को देखते भालते हैं मानो वे मेरे प्राणों की घात में ताक लगाए बैठे हों। ७ क्या वे बुराई करके भी बच जाएँगे? हे परमेश्वर, अपने क्रोध से देश-देश के लोगों को गिरा दें। ८ तू मेरे मारे-मारे फिरने का हिसाब रखता है; तू मेरे आँसुओं को अपनी कुप्पी में रख ले! क्या उनकी चर्चा तेरी पुस्तक में नहीं है? ९ तब जिस समय मैं पुकास्तँगा, उसी समय मेरे शत्रु उलटे फिरेंगे। यह मैं जानता हूँ, कि परमेश्वर मेरी ओर है। १० परमेश्वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करँगा। ११ मैंने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, मैं न डरँगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है? १२ हे परमेश्वर, तेरी मननों का भार मुझ पर बना है, मैं तुझको धन्यवाद-बलि चढ़ाऊँगा। १३ क्योंकि तूने मुझे को मृत्यु से बचाया है; तूने मेरे पैरों को भी फिसलने से बचाया है, ताकि मैं परमेश्वर के सामने जीवितों के उजियाले में चलूँ फिरँसँ।

५७ प्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत राग में दाऊद का मित्काम; जब वह शाऊल से भागकर गुफा में छिप गया था हे परमेश्वर, मुझ पर दया कर, मुझ पर दया कर, क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूँ; और जब तक ये विपत्तियों निकल न जाएँ, तब तक मैं तेरे पंखों के तले शरण लिए रहँगा। २ मैं परमप्रधान परमेश्वर को पुकास्तँगा, परमेश्वर को जो मेरे लिये सब कुछ सिद्ध करता है। ३ परमेश्वर स्वर्ग से भेजकर मुझे बचा लेगा, जब मेरा निगलनेवाला निन्दा कर रहा हो। (सेला) परमेश्वर अपनी कस्ता और सच्चाई प्रगत करेगा। ४ मेरा प्राण सिंहों के बीच मैं हूँ, मुझे जलते हुओं के बीच मैं लेटना पड़ता है, अर्थात् ऐसे मनुष्यों के बीच मैं जिनके दाँत बर्छी और तीर हैं, और जिनकी जीभ तेज तलवार है। ५ हे परमेश्वर तू स्वर्ग के ऊपर अति महान और तेजोभय है, तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर फैल जाए। ६ उन्होंने मेरे पैरों के लिये जाल

बिछाया है; मेरा प्राण ढला जाता है। उन्होंने मेरे आगे गङ्गा खोदा, परन्तु आप ही उसमें गिर पड़े। (सेला) ७ हे परमेश्वर, मेरा मन स्थिर है, मेरा मन स्थिर है; मैं गङ्गा का वरन भजन कीर्तन करँगा। ८ हे मेरे मन जाग जा! हे सारंगी और बीणा जाग जाओ; मैं भी पौ फटे ही जाग उदँगा। ९ हे प्रभु, मैं देश-देश के लोगों के बीच तेरा धन्यवाद करँगा, मैं राज्य-राज्य के लोगों के बीच मैं तेरा भजन गाऊँगा। १० क्योंकि तेरी कस्ता स्वर्ग तक बड़ी है, और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुँचती है। ११ हे परमेश्वर, तू स्वर्ग के ऊपर अति महान हैं! तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर फैल जाए।

५८ प्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत राग में दाऊद का मित्काम हे मनुष्यों, क्या तुम सचमुच धार्मिकता की बात बोलते हो? और हे मनुष्य वंशियों क्या तुम सिधाई से न्यय करते हो? १ नहीं, तुम मन ही मन में कुटिल काम करते हो; तुम देश भर में उपद्रव करते जाते हो। २ दुष्ट लोग जन्मते ही पराए हो जाते हैं, वे पेट से निकलते ही झुट बोलते हुए भटक जाते हैं। ३ उनमें सर्प का सा विष है, वे उस नाग के समान हैं, जो सुनना नहीं चाहता; ४ और सपेरा कितनी ही निपुणता से कर्मों न मंत्र पढ़े, तो भी उसकी नहीं सुनता। ५ हे परमेश्वर, उनके मूँह में से दाँतों को तोड़ दे; हे यहोवा, उन जवान सिंहों की दाढ़ों को उखाड़ डाल। ६ वे घुलकर बहते हुए पानी के समान हो जाएँ; जब वे अपने तीर चढ़ाएँ, तब तीर चानों दो टुकड़े हो जाएँ। ७ वे घोंघे के समान हो जाएँ जो घुलकर नाश हो जाता है, और झीं के पिरे हुए गर्भ के समान हो जिसमें सूज को देखा ही नहीं। ८ इससे पहले कि तुम्हारी हाँड़ियों में काँटों की आँच लगे, हरे व जले, दोनों को वह बवण्डर से उड़ा ले जाएगा। ९ परमेश्वर का ऐसा पलटा देखकर आनन्दित होगा; वह अपने पाँव दुष्ट के लह में धोएगा। १० तब मनुष्य कहने लगेंगे, निश्वय धर्मी के लिये फल है, निश्वय परमेश्वर है, जो पृथ्वी पर न्याय करता है।

५९ प्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत राग में दाऊद का मित्काम; जब शाऊल के भेजे हुए लोगों ने घर का पहरा दिया कि उसको मार डाले हैं मेरे परमेश्वर, मुझ को शत्रुओं से बचा, मुझे ऊँचे स्थान पर रखकर मेरे विरोधियों से बचा, २ मुझ को झुराई करनेवालों के हाथ से बचा, और हत्यारों से मेरा उद्धार कर। ३ क्योंकि देख, वे मेरी घात में लगे हैं, हे यहोवा, मेरा कोई दोष या पाप नहीं है, तो भी बलवन्त लोग मेरे विद्यु इकट्ठे होते हैं। ४ मैं निर्दोष हूँ तो भी वे मुझसे लड़ने को मेरी ओर दौड़ते हैं; जाग और मेरी मदद कर, और यह देख। ५ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हे इश्ाउल के परमेश्वर सब अन्यजातियों को दण्ड देने के लिये जाग; किनी विश्वासाधारी अत्याचारी पर अनुग्रह न कर। (सेला) ६ वे लोग साँझ को लौटकर कुते के समान गर्जते हैं, और नगर के चारों ओर घूमते हैं। ७ देख वे डकाते हैं, उनके मूँह के भीतर तलवरें हैं, क्योंकि वे कहते हैं, “कौन हमें सुनता है?” ८ परन्तु हे यहोवा, तू उन पर हँसेगा; तू सब अन्यजातियों को उपहास में उड़ाएगा। ९ हे परमेश्वर, मेरे बल, मैं तुझ पर ध्यान दूँगा, तू मेरा ऊँचा गढ़ है। १० परमेश्वर कस्ता करता हुआ मुझसे मिलेगा; परमेश्वर मेरे शत्रुओं के विषय मेरी इच्छा पूरी कर देगा। ११ उन्हें घात न कर, ऐसा न हो कि मेरी प्रजा भूल जाए; हे प्रभु, हे हमारी डाल! अपनी शक्ति से उन्हें तितर-बितर कर, उन्हें ढबा दे। १२ वह अपने मूँह के पाप, और होतों के वचन, और शपां देने, और झुट बोलने के कारण, अभिमान में फँसे हुए पकड़े जाएँ। १३ जलजलाहट में आकर उनका अन्त कर, उनका अन्त कर दे ताकि वे नष्ट हो जाएँ तब लोग जानेंगे कि परमेश्वर याकूब पर, बरन पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करता है। (सेला) १४ वे साँझ को लौटकर कुते के समान गर्जते, और नगर के चारों ओर घूमते हैं। १५ वे टुकड़े के लिये मरे-

मारे फिरते, और तूम न होने पर रात भर गुरते हैं। १६ परन्तु मैं तेरी सामर्थ्य का यश गाँड़गा, और भीर को तेरी कस्सा का जयजयकार कहूँगा। क्योंकि तू मेरा ऊँचा गढ़ है, और संकट के समय मेरा शरणस्थान ठहरा है। १७ हे मेरे बल, मैं तेरा भजन गाँड़गा, क्योंकि हे परमेश्वर, तू मेरा ऊँचा गढ़ और मेरा कस्सामय परमेश्वर है।

६० प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का मिलकाम शूश्नेदूत राग में

शिक्षादायक। जब वह अरम्नहैम और अरमसोबा से लड़ता था। और योआब ने लौटकर नमक की तराई में एटोमियों में से बारह हजार पुष्प मार लिये हे परमेश्वर, तूने हमको त्याग दिया, और हमको तोड़ डाला है; तू क्रोधित हुआ; फिर हमको ज्यों का त्यों कर दे। २ तूने भूमि को कँपाया और फाड़ डाला है; उसके दरारों को भर दे, क्योंकि वह डगमगा रही है। ३ तूने अपनी प्रजा को कठिन समय दिखाया; तूने हाँस लड़खड़ा देवाला दाखामधु पिलाया है। ४ तूने अपने डरवैयों को झाँड़ा दिया है, कि वह सच्चाई के कारण फहराया जाए। (सेला) ५ तू अपने दाहिने हाथ से बचा, और हमारी सुन ले कि तेरे प्रिय छुड़ाए जाएँ। ६ परमेश्वर पवित्राके साथ बोला है, “मैं प्रफुल्लित होऊँगा; मैं शेकेम को बाँट लूँगा, और सुककोत की तराई को नपवाऊँगा। ७ गिलाद मेरा है; मनशे भी मेरा है; और ऐप्रैम मेरे सिर का टोप, यहदा मेरा राजदण्ड है। ८ मोआब मेरे धोने का पात्र है; मैं एटोम पर अपना जृता फेंकूँगा; हे पलिशीन, मेरे ही कारण जयजयकार कर।” ९ मुझे गढ़वाले नार मैं कौन पहुँचाएगा? एटोम तक मेरी अगुआई किसने की है? १० हे परमेश्वर, क्या तूने हमको त्याग नहीं दिया? हे परमेश्वर, तू हमारी सेना के साथ नहीं जाता। ११ शत्रु के विरुद्ध हमारी सहायता कर, क्योंकि मनुष्य की सहायता व्यर्थ है। १२ परमेश्वर की सहायता से हम वीरता दिखाएँगे, क्योंकि हमारे शत्रुओं को वही रौंदेगा।

६१ प्रधान बजानेवाले के लिये तारावाले बाजे के साथ दाऊद का भजन है

परमेश्वर, मेरा चिल्लाना सुन, मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दे। २ मूँछ खाते समय मैं पृथ्वी की छोर से भी तुझे पुकास्तँगा, जो चढ़ान में लिये ऊँची है, उस पर मुझ को ले चल; ३ क्योंकि तू मेरा शरणस्थान है, और शत्रु से बचने के लिये ऊँचा गढ़ है। ४ मैं तेरे तम्बू में युगानुयुग बना रहूँगा। मैं तेरे पंखों की ओट में शरण लिए रहूँगा। (सेला) ५ क्योंकि हे परमेश्वर, तूने मेरी मन्त्रों सुनी, जो तेरे नाम के डरवैये हैं, उनका सा भाग तूने मुझे दिया है। ६ तू राजा की आशु को बहुत बढ़ाएगा; उसके वर्ष पीढ़ी-पीढ़ी के बराबर होंगे। ७ वह परमेश्वर के सम्मुख सदा बना रहेगा; तू अपनी कस्सा और सच्चाई को उसकी रक्षा के लिये ठहरा रख। ८ इस प्रकार मैं सर्वदा तेरे नाम का भजन गा गाकर अपनी मन्त्रों हर दिन पूरी किया करूँगा।

६२ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन। यदूतन की राग पर सच्चमुच

मैं चुपचाप होकर परमेश्वर की ओर मन लगाए हूँ मेरा उद्धार उसी से होता है। १ सच्चमुच वही, मेरी चढ़ान और मेरा उद्धार है, वह मेरा गढ़ है मैं अधिक न डिलूँगा। २ तुम कब तक एक पुष्प पर धावा करते रहोगे, कि सब मिलकर उसका धाव करो? वह तो झुकी हुई दीवार या गिरते हुए बाड़े के समान है। ३ सच्चमुच वे उसको, उसके ऊँचे पद से गिराने की सम्पत्ति करते हैं; वे झाड़ से प्रसान्न रहते हैं। मूँह से तो वे आशीर्वाद देते पर मन में कोसते हैं। (सेला) ५ हे मेरे मन, परमेश्वर के सामने चुपचाप रह, क्योंकि मेरी आशा उसी से है। ६ सच्चमुच वही मेरी चढ़ान, और मेरा उद्धार है, वह मेरा गढ़ है; इसलिए मैं न डिलूँगा। ७ मेरे उद्धार और मेरी महिला का आधार परमेश्वर है; मेरी ढूँढ़ चढ़ान, और मेरा शरणस्थान परमेश्वर है। ८ हे लोगों, हर समय उस पर भरोसा रखो, उससे अपने-अपने मन की बातें खोलकर कहो; परमेश्वर हमारा शरणस्थान है।

(सेला) ९ सच्चमुच नीच लोग तो अस्थाई, और बड़े लोग मिथ्या ही हैं; तौल मैं वे हलके निकलते हैं, वे सब साँस से भी हलके हैं। १० अत्याचार करने पर भरोसा मत रखो, और लट्ठ पाट करने पर मत फूलो; चाहे धन-सम्पत्ति बढ़े, तो भी उस पर मन न लगाना। ११ परमेश्वर ने एक बार कहा है; और दो बार मैंने यह सुना है: कि सामर्थ्य परमेश्वर का है १२ और हे प्रभु, कस्सा भी तेरी है। क्योंकि तू एक-एक जन को उसके काम के अनुसार फल देता है।

६३ दाऊद का भजन; जब वह यहदा के जंगल में था। हे परमेश्वर, तू मेरा

परमेश्वर है, मैं तुझे यत्र से ढूँढ़ा; सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है। १२ इस प्रकार से मैंने पवित्रस्थान में तुझ पर दृष्टि की, कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूँ। ३ क्योंकि तेरी कस्सा जीवन से भी उत्तम है, मैं तेरी प्रशंसा करूँगा। ४ इसी प्रकार मैं जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूँगा; और तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊँगा। ५ मेरा जीव मानो चबीं और चिकने भोजन से तूम होगा, और मैं जयजयकार करके तेरी स्तुति करूँगा। ६ जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूँगा, तब रात के एक-एक पहर में तुझ पर ध्यान करूँगा; ७ क्योंकि तू मेरा सहायक बना है, इसलिए मैं तेरे पंखों की छाया में जयजयकार करूँगा। ८ मेरा मन तेरे पीछे-पीछे लगा चलता है; और मुझे तो तू अपने दाहिने हाथ से थाम रखता है। ९ परन्तु जो मेरे प्राण के खोजी है, वे पृथ्वी के नीचे स्थानों में जा पड़ेंगे; १० वे तलावार से मारे जाएँगे, और गीदड़ों का आहार हो जाएँगे। ११ परन्तु राजा परमेश्वर के कारण आनन्दित होगा; जो कोई परमेश्वर की शपथ खाए, वह बड़ाई करने पाएगा; परन्तु झूठ बोलनेवालों का मुँह बन्द किया जाएगा।

६४ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन है परमेश्वर, जब मैं तेरी

दुहाई दूँ, तब मेरी सुन; शत्रु के उपजाए हुए भय के समय मेरे प्राण की रक्षा कर। २ कुकर्मियों की गोष्ठी से, और अनर्थकारियों के हुल्लड से मेरी आड़ हो। ३ उन्होंने अपनी जीध को तलावार के समान तेज किया है, और अपने कड़वे चचनों के तीरों को चढ़ाया है; ४ ताकि छिपकर खेरे मनुष्य को मारें; वे निराहोंकर उसको अचानक मारते भी हैं। ५ वे फेरे काम करने को हियाव बाँधते हैं, वे फंदे लगाने के विषय बातचीत करते हैं; और कहते हैं, “हमको कौन देखेगा?” ६ वे कुटिलता की युक्ति निकलते हैं; और कहते हैं, “हमने पक्की युक्ति खोजकर निकाली है।” क्योंकि मनुष्य के मन और हृदय के बिचार गहरे है। ७ परन्तु परमेश्वर उन पर तीर चलाएगा; वे अचानक घायल हो जाएँगे। ८ वे अपने ही चचनों के कारण ठोकर खाकर पिर पड़ेंगे; जितने उन पर दृष्टि करेंगे वे सब अपने-अपने सिर हिलाएँगे। ९ तब सारे लोग डर जाएँगे; और परमेश्वर के कामों का बखान करेंगे, और उसके कार्यक्रम को भली भाँति समझेंगे। १० धमीं तो यहोवा के कारण आनन्दित होकर उसका शरणागत होगा, और सब सीधे मनवाले बड़ाई करेंगे।

६५ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन, गीत है परमेश्वर, सिद्धोन

मैं स्तुति तेरी बाट जोहती है; और तेरे लिये मन्त्रने पूरी की जाएँगी। १ हे प्रार्थना के सुननेवाले! सब प्राणी तेरे ही पास आएँगे। २ अर्थम के काम मुझ पर प्रबल हुए हैं; हमारे अपराधों को तू क्षमा करेगा। ३ क्या ही धन्य है वह, जिसको तू चुनकर अपने समीप अने देता है, कि वह तेरे अँगनों में वास करे! हम तेरे भवन के, अर्थात् तेरे पवित्र मन्दिर के उत्तम-उत्तम पदार्थों से तूम होंगे। ५ हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, हे पृथ्वी के सब दर-दर देवों के और दूँ के समुद्र पर के रहनेवालों के आधार, तू धार्मिकता से किए हुए अदृत कार्यों द्वारा

हमें उत्तर देगा; ६ तू जो पराक्रम का फैटा करने हुए, अपनी सामर्थ्य के पर्वतों को स्थिर करता है; ७ तू जो समृद्ध का महाशब्द, उसकी तंरंगों का महाशब्द, और देश-देश के लोगों का कोलाहल शान्त करता है; ८ इसलिए दूर-दूर देशों के रहनेवाले तेरे चिन्ह देखकर डर गए हैं; ९ तू उदयाचल और अस्ताचल दोनों से जयजयकार करता है। १० तू भूमि की सुधि लेकर उसको सीचता है, तू उसको बहुत फलादायक करता है; परमेश्वर की नदी जल से भरी रहती है; तू पृथ्वी को तैयार करके मनुष्यों के लिये अन्न को तैयार करता है। ११ तू रेघारियों को भली भाँति सीचता है, और उनके बीच की मिट्टी को बैठाता है, तू भूमि को मैंह से नरम करता है, और उसकी उपज पर आशीष देता है। १२ तेरी भलाइयों से, तू वर्ष को मुकुट पहनता है; तेरे मार्गों में उत्तम-उत्तम पदार्थ पाए जाते हैं। १३ वे जंगल की चराइयों में हरियाली फूट पड़ती हैं; और पहाड़ियाँ हर्ष का फैटा बांधे हुई हैं। १४ चराइयाँ भेड़-बकरियों से भरी हुई हैं, और तराइयाँ अन्न से ढाँपी हुई हैं, वे जयजयकार करती और गाती भी हैं।

६६ प्रधान बजानेवाले के लिये गीत, भजन हे सारी पृथ्वी के लोगों, परमेश्वर के लिये जयजयकार करो; २ उसके नाम की महिमा का भजन गाओ; उसकी स्तुति करते हुए, उसकी महिमा करो। ३ परमेश्वर से कहो, “तेरे काम कितने भयानक हैं! तेरी महासामर्थ्य के कारण तेरे शत्रु तेरी चापलसी करेंगे। ४ सारी पृथ्वी के लोग तुझे दण्डवत् करेंगे, और तेरा भजन गाएँगे, वे तेरे नाम का भजन गाएँगे” (सेला) ५ आओ परमेश्वर के कामों को देखो; वह अपने कार्यों के कारण मनुष्यों को भययोग्य देख पड़ता है। ६ उसने समृद्ध को सूखी भूमि कर डाला; वे महानद में से पाँव-पाँव पार उत्तरे। वहाँ हम उसके कारण आनन्दित हुए, ७ जो अपने पराक्रम से सर्वदा प्रभुता करता है, और अपनी आँखों से जाति-जाति को तकाता है। विद्रोही अपने सिर न उठाए। (सेला) ८ हे देश-देश के लोगों, हमारे परमेश्वर को धन्य कहो, और उसकी स्तुति में राग उठाओ, ९ जो हमको जीवित रखता है, और हमारे पाँव को टलने नहीं देता। १० क्योंकि हे परमेश्वर तूने हमको जाँचा; तूने हमें चाँदी के समान ताया था। ११ तूने हमको जाल में फँसाया; और हमारी कम्पर पर भारी बोझ बँधा था; १२ तूने घुड़चढ़ों को हमारे सिरों के ऊपर से चलाया, हम आग और जल से होकर गए; परन्तु तूने हमको उबाल के सुख से भर दिया है। १३ मैं होमबलि लेकर तेरे भवन में आँँगा मैं उन मन्त्रों को तेरे लिये पूरी कर्त्त्वा, १४ जो मैंने मूँह खोलकर मानी, और संकट के समय कही थी। १५ मैं तुझे मोटे पशुओं की होमबलि, मेंढों की चबीं की धूप समेत चढ़ाऊँगा; मैं बकरों समेत बैल चढ़ाऊँगा। (सेला) १६ हे परमेश्वर के सब डरवैयों, आकर सुगो, मैं बताऊँगा कि उसने मेरे लिये क्या-क्या किया है। १७ मैंने उसको पुकारा, और उसी का गुणानुवाद मुझसे हुआ। १८ यदि मैं मन में अनर्थी की बात सोचता, तो प्रभु मेरी न सुनता। १९ परन्तु परमेश्वर ने तो सुना है; उसने मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दिया है। २० धन्य है परमेश्वर, जिसने न तो मेरी प्रार्थना अनसुनी की, और न मुझसे अपनी कस्ता दूर कर दी है!

६७ प्रधान बजानेवाले के लिये तारवाले बाजों के साथ भजन, गीत परमेश्वर हम पर अनुग्रह करे और हमको आशीष दे; वह हम पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, (सेला) २ जिससे तेरी गति पृथ्वी पर, और तेरा किया हुआ उद्घार सारी जातियों में जाना जाए। ३ हे परमेश्वर, देश-देश के लोग तेरा धन्यवाद करें; देश-देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें। ४ राज्य-राज्य के लोग आनन्द करें, और जयजयकार करें, क्योंकि तू देश-देश के लोगों का न्याय धर्म से करेगा, और पृथ्वी के राज्य-राज्य के लोगों की अगुआई करेगा। (सेला) ५ हे परमेश्वर, देश-देश के लोग तेरा धन्यवाद करें; देश-देश के सब

लोग तेरा धन्यवाद करें। ६ भूमि ने अपनी उपज दी है, परमेश्वर जो हमारा परमेश्वर है, उसने हमें आशीष दी है। ७ परमेश्वर हमको आशीष देगा, और पृथ्वी के दूर-दूर देशों के सब लोग उसका भय मानेंगे।

६८ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन, गीत परमेश्वर उठे, उसके

शत्रु तितर-बितर हों; और उसके बैरी उसके सामने से भाग जाएँ। १ जैसे धुआँ उड़ जाता है, वैसे ही तू उनको उड़ा दे; जैसे मोम आग की आँच से पिघल जाता है, वैसे ही दृश्य लोग परमेश्वर की उपस्थिति से नाश हों। २ परन्तु धर्मी आनन्दित हों; वे परमेश्वर के सामने प्रफुल्लित हों; वे अनन्द में मग्न हों! ३ परमेश्वर का गीत गाओ, उसके नाम का भजन गाओ; जो निर्जल देशों में सवार होकर चलता है, उसके लिये सङ्क बनाओ; उसका नाम यहोवा है, इसलिए तुम उसके सामने प्रफुल्लित हो! ४ परमेश्वर अपने पवित्र धाम में, अनाथों का पिता और विधवाओं का न्यायी है। ५ परमेश्वर अनाथों का घर बसाता है; और बन्दियों को छुड़ाकर सम्पन्न करता है; परन्तु विद्रोहियों को सखी भूमि पर रहना पड़ता है। ६ हे परमेश्वर, जब तू अपनी प्रजा के आगे-आगे चलता था, जब तू निर्जल भूमि में सेना समेत चला, (सेला) ७ तब पृथ्वी काँप उठी, और आकाश भी परमेश्वर के सामने टपकने लगा, उधर सनि पर्वत परमेश्वर, हाँ इसाएल के परमेश्वर के सामने काँप उठा। ८ हे परमेश्वर, तुने बहुतायत की वर्षा की; तेरा निज भाग तो बहुत सखा था, परन्तु तुने उसको हरा भरा किया है; ९ तेरा झाण्ड उसमें बसने लगा; हे परमेश्वर तुने अपनी भलाई से नीन जन के लिये तैयारी की है। १० प्रभु आज्ञा देता है, तब शुभ समाचार सुनानेवालियों की बड़ी सेना हो जाती है। ११ अपनी-अपनी सेना समेत राजा भागे चले जाते हैं, और गृहस्थित लट्ट को बाँट लेती है। १२ क्या तुम भेड़शालाओं के बीच लेट जाओगे? और ऐसी कबूतरी के समान होंगे जिसके पंख चाँदी से और जिसके पर पीते सोने से मढ़े हुए हों? १३ जब सर्वज्ञतिमान ने उसमें राजाओं को तितर-बितर किया, तब मानो सल्लोम पर्वत पर हिम पड़ा। १४ बाशान का पहाड़ परमेश्वर का पहाड़ है; बाशान का पहाड़ बहुत शिखरवाला पहाड़ है। १५ परन्तु हे शिखरवाले पहाड़ों, तुम क्यों उस पर्वत को धूरे हो, जिसे परमेश्वर ने अपने वास के लिये चाहा है, और जहाँ यहोवा सदा वास किए रहेगा? १६ परमेश्वर के रथ बीस हजार, वरन् हजारों हजार हैं; प्रभु उनके बीच मैं हूँ, जैसे वह सनि पवित्रस्थान मैं है। १७ तू ऊँचे पर चढ़ा, तू लोगों को बँधवाई मैं ले गया; तूने मनुष्यों से, बन् हठीले मनुष्यों से भी भेट ली, जिससे यहोवा परमेश्वर उनमें वास करे। १८ धन्य है प्रभु, जो प्रतिदिन हमारा बोझ उठाता है; वही हमारा उद्गरकर्ता परमेश्वर है। (सेला) १९ वही हमारे लिये बचानेवाला परमेश्वर ठहरा; यहोवा प्रभु मृत्यु से भी बचाता है। २० निश्चय परमेश्वर अपने शत्रुओं के सिर पर, और जो अर्धम के मार्ग पर चलता रहता है, उसका बाल भी खोपड़ी पर मार-मार के उसे चूर करेगा। २१ प्रभु ने कहा है, “मैं उन्हें बाशान से निकाल लाऊँगा, मैं उनको गहरे सागर के तल से भी फेर ले आऊँगा, २२ कि तू अपने पाँव को लह मैं ढुबोए, और तेरे शत्रु तेरे कुर्तों का भाग ठहरौं।” २३ हे परमेश्वर तेरी शोभा-यात्राएँ देखी गई, मेरे परमेश्वर और राजा की शोभा यात्रा पवित्रस्थान मैं जाते हुए देखी गई। २४ गणेवाले आगे-आगे और तारवाले बाजों के बजानेवाले पीछे-पीछे गए, चारों ओर कुमारियाँ डफ बजाती थीं। २५ सभाओं में परमेश्वर का, हे इसाएल के सोते से निकले हुए लोगों, प्रभु का धन्यवाद करो। २६ पहला बिन्यामीन जो सबसे छोटा गोत्र है, फिर यहोवा के हाकिम और उनकी सभा और जबलन और नसानी के हाकिम हैं। २७ तेरे परमेश्वर ने तेरी सामर्थ्य को बनाया है, हे परमेश्वर, अपनी सामर्थ्य को हम पर प्रगट कर, जैसा तूने पहले

प्रगट किया है। २८ तेरे मन्दिर के कारण जो यस्तलेम में है, राजा तेरे लिये भेट ले आएँगे। ३० नरकटों में रहनेवाले जंगली पशुओं को, सांडों के झुण्ड को और देश-देश के बछड़ों को शिकड़ करे। वे चाँदी के टुकड़े लिये हुए प्रणाम करेंगे; जो लोगे यहु से प्रसन्न रहते हैं, उनको उसने तिरत-वितर किया है। ३१ मिथु से अधिकारी आएँगे; कृशी अपने हाथों को परमेश्वर की ओर फुर्ती से फैलाएँगे। ३२ हे पृथ्वी पर के राज्य-राज्य के लोगों परमेश्वर का गीत गाओ; प्रभु का भजन गाओ, (सेला) ३३ जो सबसे ऊँचे सनातन स्वर्ण में सवार होकर चलता है; देखो वह अपनी वाणी सुनाता है, वह गम्भीर वाणी शक्तिशाली है। ३४ परमेश्वर की सामर्थ्य की स्तुति करो, उसका प्रताप इमाइल पर छाया हुआ है, और उसकी सामर्थ्य आकाशमण्डल में है। ३५ हे परमेश्वर, तु अपने पवित्रस्थानों में भययोग्य है, इमाइल का परमेश्वर ही अपनी प्रजा को सामर्थ्य और शक्ति का देनेवाला है। परमेश्वर धन्य है।

६९ प्रधान बजानेवाले के लिये शोशनीम राग में दाऊद का गीत हे परमेश्वर,
मेरा उद्घार कर, मैं जल में डबा जाता हूँ। १ मैं बड़े दलदल में धैंसा जाता हूँ, और मैं पैर कहीं नहीं स्कते; मैं गहरे जल में आ गया, और धारा में डबा जाता हूँ। २ मैं पुकारते-पुकारते थक गया, मेरा गला सूख गया है, अपने परमेश्वर की बाट जोहते-जोहते, मेरी आँखें धूँधली पड़ गई हैं। ३ जो अकारण मेरे बैरी है, वे गिनती में मेरे सिर के बालों से अधिक हैं; मेरे विनाश करनेवाले जो व्यर्थ मेरे शत्रु हैं, वे सामर्थी हैं, इसलिए जो मैंने लटा नहीं वह भी मुझ को देना पड़ा। ४ हे परमेश्वर, तू तो मेरी मृत्युता को जानता है, और मेरे दोष तुम से छिपे नहीं हैं। ५ हे प्रभु, हे सेनाओं के यहोवा, जो तेरी बाट जोहते हैं, वे मेरे कारण लजित न हो; हे इमाइल के परमेश्वर, जो तुम्हें ढँढ़ते हैं, वह मेरे कारण अपमानित न हो। ६ तेरे ही कारण मेरी निन्दा हुई है, और मेरा मुँह लज्जा से ढूँपा है। ७ मैं अपने भाइयों के सामने अजनबी हुआ, और अपने सभे भाइयों की दृष्टि में परदेशी ठहरा हूँ। ८ क्योंकि मैं तेरे भवन के निमित जलते-जलते भस्म हुआ, और जो निन्दा वे तेरी करते हैं, वही निन्दा मुझ को सहनी पड़ी है। ९ जब मैं रोकर और उपवास करके दुःख उठाता था, तब उससे भी मेरी नामधाराई ही हुई। १० जब मैं टाट का बख्ख पहने था, तब मेरा दृश्यन्त उनमें चलता था। ११ फाटक के पास बैठनेवाले मेरे विषय बातचीत करते हैं, और मदिरा पीनिवाले मुझ पर लगता हुआ गीत गते हैं। १२ परन्तु हे यहोवा, मेरी प्रार्थना तो तेरी प्रसन्नता के समय में हो रही है; हे परमेश्वर अपनी कस्ता की बहुतायत से, और बचाने की अपनी सच्ची प्रतिज्ञा के अनुसार मेरी सुन लो। १३ मुझ को दलदल में से उबार, कि मैं धैंस न जाऊँ; मैं अपने बैरियों से, और गहरे जल में से बच जाऊँ। १४ मैं धारा में डब न जाऊँ, और न मैं गहरे जल में डब मस्तूँ, और न पातल का मुँह मेरे ऊपर बन्द हो। १५ हे यहोवा, मेरी सुन ले, क्योंकि तेरी कस्ता उत्तम है; अपनी दया की बहुतायत के अनुसार मेरी ओर ध्यान दे। १६ अपने दास से अपना मुँह न मोड़; क्योंकि मैं संकर मैं हूँ, फुर्ती से मेरी सुन लो। १७ मेरे निकट आकर मुझे छुड़ा लो, मेरे श्रुतों से मुझ को छुटकारा दे। १८ मेरी नामधाराई और लज्जा और अनादर को तु जानता है। मेरे सब द्वोही तेरे सामने हैं। १९ मेरा हृदय नामधाराई के कारण फट गया, और मैं बहुत उदास हूँ। मैंने किसी तरस खानेवाले की आशा तो की, परन्तु किसी को न पाया, और शानि देनेवाले ढँढता तो रहा, परन्तु कोई न मिला। २० लोगों ने मेरे खाने के लिये विष दिया, और मेरी प्यास बुझाने के लिये मुझे सिरका पिलाया। २१ उनका भोजन उनके लिये फंदा हो जाए; और उनके सुख के समय जाल बन जाए। २२ उनकी आँखों पर अंधेरा छा जाए, ताकि वे देख न सकें; और तू उनकी कमर को निरन्तर कँपाता रह। २३ उनके ऊपर अपना

रोष भड़का, और तेरे क्रोध की आँच उनको लगे। २४ उनकी छावनी उजड़ जाए, उनके डेरों में कोई न रहे। २५ क्योंकि जिसको तूने मारा, वे उसके पीछे पड़े हैं, और जिनको तूने घायल किया, वे उनकी पीड़ा की चर्चा करते हैं। २६ उनके अर्धम पर अर्धम बढ़ा; और वे तेरे धर्म को प्राप्त न करें। २७ उनका नाम जीवन की पुस्तक में से काटा जाए, और धर्मियों के संग लिखा न जाए। २८ परन्तु मैं तो दुर्खी और पीड़ित हूँ, इसलिए हे परमेश्वर, तू मेरा उद्घार करके मुझे ऊँचे स्थान पर बैठा। २९ मैं गीत गाकर तेरे नाम की स्तुति करूँगा, और धन्यवाद करता हुआ तेरी बडाई करूँगा। ३० यह यहोवा को बैल से अधिक, बरन सीधा और खुबनेवाले बैल से भी अधिक भाषणा। ३१ नम्र लोग इसे देखकर आनन्दित होंगे, हे परमेश्वर के खोजियों, तुम्हारा मन हरा हो जाए। ३२ क्योंकि यहोवा दरिद्रों की ओर कान लगाता है, और अपने लोगों को जो बन्धी हैं तुच्छ नहीं जानता। ३३ स्वर्ण और पृथ्वी उसकी स्तुति करें, और समृद्ध अपने सब जीवजन्तुओं समेत उसकी स्तुति करें। ३४ क्योंकि परमेश्वर सिव्योन का उद्घार करेगा, और यहदा के नगरों को फिर बसाएगा; और लोग फिर वहाँ बसकर उसके अधिकारी हो जाएँगे। ३५ उसके दासों का वंश उसको अपने भाग में पाएगा, और उसके नाम के प्रेमी उसमें वास करेंगे।

७० प्रधान बजानेवाले के लिये: स्मरण करने के लिये दाऊद का भजन हे परमेश्वर, मुझे छुड़ाने के लिये, हे यहोवा, मेरी सहायता करने के लिये फुर्ती कर। १ जो मेरे प्राण के खोजी है, वे लजित और अपमानित हो जाए। जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं, वे पीछे हटाए और निरादर किए जाएँ। २ जो कहते हैं, “आहा, आहा!” वे अपनी लज्जा के मारे उलटे फेरे जाएँ। ३ जितने तुम्हें ढँढ़ते हैं, वे सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों। और जो तेरा उद्घार चाहते हैं, वे निरन्तर कहते रहें, “परमेश्वर की बडाई हो!” ४ मैं तो दीन और दरिद्र हूँ, हे परमेश्वर मेरे लिये फुर्ती कर। तू मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है; हे यहोवा विलम्ब न कर।

७१ हे यहोवा, मैं तेरा शरणागत हूँ; मुझे लजित न होने दे। २ तू तो धर्मी है, मुझे छुड़ा और मेरा उद्घार कर; मेरी ओर कान लगा, और मेरा उद्घार कर। ३ मैं लिये सनातन काल की चट्ठान का धाम बन, जिसमें मैं नित्य जा सकूँ, तूने मेरे उद्घार की आज्ञा तो दी है, क्योंकि तू मेरी चट्ठान और मेरा गढ़ ठहरा है। ४ हे मेरे परमेश्वर, दुःख के और कूटिल और कूर मनुष्य के हाथ से मेरी रक्षा कर। ५ क्योंकि हे प्रभु यहोवा, मैं तेरी ही बाट जोहता आया हूँ; बचपन से मेरा आधार तू है। ६ मैं गर्भ से निकलते ही, तेरे द्वारा सम्भाला गया; मुझे माँ की कोख से तू ही ने निकाला; इसलिए मैं नित्य तेरी स्तुति करता रहूँगा। ७ मैं बहुतों के लिये चमत्कार बना हूँ; परन्तु तू मेरा दृढ़ शरणस्थान है। ८ मेरे मूँह से तेरे गुणान्वाद, और दिन भर तेरी शोभा का वर्णन बहुत हुआ करे। ९ बुद्धाएं के समय मेरा त्याग न कर; जब मेरा बल घटे तब मुझ को छोड़ न दे। १० क्योंकि मेरे शत्रु मेरे विषय बातें करते हैं, और जो मेरे प्राण की ताक मैं हूँ, वे आपस में यह सम्मति करते हैं कि ११ परमेश्वर ने उसको छोड़ दिया है; उसका पीछा करके उसे पकड़ लो, क्योंकि उसका कोई छुड़ानेवाला नहीं। १२ हे परमेश्वर, मुझसे दूर न रह; हे मेरे परमेश्वर, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर। १३ जो मेरे प्राण के विरोधी हैं, वे नामधाराई और अनादर में गड़ जाएँ। १४ मैं अपने मूँह से तेरी धार्मिकता का, और तेरे किए हुए उद्घार का वर्णन दिन भर करता रहूँगा, क्योंकि उनका पूरा ब्योरा मेरी समझ से पेरे है। १५ मैं प्रभु यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन करता हुआ आँग्मा, मैं केवल तेरी ही

धार्मिकता की चर्चा किया कहसुँगा। १६ हे परमेश्वर, तू तो मुझ को बचपन ही से सिखाता आया है, और अब तक मैं तेरे आश्वर्यकर्मों का प्रचार करता आया हूँ। १७ इसलिए हे परमेश्वर जब मैं बूढ़ा हो जाऊँ और मेरे बाल पक जाएँ, तब भी तू मुझे न छोड़, जब तक मैं अनेवाली पीढ़ी के लोगों को तेरा बाहबल और सब उत्पन्न होनेवालों को तेरा पराक्रम सुनाऊँ। १८ हे परमेश्वर, तेरी धार्मिकता अति महान है। तू जिसने महाकार्य किए हैं, हे परमेश्वर तेरे तुल्य कौन है? १९ तुने तो हमको बहुत से कठिन कष्ट दिखाएँ हैं परन्तु अब तू फिर से हमको जिलाएणा; और पृथ्वी के गहरे राष्ट्र में से उत्तर लेगा। २० तू मेरे समान को बढ़ाएणा, और फिरकर मुझे शान्ति देगा। २१ हे मेरे परमेश्वर, मैं भी तेरी सच्चाई का धन्यवाद सारंगी बजाकर गाऊँगा; हे इमाएल के पवित्र मैं वीणा बजाकर तेरा भजन गाऊँगा। २२ जब मैं तेरा भजन गाऊँगा, तब अपने मुँह से और अपने प्राण से भी जो तुमे बचा लिया है, जयजयकार कहसुँगा। २३ और मैं तेरे धार्मिकता की चर्चा दिन भर करता रहूँगा; क्योंकि जो मेरी हानि के अभिलाषी थे, वे लज्जित और अपमानित हुए।

७२ सलैमान का गीत हे परमेश्वर, राजा को अपना नियम बता, राजपुत को

अपनी धार्मिकता सिखाओ! २४ वह तेरी प्रजा का न्याय धार्मिकता से, और तेरे दीन लोगों का न्याय ठीक-ठीक चुकाएगा। २५ पहाड़ों और पहाड़ियों से प्रजा के लिये, धार्मिकता के द्वारा शान्ति मिला करेगी २६ वह प्रजा के दीन लोगों का न्याय करेगा, और दरिद्र लोगों को बचाएगा; और अत्याचार करनेवालों को चूर करेगा। २७ जब तक सर्व और चन्द्रमा बने रहेंगे तब तक लोग पीढ़ी-पीढ़ी तेरा भय मानने रहेंगे। २८ वह घास की खूंटी पर बरसे वाले मेंह, और भूमि सीने वाली झड़ियों के समान होगा। २९ उसके दिनों में धर्मी फूले फलेंगे, और जब तक चन्द्रमा बना रहेगा, तब तक शान्ति बहुत रहेगी। ३० वह समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा। ३१ उसके सामने जंगल के रहनेवाले घुटने टेकेंगे, और उसके शत्रु मिट्टी चाटेंगे। ३२ तर्शीश और द्वीप-द्वीप के राजा भेंट ले आएँगे, शेवा और सबा दोनों के राजा उपहार पहुँचाएँगे। ३३ सब राजा उसको दण्डवत् करेंगे, जाति-जाति के लोग उसके अधीन हो जाएँगे। ३४ क्योंकि वह दुहाई देनेवाले दरिद्र का, और दुखी और अस्थाय मनुष्य का उद्धार करेगा। ३५ वह कंगाल और दरिद्र पर तरस खाएगा, और दरिद्रों के प्राणों को बचाएगा। ३६ वह उनके प्राणों को अत्याचार और उपद्रव से छुड़ा लेगा; और उनका लह उसकी दृष्टि में अस्मोल ठड़ेगा। ३७ वह तो जीवित रहेगा और शेवा के सोने में से उसको दिया जाएगा। लोग उसके लिये नित्य प्रार्थना करेंगे; और दिन भर उसको धन्य कहते रहेंगे। ३८ देश में पहाड़ों की चोटियों पर बहुत सा अनन होगा; जिसकी बालें लबानोन के देवदारों के समान झूंपेंगी; और नगर के लोग घास के समान लहलहाएँगे। ३९ उसका नाम सदा सर्वदा बना रहेगा; जब तक सूर्य बना रहेगा, तब तक उसका नाम नित्य नया होता रहेगा, और लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे, सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी। ४० धन्य है यहोवा परमेश्वर, जो इमाएल का परमेश्वर है; आश्वर्यकर्म केवल वही करता है। ४१ उसका महिमायुक्त नाम सर्वदा धन्य रहेगा; और सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण होगी। आमीन फिर आमीन। ४२ यिशै के पुर दाऊद की प्रार्थना समाप्त हुई।

७३ आसाप का भजन सचमुच इमाएल के लिये अर्थात् शुद्ध मनवालों के

लिये परमेश्वर भला है। ४३ मेरे डग तो उखड़ना चाहते थे, मेरे डग फिसलने ही पर थे। ४४ क्योंकि जब मैं दृश्यों का कुशल देखता था, तब उन घमण्डियों के विषय डाह करता था। ४५ क्योंकि उनकी मृत्यु में वेदनाएँ नहीं होती, परन्तु उनका बल अटूट रहता है। ४६ उनको दूसरे मनुष्यों के समान कष्ट

नहीं होता; और अन्य मनुष्यों के समान उन पर विपत्ति नहीं पड़ती। ४७ इस कारण अहंकार उनके गले का हार बना है; उनका ओढ़ना उपद्रव है। ४८ उनकी अँखें चर्ची से लिलकती हैं, उनके मन की भावनाएँ उमड़ती हैं। ४९ वे ठंडा मारते हैं, और दृश्या से हिसा की बात बोलते हैं; वे डीग मारते हैं। ५० वे मानो स्वर्ग में बैठे हुए बोलते हैं, और वे पृथ्वी में बोलते फिरते हैं। ५१ इसलिए उसकी प्रजा इधर लौट आएगी, और उनको भरे हुए प्यालों का जल मिलेगा। ५२ फिर वे कहते हैं, “परमेश्वर कैसे जानता है? क्या परमप्राधान को कुछ ज्ञान है?” ५३ देखो, ये तो दृश्य लोग हैं; तो भी सदा आराम से रहकर, धन-सम्पत्ति बटोरते रहते हैं। ५४ निश्चय, मैंने अपने हृदय को व्यर्थ शुद्ध किया और अपने हाथों को निर्देषिता में धोया है; ५५ क्योंकि मैं दिन भर मार खाता आया हूँ और प्रति भोर को मेरी ताड़ना होती आई है। ५६ यदि मैंने कहा होता, “मैं ऐसा कहूँगा”, तो देख मैं तेरे सन्तानों की पीढ़ी के साथ छल करता। ५७ जब मैं सोचने लगा कि इसे मैं कैसे समझूँ, तो यह मेरी दृष्टि में अति कठिन समस्या थी, ५८ जब तक कि मैंने परमेश्वर के पवित्रस्थान में जाकर उन लोगों के परिणाम को न सोचा। ५९ निश्चय तू उहें फिसलनेवाले स्थानों में रखता है; और गिराकर सत्यानाश कर देता है। ६० वे क्षण भर में कैसे उजड़ गए हैं! वे मिट गए, वे घबराते-घबराते नाश हो गए हैं। ६१ जैसे जानेवाला स्वप्न को तुच्छ जानता है, वैसे ही हे प्रभु जब तु उठेगा, तब उनको छाया सा समझकर तुच्छ जानेगा। ६२ मेरा मन तो कड़वा हो गया था, मेरा अन्तःकरण छिद गया था, ६३ मैं अबोध और नासमझ था, मैं तेरे सम्मुख मर्ख पशु के समान था। ६४ तो भी मैं निरन्तर तेरे संग ही था; तूने मेरे दाहिने हाथ को पकड़ रखा। ६५ तू सम्पत्ति देता हुआ, मेरी अगुआई करेगा, और तब मेरी महिमा करके मुझ को अपने पास रखेगा। ६६ स्वर्ग में मेरा और कौन है? तेरे संग रहते हुए मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता। ६७ मेरे हृदय और मन दोनों तो हार गए हैं, परन्तु परमेश्वर सर्वदा के लिये मेरा भाग और मेरे हृदय की चट्टान बना है। ६८ जो तुझ से दूर रहते हैं वे तेरे नाश होंगे; जो कोई तेरे विस्तु व्याभिचार करता है, उसको तू विनाश करता है। ६९ परन्तु परमेश्वर के समीप रहना, यही मेरे लिये भला है, मैंने प्रभु यहोवा को अपना शरणस्थान माना है, जिससे मैं तेरे सब कामों को वर्णन करूँगा।

७४ आसाप का मशकील हे परमेश्वर, तूने हमें क्यों सदा के लिये लोड दिया

है? तेरी कोपानि का धुआँ तेरी चाराई की भेड़ों के विस्तु क्यों उठ रहा है? ७ अपनी मण्डली को जिसे तूने प्राचीनकाल में मोल लिया था, और अपने निज भाग का गोरा होने के लिये छुड़ा लिया था, और इस सियधेयन पर्वत को भी, जिस पर तूने वास किया था, स्मरण कर! ८ अपने डग अनन्त खण्डरों की ओर बढ़ा; अर्थात् उन सब बुराइयों की ओर जो शत्रु ने पवित्रस्थान में की है। ९ तेरे दोही तेरे विव्रतस्थान के बीच गजते रहे हैं; उन्होंने अपनी ही ध्वजाओं को चिन्ह ठहराया है। १० वे उन मनुष्यों के समान थे जो घने बन के पेड़ों पर कुल्हाड़े चलाते हैं, ११ और अब वे उस भवन की नवकारी को, कुल्हाड़ियों और हथौड़ों से बिल्कुल तोड़े डालते हैं। १२ उन्होंने तेरे पवित्रस्थान को आग में झोंक दिया है, और तेरे नाम के निवास को गिराकर अशुद्ध कर डाला है। १३ उन्होंने मन में कहा है, “हम इनको एकदम ढबा दें।” १४ उन्होंने इस देश में परमेश्वर के सब सभास्थानों को फूँक दिया है। १५ हमको अब परमेश्वर के कोई अद्युत चिन्ह दिखाई नहीं देते; अब कोई नवी नहीं रहा, न हमरे बीच कोई जानता है कि कब तक यह दशा रहेगी। १६ हे परमेश्वर दोही कब तक नामधारी करता रहेगा? क्या शत्रु, तेरे नाम की निन्दा सदा करता रहेगा? १७ तू अपना दाहिना हाथ क्यों रोके रहता है? उसे अपने पंजर से निकालकर उनका अन्त कर दे। १८ परमेश्वर तो प्राचीनकाल से मेरा राजा है, वह पृथ्वी पर उद्धार के काम करता आया है। १९ तूने तो अपनी शक्ति से समुद्र को दो भागकर

दिया; तूने तो समुद्री अजगरों के सिरों को फोड़ दिया। १४ तूने तो लिव्यातान के सिरों को टकड़े-टकड़े करके जंगली जन्तुओं को खिला दिए। १५ तूने तो सोता खोलकर जल की धारा बहाई, तूने तो बारहमासी नदियों को सूखा डाला। १६ दिन तेरा है रात भी तेरी है; सर्व और चन्द्रमा को तूने स्थिर किया है। १७ तूने तो पृथ्वी की सब सीमाओं को ठहराया; धूपकाल और सर्दी दोनों तूने ठहराए हैं। १८ है यहोवा, स्मरण कर कि शत्रु ने नामधारी की है, और मर्ख लोगों ने तेरे नाम की मिन्दा की है। १९ अपनी पिण्डकी के प्राण को बन पशु के बश में न कर; अपने दीन जनों को सदा के लिये न भल। २० अपनी वाचा की सुधि ले; क्योंकि देश के अंगैरे स्थान अत्यन्याचार के घरों से भरपूर है। २१ पिसे हुए जन को अपमानित होकर लौटना न पड़े; दीन और दरिद्र लोग तेरे नाम की स्तुति करने पाएँ। २२ है परमेश्वर, उठ, अपना मुकुद्धमा आप ही लड़, तेरी जो नामधारी मर्ख द्वारा दिन भर होती रहती है, उसे स्मरण कर। २३ अपने द्वीपों का बड़ा बोल न भल, तेरे विरोधियों का कोलाहल तो निरन्तर उठता रहता है।

७५ प्रधान बजानेवाले के लिये: अलतशहेत राग में आसाप का भजन। गीत। है परमेश्वर हम तेरा धन्यवाद करते, हम तेरा नाम धन्यवाद करते हैं, क्योंकि तेरा नाम प्रगत हुआ है, तेरे आश्वर्यकर्मों का वर्णन हो रहा है। १ जब ठीक समय आएगा तब मैं आप ही ठीक-ठीक न्याय कहँगा। २ जब पृथ्वी अपने सब रहेवालों समेत डोल रही है, तब मैं ही उसके खम्भों को विश्र करता हूँ। (सेला) ३ मैंने घमाण्डियों से कहा, “घमाण्ड मत करो,” और दूषों से, “सींग ऊँचा मत करो;” ४ अपना सींग बहुत ऊँचा मत करो, न सिर उठाकर ढिठाई की बात बोलो।” ५ क्योंकि बढ़ती न तो पूरब से न पश्चिम से, और न जंगल की ओर से आती है; ६ परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है, वह एक को घटाता और दूरे को बढ़ाता है। ७ यहोवा के हाथ में एक कटोरा है, जिसमें का दाखमूझ झागवाला है; उसमें मसाला मिला है, और वह उसमें से उड़ेलता है, निश्चय उसकी तलछट तक पृथ्वी के सब दृश्य लोग पी जाएँगे। ८ परन्तु मैं तो सदा प्रचार करता रहँगा, मैं याकूब के परमेश्वर का भजन गाऊँगा। ९ दूषों के सब सीरों को मैं काट डालूँगा, परन्तु धर्मी के सींग ऊँचे किए जाएँगे।

७६ प्रधान बजानेवाले के लिये: तारवाले बाजों के साथ, आसाप का भजन, गीत परमेश्वर यहदा में जाना गया है, उसका नाम इस्साएल में महान हुआ है। १ और उसका मण्डप शालेम में, और उसका धाम सिय्योन में है। २ वहाँ उसने तीरों को, ढाल, तत्वावर को और युद्ध के अन्य हथियारों को तोड़ डाला। (सेला) ३ है परमेश्वर, तू तो ज्योतिर्मय है: तू अहेर से भरे हुए पहाड़ों से अधिक उत्तम और महान है। ४ दृढ़ मनवाले लुट गए, और भारी नीद में पड़े हैं; और शूरुवीरों में से किसी का हाथ न चला। ५ है याकूब के परमेश्वर, तेरी धूक्की से, रसों समेत घोड़े भारी नीद में पड़े हैं। ६ केवल तू ही भययोग है; और जब तू क्रोध करने लगे, तब तेरे सामने कौन खड़ा रह सकेगा? ७ तूने स्वर्ग से निर्विय सुनाया है; पृथ्वी उस समय सुनकर डर गई, और चुप रही, ८ जब परमेश्वर न्याय करने को, और पृथ्वी के सब नप्र लोगों का उदाहर करने को उठा। (सेला) ९ निश्चय मनुज्य की जलजलाहट तेरी स्तुति का कारण हो जाएगी, और जो जलजलाहट रह जाए, उसको तू रोकेगा। १० अपने परमेश्वर यहोवा की मन्त्र मानो, और पूरी भी करो; वह जो भय के योग्य है, उसके आस-पास के सब उसके लिये भेट ले आएँ। ११ वह तो प्रधानों का आभिमान मिटा देगा; वह पृथ्वी के राजाओं को भययोग जान पड़ता है।

७७ प्रधान बजानेवाले के लिये: यदूतून की राग पर, आसाप का भजन मैं परमेश्वर की दुहाई चिल्ला किल्ला कर दूँगा, मैं परमेश्वर की दुहाई दूँगा, और वह मेरी ओर कान लगाएगा। १२ संकट के दिन मैं प्रभु की खोज में

लगा रहा; रात को मेरा हाथ फैला रहा, और ढीला न हुआ, मुझ में शान्ति आई ही नहीं। १३ मैं परमेश्वर का स्मरण कर करके कराहता हूँ, मैं चिन्ता करते-करते मूर्छित हो चला हूँ। (सेला) १४ तू मुझे झपकी लगने नहीं देता; मैं ऐसा ध्वराया हूँ कि मेरे मूँह से बात नहीं निकलती। १५ मैंने प्राचीनकाल के दिनों को, और युग-युग के वर्षों को सोचा है। १६ मैं रात के समय अपने गीत को स्मरण करता; और मन में ध्यान करता हूँ, और मन में भली भाँति विचार करता हूँ। १७ “क्या प्रभु युग-युग के लिये मुझे छोड़ देगा; और फिर कभी प्रसन्न न होगा? क्या उसकी कस्णा सदा के लिये जाती रही? क्या उमका वचन पीढ़ी-पीढ़ी के लिये निष्फल हो गया है? क्या परमेश्वर अनुग्रह करना भूल गया? क्या उसने क्रोध करके अपनी सब दया को रोक रखा है?” (सेला) १८ मैंने कहा, “यह तो मेरा दुःख है, कि परमप्रधान का दाहिना हाथ बदल गया है!” १९ मैं यहोवा के बड़े कामों की चर्चा करूँगा; निश्चय मैं तेरे प्राचीनकालवाले अद्युत कामों को स्मरण करूँगा। २० मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करूँगा, और तेरे बड़े कामों को सोचूँगा। २१ है परमेश्वर तेरी गति पवित्रता की है। कौन सा देवता परमेश्वर के तुल्य बड़ा है? २२ अद्युत काम करनेवाला परमेश्वर त ही है, तो देश-देश के लोगों पर अपनी शक्ति प्रगट की है। २३ तूने अपने भजबल से अपनी प्रजा, याकूब और यसूफ के वंश को छुड़ा लिया है। (सेला) २४ है परमेश्वर, समदू ने तज्ज्ञ देखार, समदू तज्ज्ञ देखार डर गया, गहरा सारां भी काँप उठा। २५ मैंने से बड़ी वर्षा हुई; आकाश से शब्द हुआ; फिर तेरे तीर इधर-उधर चले। २६ बर्बंडर में तेरे गरजने का शब्द सुन पड़ा था; जगत बिजली से प्रकाशित हुआ; पृथ्वी कौपी और हिल गई। २७ तेरा मार्ग समदू में है, और तेरा रास्ता गहरे जल में हुआ; और तेरे पाँवों के चिन्ह मालस मन्ही होते। २८ तूने मूसा और हास्न के द्वारा, अपनी प्रजा की अगुआई भेड़ों की सी की।

७८ आसाप का मश्कील है मेरे लोगों, मेरी शिक्षा सुनो; मेरे वचनों की ओर कान लगाओ! १९ मैं अपना मूँह नीतिवचन कहने के लिये खोलूँगा, मैं प्राचीनकाल की गुप्त बातें कहूँगा, २० जिन बातों को हमने सुना, और जान लिया, और हमारे बापदादों ने हम से वर्णन किया है। २१ उन्हें हम उनकी सन्तान से गुप्त न रखेंगे, परन्तु होनहार पीढ़ी के लोगों से, यहोवा का गुणानुवाद और उसकी सामर्थ्य और आश्वर्यकर्मों का वर्णन करेंगे। २२ उसने तो याकूब में एक चित्तानी ठहराई, और इस्साएल में एक व्यवस्था चलाई, जिसके विषय उसने हगां पितरों को आज्ञा दी, कि तुम इन्हें अपने-अपने बाल-बच्चों को बताना; २३ कि अनेवाली पीढ़ी के लोग, अर्थात् जो बच्चे उत्पन्न होनेवाले हैं, वे इन्हें जानें; और अपने-अपने बाल-बच्चों से इनका बखान करने में उद्यत हों, २४ जिससे वे परमेश्वर का भरोसा रखें, परमेश्वर के बड़े कामों को भूल न जाएँ, परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें; २५ और अपने पितरों के समान न हों, क्योंकि उस पीढ़ी के लोग तो हरीले और झगड़ालू थे, और उन्होंने अपना मन स्थिर न किया था, और न उनकी आत्मा परमेश्वर की ओर सच्ची रही। २६ ऐसीयों ने तो शब्दधारी और धर्मधारी होने पर भी, यहूँ के समय पीठ दिखा दी। २७ उन्होंने परमेश्वर की वाचा पूरी नहीं की, और उसकी व्यवस्था पर चलने से इनकार किया। २८ उन्होंने उसके बड़े कामों को और जो आश्वर्यकर्म उसने उनके सामने किए थे, उनको भुला दिया। २९ उसने तो उनके बापदादों के सम्मुख मिस्र देश के सोअन के मैदान में अद्युत कर्म किए थे। ३० उसने समदू को दो भाग करके उन्हें पार कर दिया, और जल को ढेर के समान खड़ा कर दिया। ३१ उन्हें दिन को बादल के खब्बे से और रात भर अनि के प्रकाश के द्वारा उनकी अगुआई की। ३२ वह जंगल में चट्टानें फांडकर, उनको मानो गहरे जलाशयों से मनमाना पिलाता था। ३३ उसने चट्टान से भी धाराएँ

निकाली और नदियों का सा जल बहाया। १७ तो भी वे फिर उसके विस्तु अधिक पाप करते गए, और निर्जल देश में परमप्रधान के विस्तु उठते रहे। १८ और अपनी चाह के अनुसार भोजन माँगकर मन ही मन परमेश्वर की परीक्षा की। १९ वे परमेश्वर के विस्तु बोले, और कहने लगे, “क्या परमेश्वर जंगल में मेज लगा सकता है? २० उसने चट्टान पर मारकर जल बहा तो दिया, और धाराएँ उमड़ चली, परन्तु क्या वह रोटी भी दे सकता है? क्या वह अपनी प्रजा के लिये मौस भी तैयार कर सकता?” २१ यहोवा सुनकर क्रोध से भर गया, तब याकूब के विस्तु उसकी आग भड़क उठी, और इसाएल के विस्तु क्रोध भड़का; २२ इसलिए कि उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास नहीं रखा था, न उसकी उद्धार करने की शक्ति पर भरोसा किया। २३ तो भी उसने आकाश को आज्ञा दी, और स्वर्ग के द्वारों को खोला; २४ और उनके लिये खाने को मना बरसाया, और उन्हें स्वर्ग का अन्न दिया। २५ मनुष्यों को सर्वांदूरों की रोटी मिली; उसने उनको मनमाना भोजन दिया। २६ उसने आकाश में पूर्वावाई को चलाया, और अपनी शक्ति से दक्षिणी बहाई, २७ और उनके लिये मौस धूलि के समान बहुत बरसाया, और समुद्र के रेत के समान अनगिनत पक्षी भेजे; २८ और उनकी छावनी के बीच में, उनके निवासों के चारों ओर गिराए। २९ और वे खाकर अति तृप्त हुए, और उसने उनकी कामना पूरी की। ३० उनकी कामना बनी ही रही, उनका भोजन उनके मूँह ही में था, ३१ कि परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का, और उसने उनके हृष्टपुरुषों को घात किया, और इसाएल के जवानों को गिरा दिया। ३२ इतने पर भी वे और अधिक पाप करते गए; और परमेश्वर के आश्वर्यर्कम्पी पर विश्वास न किया। ३३ तब उसने उनके दिनों को वर्यथ श्रम में, और उनके वर्षों को घबराहट में कटवाया। ३४ जब वह उन्हें घात करने लगता, तब वे उसको पूछते थे; और फिरकर परमेश्वर को यत्र से खोजते थे। ३५ उनको स्मरण होता था कि परमेश्वर हमारी चट्टान है, और परमप्रधान परमेश्वर हमारा छुड़ानेवाला है। ३६ तो भी उन्होंने उसकी चापलसी की; वे उससे झूठ बोले। ३७ क्योंकि उनका हृदय उसकी ओर ढूँढ न था; न वे उसकी वाचा के विषय सच्चे थे। ३८ परन्तु वह जो दयालू है, वह अर्धमंथ की ढाँपता, और नाश नहीं करता; वह बार बार अपने क्रोध को ढांडा करता है, और अपनी जलजलाहट को पूरी रीति से भड़कने नहीं देता। ३९ उसको स्मरण हुआ कि ये नाशवान है, ये वायु के समान हैं जो चली जाती और लौट नहीं आती। ४० उन्होंने कितनी ही बार जंगल में उससे बलवा किया, और निर्जल देश में उसको उदास किया। ४१ वे बार बार परमेश्वर की परीक्षा करते थे, और इसाएल के पवित्र को खेदित करते थे। ४२ उन्होंने न तो उसका भुजबल स्मरण किया, न वह दिन जब उसने उनको द्रोही के वश से छुड़ाया था; ४३ कि उसने कैसे अपने चिन्ह मिस्र में, और अपने चमत्कार सोअन के मैदान में किए थे। ४४ उसने तो मिथियों की नदियों को लहू बना डाला, और वे अपनी नदियों का जल पी न सके। ४५ उसने उनके बीच में डांस भेजे जिन्होंने उन्हें काट खाया, और मेंढक भी भेजे, जिन्होंने उनका बिगाड़ किया। ४६ उसने उनकी भूमि की उपज कीड़ों को, और उनकी खेतीबारी टिढ़ियों को खिला दी थी। ४७ उसने उनकी दाखलताओं को ओलों से, और उनके गूलर के पेड़ों को ओले बरसाकर नाश किया। ४८ उसने उनके पशुओं को ओलों से, और उनके ढोरों को बिजलियों से मिटा दिया। ४९ उसने उनके ऊपर अपना प्रचण्ड क्रोध और रोष भड़काया, और उन्हें संकट में डाला, और दुखदाई दूरों का दल भेजा। ५० उसने अपने क्रोध का मार्ग खोला, और उनके प्राणों को मृत्यु से न बचाया, परन्तु उनको मरी के वश में कर दिया। ५१ उसने मिस्र के सब पहिलौठों को मारा, जो हाम के डेरों में पैरूष के पहले फल थे; ५२ परन्तु अपनी प्रजा को भेड़-बकरियों के समान प्रस्थान कराया, और जंगल में

उनकी अगुआई पशुओं के झुण्ड की सी की। ५३ तब वे उसके चलाने से बेखटके चले और उनको कुछ भय न हुआ, परन्तु उनके शत्रु समुद्र में डूब गए। ५४ और उसने उनको अपने पवित्र देश की सीमा तक, इसी पहाड़ी देश में पहँचाया, जो उसने अपने दाहिने हाथ से प्राप्त किया था। ५५ उसने उनके सामने से अन्यजातियों को भगा दिया; और उनकी भूमि को डेरी से माप-मापकर बाँट दिया; और इसाएल के गोत्रों को उनके डेरों में बसाया। ५६ तो भी उन्होंने परमप्रधान परमेश्वर की परीक्षा की और उससे बलवा किया, और उसकी चितौतियों को न माना, ५७ और मुड़कर अपने पुराखाओं के समान विश्वासघात किया; उन्होंने निकम्मे धनुष के समान धोखा दिया। ५८ क्योंकि उन्होंने ऊँचे स्थान बनाकर उसको रिस दिलाई, और खट्टी हर्दू मूर्तियों के द्वारा उसमें से जलन उपजाई। ५९ परमेश्वर सुनकर रोष से भर गया, और उसने इसाएल को बिल्कुल तज दिया। ६० उसने शीलों के निवास, अर्थात् उस तम्बू को जो उसने मनुष्यों के बीच खड़ा किया था, त्याग दिया, ६१ और अपनी सामर्थ्य को बँधुवाई में जाने दिया, और अपनी शोभा को द्रोही के वश में कर दिया। ६२ उसने अपनी प्रजा को तलवार से मरवा दिया, और अपने निज भाग के विस्तु रोष से भर गया। ६३ उनके जबान आग से भस्म हुए, और उनकी कुमारियों के बिवाह के गीत न गाएँ गए। ६४ उनके याजक तलवार से मारे गए, ६५ और उनकी विधावाँ रोने न पाई। ६६ तब प्रभु मानो नीद से चौंक उठा, और ऐसे वीर के समान उठा जो दाखमधु पीकर ललकरता हो। ६७ उसने अपने द्रोहियों को मारकर पीछे हटा दिया; और उनकी सदा की नामधारी कराई। ६८ फिर उसने यूसुफ के तम्बू को तज दिया; और एप्रैम के गोत्र को न चुना; ६९ परन्तु यहदा ही के गोत्र को, और अपने प्रिय सियोन पर्वत को चुन लिया। ७० उसने अपने पवित्रस्थान को बहुत ऊँचा बना दिया, और पूर्वी के समान स्थिर बनाया, जिसकी नीव उसने सदा के लिये डाली है। ७१ फिर उसने अपने दास दाऊद को चुनकर भेड़शालाओं में से ले लिया; ७२ वह उसको बच्चेवाली भेड़ों के पीछे-पीछे फिने से ले आया कि वह उसकी प्रजा याकूब की अर्थात् उसके निज भाग इसाएल की चरवाही करे। ७३ तब उसने खेरे मन से उनकी चरवाही की, और अपने हाथ की कुशलता से उनकी अगुआई की।

७९ आसाप का भजन है परमेश्वर, अन्यजातियों तेरे निज भाग में घुस आई;

उन्होंने तेरे पवित्र मन्दिर को अशुद्ध किया; और यस्तलेम को खण्डहर कर दिया है। १ उन्होंने तेरे दासों की शब्दों को आकाश के पक्षियों का आहार कर दिया, और तेरे भत्तों का मौस पृथ्वी के बन-पशुओं को खिला दिया है। २ उन्होंने उनका लह यस्तलेम के चारों ओर जल के समान बहाया, और उनको मिट्टी देनेवाला कोई न था। ३ पडोसियों के बीच हमारी नामधारी हूँ; चारों ओर के रहनेवाले हम पर हँसते, और ठाठा करते हैं। ४ हे यहोवा, कब तक? क्या तू सदा के लिए क्रोधित रहेगा? तुझ में आग की सी जलन कब तक भड़कती रहेगी? ५ जो जातियाँ तुझको नहीं जानती, और जिन राज्यों के लोग तुझ से प्रार्थना नहीं करते, उन्हीं पर अपनी सब जलजलाहट भड़का! ६ क्योंकि उन्होंने याकूब को निगल लिया, और उसके वासस्थान को उजाड़ दिया है। ७ हमारी हानि के लिये हमारे पुराखाओं के अर्थम के कामों को स्मरण न कर, तेरी दिया हम पर शीर्घी हो, क्योंकि हम बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं। ८ हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, अपने नाम की महिमा के निमित्त हमारी सहायता कर; और अपने नाम के निमित्त हमको छुड़ाकर हमारे पापों को ढाँप दे। ९ हे अन्यजातियाँ क्यों कहने पाएँ कि उनका परमेश्वर कहाँ रहा? तेरे दासों के खून का पलटा अन्यजातियों पर हमारी आँखों के सामने लिया जाए। १० बन्दियों का कराहना तेरे कान तक पहुँचे; घात होनेवालों को अपने भुजबल के द्वारा बचा। ११ हे प्रभु, हमारे पडोसियों ने जो तेरी निन्दा की है, उसका सात गुणा

बदला उनको दे! १३ तब हम जो तेरी प्रजा और तेरी चराई की भेड़े हैं, तेरा धन्यवाद सदा करते रहेंगे; और पीढ़ी से पीढ़ी तक तेरा गुणानुबाद करते रहेंगे।

८० प्रधान बजानेवाले के लिये: शोशनीमिटूत राग में आसाप का भजन है

इसाएल के चरवाहे, तू जो युसुफ की अगुआई भेड़ों की सी करता है, कान लगाया! तू जो कस्तूरों पर विराजमान है, अपना तेज दिखाया! २ ऐपै, बिन्यामीन, और मनश्वे के सामने अपना पराक्रम दिखाकर, हमारा उद्धार करने को आ! ३ हे परमेश्वर, हमको ज्यों के त्यों कर दे; और अपने मुख का प्रकाश चमका, तब हमारा उद्धार हो जाएगा! ४ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, तू कब तक अपनी प्रजा की प्रार्थना पर क्रोधित रहेगा? ५ तने आँसूओं को उनका आहार बना दिया, और मटके भर भकर उहाँ आँसू पिलाए हैं ६ तू हमें हमारे पड़ोसियों के झगड़ेने का कारण बना देता है; और हमारे शत्रु मनमाना ठंडा करते हैं। ७ हे सेनाओं के परमेश्वर, हमको ज्यों के त्यों कर दे; और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका, तब हमारा उद्धार हो जाएगा! ८ तू मिस से एक दाखलता ले आया; और अन्यजातियों को निकालकर उसे लगा दिया। ९ तने उसके लिये स्थान तैयार किया है; और उसने जड़ पकड़ी और फैलकर देश को भर दिया। १० उसकी छाया पहाड़ों पर फैल गई, और उसकी डालियाँ महा देवदारों के समान हड्डे, ११ उसकी शाखाएँ समुद्र तक बढ़ गई, और उसके अंकुर फरात तक फैल गए। १२ फिर नूर उसके बाढ़ों को क्यों गिरा दिया, कि सब बटोरी उसके फलों को तोड़ते हैं? १३ जंगली सुअर उसको नाश किए डालता है, और मैदान के सब पशु उसे चर जाते हैं। १४ हे सेनाओं के परमेश्वर, फिर आ! स्वर्ग से ध्यान देकर देख, और इस दाखलता की सुधि ले, १५ ये पौधा तने अपने दाहिने हाथ से लगाया, और जो लता की शाखा तने अपने लिये ढूढ़ की है। १६ वह जल गई, वह कट गई है; तेरी घुड़की से तेरे शत्रु नश हो जाए। १७ तेरे दाहिने हाथ के सम्भाले हाएँ पुस्त पर तेरा हाथ रखा रहे, उस आदमी पर, जिसे तने अपने लिये ढूढ़ किया है। १८ तब हम लोग तुझ से न मुड़ेंगे: तू हमको जिला, और हम तुझ से प्रार्थना कर सकेंगे। १९ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हमको ज्यों का त्यों कर दे! और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका, तब हमारा उद्धार हो जाएगा!

८१ प्रधान बजानेवाले के लिये: गितीथ राग में आसाप का भजन परमेश्वर

जो हमारा बल है, उसका गीत आनन्द से गाओ; याकूब के परमेश्वर का जयजयकार करो! १ गीत गाओ, डफ और मधुू बजनेवाली वीणा और सारंगी को ले आओ। २ नये चाँद के दिन, और पूर्णामासी को हमरे पर्व के दिन नरसिंगा झूँको। ३ क्योंकि यह इसाएल के लिये विधि, और याकूब के परमेश्वर का ठहराया हुआ नियम है। ४ इसको उसने युसुफ में चित्तौनी की रीति पर उस समय चलाया, जब वह मिस देश के विस्तृ चला। वहाँ मैंने एक अनजानी भाषा सुनी ५ “मैंने उनके कंधों पर से बोझ को उतार दिया; उनका टोकरी ढोना छूट गया। ६ तूने संकट में पड़कर पुकारा, तब मैंने तुझे छुड़ाया; बातल गरजने के गुप स्थान में से मैंने तेरी सुनी, और मरीचा नामक सोते के पास तेरी परीक्षा की। (सेला) ७ हे मेरी प्रजा, सुन, मैं तुझे चिता देता हूँ! हे इसाएल भला हो कि तू मेरी सुने! ८ तेरे बीच में पराया ईश्वर न हो; और न त किसी पराए देवता को दण्डवत करना! ९ तेरा परमेश्वर यहोवा मैं हूँ, जो तुझे मिस देश से निकाल लाया है। तू अपना मूँह पसार, मैं उसे भर दूँगा। १० “परन्तु मेरी प्रजा ने मेरी न सुनी, इसाएल ने मुझ को न चाहा। ११ इसलिए मैंने उसको उसके मन के हठ पर छोड़ दिया, कि वह अपनी ही युक्तियों के अनुसार चले। १२ यदि मेरी प्रजा मेरी सुने, यदि इसाएल मेरे मार्गों पर चले, १३ तो मै क्षण भर में उनके शत्रुओं को दबाऊँ, और अपना हाथ उनके द्वाहियों के विस्तृ

चलाऊँ। १५ यहोवा के बैरी उसके आगे भय में दण्डवत् करें! उन्हें हमेशा के लिए अपमानित किया जाएगा। १६ मैं उनको उत्तम से उत्तम गैहँ खिलाता, और मैं चट्टान के मधु से उनको तृप्त करता।”

८२ आसाप का भजन परमेश्वर दिव्य सभा में खड़ा है: वह ईश्वरों के बीच

में न्याय करता है। १ “तुम लोग कब तक टेढ़ा न्याय करते और दुश्मों का पक्ष लेते रहेगो? (सेला) २ कंगाल और अनाथों का न्याय चुकाओ, दीन-दरिद्र का विचार धर्म से करो। ३ कंगाल और निर्धन को बचा लो; दुश्मों के हाथ से उन्हें छुड़ाओ।” ४ वे न तो कुछ समझते और न कुछ जानते हैं, परन्तु अंधेरे में चलते फिरते रहते हैं; पृथ्वी की पूरी नीच हिल जाती है। ५ मैंने कहा था “तुम ईश्वर हो, और सब के सब परमप्रधान के पुत्र हो; ६ तो भी तुम मनुष्यों के समान मरोगे, और किसी प्रधान के समान गिर जाओगे।” ७ हे परमेश्वर उठ, पृथ्वी का न्याय कर; क्योंकि तू ही सब जातियों को अपने भाग में लेगा!

८३ आसाप का भजन है परमेश्वर मैन न रह; हे परमेश्वर चुप न रह, और

न शान्त रह। १ क्योंकि देख तेरे शत्रु धूम मचा रहे हैं; और तेरे बैरियों ने सिर उठाया है। २ वे चतुर्हाँ से तेरी प्रजा की हानि की सम्पत्ति करते, और तेरे रक्षित लोगों के विस्तृ युक्तियाँ निकालते हैं। ३ उन्होंने कहा, “आओ, हम उनका ऐसा नाश करें कि राज्य भी मिट जाए; और इसाएल का नाम आगे को स्मरण न रहे।” ४ उन्होंने एक मन होकर युक्ति निकाली है, और तेरे ही विस्तृ वाचा बाँधी है। ५ ये तो एटोम के तम्बूलाते और इश्माएली, मोअबी और हाय्री, ६ गबाली, अम्मोनी, अमालेकी, और सोर समेत पलिशती हैं। ७ इनके संग अशूरी भी मिल गए हैं; उनसे भी लक्ष्यवंशियों को सहारा मिला है। (सेला) ९ इनसे ऐसा कर जैसा मिथानियों से, और कीशोन नाले में सीसिरा और याबीन से किया था, १० वे एनदोर में नाश हुए, और भूमि के लिये खाद बन गए। ११ इनके रईसों को ओरेब और जेब सरीखे, और इनके सब प्रधानों को जेबह और सल्मुन्ना के समान कर दे, १२ जिह्नेंने कहा था, “हम परमेश्वर की चाराइयों के अधिकारी आप ही हो जाएँ।” १३ हे मेरे परमेश्वर इनको बवंडर की धूलि, या पवन से उड़ाए हुए भूसे के समान कर दे। १४ उस आग के समान जो वन को भस्म करती है, और उस लौ के समान जो पहाड़ों को जला देती है, १५ तू इन्हें अपनी औंधी से भगा दे, और अपने बवंडर से घबरा दे! १६ इनके मूँह को अति लज्जित कर, कि हे यहोवा ये तेरे नाम को ढूँढ़े। १७ ये सदा के लिये लज्जित और घबराए रहें, इनके मूँह काले हों, और इनका नाश हो जाए, १८ जिससे ये जाने कि केवल तू जिसका नाम यहोवा है, सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है।

८४ प्रधान बजानेवाले के लिये गितीथ में कोरहवंशियों का भजन है सेनाओं

के यहोवा, तेरे निवास क्या ही प्रिय है! १ मेरा प्राण यहोवा के अङ्गों की अभिलाषा करते-करते मृष्टि हो चला; मेरा तन मन दोनों जीविते परमेश्वर को पुकार रहे। २ हे सेनाओं के यहोवा, हे मेरे राजा, और मेरे परमेश्वर, तेरी वेदियों में गौंथेया ने अपना बसरा और शूपाबनी ने घोंसला बना लिया है जिसमें वह अपने बच्चे रखे। ३ क्या ही धन्य है वे, जो तेरे भवन में रहते हैं, वे तेरी स्तुति निरन्तर करते रहेंगे। (सेला) ४ क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जो तुझ से शक्ति पाता है, और वे जिनको सिद्ध्यों की सड़क की सुधि रहती है। ५ वे रोने की ताई में जाते हुए उसको सोतों का स्थान बनाते हैं; फिर बरसात की अगली वृष्टि उसमें आशीष ही आशीष उपजाती है। ६ वे बल पर बल पाते जाते हैं, उनमें से हर एक जन सिद्ध्यों में परमेश्वर को अपना मूँह दिखाएगा। ७ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन, हे याकूब के परमेश्वर, कान

लगा! (सेला) ९ हे परमेश्वर, हे हमारी ढाल, दृष्टि कर; और अपने अभिषित्का मुख देखो! १० क्योंकि तेरे आँगनों में एक दिन और कही के हजार दिन से उत्तम है। दुश्गों के डेरों में वास करने से अपने परमेश्वर के भवन की डेवडी पर खड़ा रहना ही मुझे अधिक भावता है। ११ क्योंकि यहोवा परमेश्वर सर्वे और ढाल है; यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा; और जो लोग खरी चाल चलते हैं; उनसे वह कोई अच्छी वस्तु रुख न छोड़ेगा। १२ हे सेनाओं के यहोवा, क्या ही धन्य वह मनुष्य है, जो तुझ पर भरोसा रखता है!

१३ प्रधान बजानेवाले के लिये: कोरहवंशियों का भजन हे यहोवा, तू अपने

देश पर प्रसन्न हआ, याकब को बैंधवाई से लौटा ले आया है। १४ तने अपनी प्रजा के अधर्म को क्षमा किया है; और उसके सब पापों को ढाँप दिया है। (सेला) १५ तने अपने रोष को शान्त किया है; और अपने भड़के हए कोप को दूर किया है। १६ हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, हमको पुनः स्थापित कर, और अपना क्रोध हम पर से दूर कर। १७ क्या तू हम पर सदा कोपित रहेगा? क्या तू पीढ़ी से पीढ़ी तक कोप करता रहेगा? १८ क्या तू हमको फिर न जिलाएंगा, कि तेरी प्रजा तुझ में आनन्द करो? १९ हे यहोवा अपनी कम्ला हमें दिखा, और त हमारा उद्धार कर। २० मैं कान लगाए रहँगा कि परमेश्वर यहोवा क्या कहता है, वह तो अपनी प्रजा से जो उसके भक्त है, शान्ति की बातें कहेगा; परन्तु वे फिरके मूर्खता न करने लगें। २१ मिश्र्य उसके डरवैयों के उद्धार का समय निकट है, तब हमारे देश में महिमा का निवास होगा। २२ कम्ला और सच्चाई आपस में मिल गई हैं; धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया है। २३ पृथ्वी में से सच्चाई उत्तरी और स्वर्ग से धर्म जुकता है। २४ हाँ, यहोवा उत्तम वस्तुरूप देगा, और हमारी भूमि अपनी उपज देगी। २५ धर्म उत्के आगे-आगे चलेगा, और उसके पाँवों के चिह्नों को हमारे लिये मार्ग बनाएगा।

२६ दाऊद की प्रार्थना हे यहोवा, कान लगाकर मेरी सुन ले, क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूँ। २७ मेरे प्राण की रक्षा कर, क्योंकि मैं भक्त हूँ; तू मेरा

परमेश्वर है, इसलिए अपने दास का, जिसका भरोसा तुझ पर है, उद्धार कर। २८ हे प्रभु, मुझ पर अनुग्रह कर, क्योंकि मैं तुझी को लगातार पुकारता रहता हूँ। २९ अपने दास के मन को आनंदित कर, क्योंकि हे प्रभु, मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूँ। ३० क्योंकि हे प्रभु, तू भला और क्षमा करनेवाला है, और जितने तुझे पुकारते हैं उन सभी के लिये तू अति कल्पनामय है। ३१ हे यहोवा मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा, और मेरे गिडिङडों को ध्यान से सुन। ३२ संकट के दिन मैं तुझको पुकासँगा, क्योंकि तू मेरी सुन लेगा। ३३ हे प्रभु, देवताओं में से कोई भी तेरे तुल्य नहीं, और न किसी के काम तेरे कामों के बराबर हैं। ३४ हे प्रभु, जितनी जातियों को तूने बनाया है, सब आकर तेरे सामने दण्डवत् करेंगी, और तेरे नाम की महिमा करेंगी। ३५ क्योंकि तू महान और अद्वैतकर्म करनेवाला है, केवल तू ही परमेश्वर है। ३६ हे यहोवा, अपना मार्ग मुझे सिखा, तब मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलूँगा, मुझ को एक चित्त कर कि मैं तेरे नाम का भय मानूँ। ३७ हे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर, मैं अपने सम्पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूँगा, और तेरे नाम की महिमा सदा करता रहँगा। ३८ क्योंकि तेरी कल्पना मेरे ऊपर बड़ी है; और तूने मुझ को अधोलोक की तह में जाने से बचा लिया है। (Sheol h7585) ३९ हे परमेश्वर, अभिमानी लोग मेरे विद्धु उठ गए हैं, और उपद्रवियों का झुण्ड मेरे प्राण के खोनी हुए हैं, और वे तेरा कछ विचार नहीं रखते। ४० परन्तु प्रभु दयाल और अनुग्रहकारी परमेश्वर है, तू विलम्ब से कोप करनेवाला और अति कल्पनामय है। ४१ मेरी ओर फिरकर मुझ पर अनुग्रह कर; अपने दास को तू शक्ति दे, और अपनी दासी के पुत्र का उद्धार कर। ४२ मुझे भलाई का

कोई चिन्ह दिखा, जिसे देखकर मेरे बैरी निराश हों, क्योंकि हे यहोवा, तूने आप मेरी सहायता की ओर मुझे शान्ति दी है।

४३ कोरहवंशियों का भजन उसकी नीब विविध पर्वतों में है; ४४ और यहोवा सियोन के फाटकों से याकब के सारे निवासों से बढ़कर प्रीति रखता है। ४५ हे परमेश्वर के नगर, तेरे विषय महिमा की बातें कही गई हैं। (सेला) ४६ मैं अपने जान-पहचानवालों से रहब और बाबेल की भी चर्चा करूँगा; पलिशत, सोर और कूश को देखो: “यह वहाँ उत्पन्न हुआ था।” ४७ और सियोन के विषय में यह कहा जाएगा, “इसमें से प्रत्येक का जन्म उसमें हुआ था।” और परमप्रधान आप ही उसको स्थिर रखे। ४८ यहोवा जब देश-देश के लोगों के नाम लिखकर गिन लेगा, तब यह कहेगा, “यह वहाँ उत्पन्न हुआ था।” (सेला) ४९ गवैये और नृतक दोनों कहेंगे, “हमारे सब सोते तुझी में पाए जाते हैं।”

५० कोरहवंशियों का भजन प्रधान बजानेवाले के लिये: महलतलान्गोत राग

में एजांवंशी हेमान का मशकील है मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर यहोवा, मैं दिन को और रात को तेरे आगे चिल्लता आया हूँ। ५१ मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुँचे, मेरे चिल्लाने की ओर कान लगाए रहँगा कि परमेश्वर यहोवा क्या कहता है, वह तो अपनी प्रजा से जो उसके भक्त है, शान्ति की बातें कहेगा; परन्तु वे फिरके मूर्खता न करने लगें। ५२ मिश्र्य उसके डरवैयों के उद्धार का समय निकट है, तब हमारे देश में महिमा का निवास होगा। ५३ कम्ला और सच्चाई आपस में मिल गई हैं; धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया है। ५४ पृथ्वी में से सच्चाई उत्तरी और स्वर्ग से धर्म जुकता है। ५५ हाँ, यहोवा उत्तम वस्तुरूप देगा, और हमारी भूमि अपनी उपज देगी। ५६ धर्म उत्के आगे-आगे चलेगा, और उसके पाँवों के चिह्नों को हमारे लिये मार्ग बनाएगा।

५७ दाऊद की प्रार्थना हे यहोवा, कान लगाकर मेरी सुन ले, क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूँ। ५८ मेरे प्राण की रक्षा कर, क्योंकि मैं भक्त हूँ; तू मेरा परमेश्वर है, इसलिए अपने दास का, जिसका भरोसा तुझ पर है, उद्धार कर। ५९ हे प्रभु, मुझ पर अनुग्रह कर, क्योंकि मैं तुझी को लगातार पुकारता रहता हूँ। ६० क्योंकि मैं बलहीन पुम्प के समान हो गया हूँ। ६१ मैं मुर्दों के बीच छोड़ा गया हूँ, और जो घाट होकर कब्र में पड़े हैं, जिनको तू फिर स्मरण नहीं करता और वे तेरी सहायता रहित हैं, उनके समान मैं हो गया हूँ। ६२ तेरे मुझे गढ़े के तल ही मैं, अंधेरे और गहरे स्थान में रखा है। ६३ तेरी जलजलाहट मुझी पर बनी हुई है, और तूने अपने सब तंगों से मुझे दुःख दिया है। (सेला) ६४ तेरे मेरे पहचानवालों को मुझसे दूर किया है; और मुझ को उनकी दृष्टि में धिनाना किया है। मैं बन्दी हूँ और निकल नहीं सकता; ६५ दुःख भोगते-भोगते मेरी आँखें धूँधला गई हैं हे यहोवा, मैं लगातार तुझ पुकारता और अपने हाथ तेरी ओर फैलाता आया हूँ। ६६ क्या तू मुर्दों के लिये अदूत काम करेगा? क्या मेरे लोग उठकर तेरा धन्यवाद करेंगे? (सेला) ६७ क्या कब्र में तेरी कल्पना का, और विनाश की दशा में तेरी सच्चाई का वर्णन किया जाएगा? ६८ क्या तेरे अदूत काम अंधकार में, या तेरा धर्म विश्वासघात की दशा में जाना जाएगा? ६९ परन्तु हे यहोवा, मैंने तेरी दुर्हाइ दी है; और भोर को मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुँचेंगी। ७० हे यहोवा, तू मुझ को क्यों छोड़ता है? तू अपना मुख मुझसे क्यों छिपाता रहता है? ७१ मैं बचपन ही से दुखी बरन अधमारा हूँ, तुझ से भय खाते मैं अति व्याकुल हो गया हूँ। ७२ तेरा क्रोध मुझ पर पड़ा है; उस भय से मैं धिन गया हूँ। ७३ वह दिन भर जल के समान मुझे घेरे रहता है; वह मेरे चारों ओर दिखाई देता है। ७४ तेरे मित्र और भाई-बहूदु दोनों को मुझसे दूर किया है; और मेरे जान-पहचानवालों को अंधकार में डाल दिया है।

७५ एतान एजांवंशी का मशकील मैं यहोवा की सारी कल्पना के विषय सदा

गता रहँगा; मैं तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बताता रहँगा। ७६ क्योंकि मैंने कहा, “तेरी कल्पना सदा बनी रहेगी, तू स्वर्ग में अपनी सच्चाई को स्थिर रखेगा।” ७७ तने कहा, “मैंने अपने चुने हुए से बाचा बाँधी है, मैंने अपने दास दाऊद से शपथ खाई है, ७८ मैं तेरे वंश को सदा स्थिर रखँगा; और तेरी राजगढ़ी को पीढ़ी-पीढ़ी तक बनाए रखँगा।” (सेला) ७९ हे यहोवा, स्वर्ग में तेरे अदूत काम की, और पवित्रों की सभा में तेरी सच्चाई की प्रशंसा होगी। ८० क्योंकि आकाशमण्डल में यहोवा के तुल्य कौन ठड़ेरा? बलवन्तों के पुत्रों में कौन है जिसके साथ यहोवा की उपमा दी जाएगी? ८१ परमेश्वर पवित्र लोगों की गोष्ठी में अत्यन्त प्रतिष्ठा के योग्य, और अपने चारों ओर सब रहनेवालों से

अधिक भययोग्य है। ८ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हे यहोवा, तेरे तुल्य कौन सामर्थी है? तेरी सच्चाई तेरे चारों ओर है। ९ समुद्र के गर्व को तू ही तोड़ता है; जब उसके तंग उठते हैं, तब तू उनको शान्त कर देता है। १० तूने रहब को घाट किए हुए के समान कुचल डाला, और अपने शत्रुओं को अपने बाहबल से तिर-बितर किया है। ११ आकाश तेरा है, पृथ्वी भी तेरी है; जगत और जो कुछ उसमें है, उसे तू ही ने स्थिर किया है। १२ उत्तर और दक्षिण को तू ही ने सिरजा; ताबों और दर्माने तेरे नाम का जयजयकार करते हैं। १३ तेरी भजा बलवन्त है, तेरा हाथ शक्तिमान और तेरा दाहिना हाथ प्रबल है। १४ तेरे सिंहासन का मूल, धर्म और न्याय है; कस्मा और सच्चाई तेरे आगे-आगे चलती है। १५ क्या ही धन्य है वह समाज जो आनन्द के ललकार को पहचानता है; हे यहोवा, वे लोग तेरे मुख के प्रकाश में चलते हैं, १६ वे तेरे नाम के हेतु दिन भर मग्न रहते हैं, और तेरे धर्म के कारण महान हो जाते हैं। १७ क्योंकि तू उनके बल की शोभा है, और अपनी प्रसन्नता से हमारे सींग को ऊँचा करेगा। १८ क्योंकि हमारी ढाल यहोवा की ओर से है, हमारा राजा इसाएल के पवित्र की ओर से है। १९ एक समय तूने अपने भक्त को दर्शन देकर बातें की; और कहा, “मैंने सहयोग करने के भार एक वीर पर रखा है, और प्रजा में से एक को चुनकर बढ़ाया है। २० मैंने अपने दास ढाऊद को लेकर, अपने पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया है। २१ मेरा हाथ उसके साथ बना रहेगा, और मेरी भजा उसे ढूँख रखेगी। २२ शत्रु उसको तंग करने न पाएगा, और न कुटिल जन उसको दूँख देने पाएगा। २३ मैं उसके शत्रुओं को उसके सामने से नाश करूँगा, और उसके बैरियों पर विपत्ति डालूँगा। २४ परन्तु मेरी सच्चाई और कस्मा उस पर बनी रहेगी, और मेरे नाम के द्वारा उसका सींग ऊँचा हो जाएगा। २५ मैं समुद्र को उसके हाथ के नीचे और महानदों को उसके दाहिने हाथ के नीचे कर दूँगा। २६ वह मुझे पुकारकर कहेगा, ‘तू मेरा पिता है, मेरा परमेश्वर और मेरे उद्गार की चट्ठान है।’ २७ फिर मैं उसको अपना पहलौठा, और पृथ्वी के राजाओं पर प्रधान ठहराऊँगा। २८ मैं अपनी कस्मा उस पर सदा बनाए रहूँगा, और मेरी बाचा उसके लिये अस्टल रहेगी। २९ मैं उसके वंश को सदा बनाए रखूँगा, और उसकी राजगद्दी स्वर्ग के समान सर्वदा बनी रहेगी। ३० यदि उसके वंश के लोग मेरी व्यवस्था को छोड़ें और मेरे नियमों के अनुसार न चलें, ३१ यदि वे मेरी विधियों का उल्लंघन करें, और मेरी आज्ञाओं को न मारें, ३२ तो मैं उनके अपराध का ठण्ड सोंटें से, और उनके अधर्म का ठण्ड कोड़ों से दूँगा। ३३ परन्तु मैं अपनी कस्मा उस पर से न हटाऊँगा, और न सच्चाई त्याग कर झटा ठहरूँगा। ३४ मैं अपनी बाचा न तोड़ूँगा, और जो मेरे मुँह से निकल चुका है, उसे न बदलूँगा। ३५ एक बार मैं अपनी पवित्रता की शपथ खा चुका हूँ, मैं दाऊद को कमी धोखा न दूँगा। ३६ उसका वंश सर्वदा रहेगा, और उसकी राजगद्दी सूर्य के समान मेरे सम्मुख ठरी रहेगी। ३७ वह चन्द्रमा के समान, और आकाशमण्डल के विश्वासयोग साक्षी के समान सदा बना रहेगा।” (सेला) ३८ तो भी तूने अपने अभिषिक्त को छोड़ा और उसे तज दिया, और उस पर अति क्रोध किया है। ३९ तूने अपने दास के साथ की बाचा को त्याग दिया, और उसके मुकुट को भूमि पर गिराकर अशुद्ध किया है। ४० तूने उसके सब बाढ़ों को तोड़ डाला है, और उसके गढ़ों को उजाड़ दिया है। ४१ सब बटोही उसको लूट लेते हैं, और उसके पड़ोसियों से उसकी नामधाराई होती है। ४२ तूने उसके विरोधियों को प्रबल किया; और उसके सब शत्रुओं को आनन्दित किया है। ४३ फिर तू उसकी तलवार की धार को मोड़ देता है, और युद्ध में उसके पाँव जमने नहीं देता। ४४ तूने उसका तेज हर लिया है, और उसके सिंहासन को भूमि पर पटक दिया है। ४५ तूने उसकी जवानी को घटाया, और उसको लज्जा से ढाँप दिया है। (सेला) ४६ हे यहोवा, तू कब तक

लगातार मुँह फेरे रहेगा, तेरी जलजलाहट कब तक आग के समान भड़की रहेगी। ४७ मेरा स्मरण कर, कि मैं कैसा अनित्य हूँ, तूने सब मनुष्यों को क्यों व्यथ सिरजा है? ४८ कौन पुष्प सदा अमर रहेगा? क्या कोई अपने प्राण को अधोलोक से बचा सकता है? (सेला) (Sheol h7585) ४९ हे प्रभु, तेरी प्राचीनकाल की कस्मा कहाँ रही, जिसके विषय में तूने अपनी सच्चाई की शपथ दाऊद से खाई थी? ५० हे प्रभु, अपने दासों की नामधाराई की सूधि ले, मैं तो सब सामर्थी जातियों का बोझ लिए रहता हूँ। ५१ तेरे उन शत्रुओं ने तो हे यहोवा, तेरे अभिषिक्त के पीछे पड़कर उसकी नामधाराई की है। ५२ यहोवा सर्वदा धन्य रहेगा! आपनी फिर आपनी।

१० परमेश्वर के जन मसा की प्रार्थना हे प्रभु, तू पीढ़ी से पीढ़ी तक हमारे लिये धाम बना है। १ इससे पहले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, या तूने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन् अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही परमेश्वर है। २ तू मनुष्य को लौटाकर मिट्टी में ले जाता है, और कहता है, “हे आदमियों, लौट आओ!” ३ क्योंकि हजार वर्ष तेरी दृष्टि में ऐसे हैं, जैसा कल का दिन जो बीत गया, या रात का एक पहर। ४ तू मनुष्यों को धारा में बहा देता है, वे स्वप्न से ठहरते हैं, वे भोर को बदनेवाली धास के समान होते हैं। ५ वह भोर को फूलती और बढ़ती है, और सँझ तक कटकर मुझी जाती है। ६ क्योंकि हम तेरे क्रोध से भस्म हुए हैं; और तेरी जलजलाहट से घबरा गए हैं। ७ तूने हमारे अर्धम के कामों को अपने सम्मुख, और हमारे छिपे हुए पापों को अपने मुख की ज्योति में रखा है। ८ क्योंकि हमारे सब दिन तेरे क्रोध में बीत जाते हैं, हम अपने वर्ष शब्द के समान बिताते हैं। ९ हमारी आयु के वर्ष सतर तो होते हैं, और चाहे बल के कारण अस्ती वर्ष भी ही हो जाएँ, तो भी उनका घमण्ड केवल कष्ट और शोक ही शोक है; क्योंकि वह जलदी कट जाती है, और हम जाते रहते हैं। १० तेरे क्रोध की शक्ति को और तेरे भय के योग्य तेरे रोष को कौन समझता है? ११ हमको अपने दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान हो जाएँ। १२ हे यहोवा, लौट आ! कब तक? और अपने दासों पर तरस खा! १३ भोर को हमें अपनी कस्मा से तुम कर, कि हम जीवन भर जयजयकार और आनन्द करते रहें। १४ जिन्हे दिन तू हमें दुँख देता आया, और जितने वर्ष हम क्लेश भोगते आए हैं उतने ही वर्ष हमको आनन्द दे। १५ तेरा काम तेरे दासों को, और तेरा प्रताप उनकी सन्तान पर प्रगट हो। १६ हमारे परमेश्वर यहोवा की मनोहरता हम पर प्रगट हो, तू हमारे हाथों का काम हमारे लिये ढूँकर, हमारे हाथों के काम को ढूँकर।

११ जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा। १२ मैं यहोवा के विषय कहूँगा, “वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है; वह मेरा परमेश्वर है, जिस पर मैं भोरा रखता हूँ” ३ वह तो तुझे बहेलिये के जाल से, और महामारी से बचाएगा; ४ वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा, और तू उसके परों के नीचे शरण पाएगा; उसकी सच्चाई तेरे लिये ढाल और ज़िलम ठहरोगी। ५ तून रात के भय से डेरोगा, और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है, ६ न उस मरी से जो अंधेरे में फैलती है, और न उस महारोग से जो दिन-दुपहरी में उजाड़ता है। ७ तेरे निकट हजार, और तेरी दाहिनी ओर दस हजार गिरेगे; परन्तु वह तेरे पास न आएगा। ८ परन्तु तू अपनी आँखों की दृष्टि करेगा और दुर्घटों के अन्दर को देखेगा। ९ हे यहोवा, तू मेरा शरणस्थान ठहरा है। तुम्हे जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है, १० इसलिए कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी, न कोई दुँख तेरे डेरों के निकट आएगा। ११ क्योंकि वह अपने दूरों को तेरे निमित आज्ञा देगा, कि जहाँ कही तू जाए वे तेरी रक्षा करें। १२ वे तुझको हाथों हाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे

पाँवों में पत्थर से ठेस लगे। १३ तू सिंह और नाम को कुचलेगा, तू जवान सिंह और अजगर को लताड़ेगा। १४ उसने जो मुझसे खेल किया है, इसलिए मैं उसको छाड़ाऊँगा; मैं उसको ऊँचे स्थान पर रखूँगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया है। १५ जब वह मुझ को पुकारे, तब मैं उसकी सुनूँगा; संकट में मैं उसके सांग रहूँगा, मैं उसको बचाकर उसकी महिमा बढ़ाऊँगा। १६ मैं उसको दीर्घीय से तुम कस्टूँगा, और अपने किए हुए उद्धार का दर्शन दिखाऊँगा।

१२ भजन। विश्वाम के दिन के लिये गीत यहोवा का धन्यवाद करना भला है,

हे परमप्रधान, तेरे नाम का भजन गाना; १ प्रातःकाल को तेरी कषणा, और प्रति रात तेरी सच्चाई का प्रचार करना, २ दस तासवाले बाजे और सारंगी पर, और बींगी पर गम्भीर स्वर से गाना भला है। ३ क्योंकि, हे यहोवा, तूने मुझ को अपने कामों से आनन्दित किया है; और मैं तेरे हाथों के कामों के कारण जयजयकार करूँगा। ४ हे यहोवा, तेरे काम क्या ही बड़े है! तेरी कल्पनाएँ बहुत गम्भीर हैं; ५ पशु समान मनुष्य इसको नहीं समझता, और मूर्ख इसका विचार नहीं करता: ६ कि दुष्ट जो घास के समान फूलते-फलते हैं, और सब अनर्थकारी जो प्रफुल्लित होते हैं, यह इसलिए होता है, कि वे सर्वदा के लिये नाश हो जाएँ। ७ परन्तु हे यहोवा, तू सदा विराजमान रहेगा। ८ क्योंकि हे यहोवा, तेरे शत्रु, हाँ तेरे शत्रु नाश होंगे; सब अनर्थकारी तितर-बितर होंगे। ९ परन्तु मेरा सींग तूने जंगली साँड़ के समान ऊँचा किया है; तूने तजे तेल से मेरा अधिषंख किया है। १० मैं अपने शत्रुओं पर दृष्टि करके, और उन कुकर्मियों का हाल जो मेरे विस्तृ उठे थे, सुनकर सन्तुष्ट हुआ हूँ। ११ धर्मी लोग खज्जर के समान फूले फलेंगे, और लबानोने के देवदार के समान बढ़ते रहेंगे। १२ वे यहोवा के भवन में रेपे जाकर, हमारे परमेश्वर के आँगनों में फूले फलेंगे। १३ वे पुराने होने पर भी फलते रहेंगे, और रस भरे और लहलहाते रहेंगे, १४ जिससे यह प्राप्त हो कि यहोवा सच्चा है; वह मेरी चट्टान है, और उसमें कृतिलाला कुछ भी नहीं।

१३ यहोवा राजा है; उसने माहात्म्य का पहरावा पहना है; यहोवा पहरावा

पहने हुए, और सामर्थ्य का फेटा बाँधे है। इस कारण जगत स्थिर है, वह नहीं टलने का। १५ हे यहोवा, तेरी राजगद्वी अमादिकाल से स्थिर है, तू सर्वदा से है। १६ हे यहोवा, महानदों का कोलाहल हो रहा है, महानदों का बड़ा शब्द हो रहा है, महानद गरजते हैं। १७ महासागर के शब्द से, और समुद्र की महातरंगों से, विराजमान यहोवा अधिक महान है। १८ तेरी चित्तौनियाँ अति विश्वासयोग्य हैं, हे यहोवा, तेरे भवन को युग-युग पवित्रता ही शोभा देती है।

१४ हे यहोवा, हे पलटा लेनेवाले परमेश्वर, हे पलटा लेनेवाले परमेश्वर,

अपना तेज दिखा! १९ हे पृथ्वी के न्यायी, उठ; और घमण्डियों को बदला दे। २० हे यहोवा, दुष्ट लोग कब तक, दुष्ट लोग कब तक डीग मारते रहेंगे? २१ वे बकते और ढिठाई की बाँतें बोलते हैं, सब अनर्थकारी बड़ाई मारते हैं। २२ हे यहोवा, वे तेरी प्रजा को पीस डालते हैं, वे तेरे निज भाग को दुख देते हैं। २३ वे विधवा और परदेशी का घाट करते, और अनाथों को मार डालते हैं, २४ और कहते हैं, “यहोवा न देखेगा, याकब का परमेश्वर विचार न करेगा।” २५ तुम जो प्रजा में पशु सरीखे हो, विचार करो; और हे मूर्खों तुम कब बुद्धिमान बनोगे? २६ जिसने कान दिया, क्या वह आप नहीं सुनता? जिसने आँख रची, क्या वह आप नहीं देखता? २७ जो जाति-जाति को ताड़ा देता, और मनुष्य को ज्ञान सिखाता है, क्या वह न सुधारेगा? २८ यहोवा मनुष्य की कल्पनाओं को तो जानता है कि वे मिथ्या हैं। २९ हे यहोवा, क्या ही धन्य है वह पुष्प जिसको तू ताड़ना देता है, और अपनी व्यवस्था सिखाता है, ३० क्योंकि तू उसको विपत्ति के दिनों में उस समय तक चैन देता रहता है, जब तक दुष्टों के

लिये गङ्गा नहीं खोदा जाता। ३१ क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा को न तजेगा, वह अपने निज भाग को न छोड़ेगा; ३२ परन्तु न्याय फिर धर्म के अनुसार किया जाएगा, और सारे सीधे मनवाले उसके पीछे-पीछे हो लेंगे। ३३ कुकर्मियों के विस्तु मेरी ओर कौन खड़ा होगा? मेरी ओर से अनर्थकारियों का कौन सामना करेगा? ३४ यदि यहोवा मेरा सहायक न होता, तो क्षण भर में मुझे चुपचाप होकर रहना पड़ता। ३५ जब मैंने कहा, “मेरा पाँव फिसलने लगा है,” तब हे यहोवा, तेरी कक्षणा ने मुझे थाम लिया। ३६ जब मेरे मान में बहुत सी चिन्नाएँ होती हैं, तब हे यहोवा, तेरी दी हई शान्ति से मुझ को सुख होता है। ३७ क्या तेरे और दुर्गों के सिंहासन के बीच संधि होगी, जो कानून की आड़ में उत्पात मचाते हैं? ३८ वे धर्मी का प्राण लेने को दल बाँधते हैं, और निर्दोष को प्राणदण्ड देते हैं। ३९ परन्तु यहोवा मेरा गढ़, और मेरा परमेश्वर मेरी शरण की चट्टान ठहरा है। ४० उसने उनका अनर्थ काम उन्हीं पर लौटाया है, और वह उन्हें उन्हीं की बुराई के द्वारा सत्यानाश करेगा। हमारा परमेश्वर यहोवा उनको सत्यानाश करेगा।

१५ आओ हम यहोवा के लिये ऊँचे स्वर से गाएँ, अपने उद्धार की चट्टान का

जयजयकार करें! ४१ हम धन्यवाद करते हुए उसके सम्पुख आएँ, और भजन गाते हुए उसका जयजयकार करें। ४२ क्योंकि यहोवा महान परमेश्वर है, और सब देवताओं के ऊपर महान राजा है। ४३ पृथ्वी के गहरे स्थान उसी के हाथ में है; और पहाड़ों की चोटियाँ भी उसी की हैं। ४४ समुद्र उसका है, और उसी ने उसको बनाया, और स्थल भी उसी के हाथ का रचा है। ४५ आओ हम इक्कर कट्टणवत करें, और अपने कर्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें। ४६ क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है, और हम उसकी चर्चाई की प्रजा, और उसके हाथ की भेड़ें हैं। भला होता, कि आज तुम उसकी बात सुनतो! ४७ अपना-अपना हृदय ऐसा कठोर मत करो, जैसा मरीबा मैं, व मस्सा के दिन जंगल में हुआ था, ४८ जब तुम्हारे पुराखाओं ने मुझे परखा, उन्होंने मुझ को जाँचा और मेरे काम को भी देखा। ४९ चालीस वर्ष तक मैं उस पीढ़ी के लोगों से स्ता रहा, और मैंने कहा, “ये तो भरमानेवाले मन के हैं, और इन्होंने मेरे मार्गों को नहीं पहचाना!” ५० इस कारण मैंने क्रोध में आकर शपथ खाई कि ये मेरे विश्वामस्थान में कभी प्रवेश न करने पाएँगे।

१६ यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ, हे सारी पृथ्वी के लोगों यहोवा

के लिये गाओ! ५१ यहोवा के लिये गाओ, उसके नाम को धन्य कहो; दिन प्रतिदिन उसके किए हए उद्धार का शुभ समाचार सुनाते रहो। ५२ अन्यजातियों में उसकी महिमा का, और देश-देश के लोगों में उसके आश्र्यकर्मी का वर्णन करो। ५३ क्योंकि यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है; वह तो सब देवताओं से अधिक भययोग्य है। ५४ क्योंकि देश-देश के सब देवता तो मूरते ही हैं, परन्तु यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया है। ५५ उसके चारों ओर वैभव और ऐश्वर्य है; उसके पवित्रस्थान में सामर्थ्य और शोभा है। ५६ हे देश-देश के कुल के लोगों, यहोवा का गुणानुवाद करो, यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को मानो! ५७ यहोवा के नाम की ऐसी महिमा करो जो उसके योग्य है, भैंट लेकर उसके अँगनों में आओ! ५८ पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को टण्डवत् करो; हे सारी पृथ्वी के लोगों उसके सामने कौपते रहो! ५९ जाति-जाति में कहो, “यहोवा राजा हुआ है! और जगत ऐसा स्थिर है, कि वह टलने का नहीं; वह देश-देश के लोगों का न्याय खराई से करेगा।” ६० आकाश आनन्द करो, और पृथ्वी मग्न हो; समुद्र और उसमें की सब वस्तुएँ गरज उठें; ६१ मैदान और जो कुछ उसमें है, वह प्रफुल्लित हो; उसी समय वन के सारे वृक्ष जयजयकार करेंगे। ६२ यह यहोवा के सामने हो, क्योंकि वह अनेवाला

है। वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है, वह धर्म से जगत का, और सच्चाई से देश-देश के लोगों का न्याय करेगा।

१७ यहोवा राजा हुआ है, पृथ्वी मग्न हो; और द्वीप जो बहुत से हैं, वह भी आनन्द करें! २ बादल और अंधकार उसके चारों ओर हैं, उसके सिंहासन का मूल धर्म और न्याय है। ३ उसके आगे-आगे आग चलती हुई उसके विरोधियों को चारों ओर भस्म करती है। ४ उसकी विजयियों से जगत प्रकाशित हुआ, पृथ्वी देखकर थरथरा गई है! ५ पहाड़ यहोवा के सामने, मोम के समान पिघल गए, अर्थात् सारी पृथ्वी के परमेश्वर के सामने। ६ आकाश ने उसके धर्म की साक्षी दी; और देश-देश के सब लोगों ने उसकी महिमा देखी है। ७ जितने खुटी हुई मूरियों की उपासना करते और मूरों पर फूलते हैं, वे लज्जित हों; हे सब देवताओं तुम उसी को दण्डवत करो। ८ सियोन सुनकर आनन्दि हुई, और यहां की बेटियाँ मग्न हुईं, हे यहोवा, यह तेरे नियमों के कारण हुआ। ९ क्योंकि हे यहोवा, तू सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है; तू सारे देवताओं से अधिक महान ठहरा है। १० हे यहोवा के प्रेमियों, बुराई से घुणा करो; वह अपने भक्तों के प्राणों की रक्षा करता, और उन्हें दृश्यों के हाथ से बचाता है। ११ धर्मी के लिये ज्योति, और सीधे मनवालों के लिये आनन्द बोया गया है। १२ हे धर्मियों, यहोवा के कारण आनन्दि हो; और जिस पवित्र नाम से उसका स्मरण होता है, उसका धन्यवाद करो!

१८ भजन यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ, क्योंकि उसने आश्चर्यकर्म किए हैं! उसके दाहिने हाथ और पवित्र भुजा ने उसके लिये उद्घार किया है। २ यहोवा ने अपना किया हुआ उद्घार प्रकाशित किया, उसने अन्यजातियों की दृष्टि में अपना धर्म प्रगत किया है। ३ उसने इस्माइल के धराने पर की अपनी कल्पना और सच्चाई की सुधि ली, और पृथ्वी के सब दूर-दूर देशों ने हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्घार देखा है। ४ हे सारी पृथ्वी के लोगों, यहोवा का जयजयकार करो; उत्साहावृक्ष जयजयकार करो, और भजन गाओ। ५ वीणा बजाकर यहोवा का भजन गाओ, वीणा बजाकर भजन का स्वर सुनाओ। ६ तुरहियाँ और नरसिंगे फँकूँ कँकूँ कर यहोवा राजा का जयजयकार करो। ७ समुद्र और उसमें की सब वस्तुएँ गरज उठें; जगत और उसके निवासी महाशब्द करो! ८ नदियाँ तालियाँ बजाएँ; पहाड़ मिलकर जयजयकार करो। ९ यह यहोवा के सामने हो, क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है। वह धर्म से जगत का, और सच्चाई से देश-देश के लोगों का न्याय करेगा।

१९ यहोवा राजा हुआ है; देश-देश के लोग काँप उठें! वह कस्त्रों पर विराजमान है; पृथ्वी डोल उठें! २ यहोवा सियोन में महान है; और वह देश-देश के लोगों के ऊपर प्रधान है। ३ वे तेरे महान और भयोयोग नाम का धन्यवाद करों! वह तो पवित्र है। ४ राजा की सामर्थ्य न्याय से मेल रखती है, त ही ने सच्चाई को स्थापित किया; न्याय और धर्म को याकूब में त ही ने चालू किया है। ५ हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो; और उसके चरणों की चौकी के सामने दण्डवत करो! वह पवित्र है! ६ उसके याजकों में मूसा और हास्न, और उसके प्रार्थना करनेवालों में से शमूएल यहोवा को पुकारते थे, और वह उनकी सुन लेता था। ७ वह बादल के खम्भे में होकर उससे बातें करता था; और वे उसकी चित्तौनियों और उसकी दी हुई विधियों पर चलते थे। ८ हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तु उनकी सुन लेता था; तु उनके कामों का पलटा तो लेता था तो भी उनके लिये क्षमा करनेवाला परमेश्वर था। ९ हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो, और उसके पवित्र पर्वत पर दण्डवत करो; क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा पवित्र है!

१०० धन्यवाद का भजन हे सारी पृथ्वी के लोगों, यहोवा का जयजयकार करो! २ आनन्द से यहोवा की आराधना करो! जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ! ३ निश्चय जानो कि यहोवा ही परमेश्वर है उसी ने हमको बनाया, और हम उसी के हैं, हम उसकी प्रजा, और उसकी चराई की भेड़े हैं। ४ उसके फाटकों में धन्यवाद, और उसके आँगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो! ५ क्योंकि यहोवा भला है, उसकी कल्पना सदा के लिये, और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है।

१०१ दाऊद का भजन मैं कल्पना और न्याय के विषय गाँड़गा, हे यहोवा, मैं तेरी ही भजन गाँड़गा। २ मैं बुद्धिमानी से खेरे मार्ग में चलूँगा। तू मेरे पास कब आएगा? मैं अपने घर में मन की खराई के साथ अपनी चाल चलूँगा; ३ मैं किसी ओछे काम पर चित्त न लगाँगा। मैं कुर्माग पर चलनेवालों के काम से धिन रखता हूँ, ऐसे काम में मैं न लगूँगा। ४ टेढ़ा स्वभाव मुझसे दूर रहेगा; मैं बुराई को जानूँगा भी नहीं। ५ जो छिपकर अपने पड़ोसी की चुगली खाए, उसका मैं सत्यनाश करूँगा; जिसकी आँखें चढ़ी हों और जिसका मन घमण्डी है, उसकी मैं न सहँगा। ६ मेरी आँखें देश के विवासयोग लोगों पर लगी रहेंगी कि वे मेरे संग रहें; जो खेरे मार्ग पर चलता है वही मेरा सेवक होगा। ७ जो छल करता है वह मेरे घर के भीतर न रहने पाएगा; जो झूठ बोलता है वह मेरे सामने बना न रहेगा। ८ प्रति भोर, मैं देश के सब दृश्यों का सत्यनाश किया करूँगा, ताकि यहोवा के नगर के सब अनर्थकारियों को नाश करूँ।

१०२ दीन जन की उस समय की प्रार्थना जब वह दःख का मारा अपने शोक की बातें यहोवा के सामने खोलकर कहता हो हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन; मेरी दहाई तुझ तक पहुँचो! २ मेरे संकट के दिन अपना मुख मुझसे न छिपा ले; अपना कान मेरी ओर लगा; जिस समय मैं पुकासँ, उसी समय कुर्ती से मेरी सुन ले! ३ क्योंकि मेरे दिन धुँए के समान उड़े जाते हैं, और मेरी हड्डियाँ आग के समान जल गई हैं। ४ मेरा मन ज़ूलसी हुई घास के समान सूख गया है; और मैं अपनी रोटी खाना भूल जाता हूँ। ५ कराहते-कराहते मेरी चमड़ी हड्डियों में सट गई है। ६ मैं ज़ंगल के धनेश के समान हो गया हूँ, मैं उजड़े स्थानों के उल्लू के समान बन गया हूँ। ७ मैं पड़ा-पड़ा जागता रहता हूँ और गौंगे के समान हो गया हूँ जो छत के ऊपर अकेला बैठता है। ८ मेरे शत्रु लगातार मेरी नामधारी करते हैं, जो मेरे विस्तु ठंडा करते हैं, वह मेरे नाम से श्राप देते हैं। ९ क्योंकि मैंने रोटी के समान राखा खाई और आँख मिलाकर पानी पीता हूँ। १० यह तेरे क्रोध और कोप के कारण हुआ है, क्योंकि तूने मुझे उठाया, और फिर फैक दिया है। ११ मेरी आयु ढलती हुई छाया के समान है, और मैं आप घास के समान सूख चला हूँ। १२ परन्तु हे यहोवा, तू सदैव विराजमान रहेगा; और जिस नाम से तेरा स्मरण होता है, वह पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा। १३ तु उठकर सियोन पर दया करेगा; क्योंकि उस पर दया करने का ठहराया हुआ समय आ पहुँचा है। १४ क्योंकि तेरे दास उसके पत्थरों को चाहते हैं, और उसके खंडहरों की धूल पर तरस खाते हैं। १५ इसलिए जाति-जाति यहोवा के नाम का भय मारेंगी, और पृथ्वी के सब राजा तेरे प्रताप से डोरेंगे। १६ क्योंकि यहोवा ने सियोन को फिर बसाया है, और वह अपनी महिमा के साथ दिखाई देता है; १७ वह लाचार की प्रार्थना की ओर मुँह करता है, और उनकी प्रार्थना को तुच्छ नहीं जानता। १८ यह बात आनेवाली पीढ़ी के लिये लिखी जाएगी, ताकि एक जाति जो उत्पन्न होगी, वह यहोवा की स्तुति करे। १९ क्योंकि यहोवा ने अपने ऊँचे और पवित्रस्थान से दृष्टि की; स्वर्ग

से पृथ्वी की ओर देखा है, २० ताकि बन्दियों का कराहना सुने, और घात होनेवालों के बन्धन खोले; २१ तब लोग सियोन में यहोवा के नाम का वर्णन करेंगे, और यस्तलेम में उसकी स्तुति की जाएगी; २२ यह उस समय होगा जब देश-देश, और राज्य-राज्य के लोग यहोवा की उपासना करेंगे इकट्ठे होंगे। २३ उसने मुझे जीवन यात्रा में दुःख देकर, मेरे बल और आय को घटाया। २४ मैंने कहा, “हे मेरे परमेश्वर, मुझे आधी आयु में न उठा ले, तेरे वर्ष पीढ़ी से पीढ़ी तक बने रहेंगे!” २५ अदि में तूने पृथ्वी की नीव ढाली, और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है। २६ वह तो नाश होगा, परन्तु तब बना रहेगा; और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा। २७ उसको वच्च के समान बदलेगा, और वह मिट जाएगा; २८ परन्तु तब ही है, और तेरे वर्षों का अन्त न होगा। २९ तेरे दासों की सन्तान बनी रहेगी; और उनका वंश तेरे सामने स्थिर रहेगा।

१०३ दाऊद का भजन है मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और जो कुछ मुझ

मैं हूँ, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहें। १ हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भलना। २ वही तो तेरे सब अर्थम् को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है, ३ वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर कस्ता और दया का मुकुट बैधता है, ४ वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिससे तेरी जवानी उकाब के समान नई हो जाती है। ५ यहोवा सब पिसे हुओं के लिये धर्म और न्याय के काम करता है। ६ उसने मूसा को अपनी गति, और इस्लाएलियों पर अपने काम प्रगट किए। ७ यहोवा दयाल और अनुग्रहकारी, विलम्ब से कोप करनेवाला और अति कस्तामय है ८ वह सर्वदा बाद-विवाद करता न रहेगा, न उसका कोई सदा के लिये भड़का रहेगा। ९ उसने हमारे पार्थों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं किया, और न हमारे अर्थम् के कामों के अनुसार हमको बदला दिया है। १० जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊँचा है, वैसे ही उसकी कस्ता उसके डरवैयों के ऊपर प्रबल है। ११ उत्तराचल अस्ताचल से जिती दूर है, उसने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है। १२ जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है। १३ क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है; और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है। १४ मनुष्य की आयु धास के समान होती है, वह मैदान के फूल के समान फूलता है, १५ जो पवन लगते ही ठहर नहीं सकता, और न वह अपने स्थान में फिर मिलता है। १६ परन्तु यहोवा की कस्ता उसके डरवैयों पर युग-युग, और उसका धर्म उनके नारी-पोतों पर भी प्रगट होता रहता है, १७ अर्थात् उन पर जो उसकी वाचा का पालन करते और उसके उपदेशों को स्मरण करके उन पर चलते हैं। १८ यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है, और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है। १९ हे यहोवा के दूतों, तुम जो बड़े वीर हो, और उसके वचन को मानते और पूरा करते हो, उसको धन्य कहो! २० हे यहोवा की सारी सेनाओं, हे उसके सेवकों, तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, उसको धन्य कहो! २१ हे यहोवा की सारी सृष्टि, उसके राज्य के सब स्थानों में उसको धन्य कहो। हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह!

१०४ हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह! हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू अत्यन्त

महान हैं! तू वैभव और ऐश्वर्य का वच्च पहने हुए है, २२ तू उजियाले को चादर के समान ओढ़े रहता है, और आकाश को तम्बू के समान ताने रहता है, २३ तू अपनी अटारियों की किडियाँ जल में धरता है, और मेघों को अपना रथ बनाता है, और पवन के पंखों पर चलता है, २४ तू पवनों को अपने दूर, और धर्थकर्ती आग को अपने सेवक बनाता है। २५ तूने पृथ्वी को उसकी नीव पर

स्थिर किया है, ताकि वह कभी न डगमगाए। २६ तूने उसको गहरे सागर से ढाँप दिया है जैसे वच्च से; जल पहाड़ों के ऊपर ठहर गया। २७ तेरी घुड़की से वह भाग गया; तेरे गरजने का शब्द सुनते ही, वह उतावली करके बह गया। २८ पहाड़ों पर चढ़ गया, और तराइयों के मार्ग से उस स्थान में उतर गया जिसे तूने उसके लिये तैयार किया था। २९ तूने एक सीमा ठहराई जिसको वह नहीं लॉप सकता है, और न लौटकर स्थल को ढाँप सकता है। ३० तू तराइयों में सोतों को बहाता है; वे पहाड़ों के बीच से बहते हैं, ३१ उसने मैदान के सब जीव-जन्तु जल पीते हैं; जंगली गदहे भी अपनी प्यास बुझा लेते हैं। ३२ उनके पास आकाश के पर्शी बसेरा करते, और डालियों के बीच में से बोलते हैं। ३३ तू अपनी अटारियों में से पहाड़ों को सीचता है, तेरे कामों के फल से पृथ्वी तुम रहती है। ३४ तू पशुओं के लिये धास, और मनुष्यों के काम के लिये अन्न आदि उपजाता है, और इस रीति भूमि से वह भोजन-वस्तुएँ उत्पन्न करता है। ३५ और दाखमधु जिससे मनुष्य का मन आनन्दित होता है, और तेल जिससे उसका मुख चमकता है, और अन्न जिससे वह सम्भल जाता है। ३६ यहोवा के वृक्ष तुम रहते हैं, अर्थात् लबनोन के देवदार जो उसी के लगाए हुए हैं। ३७ उनमें चिडियाँ अपने धोंसले बनाती हैं; सारस का बसेरा सनोबर के वृक्षों में होता है। ३८ ऊँचे पहाड़ जंगली बकरों के लिये हैं; और चट्टानें शापानों के शरणस्थान हैं। ३९ उसने नियत समयों के लिये चन्द्रमा को बनाया है; सूर्य अपने अस्त होने का समय जानता है। ४० तू अंधकार करता है, तब रात हो जाती है; जिसमें वन के सब जीव-जन्तु धूमते-फिरते हैं। ४१ जवान सिंह अहेर के लिये गर्जते हैं, और परमेश्वर से अपना आहार माँगते हैं। ४२ सूर्य उदय होते ही वे चले जाते हैं और अपनी माँदों में विश्वाम करते हैं। ४३ तब मनुष्य अपने काम के लिये और संदृश्या तक परिश्रम करने के लिये निकलता है। ४४ हे यहोवा, तेरे काम के लिये निकलता है। इन सब वस्तुओं को तूने बुद्धि से बनाया है; पृथ्वी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण है। ४५ इसी प्रकार समृद्ध बड़ा और बहुत ही चौड़ा है, और उसमें अनगिनत जलचर जीव-जन्तु, क्या छोटे, क्या बड़े भेर पड़े हैं। ४६ उसमें जहाज भी आते-जाते हैं, और लिव्यातान भी जिसे तूने वहाँ खेलने के लिये बनाया है। ४७ इन सब को तेरा ही आसरा है, कि तू उनका आहार समय पर दिया करो। ४८ तू उन्हें देता है, वे चन लेते हैं; तू अपनी मुश्ती खोलता है और वे उत्तम पदार्थों से तृप्त होते हैं। ४९ तू मुख फेर लेता है, और वे धबरा जाते हैं; तू उनकी साँस ले लेता है, और उनके प्राण छूट जाते हैं और मिट्टी में फिर मिल जाते हैं। ५० फिर तू अपनी ओर से साँस भेजता है, और वे सिरे जाते हैं, और तू धरती को नया कर देता है। ५१ यहोवा की महिमा सदाकाल बनी रहे, यहोवा अपने कामों से आनन्दित होवे। ५२ उसकी दृष्टि ही से पृथ्वी काँप उठती है, और उसके दृष्टि ही से पहाड़ों से धुआँ निकलता है। ५३ मैं जीवन भर यहोवा का गीत गाता रहूँगा, जब तक मैं बना रहूँगा तब तक अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूँगा। ५४ मेरे सोच-विचार उसको प्रिय लगे, क्योंकि मैं तो यहोवा के कारण आनन्दित रहूँगा। ५५ पापी लोग पृथ्वी पर से मिट जाएँ, और दूष लोग अगे को न रहें! हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह! यहोवा की स्तुति करो!

१०५ यहोवा का धन्यवाद करो, उससे प्रार्थना करो, देश-देश के लोगों में

उसके कामों का प्रचार करो! १ उसके लिये गीत गाओ, उसके लिये भजन गाओ, उसके सब आश्वर्यकर्मी का वर्णन करो! २ उसके पवित्र नाम की बड़ाई करो; यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो! ३ यहोवा और उसकी सामर्थ्यों को खोजो, उसके दर्शन के लगातार खोजो बने रहो! ४ उसके किए हुए आश्वर्यकर्मी को स्मरण करो, उसके चमत्कार और निर्णय स्मरण करो! ५ हे उसके दास अब्राहम के वंश, हे याकूब की सन्तान, तुम तो उसके चुने हुए हो!

७ वही हमारा परमेश्वर यहोवा है; पृथ्वी भर में उसके निर्णय होते हैं। ८ वह अपनी वाचा को सदा स्मरण रखता आया है, यह वही वचन है जो उसने हजार पीढ़ियों के लिये ठहराया है; ९ वही वाचा जो उसने अब्राहम के साथ बांधी, और उसके विषय में उसने इसहास के शपथ खाई, १० और उसी को उसने याकब के लिये विधि करके, और इसाएल के लिये यह कहकर सदा की वाचा करके दृढ़ किया, ११ “मैं कनान देश को तुझी को टूँगा, वह बाँट में तुहारा निज भाग होगा।” १२ उस समय तो वे गिनती में थोड़े थे, बरन् बहुत ही थोड़े, और उस देश में परदेशी थे। १३ वे एक जाति से दूसरी जाति में, और एक राज्य से दूसरे राज्य में फिरते रहे; १४ परन्तु उसने किसी मनुष्य को उन पर अत्याचार करने न दिया; और वह राजाओं को उनके निमित्त यह धमकी देता था, १५ “मेरे अभिषिक्तों को मत छूओ, और न मेरे नवियों की हानि करो।” १६ फिर उसने उस देश में अकाल भेजा, और अन्न के सब अधार को दू कर दिया। १७ उसने यूफून नामक एक पुष्प को उनसे पहले भेजा था, जो दास होने के लिये बेचा गया था। १८ लोगों ने उसके पैरों में बेड़ियाँ डालकर उसे दुःख दिया; वह लोहे की साँकलों से जकड़ा गया; १९ जब तक कि उसकी बात पूरी न हुई तब तक यहोवा का वचन उसे कस्टी पर कसता रहा। २० तब राजा ने दूत भेजकर उसे निकलवा लिया, और देश-देश के लोगों के स्वामी ने उसके बन्धन खुलावा; २१ उसने उसको अपने भवन का प्रधान और अपनी पूरी सम्पत्ति का अधिकारी ठहराया, २२ कि वह उसके हाकिमों को अपनी इच्छा के अनुसार नियन्त्रित करे और पुरनियों को ज्ञान सिखाए। २३ फिर इसाएल मिस्र में आया; और याकूब हाम के देश में रहा। २४ तब उसने अपनी प्रजा को गिनती में बहुत बढ़ाया, और उसके शत्रुओं से अधिक बलवन्त किया। २५ उसने मिसियों के मन को ऐसा फेर दिया, कि वे उसकी प्रजा से बैर रखने, और उसके दासों से छल करने लगे। २६ उसने अपने दास मूसा को, और अपने चुने हए हास्न को भेजा। २७ उन्होंने मिसियों के बीच उसकी ओर से भाँति-भाँति के चिन्ह, और हाम के देश में चमत्कार दिखाए। २८ उसने अंधकार कर दिया, और अधियारा हो गया; और उन्होंने उसकी बातों को न माना। २९ उसने मिसियों के जल को लह कर डाला, और मछलियों को मार डाला। ३० मैंदक उनकी भूमि में बरन् उनके राजा की कोठरियों में भी भर गए। ३१ उसने आज्ञा दी, तब डांस आ गए, और उनके सारे देश में कृतियाँ आ गईं। ३२ उसने उनके लिये जलवृष्टि के बदले आले, और उनके देश में धधकती आग बरसाई। ३३ और उसने उनकी दाखलताओं और अंजीर के बृक्षों को वरन् उनके देश के सब पेड़ों को तोड़ डाला। ३४ उसने आज्ञा दी तब अनगिनत टिह्याँ, और कीड़े आए, ३५ और उन्होंने उनके देश के सब अन्न आदि को खा डाला; और उनकी भूमि के सब फलों को चट कर गए। ३६ उसने उनके देश के सब पहिलौठों को, उनके पौस्तक के सब पहले फल को नाश किया। ३७ तब वह इसाएल को सोना चाँदी दिलाकर निकल लाया, और उनमें से कोई निर्बल न था। ३८ उनके जाने से मिसी आनन्दित हुए, क्योंकि उनका डर उनमें समा गया था। ३९ उसने छाया के लिये बादल फैलाया, और रात को प्रकाश देने के लिये आग प्राट की। ४० उन्होंने माँगा तब उसने बर्झे पहुँचाई, और उनको स्वर्गीय भोजन से तुम किया। ४१ उसने चट्टान फाड़ी तब पानी बह निकला; और निर्जल भूमि पर नदी बहने लगी। ४२ क्योंकि उसने अपने पवित्र वचन और अपने दास अब्राहम को स्मरण किया। ४३ वह अपनी प्रजा को हरिष्ट करके और अपने चुने हुओं से जयजयकार करके निकल लाया। ४४ और उनको जाति-जाति के देश दिए; और वे अन्य लोगों के श्वम के फल के अधिकारी किए गए, ४५ कि वे उसकी विधियों को मानें, और उसकी व्यवस्था को पूरी करें। यहोवा की स्तुति करो!

१०६ यहोवा की स्तुति करो! यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है, और उसकी कस्ता सदा की है। १ यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन कौन कर सकता है, या उसका पूरा गुणानुवाद कौन सुना सकता है? २ क्या ही धन्य हैं वे जो न्याय पर चलते, और हर समय धर्म के काम करते हैं! ३ हे यहोवा, अपनी प्रजा पर की, प्रसन्नता के अनुसार मुझे स्मरण कर, मेरे उद्धार के लिये मेरी सुधि ले, ४ कि मैं तेरे चुने हुओं का कल्याण देखूँ, और तेरी प्रजा के आनन्द में आनन्दित हो जाऊँ; और तेरे निज भाग के संग बडाई करने पाऊँ। ५ हमने तो अपने पुरखाओं के समान पाप किया है; हमने कुटिलता की, हमने दृष्टा की है। ६ मिस्र में हमारे पुरखाओं ने तेरे अश्वर्यकर्मों पर मन नहीं लगाया, न तेरी अपार करणा को स्मरण रखा; उन्होंने समृद्ध के किनारे, अर्थात् लाल समृद्ध के किनारे पर बलवा किया। ७ तो भी उसने अपने नाम के निमित्त उनका उद्धार किया, जिससे वह अपने पराक्रम को प्रगट करे। ८ तब उसने लाल समृद्ध को घुड़का और वह सूख गया; और वह उन्हें गहरे जल के बीच से मानो जंगल में से निकाल ले गया। ९ उसने उन्हें बैरी के हाथ से उबारा, और शत्रु के हाथ से छुड़ा लिया। १० और उनके शत्रु जल में डूब गए; उनमें से एक भी न बचा। ११ तब उन्होंने उसके वचनों का विवास किया; और उसकी स्तुति गाने लगे। १२ परन्तु वे इतने उसके कामों को भूल गए; १३ और उसकी युक्ति के लिये न ठहरे। १४ उन्होंने जंगल में अति लालसा की और निर्जल स्थान में परमेश्वर की परीक्षा की। १५ तब उसने उन्हें मुँह माँगा वह तो दिया, परन्तु उनके प्राण को सखा दिया। १६ उन्होंने छावनी में मसा के, और यहोवा के पवित्र जन हास्न के विषय में डाह की, १७ भूमि फटकर दातान को निगल गई, और अबीराम के झूण्ड को निगल लिया। १८ और उनके झूण्ड में आग भड़क उठी; और दृष्ट लोग लौ से भस्म हो गए। १९ उन्होंने होरेब में बछड़ा बनाया, और ढली हुई मूर्ति को दण्डवत किया। २० उन्होंने परमेश्वर की महिमा, को घास खानेवाले बैल की प्रतिमा से बदल डाला। २१ वे अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को भूल गए, जिसने मिस्र में बड़े-बड़े काम किए थे। २२ उन्होंने तो हाम के देश में आश्वर्यकर्मों और लाल समृद्ध के तट पर भयकर काम किए थे। २३ इसलिए उन्होंने कहा कि मैं इहें सत्यानाश कर डालता था दि मेरा चुना हआ मसा जोखिम के स्थान में उनके लिये खड़ा न होता ताकि मेरी जलजलाहट को ठंडा करे कहीं ऐसा न हो कि मैं उन्हें नाश कर डालूँ। २४ उन्होंने मनभावने देश को निकम्मा जाना, और उसके वचन पर विवास न किया। २५ वे अपने तम्बुओं में कुड़कुड़ाए, और यहोवा का कहा न माना। २६ तब उसने उनके विषय में शपथ खाई कि मैं इनको जंगल में नाश कर कँगा, २७ और इनके वंश को अन्यजातियों के सम्मुख गिरा दूँगा, और देश-देश में तितर-बितर करँगा। २८ वे लालपोर देवता को पूजने लगे और मुर्दों को चढ़ाए हुए पशुओं का माँस खाने लगे। २९ ये उन्होंने अपने कामों से उसको कोध दिलाया, और मरी उनमें फूट पड़ी। ३० तब पीनहास ने उठकर न्यायटंड दिया, जिससे मरी थम गई। ३१ और यह उसके लेखे पीढ़ी से पीढ़ी तक सर्वदा के लिये धर्म गिना गया। ३२ उन्होंने मरीमा के सोते के पास भी यहोवा का क्रोध भड़काया, और उनके कारण मूसा की हानि हुई; ३३ क्योंकि उन्होंने उसकी आत्मा से बलवा किया, तब मूसा बिन सोचे बोल उठा। ३४ जिन लोगों के विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी, उनको उन्होंने सत्यानाश न किया, ३५ वरन् उन्हीं जातियों से हिलमिल गए और उनके व्यवहारों को सीख लिया; ३६ और उनकी मूर्तियों की पूजा करने लगे, और वे उनके लिये फंदा बन गई। ३७ वरन् उन्होंने अपने बेटे-बेटियों का लह बहाया जिन्हें उन्होंने कनान की मूर्तियों पर बलि किया, इसलिए देश खून से अपवित्र हो गया। ३८ और वे आप अपने कामों के द्वारा अशुद्ध हो गए, और

अपने कार्यों के द्वारा व्यभिचारी भी बन गए। ४० तब यहोवा का क्रोध अपनी प्रजा पर भड़का, और उसको अपने निज भाग से घृणा आई; ४१ तब उसने उनको अन्यजातियों के वश में कर दिया, और उनके बैरियों ने उन पर प्रभुता की। ४२ उनके शरुओं ने उन पर अत्याचार किया, और वे उनके हाथों तले दब गए। ४३ बारम्बार उसने उन्हें छुड़ाया, परन्तु वे उसके विस्फुल बलवा करते गए, और अपने अर्धम के कारण दबते गए। ४४ फिर भी जब जब उनका चिल्लाना उसके कान में पड़ा, तब-तब उसने उनके संकट पर दृष्टि की। ४५ और उनके हित अपनी बाचा को स्मरण करके अपनी अपार कस्त्रा के अनुसार तरस खाया, ४६ और जो उन्हें बन्दी करके ले गए थे उन सबसे उन पर दया कराई। ४७ हे हमारे परमेश्वर यहोवा, हमारा उद्धार कर, और हमें अन्यजातियों में से इकट्ठा कर ले, कि हम तौर पवित्र नाम का धन्यवाद करें, और तेरी स्तुति करते हुए तेरे विषय में बड़ाइ करें। ४८ इसाल का परमेश्वर यहोवा अनादिकाल से अनन्तकाल तक धन्य है! और सारी प्रजा कहे “आमीन!” यहोवा की स्तुति करो।

१०७ यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी कस्त्रा सदा की है! : यहोवा के छुड़ाए हुए ऐसा ही कहें, जिन्हें उसने शरु के हाथ से दाम देकर छुड़ा लिया है, ५ और उन्हें देश-देश से, पूरब-पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से इकट्ठा किया है। ६ वे जंगल में मस्खूमि के मार्ग पर भटकते फिरें, और कोई बसा हुआ नार न पाया; ७ भूख और यास के मारे, वे विकल छोड़ते हैं। ८ तब उन्होंने संकट में यहोवा की दुहाई दी, और उसने उनको सकेती से छुड़ाया; ९ और उनको ठीक मार्ग पर चलाया, ताकि वे बसने के लिये किसी नार को जा पहुँचें। १० लोग यहोवा की कस्त्रा के कारण, और उन आश्वर्यकर्मों के कारण, जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें! ११ क्योंकि वह अभिलाषी जीव को सन्तुष्ट करता है, और भूखे को उत्तम पदार्थों से तुम करता है। १० जो अधियारों और मृत्यु की छाया में भैठे, और दुःख में पड़े और बेड़ियों से जकड़े हुए थे, ११ इसाल एक कि वे परमेश्वर के वचनों के विस्फुल चले, और परमप्रधान की सम्मति को तुच्छ जाना। १२ तब उसने उनको कष्ट के द्वारा दबाया; वे ठोकर खाकर पिर पड़े, और उनको कोई सहायक न मिला। १३ तब उन्होंने संकट में यहोवा की दुहाई दी, और उसने सकेती से उनका उद्धार किया; १४ उसने उनको अधियारों और मृत्यु की छाया में से निकाल लिया; और उनके बन्धनों को तोड़ डाला। १५ लोग यहोवा की कस्त्रा के कारण, और उन आश्वर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें! १६ क्योंकि उसने पीतल के फाटकों को तोड़ा, और लोहे के बैंडों को टकड़े-टकड़े किया। १७ मूर्ख अपनी कुचाल, और अर्धम के कामों के कारण अति दुखित होते हैं। १८ उनका जी सब भौति के भोजन से मिलता है, और वे मृत्यु के फाटक तक पहुँचते हैं। १९ तब वे संकट में यहोवा की दुहाई देते हैं, और वह सकेती से उनका उद्धार करता है; २० वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता और जिस गड़े में वे पड़े हैं, उससे निकलता है। २१ लोग यहोवा की कस्त्रा के कारण और उन आश्वर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें! २२ और वे धन्यवाद-बलि चढ़ाएँ, और जयजयकार करते हुए, उसके कामों का वर्णन करें। २३ जो लोग जहाजों में समृद्ध पर चलते हैं, और महासागर पर होकर व्यापार करते हैं, २४ वे यहोवा के कामों को, और उन आश्वर्यकर्मों को जो वह गहरे समुद्र में करता है, देखते हैं। २५ क्योंकि वह आज्ञा देता है, तब प्रचण्ड वायु उठकर तरंगों को उठाता है। २६ वे आकाश तक चढ़ जाते, फिर गहराइ में उत्तर आते हैं; और क्षेत्र के मारे उनके जी में जी नहीं रहता; २७ वे चक्कर खाते, और मतवालों की भौति लड़खड़ाते हैं, और उनकी सारी बुद्धि मारी

जाती है। २८ तब वे संकट में यहोवा की दुहाई देते हैं, और वह उनको सकेती से निकलता है। २९ वह आँधी को थाम देता है और तरंगें बैठ जाती हैं। ३० तब वे उनके बैठने से आनन्दित होते हैं, और वह उनको मन चाहे बन्दरगाह में पहुँचा देता है। ३१ लोग यहोवा की कस्त्रा के कारण, और उन आश्वर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें। ३२ और सभा में उसको सराहें, और पुरिनियों के बैठक में उसकी स्तुति करें। ३३ वह नदियों को जंगल बना डालता है, और जल के सोतों को सूखी भूमि कर देता है। ३४ वह फलवन्त भूमि को बंजर बनाता है, यह वहाँ के रहनेवालों की दुश्ता के कारण होता है। ३५ वह जंगल को जल का ताल, और निर्जल देश को जल के सोते कर देता है। ३६ और वहाँ वह भूखों को बसाता है, कि वे बसने के लिये नगर तैयार करें; ३७ और खेती करें, और दाख की बारियाँ लाएँ, और भौंति-भौंति के फल उपजा लें। ३८ और वह उनको ऐसी आशीष देता है कि वे बहुत बढ़ जाते हैं, और उनके पशुओं को भी वह घटने नहीं देता। ३९ फिर विपत्ति और शोक के कारण, वे घटते और दब जाते हैं। ४० और वह हाकिमों को अपमान से लादकर मार्ग रहित जंगल में भटकाता है; ४१ वह दरिद्रों को दुःख से छुड़ाकर ऊँचे पर रखता है, और उनको भेड़ों के झुण्ड के समान परिवार देता है। ४२ साथी लोग देखकर अनन्दित होते हैं, और सब कुटिल लोग अपने मुँह बन्द करते हैं। ४३ जो कोई बुद्धिमान हो, वह इन बातों पर ध्यान करेगा; और यहोवा की कस्त्रा के कामों पर ध्यान करेगा।

१०८ दाऊद का भजन है परमेश्वर, मेरा हृदय स्थिर है; मैं गाँँगा, मैं अपनी आत्मा से भी भजन गाँँगा : : हे सारंगी और वीणा जागो! मैं आप पै फटते जाग उँगँगा १ हे यहोवा, मैं देश-देश के लोगों के मध्य में तेरा धन्यवाद करूँगा, और राज्य-राज्य के लोगों के मध्य में तेरा भजन गाँँगा। २ क्योंकि तेरी कस्त्रा आकाश से भी ऊँची है, और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक है। ३ हे परमेश्वर, तू स्वर्ग के ऊपर हो! और तेरी महिमा सारी पुर्वी के ऊपर हो! ४ इसाल एक कि तेरे प्रिय छुड़ाए जाएँ, ५ तू अपने दाहिने हाथ से बचा ले और हमारी विनती सुन ले! ६ परमेश्वर ने अपनी पवित्रता में होकर कहा है, “मैं प्रकुलित होकर शेकेम को बाँट लूँगा, और स्कृकोति की तराइ को नपवाऊँगा। ७ गिलाद मेरा है, मनशे भी मेरा है; और एष्ट्रैम मेरे सिर का टोप है; यहदा मेरा राजदण्ड है। ८ मोआब मेरे धोने का पात्र है, मैं एटोम पर अपना जूता फैकूँगा, पलिशत पर मैं जयजयकार करूँगा!” ९ मुझे गढ़वाले नगर में कौन पहुँचायाएँ? एथेम तक मेरी अगुआइ किसने की है? १० हे परमेश्वर, क्या तूने हमको त्याग नहीं दिया?, और हे परमेश्वर, तू हमारी सेना के आगे-आगे नहीं चलता। ११ शशुओं के विस्फुल हमारी सहायता कर, क्योंकि मनुष्य की सहायता व्यथ है! १२ परमेश्वर की सहायता से हम वीरता दिखाएँगे, हमारे शशुओं को वही रैंदेगा।

१०९ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन है परमेश्वर तू, जिसकी मैं स्तुति करता हूँ, चुप न रह! १ क्योंकि दृष्टि और कपटी मनुष्यों ने मेरे विस्फुल मुँह खोला है, वे मेरे विषय में झट बोलते हैं। २ उन्होंने बैर के वचनों से मुझे चारों ओर धेर लिया है, और व्यर्थ मुझसे लड़ते हैं। ३ मेरे प्रेम के बदले में वे मेरी चुपती करते हैं, परन्तु मैं तो प्रार्थना में लौलीन रहता हूँ। ४ उन्होंने भलाइ के बदले में मुझसे बुराइ की और मेरे प्रेम के बदले मुझसे बैर किया है। ५ तू उसको किसी दृष्टि के अधिकार में रख, और कोई विरोधी उसकी दाहिनी और खड़ा रहे। ६ जब उसका न्याय किया जाए, तब वह दोषी निकले, और उसकी प्रार्थना पाप गिनी जाए। ७ उसके दिन थोड़े हों, और उसके पद को दूसरा ले! ८ उसके बच्चे अनाथ हो जाएँ, और उसकी स्त्री विधवा हो जाएँ। ९

और उसके बच्चे मारे-मारे फिरें, और भीख मँगा करो; उनको अपने उजड़े हुए घर से दूर जाकर टकड़े माँगना पड़े! १८ महाजन फंदा लगाकर, उसका सर्वस्व ले ले; और परदेशी उसकी कमाई को लूट लें! १९ कोई न हो जो उस पर कस्ता करता रहे, और उसके अनाथ बालकों पर कोई तरस न खाए! २० उसका वंश नाश हो जाए, दूसरी पीढ़ी में उसका नाम मिट जाए! २१ उसके पितरों का अर्थमय यहोवा को स्मरण रहे, और उसकी माता का पाप न मिटे! २२ वह निरन्तर यहोवा के सम्मुख रहे, वह उनका नाम पृथ्वी पर से मिटे! २३ क्योंकि वह दृष्टि, कस्ता करना भल गया बरन दीन और दरिद्र को सताता था और मार डालने की इच्छा से खेदित मनवालों के पीछे पड़ा रहता था। २४ वह श्राप देने से प्रसन्न न होता था, और श्राप उस पर आ पड़ा; वह आशीर्वाद देने से प्रसन्न न होता था, इसलिए आशीर्वाद उससे दूर रहा। २५ वह श्राप देना वस्त्र के समान पहनता था, और वह उसके पेट में जल के समान और उसकी हड्डियों में तेल के समान समा गया। २६ वह उसके लिये ओढ़ने का काम दे, और फेटे के समान उसकी कमर में नित्य कसा रहे। २७ यहोवा की ओर से मेरे विरोधियों को, और मेरे विस्तु लुग कहनेवालों को यही बदला मिले! २८ परन्तु हे यहोवा प्रभु, तू अपने नाम के निमित्त मुझसे बर्ताव कर; तेरी कस्ता तो बड़ी है, इसलिए तू मुझे छुटकारा दे! २९ क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूँ, और मेरा हृदय धायल हआ है। ३० मैं ढलती हुई छाया के समान जाता रहा हूँ, मैं टिट्ठी के समान उड़ा दिया गया हूँ। ३१ उपवास करते-करते मेरे घुटने निर्बल हो गए; और मुझ में चर्बी न रहने से मैं सख गया हूँ। ३२ मेरी तो उन लोगों से नामधारी होती है; जब वे मुझे देखते, तब सिर हिलते हैं। ३३ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी सहायता कर! अपनी कस्ता के अनुसार मेरा उद्घार कर! ३४ जिससे वे जाने कि यह तेरा काम है, और हे यहोवा, तुम्हे ही यह किया है! ३५ वे मुझे कोसत तो रहें, परन्तु तू अशीर्वद दे! वे तो उठते ही लज्जित हों, परन्तु तेरा दास आनन्दित हो! ३६ मेरे विरोधियों को अनादरस्ती वस्त्र पहनाया जाए, और वे अपनी लज्जा को कम्बल के समान ओढ़ें! ३७ मैं यहोवा का बहुत धन्यवाद करूँगा, और बहुत लोगों के बीच में उसकी स्तुति करूँगा। ३८ क्योंकि वह दरिद्र की दाहिनी और खड़ा रहेगा, कि उसको प्राणदण्ड देनेवालों से बचाए।

११० दाऊद का भजन मेरे प्रभु से यहोवा की बाणी यह है, “तू मेरे दाहिने ओर बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ।” २ तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा। तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन कर। ३ तेरी प्रजा के लोग तेरे पराक्रम के दिन स्वेच्छालित बनते हैं, तेरे जवान लोग पवित्रता से शोभायमान, और भोग के गर्भ से जन्मी हुई ओस के समान तेरे पास हैं। ४ यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा, “तू मलिकिसिद्दक की रीति पर सर्वदा का याजक है।” ५ प्रभु तेरी दाहिनी ओर होकर अपने क्रोध के दिन राजाओं को चूर कर देगा। ६ वह जाति-जाति में न्याय चुकाएगा, रणभूमि शर्वों से भर जाएगी; वह लम्बे चौड़े देशों के प्रधानों को चूर कर देगा। ७ वह मार्ग में चलता हुआ नदी का जल पीएगा और तब वह विजय के बाद अपने सिर को ऊँचा करेगा।

१११ यहोवा की स्तुति करो। मैं सीधे लोगों की गोष्ठी में और मण्डली में हैं, जितने उनसे प्रसन्न रहते हैं, वे उन पर ध्यान लगाते हैं। १ उसके काम वैभवशाली और ऐश्वर्यमय होते हैं, और उसका धर्म सदा तक बना रहेगा। २ उसने अपने आश्वर्यकर्मों का स्मरण कराया है; यहोवा अनुग्रहकारी और दयावन्त है। ३ उसने अपने डरवैयों को आहार दिया है; वह अपनी बाचा को सदा तक स्मरण रखेगा। ४ उसने अपनी प्रजा को जाति-जाति का भाग देने के

लिये, अपने कामों का प्रताप दिखाया है। ५ सच्चाई और न्याय उसके हाथों के काम हैं; उसके सब उद्देश विवासयोग्य हैं, ६ वे सदा सर्वदा अटल रहेंगे, वे सच्चाई और सिध्धाई से किए हुए हैं। ७ उसने अपनी प्रजा का उद्घार किया है; उसने अपनी बाचा को सदा के लिये ठहराया है। उसका नाम पवित्र और भययोग्य है। ८ बुद्धि का मूल यहोवा का भय है; जितने उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, उनकी समझ अच्छी होती है। उसकी स्तुति सदा बनी रहेगी।

११२ यहोवा की स्तुति करो! क्या ही धन्य है वह पुस्त जो यहोवा का भय मानता है, और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है। ९ उसका वंश पृथ्वी पर पराक्रमी होगा; सीधे लोगों की सन्तान आशीर्वापाएं। १० उसके घर में धन-सम्पत्ति रहती है; और उसका धर्म सदा बना रहेगा। ११ सीधे लोगों के लिये अंधकार के बीच में ज्योति उदय होती है; वह अनुग्रहकारी, दयावन्त और धर्मी होता है। १२ जो व्यक्ति अनुग्रह करता और उधार देता है, और ईमानदारी के साथ अपने काम करता है, उसका कल्याण होता है। १३ वह तो सदा तक अटल रहेगा; धर्मी का स्मरण सदा तक बना रहेगा। १४ वह बुरे समाचार से नहीं डरता; उसका हृदय यहोवा पर भरोसा रखने से स्थिर रहता है। १५ उसका हृदय सभला हुआ है, इसलिए वह न डेरेगा, बरन अपने शत्रुओं पर दृष्टि करके सन्तुष्ट होगा। १६ उसने उदारता से दरिद्रों को दान दिया, उसका धर्म सदा बना रहेगा; और उसका सींग आदर के साथ ऊँचा किया जाएगा। १७ दृष्टि इसे देखकर कुछेंगा; वह दौँत पीस-पीसकर गल जाएगा; दृष्टि की लालसा पूरी न होगी।

११३ यहोवा की स्तुति करो। हे यहोवा के दासों, स्तुति करो, यहोवा के नाम की स्तुति करो! १ यहोवा का नाम अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहा जाएँ। २ उदयाचल से लेकर अस्तुचल तक, यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है। ३ यहोवा सारी जातियों के ऊपर महान है, और उसकी महिमा आकाश से भी ऊँची है। ४ हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कौन है? वह तो ऊँचे पर विराजमान है, ५ और आकाश और पृथ्वी पर, दृष्टि करने के लिये जुकता है। ६ वह कंगाल को मिट्टी पर से, और दरिद्र को धूरे पर से उठाकर ऊँचा करता है, ७ कि उसको प्रधानों के संग, अर्थात् अपनी प्रजा के प्रधानों के संग बैठाए। ८ वह बाँझ को घर में बाल-बच्चों की आनन्द करनेवाली माता बनाता है। यहोवा की स्तुति करो!

११४ जब इस्माइल ने मिस से, अर्थात् याकूब के घराने ने अन्य भाषावालों के मध्य से कूच किया, १ तब यहदा यहोवा का पवित्रस्थान और इस्माइल उसके राज्य के लोग हो गए। २ समुद्र देखकर भागा, यरदन नदी उल्टी बही। ३ पहाड़ में दों के समान उछलने लगे, और पहाड़ियाँ भेड़-बकरियों के बच्चों के समान उछलने लगी। ४ हे समुद्र, तुझे क्या हुआ, कि तू भागा? और हे यरदन तुझे क्या हुआ कि तू उल्टी बही? ५ हे पहाड़ों, तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़-बकरियों के समान, और हे पहाड़ियों तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़-बकरियों के बच्चों के समान उछली? ६ हे पृथ्वी प्रभु के सामने, हाँ, याकूब के परमेश्वर के सामने थरथरा। ७ वह चट्टान को जल का ताल, चक्रम के पथर को जल का सोता बना डालता है।

११५ हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं, वरन् अपने ही नाम की महिमा, अपनी कस्ता और सच्चाई के निमित्त कर। १ जाति-जाति के लोग क्यों कहने पाएँ, “उनका परमेश्वर कहाँ रहा?” २ हमारा परमेश्वर तो सर्वग में है; उसने जो चाहा वही किया है। ३ उन लोगों की मूरतें सोने चाँदी ही की तो हैं, वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं। ४ उनके मूँह तो रहता है परन्तु वे बोल

नहीं सकती; उनके आँखें तो रहती हैं परन्तु वे देख नहीं सकती। ६ उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन नहीं सकती; उनके नाक तो रहती हैं, परन्तु वे सेंध नहीं सकती। ७ उनके हाथ तो रहते हैं, परन्तु वे स्पर्श नहीं कर सकती; उनके पाँव तो रहते हैं, परन्तु वे चल नहीं सकती; और उनके कण्ठ से कुछ भी शब्द नहीं निकाल सकती। ८ जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले हैं, और उन पर सब भरोसा रखनेवाले भी वैसे ही हो जाएंगे। ९ हे इमाएल, यहोवा पर भरोसा रख! तेरा सहायक और ढाल वही है। १० हे हास्न के घराने, यहोवा पर भरोसा रख! तेरा सहायक और ढाल वही है। ११ हे यहोवा के डरवैयों, यहोवा पर भरोसा रखो! तुम्हारा सहायक और ढाल वही है। १२ यहोवा ने हमको स्मरण किया है; वह आशीष देगा; वह इमाएल के घराने को आशीष देगा; वह हास्न के घराने को आशीष देगा। १३ क्या छोटे क्या बड़े जितने यहोवा के डरवैये हैं, वह उन्हें आशीष देगा। १४ यहोवा तुम को और तुम्हारे बंश को भी अधिक बढ़ाता जाए। १५ यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का करता है, उसकी ओर से तुम आशीष पाए हो। १६ सर्वी तो यहोवा का है, परन्तु पृथ्वी उसने मनुष्यों को दी है। १७ मृतक जितने चुपचाप पड़े हैं, वे तो यहोवा की स्तुति नहीं कर सकते, १८ परन्तु हम लोग यहोवा को अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहते हरेंगे। यहोवा की स्तुति करो!

११६ मैं प्रेम रखता हूँ, इसलिए कि यहोवा ने मेरे गिडिगिडाने को सुना है।

२ उसने जो मेरी ओर कान लगाया है, इसलिए मैं जीवन भर उसको पुकारा करूँगा। ३ मृत्यु की रस्सियाँ मेरे चारों ओर थीं, मैं अधोलोक की सकेती में पड़ा था; मुझे संकट और शोक भोगना पड़ा। (Sheol h7585) ४ तब मैंने यहोवा से प्रार्थना की, “हे यहोवा, विनती सुनकर मेरे प्राण को बचा लो!” ५ यहोवा कस्त्राय और धर्मी है, और हमारा परमेश्वर दया करनेवाला है। ६ यहोवा भोलों की रक्षा करता है; जब मैं बल्तीनी हो गया था, उसने मेरा उद्धार किया। ७ हे मेरे प्राण, तू अपने विश्वास्थान में लौट आ; क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया है। ८ तने तो मेरे प्राण को मृत्यु से, मेरी आँख को आँसू बहाने से, और मेरे पाँव को ठोकर खाने से बचाया है। ९ मैं जीवित रहते हुए, अपने को यहोवा के सामने जानकर नित चलता रहूँगा। १० मैंने जो ऐसा कहा है, इसे विश्वास की कसौती पर कसकर कहा है, “मैं तो बहत ही दुष्खित हूँ;” ११ मैंने उतावली से कहा, “सब मनुष्य झड़ते हैं।” १२ यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं, उनके बदले मैं उसको क्या दूँ? १३ मैं उद्धार का कटोरा उठाकर, यहोवा से प्रार्थना करूँगा, १४ मैं यहोवा के लिये अपनी मन्त्रे, सभी की दृष्टि में प्रगट स्प मैं, उसकी सारी प्रजा के सामने पूरी करूँगा। १५ यहोवा के भक्तों की मृत्यु, उसकी दृष्टि में अनमोल है। १६ हे यहोवा, सुन, मैं तो तेरा दास हूँ; मैं तेरा दास, और तेरी दासी का पत्र हूँ। तने मेरे बन्धन खोल दिए हैं। १७ मैं तझको धन्यवाद-बलि चढ़ाऊँगा, और यहोवा से प्रार्थना करूँगा। १८ मैं यहोवा के लिये अपनी मन्त्रे, प्रगट मैं उसकी सारी प्रजा के सामने १९ यहोवा के भवन के आँगनों में, हे यस्तलेम, तेरे भीतर पूरी करूँगा। यहोवा की स्तुति करो!

११७ हे जाति-जाति के सब लोगों, यहोवा की स्तुति करो! हे राज्य-राज्य

के सब लोगों, उसकी प्रशंसा करो! २ क्योंकि उसकी कस्त्रा हमारे ऊपर प्रबल हुई है; और यहोवा की सच्चाई सदा की है यहोवा की स्तुति करो!

११८ यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी कस्त्रा

सदा की है! २ इमाएल कहे, उसकी कस्त्रा सदा की है। ३ हास्न का घराना कहे, उसकी कस्त्रा सदा की है। ४ यहोवा के डरवैये कहे, उसकी

कस्त्रा सदा की है। ५ मैंने सकेती मैं परमेश्वर को पुकारा, परमेश्वर ने मेरी सुनकर, मुझे चौड़े स्थान में पहूँचाया। ६ यहोवा मेरी ओर है, मैं न डरूँगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है? ७ यहोवा मेरी ओर मेरे सहायक है, मैं अपने बैरियों पर दृष्टि कर सन्तुष्ट होऊँगा। ८ यहोवा की शरण लेना, मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है। ९ यहोवा की शरण लेना, प्रधानों पर भी भरोसा रखने से उत्तम है। १० सब जातियों ने मुझ को धेर लिया है, परन्तु यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूँगा। ११ उन्होंने मुझ को धेर लिया है, परन्तु यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूँगा। १२ उन्होंने मुझ मधुमक्खियों के समान धेर लिया है, परन्तु कैंटों की आग के समान वे बुझ गए; यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूँगा! १३ तने मुझे बड़ा धक्का दिया तो था, कि मैं गिर पड़ूँ, परन्तु यहोवा ने मेरी सहायता की। १४ परमेश्वर मेरा बल और भजन का विषय है; वह मेरा उद्धार ठहरा है। १५ धर्मियों के तम्बुओं में जयजयकार और उद्धार की ध्वनि हो रही है, यहोवा के दाहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है, १६ यहोवा का दाहिना हाथ महान हुआ है, यहोवा के दाहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है! १७ मैं मैं न मस्तूँ बनूँ जीवित रहूँगा, और परमेश्वर के कामों का वर्णन करता रहूँगा। १८ परमेश्वर ने मेरी बड़ी ताड़ना तो की है परन्तु मुझे मृत्यु के वश में नहीं किया। १९ मेरे लिये धर्म के द्वार खोलो, मैं उन्हें प्रवेश करके यहोवा का धन्यवाद करूँगा। २० यहोवा का द्वार यही है, इससे धर्मी प्रवेश करने पाएँगे। २१ हे यहोवा, मैं तेरा धन्यवाद करूँगा, क्योंकि तने मेरी सुन ली है, और मेरा उद्धार ठहर गया है। २२ राजमिथियों ने जिस पथर को निकम्मा ठहराया था वही कोने का सिरा हो गया है। २३ यह तो यहोवा की ओर से हुआ है, यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है। २४ आज वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है; हम इसमें मगान और आनन्दित हों। २५ हे यहोवा, विनती सुन, उद्धार कर! हे यहोवा, विनती सुन, सफलता दो! २६ धन्य है वह जो यहोवा के नाम से आता है! हमने तुम को यहोवा के घर से आशीर्वाद दिया है। २७ यहोवा परमेश्वर है, और उसने हमको प्रकाश दिया है। यजपत्न को बेटी के सीरीगों से रसियों से बैधोंगी। २८ हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है, मैं तेरा धन्यवाद करूँगा; तू मेरा परमेश्वर है, मैं तुझको समरूँगा। २९ यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी कस्त्रा सदा बनी रहेगी!

११९ आलोक क्या ही धन्य है वे जो चाल के खोे हैं, और यहोवा की

व्यवस्था पर चलते हैं। ३ क्या ही धन्य है वे जो उसकी चितौनियों को मानते हैं, और पूर्ण मन से उसके पास आते हैं। ४ फिर वे कुटिलता का काम नहीं करते, वे उसके मार्गों में चलते हैं। ५ तने अपने उपदेश इसलिए दिए हैं, कि हम उसे यज्ञ से माने। ६ भला होता कि तेरी विधियों को मानने के लिये मेरी चाल चलन ढूँ हो जाए। ७ तब मैं तेरी सब आज्ञाओं की ओर चित लगाए, रहूँगा, और मैं लज्जित न होऊँगा। ८ जब मैं तेरा धर्ममय नियमों को सीधींगा, तब तेरा धन्यवाद सीधी मन से करूँगा। ९ मैं तेरी विधियों को मानूँगा: मुझे पूरी रीति से न तज! १० वेद जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखें? तेरे वचन का पालन करने से। ११ मैं पूरे मन से तेरी खोज में लगा हूँ; मुझे तेरी आज्ञाओं की बात से भटकने न दो। १२ मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विद्धु पाप न करूँ। १३ हे यहोवा, तू धन्य है; मुझे अपनी विधियों सिखा! १४ तेरे सब कहे हुए नियमों का वर्णन, मैंने अपने मुँह से किया है। १५ मैं तेरी चितौनियों के मार्ग से, मानो सब प्रकार के धन से हर्षित हुआ हूँ। १६ मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूँगा, और तेरे मार्गों की ओर दृष्टि रखूँगा। १७ मैं तेरी विधियों से सुख पाऊँगा; और तेरे वचन को न भूलूँगा। १८ गिमेल अपने

दास का उपकार कर कि मैं जीवित रहूँ, और तेरे वचन पर चलता रहूँ। १८ मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अदूत बातें देख सकूँ। १९ मैं तो पृथ्वी पर पदेशी हूँ; अपनी आज्ञाओं को मुझसे छिपाए न रख। २० मेरा मन तेरे नियमों की अभिलाषा के कारण हर समय खेदित रहता है। २१ तुमे अभिमानियों को, जो श्रापित हैं, घुड़का है, वे तेरी आज्ञाओं से भटके हुए हैं। २२ मेरी नामधारी और अपमान दूर कर, क्योंकि मैं तेरी चित्तौनियों को पकड़े हूँ। २३ हाकिम भी बैठे हुए आपस में मेरे विद्धु बातें करते थे, परन्तु तेरा दास तेरी विधियों पर ध्यान करता रहा। २४ तेरी चित्तौनियाँ मेरा सुखमूल और मेरे मन्त्री हैं। २५ दाल्थ मैं धूल में पड़ा हूँ; तू अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला! २६ मैंने अपनी चाल चलन का तुङ्ग से वर्णन किया है और तुमे मेरी बात मान ली है; तू मुझ को अपनी विधियाँ सिखा। २७ अपने उपदेशों का मार्ग मुझे समझा, तब मैं तेरे अश्वर्यकर्मीं पर ध्यान कहसूँगा। २८ मेरा जीव उदासी के मारे गल चला है; तू अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल। २९ मुझ को झूठ के मार्ग से दूर कर, और कृपा करके अपनी व्यवस्था मुझे दे। ३० मैंने सच्चाई का मार्ग चुन लिया है, तेरे नियमों की ओर मैं चित्त लगाए रहता हूँ। ३१ मैं तेरी चित्तौनियों में लौलीन हूँ, हे यहोवा, मुझे लज्जित न होने दे! ३२ जब तू मेरा हियाव बढ़ाएगा, तब मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में दौड़ूँगा। ३३ है हे यहोवा, मुझे अपनी विधियों का मार्ग सिखा दे; तब मैं उसे अन्त तक पकड़े रहूँगा। ३४ मुझे समझ दे, तब मैं तेरी व्यवस्था को पकड़े रहूँगा और पूर्ण मन से उस पर चलूँगा। ३५ अपनी आज्ञाओं के पथ में मुझ को चला, क्योंकि मैं उत्तीरे से प्रसन्न हूँ। ३६ मेरे मन को लोभ की ओर नहीं, अपनी चित्तौनियों ही की ओर फेर दे। ३७ मेरी आँखों को व्यर्थ वस्तुओं की ओर से फेर दे; तू अपने मार्ग में मुझे जिला। ३८ तेरा वादा जो तेरे भय माननेवालों के लिये है, उसको अपने दास के निमित्त भी पूरा कर। ३९ जिस नामधारी से मैं डरता हूँ, उसे दूर कर; क्योंकि तेरे नियम उत्तम है। ४० देख, मैं तेरे उपदेशों का अभिलाषी हूँ, अपने धर्म के कारण मुझ को जिला। ४१ वाप हे यहोवा, तेरी कस्ता और तेरा किया हुआ उद्वार, तेरे बादे के अनुसार, मुझ को भी मिले; ४२ तब मैं अपनी नामधारी करनेवालों को कुछ उत्तर दे सकूँगा, क्योंकि मेरा भरोसा, तेरे वचन पर है। ४३ मुझे अपने सत्य वचन करने से न रोक क्योंकि मेरी आशा तेरे नियमों पर है। ४४ तब मैं तेरी व्यवस्था पर लगातार, सदा सर्वदा चलता रहूँगा; ४५ और मैं चौड़े स्थान में चला फिरा करूँगा, क्योंकि मैंने तेरे उपदेशों की सुधि रखी है। ४६ और मैं तेरी चित्तौनियों की चर्चा राजाओं के सामने भी करूँगा, और लज्जित न होऊँगा; ४७ क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं के कारण सुधी हूँ, और मैं उनसे प्रीति रखता हूँ। ४८ मैं तेरी आज्ञाओं की ओर जिनमें मैं प्रीति रखता हूँ, हाथ फैलाऊँगा और तेरी विधियों पर ध्यान करूँगा। ४९ जैन जो वादा तुमे अपने दास को दिया है, उसे स्मरण कर, क्योंकि तूने मुझे आता ही है। ५० मेरे दुःख में मुझे शानि उसी से हूँहै, क्योंकि तेरे वचन के द्वारा मैं जीवन पाया है। ५१ अहंकारियों ने मुझे अत्यन्त ठड़े में उड़ाया है, तो भी मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा। ५२ है हे यहोवा, मैंने तेरे प्राचीन नियमों को स्मरण करके शानि पाई है। ५३ जो दृष्टि तेरी व्यवस्था को छोड़े हुए है, उनके कारण मैं क्रोध से जलता हूँ। ५४ जहाँ मैं परदेशी होकर रहता हूँ, वहाँ तेरी विधियाँ, मेरी गीत गाने का विषय बनी है। ५५ है हे यहोवा, मैंने रात को तेरा नाम स्मरण किया, और तेरी व्यवस्था पर चला हूँ। ५६ यह मुझसे इस कारण हुआ, कि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए था। ५७ हेतु यहोवा मेरा भाग है; मैंने तेरे वचनों के अनुसार चलने का निश्चय किया है। ५८ मैंने पूरे मन से तुझे मनया है; इसलिए अपने बादे के अनुसार मुझ पर दया कर। ५९ मैंने अपनी आज्ञा चाल चलन को सोचा, और तेरी चित्तौनियों का मार्ग लिया। ६० मैंने तेरी आज्ञाओं के मानने में विलम्ब नहीं, फुर्ती की है। ६१ मैं दृष्टों की रस्सियों

से बन्ध गया हूँ, तो भी मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला। ६२ तेरे धर्ममय नियमों के कारण मैं आधी रात को तेरा धन्यवाद करने को उड़ूँगा। ६३ जिनेतेरा भय मानते और तेरे उपदेशों पर चलते हैं, उनका मैं संगी हूँ। ६४ है यहोवा, तेरी कस्ता पृथ्वी में भरी हुई है; तू मुझे अपनी विधियाँ सिखा। ६५ ठेथ है यहोवा, तुमे अपने वचन के अनुसार अपने दास के संग भलाई की है। ६६ मुझे भली विवेक-शक्ति और समझ दे, क्योंकि मैंने तेरी आज्ञाओं का विश्वास किया है। ६७ उससे पहले कि मैं दुःखित हुआ, मैं भटकता था; परन्तु अब मैं तेरे वचन को मानता हूँ। ६८ तू भला है, और भला करता भी है; मुझे अपनी विधियाँ सिखा। ६९ अभिमानियों ने तेरे मेरे विद्धु झूठ का गढ़ी है, परन्तु मैं तेरे उपदेशों को पूरे मन से पकड़े रहूँगा। ७० उनका मन मोटा हो गया है, परन्तु मैं तेरी व्यवस्था के कारण सुखी हूँ। ७१ मुझे जो दुःख हुआ वह मेरे लिये भला ही हुआ है, जिससे मैं तेरी विधियों को सीख सकूँ। ७२ तेरी दी हुई व्यवस्था मैं लिये हजारों स्पर्यों और मुहरों से भी उत्तम है। ७३ योध तेरे हाथों से मैं बनाया और रचा गया हूँ; मुझे समझ दे कि मैं तेरी आज्ञाओं को सीधूँ। ७४ तेरे डरवैये मुझे देखकर आनन्दित होंगे, क्योंकि मैंने तेरे वचन पर आशा लगाई है। ७५ है यहोवा, मैं जान गया कि तेरे नियम धर्ममय हैं, और तूने अपने सच्चाई के अनुसार मुझे दुःख दिया है। ७६ मुझे अपनी कस्ता से शान्ति दे, क्योंकि तूने अपने दास को ऐसा ही बादा दिया है। ७७ तेरी दया मुझ पर हो, तब मैं जीवित रहूँगा; क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूँ। ७८ अहंकारी लज्जित किए जाए, क्योंकि उन्होंने मुझे झूठ के द्वारा गिरा दिया है; परन्तु मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूँगा। ७९ जो तेरा भय मानते हैं, वह मेरी ओर फेरें, तब वे तेरी चित्तौनियों को समझ लेंगे। ८० मेरा मन तेरी विधियों के मानने में सिंदू हो, ऐसा न हो कि मुझे लज्जित होना पड़े। ८१ कफ मेरा प्राण तेरे उद्वार के लिये बैचेन है; परन्तु मुझे तेरे वचन पर आशा रहती है। ८२ मेरी आँखें तेरे बादे के पौरे होने की बाट जोहते-जोहते धूंधली पड़ गई है; और मैं कहता हूँ कि तू मुझे कब शान्ति देगा? ८३ क्योंकि मैं धूँ दें मैं की कुप्पी के समान हो गया हूँ, तो भी तेरी विधियों को नहीं भूला। ८४ तेरे दास के किनते दिन रह गए हैं? तू मेरे पीछे पड़े हुओं को दण्ड कब देगा? ८५ अहंकारी जो तेरी व्यवस्था के अनुसार नहीं चलते, उन्होंने मेरे लिये गहे खोदे हैं। ८६ तेरी सब आजाएँ विश्वासयोग हैं, वे लोग झूठ बोलते हुए मेरे पीछे पड़े हैं, तमेरी सहायता कर! ८७ वे मुझ को पृथ्वी पर से मिटा डालने ही पर थे, परन्तु मैंने तेरे उपदेशों को नहीं छोड़ा। ८८ अपनी कस्ता के अनुसार मुझ को जिला, तब मैं तेरी दी हुई चित्तौनी को मानूँगा। ८९ लामेध है यहोवा, तेरा वचन, आकाश में सदा तक स्थिर रहता है। ९० तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है; तूने पृथ्वी को स्थिर किया, इसलिए वह बनी है। ९१ वे आज के दिन तक तेरे नियमों के अनुसार ठहरे हैं, क्योंकि सारी सुषि तेरे अधीन है। ९२ यदि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी न होता, तो मैं दुःख के समय नाश हो जाता। ९३ मैं तेरे उपदेशों को कभी न भूलूँगा; क्योंकि उन्ही के द्वारा तूने मुझे जिलाया है। ९४ मैं तेरा ही हूँ, तू मेरा उद्वार कर; क्योंकि मैं तेरे उपदेशों की सुधि रखता हूँ। ९५ दुःख मेरा नाश करने के लिये मेरी धूत में लगे हैं; परन्तु मैं तेरी चित्तौनियों पर ध्यान करता हूँ। ९६ मैंने देखा है कि प्रत्येक पूर्णता की सीमा होती है, परन्तु तेरी आज्ञा का विस्तार बड़ा और सीमा से फेरे है। ९७ मीम आहा! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूँ! दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है। ९८ तू अपनी आज्ञाओं के द्वारा मुझे अपने शत्रुओं से अधिक बुद्धिमान करता है, क्योंकि वे सदा मेरे रहती हैं। ९९ मैं अपने सब शिक्षकों से भी अधिक समझ रखता हूँ, क्योंकि मेरा ध्यान तेरी चित्तौनियों पर लगा है। १०० मैं पुनियों से भी समझदार हूँ, क्योंकि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए हूँ। १०१ मैंने अपने पाँवों को हर एक बुरे रास्ते से रोक रखा है, जिससे मैं तेरे वचन के अनुसार चलूँ। १०२ मैं

तेरी नियमों से नहीं हटा, क्योंकि तू ही ने मुझे शिक्षा दी है। १०३ तेरा वचन मुझ को कैसे मैंठि लगते हैं, वे मेरे मुँह में मधु से भी मौंठि हैं। १०४ तेरे उपदेशों के कारण मैं समझदार हो जाता हूँ, इसलिए मैं सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूँ। १०५ नून तेरा वचन मेरे पाँव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है। १०६ मैंने शपथ खाई, और ठान लिया है कि मैं तेरे धर्ममय नियमों के अनुसार चलूँगा। १०७ मैं अत्यन्त दुःख में पड़ा हूँ; वे यहोवा, अपने बादे के अनुसार मुझे जिला। १०८ हे यहोवा, मेरे वचनों को स्वेच्छाबलि जानकर ग्रहण कर, और अपने नियमों को मुझे सिखा। १०९ मेरा प्राण निस्तर मेरी हथेली पर रहता है, तो भी मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया। ११० दुशों ने मेरे लिये फंदा लगाया है, परन्तु मैं तेरे उपदेशों के मार्ग से नहीं भटका। १११ मैंने तेरी चितौनियों को सदा के लिये अपना निज भागकर लिया है, क्योंकि वे मेरे हृदय के हर्ष का कारण है। ११२ मैंने अपने मन को इस बात पर लगाया है, कि अन्त तक तेरी विधियों पर सदा चलता रहूँ। ११३ सामेख मैं दुचितों से तो बैर रखता हूँ, परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूँ। ११४ तू मेरी आड़ और ढाल है; मेरी आशा तेरे वचन पर है। ११५ हे कुकमिंयों, मुझसे दूर हो जाओ, कि मैं अपने परमेश्वर की आज्ञाओं को पकड़े रहूँ। ११६ हे यहोवा, अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल, कि मैं जीवित रहूँ, और मेरी आशा को न तोड़। ११७ मुझे थामे रख, तब मैं बचा रहूँगा, और निस्तर तेरी विधियों की ओर चित लगाए रहूँगा। ११८ जितने तेरी विधियों के मार्ग से भटक जाते हैं, उन सब को तू तुच्छ जानता है, क्योंकि उनकी चतुराई झूठ है। ११९ तने पृथ्वी के सब दुशों को धातु के मैल के समान दूर किया है; इस कारण मैं तेरी चितौनियों से प्रीति रखता हूँ। १२० तेरे भय से मेरा शरीर काँप उठता है, और मैं तेरे नियमों से डरता हूँ। १२१ ऐन मैंने तेरा न्याय और धर्म का काम किया है; तू मुझे अत्याचार करनेवालों के हाथ में न छोड़। १२२ अपने दास की भलाई के लिये जामिन हो, ताकि अहंकारी मुझ पर अत्याचार न करने पाएँ। १२३ मेरी आँखे तुझ से उद्धार पाने, और तेरे धर्ममय वचन के पौरे होने की बाट जोहते-जोहते धृुंगली पड़ गई हैं। १२४ अपने दास के संग अपनी कस्सा के अनुसार बर्ताव कर, और अपनी विधियाँ मुझे सिखा। १२५ मैं तेरा दास हूँ, तू मुझे समझ दे कि मैं तेरी चितौनियों को समझूँ। १२६ वह समय आया है, कि यहोवा काम करे, क्योंकि लोगों ने तेरी व्यवस्था को तोड़ दिया है। १२७ इस कारण मैं तेरी आज्ञाओं को सोने से बरन कुन्दन से भी अधिक प्रिय मानता हूँ। १२८ इसी कारण मैं तेरे सब उपदेशों को सब विषयों में ठीक जानता हूँ; और सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूँ। १२९ पे तेरी चितौनियाँ अदृत हैं, इस कारण मैं उहें अपने जी से पकड़े हुए हूँ। १३० तेरी बातों के खुलासे प्रकाश होता है; उससे निर्बुद्धि लोग समझ प्राप्त करते हैं। १३१ मैं मुँह खोलकर हाँफने लगा, क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं का प्यासा था। १३२ जैसी तेरी रीति अपने नाम के प्रीति रखनेवालों से है, वैसे ही मेरी ओर भी फिरकर मुझ पर दया कर। १३३ मेरे पैरों को अपने वचन के मार्ग पर स्थिर कर, और किसी अनर्थ बात को मुझ पर प्रभुता न करने दे। १३४ मुझे मनुज्यों के अत्याचार से छुड़ा ले, तब मैं तेरे उपदेशों को मानँगा। १३५ अपने दास पर अपने मुख का प्रकाश चमका दे, और अपनी विधियाँ मुझे सिखा। १३६ मेरी आँखों से आँसुओं की धारा बहती रहती है, क्योंकि लोग तेरी व्यवस्था को नहीं मानते। १३७ सांदे हे यहोवा तू धर्मी है, और तेरे नियम सीधे हैं। १३८ तने अपनी चितौनियों को धर्म और पूरी सत्यता से कहा है। १३९ मैं तेरी धूम में भस्म हो रहा हूँ, क्योंकि मेरे सतानेवाले तेरे वचनों को भूल गए हैं। १४० तेरा वचन पूरी रीति से ताया हुआ है, इसलिए तेरा दास उसमें प्रीति रखता है। १४१ मैं छोटा और तुच्छ हूँ, तो भी मैं तेरे उपदेशों को नहीं भूलता। १४२ तेरा धर्म सदा का धर्म है, और तेरी व्यवस्था सत्य है। १४३ मैं संकट और सकेती में फँसा हूँ,

परन्तु मैं तेरी आज्ञाओं से सुखी हूँ। १४४ तेरी चितौनियाँ सदा धर्ममय है; तू मुझ को समझ दे कि मैं जीवित रहूँ। १४५ काफ़ मैंने सारे मन से प्रार्थना की है, हे यहोवा मेरी सुन! मैं तेरी विधियों को पकड़े रहूँगा। १४६ मैंने तुझ से प्रार्थना की है, तू मेरा उद्धार कर, और मैं तेरी चितौनियों को माना करूँगा। १४७ मैंने पौ फटने से पहले दुहाई दी; मेरी आशा तेरे वचनों पर थी। १४८ मेरी आँखे रात के एक-एक पहर से पहले खुल गईं, कि मैं तेरे वचन पर ध्यान करूँ। १४९ अपनी कस्सा के अनुसार मेरी सुन ले; हे यहोवा, अपनी नियमों के रीति अनुसार मुझे जीवित कर। १५० जो दुष्टा की धून मैं हूँ, वे निकट आ गए हैं; वे तेरी व्यवस्था से दूर हैं। १५१ हे यहोवा, तू निकट है, और तेरी सब आज्ञाएँ सत्य हैं। १५२ बहुत काल से मैं तेरी चितौनियों को जानता हूँ, कि तने उनकी नीच सदा के लिये डाली है। १५३ रेश मेरे दुःख को देखकर मुझे छुड़ा ले, क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया। १५४ मेरा मुकदमा लड़, और मुझे छुड़ा ले, अपने बादे के अनुसार मुझ को जिला। १५५ दुशों को उद्धार मिलाना कठिन है, क्योंकि वे तेरी विधियों की सुधि नहीं रखते। १५६ हे यहोवा, तेरी दिया तो बड़ी है; इसलिए अपने नियमों के अनुसार मुझे जिला। १५७ मेरा पीछा करनेवाले और मेरे सतानेवाले बहुत हैं, परन्तु मैं तेरी चितौनियों से नहीं हटता। १५८ मैं विश्वासघातियों को देखकर घृणा करता हूँ; क्योंकि वे तेरे वचन को नहीं मानते। १५९ देख, मैं तेरे उपदेशों से कैसी प्रीति रखता हूँ! हे यहोवा, अपनी कस्सा के अनुसार मुझ को जिला। १६० तेरा सारा वचन सत्य ही है; और तेरा एक-एक धर्ममय नियम सदाकाल तक अटल है। १६१ शीन हाकिम व्यर्थ मेरे पीछे पड़े हैं, परन्तु मेरा हृदय तेरे वचनों का भय मानता है। १६२ जैसे कोई बड़ी लट पाकर हर्षित होता है, वैसे ही मैं तेरे वचन के कारण हर्षित हूँ। १६३ ज़रूर से तो मैं बैर और घृणा रखता हूँ, परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूँ। १६४ तेरे धर्ममय नियमों के कारण मैं प्रतिदिन सात बार तेरी स्तुति करता हूँ। १६५ तेरी व्यवस्था से प्रीति रखनेवालों को बड़ी शानि होती है, और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती। १६६ हे यहोवा, मैं तुझ से उद्धार पाने की आशा रखता हूँ, और तेरी आज्ञाओं पर चलता आया हूँ। १६७ मैं तेरी चितौनियों को जी से मानता हूँ, और उनसे बहुत प्रीति रखता आया हूँ। १६८ मैं तेरे उपदेशों और चितौनियों को मानता आया हूँ, क्योंकि मेरी सारी चाल चलन तेरे सम्मुख प्रगत है। १६९ ताव हे यहोवा, मेरी दुहाई तुझ तक पहुँचे, तू अपने वचन के अनुसार मुझे छुड़ा ले। १७० मेरा गिड़गिड़ाना तुझ तक पहुँचे; तू अपने वचन के अनुसार मुझे छुड़ा ले। १७१ मेरे मुँह से स्तुति निकला करे, क्योंकि तू मुझे अपनी विधियों सिखाता है। १७२ मैं तेरे वचन का गीत गाऊँगा, क्योंकि तेरी सब आज्ञाएँ धर्ममय हैं। १७३ तेरा हाथ मेरी सहायता करने को तैयार रहता है, क्योंकि मैंने तेरे उपदेशों को अपनाया है। १७४ हे यहोवा, मैं तुझ से उद्धार पाने की अभिलाषा करता हूँ, मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूँ। १७५ मुझे जिला, और मैं तेरी स्तुति करूँगा, तेरे नियमों से मेरी सहायता हो। १७६ मैं खोइ हुई भेड़ के समान भटका हूँ; तू अपने दास को ढूँढ़ ले, क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं को भूल नहीं गया।

१२० यात्रा का गीत संकट के समय मैंने यहोवा को पुकारा, और उसने मेरी सुन ली। १ हे यहोवा, ज़रूर बोलनेवाले मूँह से और छली जीभ से मेरी रक्षा कर। २ हे छली जीभ, तुझको क्या मिले? और तेरे साथ और क्या अधिक किया जाए? ३ चीर के नोकले तीर और झाऊ के अंगरे! ४ हाय, हाय, क्योंकि मुझे मेशक में परदेशी होकर रहना पड़ा और केदार के तम्बुओं में बसना पड़ा है। ५ बहुत समय से मुझ को मेल के बैरियों के साथ बसना पड़ा है। ६ मैं तो मेल चाहता हूँ, परन्तु मैं बोलते ही, वे लड़ना चाहते हैं!

१२९ यात्रा का गीत मैं अपनी आँखें पर्वतों की ओर उठाऊँगा। मुझे सहायता कहाँ से मिलेगी? २ मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है, जो आकाश और पृथ्वी का करता है। ३ वह तेरे पाँव को टलने न देगा, तेरा रक्षक कभी न ठेंगेगा। ४ सुन, इसाएल का रक्षक, न ठेंगेगा और न सोएगा। ५ यहोवा तेरा रक्षक है; यहोवा तेरी दाहिनी ओर तेरी आड़ है। ६ न तो दिन को धूप से, और न रात को चौंदीनी से तेरी कुछ हानि होगी। ७ यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा; वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा। ८ यहोवा तेरे आने-जाने में तेरी रक्षा अब से लेकर सदा तक करता रहेगा।

१२२ दाऊद की यात्रा का गीत जब लोगों ने मुझसे कहा, “आओ, हम यहोवा के भवन को चलें”, तब मैं अनन्दित हुआ। १ हे यस्शलेम, तेरे फाटकों के भीतर, हम खड़े हो गए हैं। २ हे यस्शलेम, तु ऐसे नगर के समान बना है, जिसके घर एक दूसरे से मिले हुए हैं। ३ वहाँ यहोवा के गेत्र-गोत्र के लोग यहोवा के नाम का धन्यवाद करने को जाते हैं; यह इसाएल के लिये साक्षी है। ४ वहाँ तो न्याय के सिंहासन, दाऊद के घराने के लिये रखे हुए हैं। ५ यस्शलेम की शान्ति का वरदान माँगो, तेरे प्रेमी कुशल से रहें। ६ तेरी शहरपनाह के भीतर शान्ति, और तेरे महलों में कुशल होवे। ७ अपने भाइयों और संगियों के निमित्त, मैं कहाँगा कि तुझ में शान्ति होवे! ८ अपने परमेश्वर यहोवा के भवन के निमित्त, मैं तेरी भलाई का यत्र कस्तूर।

१२३ यात्रा का गीत हे स्वर्ग में विराजमान मैं अपनी आँखें तेरी ओर उठाता हूँ! १ देख, जैसे दासों की आँखें अपने स्वामियों के हाथ की ओर, और जैसे दासियों की आँखें अपनी स्वामिनी के हाथ की ओर लगी रहती है, वैसे ही हमारी आँखें हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर उस समय तक लगी रहेंगी, जब तक वह हम पर दया न करे। २ हम पर दया कर, हे यहोवा, हम पर कृपा कर, क्योंकि हम अपमान से बहुत ही भर गए हैं। ३ हमारा जीव सुखी लोगों के उपहास से, और अहंकारियों के अपमान से बहुत ही भर गया है।

१२४ दाऊद की यात्रा का गीत इसाएल यह कहे, कि यदि हमारी ओर यहोवा न होता, १ यदि यहोवा उस समय हमारी ओर न होता जब मनुष्यों ने हम पर चढ़ाई की, २ तो वे हमको उसी समय जीवित निगल जाते, जब उनका क्रोध हम पर भड़का था, ३ हम उसी समय जल में डूब जाते और धारा में बह जाते, ४ उमड़ते जल में हम उसी समय ही बह जाते। ५ धन्य है यहोवा, जिसने हमको उनके दाँतों तले जाने न दिया! ६ हमारा जीव पक्षी के समान चिरीमार के जाल से छूट गया; जाल फट गया और हम बच निकले। ७ यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का करता है, हमारी सहायता उसी के नाम से होती है।

१२५ दाऊद की यात्रा का गीत जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं, वे सिद्ध्योन पर्वत के समान हैं, जो टलता नहीं, बरन सदा बना रहता है। १ जिस प्रकार यस्शलेम के चारों ओर पहाड़ हैं, उसी प्रकार यहोवा अपनी प्रजा के चारों ओर अब से लेकर सर्वदा तक बना रहेगा। २ दुर्दों का राजदण्ड धर्मियों के भाग पर बना न रहेगा, ऐसा न हो कि धर्मी अपने हाथ कुटिल काम की ओर बढ़ाएँ। ३ हे यहोवा, भल्तों का और सिधे मनवालों का भला कर! ४ परन्तु जो मुड़कर टेढ़े मार्गों में चलते हैं, उनको यहोवा अनर्थकारियों के संग निकाल देगा! इसाएल को शान्ति मिले!

१२६ यात्रा का गीत जब यहोवा सिद्ध्योन में लौटनेवालों को लौटा ले आया, तब हम स्वप्न देखनेवाले से हो गए। १ तब हम अनन्द से हँसने और

जयजयकार करने लगे; तब जाति-जाति के बीच में कहा जाता था, “यहोवा ने, इनके साथ बड़े-बड़े काम किए हैं।” २ यहोवा ने हमारे साथ बड़े-बड़े काम किए हैं; और इससे हम आनन्दित हैं। ३ हे यहोवा, दक्षिण देश के नालों के समान, हमारे बन्दियों को लौटा ले आ! ४ जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएँगे। ५ चाहे बोनेवाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियाँ लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा।

१२७ सुलैमान की यात्रा का गीत यदि घर को यहोवा न बनाए, तो उसके बनानेवालों का परिश्रम व्यर्थ होगा। यदि नगर की रक्षा यहोवा न करे, तो रखवाले का जगना व्यर्थ ही होगा। १ तुम जो सवारे उठते और देर करके विश्वास करते और कठोर परिश्रम की रोटी खाते हो, यह सब तुम्हारे लिये व्यर्थ ही है; क्योंकि वह अपने प्रियों को यों ही नीद प्रदान करता है। २ देखो, बच्चे यहोवा के दिए हुए भगाहैं, गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है। ३ जैसे वीर के हाथ में तीर, वैसे ही जवानी के बच्चे होते हैं। ४ क्या ही धन्य है वह पुष्प जिसने अपने तरकश को उनसे भर लिया हो! वह फाटक के पास अपने शत्रुओं से बांते करते संकोच न करेगा।

१२८ यात्रा का गीत क्या ही धन्य है हर एक जो यहोवा का भय मानता है, और उसके मार्गों पर चलता है! १ तू अपनी कमाई को निश्चय खाने पाएगा; तू धन्य होगा, और तेरा भला ही होगा। २ तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री फलवन्त दाखलता सी होगी; तेरी मेज के चारों ओर तेरे बच्चे जैतून के पौधे के समान होंगे। ३ सुन, जो पुस्त यहोवा का भय मानता हो, वह ऐसी ही आशीष पाएगा। ४ यहोवा तुझे सिद्ध्योन से आशीष देवे, और तू जीवन भर यस्शलेम का कुशल देखता रहे! ५ वरन् तू अपने नाती-पोतों को भी देखने पाएँ। इसाएल को शान्ति मिले!

१२९ यात्रा का गीत इसाएल अब यह कहे, “मेरे बचपन से लोग मुझे बार कर्तेश देते आए हैं, १ मेरे बचपन से वे मुझ को बार बार कर्तेश देते तो आए हैं, परन्तु मुझ पर प्रबल नहीं हुए। २ हलवाहों ने मेरी पीठ के ऊपर हल चलाया, और लम्बी-लम्बी रेखाएँ की।” ३ यहोवा धर्मी है; उसने दृढ़ों के फंदों को काट डाला है; ४ जिसने सिद्ध्योन से बैर रखते हैं, वे सब लज्जित हों, और पराजित होकर पीछे हट जाएँ। ५ वे छत पर की धास के समान हों, जो बढ़ने से पहले सूख जाती है; ६ जिससे कोई बाँधनेवाला अपनी मुरी नहीं भरता, न पूलियों का कोई बाँधनेवाला अपनी आँकवार भर पाता है, ७ और न अनें-जानेवाले यह कहते हैं, “यहोवा की आशीष तुम पर होवे! हम तुम को यहोवा के नाम से आशीर्वाद देते हैं!”

१३० यात्रा का गीत हे यहोवा, मैंने गहरे स्थानों में से तुझको पुकारा है! १ हे प्रभु, मेरी सुन! तेरे कान मेरे गिडिगिडें की ओर ध्यान से लगे रहें! २ हे यहोवा, यदि तू अर्धम के कामों का लेखा ले, तो हे प्रभु कौन खड़ा रह सकेगा? ३ परन्तु तू क्षमा करनेवाला है, जिससे तेरा भय माना जाए। ४ मैं यहोवा की बाट जोहता हूँ, मैं जी से उसकी बाट जोहता हूँ, और मेरी आशा उसके बचन पर है; ५ पहस्त जितना भोर को चाहते हैं, हाँ, पहस्त जितना भोर को चाहते हैं, उससे भी अधिक मैं यहोवा को अपने प्राणों से चाहता हूँ। ६ इसाएल, यहोवा पर आशा लगाए रहे! क्योंकि यहोवा कस्ता करनेवाला और पूरा छुटकारा देनेवाला है। ७ इसाएल को उसके सारे अर्धम के कामों से वही छुटकारा देगा।

१३१ दाऊद की यात्रा का गीत हे यहोवा, न तो मेरा मन गर्व से और न

मेरी दृष्टि घण्ड से भरी है; और जो बातें बड़ी और मेरे लिये अधिक कठिन हैं, उनसे मैं काम नहीं रखता। २ निश्चय मैंने अपने मन को शान्त और चुप कर दिया है, जैसे दृढ़ छुड़ाया हुआ बच्चा अपनी माँ की गोद में रहता है, वैसे ही दृढ़ छुड़ाए हुए बच्चे के समान मेरा मन भी रहता है। ३ हे इसाएल, अब से लेकर सदा सर्वदा यहोवा ही पर आशा लगाए रह!

१३२ यात्रा का गीत हे यहोवा, दाऊद के लिये उसकी सारी दुर्दशा को स्मरण

कर; ४ उसने यहोवा से शपथ खाई, और याकूब के सर्वशक्तिमान की मन्त्र मानी है, ५ उसने कहा, “निश्चय मैं उस समय तक अपने घर में प्रवेश न करूँगा, और न अपने पलंग पर चढ़ूँगा; ६ न अपनी आँखों में नीद, और न अपनी पलतों में झापकी आने दूँगा, ७ जब तक मैं यहोवा के लिये एक स्थान, अर्थात् याकूब के सर्वशक्तिमान के लिये निवास-स्थान न पाऊँ।” ८ देखो, हमने एप्ट्रिया में इसकी चर्चा सुनी है, हमने इसको वन के खेतों में पाया है। ९ आओ, हम उसके निवास में प्रवेश करें, हम उसके चरणों की चौकी के अगे दण्डवत् करें। १० हे यहोवा, उठकर अपने विश्वामस्थान में अपनी सामर्थ्य के सन्दर्भ समेत आ। ११ तेरे याजक धर्म के बब्ल पहने रहें, और तेरे भक्त लोग जयजयकार करें। १२ अपने दास दाऊद के लिये, अपने अभिषित्की प्रार्थना को अनसुनी न कर। १३ यहोवा ने दाऊद से सच्ची शपथ खाई है और वह उससे न मुकरेगा: “मैं तेरी गदी पर तेरे एक निज पुत्र को बैठाऊँगा। १४ यदि तेरे वंश के लोग मेरी वाचा का पालन करें और जो चित्तैनी मैं उहैं सिखाऊँगा, उस पर चलें, तो उनके वंश के लोग भी तेरी गदी पर युग-युग बैठते चले जाएँगा।” १५ निश्चय यहोवा ने सियोन को चुना है, और उसे अपने निवास के लिये चाहा है। १६ “यह तो युग-युग के लिये मेरा विश्वामस्थान है; यहीं मैं रहूँगा, क्योंकि मैंने इसको चाहा है। १७ मैं इसमें की भोजनवस्तुओं पर अति आशीष दूँगा; और इसके दरिद्रों को रोटी से तम करूँगा। १८ इसके याजकों को मैं उद्धार का बब्ल पहनाऊँगा, और इसके भक्त लोग ऊँचे स्वर से जयजयकार करेंगे। १९ वहाँ मैं दाऊद का एक सींग उगाऊँगा; मैंने अपने अभिषित्की के लिये एक दीपक तैयार कर रखा है। २० मैं उसके शत्रुओं को तो लज्जा का बब्ल पहनाऊँगा, परन्तु उसके सिर पर उसका मुकुट शोभायमान रहेगा।”

१३३ दाऊद की यात्रा का गीत देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात

है कि बाई लोग आपस में मिले रहें। २ यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हास्तन के सिर पर डाला गया था, और उसकी दाढ़ी से बहकर, उसके बब्ल की छोर तक पहुँच गया। ३ वह हर्मेन की उस ओस के समान है, जो सियोन के पहाड़ों पर गिरती है! यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है।

१३४ यात्रा का गीत हे यहोवा के सब सेवकों, सुगो, तुम जो रात-रात को

यहोवा के भवन में खड़े रहते हो, यहोवा को धन्य करो। २ अपने हाथ पवित्रस्थान में उठाकर, यहोवा को धन्य करो। ३ यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है, वह सियोन से तुझे आशीष देवे।

१३५ यहोवा की स्तुति करो, यहोवा के नाम की स्तुति करो, हे यहोवा

के सेवकों उसकी स्तुति करो, ४ तुम जो यहोवा के भवन में, अर्थात् हमारे परमेश्वर के भवन के आँगनों में खड़े रहते हो! ५ यहोवा की स्तुति करो, क्योंकि वो भला है, उसके नाम का भजन गाओ, क्योंकि यह मनोहर है। ६ यहोवा ने तो याकूब को अपने लिये चुना है, अर्थात् इसाएल को अपना निज धन होने के लिये चुन लिया है। ७ मैं तो जानता हूँ कि यहोवा महान है, हमारा

प्रभु सब देवताओं से ऊँचा है। ८ जो कुछ यहोवा ने चाहा उसे उसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और सब गहरे स्थानों में किया है। ९ वह पृथ्वी की छोर से कुहरे उठाता है, और वर्षा के लिये बिजली बनाता है, और पवन को अपने भण्डार में से निकालता है। १० उसने मिस्र में क्या मनुष्य क्या पशु, सब के पहिलौठों को मार डाला! ११ हे मिस्र, उसने तेरे बीच में फ़िरौन और उसके सब कर्मचारियों के विद्धु चिन्ह और चमत्कार किए। १२ उसने बहुत सी जातियाँ नाश की, और सामर्थी राजाओं को, १३ अर्थात् एमोरियों के राजा सीहीन को, और बाशान के राजा ओग को, और कनान के सब राजाओं को घात किया; १४ और उनके देश को बाँटकर, अपनी प्रजा इसाएल का भाग होने के लिये दे दिया। १५ हे यहोवा, तेरा नाम सदा स्थिर है, हे यहोवा, जिस नाम से तेरा स्मरण होता है, वह पीढ़ी-पीढ़ी बना रहेगा। १६ यहोवा तो अपनी प्रजा का न्याय चुकाएगा, और अपने दासों की दुर्दशा देखकर तरस खाएगा। १७ अन्यजातियों की मूर्ते सोना-चाँदी ही हैं, वे मनुष्यों की बनाई हुई हैं। १८ उनके मूँह तो रहता है, परन्तु वे बोल नहीं सकती, उनके आँखें तो रहती हैं, परन्तु वे देख नहीं सकती, १९ उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन नहीं सकती, न उनमें कुछ भी साँस चलती है। २० जैसी वे हैं वैसे ही उनके बननेवाले भी हैं; और उन पर सब भरोसा रखनेवाले भी वैसे ही हो जाएँगे। २१ हे इसाएल के घराने, यहोवा को धन्य कह! २२ हे लेवी के घराने, यहोवा को धन्य कह! २३ हे लेवी के घराने, यहोवा को धन्य कह! हे यहोवा के उर्वरैयों, यहोवा को धन्य कहो! २४ यहोवा जो यस्शलेम में वास करता है, उसे सियोन में धन्य कहा जाएँ यहोवा की स्तुति करो!

१३६ यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है, और उसकी कस्ता

सदा की है। २ जो ईश्वरों का परमेश्वर है, उसका धन्यवाद करो, उसकी कस्ता सदा की है। ३ जो प्रभुओं का प्रभु है, उसका धन्यवाद करो, उसकी कस्ता सदा की है। ४ उसके छोड़कर कोई बड़े-बड़े आश्वर्यकर्म नहीं करता, उसकी कस्ता सदा की है। ५ उसने अपनी बुद्धि से आकाश बनाया, उसकी कस्ता सदा की है। ६ उसने पृथ्वी को जल के ऊपर फैलाया है, उसकी कस्ता सदा की है। ७ उसने बड़ी-बड़ी ज्योतियों बनाई, उसकी कस्ता सदा की है। ८ दिन पर प्रभुता करने के लिये सूर्य को बनाया, उसकी कस्ता सदा की है। ९ और रात पर प्रभुता करने के लिये चन्द्रमा और तारागण को बनाया, उसकी कस्ता सदा की है। १० उसने मिसियों के पहिलौठों को मारा, उसकी कस्ता सदा की है। ११ और उनके बीच से इसाएलियों को निकाला, उसकी कस्ता सदा की है। १२ और उनके बीच से इसाएलियों को निकाला, उसकी कस्ता सदा की है। १३ उसने लाल समुद्र को विभाजित कर दिया, उसकी कस्ता सदा की है। १४ और इसाएल को उसके बीच से पार कर दिया, उसकी कस्ता सदा की है; १५ और फ़िरौन को उसकी सेना समेत लाल समुद्र में डाल दिया, उसकी कस्ता सदा की है। १६ वह अपनी प्रजा को जंगत में ले चला, उसकी कस्ता सदा की है। १७ उसने बड़े-बड़े राजा मारे, उसकी कस्ता सदा की है। १८ उसने प्रतापी राजाओं को भी मारा, उसकी कस्ता सदा की है; १९ एमोरियों के राजा सीहीन को, उसकी कस्ता सदा की है; २० और बाशान के राजा ओग को घात किया, उसकी कस्ता सदा की है। २१ और उनके देश को भाग होने के लिये, उसकी कस्ता सदा की है; २२ अपने दास इसाएलियों के भाग होने के लिये दे दिया, उसकी कस्ता सदा की है। २३ उसने हमारी दुर्दशा में हमारी सुधि तीन, उसकी कस्ता सदा की है; २४ और हमको द्वेषियों से छुड़ाया है, उसकी कस्ता सदा की है। २५ वह सब प्राणियों को आहार देता है, उसकी

करणा सदा की है। १६ स्वर्ग के परमेश्वर का धन्यवाद करो, उसकी करणा सदा की है।

१३७ बाबेल की नदियों के किनारे हम लोग बैठ गए, और सिस्योन को स्मरण करके रो पड़े! २ उसके बीच के मजनू वक्षों पर हमने अपनी वीणाओं को टाँग दिया; ३ क्योंकि जो हमको बन्दी बनाकर ले गए थे, उन्होंने वहाँ हम से गीत गवाना चाहा, और हमारे स्तुलने वालों ने हम से आनन्द चाहकर कहा, “सिस्योन के गीतों में से हमारे लिये कोई गीत गाओ!” ४ हम यहोवा के गीत को, पराए देश में कैसे गाएँ? ५ हे यस्तलेम, यदि मैं तुझे भूल जाऊँ, तो मेरा दाहिना हाथ सख खाएँ। ६ यदि मैं तुझे स्मरण न रखूँ, यदि मैं यस्तलेम को, अपने सब अनन्द से श्रेष्ठ न जानूँ, तो मेरी जीभ तालू से चिपट जाएँ। ७ हे यहोवा, यस्तलेम के गिराए जाने के दिन को एदोमियों के विस्तृ स्मरण कर, कि वे कैसे कहते थे, “ढाओ! उसको नीव से ढा दो!” ८ हे बाबेल, तू जो जल्द उजड़नेवाली है, क्या ही धन्य वह होगा, जो तुझ से ऐसा बर्ताव करेगा जैसा तूने हम से किया है! ९ क्या ही धन्य वह होगा, जो तैरे बच्चों को पकड़कर, चट्टान पर पटक देगा!

१३८ दाऊद का भजन मैं पूरे मन से तेरा धन्यवाद करूँगा; देवताओं के सामने

भी मैं तेरा भजन गाऊँगा। २ मैं तैरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत करूँगा, और तेरी करणा और सच्चाई के कारण तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा; क्योंकि तूने अपने वचन को और अपने बड़े नाम को सबसे अधिक महत्व दिया है। ३ जिस दिन मैंने पुकारा, उसी दिन तूने मेरी सुन ली, और मुझ में बल देकर हियाव बन्धाया। ४ हे यहोवा, पृथ्वी के सब राजा तेरा धन्यवाद करेंगे, क्योंकि उन्होंने तैरे वचन सुने हैं; ५ और वे यहोवा की गति के विषय में गाएँ, क्योंकि यहोवा की महिमा बड़ी है। ६ यद्यपि यहोवा महान है, तो भी वह नम्र मनुष्य की ओर दृष्टि करता है; परन्तु अहंकारी को दूर ही से पहचानता है। ७ चाहे मैं संकट के बीच में चाँचूं तो भी तू मुझे सरकित रखेगा, तू मेरे क्रोधित शत्रुओं के विस्तृ हाथ बढ़ाएगा, और अपने दाहिने हाथ से मेरा उद्गार करेगा। ८ यहोवा मेरे लिये सब कुछ पूरा करेगा; हे यहोवा, तेरी करणा सदा की है। तू अपने हाथों के कार्यों को त्याग न दे।

१३९ प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन हे यहोवा, तूने मुझे

जाँचकर जान लिया है। १ तू मेरा उठना और बैठना जानता है, और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है। २ मेरे चलने और लेटने की तू भली भाँति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चाल चलन का भेद जानता है। ३ हे यहोवा, मेरे मुँह में ऐसी कोई बात नहीं जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो। ४ तूने मुझे आगे-पीछे घेर रखा है, और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है। ५ यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है; यह गम्भीर और मेरी समझ से बाहर है। ६ मैं तेरे अत्मा से भागकर किधर जाऊँ? या तेरे सामने से किधर भागूँ? ७ यदि मैं आकाश पर चढँ, तो त बहाँ हैं। यदि मैं अपना खाट अधोलोक में बिछाऊँ तो वहाँ भी तू हैं (Sheol h7585) ८ यदि मैं भोर की किणों पर चढ़कर समुद्र के पार जा बर्सूँ, ९ तो वहाँ भी तू अपने हाथ से मेरी अगुआई करेगा, और अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा। १० यदि मैं कहूँ कि अंधकार में तो मैं छिप जाऊँगा, और मेरे चारों ओर का उजियाला रात का अंधेरा हो जाएगा, ११ तो भी अंधकार तुझ से न छिपाएगा, रात तो दिन के तुल्य प्रकाश देगी; क्योंकि तेरे लिये अंधियारा और उजियाला दोनों एक समान हैं। १२ तूने मेरे अंदस्ती अंगों को बनाया है, तूने मुझे माता के गर्भ में रखा। १३ मैं तेरा धन्यवाद करूँगा, इसलिए कि मैं भयानक और अदूर रिति से रचा गया हूँ। तेरे काम तो आश्वर्य के हैं, और मैं इसे भली भाँति जानता हूँ। १४ जब मैं गुप्त में बनाया जाता, और पृथ्वी के नीचे

स्थानों में रचा जाता था, तब मेरी देह तुझ से छिपी न थी। १५ तेरी आँखों ने मेरे बैडौल तत्व को देखा; और मेरे सब अंग जो दिन-दिन बनते जाते थे वे रखे जाने से पहले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे। १६ मेरे लिये तो हे परमेश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य है! उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है! १७ यदि मैं उनको गिनता तो वे रेतकों से भी अधिक ठहरते। जब मैं जाग उठता हूँ, तब भी तेरे संग रहता हूँ। १८ हे परमेश्वर निश्चय तू दृश्य को धात करोगा! हे हत्यारों, मुझपे दूर हो जाओ। १९ क्योंकि वे तेरे विस्तृ बलवा करते और छल के काम करते हैं, तेरे शत्रु तेरा नाम झटी बात पर लेते हैं। २० हे यहोवा, क्या मैं तेरे बैरियों से बैर न रखूँ, और तेरे विरोधियों से घाया न करूँ? २१ हाँ, मैं उनसे पूर्ण बैर रखता हूँ, मैं उनको अपना शत्रु समझता हूँ। २२ हे परमेश्वर, मुझे जाँचकर जान ले! मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! २३ और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मारे में मेरी अगुआई कर!

१४० प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन हे यहोवा, मुझ को बुरे

मनुष्य से बचा लो; उपद्रवी पुस्त से मेरी रक्षा कर, २ क्योंकि उन्होंने मन में बुरी कल्पनाएँ की हैं, वे लगातार लड़ाइयों मचाते हैं। ३ उनका बोलना साँप के काटने के समान है, उनके मुँह में नाग का सा विष रहता है। (सेला) ४ हे यहोवा, मुझे दृश्य के हाथों से बचा लो; उपद्रवी पुस्त से मेरी रक्षा कर, क्योंकि उन्होंने मेरे पैरों को उखाड़ने की युक्ति की है। ५ घमण्डियों ने मेरे लिये फंदे लगा रखे हैं। (सेला) ६ हे यहोवा, मैंने तुझ से कहा है कि तू मेरा परमेश्वर है; हे यहोवा, मेरे गिडिगिडने की ओर कान लगा! ७ हे यहोवा प्रभु, हे मेरे सामर्थी उद्गरकर्ता, तूने दृश्य के दिन मेरे सिर की रक्षा की है। ८ हे यहोवा, दृश्य की इच्छा को पूरी न होने दे, उसकी बुरी युक्ति को सफल न कर, नहीं तो वह घमण्ड करेगा। (सेला) ९ मेरे घेरनेवालों के सिर पर उन्ही का विचार हुआ उत्पात पड़े। १० उन पर अंगरे डाले जाएँ! वे आग में गिरा दिए जाएँ! और ऐसे गँड़ों में गिरे, कि वे फिर उठ न सकें! ११ बकवादी पृथ्वी पर स्थिर नहीं होने का; उपद्रवी पुस्त को गिराने के लिये सूराई उसका पीछा करेगी। १२ हे यहोवा, मुझे निश्चय है कि तू दीन जन का और दरिद्रों का न्याय चुकाएगा। १३ मि-सन्देह धर्मी तेरे नाम का धन्यवाद करने पाएँगे, सीधे लोग तेरे सम्पुख वास करेंगे।

१४१ दाऊद का भजन हे यहोवा, मैंने तुझे पुकारा है; मेरे लिये फुर्ती कर!

जब मैं तुझको पुकारूँ, तब मेरी ओर कान लगा! २ मेरी प्रार्थना तेरे सामने सुगन्ध धूप, और मेरा हाथ फैलाना, संध्याकाल का अन्वन्ति ठहरे! ३ हे यहोवा, मेरे मुँह पर पहरा बैठा, मेरे होठों के द्वार की रखवाली कर! ४ मेरा मन किसी बुरी बात की ओर फिरने न दे, मैं अनर्धकरी पुस्तों के संग, दृश्य कामों में न लगूँ, और मैं उनके स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं में से कुछ न खाऊँ। ५ धर्मी मुझ को मारे तो यह कस्ता मानी जाएगी, और वह मुझे ताड़ना दे, तो यह मेरे सिर पर का तेल ठहरेगा; मेरा सिर उससे इन्कार न करेगा। दृश्य लोगों के बूरे कामों के विस्तृ मैं निरन्तर प्रार्थना करता रहूँगा। ६ जब उनके न्यायी चट्टान के ऊपर से गिराए गए, तब उन्होंने मेरे वचन सुन लिए, क्योंकि वे मध्य हैं। ७ जैसे भूमि मैं हल चलने से ढेले फूटते हैं, वैसे ही हमारी हड्डियाँ अधोलोक के मुँह पर छिटारै गई हैं। (Sheol h7585) ८ परन्तु हे यहोवा प्रभु, मेरी आँखें तेरी ही ओर लगी हैं; मैं तेरा शरणागत हूँ, त मेरे प्राण जाने न दे! ९ मुझे उस फंदे से, जो उन्होंने मेरे लिये लगाया है, और अनर्थकारियों के जाल से मेरी रक्षा कर! १० दृश्य लोग अपने जालों में आप ही फैसें, और मैं बच निकलूँ।

१४२ दाऊद का मश्कील, जब वह गुफा में था: प्रार्थना मैं यहोवा की दुहाई

देता, मैं यहोवा से गिडगिडाता हूँ, २ मैं अपने शोक की बातें उससे खोलकर कहता, मैं अपना संकट उसके आगे प्रगट करता हूँ। ३ जब मेरी आत्मा मेरे भीतर से व्याकुल हो रही थी, तब तू मेरी दशा को जानता था! जिस रास्ते से मैं जानेवाला था, उसी में उहोंने मेरे लिये फंदा लगाया। ४ मैंने दाहिनी ओर देखा, परन्तु कोई मुझे नहीं देखता। मेरे लिये शरण कहीं नहीं रही, न मुझ को कोई पछता है। ५ हे यहोवा, मैंने तेरी दुहाई दी है, मैंने कहा, तू मेरा शरणस्थान है, मेरे जीती जी तू मेरा भाग है ६ मेरी चिल्लाहट को ध्यान देकर सुन, क्योंकि मेरी बड़ी दुर्दशा हो गई है। जो मेरे पीछे पड़े हैं, उनसे मुझ बचा ले; क्योंकि वे मुझसे अधिक सामर्थी हैं। ७ मुझ को बन्दीगृह से निकाल कि मैं तेरा नाम का धन्यवाद करूँ! धर्मी लोग मेरे चारों ओर आएँगे; क्योंकि तू मेरा उपकार करेगा।

१४३ दाऊद का भजन है यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन, मेरे गिडगिडाने की ओर कान लगा! तू जो सच्चा और धर्मी है, इसलिए मेरी सुन ले, २ और अपने दास से मुकदमा न चलाता। क्योंकि कोई प्राणी तेरी दृष्टि में निर्दोष नहीं ठहर सकता। ३ शत्रु तो मेरे प्राण का गाहक हआ है; उसने मुझे चूर करके मिट्टी में मिलाया है, और मुझे बहुत दिन के मेरे हुओं के समान अंदर स्थान में डाल दिया है। ४ मेरी आत्मा भीतर से व्याकुल हो रही है मेरा मन विकल है। ५ मुझे प्राचीनकाल के दिन स्मरण आते हैं, मैं तेरे सब अदूत कामों पर ध्यान करता हूँ, और तेरे हाथों के कामों को सोचता हूँ। ६ मैं तेरी ओर अपने हाथ फैलाए हाए हाए, सखी भूमि के समान मैं तेरा प्यासा हूँ। (सेला) ७ हे यहोवा, फुर्ती करके मेरी सुन ले; क्योंकि मेरे प्राण निकलने ही पर है! मुझसे अपना मुँह न छिपा, ऐसा न हो कि मैं कब्र में पड़े हुओं के समान हो जाऊँ। ८ प्रातःकाल को अपनी कस्ता की बात मुझे सुना, क्योंकि मैंने तड़ी पर भरोसा रखा है। जिस मार्ग पर मुझे चलना है, वह मुझ को बता दे, क्योंकि मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूँ। ९ हे यहोवा, मुझे शत्रुओं से बचा ले, मैं तेरी ही आड में आ छिपा हूँ। १० मुझ को यह सिखा, कि मैं तेरी इच्छा कैसे पूरी करूँ, क्योंकि मेरा परमेश्वर तू ही है! तेरी भली आत्मा मुझ को धर्म के मार्ग में ले चले! ११ हे यहोवा, मुझे अपने नाम के निमित जिला! तू जो धर्मी है, मुझ को संकट से छुड़ा लो! १२ और कस्ता करके मेरे शत्रुओं का सत्यानाश कर, और मेरे सब सतनेवालों का नाश कर डाल, क्योंकि मैं तेरा दास हूँ।

१४४ दाऊद का भजन धन्य है यहोवा, जो मेरी चढ़ान है, वह यदु के लिए

मेरे हाथों को और लडाई के लिए मेरी उँगलियों को अभ्यास कराता है। २ वह मेरे लिये कस्तानिधान और गढ़, ऊँचा स्थान और छुड़ानेवाला है, वह मेरी ढाल और शरणस्थान है, जो जातियों को मेरे वश में कर देता है। ३ हे यहोवा, मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है, या आदमी क्या है कि तू उसकी कृछ चिन्ता करता है? ४ मनुष्य तो साँस के समान है; उसके दिन ढलती हुई छाया के समान है। ५ हे यहोवा, अपने सर्वग की नीचा करके उत्तर आ! पहाड़ों को छू तब उनसे धूआँ उठेगा! ६ बिजली कड़काकर उनको तिर-बितर कर दे, अपने तीर चलाकर उनको घबरा दे! ७ अपना हाथ ऊपर से बढ़ाकर मुझे महासागर से उबार, अर्थात् परदेशियों के वश से छुड़ा। ८ उनके मुँह से तो झाठी बातें निकलती हैं, और उनके दाहिने हाथ से धोखे के काम होते हैं। ९ हे परमेश्वर, मैं तेरी स्तुति का नया गीत गाऊँगा; मैं दस तारवाली सारंगी बजाकर तेरा भजन गाऊँगा। १० तू राजाओं का उद्धार करता है, और अपने दास दाऊद को तलवार की मार से बचाता है। ११ मुझ को उबार और परदेशियों के वश से छुड़ा ले, जिनके मुँह से झाठी बातें निकलती हैं, और जिनका दाहिना

हाथ झाठ का दाहिना हाथ है। १२ हमारे बेटे जवानी के समय पौधों के समान बढ़े हुए हों, और हमारी बैटियाँ उन कोनेवाले खम्भों के समान हों, जो महल के लिये बनाए जाएँ; १३ हमारे खते भरे रहें, और उत्तम भाँति-भाँति का अन्न रखा जाए, और हमारी भेड़-बकरियाँ हमारे मैदानों में हजारों हजार बच्चे जानें; १४ तब हमारे बैल खब लदे हुए हों; हमें न विघ्न हो और न हमारा कही जाना हो, और न हमारे चौकों में रोना-पीटना हो, १५ तो इस दशा में जो राज्य हो वह क्या ही धन्य होगा! जिस राज्य का परमेश्वर यहोवा है, वह क्या ही धन्य है!

१४५ दाऊद का भजन है मेरे परमेश्वर, हे राजा, मैं तुझे सराहँगा, और

तेरे नाम को सदा सर्वदा धन्य कहता रहँगा। २ प्रतिदिन मैं तुझको धन्य कहा करँगा, और तेरे नाम की स्तुति सदा सर्वदा करता रहँगा। ३ यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है, और उसकी बड़ाई अगम है। ४ तेरे कामों की प्रशंसा और तेरे प्राक्रम के कामों का वर्णन, पीढ़ी-पीढ़ी होता चला जाएगा। ५ मैं तेरे ऐवर्ख की महिमा के प्रताप पर और तेरे भाँति-भाँति के आश्वर्यकर्म पर ध्यान करँगा। ६ लोग तेरे भयानक कामों की शक्ति की चर्चा करेंगे, और मैं तेरे बड़े-बड़े कामों का वर्णन करँगा। ७ लोग तेरी बड़ी भलाई का स्मरण करके उसकी चर्चा करेंगे, और तेरे धर्म का जयजयकार करेंगे। ८ यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से क्रोध करनेवाला और अति कस्तामय है। ९ यहोवा सभी के लिये भला है, और उसकी दया उसकी सारी सुषि पर है। १० हे यहोवा, तेरी सारी सुषि तेरा धन्यवाद करेगी, और तेरे भक्त लोग तुझे धन्य कहा करेगे! ११ वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे, और तेरे प्राक्रम के विषय में बातें करेंगे; १२ कि वे मनुष्यों पर तेरे प्राक्रम के काम और तेरे राज्य के प्रताप की महिमा प्रगट करें। १३ तेरा राज्य युग-युग का और तेरी प्रभुता सब पीढ़ियों तक बनी रहेगी। १४ यहोवा सब गिरते हुओं को सम्भालता है, और सब इके हुओं को सीधा खड़ा करता है। १५ सभी की आँखें तेरी ओर लगी रहती हैं, और तू उनको आहार समय पर देता है। १६ तू अपनी मुश्ती खोलकर, सब प्राणियों को आहार से तृप्त करता है। १७ यहोवा अपनी सब गति में धर्मी और अपने सब कामों में कस्तामय है। १८ जितने यहोवा को पुकारते हैं, अर्थात् जितने उसको सच्चाई से पुकारते हैं, उन सभी के वह निकट रहता है। १९ वह अपने डालवैयों की इच्छा पूरी करता है, और उनकी दुहाई सुनकर उनका उद्धार करता है। २० यहोवा अपने सब प्रेमियों की तो रक्षा करता, परन्तु सब दुर्दों को सत्यानाश करता है। २१ मैं यहोवा की स्तुति करँगा, और सारे प्राणी उसके पवित्र नाम को सदा सर्वदा धन्य कहते रहें।

१४६ यहोवा की स्तुति करो। हे मेरे मन यहोवा की स्तुति कर!

२ मैं जीवन भर यहोवा की स्तुति करता रहँगा; जब तक मैं बना रहँगा, तब तक मैं अपने परमेश्वर का भजन गाता रहँगा। ३ तुम प्रधानों पर भरोसा न रखना, न किसी आदमी पर, क्योंकि उसमें उद्धार करने की शक्ति नहीं। ४ उसका भी प्राण निकलना, वह भी मिट्टी में मिल जाएगा; उसी दिन उसकी सब कल्पनाएँ नाश हो जाएँगी। ५ क्या ही धन्य वह है, जिसका सहायक याकूब का परमेश्वर है, और जिसकी आशा अपने परमेश्वर यहोवा पर है। ६ वह आकाश और पृथ्वी और समृद्ध और उनमें जो कृछ है, सब का कर्ता है; और वह अपना वचन सदा के लिये पूरा करता रहेगा। ७ वह पिसे हुओं का न्याय चुकाता है; और भूखों को रोटी देता है। यहोवा बन्दियों को छुड़ाता है; ८ यहोवा अंधों को आँखें देता है। यहोवा झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है; यहोवा धर्मियों से प्रेम रखता है। ९ यहोवा परदेशियों की रक्षा करता है, और अनाथों और विधवा को तो सम्भालता है; परन्तु दुर्दों के मार्ग को टेढ़ा-मेढ़ा करता है। १० हे

सिद्धोन, यहोवा सदा के लिये, तेरा परमेश्वर पीढ़ी-पीढ़ी राज्य करता रहेगा। यहोवा की स्तुति करो!

१४७ यहोवा की स्तुति करो! क्योंकि अपने परमेश्वर का भजन गाना अच्छा है, क्योंकि वह मनभावना है, उसकी स्तुति करना उचित है।

२ यहोवा यस्सलेम को फिर बसा रहा है; वह निकाले हुए इमाएलियों को इकट्ठा कर रहा है। ३ वह खेदित मनवालों को चंगा करता है, और उनके घाव पर मरहम-पटी बाँधता है। ४ वह तारों को गिनता, और उनमें से एक-एक का नाम रखता है। ५ हमारा प्रभु महान और अति समर्थी है; उसकी बुद्धि अपरम्परा है। ६ यहोवा नम्र लोगों को सम्भालता है, और दुर्दों को भयिं पर गिरा देता है। ७ धन्यवाद करते हुए यहोवा का गीत गाओ; बीणा बजाते हुए हमारे परमेश्वर का भजन गाओ। ८ वह आकाश को मेघों से भर देता है, और पृथ्वी के लिये मैंह को तैयार करता है, और पहाड़ों पर घास उगाता है। ९ वह पशुओं को और कौवे के बच्चों को जो पुकारते हैं, आहार देता है। १० न तो वह घोड़े के बल को चाहता है, और न पुश्क के बलवन्त पैरों से प्रसन्न होता है; ११ यहोवा अपने डरवैयों ही से प्रसन्न होता है, अर्थात् उनसे जो उसकी कल्पना पर आशा लगाए रहते हैं। १२ हे यस्सलेम, यहोवा की प्रशंसा कर! हे सिद्धोन, अपने परमेश्वर की स्तुति कर! १३ क्योंकि उसने रेरे फाटकों के खम्भों को ढूढ़ किया है; और तेरी सन्तानों को आशीष दी है। १४ वह तेरी सीमा में शान्ति देता है, और तुझको उत्तम से उत्तम गेहूँ से तृप्त करता है। १५ वह पृथ्वी पर अपनी आज्ञा का प्रचार करता है, उसका वचन अति वेग से दौड़ता है। १६ वह ऊन के समान हिम को गिराता है, और राख के समान पाला बिखेरता है। १७ वह बर्फ के टुकड़े गिराता है, उसकी की हई उण्ड को कौन सह सकता है? १८ वह आज्ञा देकर उन्हें गलाता है; वह वायु बहाता है, तब जल बहने लगता है। १९ वह याकूब को अपना वचन, और इमाएल को अपनी विधियाँ और नियम बताता है। २० किसी और जाति से उसने ऐसा बर्ताव नहीं किया; और उसके नियमों को औरों ने नहीं जाना। यहोवा की स्तुति करो।

१४८ यहोवा की स्तुति करो! यहोवा की स्तुति स्वर्ग में से करो, उसकी

स्तुति ऊँचे स्थानों में करो! १ हे उसके सब दूतों, उसकी स्तुति करो: हे उसकी सब सेना उसकी स्तुति करो! २ हे सूर्य और चन्द्रमा उसकी स्तुति करो, हे सब ज्योतिमय तारागण उसकी स्तुति करो! ३ हे सबसे ऊँचे आकाश और हे आकाश के ऊपरवाले जल, तुम दोनों उसकी स्तुति करो। ४ वे यहोवा के नाम की स्तुति करें, क्योंकि उसने आज्ञा दी और ये सिरजे गए। ५ और उसने उनको सदा सर्वदा के लिये स्थिर किया है; और ऐसी विधि ठहराई है, जो टलने की नहीं। ६ पृथ्वी में से यहोवा की स्तुति करो, हे समुद्री अजगरों और गहरे सागर, ७ हे अनि और ओलों, हे हिम और कुहरे, हे उसका वचन माननेवाली प्रचण्ड वायु! ८ हे पहाड़ों और सब टीलों, हे फलदाई वृक्षों और सब देवदारों! ९ हे वन-पशुओं और सब घेरल पशुओं, हे रेंगनेवाले जन्तुओं और हे पश्चियों! १० हे पृथ्वी के राजाओं, और राज्य-राज्य के सब लोगों, हे हाकिमों और पृथ्वी के सब न्यायियों! ११ हे जवानों और कुमारियों, हे पुरनियों और बालकों! १२ यहोवा के नाम की स्तुति करो, क्योंकि केवल उसी का नाम महान है; उसका ऐवर्य पृथ्वी और आकाश के ऊपर है। १३ और उसने अपनी प्रजा के लिये एक सींग ऊँचा किया है; यह उसके सब भक्तों के लिये अर्थात् इमाएलियों के लिये और उसके समीप रहनेवाली प्रजा के लिये स्तुति करने का विषय है। यहोवा की स्तुति करो!

१४९ यहोवा की स्तुति करो! यहोवा के लिये नया गीत गाओ, भक्तों की सभा में उसकी स्तुति गाओ! २ इमाएल अपने कर्ता के कारण

आनन्दित हो, सिद्धोन के निवासी अपने राजा के कारण मग्न हों! ३ वे नाचते हुए उसके नाम की स्तुति करें, और डफ और बीणा बजाते हुए उसका भजन गाएँ! ४ क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा से प्रसन्न रहता है; वह नम्र लोगों का उद्धार करके उन्हें शोभायामन करेगा। ५ भक्त लोग महिमा के कारण प्रफुल्लित हों, और अपने बिछानों पर भी पड़े-पड़े जयजयकार करें। ६ उनके कण्ठ से परमेश्वर की प्रशंसा हो, और उनके हाथों में दोधारी तलवारें रहें, ७ कि वे जाति-जाति से पलटा ले सकें; और राज्य-राज्य के लोगों को ताड़ना दें, ८ और उनके राजाओं को जंजीरों से, और उनके प्रतिष्ठित पुस्तों को लोहे की बेड़ियों से जकड़ रखें, ९ और उनको ठहराया हुआ उण्ड देंगे! उसके सब भक्तों की ऐसी ही प्रतिष्ठा होगी। यहोवा की स्तुति करो।

१५० यहोवा की स्तुति करो! परमेश्वर के पवित्रस्थान में उसकी स्तुति करो;

उसकी सामर्थ्य से भरे हुए आकाशमण्डल में उसकी स्तुति करो! १ उसके पराक्रम के कार्यों के कारण उसकी स्तुति करो; उसकी अयन्त बड़ाई के अनुसार उसकी स्तुति करो! २ नरसिंग फँकते हुए उसकी स्तुति करो; सारंगी और बीणा बजाते हुए उसकी स्तुति करो! ३ डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो; तारवाले बजे और बाँसुरी बजाते हुए उसकी स्तुति करो! ४ ऊँचे शब्दवाली झाँझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो; आनन्द के महाशब्दवाली झाँझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो! ५ जितने प्राणी हैं सब के सब यहोवा की स्तुति करो! यहोवा की स्तुति करो!

नीतिवचन

१ दाऊद के पुत्र इम्माएल के राजा सुलैमान के नीतिवचनः २ इनके द्वारा पढ़नेवाला बुद्धि और शिक्षा प्राप्त करे, और समझ की बातें समझे, ३ और विवेकपूर्ण जीवन निर्वाह करने में प्रवीणता, और धर्म, न्याय और निष्पक्षता के विषय अनुसासन प्राप्त करे; ४ कि भोलों को चतुराई, और जवान को ज्ञान और विवेक मिले; ५ कि बुद्धिमान सुनकर अपनी विद्या बढाएं, और समझदार बुद्धि का उपदेश पाएं, ६ जिससे वे नीतिवचन और दृष्टान्त को, और बुद्धिमानों के वचन और उनके रहस्यों को समझें। ७ यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है; बुद्धि और शिक्षा को मूर्ख लोग ही तुच्छ जानते हैं। ८ हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर कान लगा, और अपनी माता की शिक्षा को न तज़; ९ क्योंकि वे मानों तेरे सिर के लिये शोभायमान मुक्त, और तेरे गले के लिये माला होगी। १० हे मेरे पुत्र, यदि पापी लोग तुझे फुसलाएँ, तो उनकी बात न मानना। ११ यदि वे कहें, “हमारे संग चल, कि हम हत्या करने के लिये घात लगाएँ, हम निर्दीशों पर वार करें; १२ हम उन्हें जीवित निगल जाएं, जैसे अधोलोक स्वस्थ लोगों को निगल जाता है, और उन्हें कब्र में पड़े मृतकों के समान बना दें। (Sheol h7585) १३ हमको सब प्रकार के अनमोल पदार्थ मिलेंगे, हम अपने धरों को लट से भर लेंगे; १४ तू हमारा सहभागी हो जा, हम सभी का एक ही बटुआ हो,” १५ तो, हे मेरे पुत्र तू उनके संग मार्ग में न चलना, वरन् उनकी डगर में पैंच भी न रखना; १६ क्योंकि वे बुराई ही करने को दौड़ते हैं, और हत्या करने को फुर्ती करते हैं। १७ क्योंकि पक्षी के देखते हुए जाल फैलाना वर्थ होता है, १८ और ये लोग तो अपनी ही हत्या करने के लिये घात लगाते हैं, और अपने ही प्राणों की घात की ताक में रहते हैं। १९ सब लालचियों की चाल ऐसी ही होती है; उनका प्राण लालच ही के कारण नाश हो जाता है। २० बुद्धि सड़क में ऊँचे स्वर से बोलती है; और चौकों में प्रचार करती है; २१ वह बाजारों की भीड़ में पुकारती है; वह नगर के फाटकों के प्रवेश पर खड़ी होकर, यह बोलती है: २२ “हे अज्ञानियों, तुम कब तक अज्ञानता से प्रीति रखोगे? और हे ठशा करनेवालों, तुम कब तक ठशा करने से प्रसन्न रहोगे? हे मूर्खों, तुम कब तक ज्ञान से बैर रखोगे? २३ तुम मेरी डॉट सुनकर मन फिराओ; सुनो, मैं अपनी आत्मा तुम्हारे लिये उपडेल टूँगी; मैं तुम को अपने वचन बताऊँगी। २४ मैंने तो पुकारा परन्तु तुम ने इकार किया, और मैंने हाथ फैलाया, परन्तु किसी ने ध्यान न दिया, २५ वरन् तुम ने मेरी सारी सम्पत्ति को अनसुना किया, और मेरी ताड़ना का मूल्य न जाना; २६ इसलिए मैं भी तुम्हारी विपत्ति के समय हँसूँगी; और जब तुम पर भय आ पड़ेगा, तब मैं ठशा करूँगी। २७ वरन् औंधी के समान तुम पर भय आ पड़ेगा, और विपत्ति बवण्डर के समान आ पड़ेगी, और तुम संकट और सकेती में फँसेगे, तब मैं ठशा करूँगी। २८ उस समय वे मुझे पुकारेंगे, और मैं न सूँगूँगी; वे मुझे यत्र से तो ढूँगेंगे, परन्तु न पाएँगे। २९ क्योंकि उन्होंने ज्ञान से बैर किया, और यहोवा का भय मानना उनको न भाया। ३० उन्होंने मेरी सम्पत्ति न चाही वरन् मेरी सब ताड़नाओं को तुच्छ जाना। ३१ इसलिए वे अपनी करनी का फल आप भोगेंगे, और अपनी युक्तियों के फल से अधा जाएँगे। ३२ क्योंकि अज्ञानियों का भटक जाना, उनके घात किए जाने का कारण होगा, और निश्चिन्त रहने के कारण मूर्ख लोग नाश होंगे; ३३ परन्तु जो मेरी सुनेगा, वह निडर बसा रहेगा, और विपत्ति से निश्चिन्त होकर सुख से रहेगा।”

२ हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे, और मेरी आज्ञाओं को अपने हत्य में रख छोड़े, ३ और बुद्धि की बात ध्यान से सुने, और समझ की बात मन लगाकर सोचें; ४ यदि तू प्रवीणता और समझ के लिये अति यत्र से पुकारे, ५

और उसको चाँदी के समान ढूँहै, और गुम धन के समान उसकी खोज में लगा रहे; ६ तो तू यहोवा के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा। ७ क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है; ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुँह से निकलती हैं। ८ वह सीधी लोगों के लिये खरी बुद्धि रख छोड़ता है; जो खराई से चलते हैं, उनके लिये वह ढाल ठहरता है। ९ वह तू धर्म और न्याय और सिद्धाई को, अथंत् सब भली-भली चाल को समझ सकेगा; १० क्योंकि बुद्धि तो तेरे हृदय में प्रवेश करेगी, और ज्ञान तेरे प्राण को सुख देवेवाला होगा; ११ विवेक तुझे सुरक्षित रखेगा; और समझ तेरी रक्षक होगी; १२ ताकि वे तुझे बुराई के मार्ग से, और उलट-फेर की बातों के कहनेवालों से बचाएंगे, १३ जो सिधाई के मार्ग को छोड़ देते हैं, ताकि अंधेरे मार्ग में चलें; १४ जो बुराई करने से आनन्दित होते हैं, और दुष्ट जन की उलट-फेर की बातों में मग्न रहते हैं; १५ जिनके चाल चलन टेढ़े-मेढ़े और जिनके मार्ग में कुटिलता है। १६ बुद्धि और विवेक तुझे पराई झीं से बचाएँगे, जो चिक्की चुपड़ी बातें बोलती हैं, १७ और अपनी जवानी के साथी को छोड़ देती, और जो अपने परमेश्वर की बाचा को भूल जाती है। १८ उसका घर मृत्यु की ढलान पर है, और उसकी डांगे मेरे हृदों के बीच पहुँचाती हैं; १९ जो उसके पास जाते हैं, उसमें से कोई भी लौटकर नहीं आता; और न वे जीवन का मार्ग पाते हैं। २० इसलिए तू भले मनुष्यों के मार्ग में चल, और धर्मियों के पथ को पकड़े रह। २१ क्योंकि धर्मी लोग देश में बसे रहेंगे, और खरे लोग ही उसमें बने रहेंगे। २२ दुष्ट लोग देश में से नाश होंगे, और विवासधाति उसमें से उछाड़े जाएँगे।

३ हे मेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को न भलाना; अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को रखे रहना; २ क्योंकि ऐसा करने से तेरी आयु बढ़ेगी, और तू अधिक कुशल से रहेगा। ३ कपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएँ; वरन् उनको अपने गले का हार बनाना, और अपनी हृदयस्पी पटिया पर लिखना। ४ तब तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति प्रतिष्ठित होगा। ५ तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। ६ उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा। ७ अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना, यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना। ८ ऐसा करने से तेरा शरीर भला चंगा, और तेरी हिँड़ियां पूछ रहेंगी। ९ अपनी सम्पत्ति के द्वारा और अपनी भूमि की सारी पहली उपज देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना, १० इस प्रकार तेरे खते खेरे और पेरे रहेंगे, और तेरे रसकण्डों से नया दाखमधु उमड़ता रहेगा। ११ हे मेरे पुत्र, यहोवा की शिक्षा से मुँह न मोड़ना, और जब वह तुझे डॉटे, तब तू बुरा न मानना, १२ जैसे पिता अपने प्रिय पुत्र को डॉटा है, वैसे ही यहोवा जिससे प्रेम रखता है उसको डॉटा है। १३ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए, और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करे, १४ जो उपलब्धि बुद्धि से प्राप्त होती है, वह चाँदी की प्रापि से बड़ी, और उसका लाभ शुद्ध सोने के लाभ से भी उत्तम है। १५ वह बहुमूल्य रत्नों से अधिक मूल्यवान है, और जितनी वस्तुओं की तूलालसा करता है, उनमें से कोई भी उसके तुल्य न ठहरेगी। १६ उसके दाहिने हाथ में दीर्घायु, और उसके बाएँ हाथ में धन और महिमा है। १७ उसके मार्ग आनन्ददायक है, और उसके सब मार्ग कुशल के हैं। १८ जो बुद्धि को गहण कर लेते हैं, उनके लिये वह जीवन का वृक्ष बनती है, और जो उसको पकड़े रहते हैं, वह धन्य है। १९ यहोवा ने पृथ्वी की नींव बुद्धि ही से डाली, और स्वर्ग को समझ ही के द्वारा स्थिर किया। २० उसी के ज्ञान के द्वारा गहरे सागर फूट निकले, और आकाशमण्डल से ओस टपकती है। २१ हे मेरे पुत्र, ये बातें तेरी दृष्टि की ओट न होने पाएं; तू खरी बुद्धि

और विवेक की रक्षा कर, २२ तब इनसे तुझे जीवन मिलेगा, और ये तेरे गले का हार बनेंगे। २३ तब तू अपने मार्ग पर निरद चलेगा, और तेरे पाँव में ठेस न लगेगी। २४ जब तू लेटेगा, तब भय न खाएगा, जब तू लेटेगा, तब सुख की नीद आएगी। २५ अचानक आनेवाले भय से न डरना, और जब दुश्मों पर विपति आ पड़े, तब न घबराना; २६ क्योंकि यहोवा तुझे सहारा दिया करेगा, और तेरे पाँव को फंदे में फँसने न देगा। २७ जो भलाई के योग्य है उनका भला अवश्य करना, यदि ऐसा करना तेरी शक्ति में है। २८ यदि तेरे पास देने को कुछ हो, तो अपने पड़ोसी से न कहना कि जा कल फिर आना, कल मैं तुझे ढाँगा। २९ जब तेरा पड़ोसी तेरे पास निश्चिन्त रहता है, तब उसके विष्णु बुरी युक्ति न बांधना। ३० जिस मनुष्य ने तुझ से बुरा व्यवहार न किया हो, उससे अकारण मुकदमा खड़ा न करना। ३१ उपद्रवी पुस्त के विषय में ढाह न करना, न उसकी सी चाल चलना; ३२ क्योंकि यहोवा कुटिल मनुष्य से घृणा करता है, परन्तु वह अपना भेद सीधे लोगों पर प्रगट करता है। ३३ दृष्ट के घर पर यहोवा का श्वाप और धर्मियों के वासस्थान पर उसकी आशीष होती है। ३४ ठंशा करनेवालों का वह निश्चय ठंशा करता है; परन्तु दीनों पर असुग्रह करता है। ३५ बुद्धिमान महिमा को पाएँगे, परन्तु मूर्खों की बढ़ती अपमान ही की होती।

४ हे मेरे पुत्रों, पिता की शिक्षा सुनो, और समझ प्राप्त करने में मन लगाओ। ५ क्योंकि मैंने तुम को उत्तम शिक्षा दी है, मेरी शिक्षा को न छोडो। ६ देखो, मैं भी अपने पिता का पुत्र था, और माता का एकतौती दुलारा था, ७ और मेरा पिता मुझे यह कहकर सिखाता था, “तेरा मन मैरे वचन पर लगा रहे; तू मेरी आज्ञाओं का पालन कर, तब जीवित रहेगा। ८ बुद्धि को प्राप्त कर, समझ को भी प्राप्त कर; उनको भूल न जाना, न मेरी बातों को छोड़ना। ९ बुद्धि को न छोड़ और वह तेरी रक्षा करेगी; उससे प्रति रुख और वह तेरा पहरा देगी। १० बुद्धि शैष्ठ है इसलिए उसकी प्राप्ति के लिये यत्र कर; अपना सब कुछ खर्च कर दे ताकि समझ को प्राप्त कर सके। ११ उसकी बडाई कर, वह तुझको बढ़ाएगी; जब तू उससे लिपट जाए, तब वह तेरी महिमा करेगी। १२ वह तेरे सिर पर शोभायमान आभूषण बाँधेगी; और तुझे सुन्दर मुकुट देगी।” १३ हे मेरे पुत्र, मेरी बातें सुनकर ग्रहण कर, तब तू बहुत वर्ष तक जीवित रहेगा। १४ मैंने तुझे बुद्धि का मार्ग बताया है; और सिधाई के पथ पर चलाया है। १५ जिसमें चलने पर तुझे रोक टोक न होगी, और चाहे तू दैडे, तो भी ठोकर न खाएगा। १६ शिक्षा को पकड़े रह, उसे छोड़ न दे; उसकी रक्षा कर, क्योंकि वही तेरा जीवन है। १७ दृष्टों की डगर में पाँव न रखना, और न सूरे लोगों के मार्ग पर चलना। १८ उसे छोड़ दे, उसके पास से भी न चल, उसके निकट से मुडकर आगे बढ़ जा। १९ क्योंकि दुष्ट लोग यदि बुराई न करें, तो उनको नीद नहीं आती; और जब तक वे किसी को ठोकर न खिलाएँ, तब तक उन्हें नीद नहीं मिलती। २० क्योंकि वे दुष्टता की रोटी खाते, और हिसा का दाखमधु पीते हैं। २१ परन्तु धर्मियों की चाल, भोर-प्रकाश के समान है, जिसकी चमक दोपहर तक बढ़ती जाती है। २२ दुश्मों का मार्ग घोर अंधकारमय है; वे नहीं जानते कि वे किस से ठोकर खाते हैं। २३ हे मेरे पुत्र मेरे वचन ध्यान धरके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा। २४ इनको अपनी आँखों से ओझल न होने दे; वरन् अपने मन में धारण कर। २५ क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती है, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चोरे रहने का कारण होती है। २६ सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है। २७ टेढ़ी बात अपने मुँह से मत बोल, और चालबाजी की बातें कहना तुझ से दूर रहे। २८ तेरी आँखें सामने ही की ओर लगी रहें, और तेरी पलतके आगे की ओर खुली रहें। २९ अपने पाँव रखने के लिये मार्ग को समतल कर, तब तेरे सब मार्ग ठीक रहेंगे।

३० न तो दाहिनी ओर मुडना, और न बाईं ओर; अपने पाँव को बुराई के मार्ग पर चलने से हटा ले।

५ हे मेरे पुत्र, मेरी बुद्धि की बातों पर ध्यान दे, मेरी समझ की ओर कान लगा; ६ जिससे तेरा विवेक सुखित बना रहे, और तू ज्ञान की रक्षा करे। ७ क्योंकि पराई बी के होठों से मधु टपकता है, और उसकी बातें तेल से भी अधिक चिकनी होती हैं; ८ परन्तु इसका परिणाम नागदौना के समान कडवा और दोधारी तलवार के समान पैना होता है। ९ उसके पाँव मृत्यु की ओर बढ़ते हैं, और उसके पांग अधोलोक तक पहुँचते हैं। (Sheol h7585) १० वह जीवन के मार्ग के विषय विचार नहीं करती; उसके चाल चलन में चंचलता है, परन्तु उसे वह स्वयं नहीं जानती। ११ इसलिए अब हे मेरे पुत्रों, मेरी सुनो, और मेरी बातों से मुँह न मोडो। १२ ऐसी बी से दूर ही रह, और उसकी डेवडी के पास भी न जाना; १३ कहीं ऐसा न हो कि तू अपना यश औरौं के हाथ, और अपना जीवन कूर जन के वश में कर दे; १४ या पराए तेरी कमाई से अपना पेट भरें, और परदेशी मनुष्य तेरे परिश्रम का फल अपने घर में रखें; १५ और तू अपने अन्तिम समय में जब तेरे शरीर का बल खत्म हो जाए तब कराह कर, १६ तू यह कहेगा “मैंने शिक्षा से कैसा बैर किया, और डॉनेवाले का कैसा तिरस्कार किया! १७ मैंने अपने गुरुओं की बातें न मानी और अपने सिखानेवालों की ओर ध्यान न लगाया। १८ मैं सभा और मण्डली के बीच में पूर्णतः विनाश की कागर पर जा पड़ा!” १९ तू अपने ही कुण्ड से पानी, और अपने ही कुँए के सोते का जल पिया करना। २० क्या तेरे सोतों का पानी सङ्क में, और तेरे जल की धारा चौकों में बह जाने पाए? २१ यह केवल तेरे ही लिये रहे, और तेरे संग अनजानों के लिये न हो। २२ तेरा सोता धन्य रहें; और अपनी जवानी की पती के साथ आनन्दित रह, २३ वह तेरे लिए प्रिय हिरनी या सुन्दर सांभरनी के समान हो, उसके स्तन सर्वदा तुझे सन्तुष्ट रखें, और उसी का प्रेम नित्य तुझे मोहित करता रहे। २४ हे मेरे पुत्र, तू व्यभिचारिणी पर क्यों मोहित हो, और पराई बी को क्यों छाती से लगाए? २५ क्योंकि मनुष्य के मार्ग यहोवा की दृष्टि से छिपे नहीं हैं, और वह उसके सब मार्गों पर ध्यान करता है। २६ दृष्ट अपने ही अर्धम के कर्मों से फँसेगा, और अपने ही पाप के बन्धनों में बन्धा रहेगा। २७ वह अनुशासन का पालन न करने के कारण मर जाएगा, और अपनी ही मूर्खता के कारण भटकता रहेगा।

६ हे मेरे पुत्र, यदि तू अपने पड़ोसी के जमानत का उत्तरदायी हुआ हो, अथवा परदेशी के लिये शपथ खाकर उत्तरदायी हुआ हो, २८ तो तू अपने ही शपथ के चर्चों में फँस जाएगा, और अपने ही मुँह के चर्चों से पकड़ा जाएगा। ३० इस स्थिति में, हे मेरे पुत्र एक काम कर और अपने आपको बचा ले, क्योंकि तू अपने पड़ोसी के हाथ में पड़ चुका है तो जा, और अपनी रिहाई के लिए उसको सांशग प्रणाम करके उससे बिनती कर। ४ तू न तो अपनी आँखों में नीद, और न अपनी पलकों में छापकी आने दे; ५ और अपने आपको हिरनी के समान शिकारी के हाथ से, और चिडिया के समान चिड़ीमार के हाथ से छुड़ा। ६ हे आलसी, चीटियों के पास जा; उनके काम पर ध्यान दे, और बुद्धिमान हो जा। ७ उनके न तो कोई न्यायी होता है, न प्रधान, और न प्रभुता करनेवाला, ८ फिर भी वे अपना आहार धूपकाल में संचय करती हैं, और कटनी के समय अपनी भोजनबस्तु बटोरती हैं। ९ हे आलसी, तू कब तक सोता रहेगा? तेरी नीद कब टूटेगी? १० थोड़ी सी नीद, एक और झपकी, थोड़ा और छाती पर हाथ रखे लेटे रहना, ११ तब तेरा कांगलपन राह के लेटेरे के समान और तेरी घटी हथियार-बन्द के समान आ पड़ेगी। १२ ओछे और अनर्थकारी को देखो, वह टेढ़ी-टेढ़ी बातें बकता फिरता है, १३ वह नैन से सैन और पाँव से

इशारा, और अपनी अंगुलियों से संकेत करता है, १४ उसके मन में उलट-फेर की बातें रहतीं, वह लगातार बुराई गढ़ता है और झगड़ा-रगड़ा उत्पन्न करता है। १५ इस कारण उस पर विपत्ति अचानक आ पड़ेगी, वह पल भर में ऐसा नाश हो जाएगा, कि बचने का कोई उपाय न रहेगा। १६ छ: बस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन् सात है जिससे उसको घुणा है: १७ अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आँखें, झट बोलनेवाली जीभ, और निर्दोष का लह बहानेवाले हाथ, १८ अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को बेग से दौड़नेवाले पाँव, १९ झट बोलनेवाला साक्षी और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य। २० हे मेरे पुत्र, अपने पिता की आज्ञा को मान, और अपनी माता की शिक्षा को न तज। २१ उनको अपने हृदय में सदा गाँठ बाँधे रख; और अपने गले का हार बना ले। २२ वह तेरे चलने में तेरी अगुआई, और सोते समय तेरी रक्षा, और जागते समय तुझे शिक्षा देगी। २३ आज्ञा तो दीपक है और शिक्षा ज्योति, और अनुशासन के लिए दी जानेवाली डॉट जीवन का मार्ग है, २४ वे तुझको अनैतिक ही से और व्यभिचारिणी की चिकनी चुपड़ी बातों से बचाएगी। २५ उसकी सुन्दरता देखकर अपने मन में उसकी अभिलाषा न कर; वह तुझे अपने कटाक्ष से फँसाने न पाएँ; २६ क्योंकि वेश्यागमन के कारण मनुष्य रोटी के टुकड़ों का भिखारी हो जाता है, परन्तु व्यभिचारिणी अनपोल जीवन का अहंकर कर लेती है। २७ क्या हो सकता है कि कोई अपनी छाती पर आग रख ले; और उसके कपड़े न जलें? २८ क्या हो सकता है कि कोई अंगारे पर चले, और उसके पाँव न झूलें? २९ जो पराई ही के पास जाता है, उसकी दशा ऐसी है, वरन् जो कोई उसको छूएगा वह दण्ड से न बचेगा। ३० जो चोर भूख के मरे अपना पेट भरने के लिये चोरी करे, उसको तो लोग तुच्छ नहीं जानते; ३१ फिर भी यदि वह पकड़ा जाएँ, तो उसको सात गुणा भर देना पड़ेगा; वरन् अपने घर का सारा धन देना पड़ेगा। ३२ जो परब्रह्मगमन करता है वह निर्वृद्ध है; जो ऐसा करता है, वह अपने प्राण को नाश करता है। ३३ उसकी धायल और अपमानित होना पड़ेगा, और उसकी नामधराई कभी न मिटेगी। ३४ क्योंकि जलन से पुख बहुत ही क्रोधित हो जाता है, और जब वह बदला लेगा तब कोई दया नहीं दिखाएगा। ३५ वह मुआवजे में कुछ न लेगा, और चाहे तू उसको बहुत कुछ दे, तो भी वह न मानेगा।

७ हे मेरे पुत्र, मेरी बातों को माना कर, और मेरी आज्ञाओं को अपने मन में रख छोड़। ८ मेरी आज्ञाओं को मान, इससे तू जीवित रहेगा, और मेरी शिक्षा को अपनी आँख की पुतरी जान; ९ उनको अपनी उंगलियों में बौद्ध, और अपने हृदय की पटिया पर लिख ले। १० बुद्धि से कह, “तू मेरी बहन है,” और समझ को अपनी कुटुम्बी बना; ११ तब तू पराई ही के बवेगा, जो चिकनी चुपड़ी बातें बोलती है। १२ मैंने एक दिन अपने घर की खिड़की से, अर्थात् अपने झोरेखे से झाँका, १३ तब मैंने भोले लोगों में से एक निर्वृद्धि जवान को देखा; १४ वह उस ही के घर के कोने के पास की सड़क से गुजर रहा था, और उसने उसके घर का मार्ग लिया। १५ उस समय दिन ढल गया, और संध्याकाल आ गया था, वरन् रात का धोर अंधकार छा गया था। १६ और उससे एक ही मिली, जिसका भेष वेश्या के समान था, और वह बड़ी धृति थी। १७ वह शान्ति रहित और चंचल थी, और उसके पैर घर में नहीं टिकते थे; १८ कभी वह सड़क में, कभी चौक में पाई जाती थी, और एक-एक कोने पर वह बाट जोहती थी। १९ तब उसने उस जवान को पकड़कर चूमा, और निर्लज्जता की चेष्ट करके उससे कहा, २० “मैंने आज ही मैलवालि चढ़ाया और अपनी मनने पूरी की; २१ इसी कारण मैं तुझ से भेट करने को निकली, मैं तेरे दर्शन की खोजी थी, और अभी पाया है। २२ मैंने अपने पलंग के बिछौने पर मिस के

बेलबूटेवाले कपड़े बिछाए हैं; २३ मैंने अपने बिछौने पर गन्धरस, अगर और दालचीनी छिड़की है। २४ इसलिए अब चल हम प्रेम से भोर तक जी बहलाते रहें; हम परस्पर की प्रीति से आनन्दित रहें। २५ क्योंकि मेरा पात घर में नहीं है; वह दूर देश को चला गया है; २६ वह चाँदी की घैरती ले गया है; और पूर्णमासी को लौट आएगा।” २७ ऐसी ही लुभानेवाली बातें कह कहकर, उसने उसको फँसा लिया; और अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से उसको अपने बश में कर लिया। २८ वह तुरन्त उसके पीछे हो लिया, जैसे बैल कसाई-खाने को, या हिरन फंदे में कदम रखता है। २९ अन्त में उस जवान का कलेजा तीर से बेधा जाएगा; वह उस चिड़िया के समान है जो फँदे की ओर बेग से उड़ती है और नहीं जानती कि उससे उसके प्राण जाएँगे। ३० अब हे मेरे पुत्रों, मेरी सुनो, और मेरी बातों पर मन लगाओ। ३१ तेरा मन ऐसी ही के मार्ग की ओर न फ़िरे, और उसकी डगरों में भूलकर भी न जाना; ३२ क्योंकि बहुत से लोग उसके द्वारा मारे गए हैं; उसके घाट किए हुओं की एक बड़ी संख्या होगी। ३३ उसका घर अधोलोक का मार्ग है, वह मृत्यु के घर में पहुँचाता है। (Sheol h7585)

क्या बुद्धि नहीं पुकारती है? क्या समझ ऊँचे शब्द से नहीं बोलती है? ३४ बुद्धि तो मार्ग के ऊँचे स्थानों पर, और चौराहों में खड़ी होती है; ३५ फ़ाटकों के पास नगर के पैठाव में, और द्वारों ही में वह ऊँचे स्वर से कहती है, ३६ “हे लोगों, मैं तुम को पुकारती हूँ, और मेरी बातें सब मनुष्यों के लिये हैं। ३७ हे भोलों, चतुराई सीधों; और हे मूर्खों, अपने मन में समझ लो ३८ सुनो, क्योंकि मैं उत्तम बातें कह रहीं हूँ, और जब मूँह खोलूँगी, तब उससे सीधी बातें निकलेंगी; ३९ क्योंकि मुझसे सच्चाई की बातों का वर्णन होगा; दृष्टु की बातों से मुझ की घृणा आती है। ४० मेरे पूँछ की सब बातें धर्म की होती हैं, उनमें से कोई देखी या उलट-फेर की बात नहीं निकलती है। ४१ समझावाले के लिये वे सब सहज, और ज्ञान प्राप्त करनेवालों के लिये अति सीधी हैं। ४२ चाँदी नहीं, मेरी शिक्षा ही को चुन लो, और उत्तम कुन्दन से बढ़कर ज्ञान को ग्रहण करो। ४३ क्योंकि बुद्धि, बहमूल्य रहों से भी अच्छी है, और सारी मनभावी बस्तुओं में कोई भी उसके तुल्य नहीं है। ४४ मैं जो बुद्धि हूँ, और मैं चतुराई में वास करती हूँ, और ज्ञान और विवेक को प्राप्त करती हूँ। ४५ यहोवा का भय मानना बुराई से बैर रखना है। घमण्ड और अहंकार, बुरी चाल से, और उलट-फेर की बात से मैं बैर रखती हूँ। ४६ उत्तम युक्ति, और खरी बुद्धि मेरी ही है, मुझ में समझ है, और पराक्रम भी मेरा है। ४७ मेरे ही द्वारा राजा राज्य करते हैं, और अधिकारी धर्म से शासन करते हैं; ४८ मेरे ही द्वारा राजा, हाकिम और पूर्वी के सब न्यायी शासन करते हैं। ४९ जो मुझसे प्रेम रखते हैं, उनसे मैं भी प्रेम रखती हूँ, और जो मुझ को यत्र से तड़के उठकर खोजते हैं, वे मुझे पाते हैं। ५० धन और प्रतिष्ठा, शाश्वत धन और धार्मिकता मेरे पास हैं। ५१ मेरा फल शुद्ध सोने से, वरन् कुन्दन से भी उत्तम है, और मेरी उपज उत्तम चाँदी से अच्छी है। ५२ मेरी फल शुद्ध सोने से, वरन् कुन्दन से भी उत्तम है, और मेरी उपज उत्तम चाँदी से अच्छी है। ५३ मेरी धर्म के मार्ग में, और न्याय की डारों के बीच में चलती हूँ, ५४ जिससे मैं अपने प्रेमियों को धन-सम्पत्ति का भागी करूँ, और उनके भण्डारों को भर दूँ। ५५ “यहोवा ने मुझ काम करने के आरम्भ में, वरन् अपने प्राचीनकाल के कार्यों से भी पहले उत्पन्न किया। ५६ मैं सदा से वरन् अदि ही से पृथ्वी की सुष्ठि से पहले ही से ठहराई गई हूँ। ५७ जब न तो गहरा सागर था, और न जल के सोते थे, तब ही से मैं उत्पन्न हुईँ। ५८ जब पहाड़ और पहाड़ियाँ स्थिर न की गई थीं, तब ही से मैं उत्पन्न हुईँ। ५९ जब यहोवा ने न तो पृथ्वी और न मैदान, न जगत की धृति के परमाणु बनाए थे, इनसे पहले मैं उत्पन्न हुईँ। ६० जब यहोवा ने आकाश को स्थिर किया, तब मैं वहाँ थी, जब उसने सागर के ऊपर आकाशमण्डल ठहराया, ६१ जब उसने आकाशमण्डल को ऊपर से स्थिर किया, और गहरे सागर के सोते फूटने लगे, ६२ जब उसने समुद्र की सीमा ठहराई, कि जल

उसकी आज्ञा का उल्लंघन न कर सके, और जब वह पृथ्वी की नीव की डोरी लगाता था, ३० तब मैं प्रधान कारीगर के समान उसके पास थी; और प्रतिदिन मैं उसकी प्रसन्नता थी, और हर समय उसके सामने आनन्दित रहती थी। ३१ मैं उसकी बासाई हुई पृथ्वी से प्रसन्न थी और मेरा सुख मनुष्यों की संगति से होता था। ३२ “इसलिए अब हे मेरे पुत्रों, मेरी सुनो; क्या ही धन्य है वे जो मेरे मार्ग को पकड़े रहते हैं। ३३ शिक्षा को सुनो, और बुद्धिमान हो जाओ, उसको अनसना न करो। ३४ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो मेरी सुनता, वरन् मेरी डेवढी पर प्रतिदिन खड़ा रहता, और मेरे द्वारों के खम्भों के पास दृष्टि लगाए रहता है। ३५ क्योंकि जो मुझे पाता है, वह जीवन को पाता है, और यहोवा उससे प्रसन्न होता है। ३६ परन्तु जो मुझे ढूँढ़ने में विफल होता है, वह अपने ही पर उपद्रव करता है; जिन्हें मुझसे बैर रखते, वे मृत्यु से प्रीति रखते हैं।”

१ बुद्धि ने अपना घर बनाया और उसके सातों खम्भे गढ़े हुए हैं। २ उसने भोज के लिए अपने पशु काटे, अपने दाखमधु में मसाला मिलाया और अपनी मेज लगाई है। ३ उसने अपनी सेविकाओं को आमन्त्रित करने भेजा है; और वह नगर के सबसे ऊँचे स्थानों से पुकारती है, ४ “जो कोई भोला है वह मुडकर यही आए!” और जो निर्बुद्धि है, उससे वह कहती है, ५ “आओ, मेरी रोटी खाओ, और मेरे मसाला मिलाए हुए दाखमधु को पीओ। ६ मर्खों का साथ छोड़ो, और जीवित रहो, समझ के मार्ग में सीधे चलतो।” ७ जो ठंडा करनेवाले को शिक्षा देता है, अपमानित होता है, और जो दृष्टि जन की डॉट्टा है वह कलंकित होता है। ८ ठंडा करनेवाले को न डॉट, ऐसा न हो कि वह दृष्टि से बैर रखे, बुद्धिमान को डॉट, वह तो तुम्ह से प्रेम रखेगा। ९ बुद्धिमान को शिक्षा दे, वह अधिक बुद्धिमान होगा; धर्मी को चिता दे, वह अपनी विद्या बढ़ाएगा। १० यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है, और परमपवित्र परमेश्वर को जानना ही समझ है। ११ मेरे द्वारा तो तेरी आयु बढ़ेगी, और तेरे जीवन के वर्ष अधिक होंगे। १२ यदि तेरा बुद्धिमान है, तो बुद्धि का फल तु ही भोगेगा; और यदि तेरा ठंडा करे, तो दण्ड केवल तु ही भोगेगा। १३ मर्खता बक-बक करनेवाली झींके के समान है; वह तो निर्बुद्धि है, और कुछ नहीं जानती। १४ वह अपने घर के द्वार में, और नगर के ऊँचे स्थानों में अपने आसन पर बैठती हुई १५ वह उन लोगों को जो अपने मार्ग पर सीधे-सीधे चलते हैं यह कहकर पुकारती है, १६ “जो कोई भोला है, वह मुडकर यही आए!” जो निर्बुद्धि है, उससे वह कहती है, १७ “चोरी का पानी मीठा होता है, और लुके-छिपे की रोटी अच्छी लगती है।” १८ और वह नहीं जानता है, कि वहाँ मेरे हुए पड़े हैं, और उस स्थी के निमंत्रित अधोलोक के निचले स्थानों में पहुँचे हैं। (Sheol h7585)

१० सुलैमान के नीतिवचन। बुद्धिमान सन्तान से पिता आनन्दित होता है, परन्तु मूर्ख सन्तान के कारण माता को शोक होता है। १ दृष्टों के रखे हुए धन से लाभ नहीं होता, परन्तु धर्म के कारण मृत्यु से बचाव होता है। २ धर्मी को यहोवा भूखा मरने नहीं देता, परन्तु दृष्टों की अभिलाषा वह पूरी होने नहीं देता। ३ जो काम में ढिलाइं करता है, वह निर्धन हो जाता है, परन्तु कामकाजी लोग अपने हाथों के द्वारा धनी होते हैं। ४ बुद्धिमान सन्तान धूपकाल में फसल बटोरता है, परन्तु जो सन्तान कटनी के समय भारी नीद में पड़ा रहता है, वह लज्जा का कारण होता है। ५ धर्मी पर बहुत से आशीर्वाद होते हैं, परन्तु दृष्टों के मुँह में उपद्रव छिपा रहता है। ६ धर्मी को स्मरण करके लोग आशीर्वाद देते हैं, परन्तु दृष्टों का नाम मिट जाता है। ७ जो बुद्धिमान है, वह आज्ञाओं को स्वीकार करता है, परन्तु जो बकवादी मूर्ख है, उसका नाश होता है। ८ जो खराई से चलता है वह निडर चलता है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है उसकी चाल प्रगत हो जाती है। ९ जो नैन से सैन करके बुरे काम के लिए इशारा

करता है उससे औरों को दुःख होता है, और जो बकवादी मूर्ख है, उसका नाश होगा। १० धर्मी का मुँह तो जीवन का सोता है, परन्तु दृष्टों के मुँह में उपद्रव छिपा रहता है। ११ बैर से तो झागड़े उपत्पन्न होते हैं, परन्तु प्रेम से सब अपराध ढूँढ़ जाते हैं। १२ समझवालों के बचनों में बुद्धि पाई जाती है, परन्तु निर्बुद्धि की पीठ के लिये कोडा है। १३ बुद्धिमान लोग ज्ञान का संग्रह करते हैं, परन्तु मूर्ख के बोलने से विनाश होता है। १४ धर्मी का धन उसका दृढ़ नगर है, परन्तु कंगाल की निर्मनता उसके विनाश का कारण है। १५ धर्मी का परिश्रम जीवन की ओर ले जाता है, परन्तु दृष्टि का लाभ पाप की ओर ले जाता है। १६ जो शिक्षा पर चलता वह जीवन के मार्ग पर है, परन्तु जो डॉट से मुँह मोड़ता, वह भटकता है। १७ जो बैर को छिपा रखता है, वह झट बोलता है, और जो झटी निन्दा फैलाता है, वह मूर्ख है। १८ जहाँ बहुत बातें होती हैं, वहाँ अपराध भी होता है, परन्तु जो अपने मुँह को बन्द रखता है वह बुद्धि से काम करता है। १९ धर्मी के बचन तो उत्तम चाँदी हैं; परन्तु दृष्टों का मन बहुत हल्का होता है। २० धर्मी के बचनों से बहतों का पालन-पोषण होता है, परन्तु मूर्ख लोग बुद्धिमत्ता के कारण मर जाते हैं। २१ धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है, और वह उसके साथ दुःख नहीं मिलता। २२ मूर्ख को तो महापाप करना हौसी की बात जान पड़ती है, परन्तु समझवाले व्यक्ति के लिए बुद्धि प्रसन्नता का विषय है। २३ दृष्टि जन जिस विपत्ति से डरता है, वह उस पर आ पड़ती है, परन्तु धर्मियों की लालसा पूरी होती है। २४ दृष्टि जन उस बवण्डर के समान है, जो गुजरते ही लोप हो जाता है परन्तु धर्मी सदा स्थिर रहता है। २५ जैसे दृँत को सिरका, और आँख को धुआँ, वैसे आलसी उनको लगता है जो उसको कहीं भेजते हैं। २६ यहोवा के भय मानने से आयु बढ़ती है, परन्तु दृष्टों का जीवन थोड़े ही दिनों का होता है। २७ धर्मियों को आशा रखने में आनन्द मिलता है, परन्तु दृष्टों की आशा टूट जाती है। २८ यहोवा खेरे मनुष्य का गढ़ ठहरता है, परन्तु अनर्थकारियों का विनाश होता है। २९ धर्मी सदा अटल रहेगा, परन्तु दृष्टि पृथ्वी पर बसने न पाएँगे। ३० धर्मी के मुँह से बुद्धि टपकती है, पर उलट-फेर की बात कहनेवाले की जीभ काटी जाएगी। ३१ धर्मी ग्रहणयोग्य बात समझकर बोलता है, परन्तु दृष्टों के मुँह से उलट-फेर की बातें निकलती हैं।

११ छल के तराजू से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु वह पूरे बटखरे से प्रसन्न होता है। १ जब अभिमान होता, तब अपमान भी होता है, परन्तु नगर लोगों में बुद्धि होती है। २ सीधे लोग अपनी खराई से अग्राही पाते हैं, परन्तु विश्वासघाती अपने कपट से नाश होते हैं। ३ कोप के दिन धन से तो कुछ लाभ नहीं होता, परन्तु धर्म मृत्यु से भी बचाता है। ४ खेरे मनुष्य का मार्ग धर्म के कारण सीधी होता है, परन्तु दृष्टि अपनी दृष्टान्त के कारण गिर जाता है। ५ सीधे लोगों का बचाव उनके धर्म के कारण होता है, परन्तु विश्वासघाती लोग अपनी ही दृष्टान्त में फँसते हैं। ६ जब दृष्टि मरता, तब उसकी आशा टूट जाती है, और अधर्मी की आशा व्यर्थ होती है। ७ धर्मी विपत्ति से छूट जाता है, परन्तु दृष्टि उसी विपत्ति में पड़ जाता है। ८ भतिहान जन अपने पड़ोसी को अपने मुँह की बात से बिगाड़ता है, परन्तु धर्मी लोग ज्ञान के द्वारा बचते हैं। ९ जब धर्मियों का कल्याण होता है, तब नगर के लोग प्रसन्न होते हैं, परन्तु जब दृष्टि नाश होते, तब जय जयकार होता है। १० सीधे लोगों के अशीर्वाद से नगर की बढ़ती होती है, परन्तु दृष्टों के मुँह की बात से वह ढाया जाता है। ११ जो अपने पड़ोसी को तुच्छ जानता है, वह निर्बुद्धि है, परन्तु समझदार पुस्त चुपचाप रहता है। १२ जो चुगली करता फिरता वह भेद प्रगत करता है, परन्तु विश्वासघात मनुष्य बात को छिपा रखता है। १३ जहाँ बुद्धि की युक्ति नहीं,

वहाँ प्रजा विपति में पड़ती है; परन्तु सम्मति देवेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है। १५ जो परदेशी का उत्तरदायी होता है, वह बड़ा दुःख उठाता है, परन्तु जो जमानत लेने से घृणा करता, वह निडर रहता है। १६ अनुग्रह करनेवाली छी प्रतिष्ठा नहीं खोती है, और उग्र लोग धन को नहीं खोते। १७ कृपात् मनुष्य अपना ही भला करता है, परन्तु जो कूर है, वह अपनी ही देह को दुःख देता है। १८ दुष्ट मिथ्या कमाई कमाता है, परन्तु जो धर्म का बीज बोता, उसको निश्चय फल मिलता है। १९ जो धर्म में ढूढ़ रहता, वह जीवन पाता है, परन्तु जो बुराई का पीछा करता, वह मर जाएगा। २० जो मन के टेंडे हैं, उनसे यहोवा को घृणा आती है, परन्तु वह खींच चालवालों से प्रमाण रहता है। २१ निश्चय जानो, बुरा मनुष्य निर्दोष न ठहरेगा, परन्तु धर्मी का वंश बचाया जाएगा। २२ जो सुदूर छी विवेक नहीं रखती, वह थूथन में सोने की नीत्य पहने हुए सउर के समान है। २३ धर्मियों की लालसा तो केवल भलाई की होती है, परन्तु दुष्टों की आशा का फल क्रोध ही होता है। २४ ऐसे हैं, जो छिट्ठा देते हैं, फिर भी उनकी बढ़ती ही होती है; और ऐसे भी हैं जो यथार्थ से कम देते हैं, और इससे उनकी घटती ही होती है। २५ उदार प्राणी हष्ट-पृष्ठ हो जाता है, और जो औरों की खेती सीचाता है, उसकी भी सीची जाएगी। २६ जो अपना अनाज जमाखोरी करता है, उसको लोग शाप देते हैं, परन्तु जो उसे बेच देता है, उसको आशीर्वाद दिया जाता है। २७ जो यत्र से भलाई करता है वह दसरों की प्रसन्नता खोता है, परन्तु जो दूसरे की बुराई का खोजी होता है, उसी पर बुराई आ पड़ती है। २८ जो अपने धन पर भरोसा रखता है वह सुखे पते के समान पिर जाता है, परन्तु धर्मी लोग नये पते के समान लहलहाते हैं। २९ जो अपने धराने को दुःख देता, उसका भाग वायु ही होगा, और मर्ख बुद्धिमान का दास हो जाता है। ३० धर्मी का प्रतिफल जीवन का वृक्ष होता है, और बुद्धिमान मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है। ३१ देख, धर्मी को पृथ्वी पर फल मिलेगा, तो निश्चय है कि दुष्ट और पापी को भी मिलेगा।

१२ जो शिक्षा पाने से प्रीति रखता है वह ज्ञान से प्रीति रखता है, परन्तु जो डॉट से बैर रखता, वह पश्च के समान मर्ख है। १ भले मनुष्य से तो यहोवा प्रसन्न होता है, परन्तु बुरी युक्ति करनेवाले को वह दोषी ठहराता है। २ कोई मनुष्य दुष्टता के कारण स्थिर नहीं होता, परन्तु धर्मियों की जड उखड़ने की नहीं। ३ भली छी अपने पति का मुकुट है, परन्तु जो लज्जा के काम करती वह मानो उसकी हड्डियों के सड़ने का कारण होती है। ४ धर्मियों की कल्पनाएँ न्याय ही की होती है, परन्तु दुष्टों की युक्तियाँ छल की हैं। ५ दुष्टों की बातचीत हल्त्या करने के लिये घात लगाने के समान होता है, परन्तु सीधे लोग अपने मूँह की बात के द्वारा छुड़नेवाले होते हैं। ६ जब दुष्ट लोग उलटे जाते हैं तब वे रहते ही नहीं, परन्तु धर्मियों का घर स्थिर रहता है। ७ मनुष्य की बुद्धि के अनुसार उसकी प्रशंसा होती है, परन्तु कुटिल तुच्छ जाना जाता है। ८ जिसके पास खाने को रोटी तक नहीं, पर अपने बारे में डीगे मारता है, उससे दास रखनेवाला साधारण मनुष्य ही उत्तम है। ९ धर्मी अपने पश्च के भी प्राण की सुधि रखता है, परन्तु दुष्टों की दया भी निर्देश देता है। १० जो अपनी भूमि को जोता, वह पेट भर खाता है, परन्तु जो निकम्मों की संगति करता, वह निर्झद्धि ठहरता है। ११ दुष्ट जन बुरे लोगों के लूट के माल की अभिलाषा करते हैं, परन्तु धर्मियों की जड़ें हरी भरी रहती हैं। १२ बुरा मनुष्य अपने दुर्वचनों के कारण फंदे में फँसता है, परन्तु धर्मी संकट से निकास पाता है। १३ सज्जन अपने वचनों के फल के द्वारा भलाई से तम होता है, और जैरी जिसकी करनी वैसी उसकी भरनी होती है। १४ मर्ख को अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है, परन्तु जो सम्मति मानता, वह बुद्धिमान है। १५ मर्ख की रिस

तुरन्त प्रगट हो जाती है, परन्तु विवेकी मनुष्य अपमान को अनदेखा करता है। १६ जो सच बोलता है, वह धर्म प्रगट करता है, परन्तु जो झूटी साक्षी देता, वह छल प्रगट करता है। १७ ऐसे लोग हैं जिनका बिना सोच विचार का बोलना तलबार के समान चुभता है, परन्तु बुद्धिमान के बोलने से लोग चंगे होते हैं। १८ सच्चाई सदा बनी रहती है, परन्तु झूठ पल भर का होता है। १९ बुरी युक्ति करनेवालों के मन में छल रहता है, परन्तु मेल की युक्ति करनेवालों को अनन्द होता है। २० धर्मी को हानि नहीं होती है, परन्तु दुष्ट लोग सारी विपति में डूब जाते हैं। २१ झूठों से यहोवा को घृणा आती है परन्तु जो ईमानदारी से काम करते हैं, उसे वह प्रसन्न होता है। २२ विवेकी मनुष्य ज्ञान को प्राप्त नहीं करता है, परन्तु मर्ख अपने मन की मर्खता ऊचे शब्द से प्रचार करता है। २३ कामकाजी लोग प्रभुता करते हैं, परन्तु आलसी बेगार में पकड़े जाते हैं। २४ उदास मन दब जाता है, परन्तु भली बात से वह आनंदित होता है। २५ धर्मी अपने पडोसी की अगुआई करता है, परन्तु दुष्ट लोग अपनी ही चाल के कारण भटक जाते हैं। २६ आलसी अहेर का पीछा नहीं करता, परन्तु कामकाजी को अनमोल बस्तु मिलती है। २७ धर्म के मार्ग में जीवन मिलता है, और उसके पथ में मृत्यु का पता भी नहीं।

१३ बुद्धिमान पुनर्पिता की शिक्षा सुनता है, परन्तु ठश करनेवाला घुड़की को भी नहीं सुनता। १ सज्जन अपनी बातों के कारण उत्तम वस्तु खाने पाता है, परन्तु विश्वासघाती लोगों का पेट उपद्रव से भरता है। २ जो अपने मूँह की चौकसी करता है, वह अपने प्राण की रक्षा करता है, परन्तु जो गाल बजाता है उसका विनाश हो जाता है। ३ आलसी का प्राण लालसा तो करता है, परन्तु उसको कुछ नहीं मिलता, परन्तु कामकाजी हष्ट-पृष्ठ हो जाते हैं। ४ धर्मी झूठे वचन से बैर रखता है, परन्तु दुष्ट लज्जा का कारण होता है और लज्जित हो जाता है। ५ धर्मी खींच चाल लचलनेवाले की रक्षा करता है, परन्तु पापी अपनी दुष्टता के कारण उलट जाता है। ६ कोई तो धन बटोरता, परन्तु उसके पास कुछ नहीं रहता, और कोई धन उड़ा देता, फिर भी उसके पास बहुत रहता है। ७ धर्मी मनुष्य के प्राण की छुड़ौती उसके धन से होती है, परन्तु निर्धन ऐसी घुड़की को सुनता भी नहीं। ८ धर्मियों की ज्योति आनन्द के साथ रहती है, परन्तु दुष्टों का दिया बुझ जाता है। ९ अंहकार से केवल झगड़े होते हैं, परन्तु जो लोग सम्मति मानते हैं, उनके पास बुद्धि रहती है। १० धोखे से कमाया धन जल्दी घटता है, परन्तु जो अपने परिश्रम से बटोरता, उसकी बढ़ती होती है। ११ जब आशा पूरी होते में बिलब जाता है, तो मन निराश होता है, परन्तु जब लालसा पूरी होती है, तब जीवन का वृक्ष लगता है। १२ जो वचन को तुच्छ जानता, उसका नाश हो जाता है, परन्तु आज्ञा के डरवैये को अच्छा फल मिलता है। १३ बुद्धिमान की शिक्षा जीवन का सोता है, और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फंदों से बच सकते हैं। १४ सुबुद्धि के कारण अनुग्रह होता है, परन्तु विश्वासघातीयों का मार्ग कड़ा होता है। १५ विवेकी मनुष्य ज्ञान से सब काम करता है, परन्तु मर्ख अपनी मर्खता फैलाता है। १६ दुष्ट दूत बुराई में फँसता है, परन्तु विश्वासयोग्य दूत मिलाप करता है। १७ जो शिक्षा को अनसुनी करता वह निर्धन हो जाता है और अपमान पाता है, परन्तु जो डॉट को मानता, उसकी महिमा होती है। १८ लालसा का पूरा होना तो प्राण की मीठा लगता है, परन्तु बुराई से हटना, मर्खी के प्राण को बुरा लगता है। १९ बुद्धिमानों की संगति कर, तब तू भी बुद्धिमान हो जाएगा, परन्तु मर्खी का साथी नाश हो जाएगा। २० बुद्धिमानों की संगति कर, विपति पापियों के पीछे लगी रहती है, परन्तु धर्मियों को अच्छा फल मिलता है। २१ भला मनुष्य अपने नाती-पोतों के लिये सम्पत्ति छोड़ जाता है, परन्तु पापी की सम्पत्ति धर्मी के लिये रखी जाती है। २२ निर्बल लोगों को खेती-बारी

से बहुत भोजनवस्तु मिलता है, परन्तु अन्याय से उसको हडप लिया जाता है। २४ जो बेटे पर छड़ी नहीं चलता वह उसका बैरी है, परन्तु जो उससे प्रेम रखता, वह यद्य से उसको शिक्षा देता है। २५ धर्मी पेट भर खाने पाता है, परन्तु दृष्टि भर्खे ही रहते हैं।

१४ हर बुद्धिमान छी अपने घर को बनाती है, पर मूर्ख छी उसको अपने

ही हाथों से ढा देती है। २६ जो सिध्धाई से चलता वह यहोवा का भय माननेवाला है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता वह उसको तुच्छ जाननेवाला ठहरता है। २७ मूर्ख के मूँह में गर्व का अंकुर है, परन्तु बुद्धिमान लोग अपने वचनों के द्वारा रक्षा पाते हैं। २८ जहाँ बैल नहीं, वहाँ गौशाला स्वच्छ तो रहती है, परन्तु बैल के बल से अनाज की बढ़ती होती है। २९ सच्चा साक्षी झूट नहीं बोलता, परन्तु झूठा साक्षी झूटी बतें उड़ाता है। ३० ठश करनेवाला बुद्धि को ढूँढता, परन्तु नहीं पाता, परन्तु समझावाले को ज्ञान सहज से मिलता है। ३१ मूर्ख से अलग हो जा, तू उससे ज्ञान की बात न पाएगा। ३२ विवेकी मनुष्य की बुद्धि अपनी चाल को समझना है, परन्तु मूर्खों की मूर्खता छल करना है। ३३ मूर्ख लोग पाप का अंगीकार करने को ठश जानते हैं, परन्तु सीधे लोगों के बीच अनुग्रह होता है। ३४ मन अपना ही दुःख जानता है, और पदेशी उसके आनन्द में हाथ नहीं डाल सकता। ३५ दुर्दृश्यों के घर का विनाश हो जाता है, परन्तु सीधे लोगों के तम्बू में बढ़ती होती है। ३६ ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है। ३७ हँसी के समय भी मन उदास हो सकता है, और आनन्द के अन्त में शोक हो सकता है। ३८ जो बैंझिमान है, वह अपनी चाल चलन का फल भोगता है, परन्तु भला मनुष्य आप ही आप सन्तुष्ट होता है। ३९ भोता तो हर एक बात को सच मानता है, परन्तु विवेकी मनुष्य समझ बुझकर चलता है। ४० बुद्धिमान डरकर बुराई से हटता है, परन्तु मूर्ख ढींह होकर चेतावनी की उपेक्षा करता है। ४१ जो झाट क्रोध करे, वह मूर्खता का काम करेगा, और जो बुरी युक्तियाँ निकालता है, उससे लोग बैर रखते हैं। ४२ भोतों का भाग मूर्खता ही होता है, परन्तु विवेकी मनुष्यों को ज्ञानस्पी मुकुर बांधा जाता है। ४३ बुरे लोग भलों के सम्मुख, और दृष्टि लोग धर्मी के फाटक पर टण्डवत करेंगे। ४४ निर्धन का पडोसी भी उससे धृणा करता है, परन्तु धर्मी के अनेक प्रेमी होते हैं। ४५ जो अपने पडोसी को तुच्छ जानता, वह पाप करता है, परन्तु जो दीन लोगों पर अनुग्रह करता, वह धन्य होता है। ४६ जो बुरी युक्ति निकालते हैं, क्या वे भ्रम में नहीं पड़ते? परन्तु भर्ती युक्ति निकालनेवालों से कम्हा और सच्चाई का व्यवहार किया जाता है। ४७ परिश्रम से सदा लाभ होता है, परन्तु बकवाद करने से केवल घटती होती है। ४८ बुद्धिमानों का धन उनका मुकुर ठहरता है, परन्तु मूर्ख से केवल मूर्खता ही उत्पन्न होती है। ४९ सच्चा साक्षी बहुतों के प्राण चबाता है, परन्तु जो झूटी बातें उड़ाता करता है उससे धोखा ही होता है। ५० यहोवा के भय में ढूँढ भरोसा है, और यह उसकी सन्तानों के लिए शरणस्थान होगा। ५१ यहोवा का भय मानना, जीवन का सोता है, और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फंदों से बच जाते हैं। ५२ राजा की महिमा प्रजा की बहुतायत से होती है, परन्तु जहाँ प्रजा नहीं, वहाँ हाकिम नाश हो जाता है। ५३ जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला है वह बड़ा समझावाला है, परन्तु जो अधीर होता है, वह मूर्खता को बढ़ाता है। ५४ शन्त मन, तन का जीवन है, परन्तु ईर्ष्या से हड्डियाँ भी गल जाती हैं। ५५ जो कंगाल पर अधेर करता, वह उसके कर्ता की निन्दा करता है, परन्तु जो दरिद्र पर अनुग्रह करता, वह उसकी महिमा करता है। ५६ दृष्टि मनुष्य बुद्धि के विषय में कुछ भी नहीं जानता। ५७ जाति की बढ़ती धर्म ही से होती है, परन्तु पाप से

देश के लोगों का अपमान होता है। ५८ जो कर्मचारी बुद्धि से काम करता है उस पर राजा प्रसन्न होता है, परन्तु जो लज्जा के काम करता, उस पर वह रोष करता है।

१५ कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है, परन्तु कटुवचन से

क्रोध भड़क उठता है। १९ बुद्धिमान ज्ञान का ठीक बखान करते हैं, परन्तु मूर्खों के मूँह से मूर्खता उबल आती है। २० यहोवा की आँखें सब स्थानों में लगी रहती हैं, वह बुरे भले दोनों को देखती रहती है। २१ शान्ति देवेवाली बात जीवन-वृक्ष है, परन्तु उलट-फेर की बात से आत्मा दुःखित होती है। २२ मूर्ख अपने पिता की शिक्षा का तिरस्कार करता है, परन्तु जो डॉँट को मानता, वह विवेकी हो जाता है। २३ धर्मी के घर में बहुत धन रहता है, परन्तु दृष्टि के कमाई में दुःख रहता है। २४ बुद्धिमान लोग बातें करने से ज्ञान को फैलाते हैं, परन्तु मूर्खों का मन ठीक नहीं रहता। २५ लोगों के बलिदान से यहोवा धृणा करता है, परन्तु वह सीधे लोगों की प्रार्थना से प्रसन्न होता है। २६ दृष्टि के चाल चलन से यहोवा को धृणा आती है, परन्तु जो धर्म का पीछा करता उससे वह प्रेम रखता है। २७ जो मार्ग को छोड़ देता, उसको बड़ी ताड़ना मिलती है, और जो डॉँट से बैर रखता, वह अवश्य मर जाता है। २८ जबकि अधोलोक और विनाशलोक यहोवा के सामने खुले रहते हैं, तो निश्चय मनुष्यों के मन भी। (Sheol h7585) २९ ठश करनेवाला डॉँट जाने से प्रसन्न नहीं होता, और न वह बुद्धिमानों के पास जाता है। ३० मन आनन्दित होने से मुख पर भी प्रसन्नता छा जाती है, परन्तु मन के दुःख से आत्मा निराश होती है। ३१ समझनेवाले का मन ज्ञान की खोज में रहता है, परन्तु मूर्ख लोग मूर्खता से पेट भरते हैं। ३२ दुश्मियों के सब दिन दुःख भरे रहते हैं, परन्तु जिसका मन प्रसन्न रहता है, वह मानो नित्य भोज में जाता है। ३३ घबराहट के साथ बहुत रखे हुए धन से, यहोवा के भय के साथ थोड़ा ही धन उत्तम है, ३४ प्रेमवाले घर में सागपात का भोजन, बैरवाले घर में स्वादिष्ट मांस खाने से उत्तम है। ३५ कोई पुस्त इगड़ा मचाता है, परन्तु जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला है, वह मुकुरमों को दबा देता है। ३६ आलसी का मार्ग काँटों से स्थां बुआ होता है, परन्तु सीधे लोगों का मार्ग राजमार्ग ठहरता है। ३७ बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित होता है, परन्तु मूर्ख अपनी माता को तुच्छ जानता है। ३८ निर्बुद्धि को मूर्खता से आनन्द होता है, परन्तु समझावाला मनुष्य सीधी चाल चलता है। ३९ बिना सम्पत्ति की कल्पनाएँ निष्फल होती हैं, परन्तु बहुत से मंत्रियों की सम्पत्ति से सफलता मिलती है। ४० सज्जन उत्तर देने से आनन्दित होता है, और अवसर पर कहा बुआ वचन क्या ही भला होता है! ४१ विवेकी के लिये जीवन का मार्ग ऊपर की ओर जाता है, इस रीति से वह अधोलोक में पड़ने से बच जाता है। (Sheol h7585) ४२ यहोवा अहंकारियों के घर को ढा देता है, परन्तु विधवा की सीमाओं को अटल रखता है। ४३ बुरी कल्पनाएँ यहोवा को धिनौनी लगती हैं, परन्तु शदू जन के वचन मनभावने हैं। ४४ लालची अपने घराने को दुःख देता है, परन्तु धूस से धृणा करनेवाला जीवित रहता है। ४५ धर्मी मन में सोचता है कि क्या उत्तर दृष्टि परन्तु दृष्टों के मूँह से बुरी बातें उबल आती हैं। ४६ यहोवा दृष्टों से दूर रहता है, परन्तु धर्मियों की प्रार्थना सुनता है। ४७ अँखों की चमक में मन को आनन्द होता है, और अच्छे समाचार से हड्डियाँ पुष्ट होती हैं। ४८ जो कीवनदारी डॉँट कान लगाकर सुनता है, वह बुद्धिमानों के संग ठिकाना पाता है। ४९ जो शिक्षा को अनसुनी करता, वह अपने प्राण को तुच्छ जानता है, परन्तु जो डॉँट को सुनता, वह बुद्धि प्राप्त करता है। ५० यहोवा के भय मानने से बुद्धि की शिक्षा प्राप्त होती है, और महिमा से पहले नम्रता आती है।

१६ मन की युक्ति मनुष्य के वश में रहती है, परन्तु मुँह से कहना यहोवा की ओर से होता है। **२** मनुष्य का सारा चाल चलन अपनी दृष्टि में पवित्र ठहरता है, परन्तु यहोवा मन को तौलता है। **३** अपने कामों को यहोवा पर डाल दे, इससे तेरी कल्पनाएँ सिद्ध होंगी। **४** यहोवा ने सब बस्तुएँ विशेष उद्देश्य के लिये बनाई हैं, वरन् दृष्टि को भी विपत्ति भोगने के लिये बनाया है। **५** सब मन के घमण्डियों से यहोवा धृता करता है; मैं दृढ़ता से कहता हूँ, ऐसे लोग निर्दोष न ठहरेंगे। **६** अर्थात् का प्रायश्चित्त कृपा, और सच्चाई से होता है, और यहोवा के भय मानने के द्वारा मनुष्य बुराई करने से बच जाते हैं। **७** जब किसी का चाल चलन यहोवा को भावता है, तब वह उसके शत्रुओं का भी उससे मेल करता है। **८** अन्याय के बड़े लाभ से, न्याय से थोड़ा ही प्राप्त करना उत्तम है। **९** मनुष्य मन में अपने मार्ग पर विचार करता है, परन्तु यहोवा ही उसके पैरों को स्थिर करता है। **१०** राजा के मुँह से दैवीवाणी निकलती है, न्याय करने में उससे चूक नहीं होती। **११** सच्चा तराजू और पलड़े यहोवा की ओर से होते हैं, थैली में जितें बटखरे हैं, सब उसी के बनवाए हुए हैं। **१२** दृष्टा करना राजाओं के लिये धृणित काम है, क्योंकि उनकी गँड़ी धर्म ही से स्थिर रहती है। **१३** धर्म की बात बोलनेवालों से राजा प्रसन्न होता है, और जो सीधी बातें बोलता है, उससे वह प्रेम खटता है। **१४** राजा का क्रोध मृत्यु के दूत के समान है, परन्तु बुद्धिमान मनुष्य उसको ठंडा करता है। **१५** राजा के मुख की चमक में जीवन रहता है, और उसकी प्रसन्नता बरसात के अन्त की घटा के समान होती है। **१६** बुद्धि की प्राप्ति शुद्ध सोने से क्या ही उत्तम है! और समझ की प्राप्ति चाँदी से बढ़कर योग्य है। **१७** बुराई से हटना धर्मियों के लिये उत्तम मार्ग है, जो अपने चाल चलन की चौकसी करता, वह अपने प्राण की भी रक्षा करता है। **१८** विनाश से पहले गर्व, और ठोकर खाने से पहले घमण्ड आता है। **१९** घमण्डियों के संग लट बाँट लेने से, दीन लोगों के संग नम्र भाव से रहना उत्तम है। **२०** जो वचन पर मन लगाता, वह कल्याण पाता है, और जो यहोवा पर भरोसा रखता, वह धन्य होता है। **२१** जिसके हृदय में बुद्धि है, वह समझनेवाला कहलाता है, और मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है। **२२** जिसमें बुद्धि है, उसके लिये वह जीवन का स्रोत है, परन्तु मर्ख का दण्ड स्वयं उसकी मर्खता है। **२३** बुद्धिमान का मन उसके मुँह पर भी बुद्धिमानी प्रगट करता है, और उसके वचन में विद्या रहती है। **२४** मनभावने वचन मधु भरे छते के समान प्राणों को मिठि लगते, और हड्डियों को हरी-भरी करते हैं। **२५** ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है। **२६** परिश्रमी की लालसा उसके लिये परिश्रम करती है, उसकी भूख तो उसको उभारती रहती है। **२७** अर्थमें मनुष्य बुराई की युक्ति निकलता है, और उसके वचनों से आग लग जाती है। **२८** टेढ़ा मनुष्य बहुत झागड़े को उठाता है, और कानाफूसी करनेवाला पाप मिर्चों में भी फूट करा देता है। **२९** उट्ड्री की मनुष्य अपने पड़ोसी को फुसलाकर कुर्मांग पर चलाता है। **३०** आँख मैंदेनेवाला छल की कल्पनाएँ करता है, और होंठ दबनेवाला बुराई करता है। **३१** पक्के बाल शोभायामन मुकुट ठहरते हैं, वे धर्म के मार्ग पर चलने से प्राप्त होते हैं। **३२** विलम्ब से क्रोध करना वीरता से, और अपने मन को वश में रखना, नगर को जीत लेने से उत्तम है। **३३** चिह्नी डाली जाती तो है, परन्तु उसको निकलना यहोवा ही की ओर से होता है।

१७ चैन के साथ सूखा टुकड़ा, उस धर की अपेक्षा उत्तम है, जो मेलबलि-पशुओं से भारा हो, परन्तु उसमें झागड़े-रगड़े हों। **१८** बुद्धि से चलनेवाला दास अपने स्वामी के उस पुत्र पर जो लज्जा का कारण होता है प्रभुता करेगा, और उस पुत्र के भाइयों के बीच भागी होगा। **१९** चाँदी के लिये कठाली, और सोने के लिये भट्ठी होती है, परन्तु मनों को यहोवा जाँचता है। **२०** कुकरी

अनर्थ बात को ध्यान देकर सुनता है, और झाठा मनुष्य दृष्टा की बात की ओर कान लगाता है। **२१** जो निर्धन को उपहास में उड़ाता है, वह उसके कर्ता की निन्दा करता है; और जो किसी की विपत्ति पर हँसता है, वह निर्देष नहीं ठहरेगा। **२२** बुद्धों की शोभा उनके नाती पोते हैं; और बाल-बच्चों की शोभा उनके माता-पिता हैं। **२३** मूर्ख के मुख से उत्तम बात फबती नहीं, और इससे अधिक प्रधान के मुख से झाँटी बात नहीं फबती। **२४** घूस देनेवाला व्यक्ति घूस को मोह लेनेवाला मणि समझता है, ऐसा पुष्प जिधर फिरता, उधर उसका काम सफल होता है। **२५** जो दूसरे के अपराध को ढाँप देता है, वह प्रेम का खोजी ठहरता है, परन्तु जो बात की चर्चा बार बार करता है, वह परम मिर्चों में भी फूट करा देता है। **२६** एक घुड़की समझनेवाले के मन में जितनी गड़ जाती है, उतना सौ बार खाना मूर्ख के मन में नहीं गड़ता। **२७** बुरा मनुष्य दैर्घ्य ही का यत्र करता है, इसलिए उसके पास क्लर्क दूर भेजा जाएगा। **२८** बच्चा-छीनी-हर्डी-रीछनी से मिलना, मूर्खता में डूबे हए मूर्ख से मिलने से बेहतर है। **२९** जो कोई भलाई के बदले में बुराई करे, उसके घर से बुराई दूर न होगी। **३०** झागड़े का आरम्भ बाँध के छेद के समान है, झागड़ा बढ़ने से पहले उसको छोड़ देना उचित है। **३१** जो दोषी को निर्दोष, और जो निर्दोष को दोषी ठहराता है, उन दोनों से यहोवा धृणा करता है। **३२** बुद्धि मोल लेने के लिये मूर्ख अपने हाथ में दाम क्यों लिए है? वह उसे चाहता ही नहीं। **३३** मित्र सब समयों में प्रेम खटता है, और विपत्ति के दिन भाई बन जाता है। **३४** निर्बुद्धि मनुष्य बाध्यकारी बायदे करता है, और अपने पड़ोसी के कर्ज का उत्तरदायी होता है। **३५** जो झागड़े-रगड़े में प्रीति रखता, वह अपराध करने से भी प्रीति रखता है, और जो अपने फाटक को बड़ा करता, वह अपने विनाश के लिये यत्र करता है। **३६** जो मन का देढ़ा है, उसका कल्याण नहीं होता, और उलट-फेर की बात करनेवाला विपत्ति में पड़ता है। **३७** जो मूर्ख को जन्म देता है वह उससे दुःखी ही पाता है; और मूर्ख के पिता को आनन्द नहीं होता। **३८** मन का आनन्द अच्छी औषधि है, परन्तु मन के टूटने से हड्डियाँ सूख जाती हैं। **३९** दृष्टि जन न्याय बिगाड़ने के लिये, अपनी गँठ से घृस निकलता है। **४०** बुद्धि समझनेवाले के सामने ही रहती है, परन्तु मूर्ख की आँखें पृथ्वी के दूर-दूर देशों में लगी रहती हैं। **४१** मूर्ख पुत्र से पिता उदास होता है, और उसकी जननी को शोक होता है। **४२** धर्मी को दण्ड देना, और प्रधानों को खाराई के कारण पिटाना, दोनों काम अच्छे नहीं हैं। **४३** जो सम्भलकर बोलता है, वह जानी ठहरता है, और जिसकी आत्मा शान्त रहती है, वही समझनेवाला पुष्प ठहरता है। **४४** मूर्ख भी जब चुप रहता है, तब बुद्धिमान गिना जाता है, और जो अपना मुँह बन्द रखता वह समझनेवाला गिना जाता है।

१८ जो दूसरों से अलग हो जाता है, वह अपनी ही इच्छा पूरी करने के लिये ऐसा करता है, और सब प्रकार की खरी बुद्धि से बैर करता है। **१९** मूर्ख का मन समझ की बातों में नहीं लगता, वह केवल अपने मन की बात प्रगट करना चाहता है। **२०** जहाँ दृष्टा आती, वहाँ अपमान भी आता है; और निरादर के साथ निन्दा आती है। **२१** मनुष्य के मृंग के वचन गहरे जल होते हैं, बुद्धि का स्रोत बहती धारा के समान हैं। **२२** दृष्ट का पक्ष करना, और धर्मी का हक्क मारना, अच्छा नहीं है। **२३** बात बढ़ाने से मूर्ख मुकदमा खड़ा करता है, और अपने को मार खाने के योग्य दिखाता है। **२४** मूर्ख का विनाश उसकी बातों से होता है, और उसके वचन उसके प्राण के लिये फंदे होते हैं। **२५** कानाफूसी करनेवाले के वचन स्वादिष्ट भोजन के समान लगते हैं, वे पेट में पच जाते हैं। **२६** जो काम में अलस करता है, वह बिगाड़नेवाले का भाई ठहरता है। **२७** यहोवा का नाम दृढ़ गढ़ है; धर्मी उसमें भागकर सब दुर्घटनाओं से बचता है।

१५ धनी का धन उसकी दृष्टि में शक्तिशाली नगर है, और उसकी कल्पना ऊँची शहरपनाह के समान है। १६ नाश होने से पहले मनुष्य के मन में घमण्ड, और महिमा पाने से पहले नम्रता होती है। १७ जो बिना बात सुने उत्तर देता है, वह मूर्ख ठहरता है, और उसका अनादर होता है। १८ रोग में मनुष्य अपनी आत्मा से सम्भलता है; परन्तु जब आत्मा हार जाती है तब इसे कौन सह सकता है? १९ समझवाले का मन ज्ञान प्राप्त करता है; और बुद्धिमान ज्ञान की बात की खोज में रहते हैं। २० भेंट मनुष्य के लिये मार्ग खो देती है, और उसे बड़े लोगों के सामने पहुँचती है। २१ मुकदमे में जो पहले बोलता, वही सच्चा जान पड़ता है, परन्तु बाद में दूसरे पक्षवाला आकर उसे ज़िंच लेता है। २२ चिट्ठी डालने से झगड़े बन्द होते हैं, और बलवन्तों की लड़ाई का अन्त होता है। २३ चिट्ठे हुए भाई को मनाना ढूढ़ नगर के ले लेने से कठिन होता है, और झगड़े राजभवन के बैंडों के समान हैं। २४ मनुष्य का पेट मूँह की बातों के फल से भरता है, और बोलने से जो कुछ प्राप्त होता है उससे वह तुम होता है। २५ जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा। २६ जिसने व्ही व्याह ती, उसने उत्तम पदार्थ पाया, और यहोवा का अनुग्रह उस पर हुआ है। २७ मिरों के बढ़ाने से तो नाश होता है, परन्तु धनी कड़ा उत्तर देता है। २८ मिरों के बढ़ाने से तो नाश होता है, परन्तु ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है।

२९ जो निर्धन खराई से चलता है, वह उस मूर्ख से उत्तम है जो टेढ़ी बातें बोलता है। ३० मनुष्य का ज्ञानहित रहना अच्छा नहीं, और जो उतावली से दौड़ता है वह चक जाता है। ३१ मर्खता के कारण मनुष्य का मार्ग टेढ़ा होता है, और वह मन ही मन यहोवा से चिढ़े लगता है। ३२ धनी के तो बहुत मिर हो जाते हैं, परन्तु कंगाल के मित्र उससे अलग हो जाते हैं। ३३ झटा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता, और जो झट बोला करता है, वह न बचेगा। ३४ उदार मनुष्य को बहुत से लोग मना लेते हैं, और दानी पुस्त का मित्र सब कोई बनता है। ३५ जब निर्धन के सब भाई उससे बैर रखते हैं, तो निश्चय है कि उसके मित्र उससे दूर हो जाएँ। वह बातें करते हुए उनका पीछा करता है, परन्तु उनको नहीं पाता। ३६ जो बुद्धि प्राप्त करता, वह अपने प्राण को प्रेमी ठहराता है; और जो समझ को रखे रहता है उसका कल्पणा होता है। ३७ दूसरा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता, और जो झट बोला करता है, वह नाश होता है। ३८ जब सुख में रहना मूर्ख की नहीं फबता, तो हाकिमों पर दास का प्रभुता करना कैसे फें। ३९ जो मनुष्य बुद्धि से चलता है वह विलम्ब से क्रोध करता है, और अपाध को भूलाना उसको शोभा देता है। ४० राजा का क्रोध सिंह की गर्जन के समान है, परन्तु उसकी प्रसन्नता घास पर की ओस के तुल्य होती है। ४१ मूर्ख पुत्र पिता के लिये विपत्ति है, और झगड़ालू पत्नी सदा टपकने वाले जल के समान हैं। ४२ घर और धन पुराखाओं के भाग से, परन्तु बुद्धिमती पत्री यहोवा ही से मिलती है। ४३ अलास से भारी नीद आ जाती है, और जो प्राणी ढिलाईं से काम करता, वह खूबा ही रहता है। ४४ जो आज्ञा को मानता, वह अपने प्राण की रक्षा करता है, परन्तु जो अपने चाल चलन के विषय में निश्चिन्त रहता है, वह मर जाता है। ४५ जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह यहोवा को ऊंधार देता है, और वह अपने इस काम का प्रतिफल पाएगा। ४६ जब तक आशा है तब तक अपने पुत्र की ताड़ना कर, जान बझाकर उसको मार न डाल। ४७ जो बड़ा क्रोधी है, उसे दण्ड उठाने दे, क्योंकि यदि तू उसे बचाए, तो बारम्बार बचाना पड़ेगा। ४८ सम्मति को सुन ले, और शिक्षा को ग्रहण कर, ताकि तू अपने अन्तकाल में बुद्धिमान ठहरे। ४९ मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएँ होती हैं, परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है, वही स्थिर रहती है। ५० मनुष्य में निषा सर्वोत्तम गुण है, और निर्धन जन झट बोलनेवाले से बेहतर है। ५१ यहोवा का भय मानने से जीवन बढ़ता है; और

उसका भय माननेवाला ठिकाना पाकर सुखी रहता है; उस पर विपत्ति नहीं पड़ने की। ५२ आलसी अपना हाथ थाली में डालता है, परन्तु अपने मूँह तक कौर नहीं उठाता। ५३ ठंडा करनेवाले को मार, इससे भोला मनुष्य समझदार हो जाएगा; और समझवाले को डॉट, तब वह अधिक ज्ञान पाएगा। ५४ जो पुत्र अपने बाप को उजाड़ता, और अपनी माँ को भगा देता है, वह अपमान और लज्जा का कारण होगा। ५५ हे मेरे पुत्र, यदि तू शिक्षा को सुनना छोड़ दे, तो तू ज्ञान की बातों से भटक जाएगा। ५६ अधीरीं साक्षी न्याय को उपहास में उड़ाता है, और दृश्य लोग अनर्थ काम निगल लेते हैं। ५७ ठंडा करनेवालों के लिये दण्ड ठहराया जाता है, और मूर्खों की पीठ के लिये कोड़े हैं।

२० दाखमुख ठंडा करनेवाला और मदिरा हल्ला मचानेवाली है, जो कोई

उसके कारण चूक करता है, वह बुद्धिमान नहीं। २१ राजा का क्रोध, जवान सिंह के गर्जन समान है; जो उसको रोष दिलाता है वह अपना प्राण खो देता है। २२ मुकदमे से हाथ उठाना, पुस्त की महिमा ठहरती है; परन्तु सब मूर्ख झगड़ने को तैयार होते हैं। २३ आलसी मनुष्य शीत के कारण हल नहीं जोता; इसलिए कटनी के समय वह शीख मँगता, और कुछ नहीं पाता। २४ मनुष्य के मन की युक्ति अथाह तो है, तो भी समझवाला मनुष्य उसको निकाल लेता है। २५ बहुत से मनुष्य अपनी निषा का प्रचार करते हैं; परन्तु सच्चा व्यक्ति कौन पा सकता है? २६ वह व्यक्ति जो अपनी सत्यनिष्ठा पर चलता है, उसके पुत्र जो उसके पीछे चलते हैं, वे धन्य हैं। २७ राजा जो न्याय के सिंहासन पर बैठा करता है, वह अपनी दृष्टि ही से सब बुराई को छाँट लेता है। २८ कौन कह सकता है कि मैंने अपने हृदय को पवित्र किया, अथवा मैं पाप से शुद्ध हुआ हूँ? २९ घटते-बढ़ते बटरुए और घटते-बढ़ते नए दोनों से यहोवा धूमा करता है। ३० लड़का भी अपने कामों से पहचाना जाता है, कि उसका काम पवित्र और सीधा है, या नहीं। ३१ सुनने के लिये कान और देखने के लिये जो आँखें हैं, उन दोनों को यहोवा ने बनाया है। ३२ नीद से प्रति न रख, नहीं तो दरिद्र हो जाएगा; आँखें खोल तब तु रोटी से तुम होगा। ३३ मोल लेने के समय ग्राहक, “अच्छी नहीं, अच्छी नहीं,” कहता है; परन्तु चले जाने पर बढ़ाई करता है। ३४ सोना और बहुत से बहमूल्य रथ तो हैं; परन्तु ज्ञान की बातें अनमोल मणि ठहरी हैं। ३५ किसी अनजान के लिए जमानत देनेवाले के बब्ल ले और पराए के प्रति जो उत्तरदायी हुआ है उससे बँधक की वस्तु ले रख। ३६ छल-कपट से प्राप्त रोटी मनुष्य को मीठी तो लगती है, परन्तु बाद में उसका मूँह कंकड़ों से भर जाता है। ३७ सब कल्पनाएँ सम्मति ही से स्थिर होती हैं; और युक्ति के साथ यदू करना चाहिये। ३८ जो लतराई करता फिरता है वह भेद प्रगट करता है; इसलिए बकवादी से मेल जोल न रखना। ३९ जो अपने माता-पिता को कोसता, उसका दिया बुझा जाता, और घोर अंधकार हो जाता है। ४० जो भाग पहले उतावली से मिलता है, अन्त में उस पर अशीष नहीं होती। ४१ मत कह, “मैं बुराई का बदला लूँगा;” वरन् यहोवा की बाट जोहता रह, वह तुझको छुड़ाएगा। ४२ घटते-बढ़ते बटरुएं से यहोवा धूमा करता है, और छल का तराजू अच्छा नहीं। ४३ मनुष्य का मार्ग यहोवा की ओर से ठहराया जाता है; मनुष्य अपना मार्ग कैसे समझ सकेगा? ४४ जो मनुष्य बिना विचार किसी वस्तु को पवित्र ठहराए, और जो मन्तन मानकर पृछापाल करने लगे, वह फदे में फँसेगा। ४५ बुद्धिमान राजा दुष्टों को फटकता है, और उन पर दाँवें का पहिया चलवाता है। ४६ मनुष्य की बातें लोग की खोज करता है। ४७ राजा की रक्षा कृपा और सच्चाई के कारण होती है, और कृपा करने से उसकी गँड़ी सम्भलती है। ४८ जवानों का गैरव उनका बल है, परन्तु बढ़ों की शोभा उनके पक्के बाल हैं। ४९ चोट लगने से जो घाव होते हैं, वे बुराई दूर करते हैं; और मार खाने से हृदय निर्मल हो जाता है।

२१ राजा का मन जल की धाराओं के समान यहोवा के हाथ में रहता है,

जिथर वह चाहता उधर उसको मोड़ देता है। १ मनुष्य का सारा चाल चलन अपनी दृष्टि में तो ठीक होता है, परन्तु यहोवा मन को जँचता है, २ धर्म और न्याय करना, यहोवा को बलिदान से अधिक अच्छा लगता है। ३ चढ़ी आँखें, घण्डी मन, और दुरुं की खेती, तीनों पापमय हैं। ४ कामकाजी की कल्पनाओं से केवल लाभ होता है, परन्तु उतावली करनेवाले को केवल घटी होती है। ५ जो धन झट के द्वारा प्राप्त हो, वह बायु से उड़ जानेवाला कुहरा है, उसके ढूँढ़नेवाले मृत्यु ही को ढूँढ़ते हैं। ६ जो उपद्रव दृश्य लोग करते हैं, उससे उन्हीं का नाश होता है, क्योंकि वे न्याय का काम करने से इन्कार करते हैं। ७ पाप से लदे हए मनुष्य का मार्ग बहुत ही टेढ़ा होता है, परन्तु जो पवित्र है, उसका कर्म सीधा होता है। ८ लम्बे-चौड़े घर में झगड़ाल् पत्री के संग रहने से, छत के कोने पर रहना उत्तम है। ९ दृश्य जन बुराई की लालसा जी से करता है, वह अपने पड़ोसी पर अनुग्रह की दृष्टि नहीं करता। १० जब ठश करनेवाले को दण्ड दिया जाता है, तब भोला बुद्धिमान हो जाता है, और जब बुद्धिमान को उपदेश दिया जाता है, तब वह जान प्राप्त करता है। ११ धर्मी जन दुरुं के घरने पर बुद्धिमानी से विचार करता है, और परमेश्वर दुरुं को बुराईमें उलट देता है। १२ जो कंगाल की दुराई पर कान न दे, वह आप पुकारेगा और उसकी सुनी न जाएगी। १३ गुम में दी ही हँडे से क्रोध ठंडा होता है, और चुके से दी ही हँडे धूस से बड़ी जलजलाहट भी थमती है। १४ न्याय का काम करना धर्मी को तो आनन्द, परन्तु अनर्थकारियों को विनाश ही का कारण जान पड़ता है। १५ जो मनुष्य बुद्धि के मार्ग से भटक जाए, उसका ठिकाना मरे हुओं के बीच में होगा। १६ जो रागरंग से प्रीति रखता है, वह कंगाल हो जाता है; और जो दाखमधु पीने और तेल लगाने से प्रीति रखता है, वह धर्मी नहीं होता। १७ दृश्य जन धर्मी की छुड़ौती ठरता है, और विश्वासघाती सीधी लोगों के बदले दण्ड भोगते हैं। १८ झगड़ाल् और चिढ़नेवाली पत्री के संग रहने से, ज़ंगल में रहना उत्तम है। १९ बुद्धिमान के घर में उत्तम धन और तेल पाए जाते हैं, परन्तु मूर्ख उनको उड़ा डालता है। २० जो धर्म और कृपा का पीछा करता है, वह जीवन, धर्म और महिमा भी पाता है। २१ बुद्धिमान शर्वीरों के नगर पर चढ़कर, उनके बल को जिस पर वे भरोसा करते हैं, नाश करता है। २२ जो अपने मुँह को बश में रखता है वह अपने प्राण को विपत्तियों से बचाता है। २३ जो अभिमान से रोष में आकर काम करता है, उसका नाम अभिमानी, और अहंकारी ठश करनेवाला पड़ता है। २४ आलसी अपनी लालसा ही में मर जाता है, क्योंकि उसके हाथ काम करने से इन्कार करते हैं। २५ कोई ऐसा है, जो दिन भर लालसा ही किया करता है, परन्तु धर्मी लगातार दान करता रहता है। २६ दुरुं का बलिदान घृणित है, विशेष करके जब वह बुरे उद्देश्य के साथ लाता है। २७ झटा साक्षी नाश हो जाएगा, परन्तु सच्चा साक्षी सदा स्थिर रहेगा। २८ दृश्य मनुष्य अपना मुख कठोर करता है, और धर्मी अपनी चाल सीधी रखता है। २९ यहोवा के विद्ध न तो कुछ बुद्धि, और न कुछ समझ, न कोई युक्ति चलती है। ३० युद्ध के दिन के लिये घोड़ा तैयार तो होता है, परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है।

२२ बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है, और सोने चाँदी से

औरों की प्रसन्नता उत्तम है। १ धनी और निर्धन दोनों में एक समानता है, यहोवा उन दोनों का कर्ता है। २ चरु मनुष्य विपत्ति को आते देखकर छिप जाता है; परन्तु भोले लोग आगे बढ़कर दण्ड भोगते हैं। ३ नम्रता और यहोवा के भय मानने का फल धन, महिमा और जीवन होता है। ४ टेढ़े मनुष्य के मार्ग में कटौती और फंदे रहते हैं; परन्तु जो अपने प्राणों की रक्षा करता, वह उन्हें दूर रहता है। ५ लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको चलना चाहिये,

और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा। ६ धनी, निर्धन लोगों पर प्रभुता करता है, और उधर लेनेवाला उधर देनेवाले का दास होता है। ७ जो कुटिलता का बीज बोता है, वह अनर्थी ही काटेगा, और उसके रोष का सोंटा टूटेगा। ८ दया करनेवाले पर आशीष फलती है, क्योंकि वह कंगाल को अपनी रोटी में से देता है। ९ ठश करनेवाले को निकाल दे, तब झगड़ा मिट जाएगा, और बाद-विवाद और अपमान दोनों टूट जाएँगे। १० जो मन की शुद्धता से प्रीति रखता है, और जिसके बचन मोहर होते हैं, राजा उसका मित्र होता है। ११ यहोवा ज्ञानी पर दृष्टि करके, उसकी रक्षा करता है, परन्तु विश्वासघाती की बातें उलट देता है। १२ आलसी कहता है, बाहर तो सिंह होगा! मैं चौक के बीच घात किया जाऊँगा। १३ व्यभिचारिणी का मूँह गहरा गहरा है, जिससे यहोवा क्रोधित होता है, वही उसमें गिरता है। १४ लड़के के मन में मूर्खता की गाँठ बंधी रहती है, परन्तु अनुशासन की छड़ी के द्वारा वह खोलकर उससे दूर की जाती है। १५ जो अपने लाभ के निमित्त कंगाल पर अधेर करता है, और जो धनी को भेंट देता, वे दोनों केवल हानि ही उठाते हैं। १६ कान लगाकर बुद्धिमानों के बचन सुन, और मेरी ज्ञान की बातों की ओर मन लगा; १७ यदि तू उसको अपने मन में रखे, और वे सब तेरे मूँह से निकला भी करें, तो यह मध्यभावनी बात होगी। १८ मैंने आज इसलिए ये बातें तुझको बताई हैं, कि तेरा भरोसा यहोवा पर हो। १९ मैं बहुत दिनों से तेरे हित के उपदेश और ज्ञान की बातें लिखता आया हूँ, २० कि मैं तुझे सत्य वचनों का निश्चय करा दूँ, जिससे जो तुझे काम में लगाएँ, उनको सच्चा उत्तर दे सके। २१ कंगाल पर इस कारण अंधेर न करना कि वह कंगाल है, और न दीन जन को कच्चरी में पीसना; २२ क्योंकि यहोवा उनका मुकदमा लडेगा, और जो लोग उनका धन हर लेते हैं, उनका प्राण भी वह हर लेगा। २३ क्रोधी मनुष्य का मित्र न होना, और झट क्रोध करनेवाले के संग न चलना, २४ कहीं ऐसा न हो कि तू उसकी चाल सीधे, और तेरा प्राण फंदे में फँस जाए। २५ जो लोग हाथ पर हाथ मारते हैं, और कर्जदार के उत्तरदायी होते हैं, उम्में तू न होना। २६ यदि तेरे पास भुगतान करने के साधन की कमी हो, तो क्यों न साहकार तेरे नीचे से खाट खींच ले जाए? २७ जो सीमा तेरे पुरावाओं ने बाँधी हो, उस पुरानी सीमा को न बढ़ाना। २८ यदि तू ऐसा पृथु देखे जो काम-काज में निपुण हो, तो वह राजाओं के सम्मुख खड़ा होगा; छोटे लोगों के सम्मुख नहीं।

२३ जब तू किसी हाकिम के संग भोजन करने को बैठे, तब इस बात को मन

लगाकर सोचना कि मेरे सामने कौन है? १ और यदि तू अधिक खनेवाला हो, तो थोड़ा खाकर भूखा उठ जाना। २ उसकी स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की लालसा न करना, क्योंकि वह थोखे का भोजन है। ३ धनी होने के लिये परिश्रम न करना; अपनी समझ का भरोसा छोड़ना। ४ जब तू अपनी दृष्टि धन पर लगाएगा, वह चला जाएगा, वह उकाब पक्षी के समान पंख लगाकर, निःसन्देह आकाश की ओर उड़ जाएगा। ५ जो डाह से देखता है, उसकी रोटी न खाना, और न उसकी स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की लालसा करना; ६ क्योंकि वह ऐसा व्यक्ति है, जो भोजन के कीमत की गणना करता है। वह तुझ से कहता तो है, खा और पी, परन्तु उसका मन तुझ से लगा नहीं है। ७ जो कौर तुने खाया हो, उसे उगलना पड़ेगा, और तू अपनी मीठी बातों का फल खोएगा। ८ मूर्ख के सामने न बोलना, नहीं तो वह तेरे बुद्धि के वचनों को तुच्छ जानेगा। ९ पुरानी सीमाओं को न बढ़ाना, और न अनाथों के खेत में घुसना; १० क्योंकि उनका छुड़नेवाला सामर्थी है; उनका मुकदमा तेरे संग वही लडेगा। ११ अपना हृदय शिक्षा की ओर, और अपने कान ज्ञान की बातों की ओर लगाना। १२ लड़के की ताड़ना न छोड़ना; क्योंकि यदि तू उसको

छड़ी से मारे, तो वह न मरेगा। १४ तू उसको छड़ी से मारकर उसका प्राण अंगोले से बचाएगा। (Sheol h7585) १५ है मेरे पुत्र, यदि तू बुद्धिमान हो, तो मेरा ही मन आनन्दित होगा। १६ और जब तू सीधी बातें बोले, तब मेरा मन प्रसन्न होगा। १७ तू पापियों के विषय मन में डाह न करना, दिन भर यहोवा का भय मानते रहना। १८ क्योंकि अन्त में फल होगा, और तेरी आशा न टौटेगी। १९ है मेरे पुत्र, तू सुनकर बुद्धिमान हो, और अपना मन सुमार्ग में सीधा चला। २० दाखमधु के पिनेवालों में न होना, न मौस के अधिक खानेवालों की संगति करना; २१ क्योंकि पियकड़ और पेट दरिद्र हो जाएँगे, और उनका कोथ उन्हें निश्चिड़ पहनाएगी। २२ अपने जन्मनेवालों पिता की सुनना, और जब तेरी माता बुद्धिया हो जाए, तब भी उसे तुच्छ न जानना। २३ सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं; और बुद्धि और शिक्षा और समझ को भी मोल लेना। २४ धर्मी का पिता बहुत मग्न होता है; और बुद्धिमान का जन्मनेवाला उसके कारण आनन्दित होता है। २५ तेरे कारण तेरे माता-पिता आनन्दित और तेरी जननी मग्न हो। २६ है मेरे पुत्र, अपना मन मेरी ओर लगा, और तेरी दृष्टि मेरे चाल चलन पर लगी रहे। २७ वेश्या गहरा गङ्गा ठहरती है; और पराई ज़ी सकेत कुएँ के समान है। २८ वह डाकू के समान घात लगाती है, और बहुत से मनुष्यों को विश्वासघाती बना देती है। २९ कौन कहता है, हाय? कौन कहता है, हाय, हाय? कौन झगड़े-रगड़े में फँसता है? कौन बक-बक करता है? किसके अकारण घाव होते हैं? किसकी आँखें लाल हो जाती हैं? ३० उनकी जो दाखमधु देर तक पीते हैं, और जो मसाला मिला हआ दाखमधु ढँढँने को जाते हैं। ३१ जब दाखमधु लाल दिखाइ देता है, और करोरे में उसका सुन्दर रंग होता है, और जब वह धार के साथ उण्डेला जाता है, तब उसको न देखना। ३२ क्योंकि अन्त में वह सर्प के समान डसता है, और करैत के समान काटता है। ३३ तू विचित्र बस्तुएँ देखेगा, और उलटी-सीधी बातें बकता रहेगा। ३४ और तू समुद्र के बीच लेटेवाले या मस्तल के सिरे पर सोनेवाले के समान रहेगा। ३५ तू कहेगा कि मैंने मार तो खाई, परन्तु दुःखित न हुआ; मैं पिट तो गया, परन्तु मुझे कुछ सुधि न थी। मैं होश में कब आऊँ? मैं तो फिर मदिरा ढँढँवा।

२४ बुरे लोगों के विषय में डाह न करना, और न उसकी संगति की चाह रखना; २ क्योंकि वे उपद्रव सोचते रहते हैं, और उनके मुँह से दृश्यता की बात निकलती है। ३ यह बुद्धि से बनता है, और समझ के द्वारा स्थिर होता है। ४ ज्ञान के द्वारा कोठरियाँ सब प्रकार की बहुमूल्य और मनोरंग वस्तुओं से भर जाती हैं। ५ वीर पुष्प बलवान होता है, परन्तु ज्ञानी व्यक्ति बलवान पुष्प से बेहतर है। ६ इसलिए जब तू युद्ध करे, तब युक्ति के साथ करना, विजय बहुत से मंत्रियों के द्वारा प्राप्त होती है। ७ बुद्धि इन्हें ऊँचे पर है कि मूर्ख उसे पा नहीं सकता; वह सभा में अपना मुँह खोल नहीं सकता। ८ जो सोच विचार के बुराई करता है, उसको लोग दृष्ट करते हैं। ९ मर्खता का विचार भी पाप है, और ठाठा करनेवाले से मनुष्य धृणा करते हैं। १० यदि तू विपति के समय साहस छोड़ दे, तो तेरी शक्ति बहुत कम है। ११ जो मार डाले जाने के लिये घसीट जाते हैं उनको छुड़ा; और जो घात किए जाने को हैं उन्हें रोक। १२ यदि तू कहे, कि देखै मैं इसको जानता न था, तो क्या मन का ज़ाँचनेवाला इसे नहीं समझता? और क्या तेरे प्राणों का रक्षक इसे नहीं जानता? और क्या वह हर एक मनुष्य के काम का फल उसे न देगा? १३ है मेरे पुत्र तू मधु खा, क्योंकि वह अच्छा है, और मधु का छता भी, क्योंकि वह तेरे मुँह में मीठा लगेगा। १४ इसी रीति बुद्धि भी तुझे वैसी ही मीठी लगेगी; यदि तू उसे पा जाए तो अन्त में उसका फल भी मिलेगा, और तेरी आशा न टौटेगी। १५ तू दृष्ट के समान धर्मी के निवास को नष्ट करने के लिये घात में न बैठ; और उसके क्षिवामस्थान को मत उजाड़; १६ क्योंकि धर्मी चाहे सात बार गिरे तो भी उठ खड़ा होता है; परन्तु

दृष्ट लोग विपति में गिरकर पड़े ही रहते हैं। १७ जब तेरा शत्रु गिर जाए तब तू आनन्दित न हो, और जब वह ठोकर खाए, तब तेरा मन मग्न न हो। १८ कहीं ऐसा न हो कि यहोवा यह देखकर अप्रसन्न हो और अपना क्रोध उस पर से हटा ले। १९ कुक्यियों के कारण मत कुढ़, दृष्ट लोगों के कारण डाह न कर; २० क्योंकि बुरे मनुष्य को अन्त में कुछ फल न मिलेगा, दृष्टों का दीपक बुझा दिया जाएगा। २१ है मेरे पुत्र, यहोवा और राजा दोनों का भय मानना; और उनके विस्तु बलवा करनेवालों के साथ न मिलना; २२ क्योंकि उन पर विपति अचानक आ पड़ेगी, और दोनों की ओर से आनेवाली विपति को कौन जानता है? २३ बुद्धिमानों के बचन यह भी है। न्याय में पक्षपात करना, किसी भी रीति से अच्छा नहीं। २४ जो दृष्ट से कहता है कि तू निर्दोष है, उसको तो हर समाज के लोग शाश्वत देते और जाति-जाति के लोग धमकी देते हैं; २५ परन्तु जो लोग दृष्ट को डॉंटरे हैं उनका भला होता है, और उत्तम से उत्तम आशीर्वाद उन पर आता है। २६ जो सीधा उत्तर देता है, वह होठों को चूमता है। २७ अपना बाहर का काम-काज ठीक करना, और अपने लिए खेत को भी तैयार कर लेना; उसके बाद अपना घर बनाना। २८ व्यर्थ अपने पड़ोसी के विस्तु साक्षी न देना, और न उसको फुसलाना। २९ मत कह, “जैसा उसने मेरे साथ किया वैसा ही मैं भी उसके साथ करूँगा”; और उसको उसके काम के अनुसार पलटा दूँगा। ३० मैं मैं अलासी के खेत के पास से और निर्बुद्धि मनुष्य की दाख की बारी के पास होकर जाता था, ३१ तो क्या देखा, कि वहाँ सब कहीं कर्तीले पेड़ भर गए हैं; और वह बिच्छू पौधों से ढँक गई है, और उसके पत्थर का बाड़ा गिर गया है। ३२ तब मैंने देखा और उस पर ध्यानपूर्वक विचार किया; हाँ मैंने देखकर शिक्षा प्राप्त की। ३३ छोटी सी नीद, एक और झपकी, थोड़ी देर हाथ पर हाथ रख के लेटे रहना, ३४ तब तेरा कंगालपन डाकू के समान, और तेरी घटी हथियार-बन्द के समान आ पड़ेगी।

२५ सुलैमान के नीतिवचन ये भी हैं, जिन्हें यहदा के राजा हिजकियाह के जनों ने नकल की थी। १ परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने में है परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात के पता लगाने से होती है। २ स्वर्ग की ऊँचाई और पृथ्वी की गहराई और राजाओं का मन, इन तीनों का अन्त नहीं मिलता। ३ चाँदी में से मैल टूर करने पर वह सुनार के लिये काम की हो जाती है। ४ वैसे ही, राजा के सामने से दृष्ट को निकाल देने पर उसकी गढ़ी धर्म के कारण स्थिर होगी। ५ राजा के सामने अपनी बड़ाई न करना और बड़े लोगों के स्थान में खड़ा न होना; ६ उनके लिए तुझे से यह कहना बेहतर है कि, “इधर मेरा पास आकर बैठ” ताकि प्रधानों के सम्मुख तुझे अपमानित न होना पड़े। ७ जो कुछ तूने देखा है, वह जल्दी से अदालत में न ला, अन्त में जब तेरा पड़ोसी तुझे शमिदा करेगा तो तू क्या करेगा? ८ अपने पड़ोसी के साथ वाद-विवाद एकान्त में करना और पराए का भेद न खोलना; ९ ऐसा न हो कि सुनेवाला तेरी भी निन्दा करे, और तेरी निन्दा बनी रहे। १० जैसे चाँदी की टोकरियों में सोने के सेब हों, वैसे ही ठीक समय पर कहा हुआ बचन होता है। ११ जैसे सोने का नथ्य और कुन्दन का जेवर अच्छा लगता है, वैसे ही मानेवाले के कान में बुद्धिमान की डॉंट भी अच्छी लगती है। १२ जैसे कटनी के समय बर्फ की ठण्ड से, वैसा ही विचासयोग दूर से भी, भेजनेवालों का जी ठंडा होता है। १३ जैसे बादल और पवन बिना बृशि लिराप्प होते हैं, वैसे ही झट-मृष्ट दान देनेवाले का बड़ाई मारना होता है। १४ धीरज धरने से न्यायी मनाया जाता है, और कोमल वचन हड्डी की भी तोड़ डालता है। १५ क्या तूने मधु पाया? तो जितना तेरे लिये ठीक हो उतना ही खाना, ऐसा न हो कि अधिक खाकर उसे उगल दे। १६ अपने पड़ोसी के घर में बाग्मी जाने से अपने पाँव को रोक, ऐसा न हो कि वह खिन्न होकर धृणा करने लगे। १७ जो किसी के विस्तु झूठी साक्षी देता

है, वह मानो हथौड़ा और तलवार और पैना तीर है। १९ विपत्ति के समय विश्वासयाती का भरोसा, टूटे हुए दाँत या उखड़े पॉक के समान है। २० जैसा जाड़े के दिनों में किसी का बच उत्तराना या सज्जी पर सिरका डालना होता है, वैसा ही उदास मनवाले के सामने गीत गाना होता है। २१ यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसको रोटी खिलाना; और यदि वह प्यासा हो तो उसे पानी पिलाना; २२ क्योंकि इस रीति तु उसके सिर पर अंगारे डालेगा, और यहावा तुझे इसका फल देगा। २३ जैसे उत्तरी वायु वर्षा को लाती है, वैसे ही चुगली करने से मुख पर क्रोध छा जाता है। २४ लब्जे चौडे घर में झगड़ालू पटी के संग रहने से छत के कोने पर रहना उत्तम है। २५ दूर देश से श्वभ सन्देश, प्यासे के लिए ठंडे पानी के समान है। २६ जो धर्मी दृढ़ के कहने में आता है, वह खराब जल-स्रोत और बिंगड़े हुए कुण्ड के समान है। २७ जैसे बहत मधु खाना अच्छा नहीं, वैसे ही आत्मप्रशंसा करना भी अच्छा नहीं। २८ जिसकी आत्मा वश में नहीं वह ऐसे नगर के समान है जिसकी शहरपनाह धेराव करके तोड़ दी गई हो।

२६ जैसा धूपकाल में हिम का, या कटनी के समय वर्षा होना, वैसा ही मूर्ख की महिमा भी ठीक नहीं होती। १ जैसे गौरीया घूमते-घूमते और शपबनी उड़ते-उड़ते नहीं बैठती, वैसे ही व्यर्थ श्वाप नहीं पड़ता। २ घोड़े के लिये कोडा, गदहे के लिये लगाम, और मूर्खों की पीठ के लिये छड़ी है। ३ मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर न देना ऐसा न हो कि तु भी उसके तुल्य ठहरे। ४ मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर देना, ऐसा न हो कि वह अपनी दृष्टि में बुद्धिमान ठहरे। ५ जो मूर्ख के हाथ से सन्देश भेजता है, वह मानो अपने पाँव में कुल्हाड़ा मारता और विष पीता है। ६ जैसे लँगड़े के पाँव लड्डुखड़ते हैं, वैसे ही मूर्खों के मुँह में नीतिवचन होता है। ७ जैसे पश्चिमों के ढेर में मणियों की थेली, वैसे ही मूर्खों को महिमा देनी होती है। ८ जैसे मतवाले के हाथ में कँटा गड़ता है, वैसे ही मूर्खों का कहा हुआ नीतिवचन भी दुःखदार होता है। ९ जैसा कोई तीरन्दाज जो अकारण सब को मारता हो, वैसा ही मूर्खों या राहगीरों का माजदीरी में लगानेवाला भी होता है। १० जैसे कूता अपनी छाँट को चाटता है, वैसे ही मूर्ख अपनी मूर्खता को दोहराता है। ११ यदि तू ऐसा मनुष्य देखे जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान बनता हो, तो उससे अधिक आशा मूर्ख ही से है। १२ आलसी कहता है, “मार्ग में सिंह है, चौक में सिंह है!” १३ जैसे किवाड़ अपनी चूल पर धूमता है, वैसे ही आलसी अपनी खाट पर करवटें लेता है। १४ आलसी अपना हाथ थाली में तो डालता है, परन्तु आलस्य के कारण कौर मुँह तक नहीं उठाता। १५ आलसी अपने को ठीक उत्तर देनेवाले सात मनुष्यों से भी अधिक बुद्धिमान समझता है। १६ जो मार्ग पर चलते हुए पराएँ झगड़े में विघ्न डालता है, वह उसके समान है, जो कृते को कानों से पकड़ता है। १७ जैसा एक पागल जो जहरीले तीर मारता हो, १८ वैसा ही वह भी होता है जो अपने पडोसी को धोखा देकर कहता है, “मैं तो मजाक कर रहा था!” १९ जैसे लकड़ी न होने से आग बुझती है, उसी प्रकार जहाँ कानाफसी करनेवाला नहीं, वहाँ झगड़ा मिट जाता है। २० जैसा अगारों में कोयला और आग में लकड़ी होती है, वैसा ही झगड़ा बढ़ाने के लिये झगड़ालू होता है। २१ कानाफसी करनेवाले के चन, स्वादिष्ट भोजन के समान भीतर उत्तर जाते हैं। २२ जैसा कोई चाँदी का पानी चढ़ाया हुआ मिट्टी का बर्तन हो, वैसा ही बूझ मनवाले के प्रेम भेर चवन होते हैं। २३ जो बैरी बात से तो अपने को भोला बनाता है, परन्तु अपने भीतर छल रखता है, २४ उसकी मीठी-मीठी बात पर विश्वास न करना, क्योंकि उसके मन में सात घिनौनी वस्तुएँ रहती हैं; २५ चाहे उसका भेर छल के कारण छिप भी जाए, तो भी उसकी बुराईं सभा के बीच प्रगत हो जाएगी। २६ जो गङ्गा खोदे, वही उसी में पिरेगा, और जो पथर लुटकाए, वह उलटकर उसी पर लुटक आएगा। २७ जिसने किसी को झाड़ी

बातों से घायल किया हो वह उससे भेर रखता है, और चिकनी चुपड़ी बात बोलनेवाला विनाश का कारण होता है।

२७ कल के दिन के विषय में डींग मत मार, क्योंकि तू नहीं जानता कि दिन भर में क्या होगा। १ तेरी प्रशंसा और लोग करें तो करें, परन्तु तू आप न करना; दूसरा तुझे सराहे तो सराहे, परन्तु तू अपनी सराहना न करना। २ पथर तो भारी है और रेत में बोझ है, परन्तु मूर्ख का क्रोध, उन दोनों से भी भारी है। ३ क्रोध की क्रता और प्रकाप की बाढ़, परन्तु ईर्ष्या के सामने कौन ठहर सकता है? ४ खुली हुई डॉट गुम प्रेम से उत्तम है। ५ जो घाव मित्र के हाथ से लगे वह विश्वासयोग है परन्तु बैरी अधिक चुम्बन करता है। ६ सन्तुष्ट होने पर मधु का छता भी फीका लगता है, परन्तु भूखे को सब कड़वी वस्तुएँ भी मीठी जान पड़ती हैं। ७ स्थान छोड़कर धूमनेवाला मनुष्य उस चिंडिया के समान है, जो धोसला छोड़कर उड़ती फिरती है। ८ जैसे तेल और सुन्ध से, वैसे ही मित्र के हृदय की मनोहर सम्पत्ति से मन आनन्दित होता है। ९ जो तेरा और तेरे पिता का भी मित्र हो उसे न छोड़ना, और अपनी विपत्ति के दिन, अपने भाई के घर न जाना। प्रेम करनेवाला पडोसी, दूर रहनेवाले भाई से कहीं उत्तम है। १० हे मेरे पुत्र, बुद्धिमान होकर मेरा मन आनन्दित कर, तब मैं अपने निन्दा करनेवाले को उत्तर दे सकँगा। ११ बुद्धिमान मनुष्य विपत्ति को आती देखकर छिप जाता है; परन्तु भोले लोग आगे बढ़े चले जाते और हानि उठाते हैं। १२ जो पराएँ का उत्तरदायी हो उसका कपड़ा, और जो अनजान का उत्तरदायी हो उससे बन्धक की वस्तु ले ले। १३ जो भोर को उठकर अपने पडोसी को ऊँचे शब्द से आशीर्वाद देता है, उसके लिये वह श्वाप पिना जाता है। १४ झाड़ी के दिन पानी का लगातार टपकना, और झगड़ालू पटी दोनों एक से हैं; १५ जो उसको रोक रखे, वह वायु को भी रोक रखेगा और दाहिने हाथ से वह तेल पकड़ेगा। १६ जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है। १७ जो अंजीके के पेड़ की रक्षा करता है वह उसका फल खाता है, इसी रीति से जो अपने स्वामी की सेवा करता उसकी महिमा होती है। १८ जैसे जल में मुख की परालाई मुख को प्रगट करती है, वैसे ही मनुष्य का मन मनुष्य को प्रगट करती है। १९ जैसे अधोलोक और विनाशलोक, वैसे ही मनुष्य की आँखें भी तुम नहीं होती। (Sheol h7585) २० जैसे चाँदी के लिये कुठाटी और सोने के लिये भासी हैं, वैसे ही मनुष्य के लिये उसकी प्रशंसा है। २१ चाहे तू मूर्ख को आनज के बीच ओखली में डालकर मस्तूल से करें, तो भी उसकी मूर्खता नहीं जाने की। २२ अपनी भेड़-बकरियों की दशा भली भाँति मन लगाकर जान ले, और अपने सब पशुओं के झूण्डों की देख-भाल उचित रीति से कर; २३ क्योंकि सम्पत्ति सदा नहीं ठहरती; और क्या राजमुकुट पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहता है? २४ कटी हुई घास उठा ली जाती और नई घास दिखाई देती है और पहाड़ों की हरियाली काटकर इकट्ठी की जाती है; २५ तब भेड़ों के बच्चे तेरे वस्त्र के लिये होंगे, और बकरियों के द्वारा खेत का मूल्य दिया जाएगा; २६ और बकरियों का इतना दूध होगा कि तू अपने घराने समेत पेट भरकर पिया करेगा, और तेरी दासियों का भी जीवन निर्वाह होता रहेगा।

२८ दुष्ट लोग जब कोई पिछा नहीं करता तब भी भागते हैं, परन्तु धर्मी लोग जवान सिंहों के समान निडर रहते हैं। १ देश में पाप होने के कारण उसके हाकिम बदलते जाते हैं; परन्तु समझदार और ज्ञानी मनुष्य के द्वारा सुप्रबन्ध बहत दिन के लिये बना रहेगा। २ जो निर्बन्ध पुष्प कंगालों पर अंधेर करता है, वह ऐसी भारी वर्षा के समान है जो कुछ भोजनवस्तु नहीं छोड़ती। ३ जो लोग व्यवस्था को छोड़ देते हैं, वे दुष्ट की प्रशंसा करते हैं, परन्तु व्यवस्था पर

चलनेवाले उनका विरोध करते हैं। ५ बुरे लोग न्याय को नहीं समझ सकते, परन्तु यहोवा को दुँड़नेवाले सब कुछ समझते हैं। ६ टेढ़ी चाल चलनेवाले धर्मी मनुष्य से खराई से चलनेवाला निर्धन पुष्प ही उत्तम है। ७ जो व्यवस्था का पालन करता वह समझदार सुपूर्ण होता है, परन्तु उड़ाऊ का संगी अपने पिता का मुँह काला करता है। ८ जो अपना धन ब्याज से बढ़ाता है, वह उसके लिये बटोरता है जो कंगालों पर अनुग्रह करता है। ९ जो अपना कान व्यवस्था सुनने से मोड़ लेता है, उसकी प्रार्थना धृष्टि ठहरती है। १० जो सीधे लोगों को भटकाकर कुर्मार्ग में ले जाता है वह अपने खेदे हुए गड़े में आप ही गिरता है; परन्तु खेर लोग कल्याण के भासी होते हैं। ११ धर्मी पुष्प अपनी दृष्टि में बुद्धिमान होता है, परन्तु समझदार कंगाल उसका मर्म समझ लेता है। १२ जब धर्मी लोग जयवन्त होते हैं, तब बड़ी शोभा होती है; परन्तु जब दृष्टि लोग प्रबल होते हैं, तब मनुष्य अपने आपको छिपाता है। १३ जो अपने अपाराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जाएगी। १४ जो मनुष्य निरन्तर प्रभु का भय मानता रहता है वह धन्य है; परन्तु जो अपना मन कठोर कर लेता है वह विपिति में पड़ता है। १५ कंगाल प्रजा पर प्रभुता करनेवाला दृष्टि, गरजनेवाले सिंह और घृमनेवाले रिछ के समान है। १६ वह शासक जिसमें समझ की कमी हो, वह बहुत अंधेरे करता है; और जो लालच का बैरी होता है वह दीर्घायु होता है। १७ जो किसी प्राणी की हत्या का अपराधी हो, वह भागकर गड़े में गिरेगा; कोई उसको न रोकेगा। १८ जो सिधाई से चलता है वह बचाया जाता है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है वह अचानक गिर पड़ता है। १९ जो अपनी भूमि को जोता-बोया करता है, उसका तो पेट भरता है, परन्तु जो निकम्मे लोगों की संगति करता है वह कंगालपन से धिरा रहता है। २० सच्चे मनुष्य पर बहुत आशीर्वाद होते रहते हैं, परन्तु जो धनी होने में उतावली करता है, वह निर्दोष नहीं ठहरता। २१ पक्षपात करना अच्छा नहीं, और यह भी अच्छा नहीं कि रोटी के एक टुकड़े के लिए मनुष्य अपाराध करे। २२ लोभी जन धन प्राप्त करने में उतावली करता है, और नहीं जानता कि वह घटी में पड़ेगा। २३ जो किसी मनुष्य को डॉटांता है वह अन्त में चापतली करनेवाले से अधिक प्यारा हो जाता है। २४ जो अपने माँ-बाप को लूटकर कहता है कि कुछ अपराध नहीं, वह नाश करनेवाले का संगी ठहरता है। २५ लालची मनुष्य झङ्गडा मचाता है, और जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह हष्ट-पृष्ठ हो जाता है। २६ जो अपने ऊर भरोसा रखता है, वह मूर्ख है; और जो बुद्धि से चलता है, वह बचता है। २७ जो निर्धन को दान देता है उसे घटी नहीं होती, परन्तु जो उससे दृष्टि फेर लेता है वह श्राप पर श्राप पाता है। २८ जब दृष्टि लोग प्रबल होते हैं तब तो मनुष्य ढूँढ़े नहीं मिलते, परन्तु जब वे नाश हो जाते हैं, तब धर्मी उन्नति करते हैं।

२९ जो बार बार डॉटे जाने पर भी हठ करता है, वह अचानक नष्ट हो जाएगा और उसका कोई भी उपाय काम न आएगा। ३ जब धर्मी लोग शिरोमणि होते हैं, तब प्रजा अनानन्दि होती है; परन्तु जब दृष्टि प्रभुता करता है तब प्रजा हाय-हाय करती है। ४ जो बुद्धि से प्रतीत रखता है, वह अपने पिता को आनन्दित करता है, परन्तु वेश्याओं की संगति करनेवाला धन को उड़ा देता है। ५ राजा न्याय से देश को स्थिर करता है, परन्तु जो बहुत धूस लेता है उसको उलट देता है। ६ जो पुष्प किसी से चिकनी चुपड़ी बातें करता है, वह उसके फैरों के लिये जाल लगाता है। ७ बुरे मनुष्य का अपराध उसके लिए फंदा होता है, परन्तु धर्मी आनन्दित होकर जयजयकर करता है। ८ धर्मी पुष्प कंगालों के मुकुदमे में मन लगाता है; परन्तु दृष्टि जन उसे जानने की समझ नहीं रखता। ९ ठाठ करनेवाले लोग नगर को फँक देते हैं, परन्तु बुद्धिमान लोग क्रोध को ठंडा करते

हैं। १० जब बुद्धिमान मूर्ख के साथ बाद-विवाद करता है, तब वह मूर्ख क्रोधित होता और ठाठ करता है, और वहाँ शान्ति नहीं रहती। ११ हत्यारे लोग खेरे पुष्प से बैर रखते हैं, और सीधे लोगों के प्राण की खोज करते हैं। १२ मूर्ख अपने सारे मन की बात खोल देता है, परन्तु बुद्धिमान अपने मन को रोकता, और शान्त कर देता है। १३ जब हाकिम झटी बात की ओर कान लगाता है, तब उसके सब सेवक दृष्टि हो जाते हैं। १४ निर्धन और अधेर करनेवाले व्यक्तियों में एक समानता है, यहोवा दोनों की आँखों में ज्योति देता है। १५ जो राजा कंगालों का न्याय सच्चाई से चुकाता है, उसकी गदी गदैव स्थिर रहती है। १६ छड़ी और डॉटे से बुद्धि प्राप्त होती है, परन्तु जो लड़का ऐसे ही छोड़ा जाता है वह अपनी माता की लज्जा का कारण होता है। १७ दुर्दोषों के बढ़ने से अपराध भी बढ़ता है; परन्तु अन्त में धर्मी लोग उनका गिरना देख लेते हैं। १८ अपने बेटे की ताड़ना कर, तब उससे तुझे चैन मिलेगा; और तेरा मन सुखी हो जाएगा। १९ जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुशा हो जाते हैं, परन्तु जो व्यवस्था को मानता है वह धन्य होता है। २० दास बातों ही की द्वारा सुधारा नहीं जाता, क्योंकि वह समझकर भी नहीं मानता। २१ क्या त बातें करने में उतावली करनेवाले मनुष्य को देखता है? उससे अधिक तो मूर्ख ही से आशा है। २२ जो अपने दास को उसके लड़कपन से ही लाइ-लाइ-यार से पालता है, वह दास अन्त में उसका बेटा बन बैठता है। २३ क्रोध करनेवाला मनुष्य झङ्गडा मचाता है और अत्यन्त क्रोध करनेवाला अपराधी भी होता है। २४ मनुष्य को गर्व के कारण नीचा देखना पड़ता है, परन्तु नम्र आत्मावाला महिमा को अधिकारी होता है। २५ जो चोर की संगति करता है वह अपने प्रण का बैरी होता है; शपथ खाने पर भी वह बात को प्रगट नहीं करता। २६ मनुष्य का भय खाना फंदा हो जाता है, परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है उसका स्थान ऊँचा किया जाएगा। २७ हाकिम से भेंट करना बहुत लोग चाहते हैं, परन्तु मनुष्य का न्याय यहोवा ही करता है। २८ धर्मी लोग कुटिल मनुष्य से धृणा करते हैं और दृष्टि जन भी सीधी चाल चलनेवाले से धृणा करता है।

३० याके के पुत्र आगूर के प्रभावशाली वचन। उस पुष्प ने ईतीएल और उक्काल से यह कहा: १ निश्चय मैं पशु सरीखा हूँ, बरन् मनुष्य कहलाने के योग्य भी नहीं; और मनुष्य की समझ मुझ में नहीं है। २ न मैंने बुद्धि प्राप्त की है, और अन्त में चापतली मुझे मिला है। ३ कौन स्वर्ग में चढ़कर फिर उतर आया? किसने बायु को अपनी मृष्टी में बटोर रखा है? किसने महासागर को अपने बन्ध में बाँध लिया है? किसने पृथ्वी की सीमाओं को ठहराया है? उसका नाम क्या है? और उसके पुत्र का नाम क्या है? यदि तू जानता हो तो बता! ५ परमेश्वर का एक-एक वचन ताया हुआ है; वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है। ६ उसके वचनों में कुछ मत बढ़ा, ऐसा न हो कि वह तुझे डॉटे और तू झ़ता ठहरे। ७ मैंने तुझ से दो वर माँगे हैं, इसलिए मेरे मने से पहले उहें मुझे देने से मूँह न मोड़, अर्थात् व्यर्थ और झटी बात मुझसे दूर रख; मुझे न तो मिर्धन कर और न धनी बना; प्रतिदिन की रोटी मुझे खिलाया कर। ८ ऐसा न हो कि जब मेरा पेट भर जाए, तब मैं इन्कार करके कहूँ कि यहोवा कौन है? या निर्धन होकर चोरी करूँ, और परमेश्वर के नाम का अनादर करूँ। ९ किसी दास की, उसके स्वामी से चुगली न करना, ऐसा न हो कि वह तुझे श्राप दे, और तू दोषी ठहराया जाए। ११ ऐसे लोग हैं, जो अपने पिता को श्राप देते और अपनी माता को धन्य नहीं कहते। १२ वे ऐसे लोग हैं जो अपनी दृष्टि में शुद्ध हैं, परन्तु उनका मैल धोया नहीं गया। १३ एक पीढ़ी के लोग ऐसे हैं उनकी दृष्टि क्या ही धमण्ड से भरी रहती है, और उनकी आँखें कैसी चढ़ी हुई रहती हैं। १४ एक पीढ़ी के लोग ऐसे हैं, जिनके दाँत तलवार और उनकी दाढ़े छुरियाँ हैं,

जिससे वे दीन लोगों को पृथ्वी पर से, और दरिद्रों को मनुष्यों में से मिटा डालें। ५५ जैसे जोंक की दो बेटियाँ होती हैं, जो कहती हैं, “दे, दे,” वैसे ही तीन वस्तुएँ हैं, जो तम नहीं होती; वरन् चार हैं, जो कभी नहीं कहती, “बस।” ५६ अधोलोक और बाँझ की कोख, भूमि जो जल पी पीकर तम नहीं होती, और आग जो कभी नहीं कहती, ‘बस।’ (Sheol h7585) ५७ जिस आँख से कोई अपने पिता पर अनादर की दृष्टि करे, और अपमान के साथ अपनी माता की आज्ञा न माने, उस आँख को तराइ के कौवे खोद खोदकर निकालेंगे, और उकाब के बच्चे खा डालेंगे। ५८ तीन बातें मेरे लिये अधिक कठिन हैं, वरन् चार हैं, जो मेरी समझ से ऐसे हैं ५९ आकाश में उकाब परी का मार्ग, चट्ठान पर सर्प की चाल, समद्र में जहाज की चाल, और कन्या के संग पुम्प की चाल। ६० व्यभिचारिणी की चाल भी वैरी ही है; वह भोजन करके मुँह पोछती, और कहती है, मैंने कोई अनर्थ काम नहीं किया। ६१ तीन बातों के कारण पृथ्वी की पाँपती है; वरन् चार हैं, जो उससे सही नहीं जाती ६२ दास का राजा हो जाना, मूर्ख का पेट भरना ६३ यिनैनी झी का ब्याहा जाना, और दासी का अपनी स्वामिन की वारिस होना। ६४ पृथ्वी पर चार छोटे जन्तु हैं, जो अयनत बुद्धिमान हैं ६५ चीटियाँ निर्बल जाति तो हैं, परन्तु धूपकाल में अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं; ६६ चट्ठानी बिज्जू बलवन्त जाति नहीं, तो भी उनकी मौंदें पहाड़ों पर होती हैं; ६७ टिड्डियों के राजा तो नहीं होता, तो भी वे सब की सब दल बाँध बाँधकर चलती हैं; ६८ और छिपकली हाथ से पकड़ी तो जाती है, तो भी राजभवनों में रहती है। ६९ तीन सुन्दर चलनेवाले प्राणी हैं; वरन् चार हैं, जिनकी चाल सुन्दर है: ७० सिंह जो सब पशुओं में पराक्रमी है, और किसी के डर से नहीं हटता; ७१ शिकारी कुत्ता और बकरा, और अपनी सेना समेत राजा। ७२ यदि तुम अपनी बढ़ाइ करेने की मूर्खता की, या कोई बुरी युक्ति बाँधी हो, तो अपने मुँह पर हाथ रख। ७३ क्योंकि जैसे टूथ के मथने से मक्खन और नाक के मरोडने से लह निकलता है, वैसे ही क्रोध के भड़काने से झगड़ा उत्पन्न होता है।

३१ लम्एल राजा के प्रभावशाली वचन, जो उसकी माता ने उसे सिखाए। १ हे मेरे पुत्र, हे मेरे निज पुत्र! हे मेरी मन्त्रों के पुत्र! २ अपना बल छियों को न देना, न अपना जीवन उनके वश कर देना जो राजाओं का पौस्थ खा जाती हैं। ३ हे लम्एल, राजाओं को दाखमधु पीना शोभा नहीं देता, और मदिरा चाहना, रईसों को नहीं फबता; ४ ऐसा न हो कि वे पीकर व्यवस्था को भूत जाएँ और किनी दुःखी के हक को मरें। ५ मदिरा उसको पिलाओ जो मरने पर है, और दाखमधु उदास मनवालों को ही देना; ६ जिससे वे पीकर अपनी दरिद्रता को भूत जाएँ और अपने कठिन श्रम फिर स्मरण न करें। ७ गौणों के लिये अपना मुँह खोल, और सब अनाथों का न्याय उचित रीति से किया कर। ८ अपना मुँह खोल और धर्म से न्याय कर, और दीन दरिद्रों का न्याय कर। ९ भती पत्री कौन पा सकता है? क्योंकि उसका मूल्य मूँगों से भी बहुत अधिक है। १० उसके पति के मन में उसके प्रति विच्वास है, और उसे लाभ की घटी नहीं होती। ११ वह अपने जीवन के सोर दिनों में उससे बुरा नहीं, वरन् भला ही व्यवहार करती है। १२ वह ऊन और सन ढूँढ ढूँढकर, अपने हाथों से प्रसन्नता के साथ काम करती है। १३ वह व्यापार के जहाजों के समान अपनी भोजनवस्तुएँ दूर से माँगती है। १४ वह रात ही को उठ बैठती है, और अपने घराने को भोजन खिलाती है और अपनी दासियों को अलग-अलग काम देती है। १५ वह किसी खेत के विषय में सोच विचार करती है और उसे मोल ले लेती है; और अपने परिश्रम के फल से दाख की बारी लगाती है। १६ वह अपनी कमर को बल के फेटे से कसती है, और अपनी बाहों को ढूँढ बनाती

है। १७ वह परख लेती है कि मेरा व्यापार लाभदायक है। रात को उसका दिया नहीं बुझता। १८ वह अटेरन में हाथ लगाती है, और चरखा पकड़ती है। १९ वह दीन के लिये मुटी खोलती है, और दरिद्र को सम्भालने के लिए हाथ बढ़ाती है। २० वह अपने घराने के लिये हिम से नहीं डरती, क्योंकि उसके घर के सब लोग लाल कपड़े पहनते हैं। २१ जब उसका पति सभा में देश के पुनियों के संग बैठता है, तब उसका सम्मान होता है। २२ वह सन के बब्ल बनाकर बेचती है; और व्यापारी को कमरबन्द देती है। २३ वह बल और प्रताप का पहरावा पहने रहती है, और अनेकाले काल के विषय पर हँसती है। २४ वह बुद्धि की बात बोलती है, और उसके वचन कृपा की शिक्षा के अनुसार होते हैं। २५ वह अपने घराने के चाल चलन को ध्यान से देखती है, और अपनी रोटी बिना परिश्रम नहीं खाती। २६ उसके पुत्र उठ उठकर उसको धन्य कहते हैं, उनका पति भी उठकर उसकी ऐसी प्रशंसा करता है: २७ “बहुत सी छियों ने अच्छे-अच्छे काम तो किए हैं परन्तु तु उन सभी में श्रेष्ठ है।” २८ शोभा तो झूठी और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु जो झी यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी। २९ उसके हाथों के परिश्रम का फल उसे दो, और उसके कार्यों से सभा में उसकी प्रशंसा होगी।

सभोपदेशक

१ यस्तलेम के राजा, दाऊद के पुत्र और उपदेशक के बचन। २ उपदेशक का

यह बचन है, “व्यर्थ ही व्यर्थ, व्यर्थ ही व्यर्थ! सब कुछ व्यर्थ है।” ३ उस सब परिश्रम से जिसे मनुष्य सूर्य के नीचे करता है, उसको क्या लाभ प्राप्त होता है? ४ एक पीढ़ी जाती है, और दूसरी पीढ़ी आती है, परन्तु पृथ्वी सर्वदा बनी रहती है। ५ सूर्य उदय होकर अस्त भी होता है, और अपने उदय की दिशा को बेग से चला जाता है। ६ वायु दक्षिण की ओर बहती है, और उत्तर की ओर घूमती जाती है; वह घूमती और बहती रहती है, और अपनी परिधि में लैट आती है। ७ सब नदियाँ समुद्र में जा मिलती हैं, तो भी समुद्र भर नहीं जाता; जिस स्थान से नदियाँ निकलती हैं, उधर ही को वे फिर जाती हैं। ८ सब बातें परिश्रम से भरी हैं; मनुष्य इसका वर्णन नहीं कर सकता; न तो आँखें देखें से तृप्त होती हैं, और न कान सुनने से भरते हैं। ९ जो कुछ हुआ था, वही फिर होगा, और जो कुछ बन चुका है वही फिर बनाया जाएगा; और सूर्य के नीचे कोई बात नई नहीं है। १० क्या ऐसी कोई बात है जिसके विषय में लोग कह सके कि देख यह नई है? यह तो प्राचीन युगों में बहुत पहले से थी। ११ प्राचीनकाल की बातों का कुछ स्मरण नहीं रहा, और होनेवाली बातों का भी स्मरण उनके बाद होनेवालों को न रहेगा। १२ मैं उपदेशक यस्तलेम में इमाएल का राजा था। १३ मैंने अपना मन लगाया कि जो कुछ आकाश के नीचे किया जाता है, उसका भेद बुद्धि से सोच सोचकर मालूम करूँ; यह बड़े दुःख का काम है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये ठहराया है कि वे उसमें लगें। १४ मैंने उन सब कामों को देखा जो सूर्य के नीचे किए जाते हैं, देखो वे सब व्यर्थ और मानो वायु को पकड़ना है। १५ जो टेढ़ा है, वह सीधा नहीं हो सकता, और जितनी वस्तुओं में घटी है, वे गिनी नहीं जाती। १६ मैंने मन में कहा, “देख, जितने यस्तलेम में मुझसे पहले थे, उन सभी से मैंने बहुत अधिक बुद्धि प्राप्त की है; और मुझ को बहुत बुद्धि और ज्ञान मिल गया है।” १७ और मैंने अपना मन लगाया कि बुद्धि का भेद लौँ और बावलेपन और मूर्खता को भी जान लौँ। मुझे जान पड़ा कि यह भी वायु को पकड़ना है। १८ क्योंकि बहुत बुद्धि के साथ बहुत खेद भी होता है, और जो अपना ज्ञान बढ़ाता है वह अपना दुःख भी बढ़ाता है।

२ मैंने अपने मन से कहा, “चल, मैं उड़ाको आनन्द के द्वारा जाँचूँगा; इसलिए आनन्दित और मगान हो।” परन्तु देखो, यह भी व्यर्थ है। ३ मैंने हँसी के विषय में कहा, “यह तो बावलापन है,” और आनन्द के विषय में, “उससे क्या प्राप्त होता है?” ४ मैंने मन में सोना कि किस प्रकार से मेरी बुद्धि बनी रहे और मैं अपने प्राण को दाखमध्य पीने से किस प्रकार बहलाऊँ और कैसे मूर्खता को थामे रहें, जब तक मालूम न करूँ कि वह अच्छा काम कौन सा है जिसे मनुष्य अपने जीवन भर करता रहे। ५ मैंने बड़े-बड़े काम किए; मैंने अपने लिये घर बनवा लिए और अपने लिये दाख की बारियाँ लगवाईं, ६ मैंने अपने लिये बारियाँ और बाग लगवा लिए, और उम्मे भाँति-भाँति के फलाई वृक्ष लगाए। ७ मैंने अपने लिये कुण्ड खुदवा लिए कि उनसे वह वन सीचा जाए जिसमें बृक्षों को लगाया जाता था। ८ मैंने दास और दासियाँ मोल लीं, और मेरे घर में दास भी उत्पन्न हुए; और जितने मुझसे पहले यस्तलेम में थे उनसे कहीं अधिक गाय-बैल और भेड़-बकरियों का मैं स्वामी था। ९ मैंने चाँदी और सोना और राजाओं और प्रान्तों के बहुमूल्य पदार्थों का भी संग्रह किया; मैंने अपने लिये गायों और गायिकाओं को रखा, और बहुत सी कामिनियाँ भी, जिनसे मनुष्य सुख पाते हैं, अपनी कर ली। १० इस प्रकार मैं अपने से

पहले के सब यस्तलेमवासियों से अधिक महान और धनाढ़ी हो गया; तो भी मेरी बुद्धि ठिकाने रही। ११ और जितनी वस्तुओं को देखें की मैंने लालसा की, उन सभी को देखें से मैं न स्कू; मैंने अपना मन किसी प्रकार का आनन्द भोगें से न रोका क्योंकि मेरा मन मेरे सब परिश्रम के कारण आनन्दित हुआ; और मेरे सब परिश्रम से मुझे यही भाग मिला। १२ तब मैंने फिर से अपने हाथों के सब कामों को, और अपने सब परिश्रम को देखा, तो क्या देखा कि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है, और सूर्य के नीचे कोई लाभ नहीं। १३ फिर मैंने अपने मन को फेरा कि बुद्धि और बावलेपन और मूर्खता के कार्यों को देखें; क्योंकि जो मनुष्य राजा के पीछे आएगा, वह क्या करेगा? केवल वही जो होता चला आया है। १४ तब मैंने देखा कि उजियाला अधियारे से जितना उत्तम है, उतना बुद्धि भी मूर्खता से उत्तम है। १५ जो बुद्धिमान है, उसके सिर में आँखें रहती हैं, परन्तु मूर्ख अधियारे में चलता है; तो भी मैंने जान लिया कि दोनों की दशा एक सी होती है। १६ तब मैंने मन में कहा, “जैसी मूर्ख की दशा होगी, वैसी ही मेरी भी होगी; फिर मैं क्यों अधिक बुद्धिमान हुआ?” और मैंने मन में कहा, यह भी व्यर्थ ही है। १७ क्योंकि न तो बुद्धिमान का और न मूर्ख का स्मरण सर्वदा बना रहेगा, परन्तु भविष्य में सब कुछ भूला दिया जाएगा। बुद्धिमान कैसे मूर्ख के समान मरता है! १८ इसलिए मैंने अपने जीवन से धृणा की, क्योंकि जो काम सूर्य के नीचे किया जाता है मुझे बुरा मालूम हुआ; क्योंकि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है। १९ मैंने अपने सारे परिश्रम के प्रतिफल से जिसे मैंने सूर्य के नीचे किया था धृणा की, क्योंकि अवश्य है कि मैं उसका फल उस मनुष्य के लिये छोड़ जाऊँ जो मेरे बाद आएगा। २० यह कौन जानता है कि वह मनुष्य बुद्धिमान होगा या मूर्ख? तो भी सूर्य के नीचे जितना परिश्रम मैंने किया, और उसके लिये बुद्धि प्रयोग की उस सब का वही अधिकारी होगा। यह भी व्यर्थ ही है। २१ तब मैं अपने मन में उस सारे परिश्रम के विषय जो मैंने सूर्य के नीचे किया था निराश हुआ, २२ क्योंकि ऐसा मनुष्य भी है, जिसका कार्य परिश्रम और बुद्धि और ज्ञान से होता है और सफल भी होता है, तो भी उसको ऐसे मनुष्य के लिये छोड़ जाना पड़ता है, जिसने उसमें कुछ भी परिश्रम न किया हो। यह भी व्यर्थ और बहुत ही बुरा है। २३ मनुष्य जो सूर्य के नीचे मन लगा कर परिश्रम करता है उससे उसको क्या लाभ होता है? २४ उसके सब दिन तो दुःखों से भरे रहते हैं, और उसका काम खेद के साथ होता है; रात को भी उसका मन चैन नहीं पाता। यह भी व्यर्थ ही है। २५ मनुष्य के लिये खाने-पीने और परिश्रम करते हुए अपने जीव को सुर्खी रखने के सिवाय और कुछ भी अच्छा नहीं। मैंने देखा कि यह भी परमेश्वर की ओर से मिलता है। २६ क्योंकि खाने-पीने और सुख भोगने में उससे अधिक समर्थ कौन है? २७ जो मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा है, उसको वह बुद्धि और ज्ञान और आनन्द देता है, परन्तु पापी को वह दुःख भरा काम ही देता है कि वह उसको देने के लिये संचय करके ढेर लगाए जो परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा हो। यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है।

३ हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का, जो आकाश के नीचे होता है, एक समय है। ४ जन्म का समय, और मरण का भी समय; जोने का समय; और बोए हुए को उखाड़ने का भी समय है; ५ घाट करने का समय, और चांदा करने का भी समय; ६ दादे का समय, और बनाने का भी समय है; ७ रोने का समय, और हँसने का भी समय; छाती पीटने का समय, और नाचने का भी समय है; ८ पथर फेंकने का समय, और पथर बटोरने का भी समय; गले लगाने का समय, और गले लगाने से स्कने का भी समय है; ९ ढूँढ़ने का समय, और खो देने का भी समय; बचा रखने का समय, और फेंक देने का भी

समय है; ७ फाडने का समय, और सीने का भी समय; चुप रहने का समय, और बोलने का भी समय है; ८ प्रेम करने का समय, और बैर करने का भी समय; लड़ाई का समय, और मेल का भी समय है। ९ काम करनेवाले को अपने परिश्रम से क्या लाभ होता है? १० मैंने उस दुःख भेर काम को देखा है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये ठहराया है कि वे उसमें लगे रहें। ११ उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने-अपने समय पर वे सुदर्श होते हैं; फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादि-अनन्तकाल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तो भी जो काम परमेश्वर ने किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य समझ नहीं सकता। १२ मैंने जान लिया है कि मनुष्यों के लिये आनंद करने और जीवन भर भलाई करने के सिवाय, और कुछ भी अच्छा नहीं; १३ और यह भी परमेश्वर का दान है कि मनुष्य खाए-पीए और अपने सब परिश्रम में सुखी रहे। १४ मैं जानता हूँ कि जो कुछ परमेश्वर करता है वह सदा स्थिर रहेगा; न तो उसमें कुछ बढ़ाया जा सकता है और न कुछ घटाया जा सकता है; परमेश्वर ऐसा इसलिए करता है कि लोग उसका भय मानें। १५ जो कुछ हुआ वह इससे पहले भी हो चका; जो होनेवाला है, वह हो भी चका है; और परमेश्वर वीती हुई बात को फिर पूछता है। १६ फिर मैंने सूर्य के नीचे क्या देखा कि न्याय के स्थान में दुष्टा होती है, और धार्मिकता के स्थान में भी दुष्टा होती है। १७ मैंने मन में कहा, “परमेश्वर धर्मी और दुष्ट दोनों का न्याय करेगा,” क्योंकि उसके यहाँ एक-एक विषय और एक-एक काम का समय है। १८ मैंने मन में कहा, “यह इसलिए होता है कि परमेश्वर मनुष्यों को जँचे और कि वे देख सके कि वे पशु-समान हैं।” १९ क्योंकि जैसी मनुष्यों की वैसी ही पशुओं की भी दशा होती है, दोनों की वही दशा होती है, जैसे एक मरत वैसे ही दूसरा भी मरता है। सभी की व्यास एक सी है, और मनुष्य पशु से कुछ बढ़कर नहीं; सब कुछ व्यर्थ ही है। २० सब एक स्थान में जाते हैं; सब मिट्टी से बने हैं, और सब मिट्टी में फिर मिल जाते हैं। २१ क्या मनुष्य का प्राण ऊपर की ओर चढ़ता है और पशुओं का प्राण नीचे की ओर जाकर मिट्टी में मिल जाता है? यह कौन जानता है? २२ अतः मैंने यह देखा कि इससे अधिक कुछ अच्छा नहीं कि मनुष्य अपने कामों में आनंदित हो, क्योंकि उसका भाग यही है; कौन उसके पीछे होनेवाली बातों को देखने के लिये उसको लौटा लाएगा?

४ तब मैंने वह सब अंधेरे देखा जो सूर्य के नीचे होता है। और क्या देखा, कि अंधेरे सहनेवालों के आँसू बह रहे हैं, और उनको कोई शान्ति देनेवाला नहीं! अंधेरे करनेवालों के हाथ में शक्ति थी, परन्तु उनको कोई शान्ति देनेवाला नहीं था। ५ इसलिए मैंने मेरे हुओं को जो मर चुके हैं, उन जीवितों से जो अब तक जीवित है अधिक धन्य कहा; ६ वरन् उन दोनों से अधिक अच्छा वह है जो अब तक हुआ ही नहीं, न यह बुरे काम देखे जो सूर्य के नीचे होते हैं। ७ तब मैंने सब परिश्रम के काम और सब सफल कामों को देखा जो लोग अपने पड़ोसी से जलन के कारण करते हैं। यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है। ८ मूर्ख छाती पर हाथ रखे रहता और अपना मौस खाता है। ९ चैन के साथ एक मुर्छी उन दो मुर्छियों से अच्छा है, जिनके साथ परिश्रम और वायु को पकड़ना हो। १० फिर मैंने सूर्य के नीचे यह भी व्यर्थ बात देखी। ११ कोई अकेला रहता और उसका कोई नहीं है; न उसके बेटा है, न भाई है, तो भी उसके परिश्रम का अन्त नहीं होता; न उसकी आँखें धन से सन्तुष्ट होती हैं, और न वह कहता है, मैं किसके लिये परिश्रम करता और अपने जीवन को सुखरहित रखता हूँ? यह भी व्यर्थ और निरा दुःख भरा काम है। १२ एक से दो अच्छे हैं, क्योंकि उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है। १३ क्योंकि यदि उनमें से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा; परन्तु हाय उस पर जो अकेला

होकर गिरे और उसका कोई उठानेवाला न हो। १४ फिर यदि दो जन एक संग सोएं तो वे गम रहेंगे, परन्तु कोई अकेला कैसे गम हो सकता है? १५ यदि कोई अकेले पर प्रबल हो तो हो, परन्तु दो उसका सामाना कर सकेंगे। जो डोरी तीन तागे से बटी हो वह जल्दी नहीं टूटती। १६ बुद्धिमान लड़का दरिद्र होने पर भी ऐसे बढ़े और मर्ख राजा से अधिक उत्तम है जो फिर सम्मति ग्रहण न करे, १७ चाहे वह उसके राज्य में धनहीन उत्पन्न हुआ या बन्दीगृह से निकलकर राजा हुआ हो। १८ मैंने सब जीवितों को जो सूर्य के नीचे चलते फिरते हैं देखा कि वे उस दूसरे लड़के के संग हो लिये हैं जो उनका स्थान लेने के लिये खड़ा हुआ। १९ वे सब तोग अग्रिमत थे जिन पर वह प्रधान हुआ था। तो भी भविष्य में होनेवाले लोग उसके कारण आनंदित न होंगे। निःसन्देह यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है।

५ जब तू परमेश्वर के भवन में जाए, तब सावधानी से चलना; सुनने के लिये समीप जाना मूर्धा के बलिदान चढ़ाने से अच्छा है; क्योंकि वे नहीं जानते कि बुरा करते हैं। ६ बातें करने में उतावली न करना, और न अपने मन से कोई बात उतावली से परमेश्वर के सामने निकालना, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में है और तू पृथकी पर है; इसलिए तेरे बचन थोड़े ही हों। ७ क्योंकि जैसे कार्य की अधिकता के कारण स्वप्न देखा जाता है, वैसे ही बहुत सी बातों का बोलनेवाला मर्ख ठहरता है। ८ जब तू परमेश्वर के लिये मन्त्र माने, तब उसके पूरा करने में विलम्ब न करना; क्योंकि वह मूर्धा से प्रसन्न नहीं होता। जो मन्त्र तूने मानी हो उसे पूरी करना। ९ मन्त्र मानकर पूरी न करने से मन्त्र का न माना ही अच्छा है। १० कोई बचन कहकर अपने को पाप में न फँसाना, और न परमेश्वर के दूत के सामने कहना कि वह भल से हुआ; परमेश्वर क्यों तेरा बोल सुनकर कोहित हो, और तेरे हाथ के कार्यों को नष्ट करे? ११ क्योंकि स्वप्नों की अधिकता से व्यर्थ बातों की बहुतायत होती है; परन्तु तू परमेश्वर का भय मानना। १२ यदि तू किनी प्रान्त में निर्धनों पर अंधेरे और न्याय और धर्म को बिगड़ा देखे, तो इससे चकित न होना; क्योंकि एक अधिकारी से बड़ा दूसरा रहता है जिसे इन बातों की सुधि रहती है, और उनसे भी और अधिक बड़े रहते हैं। १३ भूमि की उपर सब के लिये है, वरन् खेती से राजा का भी काम निकलता है। १४ जो स्पर्ये से प्रीति रखता है वह स्पर्ये से तृप्त न होगा; और न जो बहुत धन से प्रीति रखता है, लाभ से यह भी व्यर्थ है। १५ जब सम्पत्ति बढ़ती है, तो उसके खानेवाले भी बढ़ते हैं, तब उसके स्वामी को इसे छोड़ और क्या लाभ होता है कि उस सम्पत्ति को अपनी आँखों से देखे? १६ परिश्रम करनेवाला चाहे थोड़ा खाए, या बहुत, तो भी उसकी नीद सुखदाई होती है; परन्तु धनी के धन बढ़ने के कारण उसको नीद नहीं आती। १७ मैंने सूर्य के नीचे एक बड़ी बुरी बला देखी है; अर्थात् वह धन जिसे उसके मालिक ने अपनी ही हानि के लिये रखा हो, १८ और वह धन से यह भी व्यर्थ है। १९ जब केवल इसके किसके खानेवाले भी बढ़ते हैं, तब उसके स्वामी को निकला वैसा ही लौट जाएगा; उसे उस व्यर्थ परिश्रम से और क्या लाभ है? २० जैसे बह माँ के पेट से निकला वैसा ही लौट जाएगा; नंगा ही, जैसा आया था, और अपने परिश्रम के बदले कुछ भी न पाएगा जिसे वह अपने हाथ में ले जा सके। २१ यह भी एक बड़ी बला है कि जैसा वह आया, ठीक वैसा ही वह जाएगा; उसे उस व्यर्थ परिश्रम से और क्या लाभ है? २२ केवल इसके किसके जीवन भर अंधकार में भोजन किया, और बहुत ही दुःखित और रोगी रहा और क्रोध भी करता रहा? २३ सुन, जो भली बात मैंने देखी है, वरन् जो उचित है, वह यह कि मनुष्य खाए और पीए और अपने परिश्रम से जो वह सूर्य के नीचे करता है, अपनी सारी आय भर जो परमेश्वर ने तेरे दी है, सुखी रहे क्योंकि उसका भाग यही है। २४ वरन् हर एक मनुष्य जिसे परमेश्वर ने

धन-सम्पत्ति दी हो, और उनसे आनन्द भोगने और उसमें से अपना भाग लेने और परिश्रम करते हुए आनन्द करने को शक्ति भी दी हो यह परमेश्वर का वरदान है। १० इस जीवन के दिन उसे बहुत स्मरण न रखेंगे, क्योंकि परमेश्वर उसकी सुन सुनकर उसके मन को आनन्दमय रखता है।

६ एक बुराई जो मैंने सूर्य के नीचे देखी है, वह मनुष्यों को बहुत भारी लगती है: ७ किसी मनुष्य को परमेश्वर धन-सम्पत्ति और प्रतिष्ठा यहाँ तक देता है कि जो कुछ उसका मन चाहता है उसे उसकी कुछ भी घटी नहीं होती, तो भी परमेश्वर उसको उसमें से खाने नहीं देता, कोई दूसरा ही उसे खाता है; यह व्यर्थ और भयानक दुःख है। ८ यदि किसी पुस्तक के सौ पुरु हों, और वह बहुत वर्ष जीवित रहे और उसकी आयु बढ़ जाए, परन्तु न उसका प्राण प्रसन्न रहे और न उसकी अनिम किया की जाए, तो मैं कहता हूँ कि ऐसे मनुष्य से अधूरे समय का जन्मा हुआ बच्चा उत्तम है। ९ क्योंकि वह व्यर्थ ही आया और अंदरॊ में चला गया, और उसका नाम भी अंदरॊ में छिप गया; १० और न सर्य को देखा, न किसी चीज को जाने पाया; तो भी इसको उस मनुष्य से अधिक चैन मिला। ११ हौं चाहे वह दो हजार वर्ष जीवित रहे, और कुछ सुख भोगने न पाए, तो उसे क्या? क्या सब के सब एक ही स्थान में नहीं जाते? १२ मनुष्य का सारा परिश्रम उसके पेट के लिये होता है तो भी उसका मन नहीं भरता। १३ जो बुद्धिमान है वह मर्ख से किस बात में बढ़कर है? और कंगाल जो यह जानता है कि इस जीवन में किस प्रकार से चलना चाहिये, वह भी उससे किस बात में बढ़कर है? १४ आँखों से देख लेना मन की चंचलता से उत्तम है: यह भी व्यर्थ और वायु को पकड़ना है। १५ जो कुछ हुआ है उसका नाम युग के आरम्भ से रखा गया है, और यह प्राट है कि वह आदमी है, कि वह उससे जो उससे अधिक शक्तिमान है झगड़ा नहीं कर सकता है। १६ बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनके कारण जीवन और भी व्यर्थ होता है तो फिर मनुष्य को क्या लाभ? १७ क्योंकि मनुष्य के क्षणिक व्यर्थ जीवन में जो वह परछाई के समान बिताता है कौन जानता है कि उसके लिये अच्छा क्या है? क्योंकि मनुष्य को कौन बता सकता है कि उसके बाद सूर्य के नीचे क्या होगा?

१८ अच्छा नाम अनमोल इन से और मृत्यु का दिन जन्म के दिन से उत्तम है।

१९ भोज के घर जाने से शोक ही के घर जाना उत्तम है, क्योंकि सब मनुष्यों का अन्त यही है, और जो जीवित है वह मन लगाकर इस पर सोचेगा। २० हँसी से खेद उत्तम है, क्योंकि मुँह पर के शोक से मन सुधरता है। २१ बुद्धिमानों का मन शोक करनेवालों के घर की ओर लगा रहता है परन्तु मर्खों का मन आनन्द करनेवालों के घर लगा रहता है। २२ मर्खों के गीत सुनने से बुद्धिमान की घुड़की सुना उत्तम है। २३ क्योंकि मर्ख की हँसी हाण्डी के नीचे जलते हुए कँटों ही चरचराहट के समान होती है; यह भी व्यर्थ है। २४ निवृत्य अंधेरे से बुद्धिमान बावला हो जाता है; और घृस से बुद्धि नाश होती है। २५ किसी काम के आरम्भ से उसका अन्त उत्तम है; और धीरजवन्त पुस्त अहंकारी से उत्तम है। २६ अपने मन में उतावली से क्रीधित न हो, क्योंकि क्रीध मर्खों ही के हृदय में रहता है। २७ यह न कहना, "बीते दिन इनसे क्यों उत्तम थे?" क्योंकि यह तू बुद्धिमानी से नहीं पृछता। २८ बुद्धि विरासत के साथ अच्छी होती है, बरन जीवित रहनेवालों के लिये लाभकारी है। २९ क्योंकि बुद्धि की आड़ स्थये की आड़ का काम देता है; परन्तु ज्ञान की श्रेष्ठता यह है कि बुद्धि से उसके रखनेवालों के प्राण की रक्षा होती है। ३० परमेश्वर के काम पर दृष्टि कर; जिस वस्तु को उसने टेढ़ा किया हो उसे कौन सीधा कर सकता है? ३१ सुख के दिन सुख मान, और दुःख के दिन सोच; क्योंकि परमेश्वर ने दोनों को एक ही संग रखा है, जिससे मनुष्य अपने बाद होनेवाली किसी बात को न समझ सके। ३२

अपने व्यर्थ जीवन में मैंने यह सब कुछ देखा है; कोई धर्मी अपने धार्मिकता का काम करते हुए नाश हो जाता है, और दुश्चुराई करते हुए दीर्घीया होता है। ३३ अपने को बहुत धर्मी न बना, और न अपने को अधिक बुद्धिमान बना; तू क्यों अपने ही नाश का कारण हो? ३४ अत्यन्त दुश्चुरी ही न बन, और न मर्खी हो; तू क्यों अपने समय से पहले मेरे? ३५ यह अच्छा है कि तू इस बात को पकड़ रहे; और उस बात पर से भी हाथ न उठाए; क्योंकि जो परमेश्वर का भय मानता है वह इन सब कठिनाइयों से पार हो जाएगा। ३६ बुद्धि ही से नगर के दस हाकिमों की अपेक्षा बुद्धिमान को अधिक सामर्थ्य प्राप्त होती है। ३७ निःसन्देह पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्मी मनुष्य नहीं जो भलाई ही करे और जिससे पाप न हुआ हो। ३८ जितनी बातें कही जाएँ सब पर कान न लगाना, ऐसा न हो कि तू सुने कि तेरा दास तुझी को श्राप देता है; ३९ क्योंकि तू आप जानता है कि तू भी बहुत बार औरें को श्राप दिया है। ४० यह सब मैंने बुद्धि से जाँच लिया है; मैंने कहा, "मैं बुद्धिमान हो जाऊँगा," परन्तु यह मुझसे दूर रहा। ४१ वह जो दूर और अत्यन्त गहरा है, उसका भेद कौन पा सकता है? ४२ मैंने अपना मन लगाया कि बुद्धि के विषय में जान लैँ; कि खोज निकालूँ और उसका भेद जानूँ, और कि दुष्टता की मर्खता और मर्खता जो निरा बाबलापन है, को जानूँ। ४३ और मैंने मृत्यु से भी अधिक दुखदाई एक वस्तु पाई, अर्थात् वह स्त्री जिसका मन फंदा और जाल है और जिसके हाथ हथकड़ियाँ हैं; जिस पुस्त से परमेश्वर प्रसन्न है वही उससे बचेगा, परन्तु पापी उसका शिकार होगा। ४४ देख, उद्देशक कहता है, मैंने ज्ञान के लिये अलग-अलग बातें मिलाकर जॉची, और यह बात निकाली, ४५ जिसे मेरा मन अब तक ढूँढ़ रहा है, परन्तु नहीं पाया। हजार में से मैंने एक पुस्त को पाया, परन्तु उनमें एक भी स्त्री नहीं पाई। ४६ देखो, मैंने केवल यह बात पाई है, कि परमेश्वर ने मनुष्य को सीधी बनाया, परन्तु उहोंने बहुत सी युक्तियाँ निकाली हैं।

४७ बुद्धिमान के तुल्य कौन है? और किसी बात का अर्थ कौन लगा सकता है? मनुष्य की बुद्धि के कारण उसका मुख चमकता, और उसके मुख की कठोरता दूर हो जाती है। ४८ मैं तुझे सलाह देता हूँ कि परमेश्वर की शपथ के कारण राजा की आज्ञा मान। ४९ राजा के सामने से उतावली के साथ न लौटना और न बुरी बात पर हठ करना, क्योंकि वह जो कुछ चाहता है करता है। ५० क्योंकि राजा के वचन में तो सामर्थ्य रहती है, और कौन उससे कह सकता है कि तू क्या करता है? ५१ जो आज्ञा को मानता है, वह जो खिम से बचेगा, और बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है। ५२ क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है, यद्यपि मनुष्य का दुःख उसके लिये बहुत भारी होता है। ५३ वह नहीं जानता कि क्या होनेवाला है, और कब होगा? यह उसको कौन बता सकता है? ५४ ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसका वश प्राण पर चले कि वह उसे निकलते समय रोक ले, और न कोई मृत्यु के दिन पर अधिकारी होता है; और न उसे लडाई से छुट्टी मिल सकती है, और न दुष्ट लोग अपनी दुष्टता के कारण बच सकते हैं। ५५ जितने काम सूर्य के नीचे किए जाते हैं उन सब को ध्यानपूर्वक देखेने में यह सब कुछ मैंने देखा, और यह भी देखा कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य पर अधिकारी होकर अपने ऊपर हानि लाता है। ५६ फिर मैंने दुश्मों को गाड़े जाते देखा, जो पवित्रस्थान में आया-जाया करते थे और जिस नगर में वे ऐसा करते थे वहाँ उनका स्मरण भी न रहा; यह भी व्यर्थ ही है। ५७ बुरे काम के दण्ड की आज्ञा फूर्ती से नहीं दी जाती; इस कारण मनुष्यों का मन बुरा काम करने की इच्छा से भरा रहता है। ५८ चाहे पारी सौ बार पाप करे, अपने दिन भी बढ़ाए, तो भी मुझे निश्चय है कि जो परमेश्वर से डरते हैं और उसको सम्मुख जानकर भय से चलते हैं, उनका भला ही होगा; ५९ परन्तु दुश्चुरी का भला नहीं होने का, और न उसकी जीवनस्पी छाया

लम्बी होने पाएगी, क्योंकि वह परमेश्वर का भय नहीं मानता। १४ एक व्यर्थ बात पृथ्वी पर होती है, अर्थात् ऐसे धर्मी हैं जिनकी वह दशा होती है जो दुष्टों की होनी चाहिये, और ऐसे दुष्ट हैं जिनकी वह दशा होती है जो धर्मियों की होनी चाहिये। मैंने कहा कि यह भी व्यर्थ ही है। १५ तब मैंने आनन्द को सराहा, क्योंकि सूर्य के नीचे मनुष्य के लिये खाने-पीने और आनन्द करने को छोड़ और कुछ भी अच्छा नहीं, क्योंकि यही उसके जीवन भर जो परमेश्वर उसके लिये सूर्य के नीचे ठहराए, उसके परिश्रम में उसके सांग बना रहेगा। १६ जब मैंने बुद्धि प्राप्त करने और सब काम देखने के लिये जो पृथ्वी पर किए जाते हैं अपना मन लाया, कि कैसे मनुष्य रात-दिन जाते रहते हैं; १७ तब मैंने परमेश्वर का सारा काम देखा जो सूर्य के नीचे किया जाता है, उसकी थाह मनुष्य नहीं पा सकता। चाहे मनुष्य उसकी खोज में मैंने तिना भी परिश्रम करे, तो भी उसको न जान पाएगा; और यद्यपि बुद्धिमान कर्हे भी कि मैं उसे समझूँगा, तो भी वह उसे न पा सकेगा।

९ यह सब कुछ मैंने मन लागकर विचारा कि इन सब बातों का भेद पाऊँ, कि किस प्रकार धर्मी और बुद्धिमान लोग और उनके काम परमेश्वर के हाथ में हैं; मनुष्य के आगे सब प्रकार की बातें हैं परन्तु वह नहीं जानता कि वह प्रेम है या बैर। १८ सब बातें सभी के लिए एक समान होती हैं, धर्मी हो या दुष्ट, भले, शुद्ध या अशुद्ध, यज्ञ करने और न करनेवाले, सभी की दशा एक ही सी होती है। जैसी भले मनुष्य की दशा, वैसी ही पापी की दशा; जैसी शाश्वत खानेवाले की दशा, वैसी ही उसकी जो शपथ खाने से डरता है। १९ जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उसमें यह एक दोष है कि सब लोगों की एक सी दशा होती है, और मनुष्यों के मर्मों में बुराई भरी हुई है, और जब तक वे जीवित रहते हैं उनके मन में बावलापन रहता है, और उसके बाद वे मरे हुओं में जा मिलते हैं। २० परन्तु जो सब जीविते में है, उसे आशा है, क्योंकि जीविता कृता मरे हुए, सिंह से बढ़कर है। २१ क्योंकि जीविते तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगे, परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते, और न उनको कुछ और बदला मिल सकता है, क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है। २२ उनका प्रेम और उनका बैर और उनकी डाह नाश हो चुकी, और अब जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उसमें सदा के लिये उनका और कोई भाग न होगा। २३ अपने मार्ग पर चला जा, अपनी रोटी आनन्द से खाया कर, और मन में सुख मानकर अपना दाखमधु पिया कर; क्योंकि परमेश्वर तेरे कामों से प्रसन्न हो चुका है। २४ तेरे वक्ष सदा उजले रहें, और तेरे सिर पर तेल की घटी न हो। २५ अपने व्यर्थ जीवन के सारे दिन जो उसमें सूर्य के नीचे तेरे लिये ठहराए हैं अपनी प्यारी पत्री के संग में बिताना, क्योंकि तेरे जीवन और तेरे परिश्रम में जो त् सूर्य के नीचे करता है तेरा यही भाग है। २६ जो काम तुझे मिले उसे अपनी शक्ति भर करना, क्योंकि अद्योलोक में जहाँ त् जानेवाला है, न काम न युक्ति न ज्ञान और न बुद्धि है। (Sheol h7585) २७ फिर मैंने सूर्य के नीचे देखा कि न तो दौड़ में वेग दौड़नेवाले और न यहु में शूरवीर जीतते; न बुद्धिमान लोग रोटी पाते, न समझवाले धन, और न प्रवीरों पर अनुग्रह होता है, वे सब समय और संयोग के बश में हैं। २८ क्योंकि मनुष्य अपना समय नहीं जानता। जैसे मछलियाँ दुःखदाई जाल में और चिंचियें फंदे में फँसती हैं, वैसे ही मनुष्य दुःखदाई समय में जो उन पर अचानक आ पड़ता है, फँस जाते हैं। २९ मैंने सूर्य के नीचे इस प्रकार की बुद्धि की बात भी देखी है, जो मुझे बड़ी जान पड़ी। ३० एक छोटा सा नगर था, जिसमें थोड़े ही लोग थे; और किसी बड़े राजा ने उस पर चढ़ाई करके उसे धेर लिया, और उसके बिस्तु बड़ी मोर्चाबन्दी कर दी। ३१ परन्तु उसमें एक दरिद्र बुद्धिमान पुख पाया गया, और उसने उस नगर को अपनी बुद्धि के द्वारा बचाया। तो भी किसी ने उस दरिद्र पुख का स्मरण न रखा। ३२ तब मैंने कहा,

“यद्यपि दरिद्र की बुद्धि तुच्छ समझी जाती है और उसका वचन कोई नहीं सुनता तो भी पराक्रम से बुद्धि उत्तम है।” ३३ बुद्धिमानों के वचन जो धर्म-धीमे कहे जाते हैं वे मूर्खों के बीच प्रभुता करनेवाले के चिल्ला चिल्लाकर कहने से अधिक सुने जाते हैं। ३४ लड़ाई के हथियारों से बुद्धि उत्तम है, परन्तु एक पापी बहुत सी भलाई का नाश करता है।

१० मरी हुई मकिखरों के कारण गंधी का तेल सड़ने और दुर्बन्ध अने लगता है; और थोड़ी सी मूर्खता बुद्धि और प्रतिष्ठा को घटा देती है। ३५ बुद्धिमान का मन उचित बात की ओर रहता है परन्तु मूर्ख का मन उसके विपरीत रहता है। ३६ जब मूर्ख मार्खी मार्खी पर चलता है, तब उसकी समझ काम नहीं देती, और वह सबसे कहता है, ‘मैं मूर्ख हूँ।’ ३७ यदि हाकिम का क्रोध तुझ पर भड़के, तो अपना स्थान न छोड़ना, क्योंकि धीरज धरने से बड़े-बड़े पाप स्फोर हैं। ३८ एक बुराई है जो मैंने सूर्य के नीचे देखी, वह हाकिम की भूल से होती है: ३९ अर्थात् मूर्ख बड़ी प्रतिष्ठा के स्थानों में ठहराए जाते हैं, और धनवान लोग नीचे बैठते हैं। ४० मैंने दासों को घोड़ों पर चढ़े, और ईंसों को दासों के समान भूमि पर चलते हुए देखा है। ४१ जो गङ्गा खोड़े वह उसमें गिराया और जो बाढ़ा तोड़े उसको सर्प डसेगा। ४२ जो पत्थर फोड़े, वह उसमें घायल होगा, और जो लकड़ी काटे, उसे उसी से डर होगा। ४३ यदि कुलहाड़ा थोथा हो और अपनुष्य उसकी धार को पैनी न करे, तो अधिक बल लगाना पड़ेगा; परन्तु सफल होने के लिये बुद्धि से लाभ होता है। ४४ यदि मंत्र से पहले सर्प डसे, तो मंत्र पढ़नेवाले को कुछ भी लाभ नहीं। ४५ बुद्धिमान के वचनों के कारण अनुग्रह होता है, परन्तु मूर्ख अपने वचनों के द्वारा नाश होते हैं। ४६ उसकी बात का अरम्भ मूर्खता का, और उनका अन्त दुःखदाई बावलापन होता है। ४७ मूर्ख बहुत बातें बढ़ाकर बोलता है, तो भी कोई मनुष्य नहीं जानता कि क्या होगा, और कौन बता सकता है कि उसके बाद क्या होनेवाला है? ४८ मूर्ख को परिश्रम से थकावटी ही होती है, यहाँ तक कि वह नहीं जानता कि नगर को कैसे जाए। ४९ हे देश, तुझ पर हाय जब तेरा राजा लड़का है और तेरे हाकिम प्रातःकाल भोज करते हैं! ५० हे देश, तू धन्य है जब तेरा राजा कुलीन है, और तेरे हाकिम समय पर भोज करते हैं, और वह भी मतवाले होने को नहीं, वरन् बल बढ़ाने के लिये! ५१ आलत्य के कारण छत की कड़ियाँ ढब जाती हैं, और हाथों की सुस्ती से घर चता है। ५२ जो बहुं सीख्सी के लिये किया जाता है, और दाखमधु से जीवन को आनन्द मिलता है; और स्पर्यों से सब कुछ प्राप्त होता है। ५३ राजा को मन में श्री श्राप न देना, न धनवान को अपने शयन की कोठरी में श्राप देना; क्योंकि कोई आकाश का पक्षी तेरी वाणी को ले जाएगा, और कोई उड़ेवाला जन्तु उस बात को प्रगट कर देगा।

११ अपनी रोटी जल के ऊपर डाल दे, क्योंकि बहुत दिन के बाद त् उसे फिर पाएगा। १२ सात वरन् आठ जनों को भी भाग दे, क्योंकि तु नहीं जानता कि पृथ्वी पर क्या विपत्ति आ पड़ेगी। १३ यदि बादल जलभरे हैं, तब उसको भूमि पर उड़ाले देते हैं, और वक्ष चाहे दक्षिण की ओर पिरे या उत्तर की ओर, तो भी जिस स्थान पर वक्ष पिरेगा, वही पड़ा रहेगा। १४ जो वायु को ताकता रहेगा वह बीज बोने न पाएगा; और जो बादलों को देखता रहेगा वह लवने न पाएगा। १५ जैसे तू वायु के चलने का मार्ग नहीं जानता और तेरे जीवन की रीति से गर्भवती के पेट में हड्डियाँ बढ़ती हैं, वैसे ही तू परमेश्वर का काम नहीं जानता जो सब कुछ करता है। १६ भोज को अपना बीज बो, और साँझ को भी अपना हाथ न रोक; क्योंकि तू नहीं जानता कि कौन सफल होगा, यह या वह या दोनों के दोनों अच्छे निकलेंगे। १७ उजियाता मनभावना होता है, और धूप के देखने से आँखों को सुख होता है। १८ यदि मनुष्य बहुत वर्ज जीवित रहे, तो

उन सभी में आनन्दित रहे; परन्तु यह स्मरण रखे कि अधिथारे के दिन भी बहुत होंगे। जो कुछ होता है वह व्यर्थ है। ५ हे जवान, अपनी जवानी में आनन्द कर, और अपनी जवानी के दिनों में मग्न रह; अपनी मनमानी कर और अपनी आँखों की दृष्टि के अनुसार चल। परन्तु यह जान रख कि इन सब बातों के विषय में परमेश्वर तेरा न्याय करेगा। ६ अपने मन से खेद और अपनी देह से दुःख दूर कर, क्योंकि लड़कपन और जवानी दोनों व्यर्थ हैं।

१२ अपनी जवानी के दिनों में अपने सुजनहार को स्मरण रख, इससे पहले

कि विपत्ति के दिन और वे वर्ष आँए, जिनमें तू कहे कि मेरा मन इनमें नहीं लगता। २ इससे पहले कि सूर्य और प्रकाश और चन्द्रमा और तारागण अंगौरे हो जाएँ, और वर्षा होने के बाद बादल फिर घिर आएँ, ३ उस समय घर के पहास्त कौंपेंगे, और बलवन्त शूक जाएँगे, और पिसनहारियाँ थोड़ी रहने के कारण काम छोड़ देंगी, और झरोखों में से देखनेवालियाँ अची हो जाएँगी, ४ और सड़क की ओर के किवाड़ बन्द होंगे, और चक्की पीसने का शब्द धीमा होगा, और तड़के चिड़िया बोलते ही एक उठ जाएगा, और सब गनेवालियों का शब्द धीमा हो जाएगा। ५ फिर जो ऊँचा हो उससे भय खाया जाएगा, और मार्ग में डरावनी वस्तुएँ मानी जाएँगी; और बादाम का पेड़ फूलेगा, और टिड़ी भी भारी लगेगी, और भूख बढ़नेवाला फल फिर काम न देगा; क्योंकि मनुष्य अपने सदा के घर को जाएगा, और रोने पीटनेवाले सड़क-सड़क फिरेंगे। ६ उस समय चौंकी का तार दो टुकड़े हो जाएगा और सोने का कटोरा टूटेगा; और सोते के पास घडा फूटेगा, और कुण्ड के पास रहट टूट जाएगा, ७ जब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिसने उसे दिया लौट जाएगी। ८ उपदेशक कहता है, सब व्यर्थ ही व्यर्थ, सब कुछ व्यर्थ है। ९ उपदेशक जो बुद्धिमान था, वह प्रजा को ज्ञान भी सिखाता रहा, और ध्यान लगाकर और जाँच-परख करके बहुत से नीतिवचन क्रम से रखता था। १० उपदेशक ने मनभावने शब्द खोजे और सिधाई से ये सच्ची बातें लिख दीं। ११ बुद्धिमानों के वचन पैनों के समान होते हैं, और सभाओं के प्रधानों के वचन गाड़ी हुई कीलों के समान हैं, क्योंकि एक ही चरवाहे की ओर से मिलते हैं। १२ हे मेरे पुत्र, इहीं मैं चौकसी सीख। बहुत पुस्तकों की रचना का अन्त नहीं होता, और बहुत पढ़ना देह को थका देता है। १३ सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर, क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है। १४ क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुम बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा।

श्रेष्ठगीत

१ श्रेष्ठगीत जो सुलैमान का है। वधु २ तू अपने मुँह के चुम्बनों से मुझे छूओ!

क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से उत्तम है, ३ तेरे भाँति-भाँति के इनों का सुगन्ध उत्तम है, तेरा नाम उण्डेले हुए इन के तुल्य है; इसलिए कुमारियाँ तुझ से प्रेम रखती हैं ४ मुझे खींच ले, हम तेरे पीछे दौड़ेंगे। राजा मुझे अपने महल में ले आया है। हम तुझ में मगान और आनन्दित होंगे; हम दाखमधु से अधिक तेरे प्रेम की चर्चा करेंगे; वे ठीक ही तुझ से प्रेम रखती हैं। ५ हे यस्श्लेम की पुत्रियों, मैं काली तो हूँ परन्तु सुन्दर हूँ, केदर के तम्बुओं के और सुलैमान के पर्दों के तुल्य हूँ। ६ मुझे इसलिए न घूर किये मैं सौंवली हूँ, क्योंकि मैं धूप से झलस गई। मेरी माता के पुत्र मुझसे अप्रसन्न थे, उन्होंने मुझ को दाख की बारियों की रखवालिन बनाया; परन्तु मैंने अपनी निज दाख की बारी की रखवाली नहीं की। ७ हे मेरे प्राणप्रिय मुझे बता, तू अपनी भेड़-बकरियाँ कहाँ चराता है, दोपहर को तू उन्हें कहाँ बैठाता है; मैं क्यों तेरे संगियों की भेड़-बकरियों के पास धूंधट काढ़े हुए भटकती फिरँ? वर ८ हे खियों में सुन्दरी, यदि तू यह न जानती हो तो भेड़-बकरियों के खुरों के चिन्हों पर चल और चरावाहों के तम्बुओं के पास, अपनी बकरियों के बच्चों को चरा। ९ हे मेरी प्रिय मैंने तेरी तुलना फ़िरौन के रथों में जुती हुई घोड़ी से की है। १० तेरे गल केशों के लटों के बीच क्या ही सुन्दर है, और तेरा कण्ठ हरीं की लड़ियों के बीच। वधु ११ हम तेरे लिये चाँदी के फूलदार सोने के आभूषण बनाएँगे। १२ जब राजा अपनी मेजे के पास बैठा था मेरी जटामारी की सुगन्ध फैल रही थी। १३ मेरा प्रेमी मेरे लिये लोबान की थैली के समान है जो मेरी छातियों के बीच में पड़ी रहती है। १४ मेरा प्रेमी मेरे लिये मैंहटी के फूलों के गुच्छे के समान है, जो एगदी की दाख की बारियों में होता है। वर १५ तू सुन्दरी है, हे मेरी प्रिय, तू सुन्दरी है; तेरी आँखें कबूतरी की सी हैं। वधु १६ हे मेरे प्रिय तू सुन्दर और मनभावना है और हमारा बिछोना भी हरा है; १७ हमारे घर के धरन देवदार हैं और हमारी छत की कढ़ियाँ सोनवर हैं।

२ मैं शारोन का गुलाब और तराइयों का सोसन फूल हूँ। वर ३ जैसे सोसन

फूल कटी लेडों के बीच वैसे ही मेरी प्रिय युक्तियों के बीच मैं हूँ। वधु ४ जैसे सेब का बृक्ष जंगल के क्रृष्णों के बीच मैं, वैसे ही मेरा प्रेमी जवानों के बीच मैं हूँ। मैं उसकी छाया में हैरिंग होकर बैठ गई, और उसका फल मुझे खाने में मीठा लगा। ५ वह मुझे भोज के घर में ले आया, और उसका जो झांडा मेरे ऊपर फहराता था वह प्रेम था। ६ मुझे किंशिमा खिलाकर सम्भालो, सेब खिलाकर तजा करो: क्योंकि मैं प्रेम रोगी हूँ। ७ काश, उसका बायाँ हाथ मेरे सिर के नीचे होता, और अपने दाहिने हाथ से वह मेरा आलिगन करता! ८ हे यस्श्लेम की पुत्रियों, मैं तुम से चिकारियों और मैदान की हिरनियों की शपथ धराकर कहती हूँ, कि जब तक वह स्वयं न उठना चाहे, तब तक उसको न उकसाओं न जगाओ। वधु ९ मेरा प्रेमी का शब्द सुन पड़ता है! देखो, वह पहाड़ों पर कृदाता और पहाड़ियों को फान्दता हुआ आता है। १० मेरा प्रेमी चिकारे या जवान हिरन के समान है। देखो, वह हमारी दीवार के पीछे खड़ा है, और खिड़कियों की ओर ताक रहा है, और झंझरी में से देख रहा है। ११ मेरा प्रेमी मुझसे कह रहा है, वर “हे मेरी प्रिय, हे मेरी सुन्दरी, उठकर चली आ; १२ क्योंकि देख, सदीं जाती रही; वर्षा भी हो चुकी और जाती रही है। १३ पृथ्वी पर फूल दिखाइ देते हैं, चिड़ियों के गाने का समय आ पहँचा है, और हमारे देश में पिण्डुक का शब्द सुनाई देता है। १४ अंजर पकने लगे हैं, और दाखलताएँ फूल रही हैं; वे सुगन्ध दे रही हैं। हे मेरी प्रिय, हे मेरी सुन्दरी,

उठकर चली आ। १५ हे मेरी कबूतरी, पहाड़ की दाराओं में और टीलों के कुंज में तेरा मुख मुझे देखने दे, तेरा बोल मुझे सुनने दे, क्योंकि तेरा बोल मीठा, और तेरा मुख अति सुन्दर है। १६ जो छोटी लोमधियाँ दाख की बारियों को बिगाड़ती हैं, उन्हें पकड़ ले, क्योंकि हमारी दाख की बारियों में फूल लगे हैं।” १७ वधु १७ मेरा प्रेमी मेरा है और मैं उसकी हूँ, वह अपनी भेड़-बकरियाँ सोसान फूलों के बीच मैं चराता है। १८ जब तक दिन ठंडा न हो और छाया लम्बी होते-होते मिट न जाए, तब तक है मेरे प्रेमी उस चिकारे या जवान हिरन के समान बन जो बेतर के पहाड़ों पर फिरता है।

३ रात के समय मैं अपने पलंग पर अपने प्राणप्रिय को ढूँढ़ती रही; मैं उसे

ढूँढ़ती तो रही, परन्तु उसे न पाया। २ “मैंने कहा, मैं अब उठकर नगर मैं, और सड़कों और चौकों में घमकर अपने प्राणप्रिय को ढूँढ़ा!” मैं उसे ढूँढ़ती तो रही, परन्तु उसे न पाया। ३ जो घरसे नगर में घमते थे, वे मुझे मिले, मैंने उनसे पूछा, “क्या तुम ने मेरे प्राणप्रिय को देखा है?” ४ मुझ को उनके पास से आगे बढ़े थोड़े ही देर हुई थी कि मेरा प्राणप्रिय मुझे मिल गया। मैंने उसको पकड़ लिया, और उसको जाने न दिया जब तक उसे अपनी माता के घर अर्थात् अपनी जननी की कोठरी में न ले आई। ५ हे यस्श्लेम की पुत्रियों, मैं तुम से चिकारियों और मैदान की हिरनियों की शपथ धराकर कहती हूँ, कि जब तक प्रेम आप से न उठे, तब तक उसको न उकसाओं और न जगाओ। वधु ६ यह क्या है जो धूँधे के खम्भे के समान, गन्धर्स और लोबान से सुगन्धित, और व्यापारी की सब भाँति की बुकनी लगाए हुए जंगल से निकला आता है? ७ देखो, यह सुलैमान की पालकी है। उसके चरों ओर इसाएल के शूरवीरों में के साठ वीर है। ८ वे सब के सब तलवार बाँधनेवाले और युद्ध विद्या में निपुण हैं। प्रत्येक पुस्तक रात के डर से जाँघ पर तलवार लटकाए रहता है। ९ सुलैमान राजा ने अपने लिये लबानोन के काठ की एक बड़ी पालकी बनवा ली। १० उसने उसके खम्भे चाँदी के, उसका सिरहाना सोने का, और गढ़ी बैगनी रंग की बनवाई है; और उसके भीतरी भाग को यस्श्लेम की पुत्रियों निकलकर सुलैमान राजा पर दृष्टि डालो, देखो, वह वही मुकुट पहने हुए है जिसे उसकी माता ने उसके विवाह के दिन और उसके मन के आनन्द के दिन, उसके सिर पर रखा था।

११ हे मेरी प्रिय तू सुन्दर है, तू सुन्दर है! तेरी आँखें तेरी लटों के बीच मैं

कबूतरों के समान दिखाइ देती हैं। तेरे बाल उन बकरियों के झाँण के समान हैं जो गिलाद पहाड़ के ढाल पर लेटी हुई हैं। १२ तेरे दाँत उन ऊन कत्ती हुई भेड़ों के झाँण के समान हैं, जो नहाकर ऊपर आई हैं, उनमें हर एक के दो-दो जुड़वा बच्चे होते हैं। और उनमें से किसी का साथी नहीं मरा। १३ तेरे होठ लाल रंग की डोरी के समान है, और तेरा मुँह मनोहर है, तेरे कपोल तेरी लटों के नीचे अनार की फाँक से देख पड़ते हैं। १४ तेरा गला दाऊद की मीनार के समान है, जो अब्स-शब्स के लिये बना हो, और जिस पर हजार ढांलें टैंटी हुई हों, वे सब ढालें शूरवीरों की हैं। १५ तेरी दोनों छातियाँ मुग के दो जुड़वे बच्चों के तुल्य हैं, जो सोसन फूलों के बीच मैं चरते हैं। १६ जब तक दिन ठंडा न हो, और छाया लम्बी होते-होते मिट न जाए, तब तक मैं शीघ्रता से गन्धर्स के पहाड़ और लोबान की पहाड़ी पर चला जाऊँगा। १७ हे मेरी प्रिय तू सर्वांग सुन्दरी है; तुम में कोई दोष नहीं। १८ हे मेरी दुल्हन, तू मेरे संग लबानोन से, मेरे संग लबानोन से चलती आ। तू अमाना की चोटी पर से, सनीर और हेमर्न की चोटी पर से, सिंहों की गुफाओं से, चीतों के पहाड़ों पर से दृष्टि कर। १९ हे मेरी बहन, हे मेरी दुल्हन, तूने मेरा मन मोह लिया है, तूने अपनी आँखों की एक ही

चितवन से, और अपने गते के एक ही हीर से मेरा हृदय मोह लिया है। १० हे मेरी बहन, हे मेरी दुल्हन, तेरा प्रेम क्या ही मनोहर है। तेरा प्रेम दाखमधु से क्या ही उत्तम है, और तेरे बब्रों का सुगन्ध सब प्रकार के मसालों के सुगन्ध से। ११ हे मेरी दुल्हन, तेरे होटों से मधु टपकता है; तेरी जीभ के नीचे मधु और दूध रहता है; तेरे बब्रों का सुगन्ध लबानोन के समान है। १२ मेरी बहन, मेरी दुल्हन, किवाड़ लार्इ हुई बारी के समान, किवाड़ बन्द किया हुआ सोता, और छाप लगाया हुआ ज़िरा है। १३ तेरे अंकुर उत्तम फलबाली अनार की बारी के तुल्य हैं, जिसमें मेंहदी और जटामासी, १४ जटामासी और केसर, लोबान के सब भाँति के पेड़, मुश्क और दालचीनी, गन्धरस, अगर, आदि सब मुख्य-मुख्य सुगन्ध-दृश्य होते हैं। १५ तेरे बारियों का सोता है, फूटते हुए जल का कुअँ, और लबानोन से बहती हुई धाराएँ हैं। वधु १६ हे उत्तर वायु जाग, और हे दक्षिण वायु चली आ! मेरी बारी पर बह, जिससे उसका सुगन्ध फैले। मेरा प्रेमी अपनी बारी में आए, और उसके उत्तम-उत्तम फल खाए।

५ हे मेरी बहन, हे मेरी दुल्हन, मैं अपनी बारी में आया हूँ, मैंने अपना गन्धरस और बलसान चुन लिया; मैंने मधु समेत छत्ता खा लिया, मैंने दूध और दाखमधु पी लिया। सहेलियाँ हे मिठों, तुम भी खाओ, हे प्यारों, पियो, मनमान पियो। वधु २ मैं सोती थी, परन्तु मेरा मन जागता था। सन! मेरा प्रेमी खटखटाता है, और कहता है, “हे मेरी बहन, हे मेरी प्रिय, हे मेरी कबूतरी, हे मेरी निर्मल, मैं लिये द्वार खोल; क्योंकि मेरा सिर आस से भरा है, और मेरी लटें रात में गिरी हुई बैंटों से भीगी हैं।” ३ मैं अपना वन्धु उत्तर चुकी थी मैं उसे फिर कैसे पहांूँ? मैं तो अपने पाँव धो चुकी थी अब उनको कैसे मैला करूँ? ४ मेरे प्रेमी ने अपना हाथ किवाड़ के छेद से भीतर डाल दिया, तब मेरा हृदय उसके लिये उमड़ उठा। ५ मैं अपने प्रेमी के लिये द्वार खोलने को उठी, और मेरे हाथों से गन्धरस टपका, और मेरी अंगुलियों पर से टपकता हुआ गन्धरस बेंड़ की मुर्हों पर पड़ा। ६ मैंने अपने प्रेमी के लिये द्वार तो खोला परन्तु मेरा प्रेमी मुड़कर चला गया था। जब बह बोल रहा था, तब मेरा प्राण घबरा गया था मैंने उसको ढूँढ़ा, परन्तु न पाया; मैंने उसको पुकारा, परन्तु उसने कुछ उत्तर न दिया। ७ पहरेदार जो नार में घूसते थे, मुझे मिले, उन्होंने मुझे मारा और घायल किया; शहरपनाह के पहरसों ने मेरी चंद्र मुझसे छीन ली। ८ हे यस्सलेम की पुत्रियों, मैं तुम को शपथ धराकर कहती हूँ, यदि मेरा प्रेमी तुम को मिल जाए, तो उससे कह देना कि मैं प्रेम में रोगी हूँ। सहेलियाँ ९ हे स्त्रियों में परम सुन्दरी तेरा प्रेमी और प्रेमियों से किस बात में उत्तम है? तू क्यों हमको ऐसी शपथ धराती है? वधु १० मेरा प्रेमी गोरा और लाल सा है, वह दस हजारों में उत्तम है। ११ उसका सिर उत्तम कुन्दन है; उसकी लटकी हुई लटें कौतों की समान काली है। १२ उसकी आँखें उन कबूतरों के समान हैं जो दूध में नहाकर नदी के किनारे अपने झण्ड में एक कतार से बैठे हए हों। १३ उसके गाल फूलों की फुलवारी और बलसान की उभरी हुई क्यारियाँ हैं। उसके होंठ सोसन फूल हैं जिनसे पिघला हुआ गन्धरस टपकता है। १४ उसके हाथ फीरीजा जड़े हुए सोने की छड़े हैं। उसका शरीर नीलम के फूलों से जड़े हुए हाथी दाँत का काम है। १५ उसके पाँव कुन्दन पर बैठते हुए संगमरमर के खम्भे हैं। वह देखने में लबानोन और सुन्दरता में देवदार के बक्षों के समान मनोहर है। १६ उसकी वाणी अति मधुर है, हाँ वह परम सुन्दर है। हे यस्सलेम की पुत्रियों, यही मेरा प्रेमी और यही मेरा मित्र है।

६ हे स्त्रियों में परम सुन्दरी, तेरा प्रेमी कहाँ गया? तेरा प्रेमी कहाँ चला गया कि हम तेरे संग उसको ढूँढ़ने निकलें? वधु ७ मेरा प्रेमी अपनी बारी में अर्थात बलसान की क्यारियों की ओर गया है, कि बारी में अपनी भेड़-बकरियों

चराए और सोसन फूल बटोरे। ८ मैं अपने प्रेमी की हूँ और मेरा प्रेमी मेरा है, वह अपनी भेड़-बकरियाँ सोसन फूलों के बीच चराता है। वर ९ हे मेरी प्रिय, तू तिर्सी की समान सुन्दरी है तू यस्सलेम के समान स्पवन है, और पताका फहराती हुई सेना के तुल्य भयंकर है। १० अपनी आँखें मेरी ओर से फेर ले, क्योंकि मैं उनसे घबराता हूँ, तेरे बाल ऐसी बकरियों के झण्ड के समान हैं, जो गिलाद की ढलान पर लेटी हुई देख पड़ती हैं। ११ तेरे दाँत ऐसी भेड़ों के झण्ड के समान हैं जिन्हें सान कराया गया हो, उनमें प्रत्येक जुड़वाँ बच्चे देती हैं, जिनमें से किसी का साथी नहीं मरा। १२ तेरे कपोल तेरी लटों के नीचे अनार की फॉक से देख पड़ते हैं। १३ वहाँ साठ रानियाँ और अस्त्री रखेलियाँ और असंख्य कुमारियाँ भी हैं। १४ परन्तु मेरी कबूतरी, मेरी निर्मल, अद्वितीय है अपनी माता की एकलौती, अपनी जननी की दुलारी है। पुत्रियों ने उसे देखा और धन्य कहा; रानियों और रखेलों ने देखकर उसकी प्रशंसा की। १५ यह कौन है जिसकी शोभा भोर के तुल्य है, जो सुन्दरता में चन्द्रमा और निर्मलता में सूर्य, और पताका फहराती हुई सेना के तुल्य भयंकर दिखाई देती है? १६ मैं अखरोट की बारी में उत्तर गई, कि तराई के फूल देखें, और देखें की दाखलता में कलियाँ लगी, और अनारों के फूल खिले कि नहीं। १७ मुझे पता भी न था कि मेरी कल्पना ने मुझे अपने राजकुमार के रथ पर चढ़ा दिया। सहेलियाँ १८ लौट आ, लौट आ, हे श्लोमिन, लौट आ, लौट आ, लौट आ, कि हम तुझ पर दृष्टि करें। वधु क्या तुम श्लोमिन को इस प्रकार देखोगे जैसा महनैम के नृत्य को देखते हैं?

७ हे कुलीन की पुरी, तेरे पाँव जूतियों में क्या ही सुन्दर है! तेरी जाँघों की गोलाई ऐसे गहनों के समान है, जिसको किसी निषुण कारीगर ने रखा हो। ८ तेरी नाभि गोल कटोरा है, जो मसाला मिले हुए दाखमधु से पूर्ण हो। तेरा पेट गेहूँ के ढेर के समान है जिसके चारों ओर सोसन फूल हों। ९ तेरी दोनों छातियाँ मुग्नी के दो जुड़वे बच्चों के समान हैं। १० तेरा गला हाथी दाँत का मीनार है। तेरी आँखें हेस्तेबोन के उन कुण्डों के समान हैं, जो बन्नबीम के फाटक के पास हैं। तेरी नाक लबानोन के मीनार के तुल्य है, जिसका मुख दमिश्क की ओर है। ११ तेरा सिर तुझ पर कर्मल के समान शोभायमान है, और तेरे सिर के लेटे बैगीनी रंग के बन्ध के तुल्य है; राजा उन ललातों में बैंधुआ हो गया है। १२ हे प्रिय और मनभावनी कुमारी, तू कैसी सुन्दर और कैसी मोहर है! १३ तेरा डील-डैल खजर के समान शानदार है और तेरी छातियाँ अंगर के गुच्छों के समान हैं। १४ मैंने कहा, “मैं इस खजर पर चढ़कर उसकी डालियों को पकड़ दूँगा।” तेरी छातियाँ अंगर के गुच्छे हों, और तेरी श्वास का सुगन्ध सेबों के समान हो, १५ और तेरे चुम्बन उत्तम दाखमधु के समान हैं वधु जो सरलता से होठों पर से धरि धीर बह जाती है। १६ मैं अपनी प्रेमी की हूँ। और उसकी लालसा मेरी ओर नित बनी रहती है। १७ हे मेरे प्रेमी, आ, हम खेतों में निकल जाएँ और गाँवों में रहें, १८ फिर सबेरे उठकर दाख की बारियों में चलें, और देखें कि दाखलता में कलियाँ लगी हैं कि नहीं, कि दाख के फूल खिले हैं या नहीं, और अनार फूले हैं या नहीं। १९ मैं तुझको अपना प्रेम दिखाऊँगी। २० दूदाफलों से सुगन्ध आ रही है, और हमारे द्वारों पर सब भाँति के उत्तम फल हैं, नये और पुाने भी, जो, हे मेरे प्रेमी, मैंने तेरे लिये इकड़े कर रखे हैं।

८ भला होता कि तू मेरे भाई के समान होता, जिसने मेरी माता की छातियों से दूध पिया। तब मैं तुझे बाहर पाकर तेरा चुम्बन लेती, और कोई मेरी निन्दा न करता। २१ मैं तुझको अपनी माता के घर ले चलती, और वह मुझ को सिखाती, और मैं तुझ मसाला मिला हुआ दाखमधु, और अपने अनारों का रस पिलाती। २२ काश, उसका बायाँ हाथ मेरे सिर के नीचे होता, और अपने दाहिने हाथ से

वह मेरा आलिंगन करता! ४ हे यस्तशलेम की पुत्रियों, मैं तुम को शपथ धराती हूँ, कि तुम मेरे प्रेमी को न जगाना जब तक वह स्वयं न उठना चाहे। सहेलियाँ ५ यह कौन है जो अपने प्रेमी पर टेक लगाए हुए जंगल से चली आती है? वधू सेब के पेड़ के नीचे मैंने तुझे जगाया। वहाँ तेरी माता ने तुझे जन्म दिया वहाँ तेरी माता को पीड़िएँ उठी। ६ मुझे नगिने के समान अपने हृदय पर लगा रख, और तारीज़ की समान अपनी बाँह पर रख; क्योंकि प्रेम मृत्यु के तुल्य सामर्थी है, और ईर्ष्या कब्र के समान निर्दर्शी है। उसकी ज्वाला अनिकी दमक है वरन् परमेश्वर ही की ज्वाला है। (Sheol h7585) ७ पानी की बाढ़ से भी प्रेम नहीं बुझ सकता, और न महानदों से झूब सकता है। यदि कोई अपने घर की सारी सम्पत्ति प्रेम के बदले दे दे तो भी वह अत्यन्त तुच्छ ठहरेगी। वधू का भाई ८ हमारी एक छोटी बहन है, जिसकी छातियाँ अभी नहीं उभरीं। जिस दिन हमारी बहन के ब्याह की बात लगे, उस दिन हम उसके लिये क्या करें? ९ यदि वह शहरपनाह होती तो हम उस पर चाँदी का कंगरा बनाते; और यदि वह फाटक का किंवाड़ होती, तो हम उस पर देवदार की लकड़ी के पटे लगाते। वधू १० मैं शहरपनाह थी और मेरी छातियाँ उसके गुमट; तब मैं अपने प्रेमी की दृष्टि में शान्ति लानेवाले के समान थी। वर ११ बाल्हमोन में सुलैमान की एक दाख की बारी थी; उसने वह दाख की बारी रखवालों को सौंप दी; हर एक रखवाले को उसके फलों के लिये चाँदी के हजार-हजार टुकड़े देने थे। १२ मेरी निज दाख की बारी मेरे ही लिये है; हे सुलैमान, हजार तुड़ी को और फल के रखवालों को दो सौ मिलें। १३ तू जो बारियों में रहती है, मेरे मित्र तेरा बोल सुनना चाहते हैं; उसे मुझे भी सुनने दे। वधू १४ हे मेरे प्रेमी, शीघ्रता कर, और सुगन्ध-द्रव्यों के पहाड़ों पर चिकारे या जवान हिरन के समान बन जा।

यशायाह

१ आपोस के पुनर्यशायाह का दर्शन, जिसको उसने यहदा और यस्सलेम के विषय में उज्जियाह, योताम, आहाज, और हिजकियाह नामक यहदा के राजाओं के दिनों में पाया। २ है स्वर्ग सन, और है पृथ्वी कान लगा; क्योंकि यहोवा कहता है: “मैंने बाल-बच्चों का पालन-पोषण किया, और उनको बढ़ाया भी, परन्तु उन्होंने मुझसे बलवा किया। ३ बैल तो अपने मालिक को और गदहा अपने स्वामी की चरनी को पहचानता है, परन्तु इस्माएल मुझे नहीं जानता, मेरी प्रजा विचार नहीं करती।” ४ हाय, यह जाति पाप से कैरी भरी है! यह समाज अधर्म से कैसा लदा हुआ है। इस वंश के लोग कैसे कुकमी हैं, ये बाल-बच्चे कैसे खिड़े हुए हैं? उन्होंने यहोवा को छोड़ दिया, उन्होंने इस्माएल के पवित्र को तच्छ जाना है! वे पराए बनकर दूर हो गए हैं। ५ तुम बलवा कर करके क्यों अधिक मार खाना चाहते हो? तुम्हारा सिर घावों से भर गया, और तुम्हारा हृदय दुःख से भरा है। ६ पाँव से सिर तक कहीं भी कुछ आरोग्यता नहीं, केवल चोट और कोडे की मार के चिन्ह और सड़े हुए घाव हैं जो न दबाये गए, न बैधे गए, न तेल लगाकर नरमाये गए हैं। ७ तुम्हारा देश उजड़ा पड़ा है, तुम्हारे नगर भस्म हो गए हैं; तुम्हारे खेतों को परदेसी लोग तुम्हारे देखते ही निगल रहे हैं; वह परदेशियों से नाश किए हुए देश के समान उजाड़ है। ८ और सिद्धोन की बेटी दाख की बारी में की झोपड़ी के समान छोड़ दी गई है, या ककड़ी के खेत में के मचान या घिरे हुए नगर के समान अकेली खड़ी है। ९ यदि सेनाओं का यहोवा हमारे थोड़े से लोगों को न बचा रखता, तो हम सदोम के समान हो जाते, और गमोरा के समान ठहरते। १० है सदोम के न्यायियों, यहोवा का वचन सुनो! हे गमोरा की प्रजा, हमारे परमेश्वर की व्यवस्था पर कान लगा। ११ यहोवा यह कहता है, “तुम्हारे बहुत से मेलबलि मेरे किस काम के हैं? मैं तो मेंढों के होमबलियों से और पाले हुए पशुओं की चर्बी से अथा गया हूँ; मैं बछड़ों या भेड़ के बच्चों या बकरों के लह से प्रसन्न नहीं होता। १२ तुम जब अपने मूँह मुझे दिखाने के लिये अते हो, तब यह कौन चाहता है कि तुम मेरे आँगों को पाँव से रौंदो? १३ व्यर्थ अन्वालि फिर मत लाओ, धूप से मुझे धूणा है। नये चाँद और विश्वामित्रिन का मानना, और सभाओं का प्रचार करना, यह मुझे बुरा लगता है। महासभा के साथ ही साथ अनर्थ काम करना मुझसे सहा नहीं जाता। १४ तुम्हारे नये चाँदों और नियत पर्वों के मानने से मैं जी से बैर रखता हूँ; वे सब मुझे बोझ से जान पड़ते हैं, मैं उनको सहते-सहते थक गया हूँ। १५ जब तुम मेरी ओर हाथ फैलाओ, तब मैं तुम से मुख फेर लूँगा; तुम कितनी ही प्रार्थना क्यों न करो, तो भी मैं तुम्हारी न सुरुँगा; क्योंकि तुम्हारे हाथ खन से भरे हैं। १६ अपने को धोकर पवित्र करो: मेरी आँखों के सामने से अपने खुए कामों को दूर करो; भविष्य में बुराई करना छोड़ दो, १७ भलाई करना सीखो; यत्र से न्याय करो, उपद्रवी को सुधारो; अनाश का न्याय चुकाओ, विधवा का मुकदमा लड़ो।” १८ यहोवा कहता है, “आओ, हम आपस में वाद-विवाद करें: तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तो भी वे हिम के समान उजले हो जाएँगे; और चाहे अर्गावानी रंग के हों, तो भी वे ऊन के समान च्वेत हो जाएँगे। १९ यदि तुम आजाकारी होकर मेरी मानो, २० तो इस देश के उत्तम से उत्तम पदार्थ खाओगे; और यदि तुम न मानो और बलवा करो, तो तलवार से मारे जाओगे; यहोवा का यही वचन है।” २१ जो नगरी विश्वासयोग्य थी वह कैसे व्यभिचारिणी हो गई? वह न्याय से भरी थी और उसमें धार्मिकता पाया जाता था, परन्तु अब उसमें हत्यारे ही पाए जाते हैं। २२ तेरी चाँदी धातु का मैल हो गई, तेरे दाखमधु में पानी मिल गया है। २३ तेरे हाकिम हठीते और चोरों से मिले हैं। वे सब के सब धूस

खानेवाले और भेट के लालची हैं। वे अनाथ का न्याय नहीं करते, और न विधवा का मुकदमा अपने पास आने देते हैं। २४ इस कारण प्रभु सेनाओं के यहोवा, इस्माएल के शक्तिमान की यह वाणी है: “सुनो, मैं अपने शत्रुओं को दूर करके शान्ति पाऊँगा, और अपने बैरियों से बदला लौँगा। २५ मैं तुम पर हाथ बढ़ाकर तुम्हारा धातु का मैल पूरी रीति से भस्म करूँगा और तुम्हारी मिलावट पूरी रीति से दूर करूँगा। २६ मैं तुम में पहले के समान न्यायी और आदिकाल के समान मंत्री फिर नियुक्त करूँगा। उसके बाद तू धर्मपुरी और विश्वासयोग्य नगरी कहलाएगी।” २७ सिद्धोन न्याय के द्वारा, और जो उसमें फिरेंगे वे धार्मिकता के द्वारा छुड़ा लिए जाएँगे। २८ परन्तु बलवाइयों और पापियों का एक संग नाश होगा, और जिन्होंने यहोवा को त्यागा है, उनका अन्त हो जाएगा। २९ क्योंकि जिन बांजवृक्षों से तुम प्रीति रखते थे, उनसे वे लज्जित होंगे, और जिन बारियों से तुम प्रसन्न रहते थे, उनके कारण तुम्हारे मूँह काते होंगे। ३० क्योंकि तुम पते मुर्झाए हुए बांज वृक्ष के, और बिना जल की बारी के समान हो जाओगे। ३१ बलवान तो सन और उसका काम चिंगारी बनेगा, और दोनों एक साथ जलेंगे, और कोई बुझानेवाला न होगा।

२ आपोस के पुनर्यशायाह का वचन, जो उसने यहदा और यस्सलेम के विषय में दर्शन में पाया। ३ अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर ढूँढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊँचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा के समान उसकी ओर चलेंगे। ४ और बहुत देशों के लोग आएँगे, और आपस में कहेंगे: “आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएँ; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे।” क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिद्धोन से, और उसका वचन यस्सलेम से निकलेगा। ५ वह जाति-जाति का न्याय करेगा, और देश-देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा; और वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हाँसिया बनाएँगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विस्फू पर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे। ६ हे याकूब के घराने, आ, हम यहोवा के प्रकाश में चलें। ७ तैन अपनी प्रजा याकूब के घराने को त्याग दिया है, क्योंकि वे पूर्वजों के व्यवहार पर तन मन से चलते और पलिशियों के समान टोना करते हैं, और परदेशियों के साथ हाथ मिलाते हैं। ८ उनका देश चाँदी और सोने से भरपूर है, और उनके रखे हुए धन की सीमा नहीं; उनका देश धोड़ों से भरपूर है, और उनके रथ अग्रणीत है। ९ उनका देश मूर्तों से भरा है; वे अपने हाथों की बनाई हुई वस्तुओं को जिन्होंने अपनी उँगलियों से संवारा है, दण्डवत् करते हैं। १० इससे मनुष्य झुकते, और बड़े मनुष्य नीचे किए गए हैं, इस कारण उनको क्षमा न कर। ११ यहोवा के भय के कारण और उनके प्रताप के मारे चढ़ान में घुस जा, और मिट्टी में छिप जा। १२ क्योंकि आदिमियों की घमण्ड भरी आँखें नीची की जाएँगी और मनुष्यों का घमण्ड दूर किया जाएगा; और उस दिन केवल यहोवा ही ऊँचे पर विराजमान रहेगा। १३ क्योंकि सेनाओं के यहोवा का दिन सब घमण्डियों और ऊँची गर्दनवालों पर और उन्नति से फूलनेवालों पर आएगा; और वे झुकाए जाएँगे; १४ और लबानों के सब देवदारों पर जो ऊँचे और बड़े हैं, १५ बासान के सब बांजवृक्षों पर; और सब ऊँचे पहाड़ों और सब ऊँची पहाड़ियों पर; १६ सब ऊँचे गुम्फों और सब दृढ़ शहरपानहों पर; १७ तशीश के सब जहाजों और सब सन्दर्भ चिन्कारी पर वह दिन आता है। १८ मनुष्य का गर्व मिटाया जाएगा, और मनुष्यों का घमण्ड नीचा किया जाएगा; और उस दिन केवल यहोवा ही ऊँचे पर विराजमान रहेगा। १९ मूर्तों सब की सब नष्ट हो जाएँगी। २० जब यहोवा पृथ्वी को कम्पित करने के लिये उठेगा, तब उसके भय के कारण और उसके प्रताप के मारे लोग चट्टानों

की गुफाओं और भूमि के बिलों में जा घुसेंगे। २० उस दिन लोग अपनी चाँदी-सोने की मूर्तों को जिहें उन्होंने दण्डवत् करने के लिये बनाया था, छल्लन्दरों और चम्पागढ़ों के आगे फेकेंगे, २१ और जब यहोवा पृथ्वी को कम्पित करने के लिये उठेगा तब वे उसके भय के कारण और उसके प्रताप के मारे चट्टानों की दरारों और पहाड़ियों के छेदों में घुसेंगे। २२ इसलिए तुम मनुष्य से पेरे रहो जिसकी व्याप उसके नथनों में है, क्योंकि उसका मूल्य है ही क्या?

३ सुनो, प्रभु सेनाओं का यहोवा यस्शलेम और यहदा का सब प्रकार का सहारा और सिरहाना अर्थात् अन्न का सारा आधार, और जल का सारा आधार दूर कर देगा; २३ और वीर और योद्धा को, न्यायी और नवी को, भावी वक्ता और बृद्ध को, पचास सिपाहियों के सरदार और प्रतिष्ठित पुस्ख को, २४ मंत्री और चतुर कारीगर को, और निषुण टोन्हे को भी दूर कर देगा। २५ मैलडकों को उनके हाकिम कर दूँगा, और बच्चे उन पर प्रभुता करेंगे। २६ प्रजा के लोग आपस में एक दूसरे पर, और हर एक अपने पडोसी पर अंधेर करेंगे; और जबान बृद्ध जनों से और नीच जन माननीय लोगों से असभ्यता का व्यवहार करेंगे। २७ उस समय जब कोई पुस्ख अपने पिता के घर में अपने भाई को पकड़कर कहेगा, “तेरे पास तो बच्च है, आ हमारा न्यायी हो जा और इस उजड़े देश को अपने बश में कर ले;” २८ तब वह शपथ खाकर कहेगा, “मैं चंगा करनेवाला न होऊँगा; क्योंकि मेरे घर में न तो रोटी है और न कपड़े; इसलिए तुम मुझे प्रजा का न्यायी नहीं नियुक्त कर सकोगे।” २९ यस्शलेम तो डगमगाया और यहदा गिर गया है; क्योंकि उनके बचन और उनके काम यहोवा के विस्तृ हैं, जो उसकी तेजोमय आँखों के सामने बलवाले करनेवाले ठहरे हैं। ३० उनका चेहरा भी उनके विस्तृ साक्षी देता है, वे सदोमियों के समान अपने पाप को आप ही ख्वानते और नहीं छिपाते हैं। उन पर हाय! क्योंकि उन्होंने अपनी हानि आप ही की है। ३१ धर्मियों से कहो कि उनका भला होगा, क्योंकि वे अपने कामों का फल प्राप्त करेंगे। ३२ दृष्ट पर हाय! उसका बुरा होगा, क्योंकि उसके कामों का फल उसको मिलेगा। ३३ मेरी प्रजा पर बच्चे अंधेर करते और शियाँ उन पर प्रभुता करती हैं। हे मेरी प्रजा, तेरे अग्रु तड़े भटकते हैं, और तेरे चलने का मार्ग भुला देते हैं। ३४ यहोवा देश-देश के लोगों से मुक़दमा लड़ने और उनका न्याय करने के लिये खड़ा है। ३५ यहोवा अपनी प्रजा के बृद्ध और हाकिमों के साथ यह विवाद करता है, “तुम ही ने बारी की दाख खा डाली है, और दीन लोगों का धन लूटकर तुम ने अपने घरों में रखा है!” ३६ सेनाओं के प्रभु यहोवा की यह बाणी है, “तुम क्यों मेरी प्रजा को दलते, और दीन लोगों को पीस डालते हो!” ३७ यहोवा ने यह भी कहा है, “क्योंकि सियोन की शियाँ घमण्ड करती और सिर ऊँचे किए आँखें मटकाती और धूँधस्तों को छमछमाती हई तुम्क-तुम्क चलती हैं, ३८ इसलिए प्रभु यहोवा उनके सिर को गंजा करेगा, और उनके तन को उधरवाएगा।” ३९ उस समय प्रभु धूँधस्तों, जालियों, ४० चन्द्रहारों, झुमकों, कड़ों, धूँधटों, ४१ पगड़ियों, पैकरियों, पटकों, सुगन्धपात्रों, गण्डों, ४२ अँगूठियों, नथों, ४३ सुन्दर बञ्जों, कुर्तियों, चदरों, बटुओं, ४४ दर्पणों, मलमल के बञ्जों, बुन्दियों, दुपटों इन सभी की शोभा को दूर करेगा। ४५ सुगन्ध के बदले सड़ाहट, सुन्दर करधनी के बदले बन्धन की रस्सी, गूँथ हुए बालों के बदले गजापन, सुन्दर पटुके के बदले टाट की पेटी, और सुन्दरता के बदले दाग होंगे। ४६ तेरे पुस्ख तलवार से, और शूरवीर युद्ध में मारे जाएँगे। ४७ और उसके फाटकों में सौंस भरना और विलाप करना होगा; और वह भूमि पर अकेली बैठी रहेगी।

४ उस समय सात शियाँ एक पुस्ख को पकड़कर कहेंगी, “रोटी तो हम अपनी ही खाएँगी, और बच्च अपने ही पहनेंगी, केवल हम तेरी कहलाएँ; हमारी नामधारी दूर कर।” ५ उस समय इसाएल के बचे हुओं के लिये यहोवा की डाली, भूषण और महिमा ठहरेंगी, और भूमि की उपज, बड़ाई और शोभा ठहरेंगी। ६ और जो कोई सियोन में बचा रहे, और यस्शलेम में रहे, अर्थात् यस्शलेम में जितनों के नाम जीवनपत्र में लिखे हों, वे पवित्र कहलाएँगे। ७ यह तब होगा, जब प्रभु न्याय करनेवाली और भस्म करनेवाली आत्मा के द्वारा सियोन की शियों के मल को धो चुकेगा और यस्शलेम के खनू को दूर कर चुकेगा। ८ तब यहोवा सियोन पर्वत के एक-एक घर के ऊपर, और उसके सभास्थानों के ऊपर, दिन को तो धूँधें का बादल, और रात को धधकती आग का प्रकाश सिरजेगा, और समस्त वैभव के ऊपर एक मण्डप छाया रहेगा। ९ वह दिन को धूप से बचाने के लिये और आँधी-पानी और झड़ी में एक शरण और आड़ होगा।

५ अब मैं अपने प्रिय के लिये और उसकी दाख की बारी के विषय में गीत गाऊँगा: एक अति उपजाल टीले पर मेरे प्रिय की एक दाख की बारी थी। १ उसने उसकी मिट्ठी खोदी और उसके पत्थर बीनकर उसमें उत्तम जाति की एक दाखलता लगाई, उसके बीच में उसने एक गुम्मट बनाया, और दाखरस के लिये एक कुण्ड भी खोदा; तब उसने दाख की आशा की, परन्तु उसमें निकम्मी दाख दें ही लायी। २ अब हे यस्शलेम के निवासियों और हे यहदा के मनुष्यों, मेरे और मेरी दाख की बारी के बीच न्याय करो। ३ मेरी दाख की बारी के लिये और क्या करना रह गया जो मैंने उसके लिये न किया हो? फिर क्या कारण है कि जब मैंने दाख की आशा की तब उसमें निकम्मी दाखें लगी? ४ अब मैं तुम को बताता हूँ कि अपनी दाख की बारी से क्या कहँगा। मैं उसके कौटुम्बले बाड़े को उखाड़ दूँगा कि वह चट की जाए, और उसकी दीवार को ढा दूँगा कि वह रौदी जाए। ५ मैं उसे उजाड़ दूँगा; वह न तो फिर छाँटी और न खोदी जाएगी और उसमें भाँति-भाँति के कटीले पेड़ उतोंगे; मैं मेघों को भी आज्ञा दूँगा कि उस पर जल न बरसाएँ। ६ क्योंकि सेनाओं के यहोवा की दाख की बारी इसाएल का धराना, और उसका प्रिय पौधा यहदा के लोग है, और उसने उसमें न्याय की आशा की परन्तु अन्याय देख पड़ा; उसने धर्मिकता की आशा की, परन्तु उसे चिल्लाहट ही सुन पड़ी। ७ हाय उन पर जो धर से धर, और खेत से खेत यहाँ तक मिलाते जाते हैं कि कुछ स्थान नहीं बचता, कि तुम देश के बीच अकेले रह जाओ। ८ सेनाओं के यहोवा ने मेरे सुनते कहा है: “निश्चय बहुत से धर सुनसान हो जाएँगे, और बड़े-बड़े और सुन्दर धर निर्जन हो जाएँगे। ९ क्योंकि दस बीघे की दाख की बारी से एक ही बत दाखमधु मिलेगा, और होमेर धर के बीच से एक ही एपा अनन्त उत्पन्न होगा।” १० हाय उन पर जो बड़े तड़के उठकर मदिरा पीने लगते हैं और बड़ी रात तक दाखमधु पीते रहते हैं जब तक उनको गर्मी न चढ़ जाए। ११ उनके भोजों में वीणा, सारंगी, डफ, बाँसुरी और दाखमधु, ये सब पाये जाते हैं; परन्तु वे यहोवा के कार्य की ओर दृष्टि नहीं करते, और उसके हाथों के काम को नहीं देखते। १२ इसलिए अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा बैँधुआई में जाती है, उसके प्रतिष्ठित पुस्ख भूखे मरते और साधारण लोग प्यास से व्याकुल होते हैं। १३ इसलिए अधोलोक ने अत्यन्त लालसा करके अपना मुँह हृद से ज्यादा पसारा है, और उनका वैभव और भीड़-भाड़ और अनन्द करनेवाले सब के सब उसके पुँह में जा पड़ते हैं। (Sheol h7585) १४ साधारण मनुष्य दबाए जाते और बड़े मनुष्य नीचे किए जाते हैं, और अभिमानियों की आँखें नीची की जाती हैं। १५ परन्तु सेनाओं का यहोवा न्याय करने के कारण महान ठहरता, और पवित्र परमेश्वर धर्मी होने के कारण पवित्र ठहरता है। १६ तब भेड़ों के बच्चे मानो अपने खेत

में चरेगे, परन्तु हृष्पुष्टों के उजड़े स्थान परदेशियों को चराईं के लिये मिलेंगे। १५ हाय उन पर जो अर्थम् की अनर्थ की रसियों से और पाप को मानो गाड़ी के रस्से से खीच ले आते हैं, १६ जो कहते हैं, “वह फुटीं करे और अपने काम को शीघ्र करे कि हम उसको देखें; और इसाएल के पवित्र की युक्ति प्राप्त हो, वह निकट आए कि हम उसको समझें!” १७ हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अधियारे को उजियाला और उजियाले को अधियारा ठहराते, और कडवे को मीठा और मीठे को कडवा करके मानते हैं! १८ हाय उन पर जो अपनी दृष्टि में ज्ञानी और अपने लेखे बुद्धिमान हैं! १९ हाय उन पर जो दाखमधु पीने में वीर और मदिरा को तेज बनाने में बहादुर है, २० जो घस्त लेकर दृष्टों को निर्दोष, और निर्दोषों को दोषी ठहराते हैं! २१ इस कारण जैसे अनिं की लौ से खँडी भस्म होती है और सूखी घास जलकर बैठ जाती है, वैसे ही उनकी जड़ सड़ जाएगी और उनके फूल धूल होकर उड़ जाएँगे; क्योंकि उन्होंने सेनाओं के यहोवा की व्यवस्था को निकम्मी जाना, और इसाएल के पवित्र के बचन को तुच्छ जाना है। २२ इस कारण यहोवा का क्रोध अपनी प्रजा पर भड़का है, और उसने उनके विस्तु हाथ बढ़ाकर उनको मारा है, और पहाड़ काँप उठे, और लोगों की लोधे सड़कों के बीच कूड़ा सी पड़ी है। इन्हें पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है। २३ वह दूर-दूर की जातियों के लिये झण्डा खड़ा करेगा, और सीटी बजाकर उनको पृथ्वी की ओर से बुलाएगा, देखो, वे फुटीं करके वेंग से आएँगे। २४ उनमें कोई थका नहीं न कोई ठोकर खाता है; कोई उँधने या सोनेवाला नहीं, किसी का फेटा नहीं खुला, और किसी के जूतों का बन्धन नहीं टूटा; २५ उनके तीर शुद्ध और धनुष चढ़ाए हुए हैं, उनके घोड़ों के खुर बज्र के से और रथों के पहिये बवंडर सरीखे हैं। २६ वे सिंह या जवान सिंह के समान गरजते हैं; वे गुरुकर अहेर को पकड़ लेते और उसको ले भागते हैं, और कोई उसे उनसे नहीं छुड़ा सकता। २७ उस समय वे उन पर समुद्र के गर्जन के समान गरजेंगे और यदि कोई देश की ओर देखे, तो उसे अंधकार और संकट देख पड़ेगा और ज्योति मेंघों से छिप जाएगी।

६ जिस वर्ष उजियाह राजा मरा, मैंने प्रभु को बहुत ही ऊँचे सिंहासन पर विराजमान देखा; और उसके बब्ल के घर से मन्दिर भर गया। १ उससे ऊँचे पर साराप दिखाई दिए; उनके छ: छ: पंख थे; दो पंखों से वे अपने मूँह को ढाँपे थे और दो से अपने पाँवों को, और दो से उड़ रहे थे। २ और वे एक दूसरे से पुकारकर कह रहे थे: “सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है!” ३ और पुकारनेवाले के शब्द से डेवडियों की नींवें डोल उठी, और भवन धूँ से भर गया। ४ तब मैंने कहा, “हाय! हाय! मैं नाश हुआ; क्योंकि मैं अशद्ध होठवाले मनुष्य हूँ, और अशद्ध होठवाले मनुष्यों के बीच मैं रहता हूँ; क्योंकि मैंने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आँखों से देखा है!” ५ तब एक साराप हाथ में अंगारा लिए हुए, जिसे उसने चिमटे से बेदी पर से उठा लिया था, मैंने पास उड़कर आया। ६ उसने उससे मैं मूँह को छूकर कहा, “देख, इसने तेरे होठों को छू लिया है, इसलिए तेरा अर्थम् दूर हो गया और तेरे पाप क्षमा हो गए!” ७ तब मैंने प्रभु का यह बचन सुना, “मैं किसको भेजूँ, और हमारी ओर से कौन जाएगा?” तब मैंने कहा, “मैं यहाँ हूँ मुझे भेज!” ८ उसने कहा, “जा, और इन लोगों से कह, ‘सनते ही रहो, परन्तु न समझो; देखते ही रहो, परन्तु न बूझो।’” ९ तू इन लोगों के मन को मोटे और उनके कानों को भारी कर, और उनकी आँखों को बन्द कर; ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें, और कानों से सनें, और मन से बझें, और मन फिराएँ और चंगे हो जाएँ।” १० तब मैंने कहा, “हे प्रभु कब तक?” उसने कहा, “जब तक नगर न उजड़े और उनमें कोई रह

न जाए, और घरों में कोई मनुष्य न रह जाए, और देश उजाड़ और सुनसान हो जाए, ११ और यहोवा मनुष्यों को उसमें से दूर कर दे, और देश के बहुत से स्थान निर्जन हो जाएँ। १२ चाहे उसके निवासियों का दसवां अंश भी रह जाए, तो भी वह नाश किया जाएगा, परन्तु जैसे छोटे या बड़े बांज वृक्ष का काट डालने पर भी उसका ढूँठ बना रहता है, वैसे ही पवित्र वंश उसका ढूँठ ठहरेगा।”

७ यहोवा का राजा आहाज जो योताम का पुत्र और उजियाह का पोता था, उसके दिनों में अराम के राजा रसीन और इसाएल के राजा रमल्याह के पुत्र पेकह ने यस्शलेम से लड़ने के लिये चढ़ाई की, परन्तु युद्ध करके उनसे कुछ न बन पड़ा। १ जब दाऊद के घराने को यह समाचार मिला कि अरामियों ने ऐमियों से संधि की है, तब उसका और प्रजा का भी मन ऐसा काँप उठा जैसे बन के बृक्ष वायु चलने से काँप जाते हैं। २ तब यहोवा ने यशायाह से कहा, “अपने पुत्र शार्याश्व को लेकर धोवियों के खेत की सी डङ्क से ऊपरवाले जलकुण्ड की नाली के सिरे पर आहाज से भेट करने के लिये जा, ३ और उससे कह, ‘सावधान और शान्त हो; और उन दोनों धूआँ निकलती लुकटियों से अर्थात् रसीन और अरामियों के भडके हुए कोप से, और रमल्याह के पुत्र से मत डर, और न तेरा मन कच्चा हो। ४ क्योंकि अरामियों और रमल्याह के पुत्र समेत ऐमियों ने यह कहकर तेरे विस्तु बुरी युक्ति ठानी है कि आओ, ५ हम यहोवा द्वारा चढ़ाई करके उसको घबरा दें, और उसको अपने वश में लाकर ताबेल के पुत्र को राजा नियुक्त कर दें। ६ इसलिए प्रभु यहोवा ने यह कहा है कि यह युक्ति न तो सफल होगी और न पूरी। ७ क्योंकि अराम का सिर दमिश्क, और दमिश्क का सिर रसीन है। फिर ऐम का सिर सामरिया और सामरिया का सिर रमल्याह का पुत्र है। पैसठ वर्ष के भीतर ऐम का बल इतना टूट जाएगा कि वह जाति बर्नी न रहेगी। ८ यदि तुम लोग इस बात पर विश्वास न करो; तो मिश्र तुम स्थिर न रहोगे।” ९ फिर यहोवा ने आहाज से कहा, १० “अपने परमेश्वर यहोवा से कोई चिन्ह माँग; चाहे वह गहरे स्थान का हो, या ऊपर आकाश का हो।” (Sheol h7585) ११ आहाज ने कहा, “मैं नहीं माँगने का, और मैं यहोवा की परीक्षा नहीं करूँगा।” १२ तब उसने कहा, “हे दाऊद के घराने सुनो! क्या तुम मनुष्यों को थका देना छोटी बात समझकर अब मैं परमेश्वर को भी थका देगो? १३ इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इमानुएल रखेगी। १४ और जब तक वह बुरे को त्यागना और भले को ग्रहण करना न जाने तब तक वह मक्खन और मधु खाएगा। १५ क्योंकि उससे पहले कि वह लड़का बुरे को त्यागना और भले को ग्रहण करना जाने, वह देश जिसके दोनों राजाओं से तृ धबरा रहा है निर्जन हो जाएगा। १६ यहोवा तद्द पर, तेरी प्रजा पर और तेरे पिता के घराने पर ऐसे दिनों को ले आएगा कि जब से ऐम यहोवा से अलग हो गया, तब से वैसे दिन कभी नहीं आए - अर्थात् अश्शू के राजा के दिन।” १७ उस समय यहोवा उन मक्खियों को जो मिथ की नदियों के सिरों पर रहती है, और उन मधुमक्खियों को जो अश्शू देश में रहती है, सीटी बजाकर खुलाएगा। १८ और वे सब की सब आकर इस देश के पहाड़ी नालों में, और चट्टानों की दरारों में, और सब कॅंटीली झाड़ियों और सब चराइयों पर बैठ जाएँगी। १९ उसी समय प्रभु फरात के पावाले अश्शू के राजा स्पी भाड़े के उस्तरे से सिर और पाँवों के रोएँ मूँडेगा, उससे दाढ़ी भी पूरी मुड़ जाएगी। २० उसी समय ऐसा होगा कि मनुष्य केवल एक बछिया और दो भेड़ों को पालेगा; २१ और वे इतना दूध देंगी कि वह मक्खन खाया करेगा; क्योंकि जितने इस देश में रह जाएँगे वह सब मक्खन और मधु खाया करेंगे। २२ उस समय जिन-जिन स्थानों में हजार टुकड़े चाँदी की हजार दाखलताएँ हैं,

उन सब स्थानों में कटीले ही कटीले पेड़ होंगे। २५ तीर और धनुष लेकर लोग वहाँ जाया करेंगे, क्योंकि सारे देश में कटीले पेड़ हो जाएँगे; २६ और जितने पहाड़ कुदाल से खोदे जाते हैं, उन सभी पर कटीले पेड़ों के डर के मारे कोई न जाएगा, वे गाय-बैलों के चरने के, और भेड़-बकरियों के रौदने के लिये होंगे।

८ फिर यहोवा ने मुझसे कहा, “एक बड़ी पटिया लेकर उस पर साधारण अक्षरों से यह लिख: महेर्शालाल्हाशबज के लिये।” ९ और मैं विच्वासयोग्य पुस्तों को अर्थात् ऊरियाह याजक और जेवेरीयाह के पुत्र जकर्याह को इस बात की साक्षी करूँगा। ३ मैं अपनी पत्नी के पास गया, और वह गर्भवती हुई और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। तब यहोवा ने मुझसे कहा, “उसका नाम महेर्शालाल्हाशबज रख; ४ क्योंकि इससे पहले कि वह लड़का बाप और मौं पुकारना जाने, दीपिक और सामरिया दोनों की धन-साप्तिलृटकर अशशू का राजा अपने देश को भेजेगा।” ५ यहोवा ने फिर मुझसे कहा, ६ “इसलिए कि लोग शीलोह के धीर धीर बहनेवाले सोते को निकम्मा जानते हैं, और रसीन और रमल्याह के पुत्र के संग एका करके आनन्द करते हैं, ७ इस कारण सुन, प्रभु उन पर उस प्रबल और गहरे महानद को, अर्थात् अशशू के राजा को उसके सारे प्रताप के साथ चढ़ा लाएगा; और वह उनके सब नाटों को भर देगा और सारे तटों से छलककर बहेगा; ८ और वह यहां पर भी चढ़ आएगा, और बढ़ते-बढ़ते उस पर चढ़ेगा और गले तक पहुँचेगा; और हे इम्मानुएल, तेरा समस्त देश उसके पंखों के फैलने से ढूँप जाएगा।” ९ हे लोगों, हल्ला करो तो करो, परन्तु तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा। हे पृथ्वी के दूर-दूर देश के सब लोगों कान लगाकर सुनो, अपनी-अपनी कमर कसो तो कसो, परन्तु तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े किए जाएँगे; अपनी कमर कसो तो कसो, परन्तु तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा। १० तम युक्ति करो तो करो, परन्तु वह निष्पल हो जाएगी, तुम कुछ भी कहो, परन्तु तुम्हारा कहा हुआ ठहराया नहीं, क्योंकि परमेश्वर हमारे संग है। ११ क्योंकि यहोवा दृढ़ता के साथ मुझसे बोला और इन लोगों की सी चाल चलने को मुझे मना किया, १२ और कहा, “जिस बात को यह लोग राजदोह कहें, उसको तुम राजदोह न कहना, और जिस बात से वे डरते हैं उससे तुम न डरना और न भय खाना। १३ सेनाओं के यहोवा ही को पवित्र जानना; उसी का डर मानना, और उसी का भय खनना। १४ और वह शरणस्थान होगा, परन्तु इसाएल के दोनों घरानों के लिये ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान, और यस्तलेम के निवासियों के लिये फंदा और जाल होगा। १५ और बहुत से लोग ठोकर खाएँगे, वे गिरेंगे और चकनाचूर होंगे; वे फंदे में फँसेंगे और पकड़े जाएँगे।” १६ चितौती का पत्र बन्द कर दो, मैरे चेलों के बीच शिक्षा पर छाप लगा दो। १७ मैं उस यहोवा की बाट जोहता रहूँगा जो अपने मुख को याकूब के घराने से छिपाये है, और मैं उसी पर आशा लगाए रहूँगा। १८ देख, मैं और जो लड़के यहोवा ने मुझे सौंपे हैं, उसी सेनाओं के यहोवा की ओर से जो सियोन पर्वत पर निवास किए रहता है इसाएलियों के लिये चिन्ह और चमत्कार है। १९ जब लोग तुम से कहें, “ओझाओं और टोन्हों के पास जाकर पूछो जो गुनगुनाते और फुसफुसाते हैं,” तब तुम यह कहना, “क्या प्रजा को अपने परमेश्वर ही के पास जाकर न पूछना चाहिये? क्या जीवितों के लिये मुर्दों से पूछना चाहिये?” २० व्यवस्था और चितौती ही की चर्चा किया करो! यदि वे लोग इस वचनों के अनुसार न बोलें तो निश्चय उनके लिये पौं न फटेगी। २१ वे इस देश में क्लेशित और भूखे फिरे रहेंगे; और जब वे भूखे होंगे, तब वे क्रोध में आकर अपने राजा और अपने परमेश्वर को श्वाप देंगे, और अपना मुख ऊपर आकाश की ओर उठाएँगे; २२ तब वे

पृथ्वी की ओर दृष्टि करेंगे परन्तु उन्हें सकेती और अंधियारा अर्थात् संकट भरा अंधकार ही देख पड़ेगा; और वे घोर अंधकार में ढकेल दिए जाएँग।

१ तो भी संकट-भरा अंधकार जाता रहेगा। पहले तो उसने जब्लून और नामाली के देशों का अपमान किया, परन्तु अन्तिम दिनों में ताल की ओर यरदन के पार की अन्यजातियों के गलील को महिमा देगा। २ जो लोग अंधियारे में चल रहे थे उन्होंने बड़ा उजियाला देखा; और जो लोग घोर अंधकार से भेरे हुए मृत्यु के देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी। ३ तने जाति को बढ़ाया, तने उसको बहुत आनन्द दिया; वे तौर सामने कटनी के समय का सा आनन्द करते हैं, और ऐसे मान हैं जैसे लोग लट बॉटने के समय मग्न रहते हैं। ४ क्योंकि तने उसकी गर्दन पर के भारी जूँ और उसके बहौंगे के बाँस, उस पर अंधेर करनेवाले की लाठी, इन सभी को ऐसा तोड़ दिया है जैसे मिथानियों के दिन में किया था। ५ क्योंकि यद्दु में लड़नेवाले सिपाहियों के जूते और लहू में लथड़े हुए कपड़े सब आग का कौर हो जाएँगे। ६ क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँचे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। ७ उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिए वह उसको दाऊद की राजगंडी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा। सेनाओं के ओर यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा। ८ प्रभु ने याकूब के पास एक सन्देश भेजा है, और वह इसाएल पर प्रगट हुआ है; ९ और सारी प्रजा को, ऐसियों और सामरिया के वासियों को मालम हो जाएगा जो गर्व और कठोरता से बोलते हैं १० “इंटि तो गिर गई है, परन्तु हम गढ़े हुए पत्थरों से घर बनाएँगे; गूलर के बृक्ष तो कट गए हैं परन्तु हम उनके बदले देवदारों से काम लेंगे।” ११ इस कारण यहोवा उन पर रसीन के बैरियों को प्रबल करेगा, १२ और उनके शत्रुओं को अर्थात् पहले अराम को और तब पलिशियों को उभरेगा, और वे मुँह खोलकर इसाएलियों को निगल लेंगे। इने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है। १३ तो भी ये लोग अपने मानेवाले की ओर नहीं फिरे और न सेनाओं के यहोवा की खोल करते हैं। १४ इस कारण यहोवा इसाएल में से सिर और पृछ को, खजर की डालियों और सरकाण्डे को, एक ही दिन में काट डालेगा। १५ पुरनिया और प्रतिष्ठित पुस्त तो सिर हैं, और झूटी बातें सिखानेवाला नबी पूँछ है; १६ क्योंकि जो इन लोगों की अमुआई करते हैं वे इनको भटका देते हैं, और जिनकी अगुआई होती है वे नाश हो जाते हैं। १७ इस कारण प्रभु न तो इनके जवानों से प्रसन्न होगा, और न इनके अनाथ बालकों और विधवाओं पर दया करेगा; क्योंकि हर एक भक्तिहीन और कुकर्मी है, और हर एक के मुख से मूर्खता की बातें निकलती हैं। इनने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है। १८ क्योंकि दुष्टा आग के समान धधकती है, वह ऊँटकटारों और कॉटों को भस्म करती है, वरन् वह घेरे बन की झाड़ियों में आग लगाती है और वह धूँधूँ में चक्राचक्राकरकर ऊपर की ओर उठती है। १९ सेनाओं के यहोवा के रोष के मारे यह देश जलाया गया है, और ये लोग आग की इंधन के समान हैं; वे आपस में एक दूसरे से दया का व्यवहार नहीं करते। २० वे दाहिनी ओर से भोजनवस्तु छीनकर भी भूखे रहते, और बायी ओर से खाकर भी तृप्त नहीं होते; उसमें से प्रत्येक मनुष्य अपनी-अपनी बाँहों को माँस खाता है, २१ मनश्च ऐसै के और ऐसै मनश्च के विद्धु होकर, और वे दोनों मिलकर यहांटा के विद्धु हैं इनने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ, और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है।

१० हाय उन पर जो दृश्या से न्याय करते, और उन पर जो उत्पात करने की

आज्ञा लिख देते हैं, १ कि वे कंगलों का न्याय बिगाड़ें और मेरी प्रजा के दीन लोगों का हक मारें, कि वे विधायाओं को लूटें और अनाथों का माल अपना लें। २ तुम दण्ड के दिन और उस विपति के दिन जो दूर से आएंगी क्या करोगे? तुम सहायता के लिये किसके पास भागकर जाओगे? तुम आने वैभव को कहाँ रख छोड़ोगे? ३ वे केवल बन्दियों के पैरों के पास गिर पड़ोगे और मेरे हुओं के नीचे दबे पड़े रहेंगे। इन्हें पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है। ४ अश्वर पर हाय, जो मेरे क्रोध का लट और मेरे हाथ में का सोंठा है! वह मेरा क्रोध है। ५ मैं उसको एक भक्तिहीन जाति के विस्तु भेज़ूँगा, और जिन लोगों पर मेरा रोष भड़का है उनके विस्तु उसको आज्ञा दूँगा कि छीन-छान करे और लट ले, और उनको सड़कों की कीच के समान लताड़े। ६ परन्तु उसकी ऐसी मनसा न होगी, न उसके मन में ऐसा विचार है, क्योंकि उसके मन में यही है कि मैं बहुत सी जातियों का नाश और अन्त कर डालूँ। ७ क्योंकि वह कहता है, “क्या मेरे सब हाकिम राजा के तुल्य नहीं? ८ क्या कलनों कर्कमीश के समान नहीं है? क्या हमार अपीद के और सामरिया दामिशक के समान नहीं? ९ जिस प्रकार मेरा हाथ मूरतों से भेरे हुए उन राज्यों पर पहुँचा जिनकी मूरतों यस्थलेम और सामरिया की मूरतों से बढ़कर थीं, और जिस प्रकार मैंने सामरिया और उसकी मूरतों से किया, १० क्या उसी प्रकार मैं यस्थलेम से और उसकी मूरतों से भी न करूँ?” ११ इस कारण जब प्रभु सिद्धान्त पर्वत पर और यस्थलेम में अपना सब काम कर चुकेगा, तब मैं अश्वर के राजा के गर्व की बातों का, और उसकी घमण्ड भरी अँखों का बदला दूँगा। १२ उसने कहा है, “अपने ही बाहबल और बुद्धि से मैंने यह काम किया है, क्योंकि मैं चतुर हूँ, मैंने देश-देश की सीमाओं को हटा दिया, और उनके रखे हुए धन को लूट लिया; मैंने वीर के समान गढ़ी पर विजयनेहरों को उतार दिया है। १३ देश-देश के लोगों की धन-सम्पत्ति, चिड़ियों के थोसलों के समान, मैंने हाथ आई है, और जैसे कोई छोड़े हुए अण्डों को बटोर ले वैसे ही मैंने सारी पृथ्वी को बटोर लिया है; और कोई पंख फड़फड़ने या चौंच खोलने या ची-ची करनेवाला न था!” १४ क्या कुलहाड़ा उसके विस्तु जो उससे काटता हो डींग मारे, या अरी उसके विस्तु जो उसे खींचता हो बड़ाई करे? क्या सोटा अपने चलानेवाले को चलाए या छड़ी उसे उठाए जो काठ नहीं है! १५ इस कारण प्रभु अर्थात् सेनाओं का प्रभु उस राजा के हृष-पृष्ठ योद्धाओं को दुबला कर देगा, और उसके ऐव्यु के नीचे आग की सी जलन होगी। १६ इसाएल की ज्योति तो आग ठहरेगी, और इसाएल का पवित्र ज्वाला ठहरेगा; और वह उसके झाड़ - झाँखाड़ को एक ही दिन में भस्म करेगा। १७ और जैसे रोगी के क्षीण हो जाने पर उसकी दशा होती है वैसी ही वह उसके बन और फलाई बारी की शोषा पूरी रीति से नाश करेगा। १८ उस बन के बृक्ष इतने थोड़े रह जाएँगे कि लड़का भी उनको गिनकर लिख लेगा। १९ उस समय इसाएल के बचे हुए लोग और याकूब के घराने के भगो हुए, अपने मारनेवाले पर फिर कभी भरोसा न रखेंगे, परन्तु यहोवा जो इसाएल का पवित्र है, उसी पर वे सच्चाई से भरोसा रखेंगे। २० याकूब में से बचे हुए लोग पराक्रमी परमेश्वर की ओर फिरेंगे। २१ क्योंकि हे इसाएल, चाहे तेरे लोग समुद्र के रेतकणों के समान भी बहुत हों, तो भी निश्चय है कि उनमें से केवल बचे लोग ही लौटेंगे। सत्यानाश तो पूरे न्याय के साथ ठाना गया है। २२ क्योंकि प्रभु सेनाओं के यहोवा ने सारे देश का सत्यानाश कर देना ठाना है। २३ इसलिए प्रभु सेनाओं का यहोवा यह कहता है, “हे सिद्ध्यों में रहनेवाली मेरी प्रजा, अश्वर से मत डर; चाहे वह सोंटे से तज्ज्ञ मारे और मिस्त्र के समान तेरे ऊपर छड़ी ही उठाए। २४ क्योंकि अब थोड़ी ही देर

है कि मेरी जलन और क्रोध उनका सत्यानाश करके शान्त होगा २५ सेनाओं का यहोवा उसके विस्तु कोडा उठाकर उसको ऐसा मारेगा जैसा उसने और बनाम क चट्टान पर मिधानियों को मारा था; और जैसा उसने मिश्यों के विस्तु समुद्र पर लाठी बढ़ाइ, वैसा ही उसकी ओर भी बढ़ाएगा। २६ उस समय ऐसा होगा कि उसका बोझ तेरे कंधे पर से और उसका झूआ तेरी गर्दन पर से उठा लिया जाएगा, और अधिष्ठेक के कारण वह जूआ तोड़ डाला जाएगा।” २७ वह अव्यात में आया है, और मिश्रों में से होकर आगे बढ़ गया है; मिकमाश में उसने अपना सामान रखा है। २८ वे घाटी से पार हो गए, उन्होंने गेबा में रात काटी; रामाह अस्थरा उठा है, शाऊल का गिरा भाग निकला है। २९ हे गल्तीम की बेरी चिल्लता! हे लैशा के लोगों का नाश लगाओ! हाय बेचारा अनातोत! ३० मदमेना मारा-मारा फिरता है, गेबीम के निवासी भागने के लिये अपना-अपना सामान इकट्ठा कर रहे हैं। ३१ आज ही के दिन वह नोब में टिकेगा; तब वह सिद्धान्त पहाड़ पर, और यस्थलेम की पहाड़ी पर हाथ उठाकर धमकाएगा। ३२ देखो, प्रभु सेनाओं का यहोवा पेड़ों को भयानक रूप से छाँट डालेगा; ऊँचे-ऊँचे वृक्ष काटे जाएँगे, और जो ऊँचे हैं वे नीचे किए जाएँगे। ३३ वह घने वन को लोहे से काट डालेगा और लबानोन एक प्रतापी के हाथ से नाश किया जाएगा।

११ तब यिशै के ढूँठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में

से एक शाखा निकलकर फलवन्त होगी। ३४ और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युनिक और प्राक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी। ३५ और उसको यहोवा का भय सुग्राद्य—सा भाएगा। वह मुँह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा; ३६ परन्तु वह कंगलों का न्याय धार्मिकता से, और पृथ्वी के नग्न लोगों का निर्णय खराई से करेगा; और वह पृथ्वी को अपने बचन के सोंटे से मरेगा, और अपनी फूंक के झोंके से दृश्य को मिटा डालेगा। ३७ उसकी कटि का फेटा धार्मिकता और उसकी कमर का फेटा सच्चाई होगी। ३८ तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा रहेगा, और बछड़ा और जवान सिंह और पाला पोसा हुआ बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे, और एक छोटा लड़का उनकी अगुआई करेगा। ३९ गाय और रीछनी मिलकर चेरेंगी, और उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे; और सिंह बैल के समान भूसा खाया करेगा। ४० दूध पीता बच्चा करैते के बिल पर खेलेगा, और दूध छुड़ाया हुआ लड़का नाग के बिल में हाथ डालेगा। ४१ मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है। ४२ उस समय यिशै की जड़ देश-देश के लोगों के लिये एक झण्डा होगी; सब राज्यों के लोग उसे ढैंगें, और उसका विश्वामस्थान तेजोमय होगा। ४३ उस समय प्रभु अपना हाथ टूसी बार बढ़ाकर बचे हुओं को, जो उसकी प्रजा के रह गए हैं, अश्वर से, मिस्त्र से, पत्रोस से, कूशा से, एताम से, शिनार से, हमात से, और समुद्र के टीपों से मोल लेकर छुड़ाएगा। ४४ वह अन्यजातियों के लिये झण्डा खड़ा करके इसाएल के सब निकाले हुओं को, और यहदा के सब बिखरे हुओं को पृथ्वी की चारों दिशाओं से इकट्ठा करेगा। ४५ ऐप्रैम फिर डाह न करेगा और यहदा के तंग करनेवाले काट डाले जाएँगे; न तो ऐप्रैम यहदा से डाह करेगा और न यहदा ऐप्रैम को तंग करेगा। ४६ परन्तु वे पश्चिम की ओर पलिशियों के कंधे पर झाप्ता मरेंगे, और मिलकर पृथ्वीयों को लूटेंगे। वे एदोम और मोआब पर हाथ बढ़ाएँगे, और अमोनी उनके अधीन हो जाएँगे। ४७ यहोवा मिस्त्र के समुद्र की कोल को सुखा डालेगा, और फरात पर अपना हाथ बढ़ाकर प्रचण्ड लू से ऐसा

सुखाएगा कि वह सात धार हो जाएगा, और लोग जूता पहने हुए भी पार हो जाएँगे। ५६ उसकी प्रजा के बचे हुओं के लिये अश्शूर से एक ऐसा राज-मार्ग होगा जैसा मिस्र देश से चले आने के समय इसाएल के लिये हुआ था।

१२ उस दिन तक होगा, “हे यहोवा, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि यद्यपि

तू मुझ पर क्रोधित हुआ था, परन्तु अब तेरा क्रोध शान्त हुआ, और तूने मुझे शान्ति दी है।” २ देखो “परमेश्वर मेरा उद्धार है, मैं भरोसा रखँगा और न थरथराऊँगा; क्योंकि प्रभु यहोवा मेरा बल और मेरे भजन का विषय है, और वह मेरा उद्धारकर्ता हो गया है।” ३ तुम आनन्दपूर्वक उद्धार के स्रोतों से जल भरोगे। ४ और उस दिन तुम कहोगे, “यहोवा की स्तुति करो, उससे प्रार्थना करो; सब जातियों में उसके बड़े कामों का प्रचार करो, और कहो कि उसका नाम महान है।” ५ “यहोवा का भजन गाओ, क्योंकि उसने प्रतापमय काम किए हैं, इसे सरीर पृथ्वी पर प्रगत किया।” ६ हे सिन्योन में बसनेवाली तू जयजयकार कर और ऊँचे स्वर से गा, क्योंकि इसाएल का पवित्र तुझ में महान है।”

१३ बाबेल के विषय की भारी भविष्यद्वाणी जिसको आमोस के पुत्र यशायाह

ने दर्शन में पाया। १ मुझे पहाड़ पर एक झङ्गा खड़ा करो, हाथ से संकेत करो और उनसे ऊँचे स्वर से पुकारो कि वे सरदारों के फाटकों में प्रवेश करें। २ मैंने स्वयं अपने पवित्र किए हुओं को आजा दी है, मैंने अपने क्रोध के लिये अपने बीरों को बलाया है जो मेरे प्रताप के कारण प्रसन्न है। ३ पहाड़ों पर एक बड़ी भीड़ का सा कोलाहल हो रहा है, मानो एक बड़ी फौज की हलचल हो। राज्य-राज्य की इकट्ठी की हुई जातियाँ हलचल मचा रही हैं। सेनाओं का यहोवा युद्ध के लिये अपनी सेना इकट्ठी कर रहा है। ४ वे दूर देश से, आकाश के छोर से आए हैं, हाँ, यहोवा अपने क्रोध के हथियारों समेत सरे देश को नाश करने के लिये आया है। ५ हाय-हाय करो, क्योंकि यहोवा का दिन समीप है; वह सर्वशक्तिमान की ओर से मानो सत्यानाश करने के लिये आता है। ६ इस कारण सब के हाथ ढीले पड़ेंगे, और हर एक मनुष्य का हृदय पिघल जाएगा, ७ और वे घबरा जाएँगे। उनको पीड़ा और शोक होगा; उनको जच्चा की सी पीड़ाँ उठेंगी। वे चकित होकर एक दूसरे को तकेंगे; उनके मूँह जल जाएँगे। ८ देखो, यहोवा का वह दिन रोष और क्रोध और निर्दियत के साथ आता है कि वह पृथ्वी को उजाड़ डाले और पापियों को उसमें से नाश करे। ९ क्योंकि आकाश के तारागण और बड़े-बड़े नक्श अपना प्रकाश न देंगे, और सर्व उदय होते-होते अंधेरा हो जाएगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा। १० मैं जगत के लोगों को उनकी झूराई के कारण, और दुष्टों को उनके अधर्म का दण्ड ढाँगा; मैं अभिमानियों के अभिमान को नाश करँगा और उपद्रव करनेवालों के घमण्ड को तोड़ँगा। ११ मैं मनुष्य को कुन्दन से, और आदमी को ओपीर के सोने से भी अधिक महँगा करँगा। १२ इसलिए मैं आकाश को कँपाऊँगा, और पृथ्वी अपने स्थान से टल जाएगी; यह सेनाओं के यहोवा के रोष के कारण और उसके भड़के हए क्रोध के दिन होगा। १३ और वे खेड़े हुए हिन, या बिन चरवाहे की भेड़ों के समान अपने-अपने लोगों की ओर फिरेंगे, और अपने-अपने देश को भाग जाएँगे। १४ जो कोई मिले वह बेधा जाएगा, और जो कोई पकड़ा जाए, वह तलवार से मार डाला जाएगा। १५ उनके बाल-बच्चे उनके सामने पटक दिए जाएँगे; और उनके घर लौटे जाएँगे, और उनकी छिपायाँ भ्रष्ट की जाएँगी। १६ देखो, मैं उनके विस्तु मादी लोगों को उभासँगा जो न तो चाँदी का कुछ विचार करेंगे और न सोने का लालच करेंगे। १७ वे तीरों से जवानों को मारेंगे, और बच्चों पर कुछ दया न करेंगे, वे लड़कों पर कुछ तरस न खाएँगे। १८ बाबेल जो सब राज्यों का शिरोमणि है, और जिसकी शोभा पर कसदी लोग फूलते हैं, वह ऐसा हो जाएगा जैसे सदोम और गमोरा, जब

परमेश्वर ने उन्हें उलट दिया था। १९ वह फिर कभी न बसेगा और युग-युग उसमें कोई वास न करेगा; अरबी लोग भी उसमें डेरा खड़ा न करेंगे, और न चरवाहे उसमें अपने पशु बैठाएँगे। २० वहाँ जंगली जन्तु बैठेंगे, और उल्लू उनके घरों में भेर रहेंगे; वहाँ शर्तुर्मुख बरसेंगे, और जंगली बकरे वहाँ नाचेंगे। २१ उस नगर के राज-भवनों में हँड़ार, और उसके सुख-विलास के मन्दिरों में गीदां बोला करेंगे; उसके नाश होने का समय निकट आ गया है, और उसके दिन अब बहुत नहीं रहे।

१४ यहोवा याकूब पर दया करेगा, और इसाएल को फिर अपनाकर, उही

के देश में बसाएगा, और परदेशी उनसे मिल जाएँगे और अपने-अपने को याकूब के घराने से मिला लेंगे। १ देश-देश के लोग उनको उन्हीं के स्थान में पहुँचाएँगे, और इसाएल का घराना यहोवा की भूमि पर उनका अधिकारी होकर उनको दास और दासियाँ बनाएगा; क्योंकि वे अपने बैंधुवाई में ले जानेवालों को बन्दी बनाएँगे, और जो उन पर अत्याचार करते थे उन पर वे शासन करेंगे। २ जिस दिन यहोवा तुझे तेरे सन्ताप और घबराहट से, और उस कठिन श्रम से जो तुझ से लिया गया विश्राम देगा, ३ उस दिन तू बाबेल के राजा पर ताना मारकर कहेगा, “परिश्रम करानेवाला कैसा नाश हो गया है, सुनहले मन्दिरों से भरी नगरी कैसी नाश हो गई है। ४ यहोवा ने दुष्टों के सोंटे को और अन्याय से शासन करनेवालों के लठ को तोड़ दिया है, ५ जिससे वे मनुष्यों को लगातार रोष से मारते रहते थे, और जाति-जाति पर क्रोध से प्रभुता करते और लगातार उनके पीछे पड़े रहते थे। ६ अब सारी पृथ्वी को विश्राम मिला है, वह चैन से है; लोग ऊँचे स्वर से गा उठे हैं। ७ सोनवर और लबानोन के लेवदार भी तुझ पर आनन्द करके कहते हैं, ‘जब से तू गिराया गया तब से कोई हमें काटने को नहीं आया।’ ८ पाताल के नीचे अधोलोक में तुझ से मिलने के लिये हलचल हो रही है; वह तेरे लिये मुर्दा को अर्थात् पृथ्वी के सब सरदारों को जगाता है, और वह जाति-जाति से सब राजाओं को उनके सिंहासन पर से उठा खड़ा करता है। (Sheol h7585) ९ वे सब तुझ से कहेंगे, ‘क्या तू भी हमारे समान निर्बल हो गया है? क्या तू हमारे समान ही बन गया?’ १० तेरा वैभव और तेरी सारंगियों को शब्द अधोलोक में उतारा गया है; कीड़ी तेरा बिछौना और केचुप तेरा ओढ़ाना है। (Sheol h7585) ११ “हे भोर के चमकनेवाले तेरे तू कैसे आकाश से गिर पड़ा है? तू जो जाति-जाति को हरा देता था, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है?” १२ तू मूँह में कहता तो था, मैं स्वर्ग पर चढ़ाँगा, मैं अपने सिंहासन को परमेश्वर के तारागण से अधिक ऊँचा करँगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजँगा; १३ मैं मेघों से भी ऊँचे-ऊँचे स्थानों के ऊपर चढ़ाँगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा। १४ परन्तु तू अधोलोक में उस गड़े की तह तक उतारा जाएगा। (Sheol h7585) १५ जो तुझे देखेंगे तुझको ताकते हुए तेरे विषय में सोच-सोचकर कहेंगे, ‘क्या यह वही पुस्त है जो पृथ्वी को चैन से रहने न देता था और राज्य-राज्य में घबराहट डाल देता था; १६ जो जगत को जंगल बनाता और उसके नगरों को ढां देता था, और अपने बन्दियों को घर जाने नहीं देता था?’ १७ जाति-जाति के सब राजा अपने-अपने घर पर महिमा के साथ आराम से पड़े हैं; १८ परन्तु तू निकम्मी शाख के समान अपनी कब्र में से फेंका गया; तू उन मरे हुओं के शर्वों से धिरा है जो तलवार से बिधकर गड़े में पथरों के बीच में लताड़ी हुई लोथ के समान पड़े हैं। १९ तू उनके साथ कब्र में न गाड़ा जाएगा, क्योंकि तूने अपने देश को उजाड़ दिया, और अपनी प्रजा का घात किया है। “कृकमियों के वंश का नाम भी कभी न लिया जाएगा। २० उनके पूर्जों के अर्धम के कारण पुत्रों के घात की तैयारी करो, ऐसा न हो कि वे फिर उठकर

पृथ्वी के अधिकारी हो जाएँ, और जगत में बहुत से नगर बसाएँ।” २१ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, “मैं उनके विस्तु उड़ूँगा, और बाबेल का नाम और निशान मिटा डालूँगा, और बेटों-पेतों को काट डालूँगा,” यहोवा की यही वाणी है। २२ “मैं उसको साही की माँद और जल की झीलें कर दूँगा, और मैं उसे सत्यानाश के झाड़ से झाड डालूँगा,” सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। २३ सेनाओं के यहोवा ने यह शपथ खाइ है, “नि-सन्देह जैसा मैंने ठाना है, वैसा ही हो जाएगा, और जैसी मैंने युक्ति की है, वैसी ही पूरी होगी, २४ कि मैं अश्रू को अपने ही देश में तोड़ दूँगा, और अपने पहाड़ों पर उसे कुचल डालूँगा; तब उसका जुआ उनकी गर्दनों पर से और उसका बोझ उनके कंधों पर से उतर जाएगा।” २५ यही युक्ति सारी पृथ्वी के लिये ठहराई गई है; और यह वही हाथ है जो सब जातियों पर बढ़ा हुआ है। २६ क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने युक्ति की है और कौन उसको टाल सकता है? उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन रोक सकता है? २७ जिस वर्ष में आहाज राजा मर गया उसी वर्ष यह भारी भविष्यद्वारा हुई २८ “हे सारे पलिश्तीन तू इसलिए अनन्द न कर, कि तेरे मारनेवाले की लाली टूट गई, क्योंकि सर्प की जड़ से एक काला नाग उत्पन्न होगा, और उसका फल एक उड़नेवाला और तेज विषवाला अग्निसर्प होगा। २९ तब कंगालों के जेठे खाएँगे और दरिद्र लोग निरद बैठने पाएँगे, परन्तु मैं तेरे वंश को भूख से मार डालूँगा, और तेरे बचे हुए लोग घात किए जाएँगे। ३० हे फटक, तू हाय! हाय! कह; हे नगर, तू चिल्ला; हे पलिश्तीन तू सब का सब पिघल जा! क्योंकि उत्तर से एक धुआं उठेगा और उसकी सेना में से कोई पीछे न रहेगा।” ३१ तब जाति-जाति के दूरों को क्या उत्तर दिया जाएगा? यह कि “यहोवा ने सियोन की नीव डाली है, और उसकी प्रजा के दीन लोग उसमें शरण लेंगे।”

१५ मोआब के विषय भारी भविष्यद्वारा। निश्चय मोआब का आर नगर एक ही रात में उजाड़ और नाश हो गया है, निश्चय मोआब का कीर नगर एक ही रात में उजाड़ और नाश हो गया है। २८ बैत और दीबोन ऊँचे स्थानों पर रोने के लिये छढ़ गए हैं; नबो और मेदबा के ऊपर मोआब हाय! हाय! करता है। उन सभी के सिर मुँडे हुए, और सभी की दाढ़ियाँ मुँडी हुई हैं; ३ सड़कों में लोग टाट पहने हैं; छतों पर और चौकों में सब कोई आँसू बहाते हुए हाय! हाय! करते हैं। ४ हेशबोन और एलाते चिल्ला रहे हैं, उनका शब्द यहस तक सुनाई पड़ता है; इस कारण मोआब के हथियार-बन्द चिल्ला रहे हैं; उसका जी अति उदास है। ५ मेरा मन मोआब के लिये दुहाई देता है; उसके रईस सोअर और एलत-शलीशिया तक भागे जाते हैं। देखो, लहीत की चढ़ाई पर वे रोते हुए चढ़ रहे हैं; सुनो, होरोनैम के मार्ग में वे नाश होने की चिल्लाहट मचा रहे हैं। ६ निप्रीम का जल सख्त गया, घास कुम्हता गई और हरियाली मुर्जी गई, और ननी कुछ भी नहीं रही। ७ इसलिए जो धन उहोंने बचा रखा, और जो कुछ उन्होंने इकट्ठा किया है, उस सब को वे उस घाटी के पार लिये जा रहे हैं जिसमें मजन वक्ष है। ८ इस कारण मोआब के चारों ओर की सीमा में चिल्लाहट हो रही है, उसमें का हाहाकार एप्लैम और बैरेलीम में भी सुन पड़ता है। ९ क्योंकि दीपोन का सोता लह से भरा हुआ है; तो भी मैं दीपोन पर और दृग्ध डालूँगा, मैं बचे हुए मोआबियों और उनके देश से भागे हुओं के विस्तु सिंह भेजूँगा।

१६ जंगल की ओर से सेला नगर से सियोन की बेटी के पर्वत पर देश के हाकिम के लिये भेड़ों के बच्चों को भेजो। १० मोआब की बेटियाँ अर्नन के घाट पर उजाड़े हुए धोसते के पक्षी और उनके भटके हुए बच्चों के समान हैं। ११ सम्मति करो, न्याय चुकाओ; दोपहर ही में अपनी छाया को रात के

समान करो; घर से निकाले हुओं को छिपा रखो, जो मारे-मारे फिरते हैं उनको मत पकड़वाओ। १२ मेरे लोग जो निकाले हुए हैं वे तेरे बीच में रहें, नाश करनेवाले से मोआब को बचाओ। पीसेनेवाला नहीं रहा, लट्ट पाट फिर न होगी; क्योंकि देश में से अंधेर करनेवाले नाश हो गए हैं। १३ तब दया के साथ एक सिंहासन स्थिर किया जाएगा और उस पर दाऊद के तम्बू में सच्चाई के साथ एक विराजमान होगा जो सोच विचार कर सच्चा न्याय करेगा और धर्मिकता के काम पर तत्पर रहेगा। १४ हमने मोआब के गर्व के विषय सुना है कि वह अत्यन्त अधिमानी था; उसके अधिमान और गर्व और रोष के सम्बंध में भी सुना है—परन्तु उसका बड़ा बोल व्यर्थ है। १५ क्योंकि मोआब हाय! हाय! करेगा; सब के सब मोआब के लिये हाहाकार करेगे। कीरहरासत की दाख की टिकियों के लिये वे अति निराश होकर लम्बी-लम्बी साँस लिया करेगे। १६ क्योंकि हेशबोन के खेत और सिबमा की दाखलताएँ मुर्जी गई; जाति-जाति के अधिकारियों ने उनकी उत्तम-उत्तम लातों को काट-काटकर गिरा दिया है, वे याजेर तक पहुँची और जंगल में भी फैलती गईं; और बढ़ते-बढ़ते ताल के पार दूर तक बढ़ गई थी। १७ मैं याजेर के साथ सिबमा की दाखलताओं के लिये भी रोड़गा; हे हेशबोन और एलाते, मैं तुहाँ अपने आँसूओं से सीधँगा; क्योंकि तुहाँरे धृपकाल के फलों के और अनाज की कटनी के समय की ललकार सुनाई पड़ी है। १८ फलदारी बारियों में से अनन्द और मगनता जाती रही; दाख की बारियों में गीत न गया जाएगा, न हर्ष का शब्द सुनाई देगा; और दाखरस के कुण्डों में कोई दाख न रौदेगा, क्योंकि मैं उनके हर्ष के शब्द को बन्द करूँगा। १९ इसलिए मेरा मन मोआब के कारण और मेरा हृदय कीरहेस के कारण वीणा का सा क्रन्दन करता है। २० और जब मोआब ऊँचे स्थान पर मुँह दिखाते-दिखाते थक जाए, और प्रार्थना करने को अपने पवित्रस्थान में आए, तो उसे कुछ लाभ न होगा। २१ यही वह बात है जो यहोवा ने इससे पहले मोआब के विषय में कही थी। २२ परन्तु अब यहोवा ने यह कहा है, “मजदूरों के वर्षों के समान तीन वर्ष के भीर मोआब का वैभव और उसकी भीड़-भाड़ सब तुच्छ ठहरेगी; और थोड़े जो बचेंगे उनका कोई बल न होगा।”

१७ दमिश्क के विषय भारी भविष्यद्वारा। देखो, दमिश्क नगर न रहेगा, वह खण्डहर ही खण्डहर हो जाएगा। १३ अरोए के नगर निर्जन हो जाएँगे, वे पशुओं के झूँडों की चाराई बरेंगे; पशु उनमें बैठेंगे और उनका कोई भगानेवाला न होगा। १४ ऐप्रैम के गढ़वाले नगर, और दमिश्क का राज्य और बचे हुए अरामी, तीनों भविष्य में न रहेंगे; और जो दशा इश्वारियों के वैभव की हुई वही उनकी होगी; सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। १५ उस समय याकूब का वैभव घट जाएगा, और उसकी मोटी देह दुबली हो जाएगी। १६ और ऐसा होगा जैसा लवनेवाला अनाज काटकर बालों को अपनी अँकवार में समेटे या रपाइम नामक तराई में कोई सिला बीनता हो। १७ तो भी जैसे जैतून वृक्ष के झाड़ते समय कुछ फल रह जाते हैं, अर्थात् फुरनी पर दो-तीन फल, और फलवन्त डालियों में कहीं-कहीं चार-पाँच फल रह जाते हैं, वैसे ही उनमें सिला बिनाई होगी, इश्वाल के परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १८ उस समय मनुष्य अपने कर्ता की ओर दृष्टि करेगा, और उसकी अँखें इश्वाल के पवित्र की ओर लगी रहेंगी; १९ वह अपनी बनाई हुई वेदियों की ओर दृष्टि न करेगा, और न अपनी बनाई हुई अशेरा नामक मूरतों या सर्य की प्रतिमाओं की ओर देखेगा। २० उस समय उनके गढ़वाले नगर घने बन, और उनके निर्जन स्थान पहाड़ों की चोटियों के समान होंगे जो इश्वालियों के डर के मारे छोड़ दिए गए थे, और वे उजाड़ पड़े रहेंगे। २१ क्योंकि तू अपने उद्धारकी परमेश्वर को भूल गया और अपनी दृढ़ चट्टान का स्मरण नहीं रखा; इस कारण चाहे तू मनभावने पैथे लगाए और विदेशी कलम जमाये, २२ चाहे रोपने के दिन तू

अपने चारों और बाड़ा बाँधे, और सबै ही को उनमें फूल छिलने लगें, तो भी सन्ताप और असाध्य दुःख के दिन उसका फल नाश हो जाएगा। १२ हाय, हाय! देश-देश के बहुत से लोगों का कैसा नाद हो रहा है, वे समुद्र की लहरों के समान गरजते हैं। राज्य-राज्य के लोगों का कैसा गर्जन हो रहा है, वे प्रचण्ड धारा के समान नाद करते हैं। १३ राज्य-राज्य के लोग बाढ़ के बहुत से जल के समान नाद करते हैं, परन्तु वह उनको घुटकेगा, और वे दूष भाग जाएँगे, और ऐसे उडाए जाएँगे जैसे पाहाड़ों पर की भूमि वायु से, और धूल बवण्डर से धूमाकर उडाई जाती है। १४ सँझ को, देखो, बघराहट है! और भोर से पहले, वे लोप हो गये हैं। हमारे नाश करनेवालों का भाग और हमारे लटनेवाले की यही दशा होगी।

१८ हाय, पंखों की फड़फड़ाहट से भरे हुए देश, तू जो कूश की नदियों के पर है, १ और समुद्र पर दूरों को सरकण्डों की नावों में बैठाकर जल के मार्ग से यह कह के भेजता है, हे फूर्तीले दूरों, उस जाति के पास जाओ जिसके लोग बलिष्ठ और सुन्दर हैं, जो आदि से अब तक डरावने हैं, जो मापने और रौद्रनेवाला भी हैं, और जिनका देश नदियों से विभाजित किया हुआ है। २ हे जगत के सब रहनेवालों, और पृथकी के सब निवासियों, जब झण्डा पहाड़ों पर खड़ा किया जाए, उसे देखो! जब नरसिंगा झूँका जाए, तब सनो! ३ क्योंकि यहोवा ने मुझसे यह कहा है, “धूप की तेज गर्मी या कटनी के समय के ओसवाले बादल के समान मैं शान्त होकर निहास्त्वा।” ४ क्योंकि दाख तोड़ने के समय से पहले जब फूल फूल चुके, और दाख के गुच्छे पकने लगें, तब वह टहनियों को हँसुओं से काट डालेगा, और फैली हुई डालियों को तोड़-तोड़कर अलग फेंक देगा। ५ वे पहाड़ों के पॉसाहारी पक्षी तो उनको नोचते-नोचते धूपकाल बिताएँगे, और सब भाँति के वन पश्च उनको खाते-खाते सर्दी करेंगे। ६ उस समय जिस जाति के लोग बलिष्ठ और सुन्दर हैं, और जो आदि ही से डरावने होते आए हैं, और जो सामर्थी और रौद्रनेवाले हैं, और जिनका देश नदियों से विभाजित किया हुआ है, उस जाति से सेनाओं के यहोवा के नाम के स्थान सिव्योन पर्वत पर सेनाओं के यहोवा के पास भेट पहुँचाई जाएगी।

१९ मिस के विषय में भारी भविष्यद्वाणी। देखो, यहोवा शीघ्र उडनेवाले बादल पर सबार होकर मिस में आ रहा है; और मिस की मूर्ते उसके अने से थरथरा उठेंगी, और मिसियों का हादय पानी-पानी हो जाएगा। २ और मैं मिसियों को एक दूसरे के विस्तु उभास्त्वा, और वे आपस में लड़ेंगे, प्रत्येक अपने भाई से और हर एक अपने पड़ोसी से लड़ेगा, नगर-नगर में और राज्य-राज्य में सूदू छिड़ेंगे; ३ और मिसियों की बुद्धि मारी जाएगी और मैं उनकी युक्तियों को वर्थ्य कर दूँगा; और वे अपनी मूर्तों के पास और ओझों और फुसफुसानेवाले टोन्हों के पास जा जाकर उनसे पूछेंगे; ४ परन्तु मैं मिसियों को एक कठोर स्वामी के हाथ में कर दूँगा; और एक कूर राजा उन पर प्रभुता करेगा, प्रभु सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। ५ और समुद्र का जल सूख जाएगा, और महानी सूख कर खाली हो जाएगी; ६ और नाले से दुर्घात्मा अने लगें, और मिस की नहरें भी सूख जाएँगी, और नरकट और हगले कुम्हला जाएँगे। ७ नील नदी का तट उजड़ जाएगा, और उसके कछार की धास, और जो कुछ नील नदी के पास बोया जाएगा वह सूख कर नष्ट हो जाएगा, और उसका पता तक न लगेगा। ८ सब मछुए जितने नील नदी में बंसी डालते हैं विलाप करेंगे और लम्बी-लम्बी साँसें लेंगे, और जो जल के ऊपर जल फेंकते हैं वे निर्बल हो जाएँगे। ९ फिर जो लोग धुने हुए सन से काम करते हैं और जो सूत से बुनते हैं उनकी आशा टूट जाएगी। १० मिस के रईस तो निराश और

उसके सब मजदूर उदास हो जाएँगे। ११ निश्चय सोअन के सब हाकिम मूर्ख हैं; और फिरौन के बुद्धिमान मन्त्रियों की युक्ति पश्च की सी ठहरी। फिर तुम फिरौन से कैसे कह सकते हो कि मैं बुद्धिमानों का पुत्र और प्राचीन राजाओं की सन्तान हूँ? १२ अब तेरे बुद्धिमान कहाँ है? सेनाओं के यहोवा ने मिस के विषय जो युक्ति की है, उसको यदि वे जानते हों तो तुझे बताएँ। १३ सोअन के हाकिम मूर्ख बन गए हैं, नोप के हाकिमों ने धोखा खाया है, और जिन पर मिस के प्रधान लोगों का भरोसा था उन्होंने मिस को भरमा दिया है। १४ यहोवा ने उसमें भ्रमता उत्पन्न की है; उन्होंने मिस को उसके सारे कामों में उस मतवाले के समान कर दिया है जो वर्मन करते हुए डामगाता है। १५ और मिस के लिये कोई ऐसा काम न रहेगा जो सिर या पैँच से अथवा खजर की डालियों या सरकण्डे से हो सके। १६ उस समय मिसी, छियों के समान हो जाएँगे, और सेनाओं का यहोवा जो अपना हाथ उन पर बढ़ाएगा उसके डर के मारे वे थरथराएँगे और कॉप उठेंगे। १७ और यहदा का देश मिस के लिये यहाँ तक भय का कारण होगा कि जो कोई उसकी चर्चा सुनेगा वह थरथरा उठेगा; सेनाओं के यहोवा की उस युक्ति का यही फल होगा जो वह मिस के विस्तु करता है। १८ उस समय मिस देश में पौँच नार दूंगे जिनके लोग कनान की भाषा बोलेंगे और यहोवा की शपथ खाएँगी। उनमें से एक का नाम नाशनगर रखा जाएगा। १९ उस समय मिस देश के बीच में यहोवा के लिये एक बेदी होगी, और उसकी सीमा के पास यहोवा के लिये एक खम्भा खड़ा होगा। २० वह मिस देश में सेनाओं के यहोवा के लिये चिन्ह और साक्षी ठहरेगा; और जब वे अंधेर करनेवाले के कारण यहोवा की दुहाई देंगे, तब वह उनके पास एक उद्घारकर्ता और रक्षक भेजेगा, और उन्हें मुक्त करेगा। २१ तब यहोवा अपने आपको मिसियों पर प्रागट करेगा; और मिसी उस समय यहोवा को पहचानेंगे और मेलबलि और अन्वलि चाढ़ाकर उसकी उपासना करेंगे, और यहोवा के लिये मन्त्र मानकर पूरी भी करेंगे। २२ और यहोवा मिसियों को मारेगा, वह मारेगा और चंगा भी करेगा, और वे यहोवा की ओर फिरेंगे और वह उनकी विनती सुनकर उनको चंगा करेगा। २३ उस समय मिस से अश्शर जाने का एक राजमार्ग होगा, और अश्शरी मिस में आएँगे और मिसी लोग अश्शर को जाएँगे, और मिसी अश्शरियों के संग मिलकर आग्राहना करेंगे। २४ उस समय इसाएल, मिस और अश्शर तीनों मिलकर पृथ्वी के लिये आशीष का कारण होंगे। २५ क्योंकि सेनाओं का यहोवा उन तीनों को यह कहकर आशीष देगा, धन्य हो मेरी प्रजा मिस, और मेरा रचा हुआ अश्शर, और मेरा निज भाग इसाएल।

२० जिस वर्ष में अश्शर के राजा सर्गोन की आज्ञा से तर्तनि ने अशदोद आकर उससे युद्ध किया और उसको ले भी लिया, १ उसी वर्ष यहोवा ने आमोस के पुत्र यशायाह से कहा, “जाकर अपनी कमर का टाट खोल और अपनी जूतियाँ उतार,” अतः उसने बैसा ही किया, और वह नंगा और नों पॉव धूमता फिरता था। २ तब यहोवा ने कहा, “जिस प्रकार मेरा दास यशायाह तीन वर्ष से उघाड़ा और नों पॉव चलता आया है, कि मिस और कूश के लिये चिन्ह और लक्षण हो, ३ उसी प्रकार अश्शर का राजा मिसी और कूश के लोगों को बन्दी बनाकर देश निकाला करेगा, क्या लड़के क्या बूढ़े, सभी को बन्दी बनाकर उधाड़े और नों पॉव और नितम्ब खुले ले जाएगा, जिससे मिस लज्जित हो। ४ तब वे कूश के कारण जिस पर उनकी आशा थी, और मिस के हेतु जिस पर वे फूलते थे व्याकुल और लज्जित हो जाएँगे। ५ और समुद्र के इस पार के बसनेवाले उस समय यह कहेंगे, ‘देखो, जिन पर हम आशा रखते थे और जिनके पास हम अश्शर के राजा से बचने के लिये भागने को थे उनकी ऐसी दशा हो गई है। तो फिर हम लोग कैसे बचेंगे?’”

२१ समुद्र के पास के जंगल के विषय भारी वचन। जैसे दक्षिणी प्रचण्ड बवांडर चला आता है, वह जंगल से अर्थात् डारावें देश से निकट आ रहा है।

कँठ की बातों का मुझे दर्शन दिखाया गया है; विच्वासधारी विच्वासधार करता है, और नाशक नाश करता है। हे एलाम, चढ़ाई कर, हे मादै, घेर ले; उसका सब कराहना मैं बन्द करता हूँ। ३ इस कारण मेरी कमर में कठिन पीड़ा है; मुझ का मानो जच्चा की सी पीड़ा हो रही है; मैं ऐसे संकट में पड़ गया हूँ कि कुछ सुनाई नहीं देता, मैं ऐसा घबरा गया हूँ कि कुछ दिखाई नहीं देता। ४ मेरा हृदय धड़कता है, मैं अत्यन्त भयभीत हूँ, जिस साँझ की मैं बाट जोहता था उसे उसे मेरी श्वशराहट का कारण कर दिया है। ५ भोजन की तैयारी हो रही है, पहसु बैठाए जा रहे हैं, खाना-पीना हो रहा है। हे हाकिमों, उठो, ढाल में तेल मलो! ६ क्योंकि प्रभु ने मुझसे यह कहा है, “जाकर एक पहस्ता खड़ा कर दे, और वह जो कुछ देखे उसे बताए। ७ जब वह सवार देखे जो दो-दो करके आते हों, और गदहों और ऊँटों के सवार, तब बहुत ही ध्यान देकर सुनो।” ८ और उसने सिंह के से शब्द से पुकारा, “हे प्रभु मैं दिन भर खड़ा पहरा देता रहा और मैंने पूरी रातें पहरे पर काटी। ९ और क्या देखता हूँ कि मनुष्यों का दल और दो-दो करके सवार चले आ रहे हैं!” और वह बोल उठा, “गिर पड़ा, बाबेल गिर पड़ा; और उसके देवताओं के सब खुदी हुई मूरते भूमि पर चकनाचर कर डाली गई हैं।” १० हे मैं दाएँ हुए, और मेरे खलिहान के अन्न, जो बातें मैंने इस्पाल के परमेश्वर सेनाओं के यहोवा से सुनी है, उनको मैंने तुहँने जता दिया है। ११ दूमा के विषय भारी वचन। सेई में से कोई मुझे पुकार रहा है, “हे पहसु, रात का क्या सामाचार है? हे पहसु, रात की क्या खबर है?” १२ पहसु ने कहा, “भोर होती है और रात भी। यदि तुम पूछना चाहते हो तो पछो; फिर लौटकर आना।” १३ अब क्र के विस्तु भारी वचन। हे ददानी बटोहियों, तुम को अब क्र के जंगल में रात बितानी पड़ेगी। १४ हे तेमा देश के रहनेवाले, प्यासे के पास जल लाओ और रोटी लेकर भागनेवाले से मिलने के लिये जाओ। १५ क्योंकि वे तलवारों के सामने से वरन् नंगी तलवार से और ताने हुए धनुष से और घोर युद्ध से भागे हैं। १६ क्योंकि प्रभु ने मुझसे यह कहा है, “मजदूर के वर्षों के अन्सार एक वर्ष में केदार का सारा वैभव मिटाया जाएगा; १७ और केदार के धनुर्धीरी शूरीरों में से थोड़े ही रह जाएँगे, क्योंकि इस्पाल के परमेश्वर यहोवा ने ऐसा कहा है।”

२२ दर्शन की तराई के विषय में भारी वचन। तुम्हें क्या हुआ कि तुम सब

के सब छतों पर चढ़ गए हो, १ हे कोलाहल और ऊधम से भरी प्रसन्न नगरी! दृश्य में जो मारे गए हैं वे न तो तलवार से और न लडाई में मारे गए हैं। २ तेरे सब शासक एक संग भाग गए और बिना धनुष के बन्दी बनाए गए हैं। तेरे जिनेन शेष पाए गए वे एक संग बँधे गए, यथापि वे दूर भागे थे। ३ इस कारण मैंने कहा, “मेरी ओर से मुँह फेर लो कि मैं बिलख-बिलख कर रोकँ; मेरे नगर के सत्यानाश होने के शोक में मुझे शान्ति देने का यत्र मत करो।” ४ क्योंकि सेनाओं के प्रभु यहोवा का ठहराया हुआ दिन होगा, जब दर्शन की तराई में कोलाहल और रौद्रा जाना और बैचीनी होगी; शहरपनाह में सुरंग लगाई जाएगी और दुहाई का शब्द पहाड़ों तक पहुँचेगा। ५ एलाम पैदलों के दल और सवारों समेत तरकश बँधे हुए हैं, और कीर ढाल खोले हुए हैं। ६ तेरी उत्तम-उत्तम तराइयाँ रथों से भरी हुई होंगी और सवार फटक के सामने पांति बँधेंगे। ७ उसने यहदा का घूँघट खोल दिया है। उस दिन तूने बन नामक भवन के अञ्च-शङ्ख का स्मरण किया, ८ और तूने डाऊदपुरी की शहरपनाह की दरारों को देखा कि वे बहुत हैं, और तूने निचले जलकुण्ड के जल को इक्षा किया। ९ और यस्तलेम के घरों को पिनकर शहरपनाह के ढूँढ़ करने के लिये

घरों को ढा दिया। १० तूने दोनों दीवारों के बीच पुराने जलकुण्ड के जल के लिये एक कुण्ड खोदा। परन्तु तूने उसके कर्ता को स्मरण नहीं किया, जिसने प्राचीनकाल से उसको ठहरा रखा था, और न उसकी ओर तूने ढृति की। ११ उस समय सेनाओं के प्रभु यहोवा ने रोम-पीटने, सिर मुँडाने और टाट पहनने के लिये कहा था; १२ परन्तु क्या देखा कि हर्ष और आनन्द मनाया जा रहा है, गाय-बैल का घाट और भेड़-बकरी का बध किया जा रहा है, मौस खाया और दाखमधु पीया जा रहा है। और कहते हैं, “आओ खाएँ-पीएँ, क्योंकि कल तो हमें मरना है।” १३ सेनाओं के यहोवा ने मेरे कान में कहा और अपने मन की बात प्रगट की, “निश्चय तुम लोगों के इस अर्थम् का कुछ भी प्रायश्चित्त तुम्हारी मृत्यु तक न हो सकेगा,” सेनाओं के प्रभु यहोवा का यही कहना है। १४ सेनाओं का प्रभु यहोवा यह कहता है, “शेबना नामक उस भण्डारी के पास जो राजधाने के काम पर नियुक्त है जाकर कह, १५ ‘यहाँ तू क्या करता है? और यहाँ तेरा कौन है कि तूने अपनी कब्र यहाँ खुदवाई है? तू अपनी कब्र ऊँचे स्थान में खुदवाता और अपने रहने का स्थान चट्ठान में खुदवाता है? १६ देख, यहोवा तुझको बड़ी शक्ति से पकड़कर बहुत दूर फेंक देगा। १७ वह तुझे मरोड़कर गेन्द के समान लम्बे चौड़े देश में फेंक देगा; हे अपने स्वामी के घराने को लजिज्ज करनेवाले वहाँ तू मरेगा और तेरे वैभव के रथ वही रह जाएँगे। १८ मैं तुझको तेरे स्थान पर से ढकेल दूँगा, और तू अपने पद से उतार दिया जाएगा। १९ उस समय मैं हिल्कियाह के पुत्र अपने दास एल्याकीम को बुलाकर, उसे तेरा अंगरखा पहनाऊँगा, २० और उसकी कमर में तेरी पेटी कसकर बाँधूँगा, और तेरी प्रभुता उसके हाथ में ढूँगा। और वह यस्तलेम के रहनेवालों और यहदा के घराने का पिता ठहरेगा। २१ मैं डाऊद के घराने की कुँजी उसके कंधे पर रखूँगा, और वह खोलेगा और कोई बन्द न कर सकेगा; वह बन्द करेगा और कोई खोल न सकेगा। २२ और मैं उसको ढूँढ़ स्थान में खूँटी के समान गाँड़ूँगा, और वह अपने पिता के घराने के लिये वैभव का कारण होगा। २३ और उसके पिता से घराने का सारा वैभव, वंश और सन्तान, सब छोटे-छोटे पात्र, क्या कटोरे क्या सुहाइयाँ, सब उस पर टाँगी जाएँगी। २४ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है कि उस समय वह खूँटी जो ढूँढ़ स्थान में गाड़ी गई थी, वह ढीली हो जाएगी, और काटकर गिराई जाएगी; और उस पर का बोझ गिर जाएगा, क्योंकि यहोवा ने यह कहा है।”

२३ सोर के विषय में भारी वचन। हे तर्शीश के जहाजों हाय, हाय, करो;

क्योंकि वह उजड़ गया; वहाँ न तो कोई धर और न कोई शरण का स्थान है। यह बात उनको कितियों के देश में से प्रगट की गई है। २४ हे समुद्र के निकट रहनेवालों, जिनको समुद्र के पार जानेवाले सीढ़ीनी व्यापारियों ने धन से भर दिया है, चुप रहो। २५ शहीर का अन्न, और नील नदी के पास की उपज महासागर के मार्ग से उसको मिलती थी, क्योंकि वह और जातियों के लिये व्यापार का स्थान था। २६ हे सीदोन, लज्जित हो, क्योंकि समुद्र ने अर्थात् समुद्र के ढूँढ़ स्थान ने यह कहा है, “मैंने न तो कभी प्रसव की पीड़ा जानी और न बालक को जन्म दिया, और न बेटों को पाला और न बेटियों को पोसा है।” २७ जब सोर का समाचार मिस्र में पहुँचे, तब वे सुनकर संकट में पड़ेंगे। २८ समुद्र के निकट रहनेवालों हाय, हाय, करो! पर होकर तर्शीश को जाओ। २९ क्या यह तम्हारी प्रसन्नता से भरी हुई नगरी है जो प्राचीनकाल से बसी थी, जिसके पाँव उसे बसने के दूर ले जाते थे? ३० सोर जो राजाओं को गँड़ी पर बैठाती थी, जिसके व्यापारी हाकिम थे, और जिसके महाजन पृथ्वी भर में प्रतिष्ठित थे, उसके विस्तु किसने ऐसी युक्ति की है? ३१ सेनाओं के यहोवा ही ने ऐसी युक्ति की है कि समस्त गौरव के घमण्ड को तुच्छ कर दे और पृथ्वी के

प्रतिष्ठितों का अपमान करता है। १० हे तर्शीश के निवासियों, नील नदी के समान अपने देश में फैल जाओ, अब कुछ अवरोध नहीं रहा। ११ उसने अपना हाथ समुद्र पर बढ़ाकर राज्यों को हिला दिया है; यहोवा ने कनान के ढूब किलों को नाश करने की आज्ञा दी है। १२ और उसने कहा है, “हे सीदीन, हे भ्रष्ट की हई कुमारी, तुम फिर प्रसन्न होने की नहीं; उठ, पार होकर कितियों के पास जा, परन्तु वहाँ भी तुझे चैन न मिलेगा।” १३ कस्तियों के देश को देखो, वह जाति अब न रही; अशश ने उस देश को जंगली जन्तुओं का स्थान बनाया। उन्होंने मोर्चे बन्दी के अपने गुप्तम बनाए और राज बनवों को ढारिया, और उसको खण्डहर कर दिया। १४ हे तर्शीश के जहाजों, हाय, हाय, करो, क्योंकि तुम्हारा ढूढ़ स्थान उजड़ गया है। १५ उस समय एक राजा के दिनों के अनुसार सतर वर्ष तक सोर बिसरा हुआ रहेगा। सतर वर्ष के बीतने पर सोर वेश्या के समान गीत गाने लगेगा। १६ हे बिसरी हई वेश्या, वीणा लेकर नगर में घूम, भली भाँति बजा, बहुत गीत गा, जिससे लोग फिर तुझे याद करें। १७ सतर वर्ष के बीतने पर यहोवा सोर की सुधि लेगा, और वह फिर छिनाले की कमाई पर मन लगाकर धरती भर के सब राज्यों के संग छिनाला करेगी। १८ उसके व्यापार की प्राप्ति, और उसके छिनाले की कमाई, यहोवा के लिये पवित्र की जाएगी; वह न भण्डार में रखी जाएगी न संचय की जाएगी, क्योंकि उसके व्यापार की प्राप्ति उन्हीं के काम में आएगी जो यहोवा के सामने रहा करेंगे, कि उनको भरपूर भोजन और चमकीला बब्ल मिले।

२४ सनों, यहोवा पृथ्वी को निर्जन और सुनसान करने पर है, वह उसको

उल्टकर उसके रहनेवालों को तितर-बितर करेगा। १ और जैसी यजमान की वैसी याजक की; जैसी दास की वैसी स्वामी की; जैसी दासी की वैसी स्वामिनी की; जैसी लेनेवाले की वैसी बेचनेवाले की; जैसी उधार देनेवाले की वैसी उधार लेनेवाले की; जैसी ब्याज लेनेवाले की वैसी ब्याज देनेवाले की; सभी की एक ही दशा होगी। २ पृथ्वी शृंखला और सत्यानाश हो जाएगी, क्योंकि यहोवा ही ने यह कहा है। ३ पृथ्वी विलाप करेगी और मुझाएँी, जगत कुम्हलाएगा और मुझीं जाएगा; पृथ्वी के महान लोग भी कुम्हला जाएंगे। ४ पृथ्वी अपने रहनेवालों के कारण अशुद्ध हो गई है, क्योंकि उन्होंने व्यवस्था का उल्लंघन किया और विधि को पलट डाला, और सनातन वाचा को तोड़ दिया है। ५ इस कारण पृथ्वी को श्राव ग्रेसेगा और उसमें रहनेवाले दोषी ठहरेंगे, और इसी कारण पृथ्वी के निवासी भस्म होंगे और थोड़े ही मनुष्य रह जाएंगे। ६ नया दाखमधु जाता रहेगा, दाखलता मुझीं जाएगी, और जितने मन में अनन्द करते हैं सब लम्बी-लम्बी साँस लेंगे। ७ डफ का सुखदाई शब्द बन्द हो जाएगा, प्रसन्न होनेवालों का कोलाहल जाता रहेगा वीणा का सुखदाई शब्द शान्त हो जाएगा। ८ वे गाकर फिर दाखमधु न पीएँगे; पीनेवाले को मदिरा कड़वी लगेंगी। ९ गड़बड़ी मचानेवाली नगरी नाश होगी, उसका हर एक घर ऐसा बन्द किया जाएगा कि कोई घुस न सकेगा। १० सड़कों में लोग दाखमधु के लिये चिल्लाएँगे; आनन्द मिट जाएगा; देश का सारा हर्ष जाता रहेगा। ११ नगर उजाड़ ही उजाड़ रहेगा, और उसके फाटक तोड़कर नाश किए जाएँगे। १२ क्योंकि पृथ्वी पर देश-देश के लोगों में ऐसा होगा जैसा कि जैतून के समय, या दाख तोड़ने के बाद कोई-कोई फल रह जाते हैं। १३ वे लोग गला खोलकर जयजयकर करेंगे, और यहोवा के माहात्म्य को देखकर समुद्र से ललकरेंगे। १४ इस कारण पूर्व में यहोवा की महिमा करो, और समुद्र के द्वीपों में इङ्गाल के परमेश्वर यहोवा के नाम का गुणानुवाद करो। १५ पृथ्वी की छोर से हर में ऐसी गीत की ध्वनि सुन पड़ती है, कि धर्मी की महिमा और बड़ाई हो। परन्तु मैंने कहा, “हाय, हाय! मैं नाश हो गया, नाश! क्योंकि विश्वासघाती विश्वासघात करते, वे बड़ा ही विश्वासघात करते हैं।” १६ हे

पृथ्वी के रहनेवालों तुम्हरे लिये भय और गङ्गा और फंदा है! १८ जो कोई भय के शब्द से भागे वह गङ्गे में गिरेगा, और जो कोई गङ्गे में से निकले वह फंदे में फँसेगा। क्योंकि आकाश के झारोंखे खुल जाएँगे, और पृथ्वी की नीव डोल उठेगी। १९ पृथ्वी फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी पृथ्वी अत्यन्त कम्पयामन होगी। २० वह मतवाले के समान बहुत डगमगाएगी और मचान के समान डोलेगी; वह अपने पाप के बोझ से दबकर गिरेगी और फिर न उठेगी। २१ उस समय ऐसा होगा कि यहोवा आकाश की सेना को आकाश में और पृथ्वी के राजाओं को पृथ्वी ही पर टण्ड देगा। २२ वे बन्दियों के समान गङ्गे में इकट्ठे किए जाएँगे और बन्दीगृह में बन्द किए जाएँगे; और बहुत दिनों के बाद उनकी सुधि ली जाएगी। २३ तब चन्द्रमा संकुचित हो जाएगा और सर्व लज्जित होगा; क्योंकि सेनाओं का यहोवा सिद्धयोन पर्वत पर और यस्सलेम में अपनी प्रजा के पुनियों के सामने प्रताप के साथ राज्य करेगा।

२५ हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे सराहँगा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा; क्योंकि तने आश्वर्यकर्मी किए हैं, तने प्राचीनकाल से पूरी सच्चाई के साथ युक्तियों की हैं। २ तने नगर को ढेर बना डाला, और उस गढ़वाले नगर को खण्डहर कर डाला है; तने परदेशियों की राजपूती को ऐसा उजाड़ा कि वह नगर नहीं रहा; वह फिर कभी बसाया न जाएगा। ३ इस कारण बलवन्त राज्य के लोग तेरी महिमा करेंगे; भयंकर जातियों के नगरों में तेरा भय माना जाएगा। ४ क्योंकि तू संकट में दीनों के लिये गढ़, और जब भयानक लोगों का झोंका दीवार पर बौद्धार के समान होता था, तब तू दीरदों के लिये उनकी शरण, और तपन में छाया का स्थान हुआ। ५ जैसे निर्जल देश में बादल की छाया से तपन ठंडी होती है वैसे ही तू परदेशियों का कोलाहल और कूर लोगों को जयजयकर बन्द करता है। ६ देसनाओं का यहोवा इसी पर्वत पर सब देशों के लोगों के लिये ऐसा भोज तैयार करेगा जिसमें भाँति-भाँति का चिकना भोजन और निश्चार हुआ दाखमधु होगा; उत्तम से उत्तम चिकना भोजन और बहुत ही निश्चार हुआ दाखमधु होगा। ७ और जो परदा सब देशों के लोगों पर पड़ा है, जो धूँधू सब जातियों पर लटका हुआ है, उसे वह इसी पर्वत पर नाश करेगा। ८ वह मृत्यु को सदा के लिये नाश करेगा, और प्रभु यहोवा सभी के मुख पर से आँखें पौछ डालेगा, और अपनी प्रजा की नामधाराई सारी पृथ्वी पर से दूर करेगा; क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है। ९ उस समय यह कहा जाएगा, “देखो, हमारा परमेश्वर यही है; हम इसी की बाट जोहते आए हैं, कि वह हमारा उद्धार करे। यहोवा यही है, हम उसकी बाट जोहते आए हैं। हम उससे उद्धार पाकर मग्न और आनन्दित होंगे।” १० क्योंकि इस पर्वत पर यहोवा का हाथ सर्वदा बना रहेगा और मोआब अपने ही स्थान में ऐसा लाताड़ा जाएगा जैसा धोर में पुआल लताड़ा जाता है। ११ वह उसमें अपने हाथ इस प्रकार फैलाएगा, जैसे कोई तैरते हुए फैलाएँ; परन्तु वह उसके गर्व को तोड़ेगा; और उसकी चतुराई को निष्फल कर देगा। १२ उसकी ऊँची-ऊँची और दृढ़ शहरपनाहों को वह झुकाएगा और नीचा करेगा, वरन् भूमि पर गिराकर मिट्टी में मिला देगा।

२६ उस समय यहदा देश में यह गीत गाया जाएगा, “हमारा एक दृढ़ नगर है; उद्धार का काम देने के लिये वह उसकी शहरपनाह और गढ़ को नियुक्त करता है। २ फाटकों को खोलो कि सच्चाई का पालन करनेवाली एक धर्मी जाति प्रवेश करे। ३ जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए है, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है। ४ यहोवा पर सदा भरोसा रख, क्योंकि प्रभु यहोवा सनातन चट्ठान है। ५ वह ऊँचे पदवाले को झुका देता, जो नगर ऊँचे पर बसा है उसको वह नीचे कर देता। वह उसको

भूमि पर गिराकर मिट्टी में मिला देता है। ६ वह पाँवों से, वरन् दरिद्रों के पैरों से रौद्रा जाएगा।” ७ धर्मी का मार्ग सच्चाई है, तू जो स्वयं सच्चाई है, तू धर्मी की अगुआई करता है। ८ हे यहोवा, तेरे न्याय के मार्ग में हम लोग तेरी बाट जोहते आए हैं; तेरे नाम के स्मरण की हमारे प्राणों में लालसा बनी रहती है। ९ रात के समय मैं जी से तेरी लालसा करता हूँ, मेरा सम्पूर्ण मन यथ के साथ तुझे ढूँढता है। क्योंकि जब तेरे न्याय के काम पृथ्वी पर प्रगट होते हैं, तब जगत के रहनेवाले धार्मिकता को सीखते हैं। १० दुष्पर यह दया भी की जाए तो भी वह धार्मिकता को न सीखेगा; धर्मराज्य में भी वह कुठिलता करेगा, और यहोवा का माहात्म्य उसे सद्य न पड़ेगा। ११ हे यहोवा, तेरा हथ बढ़ा हुआ है, पर वे नहीं देखते। परन्तु वे जानेंगे कि तुझे प्रजा के लिये कैसी जलन है, और लजाएँगे। १२ तेरे बैरी आग से भस्म होंगे। हे यहोवा, तू हमारे लिये शान्ति ठहराएगा, हमने जो कुछ किया है उसे तू ही ने हमारे लिये किया है। १३ हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तेरे सिवाय और स्वामी भी हम पर प्रभुता करते थे, परन्तु तेरी कृपा से हम केवल तेरे ही नाम का गुणानुवाद करेंगे। १४ वे मर गए हैं, फिर कभी जीवित नहीं होंगे; उनको मरे बहुत दिन हुए, वे फिर नहीं उठने के; तने उनका विचार करके उनको ऐसा नाश किया कि वे फिर स्मरण में न आएँगे। १५ परन्तु तू जाति को बढ़ाया; हे यहोवा, तू जाति को बढ़ाया है; तू अपनी महिमा दिखाई है और उस देश के सब सीमाओं को तोड़ा बढ़ाया है। १६ हे यहोवा, दुःख में वे तुझे स्मरण करते थे, जब तू उठाए ताड़ना देता था तब वे दबे स्वर से अपने मन की बात तुझ पर प्रगट करते थे। १७ जैसे गर्भवती झी जनने के समय ऐंती और पीड़ा के कारण चिल्ला उठती है, हम लोग भी, हे यहोवा, तेरे सामने वैसे ही ही गए हैं। १८ हम भी गर्भवती हुए, हम भी ऐंते, हमने मानो वायु ही की जन्म दिया। हमने देश के लिये कोई उद्घार का काम नहीं किया, और न जगत के रहनेवाले उत्पन्न हुए। १९ तेरे मेरे हुए लोग जीवित होंगे, मुर्दे उठ खड़े होंगे। हे मिट्टी में बसनेवालों, जागकर जयजयकर करो! क्योंकि तेरी ओस ज्योति से उत्पन्न होती है, और पृथ्वी मुर्दों को लौटा देगी। २० हे मेरे लोगों, आओ, अपनी-अपनी कोठरी में प्रवेश करके किवाड़ों को बन्द करो; थोड़ी देर तक जब तक क्रोध शान्त न हो तब तक अपने को छिपा रखो। २१ क्योंकि देखो, यहोवा पृथ्वी के निवासियों को अधर्म का दण्ड देने के लिये अपने स्थान से चला आता है, और पृथ्वी अपना खून प्रगट करेगी और घात किए हुओं को और अधिक न छिपा रखेगी।

२७ उस समय यहोवा अपनी कड़ी, बड़ी, और दृढ़ तलवार से लियातान नापक वेग और टेढ़े चलनेवाले सर्प को दण्ड देगा, और जो अजगर समुद्र में रहता है उसको भी घात करेगा। १ उस समय एक सुन्दर दाख की बारी होगी, तुम उसका यश गाना! २ मैं यहोवा उसकी रक्षा करता हूँ, मैं क्षण-क्षण उसको सीचता रहँगा। मैं रात-दिन उसकी रक्षा करता रहँगा ऐसा न हो कि कोई उसकी हानि करे। ३ मेरे मन में जलजलाहट नहीं है। यदि कोई भाँति-भाँति के कीले पेड़ मुझसे लड़ने को खड़े करता, तो मैं उन पर पाँव बढ़ाकर उनको पूरी रीति से भयम कर देता। ४ या मेरे साथ मेल करने को वे मेरी शरण लें, वे मेरे साथ मेल कर लें। ५ भविष्य में याकूब जड़ पकड़ेगा, और इस्माइल फूले-फलेगा, और उसके फलों से जगत भर जाएगा। ६ क्या उसने उसे मारा जैसा उसके मानेवालों को मारा था? क्या वह घात किया गया जैसे उसके घात किए हुए घात हुए? ७ जब तेरे उसे निकाला, तब सोच-विचार कर उसको दुःख दिया: उसने पुरवाई के दिन उसको प्रचण्ड वायु से उड़ा दिया है। ८ इससे याकूब के अधर्म का प्रायश्चित्र किया जाएगा और उसके पाप के दू होने का प्रतिफल यह होगा कि वे वेदी के सब पत्थरों को चना बनाने के पत्थरों के समान चकनाचूर करेंगे, और अशेरा और सूर्य की प्रतिमाएँ फिर

खड़ी न रहेंगी। ९ क्योंकि गढ़वाला नगर निर्जन हुआ है, वह छोड़ी हुई बस्ती के समान निर्जन और जंगल हो गया है; वहाँ बछड़े चरेंगे और बरी बैठेंगे, और पेड़ों की डालियों की फुनगी को खा लेंगे। १० जब उसकी शाखाएँ सूखे जाएँ तब तोड़ी जाएँगी; और द्वियाँ आकर उनको तोड़कर जला देगी। क्योंकि ये लोग निर्बुद्धि हैं; इसलिए उनका कर्ता उन पर दया न करेगा, और उनका रचनेवाला उन पर अनुग्रह न करेगा। ११ उस समय यहोवा फरात से लेकर मिस्र के नाले तक अपने अन्न को फटकेगा, और हे इस्माइलियों तुम एक-एक करके इकट्ठे किए जाओगे। १२ उस समय बड़ा नरसिंगा फूँका जाएगा, और जो अशूर देश में नाश हो रहे थे और जो मिस्र देश में बरबस बसाए हुए थे वे यस्तातेम में आकर पवित्र पर्वत पर यहोवा को दण्डवत् करेंगे।

२८ घमण्ड के मुकुट पर हाय! जो ऐप्रैम के मतवालों का है, और उनकी भड़कीली सुन्दरता पर जो मुझनिवाला फूल है, जो अति उपजाऊ तराई के सिरे पर दाखमधु से मतवालों की है। २ देखो, प्रभु के पास एक बलवन्त और सामर्थी है जो ओले की वर्षी या उजाडनेवाली औंधी या बाढ़ की प्रचण्ड धार के समान है वह उसको कठोरता से भूमि पर गिरा देगा। ३ ऐप्रैमी मतवालों के घमण्ड का मुकुट पाँव से लालता जाएगा; ४ और उनकी भड़कीली सुन्दरता का मुझनिवाला फूल जो अति उपजाऊ तराई के सिरे पर है, वह ग्रीष्मकाल से पहले पके अंजीर के समान होगा, जिसे देखनेवाला देखते ही हाथ में ले और निगल जाए। ५ उस समय सेनाओं का यहोवा स्वयं अपनी प्रजा के बचे हुओं के लिये सुन्दर और प्रतापी मुकुट ठहरेगा; ६ और जो न्याय करने को बैठते हैं उनके लिये न्याय करनेवाली आत्मा और जो चढ़ाई करते हुए शब्दों को नगर के फाटक से हटा देते हैं, उनके लिये वह बल ठहरेगा। ७ ये भी दाखमधु के कारण डगमगाते और मदिरा से लड़खड़ाते हैं; याजक और नबी भी मदिरा के कारण डगमगाते हैं, दाखमधु ने उनको भुला दिया है, वे मदिरा के कारण लड़खड़ाते और दर्शन पाते हुए भटके जाते, और न्याय में भूल करते हैं। ८ क्योंकि सब भोजन आसन वमन और मल से भरे हैं, कोई शुद्ध स्थान नहीं बचा। ९ “वह किसको ज्ञान सिखाएगा, और किसको अपने समाचार का अर्थ समझाएगा? क्या उनको जो दूध छुड़ाए हुए और स्तन से अलगाए हुए हैं? १० क्योंकि आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ।” ११ वह तो इन लोगों से परदेशी होड़ों और विदेशी भाषावालों के द्वारा बतें करेगा; १२ जिनसे उसने कहा, “विश्वाम इसी से मिलेगा; इसी के द्वारा थके हुए को विश्वाम दो;” परन्तु उन्होंने सुना न चाहा। १३ इसलिए यहोवा का वचन उनके पास आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम है, थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ, जिससे वे ठोकर खाकर चित्त गिरे और घायल हो जाएँ, और फंदे में फैसकर पकड़े जाएँ। १४ इस कारण हे ठश करनेवालों, यस्तातेमवासी प्रजा के हाकिमों, यहोवा का वचन सुनो! १५ तुम ने कहा है “हमने मृत्यु से बाचा बाँधी और अधेलोक से प्रतिज्ञा कराई है; इस कारण विपरित जब बाढ़ के समान बढ़ आए तब हमारे पास न आएगी; क्योंकि हमने झूठ की शरण ली और मिथ्या की आड़ में छिपे हुए हैं।” (Sheol h7585) १६ इसलिए प्रभु यहोवा यह कहता है, “देखो, मैंने सिध्योन में नीच का पत्थर रखा है, एक परखा हुआ पत्थर, कोने का अनमोल और अति दृढ़ नीच के योग्य पत्थर: और जो कोई विश्वास रखे वह उतावली न करेगा। १७ और मैं न्याय को डोरी और धार्मिकता को साहूल ठहराऊँगा; और तुम्हारा झूठ का शरणस्थान ओलों से बह जाएगा, और तुम्हारे छिपने का स्थान जल से डब जाएगा।” १८ तब जो बाचा तुम ने मृत्यु से बाँधी है वह दृट जाएगी, और जो प्रतिज्ञा तुम ने अधेलोक से कराई वह न ठहरेगी; जब विपरित बाढ़ के समान बढ़ आए, तब तुम उसमें डब ही जाओगे।

(Sheol h7585) १९ जब जब वह बढ़ आए, तब-तब वह तुम को ले जाएगी; वह प्रतिदिन वरन् रात-दिन बढ़ा करेगी; और इस समाचार का सुनना ही व्याकुल होने का कारण होगा। २० क्योंकि बिछौना टांग फैलाने के लिये छोटा, और ओढ़ना ओढ़ने के लिये संकरा है। २१ क्योंकि यहोवा ऐसा उठ खड़ा होगा जैसा वह पराजीम नामक पर्वत पर खड़ा हुआ और जैसा गिबोन की तराई में उसने क्रोध दिखाया था; वह अब फिर क्रोध दिखाएगा, जिससे वह अपना काम करे, जो अचम्भित काम है, और वह कार्य करे जो अनोखा है। २२ इसलिए अब तुम ठाठा मत करो, नहीं तो तुम्हारे बन्धन क्से जाएँगे; क्योंकि मैंने सेनाओं के प्रभु यहोवा से यह सुना है कि सारे देश का सत्यानश ठान गया है। २३ कान लगाकर मेरी सुनो, ध्यान धरकर मेरा वचन सुनो। २४ क्या हल जोतनेवाला बीज बोने के लिये लगातार जोता रहता है? क्या वह सदा धर्ती को चीरता और होंगा फेरता रहता है? २५ क्या वह उसको चौरास करके सौफ़ को नहीं छिटाता, जरि को नहीं बखरेता और गेहँ को पाँति-पाँति करके और जौ को उसके निज स्थान पर, और कठिया गेहँ को खेत की छोर पर नहीं बोता? २६ क्योंकि उसका परमेश्वर उसको ठीक-ठीक काम करना सिखाता और बताता है। २७ दाँवने की गाड़ी से तो सौफ़ दाई नहीं जाती, और गाड़ी का पहिया जरि के ऊपर नहीं चलाया जाता; परन्तु सौफ़ छड़ी से, और जरि सोंटे से झाड़ा जाता है। २८ रोटी के अनन की दाँवनी की जाती है, परन्तु कोई उसको सदा दाँवता नहीं रहता; और न गाड़ी के पहिये न घोड़े उस पर चलाता है, वह उसे चू-चू नहीं करता। २९ यह भी सेनाओं के यहोवा की ओर से नियुक्त हुआ है, वह अद्युत युक्तिवाला और महाबृद्धिमान है।

२९ हाय, अरीएल, अरीएल, हाय उस नगर पर जिसमें दाऊद छावनी किए

हुए रह! वर्ष पर वर्ष जोड़ते जाओ, उत्सव के पर्व अपने-अपने समय पर मनाते जाओ। २ तो भी मैं तो अरीएल को सकेती मैं डालूँगा, वहाँ रोना पीटना रहेगा, और वह मेरी दृष्टि में सचमुच अरीएल सा ठहरेगा। ३ मैं चारों ओर तेरे विस्तु छावनी करके तुझे कोरों से घेर लौँगा, और तेरे विस्तु गढ़ भी बनाऊँगा। ४ तब तु मिराकर भूमि में डाला जाएगा, और धूल पर से बोलेगा, और तेरी बात भूमि से धीमी-धीमी सुनाई देगी; तेरा बोल भूमि पर से प्रेत का सा होगा, और तू धूल से गुण्याकर बोलेगा। ५ तब तेरे परदेशी बैरियों की भीड़ सूक्ष्म धूल के समान, और उन भयानक लोगों की भीड़ भूसे के समान उड़ाई जाएगी। ६ सेनाओं का यहोवा अचानक बादल गरजाता, भूमि को कंपाता, और महाध्वनि करता, बवण्डर और अँधी चलाता, और नाश करनेवाली अनि भड़काता हुआ उसके पास आएगा। ७ और जातियों की सारी भीड़ जो अरीएल से युद्ध करेगी, और जितने लोग उसके और उसके गढ़ के विस्तु लड़ेंगे और उसको सकेती मैं डालूँगे, वे सब रात के देखे हुए स्वप्न के समान ठहरेंगे। ८ और जैसा कोई भूखा स्वप्न में तो देखता है कि वह खा रहा है, परन्तु जागकर देखता है कि उसका पेट खाना ही है, या कोई प्यासा स्वप्न में देखे की वह पी रहा है, परन्तु जागकर देखता है कि उसका गला सूखा जाता है और वह प्यासा मर रहा है; वैसी ही उन सब जातियों की भीड़ की दशा होगी जो सिय्योन पर्वत से युद्ध करेगी। ९ ठरह जाओ और चकित हो! भोग-विलास करो और अंधे हो जाओ! वे मतवाले तो हैं, परन्तु दाखमधु से नहीं, वे डगमगाते तो हैं, परन्तु मदिरा पीने से नहीं! १० यहोवा ने तुम को भारी नीट मैं डाल दिया है और उसने तुम्हारी नबीस्पी अँखों को बन्द कर दिया है और तुम्हारे दर्शी-स्पी सिरों पर परदा डाला है। ११ इसलिए सारे दर्शन तुहारे लिये एक लपेटी और मुहरबन्द की हुई प्रस्तक की बातों के समान हैं, जिसे कोई पढ़े-लिखे मनुष्य को यह कहकर दे, “इसे पढ़”, और वह कहे, “मैं नहीं पढ़ सकता क्योंकि इस पर

मुहरबन्द की हुई है।” १२ तब वही पुस्तक अनपढ़ को यह कहकर दी जाए, “इसे पढ़,” और वह कहे, “मैं तो अनपढ़ हूँ।” १३ प्रभु ने कहा, “ये लोग जो मूँह से मेरा आदर करते हुए समीप आते परन्तु अपना मन मुझसे दूर रखते हैं, और जो केवल मनुष्यों की आज्ञा सुन सुनकर मेरा भय मानते हैं, १४ इस कारण सुन, मैं इनके साथ अद्युत काम वरन् अति अद्युत और अचम्भे का काम करूँगा, तब इनके बुद्धिमानों की बुद्धि नष्ट होगी, और इनके प्रवीणों की प्रवीणता जाती रहेगी।” १५ हाय उन पर जो अपनी युक्ति को यहोवा से छिपाने का बड़ा यत्र करते, और अपने काम अंधेरे में करके कहते हैं, “हमको कौन देखता है? हमको कौन जानता है?” १६ तुम्हारी कैसी उल्टी समझ है? क्या कुम्हार मिट्टी के तत्त्व गिना जाएगा? क्या बनाई हुई वस्तु अपने कर्ता के विषय कहे “उसने मुझे नहीं बनाया”, या रची हुई वस्तु अपने रचनेवाले के विषय कहे, “वह कुछ समझ नहीं रखता?” १७ क्या अब थोड़े ही दिनों के बीतने पर लबानेन फिर फलदाइ बारी न बन जाएगा, और फलदाइ बारी जंगल न गिनी जाएगी? १८ उस समय बहरे पुस्तक की बातें सुनें लगेंगे, और अंधे जिन्हें अभी कुछ नहीं सङ्गता, वे देखने लगेंगे। १९ नम्र लोग यहोवा के कारण फिर आनन्दित होंगे, और दरिद्र मनुष्य इसाएल के पवित्र के कारण मग्न होंगे। २० क्योंकि उपद्रवी फिर न रहेंगे और ठाठ करनेवालों का अन्त होगा, और जो अनर्थ करने के लिये जागते रहते हैं, २१ जो मनुष्यों को बातों में फँसाते हैं, और जो सभा में उलाहना देते उनके लिये फंदा लगाते, और धर्म को व्यर्थ बात के द्वारा बिगाड़ देते हैं, वे सब मिट जाएँगे। २२ इस कारण अब्राहम का छुड़नेवाला यहोवा, याकूब के घराने के विषय यह कहता है, “याकूब को फिर लजिज्जत होना न पड़ेगा, उसका मुख फिर नीचा न होगा। २३ क्योंकि जब उसके सन्तान मेरा काम देखेंगे, जो मैं उनके बीच मैं कहूँगा, तब वे मेरे नाम को पवित्र ठहराएँगे, वे याकूब के पवित्र को पवित्र मानेंगे, और इसाएल के परमेश्वर का अति भय मानेंगे। २४ उस समय जिनका मन भटका हो वे बुद्धि प्राप्त करेंगे, और जो कुड़कुड़ते हैं वह शिक्षा ग्रहण करेंगे।”

३० यहोवा की यह वाणी है, “हाय उन बलवा करनेवाले लड़कों पर जो

युक्ति तो करते परन्तु मेरी ओर से नहीं; वाचा तो बाँधते परन्तु मेरी आत्मा के सिखाए नहीं; और इस प्रकार पाप पर पाप पढ़ाते हैं। २ वे मुझसे बिन पूछे मिस को जाते हैं कि फिरान की रक्षा में रहे और मिस की छाया में शरण लैं। ३ इसलिए फिरौन का शरणस्थान तुम्हारी लज्जा का, और मिस की छाया में शरण लेना तुम्हारी निन्दा का कारण होगा। ४ उसके हाकिम सोअन में आए तो हैं और उसके दूर अब हानेस में पहुँचे हैं। ५ वे सब एक ऐसी जाति के कारण लज्जित होंगे जिससे उनका कुछ लाभ न होगा, जो सहायता और लाभ के बदले लज्जा और नामधराई का कारण होगी।” ६ दक्षिण देश के पश्चुओं के विषय भारी वचन। वे अपनी धन-सम्पत्ति को जबान गढ़हों की पीठ पर, और अपने खजानों को ऊंटों के कुबड़ों पर लादे हुए, संकट और सकेती के देश में होकर, जहाँ सिंह और सिंहनी, नाग और उड़नेवाले तेज विषधर सर्प रहते हैं, उन लोगों के पास जा रहे हैं जिनसे उनको लाभ न होगा। ७ क्योंकि मिस की सहायता व्यर्थ और निकम्मी है, इस कारण मैंने उसको बैठी रहनेवाली रहब कहा है। ८ अब जाकर इसको उनके सामने पटिया पर खोद, और पुस्तक में लिख, कि वह भविष्य के लिये वरन् सदा के लिये साक्षी बनी रहे। ९ क्योंकि वे बलवा करनेवाले लोग और झट बोलनेवाले लड़के हैं जो यहोवा की शिक्षा को सुनाना नहीं चाहते। १० वे दर्शियों से कहते हैं, “दर्शी मत बनो; और नवियों से कहते हैं, हमरे लिये ठीक नबूक्त मत करो; हम से चिकनी-चपड़ी बातें बोलो, धोखा देनेवाली नबूक्त करो। ११ मार्ग से मुड़ो, पथ से हटो, और

इस्माएल के पवित्र को हमारे सामने से दूर करो।” १२ इस कारण इस्माएल का पवित्र यह कहता है, “तुम लोग जो मेरे इस वचन को निकम्मा जानते और अंधेरे और कुटिलता पर भरोसा करके उन्हीं पर टेक लगाते हो; १३ इस कारण यह अर्थमें तुम्हारे लिये ऊँची दीवार का टूटा हुआ भाग होगा जो फटकर गिरे पर हो, और वह अचानक पल भर में टूटकर गिर पड़ेगा, १४ और कुम्हार के बर्तन के समान फूटकर ऐसा चकनाचूर होगा कि उसके टुकड़ों का एक ठीकरा भी न मिलेगा जिससे ऊँचीमें से आग ली जाए या हौद में से जल निकाला जाए।” १५ प्रभु यहोवा, इस्माएल का पवित्र यह कहता है, “लौट अने और शान्त रहने में तुम्हारा उद्धार है; शान्त रहने और भरोसा रखने में तुम्हारी वीरता है।” १६ परन्तु तुम ने ऐसा नहीं किया, १७ तुम ने कहा, “नहीं, हम तो घोड़ों पर चढ़कर भागेंगे,” इसलिए तुम भागेंगे; और यह भी कहा, “हम तेज सवारी पर चलेंगे,” इसलिए तुम्हारी पीछा करनेवाले उससे भी तेज होंगे। १८ एक ही की धमकी से एक हजार भागेंगे, और पाँच की धमकी से तुम ऐसा भागेंगे कि अन्त में तुम पहाड़ की चोटी के डंडे या टीले के ऊपर की धज्जा के समान रह जाओगे जो चिन्ह के लिये गाड़े जाते हैं। १९ तो भी यहोवा इसलिए विलम्ब करता है कि तुम पर अनुग्रह करें, और इसलिए ऊँचे उठेंगा कि तुम पर दया करें। क्योंकि यहोवा न्यायी परमेश्वर है; क्या ही धन्य हैं वे जो उस पर आशा लगाए रहते हैं। २० हे सिय्योन के लोगों तुम यस्शलेम में बसे रहो; तुम फिर कभी न रोओगे, वह तुम्हारी दुहाई सुनते ही तुम पर निश्चय अनुग्रह करेगा; वह सुनते ही तुम्हारी मानेगा। २१ और चाहे प्रभु तुम्हें विषपति की रोटी और दुख का जल भी दे, तो भी तुम्हारे उपदेशक फिर न छिपें, और तुम अपनी ऊँछों से अपने उपदेशकों को देखते रहेंगे। २२ और जब कभी तुम दाहिनी या बायी ओर मुड़ने लगो, तब तुम्हारे पीछे से यह वचन तुम्हारे कानों में पड़ेगा, “मार्ग यही है, इसी पर चलो।” २३ तब तुम वह चाँदी जिससे तुम्हारी खुदी हई मृतियाँ मरी हैं, और वह सोना जिससे तुम्हारी ढनी हई मृतियाँ आभूषित हैं, अशुद्ध करोगे। तुम उनको मैले कूचले बृक्ष के समान फैक दोगे और कहोगे, दूर हो। २४ वह तुम्हारे लिये जल बरसाएगा कि तुम खेत में बीज बो सको, और भूमि की उपज भी उत्तम और बहुतायत से होगी। उस समय तुम्हारे जानवरों को लम्बी-चौड़ी चराई मिलेगी। २५ और बैल और गद्दे जो तुम्हारी खेती के काम में आएंगे, वे सूप और डलिया से फटका हुआ स्वादिष्ट चारा खाएँगे। २६ उस महासंहार के समय जब गुम्फत गिर पड़ेंगे, सब ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों और पहाड़ियों पर नालियाँ और सोते पाए जाएँगे। २७ उस समय यहोवा अपनी प्रजा के लोगों का धाव बाँधेगा और उनकी चोट चंगा करेगा; तब चन्द्रमा का प्रकाश सूर्य का सा, और सूर्य का प्रकाश सात गुणा होगा, अर्थात् सात भर का प्रकाश एक दिन में होगा। २८ देखो, यहोवा दूर से चला आता है, उपका प्रकोप भड़क उठा है, और धूँप बाक लालू उठ रहा है; उसके होंठ क्रोध से भेरे हुए और उसकी जीभ भस्म करनेवाली आग के समान है। २९ उसकी साँस ऐसी उमड़नेवाली नदी के समान है जो गले तक पहुँचती है; वह सब जातियों को नाश के सूप से फटकेगा, और देश-देश के लोगों को भटकाने के लिये उनके जबड़ों में लगाम लगाएगा। ३० तब तुम पवित्र पर्व की रात का सा गीत आओगे, और जैसा लोग यहोवा के पर्वत की ओर उससे मिलने को, जो इस्माएल की चट्टान है, बाँसुरी बजाते हुए जाते हैं, वैसे ही तुम्हारे मन में भी आनन्द होगा। ३१ और यहोवा अपनी प्रतापीवाणी सुनाएगा, और अपना क्रोध भड़काता और आग की लौ से भस्म करता हुआ, और प्रचण्ड ऊँची और अति वर्षी और ओलों के साथ अपना भुजबल दिखाएगा। ३२ अश्शूर यहोवा के शब्द की शक्ति से नाश हो जाएगा, वह उसे सोंटे से मोराए। ३३ जब जब यहोवा उसको उण्ड देगा, तब-तब साथ ही डफ और बीणा बजेंगी;

और वह हाथ बढ़ाकर उसको लगातार मारता रहेगा। ३४ बहुत काल से तोपेत तैयार किया गया है, वह राजा ही के लिये ठहराया गया है, वह लम्बा-चौड़ा और गहरा भी बनाया गया है, वहाँ की चिता में आग और बहुत सी लकड़ी हैं; यहोवा की साँस जलती हुई गन्धक की धारा के समान उसको सुलगाएगी। ३५ हाय उन पर जो सहायता पाने के लिये मिस को जाते हैं और घोड़ों का आसरा करते हैं, जो रथों पर भरोसा रखते क्योंकि वे बहुत हैं, और सवारों पर, क्योंकि वे अति बलवान हैं, पर इस्माएल के पवित्र की ओर दृष्टि नहीं करते और न यहोवा की खोज करते हैं। ३६ परन्तु वह भी बुद्धिमान है और दुख देगा, वह अपने वचन न टालेगा, परन्तु उठकर कुकिर्मियों के घराने पर और अनर्थकारियों के सहायकों पर भी चढ़ाई करेगा। ३७ मिसी लोग परमेश्वर नहीं, मनुष्य ही है; और उनके घोड़े आत्मा नहीं, माँस ही हैं। जब यहोवा हाथ बढ़ाएगा, तब सहायता करनेवाले और सहायता चाहेवाले दोनों ठोकर खाकर पिंगे, और वे सब के सब एक संग नष्ट हो जाएँगे। ३८ फिर यहोवा ने मुझसे यह कहा, “जिस प्रकार सिंह या जवान सिंह जब अपने अंदर पर गुर्जता हो, और चरवाहे इकट्ठे होकर उसके विस्तु बड़ी भीड़ लगाएँ, तो वह उनके बोल से न घबराएगा और न उनके कोलाहल के कारण टेबगा, उसी प्रकार सेनाओं का यहोवा, सिय्योन पर्वत और यस्शलेम की पहाड़ी पर, यद्दु करने को उतरेगा। ३९ पंख फैलाई हुई चिड़ियों के समान सेनाओं का यहोवा यस्शलेम की रक्षा करेगा; वह उसकी रक्षा करके बचाएगा, और उसको बिन छूप ही उड़ा करेगा।” ४० हे इस्माएलियों, जिसके विस्तु तुम ने भारी बलवा किया है, उसी की ओर फिरो। ४१ उस समय तुम लोग सोने चाँदी की अपनी-अपनी मूर्तियों से जिन्हें तुम बनाकर पापी हो गए हो धृणा करोगे। ४२ “तब अश्शूर उस तलवार से गिराया जाएगा जो मनुष्य की नहीं; वह उस तलवार के सामने से भागेगा और उसके जवान बेगार में पकड़े जाएँगे। ४३ वह भय के मारे अपने सुन्दर भवन से जाता रहेगा, और उसके हाकिम घबराहट के कारण धज्जा त्याग कर भाग जाएँगे,” यहोवा जिसकी अग्नि सिय्योन में और जिसका भट्ठा यस्शलेम में है, उसी की यह वाणी है।

३३ देखो, एक राजा धार्मिकता से राज्य करेगा, और राजकुमार न्याय से हक्कमत करेगे। ३५ हर एक मानो ऊँची से छिपने का स्थान, और बौछार से आड़ होगा; या निर्जल देश में जल के झाने, व तस भूमि में बड़ी चट्टान की छाया। ३६ उस समय देखेनेवालों की ऊँचें धूँधती न होंगी, और सुनेवालों के कान लगे रहेंगे। ३७ तात्कालीने के मन ज्ञान की बातें समझेंगे, और तुलनानेवालों की जीभ फुटी से और साफ बोलेंगी। ३८ मर्हूम फिर उदार न कहलाएगा और न कंजस दानी कहा जाएगा। ३९ क्योंकि मर्हूम तो मर्हूता ही की बातें बोलता और मन में अनर्थ ही गढ़ता रहता है कि वह अर्थमें के काम करे और यहोवा के विस्तु झट करें, भूखे को भ्राता ही रहने दे और प्यासे का जल रोक रखे। ४० छली की चाले बूढ़ी होती है, वह दृश्य युक्तियाँ निकालता है कि दरिद्र को भी झटी बातों में लौटे जबकि वे ठीक और नम्रता से भी बोलते हों। ४१ परन्तु उदार मनुष्य उदारता ही की युक्तियाँ निकालता है, वह उदारता में स्थिर भी रहेगा। ४२ हे सुखी छियों, उठकर मेरी सोने; हे निश्चिन्त पुत्रियों, मेरे वचन की ओर कान लगाओ। ४३ हे निश्चिन्त छियों, वर्ष भर से कुछ ही अधिक समय में तुम विकल हो जाओगी, क्योंकि तोड़ने को दाखें न होंगी और न किसी भाँति के फल हाथ लगेंगे। ४४ हे सुखी छियों, थरथराओ, हे निश्चिन्त छियों, विकल हो; अपने-अपने बच्च उतारकर अपनी-अपनी कमर में टाट करो। ४५ वे मनभाऊ खेतों और फलनन्द दाखलताओं के लिये छाती पीटेंगी। ४६ मेरे

लोगों के बरन् प्रसन्न नगर के सब हर्ष भरे घरों में भी भाँति-भाँति के कटीले पेड़ उपजेंगे। १४ क्योंकि राजभवन त्यागा जाएगा, कोलाहल से भरा नगर सुनसान हो जाएगा और पहाड़ी और उन पर के पहस्तों के घर सदा के लिये मौंदि और जंगली गढ़ों का विहार-स्थान और घेरलू पशुओं की चराई उस समय तक बने रहेंगे १५ जब तक आत्मा ऊपर से हम पर उड़ेला न जाए, और जंगल फलदायक बारी न बने, और फलदायक बारी फिर बन न गिनी जाए। १६ तब उस जंगल में न्याय बरसेगा, और उस फलदायक बारी में धार्मिकता रहेगा। १७ और धार्मिकता का फल शान्ति और उसका परिणाम सदा का चैन और निश्चिन्त रहना होगा। १८ मेरे लोग शान्ति के स्थानों में निश्चिन्त रहेंगे, और विश्वाम के स्थानों में सुख से रहेंगे। १९ वन के विनाश के समय ओले पिंडेंगे, और नगर पूरी रीत से चौपट हो जाएगा। २० क्या ही धन्य हो तुम जो सब जलाशयों के पास बीज बोते, और बैठते और गढ़ों को स्वतंत्रता से चराते हो।

३३ हाय तुझ नाश करनेवाले पर जो नाश नहीं किया गया था; हाय तुझ विश्वासधारी पर, जिसके साथ विश्वासधार नहीं किया गया! जब तू नाश कर चुके, तब तू नाश किया जाएगा; और जब तू विश्वासधार कर चुके, तब तैरे साथ विश्वासधार किया जाएगा। २१ हे यहोवा, हम लोगों पर अनुग्रह कर; हम तेरी ही बाट जोहते हैं। भोर को तू उनका भुजबल, संकट के समय हमारा उद्धारकर्ता ठहर। २२ हल्लालू सुनते ही देख-देश के लोग भाग गए, तेरे उठने पर अन्यजातियाँ तिरत-बितर हुईं। २३ जैसे टिड्डियाँ चट करती हैं वैसे ही तुम्हारी लट चट की जाएगी, और जैसे टिड्डियाँ टूट पड़ती हैं, वैसे ही वे उस पर टूट पड़ेंगे। २४ यहोवा महान हुआ है, वह ऊँचे पर रहता है; उसने सिय्योन को न्याय और धार्मिकता से परिपूर्ण किया है, २५ और उद्धार, बुद्धि और ज्ञान की बहुतायत तैरे दिनों का आधार होगी; यहोवा का भय उसका धन होगा। २६ देख, उनके शूर्वीर बाहर चिल्ला रहे हैं; संधि के दूत बिलख-बिलख कर रो रहे हैं। २७ राजमार्ग सुनसान पड़े हैं, उन पर यात्री अब नहीं चलते। उसने वाचा को टाल दिया, नगरों को तुच्छ जाना, उसने मनुष्य को कुछ न समझा। २८ पृथ्वी विलाप करती और मुझ्जी गई है; लबानोन कुम्हला गया और वह मुझ्जी गया है; शारोन मस्खीमि के समान हो गया; बाशान और कर्मल में पतझड़ हो रहा है। २९ यहोवा कहता है, अब मैं उट्ठाना, मैं अपना प्रताप दिखाऊँगा; अब मैं महान ठहस्सा। ३० तम में सर्खी धास का गर्भ रहेगा, तुम से भर्सी उत्पन्न होगी; तुम्हारी साँस आग है जो तुहाँ भस्म करेगी। ३१ देश-देश के लोग फूँके हुए चूने के समान हो जाएँगे, और कटे हुए कैंटीली झाड़ियों के समान आग में जलाए जाएँगे। ३२ हे दूर-दूर के लोगों, सुनो कि मैंने क्या किया है? और तुम भी जो निकट हो, मेरा पराक्रम जान लो। ३३ सिय्योन के पापी थरथरा गए हैं; भन्तिहीनों को कँपकँपी लगी है; हम में से कौन प्रचण्ड आग में रह सकता? हम में से कौन उस आग में बना रह सकता है जो कभी नहीं बुझेगी? ३४ जो धार्मिकता से चलता और सीधी बातें बोलता; जो अंधेर के लाभ से घृणा करता, जो घृण नहीं लेता; जो खन की बात सुनने से कान बन्द करता, और बुराई देखने से आँख मैंदू लेता है। वही ऊँचे स्थानों में विवास करेगा। ३५ वह चट्टानों के गढ़ों में शरण लिए हुए रहेगा; उसको रोटी मिलेगी और पानी की घटी कभी न होगी। ३६ तू अपनी आँखों से राजा को उसकी शोभा सहित देखेगा; और लाबे-चौड़े देश पर दृष्टि करेगा। ३७ तू भय के दिनों को स्मरण करेगा: लेखा लेनेवाला और कर तौलकर लेनेवाला कहाँ रहा? गुम्मटों का गिननेवाला कहाँ रहा? ३८ जिनकी कठिन भाषा तू नहीं समझता, और जिनकी लड़बड़ाती जीभ की बात तू नहीं बुझ सकता उन निर्दय लोगों को तू फिर न देखेगा। ३९ हमारे पर्व के नगर सिय्योन पर दृष्टि कर! तू अपनी आँखों से यस्सलेम को देखेगा, वह

विश्वाम का स्थान, और ऐसा तम्बू है जो कभी गिराया नहीं जाएगा, जिसका कोई खँटा कभी उखाड़ा न जाएगा, और न कोई रस्सी कभी टूटेगी। ४० वहाँ महाप्रातापी यहोवा हमारे लिये रहेगा, वह बहुत बड़ी-बड़ी नदियों और नहरों का स्थान होगा, जिसमें डाँड़वाली नाव न चलेगी और न शोधयामान जहाज उसमें होकर जाएगा। ४१ क्योंकि यहोवा हमारा न्यायी, यहोवा हमारा हाकिम, यहोवा हमारा राजा है, वही हमारा उद्धार करेगा। ४२ तेरी रास्सियाँ ढीली हो गईं, वे मस्तूल की जड़ को टूट न रख सकीं, और न पाल को तान सकीं। तब बड़ी लट छीनकर बाँटी गई, लँगड़े लोग भी लट के भागी हुए। ४३ कोई निवासी न कहेगा कि मैं रोगी हूँ, और जो लोग उसमें बर्यों, उनका अर्धम क्षमा किया जाएगा।

३४ हे जाति-जाति के लोगों, सुनने के लिये निकट आओ, और हे राज्य-

राज्य के लोगों, ध्यान से सुनो! पृथ्वी भी, और जो कुछ उसमें है, जगत और जो कुछ उसमें उत्पन्न होता है, सब सुनो। ४४ यहोवा सब जातियों पर क्रोध कर रहा है, और उनकी सारी सेना पर उसकी जलजलाहाट भड़की हुई है, उसने उनको सत्यानाश होने, और संहार होने को छोड़ दिया है। ४५ उनके मारे हुए फैक दिये जाएँगे, और उनके शरों की दुर्गम्य उठेगी; उनके लहू से पहाड़ गल जाएँगे। ४६ आकाश के सारे गण जाते रहेंगे और आकाश कागज के समान लपेटा जाएगा। और जैसे दाखलता या अंजीर के वृक्ष के पते मुझाकर गिर जाते हैं, वैसे ही उसके सारे गण धूँधले होकर जाते रहेंगे। ४७ क्योंकि मेरी तलवार आकाश में पीकर तूम हुई हैं, देखो, वह न्याय करने को एदोम पर, और जिन पर मेरा श्राप है उन पर पड़ेगी। ४८ यहोवा की तलवार लहू से भर गई है, वह चर्ची से और भेड़ों के बच्चों और बकरों के लहू से, और मेंदों के गुर्दों की चर्ची से तूम हुई है। क्योंकि बोसा नगर में यहोवा का एक यज्ञ और एदोम देश में बड़ा संहार हुआ है। ४९ उनके संग जंगली साँड़ और बछड़े और बैल वध होंगे, और उनकी भूमि लहू से भीग जाएगी और वहाँ की मिट्टी चर्ची से अघा जाएगी। ५० क्योंकि बदला लेने को यहोवा का एक दिन और सिय्योन का मुकदमा चुकाने का एक वर्ष नियुक्त है। ५१ और एदोम की नदियाँ राल से और उसकी भूमि गन्धक से बदल जाएगी; उसकी भूमि जलती हुई राल बन जाएगी। ५२ वह रात-दिन न बुझेगी; उसका धूर्खां सँदैव उठता रहेगा। युग-युग वह उजाड़ पड़ा रहेगा; कोई उसमें से होकर कभी न चलेगा। ५३ उसमें धनेश पक्षी और साही पाए जाएँगे और वह उल्लू और कैवे का बेरेगा होगा। वह उस पर गड़बड़ी की ढोरी और सुनसानी का साहूल तानेगा। ५४ वहाँ न तो रेस्स होंगे और न ऐसा कोई होगा जो राज्य करने को ठहराया जाए; उसके सब हाकिमों का अन्त होगा। ५५ उसके महलों में कटीले पेड़, गढ़ों में बिछुर्पौधे और डाढ़ा उगेंगे। वह गीढ़डों का बासस्थान और शुर्मुर्गों का आँगन हो जाएगा। ५६ वहाँ निर्जल देश के जन्तु सियारों के संग मिलकर बसेंगे और रोंआर जन्तु एक दूसरे को बुलाएँगे; वहाँ लीलीती नामक जन्तु वासस्थान पाकर चैन से रहेगा। ५७ वहाँ मादा उल्लू धौंसला बनाएगी, वे अण्डे देकर उन्हें सेंपीं और अपनी छाया में बटोर लेंगी; वहाँ गिर्दु अपनी साथिन के साथ इकट्ठे रहेंगे। ५८ यहोवा की पुस्तक से छूँछकर पढ़ो: इनमें से एक भी बात बिना पूरा हुए न रहेगी; कोई बिना जोड़ा न रहेगा। क्योंकि मैंने अपने मुँह से यह आज्ञा दी है और उसी की आत्मा ने उन्हें इकट्ठा किया है। ५९ उसी ने उनके लिये चिठ्ठी डाली, उसी ने अपने हाथ से डारी डालकर उस देश को उनके लिये बाँट दिया है; वह सर्वदा उनका ही बना रहेगा और वे पीढ़ी से पीढ़ी तक उसमें बसे रहेंगे।

३५ जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे, मस्भूमि मगन होकर केसर

के समान फूलेंगी; २ वह अत्यन्त प्रफुल्लित होगी और आनन्द के साथ जयजयकार करेगी। उसकी शोभा लबानोन की सी होगी और वह कर्मल और शारोन के तुल्य तेजोमय हो जाएगी। वे यहोवा की शोभा और हमारे परमेश्वर का तेज देखेंगे। ३ ढीले हाथों को ढूढ़ करो और थरथराते हुए घृटनों को स्थिर करो। ४ घबरानेवालों से कहो, “हिंसव बौद्धों, मत डरो! देखो, तुहारा परमेश्वर बदला लेने और प्रतिफल देने को आ रहा है। हाँ, परमेश्वर आकर तुम्हारा उद्वार करेगा।” ५ तब अंधों की अँखें खोली जाएंगी और बरों के कान भी खोले जाएंगे; ६ तब लंगड़ा हिंसक की सी चौकड़ियाँ भरेगा और गँगे अपनी जीभ से जयजयकार करेंगे। क्योंकि जंगल में जल के सोते फूट निकलेंगे और मस्भूमि में नदियाँ बहने लगेंगी; ७ मृगतृष्णा ताल बन जाएगी और सूखी भूमि में सोते फूटेंगे; और जिस स्थान में सियार बैठा करते हैं उसमें घास और नरकट और सरकण्डे होंगे। ८ वहाँ एक सड़क अर्थात् राजमार्ग होगा, उसका नाम पवित्र मार्ग होगा; कोई अशुद्ध जन उस पर से न चलने पाएगा; वह तो उन्हीं के लिये रहेगा और उस मार्ग पर जो चलेंगे वह चाहे मूर्ख भी हों तो भी कभी न भटकेंगे। ९ वहाँ सिंह न रहेगा और न कोई हिंसक जनु उस पर न चढ़ेगा न बहाँ पाया जाएगा, परन्तु छुड़ाए हुए उसमें निट चलेंगे। १० और यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सियोन में आएँगे; और उके सिर पर सदा का आनन्द होगा; वे हर्ष और आनन्द पाएँगे और शोक और लम्बी सँस का लेना जाता रहेगा।

३६ हिंजकिय्याह राजा के राज्य के चौदहवें वर्ष में, अशशूर के राजा सन्हेबी

ने यहदा के सब गढ़वाले नारों पर चढ़ाइ कक्षे उनको ले लिया। १ और अशशूर के राजा ने रबशाके की बड़ी सेना टेकर लाकीश से यस्सलेम के पास हिंजकिय्याह राजा के विस्तु भेज दिया। और वह उत्तरी जलकुण्ड की नाती के पास धोबियों के खेत की सड़क पर जाकर खड़ा हुआ। २ तब हिल्किय्याह का पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम पर नियुक्त था, और शेबना जो मंत्री था, और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लेखक था, ये तीनों उससे मिलने को बाहर निकल गए। ३ रबशाके ने उनसे कहा, “हिंजकिय्याह से कहो, ‘महाराजाधिराज अशशूर का राजा यह कहता है कि तू किसका भरोसा किए बैठत है?’ ४ मेरा कहना है कि क्या मूँह से बातें बनाना ही युद्ध के लिये पराक्रम और युक्ति है? तू किस पर भरोसा रखता है कि तूने मझसे बलवा किया है? ५ सुन, तू तो उस कच्चते हुए नकट अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखत है, उस पर यदि कोई टेक लगाए तो वह उसके हाथ में चुम्भकर छेद कर देगा। मिस का राजा फ़िरोन उन सब के साथ ऐसा ही करता है जो उस पर भरोसा रखते हैं। ६ फिर यदि तू मझसे कहे, हमारा भरोसा अपने परमेश्वर यहोवा पर है, तो क्या वह वही नहीं है जिसके ऊँचे स्थानों और वेदियों को ढाकर हिंजकिय्याह ने यहदा और यस्सलेम के लोगों से कहा कि तुम इस वेदी के सामने दण्डवत् किया करो? ७ इसलिए अब मेरे स्वामी अशशूर के राजा के साथ वाचा बौद्ध तब मैं तुझे दो हजार धोड़े दूँगा यदि तू उन पर सवार चढ़ा सको। ८ फिर तू रथों और सवारों के लिये मिस पर भरोसा रखकर मेरे स्वामी के छोटे से छोटे कर्मचारी को भी कैसे हटा सकेगा? ९ क्या मैंने यहोवा के बिना कहे इस देश को उजाड़ने के लिये चढ़ाइ की है? यहोवा ने मुझसे कहा है, उस देश पर चढ़ाइ करके उसे उजाड़ दे।” १० तब एल्याकीम, शेबना और योआह ने रबशाके से कहा, “अपने दासों से असामी भाषा में बात कर क्योंकि हम उसे समझते हैं; हम से यहदी भाषा में शहरपनाह पर बैठे हुए लोगों के सनते बातें न कर।” ११ रबशाके ने कहा, “क्या मेरे स्वामी ने मुझे तेरे स्वामी ही के या

तुम्हरे ही पास ये बातें कहने को भेजा है? क्या उसने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा जो शहरपनाह पर बैठे हैं जिन्हें तुम्हरे सांग अपनी बिष्णा खाना और अपना मत्र पीना पड़ेगा?” १२ तब रबशाके ने खड़े होकर यहदी भाषा में ऊँचे शब्द से कहा, “महाराजाधिराज अशशूर के राजा की बातें सुनो! १३ राजा यह कहता है, ‘हिंजकिय्याह तुम को धोखा न दे, क्योंकि वह तुम्हें बचा न सकेगा। १४ ऐसा न हो कि हिंजकिय्याह तुम से यह कहकर यहोवा का भरोसा दिलाने पाए कि यहोवा निश्चय हमको बचाएगा कि यह नगर अशशूर के राजा के वश में न पड़ेगा। १५ हिंजकिय्याह की मत सुनो; अशशूर का राजा कहता है, भेट भेजकर मुझे प्रसन्न करो और मेरे पास निकल आओ; तब तुम अपनी-अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष के फल खा पाओगे, और अपने-अपने कुण्ड का पानी पिया करोगे; १६ जब तक मैं आकर तुम को ऐसे देश में न ले जाऊँ जो तुम्हरे देश के समान अनाज और नये दाखलमधु का देश और रोटी और दाख की बारियों का देश है। १७ ऐसा न हो कि हिंजकिय्याह यह कहकर तुम को बहकाए कि यहोवा हमको बचाएगा। क्या और जातियों के देवताओं ने अपने-अपने देश को अशशूर के राजा के हाथ से बचाया है? १८ हमात और अपांद के देवता कहाँ रहे? सपर्वेंम के देवता कहाँ रहे? क्या उन्होंने सामान्यिया को मेरे हाथ से बचाया? १९ देश-देश के सब देवताओं में से ऐसा कौन है जिसने अपने देश को मेरे हाथ से बचाया हो? फिर क्या यहोवा यस्सलेम को मेरे हाथ से बचाया?” २० परन्तु वे चुप रहे और उसके उत्तर में एक बात भी न कही, क्योंकि राजा की ऐसी आज्ञा थी कि उसको उत्तर न देना। २१ तब हिल्किय्याह का पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम पर नियुक्त था और शेबना जो मंत्री था और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लेखक था, इन्होंने हिंजकिय्याह के पास बच्चा फ़ाड़े हुए जाकर रबशाके की बातें कह कर सुनाई।

३७ जब हिंजकिय्याह राजा ने यह सुना, तब वह अपने बच्चे फ़ाड़ और टाट

ओढ़कर यहोवा के भवन में गया। १ और उसने एल्याकीम को जो राजघराने के काम पर नियुक्त था और शेबना मंत्री को और याजकों के पुनियों को जो सब टाट ओड़े हुए थे, आमोस के पुत्र यशायाह नवी के पास भेज दिया। २ उन्होंने उससे कहा, “हिंजकिय्याह यह कहता है कि ‘आज का दिन संकट और उलाहने और निन्दा का दिन है, बच्चे जन्मने पर हुए पर जच्चा को जनने का बल न रहा। ३ सम्भव है कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने रबशाके की बातें सुनी जिसे उसके स्वामी अशशूर के राजा ने जीविते परमेश्वर की निन्दा करने को भेजा है, और जो बातें तेरे परमेश्वर यहोवा ने सुनी हैं उसके लिये उन्हें दरोट; अतः तू इन बच्चे हुओं के लिये जो रह गए हैं, प्रार्थना कर।” ४ जब हिंजकिय्याह राजा के कर्मचारी यशायाह के पास आए। ५ तब यशायाह ने उनसे कहा, “अपने स्वामी से कहो, ‘यहोवा यह कहता है कि जो वचन तूने सुने हैं जिनके द्वारा अशशूर के राजा के जनों ने मेरी निन्दा की है, उनके कारण मत डर। ६ सुन, मैं उसके मन में प्रेरणा उत्पन्न करूँगा जिससे वह कुछ समाचार सुनकर अपने देश को लौट जाए; और मैं उसको उसी देश में तलवार से मरवा डालूँगा।” ७ तब रबशाके ने लौटकर अशशूर के राजा को लिब्ना नगर से युद्ध करते पाया; क्योंकि उसने सुना था कि वह लाकीश के पास से उठ गया है। ८ उसने कूश के राजा तिर्हका के विषय यह सुना कि वह उससे लड़ने को निकला है। तब उसने हिंजकिय्याह के पास दूतों को यह कहकर भेजा। ९ “तुम यहदा के राजा हिंजकिय्याह से यह कहना, ‘तेरा परमेश्वर यहोवा पर भरोसा करता है, यह कहकर तुझे धोखा न देने पाए कि यस्सलेम अशशूर के राजा के वश में न पड़ेगा। १० देख, तूने सुना है कि अशशूर के राजाओं ने सब देशों से कैसा व्यवहार किया कि उन्हें सत्यानाश ही कर दिया। ११ फिर क्या बच जाएगा? गोजान और हारान और रेसेप में रहनेवाली जिन जातियों को

और तलसार में रहनेवाले एटेनी लोगों को मेरे पुरखाओं ने नाश किया, क्या उनके देवताओं ने उन्हें बचा लिया? १३ हमारत का राजा, अपर्दि का राजा, सपर्वेम नगर का राजा, और हेना और इव्वा के राजा, ये सब कहाँ गए?” १४ इस पत्री को हिजकियाह ने दूरों के हाथ से लेकर पढ़ा; तब उसने यहोवा के भवन में जाकर उस पत्री को यहोवा के सामने फैला दिया। १५ और यहोवा से यह प्रार्थना की, १६ “हे सेनाओं के यहोवा, हे कस्टों पर विराजमान इसाएल के परमेश्वर, पृथ्वी के सब राज्यों के ऊपर केवल तू ही परमेश्वर हैं; आकाश और पृथ्वी को तू ही ने बनाया है। १७ हे यहोवा, कान लगाकर सुन; हे यहोवा आँख खोलकर देख; और सन्हेरीब के सब वचनों को सुन ले, जिसने जीविते परमेश्वर की निन्दा करने को लिख भेजा है। १८ हे यहोवा, सच तो है कि अश्शूर के राजाओं ने सब जातियों के देशों को उजाड़ा है १९ और उनके देवताओं को आग में झोका है; क्योंकि वे इंधन न थे, वे केवल मनुष्यों की कारीगरी, काठ और पत्थर ही थे; इस कारण वे उनको नाश कर सके। २० अब है हमारे परमेश्वर यहोवा, तू हमें उसके हाथ से बचा जिससे पृथ्वी के राज्य-राज्य के लोग जान लें कि केवल तू ही यहोवा है।” २१ तब आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकियाह के पास यह कहला भेजा, “इसाएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, तुम जो अश्शूर के राजा सन्हेरीब के विषय में मुझसे प्रार्थना की है, २२ उसके विषय यहोवा ने यह वचन कहा है, ‘सियोन की कुँवारी कन्या तुझे तुच्छ जानती है और उपहास में उड़ाती है; यस्शलेम की पुत्री तुझ पर सिर हिलाती है।’ २३ “तुमें किसकी नामधारी और निन्दा की है? और तू जो बड़ा बोल बोला और घमण्ड किया है, वह किसके विस्तु किया है? इसाएल के पवित्र के विस्तु। २४ अपने कर्मचारियों के द्वारा तुमें प्रभु की निन्दा करके कहा है कि बहुत से रथ लेकर मैं पर्वतों की चोटियों पर वरन् लबानोन के बीच तक चढ़ आया हूँ; मैं उसके ऊँचे-ऊँचे देवदारों और अच्छे-अच्छे सनोवर वृक्षों को काट डालँगा और उसके दूर-दूर के ऊँचे स्थानों में और उसके बन की फलाई बारियों में प्रवेश करूँगा। २५ मैंने खुदवाकर पानी पिया और मिस्र की नहरों में पाँव धरे ही उड़े सूखा दिया। २६ क्या तुमें नहीं सुना कि प्राचीनकाल से मैंने यही ठाना और पूर्वकाल से इसकी तैयारी की थी? इसलिए अब मैंने यह पूरा भी किया है कि तू गढ़वाले नगरों को खण्डहर ही खण्डहर कर दे। २७ इसी कारण उनके रहनेवालों का बल घट गया और वे विस्मित और लज़ित हुए; वे मैदान के छोटे-छोटे पेड़ों और हरी धास और छत पर की धास और ऐसे अनाज के समान हो गए जो बढ़ने से पहले ही सूख जाता है। २८ “मैं तो तेरा बैठना, कूच करना और लौट आना जानता हूँ; और यह भी कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता है। २९ इस कारण कि तू मुझ पर अपना क्रोध भड़काता और तेरे अभिमान की बातें मेरे कानों में पड़ी हैं, मैं तेरी नाक में नकेल डालकर और तेरे मुँह में अपनी लगाम लगाकर जिस मार्ग से तु आया है उसी मार्ग से तुझे लौटा दूँगा।” ३० “और तेरे लिये यह चिन्ह होगा कि इस वर्ष तो तुम उसे खाओगे जो आप से आप उंगे, और दूसरे वर्ष वह जो उससे उत्पन्न हो, और तीसरे वर्ष बीज बोकर उसे लवने पाओगे और दाख की बारियाँ लगाने और उनका फल खाने पाओगे। ३१ और यहदा के घराने के बचे हुए लोग फिर जड़ पकड़ेंगे और फूलें-फलेंगे; ३२ क्योंकि यस्शलेम से बचे हुए और सियोन पर्वत से भागे हुए लोग निकलेंगे। सेनाओं का यहोवा अपनी जलन के कारण यह काम करेगा। ३३ “इसलिए यहोवा अश्शूर के राजा के विषय यह कहता है कि वह इस नगर में प्रवेश करने, वरन् इस पर एक तीर भी मारने न पाएगा; और न वह ढाल लेकर इसके सामने अनें या इसके विस्तु दमदमा बाँधने पाएगा। ३४ जिस मार्ग से वह आया है उसी से वह लौट भी जाएगा और इस नगर में प्रवेश न करने पाएगा, यहोवा की यही वाणी है। ३५

क्योंकि मैं अपने निमित और अपने दास दाऊद के निमित, इस नगर की रक्षा करके उसे बचाऊँगा।” ३६ तब यहोवा के दूर ने निकलकर अश्शूरियों की छावनी में एक लाख पचासी हजार पुस्तों को मारा; और भोर को जब लोग उठे तब क्या देखा कि शब ही शब पड़े हैं। ३७ तब अश्शूर का राजा सन्हेरीब चल दिया और लौटकर नीनवे में रहने लगा। ३८ वहाँ वह अपने देवता निस्तोक के मन्दिर में दण्डवत कर रहा था कि इतने में उसके पुत्र अद्रमेलेक और शेरेसेर ने उसको तलबार से मारा और अरारात देश में भाग गए। और उसका पुत्र एस्हैदेन उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

३९ उन दिनों में हिजकियाह ऐसा रोगी हुआ कि वह मरने पर था। और आमोस के पुत्र यशायाह नवी ने उसके पास जाकर कहा, “यहोवा यह कहता है, अपने घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो वह दे, क्योंकि तू न बचेगा मर ही जाएगा।” ४० तब हिजकियाह ने दीवार की ओर मुँह फेरकर यहोवा से प्रार्थना करके कहा; ४१ “हे यहोवा, मैं विनती करता हूँ, स्मरण कर कि मैं सच्चाई और खोर मन से अपने को तेरे सम्पुष्य जानकर चलता आया हूँ और जो तेरी दृष्टि में उचित था वही करता आया हूँ।” और हिजकियाह बिलख-बिलख कर रोने लगा। ४२ तब यहोवा का यह वचन यशायाह के पास पहुँचा, ४३ “जाकर हिजकियाह से कह कि तेरे मूलपुस्त दाऊद का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, ‘मैंने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आँसू देखे हैं; सुन, मैं तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूँगा।’ ४४ अश्शूर के राजा के हाथ से मैं तेरी और इस नगर की रक्षा करके बचाऊँगा।” ४५ यहोवा अपने इस कहे हुए वचन को पूरा करेगा, ४६ और यहोवा की ओर से इस बात का तेरे लिये यह चिन्ह होगा कि धूप की छाया जो आहाज की धूपधड़ी में ढल गई है, मैं दस अंश पीछे की ओर लैटा दूँगा। ४७ अतः बह छाया जो दस अंश ढल चुकी थी लौट गई। ४८ यहदा के राजा हिजकियाह का लेख जो उसने लिखा जब वह रोगी होकर चंगा हो गया था, वह यह है: ४९ मैंने कहा, अपनी आयु के बीच ही मैं अधोलोक के फाटकों में प्रवेश करूँगा; क्योंकि मेरी शेष आयु हर ली गई है। (Sheol h7585) ५० मैंने कहा, मैं यहोवा को जीवितों की भूमि में फिर न देखने पाऊँगा; इस लोक के निवासियों को मैं फिर न देवैँगा। ५१ मेरा घर चरवाहे के तम्बू के समान उठा लिया गया है; मैंने जुलाई के समान अपने जीवन को लपेट दिया है; वह मुझे ताँत से काट लेगा; एक ही दिन में तू मेरा अन्त कर डालेगा। ५२ मैं भौर तक अपने मन को शान्त करता रहा; वह सिंह के समान मेरी सब हड्डियों को तोड़ता है; एक ही दिन में तू मेरा अन्त कर डालता है। ५३ मैं सूपबीनी या सारस के समान च्यू-च्यू करता, मैं पिण्डुक के समान विलाप करता हूँ। मेरी आँखें ऊपर देखते-देखते पत्थरा गई हैं। हे यहोवा, मुझ पर अंधेर हो रहा है; तू मेरा सहारा हो! ५४ मैं क्या कहूँ? उसी ने मुझसे प्रतिज्ञा की और पूरा भी किया है। मैं जीवन भर कड़वाहट के साथ धीर धीर चलता रहूँगा। ५५ हे प्रभु, इन्हीं बातों से लोग जीवित हैं, और इन सभी से मेरी आत्मा को जीवन मिलता है। तू मुझे चंगा कर और मुझे जीवित रख! ५६ देख, शान्ति ही के लिये मुझे बड़ी कड़वाहट मिली; परन्तु तुम सेह करके मुझे विनाश के गड़े से निकाला है, क्योंकि मेरे सब पापों को तूने अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है। ५७ क्योंकि अधोलोक तेरा धन्यवाद नहीं कर सकता, न मृत्यु तेरी स्तुति कर सकती है; जो कब्र में पड़े वे तेरी सच्चाई की आशा नहीं रख सकते (Sheol h7585) ५८ जीवित, हाँ जीवित ही तेरा धन्यवाद करता है, जैसा मैं आज कर रहा हूँ; पिता तेरी सच्चाई का समाचार पुत्रों को देता है। ५९ यहोवा मेरा उद्धार करेगा, इसलिए हम जीवन भर यहोवा के भवन में तारवाले बाजों पर अपने रचे हुए गीत गाते रहेंगे। ६० यशायाह ने कहा था, “अंजीरों की एक टिकिया बनाकर हिजकियाह के

फोड़े पर बाँधी जाए, तब वह बचेगा।” २२ हिजकियाह ने पूछा था, “इसका क्या चिन्ह है कि मैं यहोवा के भवन को फिर जाने पाऊँगा?”

३९ उस समय बलदान का पुत्र मरोदक बलदान, जो बाबेल का राजा था,

उसने हिजकियाह के रोगी होने और फिर चंगे हो जाने की चर्चा सुनकर उसके पास पत्री और भेट भेजी। ३ इनसे हिजकियाह ने प्रेसन्ह होकर अपने अनमोल पदार्थों का भण्डार और चाँदी, सोना, सुगन्ध-द्रव्य, उत्तम तेल और अपने अनमोल पदार्थों का भण्डारों में जो-जो वस्तुएँ थीं, वे सब उनको दिखलाई। हिजकियाह के भवन और राज्य भर में कोई ऐसी वस्तु नहीं रह गई जो उसने उन्हें न दिखाई हो। ४ तब यशायाह नबी ने हिजकियाह राजा के पास जाकर पूछा, “वे मनुष्य क्या कह गए, और वे कहाँ से तेरे पास आए थे?” हिजकियाह ने कहा, “वे तो दूर देश से अर्थात् बाबेल से मेरे पास आए थे।” ५ फिर उसने पूछा, “तेरे भवन में उन्होंने क्या क्या देखा है?” हिजकियाह ने कहा, “जो कुछ मेरे भवन में है, वह सब उन्होंने देखे हैं, मेरे भण्डारों में कोई ऐसी वस्तु नहीं जो मैंने उन्हें न दिखाई हो।” ६ तब यशायाह ने हिजकियाह से कहा, “सेनाओं के यहोवा का यह वचन सुन ले: ७ ऐसे दिन आनेवाले हैं, जिनमें जो कुछ तेरे भवन में है और जो कुछ आज के दिन तक तेरे पुरुखों का रखा हुआ तेरे भण्डारों में है, वह सब बाबेल को उठ जाएगा; यहोवा यह कहता है कि कोई वस्तु न बचेगी। ८ जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हों, उनमें से की कई को वे बैंधुवाइ में ले जाएँगे; और वे खोजे बनकर बाबेल के राजभवन में रहेंगे।” ९ हिजकियाह ने यशायाह से कहा, “यहोवा का वचन जो तूने कहा है वह भला ही है।” फिर उसने कहा, “मेरे दिनों में तो शान्ति और सच्चाई बनी रहेगी।”

४० तुम्हारा परमेश्वर यह कहता है, मेरी प्रजा को शान्ति दो, शान्ति दो!

१ यस्श्लेम से शान्ति की बातें कहो; और उससे पुकारकर कहो कि तेरी कठिन सेवा पूरी हुई है, तेरे अर्थम् का दण्ड अंगिकार किया गया है। यहोवा के हाथ से तू अपने सब पापों का दून दण्ड पा चुका है। २ किसी की पुकार सुनाई देती है, “जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो, हमारे परमेश्वर के लिये अराबा में एक राजमार्ग चौरस करो।” ३ हर एक ताराइ भर दी जाए, और हर एक पहाड़ और पहाड़ी पिरा दी जाए; जो टेढ़ा है वह सीधा और जो ऊँचा नीचा है वह चौरस किया जाए। ४ तब यहोवा का तेज प्रगट होगा और सब प्राणी उसको एक संग देखेंगे, क्योंकि यहोवा ने आप ही ऐसा कहा है।” ५ बोलनेवाले का वचन सुनाई दिया, “प्रचार करा!” मैंने कहा, “मैं क्या प्रचार करूँ?” सब प्राणी घास है, उनकी शोभा मैदान के फूल के समान है। ६ जब यहोवा की साँस उस पर चलती है, तब घास सूख जाती है, और फूल मुर्झा जाता है, निःसद्देह प्रजा घास है। ७ घास तो सूख जाती, और फूल मुर्झा जाता है, फरन्तु हमारे परमेश्वर का वचन संदैव अटल रहेगा। ८ हे सिय्योन की शुभ समाचार सुनानेवाली, ऊँचे पहाड़ पर चढ़ जा; हे यस्श्लेम को शुभ समाचार सुनानेवाली, बहुत ऊँचे शब्द से सुना, ऊँचे शब्द से सुना, मत डर; यहदा के नगरों से कह, “अपने परमेश्वर को देखो!” ९ देखो, प्रभु यहोवा सामर्थ्य दिखाता हुआ आ रहा है, वह अपने भुजबल से प्रभुता करेगा; देखो, जो मजदूरी देने की है वह उसके पास है और जो बदला देने का है वह उसके हाथ में है। १० वह चरवाहे के समान अपने झण्ड को चराएगा, वह भेड़ों के बच्चों को अँकवार में लिए रहेगा और दूध पिलानेवालियों को धीरे धीरे ले चलेगा। ११ किसने महासागर को चुल्लू से मापा और किसके बिने से आकाश का नाप हुआ, किसने पृथ्वी की मिट्टी को नपुए में भरा और पहाड़ों को तराजू में और पहाड़ियों को कैंटे में तैला है? १२ किसने यहोवा की आत्मा को मार्ग बताया या उसका सलाहकार होकर उसको

ज्ञान सिखाया है? १३ उसने किस से सम्मति ली और किसने उसे समझाकर न्याय का पथ बता दिया और ज्ञान सिखाकर बुद्धि का मार्ग जाता दिया है? १५ देखो, जातियाँ तो डोल की एक बूँद या पलड़ों पर की धूल के तुल्य ठहरी; देखो, वह द्वीपों को धूल के किनकों सरीखे उठाता है। १६ लबानेन भी इंधन के लिये थोड़ा होगा और उसमें के जीव-जन्तु होमबलि के लिये बस न होंगे। १७ सारी जातियाँ उसके सामने कुछ नहीं हैं, वे उसकी दृष्टि में लेश और शून्य से भी घट ठहरी है। १८ तुम परमेश्वर को किसके समान बताओगे और उसकी उपमा किस से दोगे? १९ मरत् कारीगर ढालता है, सुनार उसको सोने से मढ़ता और उसके लिये चाँदी की साँकेले ढालकर बनाता है। २० जो कंगाल इतना अपण नहीं कर सकता, वह ऐसा वृक्ष चून लेता है जो न धुने; तब एक निषुण कारीगर ढूँढ़कर मूरत खुदवाता और उसे ऐसा स्थिर कराता है कि वह हिल न सके। २१ क्या तुम नहीं जानते? क्या तुम ने नहीं सुना? क्या तुम को आरम्भ ही से नहीं बताया गया? क्या तुम ने पृथ्वी की नीव पड़ने के समय ही से विचार नहीं किया? २२ यह वह है जो पृथ्वी के धोरे के ऊपर आकाशमण्डल पर विराजमान है; और पृथ्वी के रहनेवाले टिड़ी के तत्त्व हैं; जो आकाश को मलमल के समान फैलाता और ऐसा तान देता है जैसा रहने के लिये तम्बू ताना जाता है; २३ जो बड़े-बड़े हाकिमों को तुच्छ कर देता है, और पृथ्वी के अधिकारियों को शृण्य के समान कर देता है। २४ वे रोपे ही जाते, वे बोए ही जाते, उनके दृঁढ় भूमि में जड़ ही पकड़ पाते कि वह उन पर पवन बहाता और वे सख जाते, और आँधी उन्हें भसे के समान उड़ा ले जाती है। २५ इसलिए तुम मुझे किसके समान बताओगे कि मैं उसके तुल्य ठहर्सँ? उस पवित्र का यही वचन है। २६ अपनी आँखें ऊपर उठाकर देखो, किसने इनको सिरजा? वह इन गांगों को गिन-गिनका निकालता, उन सब को नाम ले लेकर बुलाता है? वह ऐसा सामर्थी और अत्यन्त बलवन्त है कि उनमें से कोई बिना आए नहीं रहता। २७ हे याकूब, तू क्यों कहता है, हे इस्माइल तू क्यों बोलता है, “मेरा मार्ग यहोवा से छिपा हुआ है, मेरा परमेश्वर मेरे न्याय की कुछ चिन्ता नहीं करता?” २८ क्या तुम नहीं जानते? क्या तुम ने नहीं सुना? यहोवा जो सनातन परमेश्वर और पृथ्वी भर का सुजनहार है, वह न थकता, न श्रमित होता है, उसकी बुद्धि अगम है। २९ वह थके हुए को बल देता है और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ्य देता है। ३० तस्ण तो थकते और श्रमित हो जाते हैं, और जवान ढोकर खाकर गिरते हैं; ३१ पन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएँगे, वे उकाबों के समान उडेंगे, वे दैडेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और शक्ति न होंगी।

४१ हे द्वीपों, मेरे समाने चुप रहो; देश-देश के लोग नया बल प्राप्त करें;

वे समीप आकर बोलें; हम आपस में न्याय के लिये एक दूसरे के समीप आएँ। २ किसने पूर्व दिशा से एक को उभारा है, जिसे वह धार्मिकता के साथ अपने पाँच के पास बुलाता है? वह जातियों को उसके बश में कर देता और उसको राजाओं पर अधिकारी ठहराता है; वह अपनी तलवार से उन्हें धूल के समान, और अपने धनुष से उड़ाए हुए भसे के समान कर देता है। ३ वह उन्हें खदेड़ा और ऐसे मार्ग से, जिस पर वह कभी न चला था, बिना रोक-टोक आगे बढ़ता है। ४ किसने यह काम किया है और आदि से पीढ़ियों को बुलाता आया है? मैं यहोवा, जो सबसे पहला, और अन्त के समय रहेंगा; मैं वही हूँ। ५ द्वीप देखकर डरते हैं, पृथ्वी के दूर देश काँप उठे और निकट आ गए हैं। ६ वे एक दूसरे की सहायता करते हैं और उनमें से एक अपने बाईं से कहता है, “हियाव बाँधी!” ७ बढ़दृ सुनार को और हथौडे से बाबर करनेवाला निहाई पर मारनेवाले को यह कहकर हियाव बन्धा रहा है, “जोड़ तो अच्छी है,” अतः वह कील ठौक-ठौककर उसको ऐसा ढूँढ करता है कि वह स्थिर रहे। ८

मेरे दास इसाएल, हे मेरे चुने हुए याकूब, हे मेरे मित्र अद्वाहम के बंश; ९८ जिसे मैंने पृथ्वी के दूर-दूर देशों से लिया और पृथ्वी की ओर से बुलाकर यह कहा, “तू मेरा दास है, मैंने तुझे चुना है और त्यागा नहीं;” ९९ मत डर, क्योंकि मैं तेरे सग हूँ, इधर-उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ; मैं तुझे दृढ़ करूँगा और तेरी सहायता करूँगा, अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे सम्भाले रखूँगा। १० देख, जो तुझ से क्रोधित है, वे सब लज्जित होंगे; जो तुझ से झागड़ते हैं उनके मूँह काले होंगे और वे नाश होकर मिट जाएंगे। ११ जो तुझ से लड़ते हैं उन्हें ढूँढ़ने पर भी तू न पाएगा; जो तुझ से युद्ध करते हैं वे नाश होकर मिट जाएंगे। १२ क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा, तेरा दाहिना हाथ पकड़कर करूँगा, “मत डर, मैं तेरी सहायता करूँगा।” १३ हे कीड़े सरीखे याकूब, हे इसाएल के मनुष्यों, मत डरो! यहोवा की यह वाणी है, मैं तेरी सहायता करूँगा; इसाएल का पवित्र तेरा छुड़ानेवाला है। १४ देख, मैंने तुझे छुवीवाले दाँवने का एक नया और उत्तम यन्त्र ठहराया है; तू पहाड़ों को दाँव-दाँवकर सक्षम धूल कर देगा, और पहाड़ियों को तू भूसे के समान कर देगा। १५ तू उनको फटकेगा, और पवन उन्हें उड़ा ले जाएगा, और आँधी उन्हें तिर-बितर कर देगी। परन्तु तू यहोवा के करण मन मान होगा, और इसाएल के पवित्र के कारण बड़ाई मारेगा। १६ जब दीन और दरिद्र लोग जल ढूँढ़ने पर भी न पाएँ और उनका तालू प्यास के मारे सूख जायें; मैं यहोवा उनकी विनती सुरँगा, मैं इसाएल का परमेश्वर उनको त्याग न दूँगा। १७ मैं मूँछे टीलों से भी नदियों और पैदानों के बीच में सोते बहाऊँगा; मैं जंगल को ताल और निर्जल देश को सोते ही सोते कर दूँगा। १८ मैं जंगल में देवदार, बबूल, मैंहदी, और जैतून उगाऊँगा, मैं अराबा में सोनोवर, चिनार वृक्ष, और चीड़ इक्केह लगाऊँगा; १९ जिससे लोग देखकर जान लें, और सोचकर पूरी रीति से समझ लें कि यह यहोवा के हाथ का किया हुआ और इसाएल के पवित्र का सजा हुआ है। २० यहोवा कहता है, “अपना मुकदमा लड़ो,” याकूब का राजा कहता है, “अपने प्रमाण दो।” २१ वे उन्हें देकर हमको बताएँ कि भविष्य में क्या होगा? पूर्वकाल की घटनाएँ बताओ कि आदि में क्या-क्या हुआ, जिससे हम उन्हें सोचकर जान सके कि भविष्य में उनका क्या फल होगा; या होनेवाली घटनाएँ हमको सुना दो। २२ भविष्य में जो कुछ घटेगा वह बताओ, तब हम मानेंगे कि तुम ईश्वर हो; भला या बुरा, कुछ तो करो कि हम देखकर चकित को जाएँ। २३ देखो, तुम कुछ नहीं हो, तुम से कुछ नहीं बनता; जो कोई तुम्हें चाहता है वह धृष्टि है। २४ मैंने एक को उत्तर दिशा से उभारा, वह आ भी गया है; वह पूर्व दिशा से है और मेरा नाम लेता है; जैसा कुम्हार गीती मिट्ठी को लताड़ता है, वैसा ही वह हाकिमों को कीच के समान लताड़ देगा। २५ किसने इस बात को पहले से बताया था, जिससे हम यह जानते? किसने पूर्वकाल से यह प्रगट किया जिससे हम कहें कि वह सच्चा है? कोई भी बतानेवाला नहीं, कोई भी सुनानेवाला नहीं, तुम्हारी बातों का कोई भी सुनानेवाला नहीं है। २६ मैं ही ने पहले सिय्योन से कहा, “देख, उन्हें देख,” और मैंने यस्तलेम को एक शब समाचार देवेवाला भेजा। २७ मैंने देखने पर भी किसी को न पाया; उनमें कोई मंत्री नहीं जो मेरे पृछने पर कुछ उत्तर दे सके। २८ सुनो, उन सभी के काम अनर्थ हैं; उनके काम तुच्छ हैं, और उनकी ढली हुई मूर्तियाँ बायु और मिथ्या हैं।

४२ मेरे दास को देखो जिसे मैं सम्भाले हूँ, मेरे चुने हुए को, जिससे मेरा जी प्रसन्न है; मैंने उस पर अपना आत्मा रखा है, वह जाति-जाति के लिये न्याय प्रगट करेगा। १ न वह चिल्लाए़ा और न बूजनाहार के लिये न्याय प्रगट करेगा। २ न वह चिल्लाए़ा और न होकर चाले, न सड़क में अपनी वाणी सुनाए़ा। ३ कुचले हुए नरकट को वह न तोड़ेगा और न टिमटिमाती बर्ती को बुझाए़ा; वह सच्चाई से न्याय चुकाए़ा। ४ वह न

थकेगा और न हियाव छोड़ेगा जब तक वह न्याय को पृथ्वी पर स्थिर न करें; और द्वीपों के लोग उसकी व्यवस्था की बात जोहेंगे। ५ परमेश्वर जो आकाश का सूजने और तानेवाला है, जो उपज सहित पृथ्वी का फैलानेवाला और उस पर के लोगों को साँस और उस पर के चलनेवालों को आत्मा देनेवाला यहोवा है, वह यह कहता है: ६ “मुझ यहोवा ने तुझको धार्मिकता से बुला लिया है, मैं तेरा हाथ थाम कर तेरी रक्षा करूँगा; मैं तुझे प्रजा के लिये बाचा और जातियों के लिये प्रकाश ठहराऊँगा; ७ कि तू अंथों की आँखें खोले, बन्दियों को बद्दीगृह से निकाले और जो अंथियार में बैठे हैं उनको कालकोठरी से निकालो। ८ मैं यहोवा हूँ, मेरा नाम यही है; अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूँगा और जो स्त्री मेरे योग्य है वह खुदी हुई मूरतों को न दूँगा। ९ देखो, पहली बातें तो हो चुकी हैं, अब मैं नई बातें बताता हूँ; उनके हानि से पहले मैं तुम को सुनाता हूँ।” १० हे सम्पुर पर चलनेवालों, हे सम्पुर के सब रहनेवालों, हे द्वीपों, तुम सब अपने रहनेवालों समेत यहोवा के लिये नया गीत गाओ और पृथ्वी की ओर से उसकी स्तुति करो। ११ जंगल और उसमें की बस्तियाँ और केदार के बसे हुए गाँव जयजयकार करें; सेला के रहनेवाले जयजयकार करें, वे पहाड़ों की चीरियों पर से ऊँचे शब्द से ललकारें। १२ वे यहोवा की महिमा प्रगत करें और द्वीपों में उसका गुणानुवाद करें। १३ यहोवा वीर के समान निकलेगा और योद्धा के समान अपनी जलन भड़काए़ा, वह ऊँचे शब्द से ललकरेगा और अपने शब्दों पर जयवन्त होगा। १४ बहुत काल से तो मैं चुप रहा और मैंन साथे अपने को रोकता रहा; परन्तु अब जच्चा के समान चिल्लाऊँगा मैं हाँफ-हाँफकर साँस भरूँगा। १५ पहाड़ों और पहाड़ियों को मैं सूखा डालूँगा और उनकी सब हरियाली झूलासा ढौँगा, मैं नदियों को द्वीप कर दूँगा और तालों को सूखा डालूँगा। १६ मैं अंथों को एक मार्ग से ले चलूँगा जिसे वे नहीं जाते और उनको ऐसे पथों से चलाऊँगा जिन्हें वे नहीं जानते। उनके आगे मैं अंथियों को उजियाला करूँगा और टेढ़े मार्गों को सीधा करूँगा। मैं ऐसे-ऐसे काम करूँगा और उनको न त्यागूँगा। १७ जो लोग खुदी हुई मूरतों पर भरोसा रखते और ढली हुई मूरतों से कहते हैं, “तुम हमारे ईवर हो,” उनको पीछे हटना और अत्यन्त लज्जित होना पड़ेगा। १८ हे बर्दों, सुनो; हे अंथों, आँख खोलो कि तुम देख सको। १९ मैं दास के सिवाय कौन अंथ है? मेरे भेजे हुए दूत के तुल्य कौन बहरा है? मेरे मित्र के समान कौन अंथा या यहोवा के दास के तुल्य अंथा कौन है? २० तू बहुत सी बातों पर दृढ़ करता है परन्तु उन्हें देखता नहीं है; कान तो खुले हैं परन्तु सुनता नहीं है। २१ यहोवा को अपनी धार्मिकता के निमित ही यह भाया है कि व्यवस्था की बड़ाई अधिक करे। २२ परन्तु ये लोग लुट गए हैं, ये सब के सब गँड़ों में फँसे हुए और कालकोठरीयों में बन्द किए हुए हैं, ये पकड़े गए और कोई इन्हें नहीं छुड़ाता; ये लुट गए और कोई आज्ञा नहीं देता कि उन्हें लौटा ले आओ। २३ तुम मैं से कौन इस पर कान लगाएगा? कौन ध्यान करके होनहार के लिये सुनेगा? २४ किसने याकूब को लुटवाया और इसाएल को लटेरों के वश में कर दिया? क्या यहोवा ने यह नहीं किया जिसके विश्व हमने पाप किया, जिसके मार्गों पर उन्होंने चलाना न चाहा और न उसकी व्यवस्था को माना? २५ इस कारण उस पर उसने अपने क्रोध की आग भड़काई और युद्ध का बल चलाया; और यद्यपि आग उसके चारों ओर लग गई, तो भी वह न समझा; वह जल भी गया, तो भी न चेता।

४३ हे याकूब तेरा सुजनहार यहोवा, और हे इसाएल तेरा रचनेवाला, अब यह कहता है, “मत डर, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है; मैंने तुझे नाम लेकर बुलाया है, तमेरा ही है। २ जब तू जल में होकर जाएँ, मैं तेरे संग-संग रहूँगा और जब तू अंथियों में होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आँच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी। ३

क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूँ, इसाएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्ता हूँ, तेरी छुड़ौती मैं मैं मिस को और तेरे बदले कृष्ण और सबा को देता हूँ। ४ मेरी दृष्टि मैं तू अनगोल और प्रतिष्ठित ठहरा है और मैं तुझ से प्रेम रखता हूँ, इस कारण मैं तेरे बदले मनुष्यों को और तेरे प्राण के बदले मैं राज्य-राज्य के लोगों को दे दूँगा। ५ मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं तेरे बंश को पूर्व से ले आऊँगा, और पश्चिम से भी इक्ष्या कहँगा। ६ मैं उत्तर से कहँगा, ‘दे दे’, और दक्षिण से कि ‘रोक मत रख;’ मैं पुत्रों को दूर से और मेरी पुत्रियों को पृथ्वी की छोर से ले आओ; ७ हर एक को जो मेरा कहलाता है, जिसको मैंने अपनी महिमा के लिये सुजा, जिसको मैंने रचा और बनाया है।” ८ आँख रहते हुए अधे को और कान रखते हुए बहरों को निकाल ले आओ! ९ जाति-जाति के लोग इकट्ठे किए जाएँ और राज्य-राज्य के लोग एकत्रित हों। उनमें से कौन यह बात बता सकता या बीती हुई बातें हमें सुना सकता है? वे अपने साक्षी ले आएँ जिससे वे सच्चे ठहरें, वे सुन लें और कहें, यह सत्य है। १० यहोवा की वाणी है, “तुम मेरे साक्षी हो और मेरे दास हो, जिन्हे मैंने इसलिए चुना है कि समझकर मेरा विश्वास करो और यह जान लो कि मैं वही हूँ। मुझसे पहले कोई परमेश्वर न हुआ और न मेरे बाद कोई होगा। ११ मैं ही यहोवा हूँ और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्ता नहीं। १२ मैं ही ने समाचार दिया और उद्धार किया और वर्णन भी किया, जब तुम्हरे बीच में कोई पराया देवता न था; इसलिए तुम ही मेरे साक्षी हो,” यहोवा की यह वाणी है। १३ “मैं ही परमेश्वर हूँ और भविष्य में भी मैं ही हूँ, मेरे हाथ से कोई छुड़ा न सकेगा; जब मैं काम करना चाहूँ तब कौन मुझे रोक सकेगा।” १४ तुम्हारा छुड़ानेवाला और इसाएल का पवित्र यहोवा यह कहता है, “तुम्हारे निमित्त मैंने बाबेल को भेजा है, और उसके सब रहनेवालों को भगोड़ों की दशा में और कसियों को भी उहरी के जहाजों पर चढ़ाकर ले आऊँगा जिनके विषय वे बड़ा बोल बोलते हैं। १५ मैं यहोवा तुम्हारा पवित्र, इसाएल का सुजनहार, तुम्हारा राजा हूँ।” १६ यहोवा जो समृद्ध में मार्ग और प्रचण्ड धारा में पथ बनाता है, १७ जो रथों और घोड़ों को और शूरवीरों से तो सेना को निकाल लाता है, (वे तो एक संग वही रह गए और फिर नहीं उठ सकते, वे बुझ गए, वे सन की बीती के समान बुझ गए हैं।) वह यह कहता है, १८ “अब बीती हुई घटनाओं का स्मरण मत करो, न प्राचीनकाल की बातों पर मन लगाओ। १९ देखो, मैं एक नई बात करता हूँ, वह अभी प्रगत होगी, क्या तुम उससे अनजान रहेगे? मैं जंगल में एक मार्ग बनाऊँगा और निर्जल देश में नदियाँ बहाऊँगा। २० गीढ़ और शुतुर्मुख आदि जंगली जन्तु मेरी महिमा करेंगे; क्योंकि मैं अपनी चुनी हुई प्रजा के पीने के लिये जंगल में जल और निर्जल देश में नदियाँ बहाऊँगा। २१ इस प्रजा को मैंने अपने लिये बनाया है कि वे मेरा गुणानुवाद करें। २२ “तो भी है याकूब, तने मुझसे प्रार्थना नहीं की; बरन हे इसाएल त मुझसे थक गया है।” २३ मेरे लिये होमबलि करने को तू मैम्ने नहीं लाया और न मेलबलियों की कठिन सेवा तुझ से नहीं कराई, न तुझ से धूप लेकर तुझे थका दिया है। २४ तू मेरे लिये सुगचित नस्कर समये से मोल नहीं लाया और न मेलबलियों की चर्बी से मुझे तुम किया। परन्तु तेरे अपने पापों के कारण मुझ पर बोझ लाद दिया है, और अपने अर्धम के कामों से मुझे थका दिया है। २५ “मैं वही हूँ जो अपने नाम के निमित्त तेरे अपराधों को मिटा देता हूँ और तेरे पापों को स्मरण न करूँगा। २६ मुझे स्मरण करो, हम आपस में विवाद करो; तू अपनी बात का वर्णन कर जिससे तू निर्देश ठहरे। २७ तेरा मूलपुस्त पापी हुआ और जो-जो मेरे और तुम्हारे बीच विचर्व हुए, वे मुझसे बलबा करते चले आए हैं। २८ इस कारण मैंने पवित्रस्थान के हाकिमों को अपवित्र ठहराया, मैंने याकूब को सत्यानाश और इसाएल को निन्दित होने दिया है।

४४ “परन्तु अब हे मेरे दास याकूब, हे मेरे चुने हुए इसाएल, सुन ले! २ तेरा कर्ता यहोवा, जो तुझे गर्भ ही से बनाता आया और तेरी सहायता करेगा, यह कहता है: हे मेरे दास याकूब, हे मेरे चुने हुए यशस्वन, मत डर! ३ क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर धाराएँ बहाऊँगा; मैं तेरे बंश पर अपनी आत्मा और तेरी सन्तान पर अपनी आशीर्वाद उँडेतूँगा। ४ वे उन मजुरों के समान बढ़ेंगे जो धाराओं के पास घास के बीच मैं होते हैं। ५ कोई कहेगा, ‘मैं यहोवा का हूँ,’ कोई अपना नाम याकूब रखेगा, कोई अपने हाथ पर लिखेगा, ‘मैं यहोवा का हूँ,’ और अपना कुलनाम इसाएली बताएगा।” ६ यहोवा, जो इसाएल का राजा है, अर्थात् सेनाओं का यहोवा जो उसका छुड़ानेवाला है, वह यह कहता है, “मैं सबसे पहला हूँ, और मैं ही अन्त तक रहूँगा; मुझे छोड़ कोई परमेश्वर ही ही नहीं। ७ जब से मैंने प्राचीनकाल में मनुष्यों को ठहराया, तब से कौन हुआ जो मेरे समान उसको प्रचार करे, या बताए या मेरे लिये रचे अथवा होनहार बातें पहले ही से प्रगट करे? ८ मत डरो और न भयभीत हो; क्या मैंने प्राचीनकाल ही से ये बातें तुम्हें नहीं सुनाई और तुम पर प्रगट नहीं की? तुम मेरे साक्षी हो। क्या मुझे छोड़ कोई और परमेश्वर है? नहीं, मुझे छोड़ कोई चट्ठान नहीं; मैं किसी और को नहीं जानता!” ९ जो मूर खोदकर बनाते हैं, वे सब के सब व्यर्थ हैं और जिन बस्तुओं में वे आनन्द ढँगे उनसे कछु लाभ न होगा; उनके साक्षी, न तो आप कछु देखते और न कुछ जानते हैं, इसलिए उनको लज्जित होना पड़ेगा। १० किसने देवता या निष्फल मूरत ढाली है? ११ देख, उसके सब संगियों को तो लज्जित होना पड़ेगा, कारीगर तो मनुष्य ही है; वे सब के सब इकट्ठे होकर खड़े हों; वे डर जाएँगे, वे सब के सब लज्जित होंगे। १२ लोहार एक बस्तु अंगारों में बनाता और हथैडों से गढ़कर तैयार करता है, अपने भुजबल से वह उसको बनाता है; फिर वह भूखा हो जाता है और उसका बल घटता है, वह पानी नहीं पीता और थक जाता है। १३ बढ़ाई सूत लगाकर टाँकी से रेखा करता है और स्नदी से काम करता और परकार से रेखा खींचता है, वह उसका आकार और मनुष्य की सी सुन्दरता बनाता है ताकि लोग उसे घर में रखें। १४ वह देवदार को काटता या बन के बृक्षों में से जाति-जाति के बांज बृक्ष चुनकर देख-भाल करता है, वह देवदार का एक बृक्ष लगाता है जो वर्षा का जल पाकर बढ़ता है। १५ तब वह मनुष्य के ईंधन के काम में आता है; वह उसमें से कुछ सुलगाकर तापता है, वह उसको जलाकर रोटी बनाता है; उसी से वह देवता भी बनाकर उसको दण्डवत् करता है; वह मूर खुदवाकर उसके सामने प्रणाम करता है। १६ उसका एक भाग तो वह आग में जलाता और दूसरे भाग से माँस पकाकर खाता है, वह माँस भूनकर तूष होता; फिर तापकर कहता है, “अहा, मैं गर्भ हो गया, मैंने आग देखी है!” १७ और उसके बचे हुए भाग को लेकर वह एक देवता अर्थात् एक मूर खोदकर बनाते हैं; वह वह उसके सामने प्रणाम और दण्डवत् करता और उससे प्रार्थना करके कहता है, “मुझे बचा ले, क्योंकि तू मेरा देवता है!” १८ वे कुछ नहीं जानते, न कुछ समझ रखते हैं; क्योंकि उनकी आँखें ऐसी बन्द की गई हैं कि वे देख नहीं सकते; और उनकी बुद्धि ऐसी कि वे बड़ा नहीं सकते। १९ कोई इस पर ध्यान नहीं करता, और न किसी को इतना ज्ञान या समझ रहती है कि वह कह सके, “उसका एक भाग तो मैंने जला दिया और उसके कोयतों पर रोटी बनाई, और माँस भूनकर खाया है; फिर क्या मैं उसके बचे हुए भाग को धूनौंसी करता हूँ?” २० वह राख खाता है; भरमाई हुई बुद्धि के कारण वह भटकाया गया है और वह न अपने को बचा सकता और न यह कह सकता है, “क्या मैं दाहिने हाथ में मिथ्या नहीं?” २१ हे याकूब, हे इसाएल, इन बातों को स्मरण कर, तू मेरा दास है, मैंने तुझे रचा है; हे इसाएल, तू मेरा दास है, मैं तुझको न

भूलूँगा। २८ मैंने तेरे अपराधों को काली घटा के समान और तेरे पापों को बादल के समान मिटा दिया है; मेरी ओर फिर लौट आ, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है। २९ हे आकाश ऊँचे स्वर से गा, क्योंकि यहोवा ने यह काम किया है, हे पृथ्वी के गहरे स्थानों, जयजयकर करो; हे पहाड़ों, हे बन, हे बन के सब वृक्षों, गला खोलकर ऊँचे स्वर से गाओ! क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया है और इसाएल में महिमावान होगा। ३० यहोवा, तेरा उद्धारकर्ता, जो तुझे गर्भ ही से बनाता आया है, यह कहता है, ‘मैं यहोवा ही सब का बनानेवाला हूँ जिसने अकेले ही आकाश को ताना और पृथ्वी को अपनी ही शक्ति से फैलाया है। ३१ मैं झटे लोगों के कहे हुए निहाँों को व्यर्थ कर देता और भावी कहनेवालों को बाबला कर देता हूँ, जो ब्रूद्धिमानों को पीछे हटा देता और उनकी पंडिताई को मूर्खता बनाता हूँ; ३२ और अपने दास के बचन को पूरा करता और अपने दूसों की युक्ति को सफल करता हूँ, जो यश्शलेम के विषय कहता है, ‘वह फिर बसाई जाएगी’ और यहदा के नारों के विषय, ‘वे फिर बनाए जाएंगे और मैं उनके खण्डहरों को सुधास्त्वा,’ ३३ जो गहरे जल से कहता है, ‘तू सख जा, मैं तेरी नदियों को सखाऊँगा,’ ३४ जो कुम के विषय में कहता है, ‘वह मेरा ठहराया हुआ चरवाहा है और मेरी इच्छा पूरी करेगा;’ यश्शलेम के विषय कहता है, ‘वह बसाई जाएगी,’ और मन्दिर के विषय कि ‘तेरी नीव डाली जाएगी।’

४५ यहोवा अपने अभिविक्त कुम्ह के विषय यह कहता है, मैंने उसके दाहिने हाथ को इसलिए थाम लिया है कि उसके समने जातियों को दबा दूँ और राजाओं की कमर ढीली करूँ, उसके समने फाटकों को ऐसा खोल दूँ कि वे फाटक बन्द न किए जाएँ। २८ मैं तेरे अगे-अगे चर्तूँगा और ऊँची-ऊँची भूमि को चौरस करस्संगा, मैं पीतल के किवाड़ों को तोड़ डालूँगा और लोहे के बेंडों को टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा। ३१ मैं तुझको अंधकार में छिपा हुआ और गम स्थानों में गडा हुआ धन ढूँगा, जिससे तू जाने कि मैं इसाएल का परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुझे नाम लेकर बुलाता है। ३२ अपने दास याकूब और अपने चुने हुए इसाएल के निमित्त मैंने नाम लेकर तुझे बुलाया है; यधिपि तू मुझे नहीं जानता, तो भी मैंने तुझे पदवी दी है। ३३ मैं यहोवा हूँ और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं; यधिपि तू मुझे नहीं जानता, तो भी मैं तेरी कमर कस्सौंगा, ३४ जिससे उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक लोग जान लें कि मुझ बिना कोई है ही नहीं; मैं यहोवा हूँ और दूसरा कोई नहीं है। ३५ मैं उजियाले का बनानेवाला और अंधियारे का सूजनहार हूँ, मैं शानि का दाता और विपति को रचता हूँ, मैं यहोवा ही इन सभी का कर्ता हूँ। ३६ हे आकाश ऊपर से धार्मिकता बरसा, आकाशमण्डल से धार्मिकता की वर्षा हो; पृथ्वी खुले कि उद्धार उत्पन्न हो; और धार्मिकता भी उसके संग उगाए; मैं यहोवा ही ने उसे उत्पन्न किया है। ३७ “हाय उस पर जो अपने रचनेवाले से झगड़ा है! वह तो मिट्ठी के ठीकों में से एक ठीकरा ही है! क्या मिट्ठी कुम्हार से कहेगी, ‘तू यह क्या करता है?’ क्या कारीगर का बनाया हुआ कार्य उसके विषय कहेगा, ‘उसके हाथ नहीं हैं?’ ३८ हाय उस पर जो अपने पिता से कहे, ‘तू क्या जमाता है?’ और माँ से कहे, ‘तू किसकी माता है?’” ३९ यहोवा जो इसाएल का पवित्र और उसका बनानेवाला है वह यह कहता है, “क्या तुम आनेवाली घटनाएँ मुझसे पछोड़ो? क्या मैं पुत्रों और कानों के विषय मुझे जाजा देगे? ४० मैं ही ने पृथ्वी को बनाया और उसके ऊपर मनुष्यों को सजा दै, मैंने अपने ही हाथों से आकाश को ताना और उसके सारे गणों को आज्ञा दी है। ४१ मैं ही ने उस पुस्त को धार्मिकता में उभारा है और मैं उसके सब मार्गों को सीधा करूँगा; वह मेरे नगर को फिर बसाएगा और मेरे बन्दियों को बिना दाम या बदला लिए छुड़ा देगा,” सेनाओं के यहोवा का यहीं वचन है। ४२ यहोवा यह कहता है, “मिस्रियों

की कमाई और कूशियों के व्यापार का लाभ और सबाई लोग जो डील-डॉलवाले हैं, तेरे पास चले आएँगा, और तेरे ही हो जाएँगे, वे तेरे पीछे-पीछे चलेंगे; वे सँकल्पों में बैंधे हुए चले आएँगे और तेरे सामने दण्डवत् कर तुझ से विनती करके कहेंगे, ‘निश्चय परमेश्वर तेरे ही साथ है और दूसरा कोई नहीं; उसके सिवाय कोई और परमेश्वर नहीं।’” ४३ हे इसाएल के परमेश्वर, हे उद्धारकर्ता! निश्चय तू ऐसा परमेश्वर है जो अपने को गुम रखता है। ४४ मर्तियों के गढ़नेवाले सब के सब लज्जित और चकित होंगे, वे सब के सब व्याकूल होंगे। ४५ परन्तु इसाएल यहोवा के द्वारा युग-युग का उद्धार पाएगा; तुम युग-युग बन अनन्तकाल तक न तो कभी लज्जित और न कभी व्याकूल होंगे। ४६ मैंने उनकी पृथ्वी को रचा और उनकी व्याकूलता है, वही परमेश्वर है; उसी ने पृथ्वी को रचा और बनाया, उसी ने उसको स्थिर भी किया; उसने उसे सुनसान रहने के लिये नहीं परन्तु बसने के लिये उसे रखा है। वही यह कहता है, “मैं यहोवा हूँ, मेरे सिवाय दूसरा और कोई नहीं है। ४७ मैंने किसी गुप्त स्थान में, न अंधकार देश के किसी स्थान में बातें कीं; मैंने याकूब के बंश से नहीं कहा, ‘मुझे व्यर्थ में ढूँढो।’” मैं यहोवा सत्य ही कहता हूँ, मैं उचित बातें ही बताता हूँ। ४८ “हे जाति-जाति में से बचे हुए लोगों, इकट्ठे होकर आओ, एक संग मिलकर निकट आओ! वह जो अपनी लकड़ी की खोटी हुई मूरते लिए फिरते हैं और ऐसे देवता से जिससे उद्धार नहीं हो सकता, प्रार्थना करते हैं, वे अज्ञान हैं। ४९ तुम प्रचार करो और उनको लाओ; हाँ, वे आपस में सम्पत्ति करें किसने प्राचीनकाल से यह प्रगट किया? किसने प्राचीनकाल में इसकी सूचना पहले ही से दी? क्या मैं यहोवा ही ने यह नहीं किया? इसलिए मुझे छोड़ कोई और दूसरा परमेश्वर नहीं है, धर्मी और उद्धारकर्ता परमेश्वर मुझे छोड़ और कोई नहीं है। ५० “हे पृथ्वी के दूर-दूर के देश के रहनेवालों, तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ! क्योंकि मैं ही परमेश्वर हूँ और दूसरा कोई नहीं है। ५१ मैंने अपनी ही शपथ खाई, धार्मिकता के अनुसार मेरे मुख से यह वचन निकला है और वह नहीं टलेगा, ‘प्रेत्यक धूना मेरे सम्मुख इकेगा और प्रत्यक के मुख से मेरी ही शपथ खाई जाएगी।’” ५२ “लोग मेरे विषय में कहेंगे, केवल यहोवा ही में धार्मिकता और शक्ति है। उसी के पास लोग आएँगे, और जो उससे स्ते रहेंगे, उन्हें लज्जित होना पड़ेगा। ५३ इसाएल के सारे बंश के लोग यहोवा ही के कारण धर्मी ठहरेंगे, और उसकी महिमा करेंगे।”

४६ बेल देवता झुक गया, नबो देवता नब गया है, उनकी प्रतिमाएँ पशुओं वरन घेरेल पशुओं पर लटी हैं, जिन वस्तुओं को तुम उठाए फिरते थे, वे अब भारी बोझ हो गईं और थकित पशुओं पर लटी हैं। ५४ वे नब गए, वे एक संग झुक गए, वे उस भार को छुड़ा नहीं सके, और आप भी बैंधुवाई में चले गए हैं। ५५ “हे याकूब के घराने, हे इसाएल के घराने के सब बचे हुए लोगों, मेरी ओर कान लगाकर सुनो; तुम को मैं तुम्हारी उत्पत्ति ही से उठाए रहा और जन्म ही से लिए फिरता आया हूँ। ५६ तुम्हारे बढ़ाये में भी मैं वैसा ही बना रहूँगा और तुम्हारे बाल पक्ने के समय तक तुम्हें उठाए रहूँगा। ५७ मैंने तुम्हें बनाया और तुम्हें लिए फिरता रहूँगा, मैं तुम्हें उठाए रहूँगा और छुड़ाता भी रहूँगा। ५८ “तुम किस से मेरी उपमा दोगे और मुझे किसके समान बताओगे, किस से मेरा मिलान करोगे कि हम एक समान ठहरें? ५९ जो शैली से सोना उण्डेलते या कॉटे में चॉटी तौलते हैं, जो सुनार को मजदूरी देकर उससे देवता बनवाते हैं, तब वे उसे प्रणाम करते बरन दण्डवत् भी करते हैं! ६० वे उसको कंधे पर उठाकर लिए फिरते हैं, वे उसे उसके स्थान में रख देते और वह वही खड़ा रहता है, वह अपने स्थान से हट नहीं सकता; यदि कोई उसकी दुहाई भी दे, तो भी न वह सुन सकता है और न विपत्ति से उसका उद्धार कर सकता है।

“हे अपराधियों, इस बात को स्मरण करो और ध्यान दो, इस पर फिर मन लगाओ। १ प्राचीनकाल की बातें स्मरण करो जो आरम्भ ही से हैं, क्योंकि परमेश्वर मैं ही हूँ, दूसरा कोई नहीं; मैं ही परमेश्वर हूँ और मैं तुल्य कोई भी नहीं है। २ मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई है मैं कहता हूँ, ‘मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा।’ ३ मैं पूर्व से एक उकाल पक्षी को अर्थात् दूर देश से अपनी युक्ति के पूरा करनेवाले पुस्तकों को बुलाता हूँ मैं ही ने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूँगा; मैंने यह विचार बांधा है और उसे सफल भी करूँगा। ४ “हे कठोर मनवालों तुम जो धार्मिकता से दूर हो, कान लगाकर मेरी सुनो। ५ मैं अपनी धार्मिकता को समीप ले आने पर हूँ वह दूर नहीं है, और मेरे उद्घाटन में विलम्ब न होगा; मैं सियोन का उद्घाटन करूँगा और इसाएल को महिमा देंगा।”

४७ हे बाबेल की कुमारी बेटी, उत्तर आ और धूल पर बैठ; हे कसदियों की

बेटी तु बिना सिंहासन भूमि पर बैठ! क्योंकि तु अब फिर कोमल और सुकुमार न कहलाएगी। २ चक्की लेकर आटा पीस, अपना धूँधट हटा और घाघरा समेट ले और उघाड़ी टाँगों से नदियों को पार कर। ३ तेरी नमनता उघाड़ी जाएगी और तेरी लज्जा प्रगत होगी। मैं बदला लौंगा और किनी मनुष्य को न छोड़ूँगा। ४ हमारा छुटकारा देनेवाले का नाम सेनाओं का यहोवा और इसाएल का पवित्र है। ५ हे कसदियों की बेटी, चुपचाप बैठी रह और अधियरो में जा; क्योंकि तू अब राज्य-राज्य की स्वामिनी न कहलाएगी। ६ मैंने अपनी प्रजा से क्रोधित होकर अपने निज भाग को अपवित्र ठहराया और तेरे वश में कर दिया; तूने उन पर कुछ दया न की; ब्रूँदों पर तूने अपना अद्यन्त भारी जूआ रख दिया। ७ तूने कहा, “मैं सर्वदा स्वामिनी बनी रहूँगी,” इसलिए तूने अपने मन में इन बातों पर विचार न किया और यह भी न सोचा कि उनका क्या फल होगा। ८ इसलिए सुन, तू जो रग-रंग में उलझी हुई निरुद बैठी रहती है और मन में कहती है कि “मैं ही हूँ, और मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं; मैं विधवा के समान न बैठूँगी और न मेरे बाल-बच्चे मिटेंगे।” ९ सुन, ये दोनों दुःख अर्थात् लड़कों का जाता रहना और विधवा हो जाना, अचानक एक ही दिन तुझ पर आ पड़ेंगे। तेरे बहुत से टोन्हों और तेरे भारी-भारी तंत्र-मंत्रों के रहते भी ये तुझ पर अपने प्रेत बल से आ पड़ेंगे। १० तूने अपनी दुश्टी पर भरोसा रखा, तूने कहा, “मुझे कोई नहीं देखता,” तेरी बुद्धि और ज्ञान ने तुझे बहकाया और तूने अपने मन में कहा, “मैं ही हूँ और मैं सिवाय कोई दूसरा नहीं।” ११ परन्तु तेरी ऐसी दुर्गति होगी जिसका मन्त्र तू नहीं जानती, और तुझ पर ऐसी विपत्ति पड़ेगी कि तू प्रायश्चित्त करके उसका निवारण न कर सकेगी; अचानक विनाश तुझ पर आ पड़ेगा जिसका तुझे कुछ भी पता नहीं। १२ अपने तंत्र-मंत्र और बहुत से टोन्हों को, जिनका तूने बालायास्था ही से अभ्यास किया है, उपयोग में ला, सम्भव है तू उनसे लाभ उठा सके या उनके बल से स्थिर रह सके। १३ तू तो युक्ति करते-करते थक गई हैं; अब तेरे ज्योतिर्षी जो नक्षत्रों को ध्यान से देखते और नये-नये चाँद को देखकर होनहार बताते हैं, वे खड़े होकर तुझे उन बातों से बचाएँ जो तुझ पर घटेंगी। १४ देख, वे भूसे के समान होकर आग से भस्म हो जाएँगे; वे अपने प्राणों को ज्वाला से न बचा सकेंगे। वह आग तापने के लिये नहीं, न ऐसी होगी जिसके सामने कोई बैठ सके। १५ जिनके लिये तू परिश्रम करती आई है वे सब तेरे लिये वैसे ही होंगे, और जो तेरी युवावस्था से जैरे संग व्यापार करते आए हैं, उनमें प्रत्येक अपनी-अपनी दिशा की ओर चले जाएँगे; तेरा बचानेवाला कोई न रहेगा।

४८ हे याकूब के घराने, यह बात सुन, तुम जो इसाएली कहलाते और यहदा के सोतों के जल से उत्पन्न हुए हों; जो यहोवा के नाम की शपथ खाते हों और इसाएल के परमेश्वर की चर्चा तो करते हों, परन्तु सच्चाई और धार्मिकता से नहीं करते। २ क्योंकि वे अपने को पवित्र नाग के बताते हैं, और इसाएल के परमेश्वर पर, जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है भरोसा करते हैं। ३ “होनेवाली बातों को तो मैंने प्राचीनकाल ही से बताया है, और उनकी चर्चा मेरे मैंह से निकली, मैंने अचानक उहें प्रगत किया और वे बातें सचमुच हूँ। ४ मैं जानता था कि तू हठीला है और तेरी गर्दन लोहे की नस और तेरा माथा पीतल का है। ५ इस कारण मैंने इन बातों को प्राचीनकाल ही से तुझे बताया उनके होने से पहले ही मैंने तुझे बता दिया, ऐसा न हो कि तू यह कह पाए कि यह मेरे देवता का काम है, मेरी खोदी और ढली हुई मूर्तियों की आज्ञा से यह हुआ। ६ “तुने सुना है, अब इन सब बातों पर ध्यान कर; और देखो, क्या तुम उसका प्रचार न करोगे? अब से मैं तुझे नई-नई बातें और ऐसी गुम बातें सुनाऊँगा जिन्हें तू नहीं जानता। ७ वे अभी-अभी रची गई हैं, प्राचीनकाल से नहीं; परन्तु आज से पहले तूने उन्हें सुना भी न था, ऐसा न हो कि तू कहे कि देख मैं तो इहें जानता था। ८ हाँ! निश्चय तूने उन्हें न तो सुना, न जाना, न इससे पहले तेरे कान ही खुले थे। क्योंकि मैं जानता था कि तू निश्चय विष्वासघात करेगा, और गर्भ ही से तेरा नाम अपराधी पड़ा है। ९ “अपने ही नाम के निमित्त मैं क्रोध करते में विलम्ब करता हूँ, और अपनी महिमा के निमित्त अपने आपको रोक रखता हूँ, ऐसा न हो कि मैं तुझे काट डालूँ। १० देख, मैंने तुझे निर्मल तो किया, परन्तु, चाँदी के समान नहीं; मैंने दुःख की भरी में परखकर तुझे चुन लिया है। ११ अपने निमित्त, हाँ अपने ही निमित्त मैंने यह किया है, मेरा नाम क्यों अपवित्र ठहरे? अपनी महिमा मैं दूसरे को नहीं दूँगा। १२ “हे याकूब, हे मेरे बुलाए हुए इसाएल, मेरी ओर कान लगाकर सुन! मैं वही हूँ, मैं ही आदि और मैं ही अन्त हूँ। १३ निश्चय मेरे ही हाथ ने पृथ्वी की नींव डाली, और मेरे ही दाहिने हाथ ने आकाश फैलाया; जब मैं उनको बुलाता हूँ, वे एक साथ उपस्थित हो जाते हैं।” १४ “तुम सब के सब इकट्ठे होकर सुनो! उम्मे से किनने कभी इन बातों का समाचार दिया? यहोवा उससे प्रेम रखता है: वह बाबेल पर अपनी इच्छा पूरी करेगा, और कसदियों पर उसका हाथ पड़ेगा। १५ मैंने ही मैंने ही ने कहा और उसको बुलाया है, मैं उसको ले आया हूँ, और उसका काम सफल होगा। १६ मेरे निकट आकर इस बात को सुनो आदि से लेकर अब तक मैंने कोई भी बात गुम में नहीं कही; जब से वह हुआ तब से मैं वहाँ हूँ।” और अब प्रभु यहोवा ने और उसकी आत्मा ने मुझे भेज दिया है। १७ यहोवा जो तेरा छुड़ानेवाला और इसाएल का पवित्र है, वह यह कहता है: “मैं ही तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुझे तेरे लाभ के लिये शिक्षा देता हूँ, और जिस मार्ग से तुझे जाना है उसी मार्ग पर तुझे ले चलता हूँ। १८ भला होता कि तूने मेरी आज्ञाओं को ध्यान से सुना होता! तब तेरी शान्ति नदी के समान और तेरी धार्मिकता सम्पूर्ण की लहरों के समान होता; १९ तेरा वंश रेतकणों के तुल्य होता, और तेरी धार्मिकता सम्पूर्ण की लहरों के समान होती; उनका नाम मेरे सम्मुख से न कभी काटा और न मिटाया जाता।” २० बाबेल में से निकल जाओ, कसदियों के बीच में से भाग जाओ; जयजयकार करते हुए इस बात का प्रचार करके सुनाओ, पृथ्वी की छोर तक इसकी चर्चा फैलाओ; कहते जाओ: “यहोवा ने अपने दास याकूब को छुड़ा लिया है!” २१ जब वह उहें निर्जल देखों में ले गया, तब वे प्यासे न हुए; उसने उनके लिये चट्टान में से पानी निकाला, उसने चट्टान को चीरा और जल बह निकला। २२ “दुर्दों के लिये कुछ शान्ति नहीं,” यहोवा का यही वचन है।

४९ हे द्वीपों, मेरी और कान लगाकर सुनो; हे दूर-दूर के राज्यों के लोगों, ध्यान लगाकर मेरी सुनो! यहोवा ने मुझे गर्भ ही में से बुलाया, जब मैं माता के पेट में था, तब ही उसने मेरा नाम बताया। २ उसने मेरे मुँह को चोटी तलवार के समान बनाया और अपने हाथ की आड़ में मुझे छिपा रखा; उसने मुझ को चमकीला तीर बनाकर अपने तरकश में गुम रखा; ३ और मुझसे कहा, “तू मेरा दास इसाएल है, मैं तुझ में अपनी महिमा प्रगट करूँगा।” ४ तब मैंने कहा, “मैंने तो व्यर्थ परिश्रम किया, मैंने व्यर्थ ही अपना बल खो दिया है; तो भी निश्चय मेरा न्याय यहोवा के पास है और मेरे परिश्रम का फल मेरे परमेश्वर के हाथ में है।” ५ और अब यहोवा जिसने मुझे जन्म ही से इस्लिए रचा कि मैं उसका दास होकर याकूब को उसकी ओर वापस ले आऊँ अर्थात् इसाएल को उसके पास इकट्ठा करूँ, क्योंकि यहोवा की दृष्टि में मैं आदर योग्य हूँ और मेरा परमेश्वर मेरा बल है, ६ उसी ने मुझसे यह भी कहा है, “यह तो हलकी भी बात है कि तू याकूब के गोत्रों का उद्धार करने और इसाएल के रक्षित लोगों को लौटा ले अने के लिये मेरा सेवक ठहरे; मैं तुझे जाति-जाति के लिये ज्योति ठहराऊँगा कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए।” ७ जो मनुष्यों से तुच्छ जाना जाता, जिसने जातियों को घृणा है, और जो अधिकारियों का दास है, इसाएल का छुड़ानेवाला और उसका पवित्र अर्थात् यहोवा यह कहता है, “राजा उसे देखकर खड़े हो जाएँगे और हाकिम दण्डवत करेंगे; यह यहोवा के निमित्त होगा, जो सच्चा और इसाएल का पवित्र है और जिसने तुझे चुन लिया है।” ८ यहोवा यह कहता है, “अपनी प्रसन्नता के समय मैंने तेरी सुन ली, उद्धार करने के दिन मैंने तेरी सहायता की है, मैं तेरी रक्षा करके तुझे लोगों के लिये एक बाचा ठहराऊँगा, ताकि देश को स्थिर करे और उजड़े हुए स्थानों को उनके अधिकारियों के हाथ में दे दे; और बन्दियों से कहे, ‘बन्दीगृह से निकल आओ;’ ९ और जो अधियाये में हैं उनसे कहे, ‘अपने आपको दिखलाओ।’ वे मार्गों के किनारे-किनारे पेट भरने पाएँगे, सब मुँड़े टीलों पर भी उनको चाराई मिलेगी। १० वे खुभे और प्यासे न होंगे, न लूह और न घाम उन्हें लगेगा, क्योंकि, वह जो उन पर दया करता है, वही उनका अगुआ होगा, और जल के सोतों के पास उन्हें ले चलेगा। ११ मैं अपने सब पहाड़ों को मार्ग बना दूँगा, और मेरे राजमार्ग ऊँचे किए जाएँगे। १२ देखो, ये दू से आएँगे, और, ये उत्तर और पश्चिम से और सीनियों के देश से आएँगे।” १३ हे आकाश जयजयकार कर, हे पृथ्वी, मग्न हो, हे पहाड़ों, गला खोलकर जयजयकार करो! क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को शान्ति दी है और अपने दीन लोगों पर दया की है। १४ परन्तु सियोन ने कहा, “यहोवा ने मुझे त्याग दिया है, मेरा प्रभु मुझे भूल गया है।” १५ “क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हाँ, वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल सकता।” १६ देख, मैंने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोदकर बनाया है, तेरी शहरपनाह सदैव मेरी दृष्टि के सामने बनी रहती है। १७ और बच्चे फूर्ती से आ रहे हैं और खण्डहर बनानेवाले और उजाड़नेवाले तेरे बीच से निकले जा रहे हैं। १८ अपनी आँखें उठाकर चारों ओर देख, वे सब के सब इकट्ठे होकर जैरे पास आ रहे हैं। यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की शपथ, तू निश्चय उन सभी को गहने के समान पहन लेगी, तू दुर्लग्न के समान अपने शरीर में उन सब को बाँध लेगी।” १९ “तेरे जो स्थान सुनसान और उजड़े हैं, और तेरे जो देश खण्डहर ही खण्डहर हैं, उनमें अब निवासी न समाएँगे, और तुझे नष्ट करनेवाले दूर हो जाएँगे। २० तेरे पुत्र जो तुझ से ले लिए गए वे फिर तेरे कान में कहने पाएँगे, ‘यह स्थान हमारे लिये छोटा है, हमें और स्थान दें कि उसमें कहने पाएँगे, ‘यह स्थान हमारे लिये छोटा है, मैं तो पुत्रहीन

और बाँझ हो गई थी, दासत्व में और यहाँ-बहाँ मैं धूमती रही, इनको किसने पाला? देख, मैं अकेली रह गई थी; फिर ये कहाँ थे?” २१ प्रभु यहोवा यह कहता है, “देख, मैं अपना हाय जाति-जाति के लोगों की ओर उठाऊँगा, और देश-देश के लोगों के सामने अपना झण्डा खड़ा करूँगा; तब वे तेरे पुत्रों को अपनी गोद में लिए आएँगे, और तेरी पुत्रियों को अपने कंधे पर चढ़ाकर तेरे पास पहुँचाएँगे। २२ राजा तेरे बच्चों के निज-सेवक और उनकी रानीयों दूध पिलाने के लिये तेरी दाइयाँ होंगी। वे अपनी नाक भूमि पर राड़िकर तुझे टण्डवत करेंगे और तेरे पांवों की धूल चटोंगे। तब तू यह जान लेगी कि मैं ही यहोवा हूँ; मेरी बाट जोहेवाले कभी लज्जित न होंगे।” २३ क्या वीर के हाथ से शिकार छीना जा सकता है? क्या दृष्ट के बन्दी छुड़ाए जा सकते हैं? २४ तो भी यहोवा यह कहता है, “हाँ, वीर के बन्दी उससे छीन लिए जाएँगे, और दृष्ट का शिकार उसके हाथ से छुड़ा लिया जाएगा, क्योंकि जो तुझ से लड़ते हैं उनसे मैं आप मुकदमा लड़ूँगा, और तेरे बाल-बच्चों का मैं उद्धार करूँगा। २५ जो तुझ पर अधर करते हैं उनको मैं उन्हीं का माँस खिलाऊँगा, और, वे अपना लहर पीकर ऐसे मतवाले होंगे जैसे नये दाखमधु से होते हैं। तब सब प्राणी जान लेंगे कि तेरा उद्धारकर्ता यहोवा और तेरा छुड़ानेवाला, याकूब का शक्तिमान मैं ही हूँ।”

५० “तुम्हारी माता का त्यागपत्र कहाँ है, जिसे मैंने उसे त्यागते समय दिया था? या मैंने किस व्यापारी के हाथ तुम्हें बेचा?” यहोवा यह कहता है, “सुनो, तुम अपने ही अधर्म के कार्मों के कारण बिक गए, और तुम्हारे ही अपराधों के कारण तुम्हारी माता छोड़ दी गई। २ इसका क्या कारण है कि जब मैं आया तब कोई न मिला? और जब मैंने पुकारा, तब कोई न बोला? क्या मेरा हाथ ऐसा छोटा हो गया है कि छुड़ा नहीं सकता? क्या मुझे मैं उद्धार करने की शक्ति नहीं? देखो, मैं एक धमकी से समृद्ध को सूखा देता हूँ, मैं मानवों को रेगिस्तान बना देता हूँ; उनकी मछलियाँ जल बिना मर जाती और बसाती हैं। ३ मैं आकाश को मानो शोक का काला कपड़ा पहनाता, और टाट को उनका ओढ़ना बना देता हूँ।” ४ प्रभु यहोवा ने मुझे सीखनेवालों की जाँध दी है कि मैं थेके हुए को अपने चक्कने के द्वारा सम्भालना जाऊँ। भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सूँ। ५ प्रभु यहोवा ने मेरा कान खोला है, और मैंने विरोध न किया, न पीछे हटा। ६ मैंने मारनेवालों को अपनी पाठ और गलमोछ नोचनेवालों की ओर अपने गाल किए; अपमानित होने और उनके थूकने से मैंने मुँह न छिपाया। ७ क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है, इस कारण मैंने सकोच नहीं किया; वरन् अपना माथा चक्कमक के समान कड़ा किया क्योंकि मुझे निश्चय था कि मुझे लज्जित होना न पड़ेगा। ८ जो मुझे धाँधी ठहराता है वह मेरे निकट है। मेरे साथ कौन सुकदमा करेगा? हम आपने-सामने खड़े होंगे। मेरा विरोधी कौन है? वह मेरे निकट आए। ९ सुनो, प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है; मुझे कौन दोषी ठहरा सकेगा? देखो, वे सब कपड़े के समान पुराने हो जाएँगे; उनको किंडी खा जाएँगे। १० तुम मैं से कौन है जो यहोवा का भय मानता और उसके दास की बातें सुनता है, जो अधियाये में चलता हो और उसके पास ज्योति न हो? वह यहोवा के नाम का भरोसा रखे, और अपने परमेश्वर पर आशा लगाए रहे। ११ देखो, तुम सब जो आग जलाते और अग्निबाणों को कमर में बाँधते होंगे! तुम सब अपनी जलाई हुई आग में और अपने जलाए हुए अग्निबाणों के बीच आप ही चलो। तुम्हारी यह दशा मेरी ही ओर से होगी, तुम सन्ताप में पड़े रहोगे।

५१ “हे धर्मिका पर चलनेवालों, हे यहोवा के छँडने वालों, कान लगाकर मेरी सुनो; जिस चट्टान में से तुम खोदे गए और जिस खदान में से तुम

निकाले गए, उस पर ध्यान करो। ३ अपने मूलपुस्त अद्वाहम और अपनी माता सारा पर ध्यान करो; जब वह अकेला था, तब ही से मैंने उसको बुलाया और आशीष दी और बढ़ा दिया। ४ यहोवा ने सिय्योन को शान्ति दी है, उसने उसके सब खण्डहरों को शान्ति दी है; वह उसके जंगल को अदन के समान और उसके निर्जल देश को यहोवा की वाटिका के समान बनाएगा; उसमें हर्ष और अनन्द और धन्यवाद और भजन गाने का शब्द सुनाइ पड़ेगा। ५ “हे मेरी प्रजा के लोगों, मेरी ओर ध्यान धरो; हे मेरे लोगों, कान लगाकर मेरी सुनो; क्योंकि मेरी ओर से व्यवस्था दी जाएगी, और मैं अपना नियम देश-देश के लोगों की ज्योति होने के लिये शिर कस्संग। ६ मेरा छुटकारा निकट है; मेरा उद्धार प्राप्त हुआ है, मैं अपने भुजबल से देश-देश के लोगों का न्याय कस्संग। ७ दीप मेरी बाट जोहेंगे और मेरे भुजबल पर आशा रखेंगे। ८ आकाश की ओर अपनी आँखें उठाओ, और पृथ्वी को निहारो; क्योंकि आकाश धूँए के समान लोप हो जाएगा, पृथ्वी कपड़े के समान पुरानी हो जाएगी, और उसके रहनेवाले ऐसे ही हाजेर रहेंगे; परन्तु जो उद्धार मैं कस्संग वह सर्वदा ठहरेगा, और मेरी धार्मिकता का अन्त न होगा। ९ “हे धार्मिकता के जानेवालों, जिनके मन में मेरी व्यवस्था है, तुम कान लगाकर मेरी सुनो; मनुष्यों की नामधराई से मत डरो, और उनके निनदा करने से विस्मित न हो। १० क्योंकि घुन उन्हें कपड़े के समान और कीड़ा उहें उन के समान खाएगा; परन्तु मेरी धार्मिकता अनन्तकाल तक, और मेरा उद्धार पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा।” ११ हे यहोवा की भूजा, जाग! जाग और बल धारण कर; जैसे प्राचीनकाल में और बीते हुए पीढ़ियों में, वैसे ही अब भी जाग। क्या तू वही नहीं है जिसने रहब को टुकड़े-टुकड़े किया और अजगर को छेदा? १२ क्या तू वही नहीं है जिसने समूद्र को अर्थात् गहरे सागर के जल को सूखा डाला और उसकी गहराई में अपने छुड़ाए हुओं के पार जाने के लिये मार्ग निकाला था? १३ सो यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन में आएंगे, और उनके सिरों पर अनन्त अनन्द गूँजता रहेगा; वे हर्ष और अनन्द प्राप्त करेंगे, और शोक और सिसकियों का अन्त हो जाएगा। १४ “मैं, मैं ही तेरा शान्तिदाता हूँ; तू कौन है जो मरनेवाले मनुष्य से, और धास के समान मुझनेवाले आदमी से डरता है, १५ और आकाश के तानेवाले और पृथ्वी की नीव डालनेवाले अपने कर्ता यहोवा को भूल गया है, और जब द्रोही नाश करने को तैयार होता है तब उसकी जलजलाहट से दिन भर लगातार थरथराता है? परन्तु द्रोही की जलजलाहट कहाँ रही? १६ बन्दी शीघ्र ही स्वरंत्र किया जाएगा; वह गड़े में न मेरेगा और न उसे रोटी की कमी होगी। १७ जो समूद्र को उथल-पुथल करता जिससे उसकी लहरों में गर्जन होती है, वह मैं ही तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ मेरा नाम सेनाओं का यहोवा है। १८ मैंने तेरे मूँह में अपने वचन डाले, और तुझे अपने हाथ की आँड में छिपा रखा है; किंतु मैं आकाश को तानूँ और पृथ्वी की नीव डालूँ, और सिय्योन से कहँ, ‘‘तुम मेरी प्रजा हो।’’ १९ हे यस्शलेम जाग! जाग उठ! खड़ी हो जा, तने यहोवा के हाथ से उसकी जलजलाहट के कटोरे में से पिया है, तूने कटोरे का लड्डुखड़ा देनेवाला मद पूरा-पूरा ही पी लिया है। २० जितने लड़कों ने उससे जन्म लिया उनमें से कोई न रहा जो उसकी अमुआई करके ले चले; और जितने लड़के उसने पाले-पोसे उनमें से कोई न रहा जो उसके हाथ को थाम ले। २१ ये दो विपरिताँ तुझ पर आ पड़ी हैं, कौन तेरे संग विलाप करेगा? उजाड़ और विनाश और अकाल और तलवार आ पड़ी है, कौन तुझे शान्ति देगा? २२ तेरे लड़के मूर्छित होकर हर एक सड़क के सिरे पर, महाजाल में फैसे हुए हिरन के समान पड़े हैं; यहोवा की जलजलाहट और तेरे परमेश्वर की धमकी के कारण वे अचेत पड़े हैं। २३ इस कारण हे दुखियाँ, रोग से उसकी जान-पहचान थी, और सुन, तू मतवाली तो है, परन्तु दाखमधु पीकर नहीं; २४ तेरा प्रभु यहोवा जो

अपनी प्रजा का मुकद्दमा लड़नेवाला तेरा परमेश्वर है, वह यह कहता है, “सुन, मैं लड्डुखड़ा देनेवाले मद के कटोरे को अर्थात् अपनी जलजलाहट के कटोरे को तेरे हाथ से ले लेता हूँ; तुझे उसमें से फिर कभी पीना न पड़ेगा; २५ और मैं उसे तेरे उन दुख देनेवालों के हाथ में ढूँगा, जिन्होंने तुझ से कहा, ‘‘लेट जा, कि हम तुझ पर पाँव धरकर आगे चरों,’’ और तेरे और्धे मूँह शिरकर अपनी पीठ को भूमि और आगे चलनेवालों के लिये सड़क बना दिया।”

५२ हे सिय्योन, जाग, जाग! अपना बल धारण कर; हे पवित्र नगर यस्शलेम,

अपने शोभायमान बब्ल पहन ले; क्योंकि तेरे बीच खतनाहित और अशुद्ध लोग फिर कभी प्रवेश न करने पाएंगे। २६ अपने ऊपर से धूल झाड़ दे, हे यस्शलेम, उठ; हे सिय्योन की बड़ी बेटी, अपने गले के बन्धन को खोल दे। २७ क्योंकि यहोवा यह कहता है, “तुम जो सेत-मेत बिक गए थे, इसलिए अब बिना स्पया दिए छुड़ाए भी जाओगे। २८ प्रभु यहोवा यह कहता है: मेरी प्रजा पहले तो मिस्म में परदेशी होकर रहने को गई थी, और अशुरीयों ने भी बिना कारण उन पर अत्याचार किया। २९ इसलिए यहोवा की यह बाजी है कि मैं अब यहाँ क्या करूँ जबकि मेरी प्रजा सेत-मेत हर ली गई है? यहोवा यह भी कहता है कि जो उन पर प्रभुता करते हैं वे ऊधम मचा रहे हैं, और मेरे नाम कि निन्दा लगातार दिन भर होती रहती है। ३० इस कारण मेरी प्रजा मेरा नाम जान लेगी; वह उस समय जान लेगी कि जो बातें करता है वह यहोवा ही है; देखो, मैं ही हूँ।” ३१ पहाड़ों पर उसके पाँव क्या ही सुहाने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्प्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता है, “तेरा परमेश्वर राज्य करता है।” ३२ सुन, तेरे पहरए पुकार रहे हैं, वे एक साथ जयजयकार कर रहे हैं, क्योंकि वे साक्षात् देख रहे हैं कि यहोवा सिय्योन को लौट रहा है। ३३ हे यस्शलेम के खण्डहरों, एक संग उमंग में आकर जयजयकार करो; क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को शान्ति दी है, उसे यस्शलेम को छुड़ा दिया है। ३४ यहोवा ने सारी जातियों के सामने अपनी पवित्र भूजा प्रगट की है; और पृथ्वी के दूर-दूर देशों के सब लोग हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार निश्चय देख लेंगे। ३५ दूर हो, दूर, वहाँ से निकल जाओ, कोई अशुद्ध वस्तु मत छूओ; उसके बीच से निकल जाओ, हे यहोवा के पात्रों के ढोनेवालों, अपने को शुद्ध करो। ३६ क्योंकि तुम को उतावली से निकलना नहीं, और न भागते हुए चलना पड़ेगा; क्योंकि यहोवा तुम्हारे अगे-अगे अगुआई करता हुआ चलेगा, और इसाएल का परमेश्वर तुम्हारे पाँछे भी रक्खा करता चलेगा। ३७ देखो, मेरा दास बुद्धि से काम करेगा, वह ऊँचा, महान और अति महान हो जाएगा। ३८ जैसे बहुत से लोग उसे देखकर चकित हुए (क्योंकि उसका स्प यहाँ तक बिंगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी अदमियों की सी न रह गई थी), ३९ वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा और उसको देखकर राजा शान्त रहेगे; क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनें में भी नहीं आया, और ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी।

५३ जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा

का भुजबल किस पर प्रगट हुआ? ३३ क्योंकि वह उसके सामने अंकुर के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फैट निकलते; उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका स्प ही हमें ऐसा दिखाइ पड़ा कि हम उसको चाहते। ३५ वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुखी पुस्त था, रोग से उसकी जान-पहचान थी, और लोग उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हमने उसका मूल्य न

जाना। ४ निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तो भी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। ५ परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कार्यों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोडे खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ। ६ हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया। ७ वह सताया गया, तो भी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन करते-के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला। ८ अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किसने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवितों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी। ९ उसकी कब्र भी दुर्घटों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संर्पी हुआ, यद्यपि उसने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था और उसके मुँह से कभी छल की बात नहीं निकली थी। १० तो भी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले, उसी ने उसको रोपी कर दिया; जब वह अपना प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी। ११ वह अपने प्राणों का दुख ऊठकर उसे देखेगा और तास होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कार्यों का बोझ आप उठा लेगा। १२ इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूँगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बांध लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया, तो भी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और, अपराधी के लिये विनती करता है।

५४ “हे बाँझ, तू जो पुरुहीन है जयजयकार कर; तु जिसे प्रसव-पीड़ा नहीं हुई के लड़के सुहागिन के लड़कों से अधिक होंगे, यहोवा का यही वचन है। १ अपने तम्बू का स्थान चौड़ा कर, और तेरे डेरे के पट लम्बे किए जाएँ, हाथ मत रोक, रससियों को लम्बी और खुंटीं को ढूँकर। २ क्योंकि तू दाँड़-बाँड़ फैलेगी, और तेरा वंश जाति-जाति का अधिकारी होगा और उजड़े हुए नगरों को फिर से बसाएगा। ३ “मत डर, क्योंकि तेरी आशा फिर नहीं टूटी; मत घबरा, क्योंकि तू पिर लजिजत न होगी और तुझ पर उदासी न छाएगी; क्योंकि तू अपनी जवानी की लज्जा भूल जाएगी, और अपने विधवापन की नामधारी को फिर समरण न करेगी। ४ क्योंकि तेरा कर्ता तेरा पति है, उसका नाम सेनाओं का यहोवा है; और इसाएल का पवित्र तेरा छुड़ानेवाला है, वह सारी पृथकी का भी परमेश्वर कहलाएगा। ५ क्योंकि यहोवा ने तुझे ऐसा बुलाया है, मानो तू छोड़ी हुई और मन की दुखिया और जवानी की ताप्यां हुई जी हो, तेरे परमेश्वर का यही वचन है। ६ क्षण भर ही के लिये मैंने तुझे छोड़ दिया था, परन्तु अब बड़ी दया करके मैं फिर तुझे रख लूँगा। ७ क्रोध के आवेग में आकर मैंने पल भर के लिये तुझ से मुँह छिपाया था, परन्तु अब अनन्त कर्षण से मैं तुझ पर दया करूँगा, तेरे छुड़ानेवाले यहोवा का यही वचन है। ८ यह मेरी दृष्टि में नह के समय के जल-प्रलय के समान है; क्योंकि जैसे मैंने शपथ खाई थी कि नह के समय के जल-प्रलय से पृथकी फिर न डूबेगी, वैसे ही मैंने यह भी शपथ खाई है कि फिर कभी तुझ पर क्रोध न करूँगा और न तुझको धमकी दूँगा। ९ चाहे पहाड़ हट जाएँ, और पहाड़ियाँ टल जाएँ, तो भी मेरी कस्ता तुझ पर से कभी न हटेगी, और मेरी शान्तिदायक वाचा न टलेगी, यहोवा, जो तुझ पर दया करता है, उसका यही वचन है। १० “हे दुखियारी, तू जो

आँधी की सताई है और जिसको शान्ति नहीं मिली, सुन, मैं तेरे पत्थरों की पच्चीकारी करके बैठऊँगा, और तेरी नीच नीलमणि से डालौँगा। ११ तेरे कलश मैं माणिकों से, तेरे फाटक लालाडियों से और तेरे सब सीमाओं को मनोहर रत्नों से बनाऊँगा। १२ तेरे सब लड़के यहोवा के सिखाए हुए होंगे, और उनको बड़ी शान्ति मिलेगी। १३ त् धार्मिकता के द्वारा स्थिर होगी, त् अंधेरे से बचेगी, क्योंकि तुझे डरना न पड़ेगा; और त् धर्मभीत होने से बचेगी, क्योंकि धर्म का कारण तेरे पास न आएगा। १४ सुन, लोग भीड़ लगाएँगे, परन्तु मेरी ओर से नहीं; जितने तेरे विष्वु भीड़ लगाएँगे वे तेरे कारण गिरेंगे। १५ सुन, एक लोहार कोएले की आग धोककर इसके लिये हथियार बनाता है, वह मेरा ही सजा हुआ है। उजाड़ने के लिये भी मेरी ओर से एक नाश करनेवाला सजा गया है। १६ जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाएँ जाएँ, उनमें से कोई सफल न होगा, और जितने लोग मुझे होकर तुझ पर नालिश करें उन सभी से तू जीत जाएगा। यहोवा के दासों का यही भाग होगा, और वे मेरे ही कारण धर्मी ठहरेंगे, यहोवा की यही वार्षी है।”

५५ “अहो सब प्यासे लोगों, पानी के पास आओ; और जिनके पास स्पस्य न हो, तुम भी आकर मोल लो और खाओ। दाखमधु और दूध बिन स्पस्य और बिना दाम ही आकर ले लो। २ जो भोजनवस्तु नहीं है, उसके लिये तुम क्यों स्पस्य लगाते हो, और जिससे ऐट नहीं भरता उसके लिये क्यों परिश्रम करते हो? मेरी ओर मन लगाकर सुनो, तब उत्तम वस्तुएँ खाने पाएंगे और चिकनी-चिकनी वस्तुएँ खाकर सन्तुष्ट हो जाओंगे। ३ कान लगाओ, और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित रहोगे; और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बाँधूँगा, अर्थात् दाऊद पर की अटल कस्मा की वाचा। ४ सुनो, मैंने उसको राज्य-राज्य के लोगों के लिये साक्षी और प्रधान और आज्ञा देनेवाला ठहराया है। ५ सुन, तू ऐसी जाति को जिसे तू नहीं जानता बुलाएगा, और ऐसी जातियां जो तुझे नहीं जानती तेरे पास दौड़ी आएँगी, वे तेरे परमेश्वर यहोवा और इसाएल के पवित्र के निमित यह करेंगी, क्योंकि उसने तुझे शोभायमान किया है। ६ “जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो; ७ दृष्टि अपनी चाल चलन और अनर्थकीरी अपने सोच-चिचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरो, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरो और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा। ८ क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। ९ क्योंकि मेरी ओर तुम्हारी गति में आरे मैं और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथकी का अन्तर है। १० “जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहाँ ऐसे ही लौट नहीं जाते, वरन् भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं तो जिस से बोनेवाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है, ११ उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु, जो मेरी इच्छा है उसे वह सफल करेगा। १२ “क्योंकि तुम आनन्द के साथ निकलोगे, और शान्ति के साथ पहुँचाए जाओंगे; तुम्हारे आगे-आगे पहाड़ और पहाड़ियाँ गला खोलकर जयजयकार करेंगी, और मैदान के सब वृक्ष आनन्द के मारे ताती बजाएँगे। १३ तब भटकटैयों के बदले सनोवर उगेंगे; और बिच्छू पेड़ों के बदले मैंहदी उगेगी, और इससे यहोवा का नाम होगा, जो सदा का चिन्ह होगा और कभी न मिटेगा।”

५६ यहोवा यह कहता है, “न्याय का पालन करो, और धर्म के काम करो; क्योंकि मैं शीघ्र तुम्हारा उद्धार करूँगा, और मेरा धर्मी होना प्रगट होगा।

२ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो ऐसा ही करता, और वह आदमी जो इस पर स्थिर रहता है, जो विश्वामित्रिन को पवित्र मानता और अपवित्र करने से बचा रहता है, और अपने हाथ को सब भाँति की बुराई करने से रोकता है।” ३ जो परदेशी यहोवा से मिल गए हैं, वे न कहें, “यहोवा हमें अपनी प्रजा से निश्चय अलग करेगा,” और खोजे भी न कहें, “हम तो सूखे वृक्ष हैं।” ४ “क्योंकि जो खोजे मेरे विश्वामित्रिन को मानते और जिस बात से मैं प्रसन्न रहता हूँ उसी को अपनते और मेरी बाचा का पालन करते हैं,” उनके विषय यहोवा यह कहता है, ५ “मैं अपने भवन और अपनी शहरपानाह के भीतर उनको ऐसा नाम दृग्गा जो पुन-पुनियों से कही उत्तम होगा; मैं उनका नाम सदा बनाए रखूँगा और वह कभी न मिटाया जाएगा। ६ “परदेशी भी जो यहोवा के साथ इस इच्छा से मिले हुए हैं कि उसकी सेवा ठहल करें और यहोवा के नाम से प्रीति रखें और उसके दास हो जाएँ, जितने विश्वामित्रिन को अपवित्र करने से बचे रहते और मेरी बाचा को पालते हैं, ७ उनको मैं अपने पवित्र पर्वत पर ले आकर अपने प्रार्थना के भवन में आनन्दित करूँगा; उनके होमबलि और मैलबलि मेरी वेदी पर ग्रहण किए जाएँगे; क्योंकि मेरा भवन सब देशों के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा। ८ प्रश्न यहोवा, जो निकाले हुए इसारेलियों को इकट्ठे करनेवाला है, उसकी यह वासी है कि जो इकट्ठे किए गए हैं उनके साथ मैं औरों को भी इकट्ठे करके मिला दूँगा।” ९ हे मैदान के सब जन्तुओं, हे बन के सब पशुओं, खाने के लिये आओ। १० उसके पहसुए अधेर हैं, वे सब के सब अज्ञानी हैं, वे सब के सब गँगी कुते हैं जो भौंक नहीं सकते; वे स्वप्न देखनेवाले और लेटे रहकर सोते रहना चाहते हैं। ११ वे मरभूते कुते हैं जो कभी तुम नहीं होते। वे चरवाहे हैं जिनमें समझ ही नहीं; उन सभी ने अपने-अपने लाभ के लिये अपना-अपना मार्ग लिया है। १२ वे कहते हैं, “आओ, हम दाखमधू ले आएँ, आओ मदिगा पीकर छक जाएँ; कल का दिन भी तो आज ही के समान अत्यन्त सुहावना होगा।”

५७ धर्मी जन नाश होता है, और कोई इस बात की चिन्ता नहीं करता; भक्त मनुष्य उठा लिए जाते हैं, परन्तु कोई नहीं सोचता। धर्मी जन इसलिए उठा लिया गया कि आनेवाली आपत्ति से बच जाए, २ वह शान्ति को पहुँचता है; जो सीधी चाल चलता है वह अपनी खाट पर विश्वाम करता है। ३ परन्तु तुम, हे जादूगरनी के पुत्रों, हे व्यभिचारी और व्यभिचारिणी की सन्तान, यहाँ निकट आओ। ४ तुम किस पर हँसी करते हो? तुम किस पर मुँह खोलकर जीभ निकालते हो? क्या तुम पाखण्डी और झँठे के वंश नहीं हो, ५ तुम, जो सब हरे वृक्षों के तले देवताओं के कारण कामातुर होते और नालों में और चट्ठानों ही दरारों के बीच बाल-बच्चों को वध करते हो? ६ नालों के चिकने पथर ही देरा भाग और अंश ठहरे, तुम उनके लिये तपावन दिया और अन्बलि चढ़ाया है। क्या मैं इन बातों से शान्त हो जाऊँ? ७ एक बड़े ऊँचे पहाड़ पर तुम अपना बिछाना बिछाया है, वहीं तू बलि चढ़ाने को चढ़ गई। ८ तूने अपनी निशानी अपने द्वार के किवाड़ और चौखट की आड़ ही मैं रखी; मुझे छोड़कर तू औरों को अपने आपको दिखाने के लिये चढ़ी, तूने अपनी खाट चौड़ी की ओर उससे बाचा बाँध ली, तूने उनकी खाट को जहाँ देखा, पसन्द किया। ९ तू तेल लिए हुए राजा के पास गई और बहुत सुग्राहित तेल अपने काम में लाई, अपने दूत तू तक भेजे और अंधोलोक तक अपने को नीचा किया। (Sheol h7585) १० तू अपनी यात्रा की लम्बाई के कारण थक गई, तो भी तूने कहा कि यह वर्ष्य है; तेरा बल कुछ अधिक हो गया, इसी कारण तू नहीं थकी। ११ तूने किसके डर से झँठ कहा, और किसका भय मानकर ऐसा किया कि मुझ को स्मरण नहीं रखा न मुझ पर ध्यान दिया? क्या

मैं बहुत काल से चुप नहीं रहा? इस कारण तू मेरा भय नहीं मानती। १२ मैं आप तेरी धार्मिकता और कर्मों का वर्णन करूँगा, परन्तु उनसे तुझे कुछ लाभ न होगा। १३ जब तू दुहाई दे, तब जिन मूर्तियों को तूने जमा किया है वे ही तुझे छुड़ाएँ। वे तो सब की सब बायु से बरन एक ही फूँक से उड़ जाएँगी। परन्तु जो मेरी शरण लेगा वह देश का अधिकारी होगा, और मेरे पवित्र पर्वत का भी अधिकारी होगा। १४ यह कहा जाएगा, “पाँति बाँध बाँधकर राजमार्ग बनाओ, मेरी प्रजा के मार्ग में से हर एक ठोकर दूर करो।” १५ क्योंकि जो महान और उत्तम और सैदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है, वह यह कहता है, “मैं ऊँचे पर और पवित्रस्थान में निवास करता हूँ, और उसके संग भी रहता हूँ, जो खेदित और नग्र है, कि, नग्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हरिष्यत करूँ।” १६ मैं सदा मुकदमा न लड़ता रहूँगा, न सर्वादा क्रोधित रहूँगा; क्योंकि आत्मा मेरे बनाए हुए हैं और जीव मेरे सामने मूर्छित हो जाते हैं। १७ उसके लोभ के पाप के कारण मैंने क्रोधित होकर उसको दुःख दिया था, और क्रोध के मारे उससे मुँह छिपाया था; परन्तु वह अपने मनमाने मार्ग में दूर भक्तका चला गया था। १८ मैं उसकी चाल देखता आया हूँ, तो भी अब उसको चंगा करूँगा; मैं उसे ले लै चलूँगा और विशेष करके उसके शोक करनेवालों को शानि ढूँगा। १९ मैं मुँह के फल का सुजनहार हूँ, यहोवा ने कहा है, जो दूर और जो निकट है, दोनों को पूरी शान्ति मिले; और मैं उसको चंगा करूँगा। २० परन्तु दृश्य तो लहराते हुए समुद्र के समान है जो स्थिर नहीं रह सकता; और उसका जल मैल और कीच उछालता है। २१ दुश्मों के लिये शान्ति नहीं है, मेरे परमेश्वर का यही वचन है।”

५८ “गला खोलकर पुकार, कुछ न रख छोड़, नरसिंगों का सा ऊँचा शब्द कर; मेरी प्रजा को उसका अपराध अर्थात् याकूब के घराने को उसका पाप जाता दे। २ वे प्रतिदिन मेरे पास आते और मेरी गति जानेवाली इच्छा ऐसी रखते हैं जो मानो वे धर्मी लोग हैं जिन्होंने अपने परमेश्वर के नियमों को नहीं टाला; वे मुझसे धर्म के नियम पूछते और परमेश्वर के निकट आने से प्रसन्न होते हैं। ३ वे कहते हैं, ‘क्या कारण है कि हमने तो उपवास रखा, परन्तु तूने इसकी सुधि नहीं ली? हमने दुःख उठाया, परन्तु तूने कुछ ध्यान नहीं दिया?’ सुनो, उपवास के दिन तुम अपनी ही इच्छा पूरी करते हो और अपने सेवकों से कठिन कामों को कराते हो। ४ सुनो, तुहारे उपवास का फल यह होता है कि तुम आपस में लड़ते और झँगड़ते और दुरुता से धूँसे मारते हो। जैसा उपवास तुम आजकल रखते हो, उससे तुम्हारी प्रार्थना ऊपर नहीं सुनाई देगी। ५ जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूँ अर्थात् जिसमें मनुष्य स्वयं को दीन करे, क्या तुम इस प्रकार करते हो? क्या सिर को झाऊ के समान झकाना, अपने नीचे टाट बिछाना, और राख फैलानी ही को तुम उपवास और यहोवा को प्रसन्न करने का दिन कहते हो? ६ “जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूँ, वह क्या यह नहीं, कि, अन्याय से बनाए हुए दासों, और अधेर सहेवालों का ज़ाआ तोड़कर उनको छुड़ा लेना, और, सब ज़ौओं को टुकड़े-टुकड़े कर देना, अनाथ और मारे-मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहनाना, और अपने जातिभाइयों से अपने को न छिपाना? ७ तब तेरा प्रकाश पौ फटने के समान चमकेगा, और तू शशिंघ चंगा हो जाएगा; तेरी धार्मिकता तेरे आगे-आगे चलेगी, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते चलेगा। ८ तब तू पुकारेगा और यहोवा उत्तर देगा; ९ तू दुहाई देगा और वह कहेगा, ‘मैं यहाँ हूँ।’ यदि तू अंधेर करना और उंगली उठाना, और, दुश्म बातें बोलना छोड़ दे, १० उदासा से भ्रूखे की सहायता करे और दीन दुःखियों को सन्तुष्ट करे, तब अंधियारे में तेरा प्रकाश

चमकेगा, और तेरा घोर अंधकार दोपहर का सा उजियाला हो जाएगा। १४ यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और अकाल के समय तुझे तूम और तेरी हड्डियों को हीरी भरी करेगा; और तू सीनी हई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता। १५ तेरे वंश के लोग बहुत काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएँगे; त् पीढ़ी-पीढ़ी की पर्ती हई नीब पर घर उठाएगा; तेरा नाम टटे हुए बाढ़े का सुधारक और पथों का ठीक करनेवाला पड़ेगा। १६ “यदि तू विश्वामित्रिन को अशद्गुन करे अर्थात् मैं उस पवित्र दिन में अपनी इच्छा पूरी करने का यत्न न करे, और विश्वामित्रिन को आनन्द का दिन और यहोवा का पवित्र किया हुआ दिन समझकर माने; यदि तू उसका समान करके उस दिन अपने मार्ग पर न चले, अपनी इच्छा पूरी न करे, और अपनी ही बातें न बोले, १७ तो तू यहोवा के कारण सुखी होगा, और मैं तुझे देश के ऊँचे स्थानों पर चलने दूँगा; मैं तेरे मूलुपुष्प याकूब के भाग की उपज में से तुझे खिलाऊँगा, क्योंकि यहोवा ही के मुख से यह वचन निकला है।”

५९ सुनो, यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके,

न वह ऐसा बहार हो गया है कि सुन न सके; २ परन्तु तुम्हारे अर्धमें के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता। ३ क्योंकि तुम्हारे हाथ हत्या से और तुम्हारी अंगुलियाँ अर्धमें के कर्मों से अपवित्र हो गई हैं, तुम्हारे मुँह से तो झट्ठ और तुम्हारी जीभ से कूटिल बातें निकलती हैं। ४ कोई धर्म के साथ नालिश नहीं करता, न कोई सच्चाई से मुकदमा लड़ता है, वे मिथ्या पर भरोसा रखते हैं और झट्ठी बातें बकते हैं; उसको मानो उत्पात का गर्भ रहता, और वे अनर्थ को जन्म देते हैं। ५ वे सौँपिन के अण्डे सेते और मकड़ी के जाते बनते हैं; जो कोई उनके अण्डे खाता वह मर जाता है, और जब कोई एक को फोड़ता तब उसमें से सोलो निकलता है। ६ उनके जाले कपड़े का काम न देंगे, न वे अपने कामों से अपने को ढाँप सकेंगे। क्योंकि उनके काम अनर्थ ही के होते हैं, और उनके हाथों से उपद्रव का काम होता है। ७ वे बुराई करने को दौड़ते हैं, और निर्दोष की हत्या करने को तत्पर रहते हैं; उनकी युक्तियाँ व्यथ हैं, उजाड़ और विनाश ही उनके मार्गों में हैं। ८ शान्ति का मार्ग वे जानते ही नहीं; और न उनके व्यवहार में न्याय है; उनके पथ देहे हैं, जो कोई उन पर चले वह शान्ति न पाएगा। ९ इस कारण न्याय हम से दूर है, और धर्म हमारे समीप ही नहीं आता; हम उजियाले की बाट तो जोहते हैं, परन्तु, देखो अधियारा ही बना रहता है, हम प्रकाश की आशा तो लगाए हैं, परन्तु, योर अंधकार ही मैं चलते हैं। १० हम अंधों के समान दीवार टटोलते हैं, हाँ, हम बिना आँखें के लोगों के समान टटोलते हैं, हम दिन दोपहर रात के समान ठोकर खाते हैं, हष्पुष्टों के बीच हम मुर्दों के समान हैं। ११ हम सब के सब रिछों के समान चिल्लाते हैं और पिण्डिकों के समान च्यूं-च्यूं करते हैं; हम न्याय की बाट तो जोहते हैं, पर वह कहीं नहीं; और उद्धार की बाट जोहते हैं पर वह हम से दूर ही रहता है। १२ क्योंकि हमारे अपराध तेरे सामने बहत हुए हैं, हारों पाप हमारे विस्तु सक्षी दे रहे हैं; हमारे अपराध हमारे संग हैं और हम अपने अर्धमें के काम जानते हैं। १३ हमने यहोवा का अपराध किया है, हम उससे मुकर गए और अपने परमेश्वर के पिछे चलना छोड़ दिया, हम अंधेर करने लगे और उलट-फेर की बातें कहीं, हमने झट्ठी बातें मन में गढ़ी और कहीं भी हैं। १४ न्याय तो पिछे हटाया गया और धर्म दूर खड़ा रह गया; सच्चाई बाजार में गिर पड़ी, और सिधाई प्रवेश नहीं करने पाती। १५ हाँ, सच्चाई खो गई, और जो बुराई से भागता है वह शिकार हो जाता है। यह देखकर यहोवा ने बुरा माना, क्योंकि न्याय जाता रहा। १६ उसने देखा कि कोई भी पुष्प नहीं, और इससे अचम्भा किया कि

कोई विनती करनेवाला नहीं; तब उसने अपने ही भुजबल से उद्धार किया, और अपने धर्मी होने के कारण वह सम्भल गया। १७ उसने धार्मिकता को झिलम के समान पहन लिया, और उसके सिर पर उद्धार का टोप रखा गया; उसने बदला लेने का बख्ख धारण किया, और जलजलाहट को बागे के समान पहन लिया है। १८ उनके कर्मों के अनुसार वह उनको फल देगा, अपने द्वोहियों पर वह अपना क्रोध भड़काएगा और अपने शशुओं को उनकी कर्माई देगा; वह द्वीपवासियों को भी उनकी कर्माई भर देगा। १९ तब पश्चिम की ओर लोग यहोवा के नाम का, और पूर्व की ओर उसकी महिमा का भय मानेंगे; क्योंकि जब शत्रु महान्द के समान चढ़ाई करेंगे तब यहोवा का आमा उसके विस्तु झण्डा खड़ा करेगा। २० “याकूब में जो अपराध से मन फिरते हैं उनके लिये सिद्ध्योन में एक छुड़ानेवाला आएगा,” यहोवा की यही वार्षी है। २१ यहोवा यह कहता है, “जो बाचा मैंने उनसे बांधी है वह यह है, कि मेरा आत्मा तुझ पर ठहरा है, और अपने वचन जो मैंने तेरे मुँह में डाले हैं अब से लेकर सर्वदा तक वे तेरे मुँह से, और तेरे पुरों और पोरों के मुँह से भी कभी न हटेंगे।”

६० उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का

तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है। १ देख, पृथ्वी पर तो अंधियारा और राज्य-राज्य के लोगों पर घोर अंधकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा। २ जाति-जाति तेरे पास प्रकाश के लिये और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएँगे। ३ अपनी आँखें चारों ओर उठाकर देख; वे सब के सब इकट्ठे होकर तेरे पास आ रहे हैं, तेरे पुत्र दूर से आ रहे हैं, और तेरी पुत्रियों हाथों-हाथ पहुँचाई जा रही हैं। ४ तब तू इसे देखेगी और तेरा मुख चमकेगा, तेरा हृदय थरथराएगा और आनन्द से भर जाएगा; क्योंकि समुद्र का सारा धन और जाति-जाति की धन-सम्पत्ति तुझको मिलेगी। ५ तेरे देश में ऊँटों के झण्ड और मिदान और एपा देशों की सॉन्नियाँ इकट्ठी होंगी; शेबा के सब लोग आकर सोना और लोबान भेट लाएँगे और यहोवा का गुणनवाद आनन्द से सुनाएँगे। ६ केदार की सब भेड़-बकरियाँ इकट्ठी होकर तेरी हो जाएँगी, नबायोत के मेहे तेरी सेवा टहल के काम में आएँगे, मेरी बेदी पर वे ग्रहण किए जाएँगे और मैं अपने शोभायामान भवन को और भी प्रतीकी कर दूँगा। ७ ये कौन हैं जो बादल के समान और अपने दबों की ओर उड़ते हुए कबूलरों के समान चले आते हैं? ८ निश्चय द्वीप मेरी ही बाट देखेंगे, पहले तो तीर्थीश के जहाज आएँगे, कि तेरे पुरों को सोने-चाँदी समेत तेरे परमेश्वर यहोवा अर्थात् इस्याएल के पवित्र के नाम के निमित्त दूर से पहुँचाए, क्योंकि उसने तुझे शोभायामान किया है। ९ परदेशी लोग तेरी शहरपनाह को उठाएँगे, और उनके राजा तेरी सेवा टहल करेंगे; क्योंकि मैंने क्रोध में आकर तुझे दुःख दिया था, परन्तु अब तुझ से प्रसन्न होकर तुझ पर दया की है। १० तेरे फाटक सैदैव खुले रहेंगे; दिन और रात वे बन्द न किए जाएँगे जिससे जाति-जाति की धन-सम्पत्ति और उनके राजा बन्दी होकर तेरे पास पहुँचाए जाएँ। ११ क्योंकि जो जाति और राज्य के लोग तेरी सेवा न करें वे नष्ट हो जाएँगे; हाँ ऐसी जातियाँ पूरी सीति से सत्यानश हो जाएँगी। १२ लबानोन का वैभव अर्थात् सनोवर और देवदार और चीड़ के पेड़ एक साथ तेरे पास आएँगे कि मेरे पवित्रस्थान को सुखोभित करें; और मैं अपने चरणों के स्थान को महिमा दूँगा। १३ तेरे दुःख देनेवालों की स्तनान तेरे पास सिर द्वाकाए हुए आएँगी, और जिन्होंने तेरा तिरस्कार किया सब तेरे पाँवों पर गिरकर दण्डवत् करेंगे; वे तेरा नाम यहोवा का नगर, इस्याएल के पवित्र का सिद्ध्योन रखेंगे। १४ तू जो त्याकी गई और घृणित ठहरी, यहाँ तक कि कोई तुझ में से होकर नहीं जाता था, इसके बदले मैं तुझे सदा के घमण्ड का और पीढ़ी-पीढ़ी के हर्ष का कारण ठहराऊँगा। १५ तू जाति-जाति का दूध पी लेगी, तू राजाओं

की छातियाँ चूसेगी; और तू जान लेगी कि मैं यहोवा तेरा उद्धारकर्ता और तेरा छुड़ानेवाला, याकूब का सर्वशक्तिमान हूँ। १७ मैं पीतल के बदले सोना, लोहे के बदले चॉटी, लकड़ी के बदले पीतल और पथर के बदले लोहा लाऊँगा। मैं तेरे हाकिमों को मेल-मिलाप और तेरे चौधरियों को धार्मिकता ठहराऊँगा। १८ तेरे देश में फिर कभी उपद्रव और तेरी सीमाओं के भीतर उत्पात या अंधेर की चर्चा न सुनाई पड़ेगी; परन्तु तू अपनी शहरपनाह का नाम उद्धार और अपने फाटकों का नाम यश रखेगी। १९ फिर दिन को सूर्य तेरा उजियाला न होगा, न चाँदिनी के लिये चन्द्रमा परन्तु यहोवा तेरे लिये सदा का उजियाला और तेरा परमेश्वर तेरी शोभा ठहरेगा। २० तेरा सूर्य फिर कभी अस्त न होगा और न तेरे चन्द्रमा की ज्योति मलिन होगी; क्योंकि यहोवा तेरी सदैव की ज्योति होगा और तेरे विलाप के दिन समाप्त हो जाएँगे। २१ तेरे लोग सब के सब धर्मी होंगे; वे सर्वदा देश के अधिकारी रहेंगे, वे मेरे लगाए हुए पौधे और मेरे हाथों का काम ठहरेंगे, जिससे मेरी महिमा प्रगट हो। २२ छोटे से छोटा एक हजार हो जाएगा और सबसे दुर्बल एक सामर्थी जाति बन जाएगा। मैं यहोवा हूँ; ठीक समय पर यह सब कुछ शीघ्रता से पूरा करूँगा।

६१ प्रभु यहोवा का अत्मा मुझ पर है; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के

लिये मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिए भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूँ; कि बन्दियों के लिये स्वतंत्रता का और कैदियों के लिये छुटकारे का प्रचार करूँ; २ कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूँ; कि सब विलाप करनेवालों को शान्ति दूँ। ३ और सिय्योन के विलाप करनेवालों के सिर पर की राख दू करके सुन्दर पाइंडी बौध दूँ; कि उनका विलाप दूर करके हर्ष का तेत लगाऊँ और उनकी उदासी हटाकर यश का ओढ़ना ओढ़ाऊँ; जिससे वे धार्मिकता के बांज वृक्ष और यहोवा के लगाए हुए कहलाएँ और जिससे उसकी महिमा प्रगट हो। ४ तब वे बहूत काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएँगे, पूर्वकाल से पड़े हुए खण्डहरों में वे फिर घर बनाएँगे; उजड़े हुए नगरों को जो पीढ़ी-पीढ़ी से उजड़े हुए होंगे वे फिर नये सिरे से बसाएँगे। ५ परदेशी आ खड़े होंगे और तुम्हारी भेड़-बकरियों को चराएँगे और विदेशी लोग तुम्हारे हल चलानेवाले और दाख की बारी के माली होंगे; ६ पर तुम यहोवा के याजक कहलाओगे, वे तुम को हमारे परमेश्वर के सेवक कहेंगे; और तुम जाति-जाति की धन-सम्पत्ति को खाओगे, उनके वैष्णव की वस्तुएँ पाकर तुम बड़ाइ करोगे। ७ तुम्हारी नामधारी के बदले दूना भाग मिलेगा, अनादर के बदले तुम अपने भाग के कारण जयजयकार करोगे; तुम अपने देश में दूने भाग के अधिकारी होंगे; और सदा आनन्दित बने रहोगे। ८ क्योंकि, मैं यहोवा न्याय से प्रीति रखता हूँ, मैं अन्याय और डॉकैती से धृणा करता हूँ, इसलिए मैं उनका प्रतिफल सच्चाई से दृगा, और उनके साथ सदा की बाचा बाँधूँगा। ९ उनका वश जाति-जाति में और उनकी सन्तान देश-देश के लोगों के बीच प्रसिद्ध होगी, जितने उनको देखेंगे, पहचान लेंगे कि यह वह वंश है जिसको परमेश्वर ने आशीष दी है। १० मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊँगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मग्न रहेगा; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के बब्ब पहनाएँ और धार्मिकता की चढ़ार ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आपको सजाता और दुल्हन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है। ११ क्योंकि जैसे भूमि अपनी उपज को उगाती, और बारी में जो कुछ बोया जाता है उसको वह उपजाती है, वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के सामने धार्मिकता और धन्यवाद को बढ़ाएगा।

६२ सिय्योन के निमित्त मैं चुप न रहूँगा, और यस्शलेम के निमित्त मैं चैन न लूँगा, जब तक कि उसकी धार्मिकता प्रकाश के समान और उसका उद्धार जलती हुई मशाल के समान दिखाई न दे। २ तब जाति-जाति के लोग तेरी धार्मिकता और सब राजा तेरी महिमा देखेंगे, और तेरा एक नया नाम रखा जाएगा जो यहोवा के मुख से निकलेगा। ३ त् यहोवा के हाथ में एक शोभायमान मुकुट और अपने परमेश्वर की हथेली में राजमुकुट ठहरेगी। ४ त् फिर त्यागी हुई न कहलाएगी, और तेरी भूमि फिर उजड़ी हुई न कहलाएगी; परन्तु तू हेप्तीवा और तेरी भूमि ब्यूला कहलाएगी; क्योंकि यहोवा तुझ से प्रसन्न है, और तेरी भूमि सुहागिन होगी। ५ क्योंकि जिस प्रकार जबन पुस्त एक कुमारी को ब्याह लाता है वैसे ही तो पुत्र तुझे ब्याह लेंगे; और जैसे दूल्हा अपनी दुल्हन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा। ६ हे यस्शलेम, मैंने तेरी शहरपनाह पर पहस्त बैठाएँ हैं; वे दिन-रात कभी चुप न रहेंगे। हे यहोवा को स्मरण करनेवालों, चुप न रहो, ७ और जब तक वह यस्शलेम को स्थिर करके उसकी प्रशंसा पृथ्वी पर न फैला दे, तब तक उसे भी चैन न लेने दो। ८ यहोवा ने अपने दाहिने हाथ की ओर अपनी बलवत्त भुजा की शपथ खाई है; निद्युत्य में भविष्य में तेरा अन्न अब फिर तेरे शत्रुओं को खाने के लिये न ढूँगा, और परदेशियों के पुत्र तेरा नया दाखमधु जिसके लिये तुम परिश्रम किया है, नहीं पीने पाएँगे; ९ केवल वे ही, जिन्होंने उसे खते में रखा हो, उसमें से खाकर यहोवा की सुस्ति करेंगे, और जिन्होंने दाखमधु भण्डारों में रखा हो, वे ही उसे मेरे पवित्रस्थान के आँगनों में पीने पाएँगे। १० जाओ, फाटकों में से निकल जाओ, प्रजा के लिये मार्ग सुधारो; राजमार्ग सुधारकर ऊँचा करो, उसमें से पत्थर बीन-बीनकर फेंक दो, देश-देश के लोगों के लिये झण्डा खड़ा करो। ११ देखो, यहोवा ने पूर्वी की छोर तक इस आज्ञा का प्रचार किया है; सिय्योन की बेटी से कहो, “देख, तेरा उद्धारकर्ता आता है, देख, जो मजदूरी उसको देनी है वह उसके पास है और उसका काम उसके सामने है।” १२ और लोग उनको पवित्र प्रजा और यहोवा के छुड़ाए हुए कहेंगे; और तेरा नाम ग्रहण की हुई अर्थात् न-त्यागी हुई नगरी पड़ेगा।

६३ यह कौन है जो एटोम देश के बोझा नगर से लाल बब्ब पहने हुए चला आता है? “यह मैं ही हूँ, जो धार्मिकता से बोलता और पूरा उद्धार करने की शक्ति रखता हूँ।” २ तेरा पहरावा क्यों लाल है? और क्या कारण है कि तेरे बब्ब हाँद में दाख रौंदनेवाले के समान हैं? ३ “मैंने तो अकेले ही हाँद में दाख रौंदी हूँ, और देश के लोगों में से किसी ने मेरा साथ नहीं दिया; हाँ, मैंने अपने क्रोध में आकर उन्हें रौदा और जलकर उन्हें लाताड़ा; उनके लाह के छीटे मेरे बब्बों पर पड़े हैं, इससे मेरा सारा पहरावा धन्बेदार हो गया है। ४ क्योंकि बदला लेने का दिन मेरे मन में था, और मेरी छुड़ाई हुई प्रजा का वर्ष आ पहुँचा है। ५ मैंने खोजा, पर कोई सहायक न दिखाई पड़ा; मैंने इससे अचम्भा भी किया कि कोई सम्भालनेवाला नहीं था; तब मैंने अपने ही भुजल से उद्धार किया, और मेरी जलजलाहट ही ने मुझे सम्भाला। ६ हाँ, मैंने अपने क्रोध में आकर देश-देश के लोगों को लाताड़ा, अपनी जलजलाहट से मैंने उन्हें मतवाला कर दिया, और उनके लाह को भूमि पर बहा दिया।” ७ जितना उपकार यहोवा ने हम लोगों का किया अर्थात् इसाएँल के घराने पर दया और अत्यन्त कस्ता करके उसने हम से जितनी भलाई कि, उस सब के अनुसार मैं यहोवा के कस्तामय कार्यों का वर्णन और उसका गुणनुवाद करूँगा। ८ क्योंकि उसने कहा, निःसन्देह ये मेरी प्रजा के लोग हैं, ऐसे लड़के हैं जो धोखा न देंगे; और वह उनका उद्धारकर्ता हो गया। ९ उनके सारे संकट में उसने

भी कष्ट उठाया, और उसके सम्मुख रहनेवाले दूत ने उनका उद्धार किया; प्रेम और कोमलता से उसने अपनी ही उनको छुड़ाया; उसने उहें उठाया और प्राचीनकाल से सदा उहें लिए फिरा। १० तो भी उन्होंने बलवा किया और उसके पवित्र आत्मा को खेदित किया; इस कारण वह पलटकर उनका शत्रु हो गया, और स्वयं उनसे लड़ने लगा। ११ तब उसके लोगों को उनके प्राचीन दिन अर्थात् मूसा के दिन स्परण आए, वे कहने लगे कि जो अपनी भेड़ों को उनके चरबाहे समेत समृद्ध में से निकाल लाया वह कहाँ है? जिसने उनके बीच अपना पवित्र आत्मा डाला, वह कहाँ है? १२ जिसने अपने प्रतीपी भुजबल को मूसा के दाहिने हाथ के साथ कर दिया, जिसने उनके सामने जल को दो भाग करके अपना सदा का नाम कर लिया, १३ जो उनके गहरे समृद्ध में से ले चला; जैसा घोड़े को जंगल में वैसे ही उनको भी ठोकर न लगी, वह कहाँ है? १४ जैसे घेरेलू पश्च तराइ में उतर जाता है, वैसे ही यहोवा के आत्मा ने उनको विश्वाम दिया। इसी प्रकार से तूने अपनी प्रजा की अगुआई की ताकि अपना नाम महिमायुक्त बनाए। १५ स्वर्ग से, जो तेरा पवित्र और महिमापूर्ण वासस्थान है, दृष्टि कर। तेरी जलन और पराक्रम कहाँ रहे? तेरी दया और कर्मा मुझ पर से हट गई है। १६ निश्चय तू हमारा पिता है, यथापि अब्राहम हमें नहीं पहचानता, और इसाएल हमें ग्रहण नहीं करता; तो भी, हे यहोवा, तू हमारा पिता और हमारा छुड़ानेवाला है; प्राचीनकाल से यही तेरा नाम है। १७ हे यहोवा, तू क्यों हमको अपने मार्गों से भटका देता, और हमारे मन ऐसे कठोर करता है कि हम तेरा भय नहीं मानते? अपने दास, अपने निज भाग के गोत्रों के निमित्त लौट आ। १८ तेरी पवित्र प्रजा तो थोड़े ही समय तक तेरे पवित्रस्थान की अधिकारी रही; हमारे द्वेषियों ने उसे लातड़ दिया है। १९ हम लोग तो ऐसे हो गए हैं, मानो तूने हम पर कभी प्रभुता नहीं की, और उनके समान जो कभी तेरे न कहलाए।

६४ भला हो कि तू आकाश को फाइकर उत्तर आए और पहाड़ तेरे सामने काँप उठे। १ जैसे अग झाड़-झाँझाड़ को जला देती या जल को उबलती है, उसी रीति से तू अपने शत्रुओं पर अपना नाम ऐसा प्रगट कर कि जाति-जाति के लोग तेरे प्रताप से काँप उठें। २ जब तूने ऐसे भयानक काम किए जो हमारी आशा से भी बढ़कर थे, तब तू उत्तर आया, पहाड़ तेरे प्रताप से काँप उठे। ३ क्योंकि प्राचीनकाल ही से तुझे छोड़ कोई और ऐसा परमेश्वर न तो कभी देखा गया और न कान से उसकी चर्चा सुनी गई जो अपनी बाट जोहनेवालों के लिये काम करे। ४ तो उन्हीं से मिलता है जो धर्म के काम हर्ष के साथ करते, और तेरे मार्गों पर चलते हुए तुझे स्परण करते हैं। देख, तू क्रोधित हुआ था, क्योंकि हमने पाप किया; हमारी यह दशा तो बहुत समय से है, क्या हमारा उद्धार हो सकता है? ५ हम तो सब के सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धार्मिकता के काम सब के सब मैले विठ्ठियों के समान हैं। हम सब के सब पते के समान मुझी जाते हैं, और हमारे अर्धम के कामों ने हमें बायु के समान उड़ा दिया है। ६ कोई भी तुझ से प्रार्थना नहीं करता, न कोई तुझ से सहायता लेने के लिये चौकसी करता है कि तुझ से लिपटा रहे; क्योंकि हमारे अर्धम के कामों के कारण तूने हम से अपना मुँह छिपा लिया है, और हमें हमारी बुराइयों के वश में छोड़ दिया है। ७ तो भी, हे यहोवा, तू हमारा पिता है; देख, हम तो मिट्टी हैं, और तू हमारा कुम्हार है; हम सब के सब तेरे हाथ के काम हैं। ८ इसलिए हे यहोवा, अत्यन्त क्रोधित न हो, और अनन्तकाल तक हमारे अर्धम को स्परण न रख। विचार करके देख, हम तेरी विनती करते हैं, हम सब तेरी प्रजा हैं। ९ देख, तेरे पवित्र नगर जंगल हो गए, सिय्योन सुसासान हो गया है, यस्सलोम उजड़ गया है। १० हमारा पवित्र और शोभायमान मन्दिर, जिसमें हमारे पूर्वज तेरी स्तुति करते थे, आग से जलाया गया, और हमारी मनभावनी

वस्तुएँ सब नष्ट हो गईं हैं। ११ हे यहोवा, क्या इन बातों के होते हुए भी तू अपने को रोके रहेगा? क्या तू हम लोगों को इस अत्यन्त दुर्दशा में रहने देगा?

६५ जो मुझ को पूछते भी न थे वे मेरे खोजी हैं; जो मुझे ढूँढ़ते भी न थे उन्होंने मुझे पा लिया, और जो जाति मेरी नहीं कहलाई थी, उससे भी मैं कहता हूँ, “देख, मैं उपस्थित हूँ।” २ मैं एक हठीली जाति के लोगों की ओर दिन भर हाथ फैलाए रहा, जो अपनी युक्तियों के अनुसार बुरे मार्गों में चलते हैं। ३ ऐसे लोग, जो मेरे सामने ही बारियों में बलि चढ़ा-चढ़ाकर और ईटों पर धूप जला-जलाकर, मुझे लगातार क्रोध दिलाते हैं। ४ ये कब्ज के बीच बैठते और छिपे हुए स्थानों में रात बिताते; जो सुअर का मास्स खाते, और घृणित वस्तुओं का रस अपने बर्तनों में रखते; ५ ये कहते हैं, “हट जा, मेरे निकट मत आ, क्योंकि मैं तुझ से पवित्र हूँ।” ये मेरी नाक में धूँए व उस आग के समान हैं जो दिन भर जलती रहती है। विदेहियों को दण्ड देखो, यह बात मेरे सामने लिखी हुई है: “मैं चुप न रहूँगा, मैं निश्चय बदला दूँगा वरन् तुम्हारे और तुम्हारे पुराखाजों के भी अधर्म के कामों का बदला तुम्हारी गोद में भर दूँगा। ६ क्योंकि उन्होंने पहाड़ों पर धूप जलाया और पहाड़ियों पर मेरी मिन्दा की है, इसलिए मैं यहोवा कहता हूँ, कि, उनके पिछले कामों के बदले को मैं इनकी गोद में तैलकर दूँगा।” ७ यहोवा यह कहता है: “जिस भाँति दाख के किसी गुच्छे में जब नाश दाखमधु भर आता है, तब लोग कहते हैं, उसे नाश मत कर, क्योंकि उसमें आशीर्ण है, उसी भाँति मैं अपने दासों के निमित्त ऐसा कहूँगा कि सभी को नाश न करूँगा। ८ मैं याकूब में से एक बंश, और यहां में से अपने पर्वतों का एक वारिस उत्पन्न करूँगा; मेरे चुने हुए उसके वारिस होंगे, और मेरे दास वर्हों निवास करेंगे। ९ मेरी प्रजा जो मुझे ढूँढ़ती है, उसकी भेड़-बकरियाँ तो शारेन में चरेंगी, और उसके गाय-बैल अकोर नामक तराई में विश्वाम करेंगे। १० परन्तु तुम जो यहोवा को न्याय देते और मेरे पवित्र पर्वत को भूल जाते हो, जो भाय देवता के लिये मेज पर भोजन की वस्तुएँ सजाते और भावी देवी के लिये मसाला मिला हुआ दाखमधु भर देते हो; ११ मैं तुहें गिन-गिनकर तलवार का कौर बनाऊँगा, और तुम सब धात होने के लिये द्वुकोणे; क्योंकि, जब मैंने तुम्हें बुलाया तुम ने उत्तर न दिया, जब मैं बोला, तब तुम ने मेरी न सुनी; वरन् जो मुझे बुरा लगता है वही तुम ने नित किया, और जिससे मैं अप्रसन्न होता हूँ, उसी को तुम ने अपनाया।” १२ इस कारण प्रभु यहोवा यह कहता है: “देखो, मेरे दास तो खाँसेंगे, पर तुम भूखे रहोगे; मेरे दास पीँसेंगे, पर तुम प्यासे रहोगे; मेरे दास अनन्द करेंगे, पर तुम लचित होंगे; १३ देखो, मेरे दास हर्ष के मारे जयजयकार करेंगे, परन्तु तुम शोक से चिल्लाओंगे और खेद के मारे हाय! हाय!, करेंगे। १४ मेरे चुने हुए लोग तुम्हारी उपमा देदेकर शाप देंगे, और प्रभु यहोवा तुझको नाश करेगा; परन्तु अपने दासों का दूसरा नाम रखेगा। १५ तब सरो देश में जो कोई अपने को धन्य कहेगा वह सच्चे परमेश्वर का नाम लेकर अपने को धन्य कहेगा, और जो कोई देश में शपथ खाए वह सच्चे परमेश्वर के नाम से शपथ खाएगा; क्योंकि पिछला कष्ट दूँ हो गया और वह से छिप गया है। १६ क्योंकि देखो, मैं न या आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करता हूँ, और पहली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच-विचार में भी न आँएंगी। १७ इसलिए जो मैं उत्पन्न करने पर हूँ, उसके कारण तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मान रहो; क्योंकि देखो, मैं यस्सलोम को मान और उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊँगा। १८ मैं आप यस्सलोम के कारण मान, और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित होऊँगा; उसमें फिर रोने या चिल्लाने का शब्द न सुनाइ पड़ेगा। १९ उसमें फिर न तो थोड़े दिन का बच्चा, और न ऐसा बड़ा जाता रहेगा जिसने अपनी आयु पूरी न की हो; क्योंकि जो

लड़कपन में मरनेवाला है वह सौ वर्ष का होकर मेरे, परन्तु पापी सौ वर्ष का होकर श्रापित ठहरेगा। २५ वे घर बनाकर उनमें बसेंगे; वे दाख की बारियाँ लगाकर उनका फल खाएँगे। २६ ऐसा नहीं होगा कि वे बनाएँ और दूसरा बसे; या वे लगाएँ, और दूसरा खाएँ; क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी, और मेरे चुने हए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएँगे। २७ उनका परिश्रम व्यर्थ न होगा, न उनके बालक घबराहट के लिये उत्पन्न होंगे; क्योंकि वे यहोवा के धन्य लोगों का वंश ठहरेंगे, और उनके बाल-बच्चे उनसे अलग न होंगे। २८ उनके पुकारने से पहले ही मैं उनको उत्तर दूँगा, और उनके मैंगते ही मैं उनकी सुन लूँगा। २९ भेड़िया और मेन्ना एक संग चरा करेंगे, और सिंह बैल के समान भसा खाए़गा; और सर्प का आहार मिट्टी ही रहेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई किसी को दुःख देगा और न कोई किसी की हानि करेगा, यहोवा का यही वचन है।”

६६ यहोवा यह कहता है: “आकाश मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे चरणों की

चौकी है; तुम मेरे लिये कैसा भवन बनाओगे, और मेरे विश्वाम का कौन सा स्थान होगा? ३० यहोवा की यह वाणी है, ये सब वस्तुएँ मेरे ही हाथ की बनाई हुई हैं, इसलिए ये सब मेरी ही हैं। परन्तु मैं उसी की ओर दृष्टि करूँगा जो दीन और खेदित मन का हो, और मेरा वचन सुनकर थरथराता हो। ३१ “बैल का बलि करनेवाला मनुष्य के मार डालनेवाले के समान है; जो भेड़ का चढ़ानेवाला है वह उसके समान है जो कृते का गला काटता है; जो अन्नबलि चढ़ाता है वह मानों सूअर का लह चढ़ानेवाले के समान है; और जो लोबान जलाता है, वह उसके समान है जो मूरत को धन्य कहता है। इन सभी ने अपना-अपना मार्ग चुन लिया है, और धिनौनी वस्तुओं से उनके मन प्रसन्न होते हैं। ३२ इसलिए मैं भी उनके लिये दुःख की बातें निकालूँगा, और जिन बातों से वे डरते हैं उन्हीं को उन पर लाझ़ागा; क्योंकि जब मैंने उन्हें बुलाया, तब कोई न बोला, और जब मैंने उनसे बातें की, तब उन्होंने मेरी न सुनी; परन्तु जो मेरी दृष्टि में बुरा था वही वे करते रहे, और जिससे मैं अप्रसन्न होता था उसी को उन्होंने अपनाया।” ३३ तुम जो यहोवा का वचन सुनकर थरथराते हो यहोवा का यह वचन सुनो: “तुम्हारे भाई जो तुम से बैर रखते और मेरे नाम के निमित्त तुम को अलग कर देते हैं उन्होंने कहा है, ‘यहोवा की महिमा तो बढ़े, जिससे हम तुम्हारा आनन्द देखने पाएँ।’ परन्तु उन्हीं को लज्जित होना पड़ेगा। ३४ “सुनो, नार से कोलाहल की धूम! मन्दिर से एक शब्द, सुनाई देता है! वह यहोवा का शब्द है, वह अपने शत्रुओं को उनकी करी का फल दे रहा है।” ३५ “उसकी प्रसव-पीड़ा उठने से पहले ही उसने जन्मा दिया; उसको पीड़ाएँ होने से पहले ही उससे बेटा जन्मा। ३६ ऐसी बात किसने कभी सुनी? किसने कभी ऐसी बातें देखी? क्या देश एक ही दिन में उत्पन्न हो सकता है? क्या एक जाति क्षण मात्र में ही उत्पन्न हो सकती है? क्योंकि सियोन की प्रसव-पीड़ा उठी ही थी कि उससे सन्तान उत्पन्न हो गए। ३७ यहोवा कहता है, क्या मैं उसे जन्मने के समय तक पहुँचाकर न जन्माऊँ? तेरा परमेश्वर कहता है, मैं जो गर्भ देता हूँ क्या मैं कोख बन्द करूँ? ३८ “हे यस्शलेम से सब प्रेम रखनेवालों, उसके साथ आनन्द करो और उसके कारण मग्न हो; हे उसके विषय सब विलाप करनेवालों उसके साथ हर्षित हो! ३९ जिससे तुम उसके शान्तिस्पी स्तन से दूध पी पीकर तृप्त हो, और दूध पीकर उसकी महिमा की बहुतायत से अत्यन्त सुखी हो।” ४० क्योंकि यहोवा यह कहता है, “देखो, मैं उसकी ओर शान्ति को नदी के समान, और जाति-जाति के धन को नदी की बाढ़ के समान बहा दूँगा; और तुम उससे पीओगे, तुम उसकी गोद में उठाए जाओगे और उसके घुटनों पर कुदाए जाओगे। ४१ जिस प्रकार माता अपने पुत्र

को शान्ति देती है, वैसे ही मैं भी तुम्हें शान्ति दूँगा; तुम को यस्शलेम ही मैं शान्ति मिलेगी। ४२ तुम यह देखोगे और प्रफुल्लित होंगे; तुम्हारी हड्डियाँ घास के समान हरी-भरी होंगी; और यहोवा का हाथ उसके दासों के लिये प्रगत होगा, और उसके शत्रुओं के ऊपर उसका क्रोध भड़केगा। ४३ “क्योंकि देखो, यहोवा आग के साथ आएगा, और उसके रथ बवण्डर के समान होंगे, जिससे वह अपने क्रोध को जलजलाहट के साथ और अपनी धितौनी को भस्म करनेवाली आग की लपट से प्रगट करे। ४४ क्योंकि यहोवा सब प्राणियों का न्याय आग से और अपनी तलवार से करेगा; और यहोवा के मारे हुए बहुत होंगे। ४५ “जो लोग अपने को इसलिए पवित्र और शुद्ध करते हैं कि बारियों में जाएँ और किसी के पीछे खड़े होकर सुअर या छूटे का माँस और अन्य घृणित वस्तुएँ खाते हैं, वे एक ही संग नाश हो जाएँगे, यहोवा की यही वाणी है। ४६ “क्योंकि मैं उनके काम और उनकी कल्पनाएँ, दोनों अच्छी रीति से जानता हूँ; और वह समय आता है जब मैं सरी जातियों और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालों को इकट्ठा करूँगा; और वे अकर मेरी महिमा देखेंगे। ४७ मैं उनमें एक चिन्ह प्रगट करूँगा; और उनके बचे हुओं को मैं उन जातियों के पास भेजूँगा जिन्होंने न तो मेरा समाचार सुना है और न मेरी महिमा देखी है, अर्थात् तर्शीशियों और धनुर्धारी पृथिवीयों और तुलदियों के पास, और तुबलियों और यूनानियों और दू द्वीपवासियों के पास भी भेज दूँगा और वे जाति-जाति में मेरी महिमा का वर्णन करेंगे। ४८ जैसे इमाएल्ती लोग अन्नबलि को शुद्ध पान में रखकर यहोवा के भवन में ले आते हैं, वैसे ही वे तुम्हारे सब भाइयों को भाइयों को जातियों से घोड़ों, रथों, पालकियों, खच्चरों और सॉँडिनियों पर चढ़ा-चढ़ाकर मैं पवित्र पर्वत यस्शलेम पर यहोवा की भेट के लिये ले आएँगे, यहोवा का यही वचन है। ४९ और उनमें से मैं कृष्ण लोगों को याजक और लेवीय पद के लिये भी चुन लूँगा। ५० “क्योंकि जिस प्रकार नया आकाश और नई पृथ्वी, जो मैं बनाने पर हूँ, मेरे सम्मुख बनी रहेगी, उसी प्रकार तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम भी बना रहेगा; यहोवा की यही वाणी है।” ५१ “फिर ऐसा होगा कि एक नये चाँद से दूसरे नये चाँद के दिन तक और एक विश्वामित्रिन से दूसरे विश्वामित्रिन तक समस्त प्राणी मेरे सामने दण्डवत् करने को आया करेंगे; यहोवा का यही वचन है।” ५२ “तब वे निकलकर उन लोगों के शवों पर जिन्होंने मुझसे बलबा किया दृष्टि डालेंगे, क्योंकि उनमें पड़े हुए कीड़े कभी न मरेंगे, उनकी आग कभी न बुझेगी, और सारे मनुष्यों को उनसे अत्यन्त घृणा होगी।”

यिर्मयाह

१ हित्कियाह का पुत्र यिर्मयाह जो बिन्यामीन क्षेत्र के अनातोत में रहनेवाले

याजकों में से था, उसी के ये वचन हैं। २ यहोवा का वचन उसके पास आपोन के पुत्र यहदा के राजा योशियाह के राज्य के दिनों में उसके राज्य के तेरहवें वर्ष में पहुँचा। ३ इसके बाद योशियाह के पुत्र यहदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के दिनों में, और योशियाह के पुत्र यहदा के राजा सिदिकियाह के राज्य के याहरवें वर्ष के अन्त तक भी प्रगट होता रहा जबकि उसी वर्ष के पाँचवें महीने में यस्शलेम के निवासी बैंधुआई में न चले गए। ४ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, ५ “गर्भ में रखने से पहले ही मैंने तुझ पर वित लगाया, और उत्पन्न होने से पहले ही मैंने तुझे अधिष्ठकि किया, मैंने तुझे जातियों का भविष्यद्वक्ता ठहराया।” ६ तब मैंने कहा, “हाय, प्रभु यहोवा! देख, मैं तो बोलना भी नहीं जानता, क्योंकि मैं कम उम्र का हूँ।” ७ परन्तु यहोवा ने मुझसे कहा, “मत कह कि मैं कम उम्र का हूँ; क्योंकि जिस किसी के पास मैं तुझे भेजूँ वहाँ तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूँ वही तू कहेगा।” ८ तू उनसे भयभीत न होना, क्योंकि तुझे छुड़ाने के लिये मैं तेरे साथ हूँ, यहोवा की यही वाणी है।” ९ तब यहोवा ने हाथ बढ़ाकर मेरे मुँह को छुआ; और यहोवा ने मुझसे कहा, “देख, मैंने अपने वचन तेरे मुँह में डाल दिये हैं।” १० “सुन, मैंने आज के दिन तुझे जातियों और राज्यों पर ठहराया है; उन्हें गिराने और ढा देने के लिये, नाश करने और काट डालने के लिये, उन्हें बनाने और रोपने के लिये।” ११ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, “हे यिर्मयाह, तुझे क्या दिखाई पड़ता है?” मैंने कहा, “मुझे बादाम की एक टहनी दिखाई देती है।” १२ तब यहोवा ने मुझसे कहा, “तुझे ठीक दिखाई पड़ता है, क्योंकि मैं अपने वचन को पूरा करने के लिये जागृत हूँ।” १३ फिर यहोवा का वचन दूसरी बार मेरे पास पहुँचा, और उसने पूछा, “तुझे क्या दिखाई देता है?” मैंने कहा, “मुझे उबलता हुआ एक हण्डा दिखाई देता है जिसका मूँह उत्तर दिशा की ओर से है।” १४ तब यहोवा ने मुझसे कहा, “इस देश के सब रहनेवालों पर उत्तर दिशा से विपत्ति आ डेंगी।” १५ यहोवा की यह वाणी है, मैं उत्तर दिशा के राज्यों और कुलों को बुलाऊँगा; और वे आकर यस्शलेम के फटकों में और उसके चारों ओर की शहरपनाह, और यहदा के और सब नगरों के सामने अपना-अपना सिंहासन लगाएँगे। १६ उनकी सारी बुराई के कारण मैं उन पर दण्ड की आज्ञा द्यांगा; क्योंकि उन्होंने मुझे त्याग कर दसरे देवताओं के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई हुई वस्तुओं को दण्डवत् किया है। १७ इसलिए तू अपनी कमर कसकर उठ; और जो कुछ कहने की मैं तुझे आज्ञा दूँ वही उनसे कह। तू उनके मुख को देखकर न घबराना, ऐसा न हो कि मैं तुझे उनके सामने घबरा दूँ। १८ क्योंकि सुन, मैंने आज तुझे इस सारे देश और यहदा के राजाओं, हाकिमों, और याजकों और साधारण लोगों के विस्तु गढ़वाला नगर, और लोहे का खम्भा, और पीतल की शहरपनाह बनाया है। १९ वे तुझ से लड़ेगे तो सही, परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे, क्योंकि बचाने के लिये मैं तेरे साथ हूँ, यहोवा की यही वाणी है।”

२ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, ३ “जा और यस्शलेम में पुकारकर यह सुना दे, यहोवा यह कहता है, तेरी जबानी का सेह और तेरे विवाह के समय का प्रेम मुझे स्मरण आता है कि तू कैसे जंगल में मेरे पीछे-पीछे चलती जहाँ भूमि जोती-बोई न गई थी।” ४ इसाएल, यहोवा के लिये पवित्र और उसकी पहली उपज थी। उसे खानेवाले सब दोषी ठहरेंगे और विपत्ति में पड़ेंगे, “यहोवा की यही वाणी है।” ५ हे याकूब के घराने, हे इसाएल के घराने के कुलों

के लोगों, यहोवा का वचन सुनो! ६ यहोवा यह कहता है, “तुम्हारे पुरुखों ने मुझ में कौन सी ऐसी कूटिलता पाई कि मुझसे दूँ हट गए और निकम्मी मूर्तियों के पीछे होकर स्वयं निकम्मे हो गए? ७ उन्होंने इतना भी न कहा, ‘जो हमें मिस्र देश से निकाल ले आया जो हमें जंगल में से और रेत और गङ्गे से भरे हुए निर्जल और धोर अंधकार के देश से जिसमें होकर कोई नहीं चलता, और जिसमें कोई मनुष्य नहीं रहता, हमें निकाल ले आया वह यहोवा कहाँ है?’ ८ और मैं तुम को इस उपजाओ देश में ले आया कि उसका फल और उत्तम उपज खाओ; परन्तु मेरे इस देश में आकर तुम ने इसे अशुद्ध किया, और मेरे इस निज भाग को धृष्टि कर दिया है।” ९ याजकों ने भी नहीं पूछा, “यहोवा कहाँ है?” जो व्यवस्था सिखाते थे वे भी मुझ को न जानते थे; चरबाहों ने भी मुझसे बलवा किया, भविष्यद्वक्ताओं ने बाल देवता के नाम से भविष्यद्वाणी की और वर्थ बातों के पीछे चले। १० “इस कारण यहोवा यह कहता है, मैं फिर तुम से विवाद, और तुम्हारे बेटे और पोतों से भी प्रश्न करूँगा।” ११ किंतियों के द्वीपों में पार जाकर देखो, या केदरा में दूत भेजकर भली भाँति विचार करो और देखो; देखो, कि ऐसा काम कहीं और भी हुआ है? क्या किसी जाति ने अपने देवताओं को बदल दिया जो परमेश्वर भी नहीं हैं? १२ परन्तु मेरी प्रजा ने अपनी महिमा को निकम्मी वस्तु से बदल दिया है। १३ है आकाश चकित हो, बहुत ही थरथरा और सुनसान हो जा, यहोवा की यह वाणी है। १४ क्योंकि मेरी प्रजा ने दो बुराइयाँ की हैं: उन्होंने मुझ जीवन के जल के सोते को त्याग दिया है, और, उन्होंने हौद बना लिए, वरन् ऐसे हौद जो टृट गए हैं, और जिनमें जल नहीं रह सकता। १५ “क्या इसाएल दास है? क्या वह घर में जन्म से ही दास है? फिर वह क्यों शिकार बना? १६ जबान सिंहों ने उसके विस्तु गरजकर नाद किया। उन्होंने उसके देश को उजाड़ दिया; उन्होंने उसके नगरों को ऐसा उजाड़ दिया कि उनमें कोई बसनेवाला ही न रहा। १७ नोप और तहप-हेस के निवासी भी तेरे देश की उपज चट कर गए हैं। १८ क्या यह तेरी ही करनी का फल नहीं, जो तूने अपने परमेश्वर यहोवा को छोड़ दिया जो तुझे मार्ग में लिए चला? १९ अब तुझे मिस्र के मार्ग से क्या लाभ है कि तू सीहीर का जल पीए? अथवा अश्शर के मार्ग से भी तुझे क्या लाभ कि तू फरात का जल पीए? २० तेरी बुराई ही तेरी ताड़ना करेगी, और तेरा भटक जाना तुझे उलाहना देगा। जान ले और देख कि अपने परमेश्वर यहोवा को त्यागना, यह बुरी और कड़वी बात है; तुझे मेरा भय ही नहीं रहा, प्रश्न सनाओं के यहोवा की यही वाणी है। २१ “क्योंकि बहुत समय पहले मैंने तेरा जूआ तोड़ डाला और तेरे बन्धन खोल दिए; परन्तु तूने कहा, ‘मैं सेवा न करूँगा।’” और सब ऊँचे-ऊँचे इंटीलों पर और सब होरे पेड़ों के नीचे तू व्यभिचारिणी का सा काम करती रही। २२ मैंने तो तुझे उत्तम जाति की दाखलता और उत्तम बीज करके लगाया था, फिर तू क्यों मेरे लिये जंगली दाखलता बन गई? २३ चाहे तू अपने को सज्जी से धोए और बहुत सा साबुन भी प्रयोग करे, तो भी तेरे अधर्म का धब्बा मेरे सामने बना रहेगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। २४ तू कैसे कह सकती है कि मैं अशुद्ध नहीं, मैं बाल देवताओं के पीछे नहीं चलती? तराई में की अपनी चाल देख और जान ले कि तूने क्या किया है? तू वेग से चलने वाली और इधर-उधर फिरनेवाली ऊँटनी है, २५ जंगल में पली ही हृदंगली गदही जो कामातर होकर बायू सँघर्षी फिरती है तब कौन उसे वश में कर सकता है? जितने उसको छलनी देंगे और गता सुखाए न रह। परन्तु तूने कहा, ‘नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि मेरा प्रेम दूसरों से हो गया है और मैं उनके पीछे चलती रहूँगी।’ २६ “जैसे चोर पकड़े जाने पर लजित होता है, वैसे ही इसाएल का घराना, राजाओं, हाकिमों, याजकों और भविष्यद्वक्ताओं समेत लजित होगा। २७ वे काठ से कहते हैं, ‘तू मेरा पिता

है,’ और पत्थर से कहते हैं, ‘तूने मुझे जन्म दिया है।’ इस प्रकार उन्होंने मेरी ओर मूँह नहीं पीठ ही फेरी है; परन्तु विपति के समय वे कहते हैं, ‘उठका हमें बचा!’ २८ परन्तु जो देवता तूने अपने लिए बनाए हैं, वे कहाँ रहे? यदि वे तेरी विपति के समय तुझे बचा सकते हैं तो अभी उठें; क्योंकि हे यहदा, तेरे नगरों के बराबर तेरे देवता भी बहत हैं। २९ “तुम क्यों मुझसे बाद-विवाद करते हो? तुम सभी ने मुझसे बलबा किया है, यहोवा की यही वाणी है।” ३० मैंने व्यर्थ ही तुम्हारे बेटों की ताड़ना की, उन्होंने कुछ भी नहीं माना; तुम ने अपने भविष्यद्वाकाओं को अपनी ही तलवार से ऐसा काट डाला है जैसा सिंह फाड़ता है। ३१ हे लोगों, यहोवा के बचन पर ध्यान दो! क्या मैं इसाएल के लिये जंगल या घोर अंधकार का देश बना? तब मेरी प्रजा क्यों कहती है कि ‘हम तो आजाद हो गए हैं इसलिए तेरे पास फिर न आएँगे?’ ३२ क्या कुमारी अपने श्वांगर या दुल्हन अपनी सजावट भूल सकती है? तो भी मेरी प्रजा ने युगों से मुझे भूला दिया है। ३३ “प्रेम पाने के लिये तू कैसी सुन्दर चाल चलती है! बुरी छियों को भी तूने अपनी सी चाल सिखाई है।” ३४ तेरे घायरे मैं निर्दोष और दरिद्र लोगों के लह का चिन्ह पाया जाता है; तुने उहें सेंध लगाते नहीं पकड़ा। परन्तु इन सब के होते हुए भी ३५ तू कहती है, ‘मैं निर्दोष हूँ; निश्चय उसका क्रोध मुझ पर से हट जाएगा।’ देख, तू जो कहती है कि ‘मैंने पाप नहीं किया,’ इसलिए मैं तेरा न्याय करूँगा। ३६ तू क्यों नया मार्ग पकड़ने के लिये इतनी डाँवाड़ेल फिरती है? जैसे अशूरियों से तू लजित हुई वैसे ही मिश्यों से भी होगी। ३७ वहाँ से भी तू सिर पर हाथ रखे हुए ऐसे ही चली आएँगी, क्योंकि जिन पर तूने भरोसा रखा है उनको यहोवा ने निकम्मा ठहराया है, और उनके कारण तू सफल न होगी।

३ “वे कहते हैं, ‘यदि कोई अपनी पत्री को त्याग दे, और वह उसके पास से जाकर दूसरे पुस्त की हो जाए, तो वह पहला क्या उसके पास फिर जाएगा?’ क्या वह देश अति अशुद्ध न हो जाएगा? यहोवा की यह वाणी है कि तुने बहुत से प्रेमियों के साथ व्यभिचार किया है, क्या तू अब मेरी ओर फिरेगी? ३८ मूँडे टीलों की ओर और आँखें उठाकर देख! ऐसा कौन सा स्थान है जहाँ तूने कुर्कम न किया हो? मार्गों में तू ऐसी बैठी जैसे एक अरबी जंगल में। तुने देश को अपने व्यभिचार और दृष्टुता से अशुद्ध कर दिया है। ३९ इसी कारण वर्षा रोक दी गई और पिछली बरसात नहीं होती; तो भी तेरा माथा वेश्या के समान है, तू लजित होना ही नहीं चाहती। ४० क्या तू अब मुझे एक अरबी जंगल में। तुने देश को तूने पहाड़ों पर और सब हो गए बेडों के तले जा जाकर व्यभिचार किया है। ४१ तब मैंने सोचा, जब ये सब काम वह कर चुके तब मेरी ओर फिरेगी; परन्तु वह न फिरी, और उसकी विश्वासघाती बहन यहदा ने यह देखा। ४२ फिर मैंने देखा, जब मैंने भटकनेवाली इसाएल को उसके व्यभिचार करने के कारण त्याग कर उसे त्यागपत्र दे दिया; तो भी उसकी विश्वासघाती बहन यहदा न डरी, बरन् जाकर वह भी व्यभिचारिणी बन गई। ४३ उसके निर्लज्ज-व्यभिचारिणी होने के कारण देश भी अशुद्ध हो गया, उसने पत्थर और काठ के साथ भी व्यभिचार किया। ४४ इतने पर भी उसकी विश्वासघाती बहन यहदा पूर्ण मन से मेरी ओर नहीं फिरी, परन्तु कपट से, यहोवा की यही वाणी है।” ४५ यहोवा ने मुझसे कहा, “भटकनेवाली इसाएल, विश्वासघातिन यहदा से कम दोषी निकली है। ४६ तू जाकर उत्तर दिशा में ये बातें प्रचार कर, ‘यहोवा की यह वाणी है, हे भटकनेवाली इसाएल लौट आ, मैं तुझ पर क्रोध की दृष्टि न करूँगा; क्योंकि

यहोवा की यह वाणी है, मैं कस्मामय हूँ; मैं सर्वदा क्रोध न रखे रहूँगा। ४७ केलब अपना यह अधर्म मान ले कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से फिर गई और सब हरे बेडों के तले इधर-उधर दूसरों के पास गई, और मेरी बातों को नहीं माना, यहोवा की यह वाणी है। ४८ “हे भटकनेवाले बच्चों, लौट आओ, क्योंकि मैं तुम्हारा स्वामी हूँ; यहोवा की यह वाणी है। तुम्हारे प्रत्येक नगर से एक, और प्रत्येक कुल से दो को लेकर मैं सिय्योन में पहुँचा दूँगा। ४९ “मैं तुम्हें अपने मन के अनुकूल चरवाहे दूँगा, जो ज्ञान और बुद्धि से तुम्हें चराएँगे। ५० उन दिनों में जब तुम इस देश में बढ़ो, और फूलो-फलो, तब लोग फिर ऐसा न कहेंगे, यहोवा की वाचा का सन्दूक; यहोवा की यह भी वाणी है। उसका विचार भी उनके मन में न आएगा, न लोग उसके न रहने से चिन्ता करेंगे; और न उसकी मरम्मत होगी। ५१ उस समय यस्शलेम यहोवा का सिंहासन कहलाएगा, और सब जातियों उसी यस्शलेम में मेरे नाम के निमित्त इकट्ठी हुआ करेंगी, और, वे फिर अपने ब्रू मन के हठ पर न चलेंगी। ५२ उन दिनों में यहदा का घराना इसाएल के घराने के साथ चलेगा और वे दोनों मिलकर उत्तर के देश से इस देश में आएँगे जिसे मैंने उनके पूर्वजों को निज भाग करके दिया था। ५३ “मैंने सोचा था, मैं कैसे तुझे लड़कों में गिनकर वह मनभावना देश दूँगा जो सब जातियों के देशों का शिरोमणि है। मैंने सोचा कि तू मुझे पिता कहेगी, और मुझसे फिर न भटकेगी। ५४ इसमें तो सन्देह नहीं कि जैसे विश्वासघाती झी अपने प्रिय से मन फेर लेती है, वैसे ही है इसाएल के घराने, तू मुझसे फिर गया है, यहोवा की यही वाणी है।” ५५ मूँडे टीलों पर से इसाएलियों के रोने और गिडगिडाने का शब्द सुनाइ दे रहा है, क्योंकि वे टेढ़ी चाल चलते रहे हैं और अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गए हैं। ५६ “हे भटकनेवाले बच्चों, लौट आओ, मैं तुम्हारा भटकना सुधार दूँगा। देख, हम तो पास आए हैं; क्योंकि तू ही हमारा परमेश्वर यहोवा है। ५७ निश्चय पहाड़ों और पहाड़ियों पर का कोलाहल व्यर्थ ही है। इसाएल का उद्धार निश्चय हमारे परमेश्वर यहोवा ही के द्वारा है। ५८ परन्तु हमारी जवानी ही से उस बदनामी की वस्तु ने हमारे पुरखाओं की कमाई अर्थात् उनकी भेड़-बकरी और गाय-बैल और उनके बेटे-बेटियों को निगल लिया है। ५९ हम लजित होकर लेट जाएँ, और हमारा संकोच हमारी ओढ़नी बन जाएँ; क्योंकि हमारे पुरखा और हम भी युवा अवस्था से लेकर आज के दिन तक अपने परमेश्वर यहोवा के विस्तु पाप करते आए हैं; और हमने अपने परमेश्वर यहोवा की बातों को नहीं माना है।”

६० यहोवा की यह वाणी है, ‘हे इसाएल, यदि तू लौट आए, तो मेरे पास लौट आ। यदि तू यिनीनी वस्तुओं को मेरे सामने से दूर करे, तो तुझे आवारा फिरना न पड़ेगा, ६१ और यदि तू सच्चाई और न्याय और धार्मिकता से यहोवा के जीवन की शपथ खाए, तो जाति-जाति उसके कारण अपने आपको धन्य कहेंगी, और उसी पर घमण्ड करेंगी।’ ६२ क्योंकि यहदा और यस्शलेम के लोगों से यहोवा ने यह कहा है, ‘अपनी पड़ती भूमि को जोते, और कटीले झाड़ों में बीज मत बोओ।’ ६३ हे यहदा के लोगों और यस्शलेम के निवासियों, यहोवा के लिये अपना खतना करो; हाँ, अपने मन का खतना करो; नहीं तो तुम्हारे ब्रू कामों के कारण मेरा क्रोध आग के समान भड़केगा, और ऐसा होगा की कोई उसे बुझा न सकेगा।’ ६४ यहदा में प्रचार करो और यस्शलेम में यह सुनाओ: ‘पूरे देश में नरसिंह फूँको; गला खोलकर ललकारो और कहो, ‘आओ, हम इकट्ठे होंगे और गढ़वाले नगरों में जाएँ।’ ६५ सिय्योन के पार्ग में झण्डा खड़ा करो, खड़े मत रहो, क्योंकि मैं उत्तर की दिशा से विपत्ति और सत्यानाश ला रहा हूँ। ६६ एक सिंह अपनी झाड़ी से निकला, जाति-जाति का नाश करनेवाला चढ़ाई करके आ रहा है; वह कच करके अपने स्थान से इसलिए निकला है कि तुम्हारे देश को उजाड़ दे और तुम्हारे नगरों को ऐसा

सुनसान कर दे कि उनमें कोई बसनेवाला न रहने पाए। ८ इसलिए कमर में टाट बाँधो, बिलाप और हाय-हाय करो; क्योंकि यहोवा का भड़का हुआ कोप हम पर से टला नहीं है। ९ “उस समय राजा और हाकिमों का कलेजा कॉफ उठेगा; याजक चकित होंगे और नवी अचम्भित हो जाएँगे,” यहोवा की यह वाणी है। १० तब मैंने कहा, “हाय, प्रभु यहोवा, तूने तो यह कहकर कि तुम को शान्ति मिलेगी निश्चय अपनी इस प्रजा को और यस्शलेम को भी बड़ा धोखा दिया है; क्योंकि तलवार प्राणों को मिटाने पर है।” ११ उस समय तेरी इस प्रजा से और यस्शलेम से भी कहा जाएगा, “जंगल के मुँडें टीलों पर से प्रजा के लोगों की ओर लूबह रही है, वह ऐसी वायु नहीं जिससे आपसाना या फरछाना हो, १२ परन्तु मेरी ओर से ऐसे कामों के लिये अधिक प्रचण्ड वायु बहेरी। अब मैं उनको दाढ़ की आज्ञा देंगा।” १३ देखो, वह बादलों के समान चढ़ाई करके आ रहा है, उसके रथ बवण्डर के समान और उसके घोड़े उकाबों से भी अधिक वेग से चलते हैं। हम पर हाय, हम नाश हुए। १४ हे यस्शलेम, अपना हृदय बुराई से धो, कि तुम्हारा उद्धार हो जाए। तुम कब तक व्यर्थ कल्पनाएँ करते रहोगे? १५ क्योंकि दान से शब्द सुन पड़ रहा है और ऐसैम के पहाड़ी देश से विपत्ति का समाचार आ रहा है। १६ जाति-जाति में सुना दो, यस्शलेम के विद्धु भी इसका समाचार दो, “आक्रमणकारी दूर देश से आकर यहदा के नगरों के विद्धु ललकार रहे हैं। १७ वे खेत के खबालों के समान उसको चारों ओर से धेर रहे हैं, क्योंकि उसने मुझसे बलवाना किया है, यहोवा की यही वाणी है। १८ यह तेरी चाल और तेरे कामों ही का फल है। यह तेरी दृष्टा है और अति दुःखदाइ है; इससे तेरा हृदय छिद जाता है।” १९ हाय! हाय! मेरा हृदय भीतर ही भीतर तड़पता है! और मेरा मन घबराता है। मैं चुप नहीं रह सकता; क्योंकि हे मेरे प्राण, नरसिंग का शब्द और युद्ध की ललकार तुझ तक पहुँची है। २० नाश पर नाश का समाचार आ रहा है, सारा देश नाश हो गया है। मेरे डेरे अचानक और मेरे तम्बू एकाएक लटे गए हैं। २१ और किनने दिन तक मुझे उनका झण्डा देखना और नरसिंग का शब्द सुनना पड़ेगा? २२ “क्योंकि मेरी प्रजा मूर्ख है, वे मुझे नहीं जानते; वे ऐसे मूर्ख बच्चे हैं जिनमें कछ भी समझ नहीं। बुराई करने को तो वे बुद्धिमान हैं, परन्तु भलाई करना वे नहीं जानते।” २३ मैंने पृथ्वी पर देखा, वह सूरी और सुनसान पड़ी थी; और आकाश को, और उसमें कोई ज्योति नहीं थी। २४ मैंने पहाड़ों को देखा, वे हिल रहे थे, और सब पहाड़ियों को कि वे डोल रही थीं। २५ फिर मैंने क्या देखा कि कोई मनुष्य भी न था और सब पक्षी भी उड़ गए थे। २६ फिर मैं क्या देखता हूँ कि यहोवा के प्रताप और उस भड़के हुए प्रकोप के कारण उपजाऊ देश जंगल, और उसके सारे नगर खण्डहर हो गए थे। २७ क्योंकि यहोवा ने यह बताया, “सारा देश उजाड हो जाएगा, तो भी मैं उसका अन्त न करूँगा।” २८ इस कारण पृथ्वी बिलाप करेगी, और आकाश शोक का काला बब्ब पहनेगा; क्योंकि मैंने ऐसा ही करने को ठाना और कहा भी है; मैं इससे नहीं पछताऊँगा और न अपने प्राण को छोड़ूँगा।” २९ नगर के सारे लोग सवारों और धनर्थीरियों का कोलाहल सुनकर भागे जाते हैं; वे झाड़ियों में घुसते और चट्ठानों पर चढ़े जाते हैं; सब नगर निर्जन हो गए, और उनमें कोई बाकी न रहा। ३० और तृजब उजड़ेंगी तब क्या करेगी? चाहे तूलाल रंग के बब्ब पहने और सोने के आभूषण धारण करे और अपनी आँखों में अंजन लगाए, परन्तु व्यर्थ ही तू अपना श्वार करेगी। क्योंकि तेरे प्रेमी तज्ज्ञ निकम्मी जानते हैं; वे तेरे प्राण के खोजी हैं। ३१ क्योंकि मैंने जच्चा का शब्द, पहलौठा जनती हुई स्त्री की सी चिलाहट सुनी है, यह सिद्धोन की बेटी का शब्द है, जो हाँफती और हाथ फैलाए हुए यह कहती है, “हाय मुझ पर, मैं हृत्यारों के हाथ पड़कर मूर्छित हो चली हूँ।”

५ यस्शलेम की सड़कों में इधर-उधर दौड़कर देखो! उसके चौकों में ढूँढ़ो यदि कोई ऐसा मिल सके जो न्याय से काम करे और सच्चाई का खोजी हो; तो मैं उसका पाप क्षमा करूँगा। ६ यथपि उसके निवासी यहोवा के जीवन की शपथ भी खाँसे, तो भी निश्चय वे झाँठी शपथ खोते हैं। ७ तेरी दृष्टि सच्चाई पर नहीं है? तूने उनको दुःख दिया, परन्तु वे शोकित नहीं हुए; तूने उनको नाश किया, परन्तु उन्होंने ताड़ना से भी नहीं माना। उन्होंने अपना मन चट्ठान से भी अधिक कठोर किया है; उन्होंने पश्चात्पाप करने से इन्कार किया है। ८ फिर मैंने सोचा, “ये लोग तो कंगाल और मर्खी ही हैं; क्योंकि ये यहोवा का मार्ग और अपने परमेश्वर का नियम नहीं जानते।” ९ इसलिए मैं बड़े लोगों के पास जाकर उनको सुनाऊँगा; क्योंकि वे तो यहोवा का मार्ग और अपने परमेश्वर का नियम जानते हैं।” परन्तु उन सभी ने मिलकर जूँ को तोड़ दिया है और बन्धनों को खोल डाला है। १० इस कारण वन में से एक सिंह आकर उहाँ मरा डलेगा, निर्जल देश का एक भेड़िया उनको नाश करेगा। और एक चीति उनके नगरों के पास घात लगाए रहेगा, और जो कोई उमर्से निकले वह फाड़ा जाएगा; क्योंकि उनके अपराध बहुत बढ़ गए हैं और वे मुझसे बहुत ही दूर हट गए हैं। ११ “मैं क्यों तेरा पाप क्षमा करूँ? तेरे लड़कों ने मुझ को छोड़कर उनकी शपथ खाँसी है जो परमेश्वर नहीं है। जब मैंने उनका पेट भर दिया, तब उन्होंने व्यभिचार किया और वेश्याओं के घरों में भीड़ की भीड़ जाते थे। १२ वे खिलाए-पिलाए बै-लगाम घोड़ों के समान हो गए, वे अपने-अपने पड़ोसी की जीवी पर हिनहिनाने लगे। १३ क्या मैं ऐसे कामों का उन्हें दण्ड न दूँ? यहोवा की यह वाणी है; क्या मैं ऐसी जाति से अपना पलटा न लूँ? १४ “शहरपनाह पर चढ़कर उसका नाश तो करो, तो भी उसका अन्त मत कर डालो; उसकी जड रहने दो परन्तु उसकी डालियों को तोड़कर फेंक दो, क्योंकि वे यहोवा की नहीं हैं। १५ यहोवा की यह वाणी है कि इस्माइल और यहदा के घरानों ने मुझसे बड़ा विष्वासघात किया है। १६ “उन्होंने यहोवा की बातें झाँठलाकर कहा, ‘वह ऐसा नहीं है, विपत्ति हम पर न पड़ेगी, न हम तलवार को और न अकाल को देखेंगे। १७ भविष्यद्वत्ता हवा हो जाएँगी; उनमें परमेश्वर का वचन नहीं है। उनके साथ ऐसा ही किया जाएगा।’” १८ इस कारण सेनाओं का परमेश्वर यहोवा यह कहता है: “ये लोग जो ऐसा कहते हैं, इसलिए देख, मैं अपना वचन तेरे मुँह में आग, और इस प्रजा को काठ बनाऊँगा, और वह उनको भस्म करेगी। १९ यहोवा की यह वाणी है, हे इस्माइल के घराने, देख, मैं तुम्हारे विद्धु दूर से ऐसी जाति को चढ़ा लाऊँगा जो सामर्थी और प्राचीन है, उसकी भाषा तुम न समझोगे, और न यह जानोगे कि वे लोग क्या कह रहे हैं। २० उनका तरकश खुली कब्र है और वे सब के सब शूर्वर हैं। २१ तुम्हारे पके खेत और भोजनक्षत्रों जो तुम्हारे बेटे-बेटियों के खाने के लिये हैं उन्हें वे खा जाएँगे वे तुम्हारी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को खा डालेंगे; वे तुम्हारी दाढ़ों और अंजीरों को खा जाएँगे; और जिन गढ़वाले नगरों पर तुम भरोसा रखते हो उन्हें वे तलवार के बल से नाश कर देंगे।” २२ “तो भी, यहोवा की यह वाणी है, उन दिनों में भी मैं तुम्हारा अन्त न कर डालूँगा। २३ जब तुम पूछोगे, ‘हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम से ये सब काम किस लिये किए हैं,’ तब तुम उनसे कहना, ‘जिस प्रकार से तुम ने मुझ को त्याग कर अपने देश में दूसरे देवताओं की सेवा की है, उसी प्रकार से तुम को पराए देश में परदेशियों की सेवा करनी पड़ेगी।’” २४ याकब के घराने में यह प्रचार करो, और यहदा में यह सुनाओ। २५ “हे मर्खी और निर्बुद्ध लोगों, तुम जो आँखें रहते हुए नहीं देखते, जो कान रहते हुए नहीं सुनते, यह सुनो। २६ यहोवा की यह वाणी है, क्या तुम लोग मेरा भय नहीं मानते? क्या तुम मेरे सम्पुख नहीं थरथराते? मैंने रेत को समुद्र की सीमा ठहराकर युग-युग का ऐसा

बाँध ठहराया कि वह उसे पार न कर सके; और चाहे उसकी लहरें भी उठें, तो भी वे प्रबल न हो सके, या जब वे गरजे तो भी उसको न पार कर सके। २४ पर इस प्रजा का हठीला और बलवा करनेवाला मन है; इहोंने बलवा किया और दूर हो गए हैं। २५ वे मन में इतना भी नहीं सोचते कि हमारा परमेश्वर यहोवा तो बरसात के आरम्भ और अन्त दोनों समयों का जल समय पर बरसात है, और कट्टनी के नियत सप्ताहों को हमारे लिये रखता है, इसलिए हम उसका भय मानें। २६ परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ही के कारण वे स्क गए, और तुम्हारे पापों ही के कारण तुम्हारी भलाई नहीं होती। २७ मेरी प्रजा में दृश्य लोग पाए जाते हैं, जैसे चिडीमार तक में रहते हैं, वैसे ही वे भी घात लगाए रखते हैं। वे फंदा लगाकर मनुष्यों को अपने वश में कर लेते हैं। २८ जैसा पिजड़ा चिडियों से भरा हो, वैसे ही उनके घर छल से भरे रहते हैं, इसी प्रकार वे बढ़ गए और धनी हो गए हैं। २९ वे मोटे और चिकने हो गए हैं। बुरे कामों में वे सीमा को पार कर गए हैं; वे न्याय, विशेष करके अनाथों का न्याय नहीं चुकाते; इससे उनका काम सफल नहीं होता वे कंगालों का हक भी नहीं दिलाते। ३० इसलिए, यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं इन बातों का दण्ड न दूँ? क्या मैं ऐसी जाति से पलटान न लौँ? ३० देश में ऐसा काम होता है जिससे चकित और रोमांचित होना चाहिये। ३१ भविष्यद्वत्का झटमूँठ भविष्यद्वाणी करते हैं; और याजक उनके सहरे से प्रभुता करते हैं; मेरी प्रजा को यह भाता भी है, परन्तु अन्त के समय तुम क्या करोगे?

६ हे बिन्यामीनियों, यस्शलेम में से अपना-अपना सामान लेकर भागो! तकोआ में नरसिंगा फँको, और बेथकक्रेम पर झण्डा ऊँचा करो; क्योंकि उत्तर की दिशा से अमेवाली विपति बड़ी और विनाश लानेवाली है। १ सियोन की सून्दर और सुकुमार बेटी को मैं नाश करने पर हूँ। २ चरवाहे अपनी-अपनी भेड़-बकरियाँ संग लिए हुए हूँ उस पर चढ़कर उसके चारों ओर अपने तम्बू खड़े करोगे, वे अपने-अपने पास की घास चारा लेंगे। ३ “आओ, उसके विस्तु युद्ध की तैयारी करो; उठो, हम दोपहर को चढ़ाई करें!” “हाय, हाय, दिन ढलता जाता है, और सॉँझ की परछाई लम्फी हो चली है!” ४ “उठो, हम रात ही रात चढ़ाई करें और उसके महलों को ढा दें।” ५ सेनाओं का यहोवा तुम से कहता है, “वृक्ष काट-काटकर यस्शलेम के विस्तु मोरी बाँधो। यह वही नार है जो दण्ड के योग्य है; इसमें अंधेर ही अंधेर भरा हआ है। ६ जैसा कुएँ में से नित्य नया जल निकलता करता है, वैसा ही इस नगर में से नित्य नई बुराई निकलती है; इसमें उत्तर और उत्तरवाह का कोलाहल मचा रहता है; चेट और मारपीट मेरे देखने में निरन्तर आती है। ८ हे यस्शलेम, ताड़ना से ही मान ले, नहीं तो तू मेरे मन से भी उत्तर जाएगी; और, मैं तुझको उजाड़ कर निर्जन कर डालूँगा।” ९ सेनाओं का यहोवा यह कहता है, “इसाएल के सब बचे हुए दाखलता के समान ढूँकर तोड़े जाएँगे; दाख के तोड़नेवाले के समान उस लता की डालियों पर फिर अपना हाथ लगाए।” १० मैं किस से बोलूँ और किसको चिताकर कहूँ कि वे मानें? देख, ये ऊँचा सुरते हैं, वे ध्यान भी नहीं दे सकते; देख, यहोवा के बचन की वे निन्दा करते और उसे नहीं चाहते हैं। ११ इस कारण यहोवा का कोप मेरे मन में भर गया है; मैं उसे रोकते-रोकते थक गया हूँ। “बाजारों में बच्चों पर और जवानों की सभा में भी उसे उण्डेल दे; क्योंकि पति अपनी पत्नी के साथ और अधेड़ बूढ़े के साथ पकड़ा जाएगा। १२ उन लोगों के घर और खेत और खियाँ सब दूसरों की हो जाएँगी; क्योंकि मैं इस देश के रहनेवालों पर हाथ बढ़ाऊँगा,” यहोवा की यही वाणी है। १३ “क्योंकि उनमें छोटे से लेकर बड़े तक सब के सब लालची हैं, और क्या भविष्यद्वत्का क्या याजक सब के सब छल से काम करते हैं। १४ वे, ‘शान्ति है, शान्ति’, ऐसा कह कहकर मेरी प्रजा के घाव को ऊपर ही ऊपर चंगा करते हैं,

परन्तु शान्ति कुछ भी नहीं। १५ क्या वे कभी अपने धृषित कामों के कारण लजित हुए? नहीं, वे कुछ भी लजित नहीं हुए; वे लजित होना जानते ही नहीं; इस कारण जब और लोग नीचे गिरें, तब वे भी गिरेंगे, और जब मैं उनको दण्ड देने लगाँगा, तब वे टोकर खाकर गिरेंगे,” यहोवा का यही बचन है। १६ यहोवा यह भी कहता है, “सङ्कों पर खड़े होकर देखो, और पूछो कि प्राचीनकाल का अच्छा मार्ग कौन सा है, उसी में चलो, और तुम अपने-अपने मन में चैन पाओगे। पर उन्होंने कहा, ‘हम उस पर न चलेंगे।’ १७ मैंने तुम्हारे लिये पहस्त बैठाकर कहा, ‘नरसिंगे का शब्द ध्यान से सुनाना।’ पर उन्होंने कहा, ‘हम न सुनें।’ १८ इसलिए, हे जातियों, सुनो, और हे मण्डली, देख, कि इन लोगों में क्या हो रहा है। १९ हे पृथ्वी, सुन; देख, कि मैं इस जाति पर वह विपति ले आँँगा जो उनकी कल्पनाओं का फल है, क्योंकि इन्होंने मेरे बचनों पर ध्यान नहीं लगाया, और मेरी शिक्षा को इन्होंने निकम्मी जाना है। २० मेरे लिये जो लोबान शेबा से, और सुग्रान्थि नरकट जो दूर देश से आता है, इसका क्या प्रयोजन है? तुम्हारे होमबलियों से मैं प्रसन्न नहीं हूँ, और न तुम्हारे मेलबलि मुझे मीठे लगते हैं। २१ “इस कारण यहोवा ने यह कहा है, ‘देखो, मैं इस प्रजा के आगे ठोकर रखूँगा, और बाप और बेटा, पड़ोसी और मित्र, सब के सब ठोकर खाकर नाश होंगे।’” २२ यहोवा यह कहता है, “देखो, उत्तर से बरन पृथ्वी की छोर से एक बड़ी जाति के लोग इस देश के विरोध में उभरे जाएँगे। २३ वे धनुष और बर्छी धारण किए हुए आँएँ, वे छार और निर्दीर्घी हैं, और जब वे बोलते हैं तब मानो समुद्र गरजता है; वे घोड़ों पर चढ़े हुए आँएँ, हे सियोन, वे वीर के समान सशब्द होकर तुझ पर चढ़ाई करेंगे।” २४ इसका समाचार सुनते ही हमारे हाथ ढीले पड़े गए हैं; हम संकट में पड़े हैं, जच्चा की सी पीड़ा हमको उठी है। २५ मैदान में मत निकलो, मार्ग में भी न चलो; क्योंकि वहाँ शूरु की तलवार और चारों ओर भय दिखाई पड़ता है। २६ हे मेरी प्रजा कमर में टाट बाँध, और राख में लोट; जैसा एकलाते पत्र के लिये विलाप होता है वैसा ही बड़ा शोकमय विलाप कर; क्योंकि नाश करनेवाला हम पर अचानक आ पड़ेगा। २७ “मैंने इसलिए तुझे अपनी प्रजा के बीच गुम्फ और गढ़ ठहरा दिया कि तू उनकी चाल परखे और जान ले। २८ वे सब बहुत ही हठी हैं, वे लुताई करते फिरते हैं; उन सभी की चाल बिङड़ी है, वे निरा तांबा और लोहा ही हैं। २९ धौकनी जल गई, सीसा आग में जल गया; ढालनेवाले ने व्यर्थ ही ढाला है; क्योंकि बुरे लोग नहीं निकाले गए। ३० उनका नाम खोटी चाँदी पड़ेगा, क्योंकि यहोवा ने उनको खोटा पाया है।”

७ जो बचन यहोवा की ओर से धर्मयाह के पास पहुँचा वह यह है: १ “यहोवा के भवन के फाटक में खड़ा हो, और यह बचन प्रचार कर, और कह, हे सब यहदियों, तुम यो यहोवा को दण्डवत् करने के लिये इन फाटकों से प्रवेश करते हो, यहोवा का बचन सुनो। २ सेनाओं का यहोवा जो इसाएल का परमेश्वर है, यह कहता है, अपनी-अपनी चाल और काम सुधारो, तब मैं तुम को इस स्थान में बर्से रहने दूँगा। ३ तुम लोग यह कहकर झटी बातों पर भरोसा मत रखो, ‘यही यहोवा का मान्दिर है; यही यहोवा का मान्दिर, यहोवा का मन्दिर।’ ४ “यदि तुम सचमुच अपनी-अपनी चाल और काम सुधारो, और सचमुच मनुष्य-मनुष्य के बीच न्याय करो, ५ परदेशी और अनाथ और विधवा पर अंधेर न करो; इस स्थान में निर्दोष की हत्या न करो, और दूसरे देवताओं के पीछे न चलो जिससे तुम्हारी हानि होती है, ६ तो मैं तुम को इस नगर में, और इस देश में जो मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था, सुग-युग के लिये रहने दूँगा। ७ “देखो, तुम झटी बातों पर भरोसा रखते हो जिससे कुछ लाभ नहीं हो सकता। ८ तुम जो चोरी, हत्या और व्यभिचार करते, झटी शपथ खाते, बाल देवता के लिये धूप जलाते, और दूसरे देवताओं के पीछे जिन्हें तुम पहले नहीं

जानते थे चलते हो, १० तो क्या यह उचित है कि तुम इस भवन में आओ जो मेरा कहलाता है, और मेरे सामने खड़े होकर यह कहो ‘हम इसलिए छूट गए हैं’ कि ये सब धृष्टिकाम करें? ११ क्या यह भवन जो मेरा कहलाता है, तुम्हारी दृष्टि में डाक्टरों की गुफा हो गया है? मैंने स्वयं यह देखा है, यहोवा की यह वाणी है। १२ “मेरा जो स्थान शीलों में था, जहाँ मैंने पहले अपने नाम का निवास ठहराया था, वहाँ जाकर देखो कि मैंने अपनी प्रजा इसाएल की बुराई के कारण उसकी क्या दशा कर दी है?” १३ अब यहोवा की यह वाणी है, कि तुम जो ये सब काम करते आए हो, और यद्यपि मैं तुम से बड़े यद्र से बातें करता रहा हूँ, तो भी तुम ने नहीं सुना, और तुम्हें कहलाता आया परन्तु तुम नहीं बोले, १४ इसलिए यह भवन जो मेरा कहलाता है, जिस पर तुम भरोसा रखते हो, और यह स्थान जो मैंने तुम को और तुम्हारे पूर्वजों को दिया था, इसकी दशा मैं शीलों की सी कर दूँगा। १५ और जैसा मैंने तुम्हारे सब भाइयों को अर्थात् सरे ऐप्रिमियों को अपने सामने से दूर कर दिया है, वैसा ही तुम को भी दूर कर दूँगा। १६ “इस प्रजा के लिये त् प्रार्थना मत कर, न इन लोगों के लिये ऊँचे स्वर से पुकार न मुझसे विनती कर, क्योंकि मैं तेरी नहीं सनूँगा।” १७ क्या तू नहीं देखता कि ये लोग यहदा के नारों और यस्शलेम की सड़कों में क्या कर रहे हैं? १८ देख, बाल-बच्चे तो ईंधन बटोरते, बाप आग सुलगाते और छिंवाँ आठा गैंधीति हैं, कि स्वर्ण की रानी के लिये रोटियाँ चढ़ातँ; और मुझे क्रोधित करने के लिये तुम्हे देवताओं के लिये तपावन दें। १९ यहोवा की यह वाणी है, क्या वे मुझी को क्रोध दिलाते हैं? क्या वे अपने ही को नहीं जिससे उनके मुँह पर उदासी छाए? २० अतः प्रभु यहोवा ने यह कहा है, क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या मैदान के वृक्ष, क्या भूमि की उपज, उन सब पर जो इस स्थान में हैं, मेरे कोप की आग भड़कने पर हैं; वह नित्य जलती रहेगी और कभी न बुझेगी।” २१ सेनाओं का यहोवा जो इसाएल का परमेश्वर है, यह कहता है, “अपने मेलबलियों के साथ अपने होमबलि भी चढ़ाओ और माँस खाओ।” २२ क्योंकि जिस समय मैंने तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश में से निकाला, उस समय मैंने उन्हें होमबलि और मेलबलि के विषय कुछ आज्ञा न दी थी। २३ परन्तु मैंने तो उनको यह आज्ञा दी कि मेरे चरन को मानो, तब मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा, और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे; और जिस मार्ग की मैं तुम्हें आज्ञा दूँ उसी में चलो, तब तुम्हारा भला होगा। २४ पर उन्होंने मेरी न सुनी और न मेरी बातों पर कान लगाया; वे अपनी ही युक्तियों और अपने बुरे मन के हठ पर चलते रहे और पीछे हट गए पर आगे न बढ़े। २५ जिस दिन तुम्हारे पुरुखा मिस्र देश से निकले, उस दिन से आज तक मैं तो अपने सारे दासों, भविष्यद्वत्काओं को, तुम्हारे पास बड़े यद्र से लगातार भेजता रहा; २६ परन्तु उन्होंने मेरी नहीं सुनी, न अपना कान लगाया; उन्होंने हठ किया, और अपने पुरुखाओं से बढ़कर बुराइयों की है। २७ “तू सब बातें उससे कहेगा पर वे तेरी न सुनेंगे; त उनको बुलाएगा, पर वे न बोलेंगे।” २८ तब त उनसे कह देना, ‘यह वही जाति है जो अपने परमेश्वर यहोवा की नहीं सुनती, और ताड़ा से भी नहीं मानती; सच्चाई नाश हो गई, और उनके मुँह से दूर हो गई है।” २९ “‘अपने बाल मुँडाकर फेंक दे; मुँडे टीतों पर चढ़कर बिलाप का गीत गा, क्योंकि यहोवा ने इस समय के निवासियों पर क्रोध किया और उन्हें निकम्मा जानकर त्याग दिया है।’” ३० “यहोवा की यह वाणी है, इसका कारण यह है कि यहदियों ने वह काम किया है, जो मेरी दृष्टि में बुरा है; उन्होंने उस भवन में जो मेरा कहलाता है, अपनी धृष्टिकाम की तराई में तोपेत नामक ऊँचे स्थान बनाकर, अपने बेटे-बेटियों को आग में जलाया है, जिसकी आज्ञा मैंने कभी नहीं दी और न मेरे मन में वह कभी आया।” ३१ यहोवा की यह वाणी है, इसलिए ऐसे दिन आते हैं कि वह तराई फिर न तो तोपेत की

और न हिन्नोमवंशियों की कहलाएगी, वरन् घात की तराई कहलाएगी; और तोपेत में इतनी कब्रें होंगी कि और स्थान न रहेगा। ३२ इसलिए इन लोगों की लोथें आकाश के पक्षियों और पृथ्वी के पशुओं का आहार होंगी, और उनको भगानेवाला कोई न रहेगा। ३३ उस समय मैं ऐसा करूँगा कि यहदा के नगरों और यस्शलेम की सड़कों में न तो हर्ष और अनन्द का शब्द सुन पड़ेगा, और न दुल्हे और न दुल्हन का; क्योंकि देश उजाड़ ही उजाड़ हो जाएगा।

“यहोवा की यह वाणी है, उस समय यहदा के राजाओं, हाकिमों, याजकों, भविष्यद्वत्काओं और यस्शलेम के रहनेवालों की हड़ियों कब्रों में से निकालकर, ३४ सूर्य, चन्द्रमा और आकाश के सारे गणों के सामने फैलाई जाएंगी; क्योंकि वे उन्हीं से प्रेम रखते, उन्हीं की सेवा करते, उन्हीं के पीछे चलते, और उन्हीं के पास जाया करते और उन्हीं को दण्डवत् करते थे; और न वे इकट्ठी की जाएंगी न कब्र में रखी जाएंगी; वे भूमि के ऊपर खाद के समान पड़ी रहेंगी।” ३५ तब इस बुरे कुल के बचे हुए लोग उन सब स्थानों में जिसमें मैंने उन्हें निकाल दिया है, जीवन से मृत्यु ही को अधिक चाहेंगे, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।” ३६ “तू उनसे यह भी कह, यहोवा यह कहता है कि जब मनुष्य गिरते हैं तो क्या फिर नहीं उठते? ३७ जब कोई भटक जाता है तो क्या वह लौट नहीं आता? फिर क्या कारण है कि ये यस्शलेमी सदा दूर ही दूर भटकते जाते हैं? ये छल नहीं छोड़ते, और फिर लौटने से इन्कार करते हैं। ३८ मैंने ध्यान देकर सुना, परन्तु ये ठीक नहीं बोलते; इसमें से किसी ने अपनी बुराई से पछातकर नहीं कहा, ‘हाय! मैंने यह क्या किया है?’ जैसा घोड़ा लडाई में बेग से दौड़ता है, वैसे ही इसमें से हर एक जन अपनी ही दौड़ में दौड़ता है। ३९ आकाश में सारास भी अपने नियत समयों को जानता है, और पंडुकी, सूपारेनी, और बगुला भी अपने अनेकों का समय रखते हैं; परन्तु मेरी प्रजा यहोवा का नियम नहीं जानती।” ४० “मुम कैसे कह सकते हो कि हम बुद्धिमान हैं, और यहोवा की दी ही हड्डी व्यवस्था हमारे साथ है? परन्तु उनके शाश्वियों ने उसका झटा विवरण लिखकर उसको झटक बना दिया है।” ४१ बुद्धिमान लज्जित हो गए, वे विस्मित हुए और पकड़े गए, देखो, उन्होंने यहोवा के वचन को निकम्मा जाना है, उनमें बुद्धि कहाँ रही? ४२ इस कारण मैं उनकी छियों को दूसरे पुस्तों के और उनके खेत दूसरे अधिकारियों के वश में कर दूँगा, क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक वे सब के सब लालची हैं; क्या भविष्यद्वत्का क्या याजक, वे सब छल से काम करते हैं। ४३ उन्होंने, ‘शान्ति है, शान्ति’ ऐसा कह कहकर मेरी प्रजा के घाव को ऊपर ही ऊपर चंगा किया, परन्तु शान्ति कुछ भी नहीं है। ४४ क्या वे धृष्टिकाम करके लज्जित हुए? नहीं, वे कुछ भी लज्जित नहीं हुए, वे लज्जित होना जानते ही नहीं। इस कारण जब और लोग नीचे गिरें, तब वे भी गिरेंगे; जब उनके दण्ड का समय आएगा, तब वे भी ठोकर खाकर गिरेंगे, यहोवा का यही वचन है। ४५ यहोवा की यह भी वाणी है, मैं उन सभी का अन्त कर दूँगा। न तो उनकी दाखलताओं में दाख वापस आएंगी, और न अंजीर के वृक्ष में अंजीर वरन् उनके पते भी सूख आएंगे, और जो कुछ मैंने उन्हें दिया है वह उनके पास से जाता रहेगा।” ४६ हम क्यों चुप-चप बैठे हैं? आओ, हम चलकर गढ़वाले नारों में इकट्ठे नाश हो जाएँ; क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा हमको नाश करना चाहता है, और हमें विष पीने को दिया है; क्योंकि हमने यहोवा के विस्तृ पाप किया है। ४७ हम शान्ति की बाट जोहते थे, परन्तु कुछ कल्याण नहीं मिला, और चंगाई की आशा करते थे, परन्तु घबराना ही पड़ा है। ४८ “उनके घोड़ों का फुराना दान से सुनाई देता है, और बलवन्त घोड़ों के हिनहिनाने के शब्द से सारा देश काँप उठा है।” ४९ उन्होंने आकर हमारे देश को और जो कुछ उसमें है, और हमारे नगर को निवासियों समेत नाश किया है। ५० क्योंकि देखो, मैं तुम्हारे बीच में ऐसे साँप और नाग भेजूँगा जिन पर मंत्र न

चलेगा, और वे तुम को डरेंगे,” यहोवा की यही वाणी है। १५ हाय! हाय! इस शोक की दशा में मुझे शान्ति कहाँ से मिलेगी? मेरा हृदय भीतर ही भीतर तड़पता है। १६ मुझे अपने लोगों की चिल्लाहट दूर के देश से सुनाई देती है: “क्या यहोवा सिय्योन में नहीं है? क्या उसका राजा उसमें नहीं?” “उन्होंने क्यों मुझ को अपनी खोदी हूई मूर्तों और परदेश की व्यथ कस्तुओं के द्वारा क्रोध दिलाया है?” १७ “कठनी का समय बीत गया, फल तोड़ने की ऋत भी समाप्त हो गई, और हमारा उद्घार नहीं हुआ।” १८ अपने लोगों के कुछ से मैं भी दुखित हुआ, मैं शोक का पहरावा पहने अति अचम्भे में डूबा हूँ। १९ क्या गिलाद देश में कुछ बल्सान की औषधि नहीं? क्या उसमें कोई वैद्य नहीं? यदि है, तो मेरे लोगों के घाव क्यों चंगे नहीं हैं?

१ भला होता, कि मेरा सिर जल ही जल, और मेरी आँखें आँसुओं का सोता होती, कि मैं रात दिन अपने मारे गए लोगों के लिये रोता रहता। २ भला होता कि मुझे जंगल में बटोहियों का कोई टिकाव मिलता कि मैं अपने लोगों को छोड़कर वहीं चला जाता। क्योंकि वे सब व्यभिचारी हैं, वे विश्वासघातियों का समाज हैं। ३ अपनी-अपनी जीभ को वे धनुष के समान झूठ बोलने के लिये तैयार करते हैं, और देश में बलवन्त तो हो गए, परन्तु सच्चाई के लिये नहीं, वे बुराई पर बुराई बढ़ाते जाते हैं, और वे मुझ को जानते ही नहीं, यहोवा की यही वाणी है। ४ अपने-अपने संगी से चौकस रहे, अपने भाई पर भी भरोसा न रखो; क्योंकि सब भाई निश्चय अड़गा मारेंगे, और हर एक पड़ोसी लुत्तराई करते फिरेंगे। ५ वे एक दूसरे को ठगेंगे और सच नहीं बोलेंगे; उन्होंने झूठी ही बोलना सीखा है, और कुटिलता ही मैं परिश्रम करते हैं। ६ तेरा विवास छल के बीच है; छल ही के करण वे मेरा ज्ञान नहीं चाहते, यहोवा की यही वाणी है। ७ इसलिए सेनाओं का यहोवा यह कहता है, “देख, मैं उनको तपाकर परखूँगा, क्योंकि अपनी प्रजा के करण मैं उनसे और क्या कर सकता हूँ? ८ उनकी जीभ काल के तीर के समान बेधनेवाली है, उससे छल की बातें निकलती हैं; वे मूँह से तो एक दूसरे से मेल की बात बोलते हैं पर मन ही मन एक दूसरे की घात में लगे रहते हैं। ९ क्या मैं ऐसी बातों का टण्ड न ढूँ? यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं ऐसी जाति से अपना पलटा न लूँ? १० “मैं पहाड़ों के लिये रो उटँगा और शोक का गीत गाऊँगा, और जंगल की चराइयों के लिये विलाप का गीत गाऊँगा, क्योंकि वे ऐसे जल गए हैं कि कोई उनमें से होकर नहीं चलता, और उनमें पशुओं का शब्द भी नहीं सुनाई पड़ता; पशु-पक्षी सब भाग गए हैं। ११ मैं यस्तलेम को खण्डहर बनाकर गीढ़ोंका स्थान बनाऊँगा, और यहदा के नगरों को ऐसा उजाड़ दृঃग कि उनमें कोई न बसेगा।” १२ जो बुद्धिमान पुस्त हो वह इसका भेद समझ ले, और जिसने यहोवा के मुख से इसका करण सुना हो वह बता दे। देश का नाश क्यों होता है? क्यों वह जंगल के समान ऐसा जल गया कि उसमें से होकर कोई नहीं चलता? १३ और यहोवा ने कहा, “क्योंकि उन्होंने मेरी व्यवस्था को जो मैंने उनके अगे रखी थी छोड़ दिया; और न मेरी बात मानी और न उसके अनुसार चले हैं, १४ वरन् वे अपने हठ पर बाल नामक देवताओं के पीछे चले, जैसा उनके पुरखाओं ने उनको सिखाया। १५ इस करण, सेनाओं का यहोवा, इस्माएल का परमेश्वर यह कहता है, सुन, मैं अपनी इस प्रजा को कड़वी वस्तु खिलाऊँगा और विष पिलाऊँगा। १६ मैं उन लोगों को ऐसी जातियों में निर-वितर करूँगा जिहें न तो वे न उनके पुरखा जानते थे; और जब तक उनका अन्त न हो जाए तब तक मेरी ओर से तलवार उनके पीछे पड़ी रहेगी।” १७ सेनाओं का यहोवा यह कहता है, “सोचो, और विलाप करनेवालियों को बुलाओ; बुद्धिमान खिलों को बुलावा भेजो; १८ वे फुर्ती करके हम लोगों के लिये शोक का गीत गाएँ कि हमारी आँखों से आँसू बह चलें और हमारी पलकें जल बहाए। १९ सिय्योन से

शोक का यह गीत सुन पड़ता है, ‘‘हम कैसे नाश हो गए! हम क्यों लज्जा में पड़ गए हैं, क्योंकि हमको अपना देश छोड़ना पड़ा और हमारे घर गिरा दिए गए हैं।’’ २० इसलिए, हे खिलों, यहोवा का यह वचन सुनो, और उसकी यह आज्ञा मानो; तुम अपनी-अपनी बेटियों को शोक का गीत, और अपनी-अपनी पडोसिनों को विलाप का गीत सिखाओ। २१ क्योंकि मृत्यु हमारी खिडकियों से होकर हमारे महलों में धूस आई है, कि हमारी सड़कों में बच्चों को और चौकों में जवानों को मिटा दे। २२ तू कह, “यहोवा यह कहता है, ‘‘मनुष्यों की लोथें ऐसी पड़ी रहेंगी जैसा खाद खेत के ऊपर, और पूलियाँ काटनेवाले के पीछे पड़ी रहती हैं, और उनका कोई उठानेवाला न होगा।’’ २३ यहोवा यह कहता है, “बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे, न वीर अपनी वीरता पर, न धनी अपने धन पर घमण्ड करे; २४ परन्तु जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमण्ड करे, कि वह मुझे जानता और समझता है, कि मैं ही वह यहोवा हूँ, जो पृथकी पर कम्पा, न्याय और धार्मिकता के काम करता है; क्योंकि मैं इन्ही बातों से प्रसन्न रहता हूँ। २५ “देखो, यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आनेवाले हैं कि जिनका खतना हुआ हो, उनको खतनारहितों के समान दण्ड दृँगा, २६ अर्थात् मिलियों, यहदियों, एदोमियों, अमोनियों, मोआबियों को, और उन रेगिस्तान के निवासियों के समान जो अपने गाल के बालों को मैंडा डालते हैं; क्योंकि वे सब जातियाँ तो खतनारहित हैं, और इस्माएल का सारा घराना भी मन में खतनारहित है।”

१० यहोवा यह कहता है, हे इस्माएल के घराने जो वचन यहोवा तुम से कहता है उसे सुनो। ११ “अन्यजातियों की चाल मत सीखो, न उनके समान आकाश के विन्धों से विस्तित हो, इसलिए कि अन्यजाति लोग उनसे विस्तित होते हैं। १२ क्योंकि देशों के लोगों की रीतियाँ तो निकम्मी हैं। मूरत तो बन में से किसी का काटा हुआ काठ है जिसे कारीगर ने बस्ले से बनाया है। १३ लोग उसको सोने-चाँदी से सजाते और हथौडे से कील ठोक-ठोकर दृढ़ करते हैं कि वह हिल-डल न सके। १४ वे कठकड़ी के खेत में खेड़े पुलते के समान हैं, पर वे बोल नहीं सकती; उन्हें उठाए फिरना पड़ता है, क्योंकि वे चल नहीं सकती। उनसे मत डरो, क्योंकि, न तो वे कुछ बुरा कर सकती हैं और न कुछ भला।” १५ हे यहोवा, तेरे समान कोई नहीं है; तू महान है, और तेरा नाम पराक्रम में बढ़ा है। १६ हे सब जातियों के राजा, तुझ से कौन न डेरगा? क्योंकि यह तेरे योग्य है; अन्यजातियों के सारे बुद्धिमानों में, और उनके सारे राज्यों में तेरे समान कोई नहीं है। १७ वे पृथकी और निर्वृद्धि हैं, मर्मियों से क्या शिक्षा? वे तो काठ ही हैं! १८ पतर बनाई हूई चाँदी तशीश से लाई जाती है, और ऊफाज से सोना। वे कारीगर और सुनार के हाथों की कारीगरी हैं, उनके पहरावे नीले और बैगीनी रंग के वक्ष हैं, उनमें जो कुछ है वह निषुणा कारीगरों की कारीगरी ही है। १९ २० परन्तु यहोवा वास्तव में परमेश्वर है; जीवित परमेश्वर और सदा का राजा वही है। उसके प्रकोप से पृथकी काँपती है, और जाति-जाति के लोग उसके क्रोध को सह नहीं सकते। २१ तुम उनसे यह कहना, “ये देवता जिन्होंने आकाश और पृथकी को नहीं बनाया वे पृथकी के ऊपर से और आकाश के नीचे से नहीं जो जाँचा।” २२ उसी ने पृथकी को अपनी सामर्थ्य से बनाया, उसने जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया, और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है। २३ जब वह बोलता है तब आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है, और पृथकी की छोड़े से वह कुरहे को उठाता है। वह वर्षा के लिये बिजली चमकाता, और उपने भण्डार में से पबन चलता है। २४ सब मनुष्य मूर्ख और ज्ञानरहित हैं; अपनी खोदी हूई मूरतों के कारण सब सुनारों की आशा टूटी है; क्योंकि उनकी ढाली हूई मूरतें झटी हैं, और उनमें साँस ही नहीं है। २५ वे व्यथ और ठड़े ही के योग्य हैं; जब उनके दण्ड का समय आएगा तब वे नाश हो

जाएँगी। १५ परन्तु याकूब का निज भाग उनके समान नहीं है, क्योंकि वह तो सब का सजनहार है, और इसाएल उसके निज भाग का गोत्र है; सेनाओं का यहोवा उसका नाम है। १६ हे घेरे हुए नगर की रहनेवाली, अपनी गढ़ी भूमि पर से उठा! १७ क्योंकि यहोवा यह कहता है, “मैं अब की बार इस देश के रहनेवालों को मानो गोफन में रखकर फेंक दूँगा, और उन्हें ऐसे-ऐसे संकट में डालूँगा कि उनकी समझ में भी नहीं आएगा।” १८ मुझ पर हाय! मेरा घाव चंगा होने का नहीं। फिर मैंने सोचा, “यह तो रोग ही है, इसलिए मुझ को इसे सहना चाहिये।” १९ मेरा तम्बू लूटा गया, और सब रसियाँ दूट गई हैं; मेरे बच्चे मेरे पास से चले गए, और नहीं हैं; अब कोई नहीं रहा जो मेरे तम्बू को ताने और मेरी कनातें खड़ी करे। २० क्योंकि चरवाहे पशु सरीखे हैं, और वे यहोवा को नहीं पुकारते; इसी कारण वे बुद्धि से नहीं चलते, और उनकी सब भेड़े तिरन-बिर हो गई हैं। २१ सुन, एक शब्द सुनाई देता है! देख, वह आ रहा है! उत्तर दिशा से बड़ा हुल्लड मच रहा है ताकि यहदा के नारों को उजाड़ कर गीदड़ों का स्थान बना दे। २२ हे यहोवा, मैं जान गया हूँ, कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं। २३ हे यहोवा, मेरी ताङड़ना कर, पर न्याय से; क्रोध में आकर नहीं, कहीं ऐसा न हो कि मैं नाश हो जाऊँ। २४ जो जाति तुझे नहीं जानती, और जो तुझ से प्रार्थना नहीं करते, उन्हीं पर अपनी जलजलाहट उण्डेल; क्योंकि उन्होंने याकूब को निगल लिया, वरन् उसे खाकर अन्त कर दिया है, और उसके निवास-स्थान को उजाड़ दिया है।

११ यहोवा का यह वचन धर्मयाह के पास पहुँचा २ “इस वाचा के वचन सुनो, और यहदा के पुरुषों और यस्शलेम के रहनेवालों से कहो। ३ उनसे कहो, इसाएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, शापित है वह मनुष्य, जो इस वाचा के वचन न माने ४ जिसे मैंने तुम्हारे पुरखाओं के साथ लोहे की भट्ठी अर्थात् मिस्र देश में से निकालने के समय, यह कहकर बाँधी थी, मेरी सुनो, और जितनी आजाएँ मैं तुम्हें देता हूँ उन सभी का पालन करो। इससे तुम मेरी प्रजा ठहरेगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहसँगा; ५ और जो शपथ मैंने तुम्हारे पितरों से खाई थी कि जिस देश में दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, उसे मैं तुम को दूंगा, उसे पूरी करूँगा; और देखो, वह पूरी हड्डी है।” यह सुनकर मैंने कहा, “हे यहोवा, आमीन।” ६ तब यहोवा ने मुझसे कहा, “ये सब वचन यहदा के नारों और यस्शलेम की सड़कों में प्रचार करके कह, इस वाचा के वचन सुनो और उसके अनुसार चलो। ७ क्योंकि जिस समय से मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र देश से छुड़ा ले आया तब से आज के दिन तक उनको ढूँढ़ता से चिताता आया हूँ, मेरी बात सुनो। ८ परन्तु उन्होंने न सुनी और न मेरी बातों पर कान लगाया, किन्तु अपने-अपने खेर मन के हठ पर चलते रहे। इसलिए मैंने उनके विषय इस वाचा की सब बातों को पूर्ण किया है जिसके मानने की मैंने उन्हें आज्ञा दी थी और उन्होंने न मानी।” ९ फिर यहोवा ने मुझसे कहा, “यहदियों और यस्शलेम के निवासियों में विद्रोह पाया गया है। १० जैसे इनके पुरखा मेरे वचन सुनने से इन्कार करते थे, वैसे ही ये भी उनके अधर्मी का अनुसरण करके दूसरे देवताओं के पीछे चलते और उनकी उपासना करते हैं, इसाएल और यहदा के धरानों ने उस वाचा को जो मैंने उनके पूर्वजों से बाँधी थी, तोड़ दिया है। ११ इसलिए यहोवा यह कहता है, देख, मैं इन पर ऐसी विपत्ति डालने पर तुझसे ये बच न सकेंगे; और चाहे ये मेरी दुहाई दें तो भी मैं इनकी न सुनूँगा। १२ उस समय यस्शलेम और यहदा के नारों के निवासी उन देवताओं की दुहाई देंगे जिनके लिये वे धूप जलाते हैं, परन्तु वे उनकी विपत्ति के समय उनको कभी न बचा सकेंगे। १३ हे यहदा, जितने तेरे नगर हैं

उतने ही तेरे देवता भी हैं; और यस्शलेम के निवासियों ने हर एक सड़क में उस लज्जापूर्ण बाल की वेटियाँ बना-बनाकर उसके लिये धूप जलाया है। १४ “इसलिए तू मेरी इस प्रजा के लिये प्रार्थना न करना, न कोई इन लोगों के लिये ऊँचे स्वर से विनती करे, क्योंकि जिस समय ये अपनी विपत्ति के मारे मेरी दुहाई देंगे, तब मैं उनकी न सुनूँगा।” १५ मेरी प्रिया को मेरे घर में क्या काम है? उसने तो बहुतों के साथ कुकर्म किया, और तेरी पवित्रता पूरी रीत से जाती रही है। जब तु बुराई करती है, तब प्रसन्न होती है। १६ यहोवा ने तुझको हरा, मनोहर, सुन्दर फलवाला जैतून तो कहा था, परन्तु उसने बड़े हुल्लड के शब्द होते ही उसमें आग लगाई, और उसकी डालियाँ तोड़ डाली गईं। १७ सेनाओं का यहोवा, जिसने तुझे लगाया, उसने तुझ पर विपत्ति डालने के लिये कहा है; इसका कारण इसाएल और यहदा के धरानों की यह बुराई है कि उन्होंने मुझे रिस दिलाने के लिये बाल के निमित्त धूप जलाया।” १८ यहोवा ने मुझे बताया और यह बात मुझे मालूम हो गई; क्योंकि यहोवा ही ने उनकी युक्तियाँ मुझ पर प्रगट की। १९ मैं तो वध होनेवाले भेड़ के बच्चे के समान अनजान था। मैं न जानता था कि वे लोग मेरी हानि की युक्तियाँ यह कहकर करते हैं, “आओ, हम फल समेत इस वृक्ष को उडाड़ दें, और जीवितों के बीच में से काट डालें, तब इसका नाम तक फिर स्मरण न रहे।” २० परन्तु, अब हे सेनाओं के यहोवा, हे धर्मी न्यायी, हे अन्तःकरण की बातों के ज्ञाता, तु उनका पलटाला ले और मुझे दिखा, क्योंकि मैंने अपना मुकदमा तेरे हाथ में छोड़ दिया है। २१ इसलिए यहोवा ने मुझसे कहा, “अनातोत के लोग जो तेरे प्राण के खोजी हैं और यह कहते हैं कि तु यहोवा का नाम लेकर भविष्यद्वायी न कर, नहीं तो हमारे हाथों से मरेगा। २२ इसलिए सेनाओं का यहोवा उनके विषय यह कहता है, मैं उनको दण्ड दूँगा; उनके जवान तलवार से, और उनके लड़के-लड़कियाँ भूखे मरेंगे; २३ और उनमें से कोई भी न बचेगा। मैं अनातोत के लोगों पर यह विपत्ति डालूँगा; उनके दण्ड का दिन आनेवाला है।”

१२ हे यहोवा, यदि मैं तुझ से मुकदमा लड़ूँ, तो भी तू धर्मी है; मुझे अपने साथ इस विषय पर वाद-विवाद करने दे। दुष्टों की चाल क्यों सफल होती है? क्या कारण है कि विश्वासघाती बहुत सुख से रहते हैं? २ तु उनको बोता और वे जड़ भी पकड़ते, वे बढ़ते और फलते भी हैं; तु उनको मूँह के निकट है परन्तु उनके मनों से दूर है। ३ हे यहोवा तु मुझे जानता है, तु मुझे देखता है, और तूने मेरे मन की परीक्षा करके देखा कि मैं तेरी ओर किस प्रकार रहता हूँ। ४ जैसे मेड-बकरियाँ बात होने के लिये झुण्ड में से निकाली जाती हैं, वैसे ही उनको भी निकाल ले और वध के दिन के लिये तेयार कर। ५ कब तक देश विलाप करता रहेगा, और सारे मैदान की धास सूखी रहेगी? देश के निवासियों की दुहाई के कारण पशु-पक्षी सब नाश हो गए हैं, क्योंकि उन लोगों ने कहा, “वह हमारे अन्त को न देखेगा।” ६ “तू जो प्यादों ही के संग दौड़कर थक गया है तो घोड़ों के संग कैसे बराबरी कर सकेगा? और यधपि तू शान्ति के इस देश में निडर है, परन्तु यहरन के आस-पास के घने जंगल में तु क्या करेगा? ७ क्योंकि तेरे भाई और तेरे घराने के लोगों ने भी तेरा विश्वासघात किया है, वे तेरे पीछे ललकारते हैं, यदि वे तुझ से मीठी बातें भी कहें, तो भी उन पर विश्वास न करना।” ८ “मैंने अपना घर छोड़ दिया, अपना निज भाग मैंने त्याग दिया है, मैंने अपनी प्राणप्रिया को शत्रुओं के वश में कर दिया है। ९ क्योंकि मेरा निज भाग मैंने त्याग मैंने देखने में वन के सिंह के समान हो गया और मेरे विश्वास गरजा है; इस कारण मैंने उससे बैर किया है। १० क्या मेरा निज भाग मेरी दृष्टि में चित्तीवाले शिकारी पक्षी के समान नहीं है? क्या शिकारी पक्षी चारों ओर से उसे घेरे हुए हैं? जाओ सब जंगली पशुओं को

इकश्ता करो; उनको लाओ कि खा जाएँ। १० बहुत से चरवाहों ने मेरी दाख की बारी को बिगाड़ दिया, उन्होंने मेरे भाग को लताड़ा, बरन् मेरे मनोहर भाग के खेत को सुनसान जंगल बना दिया है। ११ उन्होंने उसको उजाड़ दिया; वह उजड़कर मेरे सामने खिलाप कर रहा है। सारा देश उजड़ गया है, तो भी कोई नहीं सोचता। १२ जंगल के सब मुंडे टीलों पर नाश करनेवाले चढ़ आए हैं; क्योंकि यहोवा की तलवार देश के एक छोर से लेकर दूसरी छोर तक निगलती जाती है, किसी मनुष्य को सान्ति नहीं मिलती। १३ उन्होंने गेहूँ तो बोया, परन्तु कॅंटीली झाड़ियाँ काटी, उन्होंने कष्ट तो उठाया, परन्तु उससे कुछ लाभ न हुआ। यहोवा के क्रोध के भड़कने के कारण वे अपने खेतों की उपज के विषय में लज्जित हो।” १४ मेरे दृष्ट पड़ोसी उस भाग पर हाथ लगाते हैं, जिसका भागी मैंने अपनी प्रजा इस्माएल को बनाया है। उनके विषय यहोवा यह कहता है: “मैं उनको उनकी भूमि में से उखाड़ा, और यहदा के घराने को भी उनके बीच में से उखाड़ूँगा। १५ उन्हें उखाड़ने के बाद मैं फिर उन पर दया करूँगा, और उनमें से हर एक को उसके निज भाग और भूमि में फिर से लगाऊँगा। १६ यदि वे मेरी प्रजा की चाल सीखकर मेरे ही नाम की सौगन्ध, यहोवा के जीवन की सौगन्ध, खाने लगों, जिस प्रकार से उन्होंने मेरी प्रजा को बाल की सौगन्ध खाना सिखाया था, तब मेरी प्रजा के बीच उनका भी वंश बढ़ेगा। १७ परन्तु यदि वे न मारें, तो मैं उस जाति को ऐसा उखाड़ूँगा कि वह फिर कभी न परेगी, यहोवा की यही वाणी है।”

१३ यहोवा ने मुझसे यह कहा, “जाकर सभी की एक कमरबन्द मोल ले, उसे कमर में बौंध और जल में मत भीगान दे।” २ तब मैंने एक कमरबन्द मोल लेकर यहोवा के वचन के अनुसार अपनी कमर में बौंध ली। ३ तब दूसरी बार यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, ४ “जो कमरबन्द तुमें मोल लेकर कमर में कस ली है, उसे फरात के टट पर ले जा और वहाँ उसे चूटान की एक दरार में छिपा दे।” ५ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मैंने उसको फरात के टट पर ले जाकर छिपा दिया। ६ बहुत दिनों के बाद यहोवा ने मुझसे कहा, “उठ, फिर फरात के पास जा, और जिस कमरबन्द को मैंने तुझे वहाँ छिपाने की आज्ञा दी उसे वहाँ से ले ले।” ७ तब मैं फरात के पास गया और खोदकर जिस स्थान में मैंने कमरबन्द को छिपाया था, वहाँ से उसको निकाल लिया। और देखो, कमरबन्द बिगड़ गई थी; वह किसी काम की न रही। ८ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, “यहोवा यह कहता है, ९ इसी प्रकार से मैं यहदियों का घमण्ड, और यस्शलेत्र का बड़ा गर्व नष्ट कर दूँगा। १० इस दृश्य जाति के लोग जो मेरे वचन सुनने से इन्कार करते हैं जो अपने मन के हठ पर चलते, दूसरे देवताओं के पीछे चलकर उनकी उपासना करते और उनको दण्डवत् करते हैं, वे इस कमरबन्द के समान हो जाएँगे जो किसी काम की नहीं रही। ११ यहोवा की यह वाणी है कि जिस प्रकार से कमरबन्द मनुष्य की कमर में कसी जाती है, उसी प्रकार से मैंने इस्माएल के सारे घराने और यहदा के सारे घराने को अपनी कमर में बौंध लिया था कि वे मेरी प्रजा बनें और मेरे नाम और कीर्ति और शोभा का कारण हों, परन्तु उन्होंने न माना। १२ “इसलिए तू उनसे यह वचन कह, ‘इस्माएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, दाखमधु के सब कुपे दाखमधु से भर दिए जाएँगे।’ तब वे तुझे से कहेंगे, ‘क्या हम नहीं जानते कि दाखमधु के सब कुपे दाखमधु से भर दिए जाएँगे?’ १३ तब तू उनसे कहना, ‘यहोवा यह कहता है, देखो, मैं इस देश के सब रहनेवालों को, विशेष करके दाऊदवंश की ग़दी पर विराजमान राजा और याजक और भविष्यद्वुता आदि यस्शलेत्र के सब निवासियों को अपनी कोपस्ती मदिरा पिलाकर अचेत कर दूँगा। १४ तब मैं उन्हें एक दूसरे से टकरा दूँगा; अर्थात् बाप को बेटे से, और बेटे को बाप से, यहोवा की यह वाणी है। मैं उन पर कोमलता नहीं दिखाऊँगा, न

तरस खाऊँगा और न दया करके उनको नष्ट होने से बचाऊँगा।” १५ देखो, और कान लगाओ, गर्व मत करो, क्योंकि यहोवा ने यह कहा है। १६ अपने परमेश्वर यहोवा की बड़ाई करो, इससे पक्के कि वह अंधकार लाए और तुहरे पाँव अंधेरे पहाड़ों पर ठोकर खाएँ, और जब तुम प्रकाश का आसरा देखो, तब वह उसको मृत्यु की छाया में बदल दे और उसे घोर अंधकार बना दे। १७ यदि तुम इसे न सुनो, तो मैं अकेले मैं तुहरे गर्व के कारण रोऊँगा, और मेरी आँखों से आँसूओं की धारा बहती रहेगी, क्योंकि यहोवा की भेड़ें बँधुआ कर ली गई हैं। १८ राजा और राजमाता से कह, “नीचे बैठ जाओ, क्योंकि तुम्हारे सिरों के शोभायमान मुकुट उतार लिए गए हैं। १९ दक्षिण देश के नगर घेरे गए हैं, कोई उन्हें बचा न सकेगा; सम्पूर्ण यहदी जाति बद्दी हो गई है, वह पूरी रीत से बँधुआई में चली गई है। २० “अपनी आँखें उठाकर उनको देख जो उत्तर दिशा से आ रहे हैं। वह सुन्दर झाँण्ड जो तुझे सौंपा गया था कहाँ है? २१ जब वह तेरे उन मित्रों को तेरे ऊपर प्रधान ठहराएँ जिन्हें तूने अपनी हानि करने की शिक्षा दी है, तब तू क्या कहेगी? क्या उस समय तुझे जच्चा की सी पीड़ाएँ न उठेंगी? २२ यदि तू अपने मन में सोचे कि ये बातें किस कारण मुझ पर पड़ी हैं, तो तेरे बड़े अर्द्ध के कारण तेरा आँचल उठाया गया है और तेरी एड़ीयाँ बलपूर्वक नांगी की गई हैं। २३ क्या कृशी अपना चमड़ा, या चीता अपने धब्बे बदल सकता है? यदि वे ऐसा कर सके, तो तू भी, जो बुराई करना सीधा गई है, भलाई कर सकेगी। २४ इस कारण मैं उनको ऐसा तितर-बितर कहूँगा, जैसा भूमा जंगल के पवन से तितर-बितर किया जाता है। २५ यहोवा की यह वाणी है, तेरा हिस्सा और मुझसे ठहराया हुआ तेरा भाग यही है, क्योंकि तूने मुझे भूलकर इन्हें पर भरोसा रखवा है। २६ इसलिए मैं भी तेरा आँचल तेरे मुँह तक उठाऊँगा, तब तेरी लज्जा जानी जाएगी। २७ व्यधिचार और चोचला और छिनालपन आदि तेरे धिनोने काम जो तूने मैदान और टीलों पर किए हैं, वे सब मैंने देखे हैं। हे यस्शलेम, तुझ पर हाया! तू अपने आपको कब तक शुद्ध न करेगी? और कितने दिन तक तू बनी रहेगी?”

१४ यहोवा का वचन जो यर्मियाह के पास सुखा पड़ने के विषय में पहुँचा १ “यहोवा विलाप करता और फाटकों में लोग शोक का पहरावा पहने हुए भूमि पर उदास बैठे हैं; और यस्शलेम की चिल्लाहट आकाश तक पहुँच गई है। २ उनके बड़े लोग उनके छोटे लोगों को पानी के लिये भेजते हैं; वे गहों पर आकर पानी नहीं पाते, इसलिए खाली बर्तन लिए हुए घर लौट जाते हैं, वे लज्जित और निराश होकर सिर ढाँप लेते हैं। ३ देश में वर्षा न होने से भूमि में दरार पड़ गई है, इस कारण किसान लोग निराश होकर सिर ढाँप लेते हैं। ४ हिरनी भी मैदान में बच्चा जनकर छोड़ जाती है क्योंकि हरी धास नहीं मिलती। ५ जंगली गदहे भी मुंडे टीलों पर खड़े हुए गीड़ोंके समान हाँफते हैं, उनकी आँखें धूँधला जाती हैं क्योंकि हरियाली कुछ भी नहीं है।” ६ “हे यहोवा, हमारे अर्धम के काम हमारे विस्तु साक्षी दे रहे हैं, हम तेरा संग छोड़कर बहत दूर भटक गए हैं, और हमने तेरे विस्तु पाप किया है; तो भी, तू अपने नाम के निमित्त कुछ कर। ७ हे इस्माएल के आधार, संकट के समय उसका बचानेवाला तू ही है, तू क्यों इस देश में परदेशी के समान है? तू क्यों उस बटोरी के समान है जो रात भर रहने के लिये कही टिकता हो? ८ तू क्यों एक विस्तु पुस्त या ऐसे बीर के समान है जो बचा न सके? तो भी हे यहोवा तू हमारे बीच में है, और हम तेरे कहलाते हैं; इसलिए हमको न तज।” ९ यहोवा ने इन लोगों के विषय यह कहा: “इनको ऐसा भटकना अच्छा लगता है, ये कुर्कम में चलने से नहीं स्के; इसलिए यहोवा इनसे प्रसन्न नहीं है, वह इनका अर्धम स्मरण करेगा और उनके पाप का दण्ड देगा।” १० फिर यहोवा

ने मुझसे कहा, “इस प्रजा की भलाई के लिये प्रार्थना मत कर। १२ चाहे वे उपवास भी करें, तो भी मैं इनकी दुहाई न सुँगा, और चाहे वे होमबलि और अन्बलि चढ़ाएँ, तो भी मैं उनसे प्रसन्न न होऊँगा; मैं तलवार, अकाल और मरी के द्वारा इनका अन्त कर डालूँगा।” १३ तब मैंने कहा, “हाय, प्रभु यहोवा, देख, भविष्यद्वत्का इनसे कहते हैं ‘न तो तुम पर तलवार चलेगी और न अकाल होगा, यहोवा तुम को इस स्थान में सदा की शान्ति देगा।’” १४ तब यहोवा ने मुझसे कहा, “ये भविष्यद्वत्का मेरा नाम लेकर झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं, मैंने उनको न तो भेजा और न कुछ ज्ञाता दी और न उनसे कोई भी बात कही। वे तुम लोगों से दर्शन का इश्टा दाव करके अपने ही मन से व्यथा और धोखे की भविष्यद्वाणी करते हैं। १५ इस कारण जो भविष्यद्वत्का मेरे बिना भेजे मेरा नाम लेकर भविष्यद्वाणी करते हैं ‘उस देश में न तो तलवार चलेगी और न अकाल होगा,’ उनके विषय यहोवा यह कहता है, कि वे भविष्यद्वत्का आप तलवार और अकाल के द्वारा नाश किए जाएँगे। १६ और जिन लोगों से वे भविष्यद्वाणी कहते हैं, वे अकाल और तलवार के द्वारा मर जाने पर इस प्रकार यस्तलेम की सड़कों में फेंक दिए जाएँगे, कि न तो उनका, न उनकी छियों का और न उनके बेटे-बेटियों का कोई मिट्ठी देनेवाला रहेगा। क्योंकि मैं उनकी द्वाई उन्हीं के ऊपर उण्डेलूँगा। १७ “तू उनसे यह बात कह, ‘मेरी आँखों से दिन-रात अँसू-लगातार बहते रहें, वे न स्कें क्योंकि मेरे लोगों की कँवरी बेटी बहत ही कुचली गई और घायल हुई है। १८ यदि मैं मैदान में जाऊँ, तो देखो, तलवार के मारे हुए पड़े हैं और घायल हुई है। १९ यदि मैं भैद्रा के भीतर आऊँ, तो देखो, भूख से अधरे पड़े हैं! क्योंकि भविष्यद्वत्का और याजक देश में कमाई करते फिरते और समझ नहीं रखते हैं।” २० क्या तूने यहदा से बिलकुल हाथ उठा लिया? क्या तु मिथ्योन से घुणा करते हैं? नहीं, तूने क्यों हमको ऐसा मारा है कि हम चंगे हो ही नहीं सकते? हम शान्ति की बाट जोहते रहे, तो भी कुछ कल्पाण हनी हआ, और यथि हम अच्छे हो जाने की आशा करते रहे, तो भी घबराना ही पड़ा है। २१ हे यहोवा, हम अपनी दुष्टा और अपने पुखाओं के अर्धम को भी मान लेते हैं, क्योंकि हमने तेरे विस्तु पाप किया है। २२ अपने नाम के निमित्त हमें न ठुकरा; अपने तेजोयम सिंहासन का अपमान न कर; जो वाचा तूने हमारे साथ बँधी, उसे स्मरण कर और उसे न तोड़। २३ क्या जाति-जाति की मूरतों में से कोई वर्षा कर सकता है? क्या आकाश झ़िड़ीयाँ लगा सकता है? हे हमारे परमेश्वर यहोवा, क्या तू ही इन सब बातों का करनेवाला नहीं है? हम तेरा ही असरा देखते रहेंगे, क्योंकि इन सारी बन्दुओं का सृजनहार तू ही है।

१५ फिर यहोवा ने मुझसे कहा, “यदि मूरा और शम्एल भी मेरे सामने खड़े होते, तो भी मेरा मन इन लोगों की ओर न फिरता। इनको मेरे सामने से निकल दो कि वे निकल जाएँ। २ और यदि वे तुझ से पछें ‘हम कहाँ निकल जाएँ।’ तो कहना ‘यहोवा यह कहता है, जो मरनेवाले हैं, वे मरने को चले जाएँ, जो तलवार से मरनेवाले हैं, वे तलवार से मरने को; जो अकाल से मरनेवाले हैं, वे आकाल से मरने को, और जो बन्दी बननेवाले हैं, वे बँध्युआई में चले जाएँ।’ ३ मैं उनके विस्तु चार प्रकार के विनाश ठहराऊँगा: मार डालने के लिये तलवार, फाड़ डालने के लिये कुत्ते, नोच डालने के लिये आकाश के पक्षी, और फाड़कर खाने के लिये मैदान के हिंसक जन्तु, यहोवा की यह वाणी है। ४ यह हिजकियाह के पुत्र, यहदा के राजा मनश्वे के उन कामों के कारण होगा जो उसने यस्तलेम में किए हैं, और मैं उन्हें ऐसा करूँगा कि वे पृथ्वी के राज्य-राज्य में मारे-मारे फिरेंगे। ५ “हे यस्तलेम, तुझ पर कौन तरस खाएगा, और कौन तेरे लिये शोक करेगा? कौन तेरा कुशल पृछें को तेरी ओर मुडेगा? ६ यहोवा की यह वाणी है कि तू मुझ को त्याग कर पीछे हट गइ है, इसलिए मैं तुझ पर हाथ बढ़ाकर तेरा नाश करूँगा; क्योंकि, मैं तरस खाते-खाते थक गया

हूँ। ७ मैंने उनको देश के फाटकों में सूप से फटक दिया है; उन्होंने कुमारग को नहीं छोड़ा, इस कारण मैंने अपनी प्रजा को निर्विश कर दिया, और नाश भी किया है। ८ उनकी विधवाएँ मैरे देखने में समृद्ध के रेतकों से अधिक हो गई हैं; उनके जवानों की माताओं के विस्तु दुपहरी ही को मैंने लुटेरों को ठहराया है, मैंने उनको अचानक संकट में डाल दिया और घबरा दिया है। ९ सात लड़कों की माता भी बेहाल हो गई और प्राण भी छोड़ दिया; उसका सूर्य दोपहर ही को अस्त हो गया; उसकी आशा टूट गई और उसका मूँह काला हो गया। और जो रह गए हैं उनको भी मैं शत्रुओं की तलवार से मरवा डालूँगा,” यहोवा की यही वाणी है। १० हे मेरी माता, मुझ पर हाय, कि तेरे मुझ ऐसे मनुष्य को उत्पन्न किया जो संसार भर से झ़गड़ा और वाद-विवाद करनेवाला ठहरा है। न तो मैंने ब्याज के लिये स्पस्ये दिए, और न किसी से उधार लिए हैं, तो भी लोग मुझे कोसते हैं। परमेश्वर की प्रतिक्रिया ११ यहोवा ने कहा, “निश्चय मैं तेरी भलाई के लिये तुझे ढूढ़ करूँगा; विपत्ति और कष्ट के समय मैं शत्रु से भी तेरी विनती कराऊँगा। १२ क्या कोई पीतल या लोहा, अर्थात् उत्तर दिशा का लोहा तोड़ सकता है? १३ तेरे सब पापों के कारण जो सर्वत्र देश में हुए हैं मैं तेरी धन-सम्पत्ति और खजाने, बिना दाम दिए लुट जाने दूँगा। १४ मैं ऐसा करूँगा कि वह शत्रुओं के हाथ ऐसे देश में चला जाएगा जिसे तू नहीं जानती है, क्योंकि मेरे क्रोध की आग भड़क उठी है, और वह तुम को जलाएगी।” १५ हे यहोवा, तू तो जानता है; मुझे स्मरण कर और मेरी सुधि लेकर मेरे सतानेवालों से मेरा पलटा ले। तू धीरज के साथ क्रोध करनेवाला है, इसलिए मुझ न उठा ले; तेरे ही निमित्त मेरी नामधारी हुई है। १६ जब तेरे वचन मेरे पास पहुँचे, तब मैंने उन्हें मानो खा लिया, और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष और आनन्द का कारण हुए; क्योंकि, हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मैं तेरा कहलाता हूँ। १७ तेरी छाया मुझ पर हुई; मैं मन बहलानेवालों के बीच बैठकर प्रसन्न नहीं हआ; तेरे हाथ के दबाव से मैं अकेला बैठा, क्योंकि तूने मुझे क्रोध से भर दिया था। १८ मेरी पीड़ा क्यों लगातार बनी रहती है? मेरी चोट की क्यों कोई औषधि नहीं है? क्या तू सचमुच मेरे लिये धोखा देनेवाली नदी और सुखेवाले जल के समान होगा? १९ यह सुनकर यहोवा ने यह कहा, “यदि तू फिर, तो मैं फिर से तुझे अपने सामने खड़ा करूँगा। यदि तू अन्मोत्त को कहे और निकामे को न कहे, तब तू मेरे मुख के समान होगा। वे लोग तेरी ओर फिरेंगे, परन्तु तू उनकी ओर न किरना। २० मैं तुझको उन लोगों के सामने पीतल की ढूढ़ शहरपनाह बनाऊँगा; वे तुझ से लडेंगे, परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे, क्योंकि मैं तुझे बचाने और तेरा उद्धार करने के लिये रो साथ हूँ, यहोवा की यह वाणी है। मैं तुझे दुष्ट लोगों के हाथ से बचाऊँगा, २१ और उपट्रवी लोगों के पंजे से छुड़ा दूँगा।”

१६ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, २ “इस स्थान में विवाह करके बेटे-बेटियाँ मत जन्मा। ३ क्योंकि जो बेटे-बेटियाँ इस स्थान में उत्पन्न हों और जो माताएँ उन्हें जन्में और जो पिता उन्हें इस देश में जन्माएँ, ४ उनके विषय यहोवा यह कहता है, वे बुरी-बुरी बीमारियों से मरेंगे। उनके लिये कोई छाती न पिटीगा, न उनको मिट्ठी देगा; वे भूमि के ऊपर खाद के समान पड़े रहेंगे। वे तलवार और अकाल से मर मिरेंगे, और उनकी लोधीं आकाश के पक्षियों और मैदान के पशुओं का आहर होंगी। ५ “यहोवा ने कहा: जिस घर में रोना पीटना हो उसमें न जाना, न छाती पीटने के लिये कहीं जाना और न इन लोगों के लिये शोक करना; क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैंने अपनी शान्ति और कस्ता और दया इन लोगों पर से उठा ली है। ६ इस कारण इस देश के छोटे-बड़े सब मिरेंगे, न तो इनको मिट्ठी दी जाएगी, न लोग छाती

पीटिंगे, न अपना शरीर चीरिंगे, और न सिर मुँडाएँगे। इनके लिये कोई शोक करनेवालों को रोटी न बाटेंगे कि शोक में उन्हें शान्ति दें; ७ और न लोग पिता या माता के मरने पर किसी को शान्ति के लिये कटोरे में दाखमधु पिलाएँगे। ८ तृभोज के घर में इनके साथ खाने-पीने के लिये न जाना। ९ क्योंकि सेनाओं का यहोवा, इसाएल का परमेश्वर यह कहता है: देख, तुम लोगों के देखते और तुम्हारे ही दिनों में मैं ऐसा कहँगा कि इस स्थान में न तो हष्ट और न आनन्द का शब्द सुनाई पड़ेगा, न दुख है और न दुल्हन का शब्द। १० “जब तू इन लोगों से ये सब बातें कहे, और वे तुझे से पूछें कि ‘यहोवा ने हमारे ऊपर यह सारी बड़ी विपरित डालने के लिये क्यों कहा है? हमारा अधर्म क्या है और हमने अपने परमेश्वर यहोवा के विस्तृ कौन सा पाप किया है?’ ११ तो तू इन लोगों से कहना, ‘यहोवा की यह वाणी है, क्योंकि तुम्हारे पुरुखा मुझे त्याग कर दूर्मे देवताओं के पीछे चले, और उनकी उपासना करके उनको दण्डबत्त की, और मुझ को त्याग दिया और मेरी व्यवस्था का पालन नहीं किया, १२ और जितनी बुराई तुम्हारे पुरुखों ने की थी, उससे भी अधिक तुम करते हो, क्योंकि तुम अपने भ्रो मन के हठ पर चलते हो और मेरी नहीं सनते; १३ इस कारण मैं तुम को इस देश से उखाड़कर ऐसे देश में फेंक दूँगा, जिसको न तो तुम जानते हो और न तुम्हारे पुरुखों जानते थे; और वहाँ तुम रात-दिन दूसरे देवताओं की उपासना करते रहोगे, क्योंकि वहाँ मैं तुम पर कृष्ण अनुग्रह न करूँगा।” १४ फिर यहोवा की यह वाणी हुई, “देखो, ऐसे दिन अनेवाले हैं जिनमें परिय यह न कहा जाएगा, ‘यहोवा जो इसाएलियों को मिस्र देश से छुड़ा ले आया उसके जीवन की सौगन्धः’ १५ वरन् यह कहा जाएगा, ‘यहोवा जो इसाएलियों को उत्तर के देश से और उन सब देशों से जहाँ उसने उनको बँधुआ कर दिया था छुड़ा ले आया, उसके जीवन की सौगन्धः’ क्योंकि मैं उनको उनके निज देश में जो मैंने उनके पर्वजों को दिया था, लौटा ले आऊँगा। १६ “देखो, यहोवा की यह वाणी है कि मैं बहुत से मछुओं को बुलवा भेजँगा कि वे इन लोगों को पकड़ लें, और, पिर मैं बहुत से बहेलियों को बुलवा भेजँगा कि वे इनको अहेर करके सब पहाड़ों और पहाड़ियों पर से और चढ़ानों की दरारों में से निकालें। १७ क्योंकि उनका पूरा चाल-चलन मेरी आँखों के सामने प्रगत है, वह मेरी दृष्टि से लिखा नहीं है, न उनका अधर्म मेरी आँखों से गुह है। इसलिए मैं उनके अधर्म और पाप का दूना टण्ड दूँगा, १८ क्योंकि उन्होंने मेरे देश को अपनी धृषिण वस्तुओं की लोथों से अशुद्ध किया, और मेरे निज भाग को अपनी अशुद्धासे भर दिया है।” १९ हे यहोवा, हे मेरे बल और दृढ़ गढ़, संकट के समय मेरे शरणस्थान, जाति-जाति के लोग पृथ्वी की चारों ओर से तेरे पास आकर कहेंगे, “निष्ठय हमारे पुरुखा झूठी, व्यर्थ और निष्फल वस्तुओं को अपनाते आए हैं। २० क्या मनुष्य ईश्वरों को बनाए? नहीं, वे ईश्वर नहीं हो सकते!” २१ “इस कारण, इस एक बार, मैं इन लोगों को अपना भुजबल और पराक्रम दिखाऊँगा, और वे जानेंगे कि मेरा नाम यहोवा है।”

१७ “यहदा का पाप लोहे की टाँकी और हरी की नोक से लिखा हुआ है, वह उनके हृदयरूपी पटिया और उनकी बेदियों के सीरों पर भी खुदा हुआ है। २ उनकी बेदियों और अशेरा नामक देवियाँ जो ही पेड़ों के पास और ऊँचे टीलों के ऊपर हैं, वे उनके लड़कों को भी स्मरण रहती हैं। ३ हे मेरे पर्वत, तू जो मैतान में है, तेरी धन-सम्पत्ति और भण्डार मैं तेरे पाप के कारण लट जाने दूँगा, और तेरे पूजा के ऊँचे स्थान भी जो तेरे देश में पाए जाते हैं। ४ तू अपने ही दोष के कारण अपने उस भाग का अधिकारी न रहने पाएगा जो मैंने तुझे दिया है, और मैं ऐसा कहँगा कि तू अनजाने देश में अपने शत्रुओं की सेवा करेगा, क्योंकि तूने मेरे क्रोध की आग ऐसी भड़काई है जो सर्वदा जलती रहेगी।” ५ यहोवा यह कहता है, “शापित है वह पुस्त जो मनुष्य पर भरोसा

रखता है, और उसका सहारा लेता है, जिसका मन यहोवा से भटक जाता है। ६ वह निर्जल देश के अधर्मे पेड़ के समान होगा और कभी भलाई न देखेगा। वह निर्जल और निर्जन तथा लोनार्हाई भूमि पर बसेगा। ७ “धन्य है वह पुस्त जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसने परमेश्वर को अपना आधार माना हो। ८ वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के किनारे पर लगा हो और उसकी जड़ जल के पास फैली हो; जब धूप होगी तब उसको न लगेगी, उसके पाते हरे रहेंगे, और सखे वर्ष में भी उनके विषय में कुछ चिन्ता न होगी, क्योंकि वह तब भी फलता रहेगा।” ९ मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला होता है, उसमें असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है? १० “मैं यहोवा मन को खोजता और हृदय को जँचता हूँ ताकि प्रयेक जन को उसकी चाल-चलन के अनुसार अर्थात् उसके कामों का फल दूँ।” ११ जो अन्याय से धन बदोरता है वह उस तीतर के समान होता है जो दूसरी चिडिया के दिए हुए अण्डों को सेती है, उसकी आपी आयु में ही वह उस धन को छोड़ जाता है, और अन्त में वह मूर्ख ही ठहरता है। १२ हमारा पवित्र आराधनालय आदि से ऊँचे स्थान पर रखे हुए एक तेजोमय सिंहासन के समान है। १३ हे यहोवा, हे इसाएल के अधार, जिनने तुझे छोड़ देते हैं वे सब लज्जित होंगे; जो तुझ से भटक जाते हैं उनके नाम भूमि ही पर लिखे जाएँगे, क्योंकि उन्होंने जीवन के जल के सेते यहोवा को त्याग दिया है। १४ हे यहोवा मुझे चंगा कर, तब मैं चंगा हो जाऊँगा; मुझे बचा, तब मैं बच जाऊँगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ। १५ सुन, वे मुझसे कहते हैं, “यहोवा का वचन कहाँ रहा? वह अभी पूरा हो जाएँ।” १६ परन्तु तू मेरा हाल जानता है, मैंने तेरे पीछे चलते हुए उतावली करके चरबाहे का काम नहीं छोड़ा; न मैंने उस अनेवाली विपरिति के दिन की लालसा की है; जो कुछ मैं बोला वह तुझ पर प्रगत था। १७ मुझे न घबरा; संकट के दिन तू ही मेरा शरणस्थान है। १८ हे यहोवा, मेरी आशा टूटने न दे, मेरे सतनेवालों ही की आशा रुटे; उन्हीं को विस्मित कर, परन्तु मुझे निराशा से बचा; उन पर विपति डाल और उनको चकनाचूरू कर दे! १९ यहोवा ने मुझसे यह कहा, “जाकर सदर फाटक में खड़ा हो जिससे वहदा के राजा वरन् यस्शलेम के सब रहनेवाले भीतर-बाहर आया-जाया करते हैं; २० और उनसे कह, ‘हे यहदा के राजाओं और सब यहदियों, हे यस्शलेम के सब निवासियों, और सब लोगों जो इन फाटकों में से होकर भीतर जाते हो, यहोवा का वचन सुनो। २१ यहोवा यह कहता है, सावधान रहो, विश्वाम के दिन कोई बोझ मत उठाओ; और न कोई बोझ यस्शलेम के फाटकों के भीतर ले आओ। २२ विश्वाम के दिन अपने-अपने घर से भी कोई बोझ बाहर मत ले जाओ और न किसी रिति का काम-काज करो, वरन् उस आशा के अनुसार जो मैंने तुम्हारे पुरुखों को दी थी, विश्वाम के दिन को पवित्र माना करो। २३ परन्तु उन्होंने न सुना और न कान लगाया, परन्तु इसके विपरीत हठ किया कि न सुनें और ताड़ना से भी न मानें। २४ “परन्तु यदि तुम सचमुच मेरी सुनो, यहोवा की यह वाणी है, और विश्वाम के दिन इस नगर के फाटकों के भीतर कोई बोझ न ले आओ और विश्वामदिन को पवित्र मानो, और उसमें किसी रिति का काम-काज न करो, २५ तब तो दाऊद की गढ़ी पर विराजमान राजा, रथों और घोड़ों पर चढ़े हुए हाकिम और यहदा के लोग और यस्शलेम के निवासी इस नगर के फाटकों से होकर प्रवेश किया करेंगे और यह नगर सर्वदा बसा रहेगा। २६ लोग होमबलि, मेलबलि अन्नबलि, लोबान और धन्यवाद-बलि लिए हुए यहदा के नारों से और यस्शलेम के आस-पास से, बिन्यामीन के क्षेत्र और नीचे के देश से, पहाड़ी देश और दक्षिण देश से, यहोवा के भवन में आया करेंगे। २७ परन्तु यदि तुम मेरी सुनकर विश्वाम के दिन को पवित्र न मानो, और उस दिन यस्शलेम के फाटकों से बोझ लिए हुए प्रवेश करते रहो, तो मैं यस्शलेम के

फाटकों में आग लगाऊँगा; और उससे यस्शलेम के महल भी भस्म हो जाएँगे और वह आग फिर न बुझेगा।”

१८ यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा, “उठकर कुम्हार

के घर जा, २ और वहाँ मैं तुझे अपने वचन सुनाऊँगा।” ३ इसलिए मैं कुम्हार के घर गया और क्या देखा कि वह चाक पर कुछ बना रहा है। ४ जो मिट्ठी का बर्तन वह बना रहा था वह बिगड़ गया, तब उसने उसी का दूसरा बर्तन अपनी समझ के अनुसार बना दिया। ५ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, ६ “हे इस्माएल के घराने, यहोवा की यह वाणी है कि इस कुम्हार के समान तुम्हारे साथ क्या मैं भी काम नहीं कर सकता? देख, जैसा मिट्ठी कुम्हार के हाथ में रहती है, वैसे ही है इस्माएल के घराने, तुम भी मेरे हाथ मैं हो। ७ जब मैं किसी जाति या राज्य के विषय कहूँ कि उसे उखाइँगा या ढाँदँा अथवा नाश करूँगा, ८ तब यदि उस जाति के लोग जिसके विषय मैंने यह बात कही हो अपनी बुराई से फिरें, तो मैं उस विपत्ति के विषय जो मैंने उन पर डालने को ठाना हो पछताऊँगा। ९ और जब मैं किसी जाति या राज्य के विषय कहूँ कि मैं उसे बनाऊँगा और रोपँगा; १० तब यदि वे उस काम को करें जो मेरी दृष्टि में बुरा है और मेरी बात न मानें, तो मैं उस भलाई के विषय जिसे मैंने उनके लिये करने को कहा है, पछताऊँगा। ११ इसलिए अब त यहदा और यस्शलेम के निवासियों से यह कह, ‘यहोवा यह कहता है, देखो, मैं तुम्हारी हानि की युक्ति और तुम्हारे विस्तृ प्रबन्ध कर रहा हूँ। इसलिए तुम अपने बुरे मार्ग से फिरो और अपना-अपना चाल चलन और काम सुधारो।’ १२ “परन्तु वे कहते हैं, ‘ऐसा नहीं होने का, हम तो अपनी ही कल्पनाओं के अनुसार चलेंगे और अपने बुरे मन के हठ पर बने रहेंगे।’ १३ “इस कारण प्रभु यहोवा यह कहता है, जाति-जाति से पूछ कि ऐसी बातें क्या कभी किसी के सुनने में आई हैं? इस्माएल की कुमारी ने जो काम किया है उसके सुनने से रोम-रोम खड़े हो जाते हैं। १४ क्या लबानोन का हिम जो चट्टान पर से मैदान में बहता है बन्द हो सकता है? क्या वह ठंडा जल जो दूर से बहता है कभी सूख सकता है? १५ परन्तु मेरी प्रजा मुझे भूल गई है; वे निकम्पी मृतियों के लिये धूप जलाते हैं, उन्होंने अपने प्राचीनकाल के मार्गों में ठोकर खाई है, और राजमार्ग छोड़कर पगड़ण्डियों में भटक गए हैं। १६ इससे उनका देश ऐसा उजाड़ हो गया है कि लोग उस पर सदा ताती बजाते रहेंगे; और जो कोई उसके पास से चले वह चकित होगा और सिर हिलाएगा। १७ मैं उनको पुरवाइ से उड़ाकर शत्रु के सामने से तितर-बितर कर दूँगा। उनकी विपत्ति के दिन मैं उनको मूँह नहीं परन्तु पीढ़ दिखाऊँगा।” १८ तब वे कहने लगे, “चलो, यिर्मयाह के विस्तृ युक्ति करें, क्योंकि न याजक से व्यवस्था, न ज्ञानी से सम्पत्ति, न भविष्यद्वक्ता से वचन दूर होंगे। आओ, हम उसकी कोई बात पकड़कर उसको नाश कराएँ और फिर उसकी किसी बात पर ध्यान न दें।” १९ हे यहोवा, मेरी ओर ध्यान दें, और जो लोग मेरे साथ झ़गड़ते हैं उनकी बातें सुन। २० क्या भलाई के बदले में बुराई का व्यवहार किया जाए? तू इस बात का स्मरण कर कि मैं उनकी भलाई के लिये तेरे सामने प्राथना करने को खड़ा हुआ जिससे तेरी जलजलाहट उन पर से उतर जाए, और अब उन्होंने मेरे प्राण लेने के लिये ग़हा खोदा है। २१ इसलिए उनके बाल-बच्चों को भूख से मरने दे, वे तलवार से कट मेरे, और उनकी छियाँ निर्वश और विधवा हो जाएँ। उनके पुरुष मरी से मरें, और उनके जवान लड़ाई में तलवार से मरे जाएँ। २२ जब त उन पर अचानक शत्रुदल चढ़ाए, तब उनके घरों से चिल्लाहट सुनाई दे! क्योंकि उन्होंने मेरे लिये ग़हा खोदा और मुझे फ़सेंने को फ़ंदे लगाए हैं। २३ हे यहोवा, तू उनकी सब युक्तियाँ जानता है जो वे मेरी मृत्यु के लिये करते हैं। इस कारण

तू उनके इस अर्धम को न ढाँप, न उनके पाप को अपने सामने से मिटा। वे तेरे देखते ही ठोकर खाकर गिर जाएँ, अपने क्रोध में आकर उनसे इसी प्रकार का व्यवहार कर।

१९ यहोवा ने यह कहा, “तू जाकर कुम्हार से मिट्ठी की बनाई हई एक सुराही

मोल ले, और प्रजा के कुछ पुरनियों में से और याजकों में से भी कुछ प्राचीनों को साथ लेकर, २ हिन्नोमियों की तराई की ओर उस फाटक के निकट चला जा जहाँ ठीकरे फैंक दिए जाते हैं; और जो वचन मैं कहूँ, उसे वहाँ प्रचार कर। ३ तू यह कहना, ‘हे यहदा के राजाओं और यस्शलेम के सब निवासियों, यहोवा का वचन सुनो। इस्माएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है, इस स्थान पर मैं ऐसी विपत्ति डालने पर हूँ कि जो कोई उसका समाचार सुने, उस पर सन्नाटा छा जाएगा। ४ क्योंकि यहाँ के लोगों ने मुझे त्याग दिया, और इस स्थान में दूसरे देवताओं के लिये जिनको न तो वे जानते हैं, और न उनके पुराखा या यहदा के पुराने राजा जानते थे धूप जलाया है और इसको पराया कर दिया है; और उन्होंने इस स्थान की निर्दोषों के लह से भर दिया, ५ और बाल की पूजा के ऊँचे स्थानों को बनाकर अपने बाल-बच्चों को बाल के लिये होम कर दिया, यद्यपि मैंने कभी भी जिसकी आज्ञा नहीं दी, न उसकी चर्चा की ओर न वह कभी मैंने मन में आया। ६ इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आते हैं कि यह स्थान फिर तोपेत या हिन्नोमियों की तराई न कहलाएगा, बरन घात ही की तराई कहलाएगा। ७ और मैं इस स्थान में यहदा और यस्शलेम की युक्तियों को निष्फल कर दूँगा; और उन्होंने उनके प्राणों के शत्रुओं के हाथ की तलबार चलबाकर गिरा दूँगा। उनकी लोथों को मैं आकाश के पक्षियों और भूमि के जीवजन्मुओं का आहार कर दूँगा। ८ मैं इस नगर को ऐसा उजाड़ दूँगा कि लोग इसे देखकर डोंगे; जो कोई इसके पास से होकर जाए वह इसकी सब विपत्तियों के कारण चकित होगा और घबराएगा। ९ और यिर जाने और उस सकेती के समय जिसमें उनके प्राण के शत्रु उहें डाल देंगे, मैं उनके ब्रेट-बेटियों का माँस उन्हें खिलाऊँगा और एक दूसरे का भी माँस खिलाऊँगा।” १० “तब त उस सुराही को उन समाने तोड़ देना जो तेरे संग जाएँ, ११ और उनसे कहना, ‘सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि जिस प्रकार यह मिट्ठी का बर्तन जो टूट गया कि फिर बनाया न जा सके, इसी प्रकार मैं इस देश के लोगों को और इस नगर को तोड़ डालूँगा। और तोपेत नामक तराई में इतनी कब्रें होंगी कि कब्र के लिये और स्थान न रहेगा। १२ यहोवा की यह वाणी है कि मैं इस स्थान और इसके रहनेवालों के साथ ऐसा ही काम करूँगा, मैं इस नगर को तोपेत के समान बना दूँगा। १३ और यस्शलेम के घर और यहदा के राजाओं के भवन, जिनकी छाँतों पर आकाश की सारी सेना के लिये धूप जलाया गया, और अन्य देवताओं के लिये तपावन दिया गया है, वे सब तोपेत के समान अशुद्ध हो जाएँगे।” १४ तब यिर्मयाह तोपेत से लौटकर, जहाँ यहोवा ने उस भविष्यद्वाणी करने को भेजा था, यहोवा के भवन के अँगन में खड़ा हुआ, और सब लोगों से कहने लगा; १५ “इस्माएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है, देखो, सब ग़ाँवों समेत इस नगर पर वह सारी विपत्ति डालना चाहता हूँ जो मैंने इस पर लाने को कहा है, क्योंकि उन्होंने हठ करके मैं वचन को नहीं माना है।”

२० जब यिर्मयाह यह भविष्यद्वाणी कर रहा था, तब इम्मेर का पुत्र पश्शहर ने

जो याजक और यहोवा के भवन का प्रधान रखवाला था, वह सब सुना। १ तब पश्शहर ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को मारा और उसे उस काठ में डाल दिया जो यहोवा के भवन के ऊपर बिन्यामिन के फाटक के पास है। २ सर्वेरों को जब पश्शहर ने यिर्मयाह को काठ में से निकलवाया, तब यिर्मयाह ने उससे कहा,

“यहोवा ने तेरा नाम पश्चार नहीं मागोमिस्साबीब रखा है। ४ क्योंकि यहोवा ने यह कहा है, देख, मैं तुझे तेरे लिये और तेरे सब मित्रों के लिये भी भय का कारण ठहराऊँगा। वे अपने शत्रुओं की तलवार से तेरे देखते ही वध किए जाएँगे। और मैं सब यहदियों को बाबेल के राजा के वश में कर दँगा; वह उनको बन्दी कर बाबेल में ले जाएगा, और तलवार से मार डालेगा। ५ फिर मैं इस नगर के सारे धन को और इसमें की कमाई और सब अन्मोल वस्तुओं को और यहदा के राजाओं का जितना रखा हआ धन है, उस सब को उनके शत्रुओं के वश में कर दँगा; और वे उसको लूटकर अपना कर लेंगे और बाबेल में ले जाएँगे। ६ और, हे पश्चार, तू उन सब समेत जो तेरे घर में रहते हैं वैधुआई में चला जाएगा; अपने उन मित्रों समेत जिनसे तने झूठी भविष्यद्वाणी की, तू बाबेल में जाएगा और वहीं मेरेगा, और वहीं तुझे और उन्हें भी मिट्टी दी जाएगी।” ७ हे यहोवा, तू तेरे मुझे थोखा दिया, और मैंने थोखा खाया; तू मुझसे बलवन्त है, इस कारण तू मुझ पर प्रबल हो गया। दिन भर मेरी हँसी होती है, सब कोई मुझसे ठश करते हैं। ८ क्योंकि जब मैं बातें करता हूँ, तब मैं जोर से पुकार पुकारकर ललकारता हूँ, “उपद्रव और उत्पात हआ, हाँ उत्पात!” क्योंकि यहोवा का वचन दिन भर मेरे लिये निन्दा और ठश का कारण होता रहता है। ९ यदि मैं कहूँ, “मैं उसकी चर्चा न करूँगा न उसके नाम से बोर्टूँगा,” तो मेरे हृदय की ऐसी दशा होनी मानो मेरी हड्डियों में धधकती हई आग हो, और मैं अपने को रोकते-रोकते थक गया पर मुझसे रगा नहीं जाता। १० मैंने बहुतों के मूँह से अपनी निन्दा सुनी है। चारों ओर भय ही भय है! मेरी जान-पहचान के सब जो मेरे ठोकर खाने की बात जोहत हैं, वे कहते हैं, “उसके दोष बताओ, तब हम उनकी चर्चा फैला देंगे। कदाचित् वह थोखा खाए, तो हम उस पर प्रबल होकर, उससे बदला लेंगे।” ११ परन्तु यहोवा मेरे साथ है, वह भयंकर वीर के समान है; इस कारण मेरे सतानेवाले प्रबल न होंगे, वे ठोकर खाकर गिरेंगे। वे बुद्धि से काम नहीं करते, इसलिए उन्हें बहुत लज्जित होना पड़ेगा। उनका अपमान सदैव बना रहेगा और कभी भूला न जाएगा। १२ हे सेनाओं के यहोवा, हे धर्मियों के परखनेवाले और हृदय और मन के ज्ञाता, जो बदला तू उनसे लेगा, उसे मैं देखूँ, क्योंकि मैंने अपना सुकड़मा तेरे ऊपर छोड़ दिया है। १३ यहोवा के लिये गाओ; यहोवा की स्तुति करो। क्योंकि वह दरिद्र जन के प्राण को कुकर्मियों के हाथ से बचाता है। १४ श्रापित हो वह दिन जिसमें मैं उत्पन्न हुआ! जिस दिन मेरी माता ने मुझ को जन्म दिया वह धन्य न हो! १५ श्रापित हो वह जन जिसने मेरे पिता को यह समाचार देकर उसको बहुत आनन्दित किया कि तेरे लड़का उत्पन्न हुआ है। १६ उस जन की दशा उन नगरों की सी हो जिन्हें यहोवा ने बिन दया दी दिया; उसे सवेरे तो चिल्लाहट और दोपहर को युद्ध की ललकार सुनाई दिया करे, १७ क्योंकि उसने मुझे गर्भ ही मैं न मार डाला कि मेरी माता का गर्भाशय ही मेरी कब्र होती, और मैं उसी में सदा पड़ा रहता। १८ मैं क्यों उत्पात और शोक भोगने के लिये जन्मा और कि अपने जीवन में परिश्रम और दुःख देखूँ, और अपने दिन नामधाराई में व्यतीत करूँ?

२१ यह वचन यहोवा की ओर से यर्मियाह के पास उस समय पहुँचा जब सिद्धिकियाह राजा ने उसके पास मल्कियाह के पुत्र पश्चार और मासेयाह याजक के पुत्र सपन्याह के हाथ से यह कहता भेजा, “हमारे लिये यहोवा से पूछ, क्योंकि बाबेल का राजा नब्बूकदनेस्सर हमारे विस्तृ युद्ध कर रहा है, कदाचित् यहोवा हम से अपने सब आश्वर्यकर्मों के अनुसार ऐसा व्यवहार करे कि वह हमारे पास से चला जाए।” २ तब यर्मियाह ने उनसे कहा, “तुम सिद्धिकियाह से यह कहो, ३ इस्त्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है:

देखो, युद्ध के जो हथियार तुम्हारे हाथों में है, जिनसे तुम बाबेल के राजा और शहरपनाह के बाहर धेरनेवाले कसदियों से लड़ रहे हो, उनको मैं लौटाकर इस नगर के बीच में इकट्ठा करूँगा; ४ और मैं स्वयं हाथ बढ़ाकर और बलवन्त भुजा से, और क्रोध और जलजलाहट और बड़े क्रोध में आकर तुम्हारे विस्तृ लड़ूँगा। ५ मैं इस नगर के रहनेवालों को क्या मनुष्य, क्या पशु सब को मार डालूँगा; वे बड़ी मरी से मरेंगे। ६ उसके बाद, यहोवा की यह वाणी है, हे यहदा के राजा सिद्धिकियाह, मैं तुझे तेरे कर्मचारियों और लोगों को बरन जो लोग इस नगर में मरी, तलवार और अकाल से बचे रहेंगे उनको बाबेल के राजा नब्बूकदनेस्सर और उनके प्राण के शत्रुओं के वश में कर दँगा। वह उनको तलवार से मार डालेगा; उन पर न तो वह तरस खाएगा, न कुछ कोमलता दिखाएगा और न कुछ दया करेगा।” ७ “इस प्राण के लोगों से कह कि यहोवा यह कहता है, देखो, मैं तुम्हारे सामने जीवन का मार्ग और मृत्यु का मार्ग भी बताता हूँ। ८ जो कोई इस नगर में रहे वह तलवार, अकाल और मरी से मरेगा; परन्तु जो कोई निकलकर उन कसदियों के पास जो तुम को धेर रहे हैं भाग जाए वह जीवित रहेगा, और उसका प्राण बचेगा। ९ क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि मैंने इस नगर की ओर अपना मुख भलाई के लिये नहीं, बरन् बुराई ही के लिये किया है; यह बाबेल के राजा के वश में पड़ जाएगा, और वह इसको फूँकवा देगा। १० “यहदा के राजकूल के लोगों से कह, ‘यहोवा का वचन सुनो ११ हे दाऊद के घराने। यहोवा यह कहता है, भोर को न्याय चुकाओ, और लटे हुए को अंधेर करनेवाले के हाथ से छुड़ाओ, नहीं तो तुम्हारे बुरे कामों के कारण मेरे क्रोध की आग भड़केगी, और ऐसी जलती रहेगी कि कोई उसे बुझा न सकेगा।’ १२ “हे तराई में रहनेवाली और समरथ देश की चढ़ान; तुम जो कहते हो, ‘हम पर कौन चढ़ाई कर सकेगा, और हमारे वासस्थान में कौन प्रवेश कर सकेगा?’ यहोवा कहता है कि मैं तुम्हारे विस्तृ हूँ। १३ और यहोवा की वाणी है कि मैं तुझे दण्ड देकर तुम्हारे कामों का फल तम्हें भुतावाँगा। मैं उसके बन में आग लगाऊँगा, और उसके चारों ओर सब कुछ भस्म हो जाएगा।”

२२ यहोवा ने यह कहा, “यहदा के राजा के भवन में उत्तरकर यह वचन कह,

१ हे दाऊद की गँडी पर विराजमान यहदा के राजा, तू अपने कर्मचारियों और अपनी प्रजा के लोगों समेत जो इन फाटकों से आया करते हैं, यहोवा का वचन सुन। २ यहोवा यह कहता है, न्याय और धर्मिकता के काम करो; और लटे हुए को अंधेर करनेवाले के हाथ से छुड़ाओ। और परदेशी, अनाथ और विधवा पर अंधेर व उपद्रव मत करो, न इस स्थान में निर्दोषों का लह बहाओ। ३ देखो, यदि तुम ऐसा करोगे, तो इस भवन के फाटकों से होकर दाऊद की गँडी पर विराजमान राजा रथों और घोड़ों पर चढ़े हुए अपने-अपने कर्मचारियों और प्रजा समेत प्रवेश किया करोगे। ४ परन्तु, यदि तुम इन बातों को न मानो तो, मैं अपनी ही सौगंध खाकर कहता हूँ, यहोवा की यह वाणी है, कि यह भवन उजाड हो जाएगा। ५ क्योंकि यहोवा यहदा के राजा के इस भवन के विषय में यह कहता है, तू मुझे गिलाद देश सा और लबानों के शिखर सा दिखाई पड़ता है, परन्तु निश्चय मैं तुझे मस्थल व एक निर्जन नगर बनाऊँगा। ६ मैं नाश करनेवालों को हथियार देकर तेरे विस्तृ भेजूँगा; वे तेरे सुन्दर देवदारों को काटकर आग में झोक देंगे। ७ जाति-जाति के लोग जब इस नगर के पास से निकलेंगे तब एक दूसरे से पछेंगे, “यहोवा ने इस बड़े नगर की ऐसी दशा क्यों की है?” ८ तब लोग कहेंगे, “इसका कारण यह है कि उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा को तोड़कर दूसरे देवताओं को दण्डवत् किया और उनकी उपासना भी की।” ९ मेरे हुए के लिये मत रोओ, उसके लिये विलाप मत करो। उसी के लिये फूट फूटकर रोओ जो परदेश चला गया है,

क्योंकि वह लौटकर अपनी जन्म-भूमि को फिर कभी देखने न पाएगा। ११ क्योंकि यहदा के राजा योशियाह का पुत्र शल्लस, जो अपने पिता योशियाह के स्थान पर राजा था और इस स्थान से निकल गया, उसके विषय में यहोवा यह कहता है “वह फिर यहाँ लौटकर न आने पाएगा। १२ वह जिस स्थान में बैंधुआ होकर गया है उसी में मर जाएगा, और इस देश को फिर कभी देखने न पाएगा।” १३ “उस पर हाय जो अपने घर को अर्थम से और अपनी उपराठी कोठरियों को अन्याय से बनवाता है, जो अपने पड़ोसी से बेगारी में काम करता है और उसकी मजदूरी नहीं देता। १४ वह कहता है, ‘मैं अपने लिये लम्बा-चौड़ा घर और हवादार ऊपरी कोठरी बना लैंगा’, और वह छिड़कियाँ बनाकर उन्हें देवदार की लकड़ी से पाट लेता है, और सिन्दू से रंग देता है। १५ तू जो देवदार की लकड़ी का अभिलाषी है, क्या इस रीत से तेरा राज्य स्थिर रहेगा। देख, तेरा पिता न्याय और धार्मिकता के काम करता था, और वह खाता पीता और सुख से भी रहता था! १६ वह इस कारण सुख से रहता था क्योंकि वह दीन और दरिद्र लोगों का न्याय चुकाता था। क्या यही मेरा ज्ञान रखना नहीं है? यहोवा की यह वाणी है। १७ परन्तु तू केवल अपना ही लाभ देखता है, और निर्दोष की हत्या करने और अंधेरा और उपद्रव करने में अपना मन और दृष्टि लगाता है।” १८ इसलिए योशियाह के पुत्र यहदा के राजा यहोयाकीम के विषय में यहोवा यह कहता है: “जैसे लोग इस रीत से कहकर रोते हैं, ‘हाय मेरे भाईं, हाय मेरी बहन! इस प्रकार कोई ‘हाय मेरे प्रभु’, या ‘हाय तेरा वैभव,’ कहकर उसके लिये विलाप न करेगा। १९ वरन् उसको गढ़े के समान मिट्ठी दी जाएगी, वह घसीट कर यस्तलेम के फाटकों के बाहर फेंक दिया जाएगा।” २० “लबानोन पर चढ़कर हाय-हाय कर, तब बाशान जाकर ऊँचे स्वर से चिल्लता; फिर अबारीम पहाड़ पर जाकर हाय-हाय कर, क्योंकि तेरे सब मित्र नाश हो गए हैं। २१ तेरे सुख के समय मैंने तुझको चिताया था, परन्तु तुमने कहा, ‘मैं तेरी न सूँगी।’ युवावस्था ही से तेरी चाल ऐसी है कि तू मेरी बात नहीं सुनती। २२ तेरे सब चरवाहे वायु से उड़ाए जाएँगे, और तेरे मित्र बैंधुआई में चले जाएँगे; निश्चय तू उस समय अपनी सारी बुराइयों के कारण लजित होगी और तेरा मूँह काला हो जाएगा। २३ हे लबानोन की रहनेवाली, हे देवदार में अपना धोसला बनानेवाली, जब तुझको जच्चा की सी पीड़ाएँ उठें तब तू व्याकुल हो जाएगी!” २४ “यहोवा की यह वाणी है: मेरे जीवन की सौगन्ध, चाहे यहोयाकीम का पुत्र यहदा का राजा कोन्याह, मेरे दाहिने हाथ की मुहर वाली अंगठी भी होता, तो भी मैं उसे उत्तर फेंकता। २५ मैं तुझे तेरे प्राण के खेजियों के हाथ, और जिसमें तू डरता है उनके अर्थात् बाबेल के राजा नब्कूदेस्सर और कसदियों के हाथ में कर दूँगा। २६ मैं तुझे तेरी जननी समेत एक पराए देश में जो तुहारी जन्म-भूमि नहीं है फेंक दूँगा, और तुम वहीं मर जाओगे। २७ परन्तु जिस देश में वे लैटने की बड़ी लालसा करते हैं, वहाँ कभी लौटने न पाएँगे।” २८ क्या, यह पुस्त कोन्याह तुच्छ और टूटा हुआ बर्बन है? क्या यह निकम्मा बर्तन है? फिर वह वंश समेत अनजाने देश में क्यों निकालकर फेंक दिया जाएगा? २९ हे पृथ्वी, पृथ्वी, हे पृथ्वी, यहोवा का वचन सु! ३० यहोवा यह कहता है, “इस पुस्त को निर्वश लिखो, उसका जीवनकाल कुशल से न बीतिगा; और न उसके वंश में से कोई समृद्ध होकर दाऊद की गँड़ी पर विराजमान या यहूदियों पर प्रभुता करनेवाला होगा।”

२३ “उन चरवाहों पर हाय जो मेरी चराई की भेड़-बकरियों को तिर-बितर करते और नाश करते हैं,” यहोवा यह कहता है। : इसलिए इस्माइल का परमेश्वर यहोवा अपनी प्रजा के चरवाहों से यह कहता है, “तुम ने मेरी भेड़-बकरियों की सुधि नहीं ली, बरन् उनको तिर-बितर किया और जबरन निकाल दिया है, इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि मैं तुम्हारे बुरे कामों

का दण्ड ढूँगा। ३ तब मेरी भेड़-बकरियों जो बची है, उनको मैं उन सब देशों में जिसमें मैं उन्हें जबरन भेज दिया है, स्वयं ही उन्हें लौटा लाकर उन्हीं की भेड़शाला में इकट्ठा करूँगा, और वे फिर फूले-फलेंगी। ४ मैं उनके लिये ऐसे चरवाहे नियुक्त करूँगा जो उन्हें चराएँगे; और तब वे न तो फिर ढेरेंगी, न विस्मित होंगी और न उनमें से कोई खो जाएगी, यहोवा की यह वाणी है। ५ “यहोवा की यह भी वाणी है, देख ऐसे दिन आते हैं जब मैं दाऊद के कुल में एक धर्मी अंकुर उगाऊँगा, और वह राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा, और अपने देश में न्याय और धार्मिकता से प्रभुता करेगा। ६ उसके दिनों में यहदी लोग बचे रहेंगे, और इस्माइली लोग निर्द बसे रहेंगे और यहोवा उसका नाम ‘यहोवा हमारी धार्मिकता’ रखेगा। ७ “इसलिए देख, यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन आएँगे जिसमें लोग फिर न कहेंगे, ‘यहोवा जो हम इसाएलियों को मिस्र देश से छुड़ा ले आया, उसके जीवन की सौगन्ध,’ ८ परन्तु वे यह कहेंगे, ‘यहोवा जो इस्माइल के घराने को उत्तर देश से और उन सब देशों से भी जहाँ उसने हमें जबरन निकाल दिया, छुड़ा ले आया, उसके जीवन की सौगन्ध।’ तब वे अपने ही देश में बसे रहेंगे।” ९ भविष्यद्वत्काओं के विषय मेरा हृदय भीतर ही भीतर फटा जाता है, मेरी सब हड्डियाँ थरथराती हैं; यहोवा ने जो पवित्र वचन कहे हैं, उन्हें सुनकर, मैं ऐसे मनुष्य के समान हो गया हूँ जो दाखमधु के ज्वो में चूँहो गया हो, १० क्योंकि यह देश व्यभिचारियों से भरा है; इस पर ऐसा शाप पड़ा है कि यह विलाप कर रहा है; वन की चराइयाँ भी सुख गईं। लोग बड़ी दौड़ तो दौड़ते हैं, परन्तु बुराई ही की ओर; और बीरता तो करते हैं, परन्तु अन्याय ही की साथ। ११ “क्योंकि भविष्यद्वत्का और याजक दोनों भक्तिहीन हो गए हैं, अपने भवन में भी मैंने उनकी बुराई पाई है, यहोवा की यही वाणी है। १२ इस कारण उनका मार्ग अंधेरा और फिसलन वाला होगा जिसमें वे ढकेलकर गिरा दिए जाएँगे; क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है कि मैं उनके दण्ड के वर्ष में उन पर विपत्ति डालूँगा! १३ सामरिया के भविष्यद्वत्काओं में मैंने यह मूर्खता देखी थी कि वे बाल के नाम से भविष्यद्वाणी करते और मेरी प्रजा इस्माइल को भटका देते थे। १४ परन्तु यस्तलेम के नवियों में मैंने ऐसे काम देखे हैं, जिनसे रोगोंपरे खड़े हो जाते हैं, अर्थात् व्यभिचार और पाशबद; वे कुकरियों को ऐसा हियाव बैंधते हैं कि वे अपनी-अपनी बुराई से पश्चाताप भी नहीं करते, सब निवासी मेरी दृष्टि में सदोमियों और गमोरियों के समान हो गए हैं।” १५ इस कारण सेनाओं का यहोवा यस्तलेम के भविष्यद्वत्काओं के विषय में यह कहता है: “देख, मैं उनको कड़वा वस्तुएँ खिलाऊँगा और विष पिलाऊँगा; क्योंकि उनके कारण सारे देश में भक्तिहीनता फैल गई है।” १६ सेनाओं के यहोवा ने तुम से यह कहा है: “इन भविष्यद्वत्काओं की बातों की ओर जो तुम से भविष्यद्वाणी करते हैं कान मत लगाओ, क्योंकि ये तुम को व्यर्थ बातें सिखाते हैं, ये दर्शन का दावा करके यहोवा के मुख की नहीं, अपने ही मन की बातें कहते हैं। १७ जो लोग मेरा तिरस्कार करते हैं उनसे ये भविष्यद्वत्का सदा कहते रहते हैं कि यहोवा कहता है, ‘तुम्हारा कल्याण होगा,’ और जितें लोग अपने हठ ही पर चलते हैं, उनसे ये कहते हैं, ‘तुम पर कोई विपत्ति न पड़ेगी।’” १८ भला कौन यहोवा की गुम सभा में खड़ा होकर उसका वचन सुनने और समझने पाया है? या किसने ध्यान देकर मेरा वचन सुना है? १९ देखो, यहोवा की जलजलाहट का प्रचण्ड बवण्ड और आँधी चलने लगी है; और उसका झोंका दूरों के सिर पर जोर से लोगाएँ। २० जब तक यहोवा अपना काम और अपनी युक्तियों को पूरी न कर चुके, तब तक उसका क्रोध शान्त न होगा। अन्त के दिनों में तुम इस बात को भली भाँति समझ सकोगे। २१ “ये भविष्यद्वत्का बिना मेरे भेजे दौड़ जाते और बिना मेरे कुछ कहे भविष्यद्वाणी करने लगते हैं। २२ यदि ये मेरी

शिक्षा में स्थिर रहते, तो मेरी प्रजा के लोगों को मेरे वचन सुनाते; और वे अपनी बुरी चाल और कामों से फिर जाते। २४ “यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं ऐसा परमेश्वर हूँ, जो दूर नहीं, निकट ही रहता हूँ? २५ फिर यहोवा की यह वाणी है, क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है, कि मैं उसे न देख सकूँ? क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझसे परिपूर्ण नहीं हैं? २६ मैंने इन भविष्यद्वत्काओं की बातें भी सुनी हैं जो मेरे नाम से यह कहकर झटाई भविष्यद्वाणी करते हैं, “मैंने स्वप्न देखा है, स्वप्न!” २७ जो भविष्यद्वत्का झठमठ भविष्यद्वाणी करते और अपने मन ही के छल के भविष्यद्वत्का हैं, यह बात कब तक उनके मन में समाई रहेगी? २८ जैसे मेरी प्रजा के लोगों के पुरुखा मेरा नाम भूलकर बाल का नाम लेने लगे थे, वैसे ही अब ये भविष्यद्वत्का उन्हें अपने-अपने स्वप्न बतायात्कार मेरा नाम भूलाना चाहते हैं। २९ यदि किसी भविष्यद्वत्का ने स्वप्न देखा हो, तो वह उसे बताए, परन्तु जिस किसी ने मेरा वचन सुना हो तो वह मेरा वचन सच्चाई से सुनाए। यहोवा की यह वाणी है, कहाँ भूसा और कहाँ गेहौ? ३० यहोवा की यह भी वाणी है कि क्या मेरा वचन आग सा नहीं है? फिर क्या वह ऐसा हथौड़ा नहीं जो पथर को फोड़ डाले? ३१ यहोवा की यह वाणी है, देखो, जो भविष्यद्वत्का मेरे वचन दूसरों से चुरा-चुराकर बोलते हैं, मैं उनके विस्तृ हूँ। ३२ फिर यहोवा की यह भी वाणी है कि जो भविष्यद्वत्का ‘उसकी यह वाणी है’, ऐसी झटी वाणी कहकर अपनी-अपनी जीभ हिलाते हैं, मैं उनके भी विस्तृ हूँ। ३३ यहोवा की यह भी वाणी है कि जो बिना मेरे भेजे या बिना मेरी आज्ञा पाए स्वप्न देखने का झटा दावा करके भविष्यद्वाणी करते हैं, और उसका वर्णन करके मेरी प्रजा को झटे घमण्ड में आकर भरमाते हैं, उनके भी मैं विस्तृ हूँ; और उससे मेरी प्रजा के लोगों का कुछ लाभ न होगा। ३४ “यदि साधारण लोगों में से कोई जन या कोई भविष्यद्वत्का या याजक तुम से पूछे, ‘यहोवा ने क्या प्रभावशाली वचन कहा है?’ तो उससे कहना, ‘क्या प्रभावशाली वचन? यहोवा की यह वाणी है, मैं तुम को त्याग दूँगा।’” ३५ और जो भविष्यद्वत्का या याजक या साधारण मनुष्य ‘यहोवा का कहा हुआ भारी वचन’ ऐसा कहता रहे, उसको धराने समेत मैं दण्ड दूँगा। ३६ तुम लोग एक दूसरे से और अपने-अपने भाई से यह पछाना, ‘यहोवा ने क्या उत्तर दिया?’ या ‘यहोवा ने क्या कहा है?’ ३७ ‘यहोवा का कहा हुआ भारी वचन’, इस प्रकार तुम भविष्य में न कहना नहीं तो तुम्हारा ऐसा कहना ही दण्ड का कारण हो जाएगा; क्योंकि हमारा परमेश्वर सेनाओं का यहोवा जो जीवित परमेश्वर है, तुम लोगों ने उसके वचन बिगाड़ दिए हैं। ३८ तू भविष्यद्वत्का से यह पूछ, ‘यहोवा ने तुमे क्या उत्तर दिया?’ ३९ या ‘यहोवा ने क्या कहा है?’ यदि तुम ‘यहोवा का कहा हुआ प्रभावशाली वचन’ इसी प्रकार कहोगे, तो यहोवा का यह वचन सुनो, ‘मैंने तो तुम्हारे पास संदेश भेजा है, भविष्य में ऐसा न कहना कि “यहोवा का कहा हुआ प्रभावशाली वचन!”’ परन्तु तुम यह करते ही रहते हो, “यहोवा का कहा हुआ प्रभावशाली वचन!”” ४० इस कारण देखो, मैं तुम को बिलकुल भल जाऊँगा और तुम को और इस नगर को जिसे मैंने तुम्हारे पुरुखाओं को, और तुम को भी दिया है, त्याग कर अपने सामने से दूर कर दूँगा। ४१ और मैं ऐसा करूँगा कि तुम्हारी नामधाराई और अनादर सदा बना रहेगा; और कभी भूला न जाएगा।

२४ जब बाबेल का राजा नबुकदनेस्सर, यहोवायाकीम के पुत्र यहोवा के राजा यकोन्याह को, और यहोवा के हाकिमों और लोहरों और अन्य कारीगरों को बन्दी बनाकर यस्सलेटेम से बाबेल को ले गया, तो उसके बाद यहोवा ने मुझ को अपने मन्दिर के सामने रखे हुए अंजीरों के दो टोकों देखिए। २५ एक टोकों में तो पहले से पके अच्छे-अच्छे अंजीर थे, और दूसरे टोकों में बहत मिकमे अंजीर थे, वरन् वे ऐसे मिकमे थे कि खाने के योग्य भी न थे। २६ फिर

यहोवा ने मुझसे पूछा, “हे यिर्मयाह, तुझे क्या देख पड़ता है?” मैंने कहा, “अंजीर; जो अंजीर अच्छे हैं वह तो बहत ही अच्छे हैं, परन्तु जो निकम्मे हैं, वह बहत ही निकम्मे हैं; वरन् ऐसे निकम्मे हैं कि खाने के योग्य भी नहीं हैं।” २७ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, २८ “इसाइल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, जैसे अच्छे अंजीरों को, वैसे ही मैं यहाँ बन्दियों को जिन्हें मैंने इस स्थान से कसदियों के देश में भेज दिया है, देखकर प्रसन्न होऊँगा। २९ मैं उन पर कपादृष्टि रखूँगा और उनको इस देश में लौटा ले आऊँगा; और उन्हें नाश न करूँगा, परन्तु बनाऊँगा; उन्हें उखाड न डालूँगा, परन्तु लगाए रखूँगा। ३० मैं उनका ऐसा मन कर दूँगा कि वे मुझे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ; और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, क्योंकि वे मेरी ओर सारे मन से फिरेंगे। ३१ “परन्तु जैसे निकम्मे अंजीर, निकम्मे होने के कारण खाए नहीं जाते, उसी प्रकार से मैं यहोवा के राजा सिद्धियाह और उसके हाकिमों और बचे हुए यस्सलेटेमों को, जो इस देश में या मिस्र में रह गए हैं, छोड़ दूँगा। ३२ इस कारण वे पृथ्वी के राज्य-राज्य में मारे-मारे फिरते हुए दुख भोगते रहेंगे; और जिन्हे स्थानों में मैं उन्हें जबरन निकाल दूँगा, उन सभी मैं वे नामधाराई और दृष्टक और श्राप का विषय होंगे। ३३ और मैं उनमें तलवार चलाऊँगा, और अकाल और मरी फैलाऊँगा, और अन्त में इस देश में से जिसे मैंने उनके पुरुखाओं को और उनको दिया, वे मिट जाएँगे।”

२५ योशियाह के पुत्र यहोवा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे वर्ष में

जो बाबेल के राजा नबुकदनेस्सर के राज्य का पहला वर्ष था, यहोवा का जो वचन यिर्मयाह नवी के पास पहुँचा, ३४ उसे यिर्मयाह नवी ने सब यहदियों और यस्सलेटेम के सब निवासियों को बताया, वह यह है: ३५ “अपमेन के पुत्र यहोवा के राजा योशियाह के राज्य के तेरहवें वर्ष से लेकर आज के दिन तक अर्थात् तेरेस वर्ष से यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचता आया है; और मैं उसे बड़े यत्र के साथ तुम से कहता आया हूँ; परन्तु तुम ने उसे नहीं सुना। ३६ यद्यपि यहोवा तुम्हारे पास अपने सारे दासों अथवा भविष्यद्वत्काओं को भी यह कहने के लिये बड़े यत्र से भेजता आया है ३७ कि ‘अपनी-अपनी बुरी चाल और अपने-अपने बुरे कामों से फिरो: तब जो देश यहोवा ने प्राचीनकाल में तुम्हारे पितरों को और तुम की सीढ़ा के लिये दिया है उस पर बसे रहने पाएंगे; परन्तु तुम ने न तो सुना और न कान लगाया है। ३८ और दूसरे देवताओं के पीछे होकर उनकी उपासना और उनको दण्डवत मत करो, और न अपनी बनाई हुई वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाओ: तब मैं तुम्हारी कुछ हानि न करूँगा।” ३९ यह सुनने पर भी तुम ने मेरी नवी मारी, वरन् अपनी बनाई हुई वस्तुओं के द्वारा मुझे रिस दिलाते आए हो जिससे तुम्हारी हानि ही हो सकती है, यहोवा की यही वाणी है। ४० “इसलिए सेनाओं का यहोवा यह कहता है: तुम ने जो मेरे वचन नहीं माने, ४१ इसलिए सनो, मैं उत्तर में रहनेवाले सब कुलों को बुलाऊँगा, और अपने दास बाबेल के राजा नबुकदनेस्सर को बुलवा भेजूँगा; और उन सभी को इस देश और इसके निवासियों के विस्तृ और इसके आस-पास की सब जायियों के विस्तृ भी ले आऊँगा; और इन सब देशों का मैं सत्यानाश करके उन्हें ऐसा उजाड दूँगा कि लोग इन्हें देखकर ताली बजाएँगे; बरन् ये सदा उजड़े ही रहेंगे, यहोवा की यही वाणी है। ४२ और मैं ऐसा करूँगा कि इन्हें न तो हर्ष और न आनन्द का शब्द सुनाई पड़ेगा, और न दुर्लभ या दुन्हन का, और न चक्रकी का भी शब्द सुनाई पड़ेगा और न इनमें दिया जातेगा। ४३ सारी जातियों का यह देश उजाड ही उजाड होगा, और ये सब जातियों सतर वर्ष तक बाबेल के राजा के अधीन रहेंगी। ४४ जब सतर वर्ष बीत चुके, तब मैं बाबेल के राजा और उस जाति के लोगों और कसदियों के देश के सब निवासियों को अर्थम का दण्ड दूँगा, यहोवा की यह

वाणी है; और उस देश को सदा के लिये उजाड़ दूँगा। १३ मैं उस देश में अपने वे सब वचन पूरे करूँगा जो मैंने उसके विषय में कहे हैं, और जितने वचन परियाह ने सारी जातियों के विस्तु भविष्यद्वाणी करके प्रस्तुक में लिखे हैं। १४ क्योंकि बहुत सी जातियों के लोग और बड़े-बड़े राजा भी उनसे अपनी सेवा कराएँगे; और मैं उनको उनकी करनी का फल भुगतवाँगा।” १५ इसाएल के परमेवर यहोवा ने मुझसे यह कहा, “मेरे हाथ से इस जलजलाहट के दाखमधु का कटोरा लेकर उन सब जातियों को पिला दे जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ। १६ वे उसे पीकर उस तलवार के कारण जो मैं उनके बीच में चलाऊँगा लड़खड़ाएँगे और बाले हो जाएँगे।” १७ इसलिए मैंने यहोवा के हाथ से वह कटोरा लेकर उन सब जातियों को जिनके पास यहोवा ने मुझे भेजा, पिला दिया। १८ अर्थात् यस्सलेम और यहदा के नारों के निवासियों को, और उनके राजाओं और हाकिमों को पिलाया, ताकि उनका देश उजाड़ हो जाए और लोग ताली बजाएँ, और उसकी उपमा देकर श्राप दिया करें; जैसा आजकल होता है। १९ और मिस्र के राजा फिरौन और उसके कर्मचारियों, हाकिमों, और सारी प्रजा को; २० और सब विदेशी मनुष्यों की जातियों को और ऊस देश के सब राजाओं को; और पलिशियों के देश के सब राजाओं को और अश्कलोन, गाजा और एक्लोन के और अश्टोद के बचे हुए लोगों को; २१ और एदोमियों, मोआवियों और अम्मोनियों के सारे राजाओं को; २२ और सोर के और सीदोन के सब राजाओं को, और समुद्र पार के देशों के राजाओं को; २३ फिर ददानियों, तेमाइयों और बजियों को और जिन्ने अपने गाल के बालों को मुँडा डालते हैं, उन सभी को भी; २४ और अरब के सब राजाओं को और जंगल में रहनेवाले दोगले मनुष्यों के सब राजाओं को; २५ और जिम्री, एलाम और मादै के सब राजाओं को; २६ और क्या निकट क्या दूर के उत्तर दिशा के सब राजाओं को एक संग पिलाया, इस प्रकार धरती भर में रहनेवाले जगत के राज्यों के सब लोगों को मैंने पिलाया। और इन सब के बाद शेशक के राजा को भी पीना पड़ेगा। २७ “बत तू उससे यह कहना, ‘सेनाओं का यहोवा जो इसाएल का परमेवर है, यह कहता है, पीओ, और मतवाले हो और उलटी करो, गिर पडो और फिर कभी न उठो, क्योंकि यह उस तलवार के कारण से होगा जो मैं तुम्हारे बीच में चलाऊँगा।” २८ “यदि वे तो हाथ से यह कटोरा लेकर पीने से इन्कार करें तो उनसे कहना, ‘सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि तुम को निश्चय पीना पड़ेगा।’ २९ देखो, जो नगर मेरा कहलाता है, मैं पहले उसी में विपति डालने लागूँगा, फिर क्या तुम लोग निर्दोष ठरके बचेगो? तुम निर्दोष ठरके न बचोगे, क्योंकि मैं पृथ्वी के सब रहनेवालों पर तलवार चलाने पर हूँ, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।” ३० “इतनी बातें भविष्यद्वाणी की रीति पर उनसे कहकर यह भी कहना, ‘यहोवा ऊपर से गरजेगा, और अपने उसी पवित्र धाम में से अपना शब्द सुनाएगा; वह अपनी चराई के स्थान के विस्तु जोर से गरजेगा; वह पृथ्वी के सारे निवासियों के विस्तु भी दाख लताड़नेवालों के समान ललकरेगा।” ३१ पृथ्वी की छोर तक भी कोलाहल होगा, क्योंकि सब जातियों से यहोवा का मुकदमा है; वह सब मनुष्यों से बाट-विवाद करेगा, और दूषों को तलवार के वश में कर देगा।” ३२ “सेनाओं का यहोवा यह कहता है: देखो, विपति एक जाति से दूसरी जाति में फैलेगी, और बड़ी आँधी पृथ्वी की छोर से उठेगी।” ३३ उस समय यहोवा के मारे हओं की लोथें पृथ्वी की एक छोर से दूसरी छोर तक पड़ी रहेंगी। उनके लिये कोई रेणे-पीटनेवाला न रहेगा, और उनकी लोथें न तो बटोरी जाएँगी और न करोंगे में रखी जाएँगी, वे भूमि के ऊपर खाद के समान पड़ी रहेंगी। ३४ हे चरवाहों, हाय-हाय करो और चिल्लाओ, हे बलवन्त मेढों और बकरो, राख मैं लौटो, क्योंकि तुम्हारे वध होने के दिन आ पहुँचे हैं, और मैं मनोहर बर्तन के

समान तुम्हारा सत्यानाश करूँगा। ३५ उस समय न तो चरवाहों के भागने के लिये कोई स्थान रहेगा, और न बलवन्त मेढों और बकरों के भागने पाएँगे। ३६ चरवाहों की चिल्लाहट और बलवन्त मेढों और बकरों के मिमियाने का शब्द सुनाई पड़ता है! क्योंकि यहोवा उनकी चराई को नाश करेगा, ३७ और यहोवा के क्रोध भड़कने के कारण शान्ति के स्थान नष्ट हो जाएँगे, जिन वासस्थानों में अब शान्ति है, वे नष्ट हो जाएँगे। ३८ युवा सिंह के समान वह अपने ठौर को छोड़कर निकलता है, क्योंकि अंधेरे करनेवाली तलवार और उसके भड़के हुए कोप के कारण उनका देश उजाड़ हो गया है।”

२६ योशियाह के पुत्र यहदा के राजा यहोवाकी के राज्य के आरम्भ में,

यहोवा की ओर से यह वचन पहुँचा, १ “यहोवा यह कहता है: यहोवा के भवन के आँगन में खड़ा होकर, यहदा के सब नगरों के लोगों के सामने जो यहोवा के भवन में टैंडवक्ट करने को आएँ, वे वचन जिनके विषय उनसे कहने की आज्ञा मैं तुझे देता हूँ कह दें; उनमें से कोई वचन मत रख छोड़। २ सम्भव है कि वे सुनकर अपनी-अपनी बुरी चाल से फिरें और मैं उनकी हानि करने से पछताँक जो उनके बुरे कामों के कारण मैंने ठाना था। ३ इसलिए तू उनसे कह, ‘यहोवा यह कहता है: यदि तुम मेरी सुनकर मेरी व्यवस्था के अनुसार जो मैंने तुम को सुनवा दी है न चलो, ४ और न मेरे दास भविष्यद्वत्ताओं के वचनों पर कान लगाओ, (जिन्हें मैं तुम्हारे पास बड़ा यत्र करके भेजता आया हूँ, परन्तु तुम ने उनकी नहीं सुनी), ५ तो मैं इस भवन को शीलो के समान उजाड़ दूँगा, और इस नगर का ऐसा सत्यानाश कर दूँगा कि पृथ्वी की सारी जातियों के लोग उसकी उपमा दे देकर श्राप दिया करेंगे।” ६ जब यिर्मयाह ये वचन यहोवा के भवन में कह रहा था, तब याजक और भविष्यद्वत्ताओं और सब साधारण लोगों ने यह कहकर उसको पकड़ लिया, “निश्चय तुझे प्राणदण्ड मिलेगा! ७ तुम क्यों यहोवा के नाम से यह भविष्यद्वाणी की ‘यह भवन शीलो के समान उजाड़ हो जाएगा, और यह नगर ऐसा उजड़ेगा कि उसमें कोई न रह जाएगा?’” इतना कहकर सब साधारण लोगों ने यहोवा के भवन में यिर्मयाह के विस्तु भीड़ लागाई। ८ यहदा के हाकिम ये बातें सुनकर, राजा के भवन से यहोवा के भवन में चढ़ आए और उसके नये फाटक में बैठ गए। ९ तब याजकों और भविष्यद्वत्ताओं ने हाकिमों और सब लोगों से कहा, “यह मनुष्य प्राणदण्ड के योग्य है, क्योंकि इन्होंने इस नगर के विस्तु ऐसी भविष्यद्वाणी की है जिसे तुम भी अपने कानों से सुन चुके हो।” १० तब यिर्मयाह ने सब हाकिमों और सब लोगों से कहा, “जो वचन तुम ने सुने हैं, उसे यहोवा ही ने मुझे इस भवन और इस नगर के विस्तु भविष्यद्वाणी की रीति पर कहने के लिये भेज दिया है। ११ इसलिए अब अपना चाल चलन और अपने काम सुधारो, और अपने परमेवर यहोवा की बात मानो; तब यहोवा उस विपति के विषय में जिसकी चर्चा उसने तुम से की है, पछताएगा। १२ देखो, मैं तुम्हारे वश में हूँ, जो कछु तुम्हारी दृष्टि में भला और ठीक हो वही मेरे साथ करो। १३ पर यह निश्चय जानो, कि यदि तुम मुझे मार डालोगे, तो अपने को और इस नगर को और इसके निवासियों को निर्दोष के हत्यारे बनाओगे; क्योंकि सचमुच यहोवा ने मुझे तुम्हारो पास यह सब वचन सुनाने के लिये भेजा है।” १४ तब हाकिमों और सब लोगों ने याजकों और नवियों से कहा, “यह मनुष्य प्राणदण्ड के योग्य नहीं है क्योंकि उसने हमारे परमेवर यहोवा के नाम से हम से कहा है।” १५ तब देखो वे पुनियों में से कितनों ने उठकर प्रजा की सारी मण्डली से कहा, १६ “यहदा के राजा हिजकियाह के दिनों में

मोरेशेतवासी मीका भविष्यद्वाणी कहता था, उसने यहदा के सारे लोगों से कहा: ‘सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि सियोन जोतकर खेत बनाया जाएगा और यस्शलेम खण्डहर हो जाएगा, और भवनवाला पर्वत जंगली स्थान हो जाएगा।’ १९ क्या यहदा के राजा हिजकियाह ने या किसी यहदी ने उसको कही मरवा डाला? क्या उस राजा ने यहोवा का भय न माना और उससे बिनती न की? तब यहोवा ने जो विपति उन पर डालने के लिये कहा था, उसके विषय क्या वह न पछताया? ऐसा करके हम अपने प्राणों की बड़ी हानि करेंगे।’ २० फिर शमायाह का पुत्र ऊरियाह नामक किर्त्यरीम का एक पुस्त जो यहोवा के नाम से भविष्यद्वाणी कहता था उसने भी इस नगर और इस देश के विद्ध ठीक ऐसी ही भविष्यद्वाणी की जैसी यिर्मयाह ने अभी की है। २१ जब यहोयाकीम राजा और उसके सब वीरों और सब हाकिमों ने उसके वचन सुने, तब राजा ने उसे मरवा डालने का यन्त्र किया; और ऊरियाह यह सुनकर डर के मारे मिस्र को भाग गया। २२ तब यहोयाकीम राजा ने मिस्र को लोग भेजे अर्थात् अकबोर के पुत्र एलनातान को कितने और पुरुषों के साथ मिस्र को भेजा। २३ वे ऊरियाह को मिस्र से निकालकर यहोयाकीम राजा के पास ले आए; और उसने उसे तलवार से मरवाकर उसकी लोथ को साधारण लोगों की कब्रों में फिकवा दिया। २४ परन्तु शापान का पुत्र अहीकाम यिर्मयाह की सहायता करने लगा और वह लोगों के वश में वध होने के लिये नहीं दिया गया।

२७ योशियाह के पुत्र, यहदा के राजा सिदकियाह के राज्य के अरम्भ में

यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा। २ यहोवा ने मिस्र से यह कहा, “बन्धन और ज़्याए बनवाकर अपनी गर्दन पर रख। ३ तब उन्हें एदोम और मोआब और अम्मोन और सोर और सीदोन के राजाओं के पास, उन दूरों के हाथ भेजना जो यहदा के राजा सिदकियाह के पास यस्शलेम में आए हैं। ४ उनको उनके स्वामियों के लिये यह कहकर आज्ञा देना: ‘इस्माएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है: अपने-अपने स्वामी से यह कहो कि ५ पृथ्वी की ओर पृथ्वी पर के मनुष्यों और पशुओं को अपनी बड़ी शक्ति और बढ़ाई हुई भूजा के द्वारा मैने बनाया, और जिस किसी को मैं चाहता हूँ उसी को मैं उन्हें दिया करता हूँ। ६ अब मैने ये सब देश, अपने दास बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर को आप ही दे दिए हैं; और मैटान के जीवजन्तुओं को भी मैने उसे दिया है कि वे उसके अधीन रहें। ७ ये सब जातियाँ उसके और उसके बाद उसके बेटे और पोते के अधीन उस समय तक रहेंगी जब तक उसके भी देश का दिन न आए; तब बहुत सी जातियाँ और बड़े-बड़े राजा उससे भी अपनी सेवा करवाएँगे। ८ “पर जो जाति या राज्य बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के अधीन न हो और उसका ज़्याए अपनी गर्दन पर न ले ले, उस जाति को मैं तलवार, अकाल और मरी का दण्ड उस समय तक देता रहूँगा जब तक उसको उसके हाथ के द्वारा मिटा न दूँ, यहोवा की यही वाणी है। ९ इसलिए तुम लोग अपने भविष्यद्वक्ताओं और भावी कहनेवालों और टोनहों और तांत्रिकों की ओर चिंत मत लगाओ जो तुम से कहते हैं कि तुम को बाबेल के राजा के अधीन नहीं होना पड़ेगा। १० क्योंकि वे तुम से झट्ठी भविष्यद्वाणी करते हैं, जिससे तुम अपने-अपने देश से दूर हो जाओ और मैं आप तुम को दूर करके नष्ट कर दूँ। ११ परन्तु जो जाति बाबेल के राजा का ज़्याए अपनी गर्दन पर लेकर उसके अधीन रहेंगी उसको मैं उसी के देश में रहने दूँगा; और वह उसमें खेती करती हुई बर्सी रहेगी, यहोवा की यही वाणी है।” १२ यहदा के राजा सिदकियाह से भी मैने ये बातें कहीं: “अपनी प्रजा समेत तू बाबेल के राजा का ज़्याए अपनी गर्दन पर ले, और उसके और उसकी प्रजा के अधीन रहकर जीवित रह। १३ जब यहोवा ने उस जाति के

विषय जो बाबेल के राजा के अधीन न हो, यह कहा है कि वह तलवार, अकाल और मरी से नाश होगी; तो फिर तू क्यों अपनी प्रजा समेत मरना चाहता है? १४ जो भविष्यद्वक्ता तुझ से कहते हैं, ‘तुझको बाबेल के राजा के अधीन न होना पड़ेगा,’ उनकी मत सुन; क्योंकि वे तुझ से झट्ठी भविष्यद्वाणी करते हैं। १५ यहोवा की यह वाणी है कि मैंने उन्हें नहीं भेजा, वे मेरे नाम से झट्ठी भविष्यद्वाणी करते हैं; और इसका फल यही होगा कि मैं तुझको देश से निकाल दूँगा, और तू उन नवियों समेत जो तुझ से झट्ठी भविष्यद्वाणी करते हैं नहीं हो जाएगा।” १६ तब याजकों और साधारण लोगों से भी मैंने कहा, “यहोवा यह कहता है, तुम्हारे जो भविष्यद्वक्ता तुम से यह भविष्यद्वाणी करते हैं कि ‘यहोवा के भवन के पात्र अब शीघ्र ही बाबेल से लौटा दिए जाएँगे,’ उनके बचनों की ओर कान मत धरो, क्योंकि वे तुम से झट्ठी भविष्यद्वाणी करते हैं। १७ उनकी मत सुनो, बाबेल के राजा के अधीन होकर और उसकी सेवा करके जीवित रहो। १८ यह नगर क्यों उजाड़ हो जाए? यदि वे भविष्यद्वक्ता भी हों, और यदि यहोवा का वचन उनके पास हो, तो वे सेनाओं के यहोवा से बिनती करें कि जो पात्र यहोवा के भवन में और यहदा के राजा के भवन में और यस्शलेम में रह गए हैं, वे बाबेल न जाने पाएँ। १९ क्योंकि सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि जो खाभे और पीतल की नैंद, गंगाल और कुर्सियाँ और अन्य पात्र इस नगर में रह गए हैं, २० जिन्हें बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर उस समय न ले गया जब वह यहोयाकीम के पुत्र यहदा के राजा यकोन्याह को और यहदा और यस्शलेम के सब कुलीनों को बन्दी बनाकर यस्शलेम से बाबेल को ले गया था, २१ जो पात्र यहोवा के भवन में और यहदा के राजा के भवन में और यस्शलेम में रह गए हैं, उनके विषय में इस्माएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि वे भी बाबेल में पहुँचाए जाएँगे; २२ और जब तक मैं उनकी सुधि न लूँ तब तक वहीं रहेंगे, और तब मैं उन्हें लाकर इस स्थान में फिर रख दूँगा, यहोवा की यही वाणी है।”

२८ फिर उसी वर्ष, अर्थात् यहदा के राजा सिदकियाह के राज्य के चौथे

वर्ष के पाँचवें महीने में, अज्जर का पुत्र हनन्याह जो गिबोन का एक भविष्यद्वक्ता था, उसने मुझसे यहोवा के भवन में, याजकों और सब लोगों के सामने कहा, १ “इस्माएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है मैंने बाबेल के राजा के जूए को तोड़ डाला है। २ यहोवा के भवन के जितने पात्र बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर इस स्थान से उठाकर बाबेल ले गया, उन्हें मैं दो वर्ष के भीतर फिर इसी स्थान में ले आऊँगा। ३ मैं यहदा के राजा यहोयाकीम का पुत्र यकोन्याह और सब यहदी बन्दियों को भी जो बाबेल को गए हैं, उनको भी इस स्थान में लौटा ले आऊँगा; क्योंकि मैंने बाबेल के राजा के जूए को तोड़ दिया है, यहोवा की यही वाणी है।” ४ तब यिर्मयाह नवी ने हनन्याह नवी से, याजकों और उन सब लोगों के सामने जो यहोवा के भवन में खड़े थे कहा, ५ “आमीन! यहोवा ऐसा ही करे; जो बातें तुमे भविष्यद्वाणी करके कहीं हैं कि यहोवा के भवन के पात्र और सब बन्दी बाबेल से इस स्थान में फिर आएँगे, उन्हें यहोवा पूरा करे। ६ तो भी मेरा यह वचन सुन, जो मैं तुझ और सब लोगों को कह सुनाता हूँ। ७ जो भविष्यद्वक्ता प्राचीनकाल से मेरे और तेरे पहले होते आए थे, उन्होंने तो बहुत से देशों और बड़े-बड़े राज्यों के विश्व युद्ध और विपति और मरी के विषय भविष्यद्वाणी की थी। ८ परन्तु जो भविष्यद्वक्ता कुशल के विषय भविष्यद्वाणी करे, तो जब उसका वचन पूरा हो, तब ही उस भविष्यद्वक्ता के विषय यह निश्चय हो जाएगा कि यह सचमुच यहोवा का भेजा हआ है।” ९ तब हनन्याह भविष्यद्वक्ता की गर्दन पर था, उतारकर तोड़ दिया। १० और हनन्याह ने सब

लोगों के सामने कहा, “यहोवा यह कहता है कि इसी प्रकार से मैं पूरे दो वर्ष के भीतर बाबेल के राजा नबुकदनेस्सर के जूए को सब जातियों की गर्दन पर से उतारकर तोड़ दूँगा।” तब यिर्मयाह भविष्यद्वत्का चला गया। १३ जब हनन्याह भविष्यद्वत्का ने यिर्मयाह भविष्यद्वत्का की गर्दन पर से ज़आ उतारकर तोड़ दिया, उसके बाद यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा; १४ “ज़ाकर हनन्याह से यह कह, ‘यहोवा यह कहता है कि तूने काठ का ज़आ तो तोड़ दिया, परन्तु ऐसा करके तूने उसके बदले लोहे का ज़आ बना लिया है।’ १५ क्योंकि इसाएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि मैं इन सब जातियों की गर्दन पर लोहे का ज़आ रखता हूँ और वे बाबेल के राजा नबुकदनेस्सर के अधीन रहेंगे, और इनको उसके अधीन होना पड़ेगा, क्योंकि मैदान के जीवजन्तु भी मैं उसके बश में कर देता हूँ।” १६ यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से यह भी कहा, “हे हनन्याह, देख यहोवा ने तुझे नहीं भेजा, तूने इन लोगों को झट्ठी आशा दिलाइ है।” १७ इसलिए यहोवा तुझ से यह कहता है, ‘देख, मैं तुझको पृथ्वी के ऊपर से उठा दूँगा, इसी वर्ष में तू मेरेगा; क्योंकि तूने यहोवा की ओर से फ़िरने की बातें कही हैं।’” १८ इस वचन के अनुसार हनन्याह उसी वर्ष के सातवें महीने में मर गया।

२१ उसी वर्ष यिर्मयाह नबी ने इस आशय की पत्री, उन पुरनियों और भविष्यद्वत्काओं और साधारण लोगों के पास भेजी जो बन्दियों में से बचे थे, जिनको नबुकदनेस्सर यस्श्लेम से बाबेल को ले गया था। २ यह पत्री उस समय भेजी गई, जब यकोन्याह राजा और राजमाता, खोजे, यहदा और यस्श्लेम के हाकिम, लोहार और अन्य कारिगर यस्श्लेम से चले गए थे। ३ यह पत्री शापान के पुत्र एलाशा और हिल्कियाह के पुत्र गमर्वह के हाथ भेजी गई, जिन्हें यहदा के राजा सिदकियाह ने बाबेल के राजा नबुकदनेस्सर के पास बाबेल को भेजा। ४ उसमें लिखा था: ‘जिन्हें लोगों को मैंने यस्श्लेम से बन्दी करके बाबेल में पहुँचवा दिया है, उन सभी से इसाएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है।’ ५ घर बनाकर उनमें बस जाओ; बारियाँ लगाकर उनके फल खाओ। ६ ब्याह करके बेटे-बेटियाँ जन्माओ; और अपने बेटों के लिये छियाँ ब्याह लो और अपनी बेटियाँ पुस्तों को ब्याह दो, कि वे भी बेटे-बेटियाँ जन्माएँ; और वहाँ घटो नहीं वरन् बढ़ते जाओ। ७ परन्तु जिस नगर में मैंने तुम को बन्दी करके भेज दिया है, उसके कुशल का यत्र किया करो, और उसके हित के लिये यहोवा से प्रार्थना किया करो। क्योंकि उसके कुशल से तुम भी कुशल के साथ रहोगे। ८ क्योंकि इसाएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा तुम से यह कहता है कि तुम्हरे जो भविष्यद्वत्का और भावी कहनेवाले तुम्हरे बीच में हैं, वे तुम को बहकाने न पाएँ, और जो स्वप्न वे तुम्हारे निमित्त देखते हैं उनकी ओर कान मत लगाओ, ९ क्योंकि वे मैंने नाम से तुम को झट्ठी भविष्यद्वाणी सुनाते हैं; मैंने उन्हें नहीं भेजा, मुझ यहोवा की यह वाणी है। १० “यहोवा यह कहता है कि बाबेल के सत्तर वर्ष पूरे होने पर मैं तुम्हारी सुधि लूँगा, और अपना यह मनभावना वचन कि मैं तुम्हें इस स्थान में लौटा ले आऊँगा, पूरा करूँगा। ११ क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि की नहीं, बरन कुशल ही की हैं, और अनन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा। १२ तब उस समय तुम मुझ को पुकारोगे और आकर मुझसे प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुर्ख़ी। १३ तम मुझे ढूँढ़ोगे और पाझेगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे। १४ मैं तुम्हें मिलाऊँगा, यहोवा की यह वाणी है, और बैंधुआई से लौटा ले आऊँगा; और तुम को उन सब जातियों और स्थानों में से जिनमें मैंने तुम को जबरन निकाल दिया है, और तुम्हें इकट्ठा करके इस स्थान में लौटा ले

आऊँगा जहाँ से मैंने तुम्हें बैंधुआ करवाकर निकाल दिया था, यहोवा की यही वाणी है। १५ “तुम कहते तो हो कि यहोवा ने हमारे लिये बाबेल में भविष्यद्वत्का प्रगट किए हैं।” १६ परन्तु जो राजा दाऊद की ग़दी पर विराजमान है, और जो प्रजा इस नगर में रहती है, अर्थात् तुम्हरे जो भाई तुम्हारे संग बैंधुआई में नहीं गए, उन सभी के विषय सेनाओं का यहोवा यह कहता है, १७ सुनो, मैं उनके बीच तलवार चलाऊँगा, अकाल, और मरी फैलाऊँगा; और उन्हें ऐसे धिनैने अंजीरों के समान कहूँगा जो निकामे होने के कारण खाए नहीं जाते। १८ मैं तलवार, अकाल और मरी लिए हुए उनका पीछा करूँगा, और ऐसा करूँगा कि वे पृथ्वी के राज्य-राज्य में मार-मारे फ़िरेंगे, और उन सब जातियों में जिनके बीच मैं उन्हें जबरन कर दूँगा, उनकी ऐसी दशा करूँगा कि लोग उन्हें देखकर चकित होंगे और ताली बजाएँगे और उनका अपमान करेंगे, और उनकी उपमा देकर श्वप्न दिया करेंगे। १९ क्योंकि जो वचन मैंने अपने दास भविष्यद्वत्काओं के द्वारा उनके पास बड़ा यत्र करके कहला भेजे हैं, उनको उन्होंने नहीं सुना, यहोवा की यही वाणी है। २० “इसलिए हे सारे बन्दियों, जिन्हें मैंने यस्श्लेम से बाबेल को भेजा है, तुम उसका यह वचन सुनो। २१ ‘कोलायाह का पुत्र अहाब और मासेयाह का पुत्र सिदकियाह जो मैंने नाम से तुम को झट्ठी भविष्यद्वाणी सुनाते हैं, उनके विषय इसाएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि सुनो, मैं उनको बाबेल के राजा नबुकदनेस्सर के हाथ में कर दूँगा, और वह उनको तुम्हारे समने मार डालेगा। २२ सब यहदी बन्दी जो बाबेल में रहते हैं, उनकी उपमा देकर यह श्वप्न दिया करेंगे: यहोवा तुझे सिदकियाह और अहाब के समान करे, जिन्हें बाबेल के राजा ने आग में भून डाला, २३ क्योंकि उन्होंने इसाएलियों में मर्खाता के काम किए, अर्थात् अपने पड़ोसियों की छिपोंको के साथ व्यभिचार किया, और बिना मेरी आज्ञा पाए मेरे नाम से झटे वचन कहे। इसका जानेवाला और गवाह मैं आप ही हूँ, यहोवा की यही वाणी है।” २४ नेहेलामी शमायाह से तू यह कह, “इसाएल के परमेश्वर यहोवा ने यह कहा है: २५ इसलिए कि तूने यस्श्लेम के सब रहनेवालों और सब याजकों को और मासेयाह के पुत्र सपन्याह याजक को अपने ही नाम की इस आशय की पत्री भेजी, २६ कि, ‘यहोवा ने यहोयादा याजक के स्थान पर तुझे याजक ठहरा दिया ताकि तू यहोवा के भवन में रखवाला होकर जिन्हें वहाँ पागलपन करते और भविष्यद्वत्का बन बैठे हैं उन्हें काठ में ठोके और उनके गले में लोहे के पटे डाले। २७ इसलिए यिर्मयाह अनातोती जो तुम्हारा भविष्यद्वत्का बन बैठा है, उसको तुम क्यों नहीं धुड़का? २८ उसने तो हम लोगों के पास बाबेल में यह कहला भेजा है कि बैंधुआई तो बहुत काल तक रहेगी, इसलिए घर बनाकर उनमें रहो, और बारियाँ लगाकर उनके फल खाओ।’” २९ यह पत्री सपन्याह याजक ने यिर्मयाह भविष्यद्वत्का को पठ सुनाई। ३० तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा “सब बैंधुओं के पास यह कहला भेज, ३१ यहोवा नेहेलामी शमायाह के विषय यह कहता है: ‘शमायाह ने मेरे बिना भेजे तुम से जो भविष्यद्वाणी की ओर तुम को झटाएँगे और भरोसा दिलाया है, ३२ इसलिए यहोवा यह कहता है: सुनो, मैं उस नेहेलामी शमायाह और उसके बंश को दण्ड देना चाहता हूँ, उसके घर में से कोई इन प्रजाओं में न रह जाएगा। और जो भलाई मैं अपनी प्रजा की करेवाला हूँ, उसको वह देखने न पाएगा, क्योंकि उसने यहोवा से फ़िर जाने की बातें कही हैं, यहोवा की यही वाणी है।”

३० यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा वह यह है: १ “इसाएल का परमेश्वर यहोवा तुझ से यह कहता है, जो वचन मैंने तुझ से कहे हैं उन सभी को पुस्तक में लिख ले। २ क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आते हैं कि मैं अपनी इसाएली और यहदी प्रजा को बैंधुआई से लौटा लाऊँगा; और जो देश मैंने उनके पितरों को दिया था उसमें उन्हें फ़ेर ले आऊँगा, और वे

फिर उसके अधिकारी होंगे, यहोवा का यही वचन है।” ४ जो वचन यहोवा ने इसाएलियों और यहदियों के विषय कहे थे, वे ये हैं ५ यहोवा यह कहता है: थरथरा देनेवाला शब्द सुनाई दे रहा है, शान्ति नहीं, भय ही का है। ६ पूछो तो भला, और देखो, क्या पुष्प को भी कही जनने की पीड़ा उठती है? फिर क्या कारण है कि सब पुष्प जच्चा के समान अपनी-अपनी कमर अपने हाथों से दबाए हुए देख पड़ते हैं? क्यों सब के मुख फिके रंग के हो गए हैं? ७ हाय, हाय, वह दिन क्या ही भारी होगा! उसके समान और कोई दिन नहीं; वह याकूब के संकट का समय होगा; परन्तु वह उससे भी छुड़ाया जाएगा। ८ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, कि उस दिन मैं उसका रखा हुआ जूआ तुम्हारी गर्दन पर से तोड़ दूँगा, और तुम्हारे बन्धनों को टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा; और परदेशी फिर उनसे अपनी सेवा न कराने पाएँगे। ९ परन्तु वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद की सेवा करेंगे जिसको मैं उन पर राज्य करने के लिये ठहराऊँगा। १० “इसलिए हे मेरे दास याकूब, तेरे लिये यहोवा की यह वाणी है, मत डर; हे इसाएल, विस्मित न हो; क्योंकि मैं दूर देश से तुझे और तेरे वंश को बैधुआई के देश से छुड़ा ले आऊँगा। तब याकूब लौटकर, चैन और सुख से रहेगा, और कोई उसको डराने न पाएगा। ११ क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, तुम्हारा उद्धार करने के लिये मैं तुम्हारे संग हूँ, इसलिए मैं उन सब जातियों का अन्त कर डालूँगा, जिनमें मैंने उन्हें तिर-बितर किया है, परन्तु तुम्हारा अन्त न करूँगा। तुम्हारी ताड़ना मैं चिराक करके करूँगा, और तुम्हें किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराऊँगा। १२ “यहोवा यह कहता है: तेरे दुःख की कोई औषध नहीं, और तेरी चोट गहरी और दुःखदाई है। १३ तेरा मुकदमा लड़ने के लिये कोई नहीं, तेरा घाव बाँधने के लिये न पढ़ी, न मलहम है। १४ तेरे सब मित्र तुझे भूल गए, वे तुम्हारी सुधि नहीं लेते; क्योंकि तेरे बड़े अधर्म और भारी पापों के कारण, मैंने शत्रु बनकर तुझे मारा है; मैंने क्रूर बनकर ताड़ना दी है। १५ तू अपने घाव के मारे क्यों चिल्लताति है? तेरी पीड़ा की कोई औषध नहीं। तेरे बड़े अधर्म और भारी पापों के कारण मैंने तुझे से ऐसा व्यवहार किया है। १६ परन्तु जितने तुझे अब खाए लेते हैं, वे आप ही खाए जाएँगे, और तेरे द्वोही आप सब के सब बैधुआई में जाएँगे; और तेरे लूटनेवाले आप तुलेंगे और जितने तेरा धन छीनते हैं, उनका धन मैं छिनवाऊँगा। १७ मैं तेरा इलाज करके तेरे घावों को चंगा करूँगा, यहोवा की यह वाणी है; क्योंकि तेरा नाम ठुकराई हुई पड़ा है: वह तो सियोन है, उसकी चिन्ता कौन करता है? १८ “यहोवा कहता है: मैं याकूब के तम्बू को बैधुआई से लौटाता हूँ और उसके घरों पर दया करूँगा; और नगर अपने ही खण्डहर पर फिर बसेगा, और राजभवन पहले के अमुसार पिर बन जाएगा। १९ तब उनमें से धन्य कहने, और अनन्द करने का शब्द सुनाई पड़ेगा। २० मैं उनका वैभव बढ़ाऊँगा, और वे थोड़े न होंगे। उनके बच्चे प्राचीनीकाल के समान होंगे, और उनकी मण्डली मेरे समाने स्थिर रहेगी; और जितने उन पर अधेर करते हैं उनको मैं दण्ड दूँगा। २१ उनका महापुस्त उन्हीं में से होगा, और जो उन पर प्रभुता करेगा, वह उन्हीं में से उत्पन्न होगा; मैं उसे अपने निकट बुलाऊँगा, और वह मेरे समीप आ भी जाएगा, क्योंकि कौन है जो अपने आप मेरे समीप आ सकता है? यहोवा की यही वाणी है। २२ उस समय तुम मेरी प्रजा ठहरोगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा।” २३ देखो, यहोवा की जलजलाहट की आँधी चल रही है! वह अति प्रचण्ड आँधी है, दूरों के सिर पर वह जोर से लगेगी। २४ जब तक यहोवा अपना काम न कर चुके और अपनी युक्तियों को पूरी न कर चुके, तब तक उसका भड़का हुआ क्रोध शान्त न होगा। अन्त के दिनों में तुम इस बात को समझ सकोगे।

३१ “उन दिनों में मैं सारे इसाएली कुलों का परमेश्वर ठहरूँगा और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है।” ३२ यहोवा यह कहता है: “जो प्रजा तलवार से बच निकली, उन पर जंगल में असुधर हुआ, मैं इसाएल को विश्वाम देने के लिये तैयार हुआ।” ३३ “यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है: मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैंने तुझ पर अपनी कस्ता बनाए रखी है। ३४ हे इसाएली कुमारी कन्या! मैं तुझे फिर बनाऊँगा; वहाँ तू फिर शंगार काके डफ बजाने लगेगी, और आनन्द कनेवालों के बीच में नाचती हुई निकलेगी। ३५ तू समरिया के पहाड़ों पर अंगू की बारियाँ फिर लगाएगी; और जो उन्हें लगाएँगे, वे उनके फल भी खाने पाएँगे। ३६ क्योंकि ऐसा दिन आएगा, जिसमें ऐसै प्रहारी देश के पहरए पुकारेंगे: ‘उठो, हम अपने परमेश्वर यहोवा के पास सियोन को चलों।’” ३७ क्योंकि यहोवा यह कहता है: “याकूब के कारण आनन्द से जयजयकार करो: जातियों में जो श्रेष्ठ है उसके लिये ऊँचे शब्द से स्तुति करो, और कहो, ‘हे यहोवा, अपनी प्रजा इसाएल के बचे हुए लोगों का भी उद्धार कर।’” ३८ देखो, मैं उनको उत्तर देश से ले आऊँगा, और पृथ्वी के कोने-कोने से इकट्ठे करूँगा, और उनके बीच अंधे, लंगड़े, गर्भवती, और जच्चा छियाँ भी आएँगी; एक बड़ी मण्डली यहाँ लौट आएगी। ३९ वे ऑसू बहाते हुए आएँगे और गिङ्गिड़ाते हुए मेरे द्वारा पहुँचाए जाएँगे, मैं उन्हें नदियों के किनारों-किनारों से और ऐसे चौरस मार्ग से ले आऊँगा, जिससे वे ठोकर न खाने पाएँगे; क्योंकि मैं इसाएल का पिता हूँ, और ऐसै मेरा जेला है। ४० “हे जाति-जाति के लोगों, यहोवा का वचन सुनो, और दूर-दूर के द्वीपों में भी इसका प्रचार करो; कहो, ‘जिसने इसाएलियों को तिर-बितर किया था, वही उन्हें इकट्ठे भी करेगा, और उनकी ऐसी रक्षा करेगा जैसी चरवाहा अपने झूण्ड की करता है।’” ४१ क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया, और उस शत्रु के पंजे से जो उससे अधिक बलवन्त है, उसे छुटकारा दिया है। ४२ इसलिए वे सियोन की चोटी पर आकर जयजयकार करेंगे, और यहोवा से अनाज, नया दाखमध, टटका तेल, भेड़-बकरियाँ और गाय-बैलों के बच्चे आदि उत्तम-उत्तम दान पाने के लिये ताँता बाँधकर चलेंगे; और उनका प्राण सीधी हुई बारी के समान होगा, और वे फिर कभी उदास न होंगे। ४३ उस समय उनकी कुमारियाँ नाचती हुई हर्ष करेगी, और जबान और बढ़े एक संग आनन्द करेंगे। क्योंकि मैं उनके शोक को दूर करके उन्हें आनन्दित करूँगा, मैं उन्हें शानि दूँगा, और दुःख के बदले आनन्द दूँगा। ४४ मैं याजकों को चिकनी वस्तुओं से अति तुम करूँगा, और मेरी प्रजा मेरे उत्तम दानों से सन्तुष्ट होगी, यहोवा की यही वाणी है। ४५ यहोवा यह भी कहता है: “सुन, रामाह नगर में विलाप और बिलक-बिलककर रोने का शब्द सुनने में आता है। राहेल अपने बालकों के लिये रो रही है; और अपने बालकों के कारण शान्त नहीं होती, क्योंकि वे नहीं रहे।” ४६ यहोवा यह कहता है: “रोने-पीटने और ऑसू बहाने से स्क जा; क्योंकि तेरे परिश्रम का फल मिलनेवाला है, और वे शत्रुओं के देश से लौट आएँगे। ४७ अन्त में रोनी आशा पूरी होगी, यहोवा की यह वाणी है, तेरे वंश के लोग अपने देश में लौट आएँगे। ४८ निश्चय मैंने ऐसै प्रहार को ये बताए कंहकर विलाप करते सुना है, ‘तेरे मेरी ताड़ना की, और मेरी ताड़ना ऐसे बछड़े की सी हुई जो निकाला न गया हो; परन्तु अब तुम्हें फेर, तब मैं फिरूँगा, क्योंकि तू मेरा परमेश्वर है।’ ४९ भटक जाने के बाद मैं पछताया; और सिखाए जाने के बाद मैंने छाती पीटी; पुराने पापों को स्मरण कर मैं लजिज्जत हुआ और मेरा मुँह काला हो गया।” ५० क्या ऐसै प्रहार प्रिय पुत्र नहीं है? क्या वह मेरा दुलारा लड़का नहीं है? जब जब मैं उसके विस्तु बातें करता हूँ, तब-तब मुझे उसका स्मरण हो आता है। इसलिए मेरा मन उसके कारण भर आता है; और मैं निश्चय उस पर दया करूँगा, यहोवा

की यही वाणी है। २२ “हे इसाएली कुमारी, जिस राजमार्ग से तू गई थी, उसी में खम्भे और झाँडे खड़े कर; और अपने इन नारों में लौट आने पर मन लगा। २३ हे भटकनेवाली कन्या, तू कब तक द्वधर-द्वधर फिरती रहेगी? यहोवा की एक नई सुषि पृथ्वी पर प्राप्त होगी, अर्थात् नारी पुष्प की सहायता करेगी।” २४ इसाएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है “जब मैं यहूदी बन्दियों को उनके देश के नारों में लौटाऊँगा, तब उनमें यह आशीर्वद फिर दिया जाएगा: ‘हे धर्मभरे वासस्थान, हे पवित्र पर्वत, यहोवा तुझे आशीर्ष दें।’ २५ यहदा और उसके सब नगरों के लोग और किसान और चरवाहे भी उसमें इकट्ठे बरसेंगे। २६ क्योंकि मैंने थके हुए लोगों का प्राप्त तम किया, और उदास लोगों के प्राप्त को भर दिया है।” २७ इस पर मैं जाग उठा, और देखा, और मेरी नीद मुझे मीठी लगी। २८ “देख, यहोवा की यह वाणी है, कि ऐसे दिन अनेवाले हैं जिनमें मैं इसाएल और यहदा के घरामों के बाल-बच्चों और पशु दोनों को बहुत बढ़ाऊँगा। २९ जिस प्रकार से मैं सोच-सोचकर उनको पिराता और ढाटा, नष्ट करता, काट डालता और सत्यानाश ही करता था, उसी प्रकार से मैं अब सोच-सोचकर उनको रोपूँगा और बढ़ाऊँगा, यहोवा की यही वाणी है। ३० उन दिनों में वे पिर न कहेंगे: ‘पिताओं ने तो खट्टे अंगर खाए, परन्तु उनके बंश के दाँत खट्टे हो गए हैं।’ ३१ क्योंकि जो कोई खट्टे अंगर खाए उसी के दाँत खट्टे हो जाएंगे, और हर एक मनुष्य अपने ही अधर्म के कारण मरा जाएगा। ३२ “फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन अनेवाले हैं जब मैं इसाएल और यहदा के घरामों से नई वाचा बाँधूँगा। ३३ वह उस वाचा के समान न होगी जो मैंने उनके पुरखाओं से उस समय बाँधी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, क्योंकि यथपि मैं उनका पति था, तो भी उन्होंने मेरी वह वाचा तोड़ डाली। ३४ परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इसाएल के घरामे से बाँधूँगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। ३५ और तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अर्धम क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा।” ३६ जिसने दिन को प्रकाश देने के लिये सूर्य को और रात को प्रकाश देने के लिये चन्द्रमा और तारागण के नियम ठहराए हैं, जो समृद्ध को उठालता और उसकी लहरों को गरजाता है, और जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है, वही यहोवा यह कहता है: ३७ “यदि ये नियम मेरे सामने से टल जाएँ तब ही यह हो सकेगा कि इसाएल का बंश मेरी दृष्टि में सदा के लिये एक जाति ठहरने की अपेक्षा मिट सकेगा।” ३८ यहोवा यह भी कहता है, “यदि ऊपर से आकाश मापा जाए और नीचे से पृथ्वी की नीच खोद खोटकर पता लगाया जाए, तब ही मैं इसाएल के सारे बंश को उनके सब पापों के कारण उनसे हाथ उठाऊँगा।” ३९ “देख, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आ रहे हैं जिनमें यह नगर हनवेल के गम्ट से लेकर कोने के फाटक तक यहोवा के लिये बनाया जाएगा। ४० मापने की रस्सी फिर आगे बढ़कर सीधी गोरेब पहाड़ी तक, और वहाँ से धमकर गोआ को पहुँचेगी। ४१ शब्दों और राख की सब तराई और किट्टोन नले तक जितने खेत हैं, घोड़ों के पूर्वी फाटक के कोने तक जितनी भूमि है, वह सब यहोवा के लिये पवित्र ठहरेगी। सदा तक वह नगर फिर कभी न तो गिराया जाएगा और न ढाया जाएगा।”

३२ यहदा के राजा सिदिक्याह के राज्य के दसवें वर्ष में जो नब्कदनेस्म के राज्य का अठारहवाँ वर्ष था, यहोवा की ओर से यह वचन धर्मयाह

के पास पहुँचा। २ उस समय बाबेल के राजा की सेना ने यस्शलेम को घेर लिया था और धर्मयाह भविष्यद्वाता यहदा के राजा सिदिक्याह ने यह कहकर उसे कैद किया था, “तू ऐसी भविष्यद्वाती क्यों करता है, ‘यहोवा यह कहता है: देखो, मैं यह नगर बाबेल के राजा के वश में कर दूँगा, वह इसको ले लेगा;’ और यहदा का राजा सिदिक्याह कसदियों के हाथ से न बचेगा परन्तु वह बाबेल के राजा के वश में अवश्य ही पड़ेगा, और वह और बाबेल का राजा आपस में आमने-सामने बातें करेंगे; और अपनी-अपनी आँखों से एक दूसरे को देखेंगे। ३ और वह सिदिक्याह को बाबेल में ले जाएगा, और जब तक मैं उसकी सुधि न लूँ, तब तक वह वही रहेगा, यहोवा की यह वाणी है। चाहे तुम लोग कसदियों से लड़ो भी, तो भी तुम्हरे लड़ने से कुछ बन न पड़ेगा।” ४ धर्मयाह ने कहा, “यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचा, ५ देख, शल्लम का पुत्र हनमेल जो तेरा चरेचा भाई है, वह तेरे पास यह कहने को आने पर है, ‘मेरा खेत जो अनातोत में है उसे मोल ले, क्योंकि उसे मोल लेकर छुड़ाने का अधिकार तेरा ही है।’ ६ अतः यहोवा के वचन के अनुसार मेरा चरेचा भाई हनमेल पहरे के आँगन में मेरे पास आकर कहने लगा, ‘मेरा जो खेत बिन्यामीन क्षेत्र के अनातोत में है उसे मोल ले, क्योंकि उसके स्वामी होने और उसके छुड़ा लेने का अधिकार तेरा ही है; इसलिए तू उसे मोल ले।’ ७ तब मैंने जान लिया कि वह यहोवा का वचन था। ८ “इसलिए मैंने उस अनातोत के खेत को अपने चरेचे भाई हनमेल से मोल ले लिया, और उसका दाम चाँदी के सत्रह शेकेल तौलकर दे दिए। ९ और मैंने दस्तावेज में दस्तखत और मुहर हो जाने पर, गवाहों के सामने वह चाँदी काँटे में तौलकर उसे दे दी। १० तब मैंने मोल लेने की दोनों दस्तावेजें जिनमें सब शर्तें लिखी हुई थीं, और जिनमें से एक पर मुहर थी और दूसरी खुली थी, ११ उन्हें लेकर अपने चरेचे भाई हनमेल के और उन गवाहों के सामने जिन्होंने दस्तावेज में दस्तखत किए थे, और उन सब यहदियों के सामने भी जो पहरे के आँगन में बैठे हुए थे, नेरियाह के पुत्र बास्क को जो महसेयाह का पोता था, सौप दिया। १२ तब मैंने उनके सामने बास्क को यह आज्ञा दी १३ “इसाएल के परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है, इन मोल लेने की दस्तावेजों को जिन पर मुहर की हुई है और जो खुली हुई है, इन्हें लेकर मिटी के बर्तन में रख, ताकि ये बहुत दिन तक रहें। १४ क्योंकि इसाएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है, इस देश में घर और खेत और दाख की बारियाँ फिर बेची और मोल ली जाएँगी।” १५ “जब मैंने मोल लेने की वह दस्तावेज नेरियाह के पुत्र बास्क के हाथ में दी, तब मैंने यहोवा से यह प्रार्थना की, १६ “हे प्रभु यहोवा, तू बड़े तराई सामर्थ्य और बढ़ाई हुई भूजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया हो। तेरे लिये कोई काम कठिन नहीं है। १७ तू हजारों पर कस्ता करता रहता परन्तु पूर्वजों के अर्धम का बदला उनके बाद उनके बंश के लोगों को भी देता है, हे महान और पराक्रमी परमेश्वर, जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है, १८ तू बड़ी युक्ति करनेवाला और सामर्थ्य के काम करनेवाला है, तेरी दृष्टि मनुष्यों के सारे चाल चलन पर लगी रहती है, और तू हर एक को उसके चाल चलन और कर्म का फल भगाता है। १९ तू ने मिस्र देश में चिन्ह और चमत्कार किए, और आज तक इसाएलियों वरन् सब मनुष्यों के बीच वैसा करता आया है, और इस प्रकार तुम अपना ऐसा नाम किया है जो आज के दिन तक बना है। २० तू अपनी प्रजा इसाएल को मिस्र देश में से चिन्हों और चमत्कारों और सामर्थ्य हाथ और बढ़ाई हुई भूजा के द्वारा, और बड़े भयानक कार्यों के साथ निकाल लाया। २१ फिर तुम यह देश उन्हें दिया जिसके देने की शपथ तूने उनके पूर्वजों से खाई थी; जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, और वे आकर इसके

अधिकारी हुए। २४ तो भी उन्होंने तेरी नहीं मानी, और न तेरी व्यवस्था पर चलें; बरन् जो कुछ तैरे उनको करने की आज्ञा दी थी, उसमें से उन्होंने कुछ भी नहीं किया। इस कारण तौरे उन पर यह सब विपत्ति डाली है। २५ अब इन दमदारों को देख, वे लोग इस नगर को ले लेने के लिये आ गए हैं, और यह नगर तलवार, अकाल और मरी के कारण इन चढ़े हुए कसदियों के वश में किया गया है। जो तैरे कहा था वह अब पूरा हुआ है, और तू इसे देखता भी है। २६ तो भी, हे प्रभु यहोवा, तौरे मुझसे कहा है कि गवाह बुलाकर उस खेत को मोल ले, यथोपि कि यह नगर कसदियों के वश में कर दिया गया है।^१ २७ तब यहोवा का यह बचन यिर्मयाह के पास पहुँचा, २८ “मैं तो सब प्रणियों का परमेश्वर यहोवा हूँ; क्या मेरे लिये कोई भी काम कठिन है? २९ इसलिए यहोवा यह कहता है, देख, मैं यह नगर कसदियों और बाबेल के राजा नव्बकदनेस्सर के वश में कर देने पर हूँ, और वह इसको ले लेगा। ३० जो कसदी इस नगर से शुद्ध कर रहे हैं, वे आकर इसमें आग लगाकर ढूँक देंगे, और जिन घरों की छतों पर उन्होंने बाल के लिये धूप जलाकर और दूसरे देवताओं को अर्ध चढ़ाकर मुझे रिस दिलाई है, वे घर जला दिए जाएँगे। ३१ क्योंकि इसाएल और यहदा, जो काम मुझे बुरा लगता है, वही लड़कपन से करते आए हैं; इसाएली अपनी बनाई हुई वस्तुओं से मुझ को रिस ही रिस दिलाते आए हैं, यहोवा की यह वाणी है। ३२ यह नगर जब से बसा है तब से आज के दिन तक मेरे क्रोध और जलजलाहट के भड़कने का कारण हुआ है, इसलिए अब मैं इसको अपने सामने से इस कारण दूर करूँगा। ३३ क्योंकि इसाएल और यहदा अपने राजाओं हाकिमों, याजकों और भविष्यद्वत्ताओं समेत, क्या यहदा देश के, क्या यस्थलेम के निवासी, सब के सब बुराई पर बुराई करके मुझ को रिस दिलाते आए हैं। ३४ उन्होंने मेरी ओर मूँह नहीं बरन पीठ ही फेर दी है, यथपि मैं उन्हें बड़े यह से सिखाता आया हूँ, तो भी उन्होंने मेरी शिक्षा को नहीं माना। ३५ बरन जो भवन मेरा कहलाता है, उसमें भी उन्होंने अपनी धृषित वस्तुएं स्थापित करके उसे अशुद्ध किया है। ३६ उन्होंने हिनोमियों की तराई में बाल के ऊँचे-ऊँचे स्थान बनाकर अपने बेटे-बेटियों को मोलेके के लिये होम किया, जिसकी आज्ञा मैंने कभी नहीं दी, और न यह बात कभी मेरे मन में आई कि ऐसा धृषित काम किया जाए और जिससे यहदी लोग पाप में फँसे। ३७ “परन्तु अब इसाएल का परमेश्वर यहोवा इस नगर के विषय में, जिसके लिये तुम लोग कहते हो, ‘वह तलवार, अकाल और मरी के द्वारा बाबेल के राजा के वश में पड़ा हुआ है’ यह कहता है: ३८ देखो, मैं उनको उन सब देशों से जिनमें मैंने क्रोध और जलजलाहट में आकर उन्हें जबरन निकाल दिया था, लौटा ले आकर इसी नगर में इकट्ठे करूँगा, और निराकर करके बसा दूँगा। ३९ और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा। ४० मैं उनको एक ही मन और एक ही चाल कर दूँगा कि वे सदा मेरा भय मानते रहें, जिससे उनका और उनके बाद उनके वश का भी भला हो। ४१ मैं उनसे यह चाचा बाँधूँगा, कि मैं कभी उनका संग छोड़कर उनका भला करना न छोड़ूँगा; और अपना भय मैं उनके मन में ऐसा उपजाऊँगा कि वे कभी मुझसे अलग होना न चाहेंगे। ४२ मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ उनका भला करता रहूँगा, और सचमुच उहें इस देश में अपने सारे मन और प्राण से बसा दूँगा। ४३ “देख, यहोवा यह कहता है कि जैसे मैंने अपनी इस प्रजा पर यह सब बड़ी विपत्ति डाल दी, वैसे ही निश्चय इससे वह सब भलाई भी करूँगा जिसके करने का वचन मैंने दिया है। इसलिए यह देश जिसके विषय तुम लोग कहते हों ४४ कि यह उजाड़ हो गया है, इसमें न तो मनुष्य रह गए हैं और न पश, यह तो कसदियों के वश में पड़ चुका है, इसी में फिर से खेत मोल लिए जाएँगे, ४५ और बिन्यामिन के क्षेत्र में, यस्थलेम के आस-पास, और यहदा देश के वश मारने में भेड़-बकरियाँ फिर गिन-गिनकर चराई जाएँगी, यहोवा का यही वचन है। ४६ “यहोवा की यह भी वाणी है, देख, ऐसे दिन आनेवाले हैं कि कल्प्याण का जो वचन मैंने इसाएल और यहदा के घरानों के विषय में कहा है, उसे पूरा करूँगा। ४७ उन दिनों में और उन समयों में, मैं डाऊद के वंश में धार्मिकता की एक डाल लगाऊँगा; और वह इस देश में न्याय और धार्मिकता के काम करेगा। ४८ उन दिनों में यहदा बचा रहेगा और यस्थलेम निराकर बसा रहेगा; और उसका नाम यह रखा जाएगा अर्थात् ‘यहोवा हमारी धार्मिकता।’ ४९ “यहोवा यह कहता है, डाऊद के कुल में इसाएल के घराने की ग़दी पर विराजेवाले सदैव बने रहेंगे, ५० और लेवीय याजकों के कुलों में प्रतिदिन मेरे लिये होमपति चढ़ानेवाले और अन्नबलि जलानेवाले और मेलबलि चढ़ानेवाले सदैव बने रहेंगे।” ५१ फिर यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा ५२ “यहोवा यह कहता है: मैंने

देश और दक्षिण देश के नगरों में लोग गवाह बुलाकर खेत मोल लेंगे, और दस्तावेज में दस्तखत और मुहर करेगे; क्योंकि मैं उनके दिनों को लौटा ले आऊँगा; यहोवा की यही वाणी है।”

३३ जिस समय यिर्मयाह पहरे के आँगन में बन्द था, उस समय यहोवा का बचन दूसी बार उसके पास पहुँचा, २ “यहोवा जो पृथ्वी का रचनेवाला है, जो उसको स्थिर करता है, उसका नाम यहोवा है; वह यह कहता है, ३ मुझसे प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी-बड़ी और कठिन बातें बताऊँगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता। ४ क्योंकि इसाएल का परमेश्वर यहोवा इस नगर के घरों और यहदा के राजाओं के भवनों के विषय में, जो इसलिए गिराए जाते हैं कि दमदारों और तलवार के साथ सुभीते से लड़ सके, यह कहता है, ५ कसदियों से युद्ध करने को वे लोग आते तो हैं, परन्तु मैं क्रोध और जलजलाहट में आकर उनको मरवाऊँगा और उनकी लोथें उसी स्थान में भर दूँगा; क्योंकि उनकी दृष्टि के कारण मैंने इस नगर से सुख फेर लिया है। ६ देख, मैं इस नगर का इलाज करके इसके निवासियों को चंगा करूँगा; और उन पर पूरी शान्ति और सच्चाई प्रगट करूँगा। ७ मैं यहदा और इसाएल के बन्दियों को लौटा ले आऊँगा, और उन्हें पहले के समान बसाऊँगा। ८ मैं उनको उनके सारे अर्थम् और पाप के काम से शुद्ध करूँगा जो उन्होंने मेरे विद्ध किए हैं; और उन्होंने जितने अर्थम् और अपराध के काम मेरे विद्ध किए हैं, उन सब को मैं क्षमा करूँगा। ९ क्योंकि वे वह सब भलाई के काम सुनेंगे जो मैं उनके लिये करूँगा और वे सब कल्प्याण और शान्ति की चर्चा सुनकर जो मैं उनसे करूँगा, डॉरे और थरथराएँगे; वे पृथ्वी की उन जातियों की दृष्टि में मेरे लिये हर्ष और स्तुति और शोभा का कारण हो जाएँगे। १० “यहोवा यह कहता है, यह स्थान जिसके विषय तुम लोग कहते हो ‘यह तो उजाड़ हो गया है, इसमें न तो मनुष्य रह गया है और न पश,’ अर्थात् यहदा देश के नगर और यस्थलेम की सड़कें जो ऐसी सुसान पड़ी हैं कि उनमें न तो कोई मनुष्य रहता है और न कोई पश, ११ इन्हीं में हर्ष और आनन्द का शब्द, दुहे-दुहन का शब्द, और इस बात के कहनेवालों का शब्द फिर सुनाइ पडेगा: ‘सेनाओं के यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि यहोवा भला है, और उसकी कस्ता सदा की है।’ और यहोवा के भवन में धन्यवाद-बलि लानेवालों का शब्द सुनाइ देगा; क्योंकि मैं इस देश की दशा पहले के समान ज्यों की त्यों कर दूँगा, यहोवा का यही वचन है। १२ “सेनाओं का यहोवा कहता है: सब गँवों समेत यह स्थान जो ऐसा उजाड़ है कि इसमें न तो मनुष्य रह गया है और न पश, इसी में भेड़-बकरियाँ बैठानेवाले चरवाहे फिर बसेंगे। १३ पहाड़ी देश में और नीचे के देश में, दक्षिण देश के नगरों में, बिन्यामिन क्षेत्र में, और यस्थलेम के आस-पास, अर्थात् यहदा देश के सब नगरों में भेड़-बकरियाँ फिर गिन-गिनकर चराई जाएँगी, यहोवा का यही वचन है। १४ “यहोवा की यह भी वाणी है, देख, ऐसे दिन आनेवाले हैं कि कल्प्याण का जो वचन मैंने इसाएल और यहदा के घरानों के विषय में कहा है, उसे पूरा करूँगा। १५ उन दिनों में और उन समयों में, मैं डाऊद के वंश में धार्मिकता की एक डाल लगाऊँगा; और वह इस देश में न्याय और धार्मिकता के काम करेगा। १६ उन दिनों में यहदा बचा रहेगा और यस्थलेम निराकर बसा रहेगा; और उसका नाम यह रखा जाएगा अर्थात् ‘यहोवा हमारी धार्मिकता।’ १७ “यहोवा यह कहता है, डाऊद के कुल में इसाएल के घराने की ग़दी पर विराजेवाले सदैव बने रहेंगे, १८ और लेवीय याजकों के कुलों में प्रतिदिन मेरे लिये होमपति चढ़ानेवाले और अन्नबलि जलानेवाले और मेलबलि चढ़ानेवाले सदैव बने रहेंगे।” १९ फिर यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा २० “यहोवा यह कहता है: मैंने

दिन और रात के विषय में जो वाचा बाँधी है, जब तुम उसको ऐसा तोड़ सको कि दिन और रात अपने-अपने समय में न हों, २८ तब ही जो वाचा मैंने अपने दास दाऊद के संग बाँधी है टूट सकेगी, कि तेरे वंश की गदी पर विराजनेवाले संदैव बने रहेंगे, और मेरी वाचा मेरी सेवा टहल करनेवाले लेवीय याजकों के संग बाँधी रहेगी। २९ जैसा आकाश की सेना की गिनती और समृद्ध के रेतकों का परिमाण नहीं हो सकता है उसी प्रकार मैं अपने दास दाऊद के वंश और अपने सेवक लेवियों को बढ़ाकर अनगिनत कर दौँगा। ३० यहोवा का यह वचन यिर्माह के पास पहुँचा ३१ “क्या तूने नहीं देखा कि ये लोग क्या कहते हैं, ‘जो दो कुल यहोवा ने चुन लिये थे उन दोनों से उसने अब हाथ उठाया है?’ यह कहकर कि ये मेरी प्रजा को तुच्छ जानते हैं और कि यह जाति उनकी दृष्टि में गिर गई है। ३२ यहोवा यह कहता है, यदि दिन और रात के विषय मेरी वाचा अटल न रहे, और यदि आकाश और पृथ्वी के नियम मेरे ठहराए हए न रह जाएँ, ३६ तब ही मैं याकूब के वंश से हाथ उठाऊँगा। और अब्राहम, इसहाक और याकूब के वंश पर प्रभुता करने के लिये अपने दास दाऊद के वंश में से किसी को फिर न ठहराऊँगा। परन्तु इसके विपरीत मैं उन पर दया करके उनको बध्युआई से लौटा लाऊँगा।”

३४ जब बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर अपनी सारी सेना समेत और पृथ्वी के जितने राज्य उसके वंश में थे, उन सभी के लोगों समेत यस्श्लेम और उसके सब गाँवों से लड़ रहा था, तब यहोवा का यह वचन यिर्माह के पास पहुँचा ३२ “इस्माइल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है: जाकर यहदा के राजा सिदकिय्याह से कह, ‘यहोवा यह कहता है: देख, मैं इस नगर को बाबेल के राजा के वंश में कर देने पर हूँ, और वह इसे फँकवा देगा। ३३ तु उसके हाथ से न चर्चा, निश्चय पकड़ा जाएगा और उसके वंश में कर दिया जाएगा; और तेरी आँखें बाबेल के राजा को देखेंगी, और तुम अपने-सामने बातें करोगे; और तू बाबेल को जाएगा।” ३४ तो भी ही यहदा के राजा सिदकिय्याह, यहोवा का यह भी वचन सुन जिसे यहोवा तेरे विषय में कहता है: ‘तु तलवार से मारा न जाएगा। ३५ तु शान्ति के साथ मरेगा। और जैसा तेरे पितरों के लिये अर्थात् जो तुझ से पहले राजा थे, उनके लिये सुगन्ध-द्रव्य जलाया गया, वैसा ही तेरे लिये भी जलाया जाएगा; और लोग यह कहकर, “हाय मेरे प्रभु!” तेरे लिये छाती पीटेंगे, यहोवा की यही वाणी है।” ३६ ये सब वचन यिर्माह भविष्यद्वाता ने यहदा के राजा सिदकिय्याह से यस्श्लेम में उस समय कहे, ३७ जब बाबेल के राजा की सेना यस्श्लेम से और यहदा के जितने नगर बच गए थे, उनसे अर्थात् लाकीश और अजेका से लड़ रही थी; क्योंकि यहदा के जो गढ़वाले नगर थे उनमें से केवल वे ही रह गए थे। ३८ यहोवा का यह वचन यिर्माह के पास उस समय आया जब सिदकिय्याह राजा ने सारी प्रजा से जो यस्श्लेम में थी यह वाचा बाँधाई कि दासों के स्वाधीन होने का प्रचार किया जाएँ ३९ कि सब लोग अपने-अपने दास-दासी को जो झब्बी या झब्बिन हों, स्वाधीन करके जाने दें, और कोई अपने यहदी भाई से फिर अपनी सेवा न कराएँ। ४० तब सब हाकिमों और सारी प्रजा ने यह प्रण किया कि हम अपने-अपने दास दासियों को स्वतंत्र कर देंगे और फिर उनसे अपनी सेवा न कराएँ; इसलिए उस प्रण के अनुसार उनको स्वतंत्र कर दिया। ४१ परन्तु इसके बाद वे फिर गए और जिन दास दासियों को उन्होंने स्वतंत्र करके जाने दिया था उनको फिर अपने वंश में लाकर दास और दासी बना लिया। ४२ तब यहोवा की ओर से यह वचन यिर्माह के पास पहुँचा ४३ “इस्माइल का परमेश्वर यहोवा तुम से यह कहता है, जिस समय मैं तुम्हारे पितरों को दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल ले आया, उस समय मैंने आप उनसे यह कहकर वाचा बाँधी ४४ ‘तुम्हारा जो झब्बी

भाई तुम्हारे हाथ में बेचा जाए उसको तुम सातवें वर्ष में छोड़ देना; छः वर्ष तो वह तुम्हारी सेवा करे परन्तु इसके बाद तुम उसको स्वतंत्र करके अपने पास से जाने देना।” परन्तु तुम्हारे पितरों ने मेरी न सुनी, न मेरी ओर कान लगाया। ४५ तुम अभी पिटे तो थे और अपने-अपने भाई को स्वतंत्र कर देने का प्रचार करके जो काम मेरी दृष्टि में भला है उसे तुम ने किया भी था, और जो भवन मेरा कहलाता है उसमें मेरे सामने वाचा भी बाँधी थी; ४६ पर तुम भटक गए और मेरा नाम इस रीत से अशहृद किया कि जिन दास दासियों को तुम स्वतंत्र करके उनकी इच्छा पर छोड़ चुके थे उहें तुम ने फिर अपने वंश में कर लिया है, और वे फिर तुम्हारे दास-दासियाँ बन गए हैं। ४७ इस कारण यहोवा यह कहता है: तुम ने जो मेरी आज्ञा के अनुसार अपने-अपने भाई के स्वतंत्र होने का प्रचार नहीं किया, अतः यहोवा का यह वचन है, सुनो, मैं तुम्हारे इस प्रकार से स्वतंत्र होने का प्रचार करता हूँ कि तुम तलवार, मरी और अकाल में फड़ोगे; और मैं ऐसा कहूँगा कि तुम पृथ्वी के राज्य-राज्य में मारे-मारे फिरोगे। ४८ जो लोग मेरी वाचा का उल्लंघन करते हैं और जो प्रण उन्होंने मेरे सामने और बछड़े को दो भाग करके उसके दोनों भागों के बीच होकर किया परन्तु उसे पूरा न किया, ४९ अर्थात् यहदा देश और यस्श्लेम नगर के हाकिम, खोजे, याजक और साधारण लोग जो बछड़े के भागों के बीच होकर गए थे, ५० उनको मैं उनके शत्रुओं अर्थात् उनके प्राण के खोजियों के वंश में कर दूँगा और उनकी लोथ आकाश के पक्षियों और मैदान के पशुओं का आहार हो जाएँगी। ५१ मैं यहदा के राजा सिदकिय्याह और उसके हाकिमों को उनके शत्रुओं और उनके प्राण के खोजियों अर्थात् बाबेल के राजा की सेना के वंश में कर दूँगा जो तुम्हारे सामने से चर्ची गई है। ५२ यहोवा का यह वचन है कि देखो, मैं उनको आज्ञा देकर इस नगर के पास लौटा ले आँऊँगा और वे लड़क इसे ले लेंगे और फँक देंगे; और यहदा के नगरों को मैं ऐसा उजाड़ दूँगा कि कोई उनमें न रहेगा।”

३५ योशियाह के पुत्र यहदा के राजा यहोवायाम के राज्य में यहोवा की ओर से यह वचन यिर्माह के पास पहुँचा ५३ “रेकाबियों के घराने के पास जाकर उनसे बातें कर और उहें यहोवा के भवन की एक कोठरी में ले जाकर दाखमधू पिला।” ५४ तब मैंने याजन्याह को जो हबस्सिन्याह का पोता और यिर्माह का पुत्र था, और उसके भाइयों और सब पुत्रों को, अर्थात् रेकाबियों के सारे घराने को साथ लिया। ५५ मैं उनको परमेश्वर के भवन में, यिदल्याह के पुत्र हानान, जो परमेश्वर का एक जन था, उसकी कोठरी में ले आया जो हाकिमों की उस कोठरी के पास थी और शल्लमू के पुत्र डेव्ही के रखवाले मासेयाह की कोठरी के ऊपर थी। ५६ तब मैंने रेकाबियों के घराने को दाखमधू से भरे हुए हैंडे और कटोरे देकर कहा, “दाखमधू पीओ।” ५७ उन्होंने कहा, “हम दाखमधू न पीएँगे क्योंकि रेकाब के पुत्र योनादाब ने जो हमारा पुरखा था हमको यह आज्ञा दी थी, ‘तुम कभी दाखमधू न पीना; न तुम, न तुम्हारे पुत्र।’ ५८ न घर बनाना, न बीज बोना, न दाख की बारी लगाना, और न उनके अधिकारी होना; परन्तु जीवन भर तम्भुओं ही में रहना जिससे जिस देश में तुम परदेशी हो, उसमें बहुत दिन तक जीते रहो।” ५९ इसलिए हम रेकाब के पुत्र अपने पुरखा यहोवानादाब की बात मानकर, उसकी सारी आज्ञाओं के अनुसार चलते हैं, न हम और न हमारी खिलौंयों या पुन्न-पुनियों कमी दाखमधू पीती हैं, ६० और न हम घर बनाकर उनमें रहते हैं। हम न दाख की बारी, न खेत, और न बीज रखते हैं; ६१ हम तम्भुओं ही में रहा करते हैं, और अपने पुरखा योनादाब की बात मानकर उसकी सारी आज्ञाओं के अनुसार काम करते हैं। ६२ परन्तु जब बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने इस देश पर चढ़ाई की, तब

हमने कहा, ‘चलो, कसदियों और अरामियों के दलों के डर के मारे यस्श्लेम में जाएँ।’ इस कारण हम अब यस्श्लेम में रहते हैं।” १२ तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा। १३ इसाएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है: “जाकर यहदा देश के लोगों और यस्श्लेम नगर के निवासियों से कह, यहोवा की यह बाणी है, क्या तुम शिक्षा मानकर मेरी न सुनोगे? १४ देखो, रेकाब के पुत्र यहोनादाब ने जो आज्ञा अपने वंश को दी थी कि तुम दाखमुद्ध न पीना वह तो मानी गई है यहाँ तक कि आज के दिन भी वे लोग कुछ नहीं पीते, वे अपने पुरुखा की आज्ञा मानते हैं; पर यथपि मैं तुम से बड़े यद्व से कहता आया हूँ, तो भी तुम ने मेरी नहीं सुनी। १५ मैं तुम्हारे पास अपने सारे दास नवियों को बड़ा यद्व करके यह कहने को भेजता आया हूँ, ‘अपनी बुरी चाल से फिरो, और अपने काम सुधारो, और दूसरे देवताओं के पीछे जाकर उनकी उपासना मत करो तब तुम इस देश में जो मैंने तुम्हारे पितरों को दिया था और तुम को भी दिया है, बसने पाओगे।’ पर तुम ने मेरी ओर कान नहीं लगाया न मेरी सुनी है। १६ देखो, रेकाब के पुत्र यहोनादाब के वंश ने तो अपने पुरुखा की आज्ञा को मान लिया पर तुम ने मेरी नहीं सुनी। १७ इसलिए सेनाओं का परमेश्वर यहोवा, जो इसाएल का परमेश्वर है, यह कहता है: देखो, यहदा देश और यस्श्लेम नगर के सारे निवासियों पर जितनी विपत्ति डालने की मैंने चर्चा की है वह उन पर अब डालता हूँ; क्योंकि मैंने उनको सुनाया पर उन्होंने नहीं सुना, मैंने उनको बुलाया पर उन्होंने उत्तर न दिया।” १८ पर रेकाबियों के घराने से यिर्मयाह ने कहा, “इसाएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा तुम से यह कहता है: इसलिए कि तुम ने जो अपने पुरुखा यहोनादाब की आज्ञा मानी, वरन् उसकी सब आज्ञाओं को मान लिया और जो कुछ उसने कहा उसके अनुसार काम किया है, १९ इसलिए इसाएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है: रेकाब के पुत्र यहोनादाब के वंश में सदा ऐसा जन पाया जाएगा जो मेरे सम्मुख खड़ा रहे।”

३६ फिर योशियाह के पुत्र यहदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के चौथे वर्ष

मैं यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा २ “एक पुस्तक लेकर जितने वचन मैंने तुझ से योशियाह के दिनों से लेकर अर्थात् जब मैं तुझ से बातें करने लगा उस समय से आज के दिन तक इसाएल और यहदा और सब जातियों के विषय में कहे हैं, सब को उसमें लिखा। ३ क्या जाने यहदा का धराना उस सारी विपत्ति का समाचार सुनकर जो मैं उन पर डालने की कल्पना कर रहा हूँ अपनी बुरी चाल से फिरे और मैं उनके अर्थमें और पाप को क्षमा करूँ।” ४ अतः यिर्मयाह ने नेरियाह के पुत्र बास्क को बुलाया, और बास्क ने यहोवा के सब वचन जो उसने यिर्मयाह से कहे थे, उसके मुख से सुनकर पुस्तक में लिख दिए। ५ फिर यिर्मयाह ने बास्क को आज्ञा दी और कहा, “मैं तो बन्धा हुआ हूँ, मैं यहोवा के भवन में नहीं जा सकता। ६ इसलिए तू उपवास के दिन यहोवा के भवन में जाकर उसके जो वचन तने मुझसे सुनकर लिखे हैं, पुस्तक में से लोगों को पढ़कर सुनाना, और जितने यहदी लोग अपने अपने नगरों से आएंगे, उनको भी पढ़कर सुनाना। ७ क्या जाने वे यहोवा से गिडिगिकार प्रार्थना करें और अपनी-अपनी बुरी चाल से फिरें; क्योंकि जो क्रोध और जलजलाहट यहोवा ने अपनी इस प्रजा पर भड़काने को कहा है, वह बड़ी है।” ८ यिर्मयाह भविष्यद्वत्का की इस आज्ञा के अनुसार नेरियाह के पुत्र बास्क ने, यहोवा के भवन में उस पुस्तक में से उसके वचन पढ़कर सुनाए। ९ योशियाह के पुत्र यहदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के पाँचवें वर्ष के नौवें महीने में यस्श्लेम में जितने लोग थे, और यहदा के नगरों से जितने लोग यस्श्लेम में आए थे, उन्होंने यहोवा के सामने उपवास करने का प्रचार किया।

१० तब बास्क ने यहोवा के भवन में सब लोगों को शापान के पुत्र गमर्याह जो प्रधान था, उसकी कोठरी में जो ऊपर के आँगन में यहोवा के भवन के नये फटक के पास थी, यिर्मयाह के सब वचन पुस्तक में से पढ़ सुनाए। ११ तब शापान के पुत्र गमर्याह के बेटे मीकायाह ने यहोवा के सारे वचन पुस्तक में से सुने। १२ और वह राजभवन के प्रधान की कोठरी में उतर गया, और क्या देखा कि वहाँ एतीशामा प्रधान और शमायाह का पुत्र दलायाह और अकबोर का पुत्र एलनातान और शापान का पुत्र गमर्याह और हनन्याह का पुत्र सिदकियाह और सब हाकिम बैठे हुए हैं। १३ मीकायाह ने जितने वचन उस समय सुने, जब बास्क ने पुस्तक में से लोगों को पढ़ सुनाए थे, उन सब का वर्णन किया। १४ उन्हें सुनकर सब हाकिमों ने यहदी को जो नतन्याह का पुत्र और शेलेम्याह का पोता और कूशी का परपोता था, बास्क के पास यह कहने को भेजा, “जिस पुस्तक में से तूने सब लोगों को पढ़ सुनाया है, उसे अपने हाथ में लेता आ।” अतः नेरियाह का पुत्र बास्क वह पुस्तक हाथ में लिए हुए उनके पास आया। १५ तब उन्होंने उससे कहा, “अब बैठ जा और हमें यह पढ़कर सुना।” तब बास्क ने उनको पढ़कर सुना दिया। १६ जब वे उन सब वचनों को सुन चुके, तब रथरथारते हुए एक दूसरे को देखने लगे; और उन्होंने बास्क से कहा, “हम से कह, क्या तने ये सब वचन उसके मुख से सुनकर लिखे?” १७ फिर उन्होंने बास्क से कहा, “हम से कह, क्या तने ये सब वचन उसके मुख से सुनाता गया और मैं इन्हें पुस्तक में स्थानी से लिखता गया।” १८ तब हाकिमों ने बास्क से कहा, “जा, तू अपने आपको और यिर्मयाह को छिपा, और कोई न जानने पाए कि तुम कहाँ हो।” १९ तब वे पुस्तक को एतीशामा प्रधान की कोठरी में रखकर राजा के पास आँगन में आए; और राजा को वे सब वचन कह सुनाए। २० तब जब यहदी को पुस्तक ले अपने के लिये भेजा, उसने उसे एतीशामा प्रधान की कोठरी में से लेकर राजा को और जो हाकिम राजा के आस-पास खड़े थे उनको भी पढ़ सुनाया। २१ राजा शीतिकाल के भवन में बैठा हुआ था, क्योंकि नौवें महीना था और उसके सामने अँगीठी जल रही थी। २२ तब यहदी तीन चार पृष्ठ पढ़ चुका, तब उसने उसे चाकू से काटा और जो आग अँगीठी में थी उसमें फैक दिया; इस प्रकार अँगीठी की आग में पूरी पुस्तक जलकर भस्म हो गई। २३ परन्तु न कोई डरा और न किसी ने अपने कपड़े फाढ़े, अर्थात् न तो राजा ने और न उसके कर्मचारियों में से किसी ने ऐसा किया, जिन्होंने वे सब वचन सुने थे। २४ एलनातान, और दलायाह, और गमर्याह ने तो राजा से विनती भी की थी कि पुस्तक को न जलाए, परन्तु उसने उनकी एक न सुनी। २५ राजा ने राजपुत्र यरहमेल को और अँगीठल के पुत्र सरायाह को और अब्देल के पुत्र शेलेम्याह को आज्ञा दी कि बास्क लेखक और यिर्मयाह भविष्यद्वत्का को पकड़ लें, परन्तु यहोवा ने उनको छिपा रखा। २६ जब राजा ने उन वचनों की पुस्तक को जो बास्क ने यिर्मयाह के मुख से सुन सुनकर लिखी थी, जला दिया, तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा २७ फिर एक और पुस्तक लेकर उसमें यहदा के राजा यहोयाकीम की जलाई हुई पहली पुस्तक के सब वचन लिख दे। २८ और यहदा के राजा यहोयाकीम के विषय में कह, ‘यहोवा यह कहता है: तने उस पुस्तक को यह कहकर जला दिया है कि तने उसमें यह क्यों लिखा है कि बाबेल का राजा यिर्मयाह की जलाई हुई पहली पुस्तक के सब वचन लिख दे। २९ और यहदा के राजा यहोयाकीम के विषय में कह, ‘यहोवा यह कहता है: तने उस पुस्तक को यह कहकर जला दिया है कि तने उसमें यह क्यों लिखा है कि बाबेल का राजा यहोयाकीम के विषय में कह, ‘यहोवा यह कहता है: तने उस पुस्तक को यह कहकर जला दिया है कि उसका कोई दाऊद की ग़ी पर विराजमान न रहेगा; और उसकी लोथ ऐसी फैक दी जाएगी कि दिन को धूप में और रात को पाले में पड़ी रहेगी। ३० मैं उसको और उसके वंश और कर्मचारियों को उनके अर्थमें दण्ड दूँगा; और जितनी विपत्ति मैंने उन

पर और यस्शलेम के निवासियों और यहूदा के सब लोगों पर डालने को कहा है, और जिसको उन्होंने सच नहीं माना, उन सब को मैं उन पर डालूँगा।”^{३६} तब यिर्मयाह ने दूसरी पुस्तक लेकर नेरियाह के पुत्र बास्क लेखक को दी, और जो पुस्तक यहूदा के राजा यहोयाकीम ने आग में जला दी थी, उसमें के सब चर्चनों को बास्क ने यिर्मयाह के मुख से सुन सुनकर उसमें लिख दिए; और उन चर्चनों में उनके समान और भी बहुत सी बातें बढ़ा दी गईं।

३७ यहोयाकीम के पुत्र कोन्याह के स्थान पर योशियाह का पुत्र सिदकिय्याह

राज्य करने लगा, क्योंकि बाबेल के राजा नबूकूदनेस्सर ने उसी को यहूदा देश में राजा ठहराया था। ^१ परन्तु न तो उसने, न उसके कर्मचारियों ने, और न साधारण लोगों ने यहोवा के चर्चनों को माना जो उसने यिर्मयाह भविष्यद्वत्ता के द्वारा कहा था। ^२ सिदकिय्याह राजा ने शेलेम्याह के पुत्र यहूकला और मासेयाह के पुत्र सपन्याह याजक को यिर्मयाह भविष्यद्वत्ता के पास यह कहला भेजा, “हमारे निमित्त हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करा।” ^३ उस समय यिर्मयाह बन्दीगृह में न डाला गया था, और लोगों के बीच आया-जाया करता था। ^४ उस समय फिरौन की सेना चढ़ाई के लिये मिस्र से निकली; तब कसदी जो यस्शलेम को घेरे हुए थे, उसका समाचार सुनकर यस्शलेम के पास से चले गए। ^५ तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह भविष्यद्वत्ता के पास पहुँचा ^६ “इस्माइल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है: यहूदा के जिस राजा ने तुम को प्रार्थना करने के लिये मेरे पास भेजा है, उससे यह कहो, ‘देख, फिरौन की जो सेना तुम्हारी सहायता के लिये निकली है वह अपने देश मिस्र में लौट जाएगी।’ कसदी फिर वापिस आकर इस नगर से लड़ेगी, वे इसकी ले लेंगे और झँक देंगे। ^७ यहोवा यह कहता है: यह कहकर तुम अपने-अपने मन में धोखा न खाओ “कसदी हमारे पास से निश्चय चले गए हैं,” क्योंकि वे चले नहीं गए। ^८ क्योंकि यदि तुम ने कसदियों की सारी सेना को जो तुम से लड़ती है, ऐसा मार भी लिया होता कि उम्में से केवल घायल लोग रह जाते, तो भी वे अपने-अपने तम्भ में से उठकर इस नगर को झँक देते।” ^९ जब कसदियों की सेना फिरौन की सेना के डर के मारे यस्शलेम के पास से निकलकर गई, ^{१०} तब यिर्मयाह यस्शलेम से निकलकर बिन्यामीन के देश की ओर इसलिए जा निकला कि वहाँ से और लोगों के संग अपना अंश ले। ^{११} जब वह बिन्यामीन क्षेत्र के फाटक में पहुँचा, तब यिरियाह नामक पहसुओं का एक सरदार वहाँ था जो शेलेम्याह का पुत्र और हनन्याह का पोता था, और उसने यिर्मयाह भविष्यद्वत्ता को यह कहकर पकड़ लिया, “तु कसदियों के पास भागा जाता है।” ^{१२} तब यिर्मयाह ने कहा, “यह झँठ है; मैं कसदियों के पास नहीं भागा जाता हूँ।” परन्तु यिरियाह ने उसकी एक न मारी, और वह उसे पकड़कर हाकिमों के पास ले गया। ^{१३} तब हाकिमों ने यिर्मयाह से क्रोधित होकर उसे पिटवाया, और योनातान प्रधान के घर में बन्दी बनाकर डलवा दिया; क्योंकि उन्होंने उसको साधारण बन्दीगृह बना दिया था। ^{१४} यिर्मयाह उस तलधर में जिसमें कई एक कोठरियाँ थीं, रहने लगा। ^{१५} उसके बहुत दिन बीतने पर सिदकिय्याह राजा ने उसको बुलवा भेजा, और अपने भवन में उससे छिपकर यह प्रश्न किया, “क्या यहोवा की ओर से कोई चर्चन पहुँचा है?” यिर्मयाह ने कहा, “हाँ, पहुँचा है। वह यह है, कि तू बाबेल के राजा के वश में कर दिया जाएगा।” ^{१६} फिर यिर्मयाह ने सिदकिय्याह राजा से कहा, “मैंने तेरा, तेरे कर्मचारियों का, व तेरी प्रजा का क्या अपराध किया है, कि तुम लोगों ने मुझ को बन्दीगृह में डलवाया है? ^{१७} तुम्हारे जो भविष्यद्वत्ता तुम से भविष्यद्वाणी करके कहा करते थे कि बाबेल का राजा तुम पर और इस देश पर चढ़ाई नहीं करेगा, वे अब कहाँ हैं? ^{१८} अब, हे मेरे प्रभु, हे राजा, मेरी प्रार्थना ग्रहण कर कि मुझे योनातान प्रधान के घर में फिर

न भेज, नहीं तो मैं वहाँ मर जाऊँगा।” ^{१९} तब सिदकिय्याह राजा की आज्ञा से यिर्मयाह पहरे के आँगन में रखा गया, और जब तक नगर की सब रोटी न चुक गई, तब तक उसको रोटीबालों की टूकान में से प्रतिदिन एक रोटी दी जाती थी। यिर्मयाह पहरे के आँगन में रहने लगा।

३८ फिर जो वचन यिर्मयाह सब लोगों से कहता था, उनको मतान के

पुत्र शपत्याह, पश्शहर के पुत्र गदल्याह, शेलेम्याह के पुत्र यूकल और मलिक्याह के पुत्र पश्शहर ने सुना, ^{२०} “यहोवा यह कहता है कि जो कोई इस नगर में रहेगा वह तलवार, अकाल और मरी से मरेगा; परन्तु जो कोई कसदियों के पास निकल भागे वह अपना प्राण बचाकर जीवित रहेगा।” ^{२१} यहोवा यह कहता है, यह नगर बाबेल के राजा की सेना के वश में कर दिया जाएगा और वह इसको ले लेगा।” ^{२२} इसलिए उन हाकिमों ने राजा से कहा, “उस पुस्तक को मरवा डाल, क्योंकि वह जो इस नगर में बचे हुए योद्धाओं और अन्य सब लोगों से ऐसे-ऐसे वचन कहता है जिससे उनके हाथ पाँव ढीले हो जाते हैं। क्योंकि वह पुस्तक प्रजा के लोगों की भलाई नहीं वरन् बुराई ही चाहता है।” ^{२३} सिदकिय्याह राजा ने कहा, “सुनो, वह तो तुम्हारे वश में है; क्योंकि ऐसा नहीं हो सकता कि राजा तुम्हारे विस्तु कुछ कर सके।” ^{२४} तब उन्होंने यिर्मयाह को लेकर राजपुत्र मलिक्याह के उस गड़े में जो पहरे के आँगन में था, रस्सियों से उतारकर डाल दिया। और उस गड़े में पानी नहीं केवल दलदल था, और यिर्मयाह कीचड़ में धूँस गया। ^{२५} उस समय राजा बिन्यामीन के फाटक के पास बैठा था सो जब एबेदमेलेक कूशी ने जो राजभवन में एक खोजा था, सुना, कि उन्होंने यिर्मयाह को गड़े में डाल दिया है। ^{२६} तब एबेदमेलेक राजभवन से निकलकर राजा से कहने लगा, ^{२७} “हे मेरे स्वामी, हे राजा, उन लोगों ने यिर्मयाह भविष्यद्वत्ता से जो कुछ किया है वह बुरा किया है, क्योंकि उन्होंने उसको गड़े में डाल दिया है; वहाँ वह भूख से मर जाएगा क्योंकि नगर में कुछ रोटी नहीं रही है।” ^{२८} तब राजा ने एबेदमेलेक कूशी को यह जाना दी, “यहाँ से तीस पुस्तक साथ लेकर यिर्मयाह भविष्यद्वत्ता को मरने से पहले गड़े में से निकाल।” ^{२९} अतः एबेदमेलेक उतने पुस्तों को साथ लेकर राजभवन के भण्डार के तलघर में गया; और वहाँ से फटे-पुराने कपड़े और चिथड़े लेकर यिर्मयाह के पास उस गड़े में रास्सियों से उतार दिए। ^{३०} तब एबेदमेलेक कूशी ने यिर्मयाह से कहा, “ये पुराने कपड़े और चिथड़े अपनी कांखों में रास्सियों के नीचे रख ले।” यिर्मयाह ने वैसा ही किया। ^{३१} तब उन्होंने यिर्मयाह को रास्सियों से खींचकर, गड़े में से निकाला। और यिर्मयाह पहरे के आँगन में रहने लगा। ^{३२} सिदकिय्याह राजा ने यिर्मयाह भविष्यद्वत्ता को यहोवा के भवन के तीसरे द्वार में अपने पास बुलवा भेजा। और राजा ने यिर्मयाह से कहा, “मैं तुझ से एक बात पूछता हूँ; मुझसे कुछ न छिपा।” ^{३३} यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से कहा, “यदि मैं तुझे बाताँ, तो क्या तू मुझे मरवा न डालेगा? और चाहे मैं तुझे सम्पत्ति भी दूँ, तो भी तू मेरी न मानेगा।” ^{३४} तब उन्होंने यिर्मयाह को रास्सियों से खींचकर, गड़े में से निकाला। और यिर्मयाह पहरे के आँगन में रहने लगा। ^{३५} सिदकिय्याह राजा ने यिर्मयाह भविष्यद्वत्ता को यहोवा के भवन के तीसरे द्वार में अपने पास बुलवा भेजा। और राजा ने यिर्मयाह से कहा, “मैं तुझ से एक बात पूछता हूँ; मुझसे कुछ न छिपा।” ^{३६} यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से कहा, “यदि मैं तुझे जीव रखा हूँ, तो क्या तू मैं तो तुझे मरवा डालूँगा, और न उन मनुष्यों के वश में कर दूँगा जो तेरे प्राण के खोजी हैं।” ^{३७} यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से कहा, “सेनाओं का परमेश्वर यहोवा जो इस्माइल का परमेश्वर है, वह यह कहता है, यदि तू बाबेल के राजा के हाकिमों के पास सचमुच निकल जाए, तब तो तेरा प्राण बचेगा, और यह नगर झँक देंगे।” ^{३८} परन्तु, यदि तू बाबेल के राजा के हाकिमों के पास न निकल जाए, तो यह नगर कसदियों के वश में दिया जाएगा, और वे इसे झँक देंगे, और तू उनके हाथ से बच न सकेगा।” ^{३९} सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से कहा, “जो यहूदी लोग कसदियों के पास भाग गए

हैं, मैं उनसे डरता हूँ, ऐसा न हो कि मैं उनके वश में कर दिया जाऊँ और वे मुझसे ठास करो।” २० यिर्मयाह ने कहा, “तू उनके वश में न कर दिया जाएगा, जो कुछ मैं तुझ से कहता हूँ उसे यहोवा का बात समझकर मान ले तब तेरा भला होगा, और तेरा प्राण बचेगा। २१ पर यदि तू निकल जाना स्वीकार न करे तो जो बात यहोवा ने मुझे दर्शन के द्वारा बताई है, वह यह है: २२ देख, यहदा के राजा के नवास में जितनी बिर्याँ रह गई हैं, वे बाबेल के राजा के हाकिमों के पास निकालकर पहुँचाए जाएँगी, और वे तुझ से कहेंगी, ‘तेरे मित्रों ने तुझे बहकाया, और उनकी इच्छा पूरी हो गई, और जब तेरे पाँव कीच में धौंस गए तो वे पीछे फिर गए हैं।’ २३ तेरी सब बिर्याँ और बाल-बच्चे कसरियों के पास निकालकर पहुँचाए जाएँगी; और तू भी कसरियों के हाथ से न बचेगा, वरन् तुझे पकड़कर बाबेल के राजा के वश में कर दिया जाएगा और इस नगर के फूँके जाने का कारण तू ही होगा।” २४ तब सिदकियाह ने यिर्मयाह से कहा, “इन बातों को कोई न जानने पाए, तो तू मारा न जाएगा। २५ यदि हाकिम लोग यह सुनकर कि मैंने तुझे से बातचीत की है तेरे पास आकर कहने लगें, ‘हमें बता कि तुमे राजा से क्या कहा, हम से कोई बात न छिपा, और हम तुझे न मरवा डालेंगे; और यह भी बता, कि राजा ने तुझ से क्या कहा,’ २६ तो तू उनसे कहना, ‘मैंने राजा से गिडिगिडाकर बिनती की थी कि मुझे योनातान के घर में फिर बापिस न भेज नहीं तो वहाँ मां जाऊँगा।’” २७ फिर सब हाकिमों ने यिर्मयाह के पास आकर पूछा, और जैसा राजा ने उसको आज्ञा दी थी, ठीक वैसा ही उसने उनको उत्तर दिया। इसलिए वे उससे और कुछ न बोले और न वह भेद खुला। २८ इस प्रकार जिस दिन यस्शलेम ले लिया गया उस दिन तक वह पहरे के आँगन ही में रहा।

३९ यहदा के राजा सिदकियाह के राज्य के नौवें वर्ष के दसवें महीने में, बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी सारी सेना समेत यस्शलेम पर चढ़ाई करके उसे धेर लिया। १ और सिदकियाह के राज्य के ग्यारहवें वर्ष के चौथे महीने के नौवें दिन को उस नगर की शहरपनाह तोड़ी गई। २ जब यस्शलेम ले लिया गया, तब नेर्मलसरेसर, और समर्गनी, और खोजों का प्रधान सर्सकीम, और मारों का प्रधान नेर्मलसरेसर आदि, बाबेल के राजा के सब हाकिम बीच के फाटक में प्रवेश करके बैठ गए। ३ जब यहदा के राजा सिदकियाह और सब योद्धाओं ने उन्हें देखा तब रात ही रात राजा की बारी के मार्ग से दोनों दीवारों के बीच के फाटक से होकर नगर से निकलकर भाग चले और अराबा का मार्ग लिया। ४ परन्तु कसरियों की सेना ने उनको खेड़कर सिदकियाह को यरीही के अराबा में जा लिया और उनको बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के पास हमार देश के रिबला में ले गए; और उसने वहाँ उसके दण्ड की आज्ञा दी। ५ तब बाबेल के राजा ने सिदकियाह के पुत्रों को उसकी आँखों के सामने रिबला में घात किया; और सब कलीन यहदियों को भी घात किया। ६ उसने सिदकियाह की आँखों को निकाल डाला और उसको बाबेल ले जाने के लिये बेडियों से जकड़वा रखा। ७ कसरियों ने राजभवन और प्रजा के घरों को आग लगाकर फँक दिया, और यस्शलेम की शहरपनाह को ढा दिया। ८ तब अंगरक्षकों का प्रधान नबूजरदान प्रजा के बचे हुओं को जो नगर में रह गए थे, और जो लोग उसके पास भाग आए थे उनको अर्थात् प्रजा में से जितने रह गए उन सब को बैधुआ करके बाबेल की ले गया। ९ परन्तु प्रजा में से जो ऐसे कंगाल थे जिनके पास कुछ न था, उनको अंगरक्षकों का प्रधान नबूजरदान यहदा देश में छोड़ गया, और जाते समय उनको दाख की बारियाँ और खेत दे दिए। १० बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने अंगरक्षकों के प्रधान नबूजरदान को यिर्मयाह के विषय में यह आज्ञा दी, ११ “उसको लेकर उस पर कृपादृष्टि बनाए रखना और उसकी कुछ हानि न करना;

जैसा वह तुझ से कहे वैसा ही उससे व्यवहार करना।” १२ अतः अंगरक्षकों के प्रधान नबूजरदान और खोजों के प्रधान नबूजरदान और मारों के प्रधान नेर्मलसरेसर यिर्मयाह के सरदार, १३ और बाबेल के राजा के सब प्रधानों ने, लोगों को भेजकर यिर्मयाह को पहरे के आँगन में से बुलवा लिया और गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था सौंप दिया कि वह उसे घर पहुँचाए। तब से वह लोगों के साथ रहने लगा। १४ जब यिर्मयाह पहरे के आँगन में कैट था, तब यहोवा का यह बचन उसके पास पहुँचा, १५ “जाकर एबेदमेलेक कशी से कह, ‘इस्माएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा तुझे से यह कहता है: देख, मैं अपने वे बचन जो मैंने इस नगर के विषय में कहे हैं इस प्रकार पूरा करूँगा कि इसका कुशल न होगा, हानि ही होगी, और उस समय उनका पूरा होना तुझे दिखाई पड़ेगा।” १६ परन्तु यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं तुझे बचाऊँगा, और जिन मनुष्यों से तू भय खाता है, तू उनके वश में नहीं किया जाएगा। १७ क्योंकि मैं तुझे निश्चय बचाऊँगा, और तू तलवार से न मरेगा, तेरा प्राण बचा रहेगा, यहोवा की यह वाणी है। यह इस कारण होगा, कि तुमे मुझ पर भरोसा रखा है।”

४० जब अंगरक्षकों के प्रधान नबूजरदान ने यिर्मयाह को रामाह में उन सब

यस्तलेमी और यहदी बन्दियों के बीच हथकड़ियों से बन्धा हुआ पाकर जो बाबेल जाने को थे छुड़ा लिया, उसके बाद यहोवा का बचन उसके पास पहुँचा। २ अंगरक्षकों के प्रधान नबूजरदान ने यिर्मयाह को उस समय अपने पास बुला लिया, और कहा, “इस स्थान पर यह जो विपत्ति पड़ी है वह तेरे परमेश्वर यहोवा की कही हुई थी। ३ जैसा यहोवा ने कहा था वैसा ही उसने पूरा भी किया है। तुम लोगों ने जो यहोवा के विष्टु पाप किया और उसकी आज्ञा नहीं मानी, इस कारण तुम्हारी यह दशा हुई है। ४ अब मैं तेरी इन हथकड़ियों को काट देता हूँ, और यदि मेरे संग बाबेल में जाना तुझे अच्छा लगे तो चल, वहाँ मैं तुझ पर क्रापूदृष्टि रखूँगा; और यदि मेरे संग बाबेल जाना तुझे न भाए, तो यहीं रह जा। देख, सारा देश तेरे सामने पड़ा है, जिधर जाना तुझे अच्छा और ठीक लगे उधर ही चला जा।” ५ वह वही था कि नबूजरदान ने फिर उससे कहा, “गदल्याह जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता है, जिसको बाबेल के राजा ने यहदा के नगरों पर अधिकारी ठहराया है, उसके पास लौट जा और उसके संग लोगों के बीच रह, या जहाँ कहीं तुझे जाना ठीक जान पड़े वही चला जा।” अतः अंगरक्षकों के प्रधान ने उसको भोजन-सामग्री और कुछ उपहार भी देकर दिया। ६ तब यिर्मयाह अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास मिस्पा को गया, और वहाँ उन लोगों के बीच जो देश में रह गए थे, रहने लगा। ७ योद्धाओं के जो दल दिहात में थे, जब उनके सब प्रधानों ने अपने जानों समेत सुना कि बाबेल के राजा ने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को देश का अधिकारी ठहराया है, और देश के जिन कंगाल लोगों को वह बाबेल को नहीं ले गया, क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बाल-बच्चे, उन सभी को उसे सौंप दिया है, ८ तब नतन्याह का पुत्र इश्माएल, करोह के पुत्र योहानान, योनातान और तन्हमेत का पुत्र सरायाह, ऐसे नतोपाचारी के पुत्र और किंसी माकावासी का पुत्र याजन्याह अपने जानों समेत गदल्याह के पास मिस्पा में आए। ९ गदल्याह जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था, उसने उससे और उनके जानों से शपथ खाकर कहा, “कसरियों के अधीन रहने से मत डरो। इसी देश में रहते हुए बाबेल के राजा के अधीन रहो तब तुम्हारा भला होगा।” १० मैं तो इसलिए मिस्पा में रहता हूँ कि जो कसदी लोग हमारे यहाँ आँए, उनके सामने हाजिर हुआ करूँ; परन्तु तुम दाखमधू और धूकाल के फल और तेल को बटोरके अपने बरतनों में रखो और अपने लिए हुए नगरों में बसे रहो।” ११ फिर जब मोआवियों, अम्मोनियों, एदोमियों और अन्य सब जातियों के बीच

रहनेवाले सब यहदियों ने सुना कि बाबेल के राजा ने यहदियों में से कुछ लोगों को बचा लिया और उन पर गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता है अधिकारी नियुक्त किया है, १२ तब सब यहदी जिन-जिन स्थानों में तिर-बितर हो गए थे, वहाँ से लौटकर यहदा देश के मिस्पा नगर में गदल्याह के पास, और बहुत दाखमधु और धृपकाल के फल बटोरने लगे। १३ तब कारेह का पुत्र योहानान और मैदान में रहनेवाले योद्धाओं के सब दलों के प्रधान मिस्पा में गदल्याह के पास आकर कहने लगे, १४ “क्या तू जानता है कि अम्मोनियों के राजा बालीस ने नत्याह के पुत्र इश्माएल को तुझे जान से मारने के लिये भेजा है?” परन्तु अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने उन पर विचार न किया। १५ फिर कारेह के पुत्र योहानान ने गदल्याह से मिस्पा में छिपकर कहा, “मुझे जाकर नत्याह के पुत्र इश्माएल को मार डालने दे और कोई इसे न जानेगा। वह क्यों तुझे मार डाले, और जितने यहदी लोग तैरे पास इकट्ठे हुए हैं वे क्यों तिर-बितर हो जाएँ और बचे हुए यहदी क्यों नाश हों?” १६ अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने कारेह के पुत्र योहानान से कहा, “ऐसा काम मत कर, तू इश्माएल के विषय में झट बोलता है।”

४१ सातवें महीने में ऐसा हुआ कि इश्माएल जो नत्याह का पुत्र और एलीशामा का पोता और राजवंश का और राजा के प्रधान पुरुषों में से था, वह दस जन संग लेकर मिस्पा में अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास आया। वहाँ मिस्पा में उन्होंने एक संग भोजन किया। २ तब नत्याह के पुत्र इश्माएल और उसके संग के दस जनों ने उठकर गदल्याह को, जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था, और जिसे बाबेल के राजा ने देश का अधिकारी ठहराया था, उसे तलवार से ऐसा मारा कि वह मर गया। ३ इश्माएल ने गदल्याह के संग जितने यहदी मिस्पा में थे, और जो कसदी योद्धा वहाँ मिले, उन सभी को मार डाला। ४ गदल्याह को मार डालने के दूसरे दिन जब कोई इसे न जानता था, ५ तब शेकेम और शिलो और सामरिया से अस्सी पुरुष दाढ़ी मुँड़ाए, वस्त्र फड़े, शरीर चरी हुए और हाथ में अन्नबलि और लोबान लिए हुए, यहोवा के भवन में जाते दिखाई दिए। ६ तब नत्याह का पुत्र इश्माएल उनसे मिलने को मिस्पा से निकला, और रोता हुआ चला। जब वह उनसे मिला, तब कहा, “अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास चलो।” ७ जब वे उस नगर में आए तब नत्याह के पुत्र इश्माएल ने अपने संगी जनों समेत उनको घात करके गढ़े में फेंक दिया। ८ परन्तु उन्हें से दस मनुष्य इश्माएल से कहने लगे, “हमको न पार; क्योंकि हमारे पास मैदान में रखा हुआ गेहूँ, जौ, तेल और मधु है।” इसलिए उसने उन्हें छोड़ दिया और उनके भाइयों के साथ नहीं मारा। ९ जिस गढ़े में इश्माएल ने उन लोगों की सब लोथे जिन्हें उसने मारा था, गदल्याह की लोथ के पास फेंक दी थी, (यह वही गढ़ है जिसे आसा राजा ने इश्माएल के राजा बाशा के डर के मारे खुदवाया था), उसको नत्याह के पुत्र इश्माएल ने मारे हुओं से भर दिया। १० तब जो लोग मिस्पा में बचे हुए थे, अर्थात् राजकुमारियाँ और जितने और लोग मिस्पा में रह गए थे जिन्हें अंगरक्षकों के प्रधान नवजरदान ने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को सौंप दिया था, उन सभी को नत्याह का पुत्र इश्माएल बन्दी बनाकर अम्मोनियों के पास ले जाने को चला। ११ जब कारेह के पुत्र योहानान ने और योद्धाओं के दलों के उन सब प्रधानों ने जो उसके संग थे, सुना कि नत्याह के पुत्र इश्माएल ने यह सब बुराई की है, १२ तब वे सब जनों को लेकर नत्याह के पुत्र इश्माएल से लड़ने को निकले और उसको उस बड़े जलाशय के पास पाया जो गिबोन में है। १३ कारेह के पुत्र योहानान को, और दलों के सब प्रधानों को देखकर जो उसके संग थे, इश्माएल के साथ जो लोग थे, वे सब अनन्दित हुए। १४ जितने लोगों को इश्माएल मिस्पा से बन्दी बनाकर लिए जाता था, वे पलटकर कारेह के पुत्र

योहानान के पास चले आए। १५ परन्तु नत्याह का पुत्र इश्माएल आठ पुस्प समेत योहानान के हाथ से बचकर अम्मोनियों के पास चला गया। १६ तब प्रजा में से जिनने बच गए थे, अर्थात् जिन योद्धाओं, शियों, बाल-बच्चों और खोजों को कारेह का पुत्र योहानान, अहीकाम के पुत्र गदल्याह के मिस्पा में मारे जाने के बाद नत्याह के पुत्र इश्माएल के पास से छुड़ाकर गिबोन से फेर ले आया था, उनको बह अपने सब संगी दलों के प्रधानों समेत लेकर चल दिया। १७ बैतलहम के निकट जो किम्हाम की साराय है, उसमें वे इसलिए टिक गए कि मिस्प में जाएँ। १८ क्योंकि वे कसदियों से डरते थे; इसका कारण यह था कि अहीकाम का पुत्र गदल्याह जिसे बाबेल के राजा ने देश का अधिकारी ठहराया था, उसे नत्याह के पुत्र इश्माएल ने मार डाला था।

४२ तब कारेह का पुत्र योहानान, होशायाह का पुत्र याजन्याह, दलों के सब

प्रधान और छोटे से लेकर बड़े तक, सब लोग १ यिर्मयाह भविष्यद्वत्ता के निकट आकर कहने लगे, “हमारी विनती ग्रहण करके अपने परमेश्वर यहोवा से हम सब बचे हुओं के लिये प्रार्थना कर, क्योंकि तू अपनी आँखों से देख रहा है कि हम जो पहले बहुत थे, अब थोड़े ही बच गए हैं। २ इसलिए प्रार्थना कर कि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे द्वारा हमारे पास कोई वचन पहुँचाए और यदि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे द्वारा हमारे पास कोई वचन पहुँचाए तो वे तेरा परमेश्वर हमको बताए कि तेरा परमेश्वर यहोवा मैं से चलें, और कौन सा काम करें?” ३ यिर्मयाह भविष्यद्वत्ता ने उनसे कहा, “मैंने तुम्हारी सुनी है; देखो, मैं तुम्हारे चबनों के अनुसार तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करूँगा और जो उत्तर यहोवा तुम्हारे लिये देगा मैं तुम को बताऊँगा, मैं तुम से कोई बात न छिपाऊँगा।” ४ तब उन्होंने यिर्मयाह से कहा, “यदि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे द्वारा हमारे पास कोई वचन पहुँचाए और यदि तेरा अनुसार न करें, तो यहोवा हमारे बीच में सच्चा और विवासयोग्य साक्षी ठरे। ५ चाहे वह भली बात हो, चाहे बुरी, तो भी हम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा, जिसके पास हम तुझे भेजते हैं, मानेंगे, क्योंकि जब हम अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानें तब हमारा भला हो।” ६ दस दिन के बीतने पर यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा। ७ तब उनसे कारेह के पुत्र योहानान को, उसके साथ के दलों के प्रधानों को, और छोटे से लेकर बड़े तक जितने लोग थे, उन सभी को बुलाकर उनसे कहा, ८ “इश्माएल का परमेश्वर यहोवा, जिसके पास तुम मेरुद्धा को इसलिए भेजा कि मैं तुम्हारी विनती उसके आगे कह सुनाऊँ, वह यह कहता है: ९ यदि तुम इसी देश में रह जाओ, तब तो मैं तुम को नाश नहीं करूँगा वरन् बनाए रखूँगा; और तुम्हें न उखाइँगा, वरन् रोपे रखूँगा; क्योंकि तुम्हारी जो हानि मैंने की है उससे मैं पछताता हूँ। १० तुम बाबेल के राजा से डरते हो, अतः उससे मत डरो; यहोवा की यह वाणी है, उससे मत डरो, क्योंकि मैं तुम्हारी रक्षा करने और तुम को उसके हाथ से बचाने के लिये तुम्हारे साथ हूँ। ११ तो तुम पर दया करूँगा, कि वह भी तुम पर दया करके तुम को तुम्हारी भयी पर फिर से बसा देगा। १२ परन्तु यदि तुम यह कहकर कि हम इस देश में रहेंगे अपने परमेश्वर यहोवा की बात न मानो, और कहो कि हम तो मिस्प देश जाकर वही रहेंगे, १३ क्योंकि वहाँ न हम यहु देखेंगे, न नरसिंगे का शब्द सुनेंगे और न हमको भाजन की घटी होगी, तो, हे बचे हुए यहदियों, यहोवा का यह बचन सनो। १४ इश्माएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है: यदि तुम सचमुच मिस्प की ओर जाने का मुँह करो, और वहाँ रहने के लिये जाओ, १५ तो ऐसा होगा कि जिस तलवार से तुम डरते हो, वही वहाँ मिस्प देश में तुम को जा लेगी, और जिस अकाल का भय तुम खाते हो, वह मिस्प में तुम्हारा पीछा न छोड़ेगी; और वहाँ तुम मरोगे। १६ जितने मनुष्य मिस्प में रहने के लिये उसकी ओर मुँह करें, वे सब तलवार, अकाल और मरी से मरोगे, और जो विपत्ति मैं उनके बीच डालूँगा, उससे कोई बचा न रहेगा। १७ “इश्माएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यह कहता है: जिस प्रकार से मेरा

कोप और जलजलाहट यस्शलेम के निवासियों पर भड़क उठी थी, उसी प्रकार से यदि तुम मिस्र में जाओ, तो मेरी जलजलाहट तुम्हारे ऊपर ऐसी भड़क उठेगी कि लोग चकित होंगे, और तुम्हारी उपमा देकर शाप दिया करेंगे और तुम्हारी निन्दा किया करेंगे। तुम तुम स्थान को फिर न देखने पाओगे। १९ है बचे हाएँ यहदियों, यहोवा ने तुम्हारे विषय में कहा है: ‘मिस्र में मत जाओगे।’ तुम निश्चय जानो कि मैंने आज तुम को चिताकर यह बात बता दी है। २० क्योंकि जब तुम ने मुझ को यह कहकर अपने परमेश्वर यहोवा के पास भेज दिया, ‘हमारे निमित्त हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर और जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा करें उसी के अनुसार हमको बता और हम वैसा ही करेंगे,’ तब तुम जान-बज्जके अपने ही को धोखा देते थे। २१ देखो, मैं आज तुम को बता देता हूँ, परन्तु, और जो कुछ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम से कहने के लिये मुझ को भेजा है, उसमें से तुम कोई बात नहीं मानते। २२ अब तुम निश्चय जानो, कि जिस स्थान में तुम परदेशी होकर रहने की इच्छा करते हो, उसमें तुम तलवार, अकाल और मरी से मर जाओगे।”

४३ जब यिर्मयाह उनके परमेश्वर यहोवा के सब वचन कह चुका, जिनको

कहने के लिये परमेश्वर ने यिर्मयाह को उन सब लोगों के पास भेजा था, २२ तब होशायाह के पुत्र अजर्याह और कारेह के पुत्र योहानान और सब अभिमानी पुरुषों ने यिर्मयाह से कहा, “तू झृठ बोलता है। हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुझे यह कहने के लिये नहीं भेजा कि ‘मिस्र में रहने के लिये मत जाओगे,’ २३ परन्तु नेरियाह का पुत्र बास्क तुझको हमारे विस्तु उकसाता है कि हम कसियों के हाथ में पड़ें और वे हमको मार डालें या बन्दी बनाकर बाबेल को ले जाएँ।” २४ इसलिए कारेह का पुत्र योहानान और दलों के सब प्रधानों और सब लोगों ने यहोवा की यह आज्ञा न मानी कि वे यहदा के देश में ही रहें। २५ पर कारेह का पुत्र योहानान और दलों के और सब प्रधान उन सब यहदियों को जो अन्यजातियों के बीच तितर-बितर हो गए थे, और उनमें से लौटकर यहदा देश में रहने लगे थे, वे उनको ले गए २६ पुस्त, झीं, बाल-बच्चे, राजकुमारियाँ, और जितने प्रणियों को अंगरक्षकों के प्रधान नव्बूजरदान ने गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और शापान का पोता था, सौप दिया था, उनको और यिर्मयाह भविष्यद्वका और नेरियाह के पुत्र बास्क को वे ले गए, २७ और यहोवा की आज्ञा न मानकर वे मिस्र देश में तहपन्हेस नगर तक आ गए। २८ तब यहोवा का यह वचन तहपन्हेस में यिर्मयाह के पास पहुँचा २९ “अपने हाथ से बड़े पथर ले, और यहदी पुरुषों के सामने उस ईंट के चबूतरे में जो तहपन्हेस में फिरैन के भवन के द्वार के पास है, चना फेर के छिपा दे, ३० और उन पुरुषों से कह, ‘इसाएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा, यह कहता है: देखो, मैं बाबेल के राजा अपने सेवक नव्बूजरदान को बुलवा भेज़ूँगा, और वह अपना सिंहासन इन पत्थरों के ऊपर जो मैंने छिपा रखे हैं, रखेगा; और अपना छत्र इनके ऊपर तनवाएगा। ३१ वह आकर मिस्र देश को मरेगा, तब जो मरनेवाले हों वे मृत्यु के वश में, जो बन्दी होनेवाले हों वे बैंधुआई में, और जो तलवार के लिये हैं वे तलवार के वश में कर दिए जाएँगे। ३२ मैं मिस्र के देवालयों में आग लगाऊँगा; और वह उन्हें झुँकवा देगा और बैंधुआई में ले जाएगा; और जैसा कोई चरवाहा अपना वश ओढ़ता है, वैसा ही वह मिस्र देश को समेट लेगा; और तब बेरुतके चला जाएगा। ३३ वह मिस्र देश के सूर्यगूह के खम्भों को तोड़ डालेगा; और मिस्र के देवालयों को आग लगाकर झुँकवा देगा।”

४४ जितने यहदी लोग मिस्र देश में मिटोल, तहपन्हेस और नोप नगरों और पत्रोस देश में रहते थे, उनके विषय यिर्मयाह के पास यह वचन पहुँचा

१ “इसाएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यह कहता है: जो विपत्ति मैं यस्शलेम और यहदा के सब नगरों पर डाल चुका हूँ, वह सब तुम लोगों ने देखी है। देखो, वे आज के दिन कैसे उजड़े हुए और निर्जन हैं, २ क्योंकि उनके निवासियों ने वह बुराई की जिससे उन्होंने मुझे रिस दिलाई थी वे जाकर दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाते थे और उनकी उपसना करते थे, जिन्हें न तो तुम और न तुम्हारे पुरुखा जानते थे। ३ तो भी मैं अपने सब दास भविष्यद्वका जो को बड़े यत्र से यह कहने के लिये तुम्हारे पास भेजता रहा कि यह घृणित काम मत करो, जिससे मैं घृणा रखता हूँ। ४ पर उन्होंने मेरी न सुनी और न मेरी ओर कान लगाया कि अपनी बुराई से फिरें और दूसरे देवताओं के लिये धूप न जलाएँ। ५ इस कारण मेरी जलजलाहट और कोप की आग यहदा के नगरों और यस्शलेम की सड़कों पर भड़क गई; और वे आज के दिन तक उजड़ और सुनसान पड़े हैं। ६ अब यहोवा, सेनाओं का परमेश्वर, जो इसाएल का परमेश्वर है, यह कहता है: तुम लोग क्यों अपनी यह बड़ी हानि करते हो, कि क्या पुस्त, क्या झीं, क्या बालक, क्या दूध पीता बच्चा, तुम सब यहदा के बीच से नाश किए जाओ, और कोई न रहे? ७ क्योंकि इस मिस्र देश में जहाँ तुम परदेशी होकर रहने के लिये आए हो, तुम अपने कामों के द्वारा, अर्थात् दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाकर मुझे रिस दिलाते हो जिससे तुम नाश हो जाओगे और पृथ्वी भर की सब जातियों के लोग तुम्हारी जाति की नामधाराई करेंगे और तुम्हारी उपमा देकर शाप दिया करेंगे। ८ जो-जो बुराईयाँ तुम्हारे पुरुखा, यहदा के राजा और उनकी झियाँ, और तुम्हारी झियाँ, बरन तुम आप यहदा देश और यस्शलेम की सड़कों में करते थे, क्या उसे तुम भूल गए हो? ९ आज के दिन तक उनका मन चर नहीं हुआ और न वे डरते हैं, और न मेरी उस व्यवस्था और उन विधियों पर चलते हैं जो मैंने तुम्हारे पूर्वजों को और तुम को भी सुनवाई हैं। १० “इस कारण इसाएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा, यह कहता है: देखो, मैं तुम्हारे विस्तु होकर तुम्हारी हानि करूँगा, ताकि सब यहदियों का अन्त कर दूँ। ११ बचे हुए यहदी जो हठ करके मिस्र देश में आकर रहने लगे हैं, वे सब मिट जाएँगे; इस मिस्र देश में छोटे से लेकर बड़े तक वे तलवार और अकाल के द्वारा मार के मिट जाएँगे; और लोग उन्हें कोसेंगे और चकित होंगे; और उनकी उपमा देकर शाप दिया करेंगे और निन्दा भी करेंगे। १२ जैसा मैंने यस्शलेम को तलवार, अकाल और मरी के द्वारा दण्ड दिया है, वैसा ही मिस्र देश में रहनेवालों को भी दण्ड ढूँगा, १३ कि जो बचे हुए यहदी मिस्र देश में परदेशी होकर रहने के लिये आए हैं, यधपि वे यहदा देश में रहने के लिये लौटने की बड़ी अभिलाषा रखते हैं, तो भी उन्हें से एक भी बचकर वहाँ न लौटने पाएगा। १४ तब मिस्र देश के पत्रोस में रहनेवाले जितने पुस्त जानते थे कि उनकी झियाँ दूसरे देवताओं के लिये धूप जलाती हैं, और जिनी झियाँ बड़ी मण्डली में पास खड़ी थीं, उन सभी ने यिर्मयाह को यह उत्तर दिया: १५ “जो वचन तने हमको यहोवा के नाम से सुनाया है, उसको हम नहीं सुनेंगे। १६ जो-जो मन्त्रे हम मान चके हैं उन्हें हम निश्चय पूरी करेंगे, हम स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाएँगे और तपावन देंगे, जैसे कि हमारे पुरुखा लोग और हम भी अपने राजाओं और अन्य हाकिमों समेत यहदा के नगरों में और यस्शलेम की सड़कों में करते थे; क्योंकि उस समय हम पेट भरकर खाते और भले चांपे रहते और किसी विपत्ति में नहीं पड़ते थे। १७ परन्तु जब से हमने स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाना और तपावन देना छोड़ दिया, तब से हमको सब वस्तुओं की घटी है; और हम तलवार और अकाल के द्वारा मिट चले हैं।” १८ और झियों ने कहा, “जब हम स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाती और चन्द्राकार रेटियाँ बनाकर तपावन देती थीं, तब अपने-अपने पति के बिन जाने एसा नहीं

करती थी।” २० तब यिर्मयाह ने, क्या ब्री, क्या पुस्प, जितने लोगों ने यह उत्तर दिया, उन सबसे कहा, २१ “तुम्हारे पुरुखा और तुम जो अपने राजाओं और हाकिमों और लोगों समेत यहदा देश के नगरों और यस्तलेम की सड़कों में धूप जलाते थे, क्या वह यहोवा के ध्यान में नहीं आया? २२ क्या उसने उसको स्मरण न किया? इसलिए जब यहोवा तुम्हारे बुरे और सब घृणित कामों को और अधिक न सह सका, तब तुम्हारा देश उजड़कर निर्जन और सुसान हो गया, यहाँ तक कि लोग उसकी उपमा देकर श्राप दिया करते हैं, जैसे कि आज होता है। २३ क्योंकि तुम धूप जलाकर यहोवा के विस्तु पाप करते और उसकी नहीं सुनते थे, और उसकी व्यवस्था और विधियों और चित्तानियों के अनुसार नहीं चले, इस कारण यह विपत्ति तुम पर आ पड़ी है, जैसे कि आज है।” २४ फिर यिर्मयाह ने उन सब लोगों से और उन सब छियों से कहा, “हे सारे मिस्र देश में रहनेवाले यहदियों, यहोवा का वचन सुनो २५ इसाएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा, यह कहता है, कि तुम ने और तम्हारी छियों ने मन्त्रों मानी और यह कहकर उन्हें पूरी करते हो कि हमने स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाने और तपावन देने की जो-जो मन्त्रों मानी हैं उन्हें हम अवश्य ही पूरी करेंगे; और तुम ने अपने हाथों से ऐसा ही किया। इसलिए अब तुम अपनी-अपनी मन्त्रों को मानकर पूरी करो। २६ परन्तु हे मिस्र देश में रहनेवाले सभी यहदियों यहोवा का वचन सुनो: सुनो, मैंने अपने बड़े नाम की शपथ खाइ है कि अब पूरे मिस्र देश में कोई यहदी मन्त्रय मेरा नाम लेकर फिर कभी यह न कहने पाएगा, ‘प्रभु यहोवा के जीवन की सौगंध्य।’ २७ सुनो, अब मैं उनकी भलाई नहीं, हानि ही की चिन्ता करूँगा; मिस्र देश में रहनेवाले सब यहदी, तलवार और अकाल के द्वारा मिट्कर नाश हो जाएंगे जब तक कि उनका सर्वनाश न हो जाए। २८ जो तलवार से बचकर और मिस्र देश से लौटकर यहदा देश में पहुँचेंगे, वे थोड़े ही होंगे; और मिस्र देश में रहने के लिये आए हुए सब यहदियों में से जो बच पाएंगे, वे जान लेंगे कि किसका वचन पूरा हुआ, मेरा या उनका। २९ इस बात का मैं यह चिन्ह देता हूँ, यहोवा की यह वाणी है, कि मैं तुम्हें इसी स्थान में दण्ड दूँगा, जिससे तुम जान लोगे कि तुम्हारी हानि करने में मेरे वचन निश्चय पूरे होंगे। ३० यहोवा यह कहता है: “देखो, जैसा मैंने यहोवा के राजा सिद्दियाह को उसके शत्रु अर्थात् उसके प्राण के खोजी बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में कर दिया, वैसे ही मैं मिस्र के राजा फिरैन होप्रा को भी उसके शत्रुओं के, अर्थात् उसके प्राण के खोजियों के हाथ में कर दूँगा।”

४५ योशियाह के पुत्र यहदा के राजा यहोवाकीम के राज्य के चौथे वर्ष में,
जब नेरियाह का पुत्र बास्क यिर्मयाह भविष्यद्वृत्ता से भविष्यद्वृत्ता के ये वचन सुनकर पुस्तक में लिखे चुका था, २ तब उसने उससे यह वचन कहा: “इसाएल का परमेश्वर यहोवा, तुझ से यह कहता है, ३ हे बास्क, तूने कहा, ‘हाय मुझ पर! क्योंकि यहोवा ने मुझे दुःख पर दुःख दिया है, मैं कराहते-कराहते थक गया और मुझे कुछ चैन नहीं मिलता।’ ४ तू इस प्रकार कह, यहोवा यह कहता है: देख, इस सारे देश को जिसे मैंने बनाया था, उसे मैं अप ढा दूँगा, और जिनको मैंने रोपा था, उन्हें स्वयं उखाड़ फेंकूँगा। ५ इसलिए सन, क्या त अपने लिये बड़ाई खोज रहा है? उसे मत खोज; क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि मैं सारे मनुष्यों पर विपत्ति डालूँगा; परन्तु जहाँ कहीं त् जाएगा वहाँ मैं तेरा प्राण बचाकर तुझे जीवित रखूँगा।”

४६ जाति-जाति के विषय यहोवा का जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वृत्ता के
पास पहुँचा, वह यह है। ६ मिस्र के विषय। मिस्र के राजा फिरैन नको की सेना जो फरात महानद के टट पर कर्कमीश में थी, और जिसे बाबेल के

राजा नबूकदनेस्सर ने योशियाह के पुत्र यहदा के राजा यहोवाकीम के राज्य के चौथे वर्ष में जीत लिया था, उस सेना के विषय ७ “दालें और फरियाँ तैयार करके लड़ने को निकट चले आओ। ८ घोड़ों को जुतवाओं; और हे सवारों, घोड़ों पर चढ़कर टोप पहने हुए खड़े हो जाओ; भालों को पैना करो, झिलमों को पहन लो! ९ मैं क्यों उनको व्याकुल देखता हूँ? वे विस्मित होकर पीछे हट गए। उनके शूरीन गिराए गए और उतावली करके भाग गए, वे पीछे देखते भी नहीं; क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि चारों ओर भय ही भय है। १० न वेग चलनेवाला भागने पाएगा और न वीर बचने पाएगा; क्योंकि उत्तर दिशा में फरात महानद के टट पर वे बड़े ठोकर खाकर गिर पड़े। ११ “यह कौन है, जो नील नदी के समान, जिसका जल महानदों का सा उछलता है, बढ़ा चला आता है? १२ मिस्र नील नदी के समान बढ़ता है, उसका जल महानदों का सा उछलता है। वह कहता है, मैं चढ़कर पृथ्वी की भर ढूँगा, मैं नारों को उनके निवासियों समेत नाश कर दूँगा। १३ हे मिस्री सवारों आगे बढ़ो, हे रथियों, बहुत ही वेग से चलाओ! हे ढाल पकड़नेवाले कूशी और पूरी वीरों, हे धनुर्धारी लुदियों चले आओ। १४ क्योंकि वह दिन सेनाओं के यहोवा प्रभु के बदला लेने का दिन होगा जिसमें वह अपने द्रोहियों से बदला लेगा। तलवार खाकर तूम होगी, और उनका लाह पीकर छक जाएगी। क्योंकि, उत्तर के देश में फरात महानद के तीर पर, सेनाओं के यहोवा प्रभु का ज़य है। १५ हे मिस्र की कुमारी कन्या, गिलाद को जाकर बलसान औषधि ले; त् वृथ्य ही बहुत इलाज करती है, त् चंगी नहीं होगी! १६ क्योंकि सब जाति के लोगों ने सुना है कि त् नीच हो गई और पृथ्वी तेरी चिल्लाहट से भर गई है, वीर से वीर ठोकर खाकर गिर पड़े; वे दोनों एक संग गिर गए हैं।” १७ यहोवा ने यिर्मयाह भविष्यद्वृत्ता से यह वचन भी कहा कि बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर क्यों आकर मिस्र देश को मार लेगा: १८ “मिस्र में वर्णन करो, और मिग्दोल में सुनाओ; हाँ, और नोप और तहपन्हेस में सुनाकर यह कहो कि खड़े होकर तैयार हो जाओ; क्योंकि तुम्हारे चारों ओर सब कुछ तलवार खा गई है। १९ तेरे बलवन्त जन क्यों नाश हो गए हैं? वे इस कारण खड़े न रह सके क्योंकि यहोवा ने उन्हें ढेकल दिया। २० उसने बहतों को ठोकर खिलाई, वे एक दूरे पर गिर पड़े; और वे कहने लगे, ‘उठो, चलो, हम अंधेर करनेवाले की तलवार के डर के मारे अपने-अपने लोगों और अपनी-अपनी जन्म-भूमि में फिर लौट जाएँ।’ २१ वहाँ वे उपकरके कहते हैं, ‘मिस्र का राजा फिरैन सत्यानाश हुआ; क्योंकि उसने अपना बहमूल्य अवसर खो दिया।’ २२ “वह राजाधिराज जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है, उसकी यह वाणी है कि मेरे जीवन की सौगंध्य, जैसा ताबोर अन्य पहाड़ों में, और जैसा कर्मेल समुद्र के किनारे है, वैसा ही वह आएगा। २३ हे मिस्र की रहनेवाली पुरी! बैंधुआई में जाने का सामान तैयार कर, क्योंकि नोप नगर उजाड़ और ऐसा भस्म हो जाएगा कि उसमें कोई भी न रहेगा। २४ “मिस्र बहुत ही सन्दर्भ बढ़िया तो है, परन्तु उत्तर दिशा से नाश चला आता है, वह आ ही गया है। २५ उसके जो सिपाही किराये पर आए हैं वह पाले-पोसे हुए बछड़ों के समान हैं; उन्होंने खुँग मोढ़ा, और एक संग भाग गए, वे खड़े नहीं रहे; क्योंकि उनकी विपत्ति का दिन और दण्ड पाने का समय आ गया। २६ उसकी आहट सर्प के भागने की सी होगी; क्योंकि वे वृक्षों के काटनेवालों की सेना और कुल्हाड़ियों लिए हुए उसके विस्तु चढ़ आएँगे। २७ यहोवा की यह वाणी है, कि चाहे उसका वन बहुत ही धना हो, परन्तु वे उसको काट डालेंगे, क्योंकि वे टिड़ियों से भी अधिक अनगिनत हैं। २८ मिस्री कन्या लजित होगी, वह उत्तर दिशा के लोगों के वश में कर दी जाएगी।” २९ इसाएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा कहता है: “देखो, मैं नो नगरवासी अपोन और फिरैन राजा और मिस्र को उसके सब देवताओं और राजाओं

समेत और फिरौन को उन समेत जो उस पर भरोसा रखते हैं दण्ड देने पर हूँ। ४८ मैं उनको बाबेल के राजा नब्कूदनेस्सर और उसके कर्मचारियों के वश में कर दूँगा जो उनके प्राण के खोजी है। उसके बाद वह प्राचीनकाल के समान फिर बसाया जाएगा, यहोवा की यह वाणी है। ४९ “पन्तु हे मेरे दास याकूब, तु मत डर, और हे इसाएल, विस्मित न हो; क्योंकि मैं तुझे और तेरे वंश को बैंधुआई के दूर देश से छुड़ा ले आऊँगा। याकूब लौटकर चैन और सुख से रहेगा, और कोई उसे डराने न पाएगा। ५० हे मेरे दास याकूब, यहोवा की यह वाणी है, कि तू मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। और यथापि मैं उन सब जातियों का अन्त कर डालूँगा जिनमें मैंने तुझे जबरन निकाल दिया है, तो भी तेरा अन्त न कहूँगा। मैं तेरी ताड़ना विचार करके कहूँगा, परन्तु तुझे किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराऊँगा।”

४७ फिरौन द्वारा गाजा नगर को जीत लेने से पहले यर्मयाह भविष्यद्वत्ता के

पास पलिशियों के विषय यहोवा का यह वचन पहुँचा २ “यहोवा यह कहता है कि देखो, उत्तर दिशा से उमड़नेवाली नदी देश को उस सब समेत जो उसमें है, और निवासियों समेत नगर को डुबो लेगी। तब मनुष्य चिल्लाएँ, वरन् देश के सब रहनेवाले हाय-हाय करेंगे। ३ शत्रुओं के बलवन्त घोड़ों की टाप, रथों के बेग चलने और उनके पहियों के चलने का कोलाहल सुनकर पिता के हाथ-पॉव ऐसे ढीले पड़ जाएँगे, कि वह मुँह मोड़कर अपने लड़कों को भी न देखेगा। ४ क्योंकि सब पलिशियों के नाश होने का दिन आता है, और सोर और सीदाने के सब बचे हुए सहायक मिट जाएँगे। क्योंकि यहोवा पलिशियों को जो कस्तोर नामक समुद्र तट के बचे हुए रहनेवाले हैं, उनको भी नाश करने पर है। ५ गाजा के लोग सिर मुँडाए हैं, अशक्तोन जो पलिशियों के नीचान में अकेला रह गया है, वह भी मिटाया गया है; तू कब तक अपनी देह चीरता रहेगा? ६ “हे यहोवा की तलवार! तू कब तक शान्त न होगी? तू अपनी म्यान में घूस जा, शान्त हो, और थमी रह! ७ तू कैसे थम करी है? क्योंकि यहोवा ने तुझको आज्ञा देकर अशक्तोन और समुद्र तट के विस्तृ ठहराया है।”

४८ मोआब के विषय इमाएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यह कहता

है: “नबो पर हाय, क्योंकि वह नाश हो गया! कियतीम की आशा टूट गई, वह ले लिया गया है; ऊँचा गढ़ निराश और विस्मित हो गया है। १ मोआब की प्रशंसा जाती रही। हेशबोन में उसकी हानि की कल्पना की गई है। ‘आओ, हम उसको ऐसा नाश करें कि वह राज्य न रह जाए।’ हे मदमेन, तू भी सुनसान हो जाएगा; तलवार तेरे पीछे पड़ेगी। २ “हेरोनैम से चिल्लाहट का शब्द सुनो! नाश और बड़े दुःख का शब्द सुनाइ देता है! ३ मोआब का सत्यानाश हो रहा है, उसके नन्हे बच्चों की चिल्लाहट सुन पड़ी। ४ क्योंकि लहूती की चढ़ाई में लोग लगातार रोते हुए चढ़ेंगे; और होरोनैम की उत्तर में नाश की चिल्लाहट का संकट हुआ है। ५ थागो! अपना-अपना प्राण बचाओ! उस अध्यूपे पेड़ के समान हो जाओ जो जंगल में होता है। ६ क्योंकि तू जो अपने कामों और सम्पत्ति पर भरोसा रखता है, इस कारण तू भी पकड़ा जाएगा; और कमोश देवता भी अपने याजकों और हाकिमों समेत बैंधुआई में जाएगा। ७ यहोवा के वचन के अनुसार नाश करनेवाले तुम्हारे हर एक नगर पर चढ़ाई करेंगे, और कोई नगर न बचेगा; धारीवाले और पहाड़ पर की चौरस भूमियाले दोनों नाश किए जाएँगे। ८ “मोआब के पंख लगा दो ताकि वह उड़कर दूर हो जाए; क्योंकि उसके नगर ऐसे उजाड़ हो जाएँगे कि उनमें कोई भी न बसने पाएगा। ९ “श्रापित है वह जो यहोवा का काम आलस्य से करता है; और वह भी जो अपनी तलवार लह बहाने से रोक रखता है। १०

“मोआब बचपन ही से सुर्खी है, उसके नीचे तलछट है, वह एक बर्तन से दूसरे बर्तन में उगड़ेला नहीं गया और न बैंधुआई में गया; इसलिए उसका स्वाद उसमें स्थिर है, और उसकी गन्ध ज्यों की त्यों बनी रहती है। ११ इस कारण यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आँएंगे, कि मैं लोगों को उसके उगड़ेलने के लिये भेज़ूँगा, और वे उसको उगड़ेलेंगे, और जिन घड़ों में वह रखा हआ है, उनको खाली करके फोड़ डालेंगे। १२ तब जैसे इसाएल के धराने को बेतेल से लजित होना पड़ा, जिस पर वे भरोसा रखते थे, वैसे ही मोआबी लोग कमोश से लजित होंगे। १३ “तुम कैसे कह सकते हो कि हम वीर और पराकरी येद्वा हैं? १४ मोआब तो नाश हुआ, उसके नार भस्म हो गए और उसके चुने हुए जवान धात होने को उत्तर गए, राजाधिराज, जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है, उसकी यही वाणी है। १५ मोआब की विपत्ति निकट आ गई, और उसके संकट में पड़ने का दिन बहुत ही बेग से आता है। १६ उसके आस-पास के सब रहनेवालों, और उसकी कीर्ति के सब जाननेवालों, उसके लिये विलाप करो; कहो, ‘हाय! यह मजबूत सौंटा और सु-दर छड़ी कैसे टूट गई है?’ १७ “हे दीबोन की रहनेवाली तू अपना वैभव छोड़कर प्यासी बैठी रह! क्योंकि मोआब के नाश करनेवाले ने तुझ पर चढ़ाई करके तेरे ढूढ़ गढ़ों को नाश किया है। १८ हे अरोएर की रहनेवाली तू मार्ग में खड़ी होकर ताकती रह! जो भागता है उससे, और जो बच निकलती है उससे पूछ कि क्या हआ है? १९ मोआब की आशा टूटेरी, वह विस्मित हो गया; तुम हाय-हाय करो और चिल्लाओ; अर्नोन में भी यह बताओ कि मोआब नाश हुआ है। २० “चौरस भूमि के देश में होलोन, यहस, मेपात, २१ दीबोन, नबो, बेतदिवलातैम, २२ और कियतीम, बेतगामूल, बेतमोन, २३ और करियतोत, बोम्मा, और क्या दूर क्या निकट, मोआब देश के सारे नगरों में दण्ड की आज्ञा पूरी हुई है। २४ यहोवा की यह वाणी है, मोआब का सींग कट गया, और भुजा टूट गई है। २५ “उसको मतवाला करो, क्योंकि उसने यहोवा के विस्तृ बड़ाई मारी है; इसलिए मोआब अपनी छाँट में लोटेगा, और उड़ायास में उड़ाया जाएगा। २६ क्या तूने भी इसाएल को उपहास में नहीं उड़ाया? क्या वह चोरों के बीच पकड़ा गया था कि जब तु उसकी चर्चा करता तब तू सिर हिलाता था? २७ “हे मोआब के रहनेवालों अपने-अपने नगर को छोड़कर चढ़ान की दिशा में बसो। उस पंडुकी के समान हो जो गुफा के मूँह की एक ओर धोंसला बनाती हो। २८ हमने मोआब के गर्व के विषय में सुना है कि वह अत्यन्त अभिमानी है; उसका गर्व, अभिमान और अहंकार, और उसका मन फूलना प्रसिद्ध है। २९ यहोवा की यह वाणी है, मैं उसके रोश को भी जानता हूँ कि वह व्यर्थ ही है, उसके बड़े बोल से कुछ बन न पड़ा। ३० इस कारण मैं मोआबियों के लिये चिल्लाऊँगा; कीरहैरेस के लोगों के लिये विलाप किया जाएगा। ३१ हे सिभाम की दाखलाता, मैं तुम्हारे लिये याजेर से भी अधिक विलाप करूँगा! तेरी डालियाँ तो ताल के पार बढ़ गई, वरन् याजेर के ताल तक भी पहुँची थीं; पर नाश करनेवाला तेरे धृपकाल के फलों पर, और तोड़ी हुई दाढ़ों पर भी टूट पड़ा। ३२ फलवाली बारियों से और मोआब के देश से आनन्द और मग्न होना उठ गया है, मैंने ऐसा किया कि दाखरस के कुण्डों में कुछ दाखरमधु न रहा; लोग फिर ललकारते हुए दाख न रौदेंगे; जो ललकार होनेवाली है, वह अब नहीं होगी। ३३ “हेशबोन की चिल्लाहट सुनकर लोग एलाले और यहस तक, और सोअर से होरेनैम और एलत-शलीशिया तक भी चिल्लाते हुए भागे चले गए हैं। क्योंकि निम्रीम का जल भी सूख गया है। ३४ और यहोवा की यह वाणी है, कि मैं ऊँचे स्थान पर चढ़ावा चढ़ाना, और देवताओं के लिये धूप जलाना, दोनों को मोआब में बन्द कर दूँगा। ३५ इस कारण मेरा मन मोआब और कीरहैरेस के लोगों के लिये

बाँसुरी सा रो रोकर अलापता है, क्योंकि जो कुछ उन्होंने कमाकर बचाया है, वह नाश हो गया है। ३७ क्योंकि सब के सिर मूँडे गए और सब की दाढ़ियाँ नोची गईं; सब के हाथ चरी हुए, और सब की कमर में टाट बन्धा हुआ है। ३८ मोआब के सब घरों की छतों पर और सब चौकों में रोना पीटना हो रहा है, क्योंकि मैंने मोआब को तुच्छ बर्तन के समान तोड़ डाला है यहोवा की यह वाणी है। ३९ मोआब के लिए विस्मित हो गया। हाय, हाय, करो! क्योंकि उसने कैसे लज्जित होकर पीठ फेरी है! इस प्रकार मोआब के चारों ओर के सब रहनेवाले उसका ठश करेंगे और विस्मित हो जाएंगे। ४० क्योंकि यहोवा यह कहता है, “देखो, वह उकाब सा उडेगा और मोआब के ऊपर अपने पंख फैलाएगा। ४१ करियोत ले लिया गया, और गढ़वाले नार दूसरों के वश में पड़ गए। उस दिन मोआबी वीरों के मन जच्चा झी के से हो जाएँगे; ४२ और मोआब ऐसा तिर-बित्र हो जाएगा कि उसका दल टट जाएगा, क्योंकि उसने यहोवा के विस्तु बड़ाई मारी है। ४३ यहोवा की यह वाणी है कि हे मोआब के रहनेवाले, तैर लिये भय और गङ्गा और फंदे ठहराए गए हैं। ४४ जो कोई भय से भागे वह गङ्गे में गिरेगा, और जो कोई गङ्गे में से निकले, वह फंदे में फँसेगा। क्योंकि मैं मोआब के दण्ड का दिन उस पर ले आऊँगा, यहोवा की यही वाणी है। ४५ “जो भागे हुए हैं वह देशबोन में शरण लेकर खड़े हो गए हैं, परन्तु हेशबोन से आग और सीहोन के बीच से लौ निकली, जिससे मोआब देश के कोने और बलतैयों के चोण्डे भस्म हो गए हैं। ४६ हे मोआब तुझ पर हाया! कमोश की प्रजा नाश हो गई; क्योंकि तेरे झी-पुष्प दोनों बैंधुआई में गए हैं। ४७ तो भी यहोवा की यह वाणी है कि अन्त के दिनों में मैं मोआब को बैंधुआई से लौटा ले आऊँगा।” मोआब के दण्ड का वचन यहीं तक हुआ।

४९ अमोनियों के विषय यहोवा यह कहता है: “क्या इसाएल के पुत्र नहीं हैं? क्या उसका कोई वारिस नहीं रहा? फिर मल्काम क्यों गाद के देश का अधिकारी हुआ? और उसकी प्रजा क्यों उसके नगरों में बसें पाई है? २ यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आनेवाले हैं, कि मैं अमोनियों के रब्बाह नामक नगर के विस्तु युद्ध की ललकार सुनवाऊँगा, और वह उजड़कर खण्डहर हो जाएगा, और उसकी बसित्याँ पूँक दी जाएँगी; तब जिन लोगों ने इसाएलियों के देश को अपना लिया है, उनके देश को इसाएली अपना लेंगे, यहोवा का यही वचन है। ३ “हे हेशबोन हाय-हाय कर; क्योंकि आई नार नाश हो गया। हे रब्बाह की बेटियों चिल्लताओ! और कमर में टाट बौंधो, छाती पीटती हुई बांडों में इधर-उधर दौड़ो। क्योंकि मल्काम अपने याजकों और हाकिमों समेत बैंधुआई में जाएगा। ४ हे भटकेनेवाली बेटी! तृ अपने देश की तराइयों पर, विशेषकर अपने बहुत ही उपजाऊ तराई पर क्यों फूलती है? तृ क्यों यह कहकर अपने रखे हुए धन पर भरोसा रखती है, ‘मेरे विस्तु कौन चढ़ाई कर सकेगा?’ ५ प्रभु सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है। देखो, मैं तेरे चारों ओर के सब रहनेवालों की ओर से तेरे मन में भय उपजाने पर हूँ, और तेरे लोग अपने-अपने सामने की ओर ढकेल दिए जाएँगे; और जब वे मारे-मारे फिरेंगे, तब कोई उन्हें इकट्ठा न करेगा। ६ परन्तु उसके बाद मैं अमोनियों को बैंधुआई से लौटा लाऊँगा; यहोवा की यही वाणी है।” ७ एदोम के विषय, सेनाओं का यहोवा यह कहता है: “क्या तेमान में अब कुछ बुद्धि नहीं रही? क्या वहाँ के ज्ञानियों की युक्ति निष्फल हो गई? क्या उनकी बुद्धि जाती रही है? ८ हे ददान के रहनेवालों भागो, लौट जाओ, वहाँ छिपकर बसो! क्योंकि जब मैं एसाव को दण्ड देते लगाऊँगा, तब उस पर भारी विपत्ति पड़ेगी। ९ यदि दाख के तोड़नेवाले तेरे पास आते, तो क्या वे कहीं-कहीं दाख न छोड़ जाते? और यदि चोर रात को आते तो क्या वे जितना चाहते उतना धन लटकर न ले जाते? १० क्योंकि मैंने एसाव को उघाड़ा है, मैंने उसके छिपने के स्थानों

को प्रगट किया है; यहाँ तक कि वह छिप न सका। उसके बंश और भाई और पड़ोसी सब नाश हो गए हैं और उसका अन्त हो गया। ११ अपने अनाथ बालकों को छोड़ जाओ, मैं उनको जिलाऊँगा; और तुम्हारी विधवाएँ मुझ पर भरोसा रखें। १२ क्योंकि यहोवा यह कहता है, देखो, जो इसके योग्य न थे कि कटोरे में से पीएँ, उनको तो निश्चय पीना पड़ेगा, फिर क्या तृ किसी प्रकार से निर्दोष ठहरकर बच जाएगा? तृ निर्दोष ठहरकर न बचेगा, तुझे अवश्य ही पीना पड़ेगा। १३ क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, मैंने अपनी सौनाथ खाई है, कि बोसा ऐसा उजड़ जाएगा कि लोग चकित होंगे, और उसकी उपमा देकर निन्दा किया करेंगे और शाप दिया करेंगे; और उसके सारे गाँव सदा के लिये उजाड़ हो जाएँगे।” १४ मैंने यहोवा की ओर से समाचार सुना है, वरन् जाति-जाति में यह कहने को एक दूष भी भेजा गया है, इक्षु होकर एदोम पर चढ़ाई करो; और उससे लड़ने के लिये उठो। १५ क्योंकि मैंने तुझे जातियों में छोटा, और मनुष्यों में तुच्छ कर दिया है। १६ हे चट्टन की दरारों में बसे हुए, हे पहाड़ी की चोटी पर किला बनानेवाले! तैरे भयानक स्प और मन के अभिमान ने तुझे धोखा दिया है। चाहे तृ उकाब के समान अपना बसेरा ऊँचे स्थान पर बनाए, तो भी मैं वहाँ से तुझे उतार लाऊँगा, यहोवा की यही वाणी है। १७ “एदोम यहाँ तक उजड़ जाएगा कि जो कोई उसके पास से चले वह चकित होगा, और उसके सारे दुखों पर ताती बजाएगा। १८ यहोवा का यह वचन है, कि जैसी सदोम और गमोरा और उके आस-पास के नगरों के उलट जाने से उनकी दशा हुई थी, वैसी ही उसकी दशा होगी, वहाँ न कोई मनुष्य रहेगा, और न कोई आदमी उसमें टिकेगा। १९ देखो, वह सिंह के समान यरदन के आस-पास के घने जंगलों से सदा की चराई पर चढ़ेगा, और मैं उनको उसके सामने से झट भगा दूँगा; तब जिसको मैं चुन लूँ उसको उन पर अधिकारी ठहराऊँगा। मेरे तुल्य कौन है? और कौन मुझ पर मुकदमा चलाएगा? वह चरवाहा कहाँ है जो मेरा सामना कर सकेगा? २० देखो, यहोवा ने एदोम के विस्तु क्या युक्ति की है, और तेमान के रहनेवालों के विस्तु कैसी कल्पना की है? निश्चय वह भेड़-बकरियों के बच्चों को घसीट ले जाएगा; वह चराई को भेड़-बकरियों से निश्चय खाली कर देगा। २१ उनके गिरने के शब्द से पृथ्वी कौप टड़ेगी; और ऐसी चिल्लाहट मचेगी जो लाल समुद्र तक सुनाई पड़ेगी। २२ देखो, वह उकाब के समान निकलकर उड़ आएगा, और बोसा पर अपने पंख फैलाएगा, और उस दिन एदोमी शूरवीरों का मन जच्चा झी का सा हो जाएगा।” २३ दमिश्क के विषय, “हमात और अर्पाद की आशा टूटी है, क्योंकि उन्होंने बुरा समाचार सुना है, वे गल गए हैं; समुद्र पर चिन्ता है, वह शान्त नहीं हो सकता। २४ दमिश्क बलतीन होकर भागने को फिरती है, परन्तु कॅपकंपी ने उसे पकड़ा है, जच्चा की सी पीड़ा उसे उठी है। २५ हाय, वह नार, वह प्रशंसा योग्य नार, जो मेरे हर्ष का कारण है, वह छोड़ा गया है। २६ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, कि उसके जवान चौकों में गिराए जाएँगे, और सब योद्धाओं को बोलना बन्द हो जाएगा। २७ मैं दमिश्क की शहरपनाह में आग लगाऊँगा जिससे बेन्हदद के राजभवन भस्म हो जाएँगे।” २८ “केदार और हासीर के राज्यों के विषय जिन्हें बाबेल के राजा नबुकदनेस्सर ने मार लिया। यहोवा यह कहता है: उठकर केदार पर चढ़ाई करो! पूरब के लोगों का नाश करो! २९ वे उनके देंगे और भेड़-बकरियों ले जाएँगे, उनके तम्बू और सब बर्जन उठाकर ऊँटों को भी हाँक ले जाएँगे, और उन लोगों से पुकारकर कहेंगे, ‘चारों ओर भय ही भय है।’ ३० यहोवा की यह वाणी है, हे हासीर के रहनेवालों भागो! दूर-दूर मारे-मारे फिरो, कहीं जाकर छिपके बसो। क्योंकि बाबेल के राजा नबुकदनेस्सर ने तम्हारे विस्तु युक्ति और कल्पना की है। ३१ “यहोवा की यह वाणी है, उठकर उस चैन से रहनेवाली जाति के लोगों पर

चढ़ाई करो, जो निर रहते हैं, और बिना किवाड़ और बेंडे के ऐसे ही बसे हुए हैं। ३२ उनके टैंट और अनगिन गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ लट में जाएँगी, क्योंकि मैं उनके गाल के बाल मुँडनेवालों को उड़ाकर सब दिशाओं में तितर-बितर करूँगा; और चारों ओर से उन पर विपत्ति लाकर डालूँगा, यहोवा की यह वाणी है। ३३ हासोर गीदड़ों का वासस्थान होगा और सदा के लिये उजाड़ हो जाएगा, वहाँ न कोई मनुष्य रहेगा, और न कोई आदीनी उसमें टिकेगा।^१ ३४ यहदा के राजा सिदिक्याह के राज्य के आरम्भ में यहोवा का यह वचन यिर्मयाह भविष्यद्वत्ता के पास एलाम के विषय पहुँचा। ३५ सेनाओं का यहोवा यह कहता है, ‘मैं एलाम के धनुष की जो उनके पराक्रम का मुख्य कारण है, तो इँगा; ३६ और मैं आकाश के चारों ओर से वायु बहाकर उन्हें चारों दिशाओं की ओर यहाँ तक तितर-बितर करूँगा, कि ऐसी कोई जाति न रहेगी जिसमें एलाम भागते हुए न आएँ। ३७ मैं एलाम को उनके शत्रुओं और उनके प्राण के खोजियों के सामने विस्तित करूँगा, और उन पर अपना कोप भड़काकर विपत्ति डालूँगा। और यहोवा की यह वाणी है, कि तलवार को उन पर चलवाते-चलवाते मैं उनका अन्त कर डालूँगा; ३८ और मैं एलाम में अपना सिंहासन रखकर उनके राजा और हाकिमों को नाश करूँगा, यहोवा की यही वाणी है। ३९ “परन्तु यहोवा की यह भी वाणी है, कि अन्त के दिनों में मैं एलाम को बँधुआई से लौटा ले आऊँगा।”

५० बाबेल और कसदियों के देश के विषय में यहोवा ने यिर्मयाह भविष्यद्वत्ता के द्वारा यह वचन कहा: १ “जातियों में बताओ, सुनाओ और झङ्णा खड़ा करो; सुनाओ, मत छिपाओ कि बाबेल ले लिया गया, बेल का मूँह काला हो गया, मरोदक विस्तित हो गया। बाबेल की प्रतिमाएँ लज्जित हुई और उसकी बेडौल मूर्तियों विस्तित हो गई।^२ २ क्योंकि उत्तर दिशा से एक जाति उस पर चढ़ाई करके उसके देश को यहाँ तक उजाड़ कर देगी, कि क्या मनुष्य, क्या पश, उसमें कोई भी न रहेगा; सब भाग जाएँगे। ३ “यहोवा की यह वाणी है, कि उन दिनों में इमार्ली और यहदा एक संग आएँगे, वे रोते हुए अपने परमेश्वर यहोवा को ढूँढ़ने के लिये चले आएँगे। ४ वे सिय्योन की ओर मुँह किए हुए उसका मार्ग पूछते और आपस में यह कहते आएँगे, ‘आओ हम यहोवा से मेल कर लें, उसके साथ ऐसी वाचा बांधे जो कभी भूली न जाए, परन्तु सदा स्थिर रहे।’^५ ५ “मेरी प्रजा खोई हुई भेड़े हैं; उनके चरवाहों ने उनको भटका दिया और पहाड़ों पर भटकाया है; वे पहाड़-पहाड़ और पहाड़ी-पहाड़ी धूमते-धूमते अपने बैठने के स्थान को भूल गई हैं। ६ जितों ने उन्हें पाया वे उनको खा गए; और उनके सतानेवालों ने कहा, ‘इसमें हमारा कुछ दोष नहीं, क्योंकि उन्होंने यहोवा के विस्तु पाप किया है जो धर्म का आधार है, और उनके पूर्वजों का अश्वय था।’^७ ७ “बाबेल के बीच में से भागों, कसदियों के देश से निकल आओ। जैसे बकरे अपने झङ्ण के आगे होते हैं, वैसे ही बनो। ८ क्योंकि देखो, मैं उत्तर के देश से बड़ी जातियों को उत्तारकर उनकी मण्डली बाबेल पर चढ़ा ले आऊँगा, और वे उसके विस्तु पांति बाँधेंगे, और उसी दिशा से वह ले लिया जाएगा। उनके तीर चतुर बींगे के से होंगे; उनमें से कोई अकारथ न जाएगा। ९ कसदियों का देश ऐसा लुटेगा कि सब लटनेवालों का पेट भर जाएगा, यहोवा की यह वाणी है। १० “हे मेरे भाग के लूटनेवालों, तुम जो मेरी प्रजा पर आनन्द करते और फुले नहीं समाते हो, और घास चरनेवाली बछिया के समान उछलते और बलवन्त घोड़ों के समान हिनहिनते हो, ११ तुम्हारी माता अत्यन्त लज्जित होगी और तुम्हारी जननी का मुँह काला होगा। क्योंकि वह सब जातियों में नीच होगी, वह जंगल और मस्त और निर्जल देश हो जाएगा। १२ यहोवा के क्रोध के कारण, वह जंगल देश निर्जन रहेगा, वह उजाड़ ही उजाड़ होगा; जो कोई बाबेल के पास से

चलेगा वह चकित होगा, और उसके सब दुःख देखकर ताली बजाएगा। १३ हे सब धनुर्धारियों, बाबेल के चारों ओर उसके विस्तु पांति बाँधो; उस पर तीर चलाओ, उन्हें मत रथ छोड़ो, क्योंकि उसने यहोवा के विस्तु पाप किया है। १४ चारों ओर से उस पर ललकारो, उसने हार मानी; उसके कोट पिराए गए, उसकी शहरपनाह ढाई गई। क्योंकि यहोवा उससे अपना बदला लेने पर है; इसलिए तुम भी उससे अपना-अपना बदला लो, जैसा उसने किया है, वैसा ही तुम भी उससे करो। १५ बाबेल मैं से बोनेवाले और काटनेवाले दोनों को नाश करो, वे दुःखदाई तलवार के डर के मारे अपने-अपने लोगों की ओर फिरें, और अपने-अपने देश को भगा जाएँ। १६ “इसाएल भगाई हुई भेड़ है, सिंहों ने उसको भगा दिया है। पहले तो अश्शू के राजा ने उसको खा डाला, और तब बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने उसकी हड्डियों को तोड़ दिया है। १७ इस कारण इसाएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यह कहता है, देखो, जैसे मैंने अश्शू के राजा को डण्ड दिया था, वैसे ही अब देश समेत बाबेल के राजा को डण्ड दूँगा। १८ मैं इसाएल को उसकी चराई मैं लौटा लाऊँगा, और वह कर्मल और बाशान में फिर चरेगा, और एप्रैल के पहाड़ों पर और गिलाद में फिर भर पेट खाने पाएगा। १९ यहोवा की यह वाणी है, कि उन दिनों में इसाएल का अधर्म ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलेगा, और यहदा के पाप खोजने पर भी नहीं मिलेगो; क्योंकि जिसमें भी बचाऊँ, उनके पाप भी क्षमा कर दूँगा। २० “तू मराम देश और पकोद नगर के निवासियों पर चढ़ाई कर। मनुष्यों को तो मार डाल, और धन का सत्यानाश कर; यहोवा की यह वाणी है, और जो-जो आज्ञा मैं तुझे देता हूँ, उन सभी के अनुसार कर। २१ सुनो, उस देश में यहु और सत्यानाश का सा शब्द हो रहा है। २२ जो हथौडा सारी पृथ्वी के लोगों को चूर-चूर करता था, वह कैसा काट डाला गया है! बाबेल सब जातियों के बीच मैं कैसा उजाड़ हो गया है! २३ हे बाबेल, मैंने तेरे लिये फंदा लगाया, और तू अनजाने उसमें फंस भी गया; तु ढूँढ़कर पकड़ा गया है, क्योंकि तू यहोवा का विरोध करता था। २४ प्रभु, सेनाओं के यहोवा ने अपने शब्दों का घर खोलकर, अपने क्रोध प्रगट करने का सामान निकाला है; क्योंकि सेनाओं के प्रभु यहोवा को कसदियों के देश में एक काम करना है। २५ पृथ्वी की छोर से आओ, और उसकी बखरियों को खोलो; उसको ढेर ही ढेर बना दो; ऐसा सत्यानाश करो कि उसमें कुछ भी न बचा रहें। २६ उसके सब बैलों को नाश करो, वे घात होने के स्थान में उतर जाएँ। उन पर हाया! क्योंकि उनके डण्ड पाने का दिन आ पहुँचा है। २७ “सुनो, बाबेल के देश में से भगनेवालों का सा बोल सुनाई पड़ता है जो सिय्योन में यह समाचार देने को दौड़े आते हैं, कि हमारा परमेश्वर यहोवा अपने मन्दिर का बदला ले रहा है। २८ “सब धनुर्धारियों को बाबेल के विस्तु इकट्ठे करो, उसके चारों ओर छावनी डालो, कोई जन भागकर निकलने न पाए। उसके काम का बदला उसे दो, जैसा उसने किया है, ठीक वैसा ही उसके साथ करो; क्योंकि उसने यहोवा इसाएल के पवित्र के विस्तु अभिमान किया है। २९ इस कारण उसके जवान चौकों में गिराए जाएँगे, और सब योद्धाओं का बोल बन्द हो जाएगा, यहोवा की यही वाणी है। ३० “प्रभु सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, हे अभिमानी, मैं तेरे विस्तु हूँ, तेरे डण्ड पाने का दिन आ गया है। ३१ अभिमानी ठोकर खाकर गिरेगा और कोई उसे फिर न उठाएगा; और मैं उसके नारों में आग लगाऊँगा जिससे उसके चारों ओर सब कुछ भस्म हो जाएगा। ३२ “सेनाओं का यहोवा यह कहता है, इसाएल और यहदा दोनों बाबार पिसे हुए हैं; और जितोंने उनको बँधुआ किया वे उन्हें पकड़े रहते हैं, और जाने नहीं देते। ३३ उनका छुड़नेवाला सामर्थी है; सेनाओं का यहोवा, यही उसका नाम है। वह उनका मुकदमा भली भौंति लडेगा कि पृथ्वी को चैन दे परन्तु बाबेल के निवासियों को व्याकुल करे। ३४ “यहोवा की यह वाणी है,

कसदियों और बाबेल के हाकिम, पंडित आदि सब निवासियों पर तलवार चलेगी! ३६ बड़ा बोल बोलनेवालों पर तलवार चलेगी, और वे मूर्ख बनेंगे! उसके शूर्वीरों पर भी तलवार चलेगी, और वे विस्मित हो जाएँगे! ३७ उसके सवारों और रथियों पर और सब मिले जुले लोगों पर भी तलवार चलेगी, और वे छियाँ बन जाएँगे! उसके भण्डरों पर तलवार चलेगी, और वे लट जाएँगे! ३८ उसके जलाशयों पर सूखा पड़ेगा, और वे सख जाएँगे! क्योंकि वह खुटी हुई मूरतों से भरा हुआ देश है, और वे अपनी भयानक प्रतिमाओं पर बाबले हैं। ३९ “इसलिए निर्जल देश के जन्तु सियरों के संग मिलकर वहाँ बसेंगे, और शुरुमुर्ह उसमें वास करेंगे, और वह पिर सदा तक बसाया न जाएगा, न युग-युग उसमें कोई वास कर सकेगा। ४० यहोवा की यह वाणी है, कि सदोम और गमोरा और उनके आस-पास के नगरों की जैसी दशा उस समय हुई थी जब परमेश्वर ने उनको उलट दिया था, वैसी ही दशा बाबेल की भी होगी, यहाँ तक कि कोई मनुष्य उसमें न रह सकेगा, और न कोई अदीमी उसमें रिकेगा। ४१ “सुनो, उत्तर दिशा से एक देश के लोग आते हैं, और पृथ्वी की छोर से एक बड़ी जाति और बहुत से राजा उठकर चढ़ाई करेंगे। ४२ वे धनुष और बर्छी पकड़े हुए हैं; वे कूर और निर्दीशी हैं; वे सम्भू के समान गरजेंगे; और घोड़ों पर चढ़े हुए तुश बाबेल की बेटी के विस्तु पाँती बैठेंगे हुए युद्ध करनेवालों के समान आएँगे। ४३ उनका समाचार सनते ही बाबेल के राजा के हाथ पाँव ढीले पड़ गए, और उसको जच्चा की सी पीड़ाँग उठी। ४४ “सुनो, वह सिंह के समान आएगा जो यदरन के आस-पास के घेरे जंगल से निकलकर ढूँ भेड़शालाएँ पर चढ़े, परन्तु मैं उनको उसके सामने से झट भग दूँगा; तब जिसको मैं चुन लैँ, उसी को उन पर अधिकारी ठहराऊँगा। देखो, मैं तृन्य कौन है? कौन मुझ पर मुकदमा चलाएगा? वह चरवाहा कहाँ है जो मेरा सामना कर सकेगा?” ४५ इसलिए सुनो कि यहोवा ने बाबेल के विस्तु क्या युक्ति की है और कसदियों के देश के विस्तु कौन सी कल्पना की है: निश्चय वह भेड़-बकरियों के बच्चों को घसीट ले जाएगा, निश्चय वह उनकी चराइयों को भेड़-बकरियों से खाली कर देगा। ४६ बाबेल के लट लिए जाने के शब्द से पृथ्वी काँप उठी है, और उसकी चिल्लाहट जातियों में सुनाई पड़ती है।

५१ यहोवा यह कहता है, मैं बाबेल के और लेबकामै के रहनेवालों के विस्तु
एक नाश करनेवाली वायु चलाऊँगा; १ और मैं बाबेल के पास ऐसे लोगों को भेजूँगा जो उसको फटक-फटककर उड़ा देंगे, और इस रीत से उसके देश को सुरासन करेंगे; और विपति के दिन चारों ओर से उसके विस्तु होंगे। २ धनुर्धरी के विस्तु और जो अपना छिलम पहने हैं धनुर्धरी धनुष चढ़ाए हुए उठे; उसके जवानों से कुछ कोमलता न करना; उसकी सारी सेना को सत्यानाश करो। ३ कसदियों के देश में मेरे हुए और उसकी सड़कों में छिदे हुए लोग गिरेंगे। ४ क्योंकि, यथापि इमाएल और यहदा के देश, इमाएल के पवित्र के विस्तु किए हुए पापों से भरपूर हो गए हैं, तो भी उनके परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा ने उनको त्याग नहीं दिया। ५ “बाबेल मैं से भागो, अपना-अपना प्राण बचाओ! उसके अर्थमें भागी होकर तुम भी न मिट जाओ; क्योंकि यह यहोवा के बदला लेने का समय है, वह उसको बदला देने पर है। ६ बाबेल यहोवा के हाथ में सोने का कटोरा था, जिससे सारी पृथ्वी के लोग मतवाले होते थे; जाति-जाति के लोगों ने उसके दाखमधु में से पिया, इस कारण वे भी बाबले हो गए। ७ बाबेल अचानक ले ली गई और नाश की गई है। उसके लिये हाय-हाय करो! उसके घावों के लिये बलसान औपचित्य लाओ; सम्भव है वह चंगी हो सके। ८ हम बाबेल का इलाज करते तो थे, परन्तु वह चंगी नहीं हुई। इसलिए आओ, हम उसको तजक्कर अपने-अपने देश को चले जाएँ; क्योंकि उस पर किए हुए न्याय का निर्णय आकाश वरन् स्वर्ग तक भी

पहुँच गया है। ९ यहोवा ने हमारे धार्मिकता के काम प्रगट किए हैं; अतः आओ, हम सिद्धांत में अपने परमेश्वर यहोवा के काम का वर्णन करें। १० “तीरों को पैना करो! ढालें थामे रहो! क्योंकि यहोवा ने मादी राजाओं के मन को उभारा है, उसने बाबेल को नाश करने की कल्पना की है, क्योंकि यहोवा अर्थात् उसके मन्दिर का यही बदला है ११ बाबेल की शहरपानाह के विस्तु झण्डा खड़ा करो; बहुत पहसु बैठाओ; घात लगाने वालों को बैठाओ; क्योंकि यहोवा ने बाबेल के रहनेवालों के विस्तु जो कुछ कहा था, वह अब करने पर है वरन् किया भी है। १२ हे बहुत जलाशयों के बीच बसी हुई और बहुत भाड़ा रखनेवाली, तेवा अन्त आ गया, तेरे लोभी की सीमा पहुँच गई है। १३ सेनाओं के यहोवा ने अपनी ही शपथ खाइ है, कि निश्चय मैं तुझको टिड़ियों के समान अनगिनत मनुष्यों से भर दूँगा, और वे तेरे विस्तु ललकरोंगे। १४ “उसी ने पृथ्वी को अपने सामर्थ्य से बनाया, और जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया; और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है। १५ जब वह बोलता है तब आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है, वह पृथ्वी की छोर से कुहरा उठाता है। वह वर्षा के लिये बिजली बनाता, और अपने भण्डर में से पवन निकाल ले आता है। १६ सब मनुष्य पशु सरीखे जानरहित हैं; सब सुनारों को अपनी खोदी हुई मूरतों के कारण लज्जित होना पड़ेगा; क्योंकि उनकी ढाली हुई मूरतों धोखा देनेवाली है, और उनके कुछ भी साँस नहीं चलती। १७ वे तो वर्ष और ठेणी ही के योग्य हैं; जब उनके नाश किए जाने का समय आएगा, तब वे नाश ही होंगी। १८ परन्तु जो याकूब का निज भाग है, वह उनके समान नहीं, वह तो सब का बनानेवाला है, और इमाएल उसका निज भाग है, उसका नाम सेनाओं का यहोवा है। १९ “तू मेरा फरसा और युद्ध के लिये हथियार ठहराया गया है; तेरे द्वारा मैं जाति-जाति को तितर-बितर कस्तूँगा; और तेरे ही द्वारा राज्य-राज्य को नाश कस्तूँगा। २० तेरे ही द्वारा मैं सरवा समेत घोड़ों को टुकड़े-टुकड़े कस्तूँगा; २१ तेरे ही द्वारा रथी समेत रथ को भी टुकड़े-टुकड़े कस्तूँगा; तेरे ही द्वारा मैं बूढ़े और लड़के दोनों को टुकड़े-टुकड़े कस्तूँगा, और जवान पुस्त और जवान छी दोनों को मैं तेरे ही द्वारा टुकड़े-टुकड़े कस्तूँगा; २२ तेरे ही द्वारा मैं भेड़-बकरियों समेत चरवाहे को टुकड़े-टुकड़े कस्तूँगा; तेरे ही द्वारा मैं किसान और उसके जड़े बैतों को भी टुकड़े-टुकड़े कस्तूँगा; अधिपतियों और हाकिमों को भी मैं तेरे ही द्वारा टुकड़े-टुकड़े कस्तूँगा। २३ “मैं बाबेल को और सारे कसदियों को भी उन सब बुराइयों का बदला दूँगा, जो उन्होंने तुम लोगों के सामने सिद्धांत में की है, यहोवा की यही वाणी है। २४ “हे नाश करनेवाले पहाड़ जिसके द्वारा सारी पृथ्वी नाश हुई है, यहोवा की यह वाणी है कि मैं तेरे विस्तु हूँ और हाथ बढ़ाकर तुझे ढाँगों पर से लुढ़का दूँगा और जला हुआ पहाड़ बनाऊँगा। २५ लोग तुझ से न तो घर के कोने के लिये पथर लेंगे, और न नीच के लिये, क्योंकि तू सदा उजाड़ होगा, यहोवा की यही वाणी है। २६ “देश में झण्डा खड़ा करो, जाति-जाति मैं नरसिंगा छूँको; उसके विस्तु जाति-जाति को तैयार करो; अरारात, मिन्नी और अश्कनज नामक राज्यों को उसके विस्तु बुलाओ, उसके विस्तु सेनापति भी ठहराओ; घोड़ों को शिखरवाली टिड़ियों के समान अनगिनत चढ़ा ले आओ। २७ उसके विस्तु जाति-जाति को तैयार करो; मादी राजाओं को उनके अधिपतियों सब हाकिमों सहित और उस राज्य के सारे देश को तैयार करो। २८ यहोवा ने विचारा है कि वह बाबेल के देश को ऐसा उजाड़ करे कि उसमें कोई भी न रहे; इसलिए पृथ्वी काँपती है और दुखित होती है २९ बाबेल के शूर्वीर गढ़ों में रहकर लड़ने से इकार करते हैं, उनकी वीरता जाती रही है; और यह देखकर कि उनके वासस्थानों में आग लग गई वे छी बन गए हैं; उसके फाटकों के बेंडे तोड़े गए हैं। ३० एक हरकारा

दूसरे हरकरे से और एक समाचार देनेवाला दूसरे समाचार देनेवाले से मिलने और बाबेल के राजा को यह समाचार देने के लिये दौड़ागा कि तेरा नगर चारों ओर से ले लिया गया है; ३१ और घाट शत्रुओं के वश में हो गए हैं, ताल भी सुखाए गए, और योद्धा घबरा उठे हैं। ३२ क्योंकि इसाएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यह कहता है: बाबेल की बेटी दाँवते समय के खलिहान के समान है, थोड़े ही दिनों में उसकी कट्टनी का समय आएगा। ३३ “बाबेल के राजा न बकूदनेस्सर ने मुझ को खा लिया, मुझ को पीस डाला; उसने मुझे खाली बर्बन के समान कर दिया, उसने मगामच्छ के समान मुझ को निगल लिया है; और मुझ को स्वादिष्ट भोजन जानकर अपना पेट मुझसे भर लिया है, उसने मुझ को जबरन निकाल दिया है।” ३४ सिय्योन की रहनेवाली कहेगी, “जो उपद्रव मुझ पर और मेरे शरीर पर हुआ है, वह बाबेल पर पलट जाए।” और यस्शलेम कहेगी, “मुझ में की ही हृषि हत्याओं का दोष कसदियों के देश के रहनेवालों पर लगे।” ३५ इसलिए यहोवा कहता है, “मैं तेरा मुकदमा लड़ूँगा और तेरा बदला लूँगा। मैं उसके ताल को और उसके सोतों को सूखा ढूँगा; ३६ और बाबेल खण्डहर, और गीढ़ों का वास्तव्य होगा; और लोग उसे देखकर चकित होंगे और ताली बजाएँगे, और उसमें कोई न रहेगा। ३७ “लोग एक संग ऐसे गरजेंगे और गुराएँगे, जैसे युवा सिंह व सिंह के बच्चे आहेर पर करते हैं। ३८ परन्तु जब जब वे उत्तेजित हों, तब मैं भोज तैयार करके उत्तेज ऐसा मतवाला करूँगा, कि वे हल्मकर सदा की नीद में पड़ेंगे और कभी न जागेंगे, यहोवा की यही वाणी है। ३९ मैं उनको, मेडों के बच्चों, और मेडों और बकरों के समान घात करा ढूँगा। ४० “शेशक, जिसकी प्रशंसा सारे पृथ्वी पर होती थी कैसे ले लिया गया? वह कैसे पकड़ा गया? बाबेल जातियों के बीच कैसे सुनास हो गया है? ४१ बाबेल के ऊपर समुद्र चढ़ आया है, वह उसकी बहुत सी लहरों में ढूँक गया है। ४२ उसके नगर उजड़ गए, उसका देश निर्जन और निर्जल हो गया है, उसमें कोई मनुष्य नहीं रहता, और उससे होकर कोई आदमी नहीं चलता। ४३ मैं बाबेल में बेल को दण्ड ढूँगा, और उसने जो कुछ निगल लिया है, वह उसके मूँह से उत्तरवाँछा। जातियों के लोग फिर उसकी ओर ताँता बौधे हुए न चलेंगे; बाबेल की शहरपनाह गिराई जाएगी। ४४ हे मेरी प्रजा, उसमें से निकल आओ! अपने-अपने प्राण को यहोवा के भड़के हुए कोप से बचाओ! ४५ जब उड़ती हुई बात उस देश में सुनी जाए, तब तुम्हारा मन न घबराए, और जो उड़ती हुई चर्चा पृथ्वी पर सुनी जाएगी तुम उससे न डरना; उसके एक वर्ष बाद एक और बात उड़ती हुई आएगी, और उस देश में उपद्रव होगा, और एक हाकिम दूसरे के विस्तृ होगा। ४६ “इसलिए देख, वे दिन आते हैं जब मैं बाबेल की खुदी हुई मूर्तों पर दण्ड की आज्ञा करूँगा; उस सारे देश के लोगों का मूँह काला हो जाएगा, और उसके सब मारे हुए लोग उसी में पड़े रहेंगे। ४७ तब स्वर्ग और पृथ्वी के सारे निवासी बाबेल पर जयजयकार करेंगे; क्योंकि उत्तर दिशा से नाश करनेवाले उस पर चढ़ाई करेंगे, यहोवा की यही वाणी है। ४८ जैसे बाबेल ने इसाएल के लोगों को मारा, वैसे ही सारे देश के लोग उसी में मार डाले जाएँगे। ४९ “हे तलवार से बचे हुओ, भागो, खड़े मत रहो! यहोवा को दूर से स्मरण करो, और यस्शलेम की भी सुधि लो: ५० ‘हम व्याकुल हैं, क्योंकि हमने अपनी नामधारी नहीं हैं, यहोवा के पवित्र भवन में विधर्मी घुस आए हैं, इस कारण हम लज्जित हैं।’ ५१ “इसलिए देखो, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आनेवाले हैं कि मैं उसकी खुदी हुई मूर्तों पर दण्ड भेजूँगा, और उसके सारे देश में लोग घायल होकर कराहते रहेंगे। ५२ चाहे बाबेल ऐसा ऊँचा बन जाए कि आकाश से बातें करे और उसके ऊँचे गढ़ और भी दृढ़ किए जाएँ, तो भी मैं उसे नाश करने के लिये, लोगों को भेजूँगा, यहोवा की यह वाणी है।

५४ “बाबेल से चिल्लाहट का शब्द सुनाई पड़ता है! कसदियों के देश से सत्यनाश का बड़ा कोलाहल सुनाई देता है। ५५ क्योंकि यहोवा बाबेल को नाश कर रहा है और उसके बड़े कोलाहल को बन्द कर रहा है। इससे उनका कोलाहल महासागर का सा सुनाई देता है। ५६ बाबेल पर भी नाश करनेवाले चढ़ आए हैं, और उसके शर्वीर पकड़े गए हैं और उनके धनुष तोड़ डाले गए; क्योंकि यहोवा बदला देनेवाला परमेश्वर है, वह अवश्य ही बदला लेगा। ५७ मैं उसके हाकिमों, पंडितों, अधिपतियों, रईसों, और शर्वीरों को ऐसा मतवाला करूँगा कि वे सदा की नीद में पड़ेंगे और फिर न जागेंगे, सेनाओं के यहोवा, जिसका नाम राजाधिराज है, उसकी यही वाणी है। ५८ “सेनाओं का यहोवा यह भी कहता है, बाबेल की चौड़ी शहरपनाह नीच से ढाई जाएगी, और उसके ऊँचे फाटक आग लगाकर जलाए जाएँगे। और उसमें राज्य-राज्य के लोगों का परिश्रम व्यर्थ ठहरेगा, और जातियों का परिश्रम आग का कौर हो जाएगा और वे थक जाएँगे।” ५९ यहदा के राजा सिदकियाह के राज्य के चौथे वर्ष में जब उसके साथ सरायाह भी बाबेल को गया था, जो नेरियाह का पुत्र और महसेयाह का पोता और राजभवन का अधिकारी भी था, ६० तब यर्मियाह भविष्यद्वृत्ता ने उसको ये बातें बताई अर्थात् वे सब बातें जो बाबेल पर पड़ेनेवाली विपत्ति के विषय लिखी हुई हैं, उन्हें यर्मियाह ने पुस्तक में लिख दिया। ६१ यर्मियाह ने सरायाह से कहा, “जब तु बाबेल में पहुँचे, तब अवश्य ही ये सब बचन पढ़ा, ६२ और यह कहना, ‘हे यहोवा तूने तो इस स्थान के विषय में यह कहा है कि मैं इसे ऐसा मिटा ढूँगा कि इसमें क्या मनुष्य, क्या पशु, कोई भी न रहेगा, वरन् यह सदा उजाड़ पड़ा रहेगा।’ ६३ और जब तू इस पुस्तक को पढ़ चुके, तब इसे एक पत्थर के संग बाँधकर फरात महानद के बीच में फेंक देना, ६४ और यह कहना, ‘इस प्रकार बाबेल ढूँब जाएगा और मैं उस पर ऐसी विपत्ति डालूँगा कि वह फिर कभी न उठेगा और वे थके रहेंगे।’” यहाँ तक यर्मियाह के वचन हैं।

५२ जब सिदकियाह राज्य करने लगा, तब वह इक्कीस वर्ष का था; और यस्शलेम में यारह वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम हमूलत था जो लिब्नावासी यर्मियाह की बेटी थी। १ उसने यहोवाकीम के सब कार्मों के असुरावं बही किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। २ मिश्वय यहोवा के कोप के कारण यस्शलेम और यहदा की ऐसी दशा हुई कि अन्त में उसने उनको अपने सामने से दूर कर दिया। और सिदकियाह ने बाबेल के राजा से बलवा किया। ३ और उसके राज्य के नैवें वर्ष के दसवें महीने के दसवें दिन को बाबेल के राजा न बकूदनेस्सर ने अपनी सारी सेना लेकर यस्शलेम पर चढ़ाई की, और उसने उसके पास छावनी करके उसके चारों ओर किला बनाया। ४ अतः नगर धेरा गया, और सिदकियाह राजा के यारहवें वर्ष तक दिशा रहा। ५ चौथे महीने के नैवें दिन से नगर में अकाल यहाँ तक बढ़ गई, कि लोगों के लिये कुछ रोटी न रही। ६ तब नगर की शहरपनाह में दरार की गई, और दोनों दीवारों के बीच जो फाटक राजा की बारी के निकट था, उसमें सब योद्धा भागकर रात ही रात नगर से निकल गए, और अराबा का मार्ग लिया। (उस समय कसदी लोग नगर को घैरे हुए थे)। ७ परन्तु उनकी सेना ने राजा का पीछा किया, और उसको यरीहो के पास के अराबा में जा पकड़ा; तब उसकी सारी सेना उपरे पास से तिरत-बितरत हो गई। ८ तब वे राजा को पकड़कर हमात देश के रिबला में बाबेल के राजा के पास ले गए। ९ वह वहाँ उसने उसके दण्ड की आज्ञा दी। १० बाबेल के राजा ने सिदकियाह के पुत्रों को उपरे के सामने घाट किया, और यहदा के सारे हाकिमों को भी रिबला में घाट किया। ११ फिर बाबेल के राजा ने सिदकियाह की आँखों को फुँड़वा

डाला, और उसको बेड़ियों से जकड़कर बाबेल तक ले गया, और उसको बन्दीगृह में डाल दिया। वह मृत्यु के दिन तक वही रहा। १३ फिर उसी वर्ष अर्थात् बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के राज्य के उन्नीसवें वर्ष के पाँचवें महीने के दसवें दिन को अंगरक्षकों का प्रधान नबूजरदान जो बाबेल के राजा के सम्मुख खड़ा रहता था यस्शलेम में आया। १४ उसने यहोवा के भवन और राजभवन और यस्शलेम के सब बड़े-बड़े घरों को आग लगाकर फुकवा दिया। १५ और कसदियों की सारी सेना ने जो अंगरक्षकों के प्रधान के संग थी, यस्शलेम के चारों ओर की सब शहरपाह को ढा दिया। १६ अंगरक्षकों का प्रधान नबूजरदान कंगाल लोगों में से कितनों को, और जो लोग नगर में रह गए थे, और जो लोग बाबेल के राजा के पास भाग गए थे, और जो कारीगर रह गए थे, उन सब को बन्दी बनाकर ले गया। १७ परन्तु, दिहात के कंगाल लोगों में से कितनों को अंगरक्षकों के प्रधान नबूजरदान ने दाख की बारियों की सेवा और किसानी करने को छोड़ दिया। १८ यहोवा के भवन में जो पीतल के खम्भे थे, और कुर्सियों और पीतल के हौज जो यहोवा के भवन में थे, उन सभी को कसदी लोग तोड़कर उनका पीतल बाबेल को ले गए। १९ और हाँड़ियों, फावड़ियों, कैचियों, कटोरों, धूपदानों, और पीतल के और सब पत्रों को, जिनसे लोग सेवा टहल करते थे, वे ले गए। २० और तसल्लों, करछों, कटोरियों, हाँड़ियों, दीवटों, धूपदानों, और कटोरों में से जो कुछ सोने का था, उके सोने को, और जो कुछ चाँदी का था उनकी चाँदी को भी अंगरक्षकों का प्रधान ले गया। २१ दोनों खम्भे, एक हौज और पीतल के बारहों बैल जो पायों के नीचे थे, इन सब को तो सुलैमान राजा ने यहोवा के भवन के लिये बनवाया था, और इन सब का पीतल तौल से बाहर था। २२ जो खम्भे थे, उनमें से एक-एक की ऊँचाई अठारह हाथ, और धेरा बारह हाथ, और मोटाई चार अंगुल की थी, और वे खोखले थे। २३ एक-एक की कँगनी पीतल की थी, और एक-एक कँगनी की ऊँचाई पाँच हाथ की थी; और उस पर चारों ओर जो जाली और अनार बने थे वे सब पीतल के थे। २४ कँगनियों के चारों ओर छियानवे अनार बने थे, और जाली के ऊपर चारों ओर एक सौ अनार थे। २५ अंगरक्षकों के प्रधान ने सरायाह महायाजक और उसके नीचे के सपन्याह याजक, और तीनों डेवढ़ीदारों को पकड़ लिया; २६ और नगर में से उसने एक खोजा पकड़ लिया, जो योद्धाओं के ऊपर ठहरा था; और जो पुस्त राजा के सम्मुख रहा करते थे, उनमें से सात जन जो नगर में मिले, और सेनापति का मुंशी जो साधारण लोगों को सेना में भरती करता था; और साधारण लोगों में से साठ पुस्त जो नगर में मिले, २७ इन सब को अंगरक्षकों का प्रधान नबूजरदान रिबला में बाबेल के राजा के पास ले गया। २८ तब बाबेल के राजा ने उन्हें हमात देश के रिबला में ऐसा मारा कि वे मर गए। इस प्रकार यहदी अपने देश से बैंधुए होकर चले गए। २९ जिन लोगों को नबूकदनेस्सर बैंधुआ करके ले गया, वे ये हैं, अर्थात् उसके राज्य के सातवें वर्ष में तीन हजार तेईस यहदी; ३० फिर अपने राज्य के अठारहवें वर्ष में नबूकदनेस्सर यस्शलेम से आठ सौ बत्तीस प्राणियों को बैंधुआ करके ले गया; ३१ फिर नबूकदनेस्सर के राज्य के तेईसवें वर्ष में अंगरक्षकों का प्रधान नबूजरदान सात सौ पैतालीस यहदी जनों को बैंधुए करके ले गया; सब प्राणी मिलकर चार हजार छः सौ हुए। ३२ फिर यहदा के राजा यहोयाकीन की बैंधुआई के सैतीसवें वर्ष में अर्थात् जिस वर्ष बाबेल का राजा एवील्मरोटक राजगढ़ी पर विराजमान हआ, उसी के बारहवें महीने के पच्चीसवें दिन को उसने यहदा के राजा यहोयाकीन को बन्दीगृह से निकालकर बड़ा पद दिया; ३३ और उससे मध्य-मध्य वचन कहकर, जो राजा उसके साथ बाबेल में बैंधुए थे, उनके सिंहासनों से उसके सिंहासन को अधिक ऊँचा किया। ३४ उसके बन्दीगृह के बख्त बदल दिए; और

वह जीवन भर नित्य राजा के सम्मुख भोजन करता रहा; ३५ और प्रतिदिन के खर्च के लिये बाबेल के राजा के यहाँ से उसको नित्य कुछ मिलने का प्रबन्ध हुआ। यह प्रबन्ध उसकी मृत्यु के दिन तक उसके जीवन भर लगातार बना रहा।

विलापगीत

१ जो नगरी लोगों से भरपूर थी वह अब कैसी अकेली बैठी हुई है! वह क्यों

एक विधवा के समान बन गई? वह जो जातियों की दृष्टि में महान और प्रान्तों में रानी थी, अब क्यों कर देनेवाली हो गई है। २ रात को वह फूट फूटकर रोती है, उसके आँखें गालों पर ढलकते हैं; उसके सब यारों में से अब कोई उसे शान्ति नहीं देता; उसके सब मित्रों ने उससे विश्वासघात किया, और उसके शत्रु बन गए हैं। ३ यहदा दुःख और कठिन दासत्व के कारण परदेश चली गई; परन्तु अन्यजातियों में रही हुई वह चैन नहीं पाती; उसके सब खदेड़नेवालों ने उसकी सेकेती में उसे पकड़ लिया है। ४ सिय्योन के मार्ग विलाप कर रहे हैं, क्योंकि नियत पर्वत में कोई नहीं आता है; उसके सब फाटक सुमासन पड़े हैं, उसके याजक कराहते हैं; उसकी कुमारियाँ शोकित हैं, और वह आप कठिन दुःख भोग रही है। ५ उसके द्वारी प्रधान हो गए, उसके शत्रु उन्नति कर रहे हैं, क्योंकि यहोवा ने उसके बहत से अपराधों के कारण उसे दुःख दिया है; उसके बाल-बच्चों को शत्रु हॉक-हॉकरक बँधुआई में ले गए। ६ सिय्योन की पुरी का सारा प्रताप जाता रहा है। उसके हाकिम ऐसे हिरनों के समान हो गए हैं जिन्हें कोई चरागाह नहीं मिलती, वे खेडेभेवालों के सामने से बलहीन होकर भागते हैं। ७ यस्सलेम ने, इन दुःख भेरे और संकट के दिनों में, जब उसके लोग दोहियों के हाथ में पड़े और उसका कोई सहायक न रहा, अपनी सब मनभावनी वस्तुओं को जो प्राचीनकाल से उसकी थी, स्मरण किया है। उसके दोहियों ने उसको उजड़ा देखकर उपहास में उड़ाया है। ८ यस्सलेम ने बड़ा पाप किया, इसलिए वह अशद्गु छी सी हो गई है; जितने उसका आदर करते थे वे उसका निरादर करते हैं, क्योंकि उन्होंने उसकी नंगा-देखी है; हाँ, वह कराहती हुई मँझे फेर लेती है। ९ उसकी अशद्गुता उसके बब्ल पर है; उसने अपने अन्त का स्मरण न रखा; इसलिए वह भयकर रीति से गिराई गई, और कोई उसे शान्ति नहीं देता है। हे यहोवा, मेरे दुःख पर दृष्टि कर, क्योंकि शत्रु मेरे विस्तु सफल हुआ है। १० दोहियों ने उसकी सब मनभावनी वस्तुओं पर हाथ बढ़ाया है; हाँ, अन्यजातियों को, जिनके विषय में तो आज्ञा दी थी कि वे तेरी सभा में भागी न होने पाएँगी, उनको उपने तेरे पवित्रस्थान में घुसा हुआ देखा है। ११ उसके सब निवासी कराहते हुए भोजनवस्तु ढूँढ़ रहे हैं; उन्होंने अपना प्राण बचाने के लिये अपनी मनभावनी वस्तुएँ बेकर भोजन मोल लिया है। हे यहोवा, दृष्टि कर, और ध्यान से देख, क्योंकि मैं तुच्छ हो गई हूँ। १२ हे सब बटोहियों, क्या तुम्हें इस बात की कुछ भी चिन्ता नहीं? दृष्टि करके देखो, क्या मेरे दुःख से बढ़कर कोई और पीड़ा है जो यहोवा ने अपने क्रोध के दिन मुझ पर डाल दी है? १३ उसने ऊपर से मेरी हड्डियों में आग लगाई है, और वे उससे भस्म हो गईं; उसने मेरे पैरों के लिये जाल लगाया, और मुझ को उलटा फेर दिया है; उसने ऐसा किया कि मैं तारी हुई सी और रोग से लगातार निर्बल रहती हूँ। १४ उसने जौ की रसियों की सामान मेरे अपराधों को अपने हाथ से कसा है, उसने उन्हें बटकर मेरी गर्दन पर चढ़ाया, और मेरा बल घटा दिया है; जिनका मैं सामान भी नहीं कर सकती, उन्हीं के वश में यहोवा ने मुझे कर दिया है। १५ यहोवा ने मेरे सब पराक्रमी पुरुषों को तुच्छ जाना; उसने नियत पर्व का प्रचार करके लोगों को मेरे विस्तु बुलाया कि मेरे जवानों को पीस डाले; यहदा की कुमारी कन्या को यहोवा ने मानो कुण्ड में पेरा है। १६ इन बातों के कारण मैं रोती हूँ; मेरी आँखों से आँसू की धारा बहती रहती है; क्योंकि जिस शान्तिदाता के कारण मेरा जी हरा भरा हो जाता था, वह मुझसे दूर हो गया; मेरे बच्चे अकेले हो गए, क्योंकि शत्रु प्रबल हुआ है। १७ सिय्योन हाथ फैलाए हुए है, उसे कोई शान्ति

नहीं देता; यहोवा ने याकूब के विषय में यह आज्ञा दी है कि उसके चारों ओर के निवासी उसके द्वारी हो जाएँ; यस्सलेम उनके बीच अशद्गु छी के समान हो गई है। १८ यहोवा सच्चाई पर है, क्योंकि मैंने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया है; हे सब लोगों, सुनो, और मेरी पीड़ा को देखो! मेरे कुमार और कुमारियाँ बँधुआई में चर्ची गई हैं। १९ मैंने अपने मित्रों को पुकारा परन्तु उन्होंने भी मुझे धोखा दिया, जब मेरे याजक और पुनिये इसलिए भोजनवस्तु ढूँढ़ रहे थे कि खाने से उनका जी हरा हो जाए, तब नगर ही में उनके प्राण ढूँट गए। २० हे यहोवा, दृष्टि कर, क्योंकि मैं संकट में हूँ, मेरी अंतड़ियाँ ऐती जाती हैं, मेरा हृदय उत्तर गया है, क्योंकि मैंने बहुत बलवा किया है। बाहर तो मैं तलवार से निर्वश होती हूँ, और घर में मृत्यु विराज रही है। २१ उन्होंने सुना है कि मैं कराहती हूँ, परन्तु कोई मुझे शान्ति नहीं देता। मेरे सब शत्रुओं ने मेरी विपत्ति का समाचार सुना है; वे इससे हर्षित हो गए कि तू ही ने यह किया है। परन्तु जिस दिन की चर्चा तूने प्रचार करके सुनाई है उसको तू दिखा, तब वे भी मेरे समान हो जाएँगे। २२ उनकी सारी दुश्टी की ओर दृष्टि कर; और जैसा मेरे सारे अपराधों के कारण तूने मुझे दण्ड दिया, जैसा ही उनको भी दण्ड दे; क्योंकि मैं बहुत ही कराहती हूँ, और मेरा हृदय रोग से निर्बल हो गया है।

२ यहोवा ने सिय्योन की पुरी को किस प्रकार अपने कोप के बादलों से ढाँप दिया है! उसने इस्साएल की शोभा को आकाश से धर्ती पर पटक दिया; और कोप के दिन अपने पाँवों की चौकी को स्मरण नहीं किया। ३ यहोवा ने याकूब की सब बस्तियों को निष्फुरता से नष्ट किया है; उसने रोष में आकर यहदा की पुरी के दृढ़ गढ़ों को ढाकर मिट्ठी में मिला दिया है, उसने हाकिमों समेत राज्य को अपवित्र ठहराया है। ४ उसने क्रोध में आकर इस्साएल के सींग को जड़ से काट डाला है; उसने शत्रु के सामने उनकी साहायता करने से अपना दाहिना हाथ खींच लिया है; उसने चारों ओर भस्म करती हुई लौ के समान याकूब को जला दिया है। ५ उसने शत्रु बनकर धनुष चढ़ाया, और बैरी बनकर दाहिना हाथ बढ़ाए हुए खड़ा है; और यहोवा की पुरी को रोना-पीटना बहुत बढ़ाया है। ६ उसने अपना मण्डप बारी के मचान के समान अचानक पिरा दिया, अपने मिलाप-स्थान को उपने नाश किया है; यहोवा ने सिय्योन में नियत पर्व और विश्वामित्र दोनों को भुला दिया है, और अपने भड़के हुए कोप से राजा और याजक दोनों का तिरस्कार किया है। ७ यहोवा ने अपनी वेदी मन से उतार दी, और अपना पवित्रस्थान अपमान के साथ तज दिया है; उसके भवनों की दीवारों को उसने शत्रुओं के वश में कर दिया; यहोवा के भवन में उन्होंने ऐसा कोलाहल मनाया कि मानो नियत पर्व का दिन हो। ८ यहोवा ने सिय्योन की कुमारी की शहरपनाह तोड़ डालने की ठानी थी: उसने डोरी डाली और अपना हाथ उसे नाश करने से नहीं खींचा; उसने किले और शहरपनाह दोनों से विलाप करवाया, वे दोनों एक साथ गिराए गए हैं। ९ उसके फाटक भूमि में धस गए हैं, उनके बेंडों को उसने तोड़कर नाश किया। उसके राजा और हाकिम अन्यजातियों में रहने के कारण व्यवस्थारहित हो गए हैं, और उसके भविष्यद्वत्ता यहोवा से दर्शन नहीं पाते हैं। १० सिय्योन की पुरी के पुरनिये भूमि पर चुपचाप बैठे हैं, उन्होंने अपने सिर पर धूल उड़ाई और टाट का फैटा बांधा है, यस्सलेम की कुमारियों ने अपना-अपना सिर भूमि तक झुकाया है। ११ मेरी आँखें आँसू बहाते-बहाते धूँधली पड़ गई हैं; मेरी अंतड़ियाँ ऐती जाती हैं;

मेरे लोगों की पुत्री के विनाश के कारण मेरा कलेजा फट गया है, क्योंकि बच्चे बरन-दूध-पीते बच्चे भी नार के चौकों में मृष्ठित होते हैं। १६ वे अपनी-अपनी माता से रोकर कहते हैं, अन्न और दाखमधु कहाँ हैं? वे नार के चौकों में घायल किए हुए मनुष्य के समान मृष्ठित होकर अपने प्राण अपनी-अपनी माता की गोद में छोड़ते हैं। १७ हे यस्सलेम की पुत्री, मैं तुझ से क्या कहूँ? मैं तेरी उपमा किस से ढूँ? हे सियोन की कुमारी कन्या, मैं कौन सी वस्तु तेरे समान ठराकर तुझे शानि ढूँ? क्योंकि तेरा दुख समृद्ध सा अपार है; तुझे कौन चंगा कर सकता है? १८ तेरे भविष्यद्वक्ताओं ने दर्शन का दावा करके तुझ से व्यर्थ और मूर्खता की बातें कहीं हैं; उन्होंने तेरा अर्धम प्रगत नहीं किया, नहीं तो तेरी बैंधुआई न होने पाती; परन्तु उन्होंने तुझे व्यर्थ के और झाँठे बचन बताए। जो तेरे लिये देश से निकाल दिए जाने का कारण हुए। १९ सब बटोही तुझ पर ताली बजाते हैं, वे यस्सलेम की पुत्री पर यह कहकर ताली बजाते और सिर हिलाते हैं, क्या यह वही नारी है जिसे परम सुन्दरी और सारी पूर्वी के हर्ष का कारण कहते थे? २० तेरे सब शत्रुओं ने तुझ पर मुँह पसारा है, वे ताली बजाते और दाँत पीसते हैं, वे कहते हैं, हम उसे निगल गए हैं। जिस दिन की बाट हम जोहते थे, वह यही है, वह हमको मिल गया, हम उसको देख चुके हैं! २१ यहोवा ने जो कुछ ठाना था वही किया भी है, जो बचन वह प्राचीनकाल से कहता आया है वही उसने पूरा भी किया है; उसने निष्ठुरा से तुझे ढा दिया है, उसने शत्रुओं को तुझ पर आनन्दित किया, और तेरे द्वाहियों के सींग को ऊँचा किया है। २२ वे प्रभु की ओर तन मन से पुकारते हैं! हे सियोन की कुमारी की शहरपनाह, अपने अँसू रात दिन नदी के समान बहाती रह! तनिक भी विश्वाम न ले, न तेरी आँख की पुतली चैन ले! २३ रात के हर पहर के आरम्भ में उठकर चिल्लाया कर! प्रभु के सम्पूर्ख अपने मन की बातों को धारा के समान उण्डेला! तेरे बाल-बच्चे जो हर एक सड़क के सिरे पर भूख के कारण मृष्ठित हो रहे हैं, उनके प्राण के निमित अपने हाथ उसकी ओर फैला। २४ हे यहोवा दृष्टि कर, और ध्यान से देख कि तू यह सब दुःख किसको दिया है? क्या बिहाँ अपना फल अर्थात् अपनी गोद के बच्चों को खा डालें? हे प्रभु, क्या याजक और भविष्यद्वक्ता तेरे पवित्रस्थान में घात किए जाएँ? २५ सड़कों में लड़के और बढ़े दोनों भूमि पर पड़े हैं; मेरी कुमारियाँ और जवान लोग तलवार से गिर गए हैं; तने कोप करने के दिन उन्हें घात किया, तू ने निष्ठुरा के साथ उनका वध किया है। २६ तू मेरे भय के कारणों को नियत पर्व की भीड़ के समान चारों ओर से बुलाया है; और यहोवा के कोप के दिन न तो कोई भाग निकला और न कोई बच रहा है; जिनको मैंने गोद में लिया और पाल-पोसकर बढ़ाया था, मेरे शत्रु ने उनका अन्त कर डाला है।

३ उसके रोप की छड़ी से दुःख भोगनेवाला पुष्प मैं ही हूँ; ३ वह मुझे ले जाकर उजियाले में नहीं, अधियारे ही मैं चलाता है; ४ उसका हाथ दिन भर मेरी ही विद्यु उठता रहता है। ५ उसने मेरा मौसू और चमड़ा गला दिया है, और मेरी हड्डियों को तोड़ दिया है; ६ उसने मुझे रोकने के लिये किला बनाया, और मुझ को कठिन दुःख और श्वर से धेरा है; ७ उसने मुझे बहुत दिन के मेरे हुए लोगों के समान अंरै स्थानों में बसा दिया है। ८ मेरे चारों ओर उसने बाढ़ा बाँधा है कि मैं निकल नहीं सकता; उसने मुझे भारी सॉकल से जकड़ा है; ९ मैं चिल्ला-चिल्ला के दुहाई देता हूँ, तो भी वह मेरी प्रार्थना नहीं सुनता, १० मेरे मार्गों को उसने गढ़े हुए पथरों से रोक रखा है, मेरी डगरों को उसने टेढ़ी कर दिया है। ११ वह मेरे लिये घात में बैठे हुए रीछ और घात लगाए हुए सिंह के समान हैं; १२ उसने मुझे मेरे मार्गों से भूला दिया, और मुझे फड़ डाला; उसने मुझ को उजाड़ दिया है। १३ उसने धनुष चढ़ाकर मुझे अपने तीर का निशाना

बनाया है। १४ उसने अपनी तीरों से मेरे हृदय को बेध दिया है; १५ सब लोग मुझ पर हँसते हैं और दिन भर मुझ पर ढालकर गीत गाते हैं, १६ उसने मुझे कठिन दुःख से भर दिया, और नागदैना पिलाकर तृप किया है। १७ उसने मेरे दाँतों को ककड़ से तोड़ डाला, और मुझे राख से ढाँप दिया है; १८ और मुझ को मन से उतारकर कुशल से रहित किया है, मैं कल्याण भूल गया हूँ; १९ इसलिए मैंने कहा, “मेरा बल नह छुआ, और मेरी आशा जो यहोवा पर थी, वह टूट गई है।” २० मेरा दुःख और मारा-मारा फिरना, मेरा नागदैना और विष का पीना स्मरण कर! २१ मैं उन्हीं पर सोचता रहता हूँ, इससे मेरा प्राण ढला जाता है। २२ परन्तु मैं यह स्मरण करता हूँ, इसलिए मुझे आशा है: २३ हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकल्पना का फल है, क्योंकि उसकी दिया अमर है। २४ प्रति भेर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान है। २५ मेरे मन ने कहा, “यहोवा मेरा भाग है, इस कारण मैं उसमें आशा रखूँगा।” २६ जो यहोवा की बाट जोहते और उसके पास जाते हैं, उनके लिये यहोवा भला है। २७ यहोवा से उड़ार पाने की आशा रखकर चुपचाप रहना भला है। २८ पुष्प के लिये जवानी में ज्ञाना उठाना भला है। २९ वह यह जानकर अकेला चुपचाप रहे, कि परमेश्वर ही ने उस पर यह बोझ डाला है, ३० वह अपना मुँह धूल में रखे, क्या जाने इसमें कुछ आशा हो; ३१ वह अपना गाल अपने मारनेवाले की ओर फेरे, और नामधारी सहता रहे। ३२ क्योंकि प्रभु मन से सर्वदा उतरे नहीं रहता, ३३ चाहे वह दुःख भी दे, तो भी अपनी कल्पना की बहुतायत के कारण वह दिया भी करता है, ३४ क्योंकि वह मनुष्यों को अपने मन से न तो दबाता है और न दुःख देता है। ३५ पूर्वी भर के बन्दियों को पॉव के तले दलित करना, ३६ किसी पुष्प का हक्क परमप्रधान के समाने मारना, ३७ और किसी मनुष्य का मुकदमा बिगाड़ना, इन तीन कामों को यहोवा देख नहीं सकता। ३८ यदि यहोवा ने आज्ञा न दी हो, तब कौन है कि बचन कहे और वह पूरा हो जाए? ३९ विपत्ति और कल्याण, क्या दोनों परमप्रधान की आज्ञा से नहीं होते? ४० इसलिए जीवित मनुष्य की कुड़कुड़ाई और पुष्प अपने पाप के दण्ड को क्यों बुरा माने? ४१ हम अपने चाल चलन को ध्यान से परखें, और यहोवा की ओर फिरें। ४२ हम स्वर्ग में वास करनेवाले परमेश्वर की ओर मन लगाएँ और हाथ फैलाएँ और कहें: ४३ “हमने तो अपराध और बलवा किया है, और तू ने क्षमा नहीं किया। ४४ तेरा कोप हम पर है, तू हमारे पीछे पड़ा है, तूने बिना तरस खाए घात किया है। ४५ तूने अपने को मेघ से घेर लिया है कि तुझ तक प्रार्थना न पहुँच सके। ४६ तूने हमको जाति-जाति के लोगों के बीच में कूड़ा-करकट सा ठहराया है। ४७ हमारे सब शत्रुओं ने हम पर अपना-अपना मुँह फैलाया है, ४८ भय और गङ्गा, उजाड़ और विनाश, हम पर आ पड़े हैं; ४९ मेरी आँखों से मेरी प्रजा की पुत्री के विनाश के कारण जल की धाराएँ बह रही हैं। ५० मेरी आँख से लगातार अँसू बहते रहेंगे, ५१ जब तक यहोवा स्वर्ग से मेरी ओर न देखे; ५२ अपनी नारी की सब छियों का हाल देखने पर मेरा दुःख बढ़ता है। ५३ जो व्यर्थ मेरे शत्रु बने हैं, उन्होंने निरदयता से चिड़िया के समान मेरा आहर किया है; ५४ उन्होंने मुझे गँड़े में डालकर मेरे जीवन का अन्त करने के लिये मेरे ऊपर पत्थर लुढ़काएँ, ५५ मेरे सिर पर से जल बह गया, मैंने कहा, ‘‘मैं अब नाश हो गया।’’ ५६ हे यहोवा, गहरे गँड़े में से मैंने तुझ से प्रार्थना की; ५७ तूने मेरी सुनी कि जो दुहाई देकर मैं चिल्लाता हूँ उससे कान न फेर ले! ५८ जब मैंने तुझे उपकार, तब तूने मुझसे कहा, ‘‘मत डरा!’’ ५९ हे यहोवा, तूने मुकदमा लड़कर मेरा प्राण बचा लिया है। ६० हे यहोवा, जो अन्याय मुझ पर हुआ है उसे तूने देखा है, तू मेरा न्याय चुका। ६१ जो बदला उन्होंने मुझसे लिया, और जो कल्पनाएँ मेरे विस्तृ की, उन्हें भी तूने देखा है। ६२ हे यहोवा, जो कल्पनाएँ और निन्दा वे मेरे विस्तृ करते हैं, वे भी तूने सुनी हैं। ६३ मेरे

विरोधियों के वचन, और जो कुछ भी वे मैंसे विस्फुलगातार सोचते हैं, उन्हें त् जानता है। ६४ उनका उठाना-बैठना ध्यान से देख; वे मुझ पर लगते हुए गीत गाते हैं। ६५ हे यहोवा, तू उनके कामों के अनुसार उनको बदला देगा। ६६ त् उनका मन सुन कर देगा; तेरा श्वाप उन पर होगा। ६७ हे यहोवा, तू अपने कोप से उनको खदेड़-खदेड़कर धर्ती पर से नाश कर देगा।"

४ सोना कैसे खोटा हो गया, अत्यन्त खरा सोना कैसे बदल गया है?

पवित्रस्थान के पत्थर तो हर एक सड़क के सिरे पर फेंक दिए गए हैं। ५ सियोन के उत्तम पुत्र जो कुन्दन के तुल्य थे, वे कुम्हार के बनाए हुए मिट्टी के घरों के समान कैसे तुच्छ पिने गए हैं! ६ गीढ़िडिन भी अपने बच्चों को थन से लगाकर पिलाती है, परन्तु मेरे लोगों की बेटी बन के शुभर्मुखों के तुल्य निर्दीश हो गई है। ७ दूध-पीती बच्चों की जीभ प्यास के मारे तालू में चिपत गई है; बाल-बच्चे रोटी माँगते हैं, परन्तु कोई उनको नहीं देता। ८ जो स्वादिष्ट भोजन खाते थे, वे अब सड़कों में व्याकुल फिरते हैं; जो मखमल के बब्बों में पले थे अब घूरों पर लेटते हैं। ९ मेरे लोगों की बेटी का अधर्म सदोम के पाप से भी अधिक हो गया जो किसी के हाथ डाले बिना भी क्षण भर में उलट गया था। १० उसके कुलीन हिम से निर्मल और दूध से भी अधिक उज्जवल थे; उनकी देह मूँगों से अधिक लाल, और उनकी सुन्दरता नीलमणि की सी थी। ११ परन्तु अब उनका स्पष्ट अंधकार से भी अधिक काला है, वे सड़कों में पहचाने नहीं जाते; उनका चमड़ा हाइड्रों में सट गया, और लकड़ी के समान सूख गया है। १२ तलवार के मारे हुए भूख के मारे हुओं से अधिक अच्छे थे जिनका प्राण खेत की उपज बिना भूख के मारे सूखता जाता है। १३ दयालु छियों ने अपने ही हाथों से अपने बच्चों को पकाया है; मेरे लोगों के विनाश के समय वे ही उनका आहार बन गए। १४ यहोवा ने अपनी पूरी जलजलाहट प्रगट की, उसने अपना कोप बहुत ही भड़काया; और सियोन में ऐसी आग लगाई जिससे उसकी नीव तक भस्म हो गई है। १५ पृथ्वी का कोई राजा या जगत का कोई निवारी इसका कभी विश्वास न कर सकता था, कि द्वीपी और शत्रु यस्तलेम के फाटकों के भीतर घुसने पाएँगे। १६ यह उसके भविष्यद्वक्ताओं के पापों और उसके याजकों के अधर्म के कामों के कारण हुआ है; क्योंकि वे उसके बीच धर्मियों की हत्या करते आए हैं। १७ वे अब सड़कों में अधे सरीखे मारे-मारे फिरते हैं, और मानो लह की छीटों से यहाँ तक अशुद्ध हैं कि कोई उनके बब्ब नहीं छू सकता। १८ लोग उनको पुकारकर कहते हैं, "अरे अशुद्ध लोगों, हट जाओ! हट जाओ! हमको मत छोओ!" जब वे भागकर मारे-मारे फिरने लगे, तब अन्यजाति लोगों ने कहा, "भविष्य में वे यहाँ टिकने नहीं पाएँगे।" १९ यहोवा ने अपने कोप से उन्हें तिरत-बितर किया, वह फिर उन पर दयादृष्टि न करेगा; न तो याजकों का समान हआ, और न पुरनियों पर कुछ अनुग्रह किया गया। २० हमारी आँखें व्यर्थ ही सहायता की बाट जोते-जोहते धूँधली पड़ गई हैं, हम लगातार एक ऐसी जाति की ओर ताकते रहे जो बचा नहीं सकी। २१ लोग हमारे पीछे ऐसे पड़े कि हम अपने नगर के चौकों में भी नहीं चल सके; हमारा अन्त निकट आया; हमारी आयु पूरी हुई; क्योंकि हमारा अन्त आ गया था। २२ हमारे खदेड़नेवाले आकाश के उकालों से भी अधिक वेग से चलते थे; वे पहाड़ों पर हमारे पीछे पड़ गए और जंगल में हमारे लिये घात लगाकर बैठ गए। २३ यहोवा का अभिषिक्त जो हमारा प्राण था, और जिसके विषय हमने सोचा था कि अन्यजातियों के बीच हम उसकी शरण में जीवित रहेंगे, वह उनके खोटे हुए गड्ढों में पकड़ा गया। २४ हे एदोम की पुत्री, त् जो ऊस देश में रहती है, हापित और आनन्दित रह; परन्तु यह कटोरा तुङ्ग तक भी पहँचेगा, और त् मतवाली होकर अपने आपको नंगा करेगी। २५ हे सियोन की पुत्री, तेरे अधर्म का दण्ड समाप्त हुआ, वह फिर तुङ्ग बैंधुआई में न ले

जाएगा; परन्तु हे एदोम की पुत्री, तेरे अधर्म का दण्ड वह तुङ्ग देगा, वह तेरे पापों को प्रगत कर देगा।

२६ हे यहोवा, स्मरण कर कि हम पर क्या-क्या बिता है; हमारी ओर दृष्टि कक्षे हमारी नामधाराई को देखे! २७ हमारा भाग परदेशियों का हो गया और हमारे घर परायों के हो गए हैं। २८ हम अनाथ और पिताहीन हो गए; हमारी माताँ विद्धा सी हो गई हैं। २९ हम मोल लेकर पानी पीते हैं, हमको लकड़ी भी दाम से मिलती है। ३० खदेड़नेवाले हमारी गर्वन पर टूट पड़े हैं; हम थक गए हैं, हमें विश्वास नहीं मिलता। ३१ हम स्वयं मिस्र के अधीन हो गए, और अश्शर के भी, ताकि पेट भर सके। ३२ हमारे पुरखाओं ने पाप किया, और मर मिटे हैं; परन्तु उनके अधर्म के कामों का भार हमको उठाना पड़ा है। ३३ हमारे ऊपर दास अधिकार रखते हैं, उनके हाथ से कोई हमें नहीं छुड़ता। ३४ जंगल में की तलवार के कारण हम अपने प्राण जोखिम में डालकर भोजनवस्तु ले आते हैं। ३५ भूख की झुलसाने वाली आग के कारण, हमारा चमड़ा तंदूर के समान काला हो गया है। ३६ सियोन में द्वियाँ, और यहदा के नगरों में कुमारियाँ भ्रष्ट की गई हैं। ३७ हाकिम हाथ के बल टाँगे गए हैं; और पुरनियों का कुछ भी आदर नहीं किया गया। ३८ जवानों को चक्री की चलानी पड़ती है; और बाल-बच्चे लकड़ी का बोझ उठाते हुए लड़खड़ाते हैं। ३९ अब फाटक पर पुरनिये नहीं बैठते, न जवानों का गीत सुनाई पड़ता है। ४० हमारे मन का हर्ष जाता रहा, हमारा नाचना विलाप में बदल गया है। ४१ हमारे सिर पर का मुकुट गिर पड़ा है; हम पर हाय, क्योंकि हमने पाप किया है। ४२ इस कारण हमारा हृदय निर्बल हो गया है, इहीं बातों से हमारी आँखें धूँधली पड़ गई हैं, ४३ क्योंकि सियोन पर्वत उजाड़ पड़ा है; उसमें सियाया घूमते हैं। ४४ परन्तु हे यहोवा, तू तो सदा तक विराजमान रहेगा; तेरा राज्य पीढ़ी-पीढ़ी बना रहेगा। ४५ तूने क्यों हमको सदा के लिये भुला दिया है, और क्यों बहुत काल के लिये हमें छोड़ दिया है? ४६ हे यहोवा, हमको अपनी ओर फेर, तब हम फिर सुधर जाएँगे। प्राचीनकाल के समान हमारे दिन बदलकर ज्यों के त्यों कर दे! ४७ क्या तूने हमें बिल्कुल त्याग दिया है? क्या तू हम से अत्यन्त क्रोधित है?

यहेजकेल

१ तीसवें वर्ष के चौथे महीने के पाँचवें दिन, मैं बन्दियों के बीच कबार नदी के टट पर था, तब स्वर्ग खुल गया, और मैंने परमेश्वर के दर्शन पाए। २ यहोवा की बैंधुआई के पाँचवें वर्ष के चौथे महीने के पाँचवें दिन को, कसदियों के देश में कबार नदी के टट पर, ३ यहोवा का वचन बृजी के पुत्र यहेजकेल याजक के पास पहुँचा; और यहोवा की शक्ति उस पर वही प्रगट हुई। ४ जब मैं देखने लगा, तो क्या देखता हूँ कि उत्तर दिशा से बड़ी घटा, और लहराती हुई आग सहित बड़ी औंती आ रही है; और घटा के चारों ओर प्रकाश और आग की बीचों-बीच से झलकाया हुआ पीतल सा कुछ दिखाई देता है। ५ फिर उसके बीच से चार जीवधारियों के समान कुछ निकले। और उनका स्पष्ट मनुष्य के समान था, ६ परन्तु उनमें से हर एक के चार-चार मुख और चार-चार पंख थे। ७ उनके पाँव सीधे थे, और उनके पाँवों के तलवे बछड़ों के खुरों के से थे; और वे झलकाए हुए पीतल के समान चमकते थे। ८ उनके चारों ओर पर पंखों के नीचे मनुष्य के से हाथ थे। और उन चारों के मुख और पंख इस प्रकार के थे: ९ उनके पंख एक दूसरे से परस्पर मिले हुए थे, वे अपने-अपने सामने सीधे ही चलते हुए मुड़ते नहीं थे। १० उनके सामने के मुखों का स्पष्ट मनुष्य का सा था; और उन चारों के दाहिनी ओर के मुख सिंह के से, बाईं ओर के मुख बैल के से थे, और चारों के पीछे के मुख उकाब पक्षी के से थे। ११ उनके चेहरे ऐसे थे और उनके मुख और पंख ऊपर की ओर अलग-अलग थे; हर एक जीवधारी के दो-दो पंख थे, जो एक दूसरे के पंखों से मिले हुए थे, और दो-दो पंखों से उनका शरीर ढूँगा हुआ था। १२ वे सीधे अपने-अपने सामने ही चलते थे; जिधर आत्मा जाना चाहता था, वे उधर ही जाते थे, और चलते समय मुड़ते नहीं थे। १३ जीवधारियों के स्पष्ट अंगारों और जलते हुए मशालों के समान दिखाई देते थे, और वह आग जीवधारियों के बीच इधर-उधर चलती-फिरती हुई बड़ा प्रकाश देती रही; और उस आग से बिजली निकलती थी। १४ जीवधारियों का चलना फिरना बिजली का सा था। १५ जब मैं जीवधारियों को देख ही रहा था, तो क्या देखा कि भूमि पर उनके पास चारों मुखों की गिरिकी के अन्दरा, एक-एक पहिया था। १६ पहियों का स्पष्ट और बनावट फीरोजे की सी थी, और चारों का एक ही स्पष्ट था; और उनका स्पष्ट और बनावट ऐसी थी जैसे एक पहिये के बीच दूसरा पहिया हो। १७ चलते समय वे अपनी चारों ओर चल सकते थे, और चलने में मुड़ते नहीं थे। १८ उन चारों पहियों के धेरे बहुत बड़े और डरावने थे, और उनके धेरों में चारों ओर आँखें ही आँखें भरी हुई थीं। १९ जब जीवधारी चलते थे, तब पहिये भी उनके साथ चलते थे; और जब जीवधारी भूमि पर से उठते थे, तब पहिये भी उठते थे। २० जिधर आत्मा जाना चाहती थी, उधर ही वे जाते, और पहिये जीवधारियों के साथ उठते थे; क्योंकि उनकी आत्मा पहियों में थी। २१ जब वे चलते थे तब ये भी चलते थे; और जब जब वे खड़े होते थे तब ये भी खड़े होते थे; और जब वे भूमि पर से उठते थे तब पहिये भी उनके साथ उठते थे, क्योंकि जीवधारियों की आत्मा पहियों में थी। २२ जीवधारियों के सिरों के ऊपर आकाशमण्डल सा कुछ था जो बर्फ के समान भयानक रीति से चमकता था, और वह उनके सिरों के ऊपर फैला हुआ था। २३ आकाशमण्डल के नीचे, उनके पंख एक दूसरे की ओर सीधी फैले हुए थे; और हर एक जीवधारी के दो-दो और पंख थे जिनसे उनके शरीर ढूँपे हुए थे। २४ उनके चलते समय उनके पंखों की फढ़फड़ाहट की आहट मुझे बहुत से जल, या सर्वशक्तिमान की वाणी, या सेना के हलचल की सी सुनाई पड़ती थी; और जब वे खड़े होते थे, तब अपने पंख लटका लेते थे। २५ फिर उनके सिरों के ऊपर जो आकाशमण्डल था, उसके ऊपर से एक शब्द सुनाई पड़ता था; और जब वे खड़े होते थे, तब अपने पंख लटका लेते थे। २६ जो आकाशमण्डल उनके सिरों के ऊपर था, उसके ऊपर मानो कुछ नीलम का बना हुआ सिंहासन था; इस सिंहासन के ऊपर मनुष्य के समान कोई दिखाई देता था। २७ उसकी मानो कमर से लेकर ऊपर की ओर मुझे झलकाया हुआ पीतल सा दिखाई पड़ा, और उसके भीतर और चारों ओर आग सी दिखाई देती थी; पिछे उस मनुष्य की कमर से लेकर नीचे की ओर भी मुझे कुछ आग सी दिखाई देती थी, और उसके चारों ओर प्रकाश था। २८ जैसे वर्षा के दिन बादल में धूमूष दिखाई पड़ता है, वैसे ही चारों ओर का प्रकाश दिखाई देता था। यहोवा के तेज का रूप ऐसा ही था। और उसे देखकर, मैं मुँह के बल गिरा, तब मैंने एक शब्द सुना जैसे कोई बातें करता है।

२ उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, अपने पाँवों के बल खड़ा हो, और मैं तुझ से बातें कहूँगा।” ३ जैसे ही उसने मुझसे यह कहा, वैसे ही आत्मा ने मुझ में समाकर मुझे पाँवों के बल खड़ा कर दिया; और जो मुझसे बातें करता था मैंने उसकी सुनी। ४ उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, मैं तुझे इसालियों के पास अर्थात् बलवा करनेवाली जाति के पास भेजता हूँ, जिन्होंने मैं विस्तृ बलवा किया है; उनके पुरुखा और वे भी आज के दिन तक मेरे विस्तृ अपराध करते चले आए हैं। ५ इस पीढ़ी के लोग जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ, वे निर्लज्ज और हठीति हैं; ६ और तु उनसे कहना, ‘प्रभु यहोवा यह कहता है,’ इससे वे, जो बलवा करनेवाले धराने के हैं, चाहे वे सुनें या न सुनें, तो भी वे इतना जान लेंगे कि हमारे बीच एक भविष्यद्वका प्रगट हुआ है। ७ हे मनुष्य के सन्तान, तू उसने न डरना; चाहे तुझे कॉर्टें, ऊटकटारों और बिच्छुओं के बीच भी रहना पड़े, तो भी उनके वचनों से न डरना; यद्यपि वे विद्रोही धराने के हैं, तो भी न तो उनके वचनों से डरना, और न उनके मुँह देखकर तेरा मन कच्चा हो। ८ इसलिए चाहे वे सुनें या न सुनें; तो भी तु मेरे वचन उनसे कहना, वे तो बड़े विद्रोही हैं। ९ “परन्तु हे मनुष्य के सन्तान, जो मैं तुझ से कहता हूँ, उसे तु सुन ले, उस विद्रोही धराने के समान तु भी विद्रोही न बनना जो मैं तुझे देता हूँ, उसे मुँह खोलकर खा लो।” १० तब मैंने दृष्टि की ओर क्या देखा, कि मेरी ओर एक हाथ बढ़ा हुआ है और उसमें एक पुस्तक है। ११ उसको उसने मैरे सामने खोलकर फैलाया, और वह दोनों ओर लिखी हुई थी; और जो उसमें लिखा था, वे विलाप और शोक और दुःख भेरे वचन थे।

३ तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, जो तुझे मिला है उसे खा ले; अर्थात् इस पुस्तक को खा, तब जाकर इसाएल के धराने से बातें कर।” ४ इसलिए मैंने मुँह खोला और उसने वह पुस्तक मुझे खिला दी। ५ तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, यह पुस्तक जो मैं तुझे देता हूँ उसे पचा ले, और अपनी अंतडियों इससे भर लो।” ६ अतः मैंने उसे खा लिया; और मेरे मुँह में वह मधु के तुल्य मीठी लगी। ७ फिर उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, तू इसाएल के धराने के पास जाकर उनको मेरे वचन सुना। ८ क्योंकि तू किसी अनोखी बोली या कठिन भाषावाली जाति के पास नहीं भेजा जाता है, परन्तु इसाएल ही के धराने के पास भेजा जाता है। ९ अनोखी बोली या कठिन भाषावाली बहुत सी जातियों के पास जो तेरी बात समझ न सकें, तू नहीं भेजा जाता। निःसन्देह यह दृष्टि मैं तुझे ऐसों के पास भेजता तो वे तेरी सुनें। १० परन्तु इसाएल के धरानेवाले तेरी सुनें से इन्कार करेंगे, वे मेरी भी सुनें से इन्कार करते हैं; क्योंकि इसाएल का सारा धराना ढीठ और कठोर मन का है। ११ देख, मैं तेरे मुख के सामने, और तेरे माथे को उनके माथे के समाने,

सामने, ढीठ कर देता हूँ। ९५ मैं तेरे माथे को हरि के तुल्य कड़ा कर देता हूँ जो चकमक पथर से भी कड़ा होता है; इसलिए तू उनसे न डरना, और न उनके मुँह देखकर तेरा मन कच्चा हो; क्योंकि वे बिद्रोही यहाने के हैं।” ९६ फिर उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, जितने वचन मैं तुझ से कहूँ, वे सब हृदय में रख और कानों से सुन। ९७ और उन बन्दियों के पास जाकर, जो तेरे जाति भाई हैं, उनसे बातें कहना और कहना, ‘प्रभु यहोवा यह कहता है,’ चाहे वे सुनें, या न सुनें।” ९८ तब परमेश्वर के आत्मा ने मुझे उठाया, और मैंने अपने पीछे बड़ी घटघड़ाहट के साथ एक शब्द सुना, “यहोवा के भवन से उसका तेज धन्य है।” ९९ और उसके साथ ही उन जीवधारियों के पंखों का शब्द, जो एक दूसे से लगते थे, और उनके संग के पहियों का शब्द और एक बड़ी ही घटघड़ाहट सुन पड़ा। १० तब आत्मा मुझे उठाकर ले गई, और मैं कठिन दूँख से भरा हआ, और मन में जलता हआ चला गया; और यहोवा की शक्ति मुझ में प्रबल थी; ११ और मैं उन बन्दियों के पास आया जो कबार नदी के टट पर तेलाबीब मैं रहते थे। और वहाँ मैं सात दिन तक उनके बीच व्याकुल होकर बैठा रहा। १२ सात दिन के व्यतीत होने पर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, १३ “हे मनुष्य के सन्तान मैंने तुझे इस्माएल के घराने के लिये पहस्ता नियुक्त किया है; तू मेरे मैंह की बात सुनकर, उहें मेरी ओर से चेतावनी देना। १४ जब मैं दृश्य से कहूँ, ‘तु निश्चय मेरेगा,’ और यदि तू उसको न चिताएँ, और न दृश्य से ऐसी बात कहे जिससे कि वह सचेत हो और अपना दृश्य मार्ग छोड़कर जीवित रहे, तो वह दृश्य अपने अर्थमें फँसा हआ मेरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं तुझी से लौंगा। १५ पर यदि तू दृश्य को चिताएँ, और वह अपनी दृश्यता और दृश्य मार्ग से न फिरे, तो वह तो अपने अर्थमें फँसा हुआ मर जाएगा; परन्तु तू अपने प्राणों को बचाएगा। १६ फिर जब धर्मी जन अपने धार्मिकता से फिरकर कुटिल काम करने लगे, और मैं उसके सामने ठोकर रखूँ, तो वह मर जाएगा, क्योंकि तने जो उसको नहीं चिताया, इसलिए वह अपने पाप में फँसा हुआ मेरागा, और जो धार्मिकता के कर्म उसने किए हाँ, उनकी सुधि न ली जाएगी, पर उसके खून का लेखा मैं तुझी से लौंगा। १७ परन्तु यदि तू धर्मी को ऐसा कहकर चेतावनी दे, कि वह पाप न करे, और वह पाप से बच जाएँ, तो वह चितौती को ग्रहण करने के कारण निश्चय जीवित रहेगा, और तू अपने प्राण को बचाएगा।” १८ फिर यहोवा की शक्ति वही मुझ पर प्रगट हुई, और उसने मुझसे कहा, “उठकर मैदान में जा; और वहाँ मैं तुझ से बातें करूँगा।” १९ तब मैं उठकर मैदान में गया, और वहाँ क्या देखा, कि यहोवा का प्रताप जैसा मुझे कबार नदी के टट पर, वैसा ही यहाँ भी दिखाई पड़ता है; और मैं मूँह के बल पिर पड़ा। २० तब आत्मा ने मुझ में समाकर मुझे पाँवों के बल खड़ा कर दिया; फिर वह मुझसे कहने लगा, “जा अपने घर के भीतर द्वार बन्द करके बैठा रह। २१ हे मनुष्य के सन्तान, देख; वे लोग तुझे रसियों से जकड़कर बाँध रखेंगे, और तू निकलकर उनके बीच जाने नहीं पाएगा। २२ मैं तेरी जीभ तेरे ताल से लगाऊँगा; जिससे तू मौन रहकर उनका डॉंटेवेला न हो, क्योंकि वे बिद्रोही घराने के हैं। २३ परन्तु जब जब मैं तुझ से बातें करूँ, तब-तब तेरे मूँह को खोलूँगा, और तू उनसे ऐसा कहना, ‘प्रभु यहोवा यह कहता है,’ जो सुनता है वह सुन ले और जो नहीं सुनता वह न सुने, वे तो बिद्रोही घराने के हैं ही।”

४ “हे मनुष्य के सन्तान, तू एक ईंट ले और उसे अपने सामने रखकर उस पर एक नगर, अर्थात् यस्सलेम का चित्र खीच; ५ तब उसे घेर अर्थात् उसके विस्तु किला बना और उसके सामने दमदमा बाँध; और छावनी डाल, और उसके चारों ओर युद्ध के यन्त्र लगा। ६ तब तू लोहे की थाली लेकर उसको लोहे की शहरपनाह मानकर अपने और उस नगर के बीच खड़ा कर; तब अपना मूँह उसके सामने करके उसकी धेराबन्दी कर, इस रीति से तू उसे घेरे

रखना। यह इस्माएल के घराने के लिये चिन्ह ठहरेगा। ७ “फिर तू अपने बायी करवट के बल लेटकर इस्माएल के घराने का अर्थमं अपने ऊपर रख; क्योंकि जितने दिन तू उस करवट के बल लेटा रहेगा, उतने दिन तक उन लोगों के अर्थमं का भार सहता रहेगा। ८ मैंने उनके अर्थमं के वर्षों के तुल्य तेरे लिये दिन ठहराए हैं, अर्थात् तीन सौ नब्बे दिन; उतने दिन तक तू इस्माएल के घराने के अर्थमं का भार सहता रह। ९ जब इतने दिन पूरे हो जाएँ, तब अपने दाहिनी करवट के बल लेटकर यहदा के घराने के अर्थमं का भार सह लेना; मैंने उसके लिये भी और तेरे लिये एक वर्ष के बदले एक दिन अर्थात् चालीस दिन ठहराए हैं। १० तब यस्सलेम के घेरने के लिये बाँह उधाड़े हुए अपना मूँह उधर करके उसके विस्तु भविष्यद्वारा करना। ११ देख, मैं तुझे रसियों से जकड़ूँगा, और जब तक उसके घेरने के दिन पूरे न हों, तब तक तू करवट न ले सकेगा। १२ “तू गेहूँ, जौ, सेम, मसरू, बाजरा, और कठिया गेहूँ, लेकर एक बर्तन में रखकर उनसे रोटी बनाया करना। जितने दिन तू अपने करवट के बल लेटा रहेगा, उतने अर्थात् तीन सौ नब्बे दिन तक उसे खाया करना। १३ जो भोजन तू खाए, उसे तौल-तौलकर खाना, अर्थात् प्रतिदिन बीस-बीस शेकेल भर खाया करना, और उसे समय-समय पर खाना। १४ पानी भी तू मापकर पिया करना, अर्थात् प्रतिदिन हीन का छठवाँ अंश पीना; और उसको समय-समय पर पीना। १५ अपना भोजन जौ की रोटियों के समान बनाकर खाया करना, और उसको मनुष्य की विष्णा से उनके देखते बनाया करना।” १६ फिर यहोवा ने कहा, “इसी प्रकार से इस्माएल उन जातियों के बीच अपनी-अपनी रोटी अशद्रुता से खाया करेंगे, जहाँ में उन्हें जबरन पहुँचाऊँगा।” १७ तब मैंने कहा, “हाय, यहोवा परमेश्वर देख, मेरा मन कभी अशुद्द नहीं हुआ, और न मैंने बचपन से लेकर अब तक अपनी मृत्यु से मरे हुए व फाड़े हुए पशु का माँस खाया, और न किसी प्रकार का धिनौना माँस मेरे मूँह में कभी गया है।” १८ तब उसने मुझसे कहा, “देख, मैंने तेरे लिये मनुष्य की विष्णा के बदले गोबर ठहराया है, और उसी से तू अपनी रोटी बनाना।” १९ फिर उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, देख, मैं यस्सलेम में अन्नस्ती आधार को दूर करूँगा; इसलिए वहाँ के लोग तौल-तौलकर और चिन्ता कर करके रोटी खाया करेंगे, और माप-मापकर और विस्मित हो होकर पानी पिया करेंगे। २० और इससे उहें रोटी और पानी की घटी होगी, और वे सब के सब घबराएँगे, और अपने अर्थमं में फँसे हुए सूख जाएँगे।”

२१ “हे मनुष्य के सन्तान, एक पैनी तौलवार ले, और उसे नाई के उस्तरे के काम में लाकर अपने सिर और दाढ़ी के बाल पूँड डाल; तब तौलने का कँटा लेकर बालों के भागकर। २२ जब नगर के घिरने के दिन पूरे हों, तब नगर के भीतर एक तिहाई आग में डालकर जलाना; और एक तिहाई लेकर चारों ओर तलवार से मारना; और एक तिहाई को पवन में उड़ाना, और मैं तलवार खीचकर उसके पीछे चलाऊँगा। २३ तब इसमें से थोड़े से बाल लेकर अपने कपड़े की छोर में बौधना। २४ फिर उसमें से भी थोड़े से लेकर आग के बीच डालना कि वे आग में जल जाएँ, तब उसी में से एक लौ भड़ककर इस्माएल के सारे घराने में फैल जाएँगी। २५ “प्रभु यहोवा यह कहता है: यस्सलेम ऐसी ही है, मैंने उसको अन्यजातियों के बीच मैं ठहराया, और वह चारों ओर देशों से धिरी है। २६ उसने मेरे नियमों के विस्तु काम करके अन्यजातियों से अधिक दृश्यता की, और मेरी विधियों के विस्तु चारों ओर के देशों के लोगों से अधिक बुराई की है; क्योंकि उन्होंने मेरे नियम तुच्छ जाने, और वे मेरी विधियों पर नहीं चरो। २७ इस कारण प्रभु यहोवा यह कहता है: तम लोग जो अपने चारों ओर देशों से आधिक हल्लड मचाते, और न मेरी विधियों पर चलते, न मेरे नियमों को मानते और अपने चारों ओर की जातियों के नियमों के

अनुसार भी न किया, ८ इस कारण प्रभु यहोवा यह कहता है: देख, मैं स्वयं तेरे विस्तृ हूँ; और अन्यजातियों के देखते मैं तेरे बीच ऐसा करूँगा। ९ तेरे सब यिनैने कामों के कारण मैं तेरे बीच ऐसा करूँगा, जैसा न अब तक किया है, और न भविष्य में फिर करूँगा। १० इसलिए तेरे बीच बच्चे अपने-अपने बाप का, और बाप अपने-अपने बच्चों का माँस खाएँगे; और मैं तुझको दण्ड दूँगा, ११ और तेरे सब बचे हुओं को चारों ओर तिरत-बितर करूँगा। इसलिए प्रभु यहोवा की यह बाणी है, कि मेरे जीवन की सौगन्ध, इसलिए कि तूमें मेरे पवित्रस्थान को अपनी सारी यिनैनी मूरतों और सारे यिनैने कामों से अशुद्ध किया है, मैं तुझ घटाऊँगा, और तुझ पर दया की दृष्टि न करूँगा, और तुझ पर कछ भी कोमलता न करूँगा। १२ तेरी एक तिहाई तो मरी से मेरेगी, और तेरे बीच भूख से मर मिटेगी; एक तिहाई तेरे आस-पास तलवार से मारी जाएगी; और एक तिहाई को मैं चारों ओर तिरत-बितर करूँगा और तलवार खीचकर उनके पीछे चलाऊँगा। १३ “इस प्रकार से मेरा कोप शान्त होगा, और अपनी जलजलाहट उन पर पूरी रीति से भडकाकर मैं शान्ति पाऊँगा; और जब मैं अपनी जलजलाहट उन पर पूरी रीति से भडका चुकँग, तब वे जान लेंगे कि मुझ यहोवा ही ने जलन में आकर यह कहा है। १४ मैं तुझे तेरे चारों ओर की जातियों के बीच, सब आने-जनेवालों के देखते हुए उजाऊँगा, और तेरी नामधारी कराऊँगा। १५ इसलिए जब मैं तुझको कोप और जलजलाहट और क्रोध दिलानेवाली घुड़कियों के साथ दण्ड दूँगा, तब तेरे चारों ओर की जातियों के सामने नामधारी, ठषा, शिक्षा और विस्मय होगा, क्योंकि मुझ यहोवा ने यह कहा है। १६ यह उस समय होगा, जब मैं उन लोगों को नाश करने के लिये तुम पर अकाल के तीखे तीर चलाकर, तुम्हारे बीच अकाल बढ़ाऊँगा, और तुम्हारे अन्नस्पी आधार को दूर करूँगा। १७ और मैं तुम्हारे बीच अकाल और दृश्य जन्तु भेज़ूँगा जो तुम्हें निःसन्तान करेंगे; और मरी और खन तुम्हारे बीच चलते रहेंगे; और मैं तुम पर तलवार चलवाऊँगा, मुझ यहोवा ने यह कहा है।”

६ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा : “हे मनुष्य के सन्तान अपना मुख इसाएल के पहाड़ों की ओर करके उनके विस्तृ भविष्यद्वाणी कर, ३ और कह, हे इसाएल के पहाड़ों, प्रभु यहोवा का वचन सुनो! प्रभु यहोवा पहाड़ों और पहाड़ियों से, और नालों और तराइयों से यह कहता है: देखो, मैं तुम पर तलवार चलवाऊँगा, और तुम्हारे पूजा के ऊँचे स्थानों को नाश करूँगा। ४ तुम्हारी वेदियाँ उजड़ेंगी और तुम्हारी सूर्य की प्रतिमाएँ तोड़ी जाएँगी; और मैं तुम में से मेरे हुओं को तुम्हारी मूरतों के आगे फेंक दूँगा। ५ मैं इसाएलियों के शर्वों को उनकी मूरतों के सामने रखूँगा, और उनकी हड्डियों को तुम्हारी वेदियों के आस-पास छिटा दूँगा। ६ तुम्हारे जितने बसाए हुए नगर हैं, वे सब ऐसे उजड जाएँगे, कि तुम्हारे पूजा के ऊँचे स्थान भी उजाड हो जाएँगे, तुम्हारी वेदियाँ उजड़ेंगी और ढाई जाएँगी, तुम्हारी मूरतें जाती रहेंगी और तुम्हारी सूर्य की प्रतिमाएँ काटी जाएँगी; और तुम्हारी सारी कारीगरी मिटाई जाएँगी। ७ तुम्हारे बीच मारे हए गिरेंगे, और तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। ८ “तो भी मैं कितनों को बचा रखूँगा। इसलिए जब तुम देश-देश में तिरत-बितर होंगे, तब अन्यजातियों के बीच तुम्हारे कछ लोग तलवार से बच जाएँगे। ९ वे बचे हुए लोग, उन जातियों के बीच, जिनमें वे बँधूए होकर जाएँगे, मुझे स्मरण करेंगे; और यह भी कि हमारा व्यभिचारी हृदय यहोवा से कैसे हट गया है और व्यभिचारिणी की सी हमारी आँखें मूरतों पर कैसी लगी हैं, जिससे यहोवा का मन टूटा है। इस रीति से उन बुराइयों के कारण, जो उन्होंने अपने सारे यिनैने काम करके की हैं, वे अपनी दृष्टि में यिनैने ठहरेंगे। १० तब वे जान लेंगे कि मैं

यहोवा हूँ, और उनकी सारी हानि करने को मैंने जो यह कहा है, उसे व्यर्थ नहीं कहा।” ११ प्रभु यहोवा यह कहता है: “अपना हाथ मारकर और अपना पाँव पटककर कह, इसाएल के घराने के सारे यिनैने कामों पर हाय, हाय, क्योंकि वे तलवार, भूख, और मरी से नाश हो जाएँगे। १२ जो दूर हो वह मरी से मेरेगा, और जो निकट हो वह तलवार से मार डाला जाएगा; और जो बचकर नगर में रहते हुए धेरा जाए, वह भूख से मेरेगा। इस भौति मैं अपनी जलजलाहट उन पर पूरी रीति से उतारूँगा। १३ जब हर एक ऊँची पहाड़ी और पहाड़ों की हर एक चोटी पर, और हर एक हरे पेड़ के नीचे, और हर एक घने बांज वृक्ष की छाया में, जहाँ-जहाँ वे अपनी सब मूरतों को सुखदायक सुगन्ध-द्रव्य चढ़ाते हैं, वहाँ उनके मारे हुए लोग अपनी वेदियों के आस-पास अपनी मूरतों के बीच में पड़े रहेंगे; तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। १४ मैं अपना हाथ उनके विस्तृ बढ़ाकर उस देश को सारे घरों समेत जंगल से ले दिलता की ओर तक उजाड ही उजाड कर दूँगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”

७ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा : “हे मनुष्य के सन्तान, प्रभु

यहोवा इसाएल की भूमि के विषय में यह कहता है, कि अन्त हुआ; चारों कोनों समेत देश का अन्त आ गया है। ८ तेरा अन्त भी आ गया, और मैं अपना क्रोध तुझ पर भड़काकर तेरे चाल चलन के अनुसार तुझे दण्ड दूँगा; और तेरे सारे यिनैने कामों का फल तुझे दूँगा। ९ मेरी दयादृष्टि तुझ पर न होगी, और न मैं कोमलता करूँगा; और जब तक तेरे यिनैने पाप तुझ में बने रहेंगे तब तक तेरे चाल-चलन का फल तुझे दूँगा। तब तेरा जान लोगा कि मैं यहोवा हूँ। १० “प्रभु यहोवा यह कहता है: विपत्ति है, एक बड़ी विपत्ति है! देखो, वह आती है। ११ अन्त आ गया है, सब का अन्त आया है; वह तेरे विस्तृ जागा है। देखो, वह आता है। १२ हे देश के निवासी, तेरे लिये चक्र धूम चुका, समय आ गया, दिन निकट है; पहाड़ों पर आनन्द के शब्द का दिन नहीं, हुल्लड ही का होगा। १३ अब थोड़े दिनों में मैं अपनी जलजलाहट तुझ पर भड़काऊँगा, और तुझ पर पूरा कोप उण्डेलूँगा और तेरे चाल चलन के अनुसार तुझे दण्ड दूँगा। और तेरे सारे यिनैने कामों का फल तुझे भुगताऊँगा। १४ मेरी दयादृष्टि तुझ पर न होगी और न मैं कोमलता करूँगा। मैं तेरी चाल चलन का फल तुझे भुगताऊँगा, और तेरे यिनैने पाप तुझ में बने रहेंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा दण्ड देनेवाला हूँ। १५ “देखो, उस दिन को देखो, वह आता है। चक्र धम चुका, छड़ी फूल चुकी, अभिमान फूला है। १६ उपद्रव बढ़ते-बढ़ते दुष्टा का टण्ड बन गया; उनमें से कोई न बचेगा, और न उनकी भीड़-भाड़, न उनके धन में से कुछ रहेगा; और न उनमें से किसी के लिये विलाप सुन पड़ेगा। १७ समय आ गया, दिन निकट आ गया है; न तो मोत्ल लेनेवाला आनन्द करे और न बेचेनेवाला शोक करे, क्योंकि उनकी सारी भीड़ पर कोप भड़क उठा है। १८ चाहे वे जीवित रहें, तो भी बेचेनेवाला बेची हुई वस्तु के पास कभी लौटने न पाएगा; क्योंकि दर्शन की यह बात देश की सारी भीड़ पर घटेगी; कोई न लौटेगा; कोई भी मनुष्य, जो अधर्म में जीवित रहता है, बल न पकड सकेगा। १९ “उन्होंने नरसिंगा फँका और सब कुछ तैयार कर दिया; परन्तु यहु में कोई नहीं जाता क्योंकि देश की सारी भीड़ पर मेरा कोप भड़का हुआ है। २० “बाहर तलवार और भीतर अकाल और मरी हैं, जो मैटान में हो वह तलवार से मेरेगा, और जो नगर में हो वह भूख और मरी से मारा जाएगा। २१ और उनमें से जो बच निकलेंगे वे बचेंगे तो सही परन्तु अपने-अपने अधर्म में फँसे रहकर तराइयों में रहेनेवाले कबूतरों के समान पहाड़ों के ऊपर विलाप करते रहेंगे। २२ सब के हाथ ढीले और सब के घुटने अति निर्बल हो जाएँगे। २३ वे कमर में टाट करेंगे, और उनके रोए खड़े होंगे; सब के मूँह सूख जाएँगे और सब के सिर मुँड़े जाएँगे। २४ वे अपनी चाँदी सड़कों में फेंक

देंगे, और उनका सोना अशुद्ध वस्तु ठहरेगा; यहोवा की जलन के दिन उनका सोना चाँड़ी उनको बचा न सकेगी, न उससे उनका जी सन्तुष्ट होगा, न उनके पेट भरेंगे। क्योंकि वह उनके अर्धम के ठोकर का कारण हुआ है। २० उनका देश जो शोभायामान और शिरोमणि था, उसके विषय में उन्होंने गर्व ही गर्व करके उसमें अपनी घृणित वस्तुओं की मूरतें, और घृणित वस्तुएँ बना रखी, इस कारण मैंने उसे उनके लिये अशुद्ध वस्तु ठहराया है। २१ मैंने उसे लटने के लिये प्रदेशियों के हाथ, और धन छीनने के लिये पृथ्वी के दुष्ट लोगों के वश में कर दूँगा; और वे उसे अपविन कर डालेंगे। २२ मैंने उसे मूँह फेर लूँगा, तब वे मेरे सुरक्षित स्थान को अपविन करेंगे; डाक उसमें घुसकर उसे अपविन करेंगे। २३ “एक सँकल बना दे, क्योंकि देश अन्याय की हत्या से, और नगर उपद्रव से भरा हुआ है। २४ मैं अन्यजातियों के बुरे से बुरे लोगों को लाँचा, जो उनके घरों के स्वामी हो जाएँगे; और मैं सामर्थियों का गर्व तोड़ दूँगा और उनके पवित्रस्थान अपविन किए जाएँगे। २५ सत्यनाश होने पर है तब ढूँढ़ने पर भी उन्हें शान्ति न मिलेगी। २६ विपत्ति पर विपत्ति आएगी और उड़ती हुई चर्चा पर चर्चा सुनाई पड़ेगी; और लोग भविष्यद्वत्ता से दर्शन की बात पछेंगे, परन्तु याजक के पास से व्यवस्था, और पुरानिये के पास से समर्पित देने की शक्ति जाती रहेगी। २७ राजा तो शोक करेगा, और रईस उदासीस्ती बब्ल पहुँचेंगे, और देश के लोगों के हाथ ढीले पड़ेंगे। मैं उनके चलन के अन्सार उनसे बताव करँगा, और उनकी कमाई के समान उनको टण्ड दूँगा; तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”

८ फिर छठवें वर्ष के छठवें महीने के पाँचवें दिन को जब मैं अपने घर में बैठा था, और यहदियों के पुरनिये मैं सामने बैठे थे, तब प्रभु यहोवा की शक्ति वही मुझ पर प्रगत हुई। ९ तब मैंने देखा कि आग का सा एक रूप दिखाई देता है; उसकी कमर से नीचे की ओर आग है, और उसकी कमर से ऊपर की ओर झलकाए हुए पीतल की झलक-सी कूँठ है। १० उसने हाथ-सा कुछ बढ़ाकर मेरे सिर के बाल पकड़े; तब आत्मा ने मुझे पृथ्वी और आकाश के बीच में उठाकर परमेश्वर के दिखाए हुए दर्शनों में यस्शलेम के मन्दिर के भीतर, आँगन के उस फाटक के पास पहुँचा दिया जिसका मुँह उत्तर की ओर है, और जिसमें उस जलन उपजानेवाली प्रतिमा का स्थान था जिसके कारण द्वेष उपजता है। ११ फिर वहाँ इसाएल के परमेश्वर का तेज वैसा ही था जैसा मैंने मैदान में देखा था। १२ उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, अपनी आँखें उत्तर की ओर उठाकर देख।” अतः मैंने अपनी आँखें उत्तर की ओर उठाकर देखा कि वेदी के फाटक के उत्तर की ओर उसके प्रवेशस्थान ही में वह डाह उपजानेवाली प्रतिमा है। १३ तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू देखता है कि ये लोग क्या कर रहे हैं? इसाएल का धराना क्या ही बड़े घृणित काम यहाँ करता है, ताकि मैं अपने पवित्रस्थान से दूर हो जाऊँ; परन्तु तू इससे भी अधिक घृणित काम देखोगा।” १४ तब वह मुझे आँगन के द्वार पर ले गया, और मैंने देखा, कि दीवार में एक छेद है। १५ तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, दीवार को फोड़।” इसलिए मैंने दीवार को फोड़कर क्या देखा कि एक द्वार है। १६ उसने मुझसे कहा, “भीतर जाकर देख कि ये लोग यहाँ कैसे-कैसे और अति घृणित काम कर रहे हैं।” १७ अतः मैंने भीतर जाकर देखा कि चारों ओर की दीवार पर जानि-जानि के रेखेवाले जन्तुओं और घृणित पशुओं और इसाएल के धराने की सब मूरतों के चित्र खीचे हुए हैं। १८ इसाएल के धराने के पुरियों में से सतर पुस्त जिनके बीच में शापान का पुत्र याजन्याह भी है, वे उन चित्रों के सामने खड़े हैं, और हर एक पुस्त अपने हाथ में धूपदान लिए हुए हैं; और धूप के धूँए के बादल की सुगन्ध उठ रही है। १९ तब उसने

मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, क्या तूने देखा है कि इसाएल के धराने के पुरनिये अपनी-अपनी नवकाशीबाली कोठरियों के भीतर अर्थात् अधिकारों में क्या कर रहे हैं? वे कहते हैं कि यहोवा हमको नहीं देखता; यहोवा ने देश को त्याग दिया है।” २० फिर उसने मुझसे कहा, “तू इससे और भी अति घृणित काम देखोगा जो वे करते हैं।” २१ तब वह मुझे यहोवा के भवन के उस फाटक के पास ले गया जो उत्तर की ओर था और वहाँ छियाँ बैठी हुई तम्हज के लिये रो रही थी। २२ तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, क्या तूने यह देखा है? फिर इनसे भी बड़े घृणित काम तू देखोगा।” २३ तब वह मुझे यहोवा के भवन के भीतरी आँगन में ले गया; और वहाँ यहोवा के भवन के द्वार के पास ओसरे और वेदी के बीच कोई पच्चीस पुस्त अपनी पीठ यहोवा के भवन की ओर और और अपने मुख पूर्व की ओर किए हुए थे; और वे पूर्व दिशा की ओर सूर्य को दृण्डबत कर रहे थे। २४ तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, क्या तूने यह देखा? क्या यहदा के धराने के लिये घृणित कामों का करना जो वे यहाँ करते हैं छोटी बात है? उन्होंने अपने देश को उपद्रव से भर दिया, और फिर यहाँ आकर मुझे रिस दिलाते हैं। बरन् वे डाली को अपनी नाक के आगे लिए रहते हैं। २५ इसलिए मैं भी जलजलाहट के साथ काम करँगा, न मैं दया करँगा और तब न मैं कोमलता करँगा, और चाहे वे मेरे कानों में ऊँचे शब्द से पुकारे, तो भी मैं उनकी बात न सुनँगा।”

२६ फिर उसने मेरे कानों में ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा, “नगर के अधिकारियों को अपने-अपने हाथ में नाश करने का हथियार लिए हुए निकल लाओ।” २७ इस पर छः पुस्त, उत्तर की ओर ऊपरी फाटक के मार्ग से अपने-अपने हाथ में धात करने का हथियार लिए हुए आए; और उनके बीच सन का बब्ल पहने, कमर में लिखने की दवात बैंधे हुए एक और पुस्त था; और वे सब भवन के भीतर जाकर पीतल की वेदी के पास खड़े हुए। २८ तब इसाएल के परमेश्वर का तेज कर्स्टों पर से, जिनके ऊपर वह रहा करता था, भवन की डेवही पर उठ आया था; और उसने उस सन के बब्ल पहने हुए पुस्त को जो कमर में दवात बैंधे हुए था, पुकारा। २९ और यहोवा ने उससे कहा, “इस यस्शलेम नगर के भीतर इधर-उधर जाकर जितने मनुष्य उन सब घृणित कामों के कारण जो उसमें किए जाते हैं, साँसें भरते और दुख के मारे चिल्लता हैं, उनके माथों पर चिन्ह लगा दें।” ३० तब उसने मेरे सनते हुए दूसरों से कहा, “नगर में उनके पीछे-पीछे चलकर मारते जाओ; किंतु पर दया न करना और न कोमलता से काम करना। ३१ बड़े, युवा, कुँवारी, बाल-बच्चे, छियाँ, सब को मारकर नाश करो, परन्तु जिस किसी मनुष्य के माथे पर वह चिन्ह हो, उसके निकट न जाना। और मेरे पवित्रस्थान ही से आरम्भ करो।” और उन्होंने उन पुरियों से आरम्भ किया जो भवन के सामने थे। ३२ फिर उसने उनसे कहा, “भवन को अशुद्ध करो, और अँगनों को शवों से भर दो। चलो, बाहर निकलो।” ३३ तब वे निकलकर नगर में मारने लगे। ३४ जब वे मार रहे थे, और मैं अकेला रह गया, तब मैं मूँह के बल गिरा और चिल्लाकर कहा, “हाय प्रभु यहोवा! क्या तू अपनी जलजलाहट यस्शलेम पर भड़काकर इसाएल के सब बच्चों को भी नाश करेगा?” ३५ तब उसने मुझसे कहा, “इसाएल और यहोवा के धरानों का अर्धम अत्यन्त ही अधिक है, यहाँ तक कि देश हत्या से और नगर अन्याय से भर गया है; क्योंकि वे कहते हैं, ‘यहोवा ने पृथ्वी को त्याग दिया और यहोवा कुछ नहीं देखता।’” ३६ इसलिए उन पर दया न होगी, न मैं कोमलता करँगा, बरन् उनकी चाल उन्हीं के सिर लौटा दूँगा।” ३७ तब मैंने क्या देखा, कि जो पुस्त सन का बब्ल पहने हुए और कमर में दवात बैंधे था, उसने यह कहकर समाचार दिया, “जैसे तूने आज्ञा दी, मैंने वैसे ही किया है।”

१० इसके बाद मैंने देखा कि कस्बों के सिरों के ऊपर जो आकाशमण्डल है, उसमें नीलमणि का सिंहासन सा कुछ दिखाई देता है। २ तब यहोवा ने उस सन के बब्ल पहने हुए पुष्प से कहा, “धूमनेवाले पहियों के बीच कस्बों के नीचे जा और अपनी दोनों मुट्ठियों को कस्बों के बीच के अंगारों से भरकर नगर पर बिखेर दे।” अतः वह मेरे देखते-देखते उनके बीच में गया। ३ जब वह पुष्प भीतर गया, तब वे कर्स्ब भवन के दक्षिण की ओर खड़े थे; और बादल भीतरवाले आँगन में भरा हुआ था। ४ तब यहोवा का तेज कस्बों के ऊपर से उठकर भवन की डेवली पर आ गया; और बादल भवन में भर गया, और वह आँगन यहोवा के तेज के प्रकाश से भर गया। ५ कस्बों के पंखों का शब्द बाहरी आँगन तक सुनाई देता था, वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बोलने का सा शब्द था। ६ जब उसने सन के बब्ल पहने हुए पुष्प को धूमनेवाले पहियों के भीतर कस्बों के बीच में से आग लेने की आज्ञा दी, तब वह उनके बीच में जाकर एक पहिये के पास खड़ा हआ। ७ तब कस्बों के बीच से एक कस्ब ने अपना हाथ बढ़ाकर, उस आग में से जो कस्बों के बीच में थी, कुछ उठाकर सन के बब्ल पहने हुए पुष्प की मुश्टि में दे दी; और वह उसे लेकर बाहर चला गया। ८ कस्बों के पंखों के नीचे तो मनुष्य का हाथ सा कुछ दिखाई देता था। ९ तब कस्बों के पास चार पहिये हैं, अर्थात् एक-एक कर्स्ब के पास एक-एक पहिया है, और पहियों का रूप फीरोजा का सा है। १० उनका ऐसा रूप है, कि चारों एक से दिखाई देते हैं, जैसे एक पहिये के बीच दूसरा पहिया हो। ११ चलने के समय वे अपनी चारों अलंगों के बल से चलते हैं, और चलते समय मुड़ते नहीं, वरन् जिधर उनका सिर रहता है वे उधर ही उसके पीछे चलते हैं और चलते समय वे मुड़ते नहीं। १२ और पीछी हाथ और पंखों समेत कस्बों का सारा शरीर और जो पहिये उनके हैं, वे भी सब के सब चारों और आँखों से भरे हुए हैं। १३ मेरे सुनते हुए इन पहियों को चक्कर कहा गया, अर्थात् धूमनेवाले पहिये। १४ एक-एक के चार-चार मुख थे; एक मुख तो कर्स्ब का सा, दूसरा मनुष्य का सा, तीसरा सिंह का सा, और चौथा उकाब पक्षी का सा। १५ कर्स्ब भूमि पर से उठ गए। ये वे ही जीवधारी हैं, जो मैंने कबार नदी के पास देखे थे। १६ जब जब वे कर्स्ब चलते थे तब-तब वे पहिये उनके पास-पास चलते थे, और जब जब कर्स्ब पृथ्वी पर से उठने के लिये अपने पंख उठाते तब-तब पहिये उनके पास से नहीं मुड़ते थे। १७ जब वे खड़े होते तब ये भी खड़े होते थे; और जब वे उठते तब ये भी उनके संग उठते थे; क्योंकि जीवधारियों की आत्मा इनमें भी रहती थी। १८ यहोवा का तेज भवन की डेवली पर से उठकर कस्बों के ऊपर ठहर गया। १९ तब कर्स्ब अपने पंख उठाकर मेरे देखते-देखते पृथ्वी पर से उठकर निकल गए; और पहिये भी उनके संग-संग गए, और वे सब यहोवा के भवन के पूर्वी फाटक में खड़े हो गए; और इसाएल के परमेश्वर का तेज उनके ऊपर ठहरा रहा। २० ये वे ही जीवधारी हैं जो मैंने कबार नदी के पास इसाएल के परमेश्वर के नीचे देखे थे; और मैंने जान लिया कि वे भी कर्स्ब हैं। २१ हर एक के चार मुख और चार पंख और पंखों के नीचे मनुष्य के से हाथ थी। २२ उनके मुख ही क्या वरन् उनकी सारी देह भी वैसी ही थी। वे संधि अपने-अपने सामने ही चलते थे।

१३ तब आत्मा ने मुझे उठाकर यहोवा के भवन के पूर्वी फाटक के पास जिसका मूँह पूर्वी दिशा की ओर है, पहुँचा दिया; और वहाँ मैंने क्या देखा, कि फाटक ही में पच्चीस पुष्प हैं। और मैंने उनके बीच अज्जर के पुत्र याजन्याह को और बनायाह के पुत्र पलत्याह को देखा, जो प्रजा के प्रधान थे। २४ तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, जो मनुष्य इस नगर में अनर्थ कल्पना और बुरी युक्ति करते हैं वे ये ही हैं। ३ ये कहते हैं, ‘घर बनाने का

समय निकट नहीं, यह नगर हँड़ा और हम उसमें का माँस है।” ४ इसलिए हे मनुष्य के सन्तान, इनके विद्यु भविष्यद्वाणी कर, भविष्यद्वाणी। ५ तब यहोवा का आत्मा मुझ पर उतरा, और मुझसे कहा, “ऐसा कह, यहोवा यह कहता है: हे इसाएल के घराने तुम ने ऐसा ही कहा है; जो कुछ तुम्हारे मन में आता है, उसे मैं जानता हूँ। ६ तुम ने तो इस नगर में बहुतों को मार डाला वरन् उसकी सड़कों को शब्दों से भर दिया है। ७ इस कारण प्रभु यहोवा यह कहता है: जो मनुष्य तुम ने इसमें मार डाले हैं, उनके शब्द ही इस नगरस्ती हैं देखे में का माँस है; और तुम इसके बीच से निकाले जाओगे। ८ तुम तलवार से डरते हो, और मैं तुम पर तलवार चलाऊँगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। ९ मैं तुम को इसमें से निकालकर परदेशियों के हाथ में कर दूँगा, और तुम को दण्ड दिलाऊँगा। १० तुम तलवार से मरकर गिरोगे, और मैं तुम्हारा मुकदमा, इसाएल के देश की सीमा पर चुकाऊँगा; तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। ११ यह नगर तुम्हारे लिये हँड़ा न बनेगा, और न तुम इसमें का माँस होंगे; मैं तुम्हारा मुकदमा इसाएल के देश की सीमा पर चुकाऊँगा। १२ तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ; तुम तो मेरी विधियों पर नहीं चर्ते, और मेरे नियमों को तुम ने नहीं माना; परन्तु अपने चारों और की अन्यजातियों की रीतियों पर चले हो।” १३ मैं इस प्रकार की भविष्यद्वाणी कर रहा था, कि बनायाह का पुत्र पलत्याह मर गया। तब मैं हँड़े के बल गिरकर ऊँचे शब्द से चिल्ला उठा, और कहा, “हाय प्रभु यहोवा, क्या तू इसाएल के बचे हुओं को सत्यानाश कर डालेगा?” १४ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, १५ “हे मनुष्य के सन्तान, यस्शलेम के निवासियों ने तेरे निकट भाइयों से वरन् इसाएल के सारे घराने से भी कहा है कि ‘तुम यहोवा के पास से दूँ हो जाओ; यह देश हमारे ही अधिकार में दिया गया है।’” १६ परन्तु तू उनसे कह, ‘प्रभु यहोवा यह कहता है कि मैंने तुम को दूर-दूर की जातियों में बसाया और देश-देश में तिरं-बितर कर दिया तो है, तो भी जिन देशों में तुम आए हुए हो, उनमें मैं स्वयं तुम्हारे लिये थोड़े दिन तक पवित्रस्थान ठहस्सा।” १७ इसलिए, उनसे कह, “प्रभु यहोवा यह कहता है, कि मैं तुम को जाति-जाति के लोगों के बीच से बोटी-हँगा, और जिन देशों में तुम तिरं-बितर किए गए हो, उनमें से तुम को इक्षत्र कहस्सा, और तम्हें इसाएल की भूमि दूँगा।” १८ और वे वहाँ हँचकर उस देश की सह धृणित मूर्तियाँ और सब धृणित काम भी उसमें से दूँ करेंगे। १९ और मैं उनका हृदय एक कर दूँगा; और उनके भीतर नई आत्मा उत्पन्न कहस्सा, और उनकी देह में से पवर्थ का सा हृदय निकालकर उन्हें माँस का हृदय दूँगा, २० जिससे वे मेरी विधियों पर नित चला करें और मेरे नियमों को मारें; और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं उनका परमेश्वर ठहस्सा। २१ परन्तु वे लोग जो अपनी धृणित मूर्तियाँ और धृणित कामों में मन लगाकर चलते रहते हैं, उनको मैं ऐसा कहस्सा कि उनकी चाल उन्हीं के सिर पर पड़ेंगी, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।” २२ इस पर कर्स्बों ने अपने पंख उठाए, और पहिये उनके संग-संग चले; और इसाएल के परमेश्वर का तेज उनके ऊपर था। २३ तब यहोवा का तेज नगर के बीच में से उठकर उस पर्वत पर ठहर गया जो नगर की पूर्व ओर है। २४ फिर आत्मा ने मुझे उठाया, और परमेश्वर के आत्मा की शक्ति से दर्शन में मुझे कसदियों के देश में बन्दियों के पास पहुँचा दिया। और जो दर्शन मैंने पाया था वह लोप हो गया। २५ तब जितनी बातें यहोवा ने मुझे दिखाई थीं, वे मैंने बन्दियों को बता दी।

१२ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, १३ “हे मनुष्य के सन्तान, तू बलवा करनेवाले घराने के बीच में रहते हैं, जिनके देखेंसे के लिये आँखें तो हैं, परन्तु नहीं देखते; और सुनने के लिये कान तो हैं परन्तु नहीं सुनते;

क्योंकि वे बलवा करनेवाले घराने के हैं। ३ इसलिए हे मनुष्य के सन्तान, दिन को बैंधुआई का सामान तैयार करके उनके देखते हुए उठ जाना, उनके देखते हुए अपना स्थान छोड़कर दूसरे स्थान को जाना। यद्यपि वे बलवा करनेवाले घराने के हैं, तो भी सम्भव है कि वे ध्यान दें। ४ इसलिए तू दिन को उनके देखते हुए बैंधुआई के सामान को निकालना, और तब त् सॉश्झ को बैंधुआई में जानेवाले के समान उनके देखते हुए उठ जाना। ५ उनके देखते हुए टीवार को फोड़कर उसी से अपना सामान निकालना। ६ उनके देखते हुए उसे अपने कंधे पर उठाकर अंधेरे में निकालना, और अपना मुँह ढौंपे रहना कि भूमि तुझे न देख पड़े; क्योंकि मैंने तुझे इसाएल के घराने के लिये एक चिह्न ठहराया है।” ७ उस आज्ञा के अनुसार मैंने बैसा ही किया। दिन को मैंने अपना सामान बैंधुआई के सामान के समान निकाला, और सॉश्झ को अपने हाथ से टीवार को फोड़ा; फिर अंधेरे में सामान को निकालकर, उनके देखते हुए अपने कंधे पर उठाए हुए चला गया। ८ सबै यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, ९ “हे मनुष्य के सन्तान, क्या इसाएल के घराने ने अर्थात् उस बलवा करनेवाले घराने ने तुझ से यह नहीं पछा, ‘यह तू क्या करता है?’ १० तू उनसे कह, ‘प्रभु यहोवा यह कहता है: यह प्रभावशाली वचन यस्शलेम के प्रधान पुस्त और इसाएल के सारे घराने के विषय में है जिसके बीच मैं वे रखते हैं।’ ११ तू उनसे कह, मैं तुम्हारे लिये चिन्ह हूँ, जैसा मैंने किया है, बैसा ही इसाएली लोगों से भी किया जाएगा; उनको उठकर बैंधुआई में जाना पड़ेगा।” १२ उनके बीच में जो प्रधान है, वह अंधेरे में अपने कंधे पर बोझ उठाए हुए निकलेगा; वह अपना सामान निकालने के लिये टीवार को फोड़ेगा, और अपना मुँह ढौंपे रहेगा कि उसको भूमि न देख पड़े। १३ और मैं उस पर अपना जाल फैलाऊँगा, और वह मेरे फंडे में फेसेगा; और मैं उसे कसादियों के देश के बाबेल में पहुँचा दूँगा; यद्यपि वह उस नगर में मर जाएगा, तो भी उसको न देखेगा। १४ जिनें उसके सहायक उसके आस-पास होंगे, उनको और उसकी सारी टोलियों को मैं सब दिशाओं में तिरत-बितर कर दूँगा; और तलवार खींचकर उनके पीछे चलवाऊँगा। १५ जब मैं उठै जाति-जाति में तिरत-बितर कर दूँगा, और देश-देश में छिन्न भिन्न कर दूँगा, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। १६ परन्तु मैं उनमें से थ्रेडे से लोगों को तलवार, भूख और मरी से बचा रखूँगा; और वे अपने धृणित काम उन जातियों में बखान करेंगे जिनके बीच मैं वे पहुँचेंगे; तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।” १७ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, १८ “हे मनुष्य के सन्तान, काँपते हुए अपनी रोटी खाना और थरथराते और चिन्ता करते हुए अपना पानी पीना; १९ और इस देश के लोगों से यह कहना, कि प्रभु यहोवा यस्शलेम और इसाएल के देश के निवासियों के विषय में यह कहता है, वे अपनी रोटी चिन्ता के साथ खाएँगे, और अपना पानी विस्मय के साथ पीएँगे; क्योंकि देश अपने सब रहनेवालों के उपद्रव के कारण अपनी सारी भरपूरी से रहत हो जाएगा। २० बसे हुए नगर उजड़ जाएँगे, और देश भी उजड़ हो जाएगा; तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ।” २१ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, २२ “हे मनुष्य के सन्तान यह क्या कहावत है जो तुम लोग इसाएल के देश में कहा करते हों, ‘दिन अधिक हो गए हैं, और दर्शन की कोई बात पूरी नहीं हुई?’ २३ इसलिए उनसे कह, ‘प्रभु यहोवा यह कहता है: मैं इस कहावत को बन्द करूँगा; और यह कहावत इसाएल पर फिर न चलेगी।’ और तू उनसे कह कि वह दिन निकट आ गया है, और दर्शन की सब बातें पूरी होने पर हैं। २४ क्योंकि इसाएल के घराने में न तो और अधिक झेठे दर्शन की कोई बात और न कोई चिकनी-चपड़ी बात फिर कही जाएगी। २५ क्योंकि मैं यहोवा हूँ; जब मैं बोलूँ, तब जो वचन मैं कहूँ, वह पूरा हो जाएगा। उसमें विलम्ब न होगा, परन्तु, हे बलवा करनेवाले घराने तुम्हारे ही

दिनों में मैं वचन कहूँगा, और वह पूरा हो जाएगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।” २६ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, २७ “हे मनुष्य के सन्तान, देख, इसाएल के घराने के लोग यह कह रहे हैं कि जो दर्शन वह देखता है, वह बहुत दिन के बाद पूरा होनेवाला है; और कि वह दूर के समय के विषय में भविष्यद्वाणी करता है। २८ इसलिए तू उनसे कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: मेरे किसी वचन के पूरा होने में पिर विलम्ब न होगा, बरन् जो वचन मैं कहूँ, वह निश्चय पूरा होगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।”

१३ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, १ “हे मनुष्य के सन्तान, इसाएल के जो भविष्यद्वत्ता अपने ही मन से भविष्यद्वाणी करते हैं, उनके विस्तृ भविष्यद्वाणी करके तू कह, ‘यहोवा का वचन सुनो।’ २ प्रभु यहोवा यह कहता है: हाय, उन मर्यू भविष्यद्वत्ताओं पर जो अपनी ही आत्मा के पीछे भटक जाते हैं, और कुछ दर्शन नहीं पाया! ३ है इसाएल, तैसे भविष्यद्वत्ता खण्डहरों में की लोमड़ियों के समान बने हैं। ४ तुम ने दरारों में चढ़कर इसाएल के घराने के लिये दीवार नहीं सुधारी, जिससे वे यहोवा के दिन यहू में स्थिर रह सकते। ५ वे लोग जो कहते हैं, ‘यहोवा की यह वाणी है,’ उन्होंने दर्शन का वर्य और झटा दावा किया है; और तब भी यह आशा दिलाई कि यहोवा यह वचन पूरा करेगा; तो भी यहोवा ने उन्हें नहीं भेजा। ६ क्या तुम्हारा दर्शन झटा नहीं है, और क्या तुम झटपूर भावी नहीं कहते? तुम कहते हो, ‘यहोवा की यह वाणी है,’ परन्तु मैंने कुछ नहीं कहा है।” ७ इस कारण प्रभु यहोवा तुम से यह कहता है: “तुम ने जो व्यर्थ बात कही और झटे दर्शन देखे हैं, इसलिए मैं तुम्हारे विस्तृ हूँ, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। ८ जो भविष्यद्वत्ता झटे दर्शन देखते और झटपूर भावी कहते हैं, मेरा हाथ उनके विस्तृ होगा, और वे मेरी प्रजा की माडली में भागी न होंगे, न उनके नाम इसाएल की नामाखली में लिखे जाएँगे, और न वे इसाएल के देश में प्रवेश करने पाएँगे; इससे तुम लोग जान लोगे कि मैं प्रभु यहोवा हूँ। ९ क्योंकि हाँ, क्योंकि उन्होंने ‘शानि है’, ऐसा कहकर मेरी प्रजा को बहकाया है जबकि शानि नहीं है, और इसलिए कि जब कोई दीवार बनाता है तब वे उसकी कच्ची पुताई करते हैं। १० उन कच्ची पुताई करनेवालों से कह कि वह गिर जाएगी। क्योंकि बड़े जोर की वर्षा होगी, और बड़े-बड़े आले भी पिंगेंगे, और प्रचण्ड और्धी उसे गिराएगी। ११ इसलिए जब दीवार गिर जाएगी, तब क्या लोग तुम से यह न कहेंगे कि जो पुताई तुम ने की वह कहाँ रही है? १२ इस कारण प्रभु यहोवा तुम से यह कहता है: मैं जलकर उसको प्रचण्ड और्धी के द्वारा गिराऊँगा; और मैं कोप से भारी वर्षा होगी, और मेरी जलजलाहट से बड़े-बड़े ओले पिंगेंगे कि दीवार को नाश करें। १३ इस रीति जिस दीवार पर तुम ने कच्ची पुताई की है, उसे मैं ढा दूँगा, बरन् मिट्ठी में मिलाऊँगा, और उसकी नींव खुल जाएगी; और जब वह गिरेगी, तब तुम भी उसके नीचे दबकर नाश होंगे; और तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। १४ इस रीति मैं दीवार और उसकी कच्ची पुताई करनेवाले दोनों पर अपनी जलजलाहट पूरी रीति से भड़काऊँगा; फिर तुम से कहूँगा, न तो दीवार रही, और न उसके लेसनेवाले रहे, १५ अर्थात् इसाएल के वे भविष्यद्वत्ता जो यस्शलेम के विषय में भविष्यद्वाणी करते और उनकी शानि का दर्शन बताते थे, परन्तु प्रभु यहोवा की यह वाणी है, कि शानि है ही नहीं। १६ “फिर हे मनुष्य के सन्तान, तू अपने लोगों की छियों से बिमुख होकर, जो अपने ही मन से भविष्यद्वाणी करती है; उनके विस्तृ भविष्यद्वाणी करके कह, १७ प्रभु यहोवा यह कहता है: जो छियों हाथ के सब जोड़ों के लिये तकिया सीती और प्राणियों का अहेर करने को सब प्रकार के मनुष्यों की आँख ढाँपने के लिये कपड़े बनाती हैं, उन पर हाय! क्या तुम मेरी प्रजा के प्राणों का अहेर करके

अपने निज प्राण बचा रखोगी? १९ तुम ने तो मुर्झी-मुर्झी भर जौ और रोटी के टुकड़ों के बदले मुझे मेरी प्रजा की दृष्टि में अपवित्र ठहराकर, और अपनी उन झूठी बातों के द्वारा, जो मेरी प्रजा के लोग तुम से सुनते हैं, जो नाश के योग्य न थे, उनको मार डाला; और जो बचने के योग्य न थे उन प्राणों को बचा रखा है। २० “इस कारण प्रभु यहोवा तुम से यह कहता है, देखो, मैं तुम्हारे उन तकियों के बिस्फू हूँ, जिनके द्वारा तुम प्राणों का अहर करती हो, इसलिए जिन्हें तुम अहर कर करके उड़ाती हो उनको मैं तुम्हारी बाँह पर से छीनकर उनको छुड़ा दूँगा। २१ मैं तुम्हारे सिर के बुर्के को फाढ़कर अपनी प्रजा के लोगों को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊँगा, और आगे को वे तुम्हारे वश में न रहेंगे कि तुम उनका अहर कर सको; तब तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूँ। २२ तुम ने जो झूठ कहकर धर्मी के मन को उदास किया है, यथपि मैंने उसको उदास करना नहीं चाहा, और तुम ने दृष्टि जन को हियाव बन्धाया है, ताकि वह अपने कुर्म मार्ग से न फिरे और जीवित रहे। २३ इस कारण तुम फिर न तो झूला दर्शन देखोगी, और न भावी कहोगी; क्योंकि मैं अपनी प्रजा को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊँगा। तब तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूँ।”

१४ फिर इसाएल के किनते पुरनिये मेरे पास आकर मेरे सामने बैठ गए।

१५ तब यहोवा का यह बचन मेरे पास पहुँचा, १ “हे मनुष्य के सन्तान, इन पुर्खों ने तो अपनी मूर्तयों अपने मन में स्थापित की, और अपने अधर्म की ठोकर अपने सामने रखी है; फिर क्या वे मुझसे कुछ भी पछड़ने पाएंगे? २ इसलिए तुमसे कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: इसाएल के घराने में से जो कोई अपनी मूर्तियाँ अपने मन में स्थापित करके, और अपने अधर्म की ठोकर अपने सामने रखकर भविष्यद्वत्ता के पास आए, उसका, मैं यहोवा, उसकी बहुत सी मूर्तयों के अनुसार ही उत्तर दूँगा, ३ जिससे इसाएल का घराना, जो अपनी मूर्तियाँ के द्वारा मुझे त्याग कर दूँ हो गया है, उन्हें मैं उन्हीं के मन के द्वारा फँसाऊँगा। ४ “इसलिए इसाएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: फिरो और अपनी मूर्तियों को पीठ के पीछे करो; और अपने सब घृणित कामों से मूँह मोडो। ५ क्योंकि इसाएल के घराने में से और उसके बीच रहनेवाले परदेशियों में से भी कोई क्यों न हो, जो मेरे पीछे हो लेना छोड़कर अपनी मूर्तियाँ अपने मन में स्थापित करे, और अपने अधर्म की ठोकर अपने सामने रखे, और तब मुझसे अपनी कोई बात पछने के लिये भविष्यद्वत्ता के पास आए, तो उसको मैं यहोवा आप ही उत्तर दूँगा। ६ मैं उस मनुष्य के विस्फू होकर उसको विस्तित करूँगा, और विन्ध ठहराऊँगा; और उसकी कहावत चलाऊँगा और उसे अपनी प्रजा में से नाश करूँगा; तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। ७ यदि भविष्यद्वत्ता ने धोखा खाकर कोई बचन कहा हो, तो जानो कि मुझ यहोवा ने उस भविष्यद्वत्ता को धोखा दिया है; और मैं अपना हाथ उसके विस्फू बढ़ाकर उसे अपनी प्रजा इसाएल में से नाश करूँगा। ८ वे सब लोग अपने-अपने अधर्म का बोझ उठाएँगे, अर्थात् जैसा भविष्यद्वत्ता से पछनेवाले का अर्थम ठहरेगा, वैसा ही भविष्यद्वत्ता का भी अर्थम ठहरेगा। ९ ताकि इसाएल का घराना आगे को मेरे पीछे हो लेना न छोड़े और न अपने भाँति-भाँति के अपराधों के द्वारा आगे को अशुद्ध बने; बरन वे मेरी प्रजा बने और मैं उनका परमेवर ठहरूँ, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।” १० तब यहोवा का यह बचन मेरे पास पहुँचा, ११ “हे मनुष्य के सन्तान, जब किसी देश के लोग मुझसे विश्वासघात करके पापी हो जाएँ, और मैं अपना हाथ उस देश के विस्फू बढ़ाकर उसका अन्नस्पी आधार दूर करूँ, और उसमें अकाल डालकर उसमें से मनुष्य और पशु दोनों को नाश करूँ, १२ तब चाहे उसमें नह, दानियेल और अर्यूब ये तीनों पुस्त हों, तो भी वे अपने धार्मिकता के द्वारा केवल अपने ही प्राणों को बचा सकेंगे; प्रभु यहोवा यही वाणी है। १३ यदि

मैं किसी देश में दृष्टि जन्तु भेजूँ जो उसको निर्जन करके उजाड़ कर डालें, और जन्तुओं के कारण कोई उसमें होकर न जाएँ, १४ तो चाहे उसमें वे तीन पुस्त हों, तो भी प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, न वे पुरों को और न पुत्रियों को बचा सकेंगे; परन्तु देश उजाड़ हो जाएगा। १५ यदि मैं उस देश पर तलवार खींचकर कहूँ, ‘हे तलवार उस देश में चल,’ और इस रीति मैं उसमें से मनुष्य और पशु नाश करूँ, १६ तब चाहे उसमें वे तीन पुस्त ही हों, तो भी प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, न तो वे पुरों को और न पुत्रियों को बचा सकेंगे, वे ही अकेले बचेंगे। १७ यदि मैं उस देश में मरी फैलाऊँ और उस पर अपनी जलजताहट भड़काकर उसका लह ऐसा बहाऊँ कि वहाँ के मनुष्य और पशु दोनों नाश हों, १८ तो चाहे नह, दानियेल और अर्यूब भी उसमें हों, तो भी, प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, वे न पुरों को और न पुत्रियों को बचा सकेंगे, अपने धार्मिकता के द्वारा वे केवल अपने ही प्राणों को बचा सकेंगे। १९ “क्योंकि प्रभु यहोवा यह कहता है: मैं यस्श्लेम पर अपने चारों दण्ड पहुँचाऊँगा, अर्थात् तलवार, अकाल, दृष्टि जन्तु और मरी, जिनसे मनुष्य और पशु सब उसमें से नाश हों। २० तो भी उसमें थोड़े से पुत्र-पुत्रियाँ बचेंगी जो वहाँ से निकलकर तुम्हारे पास पहुँचाई जाएँगी, और तुम उनके चाल चलन और कामों को देखकर उस विपत्ति के विषय में जो मैं यस्श्लेम पर डालूँगा, वरन् जितनी विपत्ति मैं उस पर डालूँगा, उस सब के विषय में शान्ति पाओगे। २१ जब तुम उनका चाल चलन और काम देखो, तब वे तुम्हारी शान्ति के कारण होंगे; और तुम जान लोगे कि मैंने यस्श्लेम में जो कुछ किया, वह बिना कारण नहीं किया, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।”

१५ फिर यहोवा का यह बचन मेरे पास पहुँचा, २ “हे मनुष्य के सन्तान, सब

वृक्षों में अंगूर की लता की क्या श्रेष्ठता है? अंगूर की शाखा जो जंगल के पेड़ों के बीच उत्पन्न होती है, उसमें क्या गुण है? ३ क्या कोई वस्तु बनाने के लिये उसमें से लकड़ी ली जाती, या कोई बर्तन टाँगेने के लिये उसमें से खेंटी बन सकती है? ४ वह तो ईंधन बनाकर आग में झोंकी जाती है; उसके दोनों सिरे आग से जल जाते, और उसके बीच का भाग भस्म हो जाता है, क्या वह किसी भी काम की है? ५ देख, जब वह बनी थी, तब भी वह किसी काम की न थी, फिर जब वह आग का ईंधन होकर भस्म हो गई है, तब किस काम की हो सकती है? ६ इसलिए प्रभु यहोवा यह कहता है, जैसे जंगल के पेड़ों में से मैं अंगूर की लता को आग का ईंधन कर देता हूँ, वैसे ही मैं यस्श्लेम के निवासियों को नाश कर दूँगा। ७ मैं उनके विस्फू होऊँगा, और वे एक आग में से निकलकर फिर दूसरी आग का ईंधन हो जाएँगे; और जब मैं उनसे विमुख होऊँगा, तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। ८ मैं उनका देश उजाड़ दूँगा, क्योंकि उन्होंने मुझसे विश्वासघात किया है, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।”

१६ फिर यहोवा का यह बचन मेरे पास पहुँचा, २ “हे मनुष्य के सन्तान,

यस्श्लेम को उसके सब घृणित काम जता दे, ३ और उससे कह, हे यस्श्लेम, प्रभु यहोवा तुम से यह कहता है: तेरा जन्म और तेरी उत्पत्ति कनानियों के देश से हुई; तेरा पिता तो एमोरी और तेरी माता हितिन थी। ४ तेरा जन्म ऐसे हुआ कि जिस दिन तू जन्मी, उस दिन न तेरा नाल कटा गया, न तू शुद्ध होने के लिये धोई गई, न तज्ज पर नमक मला गया और न तू कछ कपड़ों में लपेटी गई। ५ किसी की दयादृष्टि तुम पर नहीं हुई कि इन कामों में से तेरे लिये एक भी काम किया जाता; वरन् अपने जन्म के दिन तू धृष्टि होने के कारण खुले मैदान में फेंक दी गई थी। ६ “जब मैं तेरे पास से होकर

निकला, और तुझे लह में लोटते हुए देखा, तब मैंने तुझ से कहा, ‘हे लह में लोटती हुई जीवित रह,’ हाँ, तुझ ही से मैंने कहा, ‘हे लह में लोटती हुई, जीवित रह।’ ७ फिर मैंने तुझे खेत के पैदेह के समान बढ़ाया, और तू बढ़ते बढ़ते बड़ी हो गई और अति सुन्दर हो गई; तेरी छातियाँ सुडौल हुईं, और तेरे बाल बढ़े; तो भी तू नंगी थी। ८ ‘मैंने फिर तेरे पास से होकर जाते हुए तुझे देखा, और अब तू पूरी सी हो गई थी; इसलिए मैंने तुझे अपना वस्त्र आँढ़ाकर तेरा तन ढौप दिया, और सौन्ध खाकर तुझ से वाचा बाँधी और तू मेरी हो गई, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। ९ तब मैंने तुझे जल से नहलाकर तुझ पर से लह धो दिया, और तेरी देह पर तेल मला। १० फिर मैंने तुझे बूटेदार वस्त्र और सुझाए के चमड़े की जृतियाँ पहनाई, और तेरी कमर में सूक्ष्म सन बाँधा, और तुझे रेशमी कपड़ा ओढ़ाया। ११ तब मैंने तेरा शृंगार किया, और तेरे हाथों में चूड़ियाँ और गले में हार पहनाया। १२ फिर मैंने तेरी नाक में नथ और तेरे कानों में बालियाँ पहनाई, और तेरे सिर पर शोभायमान मुकुट धरा। १३ तेरे आभृषण से नंदी के और तेरे वस्त्र सूक्ष्म सन, रेशम और बूटेदार कपड़े के बने; फिर तेरा भोजन मैदा, मधु और तेल हुआ; और तू अत्यन्त सुन्दर, बरन रानी होने के योग्य हो गई। १४ तेरी सुन्दरता की कीर्ति अन्यजातियों में फैल गई, क्योंकि उस प्रताप के कारण, जो मैंने अपनी ओर से तुझे दिया था, तू अत्यन्त सुन्दर थी, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। १५ “परन्तु तू अपनी सुन्दरता पर भरोसा करके अपनी नामवरी के कारण व्यभिचार करने लगी, और सब यात्रियों के संग बहत कुर्कम किया, और जो कोई तुझे चाहता था तू उसी से मिलती थी। १६ तेरे अपने वस्त्र लेकर रंग-बिरंगे ऊँचे स्थान बना लिए, और उन पर व्यभिचार किया, ऐसे कुर्कम किए जो न कभी हुए और न होंगे। १७ तेरे अपने सुशोभित गहने लेकर जो मेरे दिए हुए सोने-चॉटी के थे, उनसे पुरुषों की मूरतें बना ली, और उनसे भी व्यभिचार करने लगी; १८ और अपने बूटेदार वस्त्र लेकर उनको पहनाए, और मेरा तेल और मेरा धूप उनके सामने चढ़ाया। १९ जो भोजन मैंने तुझे दिया था, अर्थात् जो मैदा, तेल और मधु में तुझे खिलाता था, वह सब तेरे उनके सामने सुखदायक सुगन्ध करके रखा; प्रभु यहोवा की यही वाणी है कि ऐसा ही हुआ। २० फिर तेरे अपने पुरु-पुत्रियाँ लेकर जिन्हें तेरे मेरे लिये जन्म दिया, उन मूरियों को बलिदान करके चढ़ाई। क्या तेरा व्यभिचार ऐसी छोटी बात थी; २१ कि तेरे मेरे बाल-बच्चे उन मूरियों के आगे आग में चढ़ाकर घाट किए हैं? २२ तेरे अपने सब धृष्टि कामों में और व्यभिचार करते हुए, अपने बचपन के दिनों की कभी सुधि न ली, जबकि तू नंगी अपने लह में लोटती थी। २३ “तेरी उस सारी बुराई के पीछे क्या हुआ? प्रभु यहोवा की यह वाणी है, हाय, तुझ पर हाय! २४ तेरे एक गुम्फट बनवा लिया, और हर एक चौक में एक ऊँचा स्थान बनवा लिया; २५ और एक-एक सङ्क के सिरे पर भी तेरे अपना ऊँचा स्थान बनवाकर अपनी सुन्दरता धृष्टि करा दी, और हर एक यात्री को कुर्कम के लिये खुलाकर महाव्यभिचारिणी हो गई। २६ तेरे अपने पड़ोसी मिसी लोगों से भी, जो मोटे-ताजे हैं, व्यभिचार किया और मझे क्रोध दिलाने के लिये अपना व्यभिचार बढ़ाती गई। २७ इस कारण मैंने अपना हाथ तेरे विस्तु बढ़ाकर, तेरा प्रतिदिन का खाना घटा दिया, और तेरी बैरिन पलिशित छियाँ जो तेरे महापाप की चाल से लजाती हैं, उनकी इच्छा पर मैंने तुझे छोड़ दिया है। २८ फिर भी तेरी तुष्णा न बुझी, इसलिए तेरे अशशूरी लोगों से भी व्यभिचार किया; और उनसे व्यभिचार करने पर भी तेरी तुष्णा न बुझी। २९ फिर तू लैन-देन के देश में व्यभिचार करते-करते कसदियों के देश तक पहुँची, और वहाँ भी तेरी तुष्णा न बुझी। ३० “प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि तेरा हृदय कैसा चंचल है कि तू ये सब काम करती है, जो निर्लज्ज वेश्या ही के काम है? ३१ तेरे हर एक सङ्क के सिरे पर जो अपना गुम्फट, और हर

चौक में अपना ऊँचा स्थान बनवाया है, क्या इसी में तू वेश्या के समान नहीं ठहरी? क्योंकि तू ऐसी कमाई पर हँसती है। ३२ तू व्यभिचारिणी पत्री है। ३३ पराए पुरुषों को अपने पति के बदले ग्रहण करती है। ३४ सब वेश्याओं को तो सम्या मिलता है, परन्तु तेरे अपने सब मित्रों को स्वयं स्पर्य देकर, और उनको लालच दिखाकर बुलाया है कि वे चारों ओर से आकर तुझ से व्यभिचार करें। ३५ इस प्रकार तेरा व्यभिचार अन्य व्यभिचारिणों से उलटा है। तेरे पीछे कोई व्यभिचारी नहीं चलता, और तू किसी से दाम लेती नहीं, बरन तू ही देती है; इसी कारण तू उलटी ठहरी। ३६ “इस कारण, हे वेश्या, यहोवा का वचन सुन, ३७ प्रभु यहोवा यह कहता है: तेरे जो व्यभिचार में अति निर्लज्ज होकर, अपनी देह अपने मित्रों को दिखाई, और अपनी मृतियों से धृष्टि काम किए, और अपने बच्चों का लह बहाकर उन्हें बलि चढ़ाया है, ३८ इस कारण देख, मैं तेरे सब मित्रों को जो तेरे प्रेमी हैं और जितनों से तेरे प्रति लगाई, और जितनों से तेरे बैर रखा, उन सभी को चारों ओर से तेरे विस्तु इक्षका कक्षे उनको तेरी देह नंगी करके दिखाऊँगा, और वे तेरा तन देखेंगे। ३९ तब मैं तुझको ऐसा दण्ड दौँगा, जैसा व्यभिचारिणियों और लह बहानेवाली छियों को दिया जाता है; और क्रोध और जलन के साथ तेरा लह बहाऊँगा। ४० इस रीति मैं तुझे उनके वश में कर दौँगा, और वे तेरे गुम्फटों को ढा देंगे, और तेरे ऊँचे स्थानों को तोड़ देंगे; वे तेरे वस्त्र जबरन उठाएंगे, और तेरे सुन्दर गहने छीन लेंगे, और तुझे नंगा करके छोड़ देंगे। ४१ तब तेरे विस्तु एक सभा इक्षकी करके वे तुझ पर पथराव करेंगे, और अपनी कटारों से आर-पार छेदेंगे। ४२ तब वे आग लगाकर तेरे घरों को जला देंगे, और तुझे बहुत सी छियों के देखते दण्ड देंगे; और मैं तेरा व्यभिचार बन्द करँगा, और तू फिर वेश्यावृत्ति के लिये दाम न देगी। ४३ जब मैं तुझ पर पूरी जलजलाहट प्रगट कर चूँगा, तब तुझ पर और उन जलाँगा वरन् शान्त हो जाऊँगा, और फिर क्रोध न करँगा। ४४ तेरे जो अपने बचपन के दिन स्मरण नहीं रखे, वरन् इन सब बातों के द्वारा मुझे चिढ़ाया; इस कारण मैं तेरा चाल चलन तैरे पर पूरी जलजलाहट प्रगट कर चूँगा, तब तुझ पर और न जलाँगा वरन् शान्त हो जाऊँगा, और फिर क्रोध न करँगा। ४५ तेरे जो अपने बचपन के दिन स्मरण नहीं रखे, वरन् इन सब बातों के द्वारा मुझे चिढ़ाया; इस कारण मैं तेरा चाल चलन तैरे पर डालूँगा और तू अपने सब पिछले धृष्टि कामों से और अधिक महापाप न करेंगी, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। ४६ “देख, सब कहावत कहेवाले तेरे विषय यह कह कहावत करेंगे, ‘जैसी माँ वैसी पुत्री।’” ४७ तेरी माँ जो अपने पति और बच्चों से धृष्टा करती थी, तू भी ठीक उसकी पुरी ठहरी; और तेरी बहनें जो अपने-अपने पति और बच्चों से धृष्टा करती थी, तू भी ठीक उनकी बहन निकलती। तेरी माता हितिन और पिता ऐसी थी। ४८ तेरी बड़ी बहन सामरिया है, जो अपनी पुत्रियों समेत तेरी बाई और रहती है, और तेरी छोटी बहन, जो तेरी दाहिनी ओर रहती है वह पुत्रियों समेत सदोम है। ४९ तू उनकी सी चाल नहीं चली, और न उनके से धृष्टि कामों ही से सन्तुर हुई; यह तो बहुत छोटी बात ठहरती, परन्तु तेरा सारा चाल चलन उनसे भी अधिक बिगड़ गया। ५० प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौन्ध व्यभिचारिणी, तेरी बहन सदोम ने अपनी पुत्रियों समेत तेरे और तेरी पुत्रियों के समान काम नहीं किए। ५१ देख, तेरी बहन सदोम का अर्धमय यह था, कि वह अपनी पुत्रियों सहित घमण्ड करती, पेट भर कर खाती और सुख चैन से रहती थी; और दीन दरिद्र को न सम्पालती थी। ५२ अतः वह गर्व करके मेरे सामने धृष्टि काम करने लगी, और यह देखकर मैंने उहें दूँ कर दिया। ५३ फिर सामरिया ने तेरे पापों के आधे भी पाप नहीं किए, तू तेरे तो उससे बढ़कर धृष्टि काम किए, और अपने घोर धृष्टि कामों के द्वारा अपनी बहनों से जीत गई। ५४ इसलिए तू तेरे जो अपनी बहनों का न्याय किया, इस कारण लजित हो, क्योंकि तू तेरे उनसे बढ़कर धृष्टि पाप किए हैं; इस कारण वे तुझ से कम दोषी ठहरी हैं। इसलिए तू इस बात से लज्जा कर और लजाती रह, क्योंकि तू तेरी बहनों को कम दोषी ठहराया है। ५५ “जब मैं उनको अर्थात् पुत्रियों सहित सदोम

और सामरिया को बैंधुआई से लौटा लाऊँगा, तब उनके बीच ही तेरे बन्दियों को भी लौटा लाऊँगा, ५४ जिससे तू लजानी रहे, और अपने सब कामों को देखकर लजाए, क्योंकि तू उनकी शान्ति ही का कारण हुई है। ५५ तेरी बहनें सदोम और सामरिया अपनी-अपनी पुत्रियों समेत अपनी पहली दशा को फिर पहुँचेंगी, और तू भी अपनी पुत्रियों सहित अपनी पहली दशा को फिर पहुँचेगी। ५६ जब तक तेरी बुआई प्रगट न हुई थी, अर्थात् जिस समय तक तू आस-पास के लोगों समेत अरामी और पलिशी छियों की जो अब चारों ओर से तुड़े तुच्छ जानती है, नामधाराई करती थी, ५७ उन अपने घण्टड के दिनों में तू भी अपनी बहन सदोम का नाम भी न लेती थी। ५८ परन्तु अब तुझको अपने महापाप और धृषिण कामों का भार आप ही उठाना पड़ा है, यहोवा की यही वाणी है। ५९ “प्रभु यहोवा यह कहता है: मैं तेरे साथ ऐसा ही बर्ताव करूँगा, जैसा तूसे किया है, क्योंकि तूने तो वाचा तोड़कर शपथ तुच्छ जानी है, ६० तो भी मैं तेरे बचपन के दिनों की अपनी वाचा स्मरण करूँगा, और तेरे साथ सदा की वाचा बाँधूँगा। ६१ जब तू अपनी बहनों को अर्थात् अपनी बड़ी और छोटी बहनों को ग्रहण करे, तब तू अपना चाल चलन स्मरण करके लजित होगी; और मैं उन्हें तेरी पुत्रियाँ ठहरा ढूँगा; परन्तु यह तेरी वाचा के अनुसार न करूँगा। ६२ मैं तेरे साथ अपनी वाचा स्थिर करूँगा, और तब तू जान लेगी कि मैं यहोवा हूँ, ६३ जिससे तू स्मरण करके लजित हो, और लज्जा के मारे फिर कभी मुँह न खोले। यह उस समय होगा, जब मैं तेरे सब कामों को ढाँपूँगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।”

१७ यहोवा का यह बचन मेरे पास पहुँचा, १ “हे मनुष्य के सन्तान, इसाएल के घराने से यह पहेली और दृष्टान्त कह, प्रभु यहोवा यह कहता है, ३ एक लम्बे पंखवाले, परों से भरे और रंग-बिरंगे बड़े उकाब पक्षी ने लबानोन जाकर एक देवदार की फुनगी नोच ली। ४ तब उसने उस फुनगी की सबसे ऊपर की पतली टहनी को तोड़ लिया, और उसे लेन-देन करनेवालों के देश में ले जाकर व्यापारियों के एक नगर में लगाया। ५ तब उसने देश का कुछ बीज लेकर एक उपजाऊ खेत में बोया, और उसे बहत जलामे स्थान में मजनू के समान लगाया। ६ वह उग्रकर छोटी फैलेवाली अंगू की लता हो गई जिसकी डालियाँ उसकी ओर झूकी, और उसकी जड उसके नीचे फैलतीं; इस प्रकार से वह अंगू की लता होकर कनखा फोड़ने और पतों से भरने लगी। ७ “फिर एक और लम्बे पंखवाला और परों से भरा हुआ बड़ा उकाब पक्षी था; और वह अंगू की लता उस स्थान से जहाँ वह लगाई गई थी, उस दूरे उकाब की ओर अपनी जड फैलाने और अपनी डालियाँ झुकने लगी कि वह उसे खीचा करे। ८ परन्तु वह तो इसलिए अच्छी भूमि में बहुत जल के पास लगाई गई थी, कि कनखाएँ फोड़े, और फले, और उत्तम अंगू की लता बने। ९ इसलिए तू यह कह, कि प्रभु यहोवा यह पूछता है: क्या वह फूले फलेगी? क्या वह उसको जड से न उखाड़ेगा, और उसके फलों को न झाड़ डालेगा कि वह अपनी सब हरी नई पतियों समेत सूख जाए? इसे जड से उखाड़ने के लिये अधिक बल और बहुत से मनुष्यों की आवश्यकता न होगी। १० चाहे, वह लगी भी रहे, तो भी क्या वह फूले फलेगी? जब पुरावाई उसे लगे, तब क्या वह बिलकुल सूख न जाएगी? वह तो जहाँ उर्गी है उसी क्यारी में सूख जाएगी।”

११ फिर यहोवा का यह बचन मेरे पास पहुँचा: “उस बलवा करनेवाले घराने से कह, १२ क्या तुम इन बातों का अर्थ नहीं समझते? फिर उनसे कह, बाबेल के राजा ने यस्सलेम को जाकर उसके राजा और प्रधानों को लेकर अपने यहाँ बाबेल में पहुँचाया। १३ तब राजवंश में से एक पुस्त को लेकर उससे वाचा बाँधी, और उसको वश में रहने की शपथ खिलाई, और देश के सामर्थी पुस्तों

को ले गया। १४ कि वह राज्य निर्बल रहे और सिर न उठा सके, वरन् वाचा पालने से स्थिर रहे। १५ तो भी इसने घोड़े और बड़ी सेना माँगने को अपने दूत मिस में भेजकर उससे बलवा किया। क्या वह फूले फलेगा? क्या ऐसे कामों का करनेवाला बचेगा? क्या वह अपनी वाचा तोड़ने पर भी बच जाएगा? १६ प्रभु यहोवा यह कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध, जिस राजा की खिलाई हुई शपथ उसने तुच्छ जानी, और जिसकी वाचा उसने तोड़ी, उसके यहाँ जिसने उसे राजा बनाया था, अर्थात् बाबेल में ही वह उसके पास ही मर जाएगा। १७ जब वे बहुत से प्राणियों को नाश करने के लिये दमदमा बांधे, और गढ़ बनाएँ, तब फिरैन अपनी बड़ी सेना और बहुतों की मण्डली रहते भी यहुँ में उसकी सहायता न करेगा। १८ क्योंकि उसने शपथ को तुच्छ जाना, और वाचा को तोड़ा; देखो, उसने बचन देने पर भी ऐसे-ऐसे काम किए हैं, इसलिए वह बचने न पाएगा। १९ प्रभु यहोवा यह कहता है: मेरे जीवन की सौगन्ध, उसने मेरी शपथ तुच्छ जानी, और मेरी वाचा तोड़ी है; यह पाप मैं उसी के सिर पर ढालूँगा। २० मैं अपना जाल उस पर फैलाऊँगा और वह मेरे फदे में फँसेगा; और मैं उसको बाबेल में पहुँचाकर उस विश्वासघात का मुकदमा उससे लड़ूँगा, जो उसने मुझसे किया है। २१ उसके सब दलों में से जितने भागों वे सब तलवार से मारे जाएँगे, और जो रह जाएँ वे चारों दिशाओं में तिरत-बितर हो जाएँगे। तब तम लोग जान लेगे कि मुझ यहोवा ही ने ऐसा कहा है।” २२ फिर प्रभु यहोवा यह कहता है: “मैं भी देवदार की ऊँची फुनगी में से कुछ लेकर लगाऊँगा, और उसकी सबसे ऊपरवाली कनखाओं में से एक कोमल कनखा तोड़कर एक अति ऊँचे पर्वत पर लगाऊँगा, २३ अर्थात् इसाएल के ऊँचे पर्वत पर लगाऊँगा; तब वह डालियाँ फोड़कर बलवन्त और उत्तम देवदार बन जाएगा, और उसके नीचे अर्थात् उसकी डालियों की छाया में भाँति-भाँति के सब पक्षी बसेरा करेंगे। २४ तब मैंदान के सब वृक्ष जान लेंगे कि मुझ यहोवा ही ने ऊँचे वृक्ष को नीचा और नीचे वृक्ष को ऊँचा किया, हरे वृक्ष को सखा दिया, और सूखे वृक्ष को हरा भरा कर दिया। मुझ यहोवा ही ने यह कहा और वैसा ही कर भी दिया है।”

१८ फिर यहोवा का यह बचन मेरे पास पहुँचा: २ “तुम लोग जो इसाएल के देश के विषय में यह कहावत कहते हो, ‘खट्टे अंगर खाए तो पिताओं ने, परन्तु दाँत खट्टे हुए बच्चों के।’ इसका क्या अर्थ है? ३ प्रभु यहोवा यह कहता है कि मेरे जीवन की शपथ, तुम को इसाएल में फिर यह कहावत कहने का अवसर न मिलेगा। ४ देखो, सभी के प्राण तो मेरे हैं; जैसा पिता का प्राण, वैसा ही उत्र का भी प्राण है; दोनों मेरे ही हैं। इसलिए जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा। ५ “जो कोई धर्मी हो, और न्याय और धर्म के काम करे, ६ और न तो पहाड़ों के पूजा स्थलों पर भोजन किया हो, न इसाएल के घराने की मूरतों की ओर आँखे उठाए हों; न पराइ झी को बिगाड़ा हो, और न क्रतुमती के पास गया हो, ७ और न किसी पर अंगैर किया हो वरन् क्रान्ती को उसकी बन्धक फेर दी हो, न किसी को लूटा हो, वरन् भाखे को अपनी रोटी दी हो और नंगे को कपड़ा ओढ़ाया हो, ८ न ब्याज पर स्पर्या दिया हो, न स्पर्ये की बढ़ती ली हो, और अपना हाथ कुट्टिल काम से रोका हो, मनुष्य के बीच सच्चाई से न्याय किया हो, ९ और मेरी विधियों पर चलता और मेरे नियमों को मानता हुआ सच्चाई से काम किया हो, ऐसा मनुष्य धर्मी है, वह निश्चय जीवित रहेगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। १० “परन्तु यदि उसका पुत्र डाकू, हत्यारा, या ऊपर कहे हुए पापों में से किसी का करनेवाला हो, ११ और ऊपर कहे हुए उचित कामों का करनेवाला न हो, और पहाड़ों के पूजा स्थलों पर भोजन किया हो, पराइ झी को बिगाड़ा हो, १२ दीन दरिद्र पर अंगैर किया हो, औरों को लूटा हो, बन्धक न लौटाई हो, मूरतों की ओर आँख उठाई हो,

धृषित काम किया हो, १३ ब्याज पर सप्ता दिया हो, और बढ़ती ली हो, तो क्या वह जीवित रहेगा? वह जीवित न रहेगा; इसलिए कि उसने ये सब धिनोंने काम किए हैं वह निश्चय मरेगा और उसका खून उसी के सिर पड़ेगा। १४ “फिर यदि ऐसे मनुष्य के पुत्र हों और वह अपने पिता के ये सब पाप देखकर भय के मारे उनके समान न करता हो। १५ अर्थात् न तो पहाड़ों के पूजा स्थलों पर भोजन किया हो, न इसाएल के घराने की मूरतों की ओर आँख उठाई हो, न पराईं की बिंगाड़ा हो, १६ न किसी पर अंधेर किया हो, न कुछ बन्धक लिया हो, न किसी को लटा हो, वरन् अपनी रोटी भूखे को दी हो, नगे को कपड़ा ओढ़ाया हो, १७ दीन जन की हानि करने से हाथ रोका हो, ब्याज और बढ़ती न ली हो, मेरे नियमों को माना हो, और मेरी विधियों पर चला हो, तो वह अपने पिता के अधर्म के कारण न मरेगा, वरन् जीवित ही रहेगा। १८ उसका पिता, जिसने अंधेर किया और लटा, और अपने भाइयों के बीच अनुचित काम किया है, वही अपने अधर्म के कारण मर जाएगा। १९ तो भी तुम लोग कहते हो, क्यों? क्या पुत्र पिता के अधर्म का भार नहीं उठात? जब पुत्र ने न्याय और धर्म के काम किए हों, और मेरी सब विधियों का पालन कर उन पर चला हो, तो वह जीवित ही रहेगा। २० जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का; धर्मी को अपने ही धार्मिकता का फल, और दृश्य को अपनी ही दृश्यता का फल मिलेगा। २१ परन्तु यदि दृश्य जन अपने सब पार्थों से फिरकर, मेरी सब विधियों का पालन करे और न्याय और धर्म के काम करे, तो वह न मरेगा; वरन् जीवित ही रहेगा। २२ उसने जिन्हें अपराध किए हों, उनमें से किसी का स्मरण उसके विश्वास न किया जाएगा; जो धार्मिकता का काम उसने किया हो, उसके कारण वह जीवित रहेगा। २३ प्रभु यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं दृश्य के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूँ? क्या मैं इससे प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे? २४ परन्तु जब धर्मी अपने धार्मिकता से फिरकर टेढ़े काम, वरन् दृश्य के सब धृषित कार्यों के अनुसार करने लगे, तो क्या वह जीवित रहेगा? जिन्हें धार्मिकता के काम उसने किए हों, उनमें से किसी का स्मरण न किया जाएगा। जो विश्वासघात और पाप उसने किया हो, उसके कारण वह मर जाएगा। २५ “तो भी तुम लोग कहते हो, ‘प्रभु की गति एक सी नहीं।’ हे इसाएल के घराने, देख, क्या मेरी गति एक सी नहीं? क्या तुम्हारी ही गति अनुचित नहीं है? २६ जब धर्मी अपने धार्मिकता से फिरकर, टेढ़े काम करने लगे, तो वह उनके कारण मरेगा, अर्थात् वह अपने टेढ़े काम ही के कारण मर जाएगा। २७ फिर जब दृश्य अपने दृश्य कार्यों से फिरकर, न्याय और धर्म के काम करने लगे, तो वह अपना प्राण बचाएगा। २८ वह जो सोच विचार कर अपने सब अपराधों से फिरा, इस कारण न मरेगा, जीवित ही रहेगा। २९ तो भी इसाएल का घराना कहता है कि प्रभु की गति एक सी नहीं। हे इसाएल के घराने, क्या मेरी गति एक सी नहीं? क्या तुम्हारी ही गति अनुचित नहीं? ३० “प्रभु यहोवा की यह वाणी है, हे इसाएल के घराने, मैं तुम मैं से हर एक मनुष्य का न्याय उसकी चाल चलन के अनुसार ही करूँगा। पश्चात्ताप करो और अपने सब अपराधों को छोड़ो, तभी तुम्हारा अधर्म तुम्हारे ठोकर खाने का कारण न होगा। ३१ अपने सब अपराधों को जो तुम ने किए हैं, दूर करो; अपना मन और अपनी आत्मा बदल डालो! हे इसाएल के घराने, तुम क्यों मरो? ३२ क्योंकि, प्रभु यहोवा की यह वाणी है, जो मेरे, उसके मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता, इसलिए पश्चात्ताप करो, तभी तुम जीवित रहेगे।”

११ “इसाएल के प्रधानों के विषय तू यह विलापगीत सना: : तेरी माता एक कैसी सिंहनी थी! वह सिंहों के बीच बैठा करती और अपने बच्चों को

जवान सिंहों के बीच पालती पोसती थी। ३ अपने बच्चों में से उसने एक को पाला और वह जवान सिंह हो गया, और अंदेर पकड़ना सीख गया; उसने मनुष्यों को भी फाड़ खाया। ४ जाति-जाति के लोगों ने उसकी चर्चा सुनी, और उसे अपने खोदे हुए गृह में फँसाया; और उसके नकेल डालकर उसे मिस्र देश में ले गए। ५ जब उसकी माँ ने देखा कि वह धीरज धेर रही तो भी उसकी आशा टूट गई, तब अपने एक और बच्चे को लेकर उसे जवान सिंह कर दिया। ६ तब वह जवान सिंह होकर सिंहों के बीच चलने फिरने लगा, और वह भी अंदेर पकड़ना सीख गया; और मनुष्यों को भी फाड़ खाया। ७ उसने उनके भवानों को बिंगाड़ा, और उनके नारों को उजाड़ा बरन उसके गरजने के डर के मारे देश और जो कुछ उसमें था सब उजड़ गया। ८ तब चारों ओर के जाति-जाति के लोग अपने-अपने प्रान्त से उसके विश्वदू निकल आए, और उसके लिये जाल लगाया, और वह उनके खोदे हुए गृह में फँस गया। ९ तब वे उसके नकेल डालकर और कठघरे में बन्द करके बाबेल के राजा के पास ले गए, और गढ़ में बन्द किया, कि उसका बोल इसाएल के पहाड़ी देश में फिर सुनाई न दे। १० “तेरी माता जिससे तू उत्पन्न हुआ, वह तट पर लगी हुई दाखलता के समान थी, और गहरे जल के कारण फलों और शाखाओं से भरी हुई थी। ११ प्रभुता करनेवालों के राजदण्डों के लिये उसमें मोटी-मोटी ठहनियाँ थीं; और उसकी ऊँचाई इनी हुई कि वह बादलों के बीच तक पहुँची; और अपनी बहुत सी डालियों समेत बहुत ही लम्बी दिखाई पड़ी। १२ तो भी वह जलजलाहट के साथ उखाड़कर भूमि पर गिराई गई, और उसके फल पुरावाई हवा के लगने से सूख गए; और उसकी मोटी ठहनियाँ टूटकर सूख गईं; और वे आग से भस्म हो गईं। १३ अब वह जगल में, वरन् निर्जल देश में लगाई गई है। १४ उसकी शाखाओं की ठहनियों में से आग निकली, जिससे उसके फल भस्म हो गए, और प्रभुता करने के योग्य राजदण्ड के लिये उसमें अब कोई मोटी ठहनी न रही।” यही विलापगीत है, और यह विलापगीत बना रहेगा।

२० सातवें वर्ष के पाँचवें महीने के दसवें दिन को इसाएल के किंतु पुरिये

यहोवा से प्रश्न करने को आए, और मैंने सामने बैठ गए। १ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: २ “हे मनुष्य के सन्तान, इसाएली पुरियों से यह कह, प्रभु यहोवा यह कहता है, क्या तुम मुझसे प्रश्न करने को आए हो? प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मैं जीवन की सौगन्ध, तुम मुझसे प्रश्न करने न पाओगे। ३ हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू उनका न्याय न करेगा? क्या तू उनका न्याय न करेगा? उनके पुराखाओं के यिनौने काम उन्हें जता दे, ४ और उनसे कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: जिस दिन मैंने इसाएल को चुन लिया, और याकूब के घराने के वंश से शपथ खाई, और मिस्र देश में अपने को उन पर प्रगट किया, और उनसे शपथ खाकर कहा, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, ५ तरी दिन मैंने उनसे यह भी शपथ खाई, कि मैं तुम को मिस्र देश से निकालकर एक देश में पहुँचाऊँगा, जिसे मैंने तुम्हारे लिये चुन लिया है; वह सब देशों का शिरोमणि है, और उसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं। ६ फिर मैंने उनसे कहा, जिन यिनौनी बस्तुओं पर तुम मैं से हर एक की आँखें लगाई हैं, उन्हें फेंक दो; और मिस्र की मूरतों से अपने को अशदू न करो; मैं ही तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। ७ परन्तु वे मुझसे बिगड़ गए और मेरी सुननी न चाही; जिन यिनौनी बस्तुओं पर उनकी आँखें लगी थीं, उनको किसी ने फेंका नहीं, और न मिस्र की मूरतों को छोड़ा। “तब मैंने कहा, मैं यहीं, मिस्र देश के बीच तुम पर अपनी जलजलाहट भड़काऊँगा। और पूरा कोप दिखाऊँगा। ९ तो भी मैंने अपने नाम के निमित्त ऐसा किया कि जिनके बीच वे थे, और जिनके देखते हुए मैंने उनको मिस्र देश से निकलने के लिये अपने को उन पर प्रगट किया

था उन जातियों के सामने वे अपवित्र न ठहरे। १० मैं उनको मिस्स देश से निकलकर जंगल में ले आया। ११ वहाँ उनको मैंने अपनी विधियाँ बताई और अपने नियम भी बताए कि जो मनुष्य उनको माने, वह उनके कारण जीवित रहेगा। १२ फिर मैंने उनके लिये अपने विश्वामित्र ठहराए जो मेरे और उनके बीच चिन्ह ठहरें; कि वे जाने कि मैं यहोवा उनका पवित्र करनेवाला हूँ। १३ तो भी इसाएल के घराने ने जंगल में मुझसे बलवा किया; वे मेरी विधियों पर न चले, और मेरे नियमों को तुच्छ जाना, जिन्हें यदि मनुष्य माने तो वह उनके कारण जीवित रहेगा; और उन्होंने मैंने विश्वामित्रों को अति अपवित्र किया। “तब मैंने कहा, मैं जंगल में इन पर अपनी जलजलाहट भड़काकर इनका अन्त कर डालूँगा। १४ परन्तु मैंने अपने नाम के निमित्त ऐसा किया कि वे उन जातियों के सामने, जिनके देखते मैं उनको निकाल लाया था, अपवित्र न ठहरे। १५ फिर मैंने जंगल में उनसे शपथ खाई कि जो देश मैंने उनको दे दिया, और जो सब देशों का शिरोमणि है, जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, उसमें उन्हें न पहुँचाऊँगा, १६ क्योंकि उन्होंने मेरे नियम तुच्छ जाने और मेरी विधियों पर न चले, और मेरे विश्वामित्र अपवित्र किए थे; इसलिए कि उनका मन उनकी मूरतों की ओर लगा रहा। १७ तो भी मैंने उन पर कृपा की दृष्टि की, और उन्हें नाश न किया, और न जंगल में पौरी रीति से उनका अन्त कर डाला। १८ “फिर मैंने जंगल में उनकी सन्तान से कहा, अपने पुराखाओं की विधियों पर न चलो, न उनकी रीतियों को मानो और न उनकी मूरतें पूजकर अपने को अशद्ग करो। १९ मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, मेरी विधियों पर चलो, और मेरे नियमों के मानने में चौकसी करो, २० और मेरे विश्वामित्रों को पवित्र मानो कि वे मेरे और तुम्हारे बीच चिन्ह ठहरे, और जिससे तुम जानो कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। २१ परन्तु उनकी सन्तान ने भी मुझसे बलवा किया; वे मेरी विधियों पर न चले, न मेरे नियमों के मानने में चौकसी की; जिन्हें यदि मनुष्य माने तो वह उनके कारण जीवित रहेगा; मेरे विश्वामित्रों को अपवित्र किया। “तब मैंने कहा, मैं जंगल में उन पर अपनी जलजलाहट भड़काकर अपना कोप दिखाऊँगा। २२ तो भी मैंने हाथ खीच लिया, और अपने नाम के निमित्त ऐसा किया, कि उन जातियों के सामने जिनके देखते हुए मैं उन्हें निकाल लाया था, वे अपवित्र न ठहरे। २३ फिर मैंने जंगल में उनसे शपथ खाई, कि मैं तुम्हें जाति-जाति में तितर-बितर कहसूँगा, और देश-देश में छितरा दूँगा, २४ क्योंकि उन्होंने मेरे नियम न माने, मेरी विधियों को तुच्छ जाना, मेरे विश्वामित्रों को अपवित्र किया, और अपने पुराखाओं की मूरतों की ओर उनकी आँखें लगी रही। २५ फिर मैंने उनके लिये ऐसी-ऐसी विधियाँ ठहराई जो अच्छी न थी और ऐसी-ऐसी रीतियाँ जिनके कारण वे जीवित न रह सके; २६ अर्थात् वे अपने सब पहिलौठों को आग में होम करने लगे; इस रीति मैंने उन्हें उहीं की भेटों के द्वारा अशद्ग किया जिससे उन्हें निर्वश कर डालूँ; और तब वे जान ले कि मैं यहोवा हूँ। २७ “हे मनुष्य के सन्तान, तू इसाएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: तुम्हरे पुराखाओं ने इसमें भी मेरी निन्दा की कि उन्होंने मेरा विष्वासघात किया। २८ क्योंकि जब मैंने उनको उस देश में पहुँचाया, जिसे उन्हें देने की शपथ मैंने उनसे खाई थी, तब वे हर एक ३५ ऊँचे टीले और हर एक घने वृक्ष पर दृष्टि करके वहीं अपने मेलबलि करने लगे; और वहीं रिस दिलानेवाली अपनी भेटें चढ़ाने लगे और वहीं अपना सुखदायक सुनान्ध-दब्य जलाने लगे, और वहीं अपने तपावन देने लगे। २९ तब मैंने उनसे पूछा, जिस ऊँचे स्थान को तुम लोग जाते हो, उससे क्या प्रयोजन है? इसी से उसका नाम अज तक बामा कहलाता है। ३० इसलिए इसाएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा तुम से यह पूछता है: क्या तुम भी अपने पुराखाओं की रीति पर चलकर अशद्ग होकर, और उनके धिनौने कार्यों के अनुसार

व्यभिचारिणी के समान काम करते हो? ३१ आज तक जब जब तुम अपनी भेटें चढ़ाते और अपने बाल-बच्चों को होम करके आग में चढ़ाते हो, तब-तब तुम अपनी मूरतों के कारण अशद्ग ठहरते हो। हे इसाएल के घराने, क्या तुम मुझसे पूछने पाओगे? प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की शपथ तुम मुझसे पूछने न पाओगे। ३२ “जो बात तुम्हरे मन में आती है, ‘हम काठ और पत्थर के उपासक होकर अन्यजातियों और देश-देश के कुलों के समान हो जाएँगे,’ वह किसी भौति पूरी नहीं होने की। ३३ “प्रभु यहोवा यह कहता है, मेरे जीवन की शपथ मैं निश्चय बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से, और भड़काई हुई जलजलाहट के साथ तुम्हारे ऊपर राज्य करसूँगा। ३४ मैं बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से, और भड़काई हुई जलजलाहट के साथ तुम्हें देश-देश के लोगों में से अलग कहसूँगा, और उन देशों से जिनमें तुम तितर-बितर हो गए थे, इक्षत कहसूँगा; ३५ और मैं तुम्हें देश-देश के लोगों के जंगल में ले जाकर, वहाँ आमने-सामने तुम से मुकदमा लड़ूँगा। ३६ जिस प्रकार मैं तुम्हारे पूर्वजों से मिस्त्र-स्पी जंगल में मुकदमा लड़ता था, उसी प्रकार तुम से मुकदमा लड़ूँगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। ३७ “मैं तुम्हें लाठी के तले चलाऊँगा। और तुम्हें बाचा के बन्धन में डालूँगा। ३८ मैं तुम में से सब विद्रोहियों को निकलकर जो मेरा अपराध करते हैं; तुम्हें शूद्र कहसूँगा; और जिस देश में वे टिकते हैं उसमें से मैं उन्हें निकाल दूँगा; परन्तु इसाएल के देश में घुसने न दूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। ३९ “हे इसाएल के घराने तुम से तो प्रभु यहोवा यह कहता है: जाकर अपनी-अपनी मूरतों की उपासना करो; और यदि तुम मेरी न सुनेगे, तो आगे को भी यही किया करो; परन्तु मेरे पवित्र नाम को अपनी भेटों और मूरतों के द्वारा फिर अपवित्र न करना। ४० “क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि इसाएल का सारा धराना अपने देश में मेरे पवित्र पर्वत पर, इसाएल के ऊँचे पर्वत पर, सब का सब मेरी उपासना करेगा; वही मैं उनसे प्रसन्न होऊँगा, और वही मैं तुम्हारी उठाई हुई भेटें और चढ़ाई हुई उत्तम-उत्तम बस्तुएँ, और तुम्हारी सब पवित्र की हुई बस्तुएँ तुम से लिया करसूँगा। ४१ जब मैं तुम्हें देश-देश के लोगों में से अलग कहसूँगा, और उन देशों से जिनमें तुम तितर-बितर हो गए हो, इक्षत कहसूँगा, तब तुम को सुखदायक सुनान्ध जानकर ग्रहण करसूँगा, और अन्यजातियों के सामने तुम्हारे द्वारा पवित्र ठहराया जाऊँगा। ४२ जब मैं तुम्हें इसाएल के देश में पहुँचाऊँगा, जिसके देने की शपथ मैंने तुम्हारे पूर्वजों से खाली थी, तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ, प्रभु यहोवा हूँ। ४३ वहाँ तुम अपनी चाल चलन और अपने सब कार्यों को जिनके करने से तुम अशद्ग हो गए हो स्मरण करोगे, और अपने सब ब्लैर कार्यों के कारण अपनी दृष्टि में धिनौने ठहरोगे। ४४ हे इसाएल के घराने, जब मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे ब्लैर चाल चलन करूँगा, और बिगड़े हए कार्यों के अनुसार नहीं, परन्तु अपने ही नाम के निमित्त बर्दाव करूँगा, तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।” ४५ यहोवा का यह वचन मेरा पास पहुँचा: ४६ “हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुख दक्षिण की ओर कर, दक्षिण की ओर वचन सुना, और दक्षिण देश के बन के विषय में भविष्यद्वाणी कर; ४७ और दक्षिण देश के बन से कह, यहोवा का यह वचन सुन, प्रभु यहोवा यह कहता है, मैं तुझ में आग लगाऊँगा, और तुझ में क्या हो, क्या सूखे, जितने पेड हैं, सब को वह भस्म करेगी; उसकी धधकती ज्वाला न बुझेगी, और उसके कारण दक्षिण से उत्तर तक सब के मुख झुलस जाएँगे। ४८ तब सब प्राणियों को सूझ पड़ेगा कि यह आग यहोवा की लगाई हुई है; और वह कभी न बुझेगी।” ४९ तब मैंने कहा, “हाय परमेश्वर यहोवा! लोग तो मेरे विषय में कहा करते हैं कि क्या वह दृष्टान्त ही का कहनेवाला नहीं है?”

२१ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा १ “हे मनुष्य के सन्तान, अपना

मुख यस्श्लेम की ओर कर और पवित्रस्थानों की ओर वचन सुना; इसाएल देश के विषय में भविष्यद्वाणी कर और उससे कह, २ प्रभु यहोवा यह कहता है, देख, मैं तेरे विस्तु हूँ, और अपनी तलवार म्यान में से खींचकर तुझ में से धर्मी और अधर्मी दोनों को नाश करूँगा। ३ इसलिए कि मैं तुझ में से धर्मी और अधर्मी सब को नाश करनेवाला हूँ, इस कारण मेरी तलवार म्यान से निकलकर दक्षिण से उत्तर तक सब प्राप्तियों के विस्तु चलेगी; ४ तब सब प्राप्ति जान लेंगे कि यहोवा ने म्यान में से अपनी तलवार खींची है; और वह उसमें फिर रखी न जाएगी। ५ इसलिए हे मनुष्य के सन्तान, तू आह मार, भारी खेद कर, और टटी कमर लेकर लोगों के सामने आह मार। ६ जब वे तुझ से पैछें, ‘तू क्यों आह मारता है’, तब कहना, ‘समाचार के कारण। क्योंकि ऐसी बात आनेवाली है कि सब के मन टूट जाएंगे और सब के हाथ ढीले पड़ेंगे, सब की आत्मा बेबस और सब के घृतने निर्वाह हो जाएंगे। देखो, ऐसी ही बात आनेवाली है, और वह अवश्य पूरी होगी,’” परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। ७ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, ८ “हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है, देख, सान चढाई हुई तलवार, और झलकाई हुई तलवार! ९ वह इसलिए सान चढाई गई कि उससे घात किया जाए, और इसलिए झलकाई गई कि बिजली के समान चमकें। तो क्या हम हरिंत हो? वह तो यहोवा के पुत्र का गजटण्ड है और सब पेड़ों को तुच्छ जानेवाला है। १० वह झलकाने को इसलिए दी गई कि हाथ में ली जाए; वह इसलिए सान चढाई और झलकाई गई कि घात करनेवालों के हाथ में दी जाए। ११ हे मनुष्य के सन्तान चिल्ला, और हाय, हाय, कर! क्योंकि वह मेरी प्रजा पर चलने वाली है, वह इसाएल के सारे प्रधानों पर चलने वाली है; मेरी प्रजा के संग वे भी तलवार के वश में आ गए। इस कारण तू अपनी छाती पीट। १२ क्योंकि सचमुच उसकी जाँच हुई है, और यदि उसे तुच्छ जानेवाला राजदण्ड भी न रहे, तो क्या? परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १३ “इसलिए हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी कर, और हाथ पर हाथ दे मार, और तीन बार तलवार का बल दुनान किया जाए; वह तो घात करने की तलवार बरन बड़े से बड़े के घात करने की तलवार है, जिससे कोठरियों में भी कोई नहीं बच सकता। १४ मैंने घात करनेवाली तलवार को उनके सब फाटकों के विस्तु इसलिए चलाया है कि लोगों के मन टूट जाएँ, और वे बहुत ठोकर खाएँ। हाय, हाय! वह तो बिजली के समान बनाई गई, और घात करने को सान चढाई गई है। १५ सिंकड़कर दाहिनी ओर जा, फिर तैयार होकर बाई और मुड़, जिधर भी तेरा मुख हो। १६ मैं भी ताली बजाऊँगा और अपनी जलजलाहट की ठंडा करूँगा, मुझ यहोवा ने ऐसा कहा है।” १७ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: १८ “हे मनुष्य के सन्तान, दो मार्ग ठहरा ले कि बाबेल के राजा की तलवार आएँ, दोनों मार्ग एक ही देश से निकलें। फिर एक चिन्ह कर, अर्थात् नगर के मार्ग के सिर पर एक चिन्ह कर; १९ एक मार्ग ठहरा कि तलवार अम्मोनियों के बब्लाह नगर पर, और यहदा देश के गढ़वाले नगर यस्श्लेम पर भी चले। २० क्योंकि बाबेल का राजा चौराहे अर्थात् दोनों मार्गों के निकलने के स्थान पर भावी बझने को खड़ा हुआ है, उसने तीरों को हिला दिया, और गृहदेवताओं से प्रश्न किया, और कलेजे को भी देखा। २१ उसके दाहिनी हाथ में यस्श्लेम का नाम है कि वह उसकी ओर यहुद के यन्त्र लगाए, और गला फाइकर घात करने की आज्ञा दे और ऊँचे शब्द से ललकारे, फाटकों की ओर यहुद के यन्त्र लगाए और दमदमा बांधे और कोट बाना। २२ परन्तु लोग तो उस भावी कहने को मिथ्या समझेंगे, उन्होंने जो उनकी शपथ खाई है, इस कारण वह उनके अर्धम का स्मरण कराकर उन्हे

पकड़ लेगा। २३ “इस कारण प्रभु यहोवा यह कहता है: इसलिए कि तुम्हारा अर्धम जो स्मरण किया गया है, और तुम्हारे अपराध जो खुल गए हैं, क्योंकि तुम्हारे सब कामों में पाप ही पाप दिखाई पड़ा है, और तुम स्मरण में आए हो, इसलिए तुम उन्हीं से पकड़े जाओगे। २४ हे इसाएल दुष्प्रधान, तेरा दिन आ गया है; अर्धम के अन्त का समय पहुँच गया है। २५ तेरे विषय में परमेश्वर यहोवा यह कहता है: पांडी उतार, और मुकुट भी उतार दे, वह ज्यों का त्यों नहीं रहने का; जो नीचा है उसे ऊँचा कर और जो ऊँचा है उसे नीचा कर। २६ मैं इसको उलट दृঁगा और उलट-पुलट कर दृঁगा; हाँ उलट दृঁগা और जब तक उसका अधिकारी न आए तब तक वह उलटा हुआ रहेगा; तब मैं उसे दे दृঁগा। २७ “फिर हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके कह कि प्रभु यहोवा अम्मोनियों और उनकी की हुई नामधाराई के विषय में यह कहता है; तू कह, खींची हुई तलवार है, वह तलवार घात के लिये झलकाई हुई है कि नाश करे और बिजली के समान हो। २८ जब तक कि वे तेरे विषय में झूँठे दर्शन पाते, और झूँठे भावी तुझको बताते हैं कि तू उन दुष्असाध्य घायलों की गर्दनों पर पड़े जिनका दिन आ गया, और जिनके अर्धम के अन्त का समय आ पहुँचा है। २९ उसको म्यान में फिर रख। जिस स्थान में तू सिरजी गई और जिस देश में तेरी उत्पत्ति हुई, उसी में मैं तेरा न्याय करूँगा। ३० मैं तुझ पर अपना क्रोध भड़काऊँगा और तुझ पर अपनी जलजलाहट की आग फूँक दृঁগা; और तुझे पशु सरीखे मनुष्य के हाथ कर दृঁগা जो नाश करने में निषुण है। ३१ तू आग का कौर होगी, तेरा खन देश में बना रहेगा; तू स्मरण में न रहेगी क्योंकि मुझ यहोवा ही ने ऐसा कहा है।”

२२ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: १ “हे मनुष्य के सन्तान, क्या

तू उस हत्यारे नगर का न्याय न करेगा? क्या तू उसका न्याय न करेगा? उसको उसके सब धिनौने काम बता दे, २ और कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हे नगर तू अपने बीच में हत्या करता है जिससे तेरा समय आए, और अपनी ही हानि करने और अशुद्ध होने के लिये मूर्ते बनाता है। ३ जो हत्या तूने की है, उससे तू दोषी ठहरी, और जो मूर्ते तूने बनाई है, उनके कारण तू अशुद्ध हो गई है; तूने अपने अन्त के दिन को समीप कर लिया, और अपने पिछले वर्षों तक पहुँच गई है। इस कारण मैंने तुझे जाति-जाति के लोगों की ओर से नामधाराई का और सब देशों के ठहरे का कारण कर दिया है। ४ हे बदनाम, हे हुल्लड से भेर हए नगर, जो निकट और जो दूर है, वे सब तुझे उपहास में उड़ाएँगे। ५ “देख, इसाएल के प्रधान लोग अपने-अपने बल के अनुसार तुझ में हत्या करनेवाले हुए हैं। ६ तुझ में माता-पिता तुच्छ जाने गए हैं, तेरे बीच परदेशी पर अंधेर किया गया; और अनाथ और विधवा तुझ में पीसी गई हैं। ७ तूने मेरी पवित्र वस्तुओं को तुच्छ जाना, और मेरे विश्वामित्रों को अपवित्र किया है। ८ तुझ में लुच्चे लोग हत्या करने को तो तपर हुए, और तेरे लोगों ने पहाड़ों पर भोजन किया है, तेरे बीच महापाप किया गया है। ९ तुझ में पिता की देह उठाई गई; तुझ में क्रतुमती झी से भी भोग किया गया है। १० किसी ने तुझ में पडोसी की झी के साथ धिनौना काम किया; और किसी ने अपनी बह को बिगाड़कर महापाप किया है, और किसी ने अपनी बहन अर्थात् अपने पिता की बेटी को भ्रष्ट किया है। ११ तुझ में विद्युत उठाई गई है, और किसी ने धूस ली है, तेरे ब्याज और सद लिया और अपने पडोसियों को पीस-पीसकर अन्याय से लाभ उठाया; और मुझ को तूने भला दिया है, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। १२ “इसलिए देख, जो लाभ तुमे अन्याय से उठाया और अपने बीच हत्या की है, उससे मैं तेरा हाथ पर हाथ दे मारा है। १३ अतः जिन दिनों में तेरा न्याय करूँगा, क्या उनमें तेरा हदय दृढ़ और तेरे हाथ स्थिर रह सकेंगे? मुझ

यहोवा ने यह कहा है, और ऐसा ही कहना। १५ मैं तेरे लोगों को जाति-जाति में वितर-बितर करूँगा, और देश-देश में छितरा दूँगा, और तेरी अशुद्धता को तुझ में से नाश करूँगा। १६ तू जाति-जाति के देखते हुए अपनी ही दृष्टि में अपवित्र ठहरेगी; तब तू जान लेगी कि मैं यहोवा हूँ।^{१७} फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: १८ “हे मनुष्य के सन्तान, इसाएल का घराना मेरी दृष्टि में धातु का मैल हो गया है; वे सब के सब भर्ती के बीच के पीतल और रोंगे और लोहे और शीरों के समान बन गए; वे चाँदी के मैल के समान हो गए हैं। १९ इस कारण प्रभु यहोवा उनसे यह कहता है: इसलिए कि तुम सब के सब धातु के मैल के समान बन गए हो, अतः देखो, मैं तुम को यस्सलेम के भीतर इकट्ठा करने पर हूँ। २० जैसे लोग चाँदी, पीतल, लोहा, शीशा, और रँगा इसलिए भर्ती के भीतर बटोरकर रखते हैं कि उन्हें आग फूँककर पिघलाइए, वैसे ही मैं तुम को अपने कोप और जलजलाहट से इकट्ठा करके वहीं रखकर पिघला दूँगा। २१ मैं तुम को वहाँ बटोरकर अपने रोप की आग से फूँकँगा, और तुम उसके बीच पिघलाए जाओगे। २२ जैसे चाँदी भर्ती के बीच में पिघलाइ जाती है, वैसे ही तुम उसके बीच में पिघलाए जाओगे; तब तुम जान लोगे कि जिसने हम पर अपनी जलजलाहट भड़काई है, वह यहोवा है।” २३ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: २४ “हे मनुष्य के सन्तान, उस देश से कह, तू ऐसा देश है जो शुद्ध नहीं हुआ, और जलजलाहट के दिन में तुझ पर वर्षा नहीं हुई; २५ तेरे भविष्यद्वत्कारों ने तुझ में राजदोह की गोष्ठी की, उन्होंने गरजेवाले सिंह के समान अहेर पकड़ा और प्राणियों को खा डाला है; वे रखे हुए अनमोल धन को छीन लेते हैं, और तुझ में बहुत खियों को विधवा कर दिया है। २६ उसके याजकों ने मेरी व्यवस्था का अर्थ खीच-खांचकर लगाया है, और मेरी पवित्र वस्तुओं को अपवित्र किया है; उन्होंने पवित्र-अपवित्र का कुछ भेद नहीं माना, और न औरों को शुद्ध-अशुद्ध का भेद सिखाया है, और वे मेरे विश्वामिदों के विषय में निश्चिन्त रहते हैं, जिससे मैं उनके बीच अपवित्र ठहरता हूँ। २७ उसके प्रधान भेड़ियों के समान अहेर पकड़ते, और अन्यथा से लाभ उठाने के लिये हत्या करते हैं और प्राण घात करने को तपर रहते हैं। २८ उसके भविष्यद्वत्का उनके लिये कच्ची पुताई करते हैं, उनका दर्शन पाना मिथ्या है, यहोवा के बिना कुछ कहे भी के यह कहकर झूठी भावी बताते हैं कि ‘प्रभु यहोवा यह कहता है।’ २९ देश के साधारण लोग भी अधेर करते और पराया धन छीनते हैं, वे दीन दीरपु को पीसते और न्याय की चिन्ता छोड़कर परदेशी पर अधेर करते हैं। ३० मैंने उनमें ऐसा मनुष्य ढूँढ़ना चाहा जो बाड़े को सुधारें और देश के निमित्त नाके में मेरे सामने ऐसा खड़ा हो कि मुझे उसको नाश न करना पड़े, परन्तु ऐसा कोई न मिला। ३१ इस कारण मैंने उन पर अपना रोप भड़काया और अपनी जलजलाहट की आग से उन्हें भस्म कर दिया है, मैंने उनकी चाल उन्हीं के सिर पर लौटा दी है, परमेश्वर यहोवा की यही वार्षी है।”

२३ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: २ “हे मनुष्य के सन्तान, तू खियाँ थीं, जो एक ही मौं की बेटी थीं। ३ वे अपने बचपन ही में वेश्या का काम मिथ्स में करने लगी; उनकी छातियाँ कुँवरेपन में पहले वही मीजी गई और उनका मरदन भी हुआ। ४ उन लड़कियों में से बड़ी का नाम ओहोला और उसकी बहन का नाम ओहोलीबा था। वे मेरी ही गई, और उनके पुनरपुत्रियाँ उत्पन्न हुईं। उनके नामों में से ओहोला तो सामरिया, और ओहोलीबा यस्सलेम है। ५ “ओहोला जब मेरी थी, तब ही व्यभिचारिणी होकर अपने मित्रों पर मोहित होने लगी जो उसके पडोसी अशशी थे। ६ वे तो सब के सब नीले वन्धु पहननेवाले मनभावने जवान, अधिपति और प्रधान थे, और घोड़ों पर सवार थे। ७ इसलिए उसने उन्हीं के साथ व्यभिचार किया जो सब के

सब सर्वोत्तम अशशी थे; और जिस किसी पर वह मोहित हुई, उसी की मूरतों से वह अशुद्ध हुई। ८ जो व्यभिचार उसने मिथ्स में सीखा था, उसको भी उसने न छोड़ा; क्योंकि बचपन में मनुष्यों ने उसके साथ कर्कम किया, और उसकी छातियाँ मीजी, और तन-मन से उसके साथ व्यभिचार किया गया था। ९ इस कारण मैंने उसको उन्हीं अशशी मित्रों के हाथ कर दिया जिन पर वह मोहित हुई थी। १० उन्होंने उसको नंगी किया; उसके पुनर-पुत्रियाँ छीनकर उसको तलवार से घात किया; इस प्रकार उनके हाथ से डण्ड पाकर वह खियों में प्रसिद्ध हो गई। ११ “उसकी बहन ओहोलीबा ने यह देखा, तो भी वह मोहित होकर व्यभिचार करने में अपनी बहन से भी अधिक बढ़ गई। १२ वह अपने अशशी पडोसियों पर मोहित होती थी, जो सब के सब अति सुन्दर वन्धु पहननेवाले और घोड़ों के सवार मनभावने, जवान अधिपति और सब प्रकार के प्रधान थे। १३ तब मैंने देखा कि वह भी अशुद्ध हो गई, उन दोनों बहनों की एक ही चाल थी। १४ परन्तु ओहोलीबा अधिक व्यभिचार करती गई; अतः जब उसने दीवार पर सेंटर से खीचे हुए ऐसे कसदी पुस्त्रों के चित्र देखे, १५ जो कमर में फेटे बैंधे हुए, सिर में छोर लटकती हुई गंगीली पगड़ियाँ पहने हुए, और सब के सब अपनी कसदी जन्म-भूमि अर्थात् बाबेल के लोगों की रीति पर प्रधानों का स्पष्ट धोर हुए थे, १६ तब उनको देखते ही वह उन पर मोहित हुई और उनके पास कसदियों के देश में दूत भेजे। १७ इसलिए बाबेली उसके पास पलंग पर आए, और उसके साथ व्यभिचार करके उसे अशुद्ध किया; और जब वह उससे अशुद्ध हो गई, तब उसका मन उनसे फिर गया। १८ तो भी जब वह तन उधाड़ती और व्यभिचार करती गई, तब मेरा मन जैसे उसकी बहन से फिर गया था, वैसे ही उससे भी फिर गया। १९ इस पर भी वह मिथ्स देश के अपने बचपन के दिन स्मरण करके जब वह वेश्या का काम करती थी, और अधिक व्यभिचार करती गई; २० और ऐसे मित्रों पर मोहित हुई, जिनका अंग गदहों का सा, और वीर्य घोड़ों का सा था। २१ तू इस प्रकार से अपने बचपन के उस समय के महापाप का समरण कराती है जब मिथी लोग तेरी छातियाँ मीजी थे।” २२ इस कारण है ओहोलीबा, परमेश्वर यहोवा तुझ से यह कहता है: “देख, मैं तेरे मित्रों को उभारकर जिससे तेरा मन फिर गया चारों और से तेरे विस्तु ले आऊँगा। २३ अर्थात् बाबेली और सब कसदियों को, और पकोद, शोया और कोआ के लोगों को; और उनके साथ सब अशशीरियों को लाऊँगा जो सब के सब घोड़ों के सवार मनभावने जवान अधिपति, और कई प्रकार के प्रतिनिधि, प्रधान और नामी पुस्त्र हैं। २४ वे लोग हथियार, रथ, छकड़े और देश-देश के लोगों का दल लिए हुए तुझ पर चढ़ाई करेंगे; और ढाल और फरी और टोप धारण किए हुए तेरे विस्तु चारों और पाँत बैंधेंगे; और मैं उन्हीं के हाथ न्याय का काम सौंपूँगा, और वे अपने-अपने नियम के अनुसार तेरा न्याय करेंगे। २५ मैं तुझ पर जलूँगा, जिससे वे जलजलाहट के साथ तुझ से बर्ताव करेंगे। वे तेरी नाक और कान काट लेंगे, और तेरा जो भी बचा रहेगा वह तलवार से मारा जाएगा। वे तेरे पुनर-पुत्रियों को छीन ले जाएँगे, और तेरा जो भी बचा रहेगा, वह आग से भस्म हो जाएगा। २६ वे तेरे वन्धु भी उतारकर तेरे सुन्दर-सुन्दर गहने छीन ले जाएँगे। २७ इस रीति से मैं तेरा महापाप और जो वेश्या का काम तूने मिथ्स देश में सीखा था, उसे भी तुझ से छुड़ाऊँगा, यहाँ तक कि तू फिर अपनी आँख उनकी ओर न लगाएँगी और न मिथ्स देश को फिर स्मरण करेंगी। २८ क्योंकि प्रभु यहोवा तुझ से यह कहता है: देख, मैं तुझे उनके हाथ सौंपूँगा जिससे तू बैर रखती है और जिससे तेरा मन फिर गया है; २९ और वे तुझ से बैर के साथ बर्ताव करेंगे, और तेरी सारी कमाई को उठा लेंगे, और तुझ नंगा करके छोड़ देंगे, और तेरे तन के उधाड़े जाने से तेरा व्यभिचार और महापाप प्रगट हो जाएगा। ३० ये काम तुझ से इस कारण किए जाएँगे

क्योंकि तू अन्यजातियों के पीछे व्यभिचारिणी के समान हो गई, और उनकी मर्मतियों को पूजकर अशुद्ध हो गई है। ३८ त अपनी बहन की लीक पर चली है, इस कारण मैं तैर हाथ में उसका सा कटोरा ढूँगा। ३९ प्रभु यहोवा यह कहता है, अपनी बहन के कटोरे से तुझे पीना पडेगा जो गहरा और चौड़ा है; तू हँसी और उपहास में उडाई जाएगी, क्योंकि उस कटोरे में बहुत कुछ समाता है। ४० त मतवालेपन और दृःख से छक जाएगी। तू अपनी बहन सामरिया के कटोरे को, अर्थात् विस्मय और उडाड को पीकर छक जाएगी। ४१ उसमें से तू गार-गारकर पीएगी, और उसके ठीकरों को भी चबाएगी और अपनी छातियाँ घायल करेगी; क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है, प्रभु यहोवा की यही वापी है। ४२ तने जो मुझे भुला दिया है और अपना मुँह मुझसे फेर लिया है, इसलिए तू आप ही अपने महापाप और व्यभिचार का भार उठा, परमेश्वर यहोवा का यही वचन है। ४३ यहोवा ने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ओहोला और ओहोलीबा का न्याय करेगा? तो फिर उनके खिलाने काम उन्हें जाता दे।” ४४ क्योंकि उन्होंने व्यभिचार किया है, और उनके हाथों में खन लगा है, उन्होंने अपनी मूरतों के साथ व्यभिचार किया, और अपने बच्चों को जो मुझसे उत्पन्न हुए थे, उन मूरतों के अगे भस्म होने के लिये चढ़ाए हैं। ४५ फिर उन्होंने मुझसे ऐसा बर्ताव भी किया कि उसी के साथ मेरे पवित्रस्थान को भी अशुद्ध किया और मेरे विश्वामिदिनों को अपवित्र किया है। ४६ वे अपने बच्चे अपनी मूरतों के सामने बलि चढाकर उसी दिन मेरा पवित्रस्थान अपवित्र करने को उसमें घुसी। देख, उन्होंने इस भाँति का काम मेरे भवन के भीतर किया है। ४७ उन्होंने दूर से पुस्तों को बुलवा भेजा, और वे चले भी आए। उनके लिये तू नहा थो, औँखों में अंजन लगा, गहने पहनकर; ४८ सुन्दर पलंग पर बैठी रही, और तेरे सामने एक मेज बिछी हुई थी, जिस पर तने मेरा धूप और मेरा तेल रखा था। ४९ तब उसके साथ निश्चिन्त लोगों की भीड़ का कोलाहल सुन पड़ा, और उन साधारण लोगों के पास जंगल से बुलाए हुए पियकड़ लोग भी थे; उन्होंने उन दोनों बहनों के हाथों में चूड़ियाँ पहनाई, और उनके सिरों पर शोभायमान मुकुट रखे। ५० ५१ “तब जो व्यभिचार करते-करते बुढ़िया हो गई थी, उसके विषय में बोल उठा, अब तो वे उर्धी के साथ व्यभिचार करेंगे। ५२ क्योंकि वे उसके पास ऐसे गए जैसे लोग वेश्या के पास जाते हैं। वैसे ही वे ओहोला और ओहोलीबा नामक महापापिणी छियों के पास गए। ५३ अतः धर्मी लोग व्यभिचारिणियों और हत्यारों के योग्य उसका न्याय करें; क्योंकि वे व्यभिचारिणियों और हत्यारों के योग्य उसका न्याय करें; क्योंकि वे व्यभिचारिणी हैं, और उनके हाथों में खन लगा है।” ५४ इस कारण परमेश्वर यहोवा यह कहता है: “मैं एक भीड़ से उन पर चढाई कराकर उन्हें ऐसा करँस्ता किंवा कि वे मारी-मारी फिरेंगी और लटी जाएंगी।” ५५ उस भीड़ के लोग उनको पथराव करके उन्हें अपनी तलवारों से काट डालेंगे, तब वे उनके पुनःपुत्रियों को घात करके उनके घर भी आग लगाकर फूँक देंगे। ५६ इस प्रकार मैं महापाप को देश में से दूर करँस्ता, और सब छियाँ शिक्षा पाकर तुम्हारा सा महापाप करने से बची रहेंगी। ५७ तुम्हारा महापाप तुम्हारे ही सिर पडेगा; और तुम निश्चय अपनी मूरतों की पूजा के पापों का भार उठाओगे; और तब तुम जान लोगे कि मैं परमेश्वर यहोवा हूँ।”

२४ नवे वर्ष के दसवें महीने के दसवें दिन को, यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: १ “हे मनुष्य के सन्तान, आज का दिन लिख ले, क्योंकि आज ही के दिन बाबेल के राजा ने यस्तलेम आ चेरा है। २ इस विद्रोही धराने से यह दृष्टान्त कह, प्रभु यहोवा कहता है, हाँडे को आग पर रख दो; उसे रखकर उसमें पानी डाल दो; ३ तब उसमें जाँघ, कंधा और सब अच्छे-अच्छे टुकड़े बटोरकर रखो; और उसे उत्तम-उत्तम हड्डियों से भर दो। ४ झूँड में से सबसे

अच्छे पशु लेकर उन हड्डियों को हण्डे के नीचे ढेर करो; और उनको भली भाँति पकाओ ताकि भीतर ही हड्डियाँ भी पक जाएँ। ५ “इसलिए प्रभु यहोवा यह कहता है: हाय, उस हत्यारी नगरी पर! हाय उस हण्डे पर! जिसका मोर्चा उसमें बना है और छूटा नहीं; उसमें से टुकड़ा-टुकड़ा करके निकाल लो, उस पर किंचित् उस न डाली जाए। ६ क्योंकि उस नगरी में किया हुआ खन उसमें है; उसने उसे भूमि पर डालकर धूलि से नहीं ढाँपा, परन्तु नगरी चटान पर रख दिया। ७ इसलिए मैंने भी उसका खन नगरी चटान पर रखा है कि वह डैंप न सके और कि बदला लेने को जलजलाहट भड़के। ८ प्रभु यहोवा यह कहता है: हाय, उस खनी नगरी पर! मैं भी ढेर को बड़ा करँगा। ९ और अधिक लकड़ी डाल, आग को बहुत तेज कर, माँस को भली भाँति पका और मसाला मिला, और हड्डियाँ भी जला दो। १० तब हण्डे को छूटा करके अंगरों पर रख जिससे वह गर्म हो और उसका पीतल जले और उसमें का मैल गले, और उसका जंग नष्ट हो जाए। ११ मैं उसके कारण परिश्रम करते-करते थक गया, परन्तु उसका भारी जंग उससे छूटता नहीं, उसका जंग आग के द्वारा भी नहीं छूटता। १२ हे अशुद्धता महापाप की है। मैं तो तुझे शुद्ध करना चाहता था, परन्तु तू शुद्ध नहीं हुई, इस कारण जब तक मैं अपनी जलजलाहट तुझ पर शान्त न कर लौं, तब तक तू फिर शुद्ध न की जाएगी। १३ मुझ यहोवा ही ने यह कहा है, और वह हो जाएगा, मैं ऐसा ही करँगा, मैं तुझे न छोड़ूँगा, न तुझ पर तरस खाऊँगा, न पछताऊँगा; तेरे चाल चलन और कामों ही के अनुसार तेरा न्याय किया जाएगा, प्रभु यहोवा की यही वापी है।” १४ यहोवा का यह भी वचन मेरे पास पहुँचा: १५ “हे मनुष्य के सन्तान, देख, मैं तेरी अँखों की प्रिय को मारकर तेरे पास से ले लेने पर हूँ, परन्तु न तू रोना-पीटना और न अँसू बहाना। १६ लम्बी साँसें ले तो ले, परन्तु वे सुनाई न पड़ें; मेरे हुओंके के लिये भी विलाप न करना। सिर पर पगड़ी बाँधे और पाँवों में जूती पहने रहना; और न तो अपने होंठ को ढाँपना न शोक के योग्य रोटी खाना।” १७ तब मैं सर्वे लोगों से बोला, और साँझा को भेरी छी मर गई। तब सर्वे मैंने आज्ञा के अनुसार किया। १८ तब लोग मुझसे कहने लगे, “क्या तू हमें न बताएगा कि यह जो तू करता है, इसका हम लोगों के लिये क्या अर्थ है?” १९ मैंने उनको उत्तर दिया, “यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, २० ‘तू इस्माइल के घराने से कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: देखो, मैं अपने पवित्रस्थान को जिसके गढ़ होने पर तुम फूलते हो, और जो तुम्हारी अँखों का चाहा हुआ है, और जिसको तुम्हारा मन चाहता है, उसे मैं अपवित्र करने पर हूँ; और अपने जिन बेटे-बेटियों को तुम वहाँ छोड़ आए हो, वे तलवार से मारे जाएँगे। २१ जैसा मैंने किया है वैसा ही तुम लोग करेगे, तुम भी अपने होंठ न ढाँपेंगे, न शोक के योग्य रोटी खाओगे। २२ तुम सिर पर पगड़ी बाँधे और पाँवों में जूती पहने रहोगे, न तुम रोओगे, न छाती पीटोगे, बरन् अपने अर्थ के कामों में फैसे हुए गतों जाओगे और एक दूसरी की ओर कराहते रहोगे। २३ इस रीति योहेजकल तुम्हारे लिये चिन्ह ठहरेगा; जैसा उसने किया, ठीक वैसा ही तुम भी करोगे। और जब यह हो जाए, तब तुम जान लोगे कि मैं परमेश्वर यहोवा हूँ।” २४ “हे मनुष्य के सन्तान, क्या यह सच नहीं, कि जिस दिन मैं उनका दुध गढ़, उनकी शोभा, और हर्ष का कारण, और उनके बेटे-बेटियाँ जो उनकी शोभा, उनकी अँखों का आनन्द, और मन की चाह हैं, उनको मैं उनसे ले लौंगा, २५ उसी दिन जो भागकर बचेगा, वह तेरे पास आकर उत्ते समाचार सुनाएगा। २६ उसी दिन तेरा मुँह खलेगा, और तू फिर चुप न रहेगा परन्तु उस बचे हुए के साथ बातें करेगा। इस प्रकार तू इन लोगों के लिये चिन्ह ठहरेगा; और ये जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”

२५ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: १ “हे मनुष्य के सन्तान, अम्मोनियों की ओर मुँह करके उनके विषय में भविष्यद्वाणी कर। २

उनसे कह, हे अम्मोनियों, परमेश्वर यहोवा का वचन सुनो, परमेश्वर यहोवा यह कहता है कि तुम ने जो मेरे पवित्रस्थान के विषय जब वह अपवित्र किया गया, और इमाएल के देश के विषय जब वह उजड़ गया, और यहदा के घराने के विषय जब वे बैंधुआई में गए, अहा, अहा! कहा! ४ इस कारण देखो, मैं तुम को पुरियों के अधिकार में करने पर हूँ, और वे तेरी बीच अपनी छावनियाँ डालेंगे और अपने घर बनाएँगे; वे तेरे फल खाएँगे और तेरा दूध पीएँगे। ५ और मैं रब्बाह नगर को ऊँकों के रहने और अम्मोनियों के देश को भेड़-बकरियों के बैठने का स्थान कर दूँगा; तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। ६ क्योंकि परमेश्वर यहोवा यह कहता है: तुम ने जो इमाएल के देश के कारण ताली बजाई और नाचे, और अपने सारे मन के अभिमान से आनन्द किया, ७ इस कारण देख, मैंने अपना हाथ तेरे ऊपर बढ़ाया है; और तुझको जाति-जाति की लटकर दूँगा, और देश-देश के लोगों में से तुझे मिटाऊँगा; और देश-देश में से नाश करूँगा। मैं तेरा सत्यानाश कर डालूँगा; तब तुम जान लेगा कि मैं यहोवा हूँ। ८ “परमेश्वर यहोवा यह कहता है: मोआब और सेईर जो कहते हैं, देखो, यहदा का घराना और सब जातियों के समान हो गया है। ९ इस कारण देख, मोआब के देश के किनारों को बेत्यशीमेत, बालमोन, और कियातिम, जो उस देश के शिरोमणि हैं, मैं उनका मार्ग खोलकर १० उन्हें पुरियों के वश में ऐसा कर दूँगा कि वे अम्मोनियों पर चढ़ाई करें; और मैं अम्मोनियों को यहाँ तक उनके अधिकार में कर दूँगा कि जाति-जाति के बीच उनका स्मरण फिर न रहेगा। ११ मैं मोआब को भी टण्ड दूँगा। और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। १२ “परमेश्वर यहोवा यह भी कहता है: एदोम ने जो यहदा के घराने से पलटा लिया, और उनसे बदला लेकर बड़ा दोषी हो गया है, १३ इस कारण परमेश्वर यहोवा यह कहता है, मैं एदोम के देश के विस्तु अपना हाथ बढ़ाकर उसमें से मनुष्य और पशु दोनों को मिटाऊँगा; और तेमान से लेकर ददान तक उसको उजाड़ कर दूँगा, और वे तलवार से मारे जाएँगे। १४ मैं अपनी प्रजा इमाएल के द्वारा एदोम से अपना बदला लूँगा; और वे उस देश में मेरे कोप और जलजलाहट के अनुसार काम करेंगे। तब वे पेरा पलटा लेना जान लेंगे, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १५ “परमेश्वर यहोवा यह कहता है: क्योंकि पलिश्ती लोगों ने पलटा लिया, वरन् अपनी युग-युग की शत्रुका के कारण अपने मन के अभिमान से बदला लिया कि नाश करें, १६ इस कारण परमेश्वर यहोवा यह कहता है, देख, मैं पलिश्तियों के विस्तु अपना हाथ बढ़ाने पर हूँ, और करेतियों को मिटा डालूँगा; और समुद्र तट के बचे हुए रहनेवालों को नाश करूँगा। १७ मैं जलजलाहट के साथ मुकदमा लड़कर, उनसे कड़ाइ के साथ पलटा लूँगा। और जब मैं उनसे बदला ले लूँगा, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”

२६ ग्यारहवें वर्ष के पहले महीने के पहले दिन को यहोवा का यह वचन
मेरे पास पहुँचा: १ “हे मनुष्य के सन्तान, सोर ने जो यस्तलेम के विषय में कहा है, ‘अहा, अहा! जो देश-देश के लोगों के फाटक के समान थी, वह नाश हो गई! उसके उजड़ जाने से मैं भरपूर हो जाऊँगा।’ २ इस कारण परमेश्वर यहोवा कहता है: हे सोर, देख, मैं तेरे विस्तु हूँ; और ऐसे करूँगा कि बहुत सी जातियाँ तेरे विस्तु ऐसी उठेंगी जैसे समुद्र की लहरें उठती हैं। ३ वे सोर की शहरपनाह को पिराएँगी, और उसके गुमटों को तोड़ डालेंगी; और मैं उस पर से उसकी मिट्ठी खुरचकर उसे नंगी चटान कर दूँगा। ४ वह समुद्र के बीच का जाल फैलाने ही का स्थान हो जाएगा; क्योंकि परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है; और वह जाति-जाति से लुट जाएगा; ५ और उसकी जो बेटियों मैदान में हैं, वे तलवार से मारी जाएँगी। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। ६ “क्योंकि परमेश्वर यहोवा यह कहता है, देख, मैं सोर के विस्तु राजाधिराज

बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर को घोड़ों, रथों, सवारों, बड़ी भीड़, और दल समेत उत्तर दिशा से ले आऊँगा। ७ तेरी जो बेटियों मैदान में हैं, उनको वह तलवार से मारेगा, और तेरे विस्तु कोट बनाएगा और दमदाम बौंधेगा; और दाल उठाएगा। ८ वह तेरी शहरपनाह के विस्तु युद्ध के यन्त्र चलाएगा और तेरे गुमटों को फरसों से ढां देगा। ९ उसके घोड़े इतने होंगे, कि तू उनकी धलि से ढूँप जाएगा, और जब वह तेरे फाटकों में ऐसे युसोंगा जैसे लोग नाकेवाले नगर में घुसते हैं, तब तेरी शहरपनाह सवारों, छकड़ों, और रथों के शब्द से काँप उठेगी। १० वह अपने घोड़ों की टापों से तेरी सब सड़कों को रौद्र डालेगा, और तेरे निवासियों को तलवार से मार डालेगा, और तेरे बल के खम्भे भूमि पर पिराए जाएँगे। ११ लोग तेरा धन लूँगें और तेरे व्यापार की वस्तुएँ छीन लेंगी; वे तेरी शहरपनाह ढा देंगे और तेरे मनभाऊ घर तोड़ डालेंगे; तेरे पथर और काठ, और तेरी धूलि वे जल में फेंक देंगे। १२ और मैं तेरे गीतों का सुरातल बन्द करूँगा, और तेरी वीणाओं की ध्वनि फिर सुनाई न देगी। १३ मैं तुझे नंगी चटान कर दूँगा; तू जाल फैलाने ही का स्थान हो जाएगा; और फिर बसाया न जाएगा; क्योंकि मुझ यहोवा ही ने यह कहा है, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है। १४ “परमेश्वर यहोवा सोर से यह कहता है, तेरे पिरने के शब्द से जब ध्याल लोग कराएंगे और तुझ में धात ही धात होगा, तब क्या टापू न काँप उठेंगे? १५ तब समुद्र तट के सब प्रधान लोग अपने-अपने सिंहासन पर से उठेंगे, और अपने बागे और बूटेदार बख उतारकर थरथराहट के बख पहनेंगे और भूमि पर बैठकर क्षण-क्षण में कौंपेंगे, और तेरे कारण विस्मित रहेंगे। १६ वे तेरे विषय में विलाप का गीत बनाकर तुझ से कहेंगे, ‘हाय! मल्लाहों की बसाई हुई हाय! सराही हुई नगरी जो समुद्र के बीच निवासियों समेत सामर्थी रही और सब टिकनेवालों की डालेवाली नगरी थी, तू कैसी नाश हुई है? १७ तेरे गिरने के दिन टापू कौप उठेंगे, और तेरे जाते रहने के कारण समुद्र से सब बाटू घबरा जाएँगे।’ १८ “क्योंकि परमेश्वर यहोवा यह कहता है: जब मैं तुझे निर्जन नारों के समान उजाड़ करूँगा और तेरे ऊपर महासागर चढ़ाऊँगा, और तू गहरे जल में ढब जाएगा, १९ तब गहे में और गिरनेवालों के संग मैं तुझे भी प्राचीन लोगों में उतार दूँगा; और गहे में और गिरनेवालों के संग तुझे भी नीचे के लोक में रखकर प्राचीनकाल के उजड़े हुए स्थानों के समान कर दूँगा; यहाँ तक कि तू फिर न बरसेगा और न जीवन के लोक में कोई स्थान पाएगा। २० मैं तुझे घबराने का कारण करूँगा, और तू भविष्य में फिर न रहेगा, वरन् ढूँढ़ने पर भी तेरा पता न लगेगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।”

२७ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: १ “हे मनुष्य के सन्तान, सोर के विषय एक विलाप का गीत बनाकर उससे यह कह, २ हे समुद्र के प्रवेश-द्वार पर रहनेवाली, हे बहूत से द्वीपों के लिये देश-देश के लोगों के साथ व्यापार करनेवाली, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हे सोर तूने कहा है कि मैं सर्वांग सुन्दर हूँ। ३ तेरी सीमा समुद्र के बीच है; तेरे बनानेवाले ने तुझे सर्वांग सुन्दर बनाया। ४ तेरी सब पटरियों सरीर पर्वत के सनोवर की लकड़ी की बनी है; तेरे मस्तूल के लिये लबानोन के देवदार लिए गए हैं। ५ तेरे डॉड बाशन के बांजवृक्षों के बने, तेरे जहाजों का पटाव कितियों के द्वीपों से लाए हुए सीधे सनोवर की हाथी दाँत जड़ी हुई लकड़ी का बना। ६ तेरे जहाजों के पाल मिस्र से लाए हुए बूटेदार सन के कपड़े के बने कि तेरे लिये झाँडे का काम दें; तेरी चाँदनी एलीशा के द्वीपों से लाए हुए नीले और बैगनी रंग के कपड़ों की बनी। ७ तेरे खेनेवाले सीदोन और अर्वद के रहनेवाले थे; हे सोर, तेरे ही बीच के बुद्धिमान लोग तेरे माँझी थे। ८ तेरे कारिगर जोड़ाइ करनेवाले गबल नगर के पुरियों और बुद्धिमान लोग थे; तुझ में व्यापार करने के लिये मल्लाहों समेत समुद्र पर के सब जहाज तुझ में आ गए थे। ९ तेरी सेना में फारसी, लूटी, और

पूरी लोग भरती हुए थे; उन्होंने तुझ में ढाल, और टोपी टॉगी; और उन्ही के कारण तेरा प्रताप बढ़ा था। ११ तेरी शहरपनाह पर तेरी सेना के साथ अर्वद के लोग चारों ओर थे, और तेरे गुमटों में गम्मद नगर के निवासी खड़े थे; उन्होंने अपनी ढाले तेरी चारों ओर की शहरपनाह पर टाँगी थी; तेरी सुन्दरता उनके द्वारा पूरी हुई थी। १२ “अपनी सब प्रकार की सम्पत्ति की बहुतायत के कारण तर्शीशी लोग तेरे व्यापारी थे; उन्होंने चाँदी, लोहा, रँगा और सीसा देकर तेरा माल मोल लिया। १३ यावान, तूल, और मेशक के लोग तेरे माल के बदले दास-दासी और पीतल के पात्र तुझ से व्यापार करते थे। १४ तेरामार्ग के घराने के लोगों ने तेरी सम्पत्ति लेकर घोड़े, सवारी के घोड़े और खच्चर दिए। १५ ददानी तेरे व्यापारी थे; बहुत से द्वीप तेरे हाट बने थे; वे तेरे पास हाथी दाँत की सींग और आबन्स की लकड़ी व्यापार में लाते थे। १६ तेरी बहुत कारीगरी के कारण अराम तेरा व्यापारी था; मरकत, बैगनी रंग का और बटेदार बब्ल, सन, मूगा, और लालडी देकर वे तेरा माल लेते थे। १७ यहां और इस्माइल भी तेरे व्यापारी थे; उन्होंने मिन्नीत का गेहूँ, पन्नग, और मधु, तेल, और बलसान देकर तेरा माल लिया। १८ तुझ में बहुत कारीगरी हुई और सब प्रकार का धन इक्ष्या हुआ, इससे दामिशक तेरा व्यापारी हुआ; तेरे पास हेलबोन का दाखमधु और उजला ऊन पहँचाया गया। १९ दान और यावान ने तेरे माल के बदले में सूत दिया; और उनके कारण फैलाद, तज और अगर में भी तेरा व्यापार हुआ। २० सवारी के चार-जामे के लिये ददान तेरा व्यापारी हुआ। २१ अरब और केदार के सब प्रधान तेरे व्यापारी ठहरे; उन्होंने मेने, मेहे, और बकरे लाकर तेरे साथ लेन-देन किया। २२ शेबा और रामाह के व्यापारी तेरे व्यापारी ठहरे; उन्होंने उत्तम-उत्तम जाति का सब भाँति का मासाला, सर्व भाँति के मणि, और सोना देकर तेरा माल लिया। २३ हारान, कने, एदेन, शेबा के व्यापारी, और अश्शर और कलमद, ये सब तेरे व्यापारी ठहरे। २४ इन्होंने उत्तम-उत्तम वस्तुएँ अर्थात् आँढ़े के नीले और बटेदार बब्ल और डोरियों से बैधी और देवदार की बनी हुई चित्र विचित्र कपड़ों की पेटियाँ लाकर तेरे साथ लेन-देन किया। २५ तर्शीश के जहाज तेरे व्यापार के माल के ढोनेवाले हुए। “उनके द्वारा तू समुद्र के बीच रहकर बहुत धनवान और प्रतापी हो गई थी। २६ तेरे खिलैयों ने तुझे गहरे जल में पहुँचा दिया है, और पुरवाई ने तुझे समुद्र के बीच तोड़ दिया है। २७ जिस दिन तू इंडेगी, उसी दिन तेरा धन-सम्पत्ति, व्यापार का माल, मल्लाह, मौँझी, जुडाई का काम करनेवाले, व्यापारी लोग, और तुझ में जितने सिपाही हैं, और तेरी सारी भीड़-भाड़ समुद्र के बीच गिर जाएगी। २८ तेरे मँझियों की चिल्लाहट के शब्द के मोरे तेरे आस-पास के स्थान काँप उठेंगे। २९ सब खेनेवाले और मल्लाह, और समुद्र में जितने मँझी रहते हैं, वे अपने-अपने जहाज पर से उतरेंगे, ३० और वे भूमि पर खड़े होकर तेरे विषय में ऊँचे शब्द से बिलख-बिलख कर रोएँगे। वे अपने-अपने सिर पर धूलि उड़ाकर राख में लोटेंगे; ३१ और तेरे शोक में अपने सिर पर मँगुडवा देंगे, और कमर में टाट बाँधकर अपने मन के कड़े दुःख के साथ तेरे विषय में रोएँगे और छाती पिटेंगे। ३२ वे विलाप करते हुए तेरे विषय में विलाप का यह गीत बनाकर गाएँगे, ‘‘सोर जो अब समुद्र के बीच चुपचाप पड़ी है, उसके तुल्य कौन नारी है? ३३ जब तेरा माल समुद्र पर से निकलता था, तब बहुत सी जातियों के लोग तुम होते थे; तेरे धन और व्यापार के माल की बहुतायत से पृथ्वी के राजा धनी होते थे। ३४ जिस समय तू अथाह जल में लहरों से दृटी, उस समय तेरे व्यापार का माल, और तेरे सब निवासी भी तेरे भीतर रहकर नाश हो गए। ३५ समुद्र-तटीय देशों के सब रहनेवाले तेरे कारण विस्तित हुए; और उनके सब राजाओं के रोएँ खड़े हो गए, और उनके मुँह उदास देख पड़े हैं। ३६ देश-देश के व्यापारी तेरे विस्तुताना मार रहे हैं; तू भय का कारण हो गई है और फिर स्थिर न रह सकेगी।”

२८ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: २ “हे मनुष्य के सन्तान, सोर के प्रधान से कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है कि तू तेरे मन में फूलकर यह कहा है, मैं ईश्वर हूँ, मैं समुद्र के बीच परमेश्वर के आसन पर बैठा हूँ,” परन्तु, यद्यपि तू अपने आपको परमेश्वर सा दिखाता है, तो भी तू ईश्वर नहीं, मनुष्य ही है। ३ तू दानियेल से अधिक बुद्धिमान तो है; कोई भेद तुझ से छिपा न होगा; ४ तू अपनी बुद्धि और समझ के द्वारा धन प्राप्त किया, और अपने भण्डारों में सोना-चाँदी खाया है; ५ तू बड़ी बुद्धि से लेन-देन किया जिससे तेरा धन बढ़ा, और धन के कारण तेरा मन फूल उठा है। ६ इस कारण परमेश्वर यहोवा यह कहता है, तू जो अपना मन परमेश्वर सा दिखाता है, ७ इसलिए देख, मैं तुझ पर ऐसे परदेशियों से चढ़ाई कराऊँगा, जो सब जातियों से अधिक क्वार हैं, वे अपनी तलवारें तेरी बुद्धि की शोभा पर चलाएँगे और तेरी चमक-दमक को बिगाड़ेंगे। ८ वे तुझे कब में उतरेंगे, और तू समुद्र के बीच के मारे हुओं की रीति पर मर जाएंगा। ९ तब, क्या तू अपने धात करनेवाले के समने कहता रहेगा, ‘‘मैं परमेश्वर हूँ?’’ तू अपने धायल करनेवाले के हाथ में ईश्वर नहीं, मनुष्य ही ठहरेगा। १० तू परदेशियों के हाथ से खतनाहीन लोगों के समान मारा जाएगा; क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है।” ११ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: १२ “हे मनुष्य के सन्तान, सोर के राजा के विषय में विलाप का गीत बनाकर उससे कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: तू तो उत्तम से भी उत्तम है; तू बुद्धि से भरपूर और सर्वांग सुन्दर है। १३ तू परमेश्वर की अदन नामक बारी में था, तेरे पास आभूषण, माणिक्य, पुखराज, हीरा, फीरोजा, सुलैमानी मणि, यशब, नीलमणि, मरकत, और लाल सब भाँति के मणि और सोने के पहरावे थे; तेरे डफ और बाँसुलियाँ तुझी में बनाई गई थीं; जिस दिन तू सिरजा गया था; उस दिन वे भी तैयार की गई थीं। १४ तू सुरक्षा करनेवाला अभिषिठ कस्ब था, मैंने तुझे ऐसा ठहराया कि तू परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर रहता था; तू आग सरीखे चमकनेवाले मणियों के बीच चलता फिरता था। १५ जिस दिन से तू सिरजा गया, और जिस दिन तक तुझे मैं कूटिलता न पाई गई, उस समय तक तू अपनी सारी चाल चलन में निर्दोष रहा। १६ परन्तु लेन-देन की बहुतायत के कारण तू उपद्रव से भरकर पापी हो गया; इसी से मैंने तुझे अविव्रत जानकर परमेश्वर के पर्वत पर से उतारा, और हे सुरक्षा करनेवाले कस्ब मैंने तुझे आग सरीखे चमकनेवाले मणियों के बीच से नाश किया है। १७ सुन्दरता के कारण तेरा मन फूल उठा था; और वैभव के कारण तेरी बुद्धि बिंगड गई थी। मैंने तुझे भूमि पर पटक दिया; और राजाओं के सामने तुझे रखा कि वे तुझको देखें। १८ तेरे अर्धम के कामों की बहुतायत से और तेरे लेन-देन की कुटिलता से तेरे पवित्रस्थान अपवित्र हो गए; इसलिए मैंने तुझ में से ऐसी आग उत्पन्न की जिससे तू भय हुआ, और मैंने तुझे सब देखनेवालों के सामने भूमि पर भस्म कर डाला है। १९ देश-देश के लोगों में से जितने तुझे जानते हैं सब तेरे कारण विस्तित हुए; तू भय का कारण हुआ है और फिर कभी पाया न जाएगा।” २० यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: २१ “हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुख सीदोन की ओर करके उसके विस्तु भविष्यद्वाणी कर, २२ और कह, प्रभु यहोवा यह कहता है: हे सीदोन, मैं तेरे विस्तु हूँ; मैं तेरे बीच अपनी महिमा कराऊँगा। जब मैं उसके बीच दण्ड ढूँगा और उसमें अपने को पवित्र ठहराऊँगा, तब लोग जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। २३ मैं उसमें मरी फैलाऊँगा, और उसकी सड़कों में लह बहाऊँगा; और उसके चारों ओर तलवार चलेगी; तब उसके बीच धायल लोग गिरेंगे, और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। २४ “इस्माइल के घराने के चारों ओर की जितनी जातियाँ उनके साथ अभिमान का बर्ताव करती हैं, उनमें से कोई उनका चुभनेवाला कँटा या बेधनेवाला शूल फिर न ठहरेगी; तब वे

जान लेंगी कि मैं परमेश्वर यहोवा हूँ। २५ “परमेश्वर यहोवा यह कहता है, जब मैं इसाएल के घराने को उन सब लोगों में से इकट्ठा करूँगा, जिनके बीच वे तिर-बितर हुए हैं, और देश-देश के लोगों के सामने उनके द्वारा पवित्र ठहरूँगा, तब वे उस देश में वास करेंगे जो मैंने अपने दास याकूब को दिया था। २६ वे उसमें निडर बसे रहेंगे; वे घर बनाकर और दाख की बारियाँ लगाकर निडर रहेंगे; तब मैं उनके चारों ओर के सब लोगों को दण्ड ढूँगा जो उनसे अभिमान का बर्ताव करते हैं, तब वे जान लेंगे कि उनका परमेश्वर यहोवा ही है।”

२७ दसवें वर्ष के दसवें महीने के बारहवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे

पास पहुँचा, २ “हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुख मिस्थ के राजा फिरौन की ओर करके उसके और सारे मिस्थ के विस्तु भविष्यद्वाणी कर; ३ यह कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हे मिस्थ के राजा फिरौन, मैं तेरे विस्तु हूँ, हे बड़े नगर, तू जो अपनी नदियों के बीच पड़ा रहता है, जिसने कहा है, ‘मेरी नदी मेरी निज की है, और मैं ही ने उसको अपने लिये बनाया है’। ४ मैं तेरे जबड़ों में नकेल डालूँगा, और तेरी नदियों की मछलियों को तेरी खाल में चिपताऊँगा, और तेरी खाल में चिपती हुई तेरी नदियों की सब मछलियों समेत तुझको तेरी नदियों में से निकालूँगा। ५ तब मैं तुझे तेरी नदियों की सारी मछलियों समेत जंगल में निकाल दूँगा, और तू मैदान में पड़ा रहेगा; किसी भी प्रकार से तेरी सुधि न ली जाएगी। मैंने तुझे बन-पशुओं और आकाश के पक्षियों का आहार कर दिया है। ६ “तब मिस्थ के सारे निवासी जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। वे तो इसाएल के घराने के लिये नरकट की टेक ठहरे थे। ७ जब उन्होंने तुझ पर हाथ का बल दिया तब तू टूट गया और उनके कंधे उछड़ ही गए; और जब उन्होंने तुझ पर टेक लगाई, तब तू टूट गया, और उनकी कमर की सारी नर्सें चढ़ गईं। ८ इस कारण प्रभु यहोवा यह कहता है: देख, मैं तुझ पर तलवार चलवाकर, तेरे मनुष्य और पशु, सभी को नाश करूँगा। ९ तब मिस्थ देश उजाड़ ही उजाड़ होगा; और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। “तुमे कहा है, ‘मेरी नदी मेरी अपनी ही है, और मैं ही ने उसे बनाया।’ १० इस कारण देख, मैं तेरे और तेरी नदियों के विस्तु हूँ, और मिस्थ देश को मिगदोल से लेकर सबने तक तक वरन् कश देश की सीमा तक उजाड़ ही उजाड़ कर दूँगा। ११ चालीस वर्ष तक उसमें मनुष्य या पशु का पाँव तक न पड़ेगा; और न उसमें कोई बसेगा। १२ चालीस वर्ष तक मैं मिस्थ देश को उजाड़ है देशों के बीच उजाड़ कर रखूँगा; और उसके नगर उजाड़ है नगरों के बीच खण्डहर ही रहेंगे। मैं मिस्थियों को जाति-जाति में छिन्न-भिन्न कर दूँगा, और देश-देश में तिर-बितर कर दूँगा। १३ “परमेश्वर यहोवा यह कहता है: चालीस वर्ष के बीतने पर मैं मिस्थियों को उन जातियों के बीच से इकट्ठा करूँगा, जिनमें वे तिर-बितर हैं; १४ और मैं मिस्थियों को बैंधुआई से छुड़ाकर पत्रोस देश में, जो उनकी जन्म-भूमि है, फिर पहुँचाऊँगा; और वहाँ उनका छोटा सा राज्य हो जाएगा। १५ वह सब राज्यों में से छोटा होगा, और फिर अपना सिर और जातियों के ऊपर न उठाएगा; क्योंकि मैं मिस्थियों को ऐसा घटाऊँगा कि वे अन्यजातियों पर फिर प्रभुता न करने पाएँगे। १६ वह फिर इसाएल के घराने के भरोसे का कारण न होगा, क्योंकि जब वे फिर उनकी ओर देखने लगें, तब वे उनके अधर्म को स्मरण करेंगे। और तब वे जान लेंगे कि मैं परमेश्वर यहोवा हूँ।” १७ फिर सत्ताइशवें वर्ष के पहले महीने के पहले दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा। १८ “हे मनुष्य के सन्तान, बबेल के राजा नबकदनेस्सर ने सोर के धेरेने में अपनी सेना से बड़ा परिश्रम कराया; हर एक का सिर गंजा हो गया, और हर एक के कंधों का चमड़ा छिल गया; तो भी उसको सोर से न तो इस बड़े परिश्रम की

मजदूरी कुछ मिली और न उसकी सेना को। १९ इस कारण परमेश्वर यहोवा यह कहता है: देख, मैं बबेल के राजा नबकदनेस्सर को मिस्थ देश दूँगा, और वह उसकी भीड़ को ले जाएगा, और उसकी धन-सम्पत्ति को लूटकर अपना कर लेगा; अतः यही मजदूरी उसकी सेना को मिलेगी। २० मैंने उसके परिश्रम के बदले में उसको मिस्थ देश इस कारण दिया है कि उन लोगों ने मेरे लिये काम किया था, परमेश्वर यहोवा की यही वारी है। २१ “उसी समय मैं इसाएल के घराने का एक सींग उगाऊँगा, और उनके बीच तेरा मुँह खोड़ूँगा। और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”

३० फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: २ “हे मनुष्य के सन्तान,

भविष्यद्वाणी करके कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हाय, हाय करो, हाय उस दिन पर! ३ क्योंकि वह दिन अर्थात् यहोवा का दिन निकट है; वह बादलों का दिन, और जातियों के दण्ड का समय होगा। ४ मिस्थ में तलवार चलेगी, और जब मिस्थ में लोग मारे जाएँगे, तब कश में भी संकट पड़ेगा, लोग मिस्थ को लूट ले जाएँगे, और उसकी नीवें उलट दी जाएँगी। ५ कश, पृत, लूट और सब दोगले, और कूब लोग, और वाचा बैंधे हुए देश के निवासी, मिस्थियों के संग तलवार से मारे जाएँगे। ६ “यहोवा यह कहता है, मिस्थ के सम्भालनेवाले भी गिर जाएँगे, और अपनी जिस सामर्थ्य पर मिस्थी फूलते हैं, वह टरेगी; मिगदोल से लेकर सबने तक उसके निवासी तलवार से मारे जाएँगे, परमेश्वर यहोवा की यही वारी है। ७ वे उजड़े हुए देशों के बीच उजड़े ठहरेंगे, और उनके नगर खण्डहर किए हुए नगरों में गिरे जाएँगे। ८ जब मैं मिस्थ में आग लगाऊँगा। और उसके सब सहायक नाश होंगे, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। ९ “उस समय मेरे सामने से दूत जहाजों पर चढ़कर निडर निकलेंगे और कूशियों को डराएँगे; और उन पर ऐसा संकट पड़ेगा जैसा कि मिस्थ के दण्ड के समय; क्योंकि देख, वह दिन आता है। १० “परमेश्वर यहोवा यह कहता है: मैं बबेल के राजा नबकदनेस्सर के हाथ से मिस्थ की भीड़-भाड़ को नाश करा दूँगा। ११ वह अपनी प्रजा समेत, जो सब जातियों में भयानक है, उस देश के नाश करने को पहुँचाया जाएगा; और वे मिस्थ के विस्तु तलवार खींचकर देश को मेरे हूँहों से भर देंगे। १२ मैं नदियों को सूखा डालूँगा, और देश को बुरे लोगों के हाथ कर दूँगा; और मैं परदेशियों के द्वारा देश को, और जो कुछ उसमें है, उजाड़ करा दूँगा; मुझ यहोवा ही ने यह कहा है। १३ “परमेश्वर यहोवा यह कहता है, मैं नोप में से मूरतों को नाश करूँगा और उसमें की मूरतों को रहने न दूँगा; फिर कोई प्रथान मिस्थ देश में न उठेगा; और मैं मिस्थ देश में भय उपजाऊँगा। १४ मैं पत्रोस को उजाड़ दूँगा, और सोअन में आग लगाऊँगा, और नो को टण्ड दूँगा। १५ सीन जो मिस्थ का दृढ़ स्थान है, उस पर मैं अपनी जलजलाहट भड़काऊँगा, और नो नगर की भीड़-भाड़ का अन्त कर डालूँगा। १६ मैं मिस्थ में आग लगाऊँगा; सीन बहुत थरथाराणा; और नो फाड़ा जाएगा और नोप के विरोधी दिन दहाड़े उठेंगे। १७ ओन और पीवीसेत के जवान तलवार से गिरेंगे, और वे नगर बैंधुआई में चले जाएँगे। १८ जब मैं मिस्थियों के जुओं को तहपहेस में तोड़ूँगा, तब उसमें दिन को अंधेरा होगा, और उसकी सामर्थ्य जिस पर वह फूलता है, वह नाश हो जाएगी; उस पर घटा छा जाएगी और उसकी बेटियाँ बैंधुआई में चली जाएँगी। १९ इस प्रकार मैं मिस्थियों को दण्ड दूँगा। और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।” २० फिर यहोवा वर्ष के पहले महीने के सातवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: २१ “हे मनुष्य के सन्तान, मैंने मिस्थ के राजा फिरौन की भुजा तोड़ दी है; और देख, न तो वह जोड़ी गई, न उस पर लेप लगाकर पट्ठी चढ़ाइ गई कि वह बैंधने से तलवार पकड़ने के योग्य बन सके। २२ इसलिए प्रभु यहोवा यह कहता है, देख, मैं मिस्थ

के राजा फिरौन के विस्तु हूँ, और उसकी अच्छी और दृटी दोनों भुजाओं को तोड़ूँगा, और तलवार को उसके हाथ से गिराऊँगा। २८ मैं मिस्रियों को जाति-जाति में तिर-बितर करूँगा, और देश-देश में छिटराऊँगा। २९ मैं बाबेल के राजा की भुजाओं को बलवत्त करके अपनी तलवार उसके हाथ में ढूँगा; परन्तु फिरौन की भुजाओं को तोड़ूँगा, और वह उसके समाने ऐसा कराहेगा जैसा मरनेवाला धायल कराहता है। ३० मैं बाबेल के राजा की भुजाओं को सम्भालूँगा, और फिरौन की भुजाएँ ढीनी पड़ेंगी, तब वे जानिए कि मैं यहोवा हूँ। जब मैं बाबेल के राजा के हाथ में अपनी तलवार ढूँगा, तब वह उसे मिस्र देश पर चलाएगा; ३१ और मैं मिस्रियों को जाति-जाति में तिर-बितर करूँगा और देश-देश में छिटरा ढूँगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”

३१ याहूहवे वर्ष के तीसरे महीने के पहले दिन को यहोवा का यह वचन

मेरे पास पहुँचा: १ “हे मनुष्य के सन्तान, मिथ के राजा फिरौन और उसकी भीड़ से कह, अपनी बड़ाई में तू किसके समान है। २ देख, अशशर तो लबानोन का एक देवदार था जिसकी सुन्दर-सुन्दर शाखें, घनी छाया देती और बड़ी ऊँची थीं, और उसकी फुनगी बादलों तक पहुँचती थीं। ३ जल ने उसे बढ़ाया, उस गहरे जल के कारण वह ऊँचा हुआ, जिससे नदियाँ उसके स्थान के चारों ओर बहती थीं, और उसकी नालियों निकलकर मैदान के सारे बूँदों के पास पहुँचती थीं। ४ इस कारण उसकी ऊँचाई मैदान के सब वृक्षों से अधिक है; उसकी टहनियाँ बहत हैं, और उसकी शाखाएँ लम्बी हो गई, क्योंकि जब वे निकली, तब उनको बहुत जल मिला। ५ उसकी टहनियों में आकाश के सब प्रकार के पक्षी बसेरा करते थे, और उसकी शाखाओं के नीचे मैदान के सब भौंति के जीवजन्तु जन्म ले रहे थे; और उसकी छाया में सब बट्टी जातियाँ रहती थीं। ६ वह अपनी बड़ाई और अपनी डालियों की लाम्बाई के कारण सुन्दर हुआ; क्योंकि उसकी जड़ बहुत जल के निकट थी। ७ परमेश्वर की बारी के देवदार भी उसको न छिपा सकते थे, सनोवर उसकी टहनियों के समान भी न थे, और न अर्मेन वृक्ष उसकी शाखाओं के तुल्य थे; परमेश्वर की बारी का भी कोई वृक्ष सुन्दरता में उसके बराबर न था। ८ मैंने उसे डालियों की बहुतायत से सुन्दर बनाया था, यहाँ तक कि अदन के सब वृक्ष जो परमेश्वर की बारी में थे, उससे डाह करते थे। ९ “इस कारण परमेश्वर यहोवा ने यह कहा है, उसकी ऊँचाई जो बढ़ गई, और उसकी फुनगी जो बादलों तक पहुँची है, और अपनी ऊँचाई के कारण उसका मन जो फूल उठा है, १० इसलिए जातियों में जो सम्पर्क है, मैं उसी के हाथ उसको कर ढूँगा, और वह निश्चय उससे बुरा व्यवहार करेगा। उसकी दृश्यता के कारण मैंने उसको निकाल दिया है। ११ परदेशी, जो जातियों में भयानक लोग हैं, वे उसको काटकर छोड़ देंगे, उसकी डालियाँ पहाड़ों पर, और सब तराइयों में गिराई जाएंगी, और उसकी शाखाएँ देश के सब नालों में टूटी पड़ी रहेंगी, और जाति-जाति के सब लोग उसकी छाया को छोड़कर चले जाएंगे। १२ उस पिरे हुए वृक्ष पर आकाश के सब पक्षी बसेरा करते हैं, और उसकी शाखाओं के ऊपर मैदान के सब जीवजन्तु चढ़ने पाते हैं। १३ यह इसलिए हुआ है कि जल के पास के सब वृक्षों में से कोई अपनी ऊँचाई न बढ़ाए, न अपनी फुनगी को बादलों तक पहुँचाए, और उनमें से जितने जल पाकर ढूढ़ हो गए हैं वे ऊँचे होने के कारण सिर न उठाएँ। क्योंकि वे भी सब के सब कब्र में गडे हुए मनुष्यों के समान मृत्यु के वश करके अधोलोक में डाल दिए जाएँगे। १४ “परमेश्वर यहोवा यह कहता है: जिस दिन वह अधोलोक में उतर गया, उस दिन मैंने विलाप कराया और गहरे सामुद्र को ढांप दिया, और नदियों का बहुत जल स्क गया; और उसके कारण मैंने लबानोन पर उदासी छा दी, और मैदान के सब वृक्ष मर्छित हुए। (Sheol h7585) १५ जब मैंने उसको कब्र में गडे हुओं के पास अधोलोक में फैक दिया,

तब उसके गिरने के शब्द से जाति-जाति थरथरा गई, और अदन के सब वृक्ष अर्थात् लबानोन के उत्तम-उत्तम वृक्षों ने, जिनमे उससे जल पाते हैं, उन सभी ने अधोलोक में शान्ति पाई। (Sheol h7585) १६ वे भी उसके संग तलवार से मारे हुओं के पास अधोलोक में उतर गए; अर्थात् वे जो उसकी भुजा थे, और जाति-जाति के बीच उसकी छाया में रहते थे। (Sheol h7585) १७ “इसलिए महिमा और बड़ाई के विषय में अदन के वृक्षों में से तू किसके समान है? तू तो अदन के और वृक्षों के साथ अधोलोक में उतारा जाएगा, और खतनारहित लोगों के बीच तलवार से मारे हुओं के संग पड़ा रहेगा। फिरौन अपनी सारी भीड़-भाड़ समेत ऐसे ही होगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।”

३२ बारहवें वर्ष के बारहवें महीने के पहले दिन को यहोवा का यह वचन

मेरे पास पहुँचा: १ “हे मनुष्य के सन्तान, मिथ के राजा फिरौन के विषय विलाप का गीत बनाकर उसको सुना: जाति-जाति में तेरी उपा जवान सिंह से दी गई थी, परन्तु तू समुद्र के मार के समान है; तू अपनी नदियों में टूट पड़ा, और उनके जल को पाँवों से मथकर गंदला कर दिया। २ परमेश्वर यहोवा यह कहता है: मैं बहुत सी जातियों की सभा के द्वारा तुझ पर अपना जाल फैलाऊँगा, और वे तुझे मेरा महाजाल में खीच लेंगे। ३ तब मैं तुझे भूमि पर छोड़ूँगा, और मैदान में फैककर आकाश के सब पक्षियों को तुझ पर बैठाऊँगा; और तेरे माँस से सारी पृथकी के जीवजन्तुओं को तूम करूँगा। ४ मैं तेरे माँस को पहाड़ों पर रखूँगा, और तराइयों को तेरी ऊँचाई से भर ढूँगा। ५ जिस देश में तू तैरता है, उसको पहाड़ों तक मैं तेरे लाह से सीधांचा; और उसके नाले तुझ से भर जाएंगे। ६ जिस समय मैं तुझे मिटाने लाँ, उस समय मैं आकाश को ढाँपूँगा और तारों को धनुन्धला कर ढूँगा; मैं सूर्य को बादल से छिपाऊँगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा। ७ आकाश में जितनी प्रकाशमान ज्योतिहाँ हैं, उन सब को मैं तेरे कारण धनुन्धला कर ढूँगा, और तेरे देश में अंधकार कर ढूँगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। ८ “जब मैं तेरे विनाश का समाचार जाति-जाति में और तेरे अनजाने देशों में फैलाऊँगा, तब बड़े-बड़े देशों के लोगों के मन में रिस उपजाऊँगा। ९ मैं बहुत सी जातियों को तेरे कारण विस्मित कर ढूँगा, और जब मैं उनके राजाओं के सामने अपनी तलवार भेजूँगा, तब तेरे कारण उनके रोएँ खड़े हो जाएँगे, और तेरे गिरने के दिन वे अपने-अपने प्राण के लिये कॉपैटे रहेंगे। १० क्योंकि परमेश्वर यहोवा यह कहता है: बाबेल के राजा की तलवार तुझ पर चलेगी। ११ मैं तेरी भीड़ को ऐसे शर्वीरों की तलवारों के द्वारा गिराऊँगा जो सब जातियों में भयानक है। “वे मिस्र के घमण्ड को तोड़ेंगे, और उसकी सारी भीड़ का सत्यानाश होगा। १२ मैं उसके सब पशुओं को उसके बहुत से जलाशयों के टट पर से नाश करूँगा; और भविष्य में वे न तो मनुष्य के पाँव से और न पशुओं के खुरों से गंदले किए जाएँगे। १३ तब मैं उनका जल निर्मल कर ढूँगा, और उनकी नदियों तेल के समान बहेंगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १४ जब मैं मिस्र देश को उजाड़ ढूँगा और जिससे वह भरपूर है, उसको छुट्टा कर ढूँगा, और जब मैं उसके सब रहनेवालों को मारूँगा, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। १५ “लोगों के विलाप करने के लिये विलाप का गीत यही है; जाति-जाति की छिंगाँ इसे गाएँगी; मिस्र और उसकी सारी भीड़ के विषय वे यही विलापीत गाएँगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।” १६ फिर बारहवें वर्ष के पहले महीने के पन्द्रहवें दिन को यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: १७ “हे मनुष्य के सन्तान, मिस्र की भीड़ के लिये हाय-हाय कर, और उसको प्रतापी जातियों की बेटियों समेत कब्र में गडे हुओं के पास अधोलोक में उतार। १८ तू किस से मनोहर है? तू उत्तरकर खतनाहीनों के संग पड़ा रह। १९ “वे तलवार से मेरे हुओं के बीच गिरेंगे, उनके लिये तलवार ही ठहराई गई है; इसलिए मिस्र को उसकी सारी भीड़ समेत घसीट ले जाओ।” २०

सामर्थी शूरवीर उससे और उसके सहायकों से अधोलोक में बातें करेंगे; वे खतनाहीन लोग वहाँ तलवार से मरे पड़े हैं। (Sheol h7585) २४ “अपनी सारी सभा समेत अशशूर भी वहाँ हैं, उसकी कब्रें उसके चारों ओर हैं; सब के सब तलवार से मरे गए हैं। २५ उसकी कब्रें गहै के कोनों में बारी ही हैं, और उसकी कब्र के चारों ओर उसकी सभा है; वे सब के सब जो जीवनलोक में भय उपजाते थे, परन्तु अब कब्र में और गड़े हुओं के संग उनके मुँह पर भी उदासी छाइ हुई है। २६ उसकी सारी भीड़ समेत उसे मरे हुओं के बीच सेज मिली, उसकी कब्रें उसी के चारों ओर हैं, वे सब के सब खतनारहित तलवार से मरे गए; उन्होंने जीवनलोक में भय उपजाया था, परन्तु अब कब्र में और गड़े हुओं के संग उनके मुँह पर उदासी छाइ हुई है; और वे मरे हुओं के बीच रखे गए हैं। २७ “वहाँ सारी भीड़ समेत मेशेक और तबल है, उनके चारों ओर कब्रें हैं; वे सब के सब खतनारहित तलवार से मरे गए, क्योंकि जीवनलोक में वे भय उपजाते थे। २८ उन गिरे हुए खतनारहित शूरवीरों के संग वे पड़े न रहेंगे जो अपने-अपने युद्ध के हथियार लिए हुए अपोलोक में उत्तर गए हैं, वहाँ उनकी तलवरें उनके सिरों के नीचे रखी हुई हैं, और उनके अर्धम के काम उनकी हड्डियों में ब्यास हैं; क्योंकि जीवनलोक में उनसे शूरवीरों को भी भय उपजाता था। (Sheol h7585) २९ इसलिए तभी खतनाहीनों के संग अंग-भंग होकर तलवार से मरे हुओं के संग पड़ा रहेगा। ३० “वहाँ पद्मोम और उसके राजा और उसके सारे प्रथान हैं, जो पाराक्रमी होने पर भी तलवार से मरे हुओं के संग रखे हैं, गड़े में गड़े हुए खतनारहित लोगों के संग वे भी पड़े रहेंगे। ३१ “वहाँ उत्तर दिशा के सारे प्रथान और सारे सीढ़ीनी भी हैं जो मरे हुओं के संग उत्तर गए; उन्होंने अपने पराक्रम से भय उपजाया था, परन्तु अब वे लजिज हुए और तलवार से और मरे हुओं के साथ वे भी खतनारहित पड़े हुए हैं, और कब्र में अन्य गड़े हुओं के संग उनके मुँह पर भी उदासी छाइ हुई है। ३२ “इन्हें देखकर फ़िरौन भी अपनी सारी भीड़ के विषय में शान्ति पाएगा, हाँ फ़िरौन और उसकी सारी सेना जो तलवार से मारी गई है, परमेश्वर यहोवा की यही बाणी है। ३३ क्योंकि मैंने उसके कारण जीवनलोक में भय उपजाया था; इसलिए वह सारी भीड़ समेत तलवार से और मरे हुओं के सहित खतनारहित के बीच लिटाया जाएगा, परमेश्वर यहोवा की यही बाणी है।”

३३ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: १ “हे मनुष्य के सन्तान, अपने लोगों से कह, जब मैं किसी देश पर तलवार चलाने लगूँ, और उस देश के लोग किसी को अपना पहस्ता करके ठहराएँ, २ तब यदि वह यह देखकर कि इस देश पर तलवार चलाने वाली है, नरसिंगा फूँकर लोगों को चिता दे, ३ तो जो कोई नरसिंगे का शब्द सुनने पर न चेते और तलवार के चलाने से मर जाए, उसका खून उसी के सिर पड़ेगा। ४ उसने नरसिंगे का शब्द सुना, परन्तु न चेता; इसलिए उसका खून उसी को लगेगा। परन्तु, यदि वह चेत जाता, तो अपना प्राण बचा लेता। ५ परन्तु यदि पहस्ता यह देखने पर कि तलवार चलाने वाली है नरसिंगा फूँकर लोगों को न चिताएँ, और तलवार के चलाने से उसे से कोई मर जाए, तो वह तो अपने अर्धमें फ़ैसा हुआ मर जाएगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं पहस्त ही से लूँगा। ६ “इसलिए, हे मनुष्य के सन्तान, मैंने तुझे इसाएल के घराने का पहस्ता ठहरा दिया है; तू मेरे मुँह से वचन सुन-सुनकर उन्हें मेरी ओर से चिता दो। ७ यदि मैं युद्ध से कहूँ, ‘हे युद्ध, तू निश्चय मरेगा,’ तब यदि तू युद्ध को उसके मार्ग के विषय न चिताएँ, तो वह युद्ध अपने अर्धमें फ़ैसा हुआ मरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं तुझी से लूँगा। ८

परन्तु यदि तू युद्ध को उसके मार्ग के विषय चिताएँ कि वह अपने मार्ग से फ़िरे और वह अपने मार्ग से न फ़िरे, तो वह तो अपने अर्धमें फ़ैसा हुआ मरेगा, परन्तु तू अपना प्राण बचा लेगा। ९ “फ़िर हे मनुष्य के सन्तान, इसाएल के घराने से यह कह, तुम लोग कहते हो: ‘हमारे अपराधों और पापों का भार हमारे ऊपर लदा हुआ है और हम उसके कारण नाश हुए जाते हैं, हम कैसे जीवित रहें?’ १० इसलिए तू उनसे यह कह, परमेश्वर यहोवा की यह बाणी है: मेरे जीवन की सौगंध, मैं दृश्य के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता, परन्तु इससे कि दृश्य अपने मार्ग से फ़िरकर जीवित रहें; हे इसाएल के घराने, तुम अपने-अपने बुरे मार्ग से फ़िर जाओ; तुम क्यों मरो? ११ हे मनुष्य के सन्तान, अपने लोगों से यह कह, जब धर्मी जन अपराध करे तब उसकी धार्मिकता उसे बचा न सकती; और दृश्य की दृश्यता भी जो हो, जब वह उससे फ़िर जाए, तो उसके कारण वह न गिरेगा; और धर्मी जन जब वह पाप करे, तब उपनी धार्मिकता के कारण जीवित न रहेगा। १२ यदि मैं धर्मी से कहूँ कि तू निश्चय जीवित रहेगा, और वह अपने धार्मिकता पर भरोसा करके कुटिल काम करने लगे, तब उसके धार्मिकता के कामों में से किसी का स्मरण न किया जाएगा; जो कुटिल काम उसने किए हों वह उन्हीं में फ़ैसा हुआ मरेगा। १३ फ़िर जब मैं दृश्य से कहूँ, तू निश्चय मरेगा, और वह अपने पाप से फ़िरकर न्याय और धर्म के काम करने लगे, १४ अर्थात् यदि दृश्य जन बन्धक लौटा दे, अपनी लूटी हुई बस्तुएँ भर दे, और बिना कुटिल काम किए जीवनदायक विधियों पर चलने लगे, तो वह न मरेगा; वह निश्चय जीवित रहेगा। १५ जितने पाप उसने किए हों, उनमें से किसी का स्मरण न किया जाएगा; उसने न्याय और धर्म के काम किए और वह निश्चय जीवित रहेगा। १६ “तो भी तुम्हारे लोग कहते हैं, प्रभु की चाल ठीक नहीं; परन्तु उन्हीं की चाल ठीक नहीं है। १७ जब धर्मी अपने धार्मिकता से फ़िरकर कुटिल काम करने लगे, तब निश्चय वह उनमें फ़ैसा हुआ मर जाएगा। १८ जब दृश्य अपनी दृश्यता से फ़िरकर न्याय और धर्म के काम करने लगे, तब वह उनके कारण जीवित रहेगा। १९ तो भी तुम कहते हो कि प्रभु की चाल ठीक नहीं? हे इसाएल के घराने, मैं हर एक व्यक्ति का न्याय उसकी चाल ही के अनुसार करूँगा।” २० फ़िर हमारी बँधुआई के ग्यारहवें वर्ष के दसवें महीने के पाँचवें दिन को, एक व्यक्ति जो यस्तश्लेम से भागकर बच गया था, वह मेरे पास आकर कहने लगा, “नगर ले लिया गया।” २१ उस भागे हुए के आने से पहले साँझा को यहोवा की शक्ति मुझ पर हुई थी; और भोर तक अर्थात् उस मनुष्य के आने तक उसने मेरा मुँह खोल दिया; अतः मेरा मुँह खुला ही रहा, और मैं फ़िर गँगा न रहा। २२ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: २३ “हे मनुष्य के सन्तान, इसाएल की भूमि के उन खण्डहरों के रहनेवाले यह कहते हैं, अब्राहम एक ही मनुष्य था, तो भी देश का अधिकारी हुआ; परन्तु हम लोग बहुत से हैं, इसलिए देश निश्चय हमारे ही अधिकार में दिया गया है। २४ इस कारण तू उनसे कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है, तुम लोग तो माँस लह समेत खाते और अपनी मूरतों की ओर दृष्टि करते, और हत्या करते हो; फ़िर क्या तुम उस देश के अधिकारी रहने पाओगे? २५ तुम अपनी-अपनी तलवार पर भरोसा करते और अपनै काम करते, और अपने-अपने पड़ोसी की झीं को अशुद्ध करते हो; फ़िर क्या तुम उस देश के अधिकारी रहने पाओगे? २६ तू उनसे यह कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: मेरे जीवन की सौगंध, निःन्देह जो लोग खण्डहरों में रहते हैं, वे तलवार से गिरेंगे, और जो खुले मैदान में रहता है, उसे मैं जीवन्तुओं का आहार कर दूँगा, और जो गढ़ों और गुफाओं में रहते हैं, वे मरी से मरेंगे। २७ मैं उस देश को उजाड़ ही उजाड़ कर दूँगा; और उसके बल का धमण्ड जाता रहेगा; और इसाएल के पहाड़ ऐसे उजाड़ेंगे कि उन पर होकर कोई न चलेगा। २८ इसलिए जब मैं उन

लोगों के किए हुए सब धिनैने कामों के कारण उस देश को उजाड़ ही उजाड़ कर दूँगा, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। ३० “हे मनुष्य के सन्तान, तेरे लोग दीवाहों के पास और घरों के द्वारों में तेरे विषय में बातें करते और एक दूसरे से कहते हैं, ‘आओ, सुनो, यहोवा की ओर से कौन सा वचन निकलता है।’ ३१ वे प्रजा के समान तेरे पास आते और मेरी प्रजा बनकर तेरे सामने बैठकर तेरे वचन सुनते हैं, परन्तु वे उन पर चलते नहीं; मुँह से तो वे बहुत प्रेम दिखाते हैं, परन्तु उनका मन लालच ही में लगा रहता है। ३२ तु उनकी दृष्टि में प्रेम के मध्य गीत गानेवाले और अच्छे बजानेवाले का सा ठहरा है, क्योंकि वे तेरे वचन सुनते तो हैं, परन्तु उन पर चलते नहीं। ३३ इसलिए जब यह बात घटेगी, और वह निश्चय घटेगी! तब वे जान लेंगे कि हमारे बीच एक भविष्यद्वत्ता आया था।”

३४ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: १ “हे मनुष्य के सन्तान, इसाएल

के चरवाहों के विस्तु भविष्यद्वाणी करके उन चरवाहों से कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हाय इसाएल के चरवाहों पर जो अपने-अपने पेट भरते हैं! क्या चरवाहों को भेड़-बकरियों का पेट न भरना चाहिए? २ तुम लोग चबीं खाते, ऊन पहनते और मोटे-मोटे पशुओं को काटते हो; परन्तु भेड़-बकरियों को तुम नहीं चराते। ३ तुम ने बीमारों को बलवान न किया, न रोगियों को चंगा किया, न धायतों के घावों को बाँधा, न निकाली हृदय को लौटा लाए, न खोई हृदय को खोजा, परन्तु तुम ने बल और जबरदस्ती से अधिकार चलाया है। ४ वे चरवाहे के न होने के कारण तितर-बितर हूँड़े, और सब बन-पशुओं का आहार हो गई। ५ मेरी भेड़-बकरियाँ तितर-बितर हूँड़े हैं; वे सारे पहाड़ों और ऊँचे-ऊँचे टीलों पर भटकती थीं; मेरी भेड़-बकरियाँ सारी पृथ्वी के ऊपर तितर-बितर हूँड़े, और न तो कोई उनकी सुधि लेता था, न कोई उनको ढूँढता था। ६ “इस कारण, हे चरवाहों, यहोवा का वचन सनो: ७ परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, मेरी भेड़-बकरियाँ जो लुट गईं, और मेरी भेड़-बकरियाँ जो चरवाहे के न होने के कारण सब बन-पशुओं का आहार हो गईं; और इसलिए कि मेरे चरवाहों ने मेरी भेड़-बकरियों की सुधि नहीं ली, और मेरी भेड़-बकरियों का पेट नहीं, अपना ही अपना पेट भरा; ८ इस कारण हे चरवाहों, यहोवा का वचन सनो, ९ परमेश्वर यहोवा यह कहता है: देखो, मैं चरवाहों के विस्तु हूँ, और मैं उनसे अपनी भेड़-बकरियों का लेखा लूँगा, और उनको फिर उन्हें चराने न दूँगा; वे फिर अपना-अपना पेट भरने न पाएँगे। मैं अपनी भेड़-बकरियों उनके मुँह से छुड़ाऊँगा कि आगे को वे उनका आहार न हों। १० “क्योंकि परमेश्वर यहोवा यह कहता है, देखो, मैं आप ही अपनी भेड़-बकरियों की सुधि लूँगा, और उन्हें ढूँढ़ागा। ११ जैसे चरवाहा अपनी भेड़-बकरियों में से भटकी हृदय को फिर से अपने छुण्ड में बटोरता है, वैसे ही मैं भी अपनी भेड़-बकरियों को बटोरूँगा, मैं उन्हें उन सब स्थानों से निकाल ले आऊँगा, जहाँ-जहाँ वे बालन और घोर अंधकार के दिन तितर-बितर हो गई हों। १२ मैं उन्हें देश-देश के लोगों में से निकालूँगा, और देश-देश से इकट्ठा करूँगा, और उन्हीं के निज भूमि में ले आऊँगा; और इसाएल के पहाड़ों पर और नालों में और उस देश के सब बसेहुए ऐस्थानों में चराऊँगा। १३ मैं उन्हें अच्छी चराई में चराऊँगा, और इसाएल के ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर उनको चराई मिलेगी; वहाँ वे अच्छी हरियाली में बैठा करेंगी, और इसाएल के पहाड़ों पर उत्तम से उत्तम चराई चरेंगी। १४ मैं आप ही अपनी भेड़-बकरियों का चरवाहा होऊँगा, और मैं आप ही उन्हें बैठाऊँगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १५ मैं खोई हृदय को ढूँढ़ागा, और निकाली हृदय को लौटा लाऊँगा, और धायत के घाव बाँधूँगा, और बीमार को बलवान करूँगा, और जो मोटी और बलवन्त है उन्हें मैं नाश करूँगा, मैं उनकी चरवाही न्याय से करूँगा। १६ “हे मेरे झुण्ड-भेड़ के बीच और मेड़ों

और बकरों के बीच न्याय करता हूँ। १७ क्या तुम्हें यह छोटी बात जान पड़ती है कि तुम अच्छी चराई चर लो और शेष चराई को अपने पाँवों से रौदी; और यह तुम्हें यह छोटी बात जान पड़ती है कि तुम निर्मल जल पी लो और शेष जल को अपने पाँवों से गंदला करो? १८ क्या मेरी भेड़-बकरियों को तुम्हरे पाँवों से रौदे हुए को चरना, और तुम्हरे पाँवों से गंदले किए हुए को पीना पड़ेगा? १९ “इस कारण परमेश्वर यहोवा उनसे यह कहता है, देखो, मैं आप मोटी और दुली भेड़-बकरियों के बीच न्याय करूँगा। २० तुम जो सब बीमारों को बाज़ और कंधे से यहाँ तक ढकेलते और सींग से यहाँ तक मारते हो कि वे तितर-बितर हो जाती हैं, २१ इस कारण मैं अपनी भेड़-बकरियों को छुड़ाऊँगा, और वे फिर न लूटेंगी, और मैं भेड़-भेड़ के और बकरी-बकरी के बीच न्याय करूँगा। २२ मैं उन पर ऐसा एक चरवाहा ठहराऊँगा जो उनकी चरवाही करेगा, वह मेरा दास दाऊद होगा, वही उनको चाराएंगा, और वही उनका चरवाहा होगा। २३ मैं, यहोवा, उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और मेरा दास दाऊद उनके बीच प्रधान होगा; मुझ यहोवा ही ने यह कहा है। २४ “मैं उनके साथ शान्ति की वाचा बाँधूँगा, और दृष्ट जन्तुओं को देश में न रहने दूँगा; अतः वे जंगल में निर रहेंगे, और वन में सोएँगे। २५ मैं उन्हें और अपनी पहाड़ी के आस-पास के स्थानों को आशीष का कारण बना लूँगा, और मैं ठीक समय में बरसाया करूँगा; और वे आशीषों की वर्षा होंगी। २६ मैदान के बृक्ष फलेंगे और भूमि अपनी उपज उपजाएंगी, और वे अपने देश में निर रहेंगे; जब मैं उनके जाए को तोड़कर उन लोगों के हाथ से छुड़ाऊँगा, जो उनसे सेवा करते हैं, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। २७ वे फिर जाति-जाति से लूटे न जाएँगे, और न वन पशु उन्हें फाड़ खाएँगे; वे निर रहेंगे, और उनको कोई न डराएंगा। २८ मैं उनके लिये उपजाओ बारी उपजाऊँगा, और वे देश में फिर भूखे न मरेंगे, और न जाति-जाति के लोग फिर उनकी निन्दा करेंगे। २९ और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर यहोवा, उनके सांग हूँ, और वे जो इसाएल का धराना है, वे मेरी प्रजा हैं, मुझ परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। ३० तुम तो मेरी भेड़-बकरियाँ, मेरी चराई की भेड़-बकरियाँ हो, तुम तो मनुष्य हो, और मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।”

३५ यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: १ “हे मनुष्य के सन्तान, अपना

मुँह से ईर पहाड़ की ओर करके उसके विस्तु भविष्यद्वाणी कर, २ और उससे कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हे सेईर पहाड़, मैं तेरे विस्तु हूँ; और अपना हाथ तेरे विस्तु बढ़ाकर तुझे उजाड़ ही उजाड़ कर दूँगा। ३ मैं तेरे नारों को खण्डहर कर दूँगा, और तू उजाड़ हो जाएगा; तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूँ। ४ क्योंकि तू इसाएलियों से युग-युग की शत्रुता रखता था, और उनकी विपत्ति के समय जब उनके अर्धम के दण्ड का समय पहुँचा, तब उन्हें तलवार से मारे जाने को दे दिया। ५ इसलिए परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, मैं तुझे हत्या किए जाने के लिये तैयार करूँगा और खन तेरा पीछा करेगा; तू तो खन से न घिनाता था, इस कारण खन तेरा पीछा करेगा। ६ इस रीति मैं सेईर पहाड़ को उजाड़ ही उजाड़ कर दूँगा, और जो उसमें आता-जाता हो, मैं उसको नाश करूँगा। ७ मैं उसके पहाड़ों को मारे हुओं से भर दूँगा; तेरे टीलों, तराइयों और सब नालों में तलवार से मारे हुए पिंडेंगे। ८ मैं तुझे युग-युग के लिये उजाड़ कर दूँगा, और तेरे नार फिर न बर्देंगे। तब तुम जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। ९ “क्योंकि तूने कहा है, ‘ये दोनों जातियाँ और ये दोनों देश मेरे होंगे; और हम ही उनके स्वामी हो जाएँगे,’ यद्यपि यहोवा वही था। १० इस कारण, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, तेरे कोप के अनुसार, और जो जलजलाहट तने उन पर अपने बैर के कारण की है, उसी के अनुसार मैं तुझ से बर्दाव करूँगा, और जब मैं तेरा न्याय करूँगा,

तुम में अपने को प्रगट कर्सँगा। १२ तू जानेगा, कि मुझ यहोवा ने तेरी सब तिरस्कार की बातें सुनी हैं, जो तुमे इसाएल के पहाड़ों के विषय में कहीं, ‘वे तो उजड़ गए, वे हम ही को दिए गए हैं कि हम उन्हें खा डालें।’ १३ तुम ने अपने मुँह से मेरे विश्वद बड़ाइ मारी, और मेरे विश्व बहुत बातें कहीं हैं, इसे मैंने सुना है। १४ परमेश्वर यहोवा यह कहता है: जब पृथ्वी भर में आनन्द होगा, तब मैं तुझे उजाड़ दूँगा १५ तू इसाएल के घराने के निज भाग के उजड़ जाने के कारण आनन्दित हआ, इसलिए मैं भी तुझ से वैसा ही कह्सँगा; हे सेहर पहाड़, हे पदोम के सारे देश, तू उजाड़ हो जाएगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”

३६ “फिर हे मनुष्य के सन्तान, तू इसाएल के पहाड़ों से भविष्यद्वाणी करके

कह, हे इसाएल के पहाड़ों, यहोवा का वचन सुनो। १ परमेश्वर यहोवा यह कहता है: श्रुते तो तुम्हारे विषय में कहा है, ‘आहा! प्राचीनकाल के ऊँचे स्थान अब हमारे अधिकार में आ गए।’ २ इस कारण भविष्यद्वाणी करके कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: लोगों ने जो तुहँसे उजाड़ा और चारों ओर से तुम्हें ऐसा निगल लिया कि तुम बची हुई जातियों का अधिकार हो जाओ, और बकवादी तुम्हारी चर्चा करते और साधारण लोग तुम्हारी निन्दा करते हैं; ३ इस कारण, हे इसाएल के पहाड़ों, परमेश्वर यहोवा का वचन सुनो, परमेश्वर यहोवा तुम से यह कहता है, अर्थात् पहाड़ों और पहाड़ियों से और नालों और तराइयों से, और उजड़े हुए खण्डहरों और निर्जन नगरों से जो चारों ओर की बची हुई जातियों से लट गए और उनके हँसने के कारण हो गए हैं; ४ परमेश्वर यहोवा यह कहता है, निश्चय मैंने अपनी जलन की आग में बची हुई जातियों के और उनसे एटोम के विश्व में कहा है कि जिन्होंने मेरे देश को अपने मन के पौरे आनन्द और अभिमान से अपने अधिकार में किया है कि वह पराया होकर लटा जाए। ५ इस कारण इसाएल के देश के विषय में भविष्यद्वाणी करके पहाड़ों, पहाड़ियों, नालों, और तराइयों से कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है, देखो, तुम ने जातियों की निन्दा सही है, इस कारण मैं अपनी बड़ी जलजलाहट से बोला हूँ। ६ परमेश्वर यहोवा यह कहता है: मैंने यह शपथ खाई है कि निःसदेह तुम्हारे चारों ओर जो जातियाँ हैं, उनको अपनी निन्दा आप ही सहनी पड़ेगी। ७ “परन्तु, हे इसाएल के पहाड़ों, तुम पर डालियाँ पनपेंगी और उनके फल मेरी प्रजा इसाएल के लिये लालेंगी; क्योंकि उसका लौट आना निकट है। ८ देखो, मैं तुम्हारे पक्ष में हूँ, और तुम्हारी ओर कूपादृष्टि करँगा, और तुम जोते-बोए जाओगे; ९ और मैं तुम पर बहुत मनुष्य अर्थात् इसाएल के सारे घराने को बसाऊँगा; और नगर फिर बसाए और खण्डहर फिर बनाए जाएँगे। १० मैं तुम पर मनुष्य और पशु दोनों को बहुत बढ़ाऊँगा; और वे बढ़े और फ्लै-फ्लैंगे, और मैं तुम को प्राचीनकाल के समान बसाऊँगा, और पहले से अधिक तुम्हारी भलाई करँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। ११ मैं ऐसा करँगा कि मनुष्य अर्थात् मेरी प्रजा इसाएल तुम पर चले-फिरेगी; और वे तुम्हारे स्वामी होंगे, और तुम उनका निज भाग होंगे, और वे फिर तुम्हारे कारण निर्वश न हो जाएँगे। १२ परमेश्वर यहोवा यह कहता है: जो लोग तुम से कहा करते हैं, ‘तू मनुष्यों का खानेवाला है, और अपने पर बसी हुई जाति को निर्वश कर देता है,’ १३ इसलिए फिर तू मनुष्यों को न खाएगा, और न अपने पर बसी हुई जाति को निर्वश करेगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १४ मैं फिर जाति-जाति के लोगों से तेरी निन्दा न सनवाऊँगा, और तुझे जाति-जाति की ओर से फिर निन्दा न सहनी पड़ेगी, और तुझ पर बसी हुई जाति को तू फिर ठोकर न खिलाएगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।” १५ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: १६ “हे मनुष्य के सन्तान, जब इसाएल का घराना अपने देश में रहता था, तब अपनी चाल चलन और कामों के द्वारा वे

उसको अशद्व करते थे; उनकी चाल चलन मुझे ऋतुमती की अशद्वता-सी जान पड़ती थी। १७ इसलिए जो हत्या उन्होंने देश में की, और देश को अपनी मूरतों के द्वारा अशद्व किया, इसके कारण मैंने उन पर अपनी जलजलाहट भड़काई। १८ मैंने उन्हें जाति-जाति में तिरत-बितर किया, और वे देश-देश में बिखर गए, उनके चाल चलन और कामों के अनुसार मैंने उनको दण्ड दिया। १९ परन्तु जब वे उन जातियों में पहुँचे जिनमें वे पहुँचाए गए, तब उन्होंने मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ठहराया, क्योंकि लोग उनके विषय में यह कहने लगे, ‘ये यहोवा की प्रजा हैं, परन्तु उसके देश से निकाले गए हैं।’ २० परन्तु मैंने अपने पवित्र नाम की सुधि ली, जिसे इसाएल के घराने के बीच अपवित्र ठहराया था, जहाँ वे गए थे। २१ “इस कारण तू इसाएल के घराने से कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हे इसाएल के घराने, मैं इसको तुम्हारे निमित्त नहीं, परन्तु अपने पवित्र नाम के निमित्त करता हूँ जिसे तुम ने उन जातियों में अपवित्र ठहराया जहाँ तुम गए थे। २२ मैं अपने बड़े नाम को पवित्र ठहराऊँगा, जो जातियों में अपवित्र ठहराया गया, जिसे तुम ने उनके बीच अपवित्र किया; और जब मैं उनकी दृष्टि में तुम्हारे बीच पवित्र ठहरँगा, तब वे जातियों जान लेंगी कि मैं यहोवा हूँ, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। २३ मैं तुम को जातियों में से ले लैंगा, और देशों में से इकश्त करँगा, और तुम को तुम्हारे निज देश में पहुँचा दूँगा। २४ मैं तुम पर शद्व जल छिड़कँगा, और तुम शद्व हो जाओगे; और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशद्वता और मूरतों से शद्व करँगा। २५ मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करँगा; और तुम्हारी देह में से पलथर का हृदय निकालकर तुम को माँस का हृदय दूँगा। २६ मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे। २७ तुम उस देश में बसेगे जो मैंने तुम्हारे पितरों को दिया था; और तुम मेरी प्रजा ठराओगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरँगा। २८ मैं तुम को तुम्हारी सारी अशद्वता से छुड़ाऊँगा, और अनन्त उपजने की आज्ञा देकर, उसे बढ़ाऊँगा और तुम्हारे बीच अकाल न ढालाऊँगा। २९ मैं वक्षों के फल और खेत की उपज बढ़ाऊँगा, कि जातियों में अकाल के कारण फिर तुम्हारी निन्दा न होगी। ३० तब तुम अपने बड़े चाल चलन और अपने कामों को जो अच्छे नहीं थे, स्मरण करके अपने अर्धर्म और धिनैने कामों के कारण अपने आप से धूणा करोगे। ३१ परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, तुम जान लो कि मैं इसको तुम्हारे निमित्त नहीं करता। हे इसाएल के घराने अपने चाल चलन के विषय में लजिज्ज हो और तुम्हारा मुख काला हो जाए। ३२ “परमेश्वर यहोवा यह कहता है, जब मैं तुम को तुम्हारे सब अर्धम के कामों से शद्व करँगा, तब तुम्हारे नगरों को बसाऊँगा; और तुम्हारे खण्डहर फिर बनाए जाएँगे। ३३ तुम्हारा देश जो सब आने जानेवालों के समाने उजाड़ है, वह उजाड़ होने के बदले जोता बोया जाएगा। ३४ और लोग कहा करेंगे, ‘यह देश जो उजाड़ था, वह अदन की बारी-सा हो गया, और जो नगर खण्डहर और उजाड़ हो गए और ढाए गए थे, वे गढ़वाले हुए, और बसाए गए हैं।’ ३५ तब जो जातियों तुम्हारे आस-पास बची रहेंगी, वे जान लेंगी कि मुझ यहोवा ने ढाए हुए को फिर बनाया, और उजाड़ में पेड़ रोपे हैं, मुझ यहोवा ने यह कहा, और ऐसा ही करँगा। ३६ “परमेश्वर यहोवा यह कहता है, इसाएल के घराने में फिर मुझसे विनती की जाएगी कि मैं उनके लिये यह करँ; अर्थात् मैं उनमें मनुष्यों की गिनती भेड़-बकरियों के समान बढ़ाऊँगा। ३७ जैसे पवित्र समयों की भेड़-बकरियाँ, अर्थात् नियत पर्वों के समय यस्त्सलेम में की भेड़-बकरियाँ अनगिनत होती हैं वैसे ही जो नगर अब खण्डहर हैं वे अनगिनत मनुष्यों के झूण्डों से भर जाएँगे। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।”

३७ यहोवा की शक्ति मुझ पर हुई, और वह मुझ में अपना आत्मा समवाकर

बाहर ले गया और मुझे तराई के बीच खड़ा कर दिया; वह तराई हड्डियों से भरी हुई थी। २ तब उसने मुझे उनके चारों ओर घुमाया, और तराई की तह पर बहुत ही हड्डियाँ थीं; और वे बहुत सखी थीं। ३ तब उसने मुझसे पछा, “हे मनुष्य के सन्तान, क्या ये हड्डियाँ जी सकती हैं?” मैंने कहा, “हे परमेश्वर यहोवा यहोवा, तू ही जानता है।” ४ तब उसने मुझसे कहा, “इन हड्डियों से भविष्यद्वाणी करके कह, ‘हे सखी हड्डियों, यहोवा का वचन सुनो।’ ५ परमेश्वर यहोवा तुम हड्डियों से यह कहता है: देखो, मैं आप तुम में साँस समवाऊँगा, और तुम जी उठोगी। ६ मैं तुम्हारी नर्ये उपजाकर माँस चढ़ाऊँगा, और तुम को चमड़े से ढाँपँगा; और तुम में साँस समवाऊँगा और तुम जी जाओगी; और तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूँ।” ७ इस आज्ञा के अनुसार मैं भविष्यद्वाणी करने लगा, और मैं भविष्यद्वाणी कर ही रहा था, कि एक आहट आई, और भूकम्प हुआ, और वे हड्डियाँ इक्की होकर हड्डी से हड्डी जुड़ गई। ८ मैं देखता रहा, कि उनमें नर्से उत्पन्न हुई और माँस चढ़ा, और वे ऊपर चमड़े से ढाँप गईं, परन्तु उनमें साँस कछ न थी। ९ तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान साँस से भविष्यद्वाणी कर, और सौंस से भविष्यद्वाणी करके कह, हे सौंस, परमेश्वर यहोवा यह कहता है कि वारों दिशाओं से आकर इन घाट किए हुओं में समा जा कि ये जी उठें।” १० उसकी इस आज्ञा के अनुसार मैंने भविष्यद्वाणी की, तब साँस उम्रे आ गई, और वे जीकर अपने-अपने पाँवों के बल खड़े हो गए; और एक बहुत बड़ी सेना हो गई। ११ फिर उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, ये हड्डियाँ इसाएल के सारे घराने की उपमा हैं। वे कहते हैं, हमारी हड्डियाँ सूख गईं, और हमारी आशा जाती रही; हम पूरी रिति से कट चके हैं।” १२ इस कारण भविष्यद्वाणी करके उनसे कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हे मेरी प्रजा के लोगों, देखो, मैं तुम्हारी कब्रें खोलकर तुम को उनसे निकालूँगा, और इसाएल के देश में पहुँचा दूँगा। १३ इसलिए जब मैं तुम्हारी कब्रें खोलूँ, और तुम को उसे निकालूँ, तब हे मेरी प्रजा के लोगों, तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ। १४ मैं तुम में अपना आत्मा समवाऊँगा, और तुम जीओगे, और तुम को तुम्हारे निज देश में बसाऊँगा; तब तुम जान लोगे कि मुझ यहोवा ही ने यह कहा, और किया भी है, यहोवा की यही वाणी है।” १५ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: १६ “हे मनुष्य के सन्तान, एक लकड़ी लेकर उस पर लिख, ‘यहदा की और उसके संगी इसाएलियों की;’ तब दूसरी लकड़ी लेकर उस पर लिख, ‘यूसुफ की अर्थात् ऐम की, और उसके संगी इसाएलियों की लकड़ी।’” १७ फिर उन लकड़ियों को एक दूसरी से जोड़कर एक ही कर ले कि वे तेरे हाथ में एक ही लकड़ी बन जाएँ। १८ जब तेरे लोग तुझ से पूछें, ‘क्या तू हमें न बताएगा कि इनसे तेरा क्या अभिप्राय है?’ १९ तब उनसे कहना, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: देखो, मैं यूसुफ की लकड़ी को जो ऐम के हाथ मैं हूँ, और इसाएल के जो गोत्र उसके संगी है, उनको लेकर यहदा की लकड़ी से जोड़कर उसके साथ एक ही लकड़ी कर दूँगा; और दोनों मेरे हाथ में एक ही लकड़ी बनेंगी। २० जिन लकड़ियों पर तू ऐसा लिखेगा, वे उनके सामने तेरे हाथ में रहें। २१ तब तू उन लोगों से कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है, देखो, मैं इसाएलियों को उन जातियों में से लेकर जिनमें वे चले गए हैं, चारों ओर से इकट्ठा करूँगा; और उनके निज देश में पहुँचाऊँगा। २२ मैं उनको उस देश अर्थात् इसाएल के पहाड़ों पर एक ही जाति कर दूँगा; और उन सभी का एक ही राजा होगा; और वे फिर दो न रहेंगे और न दो राज्यों में कभी बटेंगे। २३ वे फिर अपनी मूरतों, और धिनौने कामों या अपने किसी प्रकार के पाप के द्वारा अपने को अशुद्ध न करेंगे; परन्तु मैं उनको उन सब बस्तियों से, जहाँ वे पाप करते थे, निकालकर शुद्ध करूँगा, और वे मेरी प्रजा होंगे, और मैं

उनका परमेश्वर होऊँगा। २४ “मेरा दास दाऊद उनका राजा होगा; और उन सभी का एक ही चरबाहा होगा। वे मेरे नियमों पर चलेंगे और मेरी विधियों को मानकर उनके अनुसार चलेंगे। २५ वे उस देश में हरेंगे जिसे मैंने अपने उस याकूब को दिया था; और जिसमें तुम्हारे पुराखा रहते थे, उसी में वे और उनके बेटे-पोते सदा बसे रहेंगे; और मेरा दास दाऊद सदा उनका प्रधान रहेगा। २६ मैं उनके साथ शान्ति की बाचा बाँधूँगा, वह सदा की बाचा ठहरेगी; और मैं उन्हें स्थान देकर गिनती में बढ़ाऊँगा, और उनके बीच अपना पवित्रस्थान सदा बनाए रखूँगा। २७ मेरे निवास का तम्ब उनके ऊपर तना रहेगा; और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरी प्रजा होंगे। २८ जब मेरा पवित्रस्थान उनके बीच सदा के लिये रहेगा, तब सब जातियाँ जान लेंगी कि मैं यहोवा इसाएल का पवित्र करेवाला हूँ।”

३८ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा: १ “हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुँह मांगो देश के गोग की ओर करके, जो रोश, मेशेक और तबल का प्रधान है, उसके विस्तु भविष्यद्वाणी कर। २ और यह कह, हे गोग, हे रोश, मेशेक, और तबल के प्रधान, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: देख, मैं तेरे विस्तु हूँ। ३ मैं तुझे धुमा ले आऊँगा, और तेरे जबड़ों में निकल डालकर तुझे निकालूँगा; और तेरी सारी सेना को भी अर्थात् घोड़ों और सवारों को जो सब के सब कवच पहने हुए एक बड़ी भीड़ हैं, जो फरी और ढाल लिए हुए सब के सब तलवार चलानेवाले होंगे; ४ और उनके संग फारस, कश और पूत को, जो सब के सब ढाल लिए हैं और टोप लगाए होंगे; ५ और गोमे और उसके सारे दलों को, और उत्तर दिशा के दूर-दूर देशों के तोर्मा के धराने, और उसके सारे दलों को निकालूँगा; तेरे संग बहु से देशों के लोग होंगे। ६ “इसलिए तू तैयार हो जा; तू और जितनी भीड़ तेरे पास इकट्ठी हों, तैयार रहना, और तू उनका अगुआ बनना। ७ बहुत दिशों के बीतने पर तेरी सुधि ली जाएगी, और अन्त के बर्षों में तू उस देश में आएगा, जो तलवार के बश से छुटा हुआ होगा, और जिसके निवासी बहुत सी जातियों में से इकट्ठे होंगे; अर्थात् तू इसाएल के पहाड़ों पर आएगा जो निरन्तर उजाड़ रहे हैं; परन्तु वे देश-देश के लोगों के बश से छुड़ाए जाकर सब के सब निडर रहेंगे। ८ तू चढ़ाई करेगा, और अँधी के समान आएगा, और अपने सारे दलों और बहुत देशों के लोगों समेत मेघ के समान देश पर छा जाएगा। ९ “परमेश्वर यहोवा यह कहता है, उस दिन तेरे मन में ऐसी-ऐसी बातें आएंगी कि तू एक बड़ी युक्ति भी निकालेगा; १० और तू कहेगा कि मैं बिन शहरपान के गाँवों के देश पर चढ़ाई करूँगा, मैं उन लोगों के पास जाऊँगा जो चैन से निरद रहते हैं; जो सब के सब बिना शहरपान है और बिना बेड़ों और पल्लों के बोसे हुए हैं; ११ ताकि छीनकर तू उन्हें लटे और अपना हाथ उन खण्डहरों पर बढ़ाए जो फिर बसाए गए, और उन लोगों के विस्तु जाए जो जातियों में से इकट्ठे हुए थे और पृथ्वी की नाभि पर बसे हुए पशु और अन्य सम्पत्ति रखते हैं। १२ शेबा और ददान के लोग और तर्शीश के व्यापारी अपने देश के सब जवान सिंहों समेत तुझ से कहेंगे, ‘क्या तू लटने का आता है? क्या तूने धन छीने, सोना-चाँदी उठाने, पशु और सम्पत्ति ले जाने, और बड़ी लट अपना लेने को अपनी भीड़ इकट्ठी की है?’ १३ “इस कारण, हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके गोग से कह, परमेश्वर यहोवा यह कहता है, जिस समय मेरी प्रजा इसाएल निडर बरी रहेगी, क्या तुझे इसका समाचार न मिलेगा? १४ तू उत्तर दिशा के दूर-दूर स्थानों से आएगा; तू और तेरे साथ बहुत सी जातियों के लोग, जो सब के सब घोड़ों पर चढ़े हुए होंगे, अर्थात् एक बड़ी भीड़ और बलवन्त सेना। १५ जैसे बादल भूमि पर छा जाता है, वैसे ही तू मेरी प्रजा इसाएल के देश पर ऐसे चढ़ाई करेगा। इसलिए हे गोग,

अन्त के दिनों में ऐसा ही होगा, कि मैं तुझ से अपने देश पर इसलिए चढ़ाई कराऊँगा, कि जब मैं जातियों के देखते तेरे द्वारा अपने को पवित्र ठहराऊँ, तब वे मुझे फहान लेंगे। १७ “परमेश्वर यहोवा यह कहता है, क्या तू वही नहीं जिसकी चर्चा मैंने प्राचीनकाल में अपने दासों के, अर्थात् इसाएल के उन भविष्यद्वक्ताओं द्वारा की थी, जो उन दिनों में वर्षों तक यह भविष्यद्वाणी करते गए, कि यहोवा गोग से इशाएलियों पर चढ़ाई कराएगा? १८ जिस दिन इसाएल के देश पर गोग चढ़ाई करेगा, उसी दिन मेरी जलजलाहट मेरे मुख से प्रगट होगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। १९ मैंने जलजलाहट और क्रोध की आग में कहा कि निःसन्देह उस दिन इशाएल के देश में बड़ा भूकम्प होगा। २० और मेरे दर्शन से समझ की मछलियाँ और आकाश के पक्षी, मैदान के पश्च और भूमि पर जितने जीव-जन्तु रंगते हैं, और भूमि के ऊपर जितने मनुष्य रहते हैं, सब काँप उठेंगे; और पहाड़ गिराए जाएंगे; और चढ़ाइयाँ नाश होंगी, और सब दीवारें गिरकर मिट्टी में मिल जाएंगी। २१ परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है कि मैं उसके विस्तृत तलवार चलाने के लिये अपने सब पहाड़ों को पुकासँगा और हर एक की तलवार उसके भाई के विस्तृत उठेगी। २२ मैं मरी और खन के द्वारा उससे मुक़द्दमा लड़ूँगा, और उस पर और उसके दलों पर, और उन बहुत सी जातियों पर जो उसके पास होंगी, मैं बड़ी झड़ी लगाऊँगा, और ओले और आग और गन्धक बरसाऊँगा। २३ इस प्रकार मैं अपने को महान और पवित्र ठहराऊँगा और बहुत सी जातियों के सामने अपने को प्रगट करूँगा। तब वे जान लेंगी कि मैं यहोवा हूँ।”

३९ “फिर हे मनुष्य के सन्तान, गोग के विस्तृत भविष्यद्वाणी करके यह कह, हे गोग, हे रोश, मेंढक और तबल के प्रधान, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: मैं तेरे विस्तृत हूँ। १८ मैं तुझे धुमा ले आऊँगा, और उत्तर दिशा के दूर-दूर देशों से चढ़ा ले आऊँगा, और इशाएल के पहाड़ों पर पहुँचाऊँगा। १९ वहाँ मैं तेरा धनुष तेरे बाँध हाथ से गिराऊँगा, और तेरे तीरों को तेरे दाहिनी हाथ से गिरा दूँगा। २० तू अपने सारे दलों और अपने साथ की सारी जातियों समेत इशाएल के पहाड़ों पर मार डाला जाएगा; मैं तुझे भाँति-भाँति के माँसाहारी पक्षियों और बन-पशुओं का आहार कर दूँगा। २१ तू खेत में गिरेगा, क्योंकि मैं ही ने ऐसा कहा है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। २२ मैं मांगेगा मैं और द्वीपों के निर रहनेवालों के बीच आग लगाऊँगा; और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। २३ “मैं अपनी प्रजा इशाएल के बीच अपना नाम प्रगट करूँगा; और अपना पवित्र नाम फिर अपवित्र न होने दूँगा; तब जाति-जाति के लोग भी जान लेंगे कि मैं यहोवा, इशाएल का पवित्र हूँ। २४ यह घटना होनेवाली है और वह हो जाएगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। यह वही दिन है जिसकी चर्चा मैंने की है। २५ “तब इशाएल के नगरों के रहनेवाले निकलेंगे और हथियारों में आग लगाकर जला देंगे, ढाल, और फरी, धनुष, और तीर, लाठी, बर्छे, सब को वे सात वर्ष तक जलाते रहेंगे। २६ इस कारण वे मैदान में लकड़ी न बीमारी, न जंगल में काटेंगे, क्योंकि वे हथियारों ही को जलाया करेंगे; वे अपने लटनेवाले को लटेंगे, और अपने छीनेवालों से छीनेंगे, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। २७ “उस समय मैं गोग को इशाएल के देश में कब्रिस्तान दूँगा, वह ताल की पूर्व ओर होगा; वह अने जानेवालों की तराई कहलाएगी, और अने जानेवालों को वहाँ स्कना पडेगा; वहाँ सब भीड़ समेत गोग को मिट्टी दी जाएगी और उस स्थान का नाम गोग की भीड़ की तराई पडेगा। २८ इशाएल का घराना उनको सात महीने तक मिट्टी देता रहेगा ताकि अपने देश को शुद्ध करें जिसके लिये उनको जो भूमि के ऊपर पड़े हों, मिट्टी देंगे; और सात महीने के बीतने तक वे ढूँढ़ ढूँढ़कर यह काम करते रहेंगे। २९ देश में अने जानेवालों में से जब कोई मनुष्य की हड्डी देखे, तब उसके पास एक चिन्ह खड़ा करेगा, यह उस समय तक बना रहेगा जब तक मिट्टी देनेवाले उसे गोग की भीड़ की तराई में गाड़ न दें। ३० वहाँ के नगर का नाम भी ‘हमोना’ है। इस प्रकार देश शुद्ध किया जाएगा। ३१ “फिर हे मनुष्य के सन्तान, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: भाँति-भाँति के सब पक्षियों और सब बन-पशुओं को आजा दे, डकड़े होकर आओ, मेरे इस बड़े यज्ञ में जो मैं तुम्हारे लिये इशाएल के पहाड़ों पर करता हूँ, हर एक दिशा से इकड़े हो कि तुम माँस खाओ और लहू पीओ। ३२ तुम शूरवीरों का माँस खाओगे, और पृथ्वी के प्रधानों का लहू पीओगे और मेढ़ों, मेम्पों, बकरों और बैतों का भी जो सब के सब बाशान के तैयार किए हुए होंगे। ३३ मेरे उस भोज की चर्ची से जो मैं तुम्हारे लिये करता हूँ, तुम खाते-खाते अथा जाओगे, और उसका लहू पीते-पीते छक जाओगे। ३४ तुम मेरी मेज पर घोड़ों, सवारों, शूरवीरों, और सब प्रकार के योद्धाओं से तुम होंगे, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। ३५ “मैं जाति-जाति के बीच अपनी महिमा प्रगट करूँगा, और जाति-जाति के सब लोग मेरे न्याय के काम जो मैं करूँगा, और मेरा हाथ जो उन पर पड़ेगा, देख लेंगे। ३६ उस दिन से आगे इशाएल का घराना जान लेगा कि यहोवा हमारा परमेश्वर है। ३७ जाति-जाति के लोग भी जान लेंगे कि इशाएल का घराना अपने अर्थमें का कारण बैंधुआई में गया था; क्योंकि उन्होंने मुझसे ऐसा विश्वासघात किया कि मैंने अपना मुँह उनसे मोड़ लिया और उनको उनके बैरियों के वश कर दिया, और वे सब तलवार से मारे गए। ३८ मैंने उनकी अशुद्धता और अपराधों के अनुसार उनसे बर्ताव करके उनसे अपना मुँह मोड़ लिया था। ३९ “इसलिए परमेश्वर यहोवा यह कहता है: अब मैं याकूब को बैंधुआई से लौटा लाऊँगा, और इशाएल के सारे घराने पर दया करूँगा; और अपने पवित्र नाम के लिये मुझे जलन होगी। ४० तब उस सारे विश्वासघात के कारण जो उन्होंने मेरे विस्तृत किया वे लजित होंगे; और अपने देश में निर रहेंगे; और कोई उनको न डराएगा। ४१ जब मैं उनको जाति-जाति के बीच से लौटा लाऊँगा, और उन शत्रुओं के देशों से इकट्ठा करूँगा, तब बहुत जातियों की दृष्टि में उनके द्वारा पवित्र ठहस्ती। ४२ तब वे जान लेंगे कि यहोवा हमारा परमेश्वर है, क्योंकि मैंने उनको जाति-जाति में बैंधुआ का कर्कि किए उनके निज देश में इकट्ठा किया है। मैं उनमें से किसी को फिर परदेश में न छोड़ूँगा, ४३ और उनसे अपना मुँह फिर कभी न मोड़ लूँगा, क्योंकि मैंने इशाएल के घराने पर अपना आत्मा उण्डेला है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।”

वाणी है। ४४ तब वे मनुष्यों को नियुक्त करेंगे, जो निरन्तर इसी काम में लगे रहेंगे, अर्थात् देश में धूम-धामकर आने जानेवालों के संग होकर देश को शुद्ध करने के लिये उनको जो भूमि के ऊपर पड़े हों, मिट्टी देंगे; और सात महीने के बीतने तक वे ढूँढ़ ढूँढ़कर यह काम करते रहेंगे। ४५ देश में अने जानेवालों में से जब कोई मनुष्य की हड्डी देखे, तब उसके पास एक चिन्ह खड़ा करेगा, यह उस समय तक बना रहेगा जब तक मिट्टी देनेवाले उसे गोग की भीड़ की तराई में गाड़ न दें। ४६ वहाँ के नगर का नाम भी ‘हमोना’ है। इस प्रकार देश शुद्ध किया जाएगा। ४७ “फिर हे मनुष्य के सन्तान, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: भाँति-भाँति के सब पक्षियों और सब बन-पशुओं को आजा दे, डकड़े होकर आओ, मेरे इस बड़े यज्ञ में जो मैं तुम्हारे लिये इशाएल के पहाड़ों पर करता हूँ, हर एक दिशा से इकड़े हो कि तुम माँस खाओ और लहू पीओ। ४८ तुम शूरवीरों का माँस खाओगे, और पृथ्वी के प्रधानों का लहू पीओगे और मेढ़ों, मेम्पों, बकरों, और बैतों का भी जो सब के सब बाशान के तैयार किए हुए होंगे। ४९ मेरे उस भोज की चर्ची से जो मैं तुम्हारे लिये करता हूँ, तुम खाते-खाते अथा जाओगे, और उसका लहू पीते-पीते छक जाओगे। ५० तुम मेरी मेज पर घोड़ों, सवारों, शूरवीरों, और सब प्रकार के योद्धाओं से तुम होंगे, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। ५१ “मैं जाति-जाति के बीच अपनी महिमा प्रगट करूँगा, और जाति-जाति के सब लोगों के लिये मुझसे ऐसा विश्वासघात किया कि मैंने अपना मुँह मोड़ लिया और उनको उनके बैरियों के वश कर दिया, और वे सब तलवार से मारे गए। ५२ मैंने उनकी अशुद्धता और अपराधों के अनुसार उनसे बर्ताव करके उनसे अपना मुँह मोड़ लिया था। ५३ “इसलिए परमेश्वर यहोवा यह कहता है: अब मैं याकूब को बैंधुआई से लौटा लाऊँगा, और इशाएल के सारे घराने पर दया करूँगा; और अपने पवित्र नाम के लिये मुझे जलन होगी। ५४ तब उस सारे विश्वासघात के कारण जो उन्होंने मेरे विस्तृत किया वे लजित होंगे; और अपने देश में निर रहेंगे; और कोई उनको न डराएगा। ५५ जब मैं उनको जाति-जाति के बीच से लौटा लाऊँगा, और उन शत्रुओं के देशों से इकट्ठा करूँगा, तब बहुत जातियों की दृष्टि में उनके द्वारा पवित्र ठहस्ती। ५६ तब वे जान लेंगे कि यहोवा हमारा परमेश्वर है, क्योंकि मैंने उनको जाति-जाति में बैंधुआ का कर्कि किए उनके निज देश में इकट्ठा किया है। मैं उनमें से किसी को फिर परदेश में न छोड़ूँगा, ५७ और उनसे अपना मुँह फिर कभी न मोड़ लूँगा, क्योंकि मैंने इशाएल के घराने पर अपना आत्मा उण्डेला है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।”

४० हमारी बैंधुआई के पचचीसवें वर्ष अर्थात् यस्सलेम नगर के ले लिए

जाने के बाद चौदहवें वर्ष के पहले महीने के दसवें दिन को, यहोवा की शक्ति मुझ पर हुई, और उसने मुझे वहाँ पहुँचाया। १ अपने दर्शनों में परमेश्वर ने मुझे इशाएल के देश में पहुँचाया और वहाँ एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर खड़ा किया, जिस पर दक्षिण ओर माने किसी नगर का आकार था। २ जब वह मुझे वहाँ ले गया, तो मैंने क्या देखा कि पीतल का स्पूष धेर हुए और हाथ में सन का फीता और मापने का बाँस लिए हुए एक पुस्त फाटक में खड़ा है। ३ उस पुस्त ने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, अपनी आँखों से देख, और अपने कानों से सुन, और जो कुछ मैं तुझे दिखाऊँगा उस सब पर ध्यान दे, क्योंकि मैंने इशाएल के घराने को बताए।” ४ और देखो, भवन के बाहर चारों ओर

एक दीवार थी, और उस पुस्तक के हाथ में मापने का बौंस था, जिसकी लम्बाई ऐसे छः हाथ की थी जो साधारण हाथों से चार अंगुल भर अधिक है; अतः उसने दीवार की मोटाई मापकर बौंस भर की पाई, फिर उसकी ऊँचाई भी मापकर बौंस भर की पाई। ६ तब वह उस फाटक के पास आया जिसका मुँह पूर्व की ओर था, और उसकी सीढ़ी पर चढ़कर फाटक की दोनों डेवडियों की चौड़ाई मापकर एक-एक बौंस भर की पाई। ७ पहरेवाली कोठरियाँ बौंस भर लम्बी और बौंस भर चौड़ी थीं; और दो-दो कोठरियों का अन्तर पाँच हाथ का था; और फाटक की डेवडी जो फाटक के ओसरों के पास भवन की ओर थी, वह भी बौंस भर की थी। ८ तब उसने फाटक का वह ओसारा जो भवन के सामने था, मापकर बौंस भर का पाया। ९ उसने फाटक का ओसारा मापकर आठ हाथ का पाया, और उसके खम्भे दो-दो हाथ के पाए, और फाटक का ओसारा भवन के सामने था। १० पूर्वी फाटक के दोनों ओर तीन-तीन पहरेवाली कोठरियाँ जी जो सब एक ही माप की थी, और दोनों ओर के खम्भे भी एक ही माप के थे। ११ फिर उसने फाटक के द्वार की चौड़ाई मापकर दस हाथ की पाई; और फाटक की लम्बाई मापकर तेरह हाथ की पाई। १२ दोनों ओर की पहरेवाली कोठरियों के आगे हाथ भर का स्थान था और दोनों ओर कोठरियाँ छः छः हाथ की थीं। १३ फिर उसने फाटक को एक ओर की पहरेवाली कोठरी की छत से लेकर दूसरी ओर की पहरेवाली कोठरी की छत तक मापकर पच्चीस हाथ की दूरी पाई, और द्वार आमने-सामने थे। १४ फिर उसने साठ हाथ के खम्भे मापे, और आँगन, फाटक के आस-पास, खम्भों तक था। १५ फाटक के बाहरी द्वार के आगे से लेकर उसके भीतरी ओसरों के आगे तक पचास हाथ का अन्तर था। १६ पहरेवाली कोठरियों में, और फाटक के भीतर चारों ओर कोठरियों के बीच के खम्भे के बीच-बीच में द्विलमिलीदार खिड़कियाँ थीं, और खम्भों के ओसरों में भी वैसी ही थीं; और फाटक के भीतर के चारों ओर खिड़कियाँ थीं, और हर एक खम्भे पर खजर के पेड़ खुदे हुए थे। १७ तब वह मुझे बाहरी आँगन में ले गया; और उस आँगन के चारों ओर कोठरियाँ थीं; और एक फर्श बना हुआ था; जिस पर तीस कोठरियाँ बनी थीं। १८ यह फर्श अर्थात् निचला फर्श फाटकों से लगा हुआ था और उनकी लम्बाई के अनुसार था। १९ फिर उसने निचले फाटक के आगे से लेकर भीतरी आँगन के बाहर के आगे तक मापकर सौ हाथ पाए; वह पूर्व और उत्तर दोनों ओर ऐसा ही था। २० तब बाहरी आँगन के उत्तरमुखी फाटक की लम्बाई और चौड़ाई उसने मारी। २१ उसके दोनों ओर तीन-तीन पहरेवाली कोठरियाँ थीं, और इसके भी खम्भों के ओसरों की माप पहले फाटक के अनुसार थीं; इसकी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी। २२ इसकी भी खिड़कियों और खम्भों के ओसरों और खजूरों की माप पूर्वमुखी फाटक की सी थीं; और इस पर चढ़ने को सात सीढ़ियाँ थीं; और उनके सामने इसका ओसारा था। २३ भीतरी आँगन की उत्तर और पूर्व की ओर दूसरे फाटकों के सामने फाटक थे और उसने फाटकों की दूरी मापकर सौ हाथ की पाई। २४ फिर वह मुझे दक्षिण की ओर ले गया, और दक्षिण ओर एक फाटक था, और उसने इसके खम्भे और खम्भों का ओसारा मापकर इनकी वैसी ही माप पाई। २५ उन खिड़कियों के समान इसके और इसके खम्भों के ओसरों के चारों ओर भी खिड़कियाँ थीं; इसकी भी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी। २६ इसमें भी चढ़ने के लिये सात सीढ़ियाँ थीं और उनके सामने खम्भों का ओसारा था; और उसके दोनों ओर के खम्भों पर खजर के पेड़ खुदे हुए थे। २७ दक्षिण की ओर भी भीतरी आँगन का एक फाटक था, और उसने दक्षिण ओर के दोनों फाटकों की दूरी मापकर सौ हाथ की पाई। २८ तब वह दक्षिणी फाटक से होकर मुझे भीतरी आँगन में ले गया, और उसने

दक्षिणी फाटक को मापकर वैसा ही पाया। २९ अर्थात् इसकी भी पहरेवाली कोठरियाँ, और खम्भे, और खम्भों का ओसारा, सब वैसे ही थे, और इसके और इसके खम्भों के ओसरों की भी चारों ओर भी खिड़कियाँ थीं; और इसकी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी। ३० इसके चारों ओर के खम्भों का ओसारा भी पच्चीस हाथ लम्बा, और पचास हाथ चौड़ा था। ३१ इसका खम्भों का ओसारा बाहरी आँगन की ओर था, और इसके खम्भों पर भी खजर के पेड़ खुदे हुए थे, और इस पर चढ़ने को आठ सीढ़ियाँ थीं। ३२ फिर वह पुस्त्र मुझे पूर्व की ओर भीतरी आँगन में ले गया, और उस ओर के फाटक को मापकर वैसा ही पाया। ३३ इसकी भी पहरेवाली कोठरियाँ और खम्भे और खम्भों का ओसारा, सब वैसे ही थे; और इसके और इसके खम्भों के ओसरों की भी चारों ओर भी खिड़कियाँ थीं; इसकी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी। ३४ इसका ओसारा भी बाहरी आँगन की ओर था, और उसके दोनों ओर के खम्भों पर खजर के पेड़ खुदे हुए थे; और इसके दोनों ओर कोठरियाँ थीं। ३५ फिर उस पुस्त्र ने मुझे उत्तरी फाटक के पास ले जाकर उसे मापा, और उसकी भी माप वैसी ही पाई। ३६ उसके भी पहरेवाली कोठरियाँ और खम्भे और उनका ओसारा था; और उसके भी चारों ओर खिड़कियाँ थीं; उसकी लम्बाई पचास और चौड़ाई पच्चीस हाथ की थी। ३७ उसके खम्भे बाहरी आँगन की ओर थे, और उन पर भी दोनों ओर खजर के पेड़ खुदे हुए थे; और उसमें चढ़ने को आठ सीढ़ियाँ थीं। ३८ फिर फाटकों के पास के खम्भों के निकट द्वार समेत कोठरी थी, जहाँ होमबलि धोया जाता था। ३९ होमबलि, पापबलि, और दोषबलि के पश्चुओं के वध करने के लिये फाटक के ओसरों के पास उसके दोनों ओर दो-दो मेजें थीं। ४० फाटक की एक बाहरी ओर पर अर्थात् उत्तरी फाटक के द्वार की चढ़ाई पर दो मेजें थीं; और उसकी दूसरी बाहरी ओर पर भी, जो फाटक के ओसरों के पास थी, दो मेजें थीं। ४१ फाटक के दोनों ओर चार-चार मेजें थीं, सब मिलकर आठ मेजें थीं, जो बलिपृथक वध करने के लिये थीं। ४२ फिर होमबलि के लिये तराशे हुए पत्थर की चार मेजें थीं, जो ढेल हाथ लम्बी, ढेल हाथ चौड़ी, और हाथ भर ऊँची थीं; उन पर होमबलि और मेलबलि के पश्चुओं को वध करने के हथियार रखे जाते थे। ४३ भीतर चारों ओर चार अंगुल भर की आंकड़ियाँ लगी थीं, और मेजों पर चढ़ावे का माँस रखा हुआ था। ४४ भीतरी आँगन के उत्तरी फाटक के बाहर गानेवालों की कोठरियाँ थीं जिनके द्वार दक्षिण ओर थे; और पूर्वी फाटक की ओर एक कोठरी थी, जिसका द्वार उत्तर ओर था। ४५ उसने मुझसे कहा, “यह कोठरी, जिसका द्वार दक्षिण की ओर है, उन याजकों के लिये है जो भवन की चौकसी करते हैं, ४६ और जिस कोठरी का द्वार उत्तर की ओर है, वह उन याजकों के लिये है जो वैदी की चौकसी करते हैं; ये सादोक की सन्तान हैं; और लेवियों में से यहोवा की सेवा ठहल करने को केवल ये ही उसके समीप जाते हैं।” ४७ फिर उसने आँगन को मापकर उसे चौकोर अर्थात् सौ हाथ लम्बा और सौ हाथ चौड़ा पाया; और भवन के सामने वैदी थी। ४८ फिर वह मुझे भवन के ओसरों में ले गया, और ओसरों के दोनों ओर के खम्भों को मापकर पाँच-पाँच हाथ का पाया; और दोनों ओर फाटक की चौड़ाई तीन-तीन हाथ की थी। ४९ ओसरों की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई ग्यारह हाथ की थी; और उस पर चढ़ने को सीढ़ियाँ थीं; और दोनों ओर के खम्भों पर के पास लाटें थीं।

४१ फिर वह पुस्त्र मुझे मन्दिर के पास ले गया, और उसके दोनों ओर के खम्भों को मापकर छः छः हाथ चौड़े पाया, यह तो तम्बू की चौड़ाई थी। ४२ द्वार की चौड़ाई दस हाथ की थी, और द्वार की दोनों ओर की दीवारें

पाँच-पाँच हाथ की थी; और उसने मन्दिर की लम्बाई मापकर चालीस हाथ की, और उसकी चौड़ाई बीस हाथ की पाई। ३ तब उसने भीतर जाकर द्वार के खम्भों को मापा, और दो-दो हाथ का पाया; और द्वार छः हाथ का था; और द्वार की चौड़ाई सात हाथ की थी। ४ तब उसने भीतर के भवन की लम्बाई और चौड़ाई मन्दिर के सामने मापकर बीस-बीस हाथ की पाई; और उसने मुझसे कहा, “यह तो परमपवित्र स्थान है।” ५ फिर उसने भवन की दीवार को मापकर छः हाथ की पाया, और भवन के आस-पास चार-चार हाथ चौड़ी बाहरी कोठरियाँ थीं। ६ ये बाहरी कोठरियाँ तीन मंजिला थीं; और एक-एक महल में तीस-तीस कोठरियाँ थीं। भवन के आस-पास की दीवार इसलिए थी कि बाहरी कोठरियाँ उसके सहारे में हो; और उसी में कोठरियों की कड़ियाँ बैठाई हुई थीं और भवन की दीवार के सहारे में न थीं। ७ भवन के आस-पास जो कोठरियाँ बाहर थीं, उनमें से जो ऊपर थीं, वे अधिक चौड़ी थीं; अर्थात् भवन के आस-पास जो कुछ बना था, वह जैसे-जैसे ऊपर की ओर चढ़ता गया, वैसे-वैसे चौड़ा होता गया; इस रीति, इस घर की चौड़ाई ऊपर की ओर बढ़ी हुई थी, और लोग निचली मंजिल के बीच से ऊपरी मंजिल को चढ़ सकते थे। ८ फिर मैंने भवन के आस-पास ऊँची भूमि देखी, और बाहरी कोठरियों की ऊँचाई जोड़ तक छः हाथ के बाँस की थी। ९ बाहरी कोठरियों के लिये जो दीवार थी, वह पाँच हाथ मोटी थी, और जो स्थान खाली रह गया था, वह भवन की बाहरी कोठरियों का स्थान था। १० बाहरी कोठरियों के बीच-बीच भवन के आस-पास बीस हाथ का अन्तर था। ११ बाहरी कोठरियों के द्वार उस स्थान की ओर थे, जो खाली था, अर्थात् एक द्वार उत्तर की ओर और दूसरा दक्षिण की ओर था; और जो स्थान रह गया, उसकी चौड़ाई चारों ओर पाँच-पाँच हाथ की थी। १२ फिर जो भवन मन्दिर के पश्चिमी आँगन के सामने था, वह सत्तर हाथ चौड़ा था; और भवन के आस-पास की दीवार पाँच हाथ मोटी थी, और उसकी लम्बाई नब्बे हाथ की थी। मन्दिर की सम्पूर्ण माप १३ तब उम्रे भवन की लम्बाई मापकर सौ हाथ की पाई; और दीवारों से मिटे आँगन की भी लम्बाई मापकर सौ हाथ की पाई। १४ भवन का पूर्वी सामना और उसका आँगन सौ हाथ चौड़ा था। १५ फिर उसने पीछे के आँगन के सामने की दीवार की लम्बाई जिसके दोनों ओर छज्जे थे, मापकर सौ हाथ की पाई; और भीतरी भवन और आँगन के ओसारों को भी मापा। १६ तब उसने डेवलियों और डिलमिलीदार खिड़कियों, और आस-पास की तीनों मंजिल के छज्जों को मापा जो डेवली के सामने थे, और चारों ओर उनकी तख्ता बन्दी हुई थी; और भूमि से खिड़कियों तक और खिड़कियों के आस-पास सब कहीं तख्ताबन्दी हुई थी। १७ फिर उसने द्वार के ऊपर का स्थान भीतरी भवन तक और उसके बाहर भी और आस-पास की सारी दीवार के भीतर और बाहर भी मापा। १८ उसमें कर्स्ब और खजूर के पेड़ ऐसे खुदे हुए थे कि दो-दो कर्स्बों के बीच एक-एक खजूर का पेड़ था; और कर्स्बों के दो-दो मुख थे। १९ इस प्रकार से एक-एक खजूर की एक ओर मनुष्य का मुख बनाया हुआ था, और दूसरी ओर जबान सिंह का मुख बनाया हुआ था। इसी रीति सारे भवन के चारों ओर बना था। २० भूमि से लेकर द्वार के ऊपर तक कर्स्ब और खजूर के पेड़ खुदे हुए थे, मन्दिर की दीवार इसी भाँति बनी हुई थी। २१ भवन के द्वारों के खम्भे चौकोर थे, और पवित्रस्थान के सामने का स्पर्श मन्दिर का सा था। २२ वेदी काठ की बनी थी, और उसकी ऊँचाई तीन हाथ, और लम्बाई दो हाथ की थी; और उसके कोने और उसका सारा पाट और अलंगों भी काठ की थी। और उसने मुझसे कहा, “यह तो यहोवा के सम्मुख की मेज है।” २३ मन्दिर और पवित्रस्थान के द्वारों के दो-दो किवाड़ में २४ और हर एक किवाड़ में दो-दो मुड़नेवाले पल्ले थे, हर एक किवाड़ के लिये दो-दो पल्ले। २५ जैसे

मन्दिर की दीवारों में कर्स्ब और खजूर के पेड़ खुदे हुए थे, वैसे ही उसके किवाड़ों में भी थे, और ओसारे की बाहरी ओर लकड़ी की मोटी-मोटी धरनें थीं। २६ ओसारे के दोनों ओर डिलमिलीदार खिड़कियाँ थीं और खजूर के पेड़ खुदे थे; और भवन की बाहरी कोठरियाँ और मोटी-मोटी धरनें भी थीं।

४२ फिर वह पुस्त मुझे बाहरी आँगन में उत्तर की ओर ले गया, और मुझे उन

दो कोठरियों के पास लाया जो भवन के आँगन के सामने और उसके उत्तर की ओर थीं। २८ सौ हाथ की दूरी पर उत्तरी द्वार था, और चौड़ाई पचास हाथ की थी। २९ भीतरी आँगन के बीस हाथ सामने और बाहरी आँगन के फर्श के सामने तीनों महलों में छज्जे थे। ३० कोठरियों के सामने भीतर की ओर जानेवाला दस हाथ चौड़ा एक मार्ग था; और हाथ भर का एक और मार्ग था; और कोठरियों के द्वार उत्तर की ओर थे। ३१ ऊपरी कोठरियाँ छोटी थीं, अर्थात् छज्जों के कारण वे निचली और बिचली कोठरियों से छोटी थीं। ३२ जो दीवार कोठरियों के बाहर उनके पास-पास थी अर्थात् कोठरियों के सामने बाहरी आँगन की ओर थी, उसकी लम्बाई पचास हाथ की थी। ३३ क्योंकि बाहरी आँगन की कोठरियाँ पचास हाथ लम्बी थीं, और मन्दिर के सामने की ओर सौ हाथ की थी। ३४ इन कोठरियों के नीचे पूर्व की ओर मार्ग था, जहाँ लोग बाहरी आँगन से इनमें जाते थे। ३५ आँगन की दीवार की चौड़ाई में पूर्व की ओर अलग स्थान और भवन दोनों के सामने कोठरियाँ थीं। ३६ उनके सामने का मार्ग उत्तरी कोठरियों के मार्ग-सा था; उनकी लम्बाई चौड़ाई बाबर थी और निकास और ढंग उनके द्वार के से थे। ३७ दक्षिणी कोठरियों के द्वारों के अनुसार मार्ग के सिरे पर द्वार था, अर्थात् पूर्व की ओर की दीवार के सामने, जहाँ से लोग उनमें प्रवेश करते थे। ३८ फिर उसने मुझसे कहा, “ये उत्तरी और दक्षिणी कोठरियाँ जो आँगन के सामने हैं, वे ही पवित्र कोठरियाँ हैं, जिनमें यहोवा के समीप जानेवाले याजक परमपवित्र वस्तुएँ खाया करेंगे; वे परमपवित्र वस्तुएँ, और अन्नबलि, और पापबलि, और दोषबलि, वही रखेंगे; क्योंकि वह स्थान पवित्र है। ३९ जब जब याजक लोग भीतर जाएंगे, तब-तब निकलने के समय वे पवित्रस्थान से बाहरी आँगन में ऐसे ही न निकलेंगे, अर्थात् वे पहले अपनी सेवा टहल के बब्ल पवित्रस्थान में रहे देंगे; क्योंकि वे कोठरियाँ पवित्र हैं। तब वे सूरे वस्त्र पहनकर साधारण लोगों के स्थान में जाएँगे।” ४० जब वह भीतरी भवन को माप चुका, तब मुझे पूर्व दिशा के फाटक के मार्ग से बाहर ले जाकर बाहर का स्थान चारों ओर मापने लगा। ४१ उसने पूर्वी ओर को मापने के बाँस से मापकर पाँच सौ बाँस का पाया। ४२ तब उसने उत्तरी ओर को मापने के बाँस से मापकर पाँच सौ बाँस का पाया। ४३ तब उसने दक्षिणी ओर को मापने के बाँस से मापकर पाँच सौ बाँस का पाया। ४४ और पश्चिमी ओर को मुड़कर उसने मापने के बाँस से मापकर उसे पाँच सौ बाँस का पाया। ४५ उसने उस स्थान की चारों सीमाएँ मापी, और उसके चारों ओर एक दीवार थी, वह पाँच सौ बाँस लम्बी और पाँच सौ बाँस चौड़ी थी, और इसलिए बनी थी कि पवित्र और सर्वसाधारण को अलग-अलग करे।

४३ फिर वह पुस्त मुझ को उस फाटक के पास ले गया जो पूर्वमुखी था।

४६ तब इसाएल के परमेश्वर का तेज पूर्व दिशा से आया; और उसकी वाणी बहुत से जल की घरघराहट सी हुई; और उसके तेज से पृथ्वी प्रकाशित हुई। ४७ यह दर्शन उस दर्शन के तुल्य था, जो मैंने उसे नगर के नाश करने को आते समय देखा था; और उस दर्शन के समान, जो मैंने कबार नदी के टट पर देखा था; और मैं मुँह के बल गिर पड़ा। ४८ तब यहोवा का तेज उस फाटक से होकर

जो पूर्वमुखी था, भवन में आ गया। ५ तब परमेश्वर के आत्मा ने मुझे उठाकर भीतरी अँगन में पहुँचाया, और यहोवा का तेज भवन में भरा था। ६ तब मैंने एक जन का शब्द सुना, जो भवन में से मुझसे बोल रहा था, और वह पुष्प मैं पास खड़ा था। ७ उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, यहोवा की यह बाणी है, यह तो मेरे सिंहासन का स्थान और मेरे पाँव रखने की जगह है, जहाँ मैं इसाएल के बीच सदा वास किए रहूँगा। और न तो इसाएल का घराना, और न उसके राजा अपने व्यभिचार से, या अपने ऊँचे स्थानों में अपने राजाओं के शर्वों के द्वारा मेरा पवित्र नाम फिर अशुद्ध ठहराएँगे। ८ वे अपनी डेवढी मेरी डेवढी के पास, और अपने द्वार के खम्भे मेरे द्वार के खम्भों के निकट बनाते थे, और मेरे और उनके बीच केल दीवार ही थी, और उन्होंने अपने धिनौने कामों से मेरा पवित्र नाम अशुद्ध ठहराया था; इसलिए मैंने कोप करके उन्हें नाश किया। ९ अब वे अपना व्यभिचार और अपने राजाओं के शब मेरे सम्मुख से टूर कर दें, तब मैं उनके बीच सदा वास किए रहूँगा। १० “हे मनुष्य के सन्तान, तु इसाएल के घराने को इस भवन का नमूना दिया कि वे अपने अधर्म के कामों से लज्जित होकर उस नमूने को मापें। ११ यदि वे अपने सारे कामों से लज्जित हों, तो उन्हें इस भवन का आकार और स्वरूप, और इसके बाहर भीतर आने-जाने के मार्ग, और इसके सब आकार और विधियों, और नियम बतलाना, और उनके सामने लिख रखना; जिससे वे इसका सब आकार और इसकी सब विधियाँ स्मरण करके उनके अनुसार करें। १२ भवन का नियम यह है कि पहाड़ की चोटी के चारों ओर का सम्पूर्ण भाग परमपवित्र है। देख भवन का नियम यही है। १३ “ऐसे हाथ के माप से जो साधारण हाथ से चौवा भर अधिक हो, वेदी की माप यह है, अर्थात् उसका आधार एक हाथ का, और उसकी चौड़ाई एक हाथ की, और उसके चारों ओर की छोर पर की पटरी एक चौवे की। और वेदी की ऊँचाई यह है: १४ भूमि पर धरे हुए आधार से लेकर निचली कुर्सी तक दो हाथ की ऊँचाई रहे, और उसकी चौड़ाई हाथ भर की हो; और छोटी कुर्सी से लेकर बड़ी कुर्सी तक चार हाथ हों और उसकी चौड़ाई हाथ भर की हो; १५ और ऊपरी भाग चार हाथ ऊँचा हो; और वेदी पर जलाने के स्थान के चार सींग ऊपर की ओर निकले हों। १६ वेदी पर जलाने का स्थान चौकोर अर्थात् बारह हाथ लम्बा और बारह हाथ चौड़ा हो। १७ निचली कुर्सी चौदह हाथ लम्बी और चौदह हाथ चौड़ी, और उसके चारों ओर की पटरी आधे हाथ की हो, और उसका आधार चारों ओर हाथ भर का हो। उसकी सीढ़ी उसके पूर्व और हो।” १८ फिर उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, परमेश्वर यहोवा यह कहता है, जिस दिन होमबलि चढ़ाने और लह छिड़कने के लिये वेदी बनाई जाए, उस दिन की विधियाँ ये ठहरें। १९ “अर्थात् लेवीय याजक लोग, जो सादोक की सन्तान हैं, और मेरी सेवा टहल करने को मेरे समीप रहते हैं, उन्हें तू पापबलि के लिये एक बछड़ा देना, परमेश्वर यहोवा की यही बाणी है। २० तब तू उसके लह में से कुछ लेकर वेदी के चारों सींगों और कुर्सी के चारों कोनों और चारों ओर की पटरी पर लगाना; इस प्रकार से उसके लिये प्रायश्चित्त करने के द्वारा उसको पवित्र करना। २१ तब पापबलि के बछड़े को लेकर, भवन के पवित्रस्थान के बाहर ठहराए हुए स्थान में जला देना। २२ दूसरे दिन एक निर्दोष बकरा पापबलि करके चढ़ाना; और जैसे बछड़े के द्वारा वेदी पवित्र की जाए, वैसे ही वह इस बकरे के द्वारा भी पवित्र की जाएगी। २३ जब तू उसे पवित्र कर चुके, तब एक निर्दोष बछड़ा और एक निर्दोष मेढ़ा चढ़ाना। २४ तू उन्हें यहोवा के सामने ले आना, और याजक लोग उन पर नमक डालकर उन्हें यहोवा को होमबलि करके चढ़ाएँ। २५ सात दिन तक त् प्रतिदिन पापबलि के लिये एक बकरा तैयार करना, और निर्दोष बछड़ा और भेड़ों में से निर्दोष मेढ़ा भी तैयार किया जाए। २६ सात दिन तक याजक

लोग वेदी के लिये प्रायश्चित्त करके उसे शुद्ध करते रहें; इसी भाँति उसका संस्कार हो। २७ जब वे दिन समाप्त हों, तब आठवें दिन के बाद से याजक लोग तुम्हरे होमबलि और मेलबलि वेदी पर चढ़ाया करें; तब मैं तुम से प्रसन्न होऊँगा, परमेश्वर यहोवा की यही बाणी है।”

४४ फिर वह पुष्प मुझे पवित्रस्थान के उस बाहरी फाटक के पास लौटा ले गया, जो पूर्वमुखी है; और वह बन्द था। २८ तब यहोवा ने मुझसे कहा, “यह फाटक बन्द रहे और खोला न जाए; कोई इससे होकर भीतर जाने न पाएँ; क्योंकि इसाएल का परमेश्वर यहोवा इससे होकर भीतर आया है; इस कारण यह बन्द रहे। २९ केवल प्रधान ही, प्रधान होने के कारण, मेरे सामने भोजन करने को वहाँ बैठेगा; वह फाटक के ओसारे से होकर भीतर जाएँ, और इसी से होकर निकले।” ३० फिर वह उत्तरी फाटक के पास होकर मुझे भवन के सामने ले गया; तब मैंने देखा कि यहोवा का भवन यहोवा के तेज से भर गया है; और मैं मुँह के बल गिर पड़ा। ३१ तब यहोवा ने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, ध्यान देकर अपनी आँखों से देख, और जो कुछ मैं तुझ से अपने भवन की सब विधियों और नियमों के विषय में कहूँ, वह सब अपने कानों से सुन; और भवन के प्रवेश और पवित्रस्थान के सब निकासों पर ध्यान दे। ३२ और उन विरोधियों अर्थात् इसाएल के घराने से कहना, परमेश्वर यहोवा यह कहता है: हे इसाएल के घराने, अपने सब घृणित कामों से अब हाथ उठा। ३३ जब तुम मेरा भोजन अर्थात् चबीं और लह चढ़ाते थे, तब तुम बिराने लोगों को जो मन और तन दोनों के खतनारहित थे, मेरे पवित्रस्थान में आने देते थे कि वे मेरा भवन अपवित्र करें; और उन्होंने मेरी वाचा को तोड़ दिया जिससे तुम्हरे सब घृणित काम बढ़ गए। ३४ तुम ने मेरी पवित्र वस्तुओं की रक्षा न की, परन्तु तुम ने अपने ही मन से अन्य लोगों को मेरे पवित्रस्थान में मेरी वस्तुओं की रक्षा करनेवाले ठहराया। ३५ “इसलिए परमेश्वर यहोवा यह कहता है: इस्माएलियों के बीच जितने अन्य लोग हों, जो मन और तन दोनों के खतनारहित हैं, उनमें से कोई मेरे पवित्रस्थान में न आने पाए। ३६ “परन्तु लेवीय लोग जो उस समय मुझसे दूर हो गए थे, जब इसाएली लोग मुझे छोड़कर अपनी मूरतों के पीछे भटक गए थे, वे अपने अधर्म का भार उठाएँगे। ३७ परन्तु वे मेरे पवित्रस्थान में टहलूए होकर भवन के फाटकों का पहरा देनेवाले और भवन के टहलूए रहें; वे होमबलि और मेलबलि के पश्च लोगों के लिये वध करें, और उनकी सेवा टहल करने को उनके सामने खड़े हुआ करें। ३८ क्योंकि इसाएल के घराने की सेवा टहल वे उनकी मूरतों के सामने करते थे, और उनके ठोकर खाने और अधर्म में फैसले का कारण हो गए थे, इस कारण मैंने उनके विषय में शपथ खाई है कि वे अपने अधर्म का भार उठाएँ, परमेश्वर यहोवा की यही बाणी है। ३९ वे मेरी समीप न आएँ, और न मेरे लिये याजक का काम करें; और न मेरी किसी पवित्र वस्तु, या किसी परमपवित्र वस्तु को ढूने पाएँ, वे अपनी लज्जा का और जो घृणित काम उन्होंने किए, उनका भी भार उठाएँ। ४० तो भी मैं उन्हें भवन में की सौंपी हुई वस्तुओं का रक्षक ठहराऊँगा; उसमें सेवा का जिताना काम हो, और जो कुछ उसमें करना हो, उसके करनेवाले वे ही हों। ४१ “फिर लेवीय याजक जो सादोक की सन्तान हैं, और जिन्होंने उस समय मेरे पवित्रस्थान की रक्षा की जब इसाएली मेरे पास से भटक गए थे, वे मेरी सेवा टहल करने को मेरे सम्पूर्ण खड़े हुआ करें, परमेश्वर यहोवा की यही बाणी है। ४२ वे मेरे पवित्रस्थान में आया करें, और मेरी मेज के पास मेरी सेवा टहल करने को आएँ और मेरी वस्तुओं की रक्षा करें। ४३ जब वे भीतरी अँगन के फाटकों से होकर जाया करें, तब सन के बब्ल पहने हुए जाएँ, और जब वे भीतरी अँगन के फाटकों में या उसके भीतर सेवा टहल करते हों, तब कुछ उन के बब्ल

न पहनें। १८ वे सिर पर सन की सुन्दर टोपियाँ पहनें और कमर में सन की ज़ॉयथिया बांधें हों; किसी ऐसे कपड़े से वे कमर न बैंधे जिससे पर्सीना होता है। १९ जब वे बाहरी आँगन में लोगों के पास निकलें, तब जो बच्च पहने हुए वे सेवा ठहल करते थे, उन्हें उतारकर और पवित्र कोठरियों में रखकर दूसरे बच्च पहनें, जिससे लोग उनके बच्चों के कारण पवित्र न ठहरें। २० न तो वे सिर मुँड़ाएँ, और न बाल लम्बे होने दें; वे केवल अपने बाल कटाएँ। २१ भीती आँगन में जाने के समय कोई याजक दाखिल्य न पी। २२ वे विधवा या छोड़ी हुई श्री को ब्याह न लें; केवल इसाएल के घराने के वंश में से कुँवारी या ऐसी विधवा ब्याह लें जो किसी याजक की श्री हुई हो। २३ वे मेरी प्रजा को पवित्र अपवित्र का भेद सिखाया करें, और शुद्ध अशुद्ध का अन्तर बताया करें। २४ और जब कोई मुकदमा हो तब न्याय करने को भी वे ही बैठें, और मेरे नियमों के अनुसार न्याय करें। मेरे सब नियत पर्वों के विषय भी वे मेरी व्यवस्था और विधियाँ पालन करें, और मेरे क्षितामदिनों को पवित्र मारें। २५ वे किसी मनृष्य के शब के शब के पास न जाएँ कि अशुद्ध हो जाएँ; केवल माता-पिता, बेटे-बेटी, भाई, और ऐसी बहन के शब के कारण जिसका विवाह न हुआ हो वे अपने को अशुद्ध कर सकते हैं। २६ जब वे अशुद्ध हो जाएँ, तब उनके लिये सात दिन गिने जाएँ और तब वे शुद्ध ठहरें, २७ और जिस दिन वे पवित्रत्वान अर्थात् भीती आँगन में सेवा ठहल करने को फिर प्रवेश करें, उस दिन अपने लिये पापबलि चढ़ाएँ, परमेश्वर यहोवा की यही वार्षी है। २८ “उनका एक ही निज भाग होगा, अर्थात् उनका भाग मैं ही हूँ; तुम उन्हें इसाएल के बीच कुछ ऐसी भूमि न देना जो उनकी निज हो; उनकी निज भूमि मैं ही हूँ। २९ वे अन्नबलि, पापबलि और दोषबलि खाया करें; और इसाएल में जो वस्तु अपर्ण की जाए, वह उनको मिला करें। ३० और सब प्रकार की सबसे पहली उपज और सब प्रकार की उठाई हुई बस्तु जो तुम उठाकर चढ़ाओ, याजकों को मिला करें; और नये अन्न का पहला गूँधा हुआ आटा भी याजक को दिया करना, जिससे तुम लोगों के घर में आशीष हो। ३१ जो कुछ अपने आप मरे या फाड़ा गया हो, उसपे आशीष दो गा पांच अम्बका गाँधा याजक न रखा।

४६ “जब तुम चिट्ठी डालकर देश को बॉटो, तब देश में से एक भाग पवित्र

जानकर यहोवा की अर्पण करना; उसकी लम्बाई पच्चीस हजार बाँस की और चौड़ाई दस हजार बाँस की हो; वह भाग अपने चारों ओर के सीमा तक पवित्र ठहरा। २ उसमें से पवित्रस्थान के लिये पाँच सौ बाँस लम्बी और पाँच सौ बाँस चौड़ी चौकोनी भूमि हो, और उसकी चारों ओर पचास-पचास हाथ चौड़ी भूमि छठी पड़ी रहे। ३ उस पवित्र भाग में तुम पच्चीस हजार बाँस लम्बी और दस हजार बाँस चौड़ी भूमि को मापना, और उसी में पवित्रस्थान बनाना, जो परमपवित्र ठहरे। ४ जो याजक पवित्रस्थान की सेवा टहल करें और यहोवा की सेवा टहल करने को समीप आएँ, वह उन्हीं के लिये हो; वहाँ उनके घरों के लिये स्थान हो और पवित्रस्थान के लिये पवित्र ठहरे। ५ फिर पच्चीस हजार बाँस लम्बा, और दस हजार बाँस चौड़ा एक भाग, भवन की सेवा टहल करनेवाले लेवियों की बीस कोठरियों के लिये हो। ६ “फिर नगर के लिये, अर्पण किए हुए पवित्र भाग के पास, तुम पाँच हजार बाँस चौड़ी और पच्चीस हजार बाँस लम्बी, विशेष भूमि ठहराना; वह इसाएल के सारे धराने के लिये हो। ७ प्रधान का निज भाग पवित्र अर्पण किए हुए भाग और नगर की विशेष भूमि की दोनों ओर अर्थात् दोनों की पश्चिम और पूर्व दिशाओं में दोनों भागों के सामने हों; और उसकी लम्बाई पञ्चिम से लेकर पूर्व तक उन दो भागों में से किसी भी एक के तुल्य हो। ८ इसाएल के देश में प्रधान की यही निज भूमि हो। और मेरे ठहराए हुए प्रधान मेरी प्रजा पर फिर अधेर न करें; परन्तु इसाएल के धराने को उसके गोत्रों के अन्सार देश मिले। ९ “परमेश्वर

यहोवा यह कहता है: हे इसाएल के प्रधानों! बस करो, उपद्रव और उत्पात को दूर करो, और न्याय और धर्म के काम किया करो; मेरी प्रजा के लोगों को निकाल देना छोड़ दो, परमेश्वर यहोवा की यही वार्षी है। १० “तुम्हारे पास सच्चा तराज़, सच्चा एगा, और सच्चा बत रहे हैं। ११ एपा और बत दोनों एक ही नाप के हों, अर्थात् दोनों में होमेर का दसवाँ अंश समाएँ; दोनों की नाप होमेर के हिसाब से हो। १२ शेकेल बीस गेरा का हो; और तुम्हारा माना बीस, पच्चीस, या पन्द्रह शेकेल का हो। १३ “तुहारी उठाई हुई भेट यह हो, अर्थात् गेहँ के होमेर से एपा का छठवाँ अंश, और जौ के होमेर में से एपा का छठवाँ अंश देना। १४ तेल का नियत अंश कोर में से बत का दसवाँ अंश हो; कोर तो दस बत अर्थात् एक होमेर के तत्व है, क्योंकि होमेर दस बत का होता है। १५ इसाएल की उत्तम-उत्तम चराइयों से दो-दो सौ भेड़-बकरियों में से एक भेड़ या बकरी दी जाए। ये सब वस्तुएँ अन्नबलि, होमबलि और मेलबलि के लिये दी जाएँ जिससे उनके लिये प्रायश्चित्त किया जाए, परमेश्वर यहोवा की यही वार्षी है। १६ इसाएल के प्रधान के लिये देश के सब लोग यह भेट दें। १७ पर्वों, नये चाँट के दिनों, विश्वामिदों और इसाएल के घराने के सब नियत समयों में होमबलि, अन्नबलि, और अर्ध देना प्रधान ही का काम हो। इसाएल के घराने के लिये प्रायश्चित्त करने को वह पापबलि, अन्नबलि, होमबलि, और मेलबलि तैयार करे। १८ “परमेश्वर यहोवा यह कहता है: पहले महीने के पहले दिन को तू एक निर्दोष बछड़ा लेकर पवित्रस्थान को पवित्र करना। १९ इस पापबलि के लह में से याजक कुछ लेकर भवन के चौखट के खम्भों, और वेठी की कुर्सी के चारों कोनों, और भीतरी आँगन के फाटक के खम्भों पर लगाए। २० फिर महीने के सातवें दिन को सब भूल में पड़े हुओं और भोलों के लिये भी यह ही करना; इसी प्रकार से भवन के लिये प्रायश्चित्त करना। २१ “पहले महीने के चौदहवें दिन को तुम्हारा फसह हुआ करे, वह सात दिन का पर्व हो और उसमें अखमरी रोटी खाई जाए। २२ उस दिन प्रधान अपने और प्रजा के सब लोगों के निमित्त एक बछड़ा पापबलि के लिये तैयार करे। २३ पर्व के सातों दिन वह यहोवा के लिये होमबलि तैयार करे, अर्थात् हर एक दिन सात-सात निर्दोष बछड़े और सात-सात निर्दोष मेढ़े और प्रतिदिन एक-एक बकरा पापबलि के लिये तैयार करे। २४ हर एक बछड़े और मेढ़े के साथ वह एपा भर अन्नबलि, और एपा पीछे हीन भर तेल तैयार करे। २५ सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन से लेकर सात दिन तक अर्थात् पर्व के दिनों में वह पापबलि, वैष्णवन्ति अन्नबलि, और तेल द्वारा रिति के अन्यमा किसा करे।

४६ “परमेश्वर यहोवा यह कहता है: भीतरी औँगन का पूर्वमुखी फाटक

काम-काज के छः दिन बन्द रहे, परन्तु विश्वामिदिन को खुला रहे। और नये चाँद के दिन भी खुला रहे। १ प्रधान बाहर से फाटक के ओसारे के मार्ग से आकर फाटक के एक खम्भे के पास खड़ा हो जाए, और याजक उसका होमबलि और मेलबलि तैयार करें; और वह फाटक की डेवढी पर दण्डवत् करें; तब वह बाहर जाए, और फाटक साँझा से घले बन्द न किया जाए। २ लोग विश्वाम और नये चाँद के दिनों में उस फाटक के द्वारा मैं यहोवा के सामने दण्डवत् करें। ३ विश्वामिदिन में जो होमबलि प्रधान यहोवा के लिये चढ़ाए, वह भेड़ के छः निर्दोष बच्चे और एक निर्दोष मेड़े का हो। ४ अन्नबलि यह हो: अथर्त मेड़े के साथ एका भर अन्न और भेड़ के बच्चों के साथ यथाशक्ति अन्न और एका पीछे हीन भर तेल। ५ नये चाँद के दिन वह एक निर्दोष बछड़ा और भेड़ के छः बच्चे और एक मेड़ा चढ़ाए, ये सब निर्दोष हों। ६ बछड़े और मेड़े दोनों के साथ वह एक-एक एका अन्नबलि तैयार करें, और भेड़ के बच्चों के साथ यथाशक्ति अन्न, और एका पीछे हीन भर तेल। ७ जब प्रधान भीतर जाए तब वह फाटक के ओसारे से होकर जाए, और उसी मार्ग से निकल जाए।

१ “जब साधारण लोग नियत समयों में यहोवा के सामने दण्डवत् करने आएँ, तब जो उत्तरी फाटक से होकर दण्डवत् करने को भीतर आएँ, वह दक्षिणी फाटक से होकर निकले, और जो दक्षिणी फाटक से होकर भीतर आएँ, वह उत्तरी फाटक से होकर निकले, अर्थात् जो जिस फाटक से भीतर आया हो, वह उसी फाटक से न लौटे, अपने सामने ही निकल जाए। २० जब वे भीतर आएँ तब प्रधान उनके बीच होकर आएँ, और जब वे निकलें, तब वे एक साथ निकलें। २१ “पर्वों और अन्य नियत समयों का अन्नबलि बछड़े पीछे एपा भर, और मेडे पीछे एपा भर का हो; और भेड़ के बच्चों के साथ यथाशक्ति अन्न और एपा पीछे हीन भर तेल। २२ फिर जब प्रधान होमबलि या मेलबलि को स्वेच्छाबलि करके यहोवा के लिये तैयार करे, तब पर्वमुखी फाटक उनके लिये खोला जाएँ, और वह अपना होमबलि या मेलबलि वैसे ही तैयार करे जैसे वह विश्वामिदन को करता है; तब वह निकले, और उसके निकलने के पीछे फाटक बन्द किया जाए। २३ “प्रतिदिन तूर्व भर का एक निर्दोष भेड़ का बच्चा यहोवा के होमबलि के लिये तैयार करना, यह प्रति भोर को तैयार किया जाए। २४ प्रति भोर को उसके साथ एक अन्नबलि तैयार करना, अर्थात् एपा का छठवाँ अंश और मैदा में मिलाने के लिये हीन भर तेल की तिहाई यहोवा के लिये सदा का अन्नबलि नित्य विधि के अनुसार चढ़ाया जाए। २५ भेड़ का बच्चा, अन्नबलि और तेल, प्रति भोर को नित्य होमबलि करके चढ़ाया जाए। २६ “परमेश्वर यहोवा यह कहता है: यदि प्रधान अपने किसी पुत्र को कुछ दे, तो वह उसका भाग होकर उसके पोतों को भी मिले; भाग के नियम के अनुसार वह उनका भी निज धन ठरें। २७ परन्तु यदि वह अपने भाग में से अपने किसी कर्मचारी को कुछ दे, तो स्वतंत्रता के वर्ष तक तो वह उसका बना रहे, परन्तु उसके बाद प्रधान को लौटा दिया जाएँ; और उसका निज भाग ही उसके पुत्रों को मिले। २८ प्रजा का ऐसा कोई भाग प्रधान न ले, जो अंधेरे से उनकी निज भूमि से छीना हो; अपने पुत्रों को वह अपनी ही निज भूमि में से भाग दे; ऐसा न हो कि मेरी प्रजा के लोग अपनी-अपनी निज भूमि से तिरत-बितर हो जाएँ।” २९ फिर वह मुझे फाटक के एक ओर के द्वार से होकर याजकों की उत्तरमुखी पवित्र कोटिरियों में ले गया; वहाँ पश्चिम ओर के कोने में एक स्थान था। ३० तब उसने मुझसे कहा, “यह वह स्थान है जिसमें याजक लोग दोषबलि और पापबलि के मौस को पकाएँ और अन्नबलि को पकाएँ। ऐसा न हो कि उन्हें बाहरी आँगन में ले जाने से साधारण लोग पवित्र ठहरें।” ३१ तब उसने मुझे बाहरी आँगन में ले जाकर उस आँगन के चारों कोनों में फिराया, और आँगन के हर एक कोने में एक-एक ओट बना था, ३२ अर्थात् आँगन के चारों कोनों में चालीस हाथ लम्बे और तीस हाथ चौड़े ओट थे; चारों कोनों के ओटों की एक ही माप थी। ३३ भीतर चारों ओर दीवार थी, और दीवारों के नीचे पकाने के चूल्हे बने हुए थे। ३४ तब उसने मुझसे कहा, “पकाने के घर, जहाँ भवन के टहलुए लोगों के बलिदानों को पकाएँ, वे ये ही हैं।”

४७ फिर वह पुरुष मुझे भवन के द्वार पर लौटा ले गया; और भवन की डेवडी के नीचे से एक सोता निकलकर पूर्व की ओर बह रहा था। भवन का द्वार तो पूर्वमुखी था, और सोता भवन के पूर्व और वेदी के दक्षिण, नीचे से निकलता था। ३५ तब वह मुझे उत्तर के फाटक से होकर बाहर ले गया, और बाहर-बाहर से घुमाकर बाहरी अर्थात् पूर्वमुखी फाटक के पास पहुँचा दिया; और दक्षिणी ओर से जल पर्सीजकर वह रहा था। ३६ जब वह पुरुष हाथ में मापने की ढोरी लिए हुए पूर्व की ओर निकला, तब उसने भवन से लेकर, हजार हाथ तक उस सोते को मापा, और मुझे जल में से चलाया,

और जल टखनों तक था। ३७ उसने फिर हजार हाथ मापकर मुझे जल में से चलाया, और जल घुटनों तक था, फिर और हजार हाथ मापकर मुझे जल में से चलाया, और जल कमर तक था। ३८ तब फिर उसने एक हजार हाथ मापे, और ऐसी नदी हो गई जिसके पार मैं न जा सका, क्योंकि जल बढ़कर तैरने के योग्य था; अर्थात् ऐसी नदी थी जिसके पार कोई न जा सकता था। ३९ तब उसने मुझसे पछा, “हे मनुष्य के सन्तान, क्या तूने यह देखा है?” फिर उसने मुझे नदी के किनारे-किनारे लौटाकर पहुँचा दिया। ४० लौटाकर मैंने क्या देखा, कि नदी के दोनों तटों पर बहुत से वृक्ष हैं। ४१ तब उसने मुझसे कहा, “यह सोता पूर्वी देश की ओर बह रहा है, और असाचा मैं उत्तरकर ताल की ओर बहेगा; और यह भवन से निकला हुआ सीधा ताल में मिल जाएगा; और उसका जल मीठा हो जाएगा। ४२ जहाँ-जहाँ यह नदी बहे, वहाँ-वहाँ सब प्रकार के बहुत अण्डे देनेवाले जीवन्त जींगे और मछलियाँ भी बहुत हो जाएँगी; क्योंकि इस सोते का जल वहाँ पहुँचा है, और ताल का जल मीठा हो जाएगा; और जहाँ कहीं यह नदी पहुँचेगी वहाँ सब जन्तु जींगे। ४३ ताल के टट पर मछुए खड़े रहेंगे, और एनगदी से लेकर एनएलैम तक वे जाल फैलाए जाएँगे, और उन्हें महासागर की सी भाँति-भाँति की अनगिनत मछलियाँ मिलेंगी। ४४ परन्तु ताल के पास जो दलदल और गड़ हैं, उनका जल मीठा न होगा, वे खरे ही रहेंगे। ४५ नदी के दोनों पर भाँति-भाँति के खाने योग्य फलदारी वृक्ष उपर्योगे, जिनके पते न मुझाँगें और उनका फलनाभी कभी बन्द न होगा, क्योंकि नदी का जल पवित्रस्थान से निकला है। उनमें महीने-महीने, नये-नये फल लगेंगे। उनके फल तो खाने के, और पते औषधि के काम आएँगे।” ४६ परमेश्वर यहोवा यह कहता है: “जिस सीमा के भीतर तुम को यह देश अपने बाहरों गोत्रों के अनुसार बाँटना पड़ेगा, वह यह है: यूरुफ को दो भाग मिलें। ४७ उसे तुम एक दूसरे के समान निज भाग में पाओगे, क्योंकि मैंने शपथ खाई कि उसे तुहरे पितरों को ढाँचा, इसलिए यह देश तुम्हारा निज भाग ठहरेगा। ४८ “देश की सीमा यह हो, अर्थात् उत्तर और की सीमा महासागर से लेकर हेतलोन के पास से सदाट की घाटी तक पहुँचे, ४९ और उस सीमा के पास हमात बेरोता, और सिंब्रैम जो दमिश्क और हमात की सीमाओं के बीच मैं हूँ, और हसर्हतीकोन तक, जो हैरान की सीमा पर है। ५० यह सीमा समुद्र से लेकर दमिश्क की सीमा के पास के हसरेनोन तक पहुँचे, और उसकी उत्तरी ओर हमात हो। उत्तर की सीमा यही हो। ५१ पूर्वी सीमा जिसकी एक ओर हैरान दमिश्क, और यरदन की ओर गिलाद और इस्लाएल का देश हो; उत्तरी सीमा से लेकर पूर्वी ताल तक उसे मापना। पूर्वी सीमा तो यही हो। ५२ दक्षिणी सीमा तामार से लेकर मरीबा-कादेश नामक सोते तक अर्थात् मिस्र के नाले तक, और महासागर तक पहुँचे। दक्षिणी सीमा यही हो। ५३ पश्चिमी सीमा दक्षिणी सीमा से लेकर हमात की घाटी के सामने तक का महासागर हो। पश्चिमी सीमा यही हो। ५४ “इस प्रकार देश को इस्लाएल के गोत्रों के अनुसार आपस में बाँट लेना, जो तुम्हारे बीच रहते हुए बालकों को जन्माएँ। वे तुम्हारी दृष्टि में देशी इस्लाएलियों के समान ठरें, और तुम्हारे गोत्रों के बीच अपना-अपना भाग पाएँ। ५५ जो परदेशी जिस गोत्र के देश में रहता हो, उसको वहीं भाग देना, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

४९ “गोत्रों के भाग ये हों: उत्तरी सीमा से लगा हुआ हेतलोन के मार्ग के पास से हमात की घाटी तक, और दमिश्क की सीमा के पास के हसरेनान से उत्तर की ओर हमात के पास तक एक भाग दान का हो; और उसके पूर्वी और पश्चिमी सीमा भी हों। ५६ दान की सीमा से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक आशेर का एक भाग हो। ५७ आशेर की सीमा से लगा हुआ, पूर्व से पश्चिम तक

नमाली का एक भाग हो। ४ नमाली की सीमा से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक मनश्शे का एक भाग। ५ मनश्शे की सीमा से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक ऐप्रैम का एक भाग हो। ६ ऐप्रैम की सीमा से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक रुबेन का एक भाग हो। ७ और रुबेन की सीमा से लगा हुआ, पूर्व से पश्चिम तक यहदा का एक भाग हो। ८ “यहदा की सीमा से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक वह अपण किया हुआ भाग हो, जिसे तुम्हें अपण करना होगा, वह पच्चीस हजार बाँस चौड़ा और पूर्व से पश्चिम तक किसी एक गोत्र के भाग के तुल्य लम्बा हो, और उसके बीच में पवित्रस्थान हो। ९ जो भाग तुम्हें यहोवा को अपण करना होगा, उसकी लम्बाई पच्चीस हजार बाँस और चौड़ाई दस हजार बाँस की हो। १० यह अपण किया हुआ पवित्र भाग याजकों को मिले, वह उत्तर ओर पच्चीस हजार बाँस लम्बा, पश्चिम ओर दस हजार बाँस चौड़ा, पूर्व ओर दस हजार बाँस चौड़ा और दक्षिण ओर पच्चीस हजार बाँस लम्बा हो, और उसके बीचोंबीच यहोवा का पवित्रस्थान हो। ११ यह विशेष पवित्र भाग सादोकी की सन्तान के उन याजकों का हो जो मेरी आज्ञाओं को पालते रहें, और इस्माइलियों के भटक जाने के समय लेवियों के समान न भटके थे। १२ इसलिए देश के अपण किए हुए भाग में से यह उनके लिये अपण किया हुआ भाग, अर्थात् परमपवित्र देश ठहरे; और लेवियों की सीमा से लगा रहे। १३ याजकों की सीमा से लगा हुआ लेवियों का भाग हो, वह पच्चीस हजार बाँस लम्बा और दस हजार बाँस चौड़ा हो। सारी लम्बाई पच्चीस हजार बाँस की और चौड़ाई दस हजार बाँस की हो। १४ वे उसमें से न तो कुछ बैठें, न दूसरी भूमि से बदलें; और न भूमि की पहली उपज और किसी को दी जाए। क्योंकि वह यहोवा के लिये पवित्र है। १५ “चौड़ाई के पच्चीस हजार बाँस के सामने जो पाँच हजार बचा रहेगा, वह नगर और बस्ती और चराई के लिये साधारण भाग हो; और नगर उसके बीच में हो। १६ नगर का यह माप हो, अर्थात् उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम की ओर साढ़े चार-चार हजार हाथ। १७ नगर के पास उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम की ओर साढ़े चार-चार हजार हाथ। १८ नगर के पास उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम की ओर दोनों ओर दस-दस बाँस जो अपण किए हुए भाग के पास हो, उसकी उपज नगर में परिश्रम करनेवालों के खाने के लिये हो। १९ इस्माइल के सारे गोत्रों में से जो नगर में परिश्रम करें, वे उसकी खेती किया करें। २० सारा अपण किया हुआ भाग पच्चीस हजार बाँस लम्बा और पच्चीस हजार बाँस चौड़ा हो; तुम्हें चौकोर पवित्र भाग अपण करना होगा जिसमें नगर की विशेष भूमि हो। २१ “जो भाग रह जाए, वह प्रधान को मिले। पवित्र अपण किए हुए भाग की, और नगर की विशेष भूमि की दोनों ओर अर्थात् उनकी पूर्व और पश्चिम की ओर के पच्चीस-पच्चीस हजार बाँस की चौड़ाई के पास, जो और गोत्रों के भागों के पास रहे, वह प्रधान को मिले और अपण किया हुआ पवित्र भाग और भवन का पवित्रस्थान उनके बीच में हो। २२ जो प्रधान का भाग होगा, वह लेवियों के बीच और नगरों की विशेष भूमि हो। प्रधान का भाग यहदा और बिन्यामीन की सीमा के बीच में हो। २३ “अन्य गोत्रों के भाग इस प्रकार हों: पूर्व से पश्चिम तक बिन्यामीन का एक भाग हो। २४ बिन्यामीन की सीमा से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक शिमोन का एक भाग। २५ शिमोन की सीमा से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक इस्साकार का एक भाग। २६ इस्साकार की सीमा से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक जबलन का एक भाग। २७ जबलन की सीमा से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक गाद का एक भाग। २८ और गाद की सीमा के पास दक्षिण ओर की सीमा तामार से लेकर मरीबा-कादेश नामक सेतो तक, और मिस्र के नाले और महासागर तक पहुँचे। २९ जो देश तुम्हें इस्माइल के गोत्रों को बाँटना होगा वह यही है, और उनके भाग भी ये ही हैं, परमेश्वर

यहोवा की यही वाणी है। ३० “नगर के निकास ये हों, अर्थात् उत्तर की ओर जिसकी लम्बाई चार हजार पाँच सौ बाँस की हो। ३१ उसमें तीन फाटक हों, अर्थात् एक स्लेन का फाटक, एक यहदा का फाटक, और एक लेवी का फाटक हो; क्योंकि नगर के फाटकों के नाम इस्माइल के गोत्रों के नामों पर रखे होंगे। ३२ पूरब की ओर सीमा चार हजार पाँच सौ बाँस लम्बी हो, और उसमें तीन फाटक हों; अर्थात् एक यसुक का फाटक, एक बिन्यामीन का फाटक, और एक दान का फाटक हो। ३३ दक्षिण की ओर सीमा चार हजार पाँच सौ बाँस लम्बी हो, और उसमें तीन फाटक हों; अर्थात् एक गाद का फाटक, एक शिमोन का फाटक, एक इस्साकार का फाटक, और एक जबलन का फाटक हो। ३४ और पश्चिम की ओर सीमा चार हजार पाँच सौ बाँस लम्बी हो, और उसमें तीन फाटक हों; अर्थात् एक गाद का फाटक, और नमाली का फाटक हो। ३५ नगर के चारों ओर का घेरा अठारह हजार बाँस का हो, और उस दिन से आगे को नगर का नाम ‘यहोवा शाम्मा’ रहेगा।”

दानियेल

१ यहदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के तीसरे वर्ष में बाबेल के राजा

नबूकदेस्सर ने यस्शलेम पर चढ़ाई करके उसको धेर लिया। २ तब परमेश्वर ने यहदा के राजा यहोयाकीम को परमेश्वर के भवन के कई पाँत्रों सहित उसके हाथ में कर दिया; और उसने उन पाँत्रों को शिनार देश में अपने देवता के मन्दिर में ले जाकर, अपने देवता के भण्डर में रख दिया। ३ तब उस राजा ने अपने खोजों के प्रधान अश्पनज को आज्ञा दी कि इस्ताएली राजपुत्रों और प्रतिष्ठित पुस्त्रों में से ऐसे कई जवानों को ला, ४ जो निर्दोष, सुन्दर और सब प्रकार की बुद्धि में प्रवीण, और ज्ञान में निपुण और विद्वान और राजभवन में हाजिर रहने के योग्य हों; और उन्हें कसदियों के शास्त्र और भाषा की शिक्षा दे। ५ और राजा ने आज्ञा दी कि उनके भोजन और पीन के दाखमधु में से उन्हें प्रतिदिन खाने-पीने को दिया जाए। इस प्रकार तीन वर्ष तक उनका पालन-पोषण होता रहे; तब उसके बाद वे राजा के सामने हाजिर किए जाएँ। ६ उनमें यहदा की सन्तान से चुने हुए, दानियेल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह नामक यहदी थे। ७ और खोजों के प्रधान ने उनके टूसे नाम रखें; अर्थात् दानियेल का नाम उसने बेलतश्सर, हनन्याह का शद्रक, मीशाएल का मेशक, और अजर्याह का नाम अबेदनगो रखा। ८ परन्तु दानियेल ने अपने मन में ठान लिया कि वह राजा का भोजन खाकर और उसका दाखमधु पीकर स्वयं को अपविन न होने देगा; इसलिए उसने खोजों के प्रधान से विनती की, कि उसे अपविन न होने दे। ९ परमेश्वर ने खोजों के प्रधान के मन में दानियेल के प्रति कृपा और दया भर दी। १० और खोजों के प्रधान ने दानियेल से कहा, “मैं अपने स्वामी राजा से डरता हूँ, क्योंकि तुम्हारा खाना-पीना उसी ने ठहराया है, कही ऐसा न हो कि वह तेरा मुँह तेरे संगी जवानों से उतरा हआ और उदास देखे और तुम मेरा सिर राजा के सामने जोखिम में डालो।” ११ तब दानियेल ने उस मुखिये से, जिसको खोजों के प्रधान ने दानियेल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह के ऊपर देख-भाल करने के लिये नियुक्त किया था, कहा, १२ “मैं तुझ से विनती करता हूँ, अपने दासों को दस दिन तक जाँच, हमारे खाने के लिये साग-पात और पीन के लिये पानी ही दिया जाए। १३ पिर दस दिन के बाद हमारे मुँह और जो जवान राजा का भोजन खाते हैं उनके मुँह को देख; और जैसा तुझे देख पड़े, उसी के अनुसार अपने दासों से व्यवहार करना।” १४ उनकी यह विनती उसने मान ली, और दस दिन तक उनको जाँचता रहा। १५ दस दिन के बाद उनके मुँह राजा के भोजन के खानेवाले सब जवानों से अधिक अच्छे और चिकने देख पड़े। १६ तब वह मुखिया उनका भोजन और उनके पीन के लिये ठहराया हुआ दाखमधु दोनों छुड़ाकर, उनको साग-पात देने लगा। १७ और परमेश्वर ने उन चारों जवानों को सब शास्त्रों, और सब प्रकार की विधाओं में बुद्धिमानी और प्रवीणता दी; और दानियेल सब प्रकार के दर्शन और स्वन के अर्थ का ज्ञान ही गया। १८ तब जितेन दिन के बाद नबूकदेस्सर राजा ने जवानों को भीतर ले आने की आज्ञा दी थी, उनने दिनों के बीतने पर खोजों का प्रधान उन्हें उसके सामने ले गया। १९ और राजा उनसे बातचीत करने लगा; और दानियेल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह के तुल्य उन सब में से कोई न ठहरा; इसलिए वे राजा के सम्मुख हाजिर रहने लगे। २० और बुद्धि और हर प्रकार की समझ के विषय में जो कुछ राजा उसे पूछता था उसमें वे राज्य भर के सब ज्योतिषियों और तंत्रियों से दसगुणे निपुण ठहरते थे। २१ और दानियेल कुम्ह राजा के राज्य के पहले वर्ष तक बना रहा।

२ अपने राज्य के दूसरे वर्ष में नबूकदेस्सर ने ऐसा स्वप्न देखा जिससे उसका

मन बहुत ही व्याकुल हो गया और वह सो न सका। २ तब राजा ने आज्ञा दी, कि ज्योतिषी, तांत्रिक, टोहने और कसदी बुलाए जाएँ कि वे राजा को उसका स्वप्न बताएँ; इसलिए वे आए और राजा के सामने हाजिर हुए। ३ तब राजा ने उससे कहा, “मैंने एक स्वप्न देखा है, और मेरा मन व्याकुल है कि स्वप्न को कैसे समझूँ।” ४ तब कसदियों ने, राजा से आरामी भाषा में कहा, “हे राजा, तू चिंगंजीवी रहे! अपने दासों को स्वप्न बता, और हम उसका अर्थ बताएँ।” ५ राजा ने कसदियों को उत्तर दिया, “मैं यह आज्ञा दे चुका हूँ कि यदि तुम अर्थ समेत स्वप्न को न बताओगे तो तुम टुकड़े-टुकड़े किए जाओगे, और तुम्हारे घर फुँकवा दिए जाएँगे। ६ और यदि तुम अर्थ समेत स्वप्न को बता दो तो मुझसे भाँति-भाँति के दान और भारी प्रतिष्ठा पाओगे। इसलिए तुम मुझे अर्थ समेत स्वप्न बताओ।” ७ उन्होंने दूसरी बार कहा, “हे राजा स्वप्न तेरे दासों को बताया जाए, और हम उसका अर्थ समझा देंगे।” ८ राजा ने उत्तर दिया, “मैं निश्चय जानता हूँ कि तुम यह देखकर, कि राजा के मौंह से आज्ञा निकल चुकी है, समय बढ़ाना चाहते हो। ९ इसलिए यदि तुम मुझे स्वप्न न बताओ तो तुम्हारे लिये एक ही आज्ञा है। क्योंकि तुम ने गोष्ठी की होगी कि जब तक समय न बढ़ाये, तब तक हम राजा के सामने झाँठी और गपशप की बातें कहा करेंगे। इसलिए तुम मुझे स्वप्न बताओ, तब मैं जानूँगा कि तुम उसका अर्थ भी समझा सकते हो।” १० कसदियों ने राजा से कहा, “पृथ्वी भर में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो राजा के मन की बात बता सके; और न कोई ऐसा राजा, या प्रधान, या हाकिम कर्मी हुआ है जिसने किसी ज्योतिषी या तांत्रिक, या कसदी से ऐसी बात पूछी ही हो। ११ जो बात राजा पूछता है, वह अनोखी है, और देवताओं को छोड़कर जिनका निवास मनुष्यों के संग नहीं है, और कोई दूसरा नहीं, जो राजा को यह बता सके।” १२ इस पर राजा ने द्वैंडलाकर, और बहत ही क्रोधित होकर, बाबेल के सब पंडितों के नाश करने की आज्ञा दे दी। १३ अतः यह आज्ञा निकली, और पंडित लोगों का घात होने पर था; और लोग दानियेल और उसके समियों को ढूँढ़ रहे थे कि वे भी घात किए जाएँ। १४ तब दानियेल ने, अंगरक्षकों के प्रधान अर्योंक से, जो बाबेल के पंडितों को घात करने के लिये निकला था, सोच विचार कर और बुद्धिमानी के साथ कहा; १५ और राजा के हाकिम अर्योंक से पूछने लगा, “यह आज्ञा राजा की ओर से ऐसी उतावली के साथ क्यों निकली?” तब अर्योंक ने दानियेल को इसका भेद बता दिया। १६ और दानियेल ने भीतर जाकर राजा से विनती की, कि उसके लिये उतावली की दी समय ठहराया जाए, तो वह महाराज को स्वप्न का अर्थ बता देगा। १७ तब दानियेल ने अपने घर जाकर, अपने संगी हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह को यह हाल बताकर कहा: १८ इस भेद के विषय में स्वर्ग के परमेश्वर की दिया के लिये यह कहकर प्रार्थना करो, कि बाबेल के और सब पंडितों के संग दानियेल और उसके संगी भी नाश न किए जाएँ। १९ तब वह भेद दानियेल को गात के समय दर्शन के द्वारा प्रगट किया गया। तब दानियेल ने स्वर्ग के परमेश्वर का यह कहकर धन्यवाद किया, २० “परमेश्वर का नाम युगानुयुग धन्य है; क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के हैं। २१ समयों और क्रतुओं को वही पलटता है; राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है; बुद्धिमानों को बुद्धि और समझवालों को समझ भी वही देता है; २२ वही गृह और गुप बातों को प्रगट करता है; वह जानता है कि अधियारे में क्या है, और उसके संग सदा प्रकाश बना रहता है। २३ हे मेरे पर्वजों के परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद और स्तुति करता हूँ, क्योंकि तूने मुझे बुद्धि और शक्ति दी है, और जिस भेद का खुलना हम लोगों ने तुझ से माँगा था, उसे तूने मुझ पर प्रगट किया है, तूने हमको राजा की बात बताई है।” २४ तब दानियेल ने अर्योंक के

पास, जिसे राजा ने बाबेल के पंडितों के नाश करने के लिये ठहराया था, भीतर जाकर कहा, “बाबेल के पंडितों का नाश न कर, मुझे राजा के सम्मुख भीतर ले चल, मैं अर्थ बताऊँगा।” २५ तब अर्योक ने दानियेल को राजा के सम्मुख शीघ्र भीतर ले जाकर उससे कहा, “यहदी बांधुओं में से एक पुष्प मुझ को मिला है, जो राजा को स्वप्न का अर्थ बताएगा।” २६ राजा ने दानियेल से, जिसका नाम बेलतश्सर भी था, पूछा, “क्या तुझ में इतनी शक्ति है कि जो स्वप्न मैंने देखा है, उसे अर्थ समेत मुझे बताए?” २७ दानियेल ने राजा को उत्तर दिया, “जो भेद राजा पूछता है, वह न तो पंडित, न तांत्रिक, न ज्योतिशी, न दूसरे भारी बतानेवाले राजा को बता सकते हैं, २८ परन्तु भेदों का प्राप्त करनेवाला परमेश्वर स्वर्ग में है; और उसी ने नबकदनेस्सर राजा को जताया है कि अन्त के दिनों में क्या-क्या होनेवाला है। तेरा स्वप्न और जो कुछ तूने पलंग पर पड़े हुए देखा, वह यह है: २९ हे राजा, जब तुझको पलंग पर यह विचार आया कि भविष्य में क्या-क्या होनेवाला है, तब भेदों को खोलनेवाले ने तुझको बताया, कि क्या-क्या होनेवाला है। ३० मुझ पर यह भेद इस कारण नहीं खोला गया कि मैं अन्य सब प्राणियों से अधिक बुद्धिमान हूँ, परन्तु केवल इसी कारण खोला गया है कि स्वप्न का अर्थ राजा को बताया जाए, और तू अपने मन के विचार समझ सके। ३१ “हे राजा, जब तू देख रहा था, तब एक बड़ी मूर्ति देख पड़ी, और वह मूर्ति जो तेरे सामने खड़ी थी, वह लाली-चौड़ी थी; उसकी चमक अनुपम थी, और उसका स्पृष्ट भयंकर था। ३२ उस मूर्ति का सिर तो शुद्ध सोने का था, उसकी छाती और भुजाएँ चाँदी की, उसका पेट और जाँधें पीतल की, ३३ उसकी टाँगें लोहे की और उसके पैँव कुछ तो लोहे के और कुछ मिट्ठी के थे। ३४ फिर देखते-देखते, तूने क्या देखा, कि एक पत्थर ने, बिना किसी के खोड़े, आप ही आप उखड़कर उस मूर्ति के पैँवों पर लगकर जो लोहे और मिट्ठी के थे, उनको चूर चूरकर डाला। ३५ तब लोहा, मिट्ठी, पीतल, चाँदी और सोना भी सब चूर-चूर हो गए, और धूपकाल में खलिहानों के भूसे के समान हवा से ऐसे उड़ गए कि उनका कहीं पता न रहा; और वह पत्थर जो मूर्ति पर लगा था, वह बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथक्षी में फैल गया। ३६ “यह स्वप्न है; और अब हम उसका अर्थ राजा को समझा देते हैं। ३७ हे राजा, तू तो महाराजाधिराज है, क्योंकि स्वर्ग के परमेश्वर ने तुझको राज्य, सामर्थ्य, शक्ति और महिमा दी है, ३८ और जहाँ कहीं मनुष्य पाए जाते हैं, वहाँ उसने उन सभी को, और मैदान के जीव-जन्म, और आकाश के पक्षी भी तेरे वश में कर दिए हैं; और तुझको उन सब का अधिकारी ठहराया है। यह सोने का सिर तू ही है। ३९ तेरे बाद एक राज्य और उदय होगा जो तुझ से छोटा होगा; फिर एक और तीसारा पीतल का सा राज्य होगा जिसमें सारी पृथक्षी आ जाएगी। ४० और चौथा राज्य लोहे के तुल्य मजबूत होगा; लोहे से तो सब वस्तुएँ चूर-चूर हो जाती और भाँति, उस चौथे राज्य से सब कुछ चूर-चूर होकर पिस जाएगा। ४१ और तेरे जो मूर्ति के पैँवों और उनकी उँगलियों को देखा, जो कुछ कुम्हार की मिट्ठी की और कुछ लोहे की थी, इससे वह चौथा राज्य बटा हुआ होगा; तो भी उसमें लोहे का सा कड़ापन रहेगा, जैसे कि तेरे कुम्हार की मिट्ठी के संग लोहा भी मिला हुआ देखा था। ४२ और जैसे पैँवों की उँगलियाँ कुछ तो लोहे की और कुछ मिट्ठी की थीं, इसका अर्थ यह है, कि वह राज्य कुछ तो ढूढ़ और कुछ निर्बल होगा। ४३ और तेरे जो लोहे को कुम्हार की मिट्ठी के संग मिला हुआ देखा, इसका अर्थ यह है, कि उस राज्य के लोग एक दूसरे मनुष्यों से मिले-जुले तो रहेंगे, परन्तु जैसे लोहा मिट्ठी के साथ मेल नहीं खाता, वैसे ही वे भी एक न बने रहेंगे। ४४ और उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टौटेगा, और

न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन् वह उन सब राज्यों को चूर-चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा; ४५ जैसा तने देखा कि एक पत्थर किसी के हाथ के बिन खोदे पहाड़ में से उछड़ा, और उसने लोहे, पीतल, मिट्ठी, चाँदी, और सोने को चूर-चूर किया, इसी रीति महान परमेश्वर ने राजा को जताया है कि इसके बाद क्या-क्या होनेवाला है। न स्वप्न में और न उसके अर्थ में कुछ सन्देह है।” ४६ इतना सुनकर नबकदनेस्सर राजा ने मूँह के बल गिरकर दानियेल को दण्डवत् किया, और आज्ञा दी कि उसको भेट चढ़ाओ, और उसके सामने सुगन्ध बस्तु जलाओ। ४७ फिर राजा ने दानियेल से कहा, “सच तो यह है कि तुम लोगों का परमेश्वर, सब ईश्वरों का परमेश्वर, राजाओं का राजा और भेदों का खोलनेवाला है, इसलिए त यह भेद प्रगट कर पाया।” ४८ तब राजा ने दानियेल का पद बड़ा किया, और उसको बहुत से बड़े-बड़े दान दिए, और यह आज्ञा दी कि वह बाबेल के सारे प्रान्त पर हाकिम और बाबेल के सब पंडितों पर मुख्य प्रधान बने। ४९ तब दानियेल के विनिती करने से राजा ने शदक, मेशक, और अबेदनगों को बाबेल के प्रान्त के कार्य के ऊपर नियुक्त कर दिया; परन्तु दानियेल आप ही राजा के दरबार में रहा करता था।

३ नबकदनेस्सर राजा ने सोने की एक मूर्त बनवाई, जिसकी ऊँचाई साठ हाथ, और चौड़ाई छः हाथ की थी। और उसने उसको बाबेल के प्रान्त के दूरा नामक मैदान में खड़ा कराया। १ तब नबकदनेस्सर राजा ने अधिपतियों, हाकिमों, राज्यपालों, सलाहकारों, खजांचियों, न्यायियों, शास्त्रियों, आदि प्रान्त-प्रान्त के सब अधिकारियों को बुलवा भेजा कि वे उस मूर्त की प्रतिष्ठा में आँए जो उसने खड़ी कराई थी। २ तब अधिपति, हाकिम, राज्यपाल, सलाहकार, खजांची, न्यायी, शास्त्री आदि प्रान्त-प्रान्त के सब अधिकारी नबकदनेस्सर राजा की खड़ी कराई हुई मूर्त की प्रतिष्ठा के लिये इकट्ठे हुए, और उस मूर्त के सामने खड़े हुए। ३ तब दिलोरिये ने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा, “हे देश-देश और जाति-जाति के लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालों, तुम को यह आज्ञा सुनाई जाती है कि, ४ जिस समय तुम नरसिंगे, बाँसुरी, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुगे, तुम उसी समय यिरकर नबकदनेस्सर राजा की खड़ी कराई हुई मूर्त की प्रतिष्ठा के लिये इकट्ठे हुए, और उस मूर्त के सामने खड़े हुए। ५ तब दिलोरिये ने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा, “हे देश-देश और जाति-जाति के लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालों, तुम को यह आज्ञा सुनाई जाती है कि, ६ जिस समय तुम नरसिंगे, बाँसुरी, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुगे, तुम उसी समय यिरकर नबकदनेस्सर राजा की खड़ी कराई हुई शब्द सुन पड़ा, त्वयों ही देश-देश और जाति-जाति के लोगों और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालों ने गिरकर उस सोने की मूर्त को जो नबकदनेस्सर राजा ने खड़ी कराई थी, दण्डवत् किया। ७ उसी समय कई एक कसदी पुष्प राजा के पास गए, और कपट से यहदियों की चुगली की। ८ वे नबकदनेस्सर राजा से कहने लगे, “हे राजा, त चिरंजीवी रहे। ९ हे राजा, तूने तो यह आज्ञा दी है कि जो मनुष्य नरसिंगे, बाँसुरी, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुन पड़ा, त्वयों ही देश-देश और जाति-जाति के लोगों और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालों ने गिरकर उस सोने की मूर्त को जो नबकदनेस्सर राजा ने खड़ी कराई थी, दण्डवत् किया। १० उसी समय कई एक कसदी पुष्प राजा के पास गए, और कपट से यहदियों की चुगली की। ११ वे नबकदनेस्सर राजा से कहने लगे, “हे राजा, त चिरंजीवी रहे। १२ हे राजा, तूने तो यह आज्ञा दी है कि जो मनुष्य नरसिंगे, बाँसुरी, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुन पड़ा, वह गिरकर उस समय यहदियों से कहने की चुगली की। १३ वे नबकदनेस्सर राजा से कहने लगे, “हे राजा, तू चिरंजीवी रहे। १४ हे राजा, तूने तो यह आज्ञा दी है कि जो मनुष्य नरसिंगे, बाँसुरी, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुन पड़ा, वह गिरकर उस समय यहदियों से कहने की चुगली की। १५ और जैसे पैँवों की मूर्ति दण्डवत् करे: १६ और जो कोई गिरकर दण्डवत् न करेगा वह उरी घड़ी धधकते हुए भट्टे के बीच में डाल दिया जाएगा।” १७ इस कारण उस समय यहदियों ही सब जाति के लोगों को नरसिंगे, बाँसुरी, वीणा, सारंगी, सितार शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुन पड़ा, त्वयों ही देश-देश और जाति-जाति के लोगों और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालों ने गिरकर उस सोने की मूर्त को जो नबकदनेस्सर राजा ने खड़ी कराई थी, दण्डवत् किया। १८ उसी समय कई एक कसदी पुष्प राजा के पास गए, और कपट से यहदियों की चुगली की। १९ वे नबकदनेस्सर राजा से कहने लगे, “हे राजा, तू चिरंजीवी रहे। २० हे राजा, तूने तो यह आज्ञा दी है कि जो मनुष्य नरसिंगे, बाँसुरी, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुन पड़ा, वह गिरकर उस समय यहदियों से कहने की चुगली की। २१ और जैसे पैँवों की मूर्ति दण्डवत् करे: २२ और जो कोई गिरकर दण्डवत् न करे वह धधकते हुए भट्टे के बीच में डाल दिया जाए। २३ देख, शद्रक, मेशक, और अबेदनगों नामक कुछ यहदी पुष्प हैं, जिन्हें तने बाबेल के प्रान्त के कार्य के ऊपर नियुक्त किया है। उन पुष्पों ने, हे राजा, तेरी आज्ञा की कुछ चिन्ता नहीं की; वे तेरे देवता की उपासना नहीं करते, और जो सोने की मूर्त तूने खड़ी कराई है, उसको दण्डवत् नहीं करते।” २४ तब नबकदनेस्सर ने रोष और जलजलाहट में आकर आज्ञा दी कि शद्रक, मेशक और अबेदनगों को लाओ।

तब वे पुस्त राजा के सामने हाजिर किए गए। १४ नव्बूकदनेस्सर ने उनसे पूछा, “हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, तुम लोग जो मेरे देवता की उपासना नहीं करते, और मेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् नहीं करते, तो क्या तुम जान बङ्गकर ऐसा करते हो? १५ यदि तुम अभी तैयार हो, कि जब नरसिंगे, बाँसुरी, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो, और उसी क्षण गिरकर मेरी बनवाई हुई मूरत को दण्डवत् करो, तो बचोगे; और यदि तुम दण्डवत् न करो तो इसी घड़ी धधकते हुए भट्टे के बीच में डाले जाओगे; फिर ऐसा कौन देवता है, जो तुम को मेरे हाथ से छुड़ा सके?” १६ शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने राजा से कहा, “हे नव्बूकदनेस्सर, इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता। १७ हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हमको उस धधकते हुए भट्टे की आग से बचाने की शक्ति रखता है, वरन् हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है। १८ परन्तु, यदि नहीं, तो हे राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् करेंगे।” १९ तब नव्बूकदनेस्सर झूँझला उठा, और उसके चेहरे का रंग शद्रक, मेशक और अबेदनगो की ओर बदल गया। और उसने आज्ञा दी कि भट्टे को सात गुणा अधिक धधका दो। २० फिर अपनी सेना में के कई एक बलावान पुस्तों को उसने आज्ञा दी, कि शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बाँधकर उन्हें धधकते हुए भट्टे में डाल दो। २१ तब वे पुस्त अपने मोजों, अंगरखों, बांगों और बन्धों सहित बाँधकर, उस धधकते हुए भट्टे में डाल दिए गए। २२ वह भट्टा तो राजा की ढूढ़ आज्ञा होने के कारण अत्यन्त धधकाया गया था, इस कारण जिन पुस्तों ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को उठाया वे ही आग की आँच से जल मरे। २३ और उसी धधकते हुए भट्टे के बीच ये तीनों पुस्त, शद्रक, मेशक और अबेदनगो, बंधे हुए फेंक दिए गए। २४ तब नव्बूकदनेस्सर राजा अचम्भित हुआ और घबराकर उठ खड़ा हुआ। और अपने मंत्रियों से पूछने लगा, “क्या हाँने उस आग के बीच तीन ही पुस्त बंधे हुए नहीं डलवाएँ?” उहोंने राजा को उत्तर दिया, “हाँ राजा, सच बात तो है।” २५ फिर उसने कहा, “अब मैं देखता हूँ कि चार पुस्त आग के बीच खुले हुए टहल रहे हैं, और उनको कुछ भी हानि नहीं पहुँची; और चौथे पुस्त का स्वरूप परमेश्वर के पुरु के सदृश्य है।” २६ फिर नव्बूकदनेस्सर उस धधकते हुए भट्टे के द्वार के पास जाकर कहने लगा, “हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, हे परमप्रधान परमेश्वर के दासों, निकलकर यहाँ आओ!” यह सुनकर शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग के बीच से निकल आए। २७ जब अधिपति, हाकिम, राज्यपाल और राजा के मंत्रियों ने, जो इकट्ठे हुए थे, उन पुस्तों की ओर देखा, तब उनकी देह में आग का कुछ भी प्रभाव नहीं पाया; और उनके सिर का एक बाल भी न झूलासा, न उनके मोजे कुछ बिंगड़े, न उनमें जलने की कुछ गथ पाई गई। २८ नव्बूकदनेस्सर कहने लगा, “धन्य है शद्रक, मेशक और अबेदनगो का परमेश्वर, जिसने अपना दूत भेजकर अपने इन दासों को इसलिए बचाया, क्योंकि इहोंने राजा की आज्ञा न मानकर, उसी पर भरोसा रखा, और यह सोचकर अपना शरीर भी अपूर्ण किया, कि हम अपने परमेश्वर को छोड़, किसी देवता की उपासना या दण्डवत् न करेंगे। २९ इसलिए अब मैं यह आज्ञा देता हूँ कि देश-देश और जाति-जाति के लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालों में से जो कोई शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर की कुछ निन्दा करेगा, वह टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा, और उसका घर घूरा बनाया जाएगा; क्योंकि ऐसा कोई और देवता नहीं जो इस रीति से बचा सके।” ३० तब राजा ने बाबेल के प्रान्त में शद्रक, मेशक, अबेदनगो का पद और ऊँचा किया।

४ नव्बूकदनेस्सर राजा की ओर से देश-देश और जाति-जाति के लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले जितने सारी पृथ्वी पर रहते हैं, उन सभी को यह वचन मिला, “तुम्हारा कुशल क्षेत्र बढ़े! २८ मुझे यह अच्छा लगा, कि परमप्रधान परमेश्वर ने मुझे जो-जो चिन्ह और चमत्कार दिखाए हैं, उनको प्रगट करँ। ३१ उसके दिखाए हुए चिन्ह क्या ही बड़े, और उसके चमत्कारों में क्या ही बड़ी शक्ति प्रगट होती है! उसका राज्य तो सदा का और उसकी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी तक बड़ी रहती है। ३२ “मैं नव्बूकदनेस्सर अपने भवन में चैन से और अपने महल में प्रफुल्लित रहता था। ३३ मैंने ऐसा स्वप्न देखा जिसके कारण मैं डर गया; और पलंग पर पड़े-पड़े जो चिचार मेरे मन में आए, और जो बातें मैंने देखी, उनके कारण मैं घबरा गया था। ३४ तब मैंने आज्ञा दी कि बाबेल के सब पडित मेरे स्वप्न का अर्थ मुझे बताने के लिये मेरे सामने हाजिर किए जाएँ। ३५ तब ज्योतिषी, तांत्रिक, कसदी और भावी बतानेवाले भीतर आए, और मैंने उनको अपना स्वप्न बताया, परन्तु वे उसका अर्थ न बता सके। ३६ अन्त मैं दानियेल मेरे सम्मुख आया, जिसका नाम मेरे देवता के नाम के कारण बेलतशस्सर रखा गया था, और जिसमें पवित्र ईश्वरों की आत्मा रहती है; और मैंने उसको अपना स्वप्न यह कहकर बता दिया, ३७ वे बेलतशस्सर तू तो सब ज्योतिषियों का प्रधान हैं, मैं जानता हूँ कि तुझ में पवित्र ईश्वरों की आत्मा रहती है, और तू किसी भेद के कारण नहीं घबराता; इसलिए जो स्वप्न मैंने देखा है उसे अर्थ समेत मुझे बताकर समझा दे। ३८ जो दर्शन मैंने पलंग पर पाया वह यह है: मैंने देखा, कि पृथ्वी के बीचोबीच एक वृक्ष लगा है; उसकी ऊँचाई बहुत बड़ी है। ३९ वह वृक्ष बड़ा होकर ढूढ़ हो गया, और उसकी ऊँचाई स्वर्ग तक पहुँची, और वह सारी पृथ्वी की छोर तक दिखाई पड़ता था। ४० उसके पते सुन्दर, और उपर्युक्त बहुत फल थे, यहाँ तक कि उसमें शीती के लिये भोजन था। उसके नीचे मैदान के सब पशुओं को छाया मिलती थी, और उसकी डालियों में आकाश की सब चिड़ियाँ बसेरा करती थी, और सब प्राणी उससे आहर पाते थे। ४१ “मैंने पलंग पर दर्शन पाते समय क्या देखा, कि एक पवित्र दूत स्वर्ग से उत्तर आया। ४२ उसने ऊँचे शब्द से पुकारकर यह कहा, ‘वृक्ष को काट डालो, उसकी डालियों को छाँट दो, उसके पते झाड़ दो और उसके फल छिरता डालो, पशु उसके नीचे से हट जाएँ और चिड़ियाँ उसकी डालियों पर से उड़ जाएँ। ४३ तो भी उसके ढूँढ़े को जड़ समेत भूमि में छोड़ो, और उसको लोहे और पीतल के बन्धन से बाँधकर मैदान की हरी धास के बीच रहने दो। वह आकाश की ओस से भीगा करे और भूमि की धास खाने में मैदान के पशुओं के संग भागी हो। ४४ उसका मन बदले और मनुष्य का न रहे, परन्तु पशु का सा बन जाएँ; और उस पर सात काल बीतें। ४५ यह आज्ञा उस दूत के निर्णय से, और यह बात पवित्र लोगों के बचन से निकली, कि जो जीवित है वे जान लें कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है, और उसको जिसे चाहे उसे देता है, और वह छोटे से छोटे मनुष्य की भी उस पर नियुक्त कर देता है।” ४६ मुझ नव्बूकदनेस्सर राजा ने यही स्वप्न देखा। इसलिए हे बेलतशस्सर, तू इसका अर्थ बता, क्योंकि मेरे राज्य में और कोई पंडित इसका अर्थ मुझे समझा नहीं सका, परन्तु तुझ में तो पवित्र ईश्वरों की आत्मा रहती है, इस कारण तू उसे समझा सकता है।” ४७ तब दानियेल जिसका नाम बेलतशस्सर भी था, घड़ी भर घबराता रहा, और सोचते-सोचते व्याकुल हो गया। तब राजा कहने लगा, “हे बेलतशस्सर इस स्वप्न से, या इसके अर्थ से तू व्याकुल मत हो।” बेलतशस्सर ने कहा, “हे मेरे प्रभु, यह स्वप्न तेरे बैरियों पर, और इसका अर्थ मेरे दोहियों पर फले। ४८ जिसके वृक्ष को तू देखा देखा, जो बड़ा और ढूढ़ हो गया, और जिसकी ऊँचाई स्वर्ग तक पहुँची और जो पृथ्वी के सिरे तक दिखाई देता था; ४९ जिसके पते सुन्दर और फल बहुत थे, और

जिसमें सभी के लिये भोजन था; जिसके नीचे मैदान के सब पशु रहते थे, और जिसकी डालियों में आकाश की चिड़ियाँ बसेरा करती थीं, २८ हे राजा, वह तू ही है। तू महान और समर्थी हो गया, तेरी महिमा बड़ी और स्वर्ग तक पहुँच गई, और तेरी प्रभुता पृथ्वी की छोर तक फैली है। २९ और हे राजा, तूने जो एक पवित्र दूत को स्वर्ग से उतरते और यह कहे देखा कि वृक्ष को काट डालो और उसको नाश करो, तो भी उसके दृढ़े को जड़ समेत भूमि में छोड़ो, और उसको लोहे और पीतल के बन्धन से बांधकर मैदान की हरी घास के बीच में रहने दो; वह आकाश की ओस से भीगा करो, और उसको मैदान के पशुओं के संग ही भाग मिलो, और जब तक सात युग उस पर बीत न चुके, तब तक उसकी ऐसी ही दशा रहे। ३० हे राजा, इसका अर्थ जो परमप्रधान ने ठाना है कि राजा पर घटे, वह यह है, ३१ तू मनुष्यों के बीच से निकाला जाएगा, और मैदान के पशुओं के संग रहेगा; तू बैलों के समान घास चरेगा; और आकाश की ओस से भीगा करेगा और सात युग तक पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही प्रभुता करता है, और जिसे चाहे वह उसे दे देता है। ३२ और उस वृक्ष के दृढ़े को जड़ समेत छोड़ने की आज्ञा जो हड़ है, इसका अर्थ यह है कि तेरा राज्य तेरे लिये बना रहेगा; और जब तू जान लेगा कि जगत का प्रभु स्वर्गी ही मैं हूँ, तब तू फिर से राज्य करने पाएगा। ३३ इस कारण, हे राजा, मेरी यह सम्पत्ति स्वीकार कर, कि यदि तू पाप छोड़कर धार्मिकता करने लगे, और अर्थात् छोड़कर दीन-हीनों पर दया करने लगे, तो सम्भव है कि ऐसा करने से तेरा चैन बना रहे।” ३४ यह सब कछु नबूकदनेस्सर राजा पर घट गया। ३५ बारह महीने बीतने पर जब वह बाबेल के राजभन्दन की छत पर टहल रहा था, तब वह कहने लगा, ३६ “क्या यह बड़ा बाबेल नहीं है, जिसे मैं ही ने अपने बल और सामर्थ्य से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिये बसाया है?” ३७ यह बचन राजा के मुँह से निकलने भी न पाया था कि आकाशवाणी हड़, “हे राजा नबूकदनेस्सर तेरे विषय में यह आज्ञा निकलती है कि राज्य तेरे हाथ से निकल गया, ३८ और तू मनुष्यों के बीच में से निकाला जाएगा, और मैदान के पशुओं के संग रहेगा; और बैलों के समान घास चरेगा और सात काल तक पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि परमप्रधान, मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहे वह उसे दे देता है।” ३९ उसी घड़ी यह बचन नबूकदनेस्सर के विषय में पूरा हुआ। वह मनुष्यों में से निकाला गया, और बैलों के समान घास चरने लगा, और उसकी देह आकाश की ओस से भीगी थी, यहाँ तक कि उसके बाल उकाब पक्षियों के परों से और उसके नाखन चिड़ियाँ के पंजों के समान बढ़ गए। ४० उन दिनों के बीतने पर, मुझ नबूकदनेस्सर ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाई, और मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई, तब मैंने परमप्रधान को धन्य कहा, और जो सदा जीवित है उसकी स्तुति और महिमा यह कहकर करने लगा: उसकी प्रभुता सदा की है और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तब बना रहेवाला है। ४१ पृथ्वी के सब रहनेवाले उसके सामने तुच्छ गिने जाते हैं, और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहनेवालों के बीच अपनी इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई उसको रोककर उससे नहीं कह सकता है, “तुम यह क्या किया है?” ४२ उसी समय, मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई; और मेरे राज्य की महिमा के लिये मेरा प्रताप और मुकुट मुझ पर फिर आ गया। और मेरे मंत्री और प्रधान लोग मुझसे भेट करने के लिये आने लगे, और मैं अपने राज्य में स्थिर हो गया; और मेरी और अधिक प्रशंसा होने लगी। ४३ अब मैं नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा को सारहता हूँ, और उसकी स्तुति और महिमा करता हूँ क्योंकि उसके सब काम सच्चे, और उसके सब व्यवहार न्याय के हैं; और जो लोग घमण्ड से चलते हैं, उन्हें वह नीचा कर सकता है।

५ बेलशस्सर नामक राजा ने अपने हजार प्रधानों के लिये बड़ी दावत की, और उन हजार लोगों के सामने दाखमधु पिता। ६ दाखमधु पीत-पीती बेलशस्सर ने आज्ञा दी, कि सोमे-चौंदी के जो पात्र मेरे पिता नबूकदनेस्सर ने यस्तलैम के मन्दिर में से निकाले थे, उन्हें ले आओ कि राजा अपने प्रधानों, और रानियों और रखेलों समेत उनमें से पीए। ७ तब जो सोने के पात्र यस्तलैम में परमेश्वर के भवन के मन्दिर में से निकाले गए थे, वे लाए गए; और राजा अपने प्रधानों, और रानियों, और रखेलों समेत उनमें से पीने लगा। ८ वे दाखमधु पी पीकर सोने, चौंदी, पीतल, लोहे, काठ और पत्थर के देवताओं की स्तुति कर ही रहे थे, ९ कि उसी घड़ी मनुष्य के हाथ की सी कई ऊँगलियाँ निकलकर दीवाट के सामने राजभवन की दीवार के चौने पर कछु लिखने लगीं; और हाथ का जो भाग लिख रहा था वह राजा को दिखाई पड़ा। १० उसे देखकर राजा भयभीत हो गया, और वह मन ही मन घबरा गया, और उसकी कमर के जोड़ ढीले हो गए, और काँपते-काँपते उसके घुटने एक दूसरे से लगने लगे। ११ तब राजा ने ऊँचे शब्द से पुकारकर तत्रियों, कसदियों और अन्य भावी बतानेवालों को हाजिर करवाने की आज्ञा दी। जब बाबेल के पडित पास आए, तब उनसे कहने लगा, “जो कोई वह लिखा हुआ पढ़कर उसका अर्थ मुझे समझा ए उसे बैगनी रंग का बब्ल और उसके गले में सोने की कण्ठमाला पहनाई जाए; और मैं राज्य में तीसरा वही प्रभुता करेगा।” १२ तब राजा के सब पंडित लोग भीतर आए, परन्तु उस लिखे हुए को न पढ़ सके और न राजा को उसका अर्थ समझा सके। १३ इस पर बेलशस्सर राजा बहुत घबरा गया और भयातुर हो गया; और उसके प्रधान भी बहुत व्याकुल हुए। १४ राजा और प्रधानों के चर्चों को सुनकर, रानी दावत के घर में आई और कहने लगी, “हे राजा, तू युग-युग जीवित रहे, अपने मन में न घबरा और न उदास हो। १५ तेरे राज्य में दानियेल नामक एक पुस्त है जिसका नाम तेरे पिता ने बेलशस्सर राजा रखा था, उसमें पवित्र ईश्वरों की आत्मा रहती है, और उस राजा के दिनों में उसमें प्रकाश, प्रवीणता और ईश्वरों के तुच्छ बुद्धि पाई गई और हे नबूकदनेस्सर राजा, तेरा पिता जो राजा था, उसने उसको सब ज्योतिषियों, तत्रियों, कसदियों और अन्य भावी बतानेवालों का प्रधान ठहराया था, १६ क्योंकि उसमें उत्तम आत्मा, ज्ञान और प्रवीणता, और स्वर्गों का अर्थ बताने और पहेलियों खोलने, और सन्देह दूर करने की शक्ति पाई गई। इसलिए अब दानियेल बुलाया जाए, और वह इसका अर्थ बताएगा।” १७ तब दानियेल राजा के सामने भीतर बुलाया गया। राजा दानियेल से पछले लगा, “क्या तू वही दानियेल है जो मेरे पिता नबूकदनेस्सर राजा के यहदा देश से लाए हुए यहदी बधुओं में से है? १८ मैंने तेरे विषय में सुना है कि देवताओं की आत्मा तुम्हारे में रहती है; और प्रकाश, प्रवीणता और उत्तम बुद्धि तुम्हारे में पाई जाती है। १९ देख, अभी पंडित और तत्रिक लोग मेरे सामने इसलिए लाए गए थे कि यह लिखा हुआ पढ़ें और इसका अर्थ मुझे बताएँ, परन्तु वे उस बात का अर्थ न समझ सके। २० परन्तु मैंने तेरे विषय में सुना है कि दानियेल भेद खोल सकता और सन्देह दूर कर सकता है। इसलिए अब यदि तू उस लिखे हुए को पढ़ सके और उसका अर्थ भी मुझे समझा सके, तो तुझे बैगनी रंग का बब्ल, और तेरे गले में सोने की कण्ठमाला पहनाई जाएगी, और राज्य में तीसरा तू ही प्रभुता करेगा।” २१ दानियेल ने राजा से कहा, “अपने दान अपने ही पास रख, और जो बदला तू देना चाहता है, वह दूसरे को दे; वह लिखी हुई बात मैं राजा को पढ़ सुनाऊँगा, और उसका अर्थ भी तुझे समझाऊँगा। २२ हे राजा, परमप्रधान परमेश्वर ने तेरे पिता नबूकदनेस्सर को राज्य, बड़ाई, प्रतिष्ठा और प्रताप दिया था; २३ और उस बड़ाई के कारण जो उसने उसको दी थी, देश-देश और जाति-जाति के सब लोग, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले उसके सामने काँपते

और थरथराते थे, जिसे वह चाहता उसे वह घात करता था, और जिसको वह चाहता उसे वह जीवित रखता था जिसे वह चाहता उसे वह ऊँचा पद देता था, और जिसको वह चाहता उसे वह गिरा देता था। २० परन्तु जब उसका मन फूल उठा, और उसकी आत्मा कठोर हो गई, यहाँ तक कि वह अभिमान करने लगा, तब वह अपने राजसिंहासन पर से उतारा गया, और उसकी प्रतिष्ठा भंग की गई; २१ वह मनुष्यों में से निकाला गया, और उसका मन पशुओं का सा, और उसका निवास जंगली गदहों के बीच हो गया; वह बैलों के समान घास चरता, और उसका शरीर आकाश की ओर से भीगा करता था, जब तक कि उसने जान न लिया कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहता उसी को उस पर अधिकारी ठहराता है। २२ तो भी, हे बेलशस्सर, तू जो उसका पत्र है, और यह सब कुछ जानता था, तो भी तेरा मन नम्र न हआ। २३ वरन् तूसे स्वर्ग के प्रभु के विस्तु सिर उठाकर उसके भवन के पार मँगावकर अपने सामने रखवा लिए, और अपने प्रधानों और मादियों और रखेलों समेत तूनमें दाखमधु पिया; और चाँदी-सोने, पीतल, लोहे, काठ और पत्थर के देवता, जो न देखते न सुनते, न कुछ जानते हैं, उनकी तो स्तुति की, परन्तु परमेश्वर, जिसके हथ में तेरा प्राण है, और जिसके वश में तेरा सब चलना फिरना है, उसका सम्मान दूने नहीं किया। २४ “तब ही यह हाथ का एक भाग उसी की ओर से प्रगत किया गया है और वे शब्द लिखे गए हैं। २५ और जो शब्द लिखे गए वे ये हैं, मने, मने, तकेल, ऊपरसीन। २६ इस वाक्य का अर्थ यह है, मने, अर्थात् परमेश्वर ने तेरे राज्य के दिन गिनकर उसका अन्त कर दिया है। २७ तकेल, तू मानो तराजू में तौला गया और हल्का पाया गया है। २८ परेस, अर्थात् तेरा राज्य बाँटकर मादियों और फारसियों को दिया गया है।” २९ तब बेलशस्सर ने आज्ञा दी, और दानियेल को बैंगनी रंग का वस्त्र और उसके गले में सोने की कण्ठमाला पहनाई गई; और ढिंडोरिये ने उसके विषय में पुकारा, कि राज्य में तीसरा दानियेल ही प्रभुता करेगा। ३० उसी रात कसदियों का राजा बेलशस्सर मरां डाला गया। ३१ और दारा मादी जो कोई बासठ वर्ध का था राजगढ़ी पर विराजमान हुआ।

६ दारा को यह अच्छा लगा कि अपने राज्य के ऊपर एक सौ बीस ऐसे अधिपति ठहराएं, जो पूरे राज्य में अधिकार रखें। ३२ और उनके ऊपर उसने तीन अध्यक्ष, जिनमें से दानियेल एक था, इसलिए ठहराएं, कि वे उन अधिपतियों से लेखा लिया करें, और इस रीति राजा की कुछ हानि न होने पाए। ३३ जब यह देखा गया कि दानियेल में उत्तम आत्मा रहती है, तब उसको उन अध्यक्षों और अधिपतियों से अधिक प्रतिष्ठा मिली, वरन् राजा यह भी सोचता था कि उसको सारे राज्य के ऊपर ठहराएं। ३४ तब अध्यक्ष और अधिपति राजकार्य के विषय में दानियेल के विस्तु दोष ढूँढ़ने लगे; परन्तु वह विश्वासयोग था, और उसके काम में कोई भूल या दोष न निकला, और वे ऐसा कोई अपराध या दोष न पा सके। ३५ तब वे लोग कहने लगे, “हम उस दानियेल के परमेश्वर की व्यवस्था को छोड़ और किसी विषय में उसके विस्तु कोई दोष न पा सकेंगे।” ३६ तब वे अध्यक्ष और अधिपति राजा के पास उतावली से आए, और उससे कहा, “हे राजा दारा, तू युग-युग जीवित रहे। ३७ राज्य के सारे अध्यक्षों ने, और हाकिमों, अधिपतियों, न्यायियों, और राज्यपालों ने आपस में सम्मति की है, कि राजा ऐसी आज्ञा दे और ऐसी कड़ी आज्ञा निकाले, कि तीस दिन तक जो कोई, हे राजा, तुझे छोड़ किसी और मनुष्य या देवता से विनती करे, वह सिंहों की माँद में डाल दिया जाए। ३८ इसलिए अब हे राजा, ऐसी आज्ञा दे, और इस पत्र पर हस्ताक्षर कर, जिससे यह बात मादियों और फारसियों की अटल व्यवस्था के अनुसार अदल-बदल न हो सके।” ३९ तब दारा राजा ने उस आज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दिया। ४० जब

दानियेल को मालूम हुआ कि उस पत्र पर हस्ताक्षर किया गया है, तब वह अपने घर में गया जिसकी ऊपरी कोठरी की खिड़कियाँ यस्तलेम की ओर खुली रहती थीं, और अपनी रीति के अनुसार जैसा वह दिन में तीन बार अपने परमेश्वर के सामने घुटने टेककर प्रार्थना और धन्यवाद करता था, वैसा ही तब भी करता रहा। ४१ तब उन पुरुषों ने उतावली से आकर दानियेल को अपने परमेश्वर के सामने विनती करते और गिङ्गिड़ाते हुए पाया। ४२ तब वे राजा के पास जाकर, उसकी आज्ञापत्र के विषय में उससे कहने लगे, “हे राजा, क्या तुम ऐसे आज्ञापत्र पर हस्ताक्षर नहीं किया कि तीस दिन तक जो कोई तुझे छोड़ किसी मनुष्य या देवता से विनती करेगा, वह सिंहों की माँद में डाल दिया जाएगा?” राजा ने उत्तर दिया, “हाँ, मादियों और फारसियों की अटल व्यवस्था के अनुसार यह बात स्थिर है।” ४३ तब उन्होंने राजा से कहा, “यहदी बंधुओं में से जो दानियेल है, उसने, हे राजा, न तो तेरी ओर कुछ ध्यान दिया, और न तेरे हस्ताक्षर किए हुए आज्ञापत्र की ओर; वह दिन में तीन बार विनती किया करता है।” ४४ यह वचन सुनकर, राजा बहुत उदास हुआ, और दानियेल को बचाने के उपाय सोचने लगा; और सूर्य के अस्त होने तक उसके बचाने का यत्र करता रहा। ४५ तब वे पुरुष राजा के पास उतावली से आकर कहने लगे, “हे राजा, यह जान रख, कि मादियों और फारसियों में यह व्यवस्था है कि जो-जो मनाही या आज्ञा राजा ठहराएं, वह नहीं बदल सकती।” ४६ तब राजा ने आज्ञा दी, और दानियेल लाकर सिंहों की माँद में डाल दिया गया। उस समय राजा ने दानियेल से कहा, “तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता है, वही तुझे बचाएँ।” ४७ तब एक पत्थर लाकर उस माँद के मूँह पर रखा गया, और राजा ने उस पर अपनी अंगूठी से, और अपने प्रधानों की अंगूठियों से मूर्ह लगा दी कि दानियेल के विषय में कुछ बदलने न पाए। ४८ तब राजा अपने महल में चला गया, और उस रात को बिना भोजन पड़ा रहा; और उसके पास सुख-विलास की कोई वस्तु नहीं पहुँचा गई, और उसे नीद भी नहीं आई। ४९ भोर को पौ फटते ही राजा उठा, और सिंहों के माँद की ओर फूर्ती से चला गया। ५० जब राजा माँद के निकट आया, तब शोकभरी वाणी से चिल्लाने लगा और दानियेल से कहा, “हे दानियेल, हे जीविते परमेश्वर के दास, क्या तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता है, तुझे सिंहों से बचा सका है?” ५१ तब दानियेल ने राजा से कहा, “हे राजा, तू युग-युग जीवित रहे।” ५२ मेरे परमेश्वर ने अपना दूत भेजकर सिंहों के मूँह को ऐसा बन्द कर रखा कि उन्होंने मेरी कुछ भी हानि नहीं की; इसका कारण यह है, कि मैं उसके सामने निर्दोष पाया गया; और हे राजा, तेरे सम्मुख भी मैंने कोई भूल नहीं की।” ५३ तब राजा ने बहुत अनान्दित होकर, दानियेल को माँद में से निकालने की आज्ञा दी। अतः दानियेल माँद में से निकाला गया, और उस पर हानि का कोई चिन्ह न पाया गया, क्योंकि वह अपने परमेश्वर पर विश्वास रखता था। ५४ तब राजा ने आज्ञा दी कि जिस पुरुषों ने दानियेल की चुगती की थी, वे अपने-अपने बाल-बच्चों और बिंदीयों समेत लाकर सिंहों की माँद में डाल दिए जाएँ; और वे माँद की पेंदी तक भी न पहुँचे कि सिंहों ने उन पर झापटकर सब हड्डियों समेत उनको चबा डाला। ५५ तब दारा राजा ने सारी पृथक्की के रहनेवाले देश-देश और जाति-जाति के सब लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालों के पास यह लिखा, “तम्हारा बहुत कुशल हो।” ५६ मैं यह आज्ञा देता हूँ कि जहाँ-जहाँ मेरे राज्य का अधिकार है, वहाँ के लोग दानियेल के परमेश्वर के सम्मुख कौपते और थरथराते रहें, क्योंकि जीविता और युगानुमा तक रहनेवाला परमेश्वर वही है; उसका राज्य अविनाशी और उसकी प्रभुता सदा स्थिर रहेगी। ५७ जिसने दानियेल को सिंहों से बचाया है, वही बचाने और छुड़ानेवाला है; और स्वर्ग

में और पृथ्वी पर चिन्हों और चमत्कारों का प्रगट करनेवाला है।” १८ और दानियेल, दारा और कुम्ह फारसी, दोनों के राज्य के दिनों में सुख-चैन से रहा।

७ बबेल के राजा बेलशस्सर के राज्य के पहले वर्ष में, दानियेल ने पलंग पर स्वप्न देखा। तब उसने वह स्वप्न लिखा, और बातों का सारांश भी वर्णन किया। ८ दानियेल ने यह कहा, “मैंने रात को यह स्वप्न देखा कि महासागर पर चौमुखी औंधी चलने लगी। ९ तब समुद्र में से चार बड़े-बड़े जन्तु, जो एक दूसरे से भिन्न थे, निकल आए। १० पहला जन्तु सिंह के समान था और उसके पंख उकाक के से थे। और मैंने देखते-देखते उसके पंखों के पर नीचे गए और वह भूमि पर से उठाकर, मनुष्य के समान पाँवों के बल खड़ा किया गया, और उसको मनुष्य का हादय दिया गया। ११ फिर मैंने एक और जन्तु देखा जो रीछ के समान था, और एक पॉज़र के बल उठा हुआ था, और उसके मूँह में दाँतों के बीच तीन पसलियाँ थीं; और लोग उससे कह रहे थे, ‘उठकर बहत माँस खा।’ १२ इसके बाद मैंने दृष्टि की ओर देखा कि चीति के समान एक और जन्तु है जिसकी पीठ पर पर्सी के से चार पंख हैं; और उस जन्तु के चार सिर थे; और उसको अधिकार दिया गया। १३ फिर इसके बाद मैंने स्वप्न में दृष्टि की ओर देखा, कि एक चौथा जन्तु है जो भयंकर और डरावना और बहुत सामर्थी है; और उसके बड़े-बड़े लोहे के दाँत हैं; वह सब कुछ खा डालता है और चूर-चूर करता है, और जो बच जाता है, उसे पैरों से रौंदता है। और वह सब पहले जन्तुओं से भिन्न है; और उसके दाँत हैं; और उसके दस राजा उठेंगे, और उनके बाद उन पहलों से भिन्न एक और राजा उठेगा, जो तीन राजाओं को गिरा देगा। १४ और वह परमप्रधान के विस्तृ बातें कहेगा, और परमप्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा, और समर्यों और व्यवस्था के बदल देने की आशा करेगा, वरन् साथे तीन काल तक वे सब उसके वश में कर दिए जाएँगे। १५ परन्तु, तब न्यायी बैठेंगे, और उसकी प्रभुता छीनकर मिटाई और नाश की जाएगी; यहाँ तक कि उसका अन्त ही हो जाएगा। १६ तब राज्य और प्रभुता और धरती पर के राज्य की महिला, परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात् उसके पवित्र लोगों को दी जाएगी, उसका राज्य सदा का राज्य है, और सब प्रभुता करनेवाले उसके अधीन होंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे।” १७ “इस बात का वर्णन मैं अब कर चुका, परन्तु मुझ दानियेल के मन में बड़ी घबराहट बनी रही, और मैं भयभीत हो गया; और इस बात को मैं अपने मन में रखे रहा।”

बेलशस्सर राजा के राज्य के तीसरे वर्ष में उस पहले दर्शन के बाद एक और बात मुझ दानियेल को दर्शन के द्वारा दिखाई गई। १८ जब मैं एलाम नामक प्रान्त में, शूशन नाम राजगढ़ में रहता था, तब मैंने दर्शन में देखा कि मैं ऊलै नदी के किनारे पर हूँ। १९ फिर मैंने आँख उठाकर देखा, कि उस नदी के सामने दो सींगवाला एक मेडा खड़ा है, उसके दोनों सींग बड़े हैं, परन्तु उनमें से एक अधिक बड़ा है, और जो बड़ा है, वह दूसरे के बाद निकला। २० मैंने उस मेडे को देखा कि वह पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की ओर सींग मारता है, और कोई जन्तु उसके सामने खड़ा नहीं रह सकता, और न उसके हाथ से कोई किसी को बचा सकता है; और वह अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करके बड़ता जाता था। २१ मैं सोच ही रहा था, तो फिर क्या देखा कि एक बकरा पश्चिम दिशा से निकलकर सारी पृथ्वी के ऊपर ऐसा फिरा कि चलते समय भूमि पर पाँव न छुआया और उस बकरे की आँखों के बीच एक देखने योग्य सींग था। २२ वह उस दो सींगवाले मेडे के पास जाकर, जिसको मैंने नदी के सामने खड़ा देखा था, उस पर जलकर अपने पौरे बल से लपका। २३ मैंने देखा कि वह मेडे के निकट आकर उस पर झुँझलाया; और मेडे को मारकर उसके दोनों सींगों को तोड़ दिया; और उसका सामना करने को मेडे का कुछ भी वश न चला; तब बकरे ने उसको भूमि पर गिराकर रौंद डाला; और मेडे को उसके हाथ से छुड़ानेवाला कोई न मिला। २४ तब बकरा अत्यन्त बड़ाई मारने लगा, और जब बलवन्त हुआ, तब उसका बड़ा सींग टूट गया, और उसकी जगह देखने योग्य चार सींग निकलकर चारों दिशाओं की ओर बढ़ने लगे। २५ फिर इनमें से एक छोटा सा सींग और निकला, जो दक्षिण, पूरब और शिरोमणि देश की ओर बहुत ही बढ़ गया। २६ वह स्वर्ग की सेना तक बढ़ गया, और उसमें से और तरों में से भी कितनों को भूमि पर गिराकर रौंद डाला। २७ वरन् वह उस सेना के प्रधान तक भी बढ़ गया, और उसका नित्य होमबलि बन्द कर दिया गया;

और उसका पवित्र वास्तविक गिरा दिया गया। १२ और लोगों के अपराध के कारण नित्य होमबलि के साथ सेना भी उसके हाथ में कर दी गई, और उस सीधी ने सच्चाई को मिट्टी में मिला दिया, और वह काम करते-करते सफल हो गया। १३ तब मैंने एक पवित्र जन को बोलते सुना; फिर एक और पवित्र जन ने उस पहले बोलनेवाले से पृछा, “नित्य होमबलि और उजड़वानेवाले अपराध के विषय में जो कुछ दर्शन देखा गया, वह कब तक फलता रहेगा; अर्थात् पवित्रस्थान और सेना दोनों का रौद्रा जाना कब तक होता रहेगा?” १४ और उसने मुझसे कहा, “जब तक साँझा और सवेरा दो हजार तीन सौ बार न हों, तब तक वह होता रहेगा; तब पवित्रस्थान शुद्ध किया जाएगा।” १५ यह बात दर्शन में देखकर, मैं दानियेल, इसके समझने का यत्र करने लगा; इतने में पुस्त का रूप धरे हुए कोई मेरे सम्मुख खड़ा हुआ दिखाई पड़ा। १६ तब मुझे ऊपर नीटी के बीच से एक मनुष्य का शब्द सुन पड़ा, जो पुकारकर कहता था, “हे गब्रिएल, उस जन को उसकी देखी हुई बातें समझा दे।” १७ तब जहाँ मैं खड़ा था, वहाँ वह मेरे निकट आया; और उसके आते ही मैं घबरा गया; और मुँह के बल पर पड़ा। तब उसने मुझसे कहा, “हे मनुष्य के सन्तान, उन देखी हुई बातों को समझ ले, क्योंकि यह दर्शन अन्त समय के विषय में है।” १८ जब वह मुझसे बातें कर रहा था, तब मैं अपना मुँह भूमि की ओर किए हुए भारी नीट में पड़ा था, परन्तु उसने मुझे छुकर सीधा खड़ा कर दिया। १९ तब उसने कहा, “क्रोध भड़कने के अन्त के दिनों में जो कुछ होगा, वह मैं तुझे जाताहूँ; क्योंकि अन्त के ठहराए हुए समय में वह सब पूरा हो जाएगा। २० जो दो सीधीवाला मेडा तने देखा है, उसका अर्थ मादियों और फारसियों के राज्य से है। २१ और वह रोआर बकरा यथान का राज्य है; और उसकी आँखों के बीच जो बड़ा सीधी निकला, वह पहला राजा ठहरा। २२ और वह सीधी जो टूट गया और उसकी जगह जो चार सीधी निकले, इसका अर्थ यह है कि उस जाति से चार राज्य उदय होंगे, परन्तु उनका बल उस पहले का सा न होगा। २३ और उन राज्यों के अन्त समय में जब अपराधी पूरा बल पकड़ेंगे, तब कूर दृष्टिवाला और पहेली बूझनेवाला एक राजा उठेगा। २४ उसका सामर्थ्य बड़ा होगा, परन्तु उस पहले राजा का सा नहीं; और वह अद्युत रीत से लोगों को नाश करेगा, और सफल होकर काम करता जाएगा, और सामर्थ्यों और पवित्र लोगों के समुदाय को नाश करेगा। २५ उसकी चतुराई के कारण उसका छल सफल होगा, और वह मन में फूलकर निउर रहते हुए बहुत लोगों को नाश करेगा। वह सब राजाओं के राजा के विस्तु खी खड़ा होगा; परन्तु अन्त को वह किसी के हाथ से बिना मार खाए टूट जाएगा। २६ साँझ और सर्वे के विषय में जो कुछ तने देखा और सुना है वह सच है; परन्तु जो कुछ तने दर्शन में देखा है उसे बन्द रख, क्योंकि वह बहुत दिनों के बाद पूरा होगा।” २७ तब मुझ दानियेल का बल जाता रहा, और मैं कुछ दिन तक बीमार पड़ा रहा; तब मैं उठकर राजा का काम-काज फिर करने लगा; परन्तु जो कुछ मैंने देखा था उससे मैं चकित रहा, क्योंकि उसका कोई समझानेवाला न था।

९ मार्दी क्षर्यर्थ का पुनर दारा, जो कसदियों के देश पर राजा ठहराया गया था, २ उसके राज्य के पहले वर्ष में, मुझ दानियेल ने शान्ति के द्वारा सामझ लिया कि यस्तलेम की उजड़ी हुई दशा यहोवा के उस वचन के अनुसार, जो यिर्माह नीटी के पास पहुँचा था, कुछ वर्षों के बीतने पर अर्थात् सतर वर्ष के बाद पूरी हो जाएगी। ३ तब मैं अपना मुख प्रभु परमेश्वर की ओर करके गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करने लगा, और उपवास कर, टाट पहन, राख में बैठकर विनती करने लगा। ४ मैंने अपने परमेश्वर यहोवा से इस प्रकार प्रार्थना की और पाप का अंगीकार किया, “हे प्रभु, तू महान और भययोग्य परमेश्वर

है, जो अपने प्रेम रखने और आज्ञा माननेवालों के साथ अपनी बाचा को पूरा करता और कस्तु करता रहता है, ५ हम लोगों ने तो पाप, कुटिलता, दुष्टता और बलवा किया है, और तेरी आज्ञाओं और नियमों को तोड़ दिया है। ६ और तेरे जो दास नवी लोग, हमारे राजाओं, हाकिमों, पूर्वजों और सब साधारण लोगों से तेरे नाम से बातें करते थे, उनकी हमने नहीं सुनी। ७ हे प्रभु, तू धर्मी है, परन्तु हम लोगों को आज के दिन लज्जित होना पड़ता है, अर्थात् यस्तलेम के निवासी आदि सब यहदी, क्या समीप क्या दूर के सब इस्माइली लोग जिहें तेरे उस विश्वासधार के कारण जो उन्होंने तेरे साथ किया था, देश-देश में तिर-बितर कर दिया है, उन सभी को लज्जित होना पड़ता है। ८ हे यहोवा, हम लोगों ने अपने राजाओं, हाकिमों और पूर्वजों समेत तेरे विस्तु पाप किया है, इस कारण हमको लज्जित होना पड़ता है। ९ परन्तु, यद्यपि हम अपने परमेश्वर प्रभु से फिर गए, तो भी तू दया का सागर और क्षमा की खान है। १० हम तो अपने परमेश्वर यहोवा की शिक्षा सुनने पर भी उस पर नहीं चले जो उसने अपने दास नवियों से हमको सुनाई। ११ वरन् सब इस्माइलियों ने तेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया, और ऐसे हट गए कि तेरी नहीं सुनी। इस कारण जिस श्राप की चाची परमेश्वर के दास मूसा की व्यवस्था में लिखी हुई है, वह श्राप हम पर घट गया, क्योंकि हमने उसके विस्तु पाप किया है। १२ इसलिए उसने हमारे और हमारे न्यायियों के विषय जो वचन करते थे, उन्हें हम पर यह बड़ी विपत्ति डालकर पूरा किया है; यहाँ तक कि जैसी विपत्ति यस्तलेम पर पड़ी है, वैसी सारी धरती पर और कहीं नहीं पड़ी। १३ जैसे मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसे ही यह सारी विपत्ति हम पर आ पड़ी है, तो भी हम अपने परमेश्वर यहोवा को मनाने के लिये न तो अपने अर्थमें के कामों से फिरे, और न तेरी सत्य बातों पर ध्यान दिया। १४ इस कारण यहोवा ने सोच विचार कर हम पर विपत्ति डाली है; क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा जितने काम करता है उन सभी में धर्मी ठहरता है; परन्तु हमने उसकी नहीं सुनी। १५ और अब, हे हमारे परमेश्वर, हे प्रभु, तूने अपनी प्रजा को मिथ्य देश से, बलवन्त हाथ के द्वारा निकाल लाकर अपना ऐसा बड़ा नाम किया, जो आज तक प्रसिद्ध है, परन्तु हमने पाप किया है और दुष्टा ही की है। १६ हे प्रभु, हमारे पापों और हमारे पूर्वजों के अर्थमें के कामों के कारण यस्तलेम की ओर तेरी प्रजा की, और हमारे आस-पास के सब लोगों की ओर से नामधारी हो रही है; तो भी तू अपने सब धार्मिकता के कामों के कारण अपना क्रोध और जलजलाहट अपने नगर यस्तलेम पर से उतार दे, जो तेरे पवित्र पर्वत पर बसा है। १७ हे हमारे परमेश्वर, अपने दास की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनकर, अपने उजड़े हुए पवित्रस्थान पर अपने मुख का प्रकाश चमका; हे प्रभु, अपने नाम के निमित्त यह कर। १८ हे मैं परमेश्वर, कान लगाकर सुन, आँख खोलकर हमारी उजड़ी हुई दशा और उस नगर को भी देख जो तेरा कहलाता है; क्योंकि हम जो तेरे सामने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करते हैं, इसलिए अपने धार्मिकता के कामों पर नहीं, बरन तेरी बड़ी दया ही के कामों पर भरोसा रखकर करते हैं। १९ हे प्रभु, सुन ले; हे प्रभु, पाप क्षमा कर; हे प्रभु, ध्यान देकर जो करना है उसे कर, विलम्ब न कर; हे मैं परमेश्वर, तेरा नगर और तेरी प्रजा तेरी ही कहलाती है, इसलिए अपने नाम के निमित्त ऐसा ही कर।” २० इस प्रकार मैं प्रार्थना करता, और अपने इस्माइली जातिभाइयों के पाप का अंगीकार करता हुआ, अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख उसके पवित्र पर्वत के लिये गिड़गिड़ाकर विनती करता ही था, २१ तब वह पुस्त गब्रिएल जिसे मैंने उस समय देखा जब मुझे पहले दर्शन हुआ था, उसने वेग से उड़ने की आज्ञा पाकर, साँझ के अन्बलि के समय मुझे को छू लिया; और मुझे समझाकर मैं साथ बातें करने लगा। २२ उसने मुझसे कहा, “हे दानियेल, मैं तुझे बुद्धि और

प्रवीणता देने को अभी निकल आया हूँ। २३ जब तू गिडगिडाकर बिनती करने लगा, तब ही इसकी आज्ञा निकली, इसलिए मैं तुझे बताने आया हूँ, क्योंकि तु अति प्रिय ठहरा है; इसलिए उस विषय को समझ ले और दर्शन की बात का अर्थ जान लो। २४ “तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये सत्तर सप्ताह ठहरा ए गए हैं कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापों का अन्त और अर्थात् का प्रायश्चित्त किया जाए, और युग-युग की धर्मिकता प्राप्त हो; और दर्शन की बात पर और भविष्यद्वाणी पर छाप दी जाए, और परमपवित्र स्थान का अधिषेक किया जाए। २५ इसलिए यह जान और समझ ले, कि यस्त्वत्तेम के फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अधिषिक्त प्रधान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर चौक और खाइ समेत वह नगर कष्ट के समय में फिर बसाया जाएगा। २६ और उन बासठ सप्ताहों के बीतने पर अधिषिक्त पुष्प काटा जाएगा; और उसके हाथ कुछ न लगेगा; और आनेवाले प्रधान की प्रजा नगर और पवित्रस्थान को नाश तो करेगी, परन्तु उस प्रधान का अन्त ऐसा होगा जैसा बाढ़ से होता है; तो भी उसके अन्त तक लडाई होती रहेगी; क्योंकि उसका उजड़ जाना निश्चय ठाना गया है। २७ और वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग दृढ़ बाचा बौद्धिया, परन्तु आधे सप्ताह के बीतने पर वह मेलबलि और अन्वन्वलि को बन्द करेगा; और कंसों पर उजाड़नेवाली घृणित वस्तु दिखाइ देंगी और निश्चय से उन्हीं हुई बात के समाप्त होने तक परमेश्वर का क्रोध उजाड़नेवाले पर पड़ा रहेगा।”

१० फारस देश के राजा कुसू के राज्य के तीसरे वर्ष में दानियेल पर, जो

बेलतशस्सर भी कहलाता है, एक बात प्रगट की गई। और वह बात सच थी कि बड़ा युद्ध होगा। उसने इस बात को जान लिया, और उसको इस देखी हुई बात की समझ आ गई। २ उन दिनों, मैं दानियेल, तीन सप्ताह तक शोक करता रहा। ३ उन तीन सप्ताहों के पूरे होने तक, मैंने न तो स्वादिष्ट भोजन किया और न माँस या दाखवधु अपने मूँह में रखा, और न अपनी देह में कुछ भी तेल लगाया। ४ फिर पहले महीने के चौबीसवें दिन को जब मैं हिँड़केल नाम नदी के तट पर था, ५ तब मैंने आँखें उठाकर देखा, कि सन का बच्च पहने हुए, और ऊफाज देश के कुन्दन से कमर बॉथे हुए एक पुष्प खड़ा है। ६ उसका शरीर फोरोजा के समान, उसका मुख बिजली के समान, उसकी आँखें जलते हुए दीपक की सी, उसकी बाहें और पाँवं चमकाए हुए पीतल के से, और उसके वचनों के शब्द भीड़ों के शब्द का सा था। ७ उसको केवल मुझ दानियेल ही ने देखा, और मेरे संगी मनुष्यों को उसका कुछ भी दर्शन न हुआ; परन्तु वे बहुत ही थरथराने लगे, और छिपने के लिये भाग गए। ८ तब मैं अकेला रहकर यह अद्वितीय दर्शन देखता रहा, इससे मेरा बल जाता रहा; मैं भयातुर हो गया, और मुझ में कुछ भी बल न रहा। ९ तो भी मैंने उस पुष्प के वचनों का शब्द सुना, और जब वह मुझे सुन पड़ा तब मैं मूँह के बल गिर गया और गहरी नीद में भूमि पर औंधे मूँह पड़ा रहा। १० फिर किसी ने अपने हाथ से मेरी देह को छुआ, और मुझे उठाकर घुटनों और हथेलियों के बल थरथराते हुए बैठा दिया। ११ तब उसने मुझसे कहा, “हे दानियेल, हे अति प्रिय पुष्प, जो वचन मैं तुझ से कहता हूँ उसे समझ ले, और सीधा खड़ा हो, क्योंकि मैं अभी तेरे पास भेजा गया हूँ।” जब उसने मुझसे यह वचन कहा, तब मैं खड़ा तो हो गया परन्तु थरथराता रहा। १२ फिर उसने मुझसे कहा, “हे दानियेल, मत डार, क्योंकि पहले ही दिन को जब तूने समझने-बझने के लिये मन लगाया और अपने परमेश्वर के समाने अपने को दीन किया, उसी दिन तेरे वचन सुने गए, और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूँ। १३ फारस के

राज्य का प्रधान इक्कीस दिन तक मेरा सामना किए रहा; परन्तु मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से है, वह मेरी सहायता के लिये आया, इसलिए मैं फारस के राजाओं के पास रहा, १४ और अब मैं तुझे समझाने आया हूँ, कि अन्त के दिनों में तेरे लोगों की क्या दशा होगी। क्योंकि जो दर्शन तूने देखा है, वह कुछ दिनों के बाद पूरा होगा।” १५ जब वह पुस्प मुझसे ऐसी बातें कह चुका, तब मैंने भूमि की ओर मूँह किया और चुप रह गया। १६ तब मनुष्य के सन्तान के समान किसी ने मेरे होंठ छुए, और मैं मूँह खोलकर बोलने लगा। और जो मेरे सामने खड़ा था, उससे मैंने कहा, “हे मेरे प्रभु, दर्शन की बातों के कारण मुझ को पीड़ा-सी उठी, और मुझ में कुछ भी बल नहीं रहा। १७ इसलिए प्रभु का दास, अपने प्रभु के साथ कैसे बातें कर सकता है? क्योंकि मेरी देह में न तो कुछ बल रहा, और न कुछ सौंस ही रह गई।” १८ तब मनुष्य के समान किसी ने मुझे छकर फिर मेरा हियाव बन्धाया। १९ और उसने कहा, “हे अति प्रिय पुस्प, मत डर, तुझे शान्ति मिले; तू दृढ़ हो और तेरा हियाव बन्धा रहे।” जब उसने यह कहा, तब मैंने हियाव बौद्धकर कहा, “हे मेरे प्रभु, अब कह, क्योंकि तूने मेरा हियाव बन्धाया है।” २० तब उसने कहा, “क्या तू जानता है कि मैं किस कारण तेरे पास आया हूँ? अब मैं फारस के प्रधान से लड़ने को लौटूँगा; और जब मैं निकलूँगा, तब यूनान का प्रधान आएगा। २१ और जो कुछ सच्ची बातों से भी हर्दू प्रस्तुक में लिखा हुआ है, वह मैं तुझे बताता हूँ; उन प्रधानों के विस्तु, तुम्हारे प्रधान मीकाएल को छोड़, मेरे संग स्थिर रहनेवाला और कोई भी नहीं है।

११ “दारा नामक मादी राजा के राज्य के पहले वर्ष में उसको हियाव दिलाने

और बल देने के लिये मैं खड़ा हो गया। २ “और अब मैं तुझको सच्ची बात बताता हूँ। देख, फारस के राज्य में अब तीन और राजा उठेंगे; और चौथा राजा उन सभी से अधिक धनी होगा; और जब वह धन के कारण सामर्थी होगा, तब सब लोगों को यूनान के राज्य के विस्तु उभारेगा। ३ उसके बाद एक पराक्रमी राजा उठकर अपना राज्य बहुत बढ़ाएगा, और अपनी इच्छा के अनुसार ही काम किया करेगा। ४ और जब वह बड़ा होगा, तब उसका राज्य टूटेगा और चारों दिशाओं में बटकर अलग-अलग हो जाएगा; और न तो उसके राज्य की शक्ति ज्यों की त्यों रहेगी और न उसके बंश को कुछ मिलेगा; क्योंकि उसका राज्य उखड़कर, उनकी अपेक्षा और लोगों को प्राप्त होगा। ५ “तब दक्षिण देश का राजा बल पकड़ेगा; परन्तु उसका एक हाकिम उससे अधिक बल पकड़कर प्रभुता करेगा; यहाँ तक कि उसकी प्रभुता बड़ी हो जाएगी। ६ कई वर्षों के बीतने पर, वे दोनों आपस में मिलेंगे, और दक्षिण देश के राजा की बेटी उत्तर देश के राजा के पास शान्ति की बाचा बौद्धने को आएंगी; परन्तु उसका बाहबल बना न रहेगा, और न वह राजा और न उसका नाम रहेगा; परन्तु वह द्वी अपने पहुँचनेवालों और अपने पिता और अपने सम्भालनेवालों समेत अलग कर दी जाएगी। ७ “फिर उसकी जड़ों में से एक डाल उत्पन्न होकर उसके स्थान में बढ़ेगी; वह सेना समेत उत्तर के राजा के गढ़ में प्रवेश करेगा, और उससे युद्ध करके प्रबल होगा। ८ तब वह उसके देवताओं की ढली हुई मरतों, और सोने-चाँदी के बहमूल्य पात्रों को छीनकर मिस में ले जाएगा; इसके बाद वह कुछ वर्ष तक उत्तर देश के राजा के विस्तु हाथ रोके रहेगा। ९ तब वह राजा दक्षिण देश के राजा के देश में आएगा, परन्तु फिर अपने देश में लौट जाएगा। १० “उसके पुत्र झगड़ा मचाकर बहुत से बड़े-बड़े दल इकट्ठे करेंगे, और उमड़नेवाली नदी के समान आकर देश के बीच होकर जाएँगे, फिर लौटते हुए उसके गढ़ तक झगड़ा मचाते जाएँगे। ११ तब दक्षिण देश का राजा चिढ़ेगा, और निकलकर उत्तर देश के उस राजा से युद्ध

करेगा, और वह राजा लड़ने के लिए बड़ी भीड़ इकट्ठी करेगा, परन्तु वह भीड़ उसके हाथ में कर दी जाएगी। १२ उस भीड़ को जीतकर उसका मन फूल उठेगा, और वह लाखों लोगों को गिराएगा, परन्तु वह प्रबल न होगा। १३ क्योंकि उत्तर देश का राजा लौटकर पहली से भी बड़ी भीड़ इकट्ठी करेगा, और कई दिनों वरन् वर्षों के बीतने पर वह निश्चय बड़ी सेना और सम्पत्ति लिए हुए आएगा। १४ “उन दिनों में बहुत से लोग दक्षिण देश के राजा के विस्तु उठेंगे; वरन् तेरे लोगों में से भी उपदीवी लोग उठ खड़े होंगे, जिससे इस दर्शन की बात पूरी हो जाएगी; परन्तु वे ठोकर खाकर गिरेंगे। १५ तब उत्तर देश का राजा आकर किला बाँधेगा और दृढ़ नगर ले लेगा। और दक्षिण देश के न तो प्रधान खड़े रहेंगे और न बड़े वीर; क्योंकि किरी के खड़े रहने का बल न रहेगा। १६ तब जो भी उनके विस्तु आएगा, वह अपनी इच्छा पूरी करेगा, और वह हाथ में सत्यानाश लिए हुए शिरोमणि देश में भी खड़ा होगा और उसका सामना करनेवाला कोई न रहेगा। १७ तब उत्तर देश का राजा अपने राज्य के पूर्ण बल समेत, कई सीधे लोगों को संग लिए हुए आने लगेगा, और अपनी इच्छा के अनुसार काम किया करेगा। और वह दक्षिण देश के राजा को एक झींझालिए देगा कि उसका राज्य बिगाड़ा जाए; परन्तु वह स्थिर न रहेगी, न उस राजा की होगी। १८ तब वह द्वीपों की ओर मुँह करके बहुतों को ले लेगा; परन्तु एक सेनापति उसके अहंकार को मिटाएगा; वरन् उसके अंकुकार के अनुकूल उसे बदला देगा। १९ तब वह अपने देश के गढ़ों की ओर मुँह फेरेगा, और वह ठोकर खाकर गिरेगा, और कहीं उसका पाता न रहेगा। २० “तब उसके स्थान में कोई ऐसा उठेगा, जो शिरोमणि राज्य में अंधेर करनेवाले को घुमाएगा; परन्तु थोड़े दिन बीतने पर वह क्रोध या शूद्र किए बिना ही नाश हो जाएगा। २१ “उसके स्थान में एक तुच्छ मनुष्य उठेगा, जिसकी राज प्रतिष्ठा पहले तो न होगी, तो भी वह चैन के समय आकर चिकनी-चुपड़ी बातों के द्वारा राज्य को प्राप्त करेगा। २२ तब उसकी भुजास्त्री बाढ़ से लोग, वरन् वाचा का प्रधान भी उसके सामने से बहकर नाश होंगे। २३ क्योंकि वह उसके संग वाचा बाँधने पर भी छल करेगा, और थोड़े ही लोगों को संग लिए हुए चढ़कर प्रबल होगा। २४ चैन के समय वह प्राप्त के उत्तम से उत्तम स्थानों पर चढ़ाइ जलेगा; और जो काम न उसके पूर्वज और न उसके पूर्वजों के पूर्वज करते थे, उसे वह करेगा; और लूटी हुई धन-सम्पत्ति उनमें बहुत बाँटा करेगा। वह कुछ काल तक दृढ़ नगरों के लेने की कल्पना करता रहेगा। २५ तब वह दक्षिण देश के राजा के विस्तु बड़ी सेना लिए हुए अपने बल और हियाव को बढ़ाएगा, और दक्षिण देश का राजा अत्यन्त बड़ी सामर्थी सेना लिए हुए यदू तो करेगा, परन्तु ठहर न सकेगा, क्योंकि लोग उसके विस्तु कल्पना करेंगे। २६ उसके भोजन के खानेवाले भी उसको हरवाएँगे; और यद्यपि उसकी सेना बाढ़ के समान चढ़ेंगी, तो भी उसके बहुत से लोग मर मिटेंगे। २७ तब उन दोनों राजाओं के मन बुआई करने में लोगे, यहाँ तक कि वे एक ही मेज पर बैठे हुए अपस में झट बोलेंगे, परन्तु इससे कुछ बन न पड़ेगा; क्योंकि इन सब बातों का अन्त नियत ही समय में होनेवाला है। २८ तब उत्तर देश का राजा बड़ी लूट लिए हुए अपने देश को लौटेगा, और उसका मन पवित्र वाचा के विस्तु उभेरेगा, और वह अपनी इच्छा पूरी करके अपने देश को लौट जाएगा। २९ “नियत समय पर वह फिर दक्षिण देश की ओर जाएगा, परन्तु उस पिछली बार के समान इस बार उसका वश न चलेगा। ३० क्योंकि कितियों के जहाज उसके विस्तु आएँगे, और वह उदास होकर लौटेगा, और पवित्र वाचा पर चिढ़कर अपनी इच्छा पूरी करेगा। वह लौटकर पवित्र वाचा के तोड़नेवालों की सुधि लेगा। ३१ तब उसके सहायक खड़े होकर, दृढ़ पवित्रस्थान को अपवित्र करेंगे, और नित्य होमबलि को बन्द करेंगे। और वे उस धृणित वस्तु को खड़ा करेंगे जो

उजाड़ करा देती है। ३२ और जो लोग दृष्ट होकर उस वाचा को तोड़ेंगे, उनको वह चिकनी-चुपड़ी बातें कह कहकर भत्किहीन कर देगा; परन्तु जो लोग अपने परमेश्वर का ज्ञान रखेंगे, वे हियाव बौद्धकर बड़े काम करेंगे। ३३ और लोगों को सिखानेवाले बुद्धिमान जन बहुतों को समझाएँगे, तो भी वे बहुत दिन तक तलवार से छिड़कर और आग में जलकर, और बैंधुए होकर और लुटकर, बड़े दुख में पड़े रहेंगे। ३४ जब वे दुख में पड़ेंगे तब थोड़ा बहुत सम्भलेंगे, परन्तु बहुत से लोग चिकनी-चुपड़ी बातें कह कहकर उनसे मिल जाएँगे; ३५ और बुद्धिमानों में से कितने गिरेंगे, और इसलिए गिरने पाएँगे कि जाँचे जाएँ, और निर्मल और उजले किए जाएँ। यह दशा अन्त के समय तक बनी रहेगी, क्योंकि इन सब बातों का अन्त नियत समय में होनेवाला है। ३६ “तब वह राजा अपनी इच्छा के अनुसार काम करेगा, और अपने आपको सारे देवताओं से ऊँचा और बड़ा ठहराएगा; वरन् सब देवताओं के परमेश्वर के विस्तु भी अनोखी बातें कहेगा। और जब तक परमेश्वर का क्रोध न हो जाए तब तक उस राजा का कार्य सफल होता रहेगा; क्योंकि जो कुछ निश्चय करके ठाना हुआ है वह अवश्य ही पूरा होनेवाला है। ३७ वह अपने पूर्वजों के देवताओं की चिन्ता न करेगा, न जियों की प्रीति की कुछ चिन्ता करेगा और न किसी देवता की; क्योंकि वह अपने आप ही को सभी के ऊपर बड़ा ठहराएगा। ३८ वह अपने राजपद पर स्थिर रहकर दृढ़ गढ़ों ही के देवता का सम्मान करेगा, एक ऐसे देवता का जिसे उसके पूर्वज भी न जानते थे, वह सोना, चाँदी, मणि और मनभावनी वस्तुएँ चढ़ाकर उसका सम्मान करेगा। ३९ उस प्राए देवता के सहारे से वह अति दृढ़ गढ़ों से लड़ेगा, और जो कोई उसको माने उसे वह बड़ी प्रतिशत देगा। ऐसे लोगों को वह बहुतों के ऊपर प्रभुता देगा, और अपने लाभ के लिए अपने देश की भूमि को बाँट देगा। ४० “अन्त के समय दक्षिण देश का राजा उसको सीधी मारने लगेगा; परन्तु उत्तर देश का राजा उस पर बवण्डर के समान बहुत से रथ-सवार और जहाज लेकर चढ़ाई करेगा; इस रीति से वह बहुत से देशों में फैल जाएगा, और उनमें से निकल जाएगा। ४१ वह शिरोमणि देश में भी आएगा, और बहुत से देश उजड़ा जाएँगे, परन्तु एदोमी, मोर्काबी और मुख्य-मुख्य अमोमी आदि जातियों के देश उसके हाथ से बच जाएँगे। ४२ वह कई देशों पर हाथ बढ़ाएगा और विस्तु देश भी न बचेगा। ४३ वह मिस्त्र के सोने चाँदी के खजानों और सब मनभावनी वस्तुओं का स्वामी हो जाएगा; और लूबी और कशी लोग भी उसके पीछे हो लेंगे। ४४ उसी समय वह पूरब और उत्तर दिशाओं से समाचार सुनकर घबराएगा, और बड़े क्रोध में आकर बहुतों का सत्यानाश करने के लिये निकलेगा। ४५ और वह दोनों सम्मुद्रों के बीच पवित्र शिरोमणि पर्वत के पास अपना राजकीय तम्बू खड़ा कराएगा; इतना करने पर भी उसका अन्त आ जाएगा, और कोई उसका सहायक न रहेगा।

१२ “उसी समय मीकाएल नाम का बड़ा प्रधान, जो तेरे जातिभाइयों का पक्ष करने को खड़ा रहता है, वह उठेगा। तब ऐसे संकट का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर अब तक कभी न हुआ होगा; परन्तु उस समय तेरे लोगों में से जितनों के नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वे बच निकलेंगे। १ और जो भूमि की नीचे सोए रहेंगे उनमें से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिये, और कितने अपनी नामधारी और सदा तक अत्यन्त धिनोंने ठहराने के लिये। २ तब बुद्धिमानों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा तारों के समान प्रकाशमान रहेंगे। ३ परन्तु हे दानियेल, तू इस पुस्तक पर मुहर करके इन वचनों को अन्त समय तक के लिये बन्द रख। और बहुत लोग पृछ-पाछ और दृढ़-ढाँढ़ करेंगे, और इससे ज्ञान बढ़ भी जाएगा।” ४ यह

सब सुन, मुझ दानिय्येल ने दृष्टि करके क्या देखा कि और दो पुस्त खड़े हैं, एक तो नदी के इस टट पर, और दूसरा नदी के उस टट पर है। ६ तब जो पुस्त सन का वस्त्र पहने हुए नदी के जल के ऊपर था, उससे उन पुस्तों में से एक ने पूछा, “इन आश्चर्यकर्मी का अन्त कब तक होगा?” ७ तब जो पुस्त सन का वस्त्र पहने हुए नदी के जल के ऊपर था, उसने मेरे सुनते दाहिना और बायाँ अपने दोनों हाथ स्वर्ण की ओर उठाकर, सदा जीवित रहनेवाले की शपथ खाकर कहा, “यह दशा साढ़े तीन काल तक ही रहेगी; और जब पवित्र प्रजा की शक्ति टूटते-टूटते समाप्त हो जाएगी, तब ये बातें पूरी होंगी।” ८ यह बात मैं सुनता तो था परन्तु कुछ न समझा। तब मैंने कहा, “हे मेरे प्रभु, इन बातों का अन्तफल क्या होगा?” ९ उसने कहा, “हे दानिय्येल चला जा; क्योंकि ये बातें अन्त समय के लिये बन्द हैं और इन पर मुहर दी हड़ है। १० बहुत लोग तो अपने-अपने को निर्भल और उजले करेंगे, और स्वच्छ हो जाएँगे; परन्तु दूष लोग दुष्टा ही करते रहेंगे; और दुष्टों में से कोई ये बातें न समझेगा; परन्तु जो बुद्धिमान है वे ही समझेंगे। ११ जब से नित्य होमबलि उठाई जाएगी, और वह घिनौनी वस्तु जो उजाड़ करा देती है, स्थापित की जाएगी, तब से बारह सौ नब्बे दिन बीतेंगे। १२ क्या ही धन्य है वह, जो धीरज धरकर तेरह सौ पैतीस दिन के अन्त तक भी पहुँचे। १३ अब तू जाकर अन्त तक ठहरा रह; और तू विश्वाम करता रहेगा; और उन दिनों के अन्त में तू अपने निज भाग पर खड़ा होगा।”

होशे

१ यहदा के राजा उज्जियाह, योताम, आहाज, और हिजकियाह के दिनों में और इसाएल के राजा योआश के पुत्र यहोवा के दिनों में, यहोवा का वचन बेरी के पुत्र होशे के पास पहुँचा। २ तब यहोवा ने होशे के द्वारा पहले-पहल बातें की, तब उसने होशे से यह कहा, “जाकर एक वेश्या को अपनी पत्नी बना ले, और उसके कुर्कम के बच्चों को अपने बच्चे कर ले, क्योंकि यह देश यहोवा के पीछे लेना छोड़कर वेश्या का सा बहुत काम करता है।” ३ अतः उसने जाकर दिल्लैम की बेटी गोमर को अपनी पत्नी कर लिया, और वह उससे गर्भवती हुई और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। ४ तब यहोवा ने उससे कहा, “उसका नाम यिजेल रख; क्योंकि थोड़े ही काल में मैं येह के घराने को यिजेल की हत्या का टण्ड ढूँगा, और मैं इसाएल के घराने के राज्य का अन्त कर दूँगा। ५ उस समय मैं यिजेल की तराई में इसाएल के धनुष को तोड़ डालूँगा।” ६ वह जी फिर गर्भवती हुई और उसके एक बेटी उत्पन्न हुई। तब यहोवा ने होशे से कहा, “उसका नाम लोस्हामा रख; क्योंकि मैं इसाएल के घराने पर फिर कभी दया करके उनका अपराध किसी प्रकार से क्षमा न करूँगा। ७ परन्तु यहदा के घराने पर मैं दया करूँगा, और उनका उद्धार करूँगा; उनका उद्धार मैं धनुष या तलवार या युद्ध या घोड़ों या सवारों के द्वारा नहीं, परन्तु उनके परमेश्वर यहोवा के द्वारा करूँगा।” ८ तब उस झी ने लोस्हामा का दूध छुड़ाया, तब वह गर्भवती हुई और उससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ९ तब यहोवा ने कहा, “इसका नाम लोअम्मी रख; क्योंकि तुम लोग मेरी प्रजा नहीं हो, और न मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा।” १० तो भी इसाएलियों की गिनती समृद्ध की रेत की सी हो जाएगी, जिनका मापना-गिनना अनहोना है; और जिस स्थान में उनसे यह कहा जाता था, “तुम मेरी प्रजा नहीं हो,” उसी स्थान में वे जीवित परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे। ११ तब यहदी और इसाएली दोनों इकट्ठे हो अपना एक प्रधान ठहराकर देश से चले आएँगे; क्योंकि यिजेल का दिन प्रसिद्ध होगा।

२ इसलिए तुम लोग अपने भाइयों से अम्मी और अपनी बहनों से स्त्रीमा कहो। ३ “अपनी माता से विवाद करो, विवाद क्योंकि वह मेरी झी नहीं हो, और न मैं उसका पति हूँ। वह अपने मूँह पर से अपने छिनालपन को और अपनी छातियों के बीच से व्यभिचारों को अलग करे; ४ नहीं तो मैं उसके बब्ब उतारकर उसको जन्म के दिन के समान नींव कर दूँगा, और उसको मस्थल के समान और मस्सभूमि सरीखी बनाऊँगा, और उसे प्यास से मार डालूँगा। ५ उसके बच्चों पर भी मैं कछ दया न करूँगा, क्योंकि वे कुर्कम के बच्चे हैं। ६ उनकी माता ने छिनाला किया है; जिसके गर्भ में वे पड़े, उसने लज्जा के योग्य काम किया है। उसने कहा, “मेरे यार जो मुझे रोटी-पानी, ऊन, सन, तेल और मध्य देते हैं, मैं उन्हीं के पीछे चलूँगी।” ७ इसलिए देखो, मैं उसके मार्ग को कटौंती से घेरूँगा, और ऐसा बाड़ा खड़ा करूँगा कि वह राह न पा सकेगी। ८ वह अपने यारों के पीछे चलने से भी उन्हें न पाएगी; और उन्हें ढूँढ़ने से भी न पाएगी। तब वह कहेगी, “मैं अपने पहले पति के पास फिर लौट जाऊँगी, क्योंकि मेरी पहली दशा इस समय की दशा से अच्छी थी।” ९ वह यह नहीं जानती थी, कि अन्न, नया दाखमधु और तेल मैं ही उसे देता था, और उसके लिये वह चाँदी सोना जिसको वे बाल देवता के काम मैं ले आते हैं, मैं ही बढ़ाता था। १० इस कारण मैं अन्न की क्रतु में अपने अन्न को, और नये दाखमधु के होने के समय मैं अपने नये दाखमधु को हर लूँगा; और अपना ऊन और सन भी जिनसे वह अपना तन ढाँपती है, मैं छीन लूँगा। ११ अब मैं उसके

यारों के सामने उसके तन को उधाइूँगा, और मेरे हाथ से कोई उसे छुड़ा न सकेगा। १२ और मैं उसके पर्व, नये चाँद और विश्वामित्र आदि सब नियत समयों के उत्सवों का अन्त कर दूँगा। १३ मैं उसकी दाखलताओं और अंजीर के बक्षों को, जिनके विषय वह कहती है कि यह मेरे छिनाले की प्राप्ति है जिसे मेरे यारों ने मुझे दी है, उन्हें ऐसा उजाइूँगा कि वे जंगल से हो जाएँगे, और वन-पशु उन्हें चर डालेंगे। १४ वे दिन जिनमें वह बाल देवताओं के लिये धूप जलाती, और नथ और हार पहने अपने यारों के पीछे जाती और मुझ को भूले रहती थी, उन दिनों का टण्ड मैं उस दूँगा, यहोवा की यही वाणी है। १५ “इसलिए देखो, मैं उसे मोहित करके जंगल मैं ले जाऊँगा, और वहाँ उससे शान्ति की बातें कहूँगा। १६ वही मैं उसको दाख की बारियाँ दूँगा, और आकार की तराई को आशा का द्वार कर दूँगा और वहाँ वह मुझसे ऐसी बातें कहेगी जैसी अपनी जीवनी के दिनों में अर्थात् मिस देश से चले आने के समय कहती थी। १७ और यहोवा की यह वाणी है कि उस समय तू मुझे पति कहेगी और फिर बाली न कहेगी। १८ क्योंकि भविष्य मैं मैं उसे बाल देवताओं के नाम न लेने दूँगा; और न उनके नाम फिर स्मरण में रहेंगे। १९ और उस समय मैं उनके लिये बन-पशुओं और आकाश के पक्षियों और भूमि पर के रेणेवाले जननुओं के साथ बच्चा बांधूँगा, और धनुष और तलवार तोड़कर युद्ध को उनके देश से दूर कर दूँगा; और ऐसा करूँगा कि वे लोग निर्दर सोया करेंगे। २० मैं सदा के लिये तुड़े अपनी झी करने की प्रतिज्ञा करूँगा, और यह प्रतिज्ञा धार्मिकता, और न्याय, और कस्ता, और दया के साथ करूँगा। २१ यह सच्चाई के साथ की जाएगी, और तू यहोवा को जान लेगी। २२ “यहोवा की यह वाणी है कि उस समय मैं आकाश की सुनकर उसको उत्तर देगा; २३ और पृथ्वी अन्न, नये दाखमधु, और ताजे तेल की सुनकर उनको उत्तर देगी, और वे यिजेल को उत्तर देंगे। २४ मैं अपने लिये उसे देश में बोँड़ा, और लोस्हामा पर दया करूँगा, और लोअम्मी से कहूँगा, तू मेरी प्रजा है, और वह कहेगा, ‘हे मेरे परमेश्वर।’”

३ फिर यहोवा ने मुझसे कहा, “अब जाकर एक ऐसी झी से प्रीति कर, जो व्यभिचारी होने पर भी अपने प्रिय की प्यारी हो; क्योंकि उसी भाँति यद्यपि इसाएली पराए देवताओं की ओर फिरे, और किशमिश की टिकियों से प्रीति रखते हैं, तो भी यहोवा उनसे प्रीति रखता है।” ४ तब मैंने एक झी की चाँदी के पन्द्रह टुकड़े और डेंड होमर जौ देकर मोल लिया। ५ मैंने उससे कहा, “तू बहुत दिन तक मेरे लिये बैठी रहना; और न तो छिनाला करना, और न किसी पुस्त की झी हो जाना; और मैं भी तेरे लिये ऐसा ही रहूँगा।” ६ क्योंकि इसाएली बहुत दिन तक बिना राजा, बिना हाकिम, बिना यज्ञ, बिना स्तम्भ, और बिना एपोदा या गृहदेवताओं के बैठे रहेंगे। ७ उसके बाद वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद को फिर ढूँढ़ने लगेंगे, और अन्त के दिनों में यहोवा के पास, और उसकी उत्तम वस्तुओं के लिये थरथराते हुए आएँगे।

४ हे इसाएलियों, यहोवा का वचन सुनो; इस देश के निवासियों के साथ यहोवा का मुकदमा है। इस देश में न तो कुछ सच्चाई है, न कुछ कस्ता और न कुछ परमेश्वर का ज्ञान ही है। १ यहाँ प्यार देने, झूट बोलने, बध करने, चुराने, और व्यभिचार करने को छोड़ कुछ नहीं होता; वे व्यवस्था की सीमा को लाँचकर करते हैं और खून ही खून होता रहता है। २ इस कारण यह देश विलाप करेगा, और मैदान के जीव-जन्मतों, और आकाश के पक्षियों समेत उसके सब निवासी कम्हला जाएँगे; और समृद्ध की मछलियाँ भी नाश हो जाएँगी। ३ देखो, कोई वाद-विवाद न करें, न कोई उलाहना दें, क्योंकि तेरे लोग तो याजकों से वाद-विवाद करनेवालों के समान हैं। ४ तू दिन दुपही

ठोकर खाएगा, और रात को भविष्यद्वन्द्वा भी तेरे साथ ठोकर खाएगा; और मैं तेरी माता का नाश करूँगा। ६ मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई; तो मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है, इसलिए मैं तुझे अपना याजक रहने के अयोग्य ठहराऊँगा। इसलिए कि तूने अपने परमेश्वर की व्यवस्था को त्याग दिया है, मैं भी तेरे बाल-बच्चों को छोड़ दूँगा। ७ जैसे याजक बढ़ते गए, वैसे ही वे मेरे विस्फू पाप करते गए, मैं उनके बैधव के बदले उनका अनादर करूँगा। ८ वे मेरी प्रजा के पापबलियों को खोते हैं, और प्रजा के पापी होने की लालसा करते हैं। ९ इसलिए जो प्रजा की दशा होगी, वही याजक की भी होगी; मैं उनके चाल चलन का दण्ड दूँगा, और उनके कामों के अनुकूल उहें बदला दूँगा। १० वे खाएँगे तो सही, परन्तु तुम न होंगे, और वेश्यागमन तो करेंगे, परन्तु न बढ़ेंगे; क्योंकि उन्होंने यहोवा की ओर मन लगाना छोड़ दिया है। ११ वेश्यागमन और दाखमधु और ताजा दाखमधु, ये तीनों बुद्धि को भ्रष्ट करते हैं। १२ मेरी प्रजा के लोग काठ के पुतले से प्रश्न करते हैं, और उनकी छड़ी उनको भविष्य बताती है। क्योंकि छिनाला करनेवाली आत्मा ने उहें बहकाया है, और वे अपने परमेश्वर की अर्धीनता छोड़कर छिनाला करते हैं। १३ बांज, चिनार और छेटे बांजबूझों की छाया अच्छी होती है, इसलिए वे उनके नीचे और पहाड़ों की चोटियों पर यज्ञ करते, और टीलों पर धूप जलाते हैं। इस कारण तुम्हारी बेटियाँ छिनाल और तुम्हारी बहुएँ व्यभिचारिणी हो गई हैं। १४ जब तुम्हारी बेटियाँ छिनाला और तुम्हारी बहुएँ व्यभिचार करें, तब मैं उनको दण्ड न दूँगा; क्योंकि मनुष्य आप ही वेश्याओं के साथ एकान्त में जाते, और देवदासियों के साथी होकर यज्ञ करते हैं; और जो लोग समझ नहीं रखते, वे नाश हो जाएँगे। १५ हे इसाएल, यधपि तु छिनाला करता है, तो भी यहदा दोषी न बने। गिलाल को न आओ; और न बेतावेन को चढ़ जाओ; और यहोवा के जीवन की सौगन्ध कहकर शपथ न खाओ। १६ क्योंकि इसाएल ने हठीली बछिया के समान हठ किया है, क्या अब यहोवा उन्हें भेद के बच्चे के समान लम्बे चौड़े मैदान में चराएगा? १७ ऐप्रैम भूरों का संगी हो गया है; इसलिए उसको रहने दे। १८ वे जब दाखमधु पी चुकते हैं तब वेश्यागमन करने में लग जाते हैं, उनके प्रधान लोग निरादर होने से अधिक प्रीति रखते हैं। १९ अर्धी उनको अपने पंखों में बाँधकर उड़ा ले जाएँगी, और उनके बलिदानों के कारण वे लज्जित होंगे।

५ हे याजकों, यह बात सुनो! हे इसाएल के घराने, ध्यान देकर सुनो! हे राजा के घराने, तुम भी कान लगाओ! क्योंकि तुम्हारा न्याय किया जाएगा; क्योंकि तुम सिस्या में फंदा, और ताबोर पर लगाया हुआ जाल बन गए हो। २ उन बिंगड़े हुओं ने घोर हत्या की है, इसलिए मैं उन सभी को ताड़ना दूँगा। ३ मैं ऐप्रैम का भेद जानता हूँ, और इसाएल की दशा मुझसे छिपी नहीं है; हे ऐप्रैम, तो छिनाला किया, और इसाएल अशद्ध हुआ है। ४ उनके काम उहें अपने परमेश्वर की ओर फिने नहीं देते, क्योंकि छिनाला करनेवाली आत्मा उनमें रहती है, और वे यहोवा को नहीं जानते हैं। ५ इसाएल का गर्व उसी के विस्फू साक्षी देता है, और इसाएल और ऐप्रैम अपने अर्धम के कारण ठोकर खाएँगे, और यहदा भी उनके संग ठोकर खाएगा। ६ वे अपनी भेड़-बकरियाँ और गाय बैल लेकर यहोवा को ढूँढ़ने चलेंगे, परन्तु वह उनको न मिलेगा; क्योंकि वह उससे दूँहो गया है। ७ वे व्यभिचार के लड़के जने हैं, इससे उन्होंने यहोवा का विच्वासघात किया है। इस कारण अब चौंद उनका और उनके भागों के नाश का कारण होगा। ८ गिला में नरसिंगा, और रामाह में तुही फँको। बोतावेन में ललकार कर कहो; हे बिन्यामीन, आगे बढ़। ९ दण्ड के दिन मैं ऐप्रैम उजाड़ हो जाएगा; जिस बात का होना निश्चित है, मैंने उसी का सन्देश

इसाएल के सब गोत्रों को दिया है। १० यहदा के हाकिम उनके समान हुए हैं जो सीमा बढ़ा लेते हैं, मैं उन पर अपनी जलजलाहट जल के समान उड़ेलौंगा। ११ ऐप्रैम पर अंधेर किया गया है, वह मुकदमा हार गया है; क्योंकि वह जी लगाकर उस आज्ञा पर चला। १२ इसलिए मैं ऐप्रैम के लिये किंडी के समान और यहदा के घराने के लिये सड़ाहट के समान होऊँगा। १३ जब ऐप्रैम ने अपना रोग, और यहदा ने अपना धाव देखा, तब ऐप्रैम अशशू के पास गया, और येरेब राजा को कहला भेजा। परन्तु न वह तुहें चंगा कर सकता और न तुम्हारा धाव अच्छा कर सकता है। १४ क्योंकि मैं ऐप्रैम के लिये सिंह, और यहदा के घराने के लिये जवान सिंह बनूँगा। मैं आप ही उन्हें फाड़कर ले जाऊँगा; जब मैं उठा ले जाऊँगा, तब मेरे पंजे से कोई न छुड़ा सकेगा। १५ जब तक वे अपने को अपराधी मानकर मेरे दर्शन के खोली न होंगे तब तक मैं अपने स्थान को न लौटूँगा, और जब वे संकट में पड़ेंगे, तब जी लगाकर मुझे ढूँढ़ने लगेंगे।

६ “चलो, हम यहोवा की ओर फिरें; क्योंकि उसी ने फाड़ा, और वही हमें चंगा भी करेगा; उसी ने मारा, और वही हमारे धावों पर पटी बौद्धिगी। ७ दो दिन के बाद वह हमको जिलाएगा; और तीसरे दिन वह हमको उठाकर खड़ा करेगा; तब हम उसके सम्मुख जीवित रहेंगे। ८ आओ, हम जान ढूँढ़ै, वरन् यहोवा का जान प्राप्त करने के लिये यह भी करें; क्योंकि यहोवा का प्रगट होना भेर का सा निश्चित है; वह वर्षा के समान हमारे ऊपर आएगा, वरन् बरसात के अन्त की वर्षा के समान जिससे भूमि सीधीती है।” ९ हे ऐप्रैम, मैं तुझ से क्या करूँ? हे यहदा, मैं तुझ से क्या करूँ? तुम्हारा सेह तो भोर के मेघ के समान, और सर्वेर उड़ जानेवाली ओस के समान है। १० इस कारण मैंने भविष्यद्वन्द्वाओं के द्वारा मानो उन पर कुल्हाड़ी चलाकर उहें काट डाला, और अपने वचनों से उनको धात किया, और मेरा न्याय प्रकाश के समान चमकता है। ११ क्योंकि मैं बलिदान से नहीं, स्थिर प्रेम ही से प्रसन्न होता हूँ, और होमबलियों से अधिक यह चाहता हूँ कि लोग परमेश्वर का जान रखें। १२ परन्तु उन लोगों ने आदम के समान वाचा को तोड़ दिया; उन्होंने वहाँ मुझसे विच्वासघात किया है। १३ गिलाद नामक गढ़ी तो अनर्थकारियों से भरी है, वह खून से भरी हुई है। १४ जैसे डाकुओं के दल किसी की धात में बैठते हैं, वैसे ही याजकों का दल शेकेम के मार्ग में बैध करता है, वरन् उन्होंने महापाप भी किया है। १५ इसाएल के घराने में मैंने रोएँ खड़े होने का कारण देखा है; उसमें ऐप्रैम का छिनाला और इसाएल की अशद्धा पाई जाती है। १६ हे यहदा, जब मैं अपनी प्रजा को बैधुआई से लौटा ले आऊँगा, उस समय के लिये तेरे निमित्त भी बदला ठहराया हुआ है।

७ जब मैं इसाएल को चंगा करता हूँ तब ऐप्रैम का अर्धम और सामरिया की बुगाइयाँ प्रगट हो जाती हैं; वे छल से काम करते हैं, चोर भीतर घुसता, और डाकुओं का दल बाहर छीन लेता है। ८ तो भी वे नहीं सोचते कि यहोवा हमारी सरी बुराई को स्मरण रखता है। इसलिए अब वे अपने कामों के जाल में फँसेंगे, क्योंकि उनके कार्य मेरी दृष्टि में बने हैं। ९ वे राजा को बुराई करने से, और हाकिमों को झाठ बोलने से आनन्दित करते हैं। १० वे सब के सब व्यभिचारी हैं; वे उस तन्दूर के समान हैं जिसको पकानेवाला गर्म करता है, पर जब तक आटा गूँधा नहीं जाता और खमीर से फूल नहीं चुकता, तब तक वह आग को नहीं उकसाता। ११ हमारे राजा के जन्मदिन में हाकिम दाखमधु पीकर चूर हुए; उसने ठट्ठा करनेवालों से अपना हाथ मिलाया। १२ जब तक वे घात लगाए रहते हैं, तब तक वे अपना मन तन्दूर के समान तैयार किए रहते हैं; उनका पकानेवाला रात भर सोता रहता है; वह भोर को तन्दूर की धधकती लौ

के समान लाल हो जाता है। ७ वे सब के सब तन्दूर के समान धधकते, और अपने न्यायियों को भस्म करते हैं। उनके सब राजा मारे गए हैं; और उनमें से कोई मेरी दुहाई नहीं देता है। ८ ऐप्रैम देश-देश के लोगों से मिलाजुला रहता है; ऐप्रैम ऐसी चापाती ठहरा है जो उलटी न गई हो। ९ परदेशियों ने उसका बल तोड़ डाला, परन्तु वह इसे नहीं जानता; उसके सिर में कहीं-कहीं पके बाल हैं, परन्तु वह इसे भी नहीं जानता। १० इसाएल का गर्व उसी के विद्धु साक्षी देता है; इन सब बातों के रहते हुए भी वे अपने परमेश्वर यहोवा की ओर नहीं फिरे, और न उसको ढूँढ़ा है। ११ ऐप्रैम एक भोली पंडकी के समान हो गया है जिसके कुछ बुद्धि नहीं; वे मिथियों की दुहाई देते, और अशशू को चले जाते हैं। १२ जब वे जाँच, तब उनके ऊपर मैं अपना जाल फैलाऊंगा; मैं उन्हें ऐसा खींच लूँगा जैसे आकाश के पक्षी खींचे जाते हैं; मैं उनको ऐसी ताङना दूँगा, जैसी उनकी मण्डली सुन चुकी है। १३ उन पर हाय, क्योंकि वे मेरे पास से भटक गए! उनका सत्यानाश हो, क्योंकि उन्होंने मुझसे बलवा किया है! मैं तो उन्हें छुड़ाता रहा, परन्तु वे मेरे विस्तु झूँट बोलते आए हैं। १४ वे मन से मेरी दुहाई नहीं देते, परन्तु अपने बिछौने पर पड़े हुए हाय, हाय, करते हैं, वे अन्न और नया दाखमधु पाने के लिये भीड़ लगाते, और मुझसे बलवा करते हैं। १५ मैं उनको शिक्षा देता रहा और उनकी भुजाओं को बलवन्त करता आया हूँ, तो भी वे मेरे विस्तु बुरी कल्पना करते हैं। १६ वे फिरते तो हैं, परन्तु परमधान की ओर नहीं; वे धोखा देनेवाले धनुष के समान हैं; इसलिए उनके हाकिम अपनी क्रोधभरी बातों के कारण तलवार से मारे जाएँगे। मिस्र देश में उनको उपहास में उड़ाए जाने का यही कारण होगा।

अपने मुँह में नरसिंगा लगा। वह उकाब के समान यहोवा के घर पर झपटेगा, क्योंकि मेरे घर के लोगों ने मेरी वाचा तोड़ी, और मेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया है। १७ वे मुझसे उपकारकर कहेंगे, “हे हमारे परमेश्वर, हम इसाएली लोग तुझे जानते हैं।” १८ परन्तु इसाएल ने भलाई को मन से उतार दिया है; शत्रु उसके पीछे पड़ेगा। १९ वे राजाओं को ठहराते रहे, परन्तु मेरी इच्छा से नहीं। वे हाकिमों को भी ठहराते रहे, परन्तु मेरे अनजाने में। उन्होंने अपना सोना-चाँदी लेकर मूरतें बानी ली जिससे वे ही नाश हो जाएँ। २० हे सामरिया, उसने तेरे बछड़े को मन से उतार दिया है, मेरा क्रोध उन पर भड़का है। वे निर्दीष होने में कब तक विलम्ब करेंगे? २१ यह इसाएल से हुआ है। एक कारीगर ने उसे बनाया; वह परमेश्वर नहीं है। इस कारण सामरिया का वह बछड़ा टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। २२ वायु बोते हैं, और वे बवण्डर लंबें। उनके लिये कुछ खेत रहेगा नहीं न उनकी उपज से कुछ आटा होगा; और यदि हो भी तो परदेशी उसको खा डालेंगे। २३ इसाएल निगला गया; अब वे अन्यजातियों में ऐसे निकम्मे ठहरे जैसे तुच्छ बर्जन ठहरता है। २४ क्योंकि वे अश्वर को ऐसे चले गए, जैसा जंगली गदहा झण्ड से बिछड़ के रहता है, ऐप्रैम ने यारों को मजदूरी पर रखा है। २५ यद्यपि वे अन्यजातियों में से मजदूर बनाकर रखें, तो भी मैं उनको इकट्ठा करूँगा। और वे हाकिमों और राजा के बोझ के कारण घटने लगेंगे। २६ ऐप्रैम ने पाप करने को बहुत सी वेदियाँ बनाई हैं, वे ही वेदियाँ उसके पापी ठहरने का कारण भी ठहरी हैं। २७ मैं तो उनके लिये अपनी व्यवस्था की लाखों बातें लिखकर दिए, परन्तु वे उन्हें पराया समझते हैं। २८ वे मेरे लिये बलिदान तो करते हैं, और पशुबलि भी करते हैं, परन्तु उसका फल माँस ही है, वे आप ही उसे खाते हैं, परन्तु यहोवा उनसे प्रसन्न नहीं होता। अब वह उनके अधर्म की सुधि लेकर उनके पाप का दण्ड देगा; वे मिस्र में लौट जाएँगे। २९ क्योंकि इसाएल ने अपने कर्ता को भुला कर महल

बनाए, और यहदा ने बहुत से गढ़वाले नगरों को बसाया है; परन्तु मैं उनके नगरों में आग लगाऊँगा, और उससे उनके गढ़ भस्म हो जाएँगा।

३० हे इसाएल, तू देश-देश के लोगों के समान आनन्द में मग्न मत हो! क्योंकि तू अपने परमेश्वर को छोड़कर वेश्या बनी। तुमें अन्न के हर एक खलिहान पर छिलाले की कमाई आनन्द से ली है। ३१ वे न तो खलिहान के अन्न से तम होंगे, और न कुण्ड के दाखमधु से, और नये दाखमधु के घटने से वे धोखा खाएँगे। ३२ वे यहोवा के देश में रहने न पाएँगे; परन्तु ऐप्रैम मिस्र में लौट जाएगा, और वे अशूर में अशुद्ध वस्तुएँ खाएँगे। ३३ वे यहोवा के लिये दाखमधु का अर्ध न देंगे, और न उनके बलिदान उसको भाएँगे। उनकी रोटी शोक करनेवालों का सा भोजन ठहरेगी; जितने उसे खाएँगे सब अशुद्ध हो जाएँगे; क्योंकि उनकी भोजनवस्तु उनकी भ्रष्ट बुझाने ही के लिये होगी; वह यहोवा के भवन में न आ सकेगी। ३४ नियत समय के पर्व और यहोवा के उत्सव के दिन तम क्या करेगे? ३५ देखो, वे सत्यानाश होने के दर के मारे चले गए; परन्तु वहाँ मर जाएँगे और मिस्री उनके शव इकट्ठा करेंगे; और मोप के निवासी उनको मिट्टी देंगे। उनकी मनभानी चाँदी की वस्तुएँ बिछू बेड़ों के बीच में पड़ेंगी, और उनके तम्बूओं में कट्ठे उगेंगे। ३६ दण्ड के दिन आए हैं; बदला लेने के दिन आए हैं; और इसाएल यह जान लेगा। उनके बहुत से अधर्म और बड़े द्रेष के कारण भविष्यद्वत्ता तो मूर्ख, और जिस पुस्त पर आत्मा उतरता है, वह बावला ठहरेगा। ३७ ऐप्रैम का पहस्ता मेरे परमेश्वर के साथ था; पर भविष्यद्वत्ता सब मार्गों में बहलिये का फंदा है, और वह अपने परमेश्वर के घर में बैरी हुआ है। ३८ वे गिबा के दिनों की भाँति अत्यन्त बिगड़ हैं; इसलिए परमेश्वर उनके अधर्म की सुधि लेकर उनके पाप का दण्ड देगा। ३९ मैंने इसाएल को ऐसा पाया जैसे कोई जंगल में दाख पाएँगे; और तुम्हारे पुरखाओं पर ऐसे दृष्टि की जैसे अंजीर के पहले फलों पर दृष्टि की जाती है। परन्तु उन्होंने बालपोर के पास जाकर अपने को लज्जा का कारण होने के लिये अर्पण कर दिया, और जिस पर मोहित हो गए थे, वे उसी के समान धिनैनै हो गए। ४० ऐप्रैम का वैभव पक्षी के समान उड़ जाएगा; न तो किसी का जन्म होगा, न किसी को गर्भ रहेगा, और न कोई द्वी गर्भवती होगी। ४१ चाहे वे अपने बच्चों का पालन-पोषण कर बड़े भी करें, तो भी मैं उन्हें यहाँ तक निर्वाण करूँगा कि कोई भी न बचेगा। जब मैं उनसे दूर हो जाऊँगा, तब उन पर हाय। ४२ जैसा मैंने सोर को देखा, वैसा ऐप्रैम को भी मनभाऊ स्थान में बसा हुआ देखा; तो भी उसे अपने बच्चों को घातक के समाने ले जाना पड़ेगा। ४३ हे यहोवा, उनको दण्ड दें! तू क्या देगा? यह, कि उनकी छियों के गर्भ पिर जाएँ, और स्तन सूखे रहें। ४४ उनकी सारी बुराई गिलगाल में है; वही मैंने उनसे धूंगा की। उनके बुरे कामों के कारण मैं उनको अपने घर से निकाल दूँगा। और उनसे फिर प्रीति न रखूँगा, क्योंकि उनके सब हाकिम बलवा करनेवाले हैं। ४५ ऐप्रैम मारा हुआ है, उनकी जड़ सूख गई, उनमें फल न लगेगा। चाहे उनकी छियों बच्चे भी जने तो भी मैं उनके जन्मे हुए दुलारों को मार डालूँगा। ४६ मेरा परमेश्वर उनको निकम्मा ठहराएगा, क्योंकि उन्होंने उसकी नहीं सुनी। वे अन्यजातियों के बीच मारे-मारे फिरेंगे।

४७ इसाएल एक लहलहाती हड्ड दाखलता सी है, जिसमें बहुत से फल भी लगे, परन्तु ज्यों-ज्यों उसके फल बढ़े, त्यों-त्यों उसने अधिक वेदियों बनाई जैसे-जैसे उसकी भूमि सुधरी, वैसे ही वे सन्दर्भ खम्भे बनाते गये। ४८ उनका मन बटा हुआ है; अब वे दोषी ठहरेंगे। वह उनकी वेदियों को तोड़ डालेगा, और उनकी लाटों को टुकड़े-टुकड़े करेगा। ४९ अब वे कहेंगे, “हमारे कोई राजा नहीं है, क्योंकि हमने यहोवा का भय नहीं माना; इसलिए राजा हमारा क्या कर सकता है?” ५० वे बातें बनाते और झूठी शपथ खाकर वाचा

बाँधते हैं; इस कारण खेत की रेघारियों में धरूरे के समान दण्ड फूले फलेगा। ५ सामरिया के निवासी बेतावेन के बछड़े के लिये डरते रहेंगे, और उसके लोग उसके लिये विलाप करेंगे; और उसके पुजारी जो उसके कारण मग्न होते थे उसके प्रताप के लिये इस कारण विलाप करेंगे क्योंकि वह उनमें से उठ गया है। ६ वह योरेब राजा की भेंट ठहरने के लिये अश्शू देश में पहुँचाया जाएगा। ऐप्रैम लज्जित होगा, और इसाएल भी अपनी युक्ति से लजाएगा। ७ सामरिया अपने राजा समेत जल के बुलबुले के समान मिट जाएगा। ८ आवेन के ऊँचे स्थान जो इसाएल के पाप है, वे नाश होंगे। उनकी वेदियों पर छाड़बेरी, पेड़ और ऊँटकटरे उगेंगे; और उस समय लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे, हमको छिपा लो, और टीलों से कि हम पर गिर पड़ो। ९ हे इसाएल, तुमिहा के दिनों से पाप करता आया है, वे उर्मी में बने रहें; क्या वे मिथा में कुटिल मनुष्यों के संग लड़ाई में न फैसें? १० जब मेरी इच्छा होगी तब मैं उन्हें ताड़ना दूँगा, और देश-देश के लोग उनके विस्तु इकड़े हो जाएँगे; क्योंकि वे अपने दोनों अर्धों में फैसे हुए हैं। ११ ऐप्रैम सीरीवी हुई बढ़िया है, जो अनन्त दाँवें से प्रसन्न होती है, परन्तु मैंने उसकी सुन्दर गर्दन पर जआ रखा है, मैं ऐप्रैम पर सवार चढ़ाऊँगा, यहदा हल, और याकूब होंगा खींचेगा। १२ अपने लिये धार्मिकता का बीज लोओ, तब कस्ता के अनुसार खेत काटने पाओगे; अपनी पड़ती भूमि को जोतो; देखो, अभी यहोवा के पीछे ही लेने का समय है, कि वह आए और तुम्हारे ऊपर उद्धार बरसाएँ। १३ तुम ने दृष्टु के लिये हल जोता और अन्याय का खेत काटा है; और तुम ने धोखे का फल खाया है। और यह इसलिए हआ क्योंकि तुम ने अपने कृव्यवहार पर, और अपने बहुत से वीरों पर भरोसा रखा था। १४ इस कारण तुम्हारे लोगों में हुल्लड उठेगा, और तुम्हारे सब गढ़ ऐसे नाश किए जाएँगे। जैसा बेटबेल नगर युद्ध के समय शल्मन के द्वारा नाश किया गया; उस समय माताँ अपने बच्चों समेत पटक दी गई थी। १५ तम्हारी अत्यन्त बुराई के कारण बेतेल से भी इसी प्रकार का व्यवहार किया जाएगा। भोर होते ही इसाएल का राजा पूरी रीति से मिट जाएगा।

१६ जब इसाएल बालक था, तब मैंने उससे प्रेम किया, और अपने पत्र को मिस्र से बुलाया। २ परन्तु जितना मैं उनको बुलाता था, उतना ही वे मुझसे भागते जाते थे; वे बाल देवताओं के लिये बलिदान करते, और खट्टी हुई मरतों के लिये धूप जलाते गए। ३ मैं ही ऐप्रैम को पाँव-पाँव चलाता था, और उनको गोद में लिए फिरता था, परन्तु वे न जानते थे कि उनका चंगा करनेवाला मैं हूँ। ४ मैं उनको मनुष्य जनकर प्रेम की डोरी से खींचता था, और जैसा कोई बैल के गले की जोत खोलकर उसके सामने आहार रख दे, वैसा ही मैंने उनसे किया। ५ वह मिस्र देश में लौटने न पाएगा; अश्शू ही उसका राजा होगा, क्योंकि उसने मेरी ओर फिरने से इन्कार कर दिया है। ६ ललवार उनके नगरों में चलेगा, और उनके बैंडों को पूरा नाश करेगा; और यह उनकी युक्तियों के कारण होगा। ७ मेरी प्रजा मुझसे फिर जाने में लगी रहती है, यथापि वे उनको परमप्रधान की ओर बुलाते हैं, तो भी उनमें से कोई भी मेरी महिमा नहीं करता। ८ हे ऐप्रैम, मैं तुझे क्यों छोड़ दूँ? हे इसाएल, मैं कैसे तुझे शत्रु के वश में कर दूँ? मेरा हृदय तो उलट-पुलट हो गया, मेरा मन खेह के मारे पिघल गया है। ९ मैं अपने क्रोध को भड़कने न दूँगा, और न मैं फिर ऐप्रैम को नाश करूँगा; क्योंकि मैं मनुष्य नहीं परमेश्वर हूँ, मैं तेरे बीच में रहनेवाला पवित्र हूँ; मैं क्रोध करके न आऊँगा। १० वे यहोवा के पीछे-पीछे चलेंगे, वह तो सिंह के समान गरजेगा, और तेरे लड़के पक्ष्मिय दिशा से थरथराते हुए आएँगे। ११ वे मिस्र से चिदियों के समान और अश्शू के देश से पंडुकी की भाँति थरथराते हुए आएँगे; और मैं

उनको उन्हीं के घरों में बसा दूँगा, यहोवा की यही वाणी है। १२ ऐप्रैम ने मिथ्या से, और इसाएल के घराने ने छल से मुझे धेर रखा है, और यहदा अब तक पवित्र और विश्वासयोग्य परमेश्वर की ओर चंचल बना रहता है।

१२ ऐप्रैम वायु चराता और पुरावाई का पीछा करता रहता है; वह लगातार झूँठ और उत्पाता को बढ़ाता रहता है; वे अश्शू के साथ वाचा बाँधते और मिस्र में तेल भेजते हैं। १ यहदा के साथ भी यहोवा का मुकदमा है, और वह याकूब को उसके चाल चलन के अनुसार दण्ड देगा; उसके कामों के अनुसार वह उसको बदला देगा। २ अपनी माता की कोख ही मैं उसने अपने भाई को अड़ंगा मारा, और बड़ा होकर वह परमेश्वर के साथ लड़ा। ३ वह दूत से लड़ा, और जीती भी गया, वह रोया और उसने गिङ्गिडाकर विनीती की। बेतेल में वह उसको मिला, और वही उसने हम से बातें की। ४ यहोवा, सेनाओं का परमेश्वर, जिसका समरण यहोवा नाम से होता है। ५ इसलिए तू अपने परमेश्वर की ओर फिर; कृपा और न्याय के काम करता रह, और अपने परमेश्वर की बाट निरन्तर जोहता रह। ६ वह व्यापारी है, और उसके हाथ में छल का तराजू है; अंधेर करना ही उसको भाता है। ७ ऐप्रैम कहता है, “मैं धनी हो गया, मैंने सम्पत्ति प्राप्त की है; मेरे किनी काम में ऐसा अधर्म नहीं पाया गया जिससे पाप लगे।” ८ मैं यहोवा, मिस्र देश ही से तेरा परमेश्वर हूँ; मैं फिर तुझे तम्भुओं में ऐसा बसाऊँगा जैसा नियत पर्व के दिनों में हुआ करता है। ९ मैंने भविष्यद्वत्काओं के द्वारा बातें की, और बार बार दर्शन देता रहा; और भविष्यद्वत्काओं के द्वारा दृष्टान्त कहता आया है। १० क्या गिलाल में बैल बलि किए जाते हैं, बरन उनकी वेदियाँ उन ढेरों के समान हैं जो खेत की रेघारियों के पास हों। ११ याकूब अराम के मैदान में भाग गया था; वहाँ इसाएल ने एक पत्नी के लिये सेवा की, और पत्नी के लिये वह चरवाही करता था। १२ एक भविष्यद्वत्का के द्वारा यहोवा इसाएल को मिस्र से निकाल ले आया, और भविष्यद्वत्का ही के द्वारा उसकी रक्षा हुई। १३ ऐप्रैम ने अत्यन्त रिस दिलाई है, इसलिए उसका किया हुआ खून उरी के ऊपर बना रहेगा, और उसने अपने परमेश्वर के नाम में जो बद्धा लगाया है, वह उसी को लौटाया जाएगा।

१३ जब ऐप्रैम बोलता था, तब लोग काँपते थे; और वह इसाएल में बड़ा था;

परन्तु जब वह बाल के कारण दोषी हो गया, तब वह मर गया। १ और अब वे लोग पाप पर पाप बढ़ाते जाते हैं, और अपनी बुद्धि से चाँदी ढालकर ऐसी मूरतें बनाते हैं जो कारीगरों ही से बनी। उन्हीं के विषय लोग कहते हैं, जो नरमेध करें, वे बछड़ों को चूँगें। २ इस कारण वे भोर के मेघ, तड़के सूख जानेवाली ओस, खलिहान पर से आँधी के मारे उड़नेवाली भूसी, या चिमनी से निकलते हुए धूएँ के समान होंगे। ३ मिस्र देश ही से ये यहोवा, तेरा परमेश्वर हूँ, तु मुझे छोड़ किसी को परमेश्वर करके न जानना; क्योंकि मेरे सिवा कोई तेरा उद्धारकर्ता नहीं है। ४ मैंने उस समय तुझ पर मन लगाया जब तु जंगल में बरन अत्यन्त सरेंद्र देश में था। ५ परन्तु जब इसाएली चराए जाते थे और वे तुम हो गए, तब तुम होने पर उनका मन धमण्ड से भर गया; इस कारण वे मुझ को भूल गए। ६ इसलिए मैं उनके लिये सिंह सा बना हूँ, मैं चीति के समान उनके मार्ग में घाट लगाए रहूँगा। ७ मैं बच्चे छीनी हुई रीछनी के समान बनकर उनको मिलाऊँगा, और उनके हृदय की लिल्ली को फाँड़ूँगा, और सिंह के समान उनको वही खा डालूँगा, जैसे बन-पशु उनको फाड़ डाले। ८ हे इसाएल, तेरे विनाश का कारण यह है, कि तु मेरा अर्थात् अपने सहायक का विरोधी है। ९ अब तेरा राजा कहाँ रहा कि तेरे सब नगरों में वह तुझे बचाएँ; और तेरे न्यायी कहाँ रहे, जिनके विषय में तूने कहा था, “मेरे लिये राजा और हाकिम ठहरा

दे?” १५ मैंने क्रोध में आकर तेरे लिये राजा बनाये, और फिर जलजलाहट में आकर उनको हटा भी दिया। १६ ऐसे का अधर्म गठा हुआ है, उनका पाप संचय किया हुआ है। १७ उसको जच्चा की सी पीड़ाएँ उठेंगी, परन्तु वह निर्वृद्धि लड़का है जो जन्म लेने में देर करता है। १८ मैं उसको अधोलोक के बश से छुड़ा लूँगा और मृत्यु से उसको छुटकारा दूँगा। हे मृत्यु, तेरी मानने की शक्ति कहाँ रही? हे अधोलोक, तेरी नाश करने की शक्ति कहाँ रही? मैं पिर कभी नहीं पछताऊँगा। (Sheol h7585) १९ चाहे वह अपने भाइयों से अधिक फूले-फले, तो भी पुरवाई उस पर चलेगी, और यहोवा की ओर से मस्तक से आएगी, और उसका कुण्ड सरखेगा; और उसका सोता निर्जल हो जाएगा। उसकी रखी ही सब मनभावनी वस्तुएँ वह लट ले जाएगा। २० सामरिया दोषी ठहरेगा, क्योंकि उसने अपने परमेश्वर से बलवा किया है; वे तल्वार से मारे जाएँगे, उनके बच्चे पटके जाएँगे, और उनकी गर्भवती द्वियाँ चौर डाली जाएँगी।

२४ हे इसाएल, अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आ, क्योंकि तूने अपने अधर्म के कारण ठोकर खाई है। २ बातें सीखकर और यहोवा की ओर लौटकर, उससे कह, “सब अधर्म दूर कर; अनुग्रह से हमको ग्रहण कर; तब हम धन्यवाद रूपी बलि चढ़ाएँगे। ३ अश्शू हमारा उद्घार न करेगा, हम घोड़ों पर सवार न होंगे; और न हम फिर अपनी बनाई हुई वस्तुओं से करेंगे, ‘तुम हमारे ईश्वर हो;’ क्योंकि अनाथ पर तू ही दया करता है।” ४ मैं उनकी भटक जाने की आदत को दूर करूँगा; मैं सेत-मैत उनसे प्रेम करूँगा, क्योंकि मेरा क्रोध उन पर से उतर गया है। ५ मैं इसाएल के लिये ओस के समान होऊँगा; वह सोसन के समान फूले-फलेगा, और लबानोन के समान जड़ फैलाएगा। ६ उसकी जड़ से पौधे फूटकर निकलेंगे; उसकी शोभा जैतून की सी, और उसकी सुगन्ध लबानोन की सी होगी। ७ जो उसकी छाया में बैठेंगे, वे अन्न के समान बोढ़ेंगे, वे दाखलता के समान फूले-फलेंगे; और उसकी कीर्ति लबानोन के दाखमधु की सी होगी। ८ ऐसम कहेगा, “मूरतों से अब मेरा और क्या काम?” मैं उसकी सुनकर उस पर दृष्टि बनाए रखूँगा। मैं हरे सनोकर सा हूँ; मुझी से तू फल पाया करेगा। ९ जो बूढ़ियान हो, वही इन बातों को समझेगा, जो प्रवीण हो, वही इन्हें बूझ सकेगा; क्योंकि यहोवा के मार्ग सीधे है, और धर्मी उनमें चलते रहेंगे, परन्तु अपराधी उनमें ठोकर खाकर गिरेंगे।

योएल

१ यहोवा का वचन जो पत्रौल के पुरु योएल के पास पहुँचा, वह यह है: २ हे पुनियों, सुगे, हे देश के सब रहनेवालों, कान लगाकर सुनो! क्या ऐसी बात तुहारे दिनों में, या तुम्हारे पुरखाओं के दिनों में कर्मी हुई है? ३ अपने बच्चों से इसका वर्णन करो और वे अपने बच्चों से, और फिर उनके बच्चे आनेवाली पीढ़ी के लोगों से। ४ जो कुछ गाजाम नामक टिड़ी से बचा; उसे अर्बं नामक टिड़ी ने खा लिया। और जो कुछ अर्बं नामक टिड़ी से बचा, उसे थेलेक नामक टिड़ी ने खा लिया, और जो कुछ थेलेक नामक टिड़ी से बचा, उसे हासील नामक टिड़ी ने खा लिया है। ५ हे मतवालों, जाग उठो, और रोओ; और हे सब दाखमधू पुनिवालों, नये दाखमधू के कारण हाय, हाय, करो; क्योंकि वह तुम को अब न मिलेगा। ६ देखो, मेरे देश पर एक जाति ने चढ़ाई की है, वह सामर्थी है, और उसके लोग अनगिनत हैं; उसके दाँत सिंह के से, और डाढ़े सिंहनी की सी हैं। ७ उसने मेरी दाखलता को उजाड़ दिया, और मेरे अंजीर के बृक्ष को तोड़ डाला है; उसने उसकी सब छाल छीलकर उसे गिरा दिया है, और उसकी डालियों छिलने से सफेद हो गई हैं। ८ जैसे युक्ती अपने पति के लिये कर्म में टाट बौंधे हए विलाप करती है, वैसे ही तुम भी विलाप करो। ९ यहोवा के भवन में न तो अन्नबलि और न अर्ध आता है। उसके टहलए जो याजक है, वे विलाप कर रहे हैं। १० खेती मारी गई, भूमि विलाप करती है; क्योंकि अन नाश हो गया, नया दाखमधू सूख गया, तेल भी सूख गया है। ११ हे किसानों, लजित हो, हे दाख की बारी के मालियों, गेहूं और जौ के लिये हाय, हाय करो; क्योंकि खेती मारी गई है, १२ दाखलता सूख गई, और अंजीर का बृक्ष कुम्हला गया है अनार, खजूर, सेब, बरन, मैदान के सब बृक्ष सूख गए हैं, और मनुष्य का हर्ष जाता रहा है। १३ हे याजकों, कर्म में टाट बौंधकर छाती पीट-पीट के रोओ! हे वेदी के टहलुओं, हाय, हाय, करो। हे मेरे परमेश्वर के टहलुओं, आओ, टाट ओढ़े हए रात बिताओ! क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर के भवन में अन्नबलि और अर्ध अब नहीं आते। १४ उपवास का दिन ठहराओ, महासभा का प्रचार करो। पुनियों को, बरन् देश के सब रहनेवालों को भी अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में इकट्ठा करके उसकी दुहाई दो। १५ उस दिन के कारण हाय! क्योंकि यहोवा का दिन निकट है। वह सर्वशक्तिमान की ओर से सत्यानाश का दिन होकर आएगा। १६ क्या भोजनवस्तुएँ हमारे देखेते नाश नहीं हुई? क्या हमारे परमेश्वर के भवन का आनन्द और मग्न जाता नहीं रहा? १७ बीज ढेलों के निचे झुलस गए, भण्डार सप्ते पड़े हैं; खत्ते गिर पड़े हैं, क्योंकि खेती मारी गई। १८ पशु कैसे कराहते हैं? झूण्ड के झूण्ड गाय-बैल विकल हैं, क्योंकि उनके लिये चराई नहीं रहीं; और झूण्ड के झूण्ड भेड़-बकरियाँ पाप का फल भोग रही हैं। १९ हे यहोवा, मैं तेरी दुहाई देता हूँ, क्योंकि जंगल की चराइयाँ आग का कौर हो गईं, और मैदान के सब बृक्ष ज्वला से जल गए। २० वन-पशु भी तेरे लिये हाँफूते हैं, क्योंकि जल के सोते सूख गए, और जंगल की चराइयाँ आग का कौर हो गईं।

२ सिय्योन में नरसिंगा फूँको; मेरे पवित्र पर्वत पर साँस बौंधकर फूँको! देश के सब रहनेवाले काँप उठें, क्योंकि यहोवा का दिन आता है, बरन् वह निकट ही है। ३ वह अंधकार और अंधेरे का दिन है, वह बादलों का दिन है और अंधियारे के समान फैलता है। जैसे भोर का प्रकाश पहाड़ों पर फैलता है, वैसे ही एक बड़ी और सामर्थी जाति आएगी; प्राचीनकाल में वैसी कभी न हुई, और न उसके बाद भी फिर किसी पीढ़ी में होगी। ४ उसके आगे-आगे तो आग

भस्म करती जाएगी, और उसके पीछे-पीछे लौ जलाती जाएगी। उसके आगे की भूमि तो अदन की बारी के समान होगी, परन्तु उसके पीछे की भूमि उजाड़ मस्थल बन जाएगी, और उससे कुछ न बचेगा। ५ उनका स्पष्ट घोड़ों का सा है, और वे सावारी के घोड़ों के समान दौड़ते हैं। ६ उनके कूदने का शब्द ऐसा होता है जैसा पहाड़ों की चोटियों पर रथों के चलने का, या खँटी भस्म करती हुई लौ का, या जैसे पांति बौंधे हुए बलवन्त योद्धाओं का शब्द होता है। ७ उनके सामने जाति-जाति के लोग पीड़ित होते हैं, सब के मुख मलिन होते हैं। ८ वे शूरवीरों के समान दौड़ते, और योद्धाओं की भाँति शहरपनाह पर चढ़ते हैं। वे अपने-अपने मार्ग पर चलते हैं, और कोई अपनी पांति से अलग न चलेगा। ९ वे एक दूसरे को धक्का नहीं लगाते, वे अपनी-अपनी राह पर चलते हैं; शब्दों का सामाना करने से भी उनकी पांति नहीं टूटती। १० वे नगर में इधर-उधर दौड़ते, और शहरपनाह पर चढ़ते हैं; वे घरों में ऐसे घुसते हैं जैसे चोर खिड़कियों से घुसते हैं। ११ उनके आगे पृथ्वी काँप उठती है, और आकाश थरथराता है। सूर्य और चन्द्रमा काले हो जाते हैं, और तारे नहीं झलकते। १२ यहोवा अपने उस दल के आगे अपना शब्द सनाता है, क्योंकि उसकी सेना बहुत ही बड़ी है; जो अपना बचन पूरा करनेवाला है, वह सामर्थी है। क्योंकि यहोवा का दिन बड़ा और अति भयानक है; उसको कौन सह संकेगा? १३ “तो भी,” यहोवा की यह वाणी है, “अभी भी सुनो, उपवास के साथ रोते-पीटते अपने पौरे मन से फिरकर मेरे पास आओ।” १४ अपने बृक्ष नहीं, अपने मन ही को फाड़कर” अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो; क्योंकि वह अनुग्रहकारी, दयात्म, विलम्ब से क्रोध करनेवाला, कस्तगानिधान और दुःख देकर पछतानेवाला है। १५ क्या जाने वह फिरकर पछताए और ऐसी अशीष दे जिससे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को अन्नबलि और अर्ध दिया जाए। १६ सिय्योन में नरसिंगा फूँको, उपवास का दिन ठहराओ, महासभा का प्रचार करो; १७ लोगों को इकट्ठा करो। सभा को पवित्र करो; पुनियों को बुला लो; बच्चों और दृथीपीउदों को भी इकट्ठा करो। दूल्हा अपनी कोठरी से, और दूल्हन भी अपने कर्मों से निकल आएँ। १८ याजक जो यहोवा के टहलुए हैं, वे अँगन और वेदी के बीच में रो रोकत कहें, “हे यहोवा अपनी प्रजा पर तरस खा; और अपने निज भाग की नामधाराई न होने दें; न जाति-जाति उसकी उपमा देने पाएँ। जाति-जाति के लोग आपस में क्यों कहने पाएँ, ‘उनका परमेश्वर कहाँ रहा?’” १९ तब यहोवा को अपने देश के विषय में जलन हुई, और उसने अपनी प्रजा पर तरस खाया। २० यहोवा ने अपनी प्रजा के लोगों को उत्तर दिया, “सुनो, मैं अन और नया दाखमधू और ताजा तेल मूँहें देने पर हूँ, और तुम उन्हें पाकर तृप होगें; और मैं भविष्य में अन्यजातियों से तुम्हारी नामधाराई न होने दूँगा।” २१ “मैं उत्तर की ओर से आई हुई सेना को तुम्हारे पास से दूर करूँगा, और उसे एक निर्जल और उजाड़ देश में निकाल दूँगा; उसका अगला भाग तो पूर्ब के ताल की ओर और उसका पिछला भाग पश्चिम के समुद्र की ओर होगा; उससे दूर्निध उठेगी, और उसकी सड़ी गत्थ फैलेगी, क्योंकि उसे बहुत बुरे काम किए हैं। २२ “हे देश, तू मत डर; तू मग्न हो और आनन्द कर, क्योंकि यहोवा ने बड़े-बड़े काम किए हैं।” २३ हे मैदान के पशुओं, मत डरो, क्योंकि जंगल में चराई उगेगी, और वृक्ष फलने लगेगी; अंजीर का वृक्ष और दाखलता अपना-अपना बल दिखाने लगेगी। २४ “हे सिय्योन के लोगों, तुम अपने परमेश्वर यहोवा के कारण मग्न हो, और आनन्द करो; क्योंकि तुम्हारे लिये वह वर्षा, अर्थात् बरसात की पहली वर्षा बहुतायत से देगा; और पहले के समान अगली ओर बिछली वर्षा की भी बरसाएगा।” २५ “तब खलिहान अन्न से भर जाएँगे, और रसकुण्ड नये दाखमधू और ताजे तेल से उमड़ेंगे। २६ और जिन वर्षों की उपज अर्बं नामक टिड़ीयों, और

येलेक, और हासील ने, और गाजाम नामक टिड्यूयोंने, अर्थात् मेरे बड़े दल ने जिसको मैंने तुम्हारे बीच भेजा, खा ली थी, मैं उसकी हानि तुम को भर देंगा। ३५ “तुम पेट भरकर खाओगे, और तृप्त होगे, और अपने परमेश्वर यहोवा के नाम की स्तुति करोगे, जिसमें तुम्हारे लिये अश्वर्य के काम किए हैं। और मेरी प्रजा की आशा फिर कभी न टैटेगी। ३६ तब तुम जानोगे कि मैं इसाएल के बीच मैं हूँ, और मैं, यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर हूँ और कोई दूसरा नहीं है। मेरी प्रजा की आशा फिर कभी न टैटेगी। ३७ “उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलँगा; तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जबान दर्शन देखेंगे। ३८ तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलँगा। ३९ “और मैं आकाश में और पृथ्वी पर चमत्कार, अर्थात् लह और आग और धूँधें के खाभे दिखाऊँगा। ४० यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से फहले सर्व अंधियारा होगा और चन्द्रमा रक्त सा हो जाएगा। ४१ उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा; और यहोवा के चर्चन के अनुसार सियोन पर्वत पर, और यस्शलेम में जिन बचे हुओं को यहोवा बुलाएगा, वे उद्गार पाएंगे।

३ “क्योंकि सुनो, जिन दिनों में और जिस समय मैं यहदा और यस्शलेमवासियों को बैंधुवाई से लौटा ले आऊँगा, ४२ उस समय मैं सब जातियों को इक्ष्या करके यहोशापात की तराई में ले जाऊँगा, और वहाँ उनके साथ अपनी प्रजा अर्थात् अपने निज भाग इसाएल के विषय में जिसे उन्होंने जाति-जाति में तिरां-वितर करके मेरे देश को बैंट लिया है, उनसे मुक़द्दमा लड़ूँगा। ४३ उन्होंने तो मेरी प्रजा पर चिरी डाली, और एक लड़का वेश्या के बदले में दे दिया, और एक लड़की बेचकर दाखमधु पीया है। ४४ “हे सोर, और सीदोन और पलिश्तीन के सब प्रदेशों, तुम को मुझसे क्या काम? क्या तुम मुझ को बदला देगे? यदि तुम मुझे बदला भी दो, तो मैं शीघ्र ही तुम्हारा दिया हुआ बदला, तुम्हारे ही सिर पर डाल दूँगा। ४५ क्योंकि तुम ने मेरा चाँदी सोना ले लिया, और मेरी अच्छी और मनभावनी वस्तुएँ अपने मन्दिरों में ले जाकर रखी हैं; ४६ और यहदियों और यस्शलेमियों को यूनानियों के हाथ इसलिए बेच डाला है कि वे अपने देश से दूर किए जाएँ। ४७ इसलिए सुनो, मैं उनको उस स्थान से, जहाँ के जानेवालों के हाथ तुम ने उनको बेच दिया, बुलाने पर हूँ, और तुम्हारा दिया हुआ बदला, तुम्हारे ही सिर पर डाल दूँगा। ४८ मैं तुम्हारे बेटे-बेटियों को यहदियों के हाथ बिकाना दूँगा, और वे उनको शबाइयों के हाथ बेच देंगे जो दूर देश के रहेवाले हैं; क्योंकि यहोवा ने यह कहा है।” ४९ जाति-जाति में यह प्रचार करो, युद्ध की तैयारी करो, अपने शूरवीरों को उभारो। सब योद्धा निकट आकर लड़ने को चाहें। ५० अपने-अपने हल की फाल को पीटकर तलवार, और अपनी-अपनी हँसिया को पीटकर बछी बनाओ; जो बलहीन हो वह भी कहे, मैं वीर हूँ। ५१ हे चारों ओर के जाति-जाति के लोगों, फुर्ती करके आओ और इकट्ठे हो जाओ। हे यहोवा, तू भी अपने शूरवीरों को वहाँ ले जा। ५२ जाति-जाति के लोग उभरकर चढ़ जाएँ और यहोशापात की तराई में जाएँ, क्योंकि वहाँ मैं चारों ओर की सारी जातियों का न्याय करने को बैठूँगा। ५३ हँसुआ लगाओ, क्योंकि खेत पक गया है। आओ, दाख रौदो, क्योंकि हाँज भर गया है। रसकुण्ड उमड़ने लगे, क्योंकि उनकी बुराई बहुत बड़ी है। ५४ निबटारे की तराई में भीड़ की भीड़ है! क्योंकि निबटारे की तराई में यहोवा का दिन निकट है। ५५ सर्व और चन्द्रमा अपना-अपना प्रकाश न देंगे, और न तोरे चमकेंगे। ५६ और यहोवा सियोन से गरजेगा, और यस्शलेम से बड़ा शब्द सुनाएगा; और आकाश और पृथ्वी थरथारएँगे। परन्तु यहोवा अपनी प्रजा के

लिये शरणस्थान और इस्माएलियों के लिये गढ़ ठहरेगा। ५७ इस प्रकार तुम जानोगे कि यहोवा जो अपने पवित्र पर्वत सियोन पर वास किए रहता है, वही हमारा परमेश्वर है। और यस्शलेम पवित्र ठहरेगा, और परदेशी उसमें होकर फिर न जाने पाएँगे। ५८ और उस समय पहाड़ों से नदा दाखमधु टपकने लगेगा, और टीलों से दूध बहने लगेगा, और यहदा देश के सब नाले जल से भर जाएँगे; और यहोवा के भवन में से एक सोता फूट निकलेगा, जिससे शितीम की घाटी सीची जाएगी। ५९ यहदियों पर उपद्रव करने के कारण, मिस्र उजाड़ और एदोम उजड़ा हुआ मस्थल हो जाएगा, क्योंकि उन्होंने उनके देश में निर्दोष की हत्या की थी। ६० परन्तु यहदा सर्वदा और यस्शलेम पीढ़ी-पीढ़ी तक बना रहेगा। ६१ क्योंकि उनका खन, जो अब तक मैंने पवित्र नहीं ठहराया था, उसे अब पवित्र ठहराऊँगा, क्योंकि यहोवा सियोन में वास किए रहता है।

आमोस

१ तको आवारी आमोस जो भेड़-बकरियों के चरानेवालों में से था, उसके ये बचन हैं जो उसने यहदा के राजा उज्जियाह के, और योआश के पुत्र इसाएल के राजा यारोबाम के दिनों में, भूकम्प से दो वर्ष पहले, इसाएल के विषय में दर्शन देखकर कहे: २ “यहोवा सिय्योन से गरजेगा और यस्शलेम से अपना शब्द सुनाएगा; तब चरवाहों की चराइयाँ विलाप करेंगी, और कर्मल की चोटी झूलस जाएगी।” ३ यहोवा यह कहता है: “दमिश्क के तीन क्या, वरन् चार अपराधों के कारण मैं उसका दण्ड न छोड़ूँगा; क्योंकि उन्होंने गिलाद को लोहे के दाँवनेवाले यन्हों से रौद डाला है। ४ इसलिए मैं हजाएल राजा के राजभवन में आग लगाऊँगा, और उससे बेन्दूद राजा के राजभवन भी भस्म हो जाएंगे। ५ मैं दमिश्क के बेंडों को तोड़ डालूँगा, और आवेन नामक तराई के रहनेवालों को और बेटएदेन के घर में रहनेवाले राजदण्डधारी को नष्ट करूँगा; और अराम के लोग बन्दी होकर कीर को जाएंगे, यहोवा का यही बचन है।” ६ यहोवा यह कहता है: “गाजा के तीन क्या, वरन् चार अपराधों के कारण मैं उसका दण्ड न छोड़ूँगा; क्योंकि वे सब लोगों को बन्दी बनाकर ले गए कि उन्हें एदोम के बश में कर दें। ७ इसलिए मैं गाजा की शहरपनाह में आग लगाऊँगा, और उससे उसके भवन भस्म हो जाएंगे। ८ मैं अशदोद के रहनेवालों को और अशकलोन के राजदण्डधारी को भी नष्ट करूँगा; मैं अपना हाथ एकोन के विस्तृ चलाऊँगा, और शेष पलिश्ती लोग नष्ट होंगे,” परमेश्वर यहोवा का यही बचन है। ९ यहोवा यह कहता है: “सोर के तीन क्या, वरन् चार अपराधों के कारण मैं उसका दण्ड न छोड़ूँगा; क्योंकि उन्होंने सब लोगों को बन्दी बनाकर एदोम के बश में कर दिया और भाई की सी बाचा का स्मरण न किया। १० इसलिए मैं सोर की शहरपनाह पर आग लगाऊँगा, और उससे उसके भवन भी भस्म हो जाएंगे।” ११ यहोवा यह कहता है: “एदोम के तीन क्या, वरन् चार अपराधों के कारण मैं उसका दण्ड न छोड़ूँगा; क्योंकि उसने अपनी भाई को तलवार लिए हुए खेड़ा और कुछ भी दया न की, परन्तु क्रोध से उनको लगातार फड़ता ही रहा, और अपने रोप को अनन्तकाल के लिये बनाए रहा। १२ इसलिए मैं तेमान में आग लगाऊँगा, और उससे बोझ के भवन भस्म हो जाएंगे।” १३ यहोवा यह कहता है, “अम्मोन के तीन क्या, वरन् चार अपराधों के कारण मैं उसका दण्ड न छोड़ूँगा; क्योंकि उन्होंने अपनी सीमा को बढ़ा लेने के लिये गिलाद की गर्भवती बिंबों का पेट चीर डाला। १४ इसलिए मैं रब्बाह की शहरपनाह में आग लगाऊँगा, और उससे उसके भवन भी भस्म हो जाएंगे। उस युद्ध के दिन मैं ललकार होगी, वह आँधी वरन् बवण्डर का दिन होगा; १५ और उनका राजा अपने हाकिमों समेत बैधुआई में जाएगा, यहोवा का यही बचन है।”

२ यहोवा यह कहता है: “मोआब के तीन क्या, वरन् चार अपराधों के कारण, मैं उसका दण्ड न छोड़ूँगा; क्योंकि उसने एदोम के राजा की हड्डियों को जलाकर चूना कर दिया। ३ इसलिए मैं मोआब में आग लगाऊँगा, और उससे करियोत के भवन भस्म हो जाएंगे; और मोआब हुल्लड और ललकार, और नरसिंगे के शब्द होते-होते मर जाएंगे। ४ मैं उसके बीच में से न्यायी का नाश करूँगा, और साथ ही साथ उसके सब हाकिमों को भी घात करूँगा,” यहोवा का यही बचन है। ५ यहोवा यह कहता है: “यहदा के तीन क्या, वरन् चार अपराधों के कारण, मैं उसका दण्ड न छोड़ूँगा; क्योंकि उन्होंने यहोवा की व्यवस्था को तच्छ जाना और मेरी विधियों को नहीं माना; और अपने झटे देवताओं के कारण जिनके पीछे उनके पुरखा चलते थे, वे भी भटक गए हैं। ६

इसलिए मैं यहदा में आग लगाऊँगा, और उससे यस्शलेम के भवन भस्म हो जाएंगे।” ७ यहोवा यह कहता है: “इसाएल के तीन क्या, वरन् चार अपराधों के कारण, मैं उसका दण्ड न छोड़ूँगा; क्योंकि उन्होंने निर्दोष को स्पर्ये के लिये और दरिद्र को एक जोड़ी जूतियों के लिये बेच डाला है। ८ वे कंगालों के सिर पर की धूल का भी लालच करते, और नग्न लोगों को मार्ग से हटा देते हैं; और बाप-बेटा दोनों एक ही कुमारी के पास जाते हैं, जिससे मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ठहराए। ९ वे हर एक वेदी के पास बन्धक के बन्धों पर सोते हैं, और दण्ड के स्पर्ये से मोल लिया हुआ दाखमधू अपने देवता के घर में पी लेते हैं। १० “मैंने उनके सम्में से एमोरियों को नष्ट किया था, जिनकी लम्बाई देवताओं की सी, और जिनका बल बांजबृक्षों का सा था; तो भी मैंने ऊपर से उसके फल, और नीचे से उसकी जड़ नष्ट की। ११ और मैं तुम को मिस्र देश से निकाल लाया, और जंगल में चालीस वर्ष तक लिए फिरता रहा, कि तुम एमोरियों के देश के अधिकारी हो जाओ। १२ और मैंने तुम्हारे पुत्रों में से नवी होने के लिये और तुम्हारे कुछ जवानों में से नाजीर होने के लिये ठहराया। हे इस्माएलियों, क्या यह सब सच नहीं है?” यहोवा की यही बाची है। १३ परन्तु तुम ने नाजीरों को दाखमधू पिलाया, और नवियों को आज्ञा दी कि भविष्यद्वाणी न करें। १४ “देखो, मैं तुम को ऐसा दबाऊँगा, जैसे प्लॉटों से भरी हुई गार्डी नीचे को दबाई जाती है। १५ इसलिए वेग दौड़नेवाले को भाग जाने का स्थान न मिलेगा, और सामर्थी का सामर्थ्य कुछ काम न देगा; और न पराक्रमी अपना प्राण बचा सकेगा; १६ धनुर्धारी खड़ा न रह सकेगा, और फूर्ती से दौड़नेवाला न बचेगा; घुड़सवार भी अपना प्राण न बचा सकेगा; १७ और शूर्वीरों में जो अधिक वीर हो, वह भी उस दिन नंगा होकर भाग जाएगा,” यहोवा की यही बाची है।

३ हे इस्माएलियों, यह बचन सुनो जो यहोवा ने तुम्हारे विषय में अर्थात् उस सारे कुल के विषय में कहा है जिसे मैं मिस्र देश से लाया हूँ: ४ “पृथ्वी के सारे कुलों में से मैंने केवल तुम्हीं पर मन लगाया है, इस कारण मैं तुम्हारे सारे अर्धम के कामों का दण्ड दूँगा। ५ “यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों, तो क्या वे एक संग चल सकेंगे? ६ क्या सिंह बिना अहेर पाए वन में गरजेंगे? क्या जवान सिंह बिना कुछ पकड़े अपनी माँद में से गुराएंगा? ७ क्या चिड़िया बिना फंदा लगाए फँसेगी? क्या बिना कुछ फँसे फंदा भूमि पर से उचकेगा? ८ क्या किसी नगर में नरसिंगा फँकने पर लोग न थरथराएंगे? क्या यहोवा के बिना भेजे किसी नगर में कोई विपत्ति पड़ेगी? ९ इसी प्रकार से प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यद्वाणीओं पर अपना मर्म बिना प्रगट किए कुछ भी न करेगा। १० सिंह गज़ा; कौन न डेरगा? परमेश्वर यहोवा बोला; कौन भविष्यद्वाणी न करेगा?” ११ अशदोद के भवन और मिस्र देश के राजभवन पर प्रचार करके कहो: “सामरिया के पहाड़ों पर इकठे होकर देखो कि उसमें क्या ही बड़ा कोलाहल और उसके बीच क्या ही अंधेर के काम हो रहे हैं!” १२ यहोवा की यह बाची है, “जो लोग अपने भवनों में उपट्रव और डकैती का धन बटोरकर रखते हैं, वे सिद्धाई से काम करना जानते ही नहीं।” १३ इस कारण परमेश्वर यहोवा यह कहता है: “देश का धेरनेवाला एक शत्रु होगा, और वह तेरा बल तोड़ेगा, और तेरे भवन लेटे जाएंगे।” १४ यहोवा यह कहता है: “जिस भाँति चरवाहा सिंह के मुँह से दो टाँगे या कान का एक टुकड़ा छड़ाता है, वैसे ही इस्माएली लोग, जो सामरिया में बिछाने के एक कोने या रेशमी गड़ी पर बैठा करते हैं, वे भी छुड़ाए जाएंगे।” १५ सेनाओं के परमेश्वर, प्रभु यहोवा की यह बाची है, “देखो, और याकब के घराने से यह बात चिताकर कहो: १६ जिस समय मैं इसाएल को उसके अपराधों का दण्ड दूँगा, उसी समय मैं बेतल के बेदियों को भी दण्ड दूँगा, और वेदी के सींग टटकर भूमि पर पिर पड़ेंगे। १७ और मैं सर्दी के भवन को और धूपकाल के भवन, दोनों को गिराऊँगा; और

हाथी दाँत के बने भवन भी नष्ट होंगे, और बड़े-बड़े घर नष्ट हो जाएँगे,” यहोवा की यही वाणी है।

४ “हे बाशान की गायों, यह वचन सुनो, तुम जो सामरिया पर्वत पर हो, जो कंगालों पर अंधेर करती, और दरिंदों को कुचल डालती हो, और अपने-अपने पति से कहती हो, ‘ला, दे हम पीएँ’” १ परमेश्वर यहोवा अपनी पवित्रता की शपथ खाकर कहता है, देखो, तुम पर ऐसे दिन आनेवाले हैं, कि तुम कँटों से, और तुम्हारी सन्तान मछली की बंसियों से खीच ली जाएँगी। २ और तुम बाड़े के नाकों से होकर सीधी निकल जाओगी और हर्मेन में डाली जाओगी, ३ यहोवा की यही वाणी है। ४ “बेतेल में आकर अपराध करो, और गिलगाल में आकर बहुत से अपराध करो; अपने चढावे भोर को, और अपने दशमांश हर तीसरे दिन ले आया करो; ५ धन्यवाद-बलि खुमरी मिलाकर चढ़ाओ, और अपने स्वेच्छाबलियों की चर्चा चलाकर उनका प्रचार करो; क्योंकि हे इसाएलियों, ऐसा करना तुम को भाता है,” परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। ६ “मैंने तुम्हरे सब नगरों में दाँत की सफाई करा दी, और तुम्हारे सब स्थानों में रोटी की घटी की है, तो भी तुम मेरी ओर फिरकर न आए,” यहोवा की यही वाणी है। ७ “और जब कटनी के तीन महीने रह गए, तब मैंने तुम्हारे लिये वर्षा न की; मैंने एक नगर में जल बरसाकर दूसरे में न बरसाया; एक खेत में जल बरसा, और दूसरा खेत जिसमें न बरसा; वह सूख गया। ८ इसलिए दो तीन नगरों के लोग पानी पीने को मारे-मारे फिरते हुए एक ही नगर में आए, परन्तु तुम न हुए; तो भी तुम मेरी ओर न फिरे,” यहोवा की यही वाणी है। ९ “मैंने तुम को लूह और गेस्टि से मारा है; और जब तुम्हारी चाटिकाँ और दाख की बारियाँ, और अंजीर और जैतन के वृक्ष बहुत हो गए, तब टिड़ियाँ उन्हें खा गईं; तो भी तुम मेरी ओर फिरकर न आए,” यहोवा की यही वाणी है। १० “मैंने तुम्हारे बीच में मिस देश की सी मरी फैलाई, मैंने तुम्हारे घोड़ों को छिनवा कर तुम्हारे जवानों को तलवार से घात करा दिया; और तुम्हारी छावनी की दुर्गन्ध तुम्हारे पास पहुँचाई; तो भी तुम मेरी ओर फिरकर न आए,” यहोवा की यही वाणी है। ११ “मैंने तुम में से कई एक को ऐसा उलट दिया, जैसे परमेश्वर ने सदोम और गमोरा को उलट दिया था, और तुम आग से निकाली हुई लकड़ी के समान ठरवे; तो भी तुम मेरी ओर फिरकर न आए,” यहोवा की यही वाणी है। १२ “इस कारण, हे इसाएल, मैं तुद्धा से ऐसा ही कहूँगा, और इसलिए कि मैं तुझ में यह काम करने पर हूँ, हे इसाएल, अपने परमेश्वर के सामने अपने के लिये तैयार हो जा!” १३ देख, पहाड़ों का बनानेवाला और पवन का सिरजनेवाला, और मनुष्य को उसके मन का विचार बतानेवाला और भोर को अंधकार करनेवाला, और जो पृथ्वी के ऊँचे स्थानों पर चलनेवाला है, उसी का नाम सेनाओं का परमेश्वर यहोवा है!

५ हे इसाएल के घराने, इस विलाप के गीत के वचन सुन जो मैं तुम्हारे विषय

में कहता हूँ: ६ “इसाएल की कुमारी कन्या गिर गई, और फिर उठ न सकी; वह अपनी ही भूमि पर पटक दी गई है, और उसका उड़ानेवाला कोई नहीं।” ७ क्योंकि परमेश्वर यहोवा यह कहता है, “जिस नगर से हजार निकलते थे, उसमें इसाएल के घराने के सौ ही बचे रहेंगे, और जिसमें सौ निकलते थे, उसमें दस बचे रहेंगे।” ८ यहोवा, इसाएल के घराने से यह कहता है, मेरी खोज में लगो, तब जीवित रहेंगे। ९ बेतेल की खोज में न लगो, न गिलगाल में प्रवेश करो, और न बेरेशा को जाओ; क्योंकि गिलगाल निव्वय बैंधुआई में जाएगा, और बेतेल स्ना पड़ेगा। १० यहोवा की खोज करो, तब जीवित रहेंगे, नहीं तो वह यसूफ के घराने पर आग के समान भड़केगा, और वह उसे भस्म करेगी, और बेतेल में कोई उसका बूझानेवाला न होगा। ११

हे न्याय के बिगाड़नेवालों और धार्मिकता को मिट्टी में मिलानेवालो! १२ जो कचपचिया और मृगशिरा का बनानेवाला है, जो थोर अंधकार को भोर का प्रकाश बनाता है, जो दिन को अंधकार करके रात बना देता है, और समुद्र का जल स्थल के ऊपर बहा देता है, उसका नाम यहोवा है। १३ वह तुरन्त ही बलवन्त को बिनाश कर देता, और गढ़ का भी सत्यानाश करता है। १४ जो सभा में उलाहना देता है उससे वे बैर रखते हैं, और खरी बात बोलनेवाले से घृणा करते हैं। १५ तुम जो कंगालों को लताड़ा करते, और भेंट कहकर उनसे अन्न हर लेते हो, इसलिए जो घर तुम ने गढ़े हुए पथरतों के बनाए हैं, उनमें रहने पाओगे; और जो मनवानी दाख की बारियाँ तुम ने लगाई हैं, उनका दाखमधु न पीने पाओगे। १६ क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारे पाप भारी हैं। तुम धर्मी को सताते और धूस लेते, और फाटक में दरिंदों का न्याय बिगाड़ते हो। १७ इस कारण जो बुद्धिमान हो, वह ऐसे समय चुप रहे, क्योंकि समय बुरा है। १८ हे लोगों, बुराई को नहीं, भलाई को ढूँढ़ो, ताकि तुम जीवित रहो; और तुम्हारा यह कहना सच ठहरे कि सेनाओं का परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग है। १९ बुराई से बैर और भलाई से प्रीति रखो, और फाटक में न्याय को स्थिर करो; क्या जाने सेनाओं का परमेश्वर यहोवा यसूफ के बचे हुओं पर अनुग्रह करो। २० इस कारण सेनाओं का परमेश्वर, प्रभु यहोवा यह कहता है: “सब चौकों में रोना-पीटना होगा; और सब सड़कों में लोग हाय, हाय, करोगे। वे किसानों को शोक करने के लिये, और जो लोग विलाप करने में निपुण हैं, उन्हें रोना-पीटने को बुलाएँगे। २१ और सब दाख की बारियाँ में रोना-पीटना होगा,” क्योंकि यहोवा यह कहता है, “मैं तुम्हारे बीच में से होकर जाऊँगा।” २२ हाय तुम पर, जो यहोवा के दिन की अभिलाषा करते हो! यहोवा के दिन से तुम्हारा क्या लाभ होगा? वह तो उजियाले का नहीं, अंधियारो का दिन होगा। २३ जैसा कोई सिंह से भागे और उसे भालू मिले; या घर में आकर दीवार पर हाथ टेके और साँप उसको डसे। २४ क्या यह सच नहीं है कि यहोवा का दिन उजियाले का नहीं, वरन् अंधियारों की होगा? २५, ऐसे थोर अंधकार का जिसमें कुछ भी चमक न हो। २६ “मैं तुम्हारे पर्वों से बैर रखता, और उन्हें निकला जानता हूँ, और तुम्हारी महासभाओं से मैं प्रसन्न नहीं। २७ चाहे तुम मेरे लिये होम्बलि और अनन्बलि चढ़ाओ, तो भी मैं प्रसन्न न होऊँगा, और तुम्हारे पाले हुए पशुओं के मेलबलियों की ओर न ताकँगा। २८ अपने गीतों का कोलाहल मुझसे दूर करो; तुम्हारी सारंगियों का सूर मैं न सूँगा। २९ परन्तु न्याय को नदी के समान, और धार्मिकता को महानद के समान बहने दो। ३० “हे इसाएल के घराने, तुम जंगल में चालीस वर्ष तक पशुबलि और अनन्बलि क्या मुझी को चढ़ाते रहे? ३१ नहीं, तुम तो अपने राजा का तम्भा, और अपनी मूरतों की चरणपीठ, और अपने देवता का तारा लिए फिरते रहे, जिन्हें तुम ने अपने लिए बनाए हैं। ३२ इस कारण मैं तुम को दमिक के उस पार बैंधुआई में कर दूँगा, सेनाओं के परमेश्वर यहोवा का यही वचन है।

६ “हाय उन पर जो सियोन में सुख से रहते, और उन पर जो सामरिया के पर्वत पर निश्चिन्त रहते हैं, वे जो श्रेष्ठ जाति में प्रसिद्ध हैं, जिनके पास इसाएल का घराना आता है। ३३ कलने नगर को जाकर देखो, और वहाँ से हमात नामक बड़े नगर को जाओ; फिर पलिशियों के गत नगर को जाओ। क्या वे इन गज्जों से उत्तम हैं? क्या उनका देश तुम्हारे देश से कुछ बड़ा है? ३४ तुम बूरे दिन को दूर कर देते, और उपद्रव की गँड़ी को निकट ले आते हो। ३५ “तुम हाथी दाँत के पलंगों पर लेटे, और अपने-अपने देवतों पर पैंच फैलाए सोते हो, और भेंट-बकरियों में से मेंप्ने और गौशालाओं में से बछड़े खाते हो। ३६ तुम सारियों की साथ गीत गाते, और दाऊद के समान भाँति-भाँति के बाजे बृद्धि से निकलते हो; ३७ और कटोरों में से दाखमधु पीते, और उत्तम-उत्तम तेल

लगाते हो, परन्तु यूसुफ पर आनेवाली विपत्ति का हाल सुनकर शोकित नहीं होते। ७ इस कारण वे अब बैधुआई में पहले जाएँगे, और जो पॉव फैलाए सेते थे, उनकी विलासिता जाती रहेगी।” ८ सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, (परमेश्वर यहोवा ने अपनी ही शपथ खाकर कहा है): “जिस पर याकूब घमण्ड करता है, उससे मैं धृणा, और उसके राजभवनों से बैर रखता हूँ, और मैं इस नार को उस सब समेत जो उसमें है, शत्रु के वश में कर दूँगा।” ९ यदि किसी घर में दस पुस्तक बचे रहें, तो भी वे मर जाएँगे। १० जब किसी का चाचा, जो उसका जलानेवाला हो, उसकी हड्डियों को घर से निकालने के लिये उठाएगा, और जो घर के कोने में हो उसे कहेगा, “क्या तेरे पास कोई और है?” तब वह कहेगा, “कोई नहीं,” तब वह कहेगा, “चुप रह! हमें यहोवा का नाम नहीं लेना चाहिए।” ११ क्योंकि यहोवा की आज्ञा से बड़े घर में छेद, और छोटे घर में दरार होगी। १२ क्या योड़े चट्टान पर दौड़े? क्या कोई ऐसे स्थान में बैलों से जोते जहाँ तुम लोगों ने न्याय को विष से, और धार्मिकता के फल को कड़वे फल में बदल डाला है? १३ तुम ऐसी वस्तु के कारण आनन्द करते हो जो व्यर्थ है; और कहते हो, “क्या हम अपने ही यत्र से सामर्थी नहीं हो गए?” १४ इस कारण सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, “हे इस्माएल के घराने, देख, मैं तुम्हारे विस्तु एक ऐसी जाति खड़ी करूँगा, जो हमात की घाटी से लेकर अराबा की नदी तक तुम को संकट में डालेगी।”

७ परमेश्वर यहोवा ने मुझे यह दिखाया: और मैं क्या देखता हूँ कि उसने पिछली धास के उगने के आरम्भ में इट्टिहाय उत्पन्न की, और वह राजा की कटनी के बाद की पिछली धास थी। ८ जब वे धास खा चुकी, तब मैंने कहा, “हे परमेश्वर यहोवा, क्षमा कर! नहीं तो याकूब कैसे स्थिर रह सकेगा? वह कितना निर्बल है!” ९ इसके विषय में यहोवा पछताया, और उससे कहा, “ऐसी बात अब न होगी।” १० परमेश्वर यहोवा ने मुझे यह दिखाया: और क्या देखता हूँ कि परमेश्वर यहोवा ने आग के द्वारा मुकदमा लड़ने को पुकारा, और उस आग से महासागर सूख गया, और देश भी भ्रम होने लगा था। ११ तब मैंने कहा, “हे परमेश्वर यहोवा, स्क जा! नहीं तो याकूब कैसे स्थिर रह सकेगा? वह कैसा निर्बल है।” १२ इसके विषय में भी यहोवा पछताया, और परमेश्वर यहोवा ने कहा, “ऐसी बात फिर न होगी।” १३ उसने मुझे यह भी दिखाया: मैंने देखा कि प्रभु साहल लगाकर बनाई हुई किसी दीवार पर खड़ा है, और उसके हाथ में साहल है। १४ और यहोवा ने मुझसे कहा, “हे आमोस, तुझे क्या देख पड़ता है?” मैंने कहा, “एक साहल।” तब परमेश्वर ने कहा, “देख, मैं अपनी प्रजा इस्माएल के बीच में साहल लगाऊँगा। १५ मैं अब उनको न छोड़ूँगा। इस्माएल के ऊंचे स्थान उजाड़, और इस्माएल के पवित्रस्थान सुनासन हो जाएँगे, और मैं यारोबाम के घराने पर तलवार खीचे हुए चढ़ाई करूँगा।” १६ तब बेतेल के याजक अमस्याह ने इस्माएल के राजा यारोबाम के पास कहला भेजा, “आमोस ने इस्माएल के घराने के बीच में तुझ से राजद्रोह की गोष्ठी की है; उसके सारे वचनों को देश नहीं सह सकता।” १७ क्योंकि आमोस यह कहता है, ‘‘यारोबाम तलवार से मारा जाएगा, और इस्माएल अपनी भूमि पर से निश्चय बैधुआई में जाएगा।’’ १८ तब अमस्याह ने आमोस से कहा, “हे दर्शी, यहाँ से निकलकर यहदा देश में भाग जा, और वही रोटी खाया कर, और वही भविष्यद्वाणी किया कर; १९ परन्तु बेतेल में फिर कभी भविष्यद्वाणी न करना, क्योंकि यह राजा का पवित्रस्थान और राज-नगर है।” २० आमोस ने उत्तर देकर अमस्याह से कहा, “मैं न तो भविष्यद्वत्ता था, और न भविष्यद्वत्ता का बेटा; मैं तो गाय-बैल का चरवाहा, और गूलर के क्वक्षों का छाँटेवाला था, २१ और यहोवा ने मुझे भेड़-बकरियों के पीछे-पीछे फिरने से बुलाकर कहा, ‘‘जा, मेरी प्रजा इस्माएल से भविष्यद्वाणी कर।’’ २२ इसलिए अब तू यहोवा का

वचन सुन, तू कहता है, ‘‘इस्माएल के विस्तु भविष्यद्वाणी मत कर, और इसहाक के घराने के विस्तु बार बार वचन मत सुना।’’ २३ इस कारण यहोवा यह कहता है: ‘‘तेरी झी नगर में वेश्या हो जाएगी, और तेरे बेटे-बेटियाँ तलवार से मारे जाएँगे, और तेरी भूमि डोरी डालकर बाँट ली जाएगी; और तू आप अशुद्ध देश में मरेगा, और इस्माएल अपनी भूमि पर से निश्चय बैधुआई में जाएगा।’’

८ परमेश्वर यहोवा ने मुझ को यह दिखाया: कि, धूपकाल के फलों से भरी हुई एक टोकरी है। ९ और उसने कहा, “हे आमोस, तुझे क्या देख पड़ता है?” मैंने कहा, “धूपकाल के फलों से भरी एक टोकरी।” तब यहोवा ने मुझसे कहा, “मेरी प्रजा इस्माएल का अन्त आ गया है; मैं अब उसको और न छोड़ूँगा।” १० परमेश्वर यहोवा की वाणी है, “उस दिन राजमन्दिर के गीत हाहकार में बदल जाएँगे, और शर्वों का बड़ा ढेर लगेगा; और सब स्थानों में वे चुपचाप फैक दिए जाएँगे।” ११ यह सुनो, तुम जो दरिद्रों को निगलना और देश के नगर लोगों को नष्ट करना चाहते हो, १२ जो कहते हो, “नया चाँद कब बीतेगा कि हम अन्न बेच सकें? और विश्वासिन कब बीतेगा, कि हम अन्न के खते खोलकर एपा को छोटा और शेकेल को भारी कर दें, छल के तराजू से धोखा दे, १३ कि हम कंगलों को स्पाया देकर, और दरिद्रों को एक जोड़ी जूतियाँ देकर मोल लें, और निकम्मा अन्न बेचें?” १४ यहोवा, जिस पर याकूब को घमण्ड करना उचित है, वही अपनी शपथ खाकर कहता है, “मैं तुम्हारे किसी काम को कपी न भरूँगा। १५ क्या इस कारण भूमि का कौपींपी? क्या उन पर के सब रहनेवाले विलाप न करेंगे? यह देश सब का सब मिस्र की नील नदी के समान होगा, जो बढ़ती है, फिर लहरें मारती, और घट जाती है।” १६ परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, “उस समय मैं सूर्य को दोपहर के समय अस्त करूँगा, और इस देश को दिन दुपहरी अधियारा कर दूँगा।” १७ मैं तुम्हारे पर्वों के उत्सव को दूर करके विलाप कराऊँगा, और तुम्हारे सब गीतों को दूर करके विलाप के गीत गवाऊँगा, मैं तुम सब की कमर में टाट बैंधाऊँगा, और तुम सब के सिरों को मूँडाऊँगा; और ऐसा विलाप कराऊँगा जैसा एकलौते के लिये होता है, और उसका अन्त कठिन दुःख के दिन का सा होगा।” १८ परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, “देखो, ऐसे दिन आते हैं, जब मैं इस देश में अकाल करूँगा; उसमें न तो अन्न की भूख और न पानी की प्यास होगी, परन्तु यहोवा के वचनों के सुनने ही की भूख प्यास होगी।” १९ और लोग यहोवा के वचन की खोज में समृद्ध से समृद्ध तक और उत्तर से पूरब तक मारे-मारे फिरेंगे, परन्तु उमको न पाएँगे। २० “उस समय सुन्दर कुमारियाँ और जवान पुष्प दोनों प्यास के मारे मृद्धा खाएँगे।” २१ जो लोग सामरिया के दोष देवता की शपथ खाते हैं, और जो कहते हैं, ‘‘दान के देवता के जीवन की शपथ,’ और बेर्शबा के पन्थ की शपथ, वे सब गिर पड़ेंगे, और फिर न उठेंगे।”

९ मैंने प्रभु को बेटी के ऊपर खड़ा देखा, और उसने कहा, “खम्भे की कँगिनियों पर मार जिससे डेविडियाँ हिले, और उनको सब लोगों के सिर पर गिराकर टुकड़े-टुकड़े कर; और जो नाश होने से बचें, उन्हें मैं तलवार से घात करूँगा; उनमें से एक भी न भाग निकलेगा, और जो अपने को बचाए, वह बचने न पाएगा।” १० क्योंकि चाहे वे खोदकर अधोलोक में उतर जाएँ, तो वहाँ से मैं हाथ बढ़ाकर उन्हें लाऊँगा; चाहे वे आकाश पर चढ़ जाएँ, तो वहाँ से मैं उन्हें उतार लाऊँगा। (Sheol h7585) ११ चाहे वे कर्में छिप जाएँ, परन्तु वहाँ भी मैं उन्हें ढूँढ़ ढूँढ़कर पकड़ लौँगा, और चाहे वे समृद्ध की थाह में मेरी दृष्टि से ओट हों, वहाँ भी मैं सर्प को उन्हें डसने की आज्ञा दूँगा। १२ चाहे शत्रु उन्हें हाँकर बैधुआई में ले जाएँ, वहाँ भी मैं आज्ञा देकर तलवार से उन्हें घात कराऊँगा; और मैं उन पर भलाई करने के लिये नहीं, बुराई ही करने के लिये

दृष्टि करँगा।” ५ सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के स्पर्श करने से पृथ्वी पिघलती है, और उसके सारे रहनेवाले विलाप करते हैं; और वह सब की सब मिस्र की नदी के समान हो जाती है, जो बढ़ती है फिर लहरें मारती, और घट जाती है। ६ जो आकाश में अपनी कोठरियाँ बनाता, और अपने आकाशमण्डल की नीच पृथ्वी पर डालता, और समुद्र का जल धरती पर बहा देता है, उसी का नाम यहोवा है। ७ “हे इस्माएलियों,” यहोवा की यह वाणी है, “क्या तुम मेरे लिए कृशियों के समान नहीं हो? क्या मैं इस्माएल को मिस्र देश से और पतिशियों को कमार से नहीं निकाल लाया? और अरामियों को कीर से नहीं निकाल लाया? ८ देखो, परमेश्वर यहोवा की दृष्टि इस पापमय राज्य पर लागी है, और मैं इसको धरती पर से नष्ट करँगा; तो भी मैं पूरी रीति से याकब के घरने को नाश न करँगा,” यहोवा की यही वाणी है। ९ “मेरी आज्ञा से इस्माएल का घराना सब जातियों में ऐसा चाला जाएगा जैसा अन्न चलनी में चाला जाता है, परन्तु उसका एक भी पृष्ठ दाना भूमि पर न गिरेगा। १० मेरी प्रजा में के सब पारी जो कहते हैं, ‘वह विपत्ति हम पर न पड़ेगी, और न हमें घेरेगी,’ वे सब तलवार से मारे जाएँगे। ११ “उस समय मैं दाऊद की गिरी हई झोपड़ी को खड़ा करँगा, और उसके बाड़े के नाकों को सुधासँगा, और उसके खण्डहरों को फिर बनाऊँगा, और जैसा वह प्राचीनकाल से था, उसको वैसा ही बना दूँगा; १२ जिससे वे बचे हुए एटोमियों को वरन् सब जातियों को जो मेरी कहलाती है, अपने अधिकार में लें,” यहोवा जो यह काम पूरा करता है, उसकी यही वाणी है। १३ यहोवा की यह भी वाणी है, “देखो, ऐसे दिन आते हैं, कि हल जो तनेवाला लवनेवाले को और दाख रौंदनेवाला बीज बोनेवाले को जा लेगा, और पहाड़ों से नया दाखमधु टपकने लगेगा, और सब पहाड़ियों से बह निकलेगा। १४ मैं अपनी प्रजा इस्माएल के बनियों को लौटा ले आऊँगा, और वे उजड़े हुए नगरों को सुधारकर उनमें बसेंगे; वे दाख की बारियाँ लगाकर दाखमधु पीएंगे, और बगीचे लगाकर उनके फल खाएँगे। १५ मैं उन्हें, उन्हीं की भूमि में बोऊँगा, और वे अपनी भूमि में से जो मैंने उन्हें दी है, फिर कभी उखाड़े न जाएँगे,” तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का यही वचन है।

ओबघाह

१ ओबघाह का दर्शन। एटोम के विषय यहोवा यह कहता है: हम लोगों ने

यहोवा की ओर से समाचार सुना है, और एक दूत अन्यजातियों में यह कहने को भेजा गया है: २ “उठो! हम उससे लड़ने को उठो!” मैं तुझे जातियों में छोटा कर दूँगा, तू बहुत तुच्छ गिना जाएगा। ३ हे पहाड़ों की दरारों में बसनेवाले, हे ऊँचे स्थान में रहनेवाले, तेरे अधिमान ने तुझे धोखा दिया है; तू मन में कहता है, “कौन मुझे भूमि पर उतार देगा?” ४ परन्तु चाहे तू उकाब के समान ऊँचा उड़ता हो, वरन् तारागण के बीच अपना घोंसला बनाए हो, तो भी मैं तुझे वहाँ से नीचे गिराऊँगा, यहोवा की यही वाणी है। ५ यदि चोर-डाक रात को तेरे पास आते, (हाय, तैरैसे मिटा दिया गया है!) तो क्या वे चुराए हुए धन से तुम होकर चले न जाते? और यदि दाख के तोड़नेवाले तेरे पास आते, तो क्या वे कहीं-कहीं दाख न छोड़ जाते? ६ परन्तु एसाव का धन कैसे खोजकर लटा गया है, उसका गुप्त धन कैसे पता लगा लगाकर निकाला गया है! ७ जितनों ने तुझ से वाचा बाँधी थी, उन सभी ने तुझे सीमा तक ढकेल दिया है; जो लोग तुझ से मेल रखते थे, वे तुझको धोका देकर तुझ पर प्रबल हुए हैं; वे तेरी गोती खाते हैं, वे तेरे लिये फंदा लगाते हैं उसमें कुछ समझ नहीं है। ८ यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं उस समय एटोम में से बुद्धिमानों को, और एसाव के पहाड़ में से चतुरई को नाश न करूँगा? ९ ओहे हे तेमान, तेरे शर्वीरों का मन कच्चा हो जाएगा, और एसाव के पहाड़ पर का हर एक पुरुष घात होकर नाश हो जाएगा। १० हे एसाव, एक उपद्रव के कारण जो तुमे अपने भाई याकूब पर किया, तू लज्जा से ढैंपेगा; और सदा के लिये नाश हो जाएगा।

११ जिस दिन परदेशी लोग उसकी धन-सम्पत्ति छीनकर ले गए, और पराए लोगों ने उसके फाटकों से घुसकर यस्शलेम पर चिश्ती डाली, उस दिन तू भी उनमें से एक था। १२ परन्तु तुझे उचित नहीं था कि तू अपने भाई के दिन में, अर्थात् उसकी विपत्ति के दिन में उसकी ओर देखता रहता, और यहदियों के विनाश के दिन उनके ऊपर आनन्द करता, और उनके संकट के दिन बड़ा बोल बोलता। १३ तुझे उचित नहीं था कि मेरी प्रजा की विपत्ति के दिन तू उसके फाटक में घुसता, और उसकी विपत्ति के दिन उसकी दुर्दशा को देखता रहता, और उसकी विपत्ति के दिन उसकी धन-सम्पत्ति पर हाथ लगाता। १४ तुझे उचित नहीं था कि चौराहों पर उसके भागमेवालों को मार डालने के लिये खड़ा होता, और संकट के दिन उसके बचे हुओं को पकड़ता। १५ क्योंकि सारी जातियों पर यहोवा के दिन का आना निकट है। जैसा तूने किया है, वैसा ही तुझ से भी किया जाएगा, तेरा व्यवहार तौटकर तेरे ही सिर पर पड़ेगा। १६ जिस प्रकार तेरे मेरे पवित्र पर्वत पर पिया, उसी प्रकार से सारी जातियाँ लगातार पीती रहेंगी, वे पीँझे और वे निगल जाएंगे, और ऐसी ही जाँची जैसी कभी ही ही नहीं। १७ परन्तु उस समय सिय्योन पर्वत पर बचे हुए लोग रहेंगे, और वह पवित्रस्थान ठहरेगा; और याकूब का घराना अपने निज भागों का अधिकारी होगा। १८ तब याकूब का घराना आग, और यसुफ का घराना लौ, और एसाव का घराना खूँटी बनेगा; और वे उनमें आग लगाकर उनको भस्म करेंगे, और एसाव के घराने को कोई न बचेगा; क्योंकि यहोवा ही ने ऐसा कहा है। १९ दक्षिण देश के लोग एसाव के पहाड़ के अधिकारी हो जाएंगे, और नीचे के देश के लोग पलिशियों के अधिकारी होंगे; और यहदी, ऐसैम और सामरिया के देश को अपने भाग में कर लेंगे, और बिन्यामीन गिलाद का अधिकारी होगा। २० इश्वाएलियों के उस दल में से जो लोग बँधुआई में जाकर कनानियों के बीच सारफत तक रहते हैं, और यस्शलेमियों में से जो लोग बँधुआई में जाकर सपाराद में रहते हैं, वे सब दक्षिण देश के नगरों के

अधिकारी हो जाएँगे। २१ उद्धार करनेवाले एसाव के पहाड़ का न्याय करने के लिये सिय्योन पर्वत पर चढ़ आएँगे, और राज्य यहोवा ही का हो जाएगा।

योना

१ यहोवा का यह वचन अपितै के पुत्र योना के पास पहुँचा, २ “उठकर

उस बड़े नगर नीनवे को जा, और उसके विद्व प्रचार कर; क्योंकि उसकी बुराई मेरी दृष्टि में आ चुकी है।” ३ परन्तु योना यहोवा के सम्मुख से तर्शीश को भाग जाने के लिये उठा, और याफा नगर को जाकर तर्शीश जानेवाला एक जहाज पाया; और भाडा देकर उस पर चढ़ गया कि उनके साथ होकर यहोवा के सम्मुख से तर्शीश को चला जाए। ४ तब यहोवा ने समुद्र में एक प्रचण्ड आँधी चलाई, और समुद्र में बड़ी आँधी उठी, यहाँ तक कि जहाज टूटे पर था। ५ तब मल्लाह लोग उठकर अपने-अपने देवता की दुहाई देने लगे; और जहाज में जो व्यापार की सामग्री थी उसे समुद्र में फेंकने लगे कि जहाज हल्का हो जाए। परन्तु योना जहाज के निचले भाग में उठकर वहाँ लेटकर सो गया, और गहरी नीद में पड़ा हुआ था। ६ तब माँझी उसके निकट आकर कहने लगा, “तु भारी नीद में पड़ा हुआ क्या करता है? उठ, अपने देवता की दुहाई दे! सम्भव है कि ईश्वर हमारी चिंता करे, और हमारा नाश न हो।” ७ तब मल्लाहों ने अपास में कहा, “आओ, हम चिरी डालकर जान लें कि यह विपत्ति हम पर किसके कारण पड़ी है।” ८ तब उन्होंने चिरी डाली, और चिरी योना के नाम पर निकली। ९ तब उन्होंने उससे कहा, “हमें बता कि किसके कारण यह विपत्ति हम पर पड़ी है? तेरा व्यवसाय क्या है? ओ त कहाँ से आया है? तू किस देश और किस जाति का है?” १० उसने उनसे कहा, “मैं इन्हीं हूँ; और स्वर्ण का परमेश्वर यहोवा जिसने जल स्थल दोनों को बनाया है, उसी का भय मानता हूँ।” ११ तब वे बहत डर गए, और उससे कहने लगे, “तू यह क्या किया है?” वे जान गए थे कि वह यहोवा के सम्मुख से भाग आया है, क्योंकि उसने आप ही उनको बता दिया था। १२ तब उन्होंने उससे पूछा, “हम तेरे साथ क्या करें जिससे समुद्र शान्त हो जाए?” उस समय समुद्र की लहरें बढ़ती ही जाती थीं। १३ उसने उनसे कहा, “मुझे उठाकर समुद्र में फेंक दो; तब समुद्र शान्त पड़ जाएगा; क्योंकि मैं जानता हूँ, कि यह भारी आँधी तुम्हारे ऊपर मेरी ही कारण आई है।” १४ तो भी वे बड़े यत्र से खेते रहे कि उसको किनारे पर लगाएँ, परन्तु पहुँच न सके, क्योंकि समुद्र की लहरें उनके विद्व बढ़ती ही जाती थीं। १५ तब उन्होंने यहोवा को पुकारकर कहा, “हे यहोवा हम विनती करते हैं, कि इस पुस्तके प्राण के बदले हमारा नाश न हो, और न हमें निर्दोष की हत्या का दोषी ठहरा; क्योंकि हे यहोवा, जो कुछ तेरी इच्छा थी वही तूने किया है।” १६ तब उन्होंने योना को उठाकर समुद्र में फेंक दिया; और समुद्र की भयानक लहरें थम गईं। १७ तब उन मनुष्यों ने यहोवा का बहुत ही भय माना, और उसको भेंट चढ़ाई और मनन्ते मानी। १८ यहोवा ने एक महा मच्छ ठहराया था कि योना को निगल ले; और योना उस महा मच्छ के पेट में तीन दिन और तीन रात पड़ा रहा।

२ तब योना ने महा मच्छ के पेट में से अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके

कहा, १ “मैंने संकट में पड़े हुए यहोवा की दुहाई दी, और उसने मेरी सुन ली है; अधोलोक के उदर में से मैं चिल्ला उठा, और तेरे मेरी सुन ली। (Sheol h7585) २ तूने मुझे गहरे सागर में समुद्र की थाह तक डाल दिया; और मैं धाराओं के बीच में पड़ा था, तेरी सब तरंग और लहरें मेरे ऊपर से बह गईं। ३ तब मैंने कहा, ‘मैं तेरे सामने से निकाल दिया गया हूँ, कैसे मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर फिर ताकूँगा?’ ४ मैं जल से यहाँ तक घिरा हुआ था कि मेरे प्राण निकले जाते थे; गहरा सागर मेरे चारों ओर था, और मेरे सिर में सिवार लिपटा हुआ था। ५ मैं पहाड़ों की जड़ तक पहुँच गया था; मैं सदा के लिये भूमि में

बन्द हो गया था; तो भी हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तूने मेरे प्राणों को गड़े में से उठाया है। ६ जब मैं मूर्छा खाने लगा, तब मैंने यहोवा को स्मरण किया; और मेरी प्रार्थना तेरे पास बरन् तेरे पवित्र मन्दिर में पहुँच गई। ७ जो लोग धोखे की व्यर्थ वस्तुओं पर मन लगाते हैं, वे अपने कस्त्रानिधान को छोड़ देते हैं। ८ परन्तु मैं ऊँचे शब्द से धन्यवाद करके तुझे बलिदान चढ़ाऊँगा; जो मनत मैंने मानी, उसको पूरी कहँस्गा। उद्गार यहोवा ही से होता है।” ९ और यहोवा ने महा मच्छ को आज्ञा दी, और उसने योना को स्थल पर उगल दिया।

३ तब यहोवा का यह वचन दूसरी बार योना के पास पहुँचा, २ “उठकर उस

बड़े नगर नीनवे को जा, और जो बात मैं तुझ से कहँगा, उसका उसमें प्रचार कर।” ३ तब योना यहोवा के वचन के अनुसार नीनवे को गया। नीनवे एक बहुत बड़ा नगर था, वह तीन दिन की यात्रा का था। ४ और योना ने नगर में प्रवेश करके एक दिन की यात्रा पूरी की, और यह प्रचार करता गया, “अब से चालीस दिन के बीतने पर नीनवे उलट दिया जाएगा।” ५ तब नीनवे के मनुष्यों ने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया; और उपवास का प्रचार किया गया और बड़े से लेकर छोटे तक सभी ने टाट ओढ़ा। ६ तब यह समाचार नीनवे के राजा के कान में पहुँचा; और उसने सिंहासन पर से उठ, अपना राजकीय ओढ़ा उतारकर टाट ओढ़ा लिया, और राख पर बैठ गया। ७ राजा ने अपने प्रधानों से सम्मति लेकर नीनवे में इस आज्ञा का ढिडोरा पिटवाया, “क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, या और पश, कोई कुछ भी न खाँग़ु; वे न खाएँ और न पानी पाएँ।” ८ और मनुष्य और पशु दोनों टाट ओढ़े, और वे परमेश्वर की दुहाई चिल्ला चिल्लाकर दें; और अपने कुमारी से फिरें; और उस उपद्रव से, जो वे करते हैं, पश्चाताप करें। ९ सम्भव है, परमेश्वर द्या करे और अपनी इच्छा बदल दे, और उसका भड़का हुआ कोप शान्त हो जाए और हम नाश होने से बच जाएँ।” १० जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा, कि वे कुर्मा से फिर रहे हैं, तब परमेश्वर ने अपनी इच्छा बदल दी, और उनकी जो हानि करने की ठानी थी, उसको न किया।

४ यह बात योना को बहत ही बुरी लगी, और उसका क्रोध भड़का। १ और

उसने यहोवा से यह कहकर प्रार्थना की, ‘हे यहोवा जब मैं अपने देश में था, तब क्या मैं यही बात न कहता था? इसी कारण मैंने तेरी आज्ञा सुनते ही तर्शीश को भाग जाने के लिये फुर्ती की; क्योंकि मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है, और विलम्ब से कोप करनेवाला कस्त्रानिधान है, और दुख देने से प्रसन्न नहीं होता। २ सो अब हे यहोवा, मेरा प्राण ले ले; क्योंकि मेरे लिये जीवित रहने से मरना ही भला है।” ३ यहोवा ने कहा, “तेरा जो क्रोध भड़का है, क्या वह उचित है?” ४ इस पर योना उस नगर से निकलकर, उसकी पूब ओर बैठ गया; और वहाँ एक छपर बनाकर उसकी छाया में बैठा हुआ यह देखने लगा कि नगर का क्या होगा? ५ तब यहोवा परमेश्वर ने एक रेड का पेड उगाकर ऐसा बढ़ाया कि योना के सिर पर छाया हो, जिससे उसका दुख दूर हो। योना उस रेड के पेड के कारण बहुत ही आनन्दित हुआ। ६ सबै जब पौ फटने लगी, तब परमेश्वर ने एक कीड़े को भेजा, जिसने रेड का पेड ऐसा काटा कि वह सूख गया। ७ जब सूर्य उगा, तब परमेश्वर ने पुरावाई बहाकर लू चलाई, और धूप योना के सिर पर ऐसे लगी कि वह मूर्छा खाने लगा; और उसने यह कहकर प्रार्थना की, “मेरे लिये जीवित रहने से मरना ही अच्छा है।” ८ परमेश्वर ने योना से कहा, “तेरा क्रोध, जो रेड के पेड के कारण भड़का है, क्या वह उचित है?” उसने कहा, “हाँ, मेरा जो क्रोध भड़का है वह अच्छा ही है, वरन् क्रोध के मारे मरना भी अच्छा होता।” ९ तब यहोवा ने कहा, “जिस रेड के पेड के लिये तूने कुछ परिश्रम नहीं

किया, न उसको बढ़ाया, जो एक ही रात में हुआ, और एक ही रात में नाश भी हुआ; उस पर तूने तरस खाई है। ११ फिर यह बड़ा नगर नीनवे, जिसमें एक लाख बीस हजार से अधिक मनुष्य हैं, जो अपने दाँ-बाँ हाथों का भेद नहीं पहचानते, और बहुत घोलू पशु भी उसमें रहते हैं, तो क्या मैं उस पर तरस न खाऊँ?”

मीका

१ यहोवा का वचन, जो यहदा के राजा योताम, आहाज और हिजकियाह के दिनों में मोरेशेतवासी मीका को पहुँचा, जिसको उसने सामरिया और यस्सलेम के विषय में पाया। २ हे जाति-जाति के सब लोगों, सनो! हे पृथ्वी त् उस सब समेत जो तुझ में है, ध्यान दो। और प्रभु यहोवा तुम्हारे विस्तु, बरन परमेश्वर अपने पवित्र मन्दिर में से तुम पर साक्षी दो। ३ क्योंकि देख, यहोवा अपने पवित्रस्थान से बाहर निकल रहा है, और वह उत्तरकर पृथ्वी के ऊँचे स्थानों पर चलेगा। ४ पहाड़ उसके नीचे गल जाएंगे, और ताहँ ऐसे फटेंगी, जैसे मोम आग की अँच से, और पानी जो घाट से नीचे बहता है। ५ यह सब याकूब के अपराध, और इसाएल के धराने के पाप के कारण से होता है। याकूब का अपराध क्या है? क्या सामरिया नहीं? और यहदा के ऊँचे स्थान क्या है? क्या यस्सलेम नहीं? ६ इस कारण मैं सामरिया को मैदान के खेत का ढेर कर दूँगा, और दाख का बारीचा बनाऊँगा; और मैं उसके पत्थरों को खड़ु में लुढ़का दूँगा, और उसकी नीच उखाड़ दूँगा। ७ उसकी सब खुट्टी हुई मूर्ते टुकड़े-टुकड़े की जाएँगी; और जो कुछ उसने छिनाला करके कमाया है वह आग से भस्म किया जाएगा, और उसकी सब प्रतिमाओं को मैं चकनाचूर करूँगा; क्योंकि छिनाले ही की कमाई से उसने उसको इकट्ठा किया है, और वह फिर छिनाले की सी कमाई हो जाएगी। ८ इस कारण मैं छाती पीठकर हाथ-हाथ, करूँगा; मैं लुटा हुआ सा और नंगा चला फिरा करूँगा; मैं गीदड़ों के समान चिल्लाऊँगा, और शतुर्मांसों के समान रोऊँगा। ९ क्योंकि उसका घाव असाध्य है; और विपति यहदा पर भी आ पड़ी, बरन-वह मैं जातिभाइयों पर पड़कर यस्सलेम के फाटक तक पहुँच गई है। १० गत नगर में इसकी चर्ची मत करो, और मत रोओ; बेतआप्रा मैं धूलि में लोटोपोट करो। ११ हे शापीर की रहनेवाली नंगी होकर निर्लिङ्ज चली जा; सानान की रहनेवाली नर्ती निकल सकती; बेतसेल के रोने पीटने के कारण उसका शरणस्थान तुम से ले लिया जाएगा। १२ क्योंकि मारोत की रहनेवाली तो कशल की बाट जोहते-जोहते तड़प गई है, क्योंकि यहोवा की ओर से यस्सलेम के फाटक तक विपति आ पहुँची है। १३ हे लाकीश की रहनेवाली अपने रथों में देख चलनेवाले धोड़े जोत, तुझी से सियोन की प्रजा के पाप का अरम्भ हुआ, क्योंकि इसाएल के अपराध तुझी में पाए गए। १४ इस कारण त् गत के मोरेशेत को दान देकर दूर कर दोगा; अकजीब के घर से इसाएल के राजा धोखा ही खाएँगे। १५ हे मारेशा की रहनेवाली मैं फिर तुझ पर एक अधिकारी ठहराऊँगा, और इसाएल के प्रतिष्ठित लोगों को अदल्लाम मैं आना पड़ेगा। १६ अपने दुलारे लड़कों के लिये अपना केश कटवाकर सिर मुँड़ा, बरन अपना पूरा सिर गिर्द के समान गंजा कर दे, क्योंकि वे बैधुएं होकर तेरे पास से चले गए हैं।

१ हाय उन पर, जो बिछौनों पर पड़े हुए बुराइयों की कल्पना करते और दुष्कर्म की इच्छा करते हैं, और बलबन्त होने के कारण भौंर को दिन निकलते ही वे उसको पूरा करते हैं। २ वे खेतों का लालच करके उन्हें छीन लेते हैं, और घरों का लालच करके उन्हें भी ले लेते हैं; और उसके धराने समेत पुष्प पर, और उसके निज भाग समेत किसी पुस्त पर अंधेर और अत्याचार करते हैं। ३ इस कारण, यहोवा यह कहता है, मैं इस कुल पर ऐसी विपति डालते हूँ, जिसके नीचे से तुम अपनी गर्दन हटा न सकोगे; न अपने सिर ऊँचे किए हुए चल सकोगे; क्योंकि वह विपति का समय होगा। ४ उस समय यह अत्यन्त शोक का गीत दृश्यान्त की रीति पर गया जाएगा: “हमारा तो सर्वनाश हो गया; वह मैं लोगों के भाग को बिगाड़ा है; हाय, वह उसे मुझसे कितनी

दूर कर देता है! वह हमारे खेत बलवा करनेवाले को दे देता है।” ५ इस कारण तेरा ऐसा कोई न होगा, जो यहोवा की मण्डली में चिरी डालकर नापने की डोरी डाले। ६ बकवासी कहा करते हैं, “बकवास न करो। इन बातों के लिये न कहा करो!” ऐसे लोगों में से अपमान न मिटेगा। ७ हे याकूब के धराने, क्या यह कहा जाए कि यहोवा का आत्मा अधीर हो गया है? क्या ये काम उसी के किए हुए हैं? क्या मेरे वचनों से उसका भला नहीं होता जो सिराई से चलता है? ८ परन्तु कल की बात है कि मेरी प्रजा शत्रु बनकर मेरे विस्तु उड़ी है; तुम शान्त और भोले-भाले राहियों के तन पर से वृङ् छी छी लेते हो जो लडाई का विचार न करके निश्चिक चले जाते हैं। ९ मेरी प्रजा की छियों को तुम उनके सुखधारों से निकाल देते हो; और उनके नहें बच्चों से तुम मेरी दी हुई उत्तम वस्तुएँ सर्वदा के लिये छीन लेते हो। १० उठो, चल जाओ! क्योंकि यह तुम्हारा विश्वास्थान नहीं है, इसका कारण वह अशद्गता है जो कठिन दुख के साथ तुम्हारा नाश करेगी। ११ यदि कोई झूटी आत्मा मैं चलता हुआ झूटी और व्यर्थ बातें कहे और कहे कि मैं तुम्हें नित्य दाखमधु और मदिरा के लिये प्रचार सुनाता रहूँगा, तो वही इन लोगों का भविष्यद्वत्का ठहरेगा। १२ हे याकूब, मैं निश्चय तुम सभी को इकट्ठा करूँगा; मैं इसाएल के बच हुओं को निश्चय इकट्ठा करूँगा; और बोला की भेड़-बकरियों के समान एक संग रखूँगा। उस झुण्ड के समान जो अच्छी चाराई मैं हो, वे मरुस्यों की बहतायत के मारे कोलाहल मचाएँगे। १३ उनके अगे-अगे बाढ़े का तोड़नेवाला गया है, इसलिए वे भी उसे तोड़ रहे हैं, और फाटक से होकर निकले जा रहे हैं; उनका राजा उनके आगे-आगे गया अर्थात् यहोवा उनका सरदार और अगुआ है।

३ मैंने कहा: हे याकूब के प्रधानों, हे इसाएल के धराने के न्यायियों, सुनो! क्या न्याय का भेद जानना तुम्हारा काम नहीं? ४ तुम तो भलाई से बैर, और बुराई से प्रीति रखते हो, मानो, तुम, लोगों पर से उनकी खाल उधें लेते, और उनकी हड्डियों पर से उनका मौस नोच लेते हो; ५ वरन् तुम मेरे लोगों का माँस खा भी लेते, और उनकी खाल उधें लेते हो; तुम उनकी हड्डियों को हाण्डी मैं पकाने के लिये तोड़ डालते और उनका माँस हँड़े मैं पकाने के लिये टुकड़े-टुकड़े करते हो। ६ वे उस समय यहोवा की दुहाई देंगे, परन्तु वह उनकी न सुनेगा, बरन उस समय वह उनके बुरे कामों के कारण उनसे मूँह मोड़ लेगा। ७ यहोवा का यह वचन है कि जो भविष्यद्वत्का मेरी प्रजा को भटका देते हैं, और जब उन्हें खाने को मिलता है तब “शान्ति-शान्ति,” पुकारते हैं, और यदि कोई उनके मूँह मैं कुछ न दे, तो उसके विस्तु युद्ध करने को तैयार हो जाते हैं। ८ इस कारण तुम पर ऐसी रात आएँगी, कि तुम को दर्शन न मिलेगा, और तुम ऐसे अंधकार मैं पड़ोगे कि भावी न कह सकोगे। भविष्यद्वत्काओं के लिये सूर्य अस्त होगा, और दिन रहते उन पर अंधियारा छा जाएगा। ९ दर्शी लज्जित होंगे, और भावी कहनेवालों के मूँह काले होंगे; और वे सब के सब अपने होठों को इसलिए ढाँचे कि परमेश्वर की ओर से उत्तर नहीं मिलता। १० परन्तु मैं तो यहोवा की आत्मा से शक्ति, न्याय और पराक्रम पाकर परिपूर्ण हूँ कि मैं याकूब को उसका अपराध और इसाएल को उसका पाप जता सकूँ। ११ हे याकूब के धराने के प्रधानों, हे इसाएल के धराने के न्यायियों, हे न्याय से घृण करनेवालों और सब सीधी बातों को टेढ़ी-मेढ़ी करनेवालों, यह बात सुनो। १२ तुम सिद्धान्तों को हत्या करके और यस्सलेम को कुटिलता करके दृढ़ करते हो। १३ उसके प्रधान धूस ले लेकर विचार करते, और याजक दाम ले लेकर व्यवस्था देते हैं, और भविष्यद्वत्का स्पष्टी के लिये भावी कहते हैं, तो भी वे यह कहकर यहोवा पर भरोसा रखते हैं, “यहोवा हमारे बीच मैं है, इसलिए कोई विपति हम पर न आएगी।” १४ इसलिए तुम्हारे कारण सिद्धान्त जोतकर खेत

बनाया जाएगा, और यस्सलेम खण्डहरों का ढेर हो जाएगा, और जिस पर्वत पर परमेश्वर का भवन बना है, वह बन के ऊँचे स्थान सा हो जाएगा।

४ अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों

पर ढूँढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊँचा किया जाएगा, और हर जाति के लोग धारा के समान उसकी ओर चलेंगे। ५ और बहुत जातियों के लोग जाएँगे, और आपस में कहेंगे, “आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएँ, तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे।” क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यस्सलेम से निकलेगा। ६ वह बहुत देशों के लोगों का न्याय करेगा, और दूर-दूर तक की सामर्थी जातियों के झगड़ों को मिटाएगा, इसलिए वे अपनी तलवरें पीटकर हल के फाल, और अपने भानों से हँसिया बनाएँगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विस्तृत तलवार पर न चलाएगी, ७ और लोग आगे को युद्ध विद्या न सीखेंगे। परन्तु वे अपनी-अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष तले बैठा करेंगे, और कोई उनको न डराएगा, सेनाओं के यहोवा ने यही वचन दिया है। ८ सब राज्यों के लोग तो अपने-अपने देवता का नाम लेकर चलते हैं, परन्तु हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा का नाम लेकर सदा सर्वदा चलते रहेंगे। ९ यहोवा की यह वाणी है, उस समय मैं प्रजा के लंगड़ों को, और जबरन निकाले हुओं को, और जिनको मैंने दुःख दिया है तब सब को इकट्ठे करूँगा। १० और लंगड़ों को मैं बचा रखूँगा, और दूर किए हुओं को एक सामर्थी जाति कर दूँगा; और यहोवा उन पर सिय्योन पर्वत के ऊपर से सदा राज्य करता रहेगा। ११ और हे एंद्रे के गुप्तम, हे सिय्योन की पहाड़ी, पहली प्रभुता अर्थात् यस्सलेम का राज्य तुझे मिलेगा। १२ अब तू क्यों चिल्लाती है? क्या तुझ में कोई राजा नहीं रहा? क्या तेरा युक्ति करनेवाला नहीं हो गया, जिससे जच्चा छी के समान तुझे पीड़ा उठती है? १३ हे सिय्योन की बेटी, जच्चा छी के समान पीड़ा उठाकर उत्पन्न कर, क्योंकि अब तू गढ़ी मैं से निकलकर मैदान में बसेगी, वरन् बाबेल तक जाएगी; वही तू छुड़ाई जाएगी, अर्थात् वही यहोवा तुझे तेरे शून्यों के बश में से छुड़ा लेगा। १४ अब बहुत सी जातियाँ तेरे विस्तृ इकट्ठी होकर तेरे विषय में कहेंगी, “सिय्योन अपवित्र की जाए, और हम अपनी आँखों से उसको निहारो।” १५ परन्तु वे यहोवा की कल्पनाएँ नहीं जानते, न उसकी युक्ति समझते हैं, कि वह उन्हें ऐसा बटोर लेगा जैसे खलिहान में पूले बटोरे जाते हैं। १६ हे सिय्योन, उठ और दौबनी कर, मैं तेरे सींगों को लोहे के, और तेरे खुरों को पीतल के बना दूँगा, और तू बहुत सी जातियों को चूर-चूर करेगी, और उनकी कर्माइ यहोवा को और उनकी धन-सम्पत्ति पृथ्वी के प्रभु के लिये अर्णव रकरेगी।

५ अब हे बहुत दलों के नार, दल बाँध बाँधकर इकट्ठे हो, क्योंकि उन्हें हम

लोगों को धेर लिया है, वे इस्माइल के न्यायी के गाल पर सोंटा मारेंगे। ६ हे बैतलहम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहदा के हजारों में गिना नहीं जाता, तो भी तुझ में से मेरे लिये एक पुष्प निकलेगा, जो इस्माइलियों में प्रभुता करनेवाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन् अनादिकाल से होता आया है। ७ इस कारण वह उनको उस समय तक त्यागे रहेगा, जब तक जच्चा उत्पन्न न करे; तब इस्माइलियों के पास उसके बचे हुए भाई लौटकर उनसे मिल जाएँगे। ८ और वह खड़ा होकर यहोवा की दी हुई शक्ति से, और अपने परमेश्वर यहोवा के नाम के प्रताप से, उनकी चरवाही करेगा। और वे सुरक्षित रहेंगे, क्योंकि अब वह पृथ्वी की छोर तक महान उड़ेगा। ९ और वह शान्ति का मूल होगा, जब अश्शरी हमारे देश पर चढ़ाई करें, और हमारे राजभवनों में पौंछ रखें, तब हम उनके विस्तृ सात चरवाहे वरन् आठ प्रधान

मनुष्य खड़े करेंगे। १० और वे अश्शर के देश को वरन् प्रवेश के स्थानों तक निप्रोद के देश को तलवार चलाकर मार लेंगे; और जब अश्शरी लोग हमारे देश में आएँ, और उसकी सीमा के भीतर पौंछ रखें, तब वही पुम्प हमको उनसे बचाएगा। ११ और याकूब के बचे हुए लोग बहुत राज्यों के बीच ऐसा काम देंगे, जैसा यहोवा की ओर से पड़नेवाली ओस, और घास पर की वर्षा, जो किसी के लिये नहीं ठहरती और मनुष्यों की बात नहीं जोहती। १२ और याकूब के बचे हुए लोग जातियों में और देश-देश के लोगों के बीच ऐसे होंगे जैसे वन-पशुओं में सिंह, या भेड़-बकरियों के झुण्डों में जवान सिंह होता है, क्योंकि जब वह उनके बीच में से जाए, तो लताड़ता और फाड़ता जाएगा, और कोई बचा न सकेगा। १३ तेरा हाथ तेरे द्रोहियों पर पड़े, और तेरे सब शरू नष्ट हो जाएँ। १४ यहोवा की यही वाणी है, उस समय मैं तेरे घोड़ों का तेरे बीच में से नाश करूँगा; और तेरे रथों का विनाश करूँगा। १५ मैं तेरे देश के नारों को भी नष्ट करूँगा, और तेरे किलों को ढा दूँगा। १६ और मैं तेरे तंत्र-मंत्र नाश करूँगा, और तुझ में टोन्हे आगे को न रहेंगे। १७ और मैं तेरी खुरी हुई मूरतें, और तेरी लाठें, तेरे बीच में से नष्ट करूँगा; और तू आगे को अपने हाथ की बनाई हुई बस्तुओं को दण्डवत् न करेगा। १८ और मैं तेरी अश्शर नामक मूरतों को तेरी भूमि में से उखाड़ डालूँगा, और तेरे नगरों का विनाश करूँगा। १९ और मैं अन्यजातियों से जो मेरा कहा नहीं मानती, क्रोध और जलजलाहट के साथ बदला लूँगा।

६ जो बात यहोवा कहता है, उसे सुनो उठकर, पहाड़ों के सामने बाद विवाद कर, और टीले भी तेरी सुनने पाएँ। ७ हे पहाड़ों, और हे पृथ्वी की अटल बीच, यहोवा का बाद विवाद सुनो, क्योंकि यहोवा का अपनी प्रजा के साथ मुकदमा है, और वह इस्माइल से बाद-विवाद करता है। ८ “हे मेरी प्रजा, मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है? क्या करके मैंने तुझे थका दिया है? ९ मेरे विस्तृ साक्षी दे! मैं तो तुझे मिस्त्र देश से निकाल ले आया, और दासत्व के घर में से तुझे छुड़ा लाया; और तेरी अगुआई करने को मूसा, हास्तन और मिर्यम को भेज दिया। १० हे मेरी प्रजा, स्मरण कर, कि मोआब के राजा बालाक ने तेरे विस्तृ कौन सी युक्ति की? और बोर के पुत्र बिलाम ने उसको क्या समर्पित दी? और शितीम से गिलगाल तक की बातों का स्मरण कर, जिससे तू यहोवा के धार्मिकता के काम समझ सके।” ११ “मैं क्या लेकर यहोवा के सम्पूर्ख आँऊँ, और ऊपर रहनेवाले परमेश्वर के समान झुकूँ? क्या मैं होमबलि के लिये एक-एक वर्ष के बछड़े लेकर उसके सम्पूर्ख आँऊँ? १२ क्या यहोवा हजारों मेहों से, या तेल की लाखों नदियों से प्रसन्न होगा? क्या मैं अपने अपराध के प्रायश्चित्त में अपने पहलौठे को या अपने पाप के बदले में अपने जन्माए हुए किसी को ढूँ? १३ हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है, और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तू न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले? १४ यहोवा की वाणी इस नगर को पुकार रही है, और सम्पूर्ण ज्ञान, तेरे नाम का भय मानना है: राजदण्ड की, और जो उसे देनेवाला है उसकी बात सुनो। १५ क्या अब तक दुष्ट के घर में दुष्टाता से पाया हुआ धन और छोटा एषा घृणित नहीं है? १६ क्या मैं कपट का तराज़ और घटबढ़ के बटखोरों की थैली लेकर पत्रिव ठहर सकता हूँ? १७ क्या हाँ के धनवान लोग उपद्रव का काम देखा करते हैं, और यहाँ के सब रहनेवाले झूल बोलते हैं और उनके मुँह से छल की बातें निकलती हैं। १८ इस कारण मैं तुझे मारते-मारते बहुत ही धायल करता हूँ, और तेरे पापों के कारण तुझको उड़ाड़ डालता हूँ। १९ तू खाएगा, परन्तु तू न होगा, तेरा पेट जलता ही रहेगा, और तू अपनी सम्पत्ति लेकर चलेगा, परन्तु न बचा सकेगा, और जो कुछ तू बचा भी ले, उसको मैं तलवार चलाकर लुटवा दूँगा। २० तू बोएगा, परन्तु लवने न पाएगा;

तू जैतून का तेल निकालेगा, परन्तु लगाने न पाएगा; और दाख रौदेगा, परन्तु दाखमध्य पीने न पाएगा। १६ क्योंकि वे ओप्री की विधियों पर, और अहाब के घरने के सब कामों पर चलते हैं; और तुम उनकी युक्तियों के अनुसार चलते हो; इसलिए मैं तुझे उजाड़ दूँगा, और इस नगर के रहनेवालों पर ताली बजवाऊँगा, और तुम मेरी प्रजा की नामधराई सहोगे।

७ हाय मुझ पर! क्योंकि मैं उस जन के समान हो गया हूँ जो धूपकाल के फल लोडने पर, या रही हुई दाख बीनने के समय के अन्त में आ जाए, मुझे तो पक्की अंजीरों की लालसा थी, परन्तु खाने के लिये कोई गुच्छा नहीं रहा। ८ भक्त लोग पृथ्वी पर से नाश हो गए हैं, और मनुष्यों में एक भी सीधा जन नहीं रहा; वे सब के सब हत्या के लिये घात लगाते, और जाल लगाकर अपने-अपने भाई का आहेर करते हैं। ९ वे अपने दोनों हाथों से मन लगाकर बुराई करते हैं; हाकिम धूस पौँगता, और न्यायी धूस लेने को तैयार रहता है, और रईस अपने मन की दुष्टा वर्णन करता है; इसी प्रकार से वे सब मिलकर जालसाजी करते हैं। १० उनमें से जो सबसे उत्तम है, वह कॅटीली झाड़ी के समान दुर्खादाई है, जो सबसे सीधा है, वह कॉटेवाले बांडे से भी भुरा है। तेरे पहसुओं का कहा हुआ दिन, अर्थात् तेरे दण्ड का दिन आ गया है। अब वे शीघ्र भ्रमित हो जाएँगे। ११ मित्र पर विश्वास मत करो, परम मित्र पर भी भरोसा मत रखो; वरन् अपनी अधिगिनी से भी सम्भलकर बोलना। १२ क्योंकि पुत्र पिता का अपमान करता, और बेटी माता के, और बहु सास के विष्टु उठती हैं; मनुष्य के शत्रु उसके घर ही के लोग होते हैं। १३ परन्तु मैं यहोवा की ओर ताकता रहूँगा, मैं अपने उद्वारकर्ता परमेश्वर की बाट जोहता रहूँगा; मेरा परमेश्वर मैं सुनेगा। १४ हे मेरी बैरिन, मुझ पर आनन्द मत कर; क्योंकि ज्यों ही मैं गिसँगा त्यों ही उड़ूँगा; और ज्यों ही मैं अंधकार में पड़ूँगा त्यों ही यहोवा मेरे लिये ज्योति का काम देगा। १५ मैंने यहोवा के विष्टु पाप किया है, इस कारण मैं उस समय तक उसके क्रोध को सहता रहूँगा जब तक कि वह मेरा मुकद्दमा लड़कर मेरा न्याय न चुकाएगा। उस समय वह मुझे उजियाले में निकाल ले उसकी धार्मिकता देखूँगा। १६ तब मेरी बैरिन जो मुझसे यह कहती है कि तेरा परमेश्वर यहोवा कहाँ हरा, वह भी उसे देखेगी और लज्जा से मुँह ढाँपेगी। मैं अपनी आँखों से उसे देखूँगा; तब वह सङ्कों की कीच के समान लताड़ी जाएगी। १७ तेरे बाड़ों के बाँधने के दिन उसकी सीमा बढ़ाई जाएगी। १८ उस दिन अश्शूर से, और मिस्र के नगरों से और मिस्र और महानाट के बीच के, और समुद्र-समुद्र और पहाड़-पहाड़ के बीच के देशों से लोग तेरे पास आएँगे। १९ तो भी यह देश अपने रहनेवालों के कामों के कारण उजाड़ ही रहेगा। २० तू लाठी लिये हुए अपनी प्रजा की चरवाही कर, अर्थात् अपने निज भाग की भेड़-बकरियों की, जो कर्मेल के बन में अलग बैठती हैं; वे पूर्वकाल के समान बाशान और गिलाद में चरा करें। २१ जैसे कि मिस्र देश से तेरे निकल आने के दिनों में, वैसी ही अब मैं उसको अद्वृत काम दिखाऊँगा। २२ अन्यजातियाँ देखकर अपने सारे पराक्रम के विषय में लजाएँगी; वे अपने मुँह को हाथ से छिपाएँगी, और भूमि पर रैगनेवाले जन्तुओं की भाँति अपने बिलों में से काँपती हुई निकलेंगी; वे हमारे परमेश्वर यहोवा के पास थरथराती हुई आएँगी, और वे तुझ से डोरेंगी। २३ तेरे समान ऐसा परमेश्वर कहाँ है जो अधर्म को क्षमा करे और अपने निज भाग के बचे हुओं के अपराध को ढौंप दे? वह अपने क्रोध को सदा बनाए नहीं रहता, क्योंकि वह कस्ता से प्रीति रखता है। २४ वह फिर हम पर दया करेगा, और हमारे अधर्म के कामों को लताड़ डालेगा। २५ उनके सब पापों को गहरे समुद्र में डाल देगा। २६ तू याकूब के विषय में वह सच्चाई, और अब्राहम के विषय में वह कस्ता पूरी

करेगा, जिसकी शपथ तू प्राचीनकाल के दिनों से लेकर अब तक हमारे पितरों से खाता आया है।

नहम

१ नीनवे के विषय में भारी बचन। एल्कोशावासी नहम के दर्शन की पुस्तक।

२ यहोवा जलन रखनेवाला और बदला लेनेवाला प्रभेश्वर है; यहोवा बदला लेनेवाला और जलजलाहट करनेवाला है, यहोवा अपने द्वेषियों से बदला लेता है, और अपने शत्रुओं का पाप नहीं भलता। ३ यहोवा विलम्ब से क्रोध करनेवाला और बड़ा शक्तिमान है, वह दोषी को किसी प्रकार निर्देश न ठहराएगा। यहोवा बबंदर और आँधी में होकर चलता है, और बादल उसके पाँवों की धूल है। ४ उसके घुड़केने से महानद सख जाते हैं, वह सब नदियों को सूखा देता है; बाशन और कर्मल कुम्हलाते और लबानों की हरियाली जाती रहती है। ५ उसके स्पर्श से पहाड़ काँप उठते हैं और पहाड़ियाँ गल जाती हैं; उसके प्रताप से पृथ्वी वरन् सारा संसार अपने सब रहनेवालों समेत थरथरा उठता है। ६ उसके क्रोध का सामना कौन कर सकता है? और जब उसका क्रोध भड़कता है, तब कौन ठहर सकता है? उसकी जलजलाहट आग के समान भड़क जाती है, और चाढ़ने उसकी शक्ति से फट फटकर गिरती है। ७ यहोवा भला है; संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है, और अपने शरणगारों की सुधि रखता है। ८ परन्तु वह उमड़ती हुई धारा से उसके स्थान का अन्त कर देगा, और अपने शत्रुओं को खेड़कर अंधकार में भगा देगा। ९ तुम यहोवा के विद्धु व्या का कल्पना कर सके हो? वह तुम्हारा अन्त कर देगा; विषिति दूसरी बार पड़ने न पाएगी। १० क्योंकि चाहे वे काँटों से उलझे हुए हों, और मदिरा के नशे में चूर भी हों, तो भी वे सर्वी खँटी की समान भस्म किए जाएँगे। ११ तुझे मैं से एक निकला है, जो यहोवा के विद्धु कल्पना करता और नीचता की युक्ति बांधता है। १२ यहोवा यह कहता है, “चाहे वे सब प्रकार से सामर्थी हों, और बहुत भी हों, तो भी पूरी रिति से काटे जाएँगे और शन्य हो जाएँगे। मैंने तुझे दुःख दिया है, परन्तु फिर न दूँगा। १३ क्योंकि अब मैं उसका ज़्यातेरी गर्दन पर से उतारकर तोड़ डालूँगा, और तेरा बन्धन फाड़ डालूँगा।” १४ यहोवा ने तेरे विषय में यह आज्ञा दी है “आगे को तेरा वंश न चले; मैं तेरे देवालयों में से ढली और गढ़ी हुई मूरतों को काट डालूँगा, मैं तेरे लिये कब्र खोदूँगा, क्योंकि तू नीच है।” १५ देखो, पहाड़ों पर शुभ समाचार का सुननेवाला और शान्ति का प्रचार करनेवाला आ रहा है। अब हे यहोवा, अपने पर्व मान, और अपनी मन्त्रे पूरी कर, क्योंकि वह दुष्ट फिर कभी तेरे बीच में होकर न चलेगा, वह पूरी रिति से नष्ट हुआ है।

२ सत्यानाश करनेवाला तेरे विद्धु चढ़ आया है। गढ़ को दृढ़ कर; मार्ग देखता

हुआ चौकस रह; अपनी कमर कस; अपना बल बढ़ा दे। ३ यहोवा याकब की बड़ाई इमारात की बड़ाई के समान ज्यों की त्यों कर रहा है, क्योंकि उजाइनेवालों ने उनको उजाड़ दिया है और दाख की डालियों का नाश किया है। ४ उसके शूर्वीरों की ढालें लाल रंग से रंगी गईं, और उसके योद्धा लाल रंग के बब्ल पहने हुए हैं। तैयारी के दिन रथों का लोहा आग के समान चमकता है, और भाले हिलाए जाते हैं। ५ रथ सड़कों में बहुत वेग से हाँके जाते और चौकों में इधर-उधर चलाए जाते हैं; वे मशालों के समान दिखाई देते हैं, और उनका वेग बिजली का सा है। ६ वह अपने शूर्वीरों को स्मरण करता है; वे चलते-चलते ठोकर खाते हैं, वे शहरपनाह की ओर फुटीं से जाते हैं, और सुरक्षात्मक ढाल तैयार किया जाता है। ७ नहरों के द्वार खुल जाते हैं, और राजभवन गलकर बैठा जाता है। ८ हसेब नंगी करके बँधाई में ले ली जाएगी, और उसकी दासियाँ छाती पीटी हुई पिण्डुकों के समान विलाप करेंगी। ९ नीनवे जब से बनी है, तब से तालाब के समान है, तो भी वे भागे

जाते हैं, और “खड़े हो; खड़े हो”, ऐसा पुकारे जाने पर भी कोई मँह नहीं मोड़ता। १० चाँदी को लटो, सोने को लटो, उसके रखे हुए धन की बहतायत, और वैभव की सब प्रकार की मनभावनी सामग्री का कुछ परिमाण नहीं। ११ वह खाली, छूटी और सूनी हो गई है! मन कच्चा हो गया, और पाँव काँपते हैं, और उन सभी की कमर में बड़ी पीड़ा उठी, और सभी के मुख का रंग उड़ गया है। १२ सिंहों की वह माँट, और जवान सिंह के आखेट का वह स्थान कहाँ रहा जिसमें सिंह और सिंहनी अपने बच्चों समेत बेखटके फिरते थे? १३ सिंह तो अपने बच्चों के लिये बहुत आहर को फाड़ता था, और अपनी सिंहनियों के लिये आहेर का गला घोट घोटकर ले जाता था, और अपनी गुफाओं और माँटों को आहेर से भर लेता था। १४ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, मैं तेरे विद्धु हूँ, और उसके रथों को भस्म करके धुएँ में उड़ा दूँगा, और उसके जवान सिंह सरीखे वीर तलवार से मारे जाएँगे; मैं तेरे आहेर को पृथ्वी पर से नष्ट करूँगा, और तेरे दूतों का बोल फिर सुना न जाएगा।

३ हाय उस हत्यारी नगरी पर, वह तो छल और लट के धन से भरी हुई है; लट कम नहीं होती है। ४ कोडों की फटकार और पहियों की घडघडाहट हो रही है; घोड़े कूटते-फाँदते और रथ उछलते चलते हैं। ५ सवार चढ़ाई करते, तलवारे और भाले बिजली के समान चमकते हैं, मारे हुएं की बहतायत और शर्वों का बड़ा ढेर है, मुर्दों की कुछ गिनती नहीं, लोग मुर्दों से थोकर खा खाकर चलते हैं। ६ यह सब उस अति सुन्दर वेश्या, और निषुण टोनिहिन के छिनाले की बहतायत के कारण हुआ, जो छिनाले के द्वारा जाति-जाति के लोगों को, और टोने के द्वारा कुल-कुल के लोगों को बेच डालती है। ७ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, देख, मैं तेरे विद्धु हूँ, और तेरे वन्धु को उठाकर, तेजे जाति-जाति के सामने नंगी और राज्य-राज्य के सामने नीचा दिखाऊँगा। ८ मैं तुझ पर घिनौनी वस्तुएँ फेंककर तुझे तुच्छ कर दूँगा, और सबसे तेरी हँसी कराऊँगा। ९ और जितने तुझे देखेंगे, सब तेरे पास से भागकर कहेंगे, नीने नाश हो गईं; कौन उसके कारण विलाप करे? हम उसके लिये शान्ति देनेवाला कहाँ से ढूँढ़कर ले आएँ। १० क्या तू अमोन नगरी से बढ़कर है, जो नहरों के बीच बसी थी, और उसके चारों ओर जल था, और महानद उसके लिये किला और शहरपनाह का काम देता था? ११ कूश और मिसी उसको अनगिनत बल देते थे, पूर और लूबी तेरे सहायक थे। १२ तो भी लोग उसको बँधवाई में ले गए, और उसके नन्हे बच्चे सड़कों के सिरे पर पटक दिए गए; और उसके प्रतिष्ठित पुरुषों के लिये उन्होंने चिशी डाली, और उसके सब रईस बेड़ियों से जकड़े गए। १३ तू भी मतवाली होगी, तू धब्बा जाएगी; तू भी शत्रु के डर के शरण का स्थान ढूँढ़ेगी। १४ तेरे सब गढ़ ऐसे अंजीर के वृक्षों के समान होंगे जिनमें पहले पक्के अंजीर लगे हों, यदि वे हिलाए जाएँ तो फल खानेवाले के मुँह में गिरेंगे। १५ देख, तेरे लोग जो तेरे बीच में हैं, वे स्थियों बन गये हैं। तेरे देश में प्रवेश करने के मार्ग तेरे शूर्वीरों के लिये बिलकुल खुले पड़े हैं; और स्कावट की छड़े आग का कौर हो गई है। १६ यिर जाने के दिनों के लिये पानी भर ले, और गढ़ों को अधिक दृढ़ कर; कीचड़ में आकर गारा लताड़, और भेटे को सजाइ। १७ वहाँ तू अग में भस्म होगी, और तलवार से तू नष्ट हो जाएगी। वह येलेक नाम टिड़ी के समान तुझे निगल जाएगी। यद्यपि तू अर्बे नाम्पक टिड़ी के समान अनगिनत भी हो जाए। १८ तेरे यापारी आकाश के तारागण से भी अधिक अनगिनत है। टिड़ी चट करके उड़ जाती है। १९ तेरे मुकुटधारी लोग टिड़ियों के समान, और तेरे सेनापति टिड़ियों के दलों सरीखे ठहरेंगे जो जाड़े के दिन में बाड़ों पर टिकते हैं, परन्तु जब सूर्य दिखाई देता है तब भग जाते हैं, और कोई नहीं जानता कि वे कहाँ गए। २० हे अश्शूर के राजा, तेरे ठहराए हुए चरवाहे ऊँघते हैं; तेरे शूर्वीर भारी नीद में

पड़ गए हैं। तेरी प्रजा पहाड़ों पर तितर-बितर हो गई है, और कोई उनको फिर इकट्ठा नहीं करता। १९ तेरा घाव न भर सकेगा, तेरा रोग असाध्य है। जितने तेरा समाचार सुनेंगे, वे तेरे ऊपर ताली बजाएँगे। क्योंकि ऐसा कौन है जिस पर तेरी लगातार दुष्टा का प्रभाव न पड़ा हो?

हबक्कूक

१ भारी वचन जिसको हबक्कूक नवी ने दर्शन में पाया। २ हे यहोवा मैं कब तक तेरी दुहाई देता रहँगा, और तू न सुनेगा? मैं कब तक तेरे सम्मुख “उपद्रव”, “उपद्रव” चिल्लता रहँगा? क्या तू उड़ार नहीं करेगा? ३ तू मुझे अनर्थ काम क्यों दिखाता है? और क्या कारण है कि तू उत्पात को देखता ही रहता है? मेरे सामने लूट-पाट और उपद्रव होते रहते हैं, और झगड़ा हुआ करता है और वाद-विवाद बढ़ता जाता है। ४ इसलिए व्यवस्था ढीली हो गई और न्याय का खून हो रहा है। ५ जाति-जाति की ओर चित्त लगाकर देखो, और बहुत ही चकित हो। क्योंकि मैं तुम्हारे ही दिनों में ऐसा काम करने पर हूँ कि जब वह तुम को बताया जाए तो तुम उस पर विश्वास न करोगे। ६ देखो, मैं कसदियों को उभारने पर हूँ, वे कूर और उतावली करनेवाली जाति है, जो पराए वास्थानों के अधिकारी होने के लिये पृथ्वी भर में फैल गए हैं। ७ वे भयानक और डरावने हैं, वे आप ही अपने न्याय की बड़ाई और प्रशंसा का कारण हैं। ८ उनके घोड़ चीरों से भी अधिक वेग से चलनेवाले हैं, और सौंदर्य को आहेर करनेवाले भेड़ियों से भी अधिक कूर हैं; उनके सवार दूर-दूर कूदते-फाँदते आते हैं। हाँ, वे दूर से चले आते हैं; और आहेर पर झापटनेवाले उकाब के समान झपटा मारते हैं। ९ वे सब के सब उपद्रव करने के लिये आते हैं, सामने की ओर मुख किए हुए वे सीधे बढ़े चले जाते हैं, और बंधुओं को रोते के किनकों के समान बटोरते हैं। १० राजाओं को वे उपहास में उड़ाते और हाकिमों का उपहास करते हैं; वे सब दूर गढ़ों को तुच्छ जानते हैं, क्योंकि वे दमदमा बाँधकर उनको जीत लेते हैं। ११ तब वे बायु के समान चलते और मर्यादा छोड़कर दोषी ठहरते हैं, क्योंकि उनका बल ही उनका देवता है। १२ हे मेरे प्रभु यहोवा, हे मेरे पवित्र परमेश्वर, क्या तू अनादिकाल से नहीं है? इस कारण हम लोग नहीं मरने के। हे यहोवा, तू उनको न्याय करने के लिये ठहराया है; हे चटान, तू उलाहना देने के लिये उनको बैठाया है। १३ तेरी आँखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई की देख ही नहीं सकता, और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता; फिर तू विवासधारियों को क्यों देखता रहता, और जब दुष्ट निर्देष को निगल जाता है, तब तू क्यों चुप रहता है? १४ तू क्यों मनुष्यों को समुद्र की मछलियों के समान और उन रेंगनेवाले जन्तुओं के समान बनाता है जिन पर कोई शासन करनेवाला नहीं है। १५ वह उन सब मनुष्यों को बर्सी से पकड़कर उठा लेता और जाल में घसीटता और महाजाल में फँसा लेता है; इस कारण वह आनन्दित और मग्न है। १६ इसी लिए वह अपने जाल के सामने बलि चढ़ाता और अपने महाजाल के आगे धूप जलाता है; क्योंकि इन्हीं के द्वारा उसका भाग पृष्ठ होता, और उसका भोजन चिकना होता है। १७ क्या वह जात को खाली करने और जाति-जाति के लोगों को लगातार निर्दयता से घात करने से हाथ न रोकेगा?

२ मैं अपने पहरे पर खड़ा रहँगा, और गुम्मट पर चढ़कर ठहरा रहँगा, और ताकता रहँगा कि मुझसे वह क्या कहेगा? मैं अपने दिए हुए उलाहने के विषय में क्या उत्तर दूँ? ३ फिर यहोवा ने मुझसे कहा, “दर्शन की बातें लिख दें; बरन पटियाओं पर साफ-साफ लिख दें कि दौड़ाते हुए भी वे सहज से पक्की जाएँ। ४ क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय में पूरी होनेवाली है, बरन इसके पूरे होने का समय वेग से आता है; इसमें धोखा न होगा। चाहे इसमें विलम्ब भी हो, तो भी उसकी बात जोहते रहना; क्योंकि वह निश्चय पूरी होगी और उसमें देर न होगी। ५ देख, उसका मन फूला हुआ है, उसका मन

सीधा नहीं है; परन्तु धर्मी अपने विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा। ६ दाखमधु से धोखा होता है; अहंकारी पुस्त घर में नहीं रहता, और उसकी लालसा अधोलोक के समान पूरी नहीं होती, और मृत्यु के समान उसका पेट नहीं भरता। वह सब जातियों को अपने पास खींच लेता, और सब देशों के लोगों को अपने पास इकट्ठे कर रखता है।” (Sheol H7585) ७ क्या वे सब उसका दृश्यन चलाकर, और उस पर ताना मारकर न कहेंगे “हाय उस पर जो पराया धन छीन छीनकर धनवान हो जाता है? कब तक? हाय उस पर जो अपना घर बन्धक की वस्तुओं से भर लेता है!” ८ जो तुम्हा से कर्ज लेते हैं, क्या वे लोग अचानक न उड़ेंगे? और क्या वे न जांगों जो तुझको संकट में डालेंगे? ९ और क्या तू उनसे लटा न जाएगा? तुमें बहुत सी जातियों को लट लिया है, इसलिए सब बचे हुए लोग तुम्हीं भी लट लेंगे। इसका कारण मनुष्यों की हत्या है, और वह उपद्रव भी जो तू तेरे इस देश और राजधानी और इसके सब रहनेवालों पर किया है। १० हाय उस पर, जो अपने घर के लिये अन्याय के लाभ का लोभी है ताकि वह अपना घोंसला ऊँचे स्थान में बनाकर विपत्ति से बचे। ११ तूने बहुत सी जातियों को काटकर अपने घर के लिये लज्जा की युक्ति बाँधी, और अपने ही प्राण का दोषी ठहरा है। १२ क्योंकि घर की दीवार का पत्थर दुहाई देता है, और उसके छत की कड़ी उनके स्वर में स्वर मिलाकर उत्तर देती है। १३ हाय उस पर जो हत्या करके नगर को बनाता, और कटिलता करके शहर को ढूढ़ करता है। १४ देखो, क्या सेनाओं के यहोवा की ओर से यह नहीं होता कि देश-देश के लोग परिश्रम तो करते हैं परन्तु वे आग का कौर होते हैं; और राज्य-राज्य के लोगों का परिश्रम व्यर्थ ही ठहरता है? १५ क्योंकि पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भर जाता है। १६ हाय उस पर, जो अपने पड़ोसी को मारिया पिलाता, और उसमें विष मिलाकर उसको मतवाला कर देता है कि उसको नंगा देखे। १७ तू महिमा के बदले अपमान ही से भर गया है। तू भी पी, और अपने को खतनाहीन प्रगट कर! जो कटोरा यहोवा के दाहिने हाथ में रहता है, वह धूमकर तेरी ओर भी जाएगा, और तेरा वैभव तेरी छाँट से अशुद्ध हो जाएगा। १८ क्योंकि लबानोन में तेरा किया हुआ उपद्रव और वहाँ के जंगली पशुओं पर तेरा किया हुआ उत्पात, जिनसे वे भयानी हो गए थे, तुम्हीं पर आ पड़ेंगे। यह मनुष्यों की हत्या और उस उपद्रव के कारण होगा, जो इस देश और राजधानी और इसके सब रहनेवालों पर किया गया है। १९ खुदी हुई मूरत में क्या लाभ देखकर बनानेवाले ने उसे खोदा है? फिर झूठ सिखनेवाली और ढली हुई मूरत में क्या लाभ देखकर ढालनेवाले ने उस पर इतना भरोसा रखा है कि न बोलनेवाली और निकम्मी मूरत बनाए? २० हाय उस पर जो काठ से कहता है, जाग, अबोल पत्थर से, उठ! क्या वह सिखाएगा? देखो, वह सोने चौंदी में मढ़ा हुआ है, परन्तु उसमें जीवन नहीं है। २१ परन्तु यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है; समस्त पृथ्वी उसके सामने शान्त रहे।

३ शिश्योनीति की रीति पर हबक्कूक नवी की प्रार्थना। २ हे यहोवा, मैं तेरी कीर्ति सुनकर डर गया। हे यहोवा, वर्तमान युग में अपने काम को पूरा कर; इसी युग में तू उसको प्रगट कर; क्रोध करते हुए भी दया करना स्मरण कर। ३ परमेश्वर तेमान से आया, पवित्र परमेश्वर पारान पर्वत से आ रहा है। (सेला) उसका तेज आकाश पर छाया हुआ है, और पृथ्वी उसकी स्तुति से परिपूर्ण हो गई है। ४ उसकी ज्योति सूर्य के तृत्य थी, उसके हाथ से किरणें निकल रही थीं; और इनमें उसका सामर्थ्य छिपा हुआ था। ५ उसके आगे-आगे मरी फैलती गई, और उसके पाँवों से महाज्वर निकलता गया। ६ वह खड़ा होकर पृथ्वी को नाप रहा था; उसने देखा और जाति-जाति के लोग घबरा गए; तब सनातन पर्वत चकनाचूर हो गए, और सनातन की पहाड़ियाँ झुक गईं उसकी

गति अनन्तकाल से एक सी है। ७ मुझे कृशान के तम्बू में रहनेवाले दुःख से दबे दिखाई पड़े; और मिथान देश के डेरे डगमगा गए। ८ है यहोवा, क्या तू नदियों पर रिसियाया था? क्या तेरा क्रोध नदियों पर भड़का था, अथवा क्या तेरी जलजलाहट समुद्र पर भड़की थी, जब तू अपने घोड़ों पर और उद्धार करनेवाले विजयी रथों पर चढ़कर आ रहा था? ९ तेरा धनुष खोल में से निकल गया, तेरे दण्ड का बचन शपथ के साथ हुआ था। (सेला) तूने धरती को नदियों से चीर डाला। १० पहाड़ तुझे देखकर काँप उठे; आँधी और जल-प्रलय निकल गए; गहरा सागर बोल उठा और अपने हाथों अर्थात् लहरों को ऊपर उठाया। ११ तेरे उड़नेवाले तीरों के चलने की ज्योति से, और तेरे चमकीले भाले की झलक के प्रकाश से सर्व और चन्द्रमा अपने-अपने स्थान पर ठहर गए। १२ तू क्रोध में आकर पृथ्वी पर चल निकला, तूने जाति-जाति को क्रोध से नाश किया। १३ तू अपनी प्रजा के उद्धार के लिये निकला, हाँ, अपने अभिषिक्त के संग होकर उद्धार के लिये निकला। तूने दुष्ट के घर के सिर को कुचलकर उसे गले से नीच तक नंगा कर दिया। (सेला) १४ तूने उसके घोटाले के सिरों को उसी की बछी से छेदा है, वे मुझ को तितर-बितर करने के लिये बवंडर की आँधी के समान आए, और दीन लोगों को घात लगाकर मार डालने की आशा से आनन्दित थे। १५ तू अपने घोड़ों पर सवार होकर समुद्र से हाँ, जल-प्रलय से पार हो गया। १६ यह सब सुनते ही मेरा कलेजा काँप उठा, मेरे हौंठ थरथराने लगे; मेरी हड्डियाँ सङ्गे लगी, और मैं खड़े-खड़े काँपने लगा। मैं शान्ति से उस दिन की बाट जोहता रहूँगा जब दल बाँधकर प्रजा चढ़ाई करे। १७ क्योंकि चाहे अंजीर के वृक्षों में फूल न लगें, और न दाखलताओं में फल लगें, जैतून के वृक्ष से केवल धोखा पाया जाए और खेतों में अन्न न उपजे, भेड़शालाओं में भेड़-बकरियाँ न रहें, और न थानों में गाय बैल हों, १८ तो भी मैं यहोवा के कारण आनन्दित और मगन रहूँगा, और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न रहूँगा १९ यहोवा परमेश्वर मेरा बलमल है, वह मेरे पाँव हिरनों के समान बना देता है, वह मुझ को मेरे ऊँचे स्थानों पर चलाता है।

सपन्याह

१ आमोन के पुत्र यहदा के राजा योशियाह के दिनों में, सपन्याह के पास

जो हिजकियाह के पुत्र अमर्याह का परपोता और गदल्याह का पोता और कृशी का पुत्र था, यहोवा का यह वचन पहुँचा २ “मैं धरती के ऊपर से सब का अन्त कर दूँगा,” यहोवा की यही वाणी है। ३ “मैं मनुष्य और पशु दोनों का अन्त कर दूँगा; मैं आकाश के पक्षियों और समुद्र की मछलियों का, और दुरु समेत उनकी रखी हुई ठोकरों के कारण का भी अन्त कर दूँगा; मैं मनुष्यजाति को भी धरती पर से नाश कर डालूँगा,” यहोवा की यही वाणी है। ४ “मैं यहदा पर और यस्तालेम के सब रहनेवालों पर हाथ उठाऊँगा, और इस स्थान में बाल के बचे हुओं को और याजकों समेत देवताओं के पुजारियों के नाम को नाश कर दूँगा। ५ जो लोग अपने-अपने घर की छत पर आकाश के गण को दण्डवत् करते हैं, और जो लोग दण्डवत् करते और यहोवा की शपथ खाते हैं और मिल्कोम की भी शपथ खाते हैं; ६ और जो यहोवा के पीछे चलने से लौट गए हैं, और जिन्होंने न तो यहोवा को ढूँढ़ा, और न उसकी खोज में लगे, उनको भी मैं सत्यानाश कर डालूँगा।” ७ परमेश्वर यहोवा के सामने शान्त रहो! क्योंकि यहोवा का दिन निकट है; यहोवा ने यज्ञ स्थिर किया है, और अपने पाहनों को पवित्र किया है। ८ और यहोवा के यज्ञ के दिन, ‘‘मैं हाकिमों और राजकुमारों को और जितने परदेश के बच पहना करते हैं, उनको भी दण्ड दूँगा। ९ उस दिन मैं उन सभी को दण्ड दूँगा जो डेवडी को लाँघते, और अपने स्वामी के घर को उपद्रव और छल से भर देते हैं।” १० यहोवा की यह वाणी है, “उस दिन मछली फाटक के पास चिल्लाहट का और नये टोले मिश्राह में हाहाकार का और टीलों पर बड़े धमाके का शब्द होगा। ११ हे मत्क्षेत्र के रहनेवालों, हाय, हाय, करो! क्योंकि सब व्यापारी मिट गए; जितने चाँदी से लदे थे, उन सब का नाश हो गया है। १२ उस समय मैं दीपक लिए हुए यस्तालेम में ढूँढ़-ढूँढ़ करूँगा, और जो लोग दाखमधु के तलाश्ट तथा मैले के समान बैठे हुए मन में कहते हैं कि यहोवा न तो भला करेगा और न बुरा, उनको मैं दण्ड दूँगा। १३ तब उनकी धन-सम्पत्ति लट्टी जाएगी, और उनके घर उजाड़ होंगे; वे घर तो बनाएँगे, परन्तु उनमें रहने न पाएँगे, और वे दाख की बारियों लगाएँगे, परन्तु उनसे दाखमधु न पीने पाएँगे।” १४ यहोवा का भयानक दिन निकट है, वह बहुत वेग से समीप चला आता है; यहोवा के दिन का शब्द सुन पड़ता है, वहाँ वीर दुःख के मारे चिल्लाता है। १५ वह रोष का दिन होगा, वह संकट और सकेती का दिन वह उजाड़ और विनाश का दिन, वह अधेर और घोर अंधकार का दिन वह बादल और काली घटा का दिन होगा। १६ वह गढ़वाले नगरों और ऊँचे गुम्फों के विस्तुर मरसिंगा फँकने और ललकारने का दिन होगा। १७ मैं मनुष्यों को सकट में डालूँगा, और वे अंधों के समान चलेंगे, क्योंकि उन्होंने यहोवा के विस्तुर पाप किया है; उनका लह धूलि के समान, और उनका मौस विषा के समान फैक दिया जाएगा। १८ यहोवा के रोष के दिन में, न तो चाँदी से उनका बचाव होगा, और न सोने से; क्योंकि उसके जलन की आग से सारी पृथ्वी भस्म हो जाएगी; वह पृथ्वी के सारे रहनेवालों को घबराकर उनका अन्त कर डालेगा।

२ हे निर्लज्ज जाति के लोगों, इकट्ठे हो! ३ इससे पहले कि दण्ड की आज्ञा

पूरी हो और बचाव का दिन भूमि के समान निकले, और यहोवा का भड़कता हुआ क्रोध तम पर आ पड़े, और यहोवा के क्रोध का दिन तम पर आए, तम इकट्ठे हो। ४ हे पृथ्वी के सब नम लोगों, हे यहोवा के नियम के माननेवालों, उसको ढूँढ़ते रहो; धार्मिकता से ढूँढ़ो; नम्रता से ढूँढ़ो; सम्भव है

तुम यहोवा के क्रोध के दिन में शरण पाओ। ५ क्योंकि गाज़ा तो निर्जन और अशक्लोन उजाड हो जाएगा; अशदोद के निवासी दिन दुपहरी निकाल दिए जाएँगे, और एकोन उखाड़ा जाएगा। ६ समुद्र तट के रहनेवालों पर हाय; करेती जाति पर हाय; हे कनान, हे पलिशियों के देश, यहोवा का वचन तेरे विस्तु है; और मैं तुझको ऐसा नाश करूँगा कि तुझ में कोई न बचेगा। ७ और उसी समुद्र तट पर चरवाहों के घर होंगे और भेदशालाओं समेत चाराई ही चाराई होगी। ८ अर्थात् वही समुद्र तट यहदा के घराने के बचे हुओं को मिलेगा, वे उस पर चराएँगे; वे अशक्लोन के छोड़े हुए घरों में साँझ को लेंगे, क्योंकि उनका परमेश्वर यहोवा उनकी सधि लेकर उनकी समृद्धि को लौटा लाएगा। ९ “मोआब ने जो मेरी प्रजा की नामधाराई और अमोनियों ने जो उसकी निन्दा करके उसके देश की सीमा पर चढ़ाई की, वह मेरे कानों तक पहुँची है।” १० इस कारण इस्माइल के परमेश्वर, सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, “मेरे जीवन की शपथ, निश्चय मोआब सदोम के समान, और अमोनी गमोरा के समान बिच्छु पेड़ों के स्थान और नमक की खानियाँ हो जाएँगी, और सदैव उजडे रहेंगे। मेरी प्रजा के बचे हुए उनको लटेंगे, और मेरी जाति के शेष लोग उनको अपने भाग में पाएँगे।” ११ यह उनके गर्व का बदला होगा, क्योंकि उन्होंने सेनाओं के यहोवा की प्रजा की नामधाराई की, और उस पर बड़ाई मारी है। १२ यहोवा उनको डरावना दिखाई देगा, वह पृथ्वी भर के देवताओं को भूखा मार डालेगा, और जाति-जाति के सब ट्रीपों के निवासी अपने-अपने स्थान से उसको दण्डवत् करेंगे। १३ हे कृशियों, तुम भी मेरी तलवार से मारे जाओगे। १४ वह अपना हाथ उत्तर दिशा की ओर बढ़ाकर अश्शरू को नाश करेगा, और नीनवे को उजाड़ कर जंगल के समान निर्जल कर देगा। १५ उसके बीच में सब जाति के वन पशु झांड के झांड बैठेंगे; उसके खम्भों की कँगनियों पर धेनेसा और साही दोनों रात को बसेरा करेंगे और उसकी खिड़कियों में बोता करेंगे; उसकी डेवडियाँ सूरी पड़ी रहेंगी, और देवदार की लकड़ी उधाड़ी जाएगी। १६ यह वीही नगरी है, जो मान रही और निर बैठी रहती थी, और सोचती थी कि मैं ही हूँ, और मुझे छोड़ कोई है ही नहीं। परन्तु अब यह उजाड़ और वन-पशुओं के बैठने का स्थान बन गया है, यहाँ तक कि जो कोई इसके पास होकर चले, वह ताली बजाएगा और हाथ हिलाएगा।

३ हाय बलवा करनेवाली और अशदू और अंधेर से भरी हुई नगरी! ४ उसने

मेरी नहीं सुनी, उसने ताङना से भी नहीं माना, उसने यहोवा पर भरोसा नहीं रखा, वह अपने परमेश्वर के समीप नहीं आई। ५ उसके हाकिम गरजनेवाले सिंह ठहरे; उसके न्यायी साँझ को आहेर करनेवाले भेड़िए हैं जो सर्वे के लिये कुछ नहीं छोड़ते। ६ उसके भविष्यद्वत्का व्यर्थ बकनेवाले और विवासधारी हैं, उसके याजकों ने पवित्रस्थान को अशदू किया और व्यवस्था में खीच-खांच की है। ७ यहोवा जो उसके बीच में है, वह धर्मी है, वह कुटिलता न करेगा; वह अपना न्याय प्रति भोग प्रगट करता है और चक्रता नहीं; परन्तु कुटिल जन को लज्जा आती ही नहीं। ८ मैंने अन्यजातियों को यहाँ तक नाश किया, कि उनके कोनेवाले गुम्फ उजड़ गए, मैंने उनकी सड़कों को यहाँ तक सूरी किया, कि कोई उन पर नहीं चलता; उनके नगर यहाँ तक नाश हुए कि उनमें कोई मनुष्य बरन कोई भी प्राणी नहीं रहा। ९ मैंने कहा, “अब तू मेरा भय मानेगी, और मेरी ताङना अंधिकार करेगी जिससे उसका निवास-स्थान उस सब के अनुसार जो मैंने ठहराया था, नष्ट न हो। परन्तु वे सब प्रकार के बुरे-बुरे काम यत्र से करने लगे।” १० इस कारण यहोवा की यह वाणी है, “जब तक मैं नाश करने को न उठूँ, तब तक तुम मेरी बाट जोहते रहो। मैंने यह ठाना है कि जाति-जाति के और राज्य-राज्य के लोगों को मैं इकट्ठा करूँ, कि उन

पर अपने क्रोध की आग पूरी रीति से भड़काऊँ; क्योंकि सारी पृथ्वी मेरी जलन की आग से भस्म हो जाएगी। ९ “उस समय मैं देश-देश के लोगों से एक नई और शुद्ध भाषा बुलवाऊँगा, कि वे सब के सब यहोवा से प्रार्थना करें, और एक मन से कंधे से कंधा मिलाए हुए उसकी सेवा करें। १० कृष के नदी के पार से मुझसे विनती करनेवाले यहाँ तक कि मेरी तितर-बितर की हुई प्रजा मेरे पास भेट लेकर आएँगी। ११ “उस दिन, तू अपने सब बड़े से बड़े कामों से जिहें करके तू मुझसे फिर गई थी, फिर लाजित न होगी। उस समय मैं तेरे बीच से उहें दूर करूँगा जो अपने अहंकार में आनन्द करते हैं, और त मेरे पवित्र पर्वत पर फिर कभी अभियान न करेंगी। १२ क्योंकि मैं तेरे बीच में दीन और कंगाल लोगों का एक दल बचा रखूँगा, और वे यहोवा के नाम की शरण लेंगे। १३ इसाएल के बचे हुए लोग न तो कुटिलता करेंगे और न झूठ बोलेंगे, और न उनके मुँह से छला की बातें निकलेंगी। वे चरेंगे और विश्वास करेंगे, और कोई उनको डरानेवाला न होगा।” १४ हे सिय्योन की बेटी, ऊँचे स्वर से गा; हे इसाएल, जयजयकार कर! हे यस्शलेम अपने सम्पूर्ण मन से आनन्द कर, और प्रसन्न हो! १५ यहोवा ने तेरा दण्ड दूर कर दिया और तेरे शत्रुओं को दूर कर दिया है। इसाएल का राजा यहोवा तेरे बीच में है, इसलिए तू फिर विपत्ति न भोगेगी। १६ उस दिन यस्शलेम से यह कहा जाएगा, “हे सिय्योन मत डर, तेरे हाथ ढीले न पड़ने पाएँ। १७ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में प्राक्रमी है; वह तेरे कारण आनन्द से मग्न होगा, वह अपने प्रेम के मारे चुप रहेगा; फिर ऊँचे स्वर से गाता हआ तेरे कारण मग्न होगा। १८ “जो लोग नियत पर्वों में सम्मिलित न होने के कारण खेदित रहते हैं, उनको मैं इकट्ठा करूँगा, क्योंकि वे तेरे हैं; और उसकी नामधाराई उनको बोझ जान पड़ती है। १९ उस समय मैं उन सभी से जो तुझे दुःख देते हैं, उचित बर्ताव करूँगा। और मैं लॅंगडों को चंगा करूँगा, और बरबस निकाले हुओं को इकट्ठा करूँगा, और जिनकी लज्जा की चर्चा सारी पृथ्वी पर फैली है, उनकी प्रशंसा और कीर्ति सब कही फैलाऊँगा। २० उसी समय मैं तुम्हें ले जाऊँगा, और उसी समय मैं तुम्हें इकट्ठा करूँगा; और जब मैं तुम्हारे सामने तुम्हारी समृद्धि को लौटा लाऊँगा, तब पृथ्वी की सारी जातियों के बीच में तुम्हारी कीर्ति और प्रशंसा फैलता दूँगा,” यहोवा का यही वचन है।

हागै

१ दारा राजा के राज्य के दूसरे वर्ष के छठवें महीने के पहले दिन, यहोवा का

यह वचन, हागै भविष्यद्वक्ता के द्वारा, शालतीएल के पुत्र जस्बाबेल के पास, जो यहोवा का अधिपति था, और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक के पास पहुँचा २ “सेनाओं का यहोवा यह कहता है, ये लोग कहते हैं कि यहोवा का भवन बनाने का समय नहीं आया है।” ३ फिर यहोवा का यह वचन हागै भविष्यद्वक्ता के द्वारा पहुँचा, ४ “क्या तुम्हारे लिये अपने छतवाले घरों में रहने का समय है, जबकि यह भवन उजाड़ पड़ा है? ५ इसलिए अब सेनाओं का यहोवा यह कहता है, अपने-अपने चाल-चलन पर ध्यान करो। ६ तुम ने बहुत बोया परन्तु थोड़ा काटा; तुम खते हो, परन्तु पेट नहीं भरता; तुम पीते हो, परन्तु प्यास नहीं बढ़ती; तुम कपड़े पहनते हो, परन्तु गरमाते नहीं; और जो मजदूरी कमाता है, वह अपनी मजदूरी की कमाई को छेदवाली थेली में रखता है। ७ “सेनाओं का यहोवा तुम से यह कहता है, अपने-अपने चाल चलन पर सोचो। ८ पहाड़ पर चढ़ जाओ और लकड़ी ले आओ और इस भवन को बनाओ; और मैं उसको देखकर प्रसन्न होऊँगा, और मेरी महिमा होगी, यहोवा का यही वचन है। ९ तुम ने बहुत उपज की आशा रखी, परन्तु देखो थोड़ी ही है; और जब तुम उसे घर ले आए, तब मैंने उसको उड़ा दिया। सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, ऐसा क्यों हुआ? क्या इसलिए नहीं, कि मेरा भवन उजाड़ पड़ा है और तुम मैं से प्रत्येक अपने-अपने घर को टैड़ा चला जाता है? १० इस कारण आकाश से ओस गिरना और पृथ्वी से अनन्त उपजना दोनों बन्द हैं। ११ और मेरी आज्ञा से पृथ्वी और पहाड़ों पर, और अन्न और नये दाखमधू पर और ताजे तेल पर, और जो कुछ भूमि से उपजता है उस पर, और मनुष्यों और धरेलू पशुओं पर, और उनके परिश्रम की सारी कमाई पर भी अकाल पड़ा है।” १२ तब शालतीएल के पुत्र जस्बाबेल और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक ने सब बचे हुए लोगों समेत अपने परमेवर यहोवा की बात मानी; और जो वचन उनके परमेवर यहोवा ने उनसे कहने के लिये हागै भविष्यद्वक्ता को भेज दिया था, उसे उन्होंने मान लिया; और लोगों ने यहोवा का भय माना। १३ तब यहोवा के दूत हागै ने यहोवा से आज्ञा पाकर उन लोगों से यह कहा, “यहोवा की यह वाणी है, मैं तुम्हारे संग हूँ।” १४ और यहोवा ने शालतीएल के पुत्र जस्बाबेल को जो यहदा का अधिपति था, और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक को, और सब बचे हुए लोगों के मन को उभारकर उत्साह से भर दिया कि वे आकर अपने परमेवर, सेनाओं के यहोवा के भवन को बनाने में लग गए। १५ यह दारा राजा के राज्य के दूसरे वर्ष के छठवें महीने के चौबीसवें दिन हुआ।

२ फिर सातवें महीने के इक्कीसवें दिन को यहोवा का यह वचन हागै

भविष्यद्वक्ता के पास पहुँचा, ३ “शालतीएल के पुत्र यहदा के अधिपति जस्बाबेल, और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक और सब बचे हुए लोगों से यह बात कह, ४ ‘तुम मैं से कौन है, जिसने इस भवन की पहली महिमा देखी है? अब तुम इसे कैसी दशा में देखते हो? क्या यह सच नहीं कि यह तुम्हारी दृष्टि में उस पहले की अपेक्षा कुछ भी अच्छा नहीं है? ५ तो भी, अब यहोवा की यह वाणी है, हे जस्बाबेल, हियाव बाँध; और हे यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक, हियाव बाँध; और यहोवा की यह भी वाणी है कि हे देश के सब लोगों हियाव बाँधकर काम करो, क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूँ, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। ६ तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय जो बाचा मैंने तुम से बाँधी थी, उसी बाचा के अनुसार मेरा आत्मा तुम्हारे बीच में बना है;

इसलिए तुम मत डरो। ७ क्योंकि सेनाओं का यहोवा यह कहता है, अब थोड़ी ही देर बाकी है कि मैं आकाश और पृथ्वी और समुद्र और स्थल सब को कँपित करूँगा। ८ और मैं सारी जातियों को हिलाऊँगा, और सारी जातियों की मनवानी बस्तुएँ आएँगी; और मैं इस भवन को अपनी महिमा के तेज से भर दूँगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। ९ चाँदी तो मेरी है, और सोना भी मेरा ही है, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। १० इस भवन की पिछली महिमा इसकी पहली महिमा से बड़ी होगी, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है, और इस स्थान में मैं शान्ति दृग्मा, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।” ११ दारा के राज्य के दूसरे वर्ष के नौवें महीने के चौबीसवें दिन को, यहोवा का यह वचन हागै भविष्यद्वक्ता के पास पहुँचा, १२ “सेनाओं का यहोवा यह कहता है: याजकों से इस बात की व्यवस्था पूछ, १३ ‘यदि कोई अपने बच्चे के आँचल में पवित्र माँस बाँधकर, उसी आँचल से रोटी या पकाए हए भोजन या दाखमधू या तेल या किसी प्रकार के भोजन को छूए, तो क्या वह भोजन पवित्र ठहरेगा?’” याजकों ने उत्तर दिया, “नहीं।” १४ फिर हागै ने पूछा, “यदि कोई जन मनुष्य की लोधि के कारण अशुद्ध होकर ऐसी किसी वस्तु को छैए, तो क्या वह अशुद्ध ठहरेगी?” याजकों ने उत्तर दिया, “हाँ अशुद्ध ठहरेगी।” १५ फिर हागै ने कहा, “यहोवा की यही वाणी है, कि मेरी दृष्टि में वह प्रजा और यह जाति वैसी ही है, और इनके सब काम भी वैसे हैं; और जो कुछ वे वहाँ चढ़ाते हैं, वह भी अशुद्ध है; १६ “अब सोच-विचार करो कि आज से पहले अर्थात् जब यहोवा के मन्दिर में पत्थर पर पत्थर रखा ही नहीं गया था, १७ उन दिनों में जब कोई अन्न के बीस नपुओं की आशा से जाता, तब दस ही पाता था, और जब कोई दाखरस के कुण्ड के पास इस आशा से जाता कि पचास बर्तन भर निकलें, तब बीस ही निकलते थे। १८ ‘मैंने तुम्हारी सारी खेती को लू और गेस्ट और ओलों से मारा, तो भी तुम मेरी ओर न पिरे, यहोवा की यही वाणी है।’ १९ अब सोच-विचार करो, कि आज से पहले अर्थात् जिस दिन यहोवा के मन्दिर की नींव ढाई गड्ढ, उस दिन से लेकर नौवें महीने के इसी चौबीसवें दिन तक क्या दशा थी? इसका सोच-विचार करो। २० क्या अब तक बीज खेते मैं है? अब तक दाखलता और अंजीर और अनार और जैतून के वृक्ष नहीं फले, परन्तु आज के दिन से मैं तुम को आशीष देता रहूँगा।” २१ उसी महीने के चौबीसवें दिन को दूसरी बार यहोवा का यह वचन हागै के पास पहुँचा, २२ “यहदा के अधिपति जस्बाबेल से यह कह: मैं आकाश और पृथ्वी दोनों को हिलाऊँगा, २३ और मैं राज्य-राज्य की गँड़ी को उलट दूँगा; मैं अन्यजातियों के राज्य-राज्य का बत तोड़ूँगा, और रथों को चढ़वैयों समेत उलट दूँगा; और थोड़ों समेत सवार हर एक अपने भाई की तलवार से गिरेंगे। २४ सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है, उस दिन, हे शालतीएल के पुत्र मेरे दास जस्बाबेल, मैं तुझे लेकर महर वाली अंगूठी के समान रखूँगा, यहोवा की यही वाणी है; क्योंकि मैंने तुझी को चुन लिया है, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।”

जकर्याह

१ दारा के राज्य के दूसरे वर्ष के आठवें महीने में जकर्याह भविष्यद्वत्का के पास जो बेरेक्याह का पुत्र और इडो का पोता था, यहोवा का यह चर्चन पहुँचा २ “यहोवा तुम लोगों के पुरखाओं से बहुत ही क्रोधित हुआ था। ३ इसलिए तू इन लोगों से कह, सेनाओं का यहोवा यह कहता है: तुम मेरी और फिरो, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है, तब मैं तुम्हारी और फिरँगा, सेनाओं के यहोवा का यही चर्चन है। ४ अपने पुरखाओं के समान न बनो, उनसे तो पूर्काल के भविष्यद्वत्का यह पुकार पुकारकर कहते थे, ‘सेनाओं का यहोवा यह कहता है, अपने बुरे मार्गों से, और अपने बुरे कामों से फिरो;’ परन्तु उन्होंने न तो सुना, और न मेरी और ध्यान दिया, यहोवा की यही वाणी है। ५ तम्हारे पुरखा कहाँ हरे? भविष्यद्वत्का क्या सदा जीवित रहते हैं? ६ परन्तु मैं चर्चन और मेरी आज्ञाएँ जिनको मैंने अपने दास नवियों को दिया था, क्या वे तम्हारे पुरखाओं पर पूरी न हैं? तब उन्होंने मन फिराया और कहा, सेनाओं के यहोवा ने हमारे चाल चलन और कामों के अनुसार हम से जैसा व्यवहार करने का निश्चय किया था, वैसा ही उसने हमको बदला दिया है।” ७ दारा के दूसरे वर्ष के शबात नामक ग्यारहवें महीने के चौबीसवें दिन को जकर्याह नवी के पास जो बेरेक्याह का पुत्र और इडो का पोता था, यहोवा का चर्चन इस प्रकार पहुँचा ८ “मैंने रात को स्वप्न में क्या देखा कि एक पुस्तक लाल घोड़े पर चढ़ा हुआ उन मैंहदियों के बीच खड़ा है जो नीचे स्थान में हैं, और उसके पीछे लाल और भेरे और चेत घोड़े भी खड़े हैं। ९ तब मैंने कहा, ‘हे मेरे प्रभु ये कौन हैं?’ तब जो दूत मुझसे बातें करता था, उसने मुझसे कहा, ‘मैं तुझे दिखाऊँगा कि ये कौन हैं।’ १० फिर जो पुस्तक मैंहदियों के बीच खड़ा था, उसने कहा, ‘यह वे हैं जिनको यहोवा ने पृथ्वी पर सैर अर्थात् घूमने के लिये भेजा है।’ ११ तब उन्होंने यहोवा के उस दूत से जो मैंहदियों के बीच खड़ा था, कहा, ‘हमने पृथ्वी पर सैर किया है, और क्या देखा कि सारी पृथ्वी में शान्ति और चैन है।’ १२ “तब यहोवा के दूत ने कहा, ‘हे सेनाओं के यहोवा, तू जो यस्सलेम और यहदा के नगरों पर सतर वर्ष से क्रोधित है, इसलिए तू उन पर कब तक दया न करेगा?’ १३ और यहोवा ने उत्तर में उस दूत से जो मुझसे बातें करता था, अच्छी-अच्छी और शान्ति की बातें कही। १४ तब जो दूत मुझसे बातें करता था, उसने मुझसे कहा, ‘तू पुकारकर कह कि सेनाओं का यहोवा यह कहता है, मुझे यस्सलेम और सियोन के लिये बड़ी जलत है।’ १५ जो अन्यजातियाँ सुख से रहती हैं, उनसे मैं क्रोधित हूँ; क्योंकि मैंने तो थोड़ा सा क्रोध किया था, परन्तु उन्होंने विपत्ति को बढ़ा दिया। १६ इस कारण यहोवा यह कहता है, अब मैं दया करके यस्सलेम को लौट आया हूँ; मेरा भवन उसमें बनेगा, और यस्सलेम पर नापने की डोरी डाली जाएगी, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है। १७ “‘फिर यह भी पुकारकर कह कि सेनाओं का यहोवा यह कहता है, मेरे नगर फिर उत्तम वस्तुओं से भर जाएंगे, और यहोवा फिर सियोन को शान्ति देगा; और यस्सलेम को फिर अपना ठहरायाए।’” १८ फिर मैंने जो आँखें उठाई, तो क्या देखा कि चार सींग हैं। १९ तब जो दूत मुझसे बातें करता था, उससे मैंने पूछा, “ये क्या हैं?” उसने मुझसे कहा, “ये वे ही सींग हैं, जिन्होंने यहदा और इसाएल और यस्सलेम को तितर-बितर किया कि कोई सिर न उठा सका; परन्तु ये लोग उन्हें भगाने के लिये और उन जातियों के सींगों को काट डालने के लिये आए हैं जिन्होंने यहदा के देश को तितर-बितर करने के लिये उनके विद्धु अपने-अपने सींग उठाए थे।”

२ फिर मैंने अपनी आँखें उठाई तो क्या देखा, कि हाथ में नापने की डोरी लिए हुए एक पुस्तक है। ३ तब मैंने उससे पूछा, “तू कहाँ जाता है?” उसने मुझसे कहा, “यस्सलेम को नापने जाता हूँ कि देखें उसकी चौड़ाई कितनी, और लम्बाई कितनी है।” ४ तब मैंने क्या देखा, कि जो दून मुझसे बातें करता था वह चला गया, और दूसरा दून उससे मिलने के लिये आकर, ५ उससे कहता है, “दौड़िकर उस जवान से कह, ‘यस्सलेम मनुष्यों और घरेलू पशुओं की बहतायत के मारे शहरपनाह के बाहर-बाहर भी बसेगा।” ६ और यहोवा की यह वाणी है, कि मैं आप उसके चारों ओर आग के समान शहरपनाह ठहरसँगा, और उसके बीच में तेजोमय होकर दिखाई देंगा।” ७ यहोवा की यह वाणी है, “देखो, सुनो उत्तर के देश में से भाग जाओ, क्योंकि मैंने तुम को आकाश की चारों वायुओं के समान तितर-बितर किया है।” ८ वे बोले जाति के संग रहनेवाली, सियोन को बचकर निकल भाग। ९ क्योंकि सेनाओं का यहोवा यह कहता है, उस तेज के प्रगट होने के बाद उसने मुझे उन जातियों के पास भेजा है जो तुम्हें लूटती थी, क्योंकि जो तुम को छूता है, वह मेरी आँख की पुतली ही को छूता है। १० देखो, मैं अपना हाथ उन पर उठाऊँगा, तब वे उन्हीं से लैटे जाएँगे जो उनके दास हुए थे। तब तम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे भेजा है। ११ वे सियोन की बीटी, ऊँचे स्वर से गा और अनन्द कर, क्योंकि देख, मैं आकर तेरे बीच में निवास करसँगा, यहोवा की यही वाणी है। १२ उस समय बहत सी जातियाँ यहोवा से मिल जाएँगी, और मेरी प्रजा हो जाएँगी, और मैं तेरे बीच में वास करसँगा, १३ और तू जानेगी कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तेरे पास भेज दिया है। और यहोवा यहदा को पवित्र देश में अपना भागकर लेगा, और यस्सलेम को फिर अपना ठहराएगा। १४ “हे सब प्राणियो! यहोवा के सामने चुप रहो; क्योंकि वह जागकर अपने पवित्र निवास-स्थान से निकला है।”

३ फिर यहोवा ने यहोशू महायाजक को यहोवा के दूत के सामने खड़ा हुआ मुझे दिखाया, और शैतान उसकी दाहिनी ओर उसका विरोध करने को खड़ा था। ४ तब यहोवा ने शैतान से कहा, “हे शैतान यहोवा तुझको घुड़के! यहोवा जो यस्सलेम को अपना लेता है, वही तुझे घुड़के! क्या यह आग से निकाली हुई लुकटी सी नहीं है?” ५ उस समय यहोशू तो दून के सामने मैला बब्ब पहने हुए खड़ा था। ६ तब दूत ने उनसे जो सामने खड़े थे कहा, “इसके ये मैले बब्ब उतारो।” फिर उसने उनसे कहा, “देख, मैंने तेरा अर्थात् दूर किया है, और मैं तुझे सुन्दर बब्ब पहना देता हूँ।” ७ तब मैंने कहा, “इसके सिर पर एक शुद्ध पगड़ी रखी जाए।” और उन्होंने उसके सिर पर याजक के योग्य शुद्ध पगड़ी रखी, और उसको बब्ब पहनाए; उस समय यहोवा का दून पास खड़ा रहा। ८ तब यहोवा के दूत ने यहोशू को चिताकर कहा, ९ “सेनाओं का यहोवा तुझ से यह कहता है: यदि तू मेरे मार्गों पर चले, और जो कुछ मैंने तुझे सौंप दिया है उसकी रक्षा करे, तो तू मेरे भवन का न्यायी, और मैं आँगनों का रक्षक होगा; और मैं तुझको इनके बीच में आने-जाने दूँगा जो पास खड़े हैं।” १० हे यहोशू महायाजक, तू सुन लो, और तेरे भाइ-बन्धु जो तेरे सामने खड़े हैं वे भी सूर्य, क्योंकि वे मनुष्य शुभ शक्ति हैं सुनो, मैं अपने दास शाख को प्रगट करसँगा। ११ उस पत्थर को देख जिसे मैंने यहोशू के आगे रखा है, उस एक ही पत्थर के ऊपर सात आँखें बनी हैं, सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, देख मैं उस पत्थर पर खोद देता हूँ, और इस देश के अर्धम को एक ही दिन में दूर कर दूँगा। १२ उसी दिन तुम अपने-अपने भाई-बन्धुओं को दाखलता और अंजीर के बक्श के नीचे अने के लिये बुलाओगे, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।”

४ फिर जो दूत मुझसे बातें करता था, उसने आकर मुझे ऐसा जगाया जैसा कोई नीद से जगाया जाए। ५ और उसने मुझसे पछा, “तुझे क्या दिखाई पड़ता है?” मैंने कहा, “एक दीवट है, जो सम्पूर्ण सोने की है, और उसका कटोरा उसकी चोटी पर है, और उस पर उसके सात दीपक हैं; जिनके ऊपर बत्ती के लिये सात-सात नालियाँ हैं। ६ दीवट के पास जैतून के दो वक्ष हैं, एक उस कटोरे की दाहिनी ओर, और दूसरा उसकी बाईं ओर।” ७ तब मैंने उस दूत से जो मुझसे बातें करता था, पूछा, “हे मेरे प्रभु, ये क्या हैं?” ८ जो दूत मुझसे बातें करता था, उसने मुझ को उत्तर दिया, “क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं?” मैंने कहा, “हे मेरे प्रभु मैं नहीं जानता।” ९ तब उसने मुझे उत्तर देकर कहा, “जस्तबाबेल के लिये यहोवा का यह बचन है: न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही बचन है।” १० हे बड़े पहाड़, तू क्या है? जस्तबाबेल के सामने तू मैदान हो जाएगा; और वह चोटी का पथर यह पुकारते हुए आएगा, उस पर अनुग्रह हो, अनुग्रह!“ ११ फिर यहोवा का यह बचन मेरे पास पहुँचा, १२ “जस्तबाबेल ने अपने हाथों से इस भवन की नीच डाली है, और वही अपने हाथों से उसको तैयार भी करेगा। तब तू जानेगा कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुहारे पास भेजा है।” १३ क्योंकि किसने छोटी बातों का दिन तुच्छ जाना है? यहोवा अपनी इन सातों आँखों से सारी पृथकी पर दृष्टि करके साहल को जस्तबाबेल के हाथ में देखेगा, और आनन्दित होगा।” १४ तब मैंने उससे फिर पूछा, “ये दो जैतून के वक्ष क्या हैं जो दीवट की दाहिनी-बाईं आ हैं?” १५ फिर मैंने दूसरी बार उससे पूछा, “जैतून की दोनों डालियाँ क्या हैं जो सोने की दोनों नालियों के द्वारा अपने मैं से सुनहरा तेल उण्डलती हैं?” १६ उसने मुझसे कहा, “क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं?” मैंने कहा, “हे मेरे प्रभु, मैं नहीं जानता।” १७ तब उसने कहा, “इनका अर्थ ताजे तेल से भरे हुए वे दो पुम्प हैं जो सारी पृथकी के परमेश्वर के पास हाजिर रहते हैं।”

५ मैंने फिर आँखें उठाई तो क्या देखा, कि एक लिखा हुआ पत्र उड़ रहा है। ६ दूत ने मुझसे पूछा, “तुझे क्या दिखाई पड़ता है?” मैंने कहा, “मुझे एक लिखा हुआ पत्र उड़ता हुआ दिखाई पड़ता है, जिसकी लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई दस हाथ की है।” ७ तब उसने मुझसे कहा, “यह वह श्वाप है जो इस सारे देश पर पड़नेवाला है; क्योंकि जो कोई चोरी करता है, वह उसकी एक ओर लिखे हुए के अनुसार मैल के समान निकाल दिया जाएगा; और जो कोई शपथ खाता है, वह उसकी दूसरी ओर लिखे हुए के अनुसार मैल के समान निकाल दिया जाएगा।” ८ सेनाओं के यहोवा की यही बाणी है, मैं उसको ऐसा चलाऊँगा कि वह चोर के घर मैं और मेरे नाम की झाठी शपथ खानेवाले के घर में घुसकर ठहरेगा, और उसको लकड़ी और पथरों समेत नष्ट कर देगा।” ९ तब जो दूत मुझसे बातें करता था, उसने बाहर जाकर मुझसे कहा, “आँखे उठाकर देख कि वह क्या वस्तु निकली जा रही है?” १० मैंने पूछा, “वह क्या है?” उसने कहा? “वह वस्तु जो निकली जा रही है वह एक एपा का नाप है।” और उसने फिर कहा, “सारे देश में लोगों का यही पाप है।” ११ फिर मैंने क्या देखा कि एपा का सीसे का ढक्कन उठाया जा रहा है, और एक बींधी है जो एपा के बीच में बैठी है। १२ दूत ने कहा, “इसका अर्थ दृष्टा है।” और उसने उस झी को एपा के बीच में दवा दिया, और शीशे के उस ढक्कन से एपा का मुँह बन्द कर दिया। १३ तब मैंने आँखें उठाई, तो क्या देखा कि दो छियाँ चती जाती हैं जिनके पंख पवन में फैले हुए हैं, और उनके पंख सारस के से हैं, और वे एपा को आकाश और पृथकी के बीच में उड़ाए लिए जा रही हैं। १४ तब मैंने उस दूत से जो मुझसे बातें करता था, पूछा, “वे एपा को कहाँ लिए जाती हैं?”

१५ उसने कहा, “शिनार देश में लिए जाती है कि वहाँ उसके लिये एक भवन बनाएँ, और जब वह तैयार किया जाए, तब वह एपा वहाँ अपने ही पाए पर खड़ा किया जाएगा।”

६ मैंने फिर आँखें उठाई, और क्या देखा कि दो पहाड़ों के बीच से चार रथ चले आते हैं; और वे पहाड़ पीतल के हैं। ७ पहले रथ में लाल घोड़े और दूसरे रथ में काले, ८ तीसरे रथ में च्वेत और चौथे रथ में चितकबरे और बादामी घोड़े हैं। ९ तब मैंने उस दूत से जो मुझसे बातें करता था, पूछा, “हे मेरे प्रभु, ये क्या हैं?” १० दूत ने मुझसे कहा, “ये आकाश की चारों बायु हैं जो सारी पृथकी के प्रभु के पास उपस्थित रहते हैं, परन्तु अब निकल आए हैं।” ११ जिस रथ में काले घोड़े हैं, वह उत्तर देश की ओर जाता है, और च्वेत घोड़े पश्चिम की ओर जाते हैं, और चितकबरे घोड़े दक्षिण देश की ओर जाते हैं। १२ और बादामी घोड़ों ने निकलकर चाहा कि जाकर पृथकी पर फेरा करें।” अतः दूत ने कहा, “जाकर पृथकी पर फेरा करो।” तब वे पृथकी पर फेरा करने लगे। १३ तब उसने मुझसे पुकारकर कहा, “देख, वे जो उत्तर के देश की ओर जाते हैं, उन्होंने वहाँ मेरे प्राण की ठंडा किया है।” १४ फिर यहोवा का यह बचन मेरे पास पहुँचा: १५ “बँधुआई के लोगों में से, हेल्तै, तोबियाह और यदायाह से कुछ ले और उत्ती दिन तू सपन्याह के पृथ योशियाह के घर में जा जिसमें वे बाबेल से आकर उतरे हैं।” १६ उनके हाथ से सोना चाँदी ले, और मुकुट बनाकर उन्हें यहोसादाक के पृथ योशू महायाजक के सिर पर रख; १७ और उससे यह कह, “सेनाओं का यहोवा यह कहता है, उस पुस्प को देख जिसका नाम शाख है, वह अपने ही स्थान में उगकर यहोवा के मन्दिर को बनाएगा।” १८ वही यहोवा के मन्दिर को बनाएगा, और महिमा पाएगा, और अपने सिंहासन पर विराजमान होकर प्रभुता करेगा। और उसके सिंहासन के पास एक याजक भी रहेगा, और दोनों के बीच मेल की सम्मति होगी।” १९ और वे मुकुट हेलेम, तोबियाह, यदायाह, और सपन्याह के पृथ हेन को मिलें, और वे यहोवा के मन्दिर में स्मरण के लिये बने रहें। २० “फिर दूर-दूर के लोग आ आकर यहोवा का मन्दिर बनाने में सहायता करेंगे, और तम जानेगे कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। और यदि तुम मन लगाकर अपने परमेश्वर यहोवा की ज्ञानाओं का पालन करो तो यह बात पूरी होगी।”

२१ फिर दारा राजा के चौथे वर्ष में किसलेव नामक नौवें महीने के चौथे दिन को, यहोवा का बचन जकर्याह के पास पहुँचा। २२ बैतेलवासियों ने शेरेसेर और रोमेलेको को इसलिए भेजा था कि यहोवा से बिनी करें, २३ और सेनाओं के यहोवा के भवन के याजकों से और भविष्यद्वत्काओं से भी यह पछें, “क्या हमें उपवास करके रोना चाहिए जैसे कि किनते वर्षों से हम पैंचवें महीने में करते आए हैं?” २४ तब सेनाओं के यहोवा का यह बचन मेरे पास पहुँचा; २५ “सब साधारण लोगों से और याजकों से कह, कि जब तुम इन सतर वर्षों के बीच पैंचवें और सातवें महीनों में उपवास और विलाप करते थे, तब क्या तुम सचमुच मेरी ही लिये उपवास करते थे? २६ और जब तुम खतों पीते हो, तो क्या तुम अपने ही लिये नहीं खतों, और क्या तुम अपने ही लिये नहीं पीते हो? २७ क्या यह वही बचन नहीं है, जो यहोवा पूर्वकाल के भविष्यद्वत्काओं के द्वारा उस समय पुकारकर कहता रहा जब यस्शलेम अपने चारों ओर के नगरों समेत चैन से बसा हुआ था, और दक्षिण देश और नीचे का देश भी बसा हुआ था?” २८ फिर यहोवा का यह बचन जकर्याह के पास पहुँचा: “सेनाओं के यहोवा ने यह कहा है, २९ खराई से न्याय चुकाना, और एक दूसरे के साथ कृपा और दया से काम करना, ३० न तो विधवा पर अंधेर करना, न अनाथों पर, न परदेशी पर, और न दीन जन पर; और न अपने-अपने मन में एक दूसरे की

हानि की कल्पना करना।” १८ परन्तु उन्होंने चित लगाना न चाहा, और हठ किया, और अपने कानों को बन्द कर लिया ताकि सुन न सके। १९ वरन् उन्होंने अपने हृदय को इसलिए पथर सा बना लिया, कि वे उस व्यवस्था और उन वचनों को न मान सके जिन्हें सेनाओं के यहोवा ने अपने आत्मा के द्वारा पूर्वकाल के भविष्यद्वत्ताओं से कहला भेजा था। इस कारण सेनाओं के यहोवा की ओर से उन पर बड़ा क्रोध भड़का। २० सेनाओं के यहोवा का यही वचन है, “जैसे मैं पुकारने पर उन्होंने नहीं सुना, वैसे ही उनके पुकारने पर मैं भी न सुनूँग। २१ वरन् मैं उन्हें उन सब जातियों के बीच जिन्हें वे नहीं जानते, आँखी के द्वारा तित्स-वित्तर कर दूँगा, और उनका देश उनके पीछे ऐसा उजाड़ पड़ा रहेगा कि उसमें किसी का आना-जाना न होगा; इसी प्रकार से उन्होंने मनोहर देश को उजाड़ कर दिया।”

फिर सेनाओं के यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, २२ “सेनाओं का यहोवा यह कहता है: सियोन के लिये मुझे बड़ी जलन हुई वरन् बहुत ही जलजलाहट मुझ में उत्पन्न हुई है। २३ यहोवा यह कहता है: मैं सियोन में लौट आया हूँ, और यस्शलेम के बीच में वास किए रहूँगा, और यस्शलेम सच्चाई का नगर कहलाएगा, और सेनाओं के यहोवा का पर्वत, पवित्र पर्वत कहलाएगा। २४ सेनाओं का यहोवा यह कहता है, यस्शलेम के चौकों में फिर बूढ़े और बूढ़ीयाँ बहुत आयु की होने के कारण, अपने-अपने हाथ में लाठी लिए हुए बैठा करेंगी। २५ और नगर के चौक खेलनेवाले लड़कों और लड़कियों से भरे रहेंगे। २६ सेनाओं का यहोवा यह कहता है: चाहे उन दिनों में यह बात इन बचे हुओं की दृष्टि में अनोखी ठहरे, परन्तु क्या मेरी दृष्टि में भी यह अनोखी ठहरेगी, सेनाओं के यहोवा की यही बाणी है? २७ सेनाओं का यहोवा यह कहता है, देखो, मैं अपनी प्रजा का उद्धार करके उसे पूरब से और पश्चिम से ले आँँगा; २८ और मैं उन्हें ले आकर यस्शलेम के बीच में बसाऊँगा; और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, यह तो सच्चाई और धार्मिकता के साथ होगा।” २९ सेनाओं का यहोवा यह कहता है, “तुम इन दिनों में ये वचन उन भविष्यद्वत्ताओं के मुख से सुनते हो जो सेनाओं के यहोवा के भवन की नीव डालने के समय अर्थात् मन्दिर के बनने के समय में थे। ३० उन दिनों के पहले, न तो मनुष्य की मजदूरी मिलती थी और न पशु का भाड़ा, वरन् सतानेवालों के कारण न तो आवेलों को चैन मिलता था और न जानेवालों को; क्योंकि मैं सब मनुष्यों से एक दूसरे पर चढ़ाइं करता था। ३१ परन्तु अब मैं इस प्रजा के बचे हुओं से ऐसा बर्तव न करूँगा जैसा कि पिछले दिनों में करता था, सेनाओं के यहोवा की यही बाणी है। ३२ क्योंकि अब शान्ति के समय की उपज अर्थात् दाखलता फलत करेगी, पृथ्वी अपनी उपज उपजाया करेगी, और आकाश से ओस पिरा करेगी; क्योंकि मैं अपनी इस प्रजा के बचे हुओं को इन सब का अधिकारी कर दूँगा। ३३ हे यहदा के घराने, और इसाएल के घराने, जिस प्रकार तुम अन्यजातियों के बीच शाप के कारण थे उसी प्रकार मैं तुम्हारा उद्धार करूँगा, और तुम आशीष के कारण होगे। इसलिए तुम मत डरो, और न तुम्हारे हाथ ढीले पड़े पाएँ।” ३४ क्योंकि सेनाओं का यहोवा यह कहता है: “जिस प्रकार जब तुम्हारे पुरुख मुझे क्रोध दिलाते थे, तब मैंने उनकी हानि करने की ठान ली थी और फिर न पछताया, ३५ उसी प्रकार मैंने इन दिनों में यस्शलेम की ओर यहदा के घराने की भलाई करने की ठान ली है; इसलिए तुम मत डरो। ३६ जो-जो काम तुम्हें करना चाहिये, वे ये हैं: एक दूसरे के साथ सत्य बोला करना, अपनी कच्छरियों में सच्चाई का और मेल मिलाप की नीति का न्याय करना, ३७ और अपने-अपने मन में एक दूसरे की हानि की कल्पना न करना, और दूठी शपथ से प्रीति न रखना, क्योंकि इन सब कामों

से मैं धृणा करता हूँ, यहोवा की यही बाणी है।” ३८ फिर सेनाओं के यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, ३९ “सेनाओं का यहोवा यह कहता है: चौथे, पाँचवें, सातवें और दसवें महीने में जो-जो उपवास के दिन होते हैं, वे यहदा के घराने के लिये हर्ष और अनन्द और उत्सव के पर्वों के दिन हो जाएँगे; इसलिए अब तुम सच्चाई और मेल मिलाप से प्रीति रखो। ४० “सेनाओं का यहोवा यह कहता है: ऐसा समय आनेवाला है कि देश-देश के लोग और बहुत नारों के रहनेवाले आएँगे। ४१ और एक नगर के रहनेवाले दूसरे नगर के रहनेवालों के पास जाकर कहेंगे, ‘यहोवा से विनती करने और सेनाओं के यहोवा को ढूँढ़ने के लिये चलो; मैं भी चलूँगा।’ ४२ बहुत से देशों के वरन् सामर्थी जातियों के लोग यस्शलेम में सेनाओं के यहोवा को ढूँढ़ने और यहोवा से विनती करने के लिये आएँगे। ४३ सेनाओं का यहोवा यह कहता है: उन दिनों में भौति-भौति की भाषा बोलनेवाली सब जातियों में से देश मनुष्य, एक यहदी पूर्स के बब्ब की छोर को यह कहकर पकड़ लेंगे, ‘हम तुम्हारे संग चलेंगे, क्योंकि हमने सुना है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ है।’”

९ हदाक देश के विषय में यहोवा का कहा हुआ भारी वचन जो दमिश्क पर भी पड़ेगा। क्योंकि यहोवा की दृष्टि मनुष्यजाति की, और इसाएल के सब गोत्रों की ओर लगी है; ३९ हमात की ओर जो दमिश्क के निकट है, और सोर और सीदोन की ओर, ये तो बहुत ही बुद्धिमान हैं। ४० सोर ने अपने लिये एक गढ़ बनाया, और धूल के फिनकों के समान चौंदी, और सड़कों की कीच के समान उत्तम सोना बटोर रखा है। ४१ देखो, परमेश्वर उसको औरों के अधिकार में कर देगा, और उसके घमण्ड को तोड़कर समदू में डाल देगा; और वह नगर आग का कौर हो जाएगा। ४२ यह देखकर अश्कलोन डेरोगा; गाजा को दुर्ख होगा, और एकोन भी डेरेगा, क्योंकि उसकी आशा टूटेगी; और गाजा में फिर राजा न रहेगा और अश्कलोन फिर बसी न रहेगी। ४३ अशदोद में अनजाने लोग बरसेंगे; इसी प्रकार मैं पलतिशियों के गर्व को तोड़ूँगा। ४४ मैं उसके मूँह में से आहेर का लहू और यिनीनी वस्तुएँ निकाल दूँगा, तब उनमें से जो बचा रहेगा, वह हमारे परमेश्वर का जन होगा, और यहदा में अधिपति सा होगा; और एकोन के लोग यबसियों के समान बनेंगे। ४५ तब मैं उस सेना के कारण जो पास से होकर जाएगी और फिर लौट आएगी, अपने भवन के आस-पास छावनी किए रहेंगा, और कोई सतानेवाला फिर उनके पास से होकर न जाएगा, क्योंकि मैं ये बातें अब भी देखता हूँ। ४६ हे सियोन बहुत ही मग्न हो। हे यस्शलेम यजयज्यकार क! क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है, और गदहे पर वरन् गदी के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा। ४७ मैं एप्रैल के रथ और यस्शलेम के घोड़े नष्ट करूँगा; और युद्ध के धनुष तोड़ डाले जाएँगे, और वह अन्यजातियों से शान्ति की बातें कहेगा; वह समदू से समदू तक और महानद से पृथ्वी के दूर-दूर के देशों तक प्रभुता करेगा। ४८ तू भी सुन, क्योंकि मेरी बाचा के लहू के कारण, मैंने तेरे बन्दियों को बिना जल के गड़े में से उबार लिया है। ४९ हे आशा धरे हुए बन्दियों! गढ़ की ओर फिरो, मैं आज ही बताता हूँ कि मैं तुम को बदले में दुगना सुख दूँगा। ५० क्योंकि मैंने धनुष के समान यहदा को चढ़ाकर उस पर तीर के समान एप्रैल के लगाया है। मैं सियोन के निवासियों को यूनान के निवासियों के बिप्पु उभास्संग, और उहैं वीर की तलवार सा कर दूँगा। ५१ तब यहोवा उनके ऊपर दिखाई देगा, और उसका तीर बिजली के समान छुटेगा; और परमेश्वर यहोवा नरसिंग फूँककर दक्षिण देश की सी आँखी में होकर चलेगा। ५२ सेनाओं का यहोवा ढाल से उहैं बचाएगा, और वे अपने शारुओं का नाश करेंगे, और उनके गोफन के पथरों पर पाँव रखेंगे; और वे पीकर ऐसा कोलाहल करेंगे जैसा लोग दाखमधु पीकर करते हैं; और वे कटोरे के

समान या वेदी के कोने के समान भरे जाएँगे। १६ उस समय उनका परमेश्वर यहोवा उनको अपनी प्रजास्ती भेड़-बकरियाँ जानकर उनका उद्धार करेगा, और वे मुकुटमणि ठहर के, उसकी भूमि से बहुत ऊँचे पर चमकते रहेंगे। १७ उसका क्या ही कुशल, और क्या ही शोभा उसकी होगी! उसके जवान लोग अन्न खाकर, और कुमारियाँ नया दाखमधु पीकर हष्ट-पृष्ठ हो जाएँगी।

१० बरसात के अन्त में यहोवा से वर्षा मँगो, यहोवा से जो बिजली चमकाता है, और वह उनको वर्षा देगा और हर एक के खेत में हरियाली उपजाएगा। २ क्योंकि गृहदेवता अनर्थ बात कहते और भावी कहनेवाले झाठा दर्शन देखते और झाठे स्वप्न सुनाते, और वर्यथा शान्ति देते हैं। इस कारण लोग भेड़-बकरियों के समान भटक गए, और चरवाहे न होने के कारण दुर्दशा में पड़े हैं। ३ “मेरा क्रोध चरवाहों पर भड़का है, और मैं उन बकरों को ढण्ड दौँगा; क्योंकि सेनाओं का यहोवा अपने शूण्ड अर्थात् यहदा के घराने का हाल देखने को आएगा, और लडाई में उनको अपना हष्ट-पृष्ठ घोड़ा सा बनाएगा। ४ उसी में से कोने का पत्थर, उसी में से खूँटी, उसी में से युद्ध का धनुष, उसी में से सब प्रधान प्रगत होंगे। ५ वे ऐसे वीरों के समान होंगे जो लडाई में अपने बैरियों को सड़कों की बीच के समान रौद्रते हों; वे लडेंगे, क्योंकि यहोवा उनके सांग रहेगा, इस कारण वे बीरता से लडेंगे और सवारों की आशा द्वेरागी। ६ “मैं यहदा के घराने को पराक्रमी करूँगा, और यसूफ के घराने का उद्धार करूँगा। मुझे उन पर दया आई है, इस कारण मैं उन्हें लौटा लाकर उन्हीं के देश में बसाऊँगा, और वे ऐसे होंगे, मानो मैंने उनको मन से नहीं उतारा; मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ, इसलिए उनकी सुन लूँगा। ७ ऐसी लोग वीर के समान होंगे, और उनका मन ऐसा अनन्दित होगा जैसे दाखमधु से होता है। यह देखकर उनके बच्चे आनन्द करेंगे और उनका मन यहोवा के कारण मग्न होगा। ८ “मैं सीटी बजाकर उनको इक्षका करूँगा, क्योंकि मैं उनका छुड़नेवाला हूँ, और वे ऐसे बढ़ोंगे जैसे पहले बढ़े थे। ९ यद्यपि मैं उन्हें जाति-जाति के लोगों के बीच बिखेर दूँगा तो भी वे दूर-दूर देशों में मुझे स्मरण करेंगे, और अपने बालकों समेत जीवित लौट आएंगे। १० मैं उन्हें मिस्त्र देश से लौटा लौँगा, और अश्शूर से इक्षका करूँगा, और गिलाद और लबानोन के देशों में ले आकर इतना बढ़ाऊँगा कि वहाँ वे समा न सकेंगे। ११ वह उस कष्टदायक समृद्धि में से होकर उसकी लहरें दबाता हुआ जाएगा और नील नदी का सब गहरा जल सूख जाएगा। अश्शूर का घमण्ड तोड़ा जाएगा और मिस्त्र का राजदण्ड जाता रहेगा। १२ मैं उन्हें यहोवा द्वारा पराक्रमी करूँगा, और वे उसके नाम से चले फिरेंगे, यहोवा की यही वाणी है।

११ हे लबानोन, आग को रास्ता दे कि वह आकर तैर देवदारों को भस्म करे।

२ हे सोनेपर वृक्षों, हाय, हाय, करो! क्योंकि देवदार पिर गया है और बड़े से बड़े वृक्ष नष्ट हो गए हैं। हे बाशान के बांजवृक्षों, हाय, हाय, करो! क्योंकि अगम्य वन काटा गया है। ३ चरवाहों के हाहाकार का शब्द हो रहा है, क्योंकि उनका वैभव नष्ट हो गया है। जवान सिंहों का गरजना सुनाई देता है, क्योंकि यरदन के किनारे का घना बन नाश किया गया है। ४ मेरे परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा दी: “धात होनेवाली भेड़-बकरियों का चरवाहा हो जा। ५ उनके मोल लेनेवाले उन्हें धात करने पर भी अपने को दोषी नहीं जानते, और उनके बेचनेवाले कहते हैं, ‘यहोवा धन्य है, हम धनी हो गए हैं,’ और उनके चरवाहे उन पर कुछ दया नहीं करते। ६ यहोवा की यह वाणी है, मैं इस देश के रहनेवालों पर फिर दया न करूँगा। देखो, मैं मनुष्यों को एक दूसरे के हाथ में, और उनके राजा के हाथ में पकड़वा दूँगा; और वे इस देश को नाश करेंगे, और मैं उसके रहनेवालों को उनके वक्ष से न छुड़ाऊँगा।” ७ इसलिए मैं

धात होनेवाली भेड़-बकरियों को और विशेष करके उनमें से जो दीन थी उनको चराने लगा। और मैंने दो लाठियाँ ली; एक का नाम मैंने अनुग्रह रखा, और दूसरी का नाम एकता। इनको लिये हैं मैं उन भेड़-बकरियों को चराने लगा। ८ मैंने उनके तीनों चरवाहों को एक महीने में नष्ट कर दिया, परन्तु मैं उनके कारण अधीर था, और वे मुझसे धूण करती थीं। ९ तब मैंने उनसे कहा, “मैं तुम को न चराऊँगा। तुम मैं से जो मरे वह मरे, और जो नष्ट हो वह नष्ट हो, और जो बची होंगे वे एक दूसरे का मौस खाएँ।” १० और मैंने अपनी वह लाठी तोड़ डाली, जिसका नाम अनुग्रह था, कि जो वाचा मैंने सब अन्यजातियों के साथ बाँधी थी उसे तोड़। ११ वह उसी दिन तोड़ी गई, और इससे दीन भेड़-बकरियाँ जो मुझे ताकती थीं, उन्होंने जान लिया कि यह यहोवा का वचन है। १२ तब मैंने उनसे कहा, “यदि तुम को अच्छा लगे तो मेरी मजदूरी दो, और नहीं तो मत दो।” तब उन्होंने मेरी मजदूरी में चाँदी के तीस टुकड़े तौल दिए। १३ तब यहोवा ने मुझसे कहा, “इहें कुम्हार के आगे फेंक दे,” यह क्या ही भारी दाम है जो उन्होंने मेरा ठहराया है? तब मैंने चाँदी के उन तीस टुकड़ों को लेकर यहोवा के घर में कुम्हार के आगे फेंक दिया। १४ तब मैंने अपनी दूसरी लाठी जिसका नाम एकता था, इसलिए तोड़ डाली कि मैं उस भाईंचरे के नाते को तोड़ डालूँ जो यहदा और इसाएल के बीच मैं है। १५ तब यहोवा ने मुझसे कहा, “अब तू मूर्ख चरवाहे के हथियार ले ले।” १६ क्योंकि मैं इस देश में एक ऐसा चरवाहा ठहराऊँगा, जो खोई हुई को न ढूँगा, न तिरत-बितर को इकट्ठी करेगा, न घायलों को चंगा करेगा, न जो भली चीज़ी हैं उनका पालन-पोषण करेगा, वरन् मोटियों का मौस खाएगा और उनके खुरों को फाड़ डालेगा। १७ हाय उस निकम्मे चरवाहे पर जो भेड़-बकरियों को छोड़ जाता है! उसकी बाँह और दाढ़ीनी अँख दोनों पर लतावर लगेगी, तब उसकी बाँह सूख जाएगी और उसकी दाढ़ीनी अँख फूट जाएगी।”

१२ इसाएल के विषय में यहोवा का कहा हुआ भारी वचन: यहोवा जो

आकाश का ताननेवाला, पृथ्वी की नीच डालनेवाला और मनुष्य की आत्मा का रचनेवाला है, यहोवा की यह वाणी है, १ “देखो, मैं यस्शलेम को चारों ओर की सब जातियों के लिये लड़खड़ा देने के नशा का कटोरा ठहरा दूँगा; और जब यस्शलेम धैर लिया जाएगा तब यहदा की दशा भी ऐसी ही होगी। २ और उस समय पृथ्वी की सारी जातियाँ यस्शलेम के विस्तु इकट्ठी होंगी, तब मैं उसको इतना भारी पत्थर बनाऊँगा, कि जो उसको उठाएँगे वे बहुत ही घायल होंगे। ३ यहोवा की यह वाणी है, उस समय मैं हर एक घोड़े को घबरा दूँगा, और उसके सवार को घायल करूँगा। परन्तु मैं यहदा के घराने पर कृपादृष्टि रखूँगा, जब मैं अन्यजातियों के सब घोड़ों को अंधा कर डालूँगा। ४ तब यहदा के अधिपति सोचेंगे, ‘यस्शलेम के निवासी अपने अपने अधिपति को देखो, जैसी लकड़ी के ढेर में आग भरी अँगीरी या पले में जलती हुई मशाल होती है, अर्थात् वे दाँप-बाँप चारों ओर के सब लोगों को भस्म कर डालेंगे; और यस्शलेम जहाँ अब बसी है, वहाँ बसी रहेगी, यस्शलेम में ही।” ५ “और यहोवा पहले यहदा के तम्बूओं का उद्धार करेगा, कहीं ऐसा न हो कि दाऊद का घराना और यस्शलेम के निवासी अपने अपने वैभव के कारण यहदा के विस्तु बड़ाई मरें।” ६ उस दिन यहोवा यस्शलेम के निवासियों को मानो ढाल से बचा लेगा, और उस समय उनमें से जो ठोकर खानेवाला हो वह दाऊद के समान होगा; और दाऊद का घराना परमेश्वर के समान होगा, अर्थात् यहोवा के उस दृष्टि के समान जो उनके आगे-आगे चलता था। ७ उस दिन मैं उन सब जातियों का नाश करने का यत्र करूँगा जो यस्शलेम पर चढ़ाई करेगी। ८ “मैं दाऊद के घराने और यस्शलेम के

निवासियों पर अपना अनुग्रह करनेवाली और प्रार्थना सिखानेवाली आत्मा उण्डेलँगा, तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात् जिसे उन्होंने बेधा है, और उसके लिये ऐसे रोएँ जैसे एकलौटे पुत्र के लिये रोते-पीटते हैं, और ऐसा भारी शोक करेंगे, जैसा पहलौठे के लिये करते हैं। १० उस समय यस्शलेम में इतना रोना-पीटना होगा जैसा मागिदोन की तराई में हददिमोन में हुआ था। ११ सारे देश में विलाप होगा, हर एक परिवार में अलग-अलग; अर्थात् दाऊद के घराने का परिवार अलग, और उनकी छियाँ अलग; नातन के घराने का परिवार अलग, और उनकी छियाँ अलग; १२ लेवी के घराने का परिवार अलग और उनकी छियाँ अलग; १३ शिमियो का परिवार अलग; और उनकी छियाँ अलग; १४ और जितने परिवार रह गए हों तब एक परिवार अलग - अलग और उनकी छियाँ भी अलग-अलग।

१३ “उसी दिन दाऊद के घराने और यस्शलेम के निवासियों के लिये पाप और मलिनता धोने के निमित्त एक बहता हुआ सोता फैटेगा। १५ “सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, कि उस समय मैं इस देश में से मूर्तों के नाम मिटा डालूँगा, और वे फिर स्मरण में न रहेंगी; और मैं भविष्यद्वाकाओं और अशदू आत्मा को इस देश में से निकाल दूँगा। ६ और यदि कोई फिर भविष्यद्वाकाएँ करे, तो उसके माता-पिता, जिनसे वह उत्पन्न हआ, उससे कहें, ‘तू जीवित न बचेगा, क्योंकि तूने यहोवा के नाम से झटक कहा है;’ इसलिए जब वह भविष्यद्वाकाएँ करे, तब उसके माता-पिता जिनसे वह उत्पन्न हुआ उसको बेध डालेंगे। ७ उस समय हर एक भविष्यद्वाका भविष्यद्वाकाएँ करते हुए अपने-अपने दर्शन से लज्जित होंगे, और धोखा देने के लिये कम्बल का बब्ल न पहनेंगे, ८ परन्तु वह कहेगा, ‘मैं भविष्यद्वाका नहीं, किसान हूँ, क्योंकि लड़कपन ही से मैं दूसरों का दास हूँ।’ ९ तब उससे यह पूछा जाएगा, ‘तेरी छाती पर ये घाव कैसे हुए?’ तब वह कहेगा, ‘ये वे ही हैं जो मेरे प्रेमियों के घर में मुझे लगे हैं।’ १० सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, ‘हे तलवार, मेरे ठहराए हुए चरवाहे के बिस्तु अर्थात् जो पुस्त मेरा स्वजाति है, उसके बिस्तु चल। तू उस चरवाहे को काट, तब भेड़-बकरियाँ तिरन-बितर हो जाएँगी; और बच्चों पर मैं अपने हाथ बढ़ाऊँगा। ११ यहोवा की यह भी वाणी है, कि इस देश के सारे निवासियों की दो तिहाई मार डाली जाएँगी और बच्ची हुई तिहाई उसमें बर्नी रहेगी। १२ उस तिहाई को मैं आग में डालकर ऐसा निर्मल करँगा, जैसा स्पा निर्मल किया जाता है, और ऐसा जाँचूँगा जैसा सोना जाँचा जाता है। वे मुझसे प्रार्थना किया करेंगे, और मैं उनकी सँसाँग। मैं उनके विषय में कहूँगा, ‘ये मेरी प्रजा हैं,’ और वे मेरे विषय में कहेंगे, ‘यहोवा हमारा परमेश्वर है।’”

१४ सुनो, यहोवा का एक ऐसा दिन आनेवाला है जिसमें तेरा धन लूटकर तैरे जीव में बैट लिया जाएगा। २ क्योंकि मैं सब जातियों को यस्शलेम से लडेने के लिये इकट्ठा करँगा, और वह नगर ले लिया जाएगा। और घर लूटे जाएँगे और छियाँ भ्रष्ट की जाएँगी; नगर के आधे लोग बँधुवाई में जाएँगे, परन्तु प्रजा के शेष लोग नगर ही में रहेंगे। ३ तब यहोवा निकलकर उन जातियों से ऐसा लड़ेगा जैसा वह संग्राम के दिन में लड़ा था। ४ और उस दिन वह जैतून के पर्वत पर पाँव रखेगा, जो पूर्व की ओर यस्शलेम के सामने है; तब जैतून का पर्वत पूरब से लेकर पश्चिम तक बीचों बीच से फटकर बहुत बड़ा खड़ हो जाएगा; तब आधा पर्वत उत्तर की ओर और आधा दक्षिण की ओर हट जाएगा। ५ तब तुम मेरे बनाए हुए उस तराई से होकर भाग जाओगे, क्योंकि वह खड़ आसेल तक पहुँचेगा, बरन तुम ऐसे भागोगे जैसे उस भक्त्य के डर से भागे थे जो यहदा के राजा उजियाह के दिनों में हुआ था। तब मेरा परमेश्वर यहोवा आएगा, और सब पवित्र लोग उसके साथ होंगे। ६ उस दिन कुछ

उजियाला न रहेगा, क्योंकि ज्योतिगण सिमट जाएँगे। ७ और लगातार एक ही दिन होगा जिसे यहोवा ही जानता है, न तो दिन होगा, और न रात होगी, परन्तु सँझ के समय उजियाला होगा। ८ उस दिन यस्शलेम से जीवन का जल फूट निकलेगा उसकी एक शाखा पूरब के ताल और दूसरी पश्चिम के समुद्र की ओर बहेगी, और धूप के दिनों में और सर्दी के दिनों में भी बराबर बहती रहेंगी। ९ तब यहोवा सारी पूर्वी की राजा होगा; और उस दिन एक ही यहोवा और उसका नाम भी एक ही नाम जाएगा। १० गेबा से लेकर यस्शलेम के दक्षिण की ओर के रिम्मोन तक सब भूमि अराबा के समान हो जाएगी। परन्तु वह ऊँची होकर बिन्यामीन के फटक से लेकर परते फटक के स्थान तक, और कोनेवाले फटक तक, और हननेल के गुम्मट से लेकर राजा के दाखरस कुण्डों तक अपने स्थान में बसेगी। ११ लोग उसमें बसेंगे क्योंकि फिर सत्यानाश का श्वाप न होगा; और यस्शलेम बेखटके बसी रहेगी। १२ और जितनी जातियों ने यस्शलेम से युद्ध किया है उन सभी को यहोवा ऐसी मार से मारेगा, कि खड़े-खड़े उनका माँस सड़ जाएगा, और उनकी आँखें अपने गोलकों में सड़ जाएँगी, और उनकी जीभ उनके मुँह में सड़ जाएगी। १३ और उस दिन यहोवा की ओर से उनमें बड़ी बधारहट पैठेगी, और वे एक दूसरे के हाथ को पकड़ेंगे, और एक दूसरे पर अपने-अपने हाथ उठाएँगे। १४ यहदा भी यस्शलेम में लडेगा, और सोना, चाँदी, बच्चा आदि चारों ओर की सब जातियों की धन-सम्पत्ति उसमें बटोरी जाएगी। १५ और घोड़े, खच्चर, ऊँट और गदहे वरन जितने पशु उनकी छावनियों में होंगे वे भी ऐसी ही महामारी से मारे जाएँगे। १६ तब जितने लोग यस्शलेम पर चढ़ानेवाली सब जातियों में से बचे रहेंगे, वे प्रतिवर्ष राजा को अर्थात् सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने, और ज्ञोपडियों का पर्व मानने के लिये यस्शलेम को जाया करेंगे। १७ और पूर्वी के कुलों में से जो लोग यस्शलेम में राजा, अर्थात् सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने के लिये न जाएँगे, उनके यहाँ वर्षा न होगी। १८ और यदि मिस का कुल वहाँ न आए, तो क्या उन पर वह मरी न पड़ेगी जिससे यहोवा उन जातियों को मारेगा जो ज्ञोपडियों का पर्व मानने के लिये न जाएँगे? १९ यह मिस का और उन सब जातियों का पाप ठहरेगा, जो ज्ञोपडियों का पर्व मानने के लिये न जाएँगे। २० उस समय घोड़ों की घीटियों पर भी यह लिखा रहेगा, “यहोवा के लिये पवित्र।” और यहोवा के भवन कि हाँडियाँ उन करोरों के तुल्य पवित्र ठहरेंगी, जो वेदी के सामने रहते हैं। २१ वस्त्र-यस्शलेम में और यहदा देश में सब हाँडियाँ सेनाओं के यहोवा के लिये पवित्र ठहरेंगी, और सब मेलबल्ति करनेवाले आ आकर उन हाँडियों में माँस पकाया करेंगे। तब सेनाओं के यहोवा के भवन में फिर कोई व्यापारी न पाया जाएगा।

मलाकी

१ मलाकी के द्वारा इसाएल के लिए कहा हुआ यहोवा का भारी वचन। २

यहोवा यह कहता है, “मैंने तुम से प्रेम किया है, परन्तु तुम पूछते हो, ‘तूने हमें कैसे प्रेम किया है?’” यहोवा की यह वाणी है, “क्या एसाव याकूब का भाई न था? ३ तो भी मैंने याकूब से प्रेम किया परन्तु एसाव को अप्रिय जानकर उसके पहाड़ों को उजाड़ डाला, और उसकी पैतृक भूमि को जंगल के गीढ़ों का कर दिया है।” ४ एदोम कहता है, “हमारा देश उजड़ गया है, परन्तु हम खण्डहोरों को फिर बनाएंगे;” सेनाओं का यहोवा यह कहता है, “यदि वे बनाएँ भी, परन्तु मैं ढा ढाँगा; उनका नाम दृश्य जाति पड़ेगा, और वे ऐसे लोग कहलाएँगे जिन पर यहोवा सदैव क्रोधित रहे।” ५ तुहारी अंखें इसे देखेंगी, और तुम कहोगे, “यहोवा का प्रताप इसाएल की सीमा से आगे भी बढ़ाता जाए।” ६ “पुत्र पिता का, और दास स्वामी का आदर करता है। यदि मैं पिता हूँ, तो मेरा आदर मानना कहाँ है? और यदि मैं स्वामी हूँ, तो मेरा भय मानना कहाँ? सेनाओं का यहोवा, तुम याजकों से भी जो मेरे नाम का अपमान करते हो यही बात पूछता है। परन्तु तुम पूछते हो, ‘हमने किस बात में तेरे नाम का अपमान किया है?’ ७ तुम मेरी बेटी पर अशुद्ध भोजन चढ़ाते हो। तो भी तुम पूछते हो, ‘हम किस बात में तुझे अशुद्ध ठराते हैं?’ इस बात में भी, कि तुम कहते हो, ‘यहोवा की मेज तुच्छ है।’ ८ जब तुम अथे पशु को बलि करने के लिये समीप ले आते हो तो क्या यह बुरा नहीं? और जब तुम लौंगड़े या रोगी पशु को ले आते हो, तो क्या यह बुरा नहीं? अपने हाकिम के पास ऐसी भेट ले जाओ; क्या वह तुम से प्रसन्न होगा या तुम पर अनुग्रह करेगा? सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। ९ “अब मैं तुम से कहता हूँ, परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वह हम लोगों पर अनुग्रह करे। यह तुहारे हाथ से हआ है; तब क्या तुम समझते हो कि परमेश्वर तुम में से किसी का पक्ष करेगा? सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। १० भला होता कि तुम में से कोई मन्दिर के किवाड़ों को बन्द करता कि तुम मेरी बेटी पर व्यर्थ आग जलाने न पाते! सेनाओं के यहोवा का यह वचन है, मैं तुम से कदापि प्रसन्न नहीं हूँ, और न तुहारे हाथ से भेट ग्रहण करूँगा। ११ क्योंकि उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक अन्यजातियों में मेरा नाम महान है, और हर कहीं मेरे नाम पर धूप और शुद्ध भेट चढ़ाई जाती है; क्योंकि अन्यजातियों में मेरा नाम महान है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। १२ परन्तु तुम लोग उसको यह कहकर अपवित्र ठहारो हो कि यहोवा की मेज अशुद्ध है, और जो भोजनवस्तु उस पर से मिलती है वह भी तुच्छ है। १३ फिर तुम यह भी कहते हो, ‘यह कैसा बड़ा उपद्रव है?’ सेनाओं के यहोवा का यह वचन है। तुम ने उस भोजनवस्तु के प्रति नाक भौं सिकोड़ी, और अत्याचार से प्राप किए हुए और लौंगड़े और रोगी पशु की भेट ले आते हो! क्या मैं ऐसी भेट तुहारे हाथ से ग्रहण करूँ? यहोवा का यही वचन है। १४ जिस छली के झुण्ड में नरपशु हो परन्तु वह मन्तन मानकर परमेश्वर को वर्जित पशु चढ़ाए, वह श्वापित है; मैं तो महाराजा हूँ, और मेरा नाम अन्यजातियों में भययोग्य है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

२ “अब हे याजकों, यह आज्ञा तुम्हारे लिये है।” ३ यदि तुम इसे न सुनो, और

मन लगाकर मेरे नाम का आदर न करो, तो सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि मैं तुम को श्वाप ढूँगा, और जो वस्तुँ मेरी आशीष से तुम्हें मिलती है, उन पर मेरा श्वाप पड़ेगा, बरन् तुम जो मन नहीं लगाते हो इस कारण मेरा श्वाप उन पर पड़ चका है। ४ देखो, मैं तुम्हारे कारण तुम्हारे वंश को शिङ्कूंगा, और तुम्हारे मुँह पर तुम्हारे पर्वों के यज्ञपशुओं का मल फैलाऊँगा, और उसके संग तुम भी

उठाकर फेक दिए जाओगे। ५ तब तुम जानोगे कि मैंने तुम को यह आज्ञा इसलिए दी है कि लेवी के साथ मेरी बंधी हुई वाचा बनी रहे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। ६ मेरी जो वाचा उसके साथ बंधी थी वह जीवन और शान्ति की थी, और मैंने यह इसलिए उसको दिया कि वह भय मानता रहे; और उसने मेरा भय मान भी लिया और मेरे नाम से अत्यन्त भय खाता था। ७ उसको मेरी सच्ची शिक्षा कण्ठस्थ थी, और उसके मुँह से कुटिल बात न निकलती थी। वह शान्ति और सिधाइ से मेरे संग-संग चलता था, और बहुतों को अर्थम से लौटा ले आया था। ८ क्योंकि याजक को चाहिये कि वह अपने होठों से ज्ञान की रक्षा करे, और लोग उसके मुँह से व्यवस्था खोजे, क्योंकि वह सेनाओं के यहोवा का दूत है। ९ परन्तु तुम लोग मार्ग से ही हट गए; तुम बहुतों के लिये व्यवस्था के विषय में ठोकर का कारण हुए; तुम ने लेवी की वाचा को तोड़ दिया है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। १० इसलिए मैंने भी तुम को सब लोगों के सामने तुच्छ और नीचा कर दिया है, क्योंकि तुम मेरे मार्गों पर नहीं चलते, बरन् व्यवस्था देने में मुँह देखा विचार करते हो।” ११ क्या हम सभी का एक ही पिता नहीं? क्या एक ही परमेश्वर ने हमको उत्पन्न नहीं किया? हम क्यों एक दूसरे से विचासघात करके अपने पूर्वजों की वाचा को अपवित्र करते हैं? १२ यहदा ने विचासघात किया है, और इसाएल में और यस्तलेम में धृषित काम किया गया है; क्योंकि यहदा ने पराए देवता की कन्या से विचाह करके यहोवा के पवित्रस्थान को जो उसका प्रिय है, अपवित्र किया है। १३ जो पुस्त ऐसा काम करे, उसके तम्बूओं में से याकूब का परमेश्वर उसके घर के रक्षक और सेनाओं के यहोवा की भेट चढ़ानेवाले को यहदा से काट डालेगा! १४ फिर तुम ने यह दूसरा काम किया है कि तुम ने यहोवा की बेटी को रोनेवालों और आहें भरनेवालों के अँसुओं से भिगो दिया है, यहाँ तक कि वह तुहारी भेट की ओर दृष्टि तक नहीं करता, और न प्रसन्न होकर उसको तुहारे हाथ से ग्रहण करता है। तुम पूछते हो, “ऐसा क्यों?” १५ इसलिए, क्योंकि यहोवा तेरे और तेरी उस जवानी की संगीनी और ब्याही हुई छींकी के बीच साक्षी हुआ था जिससे तूने विचासघात किया है। १६ क्या उसने एक ही को नहीं बनाया जबकि और आत्माएँ उसके पास थीं? और एक ही को क्यों बनाया? इसलिए कि वह परमेश्वर के योग्य सन्तान चाहता है। इसलिए तुम अपनी आत्मा के विषय में चौकस रहो, और तुम में से कोई अपनी जवानी की छींकी से विचासघात न कर। १७ क्योंकि इसाएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, “मैं छींकी-त्याग से धृणा करता हूँ, और उससे भी जो अपने बच्चे को उपद्रव से ढाँपता है। इसलिए तुम अपनी आत्मा के विषय में चौकस रहो और विचासघात मत करो, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।” १८ तुम लोगों ने अपनी बातों से यहोवा को थका दिया है। तो भी पूछते हो, “हमने किस बात में उसे थका दिया?” इसमें, कि तुम कहते हो “जो कोई बुरा करता है, वह यहोवा की दृष्टि में अच्छा लगता है, और वह ऐसे लोगों से प्रसन्न रहता है,” और यह, “न्यायी परमेश्वर कहाँ है?”

३ “देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूँ, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा,

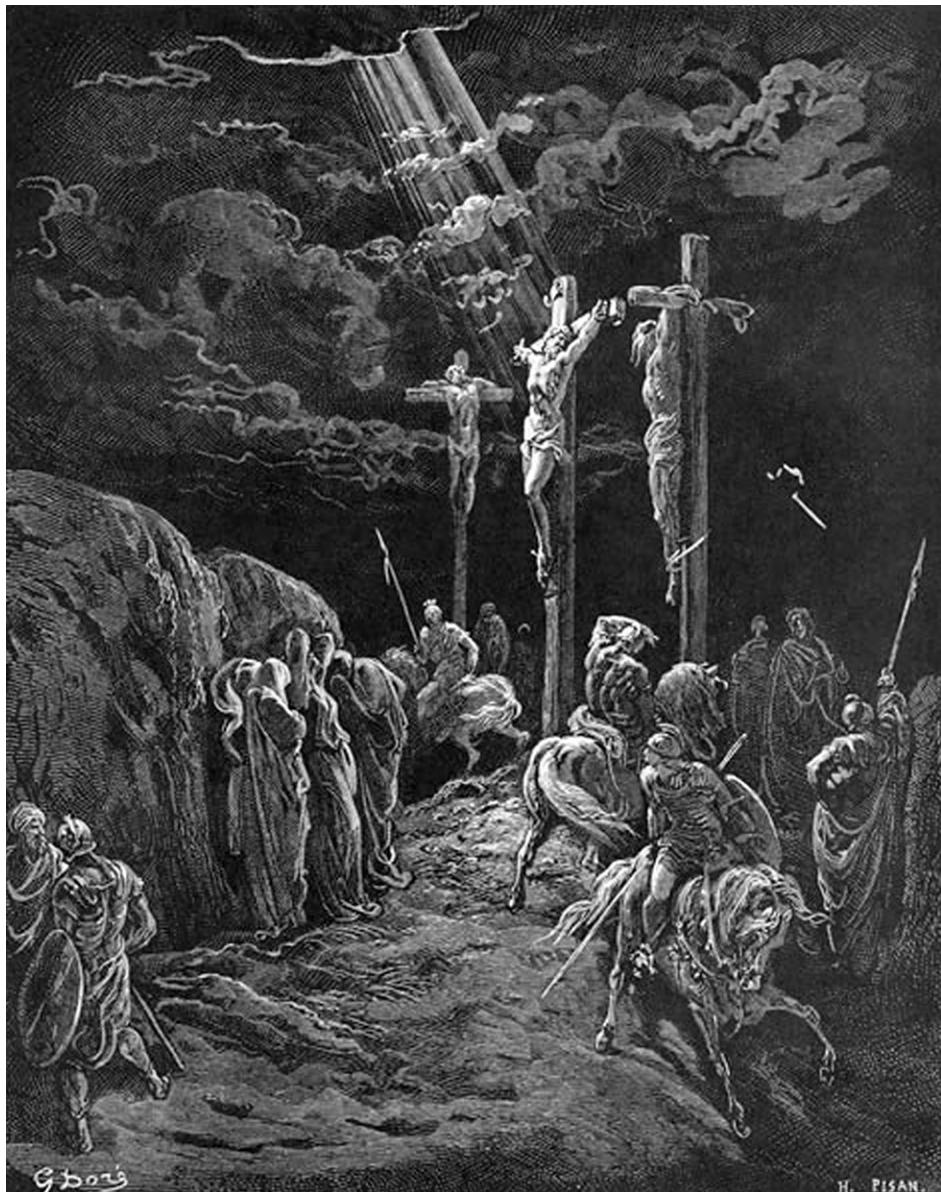
और प्रभु, जिसे तुम ढूँढ़ते हो, वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा; हाँ वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो, वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।” ४ परन्तु उसके आगे के दिन को कौन सह सकेगा? और जब वह दिखाई दे, तब कौन खड़ा रह सकेगा? क्योंकि वह सुनार की आग और धोबी के साबुन के समान है। ५ वह रूपे का तानेवाला और शुद्ध करनेवाला बनेगा, और लेवियों को शुद्ध करेगा और उनको सोने स्पै के समान निर्मल करेगा, तब वे यहोवा की भेट धार्मिकता से चढ़ाएँगे। ६ तब यहदा

और यस्त्रालेम की भेट यहोवा को ऐसी भाएगी, जैसी पहले दिनों में और प्राचीनकाल में भाती थी। ५ “तब मैं न्याय करने को तुम्हरे निकट आऊँगा, और टोन्हों, और व्यधिचारियों, और इड्ठी शपथ खानेवालों के विस्तु, और जो मजदूर की मजदूरी को दबाते, और विधवा और अनाथों पर अधेर करते, और परदेशी का न्याय बिगाड़ते, और मेरा भय नहीं मानते, उन सभी के विस्तु मैं तुन्त साक्षी ढूँगा,” सेनाओं के यहोवा का यहीं वचन है। ६ “क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं; इसी कारण, हे याकूब की सन्तान तुम नाश नहीं हुए। ७ अपने पुरखाओं के दिनों से तुम लोग मेरी विधियों से हटते आए हो, और उनका पालन नहीं करते। तुम मेरी ओर फिरो, तब मैं भी तुम्हारी ओर फिस्तँगा,” सेनाओं के यहोवा का यहीं वचन है; परन्तु तम पछते हो, ‘हम किस बात में फिरें?’ ८ क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? देखो, तुम मुझ को धोखा देते हो, और तो भी पछते हो ‘हमने किस बात में तुझे लटा है?’ दशमांश और उठाने की भेटों में। ९ तुम पर भारी श्राप पड़ा है, क्योंकि तुम मुझे लटूते हो; वरन् सारी जाति ऐसा करती है। १० सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रखें; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षी करता हूँ कि नहीं। ११ मैं तुम्हारे लिये नाश करनेवाले को ऐसा घुड़कूँगा कि वह तुम्हारी भूमि की उपज नाश न करेगा, और तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेंगे, सेनाओं के यहोवा का यहीं वचन है। १२ तब सारी जातियाँ तुम को धन्य कहेंगी, क्योंकि तुम्हारा देश मनोहर देश होगा, सेनाओं के यहोवा का यहीं वचन है। १३ “यहोवा यह कहता है, तुम ने मेरे विस्तु ढिठाई की बातें कहीं हैं। परन्तु तुम पछते हो, ‘हमने तेरे विस्तु में क्या कहा है?’” १४ तुम ने कहा है ‘परमेश्वर की सेवा करना व्यर्थ है। हमने जो उसके बताए हुए कामों को पूरा किया और सेनाओं के यहोवा के डर के मारे शोक का पहरावा पहने हुए चले हैं, इससे क्या लाभ हुआ? १५ अब से हम अभिमानी लोगों को धन्य कहते हैं, क्योंकि दुराचारी तो सफल बन गए हैं, वरन् वे परमेश्वर की परीक्षा करने पर भी बच गए हैं।” १६ तब यहोवा का भय माननेवालों ने आपस में बातें की, और यहोवा ध्यान धरकर उनकी सुनता था; और जो यहोवा का भय मानते और उसके नाम का सम्मान करते थे, उनके स्मरण के निमित्त उसके सामने एक पुस्तक लिखी जाती थी। १७ सेनाओं का यहोवा यह कहता है, “जो दिन मैंने ठहराया है, उस दिन वे लोग मेरे वरन् मेरे निज भाग ठहरेंगे, और मैं उनसे ऐसी कोमलता कस्तँगा जैसी कोई अपने सेवा करनेवाले पुत्र से करें। १८ तब तुम फिरकर धर्मी और दृष्ट का भेद, अर्थात् जो परमेश्वर की सेवा करता है, और जो उसकी सेवा नहीं करता, उन दोनों का भेद पहचान सकोगे।

४ “देखो, वह धधकते भेटे के समान दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खँटी बन जाएँगे; और उस आनेवाले दिन में वे ऐसे भस्म हो जाएँगे कि न उनकी जड़ बचेगी और न उनकी शाखा, सेनाओं के यहोवा का यहीं वचन है। २ परन्तु तुम्हारे लिये जो मेरे नाम का भय मानते हो, धार्मिकता का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चोंगे हो जाएँगे; और तुम निकलकर पाले हुए बछड़ों के समान कूदोगे और फँदोगे। ३ तब तुम दृष्टों को लताड़ डालोगे, अर्थात् मेरे उस ठहराए हुए दिन में वे तुम्हारे पाँवों के नीचे की राख बन जाएँगे, सेनाओं के यहोवा का यहीं वचन है। ४ “मेरे दास मसा की व्यवस्था अर्थात् जो-जो विधि और नियम मैंने सारे इस्माएलियों के लिये उसको हारेब में दिए थे, उनको स्मरण रखो। ५ “देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास

एलियाह नवी को भेजँगा। ६ और वह माता पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके माता-पिता की ओर फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को सत्यानाश करूँ।”

नए नियम



तब यीशु ने कहा, “हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं?”

और उन्होंने चिश्चियाँ डालकर उसके कपड़े बाँट लिए।

लूका 23:34

मत्ती

१ अब्राहम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह की बंशालकी। २

अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ, इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ, और याकूब से यहदा और उसके भाई उत्पन्न हुए। ३ यहदा और तामार से पेरेस व जेरह उत्पन्न हुए, और पेरेस से हेमोन उत्पन्न हुआ, और हेमोन से एराम उत्पन्न हुआ। ४ एराम से अम्मीनादाब उत्पन्न हुआ, और अम्मीनादाब से नहशोन, और नहशोन से सलमोन उत्पन्न हुआ। ५ सलमोन और राहबाल से बोअज उत्पन्न हुआ, और बोअज और रूत से ओबेद उत्पन्न हुआ, और ओबेद से यिशै उत्पन्न हुआ। ६ और यिशै से दाऊद राजा उत्पन्न हुआ। और दाऊद से सुलैमान उस स्त्री से उत्पन्न हुआ जो पहले ऊरिय्याह की पत्री थी। ७ सुलैमान से रहबाम उत्पन्न हुआ, और रहबाम से अबियाह उत्पन्न हुआ, और अबियाह से आसा उत्पन्न हुआ। ८ आसा से यहोशाफात उत्पन्न हुआ, और यहोशाफात से योराम उत्पन्न हुआ, और योराम से उज्जियाह उत्पन्न हुआ। ९ उज्जियाह से योताम उत्पन्न हुआ, योताम से आहाज उत्पन्न हुआ, और आहाज से हिजकिय्याह से मनश्शे उत्पन्न हुआ, मनश्शे से अमोन उत्पन्न हुआ, और अमोन से योशिय्याह उत्पन्न हुआ। १० और बन्दी होकर बाबेल जाने के समय में योशिय्याह से यकुन्याह, और उसके भाई उत्पन्न हुए। ११ बन्दी होकर बाबेल पहुँचाए जाने के बाद यकुन्याह से शालतीएल उत्पन्न हुआ, और शालतीएल से जस्त्वाबेल उत्पन्न हुआ। १२ जस्त्वाबेल से अबीहद उत्पन्न हुआ, अबीहद से एल्याकीम उत्पन्न हुआ, और एल्याकीम से अजोर उत्पन्न हुआ। १३ अजोर से सादोक उत्पन्न हुआ, सादोक से अवीम उत्पन्न हुआ, और अवीम से एलीहद उत्पन्न हुआ। १४ एलीहद से एलीआजर उत्पन्न हुआ, एलीआजर से मतान उत्पन्न हुआ, और मतान से याकूब उत्पन्न हुआ। १५ याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ, जो मरियम का पति था, और मरियम से यीशु उत्पन्न हुआ जो मसीह कहलाता है। १६ अब्राहम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ी हई, और दाऊद से बाबेल को बन्दी होकर पहुँचाए जाने तक चौदह पीढ़ी, और बन्दी होकर बाबेल को पहुँचाए जाने के समय से लेकर मसीह तक चौदह पीढ़ी हई। १७ अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उनके इकट्ठे होने के पहले से वह पवित्र आत्मा की ओर से गम्भीरी पाई गई। १८ अतः उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की। १९ जब वह इन बातों की सोच ही में था तो परमेश्वर का स्वर्गीय उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, “हे यूसुफ! दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्री मरियम को अपने यहाँ ले आने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। २० वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।” २१ यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रथा ने भविष्यद्वत्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो। २२ “देखो, एक कुँवारी गम्भीरी होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा,” जिसका अर्थ है - परमेश्वर हमारे साथ। २३ तब यूसुफ नीद से जागकर परमेश्वर के दूत की आज्ञा अनुसर अपनी पत्री को अपने यहाँ ले आया। २४ और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया: और उसने उसका नाम यीशु रखा।

२ हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तब, पूर्व से कई ज्योतिर्यी यस्त्वलेम में आकर पूछने लगे, ३ “यहदियों का

राजा जिसका जन्म हुआ है, कहाँ है? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसको झुककर प्रणाम करने आए हैं।” ४ यह सुनकर हेरोदेस राजा और उसके साथ सारा यस्त्वलेम घबरा गया। ५ और उसने लोगों के सब प्रधान याजकों और शास्त्रियों को इकट्ठा करके उनसे पूछा, “मसीह का जन्म कहाँ होना चाहिए?” ६ उन्होंने उससे कहा, “यहदिया के बैतलहम में; क्योंकि भविष्यद्वत्ता के द्वारा लिखा गया है: ७ “हे बैतलहम, यहदा के प्रेदेश, तू किसी भी रीति से यहदा के अधिकारियों में सबसे छोटा नहीं; क्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा, जो मेरी प्रजा इम्मानुएल का चरवाहा बनेगा।” ८ तब हेरोदेस ने ज्योतिर्यीयों को चुपके से खुलाकर उनसे पूछा, कि तारा ठीक किस समय दिखाई दिया था। ९ और उसने यह कहकर उन्हें बैतलहम भेजा, “जाकर उस बालक के विषय में ठीक-ठीक मालूम करो और जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो ताकि मैं भी आकर उसको प्रणाम करूँ।” १० वे राजा की बात सुनकर चले गए, और जो तारा उहोंने पूर्व में देखा था, वह उनके आगे-आगे चला; और जहाँ बालक था, उस जगह के ऊपर पहुँचकर ठहर गया। ११ उस तरे को देखकर वे अति आनन्दित हुए। १२ और उस घर में पहुँचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, और इन्डवर्ट-होकर बालक की आराधना की, और अपना-अपना थैला खोलकर उसे सोना, और लोबान, और गन्धरस की भेट चढ़ाई। १३ और स्वप्न में यह चेतावनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग से होकर अपने देश को चले गए। १४ उनके चले जाने के बाद, परमेश्वर के एक दूत ने स्वप्न में प्रकट होकर यसुफ से कहा, “उठ! उस बालक को और उसकी माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा; और जब तक मैं तुझ से न कहूँ, तब तक वही रहना; क्योंकि हेरोदेस इस बालक को ढूँढ़ने पर है कि इसे मरवा डाले।” १५ तब वह रात ही को उठकर बालक और उसकी माता को लेकर यसुफ को भाग जाना चाहता था, तब वह क्रोध से भर गया, और लोगों को भेजकर ज्योतिर्यों से ठीक-ठीक पछे हुए समय के अनुसार बैतलहम और उसके आस-पास के स्थानों के सब लड़कों को जो दो वर्ष के या उससे छोटे थे, मरवा डाला। १६ तब जो वचन यिर्याह भविष्यद्वत्ता के द्वारा कहा था पूरा हो “मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया।” १७ जब हेरोदेस ने यह देखा, कि ज्योतिर्यों ने उसके साथ धोखा किया है, तब वह क्रोध से भर गया, और लोगों को भेजकर ज्योतिर्यों से ठीक-ठीक पछे हुए समय के अनुसार बैतलहम और उसके आस-पास के स्थानों के सब लड़कों को जो दो वर्ष के या उससे छोटे थे, मरवा डाला। १८ तब जो वचन यिर्याह भविष्यद्वत्ता के द्वारा कहा था गया था, वह पूरा हुआ १९ “रामाह में एक कस्त्र-नाद सुनाई दिया, रोना और बड़ा विलाप, राहेल अपने बालकों के लिये रो रही थी; और शान्त होना न चाहती थी, क्योंकि वे अब नहीं रहे।” २० हेरोदेस के मरने के बाद, प्रभु के दूत ने मिस्र में यूसुफ को स्वप्न में प्रकट होकर कहा, २१ “उठ, बालक और उसकी माता को लेकर इम्मानुएल के देश में चला जा; क्योंकि जो बालक के प्राण लेना चाहते थे, वे मर गए।” २२ वह उठा, और बालक और उसकी माता को साथ लेकर इम्मानुएल के देश में आया। २३ परन्तु यह सुनकर कि अरखिलाउस अपने पिता हेरोदेस की जगह यहदिया पर राज्य कर रहा है, वहाँ जाने से डरा; और स्वप्न में परमेश्वर से चेतावनी पाकर गलील प्रदेश में चला गया। २४ और नासरत नामक नगर में जा बसा, ताकि वह वचन पूरा हो, जो भविष्यद्वत्ताओं के द्वारा कहा गया था: “वह नासरी कहलाएगा।”

३ उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आकर यहदिया के जंगल में यह

प्रचार करने लगा: १ “मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।” २ यह वही है जिसके बारे में यशायाह भविष्यद्वत्ता ने कहा था: “जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है, कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी करो।” ३ यह यूहन्ना ऊँट के रोम का बब्ल पहने था, और अपनी कमर में चमड़े का कमरबन्द बँधे हुए था, और उसका भोजन टिक्कियाँ

और वनमधु था। ५ तब यस्शलेम के और सारे यहदिया के, और यरदन के आस-पास के सारे क्षेत्र के लोग उसके पास निकल आए। ६ और अपने-अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया। ७ जब उन्हें बहुत से फरीसियों और सदृकियों को बपतिस्मा के लिये अपने पास आते देखा, तो उनसे कहा, “हे साँप के बच्चों, तुम्हें किसने चेतावनी दी कि अनेवाले को धर से भागो? ८ मन फिराव के योग्य फल लाओ; ९ और अपने-अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता अब्राहम है, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि परमेश्वर इन पथरों से अब्राहम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है। १० और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिए जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोका जाता है। ११ “मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद अनेवाला है, वह मुझसे शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठने के योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। १२ उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूँ को तो खेत में इकट्ठा करेगा, परन्तु भसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।” १३ उस समय यीशु गलील में यरदन के किनारे पर यहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। १४ परन्तु यहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, “मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है?” १५ यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, “अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।” तब उसने उसकी बात मान ली। १६ और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और उसके लिये आकाश खुल गया; और उसने परमेश्वर की आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा। १७ और यह आकाशवाणी हीई, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।”

४ तब उस समय पवित्र आत्मा यीशु को एकांत में ले गया ताकि शैतान से उसकी परीक्षा हो। २ वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, तब उसे भूख लागी। ३ तब परखनेवाले ने पास आकर उससे कहा, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पथर रोटियाँ बन जाएँ।” ४ यीशु ने उत्तर दिया, “लिखा है, ‘मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।’” ५ तब शैतान उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगरू पर खड़ा किया। ६ और उससे कहा, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आपको निचे पिसा दे; क्योंकि लिखा है, ‘बह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पाँवों में पथर से ठेस लगो।’” ७ यीशु ने उससे कहा, “यह भी लिखा है, ‘तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।’” ८ फिर शैतान उसे एक बहुत ऊँचे पाहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका वैधव दिखाकर ९ उससे कहा, “यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कछ तुझे दे दूँगा।” १० तब यीशु ने उससे कहा, “हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है: ‘तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।’” ११ तब शैतान उसके पास से चला गया, और स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे। १२ जब उसने यह सुना कि यहन्ना पकड़ा दिया गया, तो वह गलील को चला गया। १३ और नासरत को छोड़कर कफरनहम में जो झील के किनारे जब्लून और नमाली के क्षेत्र में है जाकर रहने लगा। १४ ताकि जो यशायाह भविष्यद्वकाएँ के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो। १५ “जबलून और नमाली के क्षेत्र, झील के मार्ग से यरदन के पास अन्यजातियों का गलील- १६ जो लोग अंधकार में बैठे थे उन्होंने बड़ी ज्योति देखी; और जो मृत्यु के क्षेत्र और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी।”

१७ उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, “मन फिराओं क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।” १८ उसने गलील की झील के किनारे फिरते हुए दो भाइयों अर्थात् शमैन को जो पतरस कहलाता है, और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुए थे। १९ और उनसे कहा, “मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।” २० वे तुन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए। २१ और वहाँ से आगे बढ़कर, उसने और दो भाइयों अर्थात् जब्दी के पुर याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने पिता जब्दी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा; और उन्हें भी बुलाया। २२ वे तुरन्त नाव और अपने पिता को छोड़कर उसके पीछे हो लिए। २३ और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनके आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दूर्बलता को दूर करता रहा। २४ और सारे सीरिया देश में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों और दुर्खें में जड़े हुए थे, और जिनमें दुष्टात्माएँ थीं और मिर्गीबालों और लकड़े के रोगियों को उसके पास लाए और उसने उन्हें चंगा किया। २५ और गलील, दिकापुलिस, यस्शलेम, यहदिया और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली।

५ वह भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए। २ और वह अपना मुँह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा: ३ “धर्य है वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। ४ “धन्य है वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएँगे। ५ “धन्य है वे, जो नम हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। ६ “धन्य है वे, जो धार्मिकता के भ्रष्टे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तुम किए जाएँगे। ७ “धन्य है वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएँगी। ८ “धन्य है वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के देखेंगे। ९ “धन्य है वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुर कहलाएँगे। १० “धन्य है वे, जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। ११ “धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें और सताएँ और झूँट बोल बोलकर तुम्हरे बिरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। १२ आनन्दित और मग्न होना क्योंकि तुम्हरे बिरोध में सब क्षेत्र की बुरी बात कहें। १३ अनन्दित और मग्न होना क्योंकि तुम्हरे विरोध में सब बड़ा प्रतिफल है। इसलिए कि उन्होंने उन भविष्यद्वकाएँ को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था। १४ “तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिंद जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके किंवदन्ती का बाहर फेका जाए और मनुष्यों के पैरों तत्ते रौदा जाए। १५ तुम जगत की ज्योति हो। जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। १६ और लोग दीया जलाकर पैमाने की निचे नहीं परन्तु दीवाट पर रखते हैं, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुँचता है। १७ उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कार्मों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें। १८ “यह न समझो, कि मैं व्यवस्थाया भविष्यद्वकाएँ की शिक्षाओं को लोप करने आया हूँ, लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ। १९ क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्द भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। २० इसलिए जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उनका पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा। २१ क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता

शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे। २१ “तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि ‘हत्या न करना’, और जो कोई हत्या करेगा वह कच्छरी में दण्ड के योग्य होगा।” २२ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कच्छरी में दण्ड के योग्य होगा और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई अपने भाई को छोड़ दे, वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा। (Geenna g1067)

२३ इसलिए यदि तू अपनी भेट वेदी पाला लाए, और वहाँ तू स्मरण करे, कि मेरे भाई के मन में मैंनी और से कुछ विरोध है, २४ तो अपनी भेट वर्ती वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर, और तब आकर अपनी भेट छढ़ा। २५ जब तक तू अपने मुझे के साथ मार्ग मैं है, उससे झटपट मेल मिलाप कर ले कहीं ऐसा न हो कि मुझे तुझे न्यायाधीश को सौंपे, और न्यायाधीश तुझे सिपाही को सौंप दे और तू बन्धीगृह में डाल दिया जाए। २६ मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक तू पाई-पाई चुका न दे तब तक वहाँ से छूटने न पाएगा। २७ “तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, ‘व्यभिचार न करना।’” २८ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई किसी भी पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका। २९ यदि तेरी दाहिनी आँख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे आँखों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। (Geenna g1067) ३० और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसको काटकर अपने पास से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिये यही भला है, कि तेरे आँखों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। (Geenna g1067) ३१ “यह भी कहा गया था, ‘जो कोई अपनी पत्नी को त्याग दे, तो उसे त्यागपत्र दे।’” ३२ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से तलाक दे, तो वह उससे व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है। ३३ “फिर तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था, ‘झूठी शपथ न खाना, परन्तु परमेश्वर के लिये अपनी शपथ को पूरी करना।’” ३४ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि कभी शपथ न खाना; न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। ३५ न धरती की, क्योंकि वह उसके पाँवों की चौकी है; न यस्तश्लोम की, क्योंकि वह महाराजा का नगर है। ३६ अपने सिर की भी शपथ न खाना क्योंकि तू एक बाल को भी न उजला, न काला कर सकता है। ३७ परन्तु तुम्हारी बात हाँ की हाँ, या नहीं की नहीं हो; क्योंकि जो कुछ इससे अधिक होता है वह बुराई से होता है। ३८ “तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था, कि आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत।” ३९ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि बुरे का समाना न करना; परन्तु जो कोई तेरी दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। ४० और यदि कोई तुझ पर मुकदमा करके तेरा कूर्ता लेना चाहे, तो उसे अंगरखानी ले लेने दे। ४१ और जो कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए तो उसके साथ दो कोस चला जा। ४२ जो कोई तुझ से मैंगे, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उससे मूँह न मोड। ४३ “तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था; कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने सतनाने वालों के लिये प्रार्थना करो।” ४४ जिससे तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरेगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सर्व उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी पर मैंह बरसाता है। ४५ क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिये क्या लाभ होगा? क्या चुंगी लेनेवाले भी ऐसा

ही नहीं करते? ४७ “और यदि तुम केवल अपने भाइयों को ही नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो? क्या अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते?” ४८ इसलिए चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।

४९ “सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धार्मिकता के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे।” ५० “इसलिए जब तू दान करे, तो अपना ढिंडोरा न पिटवा, जैसे कपटी, आराधनालयों और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उनकी बड़ाई करें, मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।” ५१ परन्तु जब तू दान करे, तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है, उसे तेरा बायाँ हाथ न जानने पाए। ५२ ताकि तेरा दान गुम रहे; और तब तेरा पिता जो गुम में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा। ५३ “और जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये आराधनालयों में और सड़कों के चौराहों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उनको अच्छा लगता है। मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।” ५४ परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द करके अपने पिता से जो गुम में है प्रार्थना कर; और तब तेरा पिता जो गुम में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा। ५५ प्रार्थना करते समय अन्यजातियों के समान बक-बक न करो; क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बार बार बोलने से उनकी सुनी जाएगी। ५६ इसलिए तुम उनके समान न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या-क्या आवश्यकताएँ हैं। ५७ “अतः तम इस रीति से प्रार्थना किया करो: ‘हे हमरे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।’” ५८ “तेरा राज्य आएतेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।” ५९ “हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।” ६० “और जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमरे अपराधों को क्षमा कर।” ६१ “और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; [क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरी ही हैं।]” ६२ “आमीन।” ६३ “इसलिए यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।” ६४ और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा। ६५ “जब तुम उपवास करो, तो कपटियों के समान तुम्हरे मूँह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मूँह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जानें। मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।” ६६ परन्तु जब तू उपवास करे तो अपने सिर पर तेल मल और मूँह धो। ६७ ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा पिता जो गुम में है, तुझे प्रतिफल देया। ६८ “अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहाँ कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चौर सेंध लगाते और चुराते हैं।” ६९ परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहाँ न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चौर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। ७० क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा। ७१ “शरीर का दीया आँख है: इसलिए यदि तेरी आँख अच्छी हो, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा।” ७२ परन्तु यदि तेरी आँख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी अधियारा होगा; इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है यदि अंधकार हो तो वह अंधकार कैसा बड़ा होगा! ७३ “कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से निष्ठावान रहेगा और दूसरे का तिरस्कार करेगा।” तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। ७४ इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएँगे, और क्या पीएँगे, और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहनेंगे, क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं? ७५ आकाश के

पक्षियों को देखो? वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; तो भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनके खिलाता है। क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते? २० तुम में कौन है, जो चिन्ना करके अपने जीवनकाल में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? २१ “और वस्त्र के लिये क्यों चिन्ना करते हो? सोसनों के फूलों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं, वे न तो परिश्रम करते हैं, न काटते हैं। २२ तो भी मैं तुम से कहता हूँ, कि सुलैमान भी, अपने सारे वैष्वर्भ में उनमें से किसी के समान वस्त्र पहने हुए न था। २३ इसलिए जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहनाता है, तो हे अल्पविवासियों, तुम को वह क्यों न पहनाएगा? २४ “इसलिए तुम चिन्ना करके यह न कहना, कि हम क्या खाएँगे, या क्या पीएँगे, या क्या पहनेंगे? २५ क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएँ चाहिए। २६ इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और धार्मिकता की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें मिल जाएँगी।

२७ अतः कल के लिये चिन्ना न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ना आप कर लेगा; आज के लिये आज ही का दुःख बहुत है।

७ “दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। ८ क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा, और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा। ९ “तूं क्यों अपने भाई की आँख के तिनके को देखता है, और अपनी आँख का लश्तु तुझे नहीं सज्जता? १० जब तेरी ही आँख में लश्तु है, तो तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, ‘ला मैं तेरी आँख से तिनका निकाल दूँ’ ११ हे कपटी, पहले अपनी आँख में से लश्तु निकाल ले, तब तू अपने भाई की आँख का तिनका भली भाँति देखकर निकाल सकेगा। १२ “पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो; ऐसा न हो कि वे उन्हें पांचों तले रोंदे और पलटकर तुम को फाड़ डालें। १३ “माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। १४ क्योंकि जो कोई माँगता है, उसे मिलता है; और जो ढूँढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा। १५ “तुम मैं से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी माँगे, तो वह उसे पत्रदे? १६ या मछली माँगे, तो उसे साँप दे? १७ अतः जब तुम ब्लैर होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा? १८ इस कारण जो कुछ तुम चाहते हों, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भविष्यद्वत्ताओं की शिक्षा यही है। १९ “सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश की ओर ले जाता है; और बहुत सारे लोग हैं जो उससे प्रवेश करते हैं। २० क्योंकि संकरा है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं। २१ “झटे भविष्यद्वत्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में फाड़नेवाले भेड़िए हैं। २२ उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या लोग झाँड़ियों से अंगर, या ऊँटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं? २३ इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है। २४ जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है। २५ अतः उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। २६ “जो मुझसे, ‘हे प्रभु, हे प्रभु’ कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। २७ उस दिन बहुत लोग मुझसे कहेंगे; ‘हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से

भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुश्षात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए?’ २८ तब मैं उनसे खुलकर कह दूँगा, ‘मैंने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुर्कम करनेवालों, मेरे पास से चले जाओ।’ २९ “इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। ३० और बारिश और बाढ़ें आई, और आँधियाँ चली, और उस घर पर टक्करें लगी, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नीव चट्टान पर डाली गई थी। ३१ परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस मूर्ख मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर रेत पर बनाया। ३२ और बारिश, और बाढ़ें आई, और आँधियाँ चली, और उस घर पर टक्करें लगी और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।” ३३ जब यीशु ये बातें कह चुका, तो ऐसा हुआ कि भीड़ उसके उपदेश से चकित हुई। ३४ क्योंकि वह उनके शास्त्रियों के समान नहीं परन्तु अधिकारी के समान उन्हें उपदेश देता था।

८ जब यीशु उस पहाड़ से उतरा, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो गई। ९ और, एक कोही ने पास आकर उसे प्रणाम किया और कहा, “हे प्रभु यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।” १० यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छुआ, और कहा, “मैं चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा।” और वह तुरन्त कोढ़ से शुद्ध हो गया। ११ यीशु ने उससे कहा, “देख, किसी से न कहना, परन्तु जाकर अपने आपको याजक के दिखा और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा, ताकि उनके लिये गवाही हो।” १२ और जब वह कफरनहम में आया तो एक स्वेदार ने उसके पास आकर उससे विनती की, १३ “हे प्रभु, मेरा सेवक घर में लकड़े का मारा बहट दुखी पड़ा है।” १४ उसने उससे कहा, “मैं आकर उसे चंगा करसँगा।” १५ स्वेदार ने उत्तर दिया, “हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए, पर केवल मुँह से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। १६ क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूँ, और सिपाही मेरे हाथ में हूँ, और जब एक से कहता हूँ, जा, तो वह जाता है; और दूसरे को कि आ, तो वह आता है; और अपने दास से कहता हूँ, कि यह कर, तो वह करता है।” १७ यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मैंने इशाएँ में भी ऐसा विवास नहीं पाया। १८ और मैं तुम से कहता हूँ, कि बहुत सारे पूर्व और पश्चिम से आकर अब्राहम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे। १९ परन्तु राज्य के सन्तानबाहर अंधकार में डाल दिए जाएँगे: वहाँ रोना और दाँतों का पीसना होगा।” २० और यीशु ने स्वेदार से कहा, “जा, जैसा तेरा विवास है, वैसा ही तेरे लिये हो।” और उसका सेवक उसी समय चंगा हो गया। २१ और यीशु ने पतरस के घर में आकर उसकी सास को तेज बुधार में पड़ा देखा। २२ उसने उसका हाथ छुआ और उसका ज्वर उत्तर गया; और वह उठकर उसकी सेवा करने लगी। २३ जब संध्या होई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुश्षात्माएँ थीं और उनसे उन आत्माओं को अपने बचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया। २४ ताकि जो बचन यशायाह भविष्यद्वत्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो: “उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।” २५ यीशु ने अपने चारों ओर एक बड़ी भीड़ देखकर इलील के उस पार जाने की आज्ञा दी। २६ और एक शास्त्री ने पास आकर उससे कहा, “हे गुरु, जहाँ कहीं तू जाएगा, मैं तेरे पीछे-पीछे हो लूँगा।” २७ यीशु ने उससे कहा, “लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्रके लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है।” २८ एक और चेले ने उससे कहा, “हे प्रभु, मुझे फहले जाने दे, कि अपने पिता को गाड़ दूँ।” २९ यीशु ने उससे कहा, “तू मेरे पीछे हो ले; और मुर्दों को

अपने मुर्दे गाड़ने दे।” २४ जब वह नाव पर चढ़ा, तो उसके चेले उसके पीछे हो लिए। २५ और, झील में एक ऐसा बड़ा तूफान उठा कि नाव लहरों से ढूँपे रहती है। २६ और वह सो रहा था। २७ तब उन्होंने पास आकर उसे जगाया, और कहा, “हे प्रभु, हमें बचा, हम नाश हुए जाते हैं।” २८ उसने उनसे कहा, “हे अल्पविश्वासियों, क्यों डरते हों?” तब उसने उठकर आँधी और पानी को ढाँटा, और सब शान्त हो गया। २९ और वे अचम्भा करके कहने लगे, “यह कैसा मनुष्य है, कि आँधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं।” ३० जब वह उस पार गढ़ेरियों के क्षेत्र में पहुँचा, तो दो मनुष्य जिनमें दुश्टामाँ थीं किन्तु उनसे निकलते हुए उसे मिले, जो इन्हे प्रचण्ड थे, कि कोई उस मार्ग से जा नहीं सकता था। ३१ और, उन्होंने चिल्लाकर कहा, “हे परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझ से क्या काम? क्या तू समय से पहले हमें दुख देने यहाँ आया है?” ३२ उनसे कुछ दूर बहुत से स्मर्तों का झाण्ड चर रहा था। ३३ दुश्टामाओं ने उससे यह कहकर विनती की, “यदि तू हमें निकालता है, तो सूरों के झाण्ड में भेज दे।” ३४ उनसे उनसे कहा, “जाओ!” और वे निकलकर स्मर्तों में घुस गईं और सारा झाण्ड टीले पर से झापटकर पानी में जा पड़ा और ढब मरा। ३५ और चरवाहे भागे, और नगर में जाकर ये सब बातें और जिनमें दुश्टामाँ थीं; उनका सारा हाल कह सुनाया। ३६ और सारे नगर के लोग यीशु से भेट करने को निकल आए और उसे देखकर विनती की, कि हमारे क्षेत्र से बाहर निकल जा।

९ फिर वह नाव पर चढ़कर पार गया, और अपने नगर में आया। १ और कई लोग एक लकड़े के मारे हुए को खाट पर रखकर उसके पास लाए। यीशु ने उनका विश्वास देखकर, उस लकड़े के मारे हुए से कहा, “हे पुत्र, धैर्य रख, तैर पाप क्षमा हुए।” २ और कई शास्त्रियों ने सोचा, “यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है।” ३ यीशु ने उनके मन की बातें जानकर कहा, “तुम लोग अपने-अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो? ४ सहज क्या है? यह कहना, ‘तैर पाप क्षमा हुए’, या यह कहना, ‘उठ और चल फिर।’” ५ परन्तु इसलिए कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है।” उसने लकड़े के मारे हुए से कहा, “उठ, अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा।” ६ वह उठकर अपने घर चला गया। ७ लोग यह देखकर डर गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे जिसने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है। ८ वहाँ से आगे बढ़कर यीशु ने मत्ती नामक एक मनुष्य को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उससे कहा, “मेरे पीछे हो ले।” वह उठकर उसके पीछे हो लिया। ९ और जब वह घर में भोजन करने के लिये बैठा तो बहुत सारे चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाता है? १० यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा, “वैध भले चंगों को नहीं परन्तु बीमारों के लिए आवश्यक है।” ११ इसलिए तुम जाकर इसका अर्थ सीख लो, कि मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूँ, क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।” १२ तब यहना के चेलों ने उसके पास आकर कहा, “क्या कारण है कि हम और फरीसी इतना उपवास करते हैं, पर तेरे चेले उपवास नहीं करते?” १३ यीशु ने उनसे कहा, “क्या बारती, जब तक दूल्हा उनके साथ है शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आँए कि दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे।” १४ नये कपड़े का पैबन्द पुराने वस्त्र पर कोई नहीं लगाता, क्योंकि वह पैबन्द वस्त्र से और कुछ खींच लेता है, और वह अधिक फट जाता है। १५ और लोग नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरते हैं; क्योंकि ऐसा करने से मशकों फट जाती है, और दाखरस बह जाता है और मशकों नाश हो जाती है, परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरते हैं और वह दोनों बच्ची रहती हैं।” १६ वह उनसे ये बातें कह ही रहा था, कि एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा, “मेरी पुत्री अभी मरी है; परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर रख, तो वह जीवित हो जाएगी।” १७ यीशु उठकर अपने चेलों समेत उसके पीछे हो लिया। १८ और देखो, एक छोटी ने जिसके बारह वर्ष से लह बहता था, उसके पीछे से आकर उसके बब्बू के कोने को छू लिया। १९ क्योंकि वह अपने मन में कहती थी, “यदि मैं उसके बब्बू ही को छू लौंगी तो चंगी हो जाऊँगी।” २० यीशु ने मुड़कर उसे देखा और कहा, “पुत्री धैर्य रख; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।” अतः वह छोटी उसी समय चंगी हो गई। २१ जब यीशु उस सरदार के घर में पहुँचा और बाँसुरी बजानेवालों और भीड़ को हल्लड मचाते देखा, २२ तब कहा, “हट जाओ, लड़की मरी नहीं, पर सोती है।” इस पर वे उसकी हँसी उड़ाने लगे। २३ परन्तु जब भीड़ निकाल दी गई, तो उसने भीतर जाकर लड़की का हाथ पकड़ा, और वह जी उठी। २४ और इस बात की चंगी उस सारे देखे में फैल गई। २५ जब यीशु वहाँ से आगे बढ़ा, तो दो अंधे उसके पीछे यह पुकारते हुए चले, “हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।” २६ जब वह घर में पहुँचा, तो वे अंधे उसके पास आए, और यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम्हें विश्वास है, कि मैं यह कर सकता हूँ?” उन्होंने उससे कहा, “हाँ हाँ प्रभु।” २७ तब उसने उनकी आँखें छुकर कहा, “तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो।” २८ और उनकी आँखें खुल गईं और यीशु ने उन्हें सर्जी के साथ सचेत किया और कहा, “सावधान, कोई इस बात को न जाने।” २९ पर उन्होंने निकलकर सारे क्षेत्र में उसका यश फैला दिया। ३० जब वे बाहर जा रहे थे, तब, लोग एक गँगा को जिसमें दुश्टामा थी उसके पास लाए। ३१ और जब दुश्टामा निकाल दी गई, तो गँगा बोलने लगा। और भीड़ ने अचम्भा करके कहा, “इसाएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।” ३२ परन्तु फरीसियों ने कहा, “यह तो दुश्टामाओं के सरदार की सहायता से दुश्टामाओं को निकालता है।” ३३ और यीशु सब नगरों और गँगों में फिरता रहा और उनके आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। ३४ जब उसने भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान जिनका कोई चरवाहा न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे। ३५ तब उसने अपने चेलों से कहा, “फसल तो बहुत है पर मजदूर थोड़े हैं।” ३६ इसलिए फसल के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत में काम करने के लिये मजदूर भेज दे।”

१० फिर उसने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया, कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें। १७ इन बारह प्रेरितों के नाम ये हैं: पहला शमैन, जो पतरस कहलाता है, और उसका भाई अन्द्रियास; जब्दी का पुत्र याकूब, और उसका भाई यूहन्ना; १८ फिलिप्पस और बरतुल्मै, थोमा, और चुंगी लेनेवाला मर्ती, हलफँस का पुत्र याकूब और तैदै। १९ शमैन कनानी, और यहदा इस्करियोती, जिसने उसे पकड़वाया। २० इन बारहों को यीशु ने यह निर्देश देकर भेजा, “अन्यजातियों की ओर न जाना, और सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना।” २१ परन्तु इसाएल के घरणे ही की खोड़ दुई भेड़ों के पास जाना। २२ और चलते-चलते प्रचार करके कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। २३ बीमारों को चंगा करो: मेरे हुओं को जिलाओ, कोडिंगों को शुद्ध करो, दुश्टामाओं को निकालो। तुम ने सेंत-मेंत पाया है, सेंत-मेंत दो। २४ अपने बटुओं में न तो सोना, और न रस्पा, और न तांबा रखना। २५ मार्ग के लिये न झोली रखो, न दो कूर्ता, न जूते और न लाठी लो, क्योंकि मजदूर को हो जाती है, परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरते हैं और वह दोनों बच्ची रहती हैं। २६ वह उनसे ये बातें कह ही रहा था, कि एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा, “मेरी पुत्री अभी मरी है; परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर रख, तो वह जीवित हो जाएगी।” २७ यीशु उठकर अपने चेलों समेत उसके पीछे हो लिया। २८ और देखो, एक छोटी ने जिसके बारह वर्ष से लह बहता था, उसके पीछे से आकर उसके बब्बू के कोने को छू लिया। २९ क्योंकि वह अपने मन में कहती थी, “यदि मैं उसके बब्बू ही को छू लौंगी तो चंगी हो जाऊँगी।” ३० यीशु ने मुड़कर उसे देखा और कहा, “पुत्री धैर्य रख रख, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।” अतः वह छोटी उसी समय चंगी हो गई। ३१ जब यीशु ने उस सरदार के घर में पहुँचा, तो वे अंधे उसके पास आए, और यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम्हें विश्वास है, कि मैं यह कर सकता हूँ?” उन्होंने उससे कहा, “हाँ हाँ प्रभु।” ३२ तब उसने उनकी आँखें छुकर कहा, “तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो।” ३३ और उनकी आँखें खुल गईं और यीशु ने उन्हें सर्जी के साथ सचेत किया और कहा, “सावधान, कोई इस बात को न जाने।” ३४ पर उन्होंने निकलकर सारे क्षेत्र में उसका यश फैला दिया। ३५ जब वे बाहर जा रहे थे, तब, लोग एक गँगा को जिसमें दुश्टामा थी उसके पास लाए। ३६ और जब दुश्टामा निकाल दी गई, तो गँगा बोलने लगा। और भीड़ ने अचम्भा करके कहा, “इसाएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।” ३७ परन्तु फरीसियों ने कहा, “यह तो दुश्टामाओं के सरदार की सहायता से दुश्टामाओं को निकालता है।” ३८ और यीशु सब नगरों और गँगों में फिरता रहा और उनके आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। ३९ जब उसने भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान जिनका कोई चरवाहा न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे। ४० तब उसने अपने चेलों से कहा, “फसल तो बहुत है पर मजदूर थोड़े हैं।” ४१ इसलिए फसल के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत में काम करने के लिये मजदूर भेज दे।”

उसका भोजन मिलना चाहिए। १५ “जिस किसी नगर या गाँव में जाओ तो पता लगाओ कि वहाँ कौन योग्य है? और जब तक वहाँ से न निकलो, उसी के यहाँ रहो। १६ और घर में प्रवेश करते हुए उसे आशीष देना। १७ यदि उस घर के लोग योग्य होंगे तो तुम्हारा कल्याण उन पर पहुँचेगा परन्तु यदि वे योग्य न हों तो तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास लौट आएगा। १८ और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे, और तुम्हारी बातें न सुने, उस घर या उस नगर से निकलते हुए अपने पांवों की धूल झाड़ डालतो। १९ मैं तुम से सच कहता हूँ, कि न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और गमोरा के नगरों की दशा अधिक सहने योग्य होगी। २० “देखो, मैं तुम्हें भेड़ों की तरह भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ इसलिए सौंपेंगे की तरह बुद्धिमान और कबूलते की तरह भोले बनो। २१ परन्तु लोगों से सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें सभाजों में सौंपेंगे, और अपने आराधनालयों में तुम्हें कोड़े मारेंगे। २२ तुम मेरे लिये राज्यपालों और राजाओं के सामने उन पर, और अन्यजातियों पर गवाह होने के लिये पेश किए जाओगे। २३ जब वे तुम्हें पकड़वाएँगे तो यह चिन्ता न करना, कि तुम कैसे बोलोगे और क्या कहोगे; क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा, वह उसी समय तुम्हें बता दिया जाएगा। २४ क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम्हारे द्वारा बोलेगा। २५ “भाई अपने भाई को और पिता अपने पुत्र को, मरने के लिये सौंपेंगे, और बच्चे माता-पिता के विरोध में उठकर उत्थे मरवा डालेंगे। २६ मैं नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धेरेगा उसी का उदाहरण होगा। २७ जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे को भाग जाना। मैं तुम से सच कहता हूँ, तुम मनुष्य के पुत्र के आने से पहले इमाएल के सब नगरों में रे गए भी न होंगे। २८ “चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, और न ही दास अपने स्वामी से। २९ चेले का गुरु के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है; जब उन्होंने घर के स्वामी को शैतानकहा तो उसके घरवालों को क्यों न कहेंगे? ३० “इसलिए उनसे मत डरना, क्योंकि कुछ ढँका नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा। ३१ जो मैं तुम से अधियारों में कहता हूँ, उसे उजियाले में कहो; और जो कानों कान सुनते हो, उसे छतों पर से प्रचार करो। ३२ जो शरीर को मार सकते हैं, पर आत्मा को मार नहीं सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है। (Geenna g1067) ३३ क्या एक पैसे में दो गौरीये नहीं बिकती? फिर भी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उनमें से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती। ३४ तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। ३५ इसलिए, डरो नहीं; तुम बहुत गैरीयों से बढ़कर मूल्यवान हो। ३६ “जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वामीय पिता के सामने मान लूँगा। ३७ पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इकार करेगा उसे मैं भी अपने स्वामीय पिता के सामने इकार करूँगा। ३८ “यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूँ; मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूँ। ३९ मैं तो आया हूँ, कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी माँ से, और बह को उसकी सास से अलग कर दूँ। ४० मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे। ४१ “जो माता या पिता को मुझसे अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं। ४२ और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं। ४३ जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा। ४४ “जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है। ४५ जो भविष्यद्वता को भविष्यद्वता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यद्वता का बदला पाएगा; और जो धर्मी जानकर धर्मी को ग्रहण करे, वह धर्मी का बदला

पाएगा। ४६ जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जानकर केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाए, मैं तुम से सच कहता हूँ, वह अपना पुरस्कार कभी नहीं खोएगा।”

११ जब यीशु अपने बारह चेलों को निर्देश दे चुका, तो वह उनके नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहाँ से चला गया। १२ यहन्ना ने बन्दीगृह में मरीह के कामों का समाचार सुनकर अपने चेलों को उससे यह पूछने भेजा, १३ “क्या आनेवाला तू ही है, या हम दूसरे की प्रीतिशक्ति करें?” १४ यीशु ने उत्तर दिया, “जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यहन्ना से कह दो। १५ कि अंधे देखते हैं और लँगड़े चलते फिरते हैं, कोटी शूद्र किए जाते हैं और बहरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं, और गरीबों को सुसामाचार सुनाया जाता है। १६ और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।” १७ जब वे वहाँ से चल दिए, तो यीशु यहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा, “तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को? १८ पर तुम क्या देखने गए थे? जो कोमल बब्ल पहनते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं। १९ तो फिर क्यों गए थे? क्या किसी भविष्यद्वता को देखने को? हाँ, मैं तुम से कहता हूँ, बरन भविष्यद्वता से भी बड़े को। २० यह बही है, जिसके विषय में लिखा है, कि ‘देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूँ, जो तेरे आगे तेरा मार्ग तैयार करेगा।’ २१ “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो छिप्यों से जन्मे हैं, उनमें से यहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं हुआ; पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उससे बड़ा है। २२ यहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है, और बलवान उसे छीन लेते हैं। २३ यहन्ना तक सारे भविष्यद्वता और व्यवस्था भविष्यद्वाणी करते रहे। २४ और चाहो तो मानो, एलियाह जो आनेवाला था, वह यही है। २५ जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले। २६ “मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से दृঁग? वे उन बालकों के समान हैं, जो बाजारों में बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं, २७ कि हमने तुम्हारे लिये बांसुरी बजाई, और तुम न नाचें; हमने विलाप किया, और तुम ने छाती नहीं पीटी। २८ क्योंकि यहन्ना न खाता आया और न ही पीता, और वे कहते हैं कि उसमें दुष्टात्मा है। २९ मनुष्य का पुन खाता-पीता आया, और वे कहते हैं कि देखो, पेट और पियकड़ मनुष्य, चुंगी लेनेवालों और पापियों का मित्र! पर ज्ञान अपने कामों में सच्चा ठहराया गया है।” ३० तब वह उन नगरों को उलाहना देने लगा, जिनमें उसने बहुत सारे सामर्थ्य के काम किए थे; क्योंकि उहोंने अपना मन नहीं फिराया था। ३१ “हाय, खुआजीन! हाय, बैतसैदा! जो सामर्थ्य के काम तुम में किए गए, यदि वे सोर और सीदोन में किए जाते, तो टाट ओढ़कर, और राख में बैठकर, वे कब के मन फिरा लेते। ३२ परन्तु मैं तुम से कहता हूँ; कि न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सोर और सीदोन की दशा अधिक सहने योग्य होगी। ३३ और हे कफरनहम, क्या त् स्वर्ग तक ऊँचा किया जाएगा? त् तो अधोलोक तक नीचे जाएगा; जो सामर्थ्य के काम तुझ में किए गए है, यदि सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता। (Hades g86) ३४ पर मैं तुम से कहता हूँ, कि न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम के नगर की दशा अधिक सहने योग्य होगी।” ३५ उसी समय यीशु ने कहा, “हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, कि तेरे इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगत किया है। ३६ हाँ, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। ३७ “मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे। ३८ “हे सब परिश्रम

करनेवालों और बोझ से दबेलोंगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। १९ मेरा जूआअपने ऊपर उठा लो; और मुझसे सीधो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। २० क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।”

१२ उस समय यीशु सब्त के दिन खेटों में से होकर जा रहा था, और उसके

चेलों को भूख लगी, और वे बाले तोड़-तोड़कर खाने लगे। १ फरीसियों ने यह देखकर उससे कहा, “देख, तेरे चेले वह काम कर रहे हैं, जो सब्त के दिन करना उचित नहीं।” २ उसने उनसे कहा, “क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने, जब वह और उसके साथी भूखे हुए तो क्या किया? ३ वह कैसे परमेश्वर के घर में गया, और भेड़ की रोटियाँ खाई, जिन्हें खाना न तो उसे और न उसके साथियों को, पर केवल याजकों को उचित था? ४ या क्या तुम ने व्यवस्था में नहीं पढ़ा, कि याजक सब्त के दिन मन्दिर में सब्त के दिन की विधि को तोड़ने पर भी निर्दोष ठहरते हैं? ५ पर मैं तुम से कहता हूँ, कि यहाँ वह है, जो मन्दिर से भी महान है। ६ यदि तुम इसका अर्थ जानते कि मैं दया से प्रसन्न होता हूँ, बलिदान से नहीं, तो तुम निर्दोष को दोषी न ठहराते। ७ मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है।” ८ वहाँ से चलकर वह उनके आराधनालय में आया। ९ वहाँ एक मनुष्य था, जिसका हाथ सूखा हुआ था; और उन्होंने उस पर दोष लगाने के लिए उससे पछा, “क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है?” १० उसने उनसे कहा, “तुम में ऐसा कौन है, जिसकी एक भेड़ हो, और वह सब्त के दिन गड़े में गिर जाए, तो वह उसे पकड़कर न निकाले? ११ भला, मनुष्य का मल्य भेड़ से कितना बढ़कर है! इसलिए सब्त के दिन भलाई करना उचित है।” १२ तब यीशु ने उस मनुष्य से कहा, “अपना हाथ बढ़ा!” उसने बढ़ाया, और वह फिर दूरे हाथ के समान अच्छा हो गया। १३ तब फरीसियों ने बाहर जाकर उसके विरोध में समर्पि की, कि उसे किस प्रकार मार डाले? १४ यह जानकर यीशु वहाँ से चला गया। और बहुत लोग उसके पीछे हो लिये, और उसने सब को चंगा किया। १५ और उन्हें चेतावनी दी, कि मुझे प्रगत न करना। १६ कि जो चचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो: १७ “देखो, यह मेरा सेवक है, जिसे मैंने चुना है, मेरा प्रिय, जिससे मेरा मन प्रसन्न है: मैं अपना आमा उस पर डालूँगा; और वह अन्यजातियों को न्याय का समाचार देगा। १८ वह न झ़गड़ा करेगा, और न चिल्लाएगा; और न बाजारों में कोई उसका शब्द सुनेगा। १९ वह कुचले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा, और धुआं देती हुई बत्ती को न बुझाएगा, जब तक न्याय की प्रबल न कराए। २० और अन्यजातियों उसके नाम पर आशा रखेंगी।” २१ तब लोग एक अंधे-गूँह को जिसमें दृश्टात्मा थी, उसके पास लाएँ और उसने उसे अच्छा किया; और वह गूँगा बोलने और देखने लगा। २२ इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, “यह क्या दाऊद की सन्तान है?” २३ परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, “यह तो दृश्टात्माओं के सरदार शैतान की सहायता के बिना दृश्टात्माओं को नहीं निकालता।” २४ उसने उनके मन की बात जानकर उसे कहा, “जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और कोई नार या घराना जिसमें फूट होती है, बना न रहेगा। २५ और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य कैसे बना रहेगा? २६ भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दृश्टात्माओं को निकालता हूँ, तो तुम्हरे बंश किसकी सहायता से निकालते हैं? इसलिए वे ही तुम्हारा न्याय करेंगे। २७ पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दृश्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है। २८ या कैसे कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लट सकता है जब तक कि पहले उस बलवन्त को न बाँध ले? और तब वह उसका

घर लट लेगा। २९ जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिखेरता है। ३० इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, पर पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी। ३१ जो कोई भूष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस युग में और न ही अनेवाले युग में क्षमा किया जाएगा। (aiōn g165) ३२ “यदि पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो; क्योंकि पेड़ फल ही से पहचाना जाता है। ३३ हे सौंप के बच्चों, तुम बुरे होकर कैसे अच्छी बातें कह सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुँह पर आता है। ३४ भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और बुरा भूष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है। ३५ और मैं तुम से कहता हूँ, कि जो-जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे। ३६ क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा।” ३७ इस पर कुछ शान्तियों और फरीसियों ने उससे कहा, “हे गुरु, हम तुझ से एक चिन्ह देखना चाहते हैं।” ३८ उसने उन्हें उत्तर दिया, “इस युग के बुरे और व्यधिचारी लोग चिन्ह ढूँढ़ते हैं; परन्तु योना भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उनको न दिया जाएगा। ३९ योना तीन रात-दिन महा मच्छ के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात-दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा। ४० नीनेवे के लोग न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएँगे, क्योंकि उन्होंने योना का प्रचार सुनकर, मन कियाया और यहाँ वह है जो योना से भी बड़ाहै। ४१ दक्षिण की रानी न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिये पृथ्वी के छोर से आई, और यहाँ वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है। ४२ “जब अशूद आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहों में विश्राम ढूँढ़ती फिरती है, और पाती नहीं। ४३ तब कहती है, कि मैं अपने उसी घर में जहाँ से निकली थी, लौट जाऊँगी, और आकर उसे सूना, झाड़ा-बूहारा और सजा-सजाया पाती है। ४४ तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे उसमें पैठकर वहाँ बास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है। इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी।” ४५ जब वह भीड़ से बातें कर ही रहा था, तो उसकी माता और भाई बाहर खड़े थे, और उससे बातें करना चाहते थे। ४६ किसी ने उससे कहा, “देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और तुझ से बातें करना चाहते हैं।” ४७ यह सुन उसने कहनेवाले को उत्तर दिया, “कौन हैं मेरी माता? और कौन हैं मेरे भाई?” ४८ और अपने चेलों की ओर अपना हाथ बढ़ाकर कहा, “मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। ४९ क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्णीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, और बहन, और माता है।”

१३ उसी दिन यीशु घर से निकलकर झील के किनारे जा बैठा। १ और उसके

पास ऐसी बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़ गया, और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही। २ और उसने उसे दृश्टान्तों में बहुत सी बातें कही “एक बोनेवाला बीज बोने निकला। ३ बोने समय कुछ बीज मार्फ के किनारे गिर, और पक्षियों ने आकर उन्हें चुरा लिया। ४ कुछ बीज पथरीली भूमि पर गिरे, जहाँ उन्हें बहुत मिट्टी न मिली और नसर मिट्टी न मिलने के कारण वे जल्द उग आए। ५ पर सूज निकलने पर वे जल गए, और जड़ न पकड़ने से सूख गए। ६ कुछ बीज झाड़ियों में गिरे, और झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा

डाला। ८ पर कुछ अच्छी भूमि पर गिरे, और फल लाए, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना। ९ जिसके कान हों वह सुन ले।” १० और चेलों ने पास आकर उससे कहा, “तु उनसे दृष्टान्तों में क्यों बातें करता है?” ११ उसने उत्तर दिया, “तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर उनको नहीं। १२ क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा; पर जिसके पास कुछ नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा। १३ मैं उनसे दृष्टान्तों में इसलिए बातें करता हूँ, कि वे देखते हुए नहीं देखते; और सुनते हुए नहीं सुनते; और नहीं समझते। १४ और उनके विषय में यशायाह की यह भविष्यद्वारी पूरी होती है: ‘तुम कानों से तो सुनोगे, पर समझेगे नहीं; और आँखों से तो देखोगे, पर तुम्हें न सङ्गेगा। १५ क्योंकि इन लोगों के मन सुस्त हो गए हैं, और वे कानों से ऊँचा सुनते हैं और उन्होंने अपनी आँखें मैंद ली हैं, कहीं ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें, और कानों से सुनें और मन से समझें, और फिर जाएँ, और मैं उन्हें चंगा करूँ।’ १६ “पर धन्य है तुम्हारी आँखें, कि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, कि वे सुनते हैं। १७ क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और धर्मियों ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो, देखें पर न देखीं; और जो बातें तुम सुनते हो, सुनें, पर न सुनीं। १८ “अब तुम बोनेवाले का दृष्टान्त सुनो १९ जो कोई राज्य का वचनसुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे वह दृष्ट आकर छीन ले जाता है; यह वही है, जो मार्ग के किनारे बोया गया था। २० और जो पथरीली भूमि पर बोया गया, यह वह है, जो वचन सुनकर तुरन्त आनन्द के साथ मान लेता है। २१ पर अपने में जड़ न रखने के कारण वह थोड़े ही दिन रह पाता है, और जब वचन के कारण क्लेश या उत्पीड़न होता है, तो तुरन्त ठोकर खाता है। २२ जो शाड़ियों में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनता है, पर इस संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबाता है, और वह फल नहीं लाता। (aiōn g165) २३ जो अच्छी भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनकर समझता है, और फल लाता है कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।” २४ यीशु ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया, “स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। २५ पर जब लोग सो रहे थे तो उसका बैरी आकर गेहूँ के बीच जंगली बीज बोकर चला गया। २६ जब अंकुर निकले और बाले लगी, तो जंगली दाने के पौधे भी दिखाई दिए। २७ इस पर गृहस्थ के दासों ने आकर उसने कहा, ‘हे स्वामी, क्या तूने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था? फिर जंगली दाने के पौधे उसमें कहाँ से आए?’ २८ उसने उनसे कहा, ‘यह किसी शत्रु का काम है।’ दासों ने उससे कहा, ‘क्या तेरी इच्छा है, कि हम जाकर उनको बटोर लें?’ २९ उसने कहा, ‘नहीं, ऐसा न हो कि जंगली दाने के पौधे बटोरते हुए तुम उनके साथ गेहूँ भी उखाड़ लो। ३० कट्टी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो, और कट्टी के समय मैं काटनेवालों से कहाँगा; पहले जंगली दाने के पौधे बटोरकर जलाने के लिये उनके गढ़े बाँध लो, और गेहूँ को मैं खेत में इकट्ठा करो।’” ३१ उसने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया, “स्वर्ग का राज्य गाई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया। ३२ वह सब बीजों से छोटा तो है पर जब बढ़ जाता है तब सब साग-पात से बड़ा होता है, और ऐसा पेड़ हो जाता है, कि आकाश के पक्षी आकर उसकी डालियों पर बसेरा करते हैं।” ३३ उसने एक और दृष्टान्त उन्हें सुनाया, “स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिसको किसी झीं ने लेकर तीन पसरी आटे में मिला दिया और होते-होते वह सब खमीर हो गया।” ३४ ये सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं, और बिना दृष्टान्त वह उनसे कुछ न कहता था। ३५ कि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो: “मैं दृष्टान्त कहने को

अपना मुँह खोलूँगा मैं उन बातों को जो जगत की उत्पत्ति से गुम रही है प्रगट करूँगा।” ३६ तब वह भीड़ को छोड़कर घर में आया, और उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा, “खेत के जंगली दाने का दृष्टान्त हमें समझा देए।” ३७ उसने उनको उत्तर दिया, “अच्छे बीज का बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है। ३८ खेत संसार है, अच्छा बीज राज्य के सन्तान, और जंगली बीज दृष्ट के सन्तान है। ३९ जिस शत्रु ने उनको बोया वह शैतान है; कट्टी जगत का अन्त है; और कटनेवाले स्वर्मदत हैं। (aiōn g165) ४० अतः जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और जलाए जाते हैं वैसा ही जगत के अन्त में होगा। (aiōn g165) ४१ मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्मदतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुर्कम कनेवालों को इकट्ठा करेंगे। ४२ और उन्हें आग के कुण्डों में डालेंगे, वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा। ४३ उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे। जिसके कान हों वह सुन ले। ४४ “स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया, और आनन्द के मारे जाकर अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया। ४५ “फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। ४६ जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया। ४७ “फिर स्वर्ग का राज्य उस बड़े जाल के समान है, जो समुद्र में डाला गया, और हर प्रकार की मछलियों को समेट लाया। ४८ और जब जाल भर गया, तो मछुए किनारे पर खीच लाए, और बैठकर अच्छी-अच्छी तो बरतनों में इकट्ठा की और बेकार-बेकार फेंक दी। ४९ जगत के अन्त में ऐसा ही होगा; स्वर्गदूत आकर दूषों को धर्मियों से अलग करेंगे, (aiōn g165) ५० और उन्हें आग के कुण्ड में डालेंगे। वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा। ५१ क्या तुम ये सब बातें समझ गए?” चेलों ने उत्तर दिया, “हाँ।” ५२ फिर यीशु ने उनसे कहा, “इसलिए हर एक शाही जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना है, उस गृहस्थ के समान है जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएँ निकालता है।” ५३ जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका, तो वहाँ से चला गया। ५४ और अपने नगर में आकर उनके आराधनालय में उन्हें ऐसा उपदेश देने लगा; कि वे चकित होकर कहने लगे, “इसको यह ज्ञान और सामर्थ्य के काम कहाँ से मिले? ५५ क्या यह बढ़दूँ का बेटा नहीं? और क्या इसकी माता का नाम मरियम और इसके भाइयों के नाम याकूब, यसुफ, शमैन और यहूदा नहीं? ५६ और क्या इसकी सब बहनें हमारे बीच में नहीं रहती? फिर इसको यह सब कहाँ से मिला?” ५७ इस प्रकार उन्होंने उसके कारण ठोकर खाई, पर यीशु ने उनसे कहा, “भविष्यद्वक्ता का अपने नगर और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर नहीं होता।” ५८ और उसने वहाँ उनके अविच्वास के कारण बहुत सामर्थ्य के काम नहीं किए।

१४ उस समय चौथाई देश के राजा हेरोदेस ने यीशु की चर्चा सुनी। १ और अपने सेवकों से कहा, “यह यूहन्ना बपतिस्मा देवेवाला है; वह मेरे हओं में से जी उठा है, इसलिए उससे सामर्थ्य के काम प्राप्त होते हैं।” २ क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पस की पत्नी हेरोदियास के कारण, यूहन्ना को पकड़कर बाँधा, और जेलखाने में डाल दिया था। ३ क्योंकि यूहन्ना ने उससे कहा था, कि इसको रखना तुझे उचित नहीं है। ४ और वह उसे मार डालना चाहता था, पर लोगों से डरता था, क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता मानते थे। ५ पर जब हेरोदेस का जन्मदिन आया, तो हेरोदियास की बेटी ने उत्सव में नाच दिखाकर हेरोदेस को खुश किया। ६ इसलिए उसने शपथ खाकर वचन दिया, “जो कुछ तू मैंगोगी, मैं तुझे देणा।” ७ वह अपनी माता के उकसाने से बोली, “यूहन्ना बपतिस्मा देवेवाले का सिर थाल में यहीं मुझे मैंगवा दे।” ८ राजा

दुःखित हुआ, पर अपनी शपथ के, और साथ बैठेवालों के कारण, आज्ञा दी, कि दे दिया जाए। १० और उसने जेलखाने में लोगों को भेजकर यूहन्ना का सिर कटवा दिया। ११ और उसका सिर थाल में लाया गया, और लड़की को दिया गया; और वह उसको अपनी माँ के पास ले गई। १२ और उसके चेलों ने आकर उसके शव को ले जाकर गाड़ दिया और जाकर यीशु को समाचार दिया। १३ जब यीशु ने यह सुना, तो नाव पर चढ़कर वहाँ से किसी सुनसान जगह को, एकान्त में चला गया; और लोग यह सुनकर नगर-नगर से पैदल उसके पीछे हो लिए। १४ उसने निकलकर एक बड़ी भीड़ देखी, और उन पर तरस खाया, और उसने उनके बीमारों को चंगा किया। १५ जब सँझ हुई, तो उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा, “यह तो सुनसान जगह है और देर हो रही है, लोगों को विदा किया जाए कि वे बस्तियों में जाकर अपने लिये भोजन मोल लें।” १६ यीशु ने उनसे कहा, “उनका जाना अवश्यक नहीं! तुम ही इहें खाने को दो।” १७ उन्होंने उससे कहा, “यहाँ हमारे पास पाँच रोटी और दो मछलियों को छोड़ और कुछ नहीं है।” १८ उसने कहा, “उनको यहाँ मेरे पास ले आओ।” १९ तब उसने लोगों को घास पर बैठने को कहा, और उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को लिया; और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियाँ तोड़-तोड़कर चेलों को दी, और चेलों ने लोगों को। २० और सब खाकर तम हो गए, और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बाहर टोकरियाँ उठाए। २१ और खानेवाले खियों और बालकों को छोड़कर पाँच हजार पुष्पों के लगभग थे। २२ और उसने तुरन्त अपने चेलों को नाव पर चढ़ाया, कि वे उससे पहले पर चले जाएँ, जब तक कि वह लोगों को विदा करे। २३ वह लोगों को विदा करके, प्रार्थना करने को अलग पहाड़ पर चढ़ गया; और साँझ को वह वहाँ अकेला था। २४ उस समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी, क्योंकि हवा सामने की थी। २५ और वह रात के चौथे पहर झील पर चलते हुए उनके पास आया। २६ चेले उसको झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए, और कहने लगे, “वह भूत है,” और डर के मारे चिल्ला उठे। २७ यीशु ने तुरन्त उनसे बातें की, और कहा, “धैर्य रखो, मैं हूँ, डरो मत।” २८ पतरस ने उसको उत्तर दिया, “हे प्रभु, यदि तु ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दो।” २९ उसने कहा, “आ!” तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा। ३० पर हवा को देखकर डर गया, और जब ढूबने लगा तो चिल्लाकर कहा, “हे प्रभु, मुझे बचा।” ३१ यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उससे कहा, “हे अत्य विक्षासी, तुम क्यों सद्देह किया?” ३२ जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम गई। ३३ इस पर जो नाव पर थे, उन्होंने उसकी आराधना करके कहा, “सचमुच, तू परमेश्वर का पुत्र है।” ३४ वे पर उतरकर गन्नेसरत प्रदेश में पहुँचे। ३५ और वहाँ के लोगों ने उसे पहचानकर आस-पास के सारे क्षेत्र में कहला भेजा, और सब बीमारों को उसके पास लाए। ३६ और उससे विनती करने लगे कि वह उन्हें अपने बन्ध के कोने ही को छूने दे; और जितनों ने उसे छुआ, वे चंगे हो गए।

१५ तब यस्शलेम से कुछ फरीसी और शारी यीशु के पास आकर कहने लगे, १ “तेरे चेले प्राचीनों की परम्पराओं को क्यों टालते हैं, कि बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं?” २ उसने उनको उत्तर दिया, “तुम भी अपनी परम्पराओं के कारण क्यों परमेश्वर की आज्ञा टालते हो? ३ क्योंकि परमेश्वर ने कहा, ‘अपने पिता और अपनी माता का आदर करना’, और ‘जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, वह मार डाला जाए।’ ४ पर तम कहते हो, कि यदि कोई अपने पिता या माता से कहे, ‘जो कुछ तुझे मुझसे लाभ पहुँच सकता था,

वह परमेश्वर को भेट चढ़ाया जा चुका’ ५ तो वह अपने पिता का आदर न करे, इस प्रकार तुम ने अपनी परम्परा के कारण परमेश्वर का वचन टाल दिया। ६ हे कपटियों, यशाया ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक ही की है: ७ ‘ये लोग होते से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझसे दूर रहता है। ८ और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्य की विधियों को धर्मपदेश करके सिखता है।’ ९ और उसने लोगों को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, “सुगो, और समझो। १० जो मूँह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, पर जो मूँह से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।” ११ तब चेलों ने आकर उससे कहा, “क्या तू जानता है कि फीसियों ने यह वचन सुनकर ठोकर खाई?” १२ उसने उत्तर दिया, “हर पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, उखाड़ा जाएगा। १३ उनको जाने दो; वे अंधे मार्ग दिखानेवाले हैं और अंधा यदि अंधे को मार्ग दिखाए, तो दोनों गड़े में पड़ेंगे।” १४ यह सुनकर पतरस ने उससे कहा, “यह दृष्टान्त हमें समझा दे।” १५ उसने कहा, “क्या तुम भी अब तक नासमझ हो? १६ क्या तुम नहीं समझते, कि जो कुछ मूँह में जाता, वह पेट में पड़ता है, और शौच से निकल जाता है? १७ पर जो कुछ मूँह से निकलता है, वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। १८ क्योंकि बूँदे विचार, हत्या, परालीगमन, व्यभिचार, चोरी, झटी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती है। १९ यही है जो मनुष्य को अशुद्ध करती है, परन्तु हाथ बिना धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता।” २० यीशु वहाँ से निकलकर, सोर और सीदोन के देशों की ओर चला गया। २१ और देखो, उस प्रदेश से एक कनानी स्त्री निकली, और चिल्लाकर कहने लगी, “हे प्रभु! दाऊद की सन्तान, मुझ पर दगा कर, मेरी बेटी को दुष्टतमा बहुत सता रहा है।” २२ पर उसने उसे कुछ उत्तर न दिया, और उसके चेलों ने आकर उससे विनती करके कहा, “इसे विदा कर; क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती आती है।” २३ उसने उत्तर दिया, “इसाएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया।” २४ पर वह आई, और उसे प्रणाम करके कहने लगी, “हे प्रभु, मेरी सहायता कर।” २५ उसने उत्तर दिया, “बच्चों कीरोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं।” २६ उसने कहा, “सत्य है प्रभु, पर कुत्ते भी वह चूर चार खाते हैं, जो उनके स्वामियों की मेज से गिरते हैं।” २७ इस पर यीशु ने उसको उत्तर देकर कहा, “हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है; जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो।” और उसकी बेटी उसी समय चंगी हो गई। २८ यीशु वहाँ से चलकर, गलील की झील के पास आया, और पहाड़ पर चढ़कर वहाँ बैठ गया। २९ और भीड़ पर भीड़ उसके पास आई, वे अपने साथ लॅगड़ों, अंधों, गँगों, टुण्डों, और बहुतों को लेकर उसके पास आए; और उन्हें उसके पांचों पर डाल दिया, और उसने उन्हें चंगा किया। ३० अतः जब लोगों ने देखा, कि गँगौ बोलते और टुण्डे चोंहोते और लॅगड़े चलते और अंधे देखते हैं, तो अचम्भा करके इसाएल के परमेश्वर की बड़ाई की। ३१ यीशु इस एल के पास उत्तर दिया, “मुझे इस भीड़ पर तरस आता है; क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साथ हैं और उनके पास कुछ खाने को नहीं; और मैं उन्हें भूखा विदा करना नहीं चाहता; कही ऐसा न हो कि मार्ग में थककर गिर जाएँ।” ३२ चेलों ने उससे कहा, “हमें इस निर्जन स्थान में कहाँ से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तुम करें?” ३३ यीशु ने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटी हैं?” उन्होंने कहा, “सात और थोड़ी सी छोटी मछलियाँ।” ३४ तब उसने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी। ३५ और उन सात रोटियों और मछलियों को ले धन्यवाद करके तोड़ा और अपने चेलों को देता गया, और चेले लोगों को। ३६ इस प्रकार सब खाकर तम हो गए और बचे हुए टुकड़ों से भेरे हुए सात टोकरे उठाए। ३७ और खानेवाले खियों और

बालकों को छोड़ चार हजार पुष्प थे। ३९ तब वह भीड़ को विदा करके नाव पर चढ़ गया, और मगदन क्षेत्र में आया।

१६ और फरीसियों और सदूकियों ने यीशु के पास आकर उसे परखने के लिये उससे कहा, “हमें स्वर्ग का कोई चिन्ह दिखा।” २० उसने उनको उत्तर दिया, “साँझ को तुम कहते हो, कि मौसम अच्छा रहेगा, क्योंकि आकाश लाल है। ३ और भोर को कहते हो, कि आज अँधी आएगी क्योंकि आकाश लाल और धूमला है; तुम आकाश का लक्षण देखकर भेद बता सकते हो, पर समय के चिन्हों का भेद क्यों नहीं बता सकते? ४ इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूँढते हैं पर योना के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा।” और वह उन्हें छोड़कर चला गया। ५ और चेले झील के उस पार जाते समय रोटी लेना भूल गए थे। ६ यीशु ने उनसे कहा, “देखो, फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहना।” ७ वे आपस में विचार करने लगे, “हम तो रोटी नहीं लाए। इसलिए वह ऐसा कहता है।” ८ यह जानकर, यीशु ने उनसे कहा, “हे अत्यन्विच्वासियों, तुम आपस में क्यों विचार करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं? ९ क्या तुम अब तक नहीं साझें? और उन पाँच हजार की पाँच रोटी स्मरण नहीं करते, और न यह कि कितनी टोकरियाँ उठाई थीं? १० और न उन चार हजार की सात रोटियाँ, और न यह कि किन्ते टोकरे उठाए गए थे? ११ तुम क्यों नहीं समझते कि मैंने तुम से रोटियों के विषय में नहीं कहा? परन्तु फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहना।” १२ तब उनको समझ में आया, कि उसने रोटी के खमीर से नहीं, पर फरीसियों और सदूकियों की शिक्षा से सावधान रहने को कहा था। १३ यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रश्न में आकर अपने चेलों से पछने लगा, “लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?” १४ उन्होंने कहा, “कुछ तो यहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहते हैं और कुछ एलियाह, और कुछ यिर्मयाह या भीष्यद्वत्काओं में से कोई एक कहते हैं।” १५ उसने उनसे कहा, “परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?” १६ शमैन पतरस ने उत्तर दिया, “तू जीविते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।” १७ यीशु ने उसको उत्तर दिया, “हे शमैन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि माँस और लाह ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगत की है।” १८ और मैं भी तुझ से कहता हूँ, कि तू पतरस है, और मैं इस पथर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोतोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। (Hadess g86) १९ मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुँजियाँ दूँगा। और जो कुछ त् पृथ्वी पर जैविया, वह स्वर्ग में जैविया, और जो कुछ त् पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खोलेगा।” २० तब उसने चेलों को चेतावनी दी, “किसी से न कहना! कि मैं मसीह हूँ।” २१ उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, “मुझे अवश्य है, कि यस्तशेत्र को जाऊँ, और प्राचीनों और प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुःख उठाऊँ; और मार डाला जाऊँ; और तीसेरे दिन जी उड़ूँ।” २२ इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर डाँने लगा, “हे प्रभु, परमेश्वर न करे! तुझ पर ऐसा कभी न होगा।” २३ उसने फिरकर पतरस से कहा, “हे शैतान, मेरे सामने से दूँ हो! तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, पर मनुष्यों की बातें पर मन लगाता है।” २४ तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, “यदि कोई मेरे पिछे आना चाहे, तो अपने आपका इकार करे और अपना क़ूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। २५ क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। २६ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा? २७ मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के

साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय ‘वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।’ २८ मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कितने ऐसे हैं, कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे।”

१९ छ: दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यहन्ना

को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया। २ और वहाँ उनके सामने उसका स्पान्तरण हुआ और उसका मुँह सूर्य के समान चमका और उसका वश ज्योति के समान उजला हो गया। ३ और मूसा और एलियाह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए। ४ इस पर पतरस ने यीशु से कहा, “हे प्रभु, हमारा यहाँ रहना अच्छा है; यदि तेरी इच्छा हो तो मैं यहाँ तीन तम्बू बनाऊँ; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलियाह के लिये।” ५ वह बोल ही रहा था, कि एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ: इसकी सुनो।” ६ चेले यह सुनकर मुँह के बल पिर गए और अत्यन्त डर गए। ७ यीशु ने पास आकर उन्हें छुआ, और कहा, “उठो, डरो मत।” ८ तब उन्होंने अपनी आँखें उठाकर यीशु को छोड़ और किसी को न देखा। ९ जब वे पहाड़ से उत्तर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह निर्देश दिया, “जब तक मनुष्य का पुत्र मेरे हृओं में से न जी उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना।” १० और उसके चेलों ने उससे पूछा, “पिर शासी क्यों कहते हैं, कि एलियाह का पहले आना अवश्य है?” ११ उसने उत्तर दिया, “एलियाह तो अवश्य आएगा और सब कुछ सुधारेगा।” १२ परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, कि एलियाह आ चुका; और उन्होंने उसे नहीं पहचाना; परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उसके साथ किया। इसी प्रकार सेमनुष्य का पुत्र भी उनके हाथ से दुःख उठाएगा।” १३ तब चेलों ने समझा कि उसने हम से यहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में कहा है। १४ जब वे भीड़ के पास पहुँचे, तो एक मनुष्य उसके पास आया, और घृने टेकर कहने लगा। १५ “हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर! क्योंकि उसको मिर्गी आती है, और वह बहुत दुःख उठाता है; और बार बार आग में और बार बार आपनी मैं गिर पड़ता है। १६ और मैं उसको तेरे चेलों के पास लाया था, पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके।” १७ यीशु ने उत्तर दिया, “हे अविच्वासी और हठीले लोगों, मैं कब तक तुहारे साथ रहूँगा? कब तक तुम्हारी सहाय्ता है? उसे यहाँ मेरे पास लाओ।” १८ तब यीशु ने उसे ढाँटा, और दुश्टता उसमें से निकला; और लड़का उसी समय अच्छा हो गया। १९ तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा, “हम इसे क्यों नहीं निकाल सके?” २० उसने उनसे कहा, “अपने विच्वास की कमी के कारण: क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुहारा विच्वास राई के दाने के बराबरभी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे, ‘यहाँ से सरकर वहाँ चला जा।’ तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुहारे साथ अनहोनी न होगी। २१ [पर यह जाति बिना प्रार्थना और उपवास के नहीं निकलती।]” २२ जब वे गलील में थे, तो यीशु ने उनसे कहा, “मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा।” २३ और वे उसे मार डालेंगे, और वह तीसेरे दिन जी उठेगा।” इस पर वे बहुत उदास हुए। २४ जब वे कफरनहम में पहुँचे, तो मन्दिर के लिये कर लेनेवालों ने पतरस के पास आकर पूछा, “क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता?” २५ उसने कहा, “हाँ, देता है।” जब वह घर में आया, तो यीशु ने उसके पछने से पहले उससे कहा, “हे शमैन तू क्या समझता है? पृथ्वी के राजा चुंगी या कर किन से लेते हैं? अपने पुत्रों से या परायों से?” २६ पतरस ने उससे कहा, “परायों से।” यीशु ने उससे कहा, “तो पुत्र बच गए। २७ फिर भी हम उन्हें ठोकर न खिलाएँ, तू झील के किनारे जाकर बंसी डाल, और जो

मछली पहले निकले, उसे ले; तो तुझे उसका मुँह खोलने पर एक सिक्का मिलेगा, उसी को लेकर मैं और और अपने बदले उन्हें दे देना।”

१८ उसी समय चेते यीशु के पास आकर पूछने लगे, “स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है?” ९ इस पर उसने एक बालक को पास बुलाकर उनके बीच में खड़ा किया, ३ और कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाओगे। ४ जो कोई अपने आपको इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा। ५ और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है। ६ “पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विवास करते हैं एक को ठोकर खिलाएँ। उसके लिये भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहरे समुद्र में डुबाया जाता। ७ ठोकरों के कारण संसार पर हाथ! ठोकरों का लगाना अवश्य है, पर हाथ उस मनुष्य पर जिसके द्वारा ठोकर लगती है। ८ “यदि तेरा हाथ या तेरा पाँव तुझे ठोकर खिलाएँ, तो काटकर फेंक दें; टुण्डा या लाँगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो हाथ या दो पाँव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाए। (aiōnios g166) ९ और यदि तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाएँ, तो उसे निकालकर फेंक दे। काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो आँख रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाए। (Geenna g1067) १० “देखो, तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानो; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि स्वर्ग में उनके स्वर्गदूत मेरे स्वार्यीय पिता का मुँह सदा देखते हैं। ११ [क्योंकि] मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को बचाने आया है।” १२ “तुम क्या समझते हो? यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़े हों, और उनमें से एक भटक जाए, तो क्या निन्यानवे को छोड़कर, और पहाड़ों पर जाकर, उस भटकी हुई को न छूँड़ोगा? १३ और यदि ऐसा हो कि उसे पाए, तो मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वह उन निन्यानवे भेड़ों के लिये जो भटकी नहीं थी इतना अनन्द नहीं करेगा, जितना कि इस भेड़े के लिये करेगा। १४ ऐसा ही तुम्हरे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं, कि इन छोटों में से एक भी नाश हो। १५ “यदि तेरा भाई तेरे विस्तु अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह न सुने, तो और एक दो जन को अपने साथ ले जा, कि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुँह से ठहराई जाए। १६ और यदि वह उनकी भी न माने, तो उसे कल्पिया से कह दे, परन्तु यदि वह कल्पिया की भी न माने, तो तू उसे अन्यजाति और चुंगी लेनेवाले के जैसा जान। १७ [मैं तुम से सच कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधेगे, वह स्वर्ग पर बैंधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलेगे, वह स्वर्ग में खेलेगा। १८] फिर मैं तुम से कहता हूँ, यदि तुम मैं से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिये जिसे वे मैंगें, एक मन के हों, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग मैं है उनके लिये हो जाएगी। १९] क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।” २० तब पतरस ने पास आकर, उससे कहा, “हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ, क्या सात बार तक?” २१ यीशु ने उससे कहा, “मैं तुझ से यह नहीं कहता, कि सात बार, बरन् सात बार के सतर गुणेतक। २२ “इसलिए स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिसने अपने दासों से लेखा लेना चाहा। २३ जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके समाने लाया गया जो दस हजार तोड़े का कर्जदार था। २४ जबकि चुकाने को उसके पास कुछ न था, तो उसके स्वामी ने कहा, कि यह और इसकी पत्ती और बाल-बच्चे और जो कुछ इसका है सब बेचा जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए। २५ इस पर

उस दास ने गिरकर उसे प्रणाम किया, और कहा, ‘हे स्वामी, धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूँगा।’ २६ तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका कर्ज क्षमा किया। २७ “परन्तु जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासों में से एक उसको मिला, जो उसके सौ दीनारका कर्जदार था; उसने उसे पकड़कर उसका गला घोटा और कहा, ‘जो कुछ तुझ पर कर्ज है भर दो।’ २८ इस पर उसका संगी दास गिरकर, उससे बिनती करने लगा; कि धीरज धर मैं सब भर दूँगा। २९ उसने न माना, परन्तु जाकर उसे बन्दीगृह में डाल दिया; कि जब तक कर्ज को भर न दे, तब तक वही रहे। ३० उसके संगी दास यह जो हुआ था देखकर बहत उदास हुए, और जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया। ३१ तब उसके स्वामी ने उसको बुलाकर उससे कहा, ‘हे दृष्ट दास, तूने जो मुझसे बिनती की, तो मैंने तो तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा किया। ३२ इसलिए जैसा मैंने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नहीं चाहिए था?’ ३३ और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देनेवालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्ज भर न दे, तब तक उनके हाथ में रहे। ३४ “इसी प्रकार यदि तुम मैं से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।”

१९ जब यीशु ये बातें कह चुका, तो गलील से चला गया; और यहूदिया के प्रदेश में यरदन के पार आया। २ और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, और उसने उहें वहाँ चंगा किया। ३ तब फरीसी उसकी परीक्षा करने के लिये पास आकर कहने लगे, “क्या हर एक कारण से अपनी पत्ती को त्यागना उचित है?” ४ उसने उत्तर दिया, “क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि जिसने उन्हें बनाया, उसने आरम्भ से न और नारी बनाकर कहा, ५ ‘इस कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्ती के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे?’ ६ अतः वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं इसलिए जैसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।” ७ उन्होंने यीशु से कहा, “फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया, कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे?” ८ उसने उनसे कहा, “मूसा ने तुम्हरे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी पत्ती को छोड़ देने की अनुमति दी, परन्तु आरम्भ में ऐसा नहीं था। ९ और मैं तुम से कहता हूँ, कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्ती को त्याग कर, दूसरी से विवाह करे, वह भी व्यभिचार करता है।” १० चेलों ने उससे कहा, “यदि पूर्ण का जी ने कासथ ऐसा सम्बद्ध है, तो विवाह करना अच्छा नहीं।” ११ उसने उनसे कहा, “सब यह वचन ग्रहण नहीं कर सकते, केवल वे जिनको यह दान दिया गया है। १२ क्योंकि कुछ नपुंसक ऐसे हैं जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे; और कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जिन्हें मनुष्य ने नपुंसक बनाया: और कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के लिये अपने आपको नपुंसक बनाया है, जो इसको ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण करे।” १३ तब लोग बालकों को उसके पास लाए, कि वह उन पर हाथ रखे और प्रार्थना करे, पर चेलों ने उन्हें ढाँटा। १४ यीशु ने कहा, “बालकों को मेरा पास आने दो, और उन्हें माना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।” १५ और वह उन पर हाथ रखकर, वहाँ से चला गया। १६ और एक मनुष्य ने पास आकर उससे कहा, “हे गुरु, मैं कौन सा भला काम करूँ, कि अनन्त जीवन पाऊँ?” (aiōnios g166) १७ उसने उससे कहा, “तू मुझसे भलाइ के विषय में क्यों पछता है? भला तो एक ही है, पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आजाओं को माना कर।” १८ उसने उससे कहा, “कौन सी आजाएँ?” यीशु ने कहा, “यह कि हत्या न

करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना; १४ अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।” २० उस जवान ने उससे कहा, “इन सब को तो मैंने माना है अब मुझ में किस बात की कमी है?” २२ यीशु ने उससे कहा, “यदि तु सिद्धहोना चाहता है; तो जा, अपना सब कुछ बेचकर गरीबों को बाँट दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो लो।” २३ परन्तु वह जवान यह बात सुन उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धर्मी था। २४ तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।” २५ फिर तुम से कहता हूँ, कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सई के नके में से निकल जाना सहज है।” २५ यह सुनकर, चेलों ने बहुत चकित होकर कहा, “फिर किसका उद्घार हो सकता है?” २६ यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, “मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।” २७ इस पर पतरस ने उससे कहा, “देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिये हैं तो हमें क्या मिलेगा?” २८ यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि नई उत्पत्ति में जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इशाएल के बाहर गोत्रों का न्याय करोगे।” २९ और जिस किसी ने घरों या भाईयों या बहनों या पिता या माता या बाल-बच्चों या खेतों को मेरे नाम के लिये छोड़ दिया है, उसको सौ गुना मिलेगा, और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा। (aiōnios g166) ३० परन्तु बहुत सारे जो पहले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहले होंगे।

२० “स्वर्ण का राज्य किसी गृहस्थ के समान है, जो सबेरे निकला, कि

अपनी दाख की बारी में मजदूरों को लगाए। १ और उसने मनजदूरों से एक दीनार रोज पर ठहराकर, उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा। २ फिर पहरएक दिन चढ़े, निकलकर, अन्य लोगों को बाजार में बेकार खड़े देखा, ३ और उनसे कहा, ‘‘तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक है, तुमें दूँगा।’’ तब वे भी गए। ४ फिर उसने दूसरे और तीसरे पहर के निकट निकलकर वैसा ही किया। ५ और एक घंटा दिन रहे फिर निकलकर दूसरों को खड़े पाया, और उनसे कहा ‘‘तुम क्यों यहाँ दिन भर बेकार खड़े रहें?’’ उन्होंने उससे कहा, ‘‘इसलिए, कि किसी ने हमें मजदूरी पर नहीं लगाया।’’ ६ उसने उसे कहा, ‘‘तुम भी दाख की बारी में जाओ।’’ ७ ‘‘सौँझा को दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा, ‘‘मजदूरों को बुलाकर पिछले से लेकर पहले तक उन्हें मजदूरी दे दो।’’ ८ जब वे आए, जो घंटा भर दिन रहे लगाए गए थे, तो उन्हें एक-एक दीनार मिला। ९ जो पहले आए, उन्होंने यह समझा, कि हमें अधिक मिलेगा; परन्तु उन्हें भी एक ही एक दीनार मिला। १० जब मिला, तो वह गृह स्वामी पर कुड़कुड़ा के कहने लगे, ११ ‘‘इन पिछलों ने एक ही घंटा काम किया, और तुमें हमारे बराबर कर दिया, जिन्होंने दिन भर का भार उठाया और धूप सही?’’ १२ उसने उनमें से एक को उत्तर दिया, ‘‘हे मित्र, मैं तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता; क्या तुम मुझसे एक दीनार न ठहराया?’’ १३ जो तेरा है, उठा ले, और चला जा; मेरी इच्छा यह है कि जिताना तुझे, उतना ही इस पिछले को भी दूँ। १४ क्या यह उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूँ वैसा करूँ? क्या तुमे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है?’’ १५ इस प्रकार जो अन्तिम हैं, वे प्रथम हो जाएँगे और जो प्रथम हैं वे अन्तिम हो जाएँगे।” १६ यीशु यस्थलेम को जाते हुए बारह चेलों को एकान्त में ले गया, और मार्ग में उनसे कहने लगा। १७ ‘‘देखो, हम यस्थलेम को जाते हैं; और

उसको घात के योग्य ठहराएँगे। १९ और उसको अन्यजातियों के हाथ सौंपेंगे, कि वे उसे उपहास में उड़ाएँ, और कोडे मारें, और कूस पर चढ़ाएँ, और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा।” २० तब जट्टी के पुत्रों की माता ने अपने पुत्रों के साथ उसके पास आकर प्रणाम किया, और उससे कुछ माँगने लगी। २१ उसने उससे कहा, “तू क्या चाहती है?” वह उससे बोली, “यह कह, कि मेरे ये दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे दाहिने और एक तेरे बाएँ बैठें।” २२ यीशु ने उत्तर दिया, “तुम नहीं जानते कि क्या माँगते हो। जो कटोरा मैं पिने पर हूँ, क्या तुम पी सकते हो?” उन्होंने उससे कहा, “पी सकते हैं।” २३ उसने उससे कहा, “तुम मेरा कटोरा तो पीओगे पर अपने दालिने बाएँ किसी को बैठाना मेरा काम नहीं, पर जिनके लिये मेरे पिता की ओर से तैयार किया गया, उन्हीं के लिये है।” २४ यह सुनकर, दस्यों चेले उन दोनों भाईयों पर कुदू हुए। २५ यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा, “तुम जानते हो, कि अन्यजातियों के अधिपति उन पर प्रभुता करते हैं; और जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जाता है। २६ परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने; २७ और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने; २८ जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिए नहीं आया कि अपनी सेवा करवाए, परन्तु इसलिए आया कि सेवा करे और बहुतों के छुटकोरे के लिये अपने प्राण दे।” २९ जब वे येरीहो से निकल रहे थे, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। ३० और दो अधे, जो सड़क के किनारे बैठे थे, यह सुनकर कि यीशु जा रहा है, पुकारकर कहने लगे, “हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।” ३१ लोगों ने उन्हें डॉटा, कि चुप रहें, पर वे और भी चिल्लाकर बोले, “हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।” ३२ तब यीशु ने खड़े होकर, उन्हें बुलाया, और कहा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं मैं तुम्हारे लिये करूँ?” ३३ उन्होंने उससे कहा, “हे प्रभु, यह कि हमारी आँखें खुल जाएँ।” ३४ यीशु ने तरस खाकर उनकी आँखें छूई, और वे तुरन्त देखने लगे, और उसके पीछे हो लिए।

२१ जब वे यस्थलेम के निकट पहुँचे और जैतन पहाड़ पर बैठकरे के पास

आए, तो यीशु ने दो चेलों को यह कह करते भेजा, १ “अपने सामने के गाँव में जाओ, वहाँ पहुँचते ही एक गढ़ी बंधी हूँ, और उसके साथ बच्चा तुहें मिलेगा; उन्हें खोलकर, मेरे पास ले आओ। २ यदि तुम से कोई कुछ कहे, तो कहो, कि प्रभु को इनका प्रयोजन है: तब वह तुरन्त उन्हें भेज देगा।” ३ यह इसलिए हुआ, कि जो वचन भविष्यद्वत्का के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो: ४ “सिद्धयों की बेटी से कहो, ‘‘देख, तेरा राजा तेरे पास आता है; वह नम्र है और गढ़े पर बैठा है; वरन लादू के बच्चे पर।’’ ५ चेलों ने जाकर, जैसा यीशु ने उनसे कहा था, वैसा ही किया। ६ और गढ़ी और बच्चे को लाकर, उन पर अपने कपड़े डाले, और वह उन पर बैठ गया। ७ और बहुत सारे लोगों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाए, और लोगों ने फेंडों से डालियाँ काटकर मार्ग में बिछाई। ८ और जो भीड़ आगे-आगे जाती और पीछे-पीछे चली आती थी, उपकार पुकारकर कहती थी, “दाऊद के सन्तान को होशाना; धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है, आकाश में होशाना।” ९ जब उसने यस्थलेम में प्रवेश किया, तो सारे नगर में हलचल मच गई, और लोग कहने लगे, “यह कौन है?” १० लोगों ने कहा, “यह गलील के नासरत का भविष्यद्वत्का यीशु है।” ११ यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर, उन सब को, जो मन्दिर में लेन-देन कर रहे थे, निकाल दिया; और सरारों के मेजें और कबूतरों के बेचनेवालों की चौकियाँ उलटी दी। १२ और उनसे कहा, “लिखा है, ‘‘मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा’; परन्तु तुम उसे डाकूओं की खोह बनाते हो।’’ १३ और अंधे

और लँगड़े, मन्दिर में उसके पास आए, और उसने उन्हें चंगा किया। १५ परन्तु जब प्रधान याजकों और शान्तियों ने इन अद्वृत कामों को, जो उसने किए, और लड़कों को मन्दिर में दाऊद की सन्तान को होशाना पुकारते हुए देखा, तो क्रोधित हुए, १६ और उससे कहने लगे, “क्या तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं?” यीशु ने उनसे कहा, “हाँ; क्या तुम ने यह कभी नहीं पढ़ा: ‘बालकों और दृढ़ पीते बच्चों के मुँह से तूने स्तुति सिद्ध कराइ?’” १७ तब वह उन्हें छोड़कर नगर के बाहर बैतनियाह को गया, और वहाँ रात बिटाई। १८ भोर को जब वह नगर को लौट रहा था, तो उसे भ्रूख लगी। १९ और अंजीर के पेड़ को सड़क के किनारे देखकर वह उसके पास गया, और पत्तों को छोड़ उसमें और कुछ न पाकर उससे कहा, “अब से तुझ में फिर कभी फल न लगो!” और अंजीर का पेड़ तुरन्त सूख गया। (alōn g165) २० यह देखकर चेलों ने अचम्पा किया, और कहा, “यह अंजीर का पेड़ तुरन्त कैसे सूख गया?” २१ यीशु ने उनको उत्तर दिया, “मैं तुम से सच कहता हूँ; यदि तुम विश्वास रखो, और सन्देह न करो; तो न केवल यह करोगे, जो इस अंजीर के पेड़ से किया गया है; परन्तु यदि इस पहाड़ से भी कहोगे, कि उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़, तो यह हो जाएगा।” २२ और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से माँगोगे वह सब तुम को मिलेगा।” २३ वह मन्दिर में जाकर उपदेश कर रहा था, कि प्रधान याजकों और लोगों के प्राचीनों ने उसके पास आकर पूछा, “तू ये काम किसके अधिकार से करता है? और तुझे यह अधिकार किसने दिया है?” २४ यीशु ने उनको उत्तर दिया, “मैं भी तुम से एक बात पूछता हूँ; यदि वह मुझे बताओगे, तो मैं भी तुम्हें बताऊँगा कि ये काम किस अधिकार से करता है।” २५ यहन्ना का बपतिस्मा कहाँ से था? स्वर्ण की ओर से या मनुष्यों की ओर से था?” तब वे आपस में विवाद करने लगे, “यदि हम कहें ‘स्वर्ण की ओर से’, तो वह हम से कहेगा, ‘फिर तुम ने उसका विश्वास क्यों न किया?’ २६ और यदि कहें ‘मनुष्यों की ओर से’, तो हमें भीड़ का डाँ है, क्योंकि वे सब यहन्ना को भविष्यद्वाता मानते हैं।” २७ अतः उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, “हम नहीं जानते।” उसने भी उनसे कहा, “तो मैं भी तुम्हें नहीं बताऊँगा, कि ये काम किस अधिकार से करता है।” २८ “तुम क्या समझते हो? किसी मनुष्य के दो पुत्र थे; उसने पहले के पास जाकर कहा, ‘हे पुत्र, आज दाख की बारी में काम कर।’” २९ उसने उत्तर दिया, “मैं नहीं जाऊँगा”, परन्तु बाद में उसने अपना मन बदल दिया और चला गया। ३० फिर दूसरे के पास जाकर ऐसा ही कहा, उसने उत्तर दिया, “जी हाँ जाता हूँ”, परन्तु नहीं गया। ३१ इन दोनों में से किसने पिता की इच्छा पूरी की? उन्होंने कहा, “पहले ने।” ३२ यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि चुंगी लेनेवाले और वेश्या तुम से पहले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं।” ३३ क्योंकि यहन्ना धार्मिकता के मार्ग से तुम्हारे पास आया, और तुम ने उस पर विश्वास नहीं किया: पर चुंगी लेनेवालों और वेश्याओं ने उसका विश्वास किया: और तुम यह देखकर बाद में भी न पछाटा कि उसका विश्वास कर लेते। ३४ “एक और दृष्टान्त सुनो एक गृहस्थ था, जिसने दाख की बारी लगाई; और उसके चारों ओर बाड़ा बाँधा; और उसमें रस का कुण्ड खोदा; और गुम्पट बनाया; और किसानों को उसका ठेका देकर परदेश चला गया।” ३५ जब फल का समय निकट आया, तो उसने अपने दासों को उसका फल लेने के लिये किसानों के पास भेजा। ३६ पर किसानों ने उसके दासों को पकड़ के, किसी को पीटा, और किसी को मार डाला; और किसी को पथराव किया। ३७ फिर उसने और दासों को भेजा, जो पहले से अधिक थे; और उन्होंने उनसे भी वैसा ही किया। ३८ अन्त में उसने अपने पुत्र को उनके पास यह कहकर भेजा, कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। ३९ परन्तु किसानों ने पुत्र को देखकर आपस में कहा, ‘यह तो वारिस है, आओ, उसे

मार डालें: और उसकी विरासत ले लें।’ ४० और उन्होंने उसे पकड़ा और दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला। ४१ “इसलिए जब दाख की बारी का स्वामी आएगा, तो उन किसानों के साथ क्या करेगा?” ४२ उन्होंने उससे कहा, “वह उन बुरे लोगों को बुरी रीत से नाश करेगा; और दाख की बारी का ठेका और किसानों को देगा, जो समय पर उसे फल दिया करेंगे।” ४३ यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम ने कभी पवित्राश्रम में यह नहीं पढ़ा: ‘जिस पथर को राजमिथियों ने बेकार समझा था, वही कोने के सिरे का पथर हो गया यह प्रभु की ओर से हुआ, और हमारे देखने में अदूत है।’” ४४ “इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा; और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा।” ४५ जो इस पथर पर गिरेगा, वह चक्नाचूर हो जाएगा: और जिस पर वह गिरेगा, उसको पीस डालेगा।” ४६ प्रधान याजक और फरीसी उसके दृष्टान्तों को सुनकर समझ गए, कि वह हमारे विषय में कहता है। ४७ और उन्होंने उसे पकड़ना चाहा, परन्तु लोगों से डर गए क्योंकि वे उसे भविष्यद्वाता मानते थे।

२२ इस पर यीशु फिर उनसे दृष्टान्तों में कहने लगा। १ “स्वर्ण का राज्य

उस राजा के समान है, जिसने अपने पुत्र का विवाह किया। २ और उसने अपने दासों को भेजा, कि निमित्रित लोगों को विवाह के भोज में बुलाएँ; परन्तु उन्होंने आना न चाहा। ३ फिर उसने और दासों को यह कहकर भेजा, ‘निमित्रित लोगों से कहो: देखो, मैं भोज तैयार कर चुका हूँ, और मेरे बैल और पते हुए पशु मारे गए हैं और सब कुछ तैयार है, विवाह के भोज में आओ।’ ४ परन्तु वे उपेशा करके चल दिया: कोई अपने खेत को, कोई अपने व्यापार को। ५ अन्य लोगों ने जो बच रहे थे उसके दासों को पकड़कर उनका अनादर किया और मार डाला। ६ तब राजा को क्रोध आया, और उसने अपनी सेना भेजकर उन हत्यारों को नाश किया, और उनके नगर को फँक दिया। ७ तब उसने अपने दासों से कहा, ‘विवाह का भोज तो तैयार है, परन्तु निमित्रित लोग योग्य न ठहरे।’ ८ इसलिए चौपांहों में जाओ, और जितने लोग तुम्हें मिलें, सब को विवाह के भोज में बुला लाओ।’ ९ अतः उन दासों ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे, क्या भले, जितने मिले, सब को इकट्ठा किया; और विवाह का घर अतिथियों से भर गया। १० “जब राजा अतिथियों को देखने को भीतर आया; तो उसने वहाँ एक मनुष्य को देखा, जो विवाह का वस्त्र नहीं पहने था।” ११ उसने उससे पूछा, ‘हे मित्र! तू विवाह का वस्त्र पहने बिना यहाँ क्यों आ गया?’ और वह मनुष्य चुप हो गया। १२ तब राजा ने सेवकों से कहा, ‘इसके हाथ-पाँव बाँधकर उसे बाहर अधियारो में डाल दो, वहाँ रोना, और दाँत पीसना होगा।’ १३ क्योंकि बुलाए हुए तो बहत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।’ १४ तब फरीसियों ने जाकर आपस में विचार किया, कि उसको किस प्रकार बातों में फँसाएँ। १५ अतः उन्होंने अपने चेलों को हेरोदियों के साथ उसके पास यह कहने को भेजा, “हे गुरु, हम जानते हैं, कि तू सच्चा है, और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है, और किसी की परवाह नहीं करता, क्योंकि तू मनुष्यों का मुँह देखकर बातें नहीं करता।” १६ इसलिए हमें बता तू क्या समझता है? कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं।” १७ यीशु ने उनकी दृष्टा जानकर कहा, “हे कपटियों, मुझे क्यों परखते हो? १८ कर का सिक्का मुझे दिखाओ।” तब वे उसके पास एक दीनार ले आए। १९ उसने, उनसे पूछा, “यह आकृति और नाम किसका है?” २० उन्होंने उससे कहा, “कैसर का।” तब उसने उनसे कहा, “जो कैसर का है, वह कैसर को; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।” २१ यह सुनकर उन्होंने अचम्पा किया, और उसे छोड़कर चले गए। २२ उसी दिन सदूकी जो कहते हैं कि मेरे हुओं का पुनर्स्थान है ही नहीं उसके पास आए, और उससे पूछा, २३ “हे गुरु, मूसा ने

कहा था, कि यदि कोई बिना सन्तान मर जाए, तो उसका भाई उसकी पत्री को विवाह करके अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न करे। २५ अब हमारे यहाँ सात भाई थे; पहला विवाह करके मर गया; और सन्तान न होने के कारण अपनी पत्री को अपने भाई के लिये छोड़ गया। २६ इसी प्रकार दूसरे और तीसरे ने भी किया, और सातों तक यही हआ। २७ सब के बाद वह ज़ी भी मर गई। २८ अतः जी उठने पर वह उन सातों में से किसकी पत्री होगी? क्योंकि वह सब की पत्री हो चुकी थी।” २९ यीशु ने उत्तर दिया, “तुम पवित्राश्व और परमेश्वर की सामर्थ्य नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़ गए हो। ३० क्योंकि जी उठने पर विवाह-शादी न होगी; परन्तु वे स्वर्ग में दूसों के समान होंगे। ३१ परन्तु मेरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने यह वचन नहीं पढ़ा जो परमेश्वर ने तुम से कहा: ३२ ‘मैं अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ?’ वह तो मेरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवितों का परमेश्वर हौं।” ३३ यह सुनकर लोग उसके उपदेश से चकित हुए। ३४ जब फरीसियों ने सुना कि यीशु ने सदृकियों का मुँह बन्द कर दिया; तो वे इकट्ठे हुए। ३५ और उनमें से एक व्यवस्थापक ने परखने के लिये, उससे पूछा, ३६ “हे गुरु, व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?” ३७ उसने उससे कहा, “तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। ३८ बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। ३९ और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ४० ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था एवं भविष्यद्वत्काओंका आधार हैं।” ४१ जब फरीसी इकट्ठे थे, तो यीशु ने उनसे पूछा, ४२ “मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो? वह किसकी सन्तान है?” उन्होंने उससे कहा, “दाऊद की।” ४३ उसने उनसे पूछा, “तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है? ४४ ‘प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों के नीचे की चौकी न कर दूँ।’ ४५ भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र कैसे ठहरा?” ४६ उसके उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका। परन्तु उस दिन से किसी को फिर उससे कुछ पूछने का साहस न हुआ।

२३ तब यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से कहा, १ “शाश्वी और फरीसी मूसा की ग़दी पर बैठे हैं; २ इसलिए वे तुम से जो कुछ कहें वह करना, और मानना, परन्तु उनके जैसा काम मत करना; क्योंकि वे कहते हों तो हैं पर करते नहीं। ३ वे एक ऐसे भारी बोझ को जिनको उठाना कठिन है, बाँधकर उन्हें मनुष्यों के कंधों पर रखते हैं; परन्तु आप उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते। ४ वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिये करते हैं वे अपने तावीजोंको चौड़े करते, और अपने बच्चों की ज़िलारों को बढ़ाते हैं। ५ भोज में मुख्य-मुख्य जगहें, और आराधनालालयों में मुख्य-मुख्य आसन, ६ और बाजारों में नमस्कार और मनुष्य में रब्बी कहलाना उन्हें भाता है। ७ परन्तु तुम रब्बी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है; और तुम सब भाई हो। ८ और पूछी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग मैं है। ९ और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात् मसीह। १० जो तुम मैं बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने। ११ जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा। १२ हे कपटी शाश्वियों और फरीसियों तुम पर हाय! तुम मनुष्यों के विरोध में स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते हो, न तो आप ही उसमें प्रवेश करते हो और न उसमें प्रवेश करनेवालों को प्रवेश करने देते हो। १३ हे कपटी शाश्वियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम विधावाओं के घरों को खा जाते हो, और दिखाने के लिए बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हो: इसलिए तुम्हें अधिक दण्ड मिलेगा।] १५

“हे कपटी शाश्वियों और फरीसियों तुम पर हाय! तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिये सारे जल और थल में फिरते हो, और जब वह मत में आ जाता है, तो उसे अपने से दुगाना नारकीय बना देते हो। (Geenna g1067) १६ “हे अंधे अगुओं, तुम पर हाय, जो कहते हो कि यदि कोई मन्दिर की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु यदि कोई मन्दिर के सामने की सौगन्ध खाए तो उससे बन्ध जाएगा। १७ हे मूर्खों, और अंधों, कौन बड़ा है, सोना या वह मन्दिर जिससे सोना पवित्र होता है? १८ फिर कहते हो कि यदि कोई वेदी की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु जो भेट उस पर है, यदि कोई उसकी शपथ खाए तो बन्ध जाएगा। १९ हे अंधों, कौन बड़ा है, भेट या वेदी जिससे भेट पवित्र होती है? २० इसलिए जो वेदी की शपथ खाता है, वह उसकी, और जो कुछ उस पर है, उसकी भी शपथ खाता है। २१ और जो मन्दिर की शपथ खाता है, वह उसकी और उसमें रहनेवालों की भी शपथ खाता है। २२ और जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन की और उस पर बैठनेवाले की भी शपथ खाता है। २३ हे कपटी शाश्वियों, और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम पोटीनि और सौफ और जरि का दसवाँ अंश देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों अर्थात् न्याय, और दया, और विवास को छोड़ दिया है; चाहिये था कि इहें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते। २४ हे अंधे अगुओं, तुम मच्छर को तो छान डालते हो, परन्तु ऊँट को निगल जाते हो। २५ “हे कपटी शाश्वियों, और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम कठोरें और थाली को ऊपर-ऊपर से तो माँजते हो परन्तु वे भीतर अंधेर असंयम से भेरे हुए हैं। २६ हे अंधे फरीसी, पहले कठोरे और थाली को भीतर से माँज कि वे बाहर से भी स्वच्छ हों। २७ हे कपटी शाश्वियों, और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम कठोरे और थाली को ऊपर-ऊपर से तो माँजते हो परन्तु वे भीतर कपट और अधर्म से भेरे हुए हो। २८ हे कपटी शाश्वियों, और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम भविष्यद्वत्काओं की कब्रें सवारते और धर्मियों की कब्रें बनाते हो। २९ और कहते हो, “यदि हम अपने पूर्वजों के दिनों में होते तो भविष्यद्वत्काओं की हत्या में उनके सहभागी न होते।” ३० इससे तो तुम अपने पर आप ही गवाई देते हो, कि तुम भविष्यद्वत्काओं के हत्यारों की सन्तान हो। ३१ अतः तुम अपने पूर्वजों के पाप का घटा भर दो। ३१ हे साँपों, हे कैतौंतों के बच्चों, तुम नरक के दण्ड से कैसे बचोंगे? (Geenna g1067) ३२ इसलिए देखो, मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वत्काओं और बुद्धिमानों और शाश्वियों को भेजता हूँ, और तुम उनमें से कुछ को मार डालोगे, और कूस पर चढ़ाओगे; और कुछ को अपने आराधनालालयों में कोड़े मारोगे, और एक नार से दूसरे नगर में खदेड़ते फिरोगे। ३३ जिससे धर्मी हाविल से लेकर विरिक्याह के पुत्र जरकार्यात तक, जिसे तुम ने मन्दिर और वेदी की बीच में मार डाला था, जितने धर्मियों का लह पृथकी पर बहाया गया है, वह सब तुम्हारे सिर पर डेंगा। ३४ मैं तुम से सच कहता हूँ, ये सब बातें इस पीढ़ी के लोगों पर आ डेंगी। ३५ “हे यस्श्लेम, हे यस्श्लेम! तू जो भविष्यद्वत्काओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पथराव करता है, कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंछों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लौं, परन्तु तुम ने न चाहा। ३६ देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है। ३७ क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि अब से जब तक तुम न कहोगे, ‘धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है’ तब तक तुम मुझे फिर करी न देखोगे।”

२४ जब यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा था, तो उसके चेले उसको मन्दिर की रचना दिखाने के लिये उसके पास आए। २५ उसने उससे कहा, “क्या

तुम यह सब नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूँ, यहाँ पत्थर पर पत्थर भी न छोटगा, जो ढाया न जाएगा।” ३ और जब वह जैतन पहाड़ पर बैठा था, तो चेलों ने अलग उसके पास आकर कहा, “हम से कह कि ये बातें कब होंगी? और तेरे आने का, और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा?” (aiōn g165) ४ यीशु ने उनको उत्तर दिया, “साक्षात् रहो! कोई तुम्हें न बहकाने पाए। ५ क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, ‘मैं मरीह हूँ’, और बहुतों को बहका देंगे। ६ तुम लडाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे; देखो घबरा न जाना क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा। ७ क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह-जगह अकाल पड़ेंगे, और भक्तपूर्व होंगे। ८ ये सब बातें पीड़ाओं का अरम्भ होंगी। ९ तब वे क्लेश दिलाने के लिये तुम्हें पकड़वाएँगे, और तुम्हें मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे। १० तब बहुत सारे ठोकर खाएँगे, और एक दूसरे को पकड़वाएँगे और एक दूसरे से बैर रखेंगे। ११ बहुत से झटे भविष्यद्वत्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को बहकाएँगे। १२ और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठंडा हो जाएगा। १३ परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्गार होगा। १४ और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचारकिया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा। १५ “इसलिए जब तुम उस उजाइनेवाली धृषिण वस्तु को जिसकी चर्चा दानियेल भविष्यद्वत्ता के द्वारा हुई थी, पवित्रस्थान में खड़ी हुई देखो, (जो पढ़े, वह समझे)। १६ तब जो यहदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएँ। १७ जो छत पर हो, वह अपने घर में से सामान लेने को न उतरे। १८ और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे। १९ “उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय, हाय। २० और प्रार्थना करो; कि तुम्हें जाडे में या सब्ल के दिन भागना न पड़े। २१ क्योंकि उस समय ऐसा भारी कर्त्तेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा। २२ और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएँगे। २३ उस समय यदि कोई तुम से कहे, कि देखो, मरीह यहाँ है! या वहाँ है! तो विश्वास न करना। २४ “क्योंकि झटे मरीह और झटे भविष्यद्वत्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएँगे, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी बहका दें। २५ देखो, मैंने पहले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है। २६ इसलिए यदि वे तुम से कहें, ‘देखो, वह जंगल में है’, तो बाहर न निकल जाना; ‘देखो, वह कोठरियों में है’, तो विश्वास न करना। २७ “क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पञ्चिम तक चमकती जाती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा। २८ जहाँ लाश हो, वही गिर इकट्ठे होंगे। २९ “उन दिनों के क्लेश के बाद तुरन्त सर्व अंधियारा हो जाएगा, और चाँद का प्रकाश जाता रहेगा, और तेरे आकाश से पिर पड़ेंगे और आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी। ३० तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटिएं; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। ३१ और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ, अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से उसके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे। ३२ “अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो जब उसकी डाली कोमल हो जाती और पते निकलने लगते हैं, तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्मकाल निकट है। ३३ इसी रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो, कि वह निकट है, बरन द्वार पर है। ३४ मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हों लें, तब तक इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा। ३५ आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरे शब्द कभी न

तलेंगे। ३६ “उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता। ३७ जैसे नहु के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। ३८ क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि नहु जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उनमें विवाह-शादी होती थी। ३९ और जब तक जल-प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालसू न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। ४० उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। ४१ दो छियाँ चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी। ४२ इसलिए जगते रहे, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा। ४३ परन्तु यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा, तो जागत रहता; और अपने घर में चोरी नहीं होने देता। ४४ इसलिए तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस समय के विषय में तुम सुनोते थी नहीं हो, उसी समय मनुष्य का पुत्र आ जाएगा। ४५ “अतः वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है, जिसे स्वामी ने अपने नौकर-चाकरों पर सरदार ठहराया, कि समय पर उन्हें भोजन दे? ४६ धन्य है, वह दास, जिस उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए। ४७ मैं तुम से सच कहता हूँ, वह उसे अपनी सारी सम्पत्ति पर अधिकारी ठहराएगा। ४८ परन्तु यदि वह दुःख दास सोचने लगे, कि मेरे स्वामी के आने में देर है। ४९ और अपने साथी दासों को पीटने लगे, और पियकर्कड़ों के साथ खाए-पीए। ५० तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा, जब वह उसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा होगा, और ऐसी घड़ी कि जिसे वह न जानता हो, ५१ और उसे कठोर दण्ड देकर, उसका भाग कपटियों के साथ ठहराएगा: वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।

२५ “तब स्वर्ग का राज्य उन दिस कुँवारियों के समान होगा जो अपनी मशालें लेकर दूर्हे से भेंट करने को निकलती। १ उनमें पाँच मूर्ख और पाँच समझादार थी। २ मूर्खों ने अपनी मशालें तो लीं, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया। ३ परन्तु समझादारों ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुपियों में तेल भी भर लिया। ४ जब दुर्हे के आने में देर हुई, तो वे सब उँधने लगीं, और सो गईं। ५ “आपी रात को धूम मरी, कि देखो, दूल्हा आ रहा है, उससे भेंट करने के लिये चलो। ६ तब वे सब कुँवारियों उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं। ७ और मूर्खों ने समझादारों से कहा, ‘अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझ रही हैं।’ ८ परन्तु समझादारों ने उत्तर दिया कि कहीं हमारे और तुम्हारे लिये पूरा न हो; भला तो यह है, कि तुम बेचनेवालों के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो। ९ जब वे मोल लेने को जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहुँचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ विवाह के घर में चली गईं और द्वार बन्द किया गया। १० इसके बाद वे दूसरी कुँवारियों भी आकर कहने लगीं, ‘हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिये द्वार खोल दे।’ ११ उसने उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूँ, मैं तुम्हें नहीं जानता। १२ इसलिए जगते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस समय को। १३ “क्योंकि यह उस मनुष्य के समान दशा है जिसने परदेश को जाते समय अपने दासों को बुलाकर अपनी सम्पत्ति उनको सौंप दी। १४ उसने एक को पाँच तोड़े, दूसरे को दो, और तीसरे को एक; अर्थात् हर एक को उसकी सामर्थ्य के अनुसार दिया, और तब परदेश चला गया। १५ तब, जिसको पाँच तोड़े मिले थे, उसने तुरन्त जाकर उनसे लेन-देन किया, और पाँच तोड़े और कमाए। १६ इसी रीति से जिसको दो मिले थे, उसने भी दो और कमाए। १७ परन्तु जिसको एक मिला था, उसने जाकर मिट्टी खोटी, और अपने स्वामी का धन छिपा दिया। १८ “बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी

आकर उससे लेखा लेने लगा। २० जिसको पाँच तोड़े मिले थे, उसने पाँच तोड़े और लाकर कहा, ‘हे स्वामी, तूने मुझे पाँच तोड़े सौंपे थे, देख मैंने पाँच तोड़े और कमाए हैं।’ २१ उसके स्वामी ने उससे कहा, ‘धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े मैं विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊँगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।’ २२ “और जिसको दो तोड़े मिले थे, उसने भी आकर कहा, ‘हे स्वामी तूने मुझे दो तोड़े सौंपे थे, देख, मैंने दो तोड़े और कमाए।’” २३ उसके स्वामी ने उससे कहा, ‘धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े मैं विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊँगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।’ २४ “जानते हो, कि दो दिन के बाद फसहका पर्व होगा; और मनुष्य का पुत्र कूस पर चढ़ाए जाने के लिये पकड़वाया जाएगा।” २५ तब प्रधान याजक और प्रजा के पुराणे कैफा नामक महायाजक के आँगन में इकट्ठे हुए। २६ और आपस में विचार करने लगे कि यीशु को छल से पकड़कर मार डालें। २७ परन्तु वे कहते थे, ‘पर्व के समय नहीं; कहीं ऐसा न हो कि लोगों में दंगा मच जाए।’ २८ जब यीशु ये सब बातें कह चुका, तो अपने चेलों से कहने लगा। २९ “तुम जानते हो, कि दो दिन के बाद फसहका पर्व होगा; और मनुष्य का पुत्र कूस पर चढ़ाए जाने के लिये पकड़वाया जाएगा।” ३० तब प्रधान याजक और आपस में बहुमूल्य इन लेकर उसके पास आई, और जब वह भोजन करने बैठा था, तो उसके सिर पर उण्डेल दिया। ३१ यह देखकर, उसके चेले झूँझला उठे और कहने लगे, “इसका क्यों सत्यानाश किया गया? ३२ यह तो अच्छे दाम पर बेचकर गरीबों को बॉटा जा सकता था।” ३३ यह जानकर यीशु ने उनसे कहा, “स्त्री को क्यों सताते हो? उसने मेरे साथ भलाई की है। ३४ गरीब तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदैव न रहूँगा। ३५ उसने मेरी देह पर जो यह इन उण्डेला है, वह मेरे गाढ़े जाने के लिये किया है। ३६ मैं तुम से सच कहता हूँ, कि सारे जगत में जहाँ कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम का वर्णन भी उसके स्मरण में किया जाएगा।” ३७ तब यहदा इस्करियोती ने, जो बारह चेलों में से एक था, प्रधान याजकों के पास जाकर कहा, ३८ “यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूँ तो मुझे क्या दोगे?” उन्होंने उसे तीस चाँदी की सिक्के तैलकर दे दिए। ३९ और वह उसी समय से उसे पकड़वाने का अवसर ढूँढ़ने लगा। ४० अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन, चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, “तू कहाँ चाहता है कि हम तेर लिये फसह खाने की तैयारी करें?” ४१ उसने कहा, “नार में फलाने के पास जाकर उससे कहो, कि गुड़ कहता है, कि मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेर यहाँ फसह मनाऊँगा।” ४२ अतः चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी, और फसह तैयार किया। ४३ जब चाँद हई, तो वह बारह चेलों के साथ भोजन करने के लिये बैठा। ४४ जब वे खा रहे थे, तो उसने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम मैं से एक मुझे पकड़वाएगा।” ४५ इस पर वे बहुत उदास हुए, और हर एक उससे पूछने लगा, “हे गुड़, क्या वह मैं हूँ?” ४६ उसने उत्तर दिया, “जिसने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है, वही मुझे पकड़वाएगा।” ४७ मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है, परन्तु उस मनुष्य के लिये शोक है जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है: यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिये भला होता।” ४८ तब उसके पकड़वानेवाले यहदा ने कहा, “हे रब्बी, क्या वह मैं हूँ?” उसने उससे कहा, “तू कह चुका।” ४९ जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष माँगकर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, “लो, खाओ: यह मेरी देह है।” ५० फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, “तुम सब इसमें से पीओ।” ५१ क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लह है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के लिए बहाया जाता है। ५२ मैं तुम से कहता हूँ, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊँगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊँगा।” ५३ फिर वे भजन गाकर जैतूस पहाड़ पर गए। ५४ तब यीशु ने उनसे कहा, “तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे; क्योंकि लिखा है, ‘मैं चरवाहे को मास्त्वा; और झूँड की भेड़ें तिर-बितर हो जाएँगी।” ५५ “परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलीत को जाऊँगा।” ५६ इस पर पतरस ने उससे कहा, “यदि सब तेर विषय में ठोकर

साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया।” ५७ और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।” (aiōnios g166)

२६ जब यीशु ये सब बातें कह चुका, तो अपने चेलों से कहने लगा। २७ “तुम जानते हो, कि दो दिन के बाद फसहका पर्व होगा; और मनुष्य का पुत्र कूस पर चढ़ाए जाने के लिये पकड़वाया जाएगा।” २८ तब प्रधान याजक और प्रजा के पुराणे कैफा नामक महायाजक के आँगन में इकट्ठे हुए। २९ और आपस में विचार करने लगे कि यीशु को छल से पकड़कर मार डालें। ३० परन्तु वे कहते थे, ‘पर्व के समय नहीं; कहीं ऐसा न हो कि लोगों में दंगा मच जाए।’ ३१ जब यीशु बैतानियाह में शैश्वत कोडी के घर में था। ३२ तो एक स्त्री संगमरमण के पात्र में बहुमूल्य इन लेकर उसके पास आई, और जब वह भोजन करने बैठा था, तो उसके सिर पर उण्डेल दिया। ३३ यह देखकर, उसके चेले झूँझला उठे और कहने लगे, “इसका क्यों सत्यानाश किया गया? ३४ यह तो अच्छे दाम पर बेचकर गरीबों को बॉटा जा सकता था।” ३५ यह जानकर यीशु ने उनसे कहा, “स्त्री को क्यों सताते हो? उसने मेरे साथ भलाई की है। ३६ गरीब तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदैव न रहूँगा। ३७ उसने मेरी देह पर जो यह इन उण्डेला है, वह मेरे गाढ़े जाने के लिये किया है। ३८ मैं तुम से सच कहता हूँ, कि सारे जगत में जहाँ कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम का वर्णन भी उसके स्मरण में किया जाएगा।” ३९ तब यहदा इस्करियोती ने, जो बारह चेलों में से एक था, प्रधान याजकों के पास जाकर कहा, ४० “यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूँ तो मुझे क्या दोगे?” उन्होंने उसे तीस चाँदी की सिक्के तैलकर दे दिए। ४१ और वह उसी समय से उसे पकड़वाने का अवसर ढूँढ़ने लगा। ४२ अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन, चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, “तू कहाँ चाहता है कि हम तेर लिये फसह खाने की तैयारी करें?” ४३ उसने कहा, “नार में फलाने के पास जाकर उससे कहो, कि गुड़ कहता है, कि मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेर यहाँ फसह मनाऊँगा।” ४४ अतः चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी, और फसह तैयार किया। ४५ जब चाँद हई, तो वह बारह चेलों के साथ भोजन करने के लिये बैठा। ४६ जब वे खा रहे थे, तो उसने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम मैं से एक मुझे पकड़वाएगा।” ४७ इस पर वे बहुत उदास हुए, और हर एक उससे पूछने लगा, “हे गुड़, क्या वह मैं हूँ?” ४८ उसने उत्तर दिया, “जिसने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है, वही मुझे पकड़वाएगा।” ४९ मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है, परन्तु उस मनुष्य के लिये शोक है जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है: यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिये भला होता।” ५० तब उसके पकड़वानेवाले यहदा ने कहा, “हे रब्बी, क्या वह मैं हूँ?” उसने उससे कहा, “तू कह चुका।” ५१ जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष माँगकर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, “लो, खाओ: यह मेरी देह है।” ५२ फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, “तुम सब इसमें से पीओ।” ५३ क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लह है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के लिए बहाया जाता है। ५४ मैं तुम से कहता हूँ, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊँगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊँगा।” ५५ फिर वे भजन गाकर जैतूस पहाड़ पर गए। ५६ तब यीशु ने उनसे कहा, “तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे; क्योंकि लिखा है, ‘मैं चरवाहे को मास्त्वा; और झूँड की भेड़ें तिर-बितर हो जाएँगी।’” ५७ “परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलीत को जाऊँगा।” ५८ इस पर पतरस ने उससे कहा, “यदि सब तेर विषय में ठोकर

खाँ तो खाँ, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊँगा।” ३४ यीशु ने उससे कहा, “मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि आज ही रात को मुर्मी के बांग देने से पहले, तू तीन बार मुझसे मुकर जाएगा।” ३५ पतरस ने उससे कहा, “यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तो भी, मैं तुझ से कभी न मुकरूँगा।” और ऐसा ही सब चेलों ने भी कहा। ३६ तब यीशु ने अपने चेलों के साथ गतसमीना नामक एक स्थान में आया और अपने चेलों से कहने लगा “यहाँ बैठे रहना, जब तक कि मैं वहाँ जाकर प्रार्थना करूँ।” ३७ और वह पतरस और जब्दी के दोनों पुरुषों को साथ ले गया, और उदास और व्याकुल होने लगा। ३८ तब उन्ने उनसे कहा, “मेरा मन बहुत उदास है, यहाँ तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है। तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।” ३९ फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुँह के बल गिरा, और यह प्रार्थना करने लगा, “हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरामुझसे टल जाए, फिर भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।” ४० फिर चेलों के पास आकर उन्हें सोते पाया, और पतरस से कहा, “क्या तुम मेरे साथ एक घटाए भर न जाग सके? ४१ जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो! आत्मा ते तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है।” ४२ फिर उसने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की, “हे मेरे पिता, यदि यह मेरी पीढ़ी बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।” ४३ तब उसने आकर उन्हें फिर सोते पाया, क्योंकि उनकी आँखें नीद से भरी थीं। ४४ और उन्हें छोड़कर फिर चला गया, और वही बात फिर कहकर, तीसरी बार प्रार्थना की। ४५ तब उसने चेलों के पास आकर उनसे कहा, “अब सोते रहो, और विश्वाम करो: देखो, समय आ पहुँचा है, और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है।” ४६ उठो, चलो, देखो, मेरा पकड़वानेवाला निकट आ पहुँचा है।” ४७ वह यह कह ही रहा था, कि यहदा जो बारहों में से एक था, आया, और उसके साथ प्रधान याजकों और लोगों के प्राचीनों की ओर से बड़ी भीड़, तलवारों और लाठियों लिए हए आई। ४८ उसके पकड़वानेवाले ने उन्हें यह पता दिया था: “जिसको मैं चूम लूँ वही है; उसे पकड़ लेना।” ४९ और तुरन्त यीशु के पास आकर कहा, “हे रब्बी, नमस्कार!” और उसको बहुत चमा। ५० यीशु ने उससे कहा, “हे मित्र, जिस काम के लिये तू आया है, उसे कर ले।” तब उन्होंने पास आकर यीशु पर हाथ डाले और उसे पकड़ लिया। ५१ तब यीशु के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ाकर अपनी तलवार खींच ली और महायाजक के दास पर चलाकर उसका कान काट दिया। ५२ तब यीशु ने उससे कहा, “अपनी तलवार म्यान में रख ले क्योंकि जो तलवार चलते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएँगे।” ५३ क्या तू नहीं समझता, कि मैं अपने पिता से बिनती कर सकता हूँ, और वह स्वर्गदूतों की बारह सैन्य-दल से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा? ५४ परन्तु पवित्रशास्त्र की वे बातें कि ऐसा ही होना अवश्य है, कैसे पूरी होंगी?” ५५ उसी समय यीशु ने भीड़ से कहा, “क्या तुम तलवारें और लाठियाँ लेकर मुझे ढाक के समान पकड़ने के लिये निकले हो? मैं हर दिन मन्दिर में बैठकर उदाश दिया करता था, और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा। ५६ परन्तु यह सब इसलिए हुआ है, कि भविष्यद्वत्काओं के बचन पौरे होंगे।” तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए। ५७ और यीशु के पकड़नेवाले उसको कैफा नामक महायाजक के पास ले गए, जहाँ शास्त्री और पुरनिए इकट्ठे हुए थे। ५८ और पतरस दूर से उसके पीछे-पीछे महायाजक के आँगन तक गया, और भीतर जाकर अन्त देखने को सेवकों के साथ बैठ गया। ५९ प्रधान याजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में झाठी गवाही की खोज में थे। ६० परन्तु बहुत से झाठे गवाहों के अने पर भी न पाई। अन्त में दो जन आए, ६१ और कहा, “इसने कहा कि मैं

तब महायाजक ने खड़े होकर उससे कहा, “क्या तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं?” ६२ परन्तु यीशु चुप रहा। तब महायाजक ने उससे कहा “मैं तुझे जीविते परमेश्वर की शपथ देता हूँ, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मरीह है, तो हम से कह दे।” ६३ यीशु ने उससे कहा, “तू आप ही कह दिया; वरन् मैं तुम से यह भी कहता हूँ, कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी और बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।” ६४ तब महायाजक ने अपने बच्चे फाड़कर कहा, “इसने परमेश्वर की निन्दा की है, अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन? देखो, तुम ने अभी यह निन्दा सुनी है! ६५ तुम क्या समझते हो?” उन्होंने उत्तर दिया, “यह मृत्युण्ड के योग्य है।” ६६ तब उन्होंने उसके मुँह पर थका और उसे धूंसे मारे, दूसरों ने थप्पड़ मार के कहा, ६७ “हे मसीह, हम से भविष्यद्वारी करके कह कि किसने तुझे मारा?” ६८ पतरस बाहर आँगन में बैठा हुआ था कि एक दासी ने उसके पास आकर कहा, “तू भी यीशु गलती के साथ था।” ६९ उसने सब के सामने यह कहकर इकार किया और कहा, “मैं नहीं जानता तू क्या कह रही है।” ७० जब वह बाहर द्वार में चला गया, तो दूसरी दासी ने उसे देखकर उनसे जो वहाँ थे कहा, “यह भी तो यीशु नासरी के साथ था।” ७१ उसने शपथ खाकर फिर इन्कार किया, “मैं उस मनुष्य को नहीं जानता।” ७२ थोड़ी देर के बाद, जो वहाँ खड़े थे, उन्होंने पतरस के पास आकर उनसे कहा, “सचमुच तू भी उनमें से एक है; क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है।” ७३ तब वह कोसने और शपथ खाने लगा, “मैं उस मनुष्य को नहीं जानता।” ७४ और तुरन्त मुर्मी ने बौंग दी। ७५ तब पतरस को यीशु की कही हुई बात स्मरण आई, “मुर्मी के बांग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।” और वह बाहर जाकर फूट फूटकर रने लगा।

२७ जब भोर हुई, तो सब प्रधान याजकों और लोगों के प्राचीनों ने यीशु के मार डालने की सम्मति की। २८ और उन्होंने उसे बाँधा और ले जाकर पिलातुस राज्यपाल के हाथ में सौंप दिया। २९ जब उसके पकड़वानेवाले यहदा ने देखा कि वह दोषी ठहराया गया है तो वह बछताया और वे तीस चाँदी के सिक्के प्रधान याजकों और प्राचीनों के पास फेर लाया। ३० और कहा, “मैंने निर्दोषी को मृत्यु के लिये पकड़वाकाल पाप किया है?” उन्होंने कहा, “हमें क्या? तू ही जाने!” ३१ तब वह उन सिक्कों को मन्दिर में फेंकर चला गया, और जाकर अपने आपो को फांसी दी। ३२ प्रधान याजकों ने उन सिक्कों को लेकर कहा, “इहें, भण्डार में रखना उचित नहीं, क्योंकि यह लहू का दाम है।” ३३ अतः उन्होंने सम्मति करके उन सिक्कों से परदेशियों के गाड़ने के लिये कुम्हार का खेत मोल ले लिया। ३४ इस कारण वह खेत आज तक लहू का खेत कहलाता है। ३५ तब जो चवन यिर्माया भविष्यद्वत्का के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ “उन्होंने वे तीस सिक्के अर्थात् उस ठहराए हुए मूल्य को (जिसे इस्माइल की सन्तान में से कितनों ने ठहराया था) ले लिया। ३६ और जैसे प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी वैसे ही उन्हें कुम्हार के खेत के मूल्य में दे दिया।” ३७ जब यीशु राज्यपाल के सामने खड़ा था, तो राज्यपाल ने उससे पूछा, “क्या तू यहदियों का राजा है?” यीशु ने उससे कहा, “तू आप ही कह रहा है।” ३८ जब प्रधान याजक और पूरनिए उस पर दोष लगा रहे थे, तो उन्ने कछ उत्तर नहीं दिया। ३९ इस पर पिलातुस ने उससे कहा, “क्या तू नहीं सुनता, कि ये तेरे विरोध में कितनी गवाहीयाँ दे रहे हैं?” ४० परन्तु उसने उसको एक बात का भी उत्तर नहीं दिया, यहाँ तक कि राज्यपाल को बड़ा आश्रय हुआ। ४१ और राज्यपाल की यह रीति थी, कि उस पर्व में लोगों के लिये किसी एक बन्दी को जिसे वे चाहते थे, छोड़ देता था। ४२ उस समय बरअब्दा नामक उन्हीं में का, एक नामी बन्धुआ था। ४३ अतः जब वे इकट्ठा हुए, तो पिलातुस ने उनसे

कहा, “तुम किसको चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूँ? बरअब्बा को, या यीशु को जो मसीह कहलाता है?” १८ क्योंकि वह जनता था कि उन्होंने उसे डाह से पकड़वाया है। १९ जब वह न्याय की ग़ीह पर बैठा हुआ था तो उसकी पत्री ने उसे कहला भेजा, “तू उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना; क्योंकि मैंने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुःख उठाया है।” २० प्रधान याजकों और प्राचीनों ने लोगों को उभारा, कि वे बरअब्बा को माँग लें, और यीशु को नाश कराएँ। २१ राज्यपाल ने उनसे पूछा, “इन दोनों में से किसको चाहते हो, कि तुम्हारे लिये छोड़ दूँ?” उन्होंने कहा, “बरअब्बा को।” २२ पिलातुस ने उनसे पूछा, “फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करें?” सब ने उसे कहा, “वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।” २३ राज्यपाल ने कहा, “क्यों उसने क्या बुराई की है?” परन्तु वे और भी चिर्ल्ला चिर्ल्लाकर कहने लगे, “वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।” २४ जब पिलातुस ने देखा, कि कुछ बन नहीं पड़ता परन्तु इसके विपरीत उपद्रव होता जाता है, तो उसने पानी लेकर भीड़ के सामने अपने हाथ धोए, और कहा, “मैं इस धर्मी के लह से निर्दोष हूँ; तुम ही जानो।” २५ सब लोगों ने उत्तर दिया, “इसका लह हम पर और हमारी सन्तान पर हो!” २६ इस पर उसने बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगावाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए। २७ तब राज्यपाल के सिपाहियों ने यीशु को किले में ले जाकर सोरे सैनिक उसके चारों ओर इकट्ठा किए। २८ और उसके कपड़े उतारकर उसे लाल चोगा पहनाया। २९ और काँटों का मुकुट ग़ंथकर उसके सिर पर रखा; और उसके दाहिने हाथ में सरकण्डा दिया और उसके आगे घुटने टेककर उसे उपहास में उड़ाने लगे, “हे यहदियों के राजा नमस्कार!” ३० और उस पर थका, और वही सरकण्डा लेकर उसके सिर पर मारने लगे। ३१ जब वे उसका उपहास कर चुके, तो वह चोगा उस पर से उतारकर फिर उसी के कपड़े उसे पहनाएँ, और क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले चले। ३२ बाहर जाते हुए उन्हें शमैन नामक एक कुरेनी मनुष्य मिला, उन्होंने उसे बेगां में पकड़ा कि उसका क्रूस उठा ले चले। ३३ और उस स्थान पर जो गुलगुता नाम की जगह अर्थात् खोपड़ी का स्थान कहलाता है पहुँचकर ३४ उन्होंने पितृ मिलाया हुआ दाखरस उसे पीने को दिया, परन्तु उसने चखकर पीना न चाहा। ३५ तब उन्होंने उसे कूस पर चढ़ाया; और चिर्ल्लाँ डालकर उसके कपड़े बाँट लिए। ३६ और वहाँ बैठकर उसका पहरा देने लगे। ३७ और उसका दोषपत्र, उसके सिर के ऊपर लगाया, कि “यह यहदियों का राजा यीशु है।” ३८ तब उसके साथ दो डाकू एक दाहिने और एक बाँधे क्रूसों पर चढ़ाए गए। ३९ और अनें-जानेवाले सिर हिला-हिलाकर उसकी निन्दा करते थे। ४० और यह कहते थे, “हे मनिर के दानेवाले और तीन दिन में बनानेवाले, अपने आपको तो बचा! यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उत्तर आ।” ४१ इसी रीति से प्रधान याजक भी शाश्वियों और प्राचीनों समेत उपहास कर करके कहते थे, ४२ “इसने दूसरों को बचाया, और अपने आपको नहीं बचा सकता। यह तो ‘इसाएल का राजा’ है। अब क्रूस पर से उत्तर आए, तो हम उस पर विश्वास करें।” ४३ उसने परमेश्वर का भरोसा रखा है, यदि वह इसको चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इसने कहा था, कि “मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।” ४४ इसी प्रकार डाकू भी जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे उसकी निन्दा करते थे। ४५ दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अंधेरा छाया रहा। ४६ तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से एकाकर कहा, “एली, एली, लामा शब्दतनी?” अर्थात् “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?” ४७ जो वहाँ खड़े थे, उनमें से कितनों ने यह सुनकर कहा, “वह तो एलियाह को पुकारता है।” ४८ उनमें से एक तुरन्त दौड़ा, और पनसोख्ता लेकर सिरके मैं ढुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया। ४९

औरों ने कहा, “रह जाओ, देखें, एलियाह उसे बचाने आता है कि नहीं।” ५० तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिर्ल्लाकर प्राण छोड़ दिए। ५१ तब, मनिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया: और धरती डोल गई और चट्टानें फट गईं। ५२ और कब्रे खुल गईं, और सोए हुए पवित्र लोगों के बहुत शब जी उठे। ५३ और उसके जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नार में गए, और बहुतों को दिखाई दिए। ५४ तब सूबेदार और जो उसके साथ यीशु का पहरा दे रहे थे, भूकम्प और जो कुछ हुआ था, देखकर अत्यन्त डर गए, और कहा, “सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था!” ५५ वहाँ बहुत सी शिर्खाँ जो गलील से यीशु की सेवा करती हुई उसके साथ आई थीं, दूर से देख रही थीं। ५६ उनमें मरियम मगदलीनी और याकूब और योसेस की माता मरियम और जबदी के पुत्रों की माता थीं। ५७ जब सॉँझ हुई तो यूसुफ नामक अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य जो आप ही यीशु का चेला था, आया। ५८ उसने पिलातुस के पास जाकर यीशु का शब माँगा। इस पर पिलातुस ने दे देने की आज्ञा दी। ५९ यूसुफ ने शब को लेकर उसे साफ चादर में लपेटा। ६० और उसे अपनी नई कब्र में रखा, जो उसने चट्टान में खुदवाई थी, और कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काकर चला गया। ६१ और मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहाँ कब्र के सामने बैठी थीं। ६२ दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के बाद का दिन था, प्रधान याजकों और फरीसियों ने पिलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा। ६३ “हे स्वामी, हमें समरण है, कि उस भरमानेवाले ने अपने जीते जी कहा था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उड़ूँगा। ६४ अतः आज़ा दे कि तीसरे दिन तक कब्र की रखवाली की जाए, ऐसा न हो कि उसके चेले आकर उसे चुरा ले जाएँ, और लोगों से कहने लगें, कि वह मेरे हुओं में से जी उठा है: तब पिछला धोखा पहले से भी बुरा होगा।” ६५ पिलातुस ने उनसे कहा, “तुम्हारे पास पहरेदार तो हैं जाओ, अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो।” ६६ अतः वे पहरेदारों को साथ लेकर गए, और पत्थर पर मुहर लगाकर कब्र की रखवाली की।

२८ सब्त के दिन के बाद समाह के पहले दिन पौ फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आईं। २९ तब एक बड़ा भूकम्प हुआ, क्योंकि परमेश्वर का एक दूर स्वर्ग से उत्तरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया। ३० उसका स्पष्ट बिजली के समान और उसका वस्त्र हिम के समान उज्ज्वल था। ३१ उसके भय से पहरेदार कौप उठे, और मृतक समान हो गए। ३२ स्वर्गदूत ने शिखों से कहा, “मत डरो, मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था छँदूती हो। ३३ वह यहाँ नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है: आओ, यह स्थान देखो, जहाँ प्रभु रखा गया था। ३४ और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है, और देखो वह तुम से पहले गलील को जाता है, वहाँ उसका दर्शन पाओगे, देखो, मैंने तुम से कह दिया।” ३५ और वे भय और बड़े आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिये दौड़ गईं। ३६ तब, यीशु उठें रही थी, कि पहरेदारों में से कितनों ने नार में आकर पूरा हात प्रधान याजकों से कह सुनाया। ३७ तब उन्होंने प्राचीनों के साथ इकट्ठे होकर सम्मति की, और सिपाहियों को बहुत चाँदी देकर कहा। ३८ “यह कहना कि रात को जब हम सो रहे थे, तो उसके चेले आकर उसे चुरा ले गए। ३९ और यदि यह बात राज्यपाल के कान तक पहुँचेगी, तो हम उसे समझा लेंगे और

तुम्हें जोखिम से बचा लेगे।” १५ अतः उन्होंने स्पष्ट लेकर जैसा सिखाए गए थे, वैसा ही किया; और यह बात आज तक यहदियों में प्रचलित है। १६ और ग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था। १७ और उन्होंने उसके दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया, पर किसी किसी को सन्देह हआ। १८ यीशु ने उनके पास आकर कहा, “स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। १९ इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, २० और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।” (aiōn g165)

मरकुस

१ परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ। २ जैसे यशायाह

भविष्यद्वका की पुस्तक में लिखा है: “देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूँ, जो तेरे लिये मार्ग सुधारेगा।” ३ जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, और उसकी सड़के सीधी करो।” ४ यूहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था। ५ सारे यहदिया के, और यस्शलेम के सब रहनेवाले निकलकर उसके पास गए, और अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया। ६ यूहन्ना ऊँट के रोम का बश पहने और अपनी कमर में चमड़े का कमरबन्द बाँधे रहता था और टिहियूँ और बनमधु खाया करता था। ७ और यह प्रचार करता था, “मेरे बाद वह अनेवाला है, जो मुझसे सत्तिकशाली है; मैं इस योग्य नहीं कि इकूकर उसके जूतों का फीता खोलूँ।” ८ मैंने तो तम्हें पानी से बपतिस्मा दिया है पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।” ९ उन दिनों में यीशु ने गलील के नासरत से आकर, यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया। १० और जब वह पानी से निकलकर ऊपर आया, तो तुरन्त उसने आकाश को खुलाते और आत्मा को कबूतर के स्पृष्ठ में अपने ऊपर उतारते देखा। ११ और यह आकाशवाणी हुई, “तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूँ।” १२ तब आत्मा ने तुरन्त उसको जंगल की ओर भेजा। १३ और जंगल में चालीस दिन तक शैतान ने उसकी परीक्षा की; और वह बन-पशुओं के साथ रहा; और स्वर्गदूत उसकी सेवा करते रहे। १४ यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया। १५ और कहा, “समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।” १६ गलील की झील के किनारे-किनारे जाते हुए, उसने शमैन और उसके भाई अन्दियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुए थे। १७ और यीशु ने उनसे कहा, “मेरे पीछे चले आओ; मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।” १८ वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए। १९ और कुछ आगे बढ़कर, उसने जब्दी के पुत्र याकूब, और उसके भाई यूहन्ना को, नाव पर जालों को सुधारते देखा। २० उसने तुरन्त उन्हें बुलाया; और वे अपने पिता जब्दी को मजदूरों के साथ नाव पर छोड़कर, उसके पीछे हो लिए। २१ और वे कफरनहम में आए, और वह तुरन्त सब्ल के दिन आराधनालय में जाकर उपदेश करने लगा। २२ और लोग उसके उपदेश से चकित हुए; क्योंकि वह उन्हें शाश्वतों की तरह नहीं, परन्तु अधिकार के साथ उपदेश देता था। २३ और उसी समय, उनके आराधनालय में एक मनुष्य था, जिसमें एक अशुद्ध आत्मा थी। २४ उसने चिल्लाकर कहा, “हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानता हूँ, तू कौन है? परमेश्वर का पवित्र जन!” २५ यीशु ने उसे डॉंटकर कहा, “चुप रह; और उसमें से बाहर निकल जा।” २६ तब अशुद्ध आत्मा उसको मरोड़कर, और बड़े शब्द से चिल्लाकर उसमें से निकल गई। २७ इस पर सब लोग आश्चर्य करते हुए आपस में बाद-विवाद करने लगे “यह क्या बात है? यह तो कोई नया उपदेश है! वह अधिकार के साथ अशुद्ध आत्माओं को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी आज्ञा मानती हैं।” २८ और उसका नाम तुरन्त गलील के आस-पास के सारे प्रदेश में फैल गया। २९ और वह तुरन्त आराधनालय में से निकलकर, याकूब और यूहन्ना के साथ शमैन और अन्दियास के घर आया। ३० और शमैन की सास तेज बुखार से पीड़ित थी, और उन्होंने तुरन्त उसके विषय में उससे कहा। ३१ तब उसने पास जाकर उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया; और उसका बुखार उस पर से उतर गया,

और वह उनकी सेवा-टहल करने लगी। ३२ संध्या के समय जब सूर्य ढूब गया तो लोग सब बीमारों को और उन्हें, जिनमें दुष्टात्माएँ थी, उसके पास लाए। ३३ और सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हुआ। ३४ और उसने बहुतों को जो नाना प्रकार की बीमारियों से दुखी थे, चंगा किया; और बहुत से दुष्टात्माओं को निकला; और दुष्टात्माओं को बोलने न दिया, क्योंकि वे उसे पहचानती थी। ३५ और भौंक को दिन निकलने से बहुत पहले, वह उठकर निकला, और एक जंगली स्थान में गया और वहाँ प्रार्थना करने लगा। ३६ तब शमैन और उसके साथी उसकी खोज में गए। ३७ जब वह मिला, तो उससे कहा; “सब लोग तुम्हें ढूँढ़ रहे हैं।” ३८ यीशु ने उनसे कहा, “आओ; हम और कहीं आप-पाप की बसियों में जाएँ, कि मैं वहाँ भी प्रचार करूँ, क्योंकि मैं इसलिए निकला हूँ।” ३९ और वह सारे गलील में उनके आराधनालयों में जा जाकर प्रचार करता और दुष्टात्माओं को निकालता रहा। ४० एक कोही ने उसके पास आकर, उससे विनती की, और उसके सामने घृटने टेककर, उससे कहा, “यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।” ४१ उसने उस पर तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, “मैं चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा।” ४२ और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया। ४३ तब उसने उसे कड़ी चेतावनी देकर तुरन्त विदा किया, ४४ और उससे कहा, “देख, किसी से कुछ मत कहना, परन्तु जाकर अपने आपको याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया है उसे भेट चढ़ा, कि उन पर गवाही हो।” ४५ परन्तु वह बाहर जाकर इस बात को बहुत प्रचार करने और यहाँ तक फैलाने लगा, कि यीशु फिर खुल्लमखुल्ला नगर में जा सका, परन्तु बाहर जंगली स्थानों में रहा; और चारों ओर से लोग उसके पास आते रहे।

२ कई दिन के बाद यीशु फिर कफरनहम में आया और सुना गया, कि वह घर में है। ३ फिर इने लोग इकट्ठे हुए, कि द्वार के पास भी जगह नहीं मिली; और वह उन्हें चंगन सुना रहा था। ४ और लोग एक लकड़े के मारे हुए को चार मनुष्यों से उठाकर उसके पास ले आए। ५ परन्तु जब वे भीड़ के कारण उसके निकट न पहुँच सके, तो उन्होंने उस छत को जिसके नीचे वहथा, खोल दिया और जब उसे उधेड़ चुके, तो उस खाट को जिस पर लकड़े का मारा हुआ पड़ा था, लटका दिया। ६ यीशु ने उनका विश्वास देखकर, उस लकड़े के मारे हुए से कहा, “हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।” ७ तब कई एक शास्त्री जो वहाँ बैठे थे, अपने-अपने मन में विचार करने लगे, ८ “यह मनुष्य क्यों ऐसा कहता है? यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है! परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है?” ९ यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया, कि वे अपने-अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं, और उनसे कहा, “तुम अपने-अपने मन में यह विचार क्यों कर रहे हो? १० सहज क्या है? क्या लकड़े के मारे से हथ कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना, कि उठ अपनी खाट उठाकर चल फिर? ११ परन्तु जिससे तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथकी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है।” १२ उसने उस लकड़े के मारे हुए से कहा, १३ “मैं तुझ से कहता हूँ, उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।” १४ वह उठा, और तुरन्त खाट उठाकर सब के सामने से निकलकर चला गया; इस पर सब चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, “हमने ऐसा कहा है। यह तो परमेश्वर की चुनी की चौकी पर बैठे देखा, और उससे कहा, “मेरे पीछे हो ले।” १५ और वह उठकर, उसके पीछे हो ले दिया। १६ और वह उपर के घर में भोजन करने बैठा; और बहुत से चुनी लेनेवाले और पापी भी उसके और चेलों के साथ भोजन करने बैठे, क्योंकि वे बहुत से थे, और

उसके पीछे हो लिये थे। १६ और शास्त्रियों और फरीसियों ने यह देखकर, कि वह तो पापियों और चुंगी लेनेवालों के साथ भोजन कर रहा है, उसके चेलों से कहा, “वह तो चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ खाता पीता है!” १७ यीशु ने यह सुनकर, उनसे कहा, “भले चंगों को वैध की आवश्यकता नहीं, परन्तु बीमारों को है। मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।” १८ यूहून्ना के चेले, और फरीसी उपवास करते थे; अतः उन्होंने आकर उससे यह कहा, “यूहून्ना के चेले और फरीसियों के चेले क्यों उपवास रखते हैं, परन्तु तेरे चेले उपवास नहीं रखते?” १९ यीशु ने उनसे कहा, “जब तक दूल्हा बारातियों के साथ रहता है क्या वे उपवास कर सकते हैं? अतः जब तक दूल्हा उनके साथ है, तब तक वे उपवास नहीं कर सकते। २० परन्तु वे दिन आएँगे, कि दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा; उस समय वे उपवास करेंगे। २१ “नये कपड़े का पैबन्द पुराणे बस्त्र पर कोई नहीं लगाता; नहीं तो वह पैबन्द उसमें से कुछ खींच लेगा, अर्थात् नया, पुराने से, और अधिक फट जाएगा। २२ नये दाखरस को पुरानी मशकों में कोई नहीं रखता, नहीं तो दाखरस मशकों को फाड़ देगा, और दाखरस और मशकों दोनों नष्ट हो जाएँगी; परन्तु दाख का नया रस नई मशकों में भरा जाता है।” २३ और ऐसा हुआ कि वह सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था; और उसके चेले चलते हुए बातें तोड़ने लगे। २४ तब फरीसियों ने उनसे कहा, “देख, ये सब्त के दिन वह काम क्यों करते हैं जो उचित नहीं?” २५ उसने उनसे कहा, “क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा, कि जब दाऊद को आवश्यकता हुई और जब वह और उसके साथी भूखे हुए, तब उसने क्या किया था? २६ उसने क्यों अवियातर महायाजक के समय, परमेश्वर के भवन में जाकर, भेट की रोटियाँ खाई, जिसका खाना याजकों को छोड़ और किसी को भी उचित नहीं, और अपने साथियों को भी दी?” २७ और उसने उनसे कहा, “सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिये। २८ इसलिए मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है।”

३ और वह फिर आराधनालय में गया, और वहाँ एक मनुष्य था, जिसका हाथ सूख गया था। ४ और वे उस पर दोष लगाने के लिये उसकी घाट में लगे हुए थे, कि देखो, वह सब्त के दिन में उसे चंगा करता है कि नहीं। ५ उसने सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा, “बीच में खड़ा हो।” ६ और उनसे कहा, “क्या सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा करना, प्राण को बचाना या मारना?” पर वे चुप रहे। ७ और उसने उनके मन की कठोरता से उदास होकर, उनको क्रोध से चारों ओर देखा, और उस मनुष्य से कहा, “अपना हाथ बढ़ा।” ८ उसने बढ़ाया, और उसका हाथ अच्छा हो गया। ९ तब फरीसी बाहर जाकर तरन्त हेरेदियों के साथ उसके विरोध में सम्मिति करने लगे, कि उसे किस प्रकार नाश करें। १० और यीशु अपने चेलों के साथ झील की ओर चला गया: और गतील से एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। ११ और यहदिया, और यस्तलेम और इदमीया से, और यरदन के पार, और सोर और सीदोन के आस-पास से एक बड़ी भीड़ यह सुनकर, कि वह कैसे अचम्भे के काम करता है, उसके पास आई। १२ और उसने अपने चेलों से कहा, “भीड़ के कारण एक छोटी नाव मेरे लिये तैयार रहे ताकि वे मुझे दबा न सकें।” १३ क्योंकि उसने बहुतों को चंगा किया था, इसलिए जितने लोग रोग से ग्रसित थे, उसे छूने के लिये उस पर गिरे पड़ते थे। १४ और अशुद्ध अल्माएँ भी, जब उसे देखती थीं, तो उसके आगे गिर पड़ती थीं, और चिल्लाकर कहती थीं कि तू परमेश्वर का पुत्र है। १५ और उसने उन्हें कड़ी चेतावनी दी कि, मुझे प्रगत न करना। १६ फिर वह पहाड़ पर चढ़ गया, और जिन्हें वह चाहता था उन्हें अपने

पास बुलाया; और वे उसके पास चले आए। १७ तब उसने बारह को नियुक्त किया, कि वे उसके साथ-साथ रहें, और वह उन्हें भेजे, कि प्रचार करें। १८ और दृष्टात्माओं को निकालने का अधिकार रखें। १९ और वे ये हैं शमान जिसका नाम उसने पतरस रखा। २० और जबदी का पुत्र याकूब, और याकूब का भाई यहन्ना, जिनका नाम उसने बुअनरगिस, अर्थात् गर्जन के पुत्र रखा। २१ और अन्दियास, और फिलिप्पस, और बरतुल्मी, और मर्ती, और थोमा, और हलफ़इस का पुत्र याकूब; और तैदै, और शमान कनानी। २२ और यहदा इस्करियोती, जिसने उसे पकड़वा भी दिया। २३ और वह घर में आया और ऐसी भीड़ इकट्ठी हो गई, कि वे रोटी भी न खा सके। २४ जब उसके कुटुम्बियों ने यह सुना, तो उसे पकड़ने के लिये निकले; क्योंकि कहते थे, कि उसकी सुध-बुध ठिकाने पर नहीं है। २५ और शास्त्री जो यस्तलेम से आए थे, यह कहते थे, “उसमें शैतान है।” और यह भी, “वह दृष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दृष्टात्माओं को निकालता है।” २६ और वह उन्हें पास बुलाकर, उनसे दृष्टात्मों में कहने लगा, “शैतान कैसे शैतान को निकाल सकता है? २७ और यदि किसी राज्य में फूट पड़े, तो वह राज्य कैसे स्थिर रह सकता है? २८ और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर क्या स्थिर रह सकेगा? २९ और यदि शैतान अपना ही विरोधी होकर अपने में फूट डाले, तो वह क्या बना रह सकता है? उसका तो अन्त ही हो जाता है। ३० “किन्तु कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में उस्कर उसका माल लट्ट नहीं सकता, जब तक कि वह पहले उस बलवन्त को न बाँध ले, और तब उसके घर को लट्ट लेगा। ३१ “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मनुष्यों के सब पाप और निन्दा जो वे करते हैं, क्षमा की जाएँगी। ३२ परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विद्यु निन्दा करे, वह कभी भी क्षमा न किया जाएगा: वरन् वह अनन्त पाप का अपराधी ठहरता है।” (aion g165, aiōnios g166) ३३ क्योंकि वे यह कहते थे, कि उसमें अशुद्ध आत्मा है। ३४ और उसकी माता और उसके भाई आए, और बाहर खड़े होकर उसे बुलाया भेजा। ३५ और भीड़ उसके आस-पास बैठी थी, और उन्होंने उससे कहा, “देख, तेरी माता और तेरे भाई बाहर तुझे ढूँढ़ते हैं।” ३६ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं?” ३७ और उन पर जो उसके आस-पास बैठे थे, दृष्टि करके कहा, “देखो, मेरी माता और मेरे भाई यह है। ३८ क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, और बहन और माता है।”

४ यीशु फिर झील के किनारे उपदेश देने लगा: और ऐसी बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई, कि वह झील में एक नाव पर चढ़कर बैठ गया, और सारी भीड़ भीमि पर झील के किनारे खड़ी रही। ३९ और वह उन्हें दृष्टात्मों में बहुत सारी बातें सिखाने लगा, और अपने उपदेश में उनसे कहा, ४० “सुनो! देखो, एक बोनेवाला, बीज बोने के लिये निकला। ४१ और बोते समय कुछ तो मार्ग के किनारे गिरा और पक्षियों ने आकर उसे चुप लिया। ४२ और कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरा जर्ही उसको बहुत मिट्टी न मिली, और नरम मिट्टी मिलने के कारण जल्द उग आया। ४३ और जब सूर्य निकला, तो जल गया, और जड़ न पकड़ने के कारण सूख गया। ४४ और कुछ तो झाड़ियों में गिरा, और झाड़ियों ने बढ़कर उसे दबा दिया, और वह फल न लाया। ४५ परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा जर्ही उसको बहुत मिट्टी न मिली, और कोई तीस गुण, कोई सात गुण और कोई सी गुण फल लाया।” ४६ और उसने कहा, “जिसके पास सुनने के लिये कान हों वह सुन ले।” ४७ जब वह अकेला रह गया, तो उसके साथियों ने उन बारह समेत उससे इन दृष्टात्मों के विषय में पूछा। ४८ उसने उनसे कहा, “तुम को तो परमेश्वर के राज्य के भेद की समझ दी गई है, परन्तु बाहरवालों के लिये सब बातें दृष्टात्मों में होती हैं। ४९ इसलिए

कि वे देखते हुए देखें और उन्हें दिखाई न पड़े और सुनते हुए सुनें भी और न समझें; ऐसा न हो कि वे फिरें, और क्षमा किए जाएं।” १३ फिर उसने उनसे कहा, “क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते? तो फिर और सब दृष्टान्तों को कैसे समझेगे? १४ बोनेवाला वचनबोता है। १५ जो मार्ग के किनारे के हैं जहाँ वचन बोया जाता है, वे वे हैं, कि जब उन्होंने सुना, तो शैतान तुरन्त आकर वचन को जो उनमें बोया गया था, उठा ले जाता है। १६ और वे से ही जो पत्थरीली भूमि पर बोए जाते हैं, वे वे हैं, कि जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं। १७ परन्तु अपने भीतर जड़ न रखने के कारण वे थोड़े ही दिनों के लिये रहते हैं; इसके बाद जब वचन के कारण उन पर करोश या उपद्रव होता है, तो वे तुरन्त ठोकर खते हैं। १८ और जो झाड़ियों में बोए गए वे वे हैं जिन्होंने वचन सुना, १९ और संसार की चिन्ता, और धन का धोखा, और वस्तुओं का लोभ उनमें समाकर वचन को दबा देते हैं और वह निष्फल रह जाता है। (aión g165) २० और जो अच्छी भूमि में बोए गए, वे वे हैं, जो वचन सुनकर ग्रहण करते और फल लाते हैं, कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा, और कोई सौ गुणा।” २१ और उसने उसे कहा, “क्या दीये को इसलिए लाते हैं कि पैमाने या खटक के नीचे रखा जाए? क्या इसलिए नहीं, कि दीवाट पर रखा जाए? २२ क्योंकि कोई वस्तु छिपी नहीं, परन्तु इसलिए कि प्रगट हो जाए, और न कुछ गुप्त है, पर इसलिए कि प्रगट हो जाए। २३ यदि किसी के सुनने के कान हों, तो सुन ले।” २४ फिर उसने उनसे कहा, “चौकस रहो, कि क्या सुनते हो? जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा, और तुम को अधिक दिया जाएगा। २५ क्योंकि जिसके पास है, उसको दिया जाएगा; परन्तु जिसके पास नहीं है उससे भी जो उसके पास है; ले लिया जाएगा।” २६ फिर उसने कहा, “परमेश्वर का राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य भूमि पर बीज छीटि, २७ और रात को सोए, और दिन को जागे और वह बीज ऐसे उगे और बढ़े कि वह न जाने। २८ पृथ्वी आप से आप फल लाती है पहले अंकुर, तब बाले, और तब बालों में तैयार दाना। २९ परन्तु जब दाना पक जाता है, तब वह तुरन्त हँसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुँची है।” ३० फिर उसने कहा, “हम परमेश्वर के राज्य की उपमा किस से दें, और किस दृष्टान्त से उसका वर्णन करें? ३१ वह राई के दाने के समान है; कि जब भूमि में बोया जाता है तो भूमि के सब बीजों से छोटा होता है। ३२ परन्तु जब बोया गया, तो उगकर सब साग-पात से बड़ा हो जाता है, और उसकी ऐसी बड़ी डालियाँ निकलती हैं, कि आकाश के पक्षी उसकी छाया में बसेरा कर सकते हैं।” ३३ और वह उन्हें इस प्रकार के बहुत से दृष्टान्त दे देकर उनकी समझ के अनुसार वचन सनाता था। ३४ और बिना दृष्टान्त करे उनसे कुछ भी नहीं कहता था; परन्तु एकान्त में वह अपने निज चेलों को सब बातों का अर्थ बताता था। ३५ उसी दिन जब साँझ हीई, तो उसने चेलों से कहा, “आओ, हम पार चलें।” ३६ और वे भीड़ को छोड़कर जैसा वह था, वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले; और उसके साथ, और भी नावें थीं। ३७ तब बड़ी आँधी आई, और लहरें नाव पर यहाँ तक लगी, कि वह अब पानी से भरी जाती थी। ३८ और वह आप पिछले भाग में गँड़ी पर सो रहा था; तब उन्होंने उसे जगाकर उससे कहा, “हे गुरु, क्या तुझे चिन्ता नहीं, कि हम नाश हुए जाते हैं?” ३९ तब उसने उठकर आँधी को डॉटा, और पानी से कहा, “शान्त रह, थम जा!” और आँधी थम गई और बड़ा चैन हो गया। ४० और उनसे कहा, “तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विवास नहीं?” ४१ और वे बहुत ही डर गए और आपस में बोले, “यह कौन है, कि आँधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं?”

५ वे झील के पार गिरासेनियों के देश में पहुँचे, २ और जब वह नाव पर से उत्तरा तो तुरन्त एक मनुष्य जिसमें अशुद्ध आत्मा थी, कब्रों से निकलकर

उसे मिला। ३ वह कब्रों में रहा करता था और कोई उसे जंजीरों से भी न बँध सकता था, ४ क्योंकि वह बार बोड़ियों और जंजीरों से बाँधा गया था, पर उसने जंजीरों को तोड़ दिया, और बेड़ियों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए थे, और कोई उसे वश में नहीं कर सकता था। ५ वह लगातार रात-दिन कब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता, और अपने को पत्थरों से घायल करता था। ६ वह यीशु को दूर ही से देखकर दौड़ा, और उसे प्रणाम किया। ७ और ऊँचे शब्द से चिल्लाकर कहा, “हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूँ, कि मुझे पीड़ा न दे।” ८ क्योंकि उसने उससे कहा था, “हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ।” ९ यीशु ने उससे पूछा, “तेरा क्या नाम है?” उसने उससे कहा, “मेरा नाम सेना है; क्योंकि हम बहुत हैं।” १० और उसने उससे बहुत बिनती की, “हमें इस देश से बाहर न भेज।” ११ वहाँ पहाड़ पर सुअरों का एक बड़ा झण्ड चर रहा था। १२ और उन्होंने उससे बिनती करके कहा, “हमें उन सुअरों में भेज दे, कि हम उनके भीतर रहे।” १३ अतः उसने उन्हें आज्ञा दी और अशुद्ध आत्मा निकलकर सुअरों के भीतर घुस गई और झण्ड, जो कोई दो हजार का था, कड़ाड़े पर से झापटकर झील में जा पड़ा, और ढूँढ़ मरा। १४ और उनके चरवाहों ने भागकर नार और गँड़ों में समाचार सुनाया, और जो हुआ था, लोग उसे देखने आए। १५ यीशु के पास आकर, वे उसको जिसमें दृश्यात्मा एँ समाई थी, कपड़े पहने और सुअरों का पूरा हाल, उनको कह सुनाया। १६ और देखेवालों ने उसका जिसमें दृश्यात्मा एँ थी, और सुअरों का पूरा हाल, उनको कह सुनाया। १७ और वे उससे बिनती करके कहने लगे, कि हमारी सीमा से चला जा। १८ और वे उससे बिनती करने लगा, “मुझे अपने साथ रहने दे।” १९ परन्तु उसने उसे आज्ञा न दी, और उससे कहा, “अपने घर जाकर अपने लोगों को बता, कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं।” २० वह जाकर दिकापुलिस में इस बात का प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मैं लिये कैसे बड़े काम किए; और सब अचम्भा करते थे। २१ जब यीशु फिर नाव से पार गया, तो एक बड़ी भीड़ उसके पास इक्की हो गई; और वह झील के किनारे था। २२ और याँझ नामक आराधनात्मय के सरदारों में से एक आया, और उसे देखकर, उसके पाँवों पर गिरा। २३ और उसने यह कहकर बहुत बिनती की, “मेरी छोटी बेटी मरने पर है: तू आकर उस पर हाथ रख, कि वह चंगी होकर जीवित रहे।” २४ तब वह उसके साथ चला; और बड़ी भीड़ उसके पाँछे हो ली, यहाँ तक कि लोग उस पर गिरे पड़ते थे। २५ और एक झी, जिसको बारह वर्ष से लह बहने का रोग था। २६ और जिसने बहुत वैधों से बड़ा दुःख उठाया और अपना सब माल व्यय करने पर भी कुछ लाभ न उठाया था, परन्तु और भी रोगी हो गई थी। २७ यीशु की चर्चा सुनकर, भीड़ में उसके पीछे से आई, और उसके बब्ब को छू लिया, २८ क्योंकि वह कहनी थी, “यदि मैं उसके बब्ब को छू लैंगी, तो चंगी हो जाओगी।” २९ और तुरन्त उसका लह बहना बन्द हो गया, और उसने अपनी देह में जान लिया, कि उस बीमारी से अच्छी हो गई हैं। ३० यीशु ने तुरन्त अपने मैं जान लिया, कि मुझसे सामर्थ्य निकली है, और भीड़ में पीछे फिरकर पूछा, “मेरा बब्ब किसने छुआ?” ३१ उसके चेलों ने उससे कहा, “तू देखता है, कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है; किसने मुझे छुआ?” ३२ तब उसने उसे देखने के लिये जिसने यह काम किया था, चारों ओर दृष्टि की। ३३ तब वह झी यह जानकर, कि उसके साथ क्या हुआ है, डरती और कॉर्पसी हीई आई, और उसके पाँवों पर गिरकर, उससे सब हाल सच-सच कह दिया। ३४ उसने उससे कहा, “पुत्री, तेरे विवास ने तुझे चंगा किया है: कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी से बची रह।” ३५

वह यह कह ही रहा था, कि आराधनालय के सरदार के घर से लोगों ने आकर कहा, “तेरी बेटी तो मर गई, अब गुरु को क्यों दुःख देता है?” ३६ जो बात वे कह रहे थे, उसको यीशु ने अनसुनी करके, आराधनालय के सरदार से कहा, “मत डर; केवल विश्वास रखा!” ३७ और उसने पतरस और याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना को छोड़, और किसी को अपने साथ अने न दिया। ३८ और आराधनालय के सरदार के घर में पहुँचकर, उसने लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखा। ३९ तब उसने भीतर जाकर उनसे कहा, “तुम क्यों हल्ला मचाते और रोते हो? लड़की मरी नहीं, परन्तु सो रही है!” ४० वे उसकी हँसी करने लगे, परन्तु उसने सब को निकलकर लड़की के माता-पिता और अपने साथियों को लेकर, भीतर जहाँ लड़की पड़ी थी, गया। ४१ और लड़की का हाथ पकड़कर उससे कहा, “तलीता कूमी”; जिसका अर्थ यह है “हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ!” ४२ और लड़की तुरन्त उठकर चलने फिरने लगी; क्योंकि वह बारह वर्ष की थी। और इस पर लोग बहुत चकित हो गए। ४३ फिर उसने उन्हें चेतावनी के साथ आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने न पाए और कहा; “इसे कुछ खाने को दो।”

६ वहाँ से निकलकर वह अपने देश में आया, और उसके चेले उसके पीछे हो लिए। १ सब्त के दिन वह आराधनालय में उपदेश करने लगा, और बहुत लोग सुनकर चकित हुए और कहने लगे, “इसके ये बातें कहाँ से आ गईं?” और यह कौन सा ज्ञान है जो उसको दिया गया है? और कैसे सामर्थ्य के काम इसके हाथों से प्रगट होते हैं? २ क्या यह वही बढ़ी नहीं, जो मरियम का पुत्र, और याकूब और योसेस और यहूदा और शमैन का भाई है? और क्या उसकी बहनें वहाँ हमारे बीच में नहीं रहती? इसलिए उन्होंने उसके विषय में ठोकर खाई। ३ यीशु ने उनसे कहा, “भविष्यद्वत्का का अपने देश और अपने कुटुम्ब और अपने घर को छोड़ और कहीं भी निरादर नहीं होता।” ४ और वह वहाँ कोई सामर्थ्य का काम न कर सका, केवल थोड़े बीमारों पर हाथ रखकर उन्हे चंगा किया। ५ और उसने उनके अविष्यास पर आश्वर्य किया और चारों ओर से गाँवों में उपदेश करता फिरा। ६ और वह बारहों को अपने पास बुलाकर उन्हें दो-दो करके भेजने लगा; और उन्हें अशृद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया। ७ और उसने उन्हें आज्ञा दी, कि “मार्ग के लिये लाठी छोड़ और कुछ न लो; न तो रोटी, न झोली, न पटुके में पैसे। ८ परन्तु जतियाँ पहनो और दो-दो कुर्तन पहनो।” ९ और उसने उनसे कहा, “जहाँ कहीं तुम किसी घर में उतरो, तो जब तक वहाँ से विदा न हो, तब तक उसी पर मैं ठरो रहो।” १० जिस स्थान के लोग तुम्हें ग्रहण न करें, और तुम्हारी न सूर्ये, वहाँ से चलते ही अपने तलवों की धूल झाड़ डालो, कि उन पर गवाही हो।” ११ और उन्होंने जाकर प्रचार किया, कि मन फिराओ, १२ और बहुत सी दृष्टाताओं को निकाला, और बहुत बीमारों पर तेल मलकर उन्हें चंगा किया। १३ और हेरोदेस राजा ने उसकी चर्चा सुनी, क्योंकि उसका नाम फैल गया था, और उसने कहा, कि “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला मरे हुओं में से जी उठा है, इसलिए उससे ये सामर्थ्य के काम प्रगट होते हैं।” १४ और औरौरों ने कहा, “यह एलियाह है”, परन्तु औरौरों ने कहा, “भविष्यद्वत्का या भविष्यद्वत्काओं में से किसी एक के समान है।” १५ हेरोदेस ने यह सुनकर कहा, “जिस यूहन्ना का सिर मैंने कटवाया था, वही जी उठा है।” १६ क्योंकि हेरोदेस ने आप अपने भाई फिलिप्स की पत्नी हेरोदियास के कारण, जिससे उसने विवाह किया था, लोगों को भेजकर यूहन्ना को पकड़वाकर बन्दीगृह में डाल दिया था। १७ क्योंकि यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा था, “अपने भाई की पत्नी को रखना तुझे उचित नहीं।” १८ इसलिए हेरोदियास उससे बैर रखती थी और यह चाहती थी, कि उसे मरवा डाले, परन्तु ऐसा न हो सका, १९ क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना को धर्मी और पवित्र

पुम्प जानकर उससे डरता था, और उसे बचाए रखता था, और उसकी सुनकर बहुत ध्वनाता था, पर आनन्द से सुनता था। २० और ठीक अवसर पर जब हेरोदेस ने अपने जन्मदिन में अपने प्रधानों और सेनापतियों, और गतील के बड़े लोगों के लिये भोज किया। २१ और उसी हेरोदियास की बेटी भीतर आई, और नाचकर हेरोदेस को और उसके साथ बैठनेवालों को प्रसन्न किया; तब राजा ने लड़की से कहा, “तू जो चाहे मुझसे माँग मैं तुझे दूँगा।” २२ और उसने शपथ खाई, “मैं अपने आधे राज्य तक जो कुछ त मुझसे माँगेगा मैं तुझे दूँगा।” २३ उसने बाहर जाकर अपनी माता से पूछा, “मैं क्या माँगूँ?” वह बोली, “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर।” २४ वह तुरन्त राजा के पास भीतर आई, और उससे बिनती की, कि त् अभी यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर एक थाल में मुझे माँगवा दे।” २५ तब राजा बहुत उदास हुआ, परन्तु अपनी शपथ के कारण और साथ बैठनेवालों के कारण उसे टालना न चाहा। २६ और राजा ने तुरन्त एक सिपाही को आज्ञा देकर भेजा, कि उसका सिर काट लाए। २७ उसने जेलखाने में जाकर उसका सिर काटा, और एक थाल में रखकर लाया और लड़की को दिया, और लड़की ने अपनी माँ को दिया। २८ यह सुनकर उसके चेले आए, और उसके शब को उठाकर कब्र में रखा। २९ प्रेरितों ने यीशु के पास इकट्ठे होकर, जो कुछ उन्होंने किया, और सिखाया था, सब उसको बता दिया। ३० उसने उनसे कहा, “तुम आप अलग किसी एकान्त स्थान में आकर थोड़ा शिशाम करो।” क्योंकि बहुत लोग आते-जाते थे, और उन्हें खाने का अवसर भी नहीं मिलता था। ३१ इसलिए वे नाव पर चढ़कर, सुनसान जगह में अलग चले गए। ३२ और बहुतों ने उन्हें जाते देखकर पहचान लिया, और सब नगरों से इकट्ठे होकर वहाँ पैदल दौड़े और उससे पहले जा पहुँचे। ३३ उसने उतरकर बड़ी भीड़ देखी, और उन पर तरस खाया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान थे, जिनका कोई रखवाला न हो; और वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा। ३४ जब दिन बहुत ढल गया, तो उसके चेले उसके पास आकर कहने लगे, “यह सुनसान जगह है, और दिन बहुत ढल गया है। ३५ उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा। ३६ जब दिन बहुत ढल गया, तो उन्होंने उससे कहा, “क्या हम दो सौ दीनार की रोटियाँ मोल लें, और उन्हें खिलाएँ?” ३७ उसने उनसे कहा, “जाकर देखो तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने मालूम करके कहा, “पाँच रोटी और दो मछली भी।” ३८ तब उसने उन्हें आज्ञा दी, कि सब को ही धास पर समूह में बैठा दो। ३९ वे सौ-सौ और पचास-पचास करके समूह में बैठ गए। ४० और उसने उन पाँच रोटियों को और दो मछलियों को लिया, और सर्वग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियाँ तोड़-तोड़ करके चेलों को देता गया, कि वे लोगों को पोरें, और वे दो मछलियाँ भी उन सब में बौट दी। ४१ और सब खाकर तुम हो गए, ४२ और उन्होंने टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरकर उठाई, और कुछ मछलियों से भी थी। ४३ जिन्होंने रोटियाँ खाई, वे पाँच हजार पुस थे। ४४ तब उसने तुरन्त अपने चेलों को विवश किया कि वे नाव पर चढ़कर उससे पहले उस पर बैठैसेदा को चले जाएँ, जब तक कि वह लोगों को बिदा करे। ४५ और उन्हें बिदा करके पहाड़ पर प्रार्थना करने को गया। ४६ और जब सौँझ हुई, तो नाव झील के बीच में थी, और वह अकेला भूमि पर था। ४७ और जब उसने देखा, कि वे खेते-खेते बघरा गए हैं, क्योंकि हवा उनके विश्वद्वयी थी, तो रात के चौथे पहर के निकट वह झील पर चलते हुए उनके पास आया; और उनसे अगे निकल जाना चाहता था। ४८ परन्तु उन्होंने उसे झील पर चलते देखकर समझा, कि भूत है, और चिल्ला उठे, ४९ क्योंकि सब उसे देखकर बघरा गए थे। पर उसने तुरन्त उनसे बातें की और कहा, “धैर्य रखो: मैं हँ: डो

मत।” ५१ तब वह उनके पास नाव पर आया, और हवा थम गईः वे बहुत ही अश्वर्य करने लगे। ५२ क्योंकि वे उन रोटियों के विषय में न समझे थे परन्तु उनके मन कठोर हो गए थे। ५३ और वे पास उत्तरकर गन्नेसरत में पहुँचे, और नाव घाट पर लगाई। ५४ और जब वे नाव पर से उतरे, तो लोग तुरन्त उसको पहचानकर, ५५ आस-पास के सारे देश में दौड़े, और बीमारों को खाटों पर डालकर, जहाँ-जहाँ समाचार पाया कि वह है, वहाँ-वहाँ लिए फिरे। ५६ और जहाँ कहीं वह गाँवों, नगरों, या बस्तियों में जाता था, तो लोग बीमारों को बाजारों में रखकर उससे विनती करते थे, कि वह उन्हें अपने बन्धे के आँचल ही को छू लेने दे: और जिन्हे उसे छूते थे, सब चंगे हो जाते थे।

७ तब फरीसी और कुछ शास्त्री जो यस्सलेम से आए थे, उसके पास इकट्ठे

हुए, २ और उन्होंने उसके कई चेलों को अशूद्ध अर्थात् बिना हाथ धोए रोटी खाते देखा। ३ (क्योंकि फरीसी और सब बहूदी, प्राचीन परम्परा का पालन करते हैं और जब तक भली भाँति हाथ नहीं धो लेते तब तक नहीं खाते; ४ और बाजार से आकर, जब तक सान नहीं कर लेते, तब तक नहीं खाते, और बहुत सी अन्य बातें हैं, जो उनके पास मानने के लिये पहुँचाइ गई हैं, जैसे कटोरों, और लोटों, और तांबे के बरतनों को धोना-माँजना।) ५ इसलिए उन फरीसियों और शास्त्रियों ने उससे पृछा, “तेरे चेले क्यों पूर्वजों की परम्पराओं पर नहीं चलते, और बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं?” ६ उसने उनसे कहा, “यशायाह ने तुम कपाटियों के विषय में बहुत ठीक भविष्यद्वाणी की; जैसा लिखा है: ‘ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझसे दूर रहता है।’ ७ और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मपदेश करके सिखाते हैं।” ८ क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा को टालकर मनुष्यों की रीतियों को मानते हो।” ९ और उसने उनसे कहा, “तुम अपनी परम्पराओं को मानने के लिये परमेश्वर की आज्ञा कैसी अच्छी तरह टाल देते हो! १० क्योंकि मूसा ने कहा है, ‘अपने पिता और अपनी माता का आदर कर,’ और ‘जो कोई पिता या माता को बुरा करे, वह अवश्य मार डाला जाए।’” ११ परन्तु तुम कहते हो कि यदि कोई अपने पिता या माता से कहे, ‘जो कुछ तुझे मुझसे लाभ पहुँच सकता था, वह कुरबान अर्थात् संकल्प हो चुका।’ १२ “तो तुम उसको उसके पिता या उसकी माता की कुछ सेवा करने नहीं देते। १३ इस प्रकार तुम अपनी परम्पराओं से, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो; और ऐसे-ऐसे बहत से काम करते हो।” १४ और उसने लोगों को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, “तुम सब मेरी मुसों, और समझो। १५ ऐसी तो कोई वस्तु नहीं जो मनुष्य में बाहर से समाकर उसे अशूद्ध करे; परन्तु जो वस्तु ऐसी मनुष्य के भीतर से निकलती है, वे ही उसे अशूद्ध करती हैं। १६ यदि किसी के सुनने के कान हों तो सुन ले।” १७ जब वह भीड़ के पास से घर में गया, तो उसके चेलों ने इस दृष्टन्त के विषय में उससे पृछा। १८ उसने उनसे कहा, “क्या तुम भी ऐसे नासमझ हो? क्या तुम नहीं समझते, कि जो वस्तु बाहर से मनुष्य के भीतर जाती है, वह उसे अशूद्ध नहीं कर सकती? १९ क्योंकि वह उसके मन में नहीं, परन्तु पेट में जाती है, और शौच में निकलती है?” यह कहकर उसने सब भोजनवस्तुओं को शुद्ध ठहराया। २० फिर उसने कहा, “जो मनुष्य में से निकलता है, वही मनुष्य को अशूद्ध करता है। २१ क्योंकि भीतर से, अर्थात् मनुष्य के मन से, बुरे-बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्तीगमन, २२ लोभ, दुष्टा, छल, लुचपन, कुरूषि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती है। २३ ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशूद्ध करती है।” २४ फिर वह वहाँ से उठकर सोर और सीदोन के देशों में आया; और एक घर में गया, और चाहता था, कि कोई न जाने; परन्तु वह छिप न सका। २५ और तुरन्त एक स्त्री जिसकी

छोटी बेटी में अशूद्ध आत्मा थी, उसकी चर्चा सुनकर आई, और उसके पाँवों पर गिरी। २६ यह यूनानी और सुस्फिनीकी जाति की थी, और उसने उससे विनती की, कि मेरी बेटी में से दृष्टाता निकाल दे। २७ उसने उससे कहा, “पहले लड़कों को तृप्त होने दे, क्योंकि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना उचित नहीं है।” २८ उसने उसको उत्तर दिया; “सच है प्रधु, फिर भी कुत्ते भी तो मेज के नीचे बालकों की रोटी के चूर चार खा लेते हैं।” २९ उसने उससे कहा, “इस बात के कारण चली जा; दृष्टाता तेरी बेटी में से निकल गई है।” ३० और उसने अपने घर आकर देखा कि लड़की खाट पर पढ़ी है, और दृष्टाता निकल गई है। ३१ फिर वह सोर और सीदोन के देशों से निकलकर दिकापुलिस देश से होता हुआ गलीत की झील पर पहुँचा। ३२ और लोगों ने एक बहर को जो हक्कला भी था, उसके पास लाकर उससे विनती की, कि अपना हाथ उस पर रखे। ३३ तब वह उसको भीड़ से अलग ले गया, और अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डाली, और थककर उसकी जीभ को छुआ। ३४ और स्वर्गी की ओर देखकर आह भरी, और उससे कहा, “इफ्फतह!” अर्थात् “खुल जा!” ३५ और उसके कान खुल गए, और उसकी जीभ की गाँठ भी खुल गई, और वह साफ-साफ बोलने लगा। ३६ तब उसने उन्हें चेतावनी दी कि किसी से न कहना; परन्तु जितना उसने उन्हें चिटाया उतना ही वे और प्रचार करने लगे। ३७ और वे बहुत ही अश्वर्य में होकर कहने लगे, “उसने जो कुछ किया सब अच्छा किया है; वह बहरों को सुनने की, और गँगों को बोलने की शक्ति देता है।”

८ उन दिनों में, जब फिर बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई, और उनके पास कुछ खाने को न था, तो उसने अपने चेलों को पास बुलाकर उनसे कहा, १ “मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्योंकि यह तीन दिन से बराबर मेरे साथ है, और उनके पास कुछ भी खाने को नहीं।” २ यदि मैं उन्हें भूखा घर भेज दूँ तो मार्ग में थककर रह जाएँ; क्योंकि इसमें से कोई-कोई दूर से आए है।” ३ उनके चेलों ने उसको उत्तर दिया, “यहाँ जंगल में इतनी रोटी कोई कहाँ से लाए कि ये तुम हों?” ४ उसने उनसे पृछा, “तुम्हरे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने कहा, “सात।” ५ तब उसने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी, और वे सात रोटियाँ ली, और धन्यवाद करके तोड़ीं, और अपने चेलों को देता गया कि उनके आगे रखें, और उन्होंने लोगों के आगे पोस दिया। ६ उनके पास थोड़ी सी छोटी मछलियाँ भी थीं; और उसने धन्यवाद करके उन्हें भी लोगों के आगे रखने की आज्ञा दी। ७ अतः वे खाकर तुम हो गए और शेष टुकड़ों के सात टोके भरकर उठाए। ८ और लोग चार हजार के लगभग थे, और उसने उनको विदा किया। ९ और वह तुरन्त अपने चेलों के साथ नाव पर चढ़कर दलमनता देश को चला गया। १० फिर फरीसी आकर उससे बाद-विवाद करने लगे, और उसे जाँचने के लिये उससे कोई स्वर्गीय चिन्ह मँगा। ११ उसने अपनी आत्मा में भरकर कहा, “इस समय के लोग क्यों चिन्ह हँड़ते हैं? मैं तुम से सच कहता हूँ, कि इस समय के लोगों को कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा।” १२ और वह उन्हें छोड़कर फिर नाव पर चढ़ गया, और पार चला गया। १३ और वे रोटी लेना भल गए थे, और नाव में उनके पास एक ही रोटी थी। १४ और उसने उन्हें चेतावनी दी, “देखो, फरीसियों के खुमरी और हेसेदेस के खुमरी से सावधान रहो।” १५ वे आपस में विचार करके कहने लगे, “हमारे पास तो रोटी नहीं है।” १६ यह जानकर यीशु ने उनसे कहा, “तुम क्यों आपस में विचार कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं है? क्या अब तक नहीं जानते और नहीं समझते? क्या तुम्हारा मन कठोर हो गया है? १७ क्या आँखें रखते हुए भी नहीं देखते, और कान रखते हुए भी नहीं सुनते? और तुम्हें

स्मरण नहीं? १५ कि जब मैंने पाँच हजार के लिये पाँच रोटी तोड़ी थी तो तुम ने टुकड़ों की कितनी टोकरियां भरकर उठाई?" उन्होंने उससे कहा, "बारह टोकरियाँ।" १६ उसने उससे कहा, "और जब चार हजार के लिये सात रोटियाँ थीं तो तुम ने टुकड़ों के कितने टोकरे भरकर उठाए थे?" उन्होंने उससे कहा, "सात टोकरे।" १७ उसने उससे कहा, "क्या तुम अब तक नहीं समझते?" १८ और वे बैतसौदा में आए; और लोग एक अंधे को उसके पास ले आए और उससे विनती की कि उसको लूपा। १९ वह उस अंधे का हाथ पकड़कर उसे गाँव के बाहर ले गया। और उसकी आँखों में थकरकर उस पर हाथ रखे, और उससे पूछा, "क्या तू कुछ देखता है?" २० उसने आँख उठाकर कहा, "मैं मनुष्यों को देखता हूँ, क्योंकि वे मुझे चलते हुए दिखाई देते हैं, जैसे पेड़।" २१ तब उसने फिर दोबारा उसकी आँखों पर हाथ रखे, और उसने ध्यान से देखा। और चंगा हो गया, और सब कुछ साफ-साफ देखने लगा। २२ और उसने उसे यह कहकर घर भेजा, "इस गाँव के भीतर पाँच भी न रखना।" २३ यीशु और उसके चेले कैसरिया फिलिप्पी के गाँवों में चले गए; और मार्ग में उसने अपने चेलों से पूछा, "लोग मुझे क्या कहते हैं?" २४ उन्होंने उत्तर दिया, "यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला; पर कोई-कोई, एलियाह; और कोई-कोई, भविष्यद्वताओं में से एक की बहते हैं।" २५ उसने उससे पूछा, "परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?" पतरस ने उसको उत्तर दिया, "तू मसीह है।" २६ तब उसने उन्हें चित्कार कहा कि "मेरे विषय में यह किसी से न कहना।" २७ और वह उन्हें सिखाने लगा, कि मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुःख उठाए, और पुरनिए और प्रधान याजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें और वह तीन दिन के बाद जी उठें। २८ उसने यह बात उनसे साफ-साफ कह दी। इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर डॉक्टर ने लगा। २९ परन्तु उसने फिरकर, और अपने चेलों की ओर देखकर पतरस को डॉक्टर कहा, "हे शैतान, मेरे सामने से दूँ हो, क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्य की बातों पर मन लगाता है।" ३० उसने भीड़ को अपने चेलों समेत पास बुलाकर उनसे कहा, "जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आप से इन्कार करे और अपना क्रस उठाकर, मेरे पीछे हो ले।" ३१ क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुमान्चर के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। ३२ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? ३३ और मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा? ३४ जो कोई इस व्यधिचारी और पापी जाति के बीच मुझसे और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आएगा, तब उससे भी लजाएगा।"

७ और उसने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य सहित आता हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चर्चेंगे।" ८ छ: दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और यूहन्ना को साथ लिया, और एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया; और उनके सामने उसका स्पष्ट बदल गया। ९ और उसका बब्ज ऐसा चमकने लगा और यहाँ तक अति उज्ज्वल हुआ, कि पृथ्वी पर कोई धोनी भी वैसा उज्ज्वल नहीं कर सकता। १० और उन्हें मूरा के साथ एलियाह दिखाई दिया; और वे यीशु के साथ बातें करते थे। ११ इस पर पतरस ने यीशु से कहा, "हे रब्बी, हमारा यहाँ रहना अच्छा है: इसलिए हम तीन मण्डप बनाएँ; एक तैरे लिये, एक मूरा के लिये, और एक एलियाह के लिये।" १२ क्योंकि वह न जानता था कि क्या उत्तर दे, इसलिए कि वे बहुत डर गए थे। १३ तब एक बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, "यह मेरा प्रिय पुत्र है; इसकी सुनो।" १४ तब उन्होंने एकाएक चारों ओर दृष्टि की, और यीशु को छोड़ अपने साथ और किसी को न देखा। १५ पहाड़ से उतरते हुए, उसने उन्हें आज्ञा दी, कि जब तक मनुष्य का पुत्र मेरे हूँओं में से जी न उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है वह किसी से न कहना। १६ उन्होंने इस बात को स्मरण रखा; और आपस में बाद-विवाद करने लगे, "मेरे हूँओं में से जी उठने का क्या अर्थ है?" १७ और उन्होंने उससे पूछा, "शास्त्री क्यों कहते हैं, कि एलियाह का पहले आना अवश्य है?" १८ उसने उन्हें उत्तर दिया, "एलियाह सचमुच पहले आकर सब कुछ सुधोरेगा, परन्तु मनुष्य के पुत्र के विषय में यह क्यों लिखा है, कि वह बहुत दुःख उठाएगा, और उच्छ गिना जाएगा?" १९ परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, कि एलियाह तो आ चुका, और जैसा उसके विषय में लिखा है, उन्होंने जो कुछ चाहा उसके साथ किया। २० और जब वह चेलों के पास आया, तो देखा कि उनके चारों ओर बड़ी भीड़ लगी है और शास्त्री उनके साथ विवाद कर रहे हैं। २१ और उसे देखते ही सब बहुत ही अश्वर्य करने लगे, और उसकी ओर दौड़कर उसे नमस्कार किया। २२ उसने उनसे पूछा, "हुम इनसे क्या विवाद कर रहे हो?" २३ भीड़ में से एक ने उसे उत्तर दिया, "हे गुरु, मैं अपने पुत्र को, जिसमें गौणी आत्मा समाइ है, तेरे पास लाया था।" २४ जहाँ कहीं वह उसे पकड़ती है, वही पटक देती है; और वह मूँह में फेन भर लाता, और दाँत पीसता, और सूखता जाता है। और मैंने तेरे चेलों से कहा, कि वे उसे निकाल दें, परन्तु वे निकाल न सके।" २५ यह सुनकर उसने उनसे उत्तर देके कहा, "हे अविच्वासी लोगों, मैं कब तक तुहारे साथ रहूँगा? और कब तक तुहारी सहौँगा? उसे मेरे पास लाओ।" २६ तब वे उसे उसके पास ले आए। और जब उसने उसे देखा, तो उस आत्मा ने तुरन्त उसे मोरोडा, और वह भूमि पर गिरा, और मूँह से फेन बहाते हुए लोटाने लगा। २७ उसने उसके पिता से पूछा, "इसकी यह दशा कब से है?" और उसने कहा, "बचपन से।" २८ उसने इसे नाश करने के लिये कभी आग और कभी पानी में गिराया; परन्तु यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर तरस खाकर हमारा उपकार कर।" २९ यीशु ने उससे कहा, "यदि तू कर सकता है! यह क्या बात है? विच्वास करनेवाले के लिये सब कुछ हो सकता है।" ३० तब वे बालक के पिता ने तुरन्त पुकारकर कहा, "हे प्रभु, मैं विच्वास करता हूँ, मेरे अविच्वास का उपाय कर।" ३१ जब यीशु ने देखा, कि लोग दौड़कर भीड़ लगा रहे हैं, तो उसने अश्वु आत्मा को यह कहकर डॉटा, कि "हे गौणी और बरी आत्मा, मैं तुमे आज्ञा देता हूँ, उसमें से निकल आ, और उसमें फिर कभी प्रवेश न करना।" ३२ तब वह चिल्लाकर, और उसे बहुत मोरोड़कर, निकल आई; और बालक मरा हुआ स हो गया, यहाँ तक कि बहुत लोग कहने लगे, कि वह मर गया। ३३ परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया, और वह खड़ा हो गया। ३४ जब वह घर में आया, तो उसके चेलों ने एकान्त में उससे पूछा, "हम उसे क्यों न निकाल सके?" ३५ उसने उनसे कहा, "यह जाति बिना प्रार्थना किसी और उपाय से निकाल नहीं सकती।" ३६ फिर वे बहाँ से चले, और गलील में होकर जा रहे थे, वह नहीं चाहता था कि कोई जाने, ३७ क्योंकि वह अपने चेलों को उपदेश देता और उससे कहता था, "मनुष्य का पुत्र, मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे; और वह मरने के तीन दिन बाद जी उठेगा।" ३८ पर यह बात उनकी समझ में नहीं आई, और वे उससे पूछने से डरते थे। ३९ फिर वे कफरनहम में आए; और घर में आकर उसने उनसे पूछा, "रास्ते में तुम किस बात पर विवाद कर रहे थे?" ४० वे चुप रहे क्योंकि, मार्ग में उन्होंने आपस में यह बाद-विवाद किया था, कि हम में से बड़ा कौन है? ४१ तब उसने बैठकर बारहों को बुलाया, और

उनसे कहा, “यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो सबसे छोटा और सब का सेवक बने।” ३५ और उसने एक बालक को लेकर उनके बीच में खड़ा किया, और उसको गोद में लेकर उनसे कहा, ३६ “जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालकों में से किसी एक को भी ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और जो कोई मुझे ग्रहण करता, वह मुझे नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।” ३७ तब यूहन्ना ने उससे कहा, “हे गुरु, हमने एक मनुष्य को तेरे नाम से दूषातामों को निकालते देखा और हम उसे मना करने लगे, क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं हो लेता था।” ३८ यीशु ने कहा, “उसको मना मत करो; क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ्य का काम करे, और आगे मेरी मिन्दा करे, ३९ क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओरे है।” ४० जो कोई एक कठोरा पानी तुम्हें इसलिए पिलाए कि तुम मसीह के हो तो मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह अपना प्रतिफल किसी तरह से न खोएगा।” ४१ “जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं, किसी को ठोकर खिलाए तो उसके लिये भला यह है कि एक बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाए और वह समुद्र में डाल दिया जाए।” ४२ यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे कट डाल टुण्डा होकर जीवन में प्रवेश करना, तेरे लिये इससे भला है कि दो हाथ रहते हुए नरक के बीच उस आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं। (Geenna g1067) ४३ जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। ४४ और यदि तेरा पाँव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे कट डाल। लँगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो पाँव रहते हुए नरक में डाला जाए। (Geenna g1067) ४५ जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। ४६ और यदि तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल, काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो आँख रहते हुए त नरक में डाला जाए। (Geenna g1067) ४७ जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। ४८ क्योंकि हर एक जन आग से नमकीन किया जाएगा। ४९ नमक अच्छा है, पर यदि नमक का स्वाद बिगड़ा जाए, तो उसे किस से नमकीन करोगे? अपने में नमक रखो, और आपस में मेल मिलाप से रहो।”

१० फिर वह वहाँ से उठकर यहदिया के सीमा-क्षेत्र और यरदन के पार आया, और भीड़ उसके पास फिर इक्षी हो गई, और वह अपनी रिति के अनुसार उहें फिर उपदेश देने लगा। ११ तब फरीसियों ने उसके पास आकर उसकी परीक्षा करने को उसपे पूछा, “क्या यह उचित है, कि पुरुष अपनी पत्नी को त्यागे?” १२ उसने उनको उत्तर दिया, “मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है?” १३ उन्होंने कहा, “मूसा ने त्याग-पत्र लिखने और त्यागने की आज्ञा दी है।” १४ यीशु ने उनसे कहा, “तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उन्हें तुम्हारे लिये यह आज्ञा लिखी। १५ पर सृष्टि के अरम्भ से, परमेश्वर ने नर और नारी करके उनको बनाया है। १६ इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा, १७ और वे दोनों एक तन होंगे; इसलिए वे अब दो नहीं, पर एक तन हैं। १८ इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।” १९ और घर में चेलों ने इसके विषय में उससे फिर पूछा। २० उसने उनसे कहा, “जो कोई अपनी पत्नी को त्याग कर दूसी से विवाह करे तो वह उस पहली के विरोध में व्याभिचार करता है।” २१ और यदि पत्नी अपने पति को छोड़कर दूसरे से विवाह करे, तो वह व्याभिचार करती है।” २२ फिर लोग बालकों को उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे, पर चेलों ने उनको ढाँटा। २३ यीशु ने यह देख कुद्दू होकर उनसे कहा, “बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मान करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। २४ मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की

तरह ग्रहण न करे, वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा।” २५ और उसने उन्हें गोद में लिया, और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी। २६ और जब वह निकलकर मार्ग में जाता था, तो एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया, और उसके आगे घुटने टेककर उससे पूछा, “हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ?” (aiōnios g166) २७ यीशु ने उससे कहा, “तुम मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर। २८ तू आज्ञाओं को तो जानता है: ‘हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, छल न करना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।’” २९ उसने उससे कहा, “हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूँ।” ३० उसने उससे कहा, “हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूँ।” ३१ यीशु ने उस पर दृष्टि करके उससे प्रेम किया, और उससे कहा, “तुम में एक बात की घटी है; जा, जो कुछ तेरा है, उसे बेचकर गारीबों को दे, और तुम्हे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो लो।” ३२ इस बात से उसके चेहरे पर उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था। ३३ यीशु ने चारों ओर देखकर अपने चेलों से कहा, “धनवानों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!” ३४ चेले उसकी बातों से अचम्भित हुए। इस पर यीशु ने फिर उनसे कहा, “हे बालकों, जो धन पर भरोसा रखते हैं, उनके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!” ३५ चेले उसकी बातों से अचम्भित हुए। ३६ परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूझ के नाके में से निकल जाना सहज है।” ३७ वे बहुत ही चकित होकर आपस में कहने लगे, “तो फिर किसका उद्धार हो सकता है?” ३८ यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, “मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।” ३९ परस्त उससे कहने लगा, “देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं।” ४० यीशु ने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे और सुसामाचार के लिये घर या भाइयों या बहनों या माता या पिता या बाल-बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो, ४१ और अब इस सम्पर्कसौ गुणा न पाए, घरों और भाइयों और बहनों और माताओं और बाल-बच्चों और खेतों को, पर सताव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन। (aiōn g165, aiōnios g166) ४२ पर बहुत सारे जो पहले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, वे पहले होंगे।” ४३ और वे यस्तलेम को जाते हुए मार्ग में थे, और यीशु उनके आगे-आगे जा रहा था: और चेले अचम्भा करने लगे और जो उसके पीछे-पीछे चलते थे वे डेरे हुए थे, तब वह फिर उन बारहों को लेकर उनसे वे बातें कहने लगा, जो उस पर अनेकांती थी। ४४ “देखो, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं।” ४५ यीशु ने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे और सुसामाचार के लिये घर या भाइयों या बहनों या माता या पिता या बाल-बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो, ४६ और अब इस सम्पर्कसौ गुणा न पाए, घरों और भाइयों और बहनों और माताओं और बाल-बच्चों और खेतों को, पर सताव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन। (aiōn g165, aiōnios g166) ४७ पर बहुत सारे जो पहले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, वे पहले होंगे।” ४८ और वे यस्तलेम को जाते हुए मार्ग में थे, और यीशु उनके आगे-आगे जा रहा था: और चेले अचम्भा करने लगे और जो उसके पीछे-पीछे चलते थे वे डेरे हुए थे, तब वह फिर उन बारहों को लेकर उनसे वे बातें कहने लगा, जो उस पर अनेकांती थी। ४९ “देखो, हम यस्तलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसको मृत्यु के योग्य ठहराएँगे, और अन्यजातियों के हाथ में सौंपेंगे। ५० और वे उसका उपरास करेंगे, उस पर थकेंगे, उसे कोडे मारेंगे, और उसे मार डालेंगे, और तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।” ५१ तब जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने उसके पास आकर कहा, “हे गुरु, हम चाहते हैं, कि जो कुछ हम तुम से माँगें, वही तू हमारे लिये करें।” ५२ उसने उनसे कहा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूँ?” ५३ उन्होंने उससे कहा, “हमें यह दे, कि तेरी महिमा में हम में से एक तो दाहिने और दूसरा तो बाएँ बैठें।” ५४ यीशु ने उनसे कहा, “तुम नहीं जानते, कि क्या माँगते हो? जो कठोरा मैं पीने पर हूँ, क्या तुम पी सकते हो? और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, क्या तुम ले सकते हो?” ५५ उन्होंने उससे कहा, “हम से हो सकता है।” यीशु ने उनसे कहा, “जो कठोरा मैं पीने पर हूँ, तुम पीओगे; और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, उसे लोगों।” ५६ पर जिनके लिये तैयार किया गया है, उन्हें छोड़ और किसी को अपने दाहिने और अपने बाएँ बैठाना मेरा काम नहीं।” ५७ यह सुनकर दसों

याकूब और यहुन्ना पर रिसियाने लगे। ४२ तो यीशु ने उनको पास बुलाकर उनसे कहा, “तुम जानते हों, कि जो अन्यजातियों के अधिपति समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उनमें जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जाते हैं। ४३ पर तुम में ऐसा नहीं है, बरन् जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने; ४४ और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने। ४५ क्योंकि मनुष्य का पुरु इसलिए नहीं आया, कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया, कि आप सेवा टहल करें, और बहुतों के छुटकारे के लिये अपना प्राण दे।” ४६ वे यरिहो में आएं, और जब वह और उसके चेले, और एक बड़ी भीड़ यरिहो से निकलती थी, तब तिमाइ का पुरु बरतिमाइ एक अंथा भिखारी, सड़क के किनारे बैठा था। ४७ वह यह सुनकर कि यीशु नासरी है, पुकार पुकारकर कहने लगा “हे दाऊद की सन्नान, यीशु मुझ पर दया कर।” ४८ बहुतों ने उसे डॉर्टा कि चुप रहे, पर वह और भी पुकारने लगा, “हे दाऊद की सन्नान, मुझ पर दया कर।” ४९ तब यीशु ने ठहरकर कहा, “उसे बुलाओ।” और लोगों ने उस अंथे को बुलाकर उससे कहा, “धैर्य रख, उठ, वह तुझे बुलाता है।” ५० वह अपना बाहरी बब्ल फेंककर शीघ्र उठा, और यीशु के पास आया। ५१ इस पर यीशु ने उससे कहा, “तू क्या चाहता है कि मैं तैर लिये करूँ?” अंथे ने उससे कहा, “हे रब्बी, यह कि मैं देखने लाऊँ।” ५२ यीशु ने उससे कहा, “चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।” और वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया।

११ जब वे यस्शलेम के निकट, जैतन पहाड़ पर बैतफगे और बैतनियाह के पास आएं, तो उसने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा, १ “सामने के गाँव में जाओं, और उम्में पहुँचते ही एक गढ़ी का बच्चा, जिस पर कभी कोई नहीं चढ़ा, बंधा हुआ तम्हें मिलेगा, उसे खोल लाओ। २ यदि तुम से कोई पछे, ‘यह क्यों करते हो?’ तो कहना, ‘प्रभु को इसका प्रयोजन है,’ और वह शीघ्र उसे यहाँ भेज देगा।” ३ उन्होंने जाकर उस बच्चे को बाहर दूर के पास चौक में बंधा हुआ पाया, और खोलने लगे। ४ उनमें से जो वहाँ खड़े थे, कोई-कोई कहने लगे “यह क्या करते हो, गढ़ी के बच्चे को क्यों खोलते हो?” ५ चेलों ने जैसा यीशु ने कहा था, वैसा ही उनसे कह दिया; तब उन्होंने उन्हे जाने दिया। ६ और उन्होंने बच्चे को यीशु के पास लाकर उस पर अपने कपड़े डाले और वह उस पर बैठ गया। ७ और बहुतों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाएं और औरों ने खेतों में से डालियाँ काट-काटकर कर फैला दी। ८ और जो उसके आगे-आगे जाते और पीछे-पीछे चले आते थे, पुकार पुकारकर कहते जाते थे, “होशाना; धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है। ९ हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है; धन्य है! आकाश में होशाना।” १० और वह यस्शलेम पहुँचकर मन्दिर में आया, और चारों ओर सब वस्तुओं को देखकर बाहरों के साथ बैतनियाह गया, क्योंकि सँझ हो गई थी। ११ दूसरे दिन जब वे बैतनियाह से निकले तो उसको भूख लगी। १२ और वह दूर से अंजीर का एक हरा पेड़ देखकर निकल गया, कि क्या जाने उसमें कुछ पाएँ; पर पत्तों को छोड़ कुछ न पाया; क्योंकि फल का समय न था। १३ इस पर उसने उससे कहा, “अब से कोई तेरा फल कभी न खाए।” और उसके चेले सुन रहे थे। (aiōn g165) १५ फिर वे यस्शलेम में आएं, और वह मन्दिर में गया; और वहाँ जो लैन-देन कर रहे थे उन्हें बाहर निकालने लगा, और सरीकों की मेजें और कबूतर के बेचेवालों की चौकियाँ उलट दी। १६ और मन्दिर में से होकर किसी को बर्तन लेकर आने-जाने न दिया। १७ और उपदेश करके उनसे कहा, “क्या यह नहीं लिखा है, कि मेरा घर सब जातियों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएँ? पर तुम ने इसे डाकुओं की खोबना दी है।” १८ यह सुनकर प्रधान याजक और शास्त्री उसके नाश करने का अवसर ढूँढ़ने लगे;

क्योंकि उससे डरते थे, इसलिए कि सब लोग उसके उपदेश से चकित होते थे। १९ और साँझ होते ही वे नगर से बाहर चले गए। २० फिर भौंर को जब वे उधर से जाते थे तो उन्होंने उस अंजीर के पेड़ को जड़ तक सूखा हुआ देखा। २१ पतरस को वह बात स्मरण आई, और उसने उससे कहा, “हे रब्बी, देख! यह अंजीर का पेड़ जिसे तुमें शाप दिया था सूख गया है।” २२ यीशु ने उसको उत्तर दिया, “परमेश्वर पर विश्वास रखो। २३ मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे, ‘तू उखड़ जा, और समृद्ध मैं जा पड़,’ और अपने मन में सन्देह न करे, बरन विश्वास करे, कि जो कहता हूँ वह हो जाएगा, तो उसके लिये बही होगा। २४ इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके माँगो तो विश्वास कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा। २५ और जब कभी तुम खड़े हुए प्रार्थना करते हो, तो यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर से कुछ विरोध हो, तो क्षमा करो: इसलिए कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे। २६ परन्तु यदि तुम क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है, तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा।” २७ वे फिर यस्शलेम में आएं, और जब वह मन्दिर में टहल रहा था तो प्रधान याजक और शास्त्री और पुनर्निए उसके पास आकर पूछने लगे। २८ “तू ये काम किस अधिकार से करता है? और यह अधिकार तुझे किसने दिया है कि तू ये काम करे?” २९ यीशु ने उनसे कहा, “मैं भी तुम से एक बात पूछता हूँ; मुझे उत्तर दो, तो मैं तुम्हे बताऊँगा कि ये काम किस अधिकार से करता हूँ।” ३० यहुन्ना का बपतिस्मा क्या स्वर्ग की ओर से था या मनुष्यों की ओर से था? मुझे उत्तर दो।” ३१ तब वे आपस में विवाद करने लगे कि यदि हम कहें ‘स्वर्ग की ओर से,’ तो वह कहेगा, ‘फिर तुम ने उसका विश्वास क्यों नहीं किया?’ ३२ और यदि हम कहें, ‘मनुष्यों की ओर से,’ तो लोगों का डर है, क्योंकि सब जानते हैं कि यहुन्ना सचमुच भविष्यद्वत्तु था। ३३ तब उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, “हम नहीं जानते।” ३४ यीशु ने उनसे कहा, “मैं भी तुम को नहीं बताता, कि ये काम किस अधिकार से करता हूँ।”

१२ फिर वह दृष्टान्तों में उनसे बातें करने लगा: “किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई, और उसके चारों ओर बाड़ा बाँधा, और रस का कुण्ड खोदा, और गुम्पट बनाया; और किसानों को उसका ठेका देकर परदेश चला गया। २ फिर फल के मौसम में उसने किसानों के पास एक दास को भेजा कि किसानों से दाख की बारी के फलों का भाग ले। ३ पर उन्होंने उसे पकड़कर पीटा और खाली हाथ लौटा दिया। ४ फिर उसने एक और दास को उनके पास भेजा और उन्होंने उसका सिर फोड़ डाला और उसका अपमान किया। ५ फिर उसने एक और को भेजा, और उन्होंने उसे मार डाला; तब उसने और बहुतों को भेजा, उनमें से उन्होंने कितनों को पीटा, और कितनों को मार डाला। ६ अब एक ही रह गया था, जो उसका प्रिय पुत्र था; अन्त में उसने उसे भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। ७ पर उन किसानों ने आपस में कहा; ‘यही तो वारिस है; आओ, हम उसे मार डालें, तब विरासत हमारी हो जाएगी।’ ८ और उन्होंने उसे पकड़कर मार डाला, और दाख की बारी के बाहर फेंक दिया। ९ “इसलिए दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा? वह आकर उन किसानों का नाश करेगा, और दाख की बारी औरों को दे देगा। १० क्या तुम ने पवित्रशास्त्र में यह वचन नहीं पढ़ा: ‘जिस पथर को राजमिश्रियों ने निकाला ठहराया था, वही कोने का सिराहो गया; ११ यह प्रभु की ओर से हुआ, और हमारी दृष्टि में अद्भुत है।’” १२ तब उन्होंने उसे पकड़ना चाहा; क्योंकि समझ गए थे, कि उसने हमारे विरोध में यह दृष्टन कहा है: पर वे लोगों से डोरे; और उसे छोड़कर चले गए। १३ तब उन्होंने उसे बातों में

फँसाने के लिये कुछ फरीसियों और हेरोटियों को उसके पास भेजा। १४ और उन्होंने आकर उससे कहा, “हे गुरु, हम जानते हैं, कि तू सच्चा है, और किसी की परवाह नहीं करता; क्योंकि तू मनुष्यों का मँहूँ देखकर बातें नहीं करता, परन्तु परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से बताता है। तो क्या कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं? १५ हम दें, या न दें?” उसने उनका कपट जानकर उससे कहा, “मुझे क्यों परखते हो? एक दीनार मैंने पास लाओ, कि मैं देखूँ।” १६ वे ले आए, और उसने उससे कहा, “यह मूर्ति और नाम किसका है?” उन्होंने कहा, “कैसर का।” १७ यीशु ने उनसे कहा, “जो कैसर का है वह कैसर का, और जो परमेश्वर का है परमेश्वर को दो।” तब वे उस पर बहुत अचम्भा करने लगे। १८ फिर सदूकियों ने भी, जो कहते हैं कि मेरे हुओं का जी उठना है ही नहीं, उसके पास आकर उससे पूछा, १९ “हे गुरु, मूसा ने हमारे लिये तिथि है, कि यदि किसी का भाई बिना सन्तान मर जाए, और उसकी पत्नी रह जाए, तो उसका भाई उसकी पती से विवाह कर ले और अपने भाई के लिये वश उत्पन्न करे। २० सात भाई थे। पहला भाई विवाह करके बिना सन्तान मर गया। २१ तब दूसरे भाई ने उस द्वी पर विवाह कर लिया और बिना सन्तान मर गया; और वैसे ही तीसरे ने भी। २२ और सातों से सन्तान न हुई। सब के पीछे वह द्वी भी मर गई। २३ अतः जी उठने पर वह उनमें से किसकी पत्नी होगी? क्योंकि वह सातों की पत्नी हो चुकी थी।” २४ यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम इस कारण से भल मैं नहीं पड़े हो कि तुम न तो पवित्रशाली ही को जानते हो, और न परमेश्वर की सामर्थ्य को? २५ क्योंकि जब वे मेरे हुओं में से जी उठेंगे, तो उनमें विवाह-शादी न होगी; पर स्वर्ग में दूतों के समान होंगे। २६ मेरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने मूसा की पुस्तकमें ज्ञाई की कथा में नहीं पढ़ा कि परमेश्वर ने उससे कहा: ‘मैं अब्राहम का परमेश्वर, और इस्हाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ?’ २७ परमेश्वर मेरे हुओं का नहीं, बरन जीवितों का परमेश्वर है, तुम बड़ी भल मैं पड़े हो।” २८ और शाश्वियों में से एक ने आकर उन्हें विवाद करते सुना, और यह जानकर कि उसने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया, उससे पूछा, “सबसे मुख्य आज्ञा कौन सी है?” २९ यीशु ने उसे उत्तर दिया, “सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है: ‘हे इस्माइल सुन, प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है।’ ३० और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।” ३१ और दूसरी यह है, ‘तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।’ इससे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।” ३२ शाश्वी ने उससे कहा, “हे गुरु, बहुत ठीक! तुम सच कहा कि वह एक ही है, और उसे छोड़ और कोई नहीं।” ३३ “और उससे सारे मन, और सारी बुद्धि, और सारे प्राण, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना; और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमबिलियों और बलिदानों से बढ़कर है।” ३४ जब यीशु ने देखा कि उससे समझ से उत्तर दिया, तो उससे कहा, “तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं।” और किसी को फिर उससे कुछ पछने का साहस न हआ। ३५ फिर यीशु ने मन्दिर में उद्देश करते हुए यह कहा, “शाश्वी क्यों कहते हैं, कि मरींह दाऊद का पुत्र है? ३६ दाऊद ने आप ही पवित्र आत्मा में होकर कहा है: ‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, “मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों की चौकी न कर दूँ।”’ ३७ “दाऊद तो आप ही उसे प्रभु कहता है, फिर वह उसका पुत्र कहाँ से ठहरा?” और भीड़ के लोग उसकी आनन्द से सुनते थे। ३८ उसने अपने उपदेश में उनसे कहा, “शाश्वियों से सावधान रहो, जो लम्बे वस्त्र पहने हुए फिरना और बाजारों में नमस्कार, ३९ और आराधनालयों में मुख्य-मुख्य आसन और भोज में मुख्य-मुख्य स्थान भी चाहते हैं। ४० वे विधायियों के घरों को खा जाते हैं, और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना

करते रहते हैं, ये अधिक दण्ड पाएँगे।” ४१ और वह मन्दिर के भण्डार के सामने बैठकर देख रहा था कि लोग मन्दिर के भण्डार में किस प्रकार पैसे डालते हैं, और बहुत धनवानों ने बहुत कुछ डाला। ४२ इन्हें में एक गरीब विधवा ने आकर दो दमड़ियाँ, जो एक अधेले के बराबर होती है, डाली। ४३ तब उसने अपने चेलों को पास बुलाकर उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि मन्दिर के भण्डार में डालने वालों में से इस गरीब विधवा ने सबसे बढ़कर डाला है; ४४ क्योंकि सब ने अपने धन की बढ़ती में से डाला है, परन्तु इसने अपनी घटी में से जो कुछ उसका था, अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी है।”

१३ जब वह मन्दिर से निकल रहा था, तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा, “हे गुरु, देख, कैसे-कैसे पथर और कैसे-कैसे भवन हैं!” ४५ यीशु ने उससे कहा, “क्या तुम ये बड़े-बड़े भवन देखते हो: यहाँ पत्थर पर पत्थर भी बचा न रहेगा जो ढाया न जाएगा।” ४६ जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा था, तो पतरस और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास ने अलग जाकर उससे पूछा, ४७ “हमें बता कि ये बातें कब होंगी? और जब ये सब बातें पूरी होने पर होंगी उस समय का क्या चिन्ह होगा?” ४८ यीशु उनसे कहने लगा, “सावधान रहोकि कोई तुम्हें न भरमाए। ४९ बहुत सारे मेरे नाम से आकर कहेंगे, ‘मैं वही हूँ’ और बहुतों को भरमाएँगे। ५० और जब तुम लड़ाइयाँ, और लड़ाइयों की चर्चा सुनो, तो न घबराना; क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा। ५१ क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। और हर कहीं भूकम्प होंगे, और अकाल पड़ेंगे। यह तो पीड़ाओं का अरम्भ ही होगा। ५२ “परन्तु तुम अपने विषय में सावधान रहो, क्योंकि लोग तुम्हें सभाओं में सौंपेंगे और तुम आराधनालयों में पिटि जाओगे, और मेरे कारण राज्यपालों और राजाओं के आगे खड़े किए जाओगे, ताकि उनके लिये गवाही हो। ५३ पर अवश्य है कि पहले सुसामाचार सब जातियों में प्रचार किया जाए। ५४ जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे, तो पहले से चिन्ता न करना, कि हम क्या कहेंगे। पर जो कुछ तुम्हें उसी समय बताया जाए, वही कहना; क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र आत्मा है। ५५ और भाई को भाई, और पिता को पुत्र मरने के लिये सौंपेंगे, और बच्चे माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे। ५६ और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैरों करेंगे; पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। ५७ “अतः जब तुम उस उजाड़ेवाली धृष्टि वस्तुको जहाँ उचित नहीं बहाँ खड़ी देखो, (पढ़नेवाला समझ ले) तब जो यहदिया में हों, वे पहाड़ों पर भाग जाएँ। ५८ जो छत पर हो, वह अपने घर से कुछ लेने को नीचे न उतरे और न भीतर जाए। ५९ और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने के लिये पिछे न लौटे। ६० उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय! हाय! ६१ और प्रार्थना किया करो कि यह जाडे में न हो। ६२ क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे, कि सुष्ठि के आरम्भ से जो परमेश्वर ने रची है अब तक न तो हुए, और न कभी फिर होंगे। ६३ और यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता, तो कोई प्राणी भी न बचता; परन्तु उन चुने हुओं के कारण जिनको उसने चुना है, उन दिनों को घटाया। ६४ उस समय यदि कोई तुम से कहे, ‘देखो, मसीह यहाँ है!’ या ‘देखो, वहाँ है!’ तो विश्वास न करना। ६५ क्योंकि झटे मसीह और झटे भविष्यद्वाता उठ खड़े होंगे, और चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएँगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। ६६ पर तुम सावधान रहो देखो, मैंने तुम्हें सब बातें पहले ही से कह दी हैं। ६७ “उन दिनों में, उस क्लेश के बाद सूरज अंधेरा हो जाएगा, और चाँद प्रकाश न देगा; ६८ और आकाश से तारागण गिरने लगेंगे, और आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी।

२६ “तब लोग मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और महिमा के साथ बादलों में आते देखेंगे। २७ उस समय वह अपने स्वर्गदूतों को भेजकर, पृथ्वी के इस छोर से आकाश के उस छोर तक चारों दिशाओं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा। २८ “अंजीर के पेड़ से यह दृश्यान्त सीखो जब उसकी डाली कोमल हो जाती; और पते निकलने लगते हैं; तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्मकाल निकट है। २९ इनी रिति से जब तुम इन बातों को होते देखो, तो जान लो, कि वह निकट है वरन् द्वारा ही पह है। ३० मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक ये सब बातें न हो लेंगी, तब तक यह लोग जाते न रहेंगे। ३१ आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी। ३२ “उस दिन या उस समय के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता। ३३ देखो, जागते और प्रार्थना करते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा। ३४ यह उस मनुष्य के समान दशा है, जो परदेश जाते समय अपना घर छोड़ जाएँ, और अपने दासों को अधिकार दे: और हर एक को उसका काम जाता दे, और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा दे। ३५ इसलिए जागते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा, सँझ को या आदी रात को, या मुर्मु के बांग देने के समय या भोर को। ३६ ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुम्हें सेते पाए। ३७ और जो मैं तुम से कहता हूँ, वही सबसे कहता हूँ: ‘जागते रहो।’

१४ दो दिन के बाद फसह और अख्मीरी रोटी का पर्व होनेवाला था। और

प्रधान याजक और शारी इस बात की खोज में थे कि उसे कैसे छल से पकड़कर मार डालें। १ परन्तु कहते थे, “पर्व के दिन नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगों में दंगा मचे।” २ जब वह बैतनियाह में शमैन कोठी के घर भोजन करने वैटा हुआ था तब एक छोटी संगमरमर के पात्र में जटामासी का बहुमूल्य शुद्ध इन लेकर आई; और पात्र तोड़कर इन को उसके सिर पर उण्डेला। ३ परन्तु कुछ लोग अपने मन में दृश्यालाकर कहने लगे, “इस इन का क्यों सत्यानाश किया गया? ४ क्योंकि यह इन तो तीन सौ दीनार से अधिक मूल्य में बेचकर गरीबों को बाँटा जा सकता था।” और वे उसको झिङ्कने लगे। ५ यीशु ने कहा, “उसे छोड़ दो; उसे क्यों सताते हो? उसने तो मैं साथ भलाई की है। ६ गरीब तुम्हारे साथ सदा रहते हैं और तुम जब चाहो तब उसने भलाई कर सकते हों; पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूँगा। ७ जो कुछ वह कर सकी, उसने किया; उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहले से मेरी देह पर इन मला है। ८ मैं तुम से सच कहता हूँ, कि सारे जागत में जहाँ कहीं कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी।” ९ तब यहां इस्करियोति जो बाहर में से एक था, प्रधान याजकों के पास गया, कि उसे उनके हाथ पकड़वा दे। १० वे यह सुनकर आनन्दित हुए, और उसको स्पष्ट देना स्वीकार किया, और यह अवसर ढूँढ़े लगा कि उसे किसी प्रकार पकड़वा दे। ११ अख्मीरी रोटी के पर्व के पहले दिन, जिसमें वे फसह का बलिदान करते थे, उसके चेलों ने उससे पूछा, “तू कहाँ चाहता है, कि हम जाकर तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें?” १२ उसने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा, “नगर में जाओ, और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा, उसके पीछे हो लेना। १३ और वह जिस घर में जाए उस घर के स्वामी से कहना: ‘गुरु कहता है, कि मेरी पाहुनशाला जिसमें मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊँ कहा है?’ १४ वह तुम्हें एक सजी-सजाई, और तैयार की हुई बड़ी अटारी दिखा देगा, वहाँ हमारे लिये तैयारी करो।” १५ तब चेले निकलकर नगर में आए और जैसा उसने उनसे कहा था, वैसा ही पाया, और फसह तैयार किया। १६ जब सँझ हुई, तो वह बाहरों के साथ आया। १७ और जब वे बैठे भोजन कर रहे थे, तो यीशु ने कहा, “मैं तुम

से सच कहता हूँ, कि तुम मैं से एक, जो मेरे साथ भोजन कर रहा है, मुझे पकड़वाएगा।” १८ उन पर उदासी छा गई और वे एक-एक करके उससे कहने लगे, “क्या वह मैं है?” १९ उसने उनसे कहा, “वह बाहरों मैं से एक है, जो मेरे साथ थाली में हाथ डालता है। २० क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो, जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य पर हाय जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है! यदि उस मनुष्य का जन्म ही न होता तो उसके लिये भला होता।” २१ और जब वे खा ही रहे थे तो उसने रोटी ली, और आशीष माँगकर तोड़ी, और उन्हें दी, और कहा, “लो, यह मेरी देह है!” २२ फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें दिया; और उन सब ने उसमें से पीया। २३ और उसने उनसे कहा, “यह वाचा का मेरा वह लह है, जो बहानों के लिये बहाया जाता है। २४ मैं तुम से सच कहता हूँ, कि दाख का रस उस दिन तक फिर कभी न पीऊँगा, जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊँगा।” २५ फिर वे भजन गाकर बाहर जैतून के पहाड़ पर गए। २६ तब यीशु ने उनसे कहा, “तुम सब ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है: ‘मैं चरवाहे को मास्ता, और भेड़े तितर-बितर हो जाएँगी।’” २७ “परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊँगा।” २८ पतरस ने उससे कहा, “यदि सब ठोकर खाएँ तो खाएँ, पर मैं ठोकर नहीं खाऊँगा।” २९ यीशु ने उससे कहा, “मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि आज ही इसी रात को मुर्मु के दो बार बाँग देने से पहले, तू तीन बार मुझसे मुकर जाएगा।” ३० और उसने और भी जोर देकर कहा, “यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े फिर भी तेरा इन्कार कभी न करूँगा।” इसी प्रकार और सब ने भी कहा। ३१ फिर वे गतसमर्नी नामक एक जगह में आए, और उसने अपने चेलों से कहा, “यहाँ बैठे रहो, जब तक मैं प्रार्थना करूँ।” ३२ और वह पतरस और याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गया; और बहुत ही अधीर और व्याकुल होने लगा, ३३ और उनसे कहा, “मेरा मन बहुत उदास है, यहाँ तक कि मैं मरने पर हूँ: तुम यहाँ ठहरो और जागते रहो।” ३४ और वह थोड़ा आगे बढ़ा, और भूमि पर गिरकर प्रार्थना करने लगा, कि यदि हो सके तो यह समय मुझ पर से टल जाए। ३५ और कहा, “हे अब्बा, हे पिता, तुझ से सब कुछ हो सकता है; इस कटोरे को मैं पास से हटा लै: फिर भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो।” ३६ फिर वह आया और उन्हें सोते पाकर पतरस से कहा, “हे शमैन, तू सो रहा है? क्या तू एक घंटे भी न जाग सका? ३७ जागते और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, पर शरीर दुर्बल है।” ३८ और वह फिर चला गया, और वही बात कहकर प्रार्थना की। ३९ और फिर आकर उन्हें सोते पाया, क्योंकि उनकी आँखें नीद से भरी थीं; और नहीं जानते थे कि उसे क्या उत्तर दें। ४० फिर तीसी बार आकर उनसे कहा, “अब सोते रहो और विश्राम करो, बस, घड़ी आ पहुँची; देखो मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है।” ४१ फिर वह कह ही रहा था, कि यहां जो बाहरों में से था, अपने साथ प्रधान याजकों और शासियों और प्राचीनों की ओर से एक बड़ी भीड़ तलवरों और लाठियों लिए हुए तुरन्त आ पहुँची। ४२ और उसके पकड़वायेवाले ने उन्हें यह पता दिया था, कि जिसको मैं चूँम वही है, उसे पकड़कर सावधानी से ले जाना। ४३ और वह आया, और तुरन्त उसके पास जाकर कहा, “हे रब्बी!” और उसको बहुत चूमा। ४४ तब उन्होंने उस पर हाथ डालकर उसे पकड़ लिया। ४५ उनमें से जो पास खड़े थे, एक ने तलवार खीचकर महायाजक के दास पर चलाई, और उसका कान उड़ा दिया। ४६ यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम डाकू जानकर मुझ पकड़ने के लिये तलवरों और लाठियों लेकर निकले हो? ४७ मैं तो हर दिन मन्दिर में तुम्हारे साथ रहकर उपदेश दिया करता था, और तब तुम

ने मुझे न पकड़ा: परन्तु यह इसलिए हुआ है कि पवित्रशास्त्र की बातें पूरी हों।” ५० इस पर सब चेते उसे छोड़कर भाग गए। ५१ और एक जवान अपनी नंगी देह पर चादर ओढ़े हुए उसके पीछे हो लिया; और लोगों ने उसे पकड़ा। ५२ पर वह चादर छोड़कर नंगा भाग गया। ५३ फिर वे यीशु को महायाजक के पास ले गए; और सब प्रधान याजक और पुरनिए और शाश्वी उसके यहाँ इकट्ठे हो गए। ५४ पतरस दूर ही दूर से उसके पीछे-पीछे महायाजक के आँगन के भीतर तक गया, और प्यारों के साथ बैठकर आग तापने लगा। ५५ प्रधान याजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में गवाही की खोज में थे, पर न मिली। ५६ क्योंकि बहुत से उसके विरोध में झटी गवाही दे रहे थे, पर उनकी गवाही एक सी न थी। ५७ तब कितनों ने उठकर उस पर यह झटी गवाही दी, ५८ “हमने इसे यह कहते सुना है मैं इस हाथ के बनाए हुए मन्दिर को ढा दूँगा, और तीन दिन में दूसरा बनाऊँगा, जो हाथ से न बना हो।” ५९ इस पर भी उनकी गवाही एक सी न निकली। ६० तब महायाजक ने बीच में खड़े होकर यीशु से पूछा: “तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं?” ६१ परन्तु वह मैन साधे रहा, और कुछ उत्तर न दिया। महायाजक ने उससे फिर पूछा, “क्या तू उस परमधन्य का पुत्र मसीह है?” ६२ यीशु ने कहा, “हाँ मैं हूँ। और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों के साथ आते देखोगे।” ६३ तब महायाजक ने अपने बन्धु फाड़कर कहा, “अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन है? ६४ तम ने यह निन्दा सुनी। तुम्हारी क्या राय है?” उन सब ने कहा यह मृत्युदण्ड के योग्य है। ६५ तब कोई तो उस पर थूकने, और कोई उसका मुँह ढाँपने और उसे चूँसी मारने, और उससे कहने लगे, “भविष्यद्वाणी कर!” और पहरेदारों ने उसे पकड़कर थप्पड़ मारे। ६६ जब पतरस नीचे आँगन में था, तो महायाजक की दासियों में से एक वहाँ आई। ६७ और पतरस को आग तापते देखकर उस पर टकटकी लगाकर देखा और कहने लगी, “तू भी तो उस नामस्ती यीशु के साथ था।” ६८ वह मुकर गया, और कहा, “मैं तो नहीं जानता और नहीं समझता कि तू क्या कह रही है।” फिर वह बाहर डेवड़ी में गया; और सुर्ए ने बाँग दी। ६९ वह दासी उसे देखकर उनसे जो पास खड़े थे, फिर कहने लगी, कि “यह उनमें से एक है।” ७० परन्तु वह फिर मुकर गया। और थोड़ी देर बाद उन्होंने जो पास खड़े थे फिर पतरस से कहा, “निश्चय त उनमें से एक है; क्योंकि तू गलतीली भी है।” ७१ तब वह स्वयं को कोसने और सपथ खाने लगा, “मैं उस मनुष्य को, जिसकी तुम चर्चा करते हो, नहीं जानता।” ७२ तब तुरन्त दूसरी बार मुर्गे ने बाँग दी पतरस को यह बात जो यीशु ने उससे कही थी याद आई, “मुर्गे को दो बार बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इनकार करेगा।” वह इस बात को सोचकर फट फटकर रेने लगा।

१५ और भोर होते ही तुरन्त प्रधान याजकों, प्राचीनों, और शाश्वियों ने बरन् सारी महासभा ने सलाह करके यीशु को बन्धवाया, और उसे ले जाकर पिलातुस के हाथ सौंप दिया। १ और पिलातुस ने उससे पूछा, “क्या तू यहदियों का राजा है?” उसने उसको उत्तर दिया, “तू स्वयं ही कह रहा हो।” २ और प्रधान याजक उस पर बहुत बातों का दोष लगा रहे थे। ३ पिलातुस ने उससे फिर पूछा, “क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता, देख ये तुझ पर कितनी बातों का दोष लगाते हैं?” ४ यीशु ने फिर कुछ उत्तर नहीं दिया; यहाँ तक कि पिलातुस को बड़ा आश्चर्य हुआ। ५ वह उस पर्व में किसी एक बन्धुए को जिसे वे चाहते थे, उनके लिये छोड़ दिया करता था। ६ और बरअब्बा नाम का एक मनुष्य उन बलवाइयों के साथ बन्धुआ था, जिन्होंने बलवे में हत्या की थी। ७ और भीड़ ऊपर जाकर उससे विनती करने लगी, कि जैसा तू हमारे लिये

करता आया है वैसा ही कर। ८ पिलातुस ने उनको यह उत्तर दिया, “क्या तुम चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये यहदियों के राजा को छोड़ दूँ?” ९ क्योंकि वह जानता था, कि प्रधान याजकों ने उसे डाह से पकड़वाया था। १० परन्तु प्रधान याजकों ने लोगों को उभारा, कि वह बरअब्बा ही को उनके लिये छोड़ दे। ११ यह सुन पिलातुस ने उनसे फिर पूछा, “तो जिसे तुम यहदियों का राजा कहते हो, उसको मैं क्या करूँ?” १२ वे फिर चिल्लाए, “उसे कूस पर चढ़ा दो।” १३ पिलातुस ने उनसे कहा, “क्यों, इसने क्या बुराई की है?” परन्तु वे और भी चिल्लाए, “उसे कूस पर चढ़ा दो।” १४ तब पिलातुस ने भीड़ को प्रसन्न करने की इच्छा से, बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोडे लगवाकर सौंप दिया, कि कूस पर चढ़ाया जाए। १५ सिपाही उसे किले के भीतर आँगन में ले गए जो प्रीटोरियम कहलाता है, और सारे सैनिक दल को बुला लाए। १६ और उन्होंने उसे बैगनी बब्ल पहनाया और कॉटों का मुकुट गँथकर उसके सिर पर रखा, १७ और यह कहकर उसे नमस्कार करने लगे, “हे यहदियों के राजा, नमस्कार!” १८ वे उसके सिर पर सरकण्डे मारते, और उस पर थूकते, और घुटने टेककर उसे प्रणाम करते रहे। १९ जब वे उसका उपहास कर चुके, तो उस पर से बैगनी बब्ल उतारकर उसी के कपड़े पहनाए; और तब उसे कूस पर चढ़ाने के लिये बाहर ले गए। २० सिकन्दर और स्फुस का पिता शमैन नामक एक कुरेनी मनुष्य, जो गाँव से आ रहा था उधर से निकला; उन्होंने उसे बैगरा में पकड़ा कि उसका कूस उठा ले चले। २१ और वे उसे गुलगुता नामक जगह पर, जिसका अर्थ खोपड़ी का स्थान है, लाए। २२ और उसे गन्धरस मिला हुआ दाखरस देने लगे, परन्तु उनसे नहीं लिया। २३ तब उन्होंने उसको कूस पर चढ़ाया, और उसके कपड़ों पर चिठ्ठियाँ डालकर, कि किसको क्या मिले, उहंहें बाँट लिया। २४ और एक पहर दिन चढ़ा था, जब उन्होंने उसको कूस पर चढ़ाया। २५ और उसका दोषपत्र लिखकर उसके ऊपर लगा दिया गया कि “यहदियों का राजा।” २६ उन्होंने उसके साथ दो ढाकू, एक उसकी दाहिनी और एक उसकी बाँई और कूस पर चढ़ाए। २७ उसको दो पवित्रशास्त्र का बह चवन कि वह अपराधियों के संग गिना गया, पूरा हुआ। २८ और मार्ग में जानेवाले सिर हिला-हिलाकर और यह कहकर उसकी निन्दा करते थे, “वाह! मन्दिर के ढानेवाले, और तीन दिन में बनानेवाले। २९ कूस पर से उत्तरकर अपने आपको बचा ले।” ३० इसी तरह से प्रधान याजक भी, शाश्वियों समेत, आपस में उपहास करके कहते थे; “इसने औरौं को बचाया, पर अपने को नहीं बचा सकता। ३१ इसाएल का राजा, मसीह, अब कूस पर से उत्तर आए कि हम देखकर चिव्वास करें।” और जो उसके साथ कूसों पर चढ़ाए गए थे, वे भी उसकी निन्दा करते थे। ३२ और दोपहर होने पर सारे देश में अधियारा छा गया, और तीसरे पहर तक रहा। ३३ तीसरे पहर यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, “इलोई, इलोई, लता शबकतनी?” जिसका अर्थ है, “हे मेरे रपरमेश्वर, हे मेरे रपरमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?” ३४ जो पास खड़े थे, उनमें से कितनों ने यह सुनकर कहा, “देखो, यह एतियाह को पुकारता है।” ३५ और एक ने दोड़कर पनसोखा को सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुमाया, और कहा, “ठहर जाओं; देखें, एलियाह उसे उतारने के लिये आता है कि नहीं।” ३६ तब यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिये। ३७ और मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया। ३८ जो संबेदार उसके सामने खड़ा था, जब उसे यूँ चिल्लाकर प्राण छोड़ते हुए देखा, तो उसने कहा, “सचमुच यह मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र था!” ३९ कई शिव्यों भी दूर से देख रही थीं: उनमें मरियम मगदलीनी, और छोटे याकूब और योसेप की माता मरियम, और सलोमी थीं। ४० जब वह गली में था तो ये उसके पीछे हो लेती थीं और उसकी सेवा-ठहल किया करती थीं; और भी

बहुत सी छियाँ थीं, जो उसके साथ यस्तलेम में आई थीं। ४२ और जब संध्या हो गई, क्योंकि तैयारी का दिन था, जो सब्त के एक दिन पहले होता है, ४३ अरिमतियाह का रहनेवाला यूसुफ आया, जो प्रतिष्ठित मंत्री और आप भी परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा में था। वह साहस करके पिलातुस के पास गया और यीशु का शव माँगा। ४४ पिलातुस ने आश्वर्य किया, कि वह इतना शीघ्र मर गया; और उसने सबेदार को बुलाकर पूछा, कि “क्या उसको मरे हुए देह है?” ४५ जब उसने सबेदार के द्वारा हाल जान लिया, तो शव यूसुफ को दिला दिया। ४६ तब उसने एक मलमल की चादर मोल ली, और शव को उतारकर उस चादर में लपेटा, और एक कब्र में जो चढ़ान में खोदी गई थी रखा, और कब्र के द्वार पर एक पत्थर लुढ़का दिया। ४७ और मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही थी कि वह कहाँ रखा गया है।

१६ जब सब्त का दिन बीत गया, तो मरियम मगदलीनी, और याकूब की

माता मरियम, और सलोमी ने सुगन्धित वस्तुएँ मोल लीं, कि आकर उस पर मलें। १ समाह के पहले दिन बड़े भोर, जब सूरज निकला ही था, वे कब्र पर आईं, २ और आपस में कहती थीं, “हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा?” ३ जब उन्होंने आँख उठाई, तो देखा कि पत्थर लुढ़का हआ है! वह बहुत ही बड़ा था। ४ और कब्र के भीतर जाकर, उन्होंने एक जवान को श्वेत वस्त्र पहने हुए दाहिनी ओर बैठे देखा, और बहुत चकित हुई। ५ उसने उनसे कहा, “चकित मत हो, तुम यीशु नासरी को, जो क्रृस पर चढ़ाया गया था, ढूँढ़ती हो। वह जी उठा है, यहाँ नहीं है; देखो, यहीं वह स्थान है, जहाँ उन्होंने उसे रखा था। ६ परन्तु तुम जाओ, और उसके चेलों और पतरस से कहो, कि वह तुम से पहले गतील को जाएगा; जैसा उसने तुम से कहा था, तुम वही उसे देखोगे।” ७ और वे निकलकर कब्र से भाग गईं; क्योंकि कँपकँपी और घबराहट उन पर छा गई थी। और उन्होंने किसी से कुछ न कहा, क्योंकि डरती थी। ८ (note: The most reliable and earliest manuscripts do not include Mark 16:9-20.) समाह के पहले दिन भोर होते ही वह जी उठकर पहले-पहल मरियम मगदलीनी को जिसमें से उसने सात दुश्तामाएँ निकाली थीं, दिखाई दिया। ९ उसने जाकर उसके साथियों को जो शोक में डबे हुए थे और रो रहे थे, समाचार दिया। १० और उन्होंने यह सुनकर कि वह जीवित है और उसने उसे देखा है, विश्वास नहीं किया। ११ इसके बाद वह दूसरे स्पृष्ट में उनमें से दो को जब वे गाँव की ओर जा रहे थे, दिखाई दिया। १२ उन्होंने भी जाकर औरों को समाचार दिया, परन्तु उन्होंने उनका भी विश्वास न किया। १३ पीछे वह उन ग्यारह चेलों को भी, जब वे भोजन करने बैठे थे दिखाई दिया, और उनके अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया, क्योंकि जिन्होंने उसके जी उनके बाद उसे देखा था, इन्होंने उसका विश्वास न किया था। १४ और उसने उनसे कहा, “तुम सरे जगत में जाकर सारी सुष्ठि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। १५ जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्घार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। १६ और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुश्तामाओं को निकालेंगे; नई-नई भाषा बोलेंगे; १७ सँपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक वस्तु भी पी जाएँ तो भी उनकी कुछ हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।” १८ तब प्रभु यीशु उनसे बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया। १९ और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन।

लूका

१ बहुतों ने उन बातों का जो हमारे बीच में बीती है, इतिहास लिखने में हाथ लगाया है। २ जैसा कि उहोंने जो पहले ही से इन बातों के देखनेवाले और वचन के सेवक थे हम तक पहुँचाया। ३ इसलिए हे श्रीमान शियुफिल्स मुझे भी यह उचित मालम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक-ठीक जाँच करके उहों तेरे लिये क्रमानुसार लिखूँ ४ कि तू यह जान ले, कि वे बातें जिनकी तैरे शिक्षा पाई हैं, कैसी अटल हैं। ५ यहदिया के राजा हेरोदेस के समय अवियाह के दल में जकर्याह नाम का एक याजक था, और उसकी पत्नी हास्तन के वंश की थी, जिसका नाम एलीशिबा था। ६ और वे दोनों परमेश्वर के सामने धर्मी थे, और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलनेवाले थे। ७ उनके कोई सन्तान न थी, क्योंकि एलीशिबा बाँझ थी, और वे दोनों बढ़े थे। ८ जब वह अपने दल की पारी पर परमेश्वर के सामने याजक का काम करता था। ९ तो याजकों की रीति के अनुसार उसके नाम पर चिन्ह निकली, कि प्रभु के मन्दिर में जाकर धूप जलाए। १० और धूप जलाने के समय लोगों की सारी मण्डली बाहर प्रार्थना कर रही थी। ११ कि प्रभु का एक स्वर्गदूत धूप की बेदी की दाढ़िनी ओर खड़ा हुआ उसको दिखाई दिया। १२ और जकर्याह देखकर घबराया और उस पर बड़ा भय छा गया। १३ परन्तु स्वर्गदूत ने उसे कहा, “हे जकर्याह, भगवीत न हो क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरी पत्नी एलीशिबा से तेरे लिये एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यहना रखना। १४ और तुझे आनन्द और हर्ष होगा और बहुत लोग उसके जन्म के कारण अनन्दित होंगे। १५ क्योंकि वह प्रभु के सामने महान होगा; और दाखरस और मदिरा कभी न पीएगा; और अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा। १६ और इसाएलियों में से बहुतों को उनके प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा। १७ वह एलियाह की आत्मा और सामर्थ्य में होकर उसके आगे-आगे चलेगा, कि पिताओं का मन बाल-बच्चों की ओर फेर दे; और आज्ञा न माननेवालों को धर्मियों की समझ पर लाए, और प्रभु के लिये एक योग्य प्रजा तैयार कर।” १८ जकर्याह ने स्वर्गदूत से पछा, “वह मैं कैसे जानूँ? क्योंकि मैं तो बढ़ा हूँ, और मेरी पत्नी भी बढ़ी हो गई है।” १९ स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, “मैं गब्रिएल हूँ, जो परमेश्वर के सामने खड़ा रहता हूँ; और मैं तुम्ह से बातें करने और तुझे यह सुसामाचार सुनाने को भेजा गया हूँ। २० और देख, जिस दिन तक ये बातें परी न हो लें, उस दिन तक तू मौन रहेगा, और बोल न सकेगा, इसलिए कि तूने मेरी बातों की जो अपने समय पर पूरी होंगी, विच्वास न किया।” २१ लोग जकर्याह की प्रतीक्षा करते रहे और अचम्भा करने लगे कि उसे मन्दिर में ऐसी देर क्यों लगी? २२ जब वह बाहर आया, तो उनसे बोल न सका अतः वे जान गए, कि उसने मन्दिर में कोई दर्शन पाया है; और वह उनसे संकेत करता रहा, और गूँगा रह गया। २३ जब उसकी सेवा के दिन पूरे हुए, तो वह अपने घर चला गया। २४ इन दिनों के बाद उसकी पत्नी एलीशिबा गर्भवती हुई; और पांच महीने तक अपने आपको यह कह के लिपाए रखा। २५ “मनुष्यों में मेरा अपमान दूर करने के लिये प्रभु ने इन दिनों में कृपादृष्टि करके मेरे लिये ऐसा किया है।” २६ छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से गब्रिएल स्वर्गदूत गतील के नासरत नगर में, २७ एक कुँवारी के पास भेजा गया। जिसकी मागनी यसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुस्त से हुई थी: उस कुँवारी का नाम मरियम था। २८ और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा, “आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है! प्रभु तेरे साथ है!” २९ वह उस वचन से बहुत घबरा गई, और सोचने लगी कि यह किस प्रकार का अभिवादन है? ३० स्वर्गदूत ने उससे कहा,

“हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। ३१ और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। ३२ वह महान होगा, और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा। ३३ और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा।” (aiōn g165) ३४ मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, “यह कैसे होगा? मैं तो पुस्त को जानती ही नहीं।” ३५ स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, “पवित्र आत्मा तुझ पर उत्तरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी; इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। ३६ और देख, और तेरी कुटुम्बिनी एलीशिबा के भी बढ़ाये में पुत्र होनेवाला है, यह उसका, जो बाँझ कहलाती थी छठवें महीना है। ३७ परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।” ३८ मरियम ने कहा, “देख, मैं प्रभु की दासी हूँ, तेरे वचन के अनुसार मेरे साथ ऐसा हो।” तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया। ३९ उन दिनों में मरियम उठकर शीघ्र ही पहाड़ी देश में यहदा के एक नगर को गई। ४० और जकर्याह के घर में जाकर एलीशिबा को नमस्कार किया। ४१ जैसे ही एलीशिबा ने मरियम का नमस्कार सुना, वैसे ही बच्चा उसके पेट में उछला, और एलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई। ४२ और उसने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, “तू, बिंदियों में धन्य है, और तेरे पेट का फल धन्य है।” ४३ और यह अनुग्रह सुने कहाँ से हुआ, कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आई। ४४ और देख जैसे ही तेरे नमस्कार का शब्द मेरे कानों में पड़ा वैसे ही बच्चा मेरे पेट में आनन्द से उछल पड़ा। ४५ और धन्य है, वह जिसने विच्वास किया कि जो बातें प्रभु की ओर से उससे कही गई, वे पूरी होंगी।” ४६ तब मरियम ने कहा, “मेरा प्राण प्रभु की बडाई करता है।” ४७ और मेरी आत्मा मेरे उद्गार करनेवाले परमेश्वर से आनन्दित हुई। ४८ क्योंकि उसने अपनी दासी की दीनता पर दृष्टि की है, इसलिए देखो, अब से सब युग-युग के लोग मुझे धन्य कहेंगे। ४९ क्योंकि उस शक्तिमान ने मेरे लिये बड़े बड़े काम किए हैं, और उसका नाम पवित्र है। ५० और उसकी दिया उन पर, जो उससे डरते हैं, पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है। ५१ उसने अपना भजबल दिखाया, और जो अपने मन में धमपंड करते थे, उहोंने तिरत-बितरत किया। ५२ उसने शासकों को सिंहासनों से गिरा दिया; और दीनों को ऊँचा किया। ५३ उसने भर्खों को अच्छी वस्तुओं से तुम किया, और धनवानों को खाली हाथ निकाल दिया। ५४ उसने अपने सेवक इसाएल को सम्भाल लिया कि अपनी उस दिया को समरण करे, ५५ जो अब्राहम और उसके बांध पर रहना चाहता है? ५६ मरियम लगभग तीन महीने उसके साथ रहकर अपने घर लौट गई। ५७ तब एलीशिबा के जनने का समय पूरा हुआ, और वह पुत्र जनी। ५८ उसके पड़ोसियों और कुटुम्बियों ने यह सुनकर, कि प्रभु ने उस पर बड़ी दिया की है, उसके साथ आनन्दित हुए। ५९ और ऐसा हुआ कि आठवें दिन वे बालक का खतना करने आए और उसका नाम उसके पिता के नाम पर जकर्याह रखने लगे। ६० और उसकी माता ने उत्तर दिया, “नहीं; वरन् उसका नाम यहना रखा जाए।” ६१ और उन्होंने उससे कहा, “तेरे कुटुम्ब में किसी का यह नाम नहीं।” ६२ तब उन्होंने उसके पिता से संकेत करके पछा कि तू उसका नाम क्या रखना चाहता है? ६३ और उसने लिखने की पट्टी मँगवाकर लिख दिया, “उसका नाम यहना है,” और सभी ने अचम्भा किया। ६४ तब उसका मँहूँ और जीभ तुरत खुल गई; और वह बोलने और परमेश्वर की स्तुति करने लगा। ६५ और उसके आस-पास के सब रहनेवालों पर भय छा गया; और उन सब बातों की चर्चा यहदिया के सारे पहाड़ी देश में फैल गई। ६६ और सब सुननेवालों ने अपने-अपने मन में विचार करके कहा, “यह बालक कैसा

होगा?" क्योंकि प्रभु का हाथ उसके साथ था। ६४ और उसका पिता जकर्याह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया, और भविष्यद्वाणी करने लगा। ६५ "प्रभु इमाएल का परमेश्वर धन्य हो, कि उसने अपने लोगों पर दृष्टि की और उनका छुटकारा किया है, ६६ और अपने सेवक दाऊद के घराने में हमारे लिये एक उद्धार का सीधा निकाला, ६७ जैसे उसने अपने पवित्र भविष्यद्वत्काओं के द्वारा जो जगत के आदि से होते आए हैं, कहा था, (alōn g165) ६८ अर्थात् हमारे शक्तियों से, और हमारे सब बैरियों के हाथ से हमारा उद्धार किया है; ६९ कि हमारे पर्वतों पर दया करके अपनी पवित्र वाचा का स्मरण करें, ७० और वह शपथ जो उसने हमारे पिता अन्नाहम से खाई थी, ७१ कि वह हमें यह देगा, कि हम अपने शक्तियों के हाथ से छुटकर, ७२ उसके सामने पवित्रता और धार्मिकता से जीवन भर निर रहकर उसकी सेवा करते रहें। ७३ और तू हे बालक, परमप्रधान का भविष्यद्वत्का कहलाएगा, क्योंकि तू प्रभु के मार्ग तैयार करने के लिये उसके आगे-आगे चलोगा, ७४ कि उसके लोगों को उद्धार का ज्ञान दे, जो उनके पापों की क्षमा से प्राप्त होता है। ७५ यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी कल्याण से होगा; जिसके कारण ऊपर से हम पर भोग का प्रकाश उदय होगा। ७६ कि अधंकर और मृत्यु की छाया में बैठनेवालों को ज्योति दे, और हमारे पांवों को कुशल के मार्ग में सिध्धि चलाए।" ७७ और वह बालक यहन्ना, बढ़ता और आत्मा में बलवन्त होता गया और इमाएल पर प्रगट होने के दिन तक जंगलों में रहा।

२ उन दिनों में औगुस्टस कैसर की ओर से आज्ञा निकली, कि सारे रोमी साम्राज्य के लोगों के नाम लिखे जाएँ। १ यह पहली नाम लिखाई उस समय हुई, जब क्लिविरिनियुस सीरिया का राज्यपाल था। २ और सब लोग नाम लिखाने के लिये अपने-अपने नगर को गए। ३ अतः यसुफ भी इसलिए कि वह दाऊद के घराने और बंश का था, गलील के नासरत नगर से यहदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया। ४ कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थी नाम लिखावा। ५ उनके बहाँ रहते हुए उसके जनने के दिन पूरे हुए। ६ और वह अपना पहलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा; क्योंकि उनके लिये सराय में जगह न थी। ७ और उस देश में किनने गड़ेरिये थे, जो रात को मैदानों में रहकर अपने झुण्ड का पहरा देते थे। ८ और परमेश्वर का एक दूसरा उनके पास आ खड़ा हुआ, और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका, और वे बहुत डर गए। ९ तब स्वर्णदूत ने उनसे कहा, "मत डो़; क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े अनन्द का सुसामाचार सुनाता हूँ; जो सब लोगों के लिये होगा, १० कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्घारकर्ता जन्मा है, और वही मरीया प्रभु है। ११ और इसका तुम्हारे लिये यह चिन्ह है, कि तुम एक बालक को कपड़े में लिपटा हुआ और चरनी में पड़ा पाओगे।" १२ तब एकाएक उस स्वर्णदूत के साथ स्वर्णदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया, १३ "आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो।" १४ जब स्वर्णदूत उनके पास से स्वर्ण को चले गए, तो गड़ेरियों ने आपस में कहा, "आओ, हम बैतलहम जाकर यह बात जो हुई है, और जिसे प्रभु ने हमें बताया है, देखें।" १५ और उन्होंने तुन्न जाकर मरियम और यसुफ को और चरनी में उस बालक को पड़ा देखा। १६ इन्हें देखकर उन्होंने वह बात जो इस बालक के विषय में उनसे कही गई थी, प्रगट की। १७ और सब सुननेवालों ने उन बातों से जो गड़ेरियों ने उनसे कही आश्चर्य किया। १८ परन्तु मरियम ये सब बातें अपने मन में रखकर सोचती रही। १९ और गड़ेरिये जैसा उनसे कहा गया था, वैसा ही सब सुनकर और देखकर परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए लौट गए। २० जब आठ दिन पूरे हुए, और उसके खतने का समय आया, तो उसका

नाम यीशु रखा गया, यह नाम स्वर्णदूत द्वारा, उसके गर्भ में आने से पहले दिया गया था। २१ और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार मरियम के शुद्ध होने के दिन पूरे हुए तो यसुफ और मरियम उसे यस्शलेम में ले गए, कि प्रभु के सामने लाएँ। २२ जैसा कि प्रभु की व्यवस्था में लिखा है: "हर एक पहलौठा प्रभु के लिये पवित्र ठहरेगा।" २३ और प्रभु की व्यवस्था के बचन के अनुसार, "पण डुकों का एक जोड़ा, या कबूतर के दो बच्चे लाकर बलिदान करें।" २४ उस समय यस्शलेम में शमैन नामक एक मनुष्य था, और वह मनुष्य धर्मी और भक्त था; और इमाएल की शान्ति की प्रतीक्षा कर रहा था, और पवित्र आत्मा उस पर था। २५ और पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकट हुआ, कि जब तक तू प्रभु के मसीह को देख न ले गा, तब तक मृत्यु को न देखेगा। २६ और वह आत्मा के सिखाने से मन्दिर में आया; और जब माता-पिता उस बालक यीशु को भीतर लाए, कि उसके लिये व्यवस्था की रीति के अनुसार करें, २७ तो उसने उसे अपनी गोद में लिया और परमेश्वर का धन्यवाद करके कहा: २८ "हे प्रभु, अब तू अपने दास को अपने बचन के अनुसार शान्ति से विदा कर दे; २९ क्योंकि मेरी आँखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है। ३० जिसे तूने सब देशों के लोगों के सामने तैयार किया है। ३१ कि वह अन्यजातियों को सच्य प्रकट करने के लिए एक ज्योति होगा, और तेरे निज लोगों इमाएल की महिमा हो।" ३२ और उसका पिता और उसकी माता इन बातों से जो उसके विषय में कही जाती थी, आश्चर्य करते थे। ३३ तब शमैन ने उनको आशीष देकर, उसकी माता मरियम से कहा, "देख, वह तो इमाएल में बहतों के गिरने, और उठने के लिये, और एक ऐसा चिन्ह होने के लिये ठहराया गया है, जिसके विरोध में बातें की जाएँगी ३४ (वरन् तेरो प्राण भी तलवार से आर-पार छिद जाएगा) इससे बहत हृदयों के बिचार प्रगट होंगे।" ३५ और अशेष के गोरा में से हन्नाह नामक फून्एल की बेटी एक भविष्यद्वत्किन थी: वह बहुत बड़ी थी, और बिवाह होने के बाद सात वर्ष अपने पति के साथ रह पाई थी। ३६ वह चौरासी वर्ष की विधावा थी: और मन्दिर को नहीं छोड़ी थी पर उपवास और प्रार्थना कर करके रात-दिन उपासना किया करती थी। ३७ और वह उस बड़ी वहाँ आकर परमेश्वर का धन्यवाद करने लगी, और उन सभी से, जो यस्शलेम के छुटकारे की प्रतीक्षा कर रहे थे, उसके विषय में बातें करने लगी। ३८ और जब वे प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ निपटा चुके तो गलील में अपने नगर नासरत को फिर चले गए। ३९ और बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था। ४० उसके माता-पिता प्रतिवर्ष फसह के पर्व में यस्शलेम को जाया करते थे। ४१ जब वह बारह वर्ष का हुआ, तो वे पर्व की रीति के अनुसार यस्शलेम को गए। ४२ और जब वे उन दिनों को पूरा करके लौटने लगे, तो वह बालक यीशु यस्शलेम में रह गया; और वह उनके माता-पिता नहीं जानते थे। ४३ वे यह समझकर, कि वह और यात्रियों के साथ होगा, एक दिन का पड़ाव निकल गए: और उसे अपने कुटुम्बियों और जान-पहचानवालों में ढूँढ़ने लगे। ४४ पर जब नहीं मिला, तो ढूँढ़ते-ढूँढ़ते यस्शलेम को फिर लौट गए। ४५ और तीन दिन के बाद उन्होंने उसे मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठे, उनकी सुनते और उनसे प्रश्न करते हुए पाया। ४६ और जितने उसकी सुन रहे थे, वे सब उसकी समझ और उसके उत्तरों से चकित थे। ४७ तब वे उसे देखकर चकित हुए और उसकी माता ने उससे कहा, "हे पुत्र, तुम हम से क्यों ऐसा व्यवहार किया? देख, तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुम्हें ढूँढ़ते थे।" ४८ उसने उनसे कहा, "तुम मुझे क्यों ढूँढ़ते थे? क्या नहीं जानते थे, कि मुझे अपने पिता के भवन मेंहोना अवश्य है?" ४९ परन्तु जो बात उसने उनसे कही, उन्होंने उसे नहीं समझा। ५० तब वह उनके साथ गया, और नासरत में आया, और उनके बंश में रहा; और

उसकी माता ने ये सब बातें अपने मन में रखी। ५० और यीशु बुद्धि और डील-डॉल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।

३ तिबिरियस कैसर के राज्य के पन्द्रहवें वर्ष में जब पुनियस पिलातुस

यहादिया का राज्यपाल था, और गलील में हेरोदेस इत्तरैया, और ऋषोनीतिस में, उसका भाई फिलिप्पस, और अबिलेने में लिसानियास चौथाई के राजा थे। १ और जब हन्ना और कैफा महायाजक थे, उस समय परमेश्वर का वचन जंगल में जकर्याह के पुनर यहन्ना के पास पहुँचा। २ और वह यरदन के आस-पास के सरों प्रदेश में आकर, पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करने लगा। ३ जैसे यशायाह भविष्यद्वता के कहे हुए वचनों की पुस्तक में लिखा है: “जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है कि, ‘प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी करो।’ ४ हर एक घाटी भर दी जाएगी, और हर एक पहाड़ और टीला नीचा है वह चौरस मार्ग बनेगा। ५ और हर प्राणी परमेश्वर के उद्धार को देखेगा।” ६ जो बड़ी भीड़ उससे बपतिस्मा लेने को निकलकर आती थी, उनसे वह कहता था, “हे साँप के बच्चों, तुम्हें किसने चेतावनी दी, कि आनेवाले क्रोध से भागो? ७ अतः मन फिराव के योग्य फल लाओ: और अपने-अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता अब्राहम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है। ८ और अब कुल्हाडा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिए जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है।” ९ और लोगों ने उससे पूछा, “तो हम क्या करें?” १० उसने उन्हें उत्तर दिया, “जिसके पास दो कुर्ते हैं? वह उसके साथ जिसके पास नहीं हैं बॉट ले और जिसके पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही करे।” ११ और चुंगी लेनेवाले भी बपतिस्मा लेने आए, और उससे पूछा, “हे गुरु, हम क्या करें?” १२ उसने उनसे कहा, “जो तुम्हारे लिये ठहराया गया है, उससे अधिक न लेना।” १३ और सिपाहियों ने भी उससे यह पूछा, “हम क्या करें?” उसने उनसे कहा, “किसी पर उपद्रव न करना, और न झटा दोष लगाना, और अपनी मजदूरी पर सन्तोष करना।” १४ जब लोग आस लगाए हुए थे, और सब अपने-अपने मन में यहन्ना के विषय में विचार कर रहे थे, कि क्या यही मरीह तो नहीं है। १५ तो यहन्ना ने उन सब के उत्तर में कहा, “मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु वह आनेवाला है, जो मुझसे शक्तिशाली है; मैं तो इस योग्य भी नहीं, कि उसके जरूरों का फीता खोल सकूँ, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। १६ उसका सप, उक्ते हाथ में है; और वह अपना खलिहान अच्छी तरह से साफ करेगा; और गेहूँ को अपने खरें में इक्षुश करेगा, परन्तु भूसी की उस आग में जो बुझने की नहीं जला देगा।” १७ अतः वह बहुत सी शिक्षा दे देकर लोगों को सुसमाचार सुनाता रहा। १८ परन्तु उसने चौथाई देश के राजा हेरोदेस को उसके भाई फिलिप्पस की पढ़ी हेरोदियास के विषय, और सब कुकर्मी के विषय में जो उसने किए थे, उलाहना दिया। १९ इसलिए हेरोदेस ने उन सबसे बढ़कर यह कुकर्मी भी किया, कि यहन्ना को बन्दीगीह में डाल दिया। २० जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया, और यीशु भी बपतिस्मा लेकर प्रार्थना कर रहा था, तो आकाश खुल गया। २१ और पवित्र आत्मा शारीरिक रूप में कबूतर के समान उस पर उत्तर, और यह आकाशवापी हुई “तू मेरा प्रिय पुर है, मैं तुझ से प्रसन्न हूँ।” २२ जब यीशु आप उपदेश करने लगा, तो लगभग तीस वर्ष की आयु का था और (जैसा समझा जाता था) यूसुफ का पुनर था; और वह एली का, २३ और वह मतात का, और वह लेवी का, और वह मलकी का, और वह यन्ना का, २४ और वह मतात का, और वह मतित्याह का, और वह आमोस का,

का, और वह नहम का, और वह असल्याह का, और वह नगर्ह का, २५ और वह मतात का, और वह मतित्याह का, २६ और वह यूहना का, और वह रेसा का, और वह जस्ल्बाबेल का, और वह शालतीएल का, और वह नेरी का, २७ और वह मलकी का, और वह अदी का, और वह कोसाम का, और वह एल्मदाम का, और वह एर का, २८ और वह येशु का, और वह एलीजेर का, और वह योरीम का, और वह मतात का, और वह लेवी का, २९ और वह शमैन का, और वह यहदा का, और वह यूसुफ का, और वह योनान का, और वह एल्याकीम का, ३० और वह मलेओह का, और वह मिन्नाह का, और वह मतता का, और वह नातान का, और वह दाऊद का, ३१ और वह यिशै का, और वह ओवेद का, और वह बोअज का, और वह सलमोन का, और वह नहशोन का, ३२ और वह अम्मीनादाब का, और वह अरनी का, और वह हेसोन का, और वह पेरेस का, और वह यहदा का, ३३ और वह याकूब का, और वह इसहाक का, और वह अब्राहम का, और वह तेरह का, और वह नाहोर का, ३५ और वह सस्ग का, और वह रऊ का, और वह पेतेग का, और वह एब्रे का, और वह शिलह का, ३६ और वह केनान का, वह अरफक्सद का, और वह शेम का, वह नहू का, वह लेमक का, ३७ और वह मथ्यिलह का, और वह हनोक का, और वह यिरिद का, और वह महललेल का, और वह केनान का, ३८ और वह एनोश का, और वह शेत का, और वह आदम का, और वह परमेश्वर का पुत्र था।

४ फिर यीशु पवित्र आत्मा से भरा हुआ, यरदन से लौटा; और आत्मा की

अगुआई से जंगल में फिरता रहा; ३९ और चालीस दिन तक शैतान उसकी परीक्षा करता रहा। उन दिनों में उसने कुछ न खाया और जब वे दिन पौर हो गए, तो उसे भूख लगी। ४० और शैतान ने उससे कहा, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इस पत्थर से कह, कि रोटी बन जाए।” ४१ यीशु ने उसे उत्तर दिया, “लिखा है: ‘मनुष्य केवल रोटी से जीवित न रहेगा।’” ४२ तब शैतान उसे ले गया और उसको पल भर में जगत के सारे राज्य दिखाए। ४३ और उससे कहा, “मैं यह सब अधिकार, और इनका वैभव तुझे दंगा, क्योंकि वह मुझे सौपा गया है, और जिसे चाहता हूँ, उसे दे सकता हूँ।” ४४ इसलिए यदि तू मुझे प्रणाम करे, तो यह सब तेरा हो जाएगा।” ४५ यीशु ने उसे उत्तर दिया, “लिखा है: ‘तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर: और केवल उत्ती की उपासना कर।’” ४६ तब उसने उसे यश्शलेम में ले जाकर मन्दिर के कंगरे पर खड़ा किया, और उससे कहा, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो आपने आपको यहाँ से निचे पिरा दे।” ४७ क्योंकि लिखा है, ‘वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, कि वे तेरी रक्षा करें।’ ४८ और ‘वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे ऐसा न हो कि तेरे पाँव में पत्थर से ठेस लगे।’” ४९ यीशु ने उसको उत्तर दिया, “यह भी कहा गया है: ‘तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न करना।’” ५० जब शैतान सब परीक्षा कर चुका, तब कुछ समय के लिये उसके पास से चला गया। ५१ फिर यीशु पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से भरा हुआ, गलील को लौटा, और उसकी चर्चा आस-पास के सारे देश में फैल गई। ५२ और वह उन ही आराधनालयों में उपदेश करता रहा, और सब उसकी बड़ाई करते थे। ५३ और वह नासरत में आया; जहाँ उसका पालन-पोषण हुआ था; और अपनी रीति के अनुसार सब्ल के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिये खड़ा हुआ। ५४ यशायाह भविष्यद्वता की पुस्तक उसे दी गई, और उसने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहाँ यह लिखा था: ५५ “प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अधिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है, कि बनियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ, ५६ और प्रभु के प्रसन्न-

रहने के वर्षका प्रचार करूँ।” २० तब उसने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दे दी, और बैठ गया: और आराधनालय के सब लोगों की आँखें उस पर लगी थी। २१ तब वह उनसे कहने लगा, “आज ही यह लेख तम्हारे सामने पूरा हुआ है।” २२ और सब ने उसे सराहा, और जो अनुग्रह की बातें उसके मुँह से निकलती थीं, उनसे अचम्भित हुए: और कहने लगे, “क्या यह यस्तुका पुत्र नहीं?” २३ उसने उनसे कहा, “उमु मुझ पर यह कहावत अवश्य कहांगे, ‘कि है वैध, अपने आपको अच्छा कर। जो कुछ हमने सुना है कि कफरनहम में तूने किया है उसे यहाँ अपने देश में भी कर।’” २४ और उसने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कोई भविष्यद्वत्ता अपने देश में मान-सम्मान नहीं पाता। २५ मैं तुम से सच कहता हूँ, कि एलियाह के दिनों में जब सढ़े तीन वर्ष तक आकाश बन्द रहा, यहाँ तक कि सारे देश में बड़ा आकाल पड़ा, तो इसाएल में बहुत सी विधाएँ थीं। २६ पर एलियाह को उनमें से किसी के पास नहीं भेजा गया, केवल सीदोने के सारफत में एक विधाव के पास। २७ और एलीशा भविष्यद्वत्ता के समय इसाएल में बहुत से कोढ़ी थे, पर सीरिया वासी नामान को छोड़ उनमें से कोई शुद्ध नहीं किया गया।” २८ ये बातें सुनते ही जिनने आराधनालय में थे, सब क्रोध से भर गए। २९ और उठकर उसे नार से बाहर निकाला, और जिस पहाड़ पर उनका नगर बसा हुआ था, उसकी चोटी पर ले चले, कि उसे वहाँ से नीचे गिरा दें। ३० पर वह उनके बीच में से निकलकर चला गया। ३१ फिर वह गलील के कफरनहम नगर में गया, और सबत के दिन लोगों को उपदेश दे रहा था। ३२ वे उसके उपदेश से चकित हो गए क्योंकि उसका वचन अधिकार सहित था। ३३ आराधनालय में एक मनुष्य था, जिसमें अशुद्ध आत्मा थी। वह ऊँचे शब्द से चिल्ला उठा, ३४ “हे यीश नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानता हूँ तू कौन है? तू परमेश्वर का पवित्र जन है!” ३५ यीश ने उसे डॉंटकर कहा, “चुप रह और उसमें से निकल जा!” तब दुश्टात्मा उसे बीच में पटककर बिना हानि पहुँचा उसमें से निकल गई। ३६ इस पर सब को अचम्भा हुआ, और वे आपस में बातें करके कहने लगे, “यह कैसा वचन है? कि वह अधिकार और सामर्थ्य के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं।” ३७ अतः चारों ओर हर जगह उसकी चर्चा होने लगी। ३८ वह आराधनालय में से उठकर शमैन के घर में गया और शमैन की सास को तेज बुखार था, और उन्होंने उसके लिये उसमें बिनती की। ३९ उसने उसके निकट खड़े होकर ज्वर को डॉंटा और ज्वर उतर गया और वह तुरन्त उठकर उनकी सेवा-ठहल करने लगी। ४० सरज डूबते समय जिन-जिनके यहाँ लोग नाना प्रकार की बीमारियों में पड़े हुए थे, वे सब उन्हें उसके पास ले आएँ, और उसने एक-एक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया। ४१ और दुश्टात्मा चिल्लाती और यह कहती हुई, “तू परमेश्वर का पुत्र है,” बहुतों में से निकल गई पर वह उन्हें डॉंटा और बोलने नहीं देता था, क्योंकि वे जानती थीं, कि यह मसीह है। ४२ जब दिन हुआ तो वह निकलकर एक एकांत स्थान में गया, और बड़ी भीड़ उसे ढूँढ़ती हुई उसके पास आई, और उसे रोकने लगी, कि हमारे पास से न जा। ४३ परन्तु उसने उनसे कहा, “मुझे और नारों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है, क्योंकि मैं इसलिए भेजा गया हूँ।” ४४ और वह गलील के आराधनालयों में प्रचार करता रहा।

५ जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती थी, और परमेश्वर का वचन सुनती थी, और वह गन्नेसरत की झील के किनारे पर खड़ा था, तो ऐसा हुआ। १ कि उसने झील के किनारे दो नावें लगी हुई देखी, और मछुए उन पर से उतरकर जाल धो रहे थे। २ उन नावों में से एक पर, जो शमैन की थी, चढ़कर, उसे उससे बिनती की, कि किनारे से थोड़ा हटा ले चले, तब वह बैठकर लोगों को नाव

पर से उपदेश देने लगा। ३ जब वह बातें कर चुका, तो शमैन से कहा, “गहरे मैं ले चल, और मछलियाँ पकड़ने के लिये अपने जाल डालो।” ४ शमैन ने उसको उत्तर दिया, “हे स्वामी, हमने सारी रात मेहनत की और कुछ न पकड़ा; तो भी तेरे कहने से जाल डालूँगा।” ५ जब उन्होंने ऐसा किया, तो बहुत मछलियाँ घेर लाए, और उनके जाल फटने लगे। ६ इस पर उन्होंने अपने साथियों को जो दूसरी नाव पर थे, संकेत किया, कि आकर हमारी सहायता करो: और उन्होंने आकर, दोनों नाव यहाँ तक भर ली कि वे इबने लगी। ७ यह देखकर शमैन पतरस यीश के पाँवों पर गिरा, और कहा, “हे प्रभु, मैं पास से जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूँ।” ८ क्योंकि इतनी मछलियों के पकड़े जाने से उसे और उसके साथियों को बहुत अचम्भा हुआ; ९ और वैसे ही जल्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को भी, जो शमैन के सहभागी थे, अचम्भा हुआ तब यीश ने शमैन से कहा, “मत डर, अब से तू मनुष्यों को जीविता पकड़ा करोगा।” १० और वे नावों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए। ११ जब वह किसी नगर में था, तो वहाँ कोढ़ से भरा हुआ एक मनुष्य आया, और वह यीश को देखकर मुँह के बल गिरा, और बिनती की, “हे प्रभु यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।” १२ उसने हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा।” १३ और उसका कोढ़ तुरन्त जाता रहा। १४ तब उसने उसे चिताया, “किसी से न कह, परन्तु जा के अपने अपाको याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मसा ने चढ़ावा ठहराया है उसे चढ़ा कि उन पर गवाही हो।” १५ परन्तु उसकी चर्चा और भी फैलती गई, और बड़ी भीड़ उसकी सुनने के लिये और अपनी बीमारियों से चंगे होने के लिये इकट्ठी हुई। १६ परन्तु वह निर्जन स्थानों में अलग जाकर प्रार्थना किया करता था। १७ और एक दिन ऐसा हुआ कि वह उपदेश दे रहा था, और फरीसी और व्यवस्थापक वहाँ बैठे हुए थे, जो गलील और यहदिया के हर एक गाँव से, और यस्तलेम से आए थे; और चंगा करने के लिये प्रभु की सामर्थ्य उसके साथ थी। १८ और देखो कई लोग एक मनुष्य को जो लकड़े का रोगी था, खाट पर लाए, और वे उसे भीतर ले जाने और यीश के सामने रखने का उपाय ढूँढ़ रहे थे। १९ और जब भीड़ के कारण उसे भीतर न ले जा सकते तो उन्होंने छत पर चढ़कर और खपैल हटाकर, उसे खाट समेत बीच में यीश के सामने उतार दिया। २० उसने उनका विश्वास देखकर उससे कहा, “हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए।” २१ तब शाही और फरीसी विवाद करने लगे, “यह कौन है, जो परमेश्वर की निन्दा करता है? परमेश्वर को छोड़ कौन पापों की क्षमा कर सकता है?” २२ यीश ने उनके मन की बातें जानकर, उनसे कहा, “तुम अपने मनों में क्या विवाद कर रहे हो? २३ सहज क्या है? क्या यह कहना कि ‘उठ और चल फिर?’” २४ परन्तु इसलिए कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है।” उसने उस लकड़े के रोगी से कहा, “मैं तुझ से कहता हूँ, उठ और अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।” २५ वह तुरन्त उनके सामने उठा, और जिस पर वह पड़ा था उसे उठाकर, परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ अपने घर चला गया। २६ तब सब चकित हुए और परमेश्वर की बड़ाई करने लगे, और बहुत डरकर कहने लगे, “आज हमने अनोखी बातें देखी हैं।” २७ और इसके बाद वह बाहर गया, और लेवी नाम एक चुंगी लेनेवाले को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उससे कहा, “मेरे पीछे हो ले।” २८ तब वह सब कुछ छोड़कर उठा, और उसके पीछे हो लिया। २९ और लेवी ने अपने घर में उसके लिये एक बड़ा भोज दिया; और चुंगी लेनेवालों की ओर अच्युतों की जो उसके साथ भोजन करने बैठे थे एक बड़ी भीड़ थी। ३० और फरीसी और उनके शाही उसके चेलों से यह

कहकर कुड़कुड़ाने लगे, “तुम चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो?” ३८ यीशु ने उनको उत्तर दिया, “वैष्य भले चंगों के लिये नहीं, परन्तु बीमारों के लिये अवश्य है।” ३९ मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को मन फिराने के लिये बुलाने आया हूँ।” ४० और उन्होंने उससे कहा, “यूहन्ना के चेले तो बराबर उपवास रखते और प्रार्थना किया करते हैं, और वैसे ही फर्सीसियों के भी, परन्तु तेरे चेले तो खाते-पीते हैं।” ४१ यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम बारातियों से जब तक दूल्हा उनके साथ रहे, उपवास करवा सकते हो? ४२ परन्तु वे दिन आएंगे, जिनमें दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, तब वे उन दिनों में उपवास करेंगे।” ४३ उसने एक और दृष्टान्त भी उनसे कहा: “कोई मनुष्य नये बन्धु में से फाड़कर पुणे बन्धु में पैबन्द नहीं लगाता, नहीं तो नया फट जाएगा और वह पैबन्द पुणे में मेल भी नहीं खाएगा।” ४४ और कोई नया दाखरस पुरानी मशक्कों में नहीं भरता, नहीं तो नया दाखरस मशक्कों को फाड़कर बह जाएगा, और मशक्के भी नाश हो जाएँगी। ४५ परन्तु नया दाखरस नई मशक्कों में भरना चाहिये। ४६ कोई मनुष्य पुराना दाखरस पीकर नया नहीं चाहता क्योंकि वह कहता है, कि पुराना ही अच्छा है।”

६ फिर सबत के दिन वह खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके चेले बाले तोड़-तोड़कर, और हाथों से मल-मलकर खाते जाते थे। ७ तब फर्सीसियों में से कुछ कहने लगे, “तुम वह काम क्यों करते हो जो सबत के दिन करना उचित नहीं?” ४७ यीशु ने उनको उत्तर दिया, “क्या तुम ने यह नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने जब वह और उसके साथी भूखे थे तो क्या किया? ४८ वह कैसे परमेश्वर के घर में गया, और भेंट की रोटियाँ लेकर खाई, जिन्हें खाना याजकों को छोड़ और किरी को उचित नहीं, और अपने साथियों को भी दी?” ४९ और उसने उनसे कहा, “मनुष्य का पुत्र सबत के दिन का भी प्रभु है!” ५० और ऐसा हुआ कि किरी और सबत के दिन को वह आराधनालय में जाकर उपदेश करने लगा; और वहाँ एक मनुष्य था, जिसका दाहिना हाथ सखा था। ५१ शाकी और फर्सी उस पर दोष लगाने का अवसर पाने के लिये उसकी ताक में थे, कि देखें कि वह सबत के दिन चंगा करता है कि नहीं। ५२ परन्तु वह उनके विचार जानता था, इसलिए उसने सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा, “उठ, बीच में खड़ा हो।” वह उठ खड़ा हुआ। ५३ यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम से यह पूछता हूँ कि सबत के दिन क्या उचित है, भला करना या बुरा करना; प्राण को बचाना या नाश करना?” ५४ और उसने चारों ओर उन सभी को देखकर उस मनुष्य से कहा, “अपना हाथ बढ़ा।” उसने ऐसी ही किया, और उसका हाथ फिर चंगा हो गया। ५५ परन्तु वे आपे से बाहर होकर आपस में विवाद करने लगे कि हम यीशु के साथ क्या करें? ५६ और उन दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने को निकला, और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई। ५७ जब दिन हुआ, तो उसने अपने चेलों को बुलाकर उनमें से बाहर चुन लिए, और उनको प्रेरित कहा। ५८ और वे ये हैं: शमीन जिसका नाम उसने पतरस भी रखा; और उसका भाई अन्दियास, और याकूब, और यूहन्ना, और फिलिप्पस, और बरतुल्मै, ५९ और मर्ती, और थोमा, और हलफईस का पुत्र याकूब, और शमैन जो जेलेटेस कहलाता है, ६० और याकूब का बेटा यहदा, और यहदा इस्करियोती, जो उसका पकड़वानेवाला बना। ६१ तब वह उनके साथ उत्तरकर चौस जगह में खड़ा हुआ, और उसके चेलों की बड़ी भीड़, और सारे यहदिया, और यस्तलेम, और सोर और सीदाने के सम्पुद्र के किनारे से बहत लोग, ६२ जो उसकी सुनने और अपनी बीमारियों से चंगा होने के लिये उसके पास आए थे, वहाँ थे। और अशूद्ध आत्माओं के सताए हुए लोग भी अच्छे किए जाते थे। ६३ और सब उसे छूना चाहते थे, क्योंकि उसमें से सामर्थ्य निकलकर सब को चंगा करती थी। ६४ तब उसने अपने चेलों की ओर

देखकर कहा, “धन्य हो तुम, जो दीन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है। ६५ “धन्य हो तुम, जो अब भूखे हो; क्योंकि तुम किए जा ओगे। “धन्य हो तुम, जो अब रोते हो, क्योंकि हाँसेगे। ६६ “धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुम से बैर किए गें, और तुम्हें निकाल देंगे, और तुम्हारी निन्दा करेंगे, और तुम्हारा नाम बुरा जानकर काट देंगे। ६७ “उस दिन आनन्दित होकर उछलना, क्योंकि देखो, तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है। उनके पूर्वज भविष्यद्वत्काओं के साथ भी वैसा ही किया करते थे। ६८ “परन्तु हाय तुम पर जो धनवान हो, क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके। ६९ “हाय तुम पर जो अब तू पूढ़े हो, क्योंकि देखो, जो धनवान हो, क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके। ७० “हाय तुम पर जो अब धूंसते हो, क्योंकि शोक करेगे और रोओगे। ७१ “हाय, तम पर; जो अब हँसते हो, क्योंकि शोक करेंगे और रोओगे। ७२ “हाय, तम पर जब सब मनुष्य तम्हें भला कहें, क्योंकि उनके पूर्वज झटे भविष्यद्वत्काओं के साथ भी ऐसा ही किया करते थे। ७३ “परन्तु मैं तुम सुनेवालों से कहता हूँ, कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करें, उनका भला करो। ७४ जो तुम्हें श्राप दें, उनको आशीष दो; जो तुम्हारा अपमान करें, उनके लिये प्रार्थना करो। ७५ जो तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे, और जो तेरी दोहर छीन ले, उसको कुर्ता लेने से भी न रोक। ७६ जो कोई तुझ से मौंगे, उसे दे; और जो तेरी वस्तु छीन ले, उससे न मौंग। ७७ और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो। ७८ “यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रखो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रखते हैं। ७९ और यदि तुम अपने भलाई करनेवालों ही के साथ भलाई करते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं। ८० और यदि तुम उसे उधार दो, जिससे फिर पाने की आशा रखते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी पापियों को उधार देते हैं, कि उतना ही फिर पाएँ। ८१ वरन् अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो, और फिर पाने की आस न रखकर उधार दो; और तुम्हारे लिये बड़ा फल होगा; और तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कपाल है। ८२ जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो। ८३ “दोष मत लगाओ; तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगा: दोषी न ठहराओ, तो तुम भी दोषी नहीं ठहराए जाओगे: क्षमा करो, तो तुम्हें भी क्षमा किया जाएगा। ८४ दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा: लोग पूरा नाम दबा-दबाकर और हिला-हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।” ८५ फिर उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा: “क्या अंधा, अंधे को मार्ग बता सकता है? क्या दोनों गड़ में नहीं सिरेंगे? ८६ चेला अपने गुण से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुण के समान होगा। ८७ तू अपने भाई की आँख के तिनके को क्यों देखता है, और अपनी ही आँख का लशा तुझे नहीं सज्जता? ८८ और जब तू अपनी ही आँख का लशा नहीं देखता, तो अपने भाई से कैसे कह सकता है, ‘हे भाई, ठहरा जा तेरी आँख से तिनके को निकाल दूँ?’ हे कपाटी, पहले अपनी आँख से लशा निकाल, तब जो तिनका तेरी भाई की आँख में है, भती भाँति देखकर निकाल सकेगा। ८९ “कोई अच्छा पेड़ नहीं, जो निकम्मा फल लाए, और न तो कोई निकम्मा पेड़ है, जो अच्छा फल लाए। ९० हर एक पेड़ अपने फल से पहचाना जाता है; क्योंकि लोग झाड़ियों से अंजीर नहीं तोड़ते, और न झड़बेरी से अंगूर। ९१ भला मनुष्य अपने मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य अपने मन के बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है; क्योंकि जो मन में भरा है वही उसके मुँह पर आता है। ९२ “जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे ‘हे प्रभु, हे प्रभु,’ कहते हो? ९३ जो कोई मेरे पास आता है, और मेरी बातें

सुनकर उहें मानता है, मैं तुम्हें बताता हूँ कि वह किसके समान है? १८ वह उस मनुष्य के समान है, जिसने घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चट्ठान में नीव डाली, और जब बाढ़ आई तो धारा उस घर पर ली, परन्तु उसे हिला न सकी; क्योंकि वह पक्का बना था। १९ परन्तु जो सुनकर नहीं मानता, वह उस मनुष्य के समान है, जिसने मिट्टी पर बिना नीव का घर बनाया। जब उस पर धारा लगी, तो वह तुरन्त पिर पड़ा, और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।”

२० जब वह लोगों को अपनी सारी बातें सुना चुका, तो कफरनहम में आया।

२१ और किसी सूबेदार का एक दास जो उसका प्रियथा, बीमारी से मरने पर था। २२ उसने वीशु की चर्चा सुनकर यहदियों के कई प्राचीनों को उससे यह विनती करने को उसके पास भेजा, कि आकर मेरे दास को चंगा कर। २३ वे वीशु के पास आकर उससे बड़ी विनती करके कहने लगे, “वह इस योग्य है, कि तु उसके लिये यह करे, २४ क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम रखता है, और उसी ने हमारे आराधनालय को बनाया है।” २५ वीशु उनके साथ-साथ चला, पर जब वह रथ से दूर न था, तो सूबेदार ने उसके पास कई मिट्टों के द्वारा कहला भेजा, “हे प्रभु दुख न उठा, क्योंकि मैं इस योग्य नहीं, कि तु मेरी छत के तले आए। २६ इसी कारण मैंने अपने आपको इस योग्य भी न समझा, कि तेरे पास आँऊ, पर वचन ही कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। २७ मैं भी पराधीन मनुष्य हूँ, और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक को कहता हूँ, ‘जा,’ तो वह जाता है, और दूसरे से कहता हूँ कि ‘आ,’ तो आता है; और अपने किसी दास को कि ‘यह कर,’ तो वह उसे करता है।” २८ यह सुनकर वीशु ने अचम्भा किया, और उसने मुँह फेरकर उस भीड़ से जो उसके पीछे आ रही थी कहा, “मैं तुम से कहता हूँ, कि मैंने इच्छाएँ मैं भी ऐसा विष्वास नहीं पाया।” २९ और भेजे हुए लोगों ने घर लौटकर, उस दास को चंगा पाया। ३० थोड़े दिन के बाद वह नाईन नाम के एक नगर को गया, और उसके चेले, और बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी। ३१ जब वह नगर के फाटक के पास पहुँचा, तो देखो, लोग एक मुर्दे को बाहर लिए जा रहे थे; जो अपनी माँ का एकलौता पुत्र था, और वह विधवा थी: और नगर के बहुत से लोग उसके साथ थे। ३२ उसे देखकर प्रभु को तरस आया, और उसने कहा, “मत रो।” ३३ तब उसने पास आकर अर्थी को छुआ; और उठानेवाले ठहर गए, तब उसने कहा, “हे जवान, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ!” ३४ तब वह मुर्दा उठ बैठा, और बोलने लगा: और उसने उसे उसकी माँ को सौप दिया। ३५ इसे सब पर भय छा गया; और वे परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, “हामरे बीच में एक बड़ा भविष्यद्वत्ता उठा है, और परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपादृष्टि की है।” ३६ और उसके विषय में यह बात सारे यहदिया और आस-पास के सारे देश में फैल गई। ३७ और यहना को उसके चेलों ने इन सब बातों का समाचार दिया। ३८ तब यहना ने अपने चेलों में से दो को बुलाकर प्रभु के पास यह पूछने के लिये भेजा, “क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी और दूसरे की प्रतीक्षा करे?” ३९ उसी घड़ी उसने बहुतों को बीमारियों और पीड़ाओं, और दुष्टामों से छुड़ाया; और बहुत से अंधों को अँखें दी। ४० और उसने उसे कहा, “जो कुछ तुम ने देखा और सुना है, जाकर यहना से कह दो; कि अथे देखते हैं, लँगड़े चलते फिरते हैं, कोही शुद्ध किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं, और मुर्दे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।” ४१ धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।” ४२ जब यहना के भेजे हुए लोग चल दिए, तो वीशु यहना के विषय में लोगों से कहने लगा, “तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को? ४३ तो तुम फिर क्या

देखने गए थे? क्या कोमल वस्त्र पहने हुए मनुष्य को? देखो, जो भड़कीला वस्त्र पहनते, और सुख-विलास से रहते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं। ४४ तो फिर क्या देखने गए थे? क्या किसी भविष्यद्वत्ता को? हाँ, मैं तुम से कहता हूँ, वरन् भविष्यद्वत्ता से भी बड़े को। ४५ यह बरी है, जिसके विषय में लिखा है: ‘देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे-आगे भेजता हूँ, जो तेरे आगे मार्ग सीधा करेगा।’

४६ “मैं तुम से कहता हूँ, कि जो श्रीयों से जन्मे हैं, उनमें से यहना से बड़ा कोई नहीं पर जो परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा है, वह उससे भी बड़ा है।” ४७ और सब साधारण लोगों ने सुनकर और चंगी लेनेवालों ने भी यहना का बपतिस्मा लेकर परमेश्वर को सच्चा मान लिया। ४८ पर फरीसियों और व्यवस्थापकों ने उससे बपतिस्मा न लेकर परमेश्वर की मनसा को अपने विषय में टाल दिया। ४९ “अतः मैं इस युग के लोगों की उपमा किस से दूँ कि वे किसके समान हैं? ५० वे उन बालकों के समान हैं जो बाजार में बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं, ‘हमने तुम्हारे लिये बाँसी बजाई, और तुम न नाचे, हमने विलाप किया, और तुम न रोए।’ ५१ क्योंकि यहना बपतिस्मा देनेवाला न रोटी खाता आया, न दाखरस पीता आया, और तुम कहते हो, उसमें दुष्टता है। ५२ मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया है, और तुम कहते हो, ‘देखो, पेट और पियकड़ मनुष्य, चुगी लेनेवालों का और पापियों का मित्र।’ ५३ पर जान अपनी सब सन्तानों से सच्चा ठहराया गया है।” ५४ फिर किसी फरीसी ने उससे विनती की, कि मेरे साथ भोजन कर; अतः वह उस फरीसी के घर में जाकर भोजन करने बैठा। ५५ वहाँ उस नगर की एक पापिनी छी यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई। ५६ और उसके पाँवों के पास, पीछे खड़ी होकर, रोती हुई, उसके पाँवों को आँसुओं से भिगाने और अपने सिर के बालों से पोछने लगी और उसके पाँव बार बार चूमकर उन पर इत्र मला। ५७ यह देखकर, वह फरीसी जिसने उसे बुलाया था, अपने मन में सोचने लगा, “यदि यह भविष्यद्वत्ता होता तो जान जाता, कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी छी है? क्योंकि वह तो पापिन है।” ५८ यह सुन वीशु ने उसके उत्तर में कहा, “हे शमैन, मुझे तुझ से कुछ कहना है।” ५९ वह बोला, “हे गुरु, कह।” ६० “किसी महाजन के दो देनदार थे, एक पाँच सौ, और दूसरा पचास दीनार देनदार था। ६१ जबकि उनके पास वापस लौटाने को कुछ न रहा, तो उसने दोनों को क्षमा कर दिया। अतः उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम रखेगा?” ६२ शमैन ने उत्तर दिया, “मेरी समझ में वह, जिसका उसने अधिक छोड़ दिया।” ६३ उसने उससे कहा, “तुमें ठीक विचार किया है।” ६४ और उस छी की ओर फिरकर उसने शमैन से कहा, “क्या तू इस छी को देखता है? मैं तेरे घर में आया परन्तु तेरे मौंप धोने के लिये पारी न दिया, पर इसने मेरे पाँव आँसुओं से भिगाए। और अपने बालों से पोछाए।” ६५ तेरे मूँझे चूमा न दिया, पर जब से मैं आया हूँ तब से इसने मेरे पाँवों का चूमाना न छोड़ा। ६६ तेरे मौंप पर तेल नहीं मला; पर इसने मेरे पाँवों पर इत्र मला है। ६७ “इसलिए मैं तुझ से कहता हूँ, कि इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया; पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।” ६८ और उसने छी से कहा, “तेरे पाप क्षमा हुए।” ६९ तब जो लोग उसके साथ भोजन करने बैठे थे, वे अपने-अपने मन में सोचने लगे, “यह कौन है जो पाँवों को भी क्षमा करता है?” ७० पर उसने छी से कहा, “तेरे विष्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा।”

७१ इसके बाद वह नगर-नगर और गँव-गँव प्रचार करता हुआ, और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ, फिरने लगा, और वे बारह उसके साथ

थे, २ और कुछ स्थियाँ भी जो दृष्टात्माओं से और बीमारियों से छुड़ाई गई थीं, और वे यह हैं मरियम जो मगदलीनी कहलाती थी, जिसमें से सात दृष्टात्माएं निकली थीं, ३ और हेरोदेस के भण्डारी खुजा की पत्री योअन्ना और सूसनाह और बहुत सी और स्थियाँ, ये तो अपनी सम्पत्ति से उसकी सेवा करती थीं। ४ जब बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई, और नगर-नगर के लोग उसके पास चले आते थे, तो उसने दृष्टान्त में कहा: “ “एक बोनेवाला बीज बोने निकला: बोते हुए कुछ मार्ग के निकारे गिरा, और रौद्रा गया, और आकाश के पश्चियों ने उसे चुप लिया। ५ और कुछ चट्टान पर गिरा, और उपजा, परन्तु नमी न मिलने से सूख गया। ६ कुछ झाड़ियों के बीच में पिरा, और झाड़ियों ने साथ-साथ बढ़कर उसे ढबा लिया। ७ और कुछ अच्छी भूमि पर गिरा, और उगाकर सौ गुणा फल लाया।” यह कहकर उसने ऊँचे शब्द से कहा, “जिसके सुनने के कान हों वह सुन लें।” ८ उसके चेलों ने उससे पूछा, “इस दृष्टान्त का अर्थ क्या है?” ९ उसने कहा, “तुम को परमेश्वर के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर औरों को दृष्टान्तों में सुनाया जाता है, इसलिए कि ‘वे देखते हुए भी न देखें, और सुनते हुए भी न समझें।’” १० “दृष्टान्त का अर्थ यह है: बीज तो परमेश्वर का बचन है। ११ मार्ग के निनारे के वे हैं, जिन्होंने सुना; तब शैतान आकर उनके मन में से वचन उठा ले जाता है, कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार पाएँ। १२ चट्टान पर के वे हैं, कि जब सुनते हैं, तो आनन्द से वचन को ग्रहण तो करते हैं, परन्तु जड़ न पकड़ने से वे थोड़ी देर तक विचास रखते हैं, और परीक्षा के समय बहक जाते हैं। १३ जो झाड़ियों में गिरा, यह वे हैं, जो सुनते हैं, पर आगे चलकर चिन्ना और धन और जीवन के सुख-विलास में फँस जाते हैं, और उनका फल नहीं पकता। १४ पर अच्छी भूमि में के वे हैं, जो वचन सुनकर भले और उत्तम मन में साधारणते रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं। १५ “कोई दिया जलाकर बरतन से नहीं ढूँकता, और न खाट के नीचे रखता है, परन्तु दीवाट पर रखता है, कि भीतर आनेवाले प्रकाश पाएं। १६ कुछ छिपा नहीं, जो प्रगट न हो; और न कुछ गुप है, जो जाना न जाए। और प्रगट न हो। १७ इसलिए सावधान रहो, कि तुम किस रीति से सुनते हो? क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा, जिसे वह अपना समझता है।” १८ उसकी माता और उसके बाईं पास आए, पर भीड़ के कारण उससे भेट न कर सके। १९ और उससे कहा गया, “तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हुए तुझ से मिलना चाहते हैं।” २० उसने उसके उत्तर में उनसे कहा, “मेरी माता और मेरे भाई ये ही हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं।” २१ फिर एक दिन वह और उसके चेले नाब पर चढ़े, और उनसे उनसे कहा, “आओ, झील के पार चलें।” अतः उन्होंने नाब खोल दी। २२ पर जब नाब चल रही थी, तो वह सो गया: और झील पर आँधी आई, और नाब पानी से भरने लगी और वे जोखिम में थे। २३ तब उन्होंने पास आकर उसे जगाया, और कहा, “स्वामी! स्वामी! हम नाश हुए जाते हैं।” तब उसने उठकर आँधी को और पानी की लहरों को ढूँटा और वे थम गए, और शान्त हो गया। २४ और उसने उनसे कहा, “तुम्हारा विच्वास कहाँ था?” पर वे डर गए, और अचम्भित होकर आपस में कहने लगे, “यह कौन है, जो आँधी और पानी को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी मानते हैं?” २५ फिर वे गिरासेनियों के देश में पहुँचे, जो उस पार गलील के सामने है। २६ जब वह किनारे पर उत्तरा, तो उस नगर का एक मनुष्य उसे मिला, जिसमें दृष्टात्माएं थी। और बहुत दिनों से न कपड़े पहनता था और न घर में रहता था वरन् कड़ों में रहा करता था। २७ वह यीशु को देखकर चिल्लाया, और उसके सामने गिरकर ऊँचे शब्द से कहा, “हे परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र यीशु! मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझ से विनती करता हूँ, मुझे पीड़ा न दो।” २८ क्योंकि वह उस

अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य में से निकलने की आज्ञा दे रहा था, इसलिए कि वह उस पर बार बार प्रबल होती थी। और यद्यपि लोग उसे जंजीरों और बेड़ियों से बाँधते थे, तो भी वह बन्धनों को तोड़ डालता था, और दृष्टात्मा उसे जंगल में भगाए फिरती थी। २९ यीशु ने उससे पूछा, “तेरा क्या नाम है?” उसने कहा, “सेना,” क्योंकि बहुत दृष्टात्माएं उसमें समा गई थीं। ३० और उन्होंने उससे विनती की, “हमें अथाह गहूँ में जाने की आज्ञा न दो।” (Abyssos g12) ३१ वहाँ पहाड़ पर सूर्यों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था, अतः उन्होंने उससे विनती की, “हमें उनमें समाने दो।” अतः उसने उन्हें जाने दिया। ३२ तब दृष्टात्माएं उस मनुष्य से निकलकर सूर्यों में समा गई और वह झुण्ड कड़ाड़े पर से झापटकर झील में जा गिरा और डब मरा। ३३ चरबाहे यह जो हुआ था देखकर भगे, और नगर में, और गाँवों में जाकर उसका समाचार कहा। ३४ और लोग यह जो हुआ था उसको देखने को निकले, और यीशु के पास आकर जिस मनुष्य से दृष्टात्माएं निकली थीं, उसे यीशु के पाँकों के पास कपड़े पहने और सचेत बैठे हुए पाकर डर गए। ३५ और देखनेवालों ने उनको बताया, कि वह दृष्टात्मा का सताया हुआ मनुष्य किस प्रकार अच्छा हुआ। ३६ तब गिरासेनियों के आस-पास के सब लोगों ने यीशु से विनती की, कि हमारे यहाँ से चला जा; क्योंकि उन पर बड़ा भय छा गया था। अतः वह नाव पर चढ़कर लौट गया। ३७ जिस मनुष्य से दृष्टात्माएं निकली थीं वह उससे विनती करने लगा, कि मुझे अपने साथ रहने दे, परन्तु यीशु ने उसे विदा करके कहा। ३८ “अपने घर में लौट जा और लोगों से कह दे, कि परमेश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े-बड़े काम किए हैं।” वह जाकर सारे नगर में प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े-बड़े काम किए। ३९ जब यीशु लौट रहा था, तो लोग उससे आनन्द के साथ मिले; क्योंकि वे सब उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। ४० और देखो, याइर नाम एक मनुष्य जो आराधनालय का सरदार था, आया, और यीशु के पाँकों पर गिरकर उससे विनती करने लगा, “मेरे घर चला।” ४१ क्योंकि उसके बारह वर्ष की एकलौती बेटी थी, और वह मरने पर थी। जब वह जा रहा था, तब लोग उस पर गिरे पड़ते थे। ४२ और एक स्त्री ने जिसको बारह वर्ष से लह बहने का रोग था, और जो अपनी सारी जीविका वैयों के पीछे व्यव यक चुकी थी और फिर भी किसी के हाथ से चंगी न हो सकी थी, ४३ पीछे से आकर उसके बक्क के आँचल को छुआ, और तुरन्त उसका लह बहना थम गया। ४४ इस पर यीशु ने कहा, “मुझे किसने छुआ?” जब सब मुकरने लगे, तो पतरस और उसके साथियों ने कहा, “हे स्वामी, तुझे तो भीड़ दबा रही है और तुझ पर गिरी पड़ती है।” ४५ परन्तु यीशु ने कहा, “किसी ने मुझे छुआ है क्योंकि मैंने जान लिया है कि मुझे मैं से सामर्थ्य निकली है।” ४६ जब स्त्री ने देखा, कि मैं छिप नहीं सकती, तब काँपती हुई आई, और उसके पाँकों पर गिरकर सब लोगों के सामने बताया, कि मैंने किस कारण से तुझे छुआ, और कैसे तुरन्त चंगी हो गई। ४७ उसने उससे कहा, “पुरी तेरे विच्वास ने तुझे चंगा किया है, कृश्ण से चंली जा।” ४८ वह यह कह ही रहा था, कि किसी ने आराधनालय के सरदार के यहाँ से आकर कहा, “तेरी बेटी मर गई: गुरु को दुख न दे।” ४९ यीशु ने सुनकर उसे उत्तर दिया, “मत डर; केवल विच्वास रख; तो वह बच जाएगी।” ५० घर में आकर उसने पतरस, और यूहन्ना, और याकूब, और लड़की के माता-पिता को छोड़ और किसी को अपने साथ भीतर आने न दिया। ५१ और सब उसके लिये रो पीट रहे थे, परन्तु उसने कहा, “रोओ मत; वह मरी नहीं परन्तु सो रही है।” ५२ वे यह जानकर, कि मर गई है, उसकी हँसी करने लगे। ५३ परन्तु उसने उसका हाथ पकड़ा, और उपकारक कहा, “हे लड़की उठ!” ५४ तब उसके प्राण लौट आए और वह तुरन्त उठी; फिर उसने आज्ञा दी, कि उसे कुछ खाने को दिया जाए। ५५

उसके माता-पिता चकित हुए, परन्तु उसने उन्हें चेतावनी दी, कि यह जो हुआ है, किसी से न कहना।

१ फिर उसने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टामाओं और बीमारियों को दूर करने की सामर्थ्य और अधिकार दिया। २ और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने, और बीमारों को अच्छा करने के लिये भेजा। ३ और उसने उसे कहा, “मार्ग के लिये कुछ न लेना: न तो लाठी, न झोली, न रोटी, न समये और न दो-दो कुर्ते। ४ और जिस किसी घर में तुम उतरो, वही रहो, और वही से बिडा हो। ५ जो कोई तुम्हें ग्रहण न करेगा उस नार से निकलते हुए अपने पाँवों की धूल झांड डालो, कि उन पर गवाही हो।” ६ अतः वे निकलकर गाँव-गाँव सुसमाचार सुनते, और हर कहीं लोगों को चंगा करते हुए फिरे रहे। ७ और देश की चौथाई का राजा हेरोदेस यह सब सुनकर घबरा गया, क्योंकि कितनों ने कहा, कि यहना मेरे हांओं में से जी उठा है। ८ और कितनों ने यह, कि एलियाह दिखाई दिया है: औरों ने यह, कि पुराने भविष्यद्वत्ताओं में से कोई जी उठा है। ९ परन्तु हेरोदेस ने कहा, “यहना का तो मैंने सिर कटवाया अब यह कौन है, जिसके विषय में ऐसी बातें सुनता हूँ?” और उसने उसे देखने की इच्छा की। १० फिर प्रेरितों ने लौटकर जो कुछ उन्होंने किया था, उसको बता दिया, और वह उन्हें अलग करके बैतैसैदा नामक एक नगर को ले गया। ११ यह जानकर भीड़ उसके पांछे हो ली, और वह आनन्द के साथ उनसे मिला, और उनसे परमेश्वर के राज्य की बातें करने लगा, और जो चंगे होना चाहते थे, उन्हें चंगा किया। १२ जब दिन ढलने लगा, तो बारहों ने आकर उससे कहा, “भीड़ को विदा कर, कि चारों ओर के गाँवों और बासियों में जाकर अपने लिए रहने को स्थान, और भोजन का उपाय करें, क्योंकि हम यहाँ सुनसान जगह में हैं।” १३ उसने उनसे कहा, “तुम ही उन्हें खाने को दो।” उन्होंने कहा, “हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो मछली को छोड़ और कुछ नहीं; परन्तु हाँ, यदि हम जाकर इन सब लोगों के लिये भोजन मोल लें, तो हो सकता है।” १४ (क्योंकि वहाँ पांच लगभग पाँच हजार पुस्त थे।) और उसने अपने चेलों से कहा, “उन्हें पचास-पचास करके पाँति में बैठा दो।” १५ उन्होंने ऐसा ही किया, और सब को बैठा दिया। १६ तब उसने वे पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं, और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया, और तोड़-तोड़कर चेलों को देता गया कि लोगों को परोसें। १७ अतः सब खाकर तुम हुए, और बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरकर उठाई। १८ जब वह एकान्त में प्रार्थना कर रहा था, और चेले उसके साथ थे, तो उसने उनसे पूछा, “लोग मुझे क्या कहते हैं?” १९ उन्होंने उत्तर दिया, “यहना बपतिस्मा देनेवाला, और कोई-कोई एलियाह, और कोई यह कि पुराने भविष्यद्वत्ताओं में से कोई जी उठा है।” २० उसने उनसे पूछा, “परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?” परन्तु ने उत्तर दिया, “परमेश्वर का मरीह।” २१ तब उसने उन्हें चेतावनी देकर कहा, “यह किसी से न कहना।” २२ और उसने कहा, “मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुःख उठाए, और पुनर्निए और प्रधान याजक और शारी उसे उच्छ समझकर मार डालें, और वह तीसरे दिन जी उठे।” २३ उसने सबसे कहा, “यदि कोई मेरे पांछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रस उठाए हुए मेरे पांछे हो ले। २४ क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा। परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा। २५ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपना प्राण खो दे, या उसकी हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? २६ जो कोई मुझसे और मेरी बातों से लजाएगा; मनुष्य का पुत्र भी जब अपनी, और अपने पिता की, और पवित्र स्वर्गदूतों की, महिमा

सहित आएगा, तो उससे लजाएगा। २७ मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कोई-कोई ऐसे हैं कि जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद न चर्खेंगे।” २८ इन बातों के कोई आठ दिन बाद वह पतरस, और यूहन्ना, और याकूब को साथ लेकर प्रार्थना करने के लिये पहाड़ पर गया। २९ जब वह प्रार्थना कर ही रहा था, तो उसके चेहरे का स्पष्ट बदल गया, और उसका बब्ल श्वेत होकर चमकने लगा। ३० तब, मूसा और एलियाह, ये दो पुस्त उसके साथ बातें कर रहे थे। ३१ ये महिमा सहित दिखाई दिए, और उसके मरने की चर्चा कर रहे थे, जो यस्तलेम में होनेवाला था। ३२ पतरस और उसके साथी नीद से थेरे थे, और जब अच्छी तरह सचेत हुए, तो उसकी महिमा; और उन दो पुस्तों को, जो उसके साथ खड़े थे, देखा। ३३ जब वे उसके पास से जाने लगे, तो पतरस ने यीश से कहा, “हे स्वामी, हमारा यहाँ रहना भला है: अतः हम तीन मण्डप बनाएँ, एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलियाह के लिये।” वह जानता न था, कि क्या कह रहा है। ३४ वह यह कह ही रहा था, कि एक बादल ने आकर उन्हें छा लिया, और जब वे उस बादल से घिरने लगे, तो डर गए। ३५ और उस बादल में से यह शब्द निकला, “यह मेरा पुत्र और मेरा चुना हुआ है, इसकी सुनो।” ३६ यह शब्द होते ही यीश अंकला पाया गया; और वे चुप रहे, और जो कुछ देखा था, उसकी कोई बात उन दिनों में किसी से न कही। ३७ और दूसरे दिन जब वे पहाड़ से उतरे, तो एक बड़ी भीड़ उससे आ मिली। ३८ तब, भीड़ में से एक मनुष्य ने चिल्लाकर कहा, “हे गुरु, मैं तुझ से विनती करता हूँ, कि मेरे पुत्र पर कृपादृष्टि कर; क्योंकि वह मेरा एकलौता है।” ३९ और देख, एक दुष्टामा उसे पकड़ती है, और वह एकाएक चिल्ला उठता है; और वह उसे ऐसा मरोड़ती है, कि वह मूँह में फेन भर लाता है; और उसे कुचलकर कठिनाई से छोड़ती है। ४० और मैंने तेरे चेलों से विनती की, कि उसे निकालें; परन्तु वे न निकाल सके।” ४१ यीश ने उत्तर दिया, “हे अविवासी और हठीते लोगों, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा, और तुम्हारी सहँगा? अपने पुत्र को यहाँ ले आ।” ४२ वह आ ही रहा था कि दुष्टामा ने उसे पटककर मरोड़ा, परन्तु यीश ने अशुद्ध आत्मा को डाँटा और लड़के को अच्छा करके उसके पिता को सौंप दिया। ४३ तब सब लोग परमेश्वर के महासामर्थ्य से चकित हुए। परन्तु जब सब लोग उन सब कामों से जो बह करता था, अचम्भा कर रहे थे, तो उन्होंने अपने चेलों से कहा, ४४ “ये बातें तुम्हारे कानों में पड़ी रहें, क्योंकि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाने को है।” ४५ परन्तु वे इस बात को न समझते थे, और यह उनसे छिपी रही; कि वे उसे जानने न पाएँ, और वे इस बात के विषय में उससे पूछने से डरते थे। ४६ फिर उनमें यह विचाद होने लगा, कि हम में से बड़ा कौन है? ४७ पर यीश ने उनके मन का विचार जान लिया, और एक बालक को लेकर अपने पास खड़ा किया, ४८ और उनसे कहा, “जो कोई मेरा नाम से इस बालक को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है, क्योंकि जो तुम में सभसे छोटे से छोटा है, वही बड़ा है।” ४९ तब यूहन्ना ने कहा, “हे स्वामी, हमने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टामाओं को निकालते देखा, और हमने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारे साथ होकर तेरे पांछे नहीं हो लेता।” ५० यीश ने उससे कहा, “उसे मना मत करो; क्योंकि जो तुम्हारे विरोध में नहीं, वह तुम्हारी ओर है।” ५१ जब उसके ऊपर उठाए जाने के दिन पूरे होने पर थे, तो उन्हें यस्तलेम को जाने का विचार ढूँढ़ा किया। ५२ और उसने अपने दूसरे भेजे: वे सामरियों के एक गाँव में गए, कि उसके लिये जगह तैयार करें। ५३ परन्तु उन लोगों ने उसे उतरने न दिया, क्योंकि वह यस्तलेम को जा रहा था। ५४ यह देखकर उसके चेले याकूब और यूहन्ना ने कहा, “हे प्रभु;

क्या तू चाहता है, कि हम आज्ञा दें, कि आकाश से आग पिरकर उन्हें भस्म कर दें?” ५५ परन्तु उसने फिरकर उन्हें डाँटा [और कहा, “तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो। क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के प्राणों को नाश करने नहीं वरन् बचाने के लिये आया है।”] ५६ और वे किसी और गाँव में चले गए। ५७ जब वे मार्ग में चले जाते थे, तो किसी ने उससे कहा, “जहाँ-जहाँ तु जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लौँगा।” ५८ यीशु ने उससे कहा, “लोमाइडियों के भट और आकाश के पक्षियों के बर्सेर होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर रखने की भी जगह नहीं।” ५९ उसने दूसरे से कहा, “मेरे पीछे हो लो।” उसने कहा, “हे प्रभु, मुझे पहले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूँ।” ६० उसने उससे कहा, “मेरे हूओं को अपने मर्द गड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना।” ६१ एक और ने भी कहा, “हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लौँगा; पर पहले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से विदा हो आऊँ।” ६२ यीशु ने उससे कहा, “जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।”

१० और इन बातों के बाद प्रभु ने सतर और मनुष्य नियुक्त किए और जिस-
जिस नगर और जगह को वह आप जाने पर था, वहाँ उन्हें दो-दो करके अपने आगे भेजा। ३ और उसने उनसे कहा, “पके खेत बहुत हैं; परन्तु मजदूर थोड़े हैं इसलिए खेत के स्वामी से विनाई करो, कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज दे। ४ जाओ; देखों मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ।” ५ इसलिए न बटुआ, न झोली, न जते लो; और न मार्ग में किसी को नमस्कार करो। ६ जिस किसी घर में जाओ, पहले कहो, ‘‘इस घर पर कल्याण हो।’’ ७ यदि वहाँ कोई कल्याण के योग्य होगा; तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा, नहीं तो तुम्हारे पास लौट आएगा। ८ उसी घर में रहो, और जो कुछ उनसे मिले, वही खाओ-पीओ, क्योंकि मजदूर को अपनी मजदूरी मिलनी चाहिए; घर-घर न फिरना। ९ और जिस नगर में जाओ, और वहाँ के लोग तुम्हें उतरें, तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए वही खाओ। १० वहाँ के बीमारों को चंगा करो: और उनसे कहो, ‘‘परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।’’ ११ परन्तु जिस नगर में जाओ, और वहाँ के लोग तुम्हें ग्रहण न करें, तो उसके बाजारों में जाकर कहो, १२ ‘‘तुम्हारे नगर की धूल भी, जो हमारे पांवों में लगी है, हम तुम्हारे सामने झाड़ देते हैं, फिर भी यह जान लो, कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।’’ १३ मैं तुम से कहता हूँ, कि उस दिन उस नगर की दशा से सदोम की दशा अधिक सहने योग्य होगी। १४ ‘‘हाय खुराजीन! हाय बैतसैदा! जो सामर्थ्य के काम तुम में किए गए, यदि वे सोर और सीदोन में किए जाते, तो टाट ओढ़कर और राख में बैठकर वे कब के मन फिराते। १५ परन्तु न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सोर और सीदोन की दशा अधिक सहने योग्य होगी।” १६ और हे कफरनहम, क्या तू स्वर्ग तक ऊँचा किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा। (Hadess g86) १७ “जो तुम्हारी सनता है, वह मेरी सनता है, और जो तुम्हें तुच्छ जानता है, वह मुझे तुच्छ जानता है; और जो मुझे तुच्छ जानता है, वह मेरे भेजनेवाले को तुच्छ जानता है।” १८ वे सतर अनन्द से फिर आकर कहने लगे, “हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टामा भी हमारे वश में है।” १९ उसने उनसे कहा, “मैं जैतान को बिजली के समान स्वर्ग से पिरा हुआ देख रहा था। २० मैंने तुम्हें सौंपों और बिच्छुओं को रौदनेका, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी। २१ तो भी इससे आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुम्हारे वश में है, परन्तु इससे आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।” २२ उसी घड़ी वह पवित्र आत्मा में होकर आनन्द से भर गया, और कहा, “हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, कि तूने इन-

बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया, हाँ, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। २३ मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंप दिया है; और कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है, केवल पुत्र के और वह जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे।” २४ और चेलों की ओर मुड़कर अकेले मैं कहा, “धन्य हैं वे आँखें, जो ये बातें जो तुम देखते हो देखती हैं, २५ क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि बहुत से भविष्यद्वाकाओं और राजाओं ने चाहा, कि जो बातें तुम देखते हो देखें; पर न देखी और जो बातें तुम सुनते हो सुनें, पर न सुनी।”

२६ तब एक व्यवस्थापक उठा; और यह कहकर, उसकी परीक्षा करने लगा, “हे गुरु, अनन्त जीवन का वारिस होने के लिये मैं क्या करूँ?” (aiōnios g166) २७ उसने उससे कहा, “व्यवस्था में क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है?”

२८ उसने उत्तर दिया, “तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने जैसा प्रेम रख।” २९ उसने उससे कहा, “तू ठीक उत्तर दिया, यही कर तो तू जीवित रहेगा।” ३० परन्तु उसने अपने आपको धर्मी ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा, “तू मेरा पड़ोसी कौन है?” ३१ यीशु ने उत्तर दिया “एक मनुष्य यस्तलिम से यरीहों को जा रहा था, कि डाकुओं ने घेरकर उसके काड़े उतार लिए, और मारपीट कर उसे अधमरा छोड़कर चले गए। ३२ और ऐसा हुआ कि उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था, परन्तु उसे देखकर कतराकर चला गया। ३३ इसी रीति से एक लेवीउस जगह पर आया, वह भी उसे देखकर कतराकर चला गया। ३४ परन्तु एक सामरीयांत्री वहाँ आ निकला, और उसे देखकर तरस खाया। ३५ और उसके पास आकर और उसके घावों पर तेल और दाखरस डालकर पटियाँ बांधी, और अपनी सवारी पर चढ़ाकर सराय में ले गया, और उसकी सेवा ठहल की। ३६ दूसरे दिन उसने दो दीनार निकालकर सराय के मालिक को दिए, और कहा, ‘‘इसकी सेवा ठहल करना, और जो कुछ तेरा और लगेगा, वह मैं लौटने पर तुझे दे दूँगा।’’ ३७ अब तेरी समझ में जो डाकुओं में पिर गया था, इन तीनों में से उसका पड़ोसी कौन ठहरा?” ३८ उसने कहा, “वही जिसने उस पर तरस खाया।” यीशु ने उससे कहा, “जा, तू भी ऐसा ही कर।” ३९ फिर जब वे जा रहे थे, तो वह एक गाँव में गया, और मार्था नाम एक द्वीपी ने उसे अपने घर में स्वागत किया। ४० और मरियम नामक उसकी एक बहन थी; वह प्रभु के पाँवों के पास बैठकर उसका बचन सुनती थी। ४१ परन्तु मार्था सेवा करते-करते घबरा गई और उसके पास आकर कहने लगी, “हे प्रभु, क्या तूझे कुछ भी चिन्ता नहीं कि मेरी बहन ने मुझे सेवा करने के लिये अकेली ही छोड़ दिया है? इसलिए उससे कह, मेरी सहायता करे।” ४२ प्रभु ने उसे उत्तर दिया, “मार्था, हे मार्था; तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है। ४३ परन्तु एक बात अवश्य है, और उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है: जो उससे छीना न जाएगा।”

११ फिर वह किसी जगह प्रार्थना कर रहा था। और जब वह प्रार्थना कर चुका, तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा, “हे प्रभु, जैसे यहना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया वैसे ही हमें भी तू सिखा दे।” ४४ उसने उससे कहा, “जब तुम प्रार्थना करो, तो कहो: ‘हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए।’ ४५ ‘हमारी दिन भर की रोटी हर दिन हमें दिया कर।’ ४६ ‘और हमारे पापों को क्षमा कर, क्योंकि हम भी अपने हर एक अपराधी को क्षमा करते हैं, और हमें परीक्षा में ला ला।’” ४७ और उसने उनसे कहा, “तुम मैं से कौन है कि उसका एक मित्र हो, और वह आधी रात को उसके पास जाकर उससे कहे, ‘हे मित्र, मुझे तीन रोटियाँ दे।’ ४८ क्योंकि एक यात्री मित्र मैं पास आया है, और उसके आगे रखने के लिये मैं पास कुछ नहीं है।” ४९ और वह

भीतर से उत्तर देता, कि मुझे दुःख न दे; अब तो द्वार बन्द है, और मेरे बालक मेरे पास बिछौने पर है, इसलिए मैं उठकर तुझे दे नहीं सकता। ८४ मैं तुम से कहता हूँ, यदि उसका मित्र होने पर भी उसे उठकर न दे, फिर भी उसके लज्जा छोड़कर माँगने के कारण उसे जितनी आवश्यकता हो उतनी उठकर देगा। ८५ और मैं तुम से कहता हूँ, कि माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा। ८६ क्योंकि जो कोई माँगता है, उसे मिलता है; और जो ढूँढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा। ८७ तुम मैं से ऐसा कौन पिता होगा, कि जब उसका पुत्र रोटी माँगे, तो उसे पथर दे: या मछली माँगे, तो मछली के बदले उसे साँप दे? ८८ या अण्डा माँगे तो उसे बिच्छू दे? ८९ अतः जब तम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा।” ९० फिर उसने एक गौँथी दुष्टात्मा को निकाला; जब दुष्टात्मा निकल गई, तो गौँथा बोलने लगा, और लोगों ने अचम्भा किया। ९१ परन्तु उनमें से कितनों ने कहा, “यह तो दुष्टात्माओं के प्रधान शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।” ९२ औरों ने उसकी परीक्षा करने के लिये उससे आकाश का एक चिन्ह माँगा। ९३ परन्तु उसने, उनके मन की बातें जानकर, उनसे कहा, “जिस-जिस राज्य में फूट होती है, वह राज्य उजड़ जाता है; और जिस घर में फूट होती है, वह नाश हो जाता है।” ९४ और यदि शैतान अपना ही विरोधी हो जाए, तो उसका राज्य कैसे बना रहेगा? क्योंकि तुम मेरे विषय में तो कहते हो, कि यह शैतान की सहायता से दुष्टात्मा से निकालता है। ९५ भला यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो तुम्हारी सन्तान किसकी सहायता से निकालते हैं? इसलिए वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएँगे। ९६ परन्तु यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ्य से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा। ९७ जब बलवन्त मनुष्य हथियार बांधे हुए अपने घर की रखवाली करता है, तो उसकी सम्पत्ति बची रहती है। ९८ पर जब उससे बढ़कर कोई और बलवन्त चढ़ाई करके उसे जीत लेता है, तो उसके बे हथियार जिन पर उसका भरोसा था, छीन लेता है और उसकी सम्पत्ति लटक बाँट देता है। ९९ जो मेरे साथ नहीं वह मेरे विरोध में है, और जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह बिखेरता है। १० “जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है तो सूखी जगहों में विश्राम ढूँढ़ती फरती है, और जब नहीं पाती तो कहती है, कि मैं अपने उसी घर में जहाँ से निकली थी लौट जाऊँगी।” ११ और आकर उसे झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है। १२ तब वह आकर अपने से और बूरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे उसमें समाकर वास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है।” १३ जब वह ये बातें कह ही रहा था तो भीड़ में से किसी भी ने ऊँचे शब्द से कहा, “धन्य है वह गर्भ जिसमें रु रुहा और वे स्तन, जो तुने क्षूसे।” १४ उसने कहा, “हाँ; परन्तु धन्य वे हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं।” १५ जब बड़ी भीड़ इकट्ठी होती जाती थी तो वह कहने लगा, “इस युग के लोग बुरे हैं; वे चिन्ह ढूँढ़ते हैं, पर योना के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उहँने न दिया जाएगा।” १६ जैसा योना नीनवे के लोगों के लिये चिन्ह ठहरा, वैसा ही मनुष्य का पुत्र भी इस युग के लोगों के लिये ठहरेगा। १७ दक्षिण की रानी न्याय के दिन इस समय के मनुष्यों के साथ उठकर, उहँने दोषी ठहराएँगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने को पृथ्वी की छोर से आई, और देखो यहाँ वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है। १८ नीनवे के लोग न्याय के दिन इस समय के लोगों के साथ खड़े होकर, उहँने दोषी ठहराएँगे; क्योंकि उहँने योना का प्रचार सुनकर मन फिराया और देखो, यहाँ वह है, जो योना से भी बड़ा है। १९ “कोई मनुष्य

दीया जला के तलघर में, या पैमाने के नीचे नहीं रखता, परन्तु दीवट पर रखता है कि भीतर आनेवाले उजियाला पाएँ। २० तेर शरीर का दीया तेरी आँख है, इसलिए जब तेरी आँख निर्मल है, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला है; परन्तु जब वह बुरी है, तो तेरा शरीर भी अंधेरा है। २१ इसलिए सावधान रहना, कि जो उजियाला तुझ में है वह अंधेरा न हो जाए। २२ इसलिए यदि तेरा सारा शरीर उजियाला हो, और उसका कोई भाग अंधेरा न रहे, तो सब का सब ऐसा उजियाला होगा, जैसा उस समय होता है, जब दीया अपनी चमक से तुझे उजाला देता है।” २३ जब वह बातें कर रहा था, तो किसी फरीसी ने उससे बिनती की, कि मेरे यहाँ भोजन कर; और वह भीतर जाकर भोजन करने बैठ। २४ फरीसी ने यह देखकर अचम्भा किया कि उसने भोजन करने से पहले हाथ-पैर नहीं धोये। २५ प्रभु ने उससे कहा, “हे फरीसियों, तुम कटौरे और थाली को ऊपर-ऊपर तो मौजते हो, परन्तु तुम्हारे भीतर अंधेरे और दुष्टा भरी है। २६ हे निर्बुद्धियों, जिसने बाहर का भाग बनाया, क्या उसने भीतर का भाग नहीं बनाया? २७ परन्तु हाँ, भीतरवाली बस्तुओं को दान कर दो, तब सब कुछ तुम्हारे लिये शुद्ध हो जाएगा। २८ “पर हे फरीसियों, तुम पर हाय! तुम पोदीने और सुदाब का, और सब भाँति के साग-पात का दसवाँ अंश देते हो, परन्तु न्याय को और परमेश्वर के प्रेम को टाल देते हो; चाहिए तो था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते।” २९ हे फरीसियों, तुम पर हाय! तुम आराधनालायों में मुख्य-मुख्य आसन और बाजारों में नमस्कर चाहते हो। ३० हाय तुम पर! क्योंकि तुम उन छिपी कब्रों के समान हो, जिन पर लोग चलते हैं, परन्तु नहीं जानते।” ३१ तब एक व्यवस्थापक ने उसको उत्तर दिया, “हे गुरु, इन बातों के कहने से तू हमारी निन्दा करता है।” ३२ उसने कहा, “हे व्यवस्थापकों, तुम पर भी हाय! तुम ऐसे बोझ जिनको उठाना कठिन है, मनुष्यों पर लादते हो परन्तु तुम आप उन बोझों को अपनी एक उँगली से भी नहीं छुते। ३३ हाय तुम पर! तुम उन भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें बनाते हो, जिन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने मार डाला था। ३४ अतः तुम गवाह हो, और अपने पूर्वजों के कामों से सहमत हो; क्योंकि उन्होंने तो उन्हें मार डाला और तुम उनकी कब्रें बनाते हो। ३५ इसलिए परमेश्वर की बुद्धि ने भी कहा है, कि मैं उनके पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को भेज़ूँगी, और वे उनमें से कितनों को मार डालेंगे, और कितनों को सताएँगे। ३६ ताकि जितने भविष्यद्वक्ताओं का लह जगत की उत्पत्ति से बहाया गया है, सब का लेखा, इस युग के लोगों से लिया जाए, ३७ हाविल की हत्या से लेकर जकर्याह की हत्या तक जो वेदी और मन्दिर के बीच में मार गया: मैं तुम से सच कहता हूँ, उसका लेखा इसी समय के लोगों से लिया जाएगा। ३८ हाय तुम व्यवस्थापकों पर! कि तुम ने ज्ञान की कुँजीले तो ली, परन्तु तुम ने आप ही प्रवेश नहीं किया, और प्रवेश करनेवालों को भी रोक दिया।” ३९ जब वह वहाँ से निकला, तो शारीरी और फरीसी बहुत पीछे पड़ गए और छेड़ने लगे, कि वह बहुत सी बातों की चर्चा करे, ४० और उसकी घात में लगे रहे, कि उसके मुँह की कोई बात पकड़ें।

१२ इतने में जब हजारों की भीड़ लग गई, यहाँ तक कि एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे, तो वह सबसे पहले अपने चेलों से कहने लगा, “फरीसियों के कपरस्पी खमीर से सावधान रहना। १ कुछ ढैंपा नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा। २ इसलिए जो कुछ तुम ने अंधेरे में कहा है, वह उजाले में सुना जाएगा; और जो तुम ने भीतर के कमरों में कानों कान कहा है, वह छतों पर प्रचार किया जाएगा। ३ “परन्तु मैं तुम से जो मेरे मित्र होता हूँ, कि जो शरीर को मार सकते हैं और उससे ज्यादा और कुछ नहीं कर सकते, उनसे मत डरो। ४ मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि तुम्हें किस से

डरना चाहिए, मरने के बाद जिसको नरक में डालने का अधिकार है, उसी से डरो; वरन् मैं तुम से कहता हूँ उसी से डरो। (Geenna g1067) ६ क्या दो पैसे की पाँच गैरेयाँ नहीं बिकती? फिर भी परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं भूलता। ७ वरन् तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं, अतः डरो नहीं, तुम बहुत गैरेयों से बढ़कर हो। ८ ‘मैं तुम से कहता हूँ जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा उसे मनुष्य का पुत्र भी परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने मान लेगा। ९ परन्तु जो मनुष्यों के सामने मुझे इन्कार करे उसका परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने इन्कार किया जाएगा। १० “जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहे, उसका वह अपराध क्षमा किया जाएगा। परन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करे, उसका अपराध क्षमा नहीं किया जाएगा। ११ “जब लोग तुम्हें आराधनालयों और अधिपतियों और अधिकारियों के सामने ले जाएँ, तो चिन्ता न करना कि हम किस रीति से या क्या उत्तर दें, या क्या कहें। १२ क्योंकि पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम्हें सीखा देगा, कि क्या कहना चाहिए।” १३ फिर भीड़ में से एक ने उससे कहा, “हे गुरु, मैं भाई से कह, कि पिता की सम्पत्ति मुझे बांट दे।” १४ उसने उससे कहा, “हे मनुष्य, किसने मुझे तुम्हारा न्यायी या बाँटनेवाला नियुक्त किया है?” १५ और उसने उनसे कहा, “सावधान रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आपको बचाए रखो; क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहतायत से नहीं होता।” १६ उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा, “किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। १७ तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूँ, क्योंकि मैं यहाँ जगह नहीं, जहाँ अपनी उपज इत्यादि रखूँ। १८ और उसने कहा, “मैं यह करूँगा: मैं अपनी बखारियाँ तोड़कर उनसे बड़ी बनाऊँगा; और वहाँ अपना सब अन्न और सम्पत्ति रखूँगा; १९ और अपने प्राण से कहूँगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत सम्पत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह।” २० परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, ‘‘हे मूर्ख! इरी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा; तब जो कुछ तौरे इकट्ठा किया है, वह किसका होगा?’’ २१ ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।” २२ फिर उसने अपने चेलों से कहा, “इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, अपने जीवन की चिन्ता न करो, कि हम क्या खाएँगे; न अपने शरीर की, कि क्या पहरेंगे। २३ क्योंकि भोजन से प्राण, और बस्त्र से शरीर बढ़कता है। २४ कौवों पर ध्यान दो; वे न बोते हैं, न काटते; न उनके भण्डार और न खत्ता होता है, फिर भी परमेश्वर उन्हें खिलाता है। तुम्हारा मूल्य पक्षियों से कहीं अधिक है २५ तुम में से ऐसा कौन है, जो चिन्ता करने से अपने जीवनकाल में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? २६ इसलिए यदि तुम सबसे छोटा क्रम भी नहीं कर सकते, तो और बातों के लिये क्यों चिन्ता करते हो? २७ सोसनों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न परिश्रम करते, न काटते हैं; फिर भी मैं तुम से कहता हूँ, कि सुलैमान भी अपने सारे वैभव में, उनमें से किसी एक के सामान बस्त्र पहने हुए न था। २८ इसलिए यदि परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है, और कल भट्टी में झोंकी जाएगी, ऐसा पहनाएगा; तो हे अल्पविश्वासियों, वह तुम्हें अधिक क्यों न पहनाएगा? २९ और तुम इस बात की खोज में न रहो, कि क्या खाएँगे और क्या पीएँगे, और न सन्देह करो। ३० क्योंकि संसार की जातियाँ इन सब बस्तुओं की खोज में रहती हैं और तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें इन बस्तुओं की आवश्यकता है। ३१ परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये बस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी। ३२ “हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे। ३३ अपनी सम्पत्ति बेचकरदान कर दो; और अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात् स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं, जिसके निकट चोर नहीं जाता, और

कीड़ा नाश नहीं करता। ३४ क्योंकि जहाँ तुम्हारा धन है, वहाँ तुम्हारा मन भी लगा रहेगा। ३५ “तुम्हारी कमर बंधी रहें, और तुम्हरे दीये जलते रहें। ३६ और तुम उन मनुष्यों के समान बनो, जो अपने स्वामी की प्रतीक्षा कर रहे हों, कि वह विवाह से कब लौटेगा; कि जब वह आकर द्वार खटखटाएँ तो तुरन्त उसके लिए खोल दें। ३७ धन्य है वे दास, जिहें स्वामी आकर जागते पाएँ; मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वह कमर बाँधकर उन्हें भोजन करने को बैठाएगा, और पास आकर उनकी सेवा करेगा। ३८ यदि वह रात के दूरे पहर या तीसरे पहर में आकर उन्हें जागते पाएँ, तो वे दास धन्य हैं। ३९ परन्तु तुम यह जान रखो, कि यदि घर का स्वामी जानता, कि चोर किस घड़ी आएगा, तो जागता रहता, और अपने घर में सेध लगने न देता। ४० तुम भी तैयार रहो; क्योंकि जिस घड़ी तुम सोचते भी नहीं, उस घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।” ४१ तब पतरस ने कहा, “हे प्रभु, क्या यह दृष्टान्त त हम ही से या सबसे कहता है।” ४२ प्रभु ने कहा, “वह विश्वासयोग और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिसका स्वामी उसे नौकर-चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर भोजन सामग्री दे। ४३ धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए। ४४ मैं तुम से सच कहता हूँ; वह उसे अपनी सब सम्पत्ति पर अधिकारी ठहराएगा। ४५ परन्तु यदि वह दास सोचने लगे, कि मेरा स्वामी अनें मैं देर कर रहा है, और दासों और दासियों को मारने-पीटने और खाने-पीने और पियककड़ होने लगे। ४६ तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन, जब वह उसकी प्रतीक्षा न कर रहा हो, और ऐसी घड़ी जिसे वह जानता न हो, आएगा और उसे भारी ताड़ना देकर उसका भाग विश्वासयाती के साथ ठहराएगा। ४७ और वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था, और तैयार न रहा और न उसकी इच्छा के अनुसार चला, बहुत मार खाएगा। ४८ परन्तु जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे वह थोड़ी मार खाएगा, इसलिए जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मँगा जाएगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत लिया जाएगा। ४९ “मैं पृथ्वी पर आगलाने आया हूँ; और क्या चाहता हूँ केवल यह कि अभी सुलग जाती। ५० मुझे तो एक बपतिस्मा लेना है; और जब तक वह न हो ले तब तक मैं कैसी व्यथा में रहूँगा। ५१ क्या तुम समझते हो कि मैं पैरुची पर मिलाप कराने आया हूँ; मैं तुम से कहता हूँ; नहीं, वरन् अल्लग कराने आया हूँ। ५२ क्योंकि अब से एक घर में पाँच जन आपस में विरोध रखेंगे, तीन दो से दो तीन से। ५३ पिता पुत्र से, और पुत्र पिता से विरोध रखेंगा; माँ बेटी से, और बेटी माँ से, सास बह से, और बह सास से विरोध रखेंगी।” ५४ और उसने भीड़ से भी कहा, “जब बादल को पश्चिम से उतरे देखो हो, तो तुरन्त कहते हो, कि वर्षा होगी; और ऐसा ही होता है। ५५ और जब दिश्पिणी हवा चलती देखते हो तो कहते हो, कि लह चलेगी, और ऐसा ही होता है। ५६ हे कपरियों, तुम धरती और आकाश के रूप में भेद कर सकते हो, परन्तु इस युग के विषय में क्यों भेद करना नहीं जानते? ५७ “तुम आप ही निर्णय क्यों नहीं कर लेते, कि उचित क्या है? ५८ जब तु अपने मुझे इक्के के साथ न्यायाधीश के पास जा रहा है, तो मार्गी ही में उससे छुने का यत्र कर ले ऐसा न हो, कि वह तुझे न्यायी के पास खीच ले जाए, और न्यायी तुझे सिपाही को सौंपे और सिपाही तुझे बन्दीगृह में डाल दे। ५९ मैं तुम से कहता हूँ, कि जब तक तू पाई-पाई न चुका देगा तब तक वहाँ से छूटने न पाएगा।”

१३ उस समय कुछ लोग आ पहुँचे, और यीशु से उन गलीलियों की चर्चा करने लगे, जिनका लह पिलातुस ने उन ही के बलिदानों के साथ मिलाया था। १४ यह सन्कर यीशु ने उनको उत्तर में यह कहा, “क्या तुम समझते हो, कि ये गलीली बाकी गलीलियों से पापी थे कि उन पर ऐसी विपत्ति पड़ी? १५ मैं तुम से कहता हूँ, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगेतो तुम सब भी

इसी रीति से नाश होंगे। ४ या क्या तुम समझते हो, कि वे अठारह जन जिन पर शीलोह का गुम्मट गिरा, और वे दबकर मर गए; यस्सलेम के और सब रहनेवालों से अधिक अपराधी थे? ५ मैं तुम से कहता हूँ, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न किराओंगे तो तुम भी सब इसी रीति से नाश होंगे।” ६ फिर उसने यह दृष्टान्त भी कहा, “किसी की अंगूँ की बारीमें एक अंजीर का पेड़ लगा हुआ था: वह उसमें फल ढूँढ़ने आया, परन्तु न पाया। ७ तब उसने बारी के रखवाले से कहा, ‘देख तीन वर्ष से मैं इस अंजीर के पेड़ में फल ढूँढ़ने आता हूँ, परन्तु नहीं पाया, इसे काट डाल कि यह भूमि को भी क्यों रोके रहे?’ ८ उसने उसको उत्तर दिया, कि हे स्वामी, इसे इस वर्ष तो और रहने दें; कि मैं इसके चारों ओर खोदकर खाद डालूँ। ९ अतः आगे को फले तो भला, नहीं तो उसे काट डालाना।” १० सब्त के दिन वह एक आराधनालय में उपदेश दे रहा था। ११ वहाँ एक स्त्री थी, जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली दृश्यता लगी थी, और वह कुबड़ी हो गई थी, और किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी। १२ यीशु ने उसे देखकर बुलाया, और कहा, “हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से छूट गई।” १३ तब उसने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई, और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी। १४ इसलिए कि यीशु ने सब्त के दिन उसे अच्छा किया था, आराधनालय का सरदार रिसियाकर लोगों से कहने लगा, “छः दिन हैं, जिनमें काम करना चाहिए, अतः उन ही दिनों में आकर चंगे हो, परन्तु सब्त के दिन में नहीं।” १५ यह सुनकर प्रभु ने उत्तर देकर कहा, “हे कपटियों, क्या सब्त के दिन तुम में से हर एक अपने बैल या गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता? १६ और क्या उचित न था, कि यह स्त्री जो अद्वाम की बेटी है, जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बाँध रखा था, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती?” १७ जब उसने ये बातें कही, तो उसके सब विरोधी लज्जित हो गए, और सारी भीड़ उन महिमा के कामों से जो वह करता था, आनन्दित हुई। १८ फिर उसने कहा, “परमेश्वर का राज्य किसके समान है? और मैं उसकी उमा किस से दूँ? १९ वह राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपनी बारी में बोया: और वह बढ़कर पेड़ हो गया; और आकाश के पक्षियों ने उसकी डालियों पर बोरा किया।” २० उसने फिर कहा, “मैं परमेश्वर के राज्य कि उपमा किस से दूँ? २१ वह खर्मीर के समान है, जिसको किसी स्त्री ने लेकर तीन पसरी आटे में मिलाया, और होते-होते सब आटा खर्मीर हो गया।” २२ वह नगर-नगर, और गाँव-गाँव होकर उपदेश देता हुआ यस्सलेम की ओर जा रहा था। २३ और किसी ने उससे पछा, “हे प्रभु, क्या उड़ार पानेवाले थोड़े हैं?” उसने उनसे कहा, २४ “सकेत द्वारा से प्रवेश करने का यथा करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि बहुत से प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे। २५ जब घर का स्वामी उठकर द्वार बन्द कर चुका हो, और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो, ‘हे प्रभु, हमारे लिये खोल दे,’ और वह उत्तर दे कि: मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम कहाँ के हो? २६ तब तुम्हें कहने लगेगे, ‘कि हमने तेरे सामने खाया-पीया और तेरे हाथ मारे बजारों में उपदेश दिया।’ २७ परन्तु वह कहेगा, मैं तुम से कहता हूँ, मैं नहीं जानता तुम कहाँ से हो। हे कुकर्म करनेवालों, तुम सब मुझसे दूर हो।” २८ वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा, जब तुम अद्वाम और इसहाक और याकूब और सब भविष्यद्वताओं को परमेश्वर के राज्य में बैठे, और अपने आपको बाहर निकाले हुए देखोगे। २९ और पूर्व और पश्चिम; उत्तर और दक्षिण से लोग आकर परमेश्वर के राज्य के भोज में भागी होंगे। ३० यह जान लो, कितने पिछले हैं वे प्रथम होंगे, और कितने जो प्रथम हैं, वे पिछले होंगे।” ३१ उसी घड़ी कितने फरीसियों ने आकर उससे कहा, “यहाँ से निकलकर चला जा; क्योंकि हेरोडेस तुझे मार डालना चाहता है।” ३२ उसने उनसे कहा, “जाकर

उस लोमड़ी से कह दो, कि देख मैं आज और कल दृश्यताओं को निकालता और बीमारों को चंगा करता हूँ और तीसे दिन अपना कार्य पूरा करँगा। ३३ तो भी मुझे आज और कल और परसों चलना अवश्य है, क्योंकि हो नहीं सकता कि कोई भविष्यद्वता यस्सलेम के बाहर मारा जाए। ३४ “हे यस्सलेम! हे यस्सलेम! तू जो भविष्यद्वताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए उन्हें पथराव करता है; कितनी ही बार मैंने यह चाहा, कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है, तैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे करूँ, पर तुम ने यह न चाहा। ३५ देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है, और मैं तुम से कहता हूँ; जब तक तुम न कहोगे, ‘धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है,’ तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।”

१४ फिर वह सब्त के दिन फरीसियों के सरदारों में से किसी के घर में रोटी खाने गया: और वे उसकी घाट में थे। १५ वहाँ एक मनुष्य उसके सामने था, जिसे जलोदर का रोग था। १६ इस पर यीशु ने व्यवस्थापकों और फरीसियों से कहा, “क्या सब्त के दिन अच्छा करना उचित है, कि नहीं?” १७ परन्तु वे चुपचाप रहे। तब उसने उसे हाथ लगाकर चंगा किया, और जाने दिया। १८ और उनसे कहा, “तुम में से ऐसा कौन है, जिसका पुत्र या बैल कुर्ए में गिर जाए और वह सब्त के दिन उसे तुरन्त बाहर न निकाल ले?” १९ वे इन बातों का कुछ उत्तर न दे सके। २० जब उसने देखा, कि आमन्त्रित लोग कैसे मुख्य-मुख्य जगह चुन लेते हैं तो एक दृश्यता देकर उनसे कहा, २१ “जब कोई तुझे विवाह में बुलाए, तो मुख्य जगह में न बैठना, कहीं ऐसा न हो, कि उसने तुझ से भी किसी बड़े को नेवता दिया हो। २२ और जिसने तुझे और उसे दोनों को नेवता दिया है, आकर तुझ से कहे, ‘इसको जगह दे,’ और तब तुझे लज्जित होकर सबसे नीची जगह में बैठना पड़े। २३ पर जब तू बुलाया जाए, तो सबसे नीची जगह जा बैठ, कि जब वह, जिसने तुझे नेवता दिया है आए, तो तुझ से कहे ‘हे मित्र, आगे बढ़कर बैठ,’ तब तेरे साथ बैठेवालों के सामने तेरी बड़ाई होगी। २४ क्योंकि जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।” २५ तब उसने अपने नेवता देवाले से भी कहा, “जब तू दिन का या रात का भोज करे, तो अपने मित्रों या भाइयों या कुटुम्बियों या धनवान पड़ोसियों को न बुला, कहीं ऐसा न हो, कि वे भी तुझे नेवता दें, और तेरा बदला हो जाए। २६ परन्तु जब तू भोज करे, तो कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अंधों को बुला। २७ तब तू धर्य होगा, क्योंकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं, परन्तु तुझे धर्मियों के जी उठनेपर इसका प्रतिफल मिलेगा।” २८ उसके साथ भोजन करनेवालों में से एक ने ये बातें सुनकर उससे कहा, “धन्य है वह, जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएगा।” २९ उसने उससे कहा, “किसी मनुष्य ने बड़ा भोज दिया और बहुतों को बुलाया। ३० जब भोजन तैयार हो गया, तो उसने अपने दास के हाथ आमन्त्रित लोगों को कहला भेजा, ‘आओ; अब भोजन तैयार है।’ ३१ पर वे सब के सब क्षमा माँगने लगे, पहले ने उससे कहा, ‘मैंने खेत मोल लिया है, और अवश्य है कि उसे देखें; मैं तुझ से विनती करता हूँ, मुझे क्षमा कर दे।’ ३२ दूसरे ने कहा, ‘मैंने पाँच जोड़े बैल मोल लिये हैं, और उन्हें परखने जा रहा हूँ; मैं तुझ से विनती करता हूँ, मुझे क्षमा कर दे।’ ३३ एक और ने कहा, ‘मैंने विवाह किया है, इसलिए मैं नहीं आ सकता।’ ३४ उस दास ने आकर अपने स्वामी को ये बातें कह सनाई। तब घर के स्वामी ने क्रोध में आकर अपने दास से कहा, ‘नगर के बाजारों और गलियों में तुरन्त जाकर कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अंधों को यहाँ ले आओ।’ ३५ दास ने फिर कहा, ‘हे स्वामी, जैसे तूने कहा था, वैसे ही किया गया है; फिर भी जगह है।’ ३६ स्वामी ने दास से कहा, ‘सड़कों पर और बाड़ों की ओर जाकर लोगों

को बरबस ले ही आ ताकि मेरा घर भर जाए। २४ क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि उन अमन्त्रित लोगों में से कोई मेरे भोज को न चलेगा।” २५ और जब बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी, तो उसने पीछे फिरकर उनसे कहा। २६ “यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेता नहीं हो सकता; २७ और जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता। २८ “तुम में से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की सामर्थ्य मेरे पास है कि नहीं? २९ कहीं ऐसा न हो, कि जब नीच डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसका उपहास करेंगे, ३० ‘यह मनुष्य बनाने तो लगा, पर तैयार न कर सका?’ ३१ या कौन ऐसा राजा है, कि दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है, क्या मैं दस हजार लेकर उसका सामना कर सकता हूँ, कि नहीं? ३२ नहीं तो उसके दूर रहते ही, वह दूत को भेजकर मिलाप करना चाहेगा। ३३ इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। ३४ “नमक तो अच्छा है, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा। ३५ वह न तो भीमि के और न खाद के लिये काम में आता है: उसे तो लोग बाहर फेंक देते हैं। जिसके सुनने के कान हों वह सुन ले।”

१५ सब चुंगी लेनेवाले और पापी उसके पास आया करते थे ताकि उसकी सुनें।

१६ और फरीसी और शाढ़ी कुड़कुड़ाकर कहने लगे, “यह तो पापियों से मिलता है और उनके साथ खाता भी है।” १७ तब उसने उसे यह दृष्टान्त कहा: १८ “तुम में से कौन है जिसकी सौ भेड़ हो, और उनमें से एक खो जाए तो निन्यानवे को मैदान में छोड़कर, उस खोई हुई को जब तक मिल न जाए खोजता न रहे? १९ और जब मिल जाती है, तब वह बड़े आनन्द से उसे काँधे पर उठा लेता है। २० और घर में आकर मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठे करके कहता है, ‘मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है।’ २१ मैं तुम से कहता हूँ कि इसी रीति से एक मन फिरनेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्यानवे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिहें मन फिरने की आवश्यकता नहीं। २२ “या कौन ऐसी स्त्री होगी, जिसके पास दस चाँदी के सिक्के हों, और उनमें से एक खो जाए; तो वह दीया जलाकर और घर झाड़-ब्झारकर जब तक मिल न जाए, जी लगाकर खोजती न रहे? २३ और जब मिल जाता है, तो वह अपने सखियों और पड़ोसियों को इकट्ठा करके कहती है, कि ‘मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया है।’ २४ मैं तुम से कहता हूँ, कि इसी रीति से एक मन फिरनेवाले पापी के विषय में पमेव्वर के स्वर्गदूतों के सामने आनन्द होता है।” २५ फिर उसने कहा, “किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। २६ उनमें से छोटे ने पिता से कहा ‘हे पिता, सम्पत्ति में से जो भाग मेरा हो, वह मुझे दे दीजिए।’ उसने उनको अपनी सम्पत्ति बांटा दी। २७ और बहुत दिन न बीते थे कि छोटा पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया और वहाँ कर्कम में अपनी सम्पत्ति उड़ा दी। २८ जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया। २९ और वह उस देश के निवासियों में से एक के यहाँ गया, उसने उसे अपने खेतों में सुअर चराने के लिये भेजा। ३० और वह चाहता था, कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरें, क्योंकि उसे कोई कुछ नहीं देता था। ३१ जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, ‘मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ। ३२ मैं अब

उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहँगा कि पिता जी मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। ३३ अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ, मुझे अपने एक मजदूर के समान रख ले।” ३४ “तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला: वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गते लगाया, और बहुत चमा। ३५ पुत्र ने उससे कहा, ‘पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है, और अब इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊँ।’ ३६ परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा, ‘झट अच्छे से अच्छा बच्चा निकालकर उसे पहनाओ, और उसके हाथ में अंगूषी, और पांवों में जूतियाँ पहनाओ, ३७ और बड़ा भोज तैयार करो ताकि हम खाएँ और आनन्द मनाएँ। ३८ क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है: खो गया था, अब मिल गया है।’ और वे आनन्द करने लगे। ३९ “परन्तु उसका जेठा पुत्र खेत में था। और जब वह आते हुए घर के निकट पहुँचा, तो उसने गणे-बजाने और नाचने का शब्द सुना। ४० और उसने एक दास को बुलाकर पूछा, ‘यह क्या हो रहा है?’ ४१ उसने उससे कहा, ‘तेरा भाई आया है, और तेरे पिता ने बड़ा भोज तैयार कराया है, क्योंकि उसे भला चंगा पाया है।’ ४२ “यह सुनकर वह ब्रह्म क्रोध से भर गया और भीतर जाना न चाहा: परन्तु उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा। ४३ उसने पिता को उत्तर दिया, ‘देखो; मैं इतने वर्ष से तेरी सेवा कर रहा हूँ, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली, फिर भी तेरे मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता। ४४ परन्तु जब तेरा यह पुत्र, जिसने तेरी सम्पत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया, तो उसके लिये तूने बड़ा भोज तैयार कराया।’ ४५ उसने उससे कहा, ‘पुत्र, तु सर्वदा मेरे साथ है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है। ४६ परन्तु अब आनन्द करना और मग्न होना चाहिए क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है।’”

१६ फिर उसने चेलों से भी कहा, “किसी धनवान का एक भण्डारी था,

और लोगों ने उसके सामने भण्डारी पर यह दोष लगाया कि यह तेरी सब सम्पत्ति उड़ा देता है। १७ अतः धनवान ने उसे बुलाकर कहा, ‘यह क्या है जो मैं तेरे विषय में सुन रहा हूँ? अपने भण्डारीपन का लेखा दें; क्योंकि तू आगे को भण्डारी नहीं रह सकता।’ १८ तब भण्डारी सोचने लगा, ‘अब मैं क्या करूँ? क्योंकि मेरा स्वामी अब भण्डारी का काम से छुड़ाया जाऊँ तो लोग मुझे खोदी नहीं जाती; और भीष भाँगने से मुझे लज्जा आती है।’ १९ मैं समझ गया, कि क्या करूँगा: ताकि जब मैं भण्डारी के काम से छुड़ाया जाऊँ तो लोग मुझे देखोंगे मैं ले लैं।’ २० और उसने अपने स्वामी के देनदारों में से एक-एक को बुलाकर पहले से पूछा, कि तुझ पर कितना कर्ज है? २१ उसने कहा, ‘सौ मन जैतून का तेल,’ तब उसने उससे कहा, कि अपनी खाता-बरी ले और बैठकर तुरन्त पचास लिख दे। २२ फिर दूसरे से पूछा, ‘तुझ पर कितना कर्ज है?’ उसने कहा, ‘सौ मन गेहूँ,’ तब उसने उससे कहा, ‘अपनी खाता-बरी लेकर अस्सी लिख दे।’ २३ ‘स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी को सराहा, कि उसने चतुराई से काम किया है, क्योंकि इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ रीति-व्यवहारों में ज्योति के लोगोंसे अधिक चतुर हैं। (aiōn g165) २४ और मैं तुम से कहता हूँ, कि अधर्म के धन से अपने लिये मित्र बना लो; ताकि जब वह जाता रहे, तो वे तुम्हें अनन्त निवासों में ले लें। (aiōnios g166) २५ जो थोड़े से थोड़े मैं विश्वासयोग्य है, वह बहुत मैं भी विश्वासयोग्य है: और जो थोड़े से थोड़े मैं अधर्मी है, वह बहुत मैं भी अधर्मी है। २६ इसलिए जब तुम सांसारिक धन मैं विश्वासयोग्य न ठहरे, तो

सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा? १२ और यदि तुम पराए धन में विश्वासयोग्य न ठहरे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा? १३ “कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा; या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा: तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।” १४ फरीसी जो लोभी थे, ये सब बातें सुनकर उसका उपहास करने लगे। १५ उसने उनसे कहा, “तुम तो मनुष्यों के सम्मेन अपने आपको धर्मी ठहरते हो, परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मन को जानता है, क्योंकि जो वस्तु मनुष्यों की दृष्टि में महान है, वह परमेश्वर के निकट घृणित है। १६ “जब तक यून्ना आया, तब तक व्यवस्था और भविष्यद्वत्ता प्रभाव में थे। उस समय से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है, और हर कोई उसमें प्रबलता से प्रवेश करता है। १७ आकाश और पृथ्वी की टल जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज है। १८ “जो कोई अपनी पत्री को त्याग कर दूसरी से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है, और जो कोई ऐसी त्यागी हुई दूसी से विवाह करता है, वह भी व्यभिचार करता है। १९ “एक धनवान मनुष्य था जो बैग्नी कपड़े और मलमल पहनता और प्रतिदिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था। २० और लाजरनाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवली पर छोड़ दिया जाता था। २१ और वह चाहता था, कि धनवान की मेज पर की जठन से अपना पेट भरे; बरन कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। २२ और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर अब्राहम की गोद में पहुँचाया। और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया, २३ और अधोलोकमें उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आँखें उठाई, और दूर से अब्राहम की गोद में लाजर को देखा। (Hadès g86)

२४ और उसने पुकारकर कहा, ‘हे पिता अब्राहम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी ऊँगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।’ २५ परन्तु अब्राहम ने कहा, ‘हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवनकाल में अच्छी वस्तुएँ पा चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएँ परन्तु अब वह यहाँ शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है।’ २६ और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई ठहराई गई है कि जो यहाँ से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सके, और न कोई वहाँ से इस पार हमारे पास आ सके।’ २७ उसने कहा, ‘तो हे पिता, मैं तुझ से विनारी करता हूँ, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज, २८ क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं; वह उनके सामने इन बातों की चेतावनी दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएँ।’ २९ अब्राहम ने उससे कहा, ‘उनके पास तो मूसा और भविष्यद्वत्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उनकी सुनें।’ ३० उसने कहा, ‘नहीं, हे पिता अब्राहम; पर यदि कोई मेरे हुओं में से उनके पास जाए, तो वे मन फिराएँगे।’ ३१ उसने उससे कहा, ‘जब वे मूसा और भविष्यद्वत्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मेरे हुओं में से कोई भी जी उठे तो भी उसकी नहीं मानेंगे।’”

१७ फिर उसने अपने चेलों से कहा, “यह निश्चित है कि वे बातें जो पाप का कारण है, आँणो परन्तु हाय, उस मनुष्य पर जिसके कारण वे आती हैं! २ जो इन छोटों में से किसी एक को ठेकर खिलाता है, उसके लिये यह भला होता कि चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह समुद्र में डाल दिया जाता। ३ सचेत रहो; यदि तेरा भाई अपराध करे तो उसे डाँट, और यदि पछताए तो उसे क्षमा कर। ४ यदि दिन भर में वह सात बार तेरा अपराध करे और सातों बार तेरे पास फिर आकर करे, कि मैं पछताता हूँ, तो उसे क्षमा कर।” ५ तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा, “हमारा विश्वास बढ़ा।” ६ प्रभु ने कहा,

“यदि तुम को राई के दाने के बराबर भी विश्वास होता, तो तुम इस शहतूत के पेड से कहते कि जड से उखड़कर समुद्र में लग जा, तो वह तुम्हारी मान लेता। ७ “पर तुम में से ऐसा कौन है, जिसका दास हल जोता, या भेंडे चराता हो, और जब वह खेत से आए, तो उससे कहे, ‘तुरन्त आकर भोजन करने बैठ?’ क्या वह उनसे न कहेगा, कि मेरा खाना तैयार कर: और जब तक मैं खाऊँ-पीऊँ तब तक कमर बौंधकर मेरी सेवा कर; इसके बाद तू भी खा पी लेना। ९ क्या वह उस दास का एहसास मानेगा, कि उसने वे ही काम किए जिसकी आज्ञा दी गई थी? १० इसी रिति से तुम भी, जब उन सब कामों को कर चुके हो जिसकी आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, ‘हम निकम्पे दास हैं; कि जो हमें करना चाहिए था वही किया है।’” ११ और ऐसा हुआ कि वह यस्शलेम को जाते हुए सामरिया और गलील प्रदेश की सीमा से होकर जा रहा था। १२ और किसी गाँव में प्रवेश करते समय उसे दस कोही मिले। १३ और उहोंने दूर खड़े होकर, ऊँचे शब्द से कहा, “हे यीशु, हे स्वामी, हम पर दया कर!” १४ उसने उन्हें देखकर कहा, “जाओ; और अपने आपको याजकों को दिखाओ।” और जाते ही जाते वे शुद्ध हो गए। १५ तब उनमें से एक यह देखकर कि मैं चांग हो गया हूँ, ऊँचे शब्द से परमेश्वर की बडाई करता हुआ लौटा; १६ और यीशु के पौँछों पर मुँह के बल गिरकर उसका धन्यवाद करने लगा, और वह सामीरी था। १७ इस पर यीशु ने कहा, “क्या दोसों शुद्ध न हए, तो फिर वे नौ कहाँ हैं? १८ क्या इस परदेशी को छोड़ कोई और न निकला, जो परमेश्वर की बडाई करता?” १९ तब उसने उससे कहा, “उठकर चला जा; तेरे विश्वास ने तुझे चांग किया है।” २० जब फरीसियों ने उससे पूछा, कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा? तो उसने उनको उत्तर दिया, “परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप में नहीं आता। २१ और लोग यह न कहेंगे, कि देखो, यहाँ है, या वहाँ है। क्योंकि, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।” २२ और उसने चेलों से कहा, “वे दिन आएंगे, जिनमें तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन को देखना चाहेंगे, और नहीं देखेने पाओंगे। २३ लोग तुम से कहेंगे, ‘देखो, वहाँ है!’ या ‘देखो यहाँ है!’ परन्तु तुम चले न जाना और न उनको पीछे हो लेना। २४ क्योंकि जैसे बिजली आकाश की एक छोर से कौंधकर आकाश की दूसरी छोर तक चमकती है, वैसा ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में प्रगट होगा। २५ परन्तु पहले अवश्य है, कि वह बहुत दुख उठाए, और इस युग के लोग उसे तुच्छ ठहराएँ। २६ जैसा नहु के दिनों में हुआ था, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा। २७ जिस दिन तक नहु जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उनमें विवाह-शादी होती थी; तब जल-प्रलय ने आकर उन सब को नाश किया। २८ और जैसा लूट के दिनों में हुआ था, कि लोग खाते-पीते लेन-देन करते, पेड़ लगाते और घर बनाते थे; २९ परन्तु जिस दिन लूट सदोम से निकला, उस दिन आग और गन्धक आकाश से बरसी और सब को नाश कर दिया। ३० मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही होगा। ३१ “उस दिन जो छत पर हो; और उसका सामान घर में हो, वह उसे लेने को न उठे, और वैसे ही जो खेत में हो वह पीछे न लौटे। ३२ लूट की पत्ती को स्मरण रखो! ३३ जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, और जो कोई उसे खोए वह उसे बचाएगा। ३४ मैं तुम से कहता हूँ, उस रात दो मनुष्य एक खाट पर होंगे, एक ले लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। ३५ दो लोग एक साथ चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी। ३६ [दो जन खेत में होंगे एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दी जाएगा।]” ३७ यह सुन उन्होंने उससे पूछा, “हे प्रभु यह कहाँ होगा?” उसने उनसे कहा, “जहाँ लाश है, वहाँ गिरू इकट्ठे होंगे।”

१८ फिर उसने इसके विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और साहस नहीं

छोड़ना चाहिए उसे यह दृष्टान्त कहा: २ “किसी नगर में एक न्यायी रहता था; जो न परमेश्वर से डरता था और न किसी मनुष्य की परवाह करता था। ३ और उसी नगर में एक विधवा भी रहती थी: जो उसके पास आ आकर कहा करती थी, ‘मेरा न्याय चुकाकर मुझे मुर्झे से बचा।’ ४ उसने कितने समय तक तो न माना परन्तु अन्त में मन में विचार कर कहा, ‘यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता, और न मनुष्यों की कुछ परवाह करता हूँ, ५ फिर भी यह विधवा मुझे सतती रहती है, इसलिए मैं उसका न्याय चुकाऊँगा, कही ऐसा न हो कि घड़ी-घड़ी आकर अन्त को मेरी नाक में दम करे।’” ६ प्रभु ने कहा, “सुनो, कि यह अधर्मी न्यायी क्या कहता है? ७ अतः क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न चुकाएगा, जो रात-दिन उसकी दुहाई देते रहते; और क्या वह उनके विषय में देर करेगा? ८ मैं तुम से कहता हूँ, वह तुरन्त उनका न्याय चुकाएगा; पर मनुष्य का पत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?” ९ और उसने उसे जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और दूसरों को तच्छ जानते थे, यह दृष्टान्त कहा: १० “दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए; एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेनेवाला। ११ फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यह प्रार्थना करने लगा, ‘हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, कि मैं और मनुष्यों के समान दृष्टा करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेनेवाले के समान हूँ। १२ मैं सपाह में दो बार उपवास करता हूँ, मैं अपनी सब कमाई का दसवाँ अंश भी देता हूँ।’ १३ “परन्तु चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आँख उठाना भी न चाहा, वरन् अपनी छाती पीट-पीट करकहा, ‘हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर।’” १४ मैं तुम से कहता हूँ, कि वह दूसरा नहीं, परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहराओर अपने घर गया; क्योंकि जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा, और जो अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।” १५ फिर लोग अपने बच्चों को भी उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे; और चेलों ने देखकर उन्हें ढाँटा। १६ यीशु ने बच्चों को पास बुलाकर कहा, “बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करो: क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। १७ मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करेगा वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा।” १८ किसी सरदार ने उससे पूछा, “हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ?” (aiōnios g166) १९ यीशु ने उससे कहा, “तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक, अर्थात् परमेश्वर। २० तू आज्ञाओं को तो जानता है: ‘व्यभिचार न करना, हत्या न करना, चोरी न करना, झीठी गवाही न देना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।’” २१ उसने कहा, “मैं तो इन सब को लड़कपन ही से मानता आया हूँ।” २२ यह सुन, “यीशु ने उससे कहा, तुझे मैं अब भी एक बात की घटी है, अपना सब कुछ बेचकर कंगालों को बाँट दे; और उत्ते स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मैं पीछे हो ले।” २३ वह यह सुनकर बहुत उदास हुआ, क्योंकि वह बड़ा धर्मी था। २४ यीशु ने उसे देखकर कहा, “धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है! २५ परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सई के नाक में से निकल जाना सहज है।” २६ और सुननेवालों ने कहा, “तो फिर किसका उदार हो सकता है?” २७ उसने कहा, “जो मनुष्य से नहीं हो सकता, वह परमेश्वर से हो सकता है।” २८ पतरस ने कहा, “देख, हम तो घर-बार छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं।” २९ उसने उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि ऐसा कोई नहीं जिसने परमेश्वर के राज्य के लिये घर, या पत्नी, या भाइयों,

या माता-पिता, या बाल-बच्चों को छोड़ दिया हो। ३० और इस समय कई गुण अधिक न पाएँ; और परलोक में अनन्त जीवन।” (aiōn g165, aiōnios g166) ३१ फिर उसने बारहों को साथ लेकर उसे कहा, “हम यस्तलेम को जाते हैं, और जितनी बातें मनुष्य के पत्र के लिये भविष्यद्वात्राओं के द्वारा लिखी गई हैं वे सब पूरी होंगी। ३२ क्योंकि वह अन्यजातियों के हाथ में सौंपा जाएगा, और वे उसका उपहास करेंगे; और उसका अपमान करेंगे, और उस पर थकेंगे। ३३ और उसे कोई मारेंगे, और मार डालेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा।” ३४ और उन्होंने इन बातों में से कोई बात न समझी और यह बात उसे छिपी रही, और जो कहा गया था वह उनकी समझ में न आया। ३५ जब वह यरीहो के निकट पहुँचा, तो एक अंधा सड़क के किनारे बैठा हुआ भीख माँग रहा था। ३६ और वह भीड़ के चलने की आहट सुनकर पूछने लगा, “यह क्या हो रहा है?” ३७ उन्होंने उसको बताया, “वीशु नासीरी जा रहा है।” ३८ तब उसने पुकारके कहा, “हे यीशु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।” ३९ जो आगे-आगे जा रहे थे, वे उसे डॉटने लगे कि चुप रहे परन्तु वह और भी चिल्लाने लगा, “हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर!” ४० तब यीशु ने खड़े होकर आज्ञा दी कि उसे मैं पास लाओ, और जब वह निकट आया, तो उसने उससे वह पूछा, ४१ तू क्या चाहता है, “मैं तेरे लिये करूँ?” उसने कहा, “हे प्रभु, यह कि मैं देखें लाऊँ।” ४२ यीशु ने उससे कहा, “देखें लग, तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है।” ४३ और वह तुरन्त देखने लगा; और परमेश्वर की बड़ाइ करता हुआ, उसके पीछे हो लिया, और सब लोगों ने देखकर परमेश्वर की स्तुति की।

१९ वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा था। २ वहाँ जक्कर्कई नामक एक मनुष्य था, जो चुंगी लेनेवालों का सरदार और धर्मी था। ३ वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन सा है? परन्तु भीड़ के कारण देख न सकता था। क्योंकि वह नाटा था। ४ तब उसको देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि यीशु उसी मार्ग से जानेवाला था। ५ जब यीशु उस जगह पहुँचा, तो ऊपर दृष्टि करके उससे कहा, “हे जक्कर्कई, झट उत्तर आ; क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।” ६ वह तुरन्त उत्तरकर आनन्द से उसे अपने घर को ले गया। ७ यह देखकर सब लोग कुड़कुड़ाकर कहने लगे, “वह तो एक पापी मनुष्य के यहाँ गया है।” ८ जक्कर्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, “हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चैगुना फेर देता हूँ।” ९ तब यीशु ने उससे कहा, “आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिए कि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है। १० क्योंकि मनुष्य का पत्र खो गए हुओं को ढूँने और उनका उद्धार करने आया है।” ११ जब वे ये बातें सुन रहे थे, तो उसने एक दृष्टान्त कहा, इसलिए कि वह यस्तलेम के निकट था, और वे समझते थे, कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रगट होनेवाला है। १२ अतः उसने कहा, “एक धर्मी मनुष्य दूर देश को चला ताकि राजपद पाकर लौट आए। १३ और उसने अपने दासों में से दस को बुलाकर उन्हें दस महरें दी, और उनसे कहा, “मैं लौट आने तक लेन-देन करना।” १४ परन्तु उसके नगर के रहनेवाले उससे बैर रखते थे, और उसके पीछे दूरों के द्वारा कहला भेजा, कि हम नहीं चाहते, कि यह हम पर राज्य करे। १५ “जब वह राजपद पाकर लौट आया, तो ऐसा हुआ कि उसने अपने दासों को जिन्हें रोकड़ दी थी, अपने सब बुलावाया ताकि मालामाल करे कि उन्होंने लेन-देन से क्या-क्या कमाई है।” १६ तब पहले ने आकर कहा, “हे स्वामी, तेरे महर से दस और महरें कमाई है।” १७ उसने उससे कहा, “हे उत्तम दास, तू धन्य है, तू बहुत ही थोड़े

में विश्वासयोग्य निकला अब दस नगरों का अधिकार रखा।’ १८ दूसरे ने आकर कहा, ‘हे स्वामी, तेरी मुहर से पाँच और मुहरें कमाई है।’ १९ उसने उससे कहा, ‘तू भी पाँच नगरों पर अधिकार रखा।’ २० तीसरे ने आकर कहा, ‘हे स्वामी, देख, तेरी मुहर यह है, जिसे मैंने अँगों में बाँध रखा था।’ २१ क्योंकि मैं तुझ से डरता था, इसलिए कि तू कठोर मनुष्य है: जो तुम नहीं रखा उसे उठा लेता है, और जो तुम नहीं बोया, उसे काटता है।’ २२ उसने उससे कहा, ‘हे दृष्टि दास, मैं भैरों ही मुँह सेतुवे प्रिया ठहराता हूँ। तू मुझे जानता था कि कठोर मनुष्य हूँ, जो मैंने नहीं रखा उसे उठा लेता, और जो मैंने नहीं बोया, उसे काटता हूँ।’ २३ तो तू मैरे स्पष्ट सराफों को क्यों नहीं रख दिए, कि मैं आकर ब्याज समेत ले लेता?’ २४ और जो लोग निकट खड़े थे, उसने उनसे कहा, ‘वह मुहर उससे ले लो, और जिसके पास दस मुहरें हैं उसे दे दो।’ २५ उन्होंने उससे कहा, ‘हे स्वामी, उसके पास दस मुहरें तो हैं।’ २६ मैं तुम से कहता हूँ, कि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं, उससे वह भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा। २७ परन्तु मैरे उन बैरियों को जो नहीं चाहते थे कि मैं उन पर राज्य करूँ, उनको यहाँ लाकर मेरे सामने मार डालो।’ २८ ये बातें कहकर वह यशस्वलेम की ओर उनके आगे-आगे चला। २९ और जब वह जैतून नाम पहाड़ पर बैठफगी और बैठनियाह के पास पहुँचा, तो उसने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा, ३० “सामने के गाँव में जाओ, और उसमें पहुँचते ही एक गढ़ी का बच्चा जिस पर कभी कोई सवार नहीं हआ, बन्धा हआ तम्हें मिलेगा, उसे खोलकर लाओ।” ३१ और यदि कोई तुम से पूछे, कि क्यों खोलते हो, तो यह कह देना, कि प्रभु को इसकी जस्तर है।” ३२ जो भेजे गए थे, उन्होंने जाकर जैसा उसने उनसे कहा था, वैसा ही पाया। ३३ जब वे गदहे के बच्चे को खोल रहे थे, तो उसके मालिकों ने उनसे पूछा, “इस बच्चे को क्यों खोलते हो?” ३४ उन्होंने कहा, “प्रभु को इसकी जस्तर है।” ३५ वे उसको यीश के पास ले आए और अपने कपड़े उस बच्चे पर डालकर यीश को उप पर बैठा दिया। ३६ जब वह जा रहा था, तो वे अपने कपड़े मार्ग में बिछाते जाते थे। ३७ और निकट आते हुए जब वह जैतून पहाड़ की ढलान पर पहुँचा, तो चेलों की सारी मण्डली उन सब सामर्थ्य के कामों के कारण जो उन्होंने देखे थे, आनन्दित होकर बड़े शब्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगी: ३८ “धन्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम से आता है। स्वर्ग में शान्ति और आकाश में महिमा हो!” ३९ तब भीड़ में से किन्तु फरीसी उससे कहने लगे, “हे गुरु, अपने चेलों को डॉट।” ४० उसने उत्तर दिया, “मैं तुम में से कहता हूँ, यदि ये चुप रहें, तो पथर चिल्ला उठेंगे।” ४१ जब वह निकट आया तो नगर को देखकर उस पर रोया। ४२ और कहा, “क्या ही भला होता, कि तू हों, तू ही, इसी दिन में कृशल की बातें जानता, परन्तु अब वे तेरी औँखों से छिप गइ हैं।” ४३ क्योंकि वे दिन तुम पर आँगे कि तेरे बैरी मोर्चा बाँधकर तुझे धेर लेंगे, और चारों ओर से तुझे दबाएँगे। ४४ और तुझे और तेरी साथ तेरे बालकों को, मिट्टी में मिलाएँगे, और तुझ में पथर पर पथर भी न छोड़ेंगे, क्योंकि तुने वह अवसर जब तुझ पर कूपादृष्टि की गई न पहचाना।” ४५ तब वह मन्दिर में जाकर बेचेनेवालों को बाहर निकालने लगा। ४६ और उनसे कहा, “लिखा है, ‘मेरा घर प्रार्थना का घर होगा,’ परन्तु तुम ने उसे डाकूओं की खोह बना दिया है।” ४७ और वह प्रतिदिन मन्दिर में उपदेश देता था: और प्रधान याजक और शास्त्री और लोगों के प्रमुख उसे भालने का अवसर ढूँढते थे। ४८ परन्तु कोई उपाय न निकाल सके; कि यह किस प्रकार करें, क्योंकि सब लोग बड़ी चाह से उसकी सनते थे।

२० एक दिन ऐसा हुआ कि जब वह मन्दिर में लोगों को उपदेश देता और सुसमाचार सुना रहा था, तो प्रधान याजक और शास्त्री, प्राचीनों के साथ

पास आकर खड़े हुए। २१ और कहने लगे, “हमें बता, तू इन कामों को किस अधिकार से करता है, और वह कौन है, जिसने तुझे यह अधिकार दिया है?” २२ उसने उनको उत्तर दिया, “मैं भी तुम से एक बात पूछता हूँ; मुझे बताओ वह यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग की ओर से था या मनुष्यों की ओर से था?” २३ तब वे आपस में कहने लगे, “यदि हम कहें, ‘स्वर्ग की ओर से,’ तो वह कहेगा, ‘फिर तुम ने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया?’” २४ और यदि हम कहें, ‘मनुष्यों की ओर से,’ तो सब लोग हमें पथराव करेंगे, क्योंकि वे सचमुच जानते हैं, कि यूहन्ना भविष्यद्वत्ता था।” २५ अतः उन्होंने उत्तर दिया, “हम नहीं जानते, कि वह किसकी ओर से था।” २६ यीश ने उसके कहा, “तो मैं भी तुझे नहीं बताता कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूँ।” २७ तब वह लोगों से यह दृष्टान्त कहने लगा, “किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई, और किसानों को उसका ठेका दे दिया और बहुत दिनों के लिये परदेश चला गया।” २८ नियुक्त समय पर उसने किसानों के पास एक दास को भेजा, कि वे दाख की बारी के कुछ फलों का भाग उसे दें, पर किसानों ने उसे पीटकर खाली हाथ लौटा दिया। २९ फिर उसने एक और दास को भेजा, और उन्होंने उसे भी पीटकर और उसका अपमान करके खाली हाथ लौटा दिया। ३० फिर उसने तीसरा भेजा, और उन्होंने उसे भी धायल करके निकाल दिया। ३१ तब दाख की बारी के स्वामी ने कहा, ‘मैं क्या करूँ? मैं अपने प्रिय पुत्र को भेज़ूँगा, क्या जाने वे उसका आदर करें।’ ३२ जब किसानों ने उसे देखा तो आपस में विचार करने लगे, ‘यह तो वारिस है, आओ, हम उसे मार डालें, कि विरासत हमारी हो जाए।’ ३३ और उन्होंने उसे दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला: इसलिए दाख की बारी का स्वामी उनके साथ क्या करेगा? ३४ “वह आकर उन किसानों को नाश करेगा, और दाख की बारी दूसरों को सौंपेगा।” यह सुनकर उन्होंने कहा, “परमेश्वर ऐसा न करे।” ३५ उसने उनकी ओर देखकर कहा, “फिर यह क्या लिखा है: ‘जिस पथर को राजमिद्दियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया।’” ३६ “जो कोई उस पथर पर गिरेगा वह चकनाचूर हो जाएगा, और जिस पर वह गिरेगा, उसको पीस डालेगा।” ३७ उसी धड़ी शास्त्रियों और प्रधान याजकों ने उसे पकड़ना चाहा, क्योंकि समझ गए थे, कि उसने उनके विष्ट दृष्टान्त कहा, परन्तु वे लोगों से डेर। ३८ और वे उसकी ताक में लगे और भेदिए भेजे, कि धर्मी का भेष धरकर उसकी कोई न कोई बात पकड़ें, कि उसे राज्यपाल के हाथ और अधिकार में सौंप दें। ३९ उन्होंने उससे यह पूछा, “हे गुरु, हम जानते हैं कि तू ठीक कहता, और सिखाता भी है, और किसी का पक्षपात नहीं करता; वरन् परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से बताता है।” ४० क्या हमें कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं? ४१ उसने उनकी चतुराई को ताड़कर उनसे कहा, ४२ “एक दीनार मुझे दिखाओ।” इस पर किसकी छाप और नाम है?” उन्होंने कहा, “कैसर का।” ४३ उसने उनके कहा, “तो जो कैसर का है, वह कैसर को दो और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।” ४४ वे लोगों के सामने उस बात को पकड़ न सके, वरन् उसके उत्तर से अचम्भित होकर चुप रह गए। ४५ फिर सदूकी जो कहते हैं, कि मेरे हूँडों का जी उठाना है ही नहीं, उम्में से कुछ ने उसके पास आकर पूछा। ४६ “हे गुरु, मूसा ने हमारे लिये यह लिखा है, ‘यदि किसी का भाई अपनी पत्नी के रहते हुए बिना सन्तान मर जाए, तो उसका भाई उसकी पत्नी से विवाह कर ले, और अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न करे।’” ४७ अतः सात भाई थे, पहला भाई विवाह करके बिना सन्तान मर गया। ४८ फिर दूसरे, ४९ और तीसरे ने भी उस झी से विवाह कर लिया। इसी रीति से सातों बिना सन्तान मर गए। ४१ सब के पीछे वह झी भी मर गई। ५० अतः जी उठने पर वह उनमें से किसकी पत्नी होगी, क्योंकि वह सातों की पत्नी रह चुकी थी।” ५१ यीशु ने उनसे कहा,

“इस युग के सन्तानों में तो विवाह-शादी होती है, (aiōn g165) ३५ पर जो लोग इस योग्य ठहरेंगे, की उस युग को और मेरे हुओं में से जी उठाना प्राप्त करें, उनमें विवाह-शादी न होगी। (aiōn g165) ३६ वे फिर मरने के भी नहीं; क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान होंगे, और पुनर्जन्म की सन्तान होने से परमेश्वर के भी सन्तान होंगे। ३७ परन्तु इस बात को कि मेरे हुए जी उत्तर हैं, मृसा ने भी झाड़ी की कथा में प्रगट की है, वह प्रभु को ‘अद्वाहम का परमेश्वर, और इस्साहक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर’ कहता है। ३८ परमेश्वर तो मुर्दा का नहीं परन्तु जीवितों का परमेश्वर है: क्योंकि उसके निकट सब जीवित हैं।” ३९ तब यह सुनकर शाश्वियों में से कितनों ने कहा, “हे गुरु, तूने अच्छा कहा।” ४० और उन्हें फिर उससे कछ और पूछने का साहस न हआ। ४१ फिर उसने उनसे पूछा, “मसीह को दाऊद की सन्तान कैसे कहते हैं? ४२ दाऊद आप भजन संहिता की पुस्तक में कहता है: ‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मैंने दाहिने बैठ, ४३ जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों तले की चौकी न कर दूँ।’” ४४ दाऊद तो उसे प्रभु कहता है; तो फिर वह उसकी सन्तान कैसे ठहरा? ४५ जब सब लोग सुन रहे थे, तो उसने अपने चेलों से कहा। ४६ “शाश्वियों से सावधान रहो, जिनको लम्बे-लम्बे वस्त्र पहने हुए फिरना अच्छा लगता है, और जिन्हें बाजारों में नमस्कार, और आराधनालायों में मुख्य आसन और भोज में मुख्य स्थान प्रिय लगता है। ४७ वे विधवाओं के घर खा जाते हैं, और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं, ये बहुत ही टण्ड पाएँगे।”

२१ फिर उसने आँख उठाकर धनवानों को अपना-अपना दान भण्डार में डालते हुए देखा। २ और उसने एक कंगाल विधवा को भी उसमें दो दमड़ियाँ डालते हुए देखा। ३ तब उसने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि इस कंगाल विधवा ने सबसे बढ़कर डाला है। ४ क्योंकि उन सब ने अपनी-अपनी बढ़ती मैं से दान में कुछ डाला है, परन्तु इसने अपनी घटी मैं से अपनी सारी जीविका डाल दी है।” ५ जब कितने लोग मन्दिर के विषय में कह रहे थे, कि वह कैसे सुन्दर पत्थरों और भेट की वस्तुओं से संवारा गया है, तो उसने कहा, ६ “वे दिन आँएं, जिनमें यह सब जो तुम देखते हो, उनमें से यहाँ किसी पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा।” ७ उन्होंने उससे पूछा, “हे गुरु, यह सब कब होगा? और ये बातें जब पूरी होने पर होंगी, तो उस समय का क्या चिन्ह होगा?” ८ उसने कहा, “सावधान रहो, कि भरमाए न जाओं, क्योंकि बहुत से मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं वही हूँ; और यह भी कि समय निकट आ पहुँचा है: तुम उनके पीछे न चले जाना। ९ और जब तुम लडाइयों और बलवों की चर्चा सुनो, तो घबरा न जाना; क्योंकि इनका पहले होना अवश्य है; परन्तु उस समय तुरन्त अन्त न होगा।” १० तब उसने उनसे कहा, “जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढाई करेगा। ११ और बड़े-बड़े भूकूप होंगे, और जगह-जगह अकाल और महामारियाँ पड़ेंगी, और आकाश में भयंकर बातें और बड़े-बड़े चिन्ह प्रगट होंगे। १२ परन्तु इन सब बातों से पहले वे मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे, और सताएँगे, और आराधनालायों में सौंपेंगे, और बन्दीगृह में डलवाएँगे, और राजाओं और राज्यपालों के समान ले जाएँगे। १३ पर यह तुम्हारे लिये गवाही देने का अवसर हो जाएगा। १४ इसलिए अपने-अपने मन में ठान रखो कि हम पहले से उत्तर देने की चिन्ता न करेंगे। १५ क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बोल और बुढ़ि दिला, कि तुम्हारे सब विरोधी समान या खण्डन न कर सकेंगे। १६ और तुम्हारे माता-पिता और भाई और कुटुम्ब, और मित्र भी तुम्हें पकड़वाएँगे; यहाँ तक कि तुम मैं से कितनों को मरवा डालेंगे। १७ और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैठ करेंगे। १८ परन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल भी बाँका न होगा। १९ अपने धीरज से तुम अपने प्राणों को बचाए रखेंगे। २० “जब तुम यस्श्लतेम को सेनाओं से दिया हुआ देखो, तो जान लेना

कि उसका उजड़ जाना निकट है। २१ तब जो यहदिया में हों वह पहाड़ों पर भाग जाएँ, और जो यस्श्लतेम के भीतर हों वे बाहर निकल जाएँ; और जो गाँवों में हो वे उसमें न जाएँ। २२ क्योंकि यह पलटा लेने के देसे दिन होंगे, जिनमें लिखी हुई सब बातें पूरी हो जाएँगी। २३ उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय, हाय! क्योंकि देश में बड़ा क्लेश और इन लोगों पर बड़ी आपति होंगी। २४ वे तलवार के कौर हो जाएँगे, और सब देशों के लोगों में बन्धुए होकर पहुँचाए जाएँगे, और जब तक अन्यजातियों का समय पूरा न हो, तब तक यस्श्लतेम अन्यजातियों से रोदा जाएगा। २५ “और सूरज और चाँद और तारों में चिह्न दिखाई देंगे, और पृथ्वी पर, देश-देश के लोगों को संकट होगा; क्योंकि वे समुद्र के गरजने और लहरों के कोलाहल से घबरा जाएँगे। २६ और भय के कारण और संसार पर आनेवाली घटनाओं की बाँट देखते-देखते लोगों के जी मैं जी न रहेगाक्योंकि आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी। २७ तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ बादल पर आते देखेंगे। २८ जब ये बातें होने लगे, तो सीधे होकर अपने सिर ऊपर उठाना; क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा।” २९ उसने उनसे एक दृश्यन्त भी कहा, “अंजीर के पेड़ और सब पेड़ों को देखो। ३० ज्यों ही उनकी कोपले निकलती हैं, तो तुम देखकर आप ही जान लेते हो, कि गीष्मकाल निकट है। ३१ इसी रीति से जब तुम ये बातें होते देखो, तब जान लो कि परमेश्वर का गज्य निकट है। ३२ मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक ये सब बातें न हो ले, तब तक इस पीढ़ी का कदमि अन्त न होगा। ३३ आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी। ३४ “इसलिए सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार और मतवालेपन, और इस जीवन की चिन्ताओं से सूखत हो जाएँ, और वह दिन तुम पर फंदे के समान अचानक आ पड़े। ३५ क्योंकि वह सारी पृथ्वी के सब रहनेवालों पर इसी प्रकार आ पड़ेगा। ३६ इसलिए जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब अनेवाली घटनाओं से बचने, और मनुष्य के पुत्र के समाने खड़ेहोने के योग्य बनो।” ३७ और वह दिन को मन्दिर में उपदेश करता था; और रात को बाहर जाकर जैतून नाम पहाड़ पर रहा करता था। ३८ और भोर को तड़के सब लोग उसकी सुनने के लिये मन्दिर में उसके पास आया करते थे।

२२ अखंतीरी रोटी का पर्व जो फसह कहलाता है, निकट था। १ और प्रधान याजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि उसको कैसे मार डालें, पर वे लोगों से डरते थे। २ और शैतान यहदा मैं समाया, जो इस्करियोंती कहलाता और बारह चेलों में गिना जाता था। ३ उसने जाकर प्रधान याजकों और पहसुओं के सरदारों के साथ बातचीती की, कि उसको किस प्रकार उनके हाथ पकड़वाए। ४ वे आनन्दित हुए, और उसे स्थे देने का बचन दिया। ५ उसने मान लिया, और अवसर ढूँढ़ने लगा, कि बिना उपट्रव के उसे उनके हाथ पकड़वा दे। ६ तब अखंतीरी रोटी के पर्व का दिन आया, जिसमें फसह का मेम्ना बलि करना अवश्य था। ७ और यीशु ने पतरस और यूहन्ना को यह कहकर भेजा, “जाकर हमारे खाने के लिये फसह तैयार करो।” ८ उन्होंने उससे पूछा, “तू कहाँ चाहता है, कि हम तैयार करें?” ९ उसने उनसे कहा, “देखो, नगर मैं प्रवेश करते ही एक मनुष्य जल का घडा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा, जिस पर मैं बह जाएँ; तुम उसके पीछे चले जाना, १० और उस पर के स्वामी से कहो, ‘गुरु तुझ से कहता है; कि वह पाहुन्शाला कहाँ है जिसमें मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊँ?’” ११ वह तुम्हें एक सज्जी-सज्जाई बड़ी अटारी दिखा देगा; वहाँ तैयारी करना।” १२ उन्होंने जाकर, जैसा उसने उनसे कहा था, वैसा ही पाया, और फसह तैयार किया। १३ जब घडी पहुँची, तो

वह प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठा। १५ और उसने उनसे कहा, “मुझे बड़ी लालसा थी, कि दुख भोगेसे से पहले यह फसह तुम्हारे साथ खाऊँ।” १६ क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न खाऊँगा।” १७ तब उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया और कहा, “इसको लो और आपस में बॉट लो।” १८ क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए तब तक मैं दाखरस अब से कभी न पीऊँगा।” १९ फिर उसने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उनको यह कहते हुए दी, “यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये दी जाती है; मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।” २० इसी रीति से उसने भोजन के बाद कटोरा भी यह कहते हुए दिया, “यह कटोरा मेरे उस लह में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है।” २१ पर देखा, मेरे पकड़वानेवाले का हाथ मेरे साथ मेज पर है। २२ क्योंकि मनुष्य का पुनर्तो जैसा उसके लिये ठहराया गया, जाता ही है, पर हाय उस मनुष्य पर, जिसके द्वारा वह पकड़वाया जाता है।” २३ तब वे आपस में पूछताछ करने लगे, “हम मैं से कौन हैं, जो यह काम करेगा?” २४ उनमें यह वाद-विवाद भी हुआ; कि हम मैं से कौन बड़ा समझा जाता है? २५ उसने उनसे कहा, “अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं, और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारकहलाते हैं।” २६ परन्तु तुम ऐसे न होना; बरन जो तुम मैं बड़ा है, वह छोटे के समान और जो प्रधान है, वह सेवक के समान बने। २७ क्योंकि बड़ा कौन है; वह जो भोजन पर बैठा है, या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है? पर मैं तुम्हारे बीच मैं सेवक के समान हूँ।” २८ “परन्तु तुम वह हो, जो मेरी परीक्षाओं में लगातार मेरे साथ रहे, २९ और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिये एक राज्य ठहराया है, वैसे ही मैं भी तुम्हारे लिये ठहराता हूँ।” ३० ताकि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ-पीओ; बरन सिंहासनों पर बैठकर इशाएल के बाहर गोत्रों का न्याय करो। ३१ “शमैन, हे शमैन, शैतान ने तुम लोगों को माँग लिया है कि गेहूँ के समान फटके।” ३२ परन्तु मैंने तेरे लिये विनीती की, कि तेरा विवास जाता न रहे और जब तू फिरे, तो अपने भाइयों को स्थिर करना।” ३३ उसने उससे कहा, “हे प्रभु, मैं तेरे साथ बद्धीगृह जाने, बरन मने को भी तैयार हूँ।” ३४ उसने कहा, “हे पतरस मैं तुम से कहता हूँ, कि आज मुर्गा बाँग देगा जब तक तू तीन बार मेरा इनकारन कर लेगा कि मैं उसे नहीं जानता।” ३५ और उसने उनसे कहा, “जब मैंने तुम्हें बटुए, और झोली, और जूते बिना भेजा था, तो क्या तुम को किसी वस्तु की घटी हुई थी?” उन्होंने कहा, “किसी वस्तु की नहीं।” ३६ उसने उनसे कहा, “परन्तु अब जिसके पास बटुआ हो वह उसे ले, और वैसे ही झोली भी, और जिसके पास तलवार न हो वह अपने कपड़े बेचकर एक मोल ले।” ३७ क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि यह जो लिखा है, ‘वह अपराधी के साथ गिना गया,’ उसका मुझे मैं पूरा होना अवश्य है; क्योंकि मेरे विषय की बातें पूरी होने पर हैं।” ३८ उन्होंने कहा, “हे प्रभु, देख, यहाँ दो तलवारें हैं।” उसने उनसे कहा, “बहुत हैं।” ३९ तब वह बाहर निकलकर अपनी रीति के अनुसार जैतून के पहाड़ पर गया, और चेते उसके पीछे हो लिए। ४० उस जगह पहुँचकर उसने उनसे कहा, “प्रार्थना करो, कि तुम परीक्षा मैं न पड़ो।” ४१ और वह आप उससे अलग एक ढेला फेंकने की दूरी भर गया, और घूटने टेककर प्रार्थना करने लगा। ४२ “हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, फिर भी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो।” ४३ तब सर्वग से एक दूत उसको दिखाई दिया जो उसे सामर्थ्य देता था। ४४ और वह अत्यन्त संकट में व्याकुल होकर और भी हार्दिक बेदना से प्रार्थना करने लगा; और उसका परीक्षा मानो लह की बड़ी-बड़ी बैंदों के समान भूमि पर गिर रहा था। ४५ तब वह प्रार्थना से उठा और अपने चेलों के पास आकर उन्हें उदासी के

मारे सोता पाया। ४६ और उनसे कहा, “क्यों सोते हो? उठो, प्रार्थना करो, कि परीक्षा मैं न पड़ो।” ४७ वह यह कह ही रहा था, कि देखो एक भीड़ आई, और उन बारहों मैं से एक जिसका नाम यहदा था उनके आगे-आगे आरहा था, वह यीशु के पास आया, कि उसे चूम ले। ४८ यीशु ने उससे कहा, “हे यहदा, क्या तू चूमा लेकर मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है?” ४९ उसके साथियों ने जब देखा कि क्या होनेवाला है, तो कहा, “हे प्रभु, क्या हम तलवार चलाएँ?” ५० और उनमें से एक ने महायाजक के दास पर तलवार चलाकर उसका दाहिना कान काट दिया। ५१ इस पर यीशु ने कहा, “अब बस करो।” और उसका कान छूकर उसे अच्छा किया। ५२ तब यीशु ने प्रधान याजकों और मन्दिर के पहस्तों के सरदारों और प्राचीनों से, जो उस पर चढ़ आए थे, कहा, “क्या तुम मुझे डाकू जानकर तलवारें और लातियाँ लिए हुए निकले हो? ५३ जब मैं मन्दिर में हर दिन तुम्हारे साथ था, तो तुम ने मुझ पर हाथ न डाला; पर यह तुम्हारी घड़ी है, और अंधकार का अधिकार है।” ५४ फिर वे उसे पकड़कर ले चले, और महायाजक के घर मैं लाए और पतरस दूर ही दूर उसके पीछे-पीछे चलता था। ५५ और जब वे आँगन में आग सुलगाकर इकट्ठे बैठे, तो पतरस भी उनके बीच मैं बैठ गया। ५६ और एक दासी उसे आग के उजियाले मैं बैठे देखकर और उसकी ओर ताक कर कहने लगी, “यह भी तो उसके साथ था।” ५७ परन्तु उसने यह कहकर इन्कार किया, “हे नारी, मैं उसे नहीं जानता।” ५८ थोड़ी देर बाद किसी और ने उसे देखकर कहा, “तू भी तो उन्हीं में से है।” पतरस ने कहा, “हे मनुष्य, मैं नहीं हूँ।” ५९ कोई घटे भर के बाद एक और मनुष्य दृढ़ता से कहने लगा, “निश्चय यह भी तो उसके साथ था; क्योंकि यह गतिली है।” ६० पतरस ने कहा, “हे मनुष्य, मैं नहीं जानता कि तू क्या कहता है?” वह कह ही रहा था कि तुरन्त मुर्गे ने बाँग दी। ६१ तब प्रभु ने घूमकर पतरस की ओर देखा, और पतरस को प्रभु की वह बात याद आई जो उसने कही थी, “आज मुर्गे के बाँग देने से पहले, तू तीन बार मेरा इनकार करोगा।” ६२ और वह बाहर निकलकर फूट फूटकर रोने लगा। ६३ जो मनुष्य यीशु को पकड़े हुए थे, वे उसका उपहास करके पीटने लगे; ६४ और उसकी आँखें ढाँपकर उससे पूछा, “भविष्यद्वाणी करते बता कि तुझे किसने मारा।” ६५ और उन्होंने बहुत सी और भी निन्दा की बातें उसके विरोध में कहीं। ६६ जब दिन हआ तो लोगों के पुरनिए और प्रधान याजक और शासी इकट्ठे हुए, और उसे अपनी महासभा में लाकर पूछा, ६७ “यदि तू मसीह है, तो हम से कह दे!” उसने उनसे कहा, “यदि मैं तुम से कहूँ तो विवास न करोगे।” ६८ और यदि पूछूँ, तो उत्तर न दोगे। ६९ परन्तु अब से मनुष्य का पुनर्संवर्तीत्व की दावी होगी और बैठा रहेगा।” ७० इस पर सब ने कहा, “तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है?” उसने उनसे कहा, “तुम आप ही कहते हो, क्योंकि मैं हूँ।” ७१ तब उन्होंने कहा, “अब हमें गवाही की क्या आवश्यकता है; क्योंकि हमने आप ही उसके मुँह से सुन लिया है।”

२३ तब सारी सभा उठकर यीशु को पिलातुस के पास ले गई। १ और वे यह कहकर उस पर दोष लगाने लगे, “हमने इसे लोगों को बहकाते और कैसर को कर देने से मना करते, और अपने आपको मसीह, राजा कहते हुए सुना है।” २ पिलातुस ने उससे पूछा, “क्या तू यहदियों का राजा है?” उसने उसे उत्तर दिया, “तू आप ही कह रहा है।” ३ तब पिलातुस ने प्रधान याजकों और लोगों से कहा, “मैं इस मनुष्य में कुछ दोष नहीं पाता।” ४ पर वे और भी दृढ़ता से कहने लगे, “यह गलीली से लेकर यहाँ तक सारे यहदियों में उपदेश दे देकर लोगों को भड़काता है।” ५ यह सुनकर पिलातुस ने पूछा, “क्या यह मनुष्य गलीली है?” ६ और यह जानकर कि वह हेरोदेस की रियासत का है, उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि उन दिनों में वह भी

यस्सलेम में था। १ हेरोदेस यीशु को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह बहुत दिनों से उसको देखना चाहता था: इसलिए कि उसके विषय में सुना था, और उसका कुछ चिन्ह देखने की आशा रखता था। २ वह उससे बहुत सारी बातें पूछता रहा, पर उसने उसको कुछ भी उत्तर न दिया। ३ और प्रधान याजक और शास्त्री खड़े हुए तन मन से उस पर दोष लगाते रहे। ४ तब हेरोदेस ने अपने सिपाहियों के साथ उसका अपमान करके उपहास किया, और भड़कलीला बच्च पहनाकर उसे पिलातुस के पास लौटा दिया। ५ उसी दिन पिलातुस और हेरोदेस मिल हो गए। इसके पहले वे एक दूसरे के बैरीथे। ६ पिलातुस ने प्रधान याजकों और सरदारों और लोगों को बुलाकर उनसे कहा, ७ “तुम इस मनुष्य को लोगों का बहकानेवाला ठहराकर मेरे पास लाए हो, और देखो, मैंने तुहारे सामने उसकी जाँच की, पर जिन बातों का तुम उस पर दोष लगाते हो, उन बातों के विषय में मैंने उसमें कुछ भी दोष नहीं पाया है, ८ न हेरोदेस ने, क्योंकि उसने उसे हमारे पास लौटा दिया है: और देखो, उससे ऐसा कुछ नहीं हुआ कि वह मृत्यु के दण्ड के योग्य ठहराया जाए। ९ इसलिए मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूँ।” १० पिलातुस पर्व के समय उनके लिए एक बन्दी को छोड़ने पर विश्वा था। ११ तब सब भिलकर चिल्लता उठे, “इसका काम तमाम कर, और हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे।” १२ वह किसी बलवे के कारण जो नगर में हुआ था, और हत्या के कारण बदीग्रह में डाला गया था। १३ पर पिलातुस ने यीशु को छोड़ने की इच्छा से लोगों को फिर समझाया। १४ परन्तु उन्होंने चिल्लाकर कहा, “उसे कूस पर चढ़ा, कूस पर!” १५ उसने तीसरी बार उसे कहा, “क्यों उसने कौन सी बुराई की है? मैंने उसमें मृत्युण्ड के योग्य कोई बात नहीं पाई। इसलिए मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूँ।” १६ परन्तु वे चिल्ला चिल्लाकर पीछे पड़ गए, कि वह कूस पर चढ़ाया जाए, और उनका चिल्लाना प्रबल हुआ। १७ अतः पिलातुस ने अज्ञा दी, कि उनकी विनती के अनुसार किया जाए। १८ और उनने उस मनुष्य को जो बलवे और हत्या के कारण बन्दीग्रह में डाला गया था, और जिसे वे माँगते थे, छोड़ दिया; और यीशु को उनकी इच्छा के अनुसार सौंप दिया। १९ जब वे उसे लिए जा रहे थे, तो उन्होंने शपौन नाम एक कुरेनी को जो गाँव से आ रहा था, पकड़कर उस पर कूस को लाद दिया कि उसे यीशु के पीछे-पीछे ले चले। २० और लोगों की बड़ी भीड़ उसके पीछे हो रही: और बहुत सारी बिल्हारी भी, जो उसके लिये छाती-पीटती और बिलाप करती थी। २१ यीशु ने उनकी ओर फिरकर कहा, “हे यस्सलेम की पुनियों, मैं लिये मत रोओ; परन्तु अपने और अपने बालकों के लिये रोओ। २२ क्योंकि वे दिन आते हैं, जिनमें लोग कहेंगे, ‘धन्य हैं वे जो बाँझ हैं, और वे गर्भ जो न जने और वे स्तन जिन्होंने दध न पिलाया।’ २३ उस समय ‘वे पहाड़ों से कहने लगेंगे, कि हम पर पिरो, और टीलों से कि हमें ढांप लो।’ २४ ‘क्योंकि जब वे हरे पेड़ के साथ ऐसा करते हैं, तो सर्खे के साथ क्या कुछ न किया जाएगा?’ २५ वे और दो मनुष्यों को भी जो कुकर्मी थे उसके साथ मार डालने को ले चले। २६ जब वे उस जगह जिसे खोपड़ी कहते हैं पूँचे, तो उन्होंने वहाँ उसे और उन कुकर्मियों को भी एक को दाहिनी और दूसरे को बाई और कूर्सों पर चढ़ाया। २७ तब यीशु ने कहा, “हे पिता, इहें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं?” और उन्होंने चिठ्ठियाँ डालकर उसके कपड़े बाँट लिए। २८ लोग खड़े-खड़े देख रहे थे, और सरदार भी उपहास कर करके कहते थे, “इसने औरों को बचाया, यदि यह परमेश्वर का मसीह है, और उसका चुना हुआ है, तो अपने आपको बचा ले।” २९ सिपाही भी पास आकर और सिरका देकर उसका उपहास करके कहते थे। ३० “यदि तू यहदियों का राजा है, तो अपने आपको बचा!” ३१ और उसके ऊपर एक दोषपत्र भी लगा था: “यह यहदियों का राजा है।

है।” ३२ जो कुकर्मी लटकाए गए थे, उनमें से एक ने उसकी निन्दा करके कहा, “क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आपको और हमें बचा!” ३३ इस पर दूसरे ने उसे डाँटकर कहा, “क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू भी तो वही दण्ड पा रहा है, ३४ और हम तो न्यायामुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं; पर इसने कोई अनुचित काम नहीं किया।” ३५ तब उसने कहा, “हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।” ३६ उसने उससे कहा, “मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोकमें होगा।” ३७ और लगभग दोपहर से तीसरे पहर तक सारे देश में अधियारा छाया रहा, ३८ और सूर्य का उजियाला जाता रहा, और मन्दिर का परदा बीच से फट गया, ३९ और यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, “हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।” और यह कहकर प्राण छोड़ दिए। ४० सरदार ने, जो कुछ हुआ था देखकर परमेश्वर की बड़ाई की, और कहा, “निश्चय यह मनुष्य धर्मी था।” ४१ और भीड़ जो यह देखने को इकट्ठी हुई थी, इस घटना को देखकर छाती पीटती हुई लौट गई। ४२ और उसके सब जान-पहचान, और जो बिल्हारी गलील से उसके साथ आई थीं, दूर खड़ी हुई यह सब देख रही थीं। ४३ और वहाँ, यूसुफ नामक महासभा का एक सदस्य था, जो सज्जन और धर्मी पुख था। ४४ और उनके विचार और उनके इस काम से प्रसन्न न था; और वह यहदियों के नगर अरिमतियाह का गहनेवाला और परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा करनेवाला था। ४५ उसने पिलातुस के पास जाकर यीशु का शव माँगा, ४६ और उसे उतारकर मलमल की चादर में लपेटा, और एक कब्र में रखा, जो चूटन में खोटी हुई थी; और उसमें कोई कभी न रखा गया था। ४७ वह तैयारी का दिन था, और सबत का दिन आरम्भ होने पर था। ४८ और उन बिल्हारी ने जो उसके साथ गलील से आई थीं, पीछे-पीछे, जाकर उस कब्र को देखा और यह भी कि उसका शव किस रीति से रखा गया है। ४९ और लौटकर सुगन्धित वस्तुएँ और इत्र तैयार किया; और सबत के दिन तो उन्होंने आजा के अनुसार विश्वाम किया।

२४ परन्तु सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर को वे उन सुगन्धित वस्तुओं को जो उन्होंने तैयार की थी, लेकर कब्र पर आईं। १ और उन्होंने पत्थर को कब्र पर से लुकड़ा हुआ पाया, २ और भीतर जाकर प्रभु यीशु का शव न पाया। ३ जब वे इस बात से भौचककी हो रही थीं तब, दो पुख झलकते बहु पहने हुए उनके पास आ खड़े हुए। ४ जब वे डर गईं, और धरती की ओर मुँह झक्का रही; तो उन्होंने उसे कहा, “तुम जीविते को मेरे हुओं में क्यों ढूँढ़ती हो? ५ वह यहाँ नहीं, परन्तु जी उठा है। स्मरण करो कि उसने गलील में रहते हुए तुम से कहा था, ६ ‘अवश्य है, कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए, और कूस पर चढ़ाया जाए, और तीसरे दिन जी उठे।’” ७ तब उसकी बातें उनको स्परण आईं, ८ और कब्र से लौटकर उन्होंने उन यारहों को, और अन्य सब को, ये सब बातें कह सुनाई। ९ जिन्होंने प्रेरितों से ये बातें कहीं, वे मरियम मगदलीनी और योअन्ना और याकूब की माता मरियम और उनके साथ की अन्य बिल्हारी भी थीं। १० परन्तु उनकी बातें उन्हें कहानी के समान लगीं और उन्होंने उन पर विश्वास नहीं किया। ११ तब पतरस उठकर कब्र पर दौड़ा गया, और झक्कर केवल कपड़े पड़े देखे, और जो हुआ था, उससे अचम्भा करता हुआ, अपने घर चला गया। १२ उसी दिन उनमें से दो जन इमाऊस नामक एक गाँव को जा रहे थे, जो यस्सलेम से कोई सात मील की दूरी पर था। १३ और वे इन सब बातों पर जो हुई थीं, आपस में बातचीत करते जा रहे थे। १४ और जब वे आपस में बातचीत और पूछताछ कर रहे थे, तो यीशु आप पास आकर उनके साथ हो लिया। १५ परन्तु उनकी आँखें ऐसी बन्द

कर दी गई थी, कि उसे पहचान न सके। १७ उसने उनसे पूछा, “ये क्या बातें हैं, जो तुम चलते-चलते आपस में करते हो?” वे उदास से खड़े रह गए। १८ यह सुनकर, उनमें से क्लियुपास नामक एक व्यक्ति ने कहा, “क्या तू यस्शलेम में अकेला परदेशी है; जो नहीं जानता, कि इन दिनों में उसमें क्या-क्या हुआ है?” १९ उसने उनसे पूछा, “कौन सी बातें” उन्होंने उससे कहा, “यीशु नासरी के विषय में जो परमेश्वर और सब लोगों के निकट काम और वचन में सामर्थी भविष्यद्वत्ता था। २० और प्रधान याजकों और हमारे सरदारों ने उसे पकड़वा दिया, कि उस पर मृत्यु की आज्ञा दी जाए; और उसे कूस पर छढ़वाया। २१ परन्तु हमें आज्ञा थी, कि यही इमाइल को छुटकारा देगा, और इन सब बातों के सिवाय इस घटना को हुए तीसरा दिन है। २२ और हम में से कई स्थियों ने भी हमें आश्वर्य में डाल दिया है, जो भोर को कब्र पर गई थी। २३ और जब उसका शब न पाया, तो यह कहती हुई आई, कि हमने स्वर्गदूतों का दर्शन पाया, जिन्होंने कहा कि वह जीवित है। २४ तब हमारे साथियों में से कई एक कब्र पर गए, और जैसा स्थियों ने कहा था, वैसा ही पाया; परन्तु उसको न देखा।” २५ तब उसने उनसे कहा, “हे निर्बुद्धियों, और भविष्यद्वत्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियों! २६ क्या अवश्य न था, कि मसीह ये दुर्ख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे?” २७ तब उसने मूसा से और सब भविष्यद्वत्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्रशास्त्रों में से, अनें विषय में की बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया। २८ इन्हें वे उस गाँव के पास पहुँचे, जहाँ वे जा रहे थे, और उसके ढंग से ऐसा जान पड़ा, कि वह आगे बढ़ना चाहता है। २९ परन्तु उन्होंने यह कहकर उसे रोका, “हमारे साथ रह; क्योंकि संध्या हो चली है और दिन अब बहुत ढल गया है।” तब वह उनके साथ रहने के लिये भीतर गया। ३० जब वह उनके साथ भोजन करने बैठा, तो उसने रोटी लेकर धन्यवाद किया, और उसे तोड़कर उनको देने लगा। ३१ तब उनकी आँखें खुल गईं; और उन्होंने उसे पहचान लिया, और वह उनकी आँखों से छिप गया। ३२ उन्होंने आपस में कहा, “जब वह मार्ग में हम से बातें करता था, और पवित्रशास्त्र का अर्थ हमें समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई?” ३३ वे उसी घड़ी उठकर यस्शलेम को लौट गए, और उन ग्यारहों और उनके साथियों को इकट्ठे पाया। ३४ वे कहते थे, “प्रभु सचमुच जी उठा है, और शमैन को दिखाई दिया है।” ३५ तब उन्होंने मार्ग की बातें उन्हें बता दीं और यह भी कि उन्होंने उसे रोटी तोड़ते समय कैसे पहचाना। ३६ वे ये बातें कह ही रहे थे, कि वह आप ही उनके बीच में आ खड़ा हुआ; और उनसे कहा, “तुहें शान्ति मिले।” ३७ परन्तु वे घबरा गए, और डर गए, और समझे, कि हम किसी भूत को देख रहे हैं। ३८ उसने उनसे कहा, “क्यों घबराते हो? और तुम्हारे मन में क्यों सन्देह उठते हैं? ३९ मेरे हाथ और मेरे पाँव को देखो, कि मैं वहीं हूँ, मुझे छूकर देखो; क्योंकि आत्मा के हड्डी माँस नहीं होता जैसा मुझ में देखते हों।” ४० यह कहकर उसने उन्हें अपने हाथ पाँव दिखाए। ४१ जब अनन्द के मारे उनको विश्वास नहीं हो रहा था, और आश्वर्य करते थे, तो उसने उनसे पूछा, “क्या यहाँ तम्हारे पास कुछ भोजन है?” ४२ उन्होंने उसे भुनी मछली का टुकड़ा दिया। ४३ उसने लेकर उनके सामने खाया। ४४ फिर उसने उनसे कहा, “ये मेरी बातें हैं, जो मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए, तुम से कहीं थीं, कि अवश्य है, कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वत्ताओं और भजनों की पुस्तकों में, मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों।” ४५ तब उसने पवित्रशास्त्र समझने के लिये उनकी समझ खोल दी। ४६ और उनसे कहा, “यह लिखा है कि मसीह दुर्ख उठाएगा, और तीसरे दिन मेरे हूओं में से जी उठेगा, ४७ और यस्शलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के

नाम से किया जाएगा। ४८ तुम इन सब बातें के गवाह हो। ४९ और जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतासँगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।” ५० तब वह उन्हें बैतनियाह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी; ५१ और उन्हें आशीष देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया। ५२ और वे उसको दण्डबत करके बड़े आनन्द से यस्शलेम को लौट गए। ५३ और वे लगातार मन्दिर में उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थे।

यूहन्ना

१ आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर

था। २ यहीं आदि में परमेश्वर के साथ था। ३ सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। ४ उसमें जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था। ५ और ज्योति अंधकार में चमकती है; और अंधकार ने उसे ग्रहण न किया। ६ एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से भेजा हुआ, जिसका नाम यूहन्ना था। ७ यह गवाही देने आया, कि ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएँ। ८ वह आप तो वह ज्योति न था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये आया था। ९ सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी। १० वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहचाना। ११ वह अपने घर में आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। १२ परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं १३ वे न तो लह से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं। १४ और वचन देवधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमसे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा। १५ यूहन्ना ने उसके विषय में गवाही दी, और पुकारकर कहा, “यह वही है, जिसका मैंने वर्णन किया, कि जो मेरे बाद आ रहा है, वह मुझसे बढ़कर है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।” १६ क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह। १७ इसलिए कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु असुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची। १८ परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रगट किया। १९ यूहन्ना की गवाही यह है, कि जब यहदियों ने यस्थलेम से याजकों और लेवियों को उससे यह पूछने के लिये भेजा, “तू कौन है?” २० तो उसने यह मान लिया, और इन्कार नहीं किया, परन्तु मान लिया “मैं मसीह नहीं हूँ।” २१ तब उन्होंने उससे पूछा, “तो फिर कौन है? क्या तू एलियाह है?” उसने कहा, “मैं नहीं हूँ।” २२ “तो क्या तू वह भविष्यद्वता है?” उसने उत्तर दिया, “नहीं।” २३ तब उन्होंने उससे पूछा, “फिर तू है कौन? ताकि हम अपने भेजनेवालों को उत्तर दें। तू अपने विषय में क्या कहता है?” २४ उसने कहा, “जैसा यथायाह भविष्यद्वता ने कहा है, मैं जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हूँ कि तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो।” २५ ये फरीसियों की ओर से भेजे गए थे। २६ उन्होंने उससे यह प्रश्न पूछा, “यदि तू न मसीह है, और न एलियाह, और न वह भविष्यद्वता है, तो फिर वपतिस्मा क्यों देता है?” २७ यूहन्ना ने उनको उत्तर दिया, “मैं तो जल से वपतिस्मा देता हूँ, परन्तु तुम्हारे बीच में एक व्यक्ति खड़ा है, जिसे तुम नहीं जानते।” २८ अर्थात् मेरे बाद आनेवाला है, जिसकी जूती का फीता मैं खोलने के योग्य नहीं।” २९ ये बातें यरटन के पार बैतनियाह में हैं, जहाँ यूहन्ना वपतिस्मा देता था। ३० दूसरे दिन उसने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, “देखो, यह परमेश्वर का मैना है, जो जगत के पाप हरता है।” ३१ यह वही है, जिसके विषय में मैंने कहा था, कि एक पुस्त मैं पीछे आता है, जो मुझसे श्रेष्ठ है, क्योंकि वह मुझसे पहले था। ३२ और मैं तो उसे पहचानता न था, परन्तु इसलिए मैं जल से वपतिस्मा देता हुआ आया, कि वह इसाएल पर प्रगट हो जाए।” ३३ और यूहन्ना ने यह गवाही दी, “मैंने आत्मा को कबूतर के रूप में आकाश से उतरते देखा है, और वह उस पर ठहर गया। ३४ और मैं तो उसे पहचानता नहीं था, परन्तु जिसने

मुझे जल से वपतिस्मा देने को भेजा, उसी ने मुझसे कहा, ‘‘जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे; वही पवित्र आत्मा से वपतिस्मा देनेवाला है।’’ ३५ दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके चेलों में से दो जन खड़े हुए थे। ३६ और उसने यीशु पर जो जा रहा था, दृष्टि करके कहा, “देखो, यह परमेश्वर का मैना है।” ३७ तब वे दोनों चेले उसकी सुनकर यीशु के पीछे हो लिए। ३८ यीशु ने मुड़कर और उनको पीछे आते देखकर उन्से कहा, “तुम किसकी खोज में हो?” उन्होंने उससे कहा, “हे रब्बी, (अर्थात् हे गुरु), तू कहाँ होता है?” ३९ उसने उससे कहा, “चलो, तो देख लोगे।” तब उन्होंने आकर उसके रहने का स्थान देखा, और उस दिन उसी के साथ रहे; और यह दसवें घंटे के लगभग था। ४० उन दोनों में से, जो यूहन्ना की बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिए थे, एक शमैन पतरस का भाई अन्द्रियास था। ४१ उसने पहले अपने सगे भाई शमैन से मिलकर उससे कहा, “हमको खिस्त अर्थात् मसीह मिल गया।” ४२ वह उसे यीशु के पास लाया: यीशु ने उस पर दृष्टि करके कहा, “तू यूहन्ना का पत्र शमैन है, तू कैफा अर्थात् पतरस कहलाएगा।” ४३ दूसरे दिन यीशु ने गलील को जाना चाहा, और फिलिप्पुस से मिलकर कहा, “मेरे पीछे हो लो।” ४४ फिलिप्पुस तो अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का निवासी था। ४५ फिलिप्पुस ने न नतनएल से मिलकर उससे कहा, “जिसका वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वत्ताओं ने किया है, वह हमको मिल गया; वह यूसुफ का पुत्र, यीशु नासरी है।” ४६ न नतनएल ने उससे कहा, “क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है?” फिलिप्पुस ने उससे कहा, “चलकर देख ले।” ४७ यीशु ने न नतनएल को अपनी ओर आते देखकर उसके विषय में कहा, “देखो, यह सचमुच इस्पाली है: इसमें कपट नहीं।” ४८ न नतनएल ने उससे कहा, “तू मुझे कैसे जानता है?” यीशु ने उसको उत्तर दिया, “इससे पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के तले था, तब मैंने तुझे देखा था।” ४९ न नतनएल ने उसको उत्तर दिया, “हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है, तू इसाएल का महाराजा है।” ५० यीशु ने उसको उत्तर दिया, “मैंने जो तुझ से कहा, कि मैंने तुझे अंजीर के पेड़ के तले देखा, क्या तू इसलिए विश्वास करता है? तू इससे भी बड़े-बड़े काम देखेगा।” ५१ फिर उससे कहा, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ण की खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर उत्तर देखोगे।”

२ फिर तीसरे दिन गलील के काना में किसी का विवाह था, और यीशु की माता भी वहाँ थी। ३ यीशु और उसके चेले भी उस विवाह में निमंत्रित थे। ४ जब दाखरस खत्म हो गया, तो यीशु की माता ने उससे कहा, “उनके पास दाखरस नहीं रहा।” ५ यीशु ने उससे कहा, “हे महिला मुझे तुझ से क्या काम? अभी मेरा समयनहीं आया।” ६ उसकी माता ने सेवकों से कहा, “जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना।” ७ वहाँ यहदियों के शुद्धिकरण के लिए पथर के छ: मटके रखे थे, जिसमें दो-दो, तीन-तीन मन समाता था। ८ यीशु ने उससे कहा, “मटकों में पानी भर दो।” तब उन्होंने उन्हें मुहाँमूहें भर दिया। ९ तब उसने उनसे कहा, “अब निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।” और वे ले गए। १० जब भोज के प्रधान ने वह पानी चरा, जो दाखरस बन गया था और नहीं जानता था कि वह कहाँ से आया है; (परन्तु जिन सेवकों ने पानी निकाला था वे जानते थे), तो भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाकर, उससे कहा ११ “हर एक मनुष्य पहले अच्छा दाखरस देता है, और जब लोग पीकर छक जाते हैं, तब मध्यम देता है; परन्तु तूने अच्छा दाखरस अब तक रख छोड़ा है।” १२ यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहला चिन्ह दिखाकर अपनी महिमा प्रगट की और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया। १३ इसके बाद

वह और उसकी माता, उसके भाई, उसके चेले, कफरनहम को गए और वहाँ कुछ दिन रहे। १३ यहदियों का फसह का पर्व निकट था, और यीशु यस्शलेम को गया। १४ और उसने मन्दिर में बैल, और भेड़ और कबूतर के बेचनेवालों और सर्साफ़ों को बैठे हुए पाया। १५ तब उसने रसियों का कोडा बनाकर, सब भेड़ों और बैलों को मन्दिर से निकाल दिया, और सर्साफ़ों के पैसे बिखेर दिये, और मेजें उलट दी, १६ और कबूतर बेचनेवालों से कहा, “इन्हें यहाँ से ले जाओ। मेरे पिता के भवन को व्यापार का घर मत बनाओ।” १७ तब उसके चेलों को स्मरण आया कि लिखा है, “तेरे घर की धून मुझे खा जाएगी।” १८ इस पर यहदियों ने उससे कहा, “तू जो यह करता है तो हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है?” १९ यीशु ने उनको उत्तर दिया, “इस मन्दिर को ढा दो, और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा।” २० यहदियों ने कहा, “इस मन्दिर के बनाने में छियालीस वर्ष लगे हैं, और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा?” २१ परन्तु उसने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था। २२ फिर जब वह मुर्दों में से जी उठा फिर उसके चेलों को स्मरण आया कि उसने यह कहा था; और उन्होंने पवित्रशास्त्र और उस वचन का जो यीशु ने कहा था, विश्वास किया। २३ जब वह यस्शलेम में फसह के समय, पर्व में था, तो बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखाता था देखकर उसके नाम पर विश्वास किया। २४ परन्तु यीशु ने अपने आपको उनके भ्रातों पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब को जानता था, २५ और उसे प्रयोजन न था कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है?

३ फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम का एक मनुष्य था, जो यहदियों का सरदार था। ३ उसने रात की यीशु के पास आकर उससे कहा, “हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।” ४ यीशु ने उसको उत्तर दिया, “मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।” ५ नीकुदेमुस ने उससे कहा, “मनुष्य जब बृद्ध हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?” ६ यीशु ने उत्तर दिया, “मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मेतो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।” ७ क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। ८ अचम्भा न कर, कि मैंने तुझ से कहा, ‘तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।’ ९ हवा जिधर चाहीती है उधर चलती है, और तू उसकी आवाज सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।” १० नीकुदेमुस ने उसको उत्तर दिया, “ये बातें कैसे हो सकती हैं?” ११ यह सुनकर यीशु ने उससे कहा, “तू इसाएलियों का गुरु होकर भी क्या इन बातों को नहीं समझता? १२ मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ कि हम जो जानते हैं, वह कहते हैं, और जिसे हमने देखा है उसकी गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते।” १३ जब मैंने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम विश्वास नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूँ, तो फिर क्यों विश्वास करोगे? १४ कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उत्तरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है। १५ और जिस तरह से मूसा ने जंगल में सौंप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए। १६ ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए। (aiōnios g166) १७ क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया,

ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (aiōnios g166) १८ परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। १९ जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहराया जा चुका है; इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। २० और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुझे थे। २१ क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए। २२ परन्तु जो सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगत हों कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।” २३ इसके बाद यीशु और उसके चेले यहदिया देश में आएँ; और वह वहाँ उनके साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा। २४ और यहन्ना भी सालेम के निकट ऐनोन में बपतिस्मा देता था। क्योंकि वहाँ बहुत जल था, और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे। २५ क्योंकि यहन्ना उस समय तक जेलखाने में नहीं डाला गया था। २६ वहाँ यहन्ना के चेलों का किसी यहदी के साथ शुद्धि के विषय में वाद-विवाद हुआ। २७ और उन्होंने यहन्ना के पास आकर उससे कहा, “हे रब्बी, जो व्यक्ति यस्तदन के पार तेरे साथ था, और जिसकी तौरे गवाही दी है, देख, वह बपतिस्मा देता है, और सब उसके पास आते हैं।” २८ यहन्ना ने उत्तर दिया, “जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए, तब तक वह कुछ नहीं पा सकता।” २९ तुम तो आप ही मेरे गवाह हो, कि मैंने कहा, ‘मैं मसीह नहीं, परन्तु उसके आगे भेजा गया हूँ।’ ३० जिसकी दुल्हन है, वही दूल्हा है: परन्तु दूल्हे का मित्र जो खड़ा हुआ उसकी सुनता है, दूल्हे के शब्द से बहुत हर्षित होता है; अब मेरा यह हर्ष पूरा हुआ है। ३१ अवश्य है कि वह बड़े और मैं घटूँ। ३२ “जो ऊपर से आता है, वह सर्वार्तम है, जो पृथ्वी से आता है वह पृथ्वी की है; और पृथ्वी की ही बातें कहता है: जो स्वर्ग से आता है, वह सब के ऊपर है। ३३ जो कुछ उसने देखा, और सुना है, उसी की गवाही देता है, और कोई उसकी गवाही ग्रहण नहीं करता।” ३४ जिसने उसकी गवाही ग्रहण कर ली उसने इस बात पर छाप दे दी कि परमेश्वर सच्चा है। ३५ क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है: क्योंकि वह आत्मा नाप कर नहीं देता। ३६ पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उसने सब वस्तुएँ उसके हाथ में दे दी हैं। ३७ जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।” (aiōnios g166)

४ फिर जब प्रभु को मालास हुआ कि फरीसियों ने सुना है कि यीशु यहन्ना से अधिक चेले बनाता और उन्हें बपतिस्मा देता है। १ (यद्यपि यीशु स्वयं नहीं वरन् उसके चेले बपतिस्मा देते थे), २ तब वह यहदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया, ३ और उसको सामरिया से होकर जाना अवश्य था। ४ इसलिए वह सूखारानामक सामरिया के एक नगर तक आया, जो उस भूमि के पास है जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था। ५ और याकूब का कुआँ भी वही था। यीशु मार्ग का थका हुआ उस कुआँ पर ऐसे ही बैठ गया। और यह बात दोपहर के समय हुई। ६ इसने में एक सामरी झीं जल भरने को आई। यीशु ने उससे कहा, “मुझे पानी पिला।” ७ क्योंकि उसके चेले तो नगर में भोजन मोल लेने को गए थे। ८ उस सामरी झीं ने उससे कहा, “तू यहदी होकर मुझ सामरी झीं से पानी क्यों माँगता है?” क्योंकि यहदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते। ९ यीशु ने उत्तर दिया, “यदि तू परमेश्वर के

वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कहता है, 'मुझे पारी पिला,' तो तू उससे माँगती, और वह तुझे जीवन का जलदेता।" ११ स्त्री ने उससे कहा, "हे स्वामी, तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं, और कुआँ गहरा है; तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहाँ से आया? १२ क्या तू हमारे पिता याकब से बड़ा है, जिसने हमें यह कुआँ दिया; और आप ही अपनी सन्तान, और अपने पशुओं समेत उसमें से पिया?" १३ यीशु ने उसको उत्तर दिया, "जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा, १४ परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा; बरन् जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा, जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।" (aiōn g165, aiōnios g166) १५ स्त्री ने उससे कहा, "हे प्रभु, वह जल मुझे दे ताकि मैं प्यासी न होऊँ और न जल भरने को इतनी दूर आऊँ।" १६ यीशु ने उससे कहा, "जा, अपने पति को यहाँ बुला ला।" १७ स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं बिना पति की हाँ।" यीशु ने उससे कहा, "तू ठीक कहती हैं, 'मैं बिना पति की हाँ।'" १८ क्योंकि तू पाँच पति कर चुकी हैं, और जिसके पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं; यह तूने सच कहा है।" १९ स्त्री ने उससे कहा, "हे प्रभु, मुझे लगता है कि तू भविष्यद्वृत्ता है। २० हमारे पूर्वजों ने इसी पहाड़ पर भजन किया, और तुम कहते हो कि वह जगह जहाँ भजन करना चाहिए यस्शलेम में है।" २१ यीशु ने उससे कहा, "हे नारी, मेरी बात का विश्वास कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे, न यस्शलेम में। २२ तुम जिसे नहीं जानते, उसका भजन करते हो; और हम जिसे जानते हैं, उसका भजन करते हैं; क्योंकि उद्धार यहदियों में से है। २३ परन्तु वह समय आता है, बरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता परमेश्वर की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है। २४ परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।" २५ स्त्री ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, अनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।" २६ यीशु ने उससे कहा, "मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।" २७ इन्हें मैं उसके चेले आ गए, और अचम्भा करने लगे कि वह स्त्री से बातें कर रहा है; फिर भी किसी ने न पूछा, "तू क्या चाहता है?" या "किस लिये उससे बातें करता है?" २८ तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी, २९ "आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैंने किया मुझे बता दिया। कहीं यहीं तो मसीह नहीं है?" ३० तब वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे। ३१ इन्हें मैं उसके चेले यीशु से यह विनिर्ती करने लगे, "हे रब्बी, कुछ खा लो।" ३२ परन्तु उसने उनसे कहा, "मेरे पास खाने के लिये ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।" ३३ तब चेलों ने अपस में कहा, "क्या कोई उसके लिये कुछ खाने को लाया है?" ३४ यीशु ने उनसे कहा, "मेरा भोजन यह है, कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूँ और उसका काम पूरा करूँ।" ३५ क्या तुम नहीं कहते, 'कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं?' देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो, कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं। ३६ और काटनेवाला मजदूरी पाता, और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है, ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर अनन्द करें। (aiōnios g166) ३७ क्योंकि इस पर यह कहावत ठीक बैठती है: 'बोनेवाला और है और काटनेवाला और।' ३८ मैंने तुम्हें खाने खेत काटने के लिये भेजा जिसमें तुम ने परिश्रम नहीं किया औरैं ने परिश्रम किया और तुम उनके परिश्रम के फल में भागी हुए।" ३९ और उस नगर के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री के कहने से यीशु पर विश्वास किया; जिसने यह गवाही दी थी, कि

उसने सब कुछ जो मैंने किया है, मुझे बता दिया। ४० तब जब ये सामरी उसके पास आए, तो उससे विनती करने लगे कि हमारे यहाँ रह, और वह वहाँ दो दिन तक रहा। ४१ और उसके बचन के कारण और भी बहुतों ने विश्वास किया। ४२ और उस स्त्री से कहा, "अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हमने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकात है।" ४३ फिर उन दो दिनों के बाद वह वहाँ से निकलकर गतील को गया। ४४ क्योंकि यीशु ने आप ही साक्षी दी कि भविष्यद्वृत्ता अपने देश में आदर नहीं पाता। ४५ जब वह गतील में आया, तो गतीली आनन्द के साथ उससे मिले; क्योंकि जिन्हें काम उसने यस्शलेम में पर्व के समय किए थे, उहोंने उन सब को देखा था, क्योंकि वे भी पर्व में गए थे। ४६ तब वह फिर गतील के काना में आया, जहाँ उसने पानी को दाखरस बनाया था। वहाँ राजा का एक कर्मचारी था जिसका पुर कफरनहम में बीमार था। ४७ वह यह सुनकर कि यीशु यहदिया से गतील में आ गया है, उसके पास गया और उससे विनिर्ती करने लगा कि चलकर मेरे पुत्र को चंगा कर दें; क्योंकि वह मरने पर था। ४८ यीशु ने उससे कहा, "जब तक तुम चिन्ह और अद्भुत काम न देखोगे तब तक दापिं विश्वास न करोगे।" ४९ राजा के कर्मचारी ने उससे कहा, "हे प्रभु, मेरे बालक की मृत्यु होने से पहले चल।" ५० यीशु ने उससे कहा, "जा, तेरा पुत्र जीवित है।" उस मनुष्य ने यीशु की कही हीई बात पर विश्वास किया और चला गया। ५१ वह मार्ग में जा ही रहा था, कि उसके दास उससे आ मिले और कहने लगे, "तेरा लड़का जीवित है।" ५२ उसने उनसे पूछा, "किस घड़ी वह अच्छा होने लगा?" उहोंने उससे कहा, "कल सातवें घण्टे में उसका ज्वर उत्तर गया।" ५३ तब पिता जान गया कि यह उसी घड़ी हुआ जिस घड़ी यीशु ने उससे कहा, "तेरा पुत्र जीवित है," और उसने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया। ५४ यह दूसरा चिन्ह था जो यीशु ने यहदिया से गतील में आकर दिखाया।

५ इन बातों के पश्चात यहदियों का एक पर्व हुआ, और यीशु यस्शलेम को गया। १ यस्शलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुण्ड है, जो इब्रानी भाषा में बैतहसदा कहलाता है, और उसके पाँच ओसारे हैं। २ इनमें बहुत से बीमार, अधे, लँगड़े और सूखे अंगावले (पानी के हिलने की आशा में) पड़े रहते थे। ३ क्योंकि नियुक्त समय पर परमेश्वर के स्वर्गद्वृत कुण्ड में उत्तरकर पानी को हिलाया करते थे: पानी हिलते ही जो कोई पहले उत्तरता, वह चंगा हो जाता था, चाहे उसकी कोई बीमारी क्यों न हो। ४ वहाँ एक मनुष्य था, जो अडीसी वर्ष से बीमारी में पड़ा था। ५ यीशु ने उसे पड़ा हुआ देखकर और यह जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा है, उससे पूछा, "क्या तू चंगा होना चाहता है?" ६ उस बीमार ने उसको उत्तर दिया, "हे स्वामी, मेरे पास कोई मनुष्य नहीं, कि जब पानी हिलाया जाए, तो मुझे कुण्ड में उतारें; परन्तु मेरे पहुँचते-पहुँचते दूसरा मुझसे पहले उत्तर जाता है।" ७ यीशु ने उससे कहा, "उठ, अपनी खाट उठा और चल फिर।" ८ वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया, और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा। ९ वह सब्त का दिन था। इसलिए यहदी उससे जो चंगा हुआ था, कहने लगे, "आज तो सब्त का दिन है, तुझे खाट उठानी उचित नहीं।" १० उसने उहोंने उत्तर दिया, "जिसने मुझे चंगा किया, उसी ने मुझसे कहा, 'अपनी खाट उठाकर चल फिर।'" ११ उहोंने उससे पूछा, "वह कौन मनुष्य है, जिसने तुझ से कहा, 'खाट उठा और, चल फिर।'?" १२ परन्तु जो चंगा हो गया था, वह नहीं जानता था कि वह कौन है; क्योंकि उस जगह में भीड़ होने के कारण यीशु वहाँ से हट गया था। १३ इन बातों के बाद वह यीशु को मन्दिर में मिला, तब उसने उससे कहा,

“देख, तू तो चंगा हो गया है; फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।” १५ उस मनुष्य ने जाकर यहदियों से कह दिया, कि जिसने मुझे चंगा किया, वह यीश है। १६ इस कारण यहदी यीश को सताने लगे, क्योंकि वह ऐसे-ऐसे काम सब्त के दिन करता था। १७ इस पर यीश ने उनसे कहा, “मेरा पिता परमेश्वर अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूँ।” १८ इस कारण यहदी और भी अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगे, कि वह न केवल सब्त के दिन की विधि को तोड़ता, परन्तु परमेश्वर को अपना पिता कहकर, अपने आपको परमेश्वर के तुल्य ठहराता था। १९ इस पर यीश ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, पुन अप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन-जिन कामों को वह करता है, उन्हें पुन भी उसी रीति से करता है।” २० क्योंकि पिता पुन से प्यार करता है और जो-जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है; और वह इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो। २१ क्योंकि जैसा पिता मेरे हूँओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुन भी जिन्हें चाहता है, उन्हें जिलाता है। २२ पिता किसी का न्याय भी नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुन को सौंप दिया है, २३ इसलिए कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुन की भी आदर करें; जो पुन का आदर नहीं करता, वह पिता का जिसने उसे भेजा है, आदर नहीं करता। २४ मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। (alōnios g166) २५ “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, वह समय आता है, और अब है, जिसमें मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएंगे।” २६ क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उसने पुन को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखें; २७ वरन उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिए कि वह मनुष्य का पुत्र है। २८ इससे अचम्भा मत करो; क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। २९ जिन्होंने भलाई की है, वे जीवन के पुनस्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है, वे टण्ड के पुनस्थान के लिये जी उठेंगे। ३० “मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता, जैसा सनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ।” ३१ यदि मैं आप ही अपनी गवाही दूँ तो मेरी गवाही सच्ची नहीं। ३२ एक और है जो मेरी गवाही देता है, और मैं जानता हूँ कि मेरी जो गवाही वह देता है, वह सच्ची है। ३३ तुम ने यहन्ना से पुछवाया और उनसे सच्चाई की गवाही दी है। ३४ परन्तु मैं अपने विषय में मनुष्य की गवाही नहीं चाहता; परि भी मैं ये बातें इसलिए कहता हूँ, कि तुम्हें उद्घार मिले। ३५ वह तो जलता और चमकता हुआ दीपक था; और तुम्हें कुछ देर तक उसकी ज्योति में, मगन होना अच्छा लगा। ३६ परन्तु मेरे पास जो गवाही है, वह यहन्ना की गवाही से बड़ी है; क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने की सौपा है अर्थात् यही काम जो मैं करता हूँ, वे मेरे गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है। ३७ और पिता जिसने मुझे भेजा है, उसी ने मेरी गवाही दी है: तुम ने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसका रूप देखा है; ३८ और उसके वचन को मन में स्थिर नहीं रखते, क्योंकि जिसे उनसे भेजा तुम उस पर विश्वास नहीं करते। ३९ तुम पवित्रशम्भ में ढूँढते हो, क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है; (alōnios g166) ४० फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते। ४१ मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता। ४२ परन्तु मैं तुम्हें जानता हूँ, कि

तुम मैं परमेश्वर का प्रेम नहीं। ४३ मैं अपने पिता परमेश्वर के नाम से आया हूँ, और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते; यदि कोई और अपने ही नाम से आए, तो उसे ग्रहण कर लोगे। ४४ तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो एकमात्र परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो? ४५ यह न समझो, कि मैं पिता के सामने तुम पर दोष लगाऊँगा, तुम पर दोष लगानेवाला तो है, अर्थात् मूसा है जिस पर तुम ने भरोसा रखा है। ४६ क्योंकि यदि तुम मूसा पर विश्वास करते, तो मुझ पर भी विश्वास करते, इसलिए कि उसने मेरे विषय में लिखा है। ४७ परन्तु यदि तुम उसकी लिखी हुई बातों पर विश्वास नहीं करते, तो मेरी बातों पर क्यों विश्वास करोगे?”

६ इन बातों के बाद यीश गलील की झील अर्थात् तिबिरियास की झील के पार गया। ७ और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्योंकि जो आश्चर्यकर्म वह बीमारों पर दिखाता था वे उनको देखते थे। ८ तब यीश पदाङ पर चढ़कर अपने चेलों के साथ वहाँ बैठा। ९ और यहदियों के फसह का पर्व निकट था। १० तब यीश ने अपनी आँखें उठाकर एक बड़ी भीड़ को अपने पास आते देखा, और फिलिप्पुस से कहा, “हम इनके भोजन के लिये कहाँ से रोटी मोल लाएँ?” ११ परन्तु उसने यह बात उसे परखने के लिये कही; क्योंकि वह स्वयं जानता था कि वह क्या करेगा। १२ फिलिप्पुस ने उसको उत्तर दिया, “दो सौ दीनार की रोटी भी उनके लिये पूरी न होंगी कि उनमें से हर एक को थोड़ी-थोड़ी मिल जाए।” १३ उसके चेलों में से शैमान पतरस के भाई अन्द्रियास ने उससे कहा, “यहाँ एक लड़का है, जिसके पास जौ की पाँच रोटी और दो मछलियाँ हैं, परन्तु इन्हें लोगों के लिये वे क्या हैं!” १४ यीश ने कहा, “लोगों को बैठा दो।” उस जगह बहुत धास थी। तब लोग जिनमें पुस्तों की संख्या लगभग पाँच हजार की थी, बैठ गए। १५ तब यीश ने रोटियाँ ली, और धन्यवाद करके बैठेनेवालों को बौंट दी; और वैसे ही मछलियों में से जिती वे चाहते थे बौंट दिया। १६ जब वे खाकर तुम हो गए, तो उसने अपने चेलों से कहा, “बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ फैका न जाए।” १७ इसलिए उन्होंने बटोरा, और जौ की पाँच रोटियों के टुकड़े जो खानेवालों से बच रहे थे, उनकी बारह टोकरियाँ भरी। १८ तब जो आश्चर्यकर्म उसने कर दिखाया उसे वे लोग देखकर कहने लगे; कि “वह भविष्यद्वत्ता जो जगत में आनेवाला था निश्चय यही है।” १९ यीश यह जानकर कि वे उसे राजा बनाने के लिये आकर पकड़ना चाहते हैं, फिर पदाङ पर अकेला चला गया। २० फिर जब संध्या हुई, तो उसके चेले झील के किनारे गए, २१ और नाव पर चढ़कर झील के पार कफरनहम को जाने लगे। उस समय अंधेरा हो गया था, और यीश अभी तक उनके पास नहीं आया था। २२ और अँखी के कारण झील में लहरें उठने लगी। २३ तब जब वे खेते-खेते तीन चार मील के लगभग निकल गए, तो उन्होंने यीश को झील पर चलते, और नाव के निकट आते देखा, और डर गए। २४ परन्तु उसने उनसे कहा, “मैं हूँ डोरो मत।” २५ तब वे उसे नाव पर चढ़ा लेने के लिये तैयार हुए और तुरन्त वह नाव उसी स्थान पर जा पहुँची जहाँ वह जाते थे। २६ दूसरे दिन उस भीड़ ने, जो झील के पार खड़ी थी, यह देखा, कि यहाँ एक को छोड़कर और कोई छोटी नाव न थी, और यीश अपने चेलों के साथ उस नाव पर न चढ़ा, परन्तु केवल उसके चेले ही गए थे। २७ (तो भी और छोटी नावें तिबिरियास से उस जगह के निकट आईं, जहाँ उन्होंने प्रभु के धन्यवाद करने के बाद रोटी खाई थी।) २८ जब भीड़ ने देखा, कि यहाँ न यीश है, और न उसके चेले, तो वे भी छोटी-छोटी नावों पर चढ़ के यीश को ढूँढते हुए कफरनहम को पहुँचे। २९ और झील के पार उससे मिलकर कहा, “हे रब्बी, त यहाँ कब आया?” ३० यीश ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढते हो कि तुम ने अचम्भित काम

देखे, परन्तु इसलिए कि तुम रोटियाँ खाकर तृप्त हुए। २७ नाशवान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा, क्योंकि पिता, अर्थात् परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी है।” (aiōnios g166) २८ उन्होंने उससे कहा, “परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम क्या करें?” २९ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “परमेश्वर का कार्य यह है, कि तुम उस पर, जिसे उसने भेजा है, विश्वास करो।” ३० तब उन्होंने उससे कहा, “फिर तू कौन सा चिन्ह दिखाता है कि हम उसे देखकर तुझ पर विश्वास करें? तू कौन सा काम दिखाता है?” ३१ हमारे पूर्वजों ने जंगल में मन्ना खाया; जैसा लिखा है, ‘उसने उन्हें खाने के लिये स्वर्ग से गेटी दी।’ ३२ यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि ममा ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से न दी, परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है। ३३ क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उत्तरकर जगत की जीवन देती है।” ३४ तब उन्होंने उससे कहा, “हे स्वामी, यह रोटी हमें सर्वदा दिया कर।” ३५ यीशु ने उनसे कहा, “जीवन की रोटी मैं हूँ: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा। ३६ परन्तु मैंने तुम से कहा, कि तुम ने मुझे देख भी लिया है, तो भी विश्वास नहीं करते। ३७ जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूँगा। ३८ क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, बरन अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उत्तरा हूँ। ३९ और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उसमें से मैं कुछ न खोऊँ परन्तु उसे अनिम दिन फिर जिला उठाऊँ। ४० क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है, कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए, और मैं उसे अनिम दिन फिर जिला उठाऊँगा।” (aiōnios g166) ४१ तब यहदी उस पर कुड़कुड़ाने लगे, इसलिए कि उसने कहा था, “जो रोटी स्वर्ग से उत्तरी, वह मैं हूँ।” ४२ और उन्होंने कहा, “क्या यह यसुफ का पुत्र यीशु नहीं, जिसके माता-पिता को हम जानते हैं? तो वह क्यों कहता है कि मैं स्वर्ग से उत्तरा हूँ?” ४३ यीशु ने उनको उत्तर दिया, “आपस में मत कुड़कुड़ाओ।” ४४ कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे खीच न ले; और मैं उसको अनिम दिन फिर जिला उठाऊँगा। ४५ भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में यह लिखा है, ‘वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे।’ जिस किसी ने पिता से सना और सीखा है, वह मेरे पास आता है। ४६ यह नहीं, कि किसी ने पिता को देखा है परन्तु जो परमेश्वर की ओर से है, केवल उसी ने पिता को देखा है। ४७ मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है। (aiōnios g166) ४८ जीवन की रोटी मैं हूँ। ४९ तुम्हारे पूर्वजों ने जंगल में मन्ना खाया और मर गए। ५० यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उत्तरी है ताकि मनुष्य उसमें से खाए और न मरे। ५१ जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उत्तरी मैं हूँ। यदि कोई इस रोटी मैं से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा; और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दृग्ं, वह मेरा मौस है।” (aiōnios g165) ५२ इस पर यहदी यह कहकर आपस में झगड़ाने लगे, “यह मनुष्य कैसे हमें अपना मौस खाने को दे सकता है?” ५३ यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ जब तक मनुष्य के पुत्र का मौस न खाओ, और उसका लह न पीओ, तुम मैं जीवन नहीं। ५४ जो मेरा मौस खाता, और मेरा लह पीता है, अनन्त जीवन उसी का है, और मैं अनिम दिन फिर उसे जिला उठाऊँगा। (aiōnios g166) ५५ क्योंकि मेरा मौस वास्तव में खाने की वस्तु है और मेरा लह वास्तव में पीने की वस्तु है। ५६ जो मेरा मौस खाता और मेरा लह पीता है, वह मुझ में स्थिर बना रहता है, और मैं उसमें ५७ जैसा जीवित पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवित हूँ वैसा ही

वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण जीवित रहेगा। ५८ जो रोटी स्वर्ग से उत्तरी यही है, पूर्वजों के समान नहीं कि खाया, और मर गए; जो कोई यह रोटी खाएगा, वह सर्वदा जीवित रहेगा।” (aiōnios g165) ५९ ये बातें उसने कफरनहम के एक आराधनालय में उपदेश देते समय कही। ६० इसलिए उसके चेलों में बहुतों ने यह सुनकर कहा, “यह तो कठोर शिक्षा है, इसे कौन मान सकता है?” ६१ यीशु ने अपने मन में यह जानकर कि मेरे चेले आपस में इस बात पर कुड़कुड़ाते हैं, उनसे पूछा, “क्या इस बात से तुम्हें ठोकर लगती है? ६२ और यदि तुम मनुष्य के पुत्र को जहाँ वह पहले था, वहाँ ऊपर जाते देखोगे, तो क्या होगा? ६३ आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं। जो बातें मैंने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं। ६४ परन्तु तुम मैं से कितने ऐसे हैं जो विश्वास नहीं करते।” क्योंकि यीशु तो पहले ही से जानता था कि जो विश्वास नहीं करते, वे कौन हैं, और कौन मुझे पकड़वाएगा। ६५ और उसने कहा, “इसलिए मैंने तुम से कहा था कि जब तक किसी को पिता की ओर से यह वरदान न दिया जाए तब तक वह मेरे पास नहीं आ सकता।” ६६ इस पर उसके चेलों में से बहुत सारे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले। ६७ तब यीशु ने उन बारहों से कहा, “क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?” ६८ शमैन पतरस ने उसको उत्तर दिया, “हे प्रभु, हम किसके पास जाएँ? अनन्त जीवन की बातें तो तेरी ही पास हैं। (aiōnios g166) ६९ और हमने विश्वास किया, और जान गए हैं, कि परमेश्वर का पवित्र जन तूही है।” ७० यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुन लिया? तो भी तुम मैं से एक व्यक्ति शैतान है!” ७१ यह उसने शमैन इस्क्रियोती के पुत्र यहदा के विषय में कहा, क्योंकि यही जो उन बारहों में से था, उसे पकड़वाने को था।

७ इन बातों के बाद यीशु गलील में फिरता रहा, क्योंकि यहदी उसे मार डालने का यथा कर रहे थे, इसलिए वह यहदिया में फिरना न चाहता था। २ और यहदियों का झोपड़ियों का पर्व निकट था। ३ इसलिए उसके भाइयों ने उससे कहा, “यहाँ से कृष करके यहदिया में चला जा, कि जो काम तू करता है, उन्हें तेरे चेले भी देखें। ४ क्योंकि ऐसा कोई न होगा जो प्रसिद्ध होना चाहे, और छिपकर काम करे: यदि तू यह काम करता है, तो अपने आपको जगत पर प्रगट कर।” ५ क्योंकि उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे। ६ तब यीशु ने उनसे कहा, “मेरा समय अभी नहीं आया; परन्तु तुम्हारे लिये सब समय है। ७ जगत तुम से बैर नहीं कर सकता, परन्तु वह मुझसे बैर करता है, क्योंकि मैं उसके विरोध में यह गवाही देता हूँ, कि उसके काम बुरे हैं। ८ तम पर्व में जाओ; मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता, क्योंकि अभी तक मेरा समय पूरा नहीं हुआ।” ९ वह उनसे ये बातें कहकर गलील ही में रह गया। १० परन्तु जब उसके भाई पर्व में चले गए, तो वह आप ही प्रगट में नहीं, परन्तु मानो गुम होकर गया। ११ यहदी पर्व में उसे यह कहकर ढूँढ़े लगे कि “वह कहाँ है?” १२ और लोगों में उसके विषय चुपके-चुपके बहुत सी बातें हुईं: कितने कहते थे, “वह भला मनुष्य है।” और कितने कहते थे, “नहीं, वह लोगों को भरमाता है।” १३ तो भी यहदियों के भय के मारे कोई व्यक्ति उसके विषय में खुलकर नहीं बोलता था। १४ और जब पर्व के आधे दिन बीत गए; तो यीशु मन्दिर में जाकर उपदेश करने लगा। १५ तब यहदियों ने अचम्भा करके कहा, “इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई?” १६ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजनेवाले का है। १७ यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूँ। १८ जो अपनी ओर से अपनी बड़ाई चाहता है, परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही बड़ाई खाता है, और मैं उसमें अर्धम नहीं। १९ क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं

दी? तो भी तम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता। तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो?” २० लोगों ने उत्तर दिया, “तुझ में दुष्टता है! कौन तुझे मार डालना चाहता है?” २१ यीशु ने उनको उत्तर दिया, “मैंने एक काम किया, और तुम सब अचम्भा करते हो। २२ इसी कारण मसा ने तुहें खतने की आज्ञा दी है, यह नहीं कि वह मसा की ओर से है परन्तु पूर्वजों से चली आई है, और तुम सबत के दिन को मनुष्य का खतना करते हो। २३ जब सबत के दिन मनुष्य का खतना किया जाता है ताकि मसा की व्यवस्था की आज्ञा टल न जाए, तो तुम मुझ पर क्यों इसलिए क्रोध करते हो, कि मैंने सबत के दिन एक मनुष्य को पूरी रीत से चंगा किया। २४ मूँह देखकर न्याय न करो, परन्तु ठीक-ठीक न्याय करो।” २५ तब कितने यस्शलेमवारी कहने लगे, “क्या यह वह नहीं, जिसके मार डालने का प्रयत्न किया जा रहा है? २६ परन्तु देखो, वह तो खुल्लमखुल्ला बातें करता है और कोई उससे कुछ नहीं कहता; क्या सम्भव है कि सरदारों ने सच-सच जान लिया है; कि यही मसीह है? २७ इसको तो हम जानते हैं, कि यह कहाँ का है; परन्तु मसीह जब आएगा, तो कोई न जानेगा कि वह कहाँ का है।” २८ तब यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए पुकारके कहा, “तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ का हूँ। मैं तो आप से नहीं आया परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, उसको तुम नहीं जानते। २९ मैं उसे जानता हूँ; क्योंकि मैं उसकी ओर से हूँ और उसी ने मुझे भेजा है।” ३० इस पर उन्होंने उसे पकड़ना चाहा तो भी किसी ने उस पर हाथ न डाला, क्योंकि उसका समय अब तक न आया था। ३१ और भीड़ में से बहतों ने उस पर विश्वास किया, और कहने लगे, “मसीह जब आएगा, तो क्या इससे अधिक चिन्हों को दिखाएगा जो इसने दिखाए?” ३२ फरीसियों ने लोगों को उसके विषय में ये बातें चुपके-चुपके करते सुना; और प्रधान याजकों और फरीसियों ने उसे पकड़ने को सिपाही भेजे। ३३ इस पर यीशु ने कहा, “मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूँ; तब अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊँगा। ३४ तुम मुझे ढूँढ़ोगे, परन्तु नहीं पाओगे; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।” ३५ यहाँदियों ने आपस में कहा, “यह कहाँ जाएगा कि हम इसे न पाएँगे? क्या वह उन यहाँदियों के पास जाएगा जो यूनानियों में तिरां-बितर होकर रहते हैं, और यूनानियों को भी उपदेश देगा? ३६ यह क्या बात है जो उसने कही, कि ‘तुम मुझे ढूँढ़ोगे, परन्तु न पाओगे; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते?’” ३७ फिर पर्व के अनित्म दिन, जो मनुष्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकारकर कहा, “यदि कोई प्यास हो तो मेरे पास आए और पीए। ३८ जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशाश्व में आया है, ‘उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।’” ३९ उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उत्तरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था। ४० तब भीड़ में से किसी किसी ने ये बातें सुनकर कहा, “सचमुच यहीं वह भविष्यद्वत्का है।” ४१ औरें ने कहा, “यह मसीह है,” परन्तु किसी ने कहा, “क्यों? क्या मसीह गलील से आएगा? ४२ क्या पवित्रशाश्व में नहीं लिखा कि मसीह दाऊद के वंश से और बैतलहम गाँव से आएगा, जहाँ दाऊद रहता था?” ४३ अतः उसके कारण लोगों में फूट पड़ी। ४४ उनमें से कितने उसे पकड़ना चाहते थे, परन्तु किसी ने उस पर हाथ न डाला। ४५ तब सिपाही प्रधान याजकों और फरीसियों के पास आए, और उन्होंने उससे कहा, “तुम उसे क्यों नहीं लाए?” ४६ सिपाहियों ने उत्तर दिया, “किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न की।” ४७ फरीसियों ने उनको उत्तर दिया, “क्या तुम भी भरमाए गए हो? ४८ क्या शासकों या फरीसियों में से किसी ने भी उस पर विश्वास किया है? ४९ परन्तु ये लोग जो व्यवस्था नहीं जानते,

शापित हैं।” ५० नीकुदेमुस ने, (जो पहले उसके पास आया था और उनमें से एक था), उससे कहा, ५१ “क्या हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति को जब तक पहले उसकी सुनकर जान न ले कि वह क्या करता है; दोषी ठराती है?” ५२ उन्होंने उसे उत्तर दिया, “क्या तू भी गलील का है? ढूँढ़ और देख, कि गलील से कोई भविष्यद्वत्का प्रागट नहीं होने का।” ५३ तब सब कोई अपने-अपने घर चले गए।

२१ यीशु जैतन के पहाड़ पर गया। २२ और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा। २३ तब शादियों और फरीसियों ने एक झीं को लाकर जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उसको बीच में खड़ा करके धीश से कहा, २४ “हे गुण, यह झीं व्यभिचार करते पकड़ी गई है। २५ व्यवस्था में मसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी लिंगियों को पथराव करें; अतः तू इस झीं के विषय में क्या कहता है?” २६ उन्होंने उसको परखने के लिये यह बात कही ताकि उस पर दोष लगाने के लिये कोई बात पाएँ, परन्तु यीशु झूककर उँगली से भूमि पर लिखने लगा। २७ जब वे उससे पछते रहे, तो उसने सीधे होकर उनसे कहा, “तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारो।” २८ और फिर झूककर भूमि पर उँगली से लिखने लगा। २९ परन्तु वे यह सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक एक-एक करके निकल गए, और यीशु अकेला रह गया, और झीं वही बीच में खड़ी रह गई। ३० यीशु ने सीधे होकर उससे कहा, “हे नारी, वे कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर दण्ड की आज्ञा न दी?” ३१ उसने कहा, “हे प्रभु, किसी ने नहीं।” यीशु ने कहा, “मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न कराओ।” ३२ तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, “जगत की ज्योति मैं हूँ, जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अंधकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।” ३३ फरीसियों ने उससे कहा; “तू अपनी गवाही आप देता है, तेरी गवाही ठीक नहीं।” ३४ यीशु ने उनको उत्तर दिया, “यदि मैं अपनी गवाही ठीक है, क्योंकि मैं जानता हूँ, कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जाता हूँ? परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आता हूँ या कहाँ को जाता हूँ। ३५ तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं करता। ३६ और यदि मैं न्याय करूँ भी, तो मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं पिता के साथ हूँ, जिसने मुझे भेजा है। ३७ और तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है; कि दो जनों की गवाही मिलकर ठीक होती है। ३८ एक तो मैं आप अपनी गवाही देता हूँ, और दूसरा पिता मेरी गवाही देता है जिसने मुझे भेजा।” ३९ उन्होंने उससे कहा, “तेरा पिता कहाँ है?” यीशु ने उत्तर दिया, “न तुम मुझे जानते हो, न मेरे पिता को, यदि मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जानते।” ४० ये बते उसने मन्दिर में उपदेश देते हुए भण्डार घर में कही, और किसी ने उसे न पकड़ा; क्योंकि उसका समय अब तक नहीं आया था। ४१ उसने फिर उनसे कहा, “मैं जाता हूँ, और तुम मुझे ढूँढ़ोगे और अपने पाप में मरोगे; जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।” ४२ उस पर यहाँदियों ने कहा, “क्या वह अपने अपको मार डालेगा, जो कहता है, ‘जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते?’” ४३ उसने उनसे कहा, “तुम मीठे के हो, मैं ऊपर का हूँ; तुम संसार के हो, मैं संसार का नहीं।” ४४ इसलिए मैंने उस से कहा, कि तुम अपने पापों में मरोगे; क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ, तो अपने पापों में मरोगे।” ४५ उन्होंने उससे कहा, “तू कौन है?” यीशु ने उनसे कहा, “वही हूँ जो प्रारम्भ से तुम से कहता आया हूँ। ४६ तुम्हारे विषय में मुझे बहत कुछ कहना और निर्णय करना है परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है; और जो मैंने उससे सुना है, वही जगत से कहता हूँ।” ४७ वे न समझे कि हम से पिता के विषय में कहता है। ४८ तब यीशु ने कहा, “जब तुम मनुष्य

के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूँ, और अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे मेरे पिता परमेश्वर ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूँ। ३८ और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ, जिससे वह प्रसन्न होता है।” ३९ वह ये बातें कह ही रहा था, कि बहुतों ने यीशु पर विश्वास किया। ४० तब यीशु ने उन यहदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, कहा, “यदि तुम मेरे वचन में बने रहेगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।” ४१ और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।” ४२ उन्होंने उसको उत्तर दिया, “हम तो अब्राहम के बंश से हैं, और कभी किसी के दास नहीं हुए; परि तू क्यों कहता है, कि तुम स्वतंत्र हो जाओगे?” ४३ यीशु ने उनको उत्तर दिया, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।” ४४ और दास सदा घर में नहीं रहता; पुनर् सदा रहता है। (aiōn g165) ४५ इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे। ४६ मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहम के बंश से हो; तो भी मेरा वचन तुम्हारे हृदय में जगह नहीं पाता, इसलिए तुम मुझे मार डालना चाहते हो। ४७ मैं वही कहता हूँ, जो अपने पिता के यहाँ देखा है; और तुम वही करते रहते हो जो तुमने अपने पिता से सुना है।” ४८ उन्होंने उसको उत्तर दिया, “हमारा पिता तो अब्राहम है।” यीशु ने उनसे कहा, “यदि तुम अब्राहम के सन्तान होते, तो अब्राहम के समान काम करते।” ४९ परन्तु अब तुम मुझ जैसे मनुष्य को मार डालना चाहते हो, जिसने तुम्हें वह सत्य वचन बताया जो परमेश्वर से सुना, यह तो अब्राहम ने नहीं किया था। ५० तुम अपने पिता के समान काम करते हो” उन्होंने उससे कहा, “हम अधिकार से नहीं जन्मे, हमारा एक पिता है अर्थात् परमेश्वर।” ५१ यीशु ने उनसे कहा, “यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझसे प्रेम रखें; क्योंकि मैं परमेश्वर में से निकलकर आया हूँ; मैं आप से नहीं आया, परन्तु उसी ने मुझे भेजा।” ५२ तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिए कि मेरा वचन सुन नहीं सकते। ५३ तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं; जब वह झूँट बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन् झूँट का पिता है। ५४ परन्तु मैं जो सच बोलता हूँ, इसलिए तुम मेरा विश्वास नहीं करते। ५५ तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है? और यदि मैं सच बोलता हूँ, तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते? ५६ जो परमेश्वर से होता है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है; और तुम इसलिए नहीं सुनते कि परमेश्वर की ओर से नहीं हो।” ५७ यह सुन यहदियों ने उससे कहा, “क्या हम ठीक नहीं कहते, कि तू सामरी है, और तुम में दुष्टात्मा है?” ५८ यीशु ने उत्तर दिया, “मुझ में दुष्टात्मा नहीं; परन्तु मैं अपने पिता का आदर करता हूँ, और तुम मेरा निरादर करते हो।” ५९ परन्तु मैं अपनी प्रतिष्ठा नहीं चाहता, हाँ, एक है जो चाहता है, और न्याय करता है। ६० मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्तकाल तक मृत्यु को न देखेगा।” (aiōn g165) ६१ लोगों ने उससे कहा, “अब हमने जान लिया कि तुझ में दुष्टात्मा है: अब्राहम मर गया, और भविष्यद्वत्का भी मर गए हैं और तू कहता है, ‘यदि कोई मेरे वचन पर चलेगा तो वह अनन्तकाल तक मृत्यु का स्वाद न छेंगा।’” (aiōn g165) ६२ हमारा पिता अब्राहम तो मर गया, क्या तु उससे बड़ा है? और भविष्यद्वत्का भी मर गए, तू अपने आपको क्या ठहराता है?” ६३ यीशु ने उत्तर दिया, “यदि मैं आप अपनी महिमा करूँ, तो मेरी महिमा कुछ नहीं, परन्तु मेरी महिमा करनेवाला मेरा पिता है, जिसे तुम कहते हो, कि वह हमारा परमेश्वर है।” ६४ और तुम ने तो उसे नहीं जाना: परन्तु मैं उसे जानता हूँ, और यदि कहूँ कि मैं उसे नहीं

जानता, तो मैं तुम्हारे समान झूठा ठहरँगा: परन्तु मैं उसे जानता, और उसके वचन पर चलता हूँ। ६५ तुम्हारा पिता अब्राहम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मग्न था; और उसने देखा, और आनन्द किया।” ६६ लोगों ने उससे कहा, “अब तक तू पचास वर्ष का नहीं, फिर भी तूने अब्राहम को देखा है?” ६७ यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ।” ६८ तब उन्होंने उसे मारने के स्त्रिये पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया।

९ फिर जाते हुए उसने एक मनुष्य को देखा, जो जन्म से अंधा था। १० और उसके चेतों ने उससे पूछा, “हे रब्बी, किसने पाप किया था कि यह अंधा जन्मा, इस मनुष्य ने, या उसके माता पिता ने?” ११ यीशु ने उत्तर दिया, “न तो इसने पाप किया था, न इसके माता पिता ने परन्तु यह इसलिए हुआ, कि परमेश्वर के काम उसमें प्राप्त हो।” १२ जिसने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है। वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता। १३ जब तक मैं जगत मैं हूँ, तब तक जगत की ज्योति है।” १४ यह कहकर उसने भूमि पर थूक से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अंधे की आँखों पर लगाकर। १५ उससे कहा, “जा, शीलोह के कुण्ड में धो ले” (शीलोह का अर्थ भेजा हुआ है) अतः उसने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया। १६ तब पडोसी और जिन्होंने पहले उसे भीख माँगते देखा था, कहने लगे, “क्या यह वही नहीं, जो बैठा भीख माँग करता था?” १७ कुछ लोगों ने कहा, “यह वही है,” औरों ने कहा, “नहीं, परन्तु उसके समान है” उसने कहा, “मैं वही हूँ।” १८ तब वे उससे पूछने लगे, “तेरी आँखें कैसे खुल गई?” १९ उसने उत्तर दिया, “यीशु नामक एक व्यक्ति ने मिट्टी सानी, और मेरी आँखों पर लगाकर मुझसे कहा, ‘शीलोह में जाकर धो ले,’ तो मैं गया, और धोकर देखते लगा।” २० उन्होंने उससे पूछा, “वह कहाँ है?” उसने कहा, “मैं नहीं जानता।” २१ लोग उसे जो पहले अंधा था फरीसियों के पास ले गए। २२ जिस दिन यीशु ने मिट्टी सानकर उसकी आँखें खोली थी वह सब्त का दिन था। २३ फिर फरीसियों ने भी उससे पूछा; तेरी आँखें किस रीति से खुल गई? उसने उनसे कहा, “उसने मेरी आँखों पर मिट्टी लगाई, फिर मैंने धो लिया, और अब देखता हूँ।” २४ इस पर कई फरीसी कहने लगे, “यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं, क्योंकि वह सब्त का दिन नहीं मानता।” औरों ने कहा, “पापी मनुष्य कैसे ऐसे चिन्ह दिखा सकता है?” अतः उसमें फूट पड़ी। २५ उन्होंने उस अंधे से फिर कहा, “उसने जो तेरी आँखें खोली, तू उसके विषय में क्या कहता है?” उसने कहा, “यह भविष्यद्वत्का है।” २६ परन्तु यहदियों को विश्वास न हुआ कि यह अंधा था और अब देखता है जब तक उन्होंने उसके माता-पिता को जिसकी आँखें खुल गई थीं, बुलाकर २७ उनसे पूछा, “क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसे तुम कहते हो कि अंधा जन्मा था? फिर अब कैसे देखता है?” २८ उसके माता-पिता ने उत्तर दिया, “हम तो जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और अंधा जन्मा था।” २९ परन्तु हम यह नहीं जानते हैं कि अब कैसे देखता है; और न यह जानते हैं, कि किसने उसकी आँखें खोली; वह सयाना है; उसी से पूछ लो; वह अपने विषय में आप कह देगा।” ३० ये बातें उसके माता-पिता ने इसलिए कहीं क्योंकि वे यहदियों से डरते थे; क्योंकि यहदी एकमत हो चुके थे, कि यदि कोई कहे कि वह मसीह है, तो उसाधनालय से निकाला जाए। ३१ इसी कारण उसके माता-पिता ने कहा, “वह सयाना है; उसी से पूछ लो।” ३२ तब उन्होंने उस मनुष्य को जो अंधा था दूसरी बार बुलाकर उससे कहा, “परमेश्वर की स्तुति कर; हम तो जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है।” ३३ उसने उत्तर दिया, “मैं नहीं जानता कि वह पापी

है या नहीं मैं एक बात जानता हूँ कि मैं अंधा था और अब देखता हूँ।” २६ उन्होंने उससे फिर कहा, “उसने तौर साथ क्या किया? और किस तरह तेरी आँखें खोली?” २७ उसने उनसे कहा, “मैं तो तुम से कह चुका, और तुम ने न सुना; अब दूसरी बार क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उसके चेले होना चाहते हो?” २८ तब वे उसे बुरा-भला कहकर बोले, “तू ही उसका चेला है, हम तो मूझा के चेले हैं। २९ हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूझा से बातें कीं, परन्तु इस मनुष्य को नहीं जानते की कहाँ का है!” ३० उसने उनको उत्तर दिया, “यह तो अचम्भे की बात है कि तुम नहीं जानते कि वह कहाँ का है तो भी उसने मेरी आँखें खोल दी। ३१ हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उसकी इच्छा पर चलता है, तो वह उसकी सुनता है। ३२ जगत के आरम्भ से यह कभी सुनने में नहीं आया, कि किसी ने भी जन्म के अंधे की आँखें खोली हैं। (aiōn g165) ३३ यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता।” ३४ उन्होंने उसको उत्तर दिया, “तू तो बिलकुल पापों में जन्मा है, तू हमें क्या सिखाता है?” और उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया। ३५ यीशु ने सुना, कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया है; और जब उससे भैट हुई तो कहा, “क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?” ३६ उसने उत्तर दिया, “हे प्रभु, वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूँ?” ३७ यीशु ने उससे कहा, “तूने उसे देखा भी है; और जो तेरे साथ बातें कर रहा है वही है।” ३८ उसने कहा, “हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ।” और उसे दण्डवत् किया। ३९ तब यीशु ने कहा, “मैं इस जगत में न्याय के लिये आया हूँ, ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएँ।” ४० जो फरीसी उसके साथ थे, उन्होंने ये बातें सुनकर उससे कहा, “क्या हम भी अंधे हैं?” ४१ यीशु ने उनसे कहा, “यदि तुम अंधे होते तो पापी न ठरते परन्तु अब कहते हो, कि हम देखते हैं, इसलिए तुम्हारा पाप बना रहता है।

१० “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जो कोई द्वारा से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु किसी दूसरी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है। २८ परन्तु जो द्वारा से भीतर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है। १ उसके लिये द्वारपाल द्वारा खोल देता है, और भेड़े उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है। २ और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उनके आगे-आगे चलता है, और भेड़े उसके पीछे-पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं। ३ परन्तु वे पराए के पीछे नहीं जाएँगी, परन्तु उससे भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानती।” ४ यीशु ने उनसे यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे न समझे कि ये क्या बातें हैं जो वह हम से कहता है। ५ तब यीशु ने उनसे फिर कहा, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि भेड़ों का द्वार मैं हूँ। ६ जितने मुझसे पहले आएँ, वे सब चोर और डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उनकी न सुनी। ७ द्वार मैं हूँ; यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया-जाया करेगा और चारा पाएगा। ८ चोर किसी ओर काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और हत्या करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ। ९ अच्छा चरवाहा मैं हूँ, अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। १० मजदूर जो न चरवाहा है, और न भेड़ों का मालिक है, भेड़िए को आते हुए देख, भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िया उन्हे पकड़ता और तितर-बितर कर देता है। ११ वह इसलिए भाग जाता है कि वह मजदूर है, और उसके भेड़ों की चिन्ता नहीं। १२ अच्छा चरवाहा मैं हूँ; मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ, और

मेरी भेड़े मुझे जानती हैं। १५ जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूँ। और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूँ। १६ और मेरी और भी भेड़े हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं; मुझे उनका भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेगी; तब एक ही झूँट और एक ही चरवाहा होगा। १७ पिता इसलिए मुझसे प्रेम रखता है, कि मैं अपना प्राण देता हूँ, कि उसे फिर ले लूँ। १८ कोई उसे मुझसे छीनता नहीं, बरन् मैं उसे आप ही देता हूँ। मुझे उसके देने का अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है। यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।” १९ इन बातों के कारण यहदियों में फिर फूट पड़ी। २० उसमें से बहुत सारे कहने लगे, “उसमें दुष्टात्मा है, और वह पापगल है; उसकी क्यों सुनते हो?” २१ औरों ने कहा, “ये बातें ऐसे मनुष्य की नहीं जिसमें दुष्टात्मा हो। क्या दुष्टात्मा अंधों की आँखें खोल सकती हैं?” २२ यस्तलिम में स्थापन पर्व हुआ, और जाड़े की क्रतु थी। २३ और यीशु मन्दिर में सूतीमान के ओसारे में टहल रहा था। २४ तब यहदियों ने उसे आ घेरा और पूछा, “तू हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है, तो हम से साफ कह दे।” २५ यीशु ने उहें उत्तर दिया, “मैंने तुम से कह दिया, और तुम विवास करते ही नहीं, जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ वे ही मेरे गवाह हैं। २६ परन्तु तुम इसलिए विश्वास करती नहीं करते, कि मेरी भेड़ों में से नहीं हो। २७ मेरी भेड़े मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उहें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे-पीछे चलती हैं। २८ और मैं उहें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगी, और कोई उहें मेरे हाथ से छीन न लेगा। (aiōn g165, aiōnios g166) २९ मेरा पिता, जिसने उहें मुझ को दिया है, सबसे बड़ा है, और कोई उहें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता। ३० मैं और पिता एक हैं।” ३१ यहदियों ने उसको उत्तर दिया, “भले काम के लिये हम तुम्हे पथराव नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की निन्दा के कारण और इसलिए कि तू मनुष्य होकर अपने आपको परमेश्वर बनाता हो।” ३२ यीशु ने उहें उत्तर दिया, “क्या तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है कि मैंने कहा, तुम ईश्वर हो?” ३३ यदि उसने उहें ईश्वर कहा जिनके पास परमेश्वर का बचन पहुँचा (और पवित्रशाला की बात लोप नहीं हो सकती।) ३४ तो जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है, तुम उससे कहते हो, ‘तू मिन्दना करता है,’ इसलिए कि मैंने कहा, “मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।” ३५ यदि मैं अपने पिता का काम नहीं करता, तो मेरा विश्वास न करो। ३६ परन्तु यदि मैं करता हूँ, तो चाहे मेरा विश्वास न भी करो, परन्तु उन कामों पर विश्वास करो, ताकि तुम जानो, और समझो, कि पिता मुझे मैं है, और मैं पिता मैं हूँ।” ३७ तब उन्होंने फिर उसे पकड़ने का प्रयत्न किया परन्तु वह उनके हाथ से निकल गया। ३८ फिर वह यदन के पार उस स्थान पर चला गया, जहाँ यहन्ना पहले बपतिस्मा दिया करता था, और वही रहा। ३९ और बहुत सारे लोग उसके पास आकर कहते थे, “यहन्ना ने तो कोई चिन्ह नहीं दिखाया, परन्तु जो कुछ यहन्ना ने इसके विषय में कहा था वह सब सच था।” ४० और वहाँ बहुतों ने उस पर विश्वास किया।

११ मरियम और उसकी बहन मार्था के गाँव बैतनियाह का लाजर नामक एक मनुष्य बीमार था। १ यह वही मरियम थी जिसने प्रभु पर इन डालकर उसके पौँछों को अपने बालों से पोछा था, इसी का भाई लाजर बीमार था। २ तब उसकी बहनों ने उसे कहला भेजा, “हे प्रभु, देख, जिससे तू प्यार करता हो, वह बीमार है।” ३ यह सुनकर यीशु ने कहा, “यह बीमार मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।” ४ और यीशु मार्था और उसकी बहन और लाजर से

प्रेम रखता था। ६ जब उसने सुना, कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर वह था, वहाँ दो दिन और ठहर गया। ७ फिर इसके बाद उसने चेलों से कहा, “आओ, हम फिर यहदिया को चलें।” ८ चेलों ने उससे कहा, “हे रब्बी, अभी तो यहदी तुझे पथराव करना चाहते थे, और क्या तू फिर भी वहीं जाता है?” ९ यीशु ने उत्तर दिया, “क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते? यदि कोई दिन को चले, तो ठोकर नहीं खाता, क्योंकि इस जगत का उजाला देखता है।” १० परन्तु यदि कोई रात को चले, तो ठोकर खाता है, क्योंकि उसमें प्रकाश नहीं।” ११ उसने ये बातें कहीं, और इसके बाद उसने कहने लगा, “हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूँ।” १२ तब चेलों ने उससे कहा, “हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो बच जाएगा।” १३ यीशु ने तो उसकी मृत्यु के विषय में कहा था: परन्तु वे समझे कि उसने नीद से सो जाने के विषय में कहा। १४ तब यीशु ने उससे साफ कह दिया, “लाजर मर गया है।” १५ और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ कि मैं वहाँ न था जिससे तम विश्वास करो। परन्तु अब आओ, हम उसके पास चलें।” १६ तब थोमा ने जो दिटुमुस कहलाता है, अपने साथ के चेलों से कहा, “आओ, हम भी उसके साथ मरने को चलें।” १७ फिर यीशु को आकर यह मालूम हुआ कि उसे कब्ज़ में रखे चार दिन हो चुके हैं। १८ बैतियाह यस्त्वालेम के समीप कोई दो मील की दूरी पर था। १९ और बहुत से यहदी मार्था और मरियम के पास उनके भाई के विषय में शान्ति देने के लिये आए थे। २० जब मार्था यीशु के अनेक का समाचार सुनकर उससे भेंट करने को गई, परन्तु मरियम घर में बैठी रही। २१ मार्था ने यीशु से कहा, “हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता।” २२ और अब भी मैं जानती हूँ, कि जो कुछ तू परमेश्वर से माँगेंगा, परमेश्वर तुझे देगा।” २३ यीशु ने उससे कहा, “तेरा भाई जी उठेगा।” २४ मार्था ने उससे कहा, “मैं जानती हूँ, अन्तिम दिन मैं पुनर्स्थान के समय वह जी उठेगा।” २५ यीशु ने उससे कहा, “पुनर्स्थान और जीवन मैं ही हूँ, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तो भी जीएगा।” २६ और जो कोई जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?” (aiōn g165) २७ उसने उससे कहा, “हाँ, हे प्रभु, मैं विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तो भी जीएगा।” २८ और जो कोई जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?”

२९ उसने उससे कहा, “हाँ, हे प्रभु, मैं विश्वास करता है वह चुक्की हूँ, कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है।” ३० यह कहकर वह चली गई, और अपनी बहन मरियम को चुपके से बुलाकर कहा, “गुरु यही है, और तुझे बुलाता है।” ३१ वह सुनते ही तुरन्त उठकर उसके पास आई। ३२ (यीशु अभी गाँव में नहीं पहुँचा था, परन्तु उसी स्थान में था जहाँ मार्था ने उससे भेंट की थी।) ३३ तब जो यहदी उसके साथ घर में थे, और उसे शान्ति दे रहे थे, यह देखकर कि मरियम तुरन्त उठकर बाहर गई है और यह समझकर कि वह कब्ज़ पर रोने को जाती है, उसके पीछे हो लिये। ३४ जब मरियम वहाँ पहुँची जहाँ यीशु था, तो उसे देखते ही उसके पाँवों पर गिरकर कहा, “हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई न मरता।” ३५ जब यीशु ने उसको और उन यहदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास और व्यकुल हुआ, ३६ और कहा, “तुम ने उसे कहाँ रखा है?” उन्होंने उससे कहा, “हे प्रभु, चलकर देख ले।” ३७ यीशु रोया। ३८ तब यहदी कहने लगे, “देखो, वह उससे कैसा प्यास करता था।” ३९ परन्तु उनमें से कितनों ने कहा, “क्या यह जिसने अधे की आँखें खोली, यह भी न कर सका कि यह मनुष्य न मरता?” ४० यीशु मन में फिर बहत ही उदास होकर कब्ज़ पर आया, वह एक गुफा थी, और एक पत्थर उस पर धरा था। ४१ यीशु ने कहा, “पत्थर को उठाओ।” उस में हुए की बहन मार्था उससे कहने लगी, “हे प्रभु, उसमें से अब तो दुर्गम्य आती है, क्योंकि उसे मेरे चार दिन हो गए।” ४२ यीशु ने उससे कहा, “क्या मैंने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो

परमेश्वर की महिमा को देखेगी।” ४३ तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया, फिर यीशु ने आँखें उठाकर कहा, “हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है।” ४४ और मैं जानता था, कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भी आस-पास खड़ी है, उनके कारण मैंने यह कहा, जिससे कि वे विश्वास करें, कि तूने मुझे भेजा है।” ४५ यह कहकर उसने बड़े शब्द से पुकारा, “हे लाजर, निकल आ!” ४६ जो मर गया था, वह कफन से हाथ पाँव बढ़े हुए निकल आया और उसका मुँह आँखोंसे से लिपटा हआ था। यीशु ने उनसे कहा, “उसे खोलकर जाने दो।” ४७ तब जो यहदी मरियम के पास आए थे, और उसका यह काम देखा था, उनमें से बहुतों ने उस पर विश्वास किया। ४८ परन्तु उनमें से कितनों ने फरीसियों के पास जाकर यीशु के कामों का समाचार दिया। ४९ इस पर प्रधान याजकों और फरीसियों ने मुख्य सभा के लोगों को इकट्ठा करके कहा, “हम क्या करेंगे? यह मनुष्य तो बहुत चिन्ह दिखाता है।” ५० यदि हम उसे ऐसी ही छोड़ दें, तो सब उस पर विश्वास ले आएँगे और रोमी आकर हमारी जगह और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे।” ५१ तब उनमें से कैफा नामक एक व्यक्ति ने जो उस वर्ष का महायाजक था, उनसे कहा, “तुम कुछ नहीं जानते; ५२ और न यह सच्चते हो, कि तुहारे लिये यह भला है, कि लोगों के लिये एक मनुष्य मरे, और न यह, कि सारी जाति नाश हो।” ५३ यह बात उसने अपनी ओर से न कहीं, परन्तु उस वर्ष का महायाजक होकर भविष्यत्वाणी की, कि यीशु उस जाति के लिये मरेगा; ५४ और न केवल उस जाति के लिये, बरन् इसलिए भी, कि परमेश्वर की तिरत-बितर सन्तानों को एक कर दे। ५५ अतः उसी दिन से वे उसके मार डालने की सम्मति करने लगे। ५६ इसलिए यीशु उस समय से यहदियों में प्रगत होकर न किरा; परन्तु वहाँ से जंगल के निकटवर्ती प्रदेश के ऐप्रैम नामक, एक नगर को चला गया; और अपने चेलों के साथ वही रहने लगा। ५७ और यहदियों का फसह निकट था, और बहुत सारे लोग फसह से पहले दिहात से यस्त्वालेम को गए कि अपने आपको शुद्ध करें। ५८ वे यीशु को ढूँढ़ने और मान्द्रि में खड़े होकर आपस में कहने लगे, “तुम क्या समझते हो? क्या वह पर्व में नहीं आएगा?” ५९ और प्रधान याजकों और फरीसियों ने भी आज्ञा दे रखी थी, कि यदि कोई यह जाने कि यीशु कहाँ है तो बताएँ, कि वे उसे पकड़ लें।

१२ फिर यीशु फसह से छः: दिन पहले बैतियाह में आया, जहाँ लाजर था; जिसे यीशु ने मेरे हुओं में से जिलाया था। २ वहाँ उन्होंने उसके लिये भोजन तैयार किया, और मार्था सेवा कर रही थी, और लाजर उनमें से एक था, जो उसके साथ भोजन करने के लिये बैठे थे। ३ तब मरियम ने जटामासी का आधा सेर बहमूल्य इन लेकर यीशु के पाँवों पर डाला, और अपने बालों से उसके पाँव पोछे, और इन की सुगन्ध से घर सुगन्धित हो गया। ४ परन्तु उसके चेलों में से यहदी इस्करियोती नामक एक चेला जो उसे पकड़वाने पर था, कहने लगा, ५ “यह इन तीन सौ दीनार में बेचकर गरीबों को क्यों न दिया गया?” ६ उसने यह बात इसलिए न कहीं, कि उसे गरीबों की चिन्ता थी, परन्तु इसलिए भी कि वह चोर था और उसके पास उनकी थेली रहती थी, और उसमें जो कुछ डाला जाता था, वह निकाल लेता था। ७ यीशु ने कहा, “उसे मेरे गाड़े जाने के दिन के लिये रहने दे। ८ क्योंकि गरीब तो तुहारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूँगा।” ९ यहदियों में से साधारण लोग जान गए, कि वह वहाँ है, और वे न केवल यीशु के कारण आए परन्तु इसलिए भी कि लाजर को देखें, जिसे उसने मेरे हुओं में से जिलाया था। १० तब प्रधान याजकों ने लाजर को भी मार डालने की सम्मति की। ११ क्योंकि उसके कारण बहुत से यहदी चले गए, और यीशु पर विश्वास किया। १२ दूसरा

दिन बहुत से लोगों ने जो पर्व में आए थे, यह सुनकर, कि यीशु यस्शलेम में आ रहा है। १३ उन्होंने खजू़ की डालियाँ लीं, और उससे भेट करने को निकले, और पुकारने लगे, “होशाना! धन्य इसाएल का राजा, जो प्रभु के नाम से आता है।” १४ जब यीशु को एक गढ़े का बच्चा मिला, तो वह उस पर बैठा, जैसा लिखा है, १५ “हे सियोन की बेटी, मत डर; देख, तेरा राजा गढ़े के बच्चे पर चढ़ा हुआ चलता आता है।” १६ उसके चेले, ये बातें पहले न समझे थे; परन्तु जब यीशु की महिमा प्रगट हुई, तो उनको स्मरण आया, कि ये बातें उसके विषय में लिखी हुई थीं; और लोगों ने उससे इस प्रकार का व्यवहार किया था। १७ तब भीड़ के लोगों ने जो उस समय उसके साथ थे यह गवाही दी कि उसने लाजर को कब्र में से बुलाकर, मेरे हुओं में से जिलाया था। १८ इसी कारण लोग उससे भेट करने को आए थे क्योंकि उन्होंने सुना था, कि उसने यह अधर्यार्थकर्म दिखाया है। १९ तब फरीसियों ने आपस में कहा, “सोचो, तम लोग कुछ नहीं कर पा रहे हो; देखो, संसार उसके पीछे हो चला है।” २० जो लोग उस पर्व में आराधना करने आए थे उनमें से कई यूनानी थे। २१ उन्होंने गलील के बैतौदा के रहनेवाले फिलिप्पुस के पास आकर उससे विनती की, “श्रीमान हम यीशु से भेट करना चाहते हैं।” २२ फिलिप्पुस ने आकर अन्द्रियास से कहा; तब अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने यीशु से कहा। २३ इस पर यीशु ने उनसे कहा, “वह समय आ गया है, कि मनुष्य के पुत्र कि महिमा हो।” २४ मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। २५ जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिये उसकी रक्षा करेगा। (aiōnios g166) २६ यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मैं पीछे हो ले; और जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा। २७ “अब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। इसलिए अब मैं क्या कहूँ? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा!” परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुँचा हूँ। २८ हे पिता अपने नाम की महिमा कर।” तब यह आकाशवाणी हुई, “मैंने उसकी महिमा की है, और फिर भी करँगा।” २९ तब जो लोग खड़े हुए सन रहे थे, उन्होंने कहा; कि बादल गरजा, औरें ने कहा, “कोई स्वर्गदूत उससे बोला।” ३० इस पर यीशु ने कहा, “यह शब्द मेरे लिये नहीं परन्तु तुम्हारे लिये आया है। ३१ अब इस जगत का न्याय होता है, अब इस जगत का सरदारनिकाल दिया जाएगा। ३२ और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खीचूँगा।” ३३ ऐसा कहकर उसने यह प्रगट कर दिया, कि वह कैसी मृत्यु से मरेगा। ३४ इस पर लोगों ने उससे कहा, “हमसे व्यवस्था की यह बात सुनी है, कि मरीह सर्वदा रहेगा, फिर तू क्यों कहता है, कि मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाया जाना अवश्य है? यह मनुष्य का पुत्र कौन है?” (aiōn g165) ३५ यीशु ने उनसे कहा, “ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच मैं हूँ, जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो कि तुम ज्योति के सन्तान बनो।” ये बातें कहकर यीशु चला गया और उनसे छिपा रहा। ३६ और उसने उनके सामने इतने चिन्ह दिखाए, तो भी उन्होंने उस पर विश्वास न किया; ३७ ताकि यशायाह भविष्यद्वता का वचन पूरा हो जो उसने कहा: “हे प्रभु, हमारे समाचार पर किसने विश्वास किया है? और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?” ३८ इस कारण वे विश्वास न कर सके, क्योंकि यशायाह ने यह भी कहा है: ३९ “उसने उनकी आँखें अंधी, और उनका मन कठोर किया है; कहीं ऐसा न हो, कि आँखों से देखें, और मन

से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूँ।” ४० यशायाह ने ये बातें इसलिए कहीं, कि उसने उसकी महिमा देखी; और उसने उसके विषय में बातें की। ४१ तो भी सदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएँ। ४२ क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उनको परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी। ४३ यीशु ने पुकारकर कहा, “जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है।” ४५ और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है। ४६ मैं जगत में ज्योति होकर आया हूँ ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अंधकार में न रहे। ४७ यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूँ। ४८ जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है तो उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात् जो वचन मैंने कहा है, वह अन्तिम दिन में उसे दोषी ठहराएगा। ४९ क्योंकि मैंने अपनी ओर से बातें नहीं की, परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या-क्या कहूँ और क्या-क्या बोलूँ। ५० और मैं जानता हूँ, कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिए मैं जो बोलता हूँ, वह जैसा पिता ने मुझसे कहा है वैसा ही बोलता हूँ।” (aiōnios g166)

१३ फसह के पर्व से पहले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरा वह समय आ पहुँचा है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊँ, तो अपने लोगों से, जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा। २ और जब शैतान शमौन के पुत्र यहाँ इस्कीरियोती के मन में यह डाल चुका था, कि उसे पकड़वाएँ, तो भोजन के समय ३ यीशु ने, यह जानकर कि पिता ने सब कुछ उसके हाथ में कर दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूँ, और परमेश्वर के पास जाता हूँ। ४ भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतार दिए, और अँगोंधा लेकर अपनी कमर बंधी। ५ तब बर्तन में पानी भरकर चेतों के पाँव धोने और जिस अँगोंछे से उसकी कमर बंधी थी उसी से पोँछने लगा। ६ जब वह शमौन पतरस के पास आया तब उसने उससे कहा, “हे प्रभु, क्या तू मेरे पाँव धोता है?” ७ यीशु ने उसको उत्तर दिया, “जो मैं करता हूँ, तू अभी नहीं जानता, परन्तु इसके बाद समझेगा।” ८ पतरस ने उससे कहा, “तू मेरे पाँव कभी न धोने पाएगा।” ९ यह सुनकर यीशु ने उससे कहा, “यदि मैं तुझे न धोऊँ, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी भाग नहीं।” (aiōn g165) ९ शमौन पतरस ने उससे कहा, “हे प्रभु, तो मेरे पाँव ही नहीं, वरन् हाथ और सिर भी धो दो।” १० यीशु ने उससे कहा, “जो नहा चुका है, उसे पाँव के सिवा और कुछ धोने का प्रयोजन नहीं; परन्तु वह बिलकुल शुद्ध है: और तुम शुद्ध हो; परन्तु सब के सब नहीं।” ११ वह तो अपने पकड़वानेवाले को जानता था इसलिए उसने कहा, “तुम सब के सब शुद्ध नहीं।” १२ जब वह उनके पाँव धो चुका और अपने कपड़े फहरन कर फिर बैठ गया तो उनसे कहने लगा, “क्या तुम समझे कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया? १३ तुम मुझे गुरु, और प्रभु, कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ। १४ यदि मैंने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पाँव धोएँ, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए। १५ क्योंकि मैंने तुम्हें नमस्त दिखा दिया है, कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो। १६ मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं; और न भेजा हुआ अपने भेजनेवाले से। १७ तुम तो ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो। १८ मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता: जिन्हें मैंने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूँ; परन्तु यह इसलिए है, कि पवित्रशाश्वत का यह वचन पूरा हो, ‘जो मेरी रोटी खाता है, उसने मुझ पर लात उठाई।’ १९ अब मैं उसके होने से पहले

तुम्हें जताए देता हूँ कि जब हो जाए तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूँ। २० मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जो मेरे भेजे हए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।” २१ ये बातें कहकर यीशु अत्मा में व्याकुल हुआ और यह गवाही दी, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि तुम मेरे से एक मुझे पकड़वाएगा।” २२ चेते यह सदैव करते हुए, कि वह किसके विषय में कहता है, एक दूसरे की ओर देखने लगे। २३ उसके चेलों में से एक जिससे यीशु प्रेम रखता था, यीशु की छाती की ओर झुका हुआ बैठा था। २४ तब शमान पतरस ने उसकी ओर सकेत करके पूछा, “बता तो, वह किसके विषय में कहता है?” २५ तब उसने उसी तरह यीशु की छाती की ओर झुककर पूछा, “हे प्रभु, वह कौन है?” २६ यीशु ने उत्तर दिया, “जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोकर ढूँगा, वही है।” और उसने टुकड़ा डुबोकर शमान के पुनर यहदा इस्करियोती को दिया। २७ और टुकड़ा लेते ही शैतान उसमें समा गया: तब यीशु ने उससे कहा, “जो तु करनेवाला है, तुरन्त कर।” २८ परन्तु बैठनेवालों में से किसी ने न जाना कि उसने यह बात उससे किस लिये कही। २९ यहदा के पास थैली रहती थी, इसलिए किसी ने समझा, कि यीशु उससे कहता है, कि जो कुछ हमें पर्व के लिये चाहिए वह मोल ले, या यह कि गरीबों को कुछ दे। ३० तब वह टुकड़ा लेकर तुरन्त बाहर चला गया, और रात्रि का समय था। ३१ जब वह बाहर चला गया तो यीशु ने कहा, “अब मनुष्य के पुनर की महिमा हुई, और परमेश्वर की महिमा उसमें हुई; ३२ और परमेश्वर भी अपने में उसकी महिमा करेगा, वरन् तुरन्त करेगा।” ३३ हे बालकों, मैं और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूँ: फिर तुम मुझे ढूँढ़ोगे, और जैसा मैंने यहदियों से कहा, ‘जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते,’ वैसा ही मैं अब तुम से भी कहता हूँ। ३४ मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ, कि एक दूसरे से प्रेम रखो जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। ३५ यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो।” ३६ शमान पतरस ने उससे कहा, “हे प्रभु, तु कहाँ जाता है?” यीशु ने उत्तर दिया, “जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तू अब मेरे पीछे आ नहीं सकता; परन्तु इसके बाद मेरे पीछे आएगा।” ३७ पतरस ने उससे कहा, “हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तेरे लिये अपना प्राण ढूँगा।” ३८ यीशु ने उत्तर दिया, “क्या तु मेरे लिये अपना प्राण देगा? मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ कि मुर्गा बाँग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा।

१४ “तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। : मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ। ३ और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो। ४ “और जहाँ मैं जाता हूँ तुम वहाँ का मार्ग जानते हो।” ५ थोमा ने उससे कहा, “हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहाँ जाता है; तो मार्ग कैसे जानें?” ६ यीशु ने उससे कहा, “मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता। ७ यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते, और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है।” ८ फिलिप्पस ने उससे कहा, “हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे: यही हमारे लिये बहत है।” ९ यीशु ने उससे कहा, “हे फिलिप्पस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है: तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा? १० क्या तू विश्वास नहीं करता, कि मैं पिता मैं हूँ, और पिता मुझ मैं है?

रहकर अपने काम करता है। ११ मेरा ही विश्वास करो, कि मैं पिता मैं हूँ, और पिता मुझ मैं है, नहीं तो कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो। १२ “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ। १३ और जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करँगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो। १४ यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। १५ और मैं पिता से विनिती करँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वादा तुम्हारे साथ रहे। (aion g165) १६ अर्थात् सत्य की आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम मैं होगा। १७ “मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूँगा, मैं तुम्हारे पास वापस आता हूँ। १८ और थोड़ी देर रह गई है कि संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे, इसलिए कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे। १९ उस दिन तुम जानोगे, कि मैं अपने पिता मैं हूँ, और तुम मुझ मैं, और मैं तुम मैं। २० जिसके पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मनता है, वही मुझसे प्रेम रखता है, और जो मुझसे प्रेम रखता है, उससे मेरा प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखेगा, और अपने आपको उस पर प्रगट करँगा।” २१ उस यहदा ने जो इस्करियोती न था, उससे कहा, “हे प्रभु, क्या हुआ कि तू अपने आपको हम पर प्रगट करना चाहता है, और संसार पर नहीं?” २२ यीशु ने उसको उत्तर दिया, “यदि कोई मुझसे प्रेम रखे, तो वह मेरे बचन को मानोगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आँगे, और उसके साथ वास करेगे। २३ जो मुझसे प्रेम नहीं रखता, वह मेरे बचन नहीं मानता, और जो बचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं बरन पिता का है, जिसने मुझे भेजा। २४ “ये बातें मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कही। २५ परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।” २६ मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ, जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे। २७ तुम ने सुना, कि मैंने तुम से कहा, “मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास फिर आता हूँ” यदि तुम मुझसे प्रेम रखते, तो इस बात से अनन्दित होते, कि मैं पिता के पास जाता हूँ क्योंकि पिता मुझसे बड़ा है। २८ और मैंने अब इसके होने से पहले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम विश्वास करो। २९ मैं अब से तुम्हारे साथ और बहत बातें न करँगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है, और मुझ पर उसका कुछ अधिकार नहीं। ३० परन्तु यह इसलिए होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूँ, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे ही करता हूँ। उठो, यहाँ से चलें।

१५ “सच्ची दाखलता मैं हूँ, और मेरा पिता किसान है। १ जो डाली मुझ मैं हूँ, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छाँटता है ताकि और फले। २ तुम तो उस बचन के कारण जो मैंने तुम से कहा है, शुद्ध हो। ३ तुम मैं तुम से रखता है, और मैं तुम मैं जैसे डाली यदि दाखलता मैं बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ मैं बने न रहे तो नहीं फल सकते। ४ मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो; जो मुझ मैं बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। ५ यदि कोई मुझ मैं बना न रहे, तो वह डाली के समान फैक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उहें बटोरकर आग में झोक देते हैं, और वे जल जाती हैं। ६ यदि तुम मुझ मैं बने रहो, और मेरी बातें तुम मैं बनी रहें तो जो चाहो मौंगो और वह तुम्हारे लिये

हो जाएगा। ८ मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे। ९ जैसा पिता ने मुझसे प्रेम रखा, वैसे ही मैंने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो। १० यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे जैसा कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ। ११ मैंने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। १२ “मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। १३ इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे। १४ जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो। १५ अब से मैं तुम्हें दास न कहूँगा, क्योंकि दास नहीं जानता, कि उसका स्वामी क्या करता है: परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैंने जो बातें अपने पिता से सुनी, वे सब तुम्हें बता दी। १६ तुम ने मुझे नहीं चुनाव-पन्तु मैंने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से माँगो, वह तुम्हें दे। १७ इन बातों की आज्ञा मैं तुम्हें इसलिए देता हूँ, कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो। १८ “यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो, कि उसने तुम से पहले मुझसे भी बैर रखा। १९ यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रेम रखता, परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं बरन् मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया है; इसलिए संसार तुम से बैर रखता है। २० जो बात मैंने तुम से कही थी, ‘दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता,’ उसको याद रखो यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएँगे; यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे। २१ परन्तु यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते। २२ यदि मैं न आता और उनसे बातें न करता, तो वे पापी न ठहरते परन्तु अब उन्हें उनके पाप के लिये कोई बहाना नहीं। २३ जो मुझसे बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है। २४ यदि मैं उसे वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा, और दोनों से बैर किया। २५ और यह इसलिए हुआ, कि वह बचन पूरा हो, जो उनकी व्यवस्था में लिखा है, ‘उन्होंने मुझसे व्यर्थ बैर किया।’ २६ परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा। २७ और तुम भी गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मैं साथ रहे हो।

१६ “ये बातें मैंने तुम से इसलिए कहीं कि तुम ठोकर न खाओ। २ वे तुम्हें आराधनालालों में से निकाल देंगे, वरन् वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा यह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूँ। ३ और यह वे इसलिए करेंगे कि उन्होंने न पिता को जाना है और न मुझे जानते हैं। ४ परन्तु ये बातें मैंने इसलिए तुम से कहीं, कि जब उनके पैर होने का समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए, कि मैंने तुम से पहले ही कह दिया था, ‘मैंने आरम्भ में तुम से ये बातें इसलिए नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। ५ अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता हूँ और तुम में से कोई मुझसे नहीं पूछता, ‘तू कहाँ जाता है?’ ६ परन्तु मैंने जो ये बातें तुम से कहीं हैं, इसलिए तुम्हारा मन शोक से भर गया। ७ फिर भी मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। ८ और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निस्तर करेगा। ९ पाप के विषय में इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते; १० और धार्मिकता के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूँ, और तुम

मुझे फिर न देखोगे; ११ न्याय के विषय में इसलिए कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है। १२ “मुझे तुम से और भी बहत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। १३ परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और अनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। १४ वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। १५ जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है, इसलिए मैंने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। १६ “थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे।” १७ तब उसके किन्तु चेलों ने आपस में कहा, “यह क्या है, जो वह हम से कहता है, ‘थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे?’” १८ और यह “इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूँ?” १९ तब उन्होंने कहा, “यह ‘थोड़ी देर’ जो वह कहता है, क्या बात है? हम नहीं जानते, कि क्या कहता है!” २० यीशु ने यह जानकर, कि वे मुझसे पूछना चाहते हैं, उनसे कहा, “क्या तुम आपस में मेरी इस बात के विषय में पछाटाछ करते हो, ‘थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे?’” २१ मैं तुम से सच-सच कहता हूँ; कि तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगा: तुम्हें शोक होगा, परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द बन जाएगा। २२ जब व्ही जनने लगती है तो उसको शोक होता है, क्योंकि उसकी दुःख की घटी आ पहुँची, परन्तु जब वह बालक को जन्म दे चुकी तो इस आनन्द से कि जगत में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ, उस संकट को फिर स्मरण नहीं करती। २३ और तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुम से फिर मिलौँगा और तुम्हारे मन में आनन्द होगा; और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा। २४ उस दिन तुम मुझसे कुछ न पूछेगे, मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, यदि पिता से कुछ माँगोगे, तो वह मेरा नाम से तुम्हें देगा। २५ अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा; माँगो तो पाओगेताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। २६ “मैंने ये बातें तुम से दृश्यान्तों में कहीं हैं, परन्तु वह समय आता है, कि मैं तुम से दृश्यान्तों में और फिर नहीं कहूँगा, परन्तु खोलकर तुम्हें पिता के विषय में बताऊँगा। २७ उस दिन तुम मेरा नाम से माँगोगे, और मैं तुम से यह नहीं कहता, कि मैं तुम्हरे लिये पिता से विनती करूँगा। २८ क्योंकि पिता तो स्वयं ही तुम से प्रेम रखता है, इसलिए कि तुम ने मुझसे प्रेम रखा है, और यह भी विश्वास किया, कि मैं पिता की ओर से आया। २९ मैं पिता की ओर से जगत में आया हूँ, फिर जगत को छोड़कर पिता के पास वापस जाता हूँ।” ३० उसके चेलों ने कहा, “देख, अब तो तुम्हारा खोलकर कहता है, और कोई दृश्यान्त नहीं कहता। ३१ अब हम जान गए, कि तू सब कुछ जानता है, और जस्तर नहीं कि कोई तुम से प्रश्न करे, इससे हम विश्वास करते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से आया है।” ३२ यह सुन यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम अब विश्वास करते हो? ३३ देखो, वह घटी आती है वरन् आ पहुँची कि तुम सब तिरात-बितर होकर अपना-अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे, फिर भी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है। ३४ मैंने ये बातें तुम से इसलिए कहीं हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैंने संसार को जीत लिया है।”

१७ यीशु ने ये बातें कहीं हैं और अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर कहा, “हे पिता, वह घटी आ पहुँची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे, २ क्योंकि तूने उसको सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तूने उसको दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे। (aiōnios g166) ३ और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुम एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है, जानें। (aiōnios g166) ४ जो काम तूने मुझे करने

को दिया था, उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है। ५ और अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की सुषि से पहले, मेरी तेरे साथ थी। ६ “मैंने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया जिन्हें तू तेरे जगत में से मुझे दिया। वे तेरे थे और तेरे उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे वचन को मान लिया है। ७ अब वे जान गए हैं, कि जो कुछ तूने मुझे दिया है, सब तेरी ओर से है। ८ क्योंकि जो बातें तूने मुझे पहुँचा दी, मैंने उन्हें उनको पहुँचा दिया और उन्होंने उनको ग्रहण किया और सच-सच जान लिया है, कि मैं तेरी ओर से आया हूँ, और यह विश्वास किया है कि तू ही ने मुझे भेजा। ९ मैं उनके लिये विनिर्नी करता हूँ, संसार के लिये विनिर्नी नहीं करता हूँ परन्तु उन्हीं के लिये जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं। १० और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है; और जो तेरा है वह मेरा है; और इन्से मेरी महिमा प्रगत हुई है। ११ मैं आगे को जगत में न रहेंगा, परन्तु ये जगत में रहेंगे, और मैं तेरे पास आता हूँ, हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तूने मुझे दिया है, उनकी रक्षा कर, कि वे हमारे समान एक हों। १२ जब मैं उनके साथ था, तो मैंने तेरे उस नाम से, जो तूने मुझे दिया है, उनकी रक्षा की, मैंने उनकी देख-रेख की और विनाश के पुत्र को छोड़ उनमें से कोई नाश न हुआ, इसलिए कि पवित्राश्रव्ण की बात पूरी हो। १३ परन्तु अब मैं तेरे पास आता हूँ, और ये बातें जगत में कहता हूँ, कि वे मेरा आनन्द अपने में पूरा पाएँ। १४ मैंने तेरा वचन उहें पहुँचा दिया है, और संसार ने उनसे बैर किया, क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। १५ मैं यह विनिर्नी नहीं करता, कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दृश्य से बचाए रख। १६ जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। १७ सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है। १८ जैसे तूने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैंने भी उन्हें जगत में भेजा। १९ और उनके लिये मैं अपने आपको पवित्र करता हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएँ। २० “मैं केवल इन्हीं के लिये विनिर्नी नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करें, २१ कि वे सब एक हों; जैसा तू है पिता मुझे मैं हूँ, और मैं तुझ मैं हूँ, वैसे ही वे भी हम मैं हों, इसलिए कि जगत विश्वास करे, कि तू ही ने मुझे भेजा। २२ और वह महिमा जो तूने मुझे दी, मैंने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं। २३ मैं उनमें और तम मध्य में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तूने मुझसे प्रेम रखा, वैसा ही उनसे प्रेम रखा। २४ हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तूने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ, वहाँ वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तूने मुझे दी है, क्योंकि तूने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझसे प्रेम रखा। २५ हे धार्मिक पिता, संसार ने मुझे नहीं जाना, परन्तु मैंने तुझे जाना और इन्होंने भी जाना कि तू ही ने मुझे भेजा। २६ और मैंने तेरा नाम उनको बताया और बताता रहँगा कि जो प्रेम तुझको मुझसे था, वह उनमें रहे और मैं उनमें रहूँ।”

१८ यीशु ये बातें कहकर अपने चेलों के साथ किंद्रोन के नाले के पार गया, वहाँ एक बारी थी, जिसमें वह और उसके चेले गए। २ और उसका पकड़वानेवाला यहदा भी वह जगह जानता था, क्योंकि यीशु अपने चेलों के साथ वहाँ जाया करता था। ३ तब यहदा सैन्य-दल को और प्रधान याजकों और फरीसियों की ओर से प्यारों को लेकर दीपिकों और मशालों और हथियारों को लिए हुए वहाँ आया। ४ तब यीशु उन सब बातों को जो उस पर आनेवाली थी, जानकर निकला, और उनसे कहने लगा, “किसे दूँढ़ते हो?” ५ उन्होंने उसको उत्तर दिया, “यीशु नासरी को।” यीशु ने उनसे कहा, “मैं हूँ।” और उसका पकड़वानेवाला यहदा भी उनके साथ खड़ा था। ६ उसके यह कहते ही, “मैं हूँ,” वे पीछे हटकर भूमि पर पिर पड़े। ७ तब उसने फिर उनसे पूछा,

“तुम किसको दूँढ़ते हो।” वे बोले, “यीशु नासरी को।” ८ यीशु ने उत्तर दिया, “मैं तो तुम से कह चुका हूँ कि मैं हूँ, यदि मुझे दूँढ़ते हो तो इहें जाने दो।” ९ यह इसलिए हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उसने कहा था: “जिन्हें तूने मुझे दिया, उनमें से मैंने एक को भी न खोया।” १० शमैन पतरस ने तलवार, जो उसके पास थी, खीची और महायाजक के दास पर चलाकर, उसका दाहिना कान काट दिया, उस दास का नाम मलखुस था। ११ तब यीशु ने पतरस से कहा, “अपनी तलवार काठी में रख। जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है क्या मैं उसे न पीँऊँ?” १२ तब सिपाहियों और उनके स्कूबेरां और यहदियों के प्यारों ने यीशु को पकड़कर बाँध लिया, १३ और पहले उसे हन्ना के पास ले गए, क्योंकि वह उस वर्ष के महायाजक कैफा का ससुर था। १४ यह वही कैफा था, जिसने यहदियों को सलाह दी थी कि हमारे लोगों के लिये एक पुष्प का मरना अच्छा है। १५ शमैन पतरस और एक और चेला भी यीशु के पीछे हो लिए। यह चेला महायाजक का जाना पहचाना था और यीशु के साथ महायाजक के अँगन में गया। १६ परन्तु पतरस बाहर द्वार पर खड़ा रहा, तब वह दूसरा चेला जो महायाजक का जाना पहचाना था, बाहर निकला, और द्वारपालिन से कहकर, पतरस को भीतर ले आया। १७ उस दीर्घी ने जो द्वारपालिनी थी, पतरस से कहा, “क्या तू भी इस मनुष्य के चेलों में से है?” उसने कहा, “मैं नहीं हूँ।” १८ दास और प्यारों जाडे के कारण कोयले धधकाकर खड़े आग तप रहे थे और पतरस भी उनके साथ खड़ा आग तप रहा था। १९ तब महायाजक ने यीशु से उसके चेलों के विषय में और उसके उपदेश के विषय में पूछा। २० यीशु ने उसको उत्तर दिया, “मैंने जगत से खुलकर बौते की, मैंने आराधनालालों और मन्दिर में जहाँ सब यहदी हुआ करते हैं सदा उपदेश किया और गुम में कुछ भी नहीं कहा। २१ तू मुझसे क्यों पूछता है? सुनेवालों से पूछः कि मैंने उनसे क्या कहा? देख वे जानते हैं; कि मैंने क्या-क्या कहा।” २२ जब उसने यह कहा, तो प्यारों में से एक ने जो पास खड़ा था, यीशु को थप्पड़ मारकर कहा, “क्या तू महायाजक को इस प्रकार उत्तर देता है?” २३ यीशु ने उसे उत्तर दिया, “यदि मैंने बुरा कहा, तो उस बुराई पर गवाही दें; परन्तु यदि भला कहा, तो मुझे क्यों मारता है?” २४ हन्ना ने उसे बंधे हुए कैफा महायाजक के पास भेज दिया। २५ शमैन पतरस खड़ा हुआ आग तप रहा था। तब उन्होंने उससे कहा; “क्या तू भी उसके चेलों में से है?” उसने इन्कार करके कहा, “मैं नहीं हूँ।” २६ महायाजक के दासों में से एक जो उसके कुटुम्ब में से था, जिसका कान पतरस ने कट डाला था, बोला, “क्या मैंने तुझे उसके साथ बारी में न देखा था?” २७ पतरस फिर इन्कार कर गया और तुरन्त मुर्गी ने बाँग दी। २८ और वे यीशु को कैफा के पास से किले को ले गए और भेर का समय था, परन्तु वे स्वयं किले के भीतर न गए ताकि अशद्ध न हों परन्तु फसह खा सकें। २९ तब पिलातुस उनके पास बाहर निकल आया और कहा, “तुम इस मनुष्य पर किस बात का दोषारोपण करते हो?” ३० उन्होंने उसको उत्तर दिया, “यदि वह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे हाथ न सौंपते।” ३१ पिलातुस ने उनसे कहा, “तुम ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार उसका न्याय करो।” यहदियों ने उससे कहा, “हमें अधिकार नहीं कि किसी का प्राण लें।” ३२ यह इसलिए हुआ, कि यीशु की वह बात पूरी हो जो उसने यह दर्शाया हुए कही थी, कि उसका मरना कैसा होगा। ३३ तब पिलातुस फिर किले के भीतर गया और यीशु को बुलाकर, उससे पूछा, “क्या तू यहदियों का राजा है?” ३४ यीशु ने उत्तर दिया, “क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या औरों ने मेरे विषय में तुझे से कही?” ३५ पिलातुस ने उत्तर दिया, “क्या मैं यहदी हूँ? तेरी ही जाति और प्रधान याजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंपा, तूने क्या किया है?” ३६ यीशु ने उत्तर दिया, “मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का

होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहदियों के हाथ सौंपा न जाता: परन्तु अब मेरा राज्य यहाँ का नहीं।” ३७ पिलातुस ने उससे कहा, “तो क्या तू राजा है?” यीशु ने उत्तर दिया, “तू कहता है, कि मैं राजा हूँ; मैंने इसलिए जन्म लिया, और इसलिए जगत में आया हूँ कि सत्य पर गवाही दूँ जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है।” ३८ पिलातुस ने उससे कहा, “सत्य क्या है?” और यह कहकर वह फिर यहदियों के पास निकल गया और उनसे कहा, “मैं तो उसमें कुछ दोष नहीं पाता।” ३९ “पर तुम्हारी यह रीति है कि मैं फसह में तुम्हारे लिये एक व्यक्ति को छोड़ दूँ। तो क्या तुम चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये यहदियों के राजा को छोड़ दूँ?” ४० तब उन्होंने फिर चिल्लाकर कहा, “स्त्री नहीं परन्तु हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे।” और बरअब्बा डाक था।

१९ इस पर पिलातुस ने यीशु को लेकर कोडे लगवाए। १९ और सिपाहियों ने

कॉटों का मुकुट पॉथकर उपके सिर पर रखा, और उसे बैगनी ऊपरी बन्ध पहनाया, २० और उपके पास आ आकर कहने लगे, “हे यहदियों के राजा, प्रणाम!” और उसे थप्पड़ मारे। २१ तब पिलातुस ने फिर बाहर निकलकर लोगों से कहा, “देखो, मैं उसे तुम्हारे पास फिर बाहर लाता हूँ; ताकि तुम जानो कि मैं उसमें कुछ भी दोष नहीं पाता।” २२ तब यीशु कॉटों का मुकुट और बैगनी बन्ध पहने हुए बाहर निकला और पिलातुस ने उनसे कहा, “देखो, यह पुस्त।” २३ जब प्रधान याजकों और प्यादों ने उसे देखा, तो चिल्लाकर कहा, “उसे कूस पर चढ़ा, कूस पर!” पिलातुस ने उनसे कहा, “तुम ही उसे लेकर कूस पर चढ़ाओ; क्योंकि मैं उसमें दोष नहीं पाता।” २४ यहदियों ने उसको उत्तर दिया, “हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मरो जाने के योग्य है क्योंकि उसने अपने अपको परमेश्वर का पुत्र बनाया।” २५ जब पिलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया। २६ और फिर किसे के भीतर गया और यीशु से कहा, “तू कहाँ का है?” २७ परन्तु यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया। २८ पिलातुस ने उससे कहा, “मुझसे क्यों नहीं बोलता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे कूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।” २९ यीशु ने उत्तर दिया, “यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझे पर कुछ अधिकार न होता; इसलिए जिसने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है, उसका पाप अधिक है।” ३० इससे पिलातुस ने उसे छोड़ देना चाहा, परन्तु यहदियों ने चिल्ला चिल्लाकर कहा, “यदि तू इसको छोड़ देगा तो तू कैसर का मित्र नहीं; जो कोई अपने आपको राजा बनाता है वह कैसर का सामना करता है।” ३१ ये बातें सुनकर पिलातुस यीशु को बाहर लाया और उस जगह एक चबूतरा था, जो इत्तानी में ‘गब्बता’ कहलाता है, और वहाँ न्याय आसन पर बैठा। ३२ यह फसह की तैयारी का दिन था और छठे घंटे के लगभग था: तब उसने यहदियों से कहा, “देखो, यही है, तुम्हारा राजा!” ३३ परन्तु वे चिल्लाए, “ले जा! ले जा! उसे कूस पर चढ़ा!” पिलातुस ने उनसे कहा, “क्या मैं तुम्हारे राजा को कूस पर चढ़ाऊँ?” प्रधान याजकों ने उत्तर दिया, “कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं।” ३४ तब उसने उसे उनके हाथ सौंप दिया ताकि वह कूस पर चढ़ाया जाए। ३५ तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना कूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो ‘खोपड़ी का स्थान’ कहलाता है और इत्तानी में ‘गुलगुता’। ३६ वहाँ उन्होंने उसे और उसके साथ और दो मनुष्यों को कूस पर चढ़ाया, एक को इधर और एक को उधर, और बीच में यीशु को। ३७ और पिलातुस ने एक दोष-पत्र लिखकर कूस पर लगा दिया और उसमें यह लिखा हुआ था, “यीशु नासरी यहदियों का राजा।” ३८ यह दोष-पत्र बहुत यहदियों ने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहाँ यीशु कूस पर चढ़ाया गया था नगर के पास था और पत्र इत्तानी और यूनानी में लिखा हुआ था। ३९ तब यहदियों के प्रधान याजकों ने पिलातुस से कहा,

“‘यहदियों का राजा’ मत लिख परन्तु यह कि ‘उसने कहा, मैं यहदियों का राजा हूँ।’” ४० पिलातुस ने उत्तर दिया, “मैंने जो लिख दिया, वह लिख दिया।” ४१ जब सिपाही यीशु को कूस पर चढ़ा चुके, तो उसके कपड़े लेकर चार भाग किए, हर सिपाही के लिये एक भाग और कुर्ता भी लिया, परन्तु कुर्ता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था; ४२ इसलिए उन्होंने आपस में कहा, “हम इसको न फाड़ें, परन्तु इस पर चिठ्ठी डालें कि वह किसका होगा।” यह इसलिए हआ, कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो, “उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिए और मेरे बन्ध पर चिठ्ठी डाली।” ४३ अतः सिपाहियों ने ऐसा ही किया। परन्तु यीशु के कूस के पास उसकी माता और उसकी माता की बहन मरियम, क्लोपास की पत्री और मरियम मगदलीनी खड़ी थी। ४४ यीशु ने अपनी माता और उस चेले को जिससे वह प्रेम रखता था पास खड़े देखकर अपनी माता से कहा, “हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है।” ४५ तब उस चेले से कहा, “देख, यह तेरी माता है।” और उसी समय से वह चेला, उसे अपने घर ले गया। ४६ इसके बाद यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका; इसलिए कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो कहा, “मैं प्यासा हूँ।” ४७ वहाँ एक सिरके से भरा हुआ बर्तन धरा था, इसलिए उन्होंने सिरके के पिंगाए हुए पनसोखा को जफे पर रखकर उसके मैंह से लगाया। ४८ जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, “प्पा हुआ”; और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए। ४९ और इसलिए कि वह तैयारी का दिन था, यहदियों ने पिलातुस से विनती की, कि उनकी टॉंगे तोड़ दी जाएँ और वे उतारे जाएँ ताकि सब्त के दिन वे कूसों पर न रहें, क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन था। ५० इसलिए सिपाहियों ने आकर पहले की टॉंगे तोड़ी तब दूसरे की भी, जो उसके साथ कूसों पर चढ़ाए गए थे। ५१ परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उनकी टॉंगे न तोड़ी। ५२ परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उसमें से तुन्न लह और पानी निकला। ५३ जिसने यह देखा, उसी ने गवाही दी है, और उसकी गवाही सच्ची है; और वह जानता है, कि सच कहत है कि तुम भी विश्वास करो। ५४ ये बातें इसलिए हुईं कि पवित्रशास्त्र की यह बात पूरी हो, “उसकी कोई हही तोड़ी न जाएगी।” ५५ फिर एक और स्थान पर यह लिखा है, “जिसे उन्होंने बेधा है, उस पर ढूँढ़ि करोगे।” ५६ इन बातों के बाद अरिमतियाह के यसुफ ने, जो यीशु का चेला था, (परन्तु यहदियों के डर से इस बात को छिपाए रखता था), पिलातुस से विनती की, कि मैं यीशु के शव को ले जाऊँ, और पिलातुस ने उसकी विनती सुनी, और वह आकर उसका शव ले गया। ५७ नीकुदेसु भी जो पहले यीशु के पास रात को गया था पचास सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया। ५८ तब उन्होंने यीशु के शव को लिया और यहदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध-द्रव्य के साथ कफन में लेपेटा। ५९ उस स्थान पर जहाँ यीशु कूस पर चढ़ाया गया था, एक बारी थी; और उस बारी में एक नई कब्र थी; जिसमें कोई न रखा गया था। ६० अतः यहदियों की तैयारी के दिन के कारण, उन्होंने यीशु को उसी में रखा, क्योंकि वह कब्र निकट थी।

“‘यहदियों का राजा’ मत लिख परन्तु यह कि ‘उसने कहा, मैं यहदियों का राजा हूँ।’” ६१ पिलातुस ने उत्तर दिया, “मैंने जो लिख दिया, वह लिख दिया।” ६२ जब सिपाही यीशु को कूस पर चढ़ा चुके, तो उसके कपड़े लेकर चार भाग किए, हर सिपाही के लिये एक भाग और कुर्ता भी लिया, परन्तु कुर्ता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था; ६३ इसलिए उन्होंने आपस में कहा, “हम इसको न फाड़ें, परन्तु इस पर चिठ्ठी डालें कि वह किसका होगा।” यह इसलिए हआ, कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो, “उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिए और वे बन्ध पर चिठ्ठी डाली।” ६४ अतः सिपाहियों ने ऐसा ही किया। परन्तु यीशु के कूस के पास उसकी माता और उसकी माता की बहन मरियम, क्लोपास की पत्री और मरियम मगदलीनी खड़ी थी। ६५ यीशु ने अपनी माता और उस चेले को जिससे वह प्रेम रखता था पास खड़े देखकर अपनी माता से कहा, “हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है।” ६६ तब उस चेले से कहा, “देख, यह तेरी माता है।” और उसी समय से वह चेला, उसे अपने घर ले गया। ६७ इसके बाद यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका; इसलिए कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो कहा, “मैं प्यासा हूँ।” ६८ वहाँ एक सिरके से भरा हुआ बर्तन धरा था, इसलिए उन्होंने सिरके के पिंगाए हुए पनसोखा को जफे पर रखकर उसके मैंह से लगाया। ६९ जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, “प्पा हुआ”; और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए। ७० अतः सिपाहियों ने आकर पहले की टॉंगे तोड़ी तब दूसरे की भी, जो उसके साथ कूसों पर चढ़ाए गए थे। ७१ परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उनकी टॉंगे न तोड़ी। ७२ परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उसमें से तुन्न लह और पानी निकला। ७३ जिसने यह देखा, उसी ने गवाही दी है, और उसकी गवाही सच्ची है; और वह जानता है, कि सच कहत है कि तुम भी विश्वास करो। ७४ ये बातें इसलिए हुईं कि पवित्रशास्त्र की यह बात पूरी हो, “उसकी कोई हही तोड़ी न जाएगी।” ७५ फिर एक और स्थान पर यह लिखा है, “जिसे उन्होंने बेधा है, उस पर ढूँढ़ि करोगे।” ७६ इन बातों के बाद अरिमतियाह के यसुफ ने, जो यीशु का चेला था, (परन्तु यहदियों के डर से इस बात को छिपाए रखता था), पिलातुस से विनती की, कि मैं यीशु के शव को ले जाऊँ, और पिलातुस ने उसकी विनती सुनी, और वह आकर उसका शव ले गया। ७७ नीकुदेसु भी जो पहले यीशु के पास रात को गया था पचास सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया। ७८ तब उन्होंने यीशु के शव को लिया और यहदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध-द्रव्य के साथ कफन में लेपेटा। ७९ उस स्थान पर जहाँ यीशु कूस पर चढ़ाया गया था, एक बारी थी; और उस बारी में एक नई कब्र थी; जिसमें कोई न रखा गया था। ८० अतः यहदियों की तैयारी के दिन के कारण, उन्होंने यीशु को उसी में रखा, क्योंकि वह कब्र निकट थी।

२० सप्ताह के पहले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र

पर आई, और पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा। १ तब वह दौड़ी और शमैन पतसस और उस दूसरे चेले के पास जिससे यीशु प्रेम रखता था आकर कहा, “वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं, और हम नहीं जानतीं, कि उसे कहाँ रख दिया है।” २ तब पतसस और वह दूसरा चेला निकलकर कब्र की ओर चले। ३ और दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे, परन्तु दूसरा चेला पतसस से आगे बढ़कर कब्र पर पहले पहुँचा। ४ और झुककर कपड़े पड़े देखे: तो भी

वह भीतर न गया। ६ तब शमैन पतरस उसके पीछे-पीछे पहुँचा और कब्र के भीतर गया और कपड़े पड़े देखे। ७ और वह अंगोछा जो उसके सिर पर बन्धा हुआ था, कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं परस्त अलग एक जगह लपेटा हुआ देखा। ८ तब दूसरा चेला भी जो कब्र पर पहले पहुँचा था, भीतर गया और देखकर विश्वास किया। ९ वे तो अब तक पवित्रशास्त्र की वह बात न समझते थे, कि उसे मेरे हुओं में से जी उठना होगा। १० तब ये चेले अपने घर लौट गए। ११ परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही और रोते-रोते कब्र की ओर झक्कर कर, १२ दो स्वर्गदूतों को उज्ज्वल कपड़े पहने हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैतने बैठे देखा, जहाँ यीशु का शव पड़ा था। १३ उन्होंने उससे कहा, “हे नारी, तू क्यों रोती है?” उसने उनसे कहा, “वे मेरे प्रभु को उठा ले गए और मैं नहीं जानती कि उसे कहाँ रखा है।” १४ यह कहकर वह पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा और न पहचाना कि यह यीशु है। १५ यीशु ने उससे कहा, “हे नारी तू क्यों रोती है? किसको ढूँढ़ती है?” उसने माली समझकर उससे कहा, “हे श्रीमान, यदि तूने उसे उठा लिया है तो मुझसे कह कि उसे कहाँ रखा है और मैं उसे ले जाऊँगी।” १६ यीशु ने उससे कहा, “मरियम!” उसने पीछे फिरकर उससे इब्रानी में कहा, “रब्बनी!” अर्थात् ‘हे गुरु।’ १७ यीशु ने उससे कहा, “मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कह दे, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ।” १८ मरियम मगदलीनी ने जाकर चेलों को बताया, “मैंने प्रभु को देखा और उसने मुझसे बातें कहीं।” १९ उसी दिन जो सपाह का पहला दिन था, संध्या के समय जब वहाँ के द्वार जहाँ चेले थे, यह दियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आया और बीच में खड़ा होकर उनसे कहा, “तुम्हें शान्ति मिले।” २० और यह कहकर उसने अपना हाथ और अपना पंजर उनको दिखाएः तब चेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए। २१ यीशु ने फिर उनसे कहा, “तुम्हें शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।” २२ यह कहकर उसने उन पर फैँका और उनसे कहा, “पवित्र आत्मा लो।” २३ जिनके पाप तुम क्षमा करोवे उनके लिये क्षमा किए गए हैं; जिनके तुम रखो, वे रखे गए हैं।” २४ परन्तु बाहों में से एक व्यक्ति अर्थात् थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, जब यीशु आया तो उनके साथ न था। २५ जब और चेले उससे कहने लगे, “हमने प्रभु को देखा है,” तब उन्हे उनसे कहा, “जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के छेद न देख लूँ, और कीलों के छेदों में अपनी ऊँली न डाल लूँ, तब तक मैं विश्वास नहीं करूँगा।” २६ आठ दिन के बाद उसके चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उनके साथ था, और द्वार बन्द थे, तब यीशु ने आकर और बीच में खड़ा होकर कहा, “तुम्हें शान्ति मिले।” २७ तब उसने थोमा से कहा, “अपनी ऊँली यहाँ लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।” २८ यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, “हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!” २९ यीशु ने उससे कहा, “नूने तो मुझे देखकर विश्वास किया है? धन्य है वे जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।” ३० यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाएँ, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। ३१ परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मर्सीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।

२१ इन बातों के बाद यीशु ने अपने आपको तिविरियास झील के किनारे चेलों पर प्रगट किया और इस रीति से प्रगट किया। २२ शमैन पतरस और थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, और गलील के काना नगर का नतनएल और

जब्दी के पुत्र, और उसके चेलों में से दो और जन इकट्ठे थे। २३ शमैन पतरस ने उनसे कहा, “मैं मछली पकड़ने जाता हूँ।” उन्होंने उससे कहा, “हम भी तेरे साथ चलते हैं।” इसलिए वे निकलकर नाव पर चढ़े, परन्तु उस रात कुछ न पकड़ा। २४ भेर होते ही यीशु किनारे पर खड़ा हुआ; फिर भी चेलों ने न पहचाना कि यह यीशु है। २५ तब यीशु ने उनसे कहा, “हे बालकों, क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है?” उन्होंने उत्तर दिया, “नहीं।” २६ उनसे उनसे कहा, “नाव की दाहिनी ओर जाल डालो, तो पाओगे।” २७ तब उन्होंने जाल डाला, और अब मछलियों की बहुतायत के कारण उसे खींच न सके। २८ इसलिए उस चेले ने जिससे यीशु प्रेम रखता था पतरस से कहा, “यह तो प्रभु है।” शमैन पतरस ने यह सुनकर कि प्रभु है, कमर में अंगरखा कस लिया, क्योंकि वह नंगा था, और झील में कूद पड़ा। २९ परन्तु और चेले डोंगी पर मछलियों से भेरा हुआ जाल खींचते हुए आए, क्योंकि वे किनारे से अधिक दूर नहीं, कोई दो सौ हाथ पर थे। ३० जब किनारे पर उतरे, तो उन्होंने कोयले की आग, और उस पर मछली रखी हुई, और रोटी देवी। ३१ यीशु ने उनसे कहा, “जो मछलियाँ तुम ने अभी पकड़ी हैं, उनमें से कुछ लाओ।” ३२ शमैन पतरस ने डोंगी पर चढ़कर एक सौ तिरमन बड़ी मछलियों से भेरा हुआ जाल किनारे पर खींचा, और इतनी मछलियों होने पर भी जाल न फटा। ३३ यीशु ने उनसे कहा, “आओ, भोजन करो।” और चेलों में से किसी को साहस न हआ, कि उससे पछे, “तू कौन है?” क्योंकि वे जानते थे कि यह प्रभु है। ३४ यीशु आया, और रोटी लेकर उठे दी, और वैसे ही मछली भी। ३५ यह तीसी बार है, कि यीशु ने मेरे हुओं में से जी उठने के बाद चेलों को दर्शन दिए। ३६ भोजन करने के बाद यीशु ने शमैन पतरस से कहा, “हे शमैन, यहन्ना के पुत्र, क्या तू इनसे बढ़कर मुझसे प्रेम रखता है?” उसने उससे कहा, “हाँ प्रभु; तू तो जानता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ।” उसने उससे कहा, “मेरे मेनों को चरा।” ३७ उन्हें फिर दसी बार उससे कहा, “हे शमैन यहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझसे प्रेम रखता है?” उसने उससे कहा, “हाँ, प्रभु तू जानता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ।” उसने उससे कहा, “मेरी भेड़ोंकी रखवाली कर।” ३८ उसने तीसी बार उससे कहा, “हे शमैन यहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझसे प्रीति रखता है?” पतरस उदास हुआ, कि उसने उसे तीसी बार ऐसा कहा, “क्या तू मुझसे प्रीति रखता है?” और उससे कहा, “हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता है: तू यह जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ।” यीशु ने उससे कहा, “मेरी भेड़ों को चरा।” ३९ मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ, जब तू जावन था, तो अपनी कमर बाँधकर जहाँ चाहता था, वहाँ फिरता था; परन्तु जब तू बड़ा होगा, तो अपने हाथ लम्बे करेगा, और दूसरा तेरी कमर बाँधकर जहाँ तू न चाहेगा वहाँ तुझे ले जाएगा।” ४० उसने इन बातों से दर्शन्या कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा; और यह कहकर, उससे कहा, “मेरे पीछे हो ले।” ४१ पतरस ने फिरकर उस चेले को पीछे आते देखा, जिससे यीशु प्रेम रखता था, और जिसने भोजन के समय उसकी छाती की ओर झांककर पछा “हे प्रभु, तेरा पकड़वानेवाला कौन है?” ४२ उसे देखकर पतरस ने यीशु से कहा, “हे प्रभु, इसका क्या हाल होगा?” ४३ यीशु ने उससे कहा, “यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे क्या? तू मेरे पीछे हो ले।” ४४ इसलिए भाइयों में यह बात फैल गई, कि वह चेले न मरेगा; तो भी यीशु ने उससे यह नहीं कहा, कि वह न मरेगा, परन्तु यह कि “यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इससे क्या?” ४५ यह वही चेला है, जो इन बातों की गवाही देता है और जिसने इन बातों को लिखा है। ४६ और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किएँ, यदि वे एक-एक

करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में
भी न समातीं।

प्रेरितों के काम

१ हे शियुफिल्स, मैंने पहली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी,

जो यीशु आरम्भ से करता और सिखाता रहा, २ उस दिन तक जब वह उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया, ३ और यीशु के दुःख उठने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आपको उन्हें जीवित दिखाया, और चात्नीस दिन तक वह प्रेरितों को दिखाई देता रहा, और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा। ४ और चेलों से मिलकर उन्हें आज्ञा दी, “यस्शलेम को न छोडो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की प्रतीक्षा करते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझसे सुन चुके हो। ५ क्योंकि यहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।” ६ अतः उन्होंने इकट्ठे होकर उससे पूछा, “हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्ताएल का राज्य पुनः स्थापित करेगा?” ७ उसने उनसे कहा, “उन समयों या कालों को जानना, जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं। ८ परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यस्शलेम और सारे यहदिया और सामरिया में, और पृथ्यी की छोटे तक मेरे गवाह होंगे।” ९ यह कहकर वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया। १० और उनके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तब देखो, दो पुष्प श्वेत वस्त्र पहने हुए उनके पास आ खड़े हुए। ११ और कहने लगे, “हे गलीली पुष्पों, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।” १२ तब वे जैतून नामक पहाड़ से जो यस्शलेम के निकट एक सब्त के दिन की दूरी पर है, यस्शलेम को लौटे। १३ और जब वहाँ पहुँचे तो वे उस अटारी पर गए, जहाँ पतरस, यहन्ना, याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पस, थोमा, बरतल्मै, मत्ती, हलफईस का पुत्र याकूब, शमैन जेलोतेस और याकूब का पुत्र यहदा रहते थे। १४ ये सब कई छियों और यीशु की माता मरियम और उनके भाइयों के साथ एक चित्त होकर प्रार्थना में लगे रहे। १५ और उन्हीं दिनों में पतरस भाइयों के बीच में जो एक सौ बीस व्यक्ति के लगभग इकट्ठे थे, खड़ा होकर कहने लगा। १६ “हे भाइयों, अवश्य यथा कि पवित्रास्त्र का वह लेख पूरा हो, जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यहदा के विषय में जो यीशु के पकड़ने वालों का अगुआ था, पहले से कहा था। १७ क्योंकि वह तो हम में गिना गया, और इस सेवकाई में भी सहभागी हुआ।” १८ (उसने अधर्म की कमाई से एक खेत मोल लिया; और सिर के बल पिरा, और उसका पेट फट गया, और उसकी सब अंतिडियों निकल गई। १९ और इस बात को यस्शलेम के सब रहनेवाले जान गए, यहाँ तक कि उस खेत का नाम उनकी भाषा में ‘हकलदारा’ अर्थात् ‘लह का खेत’ पड़ गया।) २० क्योंकि भजन सहिता में लिखा है, ‘उसका घर उजड़ जाए, और उसमें कोई न बसे’ और ‘उसका पद कोई दूसरा ले ले।’ २१ इसलिए जितने दिन तक प्रभु यीशु हमारे साथ आता-जाता रहा, अर्थात् यहन्ना के बपतिस्मा से लेकर उसके हमारे पास से उठाए जाने तक, जो लोग बराबर हमारे साथ रहे, २२ उचित है कि उनमें से एक व्यक्ति हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह हो जाए। २३ तब उन्होंने दो को खड़ा किया, एक यूसुफ को, जो बरसब्बास कहलाता है, जिसका उपनाम यस्तुत्य है, दूसरा मतियाह को। २४ और यह कहकर प्रार्थना की, “हे प्रभु, तू जो सब के मन को जानता है, यह प्रगट कर कि इन दोनों में से तूने किसको चुना है, २५ कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई का पद ले, जिसे यहदा छोड़कर अपने स्थान को गया।” २६ तब

उन्होंने उनके बारे में चिठ्ठियाँ डाली, और चिठ्ठी मतियाह के नाम पर निकली, अतः वह उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया।

२ जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। ३ और

अचानक आकाश से बड़ी औंधी के समान सनसनाहट का शब्द हआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया। ४ और उन्हें आग के समान जीर्घे फटी हुई दिखाई दी और उनमें से हर एक पर आ ठहरी। ५ और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे। ६ और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त-यहदी यस्शलेम में रहते थे। ७ जब वह शब्द सुनाई दिया, तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं। ८ और वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे, “देखो, ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलिली नहीं? ९ तो फिर क्यों हम में से; हर एक अपनी-अपनी जन्म-भूमि की भाषा सुनता है? १० हम जो पारथी, मेदी, एलाम लोग, मेसोपोटामिया, यहदिया, कपपूद्यकिया, पुन्तस और आसिया, ११ और फ्रिगिया और पंफलिया और मिस्र और लीबिया देश जो करने के आस-पास हैं, इन सब देशों के रहनेवाले और रोमी प्रवासी, १२ अर्थात् क्या यहदी, और क्या यहदी मत धारण करनेवाले, क्रेती और अरबी भी हैं, परन्तु अपनी-अपनी भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं।” १३ और वे सब चकित हुए, और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे, “यह क्या हो रहा है?” १४ परन्तु दूसरों ने उपहास करके कहा, “वे तो नई मदिरा के नशे में हैं।” १५ परतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे शब्द से कहने लगा, “हे यहदियों, और हे यस्शलेम के सब रहनेवालों, यह जान ले और कान लगाकर मेरी बातें सुनो। १६ जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में नहीं हैं, क्योंकि अभी तो तीसरा पहर ही दिन चढ़ा है। १७ परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वुक्ता के द्वारा कही गई है: १८ ‘परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलौंगा और तुम्हरे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वारी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे बूढ़े पुस्प स्वप्न देखेंगे। १९ वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपनी आत्मा उण्डेलौंगा, और वे भविष्यद्वारी करेंगे। २० और मैं ऊपर आकाश में अद्वृत काम, और मीठे धरती पर चिन्ह, अर्थात् लह, और आग और धूँए का बादल दिखाऊँगा। २१ प्रभु के महान और तेजस्वी दिन के आने से पहले सूर्य अंधेरा और चाँद लह सा हो जाएगा। २२ और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धर पाएगा।” २३ “हे इसाएलियों, ये बातें सुनो कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और अस्तर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हरे बीच उसके द्वारा कर दिखालाए जिसे तुम आप ही जानते हो। २४ उनीं को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे कूस पर चढ़ावकार मार डाला। २५ परन्तु उन्हीं को परमेश्वर ने मन्त्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया: क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके बश में रहता। २६ क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है, मैं प्रभु को सर्वदा अपने सामने देखता रहा क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर है, ताकि मैं डिंग न जाँचू। २७ इसी कारण मेरा मन आनन्दित हआ, और मेरी जीभ मग्न हई; वरन् मेरा शरीर भी आशा में बना रहेगा। २८ क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ोगा; और न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा! (Hades g86) २९ तुमें मुझे जीवन का मार्ग बताया है; तू मुझे अपने दर्शन के द्वारा आनन्द से भर देगा।” ३० “हे भाइयों, मैं

उस कुलपति दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूँ कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उसकी कब्र आज तक हमारे यहाँ बर्तमान है। ३० वह भविष्यद्वक्ता था, वह जानता था कि परमेश्वर ने उससे शपथ खाइ है, मैं तेरे बंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊँगा। ३१ उसने होनेवाली बात को पहले ही से देखकर मसीह के जी उनके के विषय में भविष्यद्वाणी की, कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया, और न उसकी देह सड़ने पाई। (Hades g86) ३२ “इसी वीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं। ३३ इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिंडा से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उण्डेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। ३४ क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह स्वयं कहता है, ‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दाहिने बैठे, ३५ जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों तले की चौकी न कर दूँ।’” ३६ “अतः अब इस्माइल का सारा धराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी वीशु को जिसे तुम ने कूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।” ३७ तब सुनेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और अन्य प्रेरितों से पूछने लगे, “हे भाइयों, हम क्या करें?” ३८ पतरस ने उनसे कहा, “मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये वीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। ३९ क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।” ४० उसने बहुत और बातों से भी गवाही दे टेकर समझाया कि अपने आपको इस टेढ़ी जाति से बचाओ। ४१ अतः जिन्होंने उसका बचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगाभग उनमें मिल गए। ४२ और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलाने रहे। ४३ और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्दुन काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्राप्त होते थे। ४४ और सब विचास का नकेवाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएँ साझे की थीं। ४५ और वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच-बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बाँट दिया करते थे। ४६ और वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सिधाई से भोजन किया करते थे। ४७ और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे; और जो उत्तरां पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।

३ पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे। ४ और लोग एक जन्म के लॉगड़े को ला रहे थे, जिसको वे प्रतिदिन मन्दिर के उस द्वार पर जो ‘सन्दर्भ’ कहलाता है, बैठा देते थे, कि वह मन्दिर में जानेवालों से भीख माँगी। ५ जब उसने पतरस और यूहन्ना को मन्दिर में जाने देखा, तो उनसे भीख माँगी। ६ पतरस ने यूहन्ना के साथ उसकी और ध्यान से देखकर कहा, “हमारी ओर देखा!” ७ अतः वह उनसे कुछ पाने की आशा रखते हुए उनकी ओर ताकने लगा। ८ तब पतरस ने कहा, “चाँदी और सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता है, वीशु मसीह नासीर के नाम से चल फिर।” ९ और उसने उसका दाहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया; और तुरन्त उसके पाँवों और टखनों में बल आ गया। १० और वह उठलकर खड़ा हो गया, और चलने फिरने लगा; और चलता, और कृदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उनके साथ मन्दिर में गया। ११ सब लोगों ने उसे चलते फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते देखकर, १२ उसको पोहचान लिया कि यह वही है, जो मन्दिर के ‘सन्दर्भ’ फाटक पर बैठकर भीख माँगा करता था; और उस घटना से जो उसके साथ हुई थी; वे बहुत अचम्भित और चकित हुए। १३ जब

वह पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था, तो सब लोग बहुत अचम्भा करते हुए उस ओसरे में जो सुलैमान का कहलाता है, उनके पास दौड़े आए। १४ यह देखकर पतरस ने लोगों से कहा, “हे इस्माइलियों, तुम इस मनुष्य पर क्यों अचम्भा करते हो, और हमारी ओर क्यों इस प्रकार देख रहे हो, कि माने हमने अपनी सामर्थ्य या भक्ति से इसे चलने फिरने योग्य बना दिया। १५ अब्राहम और इस्माइल और याकूब के परमेश्वर, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने अपने सेवक वीशु की महिमा की, जिसे तुम ने पकड़वा दिया, और जब पिलातुस ने उसे छोड़ देने का विचार किया, तब तुम ने उसके सामने वीशु का तिरस्कार किया। १६ तुम ने पवित्र और धर्मी का तिरस्कार किया, और चाहा कि एक हत्यारे को तुम्हारे लिये छोड़ दिया जाए। १७ और तुम ने जीवन के कर्ता को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मेरे हुओं में से जिलाया; और इस बात के हम गवाह हैं। १८ और उसी के नाम ने, उस विचास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ्य दी है; और निश्चय उसी विचास ने जो वीशु के द्वारा है, इसको तुम सब के सामने बिलकुल भला चंगा कर दिया है। १९ “और अब हे भाइयों, मैं जानता हूँ कि यह काम तुम ने अज्ञानता से किया, और वैसा ही तुहारे सरदारों ने भी किया। २० परन्तु जिन बातों को परमेश्वर ने सब भविष्यद्वक्ताओं के मुख से कहा है कि तुम्हारे पाप मिटाएँ जाएँ, जिससे प्रभु के सम्मुख से विश्वानि के दिन आएँ। २१ और वह उस वीशु को भेजे जो तुहारे लिये पहले ही से मसीह ठहराया गया है। २२ अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे जब तक कि वह सब बातों का सुधार न कर ले जिसकी चर्चा प्राचीनकाल से परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से की है। (aión g165) २३ जैसा कि मूसा ने कहा, ‘प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ जैसा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा, जो कुछ वह तुम से कहे, उसकी सुनाना।’ २४ परन्तु प्रयेक प्रभु जो उस भविष्यद्वक्ता की न सने, लोगों में से नाश किया जाएगा। २५ और शमूलैन से लेकर उसके बाद वालों तक जिन्हे भविष्यद्वक्ताओं ने बात कहीं उन सब ने इन दिनों का सन्देश दिया है। २६ तुम भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान और उस वाचा के भागी हो, जो परमेश्वर ने तुम्हारे पूर्वजों से बाँधी, जब उसने अब्राहम से कहा, ‘तेरे बंश के द्वारा पृथ्वी के सारे धराने आशीष पाएँगे।’ २७ परमेश्वर ने अपने सेवक को उठाकर फहले तुम्हारे पास भेजा, कि तुम मैं से हर एक को उसकी बुराइयों से फेरकर आशीष दे।”

४ जब पतरस और यूहन्ना लोगों से यह कह रहे थे, तो याजक और मन्दिर के सरदार और सदूकी उन पर चढ़ आए। १ वे बहुत क्रोधित हुए कि पतरस और यूहन्ना वीशु के विषय में सिखाते थे और उसके मेरे हुओं में से जी उठने का प्रचार करते थे। २ और उन्होंने उन्हें पकड़कर दूसरे दिन तक हवालात में रखा क्योंकि संध्या हो गई थी। ३ परन्तु बचन के सुनेवालों में से बहतों ने विचास किया, और उनकी पिनती पाँच हजार सुख्खों के लगाभग हो गई। ४ दूसरे दिन ऐसा हआ कि उनके सरदार और पुनिएँ और शांत्वी। ५ और महायाजक हन्ना और कैफा और यूहन्ना और सिकन्दर और जिन्हे महायाजक के धराने के थे, सब यस्तलैप में इकट्ठे हुए। ६ और पतरस और यूहन्ना को बीच में खड़ा करके पूछने लगे, “तुम ने यह काम किस सामर्थ्य से और किस नाम से किया है?” ७ तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा, ८ “हे लोगों के सरदारों और प्राचीनों, इस दुर्लभ मनुष्य के साथ जो भलाई की गई है, यदि आज हम से उसके विषय में पूछाताल की जाती है, कि वह कैसे अच्छा हुआ। ९ तो तुम सब और सारे इस्माइली लोग जान लें कि वीशु मसीह

नासरी के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मेरे हुओं में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला चंगा खड़ा है। १४ यह वही पथर है जिसे तुम राजमिथियों ने तुच्छ जाना और वह कोने के सिरे का पथर हो गया। १५ और किसी दूसरे के द्वारा उड़ार नहीं; क्योंकि स्वर्ण के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उड़ार पा सके।^{१६} जब उन्होंने पतरस और यहन्ना का साहस देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं। १७ परन्तु उस मनुष्य को जो अच्छा हुआ था, उनके साथ खड़े देखकर, यहदी उनके विरोध में कुछ न कह सके। १८ परन्तु उन्हें महासभा के बाहर जाने की आज्ञा देकर, वे आपस में विचार करने लगे, १९ “हम इन मनुष्यों के साथ क्या करें? क्योंकि यस्सलेम के सब रहनेवालों पर प्रगत है, कि इनके द्वारा एक प्रसिद्ध चिन्ह दिखाया गया है; और हम उसका इन्कार नहीं कर सकते। २० परन्तु इसलिए कि यह बात लोगों में और अधिक फैल न जाए, हम उन्हें धमकाएँ, कि वे इस नाम से फिर किसी मनुष्य से बातें न करें।” २१ तब पतरस और यहन्ना को बुलाया और चेतावनी देकर यह कहा, “यीशु के नाम से कुछ भी न बोलना और न सिखाना।” २२ परन्तु पतरस और यहन्ना ने उनको उत्तर दिया, “तुम ही न्याय करो, कि क्या यह परमेश्वर के निकट भला है, कि हम परमेश्वर की बात से बढ़कर तम्हारी बात मानें? २३ क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता, कि जो हमने देखा और सुना है, वह न कहें।” २४ तब उन्होंने उनको और धमकाकर छोड़ दिया, क्योंकि लोगों के कारण उन्हें दण्ड देने का कोई कारण नहीं मिला, इसलिए कि जो घटना हुई थी उसके कारण सब लोग परमेश्वर की बड़ाइ करते थे। २५ क्योंकि वह मनुष्य, जिस पर यह चंगा करने का चिन्ह दिखाया गया था, चालीस वर्ष से अधिक आयु का था। २६ पतरस और यहन्ना छूटकर अपने साथियों के पास आए, और जो कुछ प्रधान याजकों और प्राचीनों ने उनसे कहा था, उनको सुना दिया। २७ यह सुनकर, उन्होंने एक चित्त होकर ऊँचे शब्द से परमेश्वर से कहा, “हे प्रभु, तू वही है जिसने स्वर्ण और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है बनाया। २८ तूने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा, ‘अन्यजातियों ने हल्लड़ ब्यां मचाया? और देश-देश के लोगों ने क्यों वर्ध्य बातें सोची?’ २९ प्रभु और उसके अभिषिक्त के विरोध में पृथ्वी के राजा खड़े हुए, और हाकिम एक साथ इकट्ठे हो गए।” ३० “क्योंकि सचमुच तेरे पवित्र सेवक यीशु के विरोध में, जिसे तूने अधिषेष किया, हेरोदेस और पुनित्युस पिलातुप भी अन्यजातियों और इसाएलियों के साथ इस नगर में इकट्ठे हुए। ३१ कि जो कुछ पहले से तेरी सामर्थ्य और मति से ठहरा था वही करें। ३२ अब हे प्रभु, उनकी धमकियों को देख, और अपने दासों को यह बरदान दे कि तेरा वचन बड़े साहस से सुनाएँ। ३३ और चंगा करने के लिये तू अपना हाथ बढ़ा कि चिन्ह और अद्वृत काम तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किए जाएँ।” ३४ जब वे प्रार्थना कर चके, तो वह स्थान जहाँ वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन साहस से सुनाते रहे। ३५ और विश्वास करनेवालों की मण्डली एक चित्त और एक मन की थी, यहाँ तक कि कोई भी अपनी सम्पत्ति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे का था। ३६ और प्रेरित बड़ी सामर्थ्य से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था। ३७ और उनमें कोई भी दरिद्र न था, क्योंकि जिनके पास भूमि या घर थे, वे उनको बेच-बेचकर, बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते, और उसे प्रेरितों के पाँवों पर रखते थे। ३८ और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार हर एक को बाँट दिया करते थे। ३९ और यूसुफ नामक, साइप्रस का एक लेवी था जिसका नाम प्रेरितों ने

बरनबास अर्थात् (शान्ति का पुत्र) रखा था। ४० उसकी कुछ भूमि थी, जिसे उसने बेचा, और दाम के स्थेये लाकर प्रेरितों के पाँवों पर रख दिए।

५ हनन्याह नामक एक मनुष्य, और उसकी पत्नी सफीरा ने कुछ भूमि बेची। १ और उसके दाम में से कुछ रख छोड़ा; और यह बात उसकी पत्नी भी जानती थी, और उसका एक भाग लाकर प्रेरितों के पाँवों के आगे रख दिया। २ परन्तु पतरस ने कहा, “हे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े? ३ जब तक वह तेरे पास रही, क्या तेरी न थी? और जब बिक गई तो उसकी कीमत क्या तेरे वश में न थी? तुमे यह बात अपने मन में क्यों सोची? तुमे मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है।” ४ ये बातें सुनते ही हनन्याह गिर पड़ा, और प्राण छोड़ दिए; और सब सुननेवालों पर बड़ा भय छा गया। ५ फिर जवानों ने उठकर उसकी अर्थी बनाई और बाहर ले जाकर गाड़ दिया। ६ लगभग तीन घंटे के बाद उसकी पत्नी, जो कुछ हुआ था न जानकर, भीतर आई। ७ तब पतरस ने उससे कहा, “मुझे बता क्या तुम ने वह भूमि इतने ही में बेची थी?” उसने कहा, “हाँ, इन्हे ही मैं।” ८ पतरस ने उससे कहा, “यह क्या बात है, कि तुम दोनों प्रभु के आत्मा की परीक्षा के लिए एक साथ सहमत हो गए? देख, तेरे पति के गाड़नेवाले द्वारा ही पर खड़े हैं, और तुम्हे भी बाहर ले जाएँगे।” ९ तब वह तुरन्त उसके पाँवों पर गिर पड़ी, और प्राण छोड़ दिए; और जवानों ने भीतर आकर उसे मरा पाया, और बाहर ले जाकर उसके पति के पास गाड़ दिया। १० और सारी कलीसिया पर और इन बातों के सब सुननेवालों पर, बड़ा भय छा गया। ११ प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्वृत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे। १२ परन्तु औरों में से किसी को यह साहस न होता था कि, उनमें जा मिलें, फिर भी लोग उनकी बड़ाइ करते थे। १३ और विश्वास करनेवाले बहुत सारे पूर्ण और खियाँ प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे। १४ यहाँ तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला-लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस आए, तो उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए। १५ और यस्सलेम के आस-पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला-लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे। १६ तब महायाजक और उसके सब साथी जो सदूकियों के पंथ के थे, ईर्ष्या से भर उठे। १७ और प्रेरितों को पकड़कर बन्दीगृह में बन्द कर दिया। १८ परन्तु रात को प्रभु के एक स्वर्गदूत ने बन्दीगृह के द्वार खोलकर उन्हें बाहर लाकर कहा, १९ “जाओ, मन्दिर में खड़े होकर, इस जीविन की सब बातें लोगों को सुनाओ।” २० वे यह सुनकर भोर होते ही मन्दिर में जाकर उपदेश देने लगे। परन्तु महायाजक और उसके साथियों ने आकर महासभा को और इसाएलियों के सब प्राचीनों को इकट्ठा किया, और बन्दीगृह में कहला भेजा कि उन्हें लाएँ। २१ परन्तु अधिकारियों ने वहाँ पहुँचकर उन्हें बन्दीगृह में न पाया, और लौटकर सन्देश दिया, २२ “हमने बन्दीगृह को बड़ी सावधानी से बन्द किया हुआ, और पहरेवालों को बाहर द्वारों पर खड़े हुए पाया; परन्तु जब खोला, तो भीतर कोई न मिला।” २३ जब मन्दिर के सरदार और प्रधान याजकों ने ये बातें सुनी, तो उनके विषय में भारी चिन्ता में पड़ गए कि उनका क्या हुआ! २४ इतने में किसी ने आकर उन्हें बताया, “देखो, जिन्हें तुम ने बन्दीगृह में बन्द रखा था, वे मनुष्य मन्दिर में खड़े हुए लोगों को उपदेश दे रहे हैं।” २५ तब सरदार, अधिकारियों के साथ जाकर, उन्हें ले आया, परन्तु बलपूर्वक नहीं, क्योंकि वे लोगों से डरते थे, कि उन पर पथराव न करें। २६ उन्होंने उन्हें फिर

लाकर महासभा के सामने खड़ा कर दिया और महायाजक ने उनसे पूछा, २८ “क्या हमने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी थी, कि तुम इस नाम से उपदेश न करना? फिर भी देखो, तुम ने सारे यस्सलेम को अपने उपदेश से भर दिया है और उस व्यक्ति का लह हमारी गर्दन पर लाना चाहते हो।” २९ तब पतरस और, अन्य प्रेरितों ने उत्तर दिया, “मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है।” ३० हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया, जिसे तुम ने क्रूस पर लटकाकर मार डाला था। ३१ उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्घारकर्ता ठहराकर, अपने दाहिने हाथ से सर्वोच्च किया, कि वह इस्पाएलियों को मन फिराव और पापों की क्षमा प्रदान करे। ३२ और हम इन बातों के गवाह हैं, और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं।” ३३ यह सुनकर वे जल उठे, और उन्हें मार डालना चाहा। ३४ परन्तु गमतीएल नामक एक फरीसी ने जो व्यवस्थापक और सब लोगों में माननीय था, महासभा में खड़े होकर प्रेरितों को थोड़ी देर के लिये बाहर कर देने की आज्ञा दी। ३५ तब उसने कहा, “हे इस्पाएलियों, जो कुछ इन मनुष्यों से करना चाहते हो, सोच समझ के करना।” ३६ क्योंकि इन दिनों से पहले थियूदास यह कहता हुआ उठा, कि मैं भी कुछ हूँ, और कोई चार सौ मनुष्य उसके साथ हो लिए, परन्तु वह मारा गया; और जितने लोग उसे मानते थे, सब तितर-बितर हुए और मिट गए। ३७ उसके बाद नाम लिखाई के दिनों में यहदा गलिली उठा, और कुछ लोग अपनी ओर कर लिए; वह भी नाश हो गया, और जितने लोग उसे मानते थे, सब तितर-बितर हो गए। ३८ इसलिए अब मैं तुम से कहता हूँ, इन मनुष्यों से दूर ही रहो और उनसे कुछ काम न रखो; क्योंकि यदि यह योजना या काम मनुष्यों की ओर से हो तब तो मिट जाएगा; ३९ परन्तु यदि परमेश्वर की ओर से है, तो तुम उन्हें कदापि मिटा न सकोगे; कहीं ऐसा न हो, कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो।” ४० तब उन्होंने उसकी बात मान ली; और प्रेरितों को बुलाकर पिटाया; और यह आज्ञा देकर छोड़ दिया, कि यीशु के नाम से फिर बातें न करना। ४१ वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के सामने से चले गए, कि हम उसके नाम के लिये निरादर होने के योग्य तो ठहरे। ४२ इसके बाद हर दिन, मन्दिर में और घर-घर में, वे लगातार सिखाते और प्रचार करते थे कि यीशु ही मसीह है।

६ उन दिनों में जब चेलों की संख्या बढ़ने लगी, तब यन्मानी भाषा बोलनेवाले इत्तानियों पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधाओं की सृधि नहीं ली जाती। ७ तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, “यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा मैं रहे।” ८ इसलिए हे भाइयों, अपने में से सात सुनाम पुस्तों को जो पवित्र आत्मा और बूढ़ि से परिपूर्ण हो, चून लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। ९ परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा मैं लगे रहेंगे।” १० यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिफनुस नामक एक पुस्त को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, फिलिप्पुस, सूखुस, नीकानोर, तीपोन, परमिनास और अन्ताकिया वासी नीकुलाऊस को जो यहदी मत मैं आ गया था, चून लिया। ११ और इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा किया और उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे। १२ और परमेश्वर का वचन फैलता गया और यस्सलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई; और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत के अधीन हो गया। १३ स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े-बड़े अद्भुत काम और चिन्ह दिखाया करता था। १४ तब उस आराधनालय में से जो दासत्व-मुक्त कहलाती थी, और कुरेनी और सिकन्द्रिया और किलिकिया और आसिया के

लोगों में से कई एक उठकर स्तिफनुस से बाद-विवाद करने लगे। १५ परन्तु उस ज्ञान और उस आत्मा का जिससे वह बातें करता था, वे सामना न कर सके। १६ इस पर उन्होंने कई लोगों को उकसाया जो कहने लगे, “हमने इसे मूसा और परमेश्वर के विरोध में मिन्दा की बातें कहते सुना है।” १७ और लोगों और प्राचीनों और शान्तियों को भड़काकर चढ़ आए और उसे पकड़कर महासभा में ले आए। १८ और झटे गवाह खड़े किए, जिन्होंने कहा, “यह मनुष्य इस पवित्रस्थान और व्यवस्था के विरोध में बोलना नहीं छोड़ता।” १९ क्योंकि हमने उसे यह कहते सुना है, कि यही यीशु नासरी इस जगह को ढां देगा, और उन रितियों को बदल डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं।” २० तब सब लोगों ने जो महासभा में बैठे थे, उसकी ओर ताक कर उसका मुख स्वर्गदूत के समान देखा।

७ तब महायाजक ने कहा, “क्या ये बातें सत्य हैं?” १ उसने कहा, “हे भाइयों, और पिताओं सुनो, हमारा पिता अब्राहम हारान में बसने से पहले जब मेसोपोटामिया में था; तो तेजोमय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया।” २ और उसने कहा, “तू अपने देश और अपने कुटुम्ब से निकलकर उस देश में चला जा, जिसे मैं तुझे दिखाऊँगा।” ३ तब वह कसदियों के देश से निकलकर हारान में जा बसा; और उसके पिता की मृत्यु के बाद परमेश्वर ने उसको वहाँ से इस देश में लाकर बसाया जिसमें अब तुम बसते हो, ४ और परमेश्वर ने उसको कुछ विरासत न दी, बरन् पैर रखने भर की भी उसमें जगह न दी, यद्यपि उस समय उसके कोई पुत्र भी न था। फिर भी प्रतिज्ञा की, मैं यह देश, तेरे और तेरे बाद तेरे बंश के हाथ कर दूँगा।” ५ और परमेश्वर ने यह कहा, ‘तेरी सन्तान के लोग पराए देश में परदेशी होंगे, और वे उन्हें दास बनाएंगे, और चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे।’ ६ और परमेश्वर ने कहा, ‘जिस जाति के वे दास होंगे, उसको मैं दण्ड दौँगा; और इसके बाद वे निकलकर इसी जगह मेरी सेवा करेंगे।’ ७ और उसने उससे खतने की बाचा बांधी; और इसी दशा में इस्हाक उससे उत्पन्न हुआ; और आठवें दिन उसका खतना किया गया; और इस्हाक से याकूब और याकूब से बाहर कुलपति उत्पन्न हुए। ८ “और कुलपतियों ने यूसुफ से ईर्ष्या करके उसे मिस्त्र देश जानेवालों के हाथ बेचा; परन्तु परमेश्वर उसके साथ था।” ९ और उसे उसके सब कलेशों से छुड़ाकर मिस्त्र के राजा फिरौन के आगे अनुग्रह और बुद्धि दी, उसने उसे मिस्त्र पर और अपने सारे घर पर राज्यपाल ठहराया। १० तब मिस्त्र और कनान के सारे देश में अकाल पड़ा; जिससे भारी कलेश हुआ, और हमारे पूर्वजों को अन्न नहीं मिलता था। ११ परन्तु याकूब ने यह सुनकर, कि मिस्त्र में अनाज है, हमारे पूर्वजों को पहली बार भेजा। १२ और दूसरी बार यूसुफ अपने भाइयों पर प्रगट हो गया, और यूसुफ की जाति फिरौन को मालम हो गई। १३ तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब और अपने सारे कुटुम्ब को, जो पचहतर व्यक्ति थे, बुला भेजा। १४ तब याकूब मिस्त्र में गया; और वहाँ वह और हमारे पूर्वज मर गए। १५ उनके शव शेकेम में पहुँचाए जाकर उस कब्र में रखे गए, जिसे अब्राहम ने चाँदी टेकर शेकेम में हमोर की सन्तान से मोल लिया था। १६ “परन्तु जब उस प्रतिज्ञा के पूरे होने का समय निकट आया, जो परमेश्वर ने अब्राहम से की थी, तो मिस्त्र मैं वे लोग बढ़ गए; और बहुत हो गए। १७ तब मिस्त्र में दूसरा राजा हुआ जो यूसुफ की जाति जानता था। १८ उसने हायरी जाति से चतुर्वृक्ष करके हाथों बापदादों के साथ यहाँ तक बुरा व्यवहार किया, कि उन्हें अपने बालकों को फेंक देना पड़ा कि वे जीवित न रहें। १९ उससे यूसुफ जाति से चतुर्वृक्ष करके हाथों बापदादों के दृष्टि में बहुत ही स्नदरथा; और वह तीन महीने तक अपने पिता के घर मैं पाला गया। २० परन्तु जब फेंक दिया गया तो फिरौन की बेटी ने उसे उठा लिया,

और अपना पुत्र करके पाला। २८ और मूसा को मिथियों की सारी बिधा पढ़ाई गई, और वह बचन और कामों में सामर्थी था। २९ “जब वह चालीस वर्ष का हुआ, तो उसके मन में आया कि अपने इसाएली भाइयों से भेट करे। २० और उसने एक व्यक्ति पर अन्याय होते देखकर, उसे बचाया, और मिथी को मारकर सताए हुए का पलटा लिया। २१ उसने सोचा, कि उसके भाई-समझेंगे कि परमेश्वर उसके हाथों से उनका उद्धार करेगा, परन्तु उन्होंने न समझा। २२ दूसरे दिन जब इसाएली आपस में लड़ रहे थे, तो वह वहाँ जा पहुँचा; और यह कहकर उन्हें मेल करने के लिये समझाया, कि हे पूर्णों, ‘तुम तो थाई-भाई हो, एक दूसरे पर क्यों अन्याय करते हो?’ २३ परन्तु जो अपने पड़ोसी पर अन्याय कर रहा था, उसने उसे यह कहकर धक्का दिया, ‘तुझे किसने हम पर अधिपति और न्यायाधीश ठहराया है?’ २४ क्या जिस रीत से तौने कल मिथी को मार डाला मुझे भी मार डालना चाहता है?’ २५ यह बात सुनकर, मूसा भागा और मिधान देश में परदेशी होकर रहने लगा: और वहाँ उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए। २६ “जब पूरे चालीस वर्ष बीत गए, तो एक स्वर्गदूत ने सनि पहाड़ के जंगल में उसे जलती हुई झाड़ी की जाला में दर्शन दिया। २७ मूसा ने उस दर्शन को देखकर अचम्पा किया, और जब देखने के लिये पास गया, तो प्रभु की यह वारी सुनाई दी, २८ ‘मैं तेरे पूर्वजों, अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूँ।’ तब तो मूसा काँप उठा, यहाँ तक कि उसे देखने का साहस न रहा। २९ तब प्रभु ने उससे कहा, ‘अपने पाँवों से जूती उतार ले, क्योंकि जिस जगह तु खड़ा है, वह पवित्र भूमि है। ३० मैंने सचमुच अपने लोगों की दुर्दशा को जो मिस्र में है, देखी है; और उनकी आहें और उनका रोना सुन लिया है; इसलिए उन्हें छुड़ाने के लिये उतारा हूँ। अब आ, मैं तुझे मिथ में भेज़ूंगा। ३१ “जिस मूसा को उन्होंने यह कहकर नकारा था, ‘तुझे किसने हम पर अधिपति और न्यायाधीश ठहराया है?’ उसी को परमेश्वर ने अधिपति और छुड़ानेवाला ठहराकर, उस स्वर्गदूत के द्वारा जिसने उसे झाड़ी में दर्शन दिया था, भेजा। ३२ यहाँ व्यक्ति मिथ और लाल समुद्र और जंगल में चालीस वर्ष तक अद्युत काम और चिन्ह दिखा दिखाकर उन्हें निकाल लाया। ३३ यह वही मूसा है, जिसने इसाएलियों से कहा, ‘परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हरे लिये मेरे जैसा एक भविष्यद्वता उठाएगा।’ ३४ यह वही है, जिसने जंगल में मण्डली के बीच उस स्वर्गदूत के साथ सनि पहाड़ पर उससे बाते की, और हमारे पूर्वजों के साथ था, उसी को जीवित बचन मिले, कि हम तक पहुँचाए। ३५ परन्तु हमारे पूर्वजों ने उसकी मानना न चाहा; वरन् उसे ढंकाकर अपने मन मिथ की ओर फेरे, ३६ और हासन से कहा, ‘हमारे लिये ऐसा देवता बना, जो हमारे आगे-आगे चलें; क्योंकि यह मूसा जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया, हम नहीं जानते उसे क्या हुआ?’ ३७ उन दिनों में उन्होंने एक बछड़ा बनाकर, उसकी मूरत के आगे बलि चढ़ाया; और अपने हाथों के कामों में मग्न होने लगे। ३८ अतः परमेश्वर ने मूँह मोड़कर उन्हें छोड़ दिया, कि आकाशगण पूजे, जैसा भविष्यद्वताओं की पुस्तक में लिखा है, ‘हे इसाएल के घराने, क्या तुम जंगल में चालीस वर्ष तक पशुबलि और अन्नबलि मुझ ही को चढ़ाते रहे?’ ३९ और तुम मोलेक के तम्बू और रिफान देवता के तारे को लिए फिरते थे, अर्थात् उन मूर्तियों को जिन्हें तुम ने टण्डवत् करने के लिये बनाया था। अतः मैं तुम्हें बाबेल के परे ले जाकर बसाऊँगा।’ ४० “साक्षी का तम्बू जंगल में हमारे पूर्वजों के बीच में था; जैसा उसने ठहराया, जिसने मूसा से कहा, ‘जो आकार तूने देखा है, उसके अनुसार इसे बना।’ ४१ उसी तम्बू को हमारे पूर्वजों ने पूर्वकाल से पाकर यहोश के साथ यहाँ ले आए; जिस समय कि उन्होंने उन अन्यजातियों पर अधिकार पाया, जिन्हें परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों के सामने से निकाल दिया, और वह दाऊद के समय तक रहा। ४२ उस पर

परमेश्वर ने अनुग्रह किया; अतः उसने विनती की कि वह याकूब के परमेश्वर के लिये निवास-स्थान बनाए। ४३ परन्तु सूलैमान ने उसके लिये घर बनाया। ४४ परन्तु परमेश्वर हाथ के बनाए घरों में नहीं रहता, जैसा कि भविष्यद्वता ने कहा, ४५ ‘प्रभु कहता है, स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे पाँवों तते की चौकी है, मेरे लिये तुम किस प्रकार का घर बनाओगे? और मेरे विश्वाम का कौन सा स्थान होगा?’ ४६ क्या ये सब बस्तुएँ मेरे हाथ की बनाई नहीं?’ ४७ ‘हे हरीले, और मन और कान के खत्नारहित लोगों, तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो। जैसा तुम्हारे पूर्वज करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो। ४८ भविष्यद्वताओं में से किसको तुहारे पूर्वजों ने नहीं सताया? और उन्होंने उस धर्मी के आगमन का पूर्वकाल से सन्देश देवतालों को मार डाला, और अब तुम भी उसके पकड़वानेवाले और मार डालनेवाले हुए ४९ तुम ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं किया।’ ५० ये बातें सुनकर वे क्रोधित हुए और उस पर दाँत पीसने लगे। ५१ परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़ा देखकर ५२ कहा, “देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूँ।” ५३ तब उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिए, और एक चित्त होकर उस पर झटपटे। ५४ और उसे नगर के बाहर निकालकर पथराव करने लगे, और गवाहों ने अपने काँड़े शाऊल नामक एक जवान के पाँवों के पास उतार कर रखे। ५५ और वे स्तिफनुस को पथराव करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा, ‘हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।’ ५६ फिर घुटने टेककर ऊँचे शब्द से पुकारा, ‘हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा।’ और यह कहकर सो गया।

शाऊल उसकी मृत्यु के साथ सहमत था। उसी दिन यस्तलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहदिया और सामरिया देशों में तितर-बितर हो गए। ५७ और भक्तों ने स्तिफनुस को कब्र में रखा; और उसके लिये बड़ा विलाप किया। ५८ पर शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था; और घर-घर घुसकर पूर्णों और छियों को घसीट-घसीट कर बन्दीगृह में डालता था। ५९ मगर जो तितर-बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे। ६० और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। ६१ जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया। ६२ क्योंकि वहीं में से अशूद्ध आत्माएँ बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकड़े के रोपी और लॉगडे भी अच्छे किए गए। ६३ और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया। ६४ इससे पहले उस नगर में शमैन नामक एक मनुष्य था, जो जादू-टोना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आपको एक बड़ा पुस्त बताता था। ६५ और सब छोटे से लेकर बड़े शब्द तक उसका सम्मान कर कहते थे, “यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान कहलाती है।” ६६ उसने बहुत दिनों से उन्हें अपने जादू के कामों से चकित कर रखा था, इसलिए वे उसको बहुत मानते थे। ६७ परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु मरीह के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुस्त, क्या बी बपतिस्मा लेने लगे। ६८ तब शमैन ने स्वयं भी विश्वास किया और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा और चिन्ह और बड़े-बड़े सामर्थ्य के काम होते देखकर चकित होता था। ६९ जब प्रेरितों ने यो यस्तलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यहन्ना को उनके पास भेजा। ७० और उन्होंने जाकर उनके लिये प्रार्थना की ताकि पवित्र आत्मा पाएँ। ७१ क्योंकि

पवित्र आत्मा अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। १७ तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया। १८ जब शमैन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तो उनके पास स्थये लाकर कहा, १९ “यह शक्ति मुझे भी दो, कि जिस किसी पर हाथ रखें, वह पवित्र आत्मा पाए।” २० पतरस ने उससे कहा, “तेरे स्पर्ये तेरे साथ नाश हों, क्योंकि तूने परमेश्वर का दान स्पर्यों से मोल लेने का विचार किया। २१ इस बात में न तेरा हिस्सा है, न भाग, क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं। २२ इसलिए अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए। २३ क्योंकि मैं देखता हूँ, कि तू पित की कडवाहट और अर्धम के बन्धन में पड़ा है।” २४ शमैन ने उत्तर दिया, “तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुम ने कहीं, उनमें से कोई मुझ पर न आ पड़े।” २५ अतः पतरस और यूहन्ना गवाही देकर और प्रभु का बचन सुनाकर, यस्तलेम को लौट गए, और सामरियों के बहुत से गाँवों में सुसमाचार सुनाते गए। २६ फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा, “उठकर दक्षिण की ओर उस मार्ग पर जा, जो यस्तलेम से गाजा को जाता है। यह रेगिस्टानी मार्ग है।” २७ वह उठकर चल दिया, और तब, कृश देश का एक मनुष्य आ रहा था, जो खोजा और कृशियों की रानी कन्दाके का मंत्री और खांची था, और आराधना करने को यस्तलेम आया था। २८ और वह अपने रथ पर बैठा हुआ था, और यशायाह भविष्यद्वत्का की पुस्तक पढ़ता हुआ लौटा जा रहा था। २९ तब पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, “निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले।” ३० फिलिप्पुस उसकी ओर दौड़ा और उसे यशायाह भविष्यद्वत्का की पुस्तक पढ़ते हुए सुना, और पृछा, “तु जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है?” ३१ उसने कहा, “जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं कैसे समझूँ?” और उसने फिलिप्पुस से विनती की, कि चढ़कर उसके पास बैठे। ३२ पवित्रशास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, वह यह था: “वह भेड़ के समान वध होने को पहुँचाया गया, और जैसा मैम्ना अपने ऊन कतरनेवालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला, ३३ उसकी दीनता में उसका न्याय होने नहीं पाया, और उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा? क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठा लिया जाता है।” ३४ इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से पृछा, “मैं तुम से विनती करता हूँ, यह बता कि भविष्यद्वत्का यह किसके विषय में कहता है, अपने या किसी दूसरे के विषय में?” ३५ तब फिलिप्पुस ने अपना मुँह खोला, और इसी शाश्वत से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। ३६ मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुँचे, तब खोजे ने कहा, “देख यहाँ जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?” ३७ फिलिप्पुस ने कहा, “यदि तू सब मन से विश्वास करता है तो ले सकता है।” उसने उत्तर दिया, “मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।” ३८ तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया। ३९ जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, और खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया। ४० पर फिलिप्पुस अरदोद में आ निकला, और जब तक कैसरिया में न पहुँचा, तब तक नगर-नगर सुसमाचार सुनाता गया।

१ शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और मार डालने की धून में था, महायाजक के पास गया। २ और उससे दमिश्क के आराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिठ्ठियाँ माँगी, कि क्या पुम्प, क्या स्त्री, जिन्हें वह

इस पंथ पर पाए उहैं बाँधकर यस्तलेम में ले आए। ३ परन्तु चलते-चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुँचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी, ४ और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, “हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?” ५ उसने पृछा, “हे प्रभु, तू कौन है?” उसने कहा, “मैं यीशु हूँ; जिसे तू सताता है। ६ परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है, वह तुझ से कहा जाएगा।” ७ जो मनुष्य उसके साथ थे, वे चुपचाप रह गए; क्योंकि शब्द तो सुनते थे, परन्तु किसी को देखते न थे। ८ तब शाऊल भूमि पर से उठा, परन्तु जब आँखें खोली तो उसे कुछ दिखाई न दिया और वे उसका हाथ पकड़ के दमिश्क में ले गए। ९ और वह तीन दिन तक न देख सका, और न खाया और न पीया। १० दमिश्क में हनन्याह नामक एक चेला था, उससे प्रभु ने दर्शन में कहा, “हे हनन्याह!” उसने कहा, “हाँ प्रभु!” ११ तब प्रभु ने उससे कहा, “उठकर उस गली में जा, जो ‘सीधी’ कहलाती है, और यहां के घर में शाऊल नामक एक तरसुस वासी को पूछ ले; क्योंकि वह प्रार्थना कर रहा है, १२ और उसने हनन्याह नामक एक पुस्तकों भीतर आते, और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए।” १३ हनन्याह ने उत्तर दिया, “हे प्रभु, मैंने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है कि इसने यस्तलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी-बड़ी बुराइयाँ की हैं; १४ और यहाँ भी इसको प्रधान याजकों की ओर से अधिकार मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सब को बाँध ले।” १५ परन्तु प्रभु ने उससे कहा, “तू चला जा; क्योंकि यह, तो अन्यजातियों और राजाओं, और इस्माएलियों के सामने मेरा नाम प्रगत करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है। १६ और मैं उसे बताऊँगा, कि मेरे नाम के लिये उसे कैसा-कैसा दुःख उठाना पड़ेगा।” १७ तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, “हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में, जिससे तू आया तुझे दिखाई दिया था, उर्फी ने मुझे भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।” १८ और तुरन्त उसकी आँखों से छिलके से गिरे, और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्मा लिया; १९ फिर भोजन करके बल पाया। वह कई दिन उन चेलों के साथ रहा जो दमिश्क में थे। २० और वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा, कि वह परमेश्वर का पुत्र है। २१ और सब सुननेवाले चकित होकर कहने लगे, “क्या यह वही व्यक्ति नहीं है जो यस्तलेम में उहैं जो इस नाम को लेते थे नाश करता था, और यहाँ भी इसलिए आया था, कि उहैं बाँधकर प्रधान याजकों के पास ले जाएगा?” २२ परन्तु शाऊल और भी सामर्थी होता गया, और इस बात का प्रमाण दें-देकर कि यीशु ही मसीह है, दमिश्क के रहेनेवाले यहदियों का मुँह बन्द करता रहा। २३ जब बहुत दिन बीत गए, तो यहदियों ने मिलकर उसको मार डालने की युक्ति निकाली। २४ परन्तु उनकी युक्ति शाऊल को मालूम हो गई; वे तो उसको मार डालने के लिये रात दिन फाटकों पर घात में लगे रहते थे। २५ परन्तु रात को उसके चेलों ने उसे लेकर टोकरे में बैठाया, और शहरपान हर पर से लटकाकर उत्तर दिया। २६ यस्तलेम में पहुँचकर उसने चेलों के साथ मिल जाने का उपाय किया परन्तु सब उससे डरते थे, क्योंकि उनको विश्वास न होता था, कि वह भी चेला है। २७ परन्तु बरनबास ने उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले जाकर उनसे कहा, कि इसने किसी रिति से मार्ग में प्रभु को देखा, और उसने इससे बातें की; फिर दमिश्क में इसने कैसे साहस से यीशु के नाम का प्रचार किया। २८ वह उनके साथ यस्तलेम में आता-जाता रहा। और निधिङ्क बोकर प्रभु के नाम से प्रचार करता था। २९ और यूनानी भाषा बोलनेवाले यहदियों के साथ बातचीत और बात-विवाद करता था; परन्तु वे उसे मार डालने का यत्र करने लगे। ३० यह जानकर भाइयों ने उसे कैसरिया में ले आए, और उत्तरसु

को भेज दिया। ३५ इस प्रकार सारे यहदिया, और गलील, और सामरिया में कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती गई। ३६ फिर ऐसा हुआ कि पतरस हर जगह फिरता हुआ, उन पवित्र लोगों के पास भी पहुँचा, जो लुड़ा में रहते थे। ३७ वहाँ उसे ऐनियास नामक लकड़े का मारा हुआ एक मनुष्य मिला, जो आठ वर्ष से खाट पर पड़ा था। ३८ पतरस ने उससे कहा, “हे ऐनियास! यीशु मसीह तुझे चंगा करता है। उठ, अपना बिछौना उठा।” तब वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ। ३९ और लुड़ा और शारेन के सब रहनेवाले उसे टेक्कर प्रभु की ओर पिए। ४० याफा में तबीती अर्थात् दोरकास नामक एक विश्वासिनी रहती थी, वह बहुत से भत्ते-भले काम और दान किया करती थी। ४१ उन्हीं दिनों में वह बीमार होकर मर गई; और उन्होंने उसे नहलाकर अटारी पर रख दिया। ४२ और इसलिए कि लुड़ा याफा के निकट था, चेलों ने यह सुनकर कि पतरस वहाँ है दो मनुष्य भेजकर उससे विनती की, “हमारे पास अने में देर न कर।” ४३ तब पतरस उठकर उनके साथ हो लिया, और जब पहुँच गया, तो वे उसे उस अटारी पर ले गए। और सब विधवाएँ रोती हुई, उसके पास आ खड़ी हुई और जो कुर्त और कपड़े दोरकास ने उनके साथ रहते हुए बनाए थे, दिखाने लगी। ४४ तब पतरस ने सब को बाहर कर दिया, और घुने टेक्कर प्रार्थना की; और शब की ओर टेक्कर कहा, “हे तबीती, उठ।” तब उसने अपनी आँखें खोल दी; और पतरस को देखकर उठ बैठी। ४५ उसने हाथ टेक्कर उसे उठाया और पवित्र लोगों और विधवाओं को बुलाकर उसे जीवित और जागृत दिखा दिया। ४६ यह बात सारे याफा में फैल गई; और बहुतों ने प्रभु पर विश्वास किया। ४७ और पतरस याफा में शमैन नामक किसी चमड़े का धन्धा करनेवाले के यहाँ बहुत दिन तक रहा।

१० कैसरिया में कुरनेलियुस नामक एक मनुष्य था, जो इतालियानी नाम सैन्य-दल का सूबेदार था। १ वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहदी लोगों को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था। २ उसने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा, “हे कुरनेलियुस।” ३ उसने उसे ध्यान से देखा और डरकर कहा, “हे स्वामी क्या है?” उसने उससे कहा, “तेरी प्रार्थनाएँ और तेरे दान स्मरण के लिये परमेश्वर के सामने पहुँचे हैं।” ४ और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमैन को, जो पतरस कहलाता है, बुलावा ले। ५ वह शमैन, चमड़े का धन्धा करनेवाले के यहाँ अतिथि है, जिसका घर समृद्ध के किनारे है।” ६ जब वह स्वर्गदूत जिसने उससे बातें की थी चला गया, तो उसने दो सेवक, और जो उसके पास उपस्थित रहा करते थे उनमें से एक भक्त सिपाही को बुलाया, ७ और उहें सब बातें बताकर याफा को भेजा। ८ दूसरे दिन जब वे चलते-चलते नगर के पास पहुँचे, तो दोपहर के निकट पतरस छत पर प्रार्थना करने चढ़ा। ९ उसे भूख लगी और कुछ खाना चाहता था, परन्तु जब वे तैयार कर रहे थे तो वह बेस्थ हो गया। १० और उसने देखा, कि आकाश खुल गया, और एक बड़ी चादर, पात्र के समान चारों कोनों से लटकाया हुआ, पृथ्वी की ओर उतर रहा है। ११ जिसमें पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाएँ और रेणेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे। १२ और उसे एक ऐसी वाणी सुनाई दी, “हे पतरस उठ, मार और खा।” १३ परन्तु पतरस ने कहा, “नहीं प्रभु, कदापि नहीं; क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है।” १४ फिर दूसरी बार उसे वाणी सुनाई दी, “जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तु अशुद्ध मत कह।” १५ तीन बार ऐसा ही हुआ; तब तुरन्त वह चादर आकाश पर उठा लिया गया। १६ जब पतरस अपने मन में दुविधा में था, कि यह दर्शन जो

मैंने देखा क्या है, तब वे मनुष्य जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था, शमैन के घर का पता लगाकर द्वारा पर आ खड़े हुए। १७ और पुकारकर पूछने लगे, “क्या शमैन जो पतरस कहलाता है, यहाँ पर अतिथि है?” १८ पतरस जो उस दर्शन पर सोच ही रहा था, कि आत्मा ने उससे कहा, “देख, तीन मनुष्य तुझे खोज रहे हैं।” १९ अतः उठकर नीचे जा, और निःसंकोच उनके साथ हो ले; क्योंकि मैंने ही उन्हें भेजा है।” २० तब पतरस ने नीचे उतरकर उन मनुष्यों से कहा, “देखो, जिसको तुम खोज रहे हो, वह मैं ही हूँ, तुम्हारे अने का क्या कारण है?” २१ उन्होंने कहा, “कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरनेवाला और सारी यहदी जिति में सुनाम मनुष्य है, उसने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह निर्देश पाया है, कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से उपदेश सुनो।” २२ तब उसने उन्हें भीतर बुलाकर उनको रहने की जगह दी। और दूसरे दिन, वह उनके साथ गया, और याफा के भाइयों में से कुछ उसके साथ हो लिए। २३ दूसरे दिन वे कैसरिया में पहुँचे, और कुरनेलियुस अपने कुटुम्बियों और प्रिय मित्रों को इकट्ठे करके उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। २४ जब पतरस भीतर आ रहा था, तो कुरनेलियुस ने उससे भेट की, और उसके पाँवों पर गिरकर उसे प्रणाम किया। २५ परन्तु पतरस ने उसे उठाकर कहा, “खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य ही हूँ।” २६ और उसके साथ बातचीत करता हुआ भीतर आ गया, और बहुत से लोगों को इकट्ठे देखकर २७ उनसे कहा, “तुम जानते हो, कि अन्यजाति की संगति करना या उसके यहाँ जाना यहदी के लिये अधर्म है, परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है कि किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न कहा।” २८ इसलिए मैं जब बुलाया गया तो बिना कुछ कहे चला आया। अब मैं पूछता हूँ कि मुझे किस काम के लिये बुलाया गया है?” २९ कुरनेलियुस ने कहा, “चार दिन पहले, इसी समय, मैं अपने घर में तीसरे पहर को प्रार्थना कर रहा था; कि एक पुस्तक ममकीला बच पहने हुए, मेरे सामने आ खड़ा हुआ।” ३० और कहने लगा, “हे कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरे दान परमेश्वर के सामने स्मरण किए गए हैं।” ३१ इसलिए किसी को याफा भेजकर शमैन को जो पतरस कहलाता है, बुला। वह समुद्र के किनारे शमैन जो, चमड़े का धन्धा करनेवाले के घर में अतिथि है।” ३२ तब मैंने तुरन्त तेरे पास लोग भेजे, और तैने भला किया जो आ गया। अब हम सब यहाँ परमेश्वर के सामने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उसे सुनें।” ३३ तब पतरस ने मुँह खोलकर कहा, अब मुझे निश्चय हुआ, कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, ३४ वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धार्मिक काम करता है, वह उसे भाता है। ३५ जो वचन उसने इमारिलियों के पास भेजा, जबकि उसने यीशु मसीह के द्वारा जो सब का प्रभु है, शान्ति का सुसामाचार सुनाया। ३६ वह वचन तुम जानते हो, जो यहन्ता के बपतिस्मा के प्रचार के बाद गलील से आम्भ होकर सारे यहदिया में फैल गया। ३७ परमेश्वर ने किसी रिति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हए है, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। ३८ और हम उन सब कामों के गवाह हैं; जो उसने यहदिया के देश और यस्तलेम में भी किए, और उन्होंने उसे काठ पर लटकाकर मार डाला। ३९ उसको परमेश्वर ने तीसरे दिन जिलाया, और प्रगट भी कर दिया है। ४० सब लोगों को नहीं वरन् उन गवाहों को जिन्हें परमेश्वर ने पहले से चुन लिया था, अर्थात् हमको जिन्होंने उसके मेरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया पीया; ४१ और उसने हमें आज्ञा दी कि लोगों में प्रचार करो और गवाही दो, कि यह वही है जिसे परमेश्वर ने जीवितों और मेरे हुओं का न्यायी ठहराया है। ४२ उसकी सब भविष्यद्वता गवाही देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा

मिलेगी। ४४ पतरस ये बातें कह ही रहा था कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उत्तर आया। ४५ और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उण्डेला गया है। ४६ क्योंकि उन्होंने उन्हें भाँति-भाँति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा, ४७ “क्या अब कोई इन्हें जल से रोक सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएँ, जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?” ४८ और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे विनती की, कि कुछ दिन और हमारे साथ रह।

११ और प्रेरितों और भाइयों ने जो यहदिया में थे सुना, कि अन्यजातियों

ने भी परमेश्वर का वचन मान लिया है। २ और जब पतरस यस्शलेम में आया, तो खतना किए हुए लोग उससे वाद-विवाद करने लगे, ३ “तू ने खतनारहित लोगों के यहाँ जाकर उनके साथ खाया।” ४ तब पतरस ने उन्हें अरम्भ से क्रमानुसार कह सुनाया; ५ “मैं याफा नगर में प्रार्थना कर रहा था, और बेसुध होकर एक दर्शन देखा, कि एक बड़ी चादर, एक पत्र के समान चारों कोनों से लटकाया हुआ, आकाश से उत्तरकर मैं पास आया। ६ जब मैंने उस पर ध्यान किया, तो पृथ्वी के चौपाई और बन पश्च और रेखेवाले जन्म और आकाश के पक्षी देखे; ७ और यह आवाज भी सुना, ‘हे पतरस उठ मार और खा।’ ८ मैंने कहा, ‘नहीं प्रभु, नहीं; क्योंकि कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु मेरे पैर में कभी नहीं गई।’ ९ इसके उत्तर में आकाश से दोबारा आवाज आई, ‘जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे अशुद्ध मत कह।’ १० तीन बार ऐसा ही उआ; तब सब कुछ पिर आकाश पर खीच लिया गया। ११ तब तुरन्त तीन मनुष्य जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गए थे, उस घर पर जिसमें हम थे, आ खड़े हुए। १२ तब आत्मा ने मुझसे उनके साथ बेझिङ्क हो लेने को कहा, और ये छ: भाइ भी मेरे साथ हो लिए; और हम उस मनुष्य के घर में गए। १३ और उसने बताया, कि मैंने एक स्वर्गांतू को अपने घर में खड़ा देखा, जिसने मुझसे कहा, ‘याफा मैं मनुष्य भेजकर शमैन को जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। १४ वह तुझ से ऐसी बातें कहेगा, जिनके द्वारा तू और तेरा सारा धराना उड़ाएगा।’ १५ जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उत्तरा, जिस रीति से आरम्भ में हम पर उत्तरा था। १६ तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया; जो उसने कहा, ‘यहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।’ १७ अतः जबकि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला; तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता था?” १८ यह सुनकर, वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, “तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है।” १९ जो लोग उस क्लेश के मारे जो स्टिफनस के कारण पड़ा था, तिर-वितर हो गए थे, वे फिरते-फिरते फीनीके और साइप्रस और अन्ताकिया में पहुँचे; परन्तु यहदियों को छोड़ किनी और को वचन न सुनाते थे। २० परन्तु उनमें से कुछ साइप्रस वासी और कुरोनी थे, जो अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी प्रभु यीशु का सुसमाचार की बातें सुनाते लगे। २१ और प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर पिरे। २२ तब उनकी चर्चा यस्शलेम की कलीसिया के सुनने में आई, और उन्होंने बरनबास को अन्ताकिया भेजा। २३ वह वहाँ पहुँचकर, और परमेश्वर के अनुग्रह को देखकर अनुदित हुआ; और सब को उपदेश दिया कि तन मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहें। २४ क्योंकि वह एक भला मनुष्य था; और पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण था; और बहुत से लोग प्रभु में आ मिले। २५ तब वह शाऊल को ढूँढ़ने

के लिये तरसुस को चला गया। २६ और जब उनसे मिला तो उसे अन्ताकिया में लाया, और ऐसा हुआ कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते और बहुत से लोगों को उपदेश देते रहे, और चेते सबसे पहले अन्ताकिया ही में मरीही कहलाए। २७ उन्हीं दिनों में कई भविष्यद्वत्ता यस्शलेम से अन्ताकिया में आए। २८ उनमें से अगबुस ने खड़े होकर आत्मा की प्रेरणा से यह बताया, कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा, और वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा। २९ तब चेलों ने निर्णय किया कि हर एक अपनी-अपनी पूँजी के अनुसार यहदिया में रहनेवाले भाइयों की सेवा के लिये कुछ भेजे। ३० और उन्होंने ऐसा ही किया; और बरनबास और शाऊल के हाथ प्राचीनों के पास कुछ भेज दिया।

१२ उस समय हेरोदेस राजा ने कलीसिया के कई एक व्यक्तियों को दुःख देने

के लिये उन पर हाथ डाले। ३१ उसने यहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला। ३२ जब उसने देखा, कि यहदी लोग इससे आनन्दित होते हैं, तो उसने पतरस को भी पकड़ लिया। वे दिन अख्मारी रोटी के दिन थे। ३३ और उसने उसे पकड़कर बन्दीगृह में डाला, और रखवाली के लिये, चार-चार सिपाहियों के चार पहरों में रखा, इस मनसा से कि फसह के बाद उसे लोगों के सामने लाए। ३४ बन्दीगृह में पतरस की रखवाली हो रही थी; परन्तु कलीसिया उसके लिये लौ लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी। ३५ और जब हेरोदेस उसे उनके सामने लाने को था, तो उसी रात पतरस दो ज़रीरों से बंधा हुआ, दो सिपाहियों के बीच मैं सो रहा था; और पहेरादार द्वारा पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे। ३६ तब वर्षु का एक स्वर्गदूत आ खड़ा हुआ और उस कोठरी में ज्योति चमकी, और उसने पतरस की पस्ती पर हाथ मारकर उसे जगाया, और कहा, “उठ, जल्दी कर।” ३७ और उसके हाथ से जंजीर खुलकर गिर पड़ी। ३८ तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, “कमर बाँध, और अपने जूते पहन लो।” ३९ उसने वैसा ही किया, फिर उसने उससे कहा, “अपना वस्त्र पहनकर मेरे पीछे हो लो।” ४० वह निकलकर उसके पीछे हो लिया; परन्तु यह न जानता था कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है, वह सच है, बल्कि यह समझा कि मैं दर्शन देख रहा हूँ। ४१ तब वे पहले और दूसरे पहरे से निकलकर उस लोहे के फाटक पर पहुँचे, जो नगर की ओर है। वह उनके लिये आप से आप खुल गया, और वे निकलकर एक ही गली होकर गए, इनमें स्वर्गदूत उसे छोड़कर चला गया। ४२ तब पतरस ने सचेत होकर कहा, “अब मैंने सच जान लिया कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से छुड़ा लिया, और यहदियों की सारी आशा तोड़ दी।” ४३ और यह सोचकर, वह उस यहन्ना की माता मरियम के घर आया, जो मरकुस कहलाता है। वहाँ बहुत लोग इकट्ठे होकर प्रार्थना कर रहे थे। ४४ जब उसने फाटक की छिड़की खटखटाई तो स्टेन नामक एक दासी सुनने को आई। ४५ और पतरस का शब्द पहचानकर, उसने अनन्द के मारे फाटक न खोला; परन्तु दौड़कर भीतर गई, और बताया कि पतरस द्वारा पर खड़ा है। ४६ उन्होंने उससे कहा, “तू पागल है।” परन्तु वह दृढ़ता से बोली कि ऐसा ही है: तब उन्होंने कहा, “उसका स्वर्गदूत होगा।” ४७ परन्तु पतरस खटखटाता ही रहा अतः उन्होंने छिड़की खोली, और उसे देखकर चकित रह गए। ४८ तब उसने उन्हें हाथ से सकेत किया कि चुप रहें; और उनको बताया कि प्रभु किसी रीति से मुझे बन्दीगृह से निकाल लाया है। फिर कहा, “याकूब और भाइयों को यह बात कह देना।” तब निकलकर दूसरी जगह चला गया। ४९ भोर को सिपाहियों में बड़ी हलचल होने लगी कि पतरस कहाँ गया। ५० जब हेरोदेस ने उसकी खोज की ओर न पाया, तो पहस्तों की जाँच करके आज्ञा दी कि वे मारा डाले जाएँ; और वह यहदिया को छोड़कर कैसरिया में जाकर रहने लगा। ५१ हेरोदेस सोर और सीटोन के लोगों से बहुत अप्रसन्न था। तब वे एक

चित होकर उसके पास आए और बलास्तुस को जो राजा का एक कर्मचारी था, मनाकर मेल करना चाहा; क्योंकि राजा के देश से उनके देश का पालन-पोषण होता था। २१ ठहराए हुए दिन हेरोदेस राजवंश प्रहनकर सिंहासन पर बैठा; और उनको व्याख्यान देने लगा। २२ और लोग पुकार उठे, “यह तो मनुष्य का नहीं ईश्वर का शब्द है।” २३ उसी क्षण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने तुरन्त उसे आघात पहुँचाया, क्योंकि उसने परमेश्वर की महिमा नहीं की और उसके शरीर में कीड़े पड़ गए और वह मर गया। २४ परन्तु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया। २५ जब बरनबास और शाऊल अपनी सेवा पूरी कर चुके तो यहन्ना को जो मरकुस कहताता है, साथ लेकर यस्शलेम से लौटे।

१३ अन्ताकिया की कलीसिया में कई भविष्यद्वत्का और उपदेशक थे; अर्थात्

बरनबास और शमैन जो नीगर कहलाता है; और लूकीयुस कुरेनी, और चौथाई देश के राजा हेरोदेस का दृधभाई मनाहेम और शाऊल। १ जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, “मेरे लिये बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैंने उन्हें बुलाया है।” २ तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें बिंदा किया। ३ अतः वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सित्यकिया को गए; और वहाँ से जहाज पर चढ़कर साइप्रस को चले। ४ और सलमीस में पहुँचकर, परमेश्वर का वचन यहदियों के आराधनालयों में सुनाया; और यहन्ना उनका सेवक था। ५ और उस सारे टापू में से होते हुए, पाकुस तक पहुँचे। वहाँ उन्हें बार-यीशु नामक एक जादूगर मिला, जो यहदी और झाड़ा भविष्यद्वत्का था। ६ वह हाकिम सिरपियस पौलस के साथ था, जो बुद्धिमान पुस्त था। उसने बरनबास और शाऊल को अपने पास बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनना चाहा। ७ परन्तु एलीमास जादूगर ने, (क्योंकि यही उसके नाम का अर्थ है) उनका सामना करके, हाकिम को विवास करने से रोकना चाहा। ८ तब शाऊल ने जिसका नाम पौलस भी है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उसकी ओर टकटकी लगाकर कहा, ९ “हे सारे कपट और सब चतुराइ से भरे हुए शैतान की सन्तान, सकल धार्मिकता के बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा? १० अब देख, प्रभु का हाथ तुझ पर पड़ा है; और तू कुछ समय तक अंधा रहेगा और सूर्य को न देखेगा।” तब तुरन्त धृथलापन और अधेरा उस पर छा गया, और वह इधर-उधर टटोलने लगा ताकि कोई उसका हाथ पकड़कर ले चले। ११ तब हाकिम ने जो कछु हआ था, देखकर और प्रभु के उपदेश से चकित होकर विवास किया। १२ पौलस और यहन्ना उन्हें छोड़कर यस्शलेम को लौट गया। १३ और पिरागा से आगे बढ़कर पिसिदिया के अन्ताकिया में पहुँचे; और सब्त के दिन आराधनालय में जाकर बैठ गए। १४ व्यवस्था और भविष्यद्वत्काओं की पुस्तक से पढ़ने के बाद आराधनालय के सरदारों ने उनके पास कहला भेजा, “हे भाईयों, यदि लोगों के उपदेश के लिये तुम्हारे मन में कोई बात हो तो कहो।” १५ तब पौलस ने खड़े होकर और हाथ से इशारा करके कहा, “हे इसाएलीयों, और परमेश्वर से डरनेवालों, सुनो १६ इन इसाएली लोगों के परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को चुन लिया, और जब ये मिथ देश में परदेशी होकर रहते थे, तो उनकी उन्नति की; और बलवन्त भुजा से निकाल लाया। १७ और वह कोई चालीस वर्ष तक जंगल में उनकी सहता रहा, १८ और कनान देश में सात जातियों का नाश करके उनका देश लगभग साढ़े चार सौ वर्ष में इनकी विरासत में कर दिया। १९ इसके बाद उसने शमूएल भविष्यद्वत्का तक उनमें नायी ठहराए। २० उसके बाद उन्होंने एक राजा माँगा; तब परमेश्वर ने चालीस वर्ष के लिये बिन्यामीन के गोत्र में से एक मनुष्य अर्थात् कीश के पुत्र शाऊल को उन पर

राजा ठहराया। २१ फिर उसे अलग करके दाऊद को उनका राजा बनाया; जिसके विषय में उसने गवाही दी, ‘मुझे एक मनुष्य, यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है। वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।’ २२ उसी के बंश में से परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इसाएल के पास एक उद्धारकर्ता, अर्थात् यीशु को भेजा। २३ जिसके अने से पहले यहन्ना ने सब इसाएलियों को मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार किया। २४ और जब यहन्ना अपनी सेवा पूरी करने पर था, तो उसने कहा, ‘तुम मुझे क्या समझते हो? मैं वह नहीं! बरन देखो, मेरे बाद एक आनेवाला है, जिसके पाँवों की जूती के बन्ध भी मैं खोलने के योग्य नहीं।’ २५ “हे भाइयों, तुम जो अब्बाहम की सन्तान हो; और तुम जो परमेश्वर से डरते हो, तुम्हारे पास इस उद्धार का वचन भेजा गया है। २६ क्योंकि यस्शलेम के रहनेवालों और उनके सरदारों ने, न उसे पहचाना, और न भविष्यद्वत्काओं की बातें समझीं; जो हर सब्त के दिन पढ़ी जाती है, इसलिए उसे दोषी ठहराकर उनको पूरा किया। २७ उन्होंने मार डालने के योग्य कोई दोष उसमें न पाया, फिर भी पिलातुस से विनती की, कि वह मार डाला जाए। २८ और जब उन्होंने उसके विषय में लिखी हुईं सब बातें पूरी की, तो उसे क्लूस पर से उतार कर कब्र में रखा। २९ परन्तु परमेश्वर ने उसे मेरे हुओं में से जिलाया, ३० और वह उन्हें जो उसके साथ गलील से यस्शलेम आए थे, बहुत दिनों तक दिखाई देता रहा; लोगों के सामने अब वे ही उसके गवाह हैं। ३१ और हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में जो पूर्वजों से की गई थी, यह सुसमाचार सुनते हैं, ३२ कि परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर, वही प्रतिज्ञा हमारी सन्तान के लिये पूरी की; जैसा दूसरे भजन में भी लिखा है, ‘तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे जन्माया है।’ ३३ और उसके इस रीति से मेरे हुओं में से जिलाने के विषय में भी, कि वह कभी न सड़े, उसने यह कहा है, ‘मैं दाऊद पर की पवित्र और अटल कृपा तुम पर करूँगा।’ ३४ इसलिए उसने एक और भजन में भी कहा है, ‘तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा।’ ३५ “क्योंकि दाऊद तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने समय में सेवा करके सो गया, और अपने पूर्वजों में जो मिला, और सड़ भी गया। ३६ परन्तु जिसको परमेश्वर ने जिलाया, वह सड़ने नहीं पाया। ३७ इसलिए हे भाइयों; तुम जान लो कि यीशु के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता है। ३८ और जिन बातों से तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष नहीं ठहर सकते थे, उन्हीं सबसे हर एक विवास करनेवाला उसके द्वारा निर्दोष ठहरता है। ३९ इसलिए चौकस रहो, ऐसा न हो, कि जो भविष्यद्वत्काओं की पुस्तक में लिखित है, तुम पर भी आ पड़े: ४० “हे निन्दा करनेवालों, देखो, और चकित हो, और मिट जाओ; क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक काम करता हूँ; ऐसा काम, कि यदि कोई तुम से उसकी चर्चा करे, तो तुम कभी विवास न करोगे।” ४१ उनके बाहर निकलते समय लोग उनसे विनती करने लगे, कि अगले सब्त के दिन हमें ये बातें फिर सुनाइ जाएँ। ४२ और जब आराधनालय उठ गई तो यहदियों और यहदी मत में आए हुए भक्तों में से बहुत से पौलस और बरनबास के पीछे हो गए। ४३ और उन्होंने उनसे बातें करके समझाया, कि परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहो। ४४ अगले सब्त के दिन नगर के प्रायः सब लोग परमेश्वर का वचन सुनने को इकट्ठे हो गए। ४५ परन्तु यहदी भीड़ को देखकर ईर्ष्य से भर गए, और निन्दा करते हुए पौलस की बातों के विरोध में बोलने लगे। ४६ तब पौलस और बरनबास ने निर्द होकर कहा, “अवश्य था, कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें सुनाया जाता; परन्तु जबकि तुम उसे दूर करते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो अब, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं। (alionios g166) ४७ क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है, ‘मैंने तुझे अन्यजातियों के लिये ज्योति ठहराया है, ताकि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार

का द्वार हो।” ४८ यह सुनकर अन्यजाति आनन्दित हुए, और परमेश्वर के वचन की बड़ाई करने लगे, और जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया। (aiónios g166) ४९ तब प्रभु का वचन उस सारे देश में फैलने लगा। ५० परन्तु यहदियों ने भक्त और कुलीन लोगों को और नगर के प्रमुख लोगों को भड़काया, और पौलस और बरनबास पर उपद्रव करवाकर उन्हें अपनी सीमा से बाहर निकाल दिया। ५१ तब वे उनके सामने अपने पाँवों की धूल झाड़कर इकुनियुम को चले गए। ५२ और चेले आनन्द से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहे।

१४ इकुनियुम में ऐसा हुआ कि पौलस और बरनबास यहदियों की

आराधनालय में साथ-साथ गए, और ऐसी बातें की, कि यहदियों और यन्यजातियों दोनों में से बहतों ने विश्वास किया। २ परन्तु विश्वास न करनेवाले यहदियों ने अन्यजातियों के मन भाइयों के विरोध में भड़काए, और कटुता उत्पन्न कर दी। ३ और वे बहुत दिन तक वहाँ रहे, और प्रभु के भरोसे पर साहस के साथ बातें करते थे: और वह उनके हाथों से चिन्ह और अदृष्ट काम करवाकर अपने अनुग्रह के वचन पर गवाही देता था। ४ परन्तु नगर के लोगों में फूट पड़ गई थी; इससे कितने तो यहदियों की ओर, और कितने प्रेरितों की ओर हो गए। ५ परन्तु जब अन्यजाति और यहदी उनका अपमान और उन्हें पथराव करने के लिये अपने सरदारों समेत उन पर दौड़े। ६ तो वे इस बात को जान गए, और लुकाउनिया के लुम्बा और दिखे नगरों में, और आस-पास के प्रदेशों में भाग गए। ७ और वहाँ सुसमाचार सुनाने लगे। ८ लुम्बा में एक मनुष्य बैठा था, जो पाँवों का निर्बल था। वह जन्म ही से लैंगडा था, और कभी न चला था। ९ वह पौलस को बातें करते सुन रहा था और पौलस ने उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा कि इसको चंगा हो जाने का विश्वास है। १० और ऊँचे शब्द से कहा, “अपने पाँवों के बत्त सीधा खड़ा हो।” तब वह उछलकर चलने फिरे लगा। ११ लोगों ने पौलस का यह काम देखकर लुकाउनिया भाषा में ऊँचे शब्द से कहा, “देवता मनुष्यों के स्पृह में होकर हमारे पास उत्तर आए हैं।” १२ और उन्होंने बरनबास को ज्यूस, और पौलस को हर्मेस कहा क्योंकि वह बातें करने में मुख्य था। १३ और ज्यूस के उस मन्दिर का पुजारी जो उनके नगर के सामने था, बैल और फलों के हार फाटकों पर लाकर लोगों के साथ बलिदान करना चाहता था। १४ परन्तु बरनबास और पौलस प्रेरितों ने जब सुना, तो अपने कपड़े फाढ़े, और भीड़ की ओर लपक गए, और पुकारकर कहने लगे, १५ ‘हे लोगों, तुम क्या करते हो? हम भी तो तुम्हारे समान दुःख-सुख भोगी मनुष्य हैं, और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं, कि तुम इन वर्थ्य वस्तुओं से अलग होकर जीविते परमेश्वर की ओर फिरो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उम्में है बनाया। १६ उसने बीते समयों में सब जातियों को अपने-अपने मार्गों में चलने दिया। १७ तो भी उसने अपने अपाको बै-गवाह न छोड़ा; किन्तु वह भलाई करता रहा, और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा।” १८ यह कहकर भी उन्होंने लोगों को बड़ी कठिनाई से रोका कि उनके लिये बलिदान न करें। १९ परन्तु कितने यहदियों ने अन्ताकिया और इकुनियुम से आकर लोगों को अपनी ओर कर लिया, और पौलस पर पथराव किया, और मरा समझकर उसे नगर के बाहर घसीट ले गए। २० पर जब चेले उसकी चारों ओर आ खड़े हुए, तो वह उठकर नगर में गया और दूसरे दिन बरनबास के साथ दिखे को चला गया। २१ और वे उस नगर के लोगों को सुसमाचार सुनाकर, और बहुत से चेले बनाकर, लुम्बा और इकुनियुम और अन्ताकिया को लौट आए। २२ और चेले के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते थे कि विश्वास में बने रहो;

और यह कहते थे, “हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।” २३ और उन्होंने हर एक कलीसिया में उनके लिये प्राचीन ठहराए, और उपवास सहित प्रार्थना करके उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्होंने विश्वास किया था। २४ और पिसिदिया से होते हुए वे पृष्ठलिया में पहुँचे; २५ और पिरगा में वचन सुनाकर अतालिया में आए। २६ और वहाँ से जहाज द्वारा अन्ताकिया गये, जहाँ वे उस काम के लिये जो उन्होंने पूरा किया था परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपे गए। २७ वहाँ पहुँचकर, उन्होंने कलीसिया इकट्ठी की और बताया, कि परमेश्वर ने हमारे साथ होकर कैसे बड़े-बड़े काम किए। और अन्यजातियों के लिये विश्वास का द्वार खोल दिया। २८ और वे चेलों के साथ बहुत दिन तक रहे।

१५ फिर कुछ लोग यहदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगे: “यदि

मूरा की रिति पर तुम्हारा खत्म न हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते।” १ जब पौलस और बरनबास का उनसे बहुत मनभेद और विवाद हुआ तो यह ठहराया गया, कि पौलस और बरनबास, और उनमें से कुछ व्यक्ति इस बात के विषय में प्रेरितों और प्राचीनों के पास यस्श्लेम को जाएँ। २ अतः कलीसिया ने उन्हें कुछ दूर तक पहुँचाया; और वे फीनीके और सामरिया से होते हुए अन्यजातियों के मन फिराने का समाचार सुनाते गए, और सब भाइयों को बहुत आनन्दित किया। ३ जब वे यस्श्लेम में पहुँचे, तो कलीसिया और प्रेरित और प्राचीन उनसे आनन्द के साथ मिले, और उन्होंने बताया कि परमेश्वर ने उनके साथ होकर कैसे काम किए। ४ परन्तु फरीसियों के पथ में से जिन्होंने विश्वास किया था, उनमें से कितनों ने उठकर कहा, “उन्हें खत्म कराने और मूरा की व्यवस्था को मानने की आज्ञा देनी चाहिए।” ५ तब प्रेरित और प्राचीन इस बात के विषय में विचार करने के लिये इकट्ठे हुए। ६ तब प्रेरित और प्राचीन इस बात के विषय में विचार करने के लिये इकट्ठे हुए। ७ तब पतरस ने बहुत वाद-विवाद हो जाने के बाद खड़े होकर उनसे कहा, “हे भाइयों, तुम जानते हो, कि बहुत दिन हुए, कि परमेश्वर ने तुम में से मुझे चुन लिया, कि मैं मुँह से अन्यजातियों सुसमाचार का वचन सुनकर विश्वास करें। ८ और मन के जाँचने वाले परमेश्वर ने उनको भी हमारे समान पवित्र आत्मा देकर उनकी गवाही दी; ९ और विश्वास के द्वारा उनके मन शुद्ध करके हम में और उनमें कुछ भेद न रखा। १० तो अब तुम क्यों परमेश्वर की परीक्षा करते हो, कि चेलों की गर्दन पर ऐसा जआ रखो, जिसे न हमारे पर्वज उठा सकते थे और न हम उठा सकते हैं। ११ हाँ, हमारा यह तो निश्चय है कि जिस रिति से वे प्रभु यीशु के अनुग्रह से उड़ाए पाएँगे; उसी रिति से हम भी पाएँगे।” १२ तब सारी सभा चुपचाप होकर बरनबास और पौलस की सुनने लगी, कि परमेश्वर ने उनके द्वारा अन्यजातियों में कैसे-कैसे बड़े चिन्ह, और अदृष्ट काम दिखाए। १३ जब वे चुप हुए, तो याकूब कहने लगा, “हे भाइयों, मेरी सुनो। १४ शमैन ने बताया, कि परमेश्वर ने धलेन-धलन अन्यजातियों पर कैसी कृपादृष्टि की, कि उनमें से अपने नाम के लिये एक लोग बना ले। १५ और इससे भविष्यद्वक्ताओं की बातें भी मिलती हैं, जैसा लिखा है, १६ ‘इसके बाद मैं फिर आकर दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊँगा, और उसके खंडहोरों को फिर बनाऊँगा, और उसे खड़ा करूँगा, १७ इसलिए कि शेष मनुष्य, अर्थात् सब अन्यजाति जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु को ढूँढ़ें, १८ यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है।’ (aión g165) १९ “इसलिए मेरा विचार यह है, कि अन्यजातियों में से जो लोग परमेश्वर की ओर फिरते हैं, हम उन्हें दुःख न दें; २० परन्तु उन्हें लिख भेजें, कि वे मूरतों की अशुद्धताओं और अभिचार और गला घोंटे हुओं के मौस से और लह से पेरे रहें। २१ क्योंकि पुनर्न एसमय से नगर-नगर मूरा की व्यवस्था के प्रचार करनेवाले होते चले आए हैं, और वह हर सब्त के दिन आराधनालय में पढ़ी जाती है।” २२ तब सारी

कलीसिया सहित प्रेरितों और प्राचीनों को अच्छा लगा, कि अपने में से कुछ मनुष्यों को चुनें, अर्थात् यहदा, जो बरसब्बास कहलाता है, और सीलास को जो भाइयों में मुखिया थे; और उन्हें पौलस और बरनबास के साथ अन्ताकिया को भेजें। २३ और उन्होंने उनके हाथ यह लिख भेजा: “अन्ताकिया और सीरिया और किलिकिया के रहनेवाले भाइयों को जो अन्यजातियों में से हैं, प्रेरितों और प्राचीन भाइयों का नमस्कार।” २४ हमने सुना है, कि हम में से कुछ ने वहाँ जाकर, तभीं अपनी बातों से घबरा दिया; और तुम्हरे मन उलट दिए हैं परन्तु हमने उनको आज्ञा नहीं दी थी। २५ इसलिए हमने एक चित्त होकर ठीक समझा, कि चुने हुए मनुष्यों को अपने प्रिय बरनबास और पौलस के साथ तुम्हारे पास भेजें। २६ ये तो ऐसे मनुष्य हैं, जिन्होंने अपने प्राण हमारे प्रभु यीश मसीह के नाम के लिये जोखिम में डाले हैं। २७ और हमने यहदा और सीलास को भेजा है, जो अपने मूँह से भी ये बातें कह देंगे। २८ पवित्र आत्मा को, और हमको भी ठीक जान पड़ा कि इन आवश्यक बातों को छोड़; तुम पर और बोझ न डालें; २९ कि तुम मूर्त्यों के बलि किए हुओं से, और लह से, और गला घोटे हुओं के मांस से, और व्यभिचार से दूर रहो। इनसे दूर रहो तो तम्हारा भला होगा। आगे शुभकामना।” ३० फिर वे विदा होकर अन्ताकिया में पहुँचे, और सभा को इकट्ठी करके उन्हें पत्री दे दी। ३१ और वे पढ़कर उस उदाश की बात से अति आनन्दित हुए। ३२ और यहदा और सीलास ने जो आप भी भविष्यद्वत्ता थे, बहुत बातों से भाइयों को उपदेश देकर स्थिर किया। ३३ वे कुछ दिन रहकर भाइयों से शान्ति के साथ विदा हुए कि अपने भेजनेवालों के पास जाएँ। ३४ (परन्तु सीलास को वहाँ रहना अच्छा लगा।) ३५ और पौलस और बरनबास अन्ताकिया में रह गए; और अन्य बहुत से लोगों के साथ प्रभु के वचन का उदाश करते और सुसमाचार सुनाते रहे। ३६ कुछ दिन बाद पौलस ने बरनबास से कहा, “जिन-जिन नगरों में हमने प्रभु का वचन सुनाया था, आओ, फिर उम्मे चलकर अपने भाइयों को देखें कि कैसे हैं।” ३७ तब बरनबास ने यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेने का विचार किया। ३८ परन्तु पौलस ने उसे जो पफूलिया में उनसे अलग हो गया था, और काम पर उनके साथ न गया, साथ ले जाना अच्छा न समझा। ३९ अतः ऐसा विवाद उठा कि वे एक दूसरे से अलग हो गए; और बरनबास, मरकुस को लेकर जहाज से साइप्रस को चला गया। ४० परन्तु पौलस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपा जाकर वहाँ से चला गया। ४१ और कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ, सीरिया और किलिकिया से होते हुए निकला।

१६ फिर वह दिखे और लुक़ा में भी गया, और वहाँ तीमुथियुस नामक एक चेला था। उसकी माँ यहदी विश्वासी थी, परन्तु उसका पिता यन्नानी था। २ वह लुक़ा और इकुनियम के भाइयों में सुनाम था। ३ पौलस की इच्छा थी कि वह उसके साथ चले; और जो यहदी लोग उन जगहों में थे उनके कारण उसे लेकर उसका खतना किया, क्योंकि वे सब जानते थे, कि उसका पिता यन्नानी था। ४ और नगर-नगर जाते हुए वे उन विधियों को जो यस्सलेम के प्रेरितों और प्राचीनों ने ठहराई थी, मानने के लिये उन्हें पहुँचाते जाते थे। ५ इस प्रकार कलीसियाएँ विश्वास में स्थिर होती गई और गिनती में प्रतिदिन बढ़ती गई। ६ और वे फ़ूगिया और गलातिया प्रदेशों में से होकर गए, क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें आसिया में वचन सुनाने से मना किया। ७ और उन्होंने मूरसिया के निकट पहुँचकर, बितूनिया में जाना चाहा; परन्तु यीश के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया। ८ अतः वे मूरसिया से होकर त्रोआस में आए। ९ वहाँ पौलस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिटुनी पुस्प खड़ा हुआ, उससे बिनती करके कहता है, “पार उत्तरकर मकिटुनिया में आ, और हमारी सहायता

कर।” १० उसके यह दर्शन देखते ही हमने तुरन्त मकिटुनिया जाना चाहा, यह समझकर कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिये बुलाया है। ११ इसलिए त्रोआस से जहाज खोलकर हम सीधे समानारके और दूसरे दिन नियापुलिस में आए। १२ वहाँ से हम किलिपी में पहुँचे, जो मकिटुनिया प्रान्त का मुख्य नगर, और रोमियों की बस्ति है; और हम उस नगर में कुछ दिन तक रहे। १३ सब्त के दिन हम नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह समझकर गए कि वहाँ प्रार्थना करने का स्थान होगा; और बैठकर उन द्वियों से जो इकट्ठी हुई थीं, बातें करने लगे। १४ और तुदिया नाम थुआतीरा नगर की बैगीनी कपड़े बेचनेवाली एक भक्त झी सुन रखी थी, और प्रभु ने उसका मन खोला, ताकि पौलस की बातों पर ध्यान लगाए। १५ और जब उसने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया, तो उसने बिनती की, “यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासीनी समझते हो, तो चलकर मेरे घर में रहो,” और वह हमें मनकर ले गई। १६ जब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली, जिसमें भारी कहनेवाली आत्मा थी; और भारी कहने से अपने स्वामियों के लिये बहुत कुछ कमा लाती थी। १७ वह पौलस के और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी, “ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं।” १८ वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही, परन्तु पौलस परेशान हुआ, और मुड़कर उस आत्मा से कहा, ‘‘मैं तुमे यीश मसीह के नाम से आज्ञा देता हूँ, कि उसमें से निकल जा और वह उसी घड़ी निकल गई।’’ १९ जब उसके स्वामियों ने देखा, कि हमारी कमाई की आशा जाती रही, तो पौलस और सीलास को पकड़कर चौक में प्रधानों के पास खींच ले गए। २० और उन्हें फौजदारी के हाकिमों के पास ले जाकर कहा, “ये लोग जो यहदी हैं, हमारे नगर में बड़ी हलचल मचा रहे हैं, २१ और ऐसी रीतियाँ बता रहे हैं, जिन्हें ग्रहण करना या मानना हम रोमियों के लिये ठीक नहीं।” २२ तब भीड़ के लोग उनके विरोध में इकट्ठे होकर चढ़ आए, और हाकिमों ने उनके कपड़े फाढ़कर उतार डाले, और उन्हें बेत मारने की आज्ञा दी। २३ और बहुत बेत लगावाकर उन्होंने उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया और दोगों को आज्ञा दी कि उन्हें सावधानी से रखे। २४ उसने ऐसी आज्ञा पाकर उन्हें भीतर की कोठरी में रखा और उनके पाँव काठ में ठोक दिए। २५ आधी रात के लगभग पौलस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और कैदी उनकी सुन रहे थे। २६ कि इन्हें मैं अचानक एक बड़ा भूकम्प हुआ, यहाँ तक कि बन्दीगृह की नींव हिल गई, और तुरन्त सब द्वार खुल गए; और सब के बन्धन खुल गए। २७ और दोगों जाग उठा, और बन्दीगृह के द्वार खुले देखकर समझा कि कैदी भाग गए, अतः उसने तलवार खींचकर अपने आपको मार डालना चाहा। २८ परन्तु पौलस ने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा, “अपने आपको कुछ हानि न पहुँचा, क्योंकि हम सब यही हैं।” २९ तब वह दिया मैंगवाकर भीतर आया और कैपांता हुआ पौलस और सीलास के आगे गिरा; ३० और उन्हें बाहर लाकर कहा, “हे सज्जनों, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूँ?” ३१ उन्होंने कहा, “प्रभु यीश मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।” ३२ और उन्होंने उसको और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया। ३३ और रात को उसी घड़ी उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया। ३४ और उसने उन्हें अपने घर में ले जाकर, उनके आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया। ३५ जब दिन हुआ तब हाकिमों ने सिपाहियों के हाथ कहला भेजा कि उन मनुष्यों को छोड़ दो। ३६ दोगों ने ये बातें पौलस से कह सुनाई, “हाकिमों ने उन्हें छोड़ देने की आज्ञा भेज दी है, इसलिए अब निकलकर कुशल से चले जाओ।” ३७ परन्तु पौलस ने उससे

कहा, “उन्होंने हमें जो रोमी मनुष्य हैं, दोषी ठहराए बिना लोगों के सामने मारा और बन्दीगृह में डाला, और अब क्या चुपके से निकाल देते हैं? ऐसा नहीं, परन्तु वे आप आकर हमें बाहर ले जाएँ।” ३४ सिपाहियों ने ये बातें हाकिमों से कह दी, और वे यह सुनकर कि रोमी हैं, डर गए, ३५ और आकर उन्हें मनाया, और बाहर ले जाकर बिनती की, कि नगर से चले जाएँ। ३६ वे बन्दीगृह से निकलकर लुटिया के यहाँ गए, और भाइयों से भेट करके उन्हें शान्ति दी, और चले गए।

१७ फिर वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आएं

जहाँ यहदियों का एक आराधनालय था। ३७ और पौलस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया, और तीन सबक के दिन पवित्रशान्तों से उनके साथ वाद-विवाद किया; ३८ और उनका अर्थ खोल-खोलकर समझाता था कि मरींह का दुख उठाना, और मेरे हाथों में से जी उठाना, अवश्य था; “यही यीशु जिसकी मैं तुहाँ कथा सुनाता हूँ, मरींह है।” ३९ उनमें से कितनों ने, और भक्त युनानियों में से बहुतों ने और बहुत सारी प्रमुख छियों ने मान लिया, और पौलस और सीलास के साथ मिल गए। ४० परन्तु यहदियों ने ईर्ष्या से भरकर बाजार से लोगों में से कई दृष्ट मनुष्यों को अपने साथ में लिया, और भीड़ लगाकर नगर में हल्लड मचाने लगे, और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा। ४१ और उन्हें न पाकर, वे यह चिल्लाते हुए यासोन और कुछ भाइयों को नगर के हाकिमों के सामने खींच लाए, “ये लोग जिन्होंने जगत को उलटा पूलटा कर दिया है, यहाँ भी आए हैं। ४२ और यासोन ने उन्हें अपने यहाँ ठहराया है, और ये सब के सब यह कहते हैं कि यीशु राजा है, और कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं।” ४३ जब भीड़ और नगर के हाकिमों ने ये बातें सुनी, तो वे परेशान हो गये। ४४ और उन्होंने यासोन और बाकी लोगों को जमानत पर छोड़ दिया। ४५ भाइयों ने तुरन्त रात ही रात पौलस और सीलास को बिरीया में भेज दिया, और वे वहाँ पहुँचकर यहदियों के आराधनालय में गए। ४६ ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्रशान्तों में ढूँढ़ते रहे कि ये बातें ऐसी ही हैं कि नहीं। ४७ इसलिए उनमें से बहुतों ने, और युनानी कुलीन छियों में से और पुस्तों में से बहुतों ने विश्वास किया। ४८ किन्तु जब थिस्सलुनीके के यहदी जान गए कि पौलस बिरीया में भी परमेश्वर का वचन सुनाता है, तो वहाँ भी आकर लोगों को भड़काने और हलचल मचाने लगे। ४९ तब भाइयों ने तुरन्त पौत्रुप को विदा किया कि समृद्ध के किनारे चला जाए; परन्तु सीलास और तीमुथियुस वही रह गए। ५० पौलस के पहुँचाने वाले उसे एथेस तक ले गए, और सीलास और तीमुथियुस के लिये यह निर्देश लेकर विदा हुए कि मेरे पास अति शीघ्र आओ। ५१ जब पौलस एथेस में उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, तो नगर को मूर्तों से भरा हुआ देखकर उसका जी जल उठा। ५२ अतः वह आराधनालय में यहदियों और भक्तों से और चौक में जो लोग मिलते थे, उनसे हर दिन वाद-विवाद किया करता था। ५३ तब इपिकूरी और स्टोइकी दार्शनिकों में से कुछ उससे तक करने लगे, और कुछ ने कहा, “यह बकवादी क्या कहना चाहता है?” परन्तु दूसरों ने कहा, “वह अन्य देवताओं का प्रचारक मालूम पड़ता है,” क्योंकि वह यीशु का और पुनर्स्थान का समसाचार सुनाता था। ५४ तब वे उसे अपने साथ अरियुपगुस पर ले गए और पूछा, “क्या हम जान सकते हैं, कि यह नया मत जो तु सुनाता है, क्या है?” ५५ क्योंकि तू अनोखी बातें हमें सुनाता है, इसलिए हम जानना चाहते हैं कि इनका अर्थ क्या है?” ५६ (इसलिए कि सब एथेस वासी और परदेशी जो वहाँ रहते थे नई-नई बातें कहने और सुनने के सिवाय और किसी काम में

समय नहीं बिताते थे।) ५७ तब पौलस ने अरियुपगुस के बीच में खड़ा होकर कहा, “हे एथेस के लोगों, मैं देखता हूँ कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानवेवाले हो। ५८ क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी बेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, ‘अनजाने ईश्वर के लिये।’ इसलिए जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूँ। ५९ जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। ६० न किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और व्यास और सब कुछ देता है। ६१ उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय और निवास के सीमाओं को इसलिए बांधा है, ६२ कि वे परमेश्वर को ढूँढ़ें, और शायद वे उसके पास पहुँच सकें, और वास्तव में, वह हम में से किसी से दूर नहीं है। ६३ क्योंकि हम उसी मैं जीवित रहते, और चलते फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, ‘हम तो उसी के बंश भी हैं।’ ६४ अतः परमेश्वर का बंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व, सोने या चाँदी या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हैं। ६५ इसलिए परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, पर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। ६६ क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धार्मिकता से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मेरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।” ६७ मेरे हुओं के पुनर्स्थान की बात सुनकर कितने तो उपहास करने लगे, और कितनों ने कहा, “यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे।” ६८ इस पर पौलस उनके बीच में से चला गया। ६९ परन्तु कुछ मनुष्य उसके साथ मिल गए, और विश्वास किया; जिनमें दियुम्नियुस जो अरियुपगुस का सदस्य था, और दमप्रिस नामक एक स्त्री थी, और उनके साथ और भी कितने लोग थे।

१८ इसके बाद पौलस एथेस को छोड़कर कुरिन्थुस में आया। ७ और वहाँ

अक्विला नामक एक यहदी मिला, जिसका जन्म पुन्तुस में हुआ था; और अपनी पत्री प्रिस्किल्ला के साथ इतालिया से हाल ही में आया था, क्योंकि क्लैवियस ने सब यहदियों को रोम से निकल जाने की आज्ञा दी थी, इसलिए वह उनके यहाँ गया। ८ और उसका और उनका एक ही व्यापार था; इसलिए वह उनके साथ रहा, और वे काम करने लगे, और उनका व्यापार तम्बू बनाने का था। ९ और वह हर एक सबत के दिन आराधनालय में वाद-विवाद करके यहदियों और यूनानियों को भी समझाता था। १० जब सीलास और तीमुथियुस मकिनिया से आए, तो पौलस वचन सुनाने की धूम में लगकर यहदियों को गवाही देता था कि यीशु ही मरींह है। ११ परन्तु जब वे विरोध और मिन्दा करने लगे, तो उसने अपने कपड़े झाड़कर उनसे कहा, “तुम्हारा लह तुम्हारी सिर पर रहे! मैं निर्देश हूँ। अब से मैं अन्यजातियों के पास जाऊँगा।” १२ और वहाँ से चलकर वह तीतुस यूस्तुस नामक परमेश्वर के एक भक्त के घर में आया, जिसका घर आराधनालय से लगा हुआ था। १३ तब आराधनालय के सरदार किम्पस ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया; और बहुत से कुरिन्थवासियों ने सुनकर विश्वास किया और बपतिस्मा लिया। १४ और प्रभु ने रात को दर्शन के द्वारा पौलस से कहा, “मत डर, वरन् कहे जा और चुप मत रह; १५ क्योंकि मैं तेर साथ हूँ, और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।” १६ इसलिए वह उनमें परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष तक रहा। १७ जब गल्लियो अखाया

देश का राज्यपाल था तो यहदी लोग एका करके पौलस पर चढ़ आए, और उसे न्याय आसन के सामने लाकर कहने लगे, १३ “यह लोगों को समझाता है, कि परमेश्वर की उपासना ऐसी रिति से करें, जो व्यवस्था के विपरीत है।” १४ जब पौलस बोलने पर था, तो गलिलियो ने यहदियों से कहा, “हे यहदियों, यदि यह कुछ अन्यथा या दुष्टा की बात होती तो उचित था कि मैं तुम्हारी सुनता। १५ परन्तु यदि यह वाद-विवाद शब्दों, और नामों, और तुम्हारे यहाँ की व्यवस्था के विषय में है, तो तुम ही जानो; क्योंकि मैं इन बातों का न्यायी बनना नहीं चाहता।” १६ और उसने उहाँ न्याय आसन के सामने से निकलता दिया। १७ तब सब लोगों ने आराधनालय के सरदार सोसियेस को पकड़ के न्याय आसन के सामने मारा। परन्तु गलिलियो ने इन बातों की कुछ भी चिन्ता न की। १८ अतः पौलस बहुत दिन तक वहाँ रहा, फिर भाइयों से विदा होकर किंडिया में इसलिए सिर मुँडाया, क्योंकि उसने मन्त्र मानी थी और जहाज पर सीरिया को चल दिया और उसके साथ प्रिस्किल्ला और अक्विला थे। १९ और उसने इफिसुस में पहुँचकर उनको वहाँ छोड़ा, और आप ही आराधनालय में जाकर यहदियों से विवाद करने लगा। २० जब उन्होंने उससे विनीती की, “हमारे साथ और कुछ दिन रह।” तो उसने स्वीकार न किया; २१ परन्तु यह कहकर उनसे विदा हुआ, “यदि परमेश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास फिर आऊँगा।” तब इफिसुस से जहाज खोलकर चल दिया, २२ और कैसरिया में उत्तरकर (यस्सलेम को) गया और कलीसिया को नमकार करके अन्ताकिया में आया। २३ फिर कुछ दिन रहकर वहाँ से चला गया, और एक ओर से गलातिया और फ्रूगिया में सब चेलों को स्थिर करता फिरा। २४ अपुल्लोस नामक एक यहदी जिसका जन्म सिकन्दरिया में हुआ था, जो विद्रोह पुस्त था और पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह से जानता था इफिसुस में आया। २५ उसने प्रभु के मार्ग की सिक्षा पाई थी, और मन लगाकर यीशु के विषय में ठीक-ठीक सनाता और सिखाता था, परन्तु वह केवल यहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था। २६ वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा, पर प्रिस्किल्ला और अक्विला उसकी बातें सुनकर, उसे अपने यहाँ ले गए और परमेश्वर का मार्ग उसको और भी सप्त रूप से बताया। २७ और जब उसने निश्चय किया कि पार उत्तरकर अखाया को जाए तो भाइयों ने उसे ढार्डस टेकर चेलों को लिखा कि वे उससे अच्छी तरह मिलें, और उसने पहुँचकर वहाँ उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्होंने अनुग्रह के कारण विच्वास किया था। २८ अपुल्लोस ने अपनी शक्ति और कौशल के साथ यहदियों को सार्वजनिक रूप से अभिभूत किया, पवित्रशास्त्र से प्रमाण दे देकर कि यीशु ही मरीह है।

१९ जब अपुल्लोस कुरिन्थ्युस में था, तो पौलस ऊपर के सारे देश से होकर इफिसुस में आया और वहाँ कुछ चेले मिले। १८ उसने कहा, “क्या तुम ने विच्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?” उन्होंने उससे कहा, “हमने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।” १९ उसने उससे कहा, “तो फिर तुम ने किसका बपतिस्मा लिया?” उन्होंने कहा, “यहन्ना का बपतिस्मा।” २० पौलस ने कहा, “यहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विच्वास करना।” २१ यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया। २२ और जब पौलस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे। २३ ये सब लगभग बारह पुस्त थे। २४ और वह आराधनालय में जाकर तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में विवाद करता और समझाता रहा। २५ परन्तु जब कुछ लोगों ने कठोर होकर उसकी नहीं मानी वरन् लोगों के सामने इस पंथ को बुरा कहने लगे, तो उसने उनको छोड़कर चेलों को अलग कर लिया, और

प्रतिदिन तुर्न्सु की पाठशाला में वाद-विवाद किया करता था। २६ दो वर्ष तक यहीं होता रहा, यहाँ तक कि आसिया के रहनेवाले क्या यहदी, क्या यानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया। २७ और परमेश्वर पौलस के हाथों से समर्थ्य के अद्भुत काम दिखाता था। २८ यहाँ तक कि स्माल और अँगोछे उसकी देह से स्पर्श कराकर बीमारों पर डालते थे, और उनकी बीमारियाँ टूर हो जाती थीं; और दृष्टाताएँ उनमें से निकल जाया करती थीं। २९ परन्तु कुछ यहदी जो झाड़ा फँकी करते फिरते थे, यह करने लगे कि जिनमें दृष्टाता हों उन पर प्रभु यीशु का नाम यह कहकर फँकने लगे, “जिस यीशु का प्रचार पौलस करता है, मैं तुम्हें उसी की शपथ देता हूँ।” ३० और स्विकृता नाम के एक यहदी प्रधान याजक के सात पुत्र थे, जो ऐसा ही करते थे। ३१ पर दृष्टाता ने उत्तर दिया, “यीशु को मैं जानती हूँ, और पौलस को भी पहचानती हूँ; परन्तु तुम कौन हो?” ३२ और उस मनुष्य ने जिसमें दृष्ट आत्मा थीं, उन पर लपककर, और उत्तें काबू में लाकर, उन पर ऐसा उपद्रव किया, कि वे नगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे। ३३ और यह बात इफिसुस के रहनेवाले यहदी और यानी भी सब जान गए, और उन सब पर भय छा गया; और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई हुई। ३४ और जिन्होंने विच्वास किया था, उनमें से बहुतों ने आकर अपने-अपने बुरे कामों को मान लिया और प्रगट किया। ३५ और जाटू-टोना करनेवालों में से बहुतों ने अपनी-अपनी पोथियाँ इकट्ठी करके सब के सामने जला दी; और जब उनका दाम जोड़ा गया, जो पचास हजार चाँदी के सिक्कों के बराबर निकला। ३६ इस प्रकार प्रभु का वचन सामर्थ्यपूर्वक फैलता गया और प्रबल होता गया। ३७ जब ये बातें हो चुकी तो पौलस ने आत्मा में ठाना कि मकिनुयिया और अखाया से होकर यस्सलेम को जाऊँ, और कहा, “वहाँ जाने के बाद मुझे रोम को भी देखना अवश्य है।” ३८ इसलिए अपनी सेवा करनेवालों में से तीसुथियुस और इरास्तुस को मकिनुयिया में भेजकर अप कुछ दिन आसिया में रह गया। ३९ उस समय उस पन्थ के विषय में बडा हल्लड हुआ। ४० क्योंकि दिमेषियुस नाम का एक सुनार अरतिमिस के चाँदी के मन्दिर बनवाकर, कारीगरों को बहुत काम दिलाया करता था। ४१ उसने उनको और ऐसी वस्तुओं के कारीगरों को इकट्ठे करके कहा, “हे मनुष्यों, तुम जानते हो कि इस काम से हमें कितना धन मिलता है।” ४२ और तम देखते और सुनते हो कि केवल इफिसुस ही में नहीं, बरन प्रायः सारे आसिया में यह कह कहकर इस पौलस ने बहुत लोगों को समझाया और भरमाया भी है, कि जो हाथ की कारीगरी है, वे इंवर नहीं। ४३ और अब केवल इसी एक बात का ही डर नहीं कि हमारे इस धन्धे की प्रतिष्ठा जाती रहेगी; बरन यह कि महान देवी अरतिमिस का मन्दिर उच्छ समझा जाएगा और जिसे सारा आसिया और जगत पूजता है उसका महत्व भी जाता रहेगा।” ४४ वे यह सुनकर क्रोध से भर गए और चिल्लाकर कहने लगे, “इफिसियों की अरतिमिस, महान है!” ४५ और सारे नगर में बडा कोलाहल मच गया और लोगों ने गयसु और अरिस्तर्थसु, मकिनुयियों को जो पौलस के संगी यात्री थे, पकड़ लिया, और एक साथ होकर रंगशाला में टौड गए। ४६ जब पौलस ने लोगों के पास भीतर जाना चाहा तो चेलों ने उसे जाने न दिया। ४७ आसिया के हाकियों में से भी उसके कई मित्रों ने उसके पास कहला भेजा और विनीती की, कि रंगशाला में जाकर जोखिम न उठाना। ४८ वहाँ कोई कुछ चिल्लाता था, और कोई कुछ; क्योंकि सभा में बड़ी गडबडी हो रही थी, और बहुत से लोग तो यह जानते भी नहीं थे कि वे किस लिये इकट्ठे हुए हैं। ४९ तब उन्होंने सिकन्दर को, जिसे यहदियों ने खड़ा किया था, भीड़ में से आगे बढ़ाया, और सिकन्दर हाथ से संकेत करके लोगों के सामने उत्तर देना चाहता था। ५० परन्तु जब उन्होंने जान लिया कि वह यहदी है, तो सब के सब एक स्वर से कोई दो घटे तक

चिल्लाते रहे, “इफिसियों की अरतिमिस, महान है।” ३१ तब नगर के मंत्री ने लोगों को शान्त करके कहा, “हे इफिसियों, कौन नहीं जानता, कि इफिसियों का नगर महान देवी अरतिमिस के मन्दिर, और आकाश से मिरी हुई मूरत का खबवाला है। ३२ अतः जबकि इन बातों का खण्डन ही नहीं हो सकता, तो उचित है, कि तुम शान्त रहो; और बिना सोचे-विचरे कुछ न करो। ३३ क्योंकि तुम इन मनुष्यों को लाए हो, जो न मन्दिर के लटेनेवले हैं, और न हमारी देवी के निन्दक हैं। ३४ यदि दिमेनियुस और उसके साथी कारीगरों को किसी से विवाद हो तो कच्छरी खुनी है, और हाकिम भी हैं; वे एक दूसरे पर आरोप लगाए। ३५ परन्तु यदि तुम किसी और बात के विषय में कुछ पछान चाहते हो, तो नियत सभा में फैसला किया जाएगा। ३६ क्योंकि आज के बलवे के कारण हम पर दोष लगाए जाने का डर है, इसलिए कि इसका कोई कारण नहीं, अतः हम इस भीड़ के इक्षण होने का कोई उत्तर न दे सकेंगे।” ३७ और यह कह के उसने सभा को विदा किया।

२० जब हुल्लड थम गया तो पैलूस ने चेलों को बुलवाकर समझाया, और उसने बिदा होकर मकिदुनिया की ओर चल दिया। २१ उस सरे प्रदेश में से होकर और चेलों को बहुत उत्साहित कर वह यूनान में आया। २२ जब तीन महीने रहकर वह वहाँ से जहाज पर सीरिया की ओर जाने पर था, तो यहदी उसकी धार में लगे, इसलिए उसने यह निश्चय किया कि मकिदुनिया होकर लौट जाए। २३ बिरिया के पुर्सी का पुक्र सोपत्रुम और थिस्सलुनीकियों में से अरिस्तर्वुस और सिकुन्दुम और दिरबे का गयुस, और तीवुथियुस और आसिया का तुखिकूस और ब्राफिसुम आसिया तक उसके साथ हो लिए। २४ पर वे आगे जाकर त्रोआस में हमारी प्रतीक्षा करते रहे। २५ और हम अब्दुमीरी रोटी के दिनों के बाद फिलिप्पी से जहाज पर चढ़कर पाँच दिन में त्रोआस में उनके पास पहुँचे, और सात दिन तक वही रहे। २६ सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पैलूस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उसने बातें की, और आधी रात तक उदाशे देता रहा। २७ जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे, उसमें बहुत दीये जल रहे थे। २८ और युत्तुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नीद से झुक रहा था, और जब पैलूस देर तक बाते करता रहा तो वह नीद के झोंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया। २९ परन्तु पैलूस उत्तरकर उससे लिपट गया, और गले लगाकर कहा, “घबराओ नहीं, क्योंकि उसका प्राण उसी में है।” ३० और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक उनसे बातें करता रहा कि पौ फट गई, फिर वह चला गया। ३१ और वे उस जवान को जीवित ले आए, और बहुत शान्ति पाई। ३२ हम पहले से जहाज पर चढ़कर अस्सुस को इस विचार से आगे गए, कि वहाँ से हम पैलूस को चढ़ा ले क्योंकि उसने यह इसलिए ठहराया था, कि आप ही पैदल जानेवाला था। ३३ जब वह अस्सुस में हमें मिला तो हम उसे चढ़ाकर मिलुने में आए। ३४ और वहाँ से जहाज खोलकर हम दूसरे दिन खियुस के सामने पहुँचे, और अगले दिन सामुस में जा पहुँचे, फिर दूसरे दिन मीलेतुस में आए। ३५ क्योंकि पैलूस ने इफिसियों के पास से होकर जाने की ठानी थी, कि कहीं ऐसा न हो, कि उसे आसिया में देर लगे, क्योंकि वह जलदी में था, कि यदि हो सके, तो वह पिन्तेकुस्त के दिन यस्सलेम में रहे। ३६ और उसने मीलेतुस से इफिसियों के पास से होकर जाने की ठानी थी, कि कहीं ऐसा न हो, कि उसे आसिया में देर लगे, क्योंकि वह जलदी में था, कि यदि हो सके, तो वह पिन्तेकुस्त के दिन यस्सलेम में रहे। ३७ और उसने मीलेतुस से इफिसियों में कहला भेजा, और कलीसिया के प्राचीनों को बुलवाया। ३८ जब वे उसके पास आए, तो उनसे कहा, “तुम जानते हो, कि पहले ही दिन से जब मैं आसिया में पहुँचा, मैं हर समय तुम्हारे साथ किस प्रकार रहा। ३९ अर्थात् बड़ी दीनता से, और औस् बहा-बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो यहदियों के पड़यंत्र के कारण जो मुझ पर आ पड़ी; मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा। ४० और जो-जो बातें तुम्हारे लाभ

की थीं, उनको बताने और लोगों के सामने और घर-घर सिखाने से कभी न ज़िद्दिका। ४१ वरन् यहदियों और यूनानियों को चेतावनी देता रहा कि परमेश्वर की ओर मन फिराए, और हमारे प्रभु यीश मरीह पर विच्वास करे। ४२ और अब, मैं आत्मा में बंधा हुआ यस्सलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता, कि वहाँ मुझ पर क्या-क्या बीतेगा, ४३ केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे-देकर मुझसे कहता है कि बन्धन और क्लेश तैर लिये तैयार है। ४४ परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जाँहूँ बरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवा को पूरी करूँ, जो मैंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसामाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीश से पाई है। ४५ और अब मैं जानता हूँ, कि तुम सब जिनमें मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मूँह फिर न देखोगे। ४६ इसलिए मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूँ, कि मैं सब के लह से निर्दीष हूँ। ४७ क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीत से बताने से न चिढ़ाका। ४८ इसलिए अपनी और पूरे झुण्ड की देख-रेख करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की खबवाली करो, जिसे उसने अपने लह से मोल लिया है। ४९ मैं जानता हूँ, कि मैं जाने के बाद फ़ाइनेवले भेड़िए तुम में आँगे, जो झुण्ड को न छोड़ेगे। ५० तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे वाँच लेने के टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे। ५१ इसलिए जागते रहो, और स्मरण करो कि मैंने तीन वर्ष तक रात दिन औंसू बहा-बहाकर, हर एक को चितौनी देना न छोड़ा। ५२ और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के बचन को सौंप देता हूँ; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है, और सब पवित्र किए गये लोगों में सहभागी होकर विरासत दे सकता है। ५३ मैंने किसी के चाँदी, सोने या कपड़े का लालच नहीं किया। ५४ तुम आप ही जानते हो कि इही हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएँ पूरी की। ५५ मैंने तुम्हें सब कुछ करके दिखाया, कि इस रीत से परिष्क्रम करते हुए निर्बलों को सम्मालना, और प्रभु यीश के बचन स्मरण रखना अवश्य है, कि उसने आप ही कहा है: “लेने से देना धन्य है।” ५६ यह कहकर उसने घुटने टेके और उन सब के साथ प्रार्थना की। ५७ तब वे सब बहुत रोए और पैलूस के गते लिपटकर उसे चूमे लगे। ५८ वे विशेष करके इस बात का शोक करते थे, जो उनमें कहीं थी, कि तुम मेरा मूँह फिर न देखोगे। और उन्होंने उसे जहाज तक पहुँचाया।

२१ जब हमने उसने अलग होकर समुद्री यात्रा प्रारम्भ किया, तो सीधे मार्ग से कोस में आए, और दूसरे दिन स्तुस में, और वहाँ से पतरा में; १ और एक जहाज फ़ीनीके को जाता हुआ मिला, और हमने उस पर चढ़कर, उसे खोल दिया। २ जब साइप्रस दिवाई दिया, तो हमने उसे बाँहँ हाथ छोड़ा, और सीरिया को चलकर सोर में उतरे; क्योंकि वहाँ जहाज का बोझ उतारना था। ३ और चेलों को पाकर हम वहाँ सात दिन तक रहे। उन्होंने आत्मा के सिखाए पैलूस से कहा कि यस्सलेम में पैंच न रखना। ४ जब वे दिन पौरे हो गए, तो हम वहाँ से चल दिए, और सब बिल्हों और बालकों समेत हमें नगर के बाहर तक पहुँचाया और हमने किनारे पर घुटने टेककर प्रार्थना की। ५ तब एक दूसरे से विदा होकर, हम तो जहाज पर चढ़े, और वे अपने-अपने घर लौट गए। ६ जब हम सोर से जलयात्रा पूरी करके पतुलिमियस में पहुँचे, और भाईयों को नमस्कार करके उनके साथ एक दिन रहे। ७ दूसरे दिन हम वहाँ से चलकर कैसरिया में आए, और फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक के घर में जो सातों में से एक था, जाकर उसके यहाँ रहे। ८ उसकी चार कुँवारी पुत्रियाँ थीं; जो भविष्यद्वारा करती थीं। ९ जब हम वहाँ बहुत दिन रह चुके, तो अगबुस नामक एक भविष्यद्वका यहृदिया से आया। १० उसने हमारे पास आकर पैलूस

का कमरबन्द लिया, और अपने हाथ पाँव बाँधकर कहा, “पवित्र आत्मा यह कहता है, कि जिस मनुष्य का यह कमरबन्द है, उसको यस्शलेम में यहदी इसी रीति से बाँधेंगे, और अन्यजातियों के हाथ में सैंपेंगे।” १२ जब हमने ये बातें सुनी, तो हम और वहाँ के लोगों ने उससे विनती की, कि यस्शलेम को न जाए। १३ परन्तु पौलस ने उत्तर दिया, “तुम क्या करते हो, कि रो-रोकर मेरा मन तोड़ते हो? मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यस्शलेम में न केवल बाँधे जाने ही के लिये वरन् मरने के लिये भी तैयार हूँ।” १४ जब उसने न माना तो हम यह कहकर चुप हो गए, “प्रभु की इच्छा पूरी हो।” १५ उन दिनों के बाद हमने तैयारी की और यस्शलेम को चल दिए। १६ कैसरिया के भी कुछ चेले हमारे साथ हो लिए, और मनासोन नामक साइप्रस के एक पुराने चेले को साथ ले आए, कि हम उसके यहाँ टिकें। १७ जब हम यस्शलेम में पहुँचे, तब भाइयों ने बड़े अनन्द के साथ हमारा स्वागत किया। १८ दूसरे दिन पौलस हमें लेकर याकूब के पास गया, जहाँ सब प्राचीन इकट्ठे थे। १९ तब उसने उन्हें नमस्कार करके, जो-जो काम परमेश्वर ने उसकी सेवकाई के द्वारा अन्यजातियों में किए थे, एक-एक करके सब बताया। २० उन्होंने यह सुनकर परमेश्वर की महिमा की, फिर उससे कहा, “हे भाई, तू देखता है, कि यहदियों में से कई हजार ने विद्वास किया है, और सब व्यवस्था के लिये धन लगाए हैं।” २१ और उनको तेरे विषय में सिखाया गया है, कि तू अन्यजातियों में रहनेवाले यहदियों को मूसा से फिर जाने को सिखाता है, और कहता है, कि न अपने बच्चों का खतना कराओ और न रीतियों पर चलो। २२ तो फिर क्या किया जाए? लोग अवश्य सुनेंगे कि तू यहाँ आया है। २३ इसलिए जो हम तुझ से कहते हैं, वह कर। हमारे यहाँ चार मनुष्य हैं, जिन्होंने मन्त्र नहीं है। २४ उन्हें लेकर उसके साथ अपने आपको शुद्ध कर; और उनके लिये खर्चा दे, कि वे सिर मुँड़ाएँ। तब सब जान लेंगे, कि जो बातें उन्हें तेरे विषय में सिखाई गईं, उनकी कुछ जड़ नहीं है परन्तु तू आप भी व्यवस्था को मानकर उसके अनुसार चलता है। २५ परन्तु उन अन्यजातियों के विषय में जिन्होंने विद्वास किया है, हमने यह निर्णय करके लिख भेजा है कि वे मृतियों के सामने बलि किए हए माँस से, और लह से, और गला घोंटे हुओं के माँस से, और व्यधिचार से, बचे रहें।” २६ तब पौलस उन मनुष्यों को लेकर, और दूसरे दिन उनके साथ शुद्ध होकर मन्दिर में गया, और वहाँ बता दिया, कि शुद्ध होने के दिन, अर्थात् उनमें से हर एक के लिये चढ़ावा चढ़ाए जाने तक के दिन कब पौरे होंगे। २७ जब वे सात दिन पौरे होने पर थे, तो आसिया के यहदियों ने पौलस को मन्दिर में देखकर सब लोगों को भड़काया, और यह चिल्ला चिल्लाकर उसको पकड़ लिया, २८ “हे इसाएलियों, सहायता करो; यह वही मनुष्य है, जो लोगों के, और व्यवस्था के, और इस स्थान के विरोध में हर जगह सब लोगों को सिखाता है, यहाँ तक कि यानियों को भी मान्दिर में लाकर उसने इस पवित्रस्थान को अपवित्र किया है।” २९ उन्होंने तो इससे पहले इफिसस वासी तुकिमस को उसके साथ नगर में देखा था, और समझते थे कि पौलस उसे मन्दिर में ले आया है। ३० तब सारे नगर में कोलाहल मच गया, और लोग दौड़कर इकट्ठे हुए, और पौलस को पकड़कर मन्दिर के बाहर घसीट लाए, और तुरन्त द्वार बन्द किए गए। ३१ जब वे उसे मार डालना चाहते थे, तो सैन्य-दल के सरदार को सन्देश पहुँचा कि सारे यस्शलेम में कोलाहल मच रहा है। ३२ तब वह तुरन्त सिपाहियों और सूबेदारों को लेकर उनके पास नीचे दौड़ आया; और उन्होंने सैन्य-दल के सरदार को और सिपाहियों को देखकर पौलस को मारना-पीटना रोक दिया। ३३ तब सैन्य-दल के सरदार ने पास आकर उसे पकड़ लिया; और दो जंजीरों से बाँधने की आज्ञा देकर पूर्णे लगा, “यह कौन है, और इसने क्या किया है?” ३४ परन्तु भीड़ में से कोई

कुछ और कोई कुछ चिल्लाते रहे और जब हुल्लड के मारे ठीक सच्चाई न जान सका, तो उसे गढ़ में ले जाने की आज्ञा दी। ३५ जब वह सीढ़ी पर पहुँचा, तो ऐसा हुआ कि भीड़ के दबाव के मारे सिपाहियों को उसे उठाकर ले जाना पड़ा। ३६ क्योंकि लोगों की भीड़ यह चिल्लाती हुई उसके पीछे पड़ी, “उसका अन्त कर दो।” ३७ जब वे पौलस को गढ़ में ले जाने पर थे, तो उसने सैन्य-दल के सरदार से कहा, “क्या मुझे आज्ञा है कि मैं तुझ से कुछ कहूँ?” उसने कहा, “क्या तू यानी जानता है? ३८ क्या तू वह मिसी नहीं, जो इन दिनों से पहले बलवाई बनाकर चार हजार हथियार-बन्द लोगों को जंगल में ले गया?” ३९ पौलस ने कहा, “मैं तो तरसु का यहदी मनुष्य हूँ। किलिकिया के प्रसिद्ध नगर का निवासी हूँ। और मैं तुझ से विनती करता हूँ, कि मुझे लोगों से बातें करने दो।” ४० जब उसने आज्ञा दी, तो पौलस ने सीढ़ी पर खड़े होकर लोगों को हाथ से संकेत किया। जब वे चुप हो गए, तो वह इन्हीं भाषा में बोलने लगा:

२२ “हे भाइयों और पिताओं, मेरा प्रत्युत्तर सुनो, जो मैं अब तुम्हारे सामने कहता हूँ।” २३ वे यह सुनकर कि वह उनसे इन्हीं भाषा में बोलता है, वे चुप रहे। तब उसने कहा: २४ “मैं तो यहदी हूँ, जो किलिकिया के तरसु में जन्मा; परन्तु इस नगर में गमलील के पाँवों के पास बैठकर शिक्षा प्राप्त की, और पर्वजों की व्यवस्था भी ठीक रीति पर सिखाया गया; और परमेश्वर के लिये ऐसी धन लगाए था, जैसे तुम सब आज लगाए हो। २५ मैंने पूस्ख और झींदी दोनों को बाँधकर, और बन्दीगृह में डालकर, इस पंथ को यहाँ तक सताया, कि उन्हें मरवा भी डाला। २६ स्वयं महायाजक और सब पुरुण एवं गवाह हैं; कि उनमें से मैं भाइयों के नाम पर चिठ्ठियाँ लेकर दमिश्क को चलाऊ रहा था, कि जो वहाँ होंगे उन्हें दण्ड दिलाने के लिये बाँधकर यस्शलेम में लाऊँ। २७ “जब मैं यात्रा करके दमिश्क के निकट पहुँचा, तो ऐसा हुआ कि दोपहर के लगभग अचानक एक बड़ी ज्योति आकाश से मेरे चारों और चमकी। २८ और मैं भूमि पर गिर पड़ा; और यह बाणी सुनी, ‘हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?’ २९ मैंने उत्तर दिया, ‘हे प्रभु, तू कौन है?’ उसने मुझसे कहा, ‘मैं यीश नासरी हूँ, जिसे तू सताता है।’ ३० और मैं साथियों ने ज्योति तो देखी, परन्तु जो मझसे बोलता था उसकी बाणी न सुनी। ३१ तब मैंने कहा, ‘हे प्रभु, मैं क्या करूँ?’ प्रभु ने मुझसे कहा, ‘उठकर दमिश्क में जा, और जो कुछ तेरे काने के लिये ठहराया गया है वहाँ तुझे सब बता दिया जाएगा।’ ३२ जब उस ज्योति के तेज के कारण मुझे कुछ दिखाई न दिया, तो मैं अपने साथियों के हाथ पकड़े हुए दमिश्क में आया। ३३ “तब हनन्याह नाम का व्यवस्था के अनुसार एक भक्त मनुष्य, जो वहाँ के रहनेवाले सब यहदियों में सुनाम था, मेरे पास आया, ३४ और खड़ा होकर मुझसे कहा, ‘हे भाई शाऊल, फिर देखने लगा।’ उसी घड़ी मेरी आँखें खुल गईं और मैंने उसे देखा। ३५ तब उसने कहा, ‘हमारे पर्वजों के परमेश्वर ने तुझे इसलिए ठहराया है कि तू उसकी इच्छा को जाने, और उस धर्मी को देखो, और उसके मूँह से बातें सुने। ३६ क्योंकि तू उसकी ओर से सब मनुष्यों के सामने उन बातों का गवाह होगा, जो तूने देखी और सुनी हैं। ३७ अब क्यों दें देकरता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।” ३८ “जब मैं फिर यस्शलेम में आकर मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था, तो बेस्थु हो गया। ३९ और उसको देखा कि मुझसे कहता है, ‘जलदी करके यस्शलेम से झट निकल जा; क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी गवाही न मानेंगे।’ ४० मैंने कहा, ‘हे प्रभु वे तो आप जानते हैं, कि मैं तुझ पर विद्वास करनेवालों को बन्दीगृह में डालता और जगह-जगह आराधनालय में पिटवाता था। ४१ और जब तेरे गवाह स्तिफनुस का लह बहाया जा रहा था तब भी मैं वहाँ खड़ा था, और इस बात में सहमत था, और उसके हत्यारों के

कपड़ों की रखवाली करता था।’ २५ और उसने मुझसे कहा, ‘चला जा: क्योंकि मैं तुझे अन्यजितियों के पास दूर-दूर भेज़ूँगा।’ २६ वे इस बात तक उसकी सुनते रहे; तब ऊँचे शब्द से चिल्लाएँ, “ऐसे मनुष्य का अन्त करो; उसका जीवित रहना उचित नहीं।” २७ जब वे चिल्लाते और कपड़े फेकते और आकाश में धूल उड़ाते थे; २८ तो सैन्य-दल के सबेदार ने कहा, “इसे गढ़ में ले जाओ; और कोडे मारकर जाँचो, कि मैं जानूँ कि लोग किस कारण उसके विरोध में ऐसा चिल्ला रहे हैं।” २९ जब उन्होंने उसे तसमों से बाँधा तो पौलस ने उस सबेदार से जो उसके पास खड़ा था कहा, “क्या यह उचित है, कि तुम एक रोमी मनुष्य को, और वह भी जिना दोषी ठहराएँ हुए कोडे मारो?” ३० सबेदार ने यह सुनकर सैन्य-दल के सरदार के पास जाकर कहा, “तू यह क्या करता है? यह तो रोमी मनुष्य है!” ३१ तब सैन्य-दल के सरदार ने उसके पास आकर कहा, “मुझे बता, क्या तू रोमी है?” उसने कहा, “हाँ।” ३२ यह सुनकर सैन्य-दल के सरदार ने कहा, “मैंने रोमी होने का पद बहुत स्पष्ट देकर पाया है।” पौलस ने कहा, “मैं तो जन्म से रोमी हूँ।” ३३ तब जो लोग उसे जाँचने पर थे, वे तुरन्त उसके पास से हट गए; और सैन्य-दल का सरदार भी यह जानकर कि यह रोमी है, और उसने उसे बाँधा है, डर गया। ३४ दूसरे दिन वह ठीक-ठीक जानने की इच्छा से कि यहदी उस पर क्यों दोष लगाते हैं, इसलिए उसके बन्धन खोल दिएँ, और प्रधान याजकों और सारी महासभा को इकट्ठे होने की आज्ञा दी, और पौलस को नीचे ले जाकर उनके सामने खड़ा कर दिया।

२३ पौलस ने महासभा की ओर टकटकी लगाकर देखा, और कहा, “हे भाइयों, मैंने आज तक परमेश्वर के लिये बिलकुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया है।” २४ हन्नयाह महायाजक ने, उनको जो उसके पास खड़े थे, उसके पूँछ पर थपथप मारने की आज्ञा दी। २५ तब पौलस ने उससे कहा, “हे चूना फिरी हुई दीवार, परमेश्वर तुझे मारेगा। त व्यवस्था के अन्यसार मेरा न्याय करने को बैठा है, और फिर क्या व्यवस्था के विष्टु मुझे मारने की आज्ञा देता है?” २६ जो पास खड़े थे, उन्होंने कहा, “क्या तू परमेश्वर के महायाजक को बुरा-भला कहता है?” २७ पौलस ने कहा, “हे भाइयों, मैं नहीं जानता था, कि यह महायाजक है; क्योंकि लिखा है, ‘अपने लोगों के प्रधान को बुरा न कह।’” २८ तब पौलस ने यह जानकर, कि एक दल सदूकियों और दूसरा फरीसियों का है, महासभा में पुकारकर कहा, “हे भाइयों, मैं फरीसी और फरीसियों के बंश का हूँ, मेरे हुओं की आशा और पुनर्स्थान के विषय में मेरा मुकदमा हो रहा है।” २९ जब उसने यह बात कही तो फरीसियों और सदूकियों में झागड़ा होने लगा; और सभा में फूट पड़ गई। ३० क्योंकि सदूकी तो यह कहते हैं, कि न पुनर्स्थान है, न स्वर्गदूत और न आत्मा है; परन्तु फरीसी इन सब को मानते हैं। ३१ तब बड़ा हल्ला मचा और कुछ शास्त्री जो फरीसियों के दल के थे, उठकर यह कहकर झागड़ने लगे, “हम इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते; और यदि कोई आत्मा या स्वर्गदूत उससे बोला है तो फिर क्या?” ३२ जब बहुत झगड़ा हुआ, तो सैन्य-दल के सरदार ने इस डर से कि वे पौलस के टुकड़े-टकड़े न कर डालें, सैन्य-दल को आज्ञा दी कि उत्तरकर उसको उनके बीच में से जबरदस्ती निकालो, और गढ़ में ले आओ। ३३ उसी रात प्रभु ने उसके पास आ खड़े होकर कहा, “हे पौलस, धैर्य रख; क्योंकि जैसी तरे यस्श्लेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी।” ३४ जब दिन हुआ, तो यहदियों ने एका किया, और शपथ खाई कि जब तक हम पौलस को मार न डालें, यदि हम खाँ या पीँ तो हम पर धिक्कार। ३५ जिन्होंने यह शपथ खाई थी, वे चालीस जन से अधिक थे। ३६ उन्होंने प्रधान

याजकों और प्राचीनों के पास आकर कहा, “हमने यह ठाना है कि जब तक हम पौलस को मार न डालें, तब तक यदि कुछ भी खाँ, तो हम पर धिक्कार है।” ३७ इसलिए अब महासभा समेत सैन्य-दल के सरदार को समझाओ, कि उसे तुझेरे पास ले आए, मानो कि तुम उसके विषय में और भी ठीक से जाँच करना चाहते हो, और हम उसके पहँचने से पहले ही उसे मार डालने के लिये तैयार रहेंगे।” ३८ और पौलस के भाजे ने सुना कि वे उसकी घात में हैं, तो गढ़ में जाकर पौलस को सद्देश दिया। ३९ पौलस ने सबेदारों में से एक को अपने पास बुलाकर कहा, “इस जवान को सैन्य-दल के सरदार के पास ले जाओ, यह उससे कुछ कहना चाहता है।” ४० अतः उसने उसको सैन्य-दल के सरदार के पास ले जाकर कहा, “बन्दी पौलस ने मुझे बुलाकर विनती की, कि यह जवान सैन्य-दल के सरदार से कुछ कहना चाहता है; इसे उसके पास ले जाओ।” ४१ सैन्य-दल के सरदार ने उसका हाथ पकड़कर, और उसे अलग ले जाकर पछा, “तू मुझसे क्या कहना चाहता है?” ४२ उसने कहा, “यहदियों ने एका किया है, कि तुझ से विनती करें कि कल पौलस को महासभा में लाए, मानो तू और ठीक से उसकी जाँच करना चाहता है।” ४३ परन्तु उनकी मत मानना, क्योंकि उनमें से चालीस के ऊपर मनुष्य उसकी घात में हैं, जिन्होंने यह ठान लिया है कि जब तक वे पौलस को मार न डालें, तब तक न खाँएँ और न पीँएँ, और अब वे तैयार हैं और तेरे बचन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।” ४४ तब सैन्य-दल के सरदार ने जवान को यह निर्देश देकर विदा किया, “किसी से न कहना कि तुने मुझ को ये बातें बताई हैं।” ४५ उसने तब दो सूबेदारों को बुलाकर कहा, “दो सौ सिपाही, सत्तर सवार, और दो सौ भालैत को कैसरिया जाने के लिये तैयार कर रख, तू रात के तीसरे पहर को निकलना।” ४६ और पौलस की सवारी के लिये घोड़े तैयार रखो कि उसे फेलिक्स राज्यपाल के पास सुरक्षित पहुँचा दें।” ४७ उसने इस प्रकार की चिठ्ठी भी लिखी: ४८ “महाप्रतापी फेलिक्स राज्यपाल को कलौदियस लूसियास को नमस्कार; ४९ इस मनुष्य को यहदियों ने पकड़कर मार डालना चाहा, परन्तु जब मैंने जान कि वो रोमी है, तो सैन्य-दल लेकर छुड़ा लाया।” ५० और मैं जानना चाहता था, कि वे उस पर किस कारण दोष लगाते हैं, इसलिए उसे उनकी महासभा में ले गया। ५१ तब मैंने जान लिया, कि वे अपनी व्यवस्था के विवादों के विषय में उस पर दोष लगाते हैं, परन्तु मार डाले जाने या बाँधे जाने के योग्य उसमें कोई दोष नहीं। ५२ और जब मुझे बताया गया, कि वे इस मनुष्य की घात में लगे हैं तो मैंने तुरन्त उसको तेरे पास भेज दिया; और मुझदियों को भी आज्ञा दी, कि तेरे सामने उस पर आरोप लगाए।” ५३ अतः जैसे सिपाहियों को आज्ञा दी गई थी, वैसे ही पौलस को लेकर रातों-रात अन्तिप्रिया में लाए। ५४ दूसरे दिन वे सवारों को उसके साथ जाने के लिये छोड़कर आप गढ़ को लैटे। ५५ उन्होंने कैसरिया में पहुँचकर राज्यपाल को चिठ्ठी दी; और पौलस को भी उसके सामने खड़ा किया। ५६ उसने पढ़कर पछा, “यह किस प्रदेश का है?” और जब जान लिया कि कितिकिया का है; ५७ तो उससे कहा, “जब तेरे मुझी भी आँएँ, तो मैं तेरा मुकदमा करँगा।” और उसने उसे हेदेस के किले में, पहरे में रखने की आज्ञा दी।

२४ पाँच दिन के बाद हन्नयाह महायाजक कई प्राचीनों और तिरतुल्लुस नापक किसी वकील को साथ लेकर आया; उन्होंने राज्यपाल के सामने पौलस पर दोषारोपण किया। २५ जब वह बुलाया गया तो तेरितुल्लुस उस पर दोष लगाकर कहने लगा, “हे महाप्रतापी फेलिक्स, तेरे द्वारा हमें जो बड़ा कुशल होता है; और तेरे प्रबन्ध से इस जाति के लिये कितनी बुराइयाँ सुधरती जाती हैं।” २६ “इसको हम हर जगह और हर प्रकार से धन्यवाद के साथ मानते हैं।” २७ परन्तु इसलिए कि तुझे और दुःख नहीं देना चाहता, मैं तुझ से विनती

करता हूँ, कि कृपा करके हमारी दो एक बातें सुन ले। ५ क्योंकि हमने इस मनुष्य को उपद्रवी और जगत के सारे यहदियों में बलवा करानेवाला, और नासरियों के कुपंथ का मुखिया पाया है। ६ उसने मन्दिर को अशुद्ध करना चाहा, और तब हमने उसे बन्दी बना लिया। [हमने उसे अपनी व्यवस्था के अनुसार दण्ड दिया होता; ७ परन्तु सैन्य-दल के सरदार लूसियास ने आकर उसे बलपूर्वक हमारे हाथों से छीन लिया, ८ और इस पर दोष लगाने वालों को तेरे सम्पुख अनेकी की आज्ञा दी।] इन सब बातों को जिनके विषय में हम उस पर दोष लगाते हैं, तस्वीर उसको जाँच करके जान लेगा।” ९ यहदियों ने भी उसका साथ देकर कहा, ये बातें इसी प्रकार की हैं। १० जब राज्यपाल ने पौलसु को बोलने के लिये संकेत किया तो उसने उत्तर दिया: “मैं यह जानकर कि तु बहुत वर्षों से इस जाति का न्याय करता है, अनन्द से अपना प्रत्युत्तर देता हूँ। ११ तू आप जान सकता है, कि जब से मैं यस्शलेम में आराधना करने को आया, मुझे बारह दिन से ऊपर नहीं हुए। १२ उन्होंने मुझे न मन्दिर में, न आराधनालयों में, न नगर में किसी से विवाद करते या भीड़ लगाते पाया; १३ और न तो वे उन बातों को, जिनके विषय में वे अब मुझ पर दोष लगाते हैं, तेरे सामने उठाते सच प्रमाणित कर सकते हैं। १४ परन्तु यह मैं तेरे सामने मान लेता हूँ, कि जिस पंथ को वे कुपंथ कहते हैं, उसी की रीति पर मैं अपने पर्वजों के परमेश्वर की सेवा करता हूँ; और जो बातें व्यवस्था और भविष्यद्वत्काओं की पुस्तकों में लिखी हैं, उन सब पर विश्वास करता हूँ। १५ और परमेश्वर से आशा रखता हूँ जो वे आप भी रखते हैं, कि धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा। १६ इससे मैं आप भी यत्र करता हूँ, कि परमेश्वर की और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे। १७ बहुत वर्षों के बाद मैं अपने लोगों को दान पहुँचाने, और भेंट चढ़ाने आया था। १८ उन्होंने मुझे मन्दिर में, शुद्ध दशा में, बिना भीड़ के साथ, और बिना दंगा करते हुए इस काम में पाया। परन्तु वहाँ आसिया के कुछ यहदी थे - और उनको उचित था, १९ कि यदि मेरे विरोध में उनकी कोई बात हो तो यहाँ तेरे सामने आकर मुझ पर दोष लगाते २० या ये आप ही कहें, कि जब मैं महासभा के सामने खड़ा था, तो उन्होंने मुझ में कौन सा अपराध पाया? २१ इस एक बात को छोड़ जो मैंने उनके बीच में खड़े होकर पुकारकर कहा था, ‘मेरे हुओं के जी उठों के विषय में आज मेरा तुम्हारे सामने मुकदमा हो रहा है।’” २२ फेलिक्स ने जो इस पंथ की बातें ठीक-ठीक जानता था, उन्हें यह कहकर टाल दिया, “जब सैन्य-दल का सरदार लूसियास आएगा, तो तुम्हारी बात का निर्णय करँगा।” २३ और सूबेदार को आज्ञा दी, कि पौलस को कुछ छूट में रखकर रखवाली करना, और उसके मित्रों में से किसी को भी उसकी सेवा करने से न रोकना। २४ कुछ दिनों के बाद फेलिक्स अपनी पत्री दूसिल्ला को, जो यहदिनी थी, साथ लेकर आया और पौलस को बुलावाकर उस विश्वास के विषय में जो मसीह यशी पर है, उससे सुना। २५ जब वह धार्मिकता और संयम और आनेवाले न्याय की चर्चा कर रहा था, तो फेलिक्स ने भयभीत होकर उत्तर दिया, “अभी तो जा; अवसर पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊँगा।” २६ उसे पौलस से कुछ धन मिलने की भी आशा थी, इसलिए और भी बुला-बुलाकर उससे बातें किया करता था। २७ परन्तु जब दो वर्ष बीत गए, तो पुराकियुस फेस्तुस, फेलिक्स की जगह पर आया, और फेलिक्स यहदियों को खुश करने की इच्छा से पौलस को बन्दी ही छोड़ गया।

२८ फेस्तुस उस प्रान्त में पहुँचकर तीन दिन के बाद कैसरिया से यस्शलेम को गया। २९ तब प्रधान याजकों ने, और यहदियों के प्रमुख लोगों ने, उसके सामने पौलस पर दोषारोपण की; ३० और उससे विनती करके उसके

विरोध में यह चाहा कि वह उसे यस्शलेम में बुलवाए, क्योंकि वे उसे रास्ते ही मैं मार डालने की घात लगाए हुए थे। ३१ फेस्तुस ने उत्तर दिया, “पौलसु कैसरिया में कैदी है, और मैं स्वयं जलद वहाँ जाऊँगा।” ३२ फिर कहा, “तुम से जो अधिकार रखते हैं, वे साथ चलें, और यदि इस मनुष्य ने कुछ अनुचित काम किया है, तो उस पर दोष लगाएँ।” ३३ उनके बीच कोई आठ दस दिन रहकर वह कैसरिया गया: और दूसरे दिन न्याय आसन पर बैठकर पौलस को लाने की आज्ञा दी। ३४ जब वह आया, तो जो यहदी यस्शलेम से आए थे, उन्होंने आस-पास खड़े होकर उस पर बहुत से गम्भीर दोष लगाए, जिनका प्रमाण वे नहीं दे सकते थे। ३५ परन्तु पौलस ने उत्तर दिया, “मैंने न तो यहदियों की व्यवस्था के और न मन्दिर के, और न कैसर के विद्धु कोई अपराध किया है।” ३६ तब फेस्तुस ने यहदियों को खुश करने की इच्छा से पौलस को उत्तर दिया, “क्या तू चाहत है कि यस्शलेम को जाएँ, और वहाँ मेरे सामने तेरा यह मुकदमा तय किया जाएँ?” ३७ पौलस ने कहा, “मैं कैसर के न्याय आसन के सामने खड़ा हूँ; मेरे मुकदमे का यहीं फैसला होना चाहिए। जैसा तू अच्छी तरह जानता है, यहदियों का मैंने कुछ अपराध नहीं किया। ३८ यदि अपराधी हूँ और मार डाले जाने योग्य कोई काम किया है, तो मरने से नहीं मुकरता; परन्तु जिन बातों का ये मुझ पर दोष लगाते हैं, यदि उनमें से कोई बात सच न ठहरे, तो कोई मुझे उनके हाथ नहीं सौंप सकता। मैं कैसर की दुहाई देता हूँ।” ३९ तब फेस्तुस ने मत्रियों की सभा के साथ विचार करके उत्तर दिया, “तूने कैसर की दुहाई दी है, तो तू कैसर के पास ही जाएगा।” ४० कुछ दिन बीतने के बाद अग्रिप्पा राजा और बिरनीके ने कैसरिया में आकर फेस्तुस से भेंट की। ४१ उनके बहुत दिन बहाँ रहने के बाद फेस्तुस ने पौलस के विषय में राजा को बताया, “एक मनुष्य है, जिसे फेलिक्स बन्दी छोड़ गया है। ४२ जब मैं यस्शलेम में था, तो प्रधान याजकों और यहदियों के प्राचीनीयों ने उस पर दोषारोपण किया और चाहा, कि उस पर दण्ड की आज्ञा दी जाए। ४३ परन्तु मैंने उनको उत्तर दिया, कि रोमियों की यह रीति नहीं, कि किसी मनुष्य को दण्ड के लिये सौंप दें, जब तक आरोपी को अपने दोष लगाने वालों के सामने खड़े होकर दोष के उत्तर देने का अवसर न मिले। ४४ अतः जब वे यहाँ उपस्थित हुए, तो मैंने कुछ देर न की, परन्तु दूसरे ही दिन न्याय आसन पर बैठकर, उस मनुष्य को लाने की आज्ञा दी। ४५ जब उसके मुद्द़े खड़े हुए, तो उन्होंने ऐसी बुरी बातों का दोष नहीं लगाया, जैसा मैं समझता था। ४६ परन्तु अपने मत के, और यीशु नामक किसी मनुष्य के विषय में जो मर गया था, और पौलस उसको जीवित बताता था, विवाद करते थे। ४७ और मैं उलझन में था, कि इन बातों का पता कैसे लगाऊँ? इसलिए मैंने उससे पूछा, ‘क्या तू यस्शलेम जाएगा, कि वहाँ इन बातों का फैसला होता है?’ ४८ परन्तु जब पौलस ने दुहाई दी, कि मेरे मुकदमे का फैसला महाराजाधिराज के यहाँ हो; तो मैंने आज्ञा दी, कि जब तक उसे कैसर के पास न भेजँ, उसकी रखवाली की जाए।” ४९ तब अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, “मैं भी उस मनुष्य की सुनना चाहता हूँ।” ५० उसने कहा, “तू कूल सुन लेगा।” ५१ अतः दूसरे दिन, जब अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम से आकर सैन्य-दल के सरदारों और नगर के प्रमुख लोगों के साथ दरबार में पहुँचे। तब फेस्तुस ने आज्ञा दी, कि वे पौलस को ले ले आएँ। ५२ फेस्तुस ने कहा, “हे महाराजा अग्रिप्पा, और हे सब मनुष्यों जो यहाँ हमारे साथ हो, तुम इस मनुष्य को देखते हो, जिसके विषय में सरो यहदियों ने यस्शलेम में और यहाँ भी चिल्ला चिल्लाकर मुझसे विनती की, कि इसका जीवित रहना उचित नहीं। ५३ परन्तु मैंने जान लिया कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया कि मार डाला जाए; और जबकि उसने आप ही महाराजाधिराज की दुहाई दी, तो मैंने उसे भेजने का निर्णय किया। ५४ परन्तु मैंने उसके विषय में

कोई ठीक बात नहीं पाइं कि महाराजाधिराज को लिखूँ, इसलिए मैं उसे तुम्हारे सामने और विशेष करके है राजा अग्रिष्ठा तेरे सामने लाया हूँ, कि जाँचने के बाद मुझे कुछ लिखें को मिले। २७ क्योंकि बन्दी को भेजना और जो दोष उस पर लगाए गए, उन्हें न बताना, मुझे व्यर्थ समझ पड़ता है।”

२६ अग्रिष्ठा ने पौलस से कहा, “तुझे अपने विषय में बोलने की अनुमति है।” तब पौलस हाथ बढ़ाकर उत्तर देने लगा, १ “हे राजा अग्रिष्ठा, जितनी बातों का यहदी मुझ पर दोष लगाते हैं, आज तेरे सामने उनका उत्तर देने में मैं अपने को धन्य समझता हूँ, २ विशेष करके इसलिए कि तू यहदियों के सब प्रथाओं और विवादों को जानता है। अतः मैं विनिटी करता हूँ, धीरज से मेरी सुन ले। ३ “जैसा मेरा चाल-चलन अराम्भ से अपनी जाति के बीच और यस्सलेम में जैसा था, यह सब यहदी जानते हैं। ४ वे यदि गवाही देना चाहते हैं, तो आराम्भ से मुझे पहचानते हैं, कि मैं फरीसी होकर अपने धर्म के सबसे खेरे पंथ के अनुसार चला। ५ और अब उस प्रतिज्ञा की आशा के कारण जो परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से की थी, मुझ पर मुकद्दमा चल रहा है। ६ उसी प्रतिज्ञा के पूरे होने की आशा लगाए हुए, हमारे बारहों गोत्र अपने सारे मन से रात-दिन परमेश्वर की सेवा करते आए हैं। हे राजा, इसी आशा के विषय में यहदी मुझ पर दोष लगाते हैं। ७ जबकि परमेश्वर मरे हुओं को जिलाता है, तो तुम्हारे यहाँ यह बात क्यों विश्वास के योग्य नहीं समझी जाती? ८ “मैंने भी समझा था कि यीशु नासरी के नाम के विरोध में मुझ बहुत कुछ करना चाहिए। ९ और मैंने यस्सलेम में ऐसा ही किया; और प्रधान याजकों से अधिकार पाकर बहुत से पवित्र लोगों को बन्दीगृह में डाला, और जब वे मार डाले जाते थे, तो मैं भी उनके विरोध में अपनी सम्मति देता था। १० और हर आगाधनलय में मैं उहें ताइना दिला-दिलाकर यीशु की निन्दा करतावा था, यहाँ तक कि क्रोध के मारे ऐसा पागल हो गया कि बाहर के नगरों में भी जाकर उहें सताता था। ११ “इसी धून में जब मैं प्रधान याजकों से अधिकार और आजापत्र लेकर दमिश्क को जा रहा था; १२ तो हे राजा, मार्ग में दोपहर के समय मैंने आकाश से सूर्य के तेज से भी बढ़कर एक ज्योति, अपने और अपने साथ चलनेवालों के चारों ओर चमकती हुई देखी। १३ और जब हम सब भूमि पर गिर पड़े, तो मैंने इन्हाँनी भाषा में, मुझसे कहते हुए यह वाणी सुनी, ‘हे शाऊल, हे शाऊल, तु मुझे क्यों सताता है? मैंने पर लात मारना तेरे लिये कठिन है।’ १४ मैंने कहा, ‘हे प्रभु, तू कौन है?’ प्रभु ने कहा, ‘मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है। १५ परन्तु तू उठ, अपने पाँवों पर खड़ा हो; क्योंकि मैंने तुझे इसलिए दर्शन दिया है कि तुझे उन बातों का भी सेवक और गवाह ठहराऊँ, जो तेरे देखी हैं, और उनका भी जिनके लिये मैं तुझे दर्शन दूँगा। १६ और मैं तुझे तेरे लोगों से और अन्यजातियों से बचाता रहूँगा, जिनके पास मैं अब तुझे इसलिए भेजता हूँ। १७ कि तू उनकी आँखें खलें, कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें; कि पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, विरासत पाएँ।” १८ अतः हे राजा अग्रिष्ठा, मैंने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली, १९ परन्तु पहले दमिश्क के, फिर यस्सलेम के रहनेवालों को, तब यहदिया के सारे देश में और अन्यजातियों को समझाता रहा, कि मन फिराओ और परमेश्वर की ओर फिरकर मन फिराव के योग्य काम करो। २० इन बातों के कारण यहदी मुझे मन्दिर में पकड़कर मार डालने का यथा करते थे। २१ परन्तु परमेश्वर की सहायता से मैं आज तक बना हूँ और छोटे बडे सभी के सामने गवाही देता हूँ, और उन बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता, जो भविष्यद्वकाओं और मूसा ने भी कहा कि होनेवाली है, २२ कि मरीह को दुःख उठाना होगा, और वही सबसे पहले मरे हुओं में से जी उठकर, हमारे लोगों में और अन्यजातियों में ज्योति

का प्रचार करेगा।” २३ जब वह इस रीति से उत्तर दे रहा था, तो फेस्तुस ने ऊँचे शब्द से कहा, “हे पौलस, तू पागल है। बहुत विद्या ने तुझे पागल कर दिया है।” २४ परन्तु उसने कहा, “हे महारातीपी फेस्तुस, मैं पागल नहीं, परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूँ। २५ राजा भी जिसके सामने मैं निरंद होकर बोल रहा हूँ, ये बातें जानता है, और मुझे विश्वास है, कि इन बातों में से कोई उससे छिपी नहीं, क्योंकि वह घटना तो कोने में नहीं हुई। २६ वे राजा अग्रिष्ठा, क्या तू भविष्यद्वकाओं का विश्वास करता है? हाँ, मैं जानता हूँ, कि तू विश्वास करता है।” २७ अब अग्रिष्ठा ने पौलस से कहा, “क्या तू थोड़े ही समझाने से मुझे मरीही बनाना चाहता है?” २८ पौलस ने कहा, “परमेश्वर से मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़े में, क्या बहुत में, केवल तू ही नहीं, परन्तु जितने लोग आज मेरी सुनते हैं, मेरे इन बध्नों को छोड़ वे मेरे समान हो जाएँ।” २९ तब राजा और राज्यपाल और बिरनीके और उनके साथ बैठेनेवाले उठ खड़े हुए; ३० और अलग जाकर आपस में कहने लगे, “यह मनुष्य ऐसा तो कुछ नहीं करता, जो मृत्यु-दण्ड या बन्दीगृह में डाले जाने के योग्य हो। ३१ अग्रिष्ठा ने फेस्तुस से कहा, “यदि यह मनुष्य कैसर की दुहाई न देता, तो छूट सकता था।”

२७ जब यह निश्चित हो गया कि हम जहाज द्वारा इतालिया जाएँ, तो उन्होंने पौलस और कुछ अन्य बन्दियों को भी यूलियुस नामक औग्स्टस की सैन्य-दल के एक सूबेदार के हाथ सौंप दिया। ३ अद्युत्तियुम के एक जहाज पर जो आसिया के किनारे की जगहों में जाने पर था, चढ़कर हमने उसे खोल दिया, और अरिस्तर्थुस नामक थिस्सलुनीक का एक मकिटुनी हमारे साथ था। ४ दूसरे दिन हमने सीढ़ों में लंगर डाला और यूलियुस ने पौलस पर कूपा करके उसे मित्रों के यहाँ जाने दिया कि उसका सत्कार किया जाए। ५ वहाँ से जहाज खोलकर हवा विस्फु होने के कारण हम साइप्रस की आड में होकर चले; ६ और किलिक्या और पंफलिया के निकट के समुद्र में होकर लूसिया के मूरा में उतरे। ७ वहाँ सूबेदार को सिक्कन्दरिया का एक जहाज इतालिया जाता हुआ मिला, और उसने हमें उस पर चढ़ा दिया। ८ जब हम बहुत दिनों तक धीरे चलकर कठिनता से कनिदुस के सामने पहुँचे, तो इसलिए कि हवा हमें आगे बढ़ने न देती थी, हम सलमोने के सामने से होकर क्रेते की आड में चले; ९ और उसके किनारे-किनारे कठिनता से चलकर ‘शुभलंगरबारी’ नामक एक जगह पहुँचे, जहाँ से लसया नगर निकट था। १० जब बहुत दिन बीत गए, और जलयात्रा में जोखिम इसलिए होती थी कि उपवास के दिन अब बीत चुके थे, तो पौलस ने उन्हें यह कहकर चेतावनी दी, ११ “सज्जनों, मुझे ऐसा जान पड़ता है कि इस यात्रा में विषपति और बहुत हानि, न केवल माल और जहाज की बरन हमारे प्राणों की भी होनेवाली है।” १२ परन्तु सूबेदार ने कमान और जहाज के स्वामी की बातों को पौलस की बातों से बढ़कर माना। १३ वह बन्दरगाह जाडा काटने के लिये अच्छा न था; इसलिए बहुतों का विचार हुआ कि वहाँ से जहाज खोलकर यदि किसी रीति से हो सके तो फीनिक्स में पहुँचकर जाडा काटें। यह तो क्रेते का एक बन्दरगाह है जो दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम की ओर खुलता है। १४ जब दक्षिणी हवा बहने लगी, तो उन्होंने सोचा कि उन्हें जिसकी जस्तर थी वह उनके पास थी, इसलिए लंगर उठाया और किनारे के किनारे, समुद्र तट के पास चल दिए। १५ परन्तु थोड़ी देर में जमीन की ओर से एक बड़ी आँधी उठी, जो ‘यूरकुलीन’ कहलाती है। १६ जब आँधी जहाज पर लगी, तब वह हवा के सामने ठहर न सका, अतः हमने उसे बहने दिया, और इसी तरह बहुते हुए चले गए। १७ तब कौदा नामक एक छोटे से टापू की आड में बहते-बहते हम कठिनता से ढोंगी को बश में

कर सके। १७ फिर मल्लाहों ने उसे उठाकर, अनेक उपाय करके जहाज को नीचे से बाँधा, और सुतिस के रेत पर टिक जाने के भय से पाल और सामान उतार कर बहते हुए चले गए। १८ और जब हमने आँधी से बहुत हिचकोले और धक्के खाए, तो दूसरे दिन वे जहाज का माल फेंकने लगे; १९ और तीसरे दिन उन्होंने अपने हाथों से जहाज का साज-सामान भी फेंक दिया। २० और जब बहुत दिनों तक न सूर्य न तरों दिखाई दिए, और बड़ी आँधी चल रही थी, तो अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही। २१ जब वे बहुत दिन तक खेले रहे चुके, तो पौलस ने उनके बीच में खड़ा होकर कहा, “हे लोगों, चाहिए था कि तुम मेरी जात मानकर, क्रेते से न जहाज खोलते और न यह विपत्ति आती और न यह हानि उठाते। २२ परन्तु अब मैं तुम्हें समझाता हूँ कि ढाढ़स बाँधो, क्योंकि तुम में से किसी के प्राण की हानि न होगी, पर केवल जहाज की। २३ क्योंकि परमेश्वर जिसका मैं हूँ, और जिसकी सेवा करता हूँ, उसके स्वर्वदा ने आज रात मेरे पास आकर कहा, २४ ‘हे पौलस, मत डर! तुझे कैसर के सामने खड़ा होना अवश्य है। और देख, परमेश्वर ने सब को जो तेरे साथ आता करते हैं, तुझे दिया है।’ २५ इसलिए, हे सज्जनों, ढाढ़स बाँधो; क्योंकि मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ, कि जैसा मुझसे कहा गया है, वैसा ही होगा। २६ परन्तु हमें किसी टापू पर जा टिकना होगा।” २७ जब चौदहवीं रात हुई, और हम अद्विया समुद्र में भटक रहे थे, तो आयी रात के निकट मल्लाहों ने अन्मान से जाना कि हम किसी देश के निकट पहुँच रहे हैं। २८ थाह लेकर उन्होंने बीस पुरसा गहरा पाया और थोड़ा आगे बढ़कर फिर थाह ली, तो पन्द्रह पुरसा पाया। २९ तब पत्थरीली जगहों पर पड़ने के डर से उन्होंने जहाज के पीछे चार लंगर डाले, और भोर होने की कामना करते रहे। ३० परन्तु जब मल्लाह जहाज पर से भागना चाहते थे, और गलही से लंगर डालने के बहाने डोंगी समुद्र में उतार दी; ३१ तो पौलस ने सूबेदार और सिपाहियों से कहा, “यदि ये जहाज पर न रहें, तो तुम भी नहीं बच सकते।” ३२ तब सिपाहियों ने रस्से काटकर डोंगी गिरा दी। ३३ जब भोर होने पर था, तो पौलस ने यह कहकर, सब को भोजन करने को समझाया, “आज चौदह दिन हुए कि तुम आस देखते-देखते खेले रहे, और कुछ भोजन न किया। ३४ इसलिए तुम्हें समझाता हूँ कि कुछ खा लो, जिससे तुम्हारा बचाव हो; क्योंकि तुम में से किसी के सिर का एक बाल भी न गिरेगा।” ३५ और यह कहकर उसने रोटी लेकर सब के सामने परमेश्वर का धन्यवाद किया और तोड़कर खाने लगा। ३६ तब वे सब भी ढाढ़स बाँधकर भोजन करने लगे। ३७ हम सब मिलकर जहाज पर दो सौ छिह्नत जन थे। ३८ जब वे भोजन करके तुम हुए, तो गेहूँ को समुद्र में फेंककर जहाज हल्का करने लगे। ३९ जब दिन निकला, तो उन्होंने उस देश को नहीं पहचाना, परन्तु एक खाड़ी देखी जिसका चौरास किनारा था, और विचार किया कि यदि हो सके तो इसी पर जहाज को टिकाएँ। ४० तब उन्होंने लंगरों को खोलकर समुद्र में छोड़ दिया और उसी समय पतवारों के बन्धन खोल दिए, और हवा के सामने अगला पाल चाढ़ाकर किनारे की ओर चले। ४१ परन्तु दो समुद्र के संगम की जगह पड़कर उन्होंने जहाज को टिकाया, और गलही तो धक्का खाकर गड़ गई, और टल न सकी, परन्तु जहाज का पीछला भाग लहरों के बल से टूटने लगा। ४२ तब सिपाहियों का यह विचार हुआ कि बन्दियों को मार डालें, ऐसा न हो कि कोई तैर कर निकल भागे। ४३ परन्तु सूबेदार ने पौलस को बचाने की इच्छा से उन्हें इस विचार से रोका, और यह कहा, कि जो तैर सकते हैं, पहले कूदकर किनारे पर निकल जाएँ। ४४ और बाकी कोई पटरों पर, और कोई जहाज की अन्य वस्तुओं के सहारे निकल जाएँ, इस रीत से सब कोई भूमि पर बच निकले।

२८ जब हम बच निकले, तो पता चला कि यह टापू माल्टा कहलाता है। २९ और वहाँ के निवासियों ने हम पर अनोखी कृपा की, क्योंकि मैंहे के कारण जो बरस रहा था और जाड़े के कारण, उन्होंने आग सुलगाकर हम सब को ठहराया। ३० जब पौलस ने लकड़ियों का गष्टा बटोरकर आग पर रखा, तो एक साँप को उसके हाथ में लटके हुए देखा, तो आपस में कहा, “सचमुच यह मनुष्य हत्यारा है, कि यधि प्रसुद्र से बच गया, तो भी न्याय ने जीवित रहने न दिया।” ३१ तब उसने साँप को आग में झटक दिया, और उसे कुछ हानि न पहुँची। ३२ परन्तु वे प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह सूख जाएगा, या एकाएक गिरकर मर जाएगा, परन्तु जब वे बहुत देर तक देखते रहे और देखा कि उसका कुछ भी नहीं बिगड़ा, तो और ही विचार कर कहा, “यह तो कोई देवता है।” ३३ उस जगह के आस-पास पुबलियुस नामक उस टापू के प्रधान की भूमि थी; उसने हमें अपने घर ले जाकर तीन दिन मित्रावास से पहली दिन। ३४ पुबलियुस के पिता तेज बुखार और पेचिश से रोगी पड़ा था। अतः पौलस ने उसके पास घर में जाकर प्रार्थना की, और उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया। ३५ जब ऐसा हुआ, तो उस टापू के बाकी बीमार आए, और चंगे किए गए। ३६ उन्होंने हमारा बहुत आदर किया, और जब हम चलने लगे, तो जो कुछ हमारे लिये आवश्यक था, जहाज पर रख दिया। ३७ तीन महीने के बाद हम सिकन्दरिया के एक जहाज पर चल निकले, जो उस टापू में जाड़े काट रहा था, और जिसका चिन्ह दियुमक्खी था। ३८ सुरक्षा में लंगर डाल करके हम तीन दिन टिके रहे। ३९ वहाँ से हम धूमकर रेगियुम में आए; और एक दिन के बाद दक्षिणी हवा चली, तब दूसरे दिन पुतियुली में आए। ४० वहाँ हमको कुछ भाई मिले, और उनके कहने से हम उके यहाँ सात दिन तक रहे, और इस रीत से हम रोम को चलते। ४१ वहाँ से वे भाई हमारा समाचार सुनकर अपियुस के चौक और तीन-सराय तक हमारी भेट करने को निकल आए, जिन्हें देखकर पौलस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया, और ढाढ़स बाँधा। ४२ जब हम रोम में पहुँचे, तो पौलस को एक सिपाही के साथ जो उसकी रखबाली करता था, अकेले रहने की आज्ञा हुई। ४३ तीन दिन के बाद उसने यहदियों के प्रमुख लोगों को बुलाया, और जब वे इकट्ठे हुए तो उनसे कहा, “हे भाइयों, मैंने अपने लोगों के या पूर्वजों की प्रथाओं के विरोध में कुछ भी नहीं किया, फिर भी बन्दी बनाकर यस्तालेम से रोमियों के हाथ सौंपा गया। ४४ उन्होंने मुझे जाँचकर छोड़ देना चाहा, क्योंकि मुझे मैतूं के योग्य कोई दोष न था। ४५ परन्तु जब यहाँ इसके विरोध में बोलने लगे, तो मुझे कैसर की दुहाई देनी पड़ी; यह नहीं कि मुझे अपने लोगों पर कोई दोष लगाना था। ४६ इसलिए मैंने तुम को बुलाया है, कि तुम से मिलूँ और बातचीत करँ; क्योंकि इस्माइल की आशा के लिये मैं इस जंजीर से जकड़ा हुआ हूँ।” ४७ उन्होंने उससे कहा, “न हमने तेरे विषय में यहदियों से चिठ्ठियाँ पाईं, और न भाइयों में से किसी ने आकर तेरे विषय में कुछ बताया, और न कुरा कहा। ४८ परन्तु तेरा विचार क्या है? वही हम तुम से सुनना चाहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं, कि हर जगह इस मत के विरोध में लोग बातें करते हैं।” ४९ तब उन्होंने उसके लिये एक दिन ठहराया, और बहुत से लोग उसके यहाँ इकट्ठे हुए, और वह परमेश्वर के राज्य की गवाही देता हुआ, और मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों से यीश के विषय में समझा-समझाकर भोर से साँझा तक वर्णन करता रहा। ५० तब कुछ ने उन बातों को मान लिया, और कुछ ने विश्वास न किया। ५१ जब वे आपस में एकमत न हुए, तो पौलस के इस एक बात के कहने पर चले गए, “पवित्र आत्मा ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा तुम्हारे पूर्वजों से ठीक ही कहा, ५२ ‘जाकर इन लोगों से कह, कि सुनते तो रहोगे, परन्तु न

समझोगे, और देखते तो रहोगे, परन्तु न बूझोगे; २७ क्योंकि इन लोगों का मन मोटा, और उनके कान भारी हो गए हैं, और उन्होंने अपनी आँखें बन्द की हैं, ऐसा न हो कि वे कभी आँखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से समझें और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूँ।’ २८ “अतः तुम जानो, कि परमेश्वर के इस उद्धार की कथा अन्यजातियों के पास भेजी गई है, और वे सुनेंगे।” २९ जब उसने यह कहा तो यहांटी आपस में बहुत विवाद करने लगे और वहाँ से चले गए। ३० और पौलस पैरे दो वर्ष अपने किराये के घर में रहा, ३१ और जो उसके पास आते थे, उन सबसे मिलता रहा और बिना रोक-टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।

रोमियों

१ पौलस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है, और प्रेरित होने के लिये

बुलाया गया, और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिये अलग किया गया है २ जिसकी उसने पहले ही से अपने भविष्यद्वत्काओं के द्वारा पवित्रशास्त्र में, ३ अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी, जो शरीर के भाव से तो दाऊद के बंध से उत्पन्न हुआ। ४ और पवित्रता की आत्मा के भाव से मेरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।

५ जिसके द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी मानें, ६ जिनमें से तुम भी यीशु मसीह के होने के लिये बुलाए गए हो। ७ उन सब के नाम जो रोम में परमेश्वर के व्यारे हैं और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं, हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। ८ पहले मैं तुम सब के लिये यीशु मसीह के द्वारा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है। ९ परमेश्वर जिसकी सेवा में अपनी आत्मा से उसके पुत्र के सुसमाचार के विषय में करता हूँ, वहीं मेरा गवाह है, कि मैं तुम्हें किस प्रकार लगातार स्मरण करता रहता हूँ, १० और नित्य अपनी प्रार्थनाओं में विनती करता हूँ, कि किसी रीति से अब भी तुम्हारे पास आने को मेरी यात्रा परमेश्वर की इच्छा से सफल हो। ११ क्योंकि मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूँ, कि मैं तुम्हें कोई आर्थिक वरदान दृঁ जिससे तुम स्थिर हो जाओ, १२ अर्थात् यह, कि मैं तुम्हारे बीच में होकर तुम्हारे साथ उस विश्वास के द्वारा जो मुझ में, और तुम में है, शान्ति पाऊँ। १३ और हे भाइयों, मैं नहीं चाहता कि तुम इससे अनजान रहो कि मैंने बार बार तुम्हारे पास आना चाहा, कि जैसा मुझे और अन्यजातियों में फल मिला, वैसा ही तुम में भी मिले, परन्तु अब तक स्का रहा। १४ मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का, और बुद्धिमानों और निर्विद्यियों का कर्जदार हूँ। १५ इसलिए मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूँ। १६ क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो यहदी, फिर यत्नानी के लिये, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है। १७ क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, “विश्वास से धर्मीं जन जीवित रहेगा।” १८ परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अर्थम् पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अर्थम् से दबाए रखते हैं। १९ इसलिए कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। २० क्योंकि उसके अदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखेने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निस्तर हैं। (aidios g126)

२१ इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के विषय के लिये बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहाँ तक कि उनका निर्विद्यि मन अंदरा हो गया। २२ वे अपने आपको बुद्धिमान जताकर मर्ख बन गए, २३ और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला। २४ इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया, कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। २५ क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झट बना डाला, और सुष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन। (aiōn g165) २६ इसलिए परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; यहाँ तक कि उनकी छियों ने भी

स्वाभाविक व्यवहार को उससे जो स्वभाव के विस्तृ है, बदल डाला। २७ वैसे ही पुस्त भी छियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुस्तों ने पुस्तों के साथ निर्तज्ज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया। २८ जब उन्होंने परमेश्वर को पहचाना न चाहा, तो परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया; कि वे अनुचित काम करें। २९ वे सब प्रकार के अर्थम्, और दृष्टा, और लोभ, और बैर-भाव से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर, ३० गपशप करनेवाले, निन्दा करनेवाले, परमेश्वर से घृणा करनेवाले, हिंसक, अभिमानी, डीगमार, बुरी-बुरी बातों के बनानेवाले, माता पिता की आज्ञा का उल्लंघन करनेवाले, ३१ निर्विद्यि, विश्वासघाती, स्वाभाविक व्यवहार रहित, कठोर और निर्दीय हो गए। ३२ वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले मृत्यु के दण्ड के गोयां हैं, तो भी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं वरन् करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं।

२ अतः हे दोष लगानेवाले, तू कोई क्यों न हो, तू निस्तर है; क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगाता है, उसी बात में अपने आपको भी दोषी ठहराता है, इसलिए कि त जो दोष लगाता है, स्वयं ही वही काम करता है। ३ और हम जानते हैं कि ऐसे-ऐसे काम करनेवालों पर परमेश्वर की ओर से सच्चे दण्ड की आज्ञा होती है। ४ और हे मनुष्य, त जो ऐसे-ऐसे काम करनेवालों पर दोष लगाता है, और स्वयं वे ही काम करता है, क्या यह समझता है कि तू परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा से बच जाएगा? ५ क्या तू उसकी भलाई, और सहनशीलता, और धीरजस्पी धन को तच्छ जानता है? और क्या यह नहीं समझता कि परमेश्वर की भलाई तुझे मन फिराव को सिखाती है? ६ पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिये, जिसमें परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने लिये क्रोध कमा रहा है। ७ वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा। ८ जो सुर्कम में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा; (aiōnios g166) ९ पर जो स्वार्थी हैं और सत्य को नहीं मानते, वरन् अर्थम् को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा। १० और क्लेश और संकट हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है आएंगा, पहले यहदी पर फिर यूनानी पर; ११ परन्तु महिमा और आदर और कल्याण हर एक को मिलेगा, जो भला करता है, पहले यहदी को फर यूनानी को। १२ क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता। १३ इसलिए कि जिन्होंने बिना व्यवस्था पाए पाप किया, वे बिना व्यवस्था के नाश भी होंगे, और जिन्होंने व्यवस्था पाकर पाप किया, उनका दण्ड व्यवस्था के अनुसार होगा; १४ क्योंकि परमेश्वर के यहाँ व्यवस्था के सुननेवाले धर्मी नहीं, पर व्यवस्था पर चलनेवाले धर्मी ठहराए जाएँगे। १५ फिर जब अन्यजाति लोग जिनके पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उनके पास न होने पर भी वे अपने लिये आप ही व्यवस्था हैं। १६ वे व्यवस्था की बातें अपने-अपने हैं और उनकी चिन्ताएँ परस्पर दोष लगाती, या उन्हें निर्दोष ठहराती हैं। १७ जिस दिन परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुण बातों का न्याय करेगा। १८ यदि तू स्वयं को घमण्ड करता है, १९ और उसकी इच्छा जानता है; २० यदि तू अपने पर भरोसा रखता है, कि मैं अंधों का अगुआ, और अंधकार में पड़े हुओं की ज्योति, २१ और बुद्धिमीनों का सिखानेवाला, और बालकों का उपदेशक हूँ, २२ और ज्ञान, और सत्य का नमूना, जो व्यवस्था में है, मुझे मिला है। २३ अतः क्या तू जो

औरों को सिखाता है, अपने आपको नहीं सिखाता? क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश देता है, आप ही चोरी करता है? २२ तू जो कहता है, “व्यभिचार न करना,” क्या आप ही व्यभिचार करता है? तू जो मूर्तों से धृणा करता है, क्या आप ही मन्दिरों को लटूता है? २३ तू जो व्यवस्था के विषय में घमण्ड करता है, क्या व्यवस्था न मानकर, परमेश्वर का अनादर करता है? २४ “क्योंकि तुम्हारे कराण अन्यजातियों में परमेश्वर का नाम अपमानित हो रहा है,” जैसा लिखा भी है। २५ यदि तू व्यवस्था पर चले, तो खतने से लाभ तो है, परन्तु यदि तू व्यवस्था को न माने, तो तेरा खतना बिन खतना की दशा ठहरा। २६ तो यदि खतनारहित मनुष्य व्यवस्था की विधियों को माना करे, तो क्या उसकी बिन खतना की दशा खतने के बराबर न गिरी जाएगी? २७ और जो मनुष्य शारीरिक स्पृ से बिन खतना रहा यदि वह व्यवस्था को पूरा करे, तो क्या तुझे जो लेख पाने और खतना किए जाने पर भी व्यवस्था को माना नहीं करता है, दोषी न ठहराएगा? २८ क्योंकि वह यहदी नहीं जो केवल बाहरी स्पृ में यहदी है; और न वह खतना है जो प्रगट में है और देख में है। २९ पर यहदी वही है, जो अन्तरिक है; और खतना वही है, जो हृदय का और आत्मा में है; न कि लेख का, ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है।

३ फिर यहदी की क्या बड़ाई, या खतने का क्या लाभ? २ हर प्रकार से बहुत कुछ। पहले तो यह कि परमेश्वर के वचन उनको सौंपे गए। ३ यदि कुछ विश्वासघाती निकले भी तो क्या हुआ? क्या उनके विश्वासघाती होने से परमेश्वर की सच्चाई व्यर्थ ठहरेगी? ४ कदापि नहीं! बरन् परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूँठ ठहर, जैसा लिखा है, “जिससे तू अपनी बातों में धर्मी ठहरे और न्याय करते समय तू जय पाए।” ५ पर यदि हमारा अधर्म परमेश्वर की धार्मिकता ठहरा देता है, तो हम क्या कहें? क्या यह कि परमेश्वर जो क्रोध करता है अन्यायी है? (यह तो मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूँ)। ६ कदापि नहीं! नहीं तो परमेश्वर कैसे जगत का न्याय करेगा? ७ यदि मेरे झूँठ के कारण परमेश्वर की सच्चाई उसकी महिमा के लिये अधिक करके प्रगट हुई, तो फिर क्यों पापी के समान मैं टण्ड के योग्य ठहराया जाता हूँ? ८ “हम क्यों बुराई न करें कि भलाई निकलें?” जैसा हम पर यही दोष लगाया भी जाता है, और कुछ कहते हैं कि इनका यही कहना है। परन्तु ऐसों का दोषी ठहराना ठीक है। ९ तो फिर क्या हुआ? क्या हम उनसे अच्छे हैं? कपी नहीं, क्योंकि हम यहदियों और यूनानियों दोनों पर यह दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश में हैं। १० जैसा लिखा है: “कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। ११ कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर को खोजनेवाला नहीं। १२ सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए; कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं। १३ उनका गला खुली हुई कब्र है: उन्होंने अपनी जीभों से छल किया है: उनके होठों में सँपों का विष है। १४ और उनका मुँह श्वाप और कडवाहट से भरा है। १५ उनके पाँव लह बहाने को फुर्तीले हैं। १६ उनके मार्गों में नाश और कलेश है। १७ उन्होंने कुशल का मार्ग नहीं जाना। १८ उनकी आँखों के सामने परमेश्वर का भय नहीं।” १९ हम जानते हैं, कि व्यवस्था जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के अर्थीन हैं इसलिए कि हर एक मूँह बन्द किया जाए, और सारा संसार परमेश्वर के टण्ड के योग्य ठहरे। २० क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा पाप की हफ्तचान होती है। २१ पर अब बिन व्यवस्था परमेश्वर की धार्मिकता प्रगट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वत्ता देते हैं, २२ अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से

सब विश्वास करनेवालों के लिये है। क्योंकि कुछ भेद नहीं; २३ इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है, २४ परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहरा जाते हैं। २५ उसे परमेश्वर ने उसके लह के कारण एक ऐसा प्रायश्चित्त ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहले किए गए, और जिन पर परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से ध्यान नहीं दिया; उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे। २६ बरन् इसी समय उसकी धार्मिकता प्रगट हो कि जिससे वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो। २७ तो घमण्ड करना कहाँ रहा? उसकी तो जगह ही नहीं। कौन सी व्यवस्था के कारण से? क्या कर्मों की व्यवस्था से? नहीं, बरन् विश्वास की व्यवस्था के कारण। २८ इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं, कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिन विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है। २९ तो घमण्ड करना कहाँ रहा? उसकी तो जगह ही नहीं। कौन सी व्यवस्था के कारण से? क्या कर्मों की व्यवस्था से? नहीं, बरन् विश्वास की व्यवस्था के कारण। ३० इसलिए हम व्यवस्था को विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराएगा। ३१ तो क्या हम व्यवस्था को विश्वास के द्वारा व्यर्थ ठहराते हैं? कदापि नहीं! बरन् व्यवस्था को स्थिर करते हैं।

४ तो हम क्या कहें, कि हमारे शारीरिक पिता अब्राहम को क्या प्राप्त हुआ? १ क्योंकि यदि अब्राहम कामों से धर्मी ठहराया जाता, तो उसे घमण्ड करने का कारण होता है, परन्तु परमेश्वर के निकट नहीं। २ पवित्रशास्त्र क्या कहता है? यह कि “अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया।” ३ काम करनेवाले की मजदूरी देना दान नहीं, परन्तु हक्क समझा जाता है। ४ परन्तु जो काम नहीं करता बरन् भत्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना जाता है। ५ जिसे परमेश्वर बिना कर्मों के धर्मी ठहराता है, उसे ताजद भी धन्य कहता है: ६ “धन्य वे हैं, जिनके अर्धम क्षमा हुए, और जिनके पाप ढापे गए। ७ धन्य है वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए।” ८ तो यह धन्य वचन, क्या खतनावालों ही के लिये है, या खतनारहितों के लिये भी? हम यह कहते हैं, “अब्राहम के लिये उसका विश्वास धार्मिकता गिना गया।” ९ तो वह कैसे गिना गया? खतने की दशा में या बिन खतने की दशा में? खतने की दशा में नहीं परन्तु बिन खतने की दशा में। १० और उसने खतने का चिन्ह पाया, कि उस विश्वास की धार्मिकता पर छाप हो जाए, जो उसने बिन खतने की दशा में रखा था, जिससे वह उन सब का पिता ठहरे, जो बिन खतने की दशा में विश्वास करते हैं, ताकि वे भी धर्मी ठहरें; ११ और उन खतना किए हुओं का पिता हो, जो न केवल खतना किए हुए हैं, परन्तु हमरे पिता अब्राहम के उस विश्वास के पथ पर भी चलते हैं, जो उसने बिन खतने की दशा में किया था। १२ क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, न अब्राहम को, न उसके बंश को व्यवस्था के द्वारा दी गई ईश्वरी, परन्तु विश्वास की धार्मिकता के द्वारा मिली। १३ क्योंकि यदि व्यवस्थावाले वारिस हैं, तो विश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा निष्फल ठहरी। १४ व्यवस्था तो क्रोध उपजाती है और जहाँ व्यवस्था नहीं वहाँ उसका उल्लंघन भी नहीं। १५ इसी कारण प्रतिज्ञा विश्वास पर आधारित है कि अनुग्रह की रीति पर हो, कि वह सब बंश के लिये दृढ़ हो, न कि केवल उसके लिये जो व्यवस्थावाला है वही तो हम सब का पिता है। १६ जैसा लिखा है, “मैंने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है” उस परमेश्वर के सामने जिस पर उसने विश्वास किया और जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो

बातें हैं ही नहीं, उनका नाम ऐसा लेता है, कि मानो वे हैं। १८ उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिए कि उस वचन के अनुसार कि “तेरा वंश ऐसा होगा,” वह बहुत सी जातियों का पिता हो। १९ वह जो सौ वर्ष का था, अपने मेरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हआ, २० और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर सदैह किया, पर विश्वास में ढूँढ होकर परमेश्वर की महिमा की, २१ और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी सामर्थी है। २२ इस कारण, यह उसके लिये धार्मिकता पिना गया।

२३ और यह वचन, “विश्वास उसके लिये धार्मिकता पिना गया,” न केवल उसी के लिये लिखा गया, २४ वरन् हमारे लिये भी जिनके लिये विश्वास धार्मिकता पिना जाएगा, अर्थात् हमारे लिये जो उस पर विश्वास करते हैं, जिसने हमारे प्रभु यीशु को मेरे हुओं में से जिलाया। २५ वह हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिये जिलाया भी गया।

५ क्योंकि हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें, ६ जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक जिसमें हम बने हैं, हमारी पहुँच भी हई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें। ७ केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज, ८ और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है; ९ और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है। १० क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। ११ किसी धर्मी जन के लिये कोई हमे, यह तो दुर्लभ है; परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का धैर्य दिखाए। १२ परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीत से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। १३ तो जबकि हम, अब उसके लह के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के कोथा से क्यों न बचें? १४ क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उड़ाएँ क्यों न पाएँ? १५ और केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिसके द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर में आनन्दित होते हैं। १६ इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीत से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया। १७ क्योंकि व्यवस्था के दिए जाने तक पाप जगत में तो था, परन्तु जहाँ व्यवस्था नहीं, वहाँ पाप पिना नहीं जाता। १८ तो भी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया, जिन्होंने उस आदम, जो उस आनेवाले का चिन्ह है, के अपराध के समान पाप न किया। १९ पर जैसी अपराध की दशा है, वैसी अनुग्रह के बरदान की नहीं, क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मेरे, तो परमेश्वर का अनुग्रह और उसका जो दान एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के अनुग्रह से हुआ बहुत से लोगों पर अवश्य ही अधिकाई से हुआ। २० और जैसा एक मनुष्य के पाप करने का फल हुआ, वैसा ही दान की दशा नहीं, क्योंकि एक ही के कारण दण्ड की आज्ञा का फैसला हुआ, परन्तु बहुत से अपराधों से ऐसा बरदान उत्पन्न हुआ कि लोग धर्मी ठहरे। २१ क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मसंपी बरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे। २२ इसलिए जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धार्मिकता का काम भी

सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ। २३ क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे। २४ व्यवस्था बीच में आ गई कि अपराध बहुत हो, परन्तु जहाँ पाप बहुत हुआ, वहाँ अनुग्रह उससे भी कही अधिक हुआ, २५ कि जैसा पाप ने मृत्यु फैलाते हुए राज्य किया, वैसा ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिये धर्मी ठहराते हुए राज्य करे। (aiōnios g166)

६ तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो? ७ कदापि नहीं! हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उसमें कैसे जीवन बिताएँ? ८ क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जितनों ने मसीही यीशु का बपतिस्मा लिया तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? ९ इसलिए उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मेरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नये जीवन के अनुसार चाल चलें। १० क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जट जाएँगे। ११ क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्लैस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर नाश हो जाएँ, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। १२ क्योंकि जो मर गया, वह पाप से मुक्त हो गया है। १३ इसलिए यदि हम मसीह के साथ मर गए, १४ तो हमारा विश्वास यह है कि उसके साथ क्लैस पर चढ़ाया गया, वैसे ही हम मसीह मेरे हुओं में से जी उठा और फिर कभी नहीं मेरेगा। मृत्यु उस पर प्रभुता नहीं करती। १५ क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिये जीवित है। १६ ऐसे ही तुम भी अपने आपको पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीही यीशु में जीवित समझो। १७ इसलिए पाप तुम्हारे नाशवान शरीर में राज्य न करे, कि तुम उसकी लालसाओं के अधीन रहो। १८ और न अपने अंगों को अर्धसे के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आपको मेरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धार्मिकता के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो। १९ तब तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन् अनुग्रह के अधीन हो। २० तो क्या हुआ? क्या हम इसलिए पाप करें कि हम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन् अनुग्रह के अधीन हैं? कदापि नहीं! २१ क्या तुम नहीं जानते कि जिसकी आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आपको दासों के समान सौंप देते हो उसी के दास हो: चाहे पाप के, जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिसका अन्त धार्मिकता है? २२ परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे अब मन से उस उपदेश के मानवेवाले हो गए, जिसके साँचे में ढाले गए थे, २३ और पाप से छुड़ाए जाकर धार्मिकता के दास हो गए। २४ मैं तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्यों की रीत पर कहता हूँ। जैसे तुम ने अपने अंगों को अशुद्धा और कुर्कम के दास करके सौंपा था, वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के लिये धार्मिकता के दास करके सौंप दो। २५ जब तुम पाप के दास थे, तो धार्मिकता की ओर से स्वतंत्र थे। २६ तो जिन बातों से अब तुम लज्जित होते हो, उनसे उस समय तुम क्या फल पाते थे? क्योंकि उनका अन्त तो मृत्यु है। २७ परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिससे पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है। (aiōnios g166) २८ क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है। (aiōnios g166)

७ हे भाइयों, क्या तुम नहीं जानते (मैं व्यवस्था के जाननेवालों से कहता हूँ)

कि जब तक मनुष्य जीवित रहता है, तब तक उस पर व्यवस्था की प्रभुता रहती है? २ क्योंकि विवाहित स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उससे बंधी है, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह पति की व्यवस्था से छूट गई। ३ इसलिए यदि पति के जीते जी वह किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तो व्यभिचारिणी कहलाएगी, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह उस व्यवस्था से छूट गई, यहाँ तक कि यदि किसी दूसरे पुरुष की हो जाए तो भी व्यभिचारिणी न ठहरेगी। ४ तो हे मेरे भाइयों, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मेरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मेरे हुओं में से जी उड़ा: ताकि हम परमेश्वर के लिये फल लाएँ। ५ क्योंकि जब हम शारीरिक थे, तो पापों की अभिलाषाएँ जो व्यवस्था के द्वारा थीं, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिये हमारे अंगों में काम करती थीं। ६ परन्तु जिसके बन्धन में हमथे उसके लिये मरकर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, वरन् आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं। ७ तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं! वरन् बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहचानता व्यवस्था यदि न कहती, “लालच मत कर” तो मैं लालच को न जानता। ८ परन्तु पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में सब प्रकार का लालच उत्पन्न किया, क्योंकि बिना व्यवस्था के पाप मर्द है। ९ मैं तो व्यवस्था बिना पहले जीवित था, परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जी गया, और मैं मर गया। १० और वही आज्ञा जो जीवन के लिये थी, मेरे लिये मृत्यु का कारण ठहरी। ११ क्योंकि पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझे बहकाया, और उसी के द्वारा मुझे मर भी डाला। १२ इसलिए व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा पवित्र, धर्मी, और अच्छी है। १३ तो क्या वह जो अच्छी थी, मैं लिये मृत्यु ठहरी? कदापि नहीं! परन्तु पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिये मृत्यु का उत्पन्न करनेवाला हुआ कि उसका पाप होना प्रगत हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे। १४ क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं शारीरिक हूँ और पाप के हाथ बिका हुआ हूँ। १५ और जो मैं करता हूँ उसको नहीं जानता, क्योंकि जो मैं चाहता हूँ वह नहीं किया करता, परन्तु जिससे मुझे धूमा आती है, वही करता हूँ। १६ और यदि, जो मैं नहीं चाहता वही करता हूँ, तो मैं मान लेता हूँ कि व्यवस्था भली है। १७ तो ऐसी दशा में उसका करनेवाला मैं नहीं, वरन् पाप है जो मझे में बसा हुआ है। १८ क्योंकि मैं जानता हूँ, कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझसे बन नहीं पड़ते। १९ क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूँ, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता, वही किया करता हूँ। २० परन्तु यदि मैं वही करता हूँ जिसकी इच्छा नहीं करता, तो उसका करनेवाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है। २१ तो मैं यह व्यवस्था पाता हूँ कि जब भलाई करने की इच्छा करता हूँ, तो बुराई मेरे पास आती है। २२ क्योंकि मैं भीतीरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूँ। २३ परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है। २४ मैं कैसा अभग्ना मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा? २५ हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो। इसलिए मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था की सेवा करता हूँ।

८ इसलिए अब जो मसीह यीशु मैं हूँ, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। ९ क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु

की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया। १० क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुरु को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी। ११ इसलिए कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की आज्ञा। १२ क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। १३ शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है। १४ क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है, और न हो सकता है। १५ और जो शारीरिक दशा में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। १६ परन्तु जबकि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं। १७ यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धार्मिकता के कारण जीवित है। १८ और यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मेरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है, तो जिसने मसीह को मेरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाया। १९ तो हे बाइयों, हम शरीर के कर्जदार नहीं, कि शरीर के अनुसार दिन काटें। २० क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे। २१ इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। २२ क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम है अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं। २३ पवित्र आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं। २४ और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब हम उसके साथ दुःख उठाए तो उसके साथ महिमा भी पाएँ। २५ क्योंकि मैं समझता हूँ, कि इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगत होनेवाली है, कुछ भी नहीं है। २६ क्योंकि सुषि बड़ी आशा भरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की प्रतीक्षा कर रही है। २७ क्योंकि सुषि अपनी इच्छा से नहीं पर अधीन करनेवाले की ओर से व्यर्थता के अधीन इस आशा से की गई। २८ कि सुषि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। २९ क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सुषि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है। ३० और केवल वही नहीं पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की प्रतीक्षा करते हैं। ३१ आशा के द्वारा तो हमारा उद्घार हुआ है परन्तु जिस वस्तु की आशा की जाती है जब वह देखेंगे में आए, तो फिर आशा कहाँ रही? क्योंकि जिस वस्तु को कोई देख रहा है उसकी आशा क्या करेगा? ३२ परन्तु जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उसकी आशा रखते हैं, तो धीरज से उसकी प्रतीक्षा भी करते हैं। ३३ इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये विनती करता है। ३४ और मरों का जाँचनेवाला जानता है, कि पवित्र आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलती है; अर्थात् उही के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उही के लिये

जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। ४८ क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वस्प में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहलौठा ठहरे। ४९ फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धमीं भी ठहराया है, और जिन्हें धमीं ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है। ५० तो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? ५१ जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा? ५२ परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उनको धमीं ठहरानेवाला है। ५३ फिर कौन है जो टण्ड की आज्ञा देगा? मसीह वह है जो मर गया वरन् मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है। ५४ कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नांगई, या जोखिम, या तलवार? ५५ जैसा लिखा है, “तेरे लिये हम दिन भर मार डाले जाते हैं; हम वध होनेवाली भेड़ों के समान गिने गए हैं।” ५६ परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, विजेता से भी बढ़कर हैं। ५७ क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानाताएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊँचाई, ५७ न गहराई और न कोई और सुषि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।

५ मैं मसीह में सच कहता हूँ, झुट नहीं बोलता और मेरा विवेक भी पवित्र आत्मा में गवाही देता है। ६ कि मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता है। ७ क्योंकि मैं यहाँ तक चाहता था, कि अपने भाइयों, के लिये जो शरीर के भाव से मेरे कुटुम्बी हैं, आप ही मसीह से श्रापित और अलग हो जाता। ८ वे इसाएली हैं, लेपालकपन का हक, महिमा, वाचाएँ, व्यवस्था का उपहार, परमेश्वर की उपासना, और प्रतिज्ञाएँ उन्हीं की हैं। ९ पर्जन्य भी उन्हीं के हैं, और मसीह भी शरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ, जो सब के ऊपर परमेश्वर युगान्युग धन्य है। आर्मीन। (aiōn g165) १० परन्तु यह नहीं, कि परमेश्वर का चर्चन टल गया, इसलिए कि जो इसाएल के बंश है, वे सब इसाएली नहीं; ११ और न अब्राहम के बंश होने के कारण सब उसकी सन्तान ठहरे, परन्तु (लिखा है) “इसहाक ही से तेरा बंश कहलाएगा।” १२ अर्थात् शरीर की सन्तान परमेश्वर की सन्तान नहीं, परन्तु प्रतिज्ञा के सन्तान बंश गिने जाते हैं। १३ क्योंकि प्रतिज्ञा का चर्चन यह है, “मैं इस समय के अनुसार आऊँगा, और सारा का एक पुत्र होगा।” १४ और केवल यही नहीं, परन्तु जब रिबका भी एक से अर्थात् हमारे पिता इसहाक से गर्भवती थी। १५ और अपनी तक न तो बालक जमे थे, और न उन्होंने कुछ भला या बुरा किया था, इसलिए कि परमेश्वर की मनसा जो उसके चुन लेने के अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं, परन्तु बुलनेवाले पर बर्नी रहे। १६ उसने कहा, “जेठा छोटे का दास होगा।” १७ जैसा लिखा है, “मैंने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसाव को अप्रिय जाना।” १८ तो हम क्या कहें? क्या परमेश्वर के यहाँ अयाय है? कदापि नहीं! १९ क्योंकि वह मूसा से कहता है, “मैं जिस किसी पर दया करना चाहूँ, उस पर दया करूँगा, और जिस किसी पर कृपा करना चाहूँ उसी पर कृपा करूँगा।” २० इसलिए यह न तो चाहनेवाले की, न दौड़नेवाले की परन्तु दया करनेवाले परमेश्वर की बात है। २१ क्योंकि पवित्रशास्त्र में फिरौन से कहा गया, “मैंने तुझे इसलिए खड़ा किया है, कि तुझ में अपनी सामर्थ्य दिखाऊँ, और मेरे नाम का प्रचार सारी पृथकी पर हो।” २२ तो फिर, वह जिस पर चाहत है, उस पर दया करता है; और जिसे चाहता है, उसे कठोर कर देता है। २३ फिर तू मुझसे कहेगा, “वह फिर क्यों दोष लगाता है? कौन उसकी

इच्छा का सामना करता है?” २४ हे मनुष्य, भला तू कौन है, जो परमेश्वर का सामना करता है? क्या गाढ़ी हूँ वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती है, “तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया है?” २५ क्या कुम्हार को मिट्ठी पर अधिकार नहीं, कि एक ही लोंदे में से, एक बर्तन आदर के लिये, और दूधेर को अनादर के लिये बनाए? २६ कि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी सामर्थ्य प्रगट करने की इच्छा से क्रोध के बरतनों की, जो विनाश के लिये तैयार किए गए थे बड़े धीरज से सही। २७ और दया के बरतनों पर जिन्हें उसने महिमा के लिये पहले से तैयार किया, अपने महिमा के धन को प्रगट करने की इच्छा की? २८ अर्थात् हम पर जिन्हें उसने न केवल यहदियों में से बरन् अन्यजातियों में से भी बुलाया। २९ जैसा वह होशे की पुस्तक में भी कहता है, “जो मेरी प्रजा न थी, उन्हें मैं अपनी प्रजा कहूँगा, और जो प्रिया न थी, उसे प्रिया कहूँगा; २९ और ऐसा होगा कि जिस जगह में उनसे यह कहा गया था, कि तुम मेरी प्रजा नहीं हो, उसी जगह वे जीविते परमेश्वर की सन्तान कहलाएँगे।” ३० और यशायाह इसाएल के विषय में पुकारकर कहता है, “चाहे इसाएल की सन्तानों की गिनती सम्पद के रेत के बराबर हो, तो भी उनमें से थोड़े ही बचेंगे। ३१ क्योंकि प्रभु अपना बचन पृथकी पर पूरा करके, धार्मिकता से शीघ्र उसे सिद्ध करेगा।” ३२ जैसा यशायाह ने पहले भी कहा था, “यदि सेनाओं का प्रभु हमारे लिये कुछ बंश न छोड़ता, तो हम सदोम के समान हो जाते, और गमोरा के सरीखे ठहरते।” ३३ तो हम क्या कहें? यह कि अन्यजातियों ने जो धार्मिकता की खोज नहीं करते थे, धार्मिकता प्राप्त की अर्थात् उस धार्मिकता को जो विच्वास से है; ३४ परन्तु इसाएली; जो धार्मिकता की व्यवस्था की खोज करते हुए उस व्यवस्था तक नहीं पहुँचे। ३५ किस लिये? इसलिए कि वे विच्वास से नहीं, परन्तु मानो कर्मों से उसकी खोज करते थे: उन्होंने उस ठोकर के पथर पर ठोकर खाई। ३६ जैसा लिखा है, “देखो मैं सिद्धयोन में एक ठेस लगाने का पथर, और ठोकर खाने की चटान रखता हूँ, और जो उस पर विच्वास करेगा, वह लज्जित न होगा।”

१० हे भाइयों, मेरे मन की अभिलाषा और उनके लिये परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है, कि वे उद्धार पाएँ। ११ क्योंकि मैं उनकी गवाही देता हूँ, कि उनको परमेश्वर के लिये धूम रहती है, परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं। १२ क्योंकि वे परमेश्वर की धार्मिकता से अनजान होकर, अपनी धार्मिकता स्थापित करने का यत्र करके, परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन न हुए। १३ क्योंकि हर एक विच्वास करनेवाले के लिये धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त है। १४ क्योंकि मसा व्यवस्था से प्राप्त धार्मिकता के विषय में यह लिखता है: “जो व्यक्ति उनका पालन करता है, वह उनसे जीवित रहेगा।” १५ परन्तु जो धार्मिकता विच्वास से है, वह यह कहती है, “तू अपने मन में यह न कहना कि स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा?” (अर्थात् मसीह को उतार लाने के लिये), १६ या “अद्योलोक में कौन उतेरगा?” (अर्थात् मसीह को मेरे हुओं में से जिलाकर ऊपर लाने के लिये!) (Abyssos g12) १७ परन्तु क्या कहती है? यह, कि “वचन रैत निकट है, तेरे मुँह में और तेरे मन में है,” यह वही विच्वास का वचन है, जो हम प्रचार करते हैं। १८ कि यदि तू अपने मुँह से यीश को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विच्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मेरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। १९ क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विच्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुँह से अंगीकार किया जाता है। २० क्योंकि पवित्रशास्त्र यह कहता है, “जो कोई उस पर विच्वास करेगा, वह लज्जित न होगा।” २१ यहदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिए कि वह सब का प्रभु है, और अपने सब नाम लेनेवालों के लिये उदार

है। १३ क्योंकि “जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।” १४ फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्यों ले? और जिसकी नहीं सुनी उस पर क्यों विश्वास करें? और प्रचारक बिना क्यों सुनें? १५ और यदि भेजे न जाएँ, तो क्यों प्रचार करें? जैसा लिखा है, “उनके पाँव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं!” १६ परन्तु सब ने उस सुसमाचार पर कान न लगाया। यशायाह कहता है, “हे प्रभु, किसने हमारे समाचार पर विश्वास किया है?” १७ इसलिए विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के बचन से होता है। १८ परन्तु मैं कहता हूँ, “क्या उन्होंने नहीं सुना?” सुना तो सही क्योंकि लिखा है, “उनके स्वर सारी पृथ्वी पर, और उनके बचन जगत के छोर तक पहुँच गए हैं।” १९ फिर मैं कहता हूँ। क्या इसाएली नहीं जानते थे? पहले तो मूझे कहता है, “मैं उनके द्वारा जो जाति नहीं, तुम्हारे मन में जलन उपजाऊँगा, मैं एक मूर्ख जाति के द्वारा तुम्हें रिस दिलाऊँगा।” २० फिर यशायाह बड़े साहस के साथ कहता है, “जो मुझे नहीं ढूँढते थे, उन्होंने मुझे पा लिया; और जो मुझे पछते थी न थे, उन पर मैं प्रगट हो गया।” २१ परन्तु इसाएल के विषय में वह यह कहता है “मैं सारे दिन अपने हाथ एक आज्ञा न माननेवाली और विवाद करनेवाली प्रजा की ओर पसारे रहा।”

११ इसलिए मैं कहता हूँ, क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया?

कदापि नहीं! मैं भी तो इसाएली हूँ; अब्राहम के वंश और बिन्यामीन के गोत्र में से हूँ। २२ परमेश्वर ने अपनी उस प्रजा को नहीं त्यागा, जिसे उन्होंने पहले ही से जाना: क्या तुम नहीं जानते, कि पवित्रशब्द अलियाह की कथा में क्या कहता है; कि वह इसाएल के विरोध में परमेश्वर से विनती करता है। ३ “हे प्रभु, उन्होंने तेरे भविष्यद्वकाओं को मार डाला, और तेरी वेदियों को ढा दिया है; और मैं ही अकेला बच रहा हूँ, और वे मेरे प्राण के भी खोजी हैं।” ४ परन्तु परमेश्वर से उसे क्या उत्तर मिला “मैंने अपने लिये सात हजार पुस्तों को रख छोड़ा है जिन्होंने बाल के अगे घुटने नहीं टेके हैं।” ५ इसी रीति से इस समय भी, अनुग्रह से चुने हुए कुछ लोग बाकी हैं। ६ यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मों से नहीं, नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा। ७ फिर परिणाम क्या हुआ? यह कि इसाएली जिसकी खोज में है, वह उनको नहीं मिला; परन्तु चुने हुओं को मिला और शेष लोग कठोर किए गए हैं। ८ जैसा लिखा है, “परमेश्वर ने उन्हें आज के दिन तक मंदता की आत्मा दे रखी है और ऐसी आँखें दी जो न देखें और ऐसे कान जो न सुनें।” ९ और दाऊद कहता है, “उनका भोजन उनके लिये जाल, और फंसा, और ठोकर, और दण्ड का कारण हो जाए। १० उनकी आँखों पर अधेरा छा जाए ताकि न देखें, और तू सदा उनकी पीठ को झुकाए रख।” ११ तो मैं कहता हूँ क्या उन्होंने इसलिए ठोकर खाई, कि गिर पड़े? कदापि नहीं परन्तु उनके गिरने के कारण अन्यजातियों को उद्धार मिला, कि उन्हें जलन हो। १२ अब यदि उनका पिरना जगत के लिये धन और उनकी घटी अन्यजातियों के लिये सम्पत्ति का कारण हुआ, तो उनकी भरपूरी से कितना न होगा। १३ मैं तुम अन्यजातियों से यह बातें कहता हूँ। जबकि मैं अन्यजातियों के लिये प्रेरित हूँ, तो मैं अपनी सेवा की बडाई करता हूँ, १४ ताकि किसी रीति से मैं अपने कुटुम्बियों से जलन करवाकर उनमें से कई एक का उद्धार कराऊँ। १५ क्योंकि जबकि उनका त्याग दिया जाना जगत के मिलाप का कारण हुआ, तो क्या उनका ग्रहण किया जाना मेरे हुओं में से जी उठने के बाबर न होगा? १६ जब भेट का पहला पेड़ा पवित्र ठहरा, तो पूरा गँगा हुआ आटा भी पवित्र है; और जब जड़ पवित्र ठहरी, तो डालियाँ भी ऐसी ही हैं। १७ और यदि कई एक डाली तोड़ दी गई, और तू जंगली जैतून होकर उनमें साटा गया, और जैतून की जड़ की चिकनाई का

भागी हुआ है। १८ तो डालियों पर घमण्ड न करना; और यदि तू घमण्ड करे, तो जान रख, कि तू जड़ को नहीं, परन्तु जड़ तुझे सम्भालती है। १९ फिर तू कहेगा, “डालियाँ इसलिए तोड़ी गई, कि मैं साटा जाऊँ।” २० भला, वे तो अविश्वास के कारण तोड़ी गई, परन्तु तू विश्वास से बना रहता है इसलिए अभिमानी न हो, परन्तु भय मान, २१ क्योंकि जब परमेश्वर ने स्वाभाविक डालियाँ न छोड़ी, तो तुझे भी न छोड़ेगा। २२ इसलिए परमेश्वर की दयालुता और कडाई को देखा। जो गिर गए, उन पर कडाई, परन्तु तुझ पर दयालुता, यदि तू उसमें बना रहे, नहीं तो, तू भी काट डाला जाएगा। २३ और वे भी यदि अविश्वास में न रहे, तो साटे जाएँगे क्योंकि परमेश्वर उन्हें फिर साट सकता है। २४ क्योंकि यदि तू उस जैतून से, जो स्वभाव से जंगली है, काटा गया और स्वभाव के लिये अच्छी जैतून में साटा गया, तो ये जो स्वाभाविक डालियाँ हैं, अपने ही जैतून में साटे क्यों न जाएँगे। २५ हे भाइयों, कहीं ऐसा न हो, कि तुम अपने आपको बुद्धिमान समझ लो; इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो, कि जब तक अन्यजातियाँ पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इसाएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा। २६ और इस रीति से सारा इसाएल उद्धार पाएगा; जैसा लिखा है, “छुड़ानेवाला सिय्यान से आएगा, और अभक्ति को याकूब से दूर करेगा।” २७ और उनके साथ मेरी यही बाचा होगी, जबकि मैं उनके पापों को दूर कर दूँगा।” २८ सुसमाचार के भाव से तो तुम्हारे लिए वे परमेश्वर के बैरी हैं, परन्तु चुन लिये जाने के भाव से पूर्खजों के कारण प्यारे हैं। २९ क्योंकि परमेश्वर अपने वरदानों से, और बुलाहट से कभी पीछे नहीं हटता। ३० क्योंकि जैसे तुम ने पहले परमेश्वर की आज्ञा न मानी परन्तु अभी उनके आज्ञा न मानने से तुम पर दया हुई है। ३१ वैसे ही उन्होंने भी अब आज्ञा न मानी कि तुम पर जो दया होती है इससे उन पर भी दया हो। ३२ क्योंकि परमेश्वर ने सब को आज्ञा न मानने के कारण बन्द कर रखा है ताकि वह सब पर दया करे। (eleēs g1653) ३३ अहा, परमेश्वर का धन और बुद्धि और जन क्या ही गम्भीर है! उनके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं! ३४ “प्रभु कि बुद्धि को किसने जाना? या उनका मंत्री कौन हुआ? ३५ या किसने पहले उसे कुछ दिया है जिसका बदला उसे दिया जाए?” ३६ क्योंकि उसकी ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है: उसकी महिमा युगानुस्या होती रहे। आमीन। (aiōn g165)

१२ इसलिए हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर बिनती करता हूँ

करता हूँ, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ; यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। १ और इस संसार के सदृश्य न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो। (aiōn g165) २ क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम मैं से हर एक से कहता हूँ, कि जैसा समझाना चाहिए उससे बढ़कर कोई भी अपने आपको न समझे; पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार बॉट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे। ३ क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही जैसा काम नहीं; ४ वैसा ही हम जो बहुत हैं, मरीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं। ५ और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे। ६ यदि सेवा करने का दान मिल हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे; ७ जो उपदेशक हो, वह

उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे, जो अगुआई करे, वह उत्साह से करे, जो दया करे, वह हर्ष से करे। ९ प्रेम निष्कपट हों; बुराई से घृणा करो; भलाई में लगे रहो। १० थाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर स्नेह रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। ११ प्रयत्न करने में आलीं न हो; आत्मिक उन्माद में भेर रहो; प्रभु की सेवा करते रहो। १२ आशा के विषय में, आनन्दित; क्लेश के विषय में, धैर्य रखें; प्रार्थना के विषय में, स्थिर रहें। १३ पवित्र लोगों को जो कुछ अवश्य हो, उसमें उनकी सहायता करो; पहनाई करने में लगे रहो। १४ अपने सत्तेवालों को आशीष दो; आशीष दो श्राव न दो। १५ अनन्द करनेवालों के साथ अनन्द करो, और रोनेवालों के साथ रोओ। १६ आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो। १७ बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिन्ता किया करो। १८ जहाँ तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो। १९ हे प्रियों अपना बदला न लेना; परन्तु परमेश्वर को क्रोध का अवसर दो, क्योंकि लिखा है, “बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूँगा।” २० परन्तु “यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना भिला, यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अगारों का ढेर लगाए।” २१ बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।

१३ हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के अधीन रहें; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार है, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। २ इसलिए जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का विरोध करता है, और विरोध करनेवाले दण्ड पाएँगे। ३ क्योंकि अधिपति अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिये डर का कारण है; क्या तू अधिपति से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर और उसकी ओर से तेरी सराहना होगी; ४ क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू बुराई करो, तो डर; क्योंकि वह तलवार व्यर्थ लिए हुए नहीं और परमेश्वर का सेवक है; कि उसके क्रोध के अनुसार बुरे काम करनेवाले को दण्ड दे। ५ इसलिए अधीन रहना न केवल उस क्रोध से परन्तु डर से अवश्य है, वरन् विवेक भी यही गवाही देता है। ६ इसलिए जर भी दो, क्योंकि शासन करनेवाले परमेश्वर के सेवक हैं, और सदा इसी काम में लगे रहते हैं। ७ इसलिए हर एक का हक चक्राया करो; जिसे कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे चुंगी चाहिए, उसे चुंगी दो; जिससे डरना चाहिए, उससे डरो; जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर करो। ८ आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है। ९ क्योंकि यह कि “व्यधिभार न करना, हत्या न करना, चोरी न करना, लालच न करना,” और इनको छोड़ और कोई भी आज्ञा हो तो सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, “अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।” १० प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिए प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है। ११ और समय को पहचानकर ऐसा ही करो, इसलिए कि अब तुम्हारे लिये नीद से जाग उठने की झड़ी आ पहुँची है; क्योंकि जिस समय हमने विश्वास किया था, उस समय की तुलना से अब हमारा उद्धार निकट है। १२ गत बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिए हम अंधकार के कामों को तजक्कर ज्योति के हथियार बांध लें। १३ जैसे दिन में, वैसे ही हमें उचित स्पष्ट से चलना चाहिए; न कि लीलाकीड़ा, और पियक्कड़पन, न व्यधिभार, और लुचपन में, और न झगड़े और इंज्यों में। १४ वरन् प्रभु यीशु मसीह को पहन लो, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो।

१४ जो विश्वास में निर्बल है, उसे अपनी संगति में ले लो, परन्तु उसकी शक्तिओं पर विवाद करने के लिये नहीं। १ क्योंकि एक को विश्वास है, कि सब कुछ खाना उचित है, परन्तु जो विश्वास में निर्बल है, वह साग-पात ही खाता है। २ और खानेवाला न-खानेवाले को तुच्छ न जाने, और न-खानेवाला खानेवाले पर दोष न लगाए; क्योंकि परमेश्वर ने उसे ग्रहण किया है। ३ तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बन्ध रखता है, वरन् वह स्थिर ही कर दिया जाए; क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है। ४ कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर मानता है, और कोई सब दिन एक सा मानता है: हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले। ५ जो किसी दिन को मानता है, वह प्रभु के लिये मानता है: जो खाता है, वह प्रभु के लिये खाता है, क्योंकि वह परमेश्वर का धन्यवाद करता है, और जो नहीं खाता, वह प्रभु के लिये नहीं खाता और परमेश्वर का धन्यवाद करता है। ६ क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिये जीता है, और न कोई अपने लिये मरता है। ७ क्योंकि यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिये जीवित हैं, और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिये मरते हैं; फिर हम जीएं या मरें, हम प्रभु ही के हैं। ८ क्योंकि मसीह इसलिए मरा और जी भी उठा कि वह मरे हुओं और जीवितों, दोनों का प्रभु हो। ९ तू अपने भाईं पर क्यों दोष लगाता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे। १० क्योंकि लिखा है, “प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घटना मेरे सामने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर को अंगीकार करेगी।” ११ तो फिर, हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा। १२ इसलिए आगे को हम एक दूसरे पर दोष न लगाएँ पर तुम यही ठान लो कि कोई अपने भाई के सामने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखे। १३ मैं जानता हूँ, और प्रभु यीशु से मुझे मिश्रण हुआ है, कि कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं, परन्तु जो उसको अशुद्ध समझता है, उसके लिये अशुद्ध है। १४ यदि तेरा भाई तेरे भोजन के कारण उदास होता है, तो फिर तू प्रेम की रीति से नहीं चलता; जिसके लिये मसीह मरा उसको तू अपने भोजन के द्वारा नाश न कर। १५ अब तुम्हारी भलाई की निन्दा न होने पाए। १६ क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं; परन्तु धार्मिकता और मिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है। १७ जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता है, वह परमेश्वर को भाता है और मनुष्यों में ग्रहणयोग्य ठहरता है। १८ इसलिए हम उन बातों का प्रयत्न करें जिससे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो। १९ भोजन के लिये परमेश्वर का काम न बिगाड़; सब कुछ शुद्ध तो है, परन्तु उस मनुष्य के लिये बुरा है, जिसको उसके भोजन करने से ठोकर लगती है। २० भला तो यह है, कि तू न माँस खाए, और न दाखरस पीए, न और कुछ ऐसा करो, जिससे तेरा भाई ठोकर खाए। २१ तेरा जो विश्वास हो, उसे परमेश्वर के सामने अपने ही मन में रखा। धन्य है वह, जो उस बात में, जिसे वह ठीक समझता है, अपने आपको दोषी नहीं ठहराता। २२ परन्तु जो सद्देव करके खाता है, वह दण्ड के योग्य ठहर चुका, क्योंकि वह विश्वास से नहीं खाता, और जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है।

१५ अतः हम बलवानों को चाहिए, कि निर्बलों की निर्बलताओं में सहायता करें, न कि अपने आपको प्रसन्न करें। १ हम में से हर एक अपने पड़ोसी को उसकी भलाई के लिये सुधारने के निमित्त प्रसन्न करें। २ क्योंकि मसीह ने अपने आपको प्रसन्न नहीं किया, पर जैसा लिखा है, “तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ पड़ी।” ३ जितनी बातें फहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन के द्वारा आशा रखें। ४ धीरज, और प्रोत्साहन का दाता परमेश्वर तुम्हें यह वरदान

दे, कि मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक मन रहो। ६ ताकि तुम एक मन और एक स्वर होकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की स्तुति करो। ७ इसलिए, जैसा मसीह ने भी परमेश्वर की महिमा के लिये तुम्हें ग्रहण किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो। ८ मैं कहता हूँ, कि जो प्रतिज्ञाएँ पूर्वजों को दी गई थीं, उन्हें दृढ़ करने के लिये मसीह, परमेश्वर की सच्चाई का प्रमाण देने के लिये खतना किए हुए लोगों का सेवक बना। ९ और अन्यजाति भी दया के कारण परमेश्वर की स्तुति करो, जैसा लिखा है, “इसलिए मैं जाति-जाति में तेरी स्तुति करूँगा, और तेरे नाम के भजन गाँऊ़ा।” १० फिर कहा है, “हे जाति-जाति के सब लोगों, उमकी प्रजा के साथ आनन्द करो।” ११ और फिर, “हे जाति-जाति के सब लोगों, प्रभु की स्तुति करो; और हे राज्य-राज्य के सब लोगों; उसकी स्तुति करो।” १२ और फिर यशायाह कहता है, “यिशू की एक जड़ प्रगत होगी, और अन्यजातियों का अधिपति होने के लिये एक उठेगा, उस पर अन्यजातियाँ आशा रखेंगी।” १३ परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विचास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए। १४ हे मेरे भाईयों; मैं आप भी तुहरे विषय में निश्चय जानता हूँ, कि तुम भी आप ही भलाई से भरे और ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर हो और एक दूसरे को समझा सकते हो। १५ तो भी मैंने कहीं-कहीं याद दिलाने के लिये तुम्हें जो बहुत साहस करके लिखा, यह उस अनुग्रह के कारण हुआ, जो परमेश्वर ने मुझे दिया है। १६ कि मैं अन्यजातियों के लिये मसीह यीशु का सेवक होकर परमेश्वर के सुसमाचार की सेवा याजक के समान करूँ; जिससे अन्यजातियों का मानो चढ़ाया जाना, पवित्र आत्मा से पवित्र बनकर ग्रहण किया जाए। १७ इसलिए उन बातों के विषय में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, मैं मसीह यीशु में बड़ाई कर सकता हूँ। १८ क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे और किसी बात के विषय में कहने का साहस नहीं, जो मसीह ने अन्यजातियों की अधीनता के लिये वचन, और कर्म। १९ और चिह्नों और अदृत कार्यों की सामर्थ्य से, और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से मेरे ही द्वारा किए। यहाँ तक कि मैंने यस्सलेम से लेकर चारों ओर इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार का पूरा-पूरा प्रचार किया। २० पर मेरे मन की उम्पंग यह है, कि जहाँ-जहाँ मसीह का नाम नहीं लिया गया, वही सुसमाचार सुनाऊँ; ऐसा न हो, कि दरोर की नीव पर घर बनाऊँ। २१ परन्तु जैसा लिखा है, वैसा ही हो, “जिन्हें उसका सुसमाचार नहीं पहुँचा, वे ही देखेंगे और जिन्होंने नहीं सुना वे ही समझेंगे।” २२ इसलिए मैं तुम्हरे पास आने से बार बार रोका गया। २३ परन्तु अब इन दोरों में मेरे कार्य के लिए जगह नहीं रही, और बहुत वर्षों से मुझे तुम्हरे पास आने की लालसा है। २४ इसलिए जब इसपानिया को जाऊँगा तो तुम्हरे पास होता हुआ जाऊँगा क्योंकि मुझे आशा है, कि उस यात्रा में तुम से भेंट करूँ, और जब तुम्हारी संगति से मेरा जी कुछ भर जाए, तो तुम मुझे कुछ ढू आगे पहुँचा दो। २५ परन्तु अभी तो पवित्र लोगों की सेवा करने के लिये यस्सलेम को जाता हूँ। २६ क्योंकि मकिनिया और अखाया के लोगों को यह अच्छा लगा, कि यस्सलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिये कुछ चन्दा करें। २७ उन्हें अच्छा तो लगा, परन्तु वे उनके कर्जदार भी हैं, क्योंकि यदि अन्यजाति उनकी आत्मिक बातों में भागी हुए, तो उन्हें भी उचित है, कि शारीरिक बातों में उनकी सेवा करें। २८ इसलिए मैं यह काम पूरा करके और उनको यह चन्दा सौंपकर तुम्हरे पास होता हुआ इसपानिया को जाऊँगा। २९ और मैं जानता हूँ, कि जब मैं तुम्हरे पास आऊँगा, तो मसीह की पूरी आशीष के साथ आऊँगा। ३० और हे भाईयों, मैं यीशु मसीह का जो हमारा प्रभु है और पवित्र आत्मा के प्रेम का स्मरण दिलाकर, तुम से विनती करता हूँ, कि मेरे लिये परमेश्वर

से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो। ३१ कि मैं यहदिया के अविच्वासियों से बचा रहूँ, और मेरी वह सेवा जो यस्सलेम के लिये है, पवित्र लोगों को स्वीकार्य हो। ३२ और मैं परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास अनन्द के साथ आकर तुम्हारे साथ विश्राम पाऊँ। ३३ शान्ति का परमेश्वर तुम सब के साथ रहे। आमीन।

१६ मैं तुम से फीचे के लिए, जो हमारी बहन और किंछिया की कल्तीसिया की सेविका है, विनती करता हूँ। १७ कि तुम जैसा कि पवित्र लोगों को चाहिए, उसे प्रभु में ग्रहण करो; और जिस किसी बात में उसको तुम से प्रयोग्यन हो, उसकी सहायता करो; क्योंकि वह भी बहुतों की बरन मेरी भी उपकारिणी है। १८ प्रिस्का और अक्विला को जो यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार। १९ उन्होंने मेरे प्राण के लिये अपना ही सिर दे रखा था और केवल मैं ही नहीं, बरन अन्यजातियों की सारी कल्तीसियाँ भी उनका धन्यवाद करती हैं। २० और उस कल्तीसिया को भी नमस्कार जो उनके घर में है। मेरे प्रिय ईपैनितुस को जो मसीह के लिये आसिया का पहला फल है, नमस्कार। २१ मरियम को जिसने तुम्हारे लिये बहुत परिश्रम किया, नमस्कार। २२ अन्दूनीकुस और यूनियास को जो मेरे कुटुम्बी हैं, और मेरे साथ कैद हुए थे, और प्रेरितों में नामी हैं, और मुझसे पहले मसीही हुए थे, नमस्कार। २३ अप्पलिलेस को जो प्रभु में मेरा प्रिय है, नमस्कार। २४ उरबानुस को, जो मसीह में हमारा सहकर्मी है, और मेरे प्रिय इस्तखुस को नमस्कार। २५ अपिल्लेस को जो मसीह में खरा निकला, नमस्कार। २६ अरिस्टुबुलुस के घराने को नमस्कार। २७ मेरे कुटुम्बी हेरोदियन को नमस्कार। नरकिस्सुस के घराने के जो लोग प्रभु में हैं, उनको नमस्कार। २८ ट्रैफैना और फूफोसा को जो प्रभु में परिश्रम करती है, नमस्कार। २९ स्फूस को जो प्रभु में चुना हुआ है, और उसकी माता को जो मेरी भी है, दोनों को नमस्कार। ३० अस्कितुप और फिलोगोन और हिर्मेस, पत्रुबास, हमर्स और उनको साथ के भाईयों को नमस्कार। ३१ फिलुलुस और यूलिया और नेर्युस और उसकी बहन, और उलुप्पास और उनके साथ के सब पवित्र लोगों को नमस्कार। ३२ आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो: तुम को मसीह की सारी कल्तीसियाओं की ओर से नमस्कार। ३३ अब हे भाईयों, मैं तुम से विनती करता हूँ, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम पे पाई है, फूट डालने, और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उनसे सावधान रहो; और उनसे दूर रहो। ३४ क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु उन्हें पेट की सेवा करते हैं; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं। ३५ तुम्हरे आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगों में फैल गई है; इसलिए मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूँ, परन्तु मैं यह चाहता हूँ, कि तुम भलाई के लिये बुद्धिमान, परन्तु बुराई के लिये भोले बने रहो। ३६ शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों के नीचे शीशी कुचल देगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे। ३७ तीमुथियुस मेरे सहकर्मी का, और लकियुस और यासोन और सोसिपत्रुस मेरे कुटुम्बियों का, तुम को नमस्कार। ३८ मुझ पत्नी के लिखनेवाले तिरतियुस का प्रभु में तुम को नमस्कार। ३९ गयुस का जो मेरी और कल्तीसिया का पहनाई करनेवाला है उसका तुम्हें नमस्कार: इस्तुस जो नगर का भण्डारी है, और भाई ब्वारतुस का, तुम को नमस्कार। ४० हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे। आमीन। ४१ अब जो तुम को मेरे सुसमाचार अर्थात् यीशु मसीह के विषय के प्रचार के अनुसार स्थिर कर सकता है, उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से छिपा रहा। (aiōnios g166) ४२ परन्तु अब प्रगट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वत्काओं की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है, कि

वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले हो जाएँ। (aiōnios g166) २७ उसी एकमात्र अद्वैत बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन। (aiōn g165)

1 कुरिन्थियों

१ पौलस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीश मरीह का प्रेरित होने

के लिये बुलाया गया और भाई सोस्थिनेस की ओर से। २ परमेश्वर की उस

कलीसिया के नाम जो कुरिन्थ्युस में है, अर्थात् उनके नाम जो मसीह यीश में

पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं; और उन सब के नाम

भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीश मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।

३ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीश मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और

शान्ति मिलती रहे। ४ मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्वर का धन्यवाद सदा

करता हूँ, इसलिए कि परमेश्वर का यह अनुग्रह तुम पर मसीह यीश में हुआ, ५

कि उसमें होकर तुम हर बात में अर्थात् सरे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए

गए। ६ कि मसीह की गवाही तुम में पवित्री निकली। ७ यहाँ तक कि किसी

वरदान में तुम्हें घटी नहीं, और तुम हमारे प्रभु यीश मसीह के प्रणाट होने की

प्रतीक्षा करते रहते हो। ८ वह तुम्हें अन्त तक दृढ़ भी करेगा, कि तुम हमारे प्रभु

यीश मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो। ९ परमेश्वर विश्वासयोग्य है; जिसने तुम

को अपने पुत्र हमारे प्रभु यीश मसीह की संगति में बुलाया है। १० हे भाइयों, मैं

तुम से यीश मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा विनती करता हूँ, कि

तुम सब एक ही बात कहो और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक

ही मत होकर मिले रहो। ११ क्योंकि हे मेरे भाइयों, खलाए के घराने के लोगों

ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है, कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। १२ मेरा कहना

यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आपको “पौलस का,” कोई “अपुल्लोस का,”

कोई “कैफा का,” कोई “मरीह का” कहता है। १३ क्या मसीह बैठ

गया? क्या पौलस तुम्हारे लिये कूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलस के नाम

पर बपतिस्मा मिला? १४ मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि क्रिस्पुस और

ग्युस को छोड़, मैंने तुम में से किसी को भी बपतिस्मा नहीं दिया। १५ कहीं

ऐसा न हो, कि कोई कहे, कि तुम्हें मेरे नाम पर बपतिस्मा मिला। १६ और मैंने

स्थिफनास के घराने को भी बपतिस्मा दिया; इनको छोड़, मैं नहीं जानता कि

मैंने और किसी को बपतिस्मा दिया। १७ क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने

को नहीं, वरन् सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी माझों के शब्दों

के ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का कूस वर्ध्य ठहरे। १८

क्योंकि कूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मर्हित है, परन्तु हम उद्धार

पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ्य है। १९ क्योंकि लिखा है, “मैं

ज्ञानवानों के ज्ञान को नाश करूँगा, और समझदारों की समझ को तुच्छ कर

दूँगा।” २० कहाँ रहा ज्ञानवान? कहाँ रहा शास्त्री? कहाँ रहा इस संसार का

विवादी? क्या परमेश्वर ने संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया? (aiōn g165)

२१ क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर

को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के

द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे। २२ यहाँ तो चिन्ह चाहते हैं, और

यानी ज्ञान की खोज में हैं, २३ परन्तु हम तो उस कूस पर चढ़ाए हुए मसीह का

प्रचार करते हैं जो यहदियों के निकट ठोकर का कारण, और अन्यजातियों के

निकट मर्हित है; २४ परन्तु जो बुलाए हुए हैं क्या यहाँ, क्या यानी, उनके

निकट मसीह परमेश्वर की सामर्थ्य, और परमेश्वर का ज्ञान है। २५ क्योंकि

परमेश्वर की मूर्खता माझों के ज्ञान से ज्ञानवान है; और परमेश्वर की निर्बलता

माझों के बल से बहुत बलवान है। २६ हे भाइयों, अपने बुलाए जाने को तो

सोचो, कि न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न

बहुत कुलीन बुलाए गए। २७ परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया

है, कि ज्ञानियों को लज्जित करे; और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन

लिया है, कि बलवानों को लज्जित करे। २८ और परमेश्वर ने जगत के नीचों और तुच्छों को, वरन् जो हैं भी नहीं उनको भी चुन लिया, कि उन्हें जो हैं, वर्थ ठहराए। २९ ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड न करने पाए। ३० परन्तु उर्फी की ओर से तुम मसीह यीश में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात् धार्मिकता, और पवित्रता, और छुटकारा। ३१ ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, “जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे।”

२ हे भाइयों, जब मैं परमेश्वर का भेद सनाता हुआ तुम्हारे पास आया, तो

बचन या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया। ३ क्योंकि मैंने यह ठान लिया था, कि तुम्हारे बीच यीश मसीह, वरन् कूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूँ। ४ और मैं निर्बलता और भय के साथ, और बहुत शरथरात हुआ तुम्हारे साथ रहा। ५ और मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लभनेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था,

इसलिए कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो। ६ फिर भी सिद्ध लोगों में हम ज्ञान सुनते हैं परन्तु इस

संसार का और इस संसार के नाश होनेवाले हाकिमों का ज्ञान नहीं; (aiōn g165)

७ परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया। (aiōn g165)

८ जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि जानते, तो तेजोमय प्रभु को कूस पर न चढ़ाते। (aiōn g165) ९ परन्तु जैसा लिखा है, “जो आँख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं।” १० परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगत किया;

क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जाँचता है। ११

मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है? वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा। १२ परन्तु हमने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी है। १३ जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु पवित्र आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मा, आत्मिक ज्ञान से आत्मिक बातों की व्याख्या करती है। १४ परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है। १५ आत्मिक जन सब कुछ जाँचता है, परन्तु वह आप किसी से जाँचा नहीं जाता। १६ “क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है, कि उसे सिखाए?” परन्तु हम में

मसीह का मन है।

३ हे भाइयों, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका, जैसे आत्मिक लोगों

से परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक है। २८ मैंने तुम्हें दृष्टि पिलाया, अन्न न खिलाया, क्योंकि तुम उसको न खा सकते थे; वरन् अब तक भी नहीं खा सकते हों, ३ क्योंकि अब तक शारीरिक हो। इसलिए, कि जब तुम में ईर्ष्या और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और मनुष्य की रीति पर नहीं चलते? ४ इसलिए कि जब एक कहता है, “मैं पौलस का हूँ,” और दूसरा, “मैं अपुल्लोस का हूँ,” तो क्या तुम मनुष्य नहीं? ५ अपुल्लोस कौन है? और पौलस कौन है? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुम लोगों ने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया। ६ और मैं लगाया, अपुल्लोस ने सीधा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। ७ इसलिए न तो लगनेवाला कुछ है, और न सीधनेवाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ानेवाला है। ८ लगनेवाला

और सीचनेवाला दोनों एक हैं; परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मजदूरी पाएगा। ९ क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं, तम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर के भवन हो। १० परमेश्वर के उस अमृत्यु के अनुसार, जो मुझे दिया गया, मैंने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नीव डाली, और दूसरा उस पर रद्द रखता है। परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि वह उस पर कैसा रद्द रखता है। ११ क्योंकि उस नीव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नीव नहीं डाल सकता। १२ और यदि कोई इस नीव पर सोना या चाँदी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास या फस का रद्द रखे, १३ तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा; इसलिए कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है। १४ जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा। १५ और यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा, पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते-जलते। १६ क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है? १७ यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तम हो। १८ कोई अपने आपको थोका न दे। यदि तुम में से कोई इस संसार में अपने आपको ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने कि ज्ञानी हो जाए। (alön g165) १९ क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा निखारा है, “वह ज्ञानियों को उनकी चतुराई में फँसा देता है,” २० और फिर, “प्रभु ज्ञानियों के विचारों को जानता है, कि व्यर्थ हैं।” २१ इसलिए मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करें, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है। २२ क्या पौलस, क्या अपुल्लोस, क्या कैफा, क्या जगत, क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान, क्या भविष्य, सब कुछ तुम्हारा है, २३ और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का हो।

४ मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझे। ५ फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है, कि विश्वासयोग्य निकले। ६ परन्तु मेरी दृष्टि में यह बहुत छोटी बात है, कि तुम या मनुष्यों का कोई न्यायी मुझे परखे, बरन् मैं आप ही अपने आपको नहीं परखता। ७ क्योंकि मेरा मन मुझे किसी बात में दोषी नहीं ठहराता, परन्तु इससे मैं निर्दोष नहीं ठहरता, क्योंकि मेरा परखनेवाला प्रभु है। ८ इसलिए जब तक प्रभु न आए, समय से पहले किसी बात का न्याय न करो: वही तो अंधकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा, और मनों के डेशरों को प्राण करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी। ९ हे भाइयों, मैंने इन बातों में तुम्हारे लिये अपनी और अपुल्लोस की चर्चा दृष्टान्त की रीति पर की है, इसलिए कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो, कि लिखे हए से आगे न बढ़ाना, और एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में गर्व न करना। १० क्योंकि तुझ में और दूसरे में कोन भेद करता है? और तेरे पास क्या है जो तुमे (दूसरे से) नहीं पाया और जबकि तुमे (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है, कि मानो नहीं पाया? ११ तुम तो तुम हो चुके; तुम धनी हो चुके, तुम ने हमारे बिना राज्य किया; परन्तु भला होता कि तुम राज्य करते कि हम भी तुम्हारे साथ राज्य करते। १२ मेरी समझ में परमेश्वर ने हम प्रेरितों को सब के बाद उन लोगों के समान ठहराया है, जिनकी मृत्यु की आज्ञा हो चुकी हो; क्योंकि हम जगत और स्वर्गद्वारों और मनुष्यों के लिये एक तमाशा ठहरे हैं। १३ हम मसीह के लिये मूर्ख हैं; परन्तु तुम मसीह में बुद्धिमान हो; हम निर्बल हैं परन्तु तुम बलवान हो। तुम आदर पाते हो, परन्तु हम निरादर होते हैं। १४ हम इस घड़ी तक भूखे प्यासे और नगो हैं, और घूसे खाते हैं और मारे-मारे फिरते हैं; १५ और अपने ही हाथों के काम करके परिश्रम करते हैं। लोग बुरा कहते हैं, हम अशीष देते हैं; वे सताते हैं, हम सहते हैं।

है। १६ वे बदनाम करते हैं, हम विनती करते हैं हम आज तक जगत के कूड़े और सब बस्तुओं की खराचन के समान ठहरे हैं। १७ मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये ये बातें नहीं लिखता, परन्तु अपने प्रिय बालक जानकर तुम्हें चिताता हूँ। १८ क्योंकि यदि मसीह में तुम्हारे सिखानेवाले दस हजार भी होते, तो भी तुम्हारे पिता बहुत से नहीं, इसलिए कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता हुआ। १९ इसलिए मैं तुम से विनती करता हूँ, कि मेरी जैसी चाल चलो। २० इसलिए मैंने तीमुखीयसु को जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है, और वह तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह हर एक कल्पितिया में उपदेश देता हूँ। २१ किनते तो ऐसे फूल गए हैं, मानो मैं तुम्हारे पास अने ही का नहीं। २२ परन्तु प्रभु चाहे तो मैं तुम्हारे पास शीघ्र ही आँऊँगा, और उन फूले हुओं की बातों को नहीं, परन्तु उनकी सामर्थ्य को जान लौँगा। २३ क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातें मैं नहीं, परन्तु सामर्थ्य मैं होता है। २४ तुम क्या चाहते हो? क्या मैं छड़ी लेकर तुम्हारे पास आँऊँगा प्रेम और नम्रता की आत्मा के साथ?

५ यहाँ तक सुनने में आता है, कि तुम में व्यभिचार होता है, बरन ऐसा व्यभिचार जो अन्यजातियों में भी नहीं होता, कि एक पुस्त अपने पिता की पत्नी को रखता है। ६ और तुम शोक तो नहीं करते, जिससे ऐसा काम करनेवाला तुम्हारे बीच में से निकाला जाता, परन्तु घमण्ड करते हो। ७ मैं तो शरीर के भाव से दूर था, परन्तु आत्मा के भाव से तुम्हारे साथ होकर, मानो उपस्थिति की दशा में ऐसे काम करनेवाले के विषय में न्याय कर चुका हूँ। ८ कि जब तुम, और मेरी आत्मा, हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ्य के साथ इकट्ठे हों, तो ऐसा मनुष्य, हमारे प्रभु यीशु के नाम से। ९ शरीर के विनाश के लिये शैतान को सौंपा जाए, ताकि उसकी आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए। १० तुम्हारा घमण्ड करना अच्छा नहीं; क्या तुम नहीं जानते, कि थोड़ा सा खमीर पूरे गुंधे हुए आटे को खमीर कर देता है। ११ पुराना खमीर निकालकर, अपने आपको शुद्ध करो कि नया गैंधा हुआ आटा बन जाओ; ताकि तुम अखुमीरी हो, क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है। १२ इसलिए आओ हम उत्सव में आनन्द मनाएँ, न तो पुराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सिंधाई और सच्चाई की अखुमीरी रोटी से। १३ मैंने अपनी पत्नी में तुम्हें लिखा है, कि व्यभिचारियों की संगति न करना। १४ यह नहीं, कि तुम बिलकुल इस जगत के व्यभिचारियों, या लोभियों, या अंधेर करनेवालों, या मूर्तिपूजकों की संगति न करो; क्योंकि इस दशा में तुम्हें जगत में से निकल जाना ही पड़ता। १५ मेरा कहना यह है; कि यदि कोई भाई कहलाकर, व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्तिपूजक, या गली देवाला, या पियकड़, या अंधेर करनेवाला हो, तो उसकी संगति मत करना; बरन् ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना। १६ क्योंकि मुझे बाहरवालों का न्याय करने से क्या काम? क्या तुम भीतरवालों का न्याय नहीं करते? १७ परन्तु बाहरवालों का न्याय परमेश्वर करता है: इसलिए उस कुकरी को अपने बीच में से निकाल दो।

८ क्या तुम मैं से किसी को यह साहस है, कि जब दूसरे के साथ झांगड़ा हो, तो फैसले के लिये अधिर्मियों के पास जाएँ; और पवित्र लोगों के पास न जाएँ? ९ क्या तुम नहीं जानते, कि पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे? और जब तुम्हें जगत का न्याय करना है, तो क्या तुम छोटे से छोटे झांगड़ों का भी निर्णय करने के योग्य नहीं? १० क्या तुम नहीं जानते, कि हम स्वर्गदातों का न्याय करेंगे? तो क्या सांसारिक बातों का निर्णय करना हो, तो क्या उन्हीं को बैठाओगे जो कल्पितिया में कुछ नहीं समझे जाते हैं? ११ मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये यह कहता हूँ। क्या

सचमुच तुम में से एक भी बुद्धिमान नहीं मिलता, जो अपने भाईयों का निर्णय कर सके? ६ वरन् भाई-भाई में मुकदमा होता है, और वह भी अविश्वासियों के सामने। ७ सचमुच तुम में बड़ा दोष तो यह है, कि आपस में मुकदमा करते हो। वरन् अन्याय क्यों नहीं सहते? अपनी हानि क्यों नहीं सहते? ८ वरन् अन्याय करते और हानि पहुँचाते हो, और वह भी भाईयों को। ९ क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न पर्विष्टजक, न परस्पीगामी, न लुच्चे, न पुष्पगामी। १० न चोर, न लोभी, न पियकड़, न गाली देनेवाले, न अंधेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। ११ और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे। १२ सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुएँ लाभ की नहीं, सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित हैं, परन्तु मैं किसी बात के अर्थीन न होऊँगा। १३ भोजन पेट के लिये, और पेट भोजन के लिये है, परन्तु परमेश्वर इसको और उसको दोनों को नाश करेगा, परन्तु देह व्यभिचार के लिये नहीं, वरन् प्रभु के लिये; और प्रभु देह के लिये है। १४ और परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य से प्रभु को जिलाया, और हमें भी जिलाएगा। १५ क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह मसीह के अंग है? तो क्या मैं मसीह के अंग लेकर उठने वेश्या के अंग बनाऊँ? कदापि नहीं। १६ क्या तुम नहीं जानते, कि जो कोई वेश्या से संगति करता है, वह उसके साथ एक तन हो जाता है क्योंकि लिखा है, “वे दोनों एक तन होंगे।” १७ और जो प्रभु की संगति में रहता है, वह उसके साथ एक आत्मा हो जाता है। १८ व्यभिचार से बचे रहो। जितने और पाप मनुष्य करता है, वे देह के बाहर हैं, परन्तु व्यभिचार करनेवाला अपनी ही देह के विस्तृ पाप करता है। १९ क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? २० क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिए अपनी देह के तटा परमेश्वर की महिमा करो।

७ उन बातों के विषय में जो तुम ने लिखी, यह अच्छा है, कि पुस्तकी को न छोए। ८ परन्तु व्यभिचार के डर से हर एक पुस्तकी की पत्री, और हर एक स्त्री का पति हो। ९ पति अपनी पत्री का हक पूरा करें; और वैसे ही पत्री भी अपने पति का। १० पत्री को अपनी देह पर अधिकार नहीं पर उसके पति का अधिकार है; वैसे ही पति को भी अपनी देह पर अधिकार नहीं, परन्तु पत्री को। ११ तुम एक दूसरे से अलग न रहो; परन्तु केवल कुछ समय तक आपस की सम्पत्ति से कि प्रार्थना के लिये अवकाश मिले, और फिर एक साथ रहो; ऐसा न हो, कि तुहारे असंयम के कारण शैतान तुहाँ परखे। १२ परन्तु मैं जो यह कहता हूँ वह अनुमति है न कि आज्ञा। १३ मैं यह चाहता हूँ, कि जैसा मैं हूँ, वैसा ही सब मनुष्य हों; परन्तु हर एक को परमेश्वर की ओर से विशेष वरदान मिले हैं; किसी को किसी प्रकार का, और किसी को किसी और प्रकार का। १४ परन्तु मैं अविवाहितों और विधवाओं के विषय में कहता हूँ, कि उनके लिये ऐसा ही रहना अच्छा है, जैसा मैं हूँ। १५ परन्तु यदि वे संयम न कर सके, तो विवाह करें; क्योंकि विवाह करना कामातुर रहने से भला है। १६ जिनका विवाह हो गया है, उनको मैं नहीं, वरन् प्रभु आज्ञा देता है, कि पत्री अपने पति से अलग न हो। १७ (और यदि अलग भी हो जाए, तो बिना दूसरा विवाह किए रहे; या अपने पति से पिछे मेल कर ले) और न पति अपनी पत्री को छोड़े। १८ दूसरों से प्रभु नहीं, परन्तु मैं ही कहता हूँ, यदि किसी भाई की पत्री विवास न रखती हो, और उसके साथ रहने से प्रसन्न हो, तो वह उसे न छोड़े। १९ और जिस स्त्री का पति विवास न रखता हो, और उसके साथ रहने से प्रसन्न हो: वह पति को न

छोड़े। १४ क्योंकि ऐसा पति जो विश्वास न रखता हो, वह पत्री के कारण पवित्र ठहरता है, और ऐसी पत्री जो विश्वास नहीं रखती, पति के कारण पवित्र ठहरती है; नहीं तो तुम्हारे बाल-बच्चे अशुद्ध होते, परन्तु अब तो पवित्र हैं। १५ परन्तु जो पुस्तक विश्वास नहीं रखता, यदि वह अलग हो, तो अलग होने दो, ऐसी दशा में कोई भाई या बहन बन्धन में नहीं; परन्तु परमेश्वर ने तो हमें मेल-मिलाप के लिये बुलाया है। १६ क्योंकि हे झी, तू क्या जानती है, कि तू अपने पति का उद्धार करा लेगी? और हे पुस्तक, तू क्या जानती है कि तू अपनी पत्री का उद्धार करा लेगा? १७ पर जैसा प्रभु ने हर एक को बाँटा है, और जैसा परमेश्वर ने हर एक को बुलाया है, वैसा ही वह चले: और मैं सब कल्त्तिसियाओं में ऐसा ही ठहराता हूँ। १८ जो खतना किया हुआ बुलाया गया हो, वह खतनारहित न बने: जो खतनारहित बुलाया गया हो, वह खतना न करए। १९ न खतना कुछ है, और न खतनारहित परन्तु परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना ही सब कुछ है। २० हर एक जन जिस दशा में बुलाया गया हो, उसी में रहे। २१ यदि तू दास की दशा में बुलाया गया हो तो चिन्ता न कर; परन्तु यदि तू स्वतंत्र हो सके, तो ऐसा ही काम कर। २२ क्योंकि जो दास की दशा में प्रभु में बुलाया गया है, वह प्रभु का स्वतंत्र किया हुआ है और वैसे ही जो स्वतंत्रता की दशा में बुलाया गया है, वह मसीह का दास है। २३ तुम दाम देकर मोल लिये गए हो, मनुष्यों के दास न बनो। २४ हे भाइयों, जो कोई जिस दशा में बुलाया गया हो, वह उसी में परमेश्वर के साथ रहे। २५ कुँवारियों के विषय में प्रभु की कोई आज्ञा मुझे नहीं मिली, परन्तु विश्वासयोग्य होने के लिये जैसी दया प्रभु ने मुझ पर की है, उसी के अनुसार सम्मति देता हूँ। २६ इसलिए मेरी समझ में यह अच्छा है, कि आजकल क्लेश के कारण मनुष्य जैसा है, वैसा ही रहे। २७ यदि तेरे पत्री नहीं, तो उसी की खोज न कर: २८ परन्तु यदि तू विवाह भी करे, तो पाप नहीं; और यदि कुँवारी ब्याही जाए तो कोई पाप नहीं; परन्तु ऐसों को शारीरिक दुःख होगा, और मैं बचाना चाहता हूँ। २९ हे भाइयों, मैं यह कहता हूँ, कि समय कम किया गया है, इसलिए चाहिए कि जिनके पत्री हों, वे ऐसे हों मानो उनके पत्री नहीं। ३० और रोनेवाले ऐसे हों, मानो रोते नहीं; और आनन्द करनेवाले ऐसे हों, मानो आनन्द नहीं करते; और मोल लेनेवाले ऐसे हों, कि मानो उनके पास कुछ है नहीं। ३१ और इस संसार के साथ व्यवहार करनेवाले ऐसे हों, कि संसार ही के न हो लें; क्योंकि इस संसार की रीति और व्यवहार बदलते जाते हैं। ३२ मैं यह चाहता हूँ, कि तुम्हें चिन्ता न हो। अविवाहित पुस्तक प्रभु की बातों की चिन्ता में रहती है, कि प्रभु को कैसे प्रसन्न रखे। ३३ परन्तु विवाहित मनुष्य संसार की बातों की चिन्ता में रहता है, कि अपनी पत्री को किस रीति से प्रसन्न रखे। ३४ विवाहिता और अविवाहिता में भी भेद है: अविवाहिता प्रभु की चिन्ता में रहती है, कि वह देह और आत्मा दोनों में पवित्र हो, परन्तु विवाहिता संसार की चिन्ता में रहती है, कि अपने पति को प्रसन्न रखे। ३५ यह बात तुम्हारे ही लाभ के लिये कहता हूँ, न कि तुम्हें फँसाने के लिये, वरन् इसलिए कि जैसा उचित है; ताकि तुम एक चित्त होकर प्रभु की सेवा में लगे रहो। ३६ और यदि कोई यह समझे, कि मैं अपनी उस कुँवारी का हक मार रहा हूँ, जिसकी जवानी ढल रही है, और प्रयोजन भी हो, तो जैसा चाहे, वैसा करे, इसमें पाप नहीं, वह उसका विवाह होने दे। ३७ परन्तु यदि वह मन में फैसला करता है, और कोई अत्यावश्यकता नहीं है, और वह अपनी अभिलाषाओं को नियंत्रित कर सकता है, तो वह विवाह न करके अच्छा करता है। ३८ तो जो अपनी कुँवारी का विवाह कर देता है, वह अच्छा करता है और जो विवाह नहीं कर देता, वह और भी अच्छा करता है। ३९ जब तक किसी झी का पति जीवित रहता है तब तक वह उसमें झींही हड्डी है

परन्तु जब उसका पति मर जाए, तो जिससे चाहे विवाह कर सकती है, परन्तु केवल प्रभु मैं। १० परन्तु जैसी है यदि वैसी ही रहे, तो मेरे विचार में और भी धन्य है, और मैं समझता हूँ, कि परमेश्वर का आत्मा मुझे मैं भी है।

अब मूरतों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के विषय में हम जानते हैं, कि हम सब को ज्ञान है: ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है। २ यदि कोई समझे, कि मैं कुछ जानता हूँ, तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता। ३ परन्तु यदि कोई परमेश्वर से प्रेम खटवा है, तो उसे परमेश्वर पहचानता है। ४ अतः मूरतों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के खाने के विषय में हम जानते हैं, कि मूरत जगत में कोई वस्तु नहीं, और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं। ५ यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईंधर कहलाते हैं, (जैसा कि बहुत से ईंधर और बहुत से प्रभु हैं)। ६ तो भी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात् पिता जिसकी ओर से सब वस्तु हैं, और हम उसी के लिये हैं, और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिसके द्वारा सब वस्तु हुई, और हम भी उसी के द्वारा हैं। ७ परन्तु सब को यह ज्ञान नहीं; परन्तु कितने तो अब तक मूरत को कुछ समझने के कारण मूरतों के सामने बलि की हुई को कुछ वस्तु समझकर खाते हैं, और उनका विवेक निर्बल होकर अशुद्ध होता है। ८ भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुँचता, यदि हम न खाएँ, तो हमारी कुछ हानि नहीं, और यदि खाएँ, तो कुछ लाभ नहीं। ९ परन्तु चौकस रहो, ऐसा न हो, कि तुम्हारी यह स्वतंत्रता कहीं निर्बलों के लिये ठोकर का कारण हो जाए। १० क्योंकि यदि कोई तुझ जानी को मूरत के मन्दिर में भोजन करते देखे, और वह निर्बल जन हो, तो क्या उसके विवेक में मूरत के सामने बलि की हुई वस्तु के खाने का साहस न हो जाएगा। ११ इस रीति से तेरे ज्ञान के कारण वह निर्बल भाईं जिसके लिये मसीह मरा नाश हो जाएगा। १२ तो भाईयों का अपराध करने से और उनके निर्बल विवेक को चोट देने से तुम मसीह का अपराध करते हो। १३ इस कारण यदि भोजन मेरे भाई को ठोकर छिलाएँ, तो मैं कभी किसी रीति से माँस न खाऊँगा, न हो कि मैं अपने भाई के ठोकर का कारण बनूँ। (aiōn g165)

९ क्या मैं स्वतंत्र नहीं? क्या मैं प्रेरित नहीं? क्या मैंने यीशु को जो हमारा प्रभु है, नहीं देखा? क्या तुम प्रभु में मेरे बनाए हुए नहीं? १२ यदि मैं औरों के लिये प्रेरित नहीं, फिर भी तुम्हारे लिये तो हूँ, क्योंकि तुम प्रभु में मेरी प्रेरिताई पर छाप हो। ३ जो मुझे ज़रूरते हैं, उनके लिये यही मेरा उत्तर है। ४ क्या हमें खाने-पीने का अधिकार नहीं? ५ क्या हमें यह अधिकार नहीं, कि किसी मसीही बहन को विवाह करके साथ लिए फिरें, जैसा अन्य प्रेरित और प्रभु के भाई और कैफा करते हैं? ६ या केवल मुझे और बरनवास को ही जीवन निर्वाह के लिए काम करना चाहिए। ७ कौन कभी अपनी गिरह से खाकर सिपाही का काम करता है? कौन दाख की बारी लगाकर उसका फल नहीं खाता? कौन भेड़ों की रखवाली करके उनका दूध नहीं पीता? ८ क्या मैं ये बातें मनूष्य ही की रीति पर बोलता हूँ? ९ क्या व्यवस्था भी यही नहीं कहती? क्योंकि मूसा की व्यवस्था में लिखा है “दाँवते समय चलते हुए बैल का मूँह न बाँधना।” क्या परमेश्वर बैलों ही की चिन्ता करता है? १० या विशेष करके हमारे लिये कहता है। हाँ, हमारे लिये ही लिखा गया, क्योंकि उचित है, कि जोतनेवाला आशा से जोते, और दाँवनेवाला भागी होने की आशा से दाँवनी करे। ११ यदि हमने तुम्हारे लिये आत्मिक वस्तु हुईं, तो क्या यह कोई बड़ी बात है, कि तुम्हारी शारीरिक वस्तुओं की फसल काटें। १२ जब औरों का तुम पर यह अधिकार है, तो क्या हमारा इससे अधिक न होगा? परन्तु हम यह अधिकार काम में नहीं लाएँ, परन्तु सब कुछ सहते हैं, कि हमारे द्वारा मसीह

के सुसमाचार की कुछ रोक न हो। १३ क्या तुम नहीं जानते कि जो मन्दिर में सेवा करते हैं, वे मन्दिर में से खाते हैं, और जो वेदी की सेवा करते हैं, वे वेदी के साथ भागी होते हैं? १४ इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया, कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उनकी जीविका सुसमाचार से हो। १५ परन्तु मैं इनमें से कोई भी बात काम में न लाया, और मैंने तो ये बातें इसलिए नहीं लिखी, कि मेरे लिये ऐसा किया जाए, क्योंकि इससे तो मेरा मरना ही भला है, कि कोई मेरा घमण्ड वर्थ्य ठहराए। १६ यदि मैं सुसमाचार सुनाऊँ, तो मेरा कुछ घमण्ड नहीं; क्योंकि यह तो मेरे लिये अवश्य है; और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर याह! १७ क्योंकि यदि अपनी इच्छा से यह करता हूँ, तो मजदूरी मुझे मिलती है, और यदि अपनी इच्छा से नहीं करता, तो भी भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है। १८ तो फिर मेरी कौन सी मजदूरी है? यह कि सुसमाचार सुनाने में मैं मसीह का सुसमाचार सेंत-मेंत कर दूँ, यहाँ तक कि सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है, उसको मैं पूरी रीति से काम में लाऊँ। १९ क्योंकि सबसे स्वतंत्र होने पर भी मैंने अपने आपको सब का दास बना दिया है; कि अधिक लोगों को खीच लाऊँ। २० मैं यहदियों के लिये यहदी बना कि यहदियों को खीच लाऊँ, जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उनके लिये मैं व्यवस्था के अधीन न होने पर भी व्यवस्था के अधीन बना, कि उन्हें जो व्यवस्था के अधीन हैं, खीच लाऊँ। २१ व्यवस्थाहीनों के लिये मैं (जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं, परन्तु मसीह की व्यवस्था के अधीन हैं) व्यवस्थाहीन सा बना, कि व्यवस्थाहीनों को खीच लाऊँ। २२ मैं निर्बलों के लिये निर्बल सा बना, कि निर्बलों को खीच लाऊँ, मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना हूँ, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ। २३ और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूँ, कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊँ। २४ क्या तुम नहीं जानते, कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनमां एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो, कि जीतो। २५ और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुझनिवाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं, जो मुझानि का नहीं। २६ इसलिए मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूँ, परन्तु उसके समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लडता है। २७ परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूँ; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्पा ठहरूँ।

१० हे भाईयों, मैं नहीं चाहता, कि तुम इस बात से अञ्जत रहो, कि हमारे सब पूर्ज बादल के नीचे थे, और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए। ११ और सब ने बादल में, और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया। १२ और सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया। १३ और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे, जो उनके साथ-साथ चलती थी; और वह चट्टान मसीह था। १४ परन्तु परमेश्वर उनमें से बहुतों से प्रसन्न ना था, इसलिए वे जंगल में ढेर हो गए। १५ ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरी, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम बूढ़ी वस्तुओं का लालच न करें। १६ और न तुम मूरत पूजनेवाले बनो; जैसे कि उनमें से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, “लोग खाने-पीने बैठे, और खेलने-कूटने उठे।” १७ और न हम यथाभिचार करें; जैसा उनमें से कितनों ने किया और एक दिन में तेहस जहार मर गये। १८ और न हम प्रभु को परेंगे; जैसा उनमें से कितनों ने किया, और सौंपोंके द्वारा नाश किए गए। १९ और न तुम कुड़कुड़ाओं, जिस रीति से उनमें से कितने कुड़कुड़ाए, और नाश करनेवाले के द्वारा नाश किए गए। २० परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टान्त की रीति पर थी; और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गई है। (aiōn g165) २१

इसलिए जो समझता है, “मैं स्थिर हूँ,” वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े। १३ तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने के बाहर है: और परमेश्वर विश्वासयोग है: वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, बरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको। १४ इस कारण, हे मेरे व्यारों मूर्तिपूजा से बचे रहो। १५ मैं बुद्धिमान जानकर, तुम से कहता हूँ: जो मैं कहता हूँ, उसे तुम परखो। १६ वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या वह मरीह के लह की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या मरीह की देह की सहभागिता नहीं? १७ इसलिए, कि एक ही रोटी है तो हम भी जो बहुत हैं, एक देह है क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं। १८ जो शरीर के भाव से इसाएली है, उनको देखो: क्या बलिदानों के खानेवाले वेदी के सहभागी नहीं? १९ फिर मैं क्या कहता हूँ? क्या यह कि मूर्ति का बलिदान कुछ है, या मूरत कुछ है? २० नहीं, बस यह, कि अन्यजाति जो बलिदान करते हैं, वे परमेश्वर के लिये नहीं, परन्तु दुष्टामाओं के लिये बलिदान करते हैं और मैं नहीं चाहता, कि तुम दुष्टामाओं के सहभागी हो। २१ तुम प्रभु के कटोरे, और दुष्टामाओं के कटोरे दोनों में से नहीं पी सकतो। तुम प्रभु की मेज और दुष्टामाओं की मेज दोनों के सहभागी नहीं हो सकते। २२ क्या हम प्रभु को क्रोध दिलाते हैं? क्या हम उससे शक्तिमान हैं? २३ सब वस्तुएँ मैंने लिये उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तु लाभ की नहीं। सब वस्तुएँ मैंने लिये उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुओं से उन्नति नहीं। २४ कोई अपनी ही भलाई को न ढूँढ़े वरन् औरों की। २५ जो कुछ कसाइयों के यहाँ बिकता है, वह खाओ और विवेक के कारण कुछ न पछो। २६ “क्योंकि पृथ्वी और उसकी भरपूरी प्रभु की है।” २७ और यदि अविश्वासियों में से कोई तुम्हें नेवता दे, और तुम जाना चाहो, तो जो कुछ तुम्हरे सामने रखा जाए वही खाओ: और विवेक के कारण कुछ न पछो। २८ परन्तु यदि कोई तुम से कहे, “यह तो मूरत को बलि की हुई वस्तु है,” तो उसी बतानेवाले के कारण, और विवेक के कारण न खाओ। २९ मेरा मतलब, तेरा विवेक नहीं, परन्तु उस दूसरे का। भला, मेरी स्वतंत्रता दूसरे के विचार से क्यों परखी जाए? ३० यदि मैं धन्यवाद करके सहभागी होता हूँ, तो जिस पर मैं धन्यवाद करता हूँ, उसके कारण मेरी बदनामी क्यों होती है? ३१ इसलिए तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो। ३२ तुम न यहदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिये ठोकर के कारण बनो। ३३ जैसा मैं भी सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूँ, और अपना नहीं, परन्तु बहुतों का लाभ ढँगता हूँ, कि वे उड़ा पाएँ।

११ तुम मेरी जैसी चाल चलो जैसा मैं मरीह के समान चाल चलता हूँ। २८ मैं तुम्हें सराहता हूँ, कि सब बातों में तुम मुझे स्मरण करते हों; और जो व्यवहार मैंने तुम्हें सौंप दिए हैं, उन्हें धारण करते हो। ३० पर मैं चाहता हूँ, कि तुम यह जान लो, कि हर एक पुस्तका सिर मरीह है: और ज़ी का सिर पुस्त है: और मरीह का सिर परमेश्वर है। ३१ जो पुस्त सिर ढाँके हुए प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करता है, वह अपने सिर का अपमान करता है। ३२ परन्तु जो ज़ी बिना सिर ढके प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करती है, वह अपने सिर का अपमान करती है, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वस्प और महिमा है; परन्तु ज़ी पुस्त की शोभा है। ३३ क्योंकि पुस्त ज़ी से नहीं हआ, परन्तु ज़ी पुस्त से ही है। ३४ और पुस्त ज़ी के लिये नहीं सिरजा गया, परन्तु ज़ी पुस्त के लिये सिरजी गई है। ३५ इसलिए स्वर्गदूतों के कारण ज़ी को उचित है, कि अधिकार अपने सिर पर रखे। ३६ तो

भी प्रभु में न तो ज़ी बिना पुस्त और न पुस्त बिना ज़ी के है। ३७ क्योंकि जैसे ज़ी पुस्त से है, वैसे ही पुस्त ज़ी के द्वारा है; परन्तु सब वस्तुएँ परमेश्वर से हैं। ३८ तुम स्वयं ही विचार करो, क्या ज़ी को बिना सिर ढके परमेश्वर से प्रार्थना करना उचित है? ३९ क्या स्वाभाविक रीति से भी तुम नहीं जानते, कि यदि पुस्त लम्बे बाल रखे, तो उसके लिये अपमान है। ४० परन्तु यदि ज़ी लम्बे बाल रखे; तो उसके लिये शोभा है क्योंकि बाल उसको ओढ़नी के लिये दिए गए हैं। ४१ परन्तु यदि कोई विवाद करना चाहे, तो यह जाने कि न हमारी और न परमेश्वर की कलीसियाओं की ऐसी रीति है। ४२ परन्तु यह निर्देश देते हुए, मैं तुम्हें नहीं सराहता, इसलिए कि तुम्हारे इकट्ठे होने से भलाई नहीं, परन्तु हानि होती है। ४३ क्योंकि पहले तो मैं यह सनता हूँ, कि जब तुम कलीसिया में इकट्ठे होते हो, तो तुम मैं फूट होती है और मैं कुछ कुछ विश्वास भी करता हूँ। ४४ परन्तु यह निर्देश देते हुए, मैं तुम्हें नहीं सराहता, इसलिए कि तुम्हारे इकट्ठे होने से भलाई नहीं, परन्तु हानि होती है। ४५ क्योंकि पहले तो मैं यह सनता हूँ, कि जब तुम कलीसिया में इकट्ठे होते हो, तो तुम मैं कुछ कुछ विश्वास भी करता हूँ। ४६ क्योंकि विद्यर्थी भी तुम में अवश्य होंगे, इसलिए कि जो लोग तुम में खेरे निकले हैं, वे प्रगाट हो जाएँ। ४७ जब तुम एक जगह में इकट्ठे होते हो तो यह प्रभु भोज खाने के लिये नहीं है। ४८ क्योंकि खाने के समय एक दूसरे से पहले अपना भोज खा लेता है, तब कोई भखा रहता है, और कोई मतवाला हो जाता है। ४९ क्या खाने-पीने के लिये तुम्हारे घर नहीं? या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिनके पास नहीं हैं तुम्हें लजिज्जत करते हो? मैं तुम से क्या कहूँ? क्या इस बात में तम्हारी प्रशंसा करूँ? मैं प्रशंसा नहीं करता। ५० क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से हँहूँची, और मैंने तुम्हें भी पहँचाया था; कि प्रभु यीशु ने जिस रात पकड़वाया गया रोटी ली, ५१ और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा, “यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है। मैं स्मरण के लिये यही किया करो।” ५२ इसी रीति से उसने बियारी के बाद कटोरा भी लिया, और कहा, “यह कटोरा मैं लह में नई वाचा है: जब कभी पीओ, तो मैं स्मरण के लिये यही किया करो।” ५३ क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो। ५४ इसलिए जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाएँ, या उसके कटोरे में से पीएँ, वह प्रभु की देह और लह का अपराधी ठहरेगा। ५५ इसलिए मनुष्य अपने आपको ज़ांचते ते और इसी रीति से इस रोटी में से खाएँ, और इस कटोरे में से पीएँ। ५६ क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर टण्ड लाता है। ५७ इसी कारण तुम में बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए। ५८ यदि हम अपने आपको ज़ांचते, तो दण्ड न पाते। ५९ परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है इसलिए कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें। ६० इसलिए, हे मैं भाइयों, जब तुम खाने के लिये इकट्ठे होते हो, तो एक दूसरे के लिये ठहरा करो। ६१ यदि कोई भखा हो, तो अपने घर में खा ले जिससे तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो। और शेष बातों को मैं अकर ठीक कर दँगा।

६२ हे भाइयों, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक बरदानों के विषय में अज्ञात रहो। ६३ तुम जानते हो, कि जब तुम अन्यजाति थे, तो गौँ मूरतों के पीछे जैसे चलाए जाते थे वैसे चताए थे। ६४ इसलिए मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुआई से बोलता है, वह नहीं कहता कि यीशु शापित है; और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है। ६५ वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है। ६६ और सेवा भी कई प्रकार की है, परन्तु प्रभु एक ही है। ६७ और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। ६८ किन्तु सब के लाभ पहँचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। ६९ क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं; और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें। ७० और किसी को उसी आत्मा से

विवास; और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है। १० फिर किसी को सामर्थ्य के काम करने की शक्ति; और किसी को भविष्यद्वाणी की; और किसी को आत्माओं की परख, और किसी को अनेक प्रकार की भाषा; और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना। ११ परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बाँट देता है। १२ क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीही भी है। १३ क्योंकि हम सब ने क्या यहदी हो, क्या यज्ञानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया। १४ इसलिए कि देह में एक ही अंग नहीं, परन्तु बहुत से हैं। १५ यदि पाँच कहे: कि मैं हाथ नहीं, इसलिए देह का नहीं, तो क्या वह इस कारण देह का नहीं? १६ यदि यदि कान कहे, “मैं आँख नहीं, इसलिए देह का नहीं,” तो क्या वह इस कारण देह का नहीं? १७ यदि सारी देह आँख ही होती तो सुनना कहाँ से होता? यदि सारी देह कान ही होती तो सूँघना कहाँ होता? १८ परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक-एक करके देह में रखा है। १९ यदि वे सब एक ही अंग होते, तो देह कहाँ होती? २० परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं, परन्तु देह एक ही है। २१ आँख हाथ से नहीं कह सकती, “मुझे तेरा प्रयोजन नहीं,” और न सिं पाँवों से कह सकता है, “मुझे तुम्हारा प्रयोजन नहीं।” २२ परन्तु देह के वे अंग जो औरें से निर्बल देख पड़ते हैं, बहुत ही आवश्यक हैं। २३ और देह के जिन अंगों को हम कम आदरणीय समझते हैं उन्हीं को हम अधिक आदर देते हैं; और हमारे शोभाहीन अंग और भी बहुत शोभायमान हो जाते हैं, २४ फिर भी हमारे शोभायमान अंगों को इसका प्रयोजन नहीं, परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है, कि जिस अंग को घटी थी उसी को और भी बहुत आदर हो। २५ ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूरे की बाबार चिन्ता करें। २६ इसलिए यदि एक अंग दुख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनते हैं। २७ इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीही की देह हो, और अल्ला-अलग उसके अंग हो। २८ और परमेश्वर ने कलीसिया में अल्ला-अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वत्का, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ्य के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार करनेवाले, और प्रधान, और नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले। २९ क्या सब प्रेरित हैं? क्या सब भविष्यद्वत्का हैं? क्या सब उपदेशक हैं? क्या सब सामर्थ्य के काम करनेवाले हैं? ३० क्या सब को चंगा करने का वरदान मिला है? क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते हैं? ३१ क्या सब अनुवाद करते हैं? तुम बड़े से बड़े वरदानों की धून में रहो! परन्तु मैं तुम्हें और भी सबसे उत्तम मार्ग बताता हूँ।

१३ यदि मैं मनुष्यों, और स्वर्गदूतों की बोलियाँ बोलूँ, और प्रेम न रखूँ, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतला, और झङ्गनाती हुई झाँझा हूँ। १४ और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूँ, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूँ, और मुझे यहाँ तक पूरा विवास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, परन्तु प्रेम न रखूँ, तो मैं कुछ भी नहीं। १५ और यदि मैं अपनी समर्पण सम्पत्ति कंगालों को खिला दूँ, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूँ, और प्रेम न रखूँ, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। १६ प्रेम धीरजबत है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। १७ अशोभनीय व्यवहार नहीं करता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुँझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। १८ कुर्कम से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। १९ वह सब बातें सह

लेता है, सब बातों पर विवास करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। २० प्रेम कभी टलता नहीं, भविष्यद्वाणियाँ हों, तो समाप्त हो जाएँगी, भाषाएँ मौन हो जाएँगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा। २१ क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी। २२ परन्तु जब सर्वसिद्ध होएगा, तो अधूरा मिट जाएगा। २३ जब मैं बालकों के समान बोलता था, बालकों के समान मन था बालकों सी समझ थी; परन्तु सयाना हो गया, तो बालकों की बातें छोड़ दीं। २४ अब हमें दर्पण में धूँधला सा दिखाई देता है; परन्तु उस समय ऐसी पूरी सिति से पहचानँगा, जैसा मैं पहचाना गया हूँ। २५ पर अब विवास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थायी हैं, पर इनमें सबसे बड़ा प्रेम है।

१४ प्रेम का अनुकरण करो, और आमिक वरदानों की भी धून में रहो १४ विशेष करके यह, कि भविष्यद्वाणी करो। २६ क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है; वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी बातें कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है। २७ परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति, और उपदेश, और शान्ति की बातें करता है। २८ जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है; परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है। २९ मैं चाहता हूँ, कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो, परन्तु अधिकतर यह चाहता हूँ कि भविष्यद्वाणी करो: क्योंकि यदि अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया की उन्नति के लिये अनुवाद न करे तो भविष्यद्वाणी करनेवाला उससे बढ़कता है। ३० इसलिए है भाइयों, यदि मैं तुम्हारे पास आकर अन्य भाषा में बातें करूँ, और प्रकाश, या ज्ञान, या भविष्यद्वाणी, या उपदेश की बातें तुम से न करूँ, तो मुझसे तुम्हें क्या लाभ होगा? ३१ इसी प्रकार यदि निर्जीव वस्तुओं भी, जिनसे ध्वनि निकलती है जैसे बाँसी, या बीन, यदि उनके स्वरों में भेद न हो तो जो फूँका या बजाया जाता है, वह क्यों पहचाना जाएगा? ३२ और यदि तुरही का शब्द साफ न हो तो कौन लड़ाई के लिये तैयारी करेगा? ३३ ऐसे ही तुम भी यदि जीभ से साफ बातें न करो, तो जो कुछ कहा जाता है वह कैसे समझा जाएगा? तुम तो हवा से बातें करनेवाले ठहरोगे। ३४ जगत में कितने ही प्रकार की भाषाएँ क्यों न हों, परन्तु उनमें से कोई भी बिना अर्थ की न होगी। ३५ इसलिए यदि मैं किसी भाषा का अर्थ न समझूँ, तो बोलनेवाले की दृष्टि में परदेशी ठहरँगा; और बोलनेवाला मेरी दृष्टि में परदेशी ठरेगा। ३६ इसलिए तुम भी जब आमिक वरदानों की धून में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो, कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो। ३७ इस कारण जो अन्य भाषा बोले, तो वह प्रार्थना करे, कि उसका अनुवाद भी कर सके। ३८ इसलिए यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूँ, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती। ३९ तो क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूँगा, और बुद्धि से भी गाँगेंगा। ४० नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करोगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आपनी क्यों कहेगा? इसलिए कि वह तो नहीं जानता, कि तू क्या कहता है? ४१ तू तो भली भौंति से धन्यवाद करता है, परन्तु दूरे की उन्नति नहीं होती। ४२ मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि मैं तुम सबसे अधिक अन्य भाषा में बोलता हूँ। ४३ परन्तु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हजार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है, कि औरें के सिखाने के लिये बुद्धि से पाँच ही बातें कहते हैं। ४४ हे भाइयों, तुम समझ में बालक न बनो: फिर भी बुराई में तो बालक रहो, परन्तु समझ में

सयाने बनो। २४ व्यवस्था में लिखा है, कि प्रभु कहता है, “मैं अन्य भाषा बोलनेवालों के द्वारा, और पारा मुख के द्वारा इन लोगों से बात करँगा तो भी वे मेरी न सुनेंगे।” २५ इसलिए अन्य भाषाएँ विश्वासियों के लिये नहीं, परन्तु अविश्वासियों के लिये चिन्ह है, और भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिये नहीं परन्तु विश्वासियों के लिये चिन्ह है। २६ तो यदि कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो, और सब के सब अन्य भाषा बोलें, और बाहरवाले या अविश्वासी लोग भीतर आ जाएँ तो क्या वे तम्हें पागल न कहेंगे? २७ परन्तु यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें, और कोई अविश्वासी या बाहरवाला मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठारा देंगे और परख लेंगे। २८ और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएँगे, और तब वह मुँह के बल गिरकर परमेश्वर को टण्डवत् करेगा, और मान लेगा, कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है। २९ इसलिए हे भाइयों क्या करना चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर एक के हृदय में भजन, या उपदेश, या अन्य भाषा, या प्रकाश, या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है। सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिये होना चाहिए। ३० यदि अन्य भाषा में बातें करनी हों, तो दो-दो, या बहुत हो तो तीन-तीन जन बारी-बारी बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे। ३१ परन्तु यदि अनुवाद करनेवाला न हो, तो अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया में शान्त रहे, और अपने मन से, और परमेश्वर से बातें करे। ३२ भविष्यद्वात्ताओं में से दो या तीन बोलें, और शेष लोग उनके वचन को परखें। ३३ परन्तु यदि दूसरे पर जो बैठा है, कुछ इंश्वरीय प्रकाश हो, तो पहला चूप हो जाए। ३४ क्योंकि तुम सब एक-एक करके भविष्यद्वात्ताओं की आत्मा भविष्यद्वात्ताओं के वश में है। ३५ क्योंकि जब मरणे-गडबडी का नहीं, परन्तु शान्ति का कर्ता है; जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है। ३६ छियाँ कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की अनुमति नहीं, परन्तु अधीन रहने की आज्ञा है: जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। ३७ और यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने-अपने पाति से पूछें, क्योंकि जी का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है। ३८ क्यों परमेश्वर का वचन तुम में से निकलता? या केवल तुम ही तक पहुँचा है? ३९ यदि कोई मनुष्य अपने आपको भविष्यद्वात्ता या आत्मिक जन समझे, तो यह जान ले, कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ, वे प्रभु की आज्ञाएँ हैं। ४० परन्तु यदि कोई न माने, तो न माने। ४१ अतः हे भाइयों, भविष्यद्वात्ता करने की धून में रहो और अन्य भाषा बोलने से मना न करो। ४१ पर सारी बातें सध्यता और क्रमानुसार की जाएँ।

१५ हे भाइयों, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूँ जो पहले सना चुका हूँ, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिसमें तुम स्थिर भी हो। १ उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैंने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हआ। २ इसी कारण मैंने सबसे पहले तुम्हें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे पहुँची थी, कि पवित्रशाङ्क के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया। ३ और गाड़ा गया; और पवित्रशाङ्क के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। ४ और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया। ५ फिर पाँच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिनमें से बहुत सारे अब तक वर्षमान हैं पर किन्तु से गए। ६ फिर याकूब को दिखाई दिया तब सब प्रेरितों को दिखाई दिया। ७ और सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो अप्रेर दिनों का जन्मा हूँ। ८ क्योंकि मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ, वरन् प्रेरित कहलाने के योग्य भी नहीं, क्योंकि मैंने परमेश्वर की कलीसिया को सताया था। ९ परन्तु मैं जो कुछ भी हूँ, परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ। और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ परन्तु मैंने उन सबसे बढ़कर परिश्रम भी किया तो भी यह मेरी ओर

से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था। १० इसलिए चाहे मैं हूँ, चाहे वे हों, हम यहीं प्रचार करते हैं, और इसी पर तुम ने विश्वास भी किया। ११ अतः जबकि मसीह का यह प्रचार किया जाता है, कि वह मेरे हुओं में से जी उठा, तो तुम मैं से कितने क्यों कहते हैं, कि मेरे हुओं का पुनर्स्थान है ही नहीं? १२ यदि मेरे हुओं का पुनर्स्थान ही नहीं, तो मसीह भी नहीं जी उठा। १३ और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है; और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है। १४ वरन् हम परमेश्वर के झेंगे गवाह ठहरे; क्योंकि हमने परमेश्वर के विषय में यह गवाही दी कि उसने मसीह को जिला दिया यथापि नहीं जिलाया, यदि मेरे हुए नहीं जी उठते। १५ और यदि मुर्दे नहीं जी उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठा। १६ और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फँसे हो। १७ वरन् जो मसीह में सो गए हैं, वे भी नाश हए। १८ यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं। १९ परन्तु सचमुच मसीह मुर्दे में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उनमें पहला फल हुआ। २० क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, तो मनुष्य ही के द्वारा मेरे हुओं का पुनर्स्थान भी आया। २१ और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाएँ जाएँगे। २२ परन्तु हर एक अपनी-अपनी बारी से; पहला फल मसीह; फिर मसीह के आने पर उसके लोग। २३ इसके बाद अन्त होगा; उस समय वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार और सामर्थ्य का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। २४ क्योंकि जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। २५ सबसे अनिम्न बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है। २६ क्योंकि “परमेश्वर ने सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया है,” परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके अधीन कर दिया गया है तो स्पष्ट है, कि जिसने सब कुछ मसीह के अधीन कर दिया, वह आप अलग रहा। २७ और जब सब कुछ उसके अधीन हो जाएगा, तो पुन आप भी उसके अधीन हो जाएगा जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया; ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो। २८ नहीं तो जो लोग मेरे हुओं के लिये बपतिस्मा लेते हैं, वे क्या करेंगे? यदि मुर्दे जी उठते ही नहीं तो फिर क्यों उनके लिये बपतिस्मा लेते हैं? २९ और हम भी क्यों हर घड़ी जोखिम में पड़े रहते हैं? ३० हे भाइयों, मुझे उस घमण्ड की सपथ जो हमारे मसीह यीशु में मैं तुम्हारे विषय में करता हूँ, कि मैं प्रतिदिन मरता हूँ। ३१ यदि मैं मनुष्य की रीति पर इफिसुस में कन-पश्चुओं से लड़ा, तो मुझे क्या लाभ हुआ? यदि मुर्दे जिलाएँ नहीं जाएँगे, “तो आओ, खाएँ-पीएँ, क्योंकि कल तो मर ही जाएँगे।” ३२ धोखा न खाना, “बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।” ३३ धार्मिकता के लिये जाग उठो और पाप न करो; क्योंकि कितने ऐसे हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते, मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये यह कहता हूँ। ३४ अब कोई यह कहेगा, “मुर्दे किसी रीति से जी उठते हैं, और किस देह के साथ आते हैं?” ३५ हे निर्बिद्ध, जो कुछ तु बोता है, जब तक वह न मेरे जिलाया नहीं जाता। ३६ और जो तु बोता है, वह वह देह नहीं जो उत्पन्न होनेवाली है, परन्तु केवल दाना है, चाहे गेहूँ का, चाहे किसी और अनाज का। ३७ परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उसको देह देता है, और हर एक बीज को उसकी विशेष देह। ३८ सब शरीर एक समान नहीं, परन्तु मनुष्यों का शरीर और है, पशुओं का शरीर और है; पक्षियों का शरीर और है; मछलियों का शरीर और है। ३९ स्वर्गीय देह है, और पार्थिव देह है: परन्तु स्वर्गीय देहों का तेज और है, और पार्थिव का और है। ४० सूर्य का तेज और है, चाँद का तेज और है, और तारागणों का तेज और है, क्योंकि एक तरे से दूसरे तरे के तेज में अन्तर है। ४१ मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर

नाशवान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी स्पृष्टि में जी उठता है। ५३ वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है, निर्बलता के साथ बोया जाता है; और सामर्थ्य के साथ जी उठता है। ५४ स्वाभाविक देह बोइ जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है: जबकि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी है। ५५ ऐसा ही लिखा भी है, “प्रथम मनुष्य, अर्थात् आदम, जीवित प्राणी बना” और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना। ५६ परन्तु पहले आत्मिक न था, पर स्वाभाविक था, इसके बाद आत्मिक हुआ। ५७ प्रथम मनुष्य धर्ती से अर्थात् मिट्ठी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है। ५८ जैसा वह मिट्ठी का था वैसे ही वे भी हैं जो मिट्ठी के हैं; और जैसा वह स्वर्गीय है, वैसे ही वे भी स्वर्गीय हैं। ५९ और जैसे हमने उसका स्पृष्ट जो मिट्ठी का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय का स्पृष्टी धारण करेंगे। ६० हे भाइयों, मैं यह कहता हूँ कि मैंस और लह परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न नाशवान अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। ६१ देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ: कि हम सब तो नहीं सोएँगे, परन्तु सब बदल जाएँगे। ६२ और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अनिम तुरही फूँकते ही होगा क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उडाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे। ६३ क्योंकि अवश्य है, कि वह नाशवान देह अविनाश को पहन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहन ले। ६४ और जब यह नाशवान अविनाश को पहन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहन लेगा, तब वह चचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, “जय ने मृत्यु को निगल लिया।

६५ हे मृत्यु तेरी जय कहाँ रही? हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ रहा?” (Hadēs g86) ६६ मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है। ६७ परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है। ६८ इसलिए हे मेरे प्रिय भाइयों, ढूढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।

१६ अब उस चन्दे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिये किया जाता है, जैसा निर्देश मैंने गलातिया की कलीसियाओं को दिया, वैसा ही तुम भी करो। १ सपाह के पहले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे अपने पर चन्दा न करना पड़े। २ और जब मैं आऊँगा, तो जिन्हें तुम चाहोगे उन्हें मैं चिठ्ठियाँ देका भेज दूँगा, कि तुम्हारा दान यस्शलेम पहुँचा दो। ३ और यदि मेरा भी जाना उचित हुआ, तो वे मेरे साथ जाएँगे। ४ और मैं माकिदुनिया होकर तुम्हारे पास आऊँगा, क्योंकि मुझे माकिदुनिया होकर जाना ही है। ५ परन्तु सम्भव है कि तुम्हारे यहाँ ही ठहर जाऊँ और शरद क्रतु तुम्हारे यहाँ काढ़, तब जिस ओर मेरा जाना हो, उस ओर तुम मुझे पहुँचा दो। ६ क्योंकि मैं अब मार्ग में तुम से भेट करना नहीं चाहता; परन्तु मुझे आशा है, कि यदि प्रभु चाहे तो कुछ समय तक तुम्हारे साथ रहेंगा। ७ परन्तु मैं पित्तेकुस्त तक इफिसस में रहेंगा। ८ क्योंकि मेरे लिये एक बड़ा और उपरोक्ती द्वार खुला है, और विरोधी बहुत से हैं। ९ यदि तीमुथियुस आ जाए, तो देखना, कि वह तुम्हारे यहाँ निडर रहे; क्योंकि वह मेरे समान प्रभु का काम करता है। १० इसलिए कोई उसे तुच्छ न जाने, परन्तु उसे कुशल से इस ओर पहुँचा देना, कि मेरे पास आ जाए; क्योंकि मैं उसकी प्रतीक्षा करता रहा हूँ, कि वह भाइयों के साथ आए। ११ और भाई अपुल्लोस से मैंने बहुत विनीती की है कि तुम्हारे पास भाइयों के साथ जाएँ; परन्तु उसने इस समय जाने की कुछ भी इच्छा न की, परन्तु जब अवसर पाएगा, तब आ जाएगा। १२ जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुण्यार्थ करो, बलवन्त हो। १३ जो कुछ करते हो प्रेम से करो। १४ हे भाइयों, तुम स्तिफनास के घराने को जानते हो,

कि वे अखाया के पहले फल हैं, और पवित्र लोगों की सेवा के लिये तैयार रहते हैं। १५ इसलिए मैं तुम से विनती करता हूँ कि ऐसों के अधीन रहो, बरन् हर एक के जो इस काम में परिश्रमी और सहकारी हैं। १६ और मैं स्तिफनास और फूरतूनास और अखइक्स के आनन्दित हूँ, क्योंकि उन्होंने तुम्हारी घटी को पूरी की है। १७ और उन्होंने मेरी और तुम्हारी आत्मा को चैन दिया है इसलिए ऐसों को मानो। १८ आसिया की कलीसियाओं की ओर से तुम को नमस्कार; अविला और प्रिस्का का और उनके घर की कलीसिया का भी तुम को प्रभु में बहुत-बहुत नमस्कार। १९ सब भाइयों का तुम को नमस्कार: पवित्र चुम्बन से आपस में नमस्कार करो। २० मुझ पौलस का अपने हाथ का लिखा हुआ नमस्कार: २१ यदि कोई प्रभु से प्रेम न रखे तो वह शापित हो। हे हमारे प्रभु, आ! २२ प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे। २३ मेरा प्रेम मरीह यीशु में तुम सब के साथ रहे। आमीन।

2 कुरिन्थियों

१ पौलस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, और भाई तीमुथियुस की ओर से परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, और सारे अखाया के सब पवित्र लोगों के नामः २ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। ३ हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर, और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता, और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है। ४ वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है; ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शान्ति दे सकें, जो किसी प्रकार के क्लेश में हों। ५ क्योंकि जैसे मसीह के दुख हमको अधिक होते हैं, वैसे ही हमारी शान्ति में भी मसीह के द्वारा अधिक सहभागी होते हैं। ६ यदि हम कलेश पाते हैं, तो यह तुम्हारी शान्ति और उद्धार के लिये है और यदि शान्ति पाते हैं, तो यह तुम्हारी शान्ति के लिये है, जिसके प्रभाव से तुम धीरज के साथ उन क्लेशों को सह लेते हो, जिन्हें हम भी सहते हैं। ७ और हमारी आशा तुम्हारे पितय में ढूँढ़ है; क्योंकि हम जनते हैं, कि तुम जैसे दुखों के वैसे ही शान्ति के भी सहभागी हो। ८ हे भाईयों, हम नहीं चाहते कि तुम हमारे उस क्लेश से अनजान रहो, जो आसिया में हम पर पड़ा, कि ऐसे भारी बोझ से दब गए थे, जो हमारी सामर्थ्य से बाहर था, यहाँ तक कि हम जीवन से भी हाथ धो बैठे थे। ९ वरन् हमने अपने मन में समझ लिया था, कि हम पर मृत्यु की सजा हो चुकी है कि हम अपना भरोसा न रखें, वरन् परमेश्वर का जो मेरे हुओं को जिलाता है। १० उसी ने हमें मृत्यु के ऐसे बड़े संकट से बचाया, और बचाएगा; और उससे हमारी यह आशा है, कि वह आगे को भी बचाता रहेगा। ११ और तुम भी मिलकर प्रार्थना के द्वारा हमारी सहायता करोगे, कि जो वरदान बहतों के द्वारा होंगे मिला, उसके कारण बहुत लोग हमारी ओर से धन्यवाद करें। १२ क्योंकि हम अपने विवेक की इस गवाही पर घमण्ड करते हैं, कि जगत में और विशेष करके तुम्हारी बीच हमारा चरित्र परमेश्वर के योग्य ऐसी पवित्रता और सच्चाई सहित था, जो शारीरिक ज्ञान से नहीं, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह के साथ था। १३ हम तुम्हें और कुछ नहीं लिखते, केवल वह जो तुप पड़ते या मानते भी हो, और मुझे आशा है, कि अन्त तक भी मानते रहेंगे। १४ जैसा तुम में से कितनों ने मान लिया है, कि हम तुम्हारे घमण्ड का कारण हैं; वैसे तुम भी प्रभु यीशु के दिन हमारे लिये घमण्ड का कारण ठहरेंगे। १५ और इस भरोसे से मैं चाहता था कि पहले तुम्हारे पास आऊँ, कि तुम्हें एक और दान मिले। १६ और तुम्हारे पास से होकर मकिन्तुनिया को जाऊँ, और फिर मकिन्तुनिया से तुम्हारे पास आऊँ और तुम मुझे यहदिया की ओर कुछ दूर तक पहुँचाओ। १७ इसलिए मैंने जो यह इच्छा की थी तो क्या मैंने चलता दिखाइ? या जो करना चाहता हूँ क्या शारीर के अनुसार करना चाहता हूँ, कि मैं बात में 'हाँ, हाँ' भी कहूँ; और 'नहीं, नहीं' भी कहूँ? १८ परमेश्वर विश्वासयोग्य है, कि हमारे उस वचन में जो तुम से कहा 'हाँ' और 'नहीं' दोनों पाए नहीं जाते। १९ क्योंकि परमेश्वर का पत्र यीशु मसीह जिसका हमारे द्वारा अर्थात् में और सिलवान्सु और तीमुथियुस के द्वारा तुम्हारे बीच में प्रचार हुआ; उसमें 'हाँ' और 'नहीं' दोनों न थीं; परन्तु उसमें 'हाँ' ही 'हाँ' ही है। २० क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएँ हैं, वे सब उसी में 'हाँ' के साथ हैं इसलिए उसके द्वारा आमीन पी हुई, कि हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा हो। २१ और जो होंगे तुम्हारे साथ मसीह में ढूँढ़ करता है, और जिसने हमें अभिषेक किया वही परमेश्वर है। २२ जिसने हम पर छाप भी कर दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया। २३ मैं परमेश्वर को गवाह करता हूँ, कि मैं अब तक कुरिन्थुस में इसलिए नहीं आया, कि मुझे तुम पर तरस आता था। २४ यह

नहीं, कि हम विश्वास के विषय में तुम पर प्रभुता जताना चाहते हैं; परन्तु तुम्हारे आनन्द में सहायक हैं क्योंकि तुम विश्वास ही से स्थिर रखते हो।

२ मैंने अपने मन में यही ठान लिया था कि फिर तुम्हारे पास उदास होकर न आऊँ। ३ क्योंकि यदि मैं तुम्हें उदास करूँ, तो मुझे आनन्द देनेवाला कौन होगा, केवल वही जिसको मैंने उदास किया? ४ और मैंने यही बात तुम्हें इसलिए लिखी, कि कहीं ऐसा न हो, कि मेरे आने पर जिससे मुझे आनन्द मिलना चाहिए, मैं उनसे उदास होऊँ; क्योंकि मुझे तुम सब पर इस बात का भरोसा है, कि जो मेरा आनन्द है, वही तुम सब का भी है। ५ बड़े क्लेश, और मन के कष्ट से, मैंने बहुत से अँसू बहा बहाकर तुम्हें लिखा था इसलिए नहीं, कि तुम उदास हो, परन्तु इसलिए कि तुम उस बड़े प्रेम को जान लो, जो मुझे तुम से है। ६ और यदि किसी ने उदास किया है, तो मुझे ही नहीं बरन् (कि उसके साथ बहुत कड़ाई न करूँ) कुछ कुछ तुम सब को भी उदास किया है। ७ ऐसे जन के लिये यह दण्ड जो भाइयों में से बहतों ने दिया, बहुत है। ८ इसलिए इसरे यह भला है कि उसका अपराध क्षमा करो; और शान्ति दो, न हो कि ऐसा मनुष्य उदासी में ढूँढ़ जाए। ९ इस कारण मैं तुम से विनती करता हूँ, कि उसको अपने प्रेम का प्रमाण दो। १० क्योंकि मैंने इसलिए भी लिखा था, कि तुम्हें परख लूँ, कि तुम सब बातों के मानने के लिये तैयार हो, कि नहीं। ११ जिसका तुम कुछ क्षमा करते हो उसे मैं भी क्षमा करता हूँ, क्योंकि मैंने भी जो कुछ क्षमा किया है, यदि किया हो, तो तुम्हारे कारण मसीह की जगह मैं होकर क्षमा किया है। १२ कि शैतान का हम पर दाँव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं। १३ और जब मैं मसीह का सुसमाचार, सुनाने को जीआस में आया, और प्रभु ने मेरे लिये एक द्वार खोल दिया। १४ तो मेरे मन में चैन न मिला, इसलिए कि मैंने अपने भाई तीतुस को नहीं पाया; इसलिए उनसे विदा होकर मैं मकिन्तुनिया को चला गया। १५ परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हमको जय के उत्सव में लिये फिरता है, और अपने जान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है। १६ क्योंकि हम परमेश्वर के निकट उद्धार पानेवालों, और नाश होनेवालों, दोनों के लिये मसीह की सुगन्ध हैं। १७ कितनों के लिये तो मरने के निमित्त मृत्यु की गन्ध, और कितनों के लिये जीवन के निमित्त जीवन की सुगन्ध, और इन बातों के योग्य कौन है? १८ क्योंकि हम उन बहतों के समान नहीं, जो परमेश्वर के बचन में मिलावट करते हैं; परन्तु मन की सच्चाई से, और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर का उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं।

३ क्या हम फिर अपनी बडाई करने लगे? या हमें कितनों के समान सिफारिश की पत्रियाँ तुम्हारे पास लानी या तुम से लेनी हैं? ४ हमारी पत्री तुम ही हो, जो हमारे हृदयों पर लिखी हुई है, और उसे सब मनुष्य बहानते और पढ़ते हैं। ५ यह प्रगट है, कि तुम मसीह की पत्री हो, जिसको हमने सेवकों के समान लिखा; और जो स्याही से नहीं, परन्तु जीविते परमेश्वर के आत्मा से पत्थर की पटियों पर नहीं, परन्तु हृदय की माँस स्पसी पटियों पर लिखी है। ६ हम मसीह के द्वारा परमेश्वर पर ऐसा ही भरोसा रखते हैं। ७ यह नहीं, कि हम अपने आप से इस योग्य हैं, कि अपनी ओर से किसी बात का विचार कर सकें; पर हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है। ८ जिसने हमें नई बाचा के सेवक होने के योग्य भी किया, शब्द के सेवक नहीं बरन् आत्मा के; क्योंकि शब्द मरता है, पर आत्मा जिलाता है। ९ और यदि मृत्यु की यह बाचा जिसके अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे, यहाँ तक तेजोमय हुई, कि मूसा के मुँह पर के तेज के कारण जो घटता भी जाता था, इस्माएली उसके मुँह पर दृष्टि नहीं कर सकते थे। १० तो आत्मा की बाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी? ११ क्योंकि

जब दोषी ठहरानेवाली वाचा तेजोमय थी, तो धर्मी ठहरानेवाली वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी? १० और जो तेजोमय था, वह भी उस तेज के कारण जो उससे बढ़कर तेजोमय था, कुछ तेजोमय न ठहरा। ११ क्योंकि जब वह जो घटाता जाता था तेजोमय था, तो वह जो स्थिर रहेगा, और भी तेजोमय क्यों न होगा? १२ इसलिए ऐसी आशा रखकर हम साहस के साथ बोतते हैं। १३ और मूसा के समान नहीं, जिसने अपने मुँह पर परदा डाला था ताकि इसाएँ उस घटनेवाले तेज के अन्त को न देखें। १४ परन्तु वे मतिमन्द हो गए, क्योंकि आज तक पुराने नियम के पढ़ते समय उनके हृदयों पर वही परदा पड़ा रहता है; पर वह मरीह में उठ जाता है। १५ और आज तक जब कभी मूसा की पुस्तक पढ़ी जाती है, तो उनके हृदय पर परदा पड़ा रहता है। १६ परन्तु जब कभी उनका हृदय प्रभु की ओर फिरेगा, तब वह परदा उठ जाएगा। १७ प्रभु तो आत्मा है; और जहाँ कहीं प्रभु का आत्मा है वहाँ स्वतंत्रता है। १८ परन्तु जब हम सब के उधाडे चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं।

४ इसलिए जब हम पर ऐसी दिया हुई, कि हमें यह सेवा मिली, तो हम साहस नहीं छोड़ते। २ परन्तु हमने लज्जा के गुम कामों को त्याग दिया, और न चतुराई से चलते, और न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं, परन्तु सत्य को प्रगट करके, परमेश्वर के सामने हर एक मनुष्य के विवेक में अपनी भलाई बैठते हैं। ३ परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नाश होनेवालों ही के लिये पड़ा है। ४ और उन अविवासियों के लिये, जिनकी लुट्ठि इस संसार के ईंचर ने अंधी कर दी है, ताकि मरीह जो परमेश्वर का प्रतिस्पृह है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके। (aiōnios g165) ५ क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मरीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है, और उसके विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं। ६ इसलिए कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, “अंधकार में से ज्योति चमके,” और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहचान की ज्योति यीशु मरीह के चेहरे से प्रकाशमान हो। ७ परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे। ८ हम चारों ओर से क्षेत्र तो भगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निस्याय तो हैं, पर निराश नहीं होते। ९ सताए तो जाते हैं; पर त्याग नहीं जाते; पिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते। १० हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिये फिरते हैं; कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो। ११ क्योंकि हम जिते जी बर्दायीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट हो। १२ इस कारण मृत्यु तो हम पर प्रभाव डालती है और जीवन तुम पर। १३ और इसलिए कि हम मैं वही विश्वास की आत्मा हैं, “जिसके विषय में लिखा है, कि मैंने विश्वास किया, इसलिए मैं बोला।” अतः हम भी विश्वास करते हैं, इसलिए बोलते हैं। १४ क्योंकि हम जानते हैं, जिसने प्रभु यीशु को जिलाया, वही हमें यीशु में भागी जानकर जिलाएगा, और तुम्हारे साथ अपने सामने उपस्थित करेगा। १५ क्योंकि सब बस्तुएँ तुम्हारे लिये हैं, ताकि अनुग्रह बहुतों के द्वारा अधिक होकर परमेश्वर की महिमा के लिये धन्यवाद भी बढ़ाए। १६ इसलिए हम साहस नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तो भी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है। १७ क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। (aiōnios g166) १८ और हम तो देखी हुई बस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी बस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि

देखी हुई बस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी बस्तुएँ सदा बनी रहती हैं। (aiōnios g166)

५ क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थाई है। (aiōnios g166) १ इसमें तो हम कराहते, और बड़ी लालसा खेलते हैं; कि अपने स्वर्गीय घर को पहन लें। २ कि इसके पहनने से हम नंगे न पाए जाएँ। ३ और हम इस देरे में रहते हुए बोझ से दबे कराहते रहते हैं, क्योंकि हम उत्तराना नहीं, वरन् और पहनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डब जाए। ४ और जिसने हमें इसी बात के लिये तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिसने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है। ५ इसलिए हम सदा ढाढ़स बाँधे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं। ६ क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं। ७ इसलिए हम ढाढ़स बाँधे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं। ८ इस कारण हमारे मन की उमंग यह है, कि चाहे साथ रहें, चाहे अलग रहें पर हम उसे भाते रहें। ९ क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मरीह के न्याय आसन के सामने खल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले भुजे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए। १० इसलिए प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझते हैं और परमेश्वर पर हमारा हाल प्रगट है, और मेरी आशा यह है, कि तुम्हारे विवेक पर भी प्रगट हुआ होगा। ११ हम पर भी अपनी बडाई तुम्हारे सामने नहीं करते वरन् हम अपने विषय में तुम्हें धमण्ड करने का अवसर देते हैं, कि तुम उम्हे उत्तर दे सको, जो मन पर नहीं, वरन् दिखावटी बातों पर धमण्ड करते हैं। १२ यदि हम बेसुध हैं, तो परमेश्वर के लिये; और यदि चैतन्य हैं, तो तुम्हारे लिये हैं। १३ क्योंकि मरीह का प्रेम हमें विश्वास कर देता है; इसलिए कि हम यह समझते हैं, कि जब एक सब के लिये मरा तो सब मर गए। १४ और वह इस निमित्त सब के लिये मरा, कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिये न जीएँ परन्तु उसके लिये जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा। १५ इस कारण अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे, और यदि हमने मरीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, तो भी अब से उसको ऐसा नहीं जानेंगे। १६ इसलिए यदि कोई मरीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो, वे सब नई हो गईं। १७ और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मरीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाया कर लिया, और मेल मिलायी की सेवा हमें सौंप दी है। १८ अर्थात् परमेश्वर ने मरीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाया कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उसने मेल मिलाया का वचन हमें सौंप दिया है। १९ इसलिए हम मरीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है: हम मरीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाया कर लो। २० जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।

६ हम जो परमेश्वर के सहकर्मी हैं यह भी समझाते हैं, कि परमेश्वर का अनुग्रह जो तुम पर हुआ, व्यर्थ न रहने दो। १ क्योंकि वह तो कहता है, “अपनी प्रसन्नता के समय मैंने तेरी सुन ली, और उद्धार के दिन मैंने तेरी, सहायता की।” देखो; अभी प्रसन्नता का समय है; देखो, अभी उद्धार का दिन है। २ हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते, कि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए। ३ परन्तु हर बात में परमेश्वर के सेवकों के समान अपने सदृशों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दरिद्रता से, संकटों

से, ५ कोडे खाने से, कैद होने से, हुल्लडों से, परिश्रम से, जागते रहने से, उपवास करने से, ६ पवित्रता से, ज्ञान से, धीरज से, कृपालुता से, पवित्र आत्मा से। ७ सच्चे प्रेम से, सत्य के वचन से, परमेश्वर की सामर्थ्य से; धार्मिकता के हथियारों से जो दाहिने, बाएँ हैं, ८ आदर और निरादर से, दुर्गम और सुनाम से, यद्यपि भरमनेवालों के जैसे मालूम होते हैं तो भी सच्चे हैं। ९ अनजानों के सदृश्य हैं, तो भी प्रसिद्ध हैं, मरते हुओं के समान हैं और देखो जीवित हैं, मर खानेवालों के सदृश्य हैं परन्तु प्राण से मरे नहीं जाते। १० शोक करनेवालों के समान हैं, परन्तु सर्वदा आनन्द करते हैं, कंगालों के समान हैं, परन्तु बहुतों को धनवान बना देते हैं; ऐसे हैं जैसे हमारे पास कुछ रखते हैं। ११ हे कुरिन्थियों, हमने खुलकर तम से बातें की हैं, हमारा हृदय तुम्हारी ओर खुला हुआ है। १२ तुम्हारे लिये हमारे मन में कुछ संकोच नहीं, पर तुम्हारे ही मरों में संकोच है। १३ पर अपने बच्चे जानकर तुम से कहता हूँ, कि तुम भी उसके बदले में अपना हृदय खोल दो। १४ अविवासियों के साथ असमान जूँ में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अर्थमं का क्या मेल जोल? या ज्योति और अंधकार की क्या संगति? १५ और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविवासी का क्या नाता? १६ और मूरों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बंध? क्योंकि हम तो जीविते परमेश्वर के मन्दिर हैं, जैसा परमेश्वर ने कहा है “मैं उनमें बसूँगा और उनमें चला फिरा करँगा”; और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरे लोग होंगे।” १७ इसलिए प्रभु कहता है, “उनके बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छोड़ो, तो मैं तुम्हें ग्रहण करँगा; १८ और तुम्हारा पिता होऊँगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होंगे; यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है।”

७ हे प्यारों जबकि ये प्रतिज्ञाएँ हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आपको शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें। २ हमें अपने हृदय में जगह दो: हमने न किसी से अन्याय किया, न किसी को बिगाड़ा, और न किसी को ठगा। ३ मैं तुम्हें दोषी ठहराने के लिये यह नहीं कहता क्योंकि मैं पहले ही कह चूका हूँ, कि तुम हमारे हृदय में ऐसे बस गए हो कि हम तुम्हारे साथ मरने जिन के लिये तैयार हैं। ४ मैं तुम से बहुत साहस के साथ बोल रहा हूँ, मुझे तुम पर बड़ा घमण्ड है: मैं शान्ति से भर गया हूँ; अपने सारे कर्तेश में मैं आनन्द से अति भरपूर रहता हूँ। ५ क्योंकि जब हम मकिदुनिया में आए, तब भी हमारे शरीर को चैन नहीं मिला, परन्तु हम चारों ओर से कर्तेश पाते थे; बाहर लडाईयाँ थीं, भीतर भयंकर बातें थीं। ६ तो भी दीनों को शान्ति देनेवाले परमेश्वर ने तीतुस के आने से हमको शान्ति दी। ७ और न केवल उसके आने से परन्तु उसकी उस शान्ति से भी, जो उसको तुम्हारी ओर से मिली थी; और उसने तुम्हारी लालसा, और तुम्हारे दुःख और मेरे लिये तुम्हारी धन का समाचार हमें सुनाया, जिससे मुझे और भी आनन्द हुआ। ८ क्योंकि यद्यपि मैंने अपनी पत्नी से तुम्हें शोकित किया, परन्तु उससे पछताता नहीं जैसा कि पहले पछताता था क्योंकि मैं देखता हूँ, कि उस पती से तुम्हें शोक तो हुआ परन्तु वह थोड़ी देर के लिये था। ९ अब मैं आनन्दित हूँ पर इसलिए नहीं कि तुम को शोक पहुँचा वरन् इसलिए कि तुम ने उस शोक के कारण मन फिराया, क्योंकि तुम्हारा शोक परमेश्वर की इच्छा के अनुसार था, कि हमारी ओर से तुम्हें किसी बात में हानि न पहुँचे। १० क्योंकि परमेश्वर-भक्ति का शोक ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है; जिसका परिणाम उट्टार है और फिर उससे पछताता नहीं पड़ता: परन्तु सांसारिक शोक मृत्यु उत्पन्न करता है। ११ अतः देखो, इसी बात से कि तुम्हें परमेश्वर-भक्ति का शोक हुआ; तुम मैं कितना उत्साह, प्रत्यक्षतर, रिस, भय, लालसा, धन और पलटा लेने का विचार उत्पन्न हुआ? तुम ने सब प्रकार

से यह सिद्ध कर दिखाया, कि तुम इस बात में निर्दोष हो। १२ फिर मैंने जो तुम्हारे पास लिखा था, वह न तो उसके कारण लिखा, जिसने अन्याय किया, और न उसके कारण जिस पर अन्याय किया गया, परन्तु इसलिए कि तुम्हारी उत्तेजना जो हमारे लिये है, वह परमेश्वर के सामने तुम पर प्राप्त हो जाए। १३ इसलिए हमें शान्ति हूँ; और हमारी इस शान्ति के साथ तीतुस के आनन्द के कारण और भी आनन्द हुआ क्योंकि उसका जी तुम सब के कारण हरा भरा हो गया है। १४ क्योंकि यदि मैंने उसके सामने तुम्हारे विषय में कुछ घमण्ड दिखाया, तो लज्जित नहीं हुआ, परन्तु जैसे हमने तुम से सब बातें सच-सच कह दी थीं, वैसे ही हमारा घमण्ड दिखाना तीतुस के सामने भी सच निकला। १५ जब उसको तुम सब के आज्ञाकारी होने का स्मरण आता है, कि कैसे तुम ने डरते और काँपते हुए उससे भेट की; तो उसका प्रेम तुम्हारी ओर और भी बढ़ता जाता है। १६ मैं आनन्द करता हूँ, कि तुम्हारी ओर से मुझे हर बात में भरोसा होता है।

अब हे भाइयों, हम तुम्हें परमेश्वर के उस असुग्रह का समाचार देते हैं, जो मकिदुनिया की कलीनियाओं पर हुआ है। १७ कि कर्तेश की बड़ी परीक्षा में उनके बड़े आनन्द और भारी कंगालपन के बढ़ जाने से उनकी उदारता बहुत बढ़ गई। १८ और उनके विषय में मेरी यह गवाही है, कि उन्होंने अपनी सामर्थ्य भर बरन सामर्थ्य से भी बाहर मन से दिया। १९ और इस दान में और पवित्र लोगों की सेवा में भागी होने के अनुग्रह के विषय में हम से बार बार बहुत बिनिती की। २० और जैसी हमने आशा की थी, वैसी ही नहीं, बरन उन्होंने प्रभु को, फिर परमेश्वर की इच्छा से हमको भी अपने आपको दे दिया। २१ इसलिए हमने तीतुस को समझाया, कि जैसा उसने पहले आरभ किया था, वैसा ही तुम्हारे बीच में इस दान के काम को पूरा भी कर ले। २२ पर जैसे हर बात में अर्थात् विवास, वचन, ज्ञान और सब प्रकार के यत्र में, और उस प्रेम में, जो हम से रखते हो, बढ़ते जाते हो, वैसे ही इस दान के काम में भी बढ़ते जाओ। २३ मैं आज्ञा की रीति पर तो नहीं, परन्तु औरों के उत्साह से तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को परखने के लिये कहता हूँ। २४ तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ। २५ और इस बात में मेरा विचार यही है: यह तुम्हारे लिये अच्छा है; जो एक वर्ष से न तो केवल इस काम को करने ही में, परन्तु इस बात के चाहने में भी प्रथम है थे। २६ इसलिए अब यह काम पूरा करो; कि जिस प्रकार इच्छा करने में तुम तैयार थे, वैसा ही अपनी-अपनी पूँजी के अनुसार पूरा भी करो। २७ क्योंकि यदि मन की तैयारी हो तो दान उसके अनुसार ग्रहण भी होता है जो उसके पास है न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं। २८ यह नहीं कि औरों को चैन और तुम को कर्तेश मिले। २९ परन्तु बराबरी के विचार से इस समय तुम्हारी बढ़ती उनकी घटी में काम आए, ताकि उनकी बढ़ती भी तुम्हारी घटी में काम आए, कि बराबरी हो जाए। ३० जैसा लिखा है, “जिसने बहुत बटोरा उसका कुछ अधिक न मिकला और जिसने थोड़ा बटोरा उसका कुछ कम न मिकला।” ३१ परमेश्वर का धन्यवाद हो, जिसने तुम्हारे लिये वही उत्साह तीतुस के हृदय में डाल दिया है। ३२ कि उसने हमारा समझाना मान लिया वरन् बहुत उत्साही होकर वह अपनी इच्छा से तुम्हारे पास गया है। ३३ और हमने उसके साथ उस भई को भेजा है जिसका नाम सुसमाचार के विषय में सब कलीनिया में फैला हुआ है; ३४ और इसना ही नहीं, परन्तु वह कलीनिया द्वारा ठहराया भी गया कि इस दान के काम के लिये हमारे साथ जाए और हम यह सेवा इसलिए करते हैं, कि प्रभु की महिमा और हमारे मन की तैयारी प्रगत हो जाए। ३५ हम इस बात में चैक्स रहते हैं, कि इस उदारता के काम के विषय में जिसकी सेवा हम करते हैं, कोई

हम पर दोष न लगाने पाए। २५ क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली हैं हम उनकी चिन्ता करते हैं। २६ और हमने उसके साथ अपने भाई को भेजा है, जिसको हमने बार बार परख के बहुत बातों में उत्साही पाया है; परन्तु अब तुम पर उसको बड़ा भरोसा है, इस कारण वह और भी अधिक उत्साही है। २७ यदि कोई तीतस के विषय में पछे, तो वह मेरा साथी, और तुम्हारे लिये मेरा सहकर्मी है, और यदि हमारे भाइयों के विषय में पछे, तो वे कलीसियाओं के भेजे हुए और मसीह की महिमा है। २८ अतः अपना प्रेम और हमारा वह घमण्ड जो तुम्हारे विषय में है कलीसियाओं के सामने उन्हें सिद्ध करके दिखाओ।

१ अब उस सेवा के विषय में जो पवित्र लोगों के लिये की जाती है, मुझे तम को लिखना अवश्य नहीं। २ क्योंकि मैं तुम्हारे मन की तैयारी को जानता हूँ, जिसके कारण मैं तुम्हारे विषय में मकिन्युनियों के सामने घमण्ड दिखाता हूँ, कि अखाया के लोग एक वर्ष से तैयार हुए हैं, और तुम्हारे उत्साह ने और बहुतों को भी उभारा है। ३ परन्तु मैंने भाइयों को इसलिए भेजा है, कि हमने जो घमण्ड तुम्हारे विषय में दिखाया, वह इस बात में व्यर्थ न ठहरे; परन्तु जैसा मैंने कहा, वैसे ही तुम तैयार रहो। ४ ऐसा न हो, कि यदि कोई मकिन्युनी मेरे साथ आए, और तुम्हें तैयार न पाए, तो क्या जानें, इस भरोसे के कारण हम (यह नहीं करते कि तुम) लज्जित हों। ५ इसलिए मैंने भाइयों से यह विनीती करना अवश्य समझा कि वे पहले से तुम्हारे पास जाऊँ, और तुम्हारी उदारता का फल जिसके विषय में पहले से वचन दिया गया था, तैयार कर रखें, कि यह दबाव से नहीं परन्तु उदारता के फल की तरह तैयार हो। ६ परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा कटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत कटेगा। ७ हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कूद-कूद के, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है। ८ परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है। जिससे हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें अवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो। ९ जैसा लिखा है, “उसने बिखेरा, उसने गरीबों को दान दिया, उसकी धार्मिकता सदा बनी रहेगी।” (aión g165) १० अतः जो बोनेवाले को बीज, और भोजन के लिये रोटी देता है वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धार्मिकता के फलों को बढ़ाएगा। ११ तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ। १२ क्योंकि इस सेवा के पूरा करने से, न केवल पवित्र लोगों की घटियाँ पूरी होती हैं, परन्तु लोगों की ओर से परमेश्वर का बहुत धन्यवाद होता है। १३ क्योंकि इस सेवा को प्रमाण स्वीकार कर वे परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं, कि तुम मसीह के सुसमाचार को मानकर उसके अधीन रहते हो, और उनकी, और सब की सहायता करने में उदारता प्रगट करते रहते हो। १४ और वे तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं; और इसलिए कि तुम पर परमेश्वर का बड़ा ही अनुग्रह है, तुम्हारी लालसा करते रहते हैं। १५ परमेश्वर को उसके उस दान के लिये जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो।

१० मैं वही पौलस जो तुम्हारे सामने दीन हूँ, परन्तु पीठ पीछे तुम्हारी ओर साहस करता हूँ; तुम को मसीह की नप्रता, और कोमलता के कारण समझता हूँ। २ मैं यह विनीती करता हूँ, कि तुम्हारे सामने मुझे निर्भय होकर साहस करना न पड़े; जैसा मैं कितनों पर जो हमको शरीर के अनुसार चलनेवाले समझते हैं, वीरता दिखाने का विचार करता हूँ। ३ क्योंकि यधिप हम शरीर में चलते फिरते हैं, तो भी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। ४ क्योंकि

हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गङ्गों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी है। ५ हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊँची बात को, जो परमेश्वर की पहचान के विशेष में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भवना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं। ६ और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञा मानना पूरा हो जाए, तो हर एक प्रकार की आज्ञा न मानने का पलटा लो। ७ तुम इन्हीं बातों को देखते हो, जो आँखों के सामने हैं, यदि किसी का अपने पर यह भरोसा हो, कि मैं मसीह का हूँ, तो वह यह भी जान ले, कि जैसा वह मसीह का है, वैसे ही हम भी हैं। ८ क्योंकि यदि मैं उस अधिकार के विषय में और भी घमण्ड दिखाऊँ, जो प्रभु ने तुम्हारे बिगाड़ने के लिये नहीं पर बनाने के लिये हमें दिया है, तो लज्जित न होऊँगा। ९ यह मैं इसलिए कहता हूँ, कि पवित्रों के द्वारा तुम्हें डरनेवाला न ठहरँ। १० क्योंकि वे कहते हैं, “उसकी पवित्रियाँ तो गम्भीर और प्रभावशाली हैं, परन्तु जब देखते हैं, तो कहते हैं कि वह देह का निर्बल और वक्तव्य में हल्का जान पड़ता है।” ११ इसलिए जो ऐसा कहता है, कि वह यह समझ रखे, कि जैसे पीठ पीछे पवित्रों में हमारे वचन हैं, वैसे ही तुम्हारे सामने हमारे काम भी होंगे। १२ क्योंकि हमें यह साहस नहीं कि हम अपने आपको उनके साथ गिनें, या उनसे अपने को मिलाएँ, जो अपनी प्रशंसा करते हैं, और अपने आपको आपस में नाप तौलकर एक दूसरे से तुलना करके मूर्छ ठहरते हैं। १३ हम तो सीमा से बाहर घमण्ड कदापि न करें, परन्तु उसी सीमा तक जो परमेश्वर ने हमारे लिये ठहरा दी है, और उसमें तुम भी आ गए हो और उसी के अनुसार घमण्ड भी करेंगे। १४ क्योंकि हम अपनी सीमा से बाहर अपने आपको बढ़ाना नहीं चाहते, जैसे कि तुम तक न पहुँचने की दशा में होता, वरन् मसीह का सुसमाचार सुनाते हुए तुम तक पहुँच चुके हैं। १५ और हम सीमा से बाहर औरैं के परिश्रम पर घमण्ड नहीं करते, परन्तु हमें आशा है, कि ज्यों-ज्यों तुम्हारा विश्वास बढ़ता जाएगा त्यों-त्यों हम अपनी सीमा के अनुसार तुम्हारे कारण और भी बढ़ते जाएँगे। १६ कि हम औरैं की सीमा से आगे बढ़कर सुसमाचार सुनाएँ, और यह नहीं, कि हम औरैं की सीमा के भीतर बने बनाए कामों पर घमण्ड करें। १७ परन्तु जो घमण्ड करे, वह प्रभु पर घमण्ड करे। १८ क्योंकि जो अपनी बढ़ाई करता है, वह नहीं, परन्तु जिसकी बढ़ाई प्रभु करता है, वही ग्रहण किया जाता है।

११ यदि तुम मेरी थोड़ी मर्खता सह लेते तो क्या ही भला होता है, हौँ, मेरी सह भी लेते हो। १९ क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धन लगाए रहता हूँ, इसलिए कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कूँवारी के समान मसीह को सौंप दूँ। २० परन्तु मैं डरता हूँ कि जैसे सौंप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सिद्धाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए कही भ्रष्ट न किए जाएँ। २१ यदि कोई तुम्हारे पास आकर, किसी दूसरे यीशु का प्रचार करे, जिसका प्रचार हमने नहीं किया या कोई और आत्मा तुम्हें मिले; जो पहले न मिला था; या और कोई सुसमाचार जिसे तुम ने पहले न माना था, तो तुम्हारा सहना ठीक होता। २२ मैं तो समझता हूँ, कि मैं किसी बात में बड़े से बड़े प्रेरितों से कम नहीं हूँ। २३ यदि मैं वक्तव्य में अनाड़ी हूँ, तो भी ज्ञान में नहीं; वरन् हमने इसको हर बात में सब पर तुम्हारे लिये प्रगट किया है। २४ क्या इसमें मैंने कुछ पाप किया; कि मैंने तुम्हें परमेश्वर का सुसमाचार सेंत-मेंत सुनाया; और अपने आपको चीचा किया, कि तुम ऊँचे हो जाओ? २५ मैं और कलीसियाओं को लूटा अर्थात् मैंने उनसे मजदूरी ली, ताकि तुम्हारी सेवा कर सकूँ। २६ और जब तुम्हारे साथ था, और मुझे घटी हई, तो मैंने किसी पर भार नहीं डाला, क्योंकि भाइयों ने, मकिन्युनिया से आकर मेरी घटी को पूरी की: और मैंने हर बात में अपने

आपको तुम पर भार बनने से रोका, और रोके रहँगा। १० मसीह की सच्चाई मुझ में है, तो अखाया देश में कोई मुझे इस घमण्ड से न रोकेगा। ११ किस लिये? क्या इसलिए कि मैं तुम से प्रेम नहीं खता? परमेश्वर यह जानता है। १२ परन्तु जो मैं करता हूँ, वही करता रहँगा; कि जो लोग दाँव ढूँढते हैं, उन्हें मैं दाँव पाने न हूँ ताकि जिस बात में वे घमण्ड करते हैं, उसमें वे हमारे ही समान ठहरें। १३ क्योंकि ऐसे लोग झाँठे प्रेरित, और छल से काम करनेवाले, और मसीह के प्रेरितों का स्पष्ट धर्मनेवाले हैं। १४ और यह कुछ अचाम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्यथा स्वर्गदूत का स्पष्ट धारण करता है। १५ इसलिए यदि उसके सेवक भी धार्मिकता के सेवकों जैसा रूप धरें, तो कुछ बड़ी बात नहीं, परन्तु उनका अन्त उनके कामों के अनुसार होगा। १६ मैं फिर कहता हूँ, कोई मुझे मर्ख न समझे; नहीं तो मूर्ख ही समझकर मेरी सह लो, ताकि थोड़ा सा मैं भी घमण्ड कर सकूँ। १७ इस बेधड़क में जो कुछ मैं कहता हूँ वह प्रभु की आज्ञा के अनुसार नहीं पर मानो मर्खता से ही कहता हूँ। १८ जबकि बहुत लोग शरीर के अनुसार घमण्ड करते हैं, तो मैं भी घमण्ड करँगा। १९ तम तो समझदार होकर आनन्द से मर्खों की सह लेते हो। २० क्योंकि जब तुम्हें कोई दास बना लेता है, या खा जाता है, या फूसा लेता है, या अपने आपको बड़ा बनाता है, या तुम्हारे मूँह पर थप्पड़ मारता है, तो तुम सह लेते हो। २१ मेरा कहना अनादर की रीति पर है, मानो कि हम निर्बल से थे; परन्तु जिस किसी बात में कोई साहस करता है, मैं मर्खता से कहता हूँ तो मैं भी साहस करता हूँ। २२ क्या वे ही इशारी हैं? मैं भी हूँ। क्या वे ही इशारी हैं? मैं भी हूँ; क्या वे ही अब्राहम के वंश के हैं? मैं भी हूँ। २३ क्या वे ही मसीह के सेवक हैं? (मैं पागल के समान कहता हूँ) मैं उनसे बढ़कर हूँ। अधिक परिश्वम करने में; बार बार कैद होने में; कोडे खाने में; बार बार मृत्यु के जोखियों में। २४ पौँच बार मैंने यहदियों के हाथ से उनतालीस कोडे खाए। २५ तीन बार मैंने बैंटे खाई; एक बार पथराव किया गया; तीन बार जहाज जिन पर मैं चढ़ा था, टूट गए। एक रात दिन मैंने समुद्र में काटा। २६ मैं बार बार यात्राओं में; नदियों के जोखियों में; डाकुओं के जोखियों में; अपने जातिवालों से जोखियों में; अन्यजातियों से जोखियों में; नारों में के जोखियों में; जंगल के जोखियों में; समृद्ध के जोखियों में; झटे भाइयों के बीच जोखियों में रहा; २७ परिश्वम और कष्ट में; बार बार जागते रहने में; भर्ख-प्यास में; बार बार उपवास करने में; जाड़े में; उघाड़े रहने में। २८ और अन्य बातों को छोड़कर जिनका वर्णन मैं नहीं करता सब कलीसियाओं की चिन्हा प्रतिदिन मुझे दबाती है। २९ किसकी निर्बलता से मैं निर्बल नहीं होता? किसके पाप में गिरें से मेरा जी नहीं दुखता? ३० यदि घमण्ड करना अवश्य है, तो मैं अपनी निर्बलता की बातों पर घमण्ड करँगा। ३१ प्रभु वीशु का परमेश्वर और पिता जो सदा धन्य है, जानता है, कि मैं झूँठ नहीं बोलता। (aiogn 165) ३२ दमिश्क में अरितास राजा की ओर से जो राज्यपाल था, उसने मैं पकड़ने को दमिश्कियों के नगर पर पहरा बैठा रखा था। ३३ और मैं टोकरे में खिड़की से होकर दीवार पर से उतारा गया, और उसके हाथ से बच निकला।

१२ यद्यपि घमण्ड करना तो मेरे लिये ठीक नहीं, फिर भी करना पड़ता है; पर मैं प्रभु के दिए हुए दर्शनों और प्रकाशनों की चर्चा करँगा। ३४ मैंने मर्ख में एक मनुष्य को जानता हूँ, चौदह वर्ष हुए कि न जाने देहसहित, न जाने देहरहित, परमेश्वर जानता है, ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया। ३५ मैं ऐसे मनुष्य को जानता हूँ न जाने देहसहित, न जाने देहरहित परमेश्वर ही जानता है। ३६ कि स्वर्गलोक पर उठा लिया गया, और ऐसी बातें सुनी जो कहने की नहीं; और जिनका मूँह में लाना मनुष्य को उचित नहीं। ३७

ऐसे मनुष्य पर तो मैं घमण्ड करँगा, परन्तु अपने पर अपनी निर्बलताओं को छोड़, अपने विषय में घमण्ड न करँगा। ३८ क्योंकि यदि मैं घमण्ड करना चाहूँ भी तो मूर्ख न होऊँगा, क्योंकि सच बोलूँगा; तो भी स्व जाता हूँ, ऐसा न हो, कि जैसा कोई मुझे देखता है, या मुझसे सुनता है, मुझे उससे बढ़कर समझे। ३९ और इसलिए कि मैं प्रकाशनों की बहुतायत से फूल न जाऊँ, मेरे शरीर में एक काँटा चुभाया गया अर्थात् शैतान का एक दूत कि मुझे धूँसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊँ। ४० इसके विषय में मैंने प्रभु से तीन बार विनती की, कि मुझसे यह दूर हो जाए। ४१ और उसने मुझसे कहा, “मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।” इसलिए मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करँगा, कि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया करती रहे। ४२ इस कारण मैं मसीह के लिये निर्बलताओं, और निन्दाओं में, और दरिद्रता में, और उपदर्वों में, और संकटों में, प्रसन्न हूँ, क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी बलवन्त होता हूँ। ४३ मैं मूर्ख तो बना, परन्तु तुम ही ने मुझसे यह बरबस करवाया: तुहँने तो मेरी प्रशंसा करनी चाहिए थी, क्योंकि यद्यपि मैं कुछ भी नहीं, फिर भी उन बड़े से बड़े प्रेरितों से किसी बात में कम नहीं हूँ। ४४ प्रेरित के लक्षण भी तुहारे बीच सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हों, और अदुत्त कामों, और सामर्थ्य के कामों से दिखाए गए। ४५ तुम कौन सी बात मैं और कलीसियाओं से कम थे, केवल इसमें कि मैंने तुम पर अपना भार न रखा मेरा यह अन्यथा क्षमा करो। ४६ अब, मैं तीसी बार तुहारे पास आने को तैयार हूँ, और मैं तुम पर कोई भार न रखँगा; क्योंकि मैं तुहारी सम्पत्ति नहीं, बरन् तुम ही को चाहता हूँ। क्योंकि बच्चों को माता-पिता के लिये धन बटोरेना न चाहिए, पर माता-पिता को बच्चों के लिये। ४७ मैं तुम्हारी आत्माओं के लिये बहुत आनन्द से खर्च करँगा, बरन् आप भी खर्च हो जाऊँगा क्या जिनाना बढ़कर मैं तुम से प्रेम रखता हूँ, उतना ही घटकर तुम मुझसे प्रेम रखोगे? ४८ ऐसा हो सकता है, कि मैंने तुम पर बोझ नहीं डाला, परन्तु चतुराई से तुम्हें धोखा देकर फूसा लिया। ४९ भला, जिहें मैंने तुम्हारे पास भेजा, क्या उनमें से किसी के द्वारा मैंने छल करके तुम से कुछ ले लिया? ५० मैंने तीतुस ने छल करके तुम से कुछ लिया? क्या हम एक ही आत्मा के चलाए न चले? क्या एक ही मार्ग पर न चले? ५१ तुम अपी तक समझ रहे होंगे कि हम तुम्हारे सामने प्रत्युत्तर दे रहे हैं, हम तो परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह मैं बोलते हैं, और हे प्रियों, सब बातें तुम्हारी उन्नति ही के लिये कहते हैं। ५२ क्योंकि मुझे डर है, कहीं ऐसा न हो, कि मैं आकर जैसा चाहता हूँ, वैसा तुम्हें न पाऊँ; और मूँझे भी जैसा तुम नहीं चाहते वैसा ही पाओ, कि तुम मैं झगड़ा, डाह, क्रोध, विरोध, ईर्ष्या, चुगती, अभिमान और बखेडे होंगे। ५३ और कहीं ऐसा न हो कि जब मैं वापस करना पड़े, जिन्होंने पहले पाप किया था, और उस गंदे काम, और व्यभिचार, और लुचपन से, जो उन्होंने किया, मन नहीं फिराया।

१३ अब तीसी बार तुम्हारे पास आता हूँ: दो या तीन गवाहों के मूँह से हर एक बात ठहराइ जाएगी। १४ जैसे मैं जब दूरी बार तुम्हारे साथ था, वैसे ही अब दूर रहते हुए उन लोगों से जिन्होंने पहले पाप किया, और अन्य सब लोगों से अब पहले से कह देता हूँ, कि यदि मैं फिर आँऊँगा, तो नहीं छोड़ूँगा। १५ तुम तो इसका प्रामाण चाहते हो, कि मसीह मुझ मैं बोलता है, जो तुम्हारे लिये निर्बल नहीं; परन्तु तुम मैं सामर्थ्य हैं। १६ वह निर्बलता के कारण कूँस चढ़ाया तो गया, फिर भी परमेश्वर की सामर्थ्य से जीवित है, हम भी तो उसमें निर्बल हैं; परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य से जो तुम्हारे लिये है, उसके साथ

जीएँगे। ५ अपने आपको परखो, कि विश्वास में हो कि नहीं; अपने आपको जाँचो, क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते, कि यीशु मसीह तुम में है? नहीं तो तुम निकम्मे निकले हो। ६ पर मेरी आशा है, कि तुम जान लोगे, कि हम निकम्मे नहीं। ७ और हम अपने परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं, कि तुम कोई बुराई न करो; इसलिए नहीं, कि हम खरे देख पड़ें, पर इसलिए कि तुम भलाई करो, चाहे हम निकम्मे ही ठहरें। ८ क्योंकि हम सत्य के विरोध में कुछ नहीं कर सकते, पर सत्य के लिये ही कर सकते हैं। ९ जब हम निर्बल हैं, और तम बलवन्त हो, तो हम आनन्दित होते हैं, और यह प्रार्थना भी करते हैं, कि तुम सिद्ध हो जाओ। १० इस कारण मैं तुम्हारे पीठ पीछे ये बातें लिखता हूँ, कि उपस्थित होकर मुझे उस अधिकार के अनुसार जिसे प्रभु ने बिगाड़ने के लिये नहीं पर बनाने के लिये मुझे दिया है, कड़ाई से कुछ करना न पड़े। ११ अतः हे भाइयों, आनन्दित रहो; सिद्ध बनते जाओ; धैर्य रखो; एक ही मन रखो; मेल से रहो, और प्रेम और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हारे साथ होगा। १२ एक दूसरे को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो। १३ सब पवित्र लोग तुम्हें नमस्कार कहते हैं। १४ प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।

गलातियों

१ पौलस की, जो न मनुष्यों की ओर से, और न मनुष्य के द्वारा, बरन् यीशु मरीह और परमेश्वर पिता के द्वारा, जिसने उसको मेरे हओं में से जिलाया, प्रेरित है। २ और सारे भाइयों की ओर से, जो मेरे साथ हैं; गलातिया की कलीसियाओं के नाम। ३ परमेश्वर पिता, और हमारे प्रभु यीशु मरीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। ४ उसी ने अपने आपको हमारे पापों के लिये दे दिया, ताकि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए। (aion g165) ५ उसकी महिमा युग्मायुगा होती रहे। अमीन। (aion g165) ६ मुझे आश्चर्य होता है, कि जिसने तुम्हें मरीह के अनुग्रह से बुलाया उससे तुम इतनी जल्दी फिरकर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झूकने लगे। ७ परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है नी ही पर बात यह है, कि किनते ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मरीह के सुसमाचार को बिगाड़ा चाहते हैं। ८ परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाएं, तो श्रापित हो। ९ जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूँ, कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो श्रापित हो। १० अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूँ या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूँ? यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता, तो मरीह का दास न होता। ११ हे भाइयों, मैं तुम्हें जाता ए देता हूँ, कि जो सुसमाचार मैंने सुनाया है, वह मनुष्य का नहीं। १२ क्योंकि वह मुझे मनुष्य की ओर से नहीं पहुँचा, और न मुझे सिखाया गया, पर यीशु मरीह के प्रकाशन से मिला। १३ यहदी मत में जो पहले मेरा चाल-चलन था, तुम सुन चुके हो; कि मैं परमेश्वर की कलीसिया को बहुत ही सताता और नाश करता था। १४ और मैं यहदी धर्म में अपने साथी यहदियों से अधिक आगे बढ़ रहा था और अपने पूर्वजों की परम्पराओं में बहुत ही उत्तेजित था। १५ परन्तु परमेश्वर की जब इच्छा हई, उसने मेरी मात के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया, १६ कि मुझ में अपने पुत्र को प्राप्त करे कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुआँ; तो न मैंने माँस और लह से सलाह ली; १७ और न यस्श्लेम को उनके पास गया जो मुझसे पहले प्रेरित थे, पर तुरन्त अरब को चला गया और फिर वहाँ से दमिश्क को लौट आया। १८ फिर तीन वर्षों के बाद मैं कैफा से भेंट करने के लिये यस्श्लेम को गया, और उसके पास पन्द्रह दिन तक रहा। १९ परन्तु प्रभु के भाई याकूब को छोड़ और प्रेरितों में से किसी से न मिला। २० जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ, परमेश्वर को उपस्थित जानकर कहता हूँ, कि वे झूठी नहीं। २१ इसके बाद मैं सीरिया और किलिकिया के देशों में आया। २२ परन्तु यहदिया की कलीसियाओं ने जो मसीह में थी, मेरा मुँह तो कभी नहीं देखा था। २३ परन्तु यही सुना करती थीं, कि जो हमें पहले सताता था, वह अब उसी विश्वास का सुसमाचार सुनाता है, जिसे पहले नाश करता था। २४ और मेरे विषय में परमेश्वर की महिमा करती थीं।

२ चौदह वर्ष के बाद मैं बरनबास के साथ यस्श्लेम को गया और तीतुस को भी साथ ले गया। ३ और मेरा जाना ईवरीय प्रकाश के अनुसार हुआ और जो सुसमाचार मैं अन्यजातियों में प्रचार करता हूँ, उसको मैंने उन्हें बता दिया, पर एकान्त में उन्हीं को जो बड़े समझे जाते थे, ताकि ऐसा न हो, कि मेरी इस समय की, या पिछली भाग-दौड़ व्यर्थ ठहरे। ४ परन्तु तीतुस भी जो मेरे साथ था और जो यूनानी है; खतना करने के लिये विवश नहीं किया गया। ५

और यह उन झटे भाइयों के कारण हुआ, जो चोरी से घुस आए थे, कि उस स्वतंत्रता का जो मसीह यीशु में हमें मिली है, भेद कर, हमें दास बनाएँ। ६ उनके अधीन होना हमने एक घड़ी भर न माना, इसलिए कि सुसमाचार की सच्चाई तुम में बर्नी रहे। ७ फिर जो लोग कुछ समझे जाते थे वे चाहे कैसे भी थे, मुझे इससे कुछ काम नहीं, परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता उनसे मुझे कुछ भी नहीं प्राप्त हुआ। ८ परन्तु इसके विपरीत उन्होंने देखा, कि जैसा खतना किए हुए लोगों के लिये मुझे सुसमाचार का काम पतरस को सौंपा गया वैसा ही खतनारहितों के लिये मुझे सुसमाचार सुनाना सौंपा गया। ९ क्योंकि जिसने पतरस से खतना किए हुऐ मैं प्रेरिताई का कार्य बड़े प्रभाव सहित करवाया, उर्फी ने मुझसे भी अन्यजातियों में प्रभावशाली कार्य करवाया। १० और जब उन्होंने उस अनुग्रह को जो मुझे मिला था जान लिया, तो याकूब, और कैफा, और यहन्ना ने जो कलीसिया के खाख्भे समझे जाते थे, मुझे को और बरनबास को संपाति का दाहिना हाथ टेकर संग कर लिया, कि हम अन्यजातियों के पास जाएँ, और वे खतना किए हुओं के पास। ११ केवल यह कहा, कि हम कंगालों की सुधि लें, और इसी काम को करने का मैं आप भी यथ कर रहा था। १२ पर जब कैफा अन्ताकिया में आया तो मैंने उसके मुँह पर उसका सामना किया, क्योंकि वह दोषी ठहरा था। १३ इसलिए कि याकूब की ओर से कुछ लोगों के आने से पहले वह अन्यजातियों के साथ खाया करता था, परन्तु जब वे आए, तो खतना किए हुए लोगों के डर के मारे उनसे हट गया और किनारा करने लगा। १४ और उसके साथ शेष यहदियों ने भी कपट किया, यहाँ तक कि बरनबास भी उनके कपट में पड़ गया। १५ पर जब मैंने देखा, कि वे सुसमाचार की सच्चाई पर सीधी चाल नहीं चलते, तो मैंने सब के सामने कैफा से कहा, “जब तू यहदी होकर अन्यजातियों के समान चलता है, और यहदियों के समान नहीं तो तू अन्यजातियों को यहदियों के समान चलने को क्यों कहता है?” १६ हम जो जन्म के यहदी हैं, और पापी अन्यजातियों में से नहीं। १७ तो भी यह जानक कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मरीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, हमने आप भी मरीह यीशु पर विश्वास किया, कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं पर मरीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें; इसलिए कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा। १८ हम जो मरीह मैं धर्मी ठहरना चाहते हैं, यदि आप ही पापी निकलें, तो क्या मरीह पाप का सेवक है? कदापि नहीं। १९ क्योंकि जो कुछ मैंने पिरा दिया, यदि उसी को फिर बनाता हूँ, तो अपने आपको अपाराधी ठहराता हूँ। २० मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिये मर गया, कि परमेश्वर के लिये जीँऊँ। २१ मैं मरीह के साथ कूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित न रहा, पर मरीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया, और मैं लिये अपने आपको दे दिया। २२ मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मरीह का मरना व्यर्थ होता।

३ हे निर्बुद्धि गलातियों, किसने तुम्हें मोह लिया? तुम्हारी तो मानो अँखों के सामने यीशु मरीह कूस पर दिखाया गया! ४ मैं तुम से केवल यह जानना चाहता हूँ, कि तुम ने पवित्र आत्मा को, क्या व्यवस्था के कामों से, या विश्वास के समाचार से पाया? ५ क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो, कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे? ६ क्या तुम ने इतना दुःख व्यर्थ उठाया? परन्तु कदाचित् व्यर्थ नहीं। ७ इसलिए जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में सामर्थ्य के काम करता है, वह क्या व्यवस्था के कामों से

या विश्वास के सुसमाचार से ऐसा करता है? ६ “अब्राहम ने तो परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिये धार्मिकता गिनी गई।” ७ तो यह जान लो, कि जो विश्वास करनेवाले हैं, वे ही अब्राहम की सन्तान हैं। ८ और पवित्रशास्त्र ने पहले ही से यह जानकर, कि परमेश्वर अन्यजातियों को विश्वास से धर्मी ठहराएगा, पहले ही से अब्राहम को यह सुसमाचार सुना दिया, कि “तुझ में सब जातियाँ आशीष पाएँगी।” ९ तो जो विश्वास करनेवाले हैं, वे विश्वासी अब्राहम के साथ आशीष पाते हैं। १० अतः जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब श्राप के अधीन हैं, क्योंकि लिखा है, “जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह शापित है।” ११ पर यह बात प्रगट है, कि व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहाँ कोई धर्मी नहीं ठहरता क्योंकि धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। १२ पर व्यवस्था का विश्वास से कुछ सम्बंध नहीं; पर “जो उनको मानेगा, वह उनके कारण जीवित रहेगा।” १३ मसीह ने जो हमारे लिये श्रापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है, “जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।” १४ यह इसलिए हुआ, कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुँचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें, जिसकी प्रतिज्ञा हुई है। १५ हे भाइयों, मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूँ, कि मनुष्य की बाचा भी जो पक्की हो जाती है, तो न कोई उसे टालता है और न उसमें कुछ बढ़ाता है। १६ अतः प्रतिज्ञाएँ अब्राहम को, और उसके बंश को दी गईं, वह यह नहीं कहता, “बंशों को,” जैसे बहतों के विषय में कहा, पर जैसे एक के विषय में कि “तेरे बंश को” और वह मसीह है। १७ पर मैं यह कहता हूँ कि जो बाचा परमेश्वर ने पहले से पक्की की थी, उसको व्यवस्था चार सौ तीस वर्षों के बाद आकर नहीं टाल सकती, कि प्रतिज्ञा व्यर्थ ठहरे। १८ क्योंकि यदि विरासत व्यवस्था से मिली है, तो फिर प्रतिज्ञा से नहीं, परन्तु परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा के द्वारा दे दी है। १९ तब फिर व्यवस्था क्या रही? वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई, कि उस बंश के अनें तक रहे, जिसको प्रतिज्ञा दी गई थी, और व्यवस्था स्वर्गदूतों के द्वारा एक मध्यस्थ के हाथ ठहराई गई। २० मध्यस्थ तो एक का नहीं होता, परन्तु परमेश्वर एक ही है। २१ तो क्या व्यवस्था परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के विरोध में है? कदापि नहीं! क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था दी जाती जो जीवन दे सकती, तो सचमुच धार्मिकता व्यवस्था से होती। २२ परन्तु पवित्रशास्त्र ने सब को पाप के अधीन कर दिया, ताकि वह प्रतिज्ञा जिसका आधार यीशु मसीह पर विश्वास करना है, विश्वास करनेवालों के लिये पूरी हो जाए। २३ पर विश्वास के अनें से पहले व्यवस्था की अधीनता में हम कैद थे, और उस विश्वास के अनें तक जो प्राप्त होनेवाला था, हम उसी के बन्धन में रहे। २४ इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुँचने के लिए हमारी शिक्षक हुई है, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। २५ परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के अधीन न रहे। २६ क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। २७ और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है। २८ अब न कोई यहदी रहा और न युनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। २९ और यदि तुम मसीह के हो, तो अब्राहम के बंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।

४ मैं यह कहता हूँ, कि वारिस जब तक बालक है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, तो भी उसमें और दास में कूँभ भेद नहीं। ५ परन्तु पिता के ठहराए हुए समय तक रक्षकों और भण्डारियों के बश में रहता है। ६ वैसे ही

हम भी, जब बालक थे, तो संसार की आदि शिक्षा के बश में होकर दास बने हुए थे। ७ परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो ही से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ। ८ ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हमको लोपालक होने का पद मिले। ९ और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो ‘हे अब्बा, हे पिता’ कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है। १० इसलिए तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ। ११ फिर पहले, तो तुम परमेश्वर को न जानकर उनके दास थे जो स्वभाव में देवता नहीं। १२ पर अब जो तुम ने परमेश्वर को हफ्चान लिया वरन् परमेश्वर ने तुम को पहचाना, तो उन निर्वत और निकम्मी आदि शिक्षा की बातों की ओर क्यों फिरते हो, जिनके तुम दोबारा दास होना चाहते हो? १३ तुम दिनों और महीनों और नियत समयों और वर्षों को मानते हो। १४ मैं तुम्हारे विषय में डरता हूँ, कही ऐसा न हो, कि जो परिश्रम मैंने तुम्हारे लिये किया है वह व्यर्थ ठहरे। १५ हे भाइयों, मैं तुम से बिनती करता हूँ, तुम मेरे समान हो जाओ: क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हुआ हूँ; तुम ने मेरा कुछ बिगड़ा नहीं। १६ पर तुम जानते हो, कि पहले-पहल मैंने शरीर की निर्बलता के कारण तुम्हें सुसमाचार सुनाया। १७ और तुम ने मेरी शारीरिक दशा को जो तुहारी परीक्षा का कारण थी, तुच्छ न जाना; न उससे घुणा की; और परमेश्वर के दूत वरन् मसीह के समान मुझे ग्रहण किया। १८ तो वह तुम्हारा आनन्द कहाँ गया? मैं तुम्हारा गवाह हूँ, कि यदि हो सकता, तो तुम अपनी आँखें भी निकालकर मुझे दे देते। १९ तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा बैरी हो गया हूँ। २० वे तुम्हें मित्र बनाना तो चाहते हैं, पर भली मनसा से नहीं; वरन् तुम्हें मुझसे अलग करना चाहते हैं, कि तुम उन्हीं के साथ हो जाओ। २१ पर उत्साही होना अच्छा है, कि भली बात में हर समय यत्र किया जाए, न केवल उसी समय, कि जब मैं तुम्हारे साथ रहता हूँ। २२ हे मेरे बालकों, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जच्चा के समान पीड़ाएँ सहता हूँ। २३ इच्छा तो यह होती है, कि अब तुम्हारे पास आकर और ही प्रकार से बोलूँ, क्योंकि तुम्हारे विषय में मैं बिकल हूँ। २४ तुम जो व्यवस्था के अधीन होना चाहते हो, मुझसे कहो, क्या तुम व्यवस्था की नहीं सुनते? २५ यह लिखा है, कि अब्राहम के दो पुत्र हैं; एक दासी से, और एक स्वतंत्र द्वी से। २६ परन्तु जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से जन्मा, और जो स्वतंत्र द्वी से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा। २७ इन बातों में दृष्टान्त है, ये द्वियाँ मानो दो बाचाएँ हैं, एक तो सनि पहाड़ की जिससे दास ही उत्पन्न होते हैं, और वह हागार है। २८ और हागार मानो अब का सनि पहाड़ है, और आधुनिक यस्तातेम उसके तुल्य है, क्योंकि वह अपने बालकों समेत दासत्व में है। २९ पर ऊपर की यस्तातेम स्वतंत्र है, और वह हमारी माता है। ३० क्योंकि लिखा है, “हे बाँझ, तू जो नहीं जनी अनन्द कर, तू जिसको पीड़ाएँ नहीं उठती; गला खोलकर जयजयकर कर, क्योंकि त्याही ही की सन्तान सुहागिन की सन्तान से भी अधिक है।” ३१ हे भाइयों, हम इसहाक के समान प्रतिज्ञा की सन्तान हैं। ३२ और जैसा उस समय शरीर के अनुसार जन्मे हुए को सताता था, वैसा ही अब भी होता है। ३३ परन्तु पवित्रशास्त्र क्या कहता है? “दासी और उसके पुत्र को निकाल दे, क्योंकि दासी का पुत्र स्वतंत्र द्वी के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा।” ३४ इसलिए हे भाइयों, हम दासी के नहीं परन्तु स्वतंत्र द्वी की सन्तान हैं।

५ मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; इसलिए इसमें स्थिर रहो, और दासत्व के जूँ में फिर से न जुतो। ६ मैं पौलस तुम से कहता हूँ, कि

यदि खतना कराओगे, तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा। ३ फिर भी मैं हर एक खतना करानेवाले को जताएँ देता हूँ, कि उसे सारी व्यवस्था माननी पड़ेगी। ४ तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से पिर गए हो। ५ क्योंकि आत्मा के कारण, हम विश्वास से, आशा की हुई धार्मिकता की प्रतीक्षा करते हैं। ६ और मसीह यीशु में न खतना, न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल विश्वास का जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है। ७ तुम तो भली भौति दौड़ रहे थे, अब किसें तुम्हें रोक दिया, कि सत्य को न मानो। ८ ऐसी सीधी तुम्हारे बुलेनेवाले की ओर से नहीं। ९ थोड़ा सा खमीर से गुंड़ हुए आटे को खमीर कर डालता है। १० मैं प्रभु पर तुम्हारे विषय में भरोसा रखता हूँ, कि तुम्हारा कोई दूसरा विचार न होगा; परन्तु जो तुम्हें घबरा देता है, वह कोई क्यों न हो दण्ड पाएगा। ११ हे भाइयों, यदि मैं अब तक खतना का प्रचार करता हूँ, तो क्यों अब तक सताया जाता हूँ; फिर तो कूस की ठोकर जाती रही। १२ भला होता, कि जो तुम्हें डॉवाडोल करते हैं, वे अपना अंग ही काट डालते। १३ हे भाइयों, तुम स्वतंत्र होने के लिये बुलाए गए हो; परन्तु ऐसा न हो, कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिये अवसर बने, बरन प्रेम से एक दूसरे के दास बनो। १४ क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, “तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।” १५ पर यदि तुम एक दूसरे को दाँत से काटते और फाड़ खाते हो, तो चौकस रहो, कि एक दूसरे का सत्यानाश न कर दो। १६ पर मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। १७ क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। १८ और यदि तुम आत्मा के चलाएँ चलते हो तो व्यवस्था के अदीन न रहे। १९ शरीर के काम तो प्रगट है, अर्थात् व्यभिचार, गंदे काम, लुचपन, २० मृतिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फृट, विर्धर्म, २१ डाह, मतवालान, लीलाकीड़ा, और इनके जैसे और-और काम हैं, इनके विषय में तैयार करने के बाहर देता हूँ जैसा पहले कह भी चुका हूँ, कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। २२ पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, और दया, भलाई, विश्वास, २३ नम्रता, और संयम हैं; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं। २४ और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत कूस पर चढ़ा दिया है। २५ यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी। २६ हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें।

६ हे भाइयों, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को सम्भालो, और अपनी भी देख-रेख करो, कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो। ७ तुम एक दूसरे के भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो। ८ क्योंकि यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने आपको कुछ समझता है, तो अपने आपको धोखा देता है। ९ पर हर एक अपने ही काम को जाँच ले, और तब दूसरे के विषय में नहीं परन्तु अपने ही विषय में उसको घमण्ड करने का अवसर होगा। १० क्योंकि हर एक व्यक्ति अपना ही बोझ उठाएगा। ११ जो वचन की शिक्षा पाता है, वह सब अच्छी वस्तुओं में सिखानेवाले को भागी करे। १२ धोखा न खाओ, परमेश्वर उपहास में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही कोटेगा। १३ क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा, और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी

काटेगा। (aiōnios g166) १४ हम भले काम करने में साहस न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेगे। १५ इसलिए जहाँ तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ। १६ देखो, मैंने कैसे बड़े-बड़े अक्षरों में तुम को अपने हाथ से लिखा है। १७ जितने लोग शारीरिक दिखावा चाहते हैं वे तुम्हारे खतना करवाने के लिये दबाव देते हैं, केवल इसलिए कि वे मसीह के कूस के कारण सताए न जाएँ। १८ क्योंकि खतना करानेवाले आप तो, व्यवस्था पर नहीं चलते, पर तुम्हारा खतना कराना इसलिए चाहते हैं, कि तुम्हारी शारीरिक दशा पर घमण्ड करें। १९ पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूँ, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के कूस का जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में कूस पर चढ़ाया गया हूँ। २० क्योंकि न खतना, और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सुषि महत्वपूर्ण है। २१ और जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इसाएल पर, शान्ति और दया होती रहे। २२ आगे कोई मुझे दुःख न दे, क्योंकि मैं यीशु के दागों को अपनी देह में लिये फिरता हूँ। २३ हे भाइयों, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे। आमन।

इफिसियों

१ पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है,

उन पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासी लोगों के नाम जो इफिस्स में हैं, २ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। ३ हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है। ४ जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसकी दृष्टि में पवित्र और निर्दिष्ट हों। ५ और प्रेम में उसने अपनी इच्छा के भले अधिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, ६ कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें अपने प्रिय पुत्र के द्वारा सेंट-मेंट दिया। ७ हमको मसीह में उसके लह के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, परमेश्वर के उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है, ८ जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया। ९ उसने अपनी इच्छा का भेद, अपने भले अधिप्राय के अनुसार हमें बताया, जिसे उसने हमें अपने आप में ठान लिया था, १० कि परमेश्वर की योजना के अनुसार, समय की पूर्ति होने पर, जो कुछ स्वर्ग में और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे। ११ मसीह में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के यथा के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर विरासत बने। १२ कि हम जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्तुति का कारण हों। १३ और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। १४ वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिये हमारी विरासत का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो। १५ इस कारण, मैं भी उस विश्वास जो तुम लोगों में प्रभु यीशु पर है और सब पवित्र लोगों के प्रति प्रेम का समाचार सुनकर, १६ तुम्हारे लिये परमेश्वर का धन्यवाद करना नहीं छोड़ता, और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण किया करता है। १७ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें बुद्धि की आत्मा और अपने ज्ञान का प्रकाश दे। १८ और तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि हमारे बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसकी विरासत की महिमा का धन कैसा है। १९ और उसकी सामर्थ्य हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार। २० जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उसको मेरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर, २१ सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया; (aiōn g165) २२ और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया और उसे सब वस्तुओं पर शिरोपण ठहराकर कलीसिया को दे दिया, २३ यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।

२ और उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मेरे हुए थे। ३ जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के अधिपति अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। (aiōn g165) ४ इनमें हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएँ पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की

सन्तान थे। ५ परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिससे उसने हम से प्रेम किया, ६ जब हम अपराधों के कारण मेरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; अनुग्रह ही से तम्हारा उद्धार हुआ है, ७ और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया। ८ कि वह अपनी उस दया से जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए। (aiōn g165) ९ क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तम्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर का दान है; १० और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमाड़ करे। ११ क्योंकि हम परमेश्वर की रक्षा है; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सुजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया। १२ इस कारण स्मरण करो, कि तुम जो शारीरिक रीति से अन्यजाति हो, और जो लोग शरीर में हाथ के किए हुए खत्तनावाले कहलाते हैं, वे तुम को खत्तनारहित कहते हैं, १३ तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इसाएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईंवर रहित थे। १४ पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लह के द्वारा निकट हो गए हो। १५ क्योंकि वही हमारा मेल है, जिसने यहदियों और अन्यजातियों को एक कर दिया और अलग करनेवाले दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया। १६ और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएँ विधियों की रीति पर थी, मिटा दिया कि दोनों से अपने में एक नई जाति उत्पन्न करके मेल करा दे, १७ और क्लूस पर बैर को नाश करके इसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए। १८ और उसने आकर तुम्हें जो दूर थे, और उन्हें जो निकट थे, दोनों को मेल-मिलाप का सुसमाचार सुनाया। १९ क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुँच होती है। २० इसलिए तुम अब परदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। २१ और प्रेरितों और भविष्यद्वत्काओं की नीव पर जिसके कोने का पथर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो। २२ जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है, २३ जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास-स्थान होने के लिये एक साथ बना जाते हो।

३ इसी कारण मैं पौलुस जो तुम अन्यजातियों के लिये मसीह यीशु का बन्दी हूँ

२ यदि तुम ने परमेश्वर के उस अनुग्रह के प्रबन्ध का समाचार सुना हो, जो तुहारे लिये मुझे दिया गया। ३ अर्थात् यह कि वह भेद मुझ पर प्रकाश के द्वारा प्रगट हुआ, जैसा मैं पहले सक्षेप में लिख चुका हूँ। ४ जिससे तुम पदकर जान सकते हो कि मैं मसीह का वह भेद कहाँ तक समझता हूँ। ५ जो अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वत्काओं पर प्रगट किया गया है। ६ अर्थात् यह कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग विरासत में सहभागी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं। ७ और मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो सामर्थ्य के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक बना। ८ मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूँ, यह अनुग्रह हुआ कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊँ, ९ और सब पर यह बात प्रकाशित करूँ कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब के सुजनहार परमेश्वर में आदि से गुप था। (aiōn g165) १० ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थानों में हैं हैं प्रगट

किया जाए। ११ उस सनातन मनसा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी। (aiōn g165) १२ जिसमें हमको उस पर विश्वास रखने से साहस और भरोसे से निकट आने का अधिकार है। १३ इसलिए मैं विनती करता हूँ कि जो कलेश तुम्हारे लिये मुझे हो रहे हैं, उनके कारण साहस न छोड़ो, क्योंकि उनमें तुम्हारी महिमा है। १४ मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूँ, १५ जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर, हाँ एक घराने का नाम रखा जाता है, १६ कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त होते जाओ, १७ और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नीच डालकर, १८ सब पवित्र लोगों के साथ भली भाँति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कीतनी है। १९ और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से पेर है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ। २० अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है, २१ कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युआन्सुया होती रहे। आमिन। (aiōn g165)

४ इसलिए मैं जो प्रभु में बन्दी हूँ तुम से विनती करता हूँ कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो, २ अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो, ३ और मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यथा करो। ४ एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। ५ एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, ६ और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में, और सब में है। ७ पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुप्राप मिला है। ८ इसलिए वह कहता है, “वह ऊँचे पर चढ़ा, और बन्दियों को बाँध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए।” ९ (उसके ढंडे से, और क्या अर्थ पाया जाता है केवल यह कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था। १० और जो उत्तर गया यह वही है जो सारे आकाश के ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ परिपूर्ण करे।) ११ और उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वत्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुमाचारा सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। १२ जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए। १३ जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पेरे डील-डौल तक न बढ़ जाएँ। १४ ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उनके भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक वायु से उछाले, और इधर-उधर युआए जाते हों। १५ वरन् प्रेम में सच बोलें और सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ, १६ जिससे सारी देह हर एक जड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक अंग के ठीक-ठीक कार्य करने के द्वारा उसमें होता है, अपने आपको बढ़ाती है कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए। १७ इसलिए मैं यह कहता हूँ और प्रभु में जताए देता हूँ कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ की रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। १८ क्योंकि उनकी बुद्धि अंधेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं; १९ और वे सुन्न होकर लुचपन में लग गए हैं कि सब

प्रकार के गदे काम लालसा से किया करें। २० पर तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई। २१ वरन् तुम ने सचमुच उसी की सुनी, और जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गए। २२ कि तुम अपने चाल-चलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो। २३ और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ, २४ और नये मनुष्यत्व को पहन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सजा गया है। २५ इस कारण झट्ठ बोलना छोड़कर, हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं। २६ क्रोध तो करो, पर पाप मत करो; सर्व अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे। २७ और न शैतान को अवसर दो। २८ चोरी करनेवाला फिर चोरी न करें; वरन् भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करें; इसलिए कि जिसे प्रयोजन हो, उसे देने को उसके पास कुछ हो। २९ कोई गंदी बात तुम्हारे मुँह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उससे सुननेवालों पर अनुग्रह हो। ३० परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिससे तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है। ३१ सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कल्पना, और निन्दा सब बैर-भाव समेत तुम से दूर की जाए। ३२ एक दूसरे पर कृपालु, और कस्तगाम्य हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।

५ इसलिए प्रिय बच्चों के समान परमेश्वर का अनुसरण करो; २ और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिये अपने आपको सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेट करके बलिदान कर दिया। ३ जैसा पवित्र लोगों के योग्य है, वैसा तुम में व्याभिचार, और किसी प्रकार के अशुद्ध काम, या लोभ की चर्चा तक न हो। ४ और न निर्लज्जता, न मूर्खता की बातचीत की, न उपहास किया, क्योंकि ये बातें शोभा नहीं देती, वरन् धन्यवाद ही सुना जाए। ५ क्योंकि तुम यह जानते हो कि किसी व्याभिचारी, या अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य की, जो मूर्तिपूजक के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में विरासत नहीं। ६ कोई तम्हें व्यर्थ बातें से धोखा न दें; क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न माननेवालों पर भड़कता है। ७ इसलिए तुम उनके सहभागी न हो। ८ क्योंकि तुम तो पहले अंधकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, अतः ज्योति की सन्तान के समान चलो। ९ (क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है), १० और यह परखो, कि प्रभु को क्या भाता है? ११ और अंधकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन् उन पर उलाहाना दो। १२ क्योंकि उनके गुम कामों की चर्चा भी लज्जा की बात है। १३ पर जितने कामों पर उलाहा दिया जाता है वे सब ज्योति से प्रगट होते हैं, क्योंकि जो सब कुछ को प्रगट करता है, वह ज्योति है। १४ इस कारण वह कहता है, “हे सोनेवाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी।” १५ इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हों; निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो। १६ और अबसर को बहुमल्य समझो, क्योंकि दिन बुद्ध हो। १७ इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है। १८ और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ, १९ और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गते और स्तुति करते रहो। २० और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो। २१ और मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो। २२ हे पत्रियों, अपने-अपने पति के

ऐसे अधीन रहो, जैसे प्रभु के। २३ क्योंकि पति तो पत्री का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्ता है। २४ पर जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्रियाँ भी हर बात में अपने-अपने पति के अधीन रहें। २५ हे पतियों, अपनी-अपनी पत्री से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिये दे दिया, २६ कि उसको वचन के द्वारा जल के सान से शुद्ध करके पवित्र बनाए। २७ और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्णी, न कोई ऐसी वस्तु हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो। २८ इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी-अपनी पत्री से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्री से प्रेम रखता है, वह आने आप से प्रेम रखता है। २९ क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा वरन् उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है। ३० इसलिए कि हम उसकी देह के अंग हैं। ३१ “इस कारण पुरुष माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्री से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।” ३२ यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ। ३३ पर तुम मैं से हर एक अपनी पत्री से अपने समान प्रेम रखे, और पत्री भी अपने पति का भय मानो।

६ हे बच्चों, प्रभु में अपने माता-पिता के आजाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है। ७ “अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहली आज्ञा है, जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है), ८ कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहत दिन जीवित रहे।” ९ और हे पिताओं, अनने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उनका पालन-पोषण करो। १० हे दासों, जो लोग संसार के अनुसार तुहरे स्वामी हैं, अपने मन की सिधाइ से डरते, और काँपते हुए, जैसे मसीह की, वैसे ही उनकी भी आज्ञा मानो। ११ और मुझ्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिये सेवा न करो, पर मसीह के दासों के समान मन से परमेश्वर की इच्छा पर चलो, १२ और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं, परन्तु प्रभु की जानकर सुझच्छा से करो। १३ क्योंकि तुम जानते हो, कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो, चाहे स्वतंत्र, प्रभु से वैसा ही पाएगा। १४ और हे स्वामियों, तुम भी धमकियाँ छोड़कर उनके साथ वैसा ही व्यवहार करो, क्योंकि जानते हो, कि उनका और तुम्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है, और वह किसी का पक्ष नहीं करता। १५ इसलिए प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। १६ परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको। १७ क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लह और माँस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के शासकों से, और उस दुष्टता की आमिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। (aiōn q165) १८ इसलिए परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको। १९ इसलिए सत्य से अपनी कमर कमसकर, और धार्मिकता की झिलम पहनकर, २० और पाँवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहनकर; २१ और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिससे तुम उस दृश्य के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको। २२ और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। २३ और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार विनती किया करो, २४ और मेरे लिये भी कि मुझे बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए कि मैं साहस से सुसमाचार का भेद बता सकूँ, २५ जिसके लिये मैं जंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत हूँ। और यह भी कि मैं उसके विषय में जैसा मुझे चाहिए साहस से बोलूँ। २६

तुखिकुस जो प्रिय भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक है, तुम्हें सब बातें बताएगा कि तुम भी मेरी दशा जानो कि मैं कैसा रहता हूँ। २७ उसे मैंने तुम्हारे पास इसलिए भेजा है, कि तुम हमारी दशा जानो, और वह तुम्हारे मनों को शान्ति दे। २८ परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से भाइयों को शान्ति और विश्वास सहित प्रेम मिले। २९ जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से अमर प्रेम रखते हैं, उन सब पर अनुग्रह होता रहे।

फिलिप्पियों

१ मरीह यीशु के दास पौलसु और तीमुथियुस की ओर से सब पवित्र लोगों के नाम, जो मरीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते हैं, अध्यक्षों और सेवकों समेत, २ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मरीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। ३ मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूँ, तब-तब अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, ४ और जब कभी तुम सब के लिये विनती करता हूँ, तो सदा आनन्द के साथ विनती करता हूँ ५ इसलिए कि तुम पहले दिन से लेकर आज तक सुसमाचार के फैलाने में मेरे सहभागी रहे हो। ६ मुझे इस बात का भरोसा है कि जिसने तुम में अच्छा काम अरम्भ किया है, वही उसे यीशु मरीह के दिन तक पूरा करेगा। ७ उन्हिंने है कि मैं तुम सब के लिये ऐसा ही विचार करूँ, क्योंकि तुम मेरे मन में आ बसे हो, और मेरी कैद में और सुसमाचार के लिये उत्तर और प्रमाण देने में तुम सब मेरे साथ अनुग्रह में सहभागी हो। ८ इसमें परमेश्वर मेरा गवाह है कि मैं मरीह यीशु के समान प्रेम करके तुम सब की लालसा करता हूँ। ९ और मैं यह प्रार्थना करता हूँ, कि तुम्हारा प्रेम, ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी बढ़ता जाए, १० यहाँ तक कि तुम उत्तम से उत्तम बातों को प्रिय जानो, और मरीह के दिन तक सच्चे बने रहो, और ठोकर न खाओ; ११ और उस धार्मिकता के फल से जो यीशु मरीह के द्वारा होते हैं, भयपर होते जाओ जिससे परमेश्वर की महिमा और स्तुति होती रहे। १२ हे भाइयों, मैं चाहता हूँ, कि तुम यह जान लो कि मुझ पर जो बीती है, उससे सुसमाचार ही की उन्नति हुई है। १३ यहाँ तक कि कैसर के राजभवन की सारे सैन्य-दल और शेष सब तोपों में यह प्रगट हो गया है कि मैं मरीह के लिये कैद हूँ, १४ और प्रभु में जो भाई है, उनमें से अधिकांश मेरे कैद होने के कारण, साहस बाँधकर, परमेश्वर का वचन बेघड़क सुनाने का और भी साहस करते हैं। १५ कुछ तो डाह और झांडे के कारण मरीह का प्रचार करते हैं और कुछ भली मनसा से। १६ कई एक तो यह जानकर कि मैं सुसमाचार के लिये उत्तर देने को ठहराया गया हूँ प्रेम से प्रचार करते हैं। १७ और कई एक तो सिर्धाई से नहीं पर विरोध से मरीह की कथा सुनाते हैं, यह समझकर कि मेरी कैद में मेरे लिये करेश उत्पन्न करें। १८ तो क्या हुआ? केवल यह, कि हर प्रकार से चाहे बहाने से, चाहे सच्चाई से, मरीह की कथा सुनाई जाती है, और मैं इससे आनन्दित हूँ, और आनन्दित रहूँगा भी। १९ क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी विनती के द्वारा, और यीशु मरीह की आत्मा के दान के द्वारा, इसका प्रतिफल, मेरा उद्धार होगा। २० मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूँ कि मैं किसी बात में लजिज्त न होऊँ, पर जैसे मेरे प्रबल साहस के कारण मरीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसा ही अब भी हो चाहे मैं जीवित रहूँ या मर जाऊँ। २१ क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मरीह है, और मर जाना लाभ है। २२ पर यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिये लाभदायक है तो मैं नहीं जानता कि किसको चुनूँ। २३ क्योंकि मैं दोनों के बीच असंजोस में हूँ, जी तो चाहता है कि देह-व्याग के मरीह के पास जा रहूँ, क्योंकि यह बहत ही अच्छा है, २४ परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे कारण और भी आवश्यक है। २५ और इसलिए कि मुझे इसका भरोसा है। अतः मैं जानता हूँ कि मैं जीवित रहूँगा, वरन् तुम सब के साथ रहूँगा, जिससे तुम विश्वास में ढूँढ होते जाओ और उसमें आनन्दित रहो; २६ और जो घमण्ड तुम मेरे विषय में करते हो, वह मेरे फिर तुम्हारे पास आने से मरीह यीशु में अधिक बढ़ जाए। २७ केवल इतना करो कि तुम्हारा चाल-चलन मरीह के सुसमाचार के योग्य हो कि चाहे मैं आकर तुम्हें देखूँ, चाहे न भी आँऊँ, तुम्हारे विषय में यह सनूँ कि तुम एक ही आत्मा में स्थिर हो, और एक चित होकर सुसमाचार

के विश्वास के लिये परिश्रम करते रहते हो। २८ और किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खोते। यह उनके लिये विनाश का स्पष्ट चिन्ह है, परन्तु तुम्हारे लिये उद्धार का, और यह परमेश्वर की ओर से है। २९ क्योंकि मरीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि न केवल उस पर विश्वास कोरा पर उसके लिये दुःख भी उठाओ, ३० और तुम्हें वैसा ही परिश्रम करना है, जैसा तुम ने मुझे करते देखा है, और अब भी सुनते हो कि मैं वैसा ही करता हूँ।

३१ अतः यदि मरीह में कुछ प्रोत्साहन और प्रेम से ढाढ़स और आत्मा की सहभागिता, और कुछ कल्पना और दया हो, ३२ तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चिन्त, और एक ही मनसा रखो। ३३ स्वार्थ या मिथ्यागर्व के लिये कुछ न करो, पर तीनता से एक दूसरों को अपने से अच्छा समझो। ३४ हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करो। ३५ जैसा मरीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो; ३६ जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की बस्तु न समझा। ३७ वरन् अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वस्पन्द धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। ३८ और मनुष्य के स्पष्ट में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, कृत्स की मृत्यु भी सह ली। ३९ इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, ४० कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर धूटना टेकें, ४१ और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मरीह ही प्रभु है। ४२ इसलिए हे मेरे प्रियों, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और काँपते हुए अपने-अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ। ४३ क्योंकि परमेश्वर ही है, जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है। ४४ सब काम बिना कुड़कड़ाए और बिना विवाद के किया करो; ४५ ताकि तुम निर्दोष और निष्कपट होकर टेढ़े और विकृत लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, जिनके बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपिकों के समान दिखाई देते हो, ४६ कि मरीह के दिन मुझे घण्ड करने का कारण हो कि न मेरा दौड़ना और न मेरा परिश्रम करना व्यर्थ हुआ। ४७ यदि मुझे तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा के साथ अपना लह भी बहाना पड़े तो भी मैं आनन्दित हूँ, और तुम सब के साथ अनन्द करता हूँ। ४८ वैसे ही तुम भी आनन्दित हो, और मेरे साथ अनन्द करो। ४९ मुझे प्रभु यीशु में आशा है कि मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरन्त भेजूँगा, ताकि तुम्हारी दशा सुनकर मुझे शान्ति मिले। ५० क्योंकि मेरे पास ऐसे स्वभाव का और कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे। ५१ क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मरीह की। ५२ पर उसको तो तुम ने परखा और जान भी लिया है कि जैसा पत्र पिता के साथ करता है, वैसा ही उसने सुसमाचार के फैलाने में मेरे साथ परिश्रम किया। ५३ इसलिए मुझे आशा है कि ज्यों ही मुझे जान पड़ेगा कि मेरी क्या दशा होगी, त्यों ही मैं उसे तुरन्त भेज दूँगा। ५४ और मुझे प्रभु में भरोसा है कि मैं आप भी यीशु आँऊँगा। ५५ पर मैंने इण्फूदीसु को जो मेरा भाई, और सहकारी और संगी येदू़ा और तुम्हारा दूत, और आवश्यक बातों में मेरी सेवा ठहल करनेवाला है, तुम्हारे पास भेजना अवश्य समझा। ५६ क्योंकि उसका मन तुम सब में लगा हुआ था, इस कारण वह व्याकुल रहता था क्योंकि तुम ने उसकी बीमारी का हाल सुना था। ५७ और निश्चय वह बीमार तो हो गया था, यहाँ तक कि मरने पर था, परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया की; और केवल उस पर ही नहीं, पर मुझ पर

भी कि मुझे शोक पर शोक न हो। २८ इसलिए मैंने उसे भेजने का और भी यत्र किया कि तुम उससे फिर भेट करके आनन्दित हो जाओ और मेरा भी शोक घट जाए। २९ इसलिए तुम प्रभु में उससे बहुत आनन्द के साथ भेट करना, और ऐसों का आदर किया करना, ३० क्योंकि वह मसीह के काम के लिये अपने प्राणों पर जोखिम उठाकर मरने के निकट हो गया था, ताकि जो घटी तुम्हारी और से मेरी सेवा में हुई उसे पार करे।

३१ इसलिए हे मेरे भाइयों, प्रभु में आनन्दित रहो। वे ही बातें तुम को बार बार लिखें मैं मुझे तो कोई कष्ट नहीं होता, और इसमें तुम्हारी कुशलता है। ३२ कुतों से चौकस रहो, उन बोंगों काम करनेवालों से चौकस रहो, उन काट-कट करनेवालों से चौकस रहो। ३३ क्योंकि यथार्थ खतनावाले तो हम ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा की अगुआई से उपासना करते हैं, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं और शरीर पर भरोसा नहीं रखते। ३४ पर मैं तो शरीर पर भी भरोसा रख सकता हूँ। यदि किसी और को शरीर पर भरोसा रखने का विचार हो, तो मैं उससे भी बढ़कर रख सकता हूँ। ३५ आठवें दिन मेरा खतना हुआ, इमाएल के बंश, और बिन्यामीन के गोत्र का हूँ; इत्तियों का इत्तानी हूँ, व्यवस्था के विषय में यदि कहो तो फरीसी हूँ। ३६ उत्साह के विषय में यदि कहो तो कलीसिया का सतानेवाला; और व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में यदि कहो तो निर्देश था। ३७ परन्तु जो-जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। ३८ वरन् मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ। जिसके कारण मैंने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, ताकि मैं मसीह को प्राप्त करूँ। ३९ और उपर्योग पाया जाऊँ; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है, और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है, ४० ताकि मैं उसको और उसके पुनर्स्थान की सामर्थ्य को, और उसके साथ दुःखों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ और उसकी मृत्यु की सामानता को प्राप्त करूँ। ४१ ताकि मैं किसी भी रीति से मेरे हृदयों में से जी उठने के पद तक पहुँचूँ। ४२ यह मतलब नहीं कि मैं पा चुका हूँ, या सिद्ध हो चुका हूँ; पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूँ, जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। ४३ हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ; परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूलकर, आगे की बातों की ओर बढ़ा जाए। ४४ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ, जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है। ४५ अतः हम में से जितने सिद्ध हैं, यहीं विचार रखें, और यदि किसी बात में तुम्हारा और ही विचार हो तो परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रगट कर देगा। ४६ इसलिए जहाँ तक हम पहुँचे हैं, उसी के अनुसार चलें। ४७ हे भाइयों, तुम सब मिलकर मेरी सी चाल चलो, और उन्हें फहानों, जो इस रीति पर चलते हैं जिसका उदाहरण तुम हम में पाते हो। ४८ क्योंकि अनेक लोग ऐसी चाल चलते हैं, जिनकी चर्चा मैंने तुम से बार बार की है और अब भी रो-रोकर कहता हूँ, कि वे अपनी चाल-चलन से मसीह के क्रस के बैरी हैं, ४९ उनका अन्त बिनाश है, उनका ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं, और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं। ५० पर हमारा स्वदेश स्वर्ग में है; और हम एक उद्वारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के बहाँ से आने की प्रतीक्षा करते हैं। ५१ वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का स्प बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा।

५२ इसलिए हे मेरे प्रिय भाइयों, जिनमें मेरा जी लगा रहता है, जो मेरे आनन्द और मुकुट हो, हे प्रिय भाइयों, प्रभु में इसी प्रकार स्थिर रहो। ५३ मैं यूआदिया से निवेदन करता हूँ, और सन्तुते से भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें। ५४ हे सच्चे सहकर्मी, मैं तुझ से भी विनती करता हूँ, कि तू उन द्वियों की सहायता कर, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ सुसमाचार फैलाने में, क्लेमेंस और मेरे अन्य सहकर्मियों समेत परिस्थित किया, जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं। ५५ प्रभु में सदा आनन्दित रहो, मैं फिर कहता हूँ, आनन्दित रहो। ५६ तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रगट हो। प्रभु निकट है। ५७ किसी भी बात की चिन्ता मत करो; पन्तु हर एक बात में तुम्हों निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ। ५८ तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से बिल्कुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुक्षित रखेगी। ५९ इसलिए हे भाइयों, जो-जो बातें सत्य हैं, और जो-जो बातें आदरणीय हैं, और जो-जो बातें उचित हैं, और जो-जो बातें पवित्र हैं, और जो-जो बातें सुहावनी हैं, और जो-जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात् जो भी सदृश और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो। ६० जो बातें तुमने मुझसे सीधी, और ग्रहण की, और सुनी, और मुझ में देखी, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा। ६१ मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हूँ कि अब इन्होंने दिनों के बाद तुम्हारा विचार मेरे विषय में फिर जागृत हुआ है; निष्ठय तुम्हें आरम्भ में भी इसका विचार था, पर तुम्हें अवसर न मिला। ६२ यह नहीं कि मैं अपनी घटी के कारण यह कहता हूँ; क्योंकि मैंने यह सीखा है कि जिस दशा में हूँ, उसी में सन्तोष करूँ। ६३ मैं दीन होना भी जानता हूँ और बढ़ाना भी जानता हूँ; हर एक बात और सब दशाओं में मैंने तुम होना, भूख रहना, और बढ़ाना-घटना सीखा है। ६४ जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ। ६५ तो भी तुम ने भला किया कि मेरे क्लेश में भी सहभागी हुए। ६६ हे फिलिप्पियों, तुम आप भी जानते हो कि सुसमाचार प्रवार के आरम्भ में जब मैंने मकिनुफिया से कृच किया तब तुम्हें छोड़ और किसी कलीसिया ने लेने-देने के विषय में मेरी सहायता नहीं की। ६७ इसी प्रकार जब मैं थिस्सलनीके में था; तब भी तुम ने मेरी घटी पूरी करने के लिये एक बार क्या बरन दो बार कुछ भेजा था। ६८ यह नहीं कि मैं दान चाहता हूँ परन्तु मैं ऐसा फल चाहता हूँ, जो तुम्हारे लाभ के लिये बढ़ाता जाए। ६९ मेरे पास सब कुछ है, वरन् बहुतायत से भी है; जो वस्तुएँ तुम ने इप्स्कूर्टीतुम के हाथ से भेजी थीं उन्हें पाकर मैं तुम हो गया हूँ, वह तो सुखदायक सुग-न्यू और ग्रहण करने के योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है। ७० और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा। ७१ हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा युआनुया होती रहे। आमिन। (alon g165) ७२ हर एक पवित्र जन को जो यीशु मसीह में हैं नमस्कार कहो। जो भाई मेरे साथ हैं तुम्हें नमस्कार कहते हैं। ७३ सब पवित्र लोग, विशेष करके जो कैसर के घराने के हैं तुम को नमस्कार कहते हैं। ७४ हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे।

कुलस्सियों

१ पौलस की ओर से, जो परमेश्वर की इच्छा से मरीही यीशु का प्रेरित है, और भाई तीमुथियुस की ओर से, २ मरीही में उन पवित्र और विश्वासी भाईयों के नाम जो कुलस्से में रहते हैं। हमरे पिता परमेश्वर की ओर से तुहाँ अनुग्रह और शान्ति प्राप्त होती रहे। ३ हम तुम्हरे लिये नित प्रार्थना करके अपने प्रभु यीशु मरीही के पिता अर्थात् परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। ४ क्योंकि हमने सुना है, कि मरीही यीशु पर तुम्हारा विश्वास है, और सब पवित्र लोगों से प्रेम रखते हो; ५ उस आशा की ही हँई वस्तु के कारण जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी हँई है, जिसका वर्णन तुम उस सुसमाचार के सत्य वचन में सुन चुके हो। ६ जो तुम्हारे पास पहुँचा है और जैसा जगत में भी फल लाता, और बढ़ता जाता है; वैसे ही जिस दिन से तुम ने उसको सुना, और सच्चाई से परमेश्वर का अनुग्रह पहचाना है, तुम में भी ऐसा ही करता है। ७ उसी की शिक्षा तुम ने हमरे प्रिय सहकर्मी इफ्रास से पाई, जो हमरे लिये मरीही का विश्वासयोग्य सेवक है। ८ उसी ने तुम्हारे प्रेम को जो आत्मा में है हम पर प्रगट किया। ९ इसलिए जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना करने और विनीती करने से नहीं चूकते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण हो जाओ; १० ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और परमेश्वर की पहचान में बढ़ते जाओ, ११ और उसकी महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ्य से बलवन्त होते जाओ, यहाँ तक कि अनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको। १२ और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिसने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ विरासत में सहभागी हों। १३ उसी ने हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया, १४ जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है। १५ पुत्र तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिस्पृष्ट और सारी सुष्ठि में पहलौठा है। १६ क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सुष्ठि हँई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिहासन, क्या प्रभुताँ, क्या प्रधानताँ, क्या अधिकार, सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिये सुनी गई हैं। १७ और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं। १८ वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मेरे हृओं में से जी उठनेवालों में पहलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे। १९ क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उसमें सारी परिपूर्णता वास करे। २० और उसके क्रूस पर बहे हाएँ लह के द्वारा मेल-मिलाकर करके, सब वस्तुओं को उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर की हाँ, चाहे स्वर्ग की। २१ तुम जो पहले पराएँ थे और दुरु कामों के कारण मन से बैरी थे। २२ उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि तुम्हें अपने सम्पुर्ण पवित्र और गिर्कलक, और निर्देश बनाकर उपस्थित करे। २३ यदि तुम विश्वास की नीति पर दृढ़ बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ो, जिसका प्रचार आकाश के नीचे की सारी सुष्ठि में किया गया; और जिसका मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक बना, जो तुम्हारे लिये मुझे सौंपा गया, ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा-पूरा प्रचार करूँ। २४ अब मैं उन दुःखों के कारण आनन्द करता हूँ, जो तुम्हारे लिये उठाता हूँ, और मरीही के क्लेशों की घटी उसकी देह के लिये, अर्थात् कलीसिया के लिये, अपने शरीर में पूरी किए देता हूँ, २५ जिसका मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक बना, जो तुम्हारे लिये मुझे सौंपा गया, ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा-पूरा प्रचार करूँ। २६ अर्थात् उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप रहा, परन्तु अब उसके उन

पवित्र लोगों पर प्रगट हुआ है। (aiōn g165) २७ जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है, कि मरीही जो महिमा की आशा है तुम में रहता है। २८ जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जाता देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मरीही में सिद्ध करके उपस्थित करें। २९ और इसी के लिये मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य के साथ प्रभाव डालती है तब मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ।

३० मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो, कि तुम्हारे और उनके जो लौटीकिया में हैं, और उन सब के लिये जिन्होंने मेरा शारीरिक मूँह नहीं देखा मैं कैसा परिश्रम करता हूँ। ३१ ताकि उनके मनों को प्रोत्साहन मिले और वे प्रेम से आपस में गढ़े रहें, और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें, और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात् मरीही को पहचान लें। ३२ जिसमें बुद्धि और ज्ञान के साथ भण्डार छिपे हुए हैं। ३३ यह मैं इसलिए कहता हूँ, कि कोई मनुष्य तुम्हें लुभानेवाली बातों से धोखा न दे। ३४ यथापि मैं यदि शरीर के भाव से तुम से दूर हूँ, तो भी आत्मिक भाव से तुम्हारे निकट हूँ, और तुम्हारे विधि-अनुसार चरित्र और तुम्हारे विश्वास की जो मरीही में है दृढ़ता देखकर प्रसन्न होता हूँ। ३५ इसलिए, जैसे तुम ने मरीही यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो। ३६ और उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ; और जैसे तुम सिखाए गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ, और अत्यन्त धन्यवाद करते रहो। ३७ चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहर न कर ले, जो मनुष्यों की परम्पराओं और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मरीही के अनुसार नहीं। ३८ क्योंकि उसमें इच्छरत्व की सारी परिपूर्णता सदैव वास करती है। ३९ और तुम मरीही में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है। ४० उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, परन्तु मरीही का खतना हुआ, जिससे पापमय शारीरिक देह उत्तर दी जाती है। ४१ और उसी के साथ बपतिस्मा में गाढ़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिसने उसको मेरे हृओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। ४२ और उसने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमरे सब अपराधों को क्षमा किया। ४३ और विधियों का वह लेख और सहायक नियम जो हमरे नाम पर और हमरे विरोध में था मिटा डाला; और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है। ४५ और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उनका खुल्लमप्रखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय जयकार की ध्वनि सुनाई। ४६ इसलिए खनें-पीने या पर्व या नये चौदा, या सब्ज़ के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करो। ४७ क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया है, पर मूल वस्तुएँ मरीही की हैं। ४८ कोई मनुष्य दीनता और स्वर्गदूतों की पूजा करके तुम्हें दौड़ के प्रतिफल से चिन्तित न करो। ऐसा मनुष्य देखी हृई बातों में लगा रहता है और अपनी शारीरिक समझ पर व्यर्थ फूलता है। ४९ और उस शिरोमणि को पकड़े नहीं रहता जिससे सारी देह जोड़ों और पठों के द्वारा पालन-पोषण पाकर और एक साथ गठकर, परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है। ५० जबकि तुम मरीही के साथ संसार की आदि शिक्षा की ओर से मरीही के लिये अपनी शारीरिक समझ पर व्यर्थ फूलता है। ५१ और उस शिरोमणि को पकड़े नहीं रहता जो जीवन बिताते हैं और ऐसी विधियों के वश में क्यों रहते हो? ५२ कि 'यह न छूना,' 'उसे न चखना,' और 'उसे हाथ न लगाना'? ५३ क्योंकि ये सब वस्तु काम में लाते-लाते

नाश हो जाएँगी क्योंकि ये मनुष्यों की आज्ञाओं और शिक्षाओं के अनुसार हैं। २३ इन विधियों में अपनी इच्छा के अनुसार गढ़ी हुई भक्ति की रीति, और दीनता, और शारीरिक अभ्यास के भाव से ज्ञान का नाम तो है, परन्तु शारीरिक लालसाओं को रोकने में इनसे कुछ भी लाभ नहीं होता।

३ तो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह विघ्नान है और परमेश्वर के दाहिनी और विराजमान है।

४ पृथ्वी पर की नीही परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। ५ क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। ६ जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे। ७ इसलिए अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मौतिपूजा के बराबर है। ८ इन ही के कारण परमेश्वर का प्रक्रोप आज्ञा न माननेवालों पर पड़ता है। ९ और तुम भी, जब इन बुराइयों में जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे। १० पर अब तुम भी इन सब को अर्थात् क्रोध, रोप, बैर-भाव, निन्दा, और मूँह से गालियाँ बकना ये सब बातें छोड़ दो।

११ एक दूसरे से झट्ठ मत बोलो क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। १२ और नये मनुष्यत्व को पहन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वस्प के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है।

१३ उसमें न तो यूनानी रहा, न यहदी, न खतना, न खतनामहित, न जंगली, न स्कूटी, न दास और न स्वतंत्र केवल मसीह सब कुछ और सब में है। १४ इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं के समान जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी कम्पा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो। १५ और यदि किसी को किसी पर दोष देने को कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो। जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो। १६ और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धाता का कमरबन्ध है बाँध लो। १७ और मसीह की शानि, जिसके लिये तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे, और तुम धन्यवादी बने रहो। १८ मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बरनने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने-अपने मन में कृतज्ञता के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ। १९ वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो। २० हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, और उनसे कठोरता न करो। २१ हे बच्चों, सब बातों में अपने-अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करो, क्योंकि प्रभु इससे प्रसन्न होता है। २२ हे पिताओं, अपने बच्चों को भड़काया न करो, न हो कि उनका साहस टूट जाए। २३ हे सेवकों, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उनकी आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसान्न करनेवालों के समान दिखाने के लिये नहीं, परन्तु मन की सिधाई और परमेश्वर के भय से। २४ और जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो। २५ क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इसके बदले प्रभु से विरासत मिलेगी। तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो। २६ क्योंकि जो बुरा करता है, वह अपनी बुराई का फल पाएगा; वहाँ किसी का पक्षपात नहीं।

४ हे स्वामियों, अपने-अपने दासों के साथ न्याय और ठीक-ठीक व्यवहार करो, यह समझकर कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है। ५ प्रार्थना में

लगे रहो, और धन्यवाद के साथ उसमें जागृत रहो; ६ और इसके साथ ही साथ हमारे लिये भी प्रार्थना करते रहो, कि परमेश्वर हमारे लिये वचन सुनाने का ऐसा द्वारा खोल दे, कि हम मसीह के उस भेद का वर्णन कर सकें जिसके कारण मैं कैद में हूँ। ७ और उसे ऐसा प्रगट करें, जैसा मुझे करना उचित है। ८ अवसर को बहुमूल्य समझकर बाहरवालों के साथ तुदिमानी से बर्ताव करो। ९ तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सुहावना हो, कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए। १० प्रिय भाई और विश्वासयोग्य सेवक, तुखिक्स जो प्रभु में मेरा सहकर्मी है, मेरी सब बातें तुम्हें बता देगा। ११ उसे मैंने इसलिए तुम्हारे पास भेजा है, कि तुम्हें हमारी दशा मालूम हो जाए और वह तुम्हारे हृदयों को प्रोत्साहित करे। १२ और उसके साथ उनेसिमुस को भी भेजा है; जो विश्वासयोग्य और प्रिय भाई है और तुम ही मैं से है, वे तुम्हें यहाँ की सारी बातें बता देंगे। १३ अरिस्तार्थस जो मैंने साथ कैटै है, और मरकुस जो बरनबास का भाई लगता है। (जिसके विषय में तुम ने निर्देश पाया था कि यदि वह तुम्हारे पास आए, तो उससे अच्छी तरह व्यवहार करना।) १४ और यीशु जो यस्तुस कहलाता है, तुम्हें नमस्कार कहते हैं। खतना किए हुए लोगों में से केवल ये ही परमेश्वर के राज्य के लिये मेरे सहकर्मी और मेरे लिए सांत्वना रहते हैं। १५ इपफ्रास जो तुम मैं से है, और मसीह यीशु का दास है, तुम्हें नमस्कार कहता है और सदा तुम्हारे लिये प्रार्थनाओं में प्रयत्न करता है, ताकि तुम सिद्ध होकर पूर्ण विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा पर स्थिर रहो। १६ मैं उसका गवाह हूँ, कि वह तुम्हारे लिये और लौटीकिया और हियरापुलिसवालों के लिये बड़ा यथ करता रहता है। १७ प्रिय वैद्य लक्का और देमास का तुम्हें नमस्कार। १८ लौटीकिया के भाइयों को और सुपकास और उसकी घर की कलीसिया को नमस्कार कहना। १९ और जब यह पत्र तुम्हारे यहाँ पढ़ लिया जाए, तो ऐसा करना कि लौटीकिया की कलीसिया में भी पढ़ा जाए, और वह पत्र जो लौटीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ना। २० फिर अरखिप्स से कहना कि जो सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है, उसे सावधानी के साथ पूरी करना। २१ मुझ पैलस का अपने हाथ से लिखा हुआ नमस्कार। मेरी जंजीरों को स्मरण रखना; तुम पर अनुग्रह होता रहे। आमीन।

1 थिस्सलुनीकियों

१ पौलस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम जो पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में है। अनुग्रह और शानि तुम्हें मिलती रहे। २ हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, ३ और अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते हैं। ४ और हे भाइयों, परमेश्वर के प्रिय लोगों हम जानते हैं, कि तुम चुने हए हो। ५ क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मारा ही में बरन समर्थ और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुँचा है, जैसा तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे लिये तुम मैं कैसे बन गए थे। ६ और तुम बड़े क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी और प्रभु के समान चाल चलने लगो। ७ यहाँ तक कि मकिदुनिया और अखाया के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने। ८ क्योंकि तुम्हारे यहाँ से न केवल मकिदुनिया और अखाया में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है, कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं। ९ क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ, और तुम क्यों मूररों से परमेश्वर की ओर पिरे ताकि जीविते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो। १० और उसके पुत्र के स्वर्ण पर से अपने की प्रतीक्षा करते हो जिसे उसने मेरे हृओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु को, जो हमें आनेवाले प्रकोप से बचाता है।

२ हे भाइयों, तुम आप ही जानते हो कि हमारा तुम्हारे पास आना व्यर्थ न हुआ। ३ बरन तुम आप ही जानते हो, कि पहले फिलिपी में दुःख उठाने और उपद्रव सहने पर भी हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसा साहस दिया, कि हम परमेश्वर का सुसमाचार भारी विरोधों के होते हए भी तुम्हें सुनाएँ। ४ क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से है और न अशुद्धता से, और न छल के साथ है। ५ पर जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा, हम वैसा ही वर्णन करते हैं; और इसमें मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे मनों को जँचता है, प्रसन्न करते हैं। ६ क्योंकि तुम जानते हो, कि हम न तो कभी चापलूसी की बातें किया करते थे, और न लोभ के लिये बहाना करते थे, परमेश्वर गवाह है। ७ और यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल सकते थे, किंतु भी हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुम से, न और किसी से। ८ परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है, वैसे ही हमने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई दी है। ९ और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, १० न केवल परमेश्वर का सुसमाचार, पर अपना-अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिए कि तुम हमारे प्यारे हो गए थे। ११ क्योंकि, हे भाइयों, तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो, कि हमने इसलिए रात दिन काम धन्यवाद करते हुए तुम में परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया, कि तुम में से किसी पर भार न हों। १२ तुम आप ही गवाह हो, और परमेश्वर भी गवाह है, कि तुम विश्वासियों के बीच में हमारा व्यवहार कैसा पवित्र और धार्मिक और निर्देष रहा। १३ जैसे तुम जानते हो, कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ बर्ताव करता है, वैसे ही हम भी तुम में से हर एक को उपदेश देते और प्रोत्साहित करते और समझाते थे। १४ कि तुम्हारा चाल-चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है। १५ इसलिए हम भी परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते हैं, कि जब हमारे

द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुँचा, तो तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया और वह तुम में जो विश्वास रखते हो, कार्य करता है। १६ इसलिए कि तुम, हे भाइयों, परमेश्वर की उन कलीसियाओं के समान चाल चलने लगे, जो यहदिया में मसीह यीशु में हैं, क्योंकि तुम ने भी अपने लोगों से वैसा ही दुःख पाया, जैसा उन्होंने यहदियों से पाया था। १७ जिन्होंने प्रभु यीशु को और भविष्यद्वाताओं को भी मार डाला और हमको सताया, और परमेश्वर उनसे प्रसन्न नहीं; और वे सब मनुष्यों का विरोध करते हैं। १८ और वे अन्यजातियों से उनके उदाहर के लिये बातें करने से हमें रोकते हैं, कि सदा अपने पापों का घडा भरते रहें; पर उन पर भयानक प्रकोप आ पहुँचा है। १९ हे भाइयों, जब हम थोड़ी देर के लिये मन में नहीं बरन प्रगट में तुम से अलग हो गए थे, तो हमने बड़ी लालसा के साथ तुम्हारा मूँह देखने के लिये और भी अधिक यत्र किया। २० इसलिए हमने (अर्थात् मुझ पौलस ने) एक बार नहीं, बरन दो बार तुम्हारे पास आना चाहा, परन्तु जैतान हमें रोके रहा। २१ हमारी आशा, या आनन्द या बडाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु मसीह के सम्मुख उसके आने के समय, तुम ही न होगे? २२ हमारी बडाई और आनन्द तुम ही हो।

३ इसलिए जब हम से और न रहा गया, तो हमने यह ठहराया कि एथेस में अकेले रह जाएँ। २३ और हमने तीमुथियुस को जो मसीह के सुसमाचार में हमारा भाई, और परमेश्वर का सेवक है, इसलिए भेजा, कि वह तुम्हें स्थिर करें; और तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें समझाए। २४ कि कोई इन क्लेशों के कारण डगम्पा न जाए; क्योंकि तुम आप जानते हो, कि हम इन ही के लिये ठहराए गए हैं। २५ क्योंकि पहले भी, जब हम तुम्हारे यहाँ थे, तो तुम से कहा करते थे, कि हमें क्लेश उठाने पड़े गे, और ऐसा ही हुआ है, और तुम जानते भी हो। २६ इस कारण जब मुझसे और न रहा गया, तो तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के लिये भेजा, कि कहीं ऐसा न हो, कि परीक्षा करनेवाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो, और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो। २७ पर अभी तीमुथियुस ने जो तुम्हारे पास से हमारे यहाँ आकर तुम्हारे विश्वास और प्रेम का समाचार सुनाया और इस बात को भी सुनाया, कि तुम सदा प्रेम के साथ हमें स्मरण करते हो, और हमारे देखने की लालसा रखते हो, जैसा हम भी तुम्हें देखने की। २८ इसलिए हे भाइयों, हमने अपनी सारी सकेती और क्लेश में तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में शानि पाई। २९ क्योंकि अब यदि तुम प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीवित हैं। ३० और जैसा आनन्द हमें तुम्हारे कारण अपने परमेश्वर के सामने है, उसके बदले तुम्हारे विषय में हम किसी रीति से परमेश्वर का धन्यवाद करें। ३१ हम रात दिन बहुत ही प्रार्थना करते रहते हैं, कि तुम्हारा मूँह देखें, और तुम्हारे विश्वास की घरी पूरी करें। ३२ अब हमारा परमेश्वर और पिता आप ही और हमारा प्रभु यीशु, तुम्हारे यहाँ आने के लिये हमारी अगुआई करे। ३३ और प्रभु ऐसा करे, कि जैसा हम तुम से प्रेम रखते हैं, वैसा ही तुम्हारा प्रेम भी आपस में, और सब मनुष्यों के साथ बढ़े, और उन्नति करता जाए। ३४ ताकि वह तुम्हारे मनों को ऐसा स्थिर करे, कि जब हमारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ आए, तो वे हमारे परमेश्वर और पिता के सामने पवित्रता में निर्दोष ठहरें।

४ इसलिए हे भाइयों, हम तुम से विनती करते हैं, और तुम्हें प्रभु यीशु में समझाते हैं, कि जैसे तुम ने हम से योग्य चाल चलना, और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा है, और जैसा तुम चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते जाओ। ३५ क्योंकि तुम जानते हो, कि हमने प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन-

कौन से निर्देश पहुँचाए। ३ क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो, ४ और तुम मैं से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपने पत्र को प्राप्त करना जाने। ५ और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न अन्यजातियों के समान, जो परमेश्वर को नहीं जानती। ६ कि इस बात में कोई अपने भाई को न ठगे, और न उस पर दाँव चलाए, क्योंकि प्रभु इस बातों का पलटा लेनेवाला है; जैसा कि हमने पहले तुम से कहा, और चिताया भी था। ७ क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है। ८ इसलिए जो इसे तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं, परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है। ९ किन्तु भाईचारे के प्रेम के विषय में यह आवश्यक नहीं, कि मैं तुम्हारे पास कुछ लिखूँ; क्योंकि आपस में प्रेम रखना तुम ने आप ही परमेश्वर से सीखा है; १० और सारे मकिनुयिया के सब भाइयों के साथ ऐसा करते भी हो, पर हे भाइयों, हम तुम्हें समझाते हैं, कि और भी बढ़ते जायो, ११ और जैसा हमने तुम्हें समझाया, वैसे ही चुपचाप रहने और अपना-अपना काम-काज करने, और अपने-अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो। १२ कि बाहरवालों के साथ सभ्यता से बर्ताव करो, और तुम्हें किसी वस्तु की घटी न हो। १३ हे भाइयों, हम नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञानी रहो; ऐसा न हो, कि तुम औरों के समान शोक करो जिन्हें आशा नहीं। १४ क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएं। १५ क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के अने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कमी आगे न बढ़ेंगे। १६ क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उत्तरेंगा, उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाइ देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। १७ तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बालों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। १८ इसलिए इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।

५ पर हे भाइयों, इसका प्रयोजन नहीं, कि समयों और कालों के विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए। १ क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर आता है, वैसा ही प्रभु का दिन आनेवाला है। २ जब लोग कहते होंगे, “कुशल है, और कुछ भय नहीं,” तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और वे किसी रीति से न बचेंगे। ३ पर हे भाइयों, तुम तो अंधकार में नहीं हो, कि वह दिन तुम पर चोर के समान आ पड़े। ४ क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान, और दिन की सन्तान हो, हम न रात के हैं, न अंधकार के हैं। ५ इसलिए हम औरों की समान सोते न रहें, पर जागते और साक्षात् रहें। ६ क्योंकि जो सोते हैं, वे रात ही को सोते हैं, और जो मतवाले होते हैं, वे रात ही को मतवाले होते हैं। ७ पर हम जो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम पहनकर और उद्धार की आशा का टोप पहनकर साक्षात् रहें। ८ क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं, परन्तु इसलिए ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें। ९ वह हमारे लिये इस कारण मरा, कि हम चाहे जागते हों, चाहे सोते हों, सब मिलकर उसी के साथ जीएँ। १० इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो, और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो, जैसा कि तुम करते भी हो। ११ हे भाइयों, हम तुम से विनती करते हैं, कि जो तुम मैं परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुए हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उन्हें मानो। १२ और उनके काम के कारण प्रेम के साथ उनको बहुत ही आदर के योग्य समझो आपस में मेल-मिलाप से रहो। १३

और हे भाइयों, हम तुम्हें समझाते हैं, कि जो ठीक चाल नहीं चलते, उनको समझाओ, निस्त्वाहित को प्रोत्साहित करो, निर्बलों को सम्भालो, सब की ओर सहनशीलता दिखाओ। १४ देखो की कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करो; पर सदा भलाई करने पर तत्पर रहो आपस में और सबसे भी भलाई ही की चेष्टा करो। १५ सदा आनन्दित रहो। १६ निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो। १७ हर बात में धन्यवाद करो: क्योंकि तुम्हारे लिये मरीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है। १८ आत्मा को न बुझाओ। १९ भविष्याद्वाणियों को तुच्छ न जानो। २० सब बातों को परखो जो अच्छी है उसे पकड़े रहो। २१ सब प्रकार की बुराई से बचे रहो। २२ शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करो; तुम्हारी आत्मा, प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के अने तक पैरे और निर्दोष सुरक्षित रहें। २३ तुम्हारा बुलानेवाला विश्वासयोग्य है, और वह ऐसा ही करेगा। २४ हे भाइयों, हमारे लिये प्रार्थना करो। २५ सब भाइयों को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो। २६ मैं तुम्हें प्रभु की शपथ देता हूँ, कि यह पत्री सब भाइयों को पढ़कर सुनाई जाए। २७ हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे।

2 थिस्सलुनीकियों

१ पौलस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम, जो हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में हैः २ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। ३ हे भाइयों, तुम्हारे विषय में हमें हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, और यह उचित भी है इसलिए कि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता जाता है, और आपस में तुम सब में प्रेम बहुत ही बढ़ता जाता है। ४ यहाँ तक कि हम आप परमेश्वर की कलीसिया में तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं, कि जिसने उपद्रव और क्लेश तुम सहते हो, उन सब में तुम्हारा धीरज और विश्वास प्रगट होता है। ५ यह परमेश्वर के सच्चे न्याय का स्पष्ट प्रमाण है; कि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहरो, जिसके लिये तुम दुःख भी उठाते हो। ६ क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय है, कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे। ७ और तुम जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी स्वर्गदूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। ८ और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन्हें पलटा लेगा। ९ वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे। (aiōnios g166) १० यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करनेवालों में अश्वर्य का कारण होने को आएगा; क्योंकि तुम ने हमारी गवाही पर विश्वास किया। ११ इसलिए हम सदा तुम्हारे निमित्प्रार्थना भी करते हैं, कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे, और भलाई की हर एक इच्छा, और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ्य सहित पूरा करे, १२ कि हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के अनुसार हमारे प्रभु यीशु का नाम तुम में महिमा पाए, और तुम उसमें।

२ हे भाइयों, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास अपने इकट्ठे होने के विषय में तुम से विनती करते हैं। ३ कि किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझकर कि प्रभु का दिन आ पहुँचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए; और न तुम घबराओ। ४ किसी रीति से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक विद्रोह नहीं होता, और वह अधर्मी पुस्त अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो। ५ जो विरोध करता है, और हर एक से जो परमेश्वर, या पूज्य कहलाता है, अपने आपको बड़ा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आपको परमेश्वर प्रगट करता है। ६ क्या तुम्हें सम्पर्ण नहीं, कि जब मैं तुम्हेरे यहाँ था, तो तुम से ये बोते कहा करता था? ७ और अब तुम उस वस्तु को जानते हो, जो उसे रोक रही है, कि वह अपने ही समय में प्रगट हो। ८ क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है, पर अभी एक रोकेवाला है, और जब तक वह दूर न हो जाए, वह रोके रहेगा। ९ तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुंह की झूँक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा। १० उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूटी सामर्थ्य, चिन्ह, और अदृढ़ काम के साथ, ११ और नाश होनेवालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उहोंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिससे उनका उदार होता। १२ और इसी कारण परमेश्वर उनमें एक भटका देनेवाली सामर्थ्य को भेजेगा ताकि वे झाँठ पर विश्वास करें। १३ और जितने लोग सत्य पर विश्वास नहीं करते, वरन् अर्थमें प्रसन्न होते हैं, सब दण्ड पाएँ। १४ पर हे भाइयों,

और प्रभु के प्रिय लोगों, चाहिये कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, कि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया; कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य पर विश्वास करके उदार पाओ। १५ जिसके लिये उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो। १६ इसलिए हे भाइयों, स्थिर रहो; और जो शिक्षा तुम ने हमारे वचन या पत्र के द्वारा प्राप्त किया है, उन्हें थामे रहो। १७ हमारा प्रभु यीशु मसीह आप ही, और हमारा पिता परमेश्वर जिसने हम से प्रेम रखा, और अनुग्रह से अनन्त शान्ति और उत्तम आशा दी है। (aiōnios g166)

१८ तुम्हेरे मनों में शान्ति दे, और तुम्हें हर एक अच्छे काम, और वचन में दृढ़ करे।

३ अन्त में, हे भाइयों, हमारे लिये प्रार्थना किया करो, कि प्रभु का वचन ऐसा शीघ्र फैले, और महिमा पाए, जैसा तुम में हुआ। ४ और हम टेढ़े और दृष्ट मनुष्यों से बचे रहें क्योंकि हर एक में विश्वास नहीं। ५ परन्तु प्रभु विश्वासयोग्य है, वह तुम्हें दृढ़ता से स्थिर करेगा: और उस दृष्ट से सुरक्षित रखेगा। ६ और हमें प्रभु में तुम्हारे ऊपर भरोसा है, कि जो-जो आज्ञा हम तुम्हें देते हैं, उन्हें तुम मानते हो, और मानते भी रहेगे। ७ परमेश्वर के प्रेम और मसीह के धीरज की ओर प्रभु तुम्हारे मन की अगुआई करे। ८ हे भाइयों, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं; कि हर एक ऐसे भाई से अलग रहो, जो आलस्य में रहता है, और जो शिक्षा तुम ने हम से पाई उसके अनुसार नहीं करता। ९ क्योंकि तुम आप जानते हो, कि किस रीति से हमारी सी चाल चलती चाहिएः क्योंकि हम तुम्हारे बीच में आलसी तरीके से न चले। १० और किसी की रोटी मुफ्त में न खाईः पर परिश्रम और कष्ट से रात दिन काम धन्धा करते थे, कि तुम में से किसी पर भार न हो। ११ यह नहीं, कि हमें अधिकार नहीं; पर इसलिए कि अपने आपको तुम्हारे लिये आदर्श ठहराएँ, कि तुम हमारी सी चाल चलो। १२ और जब हम तुम्हारे यहाँ थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे, कि यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न पाए। १३ हम सुनते हैं, कि किसने लोग तुम्हारे बीच में आलसी चाल चलते हैं; और कुछ काम नहीं करते, पर औरों के काम में हाथ डाला करते हैं। १४ ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं, कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें। १५ और तुम, हे भाइयों, भलाई करने में साहस न छोड़ो। १६ यदि कोई हमारी इस पत्री की बात को न माने, तो उस पर दृष्टि रखो; और उसकी संतान न करो, जिससे वह लज्जित हो; १७ तो भी उसे बैरी मत समझो पर भाई जानकर चिनाओ। १८ अब प्रभु जो शान्ति का सोता है आप ही तुम्हें सदा और हर प्रकार से अनुग्रह दें: प्रभु तुम सब के साथ रहे। १९ मैं पौलस अपने हाथ से नमस्कार लिखता हूँ। हर पत्री में मेरा यहीं चिन्ह है, मैं इसी प्रकार से लिखता हूँ। २० हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर होता रहे।

1 तीमुथियुस

१ पौलस की ओर से जो हमारे उद्गारकर्ता परमेश्वर, और हमारी आशा के

आधार मसीह यीशु की आज्ञा से मसीह यीशु का प्रेरित है, २ तीमुथियुस के नाम जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है: पिता परमेश्वर, और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से, तुझे अनुग्रह और दया, और शानि मिलती रहे। ३ जैसे मैंने मकिदुनिया को जाते समय तुझे समझाया था, कि इफिसुस में रहकर कुछ लोगों को आज्ञा दे कि अन्य प्रकार की शिक्षा न दें, ४ और उन कहनियों और अनन्त वंशावलियों पर मन न लगाएँ, जिनसे विवाद होते हैं, ५ और परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार नहीं, जो विश्वास से सम्बंध रखता है; वैसे ही फिर भी कहता हूँ। ६ आज्ञा का सारांश यह है कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और निष्कपट विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो। ७ इनको छोड़कर कितने लोग फिरकर बकवाद की ओर भटक गए हैं, ८ और व्यवस्थापक तो होना चाहते हैं, पर जो बातें कहते और जिनको दृढ़ता से बोलते हैं, उनको समझते भी नहीं। ९ पर हम जानते हैं कि यदि कोई व्यवस्था को व्यवस्था की रीति पर काम में लाए तो वह भर्ती है। १० यह जानकर कि व्यवस्था धर्मी जन के लिये नहीं पर अवर्धियों, निंकुशों, भक्तिहीनों, पापियों, अपवित्रों और अशृद्वों, माँ-बाप के मारनेवालों, हत्यारों, ११ व्यभिचारियों, पुस्तगामियों, मनुष्य के बेचेनेवालों, झट बोलनेवालों, और झूटी शपथ खानेवालों, और इनको छोड़ दें तो उद्देश के सब विरोधियों के लिये ठहराई गई है। १२ यही परमधन्य परमेश्वर की महिमा के उस सुसमाचार के अनुसार है, जो मुझे सौंपा गया है। १३ और मैं अपने प्रभु मसीह यीशु का, जिसने मुझे सामर्थ्य दी है, धन्यवाद करता हूँ; कि उसने मुझे विश्वासयोग्य समझकर अपनी सेवा के लिये ठहराया। १४ मैं तो पहले मिन्दा करनेवाला, और सतानेवाला, और अंधेर करनेवाला था; तो भी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैंने अविश्वास की दशा में बिन समझ बड़े ये काम किए थे। १५ और हमारे प्रभु का अनुग्रह उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, बहुतायत से हुआ। १६ यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्गार करने के लिये जगत में आया, जिसमें सबसे बड़ा मैं हूँ। १७ पर मुझ पर इसलिए दया हुई कि मुझ सबसे बड़े पापी में यीशु मसीह अपनी पूरी सहनशीलता दिखाएँ, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिये विश्वास कीरणे, उनके लिये मैं एक आदर्श बनूँ। (aiōnios g166) १८ अब सनातन राजा अर्थात् अविनाशी अनदेखे अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा युग्मानुग्रह होती रहे। आर्पिन। (aiōn g165) १९ हैं पुत्र तीमुथियुस, उन भविष्यद्विषयों के अनुसार जो पहले तेरे विषय में की गई थी, मैं यह आज्ञा सौंपता हूँ, कि तु उनके अनुसार अच्छी लडाई को लड़ता रह। २० और विश्वास और उस अच्छे विवेक को थामे रह जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वास स्पी जहाज ड्रव गया। २१ उन्हीं में से हृमिनयुस और सिकन्दर हैं जिन्हें मैंने शैतान को सौंप दिया कि वे मिन्दा करना न सिखें।

२ अब मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूँ, कि विनती, प्रार्थना, निवेदन,

धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिये किए जाएँ। ३ राजाओं और सब ऊँचे पदवालों के निमित्त इसलिए कि हम विश्वास और चैन के साथ सारी भक्ति और गरिमा में जीवन बिताएँ। ४ यह हमारे उद्गारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है, ५ जो यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्गार हो, और वे सत्य को भली भाँति पहचान लें। ६ क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु

जो मनुष्य है, ७ जिसने अपने आपको सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उसकी गवाही ठीक समयों पर दी जाए। ८ मैं सच कहता हूँ, झठ नहीं बोलता, कि मैं इसी उद्देश्य से प्रचारक और प्रेरित और अन्यजातियों के लिये विश्वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया। ९ इसलिए मैं चाहता हूँ, कि हर जगह पुष्ट बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें। १० वैसे ही ख्याँ भी संकेत और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आपको संवारें, न कि बाल गैंडेने, सोने, मोतियों, और बहुमूल्य कपड़ों से, ११ पर भले कामों से, क्योंकि परमेश्वर की भक्ति करनेवाली ख्याँ को यही उचित भी है। १२ और झी को चुपचाप पूरी अधीनता में सीखना चाहिए। १३ मैं कहता हूँ, कि झी न उपदेश करे और न पुष्ट पर अधिकार चलाए, परन्तु चुपचाप रहे। १४ क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हब्ला बनाई गई। १५ और आदम बहकाया न गया, पर झी बहकावे में आकर अपराधिनी ही है। १६ तो भी झी बच्चे जनने के द्वारा उद्गार पाएँ, यदि वह संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहे।

३ यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, तो वह भले काम की इच्छा करता है। ४ यह आवश्यक है कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, अतिथि-सत्कर करनेवाला, और सिखाने में निषुण हो। ५ पियककड़ या मारपीत करनेवाला न हो; वरन् कोमल हो, और न झगड़ाल, और न धन का लोभी हो। ६ अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और बाल-बच्चों को सारी गम्भीरता से अर्थीन रखता हो। ७ जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा? ८ फिर यह कि नया चेता न हो, ऐसा न हो कि अभिमान करके शैतान के समान टण्ड पाए। ९ और बाहरवालों में भी उसका सुनाम हो, ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे में फँस जाए। १० वैसे ही सेवकों को भी गम्भीर होना चाहिए, दो रंगी, पियककड़, और नीच कमाई के लोभी न हों; ११ पर विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखें। १२ और ये भी पहले परखे जाएँ, तब यदि निर्दोष निकले तो सेवक का काम करें। १३ इसी प्रकार से ख्याँ को भी गम्भीर होना चाहिए; दोष लगानेवाली न हों, पर सचेत और सब बातों में विश्वासयोग्य हों। १४ सेवक एक ही पत्नी के पति हों और बाल-बच्चों और अपने धरों का अच्छा प्रबन्ध करना जानते हों। १५ क्योंकि जो सेवक का काम अच्छी तरह से कर सकते हैं, वे अपने लिये अच्छा पद और उस विश्वास में, जो मसीह यीशु पर है, बड़ा साहस प्राप्त करते हैं। १६ मैं भैरों पास जल्द आने की आशा रखने पर भी ये बातें तुझे इसलिए लिखता हूँ, १७ कि यदि मैं आने में देर हो तो ते ते जान ले कि परमेश्वर के धराने में जो जीविते परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खम्भा और नीच है; कैसा बर्ताव करना चाहिए। १८ और इसमें सन्देश नहीं कि भक्ति का भेद गम्भीर है, अर्थात्, वह जो शरीर में प्राप्त हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया।

४ परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आनेवाले समयों में कितने लोग

भरमानेवाली आत्माओं, और उद्गतात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएँगे, ५ यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा, जिनका विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है, ६ जो विवाह करने से रोकेंगे, और भोजन की कुछ वस्तुओं से पेरे रहने की आज्ञा देंगे; जिन्हें परमेश्वर ने इसलिए सजा कि विश्वासी और सत्य के पहचाननेवाले उन्हें धन्यवाद के साथ खाएँ। ७ क्योंकि परमेश्वर की सुजी हुई हर एक वस्तु

अच्छी है, और कोई वस्तु अस्वीकार करने के योग्य नहीं; पर यह कि धन्यवाद के साथ खाई जाएँ। ५ क्योंकि परमेश्वर के बचन और प्रार्थना के द्वारा शुद्ध हो जाती है। ६ यदि तू भावियों को इन बातों की सुधि दिलाता रहेगा, तो मरीह यीशु का अच्छा सेवक ठहरेगा; और विश्वास और उस अच्छे उपदेश की बातों से, जो त मानता आया है, तेरा पालन-पोषण होता रहेगा। ७ पर अशुद्ध और बूढ़ियों की सी कहानियों से अलग रह; और भक्ति में खुद को प्रशिक्षित कर। ८ क्योंकि देहे के प्रशिक्षण से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिये लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आनेवाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिये है। ९ यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है। १० क्योंकि हम परिश्रम और यत्र इसलिए करते हैं कि हमारी आशा उस जीविते परमेश्वर पर है; जो सब मनुष्यों का और विशेष स्पष्ट से विश्वासियों का उद्धारकर्ता है। ११ इन बातों की आज्ञा दे और सिखाता रह। १२ कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाएँ; पर बचन, चाल चलन, प्रेम, विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा। १३ जब तक मैं न आऊँ, तब तक पढ़ने और उपदेश देने और सिखाने में लौलीन रह। १४ उस वरदान से जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह। १५ उन बातों को सोचता रह और इन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह, ताकि तेरी उन्नति सब प्रगट हो। १६ अपनी और अपने उपदेश में सावधानी रख। इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा, तो त अपने, और अपने सुननेवालों के लिये भी उद्धार का कारण होगा।

५ किसी बृद्धे को न डाँटः पर उसे पिता जानकर समझा दे, और जवानों को भाई जानकर; २ बड़ी छियों को माता जानकर; और जवान छियों को पूरी पवित्रता से बहन जानकर, समझा दे। ३ उन विधवाओं का जो सचमुच विधवा हैं आदर कर। ४ और यदि किसी विधवा के बच्चे या नाती-पोते हों, तो वे पहले अपने ही घराने के साथ आदर का बर्ताव करना, और अपने माता-पिता आदि को उनका हक देना सीखें, क्योंकि यह परमेश्वर को भाता है। ५ जो सचमुच विधवा है, और उसका कोई नहीं; वह परमेश्वर पर आशा रखती है, और रात-दिन विनती और प्रार्थना में लौलीन रहती है। ६ पर जो भोग-विलास में पड़ गई, वह जीती जी मर गई है। ७ इन बातों की भी आज्ञा दिया कर ताकि वे निर्दोष रहें। ८ पर यदि कोई अपने रिस्तेदारों की, विशेष स्पष्ट से अपने परिवार की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी झुरा बन गया है। ९ उसी विधवा का नाम लिखा जाए जो साठ वर्ष से कम की न हो, और एक ही पति की पत्नी रही हो, १० और भले काम में सुनाम रही हो, जिसने बच्चों का पालन-पोषण किया हो; अतिथि की सेवा की हो, पवित्र लोगों के पाँव धोए हों, दुखियों की सहायता की हो, और हर एक भले काम में मन लगाया हो। ११ पर जवान विधवाओं के नाम न लिखना, क्योंकि जब वे मरीह का विरोध करके सुख-विलास में पड़ जाती हैं, तो विवाह करना चाहती है, १२ और दोषी ठहरती है, क्योंकि उहोंने अपनी फली प्रतिज्ञा को छोड़ दिया है। १३ और इसके साथ ही साथ वे घर-घर फिरकर आलसी होना सीखती है, और केवल आलसी नहीं, पर बक-बक करती रहती और दूसरों के काम में हाथ भी डालती है और अनुचित बातें बोलती हैं। १४ इसलिए मैं यह चाहता हूँ, कि जवान विधवाएँ विवाह करें; और बच्चे जने और घरबार सम्बालें, और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें। १५ क्योंकि कई एक तो बहक कर शैतान के पीछे हो चकी है। १६ यदि किसी विश्वासिनी के यहाँ विधवाएँ हों, तो वही उनकी सहायता करें कि कलालिसिया पर भार न हो ताकि वह उनकी सहायता कर सके, जो सचमुच में विधवाएँ हैं। १७ जो प्राचीन

अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो बचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुणे आदर के योग्य समझे जाएँ। १८ क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है, “दाँवनेवाले बैल का मूँह न बँधना,” क्योंकि “मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है।” १९ कोई दोष किसी प्राचीन पर लगाया जाए तो बिना दो या तीन गवाहों के उसको स्वीकार न करना। २० पाप करनेवालों को सब के सामने समझा दे, ताकि और लोग भी डरें। २१ परमेश्वर, और मरीह यीशु, और चुने हए स्वर्गदातों को उपस्थित जानकर मैं तुझे चेतावनी देता हूँ कि तू मन खोलकर इन बातों को माना कर, और कोई काम प्रक्षप्तता से न कर। २२ किसी पर शीघ्र हाथ न रखना और दूसरों के पाणों में भागी न होना; अपने अपको पवित्र बनाए रख। २३ भविष्य में केवल जल ही का पीनेवाला न रह, पर अपने पेट के और अपने बार बार बीमार होने के कारण थोड़ा-थोड़ा दाखरस भी लिया कर। २४ कुछ मनुष्यों के पाप प्रगट हो जाते हैं, और न्याय के लिये फहले से पहुँच जाते हैं, लेकिन दूसरों के पाप बाद में दिखाई देते हैं। २५ वैसे ही कुछ भले काम भी प्रगट होते हैं, और जो ऐसे नहीं होते, वे भी छिप नहीं सकते।

६ जितने दास जूँ के नीचे हैं, वे अपने-अपने स्वामी को बड़े आदर के योग्य जानें, ताकि परमेश्वर के नाम और उपदेश की मिन्दा न हो। २ और जिनके स्वामी विश्वासी हैं, इन्हें वे भाई होने के कारण तुच्छ न जानें; बरन् उनकी और भी सेवा करें, क्योंकि इससे लाभ उठानेवाले विश्वासी और प्रेमी हैं। इन बातों का उपदेश किया कर और समझाता रह। ३ यदि कोई और ही प्रकार का उपदेश देता है और खरी बातों को, अर्थात् हमारे प्रभु यीशु मरीह की बातों को और उस उपदेश को नहीं मानता, जो भक्ति के अनुसार है। ४ तो वह अभिमानी है और कुछ नहीं जानता, बरन् उसे विवाद और शब्दों पर तर्क करने का रोग है, जिससे डाह, और झङ्गड़े, और निन्दा की बातें, और बुरे-बुरे सद्देह, ५ और उन मनुष्यों में व्यर्थ रगड़े-झारे उत्पन्न होते हैं, जिनकी बुद्धि बिगड़ गई है और वे सत्य से विहीन हो गए हैं, जो समझते हैं कि भक्ति लाभ का द्वार है। ६ पर सन्तोष सहित भक्ति बड़ी लाभ है। ७ क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं। ८ और यदि हमारे पास खाने और पहनने को हो, तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए। ९ पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहत सी व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फँसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समूद्र में डुबा देती है। १० क्योंकि स्थाये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आपको विभिन्न प्रकार के दुःखों से छलनी बना लिया है। ११ पर हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग; और धार्मिकता, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज, और नम्रता का पीछा कर। १२ विश्वास की अच्छी कुशी लड़; और उस अनन्त जीवन को धर ले, जिसके लिये तू बुलाया गया, और बहुत गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था। (aiōnios g166) १३ मैं तुझे परमेश्वर को जो सब को जीवित रखता हूँ, और मरीह यीशु को गवाह करके जिसने पुनित्यसु पिलातुस के सामने अच्छा अंगीकार किया, यह आज्ञा देता हूँ, १४ कि तू हमारे प्रभु यीशु मरीह के प्रगट होने तक इस आज्ञा को निष्कलंक और निर्दोष रख, १५ जिसे वह ठीक समय पर दिखाएँगा, जो परमधन्य और एकमात्र अधिपति और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है, १६ और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है। उसकी प्रतिष्ठा और राज्य युगानुग्रह रहेगा। आमीन। (aiōnios g166) १७ इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे कि वे अभिमानी न हों और अनिश्चित धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के

लिये सब कुछ बहुतायत से देता है। (aiōn g165) १८ और भलाई करें, और भले कामों में धनी बरें, और उदार और सहायता देने में तत्पर हों, १९ और आनेवाले जीवन के लिये एक अच्छी नीव डाल रखें, कि सत्य जीवन को वश में कर लें। (aiōnios g166) २० हे तीमुथियुम इस धरोहर की रखवाली कर। जो तुझे दी गई है और मर्ख बातों से और विरोध के तर्क जो झुठा ज्ञान कहलाता है दूर रह। २१ कितने इस ज्ञान का अंगीकार करके विश्वास से भटक गए हैं। तुम पर अनुग्रह होता रहे।

2 तीमुथियुस

१ पौलुस की ओर से जो उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है, परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, २ प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम। परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया और शान्ति मिलती रहे। ३ जिस परमेश्वर की सेवा मैं अपने पूर्वजों की रीति पर शुद्ध विकेत से करता हूँ, उसका धन्यवाद हो कि अपनी प्रार्थनाओं में रात दिन तुझे लगातार स्मरण करता हूँ, ४ और तेरे आँसुओं की सुधि कर करके तुझ से भेट करने की लालसा रखता हूँ, कि आनन्द से भर जाऊँ। ५ और मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहले तेरी नानी लोइस, और तेरी माता यूनिक में थी, और मुझे निश्चय हुआ है, कि तझे मैं भी है। ६ इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूँ, कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है प्रज्वलित कर दे। ७ क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है। ८ इसलिए हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझसे जो उसका कैदी हूँ, लज्जित न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्थ्य के अनुसार सुसमाचार के लिये मेरे साथ दुःख उठा। ९ जिसने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर अपनी मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार है; जो मसीह यीशु में अनादिकाल से हम पर हाला है। (aiōnios g166)

१० पर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाशित हुआ, जिसने मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशामान कर दिया। ११ जिसके लिये मैं प्रचारक, और प्रेरित, और उपदेशक भी ठहरा। १२ इस कारण मैं इन दुःखों को भी उठाता हूँ, पर लजाता नहीं, क्योंकि जिस पर मैंने विश्वास रखा है, जानता हूँ, और मुझे निश्चय है, कि वह मेरी धरोहर की उस दिन तक रखवाली कर सकता है। १३ जो खरी बातें तो मुझसे सुनी हैं उनको उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख। १४ और पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी धरोहर की रखवाली कर। १५ तू जानता है, कि आसियावाले सब मुझसे फिर गए हैं, जिसमें फूलिलुप और हिमुगिनेस हैं। १६ उनेसिफ्सस के घराने पर प्रभु दया करे, क्योंकि उसने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया, और मेरी जंजीरों से लज्जित न हुआ। १७ पर जब वह रोम में आया, तो बड़े यत्र से ढूँढ़कर मुझसे भेट की। १८ (प्रभु करे, कि उस दिन उस पर प्रभु की दया हो)। और जो-जो सेवा उसने इफिसुस में की है उन्हें भी त् भली भौंति जानता है।

२ इसलिए हे मेरे पत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु मैं है, बलवन्त हो जा।

३ और जो बातें तूने बहुत गवाहों के सामने मुझसे सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों। ४ मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दुःख उठा। ५ जब कोई योद्धा लडाई पर जाता है, तो इसलिए कि अपने वरिष्ठ अधिकारी को प्रसन्न करे, अपने आपको संसार के कामों में नहीं फँसाता ६ फिर अखड़े में लड़नेवाला यदि विधि के अनुसार न लड़े तो मुकुट नहीं पाता। ७ जो किसान परिश्रम करता है, फल का अंश पहले उपरे मिलना चाहिए। ८ जो मैं कहता हूँ, उस पर ध्यान दे और प्रभु तुझे सब बातों की समझ देगा। ९ यीशु मसीह को स्मरण रख, जो दाऊद के वश से हुआ, और मेरे हूँओं में से जी उठा; और यह मेरे सुसमाचार के अनुसार है। १० जिसके लिये मैं कुकर्मी के समान दुःख उठाता हूँ, यहाँ तक कि कैद भी हूँ; परन्तु परमेश्वर का वचन कैद नहीं। ११ इस कारण मैं चुने हुए लोगों के

लिये सब कुछ सहता हूँ, कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु मैं है अनन्त महिमा के साथ पाएँ। (aiōnios g166) १२ यह बात सच है, कि यदि हम उसके

साथ मर गए हैं तो उसके साथ जाँचें भी। १३ यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे; यदि हम उसका इकार करेंगे तो वह भी हमारा इन्कार करेगा। १४ यदि हम विश्वासघाती भी हों तो भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह आप अपना इन्कार नहीं कर सकता। १५ इन बातों की सुधि उन्हें दिला, और प्रभु के सामने चिता दे, कि शब्दों पर तर्क-वितर्क न किया करें, जिनसे कुछ लाभ नहीं होता; बरन सुनेवाले बिगड़ जाते हैं। १६ अपने आपको परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम मैं लाता हो। १७ पर अशुद्ध बकवाद से बचा रह; क्योंकि ऐसे लोग और भी अभक्ति मैं बढ़ते जाएँगे। १८ और उनका वचन सड़े-घाव की तरह फैलता जाएगा: हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं, १९ जो यह कहकर कि पुनस्थान हो चुका है सत्य से भटक गए हैं, और किनतों के विश्वास को उलट-पुलट कर देते हैं। २० तो भी परमेश्वर की पक्की नीव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है: “प्रभु अपनों को पहचानता है,” और “जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे हैं।” २१ बड़े घर में न केवल सोने-चाँदी ही के, पर काठ और मिट्टी के बर्तन भी होते हैं; कोई-कोई आदर, और कोई-कोई अनादर के लिये। २२ यदि कोई अपने आपको इनसे शुद्ध करेगा, तो वह आदर का पात्र, और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिये तैयार होगा। २३ जवानी की अभिलाषाओं से भाग; और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं, उनके साथ धार्मिकता, और विश्वास, और प्रेम, और मेल-मिलाप का पीछा कर। २४ पर मूर्खता, और अविद्या के विवादों से अलग रह; क्योंकि तू जानता है, कि इनसे झगड़े होते हैं। २५ और प्रभु के दास को झगड़ालू नहीं होना चाहिए, पर सब के साथ कोमल और शिक्षा में निषुण, और सहनशील हो। २६ और विरोधियों को नग्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराक का मन दे, कि वे भी सत्य को पहचानें। २७ और इसके द्वारा जीतान की इच्छा पूरी करने के लिये सचेत होकर जीतान के फंदे से छूट जाएँ।

३ पर यह जान रख, कि अनन्ति दिनों में कठिन समय आएँगे। १ क्योंकि

मनुष्य स्वाथी, धन का लोभी, डीगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र, २ दया रहित, क्षमा रहित, दोष लगानेवाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी, ३ विश्वासघाती, हठी, अभिमानी और परमेश्वर के नहीं बरन सुख-विलास ही के चाहनेवाले होंगे। ४ वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना। ५ इन्हीं में से वे लोग हैं, जो धरों में दबे पाँव धूम आते हैं और उन दुर्बल छियों को वश में कर लेते हैं, जो पापों से दबी और हर प्रकार की अभिलाषाओं के वश मैं हैं। ६ और सदा सीखती तो रहती है पर सत्य की पहचान तक कभी नहीं पहुँचती। ७ और जैसे यन्स और यन्सेस ने मूरा का विरोध किया था वैसे ही ये भी सत्य का विरोध करते हैं; ये तो ऐसे मनुष्य हैं, जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और वे विश्वास के विषय में निकम्मे हैं। ८ पर वे इससे आगे नहीं बढ़ सकते, क्योंकि जैसे उनकी अज्ञानता सब मनुष्यों पर प्रगट हो गई थी, वैसे ही इनकी भी हो जाएँगी। ९ पर तूने उपदेश, चाल-चलन, मनसा, विश्वास, सहनशीलता, प्रेम, धीरज, उत्तीर्ण, और पीड़ा में मेरा साथ दिया, १० और ऐसे दुःखों में भी जी अन्ताकिया और इकुनियुस और लुका में मुझ पर पड़े थे। ये मैंने ऐसे उत्पीड़नों को सहा, और प्रभु ने मुझे उन सबसे छुड़ाया। ११ पर जितने मसीह यीशु मैं

भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएँगे। १३ और दुष्ट, और बहकानेवाले धोखा देते हुए, और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएँगे। १४ पर तू इन बातों पर जो तूने सीखी हैं और विश्वास किया था, यह जानकर दृढ़ बना रह; कि तूने उन्हें किन लोगों से सीखा है, १५ और जालकपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मरीह पर विश्वास करने से उद्घार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है। १६ सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभादायक है, १७ ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भने काम के लिये तप्पर हो जाए।

४ परमेश्वर और मरीह यीशु को गवाह करके, जो जीवितों और मरे हुओं का न्याय करेगा, उसे और उसके प्रगट होने, और राज्य को सुधि दिलाकर मैं तुझे आदेश देता हूँ। २ कि तू वचन का प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डॉट, और समझा। ३ क्योंकि ऐसा समय आएगा, कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुत सारे उपदेशक बटोर लेंगे। ४ और अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहनियों पर लगाएँगे। ५ पर तू सब बातों में सावधान रह, दुःख उठा, ससमाचार प्रचार का काम कर और अपनी सेवा को पूरा कर। ६ क्योंकि अब मैं अर्ध के समान उण्डेला जाता हूँ, और मेरे सासार से जाने का समय आ पहुँचा है। ७ मैं अच्छी कुशती लड़ चुका हूँ, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। ८ भविष्य में मैं लिये धार्मिकता का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, वरन् उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं। ९ मेरे पास शीघ्र आने का प्रयत्न कर। १० क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है, और थिस्सलुनीके को चला गया है, और क्रेसकेस गलातिया को और तीतुस दलमतिया को चला गया है। (aiōn g165) ११ केवल लूका मेरे साथ है मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिये वह मेरे बहुत काम का है। १२ तुखिकस को मैंने इफिसुस को भेजा है। १३ जो बागा मैं त्रोआस में करपुस के यहाँ छोड़ आया हूँ, जब तू आए, तो उसे और पुस्तकें विशेष करके चर्चपत्रों को लेते आना। १४ सिकन्दर ठठेरे ने मुझसे बहुत बुराइयाँ की हैं प्रभु उसे उसके कामों के अनुसार बदला देगा। १५ तू भी उससे सावधान रह, क्योंकि उसने हमारी जातों का बहुत ही विरोध किया। १६ मेरे पहले प्रत्यक्तर करने के समय में किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया, वरन् सब ने मुझे छोड़ दिया था भला हो, कि इसका उनको लेखा देना न पड़े। १७ परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा, और मुझे सामर्थ्य दी; ताकि मेरे द्वारा पूरा-पूरा प्रचार हो, और सब अन्यजाति सुन लें; और मैं तो सिंह के मूँह से छुड़ाया गया। १८ और प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा, और अपने स्वर्गीय राज्य में उद्घार करके पहुँचाएगा उरी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन। (aiōn g165) १९ प्रिस्का और अविला को, और उनेसिफुस्स के घराने को नमस्कार। २० इरास्तुस कुरिन्यूस में रह गया, और त्रुफिसुस को मैंने मीलेतुस में बीमार छोड़ा है। २१ जाडे से पहले चते आने का प्रयत्न कर: यूबल्स, और पदेस, और लीनुस और क्लौदिया, और सब भाइयों का तुझे नमस्कार। २२ प्रभु तेरी आत्मा के साथ रहे, तुम पर अनुग्रह होता रहे।

तीतुस

१ पौलुस की ओर से, जो परमेश्वर का दास और यीशु मसीह का प्रेरित है, परमेश्वर के चुने हुए लोगों के विवास को स्थापित करने और सच्चाई का ज्ञान स्थापित करने के लिए जो भक्ति के साथ सहमत है, २ उस अनन्त जीवन की आशा पर, जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने जो झूठ बोल नहीं सकता सनातन से की है, (aiōnios g166) ३ पर ठीक समय पर अपने वचन को उस प्रचार के द्वारा प्रगाट किया, जो हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार मुझे सौंपा गया। ४ तीतुस के नाम जो विवास की सहभागिता के विचार से मेरा सच्चा पुत्र हैः परमेश्वर पिता और हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और शान्ति होती रहे। ५ मैं इसलिए तुझे क्रेते मैं छोड़ आया था, कि तू शेष रही हुई बातों को सधरों, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर-नगर प्राचीनों को नियुक्त करे। ६ जो निर्दोष और एक ही पर्ती का पाति हो, जिनके बच्चे विवासी हों, और जिन पर लुचपन और निरंकशता का दोष नहीं। ७ क्योंकि अध्यक्ष को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिएः न हठी, न क्रोधी, न प्रियकड़, न मारपीट करनेवाला, और न नीच कमाई का लोभी।

८ पर पहुँचाइ करनेवाला, भलाई का चाहनेवाला, संयमी, न्यायी, पवित्र और जितेन्द्रिय हो; ९ और विवासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे, कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके; और विवादियों का मूँह भी बन्द कर सके। १० क्योंकि बहुत से अनुशासनहीन लोग, निरंकुश बकवादी और धोखा देनेवाले हैं; विशेष करके खतनावालों में से। ११ इनका मूँह बन्द करना चाहिएः ये लोग नीच कमाई के लिये अनुचित बातें सिखाकर घर के घर बिगाड़ देते हैं। १२ उन्हीं में से एक जन ने जो उन्हीं का भविष्यद्वता है, कहा है, “क्रेती लोग सदा झड़े, तुष पशु और आलसी पेट होते हैं।” १३ यह गवाही सच है, इसलिए उन्हें कड़ाइ से चेतावनी दिया कर, कि वे विवास में पक्के हो जाएँ। १४ यह दियों की कथा कहनियों और उन मनुष्यों की आज्ञाओं पर मन न लगाएँ, जो सत्य से भटक जाते हैं। १५ शुद्ध लोगों के लिये सब बस्तुँ शुद्ध हैं, पर अशुद्ध और अविवासियों के लिये कुछ भी शुद्ध नहीं वरन् उनकी बुद्धि और विवेक दोनों अशुद्ध हैं। १६ वे कहते हैं, कि हम परमेश्वर को जानते हैं पर अपने कामों से उसका इन्कार करते हैं, क्योंकि वे धृषित और आज्ञा न माननेवाले हैं और किसी अच्छे काम के योग्य नहीं।

२ पर तू ऐसी बातें कहा कर जो खरे सिद्धान्त के योग्य हैं। ३ अर्थात् बद्ध पुस्त सचेत और गम्भीर और संयमी हों, और उनका विवास और प्रेम और धीरज पक्का हो। ४ इसी प्रकार बुद्धि खियों का चाल चलन भक्तियुक्त लोगों के समान हो, वे दोष लगानेवाली और प्रियकड़ नहीं; पर अच्छी बातें सिखानेवाली हों। ५ ताकि वे जवान खियों को चेतावनी देती रहें, कि अपने पतियों और बच्चों से प्रेम रखें; ६ और संयमी, पवित्रता, घर का कारबार करनेवाली, भली और अपने-अपने पति के अधीन रहनेवाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए। ७ ऐसे ही जवान पुस्तों को भी समझाया कर, कि संयमी हों। ८ सब बातों में अपने अपको भले कामों का नमूना बना, तैरे उपदेश में सफाई, गम्भीरता ९ और ऐसी खराई पाई जाए, कि कोई उसे बुरा न कह सके; जिससे विरोधी हम पर कोई दोष लगाने का अवसर न पाकर लज्जित हो। १० दासों को समझा, कि अपने-अपने स्वामी के अधीन रहें, और सब बातों में उन्हें प्रसन्न रखें, और उलटकर जवाब न दें; ११ चोरी चालाकी न करें; पर सब प्रकार से पूरे विवासी निकलें, कि वे सब बातों में हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के उपदेश की शोभा बढ़ा दें। १२ क्योंकि परमेश्वर

का अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों में उद्धार लाने में सक्षम है। १३ और हमें चिताता है, कि हम अभिति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धार्मिकता से और भक्ति से जीवन बिताएँ; (aiōn g165) १४ और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की प्रतीक्षा करते रहें। १५ जिसने अपने आपको हमारे लिये दे दिया, कि हमें हर प्रकार के अर्थ से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले-भले कामों में सरगम हो। १६ पूरे अधिकार के साथ ये बातें कह और समझा और सिखाता रह। कोई तुझे तुच्छ न जानने पाए।

३ लोगों को सुधि दिला, कि हाकिमों और अधिकारियों के अधीन रहें, २ और उनकी आज्ञा मानें, और हर एक अच्छे काम के लिये तैयार रहें, २ किसी को बदनाम न करें; झांडाल न हों; पर कोमल स्वभाव के हों, और सब मनुष्यों के साथ बड़ी नग्नता के साथ रहें। ३ क्योंकि हम भी पहले, निर्बुद्धी और आज्ञा न माननेवाले, और भ्रम में पड़े हुए और विभिन्न प्रकार की अभिलाषाओं और सुख-विलास के दासत्व में थे, और बैर-भाव, और डाह करने में जीवन निर्वाह करते थे, और धृषित थे, और एक दूसरे से बैर रखते थे। ४ पर जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की भलाई, और मनुष्यों पर उसका प्रेम प्रकट हआ ५ तो उसने हमारा उद्धार किया और यह धार्मिक कामों के कारण नहीं, जो हमने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नये जन्म के सान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हआ। ६ जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उण्डेला। ७ जिससे हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें। (aiōnios g166) ८ यह बात सच है, और मैं चाहता हूँ, कि तू इन बातों के विषय में दृढ़ता से बोले इसलिए कि जिन्होंने परमेश्वर पर विवास किया है, वे भले-भले कामों में लगे रहने का ध्यान रखें। ये बातें भली, और मनुष्यों के लाभ की हैं। ९ पर मूर्खता के विवादों, और वंशवलियों, और बैर विरोध, और उन झगड़ों से, जो व्यवस्था के विषय में हों बचा रह; क्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ हैं। १० किसी पाखण्डी को एक दो बार समझा बुझाकर उससे अलग रह। ११ यह जानकर कि ऐसा मनुष्य भटक गया है, और अपने आपको दोषी ठहराकर पाप करता रहता है। १२ जब मैं तेरे पास अतिमास या तुखिकुस को भेजूँ, तो मेरे पास निकुपुलिस आने का यत्न करना; क्योंकि मैंने वही जाड़ा काटने का निश्चय किया है। १३ जेनास व्यवस्थापक और अपुल्लोद्ध को यत्न करके आगे पहुँचा दे, और देख, कि उन्हें किसी वस्तु की घटी न होने पाए। १४ हमारे लोग भी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये अच्छे कामों में लगे रहना सीखें ताकि निष्फल न रहें। १५ मेरे सब साथियों का तुझे नमस्कार और जो विवास के कारण हम से प्रेम रखते हैं, उनको नमस्कार। तुम सब पर अनुग्रह होता रहे।

फिलेमोन

१ पौलस की ओर से जो मरीह यीशु का कैट्डी है, और भाई तीमुथियुस की

ओर से हमारे प्रिय सहकर्मी फिलेमोन, २ और बहन अफाकिया, और हमारे साथी योद्धा अरखिप्पुस और फिलेमोन के घर की कलीसिया के नाम। ३ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मरीह की ओर से अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती रहे। ४ मैं सदा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, और अपनी प्रार्थनाओं में भी तुझे स्मरण करता हूँ। ५ क्योंकि मैं तेरे उस प्रेम और विच्वास की चर्चा सुनकर, जो प्रभु यीशु पर और सब पवित्र लोगों के साथ है। ६ मैं प्रार्थना करता हूँ कि, विच्वास में तुम्हारी सहभागिता हर अच्छी बात के ज्ञान के लिए प्रभावी हो जो मरीह में हमारे पास है। ७ क्योंकि हे भाई, मुझे तेरे प्रेम से बहुत आनन्द और शान्ति मिली है, इसलिए, कि तेरे द्वारा पवित्र लोगों के मन हरे भरे हो गए हैं। ८ इसलिए यद्यपि मुझे मरीह में बड़ा साहस है, कि जो बात ठीक है, उसकी आज्ञा तुझे दृँ। ९ तो भी मुझ बढ़े पौलस को जो अब मरीह यीशु के लिये कैट्डी हूँ, यह और भी भला जान पड़ा कि प्रेम से विनती करूँ। १० मैं अपने बच्चे उनेसिमुस के लिये जो मुझसे मेरी कैट्ड में जन्मा है तुझ से विनती करता हूँ। ११ वह तो पहले तेरे कुछ काम का न था, पर अब तेरे और मेरे दोनों के बड़े काम का है। १२ उसी को अर्थात् जो मेरे हृदय का टुकड़ा है, मैंने उसे तेरे पास लौटा दिया है। १३ उसे मैं अपने ही पास रखना चाहता था कि वह तेरी ओर से इस कैट्ड में जो सुसमाचार के कारण है, मेरी सेवा करे। १४ पर मैंने तेरी इच्छा बिना कुछ भी करना न चाहा कि तेरा यह उपकार दबाव से नहीं पर आनन्द से हो। १५ क्योंकि क्या जाने वह तुझ से कुछ दिन तक के लिये इसी कारण अलग हुआ कि सदैव तेरे निकट रहे। (aiōnios g166) १६ परन्तु अब से दास के समान नहीं, वरन् दास से भी उत्तम, अर्थात् भाई के समान रहे जो मेरा तो विशेष प्रिय है ही, पर अब शरीर में और प्रभु में भी, तेरा भी विशेष प्रिय हो।

१७ यदि तु मुझे अपना सहभागी समझता है, तो उसे इस प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे। १८ और यदि उसने तेरी कुछ हानि की है, या उस पर तेरा कुछ आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले। १९ मैं पौलस अपने हाथ से लिखता हूँ, कि मैं आप भर दूँगा, और इसके कहने की कुछ आवश्यकता नहीं, कि मेरा कर्ज जो तुझ पर है वह तू ही है। २० हे भाई, यह आनन्द मझे प्रभु में तेरी ओर से मिले, मरीह में मेरे जी को हरा भरा कर दे। २१ मैं तेरे आशाकारी होने का भरोसा रखकर, तझे लिखता हूँ और यह जानता हूँ, कि जो कुछ मैं कहता हूँ, त उससे कहीं बढ़कर करेगा। २२ और यह भी, कि मेरे लिये ठहरने की जगह तैयार रख; मुझे आशा है, कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा मैं तुम्हें दे दिया जाऊँगा। २३ इपफ्रास जो मरीह यीशु में मेरे साथ कैटी है २४ और मरकुस और अरिस्तर्खुस और देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी हैं; इनका तुझे नमस्कार। २५ हमारे प्रभु यीशु मरीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा पर होता रहे। आमीन।

इब्रानियों

१ पूर्व युग में परमेश्वर ने पूर्वजों से थोड़ा-थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वत्काओं के द्वारा बातें की, २ पर इन अन्तिम दिनों में हम से अपने पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सुष्ठि भी रखी है। (aión g165) ३ वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन से सम्भालता है: वह पापों को धोकर ऊँचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा। ४ और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उसने उसे बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया। ५ क्योंकि स्वर्गदूतों में से उसने कब किसी से कहा, “तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे जन्माया है?” और फिर यह, “मैं उसका पिता होऊँगा, और वह मेरा पुत्र होगा?” ६ और जब पहलौठे को जगत में फिर लाता है, तो कहता है, “परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत् करें।” ७ और स्वर्गदूतों के विषय में यह कहता है, “वह अपने दूतों को पवन, और अपने सेवकों को धधकती आग बनाता है।” ८ परन्तु पुनः के विषय में कहता है, “हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युआनुयुा रहेगा, तेरा राज्य का राजटण्ड न्याय का राजटण्ड है।” (aión g165) ९ तूने धार्मिकता से प्रेम और अधर्म से बैर रखा; इस कारण परमेश्वर, तेरे परमेश्वर, ने तेरे साथियों से बढ़कर हर्षस्ती तेल से तेरा अभिषेक किया।” १० और यह कि, “है प्रभु, आदि में तूने पृथ्वी की नीव डाली, और स्वर्ण तेरे हाथों की करीगरी है। ११ वे तो नाश हो जाएँगे; परन्तु तू बना रहेगा और वे सब बब्न के समान पुराने हो जाएँगे। १२ और तू उन्हें चादर के समान लेटेगा, और वे बब्न के समान बदल जाएँगे: पर तू वही है और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।” १३ और स्वर्गदूतों में से उसने किसे कब कहा, “तू मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों के नीचे की चौकी न कर दूँ?” १४ क्या वे सब परमेश्वर की सेवा ठहल करनेवाली आत्माएँ नहीं, जो उद्धार पानेवालों के लिये सेवा करने को भेजी जाती हैं?

२ इस कारण चाहिए, कि हम उन बातों पर जो हमने सुनी हैं अधिक ध्यान दें, ऐसा न हो कि बहक कर उनसे दूर चले जाएँ। ३ क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था, जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला मिला। ४ तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से उपेक्षा करके कैसे बच सकते हैं? जिसकी चर्चा पहले-पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुनेवालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ। ५ और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिह्नों, और अद्वृत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ्य के कामों, और पवित्र आत्मा के बदानों के बाँटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा। ६ उसने उस अनेवाले जगत को जिसकी चर्चा हम कर रहे हैं, स्वर्गदूतों के अधीन न किया। ७ वरन् किसी ने कही, यह गवाही दी है, “मनुष्य क्या है, कि तू उसकी सुधि लेता है? या मनुष्य का पुरु क्या है, कि तू उस पर दृष्टि करता है? ८ तूने उसे स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया; तूने उस पर महिमा और आदर का मुकुट रखा और उसे अपने हाथों के कामों पर अधिकार दिया। ९ तूने सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया।” इसलिए जबकि उसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, तो उसने कुछ भी रख न छोड़ा, जो उसके अधीन न हो। पर हम अब तक सब कुछ उसके अधीन नहीं देखते। १० पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मन्त्यु का दुःख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहने हुए देखते हैं, ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से वह हर एक मनुष्य के लिये मन्त्यु

का स्वाद चखे। ११ क्योंकि जिसके लिये सब कुछ है, और जिसके द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुँचाए, तो उनके उद्धार के कर्ता को दुःख उठाने के द्वारा सिद्ध करे। १२ क्योंकि पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किए जाते हैं, सब एक ही मूल से हैं, अर्थात् परमेश्वर, इसी कारण वह उन्हें भाई कहते से नहीं लजाता। १३ पर वह कहता है, “मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊँगा, सभा के बीच मैं मैं तेरा भजन गाऊँगा।” १४ और फिर यह, “मैं उस पर भरोसा रखूँगा।” और फिर यह, “देख, मैं उन बच्चों सहित जो परमेश्वर ने मुझे दिए।” १५ इसलिए जबकि बच्चे माँस और लाइ के भागी हैं, तो वह अपा भी उनके समान उनका सहभागी हो गया; ताकि मन्त्यु के द्वारा उसे जिसे मन्त्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे, १६ और जितने मन्त्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फँसे थे, उन्हें छुड़ा ले। १७ क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं बरन अब्राहम के बंश को सम्भालता है। १८ इस कारण उसको चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिससे वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बंध रखती हैं, एक दयात् और विश्वासयोग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिये प्रायाच्चित करे। १९ क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुःख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है।

३ इसलिए, हे पवित्र भाइयों, तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो। ४ जो अपने नियुक्त करनेवाले के लिये विश्वासयोग्य था, जैसा मूसा भी परमेश्वर के सारे घर में था। ५ क्योंकि यीशु मूसा से इतना बढ़कर महिमा के योग्य समझा गया है, जितना कि घर का बनानेवाला घर से बढ़कर आदर रखता है। ६ क्योंकि हर एक घर का कोई बनानेवाला होता है, पर जिसने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर है। ७ मूसा तो परमेश्वर के सारे घर में सेवक के समान विश्वासयोग्य रहा, कि जिन बातों का वर्णन होनेवाला था, उनकी गवाही दे। ८ पर मसीह पुरु के समान परमेश्वर के घर का अधिकारी है, और उसका घर हम हैं, यदि हम साहस पर, और अपनी आशा के गर्व पर अन्त तक ढूढ़ता से स्थिर रहें। ९ इसलिए जैसा पवित्र आत्मा कहता है, “यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, १० तो अपने मन को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय और परीक्षा के दिन जंगल में किया था। ११ जहाँ तम्हारे पूर्वजों ने मुझे जाँचकर परखा और चालीस वर्ष तक मेरे काम देरें। १२ इस कारण मैं उस समय के लोगों से क्रोधित रहा, और कहा, ‘इनके मन सदा भटकते रहते हैं, और इन्होंने मेरे मार्गों को नहीं पहचाना।’ १३ तब मैंने क्रोध में आकर शपथ खाई, ‘वे मेरे विश्वास में प्रवेश करने न पाएँगे।’” १४ हे भाइयों, चौकस रहो, कि तुम मैं ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न हो, जो जीविते परमेश्वर से दूर हटा ले जाए। १५ वरन् जैसा दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक दूरे को समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम मैं से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए। १६ क्योंकि हम मसीह के भारीदार हो हैं, यदि हम अपने प्रथम भरोसे पर अन्त तक ढूढ़ता से स्थिर रहें। १७ जैसा कहा जाता है, “यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय या उसका लोगों के लिये सब कुछ चाहिए।” १८ और वह चालीस वर्ष तक किन लोगों से क्रोधित रहा? क्या उन्हीं से नहीं, जिन्होंने पाप किया, और उनके शब्द जंगल में पड़े रहे? १९ और उसने किन से शपथ खाई, कि तुम मैं प्रवेश करने न पाओगे: केवल उनसे

जिन्होंने आज्ञा न मानी? १९ इस प्रकार हम देखते हैं, कि वे अविष्वास के कारण प्रवेश न कर सके।

४ इसलिए जबकि उसके विश्वाम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक है,

तो हमें डरना चाहिए; ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन उससे बचत रह जाए। १ क्योंकि हमें उन्हीं के समान सुसमाचार सुनाया गया है, पर सने हुए वचन से उन्हें कछु लाभ न हुआ; क्योंकि सुनेवालों के मन में विश्वास के साथ नहीं है। २ और हम जिन्होंने विश्वास किया है, उस विश्वाम में प्रवेश करते हैं; जैसा उसने कहा, “मैंने अपने क्रोध में शपथ खाई, कि वे मेरे विश्वाम में प्रवेश करने न पाएंगो।” यद्यपि जगत की उत्पत्ति के समय से उसके काम हो चुके थे। ३ क्योंकि सातवें दिन के विषय में उसने कहीं ऐसा कहा है, “परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सब कामों को निपटा करके विश्वाम किया।” ४ और इस जगह फिर यह कहता है, “वे मेरे विश्वाम में प्रवेश न करने पाएंगो।” ५ तो जब यह बात बाकी है कि किन्तने और हैं जो उस विश्वाम में प्रवेश करें, और इसाएलियों को, जिन्हें उसका सुसमाचार पहले सुनाया गया, उन्होंने आज्ञा न मानने के कारण उसमें प्रवेश न किया। ६ तो फिर वह किसी विशेष दिन को ठहराकर इतने दिन के बाद दाऊद की पुस्तक में उसे “आज का दिन” कहता है, जैसे पहले कहा गया, “यदि आज तुम उसका शब्द सनो, तो अपने मनों को कठोर न करो।” ७ और यदि यहोश उन्हें विश्वाम में प्रवेश करा लेता, तो उसके बाद दूसरे दिन की चर्चा न होती। ८ इसलिए जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिये सब का विश्वाम बाकी है। ९ क्योंकि जिसने उसके विश्वाम में प्रवेश किया है, उसने भी परमेश्वर के समान अपने कामों को पूरा करके विश्वाम किया है। १० इसलिए हम उस विश्वाम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ऐसा न हो, कि कोई जन उनके समान आज्ञा न मानकर गिर पड़े। ११ क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहत तेज है, प्राण, आत्मा को, गाँठ-गाँठ, और गदे-गदे को अलग करके, आर-पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है। १२ और सृष्टि की कोई वस्तु परमेश्वर से छिपी नहीं है वरन् जिसे हमें लेखा देना है, उसकी आँखों के सामने सब बस्तुएँ खुली और प्रगत हैं। १३ इसलिए, जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गी से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र वीरेश, तो आओ, हम अपने अंगीकार को ढूढ़ता से थामे हें। १४ क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दूर्खी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तो भी निष्पाप निकला। १५ इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट साहस बाँधकर चलें, कि हम पर दया हों, और वह अनुग्रह पाएँ, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।

५ क्योंकि हर एक महायाजक मनुष्यों में से लिया जाता है, और मनुष्यों ही

के लिये उन बातों के विषय में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, ठहराया जाता है: कि भेंट और पापबलि चढ़ाया करे। १ और वह अज्ञानियों, और भूले भटकों के साथ नमीं से व्यवहार कर सकता है इसलिए कि वह आप भी निर्बलता से घिरा है। २ और इसलिए उसे चाहिए, कि जैसे लोगों के लिये, वैसे ही अपने लिये भी पापबलि चढ़ाया करे। ३ और यह आदर का पद कोई अपने आप से नहीं लेता, जब तक कि हास्त के समान परमेश्वर की ओर से ठहराया न जाए। ४ वैसे ही मरीह ने भी महायाजक बनने की महिमा अपने आप से नहीं ली, पर उसको उसी ने दी, जिसने उससे कहा था, “तुमे पुत्र है, आज मैं ही ने तुझे जन्माया है।” ५ इसी प्रकार वह दूसरी जगह मैं भी कहता है, “तुम मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिये याजक है।” (aiōn g165) ६ यीशु ने

अपनी देह में रहने के दिनों में ऊँचे शब्द से पुकार पुकारकर, और आँसू बहा-बहाकर उससे जो उसको मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएँ और विनिती की और भक्ति के कारण उसकी सुनी गई। ७ और पुत्र होने पर भी, उसने दुःख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी। ८ और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया। (aiōnios g166) ९ और उसे परमेश्वर की ओर से मलिकिसिदक की रीति पर महायाजक का पद मिला। १० इसके विषय में हमें बहुत सी बातें कहनी हैं, जिनका समझाना भी कठिन है; इसलिए कि तुम ऊँचा सुनने लगे हो। ११ समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, तो भी यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाएँ? तुम तो ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए। १२ क्योंकि दूध पीनवाले को तो धार्मिकता के वचन की पहचान नहीं होती, क्योंकि वह बच्चा है। १३ पर अन्न सयानों के लिये है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियाँ अभ्यास करते-करते, भले भुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं।

६ इसलिए आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर, हम सिद्धाता की ओर बढ़ते जाएँ, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने, ७ और बपतिस्मा और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और अनन्त न्याय की शिक्षास्पी नीच, फिर से न डालें। (aiōnios g166) ८ और यदि परमेश्वर चाहे, तो हम यही करोंगे। ९ क्योंकि जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं, १० और परमेश्वर के उत्तम वचन का और आनेवाले युग की सामर्थ्य का स्वाद चख चुके हैं। (aiōn g165) ११ यदि वे भटक जाएँ, तो उन्हें मन फिराव के लिये फिर नया बनाना अनहोना है; क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और प्रगत में उस पर कलंक लगाते हैं। १२ क्योंकि जो भूमि वर्षा के पानी को जो उस पर बार बार पड़ता है, पी पीकर जिन लोगों के लिये वह जोती-बोई जाती है, उनके काम का साग-पात उपजाती है, वह परमेश्वर से आशीष पाती है। १३ पर यदि वह ज्ञाई और ऊँटकटरे उगाती है, तो निकम्मी और श्रापित होने पर है, और उसका अन्त जलाया जाना है। १४ पर ये प्रियों यद्यपि हम ये बातें कहते हैं तो भी तुम्हारे विषय में हम इससे अच्छी और उद्घारावाली बातों का भरोसा करते हैं। १५ क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं, कि तुम्हारे काम, और उस प्रेम को भूल जाए, जो तुम ने उसके नाम के लिये इस रीति से दिखाया, कि पवित्र लोगों की सेवा की, और कर भी रहे हो। १६ पर हम बहुत चाहते हैं, कि तुम में से हर एक जन अन्त तक पूरी आशा के लिये ऐसा ही प्रयत्न करता रहे। १७ ताकि तुम आलसी न हो जाओं, वरन् उनका अनुकरण करो, जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं। १८ और परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा देते समय जबकि शपथ खाने के लिये किसी को अपने से बड़ा न पाया, तो अपनी ही शपथ खाकर कहा, १९ “मैं सचमुच तुझे बहुत आशीष दँगा, और तेरी सन्तान को बढ़ाता जाऊँगा।” २० और इस रीति से उसने धीरज धरकर प्रतिज्ञा की हुई बात प्राप्त की। २१ मनुष्य तो अपने से किसी बड़े की शपथ खाया करते हैं और उनके हर एक विवाद का फैसला शपथ से पक्का होता है। २२ इसलिए जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर और भी साफ रीति से प्रगट करना चाहा, कि उसकी मनसा बदल नहीं सकती तो शपथ को बीच में लाया। २३ ताकि दो बे-बदल बातों के द्वारा जिनके विषय में परमेश्वर का झूठा ठहरना अनहोना है, हमारा दृढ़ता से ढाईस बन्ध जाए, जो शरण लेने को इसलिए दौड़े हैं, कि उस आशा को जो सामने रखी हुई है प्राप्त करें। २४ वह आशा हमारे प्राप्त के लिये ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और परदे के भीतर तक पहुँचता है। २५

जहाँ यीशु ने मलिकिसिदक की रीति पर सदाकाल का महायाजक बनकर, हमारे लिये अग्रामा के स्पृ में प्रवेश किया है। (aiōn g165)

७ यह मलिकिसिदक शालेम का राजा, और परमप्रधान परमेश्वर का याजक,

जब अब्राहम राजाओं को मारकर लौटा जाता था, तो इसी ने उससे भेट करके उसे आशीष दी, : इसी को अब्राहम ने सब वस्तुओं का दसवाँ अंश भी दिया। यह पहले अपने नाम के अर्थ के अनुसार, धार्मिकता का राजा और फिर शालेम अर्थात् शान्ति का राजा है। ८ जिसका न पिता, न माता, न बंशावली है, जिसके न दिनों का आदि है और न जीवन का अन्त है; परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वस्पृ ठहरकर वह सदा के लिये याजक बना रहता है। ९ अब इस पर ध्यान करो कि यह कैसा महान था जिसको कुलपति अब्राहम ने अच्छे से अच्छे माल की लूट का दसवाँ अंश दिया। १० लेवी की सन्तान में से जो याजक का पद पाते हैं, उन्हें आज्ञा मिली है, कि लोगों, अर्थात् अपने भाइयों से, चाहे वे अब्राहम ही की देह से क्यों न जन्मे हों, व्यवस्था के अनुसार दसवाँ अंश लें। ११ पर इसने, जो उनकी बंशावली में का भी न था अब्राहम से दसवाँ अंश लिया और जिसे प्रतिज्ञाएँ मिली थी उसे आशीष दी। १२ और उसमें संदेह नहीं, कि छोटा बड़े से आशीष पाता है। १३ और यहाँ तो मरनहार मनुष्य दसवाँ अंश लेते हैं पर वहाँ वही लेता है, जिसकी गवाही दी जाती है, कि वह जीवित है। १४ तो हम यह भी कह सकते हैं, कि लेवी ने भी, जो दसवाँ अंश लेता है, अब्राहम के द्वारा दसवाँ अंश दिया। १५ क्योंकि जिस समय मलिकिसिदक ने उसके पिता से भेट की, उस समय यह अपने पिता की देह में था। १६ तब यदि लेवीय याजकपद के द्वारा सिद्धि हो सकती है (जिसके सहारे से लोगों को व्यवस्था मिली थी) तो फिर क्या आवश्यकता थी, कि दूसरा याजक मलिकिसिदक की रीति पर खड़ा हो, और हास्त की रीति का न कहलाएँ। १७ क्योंकि जब याजक का पद बदला जाता है तो व्यवस्था का भी बदलना अवश्य है। १८ क्योंकि जिसके विषय में ये बातें कही जाती हैं, वह दूसरे गोत्र का है, जिसमें से किसी ने वेदी की सेवा नहीं की। १९ तो प्रगत है, कि हमारा प्रभु यहदा के गोत्र में से उदय हुआ है और इस गोत्र के विषय में मूसा ने याजकपद की कुछ चर्चा नहीं की। २० हमारा दावा और भी स्पष्टता से प्रकट हो जाता है, जब मलिकिसिदक के समान एक और ऐसा याजक उत्पन्न होनेवाला था। २१ जो शारीरिक आज्ञा की व्यवस्था के अनुसार नहीं, पर अविनाशी जीवन की सामर्थ्य के अनुसार नियुक्त हो। २२ क्योंकि उसके विषय में यह गवाही दी गई है, “तू मलिकिसिदक की रीति पर युगानुसुग्य याजक है।” (aiōn g165) २३ इस प्रकार, पहली आज्ञा निर्बल; और निष्पल होने के कारण लोप हो गई। २४ (इसलिए कि व्यवस्था ने किसी बात की सिद्धि नहीं की) और उसके स्थान पर एक ऐसी उत्तम आशा रखी गई है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के समीप जा सकते हैं। २५ और इसलिए मसीह की नियुक्ति बिना शपथ नहीं है। २६ क्योंकि वे तो बिना शपथ याजक ठहराए गए पर यह शपथ के साथ उसकी ओर से नियुक्त किया गया जिसने उसके विषय में कहा, “प्रभु ने शपथ खाई, और वह उससे फिर न पछाड़ाएगा, कि तू युगानुसुग्य याजक है।” (aiōn g165) २७ इस कारण यीशु एक उत्तम वाचा का जामिन ठहरा। २८ वे तो बहुत से याजक बनते आएँ, इसका कारण यह था कि मृत्यु उहें रहने नहीं देती थी। २९ पर यह युगानुसुग्य रहता है; इस कारण उसका याजकपद अटल है। (aiōn g165) ३० इसलिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा-पूरा उद्घार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिये विनिर्ति करने को सर्वदा जीवित है। ३१ क्योंकि ऐसा ही महायाजक हमारे योग्य था, जो पवित्र, और निष्कप्त और निर्मल, और पापियों से अलग, और स्वर्ग से भी ऊँचा किया

हुआ हो। ३२ और उन महायाजकों के समान उसे आवश्यक नहीं कि प्रतिदिन पहले अपने पापों और फिर लोगों के पापों के लिये बलिदान चढ़ाएँ; क्योंकि उसने अपने आपको बलिदान चढ़ाकर उसे एक ही बार निपटा दिया। ३३ क्योंकि व्यवस्था तो निर्वल मनुष्यों को महायाजक नियुक्त करती है; परन्तु उस शपथ का बचन जो व्यवस्था के बाद खाई गई, उस पुत्र को नियुक्त करता है जो युगानुसुग्य के लिये सिद्धि किया गया है। (aiōn g165)

अब जो बातें हम कह रहे हैं, उनमें से सबसे बड़ी बात यह है, कि हमारा ऐसा महायाजक है, जो स्वर्ग पर महामहिमन के सिंहासन के दाहिने जा बैठा। ३४ और पवित्रस्थान और उस सच्चे तम्बू का सेवक हुआ, जिसे किसी मनुष्य ने नहीं, वरन् प्रभु ने खड़ा किया था। ३५ क्योंकि हर एक महायाजक भेट, और बलिदान चढ़ाने के लिये ठहराया जाता है, इस कारण अवश्य है, कि इसके पास भी कुछ चढ़ाने के लिये हो। ३६ और यदि मसीह पृथ्वी पर होता तो कभी याजक न होता, इसलिए कि पृथ्वी पर व्यवस्था के अनुसार भेट चढ़ानेवाले तो हैं। ३७ जो स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिस्पृ और प्रतिबिम्ब की सेवा करते हैं, जैसे जब मूसा तम्बू बनाने पर था, तो उसे यह चेतावनी मिली, “देख जो नमूना तुझे पहाड़ पर दिखाया गया था, उसके अनुसार सब कुछ बनाना।” ३८ पर उन याजकों से बढ़कर सेवा यीशु को मिली, क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहरे बौद्धी गई है। ३९ क्योंकि यदि वह पहली वाचा निर्दोष होती, तो दूसी के लिये अवश्यर न ढूँढ़ा जाता। ४० पर परमेश्वर लोगों पर दोष लगाकर कहता है, “प्रभु कहता है, देखो वे दिन आते हैं, कि मैं इस्माइल के घराने के साथ, और यहदा के घराने के साथ, नई वाचा बौद्धीं। ४१ यह उस वाचा के समान न होगी, जो मैंने उनके पूर्वजों के साथ उस समय बौद्धी थी, जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिथ देखा से निकाल लाया, क्योंकि वे मेरी वाचा पर स्थिर न रहे, और मैंने उनकी सुधि न ली; प्रभु यही कहता है। ४२ फिर प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्माइल के घराने के साथ बौद्धीं, वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में डालूँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे। ४३ और हर एक अपने देशवाले को और अपने भाई को यह शिक्षा न देगा, कि तू प्रभु को पहचान क्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे। ४४ क्योंकि मैं उनके अर्धमेर्द के विषय में दयावन्त होऊँगा, और उनके पापों को फिर स्परण न करूँगा।” ४५ नई वाचा की स्थापना से उसने प्रथम वाचा को पुराना ठहराया, और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है।

९ उस पहली वाचा में भी सेवा के नियम थे; और ऐसा पवित्रस्थान था जो इस जगत का था। १० अर्थात् एक तम्बू बनाया गया, पहले तम्बू में दीवार, और मेज, और भेट की रोटियाँ थीं; और वह पवित्रस्थान कहलाता है। ११ और दूसरे परदे के पीछे वह तम्बू था, जो परमपवित्र स्थान कहलाता है। १२ उसमें सोने की धूपदानी, और चारों ओर सोने से मढ़ा हुआ वाचा का सन्दूक और इसमें मन्ना से भरा हुआ सोने का मर्तबान और हास्त की छड़ी जिसमें फूल फूल आ गए थे और वाचा की पटियाँ थीं। १३ उसके ऊपर दोनों तेजोमय कस्ब थे, जो प्रायश्चित्र के ढक्कन पर छाया किए हुए थे: इन्हीं का एक-एक करके वर्णन करने का अभी अवश्यर नहीं है। १४ ये बस्तुएँ इस रीति से तैयार हो चुकी, उस पहले तम्बू में तो याजक हर समय प्रवेश करके सेवा के काम सम्पन्न करते हैं, १५ पर दूसरे में केवल महायाजक वर्ष भर में एक ही बार जाता है; और बिना लह लिये नहीं जाता; जिसे वह अपने लिये और लोगों की भूल चूक के लिये चढ़ाता है। १६ इससे पवित्र आत्मा यही दिखाता है, कि जब तक पहला तम्बू

खड़ा है, तब तक पवित्रस्थान का मार्ग प्रगट नहीं हुआ। ९ और यह तम्बू तो वर्तमान समय के लिये एक दृष्टान्त है; जिसमें ऐसी भेट और बलिदान चढ़ाए जाते हैं, जिनसे आराधना करनेवालों के विवेक सिद्ध नहीं हो सकते। १० इसलिए कि वे केवल खाने-पीने की वस्तुओं, और भौति-भौति के स्नान विधि के आधार पर शारीरिक नियम हैं, जो सुधार के समय तक के लिये नियुक्त किए गए हैं। ११ परन्तु जब मसीह अनेवाली अच्छी-अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, तो उसने और भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात् सुधि का नहीं। १२ और बकरों और बछड़ों के लह के द्वारा नहीं, पर अपने ही लह के द्वारा एक ही बार पवित्रस्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। (aiōnios g166) १३ क्योंकि जब बकरों और बैलों का लह और बछिया की राख अपवित्र लोगों पर छिड़के जाने से शरीर की शुद्धता के लिये पवित्र करती है। १४ तो मसीह का लह जिसने अपने आपको सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मेरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीविते परमेश्वर की सेवा करो। (aiōnios g166) १५ और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये ही है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त विरासत को प्राप्त करें। (aiōnios g166) १६ क्योंकि जहाँ वाचा बाँधी गई है वहाँ वाचा बाँधनेवाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। १७ क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बाँधनेवाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती। १८ इसलिए पहली वाचा भी बिना लह के नहीं बाँधी गई। १९ क्योंकि जब भूमा सब लोगों को व्यवस्था की हर एक आज्ञा सुना चुका, तो उसने बछड़ों और बकरों का लह लेकर, पानी और लाल ऊन, और जूफा के साथ, उस पुस्तक पर और सब लोगों पर छिड़क दिया। २० और कहा, “यह उस वाचा का लह है, जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हारे लिये दी है।” २१ और इसी रीति से उसने तम्बू और सेवा के सारे सामान पर लह छिड़का। २२ और व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुएँ लह के द्वारा शुद्ध की जाती हैं; और बिना लह बहाए क्षमा नहीं होती। २३ इसलिए अवश्य है, कि स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिस्पृष्ठ इन बलिदानों के द्वारा शुद्ध किए जाएँ; पर स्वर्ग में की वस्तुएँ आप इनसे उत्तम बलिदानों के द्वारा शुद्ध की जाती। २४ क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्रस्थान में जो सच्चे पवित्रस्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिये अब परमेश्वर के सामने दिखाई दे। २५ यह नहीं कि वह अपने आपको बार बार चढ़ाए, जैसा कि महायाजक प्रतिवर्ष दूसरे का लह लिये पवित्रस्थान में प्रवेश किया करता है। २६ नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उसको बार बार दुःख उठाना पड़ता; पर अब युग के अन्त में वह एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे। (aiōnios g165) २७ और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। २८ वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बार बलिदान हुआ और जो लोग उसकी प्रतीक्षा करते हैं, उनके उद्धार के लिये दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा।

१० क्योंकि व्यवस्था जिसमें अनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर
उनका असली स्वस्पन नहीं, इसलिए उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रतिवर्ष अच्कूच कच्छाए जाते हैं, पास अनेवालों को कदाचि सिद्ध नहीं कर सकती। १ नहीं तो उनका चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता? इसलिए कि जब सेवा करनेवाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उनका विवेक उन्हें पापी न ठहराता। २ परन्तु उनके द्वारा प्रतिवर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है। ३

क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लह पापों को दूर करे। ५ इसी कारण मसीह जगत में आते समय कहता है, “बलिदान और भेट तैन न चाही, पर मेरे लिये एक देह तैयार की। ६ होमबलियों और पापबलियों से तू प्रसन्न नहीं हुआ। ७ तब मैंने कहा, ‘देख, मैं आ गया हूँ, (पवित्रशास्त्र में मेरे विषय में लिखा हुआ है) ताकि हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी करूँ।’ ८ ऊपर तो वह कहता है, “न तैन बलिदान और भेट और होमबलियों और पापबलियों को चाहा, और न उनसे प्रसन्न हुआ,” यद्यपि वे बलिदान तो व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते हैं। ९ फिर यह भी कहता है, “देख, मैं आ गया हूँ, ताकि तेरी इच्छा पूरी करूँ,” अतः वह पहले को हटा देता है, ताकि दूसरे को स्थापित करे। १० उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं। ११ और हर एक याजक तो खड़े होकर प्रतिदिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते; बार बार चढ़ाता है। १२ पर यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिये चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। १३ और उसी समय से इसकी प्रतीक्षा कर रहा है, कि उसके बैरी उसके पाँवों के नीचे की चौकी बैंने। १४ क्योंकि उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिये सिद्ध कर दिया है। १५ और पवित्र आत्मा भी हमें यही गवाही देता है; क्योंकि उसने पहले कहा था १६ “प्रभु कहता है; कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद उसे बाँधँगा वह यह है कि मैं अपनी व्यवस्थाओं को उनके हृदय पर लिखँगा और मैं उनके विवेक में डालँगा।” १७ (फिर वह यह कहता है,) “मैं उनके पापों को, और उनके अर्थमें कामों को फिर कभी स्मरण न करूँगा।” १८ और जब इनकी क्षमा हो गई है, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा। १९ इसलिए हो भाइयों, जबकि हमें यीशु के लह के द्वारा उस नये और जीविते मार्ग से पवित्रस्थान में प्रवेश करने का साहस हो गया है, २० जो उसने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिये अभिषेक किया है, २१ और इसलिए कि हमारा ऐसा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है। २२ तो आओ; हम सच्चे मन, और पौरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धूलवाकर परमेश्वर के समीप जाएँ। २३ और अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें; क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह विश्वासयोग्य है। २४ और प्रेम, और भले कामों में उक्साने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, २५ और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो। २६ क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बङ्गकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। २७ हाँ, दण्ड की एक भयानक उमीद और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। २८ जबकि मसा की व्यवस्था का न मानेवाला दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दाया के मार डाला जाता है। २९ तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रोटा, और वाचा के लह को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया। ३० क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसने कहा, “पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूँगा।” और फिर यह, कि “प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा।” ३१ जीविते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है। ३२ परन्तु उन पहले दिनों को स्मरण करो, जिनमें तुम ज्योति पाकर दुखों के बड़े संघर्ष में स्थिर रहे। ३३ कुछ तो यह, कि तुम निन्दा, और क्लेश सहते हुए तमाशा बने, और कुछ यह, कि तुम उनके सहभागी हुए

जिनकी दुर्दशा की जाती थी। ३४ क्योंकि तुम कैदियों के दुःख में भी दुःखी हए, और अपनी सम्पत्ति भी आनन्द से लूटने दी; यह जानकर, कि तुम्हरे पास एक और भी उत्तम और सर्वदा ठहरनेवाली सम्पत्ति है। ३५ इसलिए, अपना साहस न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है। ३६ क्योंकि तुम्हें धीरज रखना अवश्य है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ। ३७ क्योंकि अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है जबकि आनेवाला आएगा, और देर न करेगा। ३८ और मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, और यदि वह पीछे हट जाए तो मेरा मन उससे प्रसन्न न होगा।” ३९ पर हम हटनेवाले नहीं, कि नाश हो जाएँ पर विश्वास करनेवाले हैं, कि प्राणों को बचाएँ।

११ अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का मिश्रण, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। १ क्योंकि इसी के विषय में पूर्वजों की अच्छी गवाही दी गई। २ विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो। (aión g165) ३ विश्वास ही से हाबिल ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ाया; और उसी के द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही भी दी गई: क्योंकि परमेश्वर ने उसकी भेटों के विषय में गवाही दी, और उसी के द्वारा वह मरने पर भी अब तक बातें करता है। ४ विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया, कि मृत्यु को न देखें, और उसका पता नहीं मिला; क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था, और उसके उठाए जाने से घपले उसकी यह गवाही दी गई थी, कि उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया है। ५ और विश्वास बिना उपरे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है। ६ विश्वास ही से नहूं ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ी थी, चेतावनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिये जहाज बनाया, और उसके द्वारा उसने संसार को दोषी ठहराया; और उस धार्मिकता का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है। ७ विश्वास ही से अब्राहम जब खुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे विरासत में लेनेवाला था, और यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूँ, तो भी निकल गया। ८ विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में जैसे पराए देश में परदेशी रहकर इस्हाक और याकूब समेत जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बूओं में बास किया। ९ क्योंकि वह उस विष्णु नीव वाले नगर की प्रतीक्षा करता था, जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है। १० विश्वास से सारा ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की सामर्थ्य पाई, क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करनेवाले को सच्चा जाना था। ११ इस कारण एक ही जन से जो मारा हुआ सा था, आकाश के तारों और समुद्र तट के रेत के समान, अनगिनत वंश उत्पन्न हुआ। १२ ये सब विश्वास ही की दशा में मेरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुपूर्ण नहीं पाई; पर उन्हें दूर से देखकर अनानन्दि हुए और मान लिया, कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं। १३ जो ऐसी-ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रगट करते हैं, कि स्वदेश की खोज में हैं। १४ और जिस देश से वे निकल आए थे, यदि उसकी सधि करते तो उन्हें लौट जाने का अवसर था। १५ वर वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं, इसलिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में नहीं लजाता, क्योंकि उसने उनके लिये एक नगर तैयार किया है। १६ विश्वास ही से अब्राहम ने, पररेख जाने के समय में, इस्हाक को बलिदान चढ़ाया, और जिसने प्रतिज्ञाओं को सच माना था। १७ और जिससे यह कहा गया था, “इस्हाक से तेरा वंश कहलाएगा,” वह अपने एकलौते को चढ़ाने लगा। १८ क्योंकि उसने मान लिया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि उसे मेरे हुओं

में से जिलाएँ, इस प्रकार उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर वह उसे फिर मिला। १९ विश्वास ही से इस्हाक और एसाव को आनेवाली बातों के विषय में अशीर्षी दी। २० विश्वास ही से याकूब ने मरते समय यूसुक के दोनों पुत्रों में से एक-एक को आशीर्षी दी, और अपनी लाठी के सिरे पर सहारा लेकर दण्डवत् किया। २१ विश्वास ही से यूसुफ ने, जब वह मरने पर था, तो इस्माएल की सन्तान के निकल जाने की चर्चा की, और अपनी हाइंड्रियों के विषय में आज्ञा दी। २२ विश्वास ही से मूसा के माता पिता ने उसको, उत्पन्न होने के बाद तीन महीने तक छिपा रखा; क्योंकि उन्होंने देखा, कि बालक सुन्दर है, और वे राजा की आज्ञा से न डेर। २३ विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरैन की बेरी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। २४ इसलिए कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुःख भोगना और भी उत्तम लगा। २५ और मसीह के कारण निर्दित होने को मिस्त्र के भण्डार से बड़ा धन समझा क्योंकि उसकी आँखें फल पाने की ओर लगी थी। २६ विश्वास ही से राजा के क्रोध से न डरकर उसने मिस्र को छोड़ दिया, क्योंकि वह अनदेखे को मानो देखता हुआ ढूढ़ रहा। २७ विश्वास ही से उसने फसह और लह छिल्कने की विधि मानी, कि पहिलौठों का नाश करनेवाला इस्माएलियों पर हाथ न डाले। २८ विश्वास ही से वे लाल समुद्र के पार ऐसे उत्तर गए, जैसे सूखी भूमि पर से; और जब मिस्रियों ने वैसा ही करना चाहा, तो सब ढूढ़ मरे। २९ विश्वास ही से यरीहों की शहरपनाह, जब सात दिन तक उसका चक्कर लगा चुके तो वह गिर पड़ी। ३० विश्वास ही से राहाब वेश्या आज्ञा न माननेवालों के साथ नाश नहीं हुई; इसलिए कि उसने भैदियों को कुशल से रखा था। ३१ अब और क्या कहँ? क्योंकि समय नहीं रहा, कि गिरोन का, और बाराक और शिमशोन का, और यिफतह का, और दाऊद का और शम्पैल का, और भविष्यद्वत्काओं का वर्णन करँ। ३२ इन्होंने विश्वास ही के द्वारा राज्य जीति; धार्मिकता के काम किए; प्रतिज्ञा की हुई वस्तुपूर्ण प्राप्त की, सिंहों के मुँह बन्द किए, ३३ आग की ज्वाला को ठंडा किया; तलवार की धार से बच निकले, निर्बलता में बलवन्त हुए; लड़ाई में वीर निकले; बिदेशियों की फौजों को मार भगाया। ३४ बिंबियों ने अपने मेरे हुओं को फिर जीवित पाया; किनने तो मार खाते-खाते मर गए; और छुटकारा न चाहा; इसलिए कि उत्तम पुनर्स्थान के भागी हों। ३५ दूसरे लोग तो उपहास में उड़ाए जाने; और कोडे खाने; बरन् बाँधे जाने; और कैद में पड़ने के द्वारा पराखे गए। ३६ पथराव किए गए; और से चरि गए; उनकी परीक्षा की गई; तलवार से मारे गए; वे कंगाली में और क्लेश में और दुःख भोगते हुए भेड़ों और बकरियों की खालें ओढ़े हुए, इधर-उधर मारे-मारे फिरे। ३७ और जंगलों, और पहाड़ों, और गुफाओं में, और पृथ्वी की दीरारों में भटकते फिरे। संसार उनके योग्य न था। ३८ विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई, तो भी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली। ३९ क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिये पहले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धांत को न पहुँचें।

१२ इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमको धैरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझनेवाले पाप को टूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। १ और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, कूस का दुःख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। २ इसलिए उस पर ध्यान करो, जिसने अपने बिरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो। ३ तुम ने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं

की, कि तुम्हारा लह बहा हो। ५ और तुम उस उपदेश को जो तुम को पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल गए हो: “हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो साहस न छोड़। ६ क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसको अनुशासित भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको ताड़ना भी देता है।” ७ तुम दुःख को अनुशासन समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? ८ यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं ही, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यधिचार की सन्तान ठहरे। ९ फिर जबकि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे और हमने उनका आदर किया, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी अधीन न रहे जिससे हम जीवित रहें। १० वे तो अपनी-अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर यह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएँ। ११ और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तो भी जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ धार्मिकता का प्रतिफल मिलता है। १२ इसलिए ढली हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो। १३ और अपने पाँवों के लिये सीधी मार्ग बनाओ, कि टॉगड़ा भटक न जाए, पर भला चंगा हो जाए। १४ सबसे मेल मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा। १५ और ध्यान से देखते हो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएँ। १६ ऐसा न हो, कि कोई जन व्यधिचारी, या एसाक के समान अधर्मी हो, जिसने एक बार के भोजन के बदले अपने पहलीठे होने का पद बेच डाला। १७ तुम जानते तो हो, कि बाद में जब उसने आशीष पानी चाही, तो अयोध्य गिना गया, और औसू बहा बहाकर खोजने पर भी मन फिराव का अवसर उसे न मिला। १८ तुम तो उस पहाड़ के पास जो छुआ जा सकता था और आग से प्रज्जलित था, और काली घटा, और अधेरा, और आँखी के पास। १९ और तुहाँ की ध्वनि, और बोलनेवाले के ऐसे शब्द के पास नहीं आए, जिसके सुनेवालों ने विनीती की, कि अब हम से और बातें न की जाएँ। २० क्योंकि वे उस आज्ञा को न सह सके “यदि कोई पशु भी पहाड़ को छाप, तो पथराव किया जाए।” २१ और वह दर्शन ऐसा डरावना था, कि मूसा ने कहा, ‘‘मैं बहुत डरता और कॉप्ता हूँ।’’ २२ पर तुम सिद्ध्योन के पहाड़ के पास, और जीविते परमेश्वर के नगर स्वर्णीय यस्त्वलेम के पास और लाखों स्वर्णदूतों, २३ और उन पहलीठों की साधारण सभा और कल्लीसिया जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं, २४ और नई बाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के उस लह के पास आए हो, जो हाबिल के लह से उत्तम बातें कहता है। २५ साधारण रहो, और उस कहनेवाले से मुँह न फेरो, क्योंकि वे लोग जब पृथ्वी पर के चेतावनी देनेवाले से मुँह मोड़कर न बच सके, तो हम स्वर्ग पर से चेतावनी देनेवाले से मुँह मोड़कर कैसे बच सकेंगे? २६ उस समय तो उसके शब्द ने पृथ्वी को हिला दिया पर अब उसने यह प्रतिज्ञा की है, “एक बार फिर मैं केवल पृथ्वी को नहीं, बरन् आकाश को भी हिला दँगा।” २७ और यह बाक्य ‘‘एक बार फिर’’ इस बात को प्राप्त करता है, कि जो वस्तुएँ हिलाई जाती हैं, वे सजी ही वस्तुएँ होने के कारण टल जाएँगी; ताकि जो वस्तुएँ हिलाई नहीं जाती, वे अटल बनी रहें। २८ इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं, उस अनुग्रह को हाथ से न जाने दें, जिसके द्वारा हम भक्ति, और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना

कर सकते हैं जिससे वह प्रसन्न होता है। २९ क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करनेवाली आग है।

१३ भाईचारे का प्रेम बना रहे। १ अतिथि-सत्कार करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कितनों ने अनजाने में स्वर्णदूतों का आदर-सत्कार किया है।

२ कैदियों की ऐसी सुधि लो, कि मानो उनके साथ तुम भी कैद हो; और जिनके साथ बुरा बर्ताव किया जाता है, उनकी भी यह समझकर सुधि लिया करो, कि हमारी भी देह है। ३ विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और विवाह बिछौना निष्कलांक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यधिचारियों, और परस्तीगामियों का न्याय करेगा। ४ तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर संतोष किया करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है, ‘‘मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागँगा।’’ ५ इसलिए हम बेधक होकर कहते हैं, “प्रभु, मेरा सहायक है, मैं न डरँगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?” ६ जो तुम्हारे अगुए थे, और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उनके चाल-चलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो। ७ यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है। (aiōn g165) ८ नाना प्रकार के और ऊपरी उपदेशों से न भरमाए जाओ, क्योंकि मन का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है, न कि उन खाने की वस्तुओं से जिनसे काम रखनेवालों को कुछ लाभ न हुआ। ९ हमारी एक ऐसी बेदी है, जिस पर से खाने का अधिकार उन लोगों को नहीं, जो तम्बू की सेवा करते हैं। १० क्योंकि जिन पशुओं का लाह महायाजक पापबलि के लिये पवित्रस्थान में ले जाता है, उनकी देह छावनी के बाहर जलाई जाती है। ११ इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही लह के द्वारा पवित्र करने के लिये फाटक के बाहर दुःख उठाया। १२ इसलिए, आओ उसकी निन्दा अपने ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलें। १३ क्योंकि यहाँ हमारा कोई स्थिर रहनेवाला नगर नहीं, बरन् हम एक अनेवाले नगर की खोज में हैं। १४ इसलिए हम उसके द्वारा स्तुतिस्पी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिये सर्वदा चढ़ाया करें। १५ पर भलाई करना, और उदारता न भूलो; क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है। १६ अपने अगुओं की मानीं; और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं। १७ हमारे लिये प्रार्थना करते रहो, क्योंकि हमें भरोसा है, कि हमारा विवेक शुद्ध है; और हम सब बातों में अच्छी चाल चलना चाहते हैं। १८ प्रार्थना करने के लिये मैं तुम्हें और भी उत्साहित करता हूँ, ताकि मैं शीघ्र तुम्हारे पास फिर आ सकूँ। १९ अब शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान रखवाला है सनातन बाचा के लह के गुण से मेरे हुओं में से जिलाकर ले आया, (aiōnios g166) २० तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिससे उम सक्षमी इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उसको भाता है, उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में पूरा करो, उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन। (aiōn g165) २१ हे भाइयों मैं तुम्हें बहुत संक्षेप में लिखा है। २२ तुम यह जान लो कि तीपुरियुस हमारा भाई शूष्ट गया है और यदि वह शीघ्र आ गया, तो मैं उसके साथ तुम से भेंट करूँगा। २३ अपने सब अगुओं और सब पवित्र लोगों को नमस्कार करो। इतालियावाले तुम्हें नमस्कार कहते हैं। २४ तुम सब पर अनुग्रह होता रहे। आमीन।

याकूब

१ परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह के दास याकूब की ओर से उन बारहों

गोत्रों को जो तितर-बितर होकर रहते हैं नमस्कार पहँचे। २ हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, ३ यह जानकर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से भीरज उत्पन्न होता है। ४ पर भीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे। ५ पर यदि तुम में से किसी को बढ़िकी की घटी हो, तो परमेश्वर से माँगो, जो बिना उलाहन दिए सब को उत्तरता से देता है; और उसको दी जाएगी। ६ पर विश्वास से माँग, और कुछ सन्देह न करो; क्योंकि सन्देह करनेवाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है। ७ ऐसा मनुष्य यह न समझे, कि मुझे प्रभु से कछ मिलेगा, ८ वह व्यक्ति दुचित्ता है, और अपनी सारी बातों में चंचल है। ९ दीन भाई अपने ऊंचे पद पर धमण्ड करे। १० और धनवान अपनी नीच दशा पर; क्योंकि वह धास के फूल की तरह मिट जाएगा। ११ क्योंकि सूर्य उदय होते ही कड़ी धूप पड़ती है और धास को सुखा देती है, और उसका फूल झङ्ग जाता है, और उसकी शोभा मिटती जाती है; उसी प्रकार धनवान भी अपने कार्यों के मध्य में ही लोप हो जाएँगे। १२ धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खुरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों को दी है। १३ जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है। १४ परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा में खिंचकर, और फँसकर परीक्षा में पड़ता है। १५ फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है। १६ हे मेरे प्रिय भाइयों, धोखा न खाओ। १७ क्योंकि हर एक अच्छा बरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्ञोतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न ही वह परछाई के समान बदलता है। १८ उसने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के बचन के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उसकी सुष्ठि किए हुए प्राणियों के बीच पहले फल के समान हो। १९ हे मेरे प्रिय भाइयों, यह बात तुम जान लो, हर एक मनुष्य सुनने के लिये तपर और बोलने में धीर और क्रोध में धीमा हो। २० क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धार्मिकता का निर्वाह नहीं कर सकता है। २१ इसलिए सारी मलिनता और बैर-भाव की बढ़ती को दूर करके, उस बचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है। २२ परन्तु बचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुनेवाले ही नहीं जो अपने आपको धोखा देते हैं। २३ क्योंकि जो कोई बचन का सुनेवाला हो, और उस पर चलनेवाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुँह दर्पण में देखता है। २४ इसलिए कि वह अपने आपको देखकर चला जाता, और तुरन्त भूल जाता है कि वह कैसा था। २५ पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिए अशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं, पर वैसा ही काम करता है। २६ यदि कोई अपने आपको भक्त समझे, और अपनी जीभ पर लगाम न दे, पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उसकी भक्ति व्यर्थ है। २७ हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लें, और अपने आपको संसार से निष्कलनकर रखें।

२ हे मेरे भाइयों, हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु मसीह का विश्वास तुम में पक्षपात के साथ न हो। ३ क्योंकि यदि एक पुस्त सोने के छल्ले और सुदर बबू पहने हुए तम्हारी सभा में आए और एक कंगाल भी मैले कुचैले कपड़े पहने हुए आए। ४ और तुम उस सुदर बबूवाले पर ध्यान केन्द्रित करके कहो, “तू यहाँ अच्छी जगह बैठ,” और उस कंगाल से कहो, “तू वहाँ खड़ा रह,” या “मेरे पाँवों के पास बैठ।” ५ तो क्या तुम ने आपस में भेद भाव न किया और कुविचार से न्याय करनेवाले न ठहरे? ६ हे मेरे प्रिय भाइयों सनों; क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि वह विश्वास में धनी, और उस राज्य के अधिकारी हों, जिसकी प्रतिज्ञा उसने उसे की है जो उसे प्रेम रखते हैं? ७ पर तुम ने उस कंगाल का अपमान किया। क्या धनी लोग तुम पर अत्याचार नहीं करते और क्या वे ही तुम्हें कच्चरियों में घसीट-घसीट कर नहीं ले जाते? ८ क्या वे उस उत्तम नाम की निन्दा नहीं करते जिसके तुम कहलाए जाते हो? ९ तो भी यदि तुम पवित्रशास्त्र के इस बचन के अनुसार, “तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख,” सचमुच उस राज व्यवस्था को पूरी करते हो, तो अच्छा करते हो। १० पर यदि तुम पक्षपात करते हो, तो पाप करते हो, और व्यवस्था तुम्हें अपराधी ठहराती है। ११ क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा। १२ इसलिए कि जिसने यह कहा, “तू व्यधिचार न करना” उसी ने यह भी कहा, “तू हत्या न करना” इसलिए यदि तूने व्यधिचार तो नहीं किया, पर हत्या की तो भी तू व्यवस्था का उल्लंघन करनेवाला ठहरा। १३ तुम उन लोगों के समान बचन बोलो, और काम भी करो, जिनका न्याय स्वतंत्रता की व्यवस्था के अनुसार होगा। १४ क्योंकि जिसने दया नहीं की, उसका न्याय बिना दया के होगा। दया न्याय पर जयन्त रहती है। १५ हे मेरे भाइयों, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो उससे क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है? १६ यदि कोई भाई या बहन नगे उघाड़े हों, और उन्हें प्रतीदिन भोजन की घटी हो, १७ और तुम में से कोई उनसे कहे, “शान्ति से जाओ, तुम गरम रहो और तुम रहो,” पर जो बस्तैँ देह के लिये आवश्यक है वह उन्हें न दे, तो क्या लाभ? १८ वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है। १९ बरन कोई कह सकता है, “तुझे विश्वास है, और मैं कर्म करता हूँ।” तू अपना विश्वास मुझे कर्म बिना दिखा; और मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाऊँगा। २० तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है; तू अच्छा करता है; दृश्यात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं। २१ पर हे निकम्मे मनुष्य क्या तू यह भी नहीं जानता, कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है? २२ जब हमारे पिता अब्राहम ने अपने पुत्र इस्हाक को बेदी पर चढ़ाया, तो क्या वह कर्मों से धार्मिक न ठहरा था? २३ तूने देख लिया कि विश्वास ने उसके कामों के साथ मिलकर प्रभाव डाला है और कर्मों से विश्वास सिद्ध हुआ। २४ और पवित्रशास्त्र का यह बचन पूरा हआ, “अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिये धार्मिकता गिनी गई,” और वह परमेश्वर का मित्र कहलाया। २५ तुम ने देख लिया कि मनुष्य के बचन से ही नहीं, वरन् कर्मों से भी धर्मी ठहरता है। २६ वैसे ही राहब वेश्या भी जब उसने दूतों को अपने घर में उतारा, और दूसरे मार्ग से विदा किया, तो क्या कर्मों से धार्मिक न ठहरी? २७ जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।

२८ हे मेरे भाइयों, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि तुम जानते हो, कि हम उपदेशकों का और भी सखी से न्याय किया जाएगा। २९ इसलिए कि हम सब बहुत बार चूक जाते हैं जो कोई व्यक्ति बिना में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध

मनुष्य है, और सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है। ३ जब हम अपने वश में करने के लिये घोड़ों के मुँह में लगाम लगाते हैं, तो हम उनकी सारी देह को भी घुमा सकते हैं। ४ देखो, जहाज भी, यद्यपि ऐसे बड़े होते हैं, और प्रचण्ड वायु से चलाए जाते हैं, तो भी एक छोटी सी पतवार के द्वारा माँझी की इच्छा के अनुसार घुमाए जाते हैं। ५ वैसे ही जीभ भी एक छोटा सा अंग है और बड़ी-बड़ी डिगे मारी है; देखो कैसे, थोड़ी सी आग से किन्तने बड़े वन में आग लग जाती है। ६ जीभ भी एक आग है, जीभ हमारे अंगों में अर्थम् का एक लोक है और सारी देह पर कलंक लगाती है, और भवचक में आग लगा देती है और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है। (Geenna g1067) ७ क्योंकि हर प्रकार के वन-पश, पक्षी, और रेंगनेवाले जन्तु और जलचर तो मनुष्यजाति के वश में हो सकते हैं और हो भी गए हैं। ८ पर जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता; वह एक ऐसी बला है जो कभी स्कटी ही नहीं; वह प्राणनाशक विष से भरी हुई है। ९ इसी से हम प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं; और इसी से मनुष्यों को जो परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न हुए हैं श्राप देते हैं। १० एक ही मुँह से स्तुति और श्राप दोनों निकलते हैं। हे मेरे भाइयों, ऐसा नहीं होना चाहिए। ११ क्या सोते के एक ही मुँह से मीठा और खारा जल दोनों निकलते हैं? १२ हे मेरे भाइयों, क्या अंजीर के पेड़ में जैतून, या दाढ़ की लता में अंजीर लग सकते हैं? वैसे ही खोरे सोते से मीठा पानी नहीं निकल सकता। १३ तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कामों को अच्छे चाल-चलन से उस नम्रता सहित प्रगट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है। १४ पर यदि तुम अपने-अपने मन में कड़वी ईर्ष्या और स्वार्थ रखते हो, तो डीग न मरना और न ही सत्य के विद्यु झ़ग्ग बोलना। १५ यह ज्ञान वह नहीं, जो ऊपर से उत्तरा है वरन् सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है। १६ इसलिए कि जहाँ ईर्ष्या और विरोध होता है, वहाँ बहेड़ा और हर प्रकार का दुर्कर्म भी होता है। १७ पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृत्युभाव और दया, और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपटरहित होता है। १८ और मिलाप करानेवालों के लिये धार्मिकता का फल शान्ति के साथ बोया जाता है।

४ तुम में लड़ाइयाँ और झ़गड़े कहाँ से आते हैं? क्या उन सख-विलासों से नहीं जो तुम्हारे अंगों में लड़ते-भिड़ते हैं? १९ तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं; तुम हत्या और डाह करते हो, और कुछ प्राप्त नहीं कर सकते; तुम झ़गड़ते और लड़ते हो; तुम्हें इसलिए नहीं मिलता, कि माँगते नहीं। २० तुम माँगते हो और पाते नहीं, इसलिए कि बुरी इच्छा से माँगते हो, ताकि अपने भोग-विलास में उड़ा दो। २१ हे व्यधिचारिणियों, क्या तुम नहीं जानती, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? इसलिए जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आपको परमेश्वर का बैरी बनाता है। २२ क्या तुम यह समझते हो, कि पवित्रश़ु व्यर्थ कहता है? “जिस पवित्र आत्मा को उसने हमारे भीतर बसाया है, क्या वह ऐसी लालसा करता है, जिसका प्रतिफल डाह हो?”? २३ वह तो और भी अनुग्रह देता है; इस कारण यह लिखा है, “परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर नम्रों पर अनुग्रह करता है।” २४ इसलिए परमेश्वर के अधीन हो जाओ, और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। २५ परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा: हे पापियों, अपने हाथ श़द्द करो; और हे दुचिते लोगों अपने हृदय को पवित्र करो। २६ दुर्खी हो, और शोक करो, और रोओ, तुम्हारी हँसी शोक में और तुम्हारा आनन्द उदासी में बदल जाए। २७ प्रभु के सामने नम्र

बनो, तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा। २८ हे भाइयों, एक दूसरे की निन्दा न करो, जो अपने भाई की निन्दा करता है, या भाई पर दोष लगाता है, वह व्यवस्था की निन्दा करता है, और व्यवस्था पर दोष लगाता है, तो तू व्यवस्था पर चलेवाला नहीं, पर उस पर न्यायाधीश ठहरा। २९ व्यवस्था देनेवाला और न्यायाधीश तो एक ही है, जिसे बचाने और नाश करने की सामर्थ्य है; पर तू कौन है, जो अपने पड़ोसी पर दोष लगाता है? ३० तुम जो यह कहते हो, “आज या कल हम किसी और नगर में जाकर वहाँ एक वर्ष बिताएँगे, और व्यापार कक्षे लाभ उठाएँगे।” ३१ और यह नहीं जानते कि कल क्या होगा। सुन तो तो, तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो मानों धूंध के समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है। ३२ इसके विपरीत तुम्हें यह कहना चाहिए, “यदि प्रभु चाहे तो हम जीवित रहेंगे, और यह या वह काम भी करेंगे।” ३३ पर अब तुम अपनी डीगी मारने पर धमण्ड करते हो; ऐसा सब धमण्ड बुरा होता है। ३४ इसलिए जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिये यह पाप है।

५ हे धनवानों सुन तो तो; तुम अपने आनेवाले क्लेशों पर चिल्ला चिल्लाकर रोओ। ३५ तुम्हारा धन बिगड़ गया और तुम्हारे बच्चों को कीड़े खा गए। ३६ तुम्हारे सोने-चाँदी में काई लग गई है; और वह काई तुम पर गवाही देगी, और आग के समान तुम्हारा माँस खा जाएगी; तुम ने अनिम याम में धन बटोरा है। ३७ देखो, जिन मजदूरों ने तुम्हारे खेत काटे, उनकी मजदूरी जो तुम ने उन्हें नहीं दी; चिल्ला रही है, और लवेवालों की दुहाई, सेनाओं के प्रभु के कानों तक पहुँच रहा है। ३८ तुम पृथ्वी पर भोग-विलास में लगे रहे और बड़ा ही सुख भोगा; तुम ने इस वध के दिन के लिये अपने हृदय का पालन-पोषण करके मोटा ताजा किया। ३९ तुम ने धर्मी को दोषी ठहराकर मार डाला; वह तुम्हारा समाना नहीं करता। ४० इसलिए हे भाइयों, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो, जैसे, किसान पृथ्वी के बहमल्य फल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्ष होने तक धीरज धरता है। ४१ तुम भी धीरज धरो, और अपने हृदय को ढूँढ़ करो, क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है। ४२ हे भाइयों, एक दूसरे पर दोष न लगाओ ताकि तुम दोषी न ठहरो, देखो, न्यायाधीश द्वार पर खड़ा है। ४३ हे भाइयों, जिन भविष्यद्वत्ताओं ने प्रभु के नाम से बातें की, उन्हें दुर्ख उठाने और धीरज धरने का एक आदर्श समझो। ४४ देखो, हम धीरज धरनेवालों को धन्य करते हैं। तुम ने अय्यब के धीरज के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु की ओर से जो उसका प्रतिफल हुआ उसे भी जान लिया है, जिससे प्रभु की अत्यन्त कस्ता और दया प्रगट होती है। ४५ पर हे मेरे भाइयों, सबसे श्रेष्ठ बात यह है, कि शपथ न खाना; न स्वर्ग की न पृथ्वी की, न किसी और वस्तु की, पर तुम्हारी बातचीत हाँ की हाँ, और नहीं की नहीं हो, कि तुम दण्ड के योग्य न ठहरो। ४६ यदि तुम में कोई दुर्खी हो तो वह प्रार्थना करो; यदि अनन्दित हो, तो वह स्तुति के भजन गाए। ४७ यदि तुम में कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मलकर उसके लिये प्रार्थना करें। ४८ और विक्षास की प्रार्थना के दृग रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा; यदि उसने पाप भी किए हों, तो परमेश्वर उसको क्षमा करेगा। ४९ इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिससे चोगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है। ५० एतिव्याह भी तो हमारे समान दुर्ख-सुख भोगी मनुष्य था; और उसने गिडगिडाकर प्रार्थना की; कि बारिंश न बरसे; और साढ़े तीन वर्ष तक भूमि पर बारिंश नहीं हड़ी। ५१ फिर उसने प्रार्थना की, तो आकाश से वर्षा हुई, और भूमि फलवन्त हड़ी। ५२ हे मेरे भाइयों, यदि तुम में कोई सत्य के मार्ग से भटक जाए, और कोई उसको

फेर लाए। २० तो वह यह जान ले, कि जो कोई किसी भटके हुए पापी को
फेर लाएगा, वह एक प्राण को मृत्यु से बचाएगा, और अनेक पापों पर परदा
डालेगा।

1 पतरस

१ पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का प्रेरित है, उन परदेशियों के नाम,

जो पुन्तुप, गलातिया, कप्पडकिया, आसिया, और बितनिया में तितर-बितर होकर रहते हैं। २ और परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार, पवित्र आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने, और यीशु मसीह के लह के छिड़के जाने के लिये चुने गए हैं। तुम्हें अस्त्यन्त अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। ३ हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह को मरे हुओं में से जी उनके द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया, ४ अर्थात् एक अविनाशी और निर्मल, और अजर विवासत के लिये जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रही है, ५ जिनकी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ्य से, विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये, जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है, की जाती है। ६ इस कारण तुम मग्न होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अब कुछ दिन तक नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दुःख में हो, ७ और यह इसलिए है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशवान सोने से भी कही अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा, महिमा, और आदर का कारण ठहरे। ८ उससे तुम बिन देखे प्रेम रखते हो, और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मग्न होते हो, जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है, ९ और अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात् आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो। १० इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यद्वत्ताओं ने बहुत छूँड-ठौँड और जाँच-पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यद्वाणी की थी। ११ उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उनमें था, और पहले ही से मसीह के दुर्खों की और उनके बाद होनेवाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था। १२ उन पर यह प्रगट किया गया कि वे अपनी नहीं वरन् तुम्हारी सेवा के लिये ये बतें कहा करते थे, जिनका समाचार अब तुम्हें उनके द्वारा मिला जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया, तुम्हें सुसमाचार सुनाया, और इन बातों को स्वर्गदूर भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं। १३ इस कारण अपनी-अपनी बुद्धि की कमर बाँधकर, और सचेत रहकर उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो, जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलनेवाला है। १४ और आज्ञाकारी बालकों के समान अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश्य न बनो। १५ पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो। १६ क्योंकि लिखा है, “पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।” १७ और जबकि तुम, ‘‘हे पिता’’ कहकर उससे प्रार्थना करते हो, जो बिन पक्षपात हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है, तो अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ। १८ क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो पूर्वजों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चौंदी-सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ, १९ पर निर्दोष और निष्कलंक मेन्मे अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लह के द्वारा हुआ। २० मसीह को जगत की सृष्टि से पहले चुना गया था, पर अब इस अनित्य युग में तुम्हारे लिये प्रगट हुआ। २१ जो उसके द्वारा उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो, जिसने उसे मरे हुओं में जिलाया, और महिमा दी कि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो। २२ अतः जबकि तुम ने भाईचारे के निष्कपट प्रेम के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन-मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। २३ क्योंकि तुम ने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीविते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा

नया जन्म पाया है। (aiōn g165) २४ क्योंकि “हर एक प्राणी घास के समान है, और उसकी सारी शोभा घास के फूल के समान है: घास सख्त जाती है, और फूल झड़ जाता है। २५ परन्तु प्रभु का वचन युगानुयग स्थिर रहता है।” और यह ही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था। (aiōn g165)

२ इसलिए सब प्रकार का बैर-भाव, छल, कपट, डाह और बदनामी को दूर करके, २६ नये जन्म हुए बच्चों के समान निर्मल आत्मिक दूधी की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ, ३ क्योंकि तुम ने प्रभु की भलाई का स्वाद चख लिया है। ४ उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य जीविता पथर है। ५ तुम भी आप जीविते पथरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान छढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्रहणयोग्य हो। ६ इस कारण पवित्रशास्त्र में भी लिखा है, “देखो, मैं सियोन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पथर धरता हूँ: और जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी रीति से लज्जित नहीं होगा।” ७ अतः तुम्हारे लिये जो विश्वास करते हो, वह तो बहुमूल्य है, पर जो विश्वास नहीं करते उनके लिये, “जिस पथर को राजमिथियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया,” ८ और, “ठेस लाने का पथर और ठोकर खाने की चटान हो गया है,” क्योंकि वे तो वचन को न मानकर ठोकर खाते हैं और इसी के लिये वे ठहराए भी गए थे। ९ पर तम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्दृत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। १० तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है। ११ हे प्रियों मैं तुम से विनीती करता हूँ कि तुम अपने आपको परदेशी और यानी जानकर उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती है, बचे रहो। १२ अन्यजातियों में तुम्हारा चाल-चलन भला हो; इसलिए कि जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर उन्हीं के कारण कूपादृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें। १३ प्रभु के लिये मनुष्यों के ठराए हुए हर एक प्रबन्ध के अधीन रहो, राजा के इसलिए कि वह सब पर प्रधान है, १४ और राज्यपालों के, क्योंकि वे कुकर्मियों को टण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिये उसके भेजे हुए हैं। १५ क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम भले काम करने से निर्वृद्धि लोगों की अज्ञानता की बातों को बन्द कर दो। १६ अपने आपको स्वतंत्र जानो पर अपनी इस स्वतंत्रता को बुराई के लिये आड़ न बनाओ, परन्तु अपने आपको परमेश्वर के दास समझकर छलो। १७ सब का आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो। १८ हे सेवकों, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के अधीन रहो, न केवल भलों और नप्रों के, पर कुटिलों के भी। १९ क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुःख उठाता हुआ कलेश सहता है, तो यह सुहानवा है। २० क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके धूँसे खाए और धीरज धरा, तो उसमें क्या बडाई की बात है? पर यदि भला काम करके दुःख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है। २१ और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुःख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दें गया है कि तुम भी उसके पद-चिन्ह पर चलो। २२ न तो उसने पाप किया, और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली। २३ वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुःख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। २४ वह आप ही हमारे पापों को

अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ। उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए। २५ क्योंकि तुम पहले भटकी हुई भेड़ों के समान थे, पर अब अपने प्रणाणों के रखवाले और चरवाहे के पास फिर लौट आ गए हो।

३ हे पन्नियों, तुम भी अपने पति के अधीन रहो। इसलिए कि यदि इनमें से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों, ३ तो भी तुम्हरे भय सहित पवित्र चाल-चलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चाल-चलन के द्वारा खिंच जाएँ। ४ और तुम्हारा शंगार दिखावटी न हो, अर्थात् बाल गँथने, और सोने के गहन, या भाँति-भाँति के कपड़े पहनना। ५ वरन् तुहारा छिपा हुआ और गुप मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। ६ और पूर्वकाल में पवित्र खिंची भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थी, अपने आपको इसी रीति से संवारती और अपने-अपने पति के अधीन रहती थी। ७ जैसे सारा अद्वाहम की आज्ञा मानती थी और उसे स्वामी कहती थी। अतः तुम भी यदि भलाई करो और किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो तो उसकी बेटियों ठहरेगी। ८ वैसे ही है पन्नियों, तुम भी बुद्धिमानी से पत्रियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पत्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएँ स्फुर न जाएँ। ९ अतः सब के सब एक मन और दिलात् और भाईचारे के प्रेम रखनेवाले, और कस्यामय, और नम्र बनो। १० बुराई के बदले बुराई मत करो और न गलती के बदले गली दो; पर इसके विपरीत आशीष ही दो: क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिये बुलाए गए हो। ११ क्योंकि “जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होठों को छल की बातें करने से रोके रहे। १२ वह बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करे; वह मेल मिलाप को ढूँढ़े, और उसके बन्ध में रहे। १३ क्योंकि प्रभु की आँखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके काम उनकी विनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करनेवालों के विमुख रहता है।” १४ यदि तुम धार्मिकता के कारण दुःख भी उठाओ, तो धन्य हो; पर उनके डराने से मत डरो, और न घबराओ, १५ पर मसीह को प्रभु जानकर अपने-अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पछे, तो उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ; १६ और विकें भी शुद्ध रखो, इसलिए कि जिन बातों के विषय में तुम्हारी बदनामी होती है उनके विषय में वे, जो मसीह में तुम्हारे अच्छे चाल-चलन का अपमान करते हैं, लज्जित हों। १७ क्योंकि यदि परमेश्वर की यही इच्छा हो कि तुम भलाई करने के कारण दुःख उठाओ, तो यह बुराई करने के कारण दुःख उठाने से उत्तम है। १८ इसलिए कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुःख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचाएँ; वह शरीर के भाव से तो मारा गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया। १९ उसी में उसने जाकर कैदी आत्माओं को भी प्रचार किया। २० जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी जब परमेश्वर नह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज बन रहा था, जिसमें बैठकर कुछ लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। २१ और उसी पानी का दृश्यन्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तम्हें बचाता है; उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विकें से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है। २२ वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजमान है; और स्वर्गदूतों, अधिकारियों और शक्तियों को उसके अधीन किया गया है।

४ इसलिए जबकि मसीह ने शरीर में होकर दुःख उठाया तो तुम भी उसी मनसा को हथियार के समान धारण करो, क्योंकि जिसने शरीर में दुःख उठाया, वह पाप से छूट गया, २ ताकि भविष्य में अपना शेष शारीरिक जीवन मनुष्यों की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं बरन् परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत करो। ३ क्योंकि अन्यजातियों की इच्छा के अनुसार काम करने, और लुचपन की बुरी अभिलाषाओं, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, पियक्कड़पन, और धृणित मृत्युपूजा में जहाँ तक हमने पहले से समय गँवाया, वही बहुत हुआ। ४ इससे वे अचम्भा करते हैं, कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उनका साथ नहीं देते, और इसलिए वे बुरा-भला कहते हैं। ५ पर वे उम्रको जो जीवितों और मेरे हुओं का न्याय करने को तैयार हैं, लेखा देंगे। ६ क्योंकि मेरे हुओं को भी सुसमाचार इसलिए सुनाया गया, कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उनका न्याय हुआ, पर आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें। ७ सब बातों का अन्त तुरन्त होनेवाला है; इसलिए संयमी होकर प्रार्थना के लिये सचेत रहो। ८ सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो; क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढाँप देता है। ९ बिना कुड़कड़ाए एक दूसरे का अतिथि-सत्कर करो। १० जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक दूसरी की सेवा में लगाए। ११ यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले मानो परमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे, तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है; जिससे सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगत हो। महिमा और सामर्थ्य युगान्तरुण उसी की है। आमीन। (alōn g165) १२ हे प्रियों, जो दुःख स्पी अग्नि तुहरे परखने के लिये तुम में भड़की है, इससे यह समझकर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है। १३ पर जैसे-जैसे मसीह के दुःखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिससे उसकी महिमा के प्रगत होते समय भी तुम आनन्दित और मग्न हो। १४ फिर यदि मसीह के नाम के लिये तुम्हारी निन्दा की जाती है, तो धन्य हो; क्योंकि महिमा की आत्मा, जो परमेश्वर की आत्मा है, तुम पर छाया करती है। १५ तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर, या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुःख न पाए। १६ पर यदि मसीही होने के कारण दुःख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करो। १७ क्योंकि वह समय आ पहुँचा है, कि पहले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए, और जबकि न्याय का आरम्भ हम ही से होगा तो उनका क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते? १८ और “यदि धर्मी व्यक्ति ही कठिनता से उद्धार पाएगा, तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकाना?” १९ इसलिए जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुःख उठते हैं, वे भलाई करते हुए, अपने-अपने प्राण को विचासयोग सजनहार के हाथ में सौंप दें।

५ तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन और मसीह के दुःखों का गवाह और प्रगत होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूँ। २ कि परमेश्वर के उस झूण्ड की, जो तुम्हरे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिये नहीं, पर मन लगाकर। ३ जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जाताओ, वरन् झूण्ड के लिये आदर्श बनो। ४ और जब प्रधान रखवाला प्रगत होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुज़नि का नहीं। ५ हे नवयुवकों, तुम भी बुद्ध पुस्तों के अधीन रहो, बरन् तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बँधे रहो, क्योंकि “परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।” ६ इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें

उचित समय पर बढ़ाए। ७ अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है। ८ सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गजनीबले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किसको फाड़ खाए। ९ विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो, कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं, ऐसे ही दुःख भ्रात रहे हैं। १० अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हरे थोड़ी देर तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें रिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा। (aiōnios g166) ११ उसी का साप्राज्य युगान्युग रहे। आमीन। (aiōn g165) १२ मैंने सिलवानुस के हाथ, जिसे मैं विश्वासयोग्य भाई समझता हूँ, संक्षेप में लिखकर तुम्हें समझाया है, और यह गवाही दी है कि परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह यही है, इसी में स्थिर रहो। १३ जो बाबेल में तुम्हारे समान चुने हुए लोग हैं, वह और मेरा पुत्र मरकुस तुम्हें नमस्कार करते हैं। १४ प्रेम से चुम्बन लेकर एक दूसरे को नमस्कार करो। तुम सब को जो मसीह में हो शान्ति मिलती रहे।

2 पतरस

१ शमैन पतरस की और से जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है, उन लोगों के नाम जिन्होंने हमारे परमेश्वर और उद्गारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता से हमारे जैसा बहुमूल्य विवास प्राप्त किया है। २ परमेश्वर के और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति तुम में बहातात से बढ़ती जाए। ३ क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सटूप के अनुसार बुलाया है। ४ जिनके द्वारा उसने हमें बहमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी हैं ताकि इनके द्वारा तुम उस सडाहट से छूटकर जो संसार में खुली अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाओ। ५ और इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्र करके, अपने विश्वास पर सटूप, और सटूप पर समझ, ६ और समझ पर संयम, और संयम पर शीरज, और शीरज पर भक्ति, ७ और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति, और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ। ८ क्योंकि यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें, और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकामे और निष्कल न होने देंगी। ९ क्योंकि जिसमें ये बातें नहीं, वह अंधा है, और धूम-धूला देखता है, और अपने पूर्वकालीन पापों से धूलकर शुद्ध होने को भूल बैठा है। १० इस कारण है भाईयों, अपने बुलाए जाने, और चून लिये जाने को सिद्ध करने का भली भौति यत्र करते जाओ, क्योंकि यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे; ११ वरन् इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्गारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे। (aiōnios g166) १२ इसलिए यथापि तुम ये बातें जानते हो, और जो सत्य वचन तुम्हें मिला है, उसमें बने रहते हो, तो भी मैं तुम्हें इन बातों की सृष्टि दिलाने को सर्वदा तैयार रहँगा। १३ और मैं यह अपने लिये उचित समझता हूँ, कि जब तक मैं इस डेर में हूँ, तब तक तुम्हें सुधि दिलाकर उभारता रहूँ। १४ क्योंकि यह जानता हूँ, कि मसीह के वचन के अनुसार मेरे डेर के गिराए जाने का समय यीशु आवेला है, जैसा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने मुझ पर प्रकट किया है। १५ इसलिए मैं ऐसा यत्र कहसँगा, कि मेरे संसार से जाने के बाद तुम सब बातों को सर्वदा स्मरण कर सको। १६ क्योंकि जब हमने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ्य का, और आगमन का समाचार दिया था तो वह चतुराई से गढ़ी हुई कहनियों का अनुकरण नहीं किया था वरन् हमने आप ही उसके प्रताप को देखा था। १७ कि उसने परमेश्वर पिता से आदर, और महिमा पाई जब उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई “यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ।” १८ और जब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे, तो स्वर्ग से यही वाणी आते सुनी। १९ और हमारे पास जो भविष्यद्वत्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दूढ़ ठहरा है और तुम यह अच्छा करते हो, कि जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो, कि वह एक दीया है, जो अंधियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे। २० पर पहले यह जान लो कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी की अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। २१ क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

२ जिस प्रकार उन लोगों में झाँठे भविष्यद्वत्ता थे उसी प्रकार तुम में भी झाँठे उद्देशक होंगे, जो नाश करनेवाले पाण्डुलिपि का उद्गाटन छिप कर करेंगे और उस प्रभु का जिसने उन्हें मोल लिया है इन्कार करेंगे और अपने आपको

शीघ्र विनाश में डाल देंगे। ३ और बहुत सारे उनके समान लुचपन करेंगे, जिनके कारण सत्य के मार्ग की निन्दा की जाएगी। ४ और वे लोध के लिये बातें गढ़कर तुहें अपने लाभ का कारण बनाएँगे, और जो दण्ड की आज्ञा उन पर पहले से हो चुकी है, उसके अपने में कुछ भी देर नहीं, और उनका विनाश उँगता नहीं। ५ क्योंकि जब परमेश्वर ने उन दर्तों को जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, परन्तु मैं भेजकर अंधेरे कुण्डों में डाल दिया, ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें। (Tartarao g5020) ६ और प्राचीन युग के संसार को भी न छोड़ा, वरन् भक्तिहीन संसार पर महा जल-प्रलय भेजकर धार्मिकता के प्रचारक नहू समेत अठ व्यक्तियों को बचा दिया, ७ और सदोम और गोपा के नगरों को विनाश का ऐसा दण्ड दिया, कि उहें भस्म करके राख मैं मिला दिया ताकि वे आनेवाले भक्तिहीन लोगों की शिक्षा के लिये एक दृष्टान्त बनें ८ और धर्मी लहू को जो अधर्मियों के अशुद्ध चाल-चलन से बहुत दुखी था छुटकारा दिया। ९ क्योंकि वह धर्मी उनके बीच में रहते हुए, और उनके अर्धम के कामों को देख देखकर, और सुन सुनकर, हर दिन अपने सच्चे मन को पीड़ित करता था। १० तो प्रभु के भक्तों को परीक्षा में से निकाल लेना और अधर्मियों को न्याय के दिन तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है। ११ विशेष करके उन्हें जो अशुद्ध अभिलाषाओं के पीछे शरीर के अनुसार चलते, और प्रभुता को तच्छ जाते हैं वे ढीठ, और हठी हैं, और ऊँचे पदवालों को बुरा-भला कहने से नहीं डरते। १२ तो भी स्वर्गदूत जो शक्ति और सामर्थ्य में उसे बड़े हैं, प्रभु के सामने उहें बुरा-भला कहकर दोष नहीं लगाते। १३ पर ये लोग निर्वृद्धि पशुओं ही के तल्ल्य हैं, जो पकड़े जाने और नाश होने के लिये उत्पन्न हुए हैं, और जिन बातों को जानते ही नहीं, उनके विषय में औरों को बुरा-भला कहते हैं, वे अपनी सडाहट में आप ही सड़ जाएँगे। १४ औरों का बुरा करने के बदले उन्हीं का बुरा होगा; उन्हें दिन दोपहर सुख-विलास करना भला लगता है; यह कलंक और दोष है जब वे तुम्हरे साथ खाते पीते हैं, तो अपनी ओर से प्रेम भोज करके भोग-विलास करते हैं। १५ उनकी आँखों में व्यभिचार बसा हुआ है, और वे पाप किए बिना स्क नहीं सकते; वे चंचल मनवालों को फूसला लेते हैं; उनके मन को लोभ करने का अभ्यास हो गया है, वे सन्ताप की सन्तान हैं। १६ वे सीधे मार्ग को छोड़कर भटक गए हैं, और बअोर के पुत्र बिलाम के मार्ग पर हो लिए हैं, जिसने अर्धम की मजदूरी को प्रिय जाना, १७ पर उसके अपराध के विषय में उलाहना दिया गया, यहाँ तक कि अबोल गदीही ने मनुष्य की बोली से उस भविष्यद्वत्ता को उसके बावलेपन से रोका। १८ ये लोग सूखे कुँए, और आँधी के उडाए हुए बादल हैं, उनके लिये अनन्त अंधकार ठहराया गया है। (questioned) १९ वे व्यर्थ घमण्ड की बातें कर करे लुचपन के कामों के द्वारा, उन लोगों को शारीरिक अभिलाषाओं में फँसा लेते हैं, जो भटके हुओं में से अभी निकल ही रहे हैं। २० वे उन्हें स्वतंत्र होने की प्रतिज्ञा तो देते हैं, पर आप ही सडाहट के दास हैं, क्योंकि जो व्यक्ति जिससे हार गया है, वह उसका दास बन जाता है। २१ और जब वे प्रभु और उद्गारकर्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धासे बच निकले, और फिर उनमें फँसकर हार गए, तो उनकी पिछली दशा हफ्ती से भी बुरी हो गई है। २२ क्योंकि धार्मिकता के मार्ग का न जाना ही उनके लिये इससे भला होता, कि उसे जानकर, उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते, जो उहें सौंपी गई थी। २३ उन पर यह कहात ठीक बैठती है, कि कुत्ता अपनी छाँट की ओर और नहलाई हुई सूखरनी कीचड़ में लोटने के लिये फिर चली जाती है।

३ हे प्रियों, अब मैं तुम्हें यह दूसरी पत्री लिखता हूँ, और दोनों में सुधि दिलाकर तुम्हारे शुद्ध मन को उभारता हूँ, : कि तुम उन बातों को, जो पवित्र

भविष्यद्वात्ताओं ने पहले से कही हैं और प्रभु, और उद्धारकर्ता की उस आज्ञा को समर्पण करो, जो तुम्हारे प्रेरितों के द्वारा दी गई थी। ३ और यह पहले जान लो, कि अन्तिम दिनों में हँसी-उपहास करनेवाले आँएंगे, जो अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे। ४ और कहेंगे, “उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ गई? क्योंकि जब से पूर्वज सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है, जैसा सुषिं के आस्थ से था।” ५ वे तो जान बूझकर यह भूल गए, कि परमेश्वर के वचन के द्वारा से आकाश प्राचीनिकाल से विघ्मान है और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है ६ इन्हीं के द्वारा उस युग का जगत जल में डूबकर नाश हो गया। ७ पर वर्तमानकाल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिए रखे हैं, कि जलाए जाएँ; और वह भक्तिरीन मनुष्यों के न्याय और नाश होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे। ८ हे प्रियों, यह एक बात तुम से छिपी न रहे, कि प्रभु के यहाँ एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर हैं। ९ प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। १० परन्तु प्रभु का दिन चर के समान आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़े शोर के साथ जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तम होकर पिघल जाएँगे, और पृथ्वी और उसके कामों का न्याय होगा। ११ तो जबकि ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए १२ और परमेश्वर के उस दिन की प्रतीक्षा किस रीति से करनी चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्र करना चाहिए; जिसके कारण आकाश आग से पिघल जाएँगे, और आकाश के गण बहुत ही तम होकर गल जाएँगे। १३ पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नये आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी। १४ इसलिए हे प्रियों, जबकि तुम इन बातों की आस देखते हो तो यत्र करो कि तुम शान्ति से उसके सामने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो। १५ और हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो, जैसा हमारे प्रिय भाई पैतॄस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है। १६ वैसे ही उसने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है जिनमें कितनी बातें ऐसी हैं, जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उनके अर्थों को भी पवित्रशास्त्र की अन्य बातों के समान खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं। १७ इसलिए हे प्रियों तुम लोग पहले ही से इन बातों को जानकर चौकस रहो, ताकि अधर्मियों के भ्रम में फँसकर अपनी स्थिरता को हाथ से कहीं खो न दो। १८ पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अब भी हो, और सुगन्धयुग होती रहे। आमीन। (aiōn g165)

1 यूहन्ना

१ उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था, जिसे हमने सुना, और जिसे अपनी आँखों से देखा, वरन् जिसे हमने ध्यान से देखा और हाथों से छुआ। २ (यह जीवन प्रगट हुआ, और हमने उसे देखा, और उसकी गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं जो पिता के साथ था और हम पर प्रगट हुआ)। (aiōnios g166) ३ जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिए कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है। ४ और ये बातें हम इसलिए लिखते हैं, कि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। ५ जो समाचार हमने उससे सुना, और तुम्हें सुनते हैं, वह यह है: कि परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अंधकार नहीं। ६ यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अंधकार में चलें, तो हम इठुं बोलते हैं और सत्य पर नहीं चलते। ७ पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं और उसके पुत्र यीशु मसीह का लह हमें सब पापों से शुद्ध करता है। ८ यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं और हम में सत्य नहीं। ९ यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अर्थमें से शुद्ध करने में विक्षासयोग्य और धर्मी है। १० यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है।

२ मेरे प्रिय बालकों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूँ, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह। ११ और वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त है: और केवल हमारे ही नहीं, वरन् सारे जगत के पापों का भी। १२ यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, तो इससे हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं। १३ जो कोई यह कहता है, “मैं उसे जान गया हूँ,” और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है; और उसमें सत्य नहीं। १४ पर जो कोई उसके वचन पर चले, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है। हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उसमें हैं। १५ जो कोई यह कहता है, कि मैं उसमें बना रहता हूँ, उसे चाहिए कि वह स्वयं भी वैसे ही चले जैसे यीशु मसीह चलता था। १६ हे प्रियों, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिखता, पर वही पुरानी आज्ञा जो आरम्भ से तुम्हें मिली है; यह पुरानी आज्ञा वह वचन है, जिसे तुम ने सुना है। १७ पिर भी मैं तुम्हें नई आज्ञा लिखता हूँ; और यह तो उसमें और तुम में सच्ची ठहरती है; क्योंकि अंधकार मिटाता जा रहा है और सत्य की ज्योति अपनी चमकने लगी है। १८ जो कोई यह कहता है, कि मैं ज्योति में हूँ; और अपने भाई से बैर रखता है, वह अब तक अंधकार ही में है। १९ जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है, वह ज्योति में रहता है, और ठोकर नहीं खा सकता। २० पर जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह अंधकार में है, और अंधकार में चलता है; और नहीं जानता, कि कहाँ जाता है, क्योंकि अंधकार ने उसकी आँखें अंधी कर दी हैं। २१ हे बालकों, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ, कि उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए। २२ हे पिताओं, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ, कि जो आदि से है, तुम उसे जानते हो। हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ, कि तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई है; हे बालकों, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, कि तुम पिता को जान गए हो। २३ हे पिताओं, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, कि जो आदि से है तुम उसे जान गए हो। हे जवानों, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, कि जो आदि से है तुम उसे जान गए हो। हे जवानों, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, कि जो आदि से है तुम उसे जान गए हो। २४ तुम न तो संसार से

और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखो यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। २५ क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। २६ संसार और उसकी अभिलाषाएँ दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा। (aiōn g165) २७ हे लड़कों, यह अन्तिम समय है, और जैसा तुम ने सुना है, कि मरीह का विरोधी अनेकाला है, उसके असुसार अब भी बहुत से मरीह के विरोधी उठे हैं; इससे हम जानते हैं, कि यह अन्तिम समय है। २८ वे निकलते तो हम में से ही, परन्तु हम में से न थे; क्योंकि यदि वे हम में से होते, तो हमारे साथ रहते, पर निकल इसलिए गए ताकि यह प्रगट हो कि वे सब हम में से नहीं हैं। २९ और तुम्हारा तो उस पवित्र से अभिषेक हुआ है, और तुम सब सत्य जानते हो। ३० मैंने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा, कि तुम सत्य को नहीं जानते, पर इसलिए, कि तुम उसे जानते हो, और इसलिए कि कोई झूठ, सत्य की ओर से नहीं है। ३१ झूठा कौन है? वह, जो यीशु के मसीह होने का इन्कार करता है, और मसीह का विरोधी वही है, जो पिता का और पुत्र का इन्कार करता है। ३२ जो कोई पुत्र का इन्कार करता है उसके पास पिता भी नहीं: जो पुत्र को मान लेता है, उसके पास पिता भी है। ३३ जो कुछ तुम ने आरम्भ से सुना है वही तुम में बना रहे; जो तुम ने आरम्भ से सुना है, यदि वह तुम में बना रहे, तो तुम भी पुत्र में, और पिता में बने रहोगे। ३४ और जिसकी उठने हम से प्रतिज्ञा की वह अनन्त जीवन है। (aiōnios g166) ३५ मैंने ये बातें तुम्हें उनके विषय में लिखी हैं, जो तुम्हें भरमते हैं। ३६ और तुम्हारा वह अभिषेक, जो उसकी ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं, कि कोई तुम्हें सिखाएँ, बरन जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है, और झूठा नहीं और जैसा उठने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो। ३७ अतः हे बालकों, उसमें बने रहो; कि जब वह प्रगट हो, तो हमें साहस हो, और हम उसके अनेपर उसके सामने लज्जित न हों। ३८ यदि तुम जानते हो, कि वह धर्मी है, तो यह भी जानते हो, कि जो कोई धार्मिकता का काम करता है, वह उससे जन्मा है।

३९ देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान न कहलाएँ, और हम हैं भी; इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना। ४० हे प्रियों, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब यीशु मसीह प्रगट होगा तो हम भी उसके सामान होंगे, क्योंकि हम उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। ४१ और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आपको वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है। ४२ जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; और पाप तो व्यवस्था का विरोध है। ४३ और तुम जानते हो, कि यीशु मसीह इसलिए प्रगट हुआ, कि पापों को हर ले जाए; और उसमें कोई पाप नहीं। ४४ जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता: जो कोई पाप करता है, उसमें न तो उसे देखा है, और न उसको जाना है। ४५ प्रिय बालकों, किसी के भरमाने में न आना; जो धार्मिकता का काम करता है, वही उसके समान धर्मी है। ४६ जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे। ४७ जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है: और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से जन्मा है। ४८ इसी से

परमेश्वर की सन्तान, और शैतान की सन्तान जाने जाते हैं; जो कोई धार्मिकता नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं, और न वह जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता। ११ क्योंकि जो समाचार तुम ने आरम्भ से सुना, वह यह है, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें। १२ और कैन के समान न बनें, जो उस दृश्य से था, और जिसने अपने भाई की हत्या की। और उसकी हत्या किस कारण की? इसलिए कि उसके काम बुरे थे, और उसके भाई के काम धार्मिक थे। १३ हे भाइयों, यदि संसार तम से बैर रखता है तो अचम्भा न करना। १४ हम जानते हैं, कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुँचे हैं; क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं। जो प्रेम नहीं रखता, वह मृत्यु की दशा में रहता है। १५ जो कोई अपने भाई को जरूरत में देखकर उस पर तरस न खाना चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है? १६ हे मेरे प्रिय बालकों, हम बचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें। १७ इसी से हम जानेंगे, कि हम सत्य के हैं; और जिस बात में हमारा मन हमें दोष देगा, उस विषय में हम उसके सामने अपने मन को आवक्षत कर सकेंगे। १८ क्योंकि परमेश्वर हमारे मन से बड़ा है, और सब कुछ जानता है। १९ हे प्रियों, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के सामने साहस होता है। २० और जो कुछ हम माँगते हैं, वह हमें उससे मिलता है; क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं; और जो उसे भाता है वही करते हैं। २१ और उसकी आज्ञा यह है कि हम उसके पुनर्यीश मसीह के नाम पर विश्वास करें और जैसा उसने हमें आज्ञा दी है उसी के अनुसार आपस में प्रेम रखें। २२ और जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानता है, वह उसमें, और परमेश्वर उनमें बना रहता है: और इसी से, अर्थात् उस पवित्र आत्मा से जो उसने हमें दिया है, हम जानते हैं, कि वह हमें बना रहता है।

४ हे प्रियों, हर एक आत्मा पर विश्वास न करो: वरन् आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झटे भविष्यद्वन्द्वा जगत में निकल खड़े हुए हैं। २ परमेश्वर का आत्मा तुम इसी रीति से पहचान सकते हो, कि जो कोई आत्मा मान लेती है, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है। ३ और जो कोई आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है; यही मसीह के विरोधी की आत्मा है; जिसकी चर्चा तुम सुन कुके हो, कि वह अपेक्षाला है और अब भी जगत में है। ४ हे प्रिय बालकों, तुम परमेश्वर के हो और उन आत्माओं पर जय पाई है, क्योंकि जो तुम में है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है। ५ वे आत्माएँ संसार की हैं, इस कारण वे संसार की बातें बोलती हैं, और संसार उनकी सुनता है। ६ हम परमेश्वर के हैं। जो परमेश्वर को जानता है, वह हमारी सुनता है; जो परमेश्वर को नहीं जानता वह हमारी नहीं सुनता; इसी प्रकार हम सत्य की आत्मा और भ्रम की आत्मा को पहचान लेते हैं। ७ हे प्रियों, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है। ८ जो प्रेम नहीं रखता वह परमेश्वर को नहीं जानता है, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। ९ जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इससे प्रगत हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलालौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ। १० प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया पर इसमें है, कि उसने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिये अपने पुत्र को भेजा। ११ हे प्रियों, जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम

किया, तो हमको भी आपस में प्रेम रखना चाहिए। १२ परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध होता है। १३ इसी से हम जानते हैं, कि हम उसमें बने रहते हैं, और वह हम में; क्योंकि उसने अपनी आत्मा में से हमें दिया है। १४ और हमने देख भी लिया और गवाही देते हैं कि पिता ने पुत्र को जगत का उद्घारकी होने के लिए भेजा है। १५ जो कोई यह मान लेता है, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है परमेश्वर उसमें बना रहता है, और वह परमेश्वर में। १६ और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उसको हम जान गए, और हमें उस पर विश्वास है। परमेश्वर प्रेम है; जो प्रेम में बना रहता है वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उसमें बना रहता है। १७ इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ, कि हमें व्याय के दिन साहस हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी ही हैं। १८ प्रेम में भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय का सांबंध दण्ड से होता है, और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ। १९ हम इसलिए प्रेम करते हैं, क्योंकि पहले उसने हम से प्रेम किया। २० यदि कोई कहे, “मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ,” और अपने भाई से बैर रखें; तो वह झठा है; क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं रख सकता। २१ और उससे हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई अपने परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे।

५ जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न करनेवाले से प्रेम रखता है, वह उससे भी प्रेम रखता है, जो उससे उत्पन्न हुआ है। २ जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम यह जान लेते हैं, कि हम परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं। ३ क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएँ बोलादायक नहीं। ४ क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है। ५ संसार पर जय पानेवाला कौन है? केवल वह जिसका विश्वास है, कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र है। ६ यह वर्ही है, जो पानी और लह के द्वारा आया था; अर्थात् यीशु मसीह: वह न केवल पानी के द्वारा, वरन् पानी और लह दोनों के द्वारा आया था। ७ और यह आत्मा है जो गवाही देता है, क्योंकि आत्मा सत्य है। ८ और गवाही देनेवाले तीन हैं; आत्मा, पानी, और लह; और तीनों एक ही बात पर सहमत है। ९ जब हम मनुष्यों की गवाही मान लेते हैं, तो परमेश्वर की गवाही तो उससे बढ़कर है; और परमेश्वर की गवाही यह है, कि उसने अपने पुत्र के विषय में गवाही दी है। १० जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, वह अपने ही में गवाही रखता है; जिसने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया, उसने उसे झाठा ठहराया; क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया, जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है। ११ और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और यह जीवन उसके पुत्र में है। (aiōnios g166) १२ जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है, और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है। १३ मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इश्लिए लिया है कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है। (aiōnios g166) १४ और हमें उसके सामने जो साहस होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ माँगते हैं, तो हमारी सुनता है। १५ और जब हम जानते हैं, कि जो कुछ हमने उससे माँगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हमने उससे माँगा, वह पाया है। १६ यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे, जिसका फल मृत्यु

न हो, तो विनती करे, और परमेश्वर उसे उनके लिये, जिन्होंने ऐसा पाप किया है जिसका फल मृत्यु न हो, जीवन देगा। पाप ऐसा भी होता है जिसका फल मृत्यु है इसके विषय में मैं विनती करने के लिये नहीं कहता। १७ सब प्रकार का अर्थम् तो पाप है, परन्तु ऐसा पाप भी है, जिसका फल मृत्यु नहीं। १८ हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है: और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता। १९ हम जानते हैं, कि हम परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है। २० और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उसमें जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं। सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है। (alōnios g166) २१ हे बालकों, अपने आपको मूरतों से बचाए रखो।

२ यूहन्ना

१ मुझ प्राचीन की ओर से उम चुनी हुई महिला और उसके बच्चों के नाम
जिनसे मैं सच्चा प्रेम रखता हूँ, और केवल मैं ही नहीं, वरन् वह सब भी
प्रेम रखते हैं, जो सच्चाई को जानते हैं। २ वह सत्य जो हम में स्थिर रहता है,
और सर्वदा हमारे साथ अटल रहेगा; (aiōn g165) ३ परमेश्वर पिता, और पिता
के पुत्र यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह, दया, और शान्ति हमारे साथ सत्य
और प्रेम सहित रहेंगे। ४ मैं बहुत आनंदित हुआ, कि मैंने तेरे कुछ बच्चों को
उस आज्ञा के अनुसार, जो हमें पिता की ओर से मिली थी, सत्य पर चलते हुए
पाया। ५ अब हे महिला, मैं तुझे कोई नई आज्ञा नहीं, पर वही जो आरम्भ से
हमारे पास है, लिखता हूँ, और तुझ से विनती करता हूँ, कि हम एक दूसरे से
प्रेम रखें। ६ और प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलें: यह
वही आज्ञा है, जो तुम ने आरम्भ से सुनी है और तुम्हें इस पर चलना भी
चाहिए। ७ क्योंकि बहुत से ऐसे भरमानेवाले जगत में निकल आए हैं, जो यह
नहीं मानते, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया; भरमानेवाला और मसीह
का विरोधी यही है। ८ अपने विषय में चौकस रहे; कि जो परिश्रम हम सब ने
किया है, उसको तुम न खोना, वरन् उसका पूरा प्रतिफल पाओ। ९ जो कोई
आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास
परमेश्वर नहीं। जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी
है, और पुत्र भी। १० यदि कोई तुम्हरे पास आए, और यही शिक्षा न दे, उसे न
तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो। ११ क्योंकि जो कोई ऐसे जन को
नमस्कार करता है, वह उसके द्वारा कामों में सहभागी होता है। १२ मुझे बहुत सी
बातें तुम्हें लिखनी हैं, पर कागज और स्याही से लिखना नहीं चाहता; पर
आशा है, कि मैं तुम्हरे पास आऊँ, और सम्मुख होकर बातचीत करूँ: जिससे
हमारा अनन्द पूरा हो। १३ तेरी चुनी हुई बहन के बच्चे तुड़े नमस्कार करते
हैं।

3 यूहन्ना

१ मुझ प्राचीन की ओर से उस प्रिय गयुस के नाम, जिससे मैं सच्चा प्रेम
रखता हूँ। २ हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है; कि जैसे त् आत्मिक उन्नति कर
रहा है, वैसे ही त् सब बातों में उन्नति करे, और भला चंगा रहे। ३ क्योंकि
जब भाइयों ने आकर, तेरे उस सत्य की गवाही दी, जिस पर त् सचमुच चलता
है, तो मैं बहुत ही आनन्दित हुआ। ४ मुझे इससे बढ़कर और कोई आनन्द
नहीं, कि मैं सुनूँ कि मेरे बच्चे सत्य पर चलते हैं। ५ हे प्रिय, जब भी त्
भाइयों के लिए कार्य करे और अजनबियों के लिए भी तो विक्षासयोग्यता
के साथ कर। ६ उन्होंने कलीसिया के सामने तेरे प्रेम की गवाही दी थी।
यदि त् उन्हें उस प्रकार विदा करेगा जिस प्रकार परमेश्वर के लोगों के लिये
उचित है तो अच्छा करेगा। ७ क्योंकि वे उस नाम के लिये निकले हैं, और
अन्यजातियों से कुछ नहीं लेते। ८ इसलिए ऐसों का स्वागत करना चाहिए,
जिससे हम भी सत्य के पक्ष में उनके सहकर्मी हों। ९ मैंने कलीसिया को कुछ
लिखा था; पर दियुत्रिफेस जो उनमें बड़ा बनना चाहता है, हमें ग्रहण नहीं
करता। १० इसलिए यदि मैं आँऊँगा, तो उसके कामों की जो वह करता है सुधि
दिलाऊँगा, कि वह हमारे विषय में बुरी-बुरी बातें बकता है, और इस पर भी
सन्तोष न करके स्वयं ही भाइयों को ग्रहण नहीं करता, और उन्हें जो ग्रहण
करना चाहते हैं, मना करता है और कलीसिया से निकाल देता है। ११ हे प्रिय,
बुराई के नहीं, पर भलाई के अनुयायी हो। जो भलाई करता है, वह परमेश्वर
की ओर से है; पर जो बुराई करता है, उसने परमेश्वर को नहीं देखा। १२
दिमेनियस के विषय में सब ने वरन् सत्य ने भी आप ही गवाही दी: और हम भी
गवाही देते हैं, और त् जानता है, कि हमारी गवाही सच्ची है। १३ मुझे तुझको
बहुत कुछ लिखना तो था; पर स्याही और कलम से लिखना नहीं चाहता। १४
पर मुझे आशा है कि तुझ से शीघ्र भेट करूँगा: तब हम आमने-सामने बातचीत
करेंगे: तुझे शान्ति मिलती रहे। यहाँ के मित्र तुझे नमस्कार करते हैं वहाँ के
मित्रों के नाम ले लेकर नमस्कार कह देना।

यहदा

१ यहदा की ओर से जो यीशु मसीह का दास और याकूब का भाई है, उन बुलाए हुओं के नाम जो परमेश्वर पिता में प्रिय और यीशु मसीह के लिये सुरक्षित है। २ दया और शानि और प्रेम तुम्हें बहुतायत से प्राप्त होता रहे। ३ हे प्रियों, जब मैं तुम्हें उस उद्धार के विषय में लिखने में अत्यन्त परिश्रम से प्रयत्न कर रहा था, जिसमें हम सब सहभागी हैं; तो मैंने तुम्हें यह समझाना आवश्यक जाना कि उस विश्वास के लिये पूरा यत्र करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था। ४ क्योंकि किनते ऐसे मनुष्य चूपके से हम में आ मिले हैं, जिनसे इस दण्ड का वर्णन पुराने समय में पहले ही से लिखा गया था: ये भक्तिहीन हैं, और हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं, और हमारे एकमात्र स्वामी और प्रभु यीशु मसीह का इन्कार करते हैं। ५ यद्यपि तुम सब बात एक बार जान चुके हो, तो भी मैं तुम्हें इस बात की सुधि दिलाना चाहता हूँ, कि प्रभु ने एक कुल को मिस देश से छुड़ाने के बाद विश्वास न लानेवालों को नाश कर दिया। ६ फिर जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखा बरन अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उनको भी उस भीषण दिन के न्याय के लिये अंधकार में जो सनातन के लिये है बन्धनों में रखा है। (aiðios g126) ७ जिस रीति से सदोम और गमोरा और उनके आस-पास के नगर, जो इनके समान व्यभिचारी हो गए थे और पराए शरीर के पीछे लग गए थे आग के अनन्त दण्ड में पड़कर दृष्टात् ठहरे हैं। (aiōnios g166) ८ उसी रीति से ये स्वप्नदर्शी भी अपने-अपने शरीर को अशुद्ध करते, और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं, और ऊँचे पदवालों को बुरा-भला कहते हैं। ९ परन्तु प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने, जब शैतान से मूसा के शब के विषय में वाद-विवाद किया, तो उसको बुरा-भला कहकर दोष लगाने का साहस न किया, पर यह कहा, “प्रभु तुझे डॉटे।” १० पर ये लोग जिन बातों को नहीं जानते, उनको बुरा-भला कहते हैं; पर जिन बातों को अचेतन पशुओं के समान स्वभाव ही से जानते हैं, उनमें अपने आपको नाश करते हैं। ११ उन पर हाथ! कि वे कैन के समान चाल चले, और मजदूरी के लिये बिलाम के समान भ्रष्ट हो गए हैं और कोरह के समान विरोध करके नाश हुए हैं। १२ यह तम्हों प्रेम-भोजों में तुहरों साथ खाते-पीति, समुद्र में छिपी हुई चट्टान सरीखे हैं, और बेघड़क अपना ही पेट भरनेवाले रखवाले हैं; वे निर्जल बादल हैं, जिन्हें हवा उड़ा ले जाती है, पतझड़ के निष्फल पेड हैं, जो दो बार मर चुके हैं; और जड़ से उखड़ गए हैं, १३ ये समुद्र के प्रचण्ड हिलकरों हैं, जो अपनी लज्जा का फेन उछालते हैं। ये डँवाडोल तारे हैं, जिनके लिये सदाकाल तक घोर अंधकार रखा गया है। (aiōn g165) १४ और हनोक ने भी जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था, इनके विषय में यह भविष्यद्वारा की, “देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आया। १५ कि सब का न्याय करे, और सब भक्तिहीनों को उनके अभक्ति के सब कामों के विषय में जो उहोंने भक्तिहीन होकर किए हैं, और उन सब कठोर बातों के विषय में जो भक्तिहीन पापियों ने उसके विरोध में कही है, दोषी ठहराए।” १६ ये तो असंतुष्ट, कुड़कुड़नेवाले, और अपनी अभिलाषाओं के अनुसार चलनेवाले हैं; और अपने मुँह से घमण्ड की बातें बोलते हैं; और वे लाभ के लिये मुँह देखी बड़ाई किया करते हैं। १७ पर हे प्रियों, तुम उन बातों को स्मरण रखो; जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरित पहले कह चुके हैं। १८ वे तुम से कहा करते थे, “पिछले दिनों में ऐसे उपहास करनेवाले होंगे, जो अपनी अभक्ति की अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे।” १९ ये तो वे हैं, जो फृट डालते हैं, ये शारीरिक लोग हैं, जिनमें आत्मा नहीं। २० पर हे प्रियों तुम अपने अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते हुए, और पवित्र आत्मा में प्रार्थना

करते हुए, २१ अपने आपको परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो; और अनन्त जीवन के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की आशा देखते रहो। (aiōnios g166) २२ और उन पर जो शंका में हैं दया करो। २३ और बहुतों को आग में से झापटकर निकालो, और बहुतों पर भय के साथ दया करो; बरन उस बन्ध से भी घृणा करो जो शरीर के द्वारा कलंकित हो गया है। २४ अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मग्न और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है। २५ उस एकमात्र परमेश्वर के लिए, हमारे उद्धारकर्ता की महिमा, गौरव, पराक्रम और अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयग रहे। आमीन। (aiōn g165)

प्रकाशित वाक्य

१ यीशु मरीह का प्रकाशितवाक्य, जो उसे परमेश्वर ने इसलिए दिया कि

अपने दासों को वे बातें, जिनका शीघ्र होना अवश्य है, दिखाएः और उसने अपने स्वर्गदूत को भेजकर उसके द्वारा अपने दास यहन्ना को बताया, २ जिसने परमेश्वर के चरन और यीशु मरीह की गवाही, अर्थात् जो कुछ उसने देखा था उसकी गवाही दी। ३ धन्य है वह जो इस भविष्यद्वाणी के चरन को पढ़ता है, और वे जो सुनते हैं और इसमें लिखी हुई बातों को मानते हैं, क्योंकि समय निकट है। ४ यहन्ना की ओर से असिया की सात कलीसियाओं के नामः उसकी ओर से जो है, और जो था, और जो आनेवाला है; और उन सात आत्माओं की ओर से, जो उसके सिंहासन के सामने हैं, ५ और यीशु मरीह की ओर से, जो विश्वासयोग साक्षी और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहलौठा, और पृथ्वी के राजाओं का अधिपति है, तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। जो हम से प्रेम रखता है, और जिसने अपने लह के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है। ६ और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिये याजक भी बना दिया, उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयग रहे। आमीन। (aiōn g165) ७ देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है; और हर एक आँख उसे देखेगी, वरन् जिन्होंने उसे बेघा था, वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती लीटेंगे। हाँ। आमीन। ८ प्रभु परमेश्वर, जो है, और जो था, और जो आनेवाला है; जो सर्वशक्तिमान है: यह कहता है, ‘‘मैं ही अल्पा और ओमेगा हूँ।’’ ९ मैं यहन्ना, जो तुम्हारा भाई, और यीशु के क्लेश, और राज्य, और धीरज में तुम्हारा सहभागी हूँ, परमेश्वर के चरन, और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नामक टापू में था। १० मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया, और अपने पीछे तुहीं का सा बड़ा शब्द यह कहते सुना, ११ ‘‘जो कुछ त देखता है, उसे पुस्तक में लिखकर सातों कलीसियाओं के पास भेज दे, अर्थात् इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिल्डिलिफिया और लोटीकिया को।’’ १२ तब मैंने उसे जो मुझसे बोल रहा था; देखने के लिये अपना मुँह फेरा; और पीछे धूमकर मैंने सोने की सात दीवटें देखी; १३ और उन दीवटों के बीच में मुच्य के पुत्र सदृश्य एक पुस्तक को देखा, जो पाँचों तक का वस्त्र पहने, और छाती पर सोने का कमरबन्द बैंधे हुए था। १४ उसके सिर और बाल ब्लेट उन वरन् हिम के समान उज्जवल थे; और उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान थीं। १५ उसके पाँव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भृती में तपाए गए हों; और उसका शब्द बहुत जल के शब्द के समान था। १६ वह अपने दाहिने हाथ में सात तरी लिए हुए था, और उसके मुख से तेज दोधारी तलवार निकलती थी; और उसका मुँह ऐसा प्रज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है। १७ जब मैंने उसे देखा, तो उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा और उसने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखकर यह कहा, ‘‘मत ड़ा़; मैं प्रथम और अन्तिम हूँ, और जीवित भी मैं हूँ, १८ मैं मर गया था, और अब देख मैं युगानुयग जीविता हूँ; और गृह्य और अपोलोक की कुँजियों में ही पास हूँ।’’ (aiōn g165, Hades g86) १९ ‘‘इसलिए जो बातें तूने देखी हैं और जो बातें हो रही हैं; और जो इसके बाद होनेवाली हैं, उन सब को लिख ले।’’ २० अर्थात् उन सात तारों का भेद जिन्हें तूने मेरे दाहिने हाथ में देखा था, और उन सात सोने की दीवटों का भेदः वे सात तरी सातों कलीसियाओं के स्वर्गदूत हैं, और वे सात दीवट सात कलीसियाएँ हैं।

२ ‘‘इफिसुस की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिखः ‘‘जो सातों तरी अपने दाहिने हाथ में लिए हुए हैं, और सोने की सातों दीवटों के बीच में फिरता

है, वह यह कहता है: २३ मैं तेरे काम, और तेरे परिश्रम, और तेरे धीरज को जानता हूँ, और यह भी कि तू कुरे लोगों को तो देख नहीं सकता; और जो अपने अपाको प्रेरित कहते हैं, और हैं नहीं, उन्हें तूने परखकर झाठा पाया। ३ और तू धीरज धरता है, और मेरे नाम के लिये दुःख उठाते-उठाते थका नहीं। ४ पर मुझे तेरे विस्तु यह कहना है कि तूने अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया है। ५ इसलिए स्परण कर, कि तू कहाँ से गिरा है, और मन फिरा और पहले के समान काम कर; और यदि तू मन न फिराएगा, तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उसके स्थान से हटा दूँगा। ६ पर हाँ, तुझ में यह बात तो है, कि तू नीकुलइयों के कामों से घृणा करता है, जिनसे मैं भी धूप करता हूँ। ७ जिसके कान हों, वह सुन ले कि पवित्र आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है: जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूँगा। ८ ‘‘स्मरना की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिखः ‘‘जो प्रथम और अन्तिम है, जो मर गया था और अब जीवित हो गया है, वह यह कहता है: ९ ‘‘मैं तेरे क्लेश और दरिद्रता को जानता हूँ (परन्तु तू धनी है); और जो लोग अपने आपको यहदी कहते हैं और हैं नहीं, पर शैतान का अराधनालय हैं, उनकी निन्दा को भी जानता हूँ। १० जो दुःख तुझको झेलने होंगे, उनसे मत ड़रः क्योंकि, शैतान तुम में से कुछ को जेलखाने में डालने पर है ताकि तुम परखे जाओ; और तुम्हें दस दिन तक क्लेश उठाना होगा। प्राण देने तक विश्वासयोग रहः तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा। ११ जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है: जो जय पाए, उसको दूसरी मृत्यु से हानि न पहुँचेंगी। १२ ‘‘पिरगमुन की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिखः ‘‘जिसके पास तेज दोधारी तलवार है, वह यह कहता है: १३ ‘‘मैं हय तो जानता हूँ, कि तू वहाँ रहता है जहाँ शैतान का सिंहासन है, और मेरे नाम पर स्थिर रहता है; और मुझ पर विकास करने से उन दिनों में भी पीछे नहीं हटा जिनमें मेरा विश्वासयोग साक्षी अन्तिपास, तुहारे बीच उस स्थान पर मारा गया जहाँ शैतान रहता है। १४ पर मुझे तेरे विस्तु कुछ बातें कहनी हैं, क्योंकि तेरे यहाँ कुछ तो ऐसे हैं, जो बिलाम की शिक्षाको मानते हैं, जिसने बालक को इमाएलियों के आगे ठोकर का कारण रखना सिखाया, कि वे मूर्तियों पर चढ़ाई गई वस्तुएँ खाएँ, और व्याभिचार करें। १५ वैसे ही तेरे यहाँ कुछ तो ऐसे हैं, जो नीकुलइयों की शिक्षा को मानते हैं। १६ अतः मन फिरा, नहीं तो मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर, अपने मुख की तलवार से उनके साथ लड़ूँगा। १७ जिसके कान हों, वह सुन ले कि पवित्र आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है: जो जय पाए, उसको मैं गुम मना मैं से दूँगा, और उसे एक ब्लेट पत्थर गई धूंगा; और उस पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा, जिसे उसके पानवाले के सिवाय और कोई न जानेगा। १८ ‘‘थुआतीरा की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिखः ‘‘परमेश्वर का पुत्र जिसकी आँखें आग की ज्वाला के समान, और जिसके पाँव उत्तम पीतल के समान हैं, वह यह कहता है: १९ मैं तेरे कामों, और प्रेम, और विकास, और सेवा, और धीरज को जानता हूँ, और यह भी कि तेरे पिछले काम पहले से बढ़कर हैं। २० पर मुझे तेरे विस्तु यह कहना है, कि तू उस झी ईजेबेल को रहने देता है जो अपने आपको भविष्यद्वक्तिन कहती है, और मेरे दासों को व्याभिचार करने, और मूर्तियों के आगे चढ़ाई गई वस्तुएँ खाना सिखाकर भरमाती है। २१ मैंने उसको मन फिराने के लिये अवसर दिया, पर वह अपने व्याभिचार से मन फिराना नहीं चाहती। २२ देख, मैं उसे रोगैव्यया पर डालता हूँ; और जो उसके साथ व्याभिचार करते हैं यदि वे भी उसके कामों से मन न फिराएँ तो उन्हें बड़े क्लेश में डालूँगा। २३ मैं उसके बच्चों को मार डालूँगा; और तब सब कलीसियाएँ जान लेंगी कि हृदय और मन का परखनेवाला मैं ही हूँ, और मैं तुम में से हर एक को उसके

कामों के अनुसार बदला दूँगा। २४ पर तुम थुआतीरा के बाकी लोगों से, जिनते इस शिक्षा को नहीं मानते, और उन बातों को जिहें शैतान की गहरी बातें कहते हैंनहीं जानते, यह कहता है, कि मैं तुम पर और बोझ न डालूँगा। २५ पर हाँ, जो तुम्हेरे पास है उसको मेरे आने तक थामे रहो। २६ जो जय पाए, और मेरे कामों के अनुसार अन्त तक करता रहे, मैं उसे जाति-जाति के लोगों पर अधिकार दूँगा। २७ और वह लोहे का राजदण्ड लिये हुए उन पर राज्य करेगा, जिस प्रकार कुम्हार के मिट्ठी के बर्तन चकनाचूर हो जाते हैं: मैंने भी ऐसा ही अधिकार अपने पिता से पाया है। २८ और मैं उसे भोर का तारा दूँगा। २९ जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।

३ “सरदीस की कलीसिया के स्वर्गदूत को लिख: “जिसके पास परमेश्वर की

सात आत्माएँ और सात तारे हैं, यह कहता है कि मैं तेरे कामों को जानता हूँ, कि तू जीवित तो कहलाता है, पर है मगा हुआ। ३ जागृत हो, और उन वस्तुओं को जो बाकी रह गई है, और जो मिट्टिने को है, उन्हें ढूढ़ कर; क्योंकि मैंने तेरे किसी काम को अपने परमेश्वर के निकट पूरा नहीं पाया। ४ इसलिए स्मरण कर, कि तूने किसी रीति से शिक्षा प्राप्त की और सुनी थी, और उसमें बना रह, और मन फिरा: और यदि तू जागृत न रहेगा तो मैं चोर के समान आ जाऊँगा और तू कदापि न जान सकेगा, कि मैं किस घड़ी तुझ पर आ पड़ूँगा। ५ पर हाँ, सरदीस में तेरे यहाँ कुछ ऐसे लोग हैं, जिन्होंने अपने-अपने वस्त्र अशद्ध नहीं किए, वे ब्वेत वस्त्र पहने हुए मेरे साथ घूमेंगे, क्योंकि वे इस योग्य हैं। ६ जो जय पाए, उसे इसी प्रकार ख्वेत वस्त्र पहनाया जाएगा, और मैं उसका नाम जीवन की पूस्तक में से किसी रीति से न काढ़ूँगा, पर उसका नाम अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के समाने मान लूँगा। ७ जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। ८ “फिलदिलफिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख: “जो पवित्र और सत्य है, और जो दाऊद की कुँजी रखता है, जिसके खोले हुए को कोई बन्द नहीं कर सकता और बन्द किए हुए को कोई खोल नहीं सकता, वह यह कहता है, ९ मैं तेरे कामों को जानता हूँ। १० देख, मैंने तेरे सामने एक द्वार खोल रखा है, जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता; तेरी सामर्थ्य थोड़ी सी तो है, फिर भी तूने मेरे वचन का पालन किया है और मेरे नाम का इन्कार नहीं किया। ११ देख, मैं शैतान के उन आराधनालय वालोंको तेरे वश में कर दूँगा जो यहदी बन बैठे हैं, पर हैं नहीं, वरन् झट्ठ बोलते हैं—मैं ऐसा कहूँगा, कि वे आकर तेरे चरणों में दण्डवत करेंगे, और यह जान लेंगे, कि मैंने तुझ से प्रेम रखा है। १२ तूने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिए मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूँगा, जो पृथ्वी पर रहनेवालों के परखने के लिये सारे संसार पर आनेवाला है। १३ मैं शीघ्र ही आनेवाला हूँ; जो कुछ तेरे पास है उसे थामे रह, कि कोई तेरा मुकुर छीन न ले। १४ जो जय पाए, उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खम्भा बनाऊँगा, और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा; और मैं अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर अर्थात् नये यस्तलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से उतरनेवाला है और अपना नया नाम उस पर लियूँगा। १५ जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। १६ “लौदीकिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख: “जो आमीन, और विश्वासयोग्य, और सच्चा गवाह है, और परमेश्वर की सृष्टि का मूल कारण है, वह यह कहता है: १७ “मैं तेरे कामों को जानता हूँ कि तू न तो ठंडा है और न गर्म; भला होता कि तू ठंडा या गर्म होता। १८ इसलिए कि तू गूग्गुना है, और न ठंडा है और न गर्म, मैं तुझे अपने मुँह से उगलने पर हूँ। १९ तू जो कहता है, कि मैं धनी हूँ, और धनवान हो गया हूँ, और मुझे किसी वस्तु की घटी नहीं, और यह नहीं जानता, कि तू अभागा और तुच्छ और कंगाल और अंधा, और नंगा

है, २० इसलिए मैं तुझे सम्मति देता हूँ, कि आग में ताया हुआ सोना मुझसे मोल ले, कि धनी हो जाए, और ब्वेत वस्त्र ले ले कि पहनकर तुझे अपने नंगेपन की लज्जा न हो; और अपनी आँखों में लगाने के लिये सुरामा ले कि तू देखने लगे। २१ मैं जिन जिनसे प्रेम रखता हूँ, उन सब को उलाहना और ताड़ना देता हूँ, इसलिए उत्साही हो, और मन फिरा। २२ देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ, यदि कोई मेरा शब्द सुकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ। २३ जो जय पाए, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊँगा, जैसा मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया। २४ जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।”

४ इन बातों के बाद जो मैंने दृष्टि की, तो क्या देखता हूँ कि स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है; और जिसको मैंने पहले तुही के से शब्द से अपने साथ बातें करते सुना था, वही कहता है, “यहाँ ऊपर आ जा, और मैं वे बातें तुझे दिखाऊँगा, जिनका इन बातों के बाद पूरा होना अवश्य है।” ५ तुरन्त मैं आत्मा में आ गया; और क्या देखता हूँ कि एक सिंहासन स्वर्ग में रखा है, और उस सिंहासन पर कोई बैठा है। ६ और जो उस पर बैठा है, वह यशब और माणिक्य जैसा दिखाई पड़ता है, और उस सिंहासन के चारों ओर मरकत के समान एक मेघधनुष दिखाई देता है। ७ उस सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन हैं; और इन सिंहासनों पर चौबीस प्राचीन ख्वेत वस्त्र पहने हुए बैठे हैं, और उनके सिरों पर सोने के मुकुर हैं। ८ उस सिंहासन में से बिजलियाँ और गर्जन निकलते हैं और सिंहासन के सामने आग के सात दीपक जल रहे हैं, वे परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं, ९ और उस सिंहासन के सामने मामो बिल्लौर के समान काँच के जैसा समदृ है, और सिंहासन के बीच में और सिंहासन के चारों ओर चार प्राणी हैं, जिनके आगे-पीछे आँखें ही आँखें हैं। १० पहला प्राणी सिंह के समान है, और दूसरा प्राणी बछड़े के समान है, तीसरे प्राणी का मूँह मुरुज्य के समान है, और चौथा प्राणी उड़ते हुए उकाब के समान है। ११ और चारों प्राणियों के छः छः पंख हैं, और चारों ओर, और भीतर आँखें ही आँखें हैं; और वे रात-दिन बिना विश्वास लिए यह कहते रहते हैं, “पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आनेवाला है।” १२ और जब वे प्राणी उसकी जो सिंहासन पर बैठा है, और जो युगानुया जीविता है, महिमा और आदर और धन्यवाद करेंगे। (aión g165) १३ तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठेजैवाते के सामने गिर पड़ेगे, और उसे जो युगानुया जीविता है प्रणाम करेंगे; और अपने-अपने मुकुर सिंहासन के सामने यह कहते हुए डाल देंगे, (aión g165) १४ “हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ्य के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुऐसी सुनी और तेरी ही इच्छा से, वे अस्तित्व में थीं और सृजी गईं।”

५ और जो सिंहासन पर बैठा था, मैंने उसके दाहिने हाथ में एक पुस्तक देखी, जो भीतर और बाहर लिखी हुई थी, और वह सात मुहर लगाकर बन्द की गई थी। २५ मैंने एक बलवन्त स्वर्गदूत को देखा जो ऊँचे शब्द से यह प्रचार करता था “इस पुस्तक के खोलने और उसकी मुहरें तोड़ने के योग्य कौन है?” ३ और न स्वर्ग में, न पृथ्वी पर, न पृथ्वी के नीचे कोई उस पुस्तक को खोलने या उस पर दृष्टि डालने के योग्य निकला। ४ तब मैं फट फूटकर रोने लगा, क्योंकि उस पुस्तक के खोलने, या उस पर दृष्टि करने के योग्य कोई न मिला। ५ इस पर उन प्राचीनों में से एक ने मुझसे कहा, “मत रो; देख, यहदा के गोत्र का वह सिंह, जो दाऊद का मूल है, उस पुस्तक को खोलने और उसकी सातों मुहरें तोड़ने के लिये जयवन्त हुआ है।” ६ तब मैंने उस सिंहासन और चारों

प्राणियों और उन प्राचीनों के बीच में, मानो एक वध किया हुआ मेम्ना खड़ा देखा; उसके सात सींग और सात आँखें थीं, ये परमेश्वर की सातों आत्माएँ हैं, जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं। ७ उसने आकर उसके दाहिने हाथ से जो सिंहासन पर बैठा था, वह पुस्तक ले ली, ८ जब उसने पुस्तक ले ली, तो वे चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन उस मेने के सामने गिर पड़े; और हर एक के हाथ में बींगी और धूप से भेरे हुए सोने के कट्टौरे थे, ये तो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएँ हैं। ९ और वे यह नया गीत गाने लगे, “तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य हैं; क्योंकि तुम वध होकर अपने लह से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है। १० “और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।” ११ जब मैने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिनकी गिनती लाखों और करोड़ों की थी। १२ और वे ऊँचे शब्द से कहते थे, “वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ्य, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और स्तुति के योग्य है।” १३ फिर मैने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब रसी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उनमें हैं, यह कहते सुना, “जो सिंहासन पर बैठा है, उसकी, और मैने की स्तुति, और आदर, और महिमा, और राज्य, युगानुयुग रहे।” (alōn g165) १४ और चारों प्राणियों ने आमीन कहा, और प्राचीनों ने गिरकर दण्डवत् किया।

६ फिर मैने देखा कि मैने ने उन सात मुहरों में से एक को खोला; और उन चारों प्राणियों में से एक का गर्जन के समान शब्द सुना, “आ।” ७ मैने दृष्टि की, और एक श्वेत घोड़ा है, और उसका सवार धनुष लिए हुए है; और उसे एक मुकूर दिया गया, और वह जय करता हुआ निकला कि और भी जय प्राप्त करे। ८ जब उसने दूसरी मुहर खोली, तो मैने दूसे प्राणी को यह कहते सुना, “आ।” ९ फिर एक और घोड़ा निकला, जो लाल रंग का था; उसके सवार को यह अधिकार दिया गया कि पृथ्वी पर से मेल उठा ले, ताकि लोग एक दूसरे का वध करें; और उसे एक बड़ी तलवार दी गई। १० जब उसने तीसरी मुहर खोली, तो मैने तीसरे प्राणी को यह कहते सुना, “आ।” ११ और मैने दृष्टि की, और एक काला घोड़ा है; और उसके सवार के हाथ में एक तराजू है। १२ और मैने उन चारों प्राणियों के बीच में से एक शब्द यह कहते सुना, “दीनार का सेर भर गेहूँ, और दीनार का तीन सेर जौ, पर तेल, और दाखरस की हानि न करना।” १३ और जब उसने चौथी मुहर खोली, तो मैने चौथे प्राणी का शब्द यह कहते सुना, “आ।” १४ मैने दृष्टि की, और एक पीला घोड़ा है; और उसके सवार का नाम मृत्यु है; और अधोलोक उसके पीछे-पीछे है और उन्हें पृथ्वी की एक चौथाई पर यह अधिकार दिया गया, कि तलवार, और अकाल, और मरी, और पृथ्वी के बन-पशुओं के द्वारा लोगों को मार डालें। (Hades g86) १५ जब उसने पाँचवी मुहर खोली, तो मैने देवी के नीचे उनके प्राणों को देखा, जो परमेश्वर के चरन के कारण, और उस गवाही के कारण जो उन्होंने दी थी, वध किए गए थे। १६ और उन्होंने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, “हे प्रभु, हे पवित्र, और स्तर्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और पृथ्वी के रहनेवालों से हमारे लह का पलटा कब तक न लेगा?” १७ और उनमें से हर एक को खेत वञ्च दिया गया, और उनसे कहा गया, कि और थोड़ी देर तक विश्वाम करो, जब तक कि तुम्हारे संगी दास और भाई जो तुम्हारे समान वध होनेवाले हैं, उनकी भी गिनती पूरी न हो ले। १८ जब उसने छठवी मुहर खोली, तो मैने देखा कि एक बड़ा भूकम्प हुआ; और सूर्य कम्बल के समान काला, और पूरा

चन्द्रमा लह के समान हो गया। १९ और आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आँधी से हिलकर अंजीर के पेड़ में से कच्चे फल झटके हैं। २० आकाश ऐसा सरक गया, जैसा पत्र लपेटने से सरक जाता है; और हर एक पहाड़, और टापू, अपने-अपने स्थान से टल गया। २१ पृथ्वी के राजा, और प्रधान, और सरदार, और धनवान और सामर्थी लोग, और हर एक दास, और हर एक श्वत्र, पहाड़ों की गुफाओं और चट्ठानों में जा छिपे; २२ और पहाड़ों, और चट्ठानों से कहने लगे, “हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुँह से जो सिंहासन पर बैठा है और मैने के प्रकोप से छिपा लो; २३ क्योंकि उनके प्रकोप का भयानक दिन आ पहुँचा है, अब कौन ठहर सकता है?”

७ इसके बाद मैने पृथ्वी के चारों कोनों पर चार स्वर्गदूत खड़े देखे, वे पृथ्वी की चारों हवाओं को थामे हुए थे ताकि पृथ्वी, या समुद्र, या किसी पेड़ पर, हवा न चले। ८ फिर मैने एक और स्वर्गदूत को जीविते परमेश्वर की मुहर लिए हुए पूरब से ऊपर की ओर आते देखा; उसने उन चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें पृथ्वी और समुद्र की हानि करने का अधिकार दिया गया था, ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा, ९ “जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें, तब तक पृथ्वी और समुद्र और पेड़ों को हानि न पहुँचाना।” १० और जिन पर मुहर दी गई, मैने उनकी गिनती सुनी, कि इमाल की सन्तानों के सब गोत्रों में से एक लाख चौबालीस हजार पर मुहर दी गई: ११ यहदा के गोत्र में से बारह हजार पर, मुहर दी गई, स्केन के गोत्र में से बारह हजार पर, गाद के गोत्र में से बारह हजार पर, नाशीती के गोत्र में से बारह हजार पर; नशीते के गोत्र में से बारह हजार पर, इश्मौन के गोत्र में से बारह हजार पर, लेवी के गोत्र में से बारह हजार पर, इस्साकार के गोत्र में से बारह हजार पर, १२ जबलून के गोत्र में से बारह हजार पर, यसुफ के गोत्र में से बारह हजार पर, और बिन्यामीन के गोत्र में से बारह हजार पर मुहर दी गई। १३ इसके बाद मैने दृष्टि की, और हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वञ्च पहने और अपने हाथों में खजर की डालियाँ लिये हुए सिंहासन के सामने और मैने के सामने खड़ी हैं; १४ और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, “उद्धर के लिये हमारे परमेश्वर का, जो सिंहासन पर बैठा है, और मैने का जय जयकार हो।” १५ और सारे स्वर्गदूत, उस सिंहासन और प्राचीनों और चारों प्राणियों के चारों ओर खड़े हैं, फिर वे सिंहासन के सामने मुँह के बल गिर पड़े और परमेश्वर को दण्डवत् करके कहा, १६ “आमीन, हमारे परमेश्वर की स्तुति, महिमा, ज्ञान, धन्यवाद, आदर, सामर्थ्य, और शक्ति युगानुयुग बनी रहें।” (alōn g165) १७ इस पर प्राचीनों में से एक ने मुझसे कहा, “ये श्वेत वञ्च पहने हुए कौन है? और कहाँ से आए हैं?” १८ मैने उससे कहा, “हे स्वामी, तू ही जानता है।” उसने मुझसे कहा, “ये वे हैं, जो उस महाक्षेत्रे में से निकलकर आए हैं; इहोंने अपने-अपने वञ्च मैने के लह में धोकर श्वेत किए हैं। १९ “इसी कारण वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं, और उसके मन्दिर में दिन-रात उसकी सेवा करते हैं; और जो सिंहासन पर बैठा है, वह उनके ऊपर अपना तम्बू तोनेगा। २० “वे फिर भूखे और प्यासे न होंगे; और न उन पर धूप, न कोई तपन पड़ेगी। २१ क्योंकि मैम्ना जो सिंहासन के बीच में है, उनकी रखबाली करेगा, और उन्हें जीवनस्पी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा, और परमेश्वर उनकी आँखों से सब आँसू पोछ डालेगा।”

८ जब उसने सातवी मुहर खोली, तो स्वर्ग में आधे घण्टे तक सन्ताना छा गया। २२ और मैने उन सातों स्वर्गदूतों को जो परमेश्वर के सामने खड़े रहते हैं, देखा, और उन्हें सात तुरहियाँ दी गईं। २३ फिर एक और स्वर्गदूत सोने का

धूपदान लिये हुए आया, और वेदी के निकट खड़ा हुआ; और उसको बहुत धूप दिया गया कि सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ सोने की उस वेदी पर, जो सिंहासन के सामने है चढ़ाएँ। ५ और उस धूप का धूआँ पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं सहित स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के सामने परहूँच गया। ६ तब स्वर्गदूत ने धूपदान लेकर उसमें वेदी की आग भरी, और पृथ्वी पर डाल दी, और गर्जन और शब्द और बिजलियाँ और भूकम्प होने लगे। ७ और वे सातों स्वर्गदूत जिनके पास सात तुहिया थीं, फँकने को तैयार हुए। ८ पहले स्वर्गदूत ने तुरही फँकी, और लह से मिले हुए औले और आग उत्पन्न हुई, और पृथ्वी पर डाली गई; और एक तिहाई पृथ्वी जल गई, और एक तिहाई पेड़ जल गई, और सब हरी घास भी जल गई। ९ दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फँकी, तो मानो आग के समान जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ समुद्र में डाला गया; और समुद्र भी एक तिहाई लह हो गया, १० और समुद्र की एक तिहाई सुर्जी हुई बस्तुएँ जो सजीव थीं मर गईं, और एक तिहाई जहाज नाश हो गए। ११ तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही फँकी, और एक बड़ा तारा जो मशाल के समान जलता था, स्वर्ग से टूटा, और नदियों की एक तिहाई पर, और पानी के सोतों पर आ पड़ा। १२ उस तारे का नाम नागदैना है, और एक तिहाई पानी नागदैना जैसा कड़वा हो गया, और बहुत से मनुष्य उस पानी के कड़वे हो जाने से मर गए। १३ चौथे स्वर्गदूत ने तुरही फँकी, और सूर्य की एक तिहाई, और चाँद की एक तिहाई और तारों की एक तिहाई पर अपनि आई, यहाँ तक कि उनका एक तिहाई अंग अंधेरा हो गया और दिन की एक तिहाई में उजाला न रहा, और वैसे ही रात में भी। १४ जब मैंने फिर देखा, तो आकाश के बीच में एक उकाब को उड़ते और ऊँचे शब्द से यह कहते सुना, “उन तीन स्वर्गदूतों की तुरही के शब्दों के कारण जिनका फँकना अभी बाकी है, पृथ्वी के रहनेवालों पर हाय, हाय, हाय!”

१ जब पॉचवें स्वर्गदूत ने तुरही फँकी, तो मैंने स्वर्ग से पृथ्वी पर एक तारा गिरता हुआ देखा, और उसे अथाह कुण्ड की फुँकी दी गई। (Abyssos g12) २ उसने अथाह कुण्ड को खोला, और कुण्ड में से बड़ी भट्ठी के समान धूआँ उठा, और कुण्ड के धूएँ से सूर्य और बायु अंधकारमय हो गए। (Abyssos g12) ३ उस धूएँ में से पृथ्वी पर टिहुयाँ निकली, और उन्हें पृथ्वी के बिच्छुओं के समान शक्ति दी गई। ४ उनसे कहा गया कि न पृथ्वी की घास को, न किसी हरियाली को, न किसी पेड़ को हानि पहुँचाए जिनके माथे पर परमेश्वर की मुहर नहीं है। ५ और उन्हें लोगों को मार डालने का तो नहीं, पर पॉच महिने तक लोगों को पीड़ा देने का अधिकार दिया गया; और उनकी पीड़ा ऐसी थी, जैसे बिच्छु के डंक मारने से मनुष्य को होती है। ६ उन दिनों में मनुष्य मृत्यु को ढूँगे, और न पाएँ; और मने की लालसा करें, और मृत्यु उनसे भागेगी। ७ उन टिहुयों के आकार लडाई के लिये तैयार किए हुए घोड़ों के जैसे थे, और उनके सिरों पर मानो सोने के मुकुट थे; और उनके मुँह मनुष्यों के जैसे थे। ८ उनके बाल छिंगों के बाल जैसे, और दाँत सिंहों के दाँत जैसे थे। ९ वे लोहे की जैसी छिलम पहने थे, और उनके पंखों का शब्द ऐसा था जैसा रथों और बहुत से घोड़ों का जो लडाई में दौड़ते हों। १० उनकी पूँछ बिच्छुओं की जैसी थी, और उनमें डंक थे, और उन्हें पॉच महिने तक मनुष्यों को दुःख पहुँचने की जो शक्ति मिली थी, वह उनकी पूँछों में थी। ११ अथाह कुण्ड का दूँव उन पर राजा था, उसका नाम इब्रानी में अबड़ैन, और यानी में अपुल्लयोन है। (Abyssos g12) १२ पहली विपत्ति बीत चुकी, अब इसके बाद दो विपत्तियाँ और आनेवाली हैं। १३ जब छठवें स्वर्गदूत ने तुरही फँकी तो जो सोने की वेदी परमेश्वर के सामने है उसके सींगों में से मैंने ऐसा शब्द सुना, १४ मानो कोई छठवें स्वर्गदूत से, जिसके पास तुरही थी कह रहा है, “उन चार स्वर्गदूतों को जो बड़ी नदी

फरात के पास बंधे हुए हैं, खोल दे।” १५ और वे चारों दूत खोल दिए गए जो उस घड़ी, और दिन, और महीने, और वर्ष के लिये मनुष्यों की एक तिहाई के मार डालने को तैयार किए गए थे। १६ उनकी फौज के सबारों की गिनती बीस करोड़ थी; मैंने उनकी गिनती सुनी। १७ और मुझे इस दर्शन में घोड़े और उनके ऐसे सबार दिखाई दिए, जिनकी छिलमें आग, ध्वनिकान्त, और गन्धक की जैसी थी, और उन घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों के समान थे; और उनके मुँह से आग, धूआँ, और गन्धक निकलते थे। १८ इन तीनों महामारियों, अर्थात् आग, धूएँ, गन्धक से, जो उनके मुँह से निकलते थे, मनुष्यों की एक तिहाई मार डाली गई। १९ क्योंकि उन घोड़ों की सामर्थ्य उनके मुँह, और उनकी पूँछों में थी; इसलिए कि उनकी पूँछे साँपों की जैसी थीं, और उन पूँछों के सिर भी थे, और इन्हीं से वे पीड़ा पहुँचाते थे। २० बाकी मनुष्यों ने जो उन महामारियों से न मरे थे, अपने हाथों के कामों से मन न फिराया, कि दृश्यात्मों की, और सोने, चाँदी, पीतल, पत्थर, और काठ की मृतियों की पूजा न करें, जो न देख, न सुन, न चल सकती है। २१ और जो खून, और टोना, और व्यभिचार, और चोरियाँ, उन्होंने की थीं, उनसे मन न फिराया।

१० फिर मैंने एक और शक्तिशाली स्वर्गदूत को बादल ओड़े हुए स्वर्ग से

उतरते देखा; और उसके सिर पर मेघधनुष था, और उसका मुँह सर्व के समान और उसके पाँव आग के खम्भे के समान थे; १ और उसके हाथ में एक छोटी री खुली हुई पुस्तक थी। उसने अपना दाहिना पाँव समुद्र पर, और बायाँ पृथ्वी पर रखा; २ और ऐसे बड़े शब्द से चिल्लाया, जैसा सिंह गरजता है; और जब वह चिल्लाया तो गर्जन के सात शब्द सुनाई दिए। ३ जब सातों गर्जन के शब्द सुनाई दे चुके, तो मैं लिखने पर था, और मैंने स्वर्ग से यह शब्द सुना, “जो बांबों गर्जन के उन सात शब्दों से सुनी हैं, उन्हें गुम रख, और मत लिखा।” ४ जिस स्वर्गदूत को मैंने समुद्र और पृथ्वी पर खड़े देखा था; उसने अपना दाहिना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया ५ और उसकी शपथ खाकर जो युगानुयां जीवित है, और जिसने स्वर्ग को और जो कुछ उसमें है, और पृथ्वी को और जो कुछ उस पर है, और समुद्र को और जो कुछ उसमें है सुना है उसी की शपथ खाकर कहा कि “अब और देर न होगी।” (aiōn g165) ६ वरन् सातवें स्वर्गदूत के शब्द देने के दिनों में, जब वह तुरही फँकने पर होगा, तो परमेश्वर का वह रहस्य प्राप्त हो जाएगा, जिसका सूसमाचार उसने अपने दास भविष्यद्वात्ताओं को दिया था। ७ जिस शब्द करनेवाले को मैंने स्वर्ग से बोलते सुना था, वह फिर मैंने साथ बांबों करने लगा, “जा, जो स्वर्गदूत समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा है, उसके हाथ में की खुली हुई पुस्तक ले ले।” ८ और मैंने स्वर्गदूत के पास जाकर कहा, “यह छोटी पुस्तक मुझे दो।” और उसने मुझसे कहा, “ले, इसे खा ले; यह तेरा पेट कड़वा तो करेगी, पर तो मुँह में मधु जैसी मठी लगेगी।” ९ अतः मैं वह छोटी पुस्तक उस स्वर्गदूत के हाथ से लेकर खा गया। वह मेरे मुँह में मधु जैसी मठी तो लगी, पर जब मैं उसे खा गया, तो मेरा पेट कड़वा हो गया। १० तब मुझसे यह कहा गया, “तुझे बहुत से लोगों, जातियों, भाषाओं, और राजाओं के विषय में फिर भविष्यद्वात्ताणी करनी होगी।”

११ फिर मुझे नापने के लिये एक सरकण्डा दिया गया, और किसी ने कहा,

“उठ, परमेश्वर के मन्दिर और वेदी, और उसमें भजन करनेवालों को नाप ले। १२ पर मन्दिर के बाहर का आँगन छोड़ दे; उसे मत नाप क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है, और वे पवित्र नगर को बयानीस महीने तक रौदेंगी। ३ और मैं अपने दो गवाहों को यह अधिकार दँगा कि टाट ओढ़े हुए एक हजार दो सौ साठ दिन तक भविष्यद्वात्ताणी करनी होगी।” ४ ये वे ही जैतून के दो

पेड़ और दो दीवट हैं जो पृथ्वी के प्रभु के सामने खड़े रहते हैं। ५ और यदि कोई उनको हानि पहुँचाना चाहता है, तो उनके मूँह से आग निकलकर उनके बैरियों को भस्म करती है, और यदि कोई उनको हानि पहुँचाना चाहेगा, तो अवश्य इसी रीति से मार डाला जाएगा। ६ उन्हें अधिकार है कि आकाश को बन्द करें, कि उनकी भविष्यद्वाणी के दिनों में मैंह न बरसे, और उन्हें सब पानी पर अधिकार है, कि उसे लह बनाएँ, और जब जब चाहें तब-तब पृथ्वी पर हर प्रकार की विपत्ति लाएँ। ७ जब वे अपनी गवाही दे क्योंके, तो वह पशु जो अथाह कुण्ड में से निकलेगा, उनसे लडकर उन्हें जितेगा और उन्हें मार डालेगा। (Abyssos g12) ८ और उनके शब उस बड़े नगर के चौक में पड़े रहेंगे, जो आत्मिक रीति से सदोम और मिथ्य कहलाता है, जहाँ उनका प्रभु भी क्रूस पर चढ़ाया गया था। ९ और सब लोगों, कुलों, भाषाओं, और जातियों में से लोग उनके शर्वों को साढ़े तीन दिन तक देखते रहेंगे, और उनके शर्वों को कब्र में रखने न देंगे। १० और पृथ्वी के रहनेवाले उनके मरने से आनन्दित और मगन होंगे, और एक दूसरे के पास भेट भेजेंगे, क्योंकि इन दोनों भविष्यद्वत्काओं ने पृथ्वी के रहनेवालों को सताया था। ११ परन्तु साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर की ओर से जीवन का श्वास उनमें पैठ गया; और वे अपने पाँवों के बल खड़े हो गए, और उनके देखनेवालों पर बड़ा भय छा गया। १२ और उन्हें स्वर्ग से एक बड़ा शब्द सुनाई दिया, “यहाँ ऊपर आओ!” यह सुन वे बादल पर स्वार होकर अपने बैरियों के देखते-देखते स्वर्ग पर चढ़ गए। १३ फिर उत्तीर्णी एक बड़ा भक्त्य हुआ, और नगर का दसवां भाग गिर पड़ा; और उस भक्त्य से सात हजार मनुष्य मर गए और शेष डर गए, और स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की। १४ दूसरी विपत्ति बीत चुकी; तब, तीसरी विपत्ति शीघ्र आनेवाली है। १५ जब सातवें स्वर्गदूत ने तुहीं फूँकी, तो स्वर्ग में इस विषय के बड़े-बड़े शब्द होने लगे: “जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया और वह युग्मन्युग राज्य करेगा!” (aiōn g165) १६ और चौबीसों प्राचीन जो परमेश्वर के सामने अपने सिंहासन पर बैठे थे, मुँह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् करके, १७ यह कहने लगे, “हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो है और जो था, हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने अपनी बड़ी सामर्थ्य को काम में लाकर राज्य किया है। १८ अन्यजातियों ने क्रोध किया, और तेरा प्रकोप आ पड़ा और वह समय आ पहुँचा है कि मेरे हुओं का न्याय किया जाए, और तेरे दास भविष्यद्वत्काओं और पवित्र लोगों को और उन छोटे-बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं, बदला दिया जाए, और पृथ्वी के बिंगाड़नेवाले नाश किए जाएँ।” १९ और परमेश्वर का जो मन्दिर स्वर्ग में है, वह खोला गया, और उसके मन्दिर में उसकी बाच्चा का सन्दूक दिखाई दिया, विजलियों, शब्द, गर्जन और भक्त्य हुए, और बड़े ओले पड़े।

१२ फिर स्वर्ग पर एक बड़ा चिन्ह दिखाई दिया, अर्थात् एक झीं जो सूर्य ओढ़े हुए थी, और चाँद उसके पाँवों तले था, और उसके सिंह पर बारह तारों का मुकुट था; २ वह गर्भवती हुई, और चिल्लिती थी; क्योंकि प्रसव की पीड़ा उसे लगी थी, क्योंकि वह बच्चा जनने की पीड़ा में थी। ३ एक और चिन्ह स्वर्ग में दिखाई दिया, एक बड़ा लाल अजगर था जिसके सात सिर और दस सींग थे, और उसके सिरों पर सात राजमुकुट थे। ४ और उसकी पूँछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खीचकर पृथ्वी पर डाल दिया, और वह अजगर उस झीं के सामने जो जच्चा थी, खड़ा हुआ, कि जब वह बच्चा जने तो उसके बच्चे को निगल जाए। ५ और वह बेटा जनी जो तोहे का राजदण्ड लिए हुए, सब जातियों पर राज्य करने पर था, और उसका बच्चा परमेश्वर के पास, और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया। ६ और वह झीं

उस जंगल को भाग गई, जहाँ परमेश्वर की ओर से उसके लिये एक जगह तैयार की गई थी कि वहाँ वह एक हजार दो सौ साठ दिन तक पारी जाए। ७ फिर स्वर्ग पर लडाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले; और अजगर और उसके दूत उससे लड़े, ८ परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिये फिर जगह न रही। ९ और वह बड़ा अजगर अर्थात् वही पुषाना सौंप, जो शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमानेवाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए। १० फिर मैंने स्वर्ग पर से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, “अब हमारे परमेश्वर का उद्घार, सामर्थ्य, राज्य, और उसके मसीह का अधिकार प्राप्त हुआ है; क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला, जो रात-दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया करता था, गिरा दिया गया। ११ और वे मैंने के लह के कारण, और अपनी गवाही के बचन के कारण, उस पर जयवन्त हुए, क्योंकि उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहाँ तक कि मृत्यु भी सह सली। १२ इस कारण, हे स्वर्गी, और उनमें रहनेवालों मगन हो; हे पृथ्वी, और समुद्र, तुम पर हाय! क्योंकि शैतान बड़े क्रोध के साथ तम्हारे पास उतर आया है; क्योंकि जानता है कि उसका थोड़ा ही समय और बाकी है।” १३ जब अजगर ने देखा, कि मैं पृथ्वी पर गिरा दिया गया हूँ, तो उस झीं को जो बेटा जनी थी, सताया। १४ पर उस झीं को बड़े उकाब के दो पंख दिए गए, कि सौंप के सामने से उड़कर जंगल में उस जगह पहुँच जाए, जहाँ वह एक समय, और समयों, और आधे समय तक पाली जाए। १५ और सौंप ने उस झीं के पीछे अपने मूँह से नदी के समान पानी बहाया कि उसे इस नदी से बहा दे। १६ परन्तु पृथ्वी की सहायता की, और अपना मूँह खोलकर उस नदी को जो अजगर ने अपने मूँह से बहाई थी, पी लिया। १७ तब अजगर झीं पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष सन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया।

१३ और वह समुद्र के रेत पर जा खड़ा हुआ। मैंने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा, जिसके दस सींग और सात सिर थे। उसके सींगों पर दस राजमुकुट, और उसके सिरों पर परमेश्वर की निन्दा के नाम लिखे हुए थे। १ जो पशु मैंने देखा, वह चीति के समान था; और उसके पाँव भालू के समान, और मूँह सिंह के समान था। और उस अजगर ने अपनी सामर्थ्य, और अपना सिंहासन, और बड़ा अधिकार, उसे दे दिया। २ मैंने उसके सिरों में से एक पर ऐसा भारी धाव लगा देखा, माने वह मरने पर हैं, फिर उसका प्राणयातक धाव अच्छा हो गया, और सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे-पीछे अचम्भा करते हुए चलते। ३ उन्होंने अजगर की पूजा की, क्योंकि उसने पशु को अपना अधिकार दे दिया था, और यह कहकर पशु की पूजा की, “इस पशु के समान कौन है? कौन इससे लड़ सकता है?” ४ बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिये उसे एक मूँह दिया गया, और उसे बयालीस महीने तक काम करने का अधिकार दिया गया। ५ और उसने परमेश्वर की निन्दा करने के लिये मूँह खोला, कि उसके नाम और उसके तम्भ अर्थात् स्वर्ग के रहनेवालों की निन्दा करे। ६ उसे यह अधिकार दिया गया, कि पवित्र लोगों से लड़े, और उन पर जय पाए, और उसे हर एक कुल, लोग, भाषा, और जाति पर अधिकार दिया गया। ७ पृथ्वी के वे सब रहनेवाले जिनके नाम उस पैसे की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घाट हुआ है, उस पैसे की पूजा करेंगे। ८ जिसके कान हों वह सुने। ९ जिसको कैद में पड़ना है, वह कैद में पड़ेगा, जो तलवार से मारेगा, अवश्य है कि वह तलवार से मारा जाएगा। १० पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास इसी में है। ११ फिर मैंने एक और पशु को

पृथ्वी में से निकलते हुए देखा, उसके मेम्पे के समान दो सींग थे; और वह अजगर के समान बोलता था। १५ यह उस पहले पशु का सारा अधिकार उसके सामने काम में लाता था, और पृथ्वी और उसके रहनेवालों से उस पहले पशु की, जिसका प्राणधातक घाव अच्छा हो गया था, पूजा करता था। १६ वह बड़े-बड़े चिन्ह दिखाता था, यहाँ तक कि मनुष्यों के सामने स्वर्ग से पृथ्वी पर आग बरसा देता था। १७ उन चिन्हों के कारण जिन्हें उस पशु के सामने दिखाने का अधिकार उसे दिया गया था; वह पृथ्वी के रहनेवालों को इस प्रकार भरमाता था, कि पृथ्वी के रहनेवालों से कहता था कि जिस पशु को तलवार लगी थी, वह जी गया है, उसकी मृति बनाओ। १८ और उसे उस पशु की मृति में प्राण डालने का अधिकार दिया गया, कि पशु की मृति बोलने लगे; और जितने लोग उस पशु की मृति की पूजा न करें, उन्हें मरवा डाले। १९ और उसने छोटे-बड़े, धनी-कंगाल, स्वतंत्र-दास सब के दाहिने हाथ या उनके माथे पर एक-एक छाप करा दी, २० कि उसको छोड़ जिस पर छाप अर्थात् उस पशु का नाम, या उसके नाम का अंक हो, और अन्य कोई लेन-देन न कर सके। २१ ज्ञान इसी में है: जिसे बुद्धि हो, वह इस पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है, और उसका अंक छ. सौ छियासठ है।

१४ फिर मैने दृष्टि की, और देखो, वह मेम्ना सिय्योन पहाड़ पर खड़ा है, और उसके साथ एक लाख चौबालीस हजार जन हैं, जिनके माथे पर उसका और उसके पिता का नाम लिखा हुआ है। २२ और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन के जैसा शब्द था, और जो शब्द मैने सुना वह ऐसा था, मानो वीणा बजानेवाले वीणा बजाते हों। २३ और वे सिंहासन के सामने और चारों प्राणियों और प्राचीनों के सामने मानो, एक नया गीत गा रहे थे, और उन एक लाख चौबालीस हजार जनों को छोड़, जो पृथ्वी पर से मोल लिए गए थे, कोई वह गीत न सीख सकता था। २४ ये वे हैं, जो खियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कँवरे हैं; ये वे ही हैं, कि जहाँ कहीं मैम्ना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैं; ये तो परमेश्वर और मैम्ने के निमित्प पहले फल होने के लिये मनुष्यों में से मोल लिए गए हैं। २५ और उनके मुँह से कभी झट्ठ न निकला था, वे निर्दोष हैं। २६ फिर मैने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा जिसके पास पृथ्वी पर के रहनेवालों की हर एक जाति, कुल, भाषा, और लोगों को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था। (aiōnios g166) २७ और उसने बड़े शब्द से कहा, “परमेश्वर से डरो, और उसकी महिमा करो, क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है; और उसकी आराधना करो, जिसने स्वर्ण और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए।” २८ फिर इसके बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, “गिर पड़ा, वह बड़ा बाबेल गिर पड़ा जिसने अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलाई है।” २९ फिर इनके बाद एक और तीसरा स्वर्गदूत बड़े शब्द से यह कहता हुआ आया, “जो कोई उस पशु और उसकी मृति की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले, ३० तो वह परमेश्वर के प्रकोप की मदिरा जो बिना मिलावट के, उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीणा और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मैम्ने के सामने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा। ३१ और उनकी पीड़ा का धूर्णों युगान्मुगा उठता रहेगा, और जो उस पशु और उसकी मृति की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उनको रात-दिन चैन न मिलेगा।”

(aiōn g165) ३२ पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं। ३३ और मैने स्वर्ग से यह शब्द सुना, “लिख: जो मृतक प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य हैं।” आत्मा कहता है,

“हाँ, क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्वाम पाएँगे, और उनके कार्य उनके साथ हो लेते हैं।” ३४ मैने दृष्टि की, और देखो, एक उजला बादल है, और उस बादल पर मनुष्य के पुत्र सदृश कोई बैठा है, जिसके सिर पर सोने का मुकुट और हाथ में उत्तम हँसुआ है। ३५ फिर एक और स्वर्गदूत ने मन्दिर में से निकलकर, उससे जो बादल पर बैठा था, बड़े शब्द से पुकारकर कहा, “अपना हँसुआ लगाकर लवनी कर, क्योंकि लवने का समय आ पहुँचा है, इसलिए कि पृथ्वी की खेती पक चुकी है।” ३६ अतः जो बादल पर बैठा था, उसने पृथ्वी पर अपना हँसुआ लगाया, और पृथ्वी की लवनी की गई। ३७ फिर एक और स्वर्गदूत उस मन्दिर में से निकला, जो सर्वा में है, और उसके पास भी उत्तम हँसुआ था। ३८ फिर एक और स्वर्गदूत, जिसे आग पर अधिकार था, बैदी में से निकला, और जिसके पास उत्तम हँसुआ था, उससे ऊँचे शब्द से कहा, “अपना उत्तम हँसुआ लगाकर पृथ्वी की दाखलता के गुच्छे काट ले; क्योंकि उसकी दाख पक चुकी है।” ३९ तब उस स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर अपना हँसुआ लगाया, और पृथ्वी की दाखलता का फल काटकर, अपने परमेश्वर के प्रकोप के बड़े सम्कुण्ड में डाल दिया। ४० और नगर के बाहर उस रसकुण्ड में दाख रोंदे गए, और रसकुण्ड में से तटना लह निकला कि घोड़ों की लगामों तक पहुँचा, और सौ कोस तक बह गया।

१५ फिर मैने स्वर्ग में एक और बड़ा और अद्भुत चिन्ह देखा, अर्थात् सात स्वर्गदूत जिनके पास सातों अनिम विपत्तियाँ थीं, क्योंकि उनके हो जाने पर परमेश्वर के प्रकोप का अन्त है। ४१ और मैने आग से मिले हुए काँच के जैसा एक समुद्र देखा, और जो लोग उस पशु पर और उसकी मृति पर, और उसके नाम के अंक पर जयवन्त हुए थे, उन्हें उस काँच के समुद्र के निकट परमेश्वर की वीणाओं को लिए हुए खड़े देखा। ४२ और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत, और मैम्ने का गीत गा गाकर कहते थे, “हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेर कार्य महान, और अद्भुत है, हे युग-युग के राजा, तेरी चाल ठीक और सच्ची है।” ४३ “हे प्रभु, कौन तुझ से न डरेगा? और तेरे नाम की महिमा न करेगा? क्योंकि केवल तु ही पवित्र है, और सारी जातियाँ आकर तेरे सामने दण्डवत् करेंगी, क्योंकि तेरे न्याय के काम प्रगट हो गए हैं।” ४४ इसके बाद मैने देखा, कि स्वर्ग में साक्षी के तम्बू का मन्दिर खोला गया, ४५ और वे सातों स्वर्गदूत जिनके पास सातों विपत्तियाँ थीं, मलमत के शुद्ध और चमकदार वस्त्र पहने और छाती पर सोने की पट्टियाँ बैंधे हुए मन्दिर से निकले। ४६ तब उन चारों प्राणियों में से एक ने उन सात स्वर्गदूतों को परमेश्वर के, जो युगान्मुगा जीविता है, प्रकोप से भरे हुए सात सोने के कटोरे दिए। (aiōn g165) ४७ और परमेश्वर की महिमा, और उसकी सामर्थ्य के कारण मन्दिर धूएँ से भर गया और जब तक उन सातों स्वर्गदूतों की सातों विपत्तियाँ समाप्त न हुई, तब तक कोई मन्दिर में न जा सका।

१६ फिर मैने मन्दिर में किसी को ऊँचे शब्द से उन सातों स्वर्गदूतों से यह कहते सुना, “जाओ, परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को पृथ्वी पर उण्डेल दो।” ४८ अतः पहले स्वर्गदूत ने जाकर अपना कटोरा पृथ्वी पर उण्डेल दिया। और उन मनुष्यों के जिन पर पशु की छाप थी, और जो उसकी मृति की पूजा करते थे, एक प्रकार का बुरा और दुखदाइ फोड़ा निकला। ४९ दूसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा समुद्र पर उण्डेल दिया और वह मरे हुए के लह जैसा बन गया, और समुद्र में का हर एक जीविधारी मर गया। ५० तीसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा नदियों, और पानी के सोतों पर उण्डेल दिया, और वे लह बन गए। ५१ और मैने पानी के स्वर्गदूत को यह कहते सुना, “हे पवित्र, जो है, और जो था, तू न्यायी है और तेरे यह न्याय किया। ५२ क्योंकि उन्होंने पवित्र लोगों

और भविष्यद्वत्काओं का लह बहाया था, और तने उन्हें लह पिलाया; क्योंकि वे इसी योग्य हैं।^७ फिर मैंने बेदी से यह शब्द सुना, “हाँ, हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे निर्णय ठीक और सच्चे हैं।”^८ चौथे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा सूर्य पर उँडेल दिया, और उसे मनुष्यों को आग से झलसा देने का अधिकार दिया गया।^९ मनुष्य बड़ी तपन से झलस गए, और परमेश्वर के नाम की जिसे इन विपत्तियों पर अधिकार है, निन्दा की और उहोंने न मन फिराया और न महिमा की।^{१०} पाँचवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा उस पश्च के सिंहासन पर उँडेल दिया और उसके राज्य पर अंधेरा छा गया; और लोग पीड़ा के मारे अपनी-अपनी जीव चबाने लगे,^{११} और अपनी पीड़ाओं और फोड़ों के कारण स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा की; पर अपने-अपने कामों से मन न फिराया।^{१२} छठवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा महानदी फरात पर उँडेल दिया और उसका पानी सूख गया कि पूर्व दिखा के राजाओं के लिये मार्ग तैयार हो जाए।^{१३} और मैंने उस अजगर के मूँह से, और उस पश्च के मूँह से और उस झटे भविष्यद्वत्का के मूँह से तीन अशुद्ध आत्माओं को मेंढकों के स्पृष्ट में निकलते देखा।^{१४} ये चिन्ह दिखानेवाली दृश्टाताएँ हैं, जो सारे संसार के राजाओं के पास निकलकर इसलिए जाती हैं, कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लडाई के लिये इक्षक करें।^{१५} “देख, मैं चोर के समान आता हूँ, धन्य वह है, जो जागता रहता है, और अपने ब्लू कि सावधानी करता है कि नांग न फिरे, और लोग उसका नांगान न दें।”^{१६} और उन्होंने राजाओं को उस जगह इक्षक किया, जो इत्तानी में हर-मणिदोन कहलाता है।^{१७} और सातवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा हवा पर उँडेल दिया, और मन्त्रिक के सिंहासन से यह बड़ा शब्द हुआ, “हो चुका।”^{१८} फिर बिजिलियाँ, और शब्द, और गर्जन हुए, और एक ऐसा बड़ा भूकम्प हुआ, कि जब से मनुष्य की उत्पत्ति पृथ्वी पर हुई, तब से ऐसा बड़ा भूकम्प कभी न हुआ था।^{१९} इससे उस बड़े नगर के तीन टुकड़े हो गए, और जाति-जाति के नगर गिर पड़े, और बड़े बाबेल का स्मरण परमेश्वर के यहाँ हुआ, कि वह अपने क्रोध की जलजलाहट की मदिरा उसे पिलाए।^{२०} और हर एक टापू अपनी जगह से टल गया, और पहाड़ों का पता न लगा।^{२१} और आकाश से मनुष्यों पर मन-मन भर के बड़े ओले पिरे, और इसलिए कि यह विपत्ति बहुत ही भारी थी, लोगों ने ओलों की विपत्ति के कारण परमेश्वर की निन्दा की।

१७ जिन सात स्वर्गदूतों के पास वे सात कटोरे थे, उनमें से एक ने आकर मुझसे यह कहा, “इधर आ, मैं तुझे उस बड़ी वेश्या का दण्ड दिखाऊँ, जो बहुत से पानी पर बैठी है।” जिसके साथ पृथ्वी के राजाओं ने व्यभिचार किया, और पृथ्वी के रहनेवाले उसके व्यभिचार की मदिरा से मतवाले हो गए थे।^{२२} तब वह मुझे पवित्र आत्मा में जंगल को ले गया, और मैंने लाल रंग के पश्च पर जो निन्दा के नामों से भरा हुआ था और जिसके सात सिर और दस सींग थे, एक झी को बैठे हुए देखा।^{२३} यह झी बैंगनी, और लाल रंग के कपड़े पहने थी, और सोने और बहुमूल्य मणियों और मोतियों से सजी हुई थी, और उसके हाथ में एक सोने का कटोरा था जो घृणित वस्तुओं से और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा हुआ था।^{२४} और उसके माथे पर यह नाम लिखा था, “भेद - बड़ा बाबेल पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता।”^{२५} और मैंने उस झी को पवित्र लोगों के लह और धीरु के गवाहों के लह पीने से मतवाली देखा; और उसे देखकर मैं चकित हो गया।^{२६} उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, “तू क्यों चकित हुआ? मैं इस झी, और उस पश्च का, जिस पर वह सवार है, और जिसके सात सिर और दस सींग हैं, तुझे भेद बताता हूँ।”^{२७} जो पश्च तूने देखा है, यह पहले तो था, पर अब नहीं है, और

अथाह कुण्ड से निकलकर विनाश में पड़ेगा, और पृथ्वी के रहनेवाले जिनके नाम जगत की उत्पत्ति के समय से जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए, इस पश्च की यह दशा देखकर कि पहले था, और अब नहीं; और फिर आ जाएगा, अचम्पा करेंगे। (Abyssos g12)^{२८} यह समझने के लिए एक ज्ञानी मन आवश्यक है, वे सातों सिर सात पहाड़ हैं, जिन पर वह झी बैठी है।^{२९} और वे सात राजा भी हैं, पाँच तो हो चुके हैं, और एक अभी है, और एक अब तक आया नहीं, और जब आएगा तो कुछ समय तक उसका रहना भी अवश्य है।^{३०} जो पश्च पहले था, और अब नहीं, वह आप आठवाँ है; और उन सातों में से एक है, और वह विनाश में पड़ेगा।^{३१} जो दस सींग तूने देखे वे दस राजा हैं; जिन्होंने अब तक राज्य नहीं पाया; पर उस पश्च के साथ घड़ी भर के लिये राजाओं के समान अधिकार पाएँगे।^{३२} ये सब एक मन होंगे, और वे अपनी-अपनी सामर्थ्य और अधिकार उस पश्च के देंगे।^{३३} “ये मैंने से लड़ेंगे, और मैमा उन पर जय पाएगा; क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु, और राजाओं का राजा है, और जो बुलाए हुए, उन्हे हुए और विश्वासयोग्य हैं, उसके साथ है, वे भी जय पाएँगे।”^{३४} फिर उसने मुझसे कहा, “जो पानी तूने देखे, जिन पर वेश्या बैठी है, वे लोग, भीड़, जातियाँ, और भाषाएँ हैं।^{३५} और जो दस सींग तूने देखे, वे और पश्च उस वेश्या से बैर रखेंगे, और उसे लाचार और नंगी कर देंगे; और उसका माँस खा जाएंगे, और उसे आग में जला देंगे।^{३६} क्योंकि परमेश्वर उनके मन में यह डालेगा कि वे उसकी मनसा पूरी करें; और जब तक परमेश्वर के बचन पैरे न हो लें, तब तक एक मन होकर अपना-अपना राज्य पश्च को दे दें।^{३७} और वह झी, जिसे तूने देखा है वह बड़ा नगर है, जो पृथ्वी के राजाओं के राज्य करता है।”

१८ इसके बाद मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उत्तरते देखा, जिसको बड़ा अधिकार प्राप्त था; और पृथ्वी उसके तेज से प्रकाशित हो उठी।^{३८} उसने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा, “गिर गया, बड़ा बाबेल गिर गया है।” और दृश्टाताओं का विवास, और हर एक अशुद्ध आत्मा का अड्डा, और हर एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का अड्डा हो गया।^{३९} क्योंकि उसके व्यभिचार के भयानक मदिरा के कारण सब जातियाँ गिर गई हैं, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है; और पृथ्वी के व्यापारी उसके सुख-विलास की बहुतायत के कारण धनवान हुए हैं।”^{४०} फिर मैंने स्वर्ग से एक और शब्द सुना, “हे मेरे लोगों, उसमें से निकल आओ कि तुम उसके पापों में भागी न हो, और उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े;”^{४१} क्योंकि उसके पापों का ढेर स्वर्ग तक पहुँच गया है, और उसके अधर्म परमेश्वर को स्मरण आए हैं।^{४२} जैसा उसने तुम्हें दिया है, वैसा ही उसको दो, और उसके कामों के अनुसार उसे दो गुण बदला दो, जिस कटोरे में उसने भर दिया था उसी में उसके लिये दो गुण भर दो।^{४३} जिन्हीं उसने अपनी बड़ाई की और सुख-विलास किया; उतनी उसको पीड़ा, और शोक दो; क्योंकि वह अपने मन में कहती है, “मैं रानी हो बैठी हूँ, विधवा नहीं; और शोक में कभी न पड़ूँगी।”^{४४} इस कारण एक ही दिन में उस पर विपत्तियाँ आ पड़ेंगी, अर्थात् मृत्यु, और शोक, और अकाल; और वह आग में भस्म कर दी जाएगी, क्योंकि उसका न्यायी प्रभु परमेश्वर शक्तिमान है।^{४५} “और पृथ्वी के राजा जिन्होंने उसके साथ व्यभिचार, और सुख-विलास किया, जब उसके जलें का धुआँ देखेंगे, तो उसके लिये रोंगें, और छाती पीटेंगे।^{४६} और उसकी पीड़ा के डर के मारे वे बड़ी दूर खड़े होकर करेंगे, ‘हे बड़े नगर, बाबेल! हे दृढ़ नगर, हाय! हाय! घड़ी ही भर में तुझे दण्ड मिल गया है।’”^{४७} “और पृथ्वी के व्यापारी उसके लिये रोंगें और विलाप करेंगे, क्योंकि अब कोई उनका माल मौल न लेगा।^{४८} अर्थात् सोना, चाँदी, रस, मोती, मलमल, बैंगनी, रेशमी, लाल रंग के

कपड़े, हर प्रकार का सुगन्धित काठ, हाथी दाँत की हर प्रकार की वस्तुएँ, बहुमूल्य काठ, पीतल, लोहे और संगमरमर की सब भाँति के पात्र, १३ और दालचीनी, मसाले, धूप, गन्धरस, लोबान, मदिरा, तेल, मैदा, गेहूँ, गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ, घोड़े, रथ, और दास, और मनुष्यों के प्राण। १४ अब तेरे मनभावने फल तेरे पास से जाते रहे; और सुख-विलास और वैधव की वस्तुएँ तुझ से दूर हुई हैं, और वे फिर कदापि न मिलेंगी। १५ इन वस्तुओं के व्यापारी जो उसके द्वारा धनवान हो गए थे, उसकी पीड़ा के डर के मारे दूर खड़े होंगे, और रोते और विलाप करते हुए कहेंगे, १६ “हाय! हाय! यह बड़ा नगर जो मलमल, बैगी, लाल रंग के कपड़े पहने थे, और सोने, ग्लो और मोतिहारे से सजा था; १७ घड़ी ही भर में उसका ऐसा भारी धन नाश हो गया।” “और हर एक माँझी, और जलयात्री, और मल्लाह, और जितने समुद्र से कमाते हैं, सब दूर खड़े हुए, १८ और उसके जलने का धुआँ देखते हुए पुकारकर कहेंगे, “कौन सा नगर इस बड़े नगर के समान है?” १९ और अपने-अपने सिरों पर धूल डालेंगे, और रोते हुए और विलाप करते हुए चिल्लाकर कहेंगे, “हाय! हाय! यह बड़ा नगर जिसकी सम्पत्ति के द्वारा समुद्र के सब जहाज बाले धनी हो गए थे, घड़ी ही भर में उजड़ गया।” २० हे स्वर्ग, और हे पवित्र लोगों, और प्रेरितों, और भविष्यद्वत्काओं, उस पर आनन्द करो, क्योंकि परमेश्वर ने न्याय करके उससे तुम्हारा पलटा लिया है।” २१ फिर एक बलवन्त स्वर्गदूत ने बड़ी चक्रवी के पाट के समान एक पथर उठाया, और यह कहकर समुद्र में फेंक दिया, “बड़ा नगर बबेल ऐसे ही बड़े बल से गिराया जाएगा, और फिर कभी उसका पता न मिलेगा। २२ वीणा बजानेवालों, गायकों, बंसी बजानेवालों, और तुरही फूँकनेवालों का शब्द फिर कभी तुझ में सुनाई न देगा, और किसी उदयम का कोई कारीगर भी फिर कभी तुझ में न मिलेगा; और चक्रवी के चलने का शब्द फिर कभी तुझ में सुनाई न देगा; २३ और दीया का उजाला फिर कभी तुझ में न चमकेगा और दूर्घटना का शब्द फिर कभी तुझ में सुनाई न देगा, क्योंकि तेरे व्यापारी पृथ्वी के प्रधान थे, और तेरे टोने से सब जातियाँ भरमई गई थीं। २४ और भविष्यद्वत्काओं और पवित्र लोगों, और पृथ्वी पर सब मेरे हुओं का लह उसी में पाया गया।”

१९ इसके बाद मैंने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ को ऊँचे शब्द से यह कहते

सुना, “हालेलूयाह! उड़ार, और महिमा, और सामर्थ्य हमारे परमेश्वर ही का है। १ क्योंकि उसके निर्णय सच्चे और ठीक हैं, इसलिए कि उसने उस बड़ी वेश्या का जो अपने व्यभिचार से पृथ्वी को भ्रष्ट करती थी, न्याय किया, और उससे अपने दासों के लह का पलटा लिया है।” २ फिर दूसरी बार उन्होंने कहा, “हालेलूयाह! उसके जलने का धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा।” (aiōn g165) ३ और चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने जिकर परमेश्वर को दण्डवत् किया; जो सिंहासन पर बैठा था, और कहा, “आमीना हालेलूयाह!” ४ और सिंहासन में से एक शब्द निकला, “हे हमारे परमेश्वर से सब डरनेवाले दासों, क्या छोटे, क्या बड़े; तुम सब उसकी स्तुति करो।” ५ फिर मैंने बड़ी भीड़ के जैसा और बहुत जल के जैसा शब्द, और गर्जनों के जैसा बड़ा शब्द सुना “हालेलूयाह! इसलिए कि प्रभु हमारा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान राज्य करता है। ६ आओ, हम आनन्दित और मग्न हों, और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मैंने का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हन ने अपने आपको तैयार कर लिया है। ७ उसको शट्टू और चमकदार महीन मलमल पहनने को दिया गया,” क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धार्मिक काम है। ८ तब स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, “यह लिख, कि धन्य वे हैं, जो मैंने के विवाह के भोज में बुलाए गए हैं।” फिर उसने मुझसे कहा, “ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं।” ९ तब मैं उसको दण्डवत् करने

के लिये उसके पाँवों पर गिरा। उसने मुझसे कहा, “ऐसा मत कर, मैं तेरा और तेरे भाइयों का संगी दास हूँ, जो यीश की गवाही देने पर स्थिर है। परमेश्वर ही को दण्डवत् कर।” क्योंकि यीश की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है। १० फिर मैंने स्वर्ग को खला हुआ देखा, और देखता हूँ कि एक व्येत घोड़ा है, और उस पर एक सवार है, जो विश्वासयोग्य, और सत्य कहलाता है; और वह धार्मिकता के साथ न्याय और लडाई करता है। ११ उसकी आँखें आग की ज्वाला हैं, और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं। और उसका एक नाम उस पर लिखा हुआ है, जिसे उसको छोड़ और कोई नहीं जानता। १२ वह लह मैं डुबोया हुआ बच पहने है, और उसका नाम ‘परमेश्वर का वचन’ है। १३ और स्वर्ग की सेना व्येत घोड़ों पर सवार और व्येत और शट्टू मलमल पहने हुए उसके पीछे-पीछे है। १४ जाति-जाति को मारने के लिये उसके मुँह से एक चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुण्ड में दाख रौंदेगा। १५ और उसके बच्चे और जाँघ पर यह नाम लिखा है: “राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।” १६ फिर मैंने एक स्वर्गदूत को सूर्य पर खड़े हुए देखा, और उसने बड़े शब्द से पुकारकर अकाश के बीच में से उड़नेवाले सब पक्षियों से कहा, “आओ, परमेश्वर के बड़े भोज के लिये इकट्ठे हो जाओ, १७ जिससे तुम राजाओं का माँस, और सरदारों का माँस, और शक्तिमान पुरुषों का माँस, और घोड़ों का और उनके सवारों का माँस, और क्या स्वतंत्र क्या दास, क्या छोटे क्या बड़े, सब लोगों का माँस खाओ।” १८ फिर मैंने उस पशु और पृथ्वी के राजाओं और उनकी सेनाओं को उस घोड़े के सवार, और उसकी सेना से लड़ने के लिये इकट्ठे देखा। १९ और वह पशु और उसके साथ वह झट्टा भविष्यद्वत्का पकड़ा गया, जिसने उसके सामने ऐसे चिन्ह दिखाए थे, जिनके द्वारा उसने उनको भरमाया, जिन पर उस पशु की छाप थी, और जो उसकी मृति की पूजा करते थे। ये दोनों जीते जी उस आग की झील में, जो गन्धक से जलती है, डाले गए। (Limné Pyr g3041 g4442) २० और शेष लोग उस घोड़े के सवार की तलवार से, जो उसके मुँह से निकलती थी, मार डाले गए; और सब पक्षी उनके माँस से तुम हो गए।

२० फिर मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा; जिसके हाथ में अथाह कुण्ड की कुँजी, और एक बड़ी जंजीर थी। (Abyssos g12) १ और उसने उस अजगर, अर्थात् पुराने साँप को, जो शैतान है; पकड़कर हजार वर्ष के लिये बाँध दिया, २ और उसे अथाह कुण्ड में डालकर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी, कि वह हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति-जाति के लोगों को फिर न भरमाए। इसके बाद अवश्य है कि थोड़ी देर के लिये फिर खोला जाए। (Abyssos g12) ३ फिर मैंने सिंहासन देखे, और उन पर लोग बैठ गए, और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया। और उनकी आत्माओं को भी देखा, जिनके सिर यीश की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे, और जिन्होंने न उस पशु की, और न उसकी मृति की पूजा की थी, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी। वे जीवित होकर मरीन के साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। ४ जब तक ये हजार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठे। यह तो पहला पुनर्स्थान है। ५ धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहले पुनर्स्थान का भासी है, ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे। ६ जब हजार वर्ष पूरे हो चुकेंगे तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। ७ और उन जातियों को जिनकी गिनती समुद्र की रेत के बराबर होगी, अर्थात् गोग और मागोग को जिनकी गिनती समुद्र की रेत के बराबर होगी, भरमाकर लडाई के लिये इकट्ठा करने को निकलेगा। ८ और वे

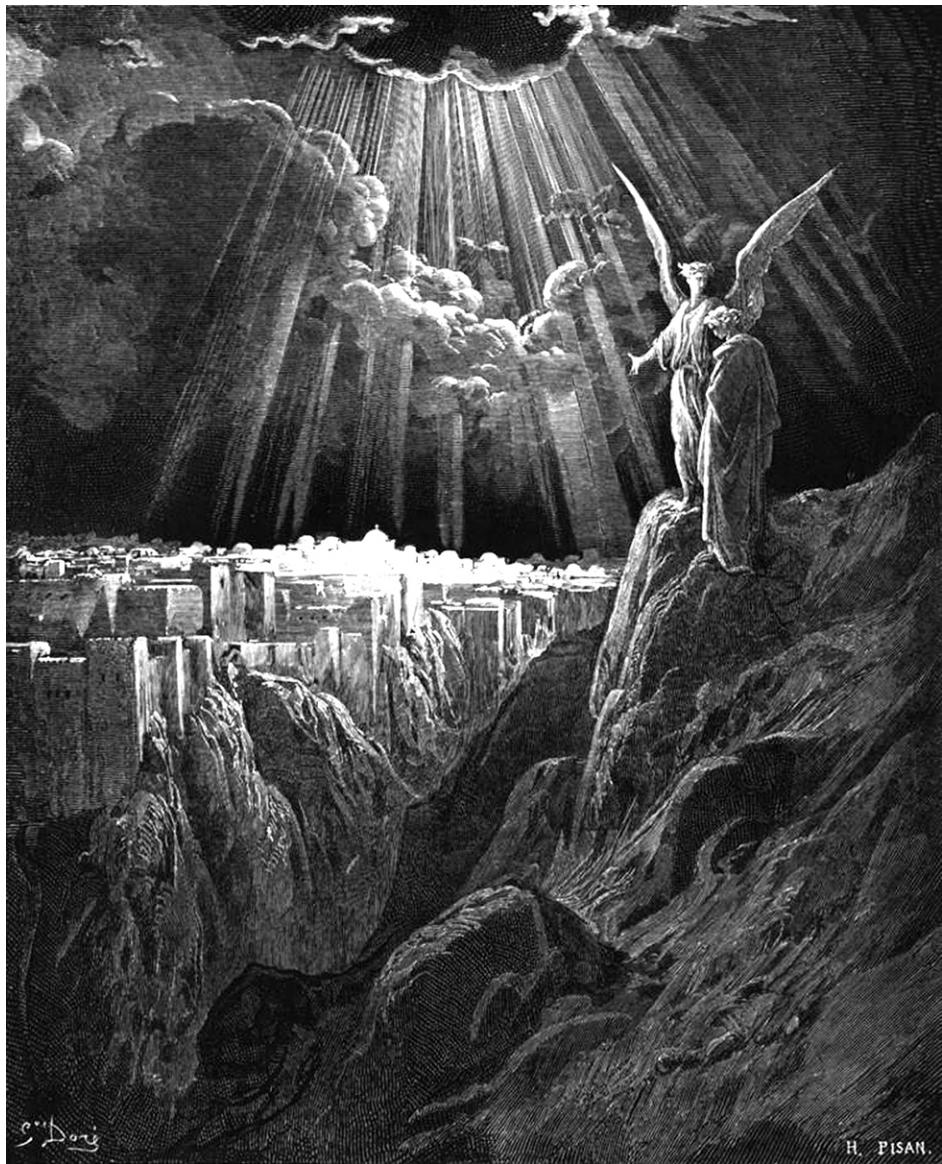
सारी पृथ्वी पर फैल जाएँगी और पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को धेर लौंगी और आग स्वर्ग से उतरकर उन्हें भस्म करेगी। १० और उनका भरमानेवाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में, जिसमें वह पशु और झटा भविष्यद्वाका भी होगा, डाल दिया जाएगा; और वे रात-दिन युग्मनुग्मा पीड़ा में तडपते रहेंगे। (aiōn g165, Limnē Pyr g3041 g4442) ११ फिर मैंने एक बड़ा चेत सिंहासन और उसको जो उस पर बैठा हुआ है, देखा, जिसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिये जगह न मिली। १२ फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खेड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात् जीवन की पुस्तक, और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। १३ और समृद्ध ने उन मरे हुओं को जो उसमें थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक में उन मरे हुओं को जो उनमें थे दे दिया; और उनमें से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया। (Hadēs g86) १४ और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए। यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। (Hadēs g86, Limnē Pyr g3041 g4442) १५ और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया। (Limnē Pyr g3041 g4442)

२१ फिर मैंने नये आकाश और नई पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समृद्ध भी न रहा। २२ फिर मैंने पवित्र नगर नये यस्त्वालेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उत्तर देखा, और वह उस दुर्लहन के समान थी, जो अपने दुर्लहे के लिये श्रूगार किए हो। २३ फिर मैंने सिंहासन में से किंची को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, “देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच मैं हूँ; वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा।” २४ और वह उनकी ऊँचों से सब ऊँपूँ पौछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रही। २५ और जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, “मैं सब कुछ नया कर देता हूँ।” २६ फिर उसने कहा, “लिख ले, क्योंकि ये वचन विवासयोग और सत्य है।” २७ फिर उसने मुझसे कहा, “ये बातें पूरी हो गई हैं। मैं अल्पा और ओमेगा, आदि और अन्त हूँ। मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंट-मेंट पिलाऊँगा।” २८ जो जय पाए, वही उन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा, और वह मेरा पुत्र होगा। २९ परन्तु डरपोकों, अविवासियों, घिनौनों, हत्यारों, व्यभिचारियों, टोन्हों, मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है। (Limnē Pyr g3041 g4442) ३० फिर जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात अन्तिम विपत्तियों से भरे हुए सात कटोरे थे, उनमें से एक मेरे पास आया, और मेरे साथ बातें करके कहा, “इधर आ, मैं तुझे दुर्लहन अर्थात् मैंने की पत्नी दिखाऊँगा।” ३१ और वह मुझे आत्मा में, एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और पवित्र नगर यस्त्वालेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उत्तर दिखाया। ३२ परमेश्वर की महिमा उसमें थी, और उसकी ज्योति बहुत ही बहुमूल्य पत्थर, अर्थात् बिल्लौर के समान यशब की तरह स्वच्छ थी। ३३ और उसकी शहरपनाह बड़ी ऊँची थी, और उसके बारह फाटक और फाटकों पर बारह स्वर्गदूत थे; और उन फाटकों पर इमाएलियों के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे। ३४ पूर्व की ओर तीन फाटक, उत्तर की ओर तीन फाटक, दक्षिण की ओर तीन फाटक, और पश्चिम की ओर तीन फाटक थे। ३५ और नगर की शहरपनाह की बारह नीरें थीं, और उन पर मैने के बारह प्रेरितों के

बारह नाम लिखे थे। ३६ जो मेरे साथ बातें कर रहा था, उसके पास नगर और उसके फाटकों और उसकी शहरपनाह को नापने के लिये एक सोने का गज था। ३७ वह नगर वार्गाकार बसा हुआ था और उसकी लम्बाई, चौड़ाई के बराबर थी, और उसने उस गज से नगर को नापा, तो साढ़े सात सौ कोस का निकला: उसकी लम्बाई, और चौड़ाई, और ऊँचाई बराबर थी। ३८ और उसने उसकी शहरपनाह को मनुष्य के, अर्थात् स्वर्गदूत के नाप से नापा, तो एक सौ चौबालीस हाथ निकली। ३९ उसकी शहरपनाह यशब की बनी थी, और नगर ऐसे शुद्ध सोने का था, जो स्वच्छ काँच के समान हो। ४० उस नगर की नीरें हर प्रकार के बहुमूल्य पत्थरों से संवारी हुई थी, पहली नीर यशब की, दूसरी नीलमणि की, तीसरी लालडी की, चौथी मरकत की, ४१ पाँचवीं गोमेटक की, छठवीं माणिक्य की, सातवीं पीतमणि की, आठवीं पेरोज की, नौवीं पुखराज की, दसवीं लहसनिए की, ग्यारहवीं धूम्रकान्त की, बारहवीं याकूत की थी। ४२ और बारहों फाटक, बारह मोतियों के थे; एक-एक फाटक, एक-एक मोती का बना था। और नगर की सड़क स्वच्छ काँच के समान शुद्ध सोने की थी। ४३ मैंने उसमें कोई मन्दिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मैना उसका मन्दिर है। ४४ और उस नगर में सूर्य और चाँद के उजियाला हो रहा है, और मैना उसका दीपक है। ४५ जाति-जाति के लोग उसकी ज्योति में चले-फिरे, और पृथ्वी के राजा अपने-अपने तेज का सामान उसमें लाएँगे। ४६ उसके फाटक दिन को कभी बन्द न होंगे, और रात वहाँ न होगी। ४७ और लोग जाति-जाति के तेज और वैभव का सामान उसमें लाएँगे। ४८ और उसमें कोई अपवित्र वस्तु या धृष्टिकाम करनेवाला, या झूठ का गढ़नेवाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा; पर केवल वे लोग जिनके नाम मैने की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।

२९ फिर उसने मुझे बिल्लौर के समान झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मैने के सिंहासन से निकलकर, २० उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का पेड था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस पेड के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे। ४९ फिर शाप न होगा, और परमेश्वर और मैने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उसकी सेवा करेंगे। ५० वे उसका मुँह देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। ५१ और फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले की आवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा, और वे युग्मनुग्मा राज्य करेंगे। (aiōn g165) ५२ फिर उसने मुझसे कहा, “ये बातें विवासयोग और सत्य हैं। और प्रभु ने, जो भविष्यद्वाकाओं की आत्माओं का परमेश्वर है, अपने स्वर्गदूत को इसलिए भेजा कि अपने दासों को वे बातें सुनता, और देखता था। और जब मैंने सुना और देखा, तो जो स्वर्गदूत मुझे ये बातें दिखाता था, मैं उसके पाँवों पर दण्डवत करने के लिये पिर पड़ा। ५३ पर उसने मुझसे कहा, “देख, ऐसा मत कर; क्योंकि मैं तेरा भाई भविष्यद्वाकाओं और इस पुस्तक की बातों को बन्द मत कर; क्योंकि समय निकट है। ५४ जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे।” ५५ “देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ, धन्य है वह, जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाकाओं की बातें मानता है।” ५६ मैं वही यहन्ना हूँ, जो ये बातें सुनता, और देखता था। और जब जब मैंने सुना और देखा, तो जो स्वर्गदूत मुझे ये बातें दिखाता था, मैं उसके पाँवों पर दण्डवत करने के लिये पिर पड़ा। ५७ पर उसने मुझसे कहा, “देख, ऐसा मत कर; क्योंकि मैं तेरा भाई भविष्यद्वाकाओं और इस पुस्तक की बातों के माननेवालों का संगी दास हूँ, परमेश्वर ही की आराधना कर।” ५८ फिर उसने मुझसे कहा, “इस पुस्तक की भविष्यद्वाकाओं की बातों को बन्द मत कर; क्योंकि समय निकट है। ५९ जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे।” ६० “देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ,

हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है। १३ मैं अल्पा और ओमेगा, पहला और अन्तिम, आदि और अन्त हूँ।” १४ “धन्य वे हैं, जो अपने वृक्ष धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे। १५ पर कुते, टोन्हें, व्याभिचारी, हत्यारे, मृतिपूजक, हर एक झट का चाहनेवाला और गढ़नेवाला बाहर रहेगा। १६ “मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को इसलिए भेजा, कि तुम्हारे आगे कलीसियाओं के विषय में इन बातों की गवाही दे। मैं दाऊद का मूल और वंश, और भोर का चमकता हुआ तारा हूँ।” १७ और आत्मा, और दुल्हन दोनों कहती है, “आ!” और सुननेवाला भी कहे, “आ!” और जो प्यासा हो, वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सैत-मैत ले। १८ मैं हर एक को, जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूँ: यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। १९ और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से, जिसका वर्णन इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा। २० जो इन बातों की गवाही देता है, वह यह कहता है, “हाँ, मैं शीघ्र अनेवाला हूँ।” आपीन। हे प्रभु यीशु आ! २१ प्रभु यीशु का अनुग्रह पवित्र लोगों के साथ रहे। आपीन।



H. PISAN.

फिर मैंने पवित्र नगर नये यस्शलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हन के समान थी, जो अपने दुर्ल्हेके लिये शृंगार किए हो। फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, “देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा।

प्रकाशित वाक्य २१:२३

पाठक गाइड

हिन्दी at AionianBible.org/Readers-Guide

The Aionian Bible republishes public domain and Creative Common Bible texts that are 100% free to copy and print. The original translation is unaltered and notes are added to help your study. The notes show the location of ten special Greek and Hebrew Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and for all mankind, and the nature of afterlife destinies.

Who has the authority to interpret the Bible and examine the underlying Hebrew and Greek words? That is a good question! We read in 1 John 2:27, “*As for you, the anointing which you received from him remains in you, and you do not need for anyone to teach you. But as his anointing teaches you concerning all things, and is true, and is no lie, and even as it taught you, you remain in him.*” Every Christian is qualified to interpret the Bible! Now that does not mean we will all agree. Each of us is still growing in our understanding of the truth. However, it does mean that there is no infallible human or tradition to answer all our questions. Instead the Holy Spirit helps each of us to know the truth and grow closer to God and each other.

The Bible is a library with 66 books in the Protestant Canon. The best way to learn God's word is to read entire books. Read the book of Genesis. Read the book of John. Read the entire Bible library. Topical studies and cross-referencing can be good. However, the safest way to understand context and meaning is to read whole Bible books. Chapter and verse numbers were added for convenience in the 16th century, but unfortunately they can cause the Bible to seem like an encyclopedia. The Aionian Bible is formatted with simple verse numbering, minimal notes, and no cross-referencing in order to encourage the reading of Bible books.

Bible reading must also begin with prayer. Any Christian is qualified to interpret the Bible with God's help. However, this freedom is also a responsibility because without the Holy Spirit we cannot interpret accurately. We read in 1 Corinthians 2:13-14, “*And we speak of these things, not with words taught by human wisdom, but with those taught by the Spirit, comparing spiritual things with spiritual things. Now the natural person does not receive the things of the Spirit of God, for they are foolishness to him, and he cannot understand them, because they are spiritually discerned.*” So we cannot understand in our natural self, but we can with God's help through prayer.

The Holy Spirit is the best writer and he uses literary devices such as introductions, conclusions, paragraphs, and metaphors. He also writes various genres including historical narrative, prose, and poetry. So Bible study must spiritually discern and understand literature. Pray, read, observe, interpret, and apply. Finally, “*Do your best to present yourself approved by God, a worker who does not need to be ashamed, properly handling the word of truth.*” 2 Timothy 2:15. “*God has granted to us his precious and exceedingly great promises; that through these you may become partakers of the divine nature, having escaped from the corruption that is in the world by lust. Yes, and for this very cause adding on your part all diligence, in your faith supply moral excellence; and in moral excellence, knowledge; and in knowledge, self-control; and in self-control patience; and in patience godliness; and in godliness brotherly affection; and in brotherly affection, love. For if these things are yours and abound, they make you to be not idle nor unfruitful to the knowledge of our Lord Jesus Christ,*” 2 Peter 1:4-8.

शब्दकोष

हिन्दी at AionianBible.org/Glossary

The Aionian Bible un-translates and instead transliterates ten special words to help us better understand the extent of God's love for individuals and all mankind, and the nature of afterlife destinies. The original translation is unaltered and a note is added to 64 Old Testament and 201 New Testament verses. Compare the meanings below to the Strong's Concordance and Glossary definitions.

Abyssos g12

Greek: proper noun, place

Usage: 9 times in 3 books, 6 chapters, and 9 verses

Meaning:

Temporary prison for special fallen angels such as Apollyon, the Beast, and Satan.

aïdios g126

Greek: adjective

Usage: 2 times in Romans 1:20 and Jude 6

Meaning:

Lasting, enduring forever, eternal.

aiōn g165

Greek: noun

Usage: 127 times in 22 books, 75 chapters, and 102 verses

Meaning:

A lifetime or time period with a beginning and end, an era, an age, the completion of which is beyond human perception, but known only to God the creator of the aiōns, Hebrews 1:2. Never meaning simple endless or infinite chronological time in Greek usage. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs.

aiōnios g166

Greek: adjective

Usage: 71 times in 19 books, 44 chapters, and 69 verses

Meaning:

From start to finish, pertaining to the age, lifetime, entirety, complete, or even consummate. Never meaning simple endless or infinite chronological time in Koine Greek usage. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs.

eleēsē g1653

Greek: verb, aorist tense, active voice, subjunctive mood, 3rd person singular

Usage: 1 time in this conjugation, Romans 11:32

Meaning:

To have pity on, to show mercy. Typically, the subjunctive mood indicates possibility, not certainty. However, a subjunctive in a purpose clause is a resulting action as certain as the causal action. The subjunctive in a purpose clause functions as an indicative, not an optative. Thus, the grand conclusion of grace theology in Romans 11:32 must be clarified. God's mercy on all is not a possibility, but a certainty. See ntgreek.org.

Geenna g1067

Greek: proper noun, place

Usage: 12 times in 4 books, 7 chapters, and 12 verses

Meaning:

Valley of Hinnom, Jerusalem's trash dump, a place of ruin, destruction, and judgment in this life, or the next, though not eternal to Jesus' audience.

Hadēs g86

Greek: proper noun, place

Usage: 11 times in 5 books, 9 chapters, and 11 verses

Meaning:

Synonomous with Sheol, though in New Testament usage Hades is the temporal place of punishment for deceased unbelieving mankind, distinct from Paradise for deceased believers.

Limnē Pyr g3041 g4442

Greek: proper noun, place

Usage: Phrase 5 times in the New Testament

Meaning:

Lake of Fire, final punishment for those not named in the Book of Life, prepared for the Devil and his angels, Matthew 25:41.

Sheol h7585

Hebrew: proper noun, place

Usage: 66 times in 17 books, 50 chapters, and 64 verses

Meaning:

The grave or temporal afterlife world of both the righteous and unrighteous, believing and unbelieving, until the general resurrection.

Tartaroō g5020

Greek: proper noun, place

Usage: 1 time in 2 Peter 2:4

Meaning:

Temporary prison for particular fallen angels awaiting final judgment.

शब्दकोष +

AionianBible.org/Bibles/Hindi---Hindi-Bible/Noted

Glossary references are below. Strong's Hebrew and Greek number notes are added to 64 Old Testament and 201 New Testament verses. Questioned verse translations do not contain Aionian Glossary words and may wrongly imply *eternal* or *Hell*. * The note placement is skipped or adjusted for verses with non-standard numbering.

Abyssos

लूका ८:३१
रोमियो १०:७
प्रकाशित वाक्य १:१
प्रकाशित वाक्य १:२
प्रकाशित वाक्य १:११
प्रकाशित वाक्य ११:७
प्रकाशित वाक्य १७:८
प्रकाशित वाक्य २०:१
प्रकाशित वाक्य २०:३

aīdios

रोमियो १:२०
यहदा १:६

aiōn

मर्ती १२:३२
मर्ती १३:२२
मर्ती १३:२९
मर्ती १३:४०
मर्ती १३:४९
मर्ती २१:११
मर्ती २४:३
मर्ती २८:२०
मरकुस ३:२९
मरकुस ४:११
मरकुस १०:३०
मरकुस ११:१४
लूका १:३३
लूका १:५५
लूका १:६०
लूका १६:८
लूका १८:३०
लूका २०:३४
लूका २०:३५
यहन्ना ४:१४
यहन्ना ६:५१
यहन्ना ६:५८
यहन्ना ८:३५
यहन्ना ८:५१
यहन्ना ८:५२
यहन्ना ९:३२
यहन्ना १०:२८
यहन्ना ११:२६
यहन्ना १२:३४
यहन्ना १३:८
यहन्ना १४:१६

प्रेरितों के काम ३:२१

प्रेरितों के काम १५:१८

रोमियो १:२५

रोमियो १:५

रोमियो १५:३६

रोमियो १२:२

रोमियो १६:२७

१ कुरिन्थियो १:२०

१ कुरिन्थियो २:६

१ कुरिन्थियो २:७

१ कुरिन्थियो २:८

१ कुरिन्थियो ३:१८

१ कुरिन्थियो ८:३

१ कुरिन्थियो १०:११

२ कुरिन्थियो ४:४

२ कुरिन्थियो ९:९

२ कुरिन्थियो ११:३१

गलातियो १:४

गलातियो १:५

इफिसियो १:१९

इफिसियो २:२

इफिसियो २:७

इफिसियो ३:९

इफिसियो ३:१९

इफिसियो ३:२९

इफिसियो ६:२९

फिलिप्पियो ४:२०

कुर्लसियो १:२६

१ तीमथियुस १:१७

१ तीमथियुस ६:१७

२ तीमथियुस ४:१०

२ तीमथियुस ४:१८

तीतुस २:३२

इत्रानियो १:२

इत्रानियो १:८

इत्रानियो ५:६

इत्रानियो ६:५

इत्रानियो ६:२०

इत्रानियो ७:१७

इत्रानियो ७:२१

इत्रानियो ७:२४

इत्रानियो ७:२८

इत्रानियो ९:२६

इत्रानियो ११:३

इत्रानियो १३:८

इत्रानियो १३:११

१ पतरस १:२३

१ पतरस १:२५

१ पतरस ४:१९

१ पतरस ५:१९

२ पतरस ३:१८

१ यहन्ना २:१७

२ यहन्ना १:२

यहदा १:१३

यहदा १:२५

प्रकाशित वाक्य १:६

प्रकाशित वाक्य १:१८

प्रकाशित वाक्य ४:९

प्रकाशित वाक्य ४:१०

प्रकाशित वाक्य ५:१३

प्रकाशित वाक्य ७:२

प्रकाशित वाक्य १०:६

प्रकाशित वाक्य ११:१५

प्रकाशित वाक्य १४:११

प्रकाशित वाक्य १५:७

प्रकाशित वाक्य १९:३

प्रकाशित वाक्य २०:१०

प्रकाशित वाक्य २२:५

aiōnios

मर्ती १८:८

मर्ती १९:१६

मर्ती १९:२९

मर्ती २५:४१

मर्ती २५:४६

मरकुस ३:२९

मरकुस ४०:१७

मरकुस ४०:३०

लका १०:२५

लका १५:९

लका १८:१८

लका १८:३०

यहन्ना ३:१५

यहन्ना ३:१६

यहन्ना ३:३६

यहन्ना ४:१४

यहन्ना ४:३६

यहन्ना ५:४८

यहन्ना ५:३९

यहन्ना ६:२७

यहन्ना ६:४०

यहन्ना ६:४७

यहन्ना ६:५४

यहन्ना ६:६८

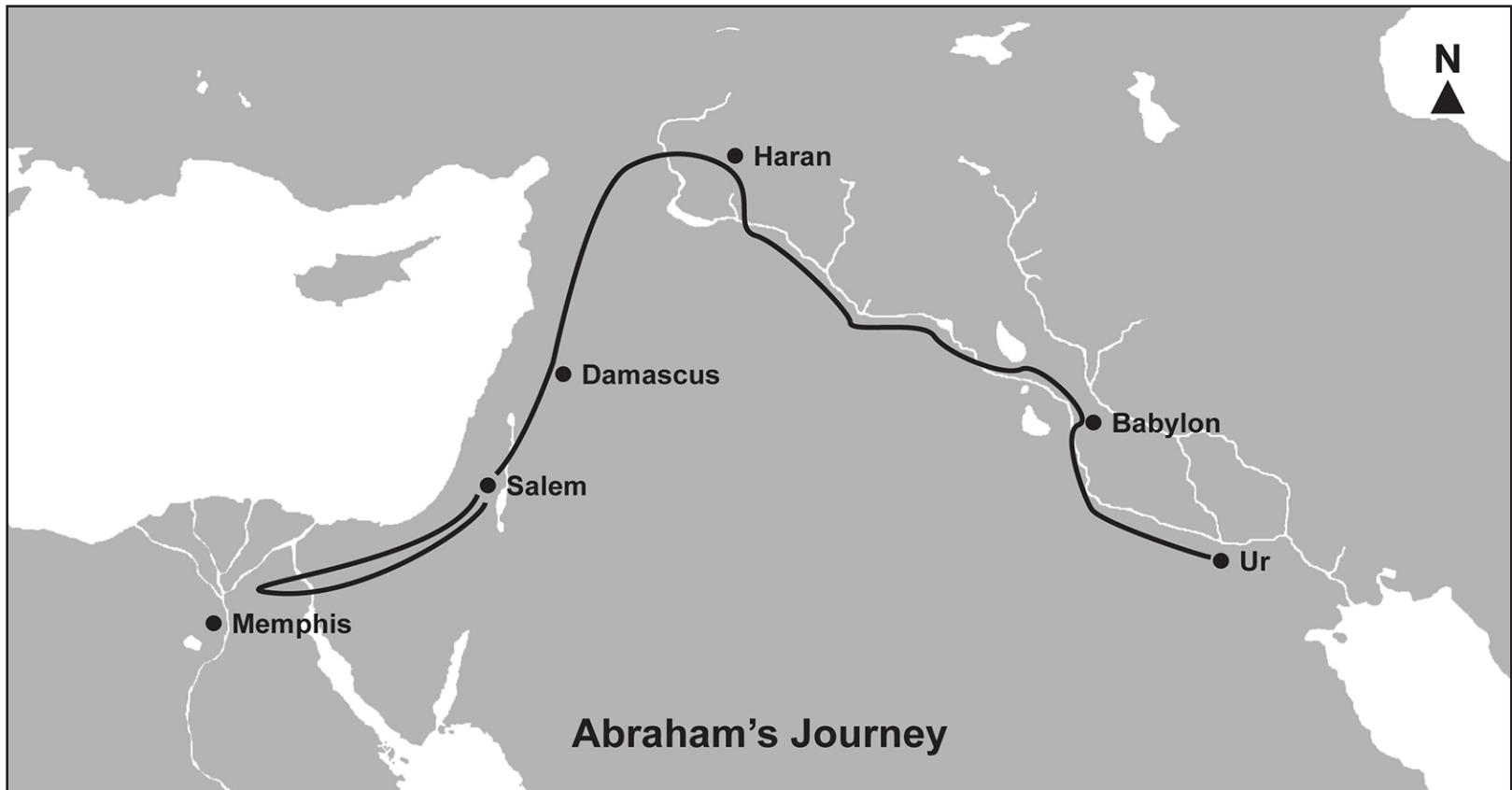
यहन्ना १०:२८
 यहन्ना १२:२५
 यहन्ना १२:५०
 यहन्ना १७:२
 यहन्ना १७:३
 प्रेरितों के काम १३:४६
 प्रेरितों के काम १३:४८
 रोमियो २:७
 रोमियो ५:२१
 रोमियो ६:२२
 रोमियो ६:२३
 रोमियो १६:२५
 रोमियो १६:२६
 २ कृपिन्थियों ४:७
 २ कृपिन्थियों ४:८
 २ कृपिन्थियों ५:१
 गलातियों ६:८
 २ थिस्सलुनीकियों १:९
 २ थिस्सलुनीकियों २:१६
 १ तीमुथियुस १:१६
 १ तीमुथियुस ६:२२
 १ तीमुथियुस ६:२६
 १ तीमुथियुस ६:११
 २ तीमुथियुस १:९
 २ तीमुथियुस २:१०
 तीतुस १:२
 तीतुस ३:७
 फिलेमोन १:१५
 इवानियों ५:९
 इवानियों ६:२
 इवानियों ९:१२
 इवानियों ९:१४
 इवानियों ९:१५
 इवानियों ९:२०
 १ पतरस ५:१०
 २ पतरस १:११
 १ यहना १:२
 १ यहना २२५
 १ यहना ३:१५
 १ यहना ५:११
 १ यहना ५:१३
 १ यहना ५:२०
 यहदा १:७
 यहदा १:२१
 प्रकाशित वाक्य १४:६
eleēsē
 रोमियो ११:३२

Geenna
 मत्ती ५:२२
 मत्ती ५:२९
 मत्ती ५:३०
 मत्ती १०:२८
 मत्ती १८:९
 मत्ती २३:१५
 मत्ती २३:३३

मरकुस ९:४३
 मरकुस ९:४५
 मरकुस ९:४७
 लका १२:५
 याकूब ३:६
Hades
 मत्ती ११:२३
 मत्ती १६:१८
 लका १०:१५
 लका १६:२३
 प्रेरितों के काम २:२७
 प्रेरितों के काम २:३१
 १ कृपिन्थियों १५:५
 प्रकाशित वाक्य १:१८
 प्रकाशित वाक्य ६:८
 प्रकाशित वाक्य २०:१३
 प्रकाशित वाक्य २०:१४
Limnē Pyr
 प्रकाशित वाक्य १९:२०
 प्रकाशित वाक्य २०:१०
 प्रकाशित वाक्य २०:१४
 प्रकाशित वाक्य २०:१५
 प्रकाशित वाक्य २०:१८
Sheol
 उत्पत्ति ३७:३५
 उत्पत्ति ४२:३८
 उत्पत्ति ४४:२९
 उत्पत्ति ४४:३१
 गिनती १६:३०
 गिनती १६:३३
 व्यवस्था विवरण ३२:२२
 १ शमूएल २:६
 २ शमूएल २२:६
 १ राजा २:६
 १ राजा २:९
 अव्यूब ७:९
 अव्यूब ११:८
 अव्यूब १४:१३
 अव्यूब १७:१३
 अव्यूब १७:१६
 अव्यूब २१:१३
 अव्यूब २४:१९
 अव्यूब २६:६
 भजन संहिता ६:५
 भजन संहिता ९:१७
 भजन संहिता १६:१०
 भजन संहिता १८:५
 भजन संहिता ३०:३
 भजन संहिता ३१:१७
 भजन संहिता ४९:१४
 भजन संहिता ४९:१५
 भजन संहिता ५५:१५
 भजन संहिता ५६:१३
 भजन संहिता ८८:३

भजन संहिता ८९:४८
 भजन संहिता ११६:३
 भजन संहिता १३९:८
 भजन संहिता १४१:७
 नीतिवचन १:१३
 नीतिवचन ५:५
 नीतिवचन ७:२७
 नीतिवचन ९:१८
 नीतिवचन १५:११
 नीतिवचन १५:२४
 नीतिवचन २३:१४
 नीतिवचन २०:२०
 नीतिवचन ३०:१६
 सभोपदेशक ९:१०
 श्रेष्ठीत ८:६
 यशायाह ५:१४
 यशायाह ७:११
 यशायाह १४:१
 यशायाह १४:११
 यशायाह १४:१५
 यशायाह २८:४५
 यशायाह २८:४८
 यशायाह ३८:१०
 यशायाह ३८:१८
 यशायाह ५७:९
 यहेजकेल ३१:१५
 यहेजकेल ३१:१६
 यहेजकेल ३१:१७
 यहेजकेल ३२:२१
 यहेजकेल ३२:२७
 होशे १३:१४
 आमोस ९:२
 योना २:२
 हबवकूक २:५
Tartaroō
 २ पतरस २:४

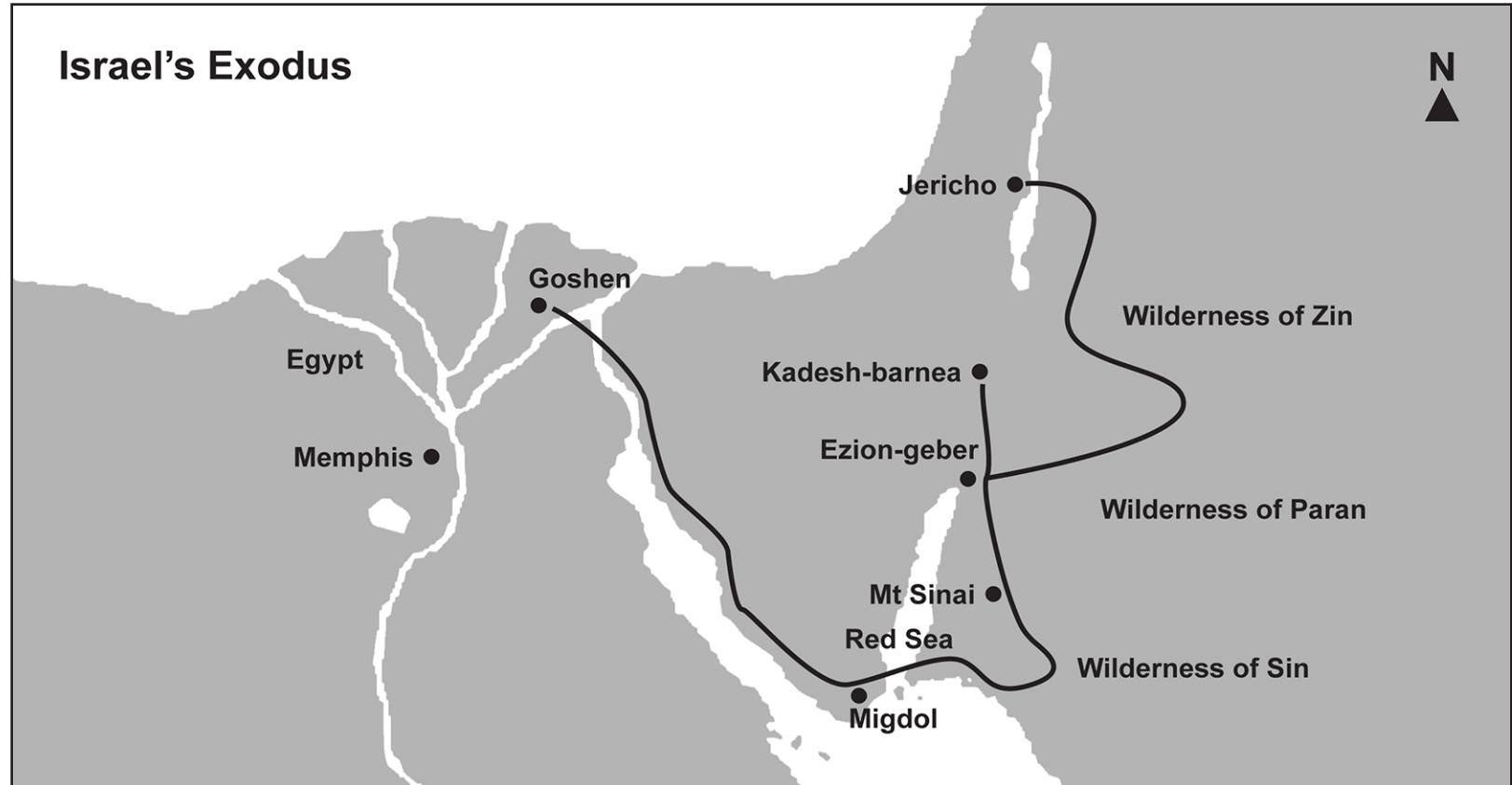
Questioned
 २ पतरस २:१७



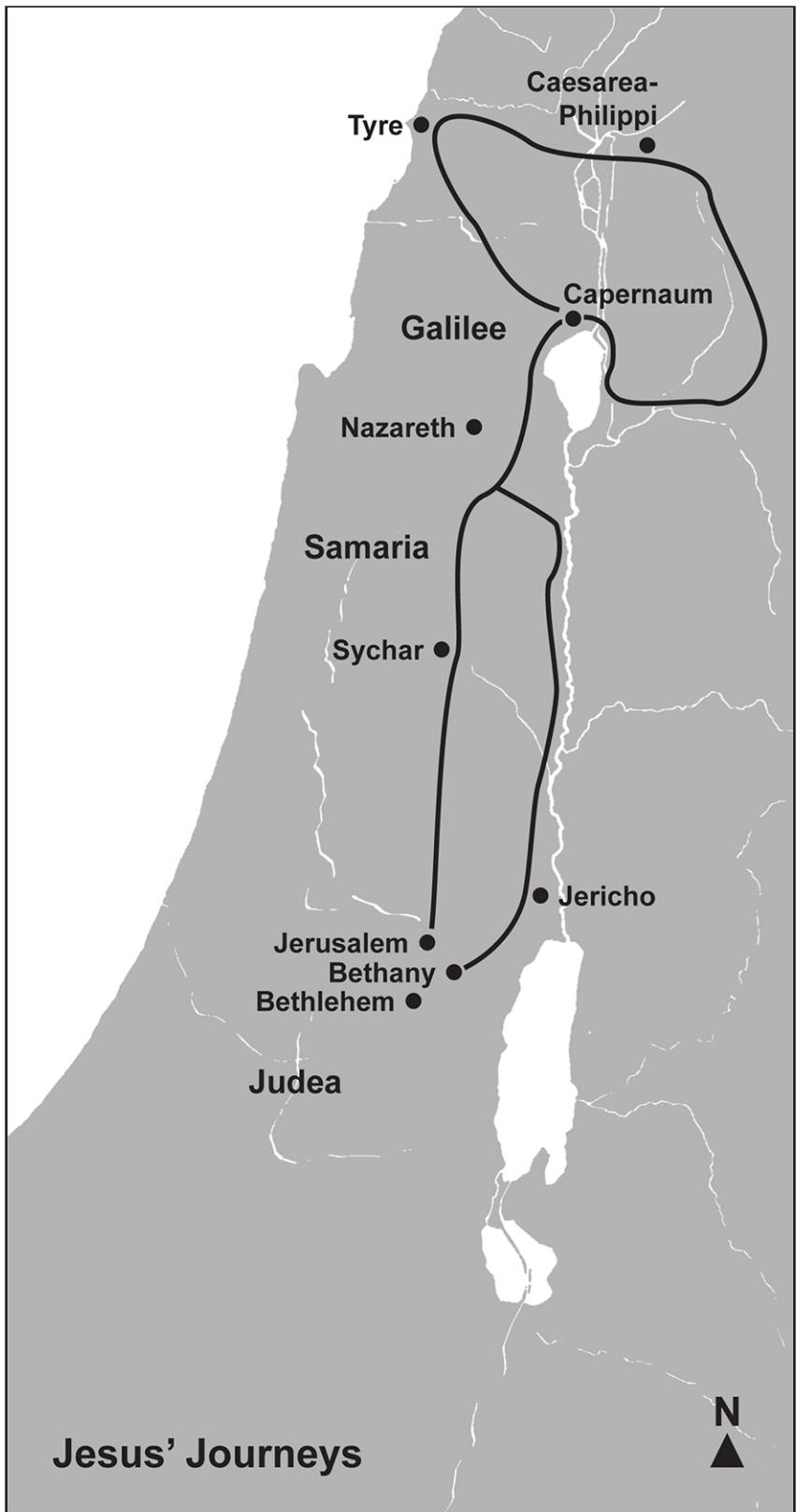
विश्वास ही से अब्राहम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे विरासत में लेनेवाला था, और यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूँ; तो भी निकल गया। - इब्रानियों ११:८

Israel's Exodus

N



जब फिरैन ने लोगों को जाने की आज्ञा दे दी, तब यद्यपि पलिशियों के देश में होकर जो मार्ग जाता है वह छोटा था;
तो भी परमेश्वर यह सोचकर उनको उस मार्ग से नहीं ले गया कि कहीं ऐसा न हो कि जब ये लोग लडाई देखें तब पछताकर मिस्र को लौट आएँ। - निर्गमन १३:१७



वर्णोकि: मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया, कि उसकी सेवा ठहर की जाए, पर इसलिए अत्या, कि आप सेवा ठहर करें, और बहुतों के छुटकारे के लिये अपना प्राण दें। - मार्कुस १०:४५



पौत्रुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है, और प्रेरित होने के लिये बुलाया गया, और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिये अलग किया गया है - रोमियों १:१

Creation 4004 B.C.

Adam and Eve created	4004
Tubal-cain forges metal	3300
Enoch walks with God	3017
Methuselah dies at age 969	2349
God floods the Earth	2349
Tower of Babel thwarted	2247
Abraham sojourns to Canaan	1922
Jacob moves to Egypt	1706
Moses leads Exodus from Egypt	1491
Gideon judges Israel	1245
Ruth embraces the God of Israel	1168
David installed as King	1055
King Solomon builds the Temple	1018
Elijah defeats Baal's prophets	896
Jonah preaches to Nineveh	800
Assyrians conquer Israelites	721
King Josiah reforms Judah	630
Babylonians capture Judah	605
Persians conquer Babylonians	539
Cyrus frees Jews, rebuilds Temple	537
Nehemiah rebuilds the wall	454
Malachi prophesies the Messiah	416
Greeks conquer Persians	331
Seleucids conquer Greeks	312
Hebrew Bible translated to Greek	250
Maccabees defeat Seleucids	165
Romans subject Judea	63
Herod the Great rules Judea	37

(The Annals of the World, James Usher)

Jesus Christ born 4 B.C.

New Heavens and Earth

1956	Christ returns for his people
1830	Jim Elliot martyred in Ecuador
1731	John Williams reaches Polynesia
1614	Zinzendorf leads Moravian mission
1572	Japanese kill 40,000 Christians
1517	Jesuits reach Mexico
1455	Martin Luther leads Reformation
1323	Gutenberg prints first Bible
1276	Franciscans reach Sumatra
1100	Ramon Llull trains missionaries
1054	Crusades tarnish the church
997	The Great Schism
864	Adalbert martyred in Prussia
716	Bulgarian Prince Boris converts
635	Boniface reaches Germany
569	Alopen reaches China
432	Longinus reaches Alodia / Sudan
397	Saint Patrick reaches Ireland
341	Carthage ratifies Bible Canon
325	Ulfilas reaches Goth / Romania
250	Niceae proclaims God is Trinity
197	Denis reaches Paris, France
70	Tertullian writes Christian literature
61	Paul imprisoned in Rome, Italy
52	Thomas reaches Malabar, India
39	Peter reaches Gentile Cornelius
33	Holy Spirit empowers the Church

(Wikipedia, Timeline of Christian missions)

Resurrected 33 A.D.

What are we? ►			Genesis 1:26 - 2:3 Mankind is created in God's image, male and female He created us					
How are we sinful? ►			Romans 5:12-19 Sin entered the world through Adam and then death through sin					
When are we? ▼								
Where are we?			Innocence		Fallen			Glory
			Eternity Past	Creation 4004 B.C.	Fall to sin No Law	Moses' Law 1500 B.C.	Christ 33 A.D.	Church Age Kingdom Age
								New Heavens and Earth
► Who are we?	God	Father	John 10:30 God's perfect fellowship	Genesis 1:31 God's perfect fellowship with Adam in The Garden of Eden	1 Timothy 6:16 Living in unapproachable light			Acts 3:21 Philippians 2:11 Revelation 20:3 God's perfectly restored fellowship with all Mankind praising Christ as Lord in the Holy City
		Son			John 8:58 Pre-incarnate	John 1:14 Incarnate	Luke 23:43 Paradise	
		Holy Spirit			Psalm 139:7 Everywhere	John 14:17 Living in believers		
	Mankind	Living	Ephesians 2:1-5 Serving the Savior or Satan on Earth Luke 16:22 Blessed in Paradise Luke 16:23, Revelation 20:5,13 Punished in Hades until the final judgment Hebrews 1:14 Serving mankind at God's command	Genesis 1:1 No Creation No people	Ephesians 2:1-5 Serving the Savior or Satan on Earth			Matthew 25:41 Revelation 20:10 Lake of Fire prepared for the Devil and his Angels
		Deceased believing			Luke 16:22 Blessed in Paradise			
		Deceased unbelieving			Luke 16:23, Revelation 20:5,13 Punished in Hades until the final judgment			
	Angels	Holy			Hebrews 1:14 Serving mankind at God's command			
		Imprisoned	2 Peter 2:4, Jude 6 Imprisoned in Tartarus Revelation 20:13 Thalaasa	Genesis 1:31 No Fall No unholy Angels	2 Peter 2:4, Jude 6 Imprisoned in Tartarus	Matthew 25:41 Revelation 20:10 Lake of Fire prepared for the Devil and his Angels		
		Fugitive			1 Peter 5:8, Revelation 12:10 Rebelling against Christ Accusing mankind			
		First Beast					Revelation 19:20 Lake of Fire	
		False Prophet					Revelation 20:2 Abyss	
		Satan						
Why are we? ►			Romans 11:25-36, Ephesian 2:7 For God has bound all over to disobedience in order to show mercy to all					

नियति

हिन्दी at AionianBible.org/Destiny

The Aionian Bible shows the location of ten special Greek and Hebrew Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and for all mankind, and the nature of after-life destinies. The underlying Hebrew and Greek words typically translated as *Hell* show us that there are not just two after-life destinies, Heaven or Hell. Instead, there are a number of different locations, each with different purposes, different durations, and different inhabitants. Locations include 1) Old Testament *Sheol* and New Testament *Hadēs*, 2) *Geenna*, 3) *Tartaroō*, 4) *Abyssos*, 5) *Limnē Pyr*, 6) *Paradise*, 7) *The New Heaven*, and 8) *The New Earth*. So there is reason to review our conclusions about the destinies of redeemed mankind and fallen angels.

The key observation is that fallen angels will be present at the final judgment, 2 Peter 2:4 and Jude 6. Traditionally, we understand the separation of the Sheep and the Goats at the final judgment to divide believing from unbelieving mankind, Matthew 25:31-46 and Revelation 20:11-15. However, the presence of fallen angels alternatively suggests that Jesus is separating redeemed mankind from the fallen angels. We do know that Jesus is the helper of mankind and not the helper of the Devil, Hebrews 2. We also know that Jesus has atoned for the sins of all mankind, both believer and unbeliever alike, 1 John 2:1-2. Deceased believers are rewarded in Paradise, Luke 23:43, while unbelievers are punished in Hades as the story of Lazarus makes plain, Luke 16:19-31. Yet less commonly known, the punishment of this selfish man and all unbelievers is before the final judgment, is temporal, and is punctuated when Hades is evacuated, Revelation 20:13. So is there hope beyond Hades for unbelieving mankind? Jesus promised, "*the gates of Hades will not prevail,*" Matthew 16:18. Paul asks, "*Hades where is your victory?*" 1 Corinthians 15:55. John wrote, "*Hades gives up,*" Revelation 20:13.

Jesus comforts us saying, "*Do not be afraid,*" because he holds the keys to *unlock* death and Hades, Revelation 1:18. Yet too often our *Good News* sounds like a warning to "*be afraid*" because Jesus holds the keys to *lock* Hades! Wow, we have it backwards! Hades will be evacuated! And to guarantee hope, once emptied, Hades is thrown into the Lake of Fire, never needed again, Revelation 20:14.

Finally, we read that anyone whose name is not written in the Book of Life is thrown into the Lake of Fire, the second death, with no exit ever mentioned or promised, Revelation 21:1-8. So are those evacuated from Hades then, "*out of the frying pan, into the fire?*" Certainly, the Lake of Fire is the destiny of the Goats. But, do not be afraid. Instead, read the Bible's explicit mention of the purpose of the Lake of Fire and the identity of the Goats, "*Then he will say also to those on the left hand, 'Depart from me, you cursed, into the consummate fire which is prepared for... the devil and his angels,'*" Matthew 25:41. Bad news for the Devil. Good news for all mankind!

Faith is not a pen to write your own name in the Book of Life. Instead, faith is the glasses to see that the love of Christ for all mankind has already written our names in Heaven. Jesus said, "*You did not choose me, but I chose you,*" John 15:16. Though unbelievers will suffer regrettable punishment in Hades, redeemed mankind will never enter the Lake of Fire, prepared for the devil and his angels. And as God promised, all mankind will worship Christ together forever, Philippians 2:9-11.



World Nations

इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से वपतिस्मा दो, - मर्ती २८:१९